# श्रीरामचरितमानस

टीकाकार : महाराज करुणासिंधु

टीकाकार

**महाराज करुणासिंधु**

# श्रीरामचरितमानस

रामचरितमानस तुलसीदास की सबसे प्रमुख कृति है। इसकी रचना सं. 1631 ई. की रामनवमी को अयोध्या में प्रारम्भ हुई थी किन्तु इसका कुछ अंश काशी ( वर्तमान वाराणसी ) में भी निर्मित हुआ था, यह ध्वनि इसके किष्किन्धा काण्ड के प्रारम्भ में आने वाले एक सोरठे से निकलती है।

घर-घर में 'रामचरितमानस' का पाठ पिछली साढ़े तीन शताब्दियों से बराबर होता आ रहा है और इसे एक धर्मग्रन्थ के रूप में देखा जाता है। इसके आधार पर गाँव-गाँव में प्रतिवर्ष रामलीलाओं का भी आयोजन किया जाता है। फलतः जैसा विदेशी विद्वानों ने भी स्वीकार किया है, उत्तरी भारत का यह सबसे लोकप्रिय ग्रन्थ है और इसने जीवन के समस्त क्षेत्रों में उच्चाशयता लाने में सफलता प्राप्त की है।

तुलसीदास ने राम तथा उनके भक्तों के चरित्र में ऐसी कौन-सी विलक्षणता उपस्थित की है, जिससे उनकी इस कृति को इतनी अधिक लोकप्रियता प्राप्त हुई है? तुलसीदास की इस रचना में अनेक दुर्लभ गुण हैं जिससे उनकी इस कृति को इतनी अधिक मान्यता मिली।

तुलसीदास की इस रचना में अनेक दुर्लभ गुण हैं किन्तु कदाचित् अपने

*शेष अगले फ्लैप पर*

रामचरि
सबसे प्र
सं. 16
अयोध्य
इसका
वाराण
यह ध्व
के प्रा
से निव
घर-घ
पाठ ि
से बर
एक ध
है। इस
प्रतिव
आयो
जैसा
किय
सबसे
जीव
उच्च
की है
तुल
के
विल
उनव
लोव
तुल
दुर्ल
कृि
मित
तुल
दुल

श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदास कृत

# श्रीरामचरितमानस

टीकाकार

**महाराज करुणासिंधु**

**लोकभारती प्रकाशन**

पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद-१

रामचरितमानस की प्रस्तुत टीका का प्रकाशन अयोध्या शोध संस्थान द्वारा प्रदत्त वित्तीय सहायता से किया गया है। इसमें उल्लिखित तथ्यों एवं अभिव्यक्त विचार लेखक के है—अयोध्या शोध संस्थान के नहीं।

**अयोध्या शोध संस्थान**

**की ओर से**

**लोकभारती प्रकाशन**

**पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद-211 001**

**वेबसाइट : www.lokbhartiprakashan.com**

**ई-मेल : info@lokbhartiprakashan.com**

**शाखाएँ**

**1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नयी दिल्ली-110 002**

**अशोक राजपथ, साइन्स कॉलेज के सामने, पटना-800 006 (बिहार)**

**36-ए, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता-700 017**

**मूल्य : ₹ 2500**

**प्रथम संस्करण** : 2018

**ग्राफिक ऑफसेट,** इलाहाबाद द्वारा मुद्रित

SHREE RAMCHARITMANAS
Annotation by Maharaj Karuna Sindhu

ISBN : 978-93-86863-66-9

# श्रीरामचरितमानस

## अनुक्रमणिका

श्रीरामचरितमानस
श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदास कृत

# ॥रामायण तुलसीदासकृत सटीक॥

## ॥बालकाण्ड॥

श्रीगणेशायनमः॥ श्लोकार्थ॥ ग्रन्थके प्रथम श्लोकके आदि चरणमेंमगनगन पर्‍योहै सोतीनिहूं अक्षर दीर्घहैं वर्णानां सो शेषके मणितेउत्पन्न भयो है ताको देवता महिजानब दिब्य गुणको उत्पन्नकरत है पुनिश्लोक के दूसरेचरणमें यगनगन पर्‍योहै रसानांसो शेषके हृदयतेहै जलदेवताहै पुनि भाषाजब कियो तबप्रथमसोरठामें भगनगनपरेउहै सो शेषके फणितेभयो है ताको देवता शशिहै सर्वबीजको पोषणकरतुहै ताते तुलसी कृत मंगलमय है अरु श्रीमद्रामायण तो स्वाभाविकै सर्व मंगलमय है ग्रंथके निर्विघ्न हेतु प्रथमही वाणीजोहै सरस्वती विनायक जोहैं गणेश तिनदोउनको गोसाईं तुलसीदासजू बन्दनाकरतेहैं वर्णजेहैं अक्षर अनेक मैत्रीसंयुक्त तिनको संघट्ट कहीसमूह परस्पर मिलाप ताकीकर्त्तावाणी है तिनअक्षरनमें

श्लोक॥ वर्णानामर्थसंघानांरसानांछन्दसामपि॥ मंगलानांचकर्तारौवंदेवाणीविनायकौ १ भवानीशंकरौवंदे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ॥ याभ्यांविनानपश्यन्ति सिद्धाःस्वांतःस्थमीश्वरम् २ वंदेबोधमयंनित्यं गुरुंशंकररूपिणम्॥ यमाश्रितोहिवक्रोऽपिचंद्रः सर्वत्रवंद्यते ३ सीतारामगुणग्राम पुण्यारण्यविहारिणौ॥ वंदेविशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ ४ उद्भवस्थितिसंहार-

अनेकप्रकारके जे अर्थ हैं तिनके कर्त्ता गणेशहैं रसजे हैं शृंगारइत्यादिक तिनकेकर्त्ता सरस्वती हैं अरुअनेकप्रकारके जेछन्दहैं तिनके कर्त्ता गणेशहैं तेद्वौसर्वमंगल के कर्त्ता हैं तौद्वौ अहंबंदे किन्तुवर्णजो अक्षर अरु अर्थ तेहिको मंगल कर्त्तावाणी है अरुरसछन्दकेकर्त्ता गणेश हैं ( १ ) द्वितीय भवानीशंकरौवन्दे श्रद्धास्वरूप श्रीभवानी हैं विश्वासकर्त्ता श्रीशंकर हैं तिनदोउनकी कृपाबिना सिद्धनको ईश्वरजो है परमात्मा स्वकही अपने स्थित अन्तःकरणमें नाहींदेखिपरत है जेहिभवानी शंकरकी कृपाबिना ईश्वरबिषे श्रद्धा विश्वास नहींआवे ताते भवानीशंकरको नमस्कारकरतहौं ( २ ) पुनिगुरुको नमस्कारकरतहौं कैसे हैं गुरु शंकररूप हैं नित्य हैं बोधकही ज्ञानमय हैं जिनशंकर के आश्रय ह्वैकै बक्रकही टेढ़बाल चन्द्रमा जो है द्वितीयाको सर्वत्रबन्दनीय है तैसे गुरुनकेशरणागत भयेसंतेजो टेढ़होइ तोजगत्में बन्दनीयहोत है किंतु शंकरै सबजगत्के गुरुरूप हैं तिनहींको नमस्कारकरतहौं ( ३ ) पुनि कवीश्वर जे बाल्मीकि हैं कपीश्वरजे हनुमान्‌जी हैं तिनको बंदना करतहौं श्रीसीतारामजूके गुणग्रामजे हैं सोपुण्यारण्यकही पवित्रारण्यहैं ताकेबिहारीअरुरक्षक हैं अरुपरमरसिकहैं विशुद्ध बिज्ञानमय हैं तेद्वौअहंबंदे ( ४ ) अबश्रीमती श्रीजानकीजीको नमस्कारकरतहौं कैसीहैंश्रीमती जानकीजी अपनीभृकुटीकीजोहै अंशबिलासमायातातेउद्भवस्थितिसंहार करतीहैं सर्बश्रेयकही अनेकप्रकारकेजोहैं कल्याणगुणवात्सल्य इत्यादिक तिनको करतीहैं श्रीरामचन्द्रजूकी बल्लभा कहीअतिप्रियाहैं तेश्रीमती श्रीजानकीजू मेरेऊपर कृपाकरैं जातेमेरी मतिशुद्धहोइ तब श्रीसीताशरामचरितसमूह मेरेहृदयमें आवैं किन्तुउद्भवस्थिति संहार संतनके हृदय में योगबैराग्य ज्ञान भक्तिप्रेमापराउत्पन्नकरतीहैं पुनि तिनहीं संतोषशीलकरुणा दया इत्यादिक स्थितकरती हैं पुनि कामक्रोध लोभ मोह मदमान इत्यादिक जन्म मरण संहार करतीहैं सर्बकल्याण करतीहैं जोरघुनाथजीको अतिप्रियहै सोईकरतीहैं तातेरामबल्लभा कही तिन श्रीजानकीजी के नतकही दीनह्वैकैशरणहौं किंतु नमस्कार करतहौं ( ५ ) अबश्रीरामचन्द्रकोअवरेवकरिकैनमस्कार करत हौं कैसेहैं श्रीरामचन्द्र अशेष कारणते

कारिणींक्लेशहारिणीम्॥ सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहंरामवल्लभाम् ५ यन्मायावशवर्तिविश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवाःसुराः यत्सत्त्वादमृषैवभातिसकलं रज्जौयथाहेर्भ्रमः॥ यत्पादप्लवमेकमेवहिभवांभोधेस्तितीर्षावतां वन्देऽहंतमशेषकारणपरं रामाख्यमी-

परेहैं अशेष कारण काकोकहिये जेहिपुरुषकी ईक्षणाते मूलप्रकृतिहोतीहै पुनिताहीते तीनों गुण अरुपांचों तत्त्व मिलिकै आठहूते ब्रह्माण्डरचना बिस्तारहोतहै अनुलोमकरिके पुनिप्रतिलोमकरिकैप्रलयहोतहै ब्रह्माण्डरचनापंचतत्त्वमें लीनहोतहै पांचोंतत्त्व अहंकारमें लीनहोत हैं अहंकारमहत्तत्त्व में लीनहोत है महत्तत्त्व मूलप्रकृति में लीनहोत है मूलप्रकृति पुरुषको प्राप्त होतहै ताको महा ईश्वरकही पुनि जगत्कर्ताकही महाकारणकही जाको सहस्त्रशीर्षापुरुषवेदप्रतिपादनकरते हैं। ( सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् इतिश्रुतिः ) संहितावेदका अंगहै सोऊप्रतिपादन करतीहैं जाकेअंशते ब्रह्मा बिष्णु शिवउत्पन्न होते हैं ( सदाशिवसंहितायां श्लोक ) निलयंपरमंदिव्यं महावैष्णवसंज्ञकं॥ सहस्त्रमूर्द्धा विश्वात्मा सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् १ यन्निमेषाज्जगत्सर्वं लयीभूतव्यवस्थितम्॥ यदंशेन समुद्भूता ब्रह्माविष्णुमहेश्वराः २ ताही पुरुषको अशेष कारणकही अशेषकही संपूर्ण जो संसारहै तेहिकेकारण महाईश्वरहैं ताते महाईश्वरको अशेषकारण कही अरुतिनही को महाबिष्णुकही सो राघवजूके दिब्यगुणरूपहैं ( श्लोकएक अन्येचाध्याये सौमित्रवाक्यंवेदान्प्रति ) राघवस्य गुणोदिव्यो महाविष्णुस्स्वरूपवान् वासुदेवंघनीभूतं तनुतेजोमहाशिवः १ तिन महाईश्वरकेपरे जोईशहै सो कौनईशहै आख्यकहीराम ऐसोनामहै

जिनको ऐसे ईश श्रीरामचन्द्रहैं तहां प्रमाणहै ( वाल्मीकीये सुन्दरकाण्डे श्लोकत्रयः ) परंब्रह्मपरंतत्त्वं परंज्ञानंपरंतपः॥ परंबीजंपरंक्षेत्रं परंकारणकारणं ( पुनः बृहन्नाटके ) एकोमहामोहभूतादिसृष्टिस्थितिर्ध्वंसहेतुर्महाविष्णुरास्ते॥ रामस्तुतज्ज्योति पादाम्बुजातः परःकारणात्कार्य्यतोऽसौपरात्मा २ ( पुनःश्रुतिः ) यस्यांशेनैवब्रह्मा-विष्णुमहेश्वराअपिजातामहाविष्णुर्यस्यदिव्यगुणाश्च सएव कार्य्य कारणयोःपरः परमपुरुषोरामोदाशरथीबभूव ॥ पुनिहरिकही हरिर्हरंतिपापानि ॥ जिन श्रीरामचन्दके रामनाम उच्चारणकरतसंते महापापजोहैं जन्ममरण सो नाशहोतहैं ताते हरिकही पुनि जिन श्रीरामचन्द्र की मायाकेबश बर्त्तमानहै अखिलकहे अनन्त विश्वजोहै अनंतब्रह्मादिकदेवताहैं अनंतअसुरहैं अनंतसिद्धमुनि चराचरजीव सर्वमायाकेबशहैं सो

**शंहरिम्॥६॥नानापुराणनिगमागमसम्मतंयद्रामायणे निगदितंक्वचिदन्यतोऽपि॥ स्वांतःसुखायतुलसीरघुनाथगाथाभाषानिबन्धमतिमंजुल-मातनोति॥७॥** * * * * * *

मायाकौनिहै त्रिगुणात्मिकाहै कारणरूपाहै तामायाकोकीन्हजोहै त्रैगुण्यमयकार्य सो असत्यहै भ्रमरूपहै जिन श्रीरामचन्द्रकी सत्यताते सत्यइव भासतहै जैसे रज्जुकही जेवरीबिषे सर्पभासतहै पर बिना श्रीरामचन्द्रकी शरणभये यहभ्रमनहींमिटै जो कोटियत्नकरै यह भ्रममृगतृष्णाइव है पर समुद्रवत्है ऐसोजोहै संसारसागर ताकेपारजाबेको श्रीमद्रामचन्द्रजूके चरणारबिंदही एक दृढ़जहाजहैं तंश्रीरामचन्द्रं अहंनमामि ( प्रमाण भगवद्गीतायां ) दैवीह्येषागुणमयी ममकायादुरत्यया ॥ मामेवयेप्रपद्यन्तेमायामेतांतरंतिते ॥६॥ श्रीगोसाईंतुलसीदास कहतेहैं कि यह जो मैंभाषाकरतहौं सोनानापुराण अरु चारिहूवेद छहूशास्त्र अरु श्रीमद्रामायणजोहै शतकोटि अपर निगदितं नामकथितं तिनसबनको सम्मत क्वचित् कही विशेष लेतहौं तहां श्रीमद्रामायण बिशेषहीहै अपरको क्वचित्क्वचित् लेतहौं किंतु औरौ लेतहौं उपनिषद् स्मृति संहिता उपपुराण अपरमुनिनकोसम्मत सतसभाषासम्मत गुरुबाक्य निजअनुभवसबकोसम्मत बिशेषलैकै भाषाप्रबन्ध करतहौं स्वकहे मेरोअन्तःकरण सुखानन्दको प्राप्तहोइ आतनोतिनाम बिस्तारसमेत कैसोहै सबसम्मत मतिमंजुलकहे अतिउज्ज्वलहै ॥७॥

सोरठार्थ ॥ श्रीभगवत्पार्षद विष्वक्सेनके स्वरूपहैं श्रीरामज्ञानुकूलसर्बमंगलकेभंडारी रामानुकूल सर्ब मंगलदाताहैं ताते ग्रन्थनिर्विघ्नहेतु प्रथमहि श्रीगणेशजूको स्मरणकरतहौं जेहिकेसुमिरेते श्रीरामसिद्धीप्राप्तहोतीहैं अरु अष्टादशसिद्धी प्राप्तहोतीहैं आगेसिद्धिनको स्वरूपकहेंगे गणनायकअनेकहैं पर हाथीकोऐसोहै बदनज्यहिको सो गणेशमेरेऊपरअनुग्रहकरौ बुद्धिकी राशिहौ शुभगुणकेसदनहौ ॥८॥ श्रीगोसाईंतुलसीदासजीने दूसरे सोरठा में मूकपदकह्यो बाचालकह्यो पंगुकह्यो चढ़बकह्यो वरकह्यो गहनकह्यो जासुकह्यो कृपाकह्यो सुदयालकह्यो द्रवौकह्यो सकलकह्यो कलिकह्यो मलकह्यो दहनकह्यो अब सबपदनकोअर्थकहतहौं क्रमहीते मूककही गूंगा मूकमें चारिभेदहैं एक बचनमूक द्वितीयअज्ञानमूक तृतीयधर्ममूक चतुर्थज्ञानमूक जासुकही जेहिपरमेश्वरकी कृपानामदयालुताते वहै बचनमूक वेदबक्ताह्वैजातहै ताकोबाचअलकहे अलंकृतनाम शोभितहोतहै भक्तमालग्रन्थ में ज्ञानदेवजूभक्तभयेतिननेभैंसिकेपाड़ाको वेदपढ़ाइदयो श्रीरामचन्द्रकी कृपासूत्रते एक अज्ञानकही

**सो० ज्यहि सुमिरेसिधिहोय गणनायक करिवर बदन॥ करहु अनुग्रह सोय बुद्धिराशि शुभगुण सदन॥८॥ मूकहोहिंबाचाल पंगु चढ़ैं गिरिवर गहन॥ जासु कृपा सुदयाल द्रवौ सकल कलिमलदहन ९ नील सरोरुहश्याम तरुणअरुण बारिज नयन॥ करहु**

बालमूक ध्रुव प्रह्लाद इत्यादिक बालहीअवस्थामें श्रीरामचन्द्रकीकृपातेवेदतत्त्वके बक्ताभये धर्ममूककही जोकेहूके कार्य्यके निमित्त केहूते कहनोपरै तब न कहनोपरै तब न कहै तेऊ भगवत्कृपाते परमार्थैकहनेलगे ज्ञानमूककहीपरमेश्वरके परमतत्त्व जानिकै मौनह्वैरहेहैं अन्यथा नहीं बोलतेहैं जैसे दत्तात्रेयजड़भरत श्रीजनकादिकरामकृपाते

परमार्थैबोलतेहैं पुनिबधिरमूक यहीरीतिजानिये जो परमार्थ रामसम्बन्धनकहै ताहीकोमूककहिये अरु जैश्वासापरमार्थमेंकहै सोईवेदबक्ताहै अरु जैश्वासाकेवललोकलिहे कहै सोई महामूकहै यहिप्रकारबधिरजानिये श्रवणद्वारव्यवहार ह्वैकै यहीप्रकारते अपरइन्द्रिनकों व्यवहारजानिये अब पंगुकही येहैं पंगुकही लँगरे को ते तीनि प्रकार के हैं एक पद को पंगु एक कर्मको पंगु एक सुमति को पंगु जो श्री रामचन्द्र की कृपा कही सुष्टु दयाहोइ तौ वहैजो चरण पंगु है सोई पहाड़ चढ़िजाइ पर दौरिकै बिना श्रमही गहन कही गम्भीर अति ऊंचो अति बिस्तर अति अगम शैलपर चढ़ि जाइ अथवागहन बन संयुक्त बड़े पर्वत जेहैं पुनि कर्म पंगु कही गीध शवरी कोल भिल्ल इत्यादिक बनाइ कर्मके पंगु रहे हैं जिनस्वप्नेहुं सुकर्म नहींकीन्ह तेऊश्री राम कृपाते परमपद महा पर्बत रूप तापर चढ़ि गये पुनिसुमति पंगु कही श्रीरामनाम स्वरूप को पाइकै मति पंगु होइगई काहूको नहीं चलैन कर्मको न ज्ञानको न कोई देवताकी उपासनाको मतिरामस्वरूप शैलपरचढ़िगई श्रीमद्रामचंद्रजीकी कृपाकरिकै अचलह्वैरहेहैं सोप्रभु मेरे ऊपरद्रवै जैसे भूखे बालकोदेखिकै माता द्रवतिहै सकलकही सम्पूर्ण कलि कहे क्लेश मलकही मनक्रमबचनकी मलीनता किन्तु कलियुगके मलकहीपाप कलियुगहिकोधर्महै चारिहूयुगमें अथवाकलिकहीकलित कलितकही मिलित चारिहूयुगकेपापदहन कही जरायदेतहैं जेहिजीवपरकृपाकही सुष्टुदयाहोइ जब श्रीमद्रामचन्द्रद्रवहिं अपनीमतिके अनुसार दूसरेसोरठाको अर्थकियोहै ॥९॥ अबतीसरे सोरठाको अर्थ करतेहैं नीलकमलतद्वत्श्यामहै शरीर अरुलाल कमलकी कली जो प्रथमैं बिगसी हैं तद्वत् नेत्रहैं सो भगवान् मेरे हृदयमें बसैं जोक्षीर सागरमें शयन करतेहैं किन्तु जैसेक्षीरसागरमें बसतेहौ तैसे बसौ अब तीनहूं सोरठा को एक अन्वय करिकै प्रतिलोम करिकै कहतेहैं जोक्षीरशायी भगवान्हैं तिनकी कृपाते मूकबाचालहोयँ पंगुपर्बतपरचढ़ैंअरुजेहिकेसुमिरेते गणेशादिकदेवता अनेकसिद्धिनकोप्राप्तहोतेहैं जो कोईकहे कि श्रीगुसाईंतुलसीदासजू श्रीमद्रमचन्द्रके उपासकहैं क्षीरशायी श्रीमन्नारायणको क्योंकहा मेरे हृदय में बासकरैं तहां यहतात्पर्यहै यहब्रह्मांडकोश जोहै तेहिमें जो परमपुरुषपरमात्मा जाको भूमापुरुषकहीसोअविद्याविद्याजो द्वैप्रकारकीमायातेहि ते परे पुरुषहै सो कौनश्रीमद्रामचन्द्र सो केवलभक्तानुग्रहार्थ प्रकृतिमंडल में अवतीर्णभये तिनकोचरित अपरम्पारहै श्रुतिस्मृति शेषशारदा शिव ब्रह्मादिकदेवता सिद्धमुनिसबको श्रीमद्रामचरित्रसम्पूर्ण जानिबेकोअगमहै तहांक्षीरशायी जो भगवान्हैं सो श्रीरामचरित्र नीकीप्रकार सम्पूर्ण परम्परा पूर्बक जानतेहैं क्योंजानिये श्रीमद्रामचन्द्रजूके द्वितीय बिग्रहका तात्पर्यहै द्वितीय बिग्रहको यह जो संसारहै मायामें सोकार्य रूप है क्षीरशायी श्रीमन्नारायण कारण रूपहैं श्रीमद्रामचन्द्र कार्यकारणतेपरेहैं क्यों जानिये श्रीमद्रामचन्द्रके निकट श्रीमती जानकीजूहैं श्रीमन् लक्ष्मणजूअखंडएकरस बिराजमानहैं जैसे श्रीरामचन्द्रके दूसर बिग्रहक्षीरशायी श्रीमन्नारायणहैं जैसे श्रीजानकीजीके दूसर बिग्रह श्रीलक्ष्मी जूहैं तैसेही श्रीलक्ष्मणजूके दूसर बिग्रह श्रीशेषजूहैं जिनको अनन्त भगवान् कही ताते श्रीमद्रामचन्द्रजू श्रीजानकीजू श्रीलक्ष्मणजू तीनिहू स्वरूप को चरित्र परमदिव्यतम अनन्त ऐसो जो चरित्रहैताको क्षीरशायी भगवान् लक्ष्मी शेषये तीनहूं को चरित्रसंपूर्ण जानतेहैं काहेते अपनी कर्तव्यता अपने को अच्छी तरह जानी जाती है तातेगोंसाईं तुलसीदासने कहा कि क्षीरशायी भगवान् मेरे हृदय में बसैं तब श्रीरामचरित्रमोको आवै अथवा अभेदकरिकै कहा अरु ग्रंथकर्त्ताकोआशयलैकै तब अर्थकरनेको होतहै श्रीतुलसीदासजू श्रीमद्रामउपासक हैं ताते तुलसीकृत श्रीरामस्वरूप धनुर्द्धरपरात्परहैं औ श्रीरामनामधामपरहै श्रीरामलीलापर है ताते हमनेतीसरे सोरठाको ऐसो अर्थ कियो तहां प्रमाणहै ( बशिष्ठसंहितायांपञ्चश्लोकाः ) रामस्यनामरूपञ्चलीलाधामपरात्परम्॥ एतश्चतुष्टयंनित्यंसच्चिदानन्दबिग्रहं १ ( पुनःबृहन्नाटके ) एको महामोहभूतादिसृष्टिस्थितिर्ध्वंसहेतुर्महाविष्णुरास्ते॥ रामस्तुतद्गीतपादाम्बुजातःपरः कारणात्कार्य्यतोऽसौपरात्मा २ ( तिलक ) एकःमहाविष्णुः आस्तेवर्त्ततेकिंभूतःमहामोहभूतादिसृष्टिस्थितिध्वंसहेतुःमहामोहमूलाज्ञानंप्रकृतिः साद्विधामायाअविद्याचतयोः कार्य्यंचमहाभूतादिपंचभूतप्रभृति आदिपदेनतद्गुणाश्चउत्पत्तिपालननाशहेतुः सएवअतःकारणरूपःइत्यर्थःश्रीरामस्तुतद्गीतपादाम्बुजातः महाविष्णुमुखोच्चारित श्रुतिवहगीतचरणसरोजः कार्यकारणयोः परः असौगुणरूपसन्नपि परमात्मेत्यर्थः२॥ श्लोक॥ सब्रह्मणस्तज्जगतोविधातुर्न्नारायणः कारणएकएव। जातस्ततो

**सो मम उरधाम सदा क्षीरसागर शयन १० कुन्दइन्दु समदेहउमारमण करुणा अयन॥ जाहि दीनपर नेह करहु कृपा मर्दन मयन ११ बन्दौं गुरुपद कंज कृपासिन्धु नररूप हरि॥ महामोहतमपुञ्ज जासुबचनरबिकरनिकर १२ चौ० बन्दौंगुरुपदपद्म परागा।**

भातिससप्रपंचः प्रपंचमेतत्परितोविधत्ते ३ (तिलक) सब्रह्मणइतिब्रह्मणचेतनस्वरूपेणसर्वव्यापकेनतदंशेनसवर्त्तमानस्य जगतः विधातुउत्पत्ति कर्त्तुः कारणरूपस्येवापि कार्य्यरूपस्यब्रह्मादेःएकएवनारायणःक्षीरशायीकारणरूपःयतस्ततोनारायणात् सब्रह्माजातःसमुत्पन्नस्सन्सप्रपंचः प्रपंचेन जगद्व्यापारेणसवर्त्तमानः भातिदीप्तिमान् भवतियेनैवप्रेरितस्मत्युतःएतत्प्रपंचंपरितस्सर्वशोभावेनविधत्तेकरोतिअतोनारायणस्य कारणाप्रसिद्धेत्यर्थः ३ (बाल्मीकीयेसुन्दरकांडे) परंब्रह्मपरंतत्त्वंपरंज्ञानंपरंतपः। परंबीजंपरंक्षेत्रंपरंकारणकारणं ४ (पुनःश्रुतिः) यस्यांशेनैवब्रह्माविष्णुमहेश्वरा अपिजातामहाविष्णुर्यस्यदिव्यगुणाश्चसएवकार्य्यकारणयोःपरः परमपुरुषोरामोदाशरथीबभूव ५ इत्यथर्वणेउत्तरार्द्धे (१०) यह मानस रामायण जोहै ताके कर्त्ता शिवजूहैं सो शिवमेरेऊपर कृपाकरो कैसे हैं शिवजूकुन्दके पुष्पजो हैं तद्वत्शरीर उज्ज्वलहै कोमलसुगन्ध मकरंदमयहैं चन्द्रवत् उज्ज्वलप्रकाश शीतल अमृतमय हैं अखंडएकरसहैं ऐसे तनमनबचनतेशिवजूके हृदयमानस ते उमग्यो श्रीमद्रामायणमानस सो प्रत्यक्षभयो उमाकेहेतु हित उमारमणतोहईहैं परउमानाम शुद्ध आर्त्तजिज्ञासू तिनकेमनमें शिवजू रामायणरमावतेभये तातेउमारमणकह्यो करुणाके स्थानहैं दीनपर बड़ोनेहहै दीनद्वैप्रकारके एकमायाके दीन हैं एकभगवान्के दीन हैंसोदोऊ दीनता शिवजूकी कृपाते मिटिजायँ कैसे हैं शिवजू मयनमर्दन हैं तेशिवमेरेऊपर सबप्रकारतेकृपाकरौ (११) अब श्रीमद्गुरुचरणकमलबन्दौं गुरुकही जाको आत्माब्रह्म परब्रह्मशब्द ब्रह्मकोबोध अच्छीप्रकार तेहोइ ताकोगुरुकही गुकार अन्धकार शिष्यबिषे बाचक है रुकारअन्धकारको दूरिकरदेत है ताते शिष्यको अज्ञानकही अन्धकार दूरिकरै ताको गुरुकही (प्रमाण) गुशब्दस्त्वंधकारस्य रुशब्दस्तंनिरोधकः। अन्धकारनिरोधत्व गुरुरित्यभिधीयते॥ पुनि गुरुगरिष्ठ शब्दहै गरिष्ठकही सर्वपूज्यहै फेरिगुरु कैसेहैं कृपाके समुद्रहैं पुनिगुरु नररूप प्रत्यक्षहरिहैं अथवाहरिकहिये सूर्य अपनीकिरणिपंक्ति करिकै रात्री को दूरिकरतेहैं गुरुअपने बचनकिरणनते शिष्यकेहृदयका अन्धकार दूरिकरिदेतेहैं तौ गुरुचरणौअहंबंदे (१२) चौ०॥ श्रीमद्गुरुचरणकमलकीपरागकही रजताको बन्दौंकैसी

**सुरुचिसुबाससरसअनुरागा १३ अमियमूरिमय चूरणचारू। शमनसकलभवरुजपरिवारू १४ सुकृतशम्भुतनविमलविभूती। मंजुल**

है रजजामें सुरुचिहै सुष्टुबासनाहै श्रेष्ठअनुरागहै देखिंये तो श्रीमद्गुरुनकेचरणनमें कमलकोधर्म का कहीं जिनचरणनमें रजकहूंते लपटिगई है तामें कमलके धर्म्म बर्त्तमानहैं धर्मकाकोकही गुणस्वभाव क्रियासंयुक्तहोइताको धर्मकही कमलनमेंमकरंद सो कृपाकही जो सुगन्धकोमलता सो सुभावकही जो पराग रंग सो गुणकही तीनोंमिलैं धर्मकही श्रीमद्गुरुन के चरणरजबिषे सुरुचिहै सो मकरन्दजानिये जो सुष्टुबासनाहै सो सुगन्धजानिये जो सुष्टुअनुरागहै सो पराग रंगजानिये ताते गुरुचरणरज सर्बधर्ममयहै सो रज बन्दौं (१३) पुनिगुरुचरण रज कैसीहै अमृतमयमूरि ताकोचूर्णहै चारुकही सुन्दरहै वैद्यकग्रन्थमें एक अमरमूरिकही है ताकोचूर्ण बनायकै जो कोईखाय सो अमरहोय देवतारूप होय अरु सर्बसिद्धी ताको प्राप्तहोहिं काहेते अमरमूरि अमृतसंयुक्तहै गुरुचरणरज चूर्णजोहै सो मोक्षअमृतमयहै ताकोसेवनकरै तौ भवकही संसारताको रुज कही रोग सो कौनहै जन्ममरण तेहिको परिवार काम क्रोध लोभ मोहमद मान मत्सर इत्यादिक अनेकनहैं जिनके बशह्वैकै संसार में जन्मतहैं अरु मरतहैं ऐसो जन्म मरण श्रीगुरुचरण रजचूर्णते शमनकही नाशहोतेहैं (१४) पुनि गुरुचरणरजकैसीहै सुकृतजोहै सो शिवरूपहै तेहिके तनको निर्मल विभूतिहै अरु मंजुलकही निर्मल जो मंगलहै मोदकहीआनंद तिनको उत्पन्नकरिबेको प्रसूता नाम माताहै पुनि विपर्यय भाव करिके अर्थसिद्धकरतेहैं शिवजू चिताकी विभूति धारणकरतेहैं सोविभूतिमहामलिनहै जबशिवके अंगमेंलागी तब विमलभई अरु गुरुचरण रज विभूति कैसीहै शम्भुरूप जो सुकृतहै ताके तनको निर्मल करतिहै कैसेजानिये जेहिसुकृतमें गुरुचरणरज नाहीं प्राप्तिहोइ सो सुकृत न कही ताकोकुकृत कहियेहै अरु मंगलकाकोकहिये जो बाह्यइन्द्रिनकी कर्त्तब्यतेसुख उत्पन्नहोइ सो मंगलकही अरु जो अंतःकरणके बिचारते सुख

उत्पन्नहोइ ताकोमोदकही तामें द्वै द्वै भेद हैं एक उज्ज्वल मंगलमोद एक मलिन मंगलमोद है जो शुद्धसात्त्विक भगवत् सम्बन्ध बाह्यकर्म है अरु अंतष्करणते रामतत्त्वबिचारजोहै ताते जो सुख उत्पन्नहै ताको मंजुल मंगलमोद कही जो बाहर-भीतर इन्द्रिनकरिकै परधन परनारि परनिंदा हिंसा परबिघ्न इत्यादिक जो कर्त्तव्यताको करिकै सुनिकै समुझिकै देखिकै मनमेंल्यायकै जो सुखजीबउत्पन्नभयोहै सो मलिनमंगलमोदकहिये ताते गुरुनके चरणारबिंदकीरज मंजुलमंगल मोदप्रसूतीकही माताहै जो अपनेगर्भते तुरंत पुत्र उत्पन्न करतुहै अरु जो गर्भको धारणकरेताको

**मंगल मोद प्रसूती १५ जनमनमंजु मुकुरमलहरणी। कियेतिलकगुणगण बशकरणी १६ श्रीगुरुपदनख मणिगणजोती। सुमिरत**

प्रसूती कही अरु मलिन मंगलमोदको नाशकरतीहै ( १५ ) पुनि गुरुचरणकमलरज कैसीहै जनकही भगवद्दास अथवा जनकही पूर्णप्राणी तिनको मन मुकुर कही दर्प्यणहै ताको मलहरिकै मंजुलकरिदेतहै जो भालमेंतिलककरैतौ संपूर्ण उत्तमगुण बशहोतेहैं जैसे सिद्धजनबशीकरण तिलककरिकै सर्बजनको बश करते हैं तैसे गुरुनकेचरणकीरज भाल में तिलककरै तौ संपूर्ण शुभगुण बशहोते हैं दूसर अर्थ पुनि तिलककही जैसे कोई राजनके तिलक होतहै तबसंपूर्ण प्रजा अरुसेना अरुभाई कुम्बादिकबशहोते हैं तैसे धर्म सर्ब के ऊपर गुरुके चरणरजका तिलककरै तो अनेकन उत्तम गुण बशहोतेहैं ( १६ ) श्रीमद्गुरु चरणके नखजेहैं तेमणिगणकी ज्योतिहैं इहां श्रीपद क्यों कहा प्रथमहिरजको वर्णन करिआयेहैं अबनखनको प्रभावकहा चाहतेहैं ताते बीचमेंश्रीपददयो दीपदेहरी अक्षरहैं पूर्बापर प्रकाश करैहैं श्रीकाको कहिये श्री धन यश प्रताप ऐश्वर्य तेज प्रकाश स्वरूपशोभा तप योग वैराग्य ज्ञान विज्ञान भक्तिइत्यादिक अनन्तदिव्य गुणसंयुक्त श्रीकहिये जाबिषे एतेगुण बर्त्तमान होहिंसो श्रीमान्है ताते श्रीमद्गुरुनके चरणारबिन्दकीरज अरुचरण अंगुलिनके नख श्रीमान्हैं श्री गुरुपदनखनको मणिगण प्रकाशको दृष्टान्तदीन्ह दीपावली प्रकाश को दृष्टान्त क्यों नहीं दीन्ह दीपकाप्रकाश हिंसा सहित है मणिगण प्रकाश हिंसा उपाधि बर्जितहै दिव्यहै अपर कर्म धर्म हिंसा उपाधि संयुक्तहै तहां श्रीमद्गुरुचरणारबिंद नख मणिगण प्रकाशमय तिनकेसुमिरेते दिब्यदृष्टिहोतीहै ( १७ ) श्रीमद्गुरुचरण नख सूर्य करिकै कहते हैं पुनि श्रीमद्गुरुचरणारबिंद नखप्रकाश कैसेहैं जिनके ध्यानकियेते मोह दलन होतेहैं मोहकाको कहिये धन धाम दारा पुत्र पौत्रादिकमें अपनपौ मानै ताको मोहकही ऐसो जोहै मोह सो तम कही अंधकार रूप है ताको नाश करिबेको सोसु कही सूर्यस्वरूपहै श्रीमद्गुरुचरणनख ऐसेहैं जाके उरमेंनखनको ध्यानआवै सो बड़भागी है जो गुरुनको तन मन धन धर्म धामधरणी समर्पण करै निष्कपटह्वैकै हृदयमें ध्यानआवै है ( १८ ) जो श्रीगुरुचरणनख ध्यानआवै तौ हृदयके बिमल नेत्रखुलैंहृदयके नेत्रकौनहैं ज्ञान वैराग्य सो खुलैं काहेते नखप्रकाश सूर्यस्वरूप हैं सूर्यनेत्रके देवताहैं ताते ज्ञान वैराग्य जो नेत्रहैं तिनके श्रीमद्गुरुचरणनख सूर्यदेवताहैं बिनादेवता इन्दिय प्रकाश नहीं करती हैं भवजोहै

**दिब्यदृष्टिहियहोती १७ दलनमोहतमसोसुप्रकासू। बड़ेभाग्यउरआवतजाशू १८ उघरेबिमलबिलोचनहीके । मिटैंदोषभवरुजरजनीके १९ सूझहिंरामचरितमणिमाणिक। गुप्तप्रकटजहँजोजेहिखानिक २० दो०॥ यथासुअंजनआंजि दृग साधकसिद्धसुजान॥**

संसारता के जेहैं दोषदुःख ते मिटिजातहैं रात्रिकोदोष अंधकारदुःखचौर राक्षसादिक तामसीजीव सोई दुःखहै भवरात्रीके का दोषदुःखहै अज्ञान सो दोषहै अज्ञानकाकोकही शरीराभिमान आत्माविस्मरणतामें दुःखकाहै कामादिकते मिटिजातेहैं जब श्रीमद्गुरुचरण नख सूर्यहृदयमें उदय होइं ( १९ ) पुनि जब हृदयके नेत्र प्रकाशितभये तब सूझै नाम देखिपरैहै श्रीमद्रामचरित्र मणिमाणिक स्वरूप मणिकाकोकही माणिक्यकाको कही तत्रदृष्टांतदिखावतेहैं मणि सर्वसंज्ञाहे पर सर्पते उत्पन्नहोइ ताकीविशेषमणिसंज्ञाहै पर्बतते उत्पन्नहोइ ताको माणिक्यकहेहैं अब दार्ष्टांत यह जो पंचभौतिकशरीरहै विषयमें सो सर्पजानिये तिनमें क्वचित् काहूके अनुभवते श्रीमद्रामचरित उत्पन्नभयो सो मणिकहिये अरु श्रुति स्मृतिसंहिता पुराण नाटक तंत्रादिक पर्बतनते उत्पन्न जो होइ श्रीमद्रामचरित सो माणिक्यस्वरूपहैं तिनमें जो गुप्तहै अरु जो प्रकटहै जहां तहां जैसी

जो खानि श्रीमद्रामचरितकी सो सकलदेखिपरैहै अथवा रामचरित सब गुप्तहीहै सो सब प्रकट देखैहै जब श्रीमद्गुरुचरणारबिन्दनख सूर्य हृदयमें उदयहोइं ( २० ) दृष्टांत-दोहार्थ ॥ यथानाम जैसे सुअंजनसुष्टुअंजनआंजिकहीदैकै दृगनामनेत्रबिषे कौनजन साधकजन सिद्धहोइ बेकेनिमित्त सिद्धअंजनदेतेहैं सिद्धकोप्राप्तभये सुजानभये दिव्यदृष्टिभईजब वे अनेकचरितदेखतेहैं जो अनेकपर्बतमें चरितहोतेहैं जो अनेकबनमें चरितहोतेहैं जो भूमितलमण्डलमें चरितहोतेहैं सो निधाननामस्थान स्थान संपूर्णचरितदेखतेहैं अब दृष्टांत मुनि श्रीगुसाईं श्रीमद्गुरु चरणारबिन्दरजको अंजनकरिकैबर्णतेहैं इस अंजनको जोकोई हृदयकेनेत्रमेंदेय तौ परमसुजानहोइ परमदिव्य दृष्टिहोइ श्रमद्रामचंद्रकेचरित अनेकप्रकारके वे देखतेहैं तहां पर्बतस्थाने श्रुति स्मृति शास्त्र पुराणादिकअनेकग्रंथ तिनमें जो श्रीरामचरित अनेकहैं सो देखते हैं बनकहीसंसार तामें जो अंतर्यामीस्वरूप अनेक चरितकरतहैं सो देखतेहैं भूतलकहीसंतसभा तामें श्रीमद्रामचंद्रके चरित अनंतहोतेहैं सो देखतेहैं जानतेहैं श्रीमद्गुरुचरण अंजनदियेसंते ( २१ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकांडे श्रीमद्गुरुचरणकमलरजनखपुनिप्रतापभावयथार्थवर्णनंनामप्रथमस्तरंगः १

**कौतुक देखहिंशैलवन भूतल भूरिनिधान २१ * * * * * * * * * गुरुपदरजमृदु मंजुलअंजन । नयनअमियदृगदोष बिभंजन १ तेहिकरबिमल बिबेकबिलोचन ॥ बरणौंरामचरितभवमोचन २**

दो० ॥ द्वितीयतरंगनि सतसभा गुणउपमा करिभाषि॥ रामचरण लक्षण कहे दै प्रयागकी शाषि १ ॥ पुनि श्रीमद्गुरु पद रज मृदुलकही कोमल मंजु कही उज्ज्वलअंजन है अंजनके अनेकनाम हैं गुरुपदरजकौनअंजन है एक अंजनको नयनामृतनामहै सो अंजन जो नेत्रमेंदेइ तौ नेत्रकेदोषतिमिरजाय फूलीमोतियाबिन्दु इत्यादिक दोषनाशहोहिं मृदुमंजु क्यों कहा एक अंजनदिये प्रथमकरुवायहै आगे शीतलता ल्यावतहै अरु नयनामृत अंजनकेदियेते बर्त्तमान परिणाम अमृतफल देतहै एकरस तहां श्रीमद्गुरुचरण रज अंजन जो हृदयके नेत्रमेंदेइ तौ अविवेक दोष नाशहोइ कोई दृगदोष बिभंजनपाठ कहतेहैं दृगकहीदशौदिशा पांचज्ञानइन्द्रिय पांच कर्मइन्द्रिय सोईदशौदिशाहैं तेहिके जो दोष शब्द स्पर्श रूप रस गन्धइत्यादिकबिषयताते श्रीमद्गुरुचरणरज करिकै दशौइन्द्रिनको दृगबन्धनकरौइन्द्रिनकेदेवताजो बिघ्नकर्तातिनकोबांधिकै इन्द्रिनकी बिषयदोषरूपदूरिकरिकै-बाह्यांतरशुद्धकरिकैतबश्री मद्रामचन्द्र के चरितबरणौंनाम कहौं ( १ ) श्रीमद्गुरुचरणरज अंजनजोहै ताकोहृदयके नेत्रजोहैं विवेक ज्ञान तामें करिकै नामदैकै तबविवेकनिर्मल करिकै तब श्रीरामचन्द्र केचरितबरणौंकैसेहैं श्रीमद्रामचन्द्रकेचरितजाके कहत सुनतसमुझतभवजोहै संसारसोमोचनकही छूटिजाइनाशको प्राप्तहोइ॥२॥ पुनिप्रथमही महीसुरजो ब्राह्मणहैं तिनकेचरणारविन्दबन्दतहौं कैसेहैं ब्राह्मणके चरण मोह तेज नितनाम उत्पन्नजोहै अनेकसंशय सोनाशहोइजाइ है सुमिरतसंते प्रथमतौ श्रीमद्गुरुचरणारबिन्दरज बर्णनकरिआये हैं अबब्राह्मणकेचरण कमल बंदन प्रथम क्योंकहेजाते प्रथमब्राह्मणैहैंपितामह जो ब्रह्माजूहैं तिनते उत्पन्नभये जोहैं ब्राह्मणप्रथमहिं सनकादिक नारदबशिष्ठादिकजेहैं ब्राह्मणतिनके चरण संसारसागरतारनेकोजहाजहैं ताते प्रथमकहा पुनिपदार्थभिन्नकरिकै प्रथमकहा गुरुचरणभिन्नपदार्थहै ब्राह्मणचरण भिन्नपदार्थहै तातेप्रथमकहा अरुब्राह्मणै सुकर्मसुष्टुधर्मके अधिष्ठाता हैं पुनिगोसाईं कहतेहैं कि मेरीकाब्यमें प्रथम ही मगनगन पर्यौहै अरुतेहिकोदेवता महिहै पुनि महिकोदेवताब्राह्मणहै ताते प्रथमकहाहै ( ३ ) पुनिसुजनजनजोहैं सुष्टुजन तिनकीजोहै समाज सोकैसीहै श्रीमद्रामचन्द्रके मिलिबेकेजेहैं अनन्तगुणदिब्यतर तिनगुणनकीखानिहै तेहि

**बन्दौंप्रथम महीसुरचरणा। मोह जनित संशय सब हरणा ३ सुजनसमाजसकलगुण खानी। करौंप्रणाम सप्रेमसुबानी ४ साधु चरितशुभ सरिसकपासू। निरसबिशद गुणमय फलजासू ५ जो सहि दुखपरछिद्र दुरावा। बन्दनीयजेहिं जग यशपावा ६ मुद**

समाजको नमस्कार करतहौं प्रेमसंयुक्त सुष्टुबाणीते ( ४ ) पुनिसाधुनकोचरित कैसोहै जैसोकपासको चरितहै अबरूपक दृष्टांतकरिकै कहतेहैंकपासकैसीहै निरसहै जामें रसलेशहू नहीं है अरुबिशदकही सुष्टु उज्ज्वलहै अबरूपक दृष्टांतकरिकै कहतेहैं साधुनकी समाजमें निरसपदकाहै शुद्धवैराग्य पुनि बिशद पदकौनहै उज्ज्वल बिशुद्धज्ञान

अरु अनेक बिशदगुण कपासमेंहैं अरु अनेक बिशदगुण साधुनमेंहैं सोईगुण दोउनमेंफलहै अरुआगेकी चौपाईमें अंग संयुक्त गुणनको स्वरूप कहतेहैं ( ५ ) जोकपास अनेक दुःखसहिकै परायाछिद्रकही इन्द्रिन की निर्लज्जता ताको दुरावतनाम छिपावतहै मर्यादेतहै कपासकौनदुःखसहतहै ओटब धुनबकातब तनब बिनब धोबीकर धोउब दरजीकरफारब सियबइत्यादिकदुःख सहिकै परायाछिद्र दुरावतहै साधुकौनदुःखसहिकै परावा छिद्रदुरावतेहैं जिनसंतनसंपूर्णजगत्को बन्दनीयकीन्हहै आपुबन्दनाको प्राप्तभयेहैं सर्वत्र अपनेस्वामीको व्याप्तरूप देखतेहैं ताते संपूर्णजगत्कोबन्दनीयकहीस्तुतियोग्यभयो तब तिनकोकोऊ मानकरै वाअपमानकरैवा निन्दाकरैवैकाहूके अवगुणनहीं देखतेहैं अरुअनेक मान अपमानदुःखसहतेहैं सबको बड़ाईदेतेहैं तातेकपास अरु संत सर्ब जगत्में बन्दनीयहैं सबजगत् तिनकीबन्दनाकरतेहैं सर्बजगत्में दोऊजन समानहैं ( ६ ) पुनि संतनकी सभा कैसीहै मुदमंगलमय है पुनिकैसीहै समाज संपूर्ण जगत्में तीर्थराज प्रयागरूप है प्रयागस्थावररूपहै संतसमाजजंगमकही चलताप्रयागरूपहैन्यूनाधिक्यरूपकालंकारकहतेहैं ( ७ ) सातचौपाईकी एकही अन्वयहै प्रयागबिषे श्रीगंगाजूकीधाराहै अरु सरस्वतीकीधाराहै अरुयमुनाजीकीधाराहैसंतसमाजसो प्रयागरूपहै तामें श्रीमद्रामचन्द्रकी भक्तिगंगारूपहै अरुश्रीमद्रामचन्द्रकोरूप अन्तर्य्यामी ब्रह्मताको जोविचार प्रचारकही उत्कर्षयुक्तबिचार अथवा प्रचारकही प्रचुर अनुभव प्रत्यक्षब्रह्मबिचारजोहै सो सरस्वतीजानिये ( ८ ) साधुनकी समाजमें जो कर्मकथाहै बिधि निषेधसंयुक्तकलिकोजोहै मलमय कहीसमूह ताको नाशकरतहै सो कर्मकथा रबिनन्दनिकही यमुनाजूहैं बिधि निषेध काकोकही बिधिकही ग्रहणनिषेध कही त्यागको भगवत् भागवत्कर्मजोहैताको बिधिकहिये संतनकी समाजबिषेइनदोउन

**मंगलमय सन्तसमाजू। जोजगजंगमतीरथ राजू ७ रामभक्तिजहँ सुरसरिधारा। सरसैब्रह्मबिचारप्रचारा ८ बिधिनिषेधमय कलिमल हरणी। कर्मकथारबिनन्दनि बरणी ९ हरिहर कथाबिराजतबेनी। सुनतसकलमुदमंगलदेनी १० बटबिश्वासअचल**

कर्मनकोछोड़े और कर्मजोहैं ताको निषेधकहिये ताते साधुन की समाजमें बिधिजोहै सोयमुनाजूहैं प्रयागमेंगंगासरस्वतीयमुना पृथक्-पृथक् शोभितहैं पुनिमिलिकै शोभित हैं संतसमाजजो है प्रयागरूप तामें भक्तिकांडज्ञानकांड कर्मकांड पृथक्-पृथक् शोभित हैं पुनिमिलिकै शोभित हैं ( ९ ) प्रयागमेंगंगा सरस्वतीयमुना तीनों मिलितहैं त्रिबेणी कहियेअरु पृथक् संतसभाबिषेका बेनीहै हरिहर कथा जोहै सोबेनीहै बेनी काको कहिये दुइ तीन चारिपांच छह सात इत्यादिक अपर मिलिजाइं ताकी बेनीसंज्ञाहै अरु हरिभगवत् हर भागवतकी कथाअभेदहै तेहि कथामें भक्तिज्ञानसुकर्म तीनों मिलिकै जहांएकताहै तहांसिद्धांतहै कौन प्रयागते जानिये जहांमोहके बशसती जीजानकीजूको स्वरूपधारणकीन्हहै तबशिवजूसतीबिषे जानकीरूप ग्रहणकीन्हहै सोबिधिभयो सतीस्वरूपकोत्यागकियो सो निषेध भयो सोबिधि निषेधमें जोकर्महै सोयमुना स्थाने अरुजोबिचारकीन्हसोबिचारकरिकैश्रीरामइच्छा को अपने अन्तष्करणमें दृढ़कीन्ह अन्तष्करण शांतिरसको प्राप्तभयो सोज्ञानहैअरु जो जानकी जूको स्वामिनी भावकीन्ह सो भक्तिहै कर्म ज्ञानभक्ति यहांतीनोंमिलितहैं ताते हरिहरकथा बिराजत बेनीत्रिबेनी सेवन करतसंते सकलमुदमंगलदेतहै हरिहर सेवनकरतसंते सकलमुदमंगल देतहै ( १० ) प्रयाग बिषे बटहै सोअक्षय है अरुप्रयाग तीर्थ राजकहावे है संतसमाजजो प्रयाग है तामें बिश्वासजो है सोबटहै बिश्वास काको कहिये यहजो संसार सागरहै तेहिते मेरीरक्षा श्रीमद्रामचन्द्रकरहिंगे सबप्रकारते यहअचल बिश्वास है तत्रप्रमाण श्रीराममंत्रार्थे॥जानक्यासहदेवेश रघुनाथो जगत्गुरुः ॥ रक्षकः सर्बसिद्धान्ते वेदान्तेषु प्रगीयते १ बटतो अक्षयहै यहांनिजधर्मकही साधुधर्मजोहैसोईअक्षयहैअचलहै पुनिप्रयागतोतीर्थराजहैयहांसमाजभरे कर जो स्वाभाविक सुकर्म जो शास्त्रनमें कहेहैं सन्तनकेकर्मसो समिष्टि करिकै एकएक सन्तमें शुद्ध भगवत् कर्महै वाह्यान्तरसोई भक्तराजपदहै अथवा तीर्थ राजमें समाज जुटैहै सन्तसभामें सुकर्महै ( ११ ) अरु प्रयागक्षेत्र जोहै सो सबको सुलभनहींहै अरु मकरके सूर्य भरि बड़ो माहात्म्यहै अरु सर्बदेशमें नहीं है अरुसन्तसमाजरूपी प्रयाग सबको सुलभहै अरु सर्बदिनमें एकरस

**निजधर्मा। तीरथराजसमाज सुकर्मा ११ सबहिंसुलभसब दिनसबदेशू। सेवतसादर समनकलेशू १२ अकथअलौकिक तीरथराऊ। देइसद्यफल प्रकटप्रभाऊ १३ दो० सुनिसमुझै जनमुदितमन मज्जहि अतिअनुराग॥ लहहिंचारिफलअछततन साधुसमाज**

सर्बदेशमें प्राप्तहै ताते सन्तसमाज प्रयागते अधिकहै प्रयागमें कल्पबास कियेते सम्पूर्ण क्लेश नाशहोतेहैं सन्तसमाजकेसेवनकियेतेजन्ममरणादि क्लेशनाशहोतेहैं (१२) तीर्थराज प्रयागजोहै ताको माहात्म्यवेदने कथनकियोहै कियहजोप्रयागहै सो अर्थ धर्म काम मोक्ष देतहै अरुलौकिक कही प्रत्यक्षहै यहनेत्रनते देखिपरैहै शरीर छूटै कालांतरमें फलदेतहै अरुसंतसमाज प्रयाग जोहै सो अलौकिक कही परोक्षहै यहनेत्रनते नहीं देखिपरैहै ज्ञाननेत्रनते देखिपरै है अरु सन्तन को माहात्म्य वेदनहीं कहिसकैं अरुसन्तसभा चारिफलकेपर भक्तिदेतहै अरुफल लौकिककही प्रत्यक्षहै अरुसद्यकही तुरन्त याहीतनमें फल देतहै (१३)। दोहार्थ ॥ जनजोहै प्राणी प्रयागको माहात्म्य सुनतभये कि प्रयागचारि फलदाता है तबसुनि कै समुझिकै चलिकै मुदितमनते मज्जनकही स्नानकरतेभये जबशरीरछूटै तबफलको प्राप्त होहिं अरुसन्तसमाजप्रयागजोहै तहां जन कही दासजिज्ञासू जोहै सन्तसभामें जाइकै सन्तनकेबचनसुनै कही श्रवणपुनि समुझब कहीमननपुनि मुदितमनकही निद्ध्यासन नित्य निरंतर अभ्यास पुनि अतिअनुरागकही साक्षात् होइ ऐसी सन्तसमाजहै तहां याही तनमें चारिहूफलको प्राप्तहोतेहैं चारिफलकौनहैं अर्थ धर्म काम मोक्ष पुनि सालोक्यसामीप्य सारूप्य सायुज्य प्राप्तहोतेहैं प्रयाग रूपी समाजऐसीहै ताउपरांत भक्तिदेतहै (१४) प्रयागमें मज्जनकियेकरफल तुरन्तनहीं देखाजाइ देहांतरमेंअपनेकर्त्तव्यको फलआपही देखतेहैं अरुसन्तसमाज प्रयागमें अनुरागरूप जो मज्जनहै ताको फल तत्काल कही बर्तमान काल तुरन्त याही तनमें अपनाको अरुसबको देखिपरैहै ताते सत्संगको प्राप्त होइकै काकजेहैं ते कोकिला होतेहैं बकुलाजेहैं तेहंसहोतेहैं (१५) यहसुनिकैजो कोई आश्चर्यकरै किकाकते कोकिला बकुलाते हंसकहांभयेहैं तहांसत्संगकी महिमा प्रसिद्धहै छिपी नहींहैं सो कहते हैं (१६) बाल्मीकि नारद घटयोनि कही अगस्त्य जोसत्संगके प्रभावते जैसे महत्वको प्राप्तभयेहैं तेअपने-अपने मुखनते कहतेभये श्रीबाल्मीकि श्रीमद्रामचन्द्र जूसों कहते भये श्रीनारद श्रीवेदव्यासजूसों कहते भये श्रीअगस्त्यजू श्रीशिवजूसों कहते भये बाल्मीकिजू कहा जब श्रीरामचन्द्र आश्रम-

**प्रयाग १४ ॥चौ०॥ मज्जनफलदेखियततकाला॥ काकहोहिंपिकबकउमराला १५ सुनिआश्चर्यकरैजनिकोई॥ सतसंगतिमहिमानहिंगोई १६ बालमीकिनारदघटयोनी॥ निजनिजमुखनकहीनिजहोनी १७ जलचरथलचरनभचरनाना॥ जेजड़चेतनजीव-**

हिं आये तबबाल्मीकि कहते हैं हे श्रीमद्रामचन्द्रजू मैं प्रचेताको पुत्रहौंमोको पूर्बहीं किरात की संगतिपरिगई तेहिदुष्ट दशामें केवल तुम्हारी कृपाते सप्तऋषिनकी संगति भई अल्पकाल तेहि प्रभावते मोको हंसवत् बिबेक भयो तुम्हारो गुण मुक्ता रूपहै तुम्हारो यशदुग्धरूप है सो तो ग्रहतभयोयह जगत्में मानादिककंकरी संबुक रूपहै देहजनितरागादिबिषयसो जलरूपहै सोसमस्त त्यागभयो तेही सत्संगके प्रभावते आप मिलेमोको हे श्रीरामचन्द्रआप सबजानतेहैं मैं ऐसेते ऐसोभयोंपुनिनारदजूकबकहा जबकोई कालमें ब्यासजूके कछू शांति हृदयमें नहींभई तब श्रीनारदजी कहा हेश्रीवेदव्यासजू पूर्बहींमैंदासीपुत्र रह्यों जहां हमरहेतिसकेयहां साधु बहुतआवैं तिनकी मैंसेवा करौं तिनको प्रसाद अन्न जल बस्त्र करिकै शरीर पालन करौं मेरी काकबृत्तिरहै जैसेकोईपनवारामें शेषछोड़िदेइ ताको काक बिनि बिनि खाइहैं तैसे मैंकरों तेई सत्संगके प्रभावते मैं भगवत्यशगान को अधिकारी भयों मेरीकोकिलवत् बाणीभई देखो तो सत्संगते मैं ऐसेते ऐसो भयों ताते हेश्रीवेदव्यास जू तुमसत्संगकरिकै केवल भगवत् यशगावहुहृदयमेंशांति ह्वैजायगी श्री अगस्त्यजूने कबकहा एकसमय में शिवजू अगस्त्यजूके आश्रममें आये शिवजू कहा श्रीरामचन्द्रजूको चरितकहौ तबअगस्त्यजूकहा हे श्रीमहादेव तुमतो ईश्वरहौ तुमसन मैं का कहौं मैंतो घटते उत्पन्नहौं पूर्बहीं कोई काल में सूर्य जोहैं मित्राबरुण तिनने यज्ञ प्रारम्भ कीन्ह तहां देवता ऋषिमुनि सिद्ध अनेकन

आये सबमिलिकै कलशस्थापनकियो कलश में सूर्य बीर्य स्थापनकियो जेती सत्सभारही तिनने कोई अपनोबल कोई बीर्य कोई तेज कोई प्रताप कोई धृति कोई शांति कोई सन्तोष कोई क्षमा कोई ज्ञान कोई वैराग्य कोई भक्ति कोई बिमल अनुराग कोईप्रेम इत्यादिक ने योगध्यान समाधि अपनी शक्तिताही कलशमें स्थापनकियो पुनि समस्त मुनि जोरहे महान् भागवत् घटस्पर्श करिकै आशीर्बाद देतेभयेघट ते बालक उत्पन्न ह्वै ऐसे कह्यो तबमैं उत्पन्न भयों कोईकालपाइकै समुद्र को पानकरिगयो सोकेवल श्रीराम प्रताप औआपकी कृपाते आपसबजानतेहौ सत्संग प्रभावसे ऐसेते ऐसोभयों अबजोआज्ञाहोइसोकरौं हे श्रीमहा-

## जहाना १८ मतिकीरतिगतिभूतिभलाई जबजेहियतनजहांजेहिपाई १९ सोजानबसतसंगप्रभाऊ लोकहुबेदनआनउपाऊ २०

देवजू तब शिवजू कहा हे अगस्त्यजू श्रीराम चरित कहहु ताते प्रयाग क्षेत्रते अति अधिकतरहै संतसभा ( १७ ) जलकेजीव थलकेजीव नभ के जीव नानाकही अनन्त जीव जड़ चेतन जीव जेते जहान कहींसंसारमें जेजीवहैं जड़ तृण तरुपाषाण इत्यादिक जे श्वासारहित तिनकीजड़ संज्ञाहै चेतन श्वासा संयुक्त जेते जीव संसार मेंहैं जलचर ग्राह इत्यादिक थलचर गज इत्यादिक नभचर गीध इत्यादिक जड़ सेत बांधतसंते पहाड़ वृक्ष तृण इत्यादिक तरे चेतन कोल भिल्ल मृग बानर ऋक्ष इत्यादिक तरे देव दानव मनुष्य इत्यादिक जेतेहैं ( १८ ) इनसबनकी मति कीरति गतिकही मोक्ष भूति कही ऐश्वर्य भलाई इत्यादिक पदार्थ जो हैंअनेक जो काहू जीवको प्राप्तभयो है जब कहूं कौन्यूयतन ते जहां कहूं प्राप्तभयो होइ ( १९ ) सो सत्संगहिके प्रभावते जानिये आन उपाय नहींहै लोकमें वेदमें सत्संग काको कहिये सत्की संगति असत्को त्याग सत् कहिये एकरस सर्वकालमें सो को है श्रीरामस्वरूप श्रीराम नाम श्रीरामधाम श्रीरामचरित श्रीरामदास इनमें एकहूकी संगति करै सो सत्संग कहिये सो संसार तरिजाय अरु इनमें जो एकहूकी संगति करै तो सबकीसंगति ह्वैजाती है ( २० ) बिना सत्संग बिवेक नहीं होतहै सत्संग काको कहिये जबमन मिलै बचन मिलै कर्म मिलै उपासना मिलै इष्ट मिलै भजन मिलै रीति रहस्य अर्च्चाप्रकार विधिवत् बिशेष मिलै ताको सत्संग कहिये है सो सत्संग बिना श्रीरामचन्द्रकी कृपा नहींमिलै अरु बिशेष सत्संग यहीहै अपर सत्संग सामान्य हैं अथवा अपनी ओरसे अपनो मन क्रम बचन जब सत्संगमें मिलाइ देइ तब अपनो संतह्वै जाइ है किन्तुसत्कृपा करै तब सन्त होय ( २१ ) सत्संगति जोहै मूलहै मूलकर्हा जर है मुदमंगलमय एकतरुहै अरु मोक्षकी अनेक साधनाहै सो फूलहै अरु जोसत्संगको सिद्धान्तहै सोईफलहै परबकला गुठली रहित रसमयहै केवल रसहीहै सो फलहै ( २२ ) शठ जेहैं सुष्टुसंगति पाइकै सुधरिजातेहैं कैसे जैसेपारसके स्पर्शते लोहा सोना होतहै शठ काको कहिये जो अपनी हानि लाभ स्वार्थ परमार्थ नहीं समुझै अरु बिना समुझे जो हठकरै सो शठ अरुजो लोहा पारसके बीचमें कागज प्रमाणकहूं अन्तराइहोइ तो लोहा सोना न होइ तैसे जो सत्संगमें नेकहू कपट राखै तो संतनके गुण नहीं प्राप्तहोहिंअरु जो सर्वप्रकार कपटको छोड़िकै लोक मर्यादा दूरिकरिकै मिलै तो संत

## बिनुसतसंगबिबेकनहोई रामकृपाबिनसुलभनसोई २१ सतसंगतिमुदमंगलमूला सोइफलसिधिसबसाधनफूला २२ शठसुधरैसतसंगतिपाई पारसपरसिकुधातुसुहाई २३ बिधिबशसुजनकुसंगतिपरहीं फणिमणिसमनिजगुणअनुसरहीं॥२४॥ बिधिहरिहरकबि

अपनी बराबरि करदेते है पारस अपनी बराबरि नहीं करतहै ( २३ ) बिधिकही बिधाता अथवा बिधिकही संस्कार तेहिके बशह्वैकै सुजन कुसंगतिमें परैं तो अपने गुणको कैसे अनुसरब कही बर्त्ततेहैं जैसे सर्पविषे मणिअरुबिष दोऊ रहतहैं पर मणि जो है सो सर्पके अवगुण जो बिष ताको नहीं परसैहै तैसेही संसार सर्पहै असाधुबिषहै बिषकेगुण खलकेगुण एकही हैंसाधुमणिहै मणिगुण साधु गुण एकहीहै तैसे सत्जन कुसंगके अवगुण नहीं परसेहैं पुनिदूसर अर्थ सर्प अपनी मणि प्रकटिकै वाहीके प्रकाशमें बिचरतहै जबकोई बिजातीय आयो तब मणि लीलिलेतहै तैसे साधु अपने गुणके प्रकाशमें बिचरतेहैं जब कोई योगते कुसंगति प्राप्तभयो तब अपनेगुणको

आवान्तरकरिकै मौन ह्वैरहतेहैं जैसो जहां तात्पर्य होतहै ताही अनुसार अपने-अपने स्वभावते असाधु अरु साधु मणि अरु गुण बिषअरु अवगुण बर्ततेहैं मणिजेहैं बिषके स्वभाव नहीं ग्रहणकरैंहैं तैसो गुणमान् पुरुषजेहैं ते अवगुण के स्वभाव नहीं ग्रहण करते हैं ( २४ ) बिधिजोब्रह्माहैं हरिजो बिष्णुहैं हरजो महादेवहैं कबिजोबाल्मीकिआदिक हैं कोबिदजे बृहस्पति आदिकहैं बाणीजोसरस्वतीहै अथवा येजे सब महान्हैं तिनकी बाणीजोहै सो साधुनकी महिमाकहतसकुचातिहै ( २५ ) तिन साधुन की महिमा मैं कैसे कहिसकौं जैसे शाक जोहै पोतिसो कांचकी होतीहै ताको बणिककही जोबेचिबेवारोहै अरुजो मणिमाणिक अमोल करिकै जवाहिरनकहा तेहिमणिकै कीमतिपोतिको बेचनहारो गरीबक्याजानै तैसेमोको संतनकीमहिमाकहिबे कोअगमहै यहगुसाई तुलसीदास जू कहतेभये जोकोई कहै किबिधि हरिहर ईश्वरहैं साधुतो जीवहै जीवकीमहिमा ईश्वर क्योंन कहै तहांयेजो ईश्वरहैं तिनकी बृत्तिकार्यहेतुगुणाभिमानीहै अरुसंतजेहैं तिनकी अकार्य गुणातीत बृत्तिहै ताते कहतकै संकोचतेहैं अथवा बिष्णुअपनो सपूत पुत्रजानिकैनहींकहते हैं ( २६ ) दोहार्थ तातेबंदौं संतनकोसमचितहै जिनको नकोई हितहै नकोई अनहितहै जैसे दोऊकरमें प्राप्तभयोहै शुभसुमन गुलाब इत्यादिक एकहाथसों उतारतेहैं एक हाथमें लेतेहैं परदोऊ करांजलिमें समसुगंधहै तैसेसंतहैं अथवासंतनके सबहितैहैं अनहित कोई नहीं हैं जैसे फूलमें सुगन्धहै कोई तोरै

**कोबिदबानी॥ कहतसाधुमहिमासकुचानी २५ सोमोसनकहिजातनकैसे॥ शाकबणिकमणिगुणगणजैसे २६ दो०॥ बंदौंसंतसमानचित हितअनहितनहिंकोइ अंजलिगतशुभसुमनजिमिसमसुगन्धकरदोइ २७ संतसरलचितजगतहितजानिसुभावसनेहु बालबिनयसुनिकरिकृपा-रामचरणरतिदेहु २८** * * * * *

वारक्षाकरै ( २७ ) संतनको सरलचित्तहै सरलकही सबकेहितैचित्तमें बसैहैस्वाभाविकैसनेहसंयुक्त ऐसेसुभावसनेह संतनको जानिकै बंदामैंरोबालक की ऐसीबुद्धिहै तोतरीविनयसुनिकैकृपाकरिकै श्रीरामचन्द्रमेंरतिदेहुजैसेबालककोकभीमाता पितालडुवाखवायेहैं पुनिकबहूं बालककेअन्तष्करणमों इच्छाभई तो तोतरीबाणीसों लडुआको अडुवाकहतहैं बारबार मांगैहैतब सुनिकै मातापिताहर्षको प्राप्तहोतेहैंहँसिकै प्रसन्नह्वैकै लाडुहीदेतेहैं तैसे मोसों कछुबिपर्यय कहिआवै तो हे संतजनहु तुम मेरेमाता पिताहौ स्वार्थपरमार्थहूको क्षमाकरिकै कृपाकरहु श्रीरामचरणरतिदेहु ( २८ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसने बालकांडेसाधुगुणस्वभावलक्षणवर्णनन्नामतृतीयस्त-रंगस्समाप्तः ३॥

दो० खलगुणचौथतरंगमेसंगदोषगुणजानि । रामचरणनिजनीचता अनुसंधानबखानि ॥ बहुरिखलनकेगण जेहैं तिनकी बन्दनाकरतहौंसतिभायकही यथार्थगुणतिनके बर्णनकरतहौं निन्दाते नाहीं बर्णतहौं कैसेहैं खल दाहिनकहीसन्मुखहैं बिनाकार्यहि बामकही टेढ़ह्वैजातेहैं ( १ ) पुनिखल कैसेहैं परायेहितकी जो हानि देखतेहैं सोई लाभ आपनोहित मानिलेतेहैं अरु किसूको गृहग्राम देश भंडार उजरिजातेहैं तो हर्षमानते हैं जो किसीकी भलाई देखतेहैं तो अपने हृदयमें हानि मानतेहैं ( २ ) हरिहरकर जोहै यश सोईराकेशहै राका नाम पूर्णमासीको ईश पूर्णचन्द्रहै ताको ग्रासकरिबेको खल राहुरूप है जहांहरिहर यश कथाहोइ तहां खल गये तहां कछु उपाधि करतेभये कोई शोच की बातैं कहतेभयवा कथामें तर्ककरतेभये वा कोई बिषयीकी बातकहते भये तेहिकरिकै जो कथा एकहूदंड बन्दभई तो एकहीदंड ग्रहणजानिये अरु जो कथा उपनेतहोइ तो सर्व ग्रासग्रहण जानिये अरु परावा अकाजकरिबे को सहस्राबाहुकी समहैं खलन के तो हजारभुजा नहीं हैं हजारभुजाकी उपमा क्यों दई परावा

**चौ०॥ बहुरिबंदिखलगणसतिभाये जेबिनुकाजदाहिनेबायें १ परहितहानिलाभजिनकेरे उजरेहर्षबिषादबसेरे २ हरिहरयश राकेशराहुसे परअकाजभटसहसबाहुसे ३ जेपरदोषलखहिंसहसाखी परहितघृतजिनकेमनमाखी ४ तेजकृशानुरोषमहिषेशा अघ अवगुणधनधनीधनेशा ५ उदयकेतुसमहितसबहीके कुंभकरणसमसोवतनीके ६ परअकाजलगितनपरिहरहीं जिमिहिमउपल**

अकाजकरिबेको हजार भुजाकी समान हर्ष बल पौरुष प्रबलता करते हैं अथवा जो कोऊ उनके सम्मतमें परअकाज करिबे को जातेहैं तिनकी भुजा सब उनहींकीहैं यहिप्रकारते खलनके सर्वप्रसंग रूप यथार्थ जानिलेव ( ३ ) जे खलपराये दोष हजार नेत्रकरिकै देखतेहैं किन्तुपराये दोषको सहसा साखीभरतेहैं परहित जोहैसौ घृतहै ताघृतके बिघ्नकरिबेको खल अपने मनको माखीकरिकै मरिजाते हैं ( ४ ) जो खलनके ऐश्वर्य गुण बलकरिकै तेजहैं सो अग्निसमहैं सोतेज जीवन ते नहींसहाजाइ ताते खलनके तेज रोष दोनों दुःखरूपहैं रोषमहिषेशकही यम के समहैं किंतु महिषासुरहै अघकही पाप अवगुणकही अनेक कुलक्षणतिनके धनेश कही कुबेर हैं ( ५ ) पुनिऐश्वर्यरोष अवगुण तीनिहूंकरिकै जो खलनकी उदयभई तो जैसे केतु आकाशमें उदयहोतसंते सर्वजीवनकोभयउत्पन्न होतभई कियहिसम्मत मेंधौंकाउपद्रवहोइ केतु प्रभावते उपद्रवभई दैवराजा अग्निरोग ग्रह चौर व्याघ्र इत्यादिक करिकै जीवन को पीड़ाभई ताते केतु अरु खलएकहीहै कुंभकर्णकी सम जो सोवतरहै तो सर्वजीव सुखीरहैं खलनके सबप्रकार दरिद्ररूपनिद्रा बनीरहै जाते सोवतैरहैं नामसदापराये आश्रयरहैं ( ६ ) पुनिपरावा अकाजकरहिं अपने शरीर को त्यागिकै जैसे पाला अरु पत्थर कृषीको नाशकरै आपगलिजायहै ( ७ ) पुनिखलबंदौं शेषको ऐसोरोषहै शेषजी तो हजार मुखते श्रीरामनाम अहर्निश कहते हैं तैसे खलपरावा दोष निशिदिनकहतेहैं ( ८ ) पुनिखलबंदौंराजा पृथुकी समान राजा पृथु भगवान्से मांगिलीनहै कि जबमैं तुम्हारी कथा सुनों तब मोको दशहजार श्रवणको फल होइ तैसेही प्रीतिसे खलपरावा अवगुण दशहजार श्रवण सम सुनते हैं ( ९ ) पुनि शक्रकही इन्द्र सम खल हैं इन्द्रको अमृत प्रिय है वा आपने देवता प्रिय हैं वा आपनोऐश्वर्य प्रिय है तीनहूंको एकही सुख है अरु सन्तत ही निरन्तर खलन को मदिरा प्रिय है वा जाति कुलकुटुम्ब मद प्रिय है अथवा ऐश्वर्य मदमोहप्रिय है ( १० ) इन्द्रको बज्र प्रिय है खलनके बचनै बज्र हैं इन्द्रहजार

कृषीदलगरहीं ७ बन्दौंखल यशशेषसरोषा सहसबदनबरणहिंपरदोषा ८ पुनिप्रणवौंपृथुराजसमाना परअघसुनहिंसहसदशकाना ९ बहुरिशक्रसमबिनवौंतेही संततसुरानीकहितजेही १० बचनबज्रजेहिसदापियारा सहसनयनपरदोषनिहारा ११ दो०॥ उदासीनअरिमीतहित सुनतजरहिंखलरीति जानुपाणियुगजोरियशबिनतीकरौंसप्रीति १२ ॥चौ०॥ मैंअपनीदिशिकीन्हनिहोरा

नेत्रनते अपने देवतन को हित देखत हैं खल हजार नेत्रकरिकै पर दोषदेखते हैं ( ११ ) ॥दोहार्थ॥ खल कैसेहैं उदासीन सबते रहते हैं अरु सबके अरि हैं पुनि जे उनके मित्र हैं तिनहूं को हितकारहोत सुनहिं तो जरिजाते हैं यहखलन कै रीतिही है ऐसे लक्षण जिनमें होइँ तेई खल हैं पुनि जे संसारते उदासीन हैं साधुजन तिनकेतौअरिहैं पुनि उदासीनजेहैं मुनिजन तिनको अरि रावण है तिनके मित्र जो शिव हैं शिवको हित श्रीरामचन्द्र हैं तिनको यश सुनतमात्र जरिजाते हैं यह खलन की रीतिही है ताते जानुकही जांघ पानि कही हाथ दोनों जोरिकै जैसेखलहैं तैसेही यथार्थ सप्रीतिसमेत बिनतीकरतहौं जानुपानिक्योंकहा अतिप्रीतिते अथवा हास्यरसते बिनयकीन किन्तुगोसाईं कहतेहैं हेमन खलनको असजानुदोनोंकरजोरिबन्दनाकरु ( १२ ) मैंतो अपनीदिशिते अतिप्रीतिते निहोराकीन पर तेखलअपनी ओरतेभोरकही न भूलैंगे निंदाविघ्न करिबेमें न चूकैंगे ( १३ ) जैसे बायसकही कागअतिअनुरागतेपालिये पर आमिष भक्षणन छोड़ैगो तैसे खल हैं इहांपुनरुक्ति न जानब ( १४ ) सन्त असन्तन दोनों के चरणबन्दौं दुःखदातादोऊ हैं पर कुछ बीच है ( १५ ) सन्तजे हैं ते बिछुरत कै प्राण हरिलेते हैं खलमिलतसन्तेदारुण दुःखदेते ( १६ ) सन्त अरुअसन्त जगत्मेंएकही संग उपजते हैं जैसे कमलअरुजोंक जलहीमें उपजैहैं खलजोंकइवहैं सन्तकमलहैं जगत्जल है ( १७ ) सन्तसुधारूपहैं खलमदिरारूपहैं सुधासुराकेपिता एक समुद्रही है सन्तअसन्तकेपिता एकजगत्ही है ( १८ ) एकहीसंग दोऊ निजनिज करतूति ते उपजतभये एकसंत कहाये भलेसुयशकी बिभूतिकोप्राप्तभये अरुएकमलिनकरतूतिते खलकहाये अपयशकी विभूतिकोप्राप्तभये तातेकर्त्तव्यही सन्तहै कर्त्तव्यही असंतहै ( १९ ) सुधाजोहै सुधाकरजोहै सुरसरी जोहै साधुजोहै येचारिअपनी करतूतिते जगत् में पूज्यमानहैं अरु गरलजोहै अनल

तेनिजओरनलाउबभोरा १३ बायसपालियअतिअनुरागा होहिंनिरामिषकबहुंकिकागा १४ बन्दौंसन्तअसज्जनचरणा दुखप्रद उभैबीचकछुबरणा १५ बिछुरतएकप्राणहरिलेहीं मिलतएकदुखदारुणदेहीं १६ उपजहिंएकसंगजगमाहीं जलजजोंकजिमि गुणबिलगाहीं १७ सुधासुरासमसाधुअसाधू जनकएकजगजलधिअगाधू १८ भलअनभलनिजनिजकरतूती लहतसुयशअपलोक बिभूती १९ सुधासुधाकरसुरसरिसाधू गरलअनल कलिमलसरिब्याधू २० गुणअवगुणजानतसबकोई जोजेहिभावनीकतेहिहोई २१ ॥दो०॥ भलोभलाईहीलहै लहैनिचाईनीच सुधासराहियअमरतागरलसराहियमीच २२ ॥चौ०॥ खलअघअगुणसाधु

जो है अनलमें केवल दाहक अवगुणलेव अपरगुणहै ताते एकदेश लैलियाकलिमलसरि कहीकर्मनाशा जोहै असाधुजोहै येतेचारि अपनी करतूतिते जगत् में अपूज्यहैं क्रमते जानिलेव एकसुद्दगुणमयहै एकअवगुणमय है ( २० ) ताते गुणअरुअवगुण सब जानतेहैं परिजाको जौनभावतहैतेवाही को नीकमानिलियोहै ( २१ ) दोहार्थ ॥ परजो भलोहै सो भलेफलकोदेइगो अरु जो नीचईफलकोदेइगो जोमहत्गुणहै औ महत्अवगुणहै इन सबको जो कोई अपने ज्ञानते गुणको अवगुणकरिकै मानते हैं अवगुणकोगुणकरिकै मानतेहैं पर ये सबअपने यथार्थगुणकोदेतेहैं सुधाकोजानिग्रहण करै वा अजानग्रहणकरै सो अमरपदैदेइगो अरु बिषकोजानि ग्रहणकरैवा अजान ग्रहणकरै सो मारिहीडारैगो ताते दोनोंसराहिबेयोग्य हैं ( २२ ) खलजो है अघअवगुण समुद्रवत् ग्रहणकिये हैं साधुजोहै दया इत्यादिकशुभगुण समुद्रवत्ग्रहणकियेहैं तातेदोऊ अवगुण गुणके अवगाहकही अपार अगाधसमुद्रहै ( २३ ) जो कोईकहै कि तुमको किसीकेगुणदोषते कौनप्रयोजनहै सो सत्यहैपरमैंयातेकहतहौं कि गुणदोषकोबिभाग मैं समुझा चाहतहौं काहेते गुणदोषपहिंचानेबिनु संग्रह त्याग नहीं होतुहैं ( २४ ) अरुभलेपोचगुण बिधिजोहैब्रह्मा तिननेउपजायेहैं अथवा भलेपोचकै बिधि जोहै सो कर्तारजोहै भगवान् तिननेउपजायेहैं गुणअरुदोष गनिगुणकहीबिचारिकै वेदने बिलगाइदियेहैं ( २५ ) वेदजोहैं अरुशास्त्रजोहैं अरु इतिहास भारत हरिबंशइत्यादिक अरु पुराण ऐते सबकहतेहैं कि बिधि जो हैब्रह्मातेहिकर प्रपंचजोहै संसार तामें गुणअवगुणसनिरहेहैं अथवाप्रपंच ह्वै विधिजोहै तामें गुण अवगुण सनिरहेहैं ( २६ ) दुइचौपाई अक्षरार्थेजानिये २ माया तहां ब्रह्मजीव तहां जगदीश मायाकही जो तीनिहूं गुण को स्फुरितकरिकै परस्पर सर्व जीवनविषे मोहकी फांसकरि दियो है ब्रह्मके आश्रयहै अनेक बिकारमयह्वैगई सो मायाजानिये अरु ब्रह्म

गुणगाहा उभेअपारउदधिअवगाहा २३ तेहितेकछुगुणदोषबखाने संग्रहत्यागनबिनुपहिंचाने २४ भलेपोचसबबिधिउपजाये गनि गुणदोष बेदबिलगाये २५ कहहिंबेदइतिहासपुरानाबिधिप्रपंचगुणअवगुणसाना २६ दुखसुखपापपुण्यदिनराती साधुअसाधुसुजा-

निर्बिकार अन्तर्यामी सर्वकोसाक्षी जेहि ब्रह्मके एकदेशमें माया सदा बिलाशकरती है तीनिगुणमय अरु ब्रह्मत्रिगुणातीतहै पर माया ब्रह्म में मिलितहै ब्रह्ममाया मिलिकै अनेक ब्रह्मांडहै जो ब्रह्म अनेक विश्वमें अन्तर्यामी रूपबिश्वको चैतन्यकियेहै आपु एकरसमायामें सूत्रात्मक व्याप्त है जैसेमणिमेंसूत्र तहां भगवद्गीता सूत्रेमणिगणाइव जैसे फूलमें सुगन्धहै जैसे पदार्थमें स्वादहै परिफूलमें सुगन्धपदार्थ में स्वादमिले है अरु भिन्नभी है ऐसे मायाब्रह्महै पुनि जीवकही कार्यरूप जो प्रकृतिहै ताकोभोक्ता अरु जीवतत्त्वएकहीहै ब्यक्तिअनेकहै जैसे अन्नधान तत्त्व एकहै परिस्वरूपभिन्नहै ऐसेजीवहै कर्माधीन सुख दुःख हर्ष शोक पापपुण्य स्वर्ग्ग नरकइत्यादिक भोक्ताहै ईश्वरकीकृपाते मोक्षहोत है अरु ईश्वरको अंशहै गीताश्लोकार्द्ध ममैवांशोजीवलोके जीवभूतःसनातनः १ पुनि जगदीशकही जगत् के ईशते कोहैं ब्रह्मा विष्णु शिव इत्यादिक सर्ब बिश्वकेकार्य उत्पत्ति पालन प्रलयकर्त्ता गुणाभिमानी गुणन के बशनहींहै गुणतीनों तीनिहूं स्वरूप के वशहैं अरु जीवनको कर्मफल प्रदाताहै आपुस्ववशहै सम्पूर्णकर्म ते

रहितहै ईश्वरहै तैजगदीश हैं अथवा कोई असकहते हैं ब्रह्मसोई चारिरूप है ब्रह्मरूप सर्वसाक्षी ईश्वररूप प्रदाता जीवरूप भोक्ता मायाइच्छाभूत भोग्य पुनि माया लक्षिकही प्रत्यक्ष ब्रह्म अलक्षिकही परोक्षआदृश्य रंककही दीनसो जीव अवनीशकही जगदीश अथवा मायाब्रह्म मायाबादी माया को ब्रह्ममानते हैं जीवजगदीश जीवजगदीशबादी जीवको जगदीश मानतेहैं यह अवगुण है कोई यथार्थ मानतेहैं मायाको माया ब्रह्मको ब्रह्म जीवको जीव जगदीश को जगदीश मानतेहैं यहगुण है पुनि कोईपदार्थहै लक्षिदेखिबे में आवै अलक्षि नदेखिपरै किन्तु लक्षण अलक्षण पुनि रंकराजा यहअर्थ है जो कोई कहैकि मायाब्रह्म जीवजगदीश येभी बिधिकेउपजायेहैं सो अर्थनहींहै बिधि कही कर्त्तारको जो बिधि विशेष ब्रह्माकोकही तौ एककारण गुणअवगुणहै एक कार्य गुण अवगुणहै मायाब्रह्म जीवजगदीश कारण गुण अवगुण है सो कर्त्तार आपुही चारिलीलारूपहै अरु चारिहू को मिलिकै जो कार्य गुण अवगुणमें है तेहि प्रपंचको कर्त्तार ब्रह्मा है चारिहूं को कार्य कौन है

**तिकुजाती २७ दानवदेवऊंचअरुनीचूअमियसजीवनमाहुरमीचू २८ मायाब्रह्मजीवजगदीशालक्षिअलक्षिरंकअवनीशा २९ काशी**

मायाको कार्य स्वर्ग नरक मृत्युलोक की प्राप्ति ब्रह्मको कार्य सबको चेतनकरैहै जीवकोकार्य अहंमम हर्ष शोकइत्यादिक जगदीश को कार्यउत्पत्ति पालन प्रलय इहां ब्रह्मा विष्णु महेश को एकहीकरिकै कहाहै तीनिहूंके बिधिनाम कहेहैं सो जानेव ताते माया ब्रह्मजीव जगदीश इनचारिहूं को कार्यहै तिसको कर्त्ता ब्रह्माहै जो ये चारिहूब्रह्मा के प्रपंचमेंहैं तौ जैसेकोईक्षत्री के ग्राममें कोई ब्राह्मणवस्यो है तो क्या ब्राह्मणको कर्त्ता क्षत्रीहै सो नहींहै तैसे ब्रह्माकोप्रपंच जो कार्यरूप गुणअवगुणमय है तामें मायाब्रह्मजीवजगदीश एकार्ण रूपगुण अवगुणमय है परिब्रह्मा के कियेनहींहै परब्रह्म जो कर्त्तारहै सो इनकोकर्त्ताहै अथवा कर्त्तारही अपनी इच्छाते चारिरूपहै इत्यर्थ २९ देखिये तौ यहबिश्वमें काशीपंचकोश मर्याद मोक्षदेतुहै अरु मगहनरकदेतुहै दोउनकीसींव समीपहीहै पुनि सुरसरिश्रीगंगा मोक्ष देतुहै अरु निकटही कर्मनाशा नदी नरकदेतुहै मगहकर्मनाशा कैसेभयेहैं मैं सूक्ष्मकहतहौं राजात्रिशंकुरहै सो श्रीबशिष्ठमुनि को शिष्यरहै अधर्मी रहै कोईकालमें वशिष्ठको अपमानकियो बशिष्ठ तौ नहींबोले बशिष्ठ के शिष्यने त्रिशंकुको शापदियो राजाचांडालरूपहोइगयो तब राजा विश्वामित्र के पास जातभयो विश्वामित्र आपने तपकेबलते सहितरथ स्वर्ग को पठायो सो गुरुनके अपमानते ब्रह्मादिक देवतनते न जाड़पायो तबबीचमेंरह्यो रथसहित अर्द्धमुखटँगि रह्यो ताके रथकीछाया जहांतक परी सो मगहभयो पश्चिम पूर्व चौबीसयोजन पर्यन्त दक्षिण उत्तर सोरहयोजन पर्यन्त अरु राजाके तनकोपसे विमुखद्वार ह्वै बहतहै सो कर्मनाशा नदीही पापमयहै को जानै केतेकालमें निष्पाप होइगो गुरुअपमानकोयहफल है शास्त्रकहैहै अरु जहां माड़वाड़ निर्जलदेश अरु ताकी सींव मिलित मालवादेश जलमयहै अरु जेहिग्राममें महिदेव जो ब्राह्मण ताहीग्राममें नीचयोगबासकही चर्मकारआदिक सो भी रहतेहैं ३० सामान्य स्वर्गकहते हैं स्वर्ग नरक अनुरागबिरागा यहबिश्वमें सबहै यमलोकभी हैतामेंचारिद्वारहैं तहाँउत्तरदरवाजेस्वर्गभोग्यहैसात्त्विकगुणहै जेपुरुषसकाम सात्त्विककर्म करतेहैं ते वह स्वर्गको प्राप्तहोतेहैं जहां अनेकभोगहैं जबयहजीव स्वर्ग को जातहै तब देवी चन्द्रमुखी किशोरीअवस्था निर्मलस्वरूप अनेकस्वर्ण रत्नमय अलंकार सदाकिहे अनेकप्रकार के बाजन बीणादिकदिब्यगानकरत धूप दीप नैवेद्य कल्पबृक्षकेदिये भोजन दिव्यबस्त्र अनेक रत्न थारनभरे कमल करनलिये आरतीसजे ऐसी देवबधू देवकन्या तेहिपुरुष को आगे लेतीहै षोड़शप्रकार पूजनकरिकै अनेकरत्नमय महल तहां।

**मगसुरसरिक्रमनासामरुमालवमहिदेवगवासा ३० स्वर्गनरकअनुरागबिरागानिगमागमगुणदोषबिभागा ३१ दो०॥ जड़चेतनगुणदोष**

बासदेतीं है बनितादिक अनेकभोग पुरुषकरतहै जब पुण्य क्षीणहोइ तबफेरि मृत्युलोकमें जन्मलेतहै (गीता) क्षीणेपुण्येमृत्युलोकंबिशंति आवागमन नहींमिट्यो ताको स्वर्गकही पुनि यमलोकमें दक्षिणदरवाजे में अट्ठाईसनरकहैं तेकौननरक तामिश्र अन्धतामिश्र रौरव महारौरव कुम्भीपाक कालसूत्र असिपत्र शूकरमुख अन्धकूप कृमिभोजन संदंश तप्तभूमि बज्रकंटक शालमली वैतरणी पूयोद प्राणरोधन बिषसन लालाभक्षण सारमेयादन अवीचिरयः पानकर्दमों रक्षोगण भोजन शूलपोत द्वंद्वसुक कूपनिरोधन

पर्यावर्त्तन शूचीमुख एते अट्ठाईसनरक इनकेस्वरूपफल उत्तरकांड में कहैंगे पश्चिम पूर्व दरवाजे सुख दुःखदोनों हैं एकही ठौर हैं एकहीजगहमें अनुराग है अरु बिरागभी है देखिये तौ महाराजा ऋषि भये देवभये तिनके एकसैपुत्रभये तिनमें नवतौ नवोंखंडके राजाभये तिनमें भरतजू परमहंसभये पुनि नवविरक्तभये महायोगेश्वरभये अपर सब ब्राह्मणभये अनुरागकही विषयमें प्रीतिकरना बिरागकहिये ब्रह्मादिक को ऐश्वर्य ताकोत्याग यह जो बिश्वहै गुणअवगुण में ताको बिभागकही भिन्नभिन्न गुणअवगुण जनायदियोहै बेदने अरुशास्त्रने ताते सबजानत हैं ३१ ॥ दोहार्थ ॥ जड़ जो है चैतन्यजोहै दोनोंगुण दोषमयहै जड़कही बृक्ष तृणजल पाषाण इत्यादिक जो न चलै तिनमें बृक्ष आंबचन्दन कटहरइत्यादिक उत्तमबृक्षजे हैं ते गुणमयहैं बबूरइत्यादिक कंटक विषसंयुक्त जेबृक्षहैं ते अवगुणमयहैं ऐसेही तृणइत्यादिक जानिय ऐसेहीपाषाणइत्यादिक जानिये चैतन्यकही नर देव दानव पशुपक्षीकीटइत्यादिक जिनके श्वासाचलैं ते चैतन्य अरु श्वासारहित हैं तिनकी जड़संज्ञा है इनसबनमें अनेकन्ह गुणमयहैं अनेकन्ह अवगुणमयहै यहविश्वअरु बिश्वके कार्य सबको कर्त्तार कही परमेश्वरहै तहाँ गुणदूधमय है अवगुण जलमय है संतजन हंसरूप हैं गुण जो है दूधरूप ताको ग्रहणकरते हैं बिकार जलरूपत्यागकरते हैं ( ३२ ) हंसको ऐसो बिबेक जो बिधातादेइ बिधाता कही परमेश्वर अथवा बिधाता कही ब्रह्मा आचार्य रूप सो बिबेकदेइ तब गुणको ग्रहणहोइ अवगुणको त्यागहोइ ( ३३ ) काल केवश स्वभाव के वश कर्मके वश कालकही जेहिकालकेबिषे चंद्रमा सूर्य देवदानवमनुष्य घरीपहरदिनमासवर्ष युग कल्प ये सब कालहीमें फिरतेहैं उपजतेहैं बिनशतेहैं सर्ब ऐसो प्रबलताको कालकही अरु कइव जन्मको

**मयविश्वकीनकरतारसन्तहंसगुणगहहिंपयपरिहरिवारिबिकार ३२ चौ०॥ असबिबेकजबदेइबिधातातबतजिदोषगुणहिंमनराता ३३ काल सुभावकर्मबरिआईभलेहुप्रकृतिबशचूकभलाई ३४ सोसुधारिहरिजनइमिलेही दलिदुखदोषबिमलयशदेही ३५ खलउ**

संस्कार सूक्ष्मरूप जो शरीरमें बर्त्तमान होत है अपने को नहीं समुझिपरैताको स्वभावकही अरु पूर्बसंस्कार संयुक्त जो कृतमान स्थूलरूप है सो इन्द्रियद्वार ह्वैकै बर्त्तमान होतहै ताको कर्मकही ए तीनिहूं प्रबलहैं जेहिपुरुषकी भली प्रकृतिकही भली रीति रहीहै अरु कभू कालकर्म स्वभाव की बरिआयी कही प्रबलता के बशह्वैकै भलीरीतिमें चूकिगयो कुरीतिह्वैगई कहूं ( ३४ ) शरीर की प्रकृतिते जो बिकारह्वैगयो ताको हरिजन सुधारिलेते हैं इमि जो कहा ताको दृष्टान्त आगेकी चौपाई में है अथवा याही चौपाई में है सो सुधारि हरिजन इमि किमि जैसे हरिके जनन्हते अनेकचूकपरी है ताको हरि सुधारते आये हैं चारिहू युग में तैसे अबहूं सुधारते हैं अथवा हरिके जनन्हते जब चूकपरी तब आपुही ते आपु समुझिकै सुधारि लेत हैं अथवा सद्गुरु उपदेश करिकै सुधारिलेते हैं इमि कही जैसे परंपरा सुधारते चले आये हैं तैसे दोष जो भई चूक तेहि करिकै जो भयो है दुःख सो दुःख दलिकही नाशकरिकै बिमलयशको प्राप्तकरते हैं अरु बिमल यश को प्राप्त होते हैं ( ३५ ) खलजो हैं खल काको कही जो नीक बिकार समुझते हैं परि बिकारही करै हैं किसूको उपदेश नहीं मानै जैसे कोई जागत है मुखमूंदि कै सोइरह्यो है सो जगायेते नहीं जागै ऐसे खलहैं तेऊ भलाई करतेहैं सुन्दरिसंगतिपाइकै फेरि जब खल खलनकी संगतिमेंगये तब वै खलत्वको सुधारिकै जैसे आगे खलरह्योहै तैसेहीकरिदये काहेते वाके खलत्व स्वभाव जो अनेकजन्मके संचित अभंग रह्योहै ताते मलिनस्वभाउ नहीं मिट्यो पाछे की चौपाई में जो इमि पदकह्यो ताकोदृष्टान्त यहांसिद्धिभयो इमिकहीजिमिखलनकोसुधारिकै खलकरिलीन तिमिसाधुते जो चूकपरी ताको सुधारि कै साधुजन साधुकरलेतेहैं ३६ लखिसुवेष सुन्दरवेष बनाये हैं अरु जगवञ्चककही जगत् उनको छलिलीनहै अथवा सबको आपुछलत फिरतेहैं तेऊबेषके प्रतापते जगत्में पूजेजाते हैं ( ३७ ) पर अन्तमें उघरिजाते हैं जेपुरुष सुन्दरवेष बनायकै बञ्चकई करतेहैं सो पाखण्ड अन्तमें खुलिजात है जैसे कालनेमिनामे राक्षस सो मार्गके मध्यमें बैठ्योजाइ संन्यासवेषसुन्दर बनायकै हनुमान्जूके छलिबेको जब हनुमान्जू लंकाते संजविनी को जातेरहे तब कोई यत्नते हनुमान्जू जानिगये तब उसको मारिडार्यो पुनि रावण संन्यासीको बेषकरिकै पंचबटीमें श्रीजानकीजूके नि-

**करहिभलपाइसुसंगू मिटैनमलिनसुभावअभंगू ३६ लखिसुवेषजगबंचकजेऊ बेषप्रतापपूजियततेऊ ३७ उघरेअंतनहोहिनिबाहू कालनेमिजिमिरावणराहू ३८ कियेकुबेषसाधुसनमानू जिमिजगजामवंतहनुमानू ३९ हानिकुसंगसुसंगतिलाहू लोकहु बेद**

कट भयसमेतजातभयो तब जानकीजू जानिलीन तब संन्यासीते राक्षसदेखिपरो अन्तमें पुनि भगवान् जब क्षीरसमुद्र मथनकीन तब चौदहरत्न निकसे लक्ष्मी कौस्तुभमणिशशि कामधेनु कल्पबृक्ष ऐरावत धन्वन्तरिरम्भानामे अप्सरा अमृत अश्व मदिरा बिष शंख धनुष १४ तेहिमें अमृत जब भगवान् देवतन्हको पारुसिकरने लगे तब देवतारूपह्वैके राहुजाइबैठोअन्तमें ताको पाखण्ड खुलिगयो अथवा कैसो बंचकहोइ बेषके प्रतापते जगत्में पूजनीयहोइहै अरु उघरहिअन्त न ताकी बंचकता अन्तहूमेंनहींउघरै निबाह ह्वैजाइहै नाममोक्षहोइहै जैसे हनुमान्के मारे अन्तकालमें कालनेमिमोक्षभयो श्रीरामचन्द्रकेमारे अन्तमेंरावणमोक्षभयो पुनिबिष्णुके चक्रकरिकै राहु को शीशछेदनभयो चक्रांकितभयो ताते अन्तमें मोक्ष होइगो ( ३८ ) कियेकुबेष जो कदाचित् केवल अन्तष्करणते साधुता होइअरु ऊपरते कुवेषकियेहोइ अरु साधुरीति होइ सो रघुनाथजी को बहुत प्रियहै जैसे विदितजगत्में जाम्बवन्त हनुमान् आदिक श्रीरामचन्दजूके अनन्यभक्तहैं अरुजेशेषसंयुक्त निष्कपटभक्तहैं तिनकीकाकहौं ( ३९ ) हानि कुसंग देखियेतौ कुसंगतिमें हानिहीदेखिपरैहै अरु सुसंगतिमें लाभही देखिपरैहै लोकहूमें वेदहूमेंप्रसिद्धहै ( ४० ) गगनचढ़े रजदेखिये तौ सुसंगति कुसंगतिकोप्रभाव रजकहीधूरि सो पवनकेप्रसंगकरिकै आकाशको चढ़िजातीहै पुनि कीचमेंमिलिजातीहै नीचजोहैजल ताकेसंगकरिकै नीचत्वको प्राप्तभईधूरि कीचह्वैगई जलकोनीच क्यों कहाजेहिके संगकरिकैकोई नीचत्वकोप्राप्तहोइ वाकेलेखे वहनीचहीहै अथवा जलनीचहीको बहतहै ताते येद्वै प्रकारकरिकै जलकोनीचकहा ( ४१ ) साधु असाधु दोऊने अपनेघरमेंकोईने सुवापाल्यो कोई ने सारिकापाल्यो साधुकेयहाँ श्रीराम श्रीराम कहतुहै असाधुकेयहां गारीदेतुहै देखियेतौ सुसंगकुसंगकरिकै पक्षिनकीप्रकृतिबिगरीजातीहै मनुष्यकोस्वभाव क्यों नबदलैगो ( ४२ ) धूमजोहै सोतृणलकड़ीकण्डा इनको कुसंगपाइकै कारिषहोत है उहै धूम नेत्रन को दुःखदेतहै पुनि तेल की संगतिपाइकै सुन्दरिमसि बनती है तेहिमसिते पुराणलिखे जाते हैं पुनि सोई कज्जल नेत्रन को शोभित करै है ( ४३ ) सोई धुआं घृतशक्कर इत्यादिकनके संगते होमहोत है ताको धुआं जल अग्नि पवनके

**विदितसबकाहू ४० गगनचढ़ैरजपवनप्रसंगा कीचहिंमिलैनीचजलसंगा ४१ साधुअसाधुसदनशुकसारी सुमिरहिंरामदेहिंगनिगारी ४२ धूमकुसंगतिकारिषहोईलिखियपुराणमंजुमसिसोई ४३ सोइजलअनलअनिलसंघाताहोइजलदजगजीवनदाता ४४ दो०॥ ग्रह**

संगकरिकै मेघहोत है सम्पूर्ण जगत्को जीवनहोतहै अथवा अवरेवकरिकैअर्थ सिद्धिहोत है धूम सोई जलनाम उत्पन्नभयो अनलतेलकही लीन उत्तमसाकल्यके प्रसंगहोइकै पुनि अनिलकही पवनके प्रसंगते सो धूममेघभयो सम्पूर्णजगत्को जीवनजल ताको दाता होतभयो है॥श्लोक॥ श्रीभगवद्गीतायां ॥ अन्नाद्भवन्तिभूतानि पर्जन्यादन्नसंभवः । यज्ञाद्भवन्तिपर्जन्यो यज्ञःकर्मसमुद्भवः ( ४४ ) दोहार्थ ॥ ग्रह भेषजग्रह नव आदित्य चन्द्र मंगल बुध बृहस्पति शुक्र शनिश्चर राहु केतु भेषजनामओषधि जलपवन पटइत्यादिक येते सुयोग पाइकै सुवस्तु होतेहैं कुयोग पाइकैकुबस्तु होतेहैं देखिये तौ चन्द्रमा एकही है काहू के दूसर सन्मुखदाहिन मंगलदाताहै अरु काहूके आठम पाछंयामें अमंगलदाता है ऐसेही नवोग्रह जानिये ओषधि कोई काल में गुणकरैहै कोईकाल में नहींगुणकरैहै जलएकही कूपको कोईम्लेच्छके पात्रमेंपरयो कोई वैष्णवके पात्र में परयोहै पवन पुष्पके प्रसंगकरिकै सुगन्धमय बहतहै विकारको प्रसंगपाइकै दुर्गन्धबहत है पटएकईथान ते मुर्दाकेकफनको गयो वाही थान ते ब्राह्मण वैष्णव के अंगमेंलग्यो इत्यादिक अनेक दृष्टान्तहै ( ४५ ) समप्रकाशहै अरु सम अन्धकारहै शुक्लपक्ष में अरु कृष्णपक्ष में दोउन में बराबरिहै शुक्लपक्षकी पूर्णमासीलेव कृष्णपक्षकी परिवालेव दोनोंप्रकाशमयहैं शुक्लपक्षकी परिवा कृष्णपक्ष की अमावस दोऊ अन्धकारमयहैं शुक्लपक्षकी चतुर्दशी कृष्णपक्षकी द्वितीया दोउनमें एकएककला अन्धकार

पन्द्रह पन्द्रहकला प्रकाश हैं शुक्लपक्ष की त्रयोदशी कृष्णपक्ष की तृतीया दोउनमें प्रकाश तम बराबरिहै येहीप्रकार क्रमही ते शुक्लपक्षको चढ़ाइ कृष्णपक्ष को उतारि आदिअन्त ताईं प्रकाश अरु तम दोउनमें बराबरिजानिये कृष्णकही कालारंग तामसगुण शुक्लकही श्वेतरंग सात्त्विकगुण देखिये तौ विधाता ने एकहीमास में द्वै पक्षकियो है शुक्लपक्ष कृष्णपक्ष काहेको कियो एकमासमें तहां प्रथमहि ते पन्द्रहदिनदिनप्रति चन्द्रमा की हानिकरैहै ताते विधाता ने कृष्णपक्ष कह्यो है कुसंगति ते ऐसीहानिहै अरु पन्द्रहदिन दिनप्रति चन्द्रमा बढ़ावैहै तातेशुक्लपक्ष कह्यो सुसंगति में ऐसी बृद्धिहै ताते जो कोई किसीकी हानि

**भेषजजल पवनपटपाइकुयोगसुयोग होइकुबस्तुसुबस्तुजग लखहिंसुलक्षणलोग ४५ समप्रकाशतमपाखदुहु नामभेदविधिकीन शशिशोषकपोषकसमुझि जगयशअपयशदीन ४६ जड़चेतनजगजीवजत सकलराममयजानि बन्दौंसबकेपदकमल सदाजोरियुग पानि ४७ देवदनुजनरनागखग प्रेतपितरगन्धर्व बन्दौंकिन्नररजनिचर कृपाकरहुअबसर्ब ४८ ॥चौ०॥ आकरचारिलक्षचौरासी**

करैहै सो जगत्में अपयशको प्राप्ति होतेहैं जो कोई किसी के धर्म को बढ़ावतेहैं ताको बिधाता यह जगत्में सुयशको प्रप्तकरतुहै ताको सुसंग कही ( ४६ ) जड़चेतन जगत्में जेते जीवहैं सकलमें अन्तर्य्यामी राममय जानिकै सबके पदकमल बन्दौं सदा दोऊकरजोरिकै श्रीअध्यात्म रामायणे वशिष्ठवाक्यं यस्मिन्रमन्ते मुनयो विद्ययाज्ञान बिक्लवेतंगुरुंप्राहरामेतिरमणाद्राम इत्यपि ( ४७ ) देवदनुज नरनागखग प्रेतपितर गंधर्व किन्नर निशिचर मैं सबके पदवन्दौं मेरेऊपर कृपाकरौ देव बृहस्पति इत्यादिक दानव प्रह्लाद इत्यादिक नर वशिष्ठ विश्वामित्र जनक इत्यादिक नागअनन्त जो शेषइत्यादिक खगकागभुशुण्ड जटायु गरुड़ इत्यादिक प्रेतराज धर्मराजइत्यादिक पित्रअर्यमा इत्यादिक गंधर्व तुम्बरु इत्यादिक किन्नर शुक इत्यादिक निशिचर विभीषण इत्यादिक एते समस्त मेरे ऊपर कृपाकरहु ( ४८ ) आकर चारि अंडज अंडा ते उत्पन्न हैं पुनि उद्भिज भुइँ फोरिकै उपजते हैं तृण वृक्ष इत्यादिक पुनि जरायुज जराकही झोरी बँधिकै जन्मते हैं पशु मनुष्य इत्यादिक उष्मज बर्षाऋतु में मसा डंसादिक ये चारि खानि हैं ताते चौरासीलक्षयोनिहैं स्थावर तृण बृक्ष इत्यादिक बीसलक्ष अरु जलके जीव नवलक्ष कूर्म संज्ञा कछुहा मूससर्प्य दीमक चींटी इत्यादिक जे भूमिखनिकै रहतेहैं ते ग्यारहलक्ष अरु विहंग पतंग इत्यादिक नभचर दशलक्ष उरु पशु चौपया इत्यादिक तीसलक्ष अरु बानरचारिलक्ष मनुष्यतन चारिखानिमें तौ है पर चौरासी ते न्यारोहै मनुष्यतनबिषे विकार कर्म करिकै चौरासी होतीहैं धर्मशास्त्रे ॥ श्लोकद्वै ॥ स्थावरंबिंशतेर्लक्षं जलजंनवलक्षकंकूर्मेश्चरुद्रलक्षंच दशलक्षंचपक्षिणः १ त्रिंशलक्षंपशूनांचचतुर्लक्षंचबानरः ततःमनुष्यतांप्राप्य ततःकर्माणिसाधयत् ( ४९ ) सीताराममय सब जगत्को जानिकै प्रणामकरतहौं यहां मयकही समूह तदात्मक को जैसे सूर्य प्रकाशमय है पावक तेजमय है शशि शीतमय है ऐसे अनेक दृष्टांत हैंतैसे श्री सीता राम मय सबजगत्है जो कहौ कि पांचतत्त्व तीनिगुणमय सबजगत् है तेहीमें श्रीसीता रामजूहैं सो यहअर्थ असिद्धहै काहेते यहसबप्रपंच अविद्यामय है ताको कारण प्रकृतिहै अरु श्रीसीताराम कार्य्य

**जातिजीवजलथलनभबासी ४९ सीयराममयसबजगजानी करौंप्रणामजोरियुगपानी ५० जानिकृपाकरिकिंकरमोहू सब**

कारण दोऊ ते परे हैं तहां चौपाई सीयराममयसबजगजानी ताको यहअर्थ है सो जानब अन्तर्यामी चैतन्यब्रह्म तेहि मय श्रीरामचन्द्र हैं अरु ब्रह्मानन्द जो है तेहिमय श्रीसीताजूहैं ऐसे जानिकै दोनों हाथजोरिकै प्रणाम करतहौं श्लोकचारसनत्कुमारसंहितायां रामंसत्यंपरंब्रह्म रामा किंचिन्नविद्यते तस्माद्रामस्यरूपोयं सत्यंसत्यमिदंजगत् १ ब्रह्मांडपुराणेश्रीरामचन्द्रवाक्यंवशिष्ठंप्रति यथानेकेषुकुम्भेषु रविरेकोपिदृश्यते तथासर्वेषुभूतेषु चिंत्यनीयोस्म्यहंसदा २ तहां श्रीसीतारामएकहीहै प्रमाणश्रुतिःरामःसीताजानकीरामचन्द्रो नित्याखण्डोयेचपश्यन्तिधीशः ३ जनकस्य राज्ञःसद्मनिसीतोत्पन्नाताछं सर्वपरापरानन्दमूर्त्तिर्गायन्तिमुनयोपिदेवाश्चकारणकार्य्याभ्यामेवपरातथैव कारणकार्य्योशक्तिर्यस्याः

विधात्रीश्रीगौरीणां सैवकर्तृ सैवरामानन्द स्वरूपिणी जनकस्ययोगफल मिवभांति ४ इत्यथर्वणेश्रुतिः उत्तरार्द्धे यहां तटस्थलक्षणाह जगकहिकै जीवको लक्ष कीन है पाछेदोहा में कहा है जड़चेतन जगजीवजत सम्पूर्ण जगत् में जेते जीवहैं सबकोमय श्रीसीताराम मय जानौहौं ताते मोको आपन किंकरजानिकै मेरेऊपर छोहकरो छलछांड़िकै सबको सीताराममय कौनरीति जानिकै किंकरहोते हैं अरु सबजीव में छलकाहै जीवतत्त्व जो है सो तौ सदा शुद्धहै जीवको अन्तर्यामी ब्रह्महै अरु ब्रह्मानन्द परमानन्दजो है यहआनन्द जीवब्रह्म के संयोगमें है काहेते की ब्रह्म अरु ब्रह्मानन्द अरु जीव ये जो हैं तीनिहूंतत्त्व सो कभी भिन्ननहींहैं सर्बकाल में एकहीसंगमिले हैं सच्चिदानन्द रूप है तहां शुद्ध जीवतत्त्व सद्रूप है ब्रह्म चिद्रूपहै अरु दुःख सुख पाप पुण्य स्वर्ग नरक हानिलाभ निन्दास्तुति मानापमान हर्ष शोक बर्णाश्रम सम्पूर्ण धर्म कर्म इत्यादिक ए कहू नहींसम्भवै सोई ब्रह्मानन्द है सो आनन्द आनन्दैरूप है चिन्मयश्रीरामचन्द्र हैं आनन्दमय श्रीसीताजूहैं सन्मय चिदानन्द है अरु यह जो जगत् है प्रपंचरूप सो सच्चिदानन्दमिले येभीसत्यहै कारणरूप तातेसीताराम मय सबजगत्को जानिकै प्रणामकरतहौं दोऊकरजोरिकै अरु जो काहूको प्रमाणदैकै कहतहौं कि स्त्रीबर्ग समस्त सीतामयहै अरु पुरुषवर्ग सर्बराममयहै सो यहअर्थ व्यावहारिकहै परमार्थिकनहीं है ( ५० ) सर्बजीव जो तुमहौ सीताराममय सो सबमिलिकै मेरे ऊपर कृपाकरोआपनों किंकरजानिकै छोहकरो छलछोड़िकै जाते श्रीश्रीरामचरितमें

## मिलिकरहुछांड़िछलछोहू ५१ निजबुधिबलभरोसमोहिंनाहीं तातेबिनयकरौं सबपाहीं ५२ करनचहौंरघुपतिगुणगाहा लघुमति

विघ्न न होइ जीवमेंछलकाहै जीवस्वस्वरूप परस्वरूप भूलिगयो है बर्णाश्रम धर्म कर्म तामें अहंमम मानिलियो है मायाको आपनीमान्यो है ताते अनेकछल जीवको होइगयोहै सो सबछलछोड़ जीव सीताराममयहै सो मेरेऊपरकृपाकरहु शुद्धरूपह्वैकै काहेते अन्तर्यामी ब्रह्म श्री सीता रामचन्द्र को रूपहै साक्षीभूत है अरु ब्रह्मानन्द श्रीसीताको रूपहै अरु जीव श्रीसीता रामचन्द्र को अंशरूप है श्रीसीता रामस्वरूप है अरु अंशीहै अरु सच्चिदानन्द बाचकपद है अरु श्रीसीताराम बाच्यहै ताते सीतारामय कहा अथवा मैंतो सबको सीताराममय देखौं हौं जो मेरे देखिबे में कहूं सम बिषम ह्वैजाय सो छल मेरोछोड़िकै छोहकरबजाते श्रीसीतारामचरित मैं करतहौं जामें बिघ्न न होय ( ५१ ) इत्यर्थः ॥ मैं श्रीरामचरित करतहौं निजकही अपनी बुद्धि को बल ताको भरोस मोको नहीं है ताते तुम सबन ते बिनय करतहौं ( ५२ ) अरु बिशेषि श्रीरामचन्द्रको गुण कराचाहतहौं केतेगुण हैं श्रीरामचन्द्र के गाहा कहेसमूह अथवा गाहाकहे ग्रहणकरतिहै मेरीमति सो मतिलघु है सो चरित को अवगाहा चाहतिहै नाम प्रवेश कीनचाहतिहै अथवा मेरीमति लघुकही छोटीहै अरु श्रीरामचरित अवगाहकहे अथाहहै थाह पावनेवाली मेरी मतिनहींहै चौपाई के दोऊचरण के अन्त में गाहापाठहै सो पुनिरुक्ति न जानब अर्थ भिन्न-भिन्न है ( ५३ ) अरु जहांतक काव्य के अंग हैं तिसकीउपाय है अनेक सो मोको एकोनहीं सूझिपरै अथवा अंक जोअक्षरमात्र तिनके जो अंग हैं ह्रस्व दीर्घ प्लुत अनुसार बिसर्ग इत्यादिक अनेकअंगहैं अक्षरनबिषे तेहिको उच्चार काव्यनबिषे जहां जसचाही इनको उच्चार तेहिकी बासना मेरे एकहूनहींहै काहेते मन अरु मति दोऊ रंकनाम कंगाल हैं मनकोचाहिये श्रीरामचरित मनन करै नामबिचारतरहै अरु मतिकोचाहिये जो मन मनन करै ताको धारणकरै सो यह कृपा में दूनोंदरिद्री हैं अरु दूनोंको मनोरथ राजाहै मनोरथ नाम चाहना बड़ीहै ( ५४ ) मति जेहिमति ते श्रीरामचरित ग्रहणकरिबेकोहै सो मति तो नीचिहै मानबड़ाई यश इत्यादिकको मनि ग्रहणकरिरही है ताते नीचिहै छाछीस्थाने कर्म सोभी नहींमिलै अरु अन्तष्करण में अच्छी रुचि है कि श्रीरामचरित जो अमृतमयहै सो मोको बहुतमिलै जैसे कोई कंगालहै जगत्मय छाछीकही जो छाछनाम माठाकोपात्रहै ताको धोवन ताको

## मोरिचरितअवगाहा ५३ सूझनएकौअंगउपाऊ मनमतिरंकमनोरथराऊ ५४ मतिअतिनीचऊंचरुचिआछी चहियअमिय जगजुरैनछाछी ५५ क्षमिहैं सज्जनमोरिढिठाई सुनिहैंबालबचनमनलाई ५६ जोबालककहतोतरिबाता सुनिमनमुदितहोहिं

छाछीकही सोऊ नहींमिलै ऐसो दरिद्री है अरु चाहना अमृत की करै है यतनी दीनता श्रीतुलसीदासजू क्यों कहते जहां हैं यहरीति को बचन आवै तहां नीचानुसंधान जानिये बिना नीचानुसंधान श्रीरामचन्द्र शीघ्रनहिंद्रवहि अरु कार्यन्य शरणागत है यहमुख्य है अथवा जैसे कोई बड़ा आदमी श्वेतबस्त्रओढ़े है काहू कालारंग की छीट परिगई सीकरमात्रताके छुटाइबे को वह मनुष्य शीघ्र यत्न करिकै छुटाइडारैहै तैसे जिनसंतन के मन सर्बथा उज्ज्वल ह्वै रहेहैं काहूकाल संस्कार के बशकी निवासनाआइगई है तब श्रीरामचन्द्रसे यदिवा श्रीराम दासन ते अथवा सर्ब जी वन ते नीचानुसंधानकरिकै धोइ डारते हैं काहेते नीचानुसंधान जलरूप है अरु जेआपु को ऊंचे मानिरहे हैं ते मृत्तिकाके धूहकी समान हैं ताते गोसाई तुलसीदास नीचानुसंधानुकीन है आपु तो सर्बथा उज्ज्वलहैं यह सर्बको शिक्षाभाग है ( ५५ ) येती बड़ीढिठाई मेरीमतिके छाछी नहींमिलै अरु चाहे अमृत यह मेरीढिठाई आश्चर्य है परिसज्जन क्षमाकरिकै मेरोबालकको ऐसो बचन मानिकै मनलाइकै सुनहिंगे ( ५६ ) जैसे बालक तोतरोबचन बोलैहै ताको माता पिता आनन्द मनते सुनते हैं सो मेरीबाणी बिपर्यय सुनिकै मेरे मनोरथपूर्णकरहिंगे सन्त जैसे कोई बज्रकंगाल को बालक कभी किञ्चित् लड्डूखायो है सोई मनमें बासनाबनी है सोईतुतुरायकै एड्डू एड्डू करिकै मांगतहै तहां कोई राजा बालक को तोतरो बचन सुनिकै कोई दशबीस लड्डूमँगाय दियोहै तैसे साधुजन जो मोसे नकहतबनैगो तबहूं रीझिकै मेरो मनोरथपूर्णकरहिंगेअरु मेरीढिठाई सज्जन क्षमाकरहिंगे ( ५७ ) अरु कूरजेहैं कुटिलजेहैं कुबिचारीजेहैं ते हँसहिंगेजे परावा दूषण जो है ताहीको भूषण धारणकियेहैं कूरकही कठोर हृदय कुटिलकही टेढ़े मन बचन कर्म कुबिचारी कहे मलीन विचार अथवाश्रीरामचन्द्र को छोड़िकै अपरदेव को सिद्धान्त करते हैं अथवा रात्रिदिन बिषय को बिचार करतेहैं ते सबकुबिचारी हंसहिंगे ( ५८ ) निजकही अपनी कबिताई सबको नीकीलगैहै सरसकही मीठीहोइ अथवा फीकीहोइ

**पितुमाता ५७ हंसिहैंकूरकुटिलकुबिचारी जेपरदूषणभूषणधारी ५८ निजकबित्तकेहिलागुननीका सरसहोयअथवाअतिफीका ५९ जेपरभणितसुनतहरषाहीं तेबरपुरुषबहुतजगनाहीं ६० जगबहुनरसरसरिसमभाई जोनिजबाढ़िबढ़हिंजलपाई ६१ सज्जनसकृत सिन्धुसमकोई देखिपूरबिधुबाढ़तजोई ६२ ॥दो०॥ भागछोटअभिलाषबड़करौंएकबिश्वास पैहैं सुखसुनिसुजनजनखलकरिहैं**

अपनी बाणी आपु आपुको सबको नीकीलगै है ( ५९ ) पुनिजो पराई भनितकही कबिताई सुन्दरिहै अथवा नाहीं सुन्दरिहै अरु रामयशसंयुक्त है ताको सुनिकै जोहर्षकोपावै बरनाम श्रेष्ठ ऐसेपुरुष जग में बहुतनहींहैं ( ६० ) अरु सर जो तलाव सरि जो नदी ये दोनों परायाकहे बर्षा को जलपाइकै बढ़तहैं ऐसे मनुष्य तो बहुतहैं जगत्में ग्रंचुबक जे यहां वहांकी सीखिकै पण्डित कहावतेहैं हठकरिकै अपनी बाणीको भूषणकरतेहैं पर बाणीको दूषण करत फिरतेहैं ऐसेबहुत हैं ( ६१ ) अरु समुद्रकी समान सकृत सज्जनहै सो कोटिनमें एकहै जैसे पूर्णचन्दमाको देखि कै समुद्र बाढ़तहै तैसे जिनके अनुभव बिद्या प्राप्तिभई है तेई समुद्रवत्हैं श्रीरामचन्द्र को स्वरूप पूर्णचन्द्रवत् देखिकै हृदय के नेत्रनते ज्ञानरूप बिद्या उमगत है बढ़तहै ( ६२ ) दोहार्थ ॥ जे कबि श्रीरामचरितके बक्ताहैं तामें मेरोभागछोटो है अरु अभिलाष ऐसीबड़ीहै कि महूंबराबरि भाग पाऊं यहआश्चर्यहै पर एक विश्वास है कि श्रीरामचरित के बक्ता जेकबिहैं जैसे उनकी बाणीको सज्जन सुनतेहैं तैसे मेरी बाणीको सुनिकै सुखपावहिंगे काहेते यामें रामयशहै अरु खल परिहास करहिंगे ( ६३ ) परखलन को परिहास मेरो हितहोइगो काकजेहैं ते कलनाम कोकिला की बाणीको हँसतेहैं कि कोकिला नाहीं बोलैजानै है मैं भलोबोलतहौं तब काक को तिरस्कारकरिकै कोकिला की बाणी सबसराहते हैं ( ६४ ) अरु बकजेहैं ते हंसको हँसतेहैं कि हंसमें अच्छीचालनहींहै अच्छो बिबेकनहीं है मेरी भलीचालु है मैं बिबेकीबड़ोहौं अरु दादुरनाम मेढुक चात्रिक को हँसतहैं कि चात्रिक में नीकीबोली नहींहै अरु मेघमें बड़ीप्रीतिनहींहै मेरी नीकीबोली है अरु प्रीतिबड़ी मेरेहै तैसे मलिनमन जेहैं खल ते बिमलबतकही कही श्रीराम सम्बन्ध बार्त्ता श्रीरायश मिश्रित काब्य ताको खल हँसतई हैं यहखलन को स्वभावही परिगयो है ( ६५ ) जे भगवत्यश की बार्त्ताको हँसतेहैं सोहँसब सुखदाताहोइगो किनको जे कोई नतो कबित्त के रसको जानहिं नतो श्रीरामपद में नेह

**उपहास ६३ ॥चौ०॥ खलपरिहासहोइहितमोरा काककहहिंकलकंठकठोरा ६४ हंसहिबकदादुरचातकही हँसहिंमलिनखल बिमलबतकही ६५ कवितरसिकनरामपदनेहूतिनकहँसुखदहासरसयेहू ६६ भाषाभनितमोरिमतिथोरी हँसबेयोगहंसेनहिंखोरी ६७ प्रभुपदप्रीतिनसामुझिनीकी तिनहिंकथासुनिलागिहिफीकी ६८ हरिहरपदरतिमतिनकुतर्की तिनकहँमधुरकथारघुवरकी ६९**

है तिनको हास्यरस सुखदाता है अथवा जे कवित्त के रसिक हैं अरु श्रीरामचन्द्र के पदमें नेहनहीं है तिनको हास्यरस सुखदाता ( ६६ ) श्री गुसाईंजी कहतेहैं जो कोई मोकोकहै कि तुम्हारी वनाई कथा बहुतबनीहै अदूष है जो दूषै सो खलहै तहां मैं आपनी काव्य को नहींकहौंहौं श्री रामयश के सद्कबिजेहैं तिनकी कहतहौं उनकी अदूषबाणीहै अरु मेरीभणितकही जो भाषाहै सो एक तो भाषा करतहौं दूसरे मेरी मतिथोरी है ताते हँसबे योग्य है हँसेते दूषणनहीं है ( ६७ ) जिनको प्रभुके चरणबिषे प्रीतिनहींहै अरु नीकी सामुझि नहींहै तिन प्राणिन को यह कथा सुनिकै फीकीलगैगी ( ६८ ) अरु जिनके हरि जो भगवान् हर जो महादेव हैं उभयपद में कुतर्क काहेते भगवत् भागवत एकही जानते हैं तिनको श्रीरघुनाथजी की कथा बहुत मधुरकही मीठी मधुर सुन्दरि कोमलसुगन्धमय ऐसी मधुर उनकोलागती है श्रीभागवते वैष्णवानांयथाशंभुः अथवा हरिहर को एकजानते हैं प्रमाण केशवो बाशिवोबा शिवोबाकेशवोबा अथवा हरिचरित जो है ताके कर है ताते हरिहर पद अतर्क है जाके हरिहरपद में प्रीति है ताको यहकथा मधुर है ( ६९ ) काहेते यहिकथा में श्रीरामचन्द्रजू के भक्ति भूषित है अरु हर राम भक्तराजहै यह जानिकै अरु सन्तजननकै जो सुष्टुबाणी है तेहि बाणी ते सराहि कै सुनहिंगे अथवा मेरी बाणी को सराहिकै सुनहिंगे काहेते श्रीराम भक्ति भूषित जानिकै ( ७० ) काहेते नतो मैं कबिहौं न चतुर हौं न प्रबीणहौंसकल कही सम्पूर्ण जो काब्यकी कला हैं अरु चौदहौबिद्या के चौंसठि अंग इनसबन ते मैं हीनहौं मेरे अन्तष्करण में इन सबन की बासनानहीं है मेरे श्रीरामचन्द्र के गुणगाइबेकी बासनाहै अपर जो अनइच्छित होइ अथवा न होइ कलाःशैवतंत्रोक्ताः गीतं गान करना १ वाद्यं बाजन बजावना २ नृत्यं नाचना ३ नाट्यं नटकोनाचना ४ आलेख्यं लिखब ५ बिशेषछेद्यं हीरा को बेधना ६ तंडुल कुसुम बलिबिकारा चाउर कुसुम सुमास इनके रंगनिकारना ७ पुष्पास्तरणं फूलन को बिछौना ८ दशनबसनांगरागाः दाँत वस्त्र अंगको राग मिस्सी इत्यादिक वस्त्र लालरंग इत्यादि ९ मणिभूमिका कर्म मणिनकरिकै भूमिरचना १० शयनरचना सेज की रचना ११ उदकवाद्यं जलतरंग के बाजा १२ उदकवाद्याः जलताड़नकरना १३ चित्रयोगाः चितेरे को काम १४ माल्यगन्थनबिकल्पः माला को पोहना १५ शेषरापीडयोजनम् मस्तक के भूषणको बिधान किरीटचन्द्रिकादिक १६ नेपथ्ययोगाः कटिवस्त्र में धागा डारना १७ कर्णपत्र भंगाः कान में भूषण पहिरावना १८ गन्धयुक्तिः फूलन के सुगन्ध निकारना १९ भूषण योजनं भूषण को गूथना २० ऐन्द्रजालाः आंबइत्यादिक लगाइ देना २१ कौचुमारयोगाः बहुरूपिआनट इत्यादिक अनेक रूपधरै २२ हस्तलाघवं पटा बान इत्यादि में शीघ्रता २३ भोज्य बिकाराः भोजन अनेक प्रकार बनाइबेकीसुघराई २४ पानकरसरागसबयोजनंपीबेके रस अरु मातबेकेरस इनको बनावना २५ सूचीवान् कर्मसुईकोसियब अरु बाण को चलावना २६ सूत्रक्रीड़ा धागा में खेलौनाको खेलना चकई इत्यादिक २७ बीणा डमरू बाद्यानि बीणा डमरू को बजाना २८ प्रहेलिका कहानी इत्यादिक बार्त्ता में प्रबीणता २९ प्रतिमाला जैसो कोईजन्तु बोली बोलै तैसी बोलना ३० दुर्वचकयोगा दुष्टछलकरना अथवा दुष्टछलिन के संग मिलि चलना ३१ पुस्तकबांचना शुद्ध शीघ्र पुस्तक बांचना ३२ नाटिकाख्यापिकादर्शनं नटीको नाचब ताको हावभाव दिखावना ३३ काव्यसमस्यापूर्ण जो कोई कबित्त श्लोककी समस्यादेइ ताकोयथार्थ पूर्णकरिदेना ३४ पट्टिका वेत्रवान्बिकल्पा नेवार इत्यादिक अरु बेत अरु रज्जु इनकी बिबिध रचना करना ३५ तर्क कर्माणि तर्ककरियुक्तिकरि कर्मकरना ३६ तक्षणं बढ़ई को कर्म ३७ बास्तुबिद्या थवईको कर्म ३८ रूपरत्न परीक्षा रूपा सोनादिक परखना ३१ धातुबाद सुनारको कर्म ४० मणिरागाकार ज्ञानं मणिन को रंग परखने को ज्ञान ४१ बृक्षापूर्वेदयोगः बृक्षको अकार व छावने को प्रकार जानना ४२ मेषकुक्कुट लावा युद्धबिधिः मेढ़ा मुर्ग बटेर को युद्ध विधि जानना ४३ शुक सारिका प्रलापकं सुवासारव इत्यादिक पढ़ावना ४४

उत्सादनं बैरी कोकोई यत्नते उच्चाटन कही निकासिदेना ४५ केशमार्जनकौशलं बारन को कंगहीसे धोवनेमें सुगन्धादि ते सुधारना ४६ अक्षर मुष्टिकाकथनंजो मूठी में कोई बस्तु लेइ ताको बताइ देना ४७ म्लेक्षितबिकल्पाः म्लेक्षभाषाको ज्ञानम्लेक्षन के बिबिध पदार्थ को बनावना ४८ देशभाषाज्ञान सर्ब देश की भाषा जानना ४९ पुष्पसकटिका निमित्तज्ञानं फूलन के रथ इत्यादिक बनावना ५० यन्त्रमात्रिका कटपुतरी नचावना ५१ धारणमात्रका संवाच्यम् कोई धारणा अरुबचनमें प्रवीणता ५२ मानसी काव्यक्र्या मानसी काव्य करना कहनानहीं पराये मनकी जानना ५३ अभिधानकोशा सबको नामजानना ५४ छन्दोज्ञान पिंगलरीतिसे छंदन की बिधि जानना ५५ क्रियाबिकल्पाः अनेक उपाइ करिकै कार्य सिद्धिकरना ५६ छलितयोगाः अनेक छल जानै ५७ बस्त्रगोपनानिबस्त्रकी

## रामभक्तिभूषितजियजानी सुनिहैंसुजनसराहिसुबानी ७० कबिनहोउँनहिंचतुरप्रबीनू सकलकलासबबिद्याहीनू ७१ आखर

रक्षाकरना ५८ धूतबिशेषः पांसा इत्यादिक खेलना ५९ आकर्ष क्रीडाखेलहू में अपनी ओर घसीटने की क्रीड़ा ६० बालंक्रीड़ंमकानि बालकन को खेल ६१ बैनायिकीनां बिनयकरिकै राजादिकन को प्रसन्नकरै ६२ बैजयिकीनां बिजय सष्ट्रकरना अथवा बिद्यैदेनेवाले जे देवता तिनकेबश करिबे की जो बिद्या ६३ बैयासिकी नांच बिद्याज्ञानं ब्यासादिकन केजे पुराण तेहि सबनकी बिद्या में प्रबीण ६४ इतिःचतुः षष्टिकलाः पुनि चौदह बिद्या ब्रह्मज्ञान रसायन सप्तस्वरजानना बेदपढ़ना ज्योतिष शास्त्रब्याकरण धनुषविद्या जलतरं बैद्यक कृषी कोक घोड़ादिक बाहन नट नृत्य चातुरी सम्बोधनं यथार्थ बोध सर्बबस्तु में येती चौदहबिद्या चौंसठिकला इनसबन की बासना मेरे नहीं है॥श्लोक॥ ब्रह्मज्ञानरसायनंस्वरधरं बेदंतथाज्योतिषं ब्याकरणंचधनुर्धरंजलतरं बैद्यंचकृष्यापरं कोकेबाहनबाजिनांनटबृतां सम्बोधनंचातुरी बिद्यानामचतुर्दशप्रतिदिनं कुर्बन्तुनोमंगलं ७१ कबित्त विषे अक्षर मधुरपरै अक्षर के आगे जो अक्षरपरै सो अक्षर के अर्थ की मित्रता लिहेहोइ ताको अक्षरकही अर्थ किं अक्षर को फल सोई अर्थहै देशकाल समाज इनको धर्मलिहे अर्थधरैअथवा प्रयोजन को अर्थकही अथवा जेहि पदार्थ को बर्णनकरै सो अर्थ है पुनि अलंकार कही उपमेय उपमान धर्मबाचक ये चारि अलंकार के चरणहैं उपमेय कही श्रीरामचन्द्र मुख उपमान कही जेहिकै उपमादेइ मुखचन्द्र तद्वत्है अथवा कमलइव है चन्द्रमा अरु कमल उपमानकही पुनि धर्म कहते हैं गुणस्वभाव क्रिया तीननिमिलिकै धर्महै शशि में श्वेतता सो गुणप्रकाश सो स्वभाव शीत सो क्रिया श्रीरामचन्द्र के मुखकै निर्मलता सो गुण प्रकाश सो स्वभाव अति मधुरबोल सो क्रिया ताको धर्मकही जिमि तिमि यथा तथा इत्यादिक सो बाचक मुख जिमिचन्द्रमुख जनु कमल ऐसो जहांपरै ताको पूर्णोपमा लंकारकही अरु यह चारिमें जै घटैं तितने लुप्ता लंकारकही इत्यादिक लंकार के बहुतभेदहैं छंदकरिबे को प्रथमहिं आठगण हैं दुइप्रस्तारहैं एकमात्रा प्रस्तार है एकवर्ण प्रस्तार है दोउनमें चारिखानि हैं एक बृत्ति पुनि जाति पुनि दण्डक पुनिमुक्तक तामें प्रथम एकअक्षर गुरुकही दीर्घ ताको एकचरण ऐसे एकएक अक्षर के चारिचरण ताको श्रीछन्दकही इत्यादिक छन्द की जातिबान्नबेलाख सत्ताइसहज़ार चारिसैबासठि छन्द हैं केवल मात्रा प्रस्तार में इतने ते कछु अधिक बर्णप्रस्तार में हैं यह मैं प्रमाण पायोंहैं पिंगलग्रन्थ में ॥दोहा॥ दुइकल ते बत्तीसलगि छन्द बान्नबेलाख॥ सहस सताइस चारिसै

## अर्थअलंकृतनानाछंदप्रबंधअनेकबिधाना ७२ भावभेदरसभेदअपाराकबितदोषगुणबिबिधिप्रकारा ७३ कवितविवेकएकनहिंमोरेसत्य

बासठि पिंगलभाख १ ताको कौन जानिसकै है येते छन्दनके जातिनामहैं पुनि प्रबन्ध कही वत्तीसमात्रा बत्तिस अक्षर के आगे जो मात्राअक्षर बढ़तजाइ ताको दण्डककही पुनि वाहीको प्रबन्ध कही पुनि बहुत छन्दको एकजगह करना पुनि बहुत अर्थको थोरे अक्षरन में करै ताको प्रबन्ध कही अरु प्रबन्ध गान को कही ताछन्द प्रबन्ध के अनेक विधानकही बिधिहै को जानै है ( ७२ ) काव्यन बिषे भावहाव है भाव सात्त्विक तामें आठभेद हैं पुनि हाव के दशभेद हैं ते भावके अंग संगी हैं सो सबबिषयमें मिसुमात्र हैं श्रीरामचन्द्र की भक्ति में अर्थसिद्धि है सो कहतेहैं लाज ते हर्ष ते जो अंग शिथिल होइजाइ ताको स्तम्भभाव कही पुनि हर्ष लाज भय कोप श्रम इत्यादि ते शरीर में पसेवचलै

ताको स्वेदभावकही २ पुनि हर्षभयादिकन ते जो रोमांच ठाढ़होइ ताको रोमांच भावकही ३ पुनि क्रोधते हर्षते मदते भीत ते भयते बचनआन कहिबेको आनै कहि आवै ताको स्वभांगभाव कही ४ क्रोध भय लाज हर्ष ते जो देहथहरातिनाम कांपै ताको कम्पभावकही ५ पुनि मोह कोह भयआदिकन ते शरीरमें और बर्णहोइजाइ ताको बिबर्णभाव कही ६ पुनि रूपाशक्त हर्ष दुखभयआदिक ते जो नेत्रन में आंशुआवै ताको आशुभाव कही ७ पुनि हर्षते दुःखते भयादिकनते इन्द्रिनको निरोधन भयो नाम रोकिगयो ताको प्रलाप भावकही येह आठभाव हैं ८ पुनि दशहाव कही नायक को बेष नायकाकरे प्रियभूषण प्रियबचन ते जो लीलाकरै ताको लीलाहावकही १ पुनि चालुमें अरु नेत्रनते अरु बचनादिकन ते जो कछुक बिशेष रसहोइ ताको बिलासहावकही २ पुनि थोरेभूषण थोरेबस्त्र ते जहां शोभा अधिकपाइये ताको बिक्षिप्तहावकही ३ पुनि उलटे भूषण उलटेवस्त्र पग को अलंकार शीश में शीश को कटिपगमें ताको बिभ्रमहाव कही ४ पुनि हर्ष गर्ब अभिलाष श्रमहास रोषभीत येते सातौ जहां एकही बारहोंहिं ताको किलकिंचित् हावकही ५ पुनि जो कोई बातन ते निरादरकरै हैअरु मिलाप की चाहबनी है ताको मोटाइत हावकही ६ पुनि ईहानाम चेष्टा जहां दुःख संयुक्त सुखकी चेष्टाहोइ परमललित ताको कुट्टंमितहावकही ७ पुनि जो आपने रूप गुण अभिमान ते आपने स्वामीको निरादर करै अथवा अभिमान ते कोई बड़ाहोइ ताको निरादरकरै ताको बिव्वयोक हाव कही ८ पुनि सकल बाणिकन ते सब बनावकरिकै सबअंग बनिरही है ताको ललित हावकही ९ पुनि जो अच्छी अभिलाषा स्वामीकीसेवा में नहीं पूर्णहोइ ताको विहितहाव कही अथवा श्रीराम तत्त्व को जिज्ञाशा की अभिलाषा बनीहै सदा कभी पूर्णनहींहै सो बिहितहावकही १० येते दशहाव कही ॥श्लोकएक॥ भावानामनुभावानां विभावानांचसंश्रयात् जायतेयः पदार्थस्तु तमाहुर्मुनयोरसं १ पुनि नवरस हैं शांतकरुणा बीर रौद्र भयानक बिभत्स हास्य अद्भुत शृंगार येते नवरस पुनि तीनिमिलिकै बारहरस हैं तीनिकौन दास्य सख्य बात्सल्य ये तीनि हैंरसन को रूप आगेकहेंगे ताते कबित्तबिषे दोष गुण दूषण भूषण बिबिधि प्रकार के हैं पुनि छन्द प्रबन्ध भाव भेदरस अलंकार इत्यादिक कबित्तबिषे छुटिजाइ सोई दोष दूषण है अनेक अरु येते समस्तकबित्त में आवहि सोई गुण भूषण है ( ७३ ) ताते कबित्त के बिबेकजेहैं अनेक प्रकारके सो मेरेमनमें एकहूबासना नहींहै कि मेरी काव्यमें काव्यनके लक्षण समस्त परैं यह बासना नहींहै काव्य लक्षणपरै किन्तु न परै यह सपेदेपर स्याही चढ़ाइकै कहतहौं अथवा कबित्त बिबेक एकनहीं है अनेक हैं अरु काव्य बिषे दूषण भूषण गुण दोष इत्यादिक अनेक हैं पिंगलगन्थबिषे मात्राप्रस्तार के छन्द कबित्तजे हैं तिनके प्रथमचरण में जै मात्रा परैं सो चारिहू चरणमेंपरैं अरु वर्णप्रस्तारके कवित्तन में जोप्रथमचरणमें जैअक्षर परैं सो चारिहू चरणमें परैं अरु जीभरोचक पदहोइ अरु अर्थभाव भेदरस युक्ति उक्तिगण लघु दीर्घ छोट बड़ देशकाल समाजसबको धर्मलिहे वर्णनकरै इत्यादिक अनेक बिबेक हैं परि मेरे इनसबनकी एकहूबासना नहीं है सत्यकहौं लिखि सत्यपदार्थ सेरभरिको सेरभरि मनभरेको मनभरि यथार्थ अर्थ कोरेकागद पर लिखिकै कहतहौं किन्तु सत्यकहौं जे जैसी बोली बोलते रहे हैं त्रेताविषे देशभाषा तैसोयथार्थ सत्य कहतहौं अरु महान् कवीश्वर जे भये हैं तिनने काव्यकर बिबेक बिचारिकै देवबाणी आपने अनुकूलकहे हैं परि बिशेष तौ सत्यराम यश है सो कोरे कागदपर लिखतहौं सब काब्यनकर आत्माप्रकाश कर्त्ता अरु मेरेकवित्तके बिबेक एकहूनहींहै ( ७४ ) दोहार्थ॥ मोरिभणित सब गुणरहित हैं पर बिश्वमेंएकश्रीराम गुण बिदितहै सो पहिले में है तेहिगुणन को सुनिकै जिनके बिमल बिबेकहैं ते बिचारि लेहिंगे ( ७५ ) इति श्रीरामचरितमानसे सकल कलिकलुष विध्वन्सने बालकाण्डे विमल नीचानुसन्धानवर्णनं नाम चतुर्थस्तरंगः४॥

कहौंलिखिकागदकोरे ७४॥दो०॥ भणितमोरिसबगुणरहितविश्वबिदितगुणएक सोबिचारिसुनिहैंसुमतिजिनकेबिमलबिबेक ७५॥

यहिमहँरघुपतिनामउदारा अतिपावनपुराणश्रुतिसारा १ मंगलभवनअमंगलहारी उमासहितजेहिजपतपुरारी २ भणितबिचित्र सुकबिकृतजेऊ रामनामबिनुसोहनतेऊ ३ बिधुबदनीसबभांतिसँवारी सोहनबसनबिनावरनारी ४ सबगुणरहितकुकबिकृतबानी

दोहा॥ रामचरण निजनीचता अनुसन्धान बखानि॥ रामकृपा अनहेतुपर पंचतरंगमजानि ५ मेरी भणित यद्यपि सबगुण रहितहै तदपिपर यहीमें श्रीरामनाम अतिशय उदारहै अतिपावन है श्रुति स्मृति पुराणसमस्त ग्रन्थन को सारभूत है ( १ ) पुनि कैसो है श्रीरामनाम समस्त शुभ मंगल को भवनहै समस्त अमंगल को नाशकर्त्ता है कैसे जानिये जाको सहित उमा पुरारिजपते हैं अहर्निश सो नाम यहि में प्रसिद्ध है ( २ ) अरु जो कोई कबि बिचित्रकाब्य करैहै सबकाब्यन के अंग पूर्णधरेहैं अरु श्रीरामनामकी विशेषता नहींपरै तौ वह काब्य अशोभितहै ( ३ ) कैसे जैसे कोई स्त्री चन्द्रमुखी हेमांगी नखशिख लौं सुन्दरीहै अरु सबभूषण कनक मणिन के पहिरेहै अरु एकबस्त्र नहींपहिरेहै तौ महा अशोभित है तैसेही रामनाम बिनु काब्यहै ( ४ ) देखिये तौ जो कोई कुकबिहैं अरु सर्बगुण रहित हैं जिनकैबाणी छन्द प्रबन्ध भाव भेदरस अलंकार इत्यादिक रहित है अरु केवल रामनाम रामयश जान्यो है ( ५ ) तेहिकबित्त को बुधजन सादर कहते हैं सुनतेहैं अरु सन्तजन गुणको ग्रहण करते हैं जैसे भ्रमर केवल सुगन्ध को ग्रहण करतहै फूल चाहै उत्तमहोइवा निकृष्टहोइ ( ६ ) यद्यपि मेरी बाणी समस्त कबित्त के गुणनकरिकै रहितहै पर श्रीरामप्रताप यहिमें प्रगट है ( ७ ) सोई मेरेमनमें दृढ़भरोस आयोहै काहेते सुष्टुसंगति ते किनने नाहीं बड़ाईपायो है सबहीपायो है ( ८ ) देखिये तौ धूमजोहै सो सहज में करुआई त्यागिदेत है अगरचन्दन शक्कर घृतादिकनके प्रसंग ते तैसे मेरी बाणी श्रीरामयश के प्रसंग तेशोभितहोइगी ( ९ ) मेरीबाणी तौ भदेसकहे अच्छी नहींहै पर तत्त्वभलो बरण्यो है श्रीराम कथा सम्पूर्ण जगत् की मंगल करणहारी है

रामनामयशअंकितजानी ५ सादरकहहिंसुनहिंबुधताही मधुकरसरससन्तगुणग्राही ६ यदपिकबितरसएकौनाहीं रामप्रताप प्रकटयहिमाहीं ७ सोइभरोसमोरेमनआवा कोनसुसंगबड़ाईपावा ८ धूमौतजैसहजकरुवाई अगरप्रसंगसुगंधबसाई ९ भणित भदेसबस्तुभलिबरणी रामकथाजगमंगलकरणी १० छं०॥ह०॥ मंगलकरणिकलिमलहरणितुलसीकथारघुनाथकी गतिकूरकबितासरितकीज्योंसरितपावनपाथकी प्रभुसुयशसंगतिभणितभलिहोइहिसुजनमनभावनी भवअंगभूतिमसानकीसुमिरतसोहावनिपावनी ११॥दो० प्रियलागिहिअतिसबहिममभणित-रामयशसंग दारुबिचारुकिकरैकोउबंदियमलयप्रसंग १२

( १० ) छन्दार्थ॥ श्रीरामचन्द्र की कथा मंगल को करतिहै अमंगलकोहरतिहै गुसाईं तुलसीदास कहतेहैं कवितनकै गति कूरकही टेढ़ी है जैसे नदी काहेते कि छन्दनबिषे खंडान्वयजो है अरु प्रसंग की अन्वय उलटिपलटि करिकै अर्थ सिद्ध होतहै सोई काब्य की टेढ़ाई है पर सरित जो है सो पाथकहे जलके संयोग ते पावनिहै सबकोई जलको ग्रहणकरते हैं नदीकी कूरता ते कौन प्रयोजन है पर जलके संयोग ते नदीशोभित है पुनि जैसे भवजो महादेव हैं तिनके अंगमें चिताकी बिभूतिलगीहै सोअति अपावनिहै तेहि संयुक्त शिवको ध्यानकरिबेमें आवत है तब ध्यानी पुरुषको अन्तष्करण पवित्र होतहै तैसे श्रीरामचन्द्र के यशके संगते मेरीबाणी पवित्र है सन्तन के मनभावनी होयगी ( ११ ) दोहार्थ॥ मेरीबाणी श्रीरामचन्द्र के यशके संगते सबको प्रियलागैगी जैसे दारु जो है काष्ट ताको बिचार कोई नहींकरै काहेते मलय जो है चन्दन तेहिके प्रसंग ते सब कोई बन्दते हैं तैसे मेरी भणित जानिये ( १२ ) पुनि जैसे कोऊश्यामगऊ है ताको दूध श्वेत है पर तात्पर्य दूधही ते है गुणदायकहै ताते सबकोई पीवत है तैसे मेरीगिरा जो है सो श्रीसीताराम जी के यशको ग्राम्यकही समूह जोहै तेहिके संग मेरीबाणी सुजान पुरुष जे हैं ते गावहिंगे सुनहिंगे काहेते मेरीबाणी श्यामगऊहै श्रीरामयश दूधहै सो उत्तमगुणदायक है ( १३ ) जो किसूकी काब्य नीकीबनी है तौ उसके इहां नहीं शोभितहै अपरस्थानमें शोभितहोत है कैसे जैसे अहि गिरिगज में मणिमाणिक मुक्ता उपजतुहै पर तिनके मस्तक पर नहीं शोभित होतहै अपरस्थानमें शोभित होतहै परमणि संज्ञातो सबकी है तथापि क्रमालंकारतेभिन्न होतहै सर्पके

उपजतहै सो मणि पर्वतमें उपजै सो माणिक हार्थीके उपजै सो मुक्ता पूर्बको अक्षर पूर्बमें मध्यको मध्य में परको पर में लागै सोक्रमालंकार कही ( १४ ) जे मणिमाणिक मुक्ता हैं अहिगिरिगज के

श्यामसुरभिपयबिशदअति गुणदकरहिंसबपान गिराग्राम्यसियरामयश गावहिंसुनहिंसुजान १३ चौ०॥ मणिमाणिकमुक्ता छबिजैसी अहिगिरिगजशिरसोहनतैसी १४ नृपकिरीटतरुणीतनपाई लहहिसकलशोभाअधिकाई १५ तैसहिंसुकबिकबितबुध कहहीं उपजहिंअनतअनतछबिलहहीं १६ भक्तिहेतुबिधिभवनबिहाई सुमिरतशारदआवतिधाई १७ रामचरितसरबिनुअन्हवाये सो श्रमजाइनकोटिउपाये १८ कीन्हेप्राकृतजनगुनगाना शिरधुनिगिरालागिपछिताना १९ कबिकोबिदअसहृदयबिचारीगावहिंहरियश

उपजत हैं पर राजनके किरीट में अरु रानिन के तन में शोभा पावतहैं ( १५ ) तैसे सुकबिन के कवित्त जे हैं ते बुधकही पण्डितजन कहतेहैं कि बिबेकिन की समाज में शोभादेते हैं ( १६ ) पर ऐसे सुन्दर कवित्त कबबनैजब शारदा प्रसन्नहोइ शारदा कब प्रसन्नहोइ जब श्रीरामयश कबिगावै क्यों जानिये जब कोई कबि काव्य करबे की इच्छाकरतेहैं तब शारदाकोप्रथम सुमिरण करतेहैं तब शारदा श्रीरामभक्तिहेतु अथवा अपनी भक्ति मानिकै ब्रह्माको लोक तजिकै दौरिकै आवति है ( १७ ) पर श्रीरामचरित सागर स्नानकिहे बिना ब्रह्मलोक से आगमन को जो भयोहै श्रम सो कोटिहू उपाय न मिट्यो ( १८ ) कब जब उहै कबि जौने शारदाको सुमिरण कियो है पुनि श्रीरामयश छोड़िकै कोई प्राकृत मनुष्य राजा इत्यादिक अथवा प्राकृत देवता कोई प्राकृत कही प्रकृति जो माया ताके बशहोयसदा ताको प्राकृतकही ताको गुणानुबाद गानकियो तब शारदा शिरधुनि कै पछिताइलागी यह कहिकै मैं केहि अपराधी के बुलाये ते आईहौं तबवह काव्य अशोभितभई काहेते कि शारदा ते बड़ो एक श्रीरामचन्द्र है और सब शारदा ते छोटे हैं ताते यह सर्वदेश रीतिहै जो छोटेको बड़े सेसम्बन्धहोइ तौ वह बहुतप्रसन्नहोइ अरु जो वातेनीचहोइ ताको सम्बन्ध होइ तौ वह बहुत खेदपावै है ( १९ ) कविजांहे कोविदजांहे पण्डिततेईहैं विचारते हैं कि श्रीरामयश गाये ते शारदा प्रसन्न होतीहै अरु हमारी रसना पवित्रहोइगी काहेते हरियश कलिमलहारीहै ताते हरियशै गावनेहैं ( २० ) काहेते सुजान यह कहते हैं कि कविताको हृदय समुद्रहै अरु मति सीपस्थाने कहते हैं शारदा स्वाती नक्षत्र है ( २१ ) अरु सुन्दरबिचार बरबारिहै जब स्वातीबर्षै तब सीपमें सुन्दर मुक्ताहोते हैं तैसे जब शारदा बिचार बरबारि बर्षै तब कविताकी सुमति में सुन्दर मुक्तारूपकबित्त होते हैं ( २२ ) दोहार्थ॥ मुक्ता तौ सराग ते बेधिकै धागा में पोहिकै कोई राजा पहिरते हैं अति शोभा पावते हैं तैसे कवित्त जो मुक्तारूपहैं ताको युक्तिसे बेधिकै श्रीरामचरित बरनाम समेटिकै सोई धागा

कलिमलहारी २० हृदयसिंधुमतिसीपसुजाना स्वातीशारद कहहिंसमाना २१ जोबरषैबरबारिबिचारू होहिंकबितमुक्तामणि चारू २२ दो०॥ युक्तिबेधिपुनिपोहियेरामचरितबरताग पहिरहिंसज्जनबिमलउरशोभाअतिअनुराग २३ चौ०॥ जेजनमेकलिकालकराला करतबबायसबेषमराला २४ चलतकुपंथवेदमगछांड़े कपटकलेवरकलिमलभांड़े २५ बंचकभक्तकहायरामके किंकर

बनाइकै तामें मुक्तारूप जो कवित्त सो कवि पोहिदेहिं तहां सन्तजनजिनके हृदय विमल होइरहेहैं ते सज्जनपहिरहिं शोभारूप अनुराग को प्राप्तहोते हैं युक्ति काकोकही जो ऐसोकरै कहै न तौ सत्यहोइ नतौ असत्यहोइ पर सत्य विशेष भासे हैं अरु जासों कहै सो प्रसन्नहोइ ताको युक्तिकही लंकाकाण्डे दोहा॥ कहमारुतसुतसुनहुंप्रभु शशितुहार प्रियदास॥ तवमूरति बिधुउरबसी सोइश्यामता भास ( २३ ) जो कोई कहै कि तुम्हारी काव्य मुक्तारूप बनीहै तहां मैं ता सत्कविन की काव्य कोकह्यो है अरु मैंतो एसोहौं

एक तौ जे यहकलिकाल में जन्मलीन्हहै जिन प्राणिन पुनि बेष तौ हंसको ऐसो किहेहैं अरु कर्तव्य तौ बायसकही कागकी ऐसीहै ( २४ ) पुनि कुमार्ग चलतेहैं वेदमार्ग छोंड़िकै मन बचन कर्म कपटहि कलेवर नाम शरीरहै बहुतका कहौं कलिमल के भांड़ेकही बर्त्तनहैं ( २५ ) पुनि कैसेहैं यहां अवरेब ते अर्थ हैं भक्तकहाइ राम के अरु भक्ति ते बंचक हैं बंचककही छली हैं कैसे जानिये श्रीरामभक्त कहावते हैं अरु किंकर होइरहे हैं कंचनके अरु कोहकाम के पुनि रामभक्त काहे को कहा यातेकहा जो गुरुनकरिकै पायो है परमेश्वर को नाम आयुधकंठीतिलक भगवत् सम्भेष नाम ऐसो पंचसंस्कारयुक्त परमेश्वर के कोईस्वरूप को भक्तहोइ तौ वह प्राणी को शरीरमहँ तीर्थरूप भयो है जो एकौ अवगुणकरै तौ लाख होतेहैं अरु उत्तम गुणकरे तौ एकको लाखहोते हैं अरु जो बिना वैष्णवभये पाप पुण्यकरै तौ एक को शतहोत है काहेतेसुक्षेत्रपाइकै बीजबढ़े है श्रीअयोध्या चित्रकूट मथुरा बृन्दाबनपुष्कर काशी प्रयाग इत्यादिकनमें जैसो पाप पुण्यकरै है तैसो बढ़ैहै ताते रामदासही को कहाहै काहेते रामभक्त सुक्षेत्रहै अरु जो कोई आपुहीते बेषबना-इकै गुण अवगुणकरै तौ वाहू क्षेत्रही समान है देखौ तौ जैसे एकसुखेतहै अरु भल कमायोहै जो वामें बबूरको बीर्यपरै तौ बहुतबाढ़ै है अरुचन्दनको बीजपरै तौ चन्दनैकी बृद्धिहोइ इत्यादिक अनेकदृष्टान्तहैं ( २६ ) ऐसे जे हैं तिनमें प्रथम मेरीलीक है जो पाछे कहिआये हैं तिनमें पुनि

**कंचनकोहकामके २६ तिनमहँप्रथमरेखजगमोरी धृगधर्मध्वजधंधकधोरी २७ जोआपनअवगुणसबकहऊं बाढ़ैकथापारनहिं लहऊं २८ तातेमैंअतिअल्पबखाने थोरेमहँजानिहैंसयाने २९ समुझिबिबिधबिधिबिनतीमोरी कोउनकथासुनिदेइहिखोरी ३० येतेहुपरकरिहैंजेशंका मोहिंतेअधिकतेजड़मतिरंका ३१ कबिनहोउँनहिंचतुरकहाऊं मतिअनुरूपरामगुणगाऊं ३२ कहँरघुपति केचरितअपारा कहँमतिमोरिनिरतसंसारा ३३ जेहिंमारुतगिरिमेरुउड़ाहीं कहहुतूलकेहिंलेखेमाहीं ३४ समुझतअमितरामप्रभु**

कैसे हैं वे धृगधर्मध्वजी कही पाखण्डीहैं जे कोई लोक के दिखावे कोकिंचित् सुकर्मकहूं कियोहै ताको कहतफिरतेहैं कि हमने बहुत दानकियो है बहुत भजन करते हैं हम संसारके बिषय जीते हैं अरु हम सर्बत्रब्रह्मदेखतेहैं ऐसे अनेक झूठीबातें कहत फिरते हैं अरु जो कहतेहैं तामेंआरूढ़ता कहूंलेशहूनहींहै तिनको धर्मध्वजीकहिये तिनहूमें जो धृगकही अतिनीच हैं पुनि कैसेहैं धन्धकधोरी हैं धन्धाकही बृथाकतर्व्यता ताहीकीधुरी हैं ( २७ ) पांच चौपाई अक्षरार्थै जानब ( ३२ ) एक सन्देह है मेरे काहेतेकि कहां रघुपतिकेचरित अपरम्पार निर्ब्यकार हैं अरु कहां मेरीमति लघु पुनि संसार में निरतनाम रत है ( ३३ ) देखिये तौ जेहि पवन के बेगते सुमेरु उड़िजाइ तहां रुईकी कौनचली है ( ३४ ) श्रीरामचन्द्र की प्रभुताई अमितहै समुझत सन्ते मेरीमति कथा करतसन्ते कदरातिहै ( ३५ ) दोहार्थ॥ श्रीरामचन्द्र के चरितजे अमित हैं ताको निरन्तर गानकरतेहैं यामें एक श्वासहू को अन्तर नहीं परै अरु पार नहीं पावते हैं नेति नेतिकरिकै गावते हैं शारद शेशमहेश विधि शास्त्र वेद स्मृति पुराण संहिता इत्यादि तहां मेरीमति की काचलीहै ( ३६ ) जो कोईकहै कि पुनि क्योंकहतेहौ तहां प्रभु की प्रभुता सब जानतेहैं कि अपरम्पारहै तदपि बिना कहे कोई नहींरहा ( ३७ ) काहेते तहां वेद यह कारण राखिदीनहै किभजन को प्रभाव बहुभांति है बहु रीति शोभित है अरु अनेकभाव है अनेक बाणीकरिकै है कैसे जानिये कोई सुनिबे को भजन कहतेहैं कोईगानही को भजन कहते हैं कोई स्मरणही को कहते हैं कोई पूजाही को अनेक बाणीकरिकै है कैसे जानिये कोई सुनिबे को भजन कहतेहैं कोईगानही को भजन कहते हैं कोई स्मरणही को कहते हैं कोई पूजाही को कहते हैं कोई दास्यभाव को कहते हैं कोई सख्यभाव को कहते हैं कोई आत्मवेदन को कहते हैं कोई बेद पुराण स्तोत्र इत्यादि पाठको कहते हैं कोई जाप्य को कहतेहैं कोई ध्यान को कहतेहैं कोई मानसीको कहतेहैं कोई प्रेमको कहतेहैं कोई लुएको कहतेहैं कोई सात्विककर्म यज्ञइत्यादि

**ताई करतकथामनअतिकदराई ३५ ॥दो०॥ शारदशेशमहेशबिधिआगमनिगमपुरान नेतिनेतिकहिजासुगुण करहिंनिरंतरगान ३६ चौ० ॥ सबजानतप्रभुप्रभुतासोई तदपिकहेबिनरहानकोई ३७ तहांवेदअसकारणराखा भजनप्रभावभांतिबहुभाखा ३८ एक**

करिकै भगवत् अर्पणकरै सोई कहते हैं कोई शुभ अशुभ जो कर्महोइसंचितक्रियमाण प्रारब्ध बशहोइ सो सब श्रीरामायेतिसमर्पयामि सो सब भजन है तामें सामान्य विशेषहै अरु अनेक बाणी ते भजनहै देववाणी नागबाणी प्राकृतिबाणीमें बंगालादेश उड़ैसादेश तैलंगदेश माड़वाड़देश पंजाबदेश ब्रजदेश श्रीअयोध्यादेश ऐसे अनेक देशभाषा हैं ऐसे सर्बद्वीप सर्बखण्ड में है अपनी अपनी बाणी ते अनेकभांति ते सबै भजन करते हैं तैसे मैंभी अपनी बाणी ते भजन करतहौं ( ३८ ) परमात्मापरब्रह्म एक है अनीह कही ईहाकहे चेष्टाकबहीं हर्ष शोक कबहीं प्रसन्न उदासीन कबहीं मोट दूबर कबहीं बाल युवा बृद्ध इत्यादिक अनेकभांतिलघु दीर्घ सो चेष्टा ते रहित है अरूपकहे प्राकृतरूप रहित है दिव्यरूप है नेत्रन की विषयरूप है ताते प्राकृत नेत्र ताकी विषयते रहितहै तातेअरूप कही अनाम कही जाको नाम राशि लग्न नक्षत्र योग मुहूर्त्त सर्व क्रिया कालरहितहै ताते अनामकही पुनि जाकेनाम की मितिनहीं पुनिजाके नामके प्रभाव को वेद नेतिनेति करिकै कहे हैं ताते अनाम कही अरु जो कही कि ब्रह्मजोहै रूपनामकरिकै रहितहै तो जहां रूपनहींहै तहां नाम कैसे सम्भवहै जो ऐसेकहिये तो श्रीरामतापिनी उपनिषद्है तामें बिरोधहोत है ॥श्लोक॥ रमन्तेयोगिनोनन्ते सत्यानंदेचिदात्मनिइतिरामपदेन्यासौ परंब्रह्माभिधीयते १ ताते रूपहै तबतो नामकहां ताते रूपनाम परमदिव्य है त्रैगुण्यरहित है पुनि वह प्रभु कैसोहै अजहै नामअजन्मा है गर्भमें नहींआवै पुनि सत्चिदानन्द है सतकही एकरस सर्व कालमें अरु कालरहितहै असत् जो माया है ताके परेहै ताको सत्कहीपुनि चित्कही चैतन्य जामें जड़को अभावहै जाकी चेतनता ते जगत्कालमें अरु कालरहितहै असत् जो माया है ताके परेहै ताको सत्कहीपुनि चित्कही चैतन्य जामें जड़को अभावहै जाकी चेतनता ते जगत् चैतन्य है अरु सबको साक्षी भूतहै वह सबकी गतिको जानै है वाकीगतिको कोई नहींजानै सो चित्कही आनन्द आनन्दय स्वरूपहै जहां प्राकृत दुःख सुखरहित सो आनन्द ताको सच्चिदानन्दकही परधामकहीपरस्वरूप है किन्तु परधाम सर्बोपर धामहै जाको ( ३९ ) कैसो है वह ब्रह्मब्यापक है बिश्वरूपभरे में कैसे ब्यापक है जैसे सूर्य अपने स्वरूपकरिकै एक है अपनेरूप महत्प्रकाश करिकै सब जगत्को प्रकाश कियेहै अरु जेते घटहोहिं कोटिन तामें लक्षि है तैसे ब्रह्मजानिये ॥श्लोक॥ ब्रह्माण्डपुराणे श्रीरामचन्द्रवाक्यं वशिष्टंप्रति यथा-नैकंपुकुम्भेपुरबिरेकोऽ

**अनीहअरूपअनामा अजसच्चिदानन्दपरधामा ३९ व्यापकबिश्वरूपभगवाना तेइधरिदेहचरितकृतनाना ४० सोकेवलभक्तन**

पिदृश्यते तथासर्वेपुभृतेपु चिन्तनीयोऽस्म्यहंसदा १ ऐसे सर्व में ब्याप्तहैसबते परेहै सूर्यके दृष्टान्तकरिकै अथवा ब्यापक रूप है जाके आपरूपी है किन्तु ऐश्वर्य्यबर्णतेहैं बिश्वरूप वहै ब्यापक वहै भगवान्वहै भगवान्कहे खड्भाग युक्त ऐश्वर्य धर्म यश श्री बैराग्य मोक्ष खड्भाग संयुक्त ताको भगवान् कही सो भगवान् शब्दको अर्थ आगे सती के मोहके प्रसंगमें कहैंगे तेई धारिदेह नानाप्रकार के चरित करतभये जैसे देहधारी प्राकृतराजा चरित करत है तैसे वहै प्रभु चरितकीन अवतीरनहैकै अरु जोकोई कहै कि देहरहित ब्रह्म है तेई भक्तन केकेवल हितलागि देहधारण करिकै अनेकचरित करिकै फेरि देहरहित ब्यापक ब्रह्म ज्योंके त्यों भयेसो यह अर्थ गुसाईंको सम्मतनहीं है काहेते ग्रन्थको आदि अन्त मध्य सो बिशेष सिद्धान्त है आदि बालकाण्डे श्लोकार्द्ध यत्पादौप्लवमेकमेवहिभवां भोधेस्तितीर्षावतां बन्देऽहं तम शेषकारणपरं रामाख्यमीशंहरिं मध्यआरण्यकांडे शांद्रानन्दपयोदशौभगतनुं पीताम्बरंसुन्दरं पाणौबाणशरासनम्कटिलसत्तूणीरभारंबरं अर्द्धश्लोक उत्तरकाण्डे केकीकण्ठाभनीलं सुरबरबिलसद्विप्रपादाब्जचिन्हं शोभाढ्यंपीतबस्त्रंसरसिजनयनं सर्वदासुप्रसन्नं ताते गुसाईंको सिद्धान्तआदि मध्य अन्त धनुर्द्धारी श्रीरामचन्द्र अपर काहूको मतहोइ सो होइ ( ४० ) सो भगवान् अवतीर्ण होइकैप्राकृतइव लीला कीन सो केवल भक्तानुग्रह अर्थ काहेते परमकृपालु हैं प्रणत जो शरण है तेहिपर बड़ो अनुराग नाम प्रीति है ( ४१ ) पुनिकैसेहैं प्रभु जाकी शरण जीव एकहूबार भयो तापर अति ममता छोह करत हैं ऐसी करुणा जापर कीन तेहिके ऊपर पुनि कबहूंनहीं कोपकीनजो वाते कालकर्म स्वभावबश अनेक चूकपरै सो देखिकै बिमार्गिते हैं ऐसेप्रभुहैं ( ४२ ) पुनि कैसेहैं प्रभुगई बहोर हैं गरीबनेवाज हैं गईबहोरकही जो बस्तु जाइरही है योगभ्रष्टभयो है सो फेरि सिद्धकरि देते हैं किन्तु बिधाताने एकहू

अंकनहीं लिख्योहै सो जो सकृत श्रीरामशरणभयोताको अनेक परम दिब्य गुण योग बैराग्य ज्ञान मुक्ति भक्ति नवधा प्रेमा परा सबदेते हैं अथवा गईबहोर कही जो बस्तुरही है पुनि जातरही हैसो कवनिबस्तु जातरही है अपनो स्वरूप निर्मल शुद्ध एकरस अखण्ड नित्य सो अपने अज्ञान ते भूलिगयो है सोई स्वरूप अज्ञान दूरिकरिकैबहोरिदेते हैं ऐसे श्रीरामचन्द्र गईबहोर हैं जो बिधाता कहै कि मैं तो

हितलागी परमकृपालुप्रणतअनुरागी ४१ जेहिजनपरममताअतिछोहू तेहिकरुणाकरिकीन्हनकोहू ४२ गईबहोरगरीबनेवाजू सरलसबलसाहेबरघुराजू ४३ बुधबरणहिंहरियशअसजानी करहिंपुनीतसफलनिजबानी ४४ तेहिबलमैंरघुपतिगुणगाथा करिहौंनाइरामपदमाथा ४५ मुनिनप्रथमहरिकीरतिगाई तेहिंमगचलतसुगममोहिंभाई ४६ ॥ दो० ॥ अतिअपारजेसरितबरजोनृप

लिखबै नहींकिया तुम क्यों देतेहौ अरु जो काम क्रोध लोभ इत्यादिकअनेक भट हैं अपनो स्वरूप के प्राप्तहोत संते बाधाकरैं तो ब्रह्मादिक देवता अरु मायासहित परिवार तिनसबन को तिरस्कार करिकै अपनीतत्त्व श्रीरामचन्द्र देते हैं जापर करुणाकरहि काहेते सबलहैं सबके ऊपर बर्त्तमान है सरल स्वभावही सबके साहेब हैं ऐसे रघुराय हैं ( ४३ ) तातेबुधजन कबिजन हरिको यशही बर्णतेहैं काहेते गईबहोर जानिकै अरुअपनी बाणीको पुनीतकहे पवित्र अरु सफल करतेहैं ( ४४ ) ताते गईबहोर श्रीरामचन्द्रजी को जानिकै तेहीबल ते मैं श्रीरघुबर के गुणनके गाथाबरणौं श्रीरघुनाथजी के पद पंकज में माथनाय कै श्रीरघुनाथजी गईबहोरहैंमेरो मनोऽर्थ पूर्णकरहिंगे जरूर ( ४५ ) अरु मुनिन श्रीरामचन्द्रकी कीर्त्ति प्रथमगाइराख्यो है तेहि मार्ग में मोको चलत सुगम भावत है ( ४६ ) दोहार्थ ॥ जैसे कोई अपार नदीहै तामें हाथी नहीं पार जाइसकैहै तामें कोई राजा सेतबांधत भयो तापर चढ़िकै चींटीपार होइजाती है बिनाश्रमही ( ४७ ) इतिश्री रामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वन्सने बालकाण्डे निजनीचानुसंधान श्रीरामकृपा बर्णनंनाम पंचमस्तरंगः ५ ॥ :: :: :: :: :: :: :: :: :: :: ::
दोहा षट्तरंगमुनिबन्दिकवि अभिनिवेशमनकीन रामचरणसबमिलि कृपा करहुजोमोहिं लखिदीन ६ जो महामुनीशन हरिकै कीर्तिगायी है सोई बल आपने मनको दिखाइकै श्रीरघुपति कै कथा शोभायमान् करिहौं ( १ ) श्रीबेदब्यासादि जे पुङ्गवकही श्रेष्ठ कबि नानाकहे अनेक जिन आगेही भविष्य हरिके चरित बखाने हैं ( २ ) तिनसबन के पद पंकजबन्दौं मेरे मनोऽर्थ पुरबाहु ( ३ ) पुनि कलि के कविनको बन्दौं जिन श्री रामचन्द्र के गुणनके ग्रामबरणेउ है संस्कृत करिकै ( ४ ) अरु जो प्राकृति कविहैं परम सयाने जिन श्रीरामचरित भाषाकरिकै बरणेहुहै ( ५ )

सेतुकराहिं चढ़िपिपीलिकापरमलघुबिनुश्रमपारहिंजाहि ॥४७॥ * * * * * * *

चौ०॥ यहिप्रकारबलमनहिंदेखाईकरिहौंरघुपतिकथासुहाई १ ब्यासआदिकबिपुंगवनाना जिनसादरहरिचरितबखाना २ चरणकमलबंदौंतिनकेरे पुरवहुसकलमनोरथमेरे ३ कलिकेकबिनकरौंपरणामा जिनबरणेरघुपतिगुणाग्रामा ४ जेप्राकृतकबिपरम सयाने भाषाजिनहरिचरितबखाने ५ भयेजेहहिंजेहोइहहिंआगे प्रणवौंसबहिंकपटछलत्यागे ६ होहुप्रसन्नदेहुबरदानू साधु

जे कवि भूत भविष्य वर्त्तमान भविष्य जे होहिंगे श्रीरामचरित के बक्तातिन सबनको कपट छल छोड़िकै बन्दौं कपटकही श्रीरामचन्द्र गुरु राम भक्त तिनको अवराधन करतेहैं अरु अन्तष्करण में और भेद भरोस कछुराखै कोई देवता को कोई धर्मको कोई कर्मको भरोस किन्तु लोक में मानबड़ाई मर्यादा इत्यादिक की बासना औरेबको

धर्म कर्म मर्याद बचनकपटिडारै अपने बचन ते खण्डनकरै ताको कपट कही अरु लोकमें जो काहूसों भेदकरिकै फेरफार करिदेय सोभी कपट है अरु जो भगवत् यशको प्रबन्ध गान करिकै लोक में पुजायबे की बासनाकरै ताको छलकही अरु लोकमें जो अपने बचनकरिकै औरको ब्यामोहित करै किन्तु सुन्दरबचनकहै अरु अन्तष्करणमें वाको बिघ्नताकै किन्तु निन्दाकरै ताको छलकही ( ६ ) समस्त कपट छल छोंड़ि बन्दौं किन्तु श्रीरामचन्द्र के चरितके जे कवि हैं ते सदा कपट छल त्यागे है ते सबमिलिकै प्रसन्न ते बरदेहु जामें मेरीबाणी सन्तसभा में आदरहोइ इहां काब्य के यश की बासना नहीं है जेहि तत्त्व को सन्तन के आदरहोइ सो मेरीबाणी में आवै सो बरदेहु ( ७ ) जो प्रबन्ध बुधजन नाहीं आदरकरैं सो बाल बुधिकवि है तिनको श्रममात्र है उनकी काब्य बालक को ऐसोखेल है बुध कही पण्डित जाको अनात्मा आत्मा परमात्मा को ज्ञान यथार्थ होइ समदर्शीहोइ ताको पण्डित कही ( ८ ) कीर्ति जो सबकोई सराहै भणित कही बाणी जो सबको प्रियलागै काहूको बिरोध न आवै अरु बिभूति जो धन जो सबके कामआवै सोई सब भलोहै जैसे गङ्गाजीहैं नीच ऊंच ज्ञानी अज्ञानी पापी पुण्यात्मा सबको हितकरैहै जो कीर्ति भणितबिभूति सबको हितकारी न होइ तौ कर्मनाशा समान है ( ९ ) श्रीरामचन्द्र कै कीर्ति सुष्टनाम उत्तम है अरु मेरी बाणी भदेसहै ताते मेरे मनमें असमंजस है काहेते श्रीरामचन्द्र की कीर्तियोग्य मेरी बाणीहोइ तौ यह आश्चर्य है ताते मेरेमन में असमंजस नाम सन्देह है अंदेशा नामचिन्ता है कि जो सन्तजन मेरीबाणी को न ग्रहणकरैं तौ बिना प्रबन्ध

**समाजभणितसनमानू ७ जोप्रबंधबुधनहिंआदरहीं सोश्रमबादिबालकबिकरहीं ८ कीरतिभणितभूतिभलिसोई सुरसरिसमसब करहितहोई ९ रामसुकीरतिभणितभदेशा असमंजसअसमोहिंअंदेशा १० तुम्हरीकृपासुलभसबमोरे सियनिसोहावनिटाट पटोरे ११ करहुअनुग्रहअसजियजानी बिमलयशहिअनुहरैसुबानी १२ ॥ दो० ॥ सरलकबितकीरतिबिमल सोआदरहिंसुजान**

किहे भल है पर मोसे बिनाकिहे नहीं रहाजाइ है ( १० ) अब कछुकब्यंग्य में लाड़ जनावतेहैं हे सन्तजनहु श्रीराम कीर्ति योग्य मेरी बाणी नहींहै पर तुम्हारी कृपा ते मोको सबप्रकार सुलभ है काहेते कि जोसुन्दर रेशमहै ताकरिकै जो टाटको बनाइकै सियाजाइ तौ टाटहू शोभा पावतहै तैसे मेरीबाणी तौ टाटहीरूपहै पर रामयश सुन्दर रेशमहै तातेसियतहीं तुम्हारी कृपाते शोभितहोइगी ( ११ ) हे सन्तजनहु जो अपने जियमें जानौ कि जो यह तुलसीदास है सो बड़ो अनारी है देखौ तौ सुन्दर पाट टाट में सियतहै जो आपनजानिकै यह नहीं नीकलागै तौ अनुग्रहकरिकै पाटके अनुहारि पटदेहु श्रीरामयश बिमल अनुहरित मेरीबाणीहोइ ( १२ ) दोहार्थ ॥ सरल कबितहोइ अरु कीर्ति बिमल केवल श्रीरामयश परै सो कबित्त सुजान आदर करतेहैं अरु जे बैरीहैं तेऊ सहजहि वैर बिसारिकै बखानकरते हैं आदरकरतेहैं सरल कबित काकोकही जा कबित में बहुधा द्युत्तअक्षरपरै कठिन अक्षर न परै मात्राबरण चारिहूचरणमें बराबरिपरै अर्थसरलहोइ आशय बहुतहोइ बहुधा धुनि अवरेव परै जाकबित में जीभ रसपावै ताको सरलकही पुनि काव्य में कठिनअक्षर अर्थपरै है अरु जेहिके बाचबे सुनबेवारेजे हैं तिनको अर्थ नहीं भाष्योहै ते बैरी दूषण करतेहैं अरु ईर्षावारे अरु असत्कबि अरु मतबादवारे ते रिपुखण्डन करते हैं ताते कठिन अक्षर अर्थ नहीं परै अरु किसूकेमतमें विरोधनहींपरै केवल श्रीरामयशपरै सो काव्य अदूष अखंडित है ताको सब बखानतेहैं ( १३ ) आदर करतेहैं एते जे सहज बैरी रिपुहैं तेऊ ग्रहण करतेहैं सो बिना विमलमति ऐसोकवित्त नहींबनै अरुमेरीमति थोरी है जो सन्तजन कृपाकरहु तो श्रीरामयश कहौं बारबार निहारतहौं ( १४ ) कबि कोबिदजे हैं श्रीरामयश मानसरहै ताहीं में जिनके मंजु हंसवत् बिहरतहैं ते तुम सब मेरी बालबिनय सुनिकै मेरी सुरुचि देखिकै कृपाकरहु काहेते तुमकृपा के स्थान हौ ( १५ ) ॥ सो० ॥ बन्दौंमुनिपद बन्दना नमस्कार दण्डवत प्रणाम एकहीहै तामें तीनिभेद

**सहजबैरबिसराइरिपु जोसुनिकरहिंबखान १३ सोनहोइबिनुबिमलमति मोहिंमतिबलअतिथोरि करहुकृपाहरियशकहौं पुनि पुनिसबहिंनिहोरि १४ कबिकोबिदरघुबरचरित मानसमंजुमराल बालबिनयसुनिसुरुचिलखि मोपरहोहुकृपाल १५॥ सो० ॥ बंदौं**

हैं एक सहजैहै जैसे कोई अपनो सम्बन्धी है किन्तु मिलापी है चलतेबैठते बन्दना करिलियो अरु दूजोबचन अभिवेष है जैसे कोई अपनेते बड़ोहै राजा इत्यादिक ताके प्रणामकरत सन्ते राजा को प्रताप ऐश्वर्यबाणीमें अभिनिवेश आइजात है अरु तीसरो स्वरूप अभिनिवेश बंदना है जैसे गुरुहैं किन्तु अपनो इष्टहै तिनके नमस्कार करत सन्ते तिनकोस्वरूप प्रताप ऐश्वर्य सेवा मनबचन कर्म में अभिनिवेश होत है ताते गुसाईं तुलसीदासजी स्वरूपाभिनिवेश बन्दना करतेहैं जाते मुनिबाक्य श्रीमद्रामायण स्वरूप हृदय में प्रवेशकरै अब श्लेखालंकार करिकै सोरठाको अर्थ करते हैं ॥ सोरठार्थ ॥ बन्दौं मुनिपद कंज कौनमुनि जिननेश्रीमद्रामायण निर्मितकीन है नाम श्रीबाल्मीकिजी इहां चरणको बिशेषण नहीं है श्रीमद्रामायण को विशेषण है बाल्मीकि जो श्रीमद्रामायणकीन्ह सो रामायण कैसी है सखर खर दूषण नाम जे राक्षस तिनसंयुक्त है पुनि सकोमल है मंजु है दोषरहितहै ॥श्लोक॥ नमस्तस्मैकृतायेनपुण्यारामायणीकथा सदूषणापिनिर्दोषा सखरापिसुकोमला १ जो कोई कहै कि रामायण जो है अमित तासु सर्ब में खरदूषण की कथाहै यामेंबाल्मीकि की अधिकता का भई तहां मुनि कबिन के बाल्मीकि श्रेष्ठ हैं आदिकबि हैं श्रीमद्रामायण के आचार्य हैं ताते कहा किन्तु जिन जिनमुनिन श्रीमद्रामायण कीन्ह है तिनसबन के पद बन्दौं पुनि दूसरा अर्थ करते हैं काब्यनविषे दोष दूषणपरे बिनु नहींरहै दोष ही जो मनभरिबस्तुहोइ ताको सेरभरिबरणै कबि ताको दोषकही अरु दूषणकही सुन्दर गणनपरै अगनपरै पुनि उपमेय उपमान की उपमादेत संते बिरोधपरैअथवारस न आवै जैसे कोऊकहै कि ये सन्तकैसे हैं जैसे इन्द्रहैं यहधर्म बिरोध उपमा है सो दूषणकही अरु कोई कबि ने भगवान् के कर चरणकी ललामीजो है सो बानरके चूतर की उपमादीन है यह रसास्वाद दूषणभयो इत्यादिक अनेक दोष दूषण हे थोरा बहुत दोष दूषण बिनाकाव्य होतईनहीं जो कहौं कि बाल्मीकि कृत श्रीमद्रामायण महाकाव्य है तौ याहूमें दोष दूषणहोइगो सो सही है महामुनि कृत रामायणमें खरनाम राक्षस जो है खर ऐसोनाम सोई दोषहै काहेते खरनाम गदहा को है ताते दोषकही अरु खरको भाई दूषणनाम सोई दूषण है ताते खर दूषण नाम जो रामायणमें है सोईनाम मात्रशेष दूषणहै नतु श्रीमद्रामायण दोषरहितहै सहित दूषण दोषरहित है काहेते बाल्मीकिजू उपमेयउपमान धर्मबाचक यथार्थ कहेहैं ताते दोष दूषण रहितहै ताही ते सकोमल कहा पुनि मंजुकही पुनि तीसरअर्थसखरसकोमल मंजु सखरनामउदारको उदारकही जो जवनैमांगे सोईदेइ जैसे कोई कल्पबृक्ष तरगयो अनेक उत्तम पदार्थ की बासनाभई सो दियो पुनि भयकरिकै सिंहकी बासनाभई तब सिंह प्राप्तभयो मारिडारेउ तहां कल्पतरु उदार तो भयो पर कठोर उदारता कोमल उदारता दोनों उसमेंहैं अरु दोनों फलदियोतैसे उदार श्रीमद्रामायणनहीं है सखरनाम उदार सकोमल उदार है मंजुनाम उज्ज्वल फलदाताहै दोष दूषण रहित उदारता श्रीमद्रामायणहै जो कहौ कि जो कोई रामायण सुनैं कहै अरु अर्थ धर्म कामकी बासना करै तो देइ किनदेइ नतुदेइ पुनि उसमें तौ दोष दूषण भरे हैं ये तीनों विषयमय हैं ताते मलिन है बन्धनरूप है ताते दोषमय है कठोर है अरु तीनिहूं में हर्ष शोक इत्यादि दूषण हैं सो सत्य है पर तहां मंजुकहेनिर्मल अर्थ धर्म काम देतहै श्रीराम सम्बन्ध तीनों दिब्यरूप देतहै दोष दूषण रहित तीनोंफल दिब्यभोग भगवत् सम्बन्ध में कराइकै तदुपरान्त वाही तनुमें परमपद देत है ऐसो उदार रामायण है यहप्रसिद्धहै प्रमाण उत्तरकाण्डे जेसकामनरसुनहिजे गावहिं सुखसम्पति नानाविधिपावहिं सुरदुर्लभसुखकरिजगमाहीं अन्तकाल रघुपतिपुरजाहीं ॥ पुनि चौथअर्थ ॥ पुनि श्रीमद्रामायण कैसो है सखरकहे सखररसहै जेहिबिषे सखके आगेजो रकारहै सो दीपदेहरी अक्षर जानब पूर्बापर दूनोंअर्थ प्रकाश करतु हैं ताते सखररस सखरकहे बहुत केवल रसमय फलहै जैसे सहतूत इत्यादिक फल बिनागुठुली बकला को फलहै काहेते कि केवल श्रीसीताराम चरितै है अरु अपर जो श्रुति स्मृति पुराण इतिहास महाभारतादिक तेसबबकला बीजरस संयुक्तफल है काहेते कि कर्मकाण्ड ज्ञानकाण्ड भक्तिकाण्ड तीनिउ मिश्रित सबग्रन्थ है कर्म छिलकास्थाने ज्ञान गुठुलीस्थाने भक्तिरसस्थाने भक्तिनवधा प्रेमापरामय श्रीमद्रामायणहै केवल भक्तिरस रूप रामायण है पुनि रस दुइप्रकार के हैं एक कोमल एककठोर जैसेपक्वफल सहतूत सेव इत्यादि बाल युवा बृद्ध सबके खाबेमें आवै है अरु नारिअर की गरी कठोररसमय है जाके दांतहोइ सो चाबै यह दृष्टान्तहैअब द्राष्टान्त कहते हैं भक्ति तीनिप्रकार की है एककर्म मिश्राभक्ति एक ज्ञानमिश्रा भक्ति एक केवल भक्ति प्रेमा पराकर्म मिश्राज्ञान मिश्रा भक्तिकठोररस गरीतुल्य है सबते न सधै अरु केवल भक्ति सबको अधिकार है केवल राम नाम कहना रामाश्रय रहना

श्रीमद्रामायण बिचार अहर्निश करना अपर सर्बत्याग सो भक्ति सबको सुलभ है ताते सकोमल कहा पुनि मंजुकहे उज्ज्वलहै अपरग्रन्थ में तीनिगुण अपरदेव मिश्रितभक्तिरस है रामायण त्रिगुणातीत अरु अपरदेव रहित भक्तिरस है श्री रामभक्ति स्वतन्त्रा है स्वतः सिद्धि है तेहिमें श्रीमद्रामायण है सत्सभामें रहतु है केवल श्रीरामलीला रामनाम रामरूप रामधाममय रामायण है ताते मंजुकहा पुनि दोष दूषणरहितहै कर्म ज्ञान रहितहै अथवा कोई अपर ग्रन्थपढ़ै जो अशुद्ध पाठकरै तो दोषहै औ जो अर्थ न करतबनै तो दूषण है अरु श्रीमद्रामायण पाठकरत अर्थ कहत सुनत चाहै बनैचाहै न बनै तामें एकअक्षर मोक्षदाता है ताते दोष दूषण रहित है एक अक्षर उच्चारणमात्र करत सन्ते महापाप नाशहोत हैं एकपाप एक महापाप पापकही गऊ बालक बृद्ध स्त्री ब्राह्मण इत्यादिकन को बध सो पाप है काहते तीर्थ व्रत दानतप यज्ञादिक किये ते पाप नाश होते हैं सो पापकही अरु महापापकही जन्म मरण सो नहींमिटै जो कोटिनकर्मकरै अरु जो शतकोटि अपर अनन्त कोटि ऐसो जो रामायणहै जो तामें एकअक्षरउच्चारणकरै कोईहोइ तो जन्म मरण जो महापाप सो नाशहैकै परमगति को प्राप्तिहोइ है तहां प्रमाण प्रसिद्ध श्लोकएक चरितंरघुनाथस्य शतकोटिप्रबिस्तरं एकैकमक्षरंपुंसांमहापातकनाशनं १ अरु ऐसो कोई ग्रन्थ में नहीं कहा कि एक अक्षर उच्चारण किये ते महापाप जो है जन्ममरण सोनाशहोइजाइ अरु श्रीमद्रामायण के एकअक्षर उच्चारण किये ते मोक्ष होत है अरु श्रीभगवद्गीतामें कहाहै एकअक्षर जो उच्चारण अन्तकालमेंहोइ अरु भगवत् स्मरणकरै तो मोक्षहोय श्लोक॥ ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् यःप्रयातित्यजन्देहं सयातिपरमांगतिं तातेयहजानिये कि श्रीमद्रामायण अमित जोहै ताके एक एकअक्षरओंकारहूतेअधिककहैताते रामायण केवल रसरूपही है जाते मोक्षके हेतु दूसरेअक्षरकी अरुस्मरणकी सहाइ नहींलेतुहै ताते रसमय है पुनि पंचमअर्थ करते हैं सखरससख नाम दूधको है श्लोकार्द्ध सखक्षीरः पयोदुग्धंगोरसंसर्पिहेतुकंइति बिश्वकोषेसख जो दूध ताको रस माखनतद्वत्सकोमलपुनि मंजु है पुनि माखन दुइप्रकारकोहै एक गऊकोहै अरु एक अजानामबकरी इत्यादिक तामसी योनि को माखन सो दोष दूषणयुक्तहै काहेतेअल्पछाछ मिश्रित है सो दूषण है अरु भले आदमीके खाबेयोग्य नहींहै सो दोष है अरु गाई को माखन सबके खाबे में आवैहै ताते दोषरहितहै पर थोरीछाछ मिला है ताते दूषण है जो उहै माखन बनायबे में आयो तो अति कोमल अतिमंजु दोष दूषण रहितभयो गऊको बनायो माखन तद्वत् श्रीमद्रामायण है कामधेनुरूप ब्रह्मा हैं चारिउ मुखस्तन हैंचारिहूमुख ते चारिहूवेद प्रकटे सो दूधरूप हैं सनकादिक बत्स हैं श्रीरामचरित माखनरूप बनावने

**मुनिपदकंज रामायणजिननिर्मयो सखरसकोमलमंजु दोषरहितदूषणसहित १६ बंदौंचारिउवेदभवबारिदबोहितसरिस जिनहिं।**

हार श्रीबाल्मीकिहैं कर्म छाछनिकारि डारेउहैताते श्रीमद्रामायण शुद्ध शुक्ल कोमल माखनहैखानेवारे सन्तजन जातेसदा एकरस शीतलहैंश्लोक एक ॥ स्वयम्भुःकामधेनुश्च स्तनश्चचतुरानन वेददुग्धामलंशुक्लं रामायणरसोद्भवं इतिस्कन्धे पुनि छठवांअर्थ सखश्रीसकही सम्यक्प्रकार सम्पूर्णरसकोमलमञ्जु है खनाम आकाशतद्वत् निर्मल किन्तु आकाशवत् ब्रह्मरसमय सकोमलनाम दयालु मञ्जुलनामनिर्मल त्रैगुण्यरहित दोषदूषणरहित ऐसो जो ब्रह्म तदात्मक रामायण है पुनि सप्तमअर्थ सखसखकहेसख्यरस शृंगाररसमय है रामायण काहेते श्रीरामचन्द्र सबकोसखाकीन्है है कोलभिल्ल वानर रीछ राक्षस चराचर जाको श्रीरामचन्द्रदेखे जिननेश्रीरामचन्द्रको देखे तिनसबको सखाकीन्है पर निर्हेतुक सकोमल ऐसे कोमलहैं श्रीरामचन्द्र अरु सबको कोमलकरिदीन सबकी कठोरताछूटिगई ॥ श्रीअयोध्याकांडेचौ० ॥ जासुनिरखिमगसांपिनिबीछी। तजेउसहजविषतामसतीछी ॥ पुनि कोई एकहूबार रामशरणभयो अरु जाकोआपनकहा ताको दोषदूषण नहींदेखतेहैं ताते दोषदूषणरहितहै वाल्मीकीयेश्लोकत्रये मित्रभावेनसंप्राप्तं नत्यजेयं कथंचन दोषोयद्यपितस्यस्यात्सतामेतदगर्हितं १ स्कन्धे॥ सकृदुच्चरितंयेन रामायणमनुत्तमं भस्मीभवं तुपापौघाः हृदिरामस्तुतद्रवात् २ श्रीमद्रामायणस्यैव श्रवणात्कीर्त्तनाच्छिवे सद्यःपुनातिवैसर्वे चिरकालंतथान्यतः ॥ इत्यर्थः॥ ( १६ ) पुनि चारिउवेदवंदौं भवबारिधकहे समुद्र ताके पारजावेको बोहितकहीजहाजरूप वेदहैं जवनीरीति रघुबीरको विशदयश देव बरणतेहैं तैसेही वेदकी वाणी पर आरूढ़होइके श्रीरामचन्द्रकोभजै ताको स्वप्नेहु खेदनहींहै ताकोसंसारसागरते वेदपारकरिदेतेहैं ताते

वेद जोहैं संसारसागर के जहाजहैं अथवा श्रीरामयश विशदवेद बरणते हैं ताते वेदनको स्वप्नेहुखेदनहीं है पुनि बिधिपदरेणु बन्दौं जिनने संसारसागरकीन्ह सागरमें तो चौदहरत्न निकसेहैं तामें कछुनीकहैं कछु ब्यकाररूपहैं संसारसागरमें संतजन सुधाशशिधेनुइत्यादिक उत्तमपदार्थप्रकटेहैं अरु खलजन विष मदिरा

**नसपनेहुखेद बरणतरघुपतिबिशदयश १७ बन्दौंबिधिपदरेणु भवसागरजिनकीन्हयह सन्तसुधाशशिधेनु प्रकटेखलबिष बारुणी १८ ॥ दो० ॥ बिबुधबिप्रबुधग्रहचरण बंदिकहौंकरजोरि होइप्रसन्नपुरवहुसकल मंजुमनोरथमोरि १९॥ चौ० ॥ पुनिबन्दौंशारदसुरसरिता युगुलपुनीतमनोहरचरिता २० मज्जनपानपापहरएका कहतसुनतएकहरअबिबेका २१ गुरपितुमातु महेशभवानी प्रणवोंदीनबन्धुदिनदानी २२ सेवकस्वामिसखासियपीके हितनिरुपधिसबबिधितुलसीके २३ कलिबिलोकिजग**

इत्यादिक ब्यकार प्रकटे हैं ॥ ( १८ ) दोहार्थ ॥ पुनि बिबुध जो देवता विप्रबुध पंडित ग्रह जो हैं नौ सबके चरण कर जोरिकै बन्दौं मेरो सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण करहु ( १९ ) पुनि शारद सुरसरिता बन्दौं दोनोंके पुनीतचरितहैं ( २० ) गंगास्नान पानते पापहरैहै शारदा कहत सुनत अबिबेकहरै है ( २१ ) गुरुरूप शिक्षाकरिबे को पितुमातुरूप दीननकेप्रियबन्धुहैं दिनकहेउत्तमकालके दाताहैं ते महेश भवानी द्वौ बन्दौं ( २२ ) पुनि सिय पिय के सेवकहैं स्वामीहैं सखाहैं सदातौंसेवकैहैं अरु जब श्रीरामचन्द्र नरनाट्यलीला करतेहैं तब रामरुचिते स्वामीहोइ पुजावतेहैं श्रीरामचन्द्र अपने अंशभूत ब्रह्मा विष्णु शिवहैं तहां सखाहैं पुनि दूसरअर्थ अवरेवते स्वामीसियपीय के सेवकसखा दोनों हैं अरु गुसाईंकहतेहैं कि इस प्रकार मेरे हित निरूपाधि करिबेको एकप्रिय महादेवई हैं ( २३ ) शिव बड़े दयालुहैं यह कलिकाल दुःखमय बिलोकिकै जगत्के हित हेतु शिव पार्बतीजी सावरमन्त्र उत्पन्न कीन्ह ( २४ ) अनमिल अक्षर हैं जामें एकौअक्षरनकी मइत्री नहींमिलै अरु कोईअर्थ भी नहीं है न कोई जाप्यहै न कोई पुरश्चरण है केवल महेश प्रताप ते तेहिमन्त्र ते भूत पिशाचादि राक्षसदेवमाया सर्बसिंह मन्त्र तन्त्र इत्यादिक अनेक शन्ति होते हैं ( २५ ) सो महेश मेरेऊपर अनुकूल हैं ताते मुदमंगलमूल कथा करतहौं किंतु अनुकूल होहिं ( २६ ) सुमिरि शिवा जोहैं पार्बती अरु शिव तिनके पदको पसाउ जो प्रसाद सो पाइकै अथवा शिवाशिव को सुमिरिकै पसाउ जोप्रसन्नता प्रसादपाइकै बरणौं रामचरित चितचाउकहे उत्सव संयुक्त पुनि चाउ चाह संयुक्त ( २७ ) भणित मोरि शिवजूकी कृपाते बिभातिनामशोभित है किमि जिमि शशि समाज नक्षत्रन संयुक्त शशि जो पूर्णमासी को तेहिमिलिकै जैसे रात्रीशोभित है ( २८ ) जो प्राणी यह रामचरित को सनेह समेत कहि हैं सुनि हैं समुझिहैं सवेतहैंकै ( २९ ) ते

**हितहरगिरजा सावरमंत्रजालजिनसिरजा २४ अनमिलअक्षरअर्थनजापू प्रकटतभावमहेशप्रतापू २५ सोमहेशमोपरअनुकूला करौंकथामुदमंगलमूला २६ सुमिरिशिवासियपायपसाऊ वरणौंरामचरितचितचाऊ २७ भणितमोरिशिवकृपाबिभाती शशिसमाजमिलिमनहुसुराती २८ जोयेहिकथहिंसनेहसमेता कहिहहिंसुनिहहिंसमुझिसचेता २९ होइहैंरामचरणअनुरागीकलि मलरहितसुमंगलभागी ३० ॥दो०॥ सपनेहुंसाचेहुमोहिंपर जोहरगौरिपसाउ तौफुरहोइजोकहउंसब भाषाभणितप्रभाउ ३१॥ चौ० ॥ बंदौंअवधपुरीअतिपावनिसरयूसरिकलिकलुषनशावनि ३२ प्रणवौंपुरनरनारिबहोरीममता जिनपरप्रभुहिनथोरी ३३ सियनिं**

श्रीरामचरणके अनुरागी होहिंगे अवशिकै अरु कलिके सम्पूर्ण मलते रहित होहिंगे यह ध्रुव है ( ३० ) दोहार्थ ॥ जाग्रतहू सपनेहू में जो हर गौरिकी सांची प्रसन्नता मेरे ऊपरहोइ तौ जो मेरे मुखते बाणीनिकसैताको प्रभाव सत्यहोइ ( ३१ ) बन्दौं श्रीअयोध्यापुरी अतिशय पावनि पवित्र एकपवित्र एकअति पवित्र तामस राजस गुणरहित

केवल सात्विक गुणयुक्त जो पदार्थ ताको पावनकही और काल कर्म गुण सुभावरहित गुणातीत ताको अति पावन कही ऐसी श्रीअयोध्या सरयू है ताते अतिपावनिकहा या दोउन के स्मरणमात्र ते सम्पूर्ण कलिमल नाशहोइ हैं ( ३२ ) बहुरि पुर नरनारि प्रणवौं जिनपर श्रीरामचन्द्र कै अति ममत्वहै ( ३३ ) श्री सीताजूकैनिन्दा अघ औघनाम समूह सो मिटाइकै बिशोक नाम अखण्ड कालरहित एकरस ऐसो लोक में बासदीन्ह अपनो स्वरूप बनाइकै जब सहित श्रीअयोध्या पर अयोध्याको गमनकीन तब अथवा बिशोक कही कालरहित ऐसोलोक अपनी इच्छा ते बनाइकै जालोक में रावण के परिवार को मोक्षदीन्ह ताहीलोक में सियनिन्दक जो धोबी ता लोक में बासदीन्ह जब श्रीरामचन्द्र लंका जीतिआये तब आधीराति सेवकन को आज्ञादीन देखो तौ पुरीमें का बार्त्ताहोतीहै तहां सब श्रीरामचन्द्र की बिजय उदार कृपादिक यश गावतेहैं तहां एक धोबी अपनी पत्नीसे श्रीजानकीजीकी कछु लघुताकहेउ सो पापको समूह ताको मेटिकै बिशोकमें बसायो कौन बिशोकलोक है श्रीअयोध्या बृजापार सोअयोध्या के दक्षिणद्वार सांतानकपुर हैं ताको बन संज्ञा है जैसे अयोध्या प्रमोदबन है पुनि बृन्दाबन काशी आनन्दबन प्रयाग बद्रीबन ऐसेही सबपुरिनकी बनसंज्ञा है तैसे सांतानकबन जो है सो अयोध्यै है तहां वास दीन्ह ऐसे श्रीरामचन्द्रहैं तहां भार्गवपुराणे नारायणबाक्यं नरंप्रतिश्लोकत्रये ॥ इदमेवपुराप्रष्णा बैकुण्ठनगरेहरिं सर्बेश्वरीजगन्माता पद्माच्छ्कमलालया:१ त्रिपाद्विभूतिवैकुण्ठे विरजायापरेतटे यादेवानांपुरायोध्या ह्यमृतेतांमृतांपुरी २ पुनिसदाशिवसंहितायां ॥ सांकेतदक्षिणद्वार हनुमद्रामवत्सल

**दकअघओघनशाये लोकबिशोकबनाइबसाये ३४ बंदौंकौशल्यादिशिप्राची कीरतिजासुसकलजगमाची ३५ जहँप्रकटेरघुपति शशिचारू विश्वसुखदखलकमलतुषारू ३६ दशरथराउसहितसबरानी सुकृतिसुमूरतिमंगलखानी ३७ करौंप्रणामकर्ममनवानी**

यत्रसन्तानकंनाम बनंदिव्यंहरे:प्रियं ३ अरु जो कोई कहतेहैं कि सत्यलोक जो ब्रह्माको है तापर संतानकलोक श्रीरामाज्ञा ते ब्रह्मै निर्माण कीन्ह है तहां श्रीआयोध्या बासिन को बासदीन्ह है पुनि ब्रह्मा के संग इनकीमोक्षहोइगी सो यह सामान्य बाक्य है परमार्थिक नहीं है काहेते श्रीअयोध्याबासी श्रीरामचन्द्र के नित्यपार्षद हैं क्षणभरि नहीं छोड़ते हैं जोकहो कि श्रीरामचन्द्र के संगबन में क्यों न गये तहां रामानुकूल हैं अरु इहां नैमिल्यलीला प्रकरण में क्षणमात्र अयोध्या नहींछोड़ते हैं अन्यच्चप्रमाण श्लोकार्द्ध ॥ अयोध्याचपरित्यज्य पादमेकंनतिष्ठति साकेतनाम श्रीअयोध्या ( ३४ ) बन्दौं कौशल्या प्राचीदिशा नाम पूर्बदिशाइव जाकीकीर्त्ति सकल जगमें छाइरही है ( ३५ ) श्रीरामचन्द्र पूर्णचन्द्र सदा एक रसते प्रकटे कमलइवखल तिनको पालारूपह्वैकै नाशकियो सम्पूर्णविश्वके सुखदाता भये पर कौमुदीनाम चकोर सन्तजन तीनिको विशेषसुख देतेभये ( ३६ ) अब श्रीदशरथमहाराज सहित रनिवासकैसे हैं राजारानीसकल सुकृत की मूर्त्तिहैं मंगल मोदकी खानिहैं ( ३७ ) तिनको प्रणाम करौं मनवचनकर्मते मेरऊपर कृपाकरहु आपके पुत्र तिनको सेवकमोको जानिकै सुतसेवक क्योंकहा पुत्रको टहलू मातापिताको बहुतप्रियहोत है ( ३८ ) कैसेहैं श्रीदशरथ कौशल्याजी जिनकोबिरचिकै नामउपजाइकै ब्रह्माबड़ाईको प्राप्तभयोहै काहेतेकि बड़ाई कीर्ति सुयश भुक्तिमुक्ति भक्ति इत्यादिकनकी महिमा ताकी अवधि नाम मर्याद श्रीरामचन्द्र हैं पुनि परब्रह्म हैं जाको नारद शुक सनकादि ब्रह्मा शिवादिकध्यावतेहैं अहर्निश ते दशरथकेपुत्र पुनि ब्रह्माके पुत्रमनु सत्यरूपा सोईदशरथ कौशल्यारूपहैं तेब्रह्माके उपजायेहैं ऐसे दशरथ कौशल्याजीनेश्रीरामचन्द्रको पुत्रकीन्ह कैसेहैं श्रीरामचन्द्रजू महिमाकी अवधिहैं पुनिमहिमाकही ब्रह्मजीवमायाआदि अन्त मध्य तिनसबनकै अवधिकही मर्याद श्रीरामचंद्रहैं ताते ब्रह्मा धन्यतमहैं ( ३९ ) सोरठार्थ:॥ राजादशरथको बन्दौं जिनको रामपरसत्यप्रेम श्रीरामचन्द्रकेबिरहमें रामरामधुनिकरतसन्ते महाराजदशरथजी तृणइवशरीरको त्यागिकै स्वर्गको प्राप्तभये तहां यह बड़ो आश्चर्यहै कि अन्तष्करणकेवृत्ति श्रीरामचन्द्र अरुबाणीमें रामरामधुनि अरु तेहीदशामें शरीरको त्याग अरु स्वर्गकी प्राप्तिभई मोक्ष नहींभई आश्चर्य है जो कोई कहै कि राजा सत्यवाक्यके धर्ममें बद्धभये ताते स्वर्ग भयो मोक्ष न भई यामेंतौ

**करहुकृपासुतसेवकजानी ३८ जिनहिंबिरचिबड़भयउबिधाता महिमाअवधिरामपितुमाता ३९ ॥ सो० ॥ बंदौंअवधभुवाल**

शास्त्रबिरोध भयो काहेते जाको जन्मभरि पापही करत बीत्योहै अरु अन्तकालमें कोई योगते भगवत्स्मरण होइ किन्तु नाम उच्चारणहोइ तब वह प्राणी मोक्षको प्राप्तहोत है यहसब शास्त्रकहत हैं श्रीभगवद्गीतायांश्लोकद्वै ॥ यंयंचापिस्मरन्भावं त्यजंत्येतेकलेवरंतंतमेवैतिकौंतेय सदातद्भावभावितः १ श्रीवाराहपुराणेशंकरवाक्यं ॥ दैवाच्छूकरसावकेननिहतोम्लेच्छोजराजर्ज्जरो हारामेतिहतोऽस्मिभूमिपतितो जल्पंस्तनुंसक्तवान् तीर्णोगोस्पदवद्भवार्णवमहोनाम्नःप्रभावात्पुनः किंचित्रंयदिरामनाम-रसिकास्तेयांतिरामास्पदं २ देखिये तो ऐसोनाम सुमिरण है अरु तहां महाराज श्रीदशरथजू रामनाम प्रीतिसंयुक्त कहतसंते श्रीराम स्वरूप मेंचित्तकैवृत्ति अखण्डलगी है अरु तेहीदशामें शरीरत्यागिदियोहै तहां बिचारिदेखो अंतकालमें रामनाम उच्चारस्मरण कैसहूहोइ अधर्म किन्तु धर्म किन्तु पाप पुण्यइत्यादिक करिकै नामको प्रतापमंद परिजाइ नहीं मोक्षदेइ सो ऐसो कोई श्रुतिस्मृति पुराण इत्यादिकनमें यहबातैं नहींहैं काहेते जो सुमेरहूते भारीअधम धर्महोइ तौ नामस्मरण भस्मकरिदेइ जैसे कोटिनमन बरूदहोइ अरुकहूं एकअग्निको कणपरै सो उड़ाइ देइहैं कहूं लेशहूमात्र नहीं रहै तैसे भगवान् को नामसुमिरण है अरु राजा श्रीदशरथ महाराज रामनामही सुमिरण किह्यो है ॥ दोहा ॥ रामरामकहि रामकहि रामरामकहिराम । रामबिरह तनत्यागिकै राउगयेसुरधाम अरु जो दशरथमहाराज को सत्यप्रियहोतो तौ बिश्वामित्र जब आये तब राजा अपनी इच्छाते हर्षिकै मुनि ते कह्यो कि जोई मांगहु सोई देउं तब मुनि श्रीरामचन्द्र को मांग्यो तब नाहीं करिगये तब बिहँसिकैबशिष्ठजी समुझावतेभये कि इनको बिवाह होइगो श्रीजनकपुरमें अरु ये दोनों कुमार सदा मुनिन के रक्षकहैं तब दशरथमहाराज हर्षिकै दीन्ह्यो है अरु जो कोई अन्धी अन्धा की शापको कहै तहां स्वर्ग को प्रयोजनै नहींहै शरीर छूटिबेको प्रयोजन है पर मिसुमात्र है काहेते कि राजाने पूर्बही श्रीरामचन्द्रजी से बर मांगिलियो है कि मेरो जीवन तुम्हारे आधीनहोइ तुम्हारे बिछुरत सन्ते मेरो शरीर छूटिजाइ जैसे मणि बिनुसर्प जलबिनु मीन यह प्रसिद्धहै प्रमाण ॥ मणिबिनुफणिजिमि जलबिनु मीना ममजीवनतिमि तुमहिंअधीना पुनि जो कोई कहै कि भरतजीकोराजा ने ननिआउर को पठैदियो तब श्रीरामचन्द्रको राज्यदेनेलगे ताते भागवतापराध भयो ताते सब उपद्रवभयो अरु राजा स्वर्ग को गये मोक्ष न भई तहां यहकहना नहीं सम्भव है काहेते इहां लीलाप्रकरण है तहांराजा के पुत्र हैं भरतजी अरु राजाकी आज्ञानुकूल हैं अरु सबप्रकारते निर्बासिकहैं भरतजी तहां अपराध कहां है अरु लौकिकमें राजा हैं राजा अपनो कार्य्य राजनीति से करते आये हैं अरु बैदिकमें दशरथ ऐसे भागवत हैं अपने भागवत धर्मसे सहित भरत लक्ष्मण शत्रुघ्न श्रीसीताराम जिनको सर्ब ध्यावते हैं तिनको पुत्रकीन्ह तहां अपराध कहांहै इहां भागवतापराध को प्रयोजनै नहीं है अरु राजा में बाक्य सत्यधर्म जो रोपण करै तौ बाल्मीकि में बिरोधपरै हैं अरु श्रीरामचन्द्र के संकल्प में विरोधपरैहै काहेते श्रीरामचन्द्र निजमुखकहा है बाल्मीकिमें कि जो कोई जीव होइ अरु एकहूबार भूलिहूकै मेरी शरणआवै बचनमात्र तौ मैं उसकेदोषदेखतैनहीं अनेकन तीनिहूंकाल के अरु अभय करिदेउँ सर्बभूत ते पांच तत्त्व तीनिहूं गुण काल कर्म सुभाउ इत्यादिक सर्ब ते अभय करिदेउं श्रीबाल्मीकीये श्लोक द्वै॥ मित्रभावेनसम्प्राप्य नत्यजेयंकथंचन दोषोयद्यपितस्यस्यात्सतामेतदगर्हितं १ सकृदेवप्रपन्नाय तवास्मीतिचयाचते अभयंसर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतंमम २ यह श्रीरामचन्द्र को संकल्पहै अरु राजा श्रीदशरथ महाराज श्रीरामहेतु त्रैलोक्य ब्रह्मा की बिभूति तेहि सबके राजा अरु ब्रह्मा के पुत्र हैं ताते ब्रह्मै सर्ब राज्यदीन सो त्यागिकै केते हजारनवर्ष तपकीन्ह भजनकीन्ह परमानन्य शरणागतभये उपाय शून्यअरु जीवनके कल्याण हेतु पुत्र बरमांग्यो राजा की भक्तिबशह्वैकै सर्बोपरि परब्रह्म श्रीरामचन्द्र पुत्रभये अरु तिन राजासे एक चूकपरिगई कोजानै कवनेयोग ते सत्यमें आरूढ़भये श्रीरामचन्द्रको छोड़िदीन तहां श्रीरामचन्द्र जो एकहू चूकनहीं माफकरैंगे तौ जो श्लोक कहिआयेसो कैसे सिद्धि होहिंगे अरु पुनि काहे को कोई जीव तरैगो काहेते कि जीवते सब अपराधही होतजाते हैं अरु श्रीरामचन्द्र को सत्य संकल्प है अभयंसर्वभूतेभ्यो तहां यह तौ तुमने सबकहा अब हम बूझते हैं राजा स्वर्ग को क्यों गये तहां यह अर्थ है राजा भागवत धर्म में बद्धभये काहे ते कि राजा वात्सल्य रसमें सदा रहे हैं पर कोई कोईसमय में शांतरस श्रीराम रक्षाते श्रीरामचन्द्रको परब्रह्मजान्योहै ॥ प्रमाणबालकांडे जाकरनामसुनतशुभहोई । मोरेगृहआयो प्रभुसोई पुनि श्रीअयोध्याकांडे चौपाई ॥ सुनहु ताततुमकहँमुनिकहहीं रामचराचरनायकअहहीं ताते महाराज श्रीदशरथजी यहजान्यो कि श्रीरामचन्द्र परमेश्वरहैं परमात्मा ब्रह्मसर्वोपरि सबके नियन्तासबकेस्वामीहैं स्वतंत्रहैंजाकीगति कोई नहीं

जानिसकै तेश्रीरामचन्द्र कैकेयी के बचन मिसु बनको चलाचाहते हैं परविशेष तहां अब मैं का करौं जो कहौं कि बनको न जाहु तौ उनका संकल्प भंग होइहै तौ मैंसर्वअधर्मको भाजन होउँगो अरुजो कहौं कि बनको जाहु तौ सन्तनकी सभा में महारूखा कठोर कहाऊंगो अरु श्रीरामचन्द्र के बिछुरत सन्ते मैं अपने प्राणको त्यागदेउँगो यह मेरो संकल्पहै ताते राजा ने शरीरत्याग अंगीकार करिकै कछुनहीं कह्यो न जाइकह्यो न रहै कह्यो अरु श्रीरामचन्द्रजी राजा को विवेक बैराग्य ज्ञानपरम अरु भागवतधर्म परम अरु स्नेह जलमीनवत् अरु प्रेमापरा भक्ति सबके जनाइबे के हेतु श्रीरामचन्द्र अपना संकल्प बनगमन लीला करते हैं कि जो कोई बिबेक बैराग्य भागवत धर्मस्नेह प्रेमापरा भक्ति इत्यादिक करिकै मोको प्राप्तिकी इच्छाराखै तौ महाराज श्रीदशरथ मय देखिलेइ अरु अपना संकल्प पूराकरना अरु राजा कासंकल्प पूराकरना ताते यहरीति श्रीरामचन्द्र बनगमनकीन्हहै पुनि जो कहौ कि राजा शरीर क्यों छोंड़ेउ यह तौ सब जानते हैं तहां राजा को संकल्प है कि श्रीरामचन्द्र के बियोग ते शरीर त्यागदेउंगो यहबिरहीभक्ति कहावै है अतिदुर्लभ है अरु जब सुमन्तकहा कि श्रीरामचन्द्र मुनिवेषकरिकै प्रियानुज सहित बनगमन कीन्ह तब सदा वात्सल्यरसमें जो रहै अरु ताही रसमें विरह की अग्नि अति प्रज्वलित उठी यहसमुझि कै कि सीता राम लक्ष्मण अति कोमल तहां बन सबप्रकारते कठोर सो प्रीतम कैसे सहैंगे अरु ताही बिरहमें संकल्प राजा का प्राप्तिभई ताते श्रीरामचन्द्र के बिरह में अतिप्रिय तन ताको तृणइव त्यागिदियो स्वर्ग को प्राप्त भये अरु जो कहौ कि श्रीराम बिरह में अरु रामराम कहतसंते शरीरत्यागिकै स्वर्ग को क्यों गये परमपदको क्यों न गये तहा श्रीरामचन्द्र की प्रेरणा ते स्वर्ग को गये हैं काहेते श्रीरामचन्द्र अपने मनमें यह बिचारेउ कि राजा ने मेरे वात्सल्यरस के बिरह में शरीरत्याग्यो है अरु मेरेराज्यतिलक को संकल्प कीन्ह्यो है अरु मैं अपने प्रिय जोहैं तिनका संकल्प पूर्णकरौंहौं जाते मेरो राज्याभिषेक देखिलेहिं ताते स्वर्गको जाहिं जाते ऊंचेबैठि कै देखहिं जैसे हम बालक कोमल हैं तैसी हमारी लीला देखहिं अरु हमारो राज्यदेखहिं पुनि परमपद बिभूति को सङ्गही चलहिंगे यह श्रीरामचन्द्र की प्रेरणा है विशेष ताते स्वर्गकोगये यह बिशेष अर्थ है तहां प्रमाण है ब्रह्मरामायणे ब्रह्मणोवाक्यं नारदंप्रतिश्लोक ४ युक्तोराजाधर्मतोधर्ममध्ये मौनीभूतःप्रेरितोराघवेन वात्सल्येऽसौरामचन्द्रस्यबंधो स्त्यक्त वादेहं स्वर्गलोकंजगाम १ पुनः श्रीमन्समहारामायणे शिववाक्यंपार्व्वतींप्रति ॥ बद्धो भागवतेधर्मे राजादशरथोमहान् यातुंस्थातुंचरामाय नोक्तवा

**सत्यप्रेमजेहिंरामपद बिछुरतदीनदयाल प्रियतनतृणइवपरिहरेउ ४० चौ० ॥ बंदौंपुरजनसहितबिदेहू जिनहिंरामपदगूढ़सनेहू ४१ योगभोगमहँराख्योगोई रामबिलोकतप्रकटेउसोई ४२ बंदौंप्रथमभरतकेचरणा जासुनेमव्रतजाइनबरणा ४३ रामचरणपंकजमन**

न्तत्रभक्तितः २ लीलादर्शयितुंस्वकेनमहता रामेणवीरोद्धवा मुच्चस्थस्यपितुर्महेन्द्रसदृशो राज्याभिषेकंतथा गंतव्यंहिमयास्वबांधवगणै राज्याच्च धामंस्वकं संचिन्त्यामृतमानसेननृपतेः स्वर्गेसुवासः कृतः ३ पुनः बृहन्नाटकेश्रीदशरथवाक्यं श्रीरामंप्रति। प्राजाहित्यथमंगलंव्रजसखेस्नेहेनहीनंवचः तिष्ठेतिप्रभुतायथारुचिकुरुष्वेसाप्युदासीनता नोजीवामित्वयाविनेतिवचनं सम्भावितेवोनवा तस्माच्छिक्षसिमांयथासमुचितं वक्तुंत्वयाप्रस्थितं ४० ॥इत्यर्थः॥ प्रणवौं सहित परिजन श्रीबिदेहजी को बिदेह कही जीवन्मुक्त जिनको स्नेह श्रीरामपद में गूढ़ है ( ४१ ) गूढ़कही ढपोस्नेह काहे में ढपेउहै श्रीरामस्नेह रत्नरूप जो है तहा योग भोग युगमिले दिब्य संपुटहै योगनीचे को फाल है तामें रत्न हैं भोग ऊपर को फाल है जामें ढपि रह्यो है जब श्रीरामजी रत्न के गाहक आये तब श्रीजनकजी देखिकै रामस्नेह रूपरत्न प्रकटेउ ( ४२ ) पुनि बंदौं प्रथम श्रीभरतजी के चरण बन्दना तो बहुत करिआये हैं भरत के प्रथम क्यों कहा जब राजा पुत्रहेतु यज्ञकीन्ह तब अग्नि जो पदार्थ दीन है तामें श्रीरामचन्द्र को छोड़िकै तीनिहूं भाइन में प्रथमभाग भरतजी हैं पुनि श्रीभरत जू श्रीराम प्रेमकै मूर्तिहैं अरु प्रेम सब साधनमें प्रथम है पुनि परे हैं किन्तु तीनिहूं भाइन में जेठे हैं प्रथम भरतजूहैं ताते प्रथमकहा पुनि भरतजू कैसे हैं श्रीरामचन्द्रविषयक नेम व्रत संयम प्रेम किसूके बरणिबे योग्यनहींहैं ( ४३ ) पुनि जैसे लोभी मधुकर कमल को रस दिनभरि पीवतसन्ते सन्ध्याभई कमल सम्पुट ह्वै गयो ताके भीतर रहिगयो

जब भोरभयो तब कमल खुलिगयो तब अपर मधुकर आये कमलपर तब तिनको देखिकै पुनि रहिगयो यहिप्रकार कमल को छाड़ैनहीं तैसे भरत को मन है श्रीराम पद पंकज को नहींतजै तिनको भरतके पद पंकज बन्दौं ( ४४ ) पुनि बन्दौं श्रीलक्ष्णजीके पद पंकज कैसे हैं पदकंज शीतल अमलभक्त सुखदाता परमानन्द दाता पद कंज हैं जिनके चरण शरणहोत सन्ते संसार की त्रैताप नाशहोइजाइ है ( ४५ ) पुनि श्रीरामचन्द कै कीर्त्ति बिमल पताका है अरु लक्ष्मणजीको यशदण्ड है तहां कीर्त्ति करुणारस तेउत्पन्नहै अरु यशबीररसते है देखिये तो मेघनाद त्रैलोक्य बिजयी बीर ताको श्रीलक्ष्मण जी

**जासू लुब्धमधुपइबतजैनपासू ४४ बंदौंलक्ष्मणपदजलजाता शीतलसुभगभक्तसुखदाता ४५ रघुपतिकीरतिबिमलपताका दण्डसमान भयउयशजाका ४६ शेषसहस्त्रशीशजगकारन सोअवतरेउभूमिभयटारन ४७ सदासोसानुकूलरहुमोपर कृपासिंधुसौमित्रगुणा**

बीररस रूपह्वैकै नाशकरिदीन्ह त्रैलोक्यमें यश पूरिरह्यो है तेहि मेघनादको श्रीरामचन्द्र करुणा करिकै परमपद दीन्ह कीर्त्ति त्रैलोक्य में फहराइ रही है अरु श्रीरामचन्द्र तो सर्बरस पूर्ण हैं पर करुणा श्रृंगार दूनोंरसस्वाभाविकै शोभितहैं अरु लक्ष्मणजू बीररस दास्यरसमय सदाहैं ( ४६ ) पुनि शेष सहस्त्र शीश जो हैं सोई लक्ष्मण स्वरूप होतभयो भूभार उतारिकै फेरि शेषरूप ह्वैकै क्षीरसागर को गये जो यह अर्थकरिये तो लक्ष्मण स्वरूप में अनित्यता आवती है अरु लक्ष्मण स्वरूप नित्य है तहां प्रमाण है जब सतीजू शिवको कहा नहींमान्यो तब श्रीरघुनाथजी की परीक्षा लेबे को गईं तब अनेकन शिव अनेकन ब्रह्मादिकदेवता देखे तहां एक एक रूप की भिन्न भिन्न आकृति अङ्गदेखे जैसे हजारन मनुष्यदेखिये सबकी आकृतिभिन्नै भिन्न देखियत है पुनि श्रीरामचन्द्र सीता लक्ष्मणजी को अनेकदेखे पर आकृति सबस्वरूपकी एकहीदेखी अखण्ड एकरस तीनिहूं स्वरूप देखे ताते लक्ष्मणस्वरूप नित्यहै तहांप्रमाणहै बाल्मीकि अध्यात्मरघुबंशकाव्य अपर जो रामायण हैं तिनसबके अन्तमें जहांपरधाम गमन बर्णनकीन्हहै तहां लक्ष्मणजीके तीनिस्वरूपकहेहैं एकशेष का स्वरूपसोश्रीसरयूमें प्रवेशकीन्ह निजस्थान को गये अरु एकस्वरूप चतुर्भुज रूप तहां इन्द्र रथलैआयो तापर आरूढ़ ह्वैकै निजस्थानको गये अरु एक स्वरूप श्रीलक्ष्मण जी द्विभुजकिशोर धनुषबाण लिये श्रीरामचन्द्र की सेवा में जैसे सदा रहतरहैं तैसे श्रीरामचन्द्र सहित श्रीजानकीजी श्रीभरत शत्रुहन जी अरु समस्त पार्षदन संयुक्त परमदिब्य बिमानपर आरूढ़ ह्वैकै निजस्थानको जातेभये तहां प्रमाण है ब्रह्मरामायणे ब्रह्मणोवाक्यं नारदंप्रतिश्लोक ५ रामेणैवोद्धितोवीरो लक्ष्मणोविदधत्स्वकः रूपत्रयमहद्वैषं लोकानांहितकाम्यया १ एकेनसरयूमध्ये प्रविवेशकृपानिधिः सहस्त्रशीर्षाभगवान् शेषरूपीरसाश्रयः २ रामानुजश्चतुर्बाहु र्विष्णुस्सर्वगुहाशयः ऐंद्रं रथसमारुह्य वैकुण्ठमगमद्विभुः ३ यानस्थोरघुनन्दनःपरपुरीं प्रेम्णागमद्भ्रातृभिर्लोकानांशिरसिस्थितांमणिमयींनित्यैकलीलापदांसौमित्रिश्चतदा कलेनप्रथमंरामाज्ञयावर्त्तते तेनैवक्रमकेनबंधुमिलितोरामेणसाकंगतः ४ श्रीमद्रामोपरंधाम भरतेनमहात्मना लक्ष्मणेनसमंभ्राता शत्रुघ्नेनतथा ययौ ५ ताते श्रीलक्ष्मणजी सर्वकोकारणहैं चौपाईको अर्थ ऐसोहै काहेतेशेषजी क्षीरसागरमें हैं अरु श्रीलक्ष्मणजी बिभूतिमें हैं नित्यस्वरूपहैं ताते शेषसहस्त्रशीशजोहैं अरुसम्पूर्ण जगत् जोहै तिनसबके कारण श्रीलक्ष्मणजी हैं ते अवतरेउ कही अवतीर्ण भये अवतीर्णकही जैसे कोई ऊंचेमहल ते नीचेको उतरिआवैहै ऐसे श्रीलक्ष्मणके पदबन्दौं पुनि दूसरअर्थ शेषलक्ष्मणजी हैं शेषीरामचन्द्र हैं शेषीकारण है अरु शेषकार्य है पुनिशेषी अंशी शेष अंश शेषीधर्मी शेष धर्म शेषीप्रकाशी शेषप्रकाश शेषशेषी केआश्रय है तहां कार्य कारण शेषशेषी दोनों अखण्ड अनादिहैं नट बीज के न्यायकरिकै अरु जैसे श्रीरामचन्द्र शेषी हैं अरु लक्ष्मणजी शेषहैं तैसे लक्ष्मण जी शेषी हैं अरु सहस्त्र शीर्ष जोसो शेष है ताते लक्ष्मणजी कारण हैं अरु शेषजी कार्य हैं देखिये तौ अपने कार्य ही को आज्ञा दई जाती है श्रीजानकीजी के स्वयंबर में लक्ष्मणजी बोलतेभये चौ० दिशि कुंजरहुकमठअहिकोला धरहुधरणिधरिधीरनडोला ॥ दशौदिशा दिशिपाल पंचभूत तीनिगुण चन्द्र सूर्य शेष इत्यादिक समस्त श्रीलक्ष्मणजी की आज्ञानुकूल हैं ताते लक्ष्मणजी सबके कारण हैं तहां प्रमाणहै श्रीविष्णुपुराणे ब्रह्मणोबाक्यं श्लोक ४ सौमित्रलक्ष्मणश्चैव सृष्टिसंहारकारकः त्वमेवजलरूपेण त्वन्नधत्तेजगद्धितं १ पंचभूतस्त्वमेवासि अग्निस्त्वंचप्रजापतिः शिवरूपेणसंहर्त्ता विष्णुरूपेणपालकः

२ ममरूपेणसंसृष्टा एवंलोकस्थितिर्भवेत् मेघनादस्यसंहर्त्ता सीताराधनतत्परः ३ अनेकमेकंजगदाश्रयंच चैतन्यरूपंजगदादिबीजं ब्रह्मेतरंब्रह्मविदोवदन्ति तंलक्ष्मणं नौमि महाप्रभावं ४ ऐसे श्रीलक्ष्मणस्वरूप द्विभुजअखंड एकरसकालानवछिन्न किशोरमूर्त्ति श्रीसीताराम सेवामें तत्पर श्रीसीताराम इच्छा सानुकूलसर्व सेवाकरते हैं अरु अपनी इच्छा से सोभी करते हैं ऐसेही तीनि हूं भाई जानिये ( ४७ ) इत्यर्थः सो लक्ष्मणमेरे ऊपर सदानुकूल हैं किन्तु अनुकूलहोहु काहेते कि कृपासिन्धुहौ सौमित्रनाम सुमित्रानन्दनकही सुमित्रा के पुत्र हौ पुनि सुमिकही सुष्ठुसौम्यसम शीलहौत्रा कही रक्षकहो सबके पुनि सुमित्र सुष्टुमित्रहौ सबके अरु त्राकीअकारलैकै आनन्ददाता सबकेहौ अरु तीनिगुणके परे हौ अरु सर्वगुण के खानि हौ ( ४८ ) पुनिबन्दौं शत्रुहनपदकंज जिनने अकेलही एकही बारलवणासुर महाबीर सुनिमहिदेव दुखदाईताको नाशकरिदीन ऐसे शरत्य में सुशील युद्ध में सावधान सब प्रकारते पुनिश्रीभरत जी श्रीरामानन्यउपाय शून्यप्रपत्ति तिनकी सेवाते तत्पर सुशीलसेवक भरतजूके मनअनु

**कर ४८ रिपुसूदनपदकमलनमामी शूरसुशीलभरतअनुगामी ४९ महाबीरप्रणवौंहनुमाना रामजासुयशआपु बखाना ५० सो० ॥ बन्दौंपवनकुमार खलबनपावकज्ञानघन जासुहृदयआगारबसहिंरामशरचापधर ५१ ॥ चौ० ॥ कपिपतिऋक्षनिशाचरराजा अंगदादिजेकीशसमाजा ५२ बन्दौंसबकेचरणसोहाये अधमशरीररामजिनपाये ५३ रघुपतिचरणउपासकजेते खगमृगसुरनर**

रूप सेवकहैं अरु श्रीरामचन्द्रको अतिप्रिय हैं ( ४९ ) पुनि महाबीरहनुमाकोबन्दौं महावीर जिनने अकेलही रावणजो त्रैलोक्य बिजयी ॥दोहा॥ भुजबलबिश्वहि बशकरि राखेसि कोउन सुतन्त्र। मण्डलीक मणिरावणराजकरै निजमन्त्र॥ब्रह्माण्ड मण्डल को स्वतन्त्र राजातेहि को मानमर्दन करिकै तेहिको पुरअति दुर्गमगढ़लंका ताकोभस्मकरिदीन एकपलमें जिनकोयश श्रीरामचन्द्र आप बखानकीन्हहै ( ५० ) पुनि सोरठार्थ पवनकुमारबन्दौं खलजोहैं बन तेहिकेजराइबेको अग्निहै ज्ञानघनहै जाकोहृदयआगारहै तहां श्रीरामचन्द्र धनुषबाणलिहे सदाबसतेहैं ( ५१ ) पुनि कपि पति सुग्रीवजाम्ब्वन्त विभीषण अंगदादि जे बानरहैं ( ५२ ) जामवन्तादिऋक्षबिभीषणादि राक्षस जिनने अधम शरीरते श्रीरामचन्द्र को पाये हैं पर ये सब तौ पार्षदहैं अपर जे अपर शरीरते श्रीरामचन्द्रको पाये हैंकोलभिल्ल शवरी गीधतरु पाषाण इत्यादिक तिनसबके पदकंजबन्दौं ( ५३ ) पुनिरघुपति चरणके उपासक जे खगगरुड़ कागभुशुण्डि इत्यादिकमृगगजइत्यादिक सुर बृहस्पति इत्यादिनर अनेक असुर प्रह्लाद बिभीषण इत्यादिक अपर जो कोई श्रीराम उपासक होहिं ( ५४ ) तिनसबके पदकञ्ज बन्दौं जे बिनुकाम कही निष्काम श्रीरामके चेरेह्वैरहेहैं ( ५५ ) पुनि शुकदेव सनकसनन्दन सनातन सनत्कुमार येचारि ब्रह्माके पुत्र नारदादिअपरजेमुनीश विज्ञानमें प्रवीण ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मारूढ़ह्वैकै श्रीरामभक्तहैं ( ५६ ) तिनसबके पदबन्दौं महिमें माथानाइकै हे मुनीशहु श्रीरामजन जानिकैकृपाकरहु किन्तु आपनजन जानिकै कृपाकरिकै श्रीरामभक्तिदेहु ( ५७ ) पुनि श्रीजनकसुता श्रीजानकीजी अतिशयप्रिय करुणनिधान श्रीरामचन्द्रको ( ५८ ) तिन श्रीजानकीजी के युगपदबन्दौं कमलतद्वत् युगकहे जा जानकीजी के पद बन्दे ते श्रीरामसहित जनकी प्रसन्नहोतीहैं किंतुयुगपद प्रेमापराभक्ति दोऊ एकहीबार होती हैं किन्तु आरत प्रसन्न अरु दीप्त प्रपन्नद्वौ एकहीबार प्राप्तहोते हैं किंतुस्वस्वरूपपर स्वरूप एकहीबारप्रप्तहोइ है पुनि लोकपरलोक दोनों के पालनहार युगचरणहैं ताते युग

**असुरसमेते ५४ बन्दौंपदसरोजसबकेरे जेबिनुकामरामकेचेरे ५५ शुकसनकादिभक्तमुनिनारद जेमुनिवरबिज्ञानबिशारद ५६ बदौंस बहिंधरणिधरिशीशा करहुकृपाजनजानिमुनीशा ५७ जनकसुताजगजननिजानकी अतिशयप्रियकरुणानिधानकी ५८ ताकेयुगपदकमलमनाऊं जासुकृपानिर्मलमतिपाऊं ५९ पुनिमनबचनकर्मरघुनायक चरणकमलबन्दौंसबलायक ६० राजिवनयनधरेधनुशायक भक्तबिपतिभंजनसुखदायक ६१ ॥दो०॥ गिराअर्थजलबीचिसम कहियतभिन्ननभिन्न बन्दौंमसीतारामपद जिनहिंपरमप्रियखिन्न ६२॥**

पद कहा सो बंदौं जिन श्रीजानकीजी की कृपाते निर्मलमति प्राप्तिहोइ ( ५९ ) पुनि मनबचन कर्मकरिकै श्रीरघुनाथजी के पद बन्दौं कैसे चरण हैं सबलायकहैं अर्थ धर्म काम मुक्ति भक्ति सबकेदाता ऐसेपदबन्दौं ( ६० ) अरुण कंजइव नयन धनुष बाणलिये हैं काहेतु भक्तजन तिनके बिरोधी तिनको नाशकरिकै सुखदेते हैं ( ६१ ) दोहार्थ ॥ गिराअर्थ अरु जल तरङ्ग कहियत भिन्नपर अभिन्न है तैसे सीताराम को भिन्नकहियत है पर अभिन्न है एकहीहै तिनके पद बन्दौं जिन सीतारामको खिन्न जो है दीनजिनको संसार दुखरूप लाग्यो है हे श्रीसीताराम जी मैं तुम्हारी शरण हौं बहुत दुखितहौं ऐसोदीन श्रीसीताराम जी को परमप्रियहै जो गिराअर्थ जलबीचिइव सीतरामहै येही अर्थ सिद्धिकरिये तौ गिरा जो है बाणी तामें अर्थ उपाधि करिकै सिद्धिहोत है कोई कार्यपाइकै बाणीमें अर्थनिकसत है अरु पवन के योग ते तरङ्ग उठती है अनिरुपाधि में केवल बाणी है अरु जल है अरु जो कही श्रीरामचन्द्र जी बाणी जलस्थाने है अरु श्रीजानकी जी अर्थ तरङ्गस्थानेकही तौनहींबनै काहेते कि जानकी जी उपाधिकरिकै सिद्धिहोती हैं तौ यह नहींबनै अरु जो श्रीजानकी जीको बाणी जलकही श्रीरामचन्द्रको अर्थ तरङ्गकहिये तौ दुइमें एकहूनहीं बनै ऐसेकहे ते मतबिरोध उपासनाबिरोध ग्रन्थकर्त्ता की आशयमें बिरोधहोत है अरु श्रीसीताराम दोऊमूर्ति सच्चिदानन्दस्वरूप एकही है अरु दोऊबिग्रह अनादि भिन्न हैं अखण्ड एकरस नित्य है प्रमाण रामःसीताजानकीरामचन्द्रो नित्याखण्डोयेचपश्यन्तिधीराः श्रुति अरु जोकहिये कि गिराअर्थ जलबीचिसम कहियत भिन्नसदा भिन्नैकही कि अभिन्नकही न कही यह काकुअर्थ कहावै है तहां गिरा अर्थ जलबीचि कैसे भिन्न करहिंगे भिन्नहोतई नहीं तहां यह अर्थ सिद्धिहोत है सीतानाम रामनाम येजो द्वैपदहैं सो बन्दतेहैं गुसाईंजी सीतानाम अरु रामनाम ये दोऊनाम सदा भिन्न हैं अरु दोनों नाम की तत्त्व अभिन्नहै गिराअर्थ जल तरङ्गकेदृष्टान्त करिकै तहां यह अर्थ करते हैं पाछे की चौपाई में श्रीजानकी जी के श्रीरघुनाथजी के पद बन्दना करिआये हैं अब आगे रामनाम कहिबेकी भूमिबांधते हैं ताते सीताशब्द अरु रामशब्द येजोदोनोंपद हैं तिनको बंदिकै भिन्न कहते हैं अरु दोनों नाम के तत्त्व सो अभिन्न कहते हैं गिरानाम जो है अर्थनाम जो है जलनाम जो है बीचिनाम जो है येतेनाम अनादि वेद शास्त्र पुराण सबकहतई आवते हैं ताते गिराअर्थ जलबीचियेते नाम अनादि भिन्न हैं अरु गिराअर्थ तत्त्व अभिन्न है एकहीहै तैसही जलतरङ्ग है तैसही सीतानाम अरु रामनाम अनादि भिन्न है अरु दोऊनाम पद जो हैं सो तत्त्व रूप अभिन्न हैं कैसे जानिये सामवेद की महा बाक्य तत्त्वमसी है वेद को सिद्धान्त है सो रामशब्द ते सिद्धिहोतहै अरुसीताशब्द सो सिद्धिहोत है रकार तत्पद है अकार त्वंपद है हलमकार असिपद है सीताशब्द में ताकार तत्पद है तकार में जो दीर्घ अकारहै सो त्वंपद है पुनि तकार की दीर्घ अकारलैकै अरु सीपद जो है ताते असीपद है ताते तत्त्वमसी तत्पद त्वंपद असिपद है ताते सिद्धिहोत है कैसे होतहै तीनिबार सीतानाम लिखै कंकणाकारकरिकै तब चित्रकाव्य ह्वैजाती है जेहीमात्रा ते चाहै तेहीमात्रा ते तत्त्व सिद्धिहोत है जे पण्डित कबिहोहिंगे ते यह जानहिंगे पर द्वौनामतत्त्व रूपही हैं ( ६२ ) पुनि प्रमाणहै श्रीमन्महारामायणे श्रीशिववाक्यं पार्वतींप्रति श्लोक ६ रकारस्तत्पदोज्ञेयस्त्वंपदोकारउच्यते मकारोसिपदंखंजं तत्त्वंअसिसुलोचने १ ब्रह्मेतितत्पदंविद्धित्वंपदोजीवनिर्मलः ईश्वरोसिपदंप्रोक्तं ततोमायाप्रवर्त्तते २ ब्रह्मयामलेशिववाक्यं ॥ रकारःसर्वभूतानां व्याप्यंव्यापकमीश्वरः रकारोनिर्विकल्पश्च शुद्धब्रह्मसदाद्वयं ३ गुरुगीतायां ॥ अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तंयेनचराचरं तत्पदंदर्शितंयेन तस्मैश्रीगुरवेनमः ४ महासुन्दरीतंत्रे ॥ लिखितं त्रिविधंसीता कंकणाकृतशोभितं चित्रकाव्यंभवेत्तत्र त्रयोनातिकविपंडितः ५ तकारंतत्पदंविद्धि त्वंपदोकारउच्यते दीर्घतावैअसीप्रोक्तं तत्वंअसि महामुने ६ । ६२ इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने बालकांडे मनवचन कर्मअभिनिवेश बन्दनाकृते षष्ठस्तरंगः॥६॥

दो० ॥ रामचरणमनपानकरु उठतीसप्ततरंग ॥ नामनिरूपणरामको निर्णयब्रह्मप्रसंग ७ जो प्रकरण श्रीगुसाईंजी कहते हैं ताके पूर्वही ताको स्वरूप कहतेहैं ताके मध्यमें ताको अंगकहतेहैं ताकेअन्तमेंमाहात्म्यकहतेहैं ऐसेही सबसदकाब्यन में जानिलेब अब रामनाम को बन्दते हैं मन बचनकर्म अभिनिवेश बन्दनाकरि आये हैं अरु करते हैं बन्दौंनाम परमेश्वर के अनन्त नाम हैं तामें रामनाम बन्दौं परमेश्वर को कवन स्वरूप रघुबर तिनको नाम रघुबर क्यों कहा रामहीकहते तहां रामकहते चारिस्वरूप में बोधहोत है दुइस्वरूप में सामान्य बोध है दुइस्वरूप में विशेष बोधहोत है परशुराम बलराम जो परशुकहिकै बलकहिकै रामकहैतब बोधहोत है ताते सामान्य बोधकही अरु

जो केवल रामहीकहे तौ रमणाद्राम इत्यादि अरु श्रीदाशरथी रामदुइ स्वरूप में विशेष बोधहोतहै जो केवल रामही कहै रघुबर न कहै तब शुष्काद्वैतमतबादी अपनैमत सिद्धिकरै हठकरिकै ताते गुसाईंजी रघुबर को नाम रामकहा परमेश्वरकेअनन्तनामहैं रामहीनाम क्यों बन्दे तहां जो आत्मा को नामस्कारकियो सो शरीर को करिचुक्यो तहां परमेश्वर के अनन्त नाम हैं तिनसबनकोआत्मा रामनाम है पर परमेश्वर के सबनाम नित्य परंपददाताहैं इहां शरीर शरीरी नित्य अखण्ड है एकही तत्त्व है पर रामनाम सर्बोपर है काहेते रामनाम में पंच पदार्थ प्रसिद्ध है रेफरेफ की अकार अरु दीर्घ अकार अरु मकार की अकार हलमकार यहपांचहू बिना एकौअक्षर नाममन्त्र इत्यादिक नहीं सिद्धिहोते हैं यह बिचारिलेव शास्त्रन में ताते राम नाम बड़ोहै तहां प्रमाण है श्रीमन्महारामायणे शिववाक्यं पार्वतींप्रतिश्लोकद्वै परमेश्वरनामानि संत्यनेकानिपार्वति परन्तुरामनामेदं सर्वेषामुत्तमोत्तमः १ नारायणादिनामानि कीर्त्तितानिबहून्यपि आत्मातेषांतुसर्वेषां रामनामप्रकाशकः २ पुनि रामनाम कैसो है हेतुकृशानुभानुहिमकर को जहां एकशब्द में दुइअर्थहोइँ तीनि चार पाँच छः सात इत्यादिकअर्थहोइँ आशयलिहे एकशब्द में ताको श्लेषालंकारकही पुनि धुन्यात्मक काव्यकही यह चौपाई में अनेकहेतु अनेक धुनि अनेक आशयहैं निजमति अनुसार एकदुइ में भी कहतहौं हेतुकहे प्रिय पुनि हेतुकहे कारण पुनि हिमकरकहे जो हिम है पाला ताको उत्पन्नकरै ताकोहिमकर कही सो चन्द्रमा अरु हिमऋतु अगहन पूष इनको हिमकर कही दृष्टांत हिमऋतु जो हिमकर है तहां कृशानु भानु हेतु कही प्रियहै काहेते प्रिय है जेते सर्बजीवभूतहैं तिनकी देहको हिमऋतु में जाड़ दुःखदेत है ताको अग्नि सूर्य निवारणकरिदेतेहैं ताते प्रियहै अब दृष्टांतइहां उपमेय लुप्तालंकारहै सो कहते हैं दुइमास कौन हैं मयमोर तोर तैं मैं इत्यादिक द्वैत तामें जड़ताजाड़ विषमउरलागा उड़तानाम अज्ञानरूप जाड़ सो सबके अन्तष्करण में लगिरह्योहै दुखदेतहै तहां रकार कृशानु अकार भानु जेहि के हृदय में प्रवेशतेभये तेहिके अन्तष्करणको जाड़रूप अज्ञान ताको नाश करतुहै तामें मकाररूपहै ताते हेतुनाम प्रिय है पुनि दूसरअर्थ हेतुकृशानु भानुहिमकरको हेतुकही कारण कारकृशनु को करण है अरु रकार में दीर्घअकार सो भानुको कारणहै मकार चन्द्रमाको कारण है तहां जो कोई कहै कि कारणकार्य को उत्पन्नकरिकै पुनि कार्य में लीनहोइजातुहै जैसे बीज ते तरुभयो पुनि बीज

**चौ० ॥ बन्दौंनामरामरघुबरको हेतुकृशानुभानुहिमकरको १ विधिहरिहरमयवेदप्रानसे अगुणअनूपमगुणनिधानसे २ महामंत्र**

तरुमें लीनभयो तैसे रामनाम ते कृशानु भानु शशि उत्पन्नभये इनहींमें रामनाम लीनभयो तहां ऐसो नहींहोइ है कारण दुइप्रकार को है एकसामान्य है एक विशेष है जैसे सोना को कारण एक कोई जरीबूटीपारा की खाक सो धातु में लीन ह्वैजातुहै तब सोना सिद्धहोत है सो सामान्य कारण है अरु पारस अतौलसोना करिदेतुहै आपु पूर्ण बनोरहेहै सो बिशेष कारण है तैसे रामनाम बिशेष कारण है अनेक अग्नि सूर्य चन्द्र उत्पन्नकरै आपु सदा पूर्णहै येतो ऐश्वर्य रामनामे कहिबेको कौनतात्पर्य है तहां धुनि है जब गुसाईंजी श्रीमद्रामचरित ग्रन्थकरिबे को प्रारम्भकीन्हे है जब एते बन्दना प्रथम करिआये हैं जब रामनाम बिषयआये तब कछुबिचार कीन कि श्रीमद्रामचरित निर्विकार है अरु मेरी मति बिकारयुक्त है बिकार तीनि प्रकार के एक शुभकर्म एक अशुभकर्म एक अन्तष्करण की बासना यह तीनिकरिकै जीव आबृतहोइरह्यो है मति मलिन होइरही है अरु ताही मति सों रामचरित्र करिबे कोहै तहां कैसे बनैगो जो मेरीमति निर्मलहोइ तब निर्मल जो है रामचरित तब बरणौं काहेते देवतारूप होइकै तब देवता की पूजनकरै यह परंपराप्रमाण है देवोभूत्वादेवंयजेत्श्रुतिः तब बिचारकीन कि मेरी मति कैसे शीघ्र निर्मलहोइ तीर्थयज्ञदान जपतप योगज्ञान ध्यान समाधिइत्यादिककरौ पर एतेसाधन जब बहुतकालकरै जब सिद्धिहोइ तब शुद्धहोइ अथवा जन्मान्तर शुद्धहोइ किन्तु विघ्नहोइजाइ न सिद्धिहोइ अरु मोकोशीघ्र शुद्धताचाहिये तहां रामनाम तुरन्त शुद्ध करैगो काहेते कि हेतुकृशानुभानु हिमकरकोरकार अग्निको कारणहै तेहि पावकमें कौनशक्तिआई प्रकाशउष्णता दाहक विशेष है दृष्टान्त जैसे अग्नि में शुभसाकल्य घृत शक्कर तिल यव चावल मेवा छुहारादिकहुतिदेइ ताकीशुद्धताभस्मकरिकै आपनोस्वरूप करिदेतुहै अरु विकारहुतिदेइ तौ उसकी बिकारता भस्मकरिके आपनोस्वरूप

करिदेतुहै देखियेतो जो कार्यमें येती शक्ति है तौ कोजानै कारणमें केती शक्ति होइगी अब दृष्टान्त कृशानुको कारण जोहै रकार तामें जो मनवाक्य अभिनिवेशभयो तहाँ शुभकर्म यज्ञादिकसो साकल्य है अरु अशुभकर्म बिकारलकरी इत्यादिक तहां रकार शुभाशुभ कर्म भस्मकरिकै पर तुरन्त आपनो स्वरूप को करिदेतु है अरुमध्यकी अकार भानुबीजहै तामें जो मन वाक्य अभिनिवेशहोइ तौ अंधकाररूप जो बासना सो तुरन्त नाशहोइजाइहै तहां रकारते अकारतेशुभकर्म अरु बासना नाशभई अब मकार क्योंबंदतेहैं तहां कृशानु अरु वैराग्य कै एककृपा है अरु भानुज्ञानकी एककृपा है काहेते कि वैराग्यतेसंसारकीराग जरिजातु है अरु ज्ञानते अज्ञान अन्धकार नाशहोतु है तहां रकार बैराग्य हेतु है अरु अकार ज्ञानहेतु है गुसाईं यह बिचारकीन किकृशानुभानु तेजोमय है अरु बैराग्यज्ञान तेजोमय है बैराग्यज्ञान में तेतअहं बैराग्यमान् ज्ञान में तेजब्रह्मास्मि अरुरकार अकारको तेजकोकहै अरु मेरीमतितौ निर्मलभई काहेते रकारते अरु अकारते कर्मशुभाशुभअरु बासनाध्वंस भई पर बैराग्यज्ञान तेजोमय है तहां जो मेरे हृदयमेंरकार अकार आयो कारणरूप तौ कार्य्यरूपतौ बैराग्यज्ञान भी आवैगोअरुतिसमें जो अहंपदहै तेजोमय सोभीआवैगो तब उद्वेग होइगो अरु मेरीमतिशांतिशीतलताको प्राप्तिहोइ तबरामचरित आवै तातेमकार जोहै चन्द्रहेतुअरु भक्तिहेतु ताकोबन्दौं जातेशीतलमतिहोइ जैसेकृशानुभानुकीतपनिचंद्रमाअपहरतु है तैसे रकार अकारमें जो है बैराग्यज्ञानतामें अहंजो हैं उष्णता ताको मकार जो भक्ति बीज सो हरतु है ताते रकार अकार मकार बंदिकै रामचरित कहौं जो कहौं कि चन्द्रमा तौ अपने शीत प्रकाश ते कृशानु भानुको प्रकाश मन्दकरिदेत है अरु सूर्य शशिके प्रकाशको मन्दकरिदेत है परस्पर बिरोध है तैसो रकार अकार मकार नहीं है दृष्टांत को एक देशलिया रकार अकार मकार ते अत्यन्त प्रीति है जैसे एकचन्द्रमणि होती है जो अग्नि के समीप धरिदेहु तौ अग्नि की उष्णता तौ हरिलेइ है अरु प्रकाश दोउनके बनोरहै है तहां रकार अकार मकारये तीनों बैराग्यज्ञान भक्ति के उपादान कारण हैं अरु कृशानु भानु हिमकर ताके निमित्त कारण हैं जैसे मृत्तिका घटको उपादान कारण है अरु कुम्हार निमित्त कारण है देखिये तौ तहां भूमि के एक देश ते अनेकघट होते हैं अरु एकहुकुम्हार अनेकघट बनायदेतु है तैसे श्रीरामनाम है ऐसे अनेक अर्थ रामनाम में हैं ताको बंदौं तहाँ प्रमाणहै श्रीमन्महारामायणे शिववाक्यं श्लोकचारि रकारोनलबीजंस्याद्येसर्वेवाडवादयःकृत्वामनोमलंसर्वं भस्मकर्मशुभाशुभं १ अकारोभानुबीजंस्याद्वेदशास्त्र प्रकाशकः नाशयत्येवद्रीत्यायाबिद्याहृदयेतमः २ मकारश्चन्द्रबीजंचसदम्या-परिपूरणम् त्रितापंहरतेनित्यं शीतलत्वंकरोतिच ३ रकारहेतुवैराग्यं परमंयच्चकथ्यते अकारोज्ञानहेतुश्च मकारोभक्तिहेतुकं ४ जो कोईकहैकि रामनामको येताप्रताप जाके स्मरणकरत सन्ते बाह्यांतरतुरन्त शुद्ध होइ तहां प्रमाण है अगस्त्यसंहितायां अभिरामेतियन्नाम कीर्तितंविवशाच्चये तेपिध्वस्ताखिलाघौघा यांतिविष्णोःपरंपदं रकार मकारको प्रभाव अमित है इत्यर्थः १ पुनि श्रीरामनाम कैसो है अब अङ्ग कहतहैं रामनाम बिधि हरिहरमय है मयकही तदात्मक को यह सेना मनुष्यमयहै यह ग्राम गृहमय है सूर्य प्रकाशमय है पटसूत्रमय है इत्यादिक रूप एकहीहै ताते तदात्मकमय कही पुनि मयकही बाहुल्य को यह मणिद्रव्य अन्नवस्त्र गज तुरङ्ग इत्यादिमय है ये पण्डित बिद्यामय हैं ये सन्त दिब्य गुणमय हैं कुवेर धनमय है भूमिबीजमय है इत्यादिकन के स्वरूप गुणभिन्न हैं ताते बाहुल्य कही ऐसेही रामनाम विधि जो है ब्रह्मा हरिजो है बिष्णु हर जो है महादेव तिनमय रामनाम तदात्मक मय है अरु बाहुल्यमय है जब गुणन ते परे तिनहुरूप है तब तदात्मक मय है जबगुणन को ग्रहणकियो तब बाहुल्यमयहै काहेते कि श्रीरामचन्द्र की एक पाद बिभूति में अनन्त ब्रह्माण्ड है तहां ब्रह्माण्डप्रति ब्रह्मा विष्णु शिवहै ताते रामनाम बिधि हरि हर बाहुल्यमय है क्रमालंकार करिकै जानब रकार बिधिमय अकार हरिमंयहै मकार हरमयहै ये तीनिहू रूप सूक्ष्मगुणन की साम्यता शुद्धरूप ॐकार में लक्षित होतेहैं तहां तदात्मकमयहै सो ॐकार मोक्षदाता है श्लोक एकपद श्रीभगवद्गीतायां औमित्येकाक्षरंब्रह्म ऐसो ॐकार रामनाम के अंशांश ते सिद्धिहोत है कैसेहोत है रकार में रेफ जो है सो ब्रह्ममय है अरु रकारमय अकार सो नादमयहै जाकोयोगीजन सुनते हैं महानाद जाको कही अरु बिन्दुमय हलमकारहै अरु जीवमय मकार की अकार है अरु वेद ब्याकरण इत्यादिक जेते स्वरहैं तेहिमय दीर्घ अकार है अरु जब प्रणवहोतभयो तब माया को कारण है ताते ये षट्तत्त्व करिकै रामनाम आबृत है तहां नादरूप जो अकारहै सो उकार होत है अर्द्धभागते वेद सूत्रकरिकै अरु मुनिन की बाक्यमें जहाँ आर्षबाणी है तहां ब्याकरण को प्रयोजन नहीं है केवल श्लोकहीके पदन ते

अर्थ सिद्धिहोतु है ताते इहां आर्षपदहै तहां नादरूप अकार उकार ह्वैकै अकार के पूर्ब बिपर्यय ह्वैके प्राप्तिभई अकार उकार मिलिकै ओकारभयो हलमकार अनुस्वार भयो ॐकार सिद्धिभयो अरु मकार की अकार सबर्णीमानिकै नादरूप ॐकार में प्रवेशभयो अरु रेफअन्तरभूतभयो प्रणव सिद्धभयो अथवा ब्याकरण के सूत्रकरिकै रेफ की बिपर्ययह्वैकै अकार जो दोनों सो एकभयो ताके पूर्बह्वैकै रेफबिसर्गभयोबिसर्गकी उकारअकार मिलिकै औकार भयो हलमकार अनुस्वार भयो तब ॐकार सिद्धिभयो मकारकी अकार सबर्णी मानिकै नादरूप ॐकारमें प्रवेशभयो ॐकार सिद्धभयो तातेबिचारिलेव रामनामके अंशके अंशते बीज जो है अरु ॐकार जो है अरु सोऽहं जो है ये तीनिहूं सिद्धिहोते हैं ताते रामनाम विधिहरिहरमय है तहां प्रमाण है श्रीमन्महारामायणे शिवबाक्यंश्लोक ( १२ ) अंशांशैरामनामश्चत्रयः सिद्धाभवन्तिहिबीजमोंकारसोऽहंचसूत्रमुक्तइतिश्रुतिः १ रामनाममहाविद्ये षड्भिवस्तुभिरावृतं ब्रह्मजीवमहानादै स्त्रिभिरन्यद्वदामिते २ स्वरेणबिन्दुनाचैव दिव्ययासाययापिच पृथक्तेनबिभागेन सांप्रतंश्रृणुपार्वति ३ परब्रह्ममयोरेफो जीवोकारश्चमश्चयः रस्याकारोमयोनादः रायादीर्घास्वरामया ४ मकारम्व्यजनम्बिन्दु हेतुःप्रणवमायया अर्द्धभागादुकारस्यद्वकारोनादरूपिणः ५ रकार गुरुएकार स्तथावर्णबिपर्य्ययः मकारम्व्यजनञ्चैव प्रणवञ्चाभिधीयते ६ मस्यासबर्णितंमत्वा प्रणवेनारूपधृक अन्तर्भूतोभवेद्रेफः प्रणवेसिद्धिरूपिणी ७ वेदेव्याकरणेचैव येचवर्णास्वरास्मृताः रामनाम्नैवतेजाताः सर्बेषांनात्रसंशयः ८ अकारःप्रणवेसत्व मुकारश्चरजोगुणः तमोऽहलमकारस्यात्प्रयोहंकारमुद्भवः ९ प्रियेभगवतीरूपे त्रिविधांजायतेऽपिचविष्णुर्विधिरहंचैवत्रयोगुणविधारिणः ( १० ) ऐसेहीश्रुतिस्मृतिकहतुहैंश्लोक॥प्रणवंकेचिदाहुर्वैबीजंश्रेष्ठंतथापरे तत्वरामेतिबर्णाभ्यांसिद्धिधमाप्नोतिमेमतं ( ११ ) महाशम्भुसंहितायां पुनिश्रुति। प्रणवंकेवलमकारोमकारअर्द्धमात्र सहितंतस्मात्प्रणवस्य चाकारस्य चोकारस्य चमकारस्यचार्द्धमात्रस्यच इत्यथर्वणेश्रुतिः ( १२ ) अकारो प्रथमाक्षरोभवति उकारोद्वितीयाक्षरोभवति मकारस्तृतीयाक्षरोभवति अर्द्धमात्राचतुर्थाक्षरोभवति बिन्दुः पंचमाक्षरोभवतिनादः षष्ठाक्षरोभवति तारकत्त्वात्तारकोभवति तदेवरामेतितारकंब्रह्मत्वं बिद्धीति श्रुतिः ( १३ ) पुनिवेदप्राणसे पुनि रामनाम वेदके प्राण हैं जैसेशुद्धपंचतत्त्व मय ब्रह्माण्ड समष्ठीरूप है तैसे पंचतत्त्व के ब्यकारमय अण्डकही शरीर है मनुष्यादिक बिष्टीरूपहैं ताते अण्ड ब्रह्मांड दोऊ पंचतत्त्व वेष्ठित विग्रह है तिनके पंचप्राण हैं प्राण अपान उदान ब्यानसमान येते पंचप्राण शुद्धरूप बिराटमेंहैं अरु पंचप्राणके पंचब्यकाररूप प्राणसोई मनुष्यादिकन में हैं तैसे वेदनके प्राण दिव्यरूप रामनाम है वेदको मूल एक ॐकार ताते वेद चारि पुनि पांच साम यजुर अथर्वण ऋग् सुस्म महाभारतादि पांचहू वेदके जो अक्षर सो स्थूल बिग्रहजानिये अरु पांचहू को सिद्धान्त अर्थ जो है सोई पंचप्राण राम है रेफरेफ की अकार दीर्घअकार हलमकार मकार की अकार ये पांचोवेदके प्राण हैं जैसे प्राण स्थूल शरीर को त्यागिदियो तब शरीर मृतकभई तैसे जेहि वेदस्मृतिपुराण इत्यादिक सूत्रऋचा श्लोक पद अक्षरनमें रेफ बिसर्ग अकार हल मकार अनुस्वार न होइ ते सब मृतकरूप ह्वै जाइ अरु वेदको सिद्धान्तजो है एकतत्त्व तेहिमय है रामनाम ताते वेदप्राण से कहा श्लोक राम नाम्नः समुत्पन्नः प्रणवोमोक्षदायकः रूपंतत्त्वमसेश्वासौ वेदतत्त्वाधिकारिणः पुनि रामनाम कैसो है अगुणकही निर्गुण है अनूपम जाकी उपमा को कछु नहीं है अरु अनेक गुणके निधानकहे स्थानहै किन्तु अगुण जोब्रह्म है अनूपम ताको गुणकहे प्रत्यक्ष करिबे को निधान है रामनाम

**जेहिजपतमहेशू काशीमुक्तिहेतुउपदेशू ३ महिमाजासुजानगणराऊ प्रथमपूजियतनामप्रभाऊ ४ जानआदिकबिनामप्रतापू भयउ**

अथवा अगुण अनूपम सात्विक राजस तामस ये जो तीनिगुण हैं ताकेपरे जेगुण हैं योगबैराग्य ज्ञान शांति शील दया क्षमा करुणादिक ये ते गुण अगुण है अनूपम हैं मुक्ति उपहित आत्मा के गुण हैं प्रकृतिके गुणनहीं हैं तिनगुणन को निधान है रामनाम जैसे धनको निधान कुबेर है किंतु अगुण अनूपम जो श्रीरामचन्द्र हैं तिनके अगुण अनूपमगुण हैं रामनाम जैसे पतङ्ग में गुण है ता करिकै पतङ्ग पाइयत है तहां गुण पतङ्ग को रूप भिन्न है रामनाम रामरूप अभिन्न है इहां दृष्टांतकोएकदेशलिया इत्यर्थः २ रामनाम महामन्त्रहु ते उत्तम है काहेते जाको महेश अहर्निशि जपते हैं अरु काशी में सर्वजीवनको मुक्तिहेतु उपदेशकरते हैं महेशकी साक्षी प्रथम क्यों दिया देव दानव

मनुष्यादिक सबन के पांच ईश्वर हैं अरु ऋषि मुनि योगी ज्ञानी ध्यानी समाधी वैष्णवसबमें अग्रणीय हैं महेश ताते जो महेश को सिद्धान्त सो तत्त्व सर्बोपरि जानिये प्रमाणभागवते॥ वैष्णवानांयथाशम्भुः। मनुस्मृतौश्लोकत्रयः सप्तकोटिमहामन्त्राश्चित्तविभ्रामकारकाः एकएवपरोमन्त्रो रामइत्यक्षरद्वयं १ हिरण्यगर्भ संहितायां ॥ श्रीरामेतिपरंमन्त्रं तदेवपरमंपदं तदेवतारकंबिद्धिजन्ममृत्युभयापहं २ काशीखण्डे। येयंयेयंश्रवणपुटके रामनामाभिरामं ध्येयंध्येयंमनसिसततंतारकंब्रह्मरूपं जल्पंजल्पंप्रकृतिविकृतौ प्राणिनांकर्णमूले वीथ्यांवीथ्यामटतिजटिलः कोपिकाशीनिवासी ३ पुनि रामनाम की महिमा गणेश जानते हैं जाके प्रताप ते प्रथम पूजाभई एकसमयमें श्रीशिवजूलोक मङ्गलार्थ गणेशकी पूजाकी इच्छाकीन तब सम्पूर्ण शिव के गण पूजा की सामग्रीही जहांतहां ते लिहे आवतेरहे तब स्वामिकार्तिक देखिकै बूझते भये तब सब समाचार दूतनके मुख ते सुन्यौ तब बिचारकीन कि शिवजू गणेश को क्यों पूजतेहैं अरु जो पिता पुत्रको अधिकार देत सन्ते पूजते हैं तौ वेदकी आज्ञा जेठेपुत्र को है सो हम बने हैं यह बिचारिकै षट्मुख शिव के पासगये शिवजी जानिगये तब शिवजीकहा हे महावीर षडानन तुम अरु गणेश ब्रह्मा के पासजाहु जाको ब्रह्मा पूजिदेहिं ताको सबपूजैं तब दोऊजन ब्रह्माके पासजाइकै सब कथाकहेतबब्रह्मैकहा दोऊजनसुनौ सामर्थी पूजाजातहै जो पृथ्वीकी प्रदक्षिणा प्रथम करिआवै ताकोपूजैं तब स्वामकार्तिक मयूरपरचढ़े गणेश मूषपरचढ़िचले तब मयूर आगे उड़िचलेउ मूषा पाछे रह्यौ तब नारदजी मिले गणेशको तब कहा हे गणेश तुम नहीं पहुंचोगे तुम जाहु ब्रह्मा की सभा में रामनाम लिखिकै प्रदक्षिणा करहु रामनाम अनेक ब्रह्माण्डको कारण है

**शुद्धकरिउलटाजापू ५ सहसनामसमसुनिशिवबानी जपिजेईपियसंगभवानी ६ हरषेहेतुहेरिहरहीको कियभूषणतियभूषणतीको ७**

स्वामकार्तिक जानि जाहिंगे तब गणेश वैसही कियो तहां जब स्वामकार्तिकचलेजाहिं मूषाके पगको अंकदेखतेजाहिं आश्चर्य मान्यो तब दुइदंड में षट्मुख सम्पूर्ण ब्रह्माण्डकी प्रदक्षिणा करिआये ब्रह्माकीसभामें गणेशको बैठेदेखे आश्चर्य माने तब ब्रह्माते पूछतेभये कि गणेश प्रदक्षिणाको करिआये तब ब्रह्मै कहे तुमको कछु देखिपरउेहोइ तौ गणेशते बूझहु तबगणेशते बूझे गणेशकहा कि श्रीनारदजूके परदेशते हमने रामके नामकी प्रदक्षिणा कियोहै तब स्वामकार्तिक समुझिगये ब्रह्माकेपाछे आपुही तिलक कियो तब षणमुख रामहीनाम आधारकियो इतिशैवतंत्रोक्ताः ४ आदिकवि श्रीबालमीकि जी नामको प्रताप जानते हैं मरामरा उलटानामजपिकै शुद्धस्वस्वरूप पर स्वरूपकी प्राप्तिभई ५ शिवजी भगवान् के सहस्त्रनाम श्लोकबद्धमेंकीन्ह तब पार्बतीजी बूझतीभईं कि हे महादेव यह जो सहस्त्रनाम आपुकीन्ह है ताके पाठकिये ते बड़ोमहत्फलहै तब शिवजीकहाकिहेप्रियाभगवान् के अपरसहस्त्र नाम उच्चारणकरैअरुरामनाम एकबारउच्चारणकरैसोतुल्यहैपाद्मेश्लोक ८ रामरामेतिरामेतिरमेरामेमनोरमे सहनामतातुल्यं रामनामबरानने १ पुनि हारितस्मृतौ चतुर्थ अध्याये। श्रीरामायनमोह्येतत्तारकंब्रह्मनामकं नाम्नांविश्नोस्सहश्राणां तुल्यएवमहा मनुः २ अनन्ताभगवन्मन्त्रा नानेनतुसमाकृताः श्रेयोरमणसामर्थ्यौ त्सौंदर्य्यगुणसागरात् ३ श्रीरामइतिनामेदं तस्याविष्णोः प्रकीर्त्तितम् रमाणात्रित्ययुक्तत्वा द्रामइत्यभिधीयते ४ एतदेवपरम्मत्र म्ब्रह्मरुद्रादिदेवताःऋषयश्चमहात्मानो मुक्ताजप्त्वाभवाम्बुधौ ५ एतन्मन्त्रमगस्त्योजप्त्वा रुद्रत्वमाप्नुयात् ब्रह्मत्वंकाश्यपोजप्त्वा कौशिकस्त्वमरेशताम् ६ कार्त्तिकेयोमनुश्चैव इन्द्रार्कगिरिनारदाः बालखिल्यादिमुनयो देवतात्वंप्रपेदिरे ७ इममेवजपन्मंत्रंरुद्रस्त्रिपुरहारकः आद्यापिरुद्रः काश्यांतुसर्बेषांत्यक्तजीविनां ८ सो पार्वतीसुनतभई सहस्त्रनामसम रामनामको प्रताप शिवकेमुखते सुनिकै पार्वती शिवकेसंग जपतभई शिवसहस्त्रनाम पाठकरैं पार्वतीजीरामनाम जपत भईकिन्तु जपिकैशिवके संग तब भोजनकरहिं ६ तबपार्वती के हृदयके हेतुकहीप्रीति हेरिकै हरहर्षे तबकियभूषण तियजेतीस्त्री ब्रह्मांडमेंहैं तिन सबनकेभूषणकीननाम सर्बोपरिबड़ाई दन्हि अथवा यहजानि कै कि जबताईं सहस्त्रनाम जपतेहैं तबताईं पार्वती रामनाम सैकरनबारजपतीहैं ताते पार्वतीको भजन हमारे भजनते बहुतबढ़ेउ तबयहबिचारि

**नामप्रभावजानिशिवनीके कालकूटफलदीन्हअमीके ८॥ दो० ॥ बरषाऋतुरघुपतिभगति तुलसीशालिसुदासरामनामबरबरण**

कै किय भूषण तिय पार्बतीको अपने अङ्गको भूषणकीन्ह नाम अर्द्धांगीकीन जनुभजन मिलाइकै बांटिलीन आधा-आधा भूषण तिय को अरु पार्वती के भूषण शिव आपुहैं अथवा तियको जिन शिवके तियकी भूषणसपनेहु नहीं है काहेते शिवजी बिरक्त हैं ते शिव पार्बती को भूषणकीन्ह रामनाम में प्रीति जानिकै ( ७ ) रामनाम को प्रभाव शिवजी नीकीप्रकारजानते हैं काहेते जब क्षीरसमुद्र मथनभयो तब अनेक रत्न निकसे तहां बिषको घट निकस्यो ताकी ज्वाला ते सुर असुर इत्यादिक जरेजाहिं तवभगवान् शिवको प्रेरणा कियो तब शिवजी भगवान् आज्ञामानि सबको दुखित देखिकै रामनाम कहिकै बिष को घटपानकरिगये सो बिष सत्यअमीफल को दियो श्रीशिवजी सदा अविनाशी हैं अरु इंद्रादिक जो देवता ते अमृत पियो तदपि ते मन्वंतर प्रतिपतति होते हैं ( ८ ) जैमुनिपुराणे वेदव्यास वाक्यं श्लोक २ रामनाम परंब्रह्मसर्ववेदप्रपूजितं महेशएव जानाति नान्योजानातिवैमुने १ रामनामपरंस्वादु भेदज्ञारसनायजातंनामरसनेत्याहुर्मुनयः तत्त्वदर्शिभिः ॥ दोहार्थ ॥ वर्षाऋतु रामभक्तिहै राम नाम बरनाम श्रेष्ठ जो दोऊबरण अक्षर हैं तहां रकार श्रावणमासहै मकारभादौंमास है देखिये ता दुइमासकरिकै ऋतु कहावै है तैसे राम दोऊअक्षर को सुमिरण सोई भक्ति कहावै है अरु बर्षाऋतु जो है सो शालि जोधान ताको बिशेष पोषणकरतु है काहेते कि धानको केवल बर्षाऋतु में मेघहीको जल आधार है अपरजल सामान्य है अरु शीलसंज्ञा तो गेहूं यव इत्यादिक सबकी है ते सब कूप सर नदी के जल जो एकहूबार पावतेहैं तब होते हैं किंतु बिना जलहू ते होतेहैं कोई केवल भूमि की शरदतेकोई शीतपाइकै होते हैं इत्यादि तुलसी शालि सुदास सुष्टुदास जाके केवल रामनाम आधार है सोई धान है रामनाम श्रावण भादौंमास है रसना मेघ है उच्चारण करना सोई गर्जब है प्रेमजल है बुद्धिभूमि है जीव धान है अन्तष्करण संयुक्त अरु जिनके नेम जप तीर्थ ब्रत दान योग वैराग्य ज्ञान इत्यादिक अरु नाम सबकी बराबरि भरोस है तो दास अपर शालिहै उरद मोठ जुवारि गेहूं यव चना मसूर इत्यादिकहैं ९ राम ये जो दोऊअक्षर सो मधुरहैं भक्तिरसमयहैंसबकोप्रियहैं अरु मनोहरमनको हरतहैं सुन्दरअतिशयहैं काहेते कि जेते भगवत्‌केनामहैं ते सबस्वरसंयुक्तहैं एऐओऔ अईऊऋऌइत्यादिस्वरहैं अथवा जो इनस्वरते रहितनामहै

**युगसावनभादौंमास ९ ॥चौ०॥ आखरमधुरमनोहरदोऊ बरणबिलोचनजनजियजोऊ १० सुमिरतसुलभसुखदसबकाहू लोकलाहुपरलोकनिबाहू ११ कहतसुनतसमुझतसुठिनीके रामलषणसमप्रियतुलसीके १२ बरणतबरणप्रीतिबिलगाती**

केवलअकारहीस्वरहैतामेंछोटेबड़ेअक्षरहैं किंतुदुत्तअक्षरहैंअरुरामनामकेवलअकारयुक्तहैसोअकारस्वराधिपहै अरुदोऊअक्षरसमहैं तातेमनोहरनाम अतिसुन्दरहै दोऊअक्षर पुनिबरणजोहैं छत्तीसअक्षर जाकरिकै वेदस्मृति पुराण सबहैं तेहिसब बर्णनके नेत्रहैं रामनामबिकहे बिशेषनेत्र हैं किन्तु बिनामदुइको दोऊनेत्रहैं मस्तकपर होते हैं तैसे रकारकीरेफ मकारहल अनुस्वार दोनों सब अक्षरनके माथेपर रहतेहैं अरु जनजोहै दास तिनके जीवकेनेत्र हैं रामस्वरूप देखिबेको जो जीवकेरामनाम नेत्रही हैं सोअन्धहै ( १० ) पुनि सुमिरतकै सुलभ है अपर नाम जो परमेश्वरके हैं ताकोपढ़ेहोइ तब शुद्धकहिआवै अरु राम सबते कहिआवैहै अरु सबकोसुखदाता है जेहिमोक्षको अनेकयत्न पण्डितजन करते हैं सोई मुक्तिराम नाम उच्चारण करतसंते होतु है ॥ श्लोक ॥ अगस्त्यसंहितायां ॥ श्रीरामेति बदन्ब्रह्मभावमाप्नोत्यसंशयस्तत्वबिद्यार्थिनोनित्यं रमंतेचित्सुखात्मनि ( १ ) पुनिलोकलाहु उज्ज्वलयश अरु परलोक निबाहुनाम मोक्षदाता है ( ११ ) पुनि कहतसुनत समुझतसंते सुठिनीक है गोसाईं कहते हैं कि मोको तौरकाररामरूपही है अरु मकार लक्ष्मण रूपही है तातेरामलषणसम प्रिय हैं मोको ( १२ ) बरणत बरणबरण जो दोऊ अक्षर तिनको भिन्नबरणौं तो प्रीति बिलगाइ जाती है काहेते बीच में औरअक्षरन परिजाइगो अरु रकार मकार दोऊ ब्रह्मजीवइवसहज संगी हैं जीवको अन्तर्य्यामी ब्रह्मअनादि एक संगीहै बद्धजीवते अरु नित्यजीवताईं कबहूं अलग नहीं है तैसे रामनाम है ( १३ ) पुनि नरनारायणसम सरस सुष्टुभ्राता हैं कबहीं भिन्न नहींहोते हैं नरनारायण सम्पूर्ण ब्रह्माण्डको पालन करते हैं पर जम्बूद्वीप को अधिक पालन करते हैं तापरभरत खण्डको विशेष पालन करते हैं जैसे कोई राजा अपने समस्तराज्यकोपालन करतुहै पर अपने शहरकी रक्षा बहुत करै है अरु महलकी रक्षा विशेष करतु है तैसे

रामनाम सर्बजीवको रक्षकहै पर जे वेदवेत्ताहैं तिनकी अधिक रक्षा करत हैं पर जिनजन केवल रामहिनाम हृदयमें बसायो है तिनको त्रातानाम रक्षक हैं विशेष पालन करतु हैं ( १४ ) भक्ति जोहै सोई सुन्दरि स्त्री है ताके दोऊकानके बिभूषण हैं सम्पूर्ण जगत्के हित

**ब्रह्मजीवइवसहजसंघाती १३ नरनारायणसरससुभ्राता जगपालनबिशेषजनत्राता १४ भक्तिसुतियकलकरणबिभूषण जगहित हेतुबिमलबिधुपूषण १५ स्वादतोषसमसुगतिसुधाके कमठशेषसमधरवसुधाके १६ जनमनमंजुकंजमधुकरसे जीहयशोमति**

कार को रकार बिमल पूषणकहे सूर्य है रकार एकरस उदयरहै है निर्दोषमातदिल है सदा उनसूर्य में अनेक दोष हैं तैसेही चन्द्रमा जानब मकार विमल चन्द्रमा है ॥ श्लोक॥ मुक्तिस्त्रीकर्णपूरौमुनिहृदयवयः पक्षतीतीरभूमी संसाराषारसिंधोः कलिकलुषतमस्तोमसोमार्कबिंबौ उन्मीलत्पुण्य पुंजद्रुमललितदलेलोचनेचश्रुतीनां कामंरामेतिबर्णोसमिहकलयतांसन्ततंसज्जनानाम् ॥ इति हनुमन्नाटके ॥ ( १५ ) पुनि रामनाम स्वाद तोष सुधा के सम है स्वमति को रकार स्वादरूप है मकार सन्तोषरूप है मुक्तिको दृष्टांत जैसे अनेक पदार्थ मिष्टान्नादिकमें स्वादतो है पर सन्तोष नहीं है काहेते कि जो आजु सुष्टुभोजनकरै पर भोर को बासना स्वादकी बनीरहती हे अरु अमृत के पानकिये ते स्वाद तोष दोनों एकहीबार पूर्णहोत है पुनि चाहना नहींरहै तैसे कर्मयोग ज्ञान इत्यादिक के कियेते सुगतिको स्वाद तो है पर सन्तोष नहीं है काहेते धर्मीकी बासनाहै कि मैं इन्द्र ब्रह्मा होउं योगी की बासना है कि मैं काल को जीतिलेउं सदा चिरंजीव रहउं याही तन ते अरु ज्ञानीकी बासना है कि महीं ब्रह्म हौं तीनिहूं की कल्पनामात्र है अरु रामनाम के स्मराण ते सुगति को स्वाद तोषदोनों पूर्णहोते हैं एकहीबार पुनि मुक्ति कै चाहना नहीं रहै अपरकी का चली है अरु जैसे कमठशेष वसुधानामपृथ्वी को धरे है तैसे रामनाम दोऊ अक्षर बुद्धिमहिरूप जाबुद्धिमें रामनामआवै सोबुद्धि अचलहोइहै ( १६ ) जनजो है दास तिनको मनकंज है मंजुकहीनिर्मल ताकेरस ग्रहण को रामनाम युगमधुर है पुनि जीभ श्रीयशोदाजी हैं रकारदीर्घसंयुक्त श्रीकृष्ण रूप है मकार हलधर रूप है बलदेव तौ जेठेहैं पाछे क्यों कहा रकार श्रीकृष्ण परब्रह्म हैंमकार हलधर शुद्धजीव है ताते क्रमहीते कहा जैसे श्रीयशोदाजी को मन वचन कर्म श्रीकृष्ण बलदेवते क्षणहुभरिनहीं भिन्न होइ तैलवत्धार मनवचन कर्म कै वृत्तिअखण्ड लगीरही एकरस तब श्रीकृष्ण बलभद्रकेलीला परमानन्द रसमय श्रीयशोदैजी जान्यो है तैसे जाकी रसना रामनाम एकरस अखण्ड तैलवत्धार स्मरण करती है सो रामनाम को सुख ब्रह्मानन्द परमानन्द रसमय ओही जानैगो जैसे गूंगा पदार्थ को स्वाद गूंगही जानैहैकहि नहिंसकै ( १७ ) दोहार्थ एकछत्र है जो रकारमेरेफहै सो जलतुंबिका

**हरिहलबरसे १७ ॥ दो० ॥ एकछत्रयकमुकुटमणि सबबरणन परजोउ। तुलसीरघुबरनामके बरणबिराजतदोउ १८ ॥चौ०॥ समुझतसरसनाम-अरुनामी प्रीतिपरस्परप्रभुअनुगामी १९॥ नामरूपद्वौईशउपाधी अकथअनादिसुसामुझिसाधी २०॥ को**

के न्यायते सबअक्षरनके शीशपर दिव्यछत्ररूप शोभित है मकारहल मोनुस्वारः यहिसूत्रकरिकै मकार दिव्यमुकुटमणिवत् द्वौशोभित हैं अरु जोरेफ की आकार मकार की अकार दीर्घअकारताके आश्रयसब अक्षर हैं सोअकारराजा है। श्लोकद्वै॥ श्रीमन्महारामायणे। निर्वर्णरामनामेदंकेवलंचस्वराधिपंमुकुटौछत्रसर्वेषांमकारोरेफव्यंजनं १ अन्यच्च यन्नामसंसर्गबसाद्विवर्णौनष्टस्वरौमूर्द्धिनगतौस्वराणांतद्रामपादौहृदयेनिधायदेहीकथंनोदर्ध्वगतिं प्रयाति २। ( १८ ) अब गुसाईंजी रामनाम अरु नामीकही बिग्रह परमदिव्यमूर्ति रामस्वरूप सो कहते हैं काहेते जो कोई कहै कि गुसाईं जी नामाकाररहे हैं स्वरूपाकार अरु ब्रह्मज्ञान में सामान्यरहे हैं ताते नामनामीको प्रकरण कहते हैं तहां त्रैताप के उपासक सब हैं सावयवब्रह्म अरु निरावयवब्रह्म अरु शब्दब्रह्म नामतहां तीनिहू तत्त्व एकही है पर ध्यानज्ञानते नाम करिकै जीवको ब्रह्म परब्रह्म द्वौपरमेश्वरकै प्राप्तसुलभ आगे कहते हैं समुझत सरसनाम अरु नामी नाम अरु नामी जो स्वरूप सो समुझत सन्ते सरसकहे बरोबरि है अरु दोउनकी प्रीति परस्पर कैसी है जैसी प्रभु जो स्वामी की

प्रीति सेवकपर अरु सेवक की प्रीतिप्रभुपर है इहां ऐसो न जानबकि नाम नामी में को स्वामी है को सेवक है इहां प्रीति बरोबरि लीन्हहै सेवक स्वामी की॥ श्लोकार्द्ध॥ योमांपश्यतिसर्वत्र सर्वंचमयिपश्यति॥ भिन्नश्लोक॥ येयथामांप्रपद्यंतेतांस्तथैव भजाम्यहं भगवद्गीतायां ( १९ ) नामरूप द्वौईशउपाधी जो कही किनामअरुरूप ईशविषे उपाधि है ईश जो है सो नामरूप रहित है जबदेव महि गऊ ब्राह्मण सन्तजन को राक्षसन करिकै पीड़ाभई तबईश इनकेरक्षाकी उपाधिकरिकै रूपनाम को ग्रहण करत है जो यह अर्थकरिये तौ पूर्वापर विशेष होत है अरु शास्त्र को विशेष पूर्बापर है पूर्वापर विशेष अरुग्रन्थ कर्त्ता के मत में विरोध होत है कैसे यहनाम प्रकरणमें पूर्बही स्वरूप को विशेष कीन्ह है बन्दौंरामनामरघुबरको रघुवर विशेषणकहा अरुद्विभुज धनुर्द्धर विशेष कहा और प्रकरण के परे में राम नाम विशेष कहा दोहा॥ रामचरित शतकोटिमहँ लियमहेश जियजानि गुसाई को सिद्धांत श्रीरामनाम श्रीराम स्वरूप नित्य कैशोर धनुर्बाणधरे ताते जो नामरूप उपाधि मानिकै अर्थकरै तिनने रामायण की विषय नहींजान्यों ऐसोअर्थ इहां असिद्ध है अब यथार्थ सिद्धकरते हैं नामरूप द्वौ ईश के उपकही समीप को अधिकही प्राप्तिकरत है जो ईश को नाम स्मरणकरै किंतुईश के स्वरूप को ध्यान धरै ते द्वौईश जो परमात्मा के समीप जीव को प्राप्ति करै है इहां तौ बराबरि कहा आगे नाम के आधीन नामीकहैंगे काहेते इहां प्राप्तिहेतु है तामे सरल काठिन्यभेद है नामके स्मरण ते प्रीति संयुक्त ईश आपुही प्रत्यक्ष होतु है जीव के समीप अरु जो ईशके स्वरूप को ध्यानधरै तब ईश के समीप को जीवजाइकै प्राप्तिहोइ है पर ऐसी समाधि जबलगै जब चतुष्ट अन्तष्करणके वृत्ति अरु वाह्य इन्द्रिन कै वृत्तिएकह्वैकै आत्मामें लय ह्वै जाहि तब अखण्ड तैलवत्धार समाधि स्थित होइ ईश के स्वरूप में जैसे बिना पवन को दीपकी ज्योति नहींहलै जैसेचन्द्रमाके प्रतिबिम्ब निर्मल जब थिरहै हलैनहीं तब चन्द्रमा को प्रतिबिम्ब चन्द्रमा एकही देखिपरै है जैसे चितर्कीबेलि ऐसे जब अखण्डवृत्तिआत्मा की परमात्मा में निर्विकल्प समाधिलगै तब यह जीव देहछोंड़िकै ईश के उपकहे समीप अधिक है प्राप्ति होइ है सो कठिन है अरु जो नामजपै सनेह संयुक्त तब ईश आपुही आवतहै सहज में जैसे अपनेगुरु कोई पर्वत के परे रहते हैं अरु शिष्य के इच्छाभई कि गुरु के समीप को प्राप्तिहोउँ तहां बन नदी सर्प सिंह पहार चोर इत्यादिक करिकै पन्थ अगम है शिष्य की गम्य नहीं है अरु जो गुरु ने आपुही बिचारेउ शिष्यकोप्रेम तोशिष्य के घर आपुही आये काहेते सामर्थ हैं कृपालु हैं तबहू शिष्य गुरुके समीप को प्राप्तभयो तैसे नामकेजपते ईश आपुही आवतहै तब जीकीसमीपताभई अरु ईश के स्वरूपकोध्यान सोकठिन है काम क्रोध लोभ इत्यादिक नदी पर्वत सिंह सर्प इत्यादिक हैं ताते ध्यानमें अनेकवाधाहै जोकदाचित् निर्बिघ्न निबहिजाइ तौ जीव ईशके समीप को जाइ है ताही ते नामकेआधीनस्वरूप कहैंगे अथवाव्यङ्गअर्थ है नामरूपद्वौ ईशकेउपाधी हैं ईशको नामजपै किन्तु रूप को ध्यान करै तब ईशको उपाधिहोती है तब ईश परधामको छोड़िकै चलो आवत है तहां नामरूप अनादि है अकथहै दोनोंकी गतिसुष्टु समुझिते साधतबनै है ( २० ) नामरूप दोनों बड़ छोट नहींकहाजाय है जो कहै तौ अपराध होत है नामरूपके गुणताकोसुनिकै गुणिकै जो भेदहोइगो सो प्रवीण साधुसमुझैंगे आगे जो व्यङ्गयुक्ति है सो मैं कहत हौं ( २१ ) देखिये तौ रूप जो है सो नामके आधीनहै मेरी समुझिमें कैसे जानिये जैसे कोई एक कहूंसेरभर अन्न के रोजगार को जात है तहां दैवयोगते कहूं एकरत्न मिल्यो पीतलाल इत्यादि रूप को ज्ञानतो भयो अरु नाम नहीं जान्यो है तहां सेरभरे अन्न की बासना

**बड़छोटकहतअपराधू सुनिगुणभेदसमुझिहहिंसाधू २१ देखियरूपनामआधीना रूपज्ञाननहिंनामबिहीना २२ रूपबिशेष नामबिनुजाने करतलगतनपरतपहिचाने २३ सुमिरियनामरूपबिनुदेखे आवतहृदयसनेहविशेखे २४ नाम रूपगतिअकथ कहानी**

नहीं मिटी तहां कोई प्रबीण ने नामबताइदियो यह तो जवाहिर है किन्तु हीरा है हजारन को माल है तब तुरन्त रत्न के रूप में निश्चय भई प्रीति भई सेरभरे की बासना नाशभई तुरन्त मनमेंराजाभयो तैसे नामजाने बिनुरूप की प्राप्ति है अरु नहीं है अरु जब नामजान्यो तबस्वरूप रूप को गुणप्रताप सबै प्राप्तिहोते हैं किन्तु रूपको ज्ञानै नहीं

है जो नामते बिहीन है ( २२ ) पुनि रूप विशेष जैसे रत्नहाथ में है पीतलाल इत्यादिक रूप को विशेष ज्ञान है अरु नामनहीं जानै तहां बस्तु यद्यपिकरतल में है तदपि नहीं पहिचानी जाइ है तैसेही रामनाम जानेबिना रामजी को स्वरूपगुण प्रताप परत्वलीला धामनहीं पहिचानो जात है ( २३ ) अरु रूप नहीं देखिबे में आयो अरु स्नेहसंयुक्त नामको सुमिरण करतु है तो स्नेह की विशेषताते रूप हृदय में जरूर आवै है जैसे कोई एक सुन्दर बालक है ताकोरूप कछु दूरिते देखिकै मनमोहिगयो ध्यान बन्धिरह्यो है पुनि कछु आवरण परिगयो अरु ताबालकको मिलाचाहतहै अरु नामनहींजानै तहां जो कोई यत्नते आपुहिजाइ तब मिलाप में अतिसुख है तैसे रामनाम रामस्वरूप तहां भगवत् के कोई नामरूप होइऐसेहीजानिये ( २४ ) नामरूप के जे अनन्त दिव्यगुण हैं तिनकै अकथकहतूति है समुझतसन्ते अतिसुखदाता है पर बखानिकैनहीं कहतबनै ( २५ ) ब्रह्म के द्वैरूप हैं एकनिरावयव निर्गुणब्रह्म है अरुएकसावयवब्रह्महैजोतीनि गुणरहित परमदिव्य परमानन्दमय गुणजिनकोहै तिनकोसगुणब्रह्मकहीते दोऊब्रह्म के बीच में सुकही उत्तमसाक्षी है अरु चतुर द्विभाषिया है दोऊ ब्रह्म के स्वरूप में बोधकरिदेतु है जाकी जामें बासनाहोइ सो देखायदेत है ऐसो रामनाम है ( २६ ) दोहार्थ॥ जैसे दीपक देहरीपर धरिदेइ तब भीतर बाहिर प्रकाशकरतु है पर दीपक पलमात्र न टरै तैसे रामनाम मणिदीपकहै जीभदेहरीरूप तापर धरिदेइ लवमात्र न टरै तब चित्त बुद्धि मन अहंकार चतुष्ट अन्तष्करण अरु बाहेर पांच ज्ञान इन्द्री पांचकर्म इन्द्रीइन दोउन के भीतर बाहेर की अविद्या अन्धकाररूप सो नाशह्वैजाइ है तब भीतर बाहेर श्रीरामचन्द्रही देखिपरै हैं श्लोक वाह्यांतरसुतीक्ष्णात्ररामचन्द्रप्रकाशते बाहेर भीतर नामहीके प्रकाश ते नामरूप देखिपरै है जैसे सूर्यही के प्रकाशते सूर्य देखिपरते हैं मणि दीप क्यों कहा अविद्यानाशकरिबे को जेते साधन हैं कर्म योग वैराग्य ज्ञानादिक सो दीपक हैं

**समुझतसुखदनपरतबखानी २५ अगुणसगुणबिचनामसुशाषी उभयप्रबोधकचतुरदुभाष २६॥ दो०॥ रामनाममणिदीपधरु**

काहेते येते उपाय ते सिद्ध हैं जैसे तेल बाती संयुक्त दीप सिद्धहोत है ताते उपाधि संयुक्त है ताते बाधा है पवनरूप लोभ रामरूप बड़ो पतङ्ग है अरु रामनाम मणिदीपक है अरु निरुपाय सिद्ध है ताते निरुपाधि है अरु जो अन्तर नाम सुमिरण करते हैं ते जीवन्मुक्तहोते हैं कैवल्यमुक्ति पावते हैं पर भक्तिको नहीं प्राप्त होते हैं अरु रामचन्द्र के स्वरूप को नहीं प्राप्त होहिं अरु जे जिह्वांतर में रामनाम जपते हैं तिनको जीवन्मुक्ति कैवल्य स्वाभाविकै अनइच्छित होत है तदुपरि पराभक्ति श्रीराम समीप को प्राप्ति होते हैं तहां प्रमाण है श्रीमन्हारामायणे शिववाक्यं श्लोक ६ रकारोमूर्द्ध्निसंचारस्त्रिकुट्याकारउच्यते मकारोधरयोर्मध्येलोमेलोमेप्रतिष्ठितं १ रकारोयोगिनांध्येयो गच्छन्ति परमंपदं अकारोज्ञातिनोध्येय स्ते सर्वेमोक्षरूपिणः २ पूर्णनाममुदादासा ध्यायंत्यंचलमानसा प्राप्नुवन्तिपरांभक्तिं श्रीरामस्यसमीपकं ३ अन्तर्जपन्तियेनाम जीवन्सुक्ताभवन्तिते तेषांनजायतेभक्तिर्नचरामसमीपकाः ४ जिह्वयाप्यंतरेणैवरामनामजपन्तिये तेचप्रेमापराभक्त्यानित्यंरामसमीपकाः५ योगिनोज्ञानिनोभक्तास्सुकर्मनिरता श्चयेरामनाम्निरताः सर्वेरमुक्रीड़ातएववै ( २७ ) नामकोजीभतेजपिकै योगीजनमोहरूपरात्रीमें जागते हैं बिरति जोवैराग्य ताकोभोर ह्वै कै बिरञ्चिके प्रपञ्चते बियोगनाम छूटि जाते हैं। श्लोकप्रमाणगीतायां १ यानिशासर्वभूतानांतस्यांजागर्त्तिसंयमी यस्यांजागर्त्तिभूतानिसानिशापश्यतोमुनेः ( २८ ) रामनाम जीभतेजपिकै योगीजन ब्रह्मसुख जो है अनूप ताको अनुभवैकहेप्राप्ति होते हैं ब्रह्म कैसो है अकथ है मन वाणी के परे है अनामय कही आमयकहे रोग सो षड्व्यकार है जायते उत्पन्नभयो बर्द्धते बढ़तभयो बिपरीयते मोटेते दूबरदूबरते मोटे गौरते श्याम श्यामते गौरभयो क्षीयते दिनप्रति क्षीण होतजात है बृद्धते बूढ़ाभयो मृयते मृतकभयो येते षड्व्यकार पुनिषड्ऊर्मी क्षुधा पिपासा हर्षशोक सुखदुःख येते आमय ताते आत्मारहित है एकरस है आत्मानाम रूपरहितहै पर नामहीते आत्माको निरूपणहोत है ताते प्राकृतिनाम रूपरहित है आत्माब्रह्म तेहिके नामरूप परमदिव्य है ताते अनामयरूप कहेहैं ऐसोजो है आत्माब्रह्म ताको नामहीते जानते हैं ते ब्रह्मसुख को प्राप्त होते हैं ब्रह्मसुख अनूप है ( २९ ) श्रीरामभक्त चारिप्र–

**जीहदेहरीद्वार तुलसीभीतरबाहिरहुजोचाहसिउजिआर २७ नामजीहजपिजागहिंजोगीबिरतिबिरञ्चिप्रपञ्च बियोगी २८ ब्रह्म सुखहिंअनुभवहिअनूपा अकथअनामयनामनरूपा २९ जाना चहैंगूढ़गतिजेऊ नाम जीहजपिजानहिंतेऊ ३० साधकनामजपहिं**

कारके हैं एक जिज्ञासू हैं जो गूढ़गति हैं गूढ़गतिकही परमात्मा परमतत्त्वजो हैं श्रीरामचन्द्र जी तिनकी प्रसन्नता केहि प्रकार ते होइ सो जाना चाहते हैं किन्तु गूढ़तत्त्व स्वरूप तेऊनाम को जीभ में जपिकै जानते हैं ( ३० ) अरु एकसाधक हैं नाम को जपिकै बासना जो अणिमादिक सिद्धिन की है सो भी प्राप्त होती है सिद्धिन के नाम रूप क्रिया फल कहते हैं सिद्धिन के नाम अणिमा महिमा लघिमा प्राप्तिः प्राकाश्यं इशिता बसिता अवस्पति ये आठो भगवत्प्रधान हैं भगवान् विषय स्वाभाविकी हैं निरतिशय हैं अरु दशसिद्धी गुणसम्बंधी हैं अनूर्मिमत्तं दूरेश्रवणं दूरेदर्शनं मनोजवः कामरूपं परकायप्रवेशनंस्वच्छन्दमृत्युः देवानांसहक्रीड़ानुदर्शनं यथासंकल्पसंसिद्धिः आज्ञाअप्रतिहतागतिः ( १० ) पुनिपांच क्षुद्रसिद्धी हैं सो वर्णन करते हैं त्रिकालज्ञत्वं अद्वन्द्वपरचित्ताद्यभिज्ञता अग्न्यर्काबुबिषादीनां प्रतिष्टंभाः अपराजयः इतिपांच अब सिद्धिन को रूप कहते हैं अणिमा महिमा लघिमातीनि सिद्धि देह की हैं जिससिद्धि करिकै देहअणुरूपको धारण करै सो अणिमा सिद्धि कही १ जेहिसिद्धि करिकै देहस्थूल स्वरूप को प्राप्त होइ ताको महिमा सिद्धिकही २ जेहिसिद्धि करिकै देहलघुभाव को प्राप्तिहोई ताको लघिमा सिद्धि कही ३ जेहिसिद्धि करिकै सर्बप्राणमात्र तिनकी जो इन्द्रीतिन करिकै सहितइन्द्रिनके देवतारूप होइकै पर इन्द्रिन में प्रवेश करै ताकी प्राप्ति सिद्धि कही ४ जेहिकरिकै सुनिबे में आये इन्द्रादिकलोक अरु पृथ्वी के बिवरसप्तपातालादिक लोक अरु पर्वतन के बिवरतिन करिकै टके देखने लायक जो पदार्थ तिनको जो भोगदर्शन की सामर्थ जिस करिकैहोइसोप्राकाश्य सिद्धिकही माया अरु माया के अंश उनको प्रेरणा करना माया की प्रेरणा ईश्वरार्धीन अरु अंशन की प्रेरणा जीवाधीन यह भेद जाननासो ईश्वरता सिद्धि कही ६ विषय भोग मोअंशग रहना ताको बसिता नाम सिद्धि कही ७ जेहि जेहि सुख की चाहना करै सो सो सुखकीसीमा प्रापतिहोइ ताको अवस्पतिनामे सिद्धिकही ८ जेहि करिकै क्षुधा पिपासादिक रहित ताकोनाम अनूर्मिमत्व सिद्धि कही ९ दूरिकीबस्तुदेखना ताको दूरिदर्शन नामे सिद्धि कही १० दूरिते सुनिपरै ताकोनामदूरि श्रवणं सिद्धि कही ११ मनकी बराबरि देह की गतिहोना ताकोनाम मनोजवः सिद्धि कही १२ जैसा रूपचहा है तैसा धरिलेइ ताकोनामकाम रूप सिद्धिकही १३ पराईदेह में प्रवेशकरै ताकोनाम परकाय प्रवेशन नामेसिद्धिकही १४ स्वेच्छामृत्युहोई ताकोनाम स्वछन्दमृत्युसिद्धिकही १५ अप्सरन के संग में जो देवतन की क्रीड़ा प्राप्ति होना ताको देवानां सहक्रीड़ानुदर्शन सिद्धिकही १६ जैसा संकल्प करै ताके अनुरूप पदार्थ की प्राप्ति होई ताकोनाम यथासंकल्प सिद्धिकही १७ जाकी आज्ञा निवारणनहोइताकोनाम आज्ञा अप्रतिहतागति सिद्धि कही १८ क्षुद्रसिद्धिपांच भूत भविष्यति वर्तमान जानना ताकोनाम त्रिकालज्ञ सिद्धि कही १ शीतउष्णकरिकै पराभव नहीं होना ताकोनाम अद्वन्द्व सिद्धिकही २ पर चित्तादिक की वस्तु जानना ताको पर चित्ताद्यभिज्ञता सिद्धिकही ३ अग्नि सूर्य्यजल विष इत्यादिक को थांभना ताकोनाम अग्न्यर्काबुबिषादीनां प्रतिष्टंभ सिद्धिकही ४ काहू करिकै पराजय न होइ ताको अपराजय सिद्धिकही ५ श्रीभगवद्वाक्यं अब सिद्धिन के क्रियाफल मिलित कहते हैं भूत-सूक्ष्म जो पंचतन्मात्रा शब्दस्पर्श रूप रसगन्धतेहि विषय सूक्ष्मस्वरूपमेरोब्याप्त तेहि में धारण करै जो सूक्ष्ममन ताको मेरीअणिमा सिद्धिप्राप्ति होइ १ ज्ञानशक्ति है जाकी ऐसो जो महत्तत्त्व तामें जो मेरो रूपता में जो महत्तत्त्वाकार मनकरै ताको महिमा सिद्धिप्राप्ति होइ २ वायुआदि जो भूततिन के जो परिमाणु कही अतिसूक्ष्मरूप तिनमें जो मेरोरूप तिसमें चित्तलगावै जो योगी ताको लघिमा सिद्धिप्राप्ति होइ ३ सात्विक अहङ्कारमें जो मेरो रूपतामें जो मनको लगावै योगीप्राप्तिसिद्धि होइ ४ क्रियाशक्ति प्रधान है यामें ऐसा जो महत्तत्त्व तामें जो मेरोरूप तामें जो मनको लगावै योगीताको सर्बोपरि ऐसी जो प्राकाश्य सिद्धि ताकोप्राप्तिहोइ ५ त्रिगुणरूप जो मायाताको जो प्रेरककालरूप विष्णु तिसमें जो मनको लगावै तायोगीक्षेत्र बाह्यान्तर शरीरजीवक्षेत्रज्ञ इन दोनों की प्रेरणारूप इशिता सिद्धिप्राप्ति होइ ६ विराट् हिरण्यगर्भ कारणयेते तीनिउपाधि तिनउपाधिन से रहित जो नारायणकर तुरीयरूप अरु जिसको भगवान्शब्दकरिकै कहते हैं तारूप में जो योगीमनको लगावै ताको बसिता सिद्धिप्राप्ति होइ ७ निर्गुणब्रह्म जो मैं तारूप में जो योगीस्वच्छ मनको लगावै ताको परमानन्दरूप अवस्पति सिद्धि होई ८ इतिआठ पुनिदश गुण हेतुक सिद्धिकहते हैं श्वेतदीपके अधिपति सत्वगुणरूप धर्ममय जोभगवान्मय तिनमें मनलगावै जो योगी सो षडूर्मीरहितहोइ ताको अनूर्मिमत्व सिद्धि प्राप्तिहोइ १ षडूर्मीकेनाम क्षुधा १ पियास २ शोक ३ मोह ४ जन्म ५ मृत्यु ६ आकाशात्म जो प्राणसमष्टीरूप में तद्रूप जो मैं तामें मनकरिकै नादकर

चिंतवनकरै जोजीव सोजीव उस आकाश में प्राप्तिभई जोबिचित्रवाणी ताकोसुनैताकोदूरिश्रवणसिद्धिप्राप्तिहोइ २ व्यापक जो सूर्य्य तिनमें चक्षुकोमिलाइकै नेत्र में सूर्य्यको मिलाइकै ताउभय संयोगमें मेरोस्वरूप तेजमय ताको ध्यानकरै सो सम्पूर्णविश्वको देखै सूक्ष्मदृष्टी जो योगी सो दूरिदर्शन सिद्धि को प्राप्तिहोइ मन और देह ताकोसंगी जो प्राणते बिप्राणकरिकै सहित मन अरु देह ताको जो मेरेवायु रूपमें मुक्तकरै ताके प्रभावकरिकै जहांमनजाइ तहां देहभी जाइ ताको मनोजवः सिद्धि प्राप्तिहोइ ४ मनको उपादान कारणकरिकै जो पोषै ता दिकरूप इच्छाकरै सो सो मन रूपको प्राप्ति होइ ताको कामरूप सिद्धिप्राप्तिहोइ ५ जाजादेह में प्रवेशकरबेकी इच्छाकरै तातादेहमें जीवात्माकर चिन्तवनकरै तब अपनीदेह छोड़िकै प्राणहै प्रधानयामें ऐसो जोलिंगशरीर सो लिंगशरीर वाह्यवायु में प्रवेशकरिकै तिनमार्गकरिकै तेहि तेहि देहमें प्रवेशकरै ताको प्रवेश सिद्धि प्राप्तिहोइ दूनोंएड़ी करिकै गुदाको दाबै अरु प्राणको क्रमकरिकै हृदय उरस्थल कण्ठ मूर्द्धिन इनमें प्राण उपाधि करिकै सहित आत्माको चढ़ावै अरु चढ़ाइकै ब्रह्मरंध्रद्वार ते ब्रह्म को अथवा और अपेक्षितलोकनको मनकरिकै आत्मा पहुंचावै तब तनकर परित्यागकरै ताको स्वच्छन्द मृत्युसिद्धि प्राप्तिहोइ ७ देवतन के क्रीड़ामें बिहारकरबेकी इच्छाकरै मेरी मूर्त्तिरूप सुरसत्व ताको चिंतवन करै तो सत्वअंशतेभई जो देवतनकीस्त्री सो प्राप्तिहोतीहै बिमानसहितताको देवानांसहक्रीड़ानुदर्शन सिद्धिप्राप्तिहोइ ८ बिनासमयभी जिस किसी प्रकार बुद्धिकरिकै जो संकल्पकरै सत्यसंकल्पकरिकै जो मैं सत्यस्वरूप जो मैं मेरे में मनको लगावै जो योगी ताको यथासंकल्प संसिद्धि प्राप्तिहोइ ९ सब को नियंता स्वतन्त्र ऐसा जो मैं मेरे स्वभावको प्राप्तिभया जो योगी ताकीआज्ञाकहूं भंगन होइ जैसे मेरी आज्ञाभंगकहूं नहीं है ताकोआज्ञा अप्रतिहता सिद्धिप्राप्तिहोइ १० दशैवगुण हेतवः पांचसामान्य सिद्धि कही मेरी सामान्य भक्तिकरिकै शुद्धभया अंतष्करण जो योगी कर त्रिकालज्ञ जो ईश्वर तेहि में मन को लगावै आपनजन्म आपनमृत्युसहित त्रैकालकी बुद्धिप्राप्तिहोइ ताको त्रिकालज्ञत्वसिद्धिप्राप्तिहोइ १ उसी योगधारणाते अद्वन्द्व सिद्धि प्राप्तिहोइ २ इसीकरिकै पर चित्तादि कीवस्तुको जानना ताको पर चित्ताद्यभिज्ञता सिद्धिप्राप्तिहोइ ३ अग्न्यादिक जो भूत तेहिकी बाधाकरिकै रहित भगवान् ऐसो भगवान् तारूपमें जो योगी मनको लगाइ ताको अग्न्यादिक भूतकी बाधाकरै ताको अग्न्यर्काबुबिषादीनां प्रतिष्टंभ सिद्धि प्राप्तिहोइ ४ श्रीबत्सचक्रादिक जो अस्त्र अरुगरुड़ अरु ध्वजा आतपत्र व्यजन इनकरिकै शोभित मेरो अवतार तिन

## लवलाये होहिंसिद्धअणिमादिकपाये ३१ जपहिंनामजनआरतभारी मिटैंकुसंकटहोहिं सुखारी ३२ रामभक्तजगचारिप्रकारा

अवतारन को सामान्य ध्यानकर्त्ता जो योगी ताको अपराजिता सिद्धिप्राप्तिहोइ इतिबीस तीनितेइससिद्धि जो हैं सो प्राप्तिहोइँ अरु अन्त्यमें मोक्षको प्राप्तिहोइ जो कोई रामनाम लयलगाइकै जीभते जपै लयकहीअतिप्रीति अरु सर्व बिस्मरण अरु मनवाणी एकह्वैजाइ श्लोक एक पूजा कोटिसमंस्तोत्रंस्तोत्रकोटिसमोजपं जापकोटिसमोध्यानं ध्यानकोटिसमोलयः ( ३१ ) अरु एक आरतभक्त है सुतबित्तदारा लोक में यशशरीर रक्षादिक हेतुसो भी प्राप्तिहोत है जैसे द्रौपदीगज सुग्रीव इत्यादिक कोई होइनाम को जपतसंते समस्त संकट मिटिजातु हैं सुखी होते हैं पुनि परमपद को प्राप्तहोते हैं इहां यहै आरतको तात्पर्य है अरु जो आरतप्रसन्न द्रीत्य प्रपन्न कहे हैं सो इहां तात्पर्य नहीं है ( ३२ ) पुनि एक श्री रामचन्द्र के ज्ञानी भक्त हैं अपने स्वस्वरूप के प्राप्ति अस सर्व भूत में एकरस आत्मा दर्शित है ब्रह्मानन्दमें प्रसन्न है जिनकी आत्मा शान्तहोइ रही है ताको विशेष ज्ञानी कही तहां प्रमाण है श्रीभगवद्गीतायां ब्रह्मभूतप्रसन्नात्मा नशोचतिनकांक्षति समः सर्वेषुभूतेषु मद्भक्तिंलभतेपराम् १ ऐसे जे ज्ञानी भक्त हैं तिनको भी नामही आधार है श्रीरामचन्द्रके भक्त चारिप्रकार के हैं आरत जिज्ञासू अर्थार्थी ज्ञानी चारिउ सुकृती हैं अनघ कहे पाप रहित हैं उदार कही मुक्ति के भागी हैं मुक्ति उपहित क्रिया है तामें तीनिसकामी हैं ये मुक्ति के अधिकारी हैं अरु ज्ञानी जीवन्मुक्त भक्तहैं ( ३३ ) चारिहू चतुरन को रामनामही आधार है पर चारिहूमें ज्ञानीभक्त श्रीरामचन्द्रको विशेष पियारे हैं काहेते केवल भक्ति ही विशेष है जिन ज्ञानिन के सोई श्री भगवद्गीता में श्रीभगवद्बाक्यं ॥श्लोक द्वै॥ चतुर्विधाभजंतेमांजनाः सुकृतिनोऽर्ज्जुन

आर्त्तोजिज्ञासुरर्थार्थीज्ञानीचभरतर्षभः १ तेषांज्ञानीनित्ययुक्त एकभक्तिविशिष्यते प्रियोहिज्ञानीनित्यर्थमहंसचममप्रियः २ ( ३४ ) चारिहु युगमें चारिहु वेद में रामनामहीके प्रभावते मुक्ति होती है परकलि में तौ विशेष ही है ताते अपर उपाय अधिकारई नहीं है श्लोक बाल्मीकीयेटीकायां॥ रामेतिबर्णद्वयमादरेण सदास्मरन्मुक्तिमुपैतिजंतुः कलौ युगेकल्मषमानुषाणामन्यत्रधर्मेखलुनाधिकारः ( ३५ ) दोहार्थ ॥ ज्ञानीभक्तसकल कामनाहीन हैं आरत जिज्ञासू अर्थार्थी इनते निर्बासिक है अथ-

**सुकृतीचारिउअनघउदारा ३३ चहुंचतुरनकहँनामअधारा ज्ञानीप्रभुहिंबिशेषपियारा ३४ चहुंजगचहुंश्रुतिनामप्रभाऊ कलिविशेष नहिंआनउपाऊ ३५॥दो०॥ सकलकामनाहीनजेरामभक्तिरसलीन नाम सप्रेमपियूषनदजिनहिंकियोमनमीन ३६ चौ०॥ अगुणसगुणदुइब्रह्मस्वरूपा अकथअनादिअगाधअनूपा ३७ मोरेमत बड़नामदुहूतेकियजेइजगनिजबशनिजबूते ३८ प्रौढ़सुजनजनजानहिं जनकी कहौंप्रतीतिप्रीतिरुचिमनकी ३९ एकदारुगतदेखियएकू पावकसमजगब्रह्मविवेकू ४० उभयअगमजग**

वा अर्थ धर्म्म काम मोक्ष यह सब कामनाते हीन हैं अरु रामभक्ति रसमयलीन हैं रामनाम प्रेमसंयुक्त सोई अमृत को नद है तामें अपने मनको मीनकिये हैं तेज्ञानी श्रीरामचन्द्र को विशेष प्रिय हैं ( ३६ ) ब्रह्मकेदुइस्वरूप हैं एक निर्गुण एक सगुण ब्रह्मदोऊ अकथ अनादि अगाध अनूप हैं ( ३७ ) पर मेरेमत में नाम दोउनते बड़ो है जो नामदोऊ स्वरूपकोनिजबशकीन्ह निजबलते ( ३८ ) प्रौढ़कहे प्रबीणजन जे हैं ते जनके मनकी जानते हैं मैं अपने मनकी प्रतीति की प्रीतिकी रुचि कहत हौं यामें आशय है कि मैं समस्त प्रबीणनकी रुचि कहत हौं ( ३९ ) ब्रह्मको बिचार दुइबिधिको है जैसे पावक एकतौ दारुकहे लकड़ी में ब्याप्त है अरु एकअग्निप्रत्यक्ष देखिबे में आवै है जो कोई कहै कि अग्नि तौ लकरीकंडा इत्यादि की उपाधिते प्रत्यक्ष है नसुअग्नि को सूक्ष्मैरूप सिद्धान्त है दान में ब्याप्त है तहां देखिये तौ समुद्र में बड़वानल अग्निनिरुपाधि स्वरूप मान् शोभित है ताते ब्रह्म के स्वरूपदुइ सनातन अखण्ड एकरस है एकनिरावयवब्रह्म एकसावयवब्रह्म द्वौको बिवेक बिवेकी जानते हैं ( ४० ) उभयब्रह्मके स्वरूप अनेक साधनते अगम है अरु रामनामते सुगमहै दोऊ स्वरूपकी प्राप्तिकरिकै पुनि एकही देखिपरै है जैसे रबि अरु रबि को समूहतेज तहां रबिशब्द अरु रबितेज अरु रबिकी मूर्त्ति एकही है अरुभिन्नभी है तैसे श्रीरामस्वरूप परब्रह्म अरु रामरूप ब्यापक ब्रह्म अरु राम नाम एकही है कथनमात्र भिन्न है तत्त्वएकही है ऐसेही ब्रह्मको बिवेकबिवेकमान जानते हैं नीकेप्रकारते निरावयवब्रह्म अरु सावयवब्रह्मदोनों को रामही कही कहो नामबड़रामते जो सबमें रमिरह्यो है ताते रामकही पुनि श्रीदशरथनन्दनराम जाको अति लावण्य सुन्दरस्वरूप चरण मुख इत्यादि प्रति अंग अंगमें परमहंस शुकसनकादि इत्यादि मुनीश्वररमे हैं ताते रामकही रामनामरामस्वरूप रामब्याप्त एकही है नामदोऊ स्वरूपते बड़कहे हैं सो केवल प्राप्तिदेशमें नतु दशरथनन्दने रामसो ब्याप्त है रमि रहे हैं अरु दशरथनन्दनके स्वरूप अरु चरणमें परमहंसजे हैं अरु भक्तजन जेहैं ते सब रमे हैं तहां श्रीभागवत के टीका में प्रथम श्रीधरवाक्यं श्लोक द्वै ॐनमः परमहंसास्वादितचरणकमलचिन्मकरन्दाय

**सुगमनामते कहौंनामबड़ब्रह्मरामते ४१ व्यापकएकब्रह्मअविनाशी सतचेतनघनआनँदराशी ४२ असप्रभुहृदयअछतअविकारी**

भक्तजनमानसनिवासाय श्रीरामचन्द्राय १ अन्य च्चरम्यरूपार्णवेरामे मुनयोयंतपश्चरन् अतएवरमुक्रीड़ारमतेयच्चराचरे २ ताते एकही है केवल श्रीरामचन्द्र है द्वैषरूप ब्रह्म को कहना सो काहेते मुमुक्षु जीवन को परोक्ष प्रतक्ष ब्रह्म दूनोंकेप्राप्त रामनाम नामते कहते हैं सुगमते अरु नाम रूप साधन सिद्धिनहीं है सिद्ध्यैरूप है ( ४१ ) एकरूप ब्रह्मसर्बत्र ब्याप्त है अबिनाशी है ब्रह्मकहे बृहदअनं ब्रह्माण्डमें एकरस अखण्ड सम्पूर्ण जैसे आकाश सर्व ब्याप्त सर्वते भिन्न पुनि सतरूप सतकहे एकरस कालरहित चेतनकहे जामें अबिद्या कबहीं नहीं ब्यापै है वह सबकी गतिको जानैहै वाकीगति कोई नहीं जानैहै अरु आनन्दकी राशि आनन्द कही माया के सुख दुख हर्ष शोक इत्यादि

सबते रहितहै सच्चिदानन्द घन घनकहे जेहि सच्चिदानन्द बिनुएक बारको अग्रभागहू भरिकहूं खाली नहींहै ताते घनकही ( ४२ ) असप्रभु अछत प्रसिद्ध ऐसो ब्रह्मजीव के अन्तरभूत व्याप्त है जीव सूक्ष्महै जो सूर्य्यकी त्रिसरेणुकरोखा में जगमगाइ रहीहै तामें एक त्रिसरेणुको सैकराभाग होइ तामेंएकभाग ताहूते सूक्ष्महै जीव अरु तेही जीव के अन्तरभूत ब्रह्म व्याप्तहै अति सूक्ष्मतरहै अबिकारी कही षडब्यकार रहित सो कहि आये हैं पाछे तेहिते रहित है ब्रह्म कैसे जीव के अन्तरभूतब्रह्म व्याप्त है जैसे कोई मिठाई पेड़ा इत्यादि तामेंरस है रसमें स्वाद है स्वाद में पुष्टी है यहदृष्टान्त है अब दृष्टान्त कहते हैं पेड़ास्थाने स्थूल शरीर रसस्थाने चित मन बुद्धि स्वादस्थाने जीव पुष्टी स्थाने ब्रह्म ऐसे ही फूल इत्यादिक दृष्टान्त हैं देखिये तो पेड़ा जो पदार्थ है अरु ताकोरस गत रसै होइजात है परस्वाद अरु पुष्टिता ये दूनों सर्ब्बकाल में मिले हैं एकरस है जैसे बीजान्तर बीज है जाते अंकुर उठत है तैसे जीव ब्रह्मसदा मिलि रहे हैं पर जग में सर्बजीव दुखित हैं काहेते यह जो पंचजनित देह है तामें अपनपौ मानिरह्यौ है आपने अन्तरभूत जो ब्रह्म है तेहिके बिनुजाने सर्ब जीव दुखकरिकै दीन होइरह्यो है जैसे मृगा अपने अन्तर कस्तूरी है बाहर ढूंढ़त है दुखित दीन है तैसे जेहिब्रह्मके जानेबिना सर्ब जीव दीनदुखित है सो ब्रह्म सर्बब्यापी है परोक्ष है नहीं देखिपरै है ( ४३ ) जो नाम निरूपणकरै तो वहै ब्रह्म प्रत्यक्षहोइ देखिपरै नामनिरूपणका कहावै नामको निरूपण नामही की यतन ते होतहै जैसे रत्न के परखैते रत्नपरखोजातहै अपरद्रव्य के परखे रत्नकोज्ञान नहींहोतहै तैसे परमेश्वर के नाम जे अनन्त हैं तिन सब नामनको अर्थ समुझै सो निरूपण कहावै तहां रामनाममें रेफजोहै सो ब्रह्ममय तदात्मक है तहां नामनिरूपणमय कछु और कहाचा-

**सकलजीवजगदीनदुखारी ४३ नामनिरूपणनामयतनते सो प्रकटतजिमिमोलरतनते ४४॥** * * *

हतहौं पर अतिगुप्त है कहिबेयोग्य नहीं है पर बिना कहे मोपै रहा नहीं जाइ तहां श्रीरामचन्द्रके नमस्कार करिकै कछु कहत है श्रीरामचन्द्र के नेत्रनको तेज अतिशय सोई ब्रह्म है सो रकारमें रेफ जोहै सो जानबअरु रेफकी अकार अतिशुद्ध नित्यजीव है अरु दीर्घअकार मुक्तजीव है अरु मकार की अकार स्वजीव है अरु तीनहुअकार एकही है ताते जीवतत्त्व एकही है अरु हलमकार तीनि शक्तिमय है एक आह्लादिनीएकविद्याएकअविद्यायेतीनिहूशक्ति हैं तहांआह्लादिनी अतिसूक्ष्मब्रह्मानन्दरूप विद्यामेंब्याप्त है अरु विद्याअविद्या में ब्याप्त है तहांनित्यजीव जेहैं श्रीरामचन्द्र के समीप सदा अखण्ड एकरस षडब्यकार रहित सच्चिदानंदरूपहै तिनके आह्लादिनी मय बिग्रह है आनन्दरूपही है अरु जीवपरमात्मा के सुखस्वादक सतस्वरूपहै चितचिद्रूपहीहै तहां आह्लादिनी अरु जीव अरु ब्यापकब्रह्म ये तीनिहूं तत्त्वकथनमात्रभिन्न हैं नतु सर्वकाल मय एकही हैं परधाममें ये तीनिहूं तत्त्व बिग्रहमान् हैं अरु ब्रह्मांड को समसूक्ष्मरूप तीनिहूं तत्त्व है जब भगवान् भागवत कै सेवाकरै किन्तु अखण्ड भजनकरै तब ये तीनिहूं तत्त्व स्थूलहोइ जातुहैं तब रामचन्द्र के समीप को प्राप्तहोतेहैं अरु मुक्तजीवन के तनविद्यामय हैं दुखसुखहर्ष शोक पाप पुण्य रहित हैं तैसेही सामान्य विद्यामय शरीर मुमुक्ष जीवन के हैं अपर जीवन के शरीर अविद्यामय हैं हर्ष शोक दुःख सुख भरे हैं अरु रामनाममें तीनि अकारजे हैं ते शुद्ध जीव तत्त्व हैं अरु अकार ईश्वरवाचकभी है तहां प्रमाण है श्रीमन्महारामायणे शिववाक्यं श्लोकसाढ़े सातकरिकै जानब शृणुष्वपरमंगुह्यंयन्नजानंतिकेपिच केपिकेपिबिजानंति रामानुक्रोसमैवच १ तेजोरूपमयोरेफः श्रीरामविककंजयो कोटि सूर्य प्रकाशश्च परब्रह्मसमुच्यते २ सोपिसर्वेषुभूतेषुसहस्त्रारेप्रतिष्ठितः सर्वसाक्षीजगद्यापी नित्यंध्यायंतियोगिनः ३ परंब्रह्ममयोरेफः जीवोकारश्चमश्चयः चिद्वाचकोरकारस्यात्सद्वाच्याकारउच्यते ४ मकारानन्दकंवाच्यंसच्चिदानन्दमव्ययं ५ व्यञ्जनाच्चाक्षरोत्पत्तिरकाराद्ब्रह्मचाक्षरः रेफोनिरक्षरोब्रह्म सर्वब्यापीनिरञ्जनः ६ मकारंव्यञ्जनंचैवत्रिधाशक्तिस्वरूपिणी शक्तिह्लादिणीविद्या विद्यासूत्रात्मकःस्वयं ७ तहां श्रुतिः ॐयोवैश्रीरामचन्द्रः सएवलोचनाभाभातिसएवब्रह्मेतिसएवसाक्षी सएवचेतः केवलंनिर्गुणात्मकस्माम्मेलग्नं ८ इत्यथर्वणे उत्तरार्द्धेअर्द्धमात्रात्पिकोरामोब्रह्मानन्दैकविग्रहः इतिरामतापिनीश्लोक अन्यच्च नित्यकैवल्य मुक्तश्चमुमुक्षूबद्धपंचभिः अकारोनित्य कैवल्य मध्यमुक्तमुमुक्षणः १ मस्याकारोभवेद्बद्धो जीवतत्वंसनातनंईश्वररांशोकअणुर्नित्यंसच्चिदानन्दमब्ययम् २ रामनामनिरूपण अगम है जोमैं गुरुन करिकै पायों है तामें

चित्संज्ञाजनाइदियो है काहेते अतिगोपहै प्रवीण उपासक जानहिंगे ताते बहुतनहीं कहेउ अरु रामनिरूपण किसूके कहिबेयोग्यनहींहै अतिअपारहै मैं मतिमन्द काकहौं पर जो श्रीरामउपासक धनुर्बाणादि पंचसंस्कार संयुक्त परमात्मानन्य होहिंगे तिसको यहनाम निरूपणकी परमतत्त्व भासैगी अरु उनहींको फलीभूत होइगो जो सतगुरन के आश्रयहोय मन क्रम वचन ते मानदूरिकरिकै तबनाम निरूपण प्राप्तहोइगो तब सो ब्रह्म जो सबके अन्तर्भूत व्याप्तहै सो नाम निरूपण प्रकटत है जैसे रत्नकेपरखेते मोल प्रकटतुहै परजवाहिरी जानै है यथार्थ रत्नकोमोल तैसे सतगुरु जानते हैं रामनाम विषय ब्रह्मको स्वरूप तहां नामरत्नहै ब्रह्ममोलहै जैसे एकरत्न दशहजारको है सो कहूं दशहजारको बिकातभयो पुनि कहूंजाइ वहरत्न दशहजारदाम उसमें बनोहै सदा तैसे नाम में ब्रह्म सदाएकरस बनो है पुनि दूसर अर्थनाम निरूपण नाम यतनते एकनामको निरूपण है अरु एकनामकी यतनहै सो कहतेहैं श्रीनारदजू प्रह्लादको अरु वाल्मीकिको नामउपदेश कियोहै ब्रह्मादिको निरूपण संयुक्त नाम उपदेश कीनहै काहेते कि प्रह्लाद गर्भ में रहै तव जैसा रामनामको निरूपण श्रीनारदके मुखते सुन्योसो यथार्थनामको स्वरूप हृदयमों आयो काहेते एकहीबार के कहेआयो जब जीवगर्भ में रहत है तब याको सांख्यज्ञान होतहै अनेक जन्मकोज्ञानहोत है अरु जब गर्भते उत्पन्नभयो तब प्रसव पवनके बेगते ज्ञान भूलि जातहै तहां प्रह्लादको शुद्धदशामें नाम उपदेशभयो प्रसवको पवननहींलाग्यो ताते प्रह्लादकी वृत्ति रामनामाकार भई ब्रह्माकार अखण्डएक रस बाहेर भीतररामही देखिपरैं अन्तर्य्यामी रूप सो कथा प्रसिद्ध है। नृसिंहपुराणे प्रह्लादप्रतिवाक्यं ॥श्लोक॥ रामनामजपतांकुतोभयं सर्वतापशमनैकभेषजं पश्यताततममगात्रसन्निधौ पावकोपिसलिलायतेधुना १ देखियेतौ रामनाम निरूपण ते कोटिनविघ्न नाशभयो तत्काल ब्रह्म प्रकटतभयो अरु वाल्मीकिको यतनसंयुक्त रामनाम उपदेश किया है मरा मरा मरा प्रथमहिमकार उपदेशकियो पुनि रकारप्राप्तभयोकाहे ते मकार जीवतत्त्व है रकार ब्रह्मतत्त्व है ताते वाल्मीकिको प्रथम स्वस्वरूपकी शुद्धता उपदेशकियो काहेते वाल्मीकिजीकी प्रथम कछुमलिनबृत्ति रहै ताते प्रथम स्वस्वरूपहीके अधिकारी रहैं आगे परस्वरूप आपुहीप्राप्तहोयगो तब मरा मरा मरा जपतजपत कोईकाल में ब्रह्माकार बृत्तिभई ब्रह्म प्रत्यक्षभयो ताते सद्गुरुन करिकै रामनाम को निरूपण प्राप्तहोइहै अथवा यतन प्राप्तहोइ दोऊरीति एकहू में दृढ़प्रतीति धारना आवै

दो० ॥ निर्गुणतेयहिभांतिबड़ नामप्रभावअपार कहौंनाम बड़रामतेनिजबिचारअनुसार॥१॥

तब ब्रह्मप्रत्यक्ष होतहै बिनाश्रमही जैसे रत्नको मोलनहीं जानोजाइनहीं देखिपरै रत्नके भीतर तौ रुपैया देखिपरै न तौ मोहर देखिपरै पर जे रत्नपारखी हैं तेई जानते हैं जो रत्न की कीमति है तिसको मोल जे रत्नपरिखैं तेई जानते हैं अथवा खरीदकरै सो रत्नकोमोलपावै तैसे राम नामको निरूपणजानै अथवा रामनाम रटनकरै प्रेमसमेत सर्ब तजिकैतैलवत्धार तव ब्रह्मस्वाभाविकै प्रत्यक्ष होइहै इत्यर्थः (४४) इतिश्रीरामचरितमानसे सकल कलिकलुषविध्वंसने बालकाण्डे रामनाम निरूपण ब्रह्मनिर्णयोनाम सप्तमस्तरङ्गः ७॥

दोहा॥ अष्टमउमँगतरंगमें आदिअन्तलोजानि। रामचरणसबतेपरे रामनामपहिंचानि ८॥ दोहार्थ॥ निर्गुणब्रह्म जोहै तेहिते नाम बड़ो है यहिभांतिते जो रीति पाछे कहिआये हैं काहे ते रामनाम को प्रताप अपार है पुनि श्रीरामचन्द्रसे नामको बड़ो कहत हौं अपनी मति के अनुसार आगे जो यह प्रकरण गुसाईंजी कहते हैं तामें समस्तलाड़रसकी बातै हैं अपर भूलिहूनजानब इहां व्यंग्यस्तुति करते हैं जाते रघुनाथजी तुरन्त प्रसन्नहोहिं देखियेतौ यहबात लौकिकहू में प्रसिद्ध है जैसे कोईराजाहै राजा के स्वरूपते राजाकेनाम को अधिकप्रताप वर्णन करै तब राजा प्रसन्न होतहै मन वचन कर्मते तब जिनने नामकी बड़ाई कियो ताको हाथी घोड़ा वस्त्र रत्न इत्यादिक भरिदेतहैं तैसे गुसाईंजी रामनाम को यथार्थ ऐश्वर्य्य बखानिकै वैराग्य ज्ञान नवधा प्रेमा पराभक्ति श्रीरामचन्द्रसे मांगिलीनि है अरु नामरूपको सिद्धांत एक ही है यह अष्टम तरङ्गमें यहैहै जो और अर्थ करियें तौ रसको अनरसहोइजाइगो ताते विवेकीजन जानहिंगे काहेते कि जो श्रीरामचन्द्र कृपाकरिकै किसूके पार आपुजाहिं किन्तु ध्यान में आवहिं तौ वहजीव कृतार्थहोइ

पर यह दोनों होना अगम है अरु जो रामनाम उच्चारणकरै कोईहोइ कैसहूंकरै कहूंरहैसो कृतार्थहोइहै यह ध्वनि यहि प्रकरणमें है तात्पर्य्य यहैहै ( १ ) श्रीरामचन्द्र अपने भक्तनके हेतु नरतनु धरेउहै ताको अर्त्थ जैसे नर जो मनुष्य पंचभूततनुधारी कोई बड़ोराजा तैसी लीला करतेभये किन्तु नरतनुधारी जो भक्तहैं तिनको संकट निवारणकीन है ताते नरतनुधारी कहा अरु जो कोई कहै कि तुम उपासनाको खैंचिकरिकै अर्थ करतेहौ गुसाईं तो यही कहा है चतुर्भुजभगवान् जाको नारायण कही विष्णु कही सोई भक्तनके हेतु नरतनु धरेउहे द्विभुजरूप दशरथकेगृहमें अवतारलीन किन्तु कोई कहै कि निर्गुण ब्रह्म जो सर्वब्यापकहै सो भक्तनके हेतु नरतनु धरेउहै सो इहांदोनों अर्थ नहीं सिद्धि होत हैं काहेते तुलसी गुसाईं श्रीरामउपासकहै ताते गुसाईंको यहमत नहीं है काहेते जो कोई यास्वरूपको उपासक होइगो सोई सर्वोपरि मानैगो अरु जो अपरस्वरूप में पर्यवसानकरै किन्तु अपरस्वरूपही को अविर्भावतिरोभावकरै तौ वह उपासकहै नहींहै अरु श्रीतुलसीदासजी विशेष श्रीराम उपासक है अरुश्री बाल्मीकिको अवतार है भक्तमालमें कहा है जाकीकीर्त्ति भरतखंडमें पूरि रही है गुसाईंको मत श्रीरामद्विभुजधनुर्द्धर परात्पर हैं॥ तहांप्रमाण सनत्कुमार संहितायां श्रीवेदव्यासबाक्यं॥श्लोक॥ परात्परतरंतत्तवं सत्यानंदंचिदात्मकं मनसा शिरसानित्यं प्रणमामिरघूत्तमं १ पुनिनारदपंचरात्रे॥ आनंदोद्विविधः प्रोक्तः मूर्त्तश्चामूर्त्तएवच अमूर्त्तस्याश्रयोमूर्त्तः परमात्मानराकृतिः २ पुनि भागवते श्रीधरवाक्यं॥ ॐनमः परमहंसास्वादितचरणकमलचिन्मकरन्दायभक्तजनमानसनिवासाय श्रीरामचन्द्राय ३ पुनि भागवतेशुकवाक्यं यस्यामलंमहिपदस्युयशोधुनापि गायन्तिपद्यमृषयोदिगमेंद्रपट्टं तन्नाकालवसुपालकिरीटयुष्टं पादाम्बुजंरघुपतेःशरणंप्रपद्ये ४ पुनिअन्यच्च असंभूता विराद्ब्रह्मविष्णुरुद्रास्तथापरे ब्रह्मतेजोघनीभूतंवर्त्ततेजानकीपतेः ५ पुनि श्रुतिः प्रकृत्यासहितः श्यामःपीतवासाप्रभाकरः द्विभुजः कुण्डलीरत्न मालीधीरोधनुर्द्धरः देहीदेहबिभागोनस्यात्सच्चिदानंदबिग्रहः श्रीरामोपनिषद ६ पुनः श्रुतिः यस्यांशेनैवब्रह्माविष्णु महेश्वराअपि जातामहाविष्णुर्यस्यदिव्य गुणाश्चसएवकार्य्यकारणयोः परः परम पुरुषोरामोदाशरथीवभूवइत्यथर्वणेउत्तरार्द्धे ७ पुनिबाल्मीकीयेलववाक्यं वेदवेद्येपरेपुंसिजातेदशरथात्मजे वेदः प्राचेतसादासीत्साक्षाद्रामायणात्मना ८ वेदकरिके बेद्यकहीजानबे योग्य जो परमपुरुषहैं जो परमतत्त्व बेदांतको सारभूत सो दशरथ आत्मज साक्षात् हैं अरु श्रीमद्रामायण वेदकीआज्ञा है साक्षात् जोचतुर्भुजभगवान् किंतुबिराद् भगवान्किंतु अंतर्यामीब्रह्म अवतार श्रीरामचन्द्र होते तौ साक्षात्पद क्योंदेते अरुसाक्षात्कही ज्योंको त्यों होइ तातेनर देहधारी लीलाभक्तनहेतुबाललीला इत्यादिकलीलामात्रनर तनधरवकहा अरुश्री रामचन्द्र स्वरूप द्विभुज धनुर्द्धर अखंड एकरस सर्बोपर कार्य्यकारणके परेसो रामभक्तानुग्रहार्थ अवतीर्णभये जैसे कोई ऊंचेते नीचेको उतरिआवै

चौ०॥ रामभक्तहितनरतनुधारी सहिसंकटकियसाधुसुखारी २ नामसप्रेमजपतअनयासा भक्तहोहिंमुदमंगलबासा ३ ऋषिहित रामसुकेतुसुताकी सहितसेनसुतकीनबिबाकी ४ सहितदोषदुखदासदुराशा दलइनामजिमिरबिनिशिनाशा ५ रामएकतापस तियतारी नामकोटिखलकुमतिसुधारी ६ भंजेउरामआपुभवचापू भवभयभंजननामप्रतापू ७ दंडकवन प्रभु कीन्ह सोहावन जनमन अमितरामकियपावन ८ निशिचरनिकरदलेरघुनंदन नामसकलकलिकलुषविभंजन ९॥ दोहा॥ शवरीगीधसुसेवकन्ह सुगति दीन्हरघुनाथ नामउधारेअमितखल वेदबिदितगुणगाथ १०॥चौ०॥ रामसुकीटबिभीषणदोऊ राखेशरणजानसबकोऊ ११ नाम गरीबअनेकनिवाजे लोकबेदबरबिरदबिराजे १२ रामभालुकपिकटकबटोरा सेतुहेतु श्रमकीन्हनथोरा १३ नामलेतभवसिंधुसुखाहीं

साक्षात् इत्यर्थः श्रीरामचन्द्र संकटसहिकै साधुनको सुखी कीन्ह तहां यह अर्थ असिद्धहै काहेते कि दुःख सुख जीवको धर्म है काहेते जीवषद्बिकार संयुक्त है अरु परमात्मा षट्बिकाररहितरूपहै॥ तहांप्रमाण है॥ श्रीअध्यात्मरामायणे परशुरामवाक्यं श्रीरामंप्रति॥ श्लोकार्द्ध॥ षद्विकारैर्बिहितंरामंत्वद्रूपचिन्मयं ताते यह अर्थ है सहिसंकट

किये साधु सुखारी साधुन अनेक संकट सहेउ तिनके संकट श्रीरामचन्द्र आपु ग्रहणकीन्ह काहेते भक्तवत्सल हैं ताते दुष्टनको मारिकै संकट नाशकरिकैसुखीकरिदीन आगे व्यंग्यस्तुति के भावते दुइदोहाको अर्थ अक्षरार्थय जानब २ समिष्टी अर्थ श्रीरामचन्द्र समुद्र बांधिकै लङ्काजीतिकै श्रीअवध में आइकै निःकंटक राज्यकरते भये अरु रामसेवक जे हैं ते रामनाम ताको प्रेमते सुमिरते हैं तिनको भवसागर बिना श्रम सूखिजात है सुजन अपने मनमें बिचार करिलेहिंगे ( १६ ) अरु मोहरूप रावण सहित सहायजीति लेते हैं नामप्रतापते पुनि अपनेसुखमें आनन्दह्वैकै फिरते हैं रामनाम के प्रतापते ( १७ ) निःकंटक भये हैं स्वप्नेहुशोच नहीं है ( १८ ) ॥दोहार्थ॥ एकब्यापक सोरामअध्यात्मे॥ रमणाद्राम इत्यपि पुनि धनुषधारीराम अन्यच्च ॥श्लोक॥ रम्यरूपार्णवेरामे मुनयोः यन्तपश्चरन् इतिरामपदेनासौ परंब्रह्माभिधीयते १ ताते व्यापक रामरूप ब्रह्म अरु दाशरथीरामस्वरूप ब्रह्मते द्वौरूप एकहीब्रह्म हैं जैसे मणि अरु मणिको प्रकाश सूर्यसूर्य के निकटकोघन प्रकाश तैसे एकही ब्रह्म जान अरु मतबादते दुइभासते हैं ताते ब्रह्मराम द्वौते राम नाम बड़ो है यह कहिबे को हेतु यह है कि व्यापक ब्रह्म जो है सो शुद्ध विज्ञानकरिकै ब्याप्तहोत है अरु किशोर बिग्रह ब्रह्मसो प्रेमापराभक्ति करिकै प्राप्तहोत है पर विज्ञान प्रेमापराभक्ति कठिनते सिद्धिहोत है अरु रामनाम करिकै दोनों ब्रह्मरूप स्वरूप प्राप्त होते हैं पर बिनाश्रमही ताते नामदोनों ते बड़ोहै पुनि रामनाम कैसो है बरदायक जो महादेव हैं तिनको बरदानदाता है बरदायककही जो शिवजू एकबरदानै दाता हैं और कुछ नहीं हैं पुनि बरदायककही एकबरदा है जिनके बरदा कहे एक बरदानै दाता है ताहीपर आरूढ़ सदारहते हैं दूसर बाहन हईनहीं हैं उत्तम बरदाता हैं ब्यकारबर नहीं देते हैं पुनि एकसै लक्षको एककोटि होत है ऐसे एकसैकोटि श्रीमद्रामायण एक बाल्मीकिजी कीन्ह्यों है तब शिवके पासलैगये शिवजू को सुनावनेलगे तहां यहखबरित्रैलोक्यमें होत भई कि श्रीमद्रामायण कैलासपर होत है तहांइन्द्र बरुण कुबेर धर्मराज अग्नि पवन शशि बृहस्पति शुक्र अरुब्रह्मादिक सर्बदेवता अरु सनकादिक नारद इत्यादि ऋषि अरु सिद्धिजन अरु शारदा इत्यादिक शक्ति अरु ब्यासशुकदेव अगस्त्य इत्यादिक अमितमुनीश्वर अरु सातहूंपातालनागलोकपिंगल बासुकीशेष अनंतइत्यादिक तीनिहूलोककेमहामहाजनकैलासको आवतेभये श्रीमद्रामायणकै दंडवत् कीन्ह शिवसंयुक्त शिवजीके आदरसे बैठते भये एकसंबत भरेमें बिधिबिधान संयुक्त श्रीमद्रामायण शतकोटि सुनतभये सुनिकैसमस्त सहितमहादेव परमानंदपरमसुख परमहर्ष को प्राप्त भये तबकीरामाकार वृत्तिभई तबसबके यह इच्छाभई कि श्रीमद्रामायण हमहूंकोमिलै तब महादेवसे सबहीप्रार्थना कीन्ह तबमहादेव प्रसन्नतासमेत शतकोटि रामायणके तीनभागकीन तेंतीसकोटि तेंतीसलाख तेंतीसहज़ार तीनसै तेंतीसश्लोक दशअक्षर ब्रह्मादिकनको दीन्ह सो स्वर्गको लैगये अरु उतने अनंतजो शेषजीहैं तिनकोदीन सोपातालको लैगये अरु उतने मुनिनको दीन्ह सो सातहूद्वीप नवखण्ड में बटिगयो बाकीरहिगयो दुइअक्षर रामनाम सो महादेव सबते मांगिलीन्ह हृदय में बिचारिकै जो कोई कहै कि महेश तो ऐसा रामनाम दुइअक्षर लैलीन्ह तब रामायण शतकोटि अपरहै सो तब रामनाम रहितभयो ताते महेश न लीन्ह किन्तु दोऊअक्षर रामायण में रहे सो व्याप्त रहे किन्तु भिन्नरहेसो तीनि बांटा न करतबनै ताते महेश मांगिलीन्ह अब रामायण में रामनाम नहींरह्यो अरुजे शास्त्र काव्य इत्यादिक हैं तेबिना रामनाम अंकितसब झूंठे हैं तहांदेवन मुनिन नागन कैसेलीन्ह यहसंदेश है सोसुनो रामायण यद्जोशब्द है ताकोअर्थ रामायण श्रीरामचन्द्र को अयनकहे स्थान है जहां सदा श्रीरामचन्द्र रहते हैं अरु जहां श्री रामस्वरूप विद्यमान

करहुविचारसुजनमनमाहीं १४ रामसकुलरणरावणमारा सीयसहितनिजपुरपगुधारा १५ राजारामअवधरजधानी गावतगुणसुरमुनि बरबानी १६ सेवकसुमिरतनामसप्रीती बिनुश्रमप्रबलमोहदलजीती १७ फिरतसनेहमगनसुखअपने। नामप्रतापशोचनहिंसपने १८॥दो०॥ ब्रह्मरामतेनामबड़बरदायकबरदानि रामचरितशतकोटिमहँलियमहेशजियजानि १९॥चौ०॥ नामप्रतापशम्भुअविनाशी साजअमंगलमंगलराशी २० शुकसनकादिसाधुमुनियोगी नामप्रसादब्रह्मसुखभोगी २१ नारदजानेउनामप्रतापू जगप्रियहरि

तहांनाम आपुहीबन्यो है अथवा रामायण रामनामही को अयन है ताते रामायण तौ रामनाम मय है तहां यह भेद है कि श्लोकन में स्वरसंधि बिभक्ति धातुक्रिया कर्म इत्यादिकन को रामनामहीको प्रकाश किहे है अरु तिनमें मिलिरह्यो है अरु श्लोकन के बीचबीच कहीं कहीं भिन्नहूहै परिपूर्वापरमें और और अक्षर परिगये हैं ताते महेश केवल रामनामही दुइ अक्षरलै लियो है सो भजनहेतु केवल अरु निशिरामनाम महेशजपते हैं अरु जहां श्रीमद्रामायण होत है तहां अवश्य करिकै सुनते हैं यह प्रसिद्ध है अरु सबही श्लोक संयुक्त रामनाम लीन्ह्यो है महादेव केवल रामनाम लीन्ह्यो है ( १९ ) शिवजी अमङ्गल बेषकिये हैं पर राम नामके प्रतापते मङ्गलराशिही अरु अबिनाशी है ताते जिनके केवल रामनामही आधार है सो कैसहूरहै मङ्गल रूप ही है ( २० ) शुकसनकादि इत्यादिक नामके प्रतापते ब्रह्मसुख भोगी हैं ( २१ ) रामनामके प्रभाव को नारदजान्योहै सम्पूर्णजगत् को हरिहर प्रियहैं अरु दोऊजनको नारदप्रिय हैं ( २२ ) रामनाम प्रह्लाद जपेउ है ताते रामप्रसादते प्रसादकही प्रसन्नताते भक्तशिरोमणि भयेहैं ( २३ ) पुनि ध्रुवजी ग्लानिसंयुक्त नामजपेउ है एकबार ध्रुवजी पांचबर्ष पूर्णअवस्थाभई है कोईसमयमें पिता जोहैराजा उत्तानपाद ताकीगोदमें बैठबे को चले तहां छोटीरानीको नामसुरुचि सो राजा के पासबैठीरहै सोध्रुवजीसों कहतीभई हेध्रुव अबैतुम राजाकी गोदमें बैठबेयोग्य नहींहो जाइकै तपकरहु भगवान्से बरमांगिकै हमारेगर्भमें उत्पन्नहोहु तबराजाकी गोदमेंबैठो यहबचन सुनिकै राजानहींबोल्यो रानी के बशरह तब ध्रुवजी ग्लानिमानिकै अपनी माता के पासगये माताकोनाम सुनीति तबमाता पूंछतीभई ध्रुवजीसबसमाचार कहि गये तबमाता शोचसंयुक्त कहती है हे पुत्र आपुमत शोचकरौ हमारो समय ऐसही है तब ध्रुवजी कहा हे मातु जेहि भगवान् के हेतु तप करिबे को कहेउ सोभगवान् कैसो है अरु कहां है तबमाता बोलतीभई हे पुत्र भगवान् कोटिनकंदर्पकी शोभाते अधिक है अरु जेहिको चक्रवर्तीराजा राज्य छोंड़िकै भजतहैं अरुमुनीश्वर परमहंस इत्यादिक विज्ञानीभजते हैं अरु जेहि भगवान्की भृकुटीकी एकबिलासमें कोटिन ब्रह्माण्ड उद्भवस्थिति लय

**हरहरिप्रियआपू २२ नामजपतप्रभुकीन्हप्रसादू भक्तशिरोमणिभेप्रहलादू २३ ध्रुवसगलानिजपेउहरिनामू पायउअचलअनूप**

होते हैं अरुइनराजन की कौनगतिहैअरु वहभगवान् सर्वत्रपरिपूर्ण है जल थल नभ देशकालचर अचरमें पूर्ण है अरु सबको साक्षीरूप सबको चैतन्यकर्त्ता सबकोकर्मफलप्रदाता सबको प्रेरक सबके परेहैं तब ध्रुवजी कहा हम वाहीप्रभु को भजन करहिंगे यह संकल्पकरिकै तब तपहेतु चलतेभये माताने बहुतप्रकार समुझायो ध्रुवजी नहीं मान्यो तब राजा सुनेउ कि ध्रुवजी वनको जातेहैं तब राजाने ध्रुवजीको बहुतप्रकार बुलायोकिराज्यलेहिंफिरि आवहिं तब ध्रुवजी विचारकीन्ह कि देखौ तौ मैंने अबहीं भगवान् को नहीं जान्यो घरते निकसतमात्र राज्य मिलती है प्रभुबड़े सामर्थ्य हैं यह जानकै नहीं फिर्योतब कछुदूरि में नारदजीमिले ध्रुवजीसों बोलतेभये चलो हम तुमको राज्य दिवाइदेहिं अरु तुम बालकहौ वनमें तुम्हारी रक्षा कौन करैगो तब ध्रुवजी बालतेभये हे महामुनि श्रीनारदजी राज्य को मैं नहीं चाहौं अरु मेरीरक्षा सोई पुरुषकरैगो जो सबजगत् की रक्षा करतु है अरु जो दशमास गर्भ में रक्षाकियो है सो इहां हमारी रक्षाकरैगो तब नारदजी प्रसन्नह्वैकै परमेश्वर को नाम उपदेशकरतभये ध्रुवजी दृढ़ करिकै जपतभये षट्मासमें भगवान् प्राप्तभये पुनि अचल अनूपम ठाउ पायउहै इतिप्रसंगे श्रीभागवते ( २४ ) पुनिरामनाम अतिपावन कर्त्ता ताको सुमिरिकै श्रीहनुमान्जोहैं ते श्रीरामचन्द्रको अपनेवशकरिराख्यो है ( २५ ) पुनि अजामिल गज गणिका अपरकहे कोलकिरात भिल्ल यमनइत्यादिक नामके प्रभावते शुद्धह्वैकै परमपदको प्राप्तभये हैं पुनि येते सब बिवशह्वैके नाम उच्चारणकियो है ते श्रीरामचन्द्र को प्राप्तभये हैं अरु जो प्रीति सों नाम उच्चारणकरै है सो तो श्रीरामचन्द्र को प्राप्तही है यामें कौन आश्चर्य है प्रमाण बाराहपुराणे शिववाक्यं॥ दैवाच्छूकरशावकेननिहतो म्लेक्षोजराजर्जरो हारामेतिहतोस्मिभूमिपतितो जल्पंस्तनुत्यक्तवान् तीर्णोगोस्पदवद्भवार्णवमहो नाम्नः प्रभावात्पुनः किंचित्रंयदिरामनामरसि कास्तेयांतिरामास्पदं १ पुनि श्रुतिप्रमाण है यश्चांडालोरामेतिवाचंबदेततेनसहसं वदेत्तेनसहसंभूंजीयात् ( २६ ) कहँलगि रामनाम की बड़ाई मैं करौं श्रीरामचन्द्र जो अपनो रामनाम ताकी महिमा कहा चाहैं तो नहींकहिसकैं हैं इहां व्यंग्यस्तुति अलंकार है जैसे कोई राजा को कहै कि आप तो कृपिणहो पर तुम्हारो प्रताप एसो है जो कोई तुम्हारोनामलेइ तो बन में सिंह नहीं बोलिसकै है अपर की का चली है तब यह

**मठामू २४ सुमिरिपवनसुतपावननामू अपनेबशकरिराखेउरामू २५ अपरअजामिलगजगणिकाऊ भयेशुद्धकरिनामप्रभाऊ २६**

सुनिकै राजा मन में बहुत प्रसन्नभयो तैसे गुसाईं तुलसीदास जी यहकहिकै श्रीरामचन्द्र को प्रसन्नकरिदीन्ह जो यह अलंकार जानै सो यह चौपाई को अर्थ जानैगा प्रमाण हनुमन्नाटके रामत्वत्तोधिकंनाम इतिमन्यामहेवयं त्वयैकातारितायोध्या नाम्नातुभुवनत्रयं १ यह व्यंग्यस्तुति है पुनि दूसरअर्थ जो श्रीरामचन्द्र कोई जीवपर कृपाकरहिं तब उसको प्राप्तहोइ तब वह कृतार्थहोइ किंतु जब श्रीरामचन्द्रके स्वरूपको ध्यान करै पर समस्त इन्द्रिन की विषय मनकी बृत्तिमें लीनकरै पुनि मनकीबृत्ति जो स्थूलसूक्ष्मसो बुद्धि में प्रवेश करिकै निश्चय करै बुद्धिकी निश्चय चित्तकी वृत्ति में लीन करिकै चित्त की बृत्ति आत्मा बिषे लीनकरिकै समाधानको प्राप्तहोइकै तब श्रीरामचन्द्र के स्वरूप में अखण्ड तैलवत्धारा समाधिबँधै तब जीव श्रीरामचन्द्रको प्राप्त होइ अरु रामनाम कोऊ कहै कहूं कहै कैसेहु कहै ते सब श्रीरामचन्द्रको प्राप्तहोतेहैं तहां प्रमाण हिरण्यगर्भसंहितायां अगस्त्यवाक्यंश्लोक द्वै॥ श्रीरामेतिपरंमन्त्रंतदेवपरमंपदं तदेवतारकंविद्धिजन्ममृत्युभयापहं १ श्री रामेतिवदंब्रह्म भावमाप्नोत्यसंशयं तत्त्वविद्यार्थिनोनित्यंरमंतेचित्सुखात्मनि २ ताते रामनाम की महिमा वेदस्मृति शास्त्र पुराण देवता मुनि इत्यादिक नहींकहिसकैं अरु जेती महिमा रामनाम की वेदकहतु हैं तित नी जीवन को नहीं समुझिपरै है अरु जो श्रीरामचन्द्र जी आपुही अपने नाम की महिमा श्रीमुखते कहहिं तो कौन समुझै है ताते श्रीरामचन्द्र अपनेनाम की महिमा नहीं कहिसकते हैं अरु श्रीरामचन्द्र अपने राम नाम को अर्थ प्रभावगुण स्वरूप सम्पूर्ण आपुही जानते हैं पर कहिनहिं सके अपर कौन जानिसकै है काहेते कि रामनाम रामस्वरूप एकही है ताते अपनोरूपगुण प्रताप नामनहीं कहते हैं और सबवेदादिक बर्णते हैं तहांप्रमाणहै श्रीमन्महारामायणे शिववाक्यं द्वैश्लोक॥ वेदाः सर्वेतथाशास्त्राः मुनयोनिर्जरर्षभाः नाम्नःप्रभावमृत्यु ग्रंतेनजानंतिसुव्रते १ रामएवाभिजानंतिकृत्स्णंनामार्थमद्भुतं ईषद्वदामि नामार्थंदेवितस्यानकंपया (२७)॥ दोहार्थ॥ न्यूनाधिकारूपकालंकारकहते हैं रामनाम अरु कल्पतरुको तदात्मक अंगकहते हैं मूल श्रीरामस्वरूप है रकार अकारत्रयस्कंध है रेफरेफ की अकारदीर्घ अकार मकार की अकार हलमकार पंचशाखा हैं चारिहू मुक्तित्त्व कहै षटशरणागत संयुक्तनवधाभक्तिपरण है कृपाकरुणादया

**कहँलगिकरौंमैंनामबड़ाई रामनसकहिनामगुणगाई २७॥दो०॥ रामनामकोकल्पतरुकरकल्याणनिवास जेहिसुमिरेभयोभागतेतुलसीतुलसीदास २८ चहुंयुगतीनिकालतिहुंलोका भयेनामजपिजीवविशोका २९ वेदपुराणसंतमतएहू सकलसुकृतफलराम**

सौशील्यादिक परमदिव्य अनन्त गुण फूलहैं प्रेम लक्षणरसरूपही फलहै पराभक्तिस्वादपुष्टी है उतकल्पतरु अर्थधर्मकाम त्रैफलदातानाम कल्पतरुजो है सो श्रीराम अर्थ धर्म काम भुक्ति मुक्ति भक्ति सदानित्यसर्बकाल सबकोदाताहै वह सबअनित्य है यह सबनित्य है अरुसंपूर्ण कल्याणकोकारक है कर्त्ता है काहेतेकि सम्पूर्ण कल्याण को निवास कहे स्थान है रामनाम हनुमन्नाटकेश्लोक कल्याणानांनिधानंकलिमलमथनं पावनंपावनानांपाथे यंजन्ममुक्षोः सपदिपरपदप्राप्तयेप्रस्थितस्य विश्रामस्थनामेकंकबिवरबचसांजीवनं-सज्जनानां बीजंधर्मद्रुमस्यप्रभवभवतांभूतयेरामनामः १ गोसाईं तुलसीदास कहते हैं कि जेहि रामनाम के सुमिरे ते मैं भाग्यते तुलसीदास भयों तुलसी प्रभुको अतिप्रिय हैं तेहिको मैं दासभयों यह तुल्य योग्यता लंकार है किंतु जेहि रामनाम के सुमिरे ते नामके भाग में भागीभयों तुलसीकहै तुल्य योग्यता ऐसी दासत्व को प्राप्तभयों श्रीरामचन्द्र के तुल्यदास तुल्य योग्यभयो अथवा वृन्दानामे जलंधरकी स्त्री सो नाम हीके प्रभाव ते तुलसीरूप दासत्वको प्राप्तिभई तुलसीदास जी कहते हैं (२८) चारिहूंयुग में तीनिहूंकाल में तीनिहूंलोक में रामनाम के प्रभाव ते जीव बिशोक होते हैं जन्म मरणरूप शोक ताते रहित होते हैं (२९) पुराण को सिद्धान्त अरु शास्त्रवेद को सिद्धान्त अरु सन्तनकोअनुभव सिद्धान्त विशेष येही है जेते सुकृत हैं योग वैराग्य शुभकर्म कांड शुभज्ञान कर्मकांड शुभ निजसउपासनाकांड इत्यादि सुष्टकृत हैं पर सबको फल रसमय राम ये जो दूनोंबर्ण हैं तिनमें स्नेह सर्बभाव ते एकरस में करना (३०) प्रथमयुग सतयुग तामें नाम को जपै अरु प्रभुके स्वरूपको ध्यानकरै तब जीव

कृतार्थहोहि अरु त्रेतायुगविषे नामजपै अरु सात्विकीयज्ञकरै प्रभुको समर्पणकरै तब जीव कृतार्थहोहि अरु द्वापरयुगविषे नाम जपै अरु प्रभुके पद पूजनकरै प्रभुको समर्पणकरै तब प्रभुको परितोषहोइ तब जीव कृतार्थहोइ ( ३१ ) अरु कलियुग जो है सो केवल मल जो है पाप तेहिको मूल है ताते मलीन ह्वै रह्यो है तहां पायस समुद्रवत् भरिरह्यो है तहां जन जो है प्राणी तिहुको मनमीन ह्वै रह्योहै नहीं भिन्न ह्वै सकै है जलमीनइव ( ३२ ) तेहि कलिकाल कराल बिषे

**सनेहू ३० ध्यानप्रथमयुगमखबिधिदूजे द्वापरपरितोषकसमपूजे ३१ कलिकेवलमलमूलमलीना पापपयोनिधिजन मनमीना ३२ नामकामतरुकालकराला सुमिरत शमनसकलजगजाला ३३ रामनामकलिअभिमतदाता हितपरलोकलोकपितुमाता ३४ नहिं**

रामनाम कल्पतरु है सम्पूर्ण शुभकामना को दाता है ताते राम नामके सुमिरतसन्ते सम्पूर्ण जो है जगजाल सो समस्त शमन कही नाशहोइ जातु है अथवा पापरूप समुद्र में मनरूप मीन ताको निकासि लेतु है जैसे कोई सागर में जाल परै है सो मीन इत्यादिक जलके जीव सबको निकासिलेतु है तैसे कोई राम नामकहै जो सुनैं जो सुमिरै जो बिचारै अरु रामनाम उच्चारणकरै जहांतक शब्दसुनिपरै सो सर्बजीवको मनसंसारसागरते निकसिजातु है काहे ते रामनाम महाजाल है ( ३३ ) रामनामचारिहुयुग में अभिमत कहे बांछित आनन्द मोक्षदाता है पर कलियुग में विशेष एक रामनामही मोक्षदाता है अपर हईनहीं है अरु परलोकको हितकारी एकरामनामही है अरु लोकमें हितकरिबेको उज्ज्वलयश शरीर को पालन रक्षा इत्यादिक सोकरिबेको परम हितकारी पितामाता समान हैं ताते परलोक अरु लोक दोउनमें निर्मल फलदाता रकारपितारूप मकारमातारूप जीव पुत्ररूपहै ( ३४ ) यहजो कलिकाल है तामें न कर्मको विवेक है यज्ञ दान तपादिक अरु न धर्मको विवेक है बर्णाश्रमधर्म इत्यादिकवर्ण ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र ब्राह्मणको कर्म धर्म समदृष्टि किन्तुसमकहे चित्त बुद्धि मन अहंकार इनकीबृत्ति कामना बिषेनचलै सो सम कही ब्राह्मणको एकगुण पुनि दम पांचज्ञान इन्द्रीलक्षिकरना पुनि ज्ञानचराचर में ब्रह्मभाव करना पांचकर्म इन्द्रीतिनकी विषयरोंकिदेना पुनि तपकरना पुनि शौचत्रिकाल स्नानादिक पुनिशांति निन्दास्तुति सहिजाना पुनि आर्जवकहे करुणादया पूज्यमान पुनि ज्ञानसारासार को जानना अपने स्वस्वरूपकी पुनि आस्यमानआशीष शापकी सामर्थ्ययेतेनव ब्राह्मण में स्वाभाविक चाहिये पुनि क्षत्रीके कर्मषट् दानतप में शूरतेजस्वी सब कोई डरै धैर्य्यमान सबप्रकारते सावधान दक्षकहे शास्त्रवेत्ता शास्त्रविधिनीतिकरना युद्ध में अचलता वेदविधि दानकरिकै ईश्वरार्प्पण ये षट्क्षत्रीके स्वाभाविक धर्म हैं वैश्यकेधर्म कृषी बाणिज्य गऊ को सेवन शूद्रतीनिहूबर्णकी सेवाकरै प्रमाण भगवद्गीतायां श्लोकतीनि॥ शमोदमस्तपः शौचं क्षांतिरार्जवमेवच ज्ञानविज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्मस्वभावजं १ शौर्यंतेजोधृतिर्दाक्ष्यं युद्धेचाप्यपलायनं दानमीश्वरभावश्च क्षात्रंकर्मस्वभावजं २ कृषिगोरक्षवाणिज्यं वैश्यकर्मस्वभावजं परिचर्य्यात्मकंकर्म शूद्रस्यापिस्वभावजं ३ पुनि आश्रमकर्म धर्म ब्रह्मचारी विद्याध्ययन स्वहस्तभोजन गुरुआज्ञाकरना गृहस्थको कर्म जो धन उत्पन्न करै कोई यत्न से तामेंअठारह भागमें एकभाग तुरन्त पुण्यकरदेइ अरु सत्रह भाग में गृहस्थी करै अतिथि सेवन नात कुटुम्ब सेवन अरु पितृका नित्य नित्य तर्पणश्राद्धकरै देवऋण यज्ञकरै ऋषि ऋण तीर्थ ब्रत दान ये तीनि ऋणते तब छूटै अरु नित्य पंचबलि बैश्यकरै इन्द्रबरुण कुवेर धर्मराज अग्नि इनकेहेतु अरु पंचदेवता की पूजनकरै विष्णु शिव देवी गणेश सूर्य्यपूजिकै बिष्णुते मुक्तिमांगे किंतु जो गुरु इष्टबतावे सोईपूजनकरै पुनि बाणप्रस्थको कर्म जो ब्रह्मचारीबिवाहकरै पुनि बाणप्रस्थलेइ तब बनमेंजाइके स्त्री संयुक्त तपकरै किंतु ब्रह्मचर्यही ते बाणप्रस्थलेइ बनजाइ तपकरै पुनि संन्यासकर्म सो दुइप्रकार को एक वैष्णव एकशैव ते द्वौदण्ड ग्रहणकरिकै कहूं दुइराति नहींटिकै ग्राम में नहींजाहि रात्रि को भोजन धातु बाहन को त्याग ब्रह्मनेष्ठी वेदवेत्ता बैराग्यमान बाह्यांतर इन्द्रीजितपुनि संन्यास में दुइभेद एक बिविदिषा संन्यास जो कहि आये हैं कछुकर्म वेद आज्ञालिहे है अरु एक बिहित संन्यास परमहंस दशा इत्यादि वर्णाश्रम कर्म धर्म बहुत हैं पुनि भक्ति श्रवण कीर्त्तन स्मरण पादसेवन अर्चन बन्दना दास्यसख्य आत्मसमर्पण ये नवधाभक्ति अरु प्रेमा पराये दुइसुतन्त्रा भक्ति हैं साधन रहित हैं केवल राम कृपारूप हैं येते सब कर्म धर्म योगबैराग्य ज्ञान भक्ति इनसबन को विवेक

कलियुग में नहींहोसके है केवल एक राम नाम यह कलियुग में जीवन को अवलम्बन है सर्ब कल्याणहेतुइत्यर्थः प्रमाण बाल्मीकीये भूषणटीकायां रामेतिबर्णद्वयमादरेण सदास्मरन्मुक्तिमुपैतिजन्तुः कलौयुगेकल्मषमानसाना मन्यत्रधर्मेखलुनाधिकारः ( ३५ ) कलि जो है कपट को निधान कही स्थान सोई कालनेमि राक्षस है अरु राम नाम सुमतिमान सामर्थ्य हनूमान जू हैं ताके नाशकरिवेको ( ३६ ) दोहार्थ॥ पुनि रामनाम श्रीनृसिंहजू हैं अरु कलिकाल जो है सो हिरण्यकशिपु है अरु रामनामके जापक जे हैं ते प्रह्लादजू हैं जैसेप्रह्लाद के हेतु श्रीनृसिंहजू हिरण्यकशिपु जो देवतनको शालतरह्यो है ताको मारिडारयो है तैसे जो राम नाम जपै ताके जेते कलि के कपटइत्यादिक ब्यकार हैं सो समस्त नाशकरिदेतु है अरु सन्तजन सुरमुनि हैं तिनको पालनकरैहै जरूर राम नाम ऐसो है बहुत का कहौं रामनाम कल्याण को स्थान है आधार है अरु भुक्ति मुक्ति ज्ञानभक्ति इत्यादिक सर्ब कल्याण सो आधेय है पर एकरस सम्पूर्ण अरु सर्बयुग कर्बकाल सर्बदेशमें सर्बजीवन को सर्ब कल्याणकर्त्ता एक राम नामही है ब्रह्मानन्द परमा-

कलिकर्मनभक्तिविवेकू रामनामअवलंबनएकू ३५ कालनेमिकलिकपटनिधानू नामसुमतिसमरथहनुमानू ३६॥ दो० राम नामनरकेहरी कनककशिपुकलिकाल जापकजनप्रह्लादजिमिपालिहिदलिसुरसाल ३७॥

भायकुभायअनखआलसहूं नाम जपतमंगलदिशिदशहूं १ सुमिरिसोनामरामगुणगाथा करौंनायरघुनाथहिंमाथा २ मोरिसुधारि

नन्द रूप है तहां प्रमाण है श्रीहनुमन्नाटके श्लोक एक ॥ कल्याणानांनिधानं कलिमलमथनंपावनंपावनानां पाथेयंयन्मुमुक्षोःसपदिपरपदप्राप्तये प्रस्थितस्य विश्रामस्थानमेकंकविवरवचसांजीवनंसज्जनानां वीजंधर्मद्रुमस्यप्रभवतुभवतांभूतयेरामनामः १ तहां यह श्रीगुसाईं तुलसीदास पुकारिकै कहते हैं कि सर्बकाल में उपायशून्यहोइ कै रामनामजपहु अन्यश्लोक। तदेवलग्नंसुदिनंतदेव तारावलंचन्द्रवलंतदेव। विद्याबलंदैवबलंतदेव सीतापतेर्नामयदास्मरामि १ ताते रामनाम सर्बकालमें विर्विघ्नमंगलकर्त्ता है ( ३७ ) इतिश्री रामचरितमानसे सकलकलिकलुष बिध्वंसने बालकाण्डे श्रीसीतापति रामनामसर्बोपरि वर्णनंनाम अष्टमस्तरंगः ८॥ :: :: ::

दोहा॥ नवतरङ्गमेंनामफल रामकृपाषट्शरण रामचरणसौशील्यरस सतमहात्मदुखहरण ९ रामनामभावसमेत जपै किन्तु अभाव समेत जपै किन्तु अनखकहे ईर्षासमेत जपै किन्तु आलस कहे जम्भुवातसन्तेकिन्तु आलस कहे सब प्रकार हारिकै आसक्त होइकै रामनाम कैसहूंजपै दशहूं दिशामें मंगलहोइहै पश्चिम बायब्यकोण उत्तरईशानकोण पूर्बअग्निकोण दक्षिणनैऋत्यकोण अरु ऊद्ध्र्वदिशा आकाश पुनि अर्द्धदिशा पाताल येते दशदिशा ताकेदेवता दशक्रमहीते जानब वरुणबायु कुबेरशिव इन्द्र अग्नि यम निऋति आकश को देव आकाशही है किंतु कोई मुनि वाक्य है आकाश को देवता शिवभगवान् है पवनतत्त्वको देवताअनन्त जोभगवान् शेषहै अरु अग्नितत्त्व को देव सूर्यभगवान् है जलकोदेव वरुणभगवान् है महितत्त्वको देवता बाराह भगवान्है अरु पातालकोदेव अष्टकुलीनाग भगवान्है येते दशदेवता दशदिशाके अरु तीनिगुण देवता संयुक्त रामनाम जपतसन्ते मंगल करते हैं अथवा दशदिशा पांच ज्ञानइन्द्रीश्रोत्रत्वक् चक्षु रसना घ्राण पुनि पांच कर्मइन्द्री मुख हाथ पग लिंग गुदा येते दशइन्द्री दशैदिशा तिनके देवता क्रमहीते जानब आकाश देवता श्रवणको ताको विषयशव्द त्वक्को पवन देवविषय स्पर्श चक्षुको देव सूर्य विषयरूप जीभ को देव बरुण विषयरस नासिका को देवता अश्विनी कुमारसूर्यकेपुत्र ताकी विषयगन्धि मुखको देव अग्नि विषय भक्षण हाथकेदेव इन्द्र विषय ब्यवहार पगको देव यज्ञ विष्णु विषय चलन लिङ्गको देवप्रजापति दक्ष विषय मैथुन गुदाको देव यमराज विषय विसर्ग येते दश दिशा अरु ताके देवता समस्त परम दिब्य मङ्गल करते हैं रामनामकेजपेते सो प्रह्लाद में देखिलेव॥ प्रमाण नृसिंहपुराणे प्रह्लादवाक्यंपितरं प्रति श्लोक एक॥ रामनामजपतांकुतोभयं सर्बतापशमनेकभेषजं यस्यताततममगात्रसन्निधौ पावकोऽपिसलिलायतेऽधुना ( १ ) ऐसेहीबाल्मीकि ध्रुव इत्यादिक भये भावते रामनाम किनने जपेउहै प्रह्लाद विभीषणइत्यादिक जे ऐसे दुष्टनकी संगति में रामनामके प्रतापते भक्तराज भये रामनाम

की दृढ़ताते अरु कुभावते हिरण्यकशिपु रावण इत्यादिक नामकहे हैं ते कृतार्थ भयेहैं अरु अनखते शिशुपाल इत्यादिकनाम कहे हैं तेऊ कृतार्थभये हैं अरु अलसाइ कहे हारिकै आसक्तहोइकै आरतसंयुक्तद्रौपदीगज इत्यादिक ते सब लोक परलोकहूं में मङ्गलमय भये हैं ताते रामनामकै सहूजपै सो मङ्गलमय है यह ध्रुवकरिकै निश्चय है अरु जोभावते नामजपै है तिनने दशनामापराध बचाइकै जपे हैं नामापराध कौन है शिव विष्णुमें भेदकरै कोई ईश्वर तत्त्वमानिकै किन्तु ईश्वरकोटीमानिकै शिव बिष्णु में अभेद करते हैं अरु कोई जो उपासक हैं किन्तु मतबादी हैं तेऊ बिष्णु को भगवत् मानिकै शिवको भागवत् मानिकै अभेद करते हैं॥ प्रमाणभागवते॥ वैष्णवानांयथाशम्भुः ताते भगवत् भागवत् अभेद है तहां प्रमाण है॥ अन्यच्चश्लोकार्द्ध॥ श्रीमद्रामस्वरूपतोजनवपुर्भिन्नंनजातंक्वचित् मीनाद्यारघुनाथयादवपतिः सर्वेऽवतारायथा १ ताते शिवको भगवत् अत्यन्त प्रिय है अरु भगवत् को शिव अत्यन्त प्रिय है ताते द्वौ अभेद है पुनि प्रमाण हरिवंशेब्रह्मणोक्तं श्लोक डेढ़ रुद्रोविष्णुःप्रविष्टस्तु विष्णुरेवयथाभवेत् विष्णुरुद्रप्रविष्टस्तु रुद्रएवतथाभवेत् तस्मादेकत्वमापन्नौ रुद्रयेंद्रौचतावुभौ १ ताते शिवविष्णुः में भेद नहीं है अरु भगवत् के नामरूप एकहीहै तहां शिवजी केवल भगवत्नामरूप अपरकर्म जानतेनहीं ताते कीटभृङ्गके न्यायकरिकै शिव विष्णु में अभेद है जोईरीति सों जो जानै सोई रीति सों विष्णु में शिव में अभेद मानै तब नामापराध मिटै नामापराध शिव विष्णुमें भेदकरै १ पुनि वेदनिन्दा २ अस सन्त कैसहू होइ तिनकी निन्दाकहैं लघुताकरना ३ पुनि नाम के बल ते पापकरना कि हम केतेऊ पाप करैंगे नाम जपैंगे मिटिजाइगो ४ पुनि श्रद्धा हीन को नाम उपदेश करना ५ पुनि मुक्ति के साधन अनेक हैं तिन सबन को नाम की बराबरि जानै सो अपराध ६ पुनिनामके माहात्म्य में मिथ्याबुद्धि करना ७ पुनि नामके माहात्म्यमें विश्वासनहीं आवत है ८ पुनि गुरुको

## हिसोसबभांती जासुकृपानहिंकृपाअघाती ३ रामसुस्वामिकुसेवकमोसे निजदिशिदेखिदयानिधिपोसे ४ लोकहुवेदसुसाहब

निरादर ९ पुनि नामके माहात्म्य में अपरकल्पना कल्पनाकहे यह मनमें ल्यावत हैं कि जो नामकहेते मोक्ष है तौ सबैप्राणी नाम कहते हैं तौसबै मोक्षमानहैं किंतुयह मन में ल्यावत हैं कि नाम अपर साधनसहित मुक्तिदाता है १० येतेदश नामापराध हैं जो हरि अपराध होइ तौ नाम के जपेते मिटिजात है अरु जो जानिकै नामापराधकरै सोकितनौ नामजपैफलीभूतनहींहोत है अरु अजान नामापराधहोइ तौ परमेश्वर के स्वरूप में मनआवेश करिकै प्रेमसमेत आर्त्तिसंयुक्त नामउच्चारणकरै तौ नामापराध मिटिजात है परपुनि नामापराध न करै तब परमेश्वर को नाम कोटिनजन्म के संचितकर्म शुभाशुभ सो नाशकरिदेत है मोक्षकरतु है तातेजे भावसमेत नामजपते हैं नामापराध बचाइकै तेसारूप्य सामीप्यमुक्ति को प्राप्तहोते हैं अरु जे कुभावते किंतु अनख ते परमेश्वर के नाम मुख ते निकसते हैं अरु कहते कहते शरीर पातहोइजाइ तबते कैवल्य मुक्ति को प्राप्तहोते हैं अरु उनको नामापराधको ज्ञाननहीं है अरु जे आलस आसक्त आरत ते अपनी रक्षाहेतु नाम उच्चारण करते हैं ते सालोक्यमुक्ति को प्राप्त होते हैं उनको भी नामापराध की सुधिनहीं है ( १ ) ऐसो श्रीरामनाम ताको हृदय में स्मरणकरिकै धारण करिकै श्रीरामचन्द्र जीको माथनाइकै श्रीरामचन्द्रजी के गुणन के गाथाकरौं ( २ ) जिन श्रीरामचन्द्र को नाम ऐसो है ते श्रीरामचन्द्र मेरी सब प्रकारते सुधारैंगे जिनश्री रामचन्द्र की कृपाकै कृपाचाहतु है ब्रह्मा शिवादिकन कै कृपा सो अघाति ही नहीं इनसबनकै कृपा यह चाहती है श्रीरामकृपा हमारेऊपर नित्य करतहीरहैं किंतु जासुकही जिन श्रीरामचन्द्र की कृपा बिना अपरदेव की कृपा ते अघाती कहैं अघको हातकहै नाशहोतई नहीं ( ३ ) देखिये तौ हमैं एसे कुसेवक तिनहूंको अपनी दिशि देखिकै पोषण कीन्ह काहेते श्रीरामचन्द्र जी सुष्टुस्वामी हैं अरु दया के समुद्र हैं ( ४ ) अरु यह बात तौ लोकहू वेद में प्रसिद्ध है कि सुष्टु साहेब जे हैं ते सबकी बिनती सुनिकै जाकी जैसी प्रीति होती है तैसही सुसाहेब पहिचानिजाते हैं ( ५ ) जैसे कोई राजा है ताके ग्राम में सबै बसते हैं गनी हैं गरीब हैं नरनमें नागर हैं पण्डित हैं मूढ़ हैं मलीन हैं उजागर हैं ( ६ ) सुकबि हैं कुकबि हैं इत्यादिक अनेकहैं ते सब अपनीमति करिकै राजाको सराहते हैं सबनरनारि ( ७ ) तहां राजा जो है सो साधु है सुजान है सुशील है ईश

**रीती विनयसुनतपहिचानतप्रीती ५ गनीगरीबग्रामनरनागर पंडितमूढ़मलीनउजागर ६ सुकबिकुकबिनिजमतिअनुसारी नृपहिं सराहतसबनरनारी ७ साधु सयानसुशीलनृपालू ईशअंशभवपरमकृपालू ८ सुनिसनमानहिंसबहिंसुबानी भणितभक्तिमतिगति**

को अंश है अरु परम कृपालु है ( ८ ) राजा जो है सो सबकै स्तुतिसुनिकै सुष्टुबाणी ते सबको सन्मान करतभयो यथायोग्य तहां सुकबिकी भणितकही काव्य की रचना अरु पण्डित की भणित वेद शास्त्र बांचबेकीअरु अर्थन की रचना दुइकी भणित पहिचान्यो है अरु गनीकही गनतीवाले धनवान् जो हैं तिनकी भक्ति कही सेवा जो धनकरिकै करते हैं अरुनागरकही जे नरन में श्रेष्ठ हैं कुल में जातिमें क्रियामें ते राजासे उत्तम कर्म्म धर्म्म कराइकै राजा की भक्ति करते हैं इनदोनों की भक्ति पहिचान्यो है अपने विषय अरु उजागर कही सभाचातुर तिनकी सुमति की चातुरी सुष्टुमतिवाले सब सराहते हैं राजै तिनकी सुमति पहिचान्यो अरु गरीबकही दीन को कि मोंसे कछुनहींबनै जाके एक राजहीकीगति है अपर किसूको कभी जानते नहीं हैं अरु एकैग्रामीण जे गवाँर हैं अरु एकै मूढ़ हैं मूढ़कही जो किसूकी कही समुझतेनहीं मानतेनहीं एकमन बचन कर्म राजही की गति है मँते अरु एकै मलिन हैं जाको धर्म कर्म इत्यादि एकौ आवतैनहीं एक राजा के आश्रय हैं अरु एकैकुकबिहैं जिनको छन्द प्रबन्ध अलंकार अक्षरन की मैत्री लघु दीर्घ घटिबढ़ि इत्यादिक समझते नहीं एक राजाको यश प्रेमसंयुक्त पदबनाइकै गावते हैं एकराज ही की गति है इनचारिहू किंतु पांचहू की गति पहिचान्यो तहां राजा सबको सराहतभयो पर इनचारिहू पांचकी गति हृदय में जानिकै हँसिकै सराहतभयो एतासुभाउ तौ प्राकृतराजन में है यह दृष्टान्त है अब दार्ष्टांतकहते हैं जे ब्रह्मा शिवादिक सर्वज्ञ त्रिकालज्ञ तिनसबन के शिरोमणि श्रीरामचन्द्र सबके ईश महाराजन के राजा तिन श्रीरामचन्द्रजी के अनेक ब्रह्मांड सोई ग्राम हैं ताते सब बसते हैं गनीकही गनतीवाले सर्व दिग्पाल चन्द्र सूर्य इत्यादिक नागर ब्रह्मापुत्रन संयुक्त पुनि पण्डित मुनीश्वर बृहस्पति शेष इत्यादिक पुनि कबि शुक्र व्यास वाल्मीकि इत्यादिक पुनि उजागर शारदा इत्यादिक पुनि गरीब गवांर मूढ़ मलीन कुकबि ये जो पांच हैं सो गुसाईं तुलसीदास कहते हैं कि ये पांचहम सरीखे जिनको कछू आवतैनहीं सब प्रकार ते हीन हैं पर एक महाराजन के राजा श्रीरामचन्द्र परमेश्वर परब्रह्म हैं तिनही की गति हमको केवल है

**पहिंचानी ९ यहप्राकृतमहिपालसुभाऊ जानिशिरोमणिकोशलराऊ १० रीझतरामसनेहनिसोते कोजगमंदमलिनमतिमोते ११ ॥दो०॥ शठसेवककीप्रीतिरुचिरखिहैंरामकृपालु उपलकियोजलयानजिनसचिवसुमतिकपिभालु १२ महूंकहावतसबक**

अपर जे अनेक साधन लोकपरलोक के हैं कर्मकांड ज्ञानकांड अरु भक्ति जो दोनोंलिहे हैं सो सब हमको आवतै नहीं है यह सत्यकरिकै कहत हौं केवल श्रीरामगति हमको है यह उपाय शून्य प्रपत्ति शरणागत कहावत है दुर्लभ है ध्वन्यात्मक अर्थ है ( ९ ) अरु यह तौ प्राकृत राजनके सुभाव हैं अरु श्रीरामचन्द्र तौ जान शिरोमणि हैं यह भरोस है परम दृढ़करिकै अरु कोशलाधीश परम उदार दीनदयाल अशरण शरण हैं श्रीरामचन्द्र यह भरोस है ( १० ) जान शिरोमणि तौ श्रीरामचन्द्र हैं पर निसोत स्नेह ते रीझते हैं निसोतकहैं निर्मल तैलवत्धार ताते यह जरूर चाहिये कि जो कोई कर्त्तब्य ते श्रीरामचन्द्र में स्नेहहोइ ताही में संकल्पकरै अरु जो स्नेह में प्रतिकूलताहोइ ताको विशेष त्यागकरे आधी चौपाई को अर्थ पुनि कार्य ते कहते हैं यह जगत् में मेरी समान मतिमन्द कोई नहीं है मोसे कछुनहींबनै यह सत्यकहौहौं ताते मेरे ऊपर रामजी कैसेरीझेंगे ( ११ ) दोहार्थ इहां आरत गोप्तृत्व मिलित है गुसाईं कहते हैं कि मैं तौ मतिमन्द हौं पर शठ जे बालबुद्धी सेवक हैं तिनकी प्रीति कै रुचि श्रीरामचन्द्र राखतई आयेहैं कैसे जानिये जिन श्रीरामचन्द्र पाषाण की नाव अरु सुमतिमान मन्त्री कपि भालु कीन्हेंहैं अरु काठ की नाव अरु सुपात्र प्रबीणमन्त्री चाहिये अरु ज्ञानभक्ति करिकै जीव संसारतरे है यह वेद की बाक्य है अरु ब्रह्मा ने अपनीसृष्टि में ये ही मर्यादाकियो है तहां पाषाण की नाव कपि भालु चंचल ते मन्त्री अरु तृण पाषाण कोलभिल्ल राक्षस

बानर भालु इत्यादिक जिनकी ओर प्रभुदेख्यो अरु जिनने प्रभुकोदेखे तिनसबहीको परमपददीन जेहि पदको महामुनीश कठिनते प्राप्त होते हैं देखियेतौ प्रभुस्वरूप बहुत है अरु सामर्थसबहैं परजैसो श्रीरामचन्द्र कीन्हहै ऐसोकिसू प्रभुने नहींकियो ताते श्रीरामचन्द्र महाराज हैं महाप्रभु हैं परब्रह्म हैं परमकृपालु हैं यहमोको जानपरेउ है ( १२ ) रीझतराम सनेह निसोते यह चौपाई लैकें अरु यह दोहातक रामनिकाई रावरीहै सबहीको नीक यहप्रसंग में श्रीरामचन्द्रकी शरणागतजो षट्प्रकार है सोकहते हैं तातेषट्शरणागतके लक्षणप्रथम जनाइकै तब आगे चौपाइन को अर्थ करैंगे तहांप्रमाण है अन्यच्चश्लोकडेढ़॥ आनुकूलस्यसंकल्पः प्रातिकूलस्यबर्जनं रक्षिष्यतीतिबिश्वासो गोप्तृत्वबरणंतथा १ आत्मनिक्षेपवर्प्पण्यंषड्विधाशरणागतिः ताको अर्थ जो धर्मकर्म

**हतरामसहतउपहास साहेबसीतानाथसेसेवकतुलसीदास १३ अतिबड़िमोरिढिठाईखोरी सुनिअधनरकहुंनाकसकोरी १४**

ज्ञानउपासना इत्यादिक जो केवल श्रीरामचन्द्र के अनुकूलहोइ रामस्नेहमयहोइ तामेंसंकल्पकरै बारंबार कि यह करिबे योग्य है मन बचन कर्म इहैकरौं बिशेष अरु कालकर्म गुणसुभाउ बशनहोइ सोलाचार १ अरु जोरामचन्द्रसेप्रतिकूलहोइ रामस्नेहमें बिक्षेप करै सो धर्मकर्मज्ञान उपासना ताकोत्यागकरै २ पुनि आत्मसमर्प्पण तनमनबचन श्रीरामार्प्पण समस्त अपनपौदूरिकरै ३ पुनि कार्य्यन्य है श्रीरामचन्द्र मोसेकछु नहीं बनै ४ पुनि गोप्तृत्वबर्णन जिन श्रीरामचन्द्र अपनोकीन्ह है कोलभिल्ल सेवरी गीध बानर रिच्छराक्षस जिनकोजाति शरीर धर्मकर्म मनबचन लोकवेदकरिकै निंदित है तिनकोअवगुण श्रीरामचन्द्र एकहुनहींलीन अरु अपनोनीकी प्रकारतेकीन है देखियेतौ जिनकी समस्तरीति चौरासीनरक भोगकरिबे योग्यतिनसबको सेवतेरक्षाकीन परमपदको प्राप्त करिदीन ऐसे श्रीरामचन्द्र उदारकृपालुदयालुहैं जोवेदने नहीं कही गुप्तराख्यो है सो श्रीरामचन्द्र प्रत्यक्षकरिदीन अपने प्रताप ते यह स्तुति करे यहगोप्तृत्व बर्णन है पुनिरक्षामें बिश्वास जो कोई कैसउहोइ कैसिहु रीतिसे प्रीतिभय आरत इत्यादिक जे सुकृतकहे एकहुबार श्रीरामशरणजाइ ताजीवको श्रीरामचन्द्र अभय करिदेते हैं परस्वाभाविकहिंते अरु तेहिं को अवगुण देखि नहीं लेते हैं सुग्रीव बिभीषण इत्यादिक में देखिलेव यह विश्वास करना ऐसही मेरीरक्षा करैंगे इति षट् ६ बाल्मीकीये श्लोक द्वै श्रीरामचन्द्र वाक्यं॥ सकृदेवप्रपन्नाय तवास्मीतिचयाचते अभयंसर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतंमम १ मित्रभावेनसम्प्राप्तं नत्यजेयंकथंचन दोषोयद्यपितस्यस्यात्सतामेतदगर्हि तं २ दोहार्थ देखिये तौ जो मोको कोई बूझत है कि तुमकोहौ तब यहकहतहौं कि मैं श्रीराम सेवकहौं अरु औरौसबकोई श्रीरामदास कहते हैं यह बड़ी उपहास कही हँसौवाहै काहेते कि जैसो साहेबहोइ तैसोसेवक चाहिये श्रीरामचन्द्र की सेवकाई योग्य शिव हैं हनुमान् अगस्त्य शुक सनकादि शारद इत्यादिक हैं अरु मैं मतिमन्द अरु साहेब सीतानाथ तिनको मैं सेवक कहावत हौं यह बड़ी उपहास है बड़ी लघुता है इहां सीतानाथ क्यों कहा तीनिशक्ति हैं श्रीशक्ति भूशक्ति लीलाशक्तिसो श्रीसीताजी से उत्पन्न है ताते सीतानाथ कहा प्रमाण है अन्यच्च श्लोक जनाव्यंशसमुद्भूत श्रीभूलीलादिभेदतः प्रकाशंश्रीश्चभूधारं लीलालयभस्थितिं ( १३ ) देखिये तौ एते बड़े सीतानाथ स्वामी अरु मैं मतिमन्द तिनको सेवक कहावत हौं एतीबड़ी मेरीढिठाई ताकी खोरि कहें खोटाई अतिशय है ताको सुनिकै अघ अरु नरक दोनों नाक

**समुझिसहमिमोहिंअपडरअपने सोसुधिरामकीन्हनहिंसपने १५ सुनिअवलोकिसुचितचषचाही भक्तिमोरिमतिस्वामिसराही १६ कहतनशाइहोइहियनीकी रीझतरामजानिजनजीकी १७ रहतनप्रभुचितचूककियेकी करतसुरतसैवारहिये की १८ जेहिंअघब**

सिकोरते भये यह जानिकै पापकहत भयो कि यह तौ हमारो सम्बन्धी है अरु नरक कहत है कि हमारे योग्य है अरुरामसेवक कहावत है यह तौ बड़ी ढीठता है ( १४ ) अब सात चौपाई में आत्मसर्प्पण कहते हैं मैं रामसेवक कहावतहौं औ अपनी करणी समुझत हौं तौ रामचन्द्र की सेवकाई योग्य मेरे एकहुलक्षण नहीं हैं धर्मविरोधी कर्म मेरे हैं

ताते अपने मन में यह समुझिकै आपुही ते आपु मैं डरिगयो हौं तहां मेरे गुण अवगुण जाग्रत के सवप्न के श्रीरामचन्द्र जी एकहू सुधि नहीं कीन्ह कैसे जान्यो जो मेरे अवगुण श्रीरामचन्द्र सुधिकरते तौ मेरे अन्तष्करण में उद्वेगउठतो ( १५ ) तब मैं जहांतहां सन्तनते सुनेउँ शास्त्रनमें सुनेउँ गुरुन ते सुनेउँ तब सब सुनिकै हृदयके नेत्रन ते सुचित्तह्वैकै अवलोकन कियेउँ तब यह देखिपरेउ कि मेरीमति अनुसार जो है सोमैं भक्तिसो स्वामी की सराही ऐसी समुझि परतीहै कि स्वामी अंगीकार कीन्हें हैं ( १६ ) काहेते जो कहत कै नशाइजाइ कहते न बनै करते न बनै अरुहृदय में नीकीप्रकार ते सांचाहोइकै चतुष्ठ अन्तष्करण आत्मा श्रीरामार्पण करिदेइ चाहे कर्म सबनते वेद को कहा कछुबनै चाहै न बनै श्रीरामचन्द्र अपने जन के अन्तष्करण की जानिकै रीझते हैं ( १७ ) पुनि जन सों जो कछु चूकपरै सो श्रीरामचन्द्र चित्त में ल्यावते नहीं काहेते उसके मन में तौ केवल अनन्य भजन की निश्चय है अरु जो संसार बशते किंतु कालवश ते किंतु सङ्गदोष ते बचन कर्म ते ब्यभिचार बिकार होते जाते हैं सो चूक श्रीरामचन्द्र देखतेनहीं बारवार उसके हृदय की सचाईपर सुरति करते हैं अरु उसको अपनोजन बिशेष मानते हैं यह श्रीरामचन्द्र की सहजरीति है श्रीवाल्मीकीये श्लोक ४ तद्ब्रूहिवचनंदेवि राज्ञोपदभिकांक्षितं करिष्येप्रतिजानेच रामोद्विर्नाभिभाषिते १ कथंचिदुपकारेण कृतेनैकेनतुष्यति नस्मरेत्युपकाराणां सतमप्यात्मवत्तया २ नाट कैद्विःशरंनाभि संघत्तेद्विःस्थापयति नाश्रितानद्विर्ददातिन चार्थिभ्योरामोद्विर्नाभिभाषिते ३ पुनः श्रीभगवद्गीतायां अपिचेत्सुदुराचारो भजतेमामनन्यभाक् साधुरेवसमंतव्यः सम्यग्व्यवसितोहिसः ४ कैसे जानिये कि श्रीरामचन्द्र अपने जनकी चूकनहींलेते उसके हृदय की प्रीति बारम्बार सुरति करते हैं गुसाईं तुलसीदास यह कहते हैं कि मैंतो मन बचकर्मश्रीरामार्पण करिदियो है पर उपाय शून्य ताते अब चाहै मोसे कर्म धर्म

**धेउब्याधजिमिबाली सोइसुकंठपुनिकीन्हकुचाली १९ सोइकरतूतिबिभीषणकेरी सपनेहुंसोनरामहियहेरी १० तेभरतहिंभेंटत**

बनै चाहै न बनै मेरे कछु शोचनहीं है अरु मेरी दशा श्रीरामचन्द्र जानते हैं जिन श्रीरामचन्द्र मोको आपन कीन्हे हैं समस्त अवगुण मेटिकै ताते मैंतौ आपुहीते जान्यों है कि श्रीरामचन्द्र जन की चूक नहीं लेते हैं ( १८ ) जो कोई कहै कि तुम कैसे जानेउ कि श्रीरामचन्द्र मेरो अवगुण मेटिकै अपनो कीन्ह है तहां यह बात प्रसिद्ध है देखिये तो जौने अघतं बालि को मारयो सोई सुग्रीव कीन्ह देखिये तो सुग्रीव की स्त्री संयुक्त जो विषय में बालि लीनरहेउ सोई विषय में सुग्रीव लीनभयो श्रीरामचन्द्र के देखत सन्ते सो सुग्रीव को अवगुण एकहू नहीं लीन काहेते सुग्रीव शरणागत भयो है कैसे जानिये सुग्रीव सांचाह्वैकै कह्यो है श्रीरामचन्द्रसों॥चौपाई॥ सुखसम्पतिपरिवारबड़ाईसबपरिहरिकरिहौं सेवकाई सो श्रीरामचन्द्र मानिलीन पुनिकहा है सखे राज्यकरो अरु विषयकोफल जन्ममरण सो मोसे न होने पावैगो ताते एकबार श्रीरामशरण भयो ताको अभयकियो अरु ऋद्धिभोगकरै पर दंडरहितभयो श्रीराम प्रतापते ( १९ ) अरु सोई विभीषणकी रीतिजानिये ताते जीव श्रीरामशरण एक बारजाइ पुनि उसके अवगुण जाग्रतस्वप्नके एकहूनहींलेते ( २० ) देखियेतौ तेविभीषण सुग्रीव इत्यादिकन को भरत के मिलतसंते श्रीरामचन्द्र बखानतेभये पर राजसभा में जहां बशिष्ठ सुमंत्र भरजीतहां बड़ाईदेतेभये ( २१ ) दोहार्थ॥ अब रक्षा में बिश्वास कहते हैं देखिये तो प्रभु जो हैं स्वामी श्रीरामचन्द्र ते तरुके नीचे बैठे हैं अरु बानर तरुके ऊपर चढ़ेहैं पर कपिन कै सुरति श्रीरामचन्द्र के कार्य्य में लगी है ताते ऊंचे नीचे की सुधि कपिन को नहीं है तिन कपिन को श्रीरामचन्द्र अपने समानकीन्हे हैं ताते श्रीरामचन्द्र की समान शील को निधान को है अपर जे भगवत् के स्वरूप हैं ते भी ऐसी साहबी नहीं जानते हैं जैसी श्रीरामचन्द्र जानते हैं अपरकी कौन चली है श्रीरामचन्द्र अपनो स्वरूपदीन्ह समस्त रीछ राक्षस बानर इत्यादिकन को स्वरूप मुक्ति को प्राप्तकीनपर याही तनमें देखिये तौ ऐसो अपर अवतार में कब कियो है किन्तु बिना अवतारही जो परमेश्वर को स्वरूप वेद बर्णत हैं तिनने ऐसोप्रभाव कब कियो है जैसो श्रीरामचन्द्र कीन्ह हैं पाषाण की नाव रीछ बानर कोलभिल्ल राक्षस तिनसवनको सुमन्त्रीकीन्ह अरु अपनो स्वरूपकरिदीन तहां प्रसिद्ध है प्रमाण उत्तरकाण्डे हनुमदादि सबबानरबीरा धरे मनोहरमनुजशरीरा मनोहर तो एक श्रीरामचन्द्र हैं ताते समस्त रामरूपही है ऐसे एकउदार श्रीरामचन्द्रही हैं ( २२ ) ताते श्रीरामचन्द्रम-

**सनमाने राजसभारघुराजबखाने २१ दो०॥ प्रभुतरुतरकपिडारपरतेकियआपुसमान तुलसीकहूं नरामसमसाहेबशीलनिधान २२ रामनिकाईरारीहैसबहीकोनीक जोयहसांची है सदातोनीकोतुलसीक २३ बहुरिसबहिंशिरनाययहिबिधिनिजगुणदोष कहि**

महाराज ईशन के ईश परमकृपालु हैं जो श्रीरामचन्द्र कै निकाई सबकोनीकीहै ब्रह्मा शिव शुक सनकादि नारद बाल्मीकि व्यास अगस्त्य इत्यादि जे बड़े हैं अरु शवरी गीध इत्यादिक जे नीच हैं तिनसबन को रामनिकाई एकरस नीकी है जो ऐसी रामरावरी निकाई सांची है अनुमान में आवत है प्रमाण वेद कहते हैं प्रत्यक्ष मोको आपुही ते देखिपरेउ है अनुमान प्रमाण प्रत्यक्ष सर्बकाल में एकरस सांची है तो तुलसी को नीकोबनो बनायो है यह अचल विश्वास है कि श्रीरामचन्द्र मेरी रक्षाकरैंगे लोकपरलोक दोनों में यह ध्रुव विश्वास है यह षट्शरणागत गुसाईं तुलसीदास बर्णनकियो पर धारणासंयुक्त ( २३ ) यहिप्रकार ते निजगुण दोष कहिकै निजगुण कौन हैं मोहिं में मैं केवल श्रीरामशरण हौं इतनो गुण है अरु अपरकर्म धर्म योग बैराग्य ज्ञान ध्यान समाधि इत्यादिक शुभ गुण तिन सबनते रहितहौं यह अवगुण है सो सबकह्यो पुनि सबको प्रणाम करिकै श्रीरामचन्द्र के बिशद निर्मल उज्ज्वल यश जोसुनिकै कलिकहे कलित होइ रहे हैं अनेक जन्म के कलुषकहे पाप जाके बश जन्म मरणहोते हैं किंतु कलिकही क्लेश जो अनेक हैं सो समस्तनाशहोइजाइ हैं ऐसो राम यश बर्णत हौं ( २४ ) जो कोई कहै कि गुसाईं तुलसीदास श्रीरामोपासक हैं अनन्य हैं अरु बारम्बार देवतादिकनकै नमस्कार करते हैं इसमें तो अनन्यता में बिरोध भासते हैं तिसको समाधान करते हैं सुनो जो कोई देवता श्रीरामचन्द्र की बराबरि होइ तबतो देवतान्तर होइ अरु ब्रह्मा शिवादिक जे देवता हैं ते सब कोई अंश हैं कोई कला हैं कोई बिभूति है ताते श्रीरामचन्द्र से कोई भिन्नहईनहीं है तिनसब में जे रामभक्त अनन्य हैं तिनकी स्तुति गुसाईं तुलसीदास कीन्ह है मुनि देव इत्यादिक देखिये तौ महादेव श्रीरामचन्द्र के परमानन्य भक्त हैं अरु पार्बती श्रीरामतत्त्व की परम अधिकारिणी हैं अरु गणेश पार्वती की सेवा में रहते हैं अरु केवल रामनाम जपते हैं ब्रह्मा श्रीरामचन्द्र के प्रथम भक्त हैं अरु अपने को छोट मानते हैं ब्रह्मरामायणेब्रह्मणोवाक्यं नारदंप्रति श्लोकएक सीतारामौपराभक्तिः कृत्स्नंवेदशिवःशिवं तदर्द्धांगिरिजावेत्ति तदर्द्धंवेद्म्यहंमुने १ पुनि वेद कहते हैं सत्यलोके ब्रह्मारत्नसिंहासने मण्डपमध्ये श्रीरामंस्थापयित्वातस्यपूजामकरोत् तदनंतरंश्रीरामं पार्वतीरुद्रौपूतौसन्तौ तस्यपूजामकुरुतां रुद्रपूजा-

**वरणौंरघुपतिबिशदयशसुनिकलिकलुषनसाइ २४॥** * * * * *

नंतसूर्य्य श्रीरामपूजितवान् इत्यथर्व्वणे अरु सूर्य्य श्रीरामभक्त हैं अरुसिंहासन है श्रीरामस्तवराज अर्द्धश्लोक सूर्य्यमण्डलमध्यस्थं रामंसीता समन्वितम् ताते जो श्रीरामदासन को सेवनकरै स्तुति इत्यादिककरै तेहि जनपर श्रीरामचन्द्र अति प्रसन्न होते हैं अपनी सेवाते ऐसो नहीं प्रसन्न होते हैं जैसो अपने भक्तन की सेवा ते प्रसन्नहोते हैं भक्त कैसहू होइ यह सब शास्त्रन में प्रसिद्ध है ताते गुसाईं तुलसीदास जी भागवत् जे रामानन्य देवता हैं तिनकी स्तुतिकीन है अरु भागवत् मुनिनकीस्तुतिकीन है अरु चराचर की स्तुतिकीन है श्रीरामचन्द्रको सर्बांतरयामी देखिकै तामें देवतान्तर मन्त्रांशही होते हैं श्रीतुलसी की काव्य केवल श्रीरामानन्यभाव है अरु जे कोई देवतांतर मन्त्रांतर कहते हैं तिन ने तुलसीकृत की तत्त्व नहींजान्यो किंतु विरोधी हैं॥ श्लोक ९॥ आदिपुराणे भगवद्वाक्यं मद्भक्तोवल्लभोयस्य सएवममवल्लभः तत्परोवल्लभोनास्तिसत्यंसत्यंवदाम्यहं १ भारतेपाण्डवगीतायां वासुदेवस्य येभक्ताःशांतास्तेहुतमानसाः तेषांदासस्यदासोऽहं भवेज्जन्मनिजन्मनि २ कोई आचार्य्यबाक्यं नाहंविप्रोनचनरपतिर्नापिवैश्योनशूद्रो नोवावर्णीनचगृहपतिर्नोवनस्थोपतिर्वा ३ किंतुप्रोद्यन्निखिलपरमानन्दपूर्णामृताद्यं सीता भर्त्तुःपदकमलयोर्दासदासानुदासः ज्ञानावलम्बकाःकेचित केचित्कर्मावलम्बकाः वयंतुरामदासानां पादत्राणावलम्बकाः ४ ब्रह्माण्डपुराणे श्रीरामगीतायां श्रीमुखवाक्यं मद्भक्तमादरेद्यस्तु मनस्पर्शनभाषणैः तंहितंमयिपस्यामि वशिष्ठमहतामिव ५ मद्भक्तेभ्यः प्रयच्छन्ति सुवस्तूनिधनान्यपि आतिथेयंकरिष्यामि तस्याहंसीतयासह ६ येमद्भक्तस्तुतिर्नित्यं मांप्रसन्नोहितेकृतम् ७ पुनि भागवतेएकादशे सर्वभूतेषुमद्भावं सवैभागवतोत्तमः

८ श्रीरामस्तवराज रामंसत्यंपरंब्रह्म रामत्किंचित्रविद्यते तस्माद्रामस्यरूपोऽयं सत्यंसत्यमिदंजगत् ९ ताते सबको राममय जानिकै रामभक्तजानिकै स्तुतिकीनहै ( २४ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने बालकाण्डे षद्शरणागत सर्वस्तुतिवर्णनं नाम नवमस्तरङ्गः ॥९॥

चौ०॥ याज्ञवल्क्यजोकथासुहाई भरद्वाजमुनिबरहिंसुनाई १ कहिहौंसोइसंबादबखानी सुनहुसकलसज्जनसुखमानी २ शम्भुकीन्हयहचरितसुहावा बहुरिकृपाकरिउमहिंसुनावा ३ सोशिवकागभुशुण्डिहिंदीन्हा रामभक्तिअधिकारी चीन्हा ४ तेहिंसनयाज्ञवल्क्यपुनिपावा तिनपुनिभरद्वाजप्रतिगावा ५ तेबक्ताश्रोतासमशीला समदर्शीजानहिंहरिलीला ६ जानहिंतीनिकालनिजज्ञा-

दोहा॥ दशतरङ्ग महिमाकथा शिवभुशुण्डि मुनिभाष रामचरणभाषाकियो पुनिनिज गुरुकीसाख १० जो कथा शोभायमान श्रीयाज्ञबल्क्यजू श्रीभरद्वाजको सुनायो है ( १ ) सोई सम्बाद बखानिकै करतहौं समस्त सज्जनजोहौ सो सुखमानिकै सुनउ ( २ ) यह जो रामचरित मानस है अतिसुन्दर सो महादेवकोकीन है बहुरिकृपा करिकैपार्बतीको सुनायो है ( ३ ) पुनि शवजी कोई काल में काकभुशुण्डि को दीन्हों है काहेते श्रीरामभक्तको अधिकारी जानिकै ( ४ ) पुनि कोईकालमें तिन काकभशुण्डितें याज्ञबल्क्यपायो है तिन याज्ञवल्क्यजू भरद्वाजसेकह्यो है ( ५ ) तेबक्ता अरु श्रोतादोऊ समशीलकहे बरोबरि बुद्धिरहैं अरु समदर्शीरहैं अरु दोऊजन श्रीरामचन्द्रजीको समान जानतेरहैं ताते यथार्थबोधको प्राप्तरहैं ( ६ ) अरु तीनिकाल जानतेरहैं भूतभविष्यबर्त्तमान भूतकहे जो कालपीछे बीतिआयो है भविष्यकहे जो कालआगे होइगो बर्त्तमानकहे काल विद्यमानहै ते तीनिहूंकालकीगति सब जानतेरहैं जैसे अपने हाथ में प्राप्त है अमराकोफल तेहिफलको ज्ञानस्वाभाविकै जानबेमें आवत है तैसेही तीनिहूंकाल वे जानतेरहैं ( ७ ) औरो जे हरिकेभक्तसुजान हैं कोई हरियशसुनते हैं कोई कहते हैं ते सब यथार्थबक्तारहैं स्पर्श पर शास्त्रबोध यथार्थरहै ( ८ )॥दोहार्थ॥ सोई कथा हमारे गुरुनको प्राप्तिभई है कोजानै कहांते सोई कथा मैं अपने गुरुनते सुनेउ है कथासुकहै सुष्टकथा अरु शूकर कहै जो सुष्टपदार्थ को उत्पन्नकरै ताकोशूकर खेतकही तहां सुष्टपदार्थ श्रीरामयशगुण चरित सो सत्सङ्ग उत्पन्न करतु है ताते सत्संगै शूकरखेत है तेही सत्सङ्ग में गुरुनते सुनते सुनेउहै अथवा शूकरखेत कहे बाराहक्षेत्र श्रीअयोध्या के पश्चिम तीनि योजन है सरयू तीर तहां सुनेउ है तब मेरी बालअवस्थारहै अचेत दशारहै तेहीदशामें जसकछु समुझिपरेउ सो ग्रहणभयो किंतु शूकरखेत शूकरजो है जैसे भूमि खोदत है जहांतहां तैसे मोंको बालपने में कछु समुझिपरेउकछुनहीं समुझिपरेउ सो ग्रहणभयो है ( ९ ) अरु मोको यथार्थ कैसे स-

ना करतलगतआमलकसमाना ७ औरौजेहरिभक्तसुजाना कहहिंसुनहिंसमुझहिंबिधिनाना ८॥ दोहा ॥ मैंपुनिनिजगुरुसनसुनी कथासुशूकरखेत समुझनहींतसबालपनतबअतिरहेहुंअचेत ९ श्रोताबक्ताज्ञाननिधिकथारामकैगूढ़ किमिसमुझौं मैमंदमति कलि मलग्रसितबिमूढ़ १०॥चौ०॥ यदपिकहीगुरुबारहिंबारासमुझिपरीकछुमतिअनुसारा ११ भाषाबद्धकरौमैंसोई मोरेमनप्रबोधजेहिंहोई १२ जसकछुबुधिबिबेकबलमोरे तसकहिहौंहियहरिकेप्रेरे १३ निजसंदेहमोहभ्रमहरणीकरौं कथाभवसरितातरणी १४ बुध

मुझिपरै कांहते श्रीरामकथा अतिगूढ़ है ताकेसमुझिबेको अरुकहबेको श्रोतावक्ताज्ञानकोनिधानचाहिये अरुमैं कैसेसमुझों एकतो बालबुद्धि दूजो कलिकालहोइकै मतिमन्द होइरही है ताते बिमूढ़होइरह्योहौं ( १० ) यद्यपि गुरुन बारबार कहा मेरी अज्ञानता को देखिकै तदपि अपनी मतिके अनुसार समुझिपरेउ ( ११ ) जो गुरुन कहेते कछु समुझि परेउ है ताको मैं भाषाबद्ध करतहौं काहेते जातेमेरे मनमें प्रबोधहोइ जो कोईकहै कि गुरुन के कहेतेबोध नहींभयो अपनेग्रन्थ किहेते बोधहोइगो यामें जो यशकी इच्छा

भाषैहैं तहां यह प्रयोजन नहीं है यातेभाषा करत हौं कि गुरुन कै कहीतत्त्वभूलि न जाय तातेलिखिलेतहौ किंतुअपने लिखेपर मनबिशेषदृढ़करै है ( १२ ) जसकछुमेरी बुद्धि के बिवेक को बलहोइगो हरिकी प्रेरणाते तसकहौंगो ( १३ ) यह श्रीरामकथा जो है सो निजकहे जोमोरसंदेह भ्रमतेहि कीहरणहारी है सो कथा मैं करतहौं भवजो है संसार सोमहानदी है ताकेपारजाबेको यहकथा नावरूप है इहां पुंल्लिङ्ग स्त्रीलिंगको भेद न लबे संसार में सबसंभवित है अरु भाषा में जैसों प्रयोजन परत है तैसेसबकहबेमें आवत हैं ( १४ ) पुनि श्रीरामकथा कैसी है बुध जो हैंपंडितजन तिनको बिश्रामस्थान है अरु समस्त जनजे हैं तिनको रंजन कहे आनन्द दाता है कलिकहे क्लेश जो अनेक प्रकार के कलुष कहेपापतिन सबनको नाशकरदेत है श्रीरामकथा ऐसी है ( १५ ) पुनि रामकथा कैसी है कलिकहे जो है जन्ममरण अथवा कलिकहे कलिकाल सोसर्प है ताके बिषनिबृत्त करिबेको रामकथा भरणी मंत्रहै गरुड़मंत्रकहै अरु कोई कोषबिषे भरणीनाम मयूरीको ताते रामकथा मयूरी है कलिकही क्लेशसर्प है अरु जो कोई कहै कि एक भरणी जन्तुहोत है ताकोसर्प लीलिजातुहै तबवह पेटफारिकै निकसिजातु है यह दृष्टांत सो सामान्य है पुनिरामकथा बिवेक अग्निरूप ताके उत्पन्न करिबेको अरणीकहे लकरीहै बक्ताश्रोता कीदृष्टिते बिवेक उपजत है अरुकथातो बिवेकमय हैं ( १६ ) श्रीरामकथा अनेक कलेश दूरिकरिवेको दिब्यकामधेनु है अरु सुजनजेहैं तिन

**बिश्रामसकलजनरंजनि रामकथाकलिकलुषबिभंजनि १५ रामकथाकलिपन्नगभरणी पुनिबिबेकपावककहंअरणी १६ रामकथा कलिकामदगाई सुजनसजीवनिमूरिसोहाई १७ सोइवसुधातलसुधातरंगिनि भवभंजनिभ्रमभेकभुअंगिनि १८ असुरसेनसमनरकनिकन्दनि साधुबिबुधकुलहितगिरिनन्दनि १९ सन्तसमाजपयोधिरमासी बिश्वभारभरअचलक्षमासी २० यमगणमुंहमसिज-**

को परमदिब्य सजीवनमूरि है अविनाशी करिदेतु है ( १७ ) पुनिबसुधाजोपृथ्वीमण्डल तामें अमृतमय तरंगिणीनाम नदी है अरु भयभञ्जनि है अरु भ्रमभेककही मेंढुक है ताके भक्षणकरिवेको सांपिनि है ( १८ ) पुनिरामकथा गिरिनंदनिइवहै पार्वतीदुर्गा स्वरूप असुरनको नाशकीन्हहै अरु देवतन को हित कीन्ह है अरु श्रीरामकथा नरकनको निकन्दन करिकै साधुनको हित करतु है ( १९ ) पुनि श्रीराम कथा लक्ष्मीरूप है सन्तनकीसमाज क्षीरसागर है तहांरहतीहै अरु ताहीते उत्पन्न है अरु सम्पूर्ण विश्वजोहै अरु विश्वरूप यह शरीर है तेहिके भारधारिबेको अचल क्षमासी नामपृथ्वीकी समान है ( २० ) अरु श्रीरामकथा यमुनाइवहै यमुनासूर्यकी पुत्रीहै अरु यमसूर्यके पुत्र हैं तहां यमुनाजी सूर्य्यसे वरमांगिलीन है अरु यमराजै भ्राताहै तिनहूंते वरमांगिलीन है किजोप्राणी यमद्वितीयाकोमोंहिमें स्नान करै ताको यमकेदूतनको दण्ड न होई यमके दूतनकेमुखमें कारिख लगिकै फिरिजाहि तैसे रामकथा सदा यमद्वितीयाको प्रभावहैंयमकेगण तिनके मुखमें कारिख लगाइबेको यमुनाइवहैं अरु जीवनको मुक्तिदेबेको काशी समहैं ( २१ ) पुनि श्रीरामचन्द्रको यहकथा तुलसीसम प्रिय है अरु तुलसीदासजी कहते हैं कि मेरेहृदयको श्रीरामचन्द्र विषय हुलासरूपहीहै ( २२ ) पुनि महादेव को कैसी प्रिय है जैसे मेकलशैलताकी सुता गङ्गा जाको शीशपर लिहे हैं किंतु नर्मदा सम प्रिय हैं अरु भगवत् सम्बन्धी जो सिद्धी है अरु सुख सम्पति है अरु सुखसंपते हैं अरुगुणसम्बन्धी जो सिद्धि सुख सम्पति है तिनसबनकी राशिहै ( २३ ) पुनि सद्गुण जो गुण श्रीरामचन्द्र को प्राप्त करनेवारे सोईगुण देवतनकेगण हैं तिनको उत्पन्नकरिबेको माताअदिति सम है यह श्रीरामकथा अरु श्रीरामचन्द्र की प्रेमापरा इत्यादिक जो भक्ति हैं तिनकीतो परमितिकहे मर्याद है ( २४ ) दोहार्थ॥ पुनि श्रीरामकथा मन्दाकिनी है अरु

**गयमुनासी जीवनमुक्तिहेतुजनुकाशी २१ रामहिंप्रियपावनितुलसीसी तुलसिदासहितहियहुलसीसी २२ शिवप्रियमेकल शैलसुतासीसकलसिद्धिसुखसम्पतिराशी २३ सदगुणसुरगणअम्बअदितिसी रघुबरभक्तिप्रेमपरिमितिसी २४॥ दोहा॥ रामकथामन्दाकिनी**

**चित्रकूटचितचारु तुलसीसुभगसनेहबनसियरघुबीरविहारु २५ रामकथाचिन्तामणिचारू सन्तसुमतितियसुभगसिं गारू २६ जगमंगलगुणग्रामरामकेदानिमुक्ति-धनधर्म्मधाम के २७ सदगुरुज्ञानविरागयोगकेविबुधबैद्यभवभीमरोगके २८ जननिजनक**

सन्तन कर चारुचित्त जो है सोई चित्रकूट है अरु श्रीतुलसी गुसाई कहते हैं कि सन्तनकर स्नेह जो शुभ है सोई सुन्दर है वन है किन्तु वननामजल तहांश्रीसीताराम लक्ष्मणसंयुक्त सदाविहारकरते हैं ( २५ ) पुनि श्रीरामचरित चारु चिंतामणि है जोई चिंतवनकरै सोई देइ संतन कै सुमति जो है सोई सुन्दरि स्त्री है ताको सुन्दर शृंगार है ( २६ ) श्रीराम गुणग्राम जो है सो संपूर्ण जगत्को मंगलरूप है अरु धनधर्म मुक्ति तिन सबनकी दाता है पर सर्बकालमें ( २७ ) अरु ज्ञान बैराग्य योगतिनकेबोध करिबेको सद्गुरु रूप है अरु बिबुधवैद्य अश्वनी कुमार सूर्य के पुत्र देवतनकेरोग नाशकरिदेते हैं किंतु धन्वन्तर हैं तैसे भव जो संसारमहाभीम रोग जेहिबश सर्बजीव रोगी होइरहे हैं तहां जेहि जीवको श्रीराम चरित प्राप्तभयो ताको संसाररोग नाशकरिदेतु है ( २८ ) अरु श्रीसीताराम के प्रेम को उत्पन्नकरिबेको माता पिता है अरु समस्त ब्रतधर्म नेम यम तिनको तो बीजरूप है ( २९ ) अरु पापसंताप शोक इत्यादिकनको शमनकहे नाशकरिदेतु है अरु लोक परलोक दोनों प्रियपालक हैं ( ३० ) अरु बिचाररूप राजा है ताके रक्षाको सुभटमन्त्री है अरु लोभ जो समुद्रवत् अपार ताको अगस्त्यरूप है ( ३१ ) अरु काम क्रोध कलि के मल सोई हाथी है अरु जनजे संपूर्ण प्राणी हैं तिनको मन सोई बन है तहां रहते हैं तिनकेनाश करिबेको रामचरित सिंहरूप है ( ३२ ) अरु पुरारि जो हैं तिनको अति प्रियतम पूज्यमान है सदा अतिथिइव है अरुदरिद्र जो असंतोषादिक सो दावानल है ताके बुझाइ देबे को कामदघन है ( ३३ ) अरु बिषमरूप जो सर्प्प है ताको बिष निबृत्त करिबे को महामणि मन्त्र है एकमणिहोती है जो सर्प्प के काटेघाउपर धरिदेइ तौ बिष

**सियरामप्रेमके बीजसकलब्रतधर्म्मनेमके २९ शमनपापसन्तापशोकके प्रियपालकपरलोकलोकके ३० सचिवसुभटभूपति बिचारके कुम्भजलोभउदधिअपारके ३१ कामकोहकलिमलकरिगणके केहरिशावकजनमनबनके ३२ अतिथिपूज्य प्रीतमपुरारिके कामदघनदारिददवारिके ३३ मंत्रमहामणिबिषयब्यालके मेटतकठिनकुअंकभालके ३४ हरनमोहमदतमदिनकरसे सेवकशालिपालजलधरसे ३५ अभिमतदानिदेवतरुबर से सेवतसुलभसुखदहरिहरसे ३६ सुकबिशरदनभमनउडुगणसे रामभक्त जनजीवनधनसे ३७ सकलसुकृतफलभूरिभोगसे जगहितनिरुपधिसाधुलोगसे ३८ सेवकमनमानसमरालसे पावनगंगतरंगमालसे ३९॥दोहा॥ कुपथकुतर्ककुचालिकलिकपटदंभपाखंड दहनरामगुणग्रामजिमिईंधनअनलप्रचंड ४० रामचरितराकेशकर**

नाश होइ जात है अरु भाल में जो बिधाते कुअंक लिख्योहै ताको मेटिडारते हैं ( ३४ ) मोह मद तम जो है ताके नाशकरिबे को सूर्य्य है अरु सेवक जो है सो धान है तिनके पालन करिबे को मेघ है ( ३५ ) अरुवांछित फल देबे को कल्पवृक्ष है अरु सेवतकै सुलभ है अरु सुखदेवे को हरिहर के सम है ( ३६ ) अरु सुकविन के मन शरदनभ हैं तहां नक्षत्रइव उदित है श्रीरामभक्तन को जीवन धन है ( ३७ ) अरु समस्त सुकृहरिहर के सम है ( ३६ ) अरु सुकविन के मन शरदनभ हैं तहां नक्षत्रइव उदित है श्रीरामभक्तन को जीवन धन है ( ३७ ) अरु समस्त सुकृत के भूरिफल जो हैं ताको भोग्य है अरु हितकारी तौ सबजगत् को हैं पर निरुपाधित रूप साधुनको है किंतु जगहित साधुसम हैं ( ३८ ) पुनि श्रीराम सेवकनको मन मानसर है तहां को हंस है अरु पवित्र करणीगङ्गा सरयू की तरङ्ग की माल है ( ३९ ) दोहार्थ॥ कुमार्ग जो वेद मर्याद

छोंड़िकै चलै कुतर्क जो विशेष पदार्थ है ताको उक्ति युक्ति करिकै दूषणदैकै सामान्य करिदेइ कुचाल जो लोक वेद कै रीति छोंड़ि करै कलिकहे अनेक क्लेश कपट जो है मीठीबात मनमें राखै आट दम्भ जो औरेकेदेखावे को शुभकर्म करै पाखण्ड जो वेद शास्त्र निंदिकै जो करै इत्यादिकन को नाशकरिदेत है श्रीरामचरित्र जैसे प्रचण्ड अग्नि में सूखीलकरीभस्महोइजाइ ( ४० ) श्रीरामचरित्र पूर्णमासी को चन्द्रमा है शरदऋतु को सबको सुखदाता है पर सज्जनजे हैं तिनको जो चित्त सो कुमुद अरुचकोर है तिनको बिशेष बड़ लाभ है ( ४१ ) इति श्री रामचरित मानसे सकल कलिकलुषबिध्वंसने बालकांडे श्रीमद्रामायण माहात्म्य प्रतापयथार्थ वर्णनंनाम दशमस्तरङ्ग :१०॥ दोहा ॥ रामचरण दश एक में महिमा अवधअपार उमाप्रश्न शिवबोधकृत मानससर अवतार ११ गोसाईं तुलसीदास कहते हैं जौनेहेतु

शरदसुखदसबकाहु सज्जनकुमुदचकोरचितहितबिशेषबड़लाहु ॥४१॥

कीन्हप्रश्नजेहिंहेतुभवानी जेहिंबिधिशंकरकहेउबखानी १ सोसबहेतुकहबमैंगाईकथाप्रबंधबिचित्रबनाई २ जेयहकथासुनी नहिंहोई जनिआश्चर्यकरैसुनिकोई ३ कथाअलौकिकसुनहिंजेज्ञानी नहिंआश्चर्य करैं असजानी ४ रामकथाकैमितिजगनाहीं असिप्रतीतिजिनकेम नमाहीं ५ नानाभांतिरामअवताराारामायणशतकोटिअपारा ६ कल्पभेदहरिचरितसोहाये भांतिअनेकमुनीशन

पार्वतीजू प्रश्नकीन है अरु जेहिबिधिते शङ्कर बखानिकै कहेउ है ( १ ) सो सब हेतु मैं बिचित्रकथा जो है ताको प्रबन्धकरिकै कहौंगो ( २ ) जे यह कथाकबहुं न सुनेउहोय तौ सुनिकै अश्चर्य्य न करब ( ३ ) काहेतेजे ज्ञानीपुरुष हैं ते जोकबहूं अलौकिककहे सर्बलोकनमें कहिबेमें देखिबेमें सुनिबेमें कहूं नहीं आयो अरु कहूं सुनिबे में दैवयोगते आयगई तौ यहजानिकै आश्चर्य्यनहीं करते हैं ( ४ ) काहेते श्रीरामकथाकै मितिनहीं है यहि जगत् में जिनपुरुषनके ऐसी प्रतीति है ( ५ ) काहेते कि श्रीरामचन्द्र के अवतार नानाभांति करिकै तातेरामायण शतकोटि अरु अपर अपार है पर एतेंरामायणके ग्रन्थ हैं शतकहैं सौहजारको एकलाख सौलाखको एककोटि ऐसे सौकोटि अरु अपर अपार श्रीमद्रामायणके ग्रंथ हैं किन्तु जाको एतीप्रतीति न आवै सो एतेश्लोकै मानिलेइ ( ६ ) तहांप्रसिद्धश्लोक हैं॥ चरितंरघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम् ॥ एकैकमक्षरंपुंसां महापातकनाशनम् १ अरु प्रभु के अवतार कल्पकल्प प्रतिहोते हैं तहां मुनीशजन जे हैं तिनने अनेक ग्रन्थकीन्ह है अरु अनेक भांति ते प्रभु के चरित गाये हैं ताते परमेश्वर के चरित को शुमारनहीं हैं वेद जे हैं ब्रह्मा शिव शेष शारदा इत्यादिक ते नेतिनेति करते हैं पर प्रभु के चरित को पारनहीं पावते हैं ( ७ ) श्रीरामचरित अपरम्पार जानिकै संशय न करी श्रीरामकथा आदर प्रीतिसमेत श्रवण करिये ( ८ ) दोहार्थ॥ जैसे श्री रामचन्द्र अनन्त हैं तैसे श्रीरामगुण अनन्त हैं तैसे अमितकथा विस्तार है यह बिचारिकै जे बिमल विवेकी हैं ते आश्चर्य्य न करैंगे ( ९ ) यहै विधि समुझिकै सम्पूर्ण संशय दूरिकरिकै श्रीगुरुपदरज शिरधरिकै ( १० ) पुनि सबके करजोरिकै बिनयकरौं जाते श्रीरामचरित करत कै कोई दूषण न देइ ( ११ ) पुनि शिवके पद बन्दि कै श्रीरामचरित अतिनिर्मलहैसो वर्णन करौ हौं ( १२ ) सोरहसै इकतीस के संवत् में श्रीरामकथा

गाये ७ करियनसंशयअसउरआनी सुनियकथासादररतिमानी ८ दो० रामअनन्तअनन्तगुणअमितकथाबिस्तार सुनिआश्चर्यन मानिहैंजिनकेबिमलबिचार ९ यहिबिधि सबसंशयकरिदूरी शिरधरिगुरुपदपंकजधूरी १० पुनिसबहींबिनवोंकरजोरी करतकथा जेहिंलागनखोरी ११ सादरशिवहिंनाइपदमाथा बरणौंविशदरामगुणगाथा १२ संवतसोरहसैयकतीसा करौंकथाहरिपदधरि शीशा १३ नौमीभौमबारमधुमासा अवधपुरीयहचरितप्रकाशा १४ जेहिदिनरामजन्मश्रुतिगावहिं तीरथसकलतहांचलिआ-

श्रीरामपदरज शीशपरधरिकै करत हौं ( १३ ) अति पुनीत चैत्रमास शुक्लपक्ष नवमीतिथि मङ्गल दिन श्रीअयोध्या में यह रामचरित को प्रकाश कही प्रारम्भकियो सो श्रीराम जन्मस्थान में श्रीहनुमान् जू की आज्ञापाइकै प्रारम्भ कीन्ह ( १४ ) जेहि दिन में श्रीरामजन्म देव गावते हैं जेहि कल्प की मैं करतहौं अरु श्रीरामकथा में प्रारम्भ कीन्ह है जेहि मङ्गल को श्रीराम जन्मभयो सो मङ्गल श्रीरामनवमीको प्राप्तभयो मध्याह्न सूर्य सबयोग मङ्गलमय तब मैं प्रारम्भकीन्ह अरु अद्यापि श्रीरामजन्मचैत्रशुक्लनवमीको जो दिनपरै ताहीदिन में ब्रह्माण्ड में जेते तीर्थ हैं ते सब आवते हैं ( १५ ) असुर प्रह्लाद विभीषण इत्यादिक नाग अनन्तइत्यादिक खग गरुड़ कागभुशुण्ड इत्यादिक नर अर्ज्जुन निषाद इत्यादिक मुनि अगस्त्य व्यास बाल्मीकि शुक सनकादि नारद इत्यादिक देवता ब्रह्मा शिव इत्यादिक जेते ब्रह्माण्ड में शुभजीव हैं तेते समस्त अद्यापि श्रीरामनवमी के दिन सबआवते हैं श्रीरामचन्द्रकै सेवाकरतेहैं ( १६ ) अरु श्रीरामजन्म उत्सव की रचना करते हैं श्रीरामचन्द्र कै कल कहे सुन्दरकीर्त्ति गानकरते हैं प्रेमसंयुक्त नृत्य करते हैं ( १७ ) दोहार्थ॥ समस्त सज्जन जे हैं ते श्रीसरयू अतिपावन जल तामें स्नानकरते हैं श्री रामनाम जपते हैं श्रीरामचन्द्र को बालस्वरूप श्याम मयूर के कण्ठतद्वन्नील अतिसुन्दर सो ध्यान करते हैं ( १८ ) श्रीसरयूकैसी है जाके दर्शन ते जलछुये ते मज्जन ते पानकियेते जन्ममरण सो पापनाश करिदेतु है यह पुराण श्रुति स्मृति कहत है ( १९ ) श्रीसरयू अति पुनीत नदी है जाकी महिमा निर्मल मति शेष शारदा कहाचाहैं तौ नहीं कहिसकैं श्रीसरयूजू कैसी है जो हजारमन्वन्तर काशी में शुद्धह्वैकै बासकरै तेहिसरिस फल श्रीसरयू जी के दर्शनमात्रते होत है ( २० ) पाद्मेश्लोक मन्वन्तरसहस्त्रेषु काशीवासेनयत्फलं॥ तत्फलंसमवाप्नोति सरयूदर्शनेकृते १ प्रयागेयोनरोगत्वा माघानांद्वादशंवसेत् ॥ तत्फलादधिकंप्रोक्तं सरयूदर्शनेकृते २ मथुरायांकल्पमेकं वसतेमानवोयदि॥ तत्फलादधिकंप्रोक्तं सरयूदर्शनेकृ

वहिं १५ असुरनागखगनरमुनिदेवा आयकरहिंरघुनायकसेवा १६ जन्ममहोत्सवरचैंसुजाना करहिंरामकलकीरतिगाना १७ दो० मज्जहिंसज्जनवृन्दवहु पावनसरयूनीर॥ जपहिंरामउरध्यानधरि सुंदरश्यामशरीर १८ दरशपरशमज्जनअरुपाना हरहिंपाप कहवेदपुराना १९ नदीपुनीतअमितमहिमाअति कहिनसकैशारदाबिमलमति २० रामधामदापुरीसोहावनि लोकसमस्तबिदितअति

ते ३ पुनःश्रुतिः प्रवाहरूपेणभवती नाम्नासरयूरहमेवात्रमनसे जलरूपिणी चतुर्युगेसरयू कलौगङ्गावशिष्ठजा ४ पुनि श्रीअयोध्यापुरी कैसी है श्रीरामधामदा है अरु धामकहैं स्वरूप श्रीराम स्वरूप को दाता है पुनि दूसर अर्थ श्रीअयोध्या अयोध्यहिं की दातब्य है यह जो श्रीअयोध्या ब्रह्मांड कोष में है सो श्रीरामचन्द्र की माधुर्यलीला धाम है अरु जो ब्रह्माण्ड के परात्पर श्रीअयोध्या है सो श्रीरामचन्द्रको भोग ऐश्वर्य्य लीलाधाम है दोनों एकहीहै दोनों अखण्ड एकरसहै माधुर्य्य ऐश्वर्य्य लीलाको भेदहैअरु तत्त्वकरिकै स्वरूप करिकं नाम करिकै नित्यताकरिकै अभेद है ( शिवसंहितायां श्लोक ) भोगस्थानंपरायोध्या लीलास्थानन्त्वियंभुवि ॥ भोगलीलायतीरामो निरंकुशविभूतिकः १ अरु प्रकृति पर जो श्रीअयोध्या है सो कहते हैं कोई ग्रन्थ में यह कहा है कि भूर्ल्लोक १ भुवर्ल्लोक २ स्वर्ल्लोक ३ महर्लोक ४ जनलोक ५ तपलोक ६ सत्यलोक ७ एते सात लोक हैं भूलोककही मृत्युलोक ताके ऊर्ध्व पचीसलक्ष योजन भुवःलोक है सो अल्पस्वर्ग्ग है अरु उतनै बिस्तार है तामें जान देवता रहते हैं जे कर्मकरिकै देवता होते हैं तिनको जान देवताकही जहां ऊर्ध्व अधवारबार है पुनि ताके ऊर्ध्व पचासलक्ष योजन है स्वः कही स्वर्गलोकहै जहां इन्द्ररहते हैं तहां जान अजान दुइप्रकार के देवता रहते हैं अजान देवता कही जे इन्द्रके अरु ब्रह्माके संकल्प में होते हैं इन्द्र के संकल्पवाले इन्द्रही के संग मन्वन्तर प्रति पतनहोतहैं अरु ब्रह्माके संकल्पवाले ब्रह्मा के संगही जो कछुहोइ सो होइ ताके पर महर्ल्लोक कोटि योजन ऊंचाहै जहां कश्यप प्रजासंयुक्तरहतेहैं पुनि ताकेपर जनलोकहै द्वैकोटियोजन तहां सामान्य मुनि ऋषिवसते हैं ताकेपर तपलोक है चारिकोटि योजन तहां परमतपस्वी रहते हैं ताकेपर ताको दून सत्यलोक है जहांब्रह्मा बिराजते हैं तहां जान अजान देवता रहते हैं द्वौ एकते सातलोक अब सदाशिवसंहिताको मत कहते हैं पृथ्वीते कोटियोजन महर्ल्लोकहै क्रैमही ते लोक के ऊपर लोक दूनदून जाने जीव महर्ल्लोक पर जनलोक ताके पर तपलोक ताकेपर

सतलोक ताकेपर कौमारलोक सनकादिकरहते हैं ताके पर उमालोक पार्वती रहती हैं ताकेपर शिवलोक है निज शक्तिसंयुक्त शिवरहते हैं यह सप्तावरण कहावत है इहांताईं देवलोकसंज्ञाहै जो जैसो कर्मकरै तैसे लोक को प्राप्त होते हैं अरु सत्यलोक ताकेउत्तर ऊर्ध्व प्रमाणरहित रमा बैकुण्ठहै जहां सनकादिकन जय विजयको शापदीन्हहै तहां शुद्ध सात्त्विक भगवत् कर्म निर्वासकरिकै जीवप्राप्त होते हैं अब ब्रह्माण्डतत्त्वावरण कहते हैं सातआवरणकरिकै ब्रह्मांडहै शिवलोकऊपर पचासकोटियोजन को अन्तर है तहां पृथ्वीको आवरण पचासकोटि योजन की मोटी है अब क्रमही ते दशदशकी अधिकता जानब महितत्त्व के परे महिते दशगुण जलतत्त्व है जलतत्त्व के परे ताको दशगुण अग्नि तत्त्व है अग्नि ते दशगुण पवनतत्त्व है पवन ते दशगुण आकाशतत्त्व है आकाश के परे त्रिधाहंकार है तामसाहंकार राजसाहंकार सात्त्विकाहंकार तीनिहूं अहंकार मिले हैं एकही हैं ताके परे महातत्त्व है एते सातआतेरणकरिकै ब्रह्माण्ड है अब तिसको भेदनकहते हैं जिनजीव के मुक्त की इच्छाभई कोई योग ते प्रथम अपने बर्ण को कर्म धर्म सवासिक तेनीचे ते करैं अरु महर्ल्लोक ताईं प्राप्तहोते हैं पुनि आश्रम के कर्म धर्म सवासिक ते करैं जनलोक को प्राप्त होते हैं पुनि ते जीव तपस्या सवासिक करैं ते तपलोक को प्राप्त होते हैं पुनि जे शुद्ध यज्ञ सवासिककरैं ते सत्यलोक को प्राप्तहोते हैं पुनि जो अपने मन शरीर शुद्धदान सवासिककरैंसो कौमारलोक को प्राप्त होते हैं पुनि जो सात्त्विकी विद्यादान सवासिक करैं सो उमालोक को प्राप्त होते हैं पुनि जो शास्त्रजन्य ज्ञान दान सवासिकरैं सो शिवलोकको प्राप्तहोते हैं एते कर्मकांडी निर्वासिक होते ही नहीं इन कर्मन को यहफलै है कैसहूहोइकै करै यह सातोंलोककी प्राप्तिक्रमही ते है पुनि जो स्थूल शरीर जो सूक्ष्म शरीर को कारण शरीर तीनिहूं की विषय स्थूल सूक्ष्मताकी भेदनकहते हैं जो नासिकाकी बिषयदुर्गंध सुगन्ध भक्तिभाव करिकै जीतै किन्तु ज्ञानभावकरिकै सो महि आवरण भेदन करिजाइ पुनि जो रसना विषय जीते अनरस सुरस निन्दास्तुति इत्यादिक जीतै सो जल तत्त्वभेद करिजाइ पुनि जो नेत्रकी बिषय जीतै प्रकृतिको रूपत्याग अरु चराचर विषय रामरूप ग्रहण सो अग्नितत्त्व आवरण भेद न करिजाइ पुनि जो त्वक् की विषय स्पर्श शीतोष्ण इत्यादिक जीतै सो पवनतत्त्व आवरण भेदनकरिजाइ पुनि जो श्रवण बिषय जीतै सो नभतत्त्व भेदनकरिजाइ तब स्थूलशरीरको भाव मिटिजाइ पुनि जो पंच बिषय शब्दस्पर्शरूप रसगन्ध पुनि पंचप्रानअपान उदान ब्यान समान पुनि पंचकर्म इन्द्रिन की बिषय चलब बिसर्ग मैथुन भक्षण व्यवहार अरु मन बुद्धि इन सत्रहतत्त्वकी विषय जीतै सो अहंकार तत्त्व भेदनकरिजाइ तब लिङ्गशरीर को अभाव ह्वै जातु है पुनि अहंकार की बिषय उलटिकै यह बृत्तिआवै कि मेरो स्वरूपसर्बकाल में शुद्ध है मैं तो चैतन्यरूप हौं सदा श्रीरामदासहौं अरु चित्त की बिषय सो उलटिकै स्वरूपपर स्वरूप की चिन्तवनकरै सर्बभूत में श्रीरामरूप अनन्य ह्वैकै देखै सर्बमान ते रहित ह्वैजाइ एकरस सर्बकाल में हर्ष शोक निंदा स्तुति मानापमान इत्यादिक रहितहोइ सद्गुरुनकबेचनलैकै सदा आनन्दरहै तब स्वरूप प्राप्तभयो पर रूपकोचल्यो है तब महत्तत्त्व भेदनकरिजाइ तब कारण शरीर छूटिजाइ तब तुरीयाको प्राप्तह्वैकै तब सातों आवरण ब्रह्माण्ड के भेदिजाइ ब्राह्मांड के ऊपर अनन्त योजन महाविष्णुको लोक है जाको वेद सहस्त्रशीर्षा पुरुष करिकै बर्णते हैं सो पुरुष ब्रह्माण्ड को कारण है अरु ताहीपुरुष में ब्रह्माण्ड लीन होत है पुनि जब पुरुष की रक्षणाहोती है तब महत्तत्त्व होत है ताते अहंकार होत है ताते सात्त्विक गुणहोत है पुनि राजस तामसी तीनिउँगुण भिन्नभिन्न भये पुनि तामस ते आकाश तत्त्वभयो ताते शब्दभयो तातेपवनभयो ताते स्पर्शभयो ताते अग्निभयो ताते रूपभयो ताते जलभयो ताते रसभयो ताते महिभयो ताते गन्धिभयो ताते औषध ओषधी होती भईं तरु तृण अन्न इत्यादिक होतभये ताही ते सर्ब जीवनको पालनहोतभयो अरु तीनिगुण पांचतत्त्व मिश्रित देव दानव मनुष्य इत्यादिक सब जीव के शरीर होतभयो अनादि कर्मानुसार जीव को भोग्यहोत भयो पुनि जब महाप्रलय को कालप्राप्त भयो तब जैसे अनुलोम करिकै तत्त्व उत्पन्नभये तैसे प्रतिलोमकरिकै प्रलयभई महाविष्णु में सबप्राप्तभये सर्ब की साम्यतारही ताते महाविष्णु बिराट् के कारण हैं सो महाविष्णुको स्वरूप हजारनशीश हजारन नयन करचरण इत्यादिक अंग हैं वेदकहते हैं ( प्रमाण ) सहस्त्र शीर्षापुरुषः सहस्त्राक्षस्सहस्त्रपात्सभूमिग्वं इतिश्रुतिः तहां रघुनाथ जी के परम दिव्य जे अनन्त गुण हैं करुणा बात्सल्य दया इत्यादिक सोई महाविष्णुको स्वरूप है सोई हजारन अंगरूप पृथक् पृथक् शोभित हैं ( श्लोक सौमित्रवाक्यं वेदान्प्रति ) राघवस्यगुणो दिव्यो महाविष्णुःस्वरूपवान् । वासुदेवोघनीभूतं तनुतेजोमहाशिवः

॥ सो महाविष्णु अनादि है निर्बिकार है अखण्ड एकरस है जिन महाबिष्णु ते ब्रह्मा बिष्णुशिवहोते हैं तहां जे जीव महाबिष्णुकी उपासनापर मानन्यह्वैकै करते हैं ते ब्रह्माण्ड पारह्वैकै महाबिष्णुको प्राप्त होते हैं पुनि महाबिष्णु लोक ताके पर महाशम्भुको लोक है सो महाशम्भु ज्योतिस्स्वरूप है जाको आदिज्योति कहते हैं सो श्रीरामचन्द्र के तनुको तेज है अक्षर ब्रह्म है जे तिनकी उपासना योगी जन करते हैं ते कैवल्य मुक्ति को प्राप्त होते हैं ताही लोकको पुनितेहि लोकके पर बासुदेव लोक है चतूर्व्यूह भगवान् रहते हैं बासुदेव संकर्षण अनिरुद्ध प्रद्युम्न तिनको स्वरूप तेजो मय है सो बासुदेव श्री रामचन्द्र को घनीभूत तेज है निरक्षर ब्रह्म है एकरस है जे तिनकी उपासना ज्ञानीजन करते हैं ते तेहि लोक को प्राप्त होते हैं जाको कैवल्य परमपदकही दोऊ लोककी मुक्ति एकही जानब श्री भगवद्गीतायां ( श्लोकार्द्ध ) सांख्ययोगोपृथक्बाला: प्रवदंतिनपंडिता: ॥ पुनिताके पर असंख्य ऊंचो गोलोक है सो अनंत योजन बिस्तारित है सो श्रीरामचन्द्रकोदेशहै दृष्टांत जैसे नगर के मध्यमेंराजा को महत्महलहैदृष्टान्तकोएकदेश है तैसेताके मध्य में श्री अयोध्या है तामेंदशआवरण हैं जो भीतर को आवरण है सो सवावकोटि योजन बिस्तारित है यह संज्ञावेदने जीवन के बोधहेतु कीन है नतु अनंत योजन ऊंचो विस्तार है ( प्रमाणश्लोकार्द्ध ) अनंतयोजनोच्छ्रायमनंतयोजनायतं॥ पुनि क्रमहीते ताको दूनदून बिस्तार जानिलेब दशो आवरणताके बाहर चारिहू दिशा में चारि दरवाज़े हैं तिनके अग्रभाग में परमदिब्य चारिबनहैं अमित बिस्तारहै श्री अयोध्या के उत्तर श्रीसरयू है दक्षिण बिरजा गंगा है सरयू बिरजा एक ही है तहां श्रीअयोध्या के दक्षिण द्वारपर श्रीहनुमान् हैं सहित पार्षदन संयुक्त कैशोरस्वरूप श्रीराम लक्ष्मणजू के रूप हैं सब तहां अशोक बनहै पुनि पश्चिम द्वारपर बिभीषण अनंत पार्षदन संयुक्त हैं तहां वृन्दावन है उत्तर अङ्गद अनंत पार्षदन संयुक्त है तहां आनंदबन है पूर्वसुग्रीव अनंत पार्षदन संयुक्त सब किशोर अवस्था श्री रामलक्ष्मण के स्वरूप हैं तहां अशोक बनहै ऐसे नव आवरणमें सबसखा दासनके मन्दिर बनेहैं परम दिव्य अखण्ड एकरस ब्रह्ममय सब जानब अरु अन्तर आवरण जो है दशवां तहांअनन्त सखिन के मन्दिर बने हैं पुनि श्री अयोध्या को दशवों आवरण जो है अंतर ताके मध्यमें परमदिव्य ब्रह्मस्वरूप कल्पतरु है क्षत्राकार है रत्नमय पेड़ स्कंध डार पात फूल फल संपूर्ण परम दिव्य चिन्मय श्रीराम रूपारूप है ताके तर मंडफ ब्रह्ममय है ताके तर वेदिका है परम दिव्यरत्नमय है ताके पर सिंहासन है कोटिन सूर्य के प्रकाशको हरतहै ता सिंहासन पर हज़ार दल को कमल है रत्नमयी ताके पर दुइमुद्रा हैं अग्निमुद्रा पुनि चन्द्रमुद्रा अगस्त्यसंहिता में तीनिमुद्रा कहे हैं अग्नि सूर्य चन्द्र ताके मध्य में श्रीसीताराम विराजमान हैं श्रीलक्ष्मण भरत शत्रुहनभ्राता अरु श्रीहनुमान् इत्यादिक षोड़श पार्षद छत्र चमर व्यजन इत्यादिक लिये हैं तहां जे श्रीसीताराम उपासक हैं परमानन्य उपाय शून्य प्रपत्ति जे हैं ते सातोंलोक के आबरण अरु सातों तत्त्व के आवरण भेदिकै ते महाविष्णु के लोक को प्राप्तिभये महाविष्णु अतिआदर संयुक्तमहा शम्भु के लोक को पहुंचाये तब महाशम्भु ने अति आदर ते बासुदेव लोक को प्राप्तिकिये तहां अतिआदर संयुक्त गोलोक को प्राप्तिभयेवृजापारभये तहां श्रीहनुमान् परम आचार्य तिनको मिले तब तिनने अति आदर ते श्रीलक्ष्मण इत्यादिक भ्राता पार्षदनसंयुक्त जहां श्रीसीताराम विराजमान हैं तहां को प्राप्ति किये तब श्रीसीताराम प्रसन्नह्वैकै तिनको मिलतभये तब श्रीजानकी जी की आज्ञा ते जैसी भावना इहांकरत रहैं ताही सेवा को प्राप्तिभये तहां यह श्री अयोध्या जे सेवनकरैं यहि काल में अरु वह श्रीअयोध्या की बासनाकरैं तो तिनको वह श्रीअयोध्या प्राप्ति होतु है पर बिना श्रमही यह प्रकरण हमने सूक्ष्मकरिकै कहा ( २१ ) तहां प्रमाण है सदाशिवसंहितायां श्रीसौमित्रवाक्यं वेदानप्रतिश्लोक उन्तालिस ३९ महर्लोकांक्षितंरूद्‌र्ध्व मेककोटि:प्रमाणत: कोटि द्वयेनबिख्यातं जनलोकंव्यवस्थितं १ चतुष्कोटि:प्रमाणस्तु तपोलोकोबिराजित: उपरिष्ठात्तत:सत्यमष्टकोटि: प्रमाणत: २ आप:प्रव्याप्तकोमारं कोटिषोड़शसंभवं तद्रूद्‌र्ध्वपरिसंख्यात उमालोकस्सनिष्ठित: ३ शिवालोकास्तद्रूद्‌र्ध्वन्तु प्रकृत्याचसमागत: विश्वस्यपुरतोवृत्ति: शिवस्यपुरतोब हि: ४ एतस्माद्बहिरावृत्ति: सप्तावरणसंज्ञका: अन्यच्चतद्रूद्‌र्ध्वकोटिपंचाशत्क्रमात् दशगुणात्परं ५ भूमिरापोनलोवायु खमहंचत्रिधापरं प्रकृतेर्महा मूलेनसप्तावरणसंज्ञका: ६ सदाशिव संहितायां तद्रूद्‌र्ध्वसर्वसत्वानां कार्य्यकारणमानिनां निलयंपरमंदिव्यं महावैष्णवसंज्ञकं ७ सहस्रमूर्द्धाविश्वात्मा सहस्राक्ष: सहस्रपात् यन्निमेषाज्जगत्सर्बं लयीभूतव्यवस्थितं ८ उद्भवन्तिबिनश्यन्ति कालज्ञानविडम्बने: यदंशेनसमुद्‌भूता ब्रह्माविष्णु महेश्वरा: ९ एतद्गुह्यंसमाख्यानं ददातुवांछितंहिन: तदर्ध्वंतुपरंदिब्यंसत्यमन्यद्‌व्यवस्थितं १०

न्यासिनांयोगिनांस्थानं भगवद्भावनात्मनां महाशम्भुर्मोदतेतत्र सर्बशक्तिसमन्वितः ११ तदूर्ध्वंतुपरंकांतंमहाबैकुण्ठसंज्ञकं बासुदेवादयस्तत्र बिहरंतिस्वमायया १२ तदूर्ध्वंतुस्वयंभांतो गोलोकः प्रकृतेः परः बाङ्मनोगोचरातीतोज्योतिरूपः सनातनः १३ तस्यमध्येपुरिंदिब्यं साकेतमितिसंज्ञकं योषिद्रत्नमणिस्तम्भ प्रमदागणसेवितं १४ तन्मध्येपरमोदारः कल्पबृक्षोवरप्रदःतस्याधः परमंदिव्यंरत्नमण्डपमुत्तमम् १५ तन्मध्येवेदिकारम्या स्वर्णरत्नविनिर्मिता तन्मध्येचपरंसुभ्रं रत्नसिंहासनंशुभं १६ सहस्त्रारंमहापद्मं कर्णिकारैस्समुत्तमंतन्मध्येमुद्रिकाभिन्नंमुद्राद्वाभ्यांबिभिन्नकं १७ वन्हींदुमण्डलेनापिवेष्ठितंविन्दुभूषितं चन्द्रकोटिप्रतीकाशं छत्रकंचसचामरं १८ सदामृतघनश्राविमुक्तादामवितानकं तन्मध्येजानकीदेवी शर्बशक्तिनमस्कृता १९ तत्रास्तेभगवानरामः सर्बदेव शिरोमणिः तत्रादौचिन्तयेत्तेजो वन्हिरूपंसुशक्तिकं २० तेजसामहताश्लिष्ट मानंदैकाग्रमन्दिरं एकाग्रमनसापश्येत्तत्रदेवंसुविग्रहं २१ स्निग्ध मिंदीवरश्यामं कोटींदुललितक्षुतिं चिद्रूपंपरमोदारं बीरभद्रंरघूद्वहं २२ द्विभुजंमघुरंशांतं जानकीप्रेमविह्वलंदोर्दंचण्डकोद्दण्डं शरच्चन्द्रमहाभुजं २३ सीतालिंगितवामांग कामरूपंरसोत्सुकं तरुणारुणसंकाशं विकचांबुजपादकं २४ पदद्वन्द्वनखश्चन्द्रः प्रियंतेजः समाबृतं कूर्मपृष्ठयदाभासं रणन्मंजीरपादकं २५ कटिसूत्रांकितंश्रीशं यक्षसूत्रैरलंकृतं रत्नकंकणकेयूरंशोभिताग्रभुजद्वयं २६ चन्द्रकोटिप्रतीकाशं कौस्तुभेनविराजितं दिव्यरत्नसमायुक्तं मुद्रिकाभिरलंकृतं २७ नाशांशैकसमायुक्तं मुक्ताफलस्फुरन्मुखं सूर्य्यकोटिप्रतीकाशं कुण्डलादिश्रुतिद्वयं २८ प्रबृत्तारुणसंकाशं कीरीटेनविराजितं गोबिन्दंगोविदांश्रेष्ठं चिन्मयानन्दविग्रहं २९ दिब्यायुधसुसम्पन्नं दिब्याभरणभूषितं अक्षरंकेवलंब्रह्म पीतकौशेय वाससं ३० शंखचक्रगदापद्मचर्मासिहलमूशलैः तद्रूपविविधाकारैः सेब्यमानंपरात्परं ३१ बशिष्ठवामदेवादि मुनिभिःपरिसेवितं लक्ष्मणंपश्चिमेभागो घृतछत्रसुचामरं ३२ उभौभरतशत्रुघ्नौ तालबृन्दकरांबुजौ अग्रेब्यग्रंहनूमन्तं वाचयंतंसुपुस्तकं ३३ भार्गवपुराणे नारायणवाक्यं नरंप्रति इदमेवपुराप्रश्नंबैकुण्ठनगरेहरिं सर्वेश्वरीजगन्माता पप्रच्छकमलालया ३४ त्रिपादिविभूतिवैकुण्ठे विरजायाः परेतटे यादेवानां पुरयोध्याह्यमृतेनमृतापुरी ३५ अन्यच्च बैकुण्ठेपंचविख्यातं क्षीराब्धिचरमाब्ययं कारणंमहावैकुण्ठं पंचमंबिरजापरं ३६ नित्यंदिब्यमनेकभोगविभवंबैकुण्ठरूपोत्तरम् सत्यानंदचिदात्मकंस्वयमभून्मूलंत्वयोध्यापुरी ३७॥ इतिअर्द्धश्लोक॥ गोलोकाच्चपरंज्ञेयंसाकेतोऽतः पुरः प्रियं गोप्यागोप्यतरा गोपासायोध्याजीवदुर्ल्लभा ३८ इतिमहारामायणे शिवबाक्यं रामस्य नामरूपंचलीलाधामपरात्परं एतच्चतुष्टयंनित्यंसच्चिदानंदबिग्रहं ३९ इति वशिष्ठ संहितायां पुनिवेद कहते हैं यायोध्यापुरीसासर्बबैकुंठानामेवमूलाधारामूलप्रकृतेः परातत्सद्ब्रह्ममयाविरजोत्तरादिब्यरत्नकोशाढ्यातस्यां नित्यंमेवंसीतारामयोर्विहारस्थलमस्तीत्य थर्बणेउत्तरार्द्धे ४० देवानापुरायोध्यातस्यांहिरण्यमयः कोषः स्वर्गोलोकोज्योतिषाबृतायोवैतांब्रह्मणेवेदो मृतेनाबृतांपुरीतस्मै ब्रह्मचब्रह्माचआयुः कीर्तिप्रजांददुरितिसामवेदेतैत्तरीयश्रुतिः श्रीअयोध्या आनंदरूप विदित है ( २१ ) इत्यर्थः ॥४० चारिखानि जीव हैं ताते अपार हैं चारिखानिमें कोई जीवहोइ जो श्रीअयोध्यामें शरीरछूटै तो पुनि संसार में न आवै जे अयोध्या में जीव बसते हैं अरु कोई भजन करते हैं सुकर्म करते हैं तिनको शरीर जब छूटतो है तब जाकी जैसीभावना भई सो तैसी मुक्तिको प्राप्तिभयो श्रीरामचन्द्रजू के समीप सारूप्य मुक्तिको प्राप्ति होते हैं किंतु सायुज्य अलंकार को प्राप्तिहोइ अरु जे अयोध्या में पापकरते हैं तिनको शरीर छूटतो है तबते कीट पतंग पशु

पाबनि २१ चारिखानिजगजीवअपारा अबधतजेतननहिंसंसारा २२ सबबिधि पुरीमनोहरजानी सकल सिद्धिप्रद मंगलखानी २३

इत्यादिक योनि में जन्मलेते हैं पर श्रीअयोध्यामें जब तिनको शरीर छूटतो है तबते सालोक्य मुक्तिको प्राप्ति होते हैं काहेते कि पाप पुण्यको फल भोग्य मनुष्य तनुको है अपर योनि में नहीं है ताते जे मनुष्य अयोध्या में बसिकरिकै पाप करते हैं ते चौरासी के दंड से छूटिकै अरु नरक दंडते छूटिकै श्री अयोध्याको प्राप्तिहोते हैं अरु जे अन्यत्र के जीव कोई योगते श्री अयोध्यामें आधहू निमेष निवास करिगये हैं जब उनको शरीर कहूं छूटो तब वै श्री अयोध्या में जन्म लेते हैं कर्मानुसार मनुष्य कीट पतंग पशु इत्यादिक योनिमें जन्म लेते हैं तब श्री अयोध्या में शरीर छोड़िकै श्री रामधाम जो श्री अयोध्या तहांको प्राप्त होते हैं यह प्रमाण है पद्मपुराणे श्लोक षष्ठिवर्षसहस्त्राणिकाशीवासेषुयत्फलं तत्फलंनिमिषार्द्धेणकलौदासरथीपुरी १ स्कांधे॥ जलरूपेनब्रह्मैवसरयूमोक्षदासदानैवात्रकर्मणोभो गो रामरूपोभवेन्नरः २ यदामतिंप्रकुरुते

अयोध्यागमनंप्रति तदानरकनिर्मुक्ता गायन्तिपितरोदिवि ३ यस्या:प्रभावमतुलः ब्रह्मावेदा:शिवोह्यहं नहिवक्तुंसमर्थास्ते विष्णुश्चसगुणः पुमान् तहां जो अनेक वासना जीवकै है सो श्रीअयोध्या में टिकै मोक्षदेती है किंतु सब एकही तनुमें मोक्ष है ( २२ ) सबप्रकारते मनोहरहै अरु सकल सिद्धि सम्पूर्णमंगल तेहिकै दाताहै ( २३ ) ऐसी पुरी जानिकै श्रीरामजन्म स्थान में विमलकथा को प्रारम्भकीन मैं कथासुनतसंते दुःख दोष मोह दम्भ पाखण्ड काम मद सर्बनाशहोइजाइ ( २४ ) यह जो श्रीरामचरित है ताको नाम मानसररामायण है जो कोई यह श्रीमद्रामायण सुनै ताको मन विश्राम स्थान को प्राप्तिहोइ विशेषि कै ( २५ ) मन जो है सोई हाथी है विषय बनरूप है तेहि में तीनिताप संयुक्त चिंता अनेक सोई दावानल है लगिरह्यो है पर विभव देखिकै जरत है ताही में मन हाथी जरत है जो श्रीरामचरित मानस में परै तो सुखीहोइ ( २६ ) यह श्रीरामचरित मानसर मुनिन के मन भावन है यह श्रीरामचरित अतिसुन्दर अतिपावन श्रीमहादेव जू कीनहै ( २७ ) कैसो है श्रीमद्रामचरित मानस तीनिप्रकारके दोष जे हैं काम क्रोध लोभ किन्तु तीनि कामना अर्थ धर्म काम किन्तु मात्सर्य मद मानकिन्तु तीनिईक्षणा सुतबित लोक मर्याद किन्तु तीनिगुण जेजे तीनिबि

**बिमलकथाकरकीनअरंभा सुनतनशाहिंकाममददंभा २४ रामचरितमानसयहिनामासुनतश्रवणपावहिंबिश्रामा २५ मनकरि विषय अनलबनजरई होयसुखी जोयहिसरपरई २६ रामचरितमानसमुनिभावन बिरचेउशम्भुसोहावनपावन २७ त्रिबिधदोषदुखदारिददावन कलिकुचालिकुलिकलुषनशावन २८ रचिमहेशनिजमानसराखापाइसुसमयशिवासनभाषा २९ तातेरामचरितमानसवर धरेउनामहियहेरिहरषिहर ३० कहौंकथासोइसुखदसोहाई सादरसुनहुसुजनमन लाई ३१ दो० जसमानसजेहिबिधिभयोजगप्रचार जेहिहेतु अबसोइकहौंप्रसंगसबसुमिरिउमावृषकेतु॥३२॥** * * * * *

कार हैं तिनते जनित जो दुःख तिनसंयुक्त सबनको श्रीमद्रामायण नाशकरत है परमपद देत है पुनि कलिकुचालि अरु संचित क्रियमान प्रारब्धि संयुक्त भूतभविष्यत वर्त्तमान समस्त पापनाश करिदेत है ( २८ ) श्रीमहेश जी अपने मनके अनुभवते यह मानस रामायण रचिराख्यो है कोई सुष्टकाल पाइकै तब शिवा जो पार्वती तिनको सुनावतेभये ( २९ ) ताहीते यह जो श्रीरामचरित है ताको मानस नाम महादेव धरेउ है अपने हृदय में बिचारिकै हर्षसंयुक्त ( ३० ) श्रीमहादेवकृत मानस रामायण ताहीको भाषा करत हौं हेसज्जनहुसादरते मनलगाइकेसुनहु ( ३१ ) दोहार्थ॥ जैसोमानसकोस्वरूप प्रताप है अरु जेहिहेतुकरिकै जगत् में प्रचुरभयो सोअबसमस्तप्रसङ्गकहतहौं पार्बती महादेव को स्मरणकरिकै ( ३२ ) इतिश्रीमानसेसकलकलिकलुपविध्वंसनेनामबालकांडे श्रीरामचरितमानसप्रारम्भश्रीअवधस्वरूपप्रभावयथार्थबर्णनंनाम एकादशस्तरङ्गः।११॥

दोहा॥ रामचरणदशदोइ में मानसथलजलपूरि॥ रामकिरतिसरयूप्रकटसुनतन्हातअघदूरि १२ श्रीमहादेव की प्रसन्नताते हृदयमें सुमतिको हुलास भयोहै ताते श्रीराम चरित मानस ताको मैं जो कबि तुलसीदास होतभयों मैं तो मानस रामायण के काव्य करिबेयोग्य नहीं हौं पूरिशिवजी की कृपाते योग्यभयों ( १ ) श्रीराम चरित जो मनोहर है ताको अपनीमति के अनुसार कहत हौं किंतु श्रीराम चरित करिकै अपनी मतिको मनोहर करौं हौं ताते हे सज्जनहुं जो मोंसे न बनै सो सुष्टुचित्त जो तुम्हार है ताते सुधारिलेव किंतु यह सुष्टुचरित है याको चित्तमें धारण करव ( २ ) अब रूपका लंकार करिकै मानसर जो है किम्पुरुष खण्ड में अरु श्रीराम चरित मानस जो है तिन दोनों की तुल्य योग्यता लंकार करिकै कहते हैं मानसर जो उत्तरा खंडमें है उसमानसर में थलभूमि है या भूमि में कुण्ड है श्रीराम चरित मानस में कबिकै सु-

**शंभुप्रसादसुमतिहियहुलसी रामचरितमानसकबितुलसी १ करौंमनोहरमतिअनुहारी सुजनसुचितसुनिलेवसुधारी २ सुमतिभूमि थलहृदयअगाधू वेदपुराणउदधिघनसाधू ३ बरषहिंरामसुयशबरबारी मधुरमनोहरमंगलकारी ४ लीलासगुणजोकहैबखानी**

मति थलभूमि है अरु हृदय अगाधता है अरु मानसर तौ सदाभरोरहतु है पर समुद्रते जललैकै मेघ और भरिदेते हैं अरु कबिकी हृदयमानसर भरिबेको बेद पुराण समुद्र हैं सन्तजन मेघ हैं ३ श्रीराम सुयश बरकही श्रेष्ठ बारिहै सोई बर्षते हैं सो मधुर है मनोहर है मङ्गल कर्त्ता है दृष्टांत जैसे समुद्र में खारजल अरु मीठोजल दोऊ मिश्रित है तहां और किसुसेनहीं भिन्नहोइ एक मेघहीकी गति है मीठोजल लेते हैं खारको त्यागकरत हैं जब वर्षा करतहै जबताईं भूमि में नहीं परै तबताईं वह जल मधुरमनोहर मंगलकारी है मेघ को जल जो कोई पात्र में ऊर्द्ध्वहीतेलैकैपान करै कोईदेश में तो कफ बात पित्त इत्यादिक एकहूं नहींहोइ अरु छहूंऋतु में सर्बकाल में मधुरकहे स्वरूपकी माधुर्यता अतिकोमल मनोहर कहे अतिसुन्दर है अरु जो कोई समुद्रते जल भरिलैजाइ अरु कोईपीवै तब ताको अनेकरोग होंइ किंतु पचैनहीं अरु सुन्दर नहीं है तैसेही बेद पुराण खारसमुद्र हैं काहेते कर्मकांड सोतौखार है अरु भगवत् यशसो मधुर है दोनों मिलिरहे हैं तहां साधुजन जे हैं ते मेघ हैं जैसे मेघ मधुरै जललेते हैं तैसे वेदपुराण ते सन्तजन भगवत्यश मधुर मनोहरमंगलकारी लैकै बर्षते हैं ताके पानकिये ते काम क्रोध लोभ इत्यादिक नाश ह्वै जाते हैं अरु जे कोई असाधु हैं ते वेद पुराण बांचिकै सुनावतेहैं ते जनुखारही जलभरिभरिपिआवते हैं काहेते सब सानिकै कहतेहैं अरु मेघ खारहीसमुद्र ते जललेते हैं अरु सूर्य्य की किरणिकी गर्मी ते मेघ जल बर्षते हैं किंतु सूर्य्य मेघ के आबरण ते बर्षते हैं यह मुनिन को अनेकमत है ( ४ ) श्रीरामचन्द्र की जो नरनाट्य लीला है ताको साधु प्रेमसमेत बखानि बखानि कहते हैं सोई जलकी स्वच्छता है अरु मेघ को जल शरीरको मलहरै है अरु श्रीरामलीला सम्पूर्ण बाह्यांतर के कर्म बासना रूप मल जन्म मरण मल हरत है ( ५ ) अरु जो प्रेम लक्षणा भक्ति है सो बरणबे योग्यनहीं है पर जब सन्तकहनेलगे तब प्रेम ते गद्‌गदबाणी ह्वै जाती है रोमांचठाढ़े होते हैं कभी बैठिजाते हैं कभी खड़े ह्वै जाते हैं कभी निर्लज्जह्वैकै नाचिउठते हैं कभी स्थम्भह्वैकै कंपायमानहोते हैं कभी रोइदेते हैं कभी ठठाइकै हँसिदेते हैं कभी प्रेमभरे गाइउठते

**सोइस्वच्छताकरैमलहानी ५ प्रेमभक्तिजोवरणिनजाई सोइमधुरताशीतलताई ६ सोजलसुकृतशालिहितहोई रामभक्तजनजीवन सोई ७ मेधामहिगतसो जलपावन सकिलिश्रवणमग चलेउसुहावन ८ भरेउ सुमानससुथलथिराना सुखदशीतरुचिचारुचिराना ९**

है कभी स्वरूपाकार बृत्ति पराभक्ति को प्राप्तह्वैकै अपनपौ समस्त भूलि जाते हैं पुनि स्वामी की इच्छा ते चैतन्य ह्वैजाते हैं इत्यादिक अनेक दशा होती हैं ताको प्रेमलक्षणा भक्तिकही सोई जल की माधुर्यताकहीस्वाद है श्रीरामचन्द्र को माधुर्य स्वरूप सो स्वाद है अरु शांतरस शांति क्षमा करुणा सोई शीतलता है जब ते मेघ ते जलछूट्यो अरु भूमि में नहीं परेउ तब की बर्णन भई तैसे सन्तजन के मुख ते श्रीराम सुयश उच्चारणभयो तब की बर्णनभई ( ६ ) पुनि जब मेघको जल भूमि में परेउ तब शालि जो है धान इत्यादिक ताको हितभयो शालि की वृद्धि ते कृषीकार को हितभयो तैसे जब साधु श्रीराम सुयशबर्षे तब कबिन केश्रोतनके अन्तष्करण में परेउ तब सुकृतरूपी शालिबढ़ेउ तब रामभक्त श्रोतनको आनन्दभयो परमानन्द जीवकाभयो आत्माको ( ७ ) पुनिमेघको जल भूमिपरेउ तब कोई नारेखोरन में परिकै जाइ मानसर में प्राप्त भयो अरु श्रीरामसुयश जो सन्तबर्षै तब कविकै मेधा कही बुद्धि सोई भूमि तामेंपरेउ तब श्रवणराह ह्वैकै हृदय में प्राप्तभयो सुमति जो है सो मानसकी थल भूमि है अरु बुद्धि मानसके बाहिरकी भूमि है ( ८ ) तबउहां जो सुष्टुथल मानसरहै सो भरोभयो जब द्वन्द्ववर्षारहित भयो शरदऋतु प्राप्तिभई तब जल थिरातभयो अपने पूर्वरूपको स्मरणकरतभयो तब वीच में भूमिकी उपाधि करिकै जलढाबर ह्वैगयो है जब अपने पूर्व स्वरूप को जलसमुझेउ तब कीचकीच में बैठिगई अपने शुद्ध स्वरूप को प्राप्तभयो तब सुखदाताभयो पुनि एकरस शीतलभयो पुनि सबकोरोचक भयो पुनि चारु कहे सुन्दरभयो पुनि चिरानकहे पुरानभयो जैसे मेघते छूट्यो तैसो निर्मल भयो यह तद्रूप दृष्टान्त है अब द्राष्टान्तकहते हैं जब सन्त श्रीरामसुयश केवल निर्मलवर्षे तब श्रोता कबिताकी बुद्धि भूमि रूप तामें परेउ तहां बुद्धि में राजसगुण जोहै सो मिलिगयो ताते ढाबर

ह्वैगयो किन्तु जो सन्तन प्राकृत दृष्टांतसंयुक्त श्रीरामसुयश कहते हैं श्रोताकेबोधहेतु तब श्रोतानेसहित दृष्टांत बुद्धिकरिकै श्रवणकियो तब सुमति थल में पर्‍यो तब मननकियो तब बुद्धिको राजसगुण अरु सन्त गुरुनको प्राकृत दृष्टांत सो धीरेहीधीरे क्रमहीते त्यागभयो तब निदध्यासन भयो

**दो० मुठिसुंदरसंबादवरबिरचेउबुद्धिबिचारि तेयहिपावनसुभगसरघाटमनोहरचारि १० सप्तप्रबंधसुभगसोपाना ज्ञाननयननिरखत मनमाना ११ रघुपतिमहिमाअगुणअवाधा बरणबसोइबरबारिअगाधा १२ रामसीययशसलिलसुधासम उपमाबीचिविलास**

तब श्रीराम सुयश केवल निर्मल आनंदरूप साक्षात् भयो अंतष्करण थिरभयो तब वे पुरुष सर्ब जीवको सुखदाता भये सबको शीतलरूप भये रोचकभये पुराण पुरुष को प्राप्त भये पुनि जलके दृष्टांत करिकै जैसे जैसे यह जीव अपने स्वरूप को चिन्तवन करै तैसे तैसे जो बीच की उपाधि ते जीव मलिन ह्वै गयो है सो बिकार मिटिजात है (९) दोहार्थ॥ मानसर में चहूंदिशि मणिनसे घाटबंध्यो है श्रीरामचरित मानस अतिसुभगता में चारिसम्बाद अतिशय सुन्दर तेई चारिहूघाट हैं प्रथम सम्बाद शिव पार्बती को दूसर कागभुशुण्डि गरुड़ को तीसर याज्ञवल्क्य भरद्वाज को चौथगुसाईं के गुरु अरु गुसाईं को अपनी अपनी बुद्धि करिकै बिरचे हैं तेई मनोहर घाट हैं (१०) अरु सातों प्रबन्ध प्रसंगयुक्त तेई सुभग सोपानकहे सीढ़ी हैं वह मानसर प्रत्यक्ष नेत्रनते देखिपरत है श्रीरामचरित मानस हृदय के नेत्र जे ज्ञान बैराग्य हैं तिनते देखिपरतहै तब यह मन प्रतीति मानत है (११) वह मानस में जलअगाध है यह मानसमें रघुपति की महिमा कहे मर्य्याद सो निर्गुण है किंतु गुणभूत सबमें सूत्रधर व्याप्त सबको नियन्ता अन्तर्यामी साक्षीरूप सबको चेतनकर्त्ता श्रीरामचन्द्र को घनीभूत तेज सूक्ष्मरूप निर्गुण सो महिमा किंतु श्रीराम गुण सब निर्गुण है यहै जो महिमा सो अगाध अगाध कहे कोई कबि बरणि नहींसकै काव्यन में नहींसमाइसकै किंतु अगाधकहे निर्दोषहै सोई श्रीरामसुयश बर बारि को अगाधता है (१२) वह मानस में तरंग उठती है यह जो श्रीसीताराम को यश सुधा सलिल है तामें उपमा जो अनेकप्रकार की हैं सोईतरंग है जाको देखत सन्ते मनरमत है कबिजनन के उपमेय को उपमान के सदृश कहते हैं सो उपमेय को लक्षिकरावते हैं सो उपमानकहीं (१३) वह मानस में पुरइनि छाइरही है अरु सीपहै तिनमें मुक्ता प्रसवहोते हैं श्रीरामचरित मानस में चौपाई सुन्दरि सघन पुरइनि है अरु कबिकी सुमति सीप है अरु युक्ति जो है सो मंजुनाम मोती है मंजु केवल उज्ज्वल को नाम है ताते मोती को नाम मंजु है चारिभांति सबकेनाम कहेजात हैं एकलाड़नाम कहीं एकजसकर्म करै तसनाम परत है ताको क्रिया नामकही एक जैसो गुणहोइ तैसो नाम

**मनोरम १३ पुरइनिसघनचारुचौपाई युक्तिमंजुमतिसीपसोहाई १४ छंदसोरठासुंदरदोहा सोबहुरंगकमलकुलसोहा १५ अर्थ अनूपसुभावसुभासा सोइपरागमकरंदसुबासा १६ सुकृतपुंजमंजुलअलिमाला ज्ञानबिरागबिचारमराला १७ धुनिअवरेवकवितगुण**

कहाजात है ताको गुणनामकही एकजैसो रूपहोइ तैसोनाम कहाजात है ताको रूपनामकही अरु मंजुकही उज्ज्वल को अरु मोती में केवल उज्ज्वलै धर्म है ताते इहां रूपनाम कहे हैं ताते मोती को मंजुनामहै (१४) वह मानस में कमल के कुल बहुतरंग के हैं श्रीरामचरित मानस में अनेकभांतिके छन्द हैं सोरठा दोहा इत्यादिक तेईबहुरंगके कमल हैं (१५) अरु कमलन में पराग है मकरन्द कहे रस है सुगन्ध है अरु छन्द सोरठा दोहादि जे कमल हैं तिनमें अर्थ जे अनूपम हैं तेई पराग सुन्दर हैं अरु सुन्दरिभावना सोईमकरंद है अरुसुन्दरिभाषा जोनप्रताकरिकैकही है सोई सुगन्ध है (१६) पुनिउनकमलकेरससुगन्धकोभ्रमर जे निर्मलहैंते आस्वादनकरते हैं अरु परागमेंरँगिजाते हैं अरु छन्दजेकमलरूप हैं तिनकेसर्वस्वाद के ग्रहणकर्त्ता सुकृतिनके सुकृति जेहैं तेई भ्रमर हैं पुनि उस मानसर में हंसरहते हैं श्रीरामचरित मानसरमें ज्ञान वैराग्य विचार इत्यादिक तेई मराल हैं (१७) पुनि उस मानसरमें मनोहरमीन हैं अनेक भांति के अरु श्रीरामचरित मानस में छन्दन में अर्थ चारिभांति करिकै हैं चारि खानि है चारि लक्षण

हैं चारि गति हैं सो जानब काव्यनके विषय एकधुनि है एक अवरेव है एक गुण है एकजाति है सोई मनोहर मीन है धुनि काको कही जहां दुइ तीनि चारि अक्षर को पद होइ ताही शब्दमें कइउअर्त्थ होइँ यह चौपाई ते जानब। बन्दौंनामरामरघुबर को। पुनि सखरसकोमल मंजु इत्यादिक जहांहोइँ ताको धुनिकाव्य कही ते चेल्हवा इत्यादिक मीन हैं जे चमकते हैं अवरेव काको कही जो अक्षर उलटिकै अर्थ सिद्धिहोइ॥ चौपाई॥ रामकथाकलिबिटपकुठारी। जहां अवरेव काव्य है ते बांबामीन हैं तिनकी सर्प्प इव रूपचाल है पुनि कबित्त बिषय गुण काकोकही जे दुइ तीनि अक्षर के पदहोहिं अरु जो अक्षर पूर्व्वहीपरै सोईपद में जमकअनुप्रास परतजाहि अरु एकै अर्थहोइ॥ चौपाई॥ भवभवबिभव पराभवकारिणि। जहां यहरीति काव्यहोइ ताको गुणकाव्यकही तहां जे छोटीछोटी मीन सौ पचासमिलिकै चलती हैं ते मीन हैं पुनि जातिकाव्य काकोकही जहां आठ दश बारह इत्यादिक अक्षरनकेपदहोहिं अरु अर्थ प्रसिद्धहोइ ते बड़ेबड़े मीन हैं एकही एक रहते हैं। हरिगीतछन्द॥ मनजाहिराचेउमिलिहिसोबर सहजसुन्दरसांवरो। यहिरीति जहां काव्यहोइ ताको जातिकाव्य कही काव्य की अरु चतुरंगिनी

**जाती मीनमनोहरतेबहुभांती १८ अर्थधर्म्मकामादिकचारी कहबज्ञानविज्ञानविचारी १९ नवरसजपतपयोगविरागा तेसब**

सेना की एकही रीति वर्णन है काव्यनविषे जो धुनि है सो घोड़ेनकी रहस्य है अवरेव जो है सो गाड़िन की रहस्य है गुणजोहै सो पैदरन की रहस्य है जाति जो है सो हाथिन की रहस्य है जैसे चतुष्पद सेना है गज रथ तुरंग पैदर तैसे चतुष्पदकाव्य है धुनि अवरेव गुण जाति तेई श्रीराम चरित मानस में अनेकभांति के मीन हैं ( १८ ) उसमानस में अनेकभांतिके जलचर हैं अरु श्रीरामचरित मानसमें अर्थ धर्म काम मोक्ष ज्ञान विज्ञान बिचार नवरस अरु जप तप अरु योग बैराग्य येते सब जलचर हैं अर्थकहे द्रब्य अन्न वस्त्र बाहनइत्यादिक सो तप दानते अर्थ सिद्धि होत है धर्म्मकहे बर्णाश्रम के धर्म्मते अपने कर्म्मते सिद्धिहोत है कामकहे कामना सो अष्टसिद्धि इत्यादिक सो देवता इष्टते सिद्धिहोत है मोक्षकहे संसारकी निबृत्ति परपद की प्राप्ति सो ज्ञानभक्ति ते सिद्धिहोत है ज्ञानदुइप्रकार का है एकशास्त्रजन्य ज्ञान दूसर निजअनुभव ते स्वस्वरूप की प्राप्ति विज्ञान कहे बिशेषज्ञान स्वस्वरूपते परस्वरूपकी प्राप्ति सर्बत्र एकदृष्टि बिचारकहे सारासार को बिभागकरना आत्मा अनात्मा को विचार करिकै भिन्नकरना ( १९ ) नवरस श्रीरामचन्द्र जी ते उत्पन्न हैं शृङ्गार जनकपुर में हास्य फागुमें अरु सूर्पनखा की नाककाटते करुणा जब श्री लक्ष्मणजी के शक्तिलगी किंतु विभीषण पर जब शक्तिचली रौद्र खर दूषण के युद्ध में अद्भुत जब कागभुशुण्डि को दिखायो है अरु श्रीकौशल्या को दिखाये अरु जयन्ताविषे वैभत्स जब नागफांस में स्वइच्छितबँधे भयानक जब सेतबांधे रावण को भयभई बीररावण के संग्राम में पुनि शांत जब राज्याभिषेक भयो॥ इति ९॥ प्रमाण शृङ्गारमालाग्रन्थे श्लोकएक ॥ शृङ्गारोजनकगृहेरघुवराद्धास्यःकृतोद्वैनस्यात् कारुण्योऽनुजरोद नेखरबधे रौद्रौद्भुतःकाक के वैभत्स्योहरिबन्धनेभयकरः सेतौरणेबीरहा शांतः श्रीभुवनेश्वरेभवहरा द्रामाद्रसोभून्नवः १ शृङ्गार की दशअवस्था अभिलाष चिन्ता स्मृति गुणकथन उद्वेग प्रलाप उन्माद व्याधि जड़तामरण १० स्वामी के मिलबे की इच्छा चिन्तासंयुक्त सो अभिलाष स्वामी के दर्शन अरु स्वामी के मिलबे को सन्तोष बार्त्तालाप करिकै सो चिंता स्वामी की जेतीचेष्टा दुःख सुख सबको स्मरण ज्ञान सो स्मृति स्वामी को बिछोह बहुतदिन को तिनको गुण किसू से कहना स्पर्श पर पति पत्नी के भावसो गुणकथन स्वामी के विषे कामकोक्लेशते विषयिक ज्ञान सो उद्वेग प्रिय जो हैं स्वामी तिनके आश्रित कल्पना जो है व्यवहार सो प्रलाप स्वामी को चकितह्वैकै ताकना अरुनेत्रसंयुक्त उन्मीलित मन अरु दूनोंहाथ से जाही को पावै ताही को धरै अरु भ्रम के वचनकहना सो उन्माद मदनको क्लेशकरिकै सन्ताप ते शरीर दूबरि ह्वैगई है सो व्याधि बिरह ब्यथा जो है सोई जीवन है दूनोंकरिकै जड़ ह्वैरहीहै सो जड़ता बिरह के क्लेश ते उत्पत्ति भयो जो व्यवहार सो मरण १० मानो मरिगई है शृङ्गारबिधि में द्वै भेद हैं एक बिप्रलंभ स्वामी के देखिबेहेतु प्राणबिहंग ह्वैकै उड़िकै जाबेकी इच्छा है सो बिप्रलंभ पुनि सम्भोग सम्भोगमें चारिभेद हैं उद्दीपन उत्कण्ठा अभीसार साक्षात्अरु उसीमें अनुभाव बिभावहै सो कहते हैं प्रथम उद्दीपन कही तामे द्वै भेद हैं एकवचन उद्दीपन स्वामी जो हैं श्रीरामचन्द्रजू तिनकी जो चर्च्चा कोई करै

ताको सुनिकै स्वामीको गुण कृपा हृदय में प्रवेशभयो तब तन पुलकि उठतु है पुनि रूपोद्दीपन कही जब स्वामीके रूपरंगकी अनुहारिकोई पदार्थ देखिबे में आयो तब स्वामीके स्वरूपकी सुधिआई हृदयमें स्वरूप प्रवेशभयो किन्तु स्वामीके बिरहकी दशा काहूमें देखिपरेउहै तबवाह्यांतर अंग अंग पुलकितभयो सो उद्दीपन कही पुनि दूसरे उत्कण्ठा कही स्वामी के मिलबेकी अति चाहनाभई अपर कछु नहीं सोहात है नेत्रन में जलभरिआये हैं हृदय गद्गद् ह्वैआयो है सो उत्कण्ठा कही पुनि अभीसार स्वामी के मिलबेको चलतभई अति आतुरते अनेक सुखकोअनुभव होतजाते हैं अरु मगमें पग डगमगात परते हैं अंग अंग पुलकित हैं सो अभीसारकही पुनि साक्षात् स्वामीकोस्वरूप देखिपरेउ तब मग्नह्वैगई स्तम्भ भावको प्राप्तभई है तहां साक्षात् सम्भोगमें तीनिभेद हैं मनसम्भोग चक्षुसम्भोग स्पर्शसम्भोगसम्भोग में दुइभावना हैं एक तत्सुख एकस्वसुख तत्सुख स्वामी के सुखहेतु शृङ्गार है अरु एकस्वामी करिकै अपने सुखहेतु शृङ्गार है बिशेषशृङ्गाररस रतिको कही तहां मन वचनकर्म के ब्यवहार एकह्वैजातु है तहां शृङ्गाररसमें षोडशउद्दीपन हैं प्रथम मज्जन है पुनि वस्त्रहार तिलक अञ्जन कुण्डल नासिकाकी मोती कबरीनूपुर जावक कुचमणि क्षुद्रघण्टिका ताम्बूल कंकण अङ्गराग चन्दन केसरि अगर कस्तूरी इत्यादिक को लेपन इति १६ पुनि शृङ्गाररस के सहायक बारह आभूषण हैं चूरी करमुद्रिका बाजूबन्द ग्रीवभूषण कटिकिंकिणी मञ्जरी नाम बिछुवा श्रवणताटंक भालमें कञ्चनमणिके टीकाशीशफूल बेनी मोतिनते गुहीहै बेसरि शृङ्गारहूमें है आभूषणहूमेंहै कोछी इति १२ पुनि बारह आभूषण शील क्षमा दया पतिव्रत सन्तोष लज्जा बिनय दृढ़ता सुन्दरता माधुर्य शुद्धता गुरुसेवा इति १२ शृङ्गारश्यामरङ्ग ताकी स्थायीभाव रति इत्यादिक प्रीति १ हास्य या उरंग ताके लक्षणविपर्यय अलंकार किन्तु हास्यके वचन २ करुणा धूम्ररंग परदुःखदेखिकै

**जलचरचारुतड़ागा २० सुकृतीसाधुनामगुणगाना तेबिचित्रजलबिहंगसमाना २१ सन्तसभाचहुंदिशिअमराई श्रद्धाऋतुबसंत समगाई**

दृविउठै ३ रौद्ररक्त अनुचित देखिकै क्रोधउपजै ४ अद्भुतपिङ्गल रंगआश्चर्य्यवत् देखिपरै ५ वैभत्स्य कृष्णरंग देखिकै लज्जा उत्पन्नहोइ मनमें धृतिआवै ६ भयानक नीलरंग जाको देखिकै भय उत्पन्नहोइ ७ वीरगौररंग रणमें दानमें तपमें शरीर इत्यादिक सर्वदेह हर्ष संयुक्त नेकहू नहीं मुरै ८ शांतश्वेतरंग निंद्या स्तुति मानापमान हर्षशोक इत्यादिक रहितइति ९ पुनि तीनि रस वात्सल्य कंचन रंग पुत्र भाव लाड़न पोषण पुनि दास्यचित्ररंग निष्काम सेवा पुनि सख्य अरुण स्वामी को प्रसन्न सबप्रकार राखै इति ३ इतिरससमाप्त ॥ पुनि जैजै अक्षर को मन्त्रहोइ तै हजारदिन प्रतिजपै अरु अक्षरप्रति लक्षको पुरश्चरणकरै अरु तप इन्द्रिनकी विषयजीतै पुनि योगाष्टांग नेम यम आसन प्रत्याहार प्राणायाम ध्यान धारणा समाधि इति ८ वैराग्य कहे तीनिगुण सम्बन्धी जो है सिद्धि तिनको त्याग येते समस्त श्रीरामचरित मानस के जलचर हैं चारु कहे सुन्दर जो श्रीरामचरित तड़ाग है तामें सुन्दर जलचर हैं अरु उसमानसर में अनेकभांति के जलचर हैं ( २० ) इत्यर्थः ॥ उसमानस में जल बिहंग जो जलहीमें रहते हैं अहर्निशि तिनको कुक्कुटनाम है रतमानस में जे सुकृती साधु हैं जे केवल रामनाम ही गानकरते हैं तेई विचित्र जल बिहंग हैं ( २१ ) उतअमराई है चहूंदिशि इतसन्तसभा अमराई है उतबसन्त ऋतु करिकै शोभित है इत सदा श्रद्धा बसन्तऋतु है श्रद्धाकही अपनी उपासना अनुकूल वेदवाक्य सन्तवाक्य गुरुवाक्य निज अनुभव की एकता करिकै प्रतीतिकरना सो श्रद्धाकही अन्यच्चश्लोक एकशास्त्रदृष्टंगुरोर्वाक्यं तृतीयंचात्मनिश्चय त्रिविधंयोऽभिजानाति समुक्तोजन्मबन्धनात् १ सन्तसभा अमराई में वसन्तरूपी श्रद्धा सदा है ( २२ ) पुनि उस अमराई में अनेक तरह के द्रुम हैं आमन की जातिबहुत हैं पुनि कटहर बड़हर सहतूत चिंचिनी ढुमरि इत्यादिकहैं पर अपने अपने फूल फल सुगन्ध स्वाद इत्यादिक करिकै शोभित हैं अरु तिनपर लता चढ़िरही हैं बिताइव छत्राकार शोभायमान ह्वै रही हैं अरु इत श्रीरामचरित मानस में सन्तसभा अमराई में पृथक् पृथक् द्रुम दिखावते हैं क्रमालंकारकरिकै जानब भक्तिनिरूपणविविधविधाना। भक्ति के निरूपण विविध प्रकार के हैं भक्तिकही सेवा भजधातु है सो सेवाबिषे सिद्धिहोतु है तहां सन्तसभा में पराभक्ति के प्राप्तिवारे प्रेमलक्षणावारे नामाकार वृत्तिवारे मानसीवारे ध्यानकरनेवारे नवधाभक्तिवारे इत्यादिक भक्तजन हैं ज्ञाननेष्ठी योगनेष्ठी कर्मनेष्ठी इत्यादिक सभा में

**भक्तिनिरूपणविविधविधानाक्षमादयाद्रुमलताबिताना २३ संयमनेमफूलफलज्ञाना हरिपदरतिरसवेदबखाना २४ औरोकथाअनेक**

सबहैं अरु अपनी अपनी भावनाते आपुआपुको सबैभक्तमानै हैं यह कहतेहैं कि सेवा को भक्तिकही सेवाकही सेवायां प्रसन्नता जाहीरीति से स्वामी प्रसन्नहोइ सो भक्ति है सोई सेवा है तहां पराभक्तिवारे श्रीरामचन्द्र के स्वरूप में तदाकारभक्ति मानते हैं प्रेमलक्षणावारे कभी दिशा भूलि जाते हैं कभी नाचिउठे कभी गाइउठे कभी रोइ कभी बैठि जाते हैं समाधिस्थ होते हैं इत्यादिक दशा बिरही बिरह भक्तिमानै हैं नामवारे रामनाम रटते प्रेमभरे भक्तिमाने हैं मानसीवारे मानसी सेवाभक्तिमाने हैं ध्यानकरनेवारे अपने स्वरूप को ध्यानकरिकै परस्वरूप को निरखते हैं सोई भक्तिमाने हैं अरु नवधा वारे कोई श्रवण को भक्तिमाने हैं कोई नत्यगान स्तोत्र पाठ पुराण इत्यादिक बांचना ताहीको भक्ति माने हैं कोई सुमिरण को मानेहैं कोई चरण सेवन भक्ति माने हैं कोई शालग्राम अरु धातु शिलादारु मृत्तिका अरु चित्रलीलाइत्यादिक विग्रह अरु गुरु सन्त तिनकी अर्च्चननाम परिचर्य्या जल चन्दनतुलसी पुष्प धूप दीप नैवेद्य ताम्बूल इत्यादिक सेवा सोई भक्तिमानते है कोई परिक्रमा करिकै संस्कृत किंतु भाषा स्तुति करिकै साष्टांग दण्डवत् दोनों पग दोनोंजांघ छाती शिर मनवचन सर्बांग भूमि स्पर्शकरै जैसे दण्डभूमि में परै है जैसे सर्प्प भूमि में लपटिरह्यौ है सो बन्दनाभक्तिमाने हैं पाद्मेश्लोक दोर्भ्यांपद्भ्यांचजानुभ्यां उरसाशिरसादृशा मनसा वचसाचेति प्रमाणोऽष्टांगईरितः १ कोई दास्य भाव परमेश्वर की आज्ञानुकूल सब करते हैं कोई सखाभाव स्वामी से केलिभक्ति मानते हैं कोई मन बचन कर्म आत्म समर्प्पण किये हैं जो करै सो रामहीकरै ज्ञानीजन जे हैं ते अपने अन्तष्करण की बृत्ति अखण्डकरिकै अपनो स्वस्वरूप निर्मलताही को सेवनकरते हैं सोई भक्ति मानते हैं अरु योगीजन अष्टांग योगनेम यम आसन प्रत्याहार प्राणायाम ध्यान धारणा समाधि करिकै ब्रह्म जो ज्योतिस्वरूप तेहीकी प्राप्तिहेतु सेवाभक्ति मानते हैं अरु कर्मवारे यज्ञ दान जप तप तीर्थब्रत इत्यादिक करिकै भगवत्को समर्प्पण करते हैं सोई सेवाभक्ति मानते हैं सोईभक्ति निरूपण है बिविधप्रकार के सोई सन्तसभा अमराई में बिबिधभांति के द्रुम हैं अरु सबमें क्षमा है सोई लता है दया है सोई बितानइव ह्वै रही है ( २३ ) उसमानसर की अमराई में फूलफूले हैं पुनि फूल हैं पुनि फलहैं पुनि फलमेंरस है इसमानसर में सन्तसभा अमराई में संयम नेम फूल हैं अरुज्ञान फलहै हरि के चरणारबिन्द में रति सोईरसहै संयमदश हैं अहिंसा सत्यअस्ते-

**प्रसङ्ग तेशुकपिकबहुबरणबिहङ्ग २५॥ दो०॥ पुलकबाटिकाबागवनसुखसुबिहङ्गबिहारु मालीसुमनसनेह जलसींचत लोचन**

य ब्रह्मचर्य्य दया नम्रता क्षमा धृति अल्प भोजन शौच येते दश संयम १० नेम शौच होम तप दान विद्याध्ययन इन्द्री निग्रह ब्रत चान्द्रायण इत्यादिक किंतु व्रतकहे प्रण उपवास एकादशी आदि मौनरहना स्नानत्रिकाल संध्याकरना दशनेम १० श्लोक द्वैप्रमाण गायत्रीभाष्ये अहिंसासत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्य्यदयार्जवंक्षमाधृतिमिताहारः शौचंइवयमादशः १ शौचेप्याचतपोदानं स्वाध्यायोयंस्थितगृहः ब्रतोपवासमौनानि स्नानंच नियमादश २ येते संयम नेम ( २४ ) उतअमराई में बिहंग हैं मयूर शुक पिक इत्यादिक इत अमराई में अनेक प्रसंग हैं॥ चौपाई॥ तनय ययातिहियौबनदयऊ इत्यादिक प्रसंग जो हैं अरु सन्तसभा में एकएकते अपर प्रसंग कहते हैं तेई अनेक बर्णके बिहंग हैं तरह तरह की मनोहर बाणी बोलते हैं ( २५ ) दोहार्त्थ उतमानसके चहूंफेर किनारे किनारेबाटिका शोभित है यामें केवल रस सुगन्धमय फूलहीलगे हैं सो बाटिका तामें बिहंग मधुकरराय मुनि इत्यादिक जे केवल रसै ग्रहण करते हैं पुनि ताही के पीछे अमराई है यामें रसाल पनस इत्यादिक तरु हैं तामें शुक पिक बिहङ्ग हैं फलन के रस ग्रहणकरते हैं ताके पीछे वन है जामें अनेकरीति के तरु हैं तहां के बिहंग अनेकप्रकार के हैं उत्तम मध्यम निकृष्ट बनके फल अनेक ताके भोक्ता हैं अरु इतमानस में जो समाजकी पुलकावली है सो तीनिप्रकार की है एकनकी पुलकावली केवल भक्तिरसमय है श्रीरामलीला माधुर्य्य में पुलकि के मग्नरहते हैं तेई बाटिका हैं अरु केवल श्रीसीताराम के स्वरूप माधुर्य्य रसमें मग्न है प्रेम उमगत है तेई बाटिका के पुष्प हैं परमानन्दरस है जीव बिहंग है सोईग्रहणकरत है अरु एकन के मन में केवल ज्ञान ही की पुलकावली है सो बाग है अरु

तेहि को फल जीवन्मुक्त है अरु ब्रह्मानन्दरस है चित्त विहंगहै सोई रसको भोक्ता है अरु एकन के कर्म्मकाण्ड में पुलकावली होती है सोई बन है तामें अर्त्थ धर्म्म काम फल है ताको भोग सो रस है अहंकार बिहंगभोक्ता है ताते उपासनाकाण्ड ज्ञानकाण्ड कर्म्मकाण्ड ये तीनिहू बाटिका बाग बन हैं अरु तीनिहू को सुष्टुमन सोई माली है जैसे बाटिका बाग बन है तैसोताको मन माली है अरु अपनी अपनी भावना में स्नेह जो है सोई जल है अरु दोऊनेत्र ते चारुघट हैं ताहीते भरिभरि सींचते हैं पुनि दूसर अर्त्थ पुलकावली सोई

चारु २६॥ चौ०॥ जेगावहिंयहचरितसम्हारे तेयहितालचतुररखवारे २७ सदासुनहिंसादरनरनारी तेसुरबरमानसअधिकारी २८ अतिखलजेविषयीबककागा यहिसरनिकटनजाहिंअभागा २९ शम्बुकभेकसियारसमाना इहांनविषयकथारसनाना ३०

बाटिका हैं या बाटिका में सर्वपदार्त्थ हैं ताते बागकहा अरु बन कहे समूह बाटिका बाग बन तीनिहू को एकही अर्त्थ है ( २६ ) उतमानसरमें रक्षक हैं इत श्रीरामचरित सँभारिके जे गावते हैं अपर चौपाई दोहा छन्द न मिलैपावै कहीं कुपाठ न होनेपावै कहीं अर्त्थ को अनर्त्थ न होनेपावै तेई चतुर रखवारे हैं ( २७ ) उत देव देवी स्नान करत हैं इत नरनारिजे सादरते सुनते हैं सदा तेई सुरबर स्नान के अधिकारी हैं ( २८ ) उत बकुलाकागलानहीं जाते हैं इतअति खलजे विषयीतेई बक काग हैं अति खलकही जे कहेते समझते हैं पर मानते नहीं अरु धारणा नहीं करते हैं अरु निन्दक हैं ते खल हैं पुनि विषयीजे विषय में लीन हैं अरुभगवत् के बिग्रह में अरु भगवत्पदार्थ में विषय आरोपण करते हैं अरु भगवत् के स्वरूप मायिक कहते हैं तैसही चरित है यह मानते हैं ते विषयी हैं अरु भगवत् के स्वरूप लीला में विषय लेसहू नहीं है ( २९ ) उतबककाग क्यों नहींजाते शम्बुक कही घोंघा भेककही मेढुक जो सेवारमें समाइरहे हैं ते उतै मानसरमें तीनिहू नहीं हैं ताते बककाग नहींजाते हैं इतै श्रीरामचरित मानसरमें विषयकीकथाको रससो नहीं है लोभसेवार है क्रोधशम्बुक है कामभेक है क्रोधकाम दोनों लोभहीके भीतर रहते हैं सो इत मानस में नहीं है ( ३० ) ताहीते हृदय में हारिकै नहीं आइसक्ते हैं कामीकाक बलाक बिचारे उनको चारा इतमानसरमें नहीं है तातेनहीं आइसक्ते हैं अथवा बिचारे कहे कङ्गाल हैं ज्ञानहीन हैं मूर्ख हैं मलीनहैं ते श्रीरामचरित मानसमें कैसे आवहिं ( ३१ ) उतै जावेको कठिन है इतआइवेको कठिन है बिना श्रीरामकृपा नहीं प्राप्तहोइ ( ३२ ) काहेते उतकुपन्थ कराल है इतकुसङ्गै कराल कुपन्थहै उतमानसके मार्ग में व्याघ्रहरिकही सिंहजाको पञ्चाननकही चारिहूपगके चंगुलचारि अरुएकमुखपांचहूते पांचहाथी एकहीबार मारतु है ताते पञ्चाननकही किन्तु पांचमुखहोहिंगे शास्त्र कहते हैं अरु सर्प्प इत्यादिक तामसी जीवन करिके मार्ग्ग कठिन है इतमानसरमें जो कदाचिमन सम्मुखहोइ तौ

त्यहिकारणआवतहियहारे कामीकाकबलाकबिचारे ३१ आवतयहिसरअतिकठिनाई रामकृपाबिनआइनजाई ३२ कठिनकुसङ्गकुपन्थकराला तिनकेबचनब्याघ्रहरिब्याला ३३ गृहकारजनानाजंजाला तेअतिदुर्ग्गमशैलविशाला ३४ बनबहु विषममोहमद माना नदीकुतर्कभयङ्करनाना ३५ दो० जेश्रद्धासम्बलरहितनहिंसन्तनकरसाथ तिनकहंमानसअगमअतिजिनहिंनप्रियरघुनाथ ३६ चौ० जोकरिकष्टजाइपुनिकोई जातहिनींदजुड़ाईहोई ३७ जड़ताजाड़बिषमउरलागा गयउनमज्जनपावअभागा ३८ करिनजाइसर

कुसङ्गी पुरुषजे हैं जिनको बचन जो भयदायक सोई ब्याघ्रहरि ब्यालहै ( ३३ ) उतबिशाल पर्ब्बत है इत गृहकार्य्य जो नाना जंजाल है सोई शैल है ( ३४ ) उतविषम बन है इत मोह मद मान जो हैं तेई बिषम बन हैं उत भयंकर नदी है इत मनकी कुतर्क जो हैं तेई भयंकर नदी हैं ( ३५ ) दोहार्त्थ उत मानस को मार्ग्ग एकतौ कठिन है दूसरे खर्चनहीं है पुनिसंगतिनहीं है ताते अगम है इत मानस में श्रद्धाखर्च नहीं है पुनि संतन की संगति नहीं है पुनि जिनके श्रीरघुनाथजी नहीं प्रिय हैं तिनको मानसअगम है

( ३६ ) जो कदाचि कोईकष्ट करिकैजाइ तौ उसको जूड़ा ह्वै जात है इत जो कष्टकरिकै आयो तबपूर्ब्ब पापते निद्रा आइगई ( ३७ ) उतअतिशय जाड़ लागि आइ है ताते स्नानपान नहीं भयो इत जड़ता जो है अज्ञानता जाते कछुनहीं समुझिपरेउ ताते बाह्यांतर नहींभीज्यो भाग्यहीन है ( ३८ ) उतइत शीतके जोरते नतौ मज्जन भयो नतौपान करिगयो अभिमान समेत फिरिआयो है अभिमान कही इतैनिद्रा अज्ञानबश इतेअति जाड़बश अभिमान भयो कि सूनेते स्नानकियेते काहोतहै ताते फिरि आयो है ( ३९ ) जो कोई पूछबे को आयो तब मानसरमें अनेक दूषण रोपण करिकै निन्दा सुनावत भयो ( ४० ) अरु तेहि प्राणीको एकहू बिघ्न नहीं ब्यापै जेहि पर श्रीरामचन्द्रकृपा करहिं ( ४१ ) उसमानसरमें जोसादर समेत स्नानकरै तौ तीनिताप मेटिकै मोक्षदेतु है इतमानस में प्रेम समेत श्रवणकरै तौ तीनिताप मेटिकै श्रीरामचन्द्र को प्राप्तिहोइ तीनिताप कौन हैं अधिभूत अध्यात्म अधिदैवत अधिभूत कही जो सुत कुटुम्ब राजा सर्प्प चोर ब्याघ्र इत्यादिकनते जो बाधाहोइ अरु अपनेमनमें जो कोई जीवको बिघ्नताकै सो अधिभूत कही लोक परलोकहू में ॥ पुनि आध्यात्म॥ जो शरीरते बाधा उत्पन्नहोइ ज्वररोग बरतोर इत्यादिक पुनिकाम क्रोध ईर्षा मात्सर्य्य इत्यादिकनते बाधा स्वार्थ परमार्थहू में सो अध्यात्मताप कहिये पुनि आधिदैवत जो दैवयोगते होइ पाला पाथर अतिबृष्टि अनाबृष्टि इत्यादिक किन्तु इन्द्रिनके देवतन करिकै

**मज्जनपाना फिरिआवहिसमेतअभिमाना ३९ जोबहोरिकोउपूंछनआवा सरनिंदाकरिताहिसुनावा ४० सकलबिघ्नब्यापैंनहिंतेही रामसुकृपाबिलोकहिंजेही ४१ सोइसादरसरमज्जनकरई महाघोरत्रैतापनजरई ४२ तेनरयहसरतजहिंनकाऊ जिनकेरामचरण भलभाऊ ४३ जोनहाइचहयहिसरभाई सोसतसंगकरैमनलाई ४४ असमानसमानसचषुचाही भइकबिबुद्धि बिमलअवगाही ४५ भयउ**

बाधाहोइ स्वारथ परमारथहू के ताको अधिदैवत तापकही इहै जो तीनिहूंताप महाघोर जेहिकरिकै सर्ब जीव तप्त है जो श्रीरामचरित मानसर में मज्जनकरै तो त्रैतापमें नहींजरै ( ४२ ) सब तजिकै जिन जीवन के श्रीरामचन्द्र जी के चरणारबिन्द में भलीप्रकार ते भाव है ते प्राणी यहमानस को नहीं तजते हैं ( ४३ ) जो भावयुक्त यहमानसर स्नानकीनचाहै तो सर्बको त्यागि मनको अच्छीतरह लगाइकै सत्संगतिकरै किन कै सन्तन कै जे पुरुष शास्त्र सम्प्रदायलिहे सबप्रकार निरभिमान निरपेक्षनिर्दम्भ संसार ते वैराग्य समदृष्टि इत्यादिक लक्षण एकरस श्रीरामतत्पर तिनपुरुषन कै संगतिकरै अहर्निश सो मानसर अन्हाहि नीकीप्रकारते ( ४४ ) अरु यह मानसर देखिबे को हृदय के नेत्रचाहिये उतमानसर भरोभयो इत कविता को हृदय मानसरभरोभयो अवगाह भयो तब कविताकै विमल अनुभवित बुद्धि तब अवगाहतभई ( ४५ ) श्रीरामचरितमानस में प्रवेश करतभई तब कविके हृदय में आनन्द को उत्साहभयो तबप्रेमको प्रमोद कही आह्लाद उमगतभयो ( ४६ ) तहां उतमानसर उमगत भयो तब शुभमङ्गलमय नदीचली तामें श्रीरामचन्द्र को यश करुणामयजलभरिकै चली सो सरयूनाम है सो सरयूमानसरमें कहां ते प्राप्तिभई तहां भक्तराज जो श्रीबशिष्ठजू तिनने पूर्बही महा तपस्याकीन्ह्यो परब्रह्मको स्मरणकीन्ह्यों तब परब्रह्म परमात्मा जो श्रीरामचन्द्र ते प्रसन्नभये तब जो गोलोक के मध्य में श्रीअयोध्या ताके दक्षिण विरजागंगा श्रीअयोध्याके उत्तर श्रीसरयू है सो श्रीरामचन्द्र की करुणारूप है को जानै अनादिही नेत्रद्वारा ह्वै प्रबाह चरणसेवति है सो सरयू श्रीरामचन्द्रकी आज्ञानुकूल श्रीबशिष्ठजू के हेतु श्रीसरयू चलतीभई प्रथम बासुदेव लोकमें आई पुरुष ने पूजनकियो पुनि महाशम्भु के लोक में आई पुनिपुरजन समेत महाविष्णुके लोक में आइकै महाविष्णुके अंग में प्रवेशकरिकै सम्पूर्ण लोक को मेखलाकरिलियो तहां महाविष्णु के लोक में सरयू कछु रहिभई कोई कालपाइकै श्रीबामनजीके चरण सों ब्रह्माण्डफूटि

**हृदयआनन्दउछाहू उमगेउप्रेमप्रमोदप्रबाहू ४६ चलीसुभगकबितासरितासो रामबिमलयशजलभरितासो ४७ सरयूनामसुमंगल**

गयो तब धारा चलतीभई तब ब्रह्माजी कमण्डलुमें लैलियो पुनि कोईकाल में राजाभगीरथ के हेतु ब्रह्मा कमण्डलु से छोड़िदीन सो गंगा भगीरथ लैकै चले ताते भागीरथी नामकहाई अरु महि ते गमनकीन तातेगंगानाम कही अरु प्रथमहि महाविष्णुके लोकमें कछु आपनो अंशछोड़ि कै श्रीसरयू श्रीबशिष्ठ के हेतु चलतीभई तब ब्रह्माण्डभेदन

कियो महत्तत्त्वत्रिधा अहंकार नभ पवन पावक जल महि येते सातआवरण ब्रह्माण्डके ते भेदिआई पुनि शिवलोक उमालोक कौमारलोक सत्यलोक तपलोक जनलोक महर्लोक समस्तलोकनको भेदनकरति सन्ते किंपुरुषखण्ड में मानसर है तामें धाराआइ प्राप्ति भई तब श्रीबशिष्ठ जी आगे ह्वैकै लेतभये षोडशप्रकार पूजनकीन तब आगे श्रीबशिष्ठजूभये तव मानसर ते श्रीसरयू चलतीभई श्रीसरयू श्रीरामचन्द्र की मनरूपी हैं श्रीरामचन्द्र के मानस ते भई हैं अनादिही ताते सरयूकही अरु कविकी हृदय जो श्रीरामचरित रूप मानसर तहां वशिष्ठस्थाने जीवतत्त्व तिनके हेतुकविके हृदय ते काव्यरूप सरयू चलतीभई श्रीरामयश जल विमलभरिकै चली इति प्रसंगबशिष्ठसंहितायां उत्तरार्द्धे ( ४७ ) सो नदी और काव्यरूपनदी दोउनके सरयूनाम दोउमङ्गल की मूल हैं सरयूके दोउकिनारे शोभित है अरु काव्यरूप सरयू में लोकसम्मत जो है अरु वेदसम्मतजो है सोई निर्मल दोऊकूल हैं ( ४८ ) पुनीतनदी जो मानसनन्दनी है सो तृण तरु निकन्दनि करतीचली है श्रीरामकीर्त्ति अमृतरूप जल काव्यरूपी नदीभरिकै चली है सो कलिके मल सोई तृणतरु है ताके मूलनाश करतचिली है ( ४९ ) दोहार्थ ॥ सरयू के दोऊकिनारे पर पुरग्रामनगरबसे हैं जो पांचघर ते अरु सौताईं ताको पुरकही अरु सौते हजारताईं ग्रामकही हजार के आगे असंख्य ताको नगर संज्ञा है अरु सरयू तीरश्रीअयोध्या है अरु सरयू के दोऊकिनारेपर पुर ग्राम नगर बहुत हैं अरु श्रीअयोध्या एकही है अरु काव्य सरयू के तीर त्रिविधिश्रोता हैं एकै आर्त्त हैं सुत वित लोक बड़ाई शरीर रक्षा इत्यादिक हेतु भगवत् कथा सुनते हैं ते पुर हैं दूसर श्रोता अणिमा महिमा इत्यादिक सिद्धि हैं अरुअल्पसिद्धि मारन मोहन उच्चाटन इत्यादिक तिनके सिद्धिहोने के हेतु वेद पुराण इत्यादिक सुनिकै मन्त्र यन्त्र देवतावराधन करते हैं सिद्धिनके हेतु ताको अर्त्थार्त्थी श्रोताकही ते ग्राम हैं पुनि तीसरश्रोता जिज्ञासू जे कथाश्रवण करते हैं ते केवल ज्ञान बैराग्य योग शील सन्तोष शांतिइत्यादिक ग्रहणकरते हैं चारिमुक्तिहेतु तिनको जिज्ञासू श्रोताकही ते

मूला लोकवेदमतमंजुलकूला ४८ नदीपुनीतसुमानसनन्दनि कलिमलतृणतरुमूलनिकन्दनि ४९॥दो०॥ श्रोतात्रिबिध * *

नगर हैं अरुजे श्रोतानहीं हैं केवल ज्ञानीभक्त हैं भगवत्यश सुनते हैं अपने स्वस्वरूप में सदा आरूढ़ हैं श्रीरामचन्द्र की स्वरूप अति माधुर्य्य नाम धाम लीला सोई रसपान करते हैं ऐसे जन दशबीस की एकरसवृत्ति है आर्त्त अर्त्थार्त्थी जिज्ञासू इनतीनिहूं कामनाते रहित हैं तिन सन्तनकै सभा जो है समाज सोई अनूपम श्रीअयोध्याजी है अपरअर्थजो करते हैं सूप चलनी ऊंट बकरी इत्यादिक दृष्टांत करिकै श्रोता कहते हैं सो भलो दृष्टान्त नहींलागै अरु श्रीसरयू के दोऊकिनारे पुर ग्राम नगरबसेहैं अरु श्रीरामकीर्त्ति सरयूरूप तहां दुइकूललोक वेद मत कहे हैं तहां पुर ग्राम नगर कौन है तहां तीनि प्रकार के श्रोता पुनि कहते हैं अर्त्थार्त्थीजिज्ञासू किन्तु त्रिवर्गी श्रोता हैं अर्थी धर्मी कामी तिनमें भेद है एकविषय हेतु आर्त्त अरु एक श्रीरामहेतु आर्त्त अरु एक विषयहेतु अर्त्थार्त्थी अरु एक श्रीरामहेतु अर्त्थार्त्थी अरु एक विषयहेतु जिज्ञासाकरते हैं गुण सीखते हैं लोक में पुजाइबेहेतु अरु एक श्रीरामतत्त्व के जिज्ञासू हैं अरु एक विषय अर्त्थी हैं एक श्रीरामअर्त्थी हैं अरु एक विषय धर्म्मी हैं अरु एक श्रीरामधर्मी हैं अरु एकैविषय कामनामें हैं अरु एकै भगवत्कामनामें हैं अरु दोउनको सिद्धान्त श्रीरामकथा श्रवणकरिकै है तहां जो विषय सवासिक हैं ते तीनोंलोक सम्मत किनारेपर बसेहैं अरु जो श्रीरामसवासिक हैं ते वेदसम्मत किनारे पर बसे हैं पर दोऊ श्रीरामचन्द्रको प्राप्ति हैं तहां एकै तुरन्त प्राप्ति है एक कालान्तर प्राप्ति है ( ५० )॥ इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकाण्डे श्रीरामचरित मानसबर्णनंनामद्वादशस्तरङ्गः १२॥ :: :: :: :: :: ::

दो० ॥ रामचरण दशत्रयलहरि रामकीर्त्तिबिस्तार भरद्वाज मुनियाज्ञबलि कहिसम्वाद उदार १३ श्रीराम भक्तिरूप सुरसरी जो है सो राम कीर्त्तिरूप सरयू में मिलतभई अरु जो कही कि सुरसरीमें सरयू मिली हैं तहां श्रीसरयू को श्री वशिष्ठजूल्याये हैं प्रथम भूमंडल में श्रीसरयूजी आई हैं काहेते को जानै श्रीवशिष्ठजू श्रीसरयू को कबल्याये हैं पर पुराणन में बर्णन है राजा सगर के आगे श्रीसरयूजी विद्यमान रहीं हैं अरु कइउ पुस्तिबीते भगीरथ भये तेगंगा को ल्याये हैं ताते श्रीसरयूके पीछे राजाभगीरथ करिकै सुरसरी बहुत कालपीछे भूमंडलमें आई हैं ताते सुरसरी

**समाजपुर ग्रामनगरदुहुंकूल सन्तसभाअनुपमअवध सकलसुमंगलमूल ॥५०॥** * * * *

**चौ०॥ रामभक्तिसुरसरितहँजाई मिलीसुकीरतिसरयुसोहाई १ सानुजरामसमरयशपावन मिलेउमहानदसोनसुहावन २ युग बिचभक्तिदेवधुनिधारा सोहतसहितसुविरतिविचारा ३ त्रिविधितापत्रासकत्रिमुहानीरामस्वरूपसिन्धुसमुहानी ४ मानसमूलमिली**

श्रीसरयू में मिलतभई हैं तैसे रामकीर्तिमें भक्तिमिली है यह बिचारिलेव ( १ ) उत श्रोणनद मिल्योहै इत श्रीलक्ष्मणजी संयुक्त श्रीरामचन्द्र को संग्रामयश जो है सोई श्रोणनद मिल्यो है ( २ ) जैसे सरयू के अरु श्रोणनदके बीचमें भागीरथी शोभित हैं तैसे सुष्टुबैराग्य अरु सुष्टुबिचार जो है दोउनके बीच में दूनों संयुक्तभक्ति शोभित है सुष्टुबैराग्य कही असत्य को त्याग सत्य की लक्षिसत कहीयोग ज्ञानबिज्ञान ध्यान समाधि इत्यादिक सत है तहां सुष्टुबिचार करिकै सर्बसतकोलिहै श्रीराम नामस्वरूपलीला ग्रहणसो सुष्टुबिचार है तामेंप्रीति करना सो भक्ति तात्पर्य यह है किबिना बैराग्य बिनाबिचार भक्ति शोभितनहींहोती है अरु तीनिहूं मिलत शोभित हैं ( ३ ) त्रिमुहानीक्षेत्र जहां शालिग्रामी नदीको संगम है तेहिकोलोग कहते हैं पर यह प्रसंग में त्रिमुहानी श्रीसरयूगंगा श्रोणनद तीनिहूंको एकतातहां सरयूगंगा संगमभई सो त्रिमुहानी है अरु इत बिचारभक्ति बैराग्य यहतीनों मिलित त्रिमुहानी तहां दूनों त्रिमुहानी तीनिहूं ताप हरतुहै अरु उत समुद्रकोचली मिलतभई अरु इतश्रीराम स्वरूप सिंधु तहां को चली प्राप्तिभई ( ४ ) जहां मानसमूल जोहै सरयू अरु सुरसरी मिलीहैं स्नानते निर्मलहोत है इतश्रवण किहेते निर्मलहोत है मन बचन कर्मते ( ५ ) पुनि उलटि करिकै सिंहावलोकन प्रसंग कहते हैं श्रीसरयू अरु सरयूको तीर अरु श्रीराम कीर्त्ति सरयूद्वौ को वर्णन करते हैं तहां बीचबीच में अपर इतिहास कथा है सोई सुन्दर बनबाग है सरयू तीरके ( ६ ) श्रीसरयू में जलचर हैं इहां उमा महेश बिवाह के बराती जे हैं तेई अनेकप्रकार के जलचर हैं ( ७ ) श्रीसरयू में भ्रमरकी शोभा अरु तरंगकी शोभा मनोहर है इतश्रीरामजन्मको आनन्द जो है सोई भ्रमरहै अरु जो बधाई बहुतबाजती है त्रैलोक्य में मनोहर सोई तरंग उठती है ८॥ दोहार्थ॥ श्रीसरयूमेंपांचरंग के अरु बहुरंग के कमल फूले हैं नीलरंग पुनि हरित लाल मिश्रितरंग

**सुरसरिही सुनतसुजनमनपावनकरिही ५ बिचबिचकथाविचित्रविभागा जनुसरितीरतीरबनबागा ६ उमामहेशविवाहबराती तेज लचरअगणितबहुभांती ७ रघुबरजन्मअनन्दबधाई भ्रमरतरंगमनोहरताई ८॥ दो०॥ बलिचरितचहुं बन्धु के बनजविपुल बहुरङ्ग नृपरानीपरिजनसुकृत मधुकरबारिबिहङ्ग ९॥ चौ०॥ सीयस्वयम्बरकथासुहाई सरितसोहावनिसोछबिछाई १० नदीनाववटुप्रश्नअनेका केवटकुशलउतरसविवेका ११ सुनिअनुकथनपरस्परहोई पथिकसमाजसोहसरिसोई १२ घोरधारभृगुना**

पुनि अरुणरंग पुनि श्वेतरंग पुनि पीतरंग इत्यादि मिलित बहुरंग हैं कमलपर मधुकर रसलेते हैं पुनि जलके बिहंग हैं इतै चारिहूभाइन के बालचरित जे हैं अनेक रसरंग के तेई कमल हैं अरु शांति करुणाहास्य वात्सल्य दास्य सख्य शृङ्गार इत्यादिक सबरस तेई रस हैं अरु सुगन्ध है यथायोग्य अधिकारी प्रतिरस सुगन्ध ताको दर्शावते हैं बाललीला में तहां श्रीदशरथमहाराज अरु कौशल्यादिक महारानी इनके सुकृत जे हैं तेई मधुकर हैं वात्सल्यरस विशेष पीवते हैं अपररस सुगन्ध है सम्पूर्ण परिजनन को सुकृत जे हैं ते बारिबिहंग हैं सुगन्धलेते हैं ( ९ ) सरयूमें शोभा छबिछाइरही है श्रीरामकर्त्तिसरि में श्रीजानकीजी के स्वयम्बर कै कथा जो है सोई शोभाछबि छाइरही है

श्रीरामकीर्त्तिरसमें श्रीजानकी जी के स्वयम्बर की कथा जो है सोई शोभा छबि छाइरही है ( १० ) श्रीसरयू में नाव है नावपर केवट है कुशलते पारउतारि देते हैं अरु इतेबटुसंज्ञा ब्रह्मचर्य ग्रहणसंयुक्त विद्यार्थी जे हैं विद्याके अर्थ ताही के प्रश्नकरते हैं अनेकबिधि ते पुनि बटुसंज्ञा सबश्रोतनकी है तिनके जे प्रश्न हैं अनेक तेई लोह लकरी संयुक्त सोई नावहै अरु कुशलनाम पण्डित जोबक्ता हैं सबके प्रश्न को उत्तर दैकै बोधकरतु हैं विवेक संयुक्त सोईकेवट के पारउतारिदेतु है कुशलपूर्बक ( ११ ) श्रीसरयू में पथिकजन को पारकरते हैं इहां बक्ताके मुखते सुनिकै तब दुइचारि मिलिकै परस्पर अनुकथन करते हैं अरु बक्ताकी बाणीकरिकै परस्पर बोधकरते हैं सोई पथिकनकी समाज है ( १२ ) सरयू में घोरधार हैं इहां परशुराम को कोप घोरधार है श्रीसरयू में घाटबँधे हैं सुन्दर·अचल अटूट इत श्रीरामवचन परशुराम प्रति तेई सुन्दर अटूट घाट हैं ( १३ ) श्रीसरयूमें उमंग है जो जलरा शिकी राशि लगिजातु है अरु इतै सहित अनुज श्रीरामचन्द्र के बिवाहको उत्साह जो है सोई सुख सबको सुखदाता उमंग है ( १४ ) श्रीसरयू

थरिसानी घाटसुबन्धरामवरबानी १३ सानुजरामविवाहउछाहू सोसुखउमैगसुखदसबकाहू १४ कहतसुनतपुलकतहरषाहीं ते सुकृतीमनमुदितनहाहीं १५ रामतिलकहितमंगलसाजापर्ब्बयोगजनुजुरेउसमाजा १६ काईकुमतिकेकयीकेरी परीजासुफल बिपतिघनेरी १७॥दो०॥ शमनसकलउतपातअति भरतचरितजसयाग कलिअघखलअवगुणकथन तेजलमलबककाग १८॥ चौ०॥ कीरतिसरितछहूं ऋतुरूरी समयसुहावनिपावनिभूरी १९ हिमहिमशैलसुताशिवब्याहू शिशिरसुखदप्रभुजन्म

में सुकृतीजन स्नान करते हैं अरु इतै श्रीरामकीर्त्तिसरि जोहै तहां सुनते हैं समुझते हैं पुलकते हैं हर्षते हैं मनमुदित होते हैं इतेई स्नानकरते हैं ( १५ ) श्रीसरयू में पर्बयोग परतु है इतै श्रीरामचन्द्र के राज्याभिषेक की समाज सोई पर्बयोग है ( १६ ) अरु जल में एकदेश में कहूंकाई को योग कबि कहते हैं इहां कैकेयीमें कुमति जो देवमायाकरिकै भई है जेहि करिकै सर्बजीवको दुःखै फल होतभयो सोईहै ( १७ ) दोहार्थ॥ जैसे वर्षाऋतु में जोरजलपाइकै काई बहिजाती है तैसे समस्त उत्पात जो कैकेयीकरिकै भया है सो भरतके जप यज्ञकरिकै शमनकही नाश है गयो अरु जो कलियुग के स्वरूपकहे हैं अरु कलिके अघ कहे हैं उत्तरकाण्डमें अरु बालकाण्ड में बन्दना में खलन के अवगुण कहेहैं सो जलको विकार फेन अरु बक काग है क्रम ते जानव ( १८ ) श्रीसरयू अरु श्रीसरयूकेतीर छहूंऋतुकरिकै शोभित है अरु कीर्त्तिसरि जो है सो छहूं ऋतु रूरिनाम शोभित हैं समय समय सुहावनि लागती है अरु भूरिनाम अति पावनि है ( १९ ) प्रथमै हितऋतु कहते हैं हिमकहै हिमाचल शैल जो है तिनकी कन्या पार्बती अरु शिवजूको विवाह जोहै सोई यह अगहन पूषहिम ऋतु है हिमऋतु ठण्ढपरतु है गरीबनको दुइचारिघड़ी दुःखदेतुहै शिवजूके बिवाह में भूतप्रेतनको देखिकै बाल बालबुद्धी जीव दुःखित भयेसोई जाड़ है हिमऋतु में बड़े आदमी विषय भोग में सुखीरहते हैं अरु हिमऋतु में तुषार जब परेउ तब कमल ताम्बूल इत्यादिक नाश होइजाते हैं अरु शिवपार्बती के विवाह में स्वामिकार्तिक के जन्म को हेतु है तेहि करिकै देवता बड़े आदमी हैं ते सुखीभये खल कमल नाशभये पुनिमाघ फाल्गुन शिशिरऋतु है माघ में मकर के सूर्यहोते हैं प्रयाग में मेलाभरतु है अरु फाल्गुन में फागुहोती है बाजन गानहोते हैं श्रीरामजन्म के समय में ब्रह्मादिक देवता सिद्धमुनिआये मेलाहोतभयो अरु त्रैलोक्य में बधाई गानअगर कपूर चन्दन केसरि कस्तूरी कुंकुम अर्बारकी कीचमचिरही है श्रीरामजन्म के उत्सव में सोई शिशिर है ( २० ) अरु श्रीरामचन्द्र

उछाहू २० बर्णबरामबिवाहसमाजू सोइमुदमंगलमयऋतुराजू २१ ग्रीषमदुसहरामबनगवनू पंथकथाखरआतपपवनू २२ बर्षाघोर निशाचररारीसुरकुलशालिसुमंगलकारी २३ रामराज्यसुखबिनयबड़ाई बिशदसुखदसोइशरद सोहाई २४ सतीशिरोमणिसियगुण

के बिवाहकी समाज जो है मुदमङ्गलमय सोई चैत्र बैशाख ऋतुराज बसन्त है बसन्त में पल्लवफूल करिकै तरु तृण भूमि शोभित होरही है अरु श्रीरामचन्द्रके बिवाहमें बरातकी शोभा हाथिनकेयूथ घोड़ेनकेयूथरथनकेयूथ पैदरनकेयूथ तिनसबनके शृङ्गार हेममणिबनात पाटम्बरनकरिकै शोभित देवलोक नरलोक नागलोक सबके मन प्रफुल्लित सोई बसन्त शोभित है ( २१ ) अरु श्रीरामचन्द्र को बनगमन सोई ज्येष्ठ आषाढ़ ग्रीष्मऋतु है अरु पन्थकीकथा सोई घाम अरु पवन है श्रीरामचन्द्र को वियोग श्रीदशरथ महाराज के बियोगकरिकै सबको भयो क्लेश सो सब ग्रीष्मको धर्म्म है ( २२ ) अरु खर दूषण रावणादि राक्षसन के महाघोर संग्राम जो है सोई श्रावण भादौं बर्षाऋतु है दोऊदलकी अनी अनी ब्यूह रचना जे हैं तेई मेघ हैं अरु बाजन के आयुधन के वीरन के घोरशब्द जे हैं तेईमेघ के गर्ज्जब है अरु राक्षसन के धनुषकेगोशा अरु बानरनके लूम की शोभा सोई दामिनी की चमक है अरु श्रीरामचन्द्र के बाणन की बिशेषता बहु अरु दोऊदलन के बाणनके छूटब तेई जलके विन्दुन की वर्षा है अरु सन्त गो महि मुनि सिद्ध देवतादिकन के कुल तेई शालिनाम विशेषधान है तिनको मंगलकारी है ( २३ ) अरु श्रीरामचन्द्रजी को राज्याभिषेक को जो सुखहै सर्ब्बजीवन को अरु देव मुनिकरिकै जोबिनती है अरु बाल्मीकि व्यास इत्यादिक जे महाकवि हैं अरु वेदनकरिकै जानिये योग्य जो बड़ाई अरु यश है सोई विशद अतिसुखदायी त्रैलोक्यको सोई कुवार कार्तिक शरदऋतु है अरु शरदऋतु में भूमि जल नभ सबनिर्मल उज्ज्वल होतभयो श्रीरामचन्द्र राज्यपर बैठे तब यशकरिकै त्रैलोक्य उज्ज्वलहोतभयो शिव की उज्ज्वलतालय होइगई तहांपरमपुरुष श्रीमन्नारायण अपनो क्षीरसमुद्र ढूंढ़ते हैं शिव कैलास ढूंढ़ते हैं इन्द्र ऐरावतहाथी ढूंढ़ते हैं राहुश्वेत ह्वै गयो चन्द्रमा को ढूंढ़त हैं तहां अपनोरूप नहींसमुझिपरै तैसेही ब्रह्मा हंस ढूंढ़ते हैं ऐसेही रीति ब्रह्माण्डकोषभरे में होतभयो तामस राजस गुणनहीं रह्यो केवल शुद्ध सात्त्विक शांतरस पूरिरह्यो है ( २४ ) प्रमाण है श्रीहनुमन्नाटके श्लोकएक ॥ महाराज श्रीमन्जगति यशसातेधवलिते पयःपारावारं परमपुरुषोऽयंमृगयते

**गाथा सोइगुणअमलअनूपमपाथा २५ भरतसुभावसुशीतलताई सदाएकरसबरणिन जाई २६॥दो०॥ अवलोकनिबोलनिमिलनि प्रीतिपरस्परहास भायपभलिचहुं बंधुकेजलमाधुरीसुबास २७॥चौ०॥ आरतिबिनयदीनता मोरी लघुता ललितसुवारिनथोरी २८**

कपर्द्दीकैलासंकुलिशभृद्धौमंकरिवरं कलानाथंराहुः कमलभवनोहंसमधुना १ सती जो है नरनाग देवी जेती स्त्री वर्ग्ग ब्रह्मांड में हैं पतिव्रता सती जेती हैं तिनसबनकीशिरोमणि श्रीजानकी जी जिन श्रीजानकीजी के सुमिरे ते सबको पतिब्रत रहत है तिन श्रीजानकी जी को जो निर्मल अनूप गुण गाथ है सोई जलकी निर्मलता है ( २५ ) अरु भरतजीको सुभाव जो निर्मल एकरस सोई जल की शीतलता है बर्णिबे योग्यनहीं है ( २६ ) दोहार्थ॥ पुनि चारिहूभाइनकी जोपरस्पर अवलोकनिहै बोलनिहै मिलापहै ये तीनिहूं तीनिप्रकार जल की माधुर्य्यता है जल के स्वरूप की माधुर्य्यता पुनि स्वादुकी माधुर्य्यता पुनि गुणकी माधुर्य्यता है पुनिपरस्पर परमप्रीति जो है अरु परस्पर हास्य जो है भायप जो है सोई तीनिप्रकार के जलकी सुगन्धता है एकस्वरूपै में सुगन्ध है अरु एक सुयशकी सुगन्ध है अरु एक प्रबाह अखण्ड नित्य एकरसकी सुगन्ध है क्रम हीते जानब ( २७ ) श्रीरामकीर्त्ति सरयूद्वौकीलालित्य अतिशय है जेहिपदार्थ्थके सुनत कहत देखत समुझत ग्रहण करत सन्ते बाह्यान्तर विषे आह्लाद उत्पन्नहोइ ताको लालित्यकही इतकीर्त्ति सरयूबिषे मेरी आरतबिनय दीनता सोई लालित्य है पर मेरो सब लघु है अरु कीर्त्तिसरयू की लालित्य थोरी नहीं है बहुति है जेहि बस्तुकी किसूसे अतिचाहना भई अरु ताकी बिनती करत है अतिदीन होइकै ताको आरतकही किंतु आरत बिनय दीनता लघुता येई लालित्य हैं ( २८ ) अद्भुत कही जो यहिनेत्रनते अदृश्य होइ अरु हृदय के नेत्रन ते देखिपरत है अरु प्रत्यक्ष देखि परत है पर जो सुनिबे में नहींआवै आश्चर्य्यवत् देखिये जैसे मेघपर नक्षत्र उदयहोइ इत्यादिक जानब अरु जाकी शोभा कहिबे में नहीं आवै ताको अद्भुत कही सरयू सलिल जो है अरु काव्यसरि में रामकीर्त्ति सलिल जो है अद्भुत दोऊ हैं सुनबे में स्नान है सुखकारी अनेक आशापियास दोनोंहरत है अथवा आशकही श्रीरामचरित की चाहना सोई पियास है सो सन्तुष्टकरत है पुनि चाहना बढ़त है मनकोमल दोनोंहरत है ( २९ ) श्रीरामचन्द्र को प्रेम दोनों पोषत है अरु कलिकही कलियुग को किंतु कलिकही क्लेश को तिनके कलुष जो पाप सम्पूर्ण तेहिकरिकै जो

सुनतसुखकारी आसपियासमनोमलहारी २९ रामसुप्रेमहिंपोषतपानी हरतसकलकलिकलुषगलानी ३० भवश्रमशोषकतोषक तोषा शमनदुरितदुखदारिददोषा ३१ कामकोहमदमोहनशावन विमलबिबेकबिरागबढ़ावन ३२ सादरमज्जनपानकियेतेमिटत पापपरितापहियेते ३३ जिनयहिबारिनमानसधोये तेकायरकलिकालबिगोये ३४ तृषितनिरखिरविकरभवबारी फिरहिंमृगा

ग्लानि है सो दोनोंहरतु है ( ३० ) अरु भव जो संसारसागर तेहिकरिकैश्रम जन्म मरण दोनों सोखि लेते हैं अरु सन्तोष को तोषण कही पोषण करत है दोनों अरु शमनकही नाशकरिदेत है दुसह जो नहींसहाजाइ ऐसो दुख अरु दरिद्रकही असन्तोष अरु सर्व्वदोष शमन करिदेतु है ( ३१ ) अरु काम कोह मद मोह नाशकरत है दोनों विमल विवेक वैराग्य को वढ़ावत है ( ३२ ) उतै जो सादरसमेत मज्जनकरै किंतु पानकरै अरु इतै श्रवणकरै अरु धारणा करैं ते दोनों बाह्यान्तर के जे हैं पाप अरु परितापकही अनेक चिन्ता तेहिकरिकैं जो क्लेश सो हरत है ( ३३ ) जिनने श्रीसरयू में स्नान नहींकियो अरु श्रीराम कीर्त्तिसरि में अपने मनको नहींधोयो तिनकादर्य्य जीवन को कलिकाल ने बिगोइलियो है बिगोइ कही कलिकाल ने अपने में लीनकरिलियोहैं अपने खानेजाद गुलामकरि लियो है ( ३४ ) जे प्राणी श्रीमद्रामचरितसरमें नहीं तृप्तभये ते अपरधर्मकर्म संसार मृगतृष्णा को जल तामें दुखित भ्रमते हैं ( ३५ ) दोहार्थ॥ अपनीमति के अनुसार दोऊबारि कै गुणगनिकैं अरु गुनिकैनाम बिचारिकै अपने मनको स्नानपान कराइकै भवानी शंकर को सुमिरि कै श्रीमद्रामचरित जो शोभायमान है तेहिको कवि मैं होत हौं ( ३६ ) अब श्रीरघुपति के पद पंकज हृदय में धरिकै तेहि को प्रसादकही प्रसन्नतापाइकै युगलमुनिवर्य्यनाम श्रेष्ठ तिनको मिलाप अरु तिनको परम उत्तमोत्तम ऐसो जो सम्बाद सो कहत हौं ( ३७ ) जेहिप्रकार भरद्वाज प्रश्नकीन्ह है याज्ञवल्क्य मुनि पाइकै सो सम्बाद प्रथम सुख्यकरिकै कहतहौं जाते सब सम्बाद मोको स्फुरितहोइ सो सबहेतु समुझिकै कहौंगो यह दोहा भरद्वाज जिमिप्रश्नकरि सो कहूंकहूं नही है पर विरोध भी नहीं है ( ३८ ) इति श्री रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकाण्डे मानसररूपकसमाप्तंत्रयोदशस्तरङ्गः॥१३॥

जिमिजीवदुखारी ३५॥ दोहा॥ मतिअनुहारिसबारिगुण गणिगुणिमनअन्हवाइ सुमिरिभवानिसशंकरहि कहकविकथासुहाइ ३६ अबरघुपतिपदपंकरुहहियधरिपाइप्रसाद कहौंयुगलमुनिवर्यकरमिलनसुभगसम्बाद ३७ भरद्वाजजिमिप्रश्नकरियाज्ञबल्क्यमुनिपाइ प्रथममुख्यसम्बादसो कहिहौंहेतुबुझाइ॥३८॥ * * * * * * *

चौ० ॥ भरद्वाजमुनिबसहिंप्रयागा तिनहिंरामपदअतिअनुरागा १ तापसशमदमदयानिधाना परमारथपथपरमसुजाना २ माघ मकरगतरविजब होई तीरथपतिहिजाइसबकोई ३ देवदनुजनरकिन्नरश्रेणी सादरमज्जहिंसकलत्रिवेणी ४ पूजहिंमाधवपदजलजाता परसिअक्षयबटहर्षितगाता ५ भरद्वाजआश्रमअतिपावन परमरम्यमुनिवरमनभावन ६॥ तहांहोइमुनिऋषयसमाजा जाहिं जेमज्जनतीरथराजा ७ मज्जहिंप्रातसमेतउछाहा कहहिंपरस्पर हरिगुणगाहा ८॥ दोहा॥ ब्रह्मनिरूपणधर्म्मबिधिबरणहिं तत्त्व

दोहा ॥ रामचरण दशचारि में बसिप्रयाग सतसंग ब्रह्मनिरूपणकांडत्रैचौअनुबन्ध प्रसंग १४ जब मकरके सूर्य होते हैं तब जे भागवत जीव ब्रह्मांड में हैं ते सब तीर्थपति जो प्रयाग तहां को जाते हैं तहां भरद्वाज मुनि परम विवेकी श्रीराम तत्त्व के परम वेत्ता तिनके आश्रम को समस्त नर मुनि ऋषि देव दानव इत्यादिक जे भागवत हैं ते समस्त भरद्वाजसेसत्सङ्ग हेतु जाहिंतहां समाजहोइ यह आठहू चौपाई को भाव जानब अरु अर्थ अक्षरार्थ जानिये ( ८ ) ॥दोहार्थ॥ मकरके समय प्रयाग में जेतेसाधु जाहिंते सब

भरद्वाज के आश्रम को जाहिं तहां समाज होइ तब ब्रह्मको निरूपण करहिं ब्रह्म निरूपण धर्मबिधि अवरेव करिकै अर्थहोत है प्रथम कर्मकांड पुनि ज्ञानकांड पुनि भक्तिकांड निरूपण करहिं धर्म बिधि अपने अपने धर्म की बिधि कहहिं सो कर्मकांड है पुनि सांख्य संयुक्तब्रह्म निरूपण करहिं सो ज्ञानकांड है पुनि भगवत् की भक्ति कहहिं ज्ञान बैराग्य संयुक्त सो उपासनाकांड है अथवा ब्रह्मनिरूपण धर्मबिधि ब्रह्मनिरूपण करहिं धर्मबिधिसे तहां एक अधर्मबिधि ब्रह्मनिरूपण है अरु एक धर्मबिधि ब्रह्मनिरूपण है एकैकहते हैं कि अपरब्रह्म कहां है यहसंसारैब्रह्म है यहिजगत् को कर्त्ता कोई नहीं है आपुहीते यह जगत् उत्पत्ति होतु है मनुष्यते मनुष्य पशुते पशु पक्षीते पक्षी तरुते तरु अन्नते अन्नइत्यादिक चराचर काल में उपजते पलते मरते हैं यह परम्परा अनादि कालते चलाआवत है जैसे जलमें लहरी स्वाभाविक उठती हैं पुनि बनीरहती हैं पर आदि अंत मध्य एक जलही है ऐसेही पांचहूतत्त्व एकही हैं तेही करिकै स्वाभाविक रचना वनिरही है ताते संसारैब्रह्म है पुनि कोई कहते हैं कि अपरब्रह्म कहां है सांख्य जो है सोई ब्रह्म है महत्तत्त्वसे महत्भयो पुनित्रिधा अहंकार भयो पुनि पांचतत्त्व नभपवन पावकजल महिपुनिपंच बिषय क्रमहीते शब्दस्पर्शरूप रस गंध पुनि अनेक व्यवहार भयो पुनि स्वाभाविकै कोई समय में सृष्टि महिमें लय भई महिजलमें जलपावक में पावक पवन में पवननभमें नभगुणनमें गुण अहंकार में अहंकार प्रणवमें प्रणव महद्में महद् महत्तत्त्व में ऐसे ही उपजत है पलत है लयहोत है जैसे आकाशही के कोष ते मेघ उठत है प्रत्यक्षहोत है पुनि आकाशही में अदृश्य होइजातु है ऐसेही संसार की परम्परा है ताते सांख्यैब्रह्म है अरु कोई शक्ति को ब्रह्म कहते हैं कि शक्ति कोई है सो अति अनिर्वचनीयहै तिनने अपनी इच्छा ते ब्रह्मा विष्णु शिवको उत्पन्नकियो तिनते तीनिगुण की प्रबृत्तिभई तेहिते सम्पूर्ण जगत् को व्यवहार भयो पुनि कालपाइकै सबजगत् क्रमही ते शक्ति में लीनभयो ताते शक्तिही ब्रह्म है पुनि कोई कहते हैं कि कालही ब्रह्म है जेहि कालके भीतर यह संसार उत्पत्ति पालन प्रलयहोतु है ताते कालही ब्रह्म है अरु कोईकहते हैं कि कर्मैब्रह्म है काहेते कि जे जैसे कर्मकरते हैं तैसे कर्मानुसार भोग करते हैं ताते कर्मैब्रह्म है अरु कोई कहते हैं कि ब्रह्म सोतोएक है निराकार है नामरूप रहित है निर्विशेष है जीव अरु ब्रह्म दुइकहना अज्ञानदेश में है ब्रह्मएक अखण्ड दण्डायमान परिपूर्णसजातीविजाती स्वगतभेदरहित है यह जो संसार सोतो भ्रमरूप है कल्पनामात्र है कछुहै नहीं अपने भ्रम ते ब्रह्म में द्वैत भासते हैं जैसे रज्जु में भुजंग भ्रांतिहोतु है जैसेसूर्यकीकिरणि में जलकी भ्रांति होती है जैसे सीप में रूपभासत है ऐसे ब्रह्ममें जगत्भासत है अरु जीव ब्रह्मअज्ञान के आवरणते द्वैतभासत हैं जैसे दर्पण में अपने द्वैस्वरूपभासत हैं जब दर्पण दूरिभयो तब एकही है जैसे घटोपाधि ते सूर्य द्वै भासते हैं ऐसे अविद्या उपाधि ते ब्रह्म द्वैभासत है जैसे घटाकाश मठाकाश महदाकाश है आकाशतत्त्व एकही है अविद्या उपाधि जीवविद्या उपाधि ईश्वर द्वौ उपाधि रहित ब्रह्म हैं घटमठभंगभये आकाश एकही है घटअविद्या मठविद्या ऐसेअविद्या विद्या त्यागे ब्रह्म एकही है अथवा प्रश्न एकदेशमें माया है अनादि है तेहिउपहित जो ब्रह्म है ताहीको ईश्वरकही ईश्वरते जगत् उत्पत्ति पालनप्रलय होत है जैसे आकाश के एकदेश में कहूंमेघरहतुहै सदा जबकबहूंइच्छाकियोतब आकाशहीबिषे मेघविस्तार ह्वैजातुहै पुनि कछुकालबनोरहतुहै पुनि आकाश के एक देशमें कहूं मेघसिमिटि रहतहै आकाश के एक देश में आश्रित है शुद्ध है तहां मेघ में शब्द जो है दामिनि जो है जल जो है सो अति सूक्ष्मरूप सम ह्वैके रहे हैं तैसे ब्रह्म के एक देश में माया है सो शुद्ध है तहां तीनि गुण पांच तत्त्व शुद्ध साम्यताको प्राप्त हैं ताही देशमें जो ब्रह्म उपहित है ताही देश को ईश्वर कही सो साकाररूप है ईश्वर जब ईक्षणाकरत है तब तीनिगुण पांचतत्त्व भिन्न भिन्न होते हैं ताते जगत् बिस्तार होत है पुनि पालन भयो पुनि प्रलय भयो तहां संसार कार्य्यरूप है अरुईश्वर कारणरूप है अरु ब्रह्मकार्य्य कारणते परे है निराकार है निर्विशेष है सच्चिदानन्द है निर्गुण है तेही ब्रह्मते अरु जीव इश्वरते अभेद कहते हैं कि ईश्वरकी विद्यामाया अरु जीव की अविद्यमाया है अरु ईश्वरकी सर्बज्ञता अरु जीव की अल्पज्ञता इन सबनको त्यागिकै जीव ईश्वर ब्रह्मतत्त्व एकही है अभेद है तहां यह विचार में आवत है जीव अपनी अविद्या अल्पज्ञता ज्ञानभये त्यागिसकै है अरु ईश्वर की विद्या सर्वज्ञता यह कौन त्यागनेवाला है इसके त्यागे नहीं त्यागीजाइ है सो आगे कैलास के प्रसङ्ग में कछुकहैंगे पुनि कोई कहते हैं कि जो कोई यहि संसारकोकर्त्ता है सोई ब्रह्म है पुनि कोई कहते हैं सर्बत्र भगवान् के हाथ हैं सर्वत्र पायँ हैं सर्बशीश हैं सर्ब नयन हैं सर्ब मुख हैं पुनि कोई कहते हैं भगवान् चतुर्भुजरूप सोई ब्रह्म है जिनको वेद नारायण कहते हैं तिनहीते जगत की उत्पत्ति पालन संहारहोत है अरु नारायण सर्बजीव में साकाररूप ब्याप्त है अरु नारायण विरजापार पर बैकुण्ठ में दिव्य बिभूति

संयुक्त बिराजमान हैं सर्बोपर हैं ताते नारायण ब्रह्म हैं अरु दूसर बिग्रह क्षीरसागर में लक्ष्मी संयुक्त बिराजमान हैं जगत् के कारण हैं अरु एक रूप रमाबैकुण्ठ में बिराजमान हैंकै सात्विकगुणकरिकै जगत् को पालन करते हैं अरु सर्बजीव नारायणके दास हैं अरु कोई कहते हैं कि ब्रह्म द्विभुजस्वरूप है जिनको वेद श्रीकृष्ण ऐसोनाम कहते हैं सर्बोपर हैं प्रकृति के पारगोलोकहै तहां श्रीराधा संयुक्त परमदिव्य बिहार सदाकरते हैं अरु कार्य्य कारणतेपरे हैं सर्बब्याप्त हैं परमपुरुष हैं परब्रह्म हैं अरु कोई कहते हैं कि द्विभुजस्वरूप श्रीरामचन्द्र सोई परब्रह्म हैं सो सर्बोपर कार्य्य कारुणके परे हैं सर्बोपर श्रीअयोध्या तहां श्रीजानकी संयुक्त परमदिव्य बिभूतिसंयुक्त बिहार करते हैं अरु ब्रह्म जो सर्वत्रब्याप्त सो श्रीरामचन्द्र को घनीभूततेज है परतेज चैतन्यरूप एकरस अखण्ड दण्डायमान परिपूर्ण सर्बभूत में रमिरह्यो है ताते रामकही अरु अतिलावण्य माधुर्य्य स्वरूप में योगी मुनिन के मनरमत हैं ताते रामकही सोईस्वरूप याज्ञवल्क्य निरूपणकरहिंगे ऐसेही अपने अपने मतिकेअनुरूप ब्रह्मनिरूपण सबैकरते हैं अरु जेहितत्त्वन करिकै ब्रह्म अरु जीवकेबीचमें आवरण परिगयो है नहींदेखिपरै ताते तत्त्वनको बिभागकरते हैं ताते स्वस्वरूप जीव अरु परस्वरूप परमात्मा सो देखिपरै ताते यह बर्णते हैं कि ईश्वर जब ईक्षणाकरतहै सो मूलप्रकृति है ताते महत्तत्त्वभयो तेहिते महद्संज्ञाभयो पुनि अहंकार भयो ताते त्रिधारूपभयो सात्विकाऽहंकार राजसाऽहंकार तामसाऽहंकार पुनि पांचतत्त्व आकाश पवन अग्नि जल पृथ्वीभये पुनि पंच विषय भये क्रमहीते शब्द स्पर्श गन्ध पुनि दशइन्द्री भई पांचज्ञानइन्द्रीक्रमही ते जानब श्रवणत्वक् नयन जीभ नासिका पुनि पांचकर्म्म इन्द्री मुख हाथ पग लिंग गुदा पुनि क्रमहीते देवताजानब दिशा पवन सूर्य्यबरुण अश्विनीकुमार एते ज्ञानइन्द्रीके देवता पुनि कर्म्म इन्द्रीके देवता क्रमहीते अग्नि इन्द्र यज्ञ बिष्णु दक्षप्रजापति यमराज येते कर्म्म इन्द्रीके देवता तामसगुण ते तत्त्वभये राजससों इन्द्रीभई सात्विक ते देवता भये पुनि चतुष्ट अन्तष्करण चित्त अहंकार मन बुद्धि चारिदेवता वासुदेव संकर्षण प्रद्युम्न अनिरुद्ध पुनि जीवरुद्र चन्द्रमा ब्रह्मा पुनि दशबायुभई प्राण अपान उदान ब्यान समान पुनि देवदत्त कृकल कूर्म्म नाग धनंजय पुनि पंचकोशभये आनन्दमय विज्ञानमय मनोमय प्राणमय अन्नमय येते पंचकोश इत्यादिकन में अनेकभेद हैं मैं अतिअल्प कहेहैं पर येते पंचीकृत विषयमें हैं अनित्य हैं तिनके अन्तर्भूत जीव तेहिके अन्तर्भूत ब्रह्म है ब्रह्म ते जड़चैतन्य है अरु ब्रह्मभिन्न है जैसे चुम्बक शिलाते लोहा स्फुरित होत है जैसे ब्रह्म ते पंचीकृत स्फुरित है पंचीकृतमें जीवब्रह्म कैसे मिले हैं अरु भिन्न है बिशेष जैसे फूल में सुगन्धरस जैसेमिठाई में स्वादपुष्टी जैसे दूध में माखन घृत जैसे फल बीज पुनि बीजांतर बीज है ऐसे अनेक दृष्टांत हैं जहां जीवब्रह्म अन्तर्यामी एकही तत्त्व है आचार्य्यन के मतकरिकै भिन्नभी है एकभी है यामें कछु बिरोधनहीं है कर्म्माधीन जीवभोक्ता है अन्तर्यामी साक्षी है अरु शुद्ध दशा में एकही है वही कैवल्यरूप है वहै दासरूप है श्रीरामचन्द्र को कोई यह कहते हैं कि पंचीकृत में एकरूप कैसे ब्याप्त है जैसे दारु में अग्नि जैसे तिलमेंतेलजैसे धातुमेंशब्दइत्यादिक अनेकभांतिते तत्त्वनकोविभागकरिकै आत्मा को बिलक्षण दिखावते हैं पुनि जब तत्त्वनतें बिलक्षणभगवान् देखिपरेउतब भगवन्तकै भक्तिकह तेहैं ज्ञान बैराग्यसंयुक्त भक्तिएकअरु दश हैं अरु साठि अरुचारिअंग हैं अस्सीचौरासीअंगकहतेहैं सोसबग्रन्थनमेंप्रमाण है मेरे जाने हैं कवनि अंग हैं परमेश्वर के आठपहर में कर्मकिंतुआठपहरकीमानसी सोई भावनाचौंसठिकहीअरुवाहीमेंबढ़ायकै अस्सीकहे हैं चौरासीभीकहे हैं परमैंग्यारहस्वरूप कहत हौं श्रवणकीर्त्तन स्मरण पादसेवन अर्च्चनबन्दन दास्य सख्य आत्मसमर्प्पण प्रेमापरा अब इनकीदशा कहते हैं श्रवणभक्तिजैसे मृगा राग सुनतसंते अपनीदशा भूलिजात है तैसे श्रीराम यश सुनै अरु जो बक्ता कहै सो सब धारणा करिलेइ पश्चात् मनन करै सो श्रवणभक्तिकही पुनि कीर्त्तन श्रीभगवद्यश गावते हैं नाचते हैं मग्नहोते हैं जैसे मयूरगति सो कीर्त्तन भक्ति कही पुनि स्मरण श्रीराम स्वरूप गुणलीलानाम स्मरण करते हैं जैसे बिरहिनी अपने पति को सुमिरति है जैसे कमठ अंड को सुमिरत है इहां दृष्टांत को एक देशलिया सो स्मरण भक्तिकही पुनि पादसेवन श्रीरामपाद सेवन अर्च्चा विग्रहमें करै किंतु मानसीमें करै पर निष्काम प्रीतिसमेतकरै जैसे पतिब्रता आपने पतिके पदसेवनकरति है पर अपर धर्म्मकर्म्म जानतिनहीं सोपादसेवन भक्तिअर्च्चन बाह्यांतर प्रथम अपनोस्वरूप शौच स्नान भूत शुद्धि इत्यादिक करिकै शुद्धकरै तदुपरान्त परमेश्वर को मन्दिरलेपन पार्षद स्नान शृङ्गार फल तुलसी धूप दीप नैवेद्य आचमन तांबूल आरती दण्डवत्रागभोग इत्यादिकभाव प्रीतिसों अर्पणकरना जैसे सनेहवती माता के एकहीपुत्र है वह उसका लाड़न पोषण करती है सो अर्च्चन भक्ति बन्दना साष्टांग द्वौजानुकटिबक्षःस्थल द्वौपाणि नासिका ललाट इत्यादिक सर्बांग भूमिमें स्पर्श होइ जैसे सर्प्प भूमि में लोटत है

जैसे दण्ड पृथ्वी में गिरत है पुनि ह्वैकरजोरिकै दीनह्वैकै भगवान् के आगे बिनयकरै सो बन्दना भक्तिकही दास्य श्रीरामचन्द्र की इच्छानुकूल सेवाकरै अरु सर्बकाल में रामरजायपर आरूढ़रहै अरु चारिहूं पदार्थन ते निष्कामरहै सदाप्रसन्नरहै देहादिसंसारते रागको त्यागकरै प्रीति एक श्रीरामचन्द्र से करै अरु श्रीरामचन्द्र स्वामी हैं में दासहौं दासत्व कैसे करै जैसे नयन पद कर ये तीनिहुँ मुखको सेवनकरते हैं नेत्रदेखिकै पगचलिकै करकरिकै अनेक व्यंजनप्रीतिसंयुक्त बनावते हैं मुखको भोजनकरावते हैं अरु आप ब्यंजन को स्वादु लेशहूनहींग्रहणकरते हैं तहां मुख सर्बइन्द्रियन को पोषणकरतहै तैसे भगवान् के दास अरु भगवान् हैं यह दास्यभक्ति सख्य जोई रीति से स्वामी श्रीरामचन्द्र प्रसन्नहोहिं सोईकरै सङ्गभोजन शयन जागब खेलब बैठब बोलब हास्यइत्यादिक निर्भर बाराबरिकरै पर स्वामी भाव मनकी रुचिलिहे सबकरे सख्यभक्ति आत्मनिवेदन अपनो मनबचन कर्म्मजीव श्रीसीताराम को समर्प्पणकरै अपनाउपाय शून्यअकर्त्तार है यह आत्म निवेदन भक्ति पुनि प्रेमा श्रीरामचन्द्र के प्रेममें मग्नहोइजाते हैं कभीहँसिउठते हैं कभी रोयदेते हैं कभी उठिदौरते हैं कभी बैठिजाते हैं दिशिबिदिशि नहीं सूझिपरै प्रेममें मत्त हैं जैसे मदान्ध ताको प्रेमलक्षणा भक्तिकही प्रेमापराभक्ति श्रीरामचन्द्रकी सेवामें है अरु प्रेम करिकै सेवामें बिपर्य्ययभई अपरअङ्ग के भूषणपट अङ्गराग इत्यादिक अपरअङ्ग में पहिरावते हैं औरै भोजन चाही औरैभोजन देते हैं सो प्रेमापराभक्ति मिलित कही जैसे शवरी विदुरकोफल पुनि पराभक्ति श्रीरामचन्द्र अतिसुन्दर जिनको देखिकै कोटिन काम मोहित ह्वै जात हैं जेहिस्वरूपकै छवि ब्रह्मांड भरेके जीवन के चित्त को आकर्षण करति है जेहिस्वरूपकी माधुर्य्य लावण्यछटा बाह्यांतर नेत्रनते दृश्यमान् होतसन्ते जड़ीभूत समाधिस्थ ह्वैजातेहैं मुनीश्वरजे हैं परमहंस जे हैं ते दखिये तौ उत्तरकाण्ड में जब श्रीरामचन्द्र के समीप सनकादिक चारिहू भाईगये हैं कैसे सनकादिकहैं सदा ब्रह्मतत्पर जिनकी ब्रह्मविषे सहजानन्दसमाधि सर्ब्बकाल में बनीहै ते महामुनि परमहंस जे सर्बकाल में तुरीयावस्था में आरूढ़ अरु जीवन्मुक्त विदेहमुक्त ऐसी नित्यदशा एकरस मूर्त्तिजिनकी दृष्टि सदा ब्रह्ममयजिनकी ब्रह्माकार अखण्डबृत्ति जिनने ब्रह्मज्ञानकरिकै प्रश्नकीन्ह तब ब्रह्माते प्रत्युत्तरनहींआयो तब भगवान् ने हंसरूपह्वैकै ब्रह्माकोपक्षकरिकै प्रत्युत्तरदैकै समाधानकीन्ह ऐसे आवालही ते ब्रह्मनेष्ठी ते सनकादिक रीरामचन्द्रकैछवि अतुलितविलोकिकै श्रीरामरूप में डूबिगये कछु सुधि न रही जैसे भीति में चित्र जैसे शिलामेंप्रतिमा तब तिनकीबड़ाई श्रीरामचन्द्र आपु श्रीमुख ते करतेभये सोई सुतीक्षण की दशाभई ताते जहांसेवककी सेवकाई अरु स्वामीको स्वामित्व भूलिजाइ ताको पराभक्ति कही भक्तिकही भजधातु सेवाबिषे होत है सेवाकही प्रसन्नता जाही में स्वामीप्रसन्नहोइ सोई भक्ति है तहां सबभक्ति में श्रीरामचन्द्र प्रसन्न हैं पर प्रेमा परा में बिशेष प्रसन्न हैं सनकादिक नारद सुतीक्षण शवरी में देखिलेवताको भक्तिकही पुनि ज्ञानकहते हैं स्वस्वरूप कै प्राप्ति जाते परस्वरूपमें भक्तिहोइ अपनो स्वरूप अपने शरीरही में है कैसे है जैसे फूलमें सुगन्ध जैसे पदार्थ में स्वाद जैसे दूधमें घृत जैसे दारुपाषाणमें अग्नि जैसे तिल में तेल जैसे मृगमें कस्तूरी है पर बिनाजाने बाहेर ढूंढ़तु है तैसे अपनेस्वस्वरूप मायाके आवरण विक्षेपकरिकै ढपिरह्यो है तहां नित्य नित्य को विवेककरिकै आवरण विक्षेपको दूरिकरिकै अपनोस्वरूप आपुहीमें देखैआवरणकही अपने अज्ञानते अपनोस्वरूपढपिरह्यो है बिक्षेपकही शरीर इन्द्री मन इनकी ब्याधि आधिकी उपाधिकरिकै स्वस्वरूप भूलिगयोहैताको बिक्षेपकही बुद्धिके अनुभव विचार ते अपनो स्वरूप शरीरते भिन्न करिकै देखै कि मेरोस्वरूप नतो चारिवर्णाही है नतो चारिआश्रमै है नतो देवता है नतो दानव है नतो मनुष्य है नतो चरहै न अचर है यह तो सब अनित्यहै अरु मेरोस्वरूप नित्य है अखण्ड एकरस है शुद्ध चैतन्य निर्मल है चौबीसतत्त्व मायाके हैं अरु पच्चीसवांतत्त्व आत्मा है चौबीसते भिन्न है चौबीसों आत्माकरिकै सत्य हैं चौबीसों तत्त्व ते आत्माकोज्ञान के यत्न ते भिन्नकरिलेइ जैसे फूल ते अतर चोवा फुलेल काढ़िलेते हैं जैसे दूध में घृतब्याप्त है यत्न ते काढ़िलेते हैं इत्यादिक अनेक दृष्टांतहैंऐसेही जब अपने अनुभवते अपने स्वरूपकीप्राप्तिभई तब उसको न सुख न दुःख न पाप न पुण्य न निन्दा न स्तुति तब वह आनन्दमय होतहै जब स्वस्वरूप की प्राप्तिभई ताको ज्ञानकही ज्ञानतीनि प्रकारको एक वर्णाश्रम को ज्ञान एकशास्त्रजन्य ज्ञान अरु एक विशेष अनुभव स्वरूपाकार ज्ञान औ जाते ऐसोज्ञानहोइ सो वैराग्य कहते हैं वैराग्य में चारिभेद हेतुस्वरूप फलअवधि विषयजो है ताको विषहूते अतिअधिकजाने काहेते कि जो कोई बिषखातु है तो शरीर छूटिजात है पुनि जो कहुं कर्मानुसार शरीर को धारणकियो तहां वह विषनहीं अमलकरै अरु जोमनुष्यतनु पाइकै विषय जो है महाविषरूप ताहीभोग में आसक्तभयो तब शरीरछूटिगयो तब विषयविष जो है सो चौरासीलक्षयोनिमें अमलकरतु है

जियतहै मरतहै को जानै केतेयुगबीतेंगे याहीहालमें ताते विषयको बिषहू ते अधिकजाने ताको हेतु वैराग्यकही पुनि स्वरूप वैराग्य में द्वैभेद हैं एकफल को त्याग एकस्वरूप को त्याग एकैविषय को व्यवहारकरि कै कर्मकरते हैं पर ताको फलभोग्य त्यागकरते हैं यह कहते हैं कि वेद की आज्ञा करते हैं फल भगवत् समर्पणकरते हैं अरु एकै जब विषय प्राप्तिभई ऋद्धि सिद्धि मान बड़ाई इत्यादि तेहि विषय को स्वरूपै त्यागकरतेहैं यह काहेते है कि जेहिको फलै नहींखाना तिसकाउपाय काहेको करना ताको स्वरूप वैराग्यकही पुनि जो विषय प्राप्तिभई अरु ताकोत्यागिदियो पुनि उसमें बासना न चलै दीनाधीनको त्याग करैं दीनकही जो पदार्थमें त्यागकीन है सो मेरेपास फेरिआवै तौ कछुक उसमेंसेलैकै अपनो निर्बाह करौं यह दीनताकी बासना न उठनेपावे आधीन यह जो पदार्थ मेरेइहां आयोरहै सो मैं पुण्यकरिदेत्यों तो भलीहोती जाते कोईकाल में मोको फेरिप्राप्तिहोती यह बासना न उठनेपावे पुनि अहंपद न आवै मनबचनकर्म ते कि मैं बड़ोत्यागीहौं यह बासना कबहूं न उठैताको फल बैराग्यकही पुनि जो विषय जानिकै त्यागकियो है तैसेही बिषय इहांताई जानै सातलोक नीचे हैं अतल बितल सुतल रसातल तलातल महातल पाताल इति ७ पुनि सातलोक ऊपर हैं भूर्लोक भुवस्वः महः जन तप सत्यलोक इति सात ७ पुनि शेषलोक ऐश्वर्य मृत्युलोक ऐश्वर्य ब्रह्मलोक ऐश्वर्य येते समस्त महाविषरूप जानै ताको अवधि वैराग्यकही एक वैराग्य चारिप्रकारको है व्यतिरेक एकइन्द्री बशीकार जितमान सारासार को विचार नीकीप्रकारते अहर्निशि करना यह संसार असार है संसारकही अपनीदेह अरु देह के स्नेही माता पितास्त्री पुत्र भाई नात कुटुम्ब अरु देवदानव मनुष्य पशु पक्षी इत्यादिक समस्त न काहूके भये हैं न काहूके हैं न काहूके होहिंगे न कोई संगजाइगो न कोईसंग आयो है मैं तो सदा एकहीहौं देखिये तौ बड़ो आश्चर्यहै मेराशरीर अनित्य है अरु शरीर के हेतु जिनमें स्नेहमान्यो है सोभी अनित्य है अरु तिनदोनोंमें अहंमम मानिरह्योहै सर्बभूत में मित्र अरिमानापमान इत्यादिक अनेकन विकार ग्रहणकरिरह्यो है मेरेविचार में त्रैगुण्यजनित व्यवहार जो है सो सब अनित्य है अरु आत्मानित्य है सोई मेरो स्वस्वरूप है सोई सार है नित्यानित्य दूनों कैसे मिलिरहेहैं जैसेदूध अरु जल तहां हंसवत् बुद्धिकरिकै सार को ग्रहण असार को त्याग ताको जितमान वैराग्यकही पुनि व्यतिरेक काम क्रोध लोभ मोह मदइत्यादिकनको स्वरूप शोधनकरै अरु ज्ञान वैराग्य विज्ञान शांति सन्तोष शील इत्यादिक इनदूनों को स्वरूप शोधै कौन परिपक्व है कौन अपक्वहै जो परिपक्वहोइ तामें चित्तलगावै अरु जो अपक्वहोइ ताको किसी योग करिकै मिटाइडारै अरु काल जो है सो सर्प है सबकोडसै है तहांअपनीबुद्धि को नेउररूपकरै जब नेउरको सर्पकाटैहै तब नेउर भी सर्प को काटिडारतु है अरु नेउर जो है सो कोईबूटी सूंघिलेतु है सर्पको विष नहीं व्यापत है वह सर्पको खण्डखण्ड करिडारतु है तैसे गुरुमन्त्र बूटी ते कालको विषय निवृत्तकरै जेते विषयभाव हैं तेतेसर्ब अभावकरिदेइ ताको व्यतिरेक वैराग्यकही पुनि इकइन्द्री जो मनमें विषय भोग की इच्छाहोइ तो विषयकोही अनित्य जानिकै अरु अपनेधर्म को बाधक जानिकै बाह्य इन्द्रिन संयुक्त मनको विचारकरिकै रोंकि देइ अरु इन्द्रिनसंयुक्त चतुष्ठ अन्तष्करण के अभिमान को त्यागकरै अरु सर्व इन्द्रिनमें व्याप्त श्रीरामचन्द्र को देखै जैसे एकघट में अनेक छिद्र हैं ताघट के भीतर दीपक बारि देइ दीपक सब छिद्रन को प्रकाश करतु है तैसे श्रीरामचन्द्र सबको प्रकाश किये हैं यह अचल दृष्टि होइ ताको यकेन्द्री बैराग्यकही पुनि बशीकार नरलोक विषय भोग्य देवलोकविषयभोग्य नागलोक विषयभोग्य तीनिहूं लोकनकी विषय महा रोगसम अरु नाशमान जानि कै ताको स्वरूपही त्यागकरै ताको बशीकार बैराग्यकही पुनि बैराग्य में चारिभेद हैं मन्द तीब्र तीब्रतर तीब्रतम मृतक को देखिकै किन्तु कोई योगते विषय नष्टहोइ गयो है अथवा गृह के लोगन अपने को त्यागि दियो है तब आपुको धिक् मानिकै बैराग्य आई है ताको मन्दबैराग्य कही पुनि तीब्र श्रुतिस्मृति पुराणइत्यादिक श्रवण करिकै संसारको अनित्य जानिकै सुत दारा धन धाम इत्यादिक दियो है ईश्वरके भजन की लालसा उठी है जो कुछ प्राप्तिहोइ ताहूको अभाव अरु प्राप्ति में बासना नास्ति मुमुक्षु रूप है ताको तीब्र बैराग्यकही तीब्रतर जाको अपनी देहते बैराग्य है शीतउष्णदुःखसुख मानापमान इत्यादिकनकी शरीर में चेष्टानहीं आवै अरु किसी के

**विभाग कहहिंभक्तिभगवंतकी संयुतज्ञानबिराग ९ चौ० यहिप्रकारभरिमाघनहाहीं पुनिसबनिजनिजआश्रमजाहीं १० प्रतिसंवत**

गुण अवगुण दृष्टि में न आवैं अरु चौदह भुवन तीनि लोकको विषयमनते भूलिजाइ अर्त्थ धर्म काम इनकी गन्धि दूरि ह्वैगई है जीवन्मुक्त हैं केवल मोक्षदशामें आरूढ़ है समविषमते परे हैं सर्बत्र ब्रह्मदृष्टि है ताकोतीब्रतरबैराग्यकही पुनि तीब्रतम जोई तीब्रतर के लक्षण हैं सो लक्षण तो साधारणै हैं पर जिनके मोक्षहूको त्यागहै अरु जिनके नित्यानित्यको अभाव है अरु श्रीरामचन्द्र के स्वरूप बिरहमेंप्रेमा पराभक्तिमें एक रस आरूढ़ हैं जिनकी दशा अलक्षि है ताको तीब्रतम बैराग्यकही यहदोहा सातहूकाण्डके अर्थको सूचितकरतु है ताते अमित अर्थहैं मैंने अपनी मति अनुसार कहा मकर के समय में सब मुनि प्रयाग को जाहिंभरद्वाज के आश्रम में आसन करहिं प्रातःकाल समस्त क्रिया करिकै सत्सङ्गहोइ तहां ब्रह्मनिरूपण अरु सम्पूर्ण धर्मकै बिधिकरहिं पुनि सांख्यबर्णन करहिं भगवन्त की भक्ति अरु ज्ञानबैराग्य कहहिं येहीप्रकारते मासभरि सत्सङ्गहोइ ( ९ ) येही प्रकार ते माघभरि स्नान करहिं पुनि निज निज आश्रम को जाहिं ( १० ) ऐसेही प्रतिसम्बत् आनन्दहोइ पुनि अपने अपने आश्रमको जाहिं ( ११ ) एकबार कल्पबास करिकै सब मुनिनिज निज आश्रमकोगये ( १२ ) तहां याज्ञबल्क्य महामुनीश परमबिबेकी तिनको भरद्वाज चरणगहिकै राखतेभये ( १३ ) चरण धोइकै सुन्दर आसनदियो ( १४ ) षोड़श प्रकार पूजन करिकै स्तुतिकीन पुनि भरद्वाजदोऊ करजोरिकै मृदुबाणी बोलतेभये ( १५ ) हे नाथ सम्पूर्णवेदकैतत्त्व तुम्हारे करतलहै अरु मेरे एक बड़ी संशय है ( १६ ) सो कहिकै बड़ीलाज लागती है काहेते सबकोई कहैंगे कि भरद्वाज के संशय अबहीं बनी है अरु जो लोकलाजकरिकै नहींपूछौं तौ परमअकाजहै ( १७ ) दोहार्थ॥ अरु सन्तजन श्रुति स्मृति पुराणइत्यादिक कहते हैं कि जो सत्‌गुरुनते नेकहूदुराउ करै तो बिमलबिवेकको नहींप्राप्तिहोइ ( १८ ) हे नाथ

**असहोइअनन्दा मकरमज्जिगवनहिंमुनिवृन्दा ११ एकबारभरिमकरनहाये सबमुनीशआश्रमनसिधाये १२ याज्ञवल्क्यमुनि परमविवेकी भरद्वाजराखेपदछेकी १३ सादरचरणसरोजपखारे अतिपुनीतआसनबैठारे १४ करिपूजामुनिमुयशबखानी बोले अतिपुनीतमृदुबानी १५ नाथ एक संशयबड़िमोरे करतलवेदतत्त्वसबतोरे १६ कहतसोमोहिंलागतिअतिलाजा जोनकहौं बड़ होइअकाजा १७॥दो०॥ संत कहैंअसनीतिप्रभुश्रुतिपुराणअसगाव होइनविमलबिबेकउरगुरुसनकिहेदुराव १८॥ चौ० ॥ असबिचारिप्रकट्योनिजमोहू हरहुनाथकरजनपरछोहू १९ रामनामकरअमितप्रभावा सन्तपुराणउपनिषधगावा २० सन्ततजपत शम्भुअबिनाशी शिवभगवानज्ञानगुणराशी २१ आकरचारिजीवजगअहहीं काशीमरतपरमपदलहहीं २२ सोपिराममहिमा**

ऐसे बिचारिकै अपनोमोह प्रकटकरतहौं मोरेऊपर छोहकरिकै मोहकोनाशकरहु ( १९ ) हे नाथ रामनामकोप्रभाव अमित है जाके प्रभाव को सन्तजनपुराण उपनिषदगावते हैं पर पारनहीपावैं ( २० ) अरु शिवजी निरन्तरजपते हैं यामेंएक लवमात्र अन्तरनहींपरै जो कही कि शिवजी अपने जन्ममरणके छुटाइबेकोजपते हैं किन्तु महत् ऐश्वर्य्यके हेतुजपते हैं किन्तु ज्ञानगुणकेहेतु जपते हैं सो नही है काहेते शिवजी सदा अबिनाशी हैं भगवान् हैं ज्ञानगुणकी राशि हैं ईश्वर हैं तिनको इष्ट रामनामही है अरु महादेव के समान तो कोई हई नहीं है अधिक कहांतेहोइगो अरु तिन महादेवको इष्ट रामनाम है ताते निरंतर जपते हैं ( २१ ) चारिखानि ते अनेक जीवते हैं काशीमेंजेमरते हैं ते परमपदको प्राप्तहोते हैं ( २२ ) सो शिवजी रामनाम उपदेश करते हैं तातेमोक्षहोते हैं सो रामनामही की महिमा है ( २३ ) भरद्वाज पूछते हैं हे महामुनीश श्रीयाज्ञबल्क्यजी प्रभुकहे सामर्त्थ हैं मैं पूंछतहौं आपुकोशिष्यह्वैकै मेरी अज्ञानताको अपराध क्षमाकरब हे नाथ जेहि रामनाम को महेशजपते हैं सो राम को स्वरूप अखंड एकरस कौन है तुमकृपाकेनिधानहौ नीकीप्रकारते यथार्त्थमोंसे समुझाइके कहौ ( २४ ) यह संदेह है कि कोई मुनि श्रुति स्मृतिको प्रमाणदैकै कहते हैं कि रामचन्द्र सर्ब्बमेंरमिरह्योहै मन बचन कर्म अगोचर अरूप अनुभवगम्य कही प्राप्त ज्ञानस्वरूप कैवल्यरूप निर्बिकार सूक्ष्मतर है सर्बमें रमिरह्यो है ताको रामकहीअरु मैं श्रुति स्मृति बिचारिकै अरु जहां

तहां सुनिकै एकस्वरूप श्रीरामचन्द्र को जानतहौं अखंड एकरस अवधेश जो श्रीदशरथ महाराज तिनकेकुमार भक्तानुग्रहार्त्थ तिनको चरित निर्मल अमित सो ब्रह्मांड के बाह्यांतर पूर्ण बिदित ह्वैरह्यो है ( २५ ) ऐसे परब्रह्म परमात्मा श्रीरामचन्द्रजी तहां यह आश्चर्य्य देखिबे सुनिबेमें आयो कि नारिनके बिरह करिकै आपु

मुनिराया शिवउपदेशकरतकरिदाया २३ रामकवनप्रभुपूंछौंतोहीं कहहुबुझाइकृपानिधिमोहीं २४ एकरामअवधेशकुमारा तिनकरचरितविदितसंसारा २५ नारिविरहदुखलहेउअपारा भयउरोषरणरावणमारा २६ दो०॥ प्रभुसोइरामकिअपरकोउजाहि जपतत्रिपुरारिस त्यधामसर्ब्बज्ञतुमकहहु-बिबेकविचारि २७ चौ०॥ जैसे मिटैमोहभ्रमभारीकहहुसोकथानाथविस्तारी २८ याज्ञवल्क्य

दुःखको प्राप्तिभये हैं पुनि आश्चर्य देखै हैं कि रावण त्रैलोक्य विजयी ताको संग्राम में रोषकरिकै नाशकरि दियो तहां यह संशय है कि परब्रह्म बिषे दुःख अरु क्रोध कैसे संभवै हैं ( २६ ) ॥दोहार्थ॥ हे प्रभुसोई रामचन्द्र हैं जिनको महेश जपते हैं किंतु अपररामहैं तुम सत्यके धामहौ पुनि सर्बज्ञहौ अरु यथार्त्थबक्ता आपुहौ ताते बिबेक करिकै बिचारिकै कहौ कौनराम हैं ( २७ ) हे नाथ यहबड़ी संशय है सिद्धांतबिषे श्रीरामजीको कौन स्वरूप है निर्गुण निराकाररूप है किंतु सगुण साकार स्वरूप है कौनस्वरूपमें हम निश्चय करैं तातेजेहि प्रकारते मोहमिटै सो बिस्तारपूर्वककथा कहहु ( २८ ) तहां गुसाईं तुलसी दासजी कहते हैं कि भरद्वाज को प्रश्नपरमबिचित्र परम तत्त्व को प्रत्यक्ष करनहारो ऐसो शुभ प्रश्न सुनिकै श्रीयाज्ञवल्क्यजी अतिहर्ष संयुक्त बिहंसिकै बोलतेभये हे भरद्वाज तुमधन्यहौ तुम्हारी आश्चर्य्य बुद्धि है तुम्हारे प्रश्न में जो वेद में गुह्यादगुह्य गुह्यतम परमतत्त्व है सो आपुही ते प्रत्यक्ष होइगो हे भरद्वाज मोको तौ ऐसो समुझि परतु है कि तुमको रघुपति की प्रभुतानीकी प्रकारते बिदित है रघुपति कही जेते रघुबंशकुलमें उत्पन्नभये हैं अरु हैं अरु होहिंगे तिन सबको बिनाश्रमही परम पदको अधिकार दियो है ताते श्रीराम चन्द्र को रघुपति कही पुनि रघुसंज्ञा जीवकी है अरु सर्ब्ब जीवकेपति श्रीरामचन्द्र हैं ताते रघुपतिकही तिन रघुपतिकै महिमा हे भरद्वाज तुमको बिदित है किंतु लीला प्रकरणमें रघुबंश कुलमेंश्रेष्ठ ताते रघुपतिकही ( २९ ) हे भरद्वाज तुम मन वचन कर्म्मसे श्रीराम भक्तहौ तुम्हारी चतुराई मैं अच्छी तरह जानी है ( ३० ) श्रीराम चन्द्रके गूढ़ गुण सुनाचाहत हौ अरु प्रश्न मूढ़की नाईं किहेउ है सो एसेही चाहिये ( ३१ ) हे तात मनको सावधान करिकै सादरते सुनहु श्रीरामतत्त्व अति गूढ़ है अब श्रीराम कथा शोभायमान मैं कहत हौं ( ३२ ) महामोह महिषासुर दानवको ईश है ताकेनाश करिबे को रामकथा कालिका भवानीतद्वत् है ( ३३ ) पुनि श्रीरामचन्द्र बिमल पूर्णचन्द्र हैं अरु रामकथा अमृतमय घनकिरणि है संतन को चित्तचकोर

बोलेमुसुकाई तुमहिंबिदितरघुपतिप्रभुताई २९ रामभक्ततुममनक्रमबानी चतुराईतुम्हारिमैंजानी ३० चाहहुसुनारामगुणगूढ़ा कीन्हेउप्रश्नमनहुंअतिमूढ़ा ३१ तातसुनहुसादर मनलाई कहौंरामकैकथासुहाई ३२ महामोहमहिषेशविशाला रामकथाकालिकालकराला ३३ रामकथाशशिकिरणिसमाना सन्तचकोरकरहिंजेहिपाना ३४ ऐसेहिसंशयकीनभवानी महादेवतबकहाब

ताको पान करते हैं हे तात श्रुति स्मृति इत्यादिक अरु श्रीमद्रामायणशतकोटि अपर है सो प्रतिपादकहै अरु दशरथनन्दन श्रीरामचन्द्र प्रतिपाद्य हैं प्रतिपादक प्रतिपाद्य ताकोअर्त्थ समस्तग्रन्थ श्रुतिस्मृति पुराण श्रीमद्रामायण इत्यादिक श्रीरामहीको गावते हैं हेभरद्वाज अबचारि अनुबन्ध कहते हैं सो सुनो जबचारि अनुबंध सद्गुरुन ते प्राप्तहोइ तब श्रीरामचरित श्रीरामतत्त्व प्राप्तहोत है सो कहते हैं प्रथम अधिकारी पुनि विषय पुनि सम्बन्ध पुनि प्रयोजन अब इनके स्वरूप कहते हैं जब बैराग्य बिवेक अरु षड़सम्पति संयुक्त होइ ताको बिशेष अधिकारी कही बैराग्य सोतौ पाछेके दोहा मे कहिआये हैं पुनि बिबेक कहते हैं समुझिकैस्वधर्मको ग्रहण परधर्म्म को त्याग पुनि आत्मा अनात्मा दोऊ मिलि रहे हैं जैसे जल अरु दूध जैसे हंस दूधको ग्रहणकरत है जल को त्यागकरत है तैसेही राम सम्बन्ध पदार्त्थ ताको ग्रहण संसारसम्बन्धकोत्याग

जामें अचल दृढ़ बुद्धिरहै ताको विवेक कही पुनि षट्सम्पति कहते हैं शमदम उपरति तितीक्षा श्रद्धा समाधान शमकही अन्तष्करण चित्त बुद्धि मन अहंकार इनकी वृत्ति को बेगएकरस थिरह्वैजाइ सो शमकही पुनि पांचज्ञान इन्द्री पांचकर्म्मइन्द्री इनके विषय को दमनकरै जीतिलेइ सो दम पुनि अन्तर्बाह्य इन्द्रिनको बेग एकरस थिरह्वैजाहि सो उपरति पुनि दुखसुख निन्दा स्तुति मानापमान हर्ष शोक इत्यादिक अनेक द्वन्द धर्म्मके प्राप्ति होतसन्ते हँसिकै एकरसरहै सो तितीक्षा पुनि अपने इष्ट अनुकूलवेदबाक्य गुरुबाक्य में प्रतीति सो श्रद्धा पुनि अपनेस्वरूप ते श्रीरामस्वरूप में चिंतवन चित्तकै बृत्ति डिगैनहीं सो समाधान येती षट्सम्पति पुनिषट्सम्पति षट्शरणागत को कहते हैं श्रीरामचन्द्र के अनुकूल जो साधन होइ तामें संकल्पकरै कि मैं यहै करौंगो पुनि राम प्रतिकूल जो कर्म्मधर्महोइ ताको विशेष त्याग करै पुनि मनबचनकर्म आत्मसमर्प्पण करै पुनि कार्पण्य हे श्रीरामचन्द्र मोसे कछुनहींबनै मैं बड़ोनीचहौं पुनि गोप्तृत्वबर्णनदेखिये तोजो वेदने गुप्तराखेउ है नहीं कह्यो सो श्रीरामचन्द्र कीन्ह्यो है संसार ते उबारि लीन्हो है शबरी के फल जूठेखाये माता की समानमान्यो निषाद और बानर भालुन को परमसखा कीन मंत्रीकीन निज स्वरूप मुक्तिदीन पाषाणकी नावकीन श्रीरामचन्द्र कै कृपा करुणा दयासमुझै पुनि रक्षामें बिश्वास जिन श्रीरामचन्द्र लोक परलोकहू में रक्षा कीन है बिभीषण सुग्रीव गज द्रौपदी इत्यादिक अनेकन कै रक्षाकीन है सो मेरी रक्षाकरहिंगे यह अचल विश्वास करना इति षट्शरणागत हैं इनसबनकरिकै युक्तहोइ सो अधिकारी कही जब ऐसो अधिकारी होइ तब विषयको प्राप्तहोइ विषयकही श्रुति स्मृति शास्त्र पुराण श्रीमद्रामायण समस्त ग्रन्थन की विषय श्रीरामचन्द्र हैं जब विषयको अच्छीतरहजानै तब सम्बन्ध को प्राप्तहोइ सम्बन्धकही जीवते अरु परमेश्वर ते सजातीय सम्बन्ध है अंशअंशी सम्बन्ध है धर्म्मधर्म्मी सम्बन्ध है प्रकाशप्रकाशी सम्बन्ध है भोक्ता साक्षी सम्बन्ध है दीनदयालुसम्बन्ध है पुत्र पिता सम्बन्ध है सेवक स्वामी सम्बन्ध है राजा प्रजासम्बन्ध है रूपरूपी सम्बन्ध है सख्यसखा सम्बन्ध है पत्नीपति सम्बन्ध है इत्यादिक सम्बन्ध है सब अनादि हैं ताको जानै गुरूकीबाक्य ते पुनि प्रयोजनकही जीवकोप्रयोजन सांचो श्रीरामचन्द्र कै भक्तिकरै चारिहूफलते निष्कामह्वैकै सो भक्ति पीछे के दोहा में कहे हैं जो चारिउ अनुबन्ध जानै सो रामभक्ति पहिंचानै अधिकारी विषयसम्बन्ध प्रयोजन तब बुद्धि निष्काम मुमुक्षूभक्त होइ याज्ञबल्क्य कहते हैं हे भरद्वाज चारिहू अनुबन्ध तुम्हारे करतल हैं तुम जीवन्मुक्त भक्त हौ श्रीरामचन्द्र के यह चारिउ अनुबन्ध भरद्वाजजी से याज्ञबल्क्यजी ने यहिचौपाई में आशयजनाये हैं॥चौपाई॥ रामभक्ततुममनक्रमबानी चतुराईतुम्हारिमैं जानी ( ३४ ) याज्ञबल्क्य कहते हैं हे भरद्वाज अब जो प्रश्न तुमकीन है तैसेही संशय पार्बती कीनरहै तबमहादेव विस्तार कथाकहिकै संदेह खण्डनकरिदीन है ( ३५ ) दोहार्थ॥सो अपनी मतिअनुसार शिव पार्बतीको सम्बाद जौनेसमय जेहिहेतु भयो है सो कहत हौं जो सुनिकै सम्पूर्ण बिषाद मिटिजाइ पर कछुक सूचनिकामें प्रथमकहिकै तब सम्बाद कहौंगो हे तात श्रीरामचन्द्र कै द्वैस्वरूप हैं एक अबिग्रहमान है अरु एक विग्रहमान है दृष्टान्त जैसे सूर्य्य अरु सूर्य्य के सघनप्रकाश पुनि मणि मणिको प्रकाश सूर्य्य मणिस्थानसाकारस्वरूप रामप्रकाशस्थान निराकाररूपराम दोऊस्वरूप एकही हैं अखण्ड हैं यह श्रुति स्मृति उपनिषद पुराण समस्त मुनिन को परमसिद्धांत है अरु कोई कहते हैं कि साकारस्वरूप परमेश्वर मायिक बिग्रह हैं तहां वेद कै तत्त्व सत्सङ्गकै तत्त्व महामुनीशन को मत उनको नहीं प्राप्त भयो अरु महादेव रामनामही जपते हैं सो साकार स्वरूप राम जिनके

खानी ३५ दो० कहौंस्वमतिअनुहारिअब उमाशम्भुसम्बाद भयउसमयजेहिहेतुअब सुनुमुनिमिटैविषाद ॥३६॥

एकबारत्रेतायुगमाहीं शम्भुगयेकुम्भजऋषिपाहीं १ सङ्गसतीजगजननिभवानी पूजेऋषिअखिलेश्वरजानी २ रामकथामुनि

रूपकी छटा कोटिन सूर्य्य कोटिनशशि कोटिनकाम लज्जितहोतेहैं जिनको दशरथनन्दन कही अरु जिनके अंश ते ब्रह्मा विष्णु महेश बिराट हैं हे भरद्वाज अब उमा महेशको सम्बादसुनो ( ३६ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वन्सने बालकाण्डे श्रीयाज्ञबल्क्यभरद्वाजसम्बादे चतुर्दशस्तरंगः ॥१४॥ :: ::

दोहा ॥ रामचरणरसपांचमें शिवअगस्त्यमिलिप्रेम सतीमोहमायालख्यो लषणरामसियक्षेम १५ हे भरद्वाजजी एकसमय त्रेतायुग के चौथे चरण में महादेवजी महामुनि जो अगस्त्य हैं तिनके आश्रम को जातेभये ( १ ) सङ्गमें जगत् की माता सतीजी हैं महादेवको सब के ईश्वर जानिकै अगस्त्यजीने पूजनकिये ( २ ) शिवजीकी आज्ञाते अगस्त्यजीश्रीमद्रामचरित नीकीप्रकारकहतेभये परमसुख मानिकै महादेवसुनते भये ( ३ ) पुनि ऋषि रामभक्ति पूछतेभये तहां चारिउ अनुबन्ध जिनके हस्तामलकहैं पुनि रामतत्त्व रामउपासनाताके परम अधिकारी जानिकै महादेव श्रीरामभक्ति नीकी प्रकार कहते भये तातेबिनाअधिकारी श्रीरामतत्त्व नहीं कही कबहूं ( ४ ) श्रीरघुपति गुणगाथ परस्पर कहते सुनते कछुकाल रहते भये ( ५ ) पुनि मुनिसन बिदा मांगिकरि दक्षकुमारि संगचलते भये कैलाशको ( ६ ) तेही काल में श्रीरघुबंशमणि अवतीर्ण भये हरि क्यों कहे महिको भार हरहिंगे ताते हरि कहेउ ( ७ ) श्रीदशरथ महाराज के वचन के मिसु करिकै दण्डकारण्य में अपनी लीला अबिनाशी करते हैं ( ८ ) दोहार्त्थ॥ महादेव अपने हृदय में विचार करते चले जाते हैं कि श्रीरामचन्द्र गुप्तरूप श्रीअयोध्या में अवतीर्ण ह्वैकै अरु गुप्तै लीला आरण्य में करते हैं याते हमारोप्रभाव कोई न जानै अरु मेरेदर्शनकी वड़ीलालसा है जो यहिकालमें मैं जाइकै प्रत्यक्षदर्शन करौं तो देवता मुनि

वर्ण्यबखानी सुनीमहेशपरमसुखमानी ३ ऋषिपूछीहरिभक्तिसोहाई कहीशम्भुअधिकारीपाई ४ कहतसुनतरघुपतिगुण गाथा कछुदिनतहांरहेगिरिनाथा ५ मुनिसनबिदामांगित्रिपुरारी चलेभवनसँगदक्षकुमारी॥६॥ तेहिअवसरभंजनमहिभारा हरि रघुबंशलीनअवतारा ७ पिताबचनतजिराज्यउदासी दण्डकबनबिचरतअविनाशी॥८॥ दो०॥ हृदयविचारतजातहर केहिविधिदर्शनहोई। गुप्तरूपअवतरेउप्रभुगयेजानसबकोइ ९ सो०॥ शङ्करउरअतिक्षोभसतीनजानैमर्म्मसो। तुलसीदरशनलोभमन डरलोचनलालची १० रावणमरणमनुजकरयांचा। प्रभुविधिवचनकीनचहसांचा ११ जोनहिंजाउंरहैपछितावा करतविचारनबनतब

इत्यादिक सब जानिजाहिंगे अरु श्रीरामचन्द्रको संकोच होइगो किन्तु यह विचारिकै श्री अयोध्या में दर्शनकैइच्छा करते हैं यह सामान्य अर्थ है ( ९ ) ॥दोहार्त्थ॥ हे भरद्वाज न तौ महादेवसे जातबनै न विनादर्शनसन्तोषहोइ यह द्वन्द्वविचारताहीको क्षोभकही तहां शङ्करके मनमें क्षोभ भयो सो मर्म्मसती नहीं जानैं अरु शिवकोमन जात सन्ते डरत है अरुदर्शनहेतु लोचन ललचाइरहे हैं ( १० ) हे भरद्वाज कोई कालमें रावण वड़ो तपकीन तब ब्रह्माबोलतेभये कि बरमांगु तब रावण कहा कि बानरनरछोड़िकै अपर किसूकेमारे हमनहीं मरैं ताते परमात्मा परब्रह्म श्री रामचन्द्रजी ब्रह्माका वचन सत्यकरिबेको अरु रावण के बधहेतु नरलीलाकरते हैं ( ११ ) तहां यहै समुझिकै महादेव अपने मनमें कहते हैं कि जो न जाउं दर्शनको तो पश्चात्ताप बनोरहैगो काहेते कि श्रीरामचन्द्र बनमें भलेएकांत हैं अरु बहुतदूरि नहीं हैं एसेही मनमें संकल्प विकल्प होत है कछुविचार में नहीं आवैहै ( १२ ) ऐसेही ईश जो महादेव सो शोचसंयुक्त चलेजाते हैं अरु तेहीसमय में श्रीराम इच्छाते दशशीश जो रावण है सो मारीचको संगलैकै पंचवटी को जातभयो ( १३ ) तहां मारीचकंचनमृग भयो तेहिके बधबेको श्रीरामचन्द्र जाते भये पुनि पीछे श्रीलक्ष्मणजी जातेभये ( १४ ) तहां रावण प्रभुकी लीलाको प्रभाव नहींजान्योहै रावण जो है मूढ़ सो छलकरिकै छलकृत रूपजो हैं वैदेहीं तिनको हरतभयो कैसे जानिये छलीको छलैरूप जानकीजी प्राप्तह्वैकै कृतार्त्थ करती हैं अरु सांचेको सांचहीगति सों प्राप्तहोती हैं जो कोईकहै कि साक्षात् सीतालंका को गई हैं मायाकी सीता नहींगई काहेते जो मायाकी सीतालंका को गई हैं तौ माया के रामचन्द्रहू लंका को गये हैं तौ समस्त लीला मायिकभयो असत्यभयो तहां उसको प्रत्युत्तर देते हैं देखिये तौ रावण इतनो अधिकारी नहीं है जहांसाक्षात् सीताजी जाहिं

नावा १२ यहिविधिभयेशोचबशईशा तेहीसमयजाइदशशीशा १३ लीन्हनीचमारीचहिसङ्गभयउतुरतसोकपटकुरङ्ग १४ करि छलमूढ़हरीवैदेही प्रभुप्रभावतसविदितनतेही १५ मृबगधिबंधुसहितप्रभुआये आश्रमदेखिनयनजलछाये १६ बिरहबिकल

किंतु साक्षात् सीता को रावण लैजाइ सो ऐसो होत ही नहीं काहेते कि जो जैसो अधिकारी होत है ताको तैसीही भगवत् कृपाहोती है तहां रावण जो है सो केवल अपनी मुक्तिहेतु बिरोधाभावकरिकै सीताजीको लै गयो है ताते श्रीरामचन्द्र जी की आज्ञा ते श्रीसीताजी अपनी एकशक्ति मायारूपी ताको अपनी सदृश स्वरूपकरिकै ताही ते लक्ष्मणजी को छलबचन कहिकै पुनि लंकाको जातभई कृपाकरिकै रावणकी मुक्तिहेतु काहेते जे जीवकैसहू परमेश्वरको जानैहै राधे वा बिरोधे तिनको परमेश्वर थोरही में कृपाकरिकै कृतार्थ करिदेते हैं ताते रावण के अधिकार योग्य श्री वैदेहीको एकअंशभूत लंकाको प्राप्ति भई है पुनि अपने मनमें बिचार तौ करौ जो सीताजी साक्षात् लंकाकोजातीं तो सीतासंयुक्त सतीको दर्शन कैसे हो तो तातेसीता रामकबहूं पलमात्र अभिन्न नहीं होते हैं अरु साक्षात् सीताजीको स्वरूप ताके अधिकारी श्रीजनक ऐसे हैं अरु श्री रामचन्द्र अपने अंग में सीताजीको अगोचर किहे हैं अग्नि के मिसुकरिकै तब लंकाकोगये हैं कैसे जानिये साक्षात् स्वरूप को दर्शनपाके अधिकारी बिभीषण हैं कब जानिये जब लंकाजीतिभये तब श्रीसीताजी अग्निप्रवेशकीन तब अग्नि मूर्त्तिमान् प्रत्यक्ष ह्वैकै श्रीसीताजी को गोदमेंलिहे बोलतेभये हे श्रीरामचन्द्र जी हम आपुके आज्ञानुकूल सदा निकटही रहते हैं आपु दण्डकारण्य में सीताजी की सेवकाई को मोकोसौंपेहौ अपनेलीलाहेतु सो लीला आप करतभये अब श्रीजानकीजी के चरणके पीछे में आपुके समीपठाढ़ो हौं जैसीआज्ञाहोइ सो करौं तब श्रीरामचन्द्र बिहंसे अतिप्रसन्नभये तब श्रीरामचन्द्र के बामांगमें श्रीजानकी जीको स्थापिकै युगुलस्वरूप हृदय में धरिकै पावक अन्तर्ध्यानभयो तब बिभीषण इत्यादिक को साक्षात् सीताजीको दर्शनभयो है यह प्रसिद्ध है बाल्मीकि में लंकाकाण्ड में अग्निप्रवेश प्रसंगमें भूषण तिलक में देखिलेव अरु नाटकमें अध्यात्म तुलसीकृत में प्रसिद्ध कहे हैं ( १५ ) हे भरद्वाज जब रावणनमस्कार करिकै श्रीजानकीजी को लैगयो तब श्रीरामचन्द्र मारीच मृगरूप ताको बधिकै सहित लक्ष्मण आश्रमको आवतेभये तहां श्रीजानकीजीको नहींदेख्यो ( १६ ) तब श्रीरामचन्द्र अपने कौतुकते श्रीजान-

नरइवरघुराई खोजतबिपिनफिरतदोउभाई १७ कबहुंकयोगवियोगनजाके देखाप्रगटदुसहदुखताके ( १८ )॥ दो० अतिविचित्र रघुपतिचरितजानहिंपरमसुजान तेमतिमन्दविमोहबशहृदयधरहिंकछुआन १९ शम्भुसमयतेहिरामहिंदेखा उपजाहियअति

कीजी के बिरहकरिकै प्राकृतइव लीलाकरनेलगे नेत्रन में जलभरिकै सम्पूर्ण जीवन से पूछते हैं हे तरुलतहु तुम श्रीजानकी जी को देख्यो है शीघ्र कहो हे मृग मृगिहु तुम श्रीजानकी जी को देख्यो है शीघ्रबोलो हेबिहंग बिहंगिनिहुं तुम श्रीजानकीजी को देख्यो है हेदीर्घ लघुपर्वतहु तुम श्रीजनकनन्दनीजी को देख्यो है हे पृथ्वी तुम श्रीजनकनन्दनीजी को शीघ्रबताइदेहु हे नंद नंदिहु तुम श्रीमैथिलीजीको देख्यो है हेतलाव तलावहु तुम श्रीवैदेहीजीको देख्यो है हे सम्पूर्ण बनस्पतिहु तुम श्रीजनकलाड़िलीजी को देख्यो है हे वनकेदेव देविहु तुम श्रीभूमिजाजी को देख्यो है हे दशहुदिशा के देवतहु सहित शक्तिनतुम प्राणप्रियाको देख्यो है हे भरद्वाज ऐसे ही श्रीरामचन्द्रजी जानकीजी के बिरहमें मग्न होते हैं पुनि बूझते चलेजाते हैं मर्यादा को आवान्तरकिहे बिरह करते हैं ( १७ ) देखिये तौ जिन श्रीरामचन्द्रके न तौ योग न बियोग सर्बकाल एकरस सच्चिदानन्दघन मूर्त्ति ते श्रीरामचन्द्र प्रत्यक्ष दुखकरते हैं तिनके चरित को जानै है केवल भक्तानुग्रहार्त्थ तहां रघुनाथजी बिरह करते हैं लक्ष्मणजी नहीं बोलते हैं ( १८ ) दोहार्त्थ॥ हे भरद्वाज श्रीरघुपति के चरित अतिबिचित्र हैं कोई नहीं जानिसकै जे परमसुजान सन्त श्रीरामचन्द्र के कृपापात्र हैं दैवीबुद्धि हैं ते जानतेहैं श्रीरामचरित चित्रबिचित्र तामेंआनन्दपावते हैं यह समुझिकै कि श्रीरामचन्द्र यह दिखावते हैं कि जैसे मैं श्रीजानकीजी के मिलबेको बिकलहौं तैसे मेरेभक्त मेरेमिलबेको बिकल होंहि यह शिक्षाकरते हैं अरु जिन जीवन कै आसुरी बुद्धि है ते यह समुझते हैं कि रामचन्द्र परमात्मा परब्रह्म जो होते तौ जानकीजीको क्योंढूंढ़ते फिरते ( १९ ) हे भरद्वाज जेहिसमय में श्रीरामचन्द्र लीलाकरते हैं तेहीसमय में शिवजी सतीसंयुक्त चलेजाते रहे तहां श्रीरामचन्द्रको देखत भये अतिहर्ष को प्राप्तभये हैं ( २० ) श्रीरामछबि समुद्र लोचनभरि निहारिकै महादेव छकिरहे हैं कुसमयजानिकै पहिचान नहींकियो है ( २१ ) जयसच्चिदान्द जगपावन जिन श्रीरामचन्द्र को लीला सम्पूर्ण जगत् को पबित्र करती यह कहिकै नमस्कारकरि मनोज नशावनचले मनोजनशावन क्यों कहे शिवजी सदा कामजीते हैं अथवा आगे कामको नाश

**हर्षविशेषा २० भरिलोचनछविसिन्धुनिहारीकुसमयजानिनकीन्हचिन्हारी २१ जयसच्चिदानन्दजगपावन असकहिचलेउमनोज नशावन २२ चलेजातशिवसतीसमेता पुनिपुनिपुलकितकृपानिकेता २३ सतीसुदशाशम्भुकैदेखी उरउपजासन्देहविशेषी २४ शङ्कर जगतवंद्यजगदीशा सुरनरमुनिसबनावहिंशीशा २५ तेनृपसुतहिकीन्हपरणामा कहिसच्चिदानन्दपरधामा २६ भयेमगनछविता**

करहिंगे ( २२ ) सतीसमेत शिवचलेजात सन्ते पुनः पुनः पुलकत गद्‌गदप्रेमभरे कृपानिकेत शिवजी को इहां क्यों कहा श्रीरामस्वरूप द्विभुज परात्पर सच्चिदानन्द बिग्रह जो अगस्त्य जी के इहां सत्संगभयो है सो परमतत्त्व सतीजीको अच्छी प्रकार नहीं प्राप्तभयो अब यह प्रसंग के द्वारहैके महादेवकी कृपाते श्रीरामस्वरूप सतीको प्राप्तहोइगो कछु सती तनमें लक्षिहोइगो पुनि सम्पूर्ण दुसरेतन में प्राप्तहोइगो ताते कृपानिकेत कहा अथवा कृपाके निकेत श्रीरामचन्द्र तिनकोदेखिकै अंग अंग पुलकके संयुक्त चलेजाते हैं ( २३ ) शिवजी प्रेमतेभरे चलेजाते हैं डगमगात पगमगमें परते हैं कभी रस्ताछूटि जाती है कभी राहलेते हैं अश्रुपात होते हैं रोमांच खड़े हैं ऐसीदशा महादेव की सतीजी देखतीभई तब सती के मन में बिशेष सन्देह होतभयो ( २४ ) अपनेमन में यह बिचारकरती है कि शंकरको सम्पूर्ण जगत् बन्दनाकरत है काहेते जगत्के ईश हैं सुरनरमुनि सब शीशनावते हैं शंकरको ( २५ ) ते शंकर राजादशरथकेपुत्र तिनकोप्रणामकरतेभये पर सच्चिदानन्द परधाम कहिकै धामकहे स्वरूप पर यहीस्वरूप जो बनमें फिरते हैं ताही मूर्त्तिको सच्चिदानन्द परस्वरूपकह्यो यह बड़ोआश्चर्य्य है ( २६ ) अरु तिनकीछवि देखिकै मग्नह्वैगये हैं अरु अद्यापि तिनमें परमप्रीति रोंकीनहींरहे है ( २७ ) दोहार्थ॥ यहकैसो बिचारकरियेजो कहिये कि सच्चिदानन्द तौ ब्रह्मकोकही सो ब्रह्म कैसो है सर्वत्रव्याप्त है सर्ब ते भिन्न है बिरजहै रजकहे माया ते भिन्न है अरु अजन्मा है अरुनिर्गुण है अरु अकल है कलारहितहै अभेद है अद्वैतहै अरूपहै एकरस है सर्बमय है सर्ब ते भिन्न है ऐसो जो ब्रह्म है सो नरदेह काहेको धारैगो वामें कछुकारण कार्य्य नहीं है जाको वेदहूनहींजानै है सो ब्रह्म ये राजपुत्र नहीं है यह सतीजी निश्चयकियो है ( २८ ) पुनि सतीजी बिचारकरती हैं कि विष्णु सगुणरूप ईश्वर हैं तिनकोभी सच्चिदानन्द कहौ सोविष्णु देव- तनकेहेतु नरतनधरते हैं पर विष्णु तौ सर्वज्ञ हैं जैसे महादेवसर्बज्ञ हैं ( २९ ) विष्णु तौ ज्ञानकेधाम हैं श्रीपति हैं असुरारि हैं ते विष्णु अज्ञानकीनाईं

**सुबिलोकी अजहुं प्रीतिउररहतनरोकी २७॥ दो०॥ ब्रह्मजोब्यापकबिरजअजनिर्गुणअकलअभेद सोकिदेहधरिहोइनरजाहिनजानहिंवेद २८चौ०॥ विष्णुजोसुरहितनरतनुधारी सोउसर्ब्बज्ञयथात्रिपुरारी २९ खोजहिंसोकिअज्ञइवनारी ज्ञानधामश्रीपतिअसुरारी ३० शम्भुगिरापुनिमृषानहोई शिवसर्बज्ञजानसबकोई ३१ अससंशयमनभयउअपारा होइनहृदय प्रबोध प्रचारा ३२ यद्यपिप्रगट**

कैसे अपर्नाप्रिया को ढूंढ़ैंगे यह तौ नहीं सम्भव है ताते ये जो राजपुत्र हैं सो नतौ ये निर्गुण निराकारब्रह्म हैं अरु नतौ ये सगुण ईश्वर हैं जिनको विष्णुकही अरु बिराट्कही सोनहीं हैं यहसतीजी निश्चयकरती भई ( ३० ) पुनि बिचारकरती हैं कि ये जो राजपुत्र हैं तिनको महादेवने सच्चिदानन्द परधामकहिकै नमस्कार कियो है धामकही स्वरूप बिग्रह ये जो हैंराजतनय ते सच्चिदानन्द मूर्त्ति सो सर्बोपरियहकहिकै प्रणामकरिकै तिनकी छबिदेखिकै नमस्कार कियो है धामकही स्वरूप बिग्रह ये जो हैंराजतनय ते सच्चिदानन्द मूर्त्ति सो सर्बोपरियहकहिकै प्रणामकरिकै तिन की छबिदेखिकै परमानन्दमय मग्न हैं यह बड़ो आश्चर्य्य है अरु महादेव की बचन बृथानहीं है काहेते कि महादेव ईश्वर हैं सर्वज्ञ हैं त्रिकालज्ञ हैं यह सबै जानते हैं ( ३१ ) हे भरद्वाज सती के हृदय में यह सन्देह भरिरह्यो है कि ये जो दशरथकुमार हैं नतौ निर्गुण हैं न सगुण ईश्वर हैं अरु महादेव का बचन बृथानहीं है यहमनमें त्रिधासंशय अपारभई हृदय में प्रबोध को प्रचार नहींहोत है ( ३२ ) यद्यपि सती प्रकटनहींकियो है तदपि अन्तर्यामी

श्रीमहादेव सब जानिलियो है ( ३३ ) तब महादेवजीबोलेहेसतीजी तुम स्त्रीसुभाव से यह संशय करती हौ ऐसी संशय कबहूं मनहुं में न ल्याइये ( ३४ ) काहेते जिनकी कथा अगस्त्यजी ने महेश से कह्यो है पुनि जिनकी भक्ति मैं अगस्त्यजी से कह्यो है ( ३५ ) सोई मेरे इष्ट हैं जिनको रघुबीर कही दशरथकुमारकही सतीजी ये जो दशरथकुमार हैं जिनको इहै स्वरूपताही को ध्यावते हैं ब्रह्मा नारद सनकादिक शुक शेष अगस्त्य जनक बशिष्ठ बामदेव याज्ञबल्क्य ब्यास बाल्मीकि इत्यादिकबड़ेबड़े धीर मुनीश्वर जे हैं जिनने अच्छीप्रकार वेद कै तत्त्वजाने हैं ते समस्त इनहीं रामचन्द्र को ध्यावते हैं जिनको हमने नमस्कार कियो है ( ३६ ) छन्दार्त्थ ॥ मुनि धीर योगीश सिद्ध इत्यादिक अपनेमन को निर्मल करिकै ध्यावते हैं अरु निगमागम पुराण इत्यादिक जेहिकी कीर्त्तिनेतिनेति करिकै गावते हैं ( ३७ ) सो यही रामचन्द्र हैं धनुर्द्धर सबके परे हैं ईश्वर हैं सबते भिन्न हैं अरु येई श्रीरामचन्द्र सच्चिदानन्द घनतेज भूतनिर्मल एकरस ते सर्बत्र ब्याप्त हैं आकाश पवन पांचहूं तत्त्व तीनिहूं गुण

नकहेउभवानीहरअंतर्यामीसबजानी ३३ सुनहु सतीतवनारिसुभाऊसंशयअसनधरीउरकाऊ ३४ जासुकथाकुम्भजऋषिगाईभक्तिजासु मैंमुनिहिसुनाई ३५ सोइममइष्टदेवरघुवीरासेवहिंजाहिसदामुनिधीरा ३६ ॥छन्दगीतका॥ मुनिधीरयोगीसिद्धसन्ततविमलमनजेहि ध्यावहीं कहिनेतिनिगमपुराणआगमजासुकीरतिगावहीं ३७ सोइरामब्यापकबह्मभुवननिकायपतिमायाधनी अवतरेउअपनेभक्त

में जैसे कोई सुगन्धहैतामें आह्लादव्याप्त है जैसे रसमें स्वादव्याप्त है जैसे आकाश में शब्दब्याप्त है जैसे सूर्य्यकीकिरणि में जलब्याप्त है जो कोई कहै कि सूर्यकी किरणिमें जलबृथा है तहां बिचार करिकै कहौ देखो तोसूर्य्य अपनी किरणिकरिकै जलबृष्टि करते हैं सूर्य्यकै किरणि सूक्ष्म है तामें जलसूक्ष्मतर है जो सूक्ष्मजल न होतो तौ सूर्य्यकी किरणिते जलकीवृष्टि न होती ताते सूर्य्य की किरणि में सूक्ष्मजल सर्बकाल में है तैसे जीवके आवान्तर ब्रह्मब्याप्त है इत्यादि सूक्ष्म के दृष्टांत सूक्ष्म की ब्यापकता कहे हैं अरु जीवकी ब्यापकताकरिकै सर्व देहधारी जेते हैं ते सब दुख सुख के भोक्ता ह्वै रहे हैं अनित्यको दृष्टांत नित्य में देते हैं तहां दृष्टान्तकोतात्पर्यदैकै पदार्थ की लक्षिकरावते हैं जिज्ञासूके बोधहेतु शिवजी कहते हैं हे सतीजी तुम श्रीरामचन्द्रको ऐसेजानहु जैसे सूर्य्य अरु सूर्य्यकोएकघनस्तेज है अरु एकप्रकाश है तहां तेजमें प्रकाशमिलो है एकही ह्वै रह्यो है अरु घनस्तेज जो है ताहीतेज के सूत्रते प्रकाशहू तेजमान् है परसामान्यतेज प्रकाश में है अरु सब भुवनको प्रकाशकिहे हैं तहां सूर्य्य तेजप्रकाशमें मूर्त्तिमान् है तहां सूर्य्य अपनेसघन तेज प्रकाश के आवरण ते नहींदेखिपरते हैं यह दृष्टांत है अब दृष्टांत कहते हैं श्रीरामचन्द्र मूर्त्तिमान् अखण्ड एकरस सूर्य्यस्थाने जानिये तहां न तौ उदय है नतौ अस्तहै नतौ प्रातःकाल है न तौ सन्ध्याकाल है नतौ मध्याह्नकाल है श्रीरामचन्द्र सच्चिदानन्द परब्रह्म बिग्रह है एकरस तेजप्रकाशमय हैं अरु जिनको सहजघनस्तेज प्रकाशमय सो चैतन्यरूप है ताही तेज के आवरण ते श्रीरामचन्द्र नहीं देखिपरते हैं अरु तेही तेजको वेदब्रह्मकहते हैं मन वचन इन्द्रीअगोचर है काहेते मन बाणी इन्द्री जो उहां लक्षिकीन तब लयह्वैजाती है पुनि को कहै अरु सघन जो तेज प्रकाशमय है सो अपने प्रकाश ते अनेकब्रह्मांडको प्रकाशकिये है ऐसे श्रीरामचन्द्र अनेक ब्रह्माण्ड में ब्याप्त हैं अरु सब के परेहैं सो येई रामचन्द्र हैं जिनको हमने नमस्कार कियो है सोई रामअनेक ब्रह्माण्ड के पति हैं सो तै जानु हे सती अपने भक्तनके हेतु अवती-

हितनिजतंत्रनितरघुकुलमनी ३८ सो० लागनउरउपदेशयदपिकहेउशिवबारबहुबोलेबिहंसिमहेशहरिमायाबलजानिजिय ३९ चौ० जोतुम्हरेमनअतिसन्देहू तौकिनजायपरीक्षालेहू ४० तबलगिबैठिरहौंबटछाहींजबलगितुमऐहहुमोहिंपाहीं ४१ जैसे जायमोहभ्रमभारीकरेउसोयतन विवेक विचारी ४२ चलीसतीशिवआयसुपाईकरैविचारकरौंकाभाई ४३ इहांशम्भुअसमन अनुमानादक्षसुताकरनहिं कल्याना ४४ मोरेहुकहेनसंशयजाही बिधिबिपरीतभलाईनाही ४५ होइहिसोइजोरामरचिराखा कोकहितर्कबढ़ावैशाखा ४६ अस

र्णभये रघुवंशकुल में काहे ते भक्तवात्सल्य है तहां राजादशरथ पूर्बजन्म में अखण्डभक्ति कियो तिनकेहेतु अवतीर्णभये साक्षात् जैसे कोई ऊंचे महलते नीचे अपनेअजिर में उतरिआवते हैं तैसे श्रीराम निजतन्त्रकहीं स्वतन्त्र हैं किंतु निजतन्त्रकही भक्तिहेतु लीलाकरिबे की इच्छा है सो लीलानित्य है सो तुमजानहु हे सतीजी ( ३८ ) सोरठा॥ हेभरद्वाजमहादेवजी अनेकप्रकारते उपदेशकियो पर सतीजी के हृदय में उपदेश नहींलग्यो तब महादेव हरिकीमाया अतिबलिष्ठ जानिकै विहंसिकै बोलतेभये ( ३९ ) हे सतीजी जो तुम्हारे मनमें अति सन्देह भयोहै तौ तुम कछु परीक्षा लेहुजाइ ( ४० ) तबलगि मैं यहि बटकी छाया तर बैठोहौंजबलगि तुम लौटिआवहुगी ( ४१ ) पर हे सती जेहियत्नते यह महामोह मिटै सोई करेउ बिबेक विचारिकै अपर कछु अधिक न करेउ ( ४२ ) शिवकी आज्ञा पाइके सतीजी परीक्षालेबेको चलतीभई बिचार करती हैं कि मैं केहिप्रकारते परीक्षालेउँ तबयह मनमें आयो कि सीताजीको स्वरूपकरौं ( ४३ ) अरु इहां महादेवजी यह बिचारकीन्ह कि दक्षसुता को कल्याण नहीं है ( ४४ ) काहेते जो हमारेहु कहेते संशय नहीं गई तौबिधिही विपरीत है किन्तु विधि कही कर्म कछु भलाई नहीं देखिपरै है ( ४५ ) तब तुरन्त बिचार कीन कि जो कुछ श्रीरामचन्द्र रचि राख्योहै सोई होइगो तर्कणा की शाखा बढ़ावै जो शोचकी तर्क करिये तौ मन कै बृत्ति शोचहीमें चली जाती है ऐसेही भगवत् विचार में जानब ( ४६ ) यह परम सन्तन के लक्षण हैं जो कुछ होइ सो रामरजाइ अरु कहते सब हैं तहां न तौ हानिमें शोच न तौ लाभ में हर्ष यह समुझिकै कि यहजीवअरु प्रकृति भगवद् बिभूति है परमेश्वर चाहैं सो करैं श्रीरामचन्द्र जीके जे परम भक्तहैं तिनको हर्ष शोच काहेमें होतहै जब कोईकाल में भजननहीं बनिपर्यो तब शोच करते हैं अरु जब भजन वनोचलो जात है तब

**कहिजपनलगेहरिनामा गईसतीजहंप्रभुसुखधामा ४७ दो० पुनिपुनिहृदयविचारकरिधरिसीताकररूप आगेहोइचलिपन्थतेहिजेहिआवतनरभूप ४८ लक्ष्मणदीखसतीकृतबेषा चकितभयेभ्रमहृदयबिशेषा ४९ कहिनसकतकछुअतिगंभीरा प्रभुप्रभावजानतमतिधीरा ५० सतीकपटजानेउसुरस्वामी समदर्शीसबअन्तरयामी ५१ सुमिरतजाहिमिटैअज्ञानासोइसर्ब्बज्ञराम भगवाना ५२ सती**

हर्ष में भरे हैं ऐसे विचारिकै शिवजी रामनाम जप करनेलगे आनन्दयुक्त अरु सुखकोधाम जो श्रीरामचन्द्र तहां को सतीजाती भई ( ४७ ) दोहार्थ पुनि पुनि हृदय में विचार करिकै श्रीसीताजीको रूपधरिकै जेहिमार्गमें नरलीलाकरत श्रीरामचन्द्र चलेजाते हैं तहां आगेजाइके सती प्राप्ति भई ( ४८ ) तहां लक्ष्मणजी की दृष्टि दशौदिशामें है तहां सती जबसतीरूपरहीं तब लक्ष्मणजी देखे अरु जब सतीरूपते सीतारूप धारणकरत सन्ते तब देखे तब लक्ष्मणजीके विशेष सन्देहभयो यह सतीजी कौन चरित कीन्ह्यों है किन्तु लक्ष्मणजी चकितभये हैं सतीजी में विशेषभ्रम जानिकै ( ४९ ) श्रीलक्ष्मणजी अति गम्भीर हैं कछु बोले नहीं काहेते कि सर्वज्ञता जो है अरु अन्तर्यामित्त्व जो है सो स्वाभाविक सामान्य एक गुण है श्रीरामचन्द्रको यह लक्ष्मणजी जानते हैं तहां यह विचार कीन्ह श्रीरामचन्द्रजीकी लीला यथार्थ कोई नहीं जानै है ताते इहांरघुनाथजी कछुचरित कीन्ह चाहते हैं सो समुझिकै लक्ष्मणजी कछुनहींबोले ( ५० ) तहां सर्वकेस्वामी श्रीरामचन्द्रजी सतीको कपट करतसन्तेजान्यो है काहेते सबके अन्तर्यामी हैं समदर्शी हैं सबके अन्तष्करणमें देशकाल दिशि बिदिशि सर्वत्र सूत्रात्मक व्याप्त हैं ( ५१ ) जिन श्रीरामचन्द्रकोनाम सुमिरेते सम्पूर्ण अज्ञान नाशह्वैजातहै काहेते परमात्मा परब्रह्म परमेश्वर सर्वज्ञ पूर्णभगवान् हैं भगवान् क्योंकहा ताकोअर्थ भगवान्कही षट्भग युक्त ऐश्वर्य्य धर्म्म यश श्रीवैराग्य मोक्ष तिनको स्वरूप कहते हैं ऐश्वर्य्य जाको अनेक ब्रह्मांडहै पुनि धर्म काको कहा सत्यवाक्य सर्वदाता निष्कपट शुद्धकर्म ताको धर्मकही पुनि यश काकोकही तेज जाके तेजकेआगे सूर्य चन्द्र अग्नि दामिनि इत्यादिक छिपिजाहिं श्रीकही शोभा स्वरूप करिकै सर्व गुणकरिकै शोभित है श्रीकही प्रताप जाको सबडरैं जाकी आज्ञा में पृथ्वी अप तेज वायु आकाश तीनिहूं गुण देव दानव मनुष्य इत्यादि चराचर वर्त्तमान हैं श्री कही लक्ष्मीजी जाकी आज्ञानुकूल ह्वैकै कोटिन ब्रह्मांडमें सुख भोग भरिदियो है ताको श्रीकही पुनि वैराग्य काकोकही शब्दस्पर्श

**कीन्हचहततहांदुराऊ देखहुनारिसुभावप्रभाऊ ५३ निजमायाबलहृदयबखानी बोलेबिहंसिराममृदुबानी ५४ जोरिपाणिप्रभुकीन्ह प्र-**

रूप रस गंधि चित्त बुद्धि मन अहंकार सात्विक राजस तामस इनसबन को अपने वशकिये हैं अरु इनकेपरे हैं ताकोवैराग्यकही पुनि मोक्षकाको कही सालोक्य भगवान् के लोकमें बसै समीप्य सदा निकटरहै सारूप्यजैसो भगवान्को रूप है तैसो रूपहोइ सायुज्य अलंकार होइकैरहै अथवा कोई के मत में जैसे सूर्य्यकोतेज घटफूटे सूर्य्यहीमें लीनहोइताको सायुज्यकही पुनिसारिष्टि मुक्ति सामान्य ऐश्वर्य्य अपने सामान्यऐश्वर्य्य देते हैं। येपांचमुक्तिहैं ताते ऐश्वर्य्य धर्म्म यश श्री वैराग्य मोक्ष येते षट्भग जामे संपूर्णहोहिं अरु अपने जनकोछ्रसहुकोदाता ताको पूर्णभगवान् कही जो स्वरूप षट्भगमेंकछुककमहोइताकोअंशकला विभूतिकही देखिये तौयेते षट्भग श्रीरामचन्द्रको बामचरण में षट्कोण अंक हैं तामें षट्भगशस्त्रकहतुहैं ताते श्रीरामचन्द्र पूर्णस्वयंभगवान् हैं श्लोक द्वै श्रीमन्महारामायणे ऐश्वर्य्येणचधर्मेण यशसाचश्रियैवच वैराग्यमोक्षषट्कोणैः संज्ञातोभगवान्हरिः१ पोषणंभरणाधारं शरण्यंसर्बब्यापकंकारुण्यंषड्भिः पूर्णरामस्तुभगवान्स्वयं २ अनेकब्रह्मांडको पोषणगुण अरुभरणगुण अरु आधारगुणअरुसर्बशरण्य त्वगुणअरुसर्बब्यापकत्वगुण अरुकरुणागुण येतेषड्गुण परमदिव्यपूर्ण श्रीरामचन्द्र स्वयंभगवान् हैं ५२ परब्रह्महैं कोटिनाब्रह्माण्डके स्वामी सबके नियंता हैं तिन श्रीरामचन्द्रजी से सतीजी दुरावकरिकैपरीक्षालीन चाहती हैं देखो तौ स्त्री स्वभाव में येती अज्ञानता है ( ५३ ) तब श्रीरामचन्द्र अपनी मायाकी प्रबलता विचारिकै सतीके निकटजाइकै मनमें बिहँसिकैदोनोंकरजोरिकै शीशनाइकै नमस्कारकरते भये ( ५४ ) पुनि मनुष्य की नाईं कोमलवाणी जामें अनेक मर्म्म के अर्त्थ सो श्रीरामचन्द्र बोलतेभये हमारो राम एसो नाम है अरु अयोध्या के राजा श्रीदशरथमहाराज तिनके हमपुत्र हैं पिता ने हमको बनदियो है हम बनमें आये हैं हमारीप्रिया तिनको कोई हरिलैगयो है हम बिकल ढूँढ़ते हैं श्रीजनकनन्दनी जी को कहूं तुम देख्यो तौ नहीं अरु तुम तौ दक्षप्रजापति की कन्या हौ अरु महादेव की प्रियाहहु सती ऐसो तुम्हारो नाम है नर नाग देव स्त्री जे पतिव्रता तिनमें तुम शिरोमणि हौ अरु भवानी जगत् की माताहहु सर्बज्ञहहु शिवकी सत्सङ्गिनीहहु सर्बयोग्यहहु हे सतीजी ताते हम तुमको नमस्कारकरते हैं काहेते हम राजपुत्र हैं अरु तुम अरु महादेव सबके पूज्यहौ ( ५५ ) पुनि श्रीरामचन्द्र बोलते भये हे सतीजी सबको ईश्वर

**णामा पितासमेतलीननिजनामा ५५ कहेउबहोरिकहांवृषकेतू बिपिनअकेलिफिरहुकेहिहेतु ५६॥दो०॥ रामवचनमृदुगूढ़सुनि उपजा अतिसंकोच सतीसभीतमहेशपहँ चलीहृदयबड़शोच ५७॥चौ०॥ मैं शङ्करकरकहानमाना निजअज्ञानरामपरआना ५८ जाइ**

अरु देव दानव मनुष्य मुनि अरु चराचर सबके पूज्य सबके कर्त्ता सर्बज्ञसत्यबादी सत्यसंकल्पी ऐसे श्रीवृषकेतु तिनको परित्यागकिहे बनमें अकेली तुम काहेको फिरती हौ श्रीरामचन्द्र के बचनमें अनेकन अर्त्थ हैं तहां येते समुझि परते हैं श्रीरघुनाथजी को शिवजी सच्चिदानन्द कहिकै नमस्कारकीन अरु सतीजी यहजान्यो कि निर्गुण ब्रह्म जो है सो तौ ये नहीं हैं अरुसगुणईश्वर विष्णु जो है सोभी ये नहीं हैं अरु शिवजी राज पुत्र को सच्चिदानन्दकह्यो यह संशयभई तहां सतीजीको श्रीरामचन्द्रजी येही स्वरूप के आश्रय दोनोंस्वरूप लक्षिकरावते हैं सतीजी श्रीसीताको रूपधारण किये हैं तहां श्रीरामचन्द्र बोलतेभये हे सती तुम महादेवकी अवज्ञाकीन अरु श्रीसीता को रूपधरेहु ताते महादेव तुमको परित्यागचुके अब तुम अकेलिही भइहु यह अपने व्यापकत्त्व अन्तर्य्यामित्व रूप गुणजनायो है अरु सर्बज्ञता भी दिखायो है अरु यह दिखायो कि हम राजपुत्रसच्चिदानन्दब्रह्म सर्बब्यापी एकरस ऐसेराजपुत्र अखण्डहम हैं अरुजोतुम अपनेमनमें कहेहु कि ये तो विष्णुभी नहीं हैं सोआगेदेखिलेहु ( ५६ ) दोहार्त्थ ॥ तहां श्रीरामचन्द्र जू की बाणी अतिकोमल अतिगूढ़ अर्त्थ सो सतीजी सब समुझिगईं तब अतिसंकोच बशह्वैकै बड़ेशोचसंयुक्त महेश के पास सतीरूप ह्वै कै चलतीभईं ( ५७ ) तहां सतीजी शोचकरती हैं हे परमेश्वर हाय हाय मैं अपने अज्ञान ते शंकर को कहा नहीं मान्यों अरु अपनी अज्ञानता श्रीरामचन्द्र में आरोपण कियों अब धौं विधाताका करैगो ( ५८ ) अब महेशजी को कौनउत्तर देहौंजाइ हाइहाइ मोंपै कछुकरतनहीं बन्यो सतीके दारुणदुःख उत्पन्नभयो हे भरद्वाज जे कोई भागवत की बाणी का अपमान

करते हैं तिनको दिनप्रति क्लेशैं फलप्राप्त होते हैं ( ५९ ) तब श्रीरामचन्द्र जान्यो कि सती दुःखितभई तब अपनोप्रभाव कछुक अपरदिखावते हैं शिवकीप्रियाजानिकै अपनेप्रभाव में अपनो स्वरूप सतीजीको दिखावते हैं कृपाकरिकै ( ६० ) सतीजी शोचसंयुक्तशिवके पास चलीजाती हैं तब आगे देखती हैं श्रीरामचन्द्र जी श्रीजानकीजी श्रीलक्ष्मणजी तीनिहूं स्वरूप सतीजी देखतीभई पर कैसे स्वरूप देखतीभई षोडशौ शृंगारसंयुक्त देखे ( ६१ ) पुनि पीछे देखतीभई तहां

**उतरअबदेहौंकाहा उरउपजाअतिदारुणदाहा ५९ जानारामसतीदुखपावा निजप्रभावकछुप्रकटजनावा ६० सतीदीखकौतुकमग जाता आगेराम सहितसियभ्राता ६१ फिरिचितवापाछेप्रभुदेखा सहितबन्धुसियसुन्दरबेषा ६२ जहँदेखहिंतहंप्रभुआसीना सेव-**

श्रीराम सीता लक्ष्मणजी तीनिहूंस्वरूप सुन्दरवेष शृङ्गार की रचनासंयुक्त देखे श्रीरामचन्द्र को स्वरूपकैसो है जैसे नीलमणि की चमक आवरणरहित झकाझक्क हलहलात परब्रह्म मूर्त्ति प्रकाशमय मन वचन कर्म अगोचर तैसही श्रीजानकीजीको स्वरूप जैसे पद्मरागमणि पुनि जैसे शरदऋतुके बालसूर्यनिर्मल आवरणरहित झकाझक्क प्रकाशमय मन वचन इन्द्री अगोचर तैसेंही श्रीलक्ष्मणजी को स्वरूप जैसे पिरोजमणि झकाझक्कहलहलात प्रकाशमय आवरणरहित मन बचन कर्म अगोचर ऐसोस्वरूपपुनि परमदिव्य प्रकृतिरहित चिद्रूप परब्रह्म मूर्त्ति श्रीरामचन्द्रजी हैं अरु ब्रह्मानन्द परमानन्द एकरसमूर्त्ति श्रीजानकीजी हैं अरु परमशुद्ध निर्मलएकरस जीवतत्त्वरूप निर्बिकारमूर्त्ति श्रीलक्ष्मणजी हैं ऐसेही तीनिहूं स्वरूप सच्चिदानन्द परमदिव्य एकरस भिन्नभिन्न सतीजी देखतीभई काहेतेश्रीरामचन्द्र जी कृपाकरिकै सतीजीको परम दिव्यदृष्टि दियो है ताते देखतोभई शृङ्गारसंयुक्त सो कहते हैं तहां सतीजी देखतीभई श्रीरघुनाथजी अपनी परमदिव्य त्रिपादविभूति दिखावते हैं सो परमदिव्य संधिनी संदीपनी आह्लादिनी संधिनी जीवपरमात्मा की संधिमिलावैहै सो संधिनी संदीपनी परब्रह्म को स्वरूप जीव के अन्तरदीप्तकरै है सो संदीपनी आह्लादिनी जीवके अन्तर परमानन्द परमात्मा को आह्लादकरै है ये तीनिहुं नवधा प्रेमापराभक्ति हैं कंचनमणिमय भूमि अरु जेते तरु तृण सो कल्पतरुमय जाके पेड़स्कन्ध शाखापर्ण फूल फल यथायोग्य दिव्य हेममणिरंगतद्वत् अरु अमृतमयरस सर्बकाल एकरस ऐसेही दशौदिशा आकाश पाताल मध्यसम्पूर्ण ब्रह्माण्ड श्रीअयोध्यास्वरूप देखिपरयो तहां अनन्तसिंहासन दिव्यरत्न मणिनमें दशौदिशा परिपूर्ण तहां सिंहासनप्रति श्रीसीता श्रीरामचन्द्र श्रीलक्ष्मणसंयुक्त आसीनहैं शीश पै किरीट कुण्डलकोटिन सूर्य के प्रकाश कोटिन चन्द्रमाकी शीतलता अरु अलकैंबंक कपोलन पै झुकिरही हैं मधुपकी अवलीकी शोभाहरत हैं मुखपंकज शोभित है अरु भाल में युगरेख तिलकदामिनी की छटाहरत है भृकुटीबंक कामकी धनुषकीछवि हरत है श्वेत अरुण श्याम कमल तरुणतेहि की शोभाहरतु है लोचन नासिका अतिमनोहर तहां एक मोतीशोभित है अधर पर हलत है जनुरति जो है सो अपनी सेंदुरदानी छोटीसी चन्द्रमाको दियो है तब पूर्णचन्द्र जो निष्कलंक तिनने अल्पदामिनी ते पोहिकै अपने हृदय में पहिरयो है कपोलआदर्शवत् निर्मल हैं कुण्डलकझलकमानहुं मैननृत्यकरत है अरु कुण्डल अरु अलकैं दोनों की हलनिजनुरविसुवन अरु राहुसुवन लरते हैं मिलते हैं शशिके सुधाहेतु पुनि जनु नागन के छौना अपनेपिता की मणि अपर्नामणि संयुक्त चन्द्रमा को देते हैं बदले में अमृतपान करते हैं अधर बिम्बकी अरुणताहरत है दशनहीं की पोढ़ाई प्रकाश निर्मलरंग दाड़िमके बीजकीसघनता रंग निर्मलता दामिनीकी छटा ईषद्धास्य प्रकाशमय अनूपम ऐसेदशन हैं बदन अनूप है अरु चिबुक जैसे नीलगोलमणि तामें पीतबिन्दु शृंगारहूको शृंगार योगीशन के चित्तहरत हैं ग्रीवत्रेरेखा सो सुन्दर तार्कासीव तीनिरेखाहैं यहिके परे सुन्दरतानास्ति है कंठमें गजमुक्तन के कंठा अनूप पुनि कौस्तुभ मणि त्रिकोण है सो शुद्धसमिष्टी जीवतत्त्व जगमगाइरह्यो है पुनि वक्षः स्थलविषे दक्षिणभाग में श्रीबत्सलांक्षण परमदिव्य सम्पूर्ण श्रीतेहिको समिष्टी स्वरूप श्रीजानकीजीको दूसररूपसुन्दर प्रकाशमय भुक्ति मुक्ति भक्तिप्रदायनी सर्बदा पुनि पदिक ढिगन में मणिनकी कनीलगी हैं जनु चौकोण चन्द्रमा के ढिगन बृहस्पति शुक्र इत्यादिकनक्षत्रन की सभा अचल बैठी है पुनि मोहनमाला मुक्ता पद्मरागमणि पिरोजमणि मुनि वैजयन्तीमाला नीलहरित लालश्वेतपीत मणिनमय जगमगाइ रह्यो है पुनि बनमाला तुलसीदल श्वेत पीत फूल पदकंजमें नूपुरतप्त हेम

इव प्रकाशमय मणिनकीकनी जटित स्वाभाविक ओंकारशब्द मधुर मधुर होते हैं जनु मुनिनके निर्मल मन चित्र बिचित्र मधुकर रूप चरणकमल के मकरंद पानकरते हैं अरु आनन्द से गुंजार करते हैं अरु पदके नखनकी शोभाजनु पंकजके दलनपर मुक्तानकी अवलीबैठीहैं अरु दोनोंचरण के तल में मनोहर अंक चालिस अरु आठशोभित हैं दक्षिणचरणके मध्यमें अष्टांगयोग रूपऊर्ध्वरेखा है १ मध्यएड़ी में सर्बकल्याण स्वरूपस्वस्ति कहै २ ऊर्ध्वरेखा के बामें स्वस्तिकके आगे अष्टांगयोग अष्टसिद्धि स्वरूपवअष्टकोण है ३ सम्पूर्ण श्रीस्वरूप श्री है ४ क्रूरबुद्धि शमनकरिबे को हल है ५ कर्मके कूटिबे को मूशल है ६ क्षमा क्षिति धारिबेको शांतस्वरूपशेष है ७ प्रलयस्वरूप बाण है ८ निर्मल आकाश अंबर है ९ जो भगवान् के हाथ में पद्म है सोई अष्टदल कमल है १० परमदिब्य पुष्पकबिमानसर्बपदार्त्थ पूर्ण है ११ पापपर्बत नाशकरिबे को बज्ररूप ब्रह्म है १२ अंगुष्ठमध्य में शुद्धयज्ञ स्वरूपयव है १३ ऊर्ध्वरेखा के दाहिने स्वस्तिक के आगे चारिहूपदार्त्थ पूर्ण कल्पतरु है १४ मनमतङ्ग फेरिबेको अंकुश है १५ सर्बबिजयरूप ध्वजा है १६ त्रैलोक्य में त्रैतापरूप मुकुट है १७ जो भगवान् के हाथ में सो चक्र है दुष्टनको संहारकर्त्ता १८ पुनिसिंहासन परमसंतोष बोधरूप ही है १९ पुनि चमर षट् बिकार को नाशकर्त्ता ऐश्वर्य्यरूपही है २० पुनि छत्र सर्बरक्षक शांति निष्कंटककर्त्ता श्रीरामचन्द्र की दयारूप ही है २१ पुरुषअंक सर्बसाक्षी मूर्त्तिमान् चरण सेवाकरत है शांतरस रूपही है २२ पुनि यवमाला शृङ्गारस्वरूप है २३ पुनि यमदण्ड कालरूप है यमदण्ड बचावत है परमदिब्य अनन्त गुणमय शोभित है क्रमही तेजानब पुनि बामचरण के मध्य में श्रीसरयू है श्रीरामचन्द्र की करुणारूप ही है पुनि एड़ी के मध्य में गोपद है कामधेनुही है परमदिब्य गुणदाता है सरयू दाहिन गोपद के आगे क्षिति है परमदिब्य गुण उत्पन्नकरत है पुनि अमृत कुम्भ है सर्ब मङ्गलरूप है पुनि पताका है शुभ कीर्त्तिरूपही है पुनि जम्बूफल है रामरूप को दरशावत है पुनि अर्द्धचन्द्र है बाह्यान्तर की क्रूरता हरत है पुनि पांचजन्य शंख है जो भगवान् के हस्तकमल में शोभित है सोई चरणसेवन करत है अनहद शब्द जामें स्वाभाविक होत है पुनि षट्कोण है षट् ऐश्वर्य्य रूप ही है पुनि त्रिकोण है त्रैकाण्ड रूपही है समस्त त्रिदोष हरै है पुनि गदा है भगवान् के हस्त कमल में शोभित है दुष्टन को नाशकरत है पुनि वहै चरणसेवन करत है पुनि जीवरूप है जगमगाइ रह्यो है पुनि अंगुष्ठ में बिन्दु है सो प्रकाश रूपही है वात्सल्य शृंगार रसमय है पुनि सरयू के बामदिशिमें गोपद के आगे शक्ति है मूलप्रकृति रूप ही है सम्पूर्ण जगत्को कारण मूर्त्ति है प्रकृति के बिकार हरति है पुनि अमृत कुण्ड है जामें मुनीश्वरनको चित्त मीन ह्वैरहे हैं अमर करतु है पुनि त्रिबली है तीनिगुण हरत है पुनि त्रैदेव एक एक रूप ह्वैकै चरण सेवन करते हैं पुनि मीन है संपूर्ण दिव्य जो सद्गुण है सो समस्त समिष्टी रूप है पुनि पूर्ण चन्द्र है परम आह्लाद रूपही है पुनि बीणाहै सम्पूर्ण राग रागिनी तालमूर्च्छनास्वर ग्राम इत्यादिकन को समिष्टी रूपहै पुनि बेणु है जामें स्वाभाविक मधुर शब्द होतहै जो योगी सुनीशन के चित्त को आकर्षण करतु है पुनि धनुष है महाकाल रूपही है बीररस रूपही है मनके बैरी हरतु है पुनि तून है सख्य रस रूपही है पुनि हंसहै दास्यरस विवेकरूप ही है पुनि चंद्रिका है शृंगाररस बिजय सुकीर्त्ति रूप ही है येते अठचालिस अंकन के स्वरूप मैंने सूक्ष्मै कहे हैं अरु श्रीमन्महारामायण में अठचालिस अध्यायमें नब्बे अरु एक्यानबे श्लोक कहे हैं अंकन के रंग ऐश्वर्य स्वरूप अरु जो अंक श्रीरामचन्द्र के दाहिने पगमें है सो श्रीजानकी जी के बाम पगमें है जो श्रीराम के बामपग में है सो श्रीसीताके दाहिने पगमें है राज्यासन श्रीरामचन्द्र बैठे हैं सुखासन श्रीजानकी जी बैठी हैं श्रीरामचन्द्र के पीताम्बर शोभित है कटि में बाल सूर्य की ज्योति हरतु है कटि किंकिणी तीनि अवली पुनि यज्ञोपवीत तड़ित की शोभा हरतु है पुनि बाजूबन्द हेमरत्नमय शोभित है पुनि कंकण तीनि अवली यवाकार हेमरत्नमय है पुनि मुद्रिका हेमरत्नमय है बिशाल भुज हैं नखजनु पंकज दलनपर मोतिनकी अवली है अनूपम धनुषबाण चित्र विचित्र लिहे हैं नखशिख लौं अनूपमशोभा बनिरही है यहीप्रकार ते जहांजस चाही षोड़शौ शृंगार हैं नखशिखलौं अद्भुत अलंकार चन्द्रिकादिक अंगराग इत्यादिक संयुक्त श्रीजानकीजी शोभित हैं पर येते अलंकार फूलहूते हरुहैं दाहिनेकरकंज में नीलकमल सुन्दर लिहे हैं अरु बामकरमें बिचित्र गेंद लिहे हैं सीता रामचन्द्रजीके बामांगबिषे स्थितहैं अरु जैसे श्रीरामचन्द्रैजी के शृंगारकहे हैं तैसेही श्रीलक्ष्मणजीको जानिलेब

श्रीरामचन्द्रके दाहिनेभागमें चमरलिहे ठाढ़े हैं श्रीसीतारामजीके मध्य में श्रीभरतजी छत्रलिहे श्रीसीतारामजी के पाछे ठाढ़े हैं अरु श्रीभरतजी के बाम भाग में श्रीजानकीजी के बामदिशिमें शत्रुहनजी व्यजनलिहे ठाढ़ेहैं तहां तीनिहूंभाईको एकहीजानब अरु हनुमान् अग्रभाग में श्रीमद्रामायणगान करतेहैं अपर पार्षद षोड़शौ हनुमान् सुग्रीव अंगद दधिमुख द्विविद मयंद जाम्बवन्त सुखेन दरीमुख नील नल गवाक्ष पनस गन्धमादन बिभीषण इत्यादि अनन्त पार्षद ते सब किशोरमूर्त्ति श्रीराम लक्ष्मण के रूप श्याम गौर ते सब सेवामें अनेकन अनेक पदार्त्थ लिहे अमित छत्र चमर व्यजन धनुष बाण बेंत इत्यादिक लिहेठाढ़े हैं यथायोग्य ॥ प्रमाणअगस्त्यसंहितायांउत्तरार्द्धश्लोकाः॥ षोड़शपार्षदानित्यादिव्यदेहाव्यवस्थिताः किशोरावयसामध्यारामलक्ष्मणरूपिणः १ श्यामगौडाःसुमनसाःकामादधिकसुन्दराः अनेकानिपदार्थानिगृहीताःकरकंजकैः २ मनोवाक्कर्मभिः सर्वेरामसेवासुतत्पराः स्थिताः समीपगाः श्राद्धाः सीतारामैकमानसाः ३ यादृशीरामवांछास्यात्तादृशोहिभवंतिते रामाभिलाषिणःसर्वेरामरूपैकतत्पराः ४ हनुमानथसुग्रीवोह्यंगदोद्विविदस्तथा मयंदश्चसुखेनश्च कुमुदश्चदरीमुखः ५ नीलोनलोगवाक्षश्चपनसोगंधमादनः बिभीषणोजाम्बवन्तःदधिमुखाषोड़शाःस्मृताः ६ अरु जानकीजीके निकट पंच अष्ट षोड़श इत्यादिक सखी अनेक षोड़शौशृंगार बारहौआभूषण नित्य श‍ृङ्गार आभूषण सदा सब मध्यकिशोरी नित्य एकरस अनेक पदार्त्थ लिहे ठाढ़ी हैं आह्लादिनी द्वौदिशि सहजानन्दिनी मदनमंजरी चन्द्रकला चन्द्रावती चन्द्रमुखी इति षष्टबिमला उत्कर्षिणी क्रिया योगा पार्वती ईशाना ज्ञाना सत्या इति अष्ट उज्ज्वला कांचनी चित्रा चित्ररेखा सुधा सुखी हंसी प्रहंसी कमला विषदाक्षी सुदन्शका चन्द्राननी चन्द्रभद्रामाधुर्य्या शालिनी कर्पूरांगी बरारोहा इतिषोड़श पुनि रघुनन्दन की

**हिंसिद्धमुनीशप्रवीना ६३ देखेशिवविधिविष्णुअनेका अमितप्रभावएकतेएका ६४ बन्दतचरणकरतप्रभुसेवा विविधिवेषदेखे**

सखी षष्ठ आह्लादिनी द्वौदिशि चारुशीला अतिशीला सुशीला हेमालक्ष्मणा इतिषष्ट पुनि अष्ट बागीशा माधवी हरिप्रिया ममजीवा नित्या विद्या सुविद्या कूटरूपा इतिअष्ट पुनि षोड़श शोभना सुभदा शांता सन्तोषा सुखदा सत्यवती चारुस्मिता चारुरूपा चार्वांगी चारुलोचना हेमांगी क्षेमाक्षेम दात्री धात्री धीरा धरास्मृता इति षोड़श इत्यादिक अनन्तसखी श्रीजानकीजीके निकट अनेकपदार्त्थलिहे मङ्गल सेवा में तत्पर हैं सब (६२) सम्पूर्ण भूमितप्त हेमइव प्रकाश शीतलमय निर्मल शीशाइव तहां सतीजी जौनिहीं दिशा देखती हैं भूमितल आकाश जहां देखती हैं आकाश पाताल निर्मलदिशि बिदिशि श्रीसीताराम लक्ष्मण सिंहासनपर आसीन हैं अनन्त सिंहासन सिंहासनप्रति श्रीसीताराम बिराजेहैं अखिल ब्रह्मांड कोष में परिपूर्ण शोभा ह्वै रही है जहांतहां सिद्ध कपिलदेव लोमसइत्यादिक सेवते हैं अरु मुनीश्वर शुक सनकादिक नारद बाल्मीकि ब्यास इत्यादिक सेवतेहैं पर सब किशोररूप हैं अरु जैसे अनन्त श्रीरामचन्द्र के स्वरूप हैं तैसेही इनसबके अनन्तरूप हैं (६३) पुनि जहांजहां श्रीसीतारामचन्द्र को आसीनदेखे तहांतहां सदाशिव अरु ब्रह्मा अरु विष्णु अनन्त देखे तहां विष्णु चतुर्भुज गदा पद्म शंख चक्र परम दिव्य किरीट कुण्डल कमलनयन चन्द्रबदन कौस्तुभ भृगुलता श्रीवत्सपदिक मोतिन के माला पीताम्बर किंकिणी यज्ञोपवीत बनमाल नूपुर चरणकमल ऐसे परमदिव्य अलङ्कार अनूपम श्यामस्वरूप कोटिनसूर्य को प्रकाश किरीट इत्यादिक अलङ्कार कोटिन घन दामिनी इत्यादिकनकी शोभाहरत है कौस्तुभ भृगुलता श्रीवत्स येते तीनिलांक्षण छोंड़ भागवान् विष्णु स्वरूप अनन्त पार्षद अनेक पदार्त्थलिहे सङ्गही हैं ऐसे विष्णुभगवान् जिनको अमित प्रभाव है अरु ब्रह्मा दिव्यरूप सहित पार्षदन चारिहूमुख ते वेदपढ़त अरु शिव परमदिव्य कल्याणरूप सहितपार्षदन संयुक्त श्रीरामयश गानकरत ऐसे अनेक अमित प्रभाव जिनके (६४) अरु तीनिगुण काल कर्म सुभाव दिव्यरूप अरु इन्द्रबरुण कुवेर यमराज अग्नि चन्द्र सूर्य्य शुक्र बृहस्पति इत्यादिक अमित देवता देखेदिव्यरूप अरु सहित पार्षदन अमित ऐश्वर्य्य संयुक्त तहां शिव ब्रह्मादिक समस्त देवतनको संगलिहे सब संयुक्त विष्णुजो हैं भगवान् ते सहित देवतन ऐश्वर्य्य शक्तिनसंयुक्त श्रीरामचन्द्रकी स्तुति करते हैं चरणार-

**सबदेवा ६५ ॥दो०॥ सतीविधात्रीइन्दिरादेखेअमितअनूप जेहिजेहिवेषअजादिसुर तेहितेहितनअनुरूप ६६ चौ०॥ देखेजहंतहं रघुपतिजेते शक्तिनसहितसकलसुरतेते ६७ जीवचराचरजेसंसारा देखेसकलअनेकप्रकारा ६८ पूजहिंप्रभुहिदेवबहुबेषा रामस्व-**

बिन्द को सेवन करते हैं पर एकएक देवतन को पृथक् पृथक् रूपवेष सतीजी देखती हैं परस्वरूप प्रति आकृति अरु वेष कछुक कछुक भिन्नभिन्न देखती हैं ( ६५ ) दोहार्थ॥ तहां महादेव के समीप सतीजी अपनोस्वरूप अनेक देखती हैं अरु इन्द्राणी अनेक सरस्वती सावित्री गायत्री अनेक देखती हैं अरु लक्ष्मी अनेक देखती हैं ऐसेही जेते देवता ब्रह्मादिक हैं तिनसबन के वेष अनुरूप तिनहीं के समीप तिनही तिनही की शक्ति देखतीभईं श्रीजानकीजी की सेवा सब करती हैं ( ६६ ) श्रीरामचन्द्र जी श्रीसीता लक्ष्मणजी के स्वरूप अनेकन सतीजी देखती हैं अपने आगे पीछे आकाश पाताल दिशा उपदिशा सतीजी देखती हैं जहां जहां देखती हैं तहांतहां रघुपति के स्वरूप अनेकन देखती हैं अरु जेते रघुपति के स्वरूप देखती हैं तिन श्रीरामचन्द्र के निकट एकएक स्वरूपप्रति अनेकन देवताअरु शिव ब्रह्मा विष्णु निजनिज शक्तिनसंयुक्त सब देवतनको सतीजी देखती हैं श्रीरामचन्द्रजी की सेवाकरते हैं ( ६७ ) पुनि जेते जीवचरअचरसंसार में हैं तेते सब दिब्यस्वरूप श्रीरामचन्द्रजीकी सेवा यथायोग्य करते हैं पर जेते जीव देव दानव मनुष्य चारिखानि देखे सब दिब्यरूप परभिन्नभिन्नरूप आकृति सबकीदेखे जैसे कोटिन मनुष्य देखिये पर कछुक सबके रूप आकृति पृथक्पृथक् देखिपरती है तैसे ही सबको देखती हैं ( ६८ ) यथायोग्य श्रीरामचन्द्रजीके पद पंकज पूजते हैं बहुवेष बहुआकृति बने हैं अरु तहां श्रीरामचन्द्र को स्वरूप देखती हैं अनन्त पर न दूसरवेषदेखे न दूसररूप देखे न दूसर आकृति देख्यो है तहां परिपूर्ण परब्रह्म सच्चिदानन्द मूर्त्ति श्रीरामचन्द्रजी अरु परिपूर्ण पराभक्ति सच्चिदानन्द बिग्रह श्रीसीताजी अरु नित्य शुद्ध जीवतत्त्व समिष्टीरूप सच्चिदानन्द मूर्त्ति श्रीलक्ष्मणजी तीनिहूं स्वरूप बिग्रह अखण्ड एकरस नखशिखलों शृङ्गार अद्भुत स्वरूप सतीजी देखती हैं ( ६९ ) रघुपति क्यों कहा॥ विश्वकोषे श्लोकार्द्ध ॥ रघुजीवात्मबुद्धिश्च भोक्ताभुकचेतनस्तथा रघुसंज्ञा जीव देवदानव मनुष्यादिक चराचर अनन्त जीव सबकेपति सबसेवते हैं तिनको सतीजी देखती हैं तेई रघुपति रघुवंशकुल को संसारते रक्षाकरिकै परमपद दीन ताते रघुपति कहा अवलोके अमित श्रीरघुपतिको श्रीसीताजीको श्रीलक्ष्मणजी को देखे सोई वेष सोई आकृति तदाकार अनन्त रघुपति अनन्तसीता अनन्त लक्ष्मण एकरस एकमूर्त्ति एकहीवेष रूपसती जी दे-

**रूपनदूसरदेखा ६९ अवलोकेरघुपतिबहुतेरे सीतासहितनवेषघनेरे ७० सोइरघुबरसोइलक्ष्मणसीता देखिसतीअतिभईसभी**

खती भई जेते अनन्त श्रीरामस्वरूप देखे तहांतहां श्रीरामजी के निकटचहुंफेर मण्डलाकार ठाढ़े करजोरे इन्द्रादिक देवता अरु शिव ब्रह्मा श्रीविष्णु भगवान् इत्यादिक अनन्त ठाढ़े हैं पर इनसबके अनन्त रूप देखे पर सबके देवतन कै आकृतिरूप वेष कछुक कछुक भिन्नभिन्न देखती हैं सतीजी देखिकै अति भय को प्राप्तभई तहां शिव के बचन अनुसूत अरु सती के सन्देह के अनुसूत श्रीरामचन्द्र अपनो स्वरूप परात्परतर गुह्याद्गुह्य तम ऐसो स्वरूप कृपाकरिकै दिखाये हैं काहेते श्रीरामचन्द्र सतीको प्रणाम कीन्ह्यो है तब सर्बज्ञ अन्तर्यामित्व व्यापकत्त्व गुण धर्म्म सतीको दिखाइदियो अरु अपनो अद्वैत द्विभुज स्वरूप एकरस अनन्त स्वरूप दिखावतेभये तहां अनन्त ब्रह्मा शिव विष्णु अपनी सेवा में दिखाये हैं काहेते कि सतीजी प्रथम यह संदेह कीन्ह्योरहै कि ये जो राजपुत्र हैं तिनको महादेव सच्चिदानन्द बिग्रह परात्पर तरकह्यो है अरु तिनको स्वरूप देखिकै प्रेममें मग्नह्वैगये हैं अरु सच्चिदानन्द दुइस्वरूप को कही एक ब्रह्म जो सर्वब्यापकहै ताको सच्चिदानन्दकही अरु एक विष्णु को सच्चिदानन्द कही सो ये जो राजपुत्र हैं ते दोनों में एकहू नहीं है अरु शिव को वचन बृथा नहीं है तहां श्रीरामचन्द्रजी अपनो निर्गुणै गुण अन्तर्यामी प्रकाशरूप प्रथम दिखायो है अरुब्रह्मा शिव विष्णुको अपनो अंशभूत ईश्वररूप दिखायो है अरु इन्द्रादिक देवतनको अपनी उत्तम बिभूति जीवकोटि में दिखायो है अपने आश्रय सबको दिखायो है ब्रह्मा शिव विष्णुको गुणसंयुक्त दिखायो है अरु अपनो स्वरूप गुणातीत दिखायो है अरु व्यापकब्रह्म अपनो स्वरूप दिखायोहै सो निर्गुण रूप अरु धनुषधर अपनो स्वरूप दियो है

कोई यह कहते हैं कि परमात्मा को बिग्रह ताको रूपकही सो रूप नित्य है पर रूप में व्याप्तब्रह्म ताको स्वरूपकही देहीदेह ताको बिभाग मानते हैं सो यह जाको मतहोइ ताको होइजाइ पर यह शिव अगस्त्य व्यास बाल्मीकि को मत नहीं है अरु तुलसीदासजी को मत नहीं है इनको मत यह है श्रीरामचन्द्र धनुर्द्धर सीतापति स्वरूप हैं अरु तिनको प्रकाश समूह को रूप है ऐसो परमस्वरूप परम दिव्यलीला सतीजी देखतीभई त्रैतत्त्व अखण्ड एकरस देखती भई तहां व्यापकतत्त्व अरु ईश्वरतत्त्व सो समस्तश्रीरामचन्द्र के आश्रय देख्यो अरु त्रिपाद बिभूति सन्धिनी सन्दीपिनी आह्लादिनी विद्या संयुक्त देख्यो पुनि श्रीशक्तिलीला शक्तिभूशक्ति समस्तसीताजीके आश्रय देख्यो अरु जेते जीव समस्त श्रीलक्ष्मणजी के आश्रय देख्यो श्रीरामसेवामें सवदेख्यो भलीप्रकारते तदपि शिवके वचन के अपमानते बोधनहीं भयो बिकलभई इहां बारबार कहेको पुनरुक्ति न मानव यह प्रकरणऐसे हैं ( ७० ) तहां प्रमाण है श्रीमन्महारामायणेशिववाक्यंपार्वतींप्रति श्लोक॥ इच्छाभूतोक्षरस्तस्यचाक्षरस्तेजउच्यते निरक्षरोघनस्तेजोवर्त्ततेजानकीपते: १ अगस्त्यसंहितायां। परात्परतरंतत्त्वंरामंदशरथात्मजं धनुर्बाणधरंवीरंचिन्मयानन्दविग्रहं २ वाल्मीकीये अयोध्याकाण्डे सुमित्रावाक्यं कौशल्यांप्रति॥ सूर्य्यस्यापिभवेत्सूर्य्योह्यग्निरग्नि: प्रभोप्रभु: श्रिय: श्रीश्चभवेदग्र्यार्कीर्त्त्याकीर्त्ति:क्षमाक्षमा: ३ श्रीभागवतेएकादशे योगीश्वरवाक्यं ॥ सोब्धिंबबन्धदशवक्त्रमहन्सलंकंसीतापतिर्जयतिलोकमलंघ्नकीर्त्ति: ४ सनत्कुमारसंहितायां श्रीवेदव्यासवाक्यं युधिष्ठिरंप्रति॥ तत्त्वस्वरूपंपुरुषंपुराणंस्वतेजसापूरितविश्वमेकं राजाधिराजंरविमण्डलस्थंविश्वेश्वरंरामहंभजामि ५ शंकराचार्य्यवाक्यं श्रीरघुनाथनाटकं ॥ निजतनुप्रभाभासिताखिलंज्वलितरत्नयुग्मदिव्यकुण्डलं पदविराजितंक्षोणिमण्डलंभजमन:सदाराममद्भुतम् ६ पुन: श्रुति:॥ धीरा:यस्यमधीतंसैव राम:दाशरथी सैवघनस्तनुभावब्रह्मेतिचेत: सम्मेलनंविधिसंगीतायां श्रुति: ७ प्रकृत्यासहित: श्याम: पीतवास: प्रभाकर: द्विभुज: कुण्डलीरत्नमालीधीरोधनुर्द्धर: देहीदेहविभागेस्यात्सच्चिदानन्दविग्रह: श्रुति: ८ श्रीस्कन्दनिर्वाणखण्डे विष्णुरुवाच॥ नमोरामायविभवेतुभ्यंविश्वैकसाक्षिणे नमोविश्वैकदेहायनमोविश्वातिगायते ९ नमोनित्यायशुद्धायप्रभवेकालमूर्त्तये दशदिग्बाहवेतुभ्यंनमोस्तुचरणायच १० नमोभारेतसेशश्वत्तेजोनेत्रायतेनम: वायुवेष्टायमहतेव्योमदेहायतेनम: ११ सत्वोपाधिरहंराम हृदयंतेपितामह: कण्ठस्तेनीलकण्ठोयं भ्रूमध्यंचतवेश्वर: १२ सदाशिवोललाटस्ते तत्तदूर्ध्वपरशिव: भूषणानिचतत्त्वानि विश्वाकाशस्यतेप्रभो १३ विष्णुनसंख्यान्पश्यामि त्वयिरुद्राननेकश: बहुरूपान्बहुभुजान्बहुवर्णान्महोदयान् १४ वर्त्तमानानतीतांश्च सुरानिहभविष्यत: नाहमन्तंप्रपश्यामि विभूतीनांतवप्रभो १५ अनन्तस्वरूपरघुवर सीता लक्ष्मण के देखे पर एकही आकृति एकही वेष सोई रघुबर सोई सीता सोई लक्ष्मण हैं ऐसेही सतीजी देखतीभई श्रीरामचन्द्रजी की अद्भुतलीला सतीजी देखिकै अति बिकलता को प्राप्तभई ( ७१ ) तब हृदय में कांपिकै तनदशा भूलिगई नेत्रमूंदिकै मगमें बैठगई हैं ( ७२ ) पुनि तुरन्त पलकखोलतीभई तब दक्षकु-

ता ७१ हृदयकम्पतनसुधिकछुनाहीं नयनमूंदिबैठीमगमाहीं ७२ बहुरिबिलोकेउनयनउघारी कछुनदीखतहंदक्षकुमारी ७३ पुनि पुनिनाइरामपदशीशा चलींतहांजहंरहेगिरीशा ७४॥ दो०॥ गईंसमीपमहेशतबहंसिपूछीकुशलात लीन्हपरीक्षाकवनविधि कहहुसत्यसबबात ॥७५॥ * *

सतीसमुझिरघुवीरप्रभाऊ भयवशशिवसनकीन्हदुराऊ १ कछुनपरीक्षा लीनगोसाई कीन्हप्रणामतुम्हारीनाई २ जोतुमकहा

मारी कछुनहींदेख्यो है ( ७३ ) तहां सहित अनुज श्रीरामचन्द्रजी मुनिवेषकिये प्राकृतिइव लीलाकरनेलगे श्रीजानकीजी को ढूंढ़ते हैं बिरह संयुक्त ऐसे पूर्वहीं लीला करते रहे तैसही करने लगे यह अद्भुतलीला श्रीरामचन्द्रजीकी देखिकै पुनि सतीजी श्रीरामपद युगुल तामें नमस्कारकरिकै अति शोचसंयुक्त सतीजी महादेव के समीप चलतीभई सतीजी मगमें चलीजाती हैं अतिशोचसंयुक्त बिचारकरती हैं हेबिधाता जब महेश मोंसे कछु पूछहिंगे तब मैं कौनीप्रकार ते प्रत्युत्तरदेउंगी तहां कछु विचार सिद्धनही भयो अरु येहीबीचमें महेश के समीपप्राप्ति भई ( ७४ ) दोहार्त्थ॥ जब सती महेश के समीप प्राप्तिभई तब महेशजी बिहंसिकै कुशल पूछते हैं कहोसतीजी कौनीप्रकार ते परीक्षालीन है तुमसतीहौ सत्यकहौ ( ७५ ) इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुपविध्वन्सनेबालकांडे श्रीरामलीलाअद्भुतसतीमोह वर्णनंनामपंचदशस्तरंग:॥१५॥

दोहा॥ सतीशोचतनत्यागिशिव बहुरिजन्मपरसङ्ग रामचरणशिवभक्तिदृढ़ पोड़शरङ्गतरङ्ग ( १६ ) आगे अक्षरार्थैजानिये सतीजी श्रीरघुबीरको प्रभावसमुझिकै भयकोप्राप्तिह्वैकै महादेव से दुराव करती भई अरु महादेवकी अवज्ञाकियेसन्तेमतिभ्रमह्वैगईहै ताते दुरावकरतीभई ( १ ) महादेव यह विचारकीन कि सतीजी श्रीजानकीजीको स्वरूपधारणकीन्ह्योरहै अरु श्रीजानकीजीमेरोइष्टहै ताते जो अबसतीजीसों पत्नीभावकरिकै प्रीतिक-

सोमृषानहोई मोरे मनप्रतीतिअतिसोई ३ तबशङ्करदेखेउधरिध्याना सतीजोकीन्हचरितसबजाना ४ बहुरिराममायहिशिरनावा प्रेरिसतिहि जेहिझूठकरावा ५ हरिइच्छाभावीबलवाना हृदयबिचारतशम्भुसुजाना ६ सतीकीन्हसीताकृतवेषा शिवउरभयउ बिषादबिशेषा ७ जोअबकरौंसतीसनप्रीती मिटैभक्तिपथहोइअनीती ८ दो०॥ परमपुनीतनजाइतजिकियेप्रेमबड़पाप प्रकटनकहतमहेशकछुहृदयअधिकसन्ताप ९॥ चौ०॥ तबशङ्करप्रभुपदशिरनावा सुमिरतरामहृदयअसआवा १० यहितनसतिहिभेटमोहिनाहीं शिवसङ्कल्पकीन्हमनमाहीं ११ असबिचारिशङ्करमतिधीरा चलेभवनसुमिरतरघुबीरा १२ चलतगगनभइगिरासुहाई जयमहेशभलिभक्तिदृढ़ाई १३ असप्रणतुमबिनकरैकोआना रामभक्तसमरथ भगवाना १४ सुनिनभगिरासतीउरशोचापूछाशिवहिसमेतसकोचा १५ कीन्हकवनप्रण कहहुकृपाला सत्यधामप्रभुदीनदयाला १६ यदपिसतीपूछाबहुभांती तदपिनकहेउत्रिपुर आराती १७ ॥दो०॥ सतीहृदयअनुमानकियसबजानेउसर्ब्बज्ञ कीन्हकपटमैंशम्भुसननारिसहजजड़अज्ञ १८॥सो०॥ जलपयसरिसबिकायदेखहुप्रीतिकिरीतिभलि बिलगहोतरसजाय कपटखटाईपरतही १९ ॥चौ०॥ हृदयशोचसमुझतनिजकरणी चिन्ता अमितजाइनहिंबरणी २० कृपासिन्धुशिवपरमअगाधा प्रकटनकहेउमोरअपराधा २१ शङ्कररुखअवलोकिभवानी प्रभुमोहिंत-

रौंगो तौ भक्तिकीमर्य्याद मिटिजाती है अरु भावहीभक्ति है ताते सतीतनमें श्रीजानकीभावकरना तब श्रीरामचन्द्रजूको दण्डवत्करिकै सती स्वरूप त्यागको सङ्कल्पकीन्ह्योदुइचौपाईलैकै ग्यारहचौपाईताईंको अर्त्थजानबग्यारह पुनिबारहचौपाईते तेरहताईं ब्रह्माकीबाणी आकाशबिषेभई ( १३ ) पुनि चौदहचौपाईसेलैकै छब्बिसताईं अक्षरार्थैजानब ( २६ ) श्रीशङ्कर अपनो सहजस्वरूप सँभारिकै अखण्डनिर्बिकल्प समाधिलागती भई सहज स्वरूपकही जो श्रीरामस्वरूप सतीजीदेख्यो है सो सँभार्‍यो है किन्तुब्यास बाल्मीकि अगस्त्य शुक सनकादिक नारद हनुमान शिवादिक जो महान् हैं तिनके एकएकस्वरूप परधाममें श्रीरामचन्द्रजीकेनिकट नित्य सेवा में रहते हैं अरु एकएकस्वरूप प्रकृतिमण्डलमें आचार्य्यरूपरहते हैं श्रीरामाज्ञा ते धर्म्मकेमर्य्यादहेतुजो श्रीरामनिकट स्वरूपहै सोई सहजस्वरूपजानबवहस्वरूप सँभार्‍यो तबएकहीह्वैजाते हैं पुनि अपने स्वरूप जो आत्मा

जेउहृदयअकुलानी २२ निजअघसमुझिनकछुकहिजाई तपयअवाइवउरअधिकाई २३ सतिहिसशोचजानिवृषकेतू कही कथासुन्दरसुखहेतू २४ बरणतपन्थबिविधिइतिहासा बिश्वनाथपहुंचेकैलासा २५ तहंपुनिसमुझिशम्भुप्रणआपन बैठेबटतरकरिकमलासन २६ शङ्करसहजस्वरूपसंभारा लागिसमाधिअखण्डअपारा २७॥दो०॥ सतीबसहिकैलासतबअधिकशोचमनमाहिं मर्म्मनकोऊजानकछु युगसम दिवससिराहिं २८॥ चौ०॥ नितनवशोचसतीउरभारा कबजैहहुंदुखसागरपारा २९ मैंजोकीन्ह रघुपतिअपमाना सुनिपतिबचनमृषाकरिजाना ३० सोफलमोहिंबिधातहिदीन्हा जोकछुउचितरहासोकीन्हा ३१ अबविधिअसन बूझियेतोहीं शङ्करबिमुखजियावहुमोहीं ३२ कहिनजाइकछुहृदयगलानी मनमहँरामहिंसुमिरिसयानी

३३ जोप्रभुदीनदयाल कहावा आरतहरणवेदयशगावा ३४ तौमैंबिनयकरउंकरजोरी छूटैवेगिदेहयहमोरी ३५ जो मोरे शिवचरणसनेहू मनक्रमबचनसत्य व्रतयेहू ३६॥दो०॥ तौसमदर्शीसुनहुप्रभुकरियसोवेगिउपाय होयमरणजेहिबिनहिंश्रम दुसहबिपत्तिविहाय ३७ यहि बिधिदुखितप्रजेशकुमारी अकथनीयदारुणदुखभारी ३८ बीतेसंवतसहससतासी तजीसमाधिशम्भुअबिनासी ३९ रामनामशिवसुमि-

है देहतेंभिन्न ताकोसँभारिकै परस्वरूपमेंलग्यो तब समाधिस्थभयो सो शङ्करकियो सतीकेत्यागसन्ते ताते जे सर्बत्यागकरैं तब ऐसी समाधिलगै ( २७ ) पुनिअट्ठाइसके दोहासे अड़तीसकी चौपाईताई अक्षरार्थैजानब ( ३८ ) जब सत्तासीहजारवर्ष बीते समाधिही में तब श्रीरामाज्ञाभई तब महादेव समाधिकोत्यागकीन्ह्यों जो कोईकहै कि सत्तासीहजारबर्ष समाधिमें रह महादेवजी अरु चौदहवर्षवीते श्रीरामचन्द्र लङ्काजीतिआये तहां राज्याभिषेकमें शिवआये यहसन्देहहै तहांशिवईश्वर हैं सब प्रकार समर्थ हैं किन्तु शिवकीसमाधिहीको स्वरूपप्रत्यक्षभयो रामराज्याभिषेकमें ( ३९ ) पुनि चालिसकीचौपाई ते तैंतालिसकी चौपाई ताईं अक्षरार्थैजानब ( ४३ ) दक्ष बड़ेअधिकारको प्राप्तभयो ताते महाअभिमानभयो ( ४४ ) ऐसो जगत् में कोई नहीं है दूजाको प्रभुतापाइकै अरु मदनहींहोइ नतु होवहीकरै जिनने अपनपौमान्यो है सो माते हैं मदअष्ट हैं जाति कुल युवा रूप

रणलागे जानेउसतीजगतपतिजागे ४० जाइशम्भुपदवन्दनकीन्हा सन्मुखशङ्करआसनदीन्हा ४१ लगेकहनहरिकथारसाला दक्ष प्रजेशभयउतेहिकाला ४२ देखाबिधिविचारिसबलायक दक्षहिकीन्हप्रजापतिनायक ४३ बड़अधिकारदक्ष जबपावा अतिअभिमानहृदयतबआवा ४४ नहिं अस कोउ जन्मेउजगमाहीं प्रभुतापाइजाहिमदनाहीं ४५॥दो०॥ दक्षलियेमुनिबोलिसब करणलगेबड़याग नेवतेसादरसकलसुरजेपावहिंमखभाग ४६॥चौ०॥ किन्नरनागसिद्धगन्धर्ब्बा बधुनसमेतचलेसुरसर्ब्बा ४७ विष्णुविरंचि महेशविहाई चलेसवलसुरयानबनाई ४८ सतीबिलोकेउव्योमबिमानाजातचलेसुन्दरबिधिनाना ४९ सुरसुन्दरीकरहिंकलगाना सुनतश्रवणछूटहिंमुनिध्याना ५० पूछेउतबशिवकहाबखानी पितायज्ञसुनिकछुहर्षानी ५१ जो महेशमोहिंआयसुदेहीं कछुदिन जाइरहौं मिसुयेही ५२ पतिपरित्यागहृदयदुखभारी कहैंननिजअपराधबिचारी ५३ बोलींसतीमनोहरबानी भयसङ्कोचप्रेमरससानी ५४॥दो०॥ पिताभवनउत्सवपरमजोप्रभुआयसुहोय तौमैंजाउँकृपायतन सादरदेखनसोय ५५ ॥चौ०॥ कहेउनीकमोरेमन भावा यह अनुचितनहिं नेवतपठावा ५६ दक्षसकलनिजसुताबुलाईहमरेबैरतुम्हैंबिसराई ५७ ब्रह्मसभाहमसनदुखमाना तेहितेअजहुं करतअपमाना ५८ जोबिनुबोलेजाहुभवानी रहैनशीलसनेहनकानी ५९ यदपिमित्रपितुप्रभुगुरुगेहा जाइयबिनुबोलेनसंदेहा ६०

धन विद्या ज्ञान ध्यानप्राप्तहोतसन्ते अष्टमद एकएकमद सबको बौराइदेत है काहेते अपनपौमानिलेते हैं तहां जिनने श्रीरामचन्द्रजीकी समस्त विभूति जान्यो है सबप्रकारते अपनपौदूरिकियो है तिनको जो आठहूमदप्राप्तहोयँ तहां लेशहूमदनहींहोइ ( ४५ ) पुनि छियालिसकेदोहाते सत्तावन की चौपाई ताईं अक्षरार्थैजानब ( ५७ ) एकसमय में महादेव ब्रह्माकीसभा में बैठेरहे तेहीकाल में दक्षप्रजापति आयप्राप्तभयो तहां ब्रह्माकीसभामें जेते रहे देव मुनि सिद्धइत्यादिक तिनसबैमिलि दक्षको प्रजापतिमानिकै आदरभाव करतेभये तहां पितामह ब्रह्मा नहीं उठे अरु महादेव ईश्वरअरु विरक्त श्रीरामभक्तिते महादेव नतौ आदर कियो नतौ निरादरकियो एकरसबैठे रहे हैं तहां दक्ष ऐश्वर्य्यमदपाइकै शिवजूको निरादरबचन बहुत कह्यो शिवजी नहींबोले पुनि दक्षशापदीन्ह्यो यहकह्यो कि यज्ञ में तुम्हारोभागनहींमिलै तब दक्षको नन्दीश्वर शापदेतभयो यह

कह्यो कि जो प्रजापतिभयो है अरु यज्ञ जो करैगो सो नष्टहोइजाइगो तब भृगुमुनिबिचारकीन्ह्यो कि जो दक्षकीयज्ञपूर्णहोती तौ समस्त मुनिनकी पूजा होती वेद

तदपिबिरोध मानजहँ कोई तहांगयेकल्याणनहोई ६१ भांतिअनेकशम्भुसमुझावा भावीबशनज्ञानउरआवा ६२ कहप्रभु जाहु जोबिनहिंबोलाये नहिंभलिबातहमारेभाये ६३॥ दो०॥ कहिदेखाहरयत्नबहुरहैनदक्षकुमारि दिये मुख्यगणसङ्गतबविदाकियेत्रिपुरारि ६४॥ चौ०॥ पिताभवन जबगईभवानी दक्षत्रासकाहुनसनमानी ६५ सादरभलेहिमिलीइकमाता भगिनीमिलीबहुतमुसक्याता ६६ दक्षनकछुपूंछीकुशलाता सतिहि बिलोकिजरेउसबगाता ६७ सती जाइदेखेउतबयागा कतहुंनदीखशम्भुकरभागा ६८ तब चितचढ़ेउजोशङ्करकहेऊ प्रभु अपमानसमुझिउरदहेऊ ६९ पाछिलदुखअसहृदयनब्यापा जस यह भयउमहापरितापा ७० यद्यपि जगदारुणदुखनानासबतेकठिनजातिअपमाना ७१ समुझिसोसतिहिभयउअतिक्रोधा बहुविधिजननीकीन्हप्रबोधा ७२ ॥दो०॥ शिवअपमाननजाइसहि हृदयनहोयप्रबोध सकलसभहिहठिहटकितबबोलींवचनसक्रोध ७३ सुनहु सभासदसकलमुन्दिन्कहीसुनीजिनश

करिकै सत्कर्महोते यहसमुझिकै भृगुमुनि कोपकरिकैशापदीन्ह्यो कि जहांलगि शिवकेगणहहु तिनमें ब्राह्मणको अपमानकरै पाषण्डी होइ पुनि नन्दीश्वर शापदीन्ह्यो कि जेते ब्राह्मण तुम्हें इत्यादिक सकामीहोंहिंते समस्त विद्यापढ़हिं परतत्त्वको नहींप्राप्तहोहिं पुनि भृगु शापदेवे कीन्ह्यो तबलगि शिवजी नन्दीपर आरूढ़ ह्वैकै केलाश को आवतेभये तेही समय में दक्षजो है सो शिवते ईर्षाकरतभयो यह सबकथा महादेव सतीजी से कहतेभये हे सतीजी जबहम ब्रह्माकी सभा में गयेरहे तब तुम कैलाश में रहिहु ताते हमरेमन में यह आवत है कि तुम दक्षकीयज्ञ में नहींजाहु ( ५८ ) पुनिओनसठिकी चौपाई ते तिहत्तरिके दोहाताई अक्षरार्थैजानब ( ७३ ) कहिबेको तौ तुम्हारी सबसभा है पर तुमसब असद्बुद्धिहहु ( ७४ ) तब अपने अपने कर्मके फलको प्राप्तहोहुगे भलीप्रकारते अरु पिता भलीभांतिते पछिताइगो ( ७५ ) सन्त कैसहूहोइ अरु शम्भु अरु श्रीपति इनको अपमान निन्दाकरै अरु जो कोईसुनै तौ द्वौकौकोटिन गोबधको पापहोत हैतहां असिमर्याद सुना है वेदहूमें ( ७६ ) कि निन्दक की जीभकाटिलेइ कैसे काटै संस्कृत किंतु भाषा किंतु युक्ति उक्ति चातुर्य्यता इत्यादिक कोई यत्न ते निन्दक की बाणीको खण्डनकरिडारै आगे जो नहीं सामर्थ्य होइ तौ उसको पाषण्डी कहिकै श्रवण मूंदिकै भागिजाय तब वह पाप मिटैहै अरु मैं तो सब की जीभ काटिबे को समर्थ हौं ( ७७ ) तहां

ङ्करनिन्दा ७४ सोफलतुरतलहबसबकाहू भलीभांतिपछिताबपिताहू ७५ सन्त शम्भुश्रीपतिअपवादा सुनियजहांतहंअसिमर्य्यादा ७६ काटियजीभजोबूतबशाई श्रवणमूंदिनतुचलियपराई ७७ जगदात्मामहेशपुरारी जगतजनकसबकेहितकारी ७८ पितामन्दमतिनिन्दततेही दक्षशुक्रसम्भवयहदेही ७९ तजिहौंतुरतदेहतेहिहेतू उरधरिचन्द्रमौलिवृषकेतू ८० असकहियोगअग्नितनुजारा भयउसकलमखहाहाकारा ८१॥दो०॥ सतीमरणसुनिशम्भुगणलगेकरणमखखीश यज्ञबिध्वंसबिलोकिभृगु रक्षाकीन्हमुनीश ८२॥चौ०॥ समाचारजबशङ्करपाये वीरभद्रकरिकोपपठाये ८३ यज्ञविध्वंसजायतिनकीन्हा सकलसुरनविधिवत फलदीन्हा ८४ भइजगबिदितदक्षगतिसोई जसकछुशम्भुबिमुखकीहोई ८५ यह इतिहाससकलजगजाना ताते मैं संक्षेपबखाना ८६ सतीमरत

महेश जगत् के आत्मा पिता हितकारी हैं ( ७८ ) पिता जो शिवनिन्दकहैं ताहीके वीर्य ते मेरोशरीर उत्पन्न है ( ७९ ) ताते यह शरीरही त्याग देउँगी चन्द्रमौलिको हृदय में धरिकै ( ८० ) तब सतीजी सम्पूर्ण सभाको तिरस्कार करिकै योगाग्नि प्रकट करिकै शरीर भस्मकरिदियो ( ८१ ) दो० ॥ तब शिवके गण उत्पात करने लगे तब भृगु मन्त्रन करिकै रक्षाकीन ( ८२ ) तब समस्त समाचार नारदजी महादेवते कह्योजाइ तब महादेवने अपने कोपकै मूर्त्ति बीरभद्र तिनको पठावतेभये ( ८३ ) बहुतसेनासंयुक्त तिन जाइकै यज्ञ बिध्वंसकियो अरु सबको यथायोग्य दण्ड दियो ( ८४ ) शम्भु के बिमुखके हेवाल राजादक्षते जानिलेव ( ८५ ) महादेवकी दोहाई करिकै सम्पूर्णयज्ञको भाग भक्षणकरिकै कैलाशको जाते भये सो प्रसिद्ध है ( ८६ ) पुनि सत्तासीकी चौपाई ते तिरानबेकी चौपाईताई अक्षरार्थै जानब ( ९३ ) जब पार्बतीजी हिमाचल के गृह में उत्पन्न होतीभई तब शैलराज कैसे शोभित हैं जैसे श्रीरामचन्द्र की भक्तिपाइकै सन्तजन शोभित होते हैं ( ९४ ) सबके गृह मंगलमय भये ब्रह्मादिकयश गावते हैं ( ९४ ) पार्वती को जन्म सुनिकै श्रीनारदजी आवतेभये ( ९६ ) तब हिमाचल षोड़शप्रकार पूजन करते भये ( ९७ ) पुनि नारि युक्तमुनि

हरिसनबरमांगा जन्मजन्मशिवपदअनुरागा ८७ तेहिकारणहिमगिरिगृहजाई जन्मीपार्वतीतनुपाई ८८ जबतेउमाशैलगृहजाई सकलसिद्धिसम्पतितहंछाई ८९ जहँतहंमुनिनसुआसनकीन्हा उचितबासहिमभूधरदीन्हा ९०॥दो०॥ सदासुमनफलसहितसबद्रुमनवनानाजाति प्रकटींसुन्दरशैलपरमणिआकरबहुभांति ९१ चौ०॥ सरितासरपुनीतजलबहहीं खगमृगमधुपसुखीसबरहहीं ९२ सहजवैरसबजीवनत्यागा गिरिपरसकलकरहिंअनुरागा ९३ सोहशैलगिरिजागृहआये जिमिजनरामभक्तिकेपाये ९४ नित नूतनमङ्गलगृहतासू ब्रह्मादिकगावहिंगुणजासू ९५ नारदसमाचारसबपाये कौतुकहीगिरिगेह सिधाये ९६ शैलराजबड़आदरकीन्हा पदपखारिबरआसनदीन्हा ९७ नारिसहितमुनिपदशिरनावा चरणसलिलसबभवनसिंचावा ९८ निजसौभाग्यबहुतगिरिबरणा सुताबोलिमेलीमुनिचरणा ९९॥ दो०॥ त्रिकालज्ञसर्ब्बज्ञतुमगतिसर्बत्रतुम्हारि कहहुसुताकेदोषगुणमुनिवरहृदयविचारि ॥१००॥ चौ०॥ कहमुनिबिहंसिगूढ़मृदुबानी सुतातुम्हारिसकलगुणखानी १०१ सुन्दरिसहजसुशीलसयानी नामउमाअम्बिकाभवानी १०२ सबलक्षणसम्पन्नकुमारी होइहिसन्ततपियहिपियारी १०३ सदाअचलयहिकरअहिवाता यहितेयशपैहहिंपितुमाता १०४ होइहिपूज्यसकलजगमाहीं यहि सेवतकछुदुर्ल्लभनाहीं १०५ यहिकरनामसुमिरिसंसारा तियचढ़िहहिंपतिब्रतअसिधारा १०६

पदवन्दि धोइ गृह सींचतेभये ( ९८ ) पार्वतीको पांयन में डारतेभये ( ९९ ) दोहार्थ॥ हे महामुनि कन्याके लक्षण कहो ( १०० ) तब मुनि बिहँसि कै कोमलवचन कहते हैं बिहँसेक्यों शुभाशुभ अनेकलक्षण देखिकै बिहँसतभये तब छिपीछिपी बातें कहते हैं ( १०१ ) पुनि एकसौदुइ चौपाई ते एकसौदश चौपाईताई अक्षरार्थै जानब ( ११० ) यहभेद नारदहू नहीं जान्यो है कौनभेद है जो नारदकह्यो सो सुनिकै सम्पूर्णरानी अरु सर्ब्बसखी अरु पार्वतीजी सब रोवनेलगीं यह भेद नारदहू नहीं जान्यो तहांयहदशा समुझतसन्ते भेद बिलगायगयो कि पार्वतीके आनन्दभरे आंसू हैं और सबके शोचभरे आंसूहैं यह सामान्य अर्थ है पुनि दूसरा अर्थ जोपार्वतीके गुणअगुण बिचारेउ सो यह भेद नारदहूनहीं जान्यो कि पार्वती

शैलसुलक्षणसुतातुम्हारी सुनहु जे अब अवगुणदुइचारी १०७ अगुणअमानमातुपितुहीना उदासीनसबसंशयक्षीना १०८॥दो०॥ योगीजटिलअकाममन नग्नअमङ्गलवेष असस्वामीयहिकामिलिहि परीहस्तअसरेष १०९॥चौ०॥ सुनिमुनिगिरासत्यजिय जानी दुखदम्पतिहिउमाहर्षानी

११० नारदहू यहभेदनजाना दशाएकसमुझतबिलगाना १११ सकलसखीगिरिजागिरिमयना पुलकशरीरभरेजलनयना ११२ होयनमृषादेवऋषिभाषाउमासोवचनहृदयधरिराषा ११३ उपजेउशिवपदकमलसनेहू मिलनकठिनमनभासन्देहू ११४ जानिकुअवसरप्रीतिदुराई सखीउछङ्गबैठितबजाई ११५ झूंठनहोहिदेवऋषिबानी शोचहिं दम्पति सखीसयानी ११६ उरधरिधीरकहैगिरिराऊ कहहुनाथ काकरियउपाऊ ११७॥दो० कहमुनीशहिमवन्तसुनु जोविधिलिखालिलार देवदनुजनरनागमुनिकोउनमेटनहार ११८ तदपिएकमैं कहउं उपाई होइकियेजोदैवसहाई ११९ जसबरमैंबरणेउं तुम पाहीं मिलिहिउमहिंतससंशयनाहीं १२० जेजेबरकेदोषबखानेतेसबशिवपहंमैंअनुमाने १२१ जोबिबाहशङ्करसनहोई दोषउगुण समकहसबकोई १२२ जोअहिसेजशयनहरिकरहीं बुधकछुतिनकहंदोषनधरहीं १२३ भानुकृशानुसर्बरसखाहीं तिनकहंमन्दक

को कौनबर मिलैगो जब वैसीदशा शिवमें समुझतभये तब भेद बिलगाइगयो तब कहनेलगे ( १११ ) पुनि एकसौबारहकी चौपाई ते एकसौ इकइसकी चौपाईताईं अक्षरार्थै जानब ( १२१ ) नारदबोले हे हिमाचलजीजो तुम्हारीकन्या को अरु शिवकोविवाहहोइ तौ जेते दूषण हैं ते सबदिव्य भूषण होइजाहिंगे जो सर्प्प चिताकैबिभूति सिंहचर्म अस्थिइत्यादिकजो अशुभ पदार्थ महादेव ग्रहणकिहे हैं तहां महादेव के अङ्गअङ्ग ते सब परमदिब्य होइरहे हैं ( १२२ ) देखिये तो जो नारायण सर्प्प शय्यापर शयनकरते हैं तहां पण्डितजन नहींदूषणधरैं ( १२३ ) देखिये तो भानु अरु कृशानु सर्बरस भक्षणकरते हैं शुभाशुभ पर तिनको अज्ञानी कोई नहीं कहै ( १२४ ) सुरसरी में शुभअशुभ सबपदार्थ बहेचले जाते हैं पर सुरसरीको अपवित्र कोई नहींकहै ( १२५ ) तहां इत्यादिक ईश्वरतत्त्व है सामर्थ है इनकोदोष नहीं लगै इनके संयोग ते दूषण भूषण ह्वैजाते हैं ( १२६ ) दोहार्थ॥ जोपै ऐसीइसकोकहै बराबरिकोईजीवकरै कि जीव अरु ईश्वरतत्त्व एकही है जो ईश्वरकरै है शुभाशुभ तौ ईश्वर को नहीं लगै तैसे जावहुको नहींलगै जो ऐसोकहै तो एककल्पभरि नरकमेंरहै पुनि चौरासी को जाइ काहेते जीव ईश की समता को कभी नहीं है ( १२७ ) देखिये तो कोई नीचजाति सुरसरीको जल कछुकभरि लैगयो तहां कोई तरुकोफूलकोई तरुको छिलका अरु मिठाई इत्यादि गङ्गाजलमें मिलाइकै कृत

हतकोउनाहीं १२४ शुभअरुअशुभसलिलसबबहई सुरसरिकोउअपुनीतनकहई १२५ समरथकहंनहिंदोषगुसाईं रविपावकसुरसरिकीनाईं १२६॥दो०॥ जोअसिहिसिकाकरहिंनर जड़बिबेकअभिमान परहिंकल्पभरिनर्क्कमहं जीवकिईशसमान १२७॥ चौ०॥ सुरसरिजलकृतबारुणिजाना कबहुंनसन्तकरहिंतेहिपाना १२८ सुरसरिमिलेसुपावनकैसे ईशअनीशहिअन्तर जैसे १२९ शम्भुसहजसमरथ भगवाना यहिबिवाहसबबिधिकल्याना १३० दुराराध्यपैअहहिंमहेशू आशुतोषपुनिकियेकलेशू १३१ जोतप

कहे मदिरा करत भयो ताको भलेआदमी नहीं पान करते हैं अरु जीव है फूल छिलका मिठाई हजारन मन गङ्गाकीधारा में डारिदेइ तो वह सब पावन होइजात है तैसे जीवअल्पज्ञ है अनादिकाल ते कर्म्मन के बशपरेउ है ताते अनेकबिकार धारणकरिरह्यो है काम क्रोध लोभ इत्यादिक ताते तिनजीवन के संगति सन्तजन नहीं करते हैं तिनको बचन नहींपानकरते हैं ( १२८ ) प्रत्यक्षदेखिये जैसे सुरसरी में जो परै सोई पावनहोत है तैसे जो ईश अनेकबिकार धारण करै तो समस्त बिकारहू निर्बिकारहोइजाते हैं तिनईश को सन्तजन भजते हैं,हे हिमाचल तैसेही महादेव को जानहु अरु जो सुरसरीको छूटजलतामें अर्थ करते हैं सो नहीं है अरु जो कहते है कि जो वहै मन्दगङ्गापरै तौ गङ्गाहोइजात है तैसे जीव ईशके जानेते ईशहोत है सो यहां यह अर्थ को प्रयोजनै नहीं है ( १२९ ) पर महादेव दुराराध्य हैं दुराराध्यकही दुस्तर अवराधन है जिनको पर जो तुम्हारी कन्या

क्लेशकरिकै तपकरै तो महेश मिलहिंगे काहेते महेश सर्ब काम के दाता हैं ( १३० ) पुनि एकसौयकतिस की चौपाई ते एकसौ पैंतिस की चौपाईताईं अक्षरार्थै जानब ( १३५ ) ऐसें अनेकबातैंकहिकै नारदहरिको सुमिरिकै गिरिजाको अशीशदैकै ब्रह्मलोक को जातभये ( १३६ ) इति श्री रामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकांडे-सतीपरित्यागपुनर्ज्जन्मवर्णनंनामषोडशस्तरङ्गः १६॥

करैकुमारितुम्हारी भाविउमेटिसकैंत्रिपुरारी १३२ यद्यपिबरअनेकजगमाहीं इनकहँशिवतजिदूसरनाहीं १३३ वरदायक प्रणतारतभंजन कृपासिंधुसेवक मनरंजन १३४ ईप्सितफलबिनशिवअवराधे लहहिनकोटियोगजपसाधे १३५॥दो०॥ असकहि नारदसुमिरिहरि गिरिजहिदीन्हअशीश होइइअबकल्याणसबसंशयत जहुगिरीश ॥१३६॥ * * * * *

चौ०॥ असकहिब्रह्मभवनमुनिगयऊ आगिलचरितसुनहुजसभयऊ १ पतिहिएकान्तपाइकहमयना नाथनमैंसमुझेउं मुनिबयना २ जोघरवरकुलहोयअनूपा करियबिवाहसुताअनुरूपा ३ नतुकन्यावरुरहैकुमारी कन्तउमाममप्राणपियारी ४ जोनमिलिहिबरगिरिजहियोगू गिरिजड़सहजकहहिंसबलोगू ५ सोइबिचारिपतिकरेहुबिवाहू जेहिनबहोरिहोयउरदाहू ६ असकहिपरीचरणधरि शीशा बोलेसहितसनेहगिरीशा ७ बरुपावकप्रकटैशशिमाहीं नारदवचनअन्यथानाहीं ८॥दो०॥ प्रियाशोचपरिहरहु अबसुमिरहुश्रीभगवान पार्व्बती निर्मयउजिनसोइकरिहैंकल्यान ९॥ चौ०॥ अबजोतुमहिंसुतापरनेहू तौयहजायसिखावनदेहू १० करइ सोतपजेहिमिलहिं महेशू आनउपायनमिटिहिकलेशू ११ नारदबचनसगर्भसहेतू सुन्दर सबगुणनिधिवृषकेतू १२ असबिचारिसबतजहुअशङ्का सबहिभांतिशङ्करनिकलङ्का १३ सुनिपतिबचनहर्षमनमाहीं गईतुरतउठिगिरिजापाहीं १४ उमहिंबिलोकिनयनभरि

दोहा॥ दशअरुसाततरङ्गमें शुभनारदउपदेश रामचरणपार्बतीतप महामुनिनकरदेश ( १७ ) पुनि एककी चौपाईते आठकीचौपाईताईं अक्षरार्थै जानब॥ दोहार्थ॥ हिमाचल कहते हैं हे प्रिया शोचको त्यागकरहु श्रीभगवान् को सुमिरण करहु जो परमेश्वर पार्वती को निर्मितकीन है सोई तुम्हारो कल्याणकरैगो प्रभु समर्थ है सर्वजीवको हितकारीहै प्रभु जो करैगो सो नीकही करैगो तुम न शोचकरौ ( ९ ) पुनि दशकी चौपाईते सत्रहकी चौपाईताईं अक्षरार्थै जानब ( १७ ) दोहार्थ ॥ पार्वतीजी भवानीहैं आद्याशक्ति हैं त्रिकालज्ञ हैं तहां युक्ति करिकै माताको बोधकरती हैं हे मातु स्वप्नविषे गौरब्राह्मण मोको उपदेश करते हैं हे उमा तपकरु तप करु यहसुनिकै रानी राजाते बूझिकै आनन्द को प्राप्तिभई ( १८ ) पुनि

बारी सहितसनेहगोदबैठारी १५ बारहिंबारलेतिउरलाई गदगदकंठनकछुकहिजाई १६ जगन्मातुसर्वज्ञभवानी मातुसुखदबोलीं मृदुबानी १७॥दो०॥ सुनहुमातु मैं दीखअसस्वप्नसुनावहुंतोहिं सुन्दर विप्रसुगौरबरअसउपदेशेहुमोहिं १८॥ चौ० करहुजायतप शैलकुमारी नारदकहासोसत्य बिचारी १९ मातुपितहिपुनियहमतभावा तपसुखप्रददुखदोषनशावा २० तपबलरचें प्रपञ्चबिधाता तपबलबिष्णुसकलजगत्राता २१ तपबलशम्भुकरहिंसंहारा तपबलशेष धरहिंमहिभारा २२ तपअधारसबसृष्टिभवानी करहुजायतपअसजियजानी २३ सुनतबचनबिस्मित महतारी स्वप्न सुनायहु गिरिहिहँकारी

२४ मातुपितहिबहुबिधिसमुझाई चलीउमातपहितहर्षाई २५ प्रियपरिवारपिताअरुमाता भयेबिकलमुखआवनबाता २६॥दो०॥ वेदशिरामुनिआयतब सबहिकहासमुझाइ पार्ब्बतीमहिमासुनत रहेप्रबोधहिपाइ २७॥चौ०॥ उरधरिधीरप्राणपतिचरणा जाइविपिनिलागींतपकरणा २८ अतिसुकुमारिनतनतपयोगू पतिपदसुमिरितजेउसबभोगू २९ नितनवचरणउपजअनुरागा बिसरीदेहतपहिमनलागा ३० संवतसहसमूलफलखाये शाकखाइशतबर्षगवांये ३१ कछुदिनभोजनबारिबतासा कियेकठिनकछु दिनउपवासा ३२ बिल्वपत्र महिपरहिंसुखाई तीनिसहससंवतसोइखाई ३३ पुनिपरिहिरेहुसुखानेउपरना उमहिनामतबभयउअपरना ३४ देखिउमहिंतप

बोनइसकी चौपाईते छब्बिसकी चौपाईताईं अक्षरार्थैजानब ( २६ ) दोहार्थ॥ पार्वतीको स्वप्नसुनिकै अरु वेदशिरानामे जो मुनि तिनने पार्वती की महिमा सब समुझाइदियो तब अच्छीतरह मातापितादिक प्रबोधकोप्राप्तभये ( २७ ) पुनि अट्ठाईसकी चौपाईते छियालिसकी चौपाईताईं अक्षरार्थै जानब ( ४६ ) यद्यपि महादेव निष्काम हैं तदपि भगवान् हैं चाहैतसरहैंभगवान्की ॥ श्लोक ॥ पोषणंभरणाधारंशरण्यंसर्वव्यापकं

खिन्नशरीरा ब्रह्मगिराभइगगनगंभीरा ३५॥दो०॥ भयउमनोरथसफलतवसुनुगिरिराजकुमारि परिहरिदुसहकलेशसब अबमिलि हहिंत्रिपुरारि ३६॥चौ०॥ असतपकाहुनकीन्हभवानी भयेअनेकधीरमुनिज्ञानी ३७ अबउरधरहुब्रह्मबरबानी सत्यसदासंततशुचि जानी ३८ आवैपिताबो लावनजबहीं हठपरिहरिगृहजायहुतबहीं ३९ मिलहिंतुमहिंजबसप्तऋषीशा तबजानेहुप्रमाणबागीशा ४० सुनतगिराविधिगगनबखानी पुलकगातगिरिजाहरषानी ४१ उमाचरितसुन्दरमैंगावा सुनहुशम्भुकरचरितसुहावा ४२ जबते सतीजाइतनुत्यागा तबतेशिवमनभयोविरागा ४३ जपहिंसदारघुनायकनामा जहँतहँसुनहिंरामगुणग्रामा ४४॥ दो०॥ चिदानन्दसुखधामशिवबिगतमोहमदकाम बिचरहिंमहिधरिहृदय-हरिसकललोकअभिराम ४५॥चौ०॥ कतहुंमुनिनउपदेशहिं ज्ञाना कतहुंरामगुणकरहिंबखाना ४६ यदपिअकामतदपिभगवाना भक्तविरहदुखदुखितसुजाना ४७ यहिबिधिगयउकालबहुबीती नितनवहोइरामपदप्रीती ४८ नेमप्रेमशंकरकरदेखा अबिचलहृदयभक्तिकीरेखा ४९ प्रकटेरामकृतज्ञकृपाला रूपशीलबलतेजबिशाला ५० बहुप्रकारशंकरहिसराहा तुमबिनअसप्रणकोनिर्ब्बाहा ५१ बहुबिधिरामशिवहिसमुझावा पार्ब्बतीकर जन्मसुनावा ५२ अतिपुनीतगिरिजाकीकरणी बिस्तरसहितकृपानिधिबरणी ५३॥दो०॥ अबबिनतीममसुनहुशिवजोहमपरनिजनेहु जाइबिवाहहुशैलजहि यह मोहिंमांगेदेहु ५४॥चौ०॥ कहशिवयदपिउचितअसनाहीं नाथबचनपुनिमेटिनजाहीं ५५ शिरधरिआयसुकरियतुम्हारा परमधर्मयहनाथहमारा ५६ मातुपिताप्रभुगुरुकीबानी बिनहिंबिचारिकरियशुभजानी ५७ तुम सबभांतिपरमहितकारी आज्ञाशिरपरनाथतुम्हारी ५८ प्रभुतोषेसुनिशंकरबचना भक्तिबिवेकधर्मयुतरचना ५९ कहप्रभुहरतु

कारुण्यंषडभिःपूर्णरामस्तुभगवान्स्वयं १ जहां येते शड्भाग पूर्णहोहिं ताको स्वयंभगवान् कही जहां कछुकमहोइ तिनहूंको भगवान्कहीं पर अंश कला बिभूति कही तात सती जो परमभक्तिमान तिनके दुखतेभये काहेते भगवान्हैं रामानन्यहैं पुनि अड़तालिसकी चौपाई ते तिहत्तरि के दोहातांई अक्षरार्थै जानब ( ७३ ) दक्षप्रजापति ब्रह्माके पुत्र हैं तहां पिता की आज्ञाते प्रथम हजार पुत्र उत्पन्नकियो पुनि दशहजार उत्पन्नकियो जब सातवर्षके सबपुत्रभये तब पिताने आज्ञादई हे पुत्रहु तुम जाइ तप करहु उपरान्त सृष्टि करहु तब समस्तपुत्रजाइकै बनमें गंगाकेतट तपस्या

म्हारप्रण रहेऊ अबउरराखे उजोहमकहेऊ ६० अन्तर्द्धानभयेअसभाषी शंकरसोइमरतिउरराखी ६१ तबहिंसप्तऋयिशिवपहँ आये बोलेह-रअतिबचनसुहाये ६२॥दो० ॥ पारबतोपहँजाइतुमप्रेमपरीक्षालेहु गिरिहिप्रेरिपठ यहुभवनदूरिकरेहुसन्देहु ६३॥चौ०॥ मुनि शिवबचनपरमसुखमानी चलेहर्यिजहँरहींभवानी ६४ ऋषिनगौरिदेखीतहँकैसी मूरतिवततपस्याजैसी ६५ बोलेमुनि सुनुशैलकुमारी करहुकवनकारणातपभारी ६६ केहिअवराधहुकाअबचहहू हमसनसत्यमर्मसबकहहू ६७ सुनतऋयिनकेबचन भवानी बोलींगूढ़मनोहरबानी ६८ कहतमर्ममनअतिसकुचाई हँसिह हुसुनिहमारिजड़ताई ६९ मनहठपरे उनरूनजसिखावा चहत वारिपरभीतिउठावा ७० नारदकहासत्यहमजाना बिनुपंखनहमचहहिंउड़ना ७१ देखहुमुनिअबिवेकहमारा चाहियशिवहिसदा भरतारा ७२॥दो०॥ सुनतबचनविहँसेऋययगिरिसंभवतबदेहनारदकरउपदेशसुनिकहहु बसेउकेहिगेह ७३॥चौ० दक्षसुतन उपदेशिनिजाई तिनपुनिभवननदेखाआई ७४ चित्रकेतुकरघरउनघाला कनककशिप्करपुनिअसहाला ७५ नारदसिखजु

करनेलगे तहां श्रीनारदजी प्राप्तभये तहां समस्तबालकनको देखतेभयेअतिसुन्दर शुद्धहदय शुद्धदशा देखिकै नारदजी बूझतभये हे बालकहुतुम समस्त किसकेपुत्रहौ तब वे बोलतेभये हम दक्षप्रजापतिके पुत्र हैं पिताकी आज्ञाते तपकरिकै विवाहकरिकै सृष्टि करहिंगे तब नारदजी बिचार कीन कि ये तो मोक्ष के अधिकारी हैं इनको बिषय की पवन नहींलगी उपदेश के पात्र हैं यह विचारि कै नारदजी बालतेभये हे बालकहु तुम अप नो जन्म क्यों खोवतेहौ यह जो संसार है सोतौ बन्धनरूप है स्त्री पुत्रपौत्रधन धाम इत्यादिक जीव के फांसी हैं इनके वशह्वैकै जीवचौरासीमें भ्रमते हैं अनेकदुःख सहते हैं इनसबनके त्यागिकै बड़े बड़े चक्रवर्ती राज्यको त्यागिकै ईश्वर को स्मरणकरिकै ईश्वर को प्राप्त भये हैं यहसंसार अनित्य है अरु तिसके हेतं तुम तपस्या करते हौ तुम बड़े अज्ञानीहौ आखिर बालकैतौहौ अरु तुमकहो कि पिताकी अज्ञा है तहां जो परमेश्वरकी ओर न लगावै सो वह गुरू नहीं वह माता पिता पति पुत्र मित्र धन इत्यादिक सब बृथा हैं ताते हे बालकहु तुम सत्संगकरिकै भगवद्भजन करिकै भगवत् को प्राप्तहोहु तहां प्रमाण है॥ भागवते श्लोक॥ गुरुर्नसस्यात्स्वजनोनसस्यात्पितानसस्याज्जननीनसास्यात् दैवंनसस्यान्नपतिश्चसस्यान्न मोचयेद्यःसमुपेतमृत्युं १ तहां नारद को वचनसुनिकै बालकनकोज्ञानभयो तब समस्त बालक बोलतेभये तुम कोहहु तब मुनि बोले हम नारद हैं ब्रह्माके पुत्र हैं इमको ब्रह्माने सृष्टि की आज्ञा दई हमने नहीं मान्यो तब ब्रह्मा हमारे ऊपर बहुतप्रसन्नभये नारदजीकहतेहैं हेबालकहु तुम्हारो पिता अरु हम दोऊ ब्रह्मा के पुत्र हैं तुम्हारोपिता विषय को अङ्गीकारकियो अरु हम विषयकोत्यागगिकै भगवद्विषयको प्राप्तभये हे बालकहु तुमको ज्ञानप्राप्त भयो है देखो तौ ऐसीकौन अभार्गा है जो कल्पतरु कामधेनु अमृत इनकोतजिकै रेड़ अरु गदही अरु विषय इनको सेवनकरै है यहबचन सुनिकै सब बालक बोलते भये हे रीनारदजी आप हमको शिष्यकरो जो आपुकहोगे सोई हमकरैंगे तब नारदजी सबनको वासुदेव मन्त्र उपदेशकरिकै ध्यानबतावते हैं हेबालकहु तुम अपने नासाग्र दृष्टिकरौ पलक नहींचलै समाधान ह्वैकै स्वस्वरूप देखहु तब कछुकालमें तुमको परब्रह्म को स्वरूप देखिपरैगो तब तुम कृतार्थ होइजाहुगे अरुतुमको शीतोष्ण क्षुधा

पिपासादिक नहींब्यापैगो पर तुमको जब पिता बोलावने आवै केतऊकरै तब तुम उनको वचन नहींसुनहुगे तब अपने ध्यान में तत्परहना अरु जो किसी का बचन सुनहुगे तब विघ्न ह्वैजाय गो यहकहिकै नारद ब्रह्मलोकको गये तब कुछकालबीते दक्षपुत्रन के बोलाबेको गये यह कहे हेपुत्रहु तुम्हारीतपस्यापूर्णभई अब उठो चलो तहां को सुनै उनकी तौ निर्बिकल्प समाधि लगिरही है तब ब्रह्मबाणी भई इनको नारद को उपदेश भयो है अब ये तुम्हारे काम के नहीं हैं तब दक्ष स्वीझिकै फिरिगये ते सब संसार सागर दुःखरूप तामें फिरि वे नहींआयेमोक्ष को प्राप्तिभये (७४) चित्रकेतु चक्रवर्ती राजा तिनके षोड़शसहस्त्र रानी रहैं पर पुत्र काहूके नहींरहै तहां राजा बिनापुत्रदुखितरहै तब राजाने अंगिरामुनि की सेवा नीकीप्रकार कियो तब मुनि प्रसन्न ह्वैकै कह्यो हे राजन् तुम्हारी छोटीरानी के एकपुत्र होइगो तब राजा हर्षको प्राप्तिभयो तब कछुक काल बीते राजा के पुत्रभयो तब राजा प्रजा को बड़ो आनन्दभयो अरु पुत्रवती रानीको बड़ोआदरभयो तहां अपर जो रहीं तेसब मिलिकै यह बिचारकीन कि जेहि रानी के पुत्रभयो सोई मालिकभई तब ईर्षा और सम्मतिकरिकै पुत्रको विषदियो पुत्रमरिगयो तब राजाके महाशोक उत्पन्नभयो तब अंगिरामुनि ज्ञान वैराग्य योग स्वार्थ परमार्थ अनेक विधिकरिकै समुझावते भये राजाकी मोह नहींगई तब अंगिराऋषि नारद को स्मरणकीन आइ प्राप्तिभये तब नारद राजाको समुझायो पर राजा को मोह नहींगयो तब नारदजूकहा हे राजन् चलोतो पुलसे बूझैं कि तुमकोहौ अरु कैसे तुममरेहु तबराजानेकहा कि बालक तो मरिगयो किसतरह बूझैंगे तब नारदने कहा कि मरब जिअब हानि लाभ इत्यादिक अज्ञान दशा में सब हैं जो ज्ञानकरिकै देखहु तो आत्मा नित्य है आनन्द स्वरूप है न किसूको पुत्र है न किसूको पिता है न हर्ष न शोक न दुख न सुख आत्मा सब ते रहित है हे राजन् तुमचलों तो वह बालकै सब कहैगो तब नारदजी अंगिराजी राजासंयुक्त समस्त समाज बालक के पासगये तब नारदजी ईश्वरकेप्रताप ते बालकते बोलत भये हे बाल तुमउठहु राजा ते बार्त्ताकरहु नारद के प्रतापते बालक उठि बैठेउ पुनि बालक बोलतभयो हे राजन् तुम काहेको शोचकरतेहो कौन किसकापुत्र है कौन किसका पिता है देखो तो जो किसूने अपने पुत्रमान्यो है अरु पुत्र ने पितामान्यो है तहां जब आइकै कोई कलेश प्राप्ति भये तब न तो पिताको मिटायो पुत्रको क्लेशजाइ न तो पुत्रको मिटायो पिताको क्लेशजाइ देखिये इतना तो किसूका किया होतहीनहीं इन्होंने अपनपौ कहा मनिलियो है यह तो सब पिता पुत्र द्वारा मित्र अरि हानि लाभ हर्ष शोक धन धाम येते भगवत माया को बिलास है सो कैसो है जैसे मृगतृष्णा को जल जैसे सीपमें रजत जैसे भूत की मिठाई अरु प्रेत की अग्नि देखिबेमात्र है भ्रमदायक है दुखदायक है वल क्लेशही है ताते राजन् सबत्यागि भगवच्छरणहोहु कृतार्त्थहोहु अरु हमारीदशा सुनो मैंजो हौं सो पंचालदेश को राजारहौं कोईमुनिके उपदेश ते राज्य त्यागि कै बिरक्तभयों भगवान् की शरणभयों एकसमय में मैं स्वाभाविक कहूंको जातरहों तहां डेढ़पहरदिन प्राप्ति भयो तहां एकग्राम ते मैं भिक्षा करिल्यायों अरु एकमाई ने चारिकाण्डादियो तब मैंने सनानकरिकै शालिग्रामको सनान कराइकै नैवेद्यबनाइकै भोगलगाइ कै प्रसाद पायो प्रथम कण्डा को मैंने शोधिनलियो तब पाछेकै कण्डा की राख में मेरीदृष्टि गई तहां कण्डा में पिपीलिकाको घररहै तहां सोरहजार चींटीजरिगई तहां देखिये तो बिना बिचार को धर्म्म को धर्म्म कर्म्म अपराधही है तहां शालिग्रामको भोगलगाये सन्ते येते गुणभये वाही पुण्यते षोड़शौहजार चींटी तेरीरानी भई हैं अरु जिनने मोको कण्डादियो सो छोटीरानी भई तिसको मैं पुत्रभयो तहां मोको तो सोरहहजार बार जन्म धरिबेकोहोत तहां १ शालिग्रामको भोगलगाये सन्ते एकजन्म धरिबेकोभयो ताते सोरहुहजार एकही बखत अपनो दांवलियो यह समुझिलेहु बहुत का कहौं यहकहिकै बालक शरीर को त्यागिकै श्रीरामचन्द्र को प्राप्तिभयो तब राजा को ज्ञानभयो नारदके उपदेशते राज्यकोत्यागिकै बिरक्तभयो अरु सबरानीबैष्णवी भईं सबभगवत् को प्राप्तभई नारद ऐसे हैं (७५) पुनि हिरण्यकशिपुत्रैलोक्य राजा सो तप करिबेकोगयो तहां हिरण्यकशिपु की रानी गर्ब्भ युक्तर है तहां नारदजूजाइ प्राप्तभये तब रानी के गर्ब्भ में बालकरहे सहित रानी बालक को श्रीरामतत्व उपदेश करने लगे काहे ते जब जीव गर्ब्भ में रहतहै तब जीवको ज्ञानहोत है शुद्धदशा रहती है तहां जीव को अनेकजन्म की सुधिरहती है सारासार को विवेकहोत है तब यह आपु

सुनहिंनरनारी अबशिहोहितजिभवनभिखारी ७७ मनकपटोतनसज्जनचीन्हा आपसरिससबहीचहकीन्हा ७८ निकेबचनमानि बिश्वासा तुमचाहहुपतिरुहजउदासा ७९ निर्गुणनिलजकुवेयकपाली अकुलअगेहदिगम्बरब्याली ८० कहहुकवनसुखअसबर पाये भलभूलिहुठगकेबौराये ८१ पञ्चकहहिंशिवसतीबिवाही पुनिअवरेड़िमरायनिताही ८२॥दो०॥ अबसुखसोवतशोच नहिभीखमांगिभवखाहिं सहजएकाकिनकेभवनक-बहुंकिनारिखटाहिं ८३॥चौ०॥ अजहूंमानहुकहाहमारा हमतुमकहँबरनी

को धृक्मानिकै यह कहत है कि जो अवकी जगतमें जाऊं तो परमेश्वरको भजनकरौ कृतार्थ होइजाउं ऐसेकहतसनते गर्भ्भ ते बाहिरभयो तब प्रसवको पवनलग्यो तब ज्ञानभूलिगयो तब रोदनकरनेलग्यो आगे बालपौगण्ड कौमार किशोर युवा वृद्ध इत्यादिक अवस्थनमें अनेक दुखपावतभयो ताते श्रीनारदजू प्रह्लाद को गर्भ्भही विषे उपदेशकियो तब प्रह्लादजीकी रामाकार वृत्तिर्भ तेही दशा में प्रह्लाद उत्पन्नभये प्रसवको पवन स्पर्ष नहींकियो सर्वभूत श्रीराममय देखिपरेउ तहां प्रह्लादही द्वारह्वैकै हिरण्यकशिपु को बाघभयो अरु मोक्ष को प्राप्तिभयो ऐसे नारद हैं यह सप्त ऋषि कहते भये अरु तेहि नारदको गुरुकारिकै तुम अपनी गृहस्थी कीनचाहति हौ ( ७६ ) सप्तऋषि बोले हे उमा जे कोई स्त्री पुरुष नारदको उप देशसुनै तो विशेष गृहत्यागगिकै विरकत होइजाइ ( ७७ ) नारदमन को कपटी है और ऊपर के देखत सनत है मनकीबेग संकल्प बिकल्प ताको कपटि लीन अथवा संसार के जाल की काटि कै अपनेसदृश करते है ताते कपटीकहा ( ७८ ) पुनि ओनासीकी चौपाई ते असीताई अक्षरार्थै जानब ( ८० ) यह संसार में ठगिकै नामयुक्त करिकै ज्ञानबैराग्य दैकै जीवको निकासिलेते हैं ताते ठगकहा ( ८१ ) पुनि बयासी की चौपाई ते नब्बे की चौपाई ताई अक्षरार्थै जानब ( ९० ) पार्बती बोलती भई हे मुनिहु जिनके गुरु के वचन में प्रतीत नहीं है ते प्राणी कोटिन जम्मभरि अनेक कर्म्म धर्म्म ज्ञान बैराग्यकरहिं पर संसार न तरहिं गुरुकही वेदमें स्वस्वरूपमें परस्वरूपमेंबोधहोइ ताको गुरुकही सो महादेव जगद्गुरु हैं ( ९१ ) इहांवाणी में से

कबिचारा ८४ अतिमुन्दरशुचिसुखदसुशीला गावहिंवेदजासुयशलीला ८५ दूषणरहितसकलगुणरासी श्रीपतिपुरबैकुण्ठ निवासी ८६ अतिसुन्दरशुचिसुखदसुशीला गावहिंवेदजायशलीला ८५ दूयरारहितसकलगुणारासी श्रीपतिपुरबैकुण्ठ निवासी ८९ असबरतुमहिंमिलाउबआनी सुनतबचनकहबिहँसिभवानी ८७ सत्यकहेहुगिरिभवतनयेहा हठनछूटछूटहिवरुदे हा ८८ कनकहुपुनिपयारातेहोई जारेउसहजनपरिहरसोई ८९ नारदबदचननमैंपरिहरऊं बसेभवनउजरैनहिंडरऊं ९० गुरुबचन प्रतीतनजेही सपनेहुं सुगमनसुखसिवितेही ९१॥दो०॥ महादेवअवगुणाभवनबिठणुसकलगुणाधाम जेहिकरसनरमिजाहिसन सा हितेहिसनकाम ९२ ॥चौ०॥ जोतुममिलतेहुप्रथममुनीशा मुनतिहुंसिखतुम्ळारिधरिशीशा ९३ अबमैजन्मशम्भुसनारा कोगुणा दूयराकरैबिचारा ९४ जोतुम्हरेहठहृदयबिशेषी रहितजाइबिनकियेबरेषी ९५ तौकौतुकियन्हआलसनाहीं बरकन्याअनेकजग माहीं ९६ जन्मकोटिलगिरगरहभारी बरउंशम्भुनतुरहौंकुमारी ९७ तजहुंननारदकरउपदेशू आपकहहिंशतबारमहेशू ९८ मैंपापरौं कहैजगदम्बा तुमगृहगबनहुभयउबिलम्बा ९९ देखिप्रेबोलेमुनिज्ञानी जयजयजगदम्बिकेभवानी १०० दो०। तुममाया भगवानशिवसकलजगतपितुमात नायचरणशिरमुनिचलेपुनिपुनिहर्यितगात १०१॥ * *

केत अर्त्थ है अवगुणकही तीनिहु गुण ते रहित हैं अरु विष्णु दिब्यगुणके धाम हैं हमारी मन महादेव सों रच्यो है हे मुनि ( ९२ ) पुनि तिरानबेकी चौपाई ते एकसौ एक के दोहाताई अक्षरार्थैजानब ( १०१ ) इतिश्री रामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वन्सने बालकाण्डे नारदोपदेशपार्बती तप बर्णनंनामसप्तदशस्तरङ्गः १७॥ :: ::

दशअरुआठतरङ्गमें शिवसमाधिकोत्याग मदनबिजयपुनिदहनतोहिरतिबरदानसोहाग ( १८ ) पुनि एक चौपाई ते पचीसकी चौपाईताईअ-

चौ०॥ जाइमुनिनहिमवन्तपठाये करिविनतीगिरिजागृहलाये १ बहुरिसन्नऋयिशिवपहँजाई कथाउमाकीसकलसुनाई २ भये मगनशिवसुनतस्नेह हर्यिसप्तऋयिगवनेगेह ३ मनथिरकरितबशम्भुसुजाना लगेकरनरघुनायकध्याना ४ तारकअसुरभयउतेहि काला भुजप्रतापबलतेजबिशाला ५ तेसबलोकुलोकपतिजीते भयेदेवसुखसम्पतिरीते ६ अजरअमरसोजीतिनजाई हारेसुरकरि विविधलराई ७ तबबिरञ्चिसनजाइपुकारे देखेविमिसबदेवदुखारे ८॥दो०॥ सबसनकहाबुझाइबिधि दनुजनिधनतबहोइ शम्भुशुकसम्भूतसुत यहिजीतैरणासोइ ९ चौ०॥ मोरकहासुनिकरहुउपाई होइहिईअरकरहिसहाई १० सतीजोतजोदक्षमख देहा जन्मीजायहसाचलगेहा ११ तेहितपकीनशम्भुहितलगी शिवसमाधिबैठेसबत्यागी १२ यदपिअहैअसमंजसभारी तदपिबातयकसुनहुहमारी १३ पठवहुकामजाइशिवपाहीं करैक्षोभशङ्करमनमाहीं १४ तबहमजाइशिवहिंसमुझाई करवाउबविवाह बरिआई १५ यहिबिधिभलेहिदेवहितहोई मतिअतिनीकिकहैसबकोई १६ अस्तुतिसुरनकीन्हअसहेतू प्रकटेउबियमबारिचर केतू १७ ॥दो०॥ सुरनकहीनिजबिपतिसबसु निमनकीन्हबिचार शम्भुविरोधनकुशलमोहिंबिहँसिकहेउअसमार १८॥चौ०॥ तदपिकरबमैंकार्य्यतुम्हारा श्रुतिकहपरमधर्म्मउपकारा १९ परिहतलागितजहिंजेदेहीं सन्ततसन्तप्रशंसहिंतेहीं २० असकहि चलेउसबहिशिरनाई सुमनधनुयकरसहितसहाई २१ चलतमारअसहृदयबिचारा शिवविरोधध्रुवमरणाहमारा २२ तबआपनप्रभाव बिस्तारा निजवशकीन्हसकलसंसारा २३ कोपेउजबहिंबारिचरकेतू क्षणामहँमिटेउसकलश्रु तिसेतू २४ ब्रह्मचर्य्यब्रतसंयमनाना धीरजधर्म्मज्ञानबिज्ञाना २५ सदाचारजपयोगविरागा सभयविवेककटकसबभागा २६॥छं०॥ भागेउबिवेकसहायसहितसुभदुसंयु

क्षरार्थै जानब ( २५ ) जबकाम कोपेउ तब वेद मर्य्याद मिटिगई अरु बिवेक राजा धर्म्मरथ धीरज ध्वजा ान खड्ग सन्तोष चर्म्म क्षमा बखतर ताके वैराग्य मन्खी विज्ञान मित्र यमभट नेम सेनापित सदाचार सेना वेदाध्ययन बाजा सदनकर्म्म ब्रह्मचर्य्य व्रत इत्यादिक सो सेवक इत्यादिक सहित कटक विवेक सदग्रन्थ सोईपर्बत प्रसङ्ग कन्दरनमें रहेजाइ ( २६ ) पुनि सत्ताइस के छन्दते बत्तिस की चौपाईताई अक्षरार्थै जानब

गमहिमुरे सदग्रन्थपर्ब्बतकन्दरनमहंजाइ तेहिअवसरदुरे होनिहारकाकरतारकेरखबारजगखरभरपरा दुइमाथकेहिरतिनाथजेहि कहंकोपिकारधनुशरधरा २७॥दो०॥ जेत्रजीवजगअचरचरनारिपुरुयअसनाम तेनिजनिजमय्यदितजिभये सकलबशकाम २८ ॥चौ०॥ सबकेहृदयमदनअभिलाया लतानिहारिनवहिंतरुशाखा २९ नदीउमगिअम्बुधिकहंधाई सङ्गमकरहिं तलावतलाई ३० जहंअसिदशाजड़नकी बरगी कोकहिसकैसचेतनकरणी

३१ पशुपक्षीनभजलथलचारी भयेकामबशसमयबिसारी ३२ मदनअन्धव्याकुलसबलीका निशिदिननहिंअवलोकहिंकोका ३३ देवदनुजनरकिन्नरब्याला प्रेतपिशाचभूतबैताला ३४ इनके दशानकहेउंबखानी सदाकामकेचेरे जानी ३५ सिहविरक्तमहामुनियोगी तेपिकामवशभयेवियोगी ३६ ॥छं०॥ भयेकामबश योगीशतापसपावरनकीकोकहै देखहिंचराचरनारिमयजेब्रह्ममयदेखतरहैं अबलाधिलोहिंपुरुयमयजग पुरुषसबअबलामयं दुइदण्डभरिब्रह्माण्भीतरकामकृतकौतुकअयं ३७॥सो०॥ धरानकाहूधीरसबकेमनमनसिजहरे जेहिराखेरघुबीर तेउबरेतेहिकालमहं ३८॥चौ०॥ उभयघरीअसकौतुकभयऊ जबलगिकामशम्भुपहंगयऊ ३९ शिवहिबिलोकिसशङ्के उमारू भयउयथा थिरसबसंसाररू ४० भयेतुरतसबजीवसुखारे जिमिमदउतरिगयेमतवारे ४१ रुइहिदेखिमदनभयमाना दुराधर्यदुर्गमभगदाना ४२ फिरतलाजकछुकहिनहिंजाई मरणाठानिसनरचेसिउपाई ४३ प्रकटेसितुरितरुचिरऋतुराजा कुसुमितनवतरुराजबिराजा ४४

( ३२ ) काम के वश चकाचकई निशिदिन नहींदेखहिं तहां दुइदण्डभरि कामकोपेउ निशिदिन कैसे सम्भवै तहां सुमेरु के दक्षिण जब सूर्य्य होते हैं तब दिन है जब सुमेरु के उत्तर तब इहां निशिहं उहांदिन है अरु कामब्रह्माण्डभरि व्यापेउहै आगे अक्षरार्थै जानब ( ३३ ) पुनि चौंतसकी चौ पाई ते पैंतालिस की चौपाई ताई अक्षरार्थै जानब ( ४५ ) तहां कामकोप प्रभाव ऐसा देखिपरेउ कि जिनको मन मरिरह्यो है तिनहूं के मनसिज जाग्यो है ( ४६ ) पुनि सैंतालिस के छन्द ते उच्चास की चौपाईताई अक्षरार्थै जानब ( ४९ ) आकर्षण उच्चाटन मारण वशीकरण यह चारिहू का

बनउपजनबापिकातड़ागा परमसुभगदशदिशाबिभागा ४५ जहंतहंमनउमगतअनुरागा देखिमुयहुमनमनसिजजागा ४९॥छं०॥ जागेउमनोभवमुयेउमनबनसुभगतानपरैकही शीतलसुगन्धसुमन्दमारुतमदनअनलंसरबासही विकसेसरनदहुकंजगुंजतपुंजमंजुलम धुकराकलहंसपिकशुकसरसरवकरिगानचहिंअप्सरा ४७॥दो०॥ सकलकलाकरिकोटिविधिहारे उसेनसमेत चलीनअचल समाधिशिवकोपेउहृदयनिकेत ४८॥चौ०॥ देखिरसालविटपगरशाखा तेहिपरचढ़ेउसदनमनसाखा ४९ सुमनचापनिजशरसं धाने अतिरिसताकिश्रवणलगिताने ५० छांड़ेसिवियम-विशिखउरलागे दूटिसमाधिशम्भुतबजागे ५१ भयोईशमनक्षोभबिशेषी नयनउघारिसक तदिशिदेखी ५२ सौरभपल्लवमदनबिलोकाभयउ-क्रोधकम्पेउबैलोका ५३ तबशिवतोसरनयनउघारा चित्रव तकामभयउजरिछारा ५४ हाहाकारभयउजगभारी डरपेसुरभयेअसुरसुखारी ५५ समुझिकामसुखशीचहिंभोगी भयेअकण्टक साधक योगी ५६॥छं०॥ योगीअकण्टकभयेपतिगतिसुनतरतिमूर्छितभई रोदतिबदतिबहुभांतिकरुणा-करतशङ्करपहंगई अतिप्रेम करिबिनतीविविधविधिजोरिकरसन्मुखरही प्रभुआशुतोथकृपालशिवअबलानिरखिबोलेसही ५७॥दो०॥ अबतेरतितवनाथकरहोइहिनामअनङ्ग विनुबपुब्यापिहिसबनउरसुनुनिजमिलनप्रसङ्ग ५८॥चौ०॥ जबयदुबंशकृष्णाअवतारा होइहिहरणमहा महिभारा ५९ कृशातनय होइहिअतितोरा बचन अन्यथाहोइनमोरा ६० रतिगवनीसुनिशंकरबानी कथाअपरअबकहौंबखानी ६१

मके धनुष हैं अरु कम्पनपनिच है अरु मोहन स्तम्भन बन्दन शोष दहन येते पंचबाण हैं काम के पर सुमनरूप है पुनि इक्यावन की चौपाई ते तिरपन की चौपाईताई अक्षरार्थै जानब ( ५३ ) ताही धनुष बाण तेशिव के हृदय में मारतभयो शिव की समाधि छूटिगई तब शिवजीने

देवनसमाचारसबपाये ब्रह्मादिकबैकुण्ठसिधाये ६२ सबसुमरबिष्णुविरंचिसमेता गयेजहांशिवकृपानिको ६३ पृथकपृथकतिन कीन्हप्रशंसा भयेप्रसन्नचन्द्रअवतंसा ९४ बोलेकृपासिन्धुतृयकेतू कहहुअमरआयेहुकेहिहेतू ६५ कहविधिप्रभुतुमअन्तर्य्यामी तदपिभक्तिबशबिनवैस्वामी ६६॥ दो०॥ सकलसुरनकेहृदयअसशंकरपरमउछाह निजनयननदेखनचहैंनाथतुम्हाराबिवाह ६७ चौ०॥ यह उत्सव देखियाभरिलोचन सोइकछुकरियमदनमदमोचन ६८ कामजारिरतिकहंबरदीन्हा कृपासिन्धुयहअतिभकीन्हा ६९ सांसतिकरिपुनिकारहिंपसाऊ नाथबड़ेनकरयहैसुभाऊ ७० पारबतीतपकीन्हअपारां करहुतासुअबछङ्गीकारा ७१ सुनि विधिबिनयसमुझिप्रभुबानी ऐसेहोउकहामुखमानी ७२ तबदेवनदुदुभीबजाई बरयिसुमनजयजयसुरसाई ७३ अवसरजानिसप्त ऋषिआये तुरतहिविधि गिरिभवनपठाये ७४ प्रथमगये जहंरहींभवानी बोले मधुरबचनछलछानी ७५॥दो०॥ कहाहमारन सुनेउतबनारदकेउपदेश अबभाझूंठतुम्हारप्रणा जारेउकाममहेश ७६॥ चौ०॥ सुनिबोलीमुसुकाइभवानी उचितकहेउमुनिवरविज्ञानी ७७ तुम्ह रेजानकामअबजारा अबलगिशम्भुरहेसबिकारा ७८ हमरेजानसदाशिवयोगी अजअनवघअकामआभोगी ७९जोमैंशिवमेयेअसजानी प्रीतिसमतकरममनबानी ८० तौहमारप्रणासुनहुमुनाशा करिहैंसत्यकृपानिधिईशा ८१ तुमजोकहाहर जारेउमारा सोइअतिबड़अबिवेकतुम्हारा ८२ तातअनलकरसहजसुभाऊ हिमतेहिनिकटजाइनहिंकाऊ ८३ गयेसमीपसोअवशिनशाई असमहेशमनमथकीनाई ८४॥दो०॥ हियहरयेमुनिबखनसुनि देखिप्रीतिबिश्वास चलेभवानिहिंनाइशिर गर्येहमा चलपास ८५॥चौ०॥ सबप्रसङ्गगिरिपतिहिसुनावा मदनदहनसुनिअतिदुखपावा ८६ बहुरिकहेउरतिकरबरदाना सुनिहिमवंत बहुतसुखमाना ८७ हृदयविचारशिम्भु प्रभुताई सादरमुनिवरलियेबोलाई ८८ सुदिनसुनखतसुघरीसुचाई बेगिवेदविधिलगन धराई ८९ पत्रीसप्तऋयिनकहँदीन्हीं गहिपदबिनयहिमाचलकीन्ही ९० जाइविधिहितिनदीन्हेउपाती बांचतप्रीतिनहृदय

तीसरनेत्र अग्निमयखोलिकै कामकोभस्मकरिदियो भक्तविरोधकोफलपायो ( ५४ ) पुनि पचपन की चौपाईते चौरानबे के दोहाताई अक्षरार्थैजानब ( ९४ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वंसनेबालकांडे श्रीशिवसमाधि मदनविजयपुनः कामबिध्वन्सनंनामअष्टादशस्तरंगः॥१८॥

समाती ९१ लगनबांचिअजसबहिसुनाई हर्येसुनिसबसुरसमुदाई ९२ सुमनवृष्टिनभबाजनबाजे मङ्गलसकलदशहुदिशिसाजे ९३ ॥दो०॥ लगेसवांरनसकलसुर बाहनविविधबिधान होहिंशकुनमङ्गलसुखदकरहिं अप्सरागान ९४॥

चौ०॥ शिवहिं शम्भुगणाकरहिंसिंगारा जटामुकुटअहिमौरसवांरा १ कुण्डलकङ्कणापहिरेब्याला तनबिभूतिकटिकेहरिछाला २ शशिललाटसुन्दरशिरगङ्गा नयनतीनउपवीतभुजङ्गा ३ गरलकण्ठउरनरशिरमाला अशुभवेयशिवधामकृपाला ४ करत्रिशुल अरुडमरुबिराजा चलेबसहचढ़िबाजनबाजा ५ देखिशिवहिंसुरतियमुसुकाहीं बरलायकदुलहिनिजगनाहीं ६ बिष्णुबिरंचिआदिसुरब्राता चढ़िचढ़िबाहनचलेबराता ७ सुरसमाजसबभांतिअनूपा नहिंबरातटूलहअनुरूपा ॥८॥ दो०॥ बिठणुकहा असबिहंसि तब बोलिसकलदिशिराज बिलगबिलगहोइचलहुसब निजनिजसहितसमाज ९॥ चौ०॥ बरअनुहारिबरातनभाई हासकरैहौ परपुरजाई १० बिठणुबचनसुनिकसुरमुसुकाने निजनिजसेनसहितबिलगाने ११ मनहींमनमहेशमुसुकाहीं हरिकेब्यंग्यबचननहिं जाहीं १० बिठणुबचनसुनिसुरमुसुकाने निजनिजसेनसहितगिलगाने ११ मनहींमनमहेशमुसुकाहीं हरिकेव्यंग्यबचननहिं जाहीं १२ अतिप्रियबचनसुनतहरिकेरे भृङ्गिहिप्रेरिसकलगणटेरे १३ शिवअनुशासनसुनिसबआये प्रभुपदजलजशीशतिननाये १४ नानाबाहननानावेषा बिहंसेशिवसमाजनिजदेखा १५ कोउमुखहीनबिपुलमुखकाहू बिनुपदकारकोउबहुपदबाहू १६ बिपु

दोहा॥ दशनव सुभगतरंग में शिवबिवाहसुखधाम रामचरणपटमुखजनम वीरभावपरिणाम १९ पुनि एक की चौपाई ते ग्यारहकी चौपाई ताई अक्षरार्थे जानब ( ११ ) अपने मनमें महेश मुसुकाते हैं विष्णु की व्यंग्यस्तुति सुनिकै व्यंग्यवचन वषे निन्दास्तुति दोनों होत हैं इहां स्तुति है श्रीविष्णु की वाणी में व्यंग्यार्त्थ यह है कि महादेव गुणातीत हैं काहते यह संसार की मर्याद त्रैगुण्यमय है सो लोक मर्याद महेश ले शहूमात्र नहीं है ( १२ ) पुनि तेरहकी चौपाई ते बहत्तरिकी चौपाईताई अक्षरार्थी जानब ( ७२ ) अनेक जेवनारभये सूपशास्त्र विषे जैसीभोजन

लनयनकोउनयनबिहीना हृष्टपुष्टकोउअतितनक्षीना १७॥छं०॥ तनक्षीनकोउअतिपीपनावनकोउअपावनगतिधरे भूयणाकराल कपालकरसबसद्यशोरिणातनभरे खरश्वानअसुरश्रृगालमूयकवेयअगणितकोगनै बहुजिनिसिप्रेतपिशाचयो गिनिभांतिबरणातन हिंबनै १८॥से०॥ नाचहिंगावहिंगीत परमतरङ्गीभूतसब देखतअतिविपरीत बोलहिंबचनबिचित्रविधि १९॥चौ०॥ जसदूल सतसबनीबराता कौतुकबिबिधिहोहिंमगजाता २० इहांहिमाचलरचेउबिताना अतिबिचित्रनहिंजाइबखाना २१ शैलसकलज हंलगिजगमाहीं लघुबिशालनहिंवरणिसिराहीं २२ बनसागरसबनदीतलावा हिमगिरिसबकहंनेवतिपठावा २३ कामरूपसुन्दर तनुधारी सहितसमाजसहितबरनारी २४ गेसबतुरतहिमाचलगेहागावहिंमङ्गलसहितसनेहा २५ प्रथमहिंगिरिसबगृहसवंराये यथा योग्यजहंतहंसबछाये २६ पुरशोभाअवलोकिसुहाई लागैलघुबिरंचिनिपुरणाई २७ ॥छं०॥ लघुलागिबिधकीनिपुणाता अवलो किपुरशोभासही बनबागकूपतड़ागसरितासुभगसबसककोकही मङ्गलबिपुलतोरणापताका केतुगृहगृहसोहहीं बनितापुरुषसुन्दर चतुरछबिदेखिमुनिमनमोहहीं २८॥दो०॥ जगदम्बाजहँअवतरीसोपुरबरणिनजाइ रिधिसिधिसंपतिसकलसुख नितनूतनअधिकाइ २९॥चौ०॥ नगरनिकटबरातजबआई पुरखरभरशोभाअधिकाई ३० करिबनावसजिबाहननाना

लेनचलेसादरअगवाना ३१ हियहर्यहिंसुरसेननिहारी हरिहिदेखिअतिभयेसुखारी ३२ शिवसमाजजबदेखनलागे बिडरिचलेबाहनसबभागे ३३ धरिधीरजतहंरहेसयाने बालकलैसबजीवपराने ३४ गयेभवनपूछहिंपितुमाता कहहिंबचनभयकम्पितगाता ३५ कहियकहाकहि जाइनबाता यमकैधारकिधौंबरिआता ३६ बरबौराहबसहअसवारा व्यालकपालबिभूयणाछारा ३७॥छं०॥ तनछारब्यालक पालभूषणानगनजटिलभयंकरा संगभूतप्रेतपिशाचयोगिनिबिकटमुखरजनीचरा जोजिअतरहिहिबरातदेखतपुण्यबड़तेहिकरसही देखिहैसोउमाबिवाहघरघरबातअसलरिकनकही ३८ ॥दो०॥ समुझिमहेशसमाजसबजननिजनक मुसुकाहिं बालबुझायेबिबिधिबिधिनिडरहोहुडरनाहिं ३९॥चौ०॥ लैअगवानिबरातहिआये दियेसबहि जनवाससुहाये ४० मैनाशुभआरतीसवांरी संगसुमंगल गावहिंनारी ४१ कंचनथारसोहबरपानी परछनच लींहरहिहरयानी ४२ विकटबेयरुद्रहिजबदेखा अबलनउरभयभयउबिशेया ४३ भाजिभव नपैटींभयवासा गयेमहेशजहांजनवासा ४४ मैनाहृदयभयउदुखभारी लीन्हबोगिरिराजकुमारी ४५ अधिकस नेहगोदबैठारी प्रयामसरोजनयनबहबारी ४६ जेहिबिधितुमहिंरूपअसदीन्हा तेइजड़बरबाउरकसकीन्हा ४७॥छं०॥ कसकी न्हबरबौराहविधिजिनतुमहिंसुन्दरतादई जोफलचहियसुरतरुहिसोबरबशबबूरहिलागई तुमसहितगिरितेगिरैपावकजरौंजलनि धिमहंपरै। घरजाउअपयशहोउजगजीवतबिवाहनहौकरौं ४८।दो०। भई बिकलअबलासक लबिकलदेखि गिरिनारि करिबि लापरोदतिबदति सुतासनहसंभारि ४९॥चौ०॥ नारदकरमैंकाहबिगारा भवनमोरजिनबसतउारा ५० असउपदेशउमहिंजिनदी न्हा बौरेबरहिलागितपकीन्हा ५१ सांचेउउनकेसोहनमाया उदासीनधनधामनजाया ५२ परघरघालक लाजनभीरा बांझकिजा नप्रसवकीपीरा ५३ जननीबिक लबिलोकिभवानी बोलींयुतविवेकमृदुबानी ५४ असबिचारिशोचहु जनिमाता सोनटरैजोरचेउ बिधाता ५५ करमलिखाजोबाउरनाहू तौकतदोय लगाइयकाहू ५६ तुमसनमिटिहिकिविधिकरअङ्का मातुवृथाजनिलेहुकलंका ५७॥छं०॥ जनिलेहुमातुकलंककरुणापरिहरहुअवसरनहीं दुखसुखजोलिखालिलारहमरे जाबजहंपाउबतहीं सुनिउमाबचनबि नीतकोमलसकलअबलाशोचहीं बहुभांतिविधिहिलगाइदूयणानयनबारि-बिमोचहीं ५८॥दो०॥ तेहिअवसरनारदसहित औऋषि सप्तसमेत समाचारसुनितुहिनगिरि गवनेतुरितनिकेत ५९चौ०॥ तबनारदसवितहिसमुझावा पूरबकथाप्रसंगसुनावा ६० मयनास त्यसुनहुममबानी जगदम्बातवमुताभवानी ६१ अजअनवद्यशक्तिअबिनाशिनि सदाशम्भुअरधंगनिवासिनि ६२ जगसम्भव पालनलयकारिणिनिजइच्छालीलाबपुधारिणि ६३ जन्मीप्रथमदक्षगृहजाई नामसतीसुन्दरतनपाई ६४ तहौंसतीशंकरहिबिवाही कथाप्रसिद्धसकलजगमाही ६५ एकबारआवतशिवसंगा देखेउरघुकुलकस लपतंगा ६६ भयउमोहशिवकहानकीन्हा भ्रममशवेष सीयकरलीन्हा ६७ ॥छन्द॥ सियवेषसतीजोकीन्हतेहिअपराधशंकरपरिहरी हरबिरहजायबहोरिपितुकेयज्ञयोगानलजरी अब जनसितुम्ह रेभवननिजपतिलागिदारुणातपकिया असजानिसंशयजजहु गिरिजासर्बदाशंकरप्रिया ६८ दो०॥ सुनिनारदकेबचनतब सबकरमिटाबियाद

क्षणामहंब्यापेउसकलपुर घर २ यह सम्बाद ६९॥चौ०॥ तबमयनाहिमवन्तअनन्दे पुनि पुनि पारबतीपदबन्दे ७० नारिपुरुषशिशुयुवासयाने नगरलोगसबअतिहरषाने ७१ लगेहोनपुरमंगलनामा सजेसबहिंहाटकघटनाना ७२ भांतिअनेक भयउजिवनारा सूपशास्त्रजसकछुब्यवहारा ७३ सोजेवनारकिजाइबखानी बसहिंभवनजेहिमातुभवानी ७४ सादरबोले सकलबराती बिष्णुबिरंचिदेवसबजाती ७५ बिबिधपांतिबैठेजेवनारा लगेपरोसननिपुरासुआरा ७६ नारिवृन्दसुरजेंवतजानी लगींदेनगारीमृदुबानी ७७॥छं०॥ गारीमधुरसुरदेहिंसुन्दर रिब्यंग्यवचनसुनावहीं भोजनकरहिंसुरअतिबिलम्बविनोदसुनिसचु पावहीं जेंवतजोबढ़ेउअनन्दसोमुखकोटिहूनमरैकह्यो अचवाइदीन्हेपानगवनेबासजहँजाकोरह्यो ७८॥दो०॥ बहुरिमुनिन हिमवन्तकहँ लग्नसुनाईआइ समयबिलोकिकिबिवाहकर पठयेदेवबोलाइ ७९॥चौ०॥ बोलिसकलसुरसादरलीन्हें सबहिय थोचितआसनदीन्हे ८० वेदीवेदबिधानसँवारी सुभगसुमङ्गलगावहिंनारी ८१ सिंहासनअतिदिब्यसुहावा जाइनबरणिविरंचि बनावा ८२ बैठेशिव बिप्रनशिरनाई हृदयमुमिरिनिजप्रभुरघुराई ८३ बहुरिमुनीशनउमाबोलाई करिशृङ्गारसखीलैआई ८४ देखतरूपसकलसुरमोहे बरणौछबिअसकबिजागकोहै ८५ जगदम्बिकाजानिभवबामा सुरनमनहिंमनकीनप्रणामा ८६ सुंदरता मर्यादभवानी जाइनकोटिहुबदनबखानी ८७॥छं०॥ कोटिहुबदननहिं बनैबरणातजगजननिशोभामहा सकुचहिंकहतश्रुतिशेय शारदमन्दमतिलुलसीकहा छबिखानिमातुभवानिगवनी मध्यमण्डफशिवजहां अबलोकिसकहिनसकुचपतिपद कमलमन मधुकरतहां ८८ ॥दो०॥ मुनिअनुशासनगणापतिहि पूजेशम्भुभवानि कोउसुनिसंशयकरैजनि सुरअनादिजियजानि ८९चौ०॥ जसबिवाहकैबिधिअुतिगाई महामुनिनसोसबकरवाई ९० गहिगिरीशकुशकन्यापानी भहिसमर्पीजानिभवानी ९१ पाणिग्रहणजबकीन्हमहेशा हियहर्येतबसकलमुरेशा ९२ वेदमंत्रमुनिवरउच्चरहीं जयजयजयतिसकलसुरकरहीं ९३ बाजहिं बाजनबिविधिबिधाना सुमनवृष्टिनभइबिधिनाना ९४ हरगिरिजाकरभयहुबिवाहू सकलभुवनभरिरहाउछाहू ९५ दासीदास तुरँगरथनागा धेनुवसनमणिबस्तु बिभागा ९६ अन्तकनकभाजनभरियाना दायजदीननजाइबरवाना ९७॥छं०॥ दायजदियो बहुभांतिपुनि करजोरिहिमभूधरकह्यो कादेउंपूरणाकामशङ्करचरणापंकजगहिरह्यो शिवकृपासागरसुरकरसन्तोय सबभांतिन कियो पुनिगह्योपदपाथोजमयना प्रेमपरिपूरणहियो ९८॥दो०॥ नाथउमासमप्राणप्रियगृहकिंकरीकरेहु क्षमेहुसकलअपराधअब होइप्रसन्नवरदेहु ९९॥चौ०॥ बहुबिधिशम्भुसासुसमुझाई गवनीभवनचरणाशिरनाई १०० जननीउमाबोलितबलीन्ही लै उछंगसुन्दरशिपदीन्ही १०१ करेहुसदाशंकरपदपूजा नारिधर्मपतिदेवनदूजा १०२ वचनकहतभरिलोचनबारी बहुरिलाइउर लीन्हकुमारी १०३ कतविधिसृजीनारिजगमाहीं पराधीनसुखसपनेहुंनाहीं १०४ भइअतिप्रेमबिकलमहत्तारी धीरजकीन्हकुसमय बिचारी १०५ पुनिपुनिमिलतिपरतिगहिचरणा परमप्रेमकछुजाइनवरणा १०९ सकलसखींमिलिभेंदटिभवानी जाइजन निउरपुनिलपटानी १०७॥छं०॥ जननीबहुरिमिलिचलींउचितअशीयसबकाहूदई फिरि फिरि बिलोकतिमातुतनतबसखीलैशिवपहं गई याचकसकलसन्तोषिशङ्कर

उमासहभवनहिंचले सबअमरहर्षेसुमनबर्षि निशाननभबाजेभले १०८॥दो०॥ चलेसंगहिम वन्ततब पहुंचावनअतिहेतु बिबिधिभांतिपरितोषकरि बिदाकियेवृषकेतु १०९॥चौ०॥ तुरभवनआयेगिरिराई सकलशैल

की बिधिकहीहे सो सबबनाईहैं ( ७३ ) पुनि चौहचरिकी चौपाई से एकसौ अठारह की चौपाई ताईं अक्षरार्थै जानब ( ११८ ) दोहार्थ॥ गिरि रमणकहे श्रृंगाररस पुनि शटमुख को जन्म बीररस अरु देवतन को क्लेशमेटेउ तब करुणारस अरु शांतरस दास्यरस में सदा है सर्वरसपूर्णहैं पर जब गिरिजाबिषे रीरामचरित रमायो तहां शांत दास्यमूर्त्तिही है ताते गिरिजारमण को चरित समुद्र है को पारपावै है तहां तुलसीदास

सरलियेबोलाई ११० आदरदानबिनयबहुमाना सबकहंबिदाकीन्हहिमवाना १११ जबहिंशम्भुकैलासहिआये सुरसबनिज २ लोकसिधाये ११२ जगतमातुपितुशम्भुभवानी तेहिश्रृंगारनकहेउंबखानी ११३ करहिंबिविधिबिधि भोगबिलासा गणानसमेत बसहिंकैलसा ११४ हरगिरिजाबिहारनितनयऊ यहिविधिविपुलकालचलिगयऊ ११५ तबजन्मेउयटपदनकुमारा तारक असुरसमरजिनमारा ११९ आगमनिगमप्रसिद्धपुराना षटमुखजन्मसकलजगजाना ११७॥छन्द॥ जगजानषटमुखजन्मकर्म प्रतापपुरुषारथमहा तेहिहेतुमैंवृषकेतुसुतकर चरितसंक्षेपहिकहा यहउमाशम्भुबिवाहजे नरनारिसुनहिंजेगावहीं कल्याणाका र्यबिवाहमंगल सर्वदासुखपावहीं ११८॥दोहा॥ चरितसिन्धुगिरिजारमण वेदनपावहिंपार बरणैतुलसीदासकिमि अति मतिमन्दगंवार ११९॥ * * * * *

चौ०॥ शम्भुचरितसुनिसरससुहावा भरद्वाजमुनिअतिसुखपावा १ बहुलालसाकथापरबाढ़ी नयननीररोमावलिठाढ़ी २ प्रेमबिवशमुखआवनबानी दशादेखिहर्षेमुनिज्ञानी ३ अहोधन्यतवजन्ममुनीशा तुमहिंप्राणसमप्रियगौरीशा ४ शिवपदकमलजिनहिंरतिनाहीं रामहिंतेसपनेहुंनसोहाहीं ५ बिनछलबि श्वनाथपदनेहू रामभक्तकरलक्षणयेहू ६ शिवसमकोरघुपतिब्रतधारी

किमिकहै अरु अतिमतिमन्द गंवारकिमिकहै ( ११९ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वन्सने बालकाण्डे श्रीमहेशचरितपरमानन्य भावभक्तिदर्शन वर्णनंनामएकोनबिंशतिस्तरंगः १९॥ :: :: :: :: :: :: :: ::

दोहा॥ रामचरणबिसईलहरि भरद्दाजसुखपाइ उमाप्रश्नशिवश्रवणपुनि ध्यानउतरहरषाइ २० पुनि एककी चौपाईते छःकी चौपाई ताईं अक्षरार्थै जानब ( ६ ) श्रीसीताराम बिषे भावभक्ति को ब्रत जो है सो ब्रतशिवकी समान धारण को करै ऐसो कौन है सो ब्रत कैसो है बिनुअघ है सो ब्रत शिवजी धारणकरिकै सती ऐसी नारिको त्यागि दियो यह परमभक्ति कहावैहै यह पराभक्ति है ( ७ ) महादेव प्रणकीन्ह्यो है सतीविषे श्री जानकीजीको भाव यह प्रणकही संकल्पकरिकै श्रीरामचन्द्र कै भक्ति दृढ़करिकै श्रीरामभक्तन को दिखाइदीन कि जो कहूं कोईजीवमें सतीविषे श्री जानकीजीको भाव यह प्रणकही संकल्पकरिकै श्रीरामचन्द्र के भक्ति दृढ़करिकै रीरामभक्तन को दिखाइदीन कि जो कहूं कोईजीवमें किन्तुकोई पदार्थमें कहूं थोरहू श्रीसीताराम को चिह्न देखै ताको श्रीसीताराम सममानै पर दृढ़बुद्धि करिकै ताको बिलक्षण भक्ति कही तामें श्रीरामचन्द्र तुरन्त प्राप्तहोते हैं सो शिवजी कियो ताते शिवकीसमाज श्रीरामचन्द्रको को प्रिय है कोई नहीं है अरु जो महादेवकी ऐसीभक्ति कोई करै तो वोहू

बिनुअघतजीसतीअसिनारी ७ प्रणकरिरघुपतिभक्तिदेखाई कोशिवसमरामहिंप्रियभाई ८ ॥दो०॥ प्रथमहिंकहिमैं शिवचरितबूझाम रमतुम्हार शुचिसेवकतुमरामकेरहितसमस्तबिकार ९॥चौ०॥ मैं जानातुम्हारगुणशीला कहौसुनहुअबरघुपतिलीला १० सुनुमुनि आजुसमागमतोरे कहिनजाइजससुखमनमोरे ११ रामचरितअतिअमितमुनीशा कहिनसकैंशतकोटिअहीशा १२ तदपियथा श्रुतकहैंबखानी सुमिरिगिरापतिप्रभुधनुपानी १३ शारददारुनारिसमस्वामी रामसूत्रधरअन्तरयामी १४ जेहिपरकृपाकरहिंज नजानी कविउरअजिरनचावहिंबानी १५ प्रणावहुंसोइकृपालुरघुनाथा बरणौंबिशदजासुगुणागाथा १६ परमरम्यगिरिवरकैलासू

प्रियहोइगो (८) पुनि नवकेदोहाते तेरह की चौपाईताईं अक्षरार्थं जानघ (१३) शारदा दारुकी स्त्री है अरु श्रीरामचन्द्र अन्तर्यामी सूत्रधर हैं तहां शारदा जो है वाणी सो चारि रूप है कृपासंयोगते परा बाणी को हृदयनाभिमें बास है सो गुणातीत है ब्रह्ममय है अरु पश्यन्ती वणीका हृदय के शिरोभागमें बास है सो सात्त्विकगुणयुक्त है पुनि मध्यमाबाणीका कंठमेंबासहै सो राजसगुणयुक्त है पुनि बैखरीबाणी को मुखमेंबास है सो तामस गुणयुक्त है येते चारिस्थान हैं शारदाके तहां तीनि वाणी के सूत्र तीनिहूंगुणहैं सूत्रधारी आद्याशक्ति है किन्तु विष्णु बिधि शिव हैं ते रामाधीन हैं अरु परावाणीको सूत्र अन्तर्यामी ब्रह्म है सूत्रधर रीरामचन्द्र हैं (१४) तहां तेहिकविको आपनजन जानिकै श्रीरामचन्द्र कृपाकरहिं तब तेहि के हृदय में पारवाणीको नचावते हैं तब वह कविकी काव्य में यथार्थश्रीसीतारामचरित आवत है तीनिहूं बाणी को भेदिकै (१५) हे भरद्वाज ऐसे श्रीरामचन्द्र कृपानिधिहैं तिनको मन वचन कर्म्म नमस्कार दण्डवतकरिकै श्रीसीताराम चरित बिशद सो बर्णतहौं (१६) कैलासपर्वत परमरम्यकही अति सुन्दर अतिश्वेत है तहां श्रीमहादेव पार्वती सदाबिराजते हैं (१७) दोहार्थ॥ जेहि कैलासविषे सि जन तपस्वी जिनके तपैधन है अरु योगीश्वर बिरक्त मुनि अनेक अरु देवता किन्नर इत्यादिक बसते हैं श्रीमहादेव के चरणरविन्द सेवते हैं (१८) जे जीव हरिहर के पद में रत सोई परमधर्म्म है तेहिते बिमुख हैं अरु अनेक कर्म्म करते हैं तिनको कैलास दुर्लभ है (१९) तेहि कैलास के मध्यताके उत्तर कछु ताहींपर एकवट बिटप है तेहिको लघुदीर्घ को प्रमाण नहीं है श्रीमहादेवकी इच्छानुकूल है छत्राकार है सघनपूर्ण हैं ललित नील अरुणयुक्त मणितद्वत् पर्ण हैं अरु अरुणमणि इव फल हैं मालाइव शोभित है नित्यएकरस है सर्बकाल में अविचल छाया है (२०) शीतलमन्द सुगन्ध पवन

सदजहांशिवउमानिवासू १७॥दो०॥ सिडतपोधनयोगिरजनसुरकिन्नरमुनिवृन्द बसहिंतहांसुकृतीसकलसेवहिंशिवसुखकन्द १८ हरिहरबिमुखधम्मरतनाहीं तेनरतहंसपनेहुनहिंजाहीं १९ तेहिगिरिपरबटबिटपबिशाला नितनूतनसुन्दरसबकाला २० त्रिबि धिसमीरसुशीतलछाया शिवबिश्रामबिटपश्रुतिगाया २१ एकबारतेहितरप्रभुगयऊ तरुबिलोकिउरअतिसुखभयऊ २२ निजकर

बहते हैं सदा शीतल छाया शिव के मन भावित सो बट शिवको आनन्द विश्रामद वेद कहते हैं (२१) एकबार महादेव तेहिबटतर जातेभये बटबिलोकि कै अतिसुखभयो है शिवजू जो सदा आनन्दरूप हैं पर यहिकाल में पार्वती के सत्संग को संयोग है ताते कहा (२२) श्रीमहादेव जू निजकरते नागरिपु सिंह तेहिकी छाला बटतर बिछाइकै सहजही बैठतेभये कैसे हैं शम्भु कृपालु हैं इहां रीतुलसीदास गुसाईजी महादेवमें समस्त आचार्य्य धर्म्म सदगुरधर्म्म बकतृत्वधर्म्में महादेव के द्वारहैकैलक्षिकरावते हैं कि आचार्य, सदगुर वक्ता ऐसो जबहोइ जैसे महादेव हैं तब वह भगवत्तत्त्वउपदेश करिबेको अधिकारी है तब उसआचार्यकी बाणी से जो श्रीरामतत्त्व निकसै तब जिज्ञासू जो है श्रोता तिनको यथार्थ तत्त्व प्राप्तिहोइ जब बक्ता मन कर्म्म निरभिमानहोइ अरु अपने भजहेतु किसूसे टहलकराइबे की अपेक्षा न करे अपनेहाथ अपने शरीरकी

परिचर्य्याकरै आसन बासन- बसन अशन जल इत्यादिक देखिये तो शिव ईश्वर हैं अरु लाखन पार्षद हैं पर अपनेहाथ सिंहचर्म्म बिछायकै बैठे हैं सिंहचर्म्मासन आसीन ह्वैकै जाते श्रोता को सन्देह मोह संशय भ्रम इत्यादिक गजरूप नाश ह्वै जाहिं ऐसेबक्तनकी बाणी सिंहरूप है किन्तु निबृत्ति आसन है जाको कोई नहींलेइ है तेहि चर्म्मपर महादेव सहजही बैठतेभये सहजहीकही सहजानन्द निष्काम निर्बासिक यह बासनानहीं है कि हमारो कोईशिष्यहोइ हमको कोई गुरुमानै हमारो कोई उपदेशलेइ हमको कोई पूजै हमको कोई भलाकहै इत्यादिक अहंममरहित भलीबुरी बासना ते रहितहोइ अरु बाह्यांतर भगवत् तत्परहोइ अहर्निश तब उसबक्ता की बाणी में पराबाणी जानिये पवनरूप भगवत्तत्त्व सुगन्धमय है तब जिज्ञासू श्रोता की बुद्धि नासिकारूप सुगन्धमय रामतत्त्व ग्रहणकरतु है आनन्द को प्राप्तिहोत है सो महादेवमें देखिलेव ( २३ ) श्रीमहादेव कैसे हैं कुन्दइन्दुदरगौर ऐसोशरीर है कुन्दकेफूल तद्वत् श्वेत कोमल सुगन्ध मकरंदमय सुन्दर शरीर हैअरुचन्द्रमा

डासिनागरिपुछाला बैठेसहजहिशम्भुकृपाला २३ कुन्दइन्दुदरगौरशरीरा भुजप्रलम्बपरिधनमुनिचीरा २४ तरुणअरुणअम्बुज समचरणा नखद्युतिभक्तिहृदयतमहरणा २५ भुजगभूतिभूषणत्रिपुरारी आननशरदचंद्रछबिहारी २६ ॥ दो०॥ जटामुकुटसुरसरि

तद्वत् उज्ज्वल प्रकाश शीतल अमृतमय शरीरहै पुनि दरकही शंखतद्वत्धवल निर्म्मल सचिक्कन मङ्गलमय ऐसो विग्रहहै किंतु मन बचन कर्म्म शिवऐसे हैं कुन्दके फूल समधर्म्म गुणसहित मन है पुनि शिव के मुखके बचन कैसे हैं इन्दुके धर्म गुणसहित पुनि शिवके कर्म्म कैसे हैं शंख सरिस सचिक्कन उज्ज्वल गुणसंयुक्त ऐसे महादेव सदा हैं काहेते श्रीरामनाम श्रीरामरूप श्रीरामभक्ति जिन महादेव के मन बचन कर्म्म रोमरोम में पूर्ण ह्वै रहे हैं सो सब पार्बतीको प्राप्तिहोइगो पुनि शिवजी उदारहैं काहेतें भुजप्रलम्बकही बिशाल हैं जिनके सदा दानहीदेव है अरु कटि में मुनिबस्त्र है ऐसे बिरक्त हैं ( २४ ) शिवकेचरण लालकमल जो प्रथमफूलेउहै अरु नखद्युति भक्तन के हृदयको अन्धकारहरत है ( २५ ) अरु भुजंगकही अनन्त शेष जो है आचार्य्यरूप सोई महादेव को भूषण है तातेदोऊ भक्तराज सदा मिले हैं ताते श्रुतिस्मृति रीति परात्पर स्वरूप भक्ति उपदेश करते हैं अरु महादेव बिभूति धारण किहे हैं सो बिभूति जो श्रीअयोध्याके जीव पर बिभूति को जाते हैं तेहि श्मशान कै बिभूति जो है सोई बिभूति महादेव भूषणकरते हैं अद्यापि अपर बिभूति महेश नहींधारणकरते हैं यहै निश्चयजानिये काहेते शिवजी श्रीरामउपासकहैं अरु उपासक ताहीको कही जो अपने इष्टाको सम्बन्धकहूं थोरहूपावै तहां इष्टकी समान मानै यह भावबिना इष्टकीकृपा नहींआवै किंतु ऐसे उपासक जव कृपाकरहिं तब आवै ताते शिवजी बिभूति धारण किहेहैं शिवजीको श्रीअयोध्या अयोध्याबासी रामसम प्रिय हैं शिवजी सो बिभूति धारण करिकै परम उपासना को दिखावते हैं अरु त्रिपुरारिकहा यह मन असुरहै ताके तीनिपुर हैं तीनिगुण कबहीं सात्त्विक में जातहै कभी राजस में कभी तामस में किन्तु काम क्रोध लोभ इनमें क्षणक्षण जातहै किंतु अर्थधर्म्म काम इनमें रहत है किन्तु सुत बित लोक मर्य्याद इनमें रहत है इत्यादिक तीनि तीनि में मनरहत है जब सहित स्थान मनको नाशकरिदेइ तब परमतत्त्व उपदेशकरै सो महादेव ऐसेही हैं ताते त्रिपुरारिक हा पुनि शिवजी को बदन शरद चन्द्रहूकी छबिहरत है काहेते चन्द्रमाअपनीकिरणि अमृतमय ताकरिकै एकसूर्य्य की तापहरत है परफेरिदूसरे दिन सूर्य्यकी तपनिहोइ है अरु आचार्य्य को मुखचन्द्रवत् है तिनके बचन जो किरणरूप तामें श्रीसीताराम चरित परम अमृतमय है सो श्रोतनके बाह्यान्तर के ताप अधिभूत अध्यात्म आधिदैवत नाश ह्वै जात हैं फिरि कबहीं नहींहोइ ताते शरदचन्द्रहू की छबिहरत है मुख की छबि ऐसी है ( २६ ) महादेव के शीशपर जटामुकुटाकार है जो शिवमें जटा अहि बिभूति भूषणचर्म्मासन इत्यादिकहैं सो वैराग्यदिखावतेहैं किबक्ता भूषण बसन सोई धारणकरै जो कोई नहींलेइ काहेते जो नीको भूषणबसन भोजन है अरु ताको ग्रहणकरैगो बक्ता किन्तु श्रोताकी तो उसमें चित्तकै बृत्ति जरूरजाइगी मन की गति अतिसूक्ष्म है तहां नतौ बक्ताते यथार्थ कहतबनैगो अरु नतौ श्रोता ते समुझतबनैगो ताते बक्ता श्रोता दोऊ संसारते बाह्यान्तर त्यागहोइ तब श्रीरामतत्त्व यथार्त्थ कहिबेसुनिबे धारणामें आवै तहांदेखिये तो शिव पार्बतीकी बिभूति त्रैलोक्य है ते महादेव श्रीरामतत्त्वहेतु जटाको मुकुट सर्प्प कपाल बिभूति भूषणअरु मृग चर्म्म बस्त्रधारण

हैं सदा निवृत्ति भजनहेतु अरु शिवजीकी जटा में श्रीगंगाजी हैं तहां शिवजी तो सदा यथार्थ सत्यबक्ता हैं तहां सुरसरिताको अर्त्थ युक्तिकरिकै कहतेहैं कैसे जैसे कोई श्रीगंगामाथेपर धारै तब वह सत्यै कहत है ताते महादेव सौगन्धकरिकै श्रीरामतत्त्व कहैंगेपार्बतीजीसे अरु महादेव के नेत्र कमलतद्वत् बिशाल हैं शीतलकृपाभरे तहांबक्ता के नेत्र शीतल सौम्य कृपासंयुक्त चाहिये जाते श्रोता के मनमेंआह्लादहोइ नीलकण्ठ लावण्यनिधि शिवजी के कण्ठ में बिषकी नील रेखा है गम्भीर पुष्ट सो उपमाको समुद्र है काहेतें जब समुद्र ते विषनिकस्यो तब समस्त लोक देव दानव मनुष्य इत्यादिक चराचर बिष की ज्वाला ते जरेजातेरहैं तब भगवत् आज्ञा ते शिवजी बिषको पानकरिगये तब संसार सुखीभयो सो विष शिवके कण्ठही में रहिगयो तेहिविषमें येती लावण्यता शोभितहोत है एकतो कृपा करुणा दयालुता सूचितहै कि शिवजू ऐसेदयालु हैं सबको दुख पीगये पुनि शिव की बड़ाई जनावते हैं कि बड़े जो हैं सो बड़ेकी मर्य्याद राखिकै दण्डदेते हैं तातेकण्ठमें प्रत्यक्षराख्यो अरु शिवजू जो चाहते विष पचाइडारते विषको नामरूप लेशहू नहींराखते शिवजू ऐसेसमर्त्थ हैं पुनि स्वामीविषे सेवकभाव दिखावते हैं कि जो स्वामीकी आज्ञाहोइ तो विषहूपान करिजाइये आज्ञाभङ्ग नहींकरना मरबे जीबे को नहींडरिये पुनि उक्तिकरिकैं अर्थकरते हैं तहां शिवजू विषको पानकरिकै पचाइगये हैं तब परमेश्वर में जो भक्तबात्सल्य है सो यह विचारकियो कि शिवजू अत्यन्त मेरीआज्ञा कीन्ह्यो है अरु मेरोस्वरूप नील है मैं शिवके कण्ठमें सदा बासकरौंगो तहां शिवजूके कण्ठमें भगवान् को एकस्वरूपबस्यो है तहां परमेश्वर को सबैहै विष अमृत इत्यादिक तहां विषको महादेव नाशकरिदियो तब भग

**तशिरलोचननलिनबिशाल नीलकण्ठलावण्यनिधिसोहबालबिधुभाल २७ बैठेसोहकामरिपुकैसेधरेशरीरशांतरसजैसे २८ पार्ब्बती**

वान् विष के मर्य्यादहेतु शिवजू के कण्ठ में नीलस्वरूप आपुबसे हैं इत्यादिक अनेक लावण्यता नीलकण्ठ में है ताते लावण्यनिधिकही पुनि बालबिधुभाल में शोभित है जेहि के दर्शन ते केवल मंगलहोतेहैं ( २७ ) कामरिपु शिवजू कमलासन पै बैठे कैसे शोभित हैं मानहुं शान्तरस की मूर्त्तिही हैं तहां जब सत्गुरु ऐसोहोइ बैठे कही आसन दृढ़होइ कामरिपुकही निष्कामहोइ अरु शान्तरस कही उदार दृष्टि वाह्यान्तर कैवृत्ति ब्रह्मानन्द विषे लयहोइ ब्रह्मानन्द में आरूढ़ ऐसे शुद्ध स्वरूप को ज्ञानसदा ताको शान्तरस कही जब ऐसोहोइ तब श्रीरामस्वरूप सुन्दर मध्य किशोर ताको अधिकारीहोइ श्रीरामनाम श्रीरामधाम श्रीरामचरितकोयथार्त्थ वक्ताहोइ तब तत्त्वमें जिज्ञासूको बोधहोइ सो महादेव सदा ऐसेहीहैं इहां पार्वतीको श्रीरामतत्त्वके उपदेशको अवसरहै ताते हमने अपनी बुद्धि अनुसार महादेवकोगुण स्वभावकृपा कहे हैं ( २८ ) पार्बतीभलो अवसर जान्यो तहां कैलास ऊपर सदा मङ्गलमय काल है अरु शिवजू सदा आनन्दमयस्वरूप हैं पर यहिकाल में श्रीरामकृपाते पार्वतीके अन्तःकरणमें आनन्द होतभयो यहसमुझिकै कि सतीतनमें श्रीरामचन्द्रजूके स्वरूपमें मोको भ्रमभई तहां श्रीमहादेवजूकोकहा मैं नहींमान्यों यह महाअपराध मोंसे भयो है ताहूपर महादेव मोरेऊपर कृपैकरतआयेहैं अब उनकी संकल्पभी पूर्णभई अब मोको आपनी दासी जानिकै अंगीकार कियो है ताते अब महेशते श्रीरामचन्द्रजूको जो परात्परतरस्वरूप है जो मैं बनमें देख्यो है तेही स्वरूप को प्रश्नकरिकै परमानन्दकी प्राप्तिह्वैकै तब भजनकरों अरु आरण्यमें यथार्त्थ स्वरूपमैं देख्यो है परमहेशकी अवज्ञा कियेसन्ते यथार्त्थ नहीं भास्यो यहसमुझिकै आनन्दपूर्वक महेशके पास पार्वती जातीभई ताते जेहिकालमें श्रीरामचन्द्रजूकी सुधिआवै कैसहू सोई उत्तम अवसर कालहै तहां प्रमाण है अन्यच्च तदेवलग्नंसुनिदंतदेव ताराबलंचन्द्रबलंतदेव विद्याबलंदैवबलंतदेव सीतापतिर्नामयदास्मरामि १ पार्वती सम्पूर्ण जगत्की माता हैं तहां माता जो है सो सबप्रकार बालकको पालनकरतीहै ताते पार्वतीजी सर्वजीवके कल्याणहेतु महेशते प्रश्नकरिबेको जातीभई जब पार्वती महादेवके समीप जातीभई ( २९ ) तब परमप्रियाजानिकै अतिआदरकीन बामभागमें आसनदीन ( ३० ) पार्वतीजी शिवकेसमीप हर्षाइकै बैठतीभई

भलअवसरजानी गईंशम्भुपहंमातुभवानी २९ जानिप्रियाअतिआदरकीन्हा बामभागआसनहरदीन्हा ३० बैठींशिवसमीपहरषाईं पूरबजन्मकथाचितआई ३१ पतिहियहेतुअधिकअनुमानी बिहंसिउमाबोलींमृदुवानी ३२ कथाजोसकललोकहितकारी सो पूछनचहैंशैलकुमारी ३३ विश्वनाथममनाथपुरारी त्रिभुवनमहिमाबिदिततुम्हारी ३४ चरअरुअचरनागनरदेवा सकलकरहिं

पूर्वजन्ममें जो सतीतनमें मोहभयो है श्रीरामचन्द्र विषे तेहिकी सुधिआवतीभई ( ३१ ) पति जो महादेव हैं तिनके हृदयमें अति प्रीतिदेखी अपने विषे तब बिहँसिकै पार्वतीजी मृदुवाणी बोलती भई मुसुकानीकही प्रसन्नह्वैकै किन्तु पाछिलशिवको तिरस्कार अरु अपनी अज्ञानता अरु अब बर्त्तमानमें अपनी सन्मुखता अरु शिवकी प्रसन्नताको शिवजू ऐसे कृपालुहैं मेरीचूक समस्त क्षमाकियो है यहसमुझिकै मुसुकाइ कै बोलतीभई ( ३२ ) जो श्रीरामचन्द्रकै कथा समस्त लोकनकीमंगलकरनहारी सो शैलकुमारी जो हैं पार्वती सो पूछ्याचाहती हैं शैलकुमारी क्यों कहा सबप्रकारते शैल परमार्थैकरतुहै साते कहां ( ३३ ) हे विश्वनाथ हेममनाथ हे पुरारि कहे त्रिपुरमें दानवरहै ताके तीनिपुर रहैं एकस्वर्ग में एक मृत्युलोक में एक पातालमें तहां उसदानवमें ऐसी शक्तिरहै किएकहीबार तीनिहूंपुरमें निवासकरै तीनि रूपह्वैकै अरु देव मुनिदुखदाता रहै ताकोमहादेव त्रिशूलकरिकै तीनिहूपुरसहितदानवको नाशकरिदीन एकहीबार ताते त्रिपुरारि कही अरु इहां तीनिशरीरहैं सोई पुर है स्थल लिंग कारण ताकी तीनि अवस्था हैं सोई महलहै जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तहाँ एकही अहंकार त्रिधारूप है सात्त्विक राजस तामस सोई त्रिपुर दानव है तेही पुरस्थानमें बसते हैं तहां आत्मा शिवरूप है अरु वैराग्यज्ञान भक्ति सोईत्रिशूलहै तीनिहुंकरिकै तीनिहूं अहंकारसहित बासना नाशकरै अपने विषे अरु शिष्य बिषे ताको सद्गुरु कही अरु जिज्ञासूकही तहां महादेव तो तीनिहूं अहंकारके परेहैं अरु पार्वती त्रैअहंकार दूरि करिकै तब आई हैं अरु कछु झीनी होइगी सो महेश दूरि करिकैतब श्रीरामतत्त्व उपदेश करहिंगे ताते त्रिपुरारिकहा हेमहादेव तुम्हारी महिमा त्रैलोक्य में बिदित है ( ३४ ) हेमहादेवजू तुम्हारेपदपकंजकैसेवा चराचरकरतेहैं नरदेवइत्यादिक सकल सम्पूर्ण ( ३५ ) दोहार्थ॥ पार्वती बोलतीभई हे प्रभु तुम सबप्रकार सामर्थ्य हो सर्वज्ञहो अरु चौंदहोविद्या अरु विघ्नके चौंसठिकला सो पाछे कहिआये हैं यह चौपाईमें स-

पदपङ्कजसेवा ३५ दो०॥ प्रभुसमर्थसर्ब्बज्ञतुम सकलकलागुणधाम योगज्ञानवैराग्यनिधिप्रणतकल्पतरुनाम ३६ जोमोपरप्रसन्न सुखरासी जानियमोहिंसत्यनिजदासी ३७ तौप्रभुहरहुमोरअज्ञाना कहिरघुनाथाकथाविधिनाना ३८ जासुभवनसुरतरुतरहोई

कलकला सबविद्याहीना अथवा षोड़शकलापूर्ण परमपुरुष है सो कलाकौनि हैं ऐश्वर्य धर्म यश श्री मोक्ष भरण पोषण आधार उत्पत्ति पालन संहार शत्रुनाशक रक्षक शरणपालन सामर्थ्य इति षोड़श आगमग्रन्थे अथवा जैसे सोरहकला करिकै जब पूर्णचन्द्रमा तब पूर्णमासी पूर्ण है तैसे महादेव सदा पूर्ण षोड़शकला हैं अनन्तशक्तिगुणपूर्ण हैं अरु इहांतीनि गुणको प्रयोजन नहीं दिब्यगुण कहिबे को प्रयोजन है दिब्यगुण कौन हैं करुणा वात्सल्य ज्ञान क्षमा शान्ति उदार सर्वज्ञ व्यापकत्त्वसर्व नियन्ता सर्वकारण सौम्य शील सदाप्रसन्न पूर्णदया सन्तोष सम सहन इत्यादि दिब्यगुण तेहि सबकालनके अरु सबगुणनके हे श्रीमहादेवजी आप धामहैं अरु योग ज्ञान वैराग्यके निधिहौ निधिकही समुद्रहौ किंतु निधि कही नवनिधि हौ प्रणत जो तुम्हारी शरण है तिनको जो तुम्हारोशिवनामहै सो दिब्यकल्पतरुहै ( ३६ ) पार्वती कहती हैं हे परमसुखकी राशि हे प्रभु जो मोरेऊपर प्रसन्नहोहु अरु मोको सत्य अपनी निजदासीजानतेहोहु ( ३७ ) हे प्रभु तो मेरो अज्ञान हरहु हे प्रभु श्रीरघुनाथजीकी कथा बहुबिधिसे कहिकै काहेते कि श्रीरघुनाथजू के स्वरूपमें मोकोभ्रमभईहै ( ३८ ) काहेते कि जेहिकोभवन सुरतरुतरहोइ सो दरिद्रते जोदुख उत्पत्ति है सो काहेको सहैगो ( ३९ ) हे महादेव ऐसे बिचारिकै मेरीमतिमें जो भारीभ्रम है सन्तापदाता सो हरहु काहेते तुम शशिको भूषण किहे हौ ( ४० ) हे प्रभु जे मुनि परमार्थबादी कही ब्रह्मवेत्ता हैं ते मुनि रामकोअनादि ब्रह्म कहते हैं

( ४१ ) अरु शेष शारदा वेद पुराण इत्यादिक सबै रघुपतिके गुणानुबाद गानकरतेहैं ( ४२ ) अरु हेमहादेव आपहू अहर्निश रामहीनाम जपतेहौ सादरकही आदर प्रीतिसंयुक्त जपतेहौ हेअनंगअरि अनङ्गअरि क्यों कहे अनङ्ग नाम कामको तहां कामकही कामनाकोसो कामना दुइप्रकारकी एक स्थूल एक सूक्ष्म है स्थूलकही जो मनमें उठै ताको करिउठै ताको स्थूलकही अरु जो मनमें उठी है अरु करिबे की इच्छा न है प्राप्तिहूभये ते नहीं अंगीकारहै अरु सूक्ष्मबासना मनकीचली है ताको सूक्ष्म कामनाकही तहां सूक्ष्मबासना बद्धनहींकरै है कैसे जैसे एक कोई क्षुधितब्राह्मण बजारमें निकरयोजाइ तहां कोई म्लेच्छके दुका

**सहकिदरिद्रजनितदुखसोई ३९ शशिभूषणअसहृदयबिचारी हरहुनाथममप्रतिभ्रमभारी ४० प्रभुजोमुनिपरमारथवादी कहहिं रामकहंब्रह्मअनादी ४१ शेषशारदावेदपुराना सकलकरहिंरघुपतिगुणगाना ४२ तुमपुनिरामनामदिनराती सादरजपहुअनङ्गअराती ४३ रामसोअवधनृपतिसुतसोई कीअजअगुणअलखगतिकोई ४४॥दो०॥ सोनृपतनयतौब्रह्मकिमि नारि**

नमें अनेक व्यञ्जनबनेधरेरहैं अरु देखिकै ब्राह्मणको मनचलिगयो अरु ब्राह्मणको जोवह व्यञ्जनको मालिकदेवहूकरै सो वहब्राह्मण छुवहूनहीं करै अरु मनकी झीनीलहरि गई है तहाँ ब्राह्मणको धर्म्म तो नहींगयो तैसे झीनीबासना है पुनि झीनी कामना कैसीहै जैसे भूजाअन्न नहींउगै जैसे जरी जेवरीजरेउ पटकोथान तहां इनकोस्वरूप तो देखिपरै है पर उनते कछुकार्य्य नहींसिद्धिहोइ तैसे बिनाचाहना मनमें कछुबासना उठै है सो यह मनकीलहरिकहावै है स्वाभाविक उठै है जैसे सूर्यकी किरणि में जलकी लहरिलहलहाती है भ्रममात्र है तैसे मनकीगति है पर सन्त जन मनकीगति झीनिहू नहीं सहिसकैं तहां झीनीबासना अपने पुरुषार्थसे नहींमिटै पुनि कबमिटै जब बासना नाशहेतु अति आरत ह्वैके राम नाम उच्चारणकरै अहर्निश तब झीनी बासना नाश ह्वै जाती है अरु स्थूलबासना सन्तजन मिटाइसक्ते हैं काकरिकै वेदवाक्य गुरुवाक्य निज अनुभवते अरु झीनीबासना बिना श्रीरामकृपा नहींमिटै तहां शिवजू श्रीरामकृपाके मूर्त्तिहीहैं कैसेजानिये श्रीरामचन्द्रके भजनमें काम ने विघ्न कियो ताको नाशकरिदीन है ताते अनङ्गारिहैं अरु बिना अङ्गको काम ताको झीनी कामना कही ताहीको झीनीबासना कही सो महादेव सदा नाशकिहेहैं रामनाम अखण्ड अहर्निश जपते हैं अनंग आराती कहिबेकोतात्पर्य पार्वती के यह है कि मेरीस्थूल अरु झीनी दोऊ भ्रम महादेव नाशकरैंगे जरूर अपनी सादृश्यकरैंगे ताते अनंगारिकहा ( ४३ ) हेस्वामीमहादेव श्रीअवधपति जो दशरथमहाराज हैं तिनके पुत्र जो श्रीराम हैं तिनही को नाम स्वरूप सबध्यावतेहैं कि अपर कोई राम हैं जिनके अजअगुण अलखगति वेदकहते हैं ( ४४ ) हे महादेवजू यहसन्देह मोको सती तनमें भयोरहे कछुक अबहूं है जो राजाके पुत्रहैं तिनको ब्रह्म कैसेकही जो कही ब्रह्म शरीरको धारणाकियो है तहां ब्रह्मशरीर धारणाकरै सो प्रयोजनै नहीं सम्भवै तथापि भक्तानुग्रहार्थ ब्रह्मशरीरको धारणाकरिकै आविर्भावभयो तहां नारि के विरहकरिकै अज्ञानइव नारि को ढूंढ़ते हैं

**विरहमतिभोरि देखिचरितमहिमासुनत भ्रमितबुद्धिअतिमोरि ४५ ॥ चौ०॥ जोअनीहव्यापकविभुकोऊ कहहुबुझाइनाथ म्वहिंसोऊ ४६ अज्ञजानिउररिसजनिधरहू जेहिविधिमोह मिटैसोइकरहू ४७ मैंबनदीखिरामप्रभुताई अतिभयबिकलनतुमहिं**

यहबात कैसे सम्भवै ब्रह्मविषे अरु मैं जो बनमें चरित प्रथम प्राकृत इवलीलादेखेउं पुनि आप की जब अवज्ञा करिकै परीक्षालेबे को गई तब औरैचरित देखेउं अरु आपु के मुख ते अरु श्रुति स्मृति में तिनकी महिमा सुनेउं सब मिलिकै मेरी बुद्धि अतिभ्रम को प्राप्ति ह्वै गई तहां पार्वती ने प्रथम यह कहा कि शेष शारदा वेद पुराना सकल करहिं रघुपति गुणगाना ऐसे तो रघुपतिको पार्वती जानती भई फिरि यह प्रश्नक्यों कियो कि जाको सबमहान्ध्यावते हैं सो येही दशरथकेपुत्रराम हैं जाको अजअगुण अलख ब्रह्मकही सोई दशरथनन्दन हैं भक्तहेतु देहधरेउ है किंतु यहबिग्रह है अजअगुण अनूपमहै किन्तु अजअगुण ब्रह्म औरै है दशरथनंदन औरै है पार्वतीके प्रश्नमें यह अर्त्थ है

धुनिकरिकै ( ४५ ) हेनाथ जो ब्रह्मअनीह है अनीहकही चेष्टारहित है चेष्टा कही षट व्यकार रहित एकरस है कालावच्छिन्न है अरु सर्बब्यापक है अरु सबको प्रभुहै सामर्थ्य है ऐसो जो ब्रह्म है सो मोसे समुझाइकै कहौ वह प्रभु कैसो है अरु राजपुत्र राम तिनको समुझाइकै कहौ सो कसे हैं ( ४६ ) हे नाथ अज्ञानी जानिकैरिसनकरब जेहिप्रकारते मोहमिटै सोईरीतिसोंकहहु ( ४७ ) काहेतेमैं जो बनमें श्रीरामचन्द्रकै प्रभुतादेखेउं सो अमितदेखेउं सो कछुशुमार नहींमिलेउ तब आपुकी जो अवज्ञा करिकैगइउं अरु श्रीराम प्रभुताअमितदेखिकै दोऊकैतिकै अतिभयते बिकल होइगइउं ताते आपुते कछुकहेउं नहीं ( ४८ ) यदपि मैं श्रीरामचन्द्रकै प्रभुता सबप्रकार अमितदेखेउं तदपिआपुके बचनमें मोको प्रतीति नहींआई ताते मेरी मतिमलीन ह्वैगई ताते देखिकै बोधनहींभयो तहां आपुके बचनकी अवज्ञाको फलमैं भलीप्रकारते पायों ताते जाको गुरुनके बचनमें प्रतीतिनहीं है ताको कल्याण नहीं है जो कोटिप्रकारकरै कोटिन जन्मभरि ( ४९ ) हेनाथ जोमैं श्रीराम प्रभुतादेखेउं सो अब आपुकी प्रसन्नताते मोको बहुत भासिआयो तथापि कछुक संशय अबहूंबनी है सोसंशयकोकृपाकरिकै नाशकरहुमैं दूनोंकर जोरिकै बिनयकरतीहौं ( ५० ) अरुहेनाथ प्रथम सतीतनमेंमोको आपुबहुतप्रबोधकीन

## सुनाई ४८ तदपिमलिनमनबोधनआवा सोफलभलीभांतिमैंपावा ४९ अजहूंकछुसंशयमनमोरे करहुकृपाविनवोंकरजोरे ५० प्रभुम्वहिं तबबहुभांतिप्रबोधा नाथसोसमुझिकरहुजनिक्रोधा ५१ तबकरअसबिमोहअबनाहीं रामकथापररुचिमनमाहीं ५२ कहहु पुनीतरामगुणगाथा भुजगराजभूषणसुरनाथा ५३॥दो०॥ बन्दौंपदधरिधरणिशिर विनयकरौंकरजोरि बरणहुरघुपतिविशदयश श्रुतिसिद्धान्तनिचोरि ५४ ॥चौ०॥ यदपियोषिताअनअधिकारी दासीमनक्रमबचनतुम्हारी ५५ गूढ़ोतत्त्वनसाधुदुरावहिं आ

तहां मेरी अभाग्यते मेरेहृदयमें नहींआयो सोसमुझिकैक्रोधनकरब ( ५१ ) हेस्वामी तबकोऐसोमोहअबनहींहै अब श्रीरामचन्द्रकी कथामें अत्यन्त प्रीति है जाकेसुनेते सबसंशय जातीरहैगी ( ५२ ) अब श्रीरामचन्द्रको अतिपुनीत जो गुणगाथ है सो कहहु भुजंगराज जो शेषजू हैं जिनको अनंत कही सर्बजीवनके कल्याणकर्त्ता आचार्य्यरूप हैं सोई तुम्हारे भूषण हैं अरु तुमकैसेहौ संपूर्ण जो देवता हैं तिनकेनाथहौ ताते आपुते कछुजानिबेको बाकीनहीं है ( ५३ ) ॥दोहार्थ॥ पार्बती जू महिमें माथ नाइकै महादेवके युगलपदकै बन्दनाकरिकै यह कहतीभई हेप्रभु श्रीरघुपतिको यश अतिशय विशद सो कहहु पर वेदनकर सिद्धांत विचारिकै कहहु जोतत्त्वचारिहू वेदको सिद्धांत जाको वेदबर्णन करते हैं अरु पारनहीं पावते नेति नेति कहते हैं अरु जो तुमअपने अनुभवबिषे सिद्धांतकीनहै सोई कहहु काहेते तुमतेश्रेष्ठ कोईनहीं है तुमईश्वरहौ तुम ब्रह्मादिक देवतन में श्रेष्ठ अरु योगेश्वरनमें श्रेष्ठ अरु बिरक्तज्ञानी बिज्ञानी अरु जे परमानन्य परपतिभक्त हैं तिन सबनमें तुमश्रेष्ठहौ सबप्रकारसे ताते वेदांतके सिद्धांतको जो होइ परमरस सो रसकहौ निचोरिकै ( ५४ ) यदपि श्रीवेदांतश्रवणका अधिकारी नहीं है तदपि मैंतौ मनबचन कर्मसे तुम्हारीदासीहूं ( ५५ ) अरु यहप्रमाण है कि साधुजन जो हैं सो गूढ़कही जो तत्त्ववेदमें छपी है अनुभवते प्रत्यक्ष है सोऊनहीं दुरावते हैं कबजब कोईजीव परम तत्त्वके आरत अधिकारी हैं आरतकही जिनको यहिसंसारमें जेतेदेहकेसम्बन्धी अरु देह अरु मानबड़ाई इत्यादिक दुखरूपलाग्यो है जैसे बनके मध्यमें हाथी है अरु बनमेंचहूंफेर दावालाग्योहै अरु गजदावाकी तपनिते बिकल आरतह्वैकै भाग्यो कोईनदमें पर्योजाइ सुखी भयो तैसेजगत् की तापते विकलह्वैकै सत्संगसागरमें परैजाइ तब सुखीहोत है ताको अतिआरतकही अधिकारीकही वैराग्यविवेक षट्संपतियुक्तहोइ शम दमतितीक्षा उपरति श्रद्धा समाधान इतिषट् पुनि षट्शरणागत भगवत् अनुकूल मयसंकल्प प्रतिकूल मयत्याग आत्मसमर्पण कार्प्पण्यगोप्तृत्त्वबर्णन रक्षाप्रतीति इतिषट् इनसबनको स्वरूप कहिआये हैं याज्ञवल्क्य भरद्वाजके संबादमें इनकरिकै युक्तहोइ ताको अधिकारीकही

## रतअधिकारीजहंपावहिं ५६ अतिआरतपूछौंसुरराया रघुपतिकथाकहौकरिदाया ५७ प्रथमसोकारणकहहुबिचारी निरगुणब्रह्म

तहां जे केवल आरत हैं ते सामान्य हैं अरु जे केवल अधिकारी हैं तेभीसामान्य हैं दूनोंमिले विशेषहैं तासों साधुनहीं दुरावते तहां मैं दूनों हौं ताते मोसे कहौ ( ५६ ) पार्बती कहती हैं हेसंपूर्ण देवतनके स्वामी मैंअतिआरत अधिकारी ह्वैकै पूछतिहौं श्रीरघुपति कै कथा अतिपवित्र सो दया करिकै कहहु ( ५७ ) पार्बतीजू महत्प्रश्नकरती हैं जा प्रश्न में पूर्बापर मध्यप्रसंग समस्तसूचितहोइगो हे महादेव स्वामी तुमपरमगुरुहौ प्रथमहिं सो कारण विचारि कै कहौ निर्गुण जो ब्रह्म सर्बब्यापक सबको नियन्तासर्बसाक्षी सर्व ते भिन्न अतिसूक्ष्मतर सूक्ष्म अज अकल अभेद ऐसोब्रह्म सगुण कैसे होत है पार्वती के जो पूर्बही सतीतन में तीनिसन्देह भयेरहैंएकतो यह सन्देह कि महादेव राजा के पुत्रको सच्चिदानन्द परधाम कहे परस्वरूप बिग्रहकहे हैं तब सतीतन में यह सुनिकै विचार कीन कि ब्रह्मकेद्वैस्वरूप वेदवरणत है एकसगुणब्रह्मएकनिर्गुणब्रह्म तिनको सच्चिदानन्द कहौ जो कहौ कि निर्गुण ब्रह्म जो है सोई देहधरेउ है तहां निर्गुण ब्रह्म जो सर्वव्यापक ताको देहधरिबे को कछुकारणै नहीं है ताते ब्यापक ब्रह्म निर्गुण सो षेराजपुत्रनहीं हैं अरु जो कहौ कि विष्णुभगवान् देवतनकेहेतुनरतनधरते हैं तहं विष्णु तो सर्बज्ञ हैं जैसे महादेव सर्बज्ञ हैं ते विष्णु अज्ञानकी नाईं कैसे आपनीप्रिया को खोजैंगे ताते ये राजपुत्र विष्णुभी नहीं हैं सतीजूके मनमें दोऊस्वरूप को निषेधभयोहै अरु सतीजू यह विचारकीन कि महादेव के बचन बृथानहीं हैं ते तीनिहूं सन्देह अब पार्बतीतनमें स्मरणकरिकै गर्भित प्रश्नकरती हैं क्रमहौ ते दोऊप्रश्न के अवान्तर समस्त तात्पर्य्य हैं। दोऊप्रश्न कौन हैं चौ०॥ प्रथमसोकारणकहहुबिचारी निर्गुणब्रह्मसगुणबपुधारी प्रनिप्रभुकहहुरामअवतारा प्रथम निर्गुण ब्रह्मको प्रश्नकरती भई काहेते कि मेरीमतिमें निर्गुणब्रह्म सगुणनहीं होतहै आगे जो महादेव कहैंगे कि निर्गुणब्रह्म सगुणरूप धारणाकरतु है तौ मैं यह समुझौंगी कि मोते सतीतनमें नहींसमुझतबन्योहै अबमैं यह जानिहौं कि श्रीरामचन्द्रै निर्गुणब्रह्म हैं भक्तनके हेतु स्वरूप धारणाकियो है अरु जो श्रीरामचन्द्रको निर्गुणब्रह्म नहींकहैंगे तो श्रीरामस्वरूप धौं कवनी रीति वर्णनकरैंगे तहां पार्वतीके प्रथमप्रश्नको तात्पर्य्य यहीहै जो

**सगुणबपुधारी ५८ पुनिप्रभुकहहुरामअवतारा बालचरितपुनिकहहुउदारा ५९ कहहुयथाजानकीबिबाही राजतजासोदूषणकाही ६० बनबसिकीन्हेउचरितअपारा कहहुनाथजिमिरावणमारा ६१ राजबैठिकीन्हेउबहुलीला सकलकहहुशङ्करसुखशीला ६२**

कहिआये हैं ( ५८ ) आगे दूसरप्रश्न करतीहैंहे प्रभु पुनि श्रीरामचन्द्रको अवतार कहौ पुनि बाललीला कहौ जो अतिउदार है जाते मोको सर्ब जानिपरै यह प्रश्न को तात्पर्यहै कि जो निर्गुणब्रह्म श्रीरामचन्द्रको नहींकहैंगे तो यह कहैंगे कि श्रीरामचन्द्र साक्षात् विष्णुको अवतार है तब मैं यह जानिहौं कि सतीतनमें जो मैं सन्देह कीन्ह्योरहै कि ये राजपुत्र विष्णुनहीं हैं सो यह मोसे नहींसमुझत बन्यो अरु महादेव तौ श्रीरामचन्द्र को नतौ निर्गुणब्रह्म कहैंगे अरु न तौ विष्णु को अवतारकहैंगे तबधौं श्रीरामचन्द्र दशरथ के पुत्र हैं तिनको स्वरूप कवनीरीति वर्णनकरैंगे जो मैं देखेउहै बन में परात्पर बिग्रहस्वरूप ताते दूसरे प्रश्न कीन्ह्यो है पार्वतीजी हे भरद्वाज ( ५९ ) समस्तप्रश्न दोईप्रश्न के भीतर जानब हे प्रभु श्रीजानकीजी को विवाह अतिसुन्दर नीकीप्रकारकहौ अरु राज्यको त्यागकीन सो कवने दूषण ते ( ६० ) अरु जो वनमेंबसिकै चरित्रकीन सो कहौ अरु रावण त्रैलोक्यबिजयी ताको रणमेंनाशकरिदीन सोकहौ ( ६१ ) अरु राज्यपर बैठे तब अनेक दिव्य लीलाकीन सो कहौ अरु यह बड़ी बिचित्र लीलाभई कि जब श्रीरामचन्द्र राज्यपर बैठे तब ब्रह्माण्डभरके जीवपरमपद के अधिकारी होत भये हैं सो कहौ ( ६२ ) दोहार्थ॥ अरु हे करुणायतन यह बड़ो आश्चर्य्य श्रीरामचन्द्र कीन है ऐसी लीला नतौ कोई अवतार में कीन है अरु बिनाअवतारहू नहींकियो है जैसी लीला श्रीरामचन्द्र कीन है किसहित प्रजा अरु श्रीअयोध्याकी मर्य्याद द्वादश २ योजन चारिहू दिशा तहां के जीव जे चराचररहे अरु जेते बानर रीछसमस्त सेनारही रावण के संग्राम में तिनसबन को अपनो स्वरूप सबको दैकै सबको संगही परधाम को लैगये सो कैसे लैगये सो कहौ सो महादेव उत्तरकाण्ड में कहे हैं जहां प्रभाव वर्णन कीनहै अरु श्रीरघुनाथजीकी बाटिका स्थितताई ॥ चौपाई॥ एकबार रघुनाथबुलाये ( ६३ ) हे प्रभु पुनिसो तत्त्व बखानिकै कहौ जेहितत्त्व बिज्ञानते मुनीश्वर मग्नहोते हैं सो कहौ ( ६४ ) भक्ति ज्ञान बिज्ञान वैराग्य इत्यादि समस्त बिभागबि-

दो०॥ बहुरिकहहुकरुणायतनकीन्हजोअचरजराम प्रजासहितरघुबंशमणि किमिगवनेनिजधाम ६३ चौ०॥ पुनिप्रभुकहहुसोतत्त्व बखानी जेहिविज्ञानमगनमुनिज्ञानी ६४ भक्तिज्ञानविज्ञानविरागा पुनिसबवरणहुसहितबिभागा ६५ औरौरामरहस्यअनेका कहहुनाथअतिबिमलबिवेका ६६ जोप्रभुमैंपूंछानहिंहोई सोउदयालुराखहुजनिगोई ६७ तुमत्रिभुवनगुरुवेदबखाना आनजीवपामर काजाना ६८ प्रश्नउमाकरसहजसुहायेछलविहीन शंकरमनभाये ६९ हरहियरामचरितसबआये प्रेमपुलकिलोचनजलछाये ७०

भागकहौ ( ६५ ) औरौ श्रीरामचन्द्रकी रहस्य जो अनेक प्रकारकी है सोकहौ रहस्यकही श्रीरामचन्द्रको स्वभाव कृपा करुणा दया उदारता सदा प्रसन्नता एकरस अरु यावल्लीला है सो सब परम रहस्य है अरु ज्ञानभक्तिको भेद इत्यादिक सोभी राम रहस्यकही अरु हे नाथ बिमल बिवेक कहौ एक विवेकगुण सम्बन्धी है अरु एक विवेक भगवत् सम्बन्धी है सारासारको बिवेक ताते बिमल कहां ( ६६ ) हेनाथ जो मोरनहीं जाना है अरु जो मोरे पूंछिबेमें कछुरहिगयोहोइ अरुजोमैंनहींपूंछ्योंहोइ सो सबकहहु काहेते तुम दयालुहौ अरु मैं आरतहौं ताते सबकहौ कछु गोइन राखहु ( ६७ ) तुमतीनिहुं लोकके गुरुहौ शिक्षाकरिबे को अपर जीवजे हैं पामरकहे जिनको तीनिहीं गुणकोज्ञान है तेपामरकाजानैंगे ( ६८ ) तहां हे भरद्वाज उमाकोप्रश्न सहजही शोभितहै अरु निश्छल निष्कपट ऐसोप्रश्न पार्बतीकोसुनिकै शंकरके मनमें बहुत आनन्दभयो ( ६९ ) तहां पार्बतीके प्रश्नकिहेसंते तब महादेवके हृदयमें श्रीरामचरित सबआये तब महादेव प्रेमतेमग्न होतभये नेत्रनते जल चलतभयो ( ७० ) श्रीरघुनाथजीकोरूप महादेवके हृदयमें आयो परमानन्द जो अमितसुख है तातेभरिरहे हैं तहां जैसेजैसे पार्बतीजीप्रश्न कीन्ह्योहै तैसेतैसे क्रमहींते महादेव स्मरणकरते हैं शिवजी तोसदारामानन्दमें इछके हैं तहां पार्बती के प्रश्न के अनुस्यूतस्मरणकरिकै समाधान करैंगे प्रथम पार्बती जी श्रीराम चरितको प्रश्नकीन्ह्यो है सो हरकेहृदयमें श्रीरामचरित सब आयो है पुनि निर्गुणब्रह्मकोप्रश्न कीन्ह्यो है कि निर्गुण जो ब्रह्मव्यापक सो कैसे सगुणहोत है ताते श्री रामरूप हृदयमें आयो काहेते श्रीरामरूपही चेतनरूप सर्बत्रव्याप्त है तहांप्रमाण ( सनत्कुमारसंहितायांश्लोकएक ) रामंसत्यं परंब्रह्म रामात्किंचिन्न विद्यते ॥ तस्माद्रामस्यरूपोऽयंसत्यंसत्यमिदंजगत् १ ताते महादेवकेहृदयमें रामरूप आयो पुनि पार्बती प्रश्नकीन्ह्यो श्रीरामवतार कहहु ताते आगेके दोहामें श्रीरामचन्द्रके स्वरूपको ध्यानकरहिंगे सुन्दर श्याम किशोर विग्रहपरब्रह्मसूरति जाते सबप्राप्त हैं पर चरितरूप स्वरूपकही है ( ७१ ) दोहार्थ॥ तहां हेभरद्वाज श्रीमहादेव श्रीरामस्वरूपको ध्यानकीन्ह्योताही ध्यानकेरसमें दुइदंड मग्नकही डूबिगये पुनि मनको बाहरकरिकै

श्रीरघुनाथरूपउरआवा परमानन्दअमितसुखपावा ७१ ॥दो०॥ मगनध्यानरसदण्डयुग पुनिमनबाहरकीन्ह रघुपतिचरितमहेश तब हर्षितवरणैलीन्ह ७२॥ * * * * * * * *

महेशजी श्रीरघुपति को चरित कहिबेकी अतिहर्ष संयुक्त इच्छाकीन जोकोईकहै कि दुइदंडमग्नभये हैं अरु मग्नह्वैकैं पुनि मन ऐसे आनन्दसे क्यों निकारयो है सो कहते हैं युगदंडकही द्वैत सेवकसेव्यभाव पुनिद्वैदंडकही मायासंबंधजे द्वैत हैं मैं मोरतोरतैं मैं इत्यादिक जो द्वन्द्व तेहिकोएक रसकरिकै तब ध्यानको रसमिलत है अथवा पार्बतीकोद्वैत हृदयमें बिचारिकै कि इनकोद्वैत कैसे नाशहोइ तब श्रीरामस्वरूप को ध्यानकरतसंते समस्त अभिप्राय हृदयमें आइगयो ताते दुइदण्डकहा अरु साधारण शास्त्रनमें बर्णनहै कि जे निजभगवज्जनहैं तिनको भगवान् अपनीविभूति ऐश्वर्य्यलीला इत्यादि दुइदण्ड में जनायदेते हैं अरु ध्यानविषे पार्बतीके प्रश्नको अनुसन्धान बनोरह्योहै अरु ताहीहेतु ध्यानकीन्हहै तातेमन बाहरभयोहै ( ७२ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकाण्डेउमाप्रश्नशिवश्रवणध्यानबर्णनंनामएकोनविंशतिस्तरङ्गः १९॥

दोहा॥ विंशतिसुभगतरंगमें प्रश्नोत्तरगौरीश सावधानश्रोताबहुरि रामचरणधरिशीश ( २० ) आगे तीनि चौपाई की एकही अन्वय है हेभरद्वाज शिवजी रघुपति के बालस्वरूप को ध्यानकरिकै मनको बाहरकरिकै पुनिबालस्वरूप श्रीरामचन्द्रको वन्दनाकीन्ह अरु मनमें यह बिचारकीन्ह कि श्रीरामचन्द्रै अपने स्वरूप करिकै सर्बव्यापक हैं जैसे सूर्य अपने घन तेजकरिकै सर्वत्र प्रकाशकरिरहे हैं तैसे श्रीरामचन्द्र अपनाघन तेजरूप जो है परमदिव्य एकरस सर्बकाल परिपूर्ण सोई रूप ते व्याप्त हैं ( ब्रह्माण्डपुराणेश्रीरामगीतायांश्लोकएक ) यथानेकेषुकुंभेषु रविरेकोऽपिदृश्यते ॥ तथासर्वेषुभूतेषु चिंतनीयोऽस्म्यहंसदा १ तहां यह जगत् झूंठा है जिन श्रीरामचन्द्र को व्यापकरूप जाने बिना जगत् सत्यइव भासत है जैसे रात्रिविषे जेवरी कोई देख्यो तब वाको सर्प्प भ्रमभयो जब कोई यत्न ते जेवरीका ज्ञान यथार्त्थ भयो तब इसजेवरीविषे सर्प्प की भ्रांति मिटिगई तहां आगे वह प्राणी सर्प्प देखैहै तव तो रज्जुविषे सर्प्पकाभ्रमभयाहै ताते जेहिको रज्जुविषे यथार्त्थ ज्ञानभयो तेहि को भ्रममिटिगयो है जब रज्जुमें निश्चयभई तब सर्प्पकी भ्रांति मिटिगई अरु जोकहै कि सारे जगत्के सर्प्पमिटिगये हैं सो यह कहना नहीं सम्भवै है तहां अपनेस्थान में माया भी सत्य है अरु श्रीरामस्वरूप व्यापक ब्रह्मविषे माया झूंठी है नहींहै अरुयहां तो महादेव के समुझिबे और कहिबे को यह तात्पर्य है कि श्रीराम

**चौ०॥ झूंठौसत्यजाहिबिनुजाने जिमिभुजंगबिनुरजुपहिंचाने १ जेहिजानेजगजाइहेराईजागेयथास्वप्नभ्रमजाई २ बन्दौंबालरूपसोइरामू**

चन्द्र विषे पार्बतीने सतीतनमें प्राकृतइव लीला देख्यो तव भ्रमभयो सोवहै लीला प्राकृतरहित परमदिव्य ब्रह्ममय सो शिवजी देखाइकै पार्वती को भ्रमहरहिंगे जैसे रज्जुमें सर्प्पकोभ्रमभयो कोई ने रसरीचिन्हाइदियोतब भ्रममिटिगई तैसे श्रीरामचन्द्र की लीला जो परमदिव्य है तेहिलीलामें जो कोई प्राकृत रोपणकरै ताको रज्जु भुजङ्गवत् भ्रमहोतहै काहेतेउनको प्राकृत गुरूमिलेउ है अच्छो वेदवेत्ता गुरुनहीं मिलेउ है अरु निर्गुणब्रह्म सगुणब्रह्म दोऊ स्वरूपनकी एकता अरु भिन्नता इनकाबोध करनेवाला ऐसो सद्गुरु उनको नहींमिलेउ अथवा सद्गुरुनकै कही उनको नहींसमुझिपरउ ताते जब सद्गुरुनकरिकै श्रीरामचन्द्र जानिजाहिं तब जगत् श्रीरामचन्द्रविषे भ्रमरूपसो मिटिजाइहै जैसे रज्जुके ज्ञान ते अहि को भ्रम मिटिजात है ( १ ) जेहिकेजाने यह जगत् हेराइजात है फेरिनहींमिलै जैसे स्वप्नविषे किसू को कोई पदार्थ प्राप्तभयो तब उसने निश्चय कियो जबवह पुरुष जाग्यो तब स्वप्नको पदार्त्थजातरह्यो तैसे जो जागबहै सोई श्रीरामचन्द्र को जानब है जब श्रीरामचन्द्र को सद्गुरुन करिकै जान्यो तब श्रीरामचन्द्र विषे जो भ्रमभयो सो हेराइगयो अरु तब उसको सहित व्यवहारसमस्त स्वप्नवत् बीतिगयो वह प्राणी जीवन्मुक्तभयो अन्त में परमपदकी प्राप्तिभई ( २ ) ऐसे जे श्रीरामचन्द्रहैं तिनके बालकस्वरूपको महादेव नमस्कार करते हैं जिन श्रीरामचन्द्र को रामनाम जो है तेहिके जपेते सब अबिधि नाशहोत है अरु सर्वविधि सुलभहोतहै काहेते कि श्रीरामनाम के आधीन समस्त बिधि है तहां एकबिधि है अरु एक निषेध है इहां यहविधिकही जो बिधि श्रीरामचन्द्रको प्राप्तकरै योगवैराग्य ज्ञान बिज्ञान ध्यान भक्ति इत्यादिकजो श्रीरामचन्द्र के अनुकूल है ताको विधि कही अरु काम क्रोध लोभ मान मद ईर्षा मात्सर्य इत्यादिक जे श्रीरामचन्द्र से प्रतिकूल हैं ताको निषेधकही तहां रामनाम जपेते समस्त बिधि स्वाभाविके सुलभहोती हैं अरु निषेधको नाशहोतहै अथवा सब विधिकही सबप्रकारते श्रीरामस्वरूप श्रीरामधाम श्रीराम लीला श्रीरामप्रताप सहजही प्राप्तहोत है ऐसो श्रीरामचन्द्रको नाम तिनको बालस्वरूप बन्दौं ताते बालचरित इत्यादिक समस्त चरित मेरे हृदयमें आवैं ताते महादेव ने बालहीस्वरूप की बन्दनाकीन्हहै पुनि श्रीरामचन्द्र श्रीदशरथमहाराज के सदनमें अवतीर्ण भये तहां जैसे राजन के बालक लीलाकरते हैं तैसे करहिंगे जैसे कोईराजन के बालकके हाथमें रत्न है अरु तेहिबालकको जो एकलेडुआकोईदेय तो वह बालकते रत्न

**सबविधिसुलभजपतजेहिनामू ३ मंगलभवनअमंगलहारी द्रवौसोदशरथअजिरबिहारी ४ करिप्रणामरामहिंत्रिपुरारीहर्षिसुधासमगिरा उचारी ५ धन्यधन्यगिरिराजकुमारी तुमसमाननहिंकोउउपकारी ६ पूंछेहुरघुपतिकथाप्रसंगासकललोकजगपावनिगंगा ७ तुमरघुबीर**

मांगिलेइ अरु वह बालकहू हर्षिकै दै देत है अरु जो वहै बालक सयानभयो तब कितनीहूं मिठाईदेइ तब वहरत्न नहींदेइ है तैसे श्रीमहादेव श्रीरामचन्द्र के बालस्वरूपको नमस्कारकरिकै सम्पूर्ण परमतत्त्व लीलाधाम नामस्वरूप गुण प्रताप ज्ञान बिज्ञान भक्तिइत्यादिक समस्त फुसिलाइकै मांगिलीन्ह है कैसे जानिये देखिये तो दशरथमहाराजके अजिरमें जो बाललीलामें कागभुशुण्डकोबरदीनहै सो बर किसूमुनीश्वरकोनहीं दियो है ताते महादेव प्रथम बालही स्वरूप की बन्दनाकीन्ह यह अर्त्थ उक्तिकरिकै कहे हैं ( ३ ) ते श्रीरामचन्द्र अरु रामनाम सम्पूर्ण मङ्गल के भवन हैं अरु सम्पूर्ण अमङ्गलके नाशकर्त्ताहैं ते श्रीरामचन्द्र वालस्वरूपदशरथ के अजिरबिहारी मोपर द्रवैं जाते समस्त श्रीरामपदार्त्थ मेरे हृदय में आवै ( ४ ) श्रीरामचन्द्रको प्रणामकरिकै अमृतमय बचन महादेव बोलतेभये ( ५ ) गिरिराज जो हिमाचल है तिनकी तुम कन्याहौ ताते तुम धन्यधन्य हौ दुइबार धन्यकहां सो अतिआदर कीन्ह तुम्हारीसमान सबको हितकारी दूसर कोई नहीं है गिरिजो है सो सबको हितकारी स्वाभाविकै होत है ताते गिरिराज कुमारी कहा ( ६ ) श्रीरघुपतिकी कथासमस्त प्रसङ्गसंयुक्त जो तुम प्रश्नकीन्ह है सो श्रीरामकथा कैसी है श्रीगङ्गाइवहै तुम्हारो प्रश्न भगीरथरूपहै तहां भगीरथ गङ्गालैकै जगत्को कल्याणकीन्ह पर जेहिलोक में गङ्गागई हैं अरु श्रीराम कथारूप गङ्गा जो है नवखण्ड सातहुद्वीप चौदहौभुवन तीनिहुंलोक इन सबनको पवित्रकीन्ह ताते तुम धन्यतरहौ ( ७ ) अरु हे पार्बती तुम तौ श्रीरामचन्द्र के चरण पंकजकी अनुरागिनीहौ मैं जानतहौं अरु जो प्रश्नकिह्योहैं सो यहरीतिहीहै कि जे श्रीरामतत्त्व जानिकै जीवन्मुक्त होइरहे हैं तेऊ अति प्रीति ते श्रीरामकथा पूंछते हैं अरु जो अपनेते जिज्ञासाकरै है ताहूते कहते हैं अरु उनहीं के कहेते सुनेते सब जगत्को हितकारहोत है ऐसो तुम्हारो प्रश्न है ( ८ ) दोहार्थ ॥ हे गिरिसुता श्रीरामकृपाते तुम्हारे शोकमोह सन्देह भ्रम सो मेरे बिचार में अब नहीं है काहेते कि शोक इत्यादिक तबताईं जानिये जबताईं आरत ह्वैकै सद्गुरुन ते प्रश्न न करै तबलगि सब है गिरिसुता क्यों कहा अबते तुम्हारीबुद्धि अचल है जो मैं कहौंगो तामें नहींचलैगो पुनि शोक काकोकही जो तत्त्व कछु प्राप्तरह्योहैअरु कोईयोगते जातरह्यो ताकी कल्पना ताको शोककही पूर्व सतीतन

## चरणअनुरागीकीन्हेउप्रश्नजगतहितलागी ८ दो० रामकृपातेगिरिसुतासपनेहुंतवमनमाहिंशोकमोहसंदेहभ्रमममविचारकछुनाहिं ९

में जो शिव अगस्त्य के सम्बाद में तत्त्वप्राप्तभयो अरु आगेहूते जो प्राप्तरह्यो सो श्रीरामचन्द्रकी बनकीलीला देखिकै जातरह्यो सतीको शोक भयो पुनि मोह कही जो महान्पुरुषके कहेमें सामान्य बोधकरै अरु अपने जानबेमें बिशेष बोधकरै इत्यादिक अपनपौ सोई मोह अरु सद्गुरु वाक्यमें अप्रतीति सो मोह तहां सतीजू महादेव को कहानहींमान्यो अरुअपनीबुद्धि ते श्रीरामचन्द्र को राजपुत्र निश्चय कियो ताते मोह ह्वैगयो सन्देहकही सन्देहालंकार कोई पदार्थ है तामें सन्देहभयो कि ऐसोहै तहांसतीजू श्रीरामाचन्द्र को राजपुत्रमान्यो अरु महादेवने सच्चिदानन्द कहा तब सती के मन में यहआयो कि ये दोऊकुमार राजपुत्रहैं कि परमात्माहैं यह सन्देहभयो पुनि भ्रमकही कोई पदार्थहोइ तामें अपरपदार्थ आरोपणकरै जैसे रज्जुबिषे भुजंग सोभ्रमालंकार है तहां सतीजू श्रीरामचन्द्र परब्रह्म तिनमें प्राकृत भावनाकीन्ह सो भ्रमभयो तहां महादेव कहते हैं कि हे पार्वती मोरे बिचारमें शोक मोह सन्देह भ्रम अब तुम्हारे नहींहैतात्पर्य्य यह है कि अब एकहू नहींरहैगो ( ९ ) हे पार्वती यद्यपि तुम निस्सन्देहहौ तदपि नीकीशंका किहेहु है इहां व्यंग्यार्थहै तुम्हारे प्रश्नमें शंकानहीं है अशङ्काहै काहेते जो सुनत कहत सब को हितकारहोइगो यहिप्रसंगमें आश्वासन अरु भयदर्शन अरु प्रीति शिवजू पार्बतीको दिखावते हैं प्रथम आश्वासन कीन पुनि भयदर्शन करावते हैं सावधान करते हैं यहसद्गुरु जिज्ञासू की रीति वेद बर्णत हैं कि प्रथम आदर करै जाते श्रोताको मन प्रसन्नहोइ पुनि कोईयुक्तिसे अरु किसूके मिसु करिकै जिज्ञासूको भय दिखायकै तब तत्त्व उपदेशकरै तेहिके उपरान्त तत्त्व में प्रीतिकरावै तब मुमुक्षु जीवन्मुक्तहोइ ताते श्रीमहादेव जी प्रथम आदरदीन्ह अब भय दिखावते हैं ( १० ) हे पार्बती जे श्रीरामकथा श्रवण ते चित्तलगाइकै नहींसुनैं तिनके कान रन्ध्र हैं कौन रन्ध्र हैं अहि भवनसम किन्तु एककान कोट को रंदा है अरु एक कान सर्प्पको बिल है जे कोई श्री रामयश छांड़िकै किसूकी निन्दाबिषे बार्त्ता सुनते हैं तहाँ जैसे रंदामें बंदूकचलैहै अरु अहिभवनमें अहि समातहै तैसे उनकेकानमेंनिन्दा बिषयप्रवेश करत है तहां श्रीरामकथाकैसेसुनैं जैसे मृगा

तदपिअशंकाकीन्हेउसोई कहतसुनतसबकरहितहोई १० जिनहरिकथासुनीनहिंकाना श्रवणरन्ध्रअहिभवनसमाना ११ नयनन सन्तदरशनहिंदेखा लोचनमोरपक्षकेलेखा १२ तेशिरकटुतुमरीसमतूला जेननमहिहरिगुरुपदमूला १३ जिनहरिभक्तिहृदयनहिं आनी जीवतशवसमानतेप्रानी १४ जेनहिंकरहिंरामगुणगाना जीहसोदादुरजीहसमाना १५ कुलिशकठोरनिठुरसोइछाती सुनि

राग सुनते हैं तहां सबको कहतेहैं अरु पार्वतीको कहतेहैं कि सावधानह्वैकैसुनो जो मेरी बाणी सुनत सन्ते चित्तकी वृत्ति अन्तै कहूं गई तो तुम्हारे श्रवण रन्ध्रअहि भवनह्वै जाहिंगे महादेवकेकहिबेको यहै तात्पर्यहै पर यहसबको कहा है अब याहीरीतिते यह प्रसङ्गभरेको अर्त्थ जानब ( ११ ) पुनि जहां सन्त सुनैं अरु चलिकै दर्शनको न जाहिं तो उनकेनेत्र मयूरकेपक्षर्कीरेखाहैं नाम नेत्रको आकार मात्रहै पर अन्धेहैं तहां महादेव कहतेहैं कि मेरे मुखमें तुम्हारी दृष्टि नहीं चलै काहेते कि बक्ताके मुखको श्रोताकैदृष्टिलगीरहै डिगैनहीं तब सद्‌गुरुकै तत्त्व नेत्रद्वारह्वैकै प्रवेशकरतु है ( १२ ) पुनि तिनकेशिर करूलौकी सम हैं ताके भीतर कटुपदार्त्थ रह्योहै तिनके शिर अरु गुरु जो है सो प्रत्यक्ष तिनको पद मूल एँड़ी अंगुली नख पद पीठ युगल तामें जाके शिर आरतह्वैकै नहीं नवैं तिनकेशिर कटुतुंबी सम हैं ( १३ ) पुनि जे प्राणी अपने हृदयमें श्रीरामचन्द्रकै भक्ति नहीं ल्यावैं ते प्राणी जीवतहैं पर शव कही मुर्दा समहैं जीवत मृतक क्योंकहेमृतकको सियार श्वान गीध इत्यादिक नोचि नोचि खाते हैं अरु हरिबिमुखनको कुटुम्ब दारा पुत्र इत्यादिक निशिदिन फारि फारि खाते हैं ( १४ ) जे प्राणी जीभते श्रीरामगुण नहीं गानकरते रामनाम नहीं उच्चारणकरते तिनकै जीभ दादुरकी समहै जो कहो कि दादुर तो जीभ रहितहै उसकीबाणी कपोल कल्पित है अनर्त्थ है तहां दादुरके कपोलही में जीभहै तहां जे रामगुण रामनाम संबंध रहित बोलते हैं तिनकीबाणी दादुरसम बिनुअर्त्थ है बृथा है अरु जेहिसमाजमें श्रीरामगुण यशनहीं कथनहोइ सो सभामेंढुकनकी समाजजानिये काहेतेकि इक्कीसहजारछसै २१६०० श्वासा आठपहरमें चलती हैं साधारणअरुजेबहुतसोवते हैं बहुत चलते हैं बहुत भोजनकरते हैं बहुतबोलतेहैं तबश्वासाबढ़िजाती है तितने बिधाताके अंकहुते आयुर्बलक्षीणहोती है अरु ब्रह्मा श्वासहीकी गिनतीते दिनमासबर्ष बांधते हैं ताते जन्ममरण पर्य्यन्तताई जैश्वासा बिनुराम नामजाती हैं तितनेही हिसाबमें जन्ममरण होतहै ताते जे बिवेकी जनहैं ते अहर्निश श्रीरामयश गुणनाम अनेक कथनकरते हैं ( १५ ) हरिकोयश सुनिकै जिनको हृदय नहींहर्षत है तिनकीछाती कुलिशहुते कठोर जानिये यहिप्रसंग

हरिचरितनजोहर्षाती १६ गिरिजासुनहुरामकैलीला सुरहितदनुजविमोहनशीला १७ ॥ दो० ॥ रामकथसुरधेनुसमसेवतसबसु

में यहधुनिहै कि पार्वतीको सावधान कीन है अरु भयदर्शन कराये हैं किजो अब मेरीवाक्यते कोई अंगडिगैगो तौ ऐसही होइगो जैसे कहिआये हैं पुनिधुनिहै कि जबजिज्ञासू सद्‌गुरुनते तत्त्वकी जिज्ञासा करै तो सर्बांगसवाधान ह्वैकै सद्‌गुरुकी बाणीसुनै जैसेमृगा रागको सुनै है तब सद्‌गुरु की बाणी फलीभूत होती है ( १६ ) हेगिरिजा श्रीरामचन्द्रकी लीलासुनहुअबतुम्हारी बुद्धि स्थिरहै श्रीरामलीला कैसीहै जिन जीवनकै बुद्धि दैवी संपत्ति में है तिनको अति हितकारी हैअरु जिन जीवनकै बुद्धि आसुरीसंपत्तिमें है तेव्यामोहित हैं श्रीरामलीला देखिकै सुनिकै दैवी बुद्धिवारे यहकहते हैं कि देखिये तो परब्रह्म श्रीरामचन्द्र जो हैं ते अपने जननकेसुखहेतु अनेक तरहकी लीलाकरते हैं जालीलाको सुनिकै समुझिकै गाइकै अनेकनजीव कृतार्त्थ होते हैं अरु जिनकै आसुरी बुद्धि है तेयह कहतेहैं कि रामचन्द्र परमेश्वरहोते तौजानकीकोक्योंढूंढ़ते फिरते नागफांसमें क्योंबंधन होते जब लक्ष्मणके शक्तिलागी तबक्यों रोवनेलगे ऐसेही अनेक असंभावना करिकै परमेश्वरबिषे प्राकृतभाव रोपण करिकै व्यामोहित होते हैं हे पार्बती ऐसेही सतीतनमें तुमहूं मोहको प्राप्तभईहौ सो सुनहु ( १७ ) ॥ दोहार्थ॥ हे पार्बती श्रीरामकथा सुरधेनुसम है परसुरधेनु तीनि हींफलकी दाताहै अरु श्रीरामकथा चारिहूफल अरुभक्ति श्रीराम स्वरूप श्रीरामधाम सबकीदाता है अरु सुरलोक सम संतसमाज तहाँ रहतीहै ऐसो समुझिकै ऐसो कौन अभागी है जो श्रीरामचरित नहीं सुनै अरु जो

श्रीरामचरित नहींसुनैहैं तिनको लोक परलोक दोनोंनष्ट हैं अरु जिनकै दैवीबुद्धि है तिनको अमृतरूप है अरु जिनकै आसुरीबुद्धि है तिनको बिषरूप होइजात है जैसे स्वाती नक्षत्रको जल जो सीपके मुखमें परै तो मुक्ताहोत है अरु सर्प्पके मुखमें परैतो विषहोत है तैसे श्रीरामकथा सुनिकै संतजन परम दिव्यलीला जानते हैं अरु आसुरी बुद्धिवाले प्राकृतइव लीला मानते हैं ( १८ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेवालकांडे श्रोतासावधानकृतेएकविंशतिस्तरंगः २१॥ :: :: ::

दोहा ॥ बाइससुभग तरंगमें उत्तरप्रश्नबहोरि रामचरण भयदर्शना श्वासनप्रीतिनथोरि ( २२ ) हे पार्बती श्रीरामकथा सुन्दरिकरतारी सम है

खदानि सन्तसभासुरलोकसमकोनसुनैअससजानि १८ * * * *

राककथासुन्दरिकरतारी संशयबिहंगउड़ावनिहारी १ रामकथाकलिविटपकुठारी सादरसुनुगिरिराजकुमारी २ रामनामगुण चरितसुहाये जन्मकर्म्मअगणितश्रुतिगाये ३ यथाअनन्तरामभगवाना यथाकथाकीरतिगुणनाना ४ तदपियथाश्रुतिजससिमति

संशयरूपी बिहंग ताको उड़ाइ देतहै पर जो एक हाथहलावै तो बिहंगनहींउड़ै है काहेते शब्द होतहीनहीं कैसे बिहंग उड़ै तैसे अकेलही कथा बांचै तौ संशय नहींजाइ है अरु एक अंगुली अरु हथौरीबजावै तहां अल्पशब्द होइगो तबहूं नहीं बिहंगउड़ैगो तैसे जो श्रोता में अल्पबुद्धि है किन्तु बक्तै अल्पबुद्धि है तहां संशय नहींजाइ है तहां जो बराबरि ताल बाजै तौ बिहंगउड़ै है तैसे श्रोता बक्ता जानब ( १ ) हे पार्बती कलि जो कलियुग है पापमय किन्तु कलिकही क्लेश जो है जन्ममरण सो बिटपहै ताके काटिडारिबे को श्रीरामकथा कुठारीइव है सो रामकथा आदर संयुक्त सुनहु चित्तकी बृत्ति एकाग्रकरिकै ( २ ) हे पार्बती श्रीरामनाम श्रीरामगुण परमदिब्य श्रीरामकीर्त्ति परम निर्म्मल श्रीरामजन्म श्रीरामकर्म्म इत्यादिक जो हैं परमदिब्यतर सो अगणित हैं वेद भी कहते हैं ( ३ ) यथाअनन्त श्रीरामस्वरूप हैं तथा कथा कीर्त्ति गुण इत्यादिक नानाविधिते हैं किसू के जानिबे कहिबे योग्यनहीं भगवान् शब्द को अर्त्थ पूर्ब कहिआये हैं ( ४ ) तदपि यथा वेदकहते हें तथा मैं कहौंगो अरु जो मेरीमति के अनुभवमें आवैगो सोभी कहौंगो काहेते तुम्हारीप्रीति श्रीरामचरितमें अतिशय देखिपरती है ( ५ ) उमा मा संज्ञा जीवकीहै उ कही उपसर्ग्गनाम संस्कार जेहि जीव के श्रीरामतत्त्व जानिबे को अरु सद्गुरुनते प्रश्नकरिबे को संस्कारहोइ ताको शुद्ध जिज्ञासूकही ताते उमाकहा अथवा महादेव कहते हैं हे उमा मा कही मेरी उपसंगी तू है ताते तुम्हारो प्रश्नमोको अतिप्रिय लागेउ है सहजही शोभित है काहेते तुम्हारे प्रश्न में सर्बसन्त सम्मतहै ताते तुम्हारो प्रश्न मोको बहुत भायो है आगे उमा तो ईश्वरी है महादेव की अर्द्धांगी है अहर्निश रामाकार है ( ६ ) इन चौपाइन में श्रोता को आदर करिआये अब श्रोता को भय दिखावते हैं अरु जो अपनेइष्टको छोड़िकै दूसरे स्वरूपको निश्चय ब्रह्मकरै तौ सद्गुरु नहींसहिसकै है यहिप्रसंग में यह धुनिहै श्रीमहादेव कहते हैं हे पार्बती तुम्हारी प्रश्न अतिप्रिय लागेउहै पर एकबात तुम्हारी मोको नहीं

मोरी कहिहौंदेखिप्रीतिअतितोरी ५ उमाप्रश्नतवसहजसुहाई सुखदसन्तसम्मतम्वहिंभाई ६ एकबातनहिमोहिंसोहानी यदपिमोहवशकहेहुभवानी ७ तुमजोकहारामकोउआना जेहिश्रुतिगावधरहिंमुनिध्याना ८ ॥ दो०॥ कहहिंसुनहिंअसअधमनर ग्रसेजेमोहपिशाच पाखण्डी हरिपदविमुखसमुझहिंझूठनसांच ९ अज्ञअकोविदअन्धअभागी काईबिषयमुकुरमनलागी १० लम्पटकप

नीकीलगी यद्यपि तुम का करहु मोहके वशकहेहु है ( ७ ) हे भवानी तुमतौ हमारीप्रिया हौ पर श्रीदशरथनन्दन जो श्रीरामचन्द्र हैं जिनको बनमें हमने नमस्कार कीन है सोई हमारे इष्टदेव हैं अरु तिनको छोड़िकै तुम्हारे मनमें यह निश्चयआई कि जाको वेदगावते हैं नेतिनेति करिकै अरु मुनीश्वर ध्यानधरते हैं सो राम आन हैं ( ८ ) दोहार्त्थ॥तहां

हे भवानी अब मैं तोको का कहौं पर जैसो तू कहेहु है ऐसोकहै अरु जो सुनै सो दोनों महाअधम हैं उन दूनहुंको महामोहरूपी पिशाच लग्यो है बनाइग्रसे हैं अरु पाखण्डी श्रोता बक्ता दोनों हैं अरु हरिपद ते बनाइ बिमुख हैं न तो उनको झूंठ समुझिपरै नतो पुरुष समुझिपरै अथवा समुझहि झूंठनसांच झूंठही समुझते हैं सांच समुझते नहीं तिनके ऐसो पशुइव ज्ञान है जे दशरथनन्दन श्रीराम परमात्मा परब्रह्मविग्रहतिनको छोड़िकै अपरराम सिद्धान्त करते हैं ते अधम पिशाच पाखण्डी हरिपद ते बिमुख हैं सबप्रकारते ( ९ ) तहा प्रमाण है पाद्मे आरण्यमुनिवाक्यं हनुमान्प्रतिश्लोक ११॥ नततपुराणंनहियत्ररामो यस्यान्नरामोनच संहितासा सनेतिहासोनहियत्ररामः काव्यंनतत्स्यान्नहियत्ररामः १ शास्त्रंनतत्स्यान्नहियत्ररामस्तीर्थंनतद्यत्रनरामचन्द्रः॥ यागःसयागोनहियत्र रामो योगःसयोगोनहियत्ररामः २ नसासभायत्रनरामचन्द्रः कालोऽप्यकालोकलिरेवसोऽस्ति संकीर्त्यतेयत्रनरामदेवो विद्यापविद्यारहितात्वनेन ३ स्थानंभयस्थाननरामकीर्त्तिः रामेतिनामामृतशून्यमास्यं ॥ सर्प्पालयंप्रेतगृहंचतद्वैयत्रार्च्यतेनैवमहेन्द्रपूज्यः ४ उक्तेनकिंस्याद्बहुनातुविश्वं सर्बमुधास्याद्यदिरामशून्यं ॥ तदेवसत्यंविहितंतदेव तदेवयोग्यंरघुनाथयुक्तं ५ सर्वेषांवेदसाराणां रहस्यन्तेप्रकाशितं एकोदेवोरामचन्द्रोब्रतमन्यत्रतत्समं ६ मन्त्रंत्वेकंचतन्नाम शास्त्रंतद्ध्येवतत्स्तुतिः ॥ तस्मात्सर्वात्मनारामचन्द्रंभजमनोहरं ७ येषान्तुमानसंरामे लग्नंनेहमनोरमे वंचिताविधिना पापस्तेवैक्रूरतरेणच ८ रामंशृण्वन्तिसद्भक्तया सम्भूताःकथयन्तिये ॥ श्रूयन्तेचसुकथ्यन्ते देवैरिन्द्रादिभिस्तुते ९ येषांरामःप्रियोनैव नवैवारीशजातथा दृष्टव्यंनमुखंतेषांगतिरस्तुकुतस्तदा १० पुनःश्रीमन्महारामायणे श्रीरामेयेचविमुखाखलमतिनिरताः ब्रह्ममन्यद्वदन्ति तेमूढाःनास्तिका

**टीकुटिलबिशेषीसपनेहुंसन्तसभानहिंदेखी ११ कहहिंतेवेदअसम्मतबानी जिनहिंनसूझलाभअरुहानी १२ मुकुरमलिनअरुनयनबिहीना रामरूपदेखहिंकिमिदीना १३ जिनके अगुणनसगुणबिवेका जल्पहिंकल्पितवचनअनेका १४ हरिमायाबशजगतभ्र**

स्तेशुभगुणरहितासर्वबुध्यातिरिक्ताः ॥ पापिष्टाधर्म्महीनाःगुरुजनविमुखावेदशास्त्रेविरुद्धाः तेहित्वागांगमम्भोरविकिरिणिजलंपातुमिच्छन्तित्रस्ताः ११ श्रीरामचन्द्र धनुर्द्धर तिनको छोड़िकै जो अपर राम तत्त्व सिद्धान्तकरते हैं ते अज्ञानी हैं अरु अकोविद कही मूर्ख हैं अरु अन्ध हैं बाहेर भीतर के नेत्रफूटे हैं अरु अभागी हैं अरु मनरूप दर्प्पणतामें विषय रूप मल लगिरह्योहै ( १० ) अरु वे लम्पटहैं पर धन पर दारामें लीनहैं अरु कपटी हैं कहतेहैं आन अरु करतेहैं आन अरु कुटिलहैं सब प्रकारतेटेढ़ेहैं विशेषकै अरु सन्तनकैसभा स्वपनेहु नहीं देखेउहै सत्सङ्ग नहींकियो मनसुखी हैं ( ११ ) ते प्राणी वेदकी सिद्धान्त सम्मत जो तेहिको छोड़िकै कहते हैं जे अपने जीवकी हानि लाभ नहीं समुझतेहैं ऐसो पशुइव ज्ञान है जिनके ( १२ ) दृष्टान्त जैसे कोई एकअन्धहै अरु दर्प्पण मलीन हाथमें लिये है अपनोमुख देखाचाहत है सो कैसेदेखैगो जो कोईकहै कि अन्धेको निर्म्मल दर्प्पण काकरैगो किन्तु नेत्रहैं अरु दर्प्पण मलीनहै तबहूं नहीं अपनोमुख देखिपरैहै तहां नेत्र अरु दर्प्पण दोनोंकी मलीनता क्योंकही तहां दर्प्पण स्थाने उनके गुरूहैं अरु गुरुतत्त्व वेत्तानहींहैं अरु वदेशास्त्रोंमें बोध नहींहै ताते मलिनहै अरु शिष्य जिज्ञासू जोहै तेहिके ज्ञान वैराग्य रूप नेत्र नहींहैं ताते दोऊ अन्धेहैं तहा मुखस्थाने श्रीरामरूप कोटिन सूर्य्यनको प्रकाश कोटिन कन्दर्प्पकी शोभा कोटिन दामिनीकी छटा ऐसो रूप वह अन्धमुकुर मलिन कैसे देखैगो ज्ञानकरिकै विहीनहै ताते दीनह्वैरह्योहै ( १३ ) जिनके निर्गुण ब्रह्मको विचार नहीं है जानतै नहीं हैं कि निर्गुण काकोकही जो कहूं कहबेको भयो तो यहकहदेतेहैं कि जो सर्व्वमेंव्यापकहै सो निर्गुणहै यह नहींजानते कि निर्गुण कैसोहै अरु कास्वरूप है अरु कैसे व्याप्तहै कैसे भिन्नहै यहविचार जिनके नहीं है अरु सगुणब्रह्मको विचार नहींहैं यहकहतेहैं कि सगुणरूप बिग्रहमायिकहै सात्विकगुणमय बिग्रहहै जाको ईश्वर कही सो बिद्या माया उपहित बिग्रहहै ताकोसगुण कही किन्तु भक्तनकेहेतु गुणनको ग्रहण करिकै बिग्रहवान् होतहै ताको सगुण कही अरु यह जानतैनहीं कि कौनगुणवैहैं जो सगुणब्रह्ममें विशेषणहैं अरु परब्रह्म मूर्त्ति विशेष्य है ताको सगुणकही यहजानतै

**माहीं तिनहिंकहतकछुअघटितनाहीं १५ बातलभूतबिबशमतवारे तेनहिंबोलहिंबचनबिचारे १६ जिनकृतमहामोहमदपाना**

नहीं तातेजिनके अगुण सगुणको बिवेक नहीं है तेई जल्पितकही जल्दी अतिआतुरता संयुक्त कल्पितवचन बनाइ बनाइ अनेकन कहतेहैं और किसूकी सुनतेनहींहैं हे पार्वती ते अज्ञानी आन राम कहतेहैं ( १४ ) वे मनुष्य हरिकीमाया जो अति प्रबलहै तेहिके बशह्वैकै जगत्में भ्रमतेहैं ते जो आन राम कहहिं तो उनका यह कहना घटितहै नामउचितहै काहेतेहरिकी मायाकेबशहैं ( १५ ) काहेते जो प्राणी बात कही सन्निपातके बशहै अरु जिनको भूत लगिरह्योहै अरु जे मदिरापान कियेहैं ते मनुष्य सँभारिकै वचन नहीं बोलतेहैं तेई अनुचित वचन कहतेहैं अरु जिनको सन्निपात अरु भूत अरु मद तीनिउ ग्रसेहैं तिनकीकाकहौं तहां बात पित्त कफतीनिउके तिले सन्निहोती है अरु इहां काम क्रोध लोभ जिनकेहै तिनके सदा सन्निपात जानिये ॥चौ०॥ उत्तरकाण्डे॥ कामबातकफलोभअपाराक्रोधपित्तनितछातीजारा प्रीतिकरहिं जोतीनिउभाई उपजसन्निपातदुखदाई अरु अशास्त्र अविद्यामान् ऐसो गुरु तिनकी वचन दृढ़करिकै ग्रहणसोई भूतचढ़ेउ है अरु मोहरूपी मदअपने को उत्तमजाति मानेहैं अरु रूपमान् माने हैं अरु युवाअवस्था माने हैं अरु बिद्यामान्मानेहैं अरु महातत्त्व माने हैं अरु वैराग्यमान् माने हैं अरु ज्ञानी माने हैं अरु ध्यानीमाने हैं येते अष्टमद पानकिहे हैं देहाभिमानी हैं येते प्राणी विचारिकै वचन नहीं बोलते हैं ते आन रामतत्त्व कहतेहैं ( १६ ) हे प्रिया जिन महा मोह मद पान कीनहै तिन मनुष्यनकर कहा कबहूं नहीं सुनिये उनकेसङ्ग न बोलिये न बैठिये न संगकरिये एकमोह एक महामोह कही जो संसार सम्बन्ध विषेहै तेहिमेंअपनपौ मानना सो मोहहै अरु जो परमात्मा परब्रह्म श्रीरामचन्द्र जी हैं किन्तु भगवत् के कोई विग्रह होहि अरु तिनके स्वरूपमें लीला में नाममें धाममें तर्ककरिकै मायाभाव रोपण करना अपने अज्ञान ते ताको महामोह कही इहां औरे के द्वार ह्वैकै पार्बतीको कहतेहैं पार्बतीके श्रीरामलीला देखिकै महामोह भईरहै किन्तुपार्बती के मिसुकरिकै सर्बजीव को शिक्षाकरते हैं ( १७ ) सोरठार्त्थ ॥ यह सबकहिकै पार्बती को सावधान दृढ़करिकै भलीप्रकारते पुनि महादेव प्रसन्नह्वैकै बोलतेभये हे प्रिया जस मैं कहिआयो हौं तैसे अपनेहृदय में दृढ़विचार करिकै सबसंशयत्यागिकै श्रीरामपदपंकज भजहु अपरसमस्तसमुझब भ्रम है अन्धकाररूप है अरु मेरीबाणी रवि की किरणि है भ्रम

**तिनकरकहाकरियनहिंकाना १७॥ सो० ॥ असजियजानिविचारि तजुसंशयभजुरामपद सुनुगिरिराजकुमारि भ्रमतमरविकरवचनमम १८॥**

**अगुणहिंसगुणहिंहिंकछुभेदा गावहिंमुनिपुराणबुधवेदा १ अगुणअरूपअलखअजजोई भक्तप्रेमबशसगुणसोहोई २ जो**

तम नाशकरिदेतुहै सो बचन सुनहु तुम गिरिराजकुमारीहौ तुम्हारीबुद्धिअचल है १८॥ इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वन्सने बालकाण्डेउमाप्रश्नोत्तर श्रोताभयदरश आश्वासनप्रीतिसावधानकृते द्वाबिंशतिस्तरङ्गः२२॥

दो०॥ अगुणसगुणदुइरूपप्रभु रामचरणकरिएकरामस्वरूपबिशेष परतेइसलहरिविवेक ( २३ ) हे भरद्वाज अब श्रीमहादेवजी पार्वती के प्रथम प्रश्नका प्रत्युत्तरदेते हैं सो कैलासके प्रसंगभरेमें जानब प्रथम यहप्रश्नहै चौपाई प्रथमसोकारणकहहुविचारी निर्गुणब्रह्मसगुणबपुधारी तीनि चौपाई की एकही अन्वय जानब अरु इहा केवल पार्बतीके प्रश्नको प्रत्युत्तरहै अरु ताहीके आवांतर श्रीराम स्वरूपको बर्णन है यह निश्चय जानब अरु दूसर पार्बती को यह प्रश्न है चौपाई पुनिप्रभुकहहुरामअवतारायहिप्रश्नको प्रत्युत्तर जय विजय जलंधर नारदको मोहलैकै अरु श्रीराम जन्मताई केवल श्रीरामस्वरूप बर्षन जानब महादेवबोले हे पार्बती निर्गुणब्रह्म अरु सगुणब्रह्म ते कछु भेदनहींहै यह मुनीश पुराण बुध वेद कहते हैं ( १ ) अगुणब्रह्म अरूपअलख अज जो है सोई ब्रह्मभक्तन के प्रेमबशह्वैकै सगुणहोतहै ( २ ) जो ब्रह्म गुणरहितहै सो सगुणकैसेहोत है जैसे जलकारणपाइकै पाला अरु ओला ह्वै जातु है जब कार्य्यकरिभयो पुनिजलको जल ह्वै गयो तैसे ब्रह्म जो ब्यापक अलखहै जो कोई भक्तन यह अभिलाषाकियो कि जो ब्रह्म सर्वत्रब्याप्तहै सोई हमारी रक्षाकरैगो तहांवह ब्रह्म कैसो चेतन है सर्वसाक्षी है सर्वकीगति जानत है ताते भक्तनकी अभिलाषा प्रेम को जानिकै स्वरूपको धारण करतेहैं जैसे प्रह्लाद अपनेपितासोंकहेउ कि मेरी रक्षाकरतुहै जो प्रभु सर्वब्यापकहै तब नृसिंहजू प्रकटभये पर माया गुणरहित स्वेच्छितस्वरूप आगे जो कोईकहै कि निर्गुणब्रह्म जो

सर्बव्यापक सो प्रत्यक्ष विग्रहमान् होतही नहीं है तहां ऐसो नेम नहीं है काहेते कि जहांजहां जैसो कारण होत है तहां तहां तैसी अभिलाषा भागवतन के होति है अरु देवतनके होतहै उसीस्थान ते प्रभु प्रत्यक्षहोते हैं कवहीं क्षीरसागर ते कबहीं बैकुण्ठ ते कबहीं परधामते कबहीं सर्वब्यापक जो है येते स्वरूप प्रभुके एकहीहैं भक्तनकीअभिलाषा अनुकूल प्रत्यक्ष होत है यहसब वेदशास्त्र में प्रमाण है काहेते प्रभुमें अनन्तशक्ति है· प्रभुके अनन्तरूपहैं अनन्तलीला हैं अनन्तकारणहैं अनन्त कार्य्य हैं तहां जो कोई यहिमेंसन्देहकरैगो तो उसको प्रभुकीप्रभुता अरु शास्त्रको विचार अरु आत्मअनुभव अच्छीतरह नहीं आयो है अरु इहां महादेव केवल पार्वती के प्रश्नको प्रत्युत्तरकहते हैं काहेते कि जैसोजिज्ञासू प्रश्नकरै तैसेही बक्ताको कहनाचाहिये तहां पार्वती प्रथमयहप्रश्न कीन कि हे महादेव प्रथम यहकहो कि निर्गुणब्रह्म सगुण कैसेहोतहै यहप्रश्नपार्वतीजू क्यों कियो तहां सतीतनमें तीनिसन्देहभयेरहैं एकतो यह कि महादेवजी राजपुत्र राम तिनको परस्वरूप बिग्रह सच्चिदानन्दकहिकै प्रणामकीन है तब सतीजू सन्देहसंयुक्त विचार करती हैं कि मेरे समुझबे में ब्रह्म जो ब्यापक बिरज अज निर्गुण अकलअभेदहै ताकोसच्चिदानन्दकही पर सोतो देहधरतै नहीं प्रयोजनै नहीं हैं काहेते वाको वेदहू नहीं जानैं ताते सो ब्रह्म ये राजपुत्र नहीं है अरु विष्णुभगवान्हैंसो देवतनके हेतु देहधरते हैं सोभी सच्चिदानन्द विग्रहहैं पर वे सर्वज्ञहैं सोभी ये राजपुत्र नहीं हैं अरु शिवको बचन बृथानहीं है यह पूर्वसन्देहकछुक है ताते यहप्रश्नकीन है कि जो मोसे समुझतनहीं बन्योहोइ तो महादेवके कहेते बोधहोइगो जो महादेव यह कहहिंगे कि श्रीराम दशरथनन्दन येई निर्गुण व्यापकब्रह्म हैं भक्तनकेहेतु शरीरको धारणकीन है तो मैं मानिकै बोधकरोंगी अरु जो विष्णुभगवान् हैं तिनहीं को अवताररामजीको कहैंगे तो मानिकै बोधकरिहौं कि मोसे नहीं समुझत बन्योंहै अरु जो ब्रह्मब्यापक अरु विष्णुभगवान् इनदोनोंस्वरूपते रामस्वरूपपरेवर्णनकरैंगे तो जौनी रीति कहेंगे तब तौनीरीति मैं समुझौंगी ताते यह प्रश्न कीनहै कि हे महादेव निर्गुण कैसे सगुणहोत है तात्पर्य्य यहहै कि निर्गुण सगुण होत है कि नहींहोत है ताते महादेव कहते हैं कि निर्गुण होत है एकदेश ये भी है हे पार्वती पर श्रीरामचन्द्रके स्वरूप के वर्णवेकोइहां तात्पर्य्य नहीं है अरु महादेव के कहिबेको हेतु यह है कि हेपार्बती जो तुम सतीतनमें सन्देहकीन है सो सब बृथा है निर्गुण सगुणहोत है सो कैसो होत है जैसे सूर्य आपुतेज की मूर्ति हैं अरु अपने तेजप्रकाश करिकै व्याप्त हैं तहाँ जबकोई को अग्निका कार्य्यभयो तब सूर्यमुखी चस्मा सूर्य के सन्मुख देखावत है अरु नीचेकण्डा धरत है तब वहै तेज जो अतिसूक्ष्म है सो ऐनक अरु कण्डा के योग ते स्थूल ह्वैजातुहै यह दृष्टान्त सूर्यस्थाने श्रीरामचन्द्र जी अरु तेजस्थाने व्यापकब्रह्म अरु ऐनक

**गुणरहितसगुणसोकैसे जलहिमउपलबिलगनहिंजैसे ३ जासुनामभ्रमतिमिरपतङ्गा तेहिकिमिकहियबिमोहप्रसङ्गा ४ राससच्चिदानन्ददिनेशा नहिंतहँमोहनिशालवलेशा ५ सहजप्रकाशरूपभगवाना नहिंतहँ पुनिबिज्ञानबिहाना ६ हृदयबिषादज्ञानअज्ञा**

स्थाने प्रह्लाद अरु कण्डास्थाने हिरण्यकश्यप तहां उत्तरएकदेश महादेवकहे हैं कि ऐसहूहोतहै अब दूसराअर्थ किन्तु जो गुणरहित सो सगुण कैसेहोत है जल हिम उपलके दृष्टान्तते तहां जल भी साकार है अरु अवस्थान्तर करिकै उहै जल हिम उपलहोत है सोभी साकारही है तहां श्रीरामचन्द्र किशोर मूर्त्ति तिनते भक्तबात्सल्य इत्यादिक परम दिव्यगुण भक्तानुग्रहार्थ अवस्थान्तरभये श्रीदशरथ महाराज भक्तराज तिनके पुत्रभये बालअवस्था पौगण्डअवस्था कुमारअवस्था आदि किशोरअवस्था पुनि किशोर के किशोर है ऐसो किशोर विग्रह श्रीरामचन्द्र परमात्मा परब्रह्म एकरस ते प्रत्यक्षभये इत्यर्थः ( ३ ) श्रीमहादेवजी पार्वतीकेप्रश्नको उत्तरदैकै बोधकरिकै तब नाम स्वरूपकहतेहैं हे पार्बतीजी जिन श्रीरामचन्द्र को नाम नित्य एकरस सूर्य है अरु भ्रम अन्धकार रूप तेहिको नाशकरतु है विनाश्रमही अरु तिन श्रीरामचन्द्रविषे तुम मोहरोपण कीन्ह्यो है यह महाअज्ञान है ( ४ ) हेपार्बती श्रीरामचन्द्र सच्चिदानन्द एकरस नित्य अखण्डमूर्त्ति ऐसे दिनेश हैं तहां मोह जो तिमिररूप सो कहूंलेशहू नहींसम्भवै है ( ५ ) हे प्रिया श्रीरामचन्द्रजी स्वयंभगवान् हैं षड्भागपूर्ण हैं ऐश्वर्य्य जिन के चारिपद विभूति है एकपद में अनेक ब्रह्माण्डहैं सो अविद्यामय है अरु विद्याभी है अरु त्रिपाद विभूति परधाममें

है संधिनी सन्दीपनी अह्लादिनी तहां श्रुतिप्रमाणहै त्रिपादूर्ध उदैत्यपुरुषः पादोत्सेहाभवत्पुनः इनको स्वरूप पूर्वकहे हैं सती के मोह के प्रसंगमें यहऐश्वर्य है पुनि धर्मचारिपद सत्य शौचतप दान पुनि जिनकोयश चारिवेद चारियुग में उज्ज्वल एकरस पूर्ण है पुनि श्रीचारिहू विभूतिमें प्रकाशरूपहै पुनि वैराग्य तीनिगुण पांचतत्त्वमूल प्रकृति इत्यादिक सबते भिन्नहैं श्रीरामचन्द्र जी पुनि मोक्षसालोक्य सामीप्यसारूप्यसायुज्यसारिष्टि येतेसमस्त षड्भाग पूर्ण हैं श्रीरामचन्द्रजी पुनि षड्भाग अनेक ब्रह्माण्डको श्रीरामचन्द्र जी पुनि मोक्षसालोक्य सामीप्यसारूप्यसायुज्यसारिष्ठ येतेसमस्त षड्भाग पूर्ण हैं श्रीरामचन्द्रजी पुनि षड्भाग अनेक ब्रह्माण्डको पोषण गुण अरु भरणगुण अरु आधारगुण सर्ब शरण्यत्वगुण सर्बब्यापकत्वगुण करुणागुण इत्यादिक अनन्त परम दिब्यगुण श्रीरामचन्द्र में स्वाभाविक पूर्ण हैं ताते भगवान् कही अन्यच्चश्लोक द्वै ऐश्वर्येणचधर्मेण यशसाचश्रीयैवच वैराग्यमोक्षषट्कोणैः संजातोभगवान्हरिः १ पोषणंभरणाधारं शरण्यंसर्बब्यापकं कारुण्यषड्भिःपूर्णं रामस्तुभगवान्स्वयं २ पुनि श्रीरामचन्द्र आपुरूपी हैं अरु सहजप्रकाश एकरस रामरूप है जो

## ना जीवधर्म्मअहमितअभिमाना ७ रामब्रह्मब्यापकजगजाना परमानन्दपरेशपुराना ८ दो० ॥ पुरुषप्रसिद्धप्रकाशनिधिप्रगटप-

अनेक ब्रह्माण्ड को प्रकाश किहेहै रूपीरूप सहज प्रकाशको दृष्टान्त जैसे सूर्यरूपी है प्रकाशरूप है तहां सो प्रकाश सूर्य में सहजही बन्यो है शोभित है ऐसे ही चन्द्रमा अरु मणिको दृष्टांत है देखिये तो जैसे सूर्य के महत्प्रकाश आवरण ते सूर्य की मूर्त्ति नहींदेखिपरैहै पुनि जैसे एकमहा तप्त सुवर्ण को गोलाहै तहां गोलाही के प्रकाश आवरणते गोला नहीं देखिपरै है तैसे श्रीरामचन्द्र जी को सहज जो महत्प्रकाश सो चिन्मय एकरस है तेहिके आवरण ते श्रीरामचन्द्र कै मूर्त्ति नहींदेखिपरै है मन बचन कर्म अगोचर है श्लोक ४ वाङ्मनोगोचरातीतं ज्योतिरूपंसनातनं कौशल्यानन्दनंरामं सच्चिदानन्दविग्रहं १ नखेन्दुकीरणैःश्रेणी पूर्णब्रह्मैककारणं केचिद्वदन्तितस्यांशं ब्रह्मचिद्रूपमब्ययं २ तदंघ्रिपंकजद्वन्द न खचन्द्रमणिप्रभा आहुःपूर्णब्रह्मणोऽपि कारणंवेददुर्गमं ३ पद्मपुराणेपातालखण्डेएकोनसप्ततमोध्यायः ९ रामैवघनस्तेजोब्रह्मैवब्यापकत्वात्व्यापकैवसाक्षिणः निराकारो सूक्ष्मत्त्वात्सूक्ष्मतरो चेतनत्त्वाच्चेतनकरो वाह्याभ्यंतरप्रकाशरूपेण एकैव इतिश्रुतिः नहिंतहँ पुनि विज्ञान विहाना तहां श्रीरामचन्द्र के विज्ञानको विहानै नहीं है काहेते कि जहां रात्री है तहांरात्री के बीते प्रातःकाल को तात्पर्य है अरु जहां रात्रिहीननहीं है तहां बिहान करिबेको कौन तात्पर्य है ताते जहां अज्ञान हैं जब अज्ञानदूरिभयो तब विज्ञानकही विशेष ज्ञान जो है अरु जहां सच्चिदानन्द दिनेश श्रीरामचन्द्रजी एकरस उदय हैं तहां अज्ञान ज्ञान विज्ञान ध्यान समाधिकाल कर्म स्वभाव गुण इत्यादिक जहां एकहूनहीं हैं ( ६ ) हेप्रिया हर्ष विषाद ज्ञान विज्ञान अज्ञान अहंमम अहमिति कही अहं इति सुतवित्तइत्यादिक मोरहैं अभिमान कही मैं बड़ोगुणमान् हों इत्यादिक सब जीवके धर्म्म हैं ( ७ ) हे पार्बतीजी श्रीरामचन्द्रही सर्व ब्यापक ब्रह्म आपनेमहत् प्रकाश गुणमत्व करिकै जग जाना कही सम्पूर्ण जगत्में साक्षी मात्र सबको नियंता अन्तर्यामीहैं जैसे कठपुतरीमें सूत्रधर अपने सूत्र करिकैब्याप्तहै अनके कला करावतहै आप भिन्नहै तैसे श्रीरामचन्द्र सूत्रात्मक व्याप्तहैं आपु भिन्नहैं परमानन्द स्वरूपहैं अरु परेश कहे सबके परे ईशहैंशिवजू कहतेहैं ब्रह्मा अरु हम बिष्णु इत्यादिक सबके ईश हैं अरु पुराण पुरुष जिनको आदि अन्त मध्य वेदहू नहीं जानि सकै नेति नेति करिकैगावतेहैं मैं जो हौं श्रीरामकृपाते कछुक श्रीराम स्वरूप जानतहौं सो येई श्रीरामचन्द्रहैं सोमैं तोपै कहतहौं ( ८ ) दोहार्त्थ ॥ कैसेहैं श्रीरामचन्द्रजीप्रसिद्ध पुरुषहैं वेद शास्त्र पुराणनमें श्रीरामचन्द्रही प्रसिद्धकही सिद्धान्त

## रावरनाथरघुकुलमणिममस्वामिसोइकहिशिवनायउमाथ ९ निजभ्रमनहिंसमुझहिंअज्ञानी प्रभुपरमोहधरहिंजड़प्रानी १० यथा

हैं किन्तु एक प्रसिद्ध पुरुषहैं परोक्ष जो सर्ब्बत्र व्यापक ब्रह्म अरु एक प्रसिद्ध पुरुष प्रत्यक्ष साकारब्रह्म श्रीरामचन्द्रजू तहां अप्रसिद्ध प्रसिद्ध पुरुष एकही तत्त्व हैं अरु प्रकाशनिधि हैं निधि कही समूहको जैसे समुद्र जलनिधि है सूर्य्य प्रकाश निधि है चन्द्रमा शीत निधि है अग्नि तेज निधि है इत्यादिक जहांलगि जाको कोशहै तहांतकते अपने

ऐश्वर्य्य प्रकाशकरिकैपूर्णहैं तैसेही श्रीरामचन्द्रको कोश अनेक ब्रह्माण्ड है तहां ब्रह्मांड ऐश्वर्य है अरु व्यापक ब्रह्म प्रकाश है जाते ब्रह्माण्ड प्रकाशित है तहां प्रकाशीश्रीरामचन्द्रहैं अरु प्रकाश व्यापकहै तहां प्रकाशी एकही है तहां असिद्ध कही अदृश्यहै अरु प्रसिद्ध कही अन्तरवाह्य दिव्यनेत्रते दृश्यमान्है तहांयाही प्रकारते दूनोंरूप स्वरूप श्रीरामचन्द्रहीहैं ताते प्रसिद्ध प्रकाशनिधि पुरुषकहा पुनि प्रकट कही प्रत्यक्ष विद्यमान् श्रीरामचन्द्र जिनको हमनेनमस्कार किया अरु तुम्हारे भ्रमभई लीलादेखिकै ताते प्रकटकहा पुनि परावरनाथ और जो माया है अरु पर जो जीवहै श्रीरामचन्द्रजी दूनोंकेनाथ हैं किन्तु और जीव अरु पर सर्वजीवके अन्तरब्याप्त सो तिन दूनों केनाथहैं किन्तु और ब्रह्मादिक देवता अरु दशोदिग्पालहैं अरु परविष्णुभगवान् हैं ते दोनों के नाथ श्रीरामचन्द्र हैं जे श्रीरघुवंशकुलके मणि हैं सो दशरथनन्दन साक्षात्हैं किन्तु रघुसंज्ञा जीवकीहै ताते जहांलगिजीवपदहै बद्ध मुमुक्षू मुक्त कैवल्य नित्य तिनसबकेशिरोमणि ईश श्रीरामचंद्र कौशल्यानन्दन द्विभुज अखण्ड एकरस अविद्या विद्या दूनोंपरे निर्विशेषपरब्रह्म सच्चिदानन्दमूर्त्ति परात्पर तरतत्त्व वेदांतको सारभूत पंचप्रकारके जीव कौन हैं तिनको भेद कहते हैं बद्धमें तीनिभेद हैं एक पांवर जाकोईश्वरको ज्ञानै नहीं है दूसर विषयी जो कछु पढ़ै गुणै पुराण इत्यादिक बांचै अपरको उपदेशकरै पर केवल बिषयको अनुसंधान मनमें है तीसरबद्ध जो वेद पुराण पढ़े हैं बांचतेहैं तत्त्वको समुझते हैं अरु अपरतेसुनते हैं कहत सुनत वैराग्नमें अनुसन्धानहोतहै आपुको धिक्मानतेहैं पर जबकहबसुनब बन्दभयो तब अर्थ धर्म काम यहि तीनिमें आसक्तहोते हैं पुनि मुमुक्षू में चारिभेद हैं एक विषयशील मुमुक्षू द्रव्यकी उपाय करते हैं परभगवत् भागवत्में लगाइदेते हैं शास्त्र सुनिकै अरु आप मन्द वैराग्नमें आरूढ़ हैं दूसर कृपाशील शास्त्रसुनिकै अध्ययन करिकै सन्ध्या त्रिकालपूजा पाठ जाप्य यजन इत्यादिक करिकै भगवत्अर्पण करते हैं आपुवैराग्यमान् हैं पुनि तीसर मननशीलशास्त्र सुनते हैं ताको मननकही सारासार को विचार करते हैं ताहीमें मोक्षमाने हैं ते तीब्र वैराग्यमान् हैं चौथे मुक्तशील मुमुक्षू मननकरिकै सिद्धान्त को ग्रहणकरिकै मुक्तनकी दशामेंअनुसन्धान करते हैं ते तीब्रतर वैराग्यमान् हैं पुनि मुक्त में तीनिभेद हैं एक जीवन्मुक्त हैं जनक बशिष्ठ विश्वामित्र बामदेव याज्ञवल्क्य भरद्वाजबृहस्पति ब्रह्मा इत्यादिकहू जे विदेह मुक्त ऋषभदेव दत्तात्रय जड़भरत इत्यादिक तीसरे जीवन्मुक्त विदेहमुक्त दूनों दशा हैं जिनमें सनकादिकनारद शुकदेव इत्यादिक पर तीनिहूं की यही तत्त्व है कछुक कृपा भिन्न है पर तीनिहूं में तीब्रतर वैराग्य है अरु योग ज्ञान भक्तिकरके परिपूर्ण हैं पुनि कैवल्यजीवहै अष्टावक्रहस्तामलक इत्यादिक जे वेदान्त शास्त्रविचारिकै ज्ञानानन्दमें मग्न ह्वै रहे हैं आपुको ब्रह्मास्मिमाने हैं जीव ब्रह्मकीएकता मानते हैं तेऊ तीब्र तम वैराग्यमें आरूढ़ हैं पुनि नित्यजीव हैं जे श्रीरामचन्द्र जी के नित्य निकटरहते हैं श्रीहनुमान् इत्यादिक षोडशौपार्षद अरु अनन्त पार्षद हैं तहां यह पदकहा रघुकुलमणि तहां रघुसंज्ञा सर्वजीवकी है ताते जहांतक जीवकुल है तिनसबके मणि कही ईशस्वामी श्रीरामचन्द्रजी हैं श्री दशरथनन्दन जिनको कही हे पार्बतीजी सोई मोर स्वामी हैं यहकहिकै प्रेमते गद्गद होइगये आसनते उठिकै श्रीरामचन्द्रजी साष्टांग दंडवत् प्रणाम करिकै पुनि आसनपर बैठे तुरंत पार्बतीजी उठिकै प्रेमसे मग्नहोइकै श्रीरामचन्द्रजी अरु महादेव जी को सर्वभावतेप्रणाम करिकै श्रीमहावेदकी आज्ञाताइकै आसनपर बैठतीभई बामभाग सम्मुखकर जोरिकै ( ९ ) श्लोक १५ श्रीवशिष्ठसंहितायांसप्ताशीतितिमोऽध्याये श्रीवशिष्ठवाक्यंभरद्वाजंप्रति॥ जयश्रीमन्महाराज कुमाररघुनन्दन रामचन्द्रमहावाहो सच्चिदानन्दविग्रह १ गुणातीतपरब्रह्म परात्परतमप्रभो वात्सल्यादिपरानन्त कल्याणगुणसागर २ जयमत्स्याद्यसङ्ख्यावतारोद्भवकारणब्रह्मविष्णुमहेशादिसंसेव्यचरणाम्बुज ३ पुनः सनत्कुमारसंहितायांश्रीवेदव्यासवाक्यं युधिष्ठिरंप्रति तत्त्वस्वरूपंपुरुषंपुराणं स्वतेजसापूरितविश्वमेकं राजाधिराजंरविमण्डलस्थं विश्वेश्वरंराममहंभजामि ४ विभूतिदंविश्वसृजंविराजं राजेन्द्रमीशंरघुवंशनाथं अचिन्त्यमव्यक्तमनन्तमूर्त्तिं ज्योतिर्मयंराममहंभजामि ५ मुनीन्द्रगुह्यंपरिपूर्णमेकं कलानिधिंकल्मषनाशहेतुं परात्परंयत्परमम्पवित्रम् नामामिरामंमहतोमहांतम् ६ पुनःश्रीरामतापिन्यां ॐयोवैश्रीरामचन्द्रः सभगवानद्वैतपरमानन्दात्मयः परब्रह्मभूर्भुवःस्वस्तस्मैवैनमोनमः ७ ॐयोवैश्रीरामचन्द्रः सभगवान्यो ब्रह्माविष्णुरीश्वरोयःसर्ववेदात्मा भूर्भुवःस्वस्तस्मैबैनमोनमः ८ ॐयोवै श्रीरामचन्द्रः सभगवान्योब्रह्माण्डस्यान्तर्हिर्व्याप्तोयोविराट्भूर्भुवः स्वस्तस्मैवैनामोनमः ९ इतिश्रुतिः यत्तद्ब्रह्मतत्तस्यतनुभाश्रुतिः १० नित्योनित्यानांचेतनश्चेतना

**गगनघनपटलनिहारी कम्पेउभानुकहहिंकुविचारी ११ चितवहिंलोचनअंगुलिलाये प्रकटयुगुलशशितिनकेभाये १२ उमाराम**

नामेकोबहूनांयोविदधातिकामान्श्रुतिः ११ अन्यच्चसच्चिद्रूपगुणस्वरूपविभवैश्वर्य्यैकदिव्यंबपुर्नित्यानन्द गुणानुभावकरुणासौंदर्य्यशुद्धोदधिः त्रय्यन्तम्प्रतिपाद्यवस्तुघटने कर्त्तास्वतन्त्रःस्वतो जातश्चाणुकरान्वयेविजयते श्रीजानकीशोविभुः १२ अंशभूताविराट्ब्रह्म विष्णुरुद्रास्तथापरे ब्रह्मतेजोघनीभूतं बर्त्ततेजानकीपतेः १३ सगुणंनिर्गुणंचैव परमात्मातथैवचयेतेचांशाहिरामस्य पूर्वंचांतेचमध्यतः १४ पुनःनारदपंचरात्रे आनन्दोद्विविधःप्रोक्तः मूर्त्तश्चामूर्त्तएवच अमूर्त्तस्याश्रयोमूर्त्तिः परमात्मानराकृतिः १५ इतिविशेषेण यहनौचौपाईसमाप्तः हेभरद्वाज श्रीमहादेवजी पुनिबोलते भये हेपार्वती सुनु यहैतेरोकहना अनुचितभयोहै जो तुमकहेहु कि रामआनहैं ऐसोतौते कहहिंजेप्राणी अज्ञानीहैं जे अपनो भ्रमनहीं समझते हैं अरु अपनोमोह प्रभुविषे रोपण करते हैं यह कहते हैं किजोरामपरमेश्वरपरब्रह्महोते तौजानकीजो को क्योंढूंढ़ते फिरते तहां प्रभुकी चित्रविचित्र लीला वैजड़प्राणी कहाजाने हैं १० जिनके पशुज्ञान हैं तेप्राणी अपनीभ्रम प्रभुविषे ऐसेरोपण करते हैं जैसे आकाश में मेघकोपटलछायरह्यो है त्यहिमेघकेनीचे आपुढपे हैं अरु सूर्य घनके ऊपर हैं सूर्यकेप्रकाशते मेघढप्योहै तहां वेमूर्ख यहकहतेहैं कि मेघकरिकै सूर्यढपिरहे हैं ( ११ ) जैसे कोई अंगुली नेत्रके मध्यमेंलगाइकै देखते हैं तबवेकहते हैं कि चन्द्रमा दुइउदित हैं देखोतो अपने नेत्रकोदोष शशिमेंरोपण करतेहैं तैसेहीजोमाया करिके भ्रमित हैं तेअपनी भ्रमश्रीरामचन्द्रविषे आरोपण करतेहैं ऐसेनरपशुहैं १२ हेउमाश्रीरामचन्द्र लीलाकरतेहैं ताकोजिन जीवनदेखे हैं अरु जिन शास्त्रमेंसुनतेहैं कि श्रीरामचन्द्र भगवान् हैं अरुयेभी सुनतेहैं कि श्रीरामचन्द्र आरण्यबिषे बिकल श्रीजानकीजीको ढूंढ़तेहैं यहदूनौंदेखिकै सुनिकै महामोहको प्राप्तिहोतेहैं यहमनमें ल्यावते हैं कि श्रीरामचन्द्र कैसेभगवान् हैं जोमनुष्यकी नाईं बिकलबनमें फिरते हैं तहां श्रीरामचन्द्रकी प्राकृतइवलीलाजोहै सो अज्ञानीजीवनको मोहरूपहै अरुवहैलीला प्राकृतमोहरूपसो श्रीरामचन्द्रबिषे परमदिब्य है जैसे श्रीगंगा श्रीसरयू केप्रबाहमें जोकुछपरै सोअतिपवित्र सरयूगंगामयसोहतहै तैसे श्रीरामचन्द्रबिषे प्राकृतइवलीला ब्रह्ममयजानिये अतिशोभाको पावतहै जैसेआकाशबिषे रात्रि शोभापावती हैं धूमयज्ञादिकनके शोभापावैहै रजशोभापावतहै किंतुहेप्रिया श्रीरामचन्द्र बिषयक असमोह श्रीजानकीबिषेहै तो यह शृंगाररबिषे अतिशोभितहै जैसेनभबिषेतमधूमधूरि शोभापावतहै देखियेतो गगनबिषे रात्रीसहित चन्द्रमा नक्षत्र कैसीशोभापावतहै अरुधूमनभ

**विषयकअसमोहा नभतमधूमधूरिजिमिसोहा १३ बिषयकरनसुरजीवसमेता सकलएकतेएकसचेता १४ सबकरपरमप्रकाशक**

बिषे मेघहोतहै अरुधूरिनभमें प्राप्तिह्वैकै राजनके किरीट नेत्रनमें शोभित होतहै देखियेतो ऐसेदेव दानव मनुष्य इत्यादिक कौनमोहकरैगो जैसो श्रीरामचन्द्र श्रीजानकीबिषेमोहकरे है जिन श्रीजानकी जी के मोहद्वार ह्वैकै संपूर्ण राक्षसनकोनाशकरिकै परमपददीनहै अरु संपूर्ण महिदेव गऊ ब्राह्मण मुनिसंत सर्बको निष्कंटक करिदीनहै किंतु श्रीरामचन्द्र बिषे बिषयिकप्राणी जे हैं तेअसमोह करते हैं कि नभ जो है सो तमधूमधूरिकरिकै मलीनह्वै गयो है अरु यहनहीं विचारते कि नभविषे येतीनिहूं शोभित हैं अरु नभतौ तमधूरि धूमते निर्लेप है इनते नतौ शोभित है न अशोभित हैं तैसेश्रीरामचन्द्रजी सबते निर्लेपहैं एकरसहैं सर्बते भिन्नहैं ( १३ ) द्वैचौपाईकी एकअन्वयहै है उमासुनहु एकबिषय है शब्दस्पर्शरूप रस गन्ध ये पांचज्ञान इन्द्रीके विषय हैं पुनि चलन बिसर्गकही मलकोत्याग मैथुनभक्षण ब्यवहार एक कर्मइन्द्री के विषय हैं पुनि करणकही इन्द्री श्रवण त्वक् नयन जीभ नासिका ज्ञान इन्द्री पग गुदा लिंग मुख हाथ कर्मइन्द्री पुनि सुर इन्द्रिनके देवता श्रवण को देवता दशौदिशा त्वक् को वायु नयन को सूर्य जीभ को बरुण नासिका को अश्वनीकुमार पुनिपगको देवता यज्ञ विष्णु गुदा को यमराज लिंगको दक्षप्रजापति मुखको अग्नि हाथको इन्द्र पुनि जीव अरु अन्तर्यामी ब्रह्म तहां विषयकरनसुरजीवसमेता सकलएकतेएकसचेता विषय करन ते सचेतन है करनसुरन ते चेतन है सुरजीव ते चेतन है ( १४ ) अरु इनसबनके परम प्रकाशक श्रीरामचन्द्रजी अनादि पुरुष अखिल ब्रह्माण्ड के पति हैं अवधपतिकहे दशरथकुमार सोई मोरस्वामी हैं कैसे सबके परम प्रकाशक हैं जैसे एक कोई महाराज है तिनको एक सूबा है तिनको एक आमिल है तिनको

एक जमादार है तिनको एक चाकर है सो सबप्रजापर अमलकरै हैं तहांराजा को तेजप्रताप सूबा में विशेषहै पुनि वहै तेजप्रताप सूबाके द्वारह्वैके आमिल में प्राप्ति है पुनि आमिल के द्वार जमादारविषे ताहीद्वार चाकरमें प्राप्त है देखौ तो वहै चाकर राजाके तेजप्रताप ते सारी राज्यमें आज्ञा करैहै ऐसेही श्रीरामचन्द्रजी अनेक ब्रह्माण्ड के राजा अपनेगुण प्रतापतेजरूपते आपु सूत्रात्मकव्याप्त हैं जीवबिषेजीव देवतनविषे देवता इन्द्रिन विषे इन्द्रीविषे में या दृष्टान्त ते श्रीरामचन्द्र अनादि सर्बको अवधि श्रीअवधपति तिनकेपति सबके परम प्रकाशकहैं हे पार्वती सो येई राम हैं

## जोई रामअनादिअवधपतिसोई १५ जगतप्रकाश्यप्रकासकरामू मायाधीशज्ञानगुणधामू १६ जासुसत्यतातेजड़माया भाससत्यइव

जिनको देखिकै तुम्हारे भ्रमभई है ( १५ ) यह जगत् प्रकाश्यहै अरु एक अन्तर्यामी प्रकाश है अरु श्रीरामचन्द्र प्रकाशक हैं जाते जगत् प्रकाशमान् है पुनि मायाधीश हैं अविद्या विद्या आह्लादिनी तीनिहूके अधीश कही ईश हैं श्रीरामचन्द्रजी पुनि गुणधामहैं तामस राजस सात्त्विक यहतीनि गुणके परे हैं तीनिहू गुण ईश के आधीन हैं परमदिव्यगुण जे हैं ज्ञान इत्यादिक तेहिके धाम हैं सो कौनगुण हैं ज्ञानशक्ति बल ऐश्वर्य तेज बीर्य्य सौशील्य बात्सल्य आर्जव सौहार्द सर्बशरण्यत्व सौम्य कारुण्य स्थिरता धैर्य्य दया माधुर्य्य आर्द्दव येते अष्टादशगुण तिनके स्वरूप कहते हैं अरु इनके विशेषण कहते हैं क्रमही ते सर्बदेशकाल बस्तु को प्रत्यक्ष अनुभवसो ज्ञान १ अघटघटना करनेकी सामर्थ्य सो शक्ति २ विश्वधारणादिकी सामर्थ्य सो बल ३ सर्बनियमनशक्ति सो ऐश्वर्य ४ काहू ते पराभवनहोइसर्बको पराभव करने की सामर्थ्य सो तेज ५ अपरमित श्रमके प्राप्तिहोत सन्ते श्रम न होय सो वीर्य ६ येते षड्गुणसृष्टि आदिक के उपयोगी हैं भगवच्छब्द को बाच्य है सो परब्रह्म में रहतेहैं अरु निकटविषे मूर्त्तिमान् हैं पुनि जाति बर्णाश्रम इत्यादिक के बड़ाईकी उपेक्षा छोड़िकै निष्कपट मन्दजनहूं के संग मिलिरहनो सो सौशील्य ७ भृत्यके दोष न विचार करना सो बात्सल्य ८ मन बचन कायको सामान्यब्यापार सो आर्ज्जव ९ अपने जनको अपना ते अधिक मानना सो सौहार्द १० ब्रह्मादिक स्थावरान्त की साधारण रक्षा सो सर्बशरण्यत्व ११ ताही को नाम सौम्य १२ पर दुःखको दूरिकरना सो करुणा १३ दान युद्धादिकमें अचलता सो स्थिरता १४ प्रतिज्ञापालनसोधैर्य्य १५ कारण बिनापरावा दुःखदेखिकै दुःखीहोयकै ताके दुःख निवारणकै इच्छा सो दया १६ अमृतपान की नाईं स्वाददर्शन सोमाधुर्य्य १७ अपने शरणागत जनको दुःख न सहनोसो आर्द्दव १८ इतिअष्टादश पुनि महाकुलीन सर्बरमण सर्बलोक प्रसिद्ध नियतात्मा महावीर्य द्युतिमान् वशीमान् बुद्धिमान् नीतिमान् वाग्मी श्रीमान उदार अदभ्रशत्रु निवर्हण सर्बब्यापकत्व इतिषोड़श अब इनके विशेषणकहते हैं क्रमही ते सर्बोत्तमकुल सो महाकुलीन १ शब्दार्थरमणीयाख्यावान् रामनामसंसार दुःखनिवृत्तिपूर्बक अपनी नित्य नैमित्यलीलामें रमणकरावैं सो राम अथवा रमणकरैं योगीजन जेहिविषे सो राम अथवा स्वरूपलावण्य दर्शनध्यान ते रमणकरैं मुनीशजन जिनविषे सो राम इतिसर्बरमण २ औ ब्रह्मादि स्थावरांत प्रसिद्ध सो सर्बलोकप्रसिद्ध ३ आब्रह्मादि स्थावरान्तको खींच्यौ है आत्मा अन्तष्करण जिनने सो नियतात्मा ४ जिनके पराक्रम ते कणमें अनन्तकोटि ब्रह्माण्डधारी महाबिराटादि के पराक्रम लीनहोइजाहिं सो महाबीर्य्य ५ सर्बकाल एकरससुन्दर सो द्युतिमान् ( ६ ) हर्ष शोक दुःखसुखरहित सो धृतिमान् ( ७ ) अपने गुणक रिकै सर्बजीवनको बाह्यान्तर वशीकृतकीन जिननेसोवशी ( ८ ) प्रशस्तबुद्धि सर्ब्बजीवनको निश्चयरूप सो बुद्धिमान् ( ९ ) आब्रह्मादिस्थावरान्त अपनीअपनीमर्यादमें सर्बकोराखते हैं सो नीतिमान् ( १० ) जाकी सहज पराबाणी है जा बाणीमें योगी समस्त रमणकरिकै रामपदको प्राप्तिहोते हैं अथवावेदहैं सहजबाणी जाकी सो वाग्मी ( ११ ) अनेक ब्रह्माण्ड में जेती हैं बिभूति त्रिपाद सहित जाको एकबिलासहै सो श्रीमान् ( १२ ) सर्वजीव जाही में प्रसन्नहोइ सोई देते हैं पुनि सम्मुख होइकै जोई पदार्थ प्रार्थनाकरै सोई देते हैं सो उदार ( १३ ) जाको आदिअंत मध्यनहीं जानै कोई अधिकाधिकतरहै सो अदभ्र ( १४ ) भक्तजनमहि गो ब्राह्मण तिनके जो शत्रु तिनको नाशकरिदेते हैं अथवा संतजनके शत्रु कामक्रोधलोभ इत्यादिक तिनको बर्जितकरते हैं नाशभी करते हैं सो शत्रु निवर्हण ( १५ ) अपने चैतन्य गुण भूतते अनेक ब्रह्मांड चैतन्यकिये हैं सो सर्बव्यापकत्व ( १६ ) येतेअष्टादशषोड़श इत्यादिक अनंतगुण परमदिव्य तिनको धामहैं

श्रीरामचन्द्रजी अपने भक्तनको सोई गुणदेते हैं ( १७ ) हेपार्वती जिन श्रीरामचन्द्रजूकीसत्यताकही सत्ताते यहजड़ अबिद्यामायाहै सो सत्यइवभासती है जैसे एकचुम्बकशिला होतहै तेहिकी सत्तातेलोहा स्फुरितहोत है आपुभिन्न है तैसे श्रीरामचन्द्रसबतेभिन्न हैं तिनकी सत्ताते जड़चेतन है सत्ताकहे अंशप्रकाश प्रताप तीनहूं एकहीतत्त्वहैं सत्ताके आश्रययह जड़कैसे चेतन है जैसे शरीरके आश्रयबार अरु नखबढ़ते हैं पर बारनख दोनोंजड़ै हैं कैसे जानिये देखिये तो वारनख जो काटिडारौ तौ शरीरको पीड़ानहीं होती है ताते जड़हैं ऐसेहीजड़ चेतनमिले हैं अरु भिन्नभी हैं तहां बार अरु नखको मूलशरीरमें प्रवेशहै सो सर्बकालमें चेतन है जो बारनख ऊपर बाढ़िआये हैं सो जड़हैं उनकी उत्पत्ति नाशबनी है अनित्यको दृष्टान्त नित्यमें देते हैं सो जानब दृष्टान्त शरीरके स्थाने श्रीरामचन्द्रजी अरु बारनखके मूलस्थाने सत्यतातेहिमिलितविद्याहै अरु ताको विशेषण ज्ञान इत्यादिक है अरु ऊपर के नखस्थाने अविद्या जड़रूप जो त्रैलोक्यमेंदेवदानव मनुष्य इत्यादिक सर्वको वशकरिरही है पर श्रीरामकी सत्यताते जड़ सत्यइव भासती है पर मोहकी सहायते यहजीव मायामें अपनपौ मानिरह्यो है सोई मोहकी सहायते यथार्थ भासै है ताते श्रीरामचन्द्रकी सत्यता एक असंभाग ते जड़ जो माया सो सत्य इव स्थित ह्वैरही है॥ अन्यच्चश्लोकद्वै २॥ प्रकाशांशःप्रतापंचसत्ताचैवंरघुत्तम जड़श्चचेतनंकृत्वाब्यापकंचैवमव्ययं १

## मोहसहाया१७॥दो०॥ रजतसीपमहँभासजिमियथाभानुकरबारि यदपिमृषातिहुंकालसोइ भ्रमनसकैकोउटारि १८ यहिविधिजग

पुनि गीतायां॥ तत्तदेवावगच्छत्वंममतेजोंऽशसंभवं विष्ठभ्याहमिदंकृत्स्नमेकांशेनस्थितोजगत् १७॥ दोहार्थ॥ हे पार्वती श्रीरामचन्द्रजी अपनेसत्यता स्वरूप करिकै परिपूर्ण ह्वैरहे हैं चैतन्यरूपतेहिचैतन्य विषय जड़ माया कैसे भासतीहै जैसे रजतजोहैरूपासो सीपमें भासतहै अरु यथा भानुकी किरणि में जलभासतु है पर सीपमें चाँदी अरु रविकरमें बारि मृषाहै तीनहूं भूत भविष्य वर्त्तमान कालमें न कभी रूपा जलरह्यो है न होइगो न है पर यहाँ भ्रमको कोई टाराचहै तो किसूके टारिबेयोग्यनहीं है देखिये तो बृथाभी कहा अरु किसूके टारिबे योग्य नहीं है येभी कहा तहां बड़ो आश्चर्य्य है जो कछु वस्तुही नहींहै तो उसको टारनाकाहै तहां नहीं है अरु है सो दोनों वाक्य सिद्धकरना काहेते बिनावस्तु भ्रम नहीं सम्भव है तहां यह विचार में आवत है कि सीपमें रूपाकोछटा सूक्ष्मताको भासतहै काहेते कि जिनको सीपमें रूपाकीभ्रमभई है तिसने आगे रूपाको व्यवहारकियोहै तबतो मोहकरिकेभ्रमभईहै अरु रविकीकिरणिमें जलको भासहै काहेते कि सूर्य अपनी किरणिते जल वर्षते हैं ताते सूक्ष्मजलको भासहै तबतो किरणिमें जलकीभ्रमहोती है पर सीपमेंरूपाअरु रविकिरणिमें जल दूनौं कार्यकारीनहींहैं आत्माहै तहां यह समुझि परत है कि एकको भ्रमभई है अरु एकभ्रमहै अरु एक जेहि बिषयभ्रमभई है ये तीनिहू अनादि समुझिपरते हैं माया अरु सत्यता कहे जीव चेतनरूप ताको भ्रमभई है अरु जेहिविषय भ्रमभईहै सो शुद्ध सत्यताब्रह्म है सो ये तीनिहूतत्त्व अखण्ड अनादि हैं तहां जेहि जीवपर परमेश्वर श्रीरामचन्द्रकी कृपाहोइ तब तीवकै जो अविद्यारूपभ्रमहै सो मिटिजाइ है तब यथार्थ बोधहोत है तहां रामोपनिषद् ते प्रमाण है॥ जीव मायेश्वरायेते त्रयस्तत्वाअनादयो खण्डाश्चैकरसास्सर्ब दैवइतिश्रुतिः जीवात्मा जो है सो परमेश्वर की सत्यता का अंश है चेतन है सोमाया के बशह्वैकै भ्रमित ह्वै गया है अपने शुद्ध स्वरूपमें आपुको भ्रमभई है पुनि अपनी भ्रम परमेश्वरमें रोपणकरे हैं तहां विना परमेश्वरकी कृपा वहभ्रम नहींमिटैहै तीनिहूकालमें तहां उत्तरकाण्डे॥चौ० ॥ ईश्वरअंशजीवअबिनाशी चेतन अमलसहजसुखराशी सोमायाबशभयउंगोसाईं बँध्योकीरमर्कटकीनाईं पुनि अयोध्याकाण्डे तुम्हरीकृपातुमहिंरघुनन्दन जानहिंभक्तभक्तउरचन्दन सोजानैंजेहिदेहुजनाई ताते जीवही को भ्रम होतीहै काहेते कि जीव अनादि मायाको भोक्ता है तहां सीपस्थाने श्रीराम सत्यता है जो नित्यशुद्ध है अरु रूपाको भ्रमस्थाने अविद्या माया है सत्यता चैतन्य में है अरु वहै सत्यता चैतन्यरूप सों अविद्या के बश ह्वैकै अनेकरूप है अनादिही ते मोह के बशबद्ध ह्वै रहेउ है ताही कोभ्रम होती है तहाँ श्रीराम सत्यता में द्वै भेद हैं पर अनादिही ते एकभेदबद्ध अरु एक भेद शुद्धमुक्तहै ताते श्रीरामचन्द्र कैसत्यता अरु मायादोनों मिलके ब्रह्मांडकी रचनाह्वैरही है अरु श्रीरामचन्द्रजी दोऊते परोत्तमहैं श्रीभगवद्गीतायां ॥श्लोक॥ द्वाविमौपुरुषौलोके क्षरअक्षरएवंवचक्षरःसर्वाणिभूतानिकूटस्थोऽक्षरउच्यते १ उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः योलोकत्रयमाविश्य

विभुर्त्यव्ययईश्वरः २ यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः अतोऽस्मिल्लोकेवेदेच प्रथितःपुरुषोत्तमः ३ किंतुबुद्धिके भ्रमहोती है आत्माबिषे किंतु सतीके भ्रमभई है श्रीरामचन्द्रविषे तातेरजते सीपको दृष्टांतदीन है पुनि दूसरार्थ रजतसीपमहंभासजिमि तहां सीपस्थानेमायाअरु रूपास्थानेसत्यता अरु रबिकिरणिमायावारिसत्यता जैसे रूपाभिन्न है रूपाकीसत्यता सीपमें भासित है अरु करणिमें जलकी सत्यता भासितहै तहांसीप अरु रबिकरते रूपाजल भिन्नहै पर अनादि सत्य है तहांसत्यता अरु माया दोनों ते श्रीरामचन्द्र परे है अरु श्रीरामसत्यता अरुमायादूनौते समस्त रचनाबनीहै ताते श्रीरामचन्द्र अरु सत्यता अरु मायातीनहूंतत्त्व पृथक्-पृथक् अनादि शोभित हैं अरु जेमायाकोतीनहूकालमें मृषा कहते हैं सो यहकहना भ्रमहै सोउनका यह कहना भ्रमरूप किसूकेटारबे योग्यनहींहै अरु जोकहीकि सर्बथाबृथाहै तोयहजीवको बन्धन कौनकिहे है ताते बृथानहीं कहीजातीहै अरुजोकही किसत्यहै तोइसको कौनटारि सकैहै काहेको कभीछूटैगी जो कहोकि अपने अज्ञानते सत्य है ज्ञानभयेतेअसत्यहै तहांदेखिये अज्ञानतो अबहिंतेहै अरुजो कहोकि अज्ञानअनादि है जीवबिषे ज्ञानभयेते शांति ह्वैजातुहै तवजीव मोक्षहोत है तो बृथा क्योंकहतेहो ताते यह श्रीरामचन्द्रकी सत्यता अरु माया येदूनौं चित्अचित् महद्विभूतिहैं किसूके कहिबे योग्य नहीं है अरु मायाजोहै न तौ सत्यकहीजाय न असत्य कहीजाय अनिर्बचनीय है इत्यर्थः १८ यही प्रकारते जैसे पाछेदोहा में कहिआये हैं तैसेही यहजगत् हरिबिषे आश्रित है यहां हरिकही आत्माको काहेते श्लोकार्द्ध हरिर्हरतिपापानि दुष्टचित्तैरपिस्मृतःता तेजब आत्मज्ञानभयो तब सम्पूर्ण भ्रम मिटिजाती हैं जैसे सीपके ज्ञान भयेते रूपाको भ्रम मिटिजाती है जैसे रबिकिरणिके ज्ञानभयेते जलकी भ्रांति मिटिजाती है पर श्रीरामकृपाते तहां यद्यपि माया भ्रमरूप असत्यहै तदपिदुःखदेतीहै काहेते असत्यकहां जाते आत्माको कल्याणकारी न

## हरिआश्रितरहई यदपिअसत्यदेतदुखअहई १९ ज्योंसपनेशिरकाटैकोईबिनजागेनदूरिदुखहोई २० जासुकृपाअसभ्रममिटिजाई

हीं है ताते असत्य है पुनि द्वितीयार्थ यह जगत् जोहै मायामय तेहिबिषे आत्मा आश्रितहै कैसे जैसे रूपासीपमें रबिकरमें वारि है तहाँ यहिरीति से चित्तबुद्धि मन अंहकार ये चतुष्टय अन्तष्करण आत्माकी ज्योत्स्नाहै ताहीकरिकै जीवात्मा मायाको भोक्ताहै आपु भिन्न है जैसे सूर्य अपनी ज्योत्स्ना जो है किरणि ताहीकरिकै शुभाशुभ रस आकर्षण भोगकरतेहैं तैसे आत्माचित्त बुद्धि मन अहंकार ते भोगकरतहै चित्तकरिकै शुभाशुभ पदार्थ को चिन्तवनकरै है बुद्धि करिकै निश्चयकरे है मनकरिकै संकल्प बिकल्प यह करौं कि न करौं यह होई कि न होइहि इत्यादिक अनेक मनकी बिषय हैं अहंकार करिकै अहंमम इत्यादिक चारिहू कीबिषयकरिकै इन्द्रिनके द्वारह्वैकै आत्मा भोगकरत है जैसे श्रीरामचन्द्र की सत्यता जीवात्मा है तैसेही आत्माकी सत्यता चित्तबुद्धि मन अहंकारहै ताही ते माया जो शुभाशुभ है ताको भोग आत्मा करै है यद्यपि यह भोग असत्य है तदपि दुःखदाता है ( १९ ) जैसे कोई स्वप्न में शिरकाटतहै तब अनेक दुःख को प्राप्ति होतहै पर बिनाजागे ते वह दुःख नहींमिटेहैं पर स्वप्नमें शिरमें लेशहू चोटनहीं लगी है पर दुःख प्रसिद्ध भयो है श्रीरामकृपा सोई जागब है ( २० ) हे पार्वती जिन श्रीरामचन्द्र की कृपा ते ऐसो प्रबल जो भ्रम है सो जीवबिषे मिटिजाती है सोई रघुराई श्रीदशरथनन्दन हैं सुनहु जैसे सीपमें रूपाको भ्रम रबिकरमें वारि स्वप्नमें शिर को काटब यह भ्रम है तैसे जीवके भ्रमभई है अपने शुद्धस्वरूप बिषे सोभ्रम जो जीवमिटाना चाहे अपनेज्ञानते तो कोटिहूयत्नते नहींमिटै बिना श्रीरामकृपाते तहां हे पार्बती तिन श्रीरामचन्द्रबिषे तुम भ्रमरोपणकीनहै यह बड़ो आश्चर्यहै कि हमारी सत्सङ्गिनि प्रिया ते तुमको श्रीरामस्वरूप नहीं जानिपरेउ है ताते अब अच्छीप्रकार ते मैं दिखावतहौं सो सुनिकै देखहु हेप्रिया जब श्रीरामचन्द्रकृपाकरहिं तब यह भ्रममिटै तब अपनो शुद्धस्वरूप चैतन्यरूप प्राप्तिहोइ तब श्रीरामस्वरूप परब्रह्मबिग्रह किशोरमूर्त्ति देखिपरै जो कोटिन काम की शोभा कोटिनसूर्य को प्रकाश कोटिन शशिकीशीतलता ललित अमृतमय कोटिनदामिनीकीछटा कोटिनश्याममणि मेघकञ्ज इत्यादिक सचिक्कणता निर्मलता झलकता अमोलता गंभीरता उदारता कोमलता लालित्य सुगंध मकरंद माधुर्यइत्यादिक लज्जितहोते हैं श्रीरामस्वरूप की उपमादेतसन्ते ऐसो श्रीरामस्वरूप देखि

**गिरिजासोइदयालुरघुराई २१ आदिअन्तकोउजासुनपावामतिअनुमाननिगमअसगावा २२ पगबिनचलैसुनैबिनकानाकरबिनकर्म**

परै है कैसेदेखपरैं है जैसे एककोईजन्मको अन्धाहै अरु पश्चिममुखबैठो है तहां दैवसंयोगते अर्द्धरात्रीमें उसकेनेत्रखुले तब उसको अन्धकारनिश्चय भयो जबभोरभयो तबअन्धकारको अभावभयो उजियारीमें निश्चयभई पुनि जब सूर्यकी उदयभई तब सूर्यके प्रकाशमें निश्चयभई उजियारी अरु प्रकाशकी एकता देखिपरी तब कोईनेकहा कि तुम पूर्वदिशा देखोतो तब पूर्वदिशा देखतसन्ते सूर्यको स्वरूप देखिपरयोहै तब सूर्यमें निश्चय भई सूर्यके आश्रय प्रकाश देखिपरेउहै पर सूर्यहीके प्रकाशते सूर्यदेखिपरते हैं और प्रकाशते सूर्य नहींदेखिपरैहैं जो षोड़शौकला चन्द्रमा उदयहोहिं अरु कोटिनमन तैल बारि देइ अरु सुमेरु इत्यादिक पर्वतनमें दावा लगिजाहि पर सूर्य नहीं देखिपरै हैं तैसे यहजीव अविद्याअंधकारमें निश्चयकियोहै अनादिहीते जब याको गुरुकृपाते विशेष शास्त्रज्ञानहोइ तब उजियाररूपीविद्या प्राप्तिहोइ तब जीवकी लक्षिहोइ पुनि जब सद्गुरुनकै कृपाहोइ तब ब्रह्मबिद्या प्राप्तिहोइ तब विज्ञानहोइ तब श्रीरामचन्द्र कृपाकरहिं तब जीवके अन्तर्भूत ब्रह्म जो व्याप्त है सो लक्षिहोइ तब श्रीरामचन्द्रको स्वरूप देखिपरै है ऐसे श्रीरामचन्द्र हैं सो तुमजानहु बिशेषते ( २१ ) हे पार्बती जिन श्रीरामचन्द्रको आदि अन्त मध्य किसूक जानिबे योग्य नहीं है श्रुतिस्मृति पुराण ब्रह्मादिक देवता महामुनीश्वर ऋषीश्वर इत्यादिक कोई नहीं जानिसकैहैं अपनीअपनी मात के अनुसार कहते हैं जैसे सरयू गङ्गाकी प्रवाह चलीजाती है अरु गरुड़इत्यादिक बड़े अरुमसाइत्यादिकलघु अरु गजइत्यादिक बड़े अरु पिपीलिका इत्यादिक लघु एते सर्ब तृषितभये जलपानकरिबेको गये अपनी अपनी प्यास प्रमाण सबैजल पीवतभये पर जलको आदि अन्त मध्य शुमार पार किसूने नहीं पायो है तैसे श्रीरामस्वरूप रामनाम रामधामरामलीला किसूके जानिबे में नहींआवे है अपनी अपनी अनुसार सबै गावते हैं सो अब मैं तुसमे वर्णतहौं श्रीरामचन्द्र को परब्रह्म बिग्रह निर्बिशेष अखंडएकरस सो तुम सावधानह्वैकै सुनहु तहाँ यहि प्रसंगमें महादेवजी निराकार ब्रह्मके अवांतर साकार ब्रह्मदेखावते हैं अरु साकार ब्रह्मको निराकार करिकै देखावते हैं अरु निराकार को साकार करिकै देखाव

**करैविधिनाना २३ आननरहितसकलरसभोगी बिनवाणीवक्ताबड़योगी २४ तनबिनपरसनयनबिनदेखा ग्रहैघ्राणबिनबासविशेषा २५ अससबभांतिअलौकिककरणी महिमातासुजाइकिमिबरणी २६ दो०॥ जेहिइमिगावहिंवेदबुध जाहिधरहिंमुनिध्यान**

ते हैं आदि अंत मध्यमें साकारही प्रतिपाद्य करते हैं यह मैं कौनो पक्षकरिकै नहींकही है शपथ करिकै कहतहौं यहां वेदको सिद्धांत अरु महादेवको सिद्धांत आशययही है जो आगेमहादेव कहते हैं तहां महादेव कहते हैं हेप्रिया अपनी मति अनुसार निगम असकहिकै गावते हैं ( २२ ) यहांतीन चौपाई की एकही अन्वय है हे उमा सो तुमसुनहु मनलगाइकैप्रभुकैसे हैं पगबिनुचलैं पगनहीं हैं अरु चलते हैं काननहीं हैं अरु सुनते हैं सबकी पुनि करनहीहैं अरु कर्मकरते हैं नानाविधिके ( २३ ) अरु मुखनहीं है पर सर्बरस भोगकरते हैं अरु रसना बाणीनहीं है परबक्ता बड़ोयोग्य है ( २४ ) अरु तनकही त्वक्नहीं है परस्पर्श सबते करते हैं अरु नेत्रनहीं हैं पर देखते हैं सबको अरु नासिकानहीं है पर उत्तम मध्यम निकृष्ट गन्धसुगन्ध सबविशेष ग्रहण करते हैं ( २५ ) यहअर्थ में निराकार ब्रह्मसूचितभयो जो कही कि सोई निराकार साकार भयो है भक्तनके हेतुकरिकै तिनही को कहा है तहां नहींबनै है काहेते कि यहां इन्द्रीरहित कहाहै अरुइन्द्रिनकी विषय संयुक्तकहा है तहां इन्द्री विषय रूपरहित निराकार ब्रह्म है तातेचलब सुनब कर्म्म करब रसभगेक्ता स्पर्शरूप देखना सुगन्ध लेनायेते बिशेषण निराकार निर्गुण ब्रह्मबिषे नहीं सम्भवतहै काहेते निर्गुण निराकार ब्रह्म निर्बिशेष वेदकहते हैं काहेतेवहतौ परिपूर्ण ( प्रमाणं ) अखंडमंगलाकारं व्याप्तंयेनचराचरं इतिस्मृतिः तहां चलबकैसे संभवै जो कहूं न होइ तबतौचलै अरु ब्रह्मतौ एकहै एकमेवाद्वितीयंब्रह्मश्रुतिः ताते जोदूसरहोइ तबतौ दूसरी बाणीसुनै पुनिजो ब्रह्मते कछुभिन्नहोइ किंतु बासनाहोइ तबतौ कर्म्मकरै तहां ब्रह्मतौ अकर्म्महै अकर्म्मणः ( ब्रह्मेतिश्रुतिः ) पुनि रसभोक्ता जो कौनौरस उसमें अपूर्णहोइ तबतौ रसभोगकरै सर्बरसश्चैकपूर्णो भोक्ताब्रह्मेतिश्रुतिः पुनि बक्तृत्वतौ तबकरैजो बाणीमें होइअरु ब्रह्मतौ बाणीतेपरे है बाक्मनोगोचरातीतंज्योतिरूपंसनातनं इति स्मृतिः

पुनिस्पर्शतौ तवकरै जो वासेकछुभिन्नहोइ॥ सूत्रेमणिगणाइवइतिगीता पुनि जो कहूंनहोइ तबतौ कहूं देखै अरु गंधसुगंध ग्रहणकरै तहांब्रह्मांड को बाह्यान्तर जो है सर्बत्र ब्रह्मपूर्ण ह्वैरह्यो है वायु आकाशवत् वाहीब्रह्म के भीतरसबहैं जैसेकोईसागरमेंघट बोरि देत तहां घटजलके भीतरतहांघटके बाहिर भीतर जल पूर्ण है जैसे घट के बाहिर भीतर आकाशपूर्ण है जैसे घटकेबाहिरभीतर सूर्य है तैसे ब्रह्म बाहिरभीतर पूर्णहै श्लोको भगवद्गीतायां यथासर्वगतंसौक्ष्म्यादाकाशंनोपलिप्यते ॥ सर्वत्रावस्थितोदेहेतथात्मानोपलिप्यते १ अध्यात्मे प्रकाशरूपोऽहमजोऽहमद्वय: सकृद्विभातोऽहमतीव निर्मल: विशुद्धविज्ञानमयोनिरामय: सम्पूर्णआनन्दमयोहमक्रिय: २ पुन:श्रीमन्महारामायणे सर्ववसतिचैवास्मिन्सर्वेऽस्मिन्वसतेऽपिवै: तमाहुर्वासुदेवंच योगिनस्तत्त्वदर्शिन: ३ वायुवद्गगनेपूर्ण जगतामेववर्त्तते सर्वभिन्ननिराकारं निर्गुणंब्रह्मउच्यते ४ ऐसो जो ब्रह्महै तहां शब्दस्पर्शरूप रस गन्ध चलन भक्षण व्यवहार इत्यादिक विशेषण ब्रह्ममें नहीं सम्भवत हैअरु जो कहो कि सगुण भगवान् विषे एते विशेषणकहे हैं तहां पुनि इन्द्रियरहितकैसेकहैंगे सो भी नहींबनै है तहां यह तीनिहूं चौपाईको यहअर्थ सिद्धिहोत है निर्गुण सगुण ते परोत्तम है श्रीरामचन्द्रजी पग बिनुचलैं तहां श्रीरामचन्द्र को स्वरूप परब्रह्म बिग्रह ऐसो है त्रिपुटी रहितहैं देवता इन्द्री विषय ये तीनि त्रिपुटी कहावती हैं इत्यादिक जहाँलगि तीनितीन हैं सो त्रिपुटी सबकहाबती हैं प्रकृतिमय सब हैं तहां सबत्रिकुटीकरिकै रहित हैं श्रीरामचन्द्रजू को स्वरूप जो है बिषयकही शब्दस्पर्शरूपरसगन्ध इत्यादिक गोलककही श्रवण त्वक् नयन रसना नासिका अरु जो सत्ता विषयको ग्रहणकरै सो इन्द्री है अरु विषयके भोक्ता सो देवता है तत्रप्रमाणं महारामायणे श्लोक २ विषयेन्द्रियदेवाश्च त्रिपुटीविश्रुताबुधै: राम:साक्षात्परब्रह्म त्रिभिरेभिर्विवर्जित: १ पदश्रवणकराननबाणी त्वग्नयननासिकादीय विषयार्धीशै:॥ विवर्जितोराम: साक्षात्परब्रह्मविग्रह: सच्चिदानन्दात्मक:स्वयं २ इतिशिवस्मृति: तहां श्रीरामचन्द्र जू के पग कैसे हैं पगविनु चलैं बिनुचलै पग है विराट् अरु त्रिधा सृष्टि जो है इत्यादि सर्व के पगमें यज्ञ विष्णु देवताको बास है ताही देवताके प्रभावते सर्व के पग चलते हैं अरु देवताही के प्रभाव ते इन्द्रीविषय सबहै तहां हे पार्वती श्रीरामचन्द्र के पग बिगु चले हैं जेहिते सबकोई चलते हैं तेहि बिनुहैं पग श्रीरामचन्द्रजूके तहां यज्ञ विष्णु देवता श्रीरामपग परनहीं हैं स्वयंपद हैं ऐसेही सर्व अर्थजानब सुनै बिनुकाना श्रीरामचन्द्र के श्रवणसुने बिनु हैं सब के श्रवणपर दिशा देवता हैं ताते सब सुनते हैं श्रीराम श्रीवण तेहिबिनुहैं स्वयंश्रवण हैं श्रीरामकर कर्मकरे बिनुहैं सब के कर पर इन्द्रदेवता को बास है ताही ते सर्बकर्म करते हैं श्रीरामकर तेहि देवताबिनु हैं स्वयंकर हैं श्रीराममुख सर्बरसभोगी बिनु है सर्बकेमुख पर अग्नि देवता है बरुण संयुक्त ताही ते सर्वरस भोगी है अरु श्रीराममुख तेहि देवताबिनु है स्वयंपदनहीं है श्रीराम रसना बिनु बाणी है सब की रसनापर वरुणको बास है पर सरस्वती संयुक्त ताहीते सर्ववक्तृत्व योग्य है श्रीरामरसना तेहि देवताबिनु है स्वयंरसनाहै तहां सर्बके मुख रसनाको एक संयोग है ताही ते मुख जो है सो अग्निदेवता करिकै भक्षणकरै है अरु जीभको देवता बरुण ताको लैकै रसग्रहणकरलु है अरु रसना जो है सो अग्नि को लैकै ग्रहणकरतु है अरु बरुणकोलैकै विषय को रसभोग करै है अरु सरस्वतीकरिकै बचन जो अनेक हैं तेहिके रसको भोगै है इति पुनि श्रीरामतन बिनु परसहै सबके तनत्वक्पर वायु देवताको वास है ताहीते सर्वस्पर्श करते हैं श्रीरामतन तेहि देवता बिनु है स्वयंतन है श्रीरामनयन बिन देखा है सबके नेत्रनपर सूर्य देवतारहतेहैं ताही ते सर्वदेखते हैं श्रीरामनयन तेहिबिनु हैं स्वयंनयन हैं श्रीराम नासिका गन्ध सुगन्ध ग्रहैबिनुहै सबके नासिकापर अश्विनीकुमार देवताहैं ताहीते सर्वगन्ध सुगन्ध ग्रहणकरत हैं श्रीराम नासिका तेहि बिनु है स्वयंनासिका है यही प्रकार ते सर्व त्रिपुटीरहित श्रीरामचन्द्र हैं त्रिपुटीकही देवता इन्द्रीबिषय तहां सात्त्विकगुणते देवता हैं अरु राजस गुण ते इन्द्री हैं अरु तामसगुण ते इन्द्रिनकी विषय है अरु जेतीत्रिपुटीहैं सो सब त्रिगुणमयहैं अरु श्रीरामचन्द्र जी को स्वरूप बिग्रह त्रिगुणातीत परब्रह्म मूर्त्ति हैं जैसो अर्थ कहिआये हैं ताही ते श्रीरामचन्द्र को निराकार विग्रहकहा है जहां विद्या अविद्या दूनों को आकार लेशहूनहीं है ताहा ते जिनको ब्रह्मा विष्णु महेश अरु महाशम्भु महाविष्णु महामाया सनकादिक नारद शुकदेव इत्यादिक परमहंस मुनीश्वर सब ध्यावते हैं तत्रप्रमाणं वशिष्ठसंहिततायां भरद्वाजप्रश्ने वशिष्ठंप्रतिश्लोक: १४ इदानींश्रोतुमिच्छामि रामस्यबालकौतुकम्॥ ब्रह्मविष्णुमहेशादि ध्येयस्यपरमात्मन: १ सनत्कुमारसंहितायां यत्परंयद्गुणातीतंयज्ज्योतिरमलंशिवं तदेवपरमंतत्त्वं कैवल्यपदकारणम् २ निरामयंनिराभासंनिरवद्यन्निरञ्जनम् नित्यानन्दंनिराकारमद्वैतन्तमस: परं ३ मनसाशिरसानित्यं प्रणमामिरघूत्तमम् महासुन्दरीतन्त्रे श्रीजानकीवाक्यञ्जनकंप्रति द्वितीयेऽध्याये सृष्टिरग्रेपरे धाम्नि सम्वाद:समभूत्किल महाशम्भुर्महाविष्णु र्महामायेरितापुन: ४ महाशम्भुर्महामाया

महाविष्णुश्चसक्रियः कालेनसमनुप्राप्त्यै राघवं पर्य्यचिन्तयन् ५ अखण्डब्रह्मणोनित्या द्राघवान्नित्यबिग्रहात् चिदानन्दात्परानन्दात्साकेतनगराधिपात् ६ पुनः श्रीमन्महारामायणे शिव वाक्यम् पार्बतींप्रति॥ शृणध्वपरमंगुह्यं यन्नजानन्तिकेऽपिच केपिकेपिविजानन्ति रामानुक्रोशएवच ७ तेजोरूपमयारेफः श्रीरामांवककञ्चयोः कोटिसूर्य्यप्रकाशश्च परब्रह्मसउच्यते ८ सोपिसर्वेषुभूतेषु सहस्त्रारेप्रतिष्ठितः सर्वसाक्षीजगद्व्यापी नित्यंध्यायन्तियोगिनः ९ रामस्यमण्डलस्यैव तेजोरूपम्वरानने कोटिकन्दर्प्पशोभाढ्यो रेफाकारोहिविद्धिच १० अकारस्सोपिरूपश्च वासुदेवःसकथ्यते मध्याकारोमहारूपः श्रीरामस्यैवबक्षसः ११ सोप्यकारोमहाविष्णोर्बलम्बीर्य्यस्वरूपकं सर्वेषामेवविश्वाना माधारस्त्वञ्चविद्धिसः १२ मस्याकारोभवेद्रूपः श्रीरामकटिजानुनी सोऽप्यकारोमहाशम्भु रुच्यतेयोजगद्गुरुः १३ रक्षाभूतश्चरामस्यमकारंव्यञ्जनञ्चयत् सामूलप्रकृतिर्ज्ञेया महामायास्वरूपिणी १४ जो श्लोक कहिआये हैं तिनमें निराकार निर्गुणब्रह्म तेहिके अवान्तरसाकररनिर्गुण परब्रह्म दिखाये हैं पुनि अब जो श्लोक कहते हैं तामें साकार परब्रह्म जो है तिनके आश्रय अनादि माया अरु जीव अरु निर्गुण निराकारब्रह्म सो दिखावते हैं क्षर अक्षर निरक्षरोत्तम दिखावते हैं जो कोईकहै कि क्षर सो तौ नाशमानको कही तहां कार्य्यरूपक्षर नाशमानहै कारणरूपनित्य है तहां शिववाक्यं पार्व्वतीम्प्रति ॥श्लोक॥ मायामयादिकंसर्व्वं पञ्चतत्त्वोद्भवन्तनुम् दृष्टश्रुतादिकञ्चैव क्षरमित्यभिधीयते १ व्यापकःसर्वभूतेषु यस्यनाशःकदापिन ॥ जीवात्मासर्व्वगोभेद्यः सोऽक्षरोभूधरात्मजे २ सर्व्वसाक्षीचिदानन्दो निर्द्वन्द्वोऽखण्डएवयः परमात्मापरब्रह्म कथ्यतेसनिरक्षरः ३ असंख्यामित्रवत्तेजो वेदाअपिचयम्बिदुः सवैनिरक्षरा तीतो रामःपरतरात्परः ४ इच्छाभूतोऽक्षरस्तस्य चाक्षरस्तेजउच्यते निरक्षरोघनस्तेजो वर्त्ततेजानकीपतेः ५ तहां श्रीमहादेवको कागभुशुण्डिको याज्ञवल्क्यको सिद्धान्त ऐसे श्रीरामचन्द्रजी हैं अरु परमहंसनकोसिद्धांतश्रीरामचन्द्रही हैं तहां पुनः प्रमाणं श्रीभागवते शुकवाक्यं यस्यामलंनृप सदस्यथसोऽधुनापिगायन्तिचाद्यमृषयोदिगभेन्द्रपट्टं तन्नाकपालवसुपालकिरीटपुष्टम्पादाम्बुजंरघुपतेःशरणम्प्रपद्ये १ पुनःश्रीधरवाक्यं ॐनमःपरम हंसास्वादितचरणकमलचिन्मकरन्दाय भक्तजनमानसनिवासायश्रीरामचन्दाय २ तीनिहूं चौपाई को अर्थकहिआयेहैं पुनि सूक्ष्मते जनावते हैं वेदकेप्रमाणते। अपाणिपादोपवनोगृहीत्वा पश्यंत्यचक्षुःसश्रृणोत्यकर्णःयोवेत्तिसर्वन्नहितस्यवेत्ता तमाहुआद्यम्पुरुषम्पुराणं १ यह श्रुतिको अर्त्थ जो है अरु जो तीनिहूं चौपाईकोअर्त्थ जौनीरीतिसे कहिआये हैं सो अर्थविशेषसाकार ब्रह्मको प्रतिपाद्य जानव अरु जो यहिश्रुतिको अर्त्थ निराकारब्रह्म में लगावते हैं सो उनने अच्छीप्रकार विचार नहींकियो है काहेतेकि जो अपाणि अपाद इत्यादिक कहेहैं सो निषेधाभास अलंकारकह्यो है तहां अंगकोनिषेध नहीं होतहै तहां परब्रह्ममय अंगकहे हैं अरु इन्द्रीइंद्रिनको देवता इन्द्रिनकी विषय तिनको निषेध कीन्हे हैं तहां स्थूल बुद्धिको त्याग सूक्ष्म बुद्धिको विचार तब यहतत्त्व समुझबे में आवेहै श्रुतिको यह अर्त्थहै श्रीरघुनाथजी के पाणि कैसे हैं अगृहीत्वा पाणिहैं अपावन पादहैं अपश्यत चक्षु हैं अश्रृणोति श्रवणहैं इत्यादिजानव ऐसो आदिपुरुषनमेंपुरुषहैं जिनकोवेत्ता कोई नहींहै तहां अर्त्थको सिद्धान्त सोई कहिआये हैं जामेंबिशेषता निकसै अरु सामान्यको त्यागहोइ अरु ग्रन्थकर्त्ताके भावमें अरु मुनीश्वरनकी विशेष वाणी में विरोध न परै तहां महादेवजी केवल श्रीरामनामश्रीरामस्वरूप द्विभुज यहै सिद्धान्तमाने अरु जानेहैं सर्बतत्त्वसोई श्रीतुलसीदासजी को जानिये तहां जो श्रुति कह्यो है कि अपाणि पादौपुरुषंपुराणं तहां पुराण पुरुष श्रीरामचन्द्रहीको शास्त्र कहते हैं मुनीश्वर कहते हैं तहां प्रमाणहै सनत्कुमार संहितायां श्रीवेदव्यास वाक्यम् श्लोक ३ तत्त्वस्वरूपम्पुरुषम्पुराणं स्वतेजसापूरितबिश्वमेकं राजाधिराजंरविमण्डलस्थं बिश्वेश्वररंराम महम्भजामि १ पुनः श्रीभागवते ध्येयंसदा परिभवघ्नमभीष्टदोहं तीर्थास्पदंशिवविरंचिन्वितंशरण्यं भृत्यार्त्तिहंप्रणतपालभवाब्धिपोतं बंदेमहापुरुषतेचरणारबिंदं २ त्यक्तवासुदुस्त्यजसुरेप्सितराजलक्ष्मीं धर्मिष्टआर्यवचसायदगादरण्यं मयामृदंदयितयेप्सितमन्वधावद्वन्दे महापुरुषतेचरणारबिंदं ३ पुनः श्रुतिः ॥ ब्रह्मपक्षप्रतिष्ठाहः॥ तहां ब्रह्म श्रीरामचन्द्र जूको पक्षकही पक्षभागहै पक्षभागकही जैसेसूर्यकी किरणि सघनसूर्य बिषेमिली सर्वत्रपूर्ण ह्वैरही हैं इत्यर्थः ( २५ ) हेपार्बती सब भांतिते ऐसे श्रीरामचन्द्रहैं जैसो कहिआयेहैं अरुअलौकिक करणी कहीलीलाहै जिनकी अलौकिककही जो चौदहौंभुवन तीनिहूं लोकमें नहीं है जैसीकरणी कहीलीला जो श्रीरामचन्द्र कीनहै काहेते ब्रह्मांडभरेमें जेतीईश्वरकोटीहैं तिनसबकै कर्त्तव्य प्रवृत्ति निबृत्तिमय है अरु श्रीरामलीला इनसबके परे है केवल परब्रह्ममय लीला है ताते श्रीरामस्वरूप श्रीरामलीला तिनकी महिमाको बरणिसकै है किन्तु अलौकिक

कही प्रकृति रहित आश्चर्यवत् जौनकहूँ देखिबे सुनबे में नहींआयो है ( २६ ) दोहार्थ हेउमा जाको वेद असकरिके गावते हैं जैसो कहिआयेहैं अरु जेहिस्वरूप को मुनीश्वर ध्यानकरते हैं सो कौनस्वरूप है जिनको दशरथसुतकही भक्त हितकारी हैं कोशलपतिकही पूर्ण भगवान् कही भगवान्कहा अरु दशरथसुतकहा तहां भगवान् केहिको पुत्र है यहसन्देह है तहां दशरथकही जव रथपर आरूढ़होहिं तब तिनकोरथ दशौदिशा में गमनकरैं कोई रोंकि नहिंसकै जिनके रथकी अव्याहत गति है पुनि दशोइन्द्री दशरथ हैं तापर जीवचढ़िकै नाम इन्द्रिन को जीतिकै परमपुरुष के समीप को गमनकरै तब भगवान् उसके बशह्वैके जो वहकहे सोईकरते हैं पुनिजो नवधा प्रेमदशधा भक्ति है सोई दशौदिशा हैं अरु जीव रथपर चढ़े रथकौन है चित्त बुद्धि मन अहंकार चारिहू शुद्ध सात्विकमय सोई रथकी चाका है अरु योग बैराग ज्ञान बिज्ञान सोई चारिघोड़े हैं अरु सूरति

**सोइदशरथसुतभक्तहितकोशलपतिभगवान २७ काशीमरतजन्तुअवलोकी जासुनामबलकरौंविशोकी २८ सोइप्रभुमोरचराचरस्वामी रघुवरसबउरअन्तर्य्यामी २९ बिवशहुजासुनामनरकहहीं जन्मअनेकजनितअघदहहीं ३० सादरसुमिरणजेनरकरहीं भवबारिधि**

बृत्तिलय तीनिहूं रसरी हैं अरु सद्गुरुनकी वाक्य चाबुक है अरु ध्यानसमाधि पताका ध्वजा हैं नामस्मरण कलश है सत्संग सारथी है शील सन्तोष दया करुणाइत्यादिक सहायक हैं शम दम इत्यादिक आयुधहैंऐसे रथपर जीवचढ़ै अरु मोहको दल सम्पूर्ण जीतिकै दशधाभक्ति जो दशौदिशा हैं तहां गमनकरै श्रीरामचन्द्र के आश्रय ह्वैकै ताही के बशह्वैकैभगवान् सुत भाई सखा स्वामी होते हैं सेवक भी होते हैं काहेते भक्त वात्सल्य हैं सो यहसब श्रीदशरथ महाराज से बनी है अपरसे नहीं बनीहै जैसे ब्रह्माण्ड मण्डलविषे जीव ईश्वर कोटी है तिनसबन ते न बनी है न बनि है न बनैगो ताते दशरथकहा अरु ताही ते श्रीरामचन्द्र पूर्णभगवान् जिनको दशरथसुतकही ( २७ ) हे उमा चारिखानिमें जेते जीव हैं ते काशी में मरतसन्ते रामनाम मैं उपेदश करतहौं ताते सर्वजीवमोक्ष और विशोक होते हैं ( २८ ) हे पार्बती सोई मेरेप्रभु अरु चराचरके स्वामी हैं श्रीरघुवंश मणि दशरथनन्दन नित्यकिशोर कोटिन कंदर्प कोटिन रबि शशि घन तड़ित मणिकञ्ज तिनसबकी उपमा क्रम ते देते हैं छवि शोभा तेज प्रताप शीतलता अमृतमय गम्भीर छटा तेईरघुबर सबके अन्तर्य्यामी हैं जेहि रीति पूर्बकहे हैं ( २९ ) तिन श्रीरामचन्द्र को राम नाम जो कोई बिबशहु उच्चारणकरै तो अनेक जन्म के सञ्चित पाप नाशह्वैकै परमपद को प्राप्ति होते हैं ( ३० ) अध्यात्मे श्लोक २ यन्नामविवशोग्रहृणन्म्रृयमानः परंपदं यातिसाक्षात्सएवाद्य मुमूर्षोर्मेपुरःस्थितं १ बाराहपुराणे देवाच्छूकरशावकेननिहतोम्लेच्छोजराजर्ज्जरो हारामेतिहतोऽस्मिभूमिपतितोजल्पंस्तनुंत्यक्तवान् तीर्णोगोस्पदवद्भवार्णवमहो नाम्नः प्रभावात्पुनः किंचित्रंयदिरामनामरसिकास्तेयांतिरामास्पदं २ अरु जो सादर संयुक्त सुमिरणकरते हैं तिनको काकहौं ते तौ श्रीरामपदको प्राप्तिही हैं ( ३१ ) सोई रामचन्द्र परमात्मा परब्रह्म सबके स्वामी प्रभु हैं सर्बके नियन्ता हैं अरु तिन श्रीरामचन्द्र विषे तुमने भ्रमरोपण किया तहां यहबड़ो अनुचिततुमनेकिया यहबड़ी अबिहितबाणी तुम्हारी अबिहितकही अशास्त्रवाणी है हमारे संग हमारीप्रिया हमारी सत्संगिनि ह्वैकै अरु हमारेइष्टप्रभु स्वामी श्रीरामचन्द्र जी अरु तहां तुमकोभ्रमभई यहबड़ो आ-

**गोपदइवतरहीं ३१ रामसोपरमात्माभवानी तहँभ्रमअतिअबिहिततवबानी ३२ अससंशयआनतउरमाहीं ज्ञानबिरागसकलगुण जाहीं ३३ सुनिशिवकेभ्रमभंजनबचना मिटिगैसबकुतर्क्ककीरचना ३४ भइरघुपतिपदप्रीतिप्रतीती दारुणअसम्भाबनाबीती ३५॥**

श्चर्य है हमको लज्जाभई है तहां तुम काकरौ श्रीरामचन्द्रजी की माया बड़ी प्रबल है अरु श्रीराम इच्छा ऐसेही रही है ( ३२ ) हेउमा श्रीरामचन्द्र विषे जैसी संशय तुमकीन्हेउरहै जो ऐसी संशय कोईकरै देव दानव मनुष्य सिद्ध मुनि इत्यादिक कोई होइ तौ उसके ज्ञान वैराग्य इत्यादि समस्त शुभ गुणनाश को प्राप्तिहोइँ विशेषकै यह श्रीमहादेवकोशाप है ( ३३ ) हे भरद्वाज जी महादेव को बचन सम्पूर्ण भ्रम की नाश करनहारी बाणी सुनिकै पार्वती के अन्तष्करणमें जो कुतर्क की रचनारही सो मिटिगई ( ३४ ) श्रीरघुनन्दनके

चरणारबिन्द में विशेष प्रतीति करिकै प्रीतिभई दारुण जो असम्भावना रही सो बीतिगई असम्भावनाकही जो अपरपदार्थ में और पदार्थ की भावनाकरै सो असम्भावना कही अरु असम्भावना कही यथार्थ पदार्त्थ को ज्ञान देहको आत्मामानैअरु आत्मा को देहमानै यह असम्भावना भई अरु देहको देह आत्मा को आत्मा यथार्थ ज्ञान सो सम्भावनाकही तहां पार्बतीजू के सतीतनमें आरण्यविषे श्रीरामस्वरूपमें दारुण असम्भावनाभई है कि ये जोराजपुत्रहैं तिनको श्रीमहादेवजी सच्चिदानन्दकहिकै प्रणामकीन्ह्यो है तहां ये कैसे परमात्मा हैं जो अपनी प्रियाको ढूंढ़ते हैं तब यहकल्पनाकरती हैं कि निर्गुणब्रह्म सो तो येनहींहैंकाहेते ब्रह्म सोतो सबप्रकारते निर्विशेषहै तेहिको देहधरिबेको प्रयोजनैनहीं हैं अरुयेराजपुत्र विष्णुभीनहींहैं काहेते विष्णुतौ सर्वज्ञहैं अरु श्रीमहादेवकोवचन सबप्रकारतेसत्यहै तहां अबमैंकानिश्चयकरा तहांसतीजी निर्गुणजोव्यापकहै ब्रह्म अरु विष्णु जोभगवान् हैं तिनबिषे सच्चिदानन्द परमात्माभावकियो सो सम्भावनाकियोअरु श्रीरामचन्द्रको केवलराजपुत्र निश्चयकियो सो असम्भावनाकियो है अरु महादेवने श्रीरामचन्द्रजूको सच्चिदानन्द परस्वरूपकहा तबसतीके सन्देह भयो अरु जब अपने नेत्रनते श्रीरामचन्द्रविषे अतिप्राकृतइव बिरह देखती भई तब महामोह को प्राप्तिभई पुनि जब श्रीरामचन्द्रजूदोऊकरजोरिकै अरु यह कहिकै कि हम महाराज श्रीदशरथ के पुत्र हैं अरु राम हमारो नाम है हमारीप्रिया श्रीजानकीजी तिनको ढूंढ़तेहैं हमतुम्हारे नमस्कारकरते हैं तुम सती महादेव की प्रियाहौ जो कहूं देखेहु होय हमारी प्रियाको तौ बताइदेहु महादेव त्रिकालज्ञ हैं तिनकी तुम प्रियाहोहु हम बहुतबिकलहैं यहसुनिकै सतीके भ्रमसंकोचभयो तहां येती

दो०॥ पुनिपुनिप्रभुपदकमलगहिजोरिपङ्क रुहपानि बोलीगिरिजाबचनबरमनहुंप्रेमरसशानि १॥ चौ० ॥ शशिकरसमसु-

सब सतीविषे असम्भावना भई तहां जो कोई कहते हैं कि श्रीरामचन्द्रचतुर्भुज श्रीमन्नारायणका अवतार हैं किंतु विष्णु का अवतार कहते हैं ब्रह्मव्यापक सोई श्रीरामअवतारहै यह सब असम्भावनाजानिये तहां महादेवजी पार्व्वतीसे सबप्रकार कहतेभये निर्गुणब्रह्मव्यापक सो कहेसगुण बिष्णु भगवान् सो भी संज्ञा जनाइ दियो आगे पुनि कहैंगे अरु श्रीरामस्वरूप किशोर धनुर्द्धर सर्व्वोपर कृपाकरके दिखावते भये तब दारुण सम्भावनारही सो मिटि गई (३५) इतिश्री रामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने-बालकाण्डेउमामहेश्वरसम्बादे श्रीरामस्वरूपबिग्रहकिशोर द्विभुजधनुर्द्धर सर्व्वोपरवर्णनंनामत्रयोविंशतिस्तरङ्ग २३॥

दो० ॥ चौबिसशुभगतरङ्ग में संज्ञाबहुअवतार अवतारीपरब्रह्मश्री रामचरणमतसार २४॥ दोहार्थ॥ देभरद्वाज पार्बतीजीकोनिराकार साकार ब्रह्म के निर्णय का सन्देह नाशभयो एकही देखिपरेउ है तब पार्वती परमानन्द को प्राप्त ह्वैके पुनः पुनः पुलकसंयुक्त महादेव के चरणारबिन्द गहती भईं दोनोंकरकमल जोरिकै महादेव से अमृत बचन बोलतीभई (१) हे शिवस्वामी आपु निर्मल एकरस पूर्णशशि हौ अरु श्रीरामचरित परम अमृत तेहिते पूर्ण हौ अरु आपका वचन अमृतभरी किरणिहै जैसेशशिके किरणि ते शरद अरु सर्वऋतु की तपनि मिटिजात तैसे आपुका बचनसुनिकै महामोह जो भारी त्रैतापमय सो बाह्यान्तर की तपनि मिटिगई (२) हे कृपालु तुम सब संशयनाश किहेहु अब श्रीरामस्वरूप मोको जानिपरेउ है साकारब्रह्म बिषे मेरी निश्चयभई पर साकाररब्रह्मविषे कछुक पूछौंगी (३) पर हे नाथ तुम्हारी कृपाते बिषादकही शोच सो मिटिगयो आपुके बचनके प्रसाद ते अबमैं सुखी सबप्रकारते भयों (४) अब मोको अपनी किंकरी जानिकै यदपिस्त्रीकीजाति जड़ और अज्ञानीहै तदपिजबताईं अपने अज्ञानते अपनोबोध सबप्रकारते न होइ तबताईं सद्गुरुनते प्रश्नकिहेजाइ ताते आपुते पुनिबूझतिहौं (५) हेनाथजो मैं प्रथमदुइप्रश्न कियोरहै एकतो निर्गुण कैसे होतहै सोतोबोधभयो पुनि प्रभुकहहु रामअवतार यहिप्रश्न को उत्तरकहहु जो मेरेऊपर प्रसन्नहौ हेप्रभु (६) हेनाथ

निगिरातुम्हारी मिटामोहशरदातपभारी २ तुमकृपालुसबसंशयहरेऊरामस्वरूपजानिमोहिंपरेऊ ३ नाथकृपाअबगयउबिषादासुखी भइउंप्रभुबचनप्रसादा ४ अबमोहिंआपनिकिङ्करिजानी यदपिसहजजड़नारिअयानी ५ प्रथमजोमैंपूंछासोइकहहू जीमोपरप्रसन्न प्रभुअहहू ६ रामब्रह्मचिन्मयअविनासी सर्ब्बरहितसबउरपुरबासी ७ नाथधरेउनरतनकेहिहेतू मोहिंसमुझाइकहहुवृषकेतू ८ उमा

अबमैं श्रीरामस्वरूप सच्चिदानन्द अखण्ड अविनाशी एकरस व्यापकसबतेभिन्न ऐसे श्रीरामरघुनन्दन हैं सोमैं अच्छी प्रकारते जान्योहैं ( ७ ) तहांहे नाथ नरतन केहि हेतु करिके धरेउहै हेवृषकेतु सो अच्छी प्रकार समझाइकैकहहु हेभरद्वाज पार्वती के यहपूछिबेको यहतात्पर्य्य है कि चतुर्भुज जो भगवान् हैं तेई महिदेव गऊ सन्तहित रघुबन्शकुलमें श्रीदशरथमहाराजके पुत्रभये हैं नरतन द्विभुज स्वरूप पुनिपृथ्वीको भारउतारि कै वहै स्वरूप चारिभुजह्वैकै गदा पद्म शंख चक्र धारण करिकै बैकुण्ठ को प्राप्तिभये जो ऐसो श्रीरामचन्द्रको महादेव कहैंगे तौ मैं जानोंगी कि श्रीरामचन्द्र साक्षात् द्विभुज नारायण हैं अरु जो विष्णुको औरैरीतिसे कछुकहैंगे अरु श्रीरामचन्द्र को कोईरीतिसे द्विभुज अखण्ड एकरस श्रीदशरथ नन्दन सर्बोपर हैं असकहैंगे तो मैं सोई निश्चयकरौंगी पार्बती के पूछबेमें यह आशयहै सोमहादेव कहैंगे ( ८ ) हेभरद्वाज उमाको बचन परमबिनी तकही विचित्रहै यहवचनमें आशयधुनि बहुतहै सोयहकहा कि नरतनधरेउ नाथकेहिहेतू तहां श्रीरामस्वरूप द्विभुजबिषे उमाकोबोध अच्छेप्रकारतेभयो तहां द्विभुज स्वरूपको अवतरण सुनाचाहती हैं अरुयहसुनिबेकी बड़ी लालसाहै कि ऐसे श्रीरामचन्द्र कार्य्य कारणकेपरे अरु सगुण रूप भगवान् जो हैं अरु निर्गुण ब्रह्मजो हैं तेहिदूनहुके कारणहैं तहांसगुणरूप विष्णुभगवान् किंतु बिराट्भगवान् अरु निर्गुणब्रह्म सर्ब व्यापक सर्बको चेतन सर्बकोनियंता सर्ब ते भिन्न जैसेआकाश सर्बबिषयमयहैअरुसर्ब ते भिन्नहै एकरस अखण्डपूर्णसजातीबिजाती स्वगतभेद रहितहैसजातीकही ब्राह्मण ब्राह्मण शब्द अरु गऊगऊ बचन इत्यादिक है परब्यक्तिकरिकै अनेकहै परसजाती करिकै एकहै ताते ब्रह्म सजाती रहितहै काहे ते ब्रह्मतौ एकहै जो बहुतहोय तबतौ सजाती कहिवे में आवै अरु बिजातीकही ब्राह्मणक्षत्री बैश्यशूद्र अरु गऊभैंस इत्यादिक बिजाती हैं तहां जो ब्रह्मछोड़िकै अपरपदार्थ कछुहोय तबतौ बिजाती कहिवेमें आवै स्वगतभेदकही ब्राह्मण ब्राह्मणमें भेदहै किंतु कोई ब्राह्मणमोटा कोईदूबर कोई दीर्घ कोईलघु कोई काला कोई गौर ऐसेहीगऊ इत्यादिकन में जानिलेवतहां जो ब्रह्म के समकोई होय किंतु ब्रह्मलघु दीर्घगौर कृष्णइत्यादिक हो-

## बचनसुनिपरमबिनीता रामकथापरप्रेमपुनीता ९ दो०॥ हियहर्षेकामारितबशङ्करसहजसुजान बहुविधिउमहिंप्रशंसिपुनिबोले

इ तबतौ स्वागत भेदकही तहां ब्रह्मसबते बिलक्षणहै ऐसो जो ब्रह्महै अरुविष्णुभगवान्है निर्गुण सगुण दोऊ स्वरूप एकहीतत्त्व हैं निर्विशेषअरु सविशेष को भेदहै तहां दोऊके उपादान कारण श्रीरामचन्द्र हैं जैसेतेजप्रकाश के उपादान कारण सूर्यहैं तहां तेज प्रकाश एकही तत्त्व अनादि अभेदहै पुनि जैसे जलमोतीको उपादान कारणहै पर जल मोतीदोऊसाकाररूपहैं तहां जल मोती कारण कार्य तत्त्व अभेद है तैसे श्रीरामचन्द्रविष्णु भगवान्के उपादान कारणहै पर एकहीतत्त्व हैं अरु श्रीरामचन्द्र बिराट्के निमित्त कारणहैं तहां ऐसे श्रीरामचन्द्रजी सर्बोपर परब्रह्म रूप सो कौनेहेतुकरिकै प्रकृतिमण्डलमें अवतीर्णभयेहैं जो कही कि पृथ्वीके भारउतारिबेहेतु अवतीर्णभये हैं तहां पालन शक्ति तौ विष्णु करिकै है ताते पृथ्वीके भार उतारिवे को विष्णु को चाहिये है श्रीराम अवतारकौनेहेतु करिकै है अरु अवतीर्ण ह्वैकै कैसो चरित करतभये हैं सो सब पर्बती प्रीतिसंयुक्त सुनाचाहती हैं ताते उमाकोप्रश्न महादेवको बहुत प्रियलग्यो है ( ९ ) दोहार्थ पार्वतीको प्रश्नसुनिकै महादेवने हृदय में बहुत प्रसन्न ह्वैकै पार्वती की प्रशंसाकीन काहेते कि जो सद्गुरुकहै अरु जिज्ञासू धारण करिलेय तबवह जिज्ञासू प्रशंसायोग्य है ( १० ) सोरठार्थ पुनि महादेव कृपा के निधान बोलते भये हे भवानी श्रीरामचन्द्रकै अति शुभ कथा मानस रामायणअति बिमल सो सुनहु यह मानस रामायण कागभुशुण्डिजी गरुड़जी से कहे हैं ( ११ ) सो संवाद बड़ोउदारहै उदार कही जेहि संबाद बिषे गरुड़जी को महा मोह दरिद्ररूप सो नाश को प्राप्तिभई है अरु जहां यह संबादहोत है तहां योजन पर्यन्त अविद्यानहीं व्याप्तहोती है ताते उदारकहा सो संवाद जैसो भयो है सो आगेकहैगे अब श्रीरामचन्द्र जी को अवतार अतिसुन्दर अतिनिर्म्मल अघरहितहै सो नीकी प्रकारते सुनहु ( १२ ) हे पार्वतीजी हरिके गुणनाम कथारूप इत्यादिक अगणित अपार हैं हरिक्योंकहा श्रीराम गुणनामकथा इत्यादिक जन्ममरण हरिलेतुहै ताते हरिकहा मैं अपनी मति के अनुसार कहतहौं सो

**कृपानिधान १० ॥ सो०॥ सुनुशुभकथाभवानिरामचरितमानसबिमल कहा भुशुण्डिबखानिसुनाबिहगनायकगरुड़ ११ सो सम्बादउदारजेहिबिधि-भाआगेकहब सुनहुरामअवतारचरितपरमसुन्दरअनघ १२ हरिगुणनामअपार कथारूपअगणितअमित मैंनिजमतिअनुसारकहौंउमासादरसुनहु १३ चौ०॥ सुनुगिरिजाहरिचरितसुहाये बिपुलबिशदनिगमागमगाये १४ हरिअवतारहेतुजेहिहोई इदमित्थंकहिजाइनसोई १५ रामअतर्क्कबुद्धिमनबानी मतहमारअससुनहुभवानी १६ तदपिसंतमुनिवेदपुराना जसकछु**

तुम आदर समेत सुनहु ( १३ ) हे गिरिजा श्रीराम चन्द्रजीके चरित्र बिपुल हैं अनंत हैं अरु सबप्रकारते निर्म्मल हैं अति शोभित हैं जेहि चरित्रको वेदशास्त्र गावते हैं ( १४ ) हे गिरिजा प्रभुके अवतार जौने जौने हेतुकरिकैहोते हैं सो इदमित्थंकही कि जो इतनेही कारण प्रभु के अवतारके हैं सो नहीं कहाजाइ है प्रभुके अवतारके अनेक कारण हैं किसूके कहिबे योग्य नहीं हैं ( १५ ) हे पार्बती जी श्रीरामचन्द्र अतर्क्क हैं तहां मन बुद्धि बाणी इत्यादिक करिकै परे हैं तर्कणामें नहींआवैं हमारो सिद्धान्त मत यहैहै जो कोई तर्क्क करिकै यह कहते हैं कि श्रीरामचन्द्र जो परब्रह्महोते तौ श्रीजानकीजी को क्यों ढूंढ़ते फिरते रावण के संग्राममें क्यों दुःख सहते किन्तु यह तर्क्क करते हैं कि श्रीरामचंद्र जी निराकार व्यापक ब्रह्महैं अपने भक्तनके हेतु अपनी माया करिकै विग्रहमान् दशरथ महाराजके पुत्रभये पुनि भक्तनके कार्य करिकै निराकार के निराकार भयेहैं पुनि कोई यहतर्क्क करते हैं कि श्रीमन्नारायण चतुर्भुज भगवान् तेई अपने भक्तन के हेतु द्विभुज स्वरूप दशरथ महाराज के पुत्र भयेहैं पुनि भूभारउतारिकै पुनि चतुर्भुज स्वरूपह्वैकै बैकुण्ठको प्राप्तिभयेहैं यह सब तर्कणा श्रीरामस्वरूप बिषे वृथाहैं उनहींको भ्रमभई है अरु हे भवानी हमारे मतमें श्रुति स्मृतिके सम्मतमें श्रीरामचन्द्र द्विभुजस्वरूप परब्रह्म अखण्ड एकरस परिपूर्ण अतर्क्कहैं ( १६ ) तदपि सन्तजन जो हैं मुनिजन जो हैं वेदजो हैं पुराण जो हैं जस कछु अपनी स्वमतिकेअनुसारकहतेहैं ( १७ ) हे सुमुखि तुम श्रीरामचन्द्रजूके सन्मुखहौ ताते नीकीप्रकारते सबकोसम्मत अब मैं तुमसे कहतहौं अरु जसकछु कारण मेरे अनुभवमेंप्राप्ति है सो भी कहौंगो ( १८ ) हे पार्व्वती अब श्रीराम जन्मकर हेतुसुनहु जब जब धर्म्मकै हानिहोत है तब तब असुर जो अधम अभिमानी हैं ते बाढ़ते हैं ( १९ ) ते संसारमें अनेक उपद्रवकरते हैं सो वर्णिबेयोग्य नहीं हैं ते राक्षस बिप्र गऊ देवता सन्तजन पृथ्वी तिन सबनको महा पीड़ा देते हैं ( २० ) तहां युग युग कल्प कल्प जब जब ऐसे कारण परैं तब तब ऐसे ही

**कहैंस्वमतिअनुमाना १७ तसमैंसुमुखिसुनावौंतोहीं समुझिपरैजसकारणमोहीं १८ जबजबहोइधर्म्मकैहानी बाढ़हिंअसुरअधम अभिमानी १९ करहिंअनीतिजाइनहिंबरणी सीदहिंबिप्रधेनुसुरधरणी २० तबतबधरिप्रभुविविधशरीरा हरहिंकृपानिधिसज्जन पीरा २१॥ दो०॥ असुरमारिथापहिंसुरनराखहिंनिजश्रुतिसेतु जगबिस्तारहिंबिशदयशरामजन्मकरहेतु २२ सोइयशगाइभक्त**

होइहैं राक्षसन करिकै पृथ्वीको भारहोतहै तब तब प्रभु जो भगवान्हैं ते विविध प्राकारको शरीर धारणकरते हैं जौनेजौने कालमें जैसो २ कारण आइ प्राप्तिहोत है तैसो तैसो शरीर प्रभु धारणकरिकै भूभार उतारते हैं अरु जीवन को मोक्ष करतेहैं तहा हे पार्वती भगवान्के अवतारकोनियम नहीं है काहेते कि जेहिकी जैसी भक्ति है ते तैसेही स्थान में भगवान्की प्रार्त्थना करतु हैं कोई क्षीरसागरते कोई बैकुण्ठते कोई प्रह्लाद इत्यादिक सर्व्वब्यापकते अरु स्वायम्भुवमनु ब्रह्माण्डकेपरेपरधामते परमपुरुषकी प्रार्थना कीन्हे हैं तहां भक्तजन अपनी भक्ति भावते अरु देवता अपनी कामनाते ऐसेही प्रभुकी प्रार्त्थना करते हैं तिसी २ स्थानते प्रभुआविर्भाव होते हैं मत्स्य इत्यादिक शरीर धारण करते हैं पुनि कार्यकरिकै अपने निज धामको तिरोभाव होते हैं अरु कोई मुनीश्वर वेद मत लैकैकहै हैं कि परस्वरूप जैसो परमेश्वरको होय तैसो हम दर्शनपावैं तब प्रभु जो कृपालु हैं भक्तवात्सल्य तब वही स्वरूपका दर्शनदेते हैं भक्तनकी पीड़ाहरते हैं ( २१ ) दोहार्थ॥ असुरनको मारिकै देवतनको स्थापन करते हैं अपने वेदकी मर्य्यादरखते हैं हे पार्व्वती

श्रीरामजन्मको यहहेतुहै सो भी कहौंगो अरु जो पृथ्वीको भार उतारिबेकेहेतु रहित अवतारहै श्रीराम अवतार सो विस्तारसमेत कहौंगो और तेहि अवतारमें भूभारउतारिबेकोमिसुमात्र है सो भी कहौंगो ( २२ ) जो भगवान् अपने भक्तनहित तनधारी ऐसो चरित करतेहैं किन्तु नरको ऐसो चरित अपने तनमें धारणकीनहै सोई यशगाइकै भक्तजन संसारतरिजाते हैं ( २३ ) तहां हे पार्वती श्रीराम जन्मके अनेककारणहैं पर एकतेएक बिचित्रहैं ( २४ ) तहां हे पार्वती अवतुमबहुत सावधानह्वैकै सुनहु अब मैं श्रीरामजन्मकोकारण कार्यस्वरूप अवतारअवतारी कहौंगो अरुताहीमें अपनोमत सिद्धांत सबकरमत देखाइकैकहौंगो ताते तुमचित्त एकाग्र करिकै सुनहु काहेते सबकहौंगो तुमसुमुखि हौ अब मैं अच्छीप्रकार तुमको जान्यो है कि तुम्हारा बाह्यान्तर श्रीरामस्वरूपविषे सन्मुखहै तुम बड़ी सयानीहौ हे भरद्वाज यहकहिकै सावधान

**भवतरहीं कृपासिन्धुजनहिततनुधरहीं २३ रामजन्मकरहेतुअनेका परमविचित्रएकतेएका २४ जन्मएकदुइकहौंबखानी सावधानसुनुसुमुखिसयानी २५॥ * * * * * * * ***

करिकै महादेव कहते हैं हे प्रिया एक अरु दुईतीनि तौ जन्मअवतार श्रीरामचन्द्रको कहौंगो अरु एकस्वरूप अजन्म अवतारी कहौंगो अरु बिष्णु भगवान् जो श्रीरामावतार होते हैं सो भी कहौंगो अरु श्रीरामचन्द्र के अंश ते ब्रह्मा विष्णु भगवान् अरु महेश मैं जो हौं ते जिनके अंशते अनेकन उत्पन्न होते हैं सो स्वरूप कहौंगो हे पार्वतीजी कल्पकल्पप्रति भगवान् के दशौ अवतार जो हैं अरु चौबीस अवतार शास्त्र कहते हैं सो कल्पकल्प किन्तु युगयुगमें अवतार होते हैं कछु नेमनहीं है भगवद्गीतायां श्लोक २ यदायदाहिधर्मस्य ग्लानिर्भवतिभारत अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानंसृजाम्यहं १ परित्राणायसाधूनां विनाशायचदुष्कृतां धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामियुगेयुगे २ तहां तीनिकल्प की मैं कहतहौं यहीरीति जानिलेव तीनिकल्पबिषे विष्णु जो भगवान् हैं सोई श्रीरामचन्द्रस्वरूपभये हैं चतुर्भुजते द्विभुज स्वरूपभये हैं तहां रूपांतरभेद भयो ताही ते अवतारकही तहां कारण कहते हैं एककल्पभरमा बैकुण्ठमें सनकादिकनशापदीह्यौ तीनिजन्मको जय विजय जो विष्णुके द्वारपाल नित्यपार्षद हैं ते द्वौहिरण्याक्ष हिरण्यकश्यपभये तहाँ भगवान् बाराह अवतार श्रीनृसिंह अवातरधरिकै द्वौको नाशकियो है हे पार्वती पुनि हिरण्याक्ष हिरण्यकश्यप द्वौ लंकामें कुम्भकरण रावणभयेजाइ तिनके बधहेतु विष्णुभगवान् श्रीरामस्वरूप होतभये अरु जो श्रीजानकीस्वरूप अवतारलीन्ह अरु कश्यप श्रीदशरथ महाराज भये अरु अदिति श्रीकौशल्या जीभई हैं हे पार्वती पुनि एककल्पबिषे जलंधरनाम दानवभयो सो किसीके सङ्ग ते लंकाविषे रावणभयोजाइ तेहिके हेतु विष्णु भगवान् श्रीराम अवतार लेतभये हैं तहाँ कश्यप अदिति दशरथ कौशल्या भये हैं लक्ष्मी जी श्रीजानकी जी भई हैं पुनि हे उमा एककल्पमें नारद जो हैं ते मोहके बशह्वैकै विष्णुभगवान् को शापदेत भये भगवान् की इच्छा तीनिहूं विषयमें जानबतहां शिवके दूत रावण कुम्भकरण भये तिनकेहेतु विष्णुश्रीरामस्वरूप धारण करतभये तहां लक्ष्मीजी श्रीजानकी रूपहोतभई कश्यप अदिति माता पिता भये हैं तहां ये तीनिअवतार श्रीरामजूके गिरिजा एकअपर कल्प जो आदि कल्प है तेहिबिषे श्रीरामस्वरूप अगुण अज अनादि अनूपम द्विभुज साक्षात् परब्रह्म बिग्रह निर्विशेष रूपान्तररहित किशोरमूर्त्ति अवतारी श्रीरामचन्द्रजी अवतीर्ण भये हैं जिनके अंशते अनेक ब्रह्माण्डमें अनेक ब्रह्मा विष्णु शिव हैं तेहिअवतारको कारणरूपाधि है ब्रह्माके अंगपुत्र महाराज स्वायंभुवमनुभये हैं तिनने महातप महाभजन कियो परमपुरुष हेतु तब तिनके प्रेमबश ह्वैकै परमपुरुष अवतीर्ण भये पुनि परमपुरुष ने अपनीइच्छा ते कारण उत्पन्नकियो है राजा भानुप्रताप सो भगवत् प्रेरणा ते रावण कुम्भकरण भये जाइ तब श्रीरामचन्द्र श्रीदशरथ महाराज के भवनविषे अवतीर्णभये तहां श्रीरामअवतार अवतारी एकहीजानब पुनि कहतहौं तीनिकल्पकोप्रसंग तहां जय बिजयके हेतु जलंधर के हेतु अरु नारदको शाप शिवकेदूतनके हेतु ये तीनिहूं कल्पविषे कश्यप श्रीदशरथ महाराज भये अदिति श्रीकौशल्याजी होतीभई अरु श्रीविष्णु भगवान् श्रीलक्ष्मीजी श्रीरामचन्द्रजी श्रीजानकीजी होतभये जब भूभार उतारिभये तब बैकुण्ठ को प्राप्तिभये हैं चतुर्भुजस्वरूप पुनि चौथेकल्प में अवतारी कहतहौं राजास्वायम्भुवमनु अरु रानी सत्यरूपा ते द्वौ श्रीदशरथ कौशल्याहोतभये तब श्रीरामसखा प्रतापी नाम सो श्रीराम प्रेरणा ते राजाभानुप्रतापभयो पुनि रावण

भयो तब परमात्मा परमपुरुष परब्रह्म द्विभुजस्वरूप अखण्ड एकरस मध्यकिशोर बिग्रह कार्यकारणके परे परात्परतर अवतारी अवतीर्ण होतभये जो कोई कहै कि तुम श्रीरामचन्द्र के स्वरूप में भेदकरते हौ तहां तत्वकरिकै स्वरूपकरिकै नामकरिकै अभेदहै अरु जब तीनिअबतार चतुर्भुज ह्वैके बैकुण्ठ को प्राप्तिभये तब भेद है अंशांशीभेद है गुणाभिमानी गुणातीतभेद है आदिअन्त श्रीरामही हैं मध्य में चतुर्भुजरूप अरु जो कोई कहै कि तुम अपनी कल्पना ते भेदकरते हौ काहेते कि चौथेअवतारके हेतु मैंने जब ब्रह्मके हेतु ब्रह्मबाणी भई है तबयह कहा है कि चौंकश्यपअदितिमहातपकीन्हा तिनकहंमैंपूरबबरदीन्हा तेदशरथकौशल्यारूपा प्रकटतभयेअवधपुरभूपा पुनि नारदश्रापसत्यसबकरिहौं तहां इनवचननको अर्थ कैसे सिद्धिकरहुगे अरु तुमकहतेहौ कि चौथेअवताराविषे मनुसत्यरूपा दशरथ कौशल्याभये हैं अरु वाणी कश्यप अदिति को कहे है हमारो समाधानकरौ तहां तुमने बहुतनीक प्रश्नकियो है पर सावधानह्वैकै सुनहु तहां प्रथम तौ यहै जानहु आगे अवतारन के प्रकरणमें चारि प्रकरण गुसाईंतुलसीदास ने कहे हैं पुनि यह समुझहु कि ग्रन्थकर्त्ता अपने ग्रन्थबिषे बिरोधकरिकै नहीं कहैगो अपनीबुद्धिके समुझबे में बिरोध होत है तहां सुनो भगवत् की सत्य संकल्पवाणी है अरु देवतन को प्रयोजनमात्र बाणी बोले हैं देवतनको केवल भूमिके भारउतारिबे को प्रयोजन है अरु पालनशक्ति बिष्णुकै है ताते परमात्मा श्रीरामचन्द्रजी अपनी बाणीविषे देवतन को विष्णुस्वरूप जनावते हैं अपनो स्वरूप गुप्तराखते हैं तहां श्रीरामचन्द्र जी की सत्यसंकल्प है जाको जो पदवीदीनताकी मर्यादा फेरि नहींतोरते हैं श्रीरामचन्द्र जी ने विष्णु को पालनशक्ति दीन है अरु बिधिको उत्पत्ति शक्तिदई है अरु महादेव को संहार शक्तिदई है श्रीजानकीनाथजी ने तहां गुसाईंजी से कहा है हरिगतिकाछन्द॥ हरिहिहरिताविधिहिबिधिता शिवहिशिवताजिनदई सोइजानकीवरमधुरमूरति मोदमयमङ्गलमई ताते विष्णु भगवान् की मर्य्यादा हेतु आपको अपनी वाणी बिषय बिष्णु स्वरूप देवतन को जनावते हैं ताते कश्यप अदितिकहा है अरु बिष्णु भगवान् अरु श्रीरामचन्द्रजू तत्त्व करिकै अभेद हैं ताते एकता करिके बाणीजनावे हैं पुनि कहा कि नारदशापसत्यसबकरिहौं पर ब्रह्मबाणी बिषे यहअर्थ है कि नारद जो शापदीनहै सो मैं परंपरा मानिलीन है तैसेही लीलायेहू अवतार बिषेकरौंगो नारदको बचनमैं सदासत्य करौंगो तहां बाणीमें विष्णुपद बिभवलिहेअर्थ है अरु जो बाणीयहकहै कि महाराज स्वायंभू अरु रानीसत्यरूपा तिनने महातप कियो है ते दशरथ कौशल्या श्रीअवध पतिभये हैं तिनके गृहबिषे मैं जो परब्रह्महौं सो अवतीर्णहोउँगो जो ऐसो कहैंतौ देवतनको भ्रमहोइजाइ काहेते कि देवतनकै बृत्तिरमा बैकुंठताईं है किन्तु क्षीरसागरताईं है अरु यह अवतार परात्परतर परब्रह्म अवतीर्णहोहिंगेगुप्तअवतार एक महादेव जानते हैं अपरदेवतानहीं जानते हैं काहेते जब कोई देवतन कहा कि बैकुण्ठकोचलो तहां पुकारैंगे अरु कोई देवतनकहा कि प्रभुक्षीरसागर में हैं तहां पुकार करैंगे तहां महादेव जानते रहैं अबकीनतौ बैकुण्ठते अवतारहै अरु नतौ क्षीरसागरते अवतारहै अबकीतौ परमपुरुष परब्रह्म श्रीरामचन्द्र अवतीर्णहोहिंगे तब महादेवजीने युक्ति करिकै कहाहै कि हे देवतहु तुम काहेको बैकुण्ठ क्षीरसागर को जातेहौ प्रभुसर्बत्र परिपूर्ण हैं देशकाल वस्तुप्रच्छेद है ताते तुमयहीं पुकारकरौ तुम्हारे आर्त्ततेप्रभु आपुही प्रत्यक्षहोहिंगे तहां चारिहू अवतार के प्रसंग हमने सूचितकिये हैं सो अच्छीतरह समुझव यहपरम सिद्धांतहै हेपार्वती हमारो मत परम सिद्धांत श्रीरामचन्द्र द्विभुज परब्रह्म सर्बोपरहैं अरु किसूको यहमतहै कि ब्रह्मनिराकारहै सर्ब्बत्र परिपूर्ण है जीवईश्वर ब्रह्मतत्त्व एकही है कैसे एकही है दृष्टांतदेते हैं जैसे आकाश के अवांतर सबहै अरु सबमेंआकाश है जैसे महदाकाश मठाकाश घटाकाश आकाश तत्त्वएकहै अविद्याउपाधि जीवघटस्थाने अरु बिद्याउपाधि ईश्वर मठस्थाने दूनौं उपाधिरहित ब्रह्म महदाकाशस्थाने पुनि जैसे आकाशके एक देशबिषेमेघहै तहां मेघमें जो आकाश भासतहै ताको मेघाकाशकही अरु मेघते जो जलछूटेउहै तहां बूंदबूंदप्रति आकाशमें भासतहै ताको बुन्दाकाशकही अबदृष्टांत कहते हैं ब्रह्मके एकदेश बिषेमायाहै सो अनादिहै अनिर्वचनीयहै सो माया अरु ब्रह्ममिलित है तिनहींको ईश्वरकही ईश्वरसर्ब्बज्ञहै जब ईश्वर ईक्ष्णा करतुहै सोई महत्तत्त्वहै तहां चतुष्टअन्तष्करणभयो तामें बुद्धिके आधीन चित्त मन अहंकार जानब तहां वाही ईक्ष्णा की अनेकबुद्धि है गई बृष्टिरूप भई बुद्धि बुद्धिप्रति बह्मको भासभयो ताको जीवकही तहां आकाश एकही तत्त्व है ऐसेही ब्रह्मतत्त्व ईश्वरतत्त्व जीवतत्त्व एकही है ऐसे ही अनेकदृष्टांत करिकै निराकार प्रतिपादन करते हैं निर्विशेषकहतेहैं तहां हे पार्वती तत्त्व करिकै तो निर्विशेषही है पर सम्पूर्ण विशेषण वाही तेहैं काहेतेमायाजड़ है सो ब्रह्मकरिकै चैतन्यहै

तातेसबविशेषणवाहीके हैं अरुजो कहते हैं कि ब्रह्मकी सत्ता करिकैजड़चेतनहै जैसेचुम्बक शिलाकी सत्ताकरिकै लोहास्फुरितहोतहै तहां यहदृष्टान्तविषेब्रह्ममें परिपूर्णता नहीं आवे है एकदेशीहोतहै काहेतेएकदेशमें सत्ताअरु एकदेशविषे पूर्णहोत है अरु ब्रह्म एकरसपूर्ण है अरु पांचतत्त्व तीनगुणकरिकै ब्रह्मांडहै तहां पांचतत्त्व गुणकरिकै कहूं एकबारको अग्रभागहूभरिखालीनहीं है तहां जो कही कि ब्रह्म इनतेभिन्नहै ब्रह्मांडके बाहिरहैब्रह्मकी सत्ता ब्रह्मांडविषे है तौ एकदेशीभयो अरु जो कही किसर्व्वगुणतत्त्वमेंपूर्ण एकरसहैतो विशेषणबनो है इत्यादिक अनेक दूषण भूषण भतबाद करिकै हैं तहां हेप्रिया जब ऐसो ब्रह्म ज्ञान होइ चतुष्ट साधनसंयुक्त होइ तब तेहि मुमुक्षूको ज्ञान प्राप्ति होइ तब अपने स्वरूप कैलक्षि होइ तब सर्वभूतविषे ब्रह्मदृष्टिहोइ तब ब्रह्मानन्दाकार वृष्टि होइ तब अन्तमें कैवल्यमुक्तिकै प्राप्तिहोइ है अरु जो निराकारब्रह्म किसीने सिद्धांतकियो है सो सत्यहै पर हे पार्वतीहमारो सिद्धान्त निर्विशेष परब्रह्म श्रीदशरथनन्दन तिनको घनस्तेज निराकार व्यापकब्रह्महै अरु हे उमा यहि जगत्को कारण महामाया है सोमहामाया महाविष्णुके आश्रितहै अनादि शुद्धहै ते महाविष्णु श्रीरामचंद्र को दिव्यगुण बिग्रह है तिनहींको महा ईश्वर कही तिनहींकी ईक्षणाते सब जगत् है पुनि हे उमा कोई मुनीश्वर यह सिद्धान्त करते हैं चतुर्भुज भगवान् परात्परतर हैं कार्य्य कारण के परे हैं अरु सोई चतुर्भुज साकाररूप सर्व्व बिषे व्याप्तहैं अरु सोईप्रभु एकस्वरूप ईश्वर क्षीरसागर बैकुंठहै तामें विराजमान सम्पूर्ण जगत्को कारण है अरु हे प्रिया हमारेमतमें चतुर्भुज भगवान् जो हैं सो श्रीरामचन्द्रको महत् अंशहै तिन श्रीरामचंद्र

**द्वारपालहरिकेप्रियदोऊ जयअरुविजयजानसबकोऊ १ बिप्रशापतेदोनौंभाई तामसअसुरदेहतिनपाई २ कनककशिपुअरु हाटकलोचन जगतबिदितसुरपतिमदमोचन ३ बिजयीसमरबीरबिख्याता धरिबराहबपुएकनिपाता ४ होइनरहरिदूसरपुनिमारा जनप्रह्लादसुयशबिस्तारा ५ ॥दो०॥ भये निशाचरजाइतेमहाबीरबलवान कुंभकरणरावणसुभट सुरविजयीजगजान ६ ॥चौ०॥ मुक्तिनभयेहतेभगवाना तीनिजन्मद्विजबचन-प्रमाणा ७ एकबारतिनकेहितलागी धरेउशरीरभक्तअनुरागी ८ कश्यपअदितितहां**

के अवतारको कारण बहुत बिधिसों बिस्तार पूर्वक सुनहु ( २५ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेबालकाण्डेउमामहेश्वरसम्बादे श्रीरामअवतारअवतारी-मतमतात्सूक्ष्मवर्णनंनामचतुर्विंशतिस्तरङ्गः २४॥ * * * * *

दोहा॥ रामचरणअवतारत्रय भेदमतांतविशेखि सावधानजिज्ञासुकरिलहरिपचीसै देखि २५ हेउमा एककल्पविषे जय बिजय दुईपार्षद बिष्णु के द्वारपाल रमाबैकुण्ठ में तहां सनकादिकन शापदीन तेदोउ हिरण्याक्षहिरण्यकश्यपभये तहां विष्णु बाराहरूपभये पुनि बिष्णुने अन्तर्यामी स्वरूप नृसिंह रूपधरिकैमारे॥श्लोकार्द्ध॥ विसप्रवंशनेधातुर्बिणुरित्यभिर्धायते॥ तेद्वो रावण कुम्भकरणभये तब विष्णु श्रीरामस्वरूपधरिकै मारिडारे मुक्तनहींभये काहेते सनकादिकनकै शापतीनि जन्मको भईरहै यहसातहू चौपाईको अर्त्थ है ( ७ ) हेउमा एकबार यहिकारण करिकै श्री रामावतार भयोहै भक्तनकेहेतु विष्णु चतुर्भुजभये ताते शरीरधारबकह्यो ( ८ ) तहां कश्यप अदिति श्रीदशरथ कौशल्या भये हैं ( ९ ) एककल्पको यहै श्रीरामअवतारको प्रयोजन जानव ( १० ) पुनि हे उमा अपर एककल्प विषे जलन्धर रावण भयो है तबहूँ विष्णुने श्रीरामस्वरूप धरिकै मारिडारेउ परमपदको प्राप्तिकीनहै तेहू अवतारविषे कश्यप अदिति श्रीदशरथ कौशल्या भये हैं चतुर्भुजते द्विभुज ताते नरधारी कह्यो है ऐसेही प्रतिअवतार मुनीश्वर हरियश अनेकभांति करिकै गावते हैं दशचौपाई अरुअठारह चौपाईताई अर्थ जानब ( १८ ) अरु हे उमा एककल्प विषे

**पितुमाता दशरथकौशल्याविख्याता ९ एककल्पयहिविधिअवतारा चरितपवित्रकियेसंसारा १० एककल्पसुरदेखिदुखारे समर जलन्धरतेसबहारे ११ शम्भुकीनसंग्रामअपारा दनुजमहाबलमरैनमारा १२ परमसतीअसुराधिपनारी तेहिबलताहिनजीतिपुरारी १३॥दो०॥ छलकरिटारे-**

उतासुब्रतप्रभुसुरकारजकीन जबतेइजानेउमरमसोइशापकोपकरिदीन १४॥ चौ० तासुशापप्रभुकीन प्रमाना कौतुकनिधिकृपालुभगवाना १५ तहाँ जलन्धररावणभयऊ रणहतिरामपरमपददयऊ १६ एकजन्मकरकारणयेहा जेहिलगिरामधरीनरदेहा १७ प्रतिअवतारकथाप्रभुकेरी सुनुमुनिबरणीकविनघनेरी १८ नारदशापदीनयकबारा कल्पएकतेहिलगिअवतारा १९ गिरिजाचकितभईसुनिबानी नारदविष्णुभक्तपुनिज्ञानी २० कारणकवनशापमुनिदीन्हा काअपराधरमापति कीन्हा २१ यहप्रसंगमोहिकहहुपुरारी मुनिमनमोहआचरजभारी २२॥दो०॥ बोलेबिहँसिमहेशतब ज्ञानीगूढ़न कोइ जेहिजस

नारद शापदीन है तेहू अवतारमें कश्यप अदिति श्रीदशरथमहाराज अरुकौशल्याजू होती भई अरु विष्णु भगवान् लक्ष्मीजी श्रीराम सीता होत भये सो जानब ( १९ ) आगे बीसकी चौपाईते बाईसकी चौपाईताई अक्षरार्थैजानब ( २२ ) दोहार्थ॥ महेश बिहँसिकै बोलतेभये हेप्रिया न कोईज्ञानी है न तो कोई मूढ़है जेहिकालबिषे रघुपति जसजेहिको करै हैं तसते होतेहैं यह अर्थ करतसन्ते श्रीराचन्द्रबिषे सम बिषम दूवणहोतहै काहेते एकको ज्ञानी कियो है अरु एकको मूढ़ कियो है तहां ऐसो नहीं है सर्बको कर्मानुसार फलदेतेहैं जैसे कोईराजाने अपने कारोबारी ते सदाबर्त्तको नेमबांधिदियोहै सोईरीति चलीजातिहै परम्परा पुनिकोईकाल में किसूकी करणीते प्रसन्नभयो तब हाथी दियो अरु बिकारदेखेउ दण्डदियो तैसे श्रीरामचन्द्र अपनीमायाकी प्रेरणाते कर्मअनुसारको सदा ब्रतबांधे हैं तहां काहूजनके अहंकार भयो कोई संयोगते तिनको दण्डदेतेहैं अविद्या मायाके मिसुकरिकै विद्या मायाकी प्रेरणाकरके अहंकारको नाशकरिदेतेहैं शुद्धकरिदेतेहैं जैसे छोटोकांटगड़ै है पगमें तबबड़ेकांटेते निकासि कै दूनोंदूरिकरैहैं देखिलीजिये ब्रह्मा शिव नारद सनकादिक कागभुशण्डिइत्यादिक अरु जो कोई निरभिमानहै कोलभिल्ल शेवरी गिद्ध बानर रीछ

रघुपतिकरहिंजब सोतसतेहिक्षणहोइ २३॥ सो० ॥ कहौंरामगुणगाथभरद्वाजसादरसुनहु भवभंजनरघुनाथभजुतुलसीतजिमानमद २४ हिमगिरिगुहाएकअतिपावन बहसमीपसुरसरीसुहावन २५ आश्रमपरमपुनीतसोहावा देखिदेवऋषिमनअतिभावा २६ निरखिशैलसरिबिपिनबिभागा भयउरमापतिपदअनुरागा २७ सुमिरतहरिहिश्वासगतिबांधी सहजबिमलमनलागिसमाधी २८ मुनिगतिदेखिसुरेशडेराना कामहिंबोलिकीन सन्माना २९ सहितसहायजाहुममहेतू चलेउहरषिहियजलचरकेतू ३० सुनासीरमनमहँअतित्रासा चहतदेवऋषिममपुरबासा ३१ जेकामीलोलुपजगमाहीं कुटिलकागइवसबहिडेराहीं ३२ दो०॥ सूखहाड़लैभाग शठश्वाननिरखिमृगराज छीनिलेइमनजानिजिमितिमिसुरपति-हिनलाज ३३ चौ०॥ तेहिआश्रमहिमदनजबगयऊ निजमायाबसंत निर्म्मयऊ ३४ कुसुमितविविधबिटपबहुरंगा कुंजहिंकोकिलगूंजहिंभृङ्गा ३५ चलीसोहावनित्रिविधिबयारी कामकृशानुबढ़ाव-

राक्षस तिनपर प्रसन्नह्वैकै तुरन्त परमपदको प्राप्तिकीन तहां मोक्षदोऊहैं ताते रघुपति एकरसहैं किन्तु अपने अपने कर्मानुसार सर्वजीव हैं तिन बिषे जब श्रीरामचन्द्र जिसको जसकरैहैं ते तस होइहैं दोहार्थ॥ मशकहिकरैं बिरंचिप्रभु अजहुमशकते हीन किन्तु जे श्रीरामानन्य हैं तिनकरयहै सिद्धांतहै कि श्रीरामैचन्द्र की प्रेरणाते गुप्तहोतहै इत्यर्थः। चौबिसके सोरठाते बत्तिसकी चौपाईताई अक्षरार्थै जानब ( ३२ ) अट्ठाइसकी चौपाईकर अर्थ करतहन दशोबाई को एककरिकै समाधि करिन है शापगति पाठ सामान्य है

( २८/३३ ) दोहार्त्थ॥ सूखहाड़ भूखोश्वान कहूं वतरह्यो तहां सिंहको देखिकै लैभाग्यो कि सिंह मेरो हाड़ छीनिलेइगो तैसही इन्द्रको हालहै यहिदृष्टान्तते इन्द्रपदवीताई विभव जोहै सो श्रीरामदासनको सूखो अस्थिकी समानत्यागहै तिनहींको श्रीरामचन्द्र प्राप्तिहैं ( ३३ ) आगे चौंतिसकीचौपाईते सैंतिसकी चौपाईताई अक्षरार्थैजानब ( ३७ ) पुनि अड़तिसकी चौपाई को अर्थ पाणिकही हाथके भावते पंतगनृत्यकरती है रम्भादिक अप्सरा किन्तु पतंगनाम तम्बूराको है सो पाणि

निहारी ३६ रंभादिकसुरनारिनवीनासकलअसमसरकलाप्रवीना ३७ करहिंगानबहुतानतरंगाबहुबिधिक्रीड़हिंपाणिपतंगा ३८ देखि सहायमदनहर्षाना कीन्हेसिपुनिप्रपंचविधिनाना ३९ कामकलाकछुमुनिहिनब्यापी निजभयडरेउमनोभवपापी ४० सीमकिचापिसकैकोउतासू बड़रखवाररमापतिजासू ४१॥ दो० ॥ सहितसहायसभीतअतिमानिहारिमनमयन गहेसिजायमुनिवरचरणकहिसुठिआरतबयन ४२॥ चौ० ॥ भयउननारदमनकछुरोषा कहिप्रियबचनकामपरितोषा ४३ नाइचरणशिरआयसुपाई गयउमदनतबसहितसहाई ४४ मुनि सुशीलता आपनिकरणी सुरपतिसभाजाय सबबरणी ४५ सुनिसबकेमनचरजआवा मुनिहिप्रशंसिहरिहिशिरनावा ४६ तबनारदगवनेशिवपाहीं जीतिकामअहमितमनमाहीं ४७ मारचरित्रशंकरहिसुनाये अतिप्रियजानि महेशसिखाये ४८ बारबारबिनवोंमुनितोहीं जिमियहकथासुनायहुमोहीं ४९ तिमिजनिहरिहिसुनायहुकबहूं चलेहुप्रसंग दुरायहुतबहूँ ५०॥दो०॥ शंभुदीनउपदेशहितनहिंनारदहिसुहान भरद्वाजकौतुकसुनहुहरिइच्छाबलवान ५१॥ चौ० ॥ राम कीनचाहैंसोइहोई करैअन्यथाअसनहिंकोई ५२ शम्भुबचनमुनिमनहिनभाये तबबिरंचिकेलोकसिधाये ५३ तहँपुनिकछुक दिवसमुनिराया रहेहृदयअहमितअधिकाया ५४ एकबारकरतलवरबीणा गावतहरिगुणगानप्रबीणा ५५ क्षीरसिन्धुगवनेमुनि

में लिहे बजावती हैं नृत्यक्रीड़ा करती हैं ( ३८ ) यहप्रसंगविषे ओन्तालिसचौपाईलैकै छप्पनचौपाई ताई एकही भाव जानब तहां नारदजू माया के वश नहीं भये हैं इहां केवल हरि इच्छा जानव ऐसी इच्छा हरि ने क्यों किया तहां सर्व्व जीवन को अरु भागवतन को भागवतापराध देखावते हैं महादेव की अवज्ञा कियो जाइ ताते भागवतापराध भयो ताते हरि ने कृपा करिकै अपराध नाश कियो शुद्ध करिदियो ( ५६ ) छप्पनसत्तावन चौपाई को अर्थ नारद क्षीरसागरको जातभये भगवान्अतिआदर संयुक्त अपने बराबर अपने आसनपर बैठावते भये तहां यह जानिये कि जो कोई काम क्रोधलोभजीते हैं तिनको भगवान् अपनी बरोबरि मानते हैं पुनि यामें और धुनिहै यहजानिये जो अपनो प्रभु अपनो आदर अपनी बरोबर कियो तब अपनो कछु बर्त्तमानमें बिघ्नजानिये जरूर सो नारदबिषे आदर बिघ्नदूनों देखिलेव आगे अक्षरार्थै जानिये ( ५७ )

नाथा जहँबशश्रीनिवासश्रुतिमाथा ५६ हरषिमिलेउठिरमानिकेता बैठेआसनऋषिहिसमेता ५७ बोलेबिहँसिचराचरराया बहुतेदिननकीनमुनिदाया ५८ कामचरितनारदसबभाखे यद्यपिप्रथमबरजिशिवराखे ५९ अतिप्रचण्डरघुपतिकैमाया जेहिन मोहअसकोजगजाया ६०॥दो०॥ रूखबदनकरिबचनमृदुबोलेश्रीभगवान तुम्हरेसुमिरणतेमिटहिंमोहमारमदमान ६१॥ चौ०॥ सुनुमुनिमोहहोइमनताके ज्ञानबिरागहृदयनहिंजाके ६२ ब्रह्मचर्यब्रतरतमतिधीरा तुम्हैंकिकरैमनोभवपीरा ६३ नारदकहेउसहितअभिमाना कृपातुम्हारिसकलभगवाना ६४ करुणामयमनदीखबिचारी

उरअंकुरेउगर्ब्बतरुभारी ६५ बेगिसोमैंडारिहौं उपारी प्रणहमारसेवकहितकारी ६६ मुनिकरहितममकौतुकहोई अवशिउपायकरबहमसोई ६७ तबनारदहरिपदशिरनाई चलेहृदयअहमितअधिकाई ६८ श्रीपतिनिजमायातबप्रेरी सुनहु कठिनकरणीतेहिकेरी ६९ ॥दो०॥ बिरचेउमगमहँनगरतेइँ

॥दोहार्त्थ॥ अर्त्थअट्ठावनके अंकते अरु सत्तरिताई भगवान् की बाणीब्यंग्यार्त्थ कृपामयहै पुनि बिष्णु भगवान् अपनी बिद्यामायाकोप्रेरणाकी न सो बिद्यामाया बर्त्तमानबिषे अबिद्याइव लीलाकरै है परिणाम शुद्ध दशा करिदेइहै तहां प्रभु जो हैं अपने दासनके जबकबहूं काहूके ज्ञान ध्यान त्यागभजन इत्यादिको अभिमानभयो पर तेहिदशामें आरूढ़ ह्वैकै मानभयो है सो बिद्यामय मानजानब अरु अविद्यामयमान भक्तनके नहीं होतहै ताते बिद्यामयमान जब भक्तनके कहूंभयो तब प्रभुमहाबिद्याको प्रेरणा करिकै मानदूरि करिदेते हैं ताते बैकुण्ठते अधिककहा उत्तरकाण्डे हरिसेवकहिनब्यापअबिद्या प्रभुप्रेरिततेहिब्यापैबिद्या तातेनाशनहोइदासकर भेदभक्तिबाढ़ैबिहंगबर सो हरिमाया सर्वशुभ गुणखानिने मगमें नगर रच्यो शतयोजन का विस्तारकियो अथवासत जो भगवान् हैं तिनके जनजोनारद तिनके निमित्त विस्तारकियो किन्तु सतकही संतजन जो नारद

शतयोजनबिस्तार श्रीनिवासपुरतेअधिक रचनाविविधप्रकार ७०॥चौ०॥ बसहिंनगरसुन्दरनरनारी जनुबहुमनसिजरतितनुधारी ७१ तेहिपुरबसैशीलनिधिराजा अगणितहयगयसेनसमाजा ७२ शतसुरेशसमबिभवबिलासा रूपतेजबलनीतिनिवासा ७३ बिश्वमोहिनीतासुकुमारी श्रीबिमोहजेहिरूपनिहारी ७४ सोहरिमायासबसुखखानी शोभातासुकिजाइबखानी ७५ करै स्वयम्बरसोनृपबाला जुरेतहां अगणितमहिपाला ७६ मुनिकौतुकीनगरतेहिगयऊ पुरबासिनतबपूंछतभयऊ ७७ सुनिसबचरितभूपगृहआये करिपूजानृपमुनिबैठाये ७८॥ दो० ॥ देखिरूपमुनिबिरतिबिसारी बड़ीबारलगिरहेनिहारी आनिदेखाईनारदहिभूपतिराजकुमारिकहहुनाथगुणदोष सब यहिकेहृदय बिचारि ७९॥चौ०॥ लक्षणतासुबिलोकिभुलाने हृदयहर्षनहिं प्रगटबखाने ८१ जोयहिबरैअमरसोहोई समरभूमितेहिजीतनकोई ८२ सेवहिंसकलचराचरताही ८० बरैशीलनिधिकन्याजाही ८३ लक्षणसबबिचारिउरराखे कछुकबनाइभूपसनभाखे ८४ सुतासुलक्षणिकहिनृपपाहीं नारदचलेशोचमनमाहीं ८५ करौं जाइसोइयतनबिचारी जेहिप्रकारम्वहिंबरैकुमारी ८६ जपतपकछुनहोइयहिकाला हेबिधिमिलहिकवनविधिबाला ८७॥दो०॥ यहिअवसरचाहीपरमशोभारूपबिशाल जोबिलोकिरीझैकुवँरितौमेलैजयमाल ८८॥चौ०॥ हरिसनमांगौंसुन्दरताई होइहिजातगहहअतिभाई ८९ मोरेहितहरिसमनहिंकोई यहिअवसरसहायसोइहोई ९० बहुबिधिविनयकीनतेहिकाला प्रकटे प्रभुकौतुकीकृपाला ९१ हरिबिलोकिमुनिनयनजुड़ाने होइहिकाजहृदयहर्षाने ९२ अतिआरतकहिकथासुनाई करहुकृपाहरि

ताईंको भावएकही जानब नारदजू कन्याको तिनकेहेतु (७०) सत्तरिके आगेते अस्सीकी चौपाई ताई अक्षरार्थै जानब (८०) एक्यासी चौपाई ते एक्यानबे की चौपाई ताईंको भावएकही जानब नारदजू कन्याको लक्षण देखिकै बैराग्य ज्ञानभजन सब बिसरि गयोऐसी भगवत् माया प्रबलहै ताते स्त्री को मनमें चिन्तवन करना स्त्री की बात कोई कहै सो सुनब अथवा स्त्री को संभाषण स्त्री को रूपदेखना स्त्रीसे कछु लेनादेना स्त्रीसे कोई सम्बन्ध करना येते यशसुकर्म धर्मयोग बैराग्यज्ञान भक्तिके बाधक बिशेषकै जानब नारदको सब भूलिगयो राजाशीलनिधि भगवान्आपुही लीलारूपहैं तिनते नारदजूने कछुकबातबनायकै कहा कि तुम्हारी कन्या सुलक्षणाहै पर दुइचारिदिन स्वयंवरको सामान्य योगहै यहकहिकै प्राप्तिहेतु भगवान्ते प्रार्थना करिबेको आतुर ह्वैकै

होहुसहाई ९३ आपनरूपदेहुप्रभुमोहीं आनभांतिनहिंपाबोंओही ९४ जेहिबिधिनाथहोइहितमोरा करहुसोबेगिदासमैं तोरा ९५ निजमायाबलदेखिबिशाला हियहंसिबोलेदीनदयाला ९६॥ दो०॥ जेहिविधिहोइहिपरमहितनारदसुनहुंतुम्हार सोइहमकरबन आनकछु बचननमृषाहमार ९७॥चौ०॥ कुपथमांगजिमिब्याकुलरोगी बैद्यनदेहसुनहुंमुनियोगी ९८ यहिविधि हिततुम्हारमैंठयऊ कहिअसअंतरहितप्रभुभयऊ ९९ मायाबिबशभयउमुनिमूढ़ा समुझीनहिंहरिगिराविगूढ़ा १०० गवनेतुरित तहांऋषिराई जहांस्वयंबरभूमिबनाई १०१ निजनिजआसनबैठेराजा बहुबनावकरिसहितसमाजा १०२ मुनिमनहर्षरूपअतिमोरे म्वहिंतजिआनबरिहिनहिंभोरे १०३ मुनिहितकारणकृपानिधाना दीनकुरूपनजाइबखाना १०४ सोचरित्रलखिकाहुनपावानारद जानिसवहिशिरनावा १०५ ॥दो०॥ रहेतहांदुइरुद्रगणतेजानहिंसबभेउ बिप्ररूपदेखतफिरैंपरमकौतुकीतेउ १०६ ॥चौ०॥ जेहि समाजबैठेमुनिजाई हृदयरूपअहमित-अधिकाई १०७ तहंबैठैमहेशगणदोऊ बिप्रबेषगतिलखैनकोऊ १०८ करहिंकूटनारदहिं सुनाई नीकदीनिहरिसुन्दरताई १०९ रीझिहिराजकुवंरि-छबिदेखी इनहिंबरिहिहरिजानिबिशेषी ११० सुनिहिमोहमनहाथप

चले ( ९१ ) बानबे चौपाई लैके अरु एकसौदुइ चौपाई को भावएकहीजानब नारदजू को भगवान् तुरन्त प्राप्तिभये नारदजू कन्याहेतु अनेकप्रार्थना कीन तब भगवान् बड़ेकौतुकी बड़ेकृपालु भक्तबत्सल सरस्वतीकोप्रेरिदीन नारदबोले हे प्रभु तुममेरे परमहितकारीहो जामें मेरोहितहोइ सोकरहु तब हरिबिहंसिकै बोले एवमस्तु तुम्हारोहित हम विशेष करैंगेइहाँ श्लेषालंकारहै नारदहुके वचनमें अरु भगवानहूकी वाक्यमें दुइदुइ अर्थ हैं तब भगवान् अन्तर्द्धानभये नारद जहां रङ्गभूमिबनी है अरुअनेकन राजा बैठे हैं तहां को जातभये ( १०२ ) एकसैतीनि चौपाई लैके अरु एकसै सत्रहकी चौपाईताई एकही जानब नारदजू के अपनेरूपकोअभिमान बहुतभयो अरु भगवान् नारदके हितहेतु कुरूपकरिदीन पर अपर कोई नहीं जानिसकै है सब कोई नारदैजानिकै दण्डवत् करते हैं तहां भगवान् भक्तबात्सल्य हैं अपने भक्तन को कछुदण्डदैकै शुद्धकरिदेते हैं पर मर्य्याद संयुक्त अपर कोई नहीं जानै है तहां जब नारद महादेवको कहा नहींमान्यो तब महादेव त्रिकालज्ञ जानिगये नारदके संग दुइ

राये हंसहिंशम्भुगणअतिसचुपाये १११ यदपिसुनहिंमुनिटअटपटिबानी समुझिनपरैबुद्धिभ्रमहानी ११२ काहुनलखासोचरित बिशेषा सोस्वरूपनृपकन्यादेखा ११३ मर्कटबदनभयंकरदेही देखतहृदयक्रोधभातेही ११४॥ दो०॥ सखीसंगलैकुंवरितबचलिजनुराजमराल देखतफिरहिमहीपसबकरसरोजजयमाल ११५ चौ०॥ जेहिदिशिबैठेनारदफूली तेहिदिशिसोनबिलोकेउभूली ११६ पुनिपुनिमुनिउकसैं-अकुलाहींदेखिदशाहरगणमुसुकाहीं ११७ धरिनृपतनतहंगयउकृपाला कुंवरिहर्षिमेलेउजयमाला ११८ दुलहिनिलैगयेलक्ष्मिनिवासा नृपसमाजसबभयोनिरासा ११९ मुनिअतिबिकलमोहमतिनाठी मणिगिरिगईछूटिजनुगांठी १२० तबहरगणबोलेमुसुकाई निजमुखमुकुरबिलोकहुजाई १२१ असकहिदोउभागेभयभारी बदनदीखमुनिबारिनिहारी १२२ बेषबिलोकिक्रोधअतिबाढ़ा तिनहिंशापदीन्हेउअतिगाढ़ा १२३ ॥दो०॥ होहुनिशाचरजायतुमकपटीपापीदोउ हंसे

दूतकरिदीन कि देखो नारद की कौनदशा भगवान्करते हैं पर तुम ऐसीरीतिरहेउ जामें नारद न जानहिं अरु कोई नहींजानै तब ते शिवकी आज्ञा ते नारदके साथलगे कबहीं अन्तर्द्धान रहैं कबहीं बिप्ररूप देखतेफिरैं तहां नारद अपनेरूप गर्बसमेत सभा को जातभये तब राजन नमस्कार कीन्ह बैंठतेभये राजकन्या सभा में आई सो नारद की दशा राजकन्या देखतीभई सो भगवत् की महाविद्या माया है सो नारदकी दिशि देखिबै नहींकियो अरु नारदरूप दशा के गर्ब ते अकुलाते हैं तहां हरके गणदेखि देखि मुसुकाते हैं यहप्रकरण अक्षरार्थै है ( ११७ ) एकसै अठारह चौपाई से लैकै अरु एकसै अट्ठाइस की चौपाईताईं एकहीअन्वय जानब तेहिसभा बिषे भगवान् राजा को बेषबनायकै गये राजकन्या जयमाल पहिरायउ भगवान् ताको लैगये तहां सभा निराशभई नारद बिकलभये तब शिवके दूतबोले हे मुनि अपनोमुख तौ दर्पणलैकै देखौ तब नारद जलमें देखैं तौ बानरको ऐसोमुख तापर अशोभित पुनि तुरन्त मुखदेखेउ जलमें तब जैसे मुनिरहे तैसेही देखेउ तब कोपकरिकै दोऊदूतन को शापदियो अरु भगवान् पर बहुत क्रोधकियो यहकहतचले कि भगवान्को शापदेहौं कि तौ भगवान् के ऊपर मरिजैहौं ऐसेही मुनि तामसभरे

हुहमहिंसोलेहुफलबहुरिहंसेहुमुनिकोउ १२४ ॥चौ०॥ पुनिजलदीखरूपनिजपावा तदपिहृदयसंतोषनआवा १२५ फरकतअधरक्रोधमनमाहीं सपदिचलेकमलापतिपाहीं १२६ देइहौंशापकिमरिहौंजाई जगतमोरउपहासकराई १२७ बीचहिपंथमिलेदनुजारी संगरमासोइराजकुमारी १२८ बोले मधुरबचन सुरसाईं मुनिकहंचलेहु विकल की नाईं १२९ सुनतबचनउपजाअतिक्रोधा मायाबशनरहामनबोधा १३० परसंपदासकहुनहिंदेखी तुम्हरेईर्षाकपटबिशेषी १३१ मथतसिंधुरुद्रहिबौरायहु सुरनप्रेरिबिषपानकरायहु १३२ ॥दो०॥ असुरसुराबिषशंकरहिआपुरमामणिचारु स्वारथसाधककुटिलतुमसदाकपटब्यवहार १३३ चौ०॥ परमस्वतंत्रनशिरपर कोई भावैमनहिंकरौतुमसोई १३४ भलेहिमन्दमंदहिभलकरहू बिस्मयहर्षनमनकछुधरहू १३५ डहकिडहकिपरचेउसबकाहू अतिअशंकमनसदाउछाहू १३६ कर्मशुभाशुभतुमहिंनबाधा अबलगितुमहिंनकाहूसाधा १३७ भलेभवनअब बायनदीन्हा पावहुगेफलआपनकीन्हा १३८ बंचेहुमोहिंजवनिधरिदेहा सोइतनुधरहुशापममयेहा १३९ कपिआकृततुमकीन

चले जाते हैं क्षीरसागर को तहां भगवान् तुरन्त सागर में ठाढ़े हैं लक्ष्मी अरु राजकन्या संयुक्त ( १२८ ) एकसै उन्तीस चौपाईलैकै अरु एकसै उन्तालिस चौपाईलगि एकअन्वयजानब नारदजी बिकल चलेआवतेहैं तब भगवान् बिहंसिकै बोलतेभये हे मुनीश्वर तुम बहुत बिकलकी नाईं कहां चलेहु है यहबचन सुनत सन्ते मुनि के क्रोध उत्पन्नभयो अनेक दुर्बचन भगवान् को कहतभये पर भगवत् प्रेरण ते मुनिकी बाणी दुर्बचन बिषे ईश्वरैअर्थ बाणीके अवतारहै तहां यहजानब बिशेषकै कैसहू महान्होहि जबकोई कामना में बासनाभई तब बुद्धि भ्रष्टहोजाती है तब सुकर्म सुधर्म संगगुरू भगवान् परमइष्ट सबको असत्कार होत है कामनाबशभये ते भगवत् मायादुस्तर है महामहा मुनीशन को ताते केवल श्री रामशरण प्राप्तिहोइ तब मायाशांति होती गीतायां श्लोक॥दैवीह्येषागुणमयीममामायादुरत्यया मामेवयेप्रपद्यन्तेमायामतान्तरंतिते १ तहांनारद जू माहामोह के बशह्वैकै भगवान्को शापदीन कि तुम राजाको तनुधरौ ( १३९ ) एकसैचालिस चौपाईलैकै एकसैपचासताईं एकहीभाव है अक्षरार्थैजानब नारदजू शापदेतेभये भगवान् आप अंगीकार करिकै अपनीमाया की प्रबलता आकर्षणकरिलीन तब नारद मायारहित भये तब

हमारी करिहैंकीशसहायतुम्हारी १४० ममअपकारकीनतुमभारी नारिबिरहतेहोहुदुखारी १४१ ॥दो०॥ शापशीशधरिहर्षिहिय प्रभुबहुबिनतीकीन निजमायाकीप्रबलताकर्षिकृपानिधिलीन १४२ चौ०॥ जबहरिमायादूरिनिवारी नहिंतहंरमानराजकुमारी १४३ तबमुनिअतिसभीतहरिचरणा गहेपाहिप्रणतारतिहरणा १४४ बृथाहोहुममशापकृपाला ममइच्छाकहदीनदयाला १४५ मैंदुर्बचनकहेउंबहुतेरे कहमुनिपापमिटहिंकिमिमेरे १४६ जपहुजाइशंकरशतनामा होइहिहृदयतुरतबिश्रामा १४७ कोउनहिं शिवसमानप्रियमोरे असपरतीततजहुजनिभोरे १४८ जेहिपरकृपानकरहिंत्रिपुरारी सोनपाउमुनिभक्तिहमारी १४९ असउरधरिमहिबिचरहुजाई अबनतुम्हैंमायानियराई १५० दो० बहुविधिमुनिहिंप्रबोधिहरितबभयेअंतर्द्धान सत्यलोकनारदचलेकरतरामगुण

बहुतग्लानि को प्राप्तिह्वैकै भगवान् की स्तुतिकीन तब भगवान् ने कहाकि मेरी ऐसीही इच्छा है पर हे मुनि तुम शिवशतनाम जपहुजाय महा अपराधसो मिटिजायगो विश्रामको प्राप्तिहोहुगे तहां यह प्रभु की रीतिहै कि जो कोई भागवतापराधकरे है तब उनहीं भागवतन के द्वारह्वैकै अपराधमिटावतेहैं तब शिवके दूतनको मुनिशाप अनुग्रहकीन अबतुमदूनों कुम्भकर्ण रावण लंकाविषे होहुजाय तुम्हारे हेतु विष्णुभगवान् लक्ष्मी अवतारलेहिंगे श्रीसीताराम स्वरूप श्रीअयोध्याविषे तहां कश्यप अदिति श्रीदशरथ कौशल्याहोहिंगे तिनकीआज्ञाके मिसुकरिकै तुमको बधहिंगे तुमपरमपद को प्राप्त होहुगे यहकहिकै नारदजी रामगुण गावतसत्यलोक को चले भगवान् अन्तर्द्धान भये (१५०) एकसै इक्यावन दोहालैकै अरु एकसैतिरसठताईं अक्षरार्थै जानिये सो पाछे अर्थजनाइआये हैं पुनि जनावतेहैं एककल्पबिषे जायबिजय हिरण्याक्ष अरु हिरण्यकशिपुभये तेई कुम्भकर्णरावणभये पुनि एककल्पविषे जलंधर रावणभयोअरु तिसको भ्राता जयशत्रु सो कुम्भकर्ण भयो पुनिएककल्पविषे शिव के दूनोंदूत नारदके शापकरिकै कुम्भकर्ण रावणभये तहां तीनिहूकल्पविषे श्रीविष्णुभगवान् रमावैकुण्ठ ते लक्ष्मीसंयुक्त अवतार लेतेभये श्री राम सीतास्वरूपभये तहां तीनिहूं कल्पविषे कश्यप अदिति श्रीअयोध्याविषे श्रीदशरथ कौशल्याभये तिनकेपुत्र भगवान् विष्णुह्वैकै पृथ्वीकोभार

गान १५१ हरगणमुनिहिंजातपथदेखी बिगतमोहमनहर्षबिशेषी १५२ अतिसभीतनारदपहँआये गहिपदआरतवचनसुनाये १५३ हरगणहमनबिप्रमुनिराया बड़अपराधकीन्हफलपाया १५४ शापअनुग्रहकरहुकृपाला बोलेनारददीनदयाला १५५ निशिचरजाइहोहुतुमदोऊ बैभवविपुलतेजबलहोऊ १५६ भुजबलविश्वजितबतुमजहिया धरिहहिंबिष्णुमनुजतनतहिया १५७ समरमरणहरिहाथतुम्हारा होइहहुमुक्तनपुनिसंसारा १५८ चलेयुगलमुनिपदशिरनाई भयेनिशाचरकालहिपाई १५९ दो० ॥ एककल्पयहिहेतुप्रभु लीन्हमनुजअवतार सुररंजनसज्जनसुखदभंजनधरणीभार १६० यहिबिधिजन्मकर्म्महरिकेरे सुन्दरसुखद बिचित्रघनेरे १६१ कल्पकल्पप्रतिप्रभुअवतरहीं चारुचरितनानाबिधिकरहीं १६२ तबतबकथामुनीशनगाई परमपुनीतप्रबन्ध बनाई १६३ बिबिधप्रसंगअनूपबखाने करहिंनसुनिआश्चर्यसयाने १६४ हरिअनंतहरिकथाअनंता कहहिंसुनहिंबहुबिधिसब

उतारिकै पुनि चतुर्भुजरूप ह्वैकै वैकुण्ठको गमनकीन तहां विष्णुभगवान्को बिद्या उपहित गुणाभिमान जानब पर विष्णुभगवान् को परमदिब्य गुण बिग्रहजानब सात्विक गुणको अपनी इच्छा ते ग्रहणकिये हैं ताते गुणाभिमानी कही अरु जब श्रीरामभये तब अविद्यारहित निर्विशेष पर ब्रह्म विग्रहजानब यह मैं कौनेउ पक्षकरिकै नहींकह्यों है यह सत्यजानबयह ऐसही तत्त्व है ऐसेही प्रभुके जन्म कर्म अनेकतरह तरह के अति सुन्दर सुखकारी बिचित्र निर्मल सच्चिदानन्दमय समस्तलीला जानब तबतब कल्पकल्प मुनीश्वरन परमपुनीतप्रबन्धबनाय बनायगाये हैं ( १६३ ) एकसैचौंसठि चौपाई लैकै अरु एकसै उनहत्तरिताईं एकहीभाव जानब महादेवकहते हैं हे प्रिया बिबिध प्रसंग हमने तुमसे अनूप अनूप कहे हैं तुम अच्छीतरह समुझहु अरु यहसब प्रसंग समुझिकै जे सयानपुरुषहैं ते आश्चर्य न करहिंगे अज्ञानी सन्देह करहिंगे कि ईश्वरमें भेदकरते हैं अरु हम ईश्वरतत्त्व अरु परब्रह्मतत्त्व एकही मानते हैं तहां परमेश्वरकेपांचस्वरूप हैं अनादिही ते कार्य कारण महाकारण पर इत्यादिक वेद कहते हैं कि भक्तानुग्रहार्थ अनादि हैं अर्च्चा अन्तर्यामी बिभु बिपुल पराक्रम ते जानब शालग्राम अथवा धातु शिला दारु चित्र मृत्तिकाइत्यादि बिग्रह सो अर्चा अन्तर्यामी सर्बको चैतन्यकर्त्ता ब्यापक बिभु मत्स्यादिक अवतारब्यूह बासुदेव संकर्षण अनिरुद्ध प्रद्युम्न पर श्रीरामचन्द्रजी श्रीमहाराज दशरथनन्दन जिनको कही तहां जबजब पृथ्वीको भारहोतहै तबतब ईश्वर अवतार लेते हैं मत्स्यादिक अरु परस्वरूप केवल जो

**संता १६५ रामचन्द्रकेचरितसुहाये कल्पकोटिनिगमागमगाये १६६ यहप्रसङ्गमैंकहाबखानी हरिमायामोहेमुनिज्ञानी १६७ प्रभुकौतुकी प्रणतहितकारी सेवतसुलभसकलदुखहारी १६८॥ सो० सुरनरमुनिकोउनाहिं जेहिनमोहमायाप्रबल असबिचारि मनमाहिंभजियमहामायापतिहि १६९॥**

कोई भक्तराज है तिनकी भक्तिकरिकै पृथ्वीके भार मिसुकरिकै अवतीर्णहोते हैं पर सब स्वरूप परमेश्वर एकही तत्त्व है यहसब समुझिकै प्रबीणजन सन्देह नहीं करैंगे ( १६४ ) काहेते हरि अनन्तरूप हैं अरु हरिकेनाम गुणकथा लीला अनन्तहैं ऐसा समुझिकै सन्तजन सन्देह नहीं करते हैं हरिचरित कहते सुनते हैं श्रीरामचन्द्रजी के चरित्र कोटिन कल्पलगिवेदनहीं कहिसकैं अपर की कहाकहौं हे प्रिया हमने तुमसे जय बिजय और जलंधर की कथा नारदको मोहभयो सो सबकहा हे प्रिया भगवत्माया अतिप्रबल है सुरनर मुनि सबको मोहति है कोऊ समर्थनहींहै जो माया को जीतिसकै ताते महामाया पतिकोभजो तब कल्याणहै ( १६९ ) इतिश्रीराचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसने बालकांडे त्रयअवतार भेदाभेद मतमतान्तसिद्धान्तजिज्ञासूसावधानकृते पंचविंशतिस्तरंगः २५॥ :: :: :: :: ::

दो०॥ षटअरुबीसतरङ्गमें नृपरानीतपज्ञान रामचरणपरप्रभुदरशशोभासिन्धुनिधान २६॥ हे भरद्वाज हे गरुड़ श्रीमहादेव बोलते भये हे शैलकुमारि अपनी बुद्धि स्थिरकरो श्रीरामजन्मके तीनिहेतु तौमैं अच्छीप्रकार ते कहिआयोहौं अब अपरहेतु सुनहु जो चित्रविचित्रकथा बिस्तार समेत कहौंगो सो चित्तलगाइ कै सुनहु ( १ ) हे पार्वती अब सो कारणसुनहु जेहिकारणसे अज अगुण अनूप परब्रह्म अवतीर्ण और कोशलपुर भूपभये सो कारण सुनहु अजकही अजन्मा जो गर्भ में नहींआवै अरुजाको अवतारहूको तात्पर्यनहीं है अपनेअंश कला बिभूतिकरिकै पृथ्वी का भारउतारते हैं ताते अजकही पुनि अगुणकही तीनिगुणरहित स्वरूप सच्चिदानन्द बिग्रह परमदिब्यब्रह्ममयगुणज्ञानबिज्ञान मोक्ष करुणा बात्सल्य सौशील्य इत्यादिक स्वाभाविक जिनमें है ताते अगुणकही पुनिअनूपकही जिनकी सदृश कोई नहीं है जिनकी उपमाकोन तौ काम है, न तौ काई भगवत् के अवतारहैं न तौ विष्णुनारायण हैं न तौ ब्रह्मब्यापक है अपरकी का कहौं सो स्वरूप आगेकहतहौं अरु चौपाईके अन्त

**अपरहेतुसुनुशैलकुमारी कहौंबिचित्रकथाबिस्तारी १ जेहिकारणअजअगुणअनूपा ब्रह्मभयोकोशलपुरभूपा २ जोप्रभुबिपिन फिरततुमदेखा बन्धुसमेतधरेमुनिबेषा ३ जासुचरितअवलोकिभवानी सतीशरीररहिहु बौरानी ४ अजहुंनछायामिटीतुम्हारी तासु**

में अनूपही पाठ है पर कोई हठकरिकै और पाठकरते हैं तहां अरूपकहीजाको प्राकृतरूप नहीं है तीनगुण पांचतत्त्व अविद्या विद्या मायारहित रूप है परब्रह्ममय रूपहै जिनको तातें अरूपहु कहतेहैं ऐसो जो परब्रह्मसो कोशलपुर भूप भये कोशलाधीश तौ सदा नित्य हैं तहां चारिहूपद विभूति चारिहूमुक्ति अरु नवधा प्रेमापराभक्ति अरु असंख्य ब्रह्माण्ड तिनसबके ईश हैं तहां भक्तानुग्रहार्थ लीला अनुकरण ते भूप कही ( २ ) हे पार्व्वती जिन प्रभुको तुम विपिनबिषे बन्धुसंयुक्त मुनिवेषकिहे देखेउहै ( ३ ) हेगिरिजा जिनप्रभुकी बनलीला चित्र विचित्र देखिकै तुम सती स्वरूप विषे बौराइगइउरहै अरु मैंनेअनेकप्रकारते तुमकोसमुझायो पर तुमकोमहामोह भ्रमभई तब हमारेकहेते तुम्हारे मनमें निश्चय भई ( ४ ) हे उमा जिनको चरित्र तुम आरण्यबिषे देखिकै महासन्देहको प्राप्त भइउ उससन्देहकीछाया तुम्हारे अद्यापि बनीहै तहां वहचरित्र देखिकै तुमको तौ भ्रमभई पर यहचरित्र कैसो है भ्रम जो है महारोग तेहिके नाशकरिबेकोमहाऔषधहै जिनप्रभुको चरित ऐसोहै तिन प्रभुको चरित कारण कार्य्य ऐश्वर्य माधुर्य लीला विस्तार समेत कहौंगो सो बहुत सावधान ह्वैकै सुनहु जो सुनिकै सर्वसन्देह नाश ह्वै जाहिंगे ( ५ ) हे प्रिया जेहि अवतार की लीला देखिकै तुमको भ्रमभयोरहै तेहि अवतार को महामंगलमयहेतु सो कहौंगो अरु जेहिप्रकार तें परमपुरुष अवतीर्ण भये सो कहौंगो तेहि अवतारविषे जो परम विचित्र लीलाकीन है सो लीला किसूकेकहिबे योग्यनहींहै श्रुति स्मृति पुराण नर नाग असुर ब्रह्मादिक देवता सबको अगम है नेतिनेति कहते हैं तहां अपनीमति के अनुसार सोलीला मैं भी कहौंगो ( ६ ) हे भरद्वाज शंकरके वचन अनेकमर्म्म के अरु माया जीव ईश्वर ब्रह्म अरु परब्रह्म तहां मायाके तीनिभेद हैं अविद्या विद्या आह्लादिनी तहां विद्या जो है सो अविद्याविषे अरु आह्लादिनी विद्याविषे सूत्रात्मकब्याप्त है अरु आह्लादिनी ब्रह्मानन्द परमानन्दमय त्रिपाद विभूति सो कहा अरु पंचप्रकार के जीव कहा अरु ईश्वर सगुण रूप सो कहा अरु ईश्वरते अवतार सो कहा अरु निरावयव सावयवब्रह्म परब्रह्म को स्वरूपकहा जिनप्रभु की लीलादेखिकै सतीके भ्रमभयो

**चरित सुनुभ्रमरुजहारी ५ लीलाकीन्हिजोतेहिअवतारा सोसबकहिहौंमतिअनुसारा ६ भरद्वाजसुनिशंकरबानी सकुचिसप्रेमाउमाहर्षानी ७ लगेबहुरिवरणैवृषकेतू सोअवतारभयोजेहिहेतू ८॥दो०॥ सोमैंतुमसनकहौंसबसुनुमुनीशमनलाय रामकथाकलिमलहरणिमङ्गलकरणिसुहाय ९ स्वायम्भूमनुअरुशतरूपा जिनतेभैनरसृष्टिअनूपा १० दम्पतिधर्मआचरणनीका अजहुंगावश्रुति**

यहप्रकरण महादेव ने भिन्नभिन्नकरिकै कहा अरु अद्वैत विशिष्टाद्वैत द्वैताद्वैतस्कहा महादेवकी परम विचित्र बाणीसुनिकै उमासंकोचसंयुक्त परमानन्द को प्राप्तभई श्रीमन्महारामायणे श्लोक १ मकारंव्यंजनंचैवत्रिधाशक्तिस्वरूपिणी शक्तिराह्लादिनीविद्या विद्यासूत्रात्मकस्स्वयं १ ( ७ ) पुनि जिस स्वरूप विषे सती के भ्रमभयोरहै वह अवतार जौनेहेतु भयो सोमहादेव आनन्द संयुक्त वर्णनकरैलगे ( ८ ) दोहार्थ॥ हे भरद्वाज जेहि अवतार की कथा महादेव पार्वतीजी से कहते हैं बिस्तारसमेत सो कथा मैंतुमसन यथार्थ कहौंगो श्रीरामचरित कैसोहै सम्पूर्ण कलि जो क्लेश जन्म मरण तेहिको नाशकर्त्ता है अरु शुभ मंगल जो है श्रीरामचन्द्रजु की प्राप्ति ताको करतु है ( ९ ) हे उमा अनूप कारण सुनहु जेहिकारणविषे पृथ्वी के भार को प्रयोजन नहीं है तहां महा अनूप कारण बिषे परमात्मा परब्रह्म साक्षात् द्विभुज अखण्ड एकरस सच्चिदानन्द मूर्त्ति अवतीर्णहोहिंगे पुनि यह कारण सिद्धिकरिकै तेहिके पश्चात् पृथ्वीके भार को कारण करिकै अपनीइच्छा से अपनेस्वरूप के कछुक गुप्तसंयुक्त अवतारलेहिंगे सो सुनहु हे भरद्वाज स्वायंभूमनु ब्रह्माजूके पुत्रहैं सहस्त्रचौकरी युगको कल्प तहां एक कल्पबिषे चौदह मन्वंतर होते हैं तहां एकभगवान् को अवतार अरु एकइन्द्र इन्द्रके संकल्पसंगविषे जो देवताहोतेहैं अरु एकमनु होते हैं अरु एकमनुके पुत्रहोते हैं अरु सप्तऋषि होते हैं ये षट्मन्वंतरप्रति होते हैं तहां साढ़ेएकहत्तरि चौकरीयुग जबबीतै है तब एकमन्वंतर होत है अरुकोई मुनि को मत है हजारयुगको ब्रह्माको एकदिन कहते हैं तहां साढ़े एकहत्तरि युगको मन्वंतर जानिये एक कल्पविषे ऐसेही चौदहबार भिन्नभिन्न होते हैं ताको मन्वंतरकही ऐसेही कल्प कल्पप्रति जानब भगवान् सबकी रक्षाहेतु मन्वंतरप्रति होते हैं अरु इन्द्रस्वर्ग को राज्य अरु देवतायज्ञभाग हेतु अरु मनुसृष्टिभरे को राजा सबकी रक्षाकरै अरु मनु के पुत्र

प्रजापालन हेतु अरु सप्तऋषि वेदधर्म पालनहेतु तहां चौदहमनुबिषे जोकल्पके प्रथममनु हैं तिनको स्वायंभुवमनु कही ब्रह्मा के पुत्र कैसे भये तहां महाकल्प के अन्तविषे श्रीमन्नारायण की नाभि ते कमल उत्पन्नभयो कमल ते ब्रह्मा उत्पन्नभये तब पुरुषकी आज्ञाजानिकै ब्रह्मा मानसी सृष्टि सनकादिक इत्यादिक उत्पन्नकीन तिनने सृष्टिको करब नहींअंगीकार कीन विरक्तभये तब ब्रह्मा ने बिचारकरिकै दक्षिणभुज ते एक पुत्रउपजाया स्वयंभू जो बह्मा हैं तिनते उत्पन्नभये ताते स्वायंभुवमनुकही अरु बामभुजते शतरूपानाम कन्या उपजायी तिनदूनोंको विवाह कीन यहां दोष न जानब स्वायम्भुवमनु भगवान्के चौबीसअवतारमें हैं अरु शतरूपातिनकी अनादि दिब्यशक्ति हैं पुनि दोषनहीं है दूसरतौ कोई हई नहीं है केहिते विवाहकरहिं पुनि समर्थ को दोष होतहीनहीं है जिनमनुशतरूपा ते नरसृष्टि जो अनूप है सो होतभई तहां जो कोई कहै कि स्वायम्भुवमनु कौने कल्पविषेभये हैं सो यहप्रमाण हमने नहींपायो परयहसमुझिपरै है कि कोई महाकल्प को अन्त है अरु नैमित्य कल्पविषे अपर अवतारजानब अरु कल्प के प्रमाण तौ विद्यमान हैं प्रलयकहीनाश को कल्पकही जबउत्पन्नभयो पालनभयो ताको कल्पकही तहां प्रलय कईविधि ते मुनिन कहा है तहां एकनित्यप्रलय जो नित्यहीदिनप्रतिउत्पत्ति नाशहोति रहति है पुनि नैमित्तिक प्रलय ब्रह्मा के दिनप्रति तहां ब्रह्मा के दिन जब हजारचौकरी युगबीतैं तब एकदिनहोत है अरु उतनैरात्रिजानब रात्रिदिन को एककल्पकही पुनि आत्यन्तिकप्रलय योगज्ञान भक्तिकरिकै मोक्षहोत है पुनि महाप्रलय ब्रह्माकेदिन जब तीनिसैसाठिबीतैं तब ब्रह्माको एकवर्षहोत है ऐसे एकसैवर्षकी ब्रह्माकी उमिरिहै जब ब्रह्माको अन्तभयो ताको महाप्रलयकही ताही के पाछे आगे को कल्पकही ( १० ) ते महाराज राजामनु अरु महारानी शतरूपाजी ते द्वौ राजा रानी धर्मनीति राजनीति वेदनीति आचरणबिषे अत्यन्त प्रवीण हैं जिनके धर्म के मर्याद की लीक वेद चारिहूयुगबिषे गावते हैं ( ११ ) जिन स्वायम्भुवमनुकेपुत्र राजाउत्तानपादभये ताके ध्रुवजूभये ध्रुवजूहरिके अनन्यभक्तभये पुनि मनुकेज्येष्ठपुत्र उत्तानपादभये अरु लघुपुत्र प्रियब्रत होत भये तिनदोऊ पुत्रनके धर्म नीति यश प्रताप बल बीर्य ऐश्वर्य जिनकोवेदपुराण प्रशंसा करते हैं ( १२ ) जिनप्रियब्रतका रथएकचाककोरहै अरु सूर्य्यको ऐसो प्रकाशरहै ते प्रियब्रत रथपर चढ़िकै पृथ्वीकी परिक्रमाकीनतिनके रथकेचाककी लीकते समुद्र होतभये सातबार सातरथपर चढ़िकै पृथ्वीमंडलमें फिरे तहां प्रथमकी चाका जो रही तेहिको दूनदून सातौरथजानब ताते दूनदून समुद्र होतभये अरु समुद्रके बीचबीच दूनदूनद्वीप होतेभये पर यह समुझिपरतहै कि आगेहू समुद्ररहे हैं काहेते कि सातौसमुद्र विराट्के कुछवेद कहते हैं अरु विराट् प्रथमहै पाछेप्रियब्रतहैं ताते

**जिनकैलीका ११ नृपउत्तानपादसुतजासू ध्रुवहरिभक्तभयउसुततासू १२ लघुसुतनामप्रियब्रतजाहीवेदपुराणप्रशंसहिंताही १३ देवहुतीपुनितासुकुमारी जोमुनिकर्दमकैप्रियनारी १४ आदिदेवप्रभुदीनदयाला जठरधरेउजेहिकपिलकृपाला १५ सांख्यशास्त्रजिन प्रकटबखाना तत्वबिचारनिपुणभगवाना १६ तेहिमनुराज्यकीन्हबहुकाला प्रभुआयसुसबविधिप्रतिपाला १७ सो०॥ होयनविषय**

प्रियब्रतके रथहुकर संयोगहै जैसे राजासगर के पुत्रनका संयोग क्षीरसमुद्रमें हैं भगवत् बिभूतिकछु समुझि नहींपरै अपारहै ( १३ ) पुनि राजा स्वायम्भुवमनुके देवहूती नाम कन्याभई तहां कोई काल पायकै राजामनुनेकर्दममुनिको कन्याविवाहि दीन ( १४ ) तिनदेवहूतीके जठर कही गर्भविषे आदिदेवजोभगवान् परमकृपालु कपिलदेव जिनने सांख्यशास्त्र ज्ञानमें माताते बखानिकै कहाहै तेप्रभु देवहूतीजीके कुक्षिमें अवतारलेतभये ( १५ ) जिन कपिलदेवने सांख्यशास्त्र की रचनाकीनहै जिसग्रंथके सुनने पढ़ने तेआत्मा अनात्मा दोनों भिन्नभिन्न अनुभव की दृष्टिविषे देखिपरै है आत्मा प्रत्यक्ष होतहै तहां कपिलजी परमतत्ववेत्ता तत्वरूपहीहैं कैसे जानिपेश्रीभगवान् और परमकृपालु हैं ( १६ ) तेराजामनु मन्वंतरभरि राज्यकीन सम्पूर्णसृष्टि का पिता जोब्रह्मा तिनकी सब आज्ञानुकूल राज्यकीन्ह्यो ( १७ ) सोरठार्थ ॥ तहां हेभरद्वाज महाराजाधिराज स्वायंभुवमनु यह अपने अन्तष्करणविषे विचारकीन कि भवनमें बास करते करते तीनिपन बीतिगये चौथापन आइ प्राप्तभयो तब राजा आदर्शलैकै मुखदेखतभये जब श्वेतबारदेखे तब बिचारकीन कि तीनिपन बृथागये यहि मनकोविषयते बैराग्यनभयो धिक्है हरिके भजनबिना कालबृथा गयो ( १८ ) तब राजाने बरबश तुरन्त उत्तानपाद

अपने पुत्रको राज्यदैकै रानीसंयुक्त आपबनकोगमनकीन ( १९ ) तहांनैमिषारण्य तीर्थबेदबिषे बिख्यातहै तहां ब्रह्माकेचक्र को नैमिषकही औरको ब्रह्माकी आज्ञाते सोचक्र ब्रह्मांडभरि फिरिआयोतेहि स्थानविषे चक्र आकाशते उतरेउ और पृथ्वीविषे धसिगयउ कुण्ड ह्वै गयो को जानै कबभयो ताते नैमिषारण्यकही अति पावनदेश भूमिजानिकै मुनिन तहा बासकीन ( २० ) नैमिषक्षेत्र कैसो है तहां अनेक मुनिनकेसमाज अरु सिद्धनकेसमाज बासकीन्हे हैं मुनिकही मननशील अहर्निश श्रीरामतत्त्व कोमननकही विचारसंयुक्ततत्त्वके दिव्यगुण प्रताप ऐश्वर्य बलवीर्य करुणादया कृपालुता इत्यादिक परमदिव्यअनन्त गुणतत्त्व विषे समुझते हैं तिनकोमुनिकही पुनि सिद्धनकोभेद पूर्व कहिआये

बिरागभवनबसतभाचौथपन हृदयबहुतदुखलागजन्मगयोहरिभक्तिबिन १८ चौ०॥ बरबशराजिसुतहिनृपदीन्हा नारिसमेतगवन बनकीन्हा १९ तीरथवरनैमिषविख्याता अतिपुनीतसाधकसिधिदाता २० बसहिंतहांमुनिसिद्धसमाजा तहंहियहर्षिचलेमनु राजा २१ पंथजातसोहहिंमतिधीरा ज्ञानभक्तिजनुधरेशरीरा २२ पहुंचेजाइधेनुमतितीरा हर्षिनहानेनिर्मलनीरा २३ आयेमिलन

हैं यहि चौपाई बिषे साधकनामजपहिंलौलायेहोहिं सिद्ध अणिमादिकपाये॥ तहां अष्टसिद्धि भगवत्सम्बन्धी हैं अरु दशसिद्धि तीनि गुण सम्बन्धी हैं तहां बहुतमुनितौ केवल श्रीरामतत्त्वहीको मननकरतेहैं तिनकोमुनिकही अरुबहुतमुनिरामतत्त्वकोमननकरतेहैं पर सिद्धिनकोभी हस्तामलक किहे हैं ते मुनि सिद्ध नैमिषारण्य विषे बसते हैं तेहि महाक्षेत्रको परम पुरुषहेतु संसारते तीव्रतम बैराग्यकरिकै राजा मनु अरु रानीशतरूपा द्वौ सतपदार्थकी मूर्तिही हैं तेद्वौ तपसंयुक्त भजन करिबेको चलतेभये ( २१ ) भक्तिज्ञानकोभेद पूर्वकहे हैं यहि दोहाबिषे दोहा ब्रह्मनिरूपणधर्मविधि॥ महाराज अरु महारानी पंथविषे चलेजाते हैं जनुभक्ति अरु ज्ञान द्वौ मूर्तिमान् ह्वै कै परमेश्वरके मिलबेको चले जात हैं मनमेंतौ अतिआरत हैं अरु तपते अत्यन्तधैर्य्यमान्हैं सबप्रकारते दंपति सदासावधान हैं तहां यहसमुझिपरैहै कि बिनाबैराग्य ज्ञान भक्ति कछु शोभा नहीं पावैहै ( २२ ) तहां राजा रानी अति शोभाको पावत आइकै गोमतीको अति निर्म्मल नीरसो अति हर्ष संयुक्त स्नान करतेभये ( २३ ) तहां राजाको धर्म्मधुरन्धरविरक्त राजर्षि जानिकै समस्त सिद्ध मुनि ज्ञानी मिलवेको आवतेभये ( २४ ) जहां जहां जो तीर्थरहे सो सब मुनि राजाको स्नान करावतेभये ( २५ ) राजा रानीको शरीर कृशह्वै गयोहै अरु प्रसन्न संयुक्त सन्तनकी सभाविषेवेद शास्त्र स्मृति पुराणसुनते हैं ( २६ ) ॥ दोहार्त्थ ॥ अरु द्वादशाक्षर वासुदेव मंत्र वरकहे श्रेष्ठ सो अनुराग संयुक्त जपते हैं अरु बासुदेव के चरणकमल विषे दम्पतिको अनुराग अतिशयहै वासुदेव मंत्र क्यों जपते भये तहां वासुदेव शब्द सब मतको बोधकरैहै अद्वैत मत बिशिष्टाद्वैतमत द्वैतमत द्वैताद्वैतमत अरु उपासकनको मत ताते गोसाई श्रीतुलसीदासजीने कहा कि राजाने वासुदेवमंत्र जपेउहै तहां मंत्र जेहि स्वरूपकोहोत हैं सोईस्वरूपजापकको प्राप्तिहोतहै तहां राजाने बासुदेव मंत्र जप्यो अरु स्वरूप द्विभुज किशोर अतिसुन्दर धनुषवाणधरे ऐसो स्वरूप राजाको प्राप्तिभयोताते तिनहींको पर बासुदेवकही अरु चतुर्व्यूह बासुदेव सो पर बासुदेव

सिद्धिमुनिज्ञानी धर्मधुरन्धरनृपऋषिजानी २४ जहँतहंतीरथरहेसुहाये ऋषिनसकलसादरकरवाये २५ कृशशरीरमुनिपटपरिधाना सतसमाजनितसुनहिंपुराना २६ दो०॥ द्वादशअक्षरमंत्रवरजपहिंसहितअनुराग वासुदेवपदपंकरुह दम्पतिमनअतिलाग २७

के आवरणबिषेहै तथाचनारदपञ्चरात्रे ॥ वासुदेवादिमूर्तीनां चतुर्णांकारणम्परं। चतुर्विंशतिमूर्तीना माश्रयश्शरणम्मम १ कर्त्तासर्व्वस्यजगतो भर्त्तासर्व्वस्यसर्व्वग:। संहर्त्ताकार्य्यजातस्य श्रीरामश्शरणम्मम २ ताते जाको बासुदेव पुरुष वेद कहते हैं सो द्विभुजस्वरूप धनुर्धरकिशोर मूर्ति परब्रह्म सोई अद्वैत स्वरूप सोई द्वैतस्वरूप सोई बिशिष्टाद्वैतस्वरूप सोईद्वैताद्वैत स्वरूप तिसी स्वरूपबिषे योगीजन सम्पूर्ण बाह्यान्तर इन्द्रिनको जीतिकै आत्माकौ अखण्ड बृत्ति परमात्मा बिषे एकतामानते हैं सोई ज्ञानी बिज्ञानी मानते हैं

श्रीभगवद्गीतायां॥ सांख्ययोगौपृथग्वाला:प्रवदन्तिनपण्डिता: पर जिनने श्रुतिस्मृति शास्त्र पुराण सत्सङ्गतिको सिद्धांतअच्छीतरह अनुभव किहेहैं तिनको सिद्धान्त यहै स्वरूप है जो महाराज मनुरानी शतरूपाको प्राप्तिभये हैं ताते बासुदेव मंत्र मनुनेजपे हैं अरु श्रीतुलसीदास गोसाईंकहेहैं सब मत श्रीरामचन्द्रबिषे पर्य्यवसानहैं ताते सवकोमत श्रीरामचन्द्रही हैं तहां वासुदेव पर पुरुष जाकोकही अरु ब्रह्मब्यापक आदिज्योति जाको कही सो सब श्रीरामचन्द्रहीको कही श्लोक श्रीमन्महारामायणे॥ सर्वम्वसतिवैयस्मिन् सर्वेस्मिन्वसतेपिवै तमाहुर्वासुदेवञ्च योगिनस्तत्त्वदर्शिन: १ पनु:सनत्कुमारसंहितायां॥ नमोस्तु वासुदेवाय ज्योतिषाम्पतयेनम: नमोस्तुरामदेवाय जगदानन्दरूपिणे २ कोशल्यानन्दनंरामं धनुर्वाणधरंहरिम् किन्तु दम्पति श्रीराम पड़क्षरमंत्र जपतेभये तातेद्वौजनको मिलाइकै द्वादशाक्षरकहा दम्पतिमनअतिलागवर कही सर्व्वोपरि मंत्रहै सो द्वौजन जपते भये ताते वा विकल्प कहे हैं वाके आगे वासुदेव जो परमात्मा परब्रह्म श्रीराम तिनके पद बिषे अतिअनुरागहै ३ इत्यर्थ: ( २७ ) ते राजा रानी तप करने लगे शाक फल कन्द आहार करहिं अरु सच्चिदानन्दब्रह्म तिनको सुमिरण करहिं सतकही जोसर्ब्बकाल विषे एकरसहै जहाँ असत् पदार्थ लेशहू नहीं है सो सतकही पुनि चित चैतन्य स्वरूप अपनी सत्ताकरिकै जड़को चेतन किहे हैं वहसर्वजीवकी गति जानैहै उसकीगतिकोई नहीं जानिसकै है सबकोनियंता सर्वतेभिन्नहै मनवचनकर्मअगोचरहै सोई चितहै आनन्दकही जहां मायासम्बन्धदु:ख सुख शेषलोक मृत्युलोक सत्यलोक पर्यन्त ब्रह्माण्डकेकटाह भरे को सुख तहां नहीं सम्भवै है अरु जौने आनन्दसमुद्रको एककणमात्र योगीज्ञानी भक्त पायकै ब्रह्माण्डकी बिभूति त्यागिदेते हैं ऐसो

**करहिंअहारशाकफलकन्दा सुमिरहिंब्रह्मसच्चिदानन्दा २८ मुनिहरिहेतुकरनतपलागे बारिअहारमूलफलत्यागे २९ उरअभिलाष**

आनन्दहै जाको कोईनहींजानिसकै सो आनन्दकही ऐसोजोब्रह्म सत्चितआनन्दस्वरूप तिनको चिंतवनकरते हैं ( २८ ) यहां हरिशब्दपर तत्त्वजानब पुन: हरिहेतु तपस्या भक्तिमय तेहिको दूसर नेमकरनेलगे बारिकहीजलको आहार करने लगे कंदमूल फलशाक इनको त्यागकियो तहां तपस्या की दूसरी भूमि का ग्रहणभई अरु जो प्रथम तप को कन्दमूल फलइत्यादिक खाइकै प्रारम्भ कीन है अरु तप की प्रथमभूमि का समाप्त ताईं स्थूल शरीर जाग्रत अवस्था तिनको अभाव भयो तप की दूसरीभूमि का विषे जल आहार कहे हैं तहां दूसरी श्रेणीविषे प्रथम ते समाप्त ताईं लिंगशरीर स्वप्नअवस्था को प्रध्वंस भयो अरु जब तीसरी तपकी भूमिकाबिषे पवन आहारकहा है तहां भूमिकाकी आदि अन्त पर्यंतलगि राजा रानी के बिरहसंयुक्त प्रेम की वृद्धिहोती जाती है तब भूमिका समाप्तभये कारण शरीरसुषुप्ति अवस्था पवनको आधार जो रह्यो सो सब क्रमही ते आत्मा ते त्यागभयो पुनि जब तप की चतुर्थअवस्थाविषे आरूढ़भये जहांकहा कि ठाढ़ेरहेएकपगदोउ तहां दम्पति एकपगठाढ़े तपस्या करनेलगे किन्तु एकपग को अर्थ जहांलगि प्रकृति के सम्बन्ध द्वैतआत्माबिषे अनादिही ते रहे सो सबनाश को प्राप्तभये केवल शुद्धस्वरूप परमदिव्य बिग्रह अद्वैतरूप तुरीयावस्था ब्रह्मानन्द भोगअखण्ड पराभक्तिकी अखण्डदशा राजा रानीकी होतभई तब चौथीभूमिकाके अन्तविषे परमात्मा परब्रह्म श्रीरामचन्द्र प्राप्तभयेहैं ताते एकपदकहा ( २९ ) राजारानीके उरअन्तष्करण मध्यआत्मा बिषे निरन्तरकही जामें अन्तर न परै तैलवद्धार अखण्ड अनुराग होतभयो कि परमप्रभु जो है जाकेपरे पुनिदूसरो तत्त्व नहीं है ऐसे परमपुरुष को नेत्रभरि देखिये ( ३० ) श्लोक: पद्मपुराणे आरण्यमुनिवाक्यं॥ रामान्नास्तिपरोदेवो रामान्नास्तिपरंव्रत नहिरामात्परोगयोगो नहिरामात्परोमख: १ भरद्वाज संहितायां॥ एकञ्चापिपरंसमस्तजगतां ज्योतिर्म्मयंकारणं प्रागन्तेचविकारशून्यमगुणंनिर्गम्यरूपञ्चयत् तच्छ्रीरामपदारविन्दनखर प्रान्तस्यतेजोऽमलं प्रध्यो वेदविदोवदन्तिपरमं तत्वन्परन्नास्त्यत: २ जो प्रभुनिर्गुण तीनिगुणकेपरेहै अरु अखण्ड एकरसहै अरु अनन्तकही जाको आदि मध्य अन्त श्रुति

**निरन्तरहोई देखियनयनपरमप्रभुसोई ३० अगुणअखण्डअनन्तअनादी जेहिचितवहिंपरमारथबादी ३१ नेतिनेतिजेहिवेदनिरूपा चिदानन्दनिरुपाधिअनूपा ३२ शम्भुविरंचिविष्णुभगवाना उपजहिंजासुअंशतेनाना ३३ ऐसेप्रभुसेवकबशअहहीं**

स्मृति शास्त्र पुराण सिद्धमुनि इत्यादिक संपूर्ण कोई नहीं जानिसकै हैं तेहि पुरुषको परमार्थवादी चिंतवन करते हैं परमार्थवादीकही ब्रह्मवादी आत्मारामजे हैं शुक सनकादिक नारद इत्यादिक परमअर्थ जो परमेश्वरतेहिकेअर्थीहैं ( ३१ ) जेहिपरम पुरुषको वेद नेतिनेति करिकै निरूपणकरते हैं कैसो है वह परब्रह्म सच्चिदानंदहै निरुपाधिहै अनूपहै निरुपाधिकही आद्याशक्तिसे लैकै अरु तीनिगुण पांचतत्त्व पर्य्यन्त ताको उपाधिकही पुनि राक्षसन करिकै महिदेव गऊ ब्राह्मणको पीड़ा ताको उपाधिकही तिनसमस्त उपाधिको जेहि पुरुषविषे प्रयोजनै नहीं है सर्वोपाधि रहितहै अनूप जेहिकी उपमाको कोई नहीं है ( ३२ ) पुनि जेहि परम पुरुषके अंशतेअनेकनशम्भु बिरंचि बिष्णु भगवान् जो हैं सो उत्पन्न होतहैं सो पुरुष हमको प्राप्तहोहिं श्रीमन्महारामायणे शिववाक्यं पार्बतींप्रति श्लोक ३ यस्यांशेनसमुद्भूताब्रह्मबिष्णुमहेश्वराः॥ नानाकृतिधराःशुद्धास्सर्वेध्यायंतितं सदा१ स्कंदे॥ ब्रह्मविष्णुमहेशाद्या यस्यांशेलोकसाधकाः तमादिदेवंश्रीरामंविशुद्धम्परमम्भजे २ सदाशिवसंहितायां सौमित्रिवाक्यं वेदान्प्रन्ति॥ विष्णुकोटिप्रतीपालं ब्रह्मकोटिविसर्जनं रुद्रकोटिप्रमर्दवं मातृकोटिविनाशनं ( ३३ ) ऐसे जो प्रभुहैं सो सेवकके बशहैं अपने भक्तनके हेतु लीलातनु ग्रहण करतहैं लीलातनु कही अपने तनुबिषे लीला ग्रहण करते हैं किंतुर्लीला जो है ताहीको तनुकही सो लीला परमदिव्य ग्रहण करते हैं बाललीला विवाहलीला बनलीला रणलीला राज्यलीला इत्यादिकलीलाविग्रहमान्हैं ( ३४ ) वशिष्ठसंहितायां॥रामस्यनामरूपञ्च लीलाधामपरात्परं एतच्चतुष्टयंनित्यं सच्चिदानन्दविग्रहम् १ जो यह वचन सत्यकरिकैवेदभाषतहैं कि परमात्मा परब्रह्म अतिदुर्गमहै योगेश्वरनको मुनीश्वरनको परमहंसनको ऐसे जे प्रभु हैं ते अपने सेवकनके बशहैं जो यहवेदवाक्य सत्यहै तो हमारी अभिलाष पूर्ण करहिंगे ( ३५ ) दोहार्त्थ॥प्रथमतपकीभूमिका कन्द मूल फलखायकै पांचहजार वर्षवीते पांचौतत्व विषे स्थूलशरीरसंयुक्त जीतिलियो है पुनि यहिप्रकारते राजारानी परम अभिलाष संयुक्त षट्हजारवर्ष बारिआहार कीन्हेनिहं तब षट्विकार जो हैं काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य्य पुनि षट्जन्म वृद्धि विवर्ण क्षीण जरा मरण

भक्तहेतुलीलातनुगहहीं ३४ जोयहबचनसत्यश्रुतिभाषा तौहमारपूजहिंअभिलाषा ३५ दो० ॥ यहिबिधिबीतेबर्षषटसहससुबारि अहार संबतसप्तसहस्त्रपुनिरहेसमीरअधार ३६ चौ०॥ बर्षसहसदशत्याग्योसोऊ ठाढ़ेरहेएकपगदोऊ ३७ विधिहरिहरतप देखिअपारा मनुसमीपआयेबहुबारा ३८ मांगहुबरबहुभांतिलोभाये परमधीरनहिंचलहिंचलाये ३९ अस्थिमात्रहोइरह्यो

पुनि षट्ऊर्मी क्षुधातृषा शीत हर्ष शोक इत्यादिक षट्विकार लिंगशरीरसंयुक्त जीतिलियो है पुनि सातहजारबर्षलगि पवनके आधार रहे हैं तब सप्तधातु रक्त मांस मेद मज्जा अस्थिबसा काम सप्तधातु कारणशरीरसंयुक्त ताके पारभये ( ३६ ) पुनि पवनको त्यागकरिकै दशहजार वर्ष ताईं निराधार एकपग राजा रानी ठाढ़ेरहे परमपुरुष बिषे अखण्ड तैलवद्धारआत्माकीवृत्तिलगिरहीहै तब दशइन्द्रीसम्बन्ध स्थूल सूक्ष्म कारणबासना झीनी प्रध्वंस ह्वै गई है तहां तुरीयावस्था अतिशुद्ध समाधिस्थ ह्वै रहहैं ( ३७ ) राजारानी की अपारजाको पारनहीं है ऐसी तपस्या परब्रह्ममय त्यहितप को तेज सत्यलोक शिवलोक बिष्णुलोक रमाबैकुण्ठ लगि प्राप्त भयो तब विष्णु भगवान् ब्रह्मा शिव अपार तपदेखिकै मनुमहाराज के समीप पृथक् पृथक् अनेक अनेक बारआये पुनि मिलिकै बहुबार आये ब्रह्मा हंसपर चढ़े महादेव नन्दीपर आरूढ़ अरु गरुड़पर आरूढ़ विष्णुने शक्तिन संयुक्त यहकहा कि बरमांगो बरमांगो बरमांगो ( ३८ ) हे राजनहम बहुत प्रसन्न हैं तुम जोई बरमांगोगे सोई हमदेहिंगे तहां परमधीर राजा की निर्बिकल्प समाधि अचललगि रहीहै सो नहींचली काहेते कि परमात्म बिषे राजा की गुणातीत बृत्ति समाधिलगी है अरु तामस राजस सात्विक गुण की सूक्ष्म सुगन्धिलिहे तीनिहूं ईश्वरन की बाणीसमुझि परती है ताते राजाको सोबाणीनहीं सुनिपरीहै ( ३९ ) तहां राजा का अस्थिमात्र शरीर ह्वैरह्योहै ऐसीदशा ह्वैगई है तदपि मनबिषे तपकीपीड़ाको आगमन सो लेशहूनहींहै काहेते कि जहां जाकी एकरस अखण्ड वृत्ति लगिरही है ताकी तहांईकी सुधिरहतीहै ॥ श्रीअयोध्याकाण्डेचौ० ॥मनतहँजहँरघुबरबैदेही विनमनतनदुखसुखसुधिकेही

तहां राजारानी परमानन्द बिषे पूर्णहैं ( ४० ) जो सबके प्रभु सर्बज्ञ परब्रह्म हैं तिनमें अपनेनिजदास जाने राजारानी परमानन्य अपनेविषे अनन्यकहीअपने बाह्यांतरते शरीरशुद्ध जगत् को अभाव अरु सर्ब कर्मधर्म अरु ब्रह्मादिकदेवतनते अरु अनेक मन्त्रादिकनते बासना शून्य परमात्माजो श्रीराम-

शरीरा तदपिमनागमनाहिंनपीरा ४० प्रभुसर्व्वज्ञदासनिजजानी गतिअनन्यतापसनृपरानी ४१ मांगुमांगुधुनिभैनभबानी परमगँभीरकृपामृतसानी ४२ मृतकजियावनिगिरासोहाई श्रवणरंध्रह्वैउरजबआई ४३ हृष्टपुष्टतनभयेसोहाये मानहुअबहिंभवनतेआये ४४

चन्द्रजी तिनके नाम स्वरूप बिषे बाह्यांतर अनुराग अखण्ड वृत्ति लगी है सो अनन्य ( ४१ ) राजारानी के प्रेमापराभक्ति के बशह्वैकै ताते मांगुमांगु बारबार यहबाणी भई तहां परमेश्वरका एकही बचन संकल्पबिषे स्वार्थपरमार्थ सर्ब सिद्धिहोते हैं तहाँ बारबार कहेते अतिकृपा बात्सल्यरसपूर्ण होते हैं पुनि धुनिकही जामें अन्तर नहींपरै ऐसीबाणी नभबिषे परमगम्भीरकृपा अमृतमय त्यहिते सानी होतभई ( ४२ ) मृतक जिआवनीबाणी संजीवनी परम अमृतमय परमानन्द स्वरूपा जब हृदयबिषे प्राप्तभई ( ४३ ) तब तनु जो कृश ह्वैरह्यो है सो हृष्टकही उत्तम काल तेहीसमय बिषे तनु पुष्टभयो किन्तु हृष्टपुष्ट एकहीशब्दहै हृष्टपुष्ट तनु होतभयो किन्तुहृष्टकही आरोग्य परम दिब्यतनु अति शोभितभयो किंतु हृष्टपुष्ट संतुष्ट पुष्ट मानो पद जो कहा है सो उत्प्रेक्षा अलंकार है मानो अबहीं भवनतेतुरंतआये हैं तहां राजारानी की जेहि पुरुषबिषे निर्बिकल्प समाधिरही अरु तेहि पुरुषकी बाणीभई कि बरमांगु बारबार धुनिभई तब परमपुरुषकी इच्छाते अरु बरकी उपेक्षाते निर्बिकल्प समाधिजोरही सो परमात्मा की बाणीके संगही राजारानी की एकरस अखण्डवृत्ति सो हृदय कमलबिषे प्राप्तभई तब सबिकल्पसमाधि बिषे वृत्ति आयगई तब आनन्दसंयुक्त समाधि शांति को प्राप्तभई परशरीर दुबरे मोटेको मान नहींरह्यो मानो अबहींते चलेआवते हैं ( ४४ ) दोहार्थ॥ परब्रह्मबाणी परम कृपामृतमय श्रवण बिषे प्रवेश करिकै अन्तष्करण में प्राप्तहोतसंते हृदयते प्रेमउमगतभयो अब अंगअंग रोमरोमप्रेमभरिकै प्रफुल्लितह्वैकै महाराजारानी साष्टांगदण्डवत् करिकै दोऊकरजोरिकै परमानन्द संयुक्त बोलतेभये हर्ष हृदयमें नहीं समाय ऊपरउमगिचल्यो है ( ४५ ) महाराजामनु बोलतेभये हेपरमप्रभु सुनु तुम अपने सेवकन के सुरतरु सुरधेनु सरिसहौ तहां सुनुऐसापद जो कहा यह समर्षवाक्य क्योंकहा तहां त्वं तू तैं तेरे सुनु गुनु जानु मांगु ले दे कहु गहु लहु इत्यादिक समर्ष पद हैं पर एतेस्थानबिषे शोभित हैं रणदान भय स्त्री सुत सेवक याचक कबिबिषे उचित है अरु अपने प्रभुस्वामीकी स्तुतिबिषे गुणकार्य्यबिषे अरु प्रीतिबिषे आरत इत्यादिक प्रभु स्वामी बिषे तू तैं सुनु रे इत्यादिक अतिप्रीतिको उपजा-

दो०॥ श्रवणसुधासमबचनसुनि प्रेमप्रफुल्लितगात बोलेमनुकरिदण्डवत हर्षनहृदयसमात ४५ चौ०॥ सुनुसेवकसुरतरुसुरधेनू विधिहरिहरपद-बन्दितरेनू ४६ सेवतसुलभसकलसुखदायक प्रणतपालसचराचरनायक ४७ जोअनाथहितहमपरनेहू तौप्रसन्न

वते हैं तहां राजारानी की स्तुति आरत प्रीति संयुक्त है तातेसुनु कहाहै अन्यश्चश्लोकः १ बाल्येसुतानांसुरतेङ्गनानां स्तुतौकबीनांसमरेभटानां॥ सदागुरूणामतियाचकानां त्वङ्कारयुक्ताहिगिराप्रशस्ता १ तहां सुरतरु अरुसुरधेनु कहा तहां सर्ब कामना को एकही पर्णकरे है दुइक्योंकहा तहां राजा अपनी वाक्य बिषे अपनो अरु रानीको भावना संकेतसंयुक्तपरमेश्वरते जनाइदियो है कि मोको तुम परमदिब्य कल्पतरुरूपहौ अरु रानीको परमदिब्य कामधेनु रूपहौ तहां राजाकीवाणीविषे यहआशयहै कि परमपुरुष जो तुमहौ सो अपनी परमानन्दस्वरूप परमदिब्य शक्ति ज्योतिनसंयुक्त हमको दर्शन देव पर जेहि परमपुरुषके चरणारविन्द की रेणु जो है तेहिकी बन्दना ब्रह्मा अरु विष्णु अरु महादेव अपनी शक्तिन संयुक्त करते हैं सदा बन्दते हैं॥ श्लोक १ वशिष्ठसंहितायां॥ जयमत्स्याद्यसंख्येयावतारोद्भवकारण॥ ब्रह्मविष्णुमहेशादि संसेव्यचरणाम्बुज १ सो परमपुरुष जैसो स्वरूप अखण्ड नित्य एकरसहोइ सोई साक्षात्स्वरूप हमको दर्शनहोइ यह परावाणी राजा बोलतेभये ( ४६ ) पुनि हे गरुड़ महाराजमनु यहकहतेभये हेप्रभु

तुम्हारी सेवाकरतसन्ते तुमसुलभहौ सुलभकही सहजमेंप्राप्तहोतेहौ काहेतेकृपालुहौ किन्तु तुम्हारीसेवाअतिसुलभहै तुमकोसेवतसन्ते कौनौसाधनक्लेशनहीं है जप तप यज्ञदान तीर्त्थव्रत योग वैराग्य ज्ञानइत्यादिक एकहूनहीं हैं केवल प्रेमतुम्हारेचरणारविंदबिषे चाही केवलप्रेमकाकोकहीश्रीपरमेश्वरपरब्रह्मके स्वरूपकीनखशिखलौं शोभाछविसुधासिन्धुमहामदताको पानकिहेसदामत्तह्वैरहेहैं जैसे मदान्धकभी रोयउठै कभीगायउठै कभीहँसिदेइहै तहांदुःख सुख पाप पुण्य हानि लाभमित्र अरि स्वर्ग नरक कञ्चन टंम मानापमान चारि बासनाअर्त्थ धर्म्म काम मोक्ष इत्यादिक जहां एकहू नहीं सम्भवै है परमपुरुषके स्वरूपकी छबि में छकेरहते हैं ताको केवल प्रेमकही तेहि प्रेमके आप वशहौ अरु मेरे ऐसो कौन प्रेमभयो जो म्वहिपर इतनी कृपाकीनहै अरु तपादिकनकर्मनते आप दुर्लभहौ ताते आप निर्हेतुक कृपालुहौ ताते तुम्हारी कृपा बिना तुम्हारी सेवा नहीं बनिपरै है अरु तुम सबप्रकारते सर्व्व जीवनकोकेवल सुखदाताहौ प्रणत जो है तुम्हारी शरण त्यहिको पालन केवल आपही करते हौ यद्यपि आप चराचर के नायक अरु सबको यथायोग्यपालनकरतेहौ तदपि जे कोई सर्वधर्मको परित्यागिकै सर्वोपायशून्य ह्वैकै

## ह्वैयहवरदेहू ४८ जोस्वरूपबसैशिवमनमाहीं जेहिकारणमुनियतनकराहीं ४९ जोभुशुंडिमनमानसहंसा सगुणअगुणतेहिनिगम

केवल एक तुम्हारीगतिहै त्यहिको संचित क्रियमान अरु प्रारब्ध अरु कालकर्म गुण स्वभाव इत्यादिक सवनाशकरिकै केवल अपनोकरिकै पालते हौ ऐसे तुमकृपालुहौ ( ४७ ) श्लोकार्द्ध श्रीमद्भगवद्गीतायां॥ सर्व्वधर्मान्परित्यज्य मामेकंशरणम्व्रज ॥ हे नाथ हितअनाथ कही जे दीनहैं जिनको आदर संसारमें कोई नहीं करै यहां यही आरत जानब अरु अनाथकहीब्रह्मांडविषे जो देव दानव मनुष्य सिद्ध इत्यादिक अरु शुभाशुभ धर्मकर्म तीर्थव्रतइत्यादिकजेहैं तिनसर्वकेजेनाथकहेप्रभुहैं तिन सबनआश्रयकहूं लेशहूनहीं है जिनके एकपरमपुरुष जोतुमहौ तिनहींके प्रपन्नहै पुनि अनाथ कही जिनके नाथ नहीं हैं जैसे वृषभनाथैते बशह्वैजात है यहां नाथकहीमोहको ताते मोहनाथ जो है त्यहिकरिकै जेतेजीव ब्रह्मांडविषे हैं सबनाथे हैं अरु जिनपुरुषन मोहरूप नाथतोरि डारे हैं तिनको अनाथकही ऐसे अनाथनके आप नाथ हितरूपहौ ताते तुम्हारो जो अनाथनाम वेदन विषे सुन्योरहै सो मैं आपुते प्रत्यक्ष देख्यों काहेते कि अखिल ब्रह्मांडकार्य्य है अरु महामाया कारणहै अरु महाविष्णु महाकारणहैं अरु हेपरम प्रभु तुम सबके परउपकारणहौ आपुतौ ऐसेहौ अरु मैं ऐसोहौं कि तुम्हारी शरणबिना तीनिपन वृथाबीतिगये विषय विषे ताहूपर आप येती कृपाकीन कि कहतेहौ जो बरमांगहु सो मैं देउँगो जो येतीकृपाहै तौ हे कृपालु मोको प्रसन्नह्वैकै यहबरदान दीजिये ( ४८ ) हे भरद्वाज परम पुरुष ते राजामनु वरमांगते हैं हे परमप्रभु जो हमारेऊपर आपु प्रसन्न ह्वैकै बरदेते हौ तौ यह बरदान देहु काहेते हम तुम्हारो निज स्वरूप नहीं जानते हैं धौं कैसो तुम्हारो स्वरूप एकरस सनातन अखण्ड है ताते जो स्वरूप शिवजूके अन्तष्करण बिषे सदा बसे है सोई स्वरूप जैसोहोइ सो ज्यों को त्यों हमको दर्शनहोइ तहां महादेवकी साक्षी क्यों दियो है याते दियो है कि परात्पर तम परमतत्व स्वरूप महादेव यथार्त्थ जानते हैं काहेते कि शिवजी साक्षात् ईश्वरहैं अरु उत्तम कर्म्मकांडिन बिषे महाऋषीश्वर हैं अरु मुनिन में मुनीश्वर हैं अरु योगिनमें योगेश्वर हैं अरु विरक्तन में विरक्तेश्वर हैं अरु ज्ञानी विज्ञानी बिषे विज्ञानीश हैं अरु ध्यानी समाधिन विषे समाधीश हैं अरु बैष्णवन बिषे भक्त राज हैं सब प्रकारते शिवजू सर्व्वोपरि हैं ताते महाराज मनुने यह कहा कि जो स्वरूप शिवजूको सिद्धान्त होइ सोई सर्व्वोपरि परमतत्व है वही स्वरूप जैसो होइ तैसेही दर्शन हमको होइ अरु जेहि परम तत्वकी प्राप्ति हेतु मुनि जो हैं मननशील ते अनेक यत्न करते हैं सम्पूर्ण बाह्य इन्द्रिन को विषय तिनको दमन करते हैं अरु चतुष्टय अन्तष्करण को सम करतेहैं अरु अनेक सुख दुःख निन्दा स्तुति मानापमान हर्ष शोक हानि लाभ इत्यादिक सबको सहिकै त्यागकरते हैं अरु त्रैगुण्यजनित बिभूतिते वैराग्यकरते हैं अरु सारासार को अहर्निशि बिचार करते हैं गुरु जो हैं परमतत्त्ववेत्ता ते वेदकी बिशेष वाक्यबिषे प्रतीति करते हैं अरु अनेकद्वन्द्व धर्मप्राप्त होतसंते परमतत्त्वबिषे समाधान रहतेहैं ऐसेही अनेकजप तप ध्यान समाधि करते हैं जेहि परमस्वरूप की प्राप्तिहेतु सोई स्वरूपजैसो होइ तैसो ज्योंकात्यों हमको दर्शनहोइ ( ४९ ) पुनि हेपरमप्रभु तुम्हारा जो निजस्वरूप कागभुशुण्ड के मनमानसर में जैसो बसतहोइ तैसो हमको प्राप्तहोइ कागभुशुण्ड की साक्षी क्योंदियो है यहि संसार में स्वर्ग नरक उत्पत्ति

पालन प्रलय तीनिगुण इत्यादिक सब अविद्यामयजानब सो कागभुशुण्ड के स्थानबिषे योजनपर्य्यंत अबिद्या नहीं है अरु भुशुण्ड के स्वरूपकीनिर्मलताका कहौं काहेते महाप्रलयहु बिषे जाकोनाशनहीं है अरु परमपुरुष परमात्माजो है सो निजस्वरूप निर्बिकार निर्मल एकरस सो ऐसेहीस्थान स्वरूपबिषे बासकरते हैं ताते भुशुण्डकोप्रमाणदीन है काहेते कि जो परात्परतर स्वरूपतत्त्व वेदान्तको सारभूत सोई भुशुण्डि को सिद्धान्त होइगो ताते सोई स्वरूप जैसोहोइ तैसोही हमको दर्शन होइ पुनि तेहि स्वरूप को वेद सगुणब्रह्म अरु निर्गुणब्रह्म एकहीस्वरूप को दूनों बिशेषण करिकै प्रशंसाकरते हैं एकही स्वरूपबिषे सगुण निर्गुणब्रह्म कैसे सम्भवै हैं तहां परम दिब्य गुण जेहि स्वरूप बिषे युक्तहै सौशील्यवात्सल्य कृपा करुणा दयालुता उदारता इत्यादिक ब्रह्ममेंअनन्तगुणहैं ताते वेद सगुण कहते हैं अरु मायाके जेते गुण हैं सात्विक राजस तामस इत्यादिक सबते रहित स्वरूप है ताते वेद निर्गुण ब्रह्म कहैहैं ऐसो स्वरूप जैसोहोइ सो हमदेखें पुनि दूसरा अर्थ अथवा सगुणस्वरूपईश्वर बिष्णु भगवान् महाविष्णु भगवान् बिराट् भगवान् महाबिराट्भगवान् अरु चेतन निर्गुणब्रह्म अरु चेतनको चेतनकर्त्ता परब्रह्म अरु चारिहूवेद अरु वेदको शिरोभाग उपनिषध जो हैं येते समस्त जेहिस्वरूपकी प्रशंसाकरते हैं सो स्वरूप हमदेखें यहबर देहु ( ५० ) बासुदेवादिमूर्त्तीनां चतुर्णांकारणंपरं॥ चतुर्बिंशतिमूर्त्तीनामाश्रयश्शरणंमम १ उदरंब्रह्मेतिसाकाराख्याउपासते हृदयंब्रह्मेत्यादित्य रूपेणपापब्रह्मादैवतादि इति श्रुतेः अतएवकेवलंशून्याच्छून्यतरंशून्यं सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरंसूक्ष्मं ब्यापकात्व्यापकतरंव्यापकं प्रकाशात्प्रकाशतरंप्रकाशं ज्ञानात्ज्ञानतरंज्ञानं नित्या-

**प्रशंसा ५० देखहिंसोस्वरूपभरिलोचन कृपाकरहुप्रणतारतिमोचन ५१ दम्पतिबचनपरमप्रियलागे मृदुलविनीतप्रेमरसपागे ५२**

न्नित्यतरंनित्यं ध्येयाद्ध्येयतरंध्येयं ईश्वरादीश्वरपरं ईश्वरं तत्त्वात्तत्त्वपरंतत्त्वं स्थूलात्स्थूलपरंस्थूलं आनन्दादानन्दपरंआनन्दं सुखात्सुखपरं सुखं चैतन्याच्चैतन्यपरंचैतन्यं रूपाद्रूपपरंरूपं ज्योतिषोज्योतिपरंज्योतिःज्योत्स्नायाज्योत्स्नातरंज्योत्स्नासमस्तंप्रमुच्यते इतिश्रुतिः जैसोअर्थ यहि श्रुतिविषे सिद्धांत है सो यही स्वरूपहै जो महाराजमनुको दर्शदीन है अपरअर्थ कल्पनामात्र है हे परमप्रभु सर्वोपरि परात्परतरमय जेहिकेपरे पुनि दूसरस्वरूप न होइ जो शिव भुशुण्डि मुनीश्वर वेदांत इनसबनको परमसिद्धांत जैसो स्वरूपहोइ तैसही स्वरूप ज्योंकोत्यों हम नयनभरि देखहिं अपर हम कछू जानते नहीं हैं सो कृपा हमारे ऊपर करहु काहेतेआप प्रणतकही जो तुम्हारे केवलशरण हैं अरु तुम्हारे जे आर्त्त हैं तिनकी आर्त्ति तुम मिटाइकै पूर्णकरतेहौ ( ५१ ) दम्पति को वचन परमप्रियअतिमृदुलकही आरतप्रपन्न विनीतकही जामें अनेकनअर्थ नीतिमय हैं अरु परमप्रेममय ऐसीवाणी दम्पतिकी परमपुरुष सुनिकै परमप्रसन्नहोतभये ( ५२ ) परमप्रभु कैसे हैं भक्तवात्सल्य कही जैसे धेनुगऊ अपनेबालक बछरा को जीभते चाटिकै निर्मल करिदेतु है तैसे परमप्रभु जे हैं ते अपने भक्तन को कृपारूप जीभते चाटिकै निर्मलकरिदेते हैं काहेते कृपाके निधानकहे स्थानहैं विश्वास कही सम्पूर्ण विश्व विषे अन्तर्य्यामी घनस्तेज गुण भूत एकरस बसे हैं अथवा विश्व बास प्रकटे सम्पूर्ण विश्व के नाथ विश्व विषे व्याप्त विश्व के परेते परमप्रभु महाराज मनु के परा प्रेम के वश ह्वैकै विश्व विषे जीवन के कल्याण हेतु परम विचित्र लीला करिबे हेतु परम पुरुष विश्व बिषे प्रकटे प्रत्यक्ष भये बास कीन हे पार्व्वती ( ५३ ) दोहार्त्थ॥ हे भरद्वाज महाराज रानी के समीप परमपुरुष साक्षात् अवतीर्ण होतभये कैसो स्वरूप है अखण्ड एकरस नित्य किशोर प्राप्ति भये हैं नील कमल नील मणि नीलघन तद्वत् श्याम शरीर है कञ्ज मणि मेघ तीनि की उपमा क्यों दियो है एकही नीला विषे बोध होत है यहि दोहा विषे उपमा न तो कहूं है अरु उपमेय लुप्तालंकार कहे हैं अरु कञ्ज मणि घन इनको धर्म्म लुप्त करिकै कहे हैं तहां जहां लुप्तालंकार करिकै कहे हैं वहाँ उपमान को धर्म लैकै उपमेय बिषे लक्षणाकरिकै कहते हैं तहाँ नीलधर्म तो तीनिहूको लियोहै अरु कञ्जविषे चारिधर्म लिये हैं कोमल सुगन्ध मकरन्द केसर

**भक्तबछलप्रभुकृपानिधाना विश्ववासप्रकटेभगवाना ५३ दो०॥ नीलसरोरुहनीलमणिनीलनीलधरश्याम लाजहिंतनशोभानिरखिकोटिकोटि-शतकाम ५४॥**

* * * * * *

युक्त शोभा तहां परमपुरुष को विग्रह ऐसो कोमल सुगन्ध मकरन्द शोभामय विग्रह है अरु नीलमणि सचिक्कन निर्मल आवरणरहित प्रकाशमय अमोल अलोम ऐसो स्वरूपहै पुनि नील मेघकी गम्भीरता अनेकतड़ितसंयुक्त अधिकरस उदारतामय ऐसे अनेक परम दिव्यधर्मकी उपमा के योग्य तनुहै पुनि कोटिन काम अंगअंगप्रति निछावरि करिदीजिये जिनकी सुन्दरतापर कोटिनकाम क्यों कहे एकही कामकी शोभा विषय बोध क्यों नहीं कियो तहाँ दृष्टांत जैसे एकमणिको प्रकाशजानिये अरुजहां कोटिनमणिकी एकताकरिये तहां केती प्रकाशकी शोभा होती है ताते कोटिनकामकी अंगअंग उपमा लघुलगै है काहेते जब परमपुरुषअवतीर्ण भये हैं तब ब्रह्मांडमण्डल प्रकाशितभयो है ऐसो परमस्वरूप प्राप्तिभये हैं॥ श्लोक ३ ॥ रामंसांद्रघनस्वरूपममलंसच्चिद्घनानन्दकं विद्युद्दिव्यदुकूलपीतयुगलं श्रीदामवक्षस्थलं॥ मंजीरांगदरत्नकंकणरणत्कांचीलसन्मुद्रिकं मुक्ताहारकिरीटकुण्डलधनुस्संचित्रवाणोज्वलम् १ काश्मीरीतिलकालकावृतमुखंसाचीक्षणंसस्मितं तांबूलाधरपल्लवंरसमयंनासाग्र मुक्ताफलं॥ ध्यायेच्छत्रसुदिव्यचामरयुतं-साकेतरत्नासने जानक्यंशभुजंसखीगणवृतंनित्यंनिकुंजेस्थितं २ परिपूर्णगुणोदेवो धीरोदात्तगुणोत्तरः॥ नटवर्यवपुश्श्रीमान्कोटिकंदर्पसुन्दरः (५४)॥ इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसनेबिमलवैराग्यबालकांडे महाराजरानीपरमत्याग तपवैराग्यज्ञानपराभक्तिपरमपुरुषप्राप्तिदर्शनंनामषट्बिंशतिस्तरंगः २६॥

दो० बीसै सप्ततरंगमें रामचरणहियधारि॥ दम्पतिसुरपुरबासभणि पूर्वअर्द्धनिर्द्धारि २७॥ शरदऋतुकीपूर्णमासीको निर्मलमयंकऐसो बदनहै यहां बाचकधर्म लुप्तालंकारहै मयंकविषे श्वेतता गुणहै प्रकाशस्वभाव है शीतक्रिया है श्रीरामचन्द्रजूको मुख अतिनिर्मल सो गुणहै अति मधुरप्रकाश स्वभावहै अतिमधुरमन्द मुसुकानि सो क्रिया है ऐसो मुख छबिकीसीवकही मर्याद है चारु अतिसुन्दर निर्मल आदर्शवत् कपोल हैं चिबुक जो ठोढ़ी है सो नीलगोलमणि इवहै चिबुकके मध्यमें पीतबिन्दुहै सो शृंगाररस को शृंगारहै पुनि जनु शृंगाररसविषे वात्सल्यरसशोभितहै दरकही शंखकीऐसी ग्रीवविषे तीनिरेखाहैं शंखकीरेखा गहिर गम्भीर सचिक्कणनिर्मल मंगलमय ग्रीवत्रयरेखसंयुक्त शोभितहै जनु छबिशोभा सुन्दरता की त्रिलीक है शृंगारकी मूर्तिविषे (१) अधरअरुणहैं जैसे कुंदुरूको पक्वफल अरु बन्धूकपुष्पहै अरु दशनश्वेत अरु कछुक अरुणाई लिहेहै जनु

**चौ० शरदमयंकबदनछबिसीवाचारुकपोलचिबुकदरग्रीवा १ अधरअरुणरदसुन्दरिनासा बिधुकरनिकरविनिन्दकहासा २ नवअम्बुज**

विधुके कोशविषे लघुवज्रनकी अवली बैठीहैं अरु जनु पक्वदाड़िमकेबीजशोभितहैं अरु नासिका जनु शुक श्याम अरु तल अरुण चोंचहै जनु प्रफुल्लित अरुणकंज तेहिकेदलनपर चन्द्रमाके अमृतको बिन्दुहलतहैं ताको शुक चुनतेहैं चपलते पावतनहीं हैं यह उपमानकी उपमा नासिका मोती अधरकी है पुनि हास्य जो प्रसन्नता मन्दमन्द मुसुकानि सो बिधुजो है तेहिकी किरणि जो अमृतमय तेहिकीहास्य निन्दाकरतु है अरु रसनाकी उपमा अभूत है जनु परस्पर दोवज्रनके भूषण तड़ितते पोहिकैशृंगारकरिकै अरुणकंजके कोशदलपर बैठिकै जीव बालकको लाड़करिकै खेलावतहै नित्यमधुर जबबोलते हैं तबकी उपमाहै मुखरसना दशननासिकाकीमोती अरुअधरकोवर्णनजानब तहांचौपाइनविषेरसनाअरुमोती कोप्रसिद्ध वर्णननहीं है परयहिचौपाईकी ध्वनिविषे रसनाअरुमोतीकी शोभासूचितहोती है चौपाई बिधुकरनिकरबिनिन्दकहासा हासकही हास्यप्रसन्नताप्रफुल्लित प्रकाश मुसुकानि हँसवशोभाकी सुन्दरतातहां मध्यकिशोरसुन्दर बालकके नासिकाबिषे मोती अतिशोभादेतुहैताते चौपाई के संकेत बिषे रसना अरु मोतीकी शोभा श्रीगोसाईं तुलसीदासनेकहा है किंतु यहिश्लोकको आशयकरिकै हमने रसनामोतीकेहेहैंश्लोक॥ काश्मीरीतिलकालकावृतमुखं साचीक्षणंसस्मितं तांबूलाधरपल्लवंरसमयंनासाग्रमुक्ताफलं १ किंतु रसना मोतीकेबिरसिककीरुचिहै (२) नवीनअम्बुज जो प्रथमबिकस्यो है तद्वत् नेत्रहैं कमलकी उन्नताचढ़ाउ उतार अरुणता निर्मलताकोमलतासुगन्धता शीतलतामकरन्दलालित सुन्दरता शोभादिकसर्वरसमय नेत्र हैं क्रमालंकारते अर्थजानब विशाल कृपाऽवलोकनि सुन्दर वात्सल्यरसमयहै चितवनि काम क्रोध लोभादिकनको नाशकरै है अरु दासरसमें कोई को पक्षनहीं है वाह्यान्तर सब देखते हैं चितवनि दयासिन्धुहै करुणाउदार अवलोकनि है चितवनि अमृतमय त्रयतापहर कटाक्ष शृङ्गार रस मय मुनीशनके चित्ताकर्षण करतुहै छटा जो है गढ़नि प्रसन्नता प्रकाश तेज माधुर्य्यमयहै कञ्ज खञ्ज झख अनङ्ग समस्तउपमा लघुहैं अम्बककी

छबि अति नीकी है अरु चितवनिकी लालित्य जीवको भावै है अरु इंद्रीमन बुद्धि चित्त करिकै अगोचर है अरु राजा रानीकीदृष्टि वाह्यान्तर परम दिव्य है तहां नेत्रकी छबिकी उपमा कविकीमतिको अगोचर है ( ३ ) भृकुटी कैसी हैं मनोजको धनुष तेहिकी छबिको हरतुहै अरु ललाट बिषे के-

## अम्बकछबिनीकी चितवनिललितभावतीजीकी ३ भृकुटिमनोजचापछबिहारी तिलकललाटपटलद्युतिकारी ४ कुण्डलमकर

सरिको तिलक है सो पटल जो दामिनी तेहिकी युगरेख तेहिकी शोभाको करतुहै किन्तु तेहिकी शोभाको मन्दकरतुहै तिलककी रेखा जनु मदनके बाणहैं उर्द्धरतेनके चित्तको आकर्षण करतु हैं ( ४ ) अरु कुण्डल मकराकृत हैं मकराकृत मकर जो मनि लघु तेहिकी आकृत मीनको मुख पुच्छ एकहैरह्यो है तेहिबिषे गोलकुण्डल जाको देशबाणी में झुमका कहते हैं अनेक परमदिब्य मणिनकीकणी छोटे मोतिनकी अवली कंचनबिषे युक्तहैं सो कुण्डलमें कोटिनसूर्य्य चन्द्रको प्रकाशहै अरु कोटिन दामिनीकी चञ्चलताहै श्लोकः १ सूर्य्यकोटिप्रतीकाशं चन्द्रकोटिप्रमोदकं विद्युत्कोटिचलच्छुभ्रं कुण्डलंयत्श्रुतिद्वये १ मुकुट शीशपर भ्राजतहै कोई मुनिके मतबिषे पञ्चखण्डको मुकुट वर्णनहै कोई मुनिके मतबिषे सप्तखण्ड वर्णन है षट्खण्ड चौफेर अरु एकमुकुटाकार मध्यबिषे है अरु षट्खण्डकेबीच २ लघु २ फणाकार झुकिरहे हैं अनेक तरहकी मणिनकी कणी परम दिब्य प्रकाशमय कंचनबिषे जटितहैं अति हरूहै कोटिन सूर्य्य चन्द्रकोपरमदिव्य प्रकाशकी छबिको हरतुहै अरु केश जो हैं अलकैं सो कुटिल जनु मधुपनकीअवली अरुण पंकजकेमध्य प्रफुल्लित तेहिकोश के द्वौकूलबिषे झूमिझूमि मकरन्द पीवते हैं पुनि जनु सर्पनकेछौना पूर्ण परमदिब्य चन्द्र तेहिके अमृतको पानकरते हैं ( ५ ) उरबिषे श्रीवत्सलांछनहै सो श्रीजानकीजी को दूसरस्वरूपहै काहेते कि श्रीरामचन्द्रजी सदा दानदेते हैं भुक्ति वैराग्य योग ज्ञान मुक्ति भक्ति इत्यादिकनकोदान जहांनित्यहै तातेश्रीजानकीजी श्रीवत्सरूप दक्षिणांगबिषे शोभितहैं अरु श्रीरामचन्द्रबिषे धर्म्मनीति नित्यहै श्रीजानकीजी वामांगमें शोभितहैं किन्तु समस्त श्रीदिव्यवक्षस्स्थलबिषेवसीहैं अरु ग्रीवाते पगलगि बनमाल शोभितहै तिन करिकै तुलसीदल श्वेत पीत फूल तहां भ्रमर जे हैं ते प्रसादी मकरन्दहेतु गुंजार शोभाकरते हैं पुनि ग्रीवाबिषे त्रिवलीशोभितहै जनु शृङ्गाररस की मूर्तिकी तीनिरेखाहैं अरु मञ्जुमुक्तनके कण्ठविषे कण्ठाहैं जनु शृङ्गाररसके आवरणविषे शान्तरस शोभितहै पुनि कण्ठाकेअर्द्ध कौस्तुभमणि त्रिकोण शोभितहै नित्य परमदिब्य त्रयतत्वबिशिष्ट त्रयकोणहै तहां शुद्धत्रैतत्व श्रीरामचन्द्र छातीमें लगायेरहते हैं ताते भक्तवत्सल कही कोटिन शशिके प्रकाशको करै हैं कौस्तुभतरपदिक है सो चौकोण चारिहू मुक्तिमिलिकै चतुष्टकोण शोभितहै अरु ढिगनबिषे मणिमोती जटितहैं मणिमो-

## मुकुटशिरभ्राजा कुटिलकेशजनुमधुपसमाजा ५ उरश्रीवत्सरुचिरबनमाला पदिकहारभूषणमणिजाला ६ केहरिकन्धरचारुजनेऊ बाहुबिभूषणसुन्दरतेऊ ७ करिकरसरिससुभगभुजदण्डाकटिनिषङ्गकरशरकोदण्डा ८ दो०॥ तड़ितबिनिन्दकपीतपट उदररेखबर

तीरूप शुद्धजीवतत्व चारिहूमुक्तिको प्राप्तिहैकै हृदांगसेवन करतेहैं पदिककेतर हार शोभितहै कइउरंग मणिनकीकणी अरु लघुमोतिनकी अवली जहांजहां जसयोग्यचाही तहांतहां तस स्वयंरचितहै शृङ्गाररस कारणमूर्त्तिबिषे तहां शृंगाररस सख्यदास्य वात्सल्यशान्त सोई पांचलरैं हैं अति मधुर ऐसोहार ग्रीवते अरु नाभिलग शोभितहै पुनि भूषण मणिनकोजालहै चतुरंगुल चौड़ाहै अनेक मोती मणि अति छोटी लरैं तिर्छ्र तिर्छ्र स्वयं पोहिरही हैं परम छबिरूप सुन्दरता शोभा लावण्य माधुर्य इत्यादिक एकहैकै श्रीरामकेउर अंगकरिकै जालस्वरूप अति शोभित है रसिकमुनीश्वरनके चित्तफँसायबेको जालहै हारबनमालके बीचबिषे शोभित है ( ६ ) केहरिकन्धइव द्वौ कन्धहैं केहरि कही पञ्चानन चारु कही सुन्दरयज्ञोपवीत शोभित जनु नीललघु मेघपरतड़ितकी तीनिरेखा थिरहैरही हैं अरुबिशाल भुजबिषे बाजूबलय कंकणामुद्रिका कञ्चनमणिनमय परमदिब्य अति सुन्दर शोभित हैं ( ७ ) करिकर करि कही हाथी पर कामहीको करिहोइ तेहिको जो करकहे शुण्ड ताहूते सरस कहे श्रेष्ठ किन्तु तेहिसम ऐसो चढ़ाव उतार भुजदण्डहैं अरु कटिबिषे पीतधोती पहिरे हैं ताकी अभूतोपमालंकार है जनु असितरंग गम्भीर नीर झरोखनि ताके मध्यबिषे बाल सूर्य्य ताकी छबिहरै है तहां कटिबिषे धोतीपर कटिसूत्र अरु

किंकिणीकीत्रयअवली सो जनु श्रीजानकीजी के नामकी ध्वनिहोती है जनु प्रातरवि कोघेरि मण्डलाकारकिहे सम्पूर्णबालखिल्या परमदिव्यरूप वेदकोसारभूतकारण प्रणवउच्चारण ध्वनिकरतेहैं तहां कटि पट तूणीर चित्रविचित्र कनक मणिमय अति शोभित है ताबिषेबाणभरे हैं सुवर्णकेपंख चित्रविचित्रडांड़ीहै अरु अति श्वेत अग्रभागविषे गांसी अति पैन अति सुन्दरहैं श्रीरामाज्ञानुकूल अनेकस्वरूप महाकालहूकेकालहैं अरु कहांलगिकहौं पातकिहुजीवनको परमपद दाता हैं करविषे बाण अरु धनुष निषंग अनूपम शोभितहै ( ८ ) दोहार्थ॥ जनु मधुर घननीलबिषे तड़ितकीनिन्दा करतसन्तेपीताम्बर शोभितहै पुनि अनूपमहै दोऊ आचरणबिषे परमदिव्य मणिन कीकणी अरु छोटेछोटे मोती लगेहैं कषाय धोती पीताम्बर धारणकिहेहैं पुनि पीताम्बर तप्तकांचनकी द्युतिहरै है जनु शृंगाररस बिषे वात्सल्यरस शोभित है उदरविषे तीनिरेखाहैं वर कही अतिसुन्दरहैं शृंगाररसकी मूर्त्तिविषे जनु तीनिलीकहैं कि इनके समपर शृंगारनहीं है दक्षिणावर्त्त नाभि

**तीनि नाभिमनोहरलेतजनुयमुनभँवरछबिछीनि ९ चौ०॥ पदराजीववरणिनहिंजाहीं मुनिमनमधुपबसैंजिनमाहीं १० बामभाग**

परम मनोहर शोभित है जनु यमुनाके भँवरकीछबि छीनिलेतुहै तहां भँवर यमुनाकी शोभा गम्भीरता अथाहताको जनावते हैं यहां शृंगाररस श्याम सुधा नदरूप तहां नाभी भँवररूप सो शृंगाररस नदकीशोभा गंभीरता अथाहताको जनावतुहै ( ९ ) पद कैसे हैं राजीव जो अरुण तद्वत् कोमल सुगन्ध मकरन्दमय पर किसूके वर्णिबेयोग्य नहीं हैं जेहिचरणारविन्द बिषे मुनीश्वरनकेमन लुब्ध मधुप ह्वैकै बसिरहे हैं नूपुर सुवर्णकेहैं मणिनकीकणी मुहड़ेनपर जटितहैं जनु मधुकर परागते भरिकै अरुणतापीततालिहे शोभितहैं मधुर ॐकारशब्द होतेहैं जनु मधुर मधुरकर गुंजार करते हैं पदकी अंगुलिनबिषे नखनकीअवली जनु कमल दलनपर मोतीजटितहैं पद पीठपर जावक शोभितहै पगतरविषे अंकुश कमलादिकअड़तालिस चिह्न अनूपमहैं यहां श्रीगोसाईजी ने श्रीरामचन्द्रजूके स्वरूपबिषे षट्रस वर्णनकिये हैं प्रथम शान्तरसकहेहैं पुनि शृंगाररस पुनि वीररस पुनि दास्यरस पुनि करुणारस पुनि वात्सल्यरसकहे हैं ( १० ) श्रीरामचन्द्रजूके बामभागबिषे अतिशय अनुकूल कही श्रीरामचन्द्रजूकी आज्ञा प्रसन्नता कृपाआनन्द स्वरूपही आदि शक्ति सर्व शक्तिनकी आदि श्रीसीताजी हैं शक्ति कवनि है श्रीशक्ति भूशक्ति लीलाशक्ति उत्कृष्टाक्रिया योगा उन्नती ज्ञाना पर्वी सत्या अनुग्रहा ईशाना कीर्त्ति विद्या इलाक्रांति:लम्बिनी चन्द्रिका क्रूराकांता भीषणी क्षांता नन्दिनी शोका शांता बिमला शुभदा शोभना पुण्या कला मालिनी महोदया आह्लादिनी इत्यादिक तीस अरु तीनि महामुख्य शक्ति हैं ते सब श्रीजानकीजीकी भृकुटी को विलास निरखि निरखि अनेकन ब्रह्माण्डके कार्य्य करती हैं अरु इनएकएकके हजार हजार उपशक्तियाँ हैं अब तेंतीस शक्तिनके गुण कहते हैं ( ३३ ) अनेक ब्रह्माण्डविषे जेती श्री हैं तिनकी प्रेरक श्रीशक्ति है १ ब्रह्माण्डको आधार भूशक्ति है २ जेती लीलाहै सो लीला शक्तिसे जानिये ३ जेतो उत्कर्ष ब्रह्माण्ड गोलकविषे है सो उत्कृष्टाशक्ति ते जानिये ४ क्रियाजेती है सो क्रियाशक्तिते जानिये ५ अष्टाङ्गयोग इत्यादिक जेते हैं ते योग शक्तिते हैं ६ महत्वृद्धि जेतीहै सो उन्नतीशक्तिते जानिये ७ वैराग्य ज्ञानविज्ञान जो है सो ज्ञानाशक्तिते जानिये ८ जय पराजय तेहिकीप्रेरक पर्वी शक्तिहै ९ सत्यपदार्थकीप्रेरक सत्याशक्ति है १० दया इत्यादिक जे उत्तमगुणहैं ताकी प्रेरक अनुग्रहाशक्तिहै ११ जेतेभेद जगत्बिषे अति दुस्तर हैं तेहिकी प्रेरक ईशानाशक्तिहै १२ जेतेसुयशहैं ताकी प्रेरक कीर्त्तिशक्ति है १३ सम्पूर्ण विद्याकीप्रेरक विद्याशक्तिहै १४ सद्वाणीप्रेरक इलाशक्तिहै १५ जितनीक्रान्ता ब्रह्माण्डबिषे हैं तेहिकीप्रेरक क्रान्ताशक्ति है १६ तीनिलोकचौदह भुवन अरु एकसैआठ बैकुण्ठ भूपरहैं सो सब श्रीरामहींके धामहैं सब अद्भुत हैं अरु भगवत्के परम दिव्य गुण अनन्तहैं अरु भगवान् जेतेरूप धारण करते हैं अंश कला बिभूति आवेश सो सब विलम्बिनी शक्ति करिकै करतेहैं १७ शीत अरु प्रकाश जहां जहांहै तिनकी प्रेरक चन्द्रिकाशक्तिहै १८ क्रूरा शक्ति आपु तौ अक्रूरहै पर जेती अक्रूरता ब्रह्माण्डमें है तितनेनकी प्रेरक क्रूराशक्तिहै १९ राग मोह शुभाशुभजेते हैं तिनकी प्रेरककान्ताशक्तिहै २० जेती भीति जगत्बिषे हैं तिनकी प्रेरक भीषणाशक्ति है २१ क्षमागुण जेते हैं तिनकी प्रेरक क्षमाशक्ति है २२ जेते आनन्दहैं तिनकी प्रेरक नन्दिनीशक्तिहै २३ शोकाशक्ति आपु तौ बिशोकहै पर ब्रह्माण्ड भरे में शोक प्रेरक करे है २४ सम्पूर्ण शान्ति तेहिकी प्रेरक शान्ता शक्ति है

२५ विमल विमलगुण जेते हैं तिनकी प्रेरक विमलाशक्ति है २६ सद्सद् गुण अरु शुभशुभधर्म्म कर्म्म जेते हैं तेहिकी प्रेरक शुभदाशक्तिहै २७ अरुजितनी शोभा छबिरूप सुन्दरता शृंगार इत्यादिक तिन सबनकी प्रेरक शोभनाशक्ति है २८ जेते पुण्यपदार्त्थ हैं तिन सबनकी प्रेरक पुण्य शक्तिहै २९ इन्द्रजाल सूर्य चन्द्रमा इत्यादिकनबिषे जेती कलाहैं सो कलावती शक्तिते जानिये ३० सर्ब ब्रह्माण्डबिषे ब्याप्तिहै सो मालिनीशक्तिजानिये ३१ ब्रह्माण्ड मण्डल बिषे त्रैगुण्यजनित जेती विभवहै अरु जीवनविषे प्राकृतिक सुभाव अरु भगवत्बिषे भक्ति जो है नवधा अरु चौरासी अंगइत्यादिक भक्तिकी प्रेरक श्रीसीतारामाज्ञानुकूल सोमहोदयाशक्तिते है अरु प्रेमापराभक्ति स्वतंत्राहै ३२ परम आह्लाद जो ब्रह्मानन्द परमानंदहै तिनकी प्रेरक आह्लादिनी शक्ति है ३३ एकएक शक्तिमें हजार हजार उपशक्तियां हैं जौनेजौने कालबिषे श्रीसीतारामकी आज्ञाहोती है तौने २ काल तैसोतैसो कार्य तेंतीस अरु उपशक्तियांजेती हैं ते सबकरती हैं सर्ब शक्ति श्रीजानकीजीकीही कला अंश विभूतिहै ताते श्रीगोसाईंजी ने श्रीसीताजूको आदिशक्ति कहा याहीते सबशक्तिनकी आदि अरु मूलप्रकृति वाही महामायाको कही सोई सम्पूर्ण जगत्का मूलकारणहै वही श्रीजानकीजीको महत्अंश है ताते अंशी अंश भावकरिकै श्रीजानकीजीको सब जगत्कीमूलकहाहै ॥ तत्रप्रमाणमाह श्रीमन्महारामायणे श्रीशिववाक्यंपार्वतीम्प्रति श्लोकः २१ संप्रवक्ष्यामियाशक्तीर्जानक्यन्शास्त्रिंशतः निकटेसंस्थितानित्यं सर्वाभरणभूषिताः १ श्रीर्भूलीलातथोत्कृष्टा क्रियायोगोत्रतीतथा ज्ञानापर्वीतथासत्या कथिताचाप्यनुग्रहा २ ईशानाचैव कीर्तिश्च विद्येलाक्रान्तिलम्बिनी चन्द्रिकापितथाक्रूरा कान्तवैभीषणीतथा ३ क्षान्ताचनन्दिनीशोका शान्ताचविमलातथा शुभदाशोभनापुण्या कलाचाप्यथमालिनी ४ महोदायाह्लादिनी शक्तयएकादशत्रिकाः भृकुटी दर्शयन्तीमा जानक्यानित्यमेवच ५ श्रीश्चश्रीःप्रेरकाज्ञेया भूरण्डाधारउच्यते लीलाबहुविधालीला उत्कृष्टोत्कर्षप्रेरका ६ क्रियासमक्रिया सम्यग्योगायोगांन्वतागतिः उन्नतीमहतीबृद्धिर्ज्ञानाबिज्ञानप्रेरका ७ करोतिप्रेरणं सभ्यक्पर्वीजयपराजयौ सत्यस्यप्रेरकासत्यानाग्रहायादयागुणा ८ येचसर्वेजगन्मध्ये भेदाअपिसुदुस्तराः ईशानाप्रेरकातेषां बर्त्ततेनात्रसंशयः ९ यशोऽधिकारिणीकीर्त्तिर्विद्याविद्याधिकारिणी सद्वाणीप्रेरकेलास्यात् क्रांताक्रांतिविवर्द्धिनी १० यानिधामानिसर्वानि श्रीरामस्याद्भुतानिच गुणाश्चा नंतरूपाणिप्रेरिकैषांबिलम्बनी ११ शीतप्रकाशयोस्सम्यक् प्रेरकाचन्द्रिकापिच क्रूरत्वंप्रेरकाक्रूरा मनोबाक्कायकर्मभिः १२ प्रेरकाबर्त्ततेकांता राग मोहोशुभाशुभौ प्रेरकाभीषणीतेषांयेचसर्वेभयादयः १३ बर्त्ततेप्रेरकाक्षांताक्षमागुणविशेषतः नन्दिनीचतथाशक्तिः सर्वानन्दप्रकाशिनी १४ शोकास्वयंविशोकाच लोकानांशोकप्रेरका शांतिप्रदायिनीशांता बिमलाबिमलान्गुणान् १५ शुभदासद्गुणंशोभां प्रेरयंतीचशोभना पुण्यापुण्यगुणोपेता कलाबहुकलावती १६ मालिनीब्यापकान्सर्बान् प्रेरयंतीमहोदयं विभवंप्रकृतिर्भक्तिर्भक्तिंबर्द्धयतेसदा १७ आह्लादिनीमहाह्लादं संबर्द्धयतिसर्वदा स्वेस्वेकार्य्येरतास्सर्वा शशक्तयश्चैवतास्सदा १८ यस्मिन्कालेभवेद्यासांसीतारामानुशासनं तस्मिन्कालेप्रकुर्वीत सर्वकार्यमशेषतः १९ एकैकानां सहस्राणि वर्त्ततेचोपशक्तयः ब्यापकास्सर्वलोकेषु सर्वतोगगनंयथा २० जानक्यंशादिसंभूताऽनेक ब्रह्माण्डकारणं सामूलप्रकृतिर्ज्ञेया महामाया स्वरूपिणी २१ आदिशक्ति छबिनिधि श्रीरामचन्द्रके बामांग बिषे श्रीसीताजू अति अनुकूल शोभित हैं अति अनुकूल कही श्रीरामानन्दस्वरूपिणी श्रीरामानन्दकारिणी सब प्रकारते छबिकीनिधि जैसे समुद्रजल निधि है तैसे श्रीसीताजू छविनिधि हैं छबिकही शोभाकी क्रान्ति जो है अतिप्रकाश छटामय शोभा काकोकही नखशिखलौ सर्बांग यथायोग्य केश मस्तकभरि अतिसूक्ष्म सघनश्याम सँवारेउ अरु भालविशाल भृकुटी बंक कामधेनुकी छबिहरैं लोचन विशाल अरुण श्वेत श्याम कमलाकरयुत तेहिकी छबिहरै क्रमते मृगको शावकबिछुरो तेहिके लोचनकी फिरनि दीर्घता मीनकी केवल चपलता खंजनकोकछु आकार अरु कटाक्षकीफिरनि सुन्दर नासिका शुककीछबिहरै मुखगोलपूर्ण चन्द्रकी छबिहरै अधर अरुण विद्रुम अरु बिम्बकी छबिहरै पुनि दशनदाड़िम दामिनिकीद्युति हरे सुन्दरि रसना अरुण चिबुक गोल मणिइव कपोल आदर्शवत् श्रवण

शोभितअनुकूला आदिशक्तिछबिनिधिजगमूला ११ उपजहिंजासुअंशगुणखानी अगणितलक्ष्मिउमाब्रह्मानी १२ भृकुटिबिलास

सम सुन्दर ग्रीवत्रैरेखा संयुक्त उर आयतभुज विशाल चढ़ाय उतार करतल अरुण अंगुली यथायोग्य नख जनुनवीन कंज दलन पर चन्द्रमाके अमृत के बिन्दु लहलहात हैं कटि सूक्ष्म है पट यथायोग्य शोभित हैं जंघयथार्थ जैसो चाहिये चरण लालकमलतल अंगुलिन के नखजनु कमलदलनपर मोतीबैठेहैं सर्वांगशुभगरूपकही सम्पूर्णतनगौर श्याम इत्यादिक रंगगढ़नि सम्पूर्ण लैकै ताको शोभाकही अरु अंग अंग प्रतिकनकमणिनके अलंकार इत्यादिक षोड़शौ शृंगारकी क्रान्ति ताको सुखमाकही अरु सम्पूर्ण तनकी सचिक्कणता निर्मलता स्वच्छता ताको सुन्दरताकही अरु तनभूषणबसन इत्यादिकनबिषे जो लालित्यहै ताकोपरमाकही परसबएकही हैं इनसबको शोभाकहीशोभाकीछटाजोहै ताको द्युतिकही अरु शोभाकीक्रान्ति ताको छबिकही सो सीताजू परमदिव्यछबिकीनिधि हैं जाकीछबिके एकअंशकी छटाते अनेकब्रह्माण्ड बिषे छबि है श्लोकार्द्ध ॥ सुखमापरमाशोभा शोभाकान्तिर्द्युतिश्छबिः इत्यमरः ( ११ ) जासुकही जिनश्रीसीताजूके अंशते अगणित लक्ष्मी उमा ब्रह्माणी उत्पन्नहोती हैं ये तीनिहूं शक्तियां तीनहूगुणकी खानिहैं पुनि श्रीजानकीजूके चरणारविन्दोंकी बन्दनाकरते हैं हरिजो विष्णुभगवान्हैं अरु हर जोमहादेवहैं अरु सहितशक्तिनब्रह्मा अरुयोगीश जो सनकादि नारद शुक व्यास अगस्त्य बाल्मीकि इत्यादिक जो मुनीश्वर योगेश्वर परमहंस जे ब्रह्मानन्द परमानन्द रसकेरसिक तेसब श्रीजानकीजूके युगुलचरणको ध्यानकरतेहैं अहर्निशि परमानन्यह्वैके चरणपंकजबिषे मनमधुपकिहेहैं तहां प्रमाणहै॥ बिधात्रीश्रीगौरीणांसेवकर्त्री श्रुतिः॥ यहश्रुति पूर्वकहीहै चौपाईबिषे॥ सीयराममय सबजगजानी॥ पुनः श्री हनुमत्संहितायां श्लोकएकः जयति जनकजायाः पादपद्मंमनोज्ञं हरिहरविधिवंद्यं साधकानां सुसेव्यं॥नखरनिकरकांतंमुद्रिकानूपुराद्यं रहरहहृदिमध्येयोगयोगीशभाव्यं ( १२ ) जिनकी भृकुटीके विलाशअंशते मूलप्रकतिहै ऐसीजो श्रीसीताजीहैं सो श्रीरामचन्द्रजूके बामांगबिषे शोभितहैं श्रीमहादेवजी कहतेहैं हे पार्वतीजी श्रीसीताजी सोई हैं जिनको श्रीरामचन्द्र बनबिषे अपनी लीलापूर्वक ढूंढ़तेरहैं तहां तुम देखिकै महामोहको प्राप्तभईरहौ जिनकी भृकुटीके बि-

**जासुजगहोई रामरामदिशिसीतासोई १३ छबिसमुद्रहरिरूपबिलोकीयकटकरहेनयनपटरोकी १४ चितवहिंसादररूपअनूपा तृप्तिनमानहिंमनुशतरूपा १५ हर्षबिवशतनदशाभुलानी परेदण्डइवगहिपदपानी १६ शिरपरसेउप्रभुनिजकरकञ्जा तुरतउठायो**

लासते अनेक ब्रह्माण्डहोतेहैं सोईसीताहैं ( १३ ) छबिसमुद्र छबिकेसमुद्रजैसे सबजलको कारण समुद्रहै तैसे अनेकब्रह्माण्ड विषे जेतीछबिहै तिन सबको कारण श्रीसीतारामरूपहै ऐसीछबिदेखिकै राजारानी मग्नहोतेभये नेत्रनकी पलकैं थकिरहीं जैसे पूर्णचन्द्रको देखिकै चकोरकी दशाहोतीहै तैसेहीभई इहांएक भावार्थधुनिहै तहांमहाराज मनुने एकपरब्रह्मकी प्रार्थनाकीनहै तहांपरब्रह्म श्रीरामचन्द्रजी श्रीजानकी संयुक्त प्रत्यक्ष भये काहेते कि परमेश्वरकासर्वभाव जीवनाहींजानिसकैहै तहां परमेश्वरबिषे जो एकहूभावनाआवै ती परमेश्वर जो सर्वातर्यामी सर्वज्ञहै वह अपनेजनको सर्वभावसे सुखदेतेहैं जातेराजाके पुत्रकीभावनाहै ताते राजाके हेतु आपुआये अरु रानीकेहेतु श्रीजानकीजी प्राप्तिभईहैं काहेते बिना पुत्रपतोहू दम्पतिको सम्पूर्णसुखनहींहोतहै ताते युगलदर्शनदीनहै जाते सम्पूर्णपरमानन्दहोइ युगुलदर्शनबिषे यहधुनिहै अरु श्रीसीताराम कभी भिन्ननहींहोते ( १४ ) महाराजमनु अरु महारानीशतरूपा श्रीसीतारामजीका अनूपरूपदेखतेहैं पर तृप्तनहींहोते अनूपकही जिनकी उपमाको कहूं कोईनहींहै श्रीसीतारामसम श्रीसीतारामही हैं यहअनन्वयालंकारहै ( १५ ) अतिहर्षके बिबशह्वैकै तनकीदशा भूलिगई है प्रेमाकुलह्वैकै राजारानी दण्डइव श्रीसीतारामजीके पायनबिषे हाथधरिकै गिरतभये ( १६ ) श्रीरामचन्द्र निजकर राजारानीकेशीशपर अतिप्रसन्नताते धरतभये श्रीरामचन्द्रजीकरुणाके सागरहैं तुरन्त राजारानीको उठावतेभये ( १७ ) दोहार्थ कृपाके निधानकहीस्थान ऐसे श्रीरामचन्द्रजी राजारानीको उठाइकै पुनि बोलतेभये हे राजन् जो तुम्हारे अभिलाप होइ सो बर मांगहु कौनिहु बातकी चिन्ता मोको महादानी जानिकै नहीं मानों मैं सब देबे योग्यहौं तहां एक दानी अरु एक महादानी दानी कही जो कोई अर्थ धर्म काममांगै मो देइ तहां ऐसे दानी ब्रह्मादिक देवता भी हैं अरु चारिहू फलके दानी श्रीविष्णुभगवान्भी हैं अरु महादानी चारिहू फल अरु योग वैराग्य ज्ञान विज्ञान नवधा प्रेमापरा भक्ति अरु आपु समेत सब एकही बारदेइ अरु जो उसके मांगिबेकी गम्यनहीं है सो भी देइ अरु जो कदाचित् वह कछु बिकारलिहे मांगै तो बिकार उ-

**करुणापुंजा १७ दोहा॥ बोलेकृपानिधानपुनि अतिप्रसन्नमोहिंजानि मांगहुबरजोभावमन महादानिअनुमानि १८ चौ० ॥ सुनि प्रभुवचनजोरियुगपाणी धरिधीरजबोलेमृदुबाणी १९ नाथदेखिपदकमलतुम्हारे अबपूजेसबकामहमारे २० एकलालसाबड़ि मनमाहीं सुगमअगमकहिजातसोनाहीं २१ तुमहिंदेतअतिसुगमगोसाईं अगमलागमोहिंनिजकृपणाई २२ यथादरिद्रबिबुध**

लटिकै दिब्यफलदेइ ताको महादानीकही ऐसे श्रीरामचन्द्रही हैं ( १८ ) हे पार्वती श्रीरामचन्द्रजूके अति आनन्दमय बचन सुनिकै राजाद्यौकरजोरिकै अतिशय धीरजधरिकै अति मृदुलबाणी बोलतेभये बड़ेनकेआगे अति सँभारिकै बोलना चाहिये यह मर्याद है ( १९ ) राजा बोलतेभये हे नाथ तुम्हारे पदकमल देखिकै अब हमारी सब कामना पूर्णभई ( २० ) हे करुणा निधान एक लालसा मोरे मनविषे बड़ी ह्वैरहीहै पर अति सुगम है अरु अति अगम भी है ( २१ ) हे गुसाईं तुमको देतसंते अति सुगमहै अरु मोको अपनी कृपणाई समुझिकै अगमलगै है काहेते जो कोई जैसो दानदेइ जैसो सुकृतकरै तैसोही उत्तम फलको प्राप्तिहोय अरु मैंने न तौ कछु दानदियो अरु न तौ कछु सुकृतकियो मैं सब प्रकारते दीनहौं पुनि कृपण कही कार्पण्य शरणागतको तहां भगवत् प्राप्तिहेतु जेते साधन वेदशास्त्र पुराण इत्यादिक कहते हैं कर्म योगज्ञान भक्ति इत्यादिक मनवचन कर्म्मसे निरन्तर सब करै पर यह मनमें स्वप्नेहु नहींआवै कि मैं कछु करतहौं यहकहै कि हेप्रभु मोंसोंकछु नहींबनै मैं सबते नीचहौं ताते राजा ने आपुको कृपानिधि कहा अरु प्रथम गोसाईंने कहा है गोइन्द्री गोपृथ्वी अरु यह ब्रह्माण्ड मण्डलको कामधेनु गऊस्वरूप आगमसार ग्रन्थबिषे बिस्तार संयुक्त कहेहैं तहां मैं कछुक कहतहौं सम्पूर्ण ब्रह्माण्डकोश नभ जो है सो ताको उदर है पवन श्वास है अग्नि पित्त है जल श्रोणित है पृथ्वीमांस है बनस्पति रोमहैं पर्बत अस्थि हैं सातौं समुद्रकुक्षिहै सम्पूर्ण नदीनस हैं सातहू पाताल जाकी अन्त्रावली हैं अरु सातहू ऊर्द्धलोक सातहू चक्र हैं मूलाधार स्वाधिष्ठान आधार अनाहत बिशुद्ध आज्ञाब्रह्म चक्र ७ सुमेरु मेरुदण्ड है चारिहूदिशा चारिहू पग हैं चारिहू युगस्तन हैं चारिहू फलदुग्ध है जीवबत्स है धर्म्मराजपुरी गुदहै यमदन्त हैं ब्रह्मायोनि है सुरवीथी पूंछहै मेघपुच्छके बारहैं इन्द्रलोक गलकंवल है शशिसूर्यनेत्र हैं रातिदिन पलक हैं नक्षत्र अलंकार है शुभाशुभकर्म्म आहार है पापपुण्य शृंगहैं उदयास्ताचल कान हैं रुद्रजाको क्रोध है सो गऊ ऊर्द्धमुख है महाविष्णुको लोक मस्तक है महाशम्भुको लोकत्रिकुटी है बासुदेवको लोक नासिका है चारिहूवेद जाकीहुंकार हैं गोलो

**तरुपाई बहुसम्पतिमांगतसकुचाई २३ तासुप्रभावनजानतसोई तथाहृदयममसंशयहोई २४ सोतुमजानहुंअन्तरयामी पुरवहुमोर**

कोर्द्धमुख है अपरदिशा दिग्पाल अपर अंगहैं अन्तर्यामी ताकोजीव है ऐसो ब्रह्माण्डरूप गोतेहिके सांई श्रीरामचन्द्रहैं ताते गोसांई कहा सब देवे योग्य हैं ( २२ ) हेनाथ मैं दीनहौं आपुसे बरमांगतसंते मोको संदेहहोतहै कैसे जैसे कोई दरिद्री कल्पतरुको पाइकै बहुत सम्पति मांगत संते अति संकोच पावत है तथापि देवतरु सर्बदेवे योग्य है पर वह अपनी दरिद्रता अरु बहुत सम्पति समुझिकै मांगत भयपावतहै यह समुझिकै कि मैं इतनेको पात्रनहींहौं पाऊं किधौं न पाऊं ( २३ ) हेनाथ वह दीनजो है सो कल्पतरुके प्रभावको नहीं जानै है ताते बहुसम्पति मांगतसंते संकोच पावतहै तैसेही हे कृपालु मोरे हृदयबिषे संशयहोतीहै ( २४ ) हे करुणा निधान आपतौ परात्पर ब्रह्ममूर्त्तिहौ आपुही सर्वजीवनके नियन्ता निर्गुण सर्ब ब्यापक परिपूर्ण सर्बान्तर्यामीहौ ऐसे तुमपर स्वरूपपरमात्मा प्रभुका नहीं जानतहौ सर्ब जानतहौ ताते हे भक्तबत्सल भक्तबश कृपालु जो मेरे मनको मनोर्थहै सो आपु पूर्णकरहु हेस्वामी यहांस्वामी क्यों कहा जाते श्रीरामचन्द्रजी परब्रह्मसच्चिदानन्द घनमूर्त्ति अखण्ड एकरस अरु श्रीसीताजू परमानन्द एकरस अखण्डमूर्त्ति परात्परतर ऐसोयुगुलस्वरूप कोटिन कामरतिकी शोभाको हरे हैं जिनको देखिकै शृंगारहूकी मूर्त्ति मोहिजाय सो अनूप युगुल स्वरूप राजामनु देखते भये प्रत्यक्ष लोचन गोचर तहां देखिकै बुद्धि बिषे यह जानिकै निश्चय भई कि यही युगुल स्वरूप श्रीमहादेव अरु कागभुशुण्डि के हृदय बिषे अखण्ड बसत है अरु पुत्रन सहित ब्रह्मा अरु शुकादिक

परमहन्स लोमशादिक योगेश्वर अरु महान् महान् मुनीश्वर अरु चारिहू वेद सिद्धांतबिषे इनहीं को ध्यावते हैं यह साक्षात् बुद्धि बिषे परमानन्दको प्राप्ति होइकै अरु जानिकै अखण्ड निश्चयभई ताते स्वामी कहा तहांस्वामीपद जो है सो सब महत् शब्दनते श्रेष्ठ है ( २५ ) श्रीरामचन्द्रजी बोले हे राजन सकुचि विहाइकै जो मनमानै सो मांगु यह धुनिहै कि हेराजनमोहींको मांगु मोरे तोको कछु अदेय नहीं है मैं सब देवेयोग्यहौं ( २६ ) दोहार्थ ॥ तब सत्यसंकल्प प्रभुको जानिकै राजा सत्यबचन बाले हे दानि शिरोमणि तहां जेते बरदायक ब्रह्माविष्णु शिवादिकहैं तिनमें तुम

मनोरथस्वामी २५ सकुचबिहाइमांगुनृपमोहीं मोरेनहिंअदेयकछुतोहीं २६ दो०॥ दानिशिरोमणिकृपानिधि नाथकहौंसतिभाव चाहौंतुमहिंसमानसुत प्रभुसनकवनदुराव २७ चौ०॥ देखिप्रीतिसुनिवचनअमोले एवमस्तुकरुणानिधिबोले २८ आपुसरिसकहं खोजौंजाई नृपतबनयहोबमैंआई २९ शतरूपहिबिलोकिकरजोरे देविमांगुवरजोरुचितोरे ३० जोवरनाथचतुरनृपमांगा सो

शिरोमणिकही सर्वोपरि दानी हौ आपुकृपाके समुद्र हौ ताते आपुतेकवन दुराउकरौं हे त्रैलोक्यनाथ आपुते सतिभाव कहतहौं तुम्हारी समान पुत्रचाहत हौं देखिये तौ ज्ञानमुक्ति भक्ति एकहू नहींमांग्यो है अरुबुद्धि इहांताई है कि चारिभुज चारिमुख पंचमुख तिनतें बरदान नहीं लीन अरु द्विभुज परब्रह्म बिषे बिशेष प्रतीति करिकै पुत्रही बरमांग्यौ यह बात्सल्यरस है यामें सब है अरु महाराजा हैं ताते ब्रह्माण्डभरे को पुत्रबरमांगिकै कल्याण कीनहै ( २७ ) तहां राजाकै अतिप्रीति आपु बिषे देखिकै काहेते सर्वत्यागिकै बात्सल्यरस में लीनहै अरु अमोल बचन सुनिकै अमोलकही निष्काम केवल परमार्थमय बचन सुनिकैकरुणानिधि एवमस्तु बोले इहां करुणारसमय वचन बोले काहेते राजा के वचनविषे सर्वजीवनकी दीनता सूचितभई है ( २८ ) प्रभु कहते हैं किहे राजन् आपुसरिस कहां खोजैजाउँ इहां अनन्वयालंकारहै श्रीरामसमँ श्रीरामही हैं हे नृप तुम्हारतनय हमहींहोब आइकै ( २९ ) राजामनुको बरदैकै रानीशतरूपाजी को करजोरे प्रभु देखतेभये किन्तु करजोरे रानी श्रीरामचन्द्र अरु श्रीजानकीजीको अतिआनन्दते बिलोकती हैं प्रभुबोलहे देवि जो तुम्हारे रुचिहोइ सो बर तुमहूं मांगहु ( ३० ) तब रानीजीअति ऐश्वर्य वात्सल्यरस बोरी वाणी बोलती हैं हे अनेकब्रह्माण्ड के नाथजो चतुर राजाने बरमांग्यो सो मोहूको अतिप्रिय लाग्यो है ( ३१ ) हेप्रभु परन्तु यहिअवसर बर मांगतसन्ते वड़ी ढिठाई होती है काहेते सिद्धांतविषे तौ जो राजाको आपु बरदीन सोईहै तथापि आपुकीआज्ञा परमानन्दमयहै किसूकै टारिबेयोग्य नहीं है अरु तुम भक्तवत्सलहौ भक्तहितवाणी आपुको बहुतप्रिय लगतीहै तहां बड़ेनकै यहरीतिहीहै अरु आपु तौ सबतेबड़ेहौ ब्रह्मादिक जे ईश्वर कोटी में हैं तिनहूंके तुम उत्पन्नकर्त्तापरमेश्वरहौ सबजगत् के स्वामी तुमहींहौ अरु ब्रह्म सर्वान्तर्यामीहौ अरु

कृपालुमोहिंअतिप्रियलागा ३१ प्रभुपरन्तुसुठिहोतिढिठाई यदपिभक्तहिततुम्हहिंसुहाई ३२ तुमब्रह्मादिजनकजगस्वामी ब्रह्मसकलउरअन्तरजामी ३३ अससमुझतमनसंशयहोई कहाजोप्रभुप्रमाणपुनिसोई ३४ जेनिजभक्तनाथतवअहहीं जोसुखपावहिं जोगतिलहहीं ३५ दो०॥ सोइ सुख सोइगतिसोइभगति सोइनिजचरणसनेहु सोइविवेकसोइरहरिनप्रभु हमहिंकृपाकरिदेहु ३६ चौ०॥ सुनिमृदुगूढ़भक्तियुतरचना कृपासिन्धुबोलेमृदुबचना ३७ जोकछुरुचितुम्हरेमनमाहीं मैं सोदीनसबसंशय नाहीं ३८

सर्व कारण कार्य रूप तुम्हारीही बिभूति है ( ३२ ) तहां हे कृपासिन्धु उदार तुम अनेकब्रह्मांडके स्वामी सर्वान्तर्यामी ब्रह्मादिकनके जनकहौ अस तुमको समुझितहै तब महासंशय होतहै कि ऐसे जे प्रभु परात्परतर परब्रह्म जीव ईश्वरके मातापिता अरु तिनकेमातापिता हमहोवेकी चाहना करते हैं यहि ढिठाईमें सन्देह अतिहोतहै तहां आपु

सबकेहृदयको भावअरु प्रीतिजानतहौ अरु कृपाकरुणा दया इत्यादिककेसमुद्रहौ ताते जो आपनेकहा कि तूहूंबरमांगु सोमैंप्रमाणकीन सबकेप्रभुकोआपनप्रभुजानिकै बरमांगतिहौं ( ३३ ) महारानीशतरूपाजी बोलतीभई हेनाथ जे तुम्हारे निजभक्तहैं जे केवलतुम्हारीशरणहैं मृत्युलोक स्वर्गलोक मोक्षलोक तीनिहूंकी प्राप्तिकेउपायसेशून्य केवलप्रपन्न ऐसेजे तुम्हारे निजभक्तहैंतेजौने सुख अरु जौनीगतिकोप्राप्तहैं ( ३४ ) हेनाथतुम्हारेनिजभक्तजेहिसुखकोजेहिगतिको प्राप्तिहोतेहैं ( ३५ ) दोहार्थ॥ तुम्हारेनिजभक्तनकोजोसुख जोगति जो भक्ति जो तुम्हारे चरणारविन्दबिषे सहजस्नेहहोइ सोईविवेक सोईरहनिकहीरहस्य जो विशेषसन्तनके जो सहजानन्दलक्षण जो पाछे दुइचारि जगह कहिआये हैं सोई परम दिव्य गुण जो तुम्हारे सन्तन के सोहमहि कृपा करिकै देहु ( ३६ ) रानी के वचन मृदुगूढ़ भक्तिकी रचना जा बाणीबिषे अनेक दिव्यरस अनेक भावभक्ति अनेक सुखकी रचना अरुभूत भविष्य वर्त्तमान तीनिहूंकालबिषे निर्दोष सो बाणीसुनिकै कृपासिंधु बिहँसिकै मृदुवचनबोले यहां कृपासिन्धुकहा तहां कृपाके समुद्रकी बिषेराजा रानी सदारहैंगे ( ३७ ) कृपासिन्धु बोले जो कछु तुम्हारेमनमें रुचि होइ सो हम तुमको सबदीन यहिमें संशयनहींहै ( ३८ ) प्रथमहिं माता कहा यह कृपाकीन हे मातु अलौकिक बिवेक तोरेहृदयसे मेरेअनुग्रहते नहीं टरैगो ( ३९ ) पुनिराजामनु चरणारबिन्दबन्दिकै बोलतेभये हे प्रभुमोरि अवरिएक बिनतीहै ( ४० ) तुम्हारे चरणकमल अरु स्वरूप बिषे असि मोरिरतिहोइ जैसे पुत्रविषय अति स्नेहते होतिहै बरु मोको बड़ोमूढ़ संसारकहै कि राजाके गृहबिषे परमात्मा अवतीर्णभये हैं राजाने के-

**मातुविवेकअलौकिकतोरे कवहुंनमिटिहिअनुग्रहमोरे ३९ बन्दिचरणमनुकह्योबहोरी अवरिएकविनतीप्रभुमोरी ४० सुत विषयकतवपदरतिहोऊ म्वहिंबरुमूढ़कहैकिनकोऊ ४१ मणिबिनुफणिजिमिजलबिनमीना ममजीवनतिमितुम्हैंअधीना ४२ असबरमांगिचरणगहिरहेऊ एवमस्तुकरुणानिधिकहेऊ ४३ अबतुममम‌अनुशासनमानी बसहुजायसुरपतिरजधानी ४४**

वल पुत्रहीभावमान्योहै यहनिन्दा मोकोअंगीकारहै यहिबातमें यहआशय है कि परमेश्वर बिषे कोई यत्नतेलगै अरु तेहिलागि में लोकनिन्दित देखिपरै तहां लोकबिड़ंबना त्यागिकै रामबिषेलगै यहवेदकहतेहैं ( ४१ ) हेप्रभुतुमरेबिषे मोरअस मनलगै जैसे मीनजल अरु सर्पमणिके बिछुरत संते प्राणको त्यागिदेइहैं तैसेतुम्हारेबिछुरत हमारेप्राणछूटिजाहिं यहबरदेहु तहां जोकहोकि राजाने यहबर तौ मांग्योहै अरुजब विश्वामित्र श्री रघुनाथजीको अपनीयज्ञ अरुजनकपुर हेतु लैगयेहैं तबबिक्षेप भयोहै पुनि तबतौ शरीर नहीं छूटो अरुजबदक्षिण आरण्यको श्रीरामने गमन कीन तेहि बिक्षेपबिषे शरीरछोड़िदियो यहसन्देहहै उत्तर तहां विश्वामित्रको विक्षेप सुखपूर्वकहै अरुदूसरा बिक्षेप दुःखपूर्वकहै ( ४२ ) तहां राजा ऐसो बरमांगिकै श्रीरामचन्द्रजीके चरणगहिरहेहैं कियहबर विशेष पाऊंतबमुसुकायकै एवमस्तु करुणानिधिने कहेउ ( ४३ ) तबश्रीरामचन्द्र बोले हेराजन् अबतुमहमारी आज्ञामानिकै इन्द्रपुरमें बासकरहुजाय ( ४४ ) सोरठार्थ। हेताततेहि इन्द्रलोकबिषे कछुककाल भोगबिलासकरिकै पुनि तुमअवधके राजाहोहुगे तबहम तुम्हारे पुत्र होहिंगे तहां ब्रह्माके एकदिनको एककल्पकही सोहजारचौकरीको एकदिन अरुहजार चौकरीकीराति सो एककल्प तहां एककल्पबिषे चौदहमन्वन्तरहोतेहैं मन्वन्तरप्रति इन्द्रहोतेहैं तहां राजामनुने तपकियोहै प्रथमकल्प प्रथममन्वन्तर प्रथमयुग के चौथेचरणबिषे पुनि जबइन्द्रपुरमें रहेजाय आगेनहीं जानाजाय किधौं कवनेकल्प अरु मन्वन्तरबिषे कवने त्रेताके चौथेचरणविषे श्रीअवध केराजा श्री दशरथमहाराजभये हैं तहां श्रीरामचन्द्रजी ने राजा को इन्द्रपुरी की आज्ञाक्यों दियो है तुरन्त अवध की आज्ञा देते यहां वेदकी मर्य्याद राखीहै तपकोफल इन्द्रपुरबिषे बहुतकाल भोगकरिलेहिं तब हम पुत्रहोहिंगे तबैते राजासे इन्द्रकी मित्रताहै तहां जोतपसंयुक्त भजनकरतेहैं सो स्वर्गभोग करिकै श्रीरामचन्द्रके समीप प्राप्तहोतेहैं अरु जोकेवल अनन्यभजन करतेहैं तेस्वर्गको नहींजाते परमपदहीको जातेहैं यहतौ हमने

**सो० तहंकरिभोगबिशाल तातगयेकछुकालपुनि होइहहुअवधभुवालतबहमहोबतुम्हारसुत ४५ इच्छामयनरदेहसंवारे होइहौं प्रकटनिकेततुम्हारे ४६ अंशनसहितदेहधरिताता क़रिहौंचरितभक्तसुखदाता ४७ जेहिसुनिसादरनरबड़भागी भवतरिहैंममता**

सुकृतीजीवनको कहाहै अरु राजाश्रीदशरथमहाराजजी श्रीरामचन्द्रजी के नित्यनिकटहैं श्रीरामचन्द्रजी नित्य इनहींके अवतीर्णहैं ( ४५ ) हे राजन् अपनीइच्छासे नरदेहसँवारिकही रचिकै तुम्हारेगृहबिषे प्रकटहोइ हौंनरदेहसंवारी यहकहा नररूपतौ अबै हहिंद्विभुज धनुषबाणलिहे किरीट कुण्डलइत्यादिक अलंकार किहेहैं तहां अब नरदेहसंवारिबेकोकाहे अरु यहीस्वरूप षड्विकाररहित अखंड एकरस है ॥ अध्यात्मेपरशुराम वाक्यं श्लोकार्द्ध ॥ विकाररहितंराम त्वद्रूपंचिन्मयंसदा पुनःसत्यात्सत्यपरंसत्यं चैतन्याच्चैतन्यपरं चैतन्यं आनन्दानन्दपरंआनन्दं नित्यान्नित्यपरंनित्यंद्विभुजंधनुर्द्धरं इति श्रुतेः तहां नरदेहसँवारबकही नरदेहबिषे अवस्थाहोतजातीहैं तैसे राजन् तुम्हारे निकेतबिषे प्रकट होइकै बालपौगंड कौमारअवस्थाकी लीला मैंभीकरौंगो पुनि नित्यकिशोरलीला अपनी इच्छासे मैं जोचाहौंगो सोकरौंगो ( ४६ ) हेतात अंशन सहित देह धरिकै तुम्हारे गृहबिषे अवतीर्ण होउंगो भक्तनको सुखदाता चरितकरौंगो जोकही कि भरत लक्ष्मण शत्रुहन ये श्रीरामचन्द्रके अंशहैं देहधरेउहै तौ ये तीनिहूं स्वरूप नित्यविग्रह अखण्ड एकरस श्रीरामचन्द्रके निकटरहते हैं सो पाछे यहि चौपाईके अर्थमेंकहे हैं चौपाई शेष सहस्त्र शीश जगकारण तहां देहधरब कैसे सम्भवै तहां एक महत्अंशहै अरु एक विभूतिअंश है जैसे सरयू गंगाकी प्रवाह धाराते कोई दुइचारि श्रोतफटिकै तेहिते पृथक् चलीं पर धाराबिषे श्रोतलग्यो है सो महत्अंशकही वह सरयूगंगाको स्वरूपहीहै अरु जो धाराते कोई किसी पात्रविषे जलभरिलैगयो ताको बिभूतिअंश कही तैसे श्रीरामचन्द्र परब्रह्म तिनको महत्अंश जे ईश्वरकोटीहैं अरु भरत शत्रुहन इत्यादिक जो षोड़शौपार्षद कहेहैं अरु हनुमानादिक ये सब महत्अंश श्रीरामस्वरूपही हैं अरु देव दानव मनुष्यादिक चराचरजीव बिभूतिअंशहैं ताते प्रभुनेकहा कि अंशन सहित देहधरि तहां यह अर्त्थ है कि ये जो मेरे महत्अंश हैं मेरी देहधरे हैं कि भरत सौमित्रशत्रुहन हनुमदादि सर्ब पार्ष्यद क्षत्र चमर ब्यजन सिंहासन सम्पूर्ण त्रिपाद परमदिब्य बिभूति ये सब मेरिही देहधरे हैं तिनसंयुक्त अवर्तीर्ण होउंगो इहां उहां परिपूर्ण करिदेउंगो ( ४७ ) जो लीला मैं करिहौं सो वड़-

**मदत्यागी ४८ आदिशक्तिजेहिजगउपजाया सोअवतरिहिमोरियहमाया ४९ पुरउबमैंअभिलाषतुम्हारा सत्यसत्यप्रणसत्यहमारा ५० पुनिपुनिअसकहिकृपानिधानाअन्तरध्यानभयेभगवाना ५१ दम्पतिउरधरिभक्तिकृपाला तेहिआश्रमहिबसेकछुकाला ५२**

भागी नर गाइकै सुनिकै समुझिकै ममता मद आपुही त्यागिकै भवसागरको तरिजाहिंगे ( ४८ ) यहि चौपाईको अर्थ सोई जानब जो पाछे यहि चौपाईको अर्थभयो है चौपाई. आदिशक्तिछबिनिधिजगमूला यहां खण्डान्वयते अर्थहै उपजाया जेहि आद्याशक्तिको जेहिते जगत्की उत्पत्ति है जिसने आद्याशक्तिको उपजायाहै वह मोरिमायाहै मायाकही दयामेरी दयाकीमूर्त्ति श्रीसीताजू हैं तिनकी कृपाबिना मैं जीवनको अंगीकारनहींकरौंहौं यह सत्य जानब सोई अवतीर्ण होहिगी अथवा श्रीजानकीजीको नहीं कहतेहैं आदिशक्ति जो जगत्की कारणहै ऐसी जो मेरी माया है तेहि संयुक्त परम दिब्यलीला करौंगो काहेते तेहिको अध्यारोपण करिकै सबके जानिबेको नरइवलीला करौंगो पर मेरी लीला ब्रह्ममयहै ( ४९ ) हे राजन् तुम्हारी अभिलाषा मैं सब पूर्णकरिहौं तहां मेरोप्रण सत्यसत्यसत्य है तीनिबार सत्य क्योंकहा श्रीरामचन्द्रकी तौ एक सत्य संकल्प है बाल्मीकीये श्लोकैक चरणं रामोद्विर्नाभिभाषते तहां यह कहा है हेतात मेरोप्रण सत्यात्सत्य तरसत्य जहां तक सामान्य विशेष सत्य है तहां मेरीसत्य सर्बोपरिहै ( ५० ) पुनःपुनः कही बारम्बार ऐसेही कहिकैकृपा के निधानकही स्थान तेअन्तर्ध्यान होइगये ( ५१ ) तब दम्पतिकही राजारानीजे हैं तिनके कृपालु जो श्रीरामचन्द्र तिनकीभक्ति अपनेहृदयविषे धरिकै तेहि आश्रम विषे कछुककाल बासकीन ( ५२ ) आगे श्री रामाज्ञा समयानुकूल पाइकै अनायासही जैसे गजके कण्ठसे सुमनकी माल छूटिपरै तैसेही तनको तजिकै इन्द्रके पुरमें बासकीनजाइ तन तजि कहा जैसे शुद्धलोह धातुने पारसको स्पर्शकियो तब लोहाने सब निजधर्म तजिदियो है धातु सुवर्ण भयोहै दृष्टांतको एकदेश लिया है तहां राजारानी तौ जब भजन करने लगे तबही परमदिब्य भये हैं तब राजारानी अपनी भक्ति योगबलते स्वेच्छित तनदिब्य देवरूप इन्द्रपुर में बसेजाइ इन्द्रने अतिआदर संयुक्तलैकै अर्द्धसिंहासन आसन दीन आपुको धन्यमानते भयेहैं ( ५३ ) ॥ दोहार्थ॥ हे भरद्वाज यह इतिहासिक सम्बाद महादेवने पार्बतीजीसे कहाहै सो अति पुनीतहै एकपुनीत जो कर्म्मकाण्ड ज्ञानकाण्ड उपासनाकाण्ड त्रयकाण्ड मिश्रित ग्रन्थमें

समयपायतनतजिअनयासा जायकीन्हअमरावतिबासा ५३ दो०॥ यहइतिहासपुनीतअति उमहिंकह्योवृषकेतु भरद्वाजसुनु अपरअबरामजन्मकरहेतु ५४॥ * * * * * * * * *

मोक्ष कहते हैं सो पुनीत इतिहास ग्रन्थ है अरु जो केवल श्रीरामचन्द्रको अति सुन्दर माधुर्य शृंगारहूकी शृंगारमूर्त्ति तेहि स्वरूपकी परम भक्ति करिकै प्राति अरु मोक्षहूको त्याग केवल अनन्य शरणागतका जेहि ग्रन्थविषे बर्णन होइ ताको अति पुनीत इतिहासकही ताते यह इतिहास अति पुनीत है पुनि मेरोनाम श्रीराम चरण है अरु महाराज श्रीराम प्रसाद जी तिनके श्रीरघुनाथ प्रसाद जी तिनको मैं हौं जिनका श्रीअयोध्या जी में परम स्थान हैं तहां श्रीमद्रामचन्द्र कोसत्य संकल्प वेद वर्णतेहैं ताते जे ऐसे स्वामी के परमानन्य शरण हैं ते सबै सत्य यथार्थ बादी हैं जहां ऐसो स्थान ऐसे इष्टदेव ऐसे परम गुरु गुरुजिनको ऐसो नाम तिनकी शरण हैं ताते कैसे झूंठ कहौंगो ताते यथार्थ कहेउ है अरु यथार्थ कहतहौं तहां हठपक्ष करिकै नहींकहौं काहेते हठपक्ष कहेते हृदय में बोधनहीं होतहै ताते सत्यकहत हौं तहां श्रीयाज्ञबल्क्य महामुनीश्वर कहते हैं हे भरद्वाजजी यह जो महादेव पार्बतीका कहा इतिहास सो अति पुनीत है छप्पै ४ अतिपुनीत इतिहासकहेउ तुलसीसबमुनिमतवेदउपनिषदरूपतत्त्वकर भावसमुझियत मतकोशास्त्रपरत्त्वसंहिता रूपकहतमुनि पुनिउपासनारूपभाष्यअर्थ नपुराणधुनि पुनिरामचरणउपमानजो उपमेयबाचकधर्ममय सबभावभेदरसयुक्तिजो उक्तिनकोसतकाब्यहय १ पुनः छन्दप्रबन्ध अनेक भेदरचना को पिंगल देहादिक संसार रागहतबिरतियोगभल सारासारनिवेदबिवेकमयीतुलसीकृत चित्तबुद्धि मनहंकार एककरिबेको समचितसब इन्द्रिनको दमनकहँ बाह्यांतर एकउपरती सहिरामचरणशीतोष्णदै ताहितितीक्षाकहजती २ पुनः तुलसीकृत बिश्वासरूप गुरुवेदबचनरति समाधानरघु बरस्वरूप नहिंडिगैध्यानमति परस्वरूपकीप्राप्तिकरनको ज्ञानरूपहय सर्बचराचरब्रह्मभवबिज्ञानरूपमय पुनिप्रापतिपरमानन्दकरि भावभक्ति भरुरामधन कृतरामचरणप्रेमापरा मग्नरामछबिभूलितन ३ देशकालत्रयनीतिरीति जगअवसरकृतनित योतिषतन्त्रसुमन्त्रयन्त्र अस्तोत्रमुनि नकृत सबपुराणब्याकरणभाष्यसतकाब्यरागस्वर शास्त्रसंहिताधर्मशास्त्रउपनिषदवेदगुरु जिमिरामचरणमधुकरत हैं भवरपुष्परसरसलियोतिमि तुलसिदासरससारलै रामचरितभाषाकियो ४ श्रीयाज्ञबल्क्य कहते हैं हे भरद्वाज यह पुनीत इतिहास वेदको शिरोभाग सो मैं तुमसेकहेउं अब

सुनुमुनिकथापुनीतपुरानी जोगिरिजाप्रतिशम्भुबखानी १ विश्वबिदितयककेकयदेशूसत्यकेतुतहँबसैनरेशू २ धर्म्मधुरन्धरनी

श्रीरामचन्द्रजो परब्रह्मस्वरूप तिनके प्रकृति मण्डलबिषे अवतीर्ण होवेको कारणसुनहु जो श्रीरामचन्द्रजी सहित श्रीसीताजी के महाराजमनु को बरदैकै निजस्थानमें जाइकै किसी एकसमय कोई एकबार परमशुभ्रसिंहासन पर बिराजमान्भये तहां अनन्तदास अरु सखनकी मण्डली बिराजमान्थी तहां अनन्त सखनबिषे एक प्रतापीनाम सखा अनन्तयूथनबिषे एकयूथप जो श्रीजानकीजीकी कृपाकीमूर्त्तिथा तेहिते श्रीरामचन्द्रजी सदा प्रसन्न बदन बोलतेभये हे प्रतापीसखे तुमहमारी आज्ञातेप्रकृति मंडलबिषेराजाहोहु हमतुम्हारेसंग कछुरणक्रीड़ाकरहिंगे तब तेहिं अतिप्रसन्न ताते रजाइ शीश पर राखिकै प्रणाम कीन्ह्यौ पुनि समयपाइकै स्वामीकी आज्ञालैकै प्रकृत मंडलबिषे राजाभानुप्रतापभयो इतिप्रसंगे श्रीमन्ममहारामायणे दोहार्थस्समाप्तः दो० अतिपुनीतकोअर्थलघु बातिक्छप्पैप्राप्ति रामचरणगुरुकृपाते कृतपूर्बार्द्धसमाप्त ५४ इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वन्सनेबालकांडे उमामहेश्वरसम्बादे पूर्बार्द्धसमाप्तम् ॥ इति श्रीदम्पत्योस्सीतारामचन्द्रदर्शनंबरप्राप्तिर्नामसप्तबिंशतिस्तरंगः २७॥

दो० ॥ बसुअरु बिंशतरंगमें भानुप्रतापप्रसंग रामचरणतापसमिलनपुनिशरीरकरभंग ( २८ ) हे भरद्वाज अतिपवित्र अरु पुराणकही आदि कल्प की कथा है अद्यापि नित्य नवीन चली आवै है जो कथा महादेव ने पार्बती प्रति बखानिकै कहा है सो सुनहु आगे अक्षरार्थै जानब अरु जहांतहां तिलक भी करैंगे ( १ ) दुइकी चौपाईते पन्द्रहकी चौपाई ताईं अक्षरार्थै जानब ( १५ ) सप्तद्वीप अरु सप्तद्वीपन के राजाको भुजन के बलते अपने बशकरिकै दण्डलैलै छांड़िदियो अथ द्वीपनके नाम जम्बूद्वीप लक्षयोजन प्रमाण तेहिके मध्यमें चौकोण इलाबृत खण्ड तेहिके संकर्षण देवता सदाशिव पुजारी तेहि इलावृतखण्ड के मध्यमें सुमेरु पर्बत अरु उत्तर रम्यकखण्ड धनुषाकार है तहाँ मत्स्या-

**तिनिधाना तेजप्रतापशीलबलवाना ३ तेहिकेभयेयुगुलसुतबीरा सबगुणधाममहारणधीरा ४ राजधनीजोजेठसुतआही नामप्रतापभानुअसताही ५ अपरसुतहिअरिमर्दननामा भुजबलअतुलअचलसंग्रामा ६ भाइहिभाइहिपरमसुरीती सकलदोषछलबर्जितप्रीती ७ जेठेसुतहिराजनृपदीन्हा हरिहितआपगवनबनकीन्हा ८ दो०॥ जबप्रतापरविभयोनृप फिरीदोहाईदेश प्रजापालअतिवेदविधिकतहुँनहींअघलेश ९ चौ०॥ नृपहितकारकसचिवसयाना नामधर्म्मरतिशुक्रसमाना १० सचिवसयानबन्धुबलबीरा आपुप्रतापभानुरणधीरा ११ सेनसङ्गचतुरंगअपारा अमितसुभटसबसमरजुझारा १२ सेनबिलोकिराउहर्षाना अरुबाजेगहगहेनिशाना १३ बिजयहेतुसबकटकबनाई सुदिनशोधिनृपचल्योबजाई १४ जहंतहंपरीअनेकलराई जीतेसकलभूपबरिआई १५ सप्तद्वीपभुजबलबश कीन्हे लैलैदण्डछाड़िनृपदीन्हें १६ सकलअवनिमंडलतेहिकाला एकप्रतापभानुमहिपाला १७ दो०स्ववशविश्वकरिवाहुबल**

वतार देवता हैं मनु पुजारीहैं इनदोनों खण्डोंके मध्यमें नील पर्वत है सोऊ धनुषाकार है तहां कागभुशुण्डि को आश्रम है रम्यकखण्डके उत्तर हिरणमय खण्डहै तेहिके कूर्मदेवता अर्यमा पुजारी हैं तेहिरम्यक अरु हिरणमयखण्डके मध्यविषे श्वेतपर्वतहै तेहि हिरणमय खण्डके उत्तर कुरुखण्ड है तहां श्रीबाराहजी देवता हैं भूदेवी पुजारीहै तेहिहिरणमयअरु कुरुखण्ड के मध्यमें शृंगवान् पर्वतहै कुरुखण्डके उत्तर समुद्रहै पुनि इलाबृतखण्ड के दक्षिण हरिबर्षखण्ड है सोऊ धनुषाकार है तहाँ श्रीनृसिंहदेवता अरु श्रीप्रह्लादपुजारी हैं इलावृत अरु हरिबर्ष खण्डके मध्यमें निषध पर्वतहै हरिबर्ष खण्डके दक्षिण किंपुरुषखण्डहै तहां श्रीरघुनाथजीदेवताहैं हनुमान्जीपुजारीहैं हरिबर्षअरु किंपुरुषखंडके मध्यमें हेमकूटपर्वतहै तेहि किंपुरुषखण्डकेदक्षिण भरतखण्डहै श्रीबद्रीनारायण देवताहैंनारदपुजारीहै किंपुरुष अरु भरतखण्डके मध्यमें हिमालयपर्वतहै तेहि भरतखण्डके दक्षिण समुद्रहै पुनि इलावृत्तखण्डके पूर्व भद्राश्वखण्ड हैं तहां हयग्रीव देवताहैं भद्रश्रवा पुजारीहैं इलावृत अरु भद्राश्वखण्ड के मध्यमें गन्धमादन पर्वतहै भद्राश्वखण्डके पूर्वसमुद्र है इलावृतखण्डकेपश्चिमकेतुमालखण्डहै वहां कामदेवताहैं रमादेवी पुजारीहै तेहि इलावृत अरु केतुमालखण्ड के मध्य में माल्यवान् पर्वत है अरु केतुमालके पश्चिम समुद्र है जम्बूद्वीपमें नवखण्ड बर्णन किये जम्बूद्वीप के मध्य इलावृतखण्ड है तेहिके उत्तर अरु दक्षिण तीनि २ अरु पूर्व पश्चिमएक २ खण्ड ये सब नवखण्ड जानब तहां जम्बूद्वीपके अधिपति ऋषभदेवजी तिनके शतपुत्रभये तिनमें नवयोगेश्वर अरु एक परमहन्स अरुयक्यासी कर्मकांडीभये अरु जम्बूद्वीप के नवखण्ड करिकै नवपुत्रनको एक एक खण्डका राज्यदैकै आपु परमहन्स दशाबिषे आरूढ़ह्वैकै भगवंतको प्राप्तिभये तेहि जम्बूद्वीपके सर्बदिशामें मण्डलाकार लक्षयोजन चौड़ा क्षारसमुद्र है नवोंखण्डनको मेषला किहेहै क्षारसमुद्र के परेद्वितीयप्लक्षद्वीप द्विलक्षयोजन प्रमाण चौड़ाहै अरु यहिप्रकार क्रमते सातोंद्वीपसातो समुद्र दून २ बढ़ेंगे अरु समुद्र द्वीपको यही प्रमाण चलाजाइगा द्वीपकेस्वामीप्रिय ब्रतात्मज इध्मजिह्व तिनके सातपुत्रभये ताहीते अपने द्वीप को सातखण्ड करिकै सातोपुत्रन को एक एक खण्डका राज्यदैकै आपुआत्मयोग करिके उपराम पावतभये तेहि सातो खण्डन में सातपर्वत सातनदी खण्ड २ प्रतिएक २ हैं तिनकेनाम क्रमते प्रथम उत्तरदिशाते बामभागलैकै गनते हैं अरु सर्बखण्डनकेनाम सोइ राजनके नामहैं अरु द्वीपनकेनाम सोई वृक्षनकेनाम हैं अथ पर्वतनकेनाम खण्डके पूर्वदिशाते लिखते हैं मेघमाल पर्वत १ हिरण्यष्ठी व पर्बत २ सुपर्ण पर्वत ३ ज्योतिष्मान् पर्वत ४ इन्द्रसेन पर्वत ५ बज्रकूट पर्वत ६ मणिकूटपर्वत ७ अथ खण्डनकेनाम प्रथम द्वितीय पर्वत अरु प्रथम द्वितीय समुद्रको अन्तर क्रमते अमृतखण्ड १ क्षेमखण्ड २ शांतखण्ड ३ समुद्रखण्ड ४ जवमखण्ड ५ शिवखण्ड ६ अभयखण्ड ७ अथ नदिनकेनाम खण्डनके बीच दोउपर्वतनके मध्य उत्तर बाहनी प्रथम औरौ क्रमते दिशाके संमुखबहती हैं ऋतम्भरानदी १ सप्रभ्रातानदी २ सावित्रीनदी ३ आंगिरिसी नदी ४ निम्नानदी ५ अरुणानदी ६ सत्यंभरानदी ७ तिन नदिन केस्पर्श करिकै नष्टभयो है रजोगुण

चारिबर्णकेहन्स १ पतंग २ ऊर्द्धायन ३ सत्यायननाम चारिबर्णके सहस्रायुष् देवतनके तुल्यश्रम स्वेदादि रहितरूपतैसही पुत्रोत्पादक हैं ते वेदत्रयी मय जो सूर्य तिनको वेदत्रयी करिकै पूजतेहैं यहीप्रकार सर्बद्वीपनमें जानब प्लक्षादिक द्वीपनके बिषे सबपुरुषनको आयुः इन्द्रिय ओजे सहबल बुद्धिबिक्रम स्वस्वाभाविकी सिद्धि साधारण है तेहि पलक्षद्वीपके सर्बदिशामें द्विलक्षयोजन चौड़ा इक्षुरसोदसमुद्र है २ अथ तृतीय शाल्मलिद्वीप चारिलक्षयोजन प्रमाण तेहिका अधिपति यज्ञबाहु यहिद्वीपके सातखंड करिकै सातों पुत्रनको राज्यदीनतामें पर्बतनदी खंडनकेनाम अथ पर्बतनकेनाम श्रुतिपर्बत १ सहस्रा पर्बत २ पुष्पपर्बत ३ मुकुन्द पर्बत ४ कुन्दपर्बत ५ बामदेव पर्बत ६ श्रृंगवान्पर्बत ७ अथ खंडनकेनाम आप्यायनखंड १ पारिभद्रखंड २ देवबर्ष खंड ३ रमणकखंड ४ सौमनस्यखंड ५ सुरोचनखंड ६ अविज्ञात खंड ७ अथ नदिनकेनाम नन्दानदी १ रजनीनदी २ कुहूनदी ३ सरस्वतीनदी ४ शिनीबालीनदी ५ अनुमतीनदी ६ राकानदी ७ तहांके चारिबर्ण श्रुतधर १ बीर्यधर २ बसुन्धर ३ इषन्धरनाम ४ भगवान्वेदमयसोमको वेदकरिकैपूजते हैं तेहिशाल्मलिद्वीपकीसर्बदिशामें चारिलक्षयोजनचौड़ा सुरोदसमुद्रहै ३ अथ चतुर्थद्वीपकुशद्वीप आठलक्षयोजन प्रमाण ८ हिरण्यरेत अधिपति तिनकेसातपुत्र उन्हेंसातोंखण्डकाराज्यदैकैतपकरतेभयेसातपर्वतसातनदीअथपर्वतनकेनामद्रविणपर्वत १ ऊर्द्धरोमापर्वत २ देवानीकपर्वत ३ चित्रकूटपर्वत ४ कपिलपर्वत ५ चतुश्श्रृंगपर्वत ६ चक्रपर्वत ७ अथखण्डनकेनामविविक्तनामखण्ड १ सत्यब्रतखण्ड २ नाभिगुप्तखण्ड ३ दृढ़रुचिखण्ड ४ व सुदानखण्ड ५ वसुखण्ड ६ दैवनामखण्ड ७ अथनदिनकेनाम घृतच्युता नदी १ देवगर्भानदी २ श्रुतिविन्दानदी ३ मित्रविन्दानदी ४ मधुकुल्यानदी ५ रसकुल्यानदी ६ मन्त्रमालानदी ७ तिनके जलकरिकै कुशद्वीपवासी चारिहुवर्ण आरोग्यहैं तिनके नाम कुशल १ कोबिद २ अभियुक्त ३ कुलक ४ तहां भगवान् जातवेदस्वरूप अग्निको जानब तिनको कर्म्म कौशल करिकै पूजतेहैं तेहि कुशद्वीपकी सर्वदिशामें आठ ८ लक्ष योजन प्रमाणघृतोद समुद्रहै ४ अथपञ्चद्वीप ५ क्रौंचद्वीप सोरहलक्ष योजन प्रमाण घृतपिष्ठनाम अधिपतिने अपने सातपुत्रों को सातोंखण्डका राज्य दैकै आपु हरिके चरणारविन्दको प्राप्तिहोते भये खण्डखण्डके विषे एकएक पर्व्वत एकएक नदी अथपर्व्वतनके नाम सर्वतोभद्रपर्व्वत १ नन्दनपर्वत २ नन्द पर्बत ३ उपबर्हणपर्वत ४ भोजनपर्वत ५ बर्द्धमान् पर्वत ६ शुक्लपर्वत ७ अथखण्डनके नाम लोहितारम्भखण्ड १ आजिष्ठखण्ड २ सुधामाखण्ड ३ मेघ पृष्ठड ४ मधुरुहखण्ड ५ आमखण्ड ६ बनस्पतिखण्ड ७ अथनदिनकेनामपवित्रवती नदी १ वृत्तिरूपवती २ तीर्थवतीनदी ३ अर्थकानदी ४ अमृतौघानदी ५ अभयानदी ६ शुक्लानदी ७ जिनकरजल पवित्र निर्मल सेवनहार निष्पाप चारिवर्ण तिनकेनाम पुरुष १ ऋषभ २ द्रविण ३ देव ४ पुरुष आपोमय देवजलको जलपूर्ण अंजलिकरिके पूजतेहैं तेहिक्रौंचद्वीपकी सर्वदिशामें सोरहलक्षयोजन प्रमाण क्षीरोदसमुद्रहै ५ अथषष्ठद्वीप ६ शाकद्वीपका बत्तिसलक्षयोजन प्रमाणहे मेधातिथि अधिपति सो अपनेसातपुत्रनको एकएकपर्वत एकएकनदी युक्तकेखण्ड तिनकाराज्य दैकै आपु भगवान्केविषे मतिलगाइकै तपोवनमें प्रवेशकरतेभये तहां चारिउवर्णकेनाम ऋतब्रत १ सत्यब्रत २ दानव्रत ३ अनुब्रत ४ भगवान्वाय्वात्मक पवनको नाम ताको प्राणायाम करिकै नष्ट है रजस्तमजिनकर ते परमसमाधिकरिकै पूजते हैं ॥ अथपर्वतनकेनाम ॥ न्यहानपर्वत १ देवपालपर्वत २ धूम्रानीलखण्ड ३ जवमान्खण्ड ४ मनोजबखण्ड ५ पुरोजबखण्ड ६ विश्वधारखण्ड ७ अथनदिनकेनाम ॥ सहस्रस्तुतिर्नदी १ पंचपदीनदी २ अपराजितानदी ३ अभयस्पृष्टीनदी ४ आयुर्दानदी ५ अनवद्यानदी ६ निजधृतिनदी ७ तेहिकुशद्वीपकी सर्वदिशामें बत्तिसलक्षयोजन प्रमाण दधिरसोदसमुद्र है ६ अथसप्तमद्वीप ॥ तेहिकीरचना सर्वते भिन्नहै तहां सातैराजाके दोईपुत्रहैं सो ताद्वीपके मध्य सर्वदिशामें एक पर्वत अरु दुइखण्डहैं तेराजा अपने दोऊपुत्रनको एकएकखण्डकाराज्यदैकै आप योगबलते भगवत्को प्राप्तिभये॥ अथद्वीपकेनाम॥ पुष्करद्वीप १ चौंसठिलक्षयोजन प्रमाण अथपर्वतनाम॥ मानसोत्तरपर्वत दशकोटियोजन प्रमाण ऊंचा चौड़ाहै सो चौफेरद्वीपके मध्यमें एकहीहै तेहिपर्वत पर चारिपुरी चारोंदिशा उत्तर कुबेरपुरी १ पश्चिम बरुणपुरी २ दक्षिणयमपुरी ३ पूर्व इन्द्रपुरी ४ अथखण्डनकेनाम ॥ जो पर्वतके द्वौदिशि हैं अर्वाचीनखण्ड पर्वतकी आदि दिशामें तेहिकर अधिपप्ति रमणक १ पराचीनखण्ड पर्वतके परदिशामाहै तेहिका अधिपति धातकि तेहिपुष्कर द्वीप के सर्वदिशामें चौंसठिलक्ष योजन प्रमाण स्वादूदक समुद्रहै ७ अरुतेहि मानसोत्तर पर्वतके ऊपर सूर्यकारथ फिरै है जो सुमेरुकी सर्वदिशामें घूमै तेहिकर संवत्सरात्मक चक्र सो उत्तरायण दक्षिणायण करिकै परिभ्रमतहै अरु तेहि मानसोत्तर पर्वतकी

उदयास्ताचल उदयअस्तके भागते संज्ञाहै यहिप्रकार सातद्वीप जम्बूद्वीप प्लक्षद्वीप शाल्मलिद्वीप कुशद्वीपक्रौंचद्वीप शाकद्वीप पुष्करद्वीप ७ सातौ द्वीपका प्रमाण १२७००००० योजन सातसमुद्र क्षारसमुद्र इक्षुरसोदसमुद्र सुरोदसमुद्र घृतोदसमुद्र दधिमण्डोदसमुद्र क्षारोदसमुद्र स्वादूदकसमुद्र ७ प्रमाण १२७००००० योजनतेहितेपरेएककोटिअट्ठावनलक्ष १५८००००० योजन भूमि और है तहां प्राणि उहैं तेहितेपरेएक कम चालीसलक्षअधिकआठकोटि ८३९००००० सुवर्णकीभूमिहै तहां देवतनबिना औरकीगम्यनाहीं है तेहितेआगे लोकालोक पर्वतहै सो ध्रुवसे ऊंचा है अरु तेतनै चौड़ा है। महिकीनाभि में

निजपुरकीनप्रवेश अर्थधर्मकामादिसुखसेवहिंसबैनरेश १८ भूपप्रतापभानुबलपाई कामधेनुभइभूमिसोहाई १९ सबुदुखबर्जितप्रजासुखारी धर्मशीलसुन्दरनरनारी २० सचिवधर्मरुचिहरिपदप्रीती नृपहितहेतु सिखावतनीती २१ गुरुसुरसंतपितरमहि देवा करहिंसदानृपसबकैसेवा २२ भूपधर्मजेवेदवखाने सकलकरहिंसादरसुखमाने २३ दिनप्रतिदेइ विविधिविधिदाना सुनैशास्त्रवरवेदपुराना २४ नानावापीकूपतड़ागा सुमनबाटिकासुंदरबागा २५ विप्रभवनसुरभवनसोहाये सबतीरथनविचित्रबनाये २६ दो० जहँलगिकहैंपुराणश्रुतिएकएकसबयाग वारसहस्त्रसहस्त्रपुनिकियेसहितअनुराग २७ चौ० हृदयनकछुफलअनुसंधाना भूपविवेकीपरमसुजाना २८ करैजोधर्मकर्ममनवानी वासुदेवअर्पितनृपज्ञानी २९ चढ़िवरवाजिवारएकराजा मृगयाकरसबसाजिसमाजा ३० विंध्याचलगंभीरवनगयऊ मृगपुनीतबहुमारतभयऊ ३१ फिरतविपिनृपदीखवराहू जनुबनदुरेउशशिहिग्रसिराहू ३२ बड़विधुनहिंसमातमुखमाहीं मनहुंक्रोधवशउगिलतनाहीं ३३ कोलकरालदशनछबिगाई तनुबिशालपीवरअधिकाई ३४ घुर्घुरातहयआरवपाये चक्रतविलोकतकानउठाये ३५ दो० नीलमहीधरशिषरसमदेखिविशालवराह चपरिचलेउहयसुटुकिनृप हांकिनहोइनिवाह ३६ चौ० आवतदेखिअधिकरववाजी चलेउवराहमरुतगतिभाजी ३७ त्वरितकीन्हनृपशरसंधाना महिमि

सुमेरु पर्वत है वह सोरहहजार योजन तरे अरु चौरासी हजार योजनऊपरहै अरु धतूराके फूलकी आकृति है चारिपर्वत षष्ठिखम्भहैं चारिनदी चतुर्दिशाबाहिनी इलावृतखण्डविषे जोहैं तेहितें अरु लोकालोकपर्वतकरअन्तर साढ़ेबारहकरोरि १२५००००००० सिद्धिभयो १६ येते समस्तद्वीप

पृथ्वीमण्डल में उदयास्तपर्यन्त हैं तेहिकेराजा एक भानुप्रतापहोतभये १७ अठारह के दोहे ते छप्पनकी चौपाई ताईं अक्षरार्थै जानब ५६ सत्तावन अट्ठावनकी चौपाई को समष्टीअर्थ जेहिराजाको भानुप्रताप जातिर्लीनहैसो ग्लानिमानिकै मन्दवैराग्यकोप्राप्तह्वैकै महाबनबिषे बासकरतभयो

लिगयउविलोकतवाना ३८ तकितकितीरमहीपचलावा करिछलसुवरशरीरबचावा ३९ प्रकटतदुरतजाइमृगभागा रिसवशभूपचलेउसँगलागा ४० गयउदूरिघनगहनवराहू जहंनाहींगजवाजिनिबाहू ४१ अतिअकेलवनबिपुलकलेशू तदपिनमृगमगतजइनरेशू ४२ कोलबिलोकिभूपबड़धीरा भागिपैठगिरिगुहागंभीरा ४३ अगमदेखिनृपअतिपछिताई फिरेउमहा वनपरेउभुलाई ४४ दो०॥ खेद खिन्नक्षुधिततृषितराजावाजिसमेत खोजतव्याकुलसरितसर जलविनुभयउअचेत ४५ चौ०॥ फिरतविपिनआश्रमयकदेखा तहँबस नृपतिकपटमुनिवेखा ४६ जासुदेशनृपलीनछड़ाई

समरसेनतजिगयउपराई ४७ समयप्रतापभानुकरजानी आपनअतिअसमयअनुमानी ४८ गयउनगृहमनबहुतगलानी मिलानराजहिनृपअभिमानी ४९ रिसउरमारिरंकजिमिराजा विपिनबसैतापसकेसाजा ५० तासुसमीपगमननृपकीन्हायहप्रतापरवितेइतपचीन्हा ५१ राउतृषितनहिंतेहिपहिंचाना-देखिसुवेषमहामुनिजाना ५२ उतरितुरंगतेकीनप्रणामा परमचतुरनकहेउ निजनामा ५३ दो०॥ भूपतितृषितविलोकितेइसरवरदीन्हदेखाइ मज्जनपानसमेतहयकीन्हनृपतिहर्षाय ५४ चौ०॥ गैश्रमसकलसुखीनृपभयऊ निजआश्रमतापसलैगयऊ ५५ आसनदीन्हअस्तरविजानी पुनितापसबोल्योमृदुबानी ५६ कोतुम कसबनफिरहुअकेले सुंदरयुवाजीवपरहेले ५७ चक्रवर्त्तिकेलक्षणतोरे देखतदयालागिअतिमोरे ५८ नामप्रतापभानुअवनीशा

जब दैवयोगते राजा भानुप्रताप को देखेउ तब चीन्हेउ अरु जब छल कपट हृदय बिषे प्राप्तभयो तव तपस्वी राजा भानुप्रतापसे बोल्यो तुमको हहु यहिमहाबनबिषे अकेले फिरतेहौ तुमको भय नहीं लागती है तुम्हारेतौ चक्रवर्त्ती राजाके लक्षण हैं तातेमोको दयालागिआई है तहां पदार्थ जानिकै अपनीउक्तिबनाइकैकहना ताकोछलकही ( ५८ ) तब भानुप्रतापराजनीतिकी चातुर्यतासे बोल्यो हे महामुनीश राजाभानुप्रताप तेहिको मैं मंत्री हौं ( ५९ ) शिकार खेलतसन्ते वन विषे भुलायगयोहौ पर यह बड़ीभाग्यभई जाते आपकेचरण देखेहुंआइ ( ६० ) राजाबोल्यो हे मुनीश तुम्हारे दर्शनते परिणाम मेरो भला समुझिपरतहै राजाकी वाणीविषे यह अर्थ सूचितहोतहै कि रावण तनुविषे मोक्ष है ( ६१ ) अब तपस्वी जो है सो राजाको जानिकै कपटसानी सत्यवाणी बोलतभयो पर यहभी एकराजनीति को अंग है तब मुनिनेकहा कि अन्धकार ह्वै आयोहै अरु तुम्हारोनगर इहांते सत्तरि योजन दूरि है ( ६२ ) दोहार्थ॥ पुनि बोल्यो तुमसुनहु रात्रि महाघोर है बन गम्भीर है पंथ नहीं सूझै ऐसे जानिकै राति भरि रहिजाहु भोरहोत जायहु ( ६३ ) तहां गोसाईं तुलसीदास कहते हैंकि देखोतो राजाभानुप्रताप जो ऐसो धर्मज्ञ विवेकवान् जिसने उत्तम

तासुसचिवमैंसुनहुमुनीशा ५९ फिरतअहेरहिंपरेउँभुलाई बड़े भाग्यपददेखेउंआई ६० हमकहंदुर्लभदरशतुम्हारा जानतहौंकछुभलहोनिहारा ६१ कहमुनितातभयउअँधिआरा योजनसत्तरिनगरतुम्हारा ६२ दो०॥ निशाघोरगंभीरवनपंथनसूझसुजान बसहुआजतुमजानिअसजायहुहोतबिहान ६३ तुलसीजसभवितव्यतातैसीमिलैसहाइ आपुनआवैताहिपहंताहितहांलैजाइ ६४॥

श्रुति स्मृति अनुकूल सम्पूर्ण कर्म धर्म भगवत् समर्पण कियो उसीने भवितव्यताताके वशहोइकै कपटमुनिविषे प्रतीतिकियो तहां जैसी भवितब्यता होति है तैसेही सहाय मिलती है जेहिके पास जेहिकी हानिलाभकी प्रारब्धि होती है तहां भवितव्यता जो है सो काहूकी सहायलैकै कितौ वाहीको वहिकेपास लैकै जाति है कितौ येहीकेपास वाको लैआवतिहै ऐसी भवितब्यता प्रबल है तहां भवितब्यता दुइप्रकारकीहै उत्तम अरु निकृष्टता में चारिभेद हैं एकभवितव्यता उत्तम मध्यम पूर्वसंस्कार के बशहैकालपाइकै प्राप्त होति है अरु एकभवितब्यताकाल जोहै उत्तम मध्यम लग्न ग्रह नक्षत्र योगघड़ी मूहूर्त्त इत्यादिक तिनके द्वारहोइकै अपनी प्रबलताते कराइलेति है अरु एक भवितब्यता कुसंग सुसंग के योग से होतिहै ये तीनिहूं भवितब्यता पृथक् पृथक् प्रबल हैं तत्रप्रमाणं श्रीअध्यात्मरामायणे श्रीअयोध्याकाण्डे श्रीदशरथ महाराज कैकेयी प्रसंगे श्लोकः धीरोऽत्यंतदयान्वितोऽपिसुगुणाचारान्वितोवाथवानीतिज्ञोविधिवाददेशिकपरोविद्याविवेकोऽथवा दुष्टानामतिपापभावितधियांसंगंसदाचेद्भवेत्तद्बुध्या परिभावितोऽपिभजतेसाम्यंक्रमेण-स्फुटम् अरु एक भवितब्यता श्रीरामचन्द्रजीकी इच्छाहै सो श्रीरामचन्द्रजी अपनी इच्छा अपने दासनपर करते हैं तहां भानुप्रताप पर श्रीरामकीइच्छाही भवितब्यता जानिये

काहेतेकि श्रीरामचन्द्रजूको सखा है श्रीरामचन्द्रजीने पूर्वही प्रेरणाकीनहै कि तुम प्रकृति मण्डलमेंजाहु हमतुम्हारेसंग रणक्रीड़ा करहिंगे तहां भानुप्रताप आज्ञालैकै प्रकृतिमण्डलमें तो आयो पर ऐसीभक्तिकियो कि यही तनुमें श्रीरामचन्द्रको प्राप्तहोउँ काहेते राजाको अपने स्वरूपको ज्ञानबनारहेउहै जब श्रीरामचन्द्रजी अपनी परामायाकी प्रेरणा करके रावण तनुमें रणक्रीड़ाकरहिंगे तब प्राप्तकरैंगे ताते यह भवितव्यता भईहै जोश्रीरामचन्द्रजी अपने दासनकोविकार भवितब्यता करते हैं तो परिणाम

चौ० भलेहिनाथआयसुधरिशीशा बांधितुरंगतरुबैठमहीशा १ नृपबहुभांतिप्रशंसेउताही चरणबंदिनिजभाग्यसराही २ पुनिबोलेउमृदुगिरासुहाई जानिपिताप्रभुकरौंढिठाई ३ मोहिंमुनीशसुतसेवकजानी नाथनामनिजकहहुबखानी ४ तेहिनजाननृपनृपहि सोजाना भूपसुहृदसोकपटसयाना ५ वैरीपुनिक्षत्रीपुनिराजा छलबलकीन्हचहैनिजकाजा ६ समुझिराजसुखदुखितअराती आँवानलइवसुलगैछाती ७ सरलबचननृपकेसुनिकाना वैरसँभारिहृदयहरषाना ८ दो०॥ कपटबोरिबाणीमृदुलबोलायुक्तिसमेत नाम

परमहितको कारण है ( ६४ ) इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वंसने बालकाण्डे राजाभानुप्रताप दिग्विजयकपटमुनिमिलापवर्णनं नामअष्टबिंशतिस्तरंगः॥२८॥

दो० ॥ रामचरणओन्तिसलहरिनृपमुनिसंगनिवास कपटीमुनिपाखंडमय सम्भाषणविश्वास २९ जब मुनिने राजासे कहा कि आजु राति रहिजाउ तब राजाने कहा कि आपुकी आज्ञा शीशपर है यह कहिकै घोड़ाको वृक्षके नीचे बांधिकै मुनिके पास बैठेउ तब मुनिने राजाको कछुक फल मूल कन्द भोजन करायो ( १ ) दुइकी चौपाई ते आठकी चौपाईताई अक्षरार्थ जानब ( ८ ) दोहार्त्थ॥तहां राजा मुनिको नाम बूझतभयो तब राजाकी निष्कपट सरल बाणी सुनिकै मुनिकपटसानी कोमलबाणीअरु युक्तिकरके अर्थको समर्थन करत है नाम हमार भिक्षुकहै काहेते हम निर्धन हैं अनिकेत हैं यह अर्थसमर्थ न भयो कि जबते तैं हमारीराज्य छीनिलीनहै तबते हमनिर्धनअनिकेतभये ताते हमारोभिखारीनाम है आकाश वृत्तिबैठे हैं यह गर्वित अर्थसिद्धभयो अरु राजा को प्रत्यक्षशब्दार्थसिद्ध है ( ९ ) इहां पांच चौपाई की एकही अन्वय जानब तब मुनिकैबाणी नीचानुसंधान सुनिकै राजा बोलतभयो महामुनीश जे पुरुष तुमसारिखे विज्ञान के निधान अभिमान रहितहैं ( १० ) ते सदा अपनपो दुराये कुबेषबनाये रहते हैं पर सबप्रकारते वोईपुरुष कुशलहैं ( ११ ) यही लक्षणनते श्रुतिसन्त टेरिकै कहते हैं कि निष्किञ्चन जे आपुसरिस पुरुष हैं तेई प्रभुको प्रिय हैं ( १२ ) हे महामुनीश्वर तुमऐसे अधन अगेह भिखारी जे हैं तिनकीमहातपस्या देखिकै शिव बिरञ्चिको सन्देह होत है कि हमारो लोक न लैलेइँ ( १३ ) मैं तुम्हारी महिमाका जानिसकौंगो जो तुम हौ सो तुमहींहौमैं तुम्हारे चरणनको बारबार नमस्कार करतहौं हे स्वामी अब मोरेऊपर

हमारभिखारिअबनिर्धनरहितनिकेत ९ चौ०॥ कहनृपजेबिज्ञाननिधाना तुमसारिखेगलितअभिमाना १० सदाअपनपौरहहिं दुराये सबविधिकुशलकुवेषबनाये ११ तेहितेकहहिंसंतश्रुतिटेरेपरमअकिंचनप्रियहरिकेरे १२ तुमसमअधनभिखारिअगेहा होत विरंचिशिवहिंसंदेहा १३ जोसिसोसितवचरणनमामी मोपरकृपाकरहुअबस्वामी १४ सहजप्रीतिभूपतिकै देखी आपुविषेविश्वास बिशेषी १५ सबप्रकारभूपहिअपनाई बोलाअधिकसनेहजनाई १६ मुनुसतिभावकहौंमहिपाला इहांबसतबीतेबहुकाला १७

कृपा करहु ( १४ ) तब शिव कहते हैं हे पार्वती मुनि जो है तिनने भूपतिकी प्रीतिप्रतीति बिश्वास अपनेबिषे बिशेषजान्यो है ( १५ ) मुनि जो है सो अनेक प्रकार की युक्तिकरिकै सबप्रकारते राजाको आपनकरि अति स्नेहजनाय बोलतभयो ( १६ ) हे महिपाल मैं सब जानता हौं अब तैं मन वचन कर्म्मसे मोरभयसिहै मैं तोसे सत्यभाव कहत

हौं इहांकही यहिस्थानबिषे मोकोबसत बहुकालबीतेहैं राजाकापदकेअर्थसिद्धि है अरु तपस्वी की बाणीबिषे यह अर्थ है कि जबसे मेरीराज्य नष्टभई है तबते यहीबनबिषेमैं वसेउहौं तबते बहुकालबीत्योहै तहां बहुकाल कही बहुवचन को जहां तीनि दण्ड तीनिपहर तीनिदिन तीनिमास तीनि वर्ष इत्यादिक तीनिसंज्ञा बहुवचनकी है ताते बहुकाल कहेउहै ( १७ ) दोहार्थ॥ ऐसे अर्थ दोहा विषे जानब हे राजन् अबलगि मोको कोई नहींमिल्यो है अरु मैं ने काहूकोजनायो भी नहीं काहेते कि लोककैमान्यता जारिडारी है किन्तु लोक मान्यता बनसम उसे तपरूप अग्नि में जराइदीनहै इहां ब्यञ्जनाकरिकैअर्थ समर्थ न करतहैं कि जबसेबनबिषे आइबसेउ हौं तबसे आजताईं तुम हीं हमको मिलेहौ और कोई नहींमिलेउ है सो सत्यैकहतहै काहेते किग्लानिमानिकै महाबनबिषे एकान्तटिकोहै जो कोईकहै कि तपस्वीराजा कोमित्र राक्षस सो दिनप्रति मिलतहै तहां उनदोनोंने तो एकहीसंग बनबासकियो है तहां दुइको प्रयोजन नहीं है एकहीका है ( १८ ) सोरठार्थ॥ श्रीगोसाईं तुलसीदासजू कहते हैं कि सुन्दरवेष सुन्दरवाणी देखि अरुसुनिकै मूढ़प्राणी भूलिजाते हैं कपटी कैसे हैं जैसे मयूर वेष वाणी सुधा सम सुन्दरि अरु सर्प खात है ताते चतुर नहीं भूलते हैं काहेते चतुरनरजो हैं उनने सुष्टुवेष सुष्टुवाणी जब किसूमें देख्यो सुन्यो तब दुइ चारि

**दो०॥ अबलगिमोहिंनमिलेउकोउमैंनजानयहुंकाहु लोकमान्यताअनलसमकरितपकाननदाहु १८ सो०॥ तुलसीदेखिसुवेष भूलहिंमूढ़नचतुरनर सुंदरकेकीपेषिबचनसुधासमअशनअहि १९ तातेगुप्तरहौंवनमाहीं हरितजिकिमपिप्रयोजननाहीं २० प्रभुजानत सबबिनहिं जनाये कहहु कवनसिधिलोकरिझाये २१ तुमशुचिसुमतिपरमप्रियमोरे प्रीतिप्रतीमिमोहिंपरतोरे २२ अबजोतातदुरावोंतोहीं दारुणदोषघटैअतिमोहीं २३ जिमिजिमितापसकथैउदासा तिमितिमिनृपहिउपजबिश्वासा २४ देखास्वबशकर्ममन**

घड़ी दुइ चारि दिन विषे वेषमें स्वभाव क्रिया अरु वाणी की सचाईकपट सब विचारि कै प्रतीति करते हैं तुरन्त नहीं प्रतीति करते हैं परन्तु वेष मानिकै पूजिदेते हैं तहां राजाने तुरन्त प्रतीति कियो है काहेतेराजा भगवत् की इच्छा जो भवितब्यता तेहिते मूढ़ह्वैगयो है ( १९ ) पुनि मुनि बोल्यो हे राजन् ताहीते मैं वनमें गुप्तरहतहौं काहेते कि हरिको भजन तजिकै संसारते कौन प्रयोजन है यह निश्चय जानब ( २० ) काहे ते प्रभु अन्तर्यामी हैं सो बिना जनायेही सब जानजाते हैं तहां लोकके रिझाये ते कहहु कौनि सिद्धि है तहां तपस्वी कहत तौ सत्य है पर अपने ऊपर रोपण करिकै कहत है ताते पाखण्ड होत है ( २१ ) हे भूपति तुममोरे शुचि सुमति परमप्रिय सेवकहहु काहेते तोरि प्रीति मोरे बिषे सांची है यह कपटबाणी कहिकै अपने विषे दृढ़बिश्वास करावत है ( २२ ) हेतात अब जो मैं तुमसन कछुदुरावकरौं तो दारुणदोष मोको घटितहोइ यहशपथ करिकै दृढ़करतहै अरु अन्तरार्थ यह है कि बैरी को हजार सौगन्ध अनेकछल अनेकयत्न करिकै मारिये यह नीति है ( २३ ) जैसे जैसे तपस्वी उदासीन वचन कहत हैं तिमितिमि राजाको विश्वासहोत है ( २४ ) तब तपस्वी ने हृदयबिषे विचारि देख्यो कि राजा मनवचन कर्म से मेरे वशभया तब तपस्वी बोल्यो कैसो है तपस्वी बकध्यानी है जैसेबकजीव बधविषे ध्यानधरै है तैसे राजाके बधकरिवे हेतु अनेक समाधि की बातैं कहत है ( २५ ) हे राजन् हमारो एकतन नाम है यहबात सुनिकैराजा शिरनाइकै बोलतभयो ( २६ ) हे नाम मोको आपन शिशुसेवकजानिकै एकतननामको अर्थ कहहु ( २७ ) दोहार्थ॥ सुनुराजन् जब आदिमेंसृष्टिकी उत्पत्ति भईथी तबही मेरी भी उत्पत्ति भई पुनि तबते मैंने देह नहींधरी है याहीते हमारोएकतननाम है यहपदको स्पष्टअर्थ राजानेसिद्धमान्यो अरु तपस्वीकी बाणीके अवान्तर यह अर्थहोत है कि अपने माता

**बानी तब बोलातापसबकसध्यानी २५ नामहमारएकतनुभाई सुनिनृपबोल्योपुनिशिरनाई २६ कहहुनामकरअर्थबखानी मोहिंसेवकसुतआपनजानी २७ दो०॥ आदिसृष्टिउपजीजबहिंतबउतपतिभइमोरि नामहमारएकतनुदेहनधरीवहोरि २८चौ०॥ जनि आश्चर्यकरहुमनमाहीं सुततपतेदुर्लभकछुनाहीं**

**२९ तपबलतेजगसिरजुबिधाता तपबलबिष्णुभयेपरित्राता ३० तपबलशम्भु करहिंसंहारा तपबलशेषधरैंमहिभारा ३१ तपअधारसबसृष्टिभुआरा तपतेअगमनकछुसंसारा ३२ भयउनृपहिसुनिअतिअनुरागा कथापुरातनकहइसोलागा ३३ कर्म्मधर्म्मइतिहासअनेका करैनिरूपणाबिरतिबिवेका ३४ उद्भवपालनप्रलयकहानी कहेसि**

पिता के आदिकही प्रथम यहीपुत्रभयो है ताहीते आदिसृष्टि अपनी उत्पत्ति कहेउहै अरु एकतननामकही जबते अपने पिताके उत्पन्नभयो है तबते काहेको दूसरिदेह धरेउ है ( २८ ) तहां आपहूतौ राजा पुनि पंडितहैअरु भुनप्रतापको जनावत है कि ये भी पण्डितहै ताते युक्ति एक तन अर्थ को पुष्ट करैहै हे तातयह जो मैंनेकहाहै सो सुनिकै अपने मनमें आश्चर्य जनिकरहु तब तपस्या निर्विघ्नहोइ तब कछुपदार्थ दुर्लभनहीं है सब सुलभ है ( २९ ) हे तात तपकेवलते ब्रह्मा सृष्टि करते हैं विष्णुपालन करते हैं ( ३० ) हे तात तपकेवलते शम्भु संहारकरते हैं अरु तपकेवलतेशेष महि काभार धरते हैं ( ३१ ) तपहीके आधारते सबसृष्टि है हे राजन् तपते कछुअगम नहीं है ( ३२ ) यह बात तपस्वीकै सुनिकै अति अनुराग भयोहै तब तपस्वी पुरातनकथा कहनलग्यो ( ३३ ) कर्मकाण्ड धर्म अनेकन इतिहास अरु बैराग्य बिवेक अच्छेप्रकारसे निरूपणकरैहै ( ३४ ) तहां तपस्वीराजा तौ हई है सब शास्त्रकाविषय जानैहै अरु राजा भानुप्रतापको सब विधिते जानैहै ताते यहि संसार की उत्पत्ति पालन प्रलयकी बिधियथार्थ कहै है अरु अमितयुक्ति बनाइकै आश्चर्यकीभी बातैं कही हैं ( ३५ ) यह सबसुनिकै राजातपस्वी के वशभयो तब आपननाम कह्यो ( ३६ ) तपस्वी बिहँसिकै बोल्यो हे राजन् मैं तोको जानतहौं जोतैं कहेसि कि मैं राजाकोमन्त्री हौं अरु आपननाम नहींकह्यो यह कपट मोको नीकलाग्यो है ( ३७ ) सोरठार्थ काहेते हेराजन् यह राजनीति बेदकहत हैं कि राजाओंको अपनानाम जहांतहां न कहाचाहिये ताहीते तेरी चातुर्यता विचारिकै तेरे ऊपर मेरीबड़ी प्रीतिभई है यह सब तपस्वीका कहना बुद्धि के प्रकाशतेयुक्तिके अर्थ समर्थ करिकै आपनकरै है ( ३८ ) हेराजन् तुम्हारानाम भानुप्रताप है सो मैं जानतहौं ताते जहांताई सूर्यको उदय अरु ऊर्द्ध अर्द्धचक्रफिरै अरु प्रकाश प्रताप ह्वैरह्योहै तहांतक तुम्हारी राज्य है ताते तुम्हारो

**अमितआश्चर्यबखानी ३५ सुनिमहीशतापसबशभयऊ आपननामकहनतबलयऊ ३६ कहतापसनृपजानौंतोहीं कीन्ह्योकपटलागहितमोहीं ३७॥सो०॥ सुनुमहीशअसनीति जहँतहँनामनकहहिंनृप मोहिंतोहिंपरअतिप्रीति सोइचतुराईनिरखितव ३८ चौ०॥ नामतुम्हारप्रतापदिनेशा सत्यकेतुतवपितानरेशा ३९ गुरु प्रसादसबजानौंराजा कहौं न आपनजानिअकाजा ४० देखिताततव**

भानुप्रताप नाम है अरु तुम्हारे पिताको सत्यकेतु नामरह्योहै काहेते तुम्हारे पिताके सत्यकी पताका अद्यापि फहराति है ताते सत्यकेतुनाम कही अरु तुमको राज्यदैकै आपु महातपकरिकै सत्य जो भगवान्हैं तेहिको प्राप्तिभये तातेसत्यकेतु ऐसोपिता तुम्हार तातेतुम धन्यहौ यह आश्वासन राजाकोकियो ( ३९ ) हे राजन् यह सब मैं गुरुन के प्रसाद तें जानतहौं मैंने अपने गुरुन को तनमन बचन धनधर्म्म समर्पण करिदीनहै तब गुरुननेकृपाकीनहै गुरुनकीकृपातेमोको सबसुलभ है पर यह किसूसेकहनानहीं जहां तहां अपनी बस्तु कहते अपने अकाज होतहै तपस्वी यह सब सत्य कहिकै अपनेबिषे गुरुत्व की कृपाते मोको सबसुलहै पर यह किसूसेकहनानहीं जहां तहां अपनी बस्तु कहेते अपनै अकाज होतहै तपस्वी यह सब सत्य कहिकै अपनेबिषे गुरुत्व करावैहै याते कपट भयो है ( ४० ) तपस्वीकहत है हे तात तुम्हारी सुधाई देखिकै मैं प्रसन्नभयोहौं एकसूधा केवल अज्ञानीको कही अरु एकसूधा ज्ञानीको कही पर निष्कपट निश्छल निर्दम्भ प्रवीण तहां तपस्वी कहतहै हे राजन् तू निपटसूधा है काहे तैं मोरे ऊपर पुनीत प्रीति किहेसि अरु तैं नीतिमें अति निपुणहसि तहां तपस्वीतौ यह वचन कहिकै अतिशय प्रतीति अपनेबिषे करावैहै पर उसकी वाणी विषे कविजन यह धुनि निकारते हैं कि हे राजन् तू तौ ज्ञानमान् सूधा है पर भवितव्यताके बश मोहिं ऐसे पाखण्डीबिषे प्रतीति किहेसि ऐसो नीतिमान्होइकै अब तैं सूध अज्ञानी है ( ४१ ) हेतात तोरेऊपर मोरिबड़ीममताउपजी है

यह जो सबकहेउहै अरु कहतहौं सो तोरेपूंछेसे नहीं तौ यह कहिवेयोग्यहीनहीं है ( ४२ ) अब मैं प्रसन्नहौं तुम निस्सन्देह बरमांगहु ( ४३ ) सुन्दर वचनसुनिकै राजा हर्षको प्राप्तिभयो पुनि पदगहिकै बहुत विनयकीन ( ४४ ) हे कृपासिन्धु मुनि तुम्हारे दर्शनतेंमोको चारिहूपदार्त्थ सुलभ हैं ( ४५ ) तथापि आपु मोरेऊपर प्रसन्नहहु तातें ऐसो वर

सहजसुधाई प्रीतिपुनीतनीतिनिपुणाई ४१ उपजिपरीममतामनमोरे कहौंकथानिजपूंछेतोरे ४२ अबप्रसन्नमैंसंशयनाहीं मांगुजो भूपभावमनमाहीं ४३ सुनिसुवचनभूपतिहरषाना गहिपदबिनयकीन्हबिधिनाना ४४ कृपासिंधुमुनिदर्शनतोरे चारिपदारथकरतलमोरे ४५ प्रभुहितथापिप्रसन्नबिलोकी मांगिअगमवरहोउंबिशोकी ४६॥दो० जरामरणदुखरहिततनसमरजितैनहिंकोउ एकक्षत्ररिपुहीनमहिराजकल्पशतहोउ ४७ चौ० कहतापसनृपऐसेहिहोऊ कारणएककठिनसुनुसोऊ ४८ कालौतवपदनाइहिशीशा एकबिप्रकुलछांड़िमहीशा ४९ तपबलबिप्रसदाबरिआरा तिनकेकोपनकोउरखवारा ५० जोबिप्रनबशकरहुनरेशा तबतवबश बिधिविष्णुमहेशा ५१ चलैनद्विजकुलसनबरिआई सत्यकहौंद्वौभुजाउठाई ५२ बिप्रशापबिनसुनुमहिपाला तोरनाशनहिंकवनेउ

मांगौं जातें बिशोकहोइजाउ ( ४६ ) दोहार्त्थ॥ हेनाथ यहवरदेउ जरा जोहै वृद्धता अरु मरण अरु सर्वव्यकार रहित मोरतनहोइ अरु समर बिषे मोसे कोई नहींजीते अरु शत कल्पताई राज्यहोइ इहां ब्रह्माकेबर्षको कल्पकहेउहै अरु एकक्षत्रपति मैं होउं मेरीरिपुहीन महिहोइ ( ४७ ) तब तपस्वीबोल्यो हेनृप जस तुमने वरमांग्यो है तैसेहीहोउ पर तहां एककारणकहित है सो सुनहु ( ४८ ) काल जो है सोऊ तुम्हारेपदमें शीशनाइहि पर एकब्राह्मण कुलकोछोड़िकै ( ४९ ) काहेते तपके बलसे बिप्र सदाबरिआर हैं तिनके कोपसें कोऊ रक्षकनहींहैं कहत यथार्त्थ है पर यहिकेआगे ब्राह्मणोंसे शापदिवावैको ताते अबहींसे पकाइति करावत है ( ५० ) हेराजन् जो किसीयत्नतें ब्राह्मणों को बशकरहु तौ तुम्हारेबश बिधि बिष्णु शिव होहिंगे ( ५१ ) बिप्रकुलतें बरिआई नहीं चलै यह मैं दूनौंभुजा उठाइकैं सत्य २ कहतहौं यहि वातबिषे यहधुनि है जातें ब्राह्मण नेवतिकै बोलावै ( ५२ ) हे महिपाल बिनाब्राह्मण के शाप कवनेहु कालमें तोर नाशनहीं है यहिबातमें यह आशय है कि तेरीपराजय बिना विप्रशाप और कोटिहूयत्नते नहीं है सो मैं करावौंगो ( ५३ ) जब यह मुनिनेकहा तब राजाहर्षको प्राप्तिभयो हे नाथ अब तुम्हारीकृपा मोपरभई है यहि ते मेरो नाश कबहूंनहीं है देखिये तौ छलकीबातनबिषे कालबश ऐसीप्रतीतिभई ( ५४ ) राजाबोल्यो हे नाथ अब तुम्हरे प्रसादतें मोकोंसर्व्वकाल कल्याण है ( ५५ ) दोहार्त्थ॥ कपटमुनि बोल्यो एवमस्तु पर हमारो मिलाप आप न भुलाउव जो किसूसे कहोगे तब तुम्हारो अकाजहोइ तौ हमारो दोषनहीं अपनी चतुराईतें राजाको चतुरजानिकै किसूसे कहना रोंकिदियो है ( ५६ ) हे राजन् ताते तुमको बर्जतहौं यहकथा जो और काहूतेकहहुगे तौ

काला ५३ हर्षेउराउबचनसुनितासू नाथनहोइमोरअबनासू ५४ तवप्रसादप्रभुकृपानिधाना मोकहँसर्बकालकल्याना ५५॥ दो०॥ एवमस्तुकहिकपटमुनिबोलाकुटिलबहोरि मिलबहमारभुवालनिजकहहु तौहमहिनखोरि ५६ ॥चौ०॥ तातेमैंतोहिंबरजौं राजा कहेकथातवपरमअकाजा ५७ छटेश्रवणयहपरतकहानी नाशतुम्हारसत्यममबानी ५८ यहप्रगटेअथवाद्विजशापा नाश तोरसुनुभानुप्रतापा ५९ आनउपायनिधनतवनाहीं जोहरिहरकोपहिंमनमाहीं ६० सत्यनाशगहिपदनृपभाषा द्विजगुरुकोपकहहु

तुम्हार परम अकाज होइगो मोर दोष नहीं जानव ( ५७ ) यह बाततुम जानौ कितौ मैं जानौ हौं छठये श्रवण बिषे जब यह परि है तौ तुम्हार नाश जरूर होइहि यहि बाणी बिषे अलंकार से दुइ अर्त्थ सत्यभये कि जो राजा किसू से यह बात कहैगो तौ जो राजा के बड़े बड़े बुद्धिमान् मंत्रीहैं वेसमुझिकै मेरोनाश करिडारैंगे अरु जब कपटमुनि अपने मित्रसे यह प्रसंगकहैगो छठे श्रवण परैगो तब राजाके नाशको कारण होइगो ( ५८ ) अथवा यहप्रसंग प्रगटतसंते ब्राह्मणकै शापहोइहि जबकपटमुनि अपने मित्रते प्रगटकरिहि तब द्विजशाप अरु कोपकोकारण होइहि अरु जब नभबाणीते प्रसंगको कारण प्रगटिहि तबशाप होइहि ( ५९ ) पुनि गर्ब्भितबाणी कहतहै यहदृढ़ निश्चय कियो कि राजाकोनाश केवल ब्राह्मणके शापते होइगो अवरिकोटिहूं यत्नते नहीं है अरु राजाकोवेदवाक्यसे सत्यप्रतीति करावै है ( ६० ) आगेराजाकी वाक्यदोहाताईं पदार्थैजानब ( ६५ ) हेनृप विप्रनको वशकरिबेकी अनेकनयत्नैं जगत्‌विषे हैं पर अतिकष्टतेसाध्यहैं तामें सिद्धिहोइ अथवा न होइ ( ६६ ) हेराजन् एक उपायसुगम है परताहूमें एकबात कठिनहै ( ६७ ) काहेते वह युक्तिमेरे आधीनहै अरु तुम्हारे नगरबिषे मेरो जाब नहींहोइगो ( ६८ ) काहेते आजुते अरु जबते मैं भयोहौं तबते काहूके गृहग्रामबिषे कबहूं नहींगयोंयह आसन छोड़िकै यहि वचनविषे अपनी बैराग्य आसनदृढ़ योगसिद्धि राजाको दिखावतभयो है अरु अपनेविषे राजाको गुरुत्वदृढ़ता करावतभयो अरु अपनेको यह कहतहै कि जबते मैं मुनिवेष बनइकै वनविषे

कोराखा ६१ राखहिगुरुजोकोपबिधाता गुरुबिरोधनहिंकोउजगत्राता ६२ जोनचलबहमकहेतुम्हारे होयनाशनहिंशोच हमारे ६३ एकहिडरडरपतमनमोरा प्रभुमहिदेवशापअतिघोरा ६४॥दो०॥ होहिंबिप्रवशकवनिविधि कहहुकृपाकरिसोउ तुमतजिदीनदयालनिज हितूनदेखौंकोउ ६५ चौ०॥ सुनुनृपबिविधियतन जगमाहीं कष्टसाध्यपुनिहोहिकिनाहीं ६६ अहहिएक अतिसुगमउपाई तहांपरंतुएककठिनाई ६७ ममआधीनयुक्तिनृपसोई मोरजाबतवनगरनहोई ६८ आजुलगेअरुजबतेभयऊं काहूकेगृहग्रामनगयऊं ६९ जौनजाउंतौहोइअकाजू बनाआइअसमंजसआजू ७० सुनिमहीशबोल्योमृदुबानी नाथनिगमअसनीतिबखानी ७१ बड़े सनेहलघुनपरकरहीं गिरिनिजशिरनसदातृणधरहीं ७२ जलधिअगाधमौलिबहफेनू संततधरणिधरैशिररेनू ७३ दो० असकहिगहेनरेशपद स्वामीहोहुकृपाल मोहिलागिदुखसहियप्रभु सज्जनदीनदयाल ७४ चौ० जानिनृपहिआपनआधीना बोलातापसकपटप्रबीना ७५ सत्यकहौंभूपतिसुनुतोहीं जगनाहींदुर्लभकछुमोहीं ७६ अवशिकाजमैंकरिहौंतोरा मनक्रमबचनभक्त-

बैठेउहौं तबते कहूंनहींगयों परराजै जानाकि आदिसृष्टि के पुरुषयेहैं ( ६९ ) परतैंमोर परम सेवकहै अब जो तोरेइहां न जांय तौ तोर परम अकाजहै अरु मोरनेमहै कि मैं कहूंनहीं जाउं यह असमंजसहै अरु यहिकी बाणीविषे यह ध्वनि है कि जो न जाउं तौ मोरई अकाज है अरु जाउं यदिकोई चीन्हिलेइ तब अनर्थहोइ यह असमंजस है किंतु अपने मनहिं में यहविचार कियो है ( ७० ) आगे एकहत्तरि बहत्तरि ( ७२ ) दुइचौपाई का अक्षरार्थैहै ( ७२ ) यहिप्रसंगविषेकेवल कपट पाखण्डवाणी कपटमुनिकहिकै आपन कार्य्यकरतहै अरु राजा भवितव्यताके बशहोइकै मूर्खह्वैगयो है यहि प्रसंग में तिहत्तरिकी चौपाईते बानबेकी चौपाईताईं को अक्षरार्थैजानब ( ९२ ) इतिश्री रामचरितमानसे सकलकलिकलुष बिध्वंसने बालकाण्डे कपटमुनि पाखण्ड बर्णनंनाम एकोनत्रिंशतितस्तरंगः २९॥ :: :: :: :: ::

तैंमोरा ७७ योगयुक्तितपमंत्रप्रभाऊ फलैतबहिजबकरियदुराऊ ७८ जोनरेशमैंकरौंरसोई तुमपरसहुमोहिजाननकोई ७९ अन्न सोजोइजोइभोजन करई सोइसोइतवआयसुअनुसरई ८० पुनितिनकेगृहजेवैजोऊ तवबशहोइभूपसुनुसोऊ ८१ जाइउपायरचहुनृप येहू संबतभरिसंकल्पकरेहू

८२॥दो०॥ नितनूतनद्विजसहसशतबरेहुसहितपरिवार मैंतुम्हरे संकल्पलगि दिनहिकरबजेवनार ८३ चौ०॥ यहिबिधिभूपकष्ट अतिथोरे होइहैंबिप्रसकलबशतोरे ८४ करिहैंबिप्रहोममखसेवा तेहिप्रसंगसहजहिबशदेवा ८५ और एकमैंकहउंलखाऊ मैंयहिबेष न आउबकाऊ ८६ तुम्हरेउपरोहित कहँराया हरिआनबमैंकरिनिजमाया ८७ तपबलतेहिकरि आपुसमाना रखिहौंयहांबर्षपरिमाना ८८ मैंधरितासुबेषसुनुराजा सबबिधितोरसँवारबकाजा ८९ गैनिशिबहुतशयनअबकीजै मोहितोहिभूपभेटदिनतीजै ९० मैंतपबलतोहितुरँगसमेता पहुँचैहौंसोवतहिनिकेता ९१ ॥ दो०॥ मैंआउबसोइबेषधरि पहिचानेहुतबमोहिं जबहिंबोलाइयकांतनृप कथासुनावौंतोहिं ९२॥ * *

चौ० शयनकीन्हनृपआयसुमानी आसनजायबैठछलज्ञानी १ श्रमितभूपनिद्राअतिआई सो किमिसोवशोचअधिकाई २ कालकेतुनिशिचरतहँआवा जेहिशूकरहोइनृपहिभुलावा ३ परममित्रतापसनृपकेरा जानैसोअतिकपटघनेरा ४ तेहिकेशत

दो० रामचरणतीसैलहरि रविप्रतापलहिशाप देवस्तुतिरावणबिजयभूमिबिकलभयदाप ( ३० ) सबप्रकारते अपनाइकै कपटमुनि बोल्योहेराजन् तुमश्रमितहहु रात्री दुइयामबीती अब चलोहम बताइदेंइ तहांजाइकै शयनकरहु भृपशयनकीन्ह आपुछलज्ञानी आसनपर बैठो आइ ( १ ) राजाश्रमित सोइगयो अरु कपटमुनिके शोच है कैसे नींदपरै ( २ ) ताहीसमय बिषे कालकेतुनाम निशिचर तेहिकेपास आयो जेहिंने शूकर रूपधरिकै राजाको भुलायो रहै प्रथम कालकेतु बनबिषे फिरतरहेउ ताहीने राजाको देखिकै शूकररूप धरेउरहै अरु वाहीमगबिषे भुलाइकै लैगयो जहां कछुकदूरि कपटमित्रको आसनरहै ( ३ ) सो राक्षस तापसनृपकोपरममित्र है सो अतिशय मायावीकपट बहुत जानैहै ( ४ ) आगे राक्षस जब अपनी राज्यपररहै तबतेहिके दशभाई अरु शतपुत्ररहैं वह खलबड़ोअजयरहै काहूते जीता न जाय ब्राह्मण वैष्णव देवादिकों को दुःखदातारहै ( ५ ) प्रथमहि राजा ने ब्राह्मण देवादिको दुखित देखिकै समरबिषे ताहीको जीत्यो ( ६ ) हे भरद्वाज वाहीखलने पाछिलवैर समुझिकै तापस नृपसे मिलिकै मन्त्रकीन ( ७ ) जाते रिपुकैक्षयहोइ सोई उपाइरचेनिराजा भानुप्रताप ने भावीबश मुनिकेकपटरूप बचन न जाने ( ८ ) दोहार्थ

सुतअरुदशभाई खलअतिअजयदेवदुखदाई ५ प्रथमहिभूपसमरतेहिमारे बिप्रसन्तसबदेखिदुखारे ६ तेहिखलपाछिलबैरसम्हारा तापसनृपमिलिमन्त्रविचारा ७ जेहिंरिपुक्षयसोइरचेनिउपाऊभावीबशनजानकछुराऊ ८ दो०॥ रिपुतेजसीअकेलअपिलघुकरि गनियनताहु अजहुदेतदुखरविशशिहिशिरअवशेषितराहु ९॥चौ०॥ तापसनृपनिजसखहिनिहारी हर्षिमिलेउउठिभयेसुखारी १० मित्रहिकहिसबकथासुनाई यातुधानबोलासुखपाई ११ अबसाधेउरिपुसुनहुनरेशा जोतुमकीन्हमोरउपदेशा १२ परिहरि शोचरहहु अबसोई बिनुऔषधहिब्याधिबिधिखोई १३ कुलसमेतरिपुमूलबहाई चौथेदिवसमिलबहमआई १४ तापसनृपहिबहुत

तहां यह नीति कहते हैं कि रिपुऋणरोग इनको लघु न जानै देखिये तौशिरबिनाराहु रविशशिको दुखदेत है ( ९ ) यह प्रथम भरद्वाजप्रति याज्ञबल्क्यको बचन कबिनेकहा तापसनृप अरु राक्षस मित्रकी बतकहाइकहिकै पुनिमिलाप तेहिकेआगे कहा तहां यह सिंहावलोकनि काब्यहै छन्द के प्रथम चरणके अन्तमें जो पदको अनुप्रासपरै सोई दूसरे चरणकेप्रथमपरै यहीरीतिते चारिहूचरणबिषेपरै ताते यह प्रसंगको अर्थ सिंहावलोकनि गोसाईंनेकहाहै हे भरद्वाज तापसनृप अरु राक्षसको सम्बादहमनेतुमसे प्रथमकहा पुनिमिलाप सुनहु ( १० ) जब तपस्वीको सखाराक्षस आयो तब तापसनृपराक्षस मित्रसे भानुप्रताप अरु अपने मिलापकासबप्रसंगकहिगयो तबयातुधानसुखपाइकैबोलतभयादश

अरुग्यारहचौपाई को मिलितअर्थहै ( ११ ) आगेचौपाइनके अक्षरार्थैजानबबारह चौपाई सेछब्बिसताई को समष्टी अर्थ कपटी मुनिको मित्रराक्षस वह महामायाबी रहै अपने मित्रको सब प्रकार ते बोधकरिकै राजाको घोड़ेसमेत एकक्षणमें उसके निवास में पहुंचादियो राजाको रानीके पास राख्योघोड़ा हयशाला में

परितोषी चलामहाकपटीअतिरोषी १५ भानुप्रतापहिबाजिसमेता पहुँचायसिक्षणमाहिंनिकेता १६ नृपहिरानिपहँशयनकराई हृदयगृहबांधेसिबाजिबनाई १७ दो०॥ राजाकेउपरोहितहिहरिलैगयोबहोरि लैराखेसिगिरिखोहमहँ मायाकरिमतिभोरि १८ चौ०॥ आपुबिरचिउपरोहितरूपा पर्‌योजाइतेहिसेजअनूपा १९ जाग्योनृपहुनभयोबिहाना देखिभवन अति अचरजमाना २० मुनिमहिमामनमाअनुमानी उठेउगवहि जेहि जाननरानी २१ काननगयउबाजिचढ़ितेही पुरनरनारिनजानेउकेही २२ गयेयामयुगभूपतिआवा घरघरउत्सवबाजुबधावा २३ उपरोहितहिदीखजबराजा चकृतबिलोकिसमुझिसोइकाजा २४ युगसमनृपहि गयेदिनतीनी कपटीमुनिपदरहिमतिलीनी २५ समयजानिउपरोहितआवा नृपहिमतेसबकहिसमुझावा २६ दो०॥ नृपहर्षे पहिचानिगुरु भ्रमबशरहानचेत वरेतुरतशतसहसवर विप्रकुटुम्बसमेत २७ चौ०॥ उपरोहितजेवनारबनाई छःरसचारिविधिजसश्रुतिगाई २८ मायामयतेहिकीनरसोई ब्यंजनबहुगनिसकैनकोई २९ बिबिधमृगनकरआमिषराधा तेहिमहँबिप्रमांसखलसाधा ३० भोजनकहँसबविप्रबोलाये पदपखारिसादरबैठाये ३१ परसनजबहिलागमहिपाला भैअकाशबाणीतेहिकाला ३२ बिप्रवृन्दउठिउठिगृहजाहू हैबड़िहानिअन्नजनिखाहू ३३ भयउरसोईं भूसुरमासू सबद्विजउठेमानिबिश्वासू ३४ भूपविकलमतिमोहभुलानी भावीबशनआवमुखबानी ३५दो०॥ बोलेबिप्रसकोपतब नहिंकछुकीन्हबिचार जाइनिशाचरहोहुनृप मूढ़सहितपरिवार ३६

बांध्योराजाने जागिके आश्चर्यमान्यो वाही घोड़ेपर चढ़िकर बनकोगयो पुनि दुइपहरबीते आयो पुरमें आनंदभयो अरु राक्षस ने राजा के उपरोहित को पर्बतमेंराख्यो आपुताहीको रूप बनाइके आयो राजैकेसे चीन्ह्यों रूपतो एकही तहां उपरोहितने स्वप्नहिंविषे कछु लक्ष कराइदियो कि हम आये पुनि वहिराजासों एकांतमें सब कह्यो है ( २६ ) सत्ताइसके दोहातेचौवालिसकी चौपाईताई अक्षरार्थै जानब ( ४४ ) दोहार्थ ॥ बिप्रबोल्यो हे राजन् यद्यपितैं निर्दोषहै तदपि ब्रह्मवाक्य शापहोइगई सो अमेटहै निर्दोष कहतसंते शापानुग्रह होतभयो तहांहराजन् हमारे शापतें तुमत्रैलोक्यविजयी राक्षस होहुगे अरु अपने निर्दोषते जो तुम अतिशयशुभ धर्मकर्म भगवत् अर्पण कीन्हेउहै ताते अंतबिषे तुम भगवत् को प्राप्तिहोहु अरु

क्षत्रबंधुतैंबिप्रबोलाई घालेलियेसहितसमुदाई ३७ ईश्वरराखाधर्महमारा जैहसितैंसमेतपरिवारा ३८ सम्बतमध्यनाशतवहोऊ जलदातानरहैकुलकोऊ ३९ नृपसुनिशापबिकलअतित्राशा भईबहुरिवरगिराअकाशा ४० बिप्रहुशापबिचारिनदीन्हा नहिंअपराधभूपकछुकीन्हा ४१ चकृतबिप्रसबसु- निनभबानी आपगयेजहँभोजनखानी ४२ तहँनअशननहिंबिप्रसुआरा फिरेउराउमनशोचअपारा ४३ नृपप्रसंगमहिसुरनसुनाई त्रसितपरेउअवनी अकुलाई ४४ दो०॥ भूपतिभावीमिटैनहिंयद्यपिदोषनतोर किये अन्यथासुहोइनहिंबिप्रशापअतिघोर ४५ असकहिसबमहिदेवसिधाये समाचारपुरबासिनपाये ४६ शोचहिंदूषणदैवहिदेहीं बिरचत हंसकागकियजेहीं ४७ उपरोहितहिभवनपहुँचाई असुरतापसहिखबरिजनाई ४८

तेइखलजहँतहँपत्रपठाये सजिसजिसेनभूपसबधाये ४९ घेरेनिनगरनिशानबजाई बिबिधभांतितहंपरीलराई ५० जूझेसकलसुभटकरि करणीबंधुसमेतपरेउनृपधरणी ५१ सत्यकेतुकुलकोउनबांचाबिप्रशापकिमिहोइअसांचा ५२ रिपुहिजीतिनृपनगरबसाई निजपुरगवनेजययशपाई ५३ दो०॥ भरद्वाजसुनु जाहिजबहोहिविधाताबाम धूरिमेरुसमजनकयम ताहिब्यालसमदाम ५४ कालपाइमुनिसुनुसोइराजा भयेनिशाचरसहित

यहिदोहा से आगे एकदोहाभरि कथा क्षेपकहै काहेते यहिक्षेपक दोहाकेअंत में चौपाई है तामें रावणकी चारिजगह पराभवकही है पर गोसाईंजीने रावणकी पराभवनहीं कही यह रामायण में किसी कल्पकी कथाहै ताते दोहा क्षेपकहै आगे बयालिसकी चौपाईते तिरपनकी चौपाई ताईं अक्षरार्थै जानब दोहार्थ॥ हे भरद्वाज जब जेहिपर बिधाता बामहोत है तबवहिप्राणी को धूरि मेरुपर्व्वत की समानहोति है अरु पिता अतिहितकारी है पर यमकेसमान दुःखदाताहोतहै अरु जेवरीसर्प होइजातिहै बिधाता जो ब्रह्माहैं ते संस्कार के फलदाता हैं यह सर्वजीवनपर है तहां भानुप्रताप को कौन संस्कार रह्यो है तहां राजाको श्रीरामकी यहआज्ञा होतिरही हैकि तुम प्राकृति मण्डलमें जायकै पृथ्वी को भारदेहु तब हम अवतीर्ण होहिंगे सो आज्ञा राजाको भूलिगई सोई संस्कार होइगयो अरु प्रभुकेबिक्षेपको स्मरणरह्यो ताते तुरन्त भगवत् प्राप्तिहीको धर्म्मकरैलाग्यो

समाजा ५५ दशशिरताहिबीसभुजदण्डा रावणनामबीरबरबण्डा ५६ भूपअनुजअरिमर्दननामा भयउसोकुम्भकरणबलधामा ५७ सचिवजोरहाधर्मरुचिजासू भयउविमात्रबंधुलघुतासू ५८ नामविभीषणजेहिजगजाना रामभक्तविज्ञाननिधाना ५९ रहेजोसुत सेवकनृपकेरे भयेनिशाचरघोरघनेरे ६० कामरूपखलजिनिसिअनेका कुटिलभयंकरबिगतविवेका ६१ कृपारहितसबहिंसक पापी वरणिनजाहिंविश्वपरितापी ६२ दो०॥ उपजेयदपिपुलस्त्यकुलपावनअमलअनूप तदपिमहीसुरशापबश भयेसकलअघ रूप ६३ चौ० १७६ कीन्ह बिबिधतपतीनिहुभाई परमउग्रसोवरणिनजाई ६४ गयेनिकटतपदेखिबिधातामांगहुबरप्रसन्नमैंताता ६५ करिबिनतीपदगहिदशशीशा बोल्यउबचनसुनहुजगदीशा ६६ हमकाहूकेमरहिंनमारे वानरमनुजजातिदुइवारे ६७ एवमस्तु तुमबड़तपकीन्हा मैंब्रह्मामलितेहिबरदीन्हा ६८ पुनिप्रभुकुम्भकरणपहँगयऊ तेहिबिलोकिमनबिस्मयभयऊ ६९ जोयहखल नितकरहिअहारा होइहिविश्वतुरतक्षयकारा ७० शारदप्रेरितासुमतिफेरीमांगेसि नींदमासषटकेरी ७१ दो०॥ गयेबिभीषणपास तबकहेउपुत्रबरमांग त्यहिमांगेउभगवन्तपदअमलकमलअनुराग ७२ तिन्हहिंदेइबरब्रह्मासिधाये हरषिततते अपने गृहआये ७३ मय तनुजामन्दोदरिनामा परमसुंदरीनारिललामा ७४ सोमयदीन्हरावणहिंआनी होइहियातुधानपतिजानी ७५ हर्षितभयो नारि

तहां श्रीरामाज्ञाते संस्कार फलदाता जो ब्रह्मा है जब राजा ब्राह्मणनकोभोजन करावनलाग्यो तब बिधाताकी आकाशबाणीभई तहां शापदेवाइकै राजाको निर्दोषकह्यो देखिये तौ ऐसो संस्कार प्रवल है ( ५४ ) पचपन की चौपाई ते चौहत्तरिकी चौपाई तक का अर्थ करत हौं सो जानिलेब श्रीमयतनुजा मन्दोदरी नामा ताको समष्टिअर्थ तहां महामुनि पुलस्त्य के कुलविषे विश्श्रवा महामुनिने कहूं सन्ध्याविषे रतिकियो तिनके राक्षसरूप भानुप्रतापही आयकै पुत्रउत्पन्नभयो तब कछुकदिन बीते मुनिने पुत्रनको त्यागि दीन तब माता और स्थान में लैकै रही तब पुत्रन जाइकै महातपकियो तब ब्रह्मै बरदीन्ह पुनि घरकोआये बड़ोप्रतापी बलीजानिकै मयनामे दानव रह्यो यह अपनीकन्या रावणको देतभयो जेहिको म-

भलिपाई पुनिदोउबंधुबिवाहेसिजाई ७६ गिरित्रिकूटयकसिंधुमझारी बिधिनिर्म्मितदुर्गमअतिभारी ७७ सोमयदानवबहुरि सवांरा कनकरचितमणिभवनअपारा ७८ भोगावतिजसअहिकुलबासा अमरावतिजसशक्रनिवासा ७९ तिनतेअधिकरम्यअतिबंका जगबिख्यातनामतेहिलंका ८०॥दो०॥ खाईंसिंधुगँभीरअति चारिहुदिशिफिरिआउ कनककोटमणिखचितदृढ़ बरणि न जाइबनाउ ८१ हरिप्रेरित जेहिकल्पजोइ यातुधानपतिहोइ शूरप्रतापी अतुलबलदलसमेतबशसोइ ८२॥ चौ०॥ रहेतहांनिशिचरभटभारे तेसबसुरनसमरसंहारे ८३ अबतहँरहहिंशक्रकेप्रेरे रक्षककोटियक्ष पतिकेरे ८४ दशमुखकतहुँखबरिअसिपाईसेनसाजिगढ़घेरेसिजाई ८५ देखिबिकटभटअतिकटकाई यक्षजीवलैगये पराई ८६ फिरिसबनगरदशाननदेखा गयेशोचसुखभयउबिशेखा ८७ सुन्दरसहजअगमअनुमानी कीनतहांरावणरजधानी ८८ जेहिजसयोगबांटिगृहदीन्हे सुखीसकलरजनीचरकीन्हे ८९ एकबारकुबेरपहँधावा पुष्पकयानजीतिलैआवा ९०॥दो०॥ कौतुकहीकैलासपुनि लीलहिलीनउठाय मनहुतौलिनिजबाहुबल चला बहुतहरषाइ ९१ देवयक्षगन्धर्बनर किन्नरनागकुमारि जीतिबरींनिजबाहुबल बहुसुन्दरिबरनारि ९२ ॥चौ०॥ सुखसम्पतिसुत

मन्दोदरीनामपरमसुन्दरीललामकही अतिलालित्यशृंगाररसमयअंगअंगहैमंद + उदरी = मन्दोदरीमन्दनामसूक्ष्मकोतातेसूक्ष्म है उदरकटिजेहिकीताते मन्दोदरी कही पुनि मन्दकही अज्ञानको जेहिके उदरमें मन्दमन्द उत्पन्नभये ताते मन्दोदरी नाम अरु रावणनाम जो सबको रोवावै उसे रावण कही आगे ब्राह्मणन बिना विचारे निर्दोषशाप दिहेनि तेहिको फल विधाता रावणकरिके जो ब्रह्मण मुनि ऋषि हैं तिनको दण्डदेत है अरु देवतनको आपनबादी जानिकै दुःखदेत है ( ७४ ) पचहत्तरिकी चौपाई ते तिरानबेकी चौपाई ताईं अक्षरार्थ जानब ( ९३ ) दिनदिनप्रति निशिचर बढ़तजात हैं कैसे जैसे प्रतिलाभ लोभबढ़तजात है जैसे कोईके दशरुपय्याकै बासनाभई अरु प्रारब्धके योगते दश मिलिगये तब वहिके लोभबढ़ेउ

सेनसहाई जयप्रतापबलबुद्धिबड़ाई ९३ नितनूतनसबबाढ़तजाही जिमिप्रतिलाभलोभअधिकाही ९४ अतिबलकुम्भकरणअसभ्राता जेहिकहंनहिं प्रतिभटजगजाता ९५ करैपानसोवैषटमासा जागतहोहितिहूंपुरत्रासा ९६ जोदिनप्रतिअहारकरुसोई बिश्वबेगि सबचौपटहोई ९७ समरधीरनहिंजाइबखाना तेहिसमअधिकसुभटबलवाना ९८ वारिदनादज्येठसुततासू भटमहँ प्रथमलीकजग जासू ९९ जेहिनहोइरणसम्मुखकोई सुरपुरनिततहिपरावनहोई १००॥दो०॥ कुमुखअकंपनकुलिशरद धूम्रकेतुअतिकाय एक एकजगजीतिसकु ऐसेसुभटनिकाय १०१ ॥चौ०॥ कामरूपजानहिंसबमाया स्वपनेहुजिनकेधर्म्मनदाया १०२ दशमुखबैठसभा यकबारा देखिअमितआपनपरिवारा १०३ सुतसमूहजनपरिजननाती गनैकोपारनिशाचरजाती १०४ सेनबिलोकिसहजअभिमानी बोलाबचनक्रोधमदसानी १०५ सुनहुसकलरजनीचरयूथाहमरेबैरीबिबुधबरूथा १०६ तेसम्मुखनहिंकरहिंलड़ाई देखि सबलरिपुजाहिंपराई १०७ तिनकरमरणएक विधिहोई कहौंबुझाइसुनहुसबसोई १०८ द्विजभोजनमखहोमशराधा

यहिकरजाइकरहुतुमबाधा १०९ ॥दो०॥ क्षुधाक्षीणबलहीनसुरसहजहिमिलिहैंआइ तबमारिहौंकिछांड़िहौं। भलीभांतिअपनाइ ११० मेघनाद कहँपुनिहँकरावा दीन्हशीषबलबैरबढ़ावा १११ जेसुरसमरधीरबलवाना जिनकेलरिबेकरअभिमाना ११२ तिन्हैंजीतिरणआनसु बांधी उठिसुतपितुअनुशासनकांधी ११३ यहिबिधिसबहीआज्ञादीन्हे आपुनचलागदाकर लीन्हे ११४ चलतदशाननडोलत

कि बीसहोते तौ तौ काम सिद्धिहोतो ऐसेहीप्राप्ति होतजात है पर लोभबढ़तजात है सन्तोष नहींहोत जो राजाताईं होइ राजाको इन्द्रहोवे को लोभ इन्द्र के ब्रह्माहोवेको लोभ ब्रह्माके भगवान् होबेको लोभ ऐसे वृथाबासनाते लोभ बढ़तजातहै पर परिणाम में नाशवान् सबकाशरीर है जैसे निशिचर बढ़िकै सबकेधर्मके नाशकर्त्ता हैं तैसे लोभबढ़ेते अपने धर्मकीनाशहोतीहै ( ९४ ) पंचानबेकी चौपाई ते एकसौ तेइसकी चौपाईताईं अक्षरार्थै जानब ( १२३ ) दोहार्थ॥ अपने भुजन के बलते रावण ने सम्पूर्ण विश्वजो ब्रह्माण्डकोष जहांलगि ब्रह्मसृष्टिरही तीनिहुंलोक देव दानव मनुष्य पांचोंतत्त्व तीनोंगुण चन्द्र सूर्य इत्यादिक चराचर सबको बशकियो काहूको स्वतंत्र नहींराख्यो सम्पूर्णप्रकृतिमण्डलबिषे निजमंत्रस्वतंत्र राज्य

अवनी गर्जतगर्भश्रवहिंसुररवनी ११५ रावणआवतसुनेउसकोहा देवनतकेउमेरुगिरिखोहा ११६ दिगपालनकेलोकसिधाये सूनेसकलदशाननपाये ११७ पुनिपुनिसिंहनादकरिभारी देइदेवतनगारिप्रचारी ११८ रणमदमत्तफिरैजगधावा प्रतिभटखोजतकतहुँनपावा ११९ रविशशिपवनबरुणधनुधारी अग्निका लयमसबअधिकारी १२० किन्नरसिद्धमनुजसुरनागा हठिसबहीकेपंथहिलागा १२१ ब्रह्मसृष्टिजहँलगितनुधारी दशमुखबश्यसकलनरनारी १२२ आयसुकरहिंसकलभयभीता नवहिंआइनितचरण पुनीता १२३ ॥दो०॥ भुजबलविश्वबश्यकरिराखिसिकोउनस्वतंत्र मण्डलीकमणिरावणराजकरहिनिजमंत्र १२४ इन्द्रजीतसनजोकछुकहेऊ सोजनुसबपहिलेहिकरिरहेऊ १२५ प्रथमहिंजिनकहंआयसुदीन्हा तिनकेचरितसुनहुजोकीन्हा १२६ देखतभीमरूपसबपापी निशिचरनिकरदेवपरितापी १२७ करहिंउपद्रवअसुरनिकाया नानारूपधरहिंकरिमाया १२८ जेहिबिधिहोइधर्मनिर्मूला सोसबकरहिंवेदप्रतिकूला १२९ जेहिजेहिदेशधेनुद्विजपावहिं नगरग्रामपुनिआगिलगावहिं १३० शुभआचरणकतहुं नहिंहोई देवबिप्रगुरुमाननकोई १३१ नहिंहरिभक्तियज्ञजपज्ञाना स्वपनेहुसुनियनवेदपुराना १३२॥ छं० चौपय्या॥ जपयोगबिरागा

करै मंत्रिन ते पूछैसही पर काहूके मंत्रमें चलैनहीं प्रभुकी एक पादविभूति राजारावणहोतभयो प्रभुनेसामान्य ऐश्वर्य और बिभूतिदीन जहां ब्रह्मा नित्य वेदपढ़िबेको जाहिं शिवजू संहिता गानकरिबे को जाहिं वृहस्पतिस्मृतिपढ़िबेकोजाहिं तुम्बरादि गन्धर्ब गानकरैजाहिं रम्भादिक अप्सरा नृत्यकरिबेकोजाहिं दशौदिक्पाल स्तुतिकरिबेको जाहिं ऐसोप्रतापी बलीरावणभयो ( १२४ ) एकसौपचीसकी चौपाईते एकसौ छत्तिसकी चौपाई ताईं अक्षरार्थै जानब ( १३६ ) ऐसो उपद्रव संसार में राक्षसनकीन तहांकछु राक्षसनकेभय अरु कछु पापते सबकैमति मलीनहोइगई तब माता पिता देव ब्राह्मण गुरु इत्यादिकोंको कोईनहींमानै अरु इनसबते बिनाप्रयोजन विरोधराखहिं आपबैठेरहैं इनते टहललेहिं अरुसाधु जे महान् हैं अरु जिनके कण्ठी तिलकमात्र देखहि तिनते विशेष टहल करवावहिंआप हुकुमकरहिं ( १३७ ) तहां हेपार्व्वती जिन प्राणिन के ऐसे आचरण देखिये कोई होहितिनकोनिशिचरैजानब काहेते कि निशिचरनको पापकर्म्म है अरु मनुष्यतनपाइकै निशिचरन के कर्म्मकरै है इससे उसप्राणीको

तपमखभागाश्रवणसुनतदशशीशा आपुनउठिधावैरहैनपावैधरिसबघालैखीसा १३३ अतिभ्रष्टअचाराभासंसारा धर्म्मसुनैनहिंकाना तेहिबहु विधित्रासै देशनिकासै जोकहवेदपुराना १३४॥ सो०॥ बरणिनजाइअनीति घोरनिशाचरजोकरहिं हिंसा परअतिप्रीति तिनकेपापनकवनिमिति १३५ चौ० बाढ़ेखलबहुचोरजुआरा जेलम्पटपरधनपरदारा १३६ मानहिंमातुपितानहिं देवा साधुनसनकरवावहिंसेवा १३७ जिनकेअसआचरणभवानी तेहिनिशिचरसमजानियप्रानी १३८ अतिशयदेखिधर्म्मकै हानी परमसभीतधराअकुलानी १३९ गिरिसरसिंधुभारनहिंमोही जसमोहिगरुअएकपरद्रोही १४० सकलधर्म्मदेखैविपरीता कहिनसकैरावणभयभीता १४१ धेनुरूपधरिहृदयबिचारी गईतहांजहँसुरमुनिझारी १४२ निजसंतापसुनायसिरोई काहूतेकछु कार्यनहोई ॥१४३॥ * * * * * *

विशेषकै महानिशिचर जानिये ( १३८ ) अतिशयधर्म्मकै हानिदेखिकैपरमभयमानिकै धराअकुलायउठी ( १३९ ) कि गिरिसुमेरु आदिक पर्वत सर सिंधु इनको भारमोको असगरूनहींहै जसकछु परद्रोहीको भारहै ( १४० ) सर्वधर्म्मको बिपरीति देखिकै रावणके भयते कछु कहिनहींसकै ( १४१ ) तब देव अरु मुनिनकेपास जाइकै निजदुःखरोइकै कहेउ ( १४२ ) तबसबन जवाबदीन हमसे कछुनहीं होइगो ( १४३ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसने बालकाण्डेरावणदिग्विजयबर्णनंनामत्रिंशतिस्तरङ्गः॥३०॥

दो० यकतिससुभगतरंग में रामचरणसुखदेतु देवस्तुतिबरदानपुनिपरब्रह्म अतिहेतु ३१॥ एकछंद अरु दूसर सोरठा को अक्षरार्थैजानब ( २ ) महादेवबोले हे पार्बती ब्रह्मादिक सब देवताबैठे बिचार करनेलगे प्रभुको कहांपुकारी कहांपाई ( ३ ) कोई कहै कि बैकुण्ठ को चलहु कोई कहै क्षीरसागर को चलहु तहां प्रभुरहते हैं ( ४ ) तबहेउमा मैंने बिचारयो कि जहांजसो जाको प्रेम प्रभाव है तहां प्रभुताको तैसेही प्रत्यक्ष हैं ( ५ ) हे पार्बती तेही समाजबिषे महूंरहौं तबमैं अपने मन में बिचार किह्यउंकि कछुकहौं ( ६ ) तबमेरे बिचार में यह आयो कि अबकी तौ इसकल्पविषे नतो बैकुंठते अवतार है न तो क्षीरसागरतेअवतारहोइगो तहांयहभेद मैंजानतहूं और कोईनहींजानत यहिकल्पबिषेपरमपुरुषपरमात्मापरब्रह्म सच्चिदानंदविग्रह

चौपय्याछं०॥ सुरमुनिगंधर्वामिलिकरिसर्बागयविरंचिकेलोका संगगोतनुधारीभूमिबिचारी परमबिकलभयशोका ब्रह्मैसबजानामनअनुमानामेरो कछुनबसाई जाकरतैंदासीसोअविनाशीहमरोतोरसहाई १ सो०॥ धरणीधरुमनधीर कहबिरंचिहरिपद सुमिर जानतजनकीपीर प्रभुभंजहिंदारुणबिपति २ चौ०॥ बैठेसुरसबकरहिंबिचारा कहँपाइयप्रभुकरियपुकारा ३ पुरबैकुंठ जानकहकोई कोउकहपयनिधिबसप्रभुसोई ४ जाकेहृदयभक्तिजसिप्रीती प्रभुतहँप्रकटसदायहरीती ५ तेहिसमाजगिरिजामैंरहेऊं अवसरपाइबचनयककहेऊं ६ हरिव्यापकसर्वत्रसमाना प्रेमतेप्रकटहोहिंमैंजाना ७ देशकालदिशिबिदिशिहुमाहीं कहहुसोकहां

निर्बिशेषमूर्त्तितेअवतीर्णहोहिंगे अरुदेवतापरम्पराबैकुण्ठ क्षीरसागरतेअवतारजानतेहैं तबमैं आक्षेपालंकारकरिकैयुक्तिसे श्रीरामचन्द्रको ब्यापक रूपअरु श्रीरामचन्द्र जो परस्वरूप तिनदोनोंरूपनकी एकताकरिकैव्यापकरूप देवतनते कछुकहतभयों यह बिचारिकै कि जहांजाको जैसोभाव प्रेम है तहां तैसेही प्रभुप्रत्यक्ष हैं ( ७ ) तब मैं बोल्यों हेदेवतहु तुमहूंनहींजाहुकाहेते ऐसोकवनदेश कालदिशिविदिशि है जहां प्रभुनहींहैं देशकहींद्वीपद्वीप देशकहीं खण्डखण्ड जैसे भरतखण्डबिषेश्रीकोशलदेश मैथिलदेशमगहदेशवङ्गालादेश

उड़ैसादेशतैलङ्गदेशमल्लारदेश मालवादेश गुजरातदेशब्रजदेश इत्यादिक अनेकनदेश हैं पुनिकालकही जो सूर्य्य की किरणि झरोषेमेंरहैहैताकी त्रिसरेणुसंज्ञा है पुनितीस त्रिसरेणु करिकै परिमाणुकही तीसपरिमाणुको अणुकही साठिअणुको लवकही साठिलवको निमेषकही साठिनिमेषको पलभयो साठिपलको दण्डभयो साठिदण्डको दिनरातिभयो तीसदिनरातिको मासभयो बाहरमासको बर्षभयो इत्यादि बर्षन करिकैयुगकल्प महाकल्प ताको कालकही पुनि चारिदिशाहैं पश्चिम उत्तर पूर्व दक्षिण पुनिषद् उपदिशाहैं बायब्य ईशान अग्नि नैर्ऋत्य ऊद्र्ध्व अर्धपुनिइनकोबीच ताको बिदिशि कही तहां देशकाल दिशिबिदिशि ऐसो कौन ठौरहै जहांप्रभु परिपूर्णनहींहैं ( ८ ) सर्बत्रपूर्णहैं अरु अगकही स्थावरजगकही जंगम तेहि चराचरमय प्रभुहैं अरु सर्बतेबिरक्तहैं भिन्न हैं पर प्रेमतेप्रभु प्रत्यक्षहोत हैं कैसे जैसे दारुदारुकी घृष्टिते अग्निप्रत्यक्षहोती है ( ९ ) हेपार्बती मोरबचन सब समाज के मनभायो ब्रह्मैमोको साधुसाधु कहिकै सराह्यो पुनिकहेउ हेदेव मुनिहु शिवसाधु हैं साधुनकेबचन सिद्धांत हैं ( १० )॥ दोहार्थ॥ बिरंचि प्रेमते स्तुतिकरनेलगे ( ११ ) ब्रह्माकी

## जहांप्रभुनाहीं ८ अगजगमयसबरहितबिरागी प्रेमतेप्रभुप्रकटैंजिमिआगी ९ मोरबचनसबकेमनमाना साधुसाधुकहिब्रह्मबखाना १० दो०॥ सुनिबिरंचिमनहर्षितनुपुलकिनयनबहनीर पुलकिगातअस्तुतिकरतसावधानमतिधीर ११ छंद॥ जयजयसुरनायक जनसुखदायकप्रणतपालभगवन्ता गोद्विजहितकारीजयअसुरारी सिंधुसुताप्रियकंता पालनसुरधरणीअद्भुतकरणीमर्म्मनजानैकोई जोसहजकृपालादीनदयाला करहुअनुग्रहसोई १२ जयजयअबिनाशीसबघटबासीव्यापकपरमानन्दा अविगतगोतीताचरितपुनीतामायारहितमुकुन्दा जेहिलागिविरागीअतिअनुरागी-बिगतमोहमुनिवृन्दा निशिवासरध्यावहिंगुणगणगावहिंजयतिसच्चिदानन्दा १३ जेहिसृष्टिउपाईत्रिविधबनाईसंगसहायनदूजा सोकरउअधारीचिन्त-हमारीजानियभक्तिनपूजा जोभवभयभञ्जन

स्तुतिबिषे चौपय्या छन्दहै सोरह चरणहैं ताते चारिछन्दहैं प्रथमछन्दमें चारिचरण ताको अक्षरार्थै जानब ( १२ ) ब्रह्माबोले हेप्रभु तुम्हारी जयजय ताको बिशेषण तुमसदा जयमान्हौ कल्याणरूप सदाचिरञ्जीवित्रैलोक्यपूज्य सुयशमान् सर्बोपरि अबिनाशी सर्बघटवासी सर्बब्यापक परमानन्दस्वरूप पुनि अविगति तुम्हारीगति कोई नहीं जानै अरु बाह्यांतर इन्द्रिनतेपरेहौ मायातेरहितहौ अरु पञ्चप्रकार की मुक्ति तेहिकेदाता हौ ऐसे तुमकोजानिकै संसारते बिरक्तहोइकै तुमबिषे मुनिवृन्द अनुरागकरते हैं मोहतेछूटिकै तुमको प्राप्तहोते हैं अरु जे तुमको अहर्निशि ध्यावते हैं तुम्हारेगुण गावते हैं अरु व्यवहारमेंहैं तेऊ तुमको प्राप्त हैं तुमकृपालुहौसच्चिदानन्दहौ तुम्हारीजय ( १३ ) ब्रह्माबोले जेहिसम्पूर्ण सृष्टिको उपाइ नामउत्पन्नकीनहै पर बिनासहाय सो हे परमेश्वर तुमने स्वतन्त्र स्वेच्छिततीनिप्रकारकी सृष्टिरचीहै सात्विकी राजसी तामसी देवमनुष्य दानव विषयी साधक सिद्धइत्यादिक त्रिधासृष्टिकही एकजीवसृष्टि एक ऐश्वरीसृष्टि एकब्रह्मसृष्टि है जीवसृष्टिमेंजेहैं तेस्वप्नसुषुप्ति अवस्थाबिषे सदा हैं अरु स्वप्नस्वरूप जो संसार है ताहीमें बर्त्तमान हैं अरुजे ऐश्वरीसृष्टिमेंहैंतेजाग्रत् अवस्थाबिषे बर्तमानहैं वे ईश्वरीतत्त्वभी जानते हैं अरु बिषयमें परेहैं अरु ब्रह्मसृष्टिवाले तुरीयावस्था में तदात्मक सच्चिदानन्द लक्षणहीसदाबर्त्तमान हैं अरु जे यवनजीव हैं तिनकै तैसी २ बासना बनीहै अरु वाहीतत्त्वको प्राप्तउहैं अरु उनको वैसे शास्त्र आचार्य्य उपदेशकगुरु हैं तत्रप्रमाणमागमसारे श्लोकाः॥ त्रिधासृष्टिः पुराजातात्रैकाजीवसंगकाद्वितीयाचैश्वरीसृष्टिर्ब्रह्मसृष्टिस्तृतीयका १ जीवसृष्ट्याद्विधावस्था सुषुप्तिःस्वप्नमध्यगा ऐश्वर्य्याजागरावस्था ब्रह्मसृष्ट्यातुरीयका २ ब्रह्मसृष्टिसमुत्पन्ना स्तुरीयात्मानएवये रहस्यन्तेविजानन्ति सच्चिदानन्दलक्षणं ३ येयेयद्यद्भवाजीवास्तेतेतद्वासनान्विताः तत्तद्ज्ञानंप्रपद्यन्ते शास्त्राचार्य्योपदेशतः ४

## मुनिमनरंजनगंजनबिपतिबरूथा मनवचक्रमबानीछांड़िसयानीशरणसकलसुरयूथा १४ शारदश्रुतिशेषाऋषयअशेषाजाकहँकोउनहिंजाना जेहिंदीनपियारेवेदपुकारेद्रवौसोश्रीभगवाना भववारिधिमन्दरसबबिधिसुन्दरगुणमन्दिरसुखपुंजा मुनिसिद्धसकलसुर परमभयातुरनमतनाथपदकंजा १५ दो० जानिसभयसुरभूमिसुनिबचनसमेतसनेह गगनगिरागम्भीरभइहरणिशोकसन्देह १६ चौ०

ब्रह्माकहते हैं हे प्रभु तुमसम्पूर्णपापके हरैयाहो हमारेदुःखको चिंतवनआपकरिये तुम्हारी पूजाभक्ति एकौनहींजानते जो प्रभु सबभय भंजन हैं अरु मुनिनकेमनको रञ्जनकही आनन्ददाता हैं अरु सम्पूर्ण विपत्तिनाशकरत हैं सो प्रभु हमारी रक्षाकरैं हे प्रभुहम जो देवता हैं सो मनक्रमवचनते सबसयानीछोड़िकै तुम्हारीही शरण हैं सयानीकही हमारीचतुराई और बल राक्षसनतेनहींचलै इससे हमसब तुम्हारीही शरण हैं ( १४ ) शारद श्रुतिशेषा ऋषयअशेषा कही सम्पूर्ण सिद्धदेवता कवीश्वर जेहिप्रभुको कोई नहींजानिसकै हे प्रभु दीनजन तुमको बहुतप्रियहैं वेदकहते हैं अरु हमसब देवतादीनहैं ताते हे श्रीभगवान् तुमद्रवहु भगवान् शब्दकोअर्थ पूर्व्व कहिआये हैं हे प्रभुतुमकैसेहो भव जो संसार सो समुद्र है किंतु तुम्हारनाम मन्दराचलपर्व्वत है ताकोमथिकै अमृतस्वरूप जो उत्तमगुण सोकाढ़ि कै देवतारूपतुम्हारेसन्ततिनकोबांटिदेतेहौ ऐसेतुमदयालुहौ अतिसुन्दर दिव्यगुणके मन्दिर सुखकेपुंजहौ हेप्रभु मुनिसिद्ध सकलदेवताभयकरिकै आतुरविकल हैं ते तुम्हारे पदकञ्जविषे नमत हैं ( १५ ) दोहार्थ सम्पूर्ण देवता सिद्धमुनि इत्यादिक सबको भयसंयुक्तजानिकै अरु तिनकेवचन अतिआरत प्रेमसंयुक्त सुनिकै परमात्माकी आकाशबिषे अति गम्भीर शोकसन्देह हरनहारी बाणी होतभई ( १६ ) हे देवमुनिसिद्ध तुम जनिडरपहु तुम्हारेहेतु मैं नरवेष धारणकरौंगो नरवेषकही सबके देखिबे को मनुष्यइव जैसे कोईराजाको अलङ्कारलीला तैसे धारण करैंगे अरुश्रीरामदासनके देखिबेमे कैसोहैउहै अलङ्कारलीला स्वरूप परब्रह्ममय है ( १७ ) अंशनसहित मनुजकही मनुष्यावतार लेउंगो इस अर्त्थ बिषेदुइविरोध होतहैं एकउपासनाबिरोध दूसरशास्त्रविरोध काहेते यहिमें यह आशय आई कि पूर्व्वहीएक आपुहीकछु और स्वरूपरहे अब देवतनमुनिनसनकहत हैं अपने अंशनसंयुक्त मनुष्य अवतार मनुष्यरूप में श्री रामभरत लक्ष्मणशत्रुहन होउंगो यहिअर्थमें दुइविरोधभये काहेते श्रीरामचन्द्रजी भरत लक्ष्मण शत्रुहनचारिउस्वरूपकिशोरमूर्ति द्विभुज किरीट कुण्डल बनमाल पीताम्बर धनुर्वाणइत्यादिक अलङ्कारसंयुक्त नित्यअखण्डएकरस सर्वोपरिप्रकृतिकेपरे परधाम ऐसोस्वरूप विराजमानसोस्वरूप

## जनिडरपहुमुनिसिद्धसुरेशा तुम्हहिंलागिधरिहौंनरवेशा १७ अंशनसहितमनुजअवतारा लेइहौंदिनकरबंशउदारा १८ कश्यप

श्रीतुलसीदासजी ने राजामनु के दर्शनविषेकहा है ताते यह चौपाई अर्थ सन्धिसंकेतसंयुक्तकहीहै अंशनसहित अनुजसहित तहां तकारकेआगे जो मकार है ताको अनुस्वारहोत है अरु मकार की अकार लैकैअनुजपदहोत हे ताते अंश सर्व्वसखादासजानिये अरु अनुजतीनोंस्वरूप अरु तिनअंशन सखादासइनसबकेसहित सूर्य्यबंशविषे अवतीर्णहोउंगो सूर्य्यबंशकैसो है अतिउदारउदारकहीसर्व्वोपरिवंश सर्व्वसदानी सर्व्वकोप्रकाशकर्त्तासर्व दुःखहर्त्ता ताहीबंशमेंअवतीर्णहोउंगो ( १८ ) नभबिषे ब्रह्मवाणी यहहोतभई हेदेवतहुकश्यप अदितिने महातपकीन्ह है तिनकोमैंने पूर्व्वहीवरदीन्ह है वे ही श्रीअयोध्याविषे श्रीदशरथकौशल्याभये हैं जो कोई कहै कि तीनिकल्पबिषे बिष्णुभगवान् बैकुण्ठतेरामावतार गोसाईंने वर्ण्यो है तहां कश्यप अदिति दशरथ कौशल्याभये हैं अरु यहिकल्पबिषे परब्रह्म परमेश्वरहीका अवतार साक्षात् होइगो अरु स्वायम्भूमनु रानीशतरूपाने तपकीन्हहैते दशरथ कौशल्या श्रीअवध में भये हैं अरु ब्रह्मबाणी तो सत्यसंकल्प है तहां यह ब्रह्मबाणीकाकहै है यह सन्देह है यहतुम सत्यकह्यो तहां ब्रह्म बाणीबिषेतात्पर्य और है कौनतात्पर्य है भारतसंयुक्त जीवनबिषे जो वासनाहोति है सो कर्म्मानुसार तेहिकोफल दाताईश्वर है तहां देवतनकैवासनायह है कि हे प्रभु पृथ्वीको भारउतारहु जामें हम सुखीहोहिं तहांपालनशक्ति बिष्णुभगवान्की है अरु बिष्णुभगवान् बहुधा कश्यपही के अवतारलेते हैं ताते देवतनके प्रयोजनमात्रहेतु बिष्णुरूपबाणी होतभईकाहेते कि

बिष्णुभगवान् जो हैं सो परब्रह्म के महत्अंश हैं तहां अंशअंशीएकही हैं जैसेगङ्गाकीबड़ी धाराहै अरु गङ्गाकाकोईस्रोत है बड़ीधारामेंमिली है सो बड़ीधाराकोमहत्अंश है सोदूनोंएकही तत्त्व हैं तहां स्रोत ईश्वरतत्त्वकही अरु बड़ीधारा परब्रह्म तत्त्वकही तहांदूनों एकहीहैं सर्वज्ञ हैं अरु जो घटबिषे गङ्गाजल भरिजात है सो जीवतत्त्व अल्पज्ञहै तहांपरब्रह्म परमेश्वर जो श्रीरामचन्द्र सो श्री बिष्णु भगवान् को अपनो स्वरूपअभेदमानिकै बिष्णुरूपबाणी बोलतेभये अरु तीनअवतारविषे विष्णुभगवान्ने पूर्वही कश्यपको बरदीन है ताते ब्रह्मबाणी सत्यकहैहै यहिचौपाई को यह अभिप्राय है जो कहिआये हैं कश्यप अदितिमहातपकीन्हातिनकहँमैंपूरुबरदीन्हा पुनियहि चौपाई को दूसर अभिप्राय है (प्रमाणंश्लोकैकचरणम्) रामोद्विर्नाभिभाषते जाको श्रीरामचन्द्र ने एकबार देख्यो किन्तु श्रीरामचन्द्र को प्रत्यक्ष अथवा ध्यानबिषेदेख्यो अरु जो कोई श्रीरामशरण एकहूबारभयो अरु श्रीरामचन्द्रने जो बचन कहा अरु काहूको कछुदीन फिरनहीं दूसरीबात सो अचल है तहां श्रीविष्णुको विष्णुपदवी बिधिको बिधिपदवी शिवकोशिवपदवी श्रीरामचन्द्र दीनहै सो तुलसीदासने विनय पत्रिका में कहा है हरिगीतिका छन्द॥ हरिहिहरिता बिधिहिबिधिता शिवहिशिवता जिनदई। सोइजानकीपतिमधुरमूरतिमोदमय मङ्गलमई॥ देखिये तौ श्रीरामचन्द्रजी ऐसे मर्यादापुरुषोत्तम हैं तहां बिष्णुको पालनशक्तिदीन है अरुदेवतनकेहेतु राक्षसन को बध अरु पृथ्वीके पालन को प्रयोजन आइपरेउ है ताते बिस्मयरूप होइकै आकाशबिषे परब्रह्मबाणी होतभई काहेते कि सबकोई जानै कि बैकुण्ठते श्रीबिष्णु भगवान्ने श्रीअयोध्याबिषे राजा दशरथ महाराज के भवनबिषे श्रीरामावतारलीनहै अरु जब श्रीदशरथमहाराजके अवतीर्णहोइकै परमदिव्यहोइकै लीलाकरहिंगे तब भृगुलताभी धारणकरैंगे अरु जब राजामनु की अभिलाषा परात्परतम पुरुष के स्वरूपकीभई तब सोई पुरुष प्राप्तभयो तब भृगुलता गोसाईं ने नहींबर्ण्यो अरु जब दशरथमहाराजके अवतीर्णलीलाबिषे भृगुलता कहेहैं अरु बैकुण्ठ बिषे श्रीबिष्णु स्वरूप में बक्षस्स्थल बिषेभृगुमुनि चरणस्पर्श कीन है अरु परबिभूति परपुरुष को यहि तनुमें किसूकी प्राप्तिनहीं है शुकसनकादि नारदादिकन की यहितनुमें प्राप्तिनहीं है ताते परब्रह्मबाणी विष्णु स्वरूपहोइकै कश्यपको दशरथ अदितिको कौशल्या सोयेहू अवतारबिषेकहाहै परम्परा देवतनको जनावते हैं काहेते कि पूर्वभूत तीनिहूँ कल्पमें श्रीअयोध्याबिषे कश्यप अदिति श्रीदशरथ कौशल्याभयेहैं चौथेकल्पबिषे राजामनु रानीशतरूपा श्रीदशरथ कौशल्याभये हैं तहांब्रह्मबाणीने कश्यप अदितिको श्रीदशरथ कौशल्या भूतबिषे कहा है अरु राजामनु शतरूपाको दशरथ कौशल्या बर्त्तमानबिषे कहा है अरु अपनोस्वरूप जोपरात्पर है तेहिको अवतीर्ण श्रीअयोध्याबिषे श्रीदशरथ कौशल्याको भविष्यबाणी कहे हैं अरु इहां तटस्थ लक्षणाबाणीबिषे अर्थ है (गङ्गायांघोषः) तहां गङ्गाकीधाराबिषे घोषनहीं है परन्तु तटपर है किंतु कश्यप अदिति गङ्गाकी धारास्थाने अरु मनुशतरूपा तटस्थाने अरु ब्रह्मबाणी अपनेअवतीर्णकोहेतु घोषस्थाने अरु ब्रह्मबाणीने कश्यप अदितिकरिकै कहाहैतहां इसमें व्यंजनाभी होति है ताते कश्यप अदितिको लक्षणाब्यंजना अध्यारोपकरिकै ब्रह्मबाणीने स्वायंभुवमनुशतरूपाकोश्रीदशरथ कौशल्याकहा है यहिप्रसंग के अर्थ को अभिप्राय यही है अरु जो कोई कहै कि राजा मनु रानीशतरूपा द्वौजन परमात्माते बरपाइकै शरीरकोस्वेच्छित त्यागिस्वर्गको प्राप्तहुये पुनिकोई कालपाइकै कश्यप अदितिभये तब तिनतप कीन तब ब्रह्मबरपाइकै स्वर्गको प्राप्तहोइकै कछुकालमें श्रीअवधमेंराजाश्रीदशरथरानी कौशल्या सहितभये हैं तिनके गृहबिषे अवतारलेहौं यह ब्रह्मबाणी कहैहै तहां यहि अर्थबिषे बहुदूषण हैं काहेते कि कश्यप कल्पभरि बनेरहतेहैं यह शास्त्रनबिषे कहाहै तहां मनुकैसे कश्यपहोहिंगे अरु जो कहैं कि यहिकल्पकेआगेजोकल्पहोइगो तेहिकल्पबिषे मनुकश्यपभयेहैंतहां येभीनहीबनै राजामनुको परमेश्वर ने यह बरदीनहै कि तुमकछुकाल स्वर्गबास करिकै श्रीअवधकेराजा होहुजाइ तबमैं तुम्हार पुत्रहोउँगोतहां राजामनु पुत्रबात्सल्य भावमें अतिआर्त्तरहे हैं सो कैसे कल्पांतर सहैंगे अरु कल्पचौदह मन्वन्तरको होत है अरु राजा स्वायंभुवमनु कल्प के प्रथममन्वन्तर के राजा हैं अरु तेही मन्वन्तरके चौथेचरण में तपकीन है अरु मन्वन्तर कछुकम साढ़ेयकहत्तरि चौकरी युगकोहोतहै अरु जबचारिउयुग मिलिकै साढ़ेयकहत्तरि युगबीतैं तब चौथचरणहोतहै तहांयुग प्रमाण है सतयुग सत्रहलक्ष अट्ठाईससहस्त्र वर्ष त्रेता बारहलक्षनब्बेहजार द्वापर आठलक्ष चौंसठिसहस्त्र कलियुग चारिलक्ष बत्तिसहजार अरु राजामनुने कल्पके प्रथममन्वन्तरविषे चौथचरणलागत नैमिषारण्यविषेआइकै पांचहजारवर्षतकतपकीन पुनि जल आहार करिकै छःहजार पुनि पवनआहार सप्तहजारपुनिनिराधारदशहजारवर्षरहेतब

परमात्माकीबाणीद्वारा सत्यसंकल्पमय बरदानहोतभयो पुनि कछुकाल श्रीरामाज्ञातेस्वर्ग में रहे पुनि श्रीअवधकेराजाभये त्रेताबिषेचौथेचरणमें तहां दशहजार की आयु तहां श्रीदशरथमहाराजकेचौथेपनविषे श्रीरामचन्द्र अवतीर्णभये आइ ताते कल्प के प्रथममन्वन्तर चौथेचरण में जो त्रेताप्राप्तभयो तेहिकेचौथेचरणबिषे राजामनु शतरूपाश्रीदशरथकौशल्याभये हैं श्रीरामपरब्रह्म अवतीर्ण भये हैं अरु तेहीमन्वन्तरकेचौथेचरणमें बालकौमार पौगंड कैशोर बिवाह बन राज्यलीलासबनित्यकरिकै परबिभूतिसंयुक्त परविभूति को गमनकीन्ह है अरु जोकोईकहै कि राजामनु सोईकश्यपभये हैं तब पुनितपकीनहै तब ब्रह्मवाणीनेवरदीन तेईकश्यपश्रीदशरथभये हैं तहां जोमनुतनुमेंतपकीन अरु परमेश्वर जो सत्यसंकल्प तिनवरदीन तहां दूनोंपदार्त्थ अफलहोते हैं यामेंबहुदूषण हैं पूर्व्वकथितअर्थसिद्ध है अरु इहै अभिप्राय इसचौपाई को जानब नारदवचनसत्यसबकरिहौं। परमशक्तिसमेतअवतरिहौं॥ कश्यपको अरु राजामनुको प्रसंगजानै तब यहिचौपाईको अर्थजानै इहै प्रयोजन आरण्यकाण्ड में नारदकीवाक्यमेंजानब मुनिनेकहा कि श्रीरामचन्द्रऐसे भक्तवत्सल पुरुषोत्तम हैं मेरे शापको परम्परामानिलीन ताते अनेक

**अदितिमहातपकीन्हतिनकहँमैपूरबवरदीन्हा १९ तेदशरथकौशल्यारूपा प्रकटतभयेअवधपुरभूपा २० तिनकेगृहअवतरिहौंजाई रघुकुलतिलक-सुचारिउभाई २१ नारदबचनसत्यसबकरिहौं परमशक्तिसमेतअवतरिहौं २२ हरिहौंसकलभूमिगरुवाई निर्भयहोहु**

दुःखकेहरैया ते दुःखसहते हैं ( १९ ) हे देवतहु तेकश्यप अदिति श्रीअयोध्याबिषे श्रीदशरथ कौशल्या राजारानी हैं इहां कश्यपअदितिको अध्यारोपकरिकै परम्परा राजामनु रानीशतरूपाको श्रीदशरथकौशल्या करिकैयहिचौथे अवतारबिषेकहते हैं ( २० ) तिनकेगृहबिषे रघुबंशिनके हमतिलक चारिउभाई अवतीर्णहोहँगे अथवा रघुबंशकुल सर्व्वकुलबंशको तिलकहै ( २१ ) हे देवतहु नारदकोवचन मैं सत्यकरिहौं अरु मेरी जो परम शक्ति है तेहिकेसंयुक्त अवतीर्णहोउँगो यहिपरब्रह्मबाणीबिषे औरैअभिप्रायअर्थ है काहेते कि जेहिकल्प विषे विष्णुभगवान्‌को नारदशापदीन है कि तुमजाइकै राजपुत्रका तनुधारणकरहु वहां अपनी प्रियाकेहेतु विरहकोप्राप्तहोहु तहांबानर अरु रीछ तुम्हारी सहायकरहिंगे ताते जैसी नारदके शापके अवतारबिषे परमदिव्यलीला कीन्हिहै तैसी मैं परम्परा मानिकै यहू अवतारबिषे लीलाकरौंगो काहेते नारद मेरेपरमभक्त हैं अरु मैं अपने भक्तनकेवाणी सदाअंगीकार करते आयोहौं जो कोईकहै कि यह जो परब्रह्मबाणीभई है सो नारदहिके शापसे अवतार यह होइगो सो यहबात नहीं काहेते कि पूर्व्वप्रसंग बिषे बिरोधपरैगो पूर्व्व चौपाई॥ नारदशापदीनयकबारा। एककल्पयहिलगिअवतारा॥ तहांनारदके शापको हेतु गोसाईं पूर्व्वहि कहिआये हैं नारद के मोहकेप्रसंगबिषे महादेव के दुइदूतकुम्भकर्ण रावणभये हैं तब श्रीविष्णुभगवान् को अवतारकह्यो है अरु यहि अवतारकोहेतु राजास्वायम्भुवमनु अरु रावण राजाभानुप्रताप तातेनारदवचनसत्यसबकरिहौं यहि चौपाईकोअर्त्थ जैसो कहिआये हैं तैसो जानब अरु परमशक्ति कही परमानन्द जो मेरो सोई सीता है सो राजाजनकके भवन बिषे अवतीर्ण होहिगी अरु मैं राजादशरथके भवनबिषे अवतीर्ण होउँगो ( २२ ) ब्रह्मबाणी कहति है कि सम्पूर्ण भूमि काभारहरौंगो है देवतहु तुमनिर्भयहोहु न डरहु ( २३ ) गगनबिषे ब्रह्मबाणी सुनिकै देवता फिरे हृदय शीतलभयो ( २४ ) तब ब्रह्मै भूमिको समुझावा अभय भरोसभयो ( २५ )॥दोहार्थ॥ ब्रह्मबाणीको अभिप्राय

**देवसमुदाई २३ गगनब्रह्मबाणीसुनिकाना तुरतफिरेसुरहृदयजुड़ाना २४ तबब्रह्मैधरणिहिसमुझावा अभयभईभरोसजियआवा २५ दो०॥ निजलोकहिबिरंचिगेदेवनयहै सिखाय बानरतनुधरिधरणिमहँहरिपदसेवहुजाय २६॥चौ०॥ गये देवसबनिजनिजधामा भूमि सहितमनकहँबिश्रामा २७ जोकछुआयसुब्रह्मै दीन्हा हर्षेदेवविलम्बनकीन्हा २८ बनचरदेहधरीक्षितिमाहीं अतुलितबलप्रताप तिनपाहीं २९ गिरितरुनखआयुधसबबीरा हरिमारगजोवहिंमतिधीरा ३० गिरिकाननजहँतहँमहिपूरीरहेजहँतहँअनेकरुचिरूरी ३१ यहसबचरितरुचिरमैंभाखा अबसोसुनहुजोबीचहिराखा ३२॥**

*  *  *  *  *  *  *  *  *

ब्रह्मा सब समुझिगये तब ब्रह्मा देवतनको आज्ञादेतभये कि तुमसब बानर रीछ तनुधरि धरि हरिपद सेवहु जाइके यहकहिकै ब्रह्मा निजस्थान कोगये ( २६ ) सब देवता निजनिज धामकोगयेभूमिसंयुक्त आनन्दकोप्राप्तभये ( २७ ) जोब्रह्मैआयसु दीन्ह सोदेवतनहर्षिकैकीन्ह ( २८ ) बानरका तनु धरतभये अतुलित बलवान् भये ( २९ ) गिरितरुनखआयुध जिनके तेहरिकी प्राप्तिको मगजोवत हैं ( ३० ) गिरिबनबिषे अनीबनाइ बनाइकै पूरि रहे ( ३१ ) हे पार्वती यह सब रुचिर चरित हमने तुमसेकहा अब जो बीचहिराखे सोसुनहु ( ३२ ) इतिश्री रामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसने बालकाण्डेउमामहेश्वरसम्बादे देवस्तुतिब्रह्मबरवाणीवर्णनंनामत्रिंशतितस्तरंगः ३०॥ :: ::

दो० ॥ बत्तिससुभगतरंग में परमपुरुषअवतार कौशल्यादरशनलह्यौरामचरणशिशुप्यार ३२ हेपार्बती अब श्रीरामचन्द्रजी के जन्म को अपरप्रसंग सुनहु श्रीअयोध्यापुरी परमदिब्य सुन्दरितहांके राजामहाराजश्रीदशरथजी ऐसोनाम श्रीरघुबंश कुलकेमणि जिनके यशको वेदगावते हैं ( १ ) काहेतेराजा धर्मधुरंधर गुणज्ञानको समुद्र हैं धर्मकाकोकही रणविषे सूरतेजस्वी सबडरै धैर्यमान् सर्ब कालमें परमदक्ष वेदशास्त्र राजनीति अरु युद्ध में अचल अरु याचकके मनभावित ईश्वरहेतु किंतु ईश्वरभावते दानदेना अरु भगवत् सम्बन्ध परमदिब्य गुणकरुणदयाउदरता शीलइत्यादिक ज्ञान शास्त्रजन्यज्ञान अरु आत्मज्ञान परमात्मकज्ञान इत्यादिकधर्मनकेधुरीण अचल संतोषतेहिके धरैया एकदशरथमहाराज अरु शार्ग पाणि जो श्रीरामचन्द्रजी तिनकै परमानन्य भक्तिहृदयमतिबिषे तहांबुद्धिमन अहंकार चित्त इनचारिहु की सम्बन्धी जोमतिहै सो त्रैगुण्यमयहै अरु आत्मासम्बन्धी जो मतिहै सो गुणातीत है ताते जो आत्मक मतिसे धारणहोइ सो अचल है काहेते शरीर में पंच आकाश हैं शीशकंठ हृदय

**अवधपुरीरघुकुलमणिराऊ वेदबिदिततेहिदशरथनाऊ १ धर्मधुरंधरगुणनिधिज्ञानी हृदयभक्तिमतिशारँगपानी २ दो० ॥ कौशल्यादिनारिप्रियसब-आचरणपुनीत पतिअनुकूलसुप्रेमदृढ़हरिपदकमलबिनीत ३ चौ०॥ एकबारभूपतिमनमाहीं भैगला**

उदर कटितहां चित्तको बासशीशपुर अहंकार कंठमेंमनउदर में बुद्धिकटिमें अरु आत्मा हृदय आकाशते ताते आत्मक मतिबिषे ज्ञानभक्ति अचल रहती है किंतु हृदय ते भक्तिकरते हैं अरु मतिते एकरसग्रहणहै ताते हृदयमतिते शार्गपाणिकी भक्तिकहाहै ( २ ) दोहार्थ श्रीदशरथ महाराजके श्री कौशल्यादिकरानी सबप्रिय हैं अरु सब आचरणबिषे पवित्र अरु पतिकेअनुकूल प्रेमकरिकै दृढ़हरिकेचरणनबिषे अतिप्रबीण हैं तहां राजाकेसाढ़ेतीनिसैरानी श्रीबाल्मीकि मुनिने कहाहै अरु महारामायण में तीनसै साठिकहाहै तिनमें चारिभेद हैं महिषी परिब्रतावावता पालाकली जो प्रथम ब्याहिआई सो महिषी अरु पाछे जो बिवाही जाहि सो परिब्रता तहांयज्ञदानबिषे महिषी अधिकारिणी है महिषीकेपाछे परिब्रता अधिकारिणी अरु बिनाबिवाही जे हैं जिन्हैं राजै रीझिकै अंगीकारकीन है सोई वावाताहै वह यज्ञदान में राजाकेसंग अधिकारिणी नहीं हैं पुनि पालाकली तिनकी दासीसंज्ञा है पर राजाकी सबपर प्रीति है तहां दशरथ महाराज के महिषी परिब्रता हैं अरु रानिनकी सेवाहेतु अपरभी हैं काहेते रघुबंश कुल बिषे बिनाबिवाही से रतिकीप्रीति नहीं है ताते कौशल्यादिक जे रानीहैंते पातिब्रत इत्यादिक जितने परमधर्म्म हैं तिनमें अति प्रवीण हैं अरु हरि जो श्रीरामचन्द्र तिनके पदकमल बिषे अतिप्रवीण प्रीतिजानब ( ३ ) एकबार राजाके मनमें ग्लानिआई कि हमारे पुत्र नहींभयो अरु बिना पुत्रलोक में सुख अरु यशकी हानिहै सुखयश जो होबहू करैतो शोभितहैपरस्वर्ग अरु बंशकीहानिहै ( ४ ) इहै बिचारिकै बशिष्ठजी के इहां जातभये चरणगहिकै बिनयकीन आपुसर्बज्ञहौ ताते हमारे पुत्रहोइगो कि न होइगो ( ५ ) आपन दुःखसुख सब कहतभये बशिष्ठजू प्रसन्न होइकै बोलतभये ( ६ ) हेराजन् तुम धैर्यधरहु तुम्हारेचारिपुत्रहोहिंगे त्रैलोक्यबिदितविजयी यशमान् अरु भक्तनकेक्लेश जन्ममरणकाभयहरैंगे तब बशिष्ठजू आज्ञा देत भये हे राजन् सर्बद्वीप अरु सर्ब देशनके राजन् को निमंत्रण पठवहु अरुसर्बऋषि मुनि वर्षदिन बिषे आवहिं अरु यज्ञशाला मुनिन अरु राजन् के निवास को मन्दिर बिस्तार समेत बनवावहु अरु यज्ञको सरञ्जाम करहु राजमहल के उत्तर सरयू पार मनोरमा नदी अति पवित्र निर्मल सर्ब

**निमोरेसुत नाहीं ४ गुरुगृहगयउतुरतमहिपाला चरणलागिकरिविनयबिशाला ५ निजदुखसुखसबगुरुहिसुनावा कहिवशिष्ठ बहुबिधिसमुझावा ६ धरहु धीरहोइहैंसुतचारी त्रिभुवनविदितभक्तभयहारी ७ शृंगीऋषिहिंवशिष्ठबुलावा पुत्रकाजशुभयज्ञकरावा ८**

फलदायिनी तेहि के दक्षिण किनारे रचनाकरहु बर्ष दिनताईं यज्ञहोइहितव तुम्हारे पुत्रहोहिंगे यह राजा सुनिकै परमानन्द को प्राप्तिहोइकैराजसभा में आइकै सब मंत्रिन को बोलाइकै आज्ञा देतभये कि सरयू में सेतुबँधावहु श्रीमहाराज गुरुकी आज्ञालैकै मनोरमा के किनारे यज्ञशाला अरु सुवर्ण मणिन के अनेक मन्दिरनकी बिस्तारपूर्बक रचना करहुतब चिरञ्जीव कहिकै बशिष्ठकी आज्ञालैकै रचनाकी तैयारी करने लगे ( ७ ) शृङ्गीऋषि को श्रीवशिष्ठजी बोलावतेभये अरु पुत्रके कार्यशुभयज्ञ करावतेभये शृङ्गीऋषि कहांरहते हैं वे कैसे श्रीअयोध्याकोआये हैं श्रीगङ्गा भागीरथी के किनारे जाको शृंगीरामपुरकही सोई स्थान हैबिभाण्डक मुनिके पुत्र शृंगीऋषि हैं तिनके आश्रमबिषे गर्म्भीरवन सुन्दर कन्दमूल फलफूल अंकुर सदारहैं विषयरसको संचार नहींरहैतेही समयबिषे पटना शहर जो मगधदेशमें है तेहिको राजा रोमपाद तिनके देशबिषे महादुकाल परेउ तब विद्वान् जो ब्राह्मण तिन्होंनेराजासे कहा कि शृंगीऋषि आवैं यज्ञकरैं तो वर्षाहोइपरवे बालनेष्ठी बिरक्त हैं जो इन्द्रकी अप्सरा आवहिं तो शृंगीऋषि को लैआवैंतब राजाने इन्द्रकी प्रार्थनाकरी तत्कालही अप्सराआइ प्राप्तभई राजा की आज्ञाभई कि शृंगीऋषिको लैआवहु तब वे शृंगीऋषि के आश्रमको जातभई तहां शृंगीऋषिके पिताकहूं अन्यत्र गयेरहैं तहां वेश्याबाजा गान नृत्यकरनेलगीं तहां शृंगीमुनिके स्त्री पुरुष को ज्ञान नहीं है तिनकेसमीप आवतभई यह जानतेभये कि ये किसी देशके मुनि हैं कोई अपूर्व बिद्याध्ययन करते हैं तब शृंगीमुनि ने प्रसन्नह्वैकै तिनको कन्दमूलफलदीन्हआइ तब तिनने कहा कि जेहिवन बिषे हम रहत हैं तेहिबनकेफलकन्द हमदेत हैं तुमलेहु भगवत् अर्पण करिकै प्रसाद करहु तब तिनकन्दमूलके आकार अनेक स्वादुके लड्डू पेड़ा इत्यादिक अनेक प्रकार की मिठाई शृंगीमुनिको दीन तब मुनिने भोगलगाइकै प्रसादकीन अतिस्वादुरस स्वरूप मधुर पुष्टता सुन्दर पाइकै प्रसन्न होइकै तिनके पास आये तुमकहां रहते हो अरु यह फल तुमनेकहां पायो है तब उनकहा कि हमारो देश पूर्बहै अरु हमारे बनबिषे यहिते नीक नीक फल हैं अरु बारह मास फलते हैं कोकिला मयूर शुक सारस बोलते हैं अरु शीतल मन्दसुगन्ध पवन बहते हैं अरु श्रीगंगाके किनारे हमारो आश्रम न जीकहीं है तुमचलिकै देखहु तो बहुत प्रसन्न होहुगे उनकी नावमें अनेकन मेवालगीहैं अमृतइव फलकेरस हैं तब मुनि संगचले नावपरचढ़े परन्तु उन पर बाटिकाफल अनेक संरजाम की रचना देखिकै मग्नहोइगये तब तिनतुरन्त नावचलाइदई मुनिके पिताका भयमानिकै अति आतुरलैचलीं तब इहां राजाको खबरिभई कि शृंगीऋषि आवते हैं तब राजाबड़ेउत्सवसे आगेलैकै धूपदीप नैवेद्य आरती करिकै महलमें लैगये अनेकन प्रकार से सेवाकीन कछुदिनबिषे यज्ञकरायो राज्यसुखीभई इहां बशिष्ठजीदशरथजूसे बोले हे राजन् बीरसिंह तुम्हारे भाई हैं तिनको पठवहु शृंगीऋषि रोमपादराजाके इहां हैं तिनको अच्छे भावभक्ति समेत बोलाइ ल्यावहिं तब बशिष्ठकी आज्ञा जैसे भई तैसेही बीरसिंहजू नव सुवर्ण मणिनते रचित बहुतसी नावन सहित बड़े सरंजामसे गाननृत्य करावते मुनिको लैआये तब बशिष्ठ अरु राजा बड़ेभावते मुनिको आगे लेतभये अर्घ्यपाद्य धूपनैवेद्य आरती करिकै सुन्दर आश्रमबिषे आसन दीन्ह तबघोड़ा बिदाकियो आगे बर्षदिनताईं घोड़ालैकै पृथ्वी मण्डल फिरिआये अरु तेही वर्षदिन में यज्ञशाला बनिकै तैयारभई बसन्तऋतु चैत्रमास शुक्लपक्ष अष्टमी को सर्बयोग उत्तम शुभदिन शोधिकै उत्तम मुहूर्त्त में घोड़ाचलेउ है अरुबर्षदिन पूरेअष्टमीको आयोतब शृंगीऋषि को लैकै यज्ञशालाकोगयो तहां ब्रह्माण्ड भरेके राजा ऋषि मुनि ब्रह्मा शिवादिक देवता आयेहैं तहां वेदकी विधि बिधानते बर्षदिनताईं यज्ञभई ( ८ ) समस्त मुनिनबिषे यज्ञमें आचार्य्य शृंगीऋषि होत भये शृङ्गीऋषि अरु बशिष्ठादिक मुनि भक्तिसहित श्रीरघुनाथजी के प्राप्ति हेतु अग्निबिषे प्रीतिसमेत बर्षदिनताईं वेदबिधिते आहुति देतभये तब चैत्र शुक्लाष्टमी मध्याह्न सूर्यजात सोमबार नक्षत्र योग लग्न ग्रह मुहूर्त्त समस्त उत्तममंगलमय तेही साइत अग्नि मूर्त्तिमान् अतिसुन्दर तेजोमय धृतालङ्कार यथायोग्य किशोरविग्रह प्रत्यक्षभये दोऊकरकञ्जगहे कंचनकोथार प्रकाशमय तामें चारुसुन्दर चरुकही परमदिव्य पायस परिपूर्णभरे ( ९ ) अग्निबोले हे बशिष्ठ जो कार्य तुम हृदयबिषे बिचार कीनहै

सो सर्बसिद्धभयो ( १० ) हे बशिष्ठ यह हवितुम राजाकोदेहु तब वशिष्ठजूने कह्यो कि हे राजन् तुम यथायोग्य भागकरिकै रनिवासनको देहुजाइ यहिप्रसंगबिषे यह अभिप्राय है कि परब्रह्मने अग्निकेहाथ पायसको प्रस्थान पठयो

भक्तिसहितमुनिआहुतिदीन्हे प्रकटेअगिनिचारुचरुलीन्हे ९ जोबशिष्ठकछुहृदयबिचारा सकलकार्य्यभासिद्धतुम्हारा १० यहहविबांटिदेहुनृपजाई यथायोग्यजेहिभागबनाई ११ दो०॥ तबअदृश्यभेपावक सकलसभहिसमुझाइ परमानन्दमगनमन हर्षनहृदयसमाइ १२ चौ०॥ गुरुपदबन्दिभूपगृहआये मंजुलमङ्गलमोदबधाये १३ तबहिंराउप्रियनारिबोलाईं कौशल्यादितहांचलिआईं १४ अर्द्धभागकौशल्यहिदीन्हा उभयभागआधेकरकीन्हा १५ कैकेयहीकहंसोनृपदयऊ रह्यउसोउभयभागपुनिभयऊ १६

है कि राजा श्रीदशरथजू के इहां यह प्रस्थानधरि आवहु हमआवते हैं ( ११ ) दोहार्त्थ॥ तबसकल सभा को समुझाइकै पावक अंतर्द्धानभये तहां पावक के मंगलमय बचन सुनिकै समस्तसभा आनन्दको प्राप्तभई आगेयज्ञबिषे जो सरञ्जाम बचेउ सो सब ब्राह्मणन अरु याचकन को देतभये श्रीरामप्रसादी सबहीलीन पुनि चैत्रशुक्ल नवमीको समस्त समाज राजसभामें आये महाराज श्रीदशरथजी यथायोग्य सबको आश्रम देतभये ( १२ ) तब राजा गुरुपदबन्दिकै अत्यानन्द मंगलतेभरे मञ्जुकही निर्मलमनते आज्ञापाइकै राजमन्दिरको आवतभये ( १३ ) तबराजाने प्रियनारि जो हैं श्रीकौशल्याजी कैकेयजी सुमित्राजी तहां सबरानी प्रिय हैं पर तीनिपरम प्रिय हैं तिनको बोलावतभये ( १४ ) आगे राजाके समीप तीनिहूं रानी अति हर्षसमेत आवतीभईं तब राजा सम्पूर्ण पायस से अर्द्धभाग श्रीकौशल्याजीकोदेतभये पुनि आधेके दुइ भागकीन्ह ( १५ ) तामें एकभाग कैकेयीजी को दीन पुनि आधेमें आधा जो चौथभागरहा ताके दुइभागकीन ( १६ ) एक कौशल्या अरु एक कैकेयीके हाथ धरयउ राजाकी आज्ञा पायकै अतिप्रसन्नता संयुक्त दोउन रानिन सुमित्राजी को दीन प्रथम श्रीकौशल्याजी दीन सो श्रीलक्ष्मणजी होहिंगे पुनि कैकेयी देतभई ताते शत्रुहन अवतीर्ण होहिंगे जेहिरीतिते बशिष्ठजीने आज्ञादीन्ह तेही रीति से राजा रानिन को देतभये ( १७ ) तबरानिन पायस भोजनकीन्ह रानिनके गर्भबिषे भरत लक्ष्मण संयुक्त श्रीरामचन्द्रजी को दिव्यप्रस्थान शोभितभयो तब रनिवास अति आनन्द को प्राप्त भयो ( १८ ) जादिनते हरिको आगमनगर्भबिषे भयो तादिनते तीनिहूंलोक चौदहौ भुवन अरु त्रैलोक्य भुवनको जो अन्तरायहै तहां २ सुख सम्पत्ति छाइरही है हरिकही बिष्णुको बिष्णुनाम पायसको जबते पायस गर्भबियेआयो तबते सुखसम्पत्तिछायो ( १९ ) मंदिरनबिषे शोभा शील तेजकीखानिरनिवास शोभित है ( २० ) येहीप्रकार परमानन्दसंयुक्त बारहमासबीततभये जौनसमय प्रभुके आविर्भावहोबेकोहै सोईसमय आइप्राप्तभयो जौनीसाइतको हवि-

कौशल्याकेकयीहाथधरि दीन्हसुमित्रहिमनप्रसन्नकरि १७ यहिविधिगर्भसहितसोनारी भयउहृदयहर्षितसुखभारी १८ जादिनतेहरिगर्भहिआये सकललोकसुखसम्पतिछाये १९ मन्दिरमहँराजहिंसबरानी शोभाशीलतेजकीखानी २० सुखयुतकछुक कालचलिगयऊ जेहिप्रभुप्रकटसोअवसरभयऊ २१दो०॥ योगलग्नग्रहबारतिथिसकलभयेअनुकूल चरअरुअचरहर्षयुतरामजन्म

ध्यान्नदियो है सोई मास तिथि ग्रह लग्न योग इत्यादिक मंगलमय अवसर श्रीरामचन्द्रजीके आविर्भावकोप्राप्तभयो ( २१ ) दोहार्त्थ॥ श्रीरामजन्म के समय सर्बमंगलकेमूल उत्तमयोग लग्न ग्रह बार तिथि इत्यादिकप्राप्तभये ब्रह्मांडबिषे जेतेजीव चराचरतेसब परमानन्दको प्राप्तभये आगे श्रीरामजन्मके समयबिषे पञ्चग्रह उच्चस्थानबिषे प्राप्तभये मेषकेसूर्य मकरकेमंगल तुलाके शनैश्चर कर्कके वृहस्पति सहित चन्द्रमा मीन के शुक्र कर्कलग्न उदय होतसंते तन भवन बिषे अरु पुनर्बसु नक्षत्र चतुर्थ चरण बिषे रामजन्म

भयो पांचों ग्रह उच्च विषे जन्मसमय जिसके होयँ सो अखिल लोकनायकहोइ सो श्रीरामके जन्मविषे सबयोगपरेहैं प्रथमस्थान में कर्कके चन्द्रमा अरु वृहस्पति द्वितीयस्थानविषे केवल सिंहराशि तृतीयस्थान विषे कन्याकेराहु चतुर्थस्थान विषे तुलाके शनैश्चर पंचमस्थान केवलवृश्चिकराशि छठयें केवल धन सतयेंस्थान विषे मकरके मंगल अठयें केवल कुम्भराशि नवमस्थान विषे मीनके शुक्र अरु केतु दशयेंस्थानविषे मेषके सूर्य ग्यारहवें स्थानविषे वृष के बुध बारहवें स्थान केवल मिथुन राशिनाम प्रथम मेष १ वृष २ मिथुन ३ कर्क ४ सिंह ५ कन्या ६ तुला ७ वृश्चिक ८ धन ९ मकर १० कुम्भ ११ मीन १२ ग्रहनव प्रथमसूर्य १ चन्द्र २ मंगल ३ बुध ४ वृहस्पति ५ शुक्र ६ शनैश्चर ७ राहु ८ केतु ९ तन १ धन २ सहज ३ सुहृद ४ सुत ५ रिपु ६ जाया ७ मृत्यु ८ धर्म ९ कर्म १० आय ११ व्यय १२ श्रीरामजन्मबिषे पञ्चग्रह उच्चस्थान में प्राप्तभये वाल्मीकीय में शिवलाल पाठकको तिलक॥ पञ्चमग्रहेपुरवि भौमशनि गुरुभार्गवेपुस्वोच्चसंस्थेषु निजोच्चराशिसंस्थेषु मेषमकरतुलाकर्कमीनस्थेषुसत्सु कर्कटाख्यलग्नेराश्युदये वाक्पतौइन्दुनासहप्रोद्यमाने उदयतिजगन्नाथंपंचोच्चैर्लोकनायकः ॥ हिरण्यंहिरणमय ब्रह्मांडंगर्भेयस्यैवतदर्थकं हिरण्यनाभेतिजन्मनामप्रतिष्ठितम् ॥श्री॥ पञ्चग्रह उच्चस्थान

**सुखमूल २२ चौ०॥ नौमीतिथिमधुमासपुनीता शुक्लपक्षअभिजितहरिप्रीता २३ मध्यदिवसअतिशीतनघामा पावनकाललोकबिश्रामा २४ शीतलमन्दसुरभिबहबाऊ हर्षितसुरसन्तनमनचाऊ २५ बनकुसुमितगिरिगणमणिआरा श्रवहिंसकलसरितामृतधारा २६ सोअवसरबिरंचिजबजाना चलेसकलसुरसाजिबिमाना २७ गगनबिलम्बसकलसुरयूथा गावहिंगुणगन्धर्बबरूथा २८ बर्षहिंसुमन**

विषे प्राप्तभये मेषके सूर्य्य मकरके मंगल तुलाके शनैश्चर कर्कलग्नउदयहोतसंते वृहस्पति सहित चन्द्रमा कर्कराशिके भयेसंते तन भवनबिषे प्राप्तभये मीनकेशुक्र पञ्चग्रहउच्चबिषे रामकाजन्मभयो पांचोंग्रह उच्चस्थसमयमें जिसकाजन्महोइ सो अखिललोक नायकहोइ तहां रामजन्मबिषे पांचोंउच्चग्रह परेहैं और भगवान् के अवतारहूमें नहींपरेहैं अपर देवतामनुष्यादिकनकी काचली है अरु श्रीरामजन्मबिषे पुनर्वसु नक्षत्र चौथे चरणपरयो है पुनि कोई॥ ज्योतिष् श्लोकः॥ उच्चस्थेग्रहपञ्चकेसुरगुरौसेन्दौनवम्यांतिथौ लग्नेकर्कटकेपुनर्वसुदिनेमेषस्थितेभास्वति निर्दग्धानि खिलाः पलाशसमिधोमेध्यादयोध्यारणे राविभूर्तमभूतपूर्वविभवं नीलस्वभावंमहः ॥ अथ योगानाहकनकदण्डः श्लोकः॥ एकः कनकदण्डाख्यो देवानामपिदुर्ल्लभः मीनेमेषेवृषेचैवतुलायांचस्थितग्रहे २ इतिकनकदंडः॥ :: :: :: ::

रामजन्मकुण्डली ॥ अथचतुःसागरयोगः चतुर्षुकेंद्रस्थानेषु सौम्याःपापस्थिताग्रहाः ॥ चतुःसागरयोगोऽयंराजसिंहासनेविशेत् ३ परमोच्चगताःसर्वे स्वोच्चांशेयदिसोमपः ॥ त्रैलोक्याधिपतिंकुर्य्युः देवदानवपूजितः ४ सातग्रह उच्चकेहोत हैं अजकही मेष तेहिकेसूर्य वृषकेचन्द्रमा मृगकही मकर तेहिके मंगल अंगना कही कन्या तेहिकेबुध कुलीरकही कर्क तेहिके वृहस्पति मीनके शुक्र तुलाके शनैश्चर येसातों उच्चके उच्चकी राशि से सतईराशि जो परै तो नीचके होइजात हैं॥श्लोक॥ अजोवृषोमृगोंऽगना कुलीरमीनतौलिनो दिवाकरादिकग्रहाःक्रमेणसंस्थिताहिचेत् ॥ इमानिभानिसूरयो वदन्तिचोच्चकानिवै यथेभ्यएवनीचकान् रसातलंगतान् विदुः ५ पुनि राशिनके पतिक्रमते कहते हैं। मेष वृश्चिकके पतिमंगल वृष अरु तुलाके पतिशुक्र मिथुन कन्याकेपति बुध कर्ककेपति चन्द्रमा सिंहकेपति सूर्य धनमीनकेपति वृहस्पति मकरकुम्भकेपति शनैश्चर ॥श्लोकः॥ कुजशुक्रसौम्यशशिसूर्यचन्द्रमा कविभौमजीवशनिसौरयोगुरुः। इहराशिपाः क्रियमृगास्यतौलिकं दुभतोनवांशविधिरुच्यतेबुधैः ६ श्रीरामकेजन्मबिषे चन्द्रमाकर्कमेंप्राप्त है अरु सर्बग्रह लग्न नक्षत्र मुहूर्त्त योगकाल इत्यादिक श्रीरामजन्मबिषे प्राप्तहोइकै सर्व मंगलमयभये ( २२ ) बसंतऋतु ब्रह्माण्ड मण्डलबिषे अरु मधुमास अतिपुनीत अरु नवमी तिथि शुक्लपक्ष अभिजित उपनक्षत्र अरु मुहूर्त्त हरिप्रीता उत्तम उपयोग किन्तुहरिप्रीता कहीहरिबिषे प्रीतिउपजावनेवाले हरिकीप्रीति करनेवारे सर्बआइ प्राप्तभये ( २३ ) दुइदण्डऊन मध्याह्नबिषेसूर्य्य तेहि समयबिषे न तौ अतिशीतल न घाम मातदिल मंगलमय समय ब्रह्माण्डभरे को मंगलदाता सम्पूर्णलोकको बिश्रामकर्त्ता ऐसो पावनकाल प्राप्तभयो ( २४ ) शीतलमन्द सुगन्ध पवन बहतभयो सम्पूर्ण ब्रह्मा शिवादिक देवता हर्षको प्राप्तभये अरु ऋषि मुनि इत्यादिक सन्तजनन के तनुमनबिषे परम उत्सवभयो

( २५ ) ब्रह्माण्डमण्डलबिषे जेते तृणतरुरहे ते सब नवीन पल्लव फूलफल समयपाय शोभितभये अरु सुमेरुउदयास्तादिसम्पूर्ण पर्व्वतनबिषे मणिमाणिक प्रकटतभये अनेकन जगमगाइरहे हैं अरु नदी सरसागर समुद्रनते सब अमृतमय धाराबहती हैं अरु भरिरहेहैं यथायोग्य जहांजसचाही तहां कमलफूले हैं हंसादिक बिंहग बोलते हैं ( २६ ) सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड मण्डल प्रकाशमानभयो चराचरजीव परमानन्दको प्राप्तभये ब्रह्मासमस्त देवतन संयुक्त अपने अपने बिमान पर चढ़ि चढ़ि हर्षसंयुक्त श्रीअयोध्यापुरीके समीप नभबिषे प्राप्तभये ( २७ ) नभबिषे बिमान बिलम्बितकही स्थिरभये सकल देवतागन्धर्व यूथकेयूथ श्रीराम अरु दशरथ महाराजके परमदिव्य गुणगावते हैं जिनराजाके परमेश्वरपुत्र हैं ( २८ ) अरु कल्पतरुकेफूल अंजुलिनभरिभरि बर्षते हैं सर्व देवता अरु गन्धर्व परमेश्वरके आनन्द में प्राप्तह्वैकै गगनबिषेगहगहेदुन्दुभीकही बड़ेबड़ेनगाराबजावतेभये गहगहेकहीगम्भीर ( २९ ) देवतामुनिनागस्तुतिकरते हैं अरु अपनीअपनी सेवापृथक् २ जनावते हैं ( ३० ) ब्रह्मादिकदेवताओंके समूह बिनयसंयुक्त स्तुतिकरिकै निजनिज स्थान को प्राप्तभये जगनिवासकही सम्पूर्ण जग बिषे अन्तर्यामीरूप सर्बसाक्षीभूतनियंतास्वरूप जग बिषे निवासकिये हैं किन्तु सम्पूर्ण जगत्जिनबिषेनिवासकियेहै सूत्रेमणिगणाइव किन्तु जगबिषे निवासकरिबेको प्राप्तभये यहबिशेषार्थ है ( ३१ ) छन्दार्थ॥ श्रीरामचन्द्रजीप्रकटभये दीननकेदयालुहैं विशेष श्रीकौशल्याजीके हितकारीहैं

सुअंजुलिसाजी गहगहगगनदुंदुभीबाजी २९ अस्तुतिकरहिंनागमुनिदेवा बहुबिधिलावहिंनिजनिजसेवा ३० दो०॥ सुरसमूह करिबिनतीपहुंचेनि-जनिजधाम जगनिवासप्रभुप्रकटभे अखिललोकबिश्राम ३१ छंदचौपय्या॥ भयेप्रकटकृपालादीनदयालाकौशल्याहितकारी हरषितमहतारीमुनि-मनहारीअद्भुतरूपनिहारी ३२ लोचनअभिरामातनघनश्यामानिजआयुधभुजचारी भूषणबन-

अपनी शोभाकरके मुनीशनके मनहरते हैं ऐसी अद्भुतशोभादेखिकै माताअति हर्षकी प्राप्तभई अद्भुत कही योगीशन मुनीशनके देखिबे सुनिबे में ध्यानसमाधि मनवचनकर्म्मते अगम है सो स्वरूप श्रीकौशल्याजू देखतीभई ( ३२ ) घनश्यामस्वरूप कोटिकन्दर्प्पकी शोभा लोचनको अभिराम कही वाञ्छित परमानन्द फलदाता निजआयुध भुजचारी चरगतिभक्षणयो: धातु है गतिप्राप्तिबिषे होतहै ताते निजआयुध जो धनुषबाण सो द्वौभुज बिषे ग्रहण कियो है किन्तु चरगमनबिषे होतहै धनुषबाण द्वौभुजबिषे फेरते हैं किन्तु धनुषबाण ग्रहणकिहे चरकही महिबिषे बिचरिबे को प्रकटभये हैं तहां भाषाबिषे जहां छन्दनकेचरणके अन्तबिषे कोई स्वरप्राप्तभये हैं अरु पदकेअर्थबिषे वे स्वर बिरोधकरते हैं तहां स्वरनको पादपूर्णार्थजानब अरु कोई सूत्रकरिकै लुप्तहोइजाते हैं ताते चरपदसिद्धहै किंतुनिजआयुध भुजचारी चारिभुजा बिषे गदापद्मशंखचक्रधरे हैं काहेते कि श्रीरामचन्द्रजीने बिष्णुभगवान्कोपालनशक्तिदीनिहै ताते श्रीरामचन्द्रजी बिष्णुस्वरूप प्रकटतभयेजाते सबजानें कि बिष्णुभगवान् अवतीर्णभये ताते चतुर्भुजप्रकटे बनमाला इत्यादिक भूषण नखशिखलौं अंगअंगप्रतिशोभित हैं अरु नयनबिशाल अरुणकञ्जइव शोभाकेसमुद्र हैं खरारिनाम परम्परासेकहाहै ( ३३ ) श्रीकौशल्या द्वौकरजोरिकै बोलतीभई हे प्रभु मैं तुम्हारीस्तुति केहिप्रकारतेकरूं काहेते तुम अनन्तहौ अरु मायाके जेतेगुण हैं अरु ज्ञान हैं तेहितेतुमअतीतकही परेहौ अरु तुम अमानहौ कैसे जानिये आपुको स्वरूप कार्य्यकारणके परे सो स्वरूप जीवन को केवल कृपाकरिकै प्राप्त होत है यह वेदपुराण कहते हैं ( ३४ ) आपुकरुणा अरु सुखके सागरहौ अरु परमदिब्य गुणनके आगरकही स्थानहौ ऐसे तुमको जानिकै वेद संतगावते हैं सो तुममेरेहितलागिकै प्रकटतभये काहेतेतुमअपने जननके बिशेषकरिकै अनुरागी हौ काहेतेआप श्रीकान्त अरु सब जीवतत्त्व श्रीजूके पतिहौकिंतु श्रीकही ऐश्वर्य यशतेज प्रताप बलबीर्य उदारता दयाज्ञान वैराग्य योग ध्यानसमाधि मोक्ष भक्तिइत्यादिक सबके तुमपतिहौ किंतु

मालानयनविशाला शोभासिन्धुखरारी ३३ कहद्वौकरजोरीअस्तुतितोरी केहिबिधिकरौं अनंता मायागुणज्ञानातीतअमानावेदपुराणभनंता ३४ करुणासुखसागरसबगुणआगर जेहिगावहिंश्रुतिसंता सोममहितलागीजनअनुरागी भयेप्रकटश्रीकंता ३५॥ व्रह्मांडनिकायानिर्मितमायारोमरोम-प्रतिवेदकहै ममदरसोबासीयहउपहासीसुनतधीरमतिथिरनरहै ३६ उपजाजबज्ञानाप्रभुमुस-

कोटि ब्रह्मांडकी श्री अरु परबिभूति त्रिपाद तेहिसबके तुम पतिहौ सकलजीवन के ऊपर कृपाकरहु ( ३५ ) पुनि श्रीकौशल्याजी कहती हैं हे प्रभु तुम्हारे स्वरूप के आश्रयतुम्हारी मायामोको कैसीदेखिपरे है कि अपने रोमरोमप्रति निकायकही समूह ब्रह्मांड निर्मितकियेहैं अरु निर्मित करती है जो हमने वेदनबिषे सुन्योहै सो प्रत्यक्ष देखियतहै ऐसी तुम्हारी मायाकोविशेष प्रभाव है अथवा ऐसो वेदकहते हैं अब सामान्य अर्थ तुम्हारे रोम रोम प्रति तुम्हारीमायाने निकायब्रह्माण्ड निर्मितकिये हैं हे प्रभु तुमसर्बोपरिब्रह्म तुम्हारोस्वरूप है जो तुमऐसेही स्वरूप बनेरहोगे तौ काहूके प्रतीति न आवेगी कि ये कौशल्याकेपुत्र हैं। अरु बड़ीउपहास है जे तुम्हारेप्रभावको जानैहैं बड़ेबड़ेधीर तिनकीमति थिरनहींरहैगी बिश्वासनहीं आवैगो अरु मैंतुम्हारी कृपाते तुमकोजानतीहौं जो नैमिषारण्यबिषे स्वहिंसंयुक्तराजाको बरदीन है सोई करिये ( ३६ ) जब ऐसो श्रीकौशल्याजूको पूर्व ज्ञान उत्पन्नभयो तब प्रभु मुसुकाने यह जानिकै कि माता हमारो स्वरूप जानती है काहेते अनेकचरित्र कीन्हचाहतेहैं ताते मातासों कहते हैं हेमातामै बिष्णुरूप अनेकलीलाकरौंगो तुममोको परमपुरुष जानेरहौअब जामें तुमको पुत्रप्रेमउपजै सो कहो वह मैंकरौं जामें तुमको आनन्द सुखहोइ ( ३७ ) मातापुनि बोली जो कोई कहै कि अबहीं तौ लोकवेदहूकीरीतिसे श्रीकौशल्यामातानहीहैं अरु गोसाईनेमाताकहा तहां श्रीरामचन्द्रने पूर्व्वही माता राजामनुके प्रसंग में कहाहै चौ०॥ मातुबिवेकअलौकिकतोरे॥ अरु वर्त्तमान में जेहिप्रकार सुतप्रेमलहै ताते प्रथमै माता कहा पुनि बोलतीभई सो मति पूर्व्वही श्रीराम ऐश्वर्य्यमय निश्चयभईहै प्रभुकी प्रेरणाते अब वह मति डोलिगई वह मतिऐश्वर्य शान्तरसते टरि गई वात्सल्यरसमें निश्चयभई तातेकहा॥ तजहुतातयहरूपा॥ अब बाललीलाकरिये यह अतिप्रियशीला कही अतिशयप्रीतिको स्थान है अरु यह सुख परमअनूपहै सो करिये ( ३८ ) हे पार्व्वती कौशल्याके वचन सुजानकही अति प्रवीणवाणी श्रीरामचन्द्रजी सुनतेभये किन्तु श्रीरामचन्द्रने

**कानाचरितबहुतबिधिकीनचहै कहिकथासुहाईमातुबुझाईजेहिप्रकारसुतप्रेमलहै ३७ मातापुनिबोलीसोमतिडोलीतजहुतातयह रूपा कीजिय-शिशुलीलाअतिप्रियशीलायहसुखपरमअनूपा ३८ सुनिबचनसुजानारोदनठानाहोइबालकनरभूपा यहचरितजोगावहिंहरिपदपावहिंतेनपरैंभवकूपा ३९॥दो०॥ विप्रधेनुसुरसन्तहितलीन्हमनुजअवतार निजइच्छानिर्मिततनुमायागुणगोपार ४०॥**

अतिसुजान माताकी वाणी सुनी सुजानकही जेहिकी वाणीविषे अनेकअभिप्रायहोंइ सो सुजान अरु तेहिको जो समुझैसो सुजान सुजानवाणीसुनिकैबिहँसिकै नरभूप जो राजादशरथ तिनकोकहूं कहूंपाठसुरभूपाहैबालकका स्वरूपहोइकै रोदनकरनेलगे यहचरित्र जो गावै सो हरिकोबिशेषकै प्राप्तहोइ फेरि भवकूप में न परै ( ३९ ) दोहार्थ ब्राह्मण गऊसन्तके हेतु मनुज अवतारलीन्ह मनुज अवतारकही नित्यकिशोर विग्रहते बालकभये निजइच्छा निर्म्मित बालतनुभये प्राकृतइव बाललीला करहिंगेताते निजइच्छा निर्म्मित तनुकहा मायाके तीनि गुण इन्द्री मनसहित सबते परे किन्तु मायाके गुण इन्द्री मनते परे नित्य किशोरमूर्त्ति बालकभये इहै अर्त्थ जानब ( ४० ) इतिश्री रामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वसन्सने बालकाण्डे श्रीपरमपुरुष आविर्भाव श्रीकौशल्या दर्शनंनामद्वात्रिंशतिस्तरंगः ३२॥ :: :: :: ::

दो० ॥ तेंतिससुभगतरंगमहँ रामजन्मउत्साह रामचरणआनन्दजगबालचरितअवगाह ( ३३ ) शिशुरोदन परममाधुर्य्य वात्सल्य रसमय सबके श्रवणमनको परमानन्द रसदाता चित्ताकर्षण रोदनवाणी परमप्रियपुरीभरमें महलमहलमें सबको सुनिपरी है मधुरै मधुर सो बाणीसुनिकै सम्भ्रमकही निर्ब्भरप्रेमते जे जैसेहैं ते तैसही सर्व्वरनिवास उठिधावतीभई आरतीसजे अरु जो सम्भ्रम भ्रमकोकहै कि पुत्रकीकन्या यह अर्थग्रामीण है ( १ ) पुनि परमहर्षसंयुक्त जहांतहांते दासीआवतीभई धाइधाइ परमानन्दबिषे सम्पूर्ण पुरबासीमग्न हैं मग्नकही डूबिजावेको जैसे कोईमर्जीवा होते हैं समुद्र में डूबिजाते हैं रत्नकाढ़िल्यावते हैं तैसे सम्पूर्ण अयोध्यावासी ब्रह्मानन्द समुद्र में मग्नकही डूबिकै श्रीरामबालस्वरूप रूपरत्नलेते हैं तहां वात्सल्यरस रत्नकोछद्‌मामहै ( २ ) श्रीदशरथ महाराजने पुत्रकोजन्मश्रवणनसुन्यो इहां उत्प्रेक्षालंकार है॥ मानहुंबह्मानन्दसमाना॥ श्रीराम जन्म जिनने राजाको सुनायो उनका वचन ब्रह्मानन्द समान राजाकेश्रवण द्वारहोइकै हृदय में समातभयो किन्तु श्रीरामजन्म होतसन्ते राज

सुनिशिशुरुदनपरमप्रियबानीसंभ्रमचलिआईसबरानी १ हर्षितजहँतहँधाईदासी आनँदमगनसकलपुरबासी २ दशरथपुत्रजन्मसुनिकाना मानहुब्रह्मानन्दसमाना ३ परमप्रेममनपुलकशरीरा चाहतउठनकरतमतिधीरा ४ जाकरनामसुनतशुभहोई मोरेगृहआवाप्रभुसोई ५ परमानन्दपूरिमनराजा कहाबोलाइबजावहुबाजा ६ गुरुवशिष्ठकहँगयोहँकाराआयेद्विजनसहितनृपद्वारा ७ अनुपमबालकदेखिनजाई

महल ब्रह्मानन्दसमान होतभयो जेहिमन्दिरबिषे राजाको मन समातभयो प्रवेशकरतभयो किन्तु पुत्रजन्मसुनिकै राजा ब्रह्मानन्द समानभये तब परमानन्द स्वरूप बालक श्रीरामचन्द्रजी तिनके देखिबेकी प्राप्तहेतुराजाकोमन बालककेसमीप चलतभयो ( ३ ) राजाकोमन परमप्रेमते पूरि रह्यो शरीर पुलकिआयो है प्रेमकही जो सत्गुरनकी वाक्यकरिकै तत्त्वउद्दीपनबिषे प्रेमहोइ सो प्रेमकही अरु जो गुरुनकी वाक्यबिषे आत्म अनुभव परस्वरूपाकार प्रेम सो परमप्रेमकही आगेराजाके परमप्रेमबिषे पुत्रके देखिबेको अनुसन्धानबनाहै ताते पुत्रकेदेखिबेको उठाचाहते हैं पर अपनी मतिको धीरकरिकै ( ४ ) पुनि श्रीरामचन्द्रकी प्रेरणाते राजाके अन्तःकरण बिषे शान्तरस ऐश्वर्य्य आइगयो मनमें राजा कहते हैं देखिये तो जेहि प्रभुको नाम कहत सुमिरत सुनतसन्ते सर्व्व अमंगल नाशहोइकैपरममंगल परमशुभहोते हैं सदा जाके नामको शिवसनकादि इत्यादिक अहर्निशि जपते हैं सो परमपुरुष मेरे गृहबिषे अवतीर्णभयो मैं अपनेभाग्यको कहांतक कहौं अरु कोई नहींकहिसकै ( ५ ) राजाकोमन परमानन्द में पूरि रहा है आज्ञा देते हैं कि बाजा बजावहु तहां सन्देह है कि शास्त्रन बिषे प्रमाण है कि जब परमानन्दकी दशा भई तब मन क्रम वचन काव्यवहार वाहीआनन्द में शांतकही स्थिरहोइजातैहैं तहां व्यवहारकेद्वैभेदहैं स्वार्थिक परमार्थिक स्वार्थिक बिषयानन्दमयहै परमार्थिक परमानन्दमय है तहां श्रीदशरथ महाराजको व्यवहार परमानन्दमय है जिनराजाकोपुत्र परमात्मा परब्रह्मभयो है जैसे क्षारसमुद्र अरु क्षीरसमुद्र द्वौमेंजलचरहैं पर जलचरनको व्यवहार समुद्र के भीतर समुद्रभरेमें है तैसे राजाको व्यवहार परमानन्दहिमेंहै पुरीभरि श्रीरामचन्द्रहिबिषे आनन्दहै ( ६ ) गुरुवशिष्ठ सर्बोपरि श्रीबशिष्ठजीके बोलाइवेको सुमन्त आज्ञानुकूल तुरन्तजातभये सुमन्तकीबाणी सुनतसंते बाणीकेसंगही श्रीबशिष्ठ ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मणोके संगराजद्वार पर आये राजामिलिकै भवनको चले ( ७ ) अनुपम श्रीरामचन्द्र बालस्वरूप तिनकी शोभा छबिलालित्यगुण इत्यादिकनकी राशि एसे अनूपबालक देखतेभये जिनकी उपमा देबेको चौदहौभुवन तीनिहूंलोकमें ऐसे अनेक ब्रह्माण्डबिषे न कोईहै न रहानहोइगो

रूपराशिगुणकहिनसिराई ८ दो०॥ नन्दीमुखशुभश्राद्धकरिजातकर्मसबकीन्हहाटकधेनुबसनमणिनृपबिप्रनकहँदीन्ह ९चौ० ध्वज

ताते अनूप कहा पुनिअनन्त गुणबालकमें कैसेलक्ष्यकीन्हतहां श्रीबशिष्ठइत्यादिकनकी जो राजमहल में समाज है सो सर्बजीवनमुक्त हैं ताते श्रीराम स्वरूप के अधिकारी हैं ताते सब जानते हैं कहिबेकी सामर्थ्य नहींहै दोहार्थ॥ नन्दीमुखश्राद्ध जातकर्म्म करिकै हाटकधेनु बसनमणि इत्यादिक पदार्थ राजाब्राह्मण अरु याचकन को देतभये तेहिसमयके श्राद्धको नन्दीमुखनामहै तहां युक्तको अर्थकरते हैं तेहिश्राद्धमें पितृनकोमुख नांदको ऐसोहोत है पितृआनन्दसों सम्मुखआवते हैं आगे जब ब्राह्मण क्षत्रीकेपुत्रजन्मतभयो जबताईं नारनहीं छीनगयो तबताईं के समय में देवपितृ ब्राह्मण अपरयाचक ऐतेपिता औ पुत्रहुके सम्मुखहोते हैं बहुत पदार्थहेतुमन अरु मुखको बिस्तारकरते हैं आनन्दहोते हैं देवयज्ञहेतु पितृश्राद्ध तर्पणहेतु देवब्राह्मण अरु याचक दानहेतु राजादशरथ महाराजने सर्बवेदबिधान करिकै सबको संतुष्टकीन्ह ( ९ ) समस्त नगर में घरघर ध्वजाकही बड़ेबड़े निशान पताका छोटेछोटे अरु तोरणबन्दनवार भूमिमें महलपरयथायोग्यछाइरहे हैं मानोआगेहीते बनिरहे हैं सो रचनाकहिबेयोग्य नहीं है ( १० ) देवता आकाशते कल्पतरुके फूलबर्षाते हैं सर्बब्रह्मानन्द में मग्न हैं ब्रह्मानन्दकोअर्थ पाछेके दोहा में कहि आये है ( ११ ) वृन्दावन मिलिकै खीचलतीभई पर सहजशृंगार जो सर्बकालमें शृंगारकिहे किन्तु सहजहीशृंगारमय हैं तेसब उठिधावतभिई ( १२ ) कोई हजारनकञ्चनके कलश मोतिनतेछुहे आगेही बनिरहे हैं अरु हेममणिमय थारतामें मंगलमयपदार्थभरे

तुलसी पीतसमेत चाउर दधि हरदी केशरि चन्दन दूर्वा गुलाल अबीर कुंकुम छोट छोटे कलश जामें रोरी अतर फुलेल गुलाब इत्यादिक सुगन्ध मोती पञ्चरत्न इत्यादिकभरे धूप दीप नैवेद्य ताम्बूल आरती युवतीलिहे धावती भई ( १३ ) सम्पूर्ण जो रनी अरु नगरकीस्त्री ये सबबालक जो श्रीरामचन्द्र तिनकीआरतीकरती हैं बारबार शिशुके चरणनपरती हैं यह संदेह है कि तुरन्तभयो बालक अरु तेहि केचरणपरै वह परिपाटी कैसेसम्भवै तहां जब राजामनुको श्रीरामचन्द्रने बरदीन है कि हमतुम्हारेपुत्र

पताकतोरणापुरछावा कहिनजाइजेहिभांतिबनावा १० सुमनवृष्टिआकाशतेहोई ब्रह्मानंदमगनसबकोई ११ वृन्द वृन्द मिलिचलीं लोगाईं सहजसिंगारकियेउठिधाई १२ कनककलशमंगलभरिथारा गावतपैठहिंभूपटवारा १३ करिआरतीनिछाबरिकरहीं बारबारशिशुचरणानपरहीं १४ मागधसूतबंदिगुणागायकपावनगुणागावहिंरघुनायक १५ सर्बसदानदीनसबकाहू जिनपावाराखान हिंताह १६ मृगमदचन्दनकुंकुमकीचा मचीसकलबीथिनबिचबीचा १७॥दो०॥ गृहगृहबाजबधवशुभप्रकटभयेसुखकन्द हर्षवं-

होहिंगे तब यह कहिकै अन्तर्द्धानहोइकै परमदिव्यविभूतिकोजातरहे जब राजाके पुत्र होने को समय आयो तब प्रथम श्रीअयोध्या पुनि अवधबासिन को आज्ञादीन कि तुम एकस्वरूपसहितऐश्वर्य्य ब्रह्माण्ड मण्डलमेंजाहु हमआवतेहैं तहां यतनाबीच परिगयउ अब अवतीर्णभये ताते बारबार शिशुचरणन परहीं ( १४ ) मागधकहीकथिक कलावतादि पदकरिकैगावतेहैं सूतकही जेपुराणकरिकैगावतेहैं बन्दीभाट कवित्तकरिकैगावते हैं श्रीरघुनाथके नित्यपावनगुणगावतेहैं इहांरघुनाथकही श्रीरामचन्द्रतोहीं पर श्रीदशरथमहाराजकोकही ( १५ ) सर्वसकहीमनबांछितदानदीनपुनिसर्बसकही एकएक शरीरको वस्त्रकटिपट निर्वाहमात्र रहिगयो अपरघर बाहर को सरमञ्जा सर्बस दानजाको उचिततिन तिनहूं जो दानलीन अरु सर्बघरको दानदीन तहां सबहीदीन लीनकीन तहां ब्रह्मादिकै देवता याचकरूप ह्वैकैश्रीराम जन्म कै उत्सवका प्रसादलेते हैं ( १६ ) मृगमद चन्दनकेशरि कुंकुमादि सुगन्ध रंगनकी बीथिनबिषे कीचमचि रही है ( १७ ) दोहार्थ॥ गृहगृहबिषे बधाई बाजती हैं काहेते सर्ब सुखके कन्दकही मूर्त्ति श्रीरामचन्द्र प्रकटे जहां तहां नगरके नरनारि वृन्दवृन्द हर्षकोप्राप्ति हैं ( १८ ) जब श्रीरामजन्म भयोहै तेहिके चारिदण्डबीते श्रीकेकईके श्रीभरतजी आविर्भावभये हैं पुनि चारिदण्डबीते श्रीसुमित्राजी के श्रीलक्ष्मणजी आविर्भाव भये पुनियहीरीतिसेशत्रुह्नप्रकटे जेहि जेहि समय में भरत लक्ष्मण शत्रुघ्न प्रकटेहैं तेही समयमेंनगरभरेमें घरघरप्रति एकएकबालक प्रकटतभये अतिसुन्दर श्रीरामचन्द्रजी के सखादास हैं घरघर परम उत्सव बधाई बजिरही हैं ( १९ ) हे पार्वती बहिसमयमें सुखसम्पत्ति अरुसमाज जो भईहै श्रीरामजन्मकेअवसरबिषे सो शारदाअरु अहिराज नहीं कहिसकैं ( २० ) अवधपुरी तेहि

तसबजहँतहँनगरनारिनरवृन्द १८ चौ०॥ केकयसुतासुमित्रादोऊ सुंदरसुतजन्मतभइँ वोऊ १९ वह सुखसम्पतिसमयसमाजा कहि नसकहिंशारदअहिराजा २० अवधपुरीसोहैयहिभांती प्रभुहिमिलनआईजनुराती २१ देखिभानुजनुमनसकुचानीतदपिबनी सन्ध्याअनुमानी २२ अगरधूपजनुबहुअंधियारी उड़हिअबीरमनहुंअरुणारी २३ मन्दिरमणिसमूहजनुतारानृप गृहकलश सोइंदुउदारा २४ भवनवेदधुनिअतिमृदुबानी जनुखगमुखरस मयअनुमानी २५ कौतुकदेखिपतंगभुलाने येकमासतेइजात नजाने २६ दो०॥ मासदिवसकरदिवसभा मर्मनजानैकोइरथसमेत रविथाकेउनिशाकवनिबिधिहोइ २७ यहरहस्यकाहून

समयबिषे यहि भांति शोभितभई जनु प्रभुके मिलिवेको रात्री आई है ( २१ ) वह जनुभानुको देखिकै सकुचाइगई तदपि अनुमानिकै सन्ध्या रूपबनी ( २२ ) अगर धूप इत्यादिक सुगन्धमय होमकोधुवां सोईअँधियारी है अरु अबीर जो बहुतउड़ती है सोई सन्ध्यासमयकी अरुणाई है ( २३ ) मन्दिरन बिषे मणिनके समूहलगे हैं सोई नखतकहे तारागणहैं

राजमन्दिर को कलश सोईमानो पूर्णचन्द्र है ( २४ ) भवनविषे ब्राह्मण वेदध्वनि करते हैं मृदुबाणीते जनु संध्यासमयके बिहंग बोलते हैं ( २५ ) कौतुक श्रीरामचन्द्रके अद्भुत चरित्रका देखिकैसूर्य भूलिगये एक महीना जातेही नहीं जान्यो ( २६ ) दोहार्थ ॥ एकमासको एक दिवसभयो परयहमर्म किसूने नहीं जान्यो काहे कि श्रीरामजन्मको उत्सव देखिकै सहित घोड़ेरबि के चित्तकी वृत्ति श्रीराम चरितमें लगिरही है ताते रथ एकमासथंभिगयो तो रात्रीकैसे होइ तहांमास कैसे जान्यो श्रीरामचन्द्रकी कृपाते साधुकबीश्वर जानत हैं ( २७ ) यहरहस्य काहूने नहीं जान्यो एकमाससूर्यकोरथ टिकिरह्यो श्रीराम जन्मोत्सवानन्द में किसूको शरीरादिकव्यवहारकी सुधि नहींरही दिनमणि श्रीराम गुण गानकरत चलतेभये ( २८ ) यह महानन्द महोत्सव देखिकै सुरमुनि नागइत्यादिक श्रीरामगुण गान करतसंते अपनेभाग्य सराहत अपने अपने भवन को चलते भये ( २९ ) महादेव कहते हैं हे गिरिजा हमारीएक चोरीसुनहु काहेते कि तुम्हारी दृढ़बुद्धि है ( ३० ) हम अरु कागभुशुण्डि मनुष्य रूपतनुधरे हमारी गतिकोकोई जानै नहीं ( ३२ ) परमानन्द प्रेम में फूले श्रीअवधकी बीथिनमें भूले फिरैं यहचोरी काहेतेकी कि यह श्रीरामजन्मबाल इत्यादिक उत्सव मनुष्यहि तनुते निकटप्राप्ति है ( ३३ ) हेपार्बती यहशुभचरित्र सोई जानैगो

हिंजाना दिनमणिचलेकरतगुणगाना २८ देखिमहोत्सवसुरमुनिनागा चलेभवनबरणतनिजभागा २९ औरौयेककहौंनिजचोरी सुनुगिरिजाअतिदृढ़मतितोरी ३० कागभुशुण्डिसंगहमदोऊमनुजरूपगतिलखैनकोऊ ३१ परमानन्दप्रेमसुखफूले बीथिन फिरहिंमगनमनभूले ३२ यहशुभचरितजानपैसोई कृपारामकैजापरहोई ३३ तेहिअवसरजोजेहिबिधिआवा दीनभूपजोजेहि मनभावा ३४ गजरथतुरँगहेमगोहीरा दीन्हेनृपनानाबिधिचीरा ३५ दो०॥ मनसन्तोषसबनकरजहँतहँदेहिँअशीश चिरजीवहु चारिउतनयतुलसिदासकेईश ३६॥

जेहिपर श्रीरामचन्द्रकै कृपाहोइगी तेहि अवसर बिषे जो जोनीरीतिसे आये ताको तैसही राजामन भावित पदार्थ देतभये ( ३४ ) हाथी घोड़े रथ गज हेमरत्न हीरा इत्यादिक अरु नाना बिधिके जरावनकै अनेकन पट सबको देतभये ( ३५ ) दोहार्थ सबके मनको संतोष करिदीन ते सब जहां तहां आशीर्वाद देते हैं महाराज श्रीदशरथ के चारिउतनय चिरञ्जीविरहैं चिरञ्जीवि क्यों कहा श्रीरामचन्द्र तौ परमेश्वर हैं इहां राजपुत्र करिकै आशीर्वाद देते हैं श्रीतुलसीदास कहते हैं मेरेईश्वरको आशीर्वाददेते हैं ( ३६ )॥ इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकाण्डेश्रीरामजन्मउत्सवलीलावर्णनोमत्रयस्त्रिंशतिस्तरङ्गः ३३॥

दो० रामचरणचौंतिसलहरि लीलाबालकराम॥ नामकरणदैबिबिधसुख छायरह्योगृहग्राम ३४ कछुक दिवसबीते यहिभाँती जो पाछे श्रीरामचन्द्रकी परमानन्दमय बाललीला कहिआये हैं यह बारह दिनकी प्रथमबाललीला गोसाईजीने बर्णन कियो है तहां आनन्दमेंभरे रातिदिनकाहू कोनहीं जानिपर्‌यो तब नामकरणको अवसर जानिकै बैशाखबदीपंचमीशुभयोगलग्न मुहूर्त्तबिषे पूर्णज्ञानी श्रीबशिष्ठजीको अतिआदरते बुलावते भये पुनि अतिआदरकीन ( २ ) पूजाकरिकै राजाबोलतेभये हे मुनीशचारिहू बालकनकेनाम आप बिचारिराखाहोइ सो धरिये ( ३ ) बशिष्ठजी बोले हे राजन् इनकेनाम अनन्त हैं अरु सबनाम अनूपहैं मैं अपनी मतिके अनुरूप कहौंगो ( ४ ) जो परमतत्त्व परमात्मा परब्रह्म परमानन्द स्वरूप परमसुखकी पूर्णराशि ऐसो परमपुरुष आनन्दसुखको समुद्र जेहिकेएकशीकर अंशभागते त्रैलोक्य प्रकाशित है सो चैतन्यरूप निर्बिकार सर्बान्तर्यामी सर्बब्यापी सर्बसाक्षी है ( ५ ) जो आनन्द सिंधु सुखकीराशि तिनको रामअसनाम सो रामनाम कैसो है अखिल कही समूह

कछुकदिवसबीतेयहिभांती जातनजानेउदिनअरुराती १ नामकरणकरअवसरजानी भूपबोलिपठयेमुनिज्ञानी २ करिपूजाभूपति असभाषा धरियनामजोमुनिगुनिराखा ३ इनकरनामअनेकअनूपा मैंनृपकहबस्वमतिअनुरूपा ४ जोआनंदसिंधुसुखराशी सो करतेत्रैलोक्यप्रकाशी ५ जोसुखधामरामअसनामा अखिललोकदायकविश्रामा ६ बिश्वभरणपोषणकर जोई ताकरनामभरत अ–

लोक जोहै अतल वितल सुतल तलातल महातल रसातल पाताल भूःभुवः स्वः भरूः जनः तपः सत्यलोक इत्यादिक चौदहौभुवन तीनिहूंलोक किन्तु अखिलकहीअनन्त ब्रह्माण्डकोविश्रामदाता केवल एक श्रीरामनामहीहै तहांयह प्रसिद्ध निगमागमकहते हैं ( ६ ) अरु हेराजन् येजोकैकेयीको पुत्रहैतिनको भरत ऐसो नामकही काहेतेसम्पूर्ण बिश्वकोभरण पोषणकरैहैतातेभरतकही तहां जिनबालकको रामकही तिनको जो बिश्वभरण गुण है अरु भरण शक्तिहै सो गुणशक्ति परमदिब्य अनादिमूर्त्तिभरतजूहैंपुनि दूसरअर्थ भरणकही पदार्थकीप्राप्ति पोषणकही सन्तोषसोदोनों एकही बार कोई पदार्थ में नहींहोतहैं काहेते जीवनके राजाहोबेकीइच्छा राजाके इन्द्रहोबेकी इन्द्रके ब्रह्माहोबेकी ब्रह्माकेपरमेश्वर इन्होंमें सन्तोषनहीं है अरु भोजनादिक करनेहारे देवता अमृत पानकिये हैं तौभी सन्तोषनहीं है अरु कर्म्मी तपस्वी कहते हैं कि मैं इन्द्रब्रह्माहोउं अरु परमार्थिक बिषे योगीकहते हैं कि हमकालको जीतिलेहिं अरुज्ञानीकहते हैं कि हमहींईश्वर ब्रह्म हैं तहां भरणपै तो जहां तहां कछुकछुहै परपोषणनहींहै काहेते कालअजितहै जीवईश्वर ब्रह्मनहींहोइहै तहां भरणपोषण दूनौएकहीसंगहोत हैं श्रीरामचन्द्र के प्रेमबिषे जैसे सुष्टुभोजन करतसंते तुष्टी पुष्टी एकही संग है तैसे जब श्रीरामप्रेममें मत्तभयो तब परमानन्द भरण पोषणसंगही है ( प्रमाण चौ० ) अवधराजसुरराजसिहाहीं। दशरथधनलखिधनदलजाहीं॥ तेहिपुरबसतभरतबिनुरागा। चञ्चरीकजिमिचम्पकबागा॥ रमाबिलासरामअनुरागी। तजतबनमइवजनबड़भागी॥ ताते श्रीरामचन्द्रबिषे जो साधुनकर अरु सन्तनबिषे श्रीरामचन्द्रजीको प्रेमहै ताहीकैमूर्त्ति श्रीभरतजीहैं ( भरद्वाजबाक्य ) मोरेजानभरततुमएहू। धरेउदेह जनुरामसनेहू॥ ( ७ ) येजो सुमित्रा के छोटेपुत्र हैं जेहिके सुमिरेते शत्रुनकोनाशहोत है ताते शत्रुहनकही जिनबालकको रामकही तिनमें जो शत्रुनाशकशक्ति है तेहिकीमूर्त्ति यह बालकहै ताते शत्रुहनकही पुनि संतनकोशत्रु काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य्य इत्यादिक नाशहोते हैं जेसंत

सहोई ७ जाकेसुमिरणतेरिपुनाशा नामशत्रुहनवेदप्रकाशा ८ दो०॥ लक्षणधामरामप्रियसकलजगतआधार गुरुबशिष्ठतेहि राखेउलक्ष्मणनामउदार ९ धरेउनामगुरुहृदयबिचारी वेदतत्त्वनृपतवसुतचारी १० मुनिजनधनसर्बसशिवप्राना बालकेलि रसते-

श्रीरामका सुमिरणकरते हैं अरु श्रीरामसंतनको सुमिरणकरते हैं तेहिकेअनदिमूर्त्ति शत्रुहन हैं ( ८ ) दोहार्थ जो सन्तन के लक्षण श्रीरामचन्द्र को प्रिय हैं तेहिकेधाम अरु सम्पूर्ण जगत् की आधारशक्ति श्रीरामचन्द्र की जो है तेहिके अनादिमूर्त्ति ये बालक हैं तहां साधुनकेलक्षण सामुद्रिक ग्रन्थ के लक्षणते लक्षितहोते हैं बैराग्ययोग ज्ञान बिज्ञान शांतिसंतोष शीलकरुणा दयाशमदम विवेक समता श्रद्धाध्यान समाधि समाधान नवधाभक्ति प्रेमापरा इत्यादिक अनन्तलक्षण सन्तनमें हैं सो श्रीरामचन्द्रकीकृपा करुणादयाते अरु येहीलक्षण सर्बजगत् को आधार हैं तिनसबके समष्टीमूर्त्ति अखण्ड एकरसयेई बालक हैं ताते लक्ष्मणकहीते सर्बजीवनके कल्याणहेतु आचार्य्य हैं अरु जो अपरअर्थ करते हैं शंख चक्र शेषकरिके सो गोसाई तुलसीदासके मतकरिकै प्रमाण है ( ९ ) गुरुनेअपने हृदय में बिचारिकै चारिहू भाइनके गुणनाम धरेउ तहांनाम चारि प्रकारकेहोते हैं लाड़रूप क्रियागुण तहां लाड़केनाम लाललालन छगनमगन बबुआ इत्यादिक रूपनाम श्यामगौर सुंदर इत्यादिक क्रियानाम रघुबर खरारि रावणारि धनुर्द्धर इत्यादि गुणनाम रामकृष्ण बासुदेवभगवान् इत्यादि ताते गुरुन इहांचारिहू भाइनके गुणनामकहेहैं मुनिने कहा हे राजन् जो वेदनबिषे सारभूततत्त्व है सोई चारिहू तुम्हारे पुत्रहैंजेहि तत्त्व को परमहंस योगेश्वर भक्तजन संसार को जीतिके ध्यावते हैं सो तुम्हारेपुत्र ऐसेहैं आपुबड़भागीहौ सुनिकै राजाकासुख कहिबेयोग्यनहींहै ( १० ) येबालक मुनीश्वरन के जीवनसर्बसहैं शिवजीको प्राणहींहैं जो बालही लीलाते किशोरताई के रसमेंपगेहैं ( ११ ) बारकही बालहीअवस्थाते निजहितपति जानिकै लक्ष्मणने श्रीरामचन्द्र के चरणोंमें रति मानी है इहांशांतरसहै ( १२ ) अरु शत्रुहनकी भरतकेसंगप्रीति अरुदूनोंभाई मिलिकै श्रीरामकी सेवाहीमें अतिप्रीति करिकै यशबड़ाई को सदाप्राप्त हैं ( १३ ) श्रीरामचंद्र भरतश्याम मयूरकेकण्ठ इव अरु लक्ष्मण शत्रुहन गौरजनु द्वौबालकस्वरूप शृंगाररसके सेवकबीररस द्वौबालक स्वरूप हैं चारिहूस्वरूप की अनूपछबि निरखि माता तृणतोरती हैं अथवा राजा अरु गुरुसमाजकेआगे तृणनाम घूंघुटलज्जाको तोरिकै देख-

इसुखमाना ११ बारेहितेनिजहितपतिजानी लक्ष्मणरामचरणरतिमानी १२ भरतशत्रुहनदूनौभाई प्रभुसेवकयशप्रीति बड़ाई १३ श्यामगोर सुंदरदोउजोरी निरखहिंछवि जननीतृणतोरी १४ चारिउशीलरूपगुणधामा तदपिअधिक सुखसागररामा १५

तीहै ( १४ ) चारिहू बालक शीलरूप गुणकेधाम हैं तदपि श्रीरामचन्द्र अधिकसुखके सागर हैं छः चौपाई को एकही अन्वय जानब अरु यहि चौपाईते॥ वेदतत्त्व नृपतवसुतचारी यहि चौपाईताईं ॥ तदपि अधिकसुखसागर रामा॥ ( १५ ) ( प्रमाणंबशिष्ठसंहितायां श्री बशिष्ठबाक्यभरद्वाजम्प्रति ) जयश्रीमन्महाराज कुमार रघुनन्दन ॥ रामचन्द्रमहाबाहोसच्चिदानन्दबिग्रह १ गुणातीतपरब्रह्म परात्परतमप्रभो॥ बात्सल्यादि परानंत कल्याणगुणसागर २ जयमत्स्याद्यसंख्येया ऽवतारोद्भवकारण ॥ ब्रह्मबिष्णुमहेशादि संसेब्यचरणांबुज ३ राघवेंद्रमहाराज पुत्ररत्नमहाद्युते॥ सौमित्रेमातृबात्सल्य सिंधुचन्द्रजयप्रभो ४ रामप्रणमनः पक्षि रत्नपञ्जरलक्ष्मणः ॥ जयासंख्येयसौन्दर्य्य बात्सल्यादिगुणार्णब ५ जयानन्तधराधार शेषकारणबिग्रह॥ कोटिकन्दर्पदर्पघ्न सच्चिदानन्दरूपधृक् ६ जयश्रीराजराजेंद्र भोग्यभूर्लोकभूषण॥ भरतानंतमाधुर्य्य परमानन्दबिग्रह ७ जयश्रीरामपादाब्ज भ्रमरभ्रातृबत्सल॥ गाम्भीर्यौदार्यसौशील्य बात्सल्यादिगुणांबुधे ८ सुमित्राब्धिमहाचन्द्र शत्रुघ्नभ्रातृभूषण ॥ जयश्रीलक्ष्मणामेय गूढ़बात्सल्यबिग्रह ९ राजेंद्रहृदयाम्भोज मार्त्तण्डमधुरद्युते॥ जयत्वंसच्चिदानंद स्वरूपगुणमन्दिर १० इत्यर्थः ( १५ ) हृदयअनुग्रहरूप हृदयमें जनुशीतल अमृतमय इंदुको प्रकाशहै अरु हास्य जो हैसो किरणिकी अतिमनोहर सूचनिका जनावति है ( १६ ) माताकबहूं उछंगलैकै हलरावती है कबहूं मणिजटित रेशमसहित पालनेमें आनंदभरी प्रियललना कहिकहि झुलावतीहै ( १७ )॥ दोहार्थ॥ ब्यापकब्रह्म अपने घनस्तेज रूपकरिकै वृहद्ब्याप्त अनेक ब्रह्माण्डबिषे जैसे आकाशब्याप्त सोईतेज ज्योतिस्वरूप जाको योगीश समाधिकरके ध्यावतेहैं अरु ज्ञानी चित्तकीबृत्ति एकाग्र करिकै आत्मा ब्रह्माकार आनंदमें रहते हैं अरुजाकोऐसो परमदिब्य तेजगुण तेहीबालकको भक्तजन प्रेम लक्षण भक्ति करिकैध्यावते हैं परमानन्दको लहते हैं निरंजन कही मायारहित निर्गुणकही तीनिहूंगुणनके परे विगतबिनोद कही शोक हर्षरहित अजकही अ-

हृदयअनुग्रहइंदुप्रकाशा सूचतिकिरणिमनोहरहासा १६ कबहुँ उछंगकबहुंबरपलना मातुदुलारहिकहिप्रियललना १७ दो०॥ ब्यापकब्रह्मनिरंजन निर्गुणविगतविनोद सोइअजप्रेमभक्तिबश कौशल्याकीगोद १८ कामकोटिछविश्यामशरीरा नीलकंजबारिदगम्भीरा १९ अरुणचरणपंकजनखज्योती कमलदलनबैठीजनुमोती २० रेखकुलिशध्वजअंकुशसोहै नूपुरधुनिसुनिमुनिमनमोहै २१ कटिकिंकिणीउदरत्रयरेखा नाभिगंभीरजानुजेहिदेखा २२ भुजबिशालभूषणयुतभूरी हियहरिनख

जन्मा गर्भ में नहीं आवें ऐसे परमेश्वर सर्वजीव ब्रह्मादिकनकेपिता ते प्रेमअरु भक्तिवश श्रीकौशल्याकी गोद में बालकस्वरूप परमानन्ददेते हैं ( १८ ) कोटिन कामकीछवि हरते हैं श्यामशरीर में कोटिनकामकी उपमा क्योंदियो जो एककामकी छवि सोई कोटिनविषे तहां जैसे एकमणिधरो तो एकहीमणिकीशोभा प्रकाशितहोती है अरु जो कोटिनधरो तो महाशोभाप्रकाश होती है ताते कोटिन कहा है कैसो श्यामशरीर है नीलकंजइव कोमल सुगन्ध मकरन्द भरे पुनि नीलबारिद गम्भीर शोभा परमार्थभरे ( १९ ) पुनि अरुणचरण पंकजकेदलतल अंगुली शोभित हैं तापर नखन कीज्योति जनुअरुण नीलपंकजके दलनपर मोतिन की पंक्तिबैठी है ( २० ) पुनि अरुण चरणतलविषे कुलिश ध्वज अंकुश इत्यादिक चालिस अरु आठअंक भक्तनके मंगलदाता शोभित हैं महारामायणमेंशिवजीनेकहा है आठ अरु चालिस अध्यायविषे पुनि नूपुरहेम मणिकनिन से जटित हैं जाकी स्वाभाविक ध्वनि प्रणवहोति है जेहिको सुनिकै मुनिन के मनमोहितहोत हैं ( २१ ) कटिबिषे किंकिणीका अतिमधुर शब्दहोत है अरु उदरबिषे तीनिरेखा हैं जनु शोभाकी तीनिलीकै हैं अरु नाभि गम्भीरदहिनावर्त्त रसिक भक्तनके मनको बिश्रामस्थली है जे मुनीश्वर ध्यान बिषे देखतेहैं ते यहिशोभाको जानते हैं ( २२ )

भुजविशाल हैं बाजूबंदकंकण इत्यादिक भूषणन संयुक्त अति शोभित हैं अरु हृदयकेबिषे सिंहको नखपहिरेहैं जाते कोई की कुदृष्टि नहींलगै तहांअति सुंदरशोभा है ( २३ ) उर विषे मणिनको हार है पंचरंगमणि हैं पीत श्वेत अरुण हरित नील ताके बीचमें पदिक चौकोण चहुँफेर मोती मणिकनी जटित हैं जनु नवग्रह अरु नक्षत्रन के मण्डलके मध्यमें पूर्णचन्द्र एकरस चौकोण शोभित है वक्षस्स्थल विषे भृगुलता अतिशोभित है तहां विष्णुभगवान् के लक्षणअपनेविषे सबको देखावते हैं तहां यहभेद श्रीदशरथ कौशल्या जानते हैं अपर नहींजानते हैं सो पूर्व यहि प्रसंग में कहिआये हैं॥ चौपाई॥ कश्यपअदितिमहातपकीन्हा तिनकहँमैंपूरबबरदीन्हा॥ सो जानब ( २४ ) कंबुकंठ

शोभाअतिरूरी २३ उरमणिहारपदिककीशोभा बिप्रचरणदेखतमनलोभा २४ कम्बुकंठअतिचिबुकसोहाई आननअमितमदन छविछाई २५ दुइदुइ दशनअधरअरुणारे नासातिलककोबरणैपारे २६ सुन्दरश्रवणसुचारुकपोला अतिप्रियमधुरतोतरेबोला २७ चिक्कणकचकुंचितगभुआरे बहुप्रकाररचिमातुसंवारे २८ पीतझंगुलियातनुपहिराई जानुपाणिबिचरनिमोहिभाई २९

शंखकी ऐसी ग्रीवविषे तीनिरेखा हैं जनु शृंगार के मर्यादकी तीनिलीकें हैं पुनि चिबुक नीलमणिइव गोल तामध्य पीतबिन्दु जनु रसिकयोगेश्वरन के चित्तको आकर्षणयंत्र है पुनि मुखपर अमितकामकी छवि छाइरही है ( २५ ) पुनि सदा प्रसन्नरूप जब किलकिकैं बोलते हैं चारिउ भाइनकेदुइ-दुइदशन अरु अरुणअधरकी कैसीशोभा होती है जनुपूर्णचन्द्र के मध्यएकएक अरुण कमल फूल्यो है चारिउ कमलकेकोश जनु दुइदुइ हीरा प्रसवभये हैं तिनबिषे जनु दामिनीकीछटा प्रकाश करती है यह अभूतउपमाहै ( २६ ) समसुंदर श्रवणन में अनूपगोल कुण्डल झलझलातहैं जनु चारुकपोलनबिषे निर्मल आदर्शकेमध्य युगमयूर नृत्यकरते हैं अतिमधुर तोतरीबोली सबके मन को हरती है ( २७ ) सचिक्कण कचहैं कुंचित कहीं टेढ़ेहैं गभुआरेकही बालअवस्थाके बहुप्रकारते माता जोहै सो सँवारतीभई कहूं फूलनकीकली गूंथीकहूं छोटीछोटी मोती गूंथीकहूं रत्ननकी कर्णी गूंथीजनुसघन अंधकारविषे खद्योत चमकतेहैं ( २८ ) अतिमहीनपीतझँगुली माताने पहिराईहै कछुक अलङ्कार झँगुलीके तरेपरे हैं कछुक ऊपरपरे हैं तेहिकी शोभाकहते हैं जनुदामिनी झुण्ड के अवांतर नीलमेघझलकते हैं अरु तेहिमेघपर नक्षत्रनकी प्रभाझलकतिहै अरु झँगुलीकेबाहर अनूप भूषणहैं ( २९ ) रूपकही येजो शरीरको प्रकाश तेहिकीछटा सोअनूप है जाको श्रुतिशेष नहीं कहिसकैं वह शोभा सोजानै जेहिमुनीश्वर योगेश्वरनको मन सपनेहुबिषे देख्योहोइ ( ३० ) ॥दोहार्थ॥ श्रीरामचंद्र कैसे हैं सुखके संदोह कहीं समूह हैं अरु मोह जो कारणमाया तेहिके परे हैं अरु ज्ञानवाणी इन्द्री तिनसबनते परे हैं ते श्रीरामचन्द्र पति जोराजारानी हैं तिनके परमप्रेमबशह्वैकै परमपुनीत बाललीला अनेकतरह की करते हैं ( ३१ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वंसनेबालकाण्डे बाललीलावर्णनन्नामचतुस्त्रिंशतिस्तरङ्गः ३४॥ :: ::

रूपसकहिंनहिंकहिश्रुतिशेषा सोजानैसपनेहुंजेहिदेखा ३० दो०॥ सुखसंदोहमोहपरज्ञानगिरागोतीत दम्पतिपरमप्रेमबशकरशिशुचरितपुनीत ३१॥०॥ * * * * * * * *

यहिबिधिरामजगतपितुमाता कोशलपुरबासिनसुखदाता १ जिनरघुनाथचरणरतिमानी तिनकीयहगतिप्रकटभवानी २ रघुपति बिमुखयतनकरिकोरी कवनसकैभवबंधनछोरी ३ जीवचराचरबशकरिराखे सोमायाप्रभुसोंभयभाखे ४ भृकुटिबिलासनचावैजाही असप्रभुछांड़िभजियकहुकाही ५ मनक्रमबचनछांड़िचतुराई भजतकृपाकरिहैंरघुराई ६ यहिबिधिशिशुबिनोदप्रभुकीन्हा

दो० पैंतिसशुभगतरङ्गबर बालचरितरघुनन्द॥अद्भुतरस जननिहिदरशरामचरणसुखकन्द ( ३५ ) यहिबिधिते श्रीरामचन्द्र परमेश्वर सर्बोपरि सबकेकारण सबजगत्के सुखदाताते कोशलपुरबासिनको बाललीला करिकै बिशेषसुखदेते हैं ( १ ) जिनने श्रीरामचन्द्र के चरणारविंदविषे रति मानी है तिनकी यहगति प्रकटहै कौनगति श्रीरामको, परमेश्वरत्व अरुबाललीला भक्तबात्सल्यगुण वे जानते हैं ( २ ) अरु रघुपतिते बिमुख जे प्राणी हैं तेअनेकयत्नकरिकै योग ज्ञानबैराग्य इत्यादि अरु अपर देवकी उपासनाकरैं तबभी भवबन्धन ते नहींछूटते हैं ( ३ ) हे पार्बती जीव अरु सम्पूर्णदेव चराचरबशकरिराख्यो है वही माया प्रभुसे भयसंयुक्त बोलतीहैकिंतु सो श्रीरामचन्द्र की माया है वह कैसी है सर्ब्बजीव अरु ब्रह्मादिकन को भयदायक है सो हम कहा ( ४ ) ऐसी जो मायाहै सो श्रीरामचन्द्रकी भुकुटीबिलास से नाचती है हे पार्वती ऐसे प्रभु को छाँड़िकै केहिको भजी ( ५ ) मन क्रम वचन ते चतुराईकही कहावतश्रीरामचन्द्रके हैं अरु औरौकर्म धर्म देवतादिकनकी उपेक्षाकरते हैं सो छांड़िकै श्रीरामचन्द्रकाभजन करो कृपा जरूर करहिंगे ( ६ ) यहिप्रकारते बाललीला करते हैं सम्पूर्णपुरबासिनको परमानन्द सुखदेते हैं ( ७ ) माता जो है सो कबहुँक हलरावती हैं कबहुंक पालनामें झुलावती हैं ( ८ ) दोहार्थ॥ प्रेमतेमग्न कौशल्याजी निशिदिन जातनहीं जानती हैं सुतके स्नेहबशह्वैकै माता बालचरित बारम्बारगानकरती हैं किन्तु सुतके स्नेह से प्रेमबशह्वैकै कौशल्या रातिदिन जातनहींजानती हैं हे पार्बती यहबालचरित तुमसे गानकीन्ह ( ९ ) महादेवबोलतभये हे प्रिया ऐसीही अनेकप्रकार की शिशुलीला करतसंते जन्मतेलैकै एकबर्षबारहदिन बीततभये तब एकबार श्रीकौशल्याजूश्रीरघु-

सकल नगरबासिनसुखदीन्हा ७ लैउछङ्गकबहुंकहलरावै कबहुंपालनेघालिझुलावै ८ दो०॥ प्रेममगनकौशल्यानिशिदिनजातनजान सुतसनेहबशमाताबालचरितकरगान ९ एकबारजननीअन्हवाये करिशृंगारपलँगपौढ़ाये १० निजकुलइष्टदेवभगवाना पूजाहेतुकीन्हअस्नाना ११ करिपूजानैवेद्यचढ़ावा आपुगईजहँपाकबनावा १२ बहुरिमातुतहंवांचलिआई भोजनकरतदीखसुतजाई १३ गइ जननीशिशुपहँभयभीता देखाबालकशयनपुनीता १४ बहुरिआइदेखासुतसोई हृदयकम्पमनधीरनहोई १५ इहांउहांदुइ बालकदे-

न्दनजूको अगर चन्दन केसरि इत्यादिकसे उबटनकरिकै सुगन्धमयजलते स्नानकराइकै सबबिधिते शृङ्गारकरिकै अनुपमपलँग में पौढ़ावती भई ( १० ) पुनि आपस्नानकरिकै बिधिसंयुक्त निजकुलके इष्टदेव जो श्रीरङ्गनाथ भगवान् तिनकीपूजाके हेतु अनेक प्रकार के पकवानव्यञ्जनबनावतीभई ( ११ ) तिसकेउपरान्त श्रीरङ्गनाथकेमन्दिरमेंजाइकै सबबिधिपूजाकरिकै अमियसरिस मिष्टान्न पक्वान्न व्यञ्जन अनेकप्रकारकेसमर्पणकरिकै सबबिधिपूजा करिकै आपु पाकशालाविषे जातभई ( १२ ) पुनि पक्वशालाकी सामग्रीसंभारिकै श्रीरङ्गनाथजीके मन्दिरमें आवतीभई तहां एकआश्चर्य देखा जैसे रघुनन्दनजू कोपलँगपर पौढ़ाइगईरहैं तैसेहीस्वरूप श्रीरङ्गनाथजूकेमन्दिर में अनेकपदार्थ कौशल्याजूने समर्पणाकीनरहै सो रघुनन्दनजू भोजन करते हैं ( १३ ) श्रीरघुनन्दनजूको मंदिर में भोजनकरतदेखिकै माताभयसंयुक्त जहां पौढ़ाइआईरहैं तहांको जातभई सोई बालक पलँगपरपौढ़े किलकत अनंदसंयुक्त देखती भई ( १४ ) हृदयकम्पायमानभयो धैर्य्यनहींहोत है ( १५ ) तुरन्त पुनि फिरीं मन्दिरमें पुनि उसीबालकको भोजनकरतदेखा पुनि तुरन्तफिरीं पलँगपरदेखा पुनिफिरी मन्दिर में ऐसेही चारिबार इहांउहांदुइबालक देखिकै कौशल्याजू कहती हैं कि मेरीमतिको भ्रम भयो कि कौनोआनबिशेष है यहिचरित्रबिषे यहबिशेष अभिप्राय है किमाताने निजकुल इष्टदेव रंगनाथ को मानिकै पूजाकरी तब रघुनन्दनजूने कृपाकरिकै माताको यहजनायदियो कि हमतुम्हारे कुलइष्टदेव बिद्यमान हैं तुम औरकिसकी भावनाकरतीहौ हमहींमेंसबैहैं ( १६ ) तबरघुनन्दनजूने जाना कि माताअकुलाइउठी तब मधुरमुसुकायकै हंसिदीन ( १७ ) दोहार्थ॥ तब श्रीरामचन्द्र अद्भुतरस अखण्ड सो स्वरूपमाताको अपने मुखविषे दिखावते हैं अपनीमायाके रोमरोमप्रति कोटिकोटि ब्रह्माण्डबर्त्तमान देखावते हैं ( १८ ) तहां श्रीरघुनाथजू के उदरबिषे श्रीकौशल्या

खा मतिभ्रममोरिकिआनविशेखा १६ देखिरामजननीअकुलानी प्रभुहँसिदीनमधुरमुसुकानी १७ दो०॥ देखरावा मातहिनिजअद्भुतरूपअखंड रोमरोमप्रतिलागेउकोटिकोटिब्रह्मण्ड १८ अगणितरविशशिशिवचतुरानन बहुगिरिसरितसिंधुमहि कानन १९ कालकर्मगुणज्ञानसुभाऊ सोदेखा जोसुनानकाऊ २० देखीमायासबबिधिगाढ़ी अतिसभीतजोरेकरठाढ़ी २१ देखाजीव नचावैजाही देखीभक्तिजोछोरैताही २२ तनुपुलकितमुखबचननआवानयनमूंदिचरणनशिरनावा २३ बिस्मयवन्तदेखिमहतारी

जूने अनेकब्रह्माण्डन प्रति अगणित रवि शशि शिव चतुरानन देखे अरुअगणित गिरि सरित सिंधु महि कानन तहां देखतीभईं ( १९ ) कालके स्वरूप कर्मकोस्वरूप तीनिउगुणको स्वरूप ज्ञानको स्वरूप अरु जीवनको सुभावकही जो अनेकजन्मन के संचित संस्कार सूक्ष्म स्वाभाविक बर्त्तमान होते हैं सो सुभावको स्वरूप अद्भुतदेखे जो देखिबे कहबे अरुसुनिबेमें कभी नहीं आयो आश्चर्य सो देखा ( २० ) पुनि माया को स्वरूप अतिगाढ़ी काहूके उल्लंघनकरिबे योग्यनहीं है सो देखी अतिसभीतकरजोरे ठाढ़ी है ( २१ ) पुनि अनेक जीवदेखे जो मायाकेवश नाचते हैं अहंमम सूत्रबन्धिकै पुनि भक्तिको स्वरूपदेखा जो अपनी दयालुता तेजीवनको बन्धन ते छोरती है ( २२ ) यह परमदिव्य ऐश्वर्य विभूति श्रीरामचन्द्र माताको देखावतेभये कि हमको तुमऐसो परमेश्वर जानहु अपर समस्त हमारी चिद्चिद्विभूति हैं सो परम आश्चर्य ऐश्वर्य मातादेखि कै तनकम्पित अंगअंग पुलकित वाक्य बन्दहोगई नयनमूंदिकै रघुनाथजूके चरणन में माथनावती भईं ( २३ ) तब श्रीरामचन्द्र माता को बिस्मयवन्त देखिकै अपनी विभूति को आकर्षणकरिलीन वहै शिशुरूपह्वैके माता को देखवतेभये ( २४ ) तब श्रीकौशल्याजू अपनेमनविषे अतिभयमानिकै स्तुतिनहींकरिसकतीं देखो तो अज्ञानता अनेकब्रह्मांडके कारण ऐसे परमेश्वर तिनको मैंने अपनापुत्रकरिकै माना ( २५ ) तब श्रीरामचन्द्रजी जननी को बहुतप्रकार ते समुझावते भये कि हे मातु तुमयह काहूसों कहीं नहींकहना ( २६ ) दोहार्थ ॥ तब श्रीकौशल्याजू धीर्य्य धरिकै बारबार बिनयकरिकै हाथजोरिकै कहती हैं कि महूंएकबर मांगतीहूं कि यह जो तुम्हारी प्रबलामाया है सो मोको कबहूं न ब्यापै अरु मेरी प्रीति आपुविषे सबप्रकार ते बनीरहै ( २७ ) इतिश्री रामचरितमानसेसकल कलिकलुषविध्वंसने बालकाण्डे श्रीरामबालचरित्र अद्भुतरसवर्णनं

भयेबहुरिशिशुरूपखरारी २४ अस्तुतिकरिनजायभयमाना जगतपितामैंसुतकरिजाना २५ हरिजननीबहुबिधिसमुझाई यहजनिकतहुंकहसिसुनुमाई २६ दो०॥ बारबारकौशल्याबिनयकरीकरजोरि अबजनिकबहूंब्यापईप्रभुयहमायातोरि २७ चौ० ॥ बालचरितहरिबहुबिधिकीन्हा सकलनगरवासिनसुखदीन्हा १ कछुककालबीतेसबभाई बड़ेभयेपरिजनसुखदाई २ चूड़ाकर्मकीनगुरुजाई बिप्रदक्षिणापुनिबहुपाई ३ परममनोहरचरितअपारा करतफिरतचारिउसुकुमारा ४ मनक्रमबचनअगोचरजोई दशरथअजिरबिचरप्रभुसोई ५ भोजनकरतबोलजबराजा नहिंआवततजिबालसमाजा ६ कौशल्याजबबोलनजाई ठुमुकिठुमुकि

नाम पंचत्रिंशतिस्तरंगः ३५॥ :: :: :: :: :: :: ::

दो०रामचरणछत्तिसलहरि प्रभुलीलापौगण्ड आनँदभक्तिबिवेकमयपूरिरह्योब्रह्मण्ड ३६ श्रीरामचन्द्र बालचरित्र बहुबिचित्रकरिकै सम्पूर्णपुरबासिनको सुखदेतेभये ( १ ) यही प्रकारते बालचरित करतसन्ते सम्पूर्णपरिजनके सुखदाता चारिउभाई कछुकसयानभये ( २ ) उपरान्त श्रीवशिष्ठजी विप्रनसमेत आइकै चूड़ाकर्म करतेभये चूड़ाकर्म कहे मूड़न कर्णवेध पुनिब्राह्मणनको राजा अनेक दक्षिणादेतेभये ( ३ ) चारिउ सुकुमार जो हैं सो परम मनोहर चरित अजिर अरु बाहरमें करतफिरते हैं ( ४ ) हे पार्बती मन क्रम

बचनते अगोचर ऐसे जे परब्रह्म परमेश्वर श्रीरामचन्द्रते भक्तबशह्वैकै श्रीदशरथके अजिरमें बिचरते हैं अरु बाहर छोटेछोटे बालकनकेसंगखेलते हैं ( ५ ) जब राजा जेवनारबिषे बोलावते हैं तब बालकनकी समाज तजिकै नहींआवते ( ६ ) पुनि जब कौशल्याजू बोलाइबेकोजाती हैं तब ठुमुकि ठुमुकि भागिजाते हैं ( ७ ) जब रघुनाधजू ठुमुकि ठुमुकि भागिचलते हैं तब माता धरिबेको दौरती हैं देखिये तो जिनकोनिगमनेति २ करिकै गावते हैं अरु शिवके ध्यानमें नहीं आवत तेहिके धरिबेको माता धावती है यह आश्चर्य्य है ( ८ ) तब रघुनाथजू बिहँसिकैमाताको धराईदीन धूमरकही बिनाबस्त्र तन धूरिसोंभरे राजाके समीप रानी ल्यावतीभई तब राजा बिहँसिके आनन्द संयुक्त गोदमें बैठावतेभये ( ९ ) ॥दोहार्थ॥ तब राजाके संगमें भोजन करनेलगे तहां बालकेलि करिबेहेतु चित्तको चपलकरिकै इत उत अवसर पाइकै बालकनकीसमाजमें किलकत भागिचले मुखमें दधिओदन कही भात लपटान

प्रभुचलैंपराई ७ निगमनेतिशिवध्याननपावा ताहिधरैजननीहठिधावा ८ धूसरधूरिभरेतनआये भूपतिबिहँसिगोदबैठाये ९ दो०॥ भोजन करतचपलचित इतउतअवसरपाइ भाजिचलेकिलकातमुखदधिओदनलपटाइ १०॥चौ० ॥ बालचरितअतिसरलसुहाये शारदशेषशंभुश्रुतिगाये ११ जिनकरमनयहिचरितनराता तेजनबंचककियेबिधाता १२ भयेकुमारजबहिंसबभ्राता दीन्हजनेऊगुरुपितुमाता १३ गुरुगृहगयेपढ़नरघुराई अल्पकालबिद्यासबपाई १४ जाकीसहजश्वासश्रुतिचारी सोहरिपढ़यहकौतुकभारी १५ विद्या

है ( १० ) बालचरित्र जोहै सो अतिसरल स्वाभाविक परमानन्द रसमयसिद्धांत अति शोभायमान् है जाको शेषश्रुति शारदा गाइगाइ परमानन्द रसको प्राप्तहोते हैं ( ११ ) जिनकर मन श्रीरामके बालचरित्रमें नहींरम्योतिनकोबिधातैं बंचककीन्ह जगत् उनको छलिलीन किन्तु जगत्बिषे वे छलीहैं ( १२ ) अब चारिउभाई बालअवस्थाते कौमारअवस्थामें प्राप्तभये बर्षदिन गर्भाधानसंयुक्त श्रीरघुनाथजी अनेकपरमचरित्र करतसंते आठवर्षकेभयेतब चैत्रशुक्लपक्ष नवमीतिथि सर्वमंगलमय नक्षत्रयोग कर्णलग्न मुहूर्त्तइत्यादि शुभदिनबिषे माता पिता गुरुमिलिकै चारिउभाइन के यज्ञोपवीत करतेभये अनेकब्राह्मणनको दक्षिणादेतेभये ( १३ ) यज्ञोपवीतके अनन्तर श्रीरघुनाथजी गरुनके पास विद्यापढ़नेकोगये चौदहौविद्या चौंसठिकला सम्पूर्णव्याकरण काव्य कोष पुराण ज्योतिष कोक संहिता उपनिषध शास्त्र श्रुति स्मृतिइत्यादिक समस्त अल्पहीकालमें चारिउभाई पढ़तेभये ( १४ ) जिन श्रीरामचन्द्रको जो विश्वरूप है तेहिकी सहजश्वासा हैं चारिउवेद ते श्रीरामचन्द्र पढ़तेभये यहकौतुक आश्चर्यलीला है किसूके जानिबेयोग्यनहीं है ( १५ ) विद्या जो है तेहिबिषे बिनय जोहै नम्रता तेहिबिषे अतिनिपुण हैं अरु परमदिव्य गुणनको शीला कही स्थान हैं यहसब राजनकेलरिकनके खेलखेलते हैं ( १६ ) करतलविषे अतिसुन्दर धनुषबाण चारिउभाई सखन संयुक्त अरु कटिविषे पीतपट दामिनीकी द्युतिहरत तापर तूण हेमरत्ननते जटित अरु सम्पूर्ण शृङ्गार किये हैं सो स्वरूप देखिकै चराचर मोहिजाते हैं ( १७ ) जेहिबीथिनबिषे चारिउभाई बिचरते हैं तेहिबीथिनके लोगलोगाई स्वरूपचरित्रदेखिकै थकितकही चित्रवत् रहिजाते हैं ( १८ ) दोहार्त्थ॥ कोशलपुरबासी नर नारि दिनके वृद्धावस्थाके किशोर अरु बाल इनसबनको श्रीरामचन्द्र कृपालु प्राणहुते प्रियलागते हैं ( १९ ) पुनि श्रीरामचन्द्र

विनयनिपुणगुणशीला खेलहिंखेलसकलनृपलीला १६ करतलबाणधनुषअतिसोहा देखतरूपचराचरमोहा १७ जेहिबीथिनबिहरैं सबभाई थकितहोहिंसबलोगलुगाई १८ दो०॥ कोशलपुरवासीनर नारिवृद्धअरुबाल प्राणहुतेप्रियलागहिं सबकहँरामकृपाल १९ चौ०॥ बंधुसखासँगलेहिंबुलाई बनमृगयानितखेलहिंजाई २० पावनमृगमारहिंजियजानी दिनप्रतिनृपहिंदेखावहिंआनी २१ जे मृगरामबाणकेमारे तेतनतजिहरिलोकसिधारे २२ अनुजसखायुतभोजनकरहींमातुपिताआज्ञाअनुसरहीं २३ जेहिबिधिसुखीहोहिं

तीनिउभाइन अरु सबसखनको बुलाइलेतेहैंसुन्दरशृंगारकिहे धनुषबाणतूणबांधे अरु घोड़नके सुवर्णरत्नके शृंगारसंयुक्त तिनपर सम्पूर्ण अनुज सखा हजारन असवारन सहित चढ़े शिकारखेलिबे को जाते हैं देवताफूलनकी वृष्टिकरतजाते हैं नकीब बोलतेजाते हैं अरु कौशल्याजू ने हजारनभार पक्वान्न मिष्टान्न पाछेसे पठये हैं श्रीरघुनाथजी शिकार खेलते हैं ( २० ) पावनमृग जे हैं तिनको मारते हैं यहीप्रकार ते प्रितिदिन श्रीदशरथमहाराज जी को आनिकै देखावते हें ( २१ ) जे मृग श्रीरामबाणके मारेमरते हैं ते दिब्यतन धरिकै बिमाननपर चढ़िकै श्रीरामधाममें प्राप्त होते हैं ( २२ ) तिन मृगनके मांस पक्वशालाबिषे पक्वहोते हैं अनुज सखायुत भोजनकरते हैं माता पिता की आज्ञानुसार सबकरते हैं ( २३ ) जेहि प्रकार ते सबलोग सुखीहोहिं सो संयोग कृपानिधि करते हैं ( २४ ) श्रीवशिष्ठजूसों मनलाइकै वेद पुराण सुनते हैं फिरि आपु वहैसुनिकै अनुजन सों समुझाइकै कहते हैं ( २५ ) प्रातःकाल उठिकै श्रीरघुनाथजीमाता पिता गुरुको मस्तक नवावते हैं ( २६ ) अरु आज्ञापाइकै पुरका कार्य यथायोग्यकरते हैं श्रीरामचन्द्र के बिलक्षण जो चरित्र तिनको देखिकै राजा अतिहर्षको प्राप्तहोते हैं ( २७ ) दोहार्थ॥ हे पार्वती श्रीरामचन्द्र अपनेघनस्तेज महत्गुणकरिकै चराचरबिषे ब्याप्त हैं पुनि अकलकहीसम्पूर्णकलन ते रहित हैं अनीहकही चेष्टारहित हैं अजकही अजन्मागर्भ में नहीं आवैं स्वेच्छित आविर्भाव होते हें निर्गुणकही तीनिउ गुणनकेपरे जिनकरनाम अरु स्वरूप है अपने भक्तन के भक्तिहेतु सुष्टुपुनीत अनूप अनेक चरित्र करतेहैं कहूं यहपाठ है निर्गुणनामनरूप निर्गुण कहीनामरूप करिकै रहित हैं तहां जिनको नामरूप पंचतत्त्व तीनगुणकरिकै

सबलोगा करहिंकृपानिधिसोइसंयोगा २४ वेदपुराणसुनहिंमनलाई आपुकहहिं अनुजनसमुझाई २५ प्रातकालउठिकैरघुनाथा मातुपितागुरुनावहिंमाथा २६ आयसुमांगिकरहिंपुरकाजा देखिचरित हर्षहिंमनराजा २७ दो०॥ व्यापकअकलअनीहअजनिरगुणनामस्वरूप भक्तहेतुनानाबिधिकरशिशुचरितअनूप २८॥ * * * * * * *

यहसबचरितरुचिरमैंगाई आगिलकथासुनहुमनलाई १ विश्वामित्रमहामुनिज्ञानी बसहिंविपिनशुभआश्रमजानी २ जहंजपयोग

रहितहें यहसुन्दर चरित्र पौगंड अवस्थाविषे करतेभये आगे आदिकिशोरअवस्थाआई ग्यारहवर्ष पांचमहीना छादिनके रघुनन्दनजू होतभये पुनि कुवारबदीछठि ते हे पार्बती और चरित्र सुनहु ( २८ ) इतिश्री रामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वंसने बालकांडे श्रीरामचन्द्र कौमारपौगंड परमबिचित्रचरित्र बर्णनंनाम षड्त्रिंशतिस्तरंगः ॥३६॥

दो०॥ सैंतिससुभगतरंगसुनि रामचरणगुणगाथ आयेविश्वामित्रजूचलेसाथरघुनाथ ३७ हे प्रिये यह जो सुन्दर रुचिरचरित्र है सो मैंने कहा आगे को सुन्दरचरित्र मनलाइ कै सुनहु ( १ ) विश्वामित्र जो हैं महामुनीश्वर ज्ञानवान् ते सिद्धाश्रमवनमें शुभचरित्र जानिकै बसते हैं वह श्रीअयोध्याके पूर्बषोड़शयोजन भागीरथी के तटपर ( २ ) जेहिआश्रममेंजपयोग यज्ञ मुनिकरते हैं परन्तु अतिशय ताड़का मारीच सुबाहुकोडरते हैं ( ३ ) काहेते डरते हैं कि यज्ञधूमजो है तेहिको देखिकै धावते हैं तहांउपद्रव अरु यज्ञभंगकरते हैं मुनिनको दुःखदेते हैं ( ४ ) यहउपद्रवजानि कै गाधितनयके मन में चिन्ताब्यापी कि बिनाहरि ये निशिचरपापीनहींमरहिंगे ( ५ ) तब मुनिवर बिचारकीन कि परमेश्वर पृथ्वी के भारहरिबे को अवतीर्ण भये हैं ( ६ ) यही मिसु कौन मिसु कि परमेश्वर दशरथ केगृहबिषे अवतीर्णभये राक्षसन को बधकरहिंगे पृथ्वीकोभार उतारहिंगे जरूरपर मैं ताड़काके बधमिसुकरिकै हरिकेचरणारबिंद देखौंजाइ अरु बिनयकरिकै दशरथ महाराजजू सों दोउभाइनको लैआवउँ ( ७ ) कैसेहैं दोऊ भाई बैराग्यज्ञान इत्यादिक अनन्त दिब्यगुणनके अयनकही स्थान ऐसेप्रभुकोमैं नेत्रभरिकै देखिहौं मेरो अहोभाग्यहैं ( ८ ) ॥ दोहार्थ॥ कुवार बदी छठिको विश्वामित्र यह मनोरथकरके श्रीअयोध्याजीको चलतभयेएकहजार मुनीश बिश्वामित्रकेसंग श्रीरघुनाथजूके दर्शनहेतु अनेक मनो

यज्ञमुनिकरहीं अतिमारीचसुबाहुहिडरहीं ३ देखतयज्ञनिशाचरधावहिं करहिंउपद्रवमुनिदुखपावहिं ४ गाधितनयमनचिंता व्यापी हरिबिनुमरहिननिश्चरपापी ५ तबमुनिवरमनकीनबिचारा प्रभुअवतरेउहरणमहिभारा ६ यहिमिसदेखौंप्रभुपदजाई करि विनतीआनौंदोउभाई ७ ज्ञानविरागसकलगुणअयना सोप्रभुमैंदेखोंभरिनयना ८ दो०॥ बहुबिधिकरतमनोरथ जातनलागीबार करिमज्जनसरयूजलगयेभूपदरबार ९ मुनिआगमनसुनाजबराजा मिलनगयेलैबिप्रसमाजा १० करिदंडवतमुनिहिसनमानी निज

रथ करत चलते भये कुवारबदी नौमीको दुइदण्ड दिनचढ़े श्रीअयोध्याको देखा कैसी है श्रीअयोध्याजी हेम रत्नमय महल तिनके शृंग स्वर्गको स्पर्श करते हैं शृङ्गनपर कलशमानहुं लाखनचन्द्र सूर्यएकरस उदित हैं अरु शृङ्गनपर मयूर नृत्यकरते हैं अतिशोभा पावते हैं अरु मणिमयसर्ब भूमि अरु गृहगृहपति कल्पतरु कामधेनु अरु ब्रह्मादिक देवता पुरीकीशोभा देखत मोहित होते हैं अरु राजमहलके उत्तरदिशि सरयूकी प्रवाह बहती है मणिमय घाटबँधेहैं जहां तहां पञ्चरङ्गके कमलफूलेहैं तिनपरभ्रमरनकी अवली गुञ्जारकरतीहैं हंसनकी अवली बिहरती व बोलती हैं अरु जहां तहां नरनारि स्नानकरते हैं अरु श्रीरघुनाथजीको करुणामय जलनिर्मल त्रयताप हरणहार शोभितहै तहाँ बिश्वामित्र पुरीकी शोभादेखिकै अति अनुरागभरे श्रीसरयूस्नान करतेभये सम्पूर्ण नेमकरिकै राजदरबारको चलतभये ( ९ ) तहां दशरथ महाराज विश्वामित्रको आगमन सुनिकै प्रेमसंयुक्त बिप्रनसमेत सप्रेम आगेलेनचले ( १० ) जाइकै साष्टांग दण्डवत्करिकै अर्घ्यपाद्यदेतसंते निजासनपर बैठाये ( ११ ) पुनि चरण प्रक्षालिकै पुष्पादिकनते पूजाकरिकै धूप दीप आरती दण्डवत्करिकै सबप्रकारते सन्मानकीन सहित समाज आजुमैं सर्बोपरि धन्यहौं ( १२ ) पुनि बिबिधि प्रकारके पक्वान्नमिष्टान्न अनेकप्रकारके व्यंजनराजाभोजनकरावतेभये पुनि सुष्टआसनदेतेभये राजाकीभक्तिभाव अपने बिषे देखिकै मुनि बहुत प्रसन्नभये ( १३ ) तेहिसमयबिषे श्रीरामलक्ष्मणभरत शत्रुहन चारिउभाई आवतेभयेदखिकै सम्पूर्णसभा आदरदेतेभये तबराजा चारिउसुतनको मुनीशके चरणनमेंडारतेभये मुनिअतिहर्षतेअतिआदरदीन श्रीरामचन्द्रको देखतसंते तपयोग बैराग्य ज्ञानध्यान समाधि इत्यादिकके फलकोप्राप्तभये देहकीदशा भूलिगई बिदेहभये ( १४ ) श्रीरामचन्द्रको पूर्णचन्द्रमुखदेखिकै सम्पूर्णमुनिनकीमण्डली चकोरइव

आसनबैठारेआनी ११ चरणपखारिकीनअतिपूजा मोहिंसमधन्यआजुनहिंदूजा १२ बिविधिभांतिभोजनकरवाये मुनिवरहृदयहर्ष अतिपाये १३ पुनिचरणनमेलेसुतचारी रामदेखिमुनिदेहबिसारी १४ भयेमगनदेखतमुखशोभा जनुचकोरपूरणशशिलोभा १५ तबमनहर षिबचनकहराऊ मुनिअसकृपानकीन्हेउकाऊ १६ केहिकारणआगमन तुम्हारा कहहुसोकरतनलावौंबारा १७ असुर समूहसतावहिंमोहीं मैंयाचनआयहुंनृपतोहीं १८ अनुजसमेतदेहुरघुनाथा निशिचरबधमैंहोहुंसनाथा १९ दो० ॥ देहुभूपमन हर्षिकरितजहुमोहअज्ञान धर्मसुयशनृपतुमकहँइनकहंअतिकल्यान २० चौ०॥ सुनिराजाअतिअप्रियबानी हृदयकंपमुखद्युति

लोभिकैदेखिरही ( १५ ) तब मनमेंहर्षिकै राजाबोले हेमुनीश्वर आजुकीऐसीकृपा कबहूं नहींकीन्हि ( १६ ) आपको आगमन जेहिकारण होय सो आज्ञादीजै मैं तुरन्तकरौं ( १७ ) तब विश्वामित्र बोले हेराजन् असुरन के जो समूह हैं सो मोको सतावते हैं मैं तुमसे याचतहौं ( १८ ) लक्ष्मणजी संयुक्त श्रीरामचन्द्र मोकोदेहु ये दोउबालक निशिचरन कोबधकरैं मैं सनाथहोउँ ( १९ ) दोहार्थ॥ हे पार्बती यहबचनसुनिकै राजा के बाणसरीखे लागे व्याकुलह्वैगये तब विश्वामित्र अतिप्रसन्नभये किराजाधन्य हैं जो श्रीरघुनाथजीविषे यहपरात्पर प्रेमवात्सल्यरस दशरथ महाराजको प्राप्त है तब विश्वामित्र राजा को सावधानकरते हैं हेराजन् श्रीरघुनाथजी विषे प्राकृत पुत्रभाव ऐसोमोह अज्ञान त्यागकरहु

हर्षिकै श्रीरघुनाथजी को देहु तुमको धर्मसुयश है अरु इनको कल्याण है येसर्ब जीवनके कल्याणहेतु तुम्हारे पुत्र हैं ( २० ) विश्वामित्र बहुप्रकार बोधकरते हैं पर राजा अप्रियबाणी सुनिकै हृदयमें कम्पायमान हैं मुखकी द्युति कुम्हिलाइ गई है तनकी सुधिनहीं है ( २१ ) अन्तष्करण में अतिक्लेश संयुक्त धीर्य्यधरि विचारकरिकै राजाबोलतेभये हे मुनि चौथेपनविषे मैं चारिपुत्रपायउँ आपु विचारिकै बचन न कहा ( २२ ) हेमुनि जेतौ चहौ तेतो भूमिमांगहु बहुधेनु मांगहु बहुकोषकही द्रब्यमांगहु सम्पूर्ण राज्यमांगहु सो मैं सबदेउँ सहरोष कही सत्यसंकल्प करिकै कहत हौं ( २३ ) देहप्राणते और कछुपदार्थ प्रियनहीं है सो आपुमांगहु तौनिमिष एकमेंदेउँ अरुआपुकी यज्ञकीरक्षा के हेतु मैं सम्पूर्ण सेनासमेत

**कूम्हिलानी २१ चौथेपनपायहुंसुतचारी ऋषयबचननहिंकहेउबिचारी २२ मांगहुभूमिधेनुधनकोषा सर्बसदेहुंआजुसहरोषा २३ देहप्राणतेप्रियकछुनाहीं सोउबरुदेहुंनिमिषएकमाहीं २४ सबसुतमोहिंप्रियप्राणकीनाई रामदेतनहिंबनैगोसाई २५ कहँनिशिचरअतिघोरकठोरा कहंसुन्दरसुतपरमकिशोरा २६ सुनिनृपगिराप्रेमरससानी हृदयहर्षमानामुनिज्ञानी २७ तबबशिष्ठ बहुबिधिसमुझावा नृपसंदेहनाशकहँपावा २८ अतिआदरदोउतनय बोलाये हृदयलायबहुभांतिसिखाये २९ मेरेप्राणनाथसुत दोऊ तुममुनिपिताआननहिंकोऊ ३० दो०॥ सौंपेभूपतिऋषिहिसुतबहुबिधिदेइअशीश जननीभवनगयेप्रभुचलेनाइपदशीश ३१**

चलौं ( २४ ) अरु मैं जो सबकहेउं सो आपुके नहींमनमें आवे तौ चारिउपुत्र मोको प्राणकी समान हैं पर हे गोसाईं श्रीरामचन्द्र को देतनहीं बनै ( २५ ) हे मुनीश कहां निशिचर अतिघोर कठोर अरुकहां ये सुन्दरपरमकिशोर अतिकोमल तिनकेसंग युद्धकेनिमित्त तुममांगतेहौ यहबड़ो आश्चर्य है ( २६ ) राजा के बचन श्रीरामचन्द्र विषे अतिप्रेममय सुनिकै मुनि अतिहर्ष को प्राप्तभये ( २७ ) तब राजा को वशिष्ठजू बहुप्रकारते समुझावते भये हे राजन् ये तुम्हारेपुत्र श्रीरामचन्द्र परब्रह्म परमेश्वरहैं ये महि गऊ मुनि सन्त इनसबकी रक्षाहेतु अवतीर्णभयेहैं अरु विश्वामित्र के हेतु करिकै राजाजनक के इहां इनको विवाहहोइगो यह सुनिकैराजाको सन्देह नाशभयो परमसुख को प्राप्तभये ( २८ ) तहां श्रीराम लक्ष्मण तौ समीपही हैं तब राजा दोऊपुत्रनको बोलाइकै हृदय में लगावते अरु बहुतीप्रकारते सिखावन देतेभये कि सबप्रकार ते मुनीश की आज्ञा के अनुकूलरहब ( २९ ) हे मुनीश दोऊपुत्र मेरे प्राणही हैं औ तुममोसों अधिकपिताहो आननहींहौ ( ३० ) दोहार्थ॥ हेगरुड़ राजा अति हर्षसंयुक्त दूनौपुत्रन को विश्वामित्र को सौंपतभये आशीर्व्वाददर्दीन तबदोऊभाई जननी के भवनको गये हे मातु हमको राजा अति हर्षसंयुक्त महामुनीश विश्वामित्र तिनके संगपठावते हैं हमआपु की आज्ञालेनेको आये हैं तब सुमित्रासंयुक्त माता कौशल्याजू बोलती हैं हे तात एवमस्तु जाहु मुनिके संग सदा मंगलहै तब माताको दण्डवत्करिकै आशीर्बादलैकै पिताकेसमीप आये पिताकी आज्ञालैकै दण्डवत्करिके विश्वामित्र के संगचले तीनिराति विश्वामित्र अयोध्यामें रहे कुवारवदी द्वादशीकोपारणकरिकै चारिदण्डदिनचढ़े अपने आश्रम को श्रीराम लक्ष्मण को लैकै गमनकीन ( ३१ ) सोरठार्थ॥ कैसे हैं पुरुषवर्ग जेनर असुर सुरपरमेश्वरताई तिनमें दोउभाई सिंह हैं बीर हैं मुनिकी भयहरनेको हर्षि कै चले कृपाके समुद्र हैं मतिसे धीरमान् हैं अखिल जो सम्पूर्ण विश्व हैंतेहिके कारण अरु कर्ता हैं ऐसे मध्यकिशोर श्रीरघुनाथजी सदा हैं अरु

**सो०॥ पुरुषसिंहदोउबीर हर्षिचलेमुनिभयहरण कृपासिंधुमतिधीर अखिलबिश्वकारणकरण ३२॥** * * *

नैमित्यलीला में बाल पौगंडकिशोर सब नित्यकरते हैं तत्रप्रमाणमाहअन्यच्च श्लोकैकादशः श्रीरामोबालकौमार पौगंडेषुवयस्सुच चकारविविधाक्रीड़ा अयोध्यानगरेप्रभुः १ मिथिलाप्राप्तकालेच धनुर्भंग्यबिवाहयोःवयोमध्यकिशोरादिरामस्यातिमनोहरम् २ अयोध्यांपुनरागम्य जानक्या सहराघवः अनन्ताभिस्सखीभिश्चवनेष्वुपिवनेषुच ३

सरयूकूलकुञ्जेषुरत्नप्रासादपंक्तिषु विजहारवसन्तादी नृतून्द्वादशवत्सरम् ४ तदामध्यकिशोरस्य वयसोमध्यमास्थितः यौवराज्यागमेचैव तद्विघ्नंदण्डकान्प्रति ५ गमनेत्रखरादीनां बधेसुग्रीवसख्यके कुम्भकर्णदशास्यादि युद्धेतद्विजये पुनः ६ अयोध्यागमनेचैव राज्यप्राप्तौचसुन्दरि दशबर्षसहस्राणि प्रजापालनकर्मणि ७ विविधेषुबिहारेषु तथावर्षसहस्त्रकं यज्ञानुष्ठानकालेच साकेतगमनावधौ ८ तत्रनित्यविहारेच रामस्यपरमात्मनः वयोमध्यकिशोरांतं सर्वदास्तिनसंशयः ९ लीलानानाविधाःकृत्वा वाल्यादिषुवयस्स्वपि वयोर्मध्यकिशोरादि जानकीसर्वदास्थिता १० अतोऽधिकंवयोयेऽन्येवदंत्यज्ञानमोहिताः जानक्याश्चैवरामस्यवालिशास्तेसुलोचन ११ इत्यर्थः ३२ इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुष बिध्वन्सने बालकांडे विश्वामित्रागमन श्रीरामयात्राबर्णनंनाम सप्तत्रिंशतिस्तरंगः ३७॥ :: :: :: ::

दो० रामचरणअरतिसलहरि मुनिमखराख्योराम तरीअहल्यापापमय तुरतगईपतिधाम ३८ विश्वामित्रजू श्रीरघुनाथजूको लैकैचले दशरथ महाराजने बारबार बिनयकरिकै सौंप्यो श्रीरघुनाथजू कैसेहैं जनुबीररस शृङ्गारकी मूर्त्तिबन्योहै अरुण कमलइव बिशालनेत्रहैं आजानबाहुहैं अरु नीलजो मेघहै अरु तमालतरु जोहै तद्वत्श्याम ते द्वौजनु तड़ितनक्षत्रन करिकै भूषितहैं ( १ ) कटिबिषे पीतपट पहिरे हैं जनुनीलघन पर बालसूर्य्य उदयहैं अरु तूण हेमरत्नमय जटित सोकसेहैं अरु रुचिरकही अतिसुन्दर हरितपीत अरुण धनुष है पीतअरुण हरितश्वेत क्वचित् कही नीलहूहै ऐसे धनुषबाण बामदक्षिण करबिषे लिहे हैं ( २ ) ऐसेहीश्यामगौर दोऊभाइनको परमनिधि पाइकै विश्वामित्र आनन्द संयुक्त चलेजातेहैं निधिकहीनवनिधिनकेनाम पद्म १ महापद्म २ शंख ३ मकर ४ कक्षप ५ मकुन्द ६ कुन्द ७ नील ८ बर्ष ९ अथ खर्बसंख्या प्रमाणं अंक

**चौ० ॥ अरुणनयनउरबाहुबिशाला नीलजलजतनश्यामतमाला १ कटिपटपीतकसेकटिभाथा रुचिरचापअरुशायकहाथा २ श्यामगौरसुन्दरदोउभाई विश्वामित्रपरमनिधिपाई ३ प्रभुब्रह्मण्यदेवमैंजाना मोहिंहितपितातज्यउभगवाना ४ चलेजातमुनिदीन देखाई सुनिताड़काक्रोधकरिधाई ५ एकहिबाणप्राणहरिलीन्हादीनजानितेहिनिजपददीन्हा ६ तबऋषिनिजनाथहिजियचीन्हा**

एकअरु तेहिपर सुन्नदस तेहिपरसुन्न एकसौ तेहिपरसुन्न हजार तेहिपरसुन्न दशहजार तेहिपरसुन्न एकलाख तेहिपरसुन्न दशलाख तेहिपरसुन्न कोटि तेहिपरसुन्न दशकोटि तेहिपरसुन्न एकअर्बुद तेहिपरसुन्न दशअर्बुदतेहिपरसुन्न एकपद्म तेहिपरसुन्न दशपद्म तेहिपरसुन्न एक महापद्म तेहिपरसुन्न दशमहापद्म आगे यहीक्रमते महापद्मको एकशंख तेहिसौको एकमकर तेहिसौकों एककक्षप तेहिसौको एकमकुन्द तेहिसौको एकनील तेहिसौनीलको एकखर्ब ९ और परमनिधि परमेश्वरहैं ( ३ ) अपनेमनमेंबिश्वामित्र यह कहतेहैं कि प्रभु केवलब्रह्मण्यदेवहैं यह मैंनेजाना काहेते परमानन्य दशरथमहाराज जिनके ऐसे पुत्रहैं जिनपिताको मेरेनिमित्तत्यागकीन ऐसे भगवान् ब्रह्मण्यदेवहैं ( ४ ) कुवारबदी अमावास्याको चारिदण्ड दिनचढ़े कछुकदूरि आश्रमरहा तहां आकाशमार्गमें सहितसहाय ताड़काचलीआवे है मानोकालेमेघकीघटाचलीआवतीहै तिनकेआयुध मानहुदामिनी दमकतीहै तिनकीबोली मानहुमेघगर्जतहैं त्यहिकोदेखिकै रघुनाथजीने मुनितेपूछा कि मेघघमण्ड नभविषेका होइहै तब मुनि कही हे रघुनाथजी यहीताड़का है तब रघुनाथजूकहा स्त्रीजोहै तबमुनिकहा आतताईकोबधे दोषनहींहै यह बार्त्तासुनिकै ताड़काक्रोधकरिकै धावतभई ( ५ ) तब रघुनाथजीने एकबाण सन्धानकरिकैमारा सोबाणलाखनहोइकै ताड़काको सेनासंयुक्त आकाशतेमारिकै गिरायदीन मानो नीलपर्बतपर बज्रपरयो है तब तेहिको दीनजानिकै ब्रह्माकोआज्ञाभईलाखनबिमानपर चढ़ायकै परमपदकोप्राप्तकीन प्रथमताड़काकोबधकीन्हो मानो सम्पूर्ण राक्षसनकीमाया निवृत्तकीन्ह ( ६ ) तबमुनि अच्छीतरहचीन्हा कि मोहिंआदिक सर्बऋषिनकेनाथयहीहैं तो सर्बकेनाथ पर आपनकार्य्य सिद्धिभये निजनाथकहाहै तब विद्यानिधि जो रामचन्द्र तिनकोअपनेबिषे जो बिद्यारही सो समर्पणकीन्ह ( ७ ) जाबिद्याते क्षुधातृषा न लगै अतुलितबल अरु तनमेंतेजको प्रकाशहोइ ( ८ )॥ दोहार्थ ॥ अरुबला अतिबला द्वौबिद्या जिनतेसब शस्त्रास्त्रउत्पन्नभयेहैं सोसब आयुध

**बिद्यानिधिकहँबिद्यादीन्हा ७ जातेलागनक्षुधापियासा अतुलितबलतनतेजप्रकाशा ८ दो०॥ आयुधसर्बसमर्पिकरि प्रभुनिज आश्रमआनि कन्दमूलफलभोजन दियेभक्तहितजानि ९॥ चौ० ॥ प्रातकहामुनिसनरघुराई निर्भययज्ञकरहुतुमजाई १० होमकरन लागेमुनिझारी आपुरहेमखकीरखवारी ११ सुनिमारीचनिशाचरकोही लैसहायधावामुनिद्रोही १२ बिनुफरबाणरामतेहि मारा शतयोजनगासागरपारा १३ पावकशरसुबाहुपुनिमारा अनुजनिशाचरकटकसंहारा १४ मारिअसुरसुरनिर्भयकारी अस्तु**

विश्वामित्रने समर्पणकीन पुनि अपनेआश्रममें आनिकै दोऊभाइनकोभक्तिभावसंयुक्त कन्दमूलफल सुधाइव समर्पणकीन ( ९ ) तबरात्रीबसिकै श्रीरामचन्द्रने कुवारशुदी परेवाको प्रातःकाल मुनिसनकहा कि हेमुनीश गुरोनिर्भययज्ञकरो ( १० ) तब हजारनमुनिजोरहैं सोसब होम करनेलगे आपुदोऊभाई यज्ञकीरक्षापररहे ( ११ ) तब दूतनतेसुनिकै अरुआकाशविषे यज्ञकोधूमदेखिकै अतिक्रोधी मुनिनकोद्रोही जो मारीच निशाचर है सो आपनसहायलैकै धावतभयो ( १२ ) तब बिनागांसी कोबाण श्रीरामचन्द्रनेमारा वह शतयोजन समुद्रपारलङ्काकोप्राप्तभयो पुनि जब सावधानभयो तब लज्जित ह्वैकै यहिपारआनिकै बासकरत भयो ( १३ ) पुनि सुबाहुनामराक्षसजोहै सो अपनी सैन्यलैकैआयो तब श्रीरामचन्द्रने अग्निबाणकरिकै सुबाहुको भस्मकीन अरु लक्ष्मणजू अग्निबाणकरिकै सम्पूर्णसैन्य भस्मकीन्ह ( १४ ) असुरनको मारिकै परमपददीन्ह देवतनको निर्भयकीन्ह तब ब्रह्मादिक देव मुनि सिद्ध चारण गुह्यक विद्याधर गन्धर्व्व समस्त स्तुतिकरते अरु गानकरते हैं पुष्पनकी वर्षाकरते हैं ( १५ ) तहां विश्वामित्रके आश्रमविषे कछुकदिवसरहे ब्राह्मणनपरदयाकीन्ह ( १६ ) भक्तिपूर्वक विश्वामित्र श्रुति स्मृति शास्त्र पुराण इत्यादिक कहते हैं श्रीरामचन्द्र सबजानते हैं पर प्रीतिपूर्व्वक सुनते हैं ( १७ ) तब विश्वामित्रजी आदरतें कहते हैं हे श्रीरामचन्द्र एकचरित्र जनकपुर विषे राजाजनकजूने धनुषयज्ञ रचना कीन्ह है सो चलिकै देखिये ( १८ ) यहसुनिकै रघुनाथजी अतिप्रसन्नता सहित कुवारसुदी सप्तमी को स्नाननेम करिकै विश्वामित्र के संग पूर्व्वदिशाको गमनकीन्ह ( १९ ) विश्वामित्र केसंगमें चलेजाते हैं तहां मगमें एकआश्रमदेखा वहां नतौ पक्षी हैं नतौ मृगहैं न कोई जीवजन्तुकी जाति है काहेते मुनिशाप महाअग्निरूप है ताते जीवनहीं रहसक्ते हैं ( २० ) तहां एकशिला प्रभुनेदेखिकै मुनितेबूझा

**तिकरहिंदेवमुनिझारी १५ तहँपुनिकछुकदिवसरघुराया रहेकीन्हबिप्रनपरदाया १६ भक्तिहेतुबहुकथापुराना कहहिंबिप्र यद्यपिप्रभुजाना १७ तबमुनिसादरकहाबुझाई चरितएकप्रभुदेखियजाई १८ धनुषयज्ञसुनिरघुकुलनाथा हरषिचलेमुनिबरके साथा १९ आश्रमएकदीखमगमाहीं खगमृगजीवजन्तुतहँनाहीं २० पूंछामुनिहिशिलाप्रभुदेखी सकलकथामुनिकहेउबिशेखी २१ दो० ॥ गौतमनारीशापबश उपलदेहधरिधीर चरणकमलरजचाहती कृपाकरहुरघुबीर २२ मात्रात्रिभंगीछन्द॥ परसतपदपावन**

यहशिला कैसी है मुनिसबप्रसंग कहते हैं ( २१ ) दोहार्त्थ॥ हे श्रीरामचन्द्र यह गौतममुनिकोआश्रम है तिनकीपत्नी अहल्या तेहिते कछुअपराध भयो तब महामुनि शापदीन्ह ताते शापके वशह्वैकै शिला ह्वैरही हैपुनि कृपाकरिकै शापानुग्रह कीन्ह त्रेताके चौथेचरणमें श्रीअयोध्या विषे महाराज श्रीदशरथकेगृह में परमेश्वर अवतीर्ण होहिंगे जनकपुरमें गमनकरतसंते चरणकीरज तेरेतनमें स्पर्शहोतेही मोक्षहोइगी ताते आपुकेचरणकी रज चाहतीहै सो कृपाकरिकै दीजिये ( २२ ) छन्दार्त्थ॥ तब रघुनाथजी ने कहा कि ब्राह्मणी जो है मुनिने कहा कि अपनाको अपराध योजितहोइ अरु वह कर्म किहेते औरको कल्याणहोइ तो महत्पुण्य है ताते आपुके चरणपरसेते यहिकर शापमोचन होइगो श्रीरघुनाथजीकेचरण अतिपावन शोकनशावन शिलामें स्पर्शकरतसंते परमदिव्य तपकीमूर्त्ति आदिकिशोरीअवस्था अतिसुन्दरस्त्री शिलाप्रकटी तब श्रीरघुनाथजी को देखतभई अत्यन्तसुन्दर शृंगारकीमूर्त्ति

परमकृपालु जनसुखदायकतिनकेसम्मुख दोऊकरजोरिकै रहिगई अतिप्रेमते शरीर पुलकिआयो है मुखते कछुवचन नहीं आवै चित्रवत् ह्वैरही हे पार्वती अहल्या बड़भागिनी है तब श्रीरघुनाथजीकी प्रेरणाते अपनाको बड़भागी मानिकै चरणन में परतभई अतिपुलकते नेत्रनसों जलकीधारा बहतभई ( २३ ) तब मनविषे धीर्य्यधरिकै प्रभुको चीन्हतभई कि ये परब्रह्म हैं सम्पूर्ण मुनीश्वर ब्रह्मा शिवादिक इनहींको ध्यावते हैं सो मेरे नयनगोचरभये अहोभाग्यमानिकै श्रीरघुपतिकी कृपाते रघुपतिकी भक्ति प्राप्तिभई अतिनिर्मलपरा वाणीते स्तुतिकरती है हे रघुराई आपु ज्ञानकरिकै गम्यकहीप्राप्तिहौ अरुमैं स्त्री सबप्रकारते अपावनि अरु आपु सम्पूर्णजगत् के पावनकर्त्ता सो

शोकनशावनप्रकटभईतपपुंजसही देखतरघुनायकजनसुखदायकसम्मुखहोइकरजोरिरही अतिप्रेमअधीरापुलकशरीरामुखनहिं आवतवचनकही अतिशयबड़भागीचरणनलागी पुलकनयनजलधारबही २३ धीरजमनकीन्हाप्रभुकहँचीन्हा रघुपतिकृपाभक्तिपाई अतिनिर्मलबाणीअस्तुतिठानी ज्ञानगम्यजयरघुराई मैंनारिअपावनप्रभुजगपावनरावणरिपुजनसुखदाई राजीवबिलोचप्रभुभवमोचनपाहिपाहिशरणनआई २४ मुनिशापजोदीन्हा-अतिभलकीन्हा परमअनुग्रहमैंमाना देखेउं भरिलोचनप्रभुभयमोचन यहैलाभशंकरजाना बिनतीप्रभुमोरीमैंमतिभोरीनाथनबरमांगौंआना पदपद्मपरागारसअनुरागा मममनमधुपकरैपाना २५ जेपदसुरसरितापरमपुनीताप्रकटभईशिवशीशधरी सोईपदपंकजजेहिपूजतअजममशिर-धरेहुकृपालहरी यहिभांतिसिधारीगौतमना-

मोको चरणकी रजदीन्ह जो ब्रह्मादिक देवतनको दुर्लभहै आप रावणादिक जो रिपुहैं तिनको सुखदायीहौ अरु अपने जननकोतौ सुख रूपहीहौ हे राजीवलोचन भवभयमोचन मैं पाहि पाहि आपुकी शरणयोग्य नहींहौं पर आपु अपनी कृपाते अपनीशरणकीन ( २४ ) अरु मुनि शाप जो दीन सो अतिनीक शाप मोको अनुग्रहरूप होतभयो जो मुनिशाप न देते तौ इननेत्रनभरिकै मुनिनको दुर्लभ जो आपुकोस्वरूप सो कैसेदेखती यह दर्शनकोलाभ शंकर जानते हैं शंकरको साक्षीदिया काहेतेयह स्वरूपके परमरसिक अहर्निश शंकरही हैं हे प्रभु मैं मतिकी मन्दहौं पर आपु कृपाकरिकै यहबरदेहु कि आपुके पदकमलविषे मेरेचित्तकीबृत्तिरसिक मधुकरइव होइ ( २५ ) जिनपदनके मकरन्दते परमपुनीत सुरसरिता प्रकटभई जाको महेशने शीशपरराखा सोई पदपंकज ब्रह्मादिकनकरिकै पूजनीयहैं सो पद मेरे शीशपरधरेउ ऐसे कृपालुहौ श्रीरामचन्द्रकी कृपाते श्रीरामचन्द्रकी भक्ति प्राप्तिह्वैकै स्तुति करिकै यहि भांति सिधारीपरमदिव्यस्वरूप परमदिव्य बिमानपर आरूढ़ह्वैकै जनलोकको जातभई तहां गौतमऋषिर हैं आनन्दसंयुक्त श्रीरामके परमधामकोप्राप्तभई ( २६ ) दोहार्थ॥ गुसाईं तुलसीदासकहतेहैं ऐसे प्रभुदीनबन्धुकारणरहित कृपाल हैं हे मन शठ सबजञ्जाल छांड़िकै इनको प्रभुकोभजु ( २७ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वन्सने बालकाण्डे विश्वामित्रयज्ञरक्षण अहल्यातारण बर्णनंनाम अष्टत्रिंशतिस्तरंगः ३८॥ :: :: ::

दो०॥ शुभतरंगउनतालिसौं रामचरणशुभदेश रामलषणमुनिसंगलै मिथिलाकियोप्रवेश ३९ हे पार्वती अहल्या को तारिकै पुनि मुनि के

रीबारबारहरिचरणपरी जोअतिमनभावासोबरपावा गइपतिलोकअनंदभरी २६ दो० ॥ असप्रभुदीनदयालहरि कारणरहितकृपाल तुलसिदासशठताहिभजुछांड़िकपटजंजाल २७॥

चौ० चलेरामलक्ष्मणमुनिसंगा गयेजहांजगपावनिगंगा १ अनुजसहितप्रभुकीन्हप्रणामावहुप्रकारसुखपायहुरामा २ पुनि सुरसरिउतपतिरघुराई कौशिककहपूछाशिरनाई ३ गाधितनयसबकथासुनाई जेहिप्रकारसुरसरिमहिआई ४ तबप्रभुऋषिनस

संग श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण श्रीजनकपुर को चलतेभये चलिकै गंगा केकिनारे ठाढ़ेभये ( १ ) सहितअनुज प्रणामकीन्ह बहुसुखकोप्राप्तभयेउ ( २ ) पुनि सुरसरीजी की उत्पत्ति अरु माहात्म्य बिश्वामित्रको प्रणामकरिकैरघुनाथजी बूझते हैं ( ३ ) राजा गाधिकेतनय जो विश्वामित्र सो कहते हैं हे रघुनाथजी आप सबजानते हौ आपके चरणारविंदते उत्पन्न है सोहमकहते हैं किसी कल्पविषे आप एकस्वरूप बामनअवतार भये तब बामनजूने राजाबलिसों तीनिपग पृथ्वी मागिलीन अपनेपगते नापतसन्ते एकपग सम्पूर्ण पातालकीन्ह अरु एकपग मृत्युलोककीन्ह अरु एक पग आकाश को गयो तेहिपगके अंगुष्ठते सातोआवरण ब्रह्माण्डभेदिगयोतब गोलोक ते बिरजा गंगाजोहैं सो वही अंगुष्ठकेनख ते श्रवतभई परम दिव्यरूप जल ब्रह्मस्वरूप बासुदेव पुरुष के लोकको प्राप्तभई पुनि महाशम्भुलोक को प्राप्तभई पुनि महाविष्णु के लोकको प्राप्त भई पुनि महा बिष्णुके लोक ते ब्रह्माके कमण्डलमें प्राप्तभई हे श्रीरामचन्द्र तुम्हारेबंशविषे राजासगर भये तिनके साठिहजार पुत्र कपिलदेव के शाप ते भस्म भये तिनही की पचईपुस्तिविषे राजाभगीरथभये तिनराज्यको त्यागिकैश्रीगंगाजू के हेतु परम तपस्याकीन्हि गंगाजीप्राप्तभई तेहि गंगाजूकरिकै साठिउहजार मोक्षभये हे श्रीरामचन्द्र ऐसी गंगाजी हैं ऐसो माहात्म्यहै ( ४ ) तब श्रीगंगा की उत्पत्ति माहात्म्यसुनिकै श्रीरघुनाथजी सहित मुनिनके स्नानकरतेभये बिबिधप्रकार के दान रघुनाथजी ब्राह्मणको देतेभये ( ५ ) तब सुन्दरीनावैं आवतीभई सम्पूर्ण ऋषिनसमेत श्रीरघुनाथजी एकही खेवा उतरतेभये तब मुनिनके वृन्द तिनके सहायक श्रीरघुनाथ जी हर्षिकै जनकपुर को सहित समाज चलतेभये वेगिकही शीघ्र कुवारसुदी एकादशी को विदेह के पुर को नियरातभये ( ६ ) पुर के बाहेरकी रभ्यता श्रीरामलक्ष्मण देखिकै विशेष हर्षकोप्राप्तभये ( ७ ) प्रथम

मेतनहाये बिबिधिदानमहिदेवनपाये ५ हरषिचलमुनिवृन्दसहाया वेगिविदेहनगरनियराया ६ पुररम्यतारामजबदेखी हरषे अनुजसमेतविशेखी ७ बापीकूपसरितसरनाना सलिलसुधासममणिसोपाना ८ गुंजतमञ्जुमत्तरसभृङ्गाकूजतकलबहुबरणविहंगा ९ बरणबरणबिगसेबनजाता त्रिबिधसमीरसदासुखदाता १० दो०॥ सुमनबाटिकाबागबन बिपुलबिहंगनिवास फूलतफलतसुपल्लवित सोहतपुरचहुंपास ११ चौ०॥ बनैनबरणतनगरनिकाई जहांजाइमनतहँइलोभाई १२ चारुबजारबिचित्रअटारी मणिमयजनुवि

पुरबाहेरके चौफेरकी रम्यतादेखतेहैं तहां बावली कूप सरित सरअनेकनहैं तिनके मणिमय घाट किनारे सो पान अतिचित्रविचित्र सुन्दरबने हैं अरु सुधासम जलपूर्ण है ( ८ ) तिनकेविषे रस ते मत्त भ्रमरगुंजारकरतेहैं अरु अनेकवर्ण वर्णके विहंग अतिमधुर बोलते हैं ( ९ ) पंचरंग के कमल बिकसे हैं नीलहरित अरुण श्वेत पीत तिनविषे सुगन्ध की लपटैंचलीआवैं हैं अरु सबप्रकार सुखदायी त्रिविधिसमीर शीतलमन्द सुगंध बहत है ( १० ) दोहार्थ॥ पुर के चहुंपास श्रीरघुनाथजी मुनिनसमेतदेखते हैं कहूंकहूं फूलनकी बाटिकालगीहैं कहूंकहूं बहुबागैंलगी हैं रसाल पनसकदली इत्यादिक तिनविषे मयूर कोकिल शुक श्यामा इत्यादिकविपुल बिहंग मधुर मधुर बोलतेहैं अरु बन हैं जामें नानाप्रकारके वृक्ष सघन शोभित हैं सो बसन्तइव सदा पुर के चहुंपासफूलते फलते पल्लवतेहैं यहिप्रकारते शोभित है सो देखतभये ( ११ ) अरु नगर के चहुंफेर कोट तेहिकी शोभावर्णबे में नहींआवै काहेते जहां जाते हैं तहां देखते हैंदेखिकै मुनिन के मन रघुनाथजूको मोहिजाते हैं ( १२ ) पुनि चहुंफेर नगरदेखिकै पश्चिमदरवाजे से नगरमें प्रवेशकीन्ह तहां चारुकही अतिसुन्दर चौपर की बजारें हैं अनेक अरु बिचित्रकही बहुरंग के रत्न सुबर्ण में जटित हैं अवारीकही पंक्तिकीपंक्ति जनु विधाताने सूत्रधारिकै निजकरते मणिमय बनायो है ( १३ ) तहां धनिककही सराफ जो केवल द्रव्यैधरे हैं अरु वणिककही जो अनेकनबस्तु संचितकिये हैं सो कैसे हैंसबकुवेरही के समान हैं अनेकन अनेकबस्तुलिये बैठेहैं ( १४ ) चौहटा कही चौपरकी बजार तिनकी अतिसुन्दरगली संततकही निरन्तरसुगन्ध अगर कपूर केसरि चन्दन इत्यादिक सुगन्धते स्वाभाविकै सींचीरहतीहैं ( १५ ) औ सबकेमन्दिर मंगलमयहैं ध्वजापताकायुक्त हेममयफहरातेहैं अरु अनेक प्रकारके चित्रबने हैं जनुरतिनाथ ने निजहाथ से बनाये

धिस्वकरसवांरी १३ धनिकबणिकवरधनदसमाना बैठेसकलवस्तुलियेनाना १४ चौहटसुंदरगलीसोहाई संततरहैसुगन्धसिचाई १५ मंगलमयमन्दिरसबकेरे चित्रितजनुरतिनाथचितेरे १६ पुरनरनारिसुभगशुचिसन्ता धर्मशीलज्ञानीगुणवन्ता १७ अतिअनूप जहँजनकनिवासू बिथकेबिबुधबिलोकिबिलासू १८ होतचकितचितकोटबिलोकी सकलभुवनशोभाजनुरोकी १९ दो०॥ धवल धाममणिपुरटपटुसुघटितनानाभांति सियनिवाससुंदरसदन शोभाकिमिकहिजाति २० चौ० ॥ सुभगद्वारसबकुलिशकपाटा भूप

हैं ( १६ ) पुरके नरनारि सुभगकही अतिसुन्दर हैं शुचिपवित्र निर्मलसन्त हैं श्रीसीतारामोपासक परमानन्य हैं अरु धर्मशील वैराग्य योग ज्ञान इत्यादिक गुणमय हैं ( १७ ) अरु राजाजनकजूको मन्दिर अतिअनूपउपमारहित है जाको बिलासकही प्रकाश सुखआनन्ददेखिकै ब्रह्मादिक देवता मोहितहोते हैं ( १८ ) कोट के भीतर आश्चर्य्यित रचनाबिलोकिकै चित्त चकृतहोइगयो जनु सकल ब्रह्माण्डभरेनकी शोभारोकि दियो है ( १९ ) दोहार्थ ॥ श्रीजानकीजी जहां बिराजती हैं सो मन्दिरस्फटिक मणिनकरिकै रचित है कंचनबिषे अरु अनेकरंगनकी मणिलगी हैं सो शोभा अनूप है कविके बर्णबेको अगमहै ( २० ) राजाजनकजूकेमन्दिरके दरवाजेमें कंचनमणिनमय केंवाड़ अतिशोभितहैं तेहि दरबाजे पर राजनकीभीर अनेकनहाथी घोड़े रथ सुखपाल संयुक्त अरु अनेकननट अरु अनेकन कला नृत्यकरनेवाले अरु मागधकहीकलावत कथिक गानविद्यावाले अरु भाट अनेक कबित्तनकरिकै यशबिरदाबली बर्णते हैंतिनकीभीर अतिशोभितदेखतेभये ( २१ ) गजबाजि रथनकेशाला अति बिशाल बिस्तर सुन्दर अनेकबने हैं अरु गजबाजि रथ सुखपालइत्यादिबाहन सर्बकाल में संकुलकही तैयार हैं ( २२ ) अरु शूरबीरमंत्री सेनापति तिनसबके गृह जैसो राजाको भवनहै तैसेही सबकेहैं ( २३ ) यहीरीतिसों देखते पश्चिमदरवाजे में प्रवेशकीन सूधही पूर्बदरवाजे से पुर के बाहरगये तहां सर सरितनके समीप अनेकन राजा उतरे हैं जे धनुषयज्ञको आये हैं ( २४ ) तहां एकअमराई अतिअनूप कौशिकीनदीकेतीर अतिसुन्दर सबप्रकार ते सुपास है ( २५ ) तेहिको देखिकै विश्वामित्रबोले हे रघुवीर कृपालु मोरमन बहुत प्रसन्नभयो है इहां टिकिये ( २६ )

भीरनटमागधभाटा २१ बनीबिशालबाजिगजशाला हयगयरथसंकुलसबकाला २२ शूरसचिवसेनपबहुतेरे नृपगृहसरिससदन सबकेरे २३ पुरबाहरसरसरितसमीपा उतरेजहँतहँबिपुलमहीपा २४ देखिअनूपएकअमराई सबसुपाससबभांतिसुहाई २५ कौशिककह्यउमोरमनमाना इहांरहियरघुबीरसुजाना २६ भलेहिनाथकहिकृपानिकेता उतरेतहँमुनिवृन्दसमेता २७ विश्वामित्रमहामुनिआये समाचारमिथिलापतिपाये २८ दो० ॥ संगसचिवशुचिभूरिभटभूसुरवरगुरुज्ञाति चलेमिलनमुनिनायकहिमुदितराउयहिभांति २९॥ * * *

कृपा के निकेत श्रीरामचन्द्रबोले हेनाथ भलीआपुकही सहित मुनिवृन्दश्रीरघुनाथजी उतरतेभये ( २७ ) तब विश्वामित्र के आगमन को समाचार राजा जनकजू पावतेभये ( २८ ) दोहार्थ॥ विश्वामित्र के मिलिबेको राजाजनकजू हर्षिकैचले संगविषे सचिव हैं शुचिकही निर्मलबुद्धि जिनकी अरु भटभूरिकहीसमूह है अरु ब्राह्मणनकीमण्डली पण्डिततत्त्ववेत्ता अरु गुरुकही श्रेष्ठ शतानन्दआदिक अरु ज्ञातिकही जातिसम्बन्धी इनसबनको विश्वामित्र के दर्शनकी अतिलालसा है मुदितमन ते चले ( २९ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वन्सने बालकाण्डे रघुबरमुनिमुनीशमिथिलाप्रवेशवर्णनंनाम एकोनचत्वारिंशतिस्तरंगः ३९ :: :: ::

दो० ॥ रामचरणचालिसलहरिनृपमुनिमिलनबिलास बहुरिराममुनिवाक्यसुखनगरबिलोकनिआस ४०॥ राजाजाइकै विश्वामित्र के चरणारविन्दविषे मस्तक धरतेभये मुनिनाथने हर्षिकै आशीर्वाददीन्ह ( १ ) संपूर्णमुनिनकी राजा आदरपूर्वक वन्दनाकरतेभये अपनी बड़ीभाग्यजानिकै राजा परमानन्दको प्राप्तभये ( २ ) बारबार कुशलप्रश्न परस्पर करते हैं विश्वामित्र राजाको बैठारतेभये ( ३ ) तेहिअवसरमें दोऊभाईआये फुलवारी देखने गये रहे ( ४ ) कैसे हैं श्याम गौर हैं अतिकोमल हैं अरु अवस्थामध्य किशोर

है सुन्दरकैसे है लोचनके सुखदहैं अपनी शोभाकरिकै संपूर्ण विश्व के चित्तको चुराइलेते हैं ( ५ ) जब रघुपति आये तब राजाजनक समाजसमेत उठतभये किन्तु सकल कही दोऊसमाज उठतभये काहेते सब तत्त्ववेत्ताहैं तब विश्वामित्र अपने दक्षिणभाग के समीप बैठारतेभये ( ६ ) दोऊभ्रातनकी छवि देखिकै सम्पूर्णसमाज अतिसुखीभयो प्रेमकरि

कीन्हप्रणामचरणधरिमाथा दीनअशीषमुदितमुनिनाथा १ विप्रवृन्दसबसादरवन्दे जानिभाग्यबड़िराउअनन्दे २ कुशलप्रश्न कहिबारहिबारा विश्वामित्रराउबैठारा ३ तेहिअवसरआयेदोउभाई गयेरहेदेखनफुलवाई ४ श्यामगौरमृदुवैसकिशोरा लोचन सुखदविश्वचितचोरा ५ उठेसकलजबरघुपतिआये बिश्वामित्रनिकटबैठाये ६ भेसबसुखीदेखिदोउभ्राताबारिविलोचनपुलकित गाता ७ मूरतिमधुरमनोहरदेखी भयेबिदेहबिदेहबिशेषी ८ दो० ॥ प्रेममगनमनजानिनृपकरिबिबेकमतिधीर बोलेमुनिपदनाइशिरगदगद-

कै नेत्रनसे जल बहतहै अंगअंग पुलकित होते हैं ( ७ ) श्रीरघुनन्दनजू मधुर मनोहरमूर्ति मधुरकही जिनको देखतसन्ते नेत्र नहीं तृप्तहोते हैं अरु मनोहर कही जिनकी शोभा मुनीश्वरनके चित्त बुद्धि मनको आकर्षणकरती है तिनको देखिकै विदेह विशेषकै विदेहह्वैगये राजानिमि ते राजा की तीनिपदवी चलीआवैहैं श्रीवशिष्ठजूके शापते राजानिमिको शरीरपतनभयो तब मुनीश्वरन राजाका शरीर मथिकै एकपुत्र उत्पन्नकीन्ह तेहिको तीनिपदवीदीन्ह मथेते उत्पन्नभयो ताते राजाको मिथिलेशकहाअरु केवल पिताते उत्पन्नभये ताते जनककहा अरु मैथुनते नहींउत्पन्न हैं ताते विदेहकहा अरु मुनीश्वरन आशीर्वाददीन्ह कि यहवंश योगज्ञानभक्ति करिकै सदा युक्तरहै ताते राजाको ज्ञानकरिकै राज्यकी विषयनहीं स्पर्शकरै ताते ज्ञानविदेहकही तहां रघुनन्दनको अतिमधुरमनोहरदेखिकैइन्द्रिनको ब्यवहार रहितभयो ताते ज्ञानविदेह तौ सदारहैं अब ज्ञानविदेह देहविदेह दूनोंभये ताते विशेषविदेहभये ( ८ ) दोहार्थ॥ राजाने श्रीरामचन्द्रके स्वरूपविषे अपनी आत्मा को प्रेमते मगनजान्यो तब अंतष्करणमें विवेकसे मतिकोधीरकरिकै योगकंवलते अरु अपनीआत्मतेश्रीरामचन्द्रको परमेश्वर निश्चयजाना पर विश्वामित्र जो सद्गुरु तिनतेविशेष जानाचाहतेहैं ताते धीरजधरिकै मुनिके पदकमल गहिकै प्रेमते भरीगदगद गम्भीरवाणी बोलतेभये ( ९ ) हे नाथ ये दोउबालक अतिसुन्दर मुनिनके कुलके तिलकहैं कि नृपनकेकुलके बालकहैं इहां श्लेषालंकारहै मुनिकुल तिलककही कोई मुनिके बालकहैं नृपकुलपालककही कोई राजाके बालक हैं पुनि मुनिकुल तिलककही सम्पूर्ण मुनिनके तिलकपरमेश्वर हैं सोई तौ न होइँ नृपकुलपालक कही राजनके कुल मनुष्य देवतादिक राजनके पालक परे ईश सोई तौ न होहिं यह धुनि अर्थ है ( १० ) अरु हे नाथ ब्रह्म जेहिको निगम नेतिनेति कहिकैगावतेहैंसोई तो न होइँ वेषकही दुइस्वरूपकरिकै हमारेइहाँकृपाकियो है इहां संदेहालङ्कारहै काहेते राजाजनक निरवयव ब्रह्मनेष्ठी हैं ताते यहकहा कि ब्रह्म

गिरागँभीर ९ चौ० ॥ कहहुनाथसुंदरदोउबालक मुनिकुलतिलककिनृपकुलपालक १० ब्रह्मजोनिगमनेतिकहिगावा उभयबेषधरि कीसोइआवा ११ सहजबिरागरूपमनमोरा थकितहोतजिमिचन्द्रचकोरा १२ तातेप्रभुपूंछौंसतिभाऊ कहहुनाथजनिकरहुदुराऊ १३

तौ न होइं दुइविग्रहधरिकै प्राप्तभयो अरु ये सावयव ब्रह्ममूर्त्ति हैं तातेसंदेहकहा ( ११ ) हेनाथ यहिसंसारते मोरमन सहजै विरागरूप है अरु इनकोदेखिकै मोरमन अतिअनुरागको प्राप्तभयो जैसे चन्द्रमाको देखिकैचकोर लोभितहोत है तैसेही मेरोमन थकितभयो है ( १२ ) ताते हे नाथ मैं सत्यभावते बूझतहौं दुराव न करो यथार्थ कहहु ( १३ ) हे नाथ काहेतेकि इनको बिलोकतसन्ते मन अत्यन्त अनुरागकोप्राप्तभयो मोरमन ब्रह्मानन्द सुखसमुद्र में सदा मग्नरहै अरु इनको देखिकैबरबश ब्रह्मसुखको त्यागिदियो है ताते जनकजूके बचनमें यह सिद्धार्थ है कि प्रथमविज्ञान निरवयव ब्रह्मसुखको प्राप्तहोइ तब श्रीरामचन्द्र सावयव परब्रह्ममूर्ति तेहिके सुखको अधिकारी होइ कैसे जैसे सूर्यहीके प्रकाशते सूर्य दृश्यमान होते हैं जैसे निजअनुभवते अपनीआत्मा दृश्यमान होतिहै तैसे आत्माके दृश्यते परमात्मा जो श्रीरामचन्द्र हैं ते दृश्यामन होते हैं पूर्बचौपाई जो कहा कि

भयेविदेहविदेहविशेषी ताको अर्थ इहांभी कहते हैं राजाजनकसदा विदेहरहे काहेते कि अपनो स्वरूप आत्मा शुद्धब्रह्म चेतनरूप तामें सदा आरूढ़रहैं अरु श्रीरामचन्द्र परब्रह्मविग्रह तिनको जब देखा तबआत्मा तेवृत्तिछूटिकै श्रीरामचन्द्र के स्वरूपमेंडूबी ताते आत्माते विदेह भये ताते विशेष बिबेक कही ( १४ ) तब मुनीशबिहँसिकैबोले हे राजन्तुमतो विशेषज्ञानवान्हौ जो तुमकह्यउ अरु जान्यउ इनबालकनकोसो तुम्हारेवचन वेद तत्त्वविषे लीकहैं सत्य हैं ( १५ ) हे राजन् ये दोऊ बालकजहांतक प्राणीकही प्राणन को धारणकिये हैं सो स्थूल सूक्ष्मकरिकै चराचरको प्राणीकही तिनसबनको ये प्रिय हैं मुनिन अरु भक्तन को परमप्रिय हैं इन्हींकरिकै सर्बजीवनको कल्याण है जनक विश्वामित्र दोऊ तत्त्ववेत्तानकीबाणी में अनेकन अभिप्रायसुनिकै श्रीरामचन्द्रमुसुकाते हैं ( १६ ) हे जनकजू रघुबंशकुलके मणि राजादशरथ तिनके ये पुत्र हैं तहां यहधुनि है कि ऐसेरामचन्द्र हैं जसतुमसमुझेउ है अरु जसकहेउ ते दशरथकेपुत्रहैं ऐसे राजादशरथ हैं कि ऐसे तुम जिनकेइहां आपुचलिआये हैं अरु

इनहिविलोकतअतिअनुरागा बरबशब्रह्मसुखहिंमनलागा १४ कहमुनिबिहंसिकह्यउनृपनीका बचनतुम्हारकिहोइअलीका १५ येप्रियसबहि जहांलगिप्रानी मनमुसुकाहिंरामसुनिबानी १६ रघुकुलमणिदशरथकेजाये ममहितलागिनरेशपठाये १७ दो०॥ राम लषणदोउबंधुबररूपशीलगुणधाम मखराख्यउसबसाखिजगजीतिअसुरसंग्राम १८ चौ०॥ मुनितवचरणदेखिकहराऊ कहिनसकै निजपुण्यप्रभाऊ १९ सुंदरश्यामगौरदोउभ्राता आनंदहुकेआनँददाता २० इनकैप्रीतिपरस्परपावनि कहिनजाइमनहीमनभावनि २१

राजा ऐसे परमार्थी कि ऐसे श्रीरामचन्द्रको पाइकै मेरेहितकेहेतु संगपठावते भये ( १७ ) दोहार्थ ॥ ये जो श्यामसुन्दर हैं रूपशील बलके स्थान तिनको रामऐसोनामहै अरु ये जो गौरहैं सोईगुणनकेस्थान श्रीरामचन्द्रके लघुभ्राताहैं लक्ष्मणऐसोनामहै ये दोऊबालकन संग्राममें महाअसुरन को जीतिकैहमारेयज्ञकी रक्षाकीनहै यहबात बर्त्तमान सबजानते हैं ( १८ ) हेपार्बती राजाजनक बालतेभये हेमुनीश तुम्हारे आगमनके दर्शनते मैं अपनेपुण्यकाप्रभाव कछुनाहींकहिसकतहौं ( १९ ) हेमुनीश श्याम गौरसुन्दरभ्राता जो हैं ते आनन्द जो ब्रह्मानन्द है ताहूको आनन्द जो है परमानन्द तेहिकेदाता हैं अस मोकोसमुझिपरै है ( २० ) इनकेबिषे जे जीव प्रीतिकरते हैं अरु जेहिजीवपर ये प्रीतिकरते हैं सो परस्पर अतिपावन है परमकल्याणरूपही हैं सो मनहीमनकही मनके अन्तर्भूत आत्माताहीको भावै है किन्तु दोऊभाइनकी प्रीति परस्पर अतिपावनि है ( २१ ) हे भरद्वाज विदेहकहते हैं हे नाथ ये दोऊबालक ब्रह्म अरु शुद्धजीवइव नित्य सहजही एकसंगी स्नेही हैं इवपदकैतवापन्हुति अलङ्कारको बाचक मिसु है ( २२ ) बारम्बार श्रीरघुनाथजीकोस्वरूप अतिसुन्दर तिनको देखिदेखि राजाको अङ्ग २ अतिपुलकत है अन्तष्करणमें अतिउत्साह होत है ( २३ ) विश्वामित्रकी प्रशंसाकरिकै चरणऽविन्दगहिकै हाथजोरिकै नगरके भीतर निजमन्दिरको लिवायचले ( २४ ) अतिसुन्दर सदासुखदाता सर्बकालमें एकरस ऐसेमन्दिरमें समस्तमुनिन अरु श्रीरामलक्ष्मणजीको राजाने बासदीन्ह ( २५ ) सबप्रकारते मुनिनकी पूजा अरु सेवकाई करिकै राजा मुनीशसे विदामांगिकै गृहको गये ( २६ ) दोहार्थ॥ बिश्वामित्रकेसंगरघुबंशमणिने भोजनकरिकै बिश्रामकीन पुनि पहरदिनरहे भ्रातासहित

सुनहुनाथकहमुदितबिदेहू ब्रह्मजीवइवसहजसनेहू २२ पुनिपुनि प्रभुहिचितवनरनाहू पुलकिगातउरअधिकउछाहू २३ मुनिहिप्रशंसिनाइपदशीशा चलेलेवाइनगरअवनीशा २४ सुंदरसदनसुखदसबकाला तहाँबासलैदीनभुआला २५ करिपूजासबबिधि सेवकाई गयेराउगृहबिदाकराई २६ दो० ॥ ऋषयसंगरघुबंशमणिकरिभोजनबिश्राम बैठेप्रभुभ्रातासहितदिवसरहाभरियाम २७ चौ० ॥ लषणहृदयलालसाबिशेषी जाइजनकपुरआइयदेखी २८ प्रभुभयबहुरिमुनिहिंसकुचाहीं प्रकटनकहहिंमनहिंमुसुकाहीं २९ रामअनुजमनकीगतिजानी भक्तिबछलताहियहुलसानी

३० परमबिनीतसकुचमुसुकाई बोलेगुरुअनुशासनपाई ३१ नाथलषण पुरदेखनचहहीं प्रभुसकोचडरप्रकटनकहहीं ३२ जोराउरअनुशासनपावौं नगरदेखायतुरतलैआवौं ३३ सुनिमुनीशकहबचनसप्रीती

उठे ( २७ ) लक्ष्मणजूके हृदयमें यहलालसा बिशेषभई कि जनकपुरदेखिआवौं ( २८ ) प्रभुकेडर अरु मुनियों के संकोचते प्रकटनहींकहतेमनमेंहुलासहोत है ( २९ ) श्रीरामचन्द्र अनुजके मनकीगति जानतेभये कि लक्ष्मणजूके अन्तष्करणकोमनोरथ सफलकियाचाहिये काहेते प्रभु भक्तवत्सलहैं ( ३० ) तब परम बिनीत कही अतिप्रवीण संकोचकै मुसुकाने तव गुरुनजाना अरु कहा कि जो कछु इच्छाहोइ तो कहिये तब श्रीरामचन्द्र अतिमधुर वचन बोलतेभये ( ३१ ) हेनाथ लक्ष्मणजू जनकपुर देखाचाहतेहैं सो हमारे अरु आपके संकोच डरते प्रकट नहीं कहिसकते ( ३२ ) जो राउरकी आज्ञाहोइ तौ नगरको देखायकै तुरन्त लैआवों आगे यहअभिप्रायहै कि श्रीरघुनाथहूजूकी सबकोअपनोस्वरूपदेखाइवे अरु नगरदेखिवे की इच्छा है ( ३३ ) श्रीरामचन्द्रके वचन अतिशयकोमल माधुर्यरसभरेसुनिकै मुनिबोले हे श्रीरामचन्द्र तुम यहनीति कस न कहहु तुमने हम को पूंछा सो जगत्में गुरु शिष्य अरु वेदकी मर्याद राखीहै ( ३४ ) हेताततुम धर्मसेतुके पालकहौ औ प्रेमकेवशहौ अपने सेवकनके सुखदाताहौ ( ३५ ) दोहार्थ ॥ हे तात जाहु नगरदेखिआवहु तुम दोउभाई सुखकेनिधान कही स्थानहौ सम्पूर्ण पुरबासिनके नेत्र सुन्दर चन्द्रबदन देखाइकै सुफल करहु ( ३६ ) ॥ इतिश्रीरामचरितमानसे-सकलकलिकलुषबिध्वंसनेबालकाण्डेजनकविश्वामित्रपरमरहस्यसम्बादे श्रीराममुनिवाक्यपरमरस वर्णनंनामचत्वारिंशतितिस्तरङ्गः ४०॥ :: :: ::

दो०॥ चालिसएकतरंगमें नगरगयेरघुनन्द रामचरणपुरप्रेमवश मोदउछाहअनन्द ४१ ॥ हे गरुड़ मुनिपद बन्दिकै दोऊभाई संपूर्ण लोकन के

कसनरामतुमराखहुनीती ३४ धर्मसेतुपालकतुमताता प्रेमविवशसेवकसुखदाता ३५ दो० ॥ जाइदेखिआवहुनगरसुखनिधानदोउभाइ करहु सफलसबकेनयन सुंदरबदनदेखाई ३६॥ * * * * *

चौ०॥ मुनिपदकमलबन्दिदोउभ्राता चलेलोकलोचनसुखदाता १ बालकवृन्ददेखिअतिशोभा लगेसंगलोचनमनलोभा २ पीतबसन परिकरकटिभाथा रुचिरचापशरसोहतहाथा ३ तनअनुहरतसुचंदनखोरी श्यामलगौरमनोहरजोरी ४ केहरिकन्धरबाहुबिशाला उरअतिरुचिरनागमणिमाला ५ सुभगशोणसरसीरुहलोचन बदनमयंकतापत्रयमोचन ६ श्रवणनकनकफूलछबिदेहीं चितवत

लोचननकेसुखदाता जनकपुर देखिबेको चलतेभये ( १ ) तहांबालकनकेवृन्दकेवृन्द श्रीरामलक्ष्मणजूकी अतिशोभा देखिकै संगचलतेभये मनअरु नयनते रूपासक्तभये ( २ ) कैसे हैं दोऊभाई पीताम्बरपहिरे हैं अरुपीताम्बरकांपाशोर्ताहै अरु कटिविषे जरावमयपटुकाहै तेहिपर कनकरत्नमयतूण है रुचिरकही अतिसुन्दर धनुर्बाण हाथविषे शोभितहैं ( ३ ) अरु तनकेअनुहरित पीत सुष्टु केसरियुक्त चन्दनके खौरि दिये हैं श्याम श्रीरामचन्द्र गौर श्रीलक्ष्मणजू अपनी शोभाकरिकै सबकेमनको हरतेहैं ( ४ ) अरु केहरिकही सिंह किशोरकेऐसे उच्चकन्धहैं अरु आजानुभुजहैं अरु वक्षस्स्थल विषे गजमुक्तनके माला हैं ( ५ ) अरु सुभग अतिसुन्दर शोणकही प्रातसमयके अरुणकमलतद्वत् नेत्रहैं अरु पूर्णमयंक निर्मल एकरस तद्वत्वदन है सो देखत बाह्य हृदय के नेत्रनते अध्यात्म अधिभूत अधिदैवत तीनिहूंताप छूटिजाते हैं ( ६ ) अरु श्रवणविषे सुवर्णके फूलकही झुमकाहैं छोटे-छोटे प्रकाशमय मोती लगे हैं अलकसंयुक्त कपोलनपर हलकत अरु झलकतहैं वे अतिशय अनूपछबि देतेहैं अरु जो इनके मुंहतन चितवतहैअरु जेहिकीदिशि ये चितवतेहैं तेहिकेचित्तको चुरायलेतेहैं ( ७ ) अरुचारुचितवनिहै अरु भृकुटी वरनाम श्रेष्ठ बांकी हैं जनु कामको धनुष है अरु भालपर युगरेख पीतकेसरिको तिलकहै जनु असमशरके शरहैं पुनि जनुबिधाताने त्रिभुवनकी शोभा समेटिकै चाकी कही छापिदियोहै ( ८ ) दोहार्थ॥ पुनि सुन्दरशीशविषे सुन्दर चौतनीकही अरुण किन्तु

पीतपगड़ीगोल तेहिके चहुंफेर चारिचारि अंगुल चौड़े रेशमीपट तेहिपर सुवर्ण कलित मणिमोतीजटित एकअग्रभाग दुइ दूनोंबगल एकपक्षभाग चारिहूकी तनी मध्यपगड़ीपर बँधी है जनु बालरविके चहुंफेर चारिहू कामिनी

चितैचोरिचितलेहीं ७ चितवनिचारुभृकुटिबरबांकी तिलकरेखशोभाजनुचाकी ८ दो० ॥ रुचिरचौतनीसुभगशिरमेचककुंचितकेश नखशिखसुंदरबन्धुदोउ शोभासकलसुदेश ९ चौ०॥ देखननगरभूपसुतआये समाचारपुरवासिनपाये १० धायेधामकामसबत्यागी मनहुंरंकनिधिलूटनलागी ११ निरखिसहजसुंदरदोउभाई होहिंसुखीलोचनफलपाई १२ युवतीभवनझरोखनलागी निरखहिंराम रूपअनुरागी १३ कहहिंपरस्परवचनसप्रीती सखिइनकोटिकामछबिजीती १४ सुरनरअसुरनागमुनिमाहीं शोभाअसकहुंसुनियत

पर दिब्यलघु नक्षत्रउदितहैं अरु मेचककही श्याम सचिक्कण सूक्ष्मसघनकुञ्चित कही टेढ़े घुंघुवारे ऐसेकेशहैं यहीप्रकारते दोऊभाइनकी नखशिखपर्यन्त सुदेशकही अंगअंग अतिशोभा बनिरहीहै ( ९ ) यहबात सम्पूर्णपुरमें भासिगई परस्पर कि दोऊभूपके कुमार जो मुनिकेसंगहैं सो नगरदेखिबेको आये हैं ( १० ) सर्वपुरवासी धामकेकाम त्यागित्यागि देखनधाये जेजैसहीरहैं ते तैसहीधाये वस्त्र अलंकार काहूने सँभार नहींकियो जैसे रंक निधिकही समूहद्रब्य रत्नइत्यादिक तेहिके लूटिबेको धावैं तैसेही सबश्रीरामचन्द्रके देखिबे को धाये ( ११ ) सहजसुन्दर कही एकरस सर्वकाल तिन दोऊभाइनको निरखते हैं लोचननकेफलको पाइकै परमानन्दसुखकोप्राप्तहोते हैं ( १२ ) अरु युवतीगण जो अतिसुन्दरी चन्द्रमुखी हेमांगी नित्यकिशोरी हैं ते हेममणिनमहलनके झरोखनमें लागिलागिअतिअनुरागते दोऊभाइनको देखतीहैं ( १३ ) परस्पर अतिप्रीतिसंयुक्त वचनकहती हैं हे सखी इनदोऊकुमारोंने कोटिनकामकी छबिको जीतिलीन है ( १४ ) संसारबिषे सुरइन्द्रादिक अरु असुर नाग मुनिइत्यादिक जेतेहैं त्रैलोक्य बिषे ऐसी शोभा देखिबेमें नहींआवैहै ( १५ ) सुन्दरताबिषे जो त्रयदेवश्रेष्ठहैं तिनकी उपमादेइ तौ विष्णु चारिभुज बिधि चारिमुख शिवपंचमुख बिकट हैं ताते इन राजकुमारनकी उपमा कैसेदीजिये यह अयोग्यहोतहै ( १६ ) इनते अधिक अपरदेव ऐसो जगत्‌मेंकौनहै जिहिको इनकी छबि की पटतर दीजिये ताते हे सखि हमारे समुझिबेमें देवईश्वर ये नहीं हैं को जानै को हैं ( १७ ) दोहार्थ॥ हेसखी इनकी वयकही अवस्था आदि किशोर है अरु सुखमा कही शोभा तेहिकेस्थानहैं पुनि श्यामगौर सुखके धामहैं हेसखि इनके अंगअंगनप्रति कोटिकोटिनकाम निछावरिहैं ताते हे स-

नाहीं १५ बिष्णुचारिभुजबिधिमुखचारी बिकटवेषमुखपंचपुरारी १६ अपरदेवअसकोजगमाहीं यहछबिसखिपटतरियेजाहीं १७ दो० ॥ बयकिशोरसुखमासदनश्यामगौरसुखधाम अंगअंगपरवारियेकोटिकोटिशतकाम १८ चौ० ॥ कहहुसखीअसकोतनुधारी जोनमोहयहरूपनिहारी १९ कोउसप्रेमबोलीमृदुबानी जोमैंसुनासोसुनहुसयानी २० येसखिदोउदशरथकेढोटाबालमरालनके कलजोटा २१ मुनिकौशिकमखकेरखवारे जिनरणअजिरजिशाचरमारे २२ श्यामगातकलकंजबिलोचन जोमारीचसुभुजमद मोचन २३ कौशल्यासुतसोसुखखानी नामरामधनुशायकपानी २४ गौरकिशोरवेषवरकाछेकरशरचापरामकेपाछे २५ लक्ष्मणनाम

खी जो बिधिते हमारी चलती तौ नेत्रनते भिन्न न करतीं ( १८ ) हे सखी ऐसोकौन तनधारीहै जो इनके स्वरूपको देखिकै न मोहै यामें कोकोक्ति अलंकार है हे सखि इनको देखिकै चराचर मोहिजाते हैं ( १९ ) कोईसखी प्रेमसंयुक्त मृदुबाणीते बोलतीभई हे सखि हे सयानी जो हम सुना है सो सुनहु दोऊप्रौढ़ाहैं ( २० ) हे सखि ये दोऊकुमार

श्रीअवधपतिराजादशरथके पुत्रहैं हंसकेऐसेछौना कल कही अतिसुन्दरजोरीहै ( २१ ) पुनि बड़े तेजस्वी हैं इनहिन बिश्वामित्रके यज्ञकीरक्षाकीन्हिहै अजिर कही आंगन सो इहां न लेव अजिरकही बिस्तार रणभूमि तेहिविषे महा २ भट निशिचरन को नाशकीन्हंहै ऐसेप्रतापीबली हैं ( २२ ) हे सखी जिनकर श्यामगातहै कल कही अतिसुन्दर कमलनेत्रहैं ते मारीच अरु सुभुज कही सुबाहुनामराक्षस तिनके मदके मोचनकर्त्ता हैं मारिकै परमपददीन्ह ऐसे हैं इहां अर्थावृत्ति अलंकारहै ( २३ ) हे सखी जिनकीमाता श्रीकौशल्याजू जो सम्पूर्ण गुणकीखानिही हैं तिनको राम ऐसोनामहै रामकहतसन्ते सखी शान्तरस बिषे शृङ्गाररस यह सूचितकरै है कि चराचर बिषे येईरमे हैं अरु योगी मुनीश्वर इनहींके चरणारविन्दबिषे रमतेहैं अरु अपने स्वरूपछबि शोभा सुन्दरता करिकै सबरसिकनके चित्तको रमावते हैं ताते रामकहा अरु धनुर्व्वाण हाथबिषेलिहे हैं यह कहतसन्ते वीररससूचितकरै है यामें यह अभिप्राय सखीकहैहै कि धनुष येई तोरैंगे यहिचौपाईमें यह ध्वनिहै ( २४ ) अरु जो दूसर कुमारहे गौरआदि किशोर वेषकही सुन्दरपट आभूषणकाछे है धनुर्व्वाणलिहे है श्रीरामचन्द्रके पाछे है ( २५ ) हे सखी त्यहिको लक्ष्मणनामहै श्रीरामचन्द्रको लघुभ्राताहै हे सखि रानीकौशल्याजूते लघुरानी सुमित्राजूहैं सो यहिकीमाता हैं ( २६ ) दोहार्त्थ॥ बिप्रनकर काजकरिकै दूनोंबन्धुमुनिबधूअहल्या पापमय ताको कृतार्त्थ करिकै अब धनुषयज्ञ देखिबको मुनिके संगआये हैं हे सखि

**रामलघुभ्राता सुनुसखितासुसुमित्रामाता २६ दो० ॥ विप्रकाजकरिबंधुदोउमगमुनिवधूउधारिआयेदेखनचापमखसुनिहर्षी सबनारि २७ चौ० ॥ देखिरामछबिसखियककहई योग्यजानकीयहवरअहई २८ जोसखिइनहिंदेखुनरनाहू प्रणपरिहरिहठि करहिविवाहू २९ कोउकहइनहिंभूपपहिंचाने मुनिसमेतसादरसनमाने ३० सखिपरंतुप्रणराउनतजई विधिवशहठिअविवेकहिभ**

ऐसी श्रीकौशल्या सुमित्राजी हैं जिनके ऐसेपुत्र हैं यहसुनिकै सम्पूर्णनारीजो हैं सो अतिहर्षको प्राप्तभई ( २७ ) अपर एकप्रौढ़ासखी श्रीरामचन्द्र की छबि नेत्रनभरि देखिकै बोलतीभई हे सखि ये श्रीजानकीहीके योग्यहैं ( २८ ) हे सखी जो इनकी शोभा राजाजनकजू देखैंगे तौ बशीभूत ह्वै जाहिंगे तब प्रणतजिकै हठकरिकै बिवाहकरहिंगे यामें मध्यानायका जोहै सो श्रीरघुनाथके स्वरूपमें आसक्तभई है तहां प्रौढ़ाने वाको समाधान कीनहै ( २१ ) तब दूसरीनायका जो प्रवीण है सो बोली हे सखी इनकोनरनाह जानते हैं सहित मुनि इनको सम्मान कीन है ( ३० ) हे सखी इनकोचीन्हो तो है परन्तु प्रणको नहीं तजहिंगे काहेते बिधिकेबशते बिधिजो परमेश्वर हैं तिनकेबश जनकको प्रण अरु राजा जो है सो तो बिवेकमानहै इनकी शोभा देखिकै ऐसो कौनहै जो प्रणको न त्याग करै राजातौ प्रणको त्यागिकै विवाह करते पर राजाको प्रण बिधिके बशहै ताते राजा हठकरिकै अबिबेकको भजत कही अविवेकहीको ग्रहण किये हैं देखिये तौ सखीकी चातुरता राजाको तौ बिवेकमान किये है अरु प्रण को अबिवेकमान किये है काहेते शृङ्गार रस के भावते पुनि सखी की बाणीमें यह अभिप्रायहै ( ३१ ) कि कर्म्म धर्म्म नेष्ठी योगी ज्ञानी इत्यादिक इनकी शोभा देखिकै अपने नेम धर्म्म कर्म्म ध्यान समाधि इत्यादिकजो प्रण न त्यागिदेइ ऐसो कौन अज्ञानी है काहेते कि सबकेफल येई हैं अरु राजाके प्रणद्वारह्वैकै परमेश्वर अपनीईश्वरता जनावाचाहते हैं तातेराजाको प्रण ईश्वराधीनहै ( ३२ ) कोईसखी बोली कि जो बिधाता ऐसो भलो सबको उचित फलदाता है तौ श्रीजानकीजू को यही बर निश्चयकरिकै मिलहिगा हे आली यामें सन्देह नहीं है अली कही भ्रमरी अरु श्रीरामचन्द्र को स्वरूप नीलकमलहै छविकेशरहै शोभामकरन्द है ताकोपानकरतीहै ताते अलीकही ( ३३ ) अपरसखीबोली कि जो विधिकेवशते

**जई ३१ कोउकहजोभलअहैविधाता सबकहंसुनियउचितफलदाता ३२ तौजानकिहिमिलीवरयेहू नाहिनआलीयहसंदेहू ३३ जोविधिवशयहबनैसंयोगू तौकृतकृत्यहोहिंसबलोगू ३४ सखिहमरेअतिआरतताते कबहुंकयेआवहिंयहिनाते ३५ दो० ॥ नाहिंतौहमकहँसुनहुसखि इनकरदरशनदूरि यहसंघटतबहोइजबपुण्यपुराकृतभूरि ३६ चौ०॥ बोलीअपरकह्यउसखिनीका यह बिवाहअतिहितसबहीका ३७ कोउकहशंकरचापकठोरा**

येश्यामलमृदुगातकिशोरा ३८ सबअसमंजसअहैसयानी यहसुनिअपर कहैमृदुबानी ३९ सखिइनकहँकोउकोउअसकहहीं बड़प्रभावदेखतलघुअहहीं ४० परसिजासुपदपंकजधूरी तरीअहल्याकृतअघ

यहसंयोगबनैबिधिकहीबिधाता किन्तु बिधिकहीकर्म हमारेकर्मभाग्यते यहसंयोगबनै तौ हमलोगनकीकृत्य कृतार्थ अरु आनन्दितहोय ( ३४ ) हेसखी बिवाहकेसम्बन्ध अरु हमारी आरतकेनातेते कबहींकबहीं ये फेरिआवहिंगे काहेते दशरथनन्दन करुणानिधानहैं ( ३५ ) दोहार्थ॥ जो यह सम्बन्धनहोइ तोहमकोइनकेदर्शनदूरिहैं श्रीजानकीजी अरुइनकेविवाहको जो संघट्टहोइ तौजानिये कि हमारोसुकृतपुण्य अमितहै ( ३६ ) अपरसखीबोली हेसखी तूअतिनीककहैहैयहविवाह जबहोइ तबअतिशयहितकारसबकोहै ( ३७ ) पुनि कोईसखीहृदयते प्रेमविषेगद्गदह्वैकैबोली कि बिधाता अरु शंकर अरु जनकइनकाहूमेंविवेककनहींहै कहां धनुष अतिकठोर अरु कहांयेसुन्दरकिशोर अतिकोमलइनकोधनुष के तोरिवेकोप्रणनचाही ताते जाकोधनुष अरु जिनप्रणकीन्ह अरुजो यहबिधातानेलिखा सोतीनोंअविवेकीहैं ( ३८ ) हेसखी हेसयानिसबअसमंजसैदेखिपरतहै हमारोकीन्हकछुनहींहोतहैयहसुनि कैअपरसखी मृदुवाणीतेबोली ( ३९ ) हेसखी तुमसब विह्वलनहोहु इनको कोईकोईअसकहते हैं कि देखतकै बालकहैं पर तेजप्रताप बड़ो है ( ४० ) ऐसे तेजस्वी हैं जिनके पदपंकज के स्पर्शते अहल्या जो अघ की भूरिरहीसो कृतार्थभई ( ४१ ) हे सखि जिनके चरणकी रजविषे इतनोप्रतापहै ते शिवको धुनषतोरे बिनातान रहैंगे नतु विशेषतोरहिंगे हे सखी यहप्रतीतिभूलिहू न त्यागकरी ताते विशेष विश्वास न करहु ( ४२ ) हे सखी यहतौ विचार करहु जेहिबिरंचिने श्रीजानकीजी को रच्यो है तेहीने श्यामलबरभी बिचारिकैरच्योहै हे पार्वती इहां सखी ऐश्वर्य माधुर्यविषेकहैहै ( ४३ ) तेहिसखीके वचनसुनिकै सब हर्षको प्राप्तह्वैकै मृदुवाणीते आशीर्वाददेतीहैं कि तेरेवचन परमेश्वरसत्यकरिहैं ( ४४ ) दोहार्थ॥ ऐसेवचन परस्पर सुमुखी सुलोचनी कहतीहैं हृदयविषे हर्षती हैं फूलबर्षाती हैं यहीप्रकारते जहांजहां दूनों बन्धु जातेहैं तहांतहां सम्पूर्णनगर में ऐसही परमानन्द

भूरी ४१ सोकिरहैबिनुशिवधनुतोरे यहप्रतीतिपरिहरियनभोरे ४२ जेइविरंचिरचिसीयसवाँरी तेइश्यामलवररच्योविचारी ४३ तासुबचनसुनिसबहरषानी ऐस्यइहोउकहइँमृदुबानी ४४ दो० ॥ हियहर्षहिंवर्षहिंसुमनसुमुखिसुलोचनवृन्द जहँजहँजाहिंबंधुदोउ तहँतहँपरमानंद ४५॥

चौ०॥ पुरपूरबदिशिगेदोउभाई जहां धनुषमखभूमिबनाई १ अतिबिस्तारचारुगचढारी विमलवेदिकारुचिरसवाँरी २ चहुंदिशि कंचनमंच विशाला रचेजहांबैठहिंमहिपाला ३ तेहिपाछेसमीपचहुंपासा अपरमंचमंडलीविलासा ४ कछुकऊंचसबभांतिसोहाई

होतेहैं इहां सखिनके वचनविषे अनेकन अभिप्रायसंयुक्त रसहैं मैंने अपनी मतिअनुसार कहेहैं ( ४५ ) ॥ इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकांडे परस्पररघुनन्दनविषयिकं सखीनांदशारसवाक्यविलासवर्णनंनामैकचत्वारिंशतिस्तरङ्गः ४१॥

दो०॥ चालिसदोइतरंगवररामचरण सुखधाम॥ धनुषभूमिदर्शननगये सुमनबाटिकाराम ( ४२ ) हे भरद्वाज पुरके पूर्व्वदिशि जहां धनुषयज्ञकीभूमि बनी है तहांको दूनोंभाई जातभये ( १ ) अति विस्तारहै चारु अतिसुन्दरहैकञ्चन मणिनकरिकै गच सुढरिरहीहै तेहिकेमध्यमें परम दिव्य वेदिका बनी है ( २ ) पुनि चहुंफेर कञ्चन मणिनमय मञ्चान बहुविशाल बनेहैंजहां सम्पूर्ण देशेदशनके महिपाल बैठहिं सो प्रथम आवरणहै ( ३ ) तेहि के समीपही उनते कछुकऊंच जापर राजाजनककी सजातीय मण्डलीबैठहि सो द्वितीय आवरणके मञ्चहैं ( ४ ) अरु द्वितीय आवरणके पाछे तेहिते कछुकऊंच तृतीय आवरणके मञ्चानबने हैं जहां समष्टी नगरकेलोग बैठहिं ( ५ ) तृतीयआवरणकेपाछे चतुर्त्थ आवरणहै वाते कछुक ऊंच स्फटिकमणिनमय चहुंफेर अनेकनधाम अतिसुन्दरबने हैं ( ६ ) जहांबैठिकै नगरकी सम्पूर्णस्त्रीदेखहिं यथायोग्यनिजकुलके अनुहारिबैठहिं

( ७ ) अरु रघुनाथजीकेसङ्ग पुरकेबालकहैं ते अपनी २ रुचिते अतिमधुरबाणीतेकहिकहि श्रीरघुनाथजीको अति प्रीतिते रचना देखावते हैं ( ८ ) दोहार्थ सम्पूर्ण जे शिशु हैं ते देखावनेके मिसुते मनोहरगात स्पर्शकरते हैं तनमेंपुलकते हैं हृदयमें अतिहर्षते हैं दोऊ भाइनकै शोभा अंगअंग निरखते हैं

बैठहिंनगरलोगजहँजाई ५ तिनकेनिकटविशालसोहाये धवलधामबहुबरणबनाये ६ जहँबैठीदेखहिंसबनारी यथायोग्यनिज कुलअनुहारी ७ पुरबालककहिकहिमृदुबचना सादरप्रभुहिंदेखावहिंरचना ८ दो०॥ सबशिशुयहिमिसुप्रेमबशपरसिमनोहरगात तनुपुलकितअतिहर्षहिय देखिमनोहरगात ९ चौ० ॥ शिशुसबरामप्रेमबशजाने प्रीतिसमेतनिकेतबखाने १० निजनिजरुचिसब लेहिंबोलाई सहितसनेहजाहिंदोउभाई ११ रामदेखावहिंअनुजहिंरचना कहिप्रियमधुरमनोहरवचना १२ लवनिमेषमहँभुवननिकाया रचैजासुअनुशासनमाया १३ भक्तिहेतुसोइदीन-दयालाचितवतचकितधनुषमखशाला १४ कौतुकदेखिकचलेगुरुपाहीं

अरु बिशालभुज धरिकै अपनी अपनी रुचिते लैजाते हैं रचना देखावते हैं अरु रघुनाथजीने बालकन के प्रेमबश ह्वैकै जितने बालकहैं तितनेही स्वरूप धारणकीन्ह एकएक बालक जानत है कि हमारेही संगरघुनाथजीहैं ताते बालकनके परमानन्द होतहै ( ९ ) सब शिशुनको रघुनाथजी प्रेमबश जानिकै पृथक्-पृथक् बालकनते मन्दिरनकी शोभा बारंबार बखानते हैं ( १० ) पुनि निजनिज रुचिसेसब बोलाइलेते हैं स्नेहसमेत दोऊभाई जाते हैं ( ११ ) तहां श्रीरामचन्द्र मधुर मनोहर बचनते कहते हैं हे श्रीलक्ष्मणजू देखौतौ अद्भुतरुचना बनिरहीहै ( १२ ) हे पार्वतीजिन श्रीरामचन्द्रके एकनिमेष के लवमात्रमें माया अनेकन ब्रह्माण्डनको रचै है जिनकीआज्ञानुकूल ( १३ ) सो दीनदयालु श्रीरामचन्द्र अपनी भक्तवात्सल्यता ते चकित ह्वैकै धनुषयज्ञकी रचनादेखते अरु देखावते हैं बालकनको आनन्ददेते हैं काहेते यहरचना मायाते भिन्नहै ( १४ ) यहपरमदिब्य कौतुक देखिकै बिलम्ब जानिकै वेदमर्य्यादसे त्रासमानिकै गुरुके समीपचले ( १५ ) हे गरुड़जी देखिये तौ जिन श्रीरामचन्द्रके त्रासते कालहूको त्रासहोतहै तेप्रभु विश्वामित्रकी त्रासमानते हैं कि संसारी देवदानव मनुष्य मेरेबशहैंअरु जे मेरोभजन करते हैं तिनके मैं बशहौं ( १६ ) तब मृदुमधुर शोभायमानबचन कहिकै बालकनको बरिआई बिदाकीन्ह ( १७ ) दोहार्थ जनकपुरकी रचनादेखिकै बहुत आनंदित हैं सो भय करिकै गुरुनबिषे अतिप्रेम अरु बिनीतकही अधीन अतिसंकोचते दोऊभाई गुरुनके चरणारबिंद गहतभये आयसु पायकै बैठे प्रेमयह जानिकै कि गुरुनबड़ी कृपाकीन जो जनकपुर हमको देखायो दीनबचन अरु संकोच कछुबिलम्ब मानिकै ( १८ ) तब निशिको प्रवेशजानिकै मुनि आयसु दीन सबबिधिते सबहिन संध्या बन्दन कीन्ह ( १९ ) सन्ध्यावन्दन करिकै बिश्वामित्र पुराणपुरुष की कथाकहनेलगे सब मुनीश्वरन सहित रघुनाथजी सुनते हैं ऐसेही सुखपूर्वक

जानिबिलंबत्रासमनमाहीं १५ जासुत्रासडरकहँडरहोई भजनप्रभभावदेखावतसोई १६ कहिबातैंमृदुमधुरसुहाई कियेबिदाबालकबरिआई १७ दो० ॥ सभयसप्रेमबिनीतअति सकुचसहितदोउभाइ गुरुपदपंकजनाइशिर बैठेआयसुपाइ १८ चौ०॥ निशिप्रवेशमुनिआयसुदीन्हा सबहींसंध्यावंदनकीन्हा १९ कहतकथाइतिहासपुरानीरुचिरजनीयुगयामसिरानी २० मुनिवरशयनकीन्हतबजाई लगेचरणचापनदोउभाई २१ जिनकेचरणसरोरुहलागी करतविविधिजपयोगविरागी २२ तेदोउबंधुप्रेमजनुजीते गुरुपदपद्मपलोटतप्रीते २३ बारबारमुनिआज्ञादीन्हा रघुबरजाइशयनतबकीन्हा २४ चापतचरणलषणउरलाये सभयसप्रेमपरमसचु-

दुइयामरात्री ब्यतीतभई ( २० ) तब बिश्वामित्रजी शयनकरते भये दोऊभाई चरण चापनेलगे ( २१ ) हे भरद्वाज जिन श्रीरामचन्द्रके चरण कमलनके निमित्त योगबैराग्य ज्ञानबिज्ञान ध्यानसमाधि इत्यादिक अनेकक्लेशकरिकै जेहिचरणन बिषे प्रीतिचाहते हैं सो अनेकन जन्ममें सिद्धिहोतीहै भगवद्गीतायां श्लोकार्द्धं अनेकजन्मसंसिद्धिस्ततोयातिपरांगतिं ( २२ ) तेदोऊबन्धु प्रेमलक्षणा भक्तिकरिकै जीतेगये हैं देखिये तो मुनीशको गुरु करिके प्रीतिसमेत चरण पलोटते हैं विश्वामित्र तौ जानते हैं कि परमेश्वरस्वामी हैं अरु अपने चरणनकी सेवा क्योंकरावते हैं तहां जे आत्म समर्पण शरणागतलीनहैं ते यह जानते हैं कि जाही में स्वामी प्रसन्नहोहिंसोई करना शीश कर पद धन धर्म कर्मसबस्वामीकोहैचाहैसो करे ( २३ ) तब बारम्बार मुनीश आज्ञादेते हैं बारम्बार कहेते दोऊजननकीप्रीति अतिसूचितहोती है तब रघुबरने जायकै शयनकीन्ह ( २४ ) तब रघुनाथजीके चरणारविन्दकी सेवा लक्ष्मणजीकरते हैं हृदयमें लगायकै भयसंयुक्तकहे कही करेरेहाथ न लगैं सेवकाईको यहीधर्म्महै ताते प्रेमसमेत चरणकमल सेवतसन्ते परमानन्दको प्राप्त हैं ( २५ ) पुनि २ प्रभुकहते हैं हेतातसोवहुजाइ तब लक्ष्मणजूने प्रभुकी आज्ञामानिकै कमलपद हृदयमें धरिकै आरामकीन्ह ( २६ ) दोहार्त्थ॥ हेपार्व्वति निशिबीती अरुणशिखापुरगाबोले तिनकी धुनिसुनिकै लक्ष्मणजूउठे पुनि जगत्केपति रघुनाथजी गुरुनते प्रथमहीजागे काहेते सुजानहैं गुरुनते प्रथमही जागना मर्यादहै ( २७ ) प्रातःक्रिया सबकरिकै स्नानकीन्ह नित्यनेम करिकै गुरुनको प्रणाम कीन्हजाइ ( २८ ) तब सुन्दर समयजानिकै कुवारशुदीचतुर्द्दशी दुइदण्डदिनचढ़े गुरुन आज्ञादीन्ह तब दोऊभाई फुलवाईमें फूललेबेकोचले

**पाये २५ पुनिपुनिप्रभुकहसोवहुताता पौढ़ेधरिउरपदजलजाता २६ दो०॥ उठेलषणनिशिविगतसुनिअरुणशिखाधुनिकान गुरुते पहिलेजगतपतिजागेरामसुजान २७ चौ०॥ सकलशौचकरिजाइनहाये नित्यनिवाहिमुनिहिशिरनाये २८ समयजानिगुरुआयसु पाई लेनप्रसूनचलेदोउभाई २९ भूपबागबरदेख्यउजाई जहँबसंतऋतुरहीलोभाई ३० लागेबिटपमनोहरनाना बरणबरणबरवेलिबिताना ३१ नवपल्लवफलसुमनसुहाये निजसंपतिसुररूखलजाये ३२ चातृककोकिलकीरचकोरा कूजतविहँगनचतकलमोरा ३३**

कौन समय जानिकै गुरुनआज्ञादीन्ह कि माताकी प्रेरणाते गौरीपूजनहेतु आजु जानकीजू फुलवारीको जाहिंगी ताते यहविचारिकै मुनि रघुनाथजीको फुलवाईमें प्रथमहिं पठावतेभये कि रघुनाथजीको जानकीजूदेखहिंगी अरु रघुनाथजू जानकीजूको देखहिंगे शोभादेखिकै जानकीजू की प्राप्तिहेतु धनुषको तृणइव जानहिंगे अरु रघुनाथजीकी शोभादेखिकैरघुनाथजीकी प्राप्तिहेतु जानकीजू अति आरति होहिंगी तब रघुनाथजी जानकीजीकी आरतता नहीं सहिसकेंगे तब धनुषको तोरहिंगे ताते यहसमय जानिकै आज्ञादीन्हहै ( २९ ) तहां रघुनाथजी जायकै राजाको बाग वर श्रेष्ठ देखतेभये तेहिबागको देखिकै बसन्तऋतुलोभिरहीहै हे भरद्वाजजहां शोभा वर्णिबेमें आवतिहै तहां यहकहते हैं कि यहि बनबाटिकामें सदा बसन्तह्वैरह्यो है अरु जेहि बाटिकाविषे बसन्तौ मोहित है तेहिकीशोभा कोकहै ( ३० ) तहां अनेक जातिके बिटप मनोहरलागे हैं छत्राकार अतिललित तिनपर वेलीचढ़िरही हैं ते वितानइव शोभित हैं ( ३१ ) तेतरु कैसे हैं सदानवीनपल्लवित कि छहूंऋतुमें एकरस तिनपल्लवनकी शोभा निर्म्मलता सचिक्कणता लालित्य सुन्दरताई इत्यादिक अनेकनछविसहित है आवरणरहित जैसे बनाईनीलमणि कछुअरुणतायुक्तहोइ अरु तैसेही फल पृथक् २ पांचहू रङ्गनकी मणि नील हरित अरुण श्वेत पीतअरु अपरको कछुरङ्ग मिलित मणितद्वत् फलहै प्रकाश शोभाकीमति रस में तद्रूप इहां पूर्णोपमालंकार जानब इहां उत्प्रेक्षालंकार कहते हैं पुनि पुष्प कैसे हैं जनु बृहस्पति शुक्र मंगल अगस्त्य शनैश्चर इत्यादिक नक्षत्र सर्व्वग्रह अनेकनरूप धरिधरि श्रीजनकजूको बगैचा देखिबेको आये मदनकेकहेते देखिकै मोहिकै बसिरहे अपने अपने एकएक अंश अंश आकाशको पठैदिये आपु अचलह्वैबैठे तहां प्रकाश प्रकाशै परमार्त्थ कोमलता यशमान सुगन्ध गुणरस ऐसे फूलहैं पहिलपद चौपाईके अन्त में जो सुहायपदहै ताते पर्ण फूल फलनकी उपमादीन्हहै सो जानब अरु जिनके पर्ण फल फूल ऐसे हैं तेतरु कैसेहैं अपनी सम्पत्ति करिके सुर रूखकी

**मध्यबागसरसुभगसुहावा मणिसोपानबिचित्रबनावा ३४ बिमलसलिलसरसिजबहुरंगाजलखगकूजतगुंजतभृंगा ३५ दो०॥ बाग तड़ागबिलोकिप्रभुहरषेबंधुसमेत परमरम्यआरामयहजोरामहिसुखदेत ३६॥ * * * ***

सम्पत्ति को लज्जित करते हैं काहेते कल्पतरु अर्त्थ धर्म्म काम तीनिहीफलकोदाता है अरु जनकजीकी फुलवारी चारिहू फलनकीदाताहै काहेते जनकइव ज्ञानमय जनकपुरसर्व्वहि तृण तरु मृग बिहंग इत्यादिकहैं तातेपुरीभरि मोक्षदाता है तहां राजाकी फुलवारीके तरु तृण खग मृग इत्यादिक श्रीजानकीजी के हाथसे स्पर्शित है ताते अर्थ धर्म काम मुक्ति भुक्तिसबके दाता हैं फुलवारी में सर्व तरुकल्पवृक्षको लज्जित करतेहैं अरुदूसर पदबिषेकह्यो सुर रूखलजाय तहां फुलवारीके वृक्षनकी शोभा देखिकै रसमयी कल्पवृक्षकीशोभा रूखी रस रहित सब कबिनको देखिपरै है ताते रूखकहा ( ३२ ) तेहि फुलवारी विषे बिहंग शोभित हैं चात्रिक कोकिलमोर चकोर कीर इत्यादिक अनेकन बिहंग उत्तमोत्तम हैं ते शुक सारिका कोकिल भृंग बिहंग राग रागिनी स्वरसंयुक्त मनोहरबाणीते जनु गानकरतेहैं अरु मयूर नृत्यकरते हैं अरु चात्रिक चकोर श्यामाकोयल राय मुनियां पारावत येते बिहंग जनु तालसंयुक्त बाजावजावतेहैं तमूरा सितार बीणा सारंगी मञ्जीर मृदंग इत्यादिक क्रमहीतेजानब जनु बसन्त अपनी कैयों अति सुन्दर समाज साजिकै श्रीरघुनाथजी को रिझावतहैं ( ३३ ) बाटिकाकी मर्याद योजन पर्य्यन्तहै मणिनमय भीतिहै कलशसंयुक्त कंगूरा जनु अनेक रूपधरे नवग्रह उदित हैं तेहि बागकेमध्यमें सुन्दरसरहैं चहूंफेर मणिनमय सोपान विचित्रबनेहैं ( ३४ ) अतिनिर्म्मल जाको जल है बहुरंगके कमलफूले हैं तिनपर भृंगगुंजारते हैं अरु हंस मधुरमधुर बोलतेहैं ऐसेही सुभगअपरबिहंगबोलतेहैं जनु रघुनाथजीको बुलावतेहैं ( ३५ ) दोहार्त्थ॥ बगैचाके चहुंफेर रंगरंगके फूलनकी अवलीलगीहैं जनु मदनने सूत्रधरिकै निजहाथबनायो है ऐसो बागहै तेहिके मध्यमें तड़ाग तिनकी शोभादेखिकै श्रीरघुनाथजी बन्धुसमेत हर्षे हे पार्व्वती रम्य कही यहबाटिका परम रमणीकहै आराम कहीबाग काहेते सर्व्वजीवनको श्रीरामचन्द्रसुखदेते हैं अरु यहबाटिका श्रीरामचन्द्रको सुखदेति है ताते अनूपरम्यहै ( ३६ )॥ इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसने बालकांडे धनुषयज्ञदर्शन बाटिकागमन बर्णननाम द्विचत्त्वारिंशतिस्तरंगः॥४२॥

चौ०॥ चहुंदिशिचितैपूंछिमालीगन लगेलेनदलफूलमुदितमन १ त्यहिअवसरसीतातहँआई गिरिजापूजनजननिपठाई २

दो०॥ रामलषणवरबाटिका चालिसतीनितरङ्ग रामचरणलहिजानकी दरशअनन्दउमङ्ग ४३॥ बगैचाकीचारिहुंदिशि देखिबेको दोऊभाईचले हैं तबकी कैसीशोभा है जनु मदन अरुबसन्त अपनेहाथनसे बगैचाकीरचनाकरिकै अपनीसुघराई देखत फिरते अरु रक्षाकरते हैं पुनि दोऊभाइनकी छटातरुणमें फल फूल पत्रनमें झलझलाइ रही है जनु मदन अरु बसन्त श्रीरघुनाथजी अरु श्रीलक्ष्मणजी तिनकेदेखिबे अरु जीतिबेको अनेकनरूपधरिकै आयो है देखिकै तृप्तनहीं होते चाहत हैं कि सम्पूर्णशोभाकी राशि हमहींलूटिलेहिं ताते चंचलह्वैकै देखत हैं अरु कोई अंगमें जीतिबे को सन्धिनहींपावै ताते चंचलह्वैकै निहारतहैं ऐसीशोभा बगैचाकीह्वैरहीहै आश्चर्यवत् चहुंदिशि बगैचा देखिकै मालिन के गण जो हैं ते कैसे हैं जनु विश्वकर्मा अनेकरूप धरिकै अपनी सुघराईकेफलहेतुटिकाहै तिनमालिनते रघुनाथजी पूछतेभये कि हम गुरुनकी पूजाहेतु फूललेहिं जो तुमकहो नतु न लेहिं तब रघुनाथजीकी शोभादेखिकै बचनसुनिकै मालीगण अतिप्रेमते धाये अतिआतुर कोई फूलफललिहे अरु कोई खालिही आये प्रेममें संभारनहीं है आइकै रघुनाथजी को चहुंदिशिते देखते हैं अरुहेलाल फूल फल दल इत्यादिककी जो आज्ञाहोइ तौहम आनिदेहिं तब रघुनाथजीनेकहा कि गुरुनकेहेतु हमहींलेहिंगे उनकह्यो हेलाल आपुकीइच्छातबलगेलेनदल फूल मुदितमन तब मुदितमनते दल फूल इत्यादिक लेनेलगे मालीगण चंद चकोर इव देखते हैं ( १ ) यहीविधिसे बाटिकामें दोऊभाई बिहरते हैं तेही अवसर विषे सुनयनाजीने गौरीपूजनहेतु सखिनसमेत जानकीजीको फुलवारी विषे पठायो है ( २ ) संगविषे बहुसखीहैं सुभगकही अतिसुन्दरी आदि मध्य अंत किशोरी सदा एकरस सदासुहागषोड़शौ शृंगार बारहौ आभूषण जहां स्वाभाविक सदाबना है परमदिब्य एक रसताको सुभग अरु सयानीकही

जिनकी चातुर्यताके आगे सरस्वती मंद है पुनि अपनी-अपनी चातुर्यताते श्रीजानकी जी की सेवाकरती हैं प्रौढ़ामध्या मुग्धादशा ते एक आज्ञानुकूल सेवा एकअपनी रुचि से सेवा अरु एकस्वामिनीके अंतष्करणसे आनंद पूर्वकसेवा तिनमें अनेकभेद सेवाके हैं ऐसी सयानीसखी विषेजे हैं सदातेई सखीमनोहर बाणी ते गीतगावती हैं जेहिगानमें मुनीशनके मनमोहित होतहैं जनुसंपूर्णरागिनी अरु उपरागिनी मनोहररूप धरिकै श्रीजानकीजी की सेवामेंआई

**संगसखीसबसुभगसयानी गावहिंगीतमनोहरबानी ३ सरसमीपगिरिजागृहसोहा बरणिनजाइदेखिमनमोहा ४ मज्जनकरिसर सखिनसमेता गईमुदितमनगौरिनिकेता ५ पूजाकीन्हअधिकअनुरागा निजअनुरूपसुभगबरमांगा ६ एकसखीसियसंगबिहाई**

अरु गानकरती हैं ऐसेही महाआनंद गानहोत बाटिकाके विषे प्राप्तिभई ( ३ ) पुनि मध्यबागमें सागर ताके निकट पश्चिम तटपर गिरिजाको गृहहै वहकनक मणिनमय रचित अनूपम शोभितहै वर्णिबेयोग्यनहींहै देखिकैकवीश्शवरनके मनमोहि जाते हैं फिरिको कहै जनु बसंतने अपनी नाभि पर्य्यन्त पदिक भूषण पहिर्‍यो है ( ४ ) तेहिअवसरविषे सखिन समेतजानकीजी स्नानकरतीहैं परस्पर जलक्रीड़ा करतीहैं फूलनके गेंदखेलतीहैं कोई हंसधरिलेती हैं कोईमीनधरिलेतीहैं चुम्बनकरती हैंपुनि उड़ाइ छोड़िदेती हैं ऐसेही अनेक कल्लोलकरिकै निकसिकै षोड़शौशृंगार बारहौभूषणकरती हैं पुनि मणिनके आभूषणनके बीचबीच फलनके आभूषण अष्टसखी श्रीजानकीजीके करती भईं तैसेही शृंगार सब सखिनके जानब सर्बांग शृंगार करिकै षोड़शौ प्रकार पूजन की बिधि लैकै आनंद पूर्बक श्रीजानकीजी सखिन समेत गौरीके मन्दिर बिषे प्रवेश करती भईं ( ५ ) तहां अतिअनुरागते गौरीकी पूजाकीन्ह अनुरूप सुभगवर मांगती भई निज अनुरूपकही जो अपने को रुचै किंतु निज अवस्था अनुरूप वरमांगे ( ६ ) तहां जब श्री जानकी जी ने फुलवारी में प्रेवश कीन्हहै तबहीं एकसखी सयानिन बिषे समाज बिहायकै फुलवारी देखिबेको गईरहै किंतु पार्बती सखी को रूप धरिकै श्रीराम जानकी को सयोग शृंगार को दूतपन करती हैं ( ७ ) सोई सखी दोऊ बन्धुन को फूल लेतसंते बिलोकत भई शोभा देखिकै विवर्ण भावको प्राप्ति भई अंचल केश मोतिन के हार शरीरपर बिथरि रहे हैं प्रेमकी बिह्वलता ते अश्रुपात कज्जलयुत चुइ रहे हैं जनु चन्द्रमा अरु मदनसे युद्ध भई है बाणन की चोटते यहहाल ह्वैरही है मग बिषे पग डगमगात बिह्वल दशाते जानकीजी के समीप को आवतभई ( ८ ) दोहार्त्थ॥ ताकीदशासखी देखतीभई गातगात पुलकितहैं हार पीठिपरपरेहैं केशमुख अरु कपोलनपर परे हैं अंचलकन्धपर परे हैं अलंकार जहांकेतहां ह्वैरहे हैं उसास लेती है देहकी सुधि भूलिगईहै ऐसेही देखिकै बिहँसिकै मृदबैनते सखी पूछती हैं हे प्रवीणसखी धीरज

**गईरहीदेखनफुलवाई ७ तेदोउबन्धुबिलोक्यउजाई प्रेमबिबशसीतापहँआई ८ दो० ॥ तासुदशादेखीसखिन पुलकगातजलनयन कहुकारणनिजहर्षकर बूझहिंसबमृदुबयन ९ चौ० ॥ देखनबागकुंवरदुइआये वयकिशोरसबभांतिसुहाये १० श्यामगौर किमिकहौंबखानी गिराअनयननयनबिनुबानी ११ सुनिहरषींसबसखीसयानी सियहियअतिउतकंठाजानी १२ एककहहिं नृपसुततेआली सुनेजेमुनिसंगआयेकाली १३ जिननिजरूपमोहिनीडारी कीन्हेस्वबशनगरनरनारी १४ बरणतछबिजहँतहँ**

धरिकै अपने हर्ष को व्यवस्थाकहहु यह कहाभयो है कोई तेरी दृष्टि में पर्‍यो है किन्तु किसी की दृष्टि लगी है किन्तु तोरे ऊपर कोई ने बशीकरणमंत्र डार्‍यउ है किन्तु मदनके समाजके भँवरमें परिगइसि सो कहु ( ९ ) तब धीरजधरिकै गद्गद वाणी ते बोलती भई हे सखि दुइराजकुवँर बागदेखिबे को आयेहैं वे किशोरअवस्थामें प्राप्त अरु सबभांति तेसुन्दर हैं ( १० ) श्याम गौरहैं तिनकी शोभा बखानिकै किमि कहौं काहेते जेहि रसनाते बखानिकै कहौं सोतौ अन्धीहै अरु नेत्र जे देखते हैं ते बक्ष्मूकहैं तहां देखै और कहै और यथार्थ है सेवनै ताते देखतबनै कहिनाहीं जाइ जिनकोदेखिकै मेरी दशा ऐसीभईहै ऐसे वे कुमारहैं ( ११ ) यहसुनिकैसखीहर्षी कोईसखी वहिसखीके

अलंकार सुधारतीभई अरु प्रवीणसखी श्रीजानकीजीके हृदय विषे उत्कण्ठा जानती भई उत्कण्ठाकही जेहिकोसुनिकै देखिबे अरु मिलिबेकी आरति अतिआतुरहोइ ( १२ ) एक प्रौढ़ा नायका कहतीहैं हे सखिहु जो तुमसब मिलि काल्हि सुन्यो है कि मुनिकेसंग दुइराजकुमार आये हैं ( १३ ) कैसेहैं वे जिन अपनेरूपको मोहिनी यंत्र डारिकै सम्पूर्ण नगरके बाल युवा वृद्ध इत्यादिकनको वशीभूतकरिलियो है ( १४ ) जिनकीछबि जहांतहां सबलोग वर्णते हैं परस्पर पुरीभरे में यही चर्चा ह्वैरही है ताते हे सखिहु अवशिदेखिये देखनयोग्यहैं ( १५ ) तेहि सखीके वचन श्रीजानकीजी को बहुत सोहाने दर्शनके निमित्तलोचन अतिललचाइरहेहैं तहां यह प्रौढ़ासखीको वचनहै प्रौढ़ामें तीनिभेद हैं एकतो स्वामिनीके अन्तष्करणकी रुचि जो सेरभरेकी होइ तौ मनन के कार्य सुखउत्पन्न युक्तिसों करनेवाली है अरु एकस्वामिनी को प्रसिद्धशिक्षा करैहै अरु एकै स्वामिनीकी आज्ञानुकूलकै कार्यकरतीहैं यहीरीति ते स्वामिनी के कार्यमें मध्यामुग्धाविषे तीनिभेद जानिलेव तहां रघुनाथजी के देखिबेको श्रीजानकीजीके नेत्रसखिन संयुक्त अतिआरति हैं ( १६ )

**सबलोगू अवशिदेखियेदेखनयोगू १५ तासुवचनअतिसियहिसोहाने दरशलागिलोचनअकुलाने १६ चलीअग्रकरिप्रियसखिसोई प्रीतिपुरातनलखैनकोई १७ दो० ॥ सुमिरिसियानारदबचनउपजीप्रीतिपुनीत चकितबिलोकतिसकलदिशि जनुशिशुमृगी सभीत १८ चौ०॥ कंकणकिंकिणिनूपुरधुनिसुनि कहतलषणसनरामहृदयगुनि १९ मानहुमदनदुंदुभीदीन्ही मनसाबिश्वबिजय**

तब जो सखी रघुनाथजीको देखिआई है ताहीको अग्रकरिकै जानकीजीसखिन सहित चलती भई तहां पुरातनि प्रीति जानकीजू की रघुनाथ जी विषे काहूके लखिबे योग्यनहीं है पुरातनि प्रीतिकौनिहै नित्यसंयोगश्रृंगार तामें आई है ताते पुरातनि प्रीतिकहां पुनिजब दोऊकुमार जनकपुर गयेरहैं तब श्रीजानकीजी ने नहीं देख्यो अब देखिबे को समय प्राप्तभयो है ताते पुरातनि कहा जो सखी अग्रचली है सो जनु श्री जानकी जीके बियोग शृंगार की मूर्त्तिहै श्रीरघुनाथ जी बिषे संयोग शृंगार करिबेको चलीहै ( १७ ) दोहार्त्थ॥ श्रीजानकीजीसे बालहीअवस्थामें नारदजी कहिगयेरहैं कि फुलवारीमें रघुनाथजीका दर्शनहोइगो पुनि धनुषतोरेपरसंयोगहोइगो यहनारदका पूर्व्वकथित वचन स्मरण करिकै जब अतिपुनीतप्रीति उपजतीभई तब चकितह्वैकै रघुनाथजीको सकलदिशि विलोकतीहैं कैसी आतुरता देखबेकी है जैसे मृगीके शावकको अपने समाजते बिक्षेप परिगयो है अति चञ्चल नयन फेरत है सर्व्वदिशि सभीत ह्वैकै अपनी समाज ह्वेरतहै तैसे जानकीजी हैं इहां वियोग शृंगारको संयोगके योगमें सञ्चारी भावहोत है ( १८ ) श्रीजानकीजी सखिनसहित हंसगमनचलीजाती हैं अति मधुर गान ताल बन्धान समेत कङ्कणताल देतसन्ते किन्तु कङ्कणकी रव स्वाभाविक अरु किंकिणी नूपुरकीरव गमनबिषे एकतालहोति है तिनकी अरु गानको मधुरशब्द शृंगाररसको परम उद्दीपन करत है सो रसमय धुनिसुनिकै श्रीरामचन्द्रने लक्ष्मणजूसे बिचारिकै बिहँसिकै कह्यो ( १९ ) हे तात मानहुं मदन अपनी सेनासजिकै नगारा बजाइकै विश्व के विजयहेतु चल्यो यहिअर्त्थमें यह अभिप्रायहै कि हे तातकाम दुन्दुभी बजाइकै जनु मेरे जीतिबेकोचल्यो है ( २० ) इतना कहिकै जेहि ओर गानधुनिहोति है तेहिओर चितये तहां श्रीजानकीजी को मुखपूर्णचंद्र निर्मल सदा एकरस रूप शोभा प्रसन्नता छबि क्रमते उज्ज्वलता प्रकाश शीतलता अमृतमय ऐसोचन्द्रमयमुख देखिकै श्रीरामचन्द्रकेनेत्रचकोरभये हैं ( २१ ) श्रीरघुनाथजीके चारुकही अतिसुन्दर नेत्र जानकीजी

**कहँकीन्ही २० असकहिफिरिचितयेत्यहिओरा सियमुखशशिभयेनयनचकोरा २१ भयेबिलोचनचारुअचंचल मनहुंसकुचि निमितज्यउदृगंचल २२ देखिसीयशोभासुखपावा हृदय सराहतवचननआवा २३ जनुबिरंचिसबनिजनिपुणाई बिरचिबिश्वकहँ प्रकटदेखाई २४ सुंदरताकहँसुंदरकरई छबिगृहदीपशिषाजनुबरई २५ सबउपमाकबिरहेजुठारी केहिपटतरिंयबिदेहकुमारी २६**

के मुखकी शोभा देखिकै अचञ्चल ह्वैरहे हैं पलक नहींचलती चकोरवत्‌दशाह्वैरही है जनु राजानिमि अपनेबंशमें जानकीजीको जानिकै अरु रघुनाथजीको जानकीजीके मुखको अवलोकन देखिकै सकुचिकै पलकनपरजो बासरह्यो सो छोड़िगये ( २२ ) हे पार्व्वती श्रीजानकीजीकीशोभा रघुनाथजी देखिकै अति सुख पावतेभये हृदयमें शोभा सराहते हैं वचनमेंनहीं कहिआवत वहशोभा और को कविकहै ( २३ ) श्रीरामचन्द्र अपने हृदयमें सराहतेहैं कि जनु बिरंचिने अपनी सब निपुणाई कही सुघरईकी एकमूर्त्ति बनाइकै सारेबिश्वको देखाइदियोहै किहम ऐसेसुघरहैं ( २४ ) तहां श्रीजानकीजी की शोभासुन्दरताजो है ताहूको सुन्दरकरै है जनुछबिको शीशमहल है ताकेमध्यमें दीपकीशिषा बरैहै जगमगाइ रह्योहै तहां सबसखी छबिकी भवनहैं श्रीजानकीजी मध्यमें दीपकी शिषाहैं ( २५ ) जेतीउपमा वेदन अरु शास्त्रनमें कहीहैं सोकबिन जुठारिकही सब कह्योहै जब श्रीजानकीजी की उपमा नहींपाई तब जुठारिडारयउ काहेते जेतीउपमाहैं सो देहधारिनमें होती हैं अरु येबिदेहकुमारीहैं ताते उपमारहित हैं अबकेहिकी पटतरदीजिये इनकीसमान येईहैं ( २६ ) दोहार्थ॥ हेतातश्रीजानकीजीकी शोभा श्रीरघुनाथजीने अपने हृदयमें अच्छीतरह अनूप बर्णनकीन्ह पुनि अपनीदशाका बिचारकीन्ह किहमरघुबंशी सत्यबादी सत्यधर्मी सत्यबिचारी तहां यह काभयो तहां अपनी दशाकी बिपर्यय जानिकै शुचिकही पवित्रमनसे अनुजजे लक्ष्मणजी तिनसेप्रभु समयकी अनुहारि बोलतेभये यहिसमयमें श्रीजानकी जी की शोभादेखिकै जैसी दशा भई है सोअनुजसे कहते हैं अरु कोईदोहाका यहअर्थ कहते हैं कि आपनिदशाबिसारि सो रघुवंशकुलकी दशा रघुनाथजीको बिसरिगई जानकी को देखिकै ( २७ ) रघुनाथजी बोले हेतात यही जनकजूकी तनयाहै जेहिकेनिमित्त धनुषयज्ञहोती है राजाजनक यहप्रणकीन्हहै कि जो धनुषको तोरै

**दो० ॥ सियशोभाहियबरणिप्रभु आपनिदशाविचारि बोलेशुचिमनअनुजसन बचनसमयअनुहारि २७ चौ०॥ तातजनकतनयायहसोई धुनषयज्ञज्यहिकारणहोई २८ पूजनगौरिसखीलैआई करतप्रकाशफिरतिफुलवाई २९ जासुबिलोकिअलौकिकशोभा सहजपुनीतमोरमनक्षोभा ३० सोसबकारणजानबिधाता फरकहिंसुभगअंगसुनुभ्राता ३१ रघुवंशिनकरसहजसुभाऊ मनकुपंथपगधरहिंनकाऊ ३२ म्वहिंअतिशयप्रतीतिमनकेरी ज्यहिस्वपनेहुपरनारिनहेरी ३३ जिनकेलहैंनरिपुरणपीठी नहिं**

तासों बिवाहकरैं ( २८ ) वह जनक तनया सखिन संयुक्त पार्बतीके पूजनको आईहै पूजाकरिकै फुलवारी देखत फिरती है प्रकाशकही फुलवारी को शोभित करती है ( २९ ) जासुकही जिन जानकीजीकी शोभा अलौकिक देखिकै अलौकिक कही ब्रह्माकीसृष्टिके लोकनबिषे ऐसीशोभा नहीं है जो शोभादेखिकै मोरमन अतिपुनीतसो क्षोभकही लोभिगयो है तातेसंदेहहै ( ३० ) सो सबकारण बिधाताजानै परहेतात हमारे सुभगकही दक्षिणअंग फरकते हैं श्रीरघुनाथजीकेबचनमें यह अभिप्रायहै कि श्रीजानकीजी हमहींको मिलैंगी ( ३१ ) काहेते कि रघुबंशिनको यह सहज स्वभाव है कि कुपन्थबिषे भूलिहूकैमन पगनहींधरैं काऊकहे कबहूंनहीं धरैं ( ३२ ) अरु त्यहिकुलबिषे मैं अपनेमनकी प्रतीति राखतहौं कि पर नारिबिषे स्वप्नहूंमें तीनिहूंकालबिषे नहींजाइ अरु जनकतनयाकी शोभादेखिकै हमारोमन मोहिगयोहै यह धुनिहै कि धनुषहमहीं तोरैंगे ( ३३ ) अरु हेतात यह मर्य्याद है रिपुनकेरणबिषे जेक्षत्री पीठिनहींदेहिं अरुपराईस्त्रीबिषे दृष्टिनहीं देते ( ३४ ) अरु जिनके याचकनके याचनाका नाहींनहीं है सर्बदेते हैं ऐसे धर्मज्ञनर जगत् बिषेथोरे हैं यहिवचनमें यहधुनिहैकि रघुनाथजी अपने बिषे आरोपणकरिकै क्षत्रिनको महद्धर्मकहिकै लक्ष्मणजूको सर्बकालको उपदेशकीन्ह ( ३५ ) दोहार्थ॥ हे पार्बति ऐसीबातैंअनुजसे कहतेहैं अरु मन श्रीजानकीजीके रूपमें लोभिरह्यो है मुखसरोज जो है तेहिके मकरन्दकोमन अरु नेत्रमधुपह्वैकै पानकरते हैं यहिस्थानबिषेरघुनाथजीके मन बाणीके अभिप्राय कबिनको अगोचरहै ( ३६ ) इतिश्री रामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वंसनेबालकाण्डे श्रीरामलक्ष्मणबाटिकाबिहार श्रीजानकीसुन्दरतासबिशेषचक्षुसंभोग शृंगाररसबर्णनन्नाम द्विचत्वारिंशतिस्तरंगः ४२॥ :: :: :: :: :: :: :: :: :: :: ::

लावहिंपरतियमनडीठी ३४ मंगनलहैनजिनकेनाहीं तेनरवरथोरेजगमाहीं ३५ दो० ॥ करतबतकहीअनुजसन मनसियरूपलोभान मुखसरोजमकरंदछबि करतमधुपइवपान ३६॥ * * * * *

चौ० ॥ चितवतिचकितचहूंदिशिसीता कहँगयेनृपकिशोरमनचीता १ जहँबिलोकिमृगशावकनयनी जनुतहँबरषकमल

दो० ॥ चालिसतीनतरंगमें रामचरणयहआस भवनगमनसियहर्षयुतरामगमनगुरुपास ४३ हेपार्बती अब श्रीजानकीजीकी और सुनिये जानकी जी रघुनाथजी की ओर चकित ह्वैके देखती हैं कि नृपकिशोरकहांगये कहां हैं यह चित्तविषे आतुर चितवतिहै ( १ ) जेहिस्थान बिषे मृगशावक नयनी जो श्रीजानकीजी श्रीरघुनाथजीको चहुंफेर देखती हैं तहां नयननकी चंचलता अरु मनकी आतुरता सो कहते हैं तहां जानकीजी के नेत्र तरुण पत्रन फूलन फलन लतन मृगन बिहंग आदिक जो संपूर्ण आदर्शवत् निर्मलहैं तिनबिषे नेत्रनकी छटाछाइरहीहै झलझलाइरहीहै जनुतहं कही संपूर्णबाटिकाविषे श्रितकहीउत्पन्नभयेहैं अभूतअनेकन कमलतिनकीबर्षाहोती है पुनि जनुतहां तेहिस्थानविषेकमलाश्रित जो ब्रह्माहैं तिनके वर्षके बर्ष श्रीजानकीजी को पलपल श्रीरघुनाथजीके देखेबिना बीततेहैं तहां यहि अवसरबिषे श्रीजानकीजीको बियोग शृंगारहै कछुक संयोग की संधिहै सो कहते हैं प्रथम वियोगको संचारीपांच उत्कंठा चिंता चपलता भ्रम बितर्क पुनि अवस्थात्रयभई अभिलाषा चिंता सुमिरण पुनि सात्त्विकभाव एक स्वेदतन में पसेवचलै पुनि हावएक मोटाइत दर्शकी इच्छाहै अरु दशा विलक्षणहै ( २ ) श्रीजानकी जी की ऐसी दशा देखिकै तब सयानी सखीजे हैं ते कछुक लताओटहैं तहां श्यामगौर सुन्दर किशोररघुनाथजीको देखावती भई ( ३ ) तब श्रीजानकीजीके रघुनाथजीको रूपदेखिकै लोचन अत्यन्तहर्षकोपाय ललचाइरहेहैं जनुनिजनिधि पहिचाने निजनिधिकही नेत्रनकीनिधिसूर्य हैं तेदोऊकुमारजनुउदितबालसूर्य हैं बाटिकाकोप्रकाशकिये हैं पुनिनेत्रनकेनिधिरूपहैं तिनकोपहिचानिकै हर्षे ( ४ ) श्रीरघुनाथजीको देखतसंते श्रीजानकी जीकेनेत्रथकितरहेपलकननिमेषको तजिदीन्हहैतहांपुनिरघुनाथजी जानकीजीकोनिमेषनकोत्यागिकैदेखते हैं दोऊजनेनके स्वरूपविषे इतउत नेत्रनकेतार कैसे शोभित हैं जनु अनंग ने शृङ्गारके सूत्रकरिकै तानातान्यो है मनचक्षु संभोगपट बिनतहै संयोगशृंगार स्पर्श संभोग पहिराइवेके हेतु ( ५ ) रघुनाथजीको देखतसन्ते श्री

शितश्रयनी २ लताओटतबसखिनलखाये श्यामलगौरकिशोरसोहाये ३ देखिरूपलोचनललचाने हर्षेजनुनिजनिधिपहिंचाने ४ थकेनयनरघुपतिछबिदेखी पलकनहूपरिहरीनिमेखी ५ अधिकसनेहदेहभइभोरी शरदशशिहिजनुचितवचकोरी ६ लोचनमगरामहिउरआनी दीन्हेपलककपाटसयानी ७ जबसियसखिनप्रेमबशजानी कहिनसकहिंकछुमनसकुचानी ८ दो०॥ लताभवनतेप्रकटभे त्यहिअवसरदोउभाई निकसेजनुयुगबिमलबिधु जलदपटलबिलगाइ ९ चौ० शोभासीवसुभगदोउवीरा नीलपीतजलजात

जानकीजीको अतिसनेह भयोहै देह भोरीकही बिह्वल दशा ह्वैगई है जैसेशरदपूर्णमासी के चन्द्रको चकोरी देखै अंगअंगकी सुधि मुखचन्द्र मकरन्दपान करतसन्ते भूलिजाइ ( ६ ) तहां श्रीरघुनाथजी को स्वरूप जानकीजी अपने नेत्रनके द्वारते हृदयमें आनिकै पलकनके कपाटदैकै बैठिगईं इहां सयानी प्रेमके वशकीन्ह काहेतेकहूं ओट न परिजायँ किन्तु चले नजाहिं ( ७ ) जब सखिन जानकीजीको अतिप्रेमवश जान्यो तब कछुकहि नहींसकतीं काहेते कि जेहिफलके सुखहेतु गौरीकीपूजनकरैहैं त्यहिफलके सुखमें जानकीजीमग्न हैं ताते जो हमकछुकहैं तौ बिक्षेपरसाभास ह्वैजाइ ताते मनमेंसंकोचकरिकै कछुनहींकहैं यहउत्तमनायकन को बिचार है ( ८ ) दोहार्थ॥ तेहिअवसरविषे लतारूपभवनते दोऊभाई न्यारेह्वैके प्रत्यक्षप्रकटभये कैसे जैसे जलदकोपटल बिलगाइकै जनुदुइचन्द्रमाप्रकटेपुनि तहांलताघनस्थाने दोऊकुमारपूर्णमयङ्कहैं ( ९ ) चौ०॥शोभाकेअरुसुभग इहां शुभलक्षणाको कही तेहिकेसींवकहीमर्य्याद हैं ब्रह्मांडके बाह्यान्तरमें जेती शोभा शुभलक्षणा है किन्तु शोभाकेशुभलक्षणजेते हैं तिनसबन के

ये कारण हैं दोऊबीर इहां बीर कहा है सो कहा बीररस न जानिये इहांदोऊकुमारको शोभाकेबीर कहाहै जिनअपनी शोभाकरिकै त्रैलोक्योत्पन्न कामादिककी शोभाको पराजयकरिकै अपनेआश्रय कीन्हे हैं सबकीशोभाकी मर्याद यथायोग्य राखेहैं अरु अपनीशोभा करिकै सखिनसहित जानकीजीके मनको बिजयकीन्हहै ताते बीरकहा है कैसे हैं दोऊ बीर नीलजलजात तद्वत् श्रीरामचन्द्रहैं अरु पीतकमल तद्वत् लक्ष्मणजी हैं किन्तु दोऊभाई मिलिकै ठाढ़े हैं नीलपीतरंगयुक्त कमल तद्वत् हैं परस्पर आभास भासैहै ताते नीलपीतकहा ( १० ) काकपक्षकही शीशविषे दोऊओर बारनकेपट्टा अतिसुन्दर सूक्ष्म सचिक्कण काकपक्षइव शोभित हैं तेहिपट्टनविषे फूलनकीकली यथार्थगूंथी हैं जनु शृंगाररसने अपनोशृंगार आपुही ते कीन्ह्योहै ( ११ ) भालविषे केसरिकै युगरेखाको तिलक है जनु नीलमणिके शृंगपर सूर्यबैठे हैं तिनके कछु अर्द्ध तेहिबिषे तड़ितके युगरेख

**शरीरा १० काकपक्षशिरसोहतनीके गुच्छाबिचबिचकुसुमकलीके ११ भालतिलकश्रमबिन्दुसोहाये श्रवणसुभसगभूषभणछबि छाये १२ बिकटभृकुटिकचघूंघुरवारे नवसरोजलोचनरतनारे १३ चारुचिबुकनासिका कपोला हासबिलासलेतमनमोला १४ मुख**

स्थिर शोभितहै पुनि जनु क्रोधितमैनने युगबाण सूर्यनकेसम्मुख सन्धानकीनहै पुनि जनु मधुकर सूर्यते भोरहेतु द्वैकिरणिलायेहैं इहां सूर्यकी मदनकी भँवरकी निशिकी कमलकी लक्षणाकरिलेब अरु बागके फिरबेके श्रमकरिकै मुखपर पसेवबिन्दु शोभित है जनु नील अरुणयुक्त कमल के दल पर चन्द्रमाके दुइबिन्दु अमृतके झलकत शोभितहैं अरु श्रवणनबिषेहेमके गोलकुण्डल प्रकाशमय रत्ननकी कणिन अरु लघुमोतिन ते जटित हैं अतिछबिको देत हैं स्वाभाविक हलत हैं जनुमयन कुण्डलरूप ह्वैकैचन्द्रमाके दुइदिशि नृत्यकरते हैं अरु बंक अलकैं कपोलनपर शोभित हैं हलती हैं जनुसर्पन के छौना ललकिललकि चन्द्रमाके अमृतको पानकरतेहैं पुनि कुण्डल अलकमिलिजाते हैं जनुरबि राहुसुवन झगरिझगरि सुधापान करतेहैं अरु दोऊकीझलक वाह्यान्तर जगमगाइ के छबिछाइरही है ( १२ ) बिकट भृकुटी हैं जनु मदनको धनुषहै अरु शीशेकेकच घुंघुवारे हैं जनु मधुपनकी समाजमिलिकै नयनमुख कंजके मकरंदकेहेतु बैठिरहेहैं अरु अरुण नवीनसरोजकी जो प्रथमकलीबिकसीहै ऐसेरतनारेलोचन हैं जिन नेत्रनकी श्यामता श्वेतता अरुणता कछुककमलननेपाई है ( १३ ) अरु चारुचिबुक जैसे गोलनीलमणि तेहिमध्य एकपातबिंदु है जनु जानकी जूको चित्त है नासिका अतिसुन्दरि है जनुमदन के शुक शावकनकोनिन्दत है अरु कपोलश्याम आदर्शवत् हैं अरु हास्यको बिलास मनको मोललैलेत है अधर अरुण हैं बिम्बफल को निंदत हैं बिहंसतबदनमें दशननकीद्युति बज्रदाड़िमको निन्दतिहै ( १४ ) सम्पूर्ण मुखकी शोभा मोपै कही नहींजाइ जेहि मुखकीशोभा देखिकै बहुकाम लज्जितहोत हैं ( १५ ) उरबिषे मणिनको हारहै बैजेयन्ती पञ्चरङ्गकी मणिलगीहैं अरु मोतिनको मालहै अरु उरपर पदिक चौकोणहै अरु मणिनकीकणीलगीहैं जनु पूर्ण चन्द्रके निकट नक्षत्रनकी सभाबैठी हैं पुनि ग्रीवबिषे मुक्तनकेकण्ठा अरु कौस्तुभमणि अरु गुञ्जशोभित हैं अरु कम्बु कही शंखकी ऐसी ग्रीवबिषे रेखात्रयहैं अरु कामकोगज तेहिकोशावक तेहिकोशुंड

**छबिकहिनजातमोहिंपाहीं जेहिबिलोकिबहुकामलजाहीं १५ उरमणिमालकम्बुकलग्रीवा कामकलभकरभुजबलसीवा १६ सुमनसमेतबामकरदोना सांवरकुंवरसखीसुठिलोना १७ दो०॥ केहरिकटिपटपीतधरसुखमाशीलनिधान देखिभानुकुलभूषणहि बिसरासखिनअपान १८ चौ० धरिधीरजयकसखीसयानी सीतासनबोलीमृदुबानी १९ बहुरिगौरिकरध्यानकरेहूभूपकिशोरदेखि**

तद्वत् दोऊभुज छबि बलकी सींवहैं ( १६ ) हे सखि हरितमणिइव पत्रतेहिकोदोना तिस पुष्प पूर्णको बामकरमें लिहे दोऊ भाई जनु अरुणकमल पर हरितकमल तेहिकेकोषमें पुष्प अनूपशोभितहैं पुनि जनुमदन अरुबसन्त शृंगार करिकै दोनामें फूलभरिकै जानकीजीकी पूजाकरिबेको आयेहैं सखिनयुक्त जानकीजीकी शोभादेखिकै मोहिगये पूजाभूलिगई ( १७ ) दोहार्त्थ ॥ हेसखि जिनकी केहरिकी ऐसी कटिहै अरु पीतपट धरित हैं जनु लघुघन नीलमध्य बालसूर्य्य उदित हैं पुनि कुंवरकैसे हैं सुखमाकहीशोभा

अरु स्नेह शील तेहिके निधान कही स्थान हैं हे पार्व्वती भानुकुल भूषण श्रीरामलक्ष्मण दोऊकुंवर जो हैं तिनकी शोभादेखिकै सखिनको अपानकही अपनपौ भूलिगयो ( १८ ) चौ० ॥ तब तो एकसखी जो सयानिहै सो धीरज धरिकै देख्यो कि यह तौ सम्पूर्ण समाज परबशभई तबसीताजीसे मृदुबाणी ब्यंग्य युक्तिसमेत बोली ( १९ ) इहां गूढ़ोक्ति अलङ्कार व्यञ्जनाहै गौरीके ध्यान मिसु करिकै जानकीको ध्यानछुड़ावतीहै तहांगौरीको ध्यान बहुरिकही पुनि कीन्ह्यो जिनके देखिबेकी आईहौ ते दोऊकुमार प्रत्यक्षदेखौ ( २० ) यह व्यंग्य बचन ध्यानकी विक्षेपकारी प्रत्यक्षकी करनहारी सुनिकै सकुचिकै जानकीजू नेत्रखोलतभई सम्मुख दोऊ रघुबीर कही दोऊकुमार देखतीभई इहां बीरनाम लाड़प्रीतिको रघुकुलबिषे दोऊ अतिदुलारे अतिप्रियसबके ताते रघुबीरकहा अरु जहां रघु सिंह निहारे यह पाठहै तहां सम्मुख तौ द्वौ हैं पर रघुबंश कुलमें सिंहश्रीरामचन्द्रहैं तिनको देखतीभई सिंहकही बीररसदेखाये जाते जानकीजीको धनुष तोरबेकी प्रतीति होइ तहां जानकीजी अतिप्रीतिसे देखतीभई ( २१ ) तहां नखशिखलौं श्रीरामचन्द्रकीशोभा बिशेषदेखतीभई तहां पिताकर प्रण अतिकठिन अरु इनकी अति माधुर्य्यता समुझिकै देखिकै मनमें क्षोभ कही सन्देह होतहै ( २२ ) तब सखिन श्रीजानकीजीको श्री रामचन्द्रकी शोभामें परवशजान्यो तब एक मध्यासखी जानकीजी के सङ्कोच भयतेबोली कि बिलम्ब बहुतभई ( २३ ) पुनि एकमध्यासखी बिहँ

किनलेहू २० सकुचिसीयतबनयनउघारे सम्मुखदोउरघुबीरनिहारे २१ नखशिखदेखिरामकैशोभा सुमिरिपिताप्रणमनअति क्षोभा २२ परबशसखिनलखीजबसीता भयउगहरयककहहिसभीता २३ पुनिआउबयहिबेरियाकाली असकहिमनबिहँसीथक आली २४ गूढगिरासुनिसियसकुचानी भयउबिलम्बमातुभयमानी २५ धरिबड़धीररामउरआनी फेरिअपनपौपितुबशजानी २६

सिकै बोलती भई कि यही बेर फुलवारीमें काल्हि फिरि आवहिंगी इहांवाक्यविदग्धा करिके आलम्बन श्रृंगारबिषे दोनोंसखीने अपने वाक्यबिषे लक्षणा ब्यञ्जना बहुत कियो है पुनि अपने वाक्य बिषे जानकी रामकेजनु नित्य मिलापको स्वयंदूतपन करती हैं ( २४ ) ऐसी गूढ़गिरा सखीकी श्रीजानकीजी सुनतीभई जो बाणीमें हावभाव रसराज उद्दीपन उत्कंठा अभीसार सम्भोग पूर्ण हैं तेहि सम्भोगमें चारिभेद प्रथम वाक्यसम्भोग वाक्य करिकै मनसम्भोग मनपर चक्षुसम्भोग चक्षुपर स्पर्शसम्भोग पुनिश्रृंगाररसको स्थायी अतिप्रीति अरु सञ्चारी ब्यंग्यतामें अनुभाव बिभाव संचारी बहुत लक्षणा हैं पुनि श्रृंगाररसके मर्म्ममें अनेक सहायक अरुपरिणाम रसकी सिद्धिऐसी अगूढ़ बाणी सखीकी सुनिकै जानकीजी सकुचाइगईं अरु माताको भयमान्यो कि आजुबिलंब ह्वैगयो पुनि यह जानिकै कि जो सखीने गूढ़बाणी कहीहै सो ऐसेही कदाचित् माता न जानै ताते भयमाना ( २५ ) पुनि बड़ो धीर धरिकै श्रीरामचन्द्रके अति मधुरमूर्त्ति हृदयमें आनिकै अरु आपनि प्राप्ति श्रीरामचन्द्र को अरु श्रीरामचन्द्रकी प्राप्ति अपनाको यह पिताके बशजाना ( २६ ) दोहार्थ ॥ तबनयनखोलिकै उठिकै सखिन संयुक्त चलतीभई बारबार फिरि फिरि रघुनाथजी को मृगविहंग तरुनके मिसुकरिकै देखती हैं रघुबीर की छबि देखिदेखिअतिप्रीति उपजति है इहाँ क्रिया बिदग्धादशाहै ( २७ ) तहां महादेवको चाप अतिकठिन अरु श्रीरामरूप अतिहीकोमल जानिकै अपनेमनमेंजानकीजी बिसूरतिकही चिंतवनकरती हैं कि धौं परमेश्वर का करैंगो किन्तु शम्भुको चाप बिसूरतिहै कि बेढबहै अरु ये मूर्त्ति कि कही विशेषिकै मूर्त्तिकही सुन्दर कोमल है पुनि धीरजधरिकै किशोर श्यामलमूर्त्ति हृदयमें राखिकै पुनि पार्वतीके मन्दिरको चलतीभई ( २८ ) पुनि रामचन्द्रने जब जानकीजी को जातजान्यो है कैसी हैं जानकीजी सुखसनेह शोभा सो षोड़शश्रृंगार बारहोआभूषण अरु पातिब्रतइत्यादिक गुणनकी खानि हैं ( २९ ) तब श्रीरामचन्द्र परमप्रेमकी मृदुमसिकीन्ह अरु

दो० ॥ देखनमिसुमृगबिहँगतरु फिरतबहोरिबहोरि निरखिनिरखिरघुबीरछबि बाढ़ीप्रीतिनथोरि २७ चौ०॥ जानिकठिन शिवचापबिसूरति चलीराखिउरश्यामलमूरति २८ प्रभुजबजातजानकीजानी सुखसनेहशोभाकैखानी २९ परमप्रेममयमृदुमसि कीन्हा चारुचित्तभीतरलिखिलीन्हा

**३० गईभवानीभवनबहोरी बन्दिचरणबोलीकरजोरी ३१ जयजयजयगिरिराजकिशोरी जय महेशमुखचन्द्रचकोरी ३२ जयगजबदनषड़ाननमाता जगतजननिदामिनिद्युतिगाता ३३ नहिंतवआदिमध्यअवसाना अमितप्रभा**

अपनोचित्त अतिसुन्दर ताको कागजकीन्ह अरु शृंगाररसकीकलमकीन्ह जानकीजीकीमूर्त्ति लिखिलीन परमप्रेमकही तैलवत्धार अखण्ड ( ३० ) बहुरिकै श्रीजानकीजी सखिनसंयुक्त पार्बतीके मन्दिरको जातीभईं भवानीके चरणबन्दि अरु दोऊकरजोरिकै बोलतीभईं ( ३१ ) जयकही अति श्रेष्ठबाणी पुनि जयकही सदा जयमान पुनि जयकही सदा सबप्रकारसामर्थ पुनि श्रीजानकीजी श्रीपार्बतीकी स्तुतिकरती हैं हे गिरिराज किशोरी तुम्हारीजय तुमसदा जयमानहौ महेशको चन्द्रमुख तेहिकी तुमचकोरीहौ यामें यह अभिप्राय है महेशके मुखते अमृतमय जो रामतत्त्व निकसत है सो तुम चकोरीह्वैकै पानकरतीहौ ( ३२ ) पुनि तुम ऐसी जयमानहौ मंगलमय गणेश तिनकी तुममाताहौ अरु सुरासुर सबकेबिजय करनेवाले स्वामिकार्त्तिक ऐसेऐसे जयमान बीररसयुक्त तिनकीतुम माताहौ पुनि सम्पूर्ण जगत् की कारणहौ अरु तुम्हारो अङ्गअङ्ग गात दामिनी इवहैं किन्तु दामिनीकी द्युतिकोदेखावतेहैं ( ३३ ) हेभवानी तुम्हारो आदि मध्य अवसानकही परिणाम तीनिहूंकालमें अमितप्रभावहै जाप्रभावको वेदनहींजानिसकते ( ३४ ) पुनि आपुकैसीहौ भव जो संसार तेहिकोभवकही उत्पन्नकरतीहौ पुनि बिभवकही पालनकरतीहौ पुनि पराभवकही संहारकरतीहौ अरु सम्पूर्ण बिश्वदेव दानब मनुष्य इत्यादिकनको अपनेगुणनते ब्यामोहितकरतीहौ अरु स्वबशकही स्वतन्त्र सम्पूर्ण बिश्वमें बिहारकरतीहौ ( ३५ ) दोहार्थ॥ हे मातु जहांतक पतिब्रता सुष्टुस्त्रीहैं तिनबिषे प्रथम आपुकीरेखाहै आपुकीमहिमा अमित है हजारन शेष शारदा श्रुतिनहींकहिसकते ( ३६ ) चौ० ॥ हेअम्ब तुमको सेवतसंते चारिहूफलसुलभहैं तुमको निष्कामसेवै सो मोक्षहोइ काहेते तुममहादेवकी अतिप्रियहौ अरु अनन्य सत्संगिनिहौ ताते मोक्षदाताहौ अरु जेसकाम सेवतेहैं ते अर्त्थ धर्म्म काम पावते हैं ऐसी बरदायिनि तुमहौ अरु त्रिपुरारिको अति

**ववेदनहिंजाना ३४ भवभवबिभवपराभवकारिणि बिश्वबिमोहनिस्वबशबिहारिणि ३५ दो०॥ पतिदेवतासुतीयमहँमातुप्रथमतवरेष महिमाअमितनकहिसकहिंसहसशारदाशेष ३६ चौ० ॥ सेवततोहिंसुलभफलचारी बरदायिनित्रिपुरारिपियारी ३७ देवि पूजिपदकमलतुम्हारे सुरनरमुनिसबहोहिंसुखारे ३८ मोरमनोरथजानहुनीके बसहुसदाउरपुरसबहीके ३९ कीन्ह्योप्रकटनकारण तेही असकहिचरणगहेबैदेही ४० बिनयप्रेमबशभईभवानी खसीमालमूरतिमुसुकानी ४१ सादरसियप्रसादउरधर्‌यऊ बोलीगौरि**

प्रियहौ ( ३७ ) हे देवि तुम्हारेचरणकमल सेइकै सुर नर मुनि सबसुखीहोते हैं ( ३८ ) हेअम्ब मोरमनोरथ नीकीप्रकारते जानतीहौ काहेते सबकर जो है उरपुर तामें तुमबसतीहौ आद्याशक्तिरूपहौ ( ३९ ) हे गरुड़ जानकीजीने आपन मनोरथ प्रकट नहींकहा यहिकारणते कि तुम सबके मनकी जानतीहौ अरु मेरेमनोरथको बिशेष जानतीहौ इतना कहिकै भवानीकेचरण गहतभईं ( ४० ) तहां प्रेमसंयुक्त जानकीजूकी बिनयसुनिकै पार्वती जू बशह्वै गईं तहां यहचौपाई में लक्षणा ब्यञ्जनादूनों हैं प्रथम लक्षणाकी जब जानकीजी पार्व्वतीके चरणनमें परनेलगीं तब फूलनकी माला पार्व्वती को पहिरावनेलगी हैं तहां माला अरु दण्डवत् एकही बारभये तहां माला ग्रीवामें नहीं पर्‌यो काहेते कि जानकीजीके चित्तकै वृत्ति प्रेम युक्त श्रीरघुनाथजी के स्वरूप में रहै पार्व्वती कै पूजा कैसे बनै तबभवानी यह ब्यंग्यजानिकै कि सुरति तो रघुनन्दनबिषे है हमारीपूजा कैसे बनै यह जानिकै मूर्त्ति मुसुकातभई अपरअर्त्थ जो करते हैं सो सामान्यहै ( ४१ ) जब माला खसिपरेउ तब जानकीजी उठाइलीन्ह उरबिषे बड़े आदरसे धारणकरिलीन कि भवानीमोको प्रसाददीन्हहै तहां जानकीजीजानती हैं कि मैंने पार्व्वतीको माला पहिरायो है सो माला मोको प्रसाद दीन्हहै अरु माला पहिलेही खसिपर्‌यो ताते मुसुकाइकै हर्षिकै बोलतीभईं ( ४२ ) हे भरद्वाज पार्व्वतीजी बिचार करती हैं कि जानकीजीकै प्रेम भरी सुरति रघुनाथजीबिषे अतिशय लगीहै जाते हमको मालापहिरावतनहीं बन्यो है ताते

बिहँसिकै सोई आशीर्व्वाददेती हैं हे जानकीजी हमारोआशीर्व्वाद सत्यमानिकै सुनो तुम्हारो मनोरथ सिद्धिहोइगो ( ४३ ) नारदजूने जो तुमते पूर्व्वहीकहाहै सो उनके वचन वेदकरिकै शुचिकही अति पवित्रहैं अरु सदासत्य हैं मुनीशकी वाक्य अरु हमारो आशीर्वादसत्यजानिकै जो बर तुम्हारे मनमें रच्यो है सो विशेषि मिलहिंगे ( ४४ )

हर्षउरभर्यऊ ४२ सुनुसियसत्यअशीषहमारी पूजीमनकामनातुम्हारी ४३ नारदबचनसदाशुचिसांचा सोइबरमिलिहिजाहिमन राचा ४४ छंदहरिगीतिका ॥ मनजाहिराच्योमिलिहिसोबरसहजसुन्दरसांवरो करुणानिधानसुजानशीलसनेहजानतरावरो ४५ यहिभांतिगौरिअशीष सुनिसिय सहितहियहर्षी अली तुलसीभवानिहिंपूजिपुनिपुनिमुदितमन मन्दिरचली ४६ सो.॥ जानिगौरि अनुकूल सियहियहर्षनजातकहि मंजुलमंगलमूल बामअंगफरकनलगे ४७॥ * * * * * * * * * *

छन्दार्थ ॥ जो तुम्हारे मनमें रच्यो है सहजसुन्दर श्यामलबर सो तुमकोजरूर प्राप्तिहोहिंगे काहेते वे करुणानिधान हैं अरु सर्वकीगति जानते हैं अपने जननको शील सनेह जानते हैं मनोरथ पूर्णकरते हैं ( ४५ ) यहिप्रकारते पार्वतीका आशीर्वाद सुनिकै सखिनसहित जानकीजी अतिहर्ष को प्राप्तभई गोसाईंजी कहतेहैं कि अतिहर्षसंयुक्त पार्वतीजीकीपूजा पुनिपुनि करतभई पुनि पार्वतीते बिदाह्वैकै मुदितमनते निजमन्दिरकोचलत भई ( ४६ ) सोरठार्थ॥ गौरिको अनुकूल जानिकै श्रीजानकीजीके हृदयकी हर्ष कविन को अगोचरहै कहा नहींजाइ मंजुल मंगलकेमूल श्रीजानकीजीके बामांग बारबार फरकतेहैं ( ४७ )॥ इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेबालकांडेश्रीरामजानकी वाटिकाविहारगौरिसत्य बरवर्णनंनामचतुश्चत्वारिंशतिस्तरङ्गः ४४॥ :: :: :: :: :: :: ::

दो०॥ पैंतालिसशुभलहरिमें रामचरणआनन्द बिरहरामसियप्राप्तहितहियहुलसतसुखकन्द ४५ हेपार्वती श्रीजानकीजीकै लोनाईकही सुन्दरता हृदयमेंसराहत श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मणसहित गुरुनकेसमीप गवनकरतेभये ( १ ) जोकछु फुलवारीविषे भयोहै सोश्रीरामचन्द्र गुरुनते सबकहते भये जोबाणीमें छल लेशहूनहींछुइगयो ( २ ) तब गुरुप्रसन्नह्वैकै सुमनपाइकै मनमें श्रीरामचन्द्रहीको पूजन करतभये काहेते श्रीरामचन्द्रमुनि विषे आपको शिष्यभावमानते हैं ताते परोक्षपूजाकीन्ह पुनि दोऊभाइनको आशीर्बाद देतेभये ( ३ ) मुनिनेकहा कि तुम्हारे मनोरथ सिद्धहोहिंगे सो सुनिकै राम लक्ष्मण बहुत सुखीभये ( ४ ) दोऊभाइनसंयुक्त मुनिविज्ञानी भोजनकरिकै व कछु बिश्रामकरिकै पुरानिकही जो वेदविषे सि

चौ० ॥ हृदय सराहतसीयलुनाई गुरुसमीपगवनेदोउभाई १ रामकहासबकौशिकपाहीं सरलसुभावछुवाछलनाहीं २ सुमनपाइमुनि पूजाकीन्ही पुनिअशीषदोउभाइनदीन्ही ३ सुफलमनोरथहोहिंतुम्हारे रामलषणसुनिभयेसुखारे ४ करिभोजनमुनिवरबिज्ञानी लगेकहनकछुकथापुरानी ५ विगतदिवसगुरुआयसुपाई सन्ध्याकरनचलेदोउभाई ६ प्राचीदिशिशशिउयउसोहावा सियमुखसरिसदेखिसुखपावा ७ बहुरिबिचारकीन्हमनमाहीं सीयबदनसमहिमकरनाहीं ८ दो० ॥ जन्मसिंधुपुनिबन्धुबिष दिनमलीनसकलंक सियमुखसमतापावकिमि चन्द्रबापुरोरंक ९ चौ०॥ घटैबढ़ैबिरहिनिदुखदाई ग्रसैराहुनिजसंधिहिपाई १० कोकशोकप्रदपंकजद्रोही

सिद्धांत रामतत्त्व बर्णन है सो युक्तिसे मुनि बर्णनकरते हैं ( ५ ) दिनअस्तहोतभयो गुरुनकी आज्ञापाइकै दोऊभाई सन्ध्याकरनेकोचले ( ६ ) तहां जानकीजी की शोभाबिषे रघुनाथजीको चित्त अतिशय आसक्तहोइरह्योहै ताते सन्ध्याकरन भूलिगये कुवारशुदी पूर्णमासी को पूर्वदिशि चन्द्रमा उदयभयो अतिसुन्दर ज्ञानकीजी के मुखसदृश

देखिकै श्रीरघुनाथजीने अतिसुखपायो ( ७ ) बहुरि अपने मनमें बिचारकीन्ह कि जानकीजीके मुखकेसम चन्द्रमा नहीं है ( ८ ) आगे न्यूनाधिक्यरूपकालंकार कहते हैं दोहार्थ॥ काहेते सिन्धु जो समुद्र तेहिते चन्द्रमाको जन्महै अरु बंधु विष हैं अरु दिनमें मलीन हैं अरु गुरुनकी स्त्री ते गमनकीन्ह है तातेसकलंक है श्रीजानकीजीके मुखकी समता किमिपावै शोभाकरिकै रंक है ( ९ ) पुनि घटत बढ़त है अरु विरहिनिनको दुखदाता है अरु राहुअपनी संधिपाइकै ग्रसत है ( १० ) अरु कोक को शोकप्रदहै अरु पंकज कोद्रोही है हे चन्द्रमा तेरे बिषे अवगुण बहुतहैं ( ११ ) अरु जानकीजीको मुख निर्दोष निर्विकार निर्मल एकरस नित्यसुधा शोभा ते पूर्ण तेहि बैदेहीके मुख की तेरी उपमा हमनेदिया सो या अतिअनुचितकि याकिजोप्रथम मुखकेसम कहा है ( १२ ) हे भरद्वाज यहां यह अभिप्राय है कि चन्द्रमाके ब्याजकही मिसुकरिकै जानकीके मुखकी अतिशयछबि अपनेमनमेंकहा सो छबि हृदयमेंधरिकै निशाबड़िजानिकै बड़िकही चारिदंड तक संध्याको प्रमाण है तहां छ:दण्डरात्रि बीतिगई ताते यहकहा निशाबड़िजानी अरु जो जानकीके मुखकीछबिके व्यवहारविषेमनरह्यो संध्या को नेमकोकरै तब निशाबड़ीजानि गुरुनके समीपको चले ( १३ ) जाइकै मुनिके पदपंकजको प्रणामकीन्ह आज्ञापाइकै जाइविश्रामकीन्ह आजु प्रणाममात्र गुरुनकी सेवकाईभई जानकीजीकी छबिमेंमग्नहैं ताते तहां श्रीरामचन्द्र के मन की सेवाकीगति लक्ष्मणजी जानते हैं काहेते प्रौढ़

**अवगुणबहुतचन्द्रमातोही ११ बैदेहीमुखपटतरदीन्हे होइदोषबड़अनुचितकीन्हे १२ सियमुखछबिबिधुव्याजबखानी गुरुपहँ चलेनिशाबड़िजानी १३ करिमुनिचरणसरोजप्रणामा आयसुपाइकीन्हबिश्रामा १४ बिगतनिशारघुनायकजागे बन्धुबिलोकिकहनअसलागे १५ उयउअरुणअवलोकहुताता पंकजकोकलोकसुखदाता १६ बोलेलषणजोरियुगपानी प्रभुप्रभावसूचक मृदुबानी १७ दो०॥ अरुणोदयसकुचेकुमुद उडुगणज्योतिमलीन तिमितुम्हारआगमनसुनि भयेनृपतिबलहीन १८ चौ०॥ नृपसब**

सेवकहैं चौकी में आरूढ़हैं ( १४ ) याहीरसमें रात्रीब्यतीतभई भोरभयो रघुनाथजी जागे बंधुकोठाढ़े बिलोकिकै असकहनलगे ( १५ ) कि हेतात पंकजकोक सर्बलोक के सुखदाता ऐसे अरुणकहीसूर्य सो देखौ तौ उदयभये ( १६ ) तब दोनोंपाणिजोरिकै लक्ष्मणजी बोलतेभये प्रभुकरप्रभाव यहबाणी में सूचक है सूचककही प्रभुके प्रभावको जनावतेहैं श्रीरघुनाथजीने लक्ष्मणजी ते बूझा कि हे तात सूर्यउदयभये तहां यहिबाणी में लक्ष्मणजूको यह अभिप्राय समुझिपरेउ कि रघुनाथजीकोमन श्रीजानकीजीकी शोभा के बश है ताते यह बचनकहा कि जानकीजीकैप्राप्ति धनुष के आधीन है जामें सूर्यके उदयहोतसन्ते धनुषकेसमीप कोई राजा नहींजाइ हमहीं गुरुआज्ञाते प्रथमजाहिं ( १७ ) दोहार्थ॥ ताते श्रीरामप्रताप अरु सूर्य अरु दोऊकर विशेषण एकही संगतुल्य योग्यतालंकारकरिकैकहते हैं लक्ष्मणजी बोले हे नाथ अरुणोदयभये कुमुदसकुचे उडुगण की ज्योति किमि मलीनभई जिमि तुम्हारे आगमनको प्रतापसुनिकै समस्तराजा बलकरिकै हीनभये ( १८ ) हेनाथ जो आपुबिचारतेहौ कि कदापि कोई राजा धनुषको तोरि न डारै सो राजन के तोरिबेयोग्य नहींहै कैसे जैसे अनेक नक्षत्रनके उदयहोतसन्ते रात्री नहींमिटै तैसे राजनकर बल नखतहै अरु तम धनुषजानिये ( १९ ) हे नाथ रविउदयभये निशा अवसानकही व्यतीतभई तब कमलकोक मधुकरके गण और खग हर्षितभये ( २० ) हे प्रभु ऐसेतुम्हारे सबभक्तजन धनुषकेटूटेते सुखीहोहिंगे ( २१ ) हे श्रीरामचन्द्र भानुउदयभये बिनाश्रमही तम नाशभयो नक्षत्रदुरिगये जगत्विषे तेजप्रकाश पूरिरह्यो है कैसे जबआपु रंगभूमिको जाहुगे तब आपुको प्रतापरूप सूर्य के उदयहोतही बिनाश्रमही धनुष तमनाशहोहिगो नखतनृप मलीनहोहिंगे सन्तदेव कोक नदकोक सुखीहोहिंगे ( २२ ) हे पार्बती रविकोउदय ब्याजमात्रकरिकै निज जो रघुराय तिनको अरु

नखतकरहिंउजियारी टारिनसकहिंचापतमभारी १९ कमलकोकमधुकरखगनाना हर्षेसकलनिशाअवसाना २० ऐसेहिप्रभुसब भक्ततुम्हारे होइहैंटूटेधनुषसुखारे २१ उयेभानुबिनुश्रमतमनाशा दुरेनखतजगतेजप्रकाशा २२ रबिनिजउदयब्याजरघुराया प्रभुप्रतापसबनृपनदेखाया २३ तवभुजबलमहिमाउदघाटी प्रकटी धनुबिघटिनपरिपाटी २४ बन्धुबचनसुनिप्रभुमुसुकाने होइशुचिस-

नृपनको प्रभाव जैसे पाछे, कहिआयेहैं सो लक्ष्मणजू कहतेभये आगे जोयहअर्थ करते हैं कि निजकही अपने उदयकरिकै प्रभुकोप्रभाव सबनृपन को देखावते हैं सो यहअर्थ नहीं बनै रविउदयकरिकै प्रभुको प्रभाव सबनृपनके देखाइबेको कछु विशेषणनहीं निकसै ताते प्रथम जो अर्थकहाहै सोई सिद्ध है ( २३ ) लक्ष्मणजू पुनि बोले हे श्रीरामचन्द्र जो तुम यहकहौ कि तुम हमको अपनोस्वामी जानिकै बड़ाईकरतेहौ जो इहांधनुष को कोई औरैराजातोरै सो लक्ष्मणजू कहतेहैं कि ऐसो नहींहोइगो काहेते कि तवभुजबलमहिमाउदघाटी॥ तुम्हारे भुजनके बलकी महिमा जो है तेहिकी उदघाटकही उद्योतकरिबेकोयहधनुषप्रकट्योहै कब जबतुम्हारेभुजनकरिकै धनुषको बिघटनिकहीनाशहोइ अरु जोकहौकि हमारेभुजन ते कदापि धनुष नहींटूटै तहा आपुके भुजनकरिकै धनुषटूटैगो परिपाटीकही परम्परा है किंतु तुम्हारे भुजा उदघाटीकही उदयाचलकी घाटी हैं अरु तुम्हारे भुजन के बलको प्रताप सूर्य है अरु तमरूप धनुष प्रकट्योहैसो विघटनि कही नाशहोइगो अरु परिपाटीकही सूर्यके परम्परा दृष्टांत करिकै ( २४ ) हे पार्बती बन्धुकेबचन यथार्थ उक्तिसहित सुनिकै प्रभुबिहँसिकै आपु नित्यपुनीत प्रातःक्रियाकरिकै स्नानकरतेभये ( २५ ) पुनि श्रीराम लक्ष्मण नित्यनेम करिकै गुरुनके पद पंकजविषे जाइकै शीशनावतेभये ( २६ ) तब तेहि अवसरविषे जनकजू सतानंदकोबुलाइकै श्री विश्वामित्रके पास पठावते भये ( २७ ) तिन सतानंदजी जनककीबिनयमुनिको सुनावतेभये सो सुनिकै मुनीश हर्षिकै दोऊभाइन को बोलावते भये ( २८ ) दोहार्थ॥ श्रीरघुनाथजी आइकै सतानन्दकेपदबंदिकै गुरुनके समीप बैठेजाइ तब मुनि ने कहा हेतात रंगभूमिकोचलिये जनकजी ने बोलायो है ( २९ ) हे तात श्रीजानकीजी को स्वयम्बर देखीजाइ ईशजो महादेव सो धौं केहिको बड़ाईदेहिं किन्तु ईश तौ परमेश्वर हैं ( ३० ) तब लक्ष्मणजी बोले हे नाथ यशको भाजन सोई है जापर तुम्हारीकृपाहेइ यामें यहधुनि है कि तुम्हारीकृपा रघुनाथजीपर है ताते हमहीं यश

हजपुनीतनहाने २५ नित्यक्रियाकरिगुरुपहँआये चरणसरोजसुभगशिरनाये २६ सतानन्दतबजनकबोलाये कौशिकमुनिपहँ तुरतपठाये २७ जनकबिनयतिनआयसुनाई हर्षेबोलिलियेदोउभाई २८ दो० ॥ सतानंदपदबन्दिप्रभु बैठेगुरुपहँजाय॥ चलहुतात मुनिकह्यहुतब पठवाजनकबोलाय २९ चौ०॥ सीयस्वयंबरदेखियजाई ईशकाहिधौंदेहिंबड़ाई ३० लषणकहायशभाजनसोई नाथकृपातवजापरहोई ३१ हर्षेमुनिसबसुनिबरबानी दीन्हअशीषसबहिसुखमानी ३२॥ * * * * *

चौ० ॥ पुनिमुनिवृंदसमेतकृपाला देखनचलेधनुषमखशाला १ रंगभूमिआयेदोउभाई अससुधिसबपुरबासिनपाई २ चलेसकलगृहकाजबिसारी बालकयुवाजरठनरनारी ३ देखाजनकभीरभइभारी शुचिसेवकसबलियेहँकारी ४ तुरतसकललोगनपहँजाहू

कभाजनहोहिंगे ( ३१ ) विश्वामित्रआदिक समस्त मुनिवरोंकीवखानी बाणीसुनिकै अतिहर्षकोप्राप्तभये और अतिशुभमानिकै सबहिन आशीर्बाददीन्ह कि लक्ष्मणजीको बचनसत्यहै ( ३२ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वन्सनेबालकाण्डे श्रीरघुनाथस्यजानक्यासहगोप्यविरहस्ताया सतानन्दकौशिकबार्त्ता बर्णनन्नामपंचचत्वारिंशतितस्तरंगः ४५॥ :: :: :: :: :: :: ::

दो०॥ चालिसषष्ठतरंगमें रंगभूमिप्रभुजाइ रामचरणरससबनकोयथायोग्यदरशाइ ४६ हे भरद्वाज पुनि मुनिनके वृन्दसमेत कृपालु श्रीरामचन्द्र धनुषयज्ञ देखनेको चले (१) रंगभूमि को दोउभाईआये यहसुधिसम्पूर्ण पुरबासी पावतेभये (२) तब बालकजे हैं युवाजेहैं बृद्धजेहैं ते सम्पूर्ण गृह अरु तनकोकार्य बिसारिकै शीघ्रचले रंगभूमि के समीप श्रीरघुनाथजी को अतिआनन्दसंयुक्त देखतभये (३) तहां जनकजीनेदेखा कि भारी भीरभई तब शुचिसेवक बोलाइलेतेभये (४) तबकहा हेसेवकहुतुरन्त सबलोगन के पासजाहु सबको उचित आसनदेहु (५) दोहार्थ॥ तिनसेवकन सबनते बिनीतकही प्रबीण मृदुबचनकहिकहि उत्तम मध्यमनीच लघु नर नारिको यथायोग्य निजनिज थल अनुहारि बैठारते भये (६) त्यहिअवसरविषे मुनिसंयुक्त दोऊराजकुंवर रंगभूमिविषे प्राप्तभये जनु मनोहरताकहीशोभा अरु छबिरंगभूमिकी समाजविषेछाइ अरु जगमगाइरही है (७) कैसे दोऊभाई हैं परमदिब्य गुणनके सागर अरुनागरकही श्रेष्ठ सर्बोपरि प्रवीणहैं अरु परमबल परमवीरता तिनसबनके

आसनउचितदेहुसबकाहू ५ दो०॥ कहिमृदुबचनबिनीततिनबैठारेनरनारि उत्तममध्यमनीचलघुनिजनिजथलअनुहारि ६ चौ० ॥ राजकुंवरत्यहिअवसरआये मनहुंमनोहरताछबिछाये ७ गुणसागरनागरबरबीरा सुन्दरश्यामलगौरशरीरा ८ राजसमाजबिराजत रूरे उडुगणमहँजनुविधुयुगपूरे ९ जिनकेरहीभावनाजैसी प्रभुमूरतिदेखीतिनतैसी १० देखहिंभूपमहारणधीरा मनहुंबीररसधरे

सागरहैं पुनि कैसे हैं अतिसुन्दर श्यामगौर शरीर हैं (८) राजन की समाजमें दोऊकुंवर रूरेकही सुन्दर कैसे विराजते हैं जानो अनेकन उडुगणकेमध्य में दुइविधु निर्दोष निर्मल पूर्ण विराजते हैं (९) जेते सबमण्डली में राजा इत्यादिक अरु सब पुरवासिरहे ते सबमिलिकै श्रीरघुनाथजीको देखतेहैं जिनके जसभावनारही तिनकोतैसेरसरूपमूर्त्तिदेखावतेभये (१०) तहां जे महा महारणधीरराजा हैं ते श्रीरघुनाथजीको वीररसकी मूर्त्ति देखते हैं वीररसको गौररंग ताको स्थाईभावहर्ष तामें दुइभेद एकमृत्युलोक से स्वर्गादिकविषे की प्राप्तिकोहर्ष अरु एकभगवान् के प्राप्तिको हर्ष काहेते कि जब आत्माको अपने स्वस्वरूपको ज्ञानभयो सोई वीररसजब ऐसोवीररस प्राप्तहोइ तब शरीरविषे जे ज्ञानभक्ति के विरोधी हैं ते अपने विषयन समेत नाशकोप्राप्तिहोहिं अरु ज्ञानभक्ति के विरोधी तिनके नाशविना आत्मा शांतिको नहींप्राप्तहोतीहै अरु बिना शांतरस ब्रह्म ज्ञान अरु भक्ति नहीं सिद्धिहोइ तबलगि द्वौसाधन हैं अरु जब शांतरसभयो तब विज्ञानकही ब्रह्मज्ञान सिद्धिभयो तब प्रेमापरा भक्ति सिद्धिभई काहेते वीररस चारिस्थान में सूचितहोत है दान संग्राम तप ज्ञान तहां चारो इंद्रीनके दमनविनानहींहोत अरु जो यहचारिइन्द्रिनकै दमनभयो तब परमात्मा को चीन्हिकै आत्माकोहर्षभयो पुनि संचारी भाव गर्व मद अंग अंग को फरकना पुनि रसके तीनकारण भाव अनुभाव विभाव सब रसनविषे होत है जो मनमें रसकीचाहउठै तेहिकोभाव कही अरु जो रसकी चाहकोबढ़ावै तेहिको बिभावकही अरु जो रसको प्राप्तिकरै तेहिको अनुभावकही ऐसेही सबरसनमेंजानिये (प्रमाणरसकल्लोलग्रन्थविषे) श्लोक भावानामनुभावानां विभावानांचसंश्रयः जायतेयःपदार्थस्तुतमाहुर्मुनयोरसं १ पुनि भावकही रसकेहेतु मनमें जलतरंगसम बिकारकाउठना अरु विभावकही उद्दीपन अरु अनुभावकही क्रियाकोकटाक्ष पुनि आननलोचन वाक्यते प्रसन्नतानिकसै सोईभाव अनुभाव विभाव पुनिसबरसनमें जैसे चरतहै सो संचारी सो एकतीसकहतेहैं आलंबनआलंब्य जामेंरहे सो कौन हैं दैन्य १ असूया २ स्मृति ३ मद ४ आलस ५ श्रम ६ उन्माद ७ ब्रीडा ८ जड़ता ९ चित्तहर्ष १० मतिआवेग ११ आकृतिगो-

शरीरा ११ डरेकुटिलनृपप्रभुहिनिहारी मनहुंभयानकमूरतिभारी १२ रहेअसुरछलजोनृपभेषा तिनप्रभुप्रकटकालसमदेखा १३ पुरवासिनदेखेदोउभाई नरभूषणलोचनसुखदाई १४ दो०॥ नारिबिलोकहिंहरषिहियनिजनिजरुचिअनुरूप जनुसोहतशृंगारधरि मूरति

पन १२ चपल १३ अप्समार १४ भय १५ उत्कंठा १६ निद्रा १७ स्वप्न १८ बोध १९ उग्रता २० व्याधि २१ प्रमाधि २२ वितर्क २३ भ्रम २४ निर्वेद २५ ग्लानि २६ गर्व २७ चिंता २८ मोह २९ विषाद ३० शंका ३१ इत्यर्थः ( ११ ) कुटिल राजाजेहैं ते प्रभुको निहारिकैडरे मानहु भयानकरस की भारीमूर्त्तिदेखा ताको नीलरंग कुटिलकही टेढ़ेमन क्रम वचनते अशास्त्रक्रिया पुनि भयानकरस को स्थाईभाव भीति त्यहिमें दुइभेद लौकिक वैदिक त्यहिके संचारी कंप स्वरभंग चिंता मोह विषाद ( १२ ) अरु जेअसुर राजाके वेषबनाइकै रंगभूमिमें आये हैं ते प्रभुको काल के समान रौद्ररस अंगअंग बिकराल देखतेहैं ताकोरंग अतिरक्त कैसे देखते हैं प्रभुकी माया डुमरिकोपेड़ है अनेक ब्रह्माण्ड फल हैं तरुविषेलगे हैं बढ़त हैं पकत हैं झरत हैं कालभक्षण करतहै यहप्रभुविषे नित्यदेखे रौद्ररसको स्थाईभाव क्रोध मद मान अहंकार रौद्ररसके संचारी नेत्रलाल अधरफरकत उग्रता शंका श्रम ( १३ ) पुनि सम्पूर्णपुरवासिन दोऊभाइनको देख्यउसख्यरस रूप सबनरनविषे भूषण लोचन के सुखदाता ताको रंग अरुण क्वचित् श्वेत मिलित पुनि सख्यरसको स्थाईभाव आनन्द पुनि संचारीदोऊभाइन के स्वरूपमें नेत्रक्रीड़ा करते हैं अरु तृप्तनहींहोते हैं अरु चाह अतिशय है ( १४ ) दोहार्थ ॥ जनकपुर की नारिजे हैं ते हर्षिकै लज्जानिवारणकरिकै निजनिज रुचिके अनुरूप दोऊभाइन को विलोकती हैं जनुशृंगाररस परम अनूपमूर्त्ति धरि कही मूर्त्तिमानह्वैकै सोहतहै शृंगाररसको श्यामरंग किंतु जनकपुर की नारिजेहैं ते परम शृंगार के अनेकरूप धरिकै परम अनूपमूर्ति जो श्रीरघुनाथजी तिनको देखती हैं तहां जनकपुरकी नारिनमें तीनिभेद हैं मुग्धा मध्या प्रौढ़ा ये तीनिहूं निजनिजरुचि से देखती हैं तहां अज्ञातमुग्धा शृंगाररस की मूर्त्ति देखती है केवल चक्षुसंभोगके सुखको प्राप्ति है तेहिको स्थाई आनन्दसंचारी अंगअंगन विषे लोचनन की चपलता अरु आकृति गोपान भय स्वप्न पुनि मध्याजेहैं तेश्रीरघुनाथजीकोदेखती हैं जनुपरमशृंगारकीमूर्त्तिपरमकहीशृंगारहूकेशृंगार की मूर्त्तिदेखतीभई परमशृंगारकोस्थाईरति अरु परस्पर संभोगकीचाहना अरु तेहिको सञ्चारी चिन्ता लज्जा स्मृति अवलोकन पुनि प्रौढ़ा जेहैं ते श्रीरघुनाथजीकी परम अनूपमूर्त्ति देखती हैं जहां शृङ्गारहूकी उपमानहींदईजाइ तहां मनसम्भोग प्रधानहै अरु प्रीतिस्थाई भावहै अरु तेहि

परमअनूप १५ चौ० ॥ बिदुषनप्रभुबिराटमयदीशा बहुमुखकरपगलोचनशीशा १६ जनकजातिअवलोकहिंकैसे सजनसगेप्रिय

को सञ्चारी चित्त हर्षआवेग उत्कण्ठा ( १५ ) पुनि बिदुषजन जे हैं बिद्यामान् ते प्रभुको बिराट्मय अद्भुत रसरूप देखते हैं ताको रङ्गपिङ्गल पीत अरु मिलित अनेकन सर्व्वत्र पग कर मुख लोचन शीश पुनि बिराट्रूपकेसे देख्यो पदको तल अरु पग पृष्ठि अरु गुल्फ अरु पिंडुरी अरु गांठी अरु जंघा अरु स्तम्भ नीचेके सातहूलोकनको क्रमहीते सातौअङ्ग जानबपाताल रसातल महातल तलातल सुतल बितल अतल पुनि ऊर्द्धकटि ते शीशताई सातौ अङ्गजानव कटि नाभि उदर हृदय बक्षस्स्थल ग्रीव शीशअङ्ग क्रमहीतेऊद्धकेसातौलोकजानव भूर्ल्लोक भुवःलोक स्वर्ल्लोक महर्ल्लोक जनलोक तपलोक सत्यलोक अरु महत्तत्त्व तीनोंगुण चारिउकी एकतासोई त्वक्है अरु मोहबस्त्रहै अरु पृथ्वीतत्त्व मांसहै जलशोणित है अग्नितत्त्वजठराग्निहै पवनतत्त्वश्वासाहै वेदवचनहै नभतत्त्व पांचोनभहैं शीशनभ कण्ठनभ हृदयनभ उदरनभ कटिनभ सातहू समुद्रआंतैहैं सातहू द्वीप सातहूचक्रहैं दिग्पाल इन्द्रभुजहैं सबदेवताअंगुली हैं अरु सबरत्ननखहैं दशौदिशा श्रवणहैं शशि सूर्य्य नेत्रहैं कालकेधनुबाण भृकुटीतीब्र अवलोकनिहै चारिउयुग पलकहैं रातिदिन निमेषहै कालमुखहै लोभअधरहै बरुणरसना है बज्र गदा इत्यादिक संयुक्त यमराजदशन हैं अश्वनीकुमार नासिकाहै नक्षत्र अलंकारहै यमपुरीगुदाहै कामलिङ्ग है सम्पूर्णनदी नसजालहैं सम्पूर्ण बनस्पति रोमहैं अरु ब्रह्मा जाकी बुद्धिहैं अंहकार शिवहैं चित्तबिष्णुहैं अरु मनचन्द्रमाहै अरु संकल्प जाको विशेषण है अरु पञ्चप्राण रामनामहै रेफरेफकी अकार अरु दीर्घअकार अरु मकारकी अकार अरु हलमकार अरु रामनामही रकार मकार ब्रह्मजीवहै कुबेर ऐश्वर्य्यहैइतिबिराट् विश्वरूप अद्भुत रसरूप सर्व्वांगदेखे जो श्रीकौशल्याजी अरु कागभुशुण्डिजीको अद्भुत रसरूप देखाये हैं सो ऐसो विराट् विश्वरूप श्रीरामचन्द्रको बिदुषनदेखा ( प्रमाणभगवद्गीतायां ) श्लोकएक ॥ सर्व्वतः पाणिपादन्त त्सर्व्वतोऽक्षिशिरोमुखं ॥ सर्व्वतःश्रुतिमल्लोके सर्व्वमावृत्यतिष्ठति ( १६ ) जनकजाति जे सम्पूर्ण निमिबंशी हैं ते श्रीरघुनाथजीको सगे जामाताइव शंकरस्वरूप देखते हैं वात्सल्य सख्यरस मिश्रित तेहिकोरङ्गअरुण पीत मिश्रित तेहिको स्थाईभाव बिलास अरु सञ्चारी प्रीतिहास्य

**लागहिंजैसे १७ सहितबिदेहबिलोकहिंरानी शिशुसमप्रीतिनजाइबखानी १८ योगिनपरतमत्त्वमयभाशा शांतशुद्धसमसहजप्रकाशा १९ हरिभक्तनदेखेदोउभ्राता इष्टदेवइवसबसुखदाता २० रामहिंचितवभावजेहिसीया सोसनेहसुखनहिंकथनीया २१ उरअनु-**

(१७) अरु बिदेह संयुक्त रनिवास श्रीअवधनन्दन श्रीरघुनन्दनजीको शिशुसम अतिप्रीतिसे वात्सल्यरस रूप देखती हैं ताको सुवर्ण को रंग ताको स्थाई पोषण अरु संचारी लाड़दुलार (१८) अरु योगी जनजे हैं ते श्रीरघुनाथजी को परमतत्त्व परम प्रकाश सम कही एकरस परम शुद्ध शान्तरस देखते हैं तेहिकोरङ्ग शुद्धश्वेत अरु स्थाई शुद्धज्ञान ब्रह्मानंद तेहिको संचारी निंदास्तुति हर्षकर रहित क्रिया समदृष्टि (१९) अरु हरिभक्त दोऊभाइन को इष्टदेव सर्बसुखदाता दास्यरसकी मूर्त्तिदेखते हैं किंतु सर्बदास दास्यरसकी मूर्त्तिही ह्वैके परम इष्टदेव देखते हैं तेहिको विचित्ररंग अरु स्थाई परमसुख अरु संचारी अनेककैंकर्य (२०) अरु श्रीरघुनाथजीको जेहिभावसे जानकीजी देखती हैं सो स्नेहसुख अकथनीयहै इहां करुणा रसरूप सूचितहोत है तेहिकारंग शुद्धबैंजनी अरु स्थाई शुद्धदया अरुसंचारी कृपा उदारता पोषण (२१) जेहिभावतेश्रीजानकीजी श्रीरामलाल को देखती हैं सो सद्कबिनके हृदयमें अनुभवित होतहै पर कहिनहीं सकते कौनीप्रकार कहैं काहेते किरामलाल बिषे जानकीजीको शृंगार भाव अवलोकन परस्पर तहां कविनको कर्ममनबाणी अगोचरहै कबिकैसेकहैं किंतु जानकीके मनमें बहुसुख स्नेह अनुभवित होत है परकहिनहीं सक्तीं सखिन प्रति सो कबि कौनी प्रकारतेकहै किंतु जानकीजी के रामलालकोकतजो स्नेह सुख भयो है सो श्रीरामचन्द्र के अंतष्करण में अनुभवित होत है पर कहिनहीं सक्ते सो कबि कौनी प्रकार ते कहैं (२२) जिनकेजस भावनारही तिनतस कोशल राजकुमारको देखा तातेकोशल राजकुमार सबरसनके कारणहैं उपादान अरु निमित्त कारणदूनों हैं अरु आपनअंशकला बिभूति अवतारन करिकै सबरसन के देवता भी हैं तहां धनुष लीलाबिषे श्रीरघुनाथजी राजनबिषे हास्यरस अरु बीभत्सरस देखावहिं तब राजाधनुषको उठावहिंगे अरु नहींउठैगो अरु फिरि उठावहिंगे नहीं उठैगो तब गिरिगिरिपरहिंगे हँसीहोइगी तहां उनकी मूर्खतादेखिकै सब हँसहिंगे तब हास्यरस उनहींको लज्जाआवैगी सब निन्दाकरहिंगे तब बीभत्सरस अरु स्थाई सञ्चारीयाहीमें जानिलेव अरु हास्यरसको पाण्डुररङ्गका बिषइव अरु बीभत्सकोकालारङ्ग (२३) दोहार्थ॥ तहां सातहूद्वीपके

**भवितनकहिसकसोऊ कवनिप्रकारकहैकबिकोऊ २२ जेहिबिधिरहाजाहिजसभाऊ त्यहितसदेख्यो कोशलराऊ २३ दो०॥ राजतराजसमाजमहँ कोशलराजकिशोर सुंदरश्यामलगौरतन बिश्वबिलोचनचोर २४॥**

**चौ० ॥ सहजमनोहरमूरतिदोऊ कोटिकामउपमालघुसोऊ १ शरदचंदनिंदकमुखनीके नीरजनयनभावतेजीके २ चितवनिचारुमारमद**

राजा अरु देव दानव जेराजबेष बनाइकैआयेहैं तिनके समाजबिषे कोसलराजकिशोर अतिसुन्दरश्यामलगौर अपनीशोभाकरिकै सबकेबिलोचन अरु चित्तकेचोरावनेवालेसर्बोपरि बिराजितहैं इहांप्रथम उल्लेषलंकार कहाहै (२४) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेबालकाण्डे द्वादशरससम्पूर्ण श्रीरामश्रयबर्णनन्नामषट्चत्वारिंशतिस्तरङ्गः ४६॥ :: :: :: :: :: :: ::

दो० चालिससाततरङ्गमें शोभासिंधुअपार रामचरणमिथिलेशलै बैठारेसुखसर ४७ आगेपदार्थैस्वतः सिद्धिहै सहजहीकही कौन्योशृङ्गारके आश्रयह्वैके शोभानहीं है सहजै मनोहरमूर्त्तिहै परमहंस मुनीश्वरनकेमनकोआकर्षणकरैहै तनकीशोभा कैसीहै कोटिनकामकी उपमादेबेकोलघुहै (१) अरु मुखकीनिकाई शरदपूर्णचन्द्रकी छबिकोनिन्दतहै मुखकीनिर्मलताप्रकाशईषद्धास मधुरबोल शशिकैउज्ज्वलता प्रकाशकिरिणि शीतलताको निन्दत है न्यूनाधिक्य रूपकालङ्कार बाचकलुप्तोपमाहै नीरजश्वेत अरुणनीलचित्रवत् सुगन्धमकरन्द लालित्य अतिकृपाशील शोभामयनेत्रहैं कैसे हैं कर्म्म मन बचन अगोचरहैं जीव जो आत्माको गोचरह्वै भावते हैं (२) अरु नेत्रनकीचितवनि चारुकही

अतिसुन्दरिबांकी है मारजो कामतेहिके सुमनकेवाण तेहिकेस्वरूप गुणक्रियाको हरतहै कहूं मारमनहरणीपाठहै सो चितवनि मारकेमनको हरतिहै भावतहृदय अष्टदलकमल मध्यशुद्ध सात्विकस्वरूप आत्मापराबाणीकोभावतहै पश्यन्ती मध्यमा बैखरी तीनोंकोलैकै वह चितवनि नहींबरणीजाय ( ३ ) कलकही अतिसुन्दर नीलमणि आदर्शवत् सचिक्कण निर्मलकपोल हैं श्रुतिकही श्रवणनविषे कुण्डलहैं इहां हेमविषेझुमकालेब मणिनकीकनी मोतिनकीअवली मधुरप्रकाशमयऐसे कुण्डल स्वाभाविक लोलकही कपोलनपर हलतहैं जनुमयनआदर्शलघु अजिरपरनृत्य करतहै पुनि चिवुक गोलमणिइव तामेंएकपीतविन्दुहै जनु शृङ्गारसकोशृङ्गार है पुनि जनु रसिकनकैबुद्धि निश्चयकरिकैस्थितह्वैरहीहै अरु अधरयुगविम्वकीअरुणताहरतहैं अरु सुन्दर मृदु मधुरमनोहरबोलते

हरणी भावतहृदयजातनहिंबरणी ३ कलकपोलश्रुतिकुण्डललोला चिबुकअधरसुन्दरमृदुबोला ४ कुमुदबन्धुकरनिन्दकहासा भृकुटी बिकटमनोहरनासा ५ भालविशालतिलकझलकाहीं कचबिलोकिअलिअवलिलजाहीं ६ पीतचौतनीशिरनिसोहाई कुसुम

हैं अरु बोलतासन्ते दशननकीशोभा जनु तड़ितकेरंगतेथोरे लघु २ हीरनकीअवलीहै पुनि जनु पक्वदाड़िमकेबीजकीअवलीशोभितहै ( ४ ) पुनि कुमुदिनी तेहिकोबन्धु इन्दु तेहिकीकरकही अमृतमय प्रकाशरूपकिरिणि तेहिकीनिन्दाकरतहै मन्दमधुरहास्य रसिकजननकोबाह्यान्तरप्रफुल्लितकरतहै काहे ते बिहँसतसंते दशन अधर रसनाकीलालित्य एकह्वैजाति है अरु षोड़शकला पूर्णचन्द्रविषेकिरणिहैं अरु इहां अधररसनामिलिकै पैंतिसकलापूर्ण चन्द्रमाकीहास्यहै ताते हास्यशशिकीकरकोनिन्दतहै अरु भृकुटीबिकटकही बांकी है जनु कामकेयुगधनुषहैं चितवनिबाणहैं रसिकनकोचित्त हरतुहै अरु नासिका मनोहरजनु श्याम अरुणतलशुकहै ( ५ ) अरु भालबिशाल शोभामय है तेहिविषे तिलकके युगरेख झलकतहैं जनु नीलमणि आदर्श केमध्यमें तड़ितकेयुगरेखझलकतहैं तिलकके मध्यमें कस्तूरी को बिन्दुहै जनु मदनके सुवनने युगशर अतिसुन्दर नारिनर मुनिदेवके जीतिबे को संधानकीनहै पुनिजनुतमालके पत्रको अपने सुख हेतु रतिपूजनकीनहै पुनि जनु अलिसूर्यते अपनेसुखहेतुदुइकिरणि मांगिल्याये हैं कचजेसूक्ष्म अतिसचिक्कण कोमल कछुकछूटे कछुकलटुरे हैं ते सर्पनके बच्चनको अरुअलिकी पंक्तिको अपनी शोभा करिकै लज्जितकरतेहैं जनुशशि अरु कमलके मकरंदको झूमिझूमि पानकरतेहैं ( ६ ) पतिचौतनी जो है सो शीशपर शोभितहै तेहिके बीचबीच कुसुमन कीकली अतिशोभित अरु जगमगाइरही हैं ( ७ ) अरु ग्रीवबिषे तीनिरेखा हैं कलकही अतिसुन्दर शंखकी रेखाको निंदति हैं जनु तीनिउ भुवनकी सुखमा कही शोभा तेहिकी मर्याद हैं ( ८ ) दोहार्थ ॥ गजमुक्तनके कण्ठा अतिललितहैं जनु नीलमणिलघुशृंगविषे शुककीपंक्ति शोभितहै अरु उरविषे श्वेतपीत फूल अरु तुलसीदलकरिकैयुक्त बनमाला अतिशोभित है जनु तमालतरुकेमध्यमें श्वेतपीत हरित शुककीपंक्तिबैठी है अरु बृषभके समउच्चकन्ध हैं अरु केहरिकी

कलीबिचबीचबनाई ७ रेखारुचिरकंबुकलग्रीवा जनुत्रिभुवनसुखमाकीसीवा ८ दो०॥ कुंजरमणिकण्ठाकलितउरतुलसीकोमाल वृषभकंधकेहरिठवनिबलनिधिबाहुबिशाल ९ चौ०॥ कटितूणीरपीतपटबांधे करशरधनुषबामबरकांधे १० पीतयज्ञउपबीतसुहाये नखशिखमंजुमहाछबिछाये ११ देखिलोगसबभयेसुखारे यकटकलोचनटरहिंनटारे १२ हर्षेजनकदेखिदोउभाई मुनिपदकमल गहेतबजाई १३ करिबिनतीनिजकथासुनाई रङ्गअवनिसबमुनिहिंदेखाई १४ जहंजहंजाहिंकुंवरबरदोऊ तहंतहंचकितचितवसबकोऊ १५ निजनिजरुचिरामहिंसबदेखा कोउनजानकछुमर्मबिशेखा १६ भलिरचनानृपसनमुनिकह्यऊ राजामुदितपरमसुख

ठवनि कही निर्भयगम्भीर अरु बिशालभुजाहैं बलनिधिकही बलकेसमुद्रहैंअलङ्कारतरंगहै ( ९ ) पुनि कटिबिषे पीतपटपर हेममणिनमय तूणीर बांधे हैं अरु करबिये बाणलिहेहैं अतिसुन्दर बामकन्धबिषे धनुषहै ( १० ) पुनिपीत यज्ञोपवीत जनुनीलमधुर घनबिषे तड़ितकीतीनिरेखा स्थिरह्वैरही हैं अतिशोभित हैं नखते शिखलौं मंजुकही अतिनिर्मल छबिछाइरहीहै ( ११ ) अद्भुतछबिदेखिकै सबलोग अतिसुखको प्राप्तभये लोचन सबके एकटकरहिगये जैसे पूर्णचन्द्रको अनेक चकोरचितैरहैं ( १२ ) दोऊभाइनको देखिकै जनकजीने अतिहर्षसंयुक्त मुनिकेपद कमल गहेजाइ ( १३ ) विनयकरिकै अपने प्रणकी सम्पूर्ण कथा सुनायकै राजासम्पूर्ण रंगभूमिदेखावतेभये ( १४ ) जहां जहां दोऊकुंवरबर जाते हैं तहां तहां सबलोग चकितह्वैकै देखते हैं ( १५ ) सबरसन के खानि सबरसनके रूप श्रीरामचन्द्रको अपनी २ रुचि अनुसार सब देखतेभये जिनजसदेखा तिन तैसे माना विशेषकै अपर मर्म काहूनहिंजाना ( १६ ) विश्वामित्र ने सम्पूर्ण रचनादेखिकै राजासे प्रसन्नह्वैकै कहां कि अतिसुन्दर विचित्रबन्योहै सुनिकै राजाको अतिआनन्द भयो है ( १७ ) दोहार्थ ॥ सब मंचानन ते एकमंचान विशालकही अति उच्चविस्तार अतिसुन्दर विशद तहां राजा जनमजूने मुनिसमेत दोऊबन्धुन को आसनदीन ( १८ ) प्रभुको देखिकैसब राजा हृदयमेंहारे जैसे राकेश जो पूर्णमासी को चन्द्र तेहिके उदय भये सन्ते नक्षत्रनके तेज मन्दह्वैजाते हैं ( १९ ) असिप्रतीति सबके मनमेंहोतिभई कि श्रीरामचन्द्रधनुषतोरहिंगे यहिमें शककहीसन्देहनहींहै ( २० ) अरु जो रामचन्द्र धनुषको भंजबकही नहीं तोरहिंगे तबहूं श्रीरामचन्द्रकेउरबिषे श्रीजानकीजी जयमाला मेलहिंगी ( २१ ) बिबेकी राजा कहते

लह्यऊ १७ दो० ॥ सबमञ्चनतेमञ्चयकसुंदरबिशदविशाल मुनिसमेतदोउबंधुतहंबैठारेमहिपाल १८ चौ०॥ प्रभुहिदेखिसबनृपहियहारे जिमिराकेशउदयभयेतारे १९ असिप्रतीतिसबकेमनमाहीं रामचापतोरबशकनाहीं २० बिनुभंजेभवधनुषबिशाला मेलिहैं सियारामउरमाला २१ असविचारिगवनहुघरभाई यशप्रतापबलतेजगवांई २२ बिहँसेअपरभूपसुनिबानी जेअविवेक अधमअभिमानी २३ तोरेहुधनुषब्याहअवगाहा बिनुतोरेकोकुंवरिबिवाहा २४ एकबारकालौकिनहोऊ सियहितसमरकरबहम सोऊ २५ यहसुनिअपरभूपमुसुकाने धर्मशीलहरिभक्तसयाने २६ सो० ॥ सीयविवाहबरामगर्वतोरिसबनृपनके जीतिको सकसंग्राम द-

हैं कि ऐसही विचारिकै अपने अपनेगृहकोजाहु अपनअपन यशप्रतापबल तेज प्रतापकहे जेहिके हुकुमनाम ते कार्य सिद्धिहोइ पुनि बलकही अपने पराक्रम ते कार्य सिद्धिकरै पुनि तेजकही जाको देखिकै सबडरैं सोयेते सब रघुनाथजी के यशप्रताप बल तेजविषे गवांइकै अपने अपनेगृह को जाहु ( २२ ) यह सुनिकै जे राजा अबिबेकी अज्ञानी अधम अभिमानी ते बिहँसे ( २३ ) अबिबेकी राजाबोले कि जो कदाचित् ये धनुष को तोरहिंगे तबहूं बिवाहहोना दुर्लभहै अरु बिना धनुषतोरे विवाहकौनकरिसकै है ( २४ ) एकबारकालहु जो आवै तौ जानकीकेहेतु हमसमर करैं ( २५ ) यहसुनिकै अपरभूप जे धर्मशील हरिकेभक्त सयानेह ते मुसुकाने ( २६ ) सोरठार्थ॥ अरु प्रणकरिकै कहते हैं कि श्रीजानकीजी को श्रीरामचन्द्र सबराजनके गर्वतोरिकै बिवाहहिंगे तिनते संग्रामविषे कौनसमर्थ है जो जीतिसकैगो राजा दशरथ के कुमार हैं रणविषे बांके हैं राजादशरथ कैसे हैं जिनको देखिकै इन्द्र आधासिंहासन छोंड़िदेइ ( २७ ) बृथा क्यों गालबजावतेहौ मनोरथ के लड्डूखाये कहूंक्षुधामिटती है ( २८ ) परमपुनीत हमार सिखापनमानहु श्रीजानकीजी को जगदम्बा जानहु ( २९ ) अरु जगत् के पिता रघुपतिको नेत्रभरिकैबिचारहु छबिनिहारिकै अपन कल्याणकरहु ( ३० ) अतिसुन्दर सुखकेदाता अरु परम दिव्यगुणनकी राशि अरु जेते तुम सबसमाजहौ सो यहजानहु कि ये दोउबन्धु महादेव के हृदयमें अहर्निश बसते है ( ३१ ) तुमअपने अज्ञानते सुधासमुद्रको निकट बिहाइकै मृगतृष्णा को जल तुम्हारीतृष्णा तेहिको क्यों दौरि मरते हौ ( ३२ ) हमने तौ तुमसे भलाकहा है आगे जाकेजस मनमेंभावै सो तसबृथाकरहु हम तौ मनुष्यतनधरेके फलको प्राप्तभये ( ३३ ) अस

शरथकेरणबांकुरे २७ चौ० ॥ वृथामरहुजनिगालबजाई मनमोदककीभूखबुताई २८ शिषहमारिसुनिपरमपुनीता जगदम्बाजानहु जियसीता २९ जगतपितारघुपतिहिविचारी भरिलोचनछबिलेहुनिहारी ३० सुन्दरसुखदसकलगुणरासी येदोउबन्धुशम्भुउरबासी ३१ सुधासमुद्रसमीपबिहाई मृगजलनिरखिमरहुकतधाई ३२ करहुजाइजाकहँजसभावा हमतौआजुपरमफलपावा ३३ असकहि भलेभूपअनुरागे रूपअनूपबिलोकनलागे ३४ देखहिंसुरनभचढ़ेबिमाना बरषहिंसुमनकरहिंकलगाना ३५ दो०॥ जानिसुअवसरजनकतबपठईसीयबुलाइ चतुरसखीसुंदरिसकल सादरचलींलिवाइ ३६॥ * * * * * *

कहिके भलेकही भक्तराजा अतिअनुराग संयुक्त श्रीरामचन्द्रको अनूपरूपदेखते हैं ( ३४ ) पुनि देवतनकेगण नभविषे बिमाननपरचढ़े श्रीरामचन्द्र को अनूपरूप देखते हैं कल्पवृक्षके फूलबर्षतेहैं श्रीसीतारामचन्द्रके परमदिब्य पुनीत चरित्र कल अतिमधुर रागिनी सुरताल संयुक्त गानकरते हैं ( ३५ ) दोहार्थ ॥ तब सुन्दर मंगलमय अवसरजानिकै जनकजी श्रीजानकीजीको बोलावतेभये तहां शतानन्दके बचनसुनिकै प्रवीण जे सखीहैं अति आदर ते रंगभूमिमें श्रीजानकीको ल्यवाइचलतीभई ( ३६ ) इतिश्रीरामचरित्रमानसे सकलकलिकलुषविध्वन्सने बालकाण्डे गुरुसंयुक्त श्रीरघुनाथजी रंगभूमिप्राप्त बर्णनंनाम सप्तचत्वारिंशतितिस्तरंगः ४७॥

दो०॥ चालिस आठतरंगमें रामचरणधरिधीर सियउपमावाणीजनकलषणबाक्यरसबीर ४८ सखिनसंयुक्त श्रीजानकीजी रंगभूमि को चलीं श्रीजानकीजीकी शोभाकही नहींजाइ काहेते जगदम्बिका हैं रूपशोभासुन्दरता इनगुणनकीखानि हैं ( १ ) तहां जानकीजी की उपमादेबेको मोको सब उपमा लघुलागती हैं काहेते प्राकृतनारिन के अंगविषे सबउपमा अनुरागकिहे हैं ताते लघु हैं याही ते कविनकरिकै झूंठीह्वैगई काहेते कबिन प्राकृतनारिन के अंगविषे सबउपमन को अनुराग कीन्ह है ताते लघु हैं ( २ ) श्रीजानकीजीकी किसूकीपटतरदैकै वर्णनकरै कुकबि कहाइकै सद्कविनबिषेको अयशलेइ ( ३ ) प्राकृतस्त्रिनमहँ जो श्रीजानकीजीको पटतरकही उपमादेई तौ ब्रह्मांडकोषमें ऐसी युवती कमनीयकही सुन्दरि हईनहीं है ( ४ ) जो कोईकहै कि देवस्त्रीनमहँ उपमा देहु तहांसोभी नहींबनै काहेते कि येती देवस्त्रीनविशे श्रेष्ठ हैं शारदा पार्बती रति

चौ० ॥ सियशोभानहिंजाइबखानी जगदम्बिकारूपगुणखानी १ उपमामोहिंसकललघुलागी प्राकृतनारिअंगअनुरागी २ सीयबरणिकेहिउपमादेई कुकबिकहाइअयशकोलेई ३ जोपटतरियतियनसमसीया जगअसियुवतिकहांकमनीया ४ गिरामुखरतनअर्द्धभवानी रतिअतिदुखितअतनुपतिजानी ५ विषबारुणीबंधुप्रियजेही कहियरमासमकिमिबैदेही ६ जोछबिसुधापयोनिधिहोई परमरूपमयकच्छपसोई ७ शोभारजुमंदरशृंगारू मथैपाणिपंकजनिजमारू ८ दो०॥ यहिबिधिउपजै लक्षिजब

रमा जो शारदाकी उपमादेई तौ शारदा मुखरकही बाक्यचंचल है तातेदूषण है अरु जो पार्वतीकी उपमादेई तौ अर्द्धांगी आधाअंग पुरुषचिह्न ते युक्त है ताते दूषण है अरु जो रतिकी उपमादेई तौ अतनुपतिजानिकै रतिदुखितहै ताते तेजमन्द है ( ५ ) अरु जो लक्ष्मीकी उपमादेई तौ विषबारुणी तिनकोबंधुहै अतिप्रियमानिकै ग्रहणाकिहे है ताते दूषणहै तिनकीसमान बैदेहीको किमिकहिये काहेते बिदेहजनक तिनके योगज्ञान भक्तिते आविर्भावहै ( ६ ) जो छबिसुधाक्रांतिमय सिंधुहाई छविकही शोभाकीक्रांति तेहिकीद्युति शोभाक्रांतिद्युतिः छबिरित्यमरः अरु छबिमें जो आह्लादहै सोई सुधाको गुणस्वादपुष्टि है अरु परमरूप कच्छपहोइ तहांरूपकही नीलहरित अरुण श्वेत पीतसो प्रकृतिकरिकै ब्रह्माकेरचे हैं अरु रूपकही अंगअंगकीबरोबरि यथायोग्य सोभी त्रैगुण्यकरिकै ब्रह्माकेरचेहैं अरु परमरूपकही स्वयंसम अंगरंग सोईकच्छपहोइ ( ७ ) पुनि शोभाकी रज्जुहोइ

शोभाकही शरीरको प्रकाश लालित्य अरु शृंगाररसको मन्दराचलहोइ अरु मार जोहै काम सोऐसेसमुद्रको अपने करपंकजसेमथै ( ८ ) दोहार्थ ॥ श्रीरसमुद्र देवदानव मथतभये तब कछु नहींप्राप्तिभयो तब बिष्णुभगवान्‌निजहाथसेमथतभये तब रत्नप्रकटेइहांतात्पर्यलक्ष्मीकोहै अरुइतै छबिरूपसमुद्रको काममथै यहिबिधिते जब लक्ष्मीप्रकटै सुन्दरता कही जाकोदेखिकै देवदानव मनुष्यादिक चराचरके मन मोहि जाहिं अरुसुख कही लौकिक पारलौकिक आनन्द जो है ऐसीसुन्दरता अरुसुखतेहिको मूलकहीकारण ऐसी लक्ष्मीउपजैतदपिसद्कविजेहैं ते अतिसंकोच समेत लजाइकै तेहि लक्ष्मीकी श्रीसीताजूकी समतुल्यता कहहिं देखिये तौ जब समुद्रतें लक्ष्मी प्राप्तिभई तब समुद्र कच्छप रज्जुस्थाने शेष अरु मंदराचल इनते कछु प्रयोजन नहीं है प्रयोजन लक्ष्मीते है तैसे छबि परमरूप शोभाशृङ्गार इनके मथे ते परमानन्द स्वरूप अनूप लक्ष्मी निकसीं पर तिन

**सुंदरतासुखमूल तदपिसकोचसमेतकवि कहहिंसीयसमतूल ९ चौ०॥ चलींसंगलैसखीसयानी गावतगीतमनोहरबानी १० सोहनवलतनुसुंदरिसारी जगतजननिअतुलितछबिभारी ११ भूषणसकलसुदेशसुहाये अंगअंगरचिसखिनबनाये १२ रंगभूमिजबसियपगुधारी देखिरूपमोहेनरनारी ( १३ ) हरषिसुरनदुंदुभीबजाई बरषिप्रसूनअप्सरागाई १४ पाणिसरोजसोहजयमाला अवचकचित**

लक्ष्मी को श्रीजानकीजीकी उपमा तुल्य कहत सन्ते कबिनकी मति सकुचाति है तिन श्रीजानकीजीकी शोभा त्रैलोक्य बिषे को कहिसकै ( ९ ) सखी जे सयानी हैं ते श्रीजानकीजी को मनोहर गीत गान करतसन्ते रंगभूमिको लैचलीं ( १० ) नवलतनुबिषे सारी अति शोभादेतिहै श्रीजानकीजी जगत्‌की जननी हैं तिनकी अतुलितछबिहै को कहिसकै इहां नवलतनु सुन्दरिसारी शृंगाररसकहा पुनि जगत् जननि कहिकै शृंगाररस बिषे शान्तरस योजितकीनहै किंतुसारीको बिशेषणहै जगत्‌बिषे अतुलितछबि जे भारी हैं त्यहिकीजननीसारीहै केवल शृंगारही पूर्णभयो ( ११ ) श्रीजानकीजूके सकलभूषण सुदेशकही अंगअंगसुदेशबिषे जहांजसचाहीतहांतस चतुरसखीरचिकै पहिरावतीभईं ( १२ ) जब श्रीजानकीजी रंगभूमिको जातीभई तब रूपदेखिकै नरनारीमोहतेभये ( १३ ) श्रीजानकीजीको देखिकै हर्षसंयुक्तदेवता दुन्दुभीबजावतेहैं कल्पवृक्षके पुष्पबरषतेहैं अप्सरागावती हैं ( १४ ) श्रीजानकीजीके हस्तकमलबिषे जयमालासोहतिहै देखिकै अवचककही अज्ञानके बशह्वैकै कुटिलराजा कुदृष्टितेयकटक चितैरहे ( १५ ) श्रीजानकीजी चकित शीघ्र चितैकाग्रकरिकै श्रीरामचन्द्रको चाहती हैं अरु अज्ञानी नर नारि मोहके बशभये ( १६ ) मुनिके समीप दोऊभाइन को देखिकै श्रीजानकीजी के लोचन ललकिकै निजनिधिपाइकै आनन्दभये ( १७ ) दोहार्थ श्रीजानकीजी रघुनाथजीकोरूप देखिरहीं तब समाजविषे गुरुजनजेहैं महत्‌जन तिनकी लाजकरिकै सकुचाइकै श्रीरघुनाथजीको हृदयमेंराखिकै सखिनकीदिशि देखनेलगीं ( १८ ) रंगभूमि विषे श्रीसीता राम कै छबिदेखिकै नरनारिन निमेषकोत्यागकीन्ह ( १९ ) सकल शौचकोकरिकै पछिताते हैं बिधाताते करजोरिकै मनविषे बिनयकरते हैं ( २० ) हे विधाता यहिधनुपविषे जनक के प्रणकी जोजड़ताई है सो बेगिहरहु हमारी ऐसीसुन्दर मतिदेहु ( २१ ) राजाबिचार

**येसकलभुआला १५ सीयचकितचितरामहिचाहा भयेमोहबशसबनरनाहा १६ मुनिसमीपदेखेदोउभाई लगेललकिलोचननिधिपाई १७ दो०॥ गुरुजनलाजसमाजबड़ि देखिसीयसकुचानि लागिबिलोकनसखिनतन रघुबीरहिउरआनि १८ चौ० ॥ रामरूपअरुसियछबिदेखी नरनारिन परिहरीनिमेषी १९ शोचहिंसकलकहतसकुचाहीं विधिसनविनयकरहिंमनमाहीं २० हरुविधिबेगिजनकजड़ताई मतिहमारिअसदेहुसुहाई २१ बिनबिचारप्रणतजिनरनाहू सीयरामकरकरहिंबिवाहू २२ जगभलकहैभावसबकाहूहठकीन्हेअंतहुपछिताहू २३ यहिलालसामगनसबलोगूबर-शांवरोजानकीयोगू २४ तबबंदीजनजनकबोलाये बिरदावलीबदतचलिआये २५ कहनृपजाइकहहुप्रणमोरा चलेभाटहियहर्षनथोरा २६ दो०॥ बोलेबंदीवचनबरसुनहुसकलमहिपाल प्रणविदेह**

न करै प्रणको तजिकै श्रीसीताराम को विवाहकरहिं ऐसीमतिदेहु इहांशुद्धसात्विक भावकहती हैं ( २२ ) जो राजा यहकरहिं तौ सबजगत् में लाभ है अरु सबको यहै भावत है अरु यहप्रण को हठकीन्हेते अन्तविषेपछिताव है काहेते कि जानकी के योग्य यईबर हैं अतिसुन्दर सुकुमार कोमल धनुष तोरिबे योग्यनहीं हैं ताते प्रणतजिकै बिवाहकरहिं ( २३ ) हे भरद्वाज यह अतिमाधुर्य्य लालसाबिषे सबलोग मग्न हैं बारबार यहै मनक्रम वचनते कहते हैं कि जानकी के योग्य यहसाँवरो बर है ( २४ ) तब तेहि अवसरविषे जनकजी बन्दीजनको बोलावतेभये ते वंशबिरदावली बर्णत आवते भये ( २५ ) राजाबोले हे प्रवीण बन्दीजनहु मोरप्रण सबराजनकी समाजमें कहहुजाइ तब जय जीव कहिकै हृदयमें अतिहर्ष संयुक्त अनेकन भाटचले ( २६ ) दोहार्थ राजनकीसमाजनविषे बंदीजनजनक की बिरदावली कहिकै बोलतेभये हे समस्त महीपहु सुनहु हम बिशालभुजा उठाइकै बिदेहको बिशालप्रण कहते हैं ( २७ ) बन्दीजनअतिहर्ष ते पुकारिकै कहते हैं यहिसमाजमें देवदानव जे राजाका वेषकरि आये हैं अरु सातहू द्वीपके भूप अरु भरतखण्ड के देशदेश के भूप ते हेसर्वभूपहुसुनहु सर्बराजनको वल समिष्टीकरिकै पूर्णउज्ज्वल प्रकाशमय चन्द्र है पर रुद्रकोधनुष राहु है अतिगरूकठोर है यह त्रैलोक्यमें सबकोबिदितहै इहांब्याजस्तुति निन्दालंकारहै ( २८ ) काहेते रावण बाणासुर जिनकी महाभटन में लीक है ते पिनाकको अतिदुर्घट देखिकै अपनीगवँहिते सिधारिगये ( २९ ) सोई पुरारि का दण्ड है अतिकठोर है तेहि

करकहहिंहमभुजाउठाइबिशाल २७ चौ० ॥ नृपभुजबलबिधुशिवधनुराहू गरुअकठोरबिदितसबकाहू २८ रावणबाणमहाभटभारे देखिशरासनगवहिंसिधारे २९ सोपुरारिकोदंडकठोरा राजसमाजआजुजेहिंतोरा ३० त्रिभुवनजयसमेतबैदेही बिनहिंबिचारबरहिं हठितेहीं ३१ सुनिप्रणसकलभूपअभिलाषे भटमानीअतिशयमनमाषे ३२ परिकरबाँधिउठेअकुलाई चलेइष्टदेवनशिरनाई ३३ तमकितमकितकिशिवधनुधरहीं उठैनकोटिभांतिबलकरहीं ३४ जिनकेकछुबिचारमनमाहीं चापसमीपमहीपनजाहीं ३५ दो० ॥ तमकिधरहिंधनुमूढ़नृप उठैनचलहिंलजाइ मनहुँपाइभटबाहुबलअधिकअधिकगरुआइ ३६ चौ० भूपसहसदशएकहिबारा लगे

को राजन की समाजमें जो कोई आजुतोरै ( ३० ) सो त्रिभुवनमें जयको प्राप्तिहोइ अरु बैदेहीको बिना बिचारे राजाबरहिंगे यहि बचनमें अभिमानी राजनको भयदरशकरायो अरु श्रीरामचन्द्रको बीररसउत्सव सिद्धांत जनायो ( ३१ ) हेपार्वती बंदीजननके मर्म संयुक्त वचनसुनिकै मानी भूप अज्ञान अभिलाषाकरिकै मनमें माखिउठे ( ३२ ) परिकरकही कटिमें पटबाँधिकै अकुलाइकै धनुषतोरिबेको उठतभये अपने अपने इष्टदेवन को शिरनाइकै चले ( ३३ ) शीघ्रधनुषके समीपजाइकै दण्डकरिकै तालठोंकिकै तमकि तमकि तकि २ शिवके धनुषकोधरतेहैं कोटि उपायते वल करते हैं पर नेकहू नहींउठै बारबार धरते उठावतेहैं गिरिगिरिपरते हैं श्रमकरते हैं पसेवाचलते हैं अविद्या के बश हैं ( ३४ ) जिन भूपनके कछुक मनमें बिचार है ते चापके समीप नहींजाते ( ३५ ) दोहार्थ॥ बारबारतमकि तमकि मूढ़राजा धनुष को धरते हैं नेकहूनहींउठै तब लज्जित ह्वैकै निजनिज आसन को जातभये मानहुँ भटनके बलपाइकै वे भट कैसे हैं काहूके शतहाथिनके तुल्यबलहै काहूके हजारहाथिनके तुल्यबल है काहूके दशहजार हाथिनके तुल्य बलहै काहूके लक्षहाथीनके तुल्य बलहै ऐसे २ अनेकनभट धनुषकोउठावते हैं अरु नहींउठै मानहुँभटनके बलपाइकै अधिक २ गरुवाइहै ( ३६ ) पुनि अपनेमूर्खत्वते दशहजार राजा एकहीबार उठावनेलगे सोधनुषनेकहूनहींटरै पुनि यारकहीएकदिन में दशहजार भटलगे सो अर्थसामान्य है ( ३७ ) शम्भुशरासन कैसेनहींडिगै जैसेकामीपुरुष सतीते कामके बचन कहै परसतीको मननहींडिगै ( ३८ ) सब राजाउपहांसकही हँसौवा निंदाकेयोग्यभये कैसे जैसै बिनाबैराग्यको संन्यास ( ३९ ) समस्तराजाजे हैं ते अपनी अपनी कीर्त्तिबिजय भारीबीरता इत्यादिक चापके हाथ बरबशकही अपने अपने अभिमानते हारिचले अबइन राजनमेंकीर्त्तिबिजय बीरता इत्यादिक भारी एकहूनहींरही ( ४० ) जेगजा धनुष

उठावनटरैनटारा ३७ डिगैनशंभुशरासनकैसे कामीबचनसतीमन जैसे ३८ सबनृपभयेयोगउपहासी जैसेबिनुबिरागसंन्यासी ३९ कीरतिबिजयबीरताभारी चलेचापकरबरबसहारी ४० श्रीहतभयेहारिहियराजा बैठेनिजनिजजाइसमाजा ४१ नृपनबिलोकिजनकअकुलाने बोलेबचनरोषजनुसाने ४२ द्वीपद्वीपकेभूपतिनाना आयेसुनिजोहमप्रणठाना ४३ देवदनुजधरिमनुजशरीरा बिपुलबीरआयेरणधीरा ४४ दो० ॥ कुवँरिमनोहरिबिजयबड़ि कीरतिअतिकमनीय पावनहारबिंरचिजनु रचेउनधनुदमनीय ४५

उठाइ उठाइआये हैं अपने अपने आसनपर बैठेहैं किसूको मुखनहींदेखावतेहैं मानहु ब्रह्महत्याकिये हैं हृदयमें हारिगये हैं सम्पूर्ण श्रीहतह्वैगई है ( ४१ ) धनुषबिषे सब नृपनकै हारिदेखिकै जनकजी अकुलाइउठे मानहु क्रोधकेरसतेसानिकै यथार्थ बचनबोले जनकजू ( ४२ ) बोले कि सातहूद्वीपके राजाहमारी प्रणसुनिकै आवतेभये ( ४३ ) दवेता दनुज मनुजको शरीरधरिधरि बड़ेबड़े रणधीरबीर अनेकनआये ( ४४ ) ॥ दोहार्थ॥ कुँवरजो मनोहरि है अरु बिजय अरु कीर्त्ति जो कमनीयकही सुन्दरि यहतीनिउ तिनकोप्राप्तिहोइ जो धनुषको दमनकरै सो बिरञ्चिने रच्योनहीं है तहां राजाजनकके बचनमें यह अभिप्रायहै कि श्रीरामचन्द्रको ब्रह्मारचवैनहींकीन्ह जो कहो कि जनकजू कुँवरिमनोहरि कैसे कहेंगे इहांबीर रसको उत्सव बढ़ावनाहै ताते दूषणनहींहै किन्तु कुँवरिमनोहरि बिजयरूपजो मनोहरि कुँवरिहै किंतु कीर्त्तिरूप जो कुँवरिमनोहरि कमनीयहै तेहि कोकहा ( ४५ ) कोई काकरै यह लाभकेहिको नहींभावै पर शङ्करकोचापकाहू न चढ़ावा यह बचनमें ब्यंग्य है कि बिना पौरुषके लालसाकाकरतेहौ ( ४६ ) चढ़ाउब तोरब यह तौ रहा पर तिलभरि भूमिहूतो कोऊनहींछुड़ाइसक्यउ ( ४७ ) यह जनकजूकहतेहैं कि जेते भटहौ जिनके बीरत्व करमानहै ते सबकोई अबमाख न मानै काहेते कि बीरबिहीन तीनिहूलोकको हमनेजाना ( ४८ ) अबआश तजितजि अपने अपने गृहको जाहु काहेते बिधातैं अपनीसृष्टिबिषे वैदेहीको बिवाहै नहींलिख्योहै ( ४९ ) अरु जो अपनेप्रणको छोड़िदेउँ तो सुकृतउजाइ ताते कुँवरि जो कुँवारि रहै तो मैं काकरौं परमेश्वरकी यहीइच्छाहै ( ५० ) जो प्रथमै मैं जानत्योंकि बिनाभटकी पृथ्वीहै तौ यह प्रणकरिकै आपन अरु सबको हँसौवाका

चौ० ॥ कहहुकाहियहलाभनभावा काहुनशंकरचापचढ़ावा ४६ रहाचढ़ाउबतोरबभाई तिलभरिभूमिनसक्यउछुड़ाई ४७ अब जनिकोउमाखैभटमानी बीरबिहीनमहीमैंजानी ४८ तजहुआशनिजनिजगृहजाहू लिखानबिधिबैदेहिबिवाहू ४९ सुकृतजायजो प्रणपरिहरऊं कुंवरिकुंवारिरहैकाकरऊं ५० जोजनतेउंबिनुभटमहिभाई तौप्रणकरिनहिंहोतिहँसाई ५१ जनकबचनसुनिसबनरनारी देखिजानकिहिंभयेदुखारी ५२ माखेलषणकुटिलभइँभौहैं रदपुटफरकतनयनरिसौहैं ५३ दो०॥ कहिनसकतरघुबीरडर लगेबचन जनुबाण नाइरामपदकमलशिर बोलेगिराप्रमाण ५४ चौ० ॥ रघुबंशिनमहँजहँकोउहोई त्यहिसमाजअसकहैनकोई ५५

हेको करावतो ( ५१ ) यह जनकजीको बचन दीनता लिहे सुनिकै पुरकेसमस्त नर नारि श्रीजानकीजी को देखिकै दुःखितभये इहां वात्सल्य रस है ( ५२ ) हेपार्बती यहजनकको वचन सुनिकै लक्ष्मणजू माखिउठे भृकुटी अधिकटेढ़ी ह्वैगई रदकहे दशननकेपट दोऊअधर फरकनेलगे अरु नयन रिससन्ते हर्षसंयुक्त अरुणारे है आये यहीवीररसके संचारी हैं ( ५३ ) दोहार्थ॥ रघुवीरकोडेराइकै कछु बोलि नहींसकते पर जनक ने बचन जो कहा कि बिनाबीर पृथ्वी है सो सुनिकै बाणसारिखे लगे तथापि नहींरहिगयो श्रीरामचन्द्र के पदपद्मविषे माथनाइकै करजोरिकै प्रमाणकही यथार्थ बाणी बोलतेभये ( ५४ ) लक्ष्मणजू बोले हे जनकजू जेहि समाजमें रघुबंशी एककोई होइ

तेहिमें असकोई न कहै जसतुमने कहा है ( ५५ ) जसअनुचिततुमनेकहा सो अस न चाहिये काहेते तुम योगेश्वरत्रिकालज्ञहौ अरु विद्यमान रघुकुल केमणि श्रीरामचन्द्र सो तुमसबजानतेही तहां अज्ञानकी ऐसीवातकहना यह अनुचित है ( ५६ ) अब श्रीरघुनाथजू तेलक्ष्मणजू कहतेहैं बाक्यबिषे यथार्थ बीररसको उद्दीपनकरतेहैं हे श्रीरामचन्द्र भानुकुलपंकजभानु मैं सहजस्वभावतेकहतहौं कछुअभिमानकरिकैनहीं ( ५७ ) जो आपुकी अनुशासन कही आज्ञापावों तौ यहिब्रह्मांड को फूलके गेंदके समान उठाइकै उड़ाइदेउँ ( ५८ ) किन्तु नहीं असकरौंतौ कच्चेघटकी नाईं ब्रह्मांडको फोरिडारौं जो कदाचित् सुमेरुआड़करै तौ प्रथमैं मेरुको मूरीकी जरकी समान उखारिडारौं ( ५९ ) पर तुम्हारे प्रतापते हेभगवान् यह पिनाक पुरान बापुरो कौनबातहै ( ६० ) हे नाथ अस मोंको जानिकै जो आपुकी आयसु होइ तौ यहकौतुक मैं करौं आपुदेखिये ( ६१ ) यहिचापको जो आपुकी आज्ञा तोरिबे की होइ तौ कमलके

कहींजनकजसिअनुचितबानी बिद्यमानरघुकुलमणिजानी ५६ सुनहुभानुकुलपंकजभानू कहौंसुभावनकछुअभिमानू ५७ जोतुम्हार अनुशासनपाऊँ कन्दुकइवब्रह्माण्डउठाऊँ ५८ काचेघटजिमिडारौंफोरी सकौंमेरुमूलकजिमितोरी ५९ तवप्रतापमहिमाभगवाना काबापुरोपिनाकपुराना ६० नाथजानिअसआयसुहोई कौतुककरौंबिलोकियसोई ६१ कमलनालजिमिचापचढ़ावौं योजनशत प्रमाणलैधावौं ६२ दो० ॥ तोरौंछत्रकदण्डजिमितवप्रतापबलनाथ जोनकरौंप्रभुपदशपथ करनधरौंधनुभाथ ६३॥ * * *

चौ०॥ लषणसकोपवचनजबबोले डगमगानिमहिदिग्गजडोले १ सकललोकसबभूपडेराने सियहियहर्षजनकसकुचाने २

नालकी नाई चढ़ाइकै करमेंलैकै सौ योजन पर्यन्त धाइकै पुनि तोरिकैफेंकिदेउँ ( ६२ ) दोहार्थ ॥ हे नाथ यहि धनुषको कैसे तोरौं जैसे वर्षा ऋतु विषे महिमें फूल छत्राकार होतहै तेहिके दण्डकी समान तुम्हारेप्रतापते मींजिडारौं जो अस नहींकरौं तौ आपुके चरणारबिन्दकीशपथ करिकै कहतहौं पुनि करमें धनुषबाण अरु तूण न धारणकरौं ( ६३ ) ॥ इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने बालकांडे श्रीजानकी उपमाबिलक्षणजनकवाक्यलषणबीररसवाक्यउद्दीपनवर्णनं नामअष्टचत्त्वारिंशतितस्तरंगः ४८॥

दोहा॥ धनुषभंगश्रीरामकरबरतरङ्गउञ्चास रामचरणजयजयजगतपूरणसबकीआस ( ४९ )॥हेभरद्वाज लक्ष्मणजू जब सकोपवचन बोले तब संपूर्ण पृथ्वी डगमगाइउठी समस्तपर्वत कम्पायमान भये दिशनके दिग्गज हालिउठे कमठशेष कलमलाइउठे ( १ ) सर्वलोक सर्वभूप डेराइउठे भय को प्राप्तभये रनिवासमें सखिनसंयुक्त श्रीजानकीजीके अतिहर्षभयो अरुजनकजू सकुचाइगये लक्ष्मणजीके तेज व्याप्तभयो ( २ ) विश्वामित्र मुनिनसमेत आनन्दसंयुक्त बारबार पुलकते हैं ( ३ ) लक्ष्मणके वचनकरिकै राजनको भयउपजाइकै पुरवासिनको सुखदैकै तब श्रीरघुनाथजीने सैन बिषे लक्ष्मणजूको निवारणकीन्ह प्रेमसमेत निकट बैठाइलीन्ह ( ४ ) तबविश्वामित्र मंगलमय समय जानिकै अतिस्नेहमय वाणी बोलतेभये ( ५ ) हे राम हे तात उठहु महेशको चाप भंजहु जनकको परिताप मेटहु ( ६ ) गुरुके वचन सुनिकै पदपंकजमें शीशनाइकै नतौ कछु हर्षभयो न कछु

गुरुरघुपतिसबमुनिमनमाहीं मुदितभयेपुनिपुनिपुलकाहीं ३ सैनहिरघुपतिलषणनिवारे प्रेमसमेतनिकटबैठारे ४ बिश्वामित्र समयशुभजानी बोलेअतिसनेहमयबानी ५ उठहुरामभंजहुभवचापा मेटहुतातजनकपरितापा ६ सुनिगुरुवचनचरणशिरनावा हर्षबिषादनकछुउरआवा ७ ठाढ़भयेउठिसहजसुभाये ठवनियुवामृगराजलजाये ८ दो० ॥ उदितउदयगिरिमंचपर रघुबरबालपतंग बिकसेसंतसरोजसब हरषेलोचनभृंग ९

**चौ० ॥ नृपनकेरिआशानिशिनाशी बचननखतअवलीनप्रकाशी १० मूढ़महीपकुमुद सकुचाने कपटीभूपउलूकलुकाने ११ भयेबिशोककोकमुनिदेवा बरषहिंसुमनजनावहिंसेवा १२ गुरुपदबन्दिसहितअनुरागा राम**

बिषादभयो ( ७ ) चापतूरिबेको सहजसुभाव उठि ठाढ़ेभये ठवनिकही अतिधीर निर्भय तेहि समयकी उपमाकोदेखिकै युवामृगराज लज्जितहोत हैं ( ८ ) दोहार्थ ॥ ठाढ़भये तहां रघुबर कैसे शोभितहैं जनु मंचान उदयाचलपर्वतहै त्यहिपर रघुबर बालसूर्य हैं रंगभूमि सरहै सन्त जे राजामुनि इत्यादिक ते कमल बिकसे हैं अरु सबके लोचन भृङ्गहैं रघुनाथजीके स्वरूपकी अवलोकनि जोहै सो सन्तनके हृदयकंजविषे सो मकरन्दहै सोई आनन्दमकरन्द पानकरते हैं अन्तर्चक्षुभृङ्ग ते अरु सुख सोईपरागहै त्यहितेभरिरहेहैं इहा धर्मसम्बन्धकीउपमाहै ( ९ ) चौ० ॥ श्रीरामचन्द्ररूपीबाल सूर्य्य उदयहोतसन्ते दुर्बुद्धी राजानकै आशानिशि नाशभई अरु उनहिनको वचन नखतनकी अवलीन प्रकाशिकही नकारहलभयेकेते अप्रकाशी ह्वैगये जो वचन मोहके वश कहतेरहे सो बन्दह्वैगये ( १० ) अरु मूढ़महीपजो रहे सो कुमुदते सम्पुट होइगये अरु कपटीकही जे देवदानव राजनगर वेषकरिकै आये हैं ते उलूकइव लुकाने ( ११ ) सात्विकी देव अरु मुनीश्वर सो चकवा चकई विशोकभये देवता सुमन वर्षते हैं अपनी सेवा जनावते हैं ( १२ ) सहित अनुराग गुरुनके पद बन्दिकै श्रीरामचन्द्र मुनिन ते आयसु मांगिकै ( १३ ) संपूर्ण जगत्के स्वामी श्रीरामचन्द्र सहज चले मत्त मञ्जु कही निर्म्मल मस्त कुञ्जर बर कही श्रेष्ठ तद्वत् सबको आनन्द देत धनुष तोरिवे को चले ( १४ ) हे पार्व्वती श्रीरामचन्द्र के चलतसंते समस्तपुरके नरनारि पुलकावली ते तन पूरितह्वै सुखीभये ( १५ ) सबमिलिकै अपने अपने पितर बन्दतेहैं सत्यसुकृत सँभारते हैं अरु मनमें यह कहते हैं कि जो पुण्यप्रभावहोइ ( १६ ) तौ हे गणेश गोसाईं शिवकरधनुष मृणालकही कमलनालकीनाईं श्रीरामचन्द्र तोरिडारैंगे ( १७ ) दोहार्थ॥ श्रीजानकीजीकीमाता प्रेमसमेत श्रीरामचन्द्रकोदेखिकै सयानीसखिनको समीपबोलाइकै स्नेहके बशह्वैकै बिलखाइ कही शोचसंयुक्त

**मुनिनसनआयसुमांगा १३ सहजहिंचलेसकलजगस्वामी मत्तमंजुबरकुंजरगामी १४ चलतरामसबपुरनरनारी पुलकपूरितनभयेसुखारी १५ बन्दिपितरसुरसुकृतसँभारे जोकछुपुण्यप्रभावहमारे १६ तौशिवधनुषमृणालकिनाईं तोरहिंरामगणेशगोसाईं १७ दो० ॥ रामहिंप्रेमसमेतलखि सखिनसमीपबोलाइ सीतामातुसनेहबश बचनकहैबिलखाइ १८ चौ० ॥ सखिसबकौतुक देखनहारे जेउकहावतहितूहमारे १९ कोउनबुझाइकहैनृपपाहीं येबालकअसहठभलनाहीं २० रावणबाणछुवानहिंचापा हारे सकलबीरकरिदापा २१ सोधनुराजकुंवरकरदेहीं बालमरालकिमन्दरलेहीं २२ भूपसयानपसकलसिरानी सखिविधिगतिकछु**

वचन कहती हैं ( १८ ) श्रीसुनयना कहतीहैं हे सखि जे हमारे हितकारीहैं तेऊ कौतुक देखनेवाले हैं ( १९ ) राजाते कोऊ समुझाइकै नहीं कहत कि ये बालकहैं अस हठकियेते नहींभलहै ( २० ) यहचाप अतिगरूहै जेहिको रावण बाणासुर इत्यादिकने नहीं छुआ अरु सम्पूर्ण वीर जे हैं दाप कही अनेक बलकरिकै हारिगये ( २१ ) सो धनुष राजकुंवरके कर देतेहैं हे सखी कहूं मरालके बालक मन्दराचल लेते हैं जो कोई तर्ककरै कि बड़े मरालका मंदराचल लेहिंगे सो यहतर्क वृथाहै काव्यनविषे ऐसीही कहबेकी परिपाटीहै ( २२ ) भूपकर सयानप सबसिराइ गयो है सखीबिधाता की गतिकछुनहीं जानीजाइ इहां रानीराजाको तिरस्कारित बचनकह्यो पातिव्रत धर्ममेंबिरोधहै पर इहां बात्सल्यरस ताते विरोधनहींहै अथवा ईश्वर पक्षमें सबकर त्यागहै ( २३ ) तब एकप्रवीण सखी मृदुवाणीते बोलती भईहेमहाराणी तेजवन्तको लघुकरिकै नजानी ( २४ ) देखियेतौ कहा अगस्त्य जी अरु कहां अपारसमुद्र तेहिको सोखिगये सुयश संसारमें छाइरह्यो ( २५ ) रविकर मंडलदेखतकै लघुलागतहै तिनके उदयहोतसन्ते तीनिहूं भुवनको तमनाशहोतहै जहांजहां उदयहोतहैं तहांतहांको तमनाशहोतहै किन्तु तीनिउंभुवन दीपमणि इत्यादिकन विषे जेते प्रकशहैं सो सब सूर्यजानब किन्तु भूर्भुवःस्वः तीनिलोक किन्तु बारहकला

सूर्य सबप्रकाशकिहे हैं ( २६ ) दोहार्थ ॥ हे महाराणी मन्त्र परमलघु है तेहिकेबश बिधि हरिहर इत्यादिक सर्वदेवता हैं अरु अंकुश खर्वकहीलघु है तेहिमहामत्तजे गज हैं तिनको वशकरिराख्योहै ( २७ ) काम जो है सो फूलकोधनुष

जायनजानी २३ बोलीचतुरसखीमृदुबानी तेजवन्तलघुगनियनरानी २४ कहँकुम्भजकहँसिन्धुअपारा सोखेउसुयशसकल संसारा २५ रबिमण्डलदेखतलघुलागा उदयतासुत्रिभुवनतमभागा २६ दो० ॥ मंत्रपरमलघुजासुबश बिधिहरिहरसुरसर्व महामत्त गजराजकहँ बशकरअंकुशखर्ब २७ चौ० ॥ कामकुसुमधनुशायकलीन्हे सकलभुवनअपनेबशकीन्हे २८ देवितजियसंशयअस जानी भंजबधनुषरामसुनुरानी २९ सखीबचनसुनिभइपरतीती मिटाबिषादबढ़ीअतिप्रीती ३० तबरामहिंबिलोकिवैदेही सभयहृदय बिनवतजेहितेही ३१ मनहींमनमनावअकुलानी होहुप्रसन्नमहेशभवानी ३२ करहुसफलअपनीसेवकाई करिहितहरहुचापगरुवाई ३३ गणनायकबरदायकदेवाआजुहिलागिकीन्हितबसेवा ३४ बारबारबिनतीसुनिमोरी करहुचापगरुवाईथोरी ३५ दो० ॥ देखि

वाणलिहेहैं तेहिते सकलभुवन आपनेवशकीन है ( २८ ) हे देवि ऐसे जानिकै संशय त्यागकरहु श्रीरामचन्द्र धनुषको जरूर भंजहिंगे ( २९ ) हे पार्व्वती सखीके बचनसुनिकै रानीके प्रतीतिभई विषादमिटिगयो सखीके वचनबिषे अतिप्रीतिबाढ़ी ( ३० ) तबकही तेहिसमयमें श्रीरामचन्द्र को श्रीजानकीजी भयसंयुक्त देखतीभई जेहितेहि देवताकी बिनयकरतीहैं जो कोईकहै कि श्रीजानकीजी तौ त्रिकालज्ञ हैं इहां भय क्यों करती हैं तहां शृंगाररसविषे शांतरस लय ह्वै जात है यहिप्रसंगमें बियोग संयोगशृंगारको योग है आगे संयोग की मुख्यताहोइगी ताते श्रीजानकीजीके मनको संकल्प सबउचित है ताते सभय बिनयकरतीहैं कि धनुषटूटै कि न टूटै ( ३१ ) श्रीजानकीजी अपनेमनमें अकुलाइकै मनावतीहैं हेमहेश भवानी प्रसन्नहोहु ( ३२ ) हम आपुकी सेवकाई कीन्हि है ताको सुफलकरहु हमारो हितकरौ चापकीगरुवाई हरहु ( ३३ ) हेगणनायक समस्त बरदायक देव आजुहीलगि तुम्हारी सेवाकीन्हि है ( ३४ ) हे गणेश बारबार हमारी बिनतीसुनहु चापकी गरुवाई थोरीकरहु ( ३५ ) दोहार्थ॥ बारबार रघुबीरके तनदेखिकै धीरजधरिकै देवतनको मनावतीहैं विकहा दुइको दोऊनेत्रविषे प्रेम जलभरिरह्यो है शरीर पुलकिरह्योहै ( ३६ ) नीकीप्रकार रघुनाथजी को नयनभरि शोभादेखिकै पुनि पिताकर प्रणसमुझिकै मनमेंक्षोभभयो इहां क्षोभकही आवरणको रघुनाथजीकीशोभा के सुखविषे जनक को प्रण मनमें आवरणकरिदियो ( ३७ ) जानकीजीपरमदिव्य बियोग शृंगारविषे व्यथा करती हैं यामें बाह्यान्तर की समस्त

देखिरघुबीरतन सुरमनावधरिधीर भरेबिलोचनप्रेमजल पुलकावलीशरीर ३६ चौ०॥ नीकेनिरखिनयनभरिशोभा पितुप्रणसुमिरिबहुरिमनक्षोभा ३७ अहहतातदारुणप्रणठानी समुझतनहिंकछुलाभनहानी ३८ सचिवसभयशिषदेइनकोई बुधसमाजबड़अनुचितहोई ३९ कहँधनुकुलिशहुचाहिकठोरा कहँश्यामलमृदुगातकिशोरा ४० बिधिकेहिभांतिधरौंउरधीरा सिरससुमनकत बेधियहीरा ४१ सकलसभाकैमतिभइभोरी अबमोहिंशम्भुचापगतितोरी ४२ निजजड़तालोगनपरडारी होहुहरुअरघुपतिहिनिहारी ४३ अतिपरितापसीयमनमाहीं लवनिमेषजनुयुगसमजाहीं ४४ दो० ॥ प्रभुहिचितयपुनिचितयमहि राजतलोचनलोल

क्रिया वृत्तिलय ह्वै जाती है यहको यहै स्वरूप है अहहकही अतिक्लेश ते मनमें कहतीहैं हेतात तुमदारुण प्रणकीन तुमको कछुलाभ हानि नहीं समुझिपर्यो ( ३८ ) देखिये तौ अनेक बुद्धिमान् सचिव राजा के संगहैं पर भयकरिकै कोई शिक्षानहींकरै ताते बुधनके समाजमें यहबड़ाअनुचितहै ( ३९ ) काहेते कहां कुलिशहु ते अधिक कठोर धनुष चाहिकहीनिश्चयकरिकै अरु कहां श्यामल मृदुगात मध्यकिशोर मूर्त्ति ( ४० ) हे विधाता मैं कौनीप्रकार ते उरमें धीरजधरौं सिरसके सुमन ते कहूं हीराबेधाजात है सिरसकही सिरसा तेहिकोफूल अतिसूक्ष्म नर्महोतहै ( ४१ ) अब मैंने जाना कि सकल सभाकैमतिभोरी ह्वैगईहै ताते हे महेश केचापअब मोको तेरीगति है ( ४२ ) हे चाप अपनीजड़ता कठोरता अरु गरुआई सबलोगनपर डारिकै श्रीरघुनाथजी को देखिकै अतिहलुक ह्वैजाहु ( ४३ ) श्रीजानकीजी के मनविषे अतिपरितापकही अतिबिरहको क्लेश सो एकएक निमेषलव सैकरों युग की समान जाते हैं ( ४४ ) दोहार्थ ॥ तहां हे पार्वती श्रीजानकीजी प्रभुकीओर पुनि महिकीओर देखतीहैं बियोगशृंगार की यहीदशाहै तहां दोउदिशि विषे श्रीजानकीजीके नेत्रनकीलोलता कैसी शोभित है जनु चन्द्रमाके मण्डलविषे अमृतके डोलकही युगकुण्ड हैं तेहिविषे जनु कामदुइमीन ह्वैकै कलोलकरतहैं तहां मुखचन्द्रबन्दीमण्डल है नेत्रसुधा कुण्डपुतरी मानहुं काम की युगमीन किंतु रामचन्द्रको स्वरूप नीलमणिइव अरु मणिमय रंगभूमि तहां श्रीरामचन्द्रचन्द्र हैं रंगभूमि चन्द्रमण्डल है उभयकी एकता जनु डोलकही सुधा को कुण्ड है तेहिविषे कामयुग मीनरूप ह्वैकै कल्लोलकरतेहैं श्रीरामचन्द्र के रूपमें अरु रंगभूमि में श्रीजानकीजी के नेत्र अति चपल झलझलाइरहे हैं गुरुजनन की लाजदरशकी आतुरताते आश्चर्य शोभा पावत हैं ( ४५ ) वियोगशृङ्गार की दशायोग सम्बन्धकहे अबदाश्यरस कहते हैं तहां

**खेलतमनसिजमीनयुग जनुबिधुमण्डलडोल ४५ गिराअनिलमुखपंकजरोकी प्रकटनिलाजनिशाअवलोकी ४६ लोचनजलरहलोचनकोना मानहुंपरमकृपणकरसोना ४७ सकुचीब्याकुलताबड़िजानी धरिधीरजप्रतीतिउरआनी ४८ तनमनबचनमोरप्रणसांचा रघुपतिपदसरोजमनरांचा ४९ तौभगवानसकलउरबासी करहिंमोहिंरघुपतिकैदासी ५० जाकरजेहिपरसत्यसनेहू सोतेहिमिलइ नकछुसंदेहू ५१ प्रभुतनचितैप्रेमप्रणठाना कृपानिधानरामसबजाना ५२ सियहिबिलोकितकेउधनुकैसे चितवगरुड़लघुब्या-**

श्रीजानकीजी गिराअलिनिकही भ्रामरीभई मुखपंकजभयो गुरुजनकी लज्जानिशाभई जानकीजी बोलिनहींसकतीं ( ४६ ) लोचन से प्रेमभरे जलसमाज की लाज ते गिरिनहींसकता लोचनके कोनमें भरिरहे हैं कैसे गहिरहे हैं मानहुं परमकृपण कोसोन है ( ४७ ) अपने हृदय में अपने को बड़ी व्याकुलता जानिकै कछु कहिबेको मन उमग्यो तब तुरंत संकोचवश धीरजको धरिकै प्रतीति उरमें ल्यावती भई ( ४८ ) जोतन मन बचनते मोरमन सांचा ह्वैकै रघुपतिकेपद पद्मबिषे रचाहोय ( ४९ ) तौ भगवान् जो सबके उरअंतरके बासी हैं तेरघुपतिकै दासी करहिंगे यामें यह अभिप्रायहै कि रघुपति मोको आपनिदासी करहिंगे काहेते सबके अंतष्करण की प्रीति जानते हैं इहां अभिप्रायमें शांतरस सूचित होतहै ( ५० ) अरु शास्त्र यह सत्य कहतहै कि जाकर जेहिपर सत्यस्नेहहै सो तेहिको मिलताहै यामें संदेह नहीं है ( ५१ ) श्री जानकीजी प्रभु तन चितै कै प्रेमको प्रण ठानतीभई तब कृपानिधान श्रीरामचन्द्र सब जानतेभये ( ५२ ) तब श्रीजानकीजीकी आर्तता देखिकै धनुषको श्रीरामचन्द्रने कैसेतक्यउ जैसे गरुड़ लघुब्यालको निशंकतकै ( ५३ ) दोहार्थ ॥ तब लषणलख्यउ कि रघुबंशमणि हरकोदंड ताकेउ तोराचाहते हैं तब गातपुलकिकै चरणते ब्रह्मांडको दाबिकै बचन बोले ( ५४ ) लक्ष्मणजो ऐसीबाणी बोलेयामें जेहिको आज्ञादेतेहैं ते सबकोई सुनै है हेदिशि कुंजरहु कमठ अहिराज बराह पृथ्वीको धीरजधरिकै धरहु डोलै न पावै ( ५५ ) श्रीरामचन्द्रशंकरकरधनुष तोराचाहतेहैं धनुषकेसंग महिउलटि न जाइ ताते हमारी आज्ञामानिकै तुम सजगहोहु सँभारहु धरहु इहां यहसमुझि परत है कियेते सबके अधिष्ठाता श्रीलक्ष्मणजी हैं ताते आज्ञादेते हैं ( ५६ ) हे गरुड़

लहिजैसे ५३ दो०॥ लषणलख्यउरघुबंशमणि ताक्यउहरकोदंड पुलकिगातबोलेबचन चरणचापिब्रह्माण्ड ५४ चौ०॥ दिशिकुंजरहुकमठअहिकोला धरहुधरणिधरिधीरनडोला ५५ रामचहहिंशंकरधनुतोरा सजगहोहुसुनिआयसुमोरा ५६ चापसमीप रामजबआये नरनारिनसुरसुकृतमनाये ५७ सबकरसंशयअरुअज्ञाना मन्दमहीपनकरअभिमाना ५८ भृगुपतिकेरिगर्बगरुवाई सुरमुनिबरनकेरिकदराई ५९ सियकरशोचजनकपछितावा रानिनकरदारुणदुखदावा ६० शम्भुचापबड़वोहितपाई चढ़ेजाइसब संगबनाई ६१ रामबाहुबलसिन्धुअपारा चाहतपारनकोउकनिहारा ६२ दो० ॥ रामबिलोकेलोगसब चित्रलिखेसेदेखि चितई

जब श्रीरामचन्द्र चापके समीप आये तब समस्त नरनारि सुरसुकृतमनावतेभये ( ५७ ) तहां जिनकेसंशयहै कि बिधाता धौं काकरै अरु जिनको अज्ञानहै कि ये धनुषको का तोरिसकैंगे अरु मन्दमहीपनकर अभिमानजोहै ( ५८ ) अरु भृगुपतिके गर्बकर गरुवाई जो है देवतन अरु मुनिबरनकी कादर्यता जो है कि ये बालकहैं धनुष कैसेटूटैगो ( ५९ ) अरु श्रीजानकीजीकोशोच जनककर पछितावा अरु रानिनकर दारुणदुख दावा रूप ( ६० ) शम्भुके चापको बड़ोवोहित जानिकै ये सब संगबनाईकहीमिलिकै जो कहिआये तिनसबके अन्तष्करणके वृत्ति तहां जहाजरूप धनुष तापर आरूढ़भयेजाइ ( ६१ ) तहां श्रीरामचन्द्रके बाहुकोबल समुद्रतामें धनुष वोहित तापर सबचढ़े पारजावा चाहत हैं पर कण्डहारकही करणवार कोई नहीं है यामें यहअभिप्राय है कि श्रीरामचन्द्र के भुजनकेबलके समुद्रको को पारपाइसकै है जो कोई बड़ेबड़े बीर तेजस्वी महान् पारकी इच्छाराखहिं सो बीचहीमें डूबिजाते हैं पारनहीं पावते ( ६२ ) दोहार्थ ॥ तब श्रीरामचन्द्र ने सबलोगन को देखा कि ये तौ सबचिन्ता करिकै चित्रसे लिखे हैं देहाभ्यास विस्मरण है पर कृपाकेमन्दिर श्रीरामचन्द्र ने श्रीजानकीजी को विशेष बिकलदेखा ( ६३ ) श्रीरामचन्द्र ने वैदेही को अतिबिकलदेखा एकएक निमिष कल्पसमबीतत है ( ६४ ) श्रीरामचन्द्र बिचारते हैं कि जो अति तृषित हैं अरु बारिबिना तनको त्यागिदियो फिर जो सुधाकोतड़ागमिल्यो तौ का भयो सुधानाम जलको ( ६५ ) पुनि कृषीकही धान इत्यादिक जो मृर्य्यकातपनितेबनाइ सूखिकै जरिगये फिर बर्षाभयेते कौनप्रयोजनहै ताते जो कोई कार्य्यबिषेसयपर चूकिगयो कार्य्यनष्ट होइगयो तौ पछिताव वृथाहै ( ६६ ) ऐसा

सीयकृपायतन जानीबिकलबिशेषि ६३ चौ०॥ देखीबिपुलबिकलबैदेही निमिषबिहातकल्पसमतेही ६४ तृषितबारिबिनु जोतनुत्यागा मुयेकरहिंकासुधातड़ागा ६५ काबर्षाजोकृषीसुखाने समयचूकिपुनिकापछिताने ६६ असजियजानिजानकिहि देखी प्रभुपुलकेलखिप्रीतिबिशेषी ६७ गुरुहिप्रणाममनहिंमनकीन्हा अतिलाघवउठाइधनुलीन्हा ६८ दमक्यउदामिनिजिमि घनलयऊ पुनिधनुनभमण्डलसमभयऊ ६९ लेतचढ़ावतखैंचतगाढ़े काहुनलखादीखसबठाढ़े ७० त्यहिक्षणमध्यरामधनुतोरा

हृदयमेंजानिकै श्रीजानकीजीकी अतिप्रीति अपनेबिषे देखिकै प्रभुपुलके ( ६७ ) तब श्रीरामचन्द्र ने मनहिंमें गुरुनके प्रणामकरिकै अति लाघव कही अतिशीघ्रते धनुषको उठाइलीन्ह ( ६८ ) अन्यच्च दोहा॥ पियलखितियकीमाधुरी तृणतोरनकीचाह ॥ झुकितृणधनुकरखण्डिगहि रसशृँगार कीलाह १ जब श्रीरघुनाथजीने धनुषको उठाइलीन्ह तब श्रीरामचन्द्रकोघनश्याम स्वरूप बिषे दामिनीइव दमक्यउ पुनि जब खैंच्यउ तब धनुष नभबिषे मण्डलाकारभयो ( ६९ ) जब श्रीरामचन्द्रने धनुषको उठायो दामिनीसम दमक्यउ क्यों तब सबके नेत्रनबिषे चाखाचौंधीह्वैगई तब लेतकै उठावतकै खैंचतकै गाढ़ेकही बलकरतकै ऐसी शीघ्रताभई सबखड़े हैं पर काहूनलेशहू नहींलख्योहै किन्तु लेतचढ़ावतसन्ते बड़ेबड़ेगाढ़े कही त्रिकालज्ञ त्रैलोक्यदृष्टी सिद्ध मुनि नर देव इत्यादिक काहूने लेशहूनहीं लख्यो देखिये तौ क्षुद्र इन्द्रजालविद्याको कोई नहीं लखिसकै अरु

श्रीरामचन्द्रकी विद्याको कौनलखिसकैहै छुअतैटूटिगयो ( ७० ) त्यहि अवसरक्षणमात्रमें श्रीरामचन्द्रने मध्यसे धनुषतोरिकैं डारिदीन्ह त्यहि तोरिबेको महाघोर कठोररव तेहिकीध्वनि तीनिहूंभुवनमें परिपूर्ण भरिरही है ( ७१ ) छन्दार्थ ॥ धनुष तूरिबेकोरव अतिघोर कठोर सम्पूर्ण भुवनमें भरिरहा सो रवसुनिकैं सूर्यकेघोड़े राहछोंड़िभागे महिअति कम्पायमानभई दिशनके दिग्गज दांतन अरु पगनते दाबतेहैं चिक्कारकरतेहैं अतिशोर होइरहा है अरु अहिराज कलमलातेहैं औ हजारहू मुखनके दशननते कमठकीपीठिपकरते हैं पकरिनहींजाइ पृष्ठिपर दशननकी लीकह्वैजाती है मानहु श्रीरामजानकी के स्वयम्बरको यशलिखतेहैं अरु कमठ कलमलाइकै चारिहुपगनके चंगुल अरु बदनते वाराहको पकरतेहैं अरु बाराह अकुलाइकै शब्दकरिकै चारिहूपगन अरु कांखते पाताल अरु भूमिको पकरते हैं ऐसहीसब कलमलाइरहेहैं ( ७२ ) अरु सुरअसुरमुनि इत्यादिक अनुबहिरह्वैगये

भरेभुवनधुनिघोरकठोरा ७१ हरिगीतिकाछन्द ॥ भरिभुवनघोरकठोररवरबिबाजितजिमारगचले ॥ चिक्करहिंदिग्गजडोलमहि अहिकोलकूरमकलमले ७२ सुरअसुरमुनिकरकानदीन्हेसकलबिकलबिचारहीं ॥ कोदण्डखंड्यउरामतुलसीजयतिबचनउचारहीं ७३ सो०॥ शंकरचापजहाज सागररघुपतिबाहुबल बूड़ीसकलसमाज चढ़ेजेप्रथमहिंमोहबश ७४॥ * * *

अपने अपने काननमें अपनी अपनी अंगुलीदाबिकै सकल बिकलह्वैकैबिचारकरते हैं हे बिधाता यह का होतहै देवतनके बिमान आकाशमें भगे भगे फिरते हैं तब ब्रह्माशिवादिक बिचारिकै भुजाउठाइकै पुकारिकै कहते हैं कि सर्बमिलि धीरजधरौ श्रीरामचन्द्रने कोदण्ड को खण्डनकीन्ह है त्यहिकोरवहै तब सुनिकै धीरजधरिकै जयतिबचन उच्चारणाकरिकै कहते हैं यह श्रीगोसाईं तुलसीदासजी कहते हैं कि धनुषभंग में विचित्ररचना भई ( ७३ ) सोरठार्थ॥ श्रीरामचन्द्रके भुजनको बलसमुद्रहै राजाजनककोप्रण गम्भीरभँवरहै अरु शङ्करकोचाप जहाजहै त्यहिभँवरबिषे जे प्रथम मोहकेबशचढ़े तिनसंयुक्तडूबगये कार्त्तिकबदीप्रतिपदाकोमध्यसूर्य्यसमयमें श्रीरामचन्द्रने धनुषको भंगकीन्ह ( ७४ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वन्सने बालकाण्डे श्रीरामकरधनुषभङ्गस्वयम्बरविजयोनामैकोनपञ्चाशत्तरङ्गः ४९॥ :: :: ::

दो०॥ लहरिपचासअनन्दप्रभु सियपहिराईमाल ॥ रामचरणसुनिपरशुधर आयेकठिनकराल ५० ॥ हे भरद्वाज प्रभुने चापको दोउखण्ड करिकै महिमें डारिदीन्ह सो देखिकै सबलोग सुखको प्राप्तिभये ( १ ) तहांकौशिकको स्वरूप अतिपावन क्षीरसमुद्रभयो अरु प्रेममय बारिका अवगाह सोहावनभयो ( २ ) श्रीरामचन्द्रको स्वरूप पूर्णचन्द्र सम निहारिकैपुलकावली तरंगनकी माल उठती है अरु समस्त मुनि सज्जन चकोरभये हैं ( ३ ) नभ बिषे गहगह कही गम्भीर बहु निशान भेरी मृदंग इत्यादिकदेवनके बाजाबजे देवबधू नृत्यपूर्व्वक गानकरतीहैं ( ४ ) ब्रह्मादिक देवता सिद्धजन मुनीशजन प्रभुकी प्रशंसा करते हैं आशीर्वाद देते हैं ( ५ ) अरुसर्वदेव कल्पवृक्षके रंगरंग के सुमन माल अरु छूठेफूलनकेमाल के माल

चौ० ॥ प्रभुदोउचापखण्डमहिडारे देखिलोगसबभयेसुखारे १ कौशिकरूपपयोनिधिपावन प्रेमवारिअवगाहसोहावन २ राम रूपराकेशनिहारी बढ़तबीचिपुलकावलिभारी ३ बाजेनभगहगहेनिशाना देवबधूनाचहिंकरिगाना ४ ब्रह्मादिकसुरसिद्धमुनीशा प्रभुहिंप्रशंसहिंदेहिंअशीशा ५ बरषहिंसुमनरंगबहुमाला गावहिं किन्नरगीत रसाला ६ रहीभुवनभरि जयजयबानी धनुषभंगधुनिजातनजानी ७ मुदितकहहिंजहँतहँनरनारी भंज्यउरामशंभुधनुभारी ८ दो०॥ बन्दीमागधसूतगण विरदबदहिंमतिधीर करहिंनिछावरिलोगसबहयगयधनुमणिचीर ९ चौ०॥

झांझमृदंगशंखसहनाई भेरिढोलदुंदुभीसोहाई १० बाजहिंबहुबाजनेसोहाये जहँतहँयुवतिनमंगलगाये ११ सखिनसहितहर्षीअतिरानी सूखतधानपराजनुपानी १२ जनकलह्यउसुखशोचबिहाई पैरतथकेथाहजनुपा-

बर्षाते हैं अरु किन्नर गंधर्व इत्यादिक रसालगीत गावते हैं ( ६ ) अरुसम्पूर्णभुवनमें जयजयकार बाणीभरिरही धनुष के भंगकीधुनि जात न जानी धौं कहांगई किंतु जाकही यमदग्निकेतनय तिनने धनुषभंगकीध्वनिजानी ( ७ ) मुदितकही आनन्दभरे जहांतहां नरनारिकहतेहैं कि श्रीरामचन्द्र शंकर को भारी धनुष भंजतभये ( ८ ) दोहार्थ॥ बन्दीगण जे हैं मागधकही कलावत जे हैं सूतकही पौराणिकजेहैं तिनकेगण बड़ेबड़े मति के धीर श्रीरघुकुल की बिरदावली बदतेहैं अरु सबलोग घोड़े हाथी रथकंचन रत्न अनेकबस्त्रादिक श्रीरामचन्द्रकी निछावरिकरते हैं ( ९ ) झांझ मृदंग शंख सहनाई भेरिढोल दुन्दुभी शोभायमान सितार तमूरा मुरचंग सारंगी बीणा बेणुइत्यादिक अनेकबाजा अतिशोभित पृथक् पृथक् ताल स्वरसंयुक्त एकसंग अतिसुहावने मधुर मधुर बाजते हैं ( १० ) जहँतहँ युवती सम्पूर्ण राग रागिनी से यथायोग्य मंगलगावती हैं ( ११ ) अरु सखिनसंयुक्त रनिवास अतिललित हर्षित है जैसे धानसूखतसन्ते वर्षाको जल यथायोग्य प्राप्तभयो ( १२ ) अरु राजाजनक निशोच सुखको प्राप्तिभये जैसे अथाहजल में कोई पैरतसन्ते डूबनेलग्यो तब तुरन्त थाहपायो जैसे उसको आनन्द सुखभयो तैसे जनकजूको सुखभयो ( १३ ) धनुषटूटे ते अज्ञानीराजा श्रीहतह्वैगये जैसे दिवसविषे दीपकन की छबिछूटिजाती है ( १४ ) श्रीजानकीजीको जो सुखभयो सोक्यहिभांति ते वरण्योजाइ जनुवर्षदिनकी तृषितचातृकी स्वातीकेजलकोप्राप्तिभई ( १५ ) श्रीरामचन्द्र को बिलोकतसन्ते लक्ष्मणजूको कैसे सुखहोतहै जैसे चकोर को किशोर पूर्णचन्द्र देखत है ( १६ ) त्यहिआनन्द मंगल के समयविषेशतानन्द की आज्ञा अरु रनिवास की प्रेरणाते श्रीजानकीजी श्रीरघुनाथ

ई १३ श्रीहतभयेभूपधनुटूटे जैसेदिवसदियाछबिछूटे १४ सियसुखहियबरणियक्यहिभांती जिमिचातृकीपाइजलस्वाती १५ रामहिलषणबिलोकहिंकैसे शशिहिंचकोरकिशोरकजैसे १६ शतानंदतबआयसुदीन्हा सीतागमनरामपहँकीन्हा १७ दो०॥ संगमखीसुंदरिचतुर गावहिंमंगलचार गवनीराजमरालगति सुखमाअंगअपार १८ चौ०॥ सखिनमध्यसियसोहतिकैसी छबिगणमध्यमहाछबिजैसी १९ करकम लनजयमालसोहाई विश्वविजयशोभाज्यहिपाई २० तनसकोचमनपरमउछाहू गूढ़प्रेमलखिपरैनकाहू २१

जी के समीप गमनकरतीभई ( १७ ) दोहार्थ ॥ संगविषे सखिनकीसमाज अनेकनरति ते अतिसुन्दरी आदि अन्त मध्य में नवल किशोरी वय अनेकन शारदाकी चतुराई षोड़शौश्रृङ्गारकीन्हे सम्पूर्ण राग रागिनी स्वरतालसंयुक्त ग्राम भेद मूर्छनाप्रबन्धइत्यादिक गानकरत मंगलाचार अति अपार आनन्दसंयुक्त राजमरालकीगतिचलतभई ( १८ ) सम्पूर्णसखिनके मध्यमें श्रीजानकीजी कैसी शोभित हैं मानहु छविके गणके मध्य में महाछबि शोभितहोइ पुनि जैसे निर्मल नक्षत्रनकेमध्यमें निर्मलचन्द्रमाशोभितहोइ महाछबिकही सम्पूर्ण छबिनकोछबिदेइ अनेकमणिनके मध्य में जैसे चिंतामणि शोभितहोइ तैसे ( १९ ) श्रीजानकीजीके करकमलविषे जयमाल शोभित है विश्वके विजयकरनहारी जो शोभा है त्यहिं ज्यहि जयमाला ते शोभापाई है किंतु विश्वबिजय जो श्रीजानकीजीहैं ते ज्यहि जयमाल ते शोभापावती हैं काहेते जयमालकरिकै बिवाहहोत

है किंतु विश्वविजय जो श्रीरामचन्द्र को वीररस है ज्यहि जयमाल ते शोभितहोत है काहेते जयमालकरिकै श्रीजानकीजी की प्राप्ति है इहां भविष्य वर्तमान एकहीसंग है किंतु श्रीरामचन्द्र श्रीजानकीजी करिकै सम्पूर्ण विश्वके विजय की शोभा ज्यहिजयमालाको प्राप्तिहै काहेते मणिइवसुमन पंचरंग की जयमाला है जनु मदन श्रीरामचन्द्रकी शोभा

देखिकै अपनी शोभाहारिकै लज्जितह्वैकै अपने पांचहू सुमनबाणकी जयमाला बनाइकै श्रीजानकीजीके करकमलकरिकै श्रीरामचन्द्रको समर्पा चहतहै किधौं जयमाल शृंगाररसके पांचहू आलम्बन सुमनरूप हैं उद्दीपन उत्कण्ठा अभीसार प्रीति सम्भोग कि धौं पञ्चरस भावको जयमाल है शान्त दास्य वात्सल्य सख्य शृङ्गार काहेते सब रसिकनके मनको बिजय करत है ताते बिश्वबिजय शोभा जेहि पाई अरु कहूं छाई पाठ है सो जयमाला बिषे बिश्वके विजयकी शोभा छाइ रही

जायसमीपरामछबिदेखी रहिजनुकुंवरिचित्रअवरेखी २२ चतुरसखीलखिकहाबुझाई पहिरावहुजयमालसुहाई २३ सुनत युगुलकरमालउठाई प्रेमविवशपहिराइनजाई २४ सोहतजनुयुगजलजसनाला शशिहिसभीतदेतजयमाला २५ गावहिंछबिअवलोकिसहेली सियजयमालरामउरमेली २६ सो० ॥ रघुबरउरजयमाल देखिदेवबर्षहिंसुमन॥ सकुचेसकलभुवाल जिमिबिलोकिरबिकुमुदगण २७ चौ०॥ पुरअरुब्योमबाजनेबाजे खलभये मलिनसाधुसबगाजे २८ सुरकिन्नरनरनागमुनीशा जयजयजय

है ( २० ) श्रीजानकीजी के गुरुजननकी समाज करिकै तनको सङ्कोचहै मनबिषे परमउत्सवहै गूढ़कही लज्जाकरिकै छिपा प्रेम सो काहूको लखि नहीं परै ( २१ ) श्रीजानकीजी श्रीरामचन्द्रके समीप जाइकै छबि देखिकैचित्रवत् रहिगईं ( २२ ) जब चतुर सखिन लखा कि जानकीजी तौ श्रीरामकी शोभा स्वरूपाकार ह्वैकै बिदेहदशाको प्राप्तभईं तब समुझाइकै कहती हैं कि रूपासक्त न होहु समय औरहै अब तुरन्त सुन्दर जयमाला श्री रामचन्द्रको पहिरावहु ( २३ ) मङ्गलमय वचनसुनिकै दोऊकरते जयमालउठावतीभई तथापि संयोग शृंगारको संयोगहै तेहिके प्रेमबशह्वैकै जयमाल पहिराई नहींजाइ तहां दोऊकरउठेते जयमाल कैसी शोभितहै ( २४ ) जनु सनाल कही नाल सहित द्वै कमल जनु शशिके भीतिते दोऊ करनते जयमाल देतिहै जानकीजीकी तहां दोऊभुज नालहैं करकमली कमलहैं कमली कही हथौरी अरु अंगुली दलहैं दोऊकरकी अंगुलिनते जयमाल ग्रहणकिये हैं ताते कर सम्पुटह्वैरहे हैं जनु रामचन्द्रको देखिकै भयकरिकैकमल संकुचित ह्वैरहेहैं ऐसी भुजनकीशोभा ते श्रीजानकीजी श्रीरामचंद्र को जयमालादेती हैं ( २५ ) ऐसही अतिहर्ष भरी श्रीजानकीजी श्रीरामचंद्रके उरमें जयमाला मेलतीभई सो छबि अवलोकि कै सखी मंगल गान करती हैं ( २६ ) सोरठा०॥ श्रीरघुबरके उरबिषे अति सुन्दर जयमाला देखिकै देवता सुमन बर्षते हैं तहां मलीन राजा सकुचिगये जैसे सूर्य्यके प्रकाशते कुमुदकेगण सम्पुटितह्वै जाते हैं ( २७ ) पुर अरु ब्योम बिषे बाजनकीध्वनि ह्वैरही है खल मलिनभये सब साधु आनन्दभरे गाजतेहैं ( २८ ) सुर किन्नर नर नाग मुनीश जयजयकार कहिकै आशीर्व्याददेते हैं ( २९ ) देवतनकी बधूटी नाचती गावती हैं बारबार फूलनकी अवली बृष्टिकरती हैं ( ३० ) जहांतहां ब्राह्मण वेदध्वनि करते हैं अरु बंदीजनविरदावली उच्चारण करते हैं ( ३१ ) चापतोरिकै श्रीरामचन्द्रने श्रीजानकी

कहिदेहिंअशीशा २९ नाचहिंगावहिंबिबुधबधूटी बारबारकुसुमावलिछूटी ३० जहँतहँबिप्रवेदधुनिकरहीं बन्दीविरदावलि उच्चरहीं ३१ महिपातालनाकयशब्यापा रामबरीसियभञ्जेउचापा ३२ करहिंआरतीपुरनरनारी देहिंनिछावरिबित्तबिसारी ३३ सोहतिसियारामकैजोरी छबिशृंगारमनहुँयकठोरी ३४ सखीकहैंप्रभुपदगहुसीता करतिनचरणपरसअतिभीता ३५ दो० ॥ गौतमतियगतिसुरतिकरि नहिंपरसतिपदपानि मनबिहँसेरघुबंशमणि प्रीतिअलौकिकजानि ३६ चौ० ॥ तबसियदेखिभूपअभि

जीको बरयउ यह उज्ज्वल यशको प्रकाश त्रैलोक्यबिषे महि अरु पातालमें ब्यापि रह्योहै ( ३२ ) पुरके नर नारि बित्त बिसारिकै आरती करते हैं बित्त बिसारि कही मन वचन कर्म्म सर्व्वस धन धर्म्मादिकन को श्रीजानकी अरु राम के सबकी सुधि रहित निछावरि कीन्ह पुनि युग कृपाते भरइ देखियतहै ( ३३ ) रंगभूमिके मध्य बिषे श्रीजनकनन्दिनी

अरु श्रीरघुनन्दनजीकी जोरी अतिशोभित है मानहुछवि अरु शृंगारकी मूर्त्ति एक ठौर शोभित है यहिसमय को उत्सव अरु परमानन्द सुख अरु युगुलजोरी की शोभापर रामचरण कहते हैं कि हमारी मतिसे त्रैलोक्यकी शोभानिछावरि है ( ३४ ) तब चतुर सखी कहतीहैं हे जानकी प्रभुके पद पङ्कजदोऊ करन ते स्पर्श करहु तहां हे पार्व्वती अति भीति ते जानकीजी प्रभु के पद नहीं स्पर्श करतीं इहां अति भीति को अर्त्थ दोहा में सिद्धिहोइगो ( ३५ ) दोहार्थ॥ पदपाणि काहेतेनहीं स्पर्शकरतीं गौतमकी तियाकी गति सुरति करिकै तब रघुबंशमणि अलौकिकप्रीति जानिकै बिहँसे इहां योग बियोग शृंगारकी दशा एकहीसंगहोती है तहां श्रीजानकीजी के मन बिषे बियोगको अभावहै अरु संयोगविषे बिहितहावकीप्राप्तिहै तातेगौतमकी तियकीगति सुरतिकीन्ह कि इनपदनको परसिकै गौतमकीतिय परमपदको प्राप्तिभई किंतु निजपतिलोककोगई इनचरणनको ऐसईप्रभावहै कदाचित् ऐसे मोहूंको न होइ यहिभयकरिकै पदपाणिते नहीं परसतीं यह बिचार करती हैं कि पदपाणि परसों अरु गौतमकी तियकीगति ऐसीमोहूंको प्राप्तिहोइ तौ विक्षेपकोप्राप्तहोउँ अरु सखी लौकिक वैदिकरीति करिकै पदपरसिबे को कहती हैं ताते इनके संयोगहेतु मैंने लोक वेद दूनोंको त्यागकीन्ह ताते जानकीजी श्रीरघुनाथजी के पद नहीं स्पर्शकरतीं यह लौकिकरहित अलौकिकप्रीति अतिगूढ़ लखिकै रघुबंशमणि मनविषेबिहँसे यहिप्रकरणविषे श्रीजानकीजीविषे मानसीव्यथा आरोपणाकरी शृङ्गाररसकै यहीदशा है अरु जो कहते हैं कि जानकीजीने गौतमकीतियकी गति यहसुरतिकीन्ह कि पाषाणकी स्त्री ह्वैगई ताते जो मैं पदपरसौं

**लाषे कूरकपूतमूढ़मनमाषे ३७ उठिउठिपहिरिसनाहअभागे जहँतहँगालबजावनलागे ३८ लेहुछड़ायसीयकहँकोऊ ॥ धरि बांधहुनृपबालकदोऊ ३९ तोरेधनुषकाजनहिंसरई जीवतहमहिंकुंवरिकोबरई ४० जोबिदेहकछुकरहिंसहाई जीतहुसमरस-**

तौ मेरे कंकण मुद्रिकाकी मणि सब स्त्रीह्वैजाहिंगी जो यह सिद्धिकरियेतौ जो कंकण मुद्रिकाकीमणि स्त्री ह्वैजाइ तो यामें जानकीजीकी का हरकति है श्रीजानकी जो तौ पटबन्धनी परममुख्य हैं अरु श्रीजानकीजीकीआज्ञानुकूल अनेकसखी दासी हैं अरु अनेकहोहिं तौ यामें श्रीजानकीजीको कौनभय है जो कहो कि कंकणमुद्रिकाकी मणि अंगसंगीहै सवतिभावको प्राप्तहोहिंगी तौ सम्पूर्ण सखी जानकीजीको अंगही हैं अरु अहल्या पाषाण ते स्त्री ह्वैकै परमपद को प्राप्तिभई तहां जो कंकणमुद्रिकाकीमणि स्त्री ह्वैजाहिं तौ ये भी परमपदको प्राप्तहोहिं तौ श्रीजानकीजीको कौनअकार्य है अनेकन हेममणिनमय अलंकार भरेधरेहैं जब चाहैं तबतौन तय्यार है ताते यह अर्थ कल्पना है ( ३६ ) तब श्रीजानकीजीको देखिकै मिथ्या अभिलाषकरिकै कूरकपूत मूढ़भूप मन में माखे ( ३७ ) उठिउठि सनाहपहिरिकै अभागे जहांतहां गालबजावनेलागे ( ३८ ) ऐसे मूर्ख कहते हैं कि जानकीजीको छीनिलेहु अरु दोऊबालकनको बांधिलेहु ( ३९ ) धनुषकेतोरे ते कार्यसिद्धह्वैगे जो हमारे जियत कुंवरिको बिवाहै गो ( ४० ) मूर्ख राजा बोलते हैं कि जो विदेह इनकी कछुसहायकरैं तोउनकेसहित इनको समर में जीतिलेहु ( ४१ ) मूर्खराजनकी वाणीसुनिकै साधुराजाबोले हेमूर्खहु राजनकीसमाजमें तुम्हारीलज्जालजायजाती है अरु तुमको धिक्कारनहींआवती ( ४२ ) तुम्हारा वल प्रताप वीरता बड़ाई अरु नाक सो पिनाकहिके संगगई ( ४३ ) जो धनुष तोरिबे में बीरता तुम कीन्हि है सोई बीरता है कि और कहूंपाई है ऐसेही बुद्धि ते बिधाता ने तुम्हारेमुंह में स्याहीलगाई है ( ४४ ) दोहार्थ ॥ हे अभागिहुईर्षा मद कोह को तजिकै श्रीरामचन्द्र को नयनभरि देखहु लक्ष्मण जू को रोष प्रबलपावक तामें पतंग जनिहोहु ( ४५ ) साधुराजा कहते हैं हे मूर्खहु तुम्हारी बासना कैसी बृथा है जैसे गरुड़ के यज्ञभाग को काग

**हितदोउभाई ४१ साधुभूपबोलेसुनिबानी राजसमाजहिलाजलजानी ४२ बलप्रतापबीरताबड़ाई नाकपिनाकहिसंगसिधाई ४३ सोइशूरताकिअबकहुंपाई असिबुधितवबिधिमुंहमसिलाई ४४ दो०॥ देखहुरामहिनयनभरि तजिईर्षामदकोहु लषणरोषपावक प्रबलजानिशलभजनिहोहु ४५ चौ० बैनतेयबलिजिमिचहकागा जिमिशशिचहैनागअरिभागा ४६ जिमिचहकुशलअकारण कोही**

सुखसम्पदाचहैशिवद्रोही ४७ लोभीलोलुपकीरतिचहई निकलंकताकिकामीलहई ४८ हरिपदबिमुखपरमगतिचाहा तसतुम्हारलालचनरनाहा ४९ कोलाहलसुनिसीयसकानीसखील्यवाइगईजहँरानी ५० रामसुभायचलेगुरुपाहीं सियसनेहबरणतमनमाहीं ५१ रानिनसहितशोचबशसीया अबधौंबिधिहिकहाकरणीया ५२ नृपनबचनसुनिइतउतबकहीं लषणरामडरबो-

चाहै अरु जैसे शशाकही खरहा सिंहके भागको चाहै ( ४६ ) पुनि अकारण क्रोधीजेहैं ते जैसे अपनी कुशल चाहैं अरु शिवसे द्रोहकरते हैं पुनि सुखसम्पदा चाहते हैं ते बड़ेमूर्खहैं ( ४७ ) अरु जैसे लोभी अरु लोलुपकही झूंठे ये दोऊ वृथाकीर्त्तिको चाहते हैं अरु जैसे कामी चाहते हैं कि मैं निष्कलंकरहौं ( ४८ ) अरु हरिकेपदते बिमुखहैं परन्तु परमपदकोचाहते हैं हेराजहु ऐसीही तुम्हारीबृथा लालसा है ( ४९ ) राजन के गलवा को कोलाहलसुनिकै श्रीजानकीजी सकायउठीं तब सखी रानी के पासकोलेवायलैगईं ( ५० ) तब श्रीरामचन्द्र सहजही गुरुनके समीप को श्री जानकीजी की शोभा अरु स्नेह मनमें वर्णतचले ( ५१ ) श्रीजानकीजीअरु सब रनिवास शोच के बशहैं अबधौं बिधाताको का कर्त्तव्य है ( ५२ ) खल राजाजे हैं ते इतउत बकतेहैं सो सुनिकै लक्ष्मणजी श्रीरामचन्द्र के डरते बोलिनहींसकते हैं ( ५३ ) खल राजाजेहैं ते इतउत बकतेहैं सो सुनिकै लक्ष्मणजू कोपसंयुक्त देखते हैं अरुणनेत्र हैं भृकुटी कुटीलहैं मानहु मत्तगजन के गणको चोप ते सिंह को किशोर देखै है ( ५४ ) मंद महीपन को खरभर देखिकै पुरकी सब नारि गारीदेती हैं ( ५५ ) धनुषकेभंगको शब्दसुनिकै अपने आश्रमते परशुरामचले २ त्यहिअवसरमेंआइ प्राप्तभये कैसे हैं भृगुवंश कमलको बनहै त्यहिके प्रफल्लितकरिबे को पतंगकही सूर्य हैं ( ५६ ) परशुराम को देखिकै सबमहीप सकुचाइगये जैसे बाजके झपटेते बटेर छिपिजाइ ( ५७ ) गौरशरीरविषे विभूति अति शोभित है अरु विशालभालबिषे त्रिपुंड्र बिराजतहै ( ५८ ) शीशविषे जटा

लिनसकहीं ५३ दो०॥ अरुणनयनभृकुटीकुटिल चितवतनृपनसकोप मनहुंमत्तगजगणनिरखिसिंहकिशोरहिचोप ५४ चौ०॥ खरभरदेखिसकलनरनारी सबमिलिदेहिंमहीपनगारी ५५ त्यहिअवसरसुनिशिवधनुभंगा आयेभृगुकुलकमलपतंगा ५६ देखिमहीपसकलसकुचाने बाजझपटजिमिलवालुकाने ५७ गौरशरीरभूतिभलिभ्राजा भालबिशालत्रिपुण्डबिराजा ५८ शीशजटाशशिबदनसुहावा रिसबशकछुकअरुणह्वैआवा ५९ भृकुटीकुटिलनयनरिसिराते सहजहुंचितवतमनहुंरिसाते ६० वृषभकंधउरबाहु बिशाला चारुजनेउमालमृगछाला ६१ कटिमुनिबसनतूणदुइबांधे धनुशरकरकुठारकलकांधे ६२ दो० ॥ शान्तवेषकरणीकठिनबरणिनजाइस्वरूप धरिमुनितनुजनुवीररसआयेजहँसबभूप ६३॥

शोभित है तिनके अग्रभाग दामिनि की द्युतिकोदेते हैं अरु चन्द्रबदनशोभितहै रिसकेवशते कछु अरुणहोइआये हैं ( ५९ ) रिसकेवशते भृकुटी कुटिल ह्वैरही हैं अरु नयनरिसकेसन्ते आरक्त ह्वैरहे हैं जाकीओर सहजहूदेखतेहैं ताको क्रोधित लक्षितहोते हैं ( ६० ) अरु वृषभके ऐसे कन्ध हैं उरभुज विशाल हैं सुन्दर यज्ञोपवीत है जनु धूम्ररंग घनपर तड़ितन की तीनिरेखा हैं अरु मृगनविषे मालसिंह तेहिकी चर्मधारित है किंतु मृगचर्मकी मालाइवधारण है ( ६१ ) कटिविषे मुनिवस्त्र धारणकिये हैं तापरदुइतूण बांधे हैं करविषे धनुबाण है अरु कलकही शोभितकुठार कन्ध विषे है ( ६२ ) शांतरसको तौ वेष है अरु करणीकठिन है यह विलक्षणस्वरूप कहानहींजाइ जनु वीररस मुनिवेष को तनुधरिकै राजनकीसमाजमें आयो हैं ( ६३ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने बालकाण्डे श्रीजानकीकरजयमालग्रहणउत्सव उपरान्त परशुराम आगमन सक्रोधबर्णनन्नामपंचाशत्तरंगः ५० :: :: :: :: :: :: :: ::

दो० ॥ रामचरणपंचासयक लहरिअनन्दअन्हाइ रामलषणपाई बिजय भृगुपतिगेसुखपाइ ५१ भृगुपतिको करालबेष देखिकै सकल राजा भयकरिकैउठे ( १ ) पितासमेत निजनिज नामकहिकै परशुरामजीकोदण्डप्रणाम करने लगे ( २ ) जाको स्वाभाविक अपनोहितजानिकै देखते हैं सो भयकरिकै जानतहै कि हमारी मृत्युभई ( ३ ) तब परशुरामजीकेसमीप जनकजूजाइकै पगमें शिरनाइकै जानकीजीको बोलाइकै प्रणाम करावतेभये ( ४ ) परशुरामने आशीर्बाददीन्ह हर्षसंयुक्त सयानीसखीनिजसमाजकोलैगईं इहां सयानीकही प्रवीण सखिनजाना कि परशुराम

चौ०॥ देखतभृगुपतिवेषकराला उठेसकलभयविकलभुआला १ पितुसमेतकहिकहिनिजनामा लगेकरनसबदण्डप्रणामा २ जेहिसुभायचितवहिंहितजानी सोजानैजनुआयखुटानी ३ जनकबहोरिआइशिरनावा सीयबोलायप्रणामकरावा ४ आशिष दीनसखींहरषानी निजसमाजलैगईंसयानी ५ बिश्वामित्रमिलेपुनिआई पदसरोजमेलेदोउभाई ६ रामलषणदशरथकेढोटा दीनअशीशदेखिभलजोटा ७ रामहिंचितयरहेथकिलोचन रूपअपारमारमदमोचन ८ दो० ॥ बहुरिबिलोकिबिदेहसन कहहुकहाअ

क्रोधितहैं ये कदाचित् शाप न देहिं ( ५ ) पुनि परशुरामजीको विश्वामित्रपरस्पर प्रीतिते मिलेजाइ अरु दोऊ भाइनको परशुरामके पगमें डारते भये ( ६ ) पुनि विश्वामित्र बोले हेमहामुनि अवधपति राजादशरथ तिनके ये दोऊ कुमार हैं अरु ताड़का सुबाहु इत्यादिक राक्षसनको बधकरिकै मेरेयज्ञकी रक्षाकरिकै अपने चरणरजते अहल्याको कृतार्थ करिकै धनुषयज्ञ देखिबेको आयेहैं तहां म्वहिंसमेत दोऊ कुमारनको आपहूको दर्शन भयो यहबड़ी लाभभई इहां विश्वामित्रकी बाणीविषे अनेकन अभिप्रायहैं को कहिसकै तहां परशुरामजी ने दोऊ कुमारनकी अतिशोभा देखिकै आशीर्वाद दीन कि तुम चिरंजीव सदाजयमानरहौ परशुरामके आशीर्वादमें अनेकन अभिप्राय हैं आशीर्वादके संगही परशुरामजूको ईश्वरत्व श्रीरामचन्द्र विषे प्राप्तभयोजाइ कैसे जैसे मुखके द्वारह्वैकै पवन हृदय में प्रवेश करै ( ७ ) तहां परशुरामजीके श्रीरामचन्द्रको स्वरूपदेखिकै नेत्रनकी पलकैं थकिरहीं श्रीरामचन्द्रके रूपकी अपार शोभा सो कोटिनमार की शोभाके समुद्रको हरतिहै सो शोभा परशुरामके देखत अवलोकनिकीराह ह्वैकै परशुरामजी को ब्रह्मतेज श्रीरामचन्द्र विषे प्राप्तभयो पुनि पश्चात्तपको जाहिंगे अरु आपुतौ सदाशुद्ध हैं ताते विश्वामित्रकी वाणी में ध्वनि अच्छी तरह न जाना काहेते श्रीरामचन्द्रजी की शोभा अच्छी तरह देखिरहे ( ८ ) दोहार्थ॥ तहां श्रीरामचन्द्रजीको अतिसुन्दरस्वरूप नेत्रनकेअंतर राखिकै अरु नेत्रनके गोलकनते विदेहकी ओर देखतेभये हे विदेह यहकहा भीरहै हे गरुड़ देखौ तौ जानिकै अजानकी नाई बूझतेहैं यामें सत्य वाक्यकी कछुक न्यूनता है तहां परशुरामजीको त्रिकालज्ञ जानिकै जनकजू नहींबोले तब परशुरामजीनेशरीरमें कोपउत्पन्नकीन्ह काहेते श्रीरामचन्द्रजी परशुरामजीकेद्वारह्वैकै यहपरमदिव्य अलौकिक लीलाकरतेहैं ( ९ ) तब क्रोधकरिकै बारम्बार परशुरामजी जनकजूतेबूझतेहैं तब जनकजीने

तिभीर पूंछ्यउजानअजानजिमि ब्याप्यउकोपशरीर ९ चौ०॥ समाचारकहिजनकसुनाये ज्यहिकारणमहीपसबआये १० सुनतबचनपुनिअनतनिहारे देखाचापखण्डमहिडारे ११ अतिरिसबोलेबचनकठोरा कहुजड़जनकधनुषक्यहितोरा १२ वेगिदिखावमूढ़नतुआजू उलटौंमहिजहँलगितवराजू १३ अतिडरउतरदेतनृपनाहीं कुटिलभूपहरषेमनमाहीं १४ सुरमुनिनागसकलनरना

महीपनके आइबेके सबसमाचार कहिसुनायो ( १० ) जनकजूके वचनसुनिकै इतैउतै निहारयो महिविषे चापको खण्डित देख्यो ( ११ ) तब अतिरिसते कठोरवचन बोले हे जड़जनक कहु धनुषको किसनेतोरा हे तहां रौद्ररसको संचारी क्रोध अरु क्रोधको संचारी कटुवचन ताते जनकजूको जड़कहा अरु रेखल अभिप्रायमें ज्ञानीकी अरु जड़की

एकदशाहै ताते जनकको जड़कहा किन्तु खण्डान्वयकरिकै अर्थकरते हैं हे जनक कहु यहजड़धनुष क्यहिंतोरा यह अर्थध्वनिकरिकै है ( १२ ) पुनि भृगुपतिबोलेहेमूढ़ ज्यहि धनुषतोरा है त्यहिको बेगिबताउ नतु जहांतक तेरी राज्य है सो महिउलटिकै पातालको पठैदेहौं इहां जनकको जड़ अरु मूढ़ कहादूनोंशब्द के अर्थको एकही सम्बन्धाभिप्राय है ( १३ ) तहां अतिशय डर ते राजा परशुरामजी के बाक्यको उत्तर नहींदेते इहां राजाडेराने कि परशुराम महातेजस्वी बीरहैं अरु इनको क्षत्रिनपर दण्ड है पुनि महामुनि हैं ताते डरे तहां परशुराम को क्रोधित जानिकै कुटिलभूप मनमें हर्षे ( १४ ) सुर अरु मुनि नाग नगर के नर नारि सब अति त्रास तें शोच करते हैं ( १५ ) सुनयना पछिताती है कि बिधाता सब बात सुधारिकै बिगारत है ( १६ ) तहां भृगुपति कर सुभाव समुझिकै जानकी जी को अर्द्ध निमेष कल्प सम बीतत है ( १७ ) दोहार्थ॥ तब श्रीरामचन्द्रजी ने सबको भय संयुक्त देख्यो अरु जानकीजी को भीरुकही अति भय संयुक्त देख्यो तब हर्ष बिषाद रहित श्रीरघुबीर परशुरामजीसे बोले इहां बीर कही रघुवंश कुल के प्रिय भूषण किन्तु रघु संज्ञा सर्वजीवकी है तिनकेबीरकही प्रियाहैं किंतु इहां परशुरामजीको बल तेजप्रताप परास्तहोइगो ताते बीरकहा ( १८ ) तब श्रीरामचन्द्रजी दोऊकर जोरिकै बोले हेनाथ ज्यहिशम्भुको धनुभंज्यउहै सो तुम्हारो कोई एकदासहोइगो यामें यह अभिप्राय है कि धनुष महनेतोरा है ( १९ ) अब जो आ-

री शोचहिंसकलत्रासउरभारी १५ मनपछितातिसीयमहतारी विधिसवांरिसबबातबिगारी १६ भृगुपतिकरसुभावसुनिसीता अर्धनिमेषकल्पसमबीता १७ दो० ॥ सभयबिलोकेलोगसब देखिजानकिहिभीर हृदयनहर्षबिषादकछुबोलेश्रीरघुबीर १८ चौ०॥ नाथशंभुधनुभंजनहारा होइहिकोउयकदासतुम्हारा १९ आयसुकाहकहियकिनमोही सुनिरिसाइबोलेमुनिकोही २० सेवकसोजोकरैसेवकाई अरिकरिणीकरिकरियलराई २१ सुनहुरामज्यहिशिवधनुतोरा सहसबाहुसमसोरिपुमोरा २२ सोबिलगाइबिहाइसमाजा नतुमारेजैहैंसबराजा २३ सुनिमुनिबचनलषणमुसुकाने बोलेपरशुधरहिअपमाने २४ बहुधनुहींतोरींलरिकाई कबहुंनअसिरिसकीन्हिगोसाईं २५ यहिधनुपरममताक्यहिहेतू सुनिरिसाइकहभृगुकुलकेतू २६ दो० ॥ रेनृपबालककालबश

यसुहोइ सो मोपर करिये यह सुनिकै मुनिकोही रिसाइकै बोलतेभये ( २० ) हेराम सेवक तौ वाकोकही जो सेवकाईकरै अरु अरिकी करणी करै सो लराईकै कार्य्यहै ( २१ ) तहां परशुराम सब जानि जानि औरकेमिसुरामचन्द्रको कहतेहैं हेराम ज्यहिं शिवको धनुषतोराहोइ सो सहस्राबाहुकी समान हमारोरिपुहै ( २२ ) ज्यहिधनुतोराहोइ सो समाजतेअलगाइकै ठाढ़होय नतु सबराजा मारेजाहिंगे ( २३ ) तब मुनिके बचन सुनिकै लक्ष्मणजू मुसकाइकै परशुधरका अपमानकरिकै बोले परशुरामलक्ष्मण दोऊसमर्थके सम्बादमें अपमानबाणीहै अरु श्रीरामराम परस्पर पूर्व परस्तुतिबाणी ( २४ ) लक्ष्मणजीबोले हे मुनि लरिकाई में हमनेऐसी धनुहीं बहुततोरी हैं पर ऐसीरिस आपकबहूं नहींकीन्ह यह व्यंग्यापमान बचनहै ( २५ ) अरु यहिधनुपर आपुको कौनेहेतु बड़ीममत्वहै यह हमनहींजानते इतनासुनिकै परशुराम क्रोधकरिकै बोले ( २६ ) दोहार्थ॥ रे नृपबालक तैं कालकेबश भयसि सँभारिकै नहींबोलै जैसे सबधनुष तैसे त्रिपुरारिको धनुष जो त्रैलोक्यमें बिदित है ( २७ ) लक्ष्मणजू हँसिकै कहते हैं हमरेजाना यह देशबाणीहै तहाँ रे पद यह जोहै सो अद्यापिश्रीअयोध्या मण्डलमें बोलतेहैं तहाँ जो कोई कहै कि रे पद यह जोहै सो परायेको अपमानकरतहै तहां हमकहते हैं कि रे पद यह जोहै सो सर्बोपरिउत्तमबाणीहै काहेते कि श्रीअयोध्यापुरीसहित मण्डलबैकुण्ठादिक सब पुरिनको मस्तकहै तहांके बासी श्रीरामचन्द्रजूके अनन्यभक्त सूचितहोतहैं काहेते कि रे शब्द सब स्वाभाविकै बोलते हैं सो सबको श्रीअयोध्याकी उपमाको अभावसूचितहै किंतु दूसराअर्थ पाछे समीपही श्रीगोसाईंजीकहीहै चौ० ॥ बोलेपरशुधरहिंअपमाने हेपार्बति परशुधरहिं कही परशु-

बोलतत्वहिंनसँभार धनुहींसमत्रिपुरारिधनुविदितसकलसंसार २७ चौ०॥लषणकहाहँसिहमरेजाना सुनहुदेवसबधनुषसमाना २८ काक्षतिलाभजीर्णधनुतोरे देखारामनयनकेभोरे २९ छुवतटूटरघुपतिहिनदोषू मुनिविनुकारणकरियनरोषू ३० बोलेचितइपरशुकीओरा रेशठसुनेसुभावनमोरा ३१ बालकजानिबधौंनहिंतोहीं केवलमुनिकरिजानेमोहीं ३२ बालब्रह्मचारीअतिकोही विश्व

धरको अपमानकरिकेंबोले ताते हमरेजाना यहिपदमें अपमान अन्वयहै तहां लक्ष्मणजूने पूर्वही अपमानबाणीकहीहै हे रे ब्राह्मण हमने सबधनुषनकीसमानै जानिकै तोराहै काहेते कि एक श्रीरामशार्ङ्ग छोड़िके अपरजे धनुषहैं दशौदिग्पाल चन्द्रसूर्य देव दानव मनुष्य अरु बिधिहरिहर देव शिरोमणि तिनसबके धनुको हमसमसामान्य मानते हैं न्यूनाधिक प्राकृतगुणनके संयोगते सामान्यहै अरु श्रीरामचन्द्रको शार्ङ्गविशेष गुणातीतहै ताते कहा है रे महिदेव हमने सवधुनषनके समजाना यहि चौपाईबिषे अक्षरार्थ अन्वयभावजानव परमसुन्दर अभिप्राय है अरु लोक वेद अनुभव अनेकयुक्ति उक्तिअलंकार इत्यादिक लक्षणा व्यञ्जना मिश्रितअन्वयहै ( २८ ) पुनि लक्ष्मणजी कहते हैं हे मुनि यह जीर्णधनुष तोरेते अक्षतकहाँ प्रत्यक्ष सोकाक्षति हमको हानिलाभ है श्रीरामचन्द्र नयनकेभोरे देखने लगे ( २९ ) तहां धनुष छुवतै टूटिगयो है श्रीरघुबरको दोष नहीं है मुनि बिनाप्रयोजन काहेको रोषकरतेहौ इहां व्यञ्जना तर्कयुतप्रतापवाणीहै ( ३० ) तब परशुराम परशाकी ओर चितैकै बोले रे शठ, मोरस्वभाव तैंने नहींसुना ( ३१ ) बालकजानिकै तोको बचावतहौं अरु तैंकेवलमोको मुनिहीजानैहै ( ३२ ) मैं असमुनिहौं कि बालब्रह्मचारी अरु बालहीते अतिकोही हौं अरु विश्वमें बिदित क्षत्रीकुलकोद्रोहीहौं ( ३३ ) अपने भुजनके बलकरिकै बिनाभूपकी भूमिकरि बिपुलबार ब्राह्मणन को मैं दीन्हि है ( ३४ ) हे महीपकुमार सहस्राबाहु के भुजनको छेदनहारापरशा सो तू बिलोकु ( ३५ ) दोहार्थ॥ हे महीपकिशोर सो काम तैंनकर जाते मैं तोको मारौं तेरेमारेते तेरे माता पिता शोचकेबश मरहिंगे अरुजेते गर्ब्बीपुरुष हैं तिनको गर्व अर्भककही बालक हैं तिनके दलिवेको मोरपरशा अतिघोर है इहां मुनिकी बाणीबिषे प्रसिद्ध तिरस्कारहै ( ३६ ) तब लक्ष्मणजू व्यंग्यमृदुबाणी ते परशुराम को उत्तरदेते हैं हे महामुनीश

विदितक्षत्रीकुलद्रोही ३३ भुजबलभूमिभूपबिनुकीन्हे बिपुलबारमहिदेवनदीन्हे ३४ सहसबाहुभुजछेदनहारा परशुबिलोकुमहीपकुमारा ३५ दो०॥मातुपितहिजनिशोचवश करसिमहीपकिशोर गर्बिनकेअर्ब्भकदलनपरशुमोरअतिघोर ३६ चौ० ॥ बिहँसिलषणबोलेमृदुबानी अहोमुनीशमहाभटमानी ३७ पुनिपुनि मोहिंदेखावकुठारू चहतउड़ावनफूंकिपहारू ३८ इहाँकुम्हड़बतियाकोउनाहीं जेतरजनीदेखिमरिजाहीं ३९ देखिकुठारशरासनबाना मैंकछुकहासहितअभिमाना ४० भृगुकुलसमुझिजनेउविलोकी जो कछुकहहुसहौंरिसरोकी ४१ सुरमहिसुरहरिजनअरुगाई हमरेकुलइनपरनशुराई ४२ बधेपापअपकीरतिहारे मारतहूंपांपरियतुम्हारे ४३ कोटिकुलिशसमवचनतुम्हारा वृथाधरहुधनुबाणकुठारा ४४ दो०॥ जोबिलोकिअनुचितकह्यउं क्षमहुमहामुनिधीर

अहोआश्चर्य महाभट तुम आपको माने हौ ( ३७ ) अरु पुनिपुनि कहीबारबार हमकोकुठार देखावतेहौ फूंककरिकै पहाड़उड़ावाचाहतेहौ ( ३८ ) हे मुनि इहां कुम्हड़ा कै बतिया कोई नहीं है जो तर्जनी देखतसन्ते मरिजाइ ( ३९ ) मैंने मुमको जो कछु अभिमानभरी बातैंकही हैं सो परशा धनुबाण बांधे देखिकै काहेते अस्त्रशस्त्र हमारो क्षत्रिनको धर्म है ( ४० ) हे मुनि एकतौ ब्राह्मण दूजे उत्तमकुल भृगुबंश यहसमुझिकै जो कछुकहौ सो रिसरोंकिकै सबसहैंगे ( ४१ ) काहेते कि सुर महिसुर हरिजनकहीवैष्णवकण्ठी तिलकमात्र अथवा गुणनकरिकै अरु गऊ इनकेऊपर हमारे रघुवंशकुलभरि शूरतानहींकरते इनको सात्विकी मानिकै टेढ़ीकर्त्तब्यदेखिकै क्षमाकरिजाते हैं ( ४२ ) काहेते इनको तयारहूंके बधिये तौ पाप है

अरु जो पछ्ररिअर्थात् हारिजाइये तौ जगत्में अपकीर्तिहोइ ताते कदाचित् जो तुम हमकोमारौ तबहूं हम तुम्हारे पांयनपरैं ( ४३ ) हे महामुनीश तुम्हारे कोपसंयुक्त जो बचन सो कोटिनबज्रकी समान हैं कोटिबज्रक्यों कहा जेता कोटिवज्रके पौरुषकरिकै बिनाशहोइ तेरीसामर्थ्य ब्राह्मणनके एकबचनमें है पर जो अपने ब्रह्मत्वमें नीकीप्रकार ते दुरुस्तहोइतब ताते तुमधनुषबाण कुठार वृथाधारणकरतेहौ इनबाणिनविषेब्यंजना लक्षणाकी युक्तिउक्ति मोपै नहींकहीजाइ तहां अनेकध्वनिपर एकध्वनि मैं कहतहौं इहां यह ध्वनि है कि हे परशुराम शस्त्रबांधबो तुमहारो धर्म नहीं है जाते तुम अपनेधर्म के अधर्मीहहु ताते तुम्हारो कोपभी वृथाहै कैसे जाना कि कोपायुधकरिकै सदा तुमपापही कीन्ह्यउ है काहेते ज्यहि क्रियाविषे केवल पापहीहोइ सो कर्म बृथा है काहेते परिणाम में क्लेशहैयामें यहध्वनिभई कि हेमुनि तुम्हारी सबकर्तब्य बृथा है काहेते श्रीरामचन्द्र ते कुवादकरतेहौ वृथाधरहुधनुबाणकुठारा यहि चौपाई के अनेकनअभिप्राय में एकअभिप्राय हमने कहा ( ४४ ) देखिये तौ शस्त्र

सुनिसरोषभृगुबंशमुनि बोलेगिरागँभीर ४५ चौ० ॥ कौशिकसुनहुमंदयहबालक कुटिलकालबशनिजकुलघालक ४६ भानुबंशराकेशकलंकू निपटनिरंकुशअबुधअशंकू ४७ कालकवरहोइहैक्षणमाहीं कहौं पुकारिखोरिम्वहिंनाहीं ४८ तुमहटकहुजोचहौ

धारी कहते हैं अरु महामुनिधीर कहते हैं यामें मुनिपद की निन्दाभई यहिदोहा में स्तुतिरूपा निंदाकी व्यंजनाकहते हैं लक्ष्मणजीबोले हे महामुनिधीर आपुको आयुधबांधे देखिकै जो अनुचित हमने कहाहोइ सो क्षमाकरहु यामें यह ब्यंग्ययुक्त भई कि परशुधरको वेष ब्रह्मधर्म क्षत्री धर्म लिहे है ताते लक्ष्मणजी ने देखिकै अपने मनमेंकहा कि आजुलौं यहसंकरबर्ण वेष किसूमें नहींदेखा लोक बेद बिरोधी वेषकिये है ताते यहि बेदबिरोधी ब्राह्मणने श्रीरामचन्द्रजीको प्रथमहिं दुर्बचनजानिकै कह्योहै चौ०॥ सुनहुरामजोशिवधनुतोरा सहसबाहुसमसोरिपुमोरा यहिबाणीमें श्रीरामचन्द्र को तिरस्कार लक्ष्मणजूको समुझिपरय्यउ वह लक्ष्मणजूनहींसहिसके ताते प्रथमहिं ते खण्डनकरनेलगे परशुराम को बाक्य बीररस ते खंडिकै अन्तमें नाशकरिदीन्ह यहसेवक स्वामीके अनन्यभावकी रीतिहै यहसुनिकै भृगुपति कोपकरिकै गम्भीरबाणीबोले ( ४५ ) हेकौशिक यह बालकमन्द है अरु कुटिलहै कालकेबशहै निजकुलको घालकहै ( ४६ ) सूर्यवंश सोई राकेश है त्यहिबिषे यहबालक कलंकहै निपट निरंकुश है अबुध है अशंक है ( ४७ ) यहिक्षणविषे यहबालक काल को कवरहोवा चाहतहै मैं पुकारिकै कहतहौं मेरोदोषनहीं हे ( ४८ ) जो यहिबालक को तुम उबाराचाहौ तौ हमारो प्रताप बल रोषजनाइकै याको हटकहु ( ४९ ) तब लक्ष्मणजू कहते हैं हे मुनि तुम्हारसुयश तुमहीं जो अपने मुखते कहतेहौ और को कहिसकै ( ५० ) अपनेमुखते तुम अपनी करणीअनेकभांति ते बारम्बार कहते हौ ( ५१ ) अरु जो यतनाकहेते सन्तोष नहीं भयोहोइ पुनि कछुकहौ अपने हृदयमें रिसरोंकि कै दुसहदुःख काहेको सहतेहौ ( ५२ ) अरु बीरव्रतीकही बीररसतुम्हारो ब्रत है अरु तुम धीरमान्हौ अरु अक्षोभकही सन्देहरहितहौ ताते गारीकही तिरस्कारितबचनकहे ते शोभानहींपावहुगे ( ५३ ) दोहार्थ॥ हे मुनि जे शूर हैं अरु

उबारा कहिप्रतापबलरोषहमारा ४९ लषणकहामुनिसुयशतुम्हारा तुमहिंअछतकोबरणैपारा ५० अपनेमुखतुमआपनिकरणी बार अनेकभांतितबहुबरणी ५१ नहिंसंतोषतौपुनिकछुकहहू जनिरिसरोंकिदुसहदुखसहहू ५२ बीरव्रतीतुमधीरअक्षोभा गारीदेतनपावहुशोभा ५३ दो०॥ शूरसमरकरणीकरहिंकहिनजनावहिंआपु बिद्यमानरिपुपायरणकायरकरहिंप्रलापु ५४ चौ० ॥ तुमतौकाल हांकिजनुलावा बारबारमोहिंलागिबोलावा ५५ सुनतलषणकेबचनकठोरा परशुसुधारिधर्य्यउकरघोरा ५६ अबम्वहिंदोषदेहिंजनि लोगू कटुबादीबालकबधयोगू ५७ बालबिलोकिबहुतमैंबांचा अबयहमरणहारभासांचा ५८ कौशिककहाक्षमियअपराधू बाल

समर विषे करणीकरतहैं ते अपनेमुखतेकहिकै नहींजनावते अरु रिपुकोबिद्यमानपाइकै कादरजे हैं ते अनेकन कल्पनाकरते हैं तात्पर्य यह कि जो कहते हौ सो करिदेखावहु यहदोहाभरे में व्यंग्य है ( ५४ ) लक्ष्मणजू कहतेहैं मुनि तुमने तौ मानौ कालको हांकिलगाइराखाहै हमारे निमित्त बारम्बार बोलावतेहौ ( ५५ ) यह श्रीलक्ष्मणजूकीबाणी अतिकठोर व्यंग्यसहित सुनिकै घोरपरशा कर में सुधारिकै धरतेभये ( ५६ ) यहपुकारिकै कहते हैं कि अब मेरोदोष कोई न देई यहबालक कटुबादीहै याहीते बधयोग्य है ( ५७ ) याको मैंने बालकबिलोकिकै बहुतबचायो अबयह सांच्यहु मरणहारभयो ( ५८ ) तब हे गरुड़ कौशिकमुनि बोले हे मुनीश बालकको दोषगुण साधुनहींगनते ( ५९ ) हे कौशिक देखिये घोरपरशा तौ मेरे हाथमें है अरु तुमजानतेहौ मैं अकारणक्रोधी हौं तहांएकअकारण है अरु एककारण है तहां कारणकही जो कछुकहिकै करिकै क्रोधकरावते हैं अरु एक अकारण है विनाकारणै क्रोधकरै ताहिअकारणकही तहां मैं अकारणक्रोधी हौं बिनाकारण क्षत्रिनको नाशकरिदिह्यहुं है अरु इहां तौ महाक्रोधको कारण है सो अस मैं अरु त्यहिकेआगे यहमेरो गुरुनकोद्रोही बालक ठाढ़े कटुबादकरत है ( ६० ) अरु मेरे बचन में उत्तर प्रत्युत्तर तर्ककरै है अरु हे कौशिक ताहूपर मैं बिनामारे छांड़तहौं केवल तुम्हारेही शीलते ( ६१ ) जो तुम्हारशील न करत्यहुं तौ यहि को कठोरकुठार ते काटिकै बिनाश्रमहि थोरेमहँ गुरुन ते उऋणहोत्यहुं ( ६२ ) दोहार्थ ॥ तब गाधिसुवनकही विश्वामित्र अतिर्धारबिहँसिकै हृदयमें कहते हैं कि मुनिको सावनको हरिअरै सूझत है जैसे सबक्षत्रिनको जानते हैं किंतु मुनिको हरिअरैसूझत है हरिअरै कही सर्वकाल में हरित अरुहरितकही अतिलालित्य कोमलसुन्दरहृदयको आह्लादरूप नित्यप्रसन्न एकरसइत्यादिक हरित के विशे

दोषगुणगनहिंनसाधू ५९ करकुठारमैंअकरणकोही आगेअपराधीगुरुद्रोही ६० उतरुदेतछांड़ौंबिनुमारे केवलकौशिकशीलतुम्हारे ६१ नतुयहिकाटिकुठारकठोरे गुरुहिउऋणहोत्यउंश्रमथोरे ६२ दो० ॥ गाधिसुवनकहहृदयहँसिमुनिहिहरिअरैसूझ अजगवखंडन ऊषमयअजहुंनबूझअबूझ ६३ चौ० ॥ कह्योलषणमुनिशीलतुम्हारा कोनहिंजानबिदितसंसारा ६४ मातुहिपितहिउऋणभयेनी-

षण हैं हरित बिशेष्य है अरु हरितकेगुण शील उदार दया करुणा कृपा इत्यादिक अनेक अरु हरित नित्यहरिअरैकही कवन्यहुकालमें सूखै नहीं एकरस नित्य ऐसो तौ एकपरमेश्वर है एकरस नित्यअखण्डहरितजामें अनन्त बिशेषण अरु गुण हैं सो मुनिको कृपारूप श्रीरामचन्द्र हरिअरै सूझि परे जो कही कि मुनिको श्रीरामचन्द्र परमेश्वर सूझिपरयो पुनि कटुबादक्यों करतेहौ तहां परीक्षालैकै निश्चयकरते हैं अरु जो यह अर्थ करते हैं कि मुनिहि हरिअरै सूझ कि हरि जो श्रीरामचन्द्र ते मुनिको अरिसूझत हैं यहिअर्थमें दुइचारि दूषण हमनेदेखे ताते सामान्य मानते हैं विश्वामित्र कहते हैं कि मुनिको केवल राजबालकै श्रीरामलक्ष्मणसूझतेहैं यह नहींबिचारकरते कि अपसंज्ञाधातु की त्यहिमें धनुष अति कठोर ताको ऊषइमि खण्डनकीन्ह रघुनाथजी के छुअतही धनुषऊषमयह्वैगयो जैसे बालक रसकेहेतु नर्मऊषतोरिडारत हैं तैसेही श्रीरामचन्द्र ने श्रीजानकीजी के बिवाह रसहेतु धनुषकोतोर्‌यो ऐसहु पराक्रम श्रीरामचन्द्र को देखिकै मुनिनहीं बूझते ऐसेअबूझ ह्वै गये हैं किंतु दोऊबालक ऐकही धातुमय खण्डकही खांड़ हैं ऊषमें खांड़नहीं है जाको मुनिपीजाइइतना बूझबेमें अबूझ है ( ६३ ) इहां स्तुतिव्याजनिंदा है लक्ष्मणजी बिहँसिकै कहते हैं हे मुनि तुम्हारो शील को कहिसकै संसार में बिदितहै ( ६४ ) अरु माता को बधिकै पिता ते उऋणभयहु अबगुरुनकी ऋण रही है सो आपुको हृदयमेंबड़ोशोच है ( ६५ ) सो उनके ऋणजनुहमरेमाथेकाढ़िराख्यो है तहां दिन बहुतबीतिगये ताते ब्याज बहुतबढ्यउहांई ( ६६ ) अब व्यवहरिया को बोलाइल्यावहु तुरन्त थैलीखोलिकै चुकाइदेहिंगे इहांलक्ष्मणजू की बाणीबिषे यहध्वनि है कि हे मुनि धनुषतोरिबे को बदला हमसे लेनेको तुम्हारीसामर्थ्य नहींहै ताते तुम्हारे गुरुमहादेवहैं तिनको बोलाइलेहु धनुषतोरिबे को दांव हमसे लेहिंआइ ( ६७ ) यह

के गुरुऋणरहीशोचबड़जीके ६५ सोजनुहमरेमाथेकाढ़ा दिनचलिगयोब्याजबहुबाढ़ा ६६ अबआनहुब्यवहरियाबोली तुरत देहुंमैंथैलीखोली ६७ मुनिकटुबचनकुठारसुधारा हायहायसबसभापुकारा ६८ भृगुबरपरशुदेखावहुमोही बिप्रबिचारिबचहुनृप द्रोही ६९ मिलेनकबहुंसुभटरणगाढ़े

द्विजदेवताघरहिकेबाढ़े ७० अनुचितकहिसबलोगपुकारे रघुपतिसैनहिलषणनिवारे ७१ दो० ॥ लषणउतरआहुतिसरिस भृगुबरकोपकृशानु बढ़तदेखिजलसमबचन बोलेरघुकुलभानु ७२ चौ०॥ नाथकरियबालकपर छोहू शूधदूधमुखकरियनकोहू ७३ जोपैप्रभुप्रभावकछुजाना तौकिबराबरिकरतअयाना ७४ जोलरिकाकछुअनुचितकरहीं

लक्ष्मणजूकी अति कटुवाणी सुनिकै परशुराम अतिक्रोधभरे कुठार को सुधारिकै उठावतेभये तब हायहायकरिकै सबलोग पुकारते भये ( ६८ ) हेपार्वती जब भृगुपति को लक्ष्मणजूने अतितामसभरे देखा तब अतितिरस्कारित बचनबोले हे द्विजभृगु मुनिजोहैं बरकही अतिश्रेष्ठ शुद्ध सात्विकी क्रिया जिनकी त्यहिबंशबिषे तुम महातामसी उत्पन्नभये सो हेनृपद्रोही मोको परशादेखावत हौ अरु मैं ब्राह्मणजानिकै बचावत हौं ( ६९ ) हे द्विज तुमघरहीके देवताबाढ़ेहौ तुमको कबहूं सुभटन के गाढ़ेरणनहींपरे हैं ( ७० ) जब येती उत्कर्ष बाणी लक्ष्मणजूने परशुराम को कही तब सबलोग पुकारिकै कहते हैं कि यहकहना बड़ेको अनुचित है तब श्रीरघुनाथजी ने सैनही ते लक्ष्मणजू को निवारणकीन्ह ( ७१ ) हे गरुड़ तहां लक्ष्मणजूको बचन घृतकीआहुति सम है अरु भृगुबरको कोपकृशानुसम है तब अग्निकीज्वाला अति बढ़तदेखिकर श्रीराम सुजान जलइव बचनबोले यामें सर्वदेश दृष्टांतपूर्ण है ( ७२ ) श्रीरामचन्द्रबोले हे नाथ बालकपर छोह करहु काहेते बालक सूधे दूधमुख होते हैं तिन पर कोह न करो ( ७३ ) जो प्रभुकरप्रभाव जानत तौ अयानालरिकाआपुकी बराबरी काहेको करत ( ७४ ) हे मुनीश जो लरिका अनुचित करत हैं तौ गुरु माता पिता हृदय में आनन्द पावत हैं ( ७५ ) शिशु सेवक जानिकै कृपाकरिये आपु शील धीर ज्ञानवान् मुनीश हौ ( ७६ ) हे पार्वती श्रीरामचन्द्र के बचनसुनिकै मुनि कछुक जुड़ाते भये पुनि मुसकाइकै लक्ष्मणजु कछुक टेढ़े बचनकहते भये ( ७७ ) तब लक्ष्मणजू को हँसतदेखिकै नखते शिखलौं क्रोधकरि परशुराम बोलतेभये हे रामतोर भ्राता बड़ापापी है ( ७८ ) गौर तौ शरीर है पर मनविषे श्याम है

गुरुपितुमातुमोदमनभरहीं ७५ करियकृपाशिशुसेवकजानी तुमसमशीलधीरमुनिज्ञानी ७६ रामबचनसुनिकछुकजुड़ाने कहिकछु बचनलषणमुसुकाने ७७ हँसतदेखिनखशिखरिसव्यापी रामतोरभ्राताबड़पापी ७८ गौरशरीरश्याममनमाहीं कालकूटमुखपयमुखनाहीं ७९ सहजटेढ़अनुहरैनतोहीं नीचमीचुसमदेखनमोहीं ८० दो० ॥ लषणकह्यउहँसिसुनहुमुनि क्रोधपापकरमूल ज्यहिबश जनअनुचितकरहिं चरहिंबिश्वप्रतिकूल ८१ चौ० ॥ मैंतुम्हारअनुचरमुनिराया परिहरिकोपकरियअबदाया ८२ टूटचापनहिं जुरहिरिसाने बैठियह्वैहहिंपांयपिराने ८३ जोअतिप्रियतौकरियउपाई जोरियकोउबड़गुणीबोलाई ८४ बोलतलषणहिंजनकडे-

इहां यह ध्वनि है कि श्रीरामचन्द्र श्यामते लक्ष्मणकेमनमें बसते हैं अरुयहिके मुखमेंबिष है दूधमुखनहींहै काहेते बिषवचन बोलत है ( ७९ ) यह सहजहीहै टेढ़तोकोनहीं अनुहरत अरु ऐसो नीचबुद्धीहै कि अपनी मीचुकीसममोको नहींदेखैहै ( ८० ) दोहार्थ॥ पुनि लक्ष्मणजी हँसिकैबोले हेमुनि क्रोध न करिये क्रोधपापकोमूल है जेहिक्रोधके बशह्वैकै जनजोहैं प्राणीते अनुचित करतेहैं विश्वमें प्रतिकूलह्वैकै चरतेकही बिचरते हैं जगत्‌में प्रतिकूलकही शूकर कूकर बिषधर इत्यादिकका तनधरिकै बिचरतेहैं ( ८१ ) हेमुनिराय मैं तुम्हार अनुचरहौं कोप परिहरिकै दयाकरहु ( ८२ ) चाप जो टूटिगयो है सो रिसानेते अबनहीं जुरिसकैहै ठाढ़े ठाढ़े आपुकेपांयपिरातेहोहिंगे ताते बैठिजाइये ( ८३ ) अरु जो यहधनुष आपुको अत प्रियहोइ तौ कोई बड़ागुणी बोलाइकै उपायकरिकै जोराइदेई ( ८४ ) यहलक्ष्मणजू की विषय व्यंग्यबाणी सुनतसन्ते जनकजूडरिकै बोलतेभये हे लक्ष्मणजू मष्टकही चुपरहो यहअति अनुचित बाणी है भली नहीं है ( ८५ ) अरु पुर के नरनारि लक्ष्मणजू के बोलतसन्ते थरथर कांपते हैं अरु परस्पर कहते हैं कि कुमार तौ छोट है पर खोटबड़ो है ( ८६ ) हेभरद्वाज भृगुपति लक्ष्मणजी की निर्भयवाणी जसजस सुनते हैं तसतस रिसते बाह्यान्तर जरत हैं अरु बलकीहानि होती जाती है ( ८७ )

तब परशुरामजी श्रीरामचन्द्र को निहोरादेके बोले कि तोरलघु बन्धुजानिकै बचावतहौं नतुमारिडारौं ( ८८ ) यह कैसो है तनगौर अतिसुन्दर है पर मनविषे मलीन है कैसे जैसे कञ्चनकेघटमें बिषभराहोइ ( ८९ ) दोहार्थ॥

राहीं मष्टकरहुअनुचितभलनाहीं ८५ थरथरकांपहिंपुरनरनारी छोटकुमारखोटबड़भारी ८६ भृगुपतिसुनिसुनिनिर्भयबानी रिसि तनजरहिहोइबलहानी ८७ बोलेरामहिंदेइनिहोरा बचैबिचारिबन्धुलघुतोरा ८८ मनमलीनतनसुन्दरकैसे बिषरसभराकनकघट जैसे ८९ दो०॥ सुनिलक्ष्मणबिहँसेबहुरिनैनतरेरेराम गुरुसमीपगमनेसकुचि परिहरिबाणीबाम ९० चौ० ॥ अतिबिनीतमृदु शीतलबाणी बोलेरामजोरियुगपाणी ९१ सुनहुनाथतुमसहससुजाना बालकवचनकरियनहिंकाना ९२ बररैबालकएकसुभाऊ इनहिंनसन्तबिदूषहिंकाऊ ९३ त्यहिनाहिंनकछुकाजबिगारा अपराधीमैंनाथतुमहारा ९४ कृपाकोपबधबन्धगोसाईं मोपर करियदासकीनाईं ९५ कहियबेगिज्यहिबिधिरिसजाई मुनिनायकसोइकरियउपाई ९६ कहमुनिरामजाइरिसकैसे अजहुंअनुज

यहबाणी सुनिकै पुनि बिहँसिकै लक्ष्मणजीने कछु कहनेकी इच्छाकीन्ह तब श्रीरामचन्द्रजी नयनतरेरिकै वर्जितकीन्ह तब लक्ष्मणजीने सकुचिकै बामबाणी परिहरिकै गुरुनकेसमीप गमनकीन्ह ( ९० ) तब अत्युत्तमअतिविनीतकही सुन्दरिमृदुकही कोमल अतिशीतल ऐसीबाणी दूनोंकर जोरिकै श्रीरामचन्द्र बोलतेभये ( ९१ ) हे नाथ तुम सहजसुजान हौ बालकको वचन प्रवाणजन नहींकानकरते ( ९२ ) हे नाथ बर्रैबालकको एकहीसुभाव है इनकी अनीतिको सन्तजन दूषणनहींधरते ( ९३ ) अरुहे नाथ त्यहिं कछुकाज नहींबिगारा धनुष तौ मैंने तोरा है अपराधी तौ मैं हौं ( ९४ ) कृपा कोप बध बन्धन जोकरिये सो मोहींपर अपनोसेवकजानिकै करिये ( ९५ ) हे मुनिनायक जेहिप्रकार ते आपुकीरिस शीघ्र जाय आज्ञा दीजिये सो हमकरैं ( ९६ ) तब मुनीशबोले हे राम रिसकैसे जाइ तव अनुज अद्यापि अनैसै चितवत है ( ९७ ) जो यहिके कण्ठ में कुठार मैं नहीं दीन्ह तौ कोपकरिकै काहकीन्ह ( ९८ ) दोहार्थ॥ मेरेकुठारकी घोरगति समुझिकै राजनकी स्त्री गर्भश्रवती हैं सो परशा अछतविद्यमान अरु यह भूपकिशोर बैरी तेहिको मैं जियतदेखत हौं यह आश्चर्यहै ( ९९ ) परशुराम बोले को जानै यहिसाइति को काल हमारो हाथ नहीं चलै अरु रिसते छातीजरैहै यहनृपनकर घातीकुठार कुंठितह्वैगयो है ( १०० ) अब मोको यहजानिपरयउ कि यहाँ बिधाता कही परमेश्वर सो मोपर कछुटेढ़भयो यहमोको समुझिपरयउ काहेते मेरे हृदयमें क्षत्रिनपर कृपाकसि ( १०१ ) इहां दुइउकही कर्तार त्यहिं आजु मोको दुस्सह

तवचितवअनैसे ९७ यहिकेकंठकुठारनदीन्हा तौमुनिकहाकोपकरिकीन्हा ९८ दो०॥ गर्भश्रवहिंअवनीपरनि सुनिकुठारगति घोर परशुअछतदेखौंजियत बैरीभूपकिशोर ९९ चौ० ॥ बहैनहाथदहैरिसछाती भाकुठारकुण्ठितनृपघाती १०० भयेवामबिधि फिर्‌योसुभाऊ मोरेहृदयकृपाकसिकाऊ १०१ आजुदैवदुखदुसहसहावा सुनिसौमित्रबहुरिशिरनावा १०२ बाउकृपामूरतिअनुकूला बोलतबचनझरतजनुफूला १०३ जोपैकृपाजरहिमुनिगाता क्रोधभयेतनराखुबिधाता १०४ देखुजनककटुबालकयेहू कीन्हचहतजड़यमपुरगेहू १०५ बेगिकरहुकिनआंखिनओटादेखतछोटखोटनृपढोटा १०६ बिहँसेलषणकहामुनिपाहीं मूंदहु नयनकतहुंकोउनाहीं १०७ दो०॥ परशुरामतबरामप्रति बोलेउरअतिक्रोध शम्भुशरासनतोरिशठ करसिहमारप्रबोध १०८

दुःखसहायो यह बचनसुनिकै सौमित्रहास्यरस ब्यंग्यसंयुक्त करजोरि शिरनायकै कहते हैं ( १०२ ) हे मुनि आपु कृपाअनुकूल की मूर्त्तिहौ काहेते लक्षितहोतहै कि जो बचन आपुबोलतेहौ सो मानहुफूलझरतेहैं ( १०३ ) तहां यह बड़ा आश्चर्य है कि जो कृपा ते आपुके गातजरते हैं तौ क्रोधभये ते तन ब्रह्मैराखै तौ रहै ( १०४ ) है भरद्वाज लक्ष्मणजीको बचनसुनिकैपरशुरामजूबोले हे जनक ये कटुबादी बालक यमपुरविषे घरकीन्हचाहत है ( १०५ ) हेजनक ताते तुम मेरीआंखिन के आगेते शीघ्र यहिकोओटकरहु काहेते यहनृपढोटा देखतको छोटहै पर बड़ोखोट है ( १०६ ) तब लक्ष्मणजू बिहँसिकै बोले हे मुनि अपनेनेत्र मूंदिलीजिये तुम्हारेलेखेकोई कहूंनहींहै ( १०७ ) दोहार्थ॥ लक्ष्मणजूको सतर्कवचन सुनिकै क्रोधकरिकै परशुरामजी श्रीरामचन्द्रजी से कोपकरिकै बोलतेभये हे शठशम्भुको शरासनतोरिकै तैं हमार प्रबोधकरत है अरु वाणी में यह अर्थ सिद्धिहोत है कि शम्भुकर शरासन जो शठ है ताको तोरिकै मेरोप्रबोधकरतहै ( १०८ ) अब यह मैंनेजाना कि तोरबन्धु कटुकहतहै सो तेरी सम्मतिते अरु तू छलसंयुक्त मोसे विनयकरतहै ( १०९ ) अब तू संग्रामकरिकै मोर परितोषकरु कितौ रामकर कहावनाछोंड़िदे राम तौ एक मैं हौं ( ११० ) ताते अब छलतजिकै समरकरु काहे ते तैंने धनुषतोरिकैहमारेगुरु शिव तिनको द्रोहकिया कि तौ समरकरु नतु बन्धुसमेत तोको मारिडारौंगो ( १११ ) हे पार्बती भृगुपतिकुठारउठाये ऐसेदुर्बचन कहते हैं अरु श्रीरामचन्द्र निर्भयमन में मुसुकाते हैं करजोरिकै माथनावते हैं जैसे जलकरिकै पूर्णघड़ानहींछलकै ( ११२ ) पुनि जैसे पवनसुगन्धलैकैचलै तैसे श्रीरामचन्द्र अपनी वाणीविषे सूक्ष्मऐश्वर्य जनावते हैं हे मुनि

**चौ०॥ बन्धुकहैकटुसम्मततोरे तूछलविनयकरसिकरजोरे १०९ करुपरितोषमोरसंग्रामा नाहिंतुछांडुकहाउबरामा ११० छल तजिसमरकरहुशिवद्रोही बन्धुसहितनतुमारौंतोही १११ भृगुपतिकहैंकुठारउठाये मनमुसुकाहिंरामशिरनाये ११२ गुनहुलषणकरहमपररोषू कतहुंसुधाइहुकरबड़दोषू ११३ टेढ़जानिशंकासबकाहू बक्रचन्द्रमहिग्रसतनराहू ११४ रामकहारिसतजहु मुनीशा करकुठारआगेयहशीशा ११५ जेहिरिसजाइकरियसोइस्वामी मोहिंजानिआपनअनुगामी ११६ दो० ॥ प्रभुसेवकहिं**

गुनहुकही चूक तौ लक्ष्मणजीकी है अरु हमपर रोपकरतेहौ ताते कतहुंसुधाइहु ते बड़ोदोष होत है ( ११३ ) काहेते टेढ़जानिकै सबको शंका होति है दखिये तौ बक्र चन्द्रमाको राहु भी नहींग्रसिसकै है ( ११४ ) पुनि श्रीरामचन्द्र कहते हैं मुनीश रिसकोतजहु तुम्हारेकरमें कुठार है अरु आगे हमारोशीश है इहां शीशकही अधीनता यामें यहअभिप्रायहै कि हम इतना अधीनहोतेहैं अरु आपु क्रोधकरतेहौ यामें अज्ञानसूचित होतहै ताते रिसकोत्यागिदीजिये किंतु तुमपरशाउठावतेहौ अरु हमशीशनवावते हैं सो तुम्हारोपरशाचलैनहीं ताते वृथा क्रोधक्योंकरतेहौ ( ११५ ) हे स्वामी मोको आपन अनुगामीजानिकै जामें रिसजाइ सो आज्ञादीजिये ( ११६ ) दोहार्थ॥ अरु आपु जो कहते हौ कि हमतेसमरकरु तहँ तुमप्रभु मैं सेवक प्रभु अरु सेवकहि समर कैसी यहअनुचितहै ताते हेबिप्रबर रोषको त्यागकरहु अरु आपुको बीवेपबिलोकिकै कछुकहेसि है ताते बालकहूको दोपनहीं है ( ११७ ) श्रीरामचन्द्रबोले हेमुनीश आपुको कुठार धनुषबाण धारणकिये देखिकै आपुकीरहस्य नहींजान्यो ताते बालबुद्धि ते आपुते लरिकाईकी बातैं कह्यो है अरु आपु तौ धीरहौ बीरहौ रिसबिचारिकै करौ यहबातहूमें व्यंग्य है कि मुनिवेपको शांतरसचाही अरु हथियारबांधे बीररसचाही आपु में दोनोंबिपर्ययदेखिकै ताते इतनीबात कही गई है ( ११८ ) अरु आपुकोनामतौ जानतरह्योहै पर चीन्ह्यो नहीं है कि परशुराम यई हैं अरु हमारे रघुबंशको स्वभाव है कि जो काहूको हथियारबांधे देखै तौ निर्भय उत्तरदेतेहैं ( ११९ ) अरु जो केवल आपु मुनिकेवेषमें आवते तौ आपके पदकीरज शिशु माथेपरधरत इहां यामें यह आशय है कि जैसा सबक्षत्रिनको जानतेहौ तैसा हमको न जानिये ( १२० ) हे बिप्र अजानबालक की चूक क्षमाकरिये ञा-
रघुनाथजी की बाणीविषे अनेकब्यंग्य तर्क हैं जामें परशुराम के बीररसका परास्तहोइ

समरकस तजहुविप्रबररोष बेषबिलोकिकह्यउकछु बालकहूनहिंदोष ११७ चौ० ॥ देखिकुठारबाणधनुधारी भइलरिकहिंरिस बीरबिचारी ११८ नामजानपैतुम्हहिंनचीन्हा बंशसुभावउतरुत्यहिंदीन्हा ११९ जोतुमअवत्यहुमुनिकीनाईं पदरजशिरशिशु धरतगोसाईं १२० क्षमहुचूकअनजानतकेरी चहियबिप्रउरकृपाघनेरी १२१ हमहिंतुमहिंसरबरिकसिनाथा कहहुतोकहांचरण कहँमाथा १२२ राममात्रलघुनामहमारा परशुसहितबड़नामतुम्हारा १२३ देवएकगुणधनुषहमारे नवगुणपरमपुनीततुम्हा-

ह्मणको केवल कृपै में अधिकार है यामें यहब्यंग्य है कि ब्राह्मणको शम दम तप शौच शान्ति आर्जव ज्ञान विज्ञान आस्तिक ये नवचाहिये अरु नवकर त्यागचाही काम क्रोध लोभ मोह मद मान मात्सर्य शोक चिन्ता सो परशुराम विषे दूनौंसंकरहैं ताते श्रीरामचन्द्र तर्क ब्यंग्यकहिकै केवल ब्राह्मण धर्मराखा चाहते हैं ( १२१ ) हे नाथ हमते तुमते सरबरिकहींबराबरि कैसेहोइ काहेते कि कहां तुम्हारचरण कहां हमारमाथ यामें यह ध्वनि है कि तुमब्राह्मणहौ अरु हमक्षत्री हैं क्षत्रिनकर यहधर्म है कि ब्राह्मणके चरणकहँ सदापूजिये सदामाथनाइये ताते आपस्वामी हौ हम सेवक हैं सेवककी स्वामी ते सरबरिनहींहै इहां यहअभिप्रायहै कि परशुरामजी को केवल शांतरसचाही ब्राह्मणत्व सिद्धिकरना अरु वीररस को अभावकरना अरु हे नाथ तुममाथहौ हमचरण हैं ताते तुमब्राह्मण बड़ेहौ हमक्षत्री तुमतेलघु हैं ( १२२ ) अरु हेमुनीश आप नामहूंकरिकै बड़े हौ हमारे द्वै वर्णकरिकै केवल रामनाम है अरु आपको परशुसंयुक्त पांचवर्णको परशुरामनाम है ताते आप सबप्रकार ते बड़ेहौ इहां यहब्यंग्य है यही जो दुइअक्षर हैं राम तेई चराचर जल थल नभ पवन अग्नि इत्यादिक सबमेंरमे हैं अरु इनहीं दुईअक्षरबिषे मुनीश योगीश परमहंसरमे हैं अरु हे मुनीश तुमपरशाविषे रमे हौ ताते परशुराम कहिये ( १२३ ) हे देव हमारे एकगुण धनुष है अरु आपके नवगुण परमपुनीत कोमल १ तपस्वी २ सन्तोष ३ क्षमा ४ अतृष्णा ५ जितेन्द्री ६ दानकोलेइ ७ अरुसर्वदाता ८ अरु दयालु ९ येतं स्वाभाविक गुणयुक्ततुमहौ किंतु कहूंयज्ञोपवीतको नवगुण कहते हैं ( १२४ ) ताते सबप्रकारते हमतुमते हारे हैं हे बिप्रबर हमाराअपराध क्षमाकरौ ( १२५ ) दोहार्थ॥ हेपार्वती श्रीरामचन्द्रजी ने बारबार परशुराम को मुनिबिप्रबरश्रेष्ठ मुनि ब्राह्मणकह्यउ तबपरशुरामजी क्रोधितह्वैकै बोलतेभये कि बन्धुकेसमान तुहूं बाम है तहां

रे १२४ सबप्रकारहमतुमसनहारे क्षमहुबिप्रअपराधहमारे १२५ दो० ॥ बारबारमुनिबिप्रबर कहारामसनराम बोलेभृगुपतिसरुष अति तुहूंबन्धुसमबाम १२६ चौ० ॥ निपटहिद्विजकरिजान्यहुमोहीं मैंजसबिप्रसुनावोंतोहीं १२७ चापश्रुवाशरआहुतिजानू कोपमोरअतिघोरकृशानू १२८ समिधसेनचतुरंगसुहाई महामहीपभयेपशुआई १२९ मैंयहिपरशुकाटिबलिदीन्हे समरयज्ञ जगकोटिनकीन्हे १३० मोरप्रभावबिदितनहिंतोरे बोलसिनिदरिविप्रकेभोरे १३१ भंजेहु चापदापबड़बाढ़ा अहमितिमनहुं जीति

परशुराम जो क्रोधकीन्ह सो यहसमुझिकै कि हमारो अभिनिवेश सदावीररसविषे अरु इनक्षत्रिनके बालकन हमको केवल ब्राह्मण शांतरस बिषे जान्यो है ताते क्रोधकियो अरु परशुराम के क्रोधबिषे यह अभिप्रायसूचित है कि क्रोधबिषे श्रीरामचन्द्रजीको परत्वजाना चाहते हैं ( १२६ ) श्रीरामचन्द्र के बचनविषे बीररसको निरादर आपुविषेजानिकै परशुरामवीररस संयुक्त बोलतेभये सुनु तू हमको निपटद्विजैकरिकै जानतभयसि अरु मैं जसबिप्रहौं तसतू सुनु ( १२७ ) मोरचापश्रुवाजानु घृतसाकल्ययुतशर आहुति अरु मोरकोप घोरकृशानुजानु ( १२८ ) अरु समिधकहीं होमकी लकरी आक पलाश खैर लहचिचिरा पीपर गूलरि शमी दूबकुशयेते नवोहोमकी समिधाहैं सो सातहूद्वीप नवोखण्ड जेतीसेनाकहीं फौज चतुरंगिनीकहींदशहाथी एकसैतुरंग हजारपैदर पचासरथ यहिकेऊपरजेताहोई सो सर्वचतुरंगिनीते समिध जानु अरुमहामहा राजा पशु जानु ( १२९ ) तिन को यहि फरशा सो काटि काटि काल देवताको बलि चढ़ाइदिह्यउं है कोटिनबार ऐसी समरयज्ञ जगत् में मैं कीन्हि है ( १३० ) मोर प्रभाव तोको बिदितनहीं है मोको केवल

ब्राह्मणभोरे बगदा है ताते तूनिरादर निडरबोलै है ( १३१ ) तुमचापभंज्यहु ताते तुमको दापकही अभिमान बहुतबाढ़्यउ है मानहुं सबजगजीतिकै ठाढ़े हौ ( १३२ ) हेभरद्वाज तब श्रीरामचन्द्र बोले हे मुनि तुमतौ मननशील त्रिकालज्ञ हौ बिचारिकै बोलहु हमारी तो लघु चूक अरु आपको कोप येताबड़ा है यहबड़ोअनुचित है ( १३३ ) अरु हे मुनीश तुम जो कह्यउ कि चापतोरिकै तुमअभिमान ते भरेहौ सो अभिमानको कछुकारणै नहींहै काहेते कि पिनाक छुवतहिटूट्यो है तहां मोको अससमुझिपरत है कि बहुत कालको पुरान गलरह्यो है ताते छुवतहि टूटिगयो है तहां अभिमान को कारणकहा है इहां रघुनाथजी की बाणी व्यंग्यश्लेषयुक्त है छुवतहिटूटिगयो सो

**जगठाढ़ा १३२ रामकहामुनिकहहुबिचारी रिसअतिबड़िलघुचूकहमारी १३३ छुवतैटूटपिनाकपुराना मैंकेहिहेतुकरौंअभिमाना १३४ दो० ॥ जोहमनिदरहिंबिप्रबर सत्यसुनहुभृगुनाथतौअसकोजगसुभटज्यहि भयबशनावहिंमाथ १३५ चौ०॥ देवदनुजभूपतिभटनाना समबलअधिककोउबलवाना १३६ जोरणमाहिंप्रचारैकोऊ लरहिंसुखेनकालकिनहोऊ १३७ क्षत्रीतनधरिसमरसकाना कुलकलंकतेहिपामरजाना १३८ कहहुस्वभावनकुलहिप्रशंशीकालहुडरैंनरणरघुवंशी १३९ बिप्रबंशकैअसि**

सत्य है अरु पुरानकहा सो बहुतकाल को हई है अरु छुवतही टूटकहिकै मुनिको अपनोप्रभाव जनावाहै पुरानि कहिकै परशुरामको गुरु अभिमान निवारते हैं ( १३४ ) दोहार्थ ॥ हे बिप्रवर जो हम कदाचित् तुम्हारनिरादरकरैं तौ ऐसो जगत् में कौनसुभट है जाके भयसे हम माथनावैं इहांध्वनि है कि हे भृगुपति तुमब्राह्मण कहेते खेदपावतेहौ अरु हमनेतुम्हारेबंशको चरण अपने बक्षस्स्थलबिषे अंगीकारकीन्ह सो कौनेहुं डर सेनहीं केवल ब्राह्मणजानिकै ताते तुम सदा मानिबे योग्य हौ ( १३५ ) हे मुनि देवता दशौ दिग्पाल चन्द्र सूर्य ब्रह्मा शिवादिक अरु राक्षसदानव भूप ब्रह्मांडभरेके जे महामहाभट ते सब हमारे सम बलवान्होहिंकिंतु हमते अधिकहोहिं ( १३६ ) तिनसबनमें कोईहोइ किंतु सबमिलि कैहमको रणमें प्रचारैं तौ हम निर्भय आनन्दपूर्बक समरमें सन्तुष्टकरिदेईअरु जो कालहू सन्मुख समरकरै तौ सन्तोष करिदेई ( १३७ ) हे मुनीश जो क्षत्री ह्वैकै समरविषे भयमानै तो वह अपनेकुलको कलंकभयो वहिको पामरजानिये ( १३८ ) हे मुनि हमरघुबंशकुल को यहसहजसुभाव कहते हैं सत्यजानो रघुबंशी रणबिषे कालहुको नहींडरते ( १३९ ) हेभृगुनाथ विप्रके बंशकी यहप्रभुताईकही प्रभाव है कि जो तुमकोडरै सो सदा निर्भयहोइ हे बिप्र असतुम्हार प्रभाव है किंतु जे सबप्रकारते अभयहैं तेऊ तुमको ब्राह्मणजानिकै डरते हैं ऐसेब्राह्मण हैं सो कहेते तुम क्यों कोपकरतेहौ ( १४० ) हे पार्वती श्रीरामचन्द्र के मृदुबचन अतिगूढ़सुनिकै हृदयबिषे जो मतिरही सो मोह अभिमान कपाटरूप तेहिते ढपिरही श्रीरामचन्द्रके गूढ़वचन सुनिकै मोह अभिमान मतिके पटलसो खुलिगये तब त्यहिसुमतिते श्रीरामचन्द्रको परमेश्वर जानते भये श्रीरामचन्द्र गूढ़ मृदुकही कोमल कर जोरिकै परशुरामकी बड़ाई करते हैं अरु गूढ़कही रघुबंशी कालहुको जीतिसकते हैं यहि बचनमें श्रीरामचन्द्र अपनो

**प्रभुताई अभयहोयसोतुमहिंडेराई १४० सुनिमृदुगूढ़बचनरघुपतिके उघरेपटलपरशुधरमतिके १४१ रामरमापतिकरधनुलेहू ऐंचहुमोरमिटैसंदेहू १४२ देतचापआपहिचढ़िगयऊ परशुराममनबिस्मयभयऊ १४३ दो० ॥ जानारामप्रतापतब पुलकप्रफुल्लितगात जोरिपाणिबोलेबचन प्रेमनहृदयसमात १४४ चौ०॥ जयरघुबंशबनजबनभानू गहनदनुजकुलदहनकृशानू १४५ जय**

स्वरूप सर्व्वोपरि जनावते हैं अरु यहकहा कि हम तुमको ब्राह्मण जानिकै माथ नवावते हैं नतु त्रैलोक्य में ऐसो कौन बीरहै जाको हम डरिकै माथानवावैं यहि बाक्यमें अपनो परत्त्व जनायो है ऐसी अनेक मर्म्मकीबातैंकही ताते गूढ़ कही ( १४१ ) हे गरुड़ तब परशुराम सावधान होइकै बोले हे राम यह रमापतिको धनुष जो है सो ऐंचिकै चढ़ावो तब मेरोसन्देहदूरिहोइ यह धनुष बिष्णुभगवान्ने महादेवके द्वाराह्वैकै मोकोदीनहै अरु यहकहिदीन है कि यहधनुष जबताहि जो चढ़ावै तबतुम पूर्णावतारजान्यहु ( १४२ ) तब

परशुराम ने श्रीरामचन्द्रको चापदीन्ह छुवतसन्ते चापचढ़िगयो तब परशुराम के मनमें बिस्मयभई कि यहअज्ञान कहां तेआइगयो जाते मैंने परमेश्वर परमात्माको अनेक दुर्बचन कह्यों तेहूपर मेरे ऊपर कृपाकीन्ह ऐसे पूर्णब्रह्म हैं ( १४३ ) दोहार्थ॥ जब श्रीरामचन्द्रके प्रतापको परशुराम जान्यो तब अतिपुलक प्रफुल्लित गात ते दोऊकर जोरिकै स्तुतिकरनेलगे ( १४४ ) हे भरद्वाज श्रीरामचन्द्र को परशुरामपरमेश्वर सर्वोपरि निश्चयकरिकै स्तुतिकरतेहैं जयकहीसर्बोपरि कल्याणरूप अरु जयकही सदा जयमान जाकी पराजय कालहू ते नहीं है हे श्रीरामचन्द्रजू तुम्हारीजय रघुबंशकुलकमल है ताको आनन्दकर्त्ता आपु भानु हैं अरु दनुजकेकुल गहनकही बन हैं तिनके दहनकरिबेको तुम कृशानुहौ ( १४५ ) हे सुर धेनुसंतहितकारी तुम्हारीजय अरु मन्द मोह कोह भ्रमके हरैया हमारी तौ तुरन्त भयहरेहु अरु सबकीभयहरतेहौ ते तुम्हारीजय ( १४६ ) अरु विनयकही सबको यथार्थ आदरदेना अरु सर्वकरिकै विनययोग्य हौ अरु शीलकरुणादिक दिब्यगुणानकेसागरहौ अरु बचननकी रचनामें आपु अतिनागरहौ ( १४७ ) अरु सेवकको सर्वसुखदाताहौ अरु सर्वांग अतिसुभगहौ अरु तुम्हारे अंगअंगकी छबि निरखिकै कोटिनअंनग लज्जित हैं ते तुम्हारीजय ( १४८ ) हे श्रीरामचन्द्र अनन्त सहस्त्र मुख स्वामिकार्त्तिक के षड्मुख ब्रह्मा चारिमुखमहादेव पंचमुखसरस्वतीइत्यादिक सर्वमिलिकै आपुकी शोभा गुणप्रताप आदिक नहीं कहिसकैं

**सुरधेनुबिप्रहितकारी जयमदमोहकोहभ्रमहारी १४६ बिनयशीलकरुणागुणसागर जयतिबचनरचनाअतिनागर १४७ सेवकसुखदसुभगसबअंगा जयशरीरछबिकोटिअनंगा १४८ कहौंकहामुखएकप्रशंसाजयमहेशमनमानसहंसा १४९ अनुचितबहुतकह्यउँ अज्ञाता क्षमहुक्षमामन्दिरदोउभ्राता १५० कहिजयजयजयरघुकुलकेतूभृगुपतिगयेबनहिंतपहेतू १५१ अपभयकुटिलमहीपडेराने जहँतहँकायरगँवहिपराने १५२ दो०॥ देवनदीन्हीदुन्दुभी प्रभुपरबर्षहिंफूल हर्षेपुरनरनारिसब मिटीमोहमयशूल १५३॥**

मैं एक मुखते आपकी प्रशंसा नहींकरिसकौं आपुमहादेवके मनमानसकेहंसहौ ते तुम्हारी जयहोय ( १४९ ) अरु मैंने आपुको बहुत अनुचित वचन अपने अज्ञान ते कह्यउं अरु आपु दोनोंभ्राता क्षमाकेमन्दिर हौ पृथ्वी ते अधिकहौ ताते मेरीअज्ञानता को क्षमाकरो ( १५० ) अरु एक जय चिरञ्जीव बाचक अरु एकजय अजयबाचकहै अरु एकजय सर्वोपरिबाचक हैं जैसे सनातन श्रीरामचन्द्र हैं तैसे परशुरामको आशीर्वादहै यह आशीर्बाद दैकै अरु यहकहिकैहेरघुकुलकेतु अपनेचरणारविन्दबिषे भक्तिदेहु अन्तर्भूत एवमस्तु बरपाइकै भृगुनाथ आनन्दपूर्वक भजन अरु तप हेतु बनकहँ गये ( १५१ ) परशुराम को वनगवन देखिकै कुटिलराजा जेरहे ते अपभय को प्राप्तभये डरिगये जहांतहां कायरजे रहे अपनी गँवहिं ते पराइगये ( १५२ ) दोहार्थ॥ तब देवतादुन्दुभी बजावतेभये फूलबर्षतेहैं नभ अरु नगरमें जहांतहां जयजयध्वनि ह्वैरहीहै पुरके नरनारि अति हर्षको प्राप्तिभये मोहरूपीशूल मिटिगई ( १५३ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकाण्डे लक्ष्मणपरशुरामश्रीरामचन्द्रसम्बादे अनेकब्यञ्जनालक्षणायुक्ति उक्तितर्कसर्बरसबरर्णनंनाम एकपञ्चाशत्तरंगः ५१॥ :: :: :: :: :: :: :: :: :: :: ::

दोहा॥ बावनसुभगतरंगमें रामचरणहितकाज॥ सजिबराततिरहुतचले श्रीदशरथमहराज ५२॥ यहि दोहाभरे में पदार्थै सिद्ध है गह गहे कही बहुगम्भीर बाजाबजे सबहींघर २ मनोहरमंगलसाजे ( १ ) यूथयूथमिलिकै सुमुखिकहीं सुन्दर मुखनयन सर्वांग हैं जिनकर ऐसी जो स्त्री कल कही सुन्दर कोकिलाकी ऐसी बाणी गान करती हैं ( २ ) अरु बिदेहकरपरमानन्द जन्य सुखबर्णिबेयोग्य नहीं है मानहु कही जैसे कोई जन्म

**चौ० ॥ अतिगहगहेबाजनेबाजे सबहिमनोहरमंगलसाजे १ यूथयूथमिलिसुमुखिसुनयनी करहिंगानकरिकोकिलबयनी २ सुखबिदेहकरबरणिनजाई जन्मदरिद्रमनहुंनिधिपाई ३ बिगतत्रासभइसीयसुखारी जिमिबिधुउदयचकोरकुमारी ४ जनककीन्ह कौशिकहिप्रणामा**

प्रभुप्रतापधनुभंजेउरामा ५ मोहिकृतकृत्यकीन्हदोउभाई अबजोउचितसोकहियगोसाई ६ कहुमुनिसुनुनरनाहप्रबीना रहाबिवाहचापआधीना ७ टूटतहीधनुभयउबिवाहू सुरनरनागबिदितसबकाहू ८ दो०॥ तदपिजाइतुमकरहुअब यथा बंशब्यवहार बूझिबिप्रकुलवृद्धगुरु वेदबिदितआचार ९ चौ० ॥दूतअवधपुरपठवहुजाई आनहुनृपदशरथहिबोलाई १० मुदितराउ

को दरिद्री पारस निधि कही चिन्तामणि पावै तैसइ परमानन्द जन्यसुख जनकजी को भयो ( ३ ) श्रीजनकजी त्रास करिकैं बिगत भई सुख को प्राप्त भई जैसे पूर्णमासी के चन्द्रमाको देखिकै चकोरी आनन्दितहोति है ( ४ ) जनकजू बिश्वामित्र को प्रणाम कीन्ह हे मुनीश आपुके प्रतापते श्रीरामचन्द्रजूने धनुषकोभंज्यउ ( ५ ) मोको दूनोंभाइन कृतकृत्य कही कृतार्थकीन्ह अब जो उचितहोइ सो कहिये आज्ञा दीजिये हमकरैं ( ६ ) मुनिबोले हे नरनाह प्रबीण सुनिये बिवाह तौ चापके आधीनरह्यो ( ७ ) हे नरेश धनुषके टूटतही बिवाहभयो यह सुरनरनाग सबको बिदितहैं ( ८ ) दोहार्त्थ॥ तदपि अब तुम जाइकै जस बंशब्यवहारहै तसकरहु अरु बिप्र गुरु वेदकुल वृद्ध बूझिकै आचारपूर्बक करहु जाइ ( ९ ) हे राजन् अवधपुरबिषे दूतपठैकै राजादशरथको वोलाइलेहु ( १० ) तब आनन्द समेत राजापत्रिका लिखिकै श्रीअवधको दूतपठावतेभये ( ११ ) पुनि आइकै सचिव महाजन सब राजाके शिरनावतेभये ( १२ ) अरु हाटबाट सुरमन्दिर सुरबास नगर सम्पूर्ण सँवारहुजाइ यह आज्ञादीन्हि ( १३ ) ते सब निजनिज गृहमें आइकै हर्षिकैचले पुनिपरिचारक कही अपने अपने काजकामिनको बुलावतेभये ( १४ ) तब यह आज्ञादीन्हि कि राजाकी आज्ञाहै कि बितानकही माड़वकी रचना करहुकरावहु तबते आज्ञा शीशपर धरिकै सचुपायकही आनन्द पूर्बक चलते भये ( १५ ) ते सब आज्ञालैकै नानाप्रकारके गुणीबोलावतेभये जे बितानकी बिधि में कुशल कही बड़ेप्रबीण हैं ( १६ ) तिनगुणमानन बिधिके पदबन्दिकै आरम्भकीन्ह प्रथम कनक केदलीके खम्भा बिरचतभये ( १७ ) दोहार्त्थ॥ तेहि कदलीके खम्भबिषे हरित मणिनके पत्र फल अरु पद्म-

कहभलहिकृपाला पठयेदूतबोलित्यहिकाला ११ बहुरिमहाजनसकलबोलाये आइसबनसादरशिरनाये १२ हाटबाटमन्दिरसुरबासा नगरसँवारहुचारिउपासा १३ हरषिचलेनिजनिजगृहआयेपुनिपरिचारकबोलिपठाये १४ रचहुबिचित्रबितानबनाई शिर धरिबचनचलेसचुपाई १५ पठयेबोलिगुणीतिननाना जेबितानबिधिकुशलसुजाना १६ बिधिहिबन्दितिनकीन्हअरम्भा रचेकनककदलीकेखम्भा १७ दो०॥ हरितमणिनकेपत्रफल पद्मरागकेफूल रचनादेखिबिचित्रअति मनबिरंचिकरभूल १८ चौ०॥ वेणुहरितमणिमयसबकीन्हे सरलसपर्णपरैंनहिंचीन्हे १९ कनककलितअहिबेलिबनाई लखिनहिंपरैसपर्णसोहाई २० तेहिकेरचिपचिबन्धबनाये बिचबिचमुक्तादामसोहाये २१ माणिकमरकतकुलिशपिरोजा चीरकोरिपचिरच्यउसरोजा २२ कियेभृङ्ग

रागमणिके फूलबनाये तेहि कदलीके खम्भकी रचनादेखिकै बिरञ्चिकोमनभूलिगयो काहेते अपनी रचनाते भिन्नदेख्यो ( १८ ) हरितमणिनमय बांससहित पर्णसरल ज्योंकात्यों चीन्हिनहींपरै जनु दिब्यबासहीहै ( १९ ) हरित मणिनबिषे सुवर्णकलित अहिबेलिकही पान तेहिते मण्डपछाये लखिनहींपरैहै मानो शोभायमान पानहीहैं ( २० ) तेहि सुवर्णके तारनतेरचिकै पचिकही गुहिबन्धन बनाये अरु बीचबीच मुक्तानके दामबनाये दामकही माला अरु मुक्तनके ऊंचेनीचे मखतूलके फूल छोटेछोटे बनाये ( २१ ) अरु माणिककही अरुणमणि मर्कतकही श्याममणि पिरोजा कही पीतमणि कुलिशकहीहीरा तिनको कोरिकोरि जमाइ जमाइ कमलरचे ( २२ ) अरु नीलमणिके भँवरबनाये अरु कइउ रंगकीमणि अरु सुवर्ण तेहितेरचिकै बिहँग बनाये अरु हंस मोर कोकिला पारावत शुकबनाये ( २३ ) अरु देवतनकी प्रतिमा मणिमय खम्भनबिषे गढ़िगढ़ि काढ़ीहैं ते सब मांगलिक द्रब्य पदार्थलिये ठाढ़ी हैं ( २४ ) अरु अनेकभांतिकी गजमुक्तनके अतिसुन्दर चौकपूरीगई है ( २५ ) दोहार्त्थ॥ सौरभकही आँबके पल्लव सो नील मणिनके

कोरिकोरि अतिसुभगबनायेअरु हेमकेबौरबनाये अरु मर्कतमणिके फल तैहिते घवरि बनाये अरु रेशम जरावमय तेहिकी डोरि ( २६ ) रुचिरबर बन्दनवाररचे मनोभव कहीकामने फन्दसँवारे हैं कोहेते मुनीश योगीश देवतादिकनके मनको फँदायबेको ( २७ ) अरु मंगलमयकलश अनेकध्वजा कही बड़े २ निशानपताकाकही छोटे २ सो रेशमकेपटनमें सुवर्ण मणिनकीकणिनते जटित

बहुरंगविहंगा गूजहिंकूजहिंपवनप्रसंगा २३ सुरप्रतिमाखम्भनगढ़िकाढ़े मंगलद्रब्यलियेसबठाढ़े २४ चौकैमोतिअनेकपुराई सिन्धुरमणिमयसहजसुहाई २५ दो० ॥ सौरभपल्लवसुभगसुठि कियेनीलमणिकोरि हेमबौरमरकतघवरि लसतपटलमयडोरि २६ चौ० ॥ रचेरुचिरबरबन्दनवारे मनहुंमनोभवफन्दसँवारे २७ मंगलकलशअनेकबनाये ध्वजपताकपटचमरसुहाये २८ दीपमनोहरमणिमयनाना जाइनबरणिविचित्रबिताना २९ ज्यहिमंडपदुलहिनबैदेही सोबरणैअसिमतिकबिकेही ३० दूलह रामरूपगुणसागर सोबितानतिहुंलोकउजागर ३१ जनकभुवनकैशोभाजैसी गृहगृहप्रतिपुरदेखियतैसी ३२ जिनतिरहुतित्यहि

अनेकनरचे ( २८ ) अरु मणिनमय मनोहर अनेक दीपकरचे तहां मण्डपतौ मणिनमय स्वाभाविकैप्रकाशमयहै अरु मणिनकेदीपकन पृथक्पृथक् भाव कीन्हहै सो चित्रविचित्र बितान वर्णिबेयोग्य नहीं है ( २९ ) जेहिमण्डपविषे दुलहिन वैदेही कही विदेहकी कन्या विदेहकही त्रैलोक्यविषयानन्द को अभाव ब्रह्मानन्द की प्राप्ति तेहिको सुख परमानन्द सो वैदेही जहां दुलहिनि हैं तेहि मण्डपकीशोभा कौनकवि कहिसकै ( ३० ) अरु जेहिमण्डपको दूलह श्रीरामचन्द्र सच्चिदानन्द जिनकोविशेषण अरु परब्रह्म विग्रह विशेष्य ते रामचन्द्र जहां दूलह परमदिव्यगुणनके सागरसो बितान उजागर कही त्रैलोक्यपर प्रकाशमान ( ३१ ) अरु जैसी जनकभुवनकी शोभा है तैसीही गृह २ प्रति बितान संयुक्त जनकपुर शोभित है ( ३२ ) जिनकेहूंतेहिसमयमेंतिरहुतिकोप्रत्यक्षदेख्यो किन्तु ध्यानमेंदेख्योतिनकहँचौदहौभुवनमेंत्रैलोक्यकीशोभाअतिलघुलागीहै ( ३३ ) जनकपुरविषे जो सम्पदा नीचके गृहविषे शोभितहै तेहिको विलोकिकै सुरनायकइत्यादि दशौदिग्पाल मोहितहोते हैं ( ३४ ) दोहार्थ॥ जेहि मिथिलानगर में बसतीहैं लक्षिकर लक्षिकही लक्ष्मी तेहिकी करकही कर्त्ता अरु कपटकहीप्राकृतराजनकी कन्याकी ऐसी लीला कर्त्तव्य अरु वेष तौ बरकही सर्व्वोपरि श्रेष्ठ स्वयंसनातनहै ते श्रीराजानकीजी जहां बिराजमान तेहि पुरकीशोभा कहतसन्ते शारद शेषइत्यादिक सकुचतहैं ( ३५ ) हेभरद्वाज जनक के दूतोदूत रामपुरपावनमें पहुँचेजाइ पावनकही अतिपवित्र ब्रह्मस्वरूप ( तत्रप्रमाणंपाद्मे ) अयोध्याचपरब्रह्मसरयूसगुणःपुमान्॥ तन्निवासीजगन्नाथःसत्यमेतद्ब्रवीमिते १ नगर अतिसोहावन कही अतिमनोहर देखिकै अतिहर्षको प्राप्तभये कैसीहै अयोध्या राजमहलते तीनियोजनपूर्व तीनियोजन पश्चिम डेढ़योजन दक्षिण डेढ़योजन उत्तर सरयूपार इतना नगर का बिस्तार है अरु एकयोजन पूर्व बिल्वहरि है अरु एकयोजन

समयनिहारी त्यहिलघुलग्यउभुवनदशचारी ३३ जोसम्पदानीचगृहसोहा त्यहिबिलोकिसुरनायकमोहा ३४ दो०॥ बसैनगरजेंहिलक्षिकरि कपटनारिबरवेष त्यहिपुरकीशोभाकहत सकुचहिंशारदशेष ३५ चौ० ॥ पहुंचेदूतरामपुरपावन हर्षेनगरविलोकि सुहावन ३६ भूपद्वारतिनखबरिजनाई दशरथनृपसुनिलियेबोलाई ३७ करिप्रणामतिनपातीदीन्ही मुदितमहीपआपुउठि

पश्चिम गुप्तहरिहै अरु दक्षिण उत्तर अर्द्ध अर्द्ध योजन यह अन्तःपुर है तहां अनेक हेमरत्नमय महल हैं अरु महलन के शृङ्गस्वर्गलोकको चुम्बन करतेहैं अरु अनेक चौहटवनेहैं अरु शृङ्गन पर अनेक कलश शोभितहैं जनु अनेकन चन्द्र सूर्य एकरस उदित हैं अरु मयूर कोकिला पारावत इत्यादिक मनोहर बिहंगबोलतेहैं अरु गृह गृह कल्पतरु कामधेनु बिराजमानहैं अरु महलनबिषे अनेक बिचित्र चित्र बनिरहेहैं अरु पुरकेबाहर बावली तड़ागोंमें मणिनमय घाटबँधे हैं अमृतमय जलभरे हैं अरु हंसविहरते हैं मनोहर बोलते हैं

अरु अनेकन बाटिका लगी हैं अरु अनेक तरहके मनोहर वृक्ष सदाफलफूल संयुक्त सदाएकरस शोभितहैं अरु मयूरकोकिला शुक सारस पारावतादिक बिहंग मनोहर बोलकरिकै बाटिकान में शोभित हैं अरु सरयूके दूनोंकूलनपर मणिनते घाटबँधेहैं अरु बिचित्रसरयूमें पञ्चरङ्गके कमल फूलिरहेहैं भ्रमरनकी अवली गुञ्जार करती हैं अरु हंसनकी अवली मधुर मधुर बोलती हैं ऐसी श्रीअयोध्या मङ्गलमयदेखिकै दूनोंदूत आनन्दभये कार्त्तिकबदी पञ्चमीको दूतअवधपुर में पहुंचे ( ३६ ) ते दोऊदूत भूपकेद्वारमें खबरि जनावतेभये तब राजादशरथ सुनिकै बोलाइलेतेभये ( ३७ ) ते द्वौ दूतन प्रणामकरिकै यहकहा कि हेमहाराज यह पत्रिका राजा जनकजूपठवाहै तब अतिहर्षतेराजाआपुउठिकैलेतभयेहैं ( ३८ ) तब राजापत्रिका बांचतभये बांचतसंते नेत्रनमें जलभरिआयो अरु गातपुलकिआये पुलकते छाती भरिआई मानो स्फटिकमणिके शीशामें अतरभरा बारबार उफनात अरु बैठतहै ( ३९ ) हे पार्व्वती पत्रिका बांचत सन्ते रामलषण उर कही ध्यानमें आइगये अरु करमें पत्रिकाहैबर कही श्रेष्ठ सो मनहिंमें बांचिकै मौनहोइरहे न खट्टीकहिगई न मीठी कहि गई तहां खट्टी मीठी काहे पत्रिकामें यह लिखा है कि श्रीरामचन्द्रधनुषको तोरा आपु आइकै श्रीराम जानकी को बिवाह करिये तब यह समुझिकै कि रामचन्द्र तौ बालक हैं अरु धनुष महाघोर कठोर सो कैसेतोरिनि होई तहाँ यह अप्रतीति सो खट्टी है अरु जनकको वचन सत्य

लीन्ही ३८ बारिबिलोचनबांचतपातीपुलकगातआईभरिछाती ३९ रामलषणउरकरवरचीठीरहिगयेकहतनखाटीमीठी ४० पुनिधरि धीरपत्रिकाबांची हरषीसभाबातसुनिसांची ४१ खेलतरहेतहांसुधिपाई आये भरतसहितलघुभाई ४२ पूंछतअतिसनेहसकुचाई तात कहांतेपातीआई ४३ दो०॥ कुशलप्राणप्रियबन्धुदोउ अहहिंकहहुकेहिदेश सुनिसनेहसानेवचनबांच्यउबहुरिनरेश ४४ चौ० ॥ सुनिपातीपुलकेदोउभ्राता अधिकसनेहनहृदयसमाता ४५ प्रीतिपुनीतिभरतकैदेखी सकलसभासुखलह्यउविशेषी ४६ तबनृपदूत

प्रतीति सो मीठी है दूनोंसमुझिकै कछु नहीं कहिगई अरु दूसरपाठ रामलषणकर बरकै चीठी श्रीरामलक्ष्मणकै कर कही कर्त्तव्य तेहिकी चीठी और उहै अर्थ ( ४० ) पुनि धीरजधरिकै प्रकट पत्रिका बांचतेभये पत्रिकासुनिकै सब सभासांचीबातमानिकै हर्षितभये ( ४१ ) तहां भरत शत्रुहन दूनों भाई खेलतरहे पत्रिकाकी खबरिपाइकै हर्षिकै राजाके पास दौरिआये ( ४२ ) अतिस्नेहभरे संकोच समेत राजाते पूंछतेभये हे तात महाराज यह पत्रिका कहांतेआईहै हमसुनाहै कि जनकपुरते आईहै ( ४३ ) दोहार्त्थ॥ हे तात प्राणप्रिय दोउबंधु कुशलसंयुक्त कहहु कवनेदेशमें हैं तब अतिप्रेमभरी बाणीसुनिकै राजाने बहुरिकै पत्रिकाबांचिसुनाई ( ४४ ) पत्रिकासुनिकै अतिस्नेहभरे दोऊभाई पुलकेगातमें नहींसमातहैं ( ४५ ) अतिपुनीतप्रीति भरत कै देखिकै सम्पूर्णसभा विशेषसुखको प्राप्तभई ( ४६ ) तब राजादूतनको निकटबैठारिकै प्रीतिसमेत मधुरमनोहर बचनबोलते भये ( ४७ ) भैयाकही अतिआदर पूर्बक राजापूंछतेहैं कि दोउबारे कुशलआनन्दहैं तुमनीके अपने नेत्रनतेदेख्योहै ( ४८ ) दोऊबालक श्यामगौर हैं छोटेछोटे धनुषबाण अरु तरकसधरे हैं अरु वहिक्रम आदि किशोर हैं अरु कौशिकमुनिके साथ हैं ( ४९ ) यहिरीति सुभावते दोऊ कुमारनको तुमनीके निजनयननते देख्योहै हे भरद्वाज बारम्बार पुलकि पुलकि राजापूंछतेहैं ( ५० ) राजाकहतेभये जादिनते मुनि ल्यवाइगये तबते सांचीसुधिआजुपाई है तहां सुधितौ सदापावतेरहे हैं काहेते दूतलगेरहे हैं परबिश्वामित्र बिवाहकेहेतु राजाते संज्ञाजनाइगये हैं सो बिवाहकीसुधि आजुपाई ताते सांचीकहा ( ५१ ) राजापूंछते हैं कहहु बिदेहने कयनप्रकारजानाहै यह प्रियवचन सुनिकै दूतमुसुकाने ( ५२ ) दोहार्त्थ ॥ दूत यह

निकटबैठारे मधुरमनोहरवचनउचारे ४७ भैयाकहहुकुशलदोउबारे तुमनीकेनिजनयननिहारे ४८ श्यामलगौरधरेधनुभाथा बय किशोरकौशिकमुनिसाथा ४९ पहिंचानेहुतुमकहहुसुभाऊ प्रेमबिवशपुनिपुनिकहराऊ ५० जादिनतेमुनिगयेल्यवाई तबतेआजु सांचिसुधिपाई

५१ कहहुबिदेहकवनिबिधिजाने सुनिप्रियवचनदूतमुसुकाने ५२ दो०॥ सुनहुमहीपतिमुकुटमणि तुमसमधन्यन कोउ रामलषणजाकेतनय विश्वबिभूषणदोउ ५३ पूंछनयोगनतनयतुम्हारे पुरुषसिंहतिहुंपुरउजियारे ५४ जिनकेयशप्रतापके आगे शशिमलीनरविशीतललागे ५५ तिनकहँकहियनाथकिमिचीन्हे देखियरविकीदीपकलीन्हे ५६ सीयस्वयंबरभूपअनेका

समुझिकै मुसुकाने कि जिनके ऐसे पुत्रते कहते हैं कि कैसे चीन्हे यह समुझिकै दूतबोले हे सर्बमहीपनके मुकुटमणि तुमसमधन्य न कोई है काहेते जाके रामलक्ष्मण दोऊतनय सम्पूर्ण विश्व के भूषणहैं इहां ध्वनि हैकि विश्वके विभूषणकही चैतन्यकर्त्ता ब्रह्मजीवते द्वैमूर्त्ति अखण्ड एकरस प्रत्यक्ष तुम्हारेतनय तातेतुम धन्यहौ ( ५३ ) तब दूतबोले हे राजन् तुम्हारेतनय पूंछिबेयोग्यनहीं हैं अरु पुरुषसंज्ञामें जितनेहैं तिनबिषे तुम्हारे द्वौतनयसिंहहैं अरु तीनिहूं लोकबिषे उजियारकही प्रकाशमान अरु प्रकाशकर्त्ताहैं ( ५४ ) जिनके यश उज्ज्वलता प्रकाश शीतलता औ मधुरता के आगे शशि मलीनहै अरु जिनके प्रताप तेज निर्मल प्रकाश के आगेसूर्यमन्द है जस श्रीरामचन्द्रजी का प्रताप तैसेही श्रीलक्ष्मणजीका ( ५५ ) हे नाथ तिनकहँ कहहु कि किमिचीन्हे अरु दीपक के प्रकाशते कहूंसूर्यको देखिये है ( ५६ ) श्रीजानकीजी के स्वयम्बर बिषे सातहूं द्वीप के राजासिमिटे कही इकट्ठाभये पर एकतेएक महाभट ( ५७ ) तहां शंभुकोशरासन उठावनेकी काकहिये काहूसों नेकहून टरेउ अरु बड़ेबड़ेबीरबरियार हारिगये ( ५८ ) अरु तीनिलोक बिषे जेभटजिन के बीरता करमानतिनसबकै शक्तिधनुष हरिलियो ( ५९ ) अरु जेबीर देवदानव नरनविषे सुमेरु उठायबे को समर्थ तेऊ हेरिकै हृदयमें हारिकै फिरिगये ( ६० ) अरुजेहिरावण कौतुककहीतै कैलास उठाय लियोहै अरु बाणासुर पृथ्वीको उठायलियोहै तेऊतेहि सभामें धनुषके द्वारपराभवको प्राप्तिभये हैं ( ६१ ) दोहार्थ॥ तहांतेहि सभाविषे हेमहाराज श्रीरघुवंशमणिनेधनुषको भंज्यउ

सिमिटेसुभटएकतेएका ५७ शम्भुशरासनकाहुनटारा हारेसकलबीरबरियारा ५८ तीनिलोकमहँजेभटमानी सबकैशक्तिशंभुधनु भानी ५९ सकहिउठायसुरासुरमेरू सोउहियहारिगयेकरिफेरू ६० जेइकौतुकशिवशैलउठावा त्यउत्यहिसभापराभवपावा ६१ दो०॥ तहांरामरघुवंशमणि सुनियमहामहिपाल भंज्यउचापप्रयासबिनु जिमिगजपंकजनाल ६२ चौ०॥ सुनिसरोषभृगुनायकआये बहुतभांतितिनआंखिदेखाये ६३ देखिरामबलनिजधनुदीन्हा करिबहुविनयगमनबनकीन्हा ६४ राजनरामअतुल बलजैसे तेजनिधानलषणपुनितैसे ६५ कम्पहिंभूपबिलोकतजाके जिमिगजहरिकिशोरकेताके ६६ देवदेखितवबालकदोऊ अबनआंखितरआवतकोऊ ६७ दूतवचनरचनाप्रियलागे प्रेमप्रतापबीररसपागे ६८ सभासमेतराउअनुरागे दूतनदेननिछावरि-

किमिजिमि पंकजकी नालको खंडखंडकरिकै डारिदेइ ऐसे तुम्हारेपुत्रहैं ( ६२ ) हेराजन् धनुषभंग सुनिकै भृगुनायकआये बहुत प्रकारते आंखि देखाबतेभये ( ६३ ) श्रीरामचन्द्र को बलदेखिकै अपनो धनुषदैकैविनय करिकै बनगवनकीन्ह ( ६४ ) हेराजन् जैसे श्रीरामचन्द्र का बल अतुलहै तैसेही अतुलबलतेज के निधान लक्ष्मणजू हैं ( ६५ ) जिनलक्ष्मणके बिलोकत संते मानीभूप कांपते हैं किमिजिमि सिंहके किशोरके ताके तेगजकंपहिं ( ६६ ) हेदेव तुम्हारे बालकन को जबतेदेखा तबते कोऊकीशोभाप्रताप बीरता मेरे अब आंखितरे नहीं आवति किइनके समताकोई हई नहीहै अधिक कहांतेहोइगो ( ६७ ) तवदूतनके अतिरचना संयुक्तवचन सुनिकै अतिप्रियलागे सोवह वचनकैसाहै प्रेमप्रताप धीररसते पागा है ( ६८ ) हेभरद्वाज दूतनकी बाणीसुनिकै राजा सहितसभा अनुरागकोप्राप्तभये तब दूतनको निछावरि देनेलगे ( ६९ ) तबदूतन अनीति कहिकै कानमूंदे धर्मबिचारिकै सबहिन सुखमानिकै बड़ाईदीन्ह सावसि बिदेहकेतुमदूतहौ ( ७० ) दोहार्थ॥ तबभूपने उठिकै हर्षते पत्रिका बशिष्ठजू को दीन्हिजाइ अरु दूतनको

बोलाइकै दूतनके मुखते सबकथा सुनावतेभये ( ७१ ) तब बशिष्ठजू अतिसुख पाइकै बोले हेराजन् पुण्यपुरुष कहँ महिबिषे सुखछाइ रह्योहै ( ७२ ) किमिसुख छाइरह्योहै जिमिसंपूर्ण नदीसमुद्रको जाती हैं यद्यपि समुद्रको कामना नहींहै ( ७३ ) तदपि तिमितेही

लागे ६९ कहिअनीतितेमूंदहिंकाना धर्मविचारिसबहिंसुखमाना ७० दो० तबउठिभूपवशिष्ठकहँदीन्हिपत्रिकाजाइ कथासुनाई गुरुहिसबसादरदूतबोलाइ ७१ चौ० ॥ सुनिबोलेगुरुअतिसुखपाई पुण्यपुरुषकहँमुखमहिछाई ७२ जिमिसरितासागरपहँजाहीं यद्यपिताहिकामनानाहीं ७३ तिमिसुखसम्पतिबिनहिंबोलाये धर्मशीलपहँजाहिँसुभाये ७४ तुमगुरुविप्रधेनुसुरसेवी तस पुनीतकौशल्यादेवी ७५ सुकृतीतुमसमानजगमाहीं भयेनहहिंकोउहोन्यउनाहीं ७६ तुमतेअधिकपुण्यबड़काके राजनरामसरिससुतजाके ७७ बीरबिनीतधर्मब्रतधारी गुणसागरबरबालकचारी ७८ तुककहँसर्बकालकल्याना सजहुबरातबजाइनिशाना ७९ दो० ॥ चलहुबेगिसुनिगुरुवचन भलेहिनाथशिरनाइ भूपतिगमनेभवनतबदूतनबासदिवाइ ८० चौ०॥ राजासबरनिवासबो-

प्रकार सुखसंपति बिनाबोलाये धर्मशील पुरुषके पासजातेहैं ( ७४ ) अरुतुमतो धर्म शीलरूपैहौ अरु तुम सुरगुरु बिप्रधेनु सेवीहौ अरु तैसेही पुनीत श्रीकौशल्यादेवी हैं ( ७५ ) हेराजन् तुम्हारेसमान सुकृतीनकोई भयोहै नहै नहोइगो ( ७६ ) अरु तुम्हारे समपुण्य किसीके तीनिहूं कालमें नहीं है अधिक कहांते होइगो काहेते जिनके रामऐसेपुत्र हैं जिनको परमहंसआदिक ध्यावते हैं ( ७७ ) कैसे हैं तुम्हारे चारिउपुत्र बीर बिनीतकही प्रवीण अरु सर्बधर्मके धरैया ( ७८ ) हे राजन् तुमकह सर्बकालमें कल्याण है अब बरातको सजिकै नगारा बजाइकै चलहु ( ७९ ) दोहार्थ॥ हेभरद्वाज तब गुरुनको शीघ्रचलहु यहबचन सुनिकै दूतन को बासदिवायकै अतिहर्षते भवनको आये ( ८० ) तब राजाने सबरनिवासको बोलाइकै जनक की पत्रिका बांचिकै सुनाइदीन्ह ( ८१ ) तब सुनिकै सब रानी हर्षी अपरकथा भूपमुखागर कहतेभये ( ८२ ) राजा रानी प्रेमते प्रफुल्लित हैं जैसे वारिदकर शब्द सुनिकै मयूर मयूरीके आनन्दहोतहै ( ८३ ) अरु गुरुनकीस्त्री इत्यादिक ब्राह्मणनकीस्त्री आशीर्व्वाद देती हैं अरु माता सब आनन्दितहहिं ( ८४ ) औ परस्पर पातीलेती हैं हृदयमें लगाइकै श्रीरामचन्द्रके बिच्छेपके बिरहकी अग्निको शीतल करती हैं ( ८५ ) अरुरामलक्ष्मणकी करणीकै कीर्त्ति बर कही श्रेष्ठ बारम्बार राजाबर्णते हैं ( ८६ ) अरु सब कौशिकमुनिका प्रतापहै यहकहिकै राजा सभाको तब रानिन ब्रा-

लाई जनकपत्रिकाबांचिसुनाई ८१ सुनिसन्देशसकलहरषानी अपरकथासबभूपबखानी ८२ प्रेमप्रफुल्लितराजहिंरानी मनहुंशिखिनमुनिबारिदवानी ८३ मुदितअशीषदेहिंगुरुनारी अतिआनन्दमगनमहतारी ८४ लेहिंपरस्परअतिप्रियपाती हृदयलगाइ जुड़ावहिंछाती ८५ रामलषणकैकीरतिकरणी बारहिँबारभूपबरबरणी ८६ मुनिप्रतापकहिद्वारसिधाये रानिनतबमहिदेवबुलाये ८७ दियेदानआनन्दसमेता चलेबिप्रबरआशिषदेता ८८ सो०॥ याचकलियेहँकारि दियेनिछावरिकोटिबिधि चिरजीवहुसुतचारि चक्रवर्त्तिदशरत्थके ८९ चौ० ॥ कहतचलेपहिरेपटनाना हर्षिहनेगहगहेनिशाना ९० समाचारपुरलोगनपाये लागेघरघरहोनबधाये ९१ भुवनचारिदशभयउउछाहू जनकसुतारघुबीरबिवाहू ९२ सुनिशुभकथालोगअनुरागेमगगृहगलीसँवारन लागे ९३ यद्यपिअ-

ह्मणनकोबोलाय ( ८७ ) आनन्दपूर्वकअनेकदान देतीभईं तब बरबिप्र आशीर्वाददेतचले ( ८८ ) सोरठार्त्थ॥ अरु अनेकयाचकबोलाइकै कोटिनबिधि निछावरि देतीभईं तब वे आर्शीर्व्वाद देतेभये कि चक्रवर्ती राजा दशरथतिनके पुत्र चिरञ्जीवहोहिं ( ८९ ) तब पाइकै नानाप्रकारके पट पहिरि पहिरि सहजही हर्षिकैचले तब हर्षिकै गहगहे कही सघन गम्भीर निशानकही नगारे बाजतेभये ( ९० ) श्रीरामचन्द्रके बिवाहके उत्सवको समाचार सबलोगन पायो घरघर बधाई बजनेलगी हैं ( ९१ ) श्रीराम जानकीके बिवाहके उत्सवको मङ्गल चौदहौ भुवनमें होनेलगो ( ९२ ) यह सब कथा सुनिकै लोग अनुरागको प्राप्तह्वैकै मग गृह गली सँवारनेलगे ( ९३ ) अरु यद्यपि अयोध्या सदैव एकरसशोभितहै काहेते श्रीरामचन्द्रकी पुरीहै मङ्गलमय अतिपावनि शोभितहै ( ९४ ) तदपि श्रीरामचन्द्रके बिवाहकीप्रीति रीतिते सब उत्सवकोसाज साजते अरु रचना करतेहैं ( ९५ ) अरु ध्वजा पताका चामर पट इत्यादिक करिकै बिचित्र चारु कही सुन्दर बाजारकी रचना करतेभये ( ९६ ) पुनि कनक कलश अरु तोरण कही मणिनके बन्दनवार तेहिकर जालरचा अरुहर्द्दी दूब अक्षत दधिइत्यादिक मालकीमाल कही पंक्तिकी पंक्तिरचना करतेभये ( ९७ ) दोहार्त्थ॥ अरु लोग मंगल मय निज २ भवन वनावतेभये अरु चतुरजन वीथीकही गलीअगर कर्पूरकस्तूरी केसरि अतर फुलेल इत्यादिकनते सींचतेभये अरु गजमुक्तनके चारुचौकैं पूरतभये ( ९८ ) जहाँतहाँ यूथयूथ भामिनि मिलिकै नवसप्तकही सोरहो शृङ्गारकिहे सकलकही सम्पूर्ण किन्तु सकलकहे स्वरूप दा-

**वधसदैवसुहावनि रामपुरीमंगलमयपावनि १४ तदपिप्रीतिकीरीतिसुहाई मंगलरचनारचीबनाई १५ ध्वजपताकपटचामरचारू छायेपरमविचित्रबजारू १६ कनककलशतोरणमणिजाला हरदूदबदधिअक्षतमाला १७ दो० ॥ मंगलमयनिजनिजभवनलोगन रचेबनाइ बीथीसींचीचतुरसमचौकैंचारुपुराइ १८ चौ०॥ जहँतहँयूथयूथमिलिभामिनि सजिनवसप्तसकलद्युतिदामिनि १९ बिधुबदनीमृगशावकलोचनि निजस्वरूपरतिमानबिमोचनि १०० गावहिंमंगलमंजुलबानी सुनिकलरवकलकंठलजानी १०१ भूपभवनकिमिजाइबखाना विश्वविमोचनरच्यउविताना १०२ मंगलद्रब्यमनोहरनाना राजतबाजतबिपुलनिशाना १०३ कतहुंविरदबंदीउच्चरहीं कतहुंवेदध्वनिभूसुरकरहीं १०४ गावहिंसुन्दरिमंगलगीता लैलैनामरामअरुसीता १०५ बहुतउछाहभ-**

मिनीको द्युतिकही शोभाको हरतुहै ( ९९ ) सब चन्द्रबदनी मृग शावकनयनी अपनी छबि स्वरूप करिकै रतिकोमान मर्द्दनकरती हैं ( १०० ) ते सबमङ्गलमञ्जुलकही निर्म्मलबार्णाते गानकरतीहैं सकलकही शोभितरव सुनिकै कलकही कोकिलाके कण्ठ लज्जितहोते हैं ( १०१ ) अरु भूप करभवन कैसे बखानिये जहां बिश्वबिमोहन बितानरच्योहै जैसे जनककेभवनमें बितान शोभितहै रचनाभई है तैसे राजादशरथके भवनमें बितान शेभितहै रचनाभई है ( १०२ ) अरु मंगलद्रब्यकही रत्न सुवर्ण बिद्रुमनानाप्रकार के पट अरु गज तुरंग रथ इत्यादिक मनोहर राजते हैं अरु निशानइत्यादिक बाजतेहैं ( १०३ ) अरु कतहुं कही जहाँ तहाँ बन्दीबिरदावली छन्दनकरिकै उच्चारणकरतेहैं अरु जहाँतहाँ ब्राह्मण वेदध्वनि करतेहैं ( १०४ ) तहांसबसुन्दरी मंगलमयगीत राम अरु सीताका नाम कहि कहि गावती हैं ( १०५ ) हे गरुड़ जनु बहुत उत्साह छोटेघरमें तेहि समयबिषे उमगिचल्योहै ( १०६ ) दोहार्त्थ॥ हे पार्व्वती राजादशरथकेभवनकीशोभा ऐसो कौनकबिहै जो वर्णनकरै काहेते जिन दशरथके ब्रह्मा शिवादिक देवतनके शिरोमणि श्रीरामचन्द्र अवतारलीन्ह ( १०७ ) पुनिराजा भरतजीको बोलावतेभये अरु आज्ञादीन्ह कि घोड़े हाथी रथनकी तय्यारी करावो ( १०८ ) बेगि कही शीघ्र रघुनाथजीके बिवाहकी बरातसजिकैचलहु यहसुनिकै भरतद्वौभाई पुलके आनन्द भरिकेधाये ( १०९ ) तब भरतजू सकल साहनीकही दरोगनको बोलावतेभये यह आज्ञादीन्हकि घोड़े रथ पैदल समूहरचिकैसब तय्यारीकरो शीघ्रही सब श्रीरघुनाथजी

वनअतिथोरा मानहुउमगिचल्यउचहुंओरा १०६ दो०॥ शोभादशरथभवनकै कोकबिबरणैपार जहाँसकलसुरशीशमणिराम लीन्हअवतार १०७ चौ०॥ भूपभरततबलियेबोलाई हयगजस्यंदनसाजहुजाई १०८ चलहुबेगिरघुबीरबराता सुनतपुलकिपूरे दोउभ्राता १०९ भरतसकलसाहनीबोलाये आयसुदीन्हमुदितउठिधाये ११० रचिरुचिजीनतुरँगतिसाजे बर्णवर्णबरबाजि बिराजे १११ सुभगसकलसुठिचंचलकरणी अवइवजरतधरतपगधरणी ११२ नानाजातिनजाहिंबखाने निदरिपवनजनुचहतउड़ाने ११३ तिनपरछैलभयेअसवारा भरतसरिससबराजकुमारा ११४ सुंदरसबबहुभूषणधारी करशरचापतूणकटिभारी ११५

के बिवाहार्त्थ जनकपुरको चलैंगे ( ११० ) ते सबहर्षिकै तय्यारी करावतेभये नानाबर्णकही नानारंगरंगके घोड़नके शृंगार जीन आवर्ण इत्यादिक अंगअंग प्रति यथायोग्य हेम मणि मोती पाटम्बर जरावनते सजतभये ( १११ ) ते घोड़े कैसे हैं सुभगकही अतिसुन्दर सदा नवीन अरु सुठि चञ्चल करणी जैसे कुम्हारकेआँवाँ जरतमें पगपरैं शीघ्रउठैं तैसेई घोड़नकेपग महिमेंपरतहैं ( ११२ ) अरु नानाजातिजाति के घोड़े बखानिबेयोग्य नहीं हैं जनु पवनकी निन्दाकरिकै आकाशबिषे उड़िजावाचाहते हैं ( ११३ ) तिन घोड़नपर रघुबंशिनके बालक अतिसुन्दर किशोर नखशिखलौं परम सुन्दर दिब्य अलङ्कारकिहे छैल असवार होतेभये सो सबराजकुमार भरत लक्ष्मण शत्रुहनके सरसकही सदृशहैं ( ११४ ) अरु सहजही अति सुन्दरहहिं अनेक भूषण उनते शोभा पावते हैं अरु करबिषे धनुषबाणकटिविषे तूण चित्रविचित्रशोभितहैं अरु शीशबिषे जरावनकेचीरा कनक मोतिनकी कलँगी कटि अरु काँधेबिषे पीताम्बर अतिशोभितहै गौरश्यामरूपहै ( ११५ ) दोहार्त्थ ॥ अरु छरेकही कछुऔरबस्तु नहींलीन्हें छबीले कही अतिहर्ष प्रसन्नमन सब श्रीराघवजी के सखा दास सबके पियारेदुलारे एकरस अरु दान संग्राम विषे अतिशूर अरु सुजानकही सर्व्ववेदवेत्ता सर्व्वनीति में प्रबीण अरु नित्यनबीन तिनसंगबिषे सवारप्रति दुइ २ पैदर जे असिकलामें अतिप्रबीण ( ११६ ) अरु गोढ़ेगाढ़ेबीर रणकेबिरद बाँधे हैं तय्यारहोइकै पुरकेबाहर निकसिनिकसि ठाढ़ेभये ( ११७ ) चतुरसबार नानागतिके तुरंगनकोफेरतेहैं अरु पणवकहीढोल निशानकहीनगाराके शब्दसुनिकै हर्षत हैं ( ११८ ) अरु सारथिनने रथको चित्रबिचित्र अनेकन हेममणि मुक्तनकरिकै सजे अरु मणिनके ध्वजापताका भूषणन

दो०॥ छरेछबीलेछैलसब शूरसुजाननबीन युगपदचरअसवारप्रति जेअसिकलाप्रवीन ११६ चौ० ॥ बाँधेबिरदबीररणगाढ़े निकसिभयेपुरबाहेरठाढ़े ११७ फेरहिंचतुरतुरँगगतिनाना हर्षहिंसुनिसुनिपणवनिशाना ११८ रथसारथिनबिचित्रबनाये ध्वजपताकमणिभूषणछाये ११९ चमरचारुकिंकिणिध्वनिकरहीं भानुयानशोभाअपहरहीं १२० श्यामकर्णअगणितहयहोते ते तिनरथनसारथिनजोते १२१ सुन्दरसकलअलंकृतसोहैं जिन्हहिंबिलोकतमुनिमनमोहैं १२२ जेजलचलहिंथलहिंकीनाई टापन बूड़बेगअधिकाई १२३ अस्त्रशस्त्रसबसाजबनाई रथीसारथिनलियेबोलाई १२४ दो० ॥ चढ़िचढ़िरथबाहेरनगर लागीजुरनबरात होतसगुनसुन्दरसबहिजोज्यहिकारजजात १२५ चौ०॥ कलितकरिवरनपरीअँबारी कहिनजाइज्यहिभाँतिसँवारी १२६

करिकैछाये हैं ( ११९ ) अरु चारुचमर शोभितहैं अरु किंकिणी ध्वनिकरतीहैं सोरथ कैसो है भानुयानके बेगकी शोभाको अपहरतहै ( १२० ) जिन घोड़नको रथमें सारथिनजोते हैं तिनते अगणित श्यामकर्णहोतेहैं किंतु कदापि दैवयोगते अगणित घोड़नबिषे कहूं दुइएक श्यामकर्णहोते हैं अरु इहां अगणित श्यामकर्ण रथनमें जोतेगये हैं

( १२१ ) अरु सकलघोड़े अतिसुन्दर अलङ्कार करिकै शोभायुक्त जिनको देखिकै मुनिबिरक्तहैं तिनकेर मनमोहिजाते हैं ( १२२ ) तेघोड़े जैसै थलमेंचलतेहैं तैसेहीजलमेंचलतेहैं वेगकी आधिक्यताते टपनहींबूड़े हैं ( १२३ ) अरु अस्त्र शस्त्र साजबनाइकै ऐसारथ साजिकै सारथिन रथिनको बोलाइलियो ( १२४ ) दोहार्थ॥ तब रथन घोड़नपर चढ़िचढ़ि बरातबाहेर जुरनलागी सुन्दर सगुनहोते हैं जो ज्यहिकार्य्यको जातहै सबकरकार्य्य श्रीरामचन्द्रकर दर्शन अरु रामनिछावरि अरु काहू काहूके बिवाहकी बासना किंतु जौन जौन कार्य्य जाको चाही सो धाइधाइ करते हैं ( १२५ ) अनेक तरहके रत्नकंचन मुक्तनकरिकै कलित पाटम्बर उन पटनपर कलित परम सुन्दर अंबारी जेहिभाँति हाथिनपर परीहै सो कहीनहींजाइ ( १२६ ) मत्तमत्त गजनके घटाके घटाचले इन्द्रके गजनकी निन्दाकरतेहैं श्रीरामचन्द्र की सवारीके हाथीकोनाम शत्रुञ्जय तेहिकी यूथकेयूथचले मानौ श्रावणकी घनघमण्ड घटामें अनेक दामिनीदमकत जनु तापर तारागण उदित एकरस मधुर मधुर गर्जतचलेहैं ( १२७ ) अरु अपरअनेक बाहन बिबिधबिधानकी शिविकाकही नालकी पालकी चौपहलूमियाना इत्यादिक

चलेमत्तगजघण्टबिराजे मनहुसुभगश्रावणघनगाजे १२७ बाहनअपरअनेकबिधाना शिविकासुभगसुखासनयाना १२८ तिन चढ़िचलेविप्रबरवृन्दा जनुतनुधरेसकलश्रुतिछन्दा १२९ मागधसूतबन्दिगुणगायक चलेयानचढ़िजोज्यहिलायक १३० बेसर ऊँटवृषभबहुजाती चलेबस्तुभरिअगणितभाती १३१ कोटिनकाँवरिचलेकहारा बिबिधिबस्तुकोबरणैपारा १३२ चलेसकलसेवकसमुदाई निजनिजसाजसमाजबनाई १३३ दो० ॥ सबकेउरनिर्भरहरषपूरितपुलकशरीर कबहुँकिदेखबनयनभरिरामलषणदोउबीर १३४ चौ०॥ गर्जहिंगजघंटाध्वनिघोरा रथरवबाजिहींसचहुँओरा १३५ निदरिघनहिंघूमरहिंनिशाना निजपराव

अरु सुखासन सुखपाल यान कही रथ ( १२८ ) तिनपर चढ़िचढ़ि वृद्धब्राह्मण जनु श्रुतिनके छन्दनकी ऋचारूप धरिचले हैं ( १२९ ) मागध कही कलावत सूतपुराण गावते हैं बन्दीजन इत्यादिक जे जैसे लायक तेतैसे बाहननपर चढ़िचढ़िचले ( १३० ) अन्यच्च॥ सूताःपौराणिकाज्ञेयामागधावंशबर्णकाः ॥ बन्दिभिर्वीररसभिःपूर्वमुक्तैर्महौजसं॥१॥ बेसरकहीखच्चर अरु ऊंट वृषभ इत्यादिक भारवाहक अनेकन पदार्थ भरिभरिचले ( १३१ ) अरु कोटिन कहार अनेक पक्वान्न मिठाई काँवरिनमें भरिभरिचले ( १३२ ) अरु सकलसेवक आपन आपन साज साजि साजिचले ( १३३ ) दोहार्थ॥ सबके उरबिषे निर्भरकही औरिएकौ सुधिनहीं है प्रेमतेभरे आतुरकब पहुंची पुलकते शरीर पूरिरह्यो है दुहुनयननते श्रीरामलषणाको कबदेखब ( १३४ ) अरु हाथीगर्जते हैं घण्टनकीध्वनि द्वौअतिघोरहोतिहै अरु रथनकोरव अरु घोड़नको हिंसकहां हिहिनाव चा रिउदिशामें पूरिरह्योहै ( १३५ ) अरु मेघके शब्दकी निन्दाकरिकै निशानघुमरतेकही बाजतेहैं तहां अपनी पराई बोली नहीं सुनिपरतीहै ( १३६ ) हे भरद्वाज भूपकेद्वारे महाभीरभई हाथीघोड़े रथ पैदरनकरिकै जो पाषाणपवाँरिदेइ तौ रजहोइजाइ ( १३७ ) तहां महलनपर चढ़ीचन्द्रमुखी देखती हैं थारिनमें मङ्गलमय आरतीलिहेहैं ( १३८ ) आनन्दपूर्वक मनोहरगीतगावती हैं बखान करिबेयोग्य नहींहैं ( १३९ ) तब सुमन्त दुइस्यन्दनसाजतेभये तेहि में रबिके घोड़नके निन्दकघोड़े जोततेभये ( १४० ) अरु तेदोऊरथ रुचिरकही सुन्दर भूपपहँ आनतेभये तिनकी शोभा शारदा शेष

कछुसुनियनकाना १३६ महाभीरभूपतिकेद्वारे रजहोइजाइपखानपँवारे १३७ चढ़ीअटारिनदेखहिंनारी लियेआरतीमंगलथारी १३८ गावहिंगीतमनोहरनाना अतिआनन्दनजाइबखाना १३९ तबसुमंतदुइस्यन्दनसाजी जोतेहयरविनिंदकबाजी १४० द्वौरथरुचिरभूपपहँ आने नहिंशारदपहँजाहिंबखाने १४१ राजसमाजएकरथसाजा दूसरतेजपुंजअतिभ्राजा १४२ दो०॥ तेहिरथरुचिरवशिष्ठकहँ हरषिचढ़ाइनरेश

**आपुचढ़ेस्यंदनसुमिरिहरगुरुगौरिगणेश १४३ चौ०॥ सहितवशिष्ठसोहनृपकैसे सुरगुरुसंगपुरंदरजैसे १४४ करिकुलरीतिवेदबिधिराऊ दीखसबहिंसबभाँतिबनाऊ १४५ सुमिरिरामगुरुआयसुपाई चलेमहीपतिशंखबजाई १४६ हर्षेबिबुधबिलोकिबराता बरषहिंसुमनसुमंगलदाता १४७ भयउकोलाहलहयगजगाजे ब्योमबरातबाजनेबाजे १४८**

पहँ नहीं बखानते बनै है ( १४१ ) राज साजसंयुक्त एकरथ राजसमाजकही राजाकेहेतु साजागयाहै अरु दूसर तेजपुञ्ज अति शोभित भ्राजत है ( १४२ ) दोहार्त्थ॥ तेहि रथपर हर्षिकै राजा बशिष्ठकहँ चढ़ावतेभयेअरु आपुहर गुरु गौरि गणेशकहँ सुमिरिकै चढ़ते भये ( १४३ ) सहित बशिष्ठ राजा कैसे शोभते हैं जैसे वृहस्पति संयुक्तइन्द्र सोहते हैं ( १४४ ) सबभांतिते बरातकर बनाव देखिकै राजा वेद बिधि से सब कुल रीति कीन्हि ( १४५ ) पुनि श्रीरामचन्द्रको हृदयमें सुमिरिकै राजा गुरुनकीआज्ञापाइकै पांचजन्य शंखध्वनि करिकै चलतेभये ( १४६ ) तब बरातबिलोकिकै देवताहर्षे कल्पवृक्षके फूलबर्षतेहैं कैसे फूलमङ्गलदाता किंतुअपनीमंगलदाता बरातको देखिकै फूलबर्षते हैं ( १४७ ) तब कोलाहल कही सबको मंगलमय शब्द अति उत्कर्षगजघोर इत्यादिकनके अरु आकाशबरात द्यौबिषे अनेकनबाजे बाजतेभये ( १४८ ) तहां सुरनरनारि अनेकनमंगल गावतीह अरु सुष्टरागरागिनी लिहेसहनाई बाजतीह ( १४९ ) अरु घण्टाघण्टिनकी ध्वनिबर्णीनहींजातीहै अरु मल्लसरोकरतेहैं तालदेतेहैं कूदतेहैं फहरातेहैं किंतु मल्लसरोकरतेहैं कूदते हैं अरु पायक नभबिषे कूदतेहैं फहरातेहैं ( १५० ) अरु बिदूषणकही भाँड़ तेअनेक कौतुककरतेहैं अरु हास्यरसमें कुशलकही अतिप्रवीणहैं अरु सब रागरागिनी तालस्वरप्रबन्ध अरु नृत्यमें अतिप्रवीणहैं ( १५१ ) दोहार्त्थ ॥ तहां कुँवरकही रघुबंशिनके बालक ते बरकही श्रेष्ठ तुरंग नचावते हैं अरु अकनिकही मृदंगनिशाननकी टंकोरसुनिकै नागरकही चतुरनटते चकितकही चंचलनेत्रन

**सुरनरनारिसुमंगलगाई सरसरागबाजहिंसहनाई १४९ घंटघंटिध्वनिबरणिनजाई सरौकरैपायकफहराई १५० करहिबिदूषक कौतुकनाना हास्यकुशलकलगानसुजाना १५१ दो०॥ तुरँगनचावहिंकुंवरबर अकनिमृदंगनिशान नागरनटचितवहिंचकित डिगहिनतालबँधान १५२ चौ०॥ बनैनबरणतबनीबराता होहिंशकुनसुंदरशुभदाता १५३ चाराचाषबामदिशिलेहीं मनहुंसकल मंगलकहिदेहीं १५४ दाहिनकागसुखेतसुहावा नकुलदरशसबकाहूपावा १५५ सानुकूलबहत्रिबिधिबयारी सघटसबालआव बरनारी १५६ लोवाफिरिफिरिदरशदेखावा सुरभीसन्मुखशिशुहिंपियावा १५७ मृगामालफिरिदाहिनआई मंगलगणजनुदीन**

ते आश्चर्यितघोड़े बाजननकी गतिलखिकै तेहिपरआपुनृत्यकरतेहैं तालबन्धानते नहींडिगैं नामनहींचूकैहैं ( १५२ ) हेभरद्वाज बरातका ऐश्वर्य्य शोभाबनाव बर्णिबेयोग्यनहींहै बरातकेआगे सुन्दर अतिशुभदाता शकुनहोतेहैं ( १५३ ) चाषकही नीलकण्ठ सो चारालिहे बायें दिशा देखिपरैं सो मानहु सम्पूर्ण मंगल कहेदेतहैं ( १५४ ) अरु दाहिनी दिशामें कागसुषेत बिषे सुन्दरबाणीबोलत पुनि नकुलकही नेउरा तेहिकर दर्शन सब काहूनपावा ( १५५ ) अरु सानुकूलकही पूर्बकोजाते हैं पश्चिमकै पवनत्रिबिधिकही शीतलमन्द सुगन्धपवन श्रीअयोध्याते जनकपुरताईं बहतिहै मानहु बरातकै दूतपन करतिहै अरु दुइघट सरयू निर्मल जलभरेबरनारि किशोरी चन्द्रमुखी अरु बालकलिहे यहीप्रकार दुइस्त्री आगे आवतीभईं ( १५६ ) पुनि लोवाकही लोखरी घूमिघूमि दर्शनदेतीहै अरुसन्मुख सुन्दरनवीन गऊ शिशु बत्सपियावतीहै ( १५७ ) पुनि मृग हरिणन की मालाकही पांतिकीपांति सबको दाहिनीदिशामें देखिपरी मानहुंमंगलके गणकही समूह देखायेदेती हैं ( १५८ ) पुनि क्षेमकरी क्षेमकी करनिहारी सो देखिपरी बोली अरु श्याम बिहंग आम्रवृक्षपर देखिपरी ( १५९ ) पुनि सन्मुख दधि अरु मीन भारकेभारदेखिपरे पुनि दुइब्राह्मण प्रबीण सुन्दर हाथबिषे श्रीमद्रामायणकै पुस्तकलिहे देखिपरे ( १६० ) दोहार्त्थ॥

श्रीदशरथ महाराजकै बरातकैसी है स्वाभाविकै मंगल अरु कल्याणमय है अरु इच्छितफलकी देनहारी है तेहि बरातकी यात्राबिषेसब शकुन मानहुं अपने सत्यहोबेके निमित्त प्राप्तभये ( १६१ ) इतिश्री

देखाई १५८ क्षेमकरीकहक्षेमविशेषी श्यामाबामसुतरुपरदेखी १५९ सन्मुखआयउदधिअरुमीना करपुस्तकदुइबिप्रप्रबीना १६० दो०॥ मंगलमयकल्याणमयअभिमतफलदातार जनुसबसांचेहोनहितीभयेशकुनयकबार १६१॥ * * *

चौ०॥ मंगलशकुनसुगमसबताके सगुणब्रह्मसुंदरसुतजाके १ रामसरिसबरदुलहिनिसीता समधीदशरथजनकपुनीता २ मुनि असब्याहसगुनसबनाचे अबकीन्हेबिरंचिम्वहिंसांचे ३ यहिबिधिकीन्हबरातपयाना हयगजगाजेहनेनिशाना ४ आवतजानिभानुकुलकेतू सरितनजनकबँधायोसेतू ५ बीचबीचबरबासबनाये सुरपुरसरिससम्पदाछाये ६ अशनशयनबरबसनसोहाये पावहिँसब

रामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वंसने बालकाण्डे श्रीदशरथमहाराज बरातप्रस्थानवर्णनन्नामद्विपञ्चाशत्तरंगः ५२॥ :: :: :: :: :: ::

दोहा॥ तीनिपचासतरंगमें चलीबरातउमंग ॥ रामचरणमिथिलाजलधि मिलनचलीजनुगंग ५३ हे गरुड़जी राजाकी बरातमें इतने सगुनभये तौ कौन आश्चर्य्य है राजाको सब सगुनमंगल सहजही सुलभहैं काहेते जिनके परब्रह्म परमदिव्यगुण मूर्त्ति पुत्र हैं ( १ ) जेहिबरातबिषे श्रीरामचन्द्रबरहैं औ परमानन्दमूर्त्ति श्रीजानकीजी दुलहिनिहैं अरु दशरथ जनकसमधी हैं जिनके श्रीरामजानकी तनयतनयाहैं जे ऐसे पुनीत हैं तिनकीबरात मंगलरूपही है ( २ ) तहां यह ब्याहसुनिकै सगुन सबनाचेहैं कि अब बिरंचि हमको सांचेकीन्ह है ( ३ ) ऐसे बरातनेयही प्रकारते पयानकीन्हैहै अरु हाथी घोड़े निशान गाजते हैं ( ४ ) तहां भानुकुलकेतुकै बरात आवतजानिकै जनकजी सरितनबिषे सेतुबँधावतेभये ( ५ ) अरु बीचबीचमें बरबास बनावतेभये तहां सुरपुरते अधिकसम्पदा छायरहीहै ( ६ ) अशन भोजन अरु शयनकही निवासशय्या बर बसन इत्यादिक मनभावित सबकोप्राप्तहैं ( ७ ) अरु नित्यमंजिल मंजिलपर नवीननवीन अधिक अधिक सुखप्राप्तहै सोसुख देखिदेखि अपने अपने मंदिर कर सुखभूलिगये हैं ( ८ ) दोहार्त्थ ॥ आवतजानिबरातबर जब बरातजनकपुरके समीप पहुँची तब जनकजूकी ओर बरातकर आगमन सुनिकै अनेकन बाहन गज रथ तुरंग इत्यादिक सजिकै अनेक बाजा बाजतसंतेअगवानीलेबेको चलतेभये ( ९ ) तब जनकजीकी आज्ञाते अनेक सोनेके कलश कोपरथार इत्यादिक भाजन अनेकपदार्थ भोजन पक्वान्न मिठाई इत्यादिक ( १० ) ते सब सुधाके समान तिनपात्रनमें भरेहैं अनेक

निजनिजमनभाये ७ नितनूतनसुखलखिअनुकूले सकलबरातिनमन्दिरभूले ८ दो०॥ आवतजानिबरातबर सुनिगहगहेनिशान सजिगजरथपदचरतुरँगलेनचलेअगवान ९ चौ० ॥ कनककलशकलकोपरथारा भाजनललितअनेकप्रकारा १० भरेसुधासमसब पकवाने भांतिभांतिनहिंजाहिंबखाने ११ फलअनेकबरबस्तुसोहाई हरषिभेटहितभूपपठाई १२ भूषणबसनमहामणिनाना खगमृगहयगजबहुबिधियाना १३ मंगलसगुनसुगन्धसुहाये बिबिधभांतिमहिपालपठाये १४ दधिच्यूराउपहारअपारा भरिभरि कांवरिचलेकहारा १५ अगवानिनजबदीखबराता उरआनन्दपुलकिभरिगाता १६ देखिबनावसहितअगवाना मुदितबरातिनहने

भांति भांतिके पक्वान्न बखानिबेयोग्यनहींहैं ( ११ ) अरु अनेक प्रकारकेफल औ अनेकवस्तु मेवा गरी छोहारा बदाम पिस्ता किसमिस सेव नासपाती अनार खवानी अंगूर पनस रसाल इत्यादिक अनेकमेवा अनेकन भारन भरिभरि भेटकेनिमित्त जनकजी पठावतेभये ( १२ ) अरु अनेक भूषण कंचन अरु जरिनके अनेकनबस्त्र अरु अनेक महामहामणिअनेक जातिजातिके खग मृग अरु यान ( १३ ) मंगल सगुन सुगन्ध सुहाये अरु मंगलमय सगुनके पदार्थ अरु अनेक सुगन्ध अतर गुलाबफुलेल इत्यादिक सुन्दर बिबिधप्रकारके पठावतेभये ( १४ ) अरु दधि चिउरा चर्बण इत्यादिक उपहारकही सो अनेक कांवरि भरिभरि कहारलैचलेहैं ( १५ ) पुनि जब अगवानिन बरातकहँदेखिनि तब अति आनंद ते पुलकिकै गातभरिआये ( १६ ) पुनि बराती बनावसहित अगवानिनकहँ देखिकै अतिआनन्द पूर्बक निशानादिक बाजाबजाबतेभये ( १७ ) दोहार्थ॥ तब हर्षिकै नगारेदैकै परस्परमिलनहेतुबगमेल कही हाथीघोड़ेरथनकीबागैं दोउदिशिते छूटतीभई जनु आनन्दके दुइसमुद्र बेलाबिहाइकै संगमकरतेभये सुष्टबेलाकही मर्यादकहँ ( १८ ) तेहिसमयकर सुखदेखिकै देवता फूलबर्षते हैं सुरसुन्दरी गानकरती हैं अरु देवता मुदितदुन्दुभी कही छोटेछोटे नगारन की नौबतिबजावते हैं ( १९ ) जो सरञ्जामभेंट हेतु गया सो राजाके आगे राखिकै करजोरिकै बहुतप्रकारते बिनय कीन्ह ( २० ) तब राजा प्रेमसमेत सबलैकै याचकनको बकसीसदेतेभये ( २१ ) तब जे अगवानी बरातके लेबेकोगये हैं ते राजाकीपूजा मान्यता बड़ाईकरिकै हाथजोरिकै जनवासेको ल्यवाइचले ( २२ ) तहां राहविषेचित्रबिचित्र बस्त्रनकेपांवड़े परतेजाते हैं तेहिपर दशरथमहाराज अरुसब

निशाना १७ दो० ॥ हरषिपरस्परमिलनहितकछुकचलेबगमेल जनुआनन्दसमुद्रदुइ मिलतबिहाइसुबेल १८ चौ०॥ बर्षिसुमन सुरसुन्दरिगावहिं मुदितदेवदुन्दुभीबजावहिं १९ बस्तुसकलराखीनृपआगे बिनयकीनतिनअतिअनुरागे २० प्रेमसमेतरायसबलीन्हे भइबकसीसयाचकनदीन्हे २१ करिपूजामान्यताबड़ाईजनवासेकहँचलेलेवाई २२ बसनबिचित्रपांवड़ेपरहीं नृपदशरथतापरपगधरहीं २३ अतिसुन्दरदीन्हेजनवासा जहँसबकहँसबभाँतिसुपासा २४ जानीसियबरातपुरआई कछुनिजमहिमाप्रकट जनाई २५ हृदयसुमिरिसबसिद्धिबोलाई भूपपहुनईकरनपठाई २६ दो० ॥ सिधिसबसियआयसुअकनिगईजहांजनवास लियेसंपदासकलसुखसुरपुरभोगबिलास २७ चौ० ॥ निजनिजबासबिलोकिबराती सुरसुखसकलसुलभसबभाँती २८ बिभवभेदकछुकाहुन

बराती पगधरिधरि चलेजाते हैं ( २३ ) तहां सहितबरात राजाकोअतिसुन्दर जनवासदीनजाइ जहां सबकहँ सबभांति सुपास है ( २४ ) जब श्री जानकी जीने जाना कि बरातपुरविषेआई तब कछुअपनीमहिमा प्रकटिकै जनावाचाहती हैं ( २५ ) तब सबसिद्धिनको हृदयमहँ स्मरणकीन्ह तब सबसिद्धि करजोरिकै ठाढ़ीभईं तब श्रीजानकीजी आज्ञादीन्ह कि अवधेशमहाराज की पहुनाई करहुजाइ ( २६ ) दोहार्थ॥ तब सब सिद्धि श्री जानकीजी के बचन अकनिकही सुनिकै जनवासेकहँजातीभईं नवनिधिइत्यादिक सम्पदा सुखसबलिहे जो सुरपुरके भोगबिलासतेसरसहैं ( २७ ) तहां बराती अपनअपन बासबिलोकतेभये जहां सुरइन्द्रादिककर सुखसब भांतितेसहजमें सुलभहै मन्दिर प्रतिकल्पतरु कामधेनु त्रिबिधि पवनको देखतसंते इन्द्रादिक दिग्पालनके ऐश्वर्य्य सुखसे आनन्द अधिकाधिकतरहै ( २८ ) यह बिभवकर भेदकाहूनहींजाना सम्पूर्ण जनकजूकर वखान करते हैं ( २९ ) यह महिमा श्रीजानकीजीकी श्रीरघुनाथजीने जानी हैतब श्रीरघुनाथजी हेतुकही प्रीतिपहिंचानिकै हर्षे ( ३० ) तहां पितुकर आगमनसुनिकै दोऊभाइनके आनन्द हृदयमें नहींसमातहै ( ३१ ) वहांसंकोचकेबश गुरुनते नहीं कहिसकतेहैं ( ३२ ) तहां विश्वामित्र श्रीरामचन्द्रके हृदयकै बड़ीबिनय पहिंचानिकै उरबिषे बिशेषकै आनन्दितहोतभये ( ३३ ) तब दोऊबन्धुनको हर्षिकै हृदय में लगायो पुलकते दोऊने-

जाना सकलजनककरकरहिंबखाना २९ सियमहिमारघुनायकजानी हरषेहृदयहेतुपहिंचानी ३० पितुआगमनसुनतदोउभाई हृदयनअतिआनन्दसमाई ३१ सकुचतकहिनसकतगुरुपाहीं पितुदर्शनलालसमनमाहीं ३२ बिश्वामित्रबिनयबड़िदेखी उरउपजा आनन्दविशेषी ३३ हरषिबन्धुदोउहृदयलगाये पुलकअंगअंबकजलछाये ३४ चलेजहाँदशरथजनवासे मनहुंसरोवरतकेउपियासे ३५ दो०॥ भूपबिलोकेजबहिंमुनिआवतसुतनसमेत उठेहरषिसुखसिन्धुमहँचलेथाहसीलेत ३६ चौ० ॥ मुनिहिंदण्डवतकीन्ह महीशा बारबारपदरजधरिशीशा ३७ कौशिकराउलियेउरलाईदैअशीषपूंछीकुशलाई ३८ पुनिदण्डवतकरतदोउभाई देखिनृपति उरसुखनसमाई ३९ सुतहियलायदुसहदुखमेटे मृतकशरीरप्राणजनुभेटे ४० पुनिवशिष्ठपदशिरतिननावा प्रेममुदितमुनिवरउर

त्रनमें जलभरिआये ( ३४ ) तब समाजसंयुक्त दोऊबन्धुन समेत विश्वामित्र जहांराजाको जनवासरहै तहांको अतिशीघ्र चलतेभये कैसेचलेमानहु अतितृषित सरोवरताकिचल्योहै ( ३५ ) दोहार्थ॥ तब राजादशरथसुतनसमेत विश्वामित्रको आवतेदेखिकै आनन्दतेभरे मुनीशके मिलिबेको आपुशीघ्रउठिचले शीघ्रपगनहींउठैहैं सुखकेसमुद्रमें थाहसीलेतचलेहैं ( ३६ ) हेभरद्वाज विश्वामित्रको राजादंडवत्करिकै बारबार पदरजशीशमेंधरते भये हैं ( ३७ ) तब बिश्वामित्र राजाको उरमेंलगाइकै बारबार कुशल पूंछतेहैं ( ३८ ) पुनि दोऊभाई राजाको दण्डवत्करते हैं तहां श्रीलक्ष्मणको देखिकै राजाकेहृदयमें सुख नहीं समातहै ( ३९ ) तब राजाका श्रीरामलक्ष्मणको हृदयमें लगाइकै श्रीरामचन्द्रके बिक्षेपको दुःख दुस्सहकहीं सहबे योग्य नहीं सो मिटि गयो ( ४० ) पुनि दोऊ भाइन बशिष्ठके चरणगहिनि प्रेमसहित मुनि उरमें लगावतेभये ( ४१ ) पुनि अनेक ब्राह्मणन को नमस्कार करतेभये तब ब्राह्मण प्रेमते आशीर्व्वाद देतेभये ( ४२ ) जब भरत शत्रुहन श्रीरामचन्द्रको साष्टांगदण्डवत् करतेभये श्रीरामचन्द्र उठाइकै उरमें लगावतेभये ( ४३ ) तब दोऊभाइनको लक्ष्मणजू देखिकैप्रेम परिपूर्णगातते मिलतेभये ( ४४ ) दोहार्त्थ॥ पुनि पुरजन अरु परिजन बाहरके प्रजाजन अरु अपने सजातीयजन अरु याचक मंत्री मित्रादिकनते तब यथा बिधि श्रीरामचन्द्र सबको एकहीबार अनन्त रूप ह्वैकै मिले काहेते परमकृपालु बिनीत हैं ( ४५ ) तहां श्रीरामचन्द्रको देखिकै बरात शीतलभई बिक्षेपके बिरहकी अग्नि शान्तभई प्रीतिकीरीति बखानी

लावा ४१ विप्रवृन्दवन्देदोउभाई मनभावतीअशीषैंपाई ४२ भरतसहानुजकीन्हप्रणामा हियउठायलायेउररामा ४३ हर्षेलषण देखिदोउभ्राता मिलेप्रेमपरिपूरणगाता ४४ दो० ॥ पुरजनपरिजनजातिजनयाचकमंत्रीमीत मिलेयथाबिधिसबहिप्रभुपरमकृपालु बिनीत ४५ चौ०॥ रामहिं देखिबरातजुड़ानी प्रीतिकिरीतिनजाइबखानी ४६ नृपसमीपसोहैंसुतचारी जनुधनधर्मादिक तनुधारी ४७ सुतनसमेतदशरथहिदेखी मुदितसकलनरनारिबिशेषी ४८ सुमनबरषिसुरहनहिंनिशाना नाकनटीनाचहिंकरिगाना ४९ सतानन्दअरुबिप्रसचिवगन मागधसूतबिदुषबन्दीजन ५० सहितबरातराउसनमाना आयसुमांगिफिरेअगवाना ५१ प्रथमबरात लगनतेआई तातेपुरप्रमोदअधिकाई ५२ ब्रह्मानंदलोगसबलहहीं-बढ़हुदिवसनिशिबिधिसनकहहीं ५३ दो०॥ रामसियाशोभा

नहीं जाय ( ४६ ) राजाके समीप चारिउसुत कैसे सोहतेहैं जनु धन कहीअर्त्थ धर्म्म काम मोक्ष मूर्त्तिमान् शोभितहैं ( ४७ ) तहां पुत्रनसमेत दशरथको देखिकै पुरकेनरनारि मुदितकहीं बिशेष करिकै आनन्दको प्राप्तभये ( ४८ ) तहां देवता सुमनबर्षिकै निशानबजावते हैं अरु नाककहीं स्वर्ग में नटी जे हैं गन्धर्व्विनी किन्नरी अप्सरा नृत्य गान करती

हैं ( ४९ ) तहांसतानन्द इत्यादिक बिप्र अरु सचिवगण अरु मागधकही बंशवर्णक अरु सूतकही पुराण गवैया अरु विदुषकही पण्डित ज्योतिषी अरु बिदूषककही भाट बन्दीजनकही जो वीररस वर्णनकरते हैं ( ५० ) ते सब मिलिकै सहितबरात राजादशरथ को सबप्रकारते सन्मान करिकै आज्ञालैकै अगवानीते फिरतेभये ( ५१ ) हे पार्व्वती लग्न अवहीं नहीं धरी गई है अरु बरात प्रथमहिंआई ताते जनकपुरबिषे अति प्रमोदकी आधिक्यता भई हैं ( ५२ ) तहां सबलोग सहजही ब्रह्मानन्दको प्राप्तहैं अरु यहमनावते हैं कि हे बिधि रात्रिदिवसकी अति वृद्धिहोइ किन्तु लग्नके दिन राति और बढ़जाहिं अबहींलग्न न आवे ( ५३ ) दोहार्थ॥ तहां दशबीसनरनारि मिलिकै आनन्दपूर्व्वक जहांतहां कहतेहैं कि अस आनन्द पुरमेंकस न होइकाहेते कि रामसीता सबसुखशोभाकी अवधिकही मर्यादहीहैं अरु दोऊ राजा सुकृतकी मूर्ति हैं तहां सबसुलभहैं ( ५४ ) पुरकेलोग परस्पर कहतेहैं कि जनकके सुकृतकीमूर्ति श्रीजानकीजी हैं अरु दशरथके सुकृतकैमूर्त्ति श्रीरामचन्द्रहैं ( ५५ ) दशरथ अरु जनककी बराबरि शिवकै अवराधनाकाहू नहींकीन्हिहै अरु इनकेसमान काहूशिवकोफल नहींलाध्यो लाध्यो

अवधिसुकृतिअवधिदोउराज जहँतहँपुरजनकहहिंसबमिलिनरनारिसमाज ५४ चौ० ॥ जनकसुकृतमूरतिबैदेही दशरथसुकृतराम धरिदेही ५५ इनसमकाहुनशिवअवराधे काहुनइनसमानफललाधे ५६ इनसमकोउनभयोजगमाहीं हैनहिंकतहुंकोहोन्यहुनाहीं ५७ हमसबसकलसुकृतकैराशी भयेजगजनमिजनकपुरबासी ५८ जिनजानकीरामछबिदेखी कोसुकृतीहमसरिसविशेषी ५९ पुनिदेखबरघुबीरबिवाहू लेबभलीबिधिलोचनलाहू ६० कहहिंपरस्परकोकिलबयनी यहिबिवाहबड़लाभसुनयनी ६१ बड़ेभाग्यबिधिबातबनाई नयनअतिथिहोइहैंदोउभाई ६२ दो०॥ बारहिबारसनेहबशजनकबोलाउबसीय लेनआइहैंबंधुदोउकोटिकाम

कही सघनफरिकैलदिरहेहैं रसमय प्राप्तभये हैं काहेते श्रीरामजानकीजीकेप्राप्तफल प्रदाता केवल रामानन्यशिवहैं ( ५६ ) अरु इनके समान जगत् में कोई नहींभयो है न कोई है अरु न कोई तीनिहूंकालमें होइगो ( ५७ ) अरु जनकपुरबासी कहतेहैं कि हमसब तिरहुतपुरमें बसिकै सकलसुकृत कीराशिभये ( ५८ ) याहीते हमारेसमान जगत्में को है तात्पर्य्य कोईनहींहै काहेते कि श्रीरामचन्द्र अरु श्रीजानकीजीकी छबिदेखतेहैं ( ५९ ) पुनि श्रीरामचन्द्र श्रीजानकीको बिवाह भलीप्रकारते देखैंगे लोचनकोलाहुलेहिंगे अरु ऐसे त्रैलोक्यकी बिभूति लोचननकहँ बृथाहै ( ६० ) कोकिल बयनी जो स्त्रीहैं सो परस्पर कहतीहैं कि हे सखी यहिबिवाहबिषे बड़ालाभहै यहकहिकै गद्गदह्वैजातीभई ( ६१ ) यह बात बिधातैं बड़ेभाग्यतेबनावाहै काहेते इननेत्रनके द्वौभाई अतिथिहोहिंगे जैसे धनाढ्यगृहीको अभ्यागत प्रियहोतेहैं ( ६२ ) दोहार्थ॥ कबद्वौभाई अतिथिकीनाई प्रियहोहिंगे जब बिवाह के उपरांत राजा श्रीजानकीजीको बारबार बोलावहिंगे तबदूनोंभाई कोटिनकामते कमनीयकही सुन्दरहैं ( ६३ ) तब रामलषणकी अनेकप्रकार पहुनाईहोइगी हे माई असससुरारि क्यहिकोनहींप्रियहै माई कही बड़ेपदको ( ६४ ) जब रामचन्द्र जनकपुरको आवहिंगे पहुनई होइगी तब तब हम सब पुरबासी रामलषणको देखि २ सुखीहोहिंगे ( ६५ ) तब एकसखी हर्षिकै बोलतीभई कि हे सखी जैसे रामलषणकरजोटा है तैसेई राजाकेसंगमें और दुइढोटाहैं ( ६६ ) हे सखी एकश्याम अरु एकगौरहैं अरु सर्वांगनखशिख अतिसुन्दरहैं हे सखी जे देखिआये हैं ते सब कहते हैं ( ६७ ) पुनि एक सखी कहती है कि हे सखी मैं आजु निहारि आईहौं जनु बिरञ्चिने अपने हाथनसँवारे हैं ( ६८ ) भरत रामचन्द्रहीकी अनु-

कमनीय ६३ चौ० ॥ बिबिधिभाँतिहोइहिपहुनाई प्रियनकाहिअससासुरमाई ६४ तबतबरामलषणहिंनिहारी होइहैंसबपुरलोगसुखारी ६५ सखिजसरामलषणकरजोटा तैसेइभूपसंगदुइढोटा ६६ श्यामगौरसबअंगसुहाये तेसबकहहिंदेखिजेआये ६७ कहेउएकमैंआजुनिहारे

जनुबिरंचिनिजहाथसँवारे ६८ भरतरामहीकीअनुहारी सहसालखिनसकहिंनरनारी ६९ लषणशत्रुसूदनयकरूपा नखशिखतेसबभाँतिअनूपा ७० मनभावहिंमुखबरणिनजाहीं उपमाकहँत्रिभुवनकोउनाहीं ७१ हरिगीतिका छन्द॥ उपमानकोउकहदासतुलसीकतहुंकविकोविदकहै बलविनयविद्याशीलशोभासिंधुइनसमयइअहैं ७२ पुरनारिसकलपसारिअंचलबिधिहिवचनसुनावहीं व्याहियेचारिउभाइयहिपुरहमसुमंगलगावहीं ७३ सो० ॥ कहहिंपरस्परनारि बारिबिलोचनपुलकतनु सखिसबकरवपुरारि पुण्यपयोनिधिभूपदोउ ७४॥ * *

हारीहैं उन्हें नर नारि सहसाकही शीघ्र नहीं पहिचानि सकैंहैं ( ६९ ) हे सखी लक्ष्मण शत्रुहन एकहीरूपहैं जेनखशिखते अति अनूपको कहिसकै ( ७० ) हे सखी मनमें अतिभावते हैं पर जीभसे बर्णे नहींजातेहैंइनकी उपमाको कोऊ त्रिभुवनमें नहींहै ( ७१ ) छन्दार्थ॥ इनकीउपमासम कोई काहेनहीं हैं उपमान हईनहींहै श्रीगोसाईं तुलसीदासकहतेहैं सो कबि कैसे कहिसकै कैसे ये चारोभाई हैं बल अरु बिनयकही नम्रता प्रबीणता बिद्या शील शोभा इत्यादिक के समुद्रहैं ताते इनकेसमानयेई हैं ( ७२ ) एकनते एकसखी असकहिकै अञ्चल पसारिकै बिधिते मनावती हैं कि हे बिधि चारिउ भाइनकर बिवाह जनकपुरमें निर्विघ्नहोइ जाते हम सब मंगलगावहिं यहवरदेहु ( ७३ ) सोरठार्थ॥ हे पार्वती परस्परनारि यहकहती हैं तनुपुलकते नेत्रनमें जलभरो है तब एक प्रबीण सखी बोली हे सखिहु तुम सब प्रेमके बश चिन्ता न करहु काहेते कि दोऊराजा सुकृतके समुद्रहैं तिनके पुण्यते तुम्हार मनोरथ महादेव सिद्धिकरिहैं ( ७४ ) इतिश्री रामचरितमानसे सकलकलिकलुपबिध्वन्सने बालकाण्डे महाराजश्रीदशरथस्य मिथिलापुरप्राप्ति बरातपुरजन आनन्दवर्णनन्नामत्रिपचाशत्तरंगः ( ५३ )॥

दो०॥ चारिपचाशतरंगमेंजनकपुरीकेलोग रामचरणजोसुखलह्योयोगिन दुर्ल्लभभोग ५४ ते सब मनोरथको करते हैं प्रेम अरु आनन्दको उमँगि उमँगि उरमहँभरते हैं ( १ ) श्रीजानकीजीके स्वयम्बरमें जो राजा आये हैं तहाँ बिवेकी जेराजारहैं तेचारिउभाइनकोदेखिकै अतिसुखकोप्राप्तभये ( २ )

चौ० ॥ यहिबिधिसकलमनोरथकरहीं आनँदउमँगिउमँगिउरभरहीं १ सीयस्वयम्बरजेनृपआये देखिबन्धुसबतिनसुखपाये २ कहतरामयशविशदबिशाला निजनिजगेहगयेमहिपाला ३ गयेबीतिकछुदिनयहिभाँती प्रमुदितपुरजनसकलबराती ४ मंगल मूललगनदिनआवा हिमऋतुअगहनमाससुहावा ५ ग्रहतिथिनखतयोगबरवारू लगनशोधिबिधिकीन्हबिचारू ६ पठैदीननारदकरसोई गनीजनकके गणकनजोई ७ सुनीसकललोगनयहबाता कहैंज्योतिषीअपरविधाता ८ दो०॥ धेनुधूरिबेलाबिमल

पुनि श्रीरामचन्द्रकोयश अतिउज्ज्वल विशाल कही ब्रह्माण्डभरेमें परिपूर्ण सो यश कहत कहत अपनेअपने गृहकोजातेभये हैं गृहकही आसन को ( ३ ) तहां यहिप्रकारते पुरजन बरातिनके कछुदिनबीतिगये प्र कहीउत्कर्षकरिकै आनन्दहैं ( ४ ) मंगलकोमूल अतिशोभित मासदिन लग्न प्राप्तभये तहां हिमऋतु अरु बारहमहीनोंमें शिरोमणि अतिशोभित अगहनका महीना ( प्रमाणभगवद्गीतायांभगवद्वाक्यम् ) मासानांमार्गशीर्षोऽहं ( ५ ) शुभ ग्रह तिथि नक्षत्र योग बार इत्यादिक बरकही श्रेष्ठ मंगलमयआइ प्राप्तभये जेतनीबिधि श्रीरामचन्द्रके जन्ममें सो सम्पूणप्राप्तभये इहां शुक्लपक्षकी पञ्चमी तिथि अरु वृश्चिकके सूर्य्य अरु महामंगलमयमूर्त्ति मीनलग्न यह सब विचारिकै शोधतेभये ( ६ ) जो साइति ब्रह्मेबिचारिकैशोधी सो पत्रिकामें लिखिकै नारदकेहाथ पठैदीन्हि तब नईसाइति जनकके ज्योतिषियों ने साधिराखी ब्रह्माकी पत्रिका अरु जनकके ज्योतिषिनकी साइतिकै एकैबिधिमिली ( ७ ) यहजानिकै सर्व्व लोग कहतेभये कि ज्योतिषी दूसरब्रह्मा हैं तहां जनककेदूत श्रीअयोध्याको गयेरहैं कार्त्तिक बदीपञ्चमी को पहुंचे तहां अष्टमीको बरातसजिकै चलतेभयेअरु त्रयोदशीको जनकपुरमें प्राप्तभये पुनि अगहनशुदी पञ्चमीको बिवाहकी तैयारी भई ( ८ ) दोहार्थ॥ हे

पार्ब्बती गोधूलिबेलाको अति बिमल सब मंगलमय मूलवेद कहते हैं सो ब्राह्मणन बिचारिकै जनकजूते समय अनुकूल जानिकै कहिदीनि ( ९ ) तब जनकने हर्षिकै उपरोहितसतानन्दतेकह्यउ कि अब बिलम्ब काहेको करतहौ ( १० ) तब सतानंद ने मंत्रिनकोबोलायो वे सकलमंगलकैसामग्री तैयारीकरकै लैआये ( ११ ) तब शंख निशानकही नगारा पणवकही ढोल इत्यादिक अनेक बाजाबा-

सकलसुमंगलमूल विप्रनकह्योबिदेहसनजानिसमयअनुकूल ९ चौ० ॥ उपरोहितहिकह्यउनरनाहा अबबिलम्बकरकारणकाहा १० सतानन्दतबसचिवबोलाये मंगलसकलसाजिलैआये ११ शंखनिशानपणवबहुबाजे मंगलसगुनसकलशुभसाजे १२ सुभग सुआसिनिगावहिंगीता करहिंवेदध्वनिविप्रपुनीता १३ लेनचलेसादरयहिभाँती गयेजहांजनवासबराती १४ कोशलपतिकरदेखिसमाजू अतिलघुलागतिनहिंसुरराजू १५ भयउसमयअबधारियेपाऊ यहसुनिपरानिशाननघाऊ १६ गुरुहिपूंछिकरिकुलबिधिराजा चलेसंगमुनिसाधुसमाजा १७ दो० ॥ भाग्यविभवअवधेशकरदेखिदेवब्रह्मादि लगेसराहनसहसमुखजानिजन्मनिजबादि १८ चौ० ॥ सुरनसुमंगलअवसरजाना बरषहिंसुमनबजाइनिशाना १९ शिवब्रह्मादिकबिबुधबरूथा चढ़ेबिमानननानायूथा २० प्रेम

जतेभये अरु मंगलमय सगुण सकल प्रकारते साजतेभये ( १२ ) तब सुभग सुआसिनीकही पुरकीलड़किनी इत्यादिक मंगलमय गीतगावती हैं अरु बिप्र अतिपुनीत वेदध्वनि करते हैं ( १३ ) यहिभांति सादरते चले जहांजनवासमेंबराती हैं तहांकोगये ( १४ ) कोशलपति जे दशरथ हैं तिनकर समाज देखिकै जनकपुरबासिनको इन्द्रपुर अतिलघुलागतहै ( १५ ) तबसतानन्द कहते हैं हे महाराज अब बिवाहको समय प्राप्तभयो मण्डपमें शीघ्र पांउधारिये इतना सुनिकै निशाननपर घावकही चोपते चोटैंपरतीभई ( १६ ) तब राजा गुरुनसेपूंछिकै वेदकीरीति करिकै साधुकही बिरक्त जाहीमें साधुता आवै विश्वामित्र की समाज संयुक्त अत्यानन्दभरे चले ( १७ ) दोहार्त्थ ॥ तहां ब्रह्मादिक देवता दशरथ महाराजकी भाग्यबिभव देखिकै सराहते हैं अपने जन्मको बादिकही वृथामानते हैं ( १८ ) तब देवतासुमंगल अवसरजानिकै नगाराबजाइकै फूलबर्षाते हैं ( १९ ) तहां शिव ब्रह्मादिकदेवता बरूथकेबरूथते नानाप्रकारकेयूथ बिमानपरचढ़ेहैं ( २० ) तिन देवतनकेप्रेमते देहमेंपुलकावलीभई अरु हृदयमेंउछाह यहिप्रकार ते श्रीरामचन्द्रका विवाह देखिबेको चले ( २१ ) जनकपुर को देखिकैदेवतनको अनुरागभयो इहां अनुरागकही मोहितभये तहां आपनआपन लोकसब देवतनको लघुलागतभयो ( २२ ) पुनि बितान जो मण्डपकीचित्रबिचित्र रचना सो अलौकिक देखिकै देवता चकितभये अलौकिक कही त्रैलोक्यके बाहर ऐश्वर्य्यवत् देखिकै चकितभये ( २३ ) अरु नगरकेस्त्रीपुरुष सब सुघर हैं सुन्दरहैं अपने धर्म्ममय हैं सुशील हैं सुजानकही

पुलकतनुहृदयउछाहू चलेबिलोकनरामबिवाहू २१ देखिजनकपुरसुरअनुरागे निजनिजलोकसबहिलघुलागे २२ चितवहिंचकितविचित्रबिताना रचनासकलअलौकिकनाना २३ नगरनारिनिररूपनिधाना सुघरसुधर्मसुशीलसुजाना २४ तिन्हैंदेखिसबसुरपुरनारी भईनखतजनुबिधुउजियारी २५ बिधिहिभयउआश्चर्यविशेषी निजकरणीकछुकतहुंनदेखी २६ दो० ॥ शिवसमुझायोलोगसबजनिआचरजभुलाहु हृदयबिचारहुधीरधरि-सियरघुबीरबिवाहु २७ चौ० ॥ जिनकरनामलेतजगमाहीं सकलअमंगलमूलनशाहीं २८ करतलहोहिंपदारथचारी तेसियरामकह्यउकामारी २९ यहिबिधिशम्भुसुरनसमुझावा पुनिआगेबरवसह

प्रबीणहैं ( २४ ) हे गरुड़ तिनतिन जनकपुरकी स्त्रीन कहँ सुरपुरकीस्त्रीदेखिकै मन्दपरिगई जैसे पूर्णचन्द्रके प्रकाशमें नक्षत्र मन्दपरते हैं ( २५ ) श्रीजनकपुरकै रचना देखिकै ब्रह्माको आश्चर्य्यभयो काहेते तहां अपनीकरणी एकहू नहींदेखैंहैं ( २६ ) दोहार्त्थ ॥ तब शिवजी ब्रह्मादिक देवतन को समुझावते हैं कि हे देवतहु यहि आश्चर्य्य में न भूलहु नेत्रनभरिकैबिचारकरि धीरजधरिकै सीतारामचन्द्रकर बिवाहदेखहु यह चरित्र ब्रह्मा की सृष्टिते भिन्नहै ( २७ ) महादेव कहतेहैं हे देवतहुइनकरनाम लेतसंतेसम्पूर्ण अमंगलकेमूल नाशहोते हैं ( २८ ) अरु चारिपदार्थ सालोक्यसारूप्य सामीप्य सायुज्य किंतु सकाम अर्थ धर्म काम मोक्ष येते सब जिनकेनाम स्मरणमात्रते सहजहीप्राप्तहोतेहैं ऐसे सीतारामचन्द्र हैं ताते तुम्हारो बड़ोभाग्य है यह कामारिकही शिवने कहा तहां जो सम्पूर्ण कामनाकोनाशकरै तब सीतारामको देखै ( २९ ) यहिबिधि शम्भुसुरनको समुझावतेभये पुनि अपनो बाहनबैल आगे चलावतेभये ( ३० ) तब देवतनमहाराजदशरथकी समाज पुत्रनसहित जातदेखा तहां महाआनन्द पुलकितगात चलेजाते हैं किंतु देवता आनन्दते पुलकते हैं ( ३१ ) तहां राजाकेसंग साधु अरु महिदेवनकी समाज जनु राजाकी सबदेवता तनुधरिकै सेवाकरते हैं ( ३२ ) अरु राजाकेसंगमें चारिउपुत्र शोभितहैं जनु सकलकही चारिउ अपबर्गकही मोक्ष तनुको धारणकिहे शोभाकरतेहैं सालोक्य सामीप्य सारूप्य सायुज्य शत्रुहन लक्ष्मण भरत श्रीरामचन्द्रादिकनकोक्रमते जानब ( ३३ ) ऐसे हैं श्रीरामचन्द्र अरु भरतका मर्कतमणि कही नील मणि आवरणरहित झलझलात प्रकाशमय तद्वत्वर्ण है पुनि लक्ष्मणशत्रुहन तैसे कंचनबर्ण हैं निर्मल बरकही सर्बोपरि देखिकै देवतनके अत्यन्त

चलावा ३० देवनदेख्यउदशरथजाता महामोदमनपुलकितगाता ३१ साधुसमाजसंगमहिदेवा जनुतनुधरेकरहिंसुरसेवा ३२ सोहत साथसुभगसुतचारी जनुअपवर्गसकलतनुधारी ३३ मर्कतकनकवरणबरजोरी देखिसुरनभइप्रीतिनथोरी ३४ पुनिरामहिंबिलोकिहियहर्षे नृपहिसराहिसुमनसुरवर्षे ३५ दो० ॥ रामरूपनखशिखनिरखिबारहिबारनिहारि पुलकगातलोचनसजलउमासमेतपुरारि ३६ चौ० ॥ केकिकण्ठद्युतिश्यामलअंगा तड़ितबिनिन्दकबसनसुरंगा ३७ ब्याहबिभूषणबिबिधिबनाये मंगलमयसबभाँतिसोहाये ३८ शरदबिमलबिधुबदनसोहावन नयननवलराजीवलजावन ३९ सकलअलौकिकसुन्दरताई कहिनजाइमनही

प्रीतिभई है ( ३४ ) हे भरद्वाज पुनि श्रीरामचन्द्रको बिलोकि हृदयमेंअतिहर्षिकै राजादशरथको सराहते हैं अरु धन्यधन्य करते हैं अरु फूलनकी वृष्टिकरते हैं ( ३५ ) दोहार्त्थ॥ तब पार्बती अरु महादेव श्रीरामचन्द्रकोदेखिकै अतिहर्षिकै गातपुलकि प्रेमानन्दभरे बारम्बार मग्नहैं ( ३६ ) कैसे श्रीरामचन्द्रहैं केकीकेकण्ठ तद्वत् शरीरकी श्यामल द्युतिहै सुरंग जो पीताम्बर तड़ितकी निन्दाकरनहार सो धारणकिहेहैं ( ३७ ) अरु बिबिध प्रकार बिवाहके भूषण परमदिब्यबने हैं सो पहिरे हैं कैसे भूषणहैं परमदिब्यमंगल प्रकाशमय सबप्रकारते शोभित हैं ( ३८ ) अरु शरदऋतुके पूर्णमासीको चन्द्रमा बिमलकही कलङ्कबिनु एकरस ऐसोमुख सो शुभशोभितहै अरु अरुणनील श्वेतसंयुक्त नबीन कमलकैकली जो प्रथमबिकर्सी हैं तिनको लजावनहारेनेत्र हैं ( ३९ ) कहांतक कहिये अंगअंग की सुन्दरतासकल अलौकिकहै हेगरुड़ ऐसी जो सुन्दरता है सो कहीनहीं जाती मनहिंमनभावती है मनको मनआत्मातिनको भावतहै ( ४० ) मनकी हरणहारि सुन्दरता ऐसे बन्धुसंग बिषे सोहते हैं ते अतिचञ्चलघोड़ा नचावतचले जाते हैं ( ४१ ) तहां अनेकन राजकुमारहैं ते घोड़ा देखावतकही नचावतेहैं अरु बंशप्रशंसक इत्यादिकहैं ते सब तिनके बिरदकी प्रशंसाकरते जाते हैं तहां मध्यमें श्रीरघुनाथजीको घोड़ा है अरु दाहिने बायें पीछे सखनकेघोड़नकी पंक्तिकीपंक्ति असवारी बागैतनी अरु नखतेशिखलों हेममणिनके भूषणका शृंगार किहे घोड़नसंयुक्त अतिशोभाको पावत चलेजाते हैं जेहिसमाज को देखिकै सिद्धमुनि देवता कामादिक मोहते हैं ( ४२ ) अरु जेहि तुरंगपर श्रीरामचन्द्र बिराजते हैं तेहि तुरंगकै गतिबेग बिलोकिकैखगनायक लज्जितहोतेहैं ( ४३ ) सो तुरंगकी शोभा कही नहींजाती है

मनभाई ४० बन्धुमनोहरसोहहिंसंगा जातनचावतचपलतुरंगा ४१ राजकुंवरबरबाजिनचावहिं वंशप्रशंसकविरदसुनावहिं ४२ जेहि तुरंगपररामबिराजे गतिबिलोकिखगनायकलाजे ४३ कहिनजाइसबभाँतिसोहावा बाजिवेषजनुकामबनावा ४४ छन्द॥जनुबाजिवेषबनाइमनसिजरामहितअतिसोहई अपनेबयबपुरूपगुणगतिसकलभुवनबिमोहई ४५ जगमगतिजीनजरावज्योति सुमोतिमणिमाणिकलगे किंकिणिललामलगामललितविलोकि-सुरनरमुनिठगे ४६ दो० ॥ प्रभुमनसहिलयलीनमनचलतबाजि छबिपाव भूषितउड़गणतड़ितघनजनुबरबरहिंनचाव ४७ चौ० ॥ जेहिबरबाजिरामअसवारा तेहिशारदहुनबरणैपारा ४८ शंकर

नखशिखलौं सबभांति ते शोभितहैं जनु कामने बाजिकरवेष बनायो है ( ४४ ) छन्दार्त्थ॥ जनु बाजिकर वेष बनाइकै कामै आइ प्राप्तभयो है श्रीरामचन्द्रके हितकही निमित्तप्रीतिते अतिसोहतहै तहां घोड़ा कैसोहै आपनबय एकही वही क्रमकरिकै अरु वपुरूप गुणगति इनसर्वकरिकै सकलविश्वको बिमोहित करतहै ( ४५ ) तेहिघोड़े पर जीन जगमगतिहैसुष्टु मोती मणिमाणिकते जटितहैं अरु घोड़ेकी किंकिणी ललाम कही अतिलालित्य सुन्दर अरु तैसही लगाम जेहिको देखिकै सुरनरमुनिनको मन ठगिरह्योहै ठगि कही देखिकै देहकीदशा भूलिगईहै ( ४६ ) दोहार्थ॥ त्यहि घोड़ाने प्रभुके मनमें अपनेमनको लैकही प्रीतिसमेतलीनकरिदियोहै सो प्रभुके मनमाफिक चलतसन्ते अतिछबिकोपावतहै तहां कैसे घोड़ानाचत चलोजात है जनु नक्षत्रन अरु तड़ितकरिकै मेघ भूषितहै तेहिको देखिकै मयूर नाचतेहैं तहां श्रीरामचन्द्रको रूप मेघ है अरु भूषण नक्षत्र हैं यज्ञोपवीत अरु मणिमाला तड़ित है घोड़ा मयूर है अलंकार संयुक्त यहिप्रकारते अद्भुत शोभाकोप्राप्तहैं ( ४७ ) जेहिबरबाजि पर श्रीरामचन्द्र असवारहैं तेहि घोड़ेकी शोभा चाल जो शारदा हजारनरसनाकरिकै वर्णाचाहैं तौ नहीं वरणिसकैं ( ४८ ) तहां तेहि घोड़ेपर असवार श्रीरामचन्द्रको स्वरूप देखिकै शंकर अनुरागकही मोहिगये तहांमहादेवके पंचमुख मुखप्रति तीनितीनिनेत्र ते पन्द्रहौनेत्र अतिप्रियलागे ( ४९ ) पुनि हरि विष्णु भगवान श्रीरामचन्द्रको हितकारी प्रीतिसोंजोहतेभये तब रमासमेत रमापति मोहितभये अपर अर्थ जो करतेहैं यहि चौपाईको तहां समय समाज पदार्थ में बिरोध होतहै ( ५० ) पुनि श्रीरामछवि देखिकै ब्रह्मा अतिहर्षित भये तहां आठैनयन जानिकै पछितात हैं

रामरूपअनुरागे नयनपंचदशअतिप्रियलागे ४९ हरिहितसहितरामजबजोहे रमासमेतरमापतिमोहे ५० निरखिरामछविबिधि हरषाने आठैनयनजानिपछिताने ५१ सुरसेनपमनबहुतउछाहूबिधितेडेवढ़ेलोचनलाहू ५२ रामहिंचितवसुरेशसुजाना गौतमशापपरमहितमाना ५३ देवसकलसुरपतिहिसिहाहीं आजुपुरंदरसमकोउनाहीं ५४ मुदितदेवगणरामहिंदेखी नृपसमाजदुहुंहर्षविशेषी ५५ हरिगीतिकाछन्द॥ अतिहर्षराजसमाजदुहुदिशिदुन्दुभीबाजहिंघनी वरषहिंसुमनसुरहरषिकहिजयजयतिजयरघुकुलमनी ( ५६ ) यहिभांतिजानिबरातआवतबाजने-बहुबाजहीं रानीसुआसिनिबोलिपरिछनहेतुमंगलसाजहीं ५७ दो०॥ सजिआर-

( ५१ ) पुनि सुरनके सेनापति षट्मुख स्वामिकार्त्तिक तिनके मनमें परमउत्साहभयो काहेते ब्रह्माते डेवढ़ेनेत्र जानिकै कि मुख्य रामदर्शन तहांमैं ब्रह्माते श्रेष्ठभयों ( ५२ ) तहां सुरेश जो सुजानहैं ते श्रीरामचन्द्रको हजारन नेत्रनते अतिप्रीतिसोहत देखतेभये तब गौतम के शापको परम हित मानते भये ( ५३ ) तहां सब देवता इन्द्रहू को सिहाते हैं कि आजुपुरन्दर के समान कोई नहीं है इहां एकबार सुरपति कहा अरु एकबार पुरन्दर कहा तहां अर्त्थ पुनरुक्त भासमान होत है सो दोष नमानब काहेते कि युक्ति दुइकी है एक

याज्ञवल्क्य की अरु एक देवतन की ( ५४ ) तहां देवतन के गण अति आनन्द ते श्रीरामचन्द्रको देखतेहैं देखिकै सबनको अपनी अपनी दशाभूलिगई है अरु दोऊराजनकी समाज अतिहर्षकोप्राप्तहै ( ५५ ) छन्दार्थ॥ द्वौराजनकी समाज अतिहर्षकोप्राप्तहै अरु दुन्दुभी घनीबाजतीहैं अरु देवता अतिहर्षते फूलबर्षाते हैं अरु बारबार रघुकुलमणिके यशकी जयजयकरते हैं ( ५६ ) हे गरुड़ यहिभांतिते बरात आवतजानिकै अनेकबाजा बजावतेभये अरु रानी सुआसिनिको बोलायकै परिछनके निमित्त मङ्गलमय आरतीकी तैयारी करतीभई ( ५७ ) दोहार्थ॥ अनेक बिधिते आरती सजतभई मङ्गलकेपदार्थ थारनमें भरि भरि रत्न तुलसीदल फूलफलादि मुदितमनते गजगामिनी परिछनकरबेको चलतीभई ( ५८ ) कैसी वेसखीहैं सबचन्द्रबदनीहैं अरु मृगशावककेसे नेत्रहैं अपनी शोभाके आगे रतिकी सुन्दरताको मानमर्द्दनकरती हैं ( ५९ ) पुनि बर्ण बर्णके चीरापहिरेहैं बहुती तौ गोरीहैं ते सुबर्ण तारन अरु मणिनकी कनिनते जटित नीलाम्बर पहिरे हैं अरु बहुतीश्यामहैं ते सुष्टधातुकेतार अरु बहुरंग मणिनकी कणिनते जटित अरुणसारी

तीअनेकबिधिमंगलसकलसँवारि चलींमुदितपरिछनकरनगजगामिनिबरनारि ५८ चौ० ॥ बिधुबदनीमृगशावकलोचनि सबनिज छबिरतिमानबिमोचनि ५९ पहिरेवरणवरणबरचीरा सकलबिभूषणसजेशरीरा ६० सकलसुमंगलअंगबनाये करहिंगानकलकंठ लजाये ६१ कंकणकिंकिणिनूपुरबाजहिं चालबिलोकिकामगजलाजहिं ६२ बाजहिंबाजनबिबिधिप्रकारा नभअरुनगरसुमंगलचारा ६३ शचीशारदारमाभवानी जेसुरतियशुचिसहजसयानी ६४ कपटनारिबरवेषबनाई मिलींसकलरनिवासनजाई ६५ करहिंगानकलमंगलबानी हर्षबिबशसबकाहुनजानी ६६ छं० ॥ कोजानिकेहिआनन्दबशसबब्रह्मबरपरछनचली कलगानमधुर

पहिरे हैं अरु बहुतसी श्यामअरुण मिलितरंगहैं ते चित्रबिचित्र जरावनकीसारी तनके अनुहरित पहिरेहैं अरु सब अंगअंगबिषे परमदिव्यभूषण पहिरेहैं अरु आदि, मध्य, अंत, किशोरी सब हैं मुग्धा मध्या प्रौढ़ा नायकासबहैं ते परिछन करिबेकोचलीं ( ६० ) पुनि ते सबसकल मंगलमय अंग बनाये कलकही सुन्दर गानकरतचलीं हैं जेहिगानको सुनिकै कोकिलाकीबाणी लज्जित है ( ६१ ) तहां कंकण किंकिणी नूपुरकी यकताल ध्वनि होति अरु जिनकी चालबिलोकिकै कामगजरूपह्वैकै लज्जितह्वै जात है ( ६२ ) तहां नभ अरु नगरमें सुष्टुमंगलके आचरण पूर्णह्वैरहे हैं अनेक बाजा बाजते हैं ( ६३ ) तेहि समाजबिषे शची जो इन्द्राणी हैं अरु शारदाअरु पार्वती अरु रमाकही लक्ष्मी इत्यादिक अरु जे दशौ दिग्पाल इत्यादिक अरु जे देवतनकी स्त्री प्रवीण हैं ( ६४ ) तेसब देवतनकी देवीकपटकही अपनेबेषको छोड़िकै उत्तम नरनारिनके परम दिव्यबेष बनाइकै नित्यकिशोरी रूपते सब रनिवासनको मिलीआय ( ६५ ) तेसब देवीमंगलमय कलमनोहरिगानकतीहैं तहां परमहर्षकेबश काहूनहींजाना ( ६६ ) छन्दार्थ॥ तहां आनन्द के बशको केहिको चीन्हत है काहेते कि परब्रह्ममूर्त्तिके परिछनकोचलींह जहां तहां कलगान होतहै निशान आदिकबाजते हैं अरु देवता फूलबर्षते हैं तहांभले प्रकारते शोभाबनिरही है ( ६७ ) ऐसो मंगलमयहोतसंते श्रीरामचन्द्रके समीप प्राप्तभई परमानन्द कन्दकी मूर्त्ति श्रीरामचन्द्रकोदेखिकै हृदयमें परमहर्षको प्राप्तभई अंभोजकै मूर्त्ति श्रीरामदूलहकोदेखिकै हृदयमें परमहर्षको प्राप्तभई अंभोजकही कमल अंबककही नेत्र अंबु जो जल तहां जेती स्त्रीरही हैं तिनके श्रीरामचन्द्रसहज सुन्दर दूलहरूप देखिकै कमल नयननते जलउमगत भयो अरु अंगअंगबिषे पुलकावली छाइरहीहै ( ६८ ) दोहार्थ॥ हे पार्वती श्रीरामचन्द्रको बरेबेषदेखिकै किंतु बरकही दूलह देखिकै जोसुख श्रीसीताजीकी मा-

निशानबरषहिंसुमनसुरशोभाभली ६७ आनन्दकन्दबिलोकिदूलहसकलहियहर्षितभई अम्भोजअम्बकअम्बुउमगिसुअंगपुलकावलिछई ६८ दो०॥ जोसुखभासियमातुमनदेखिरामवरवेष सोनसकहिंकहिकल्पशतसहसशारदाशेष ६९ चौ० ॥ नयननीरहठि मंगलजानी

**परिछनकरहिंमुदितमनरानी ७० बेदविहितअरुकुलआचारू कीन्हभलीबिधिसबब्यवहारू ७१ पंचशब्दध्वनिमंगलगाना पटपांवरेपरहिंबिधिनाना ७२ करिआरतीअर्घतिनदीन्हा रामगवनमंडपतबकीन्हा ७३ दशरथसहितसमाजबिराजे बिभव**

ताकोभयोहै सो सुखजो सौकल्पताईं सहस्र शारदा सहस्रशेष कहांचाहैंतौ नहींकहिसकैं तहांकबि कैसे कहिसकै ( ६९ ) तब सब रनिवास इत्यादिकनके राजनन्यानके दूलहदेखिकै प्रेमते नेत्रनमें जलभरिआयो सो मंगलसमय जानिकै हठिकै नेत्रनको जलरोंकिदीन्ह तहां अति आनन्दते रनिवास परिछनकरतीहैं ( ७० ) पुनि वेद अरु कुलबिधिके जे आचरणरहे ते सब बिधिबिधानते ब्यवहार पूर्बक कीन्ह ( ७१ ) पञ्चशब्द तत बितत अनध धन सुकियाततकही तारजामें लागे बिततकही मंजीर झांझकरताल अनधकही सींकते थारीमें जलभरिकै बजावते हैं उसे जलतरंग भीकही अरु करताल करसे काष्ठनमें छोटीझांझलगी अरु तालीके शब्दघनकही नगारा मृदंग इत्यादिक सुकिया कही सहनाई मुर्चंग नरसिंहा भेरीबंशी इत्यादिक पञ्चशब्दकी ध्वनि अरु मंगलगान होतहै तहां पटकही नानाप्रकारके वस्त्रनके पांवड़ेपरतेहैं ( ७२ ) तिन युवतिनने आरती करिकै अर्घ्यदीन मंगलगान करती हैं श्रीरामचन्द्र मण्डपको गमनकरतेभये ( ७३ ) दशरथमहाराज सहित समाजबिराजमान है तेहि समयका बिभव देखिकै दशोदिग्पाल लज्जितभये ( ७४ ) अरु समय समयबिषेसुरजे देवताहैं तेफूलबर्षते हैं तहां बिप्र जोहैं तेहि समय के अनुकूल शांति कही बेदनकी ऋचाकरिकै स्वस्त्ययन पढ़ते हैं ( ७५ ) तहां नभ अरु नगर बिषे मंगलमय कोलाहल ह्वैरह्योहै आपन औ परावाशब्द किसूको सुनि नहींपरैहै ( ७६ ) यहिप्रकारते श्रीरामचन्द्र सुगन्धमय अर्घ्यको देतेसंतेमण्डपकहँआये तहां अर्घ्यकोदैकै आसनपर बैठावतेभये ( ७७ ) छन्दार्थ॥ तहां श्रीरामचन्द्रको आसनपर बैठाइकरि धूप दीप नैबेद्य आचमन तांबूलादिसे पूजनकर आरती करतीभईं अतिसुन्दररूप निरखि निरखि बर

**बिलोकिलोकपतिलाजे ७४ समयसमयसुरबरषहिंफूला शांतिपढ़हिंमहिसुरअनुकूला ७५ नभअरुनगरकोलाहलहोई आपन परकछुसुनैनकोई ७६ यहिबिधिराममंडपहिआये अर्घ्यदेइआसनबैठाये ७७ छं०॥ बैठारिआसनआरतीकरिनिरखिबरसुखपावहीं मणिबसनभूषणभूरिवारहिं- नारिमंगलगावहीं ७८ ब्रह्मादिसुरबरबिप्रबेषबनाइकौतुकदेखहीं अबलोकिरविकुलकमलरविछविसुफलजीवनलेखहीं ७९ दो० ॥ नाऊबारीभाटनटरामनिछावरिपाइ मुदितअशीषहिंनाइशिरहर्षनहृदयसमाइ ८० चौ० ॥ मिले जनकसादरअतिप्रीती करिवैदिक लौकिकसबरीती ८१ मिलतमहादोउराजबिराजे उपमाखोजिखोजिकविलाजे ८२ लहीनकतहुं**

कही अतिसुखपावती हैं अरु अनेकन मणि बस्त्र निछावरि करती हैं मंगलगाती हैं ( ७८ ) दशोदिग्पाल ब्रह्मा शिवादिक ब्राह्मणनके रूपधरिकै श्रीरामचन्द्रके बिवाहदेखिबेकेहेतु मण्डपतर प्राप्तभये हैं तहां यह अतिआनन्दते कौतुक मंगलदेखते हैं तहां रघुबंशकुलकमल तेहिके प्रकाशकर्त्ता श्रीरामचन्द्र तिनकी छबिदेखिकै अपने जीवनको सुफलमानते हैं ( ७९ ) दोहार्थ॥ तेहिसमय में नाऊ बारी भाट नट इत्यादिक श्रीरामचन्द्रकी मनभावित निछावरिपाइके मुदित आशीर्बाद देते हैं ( ८० ) तहां राजाजनक अरु दशरथ द्वौमहाराज अतिप्रीतिते मिलतेभये लोकबेदकीमर्याद संयुक्तमिले ( ८१ ) हे पार्वती द्वौमहाराजमिलतकै अति शोभित हैं तहांद्वौ राजनके मिलापकी उपमादेबे को ब्यास बाल्मीकि इत्यादिक कबि खोजि खोजि हारिगे पर नहीं मिली ( ८२ ) तहां तीनिउंलोक चौदहौभुवनके कबिनकीबाणी खोजि खोजि थकिरही तब हृदयमें हारिकै अन्वयालंकार करिकै कहतेहैं कि इनके समान इनहीकी परस्पर उपमाहै ( ८३ ) तहां हे भरद्वाज द्वौ समधिन कहँ देखिकै किंतु समधीकही सम कही बरोबरि हैं धीकही बुद्धि दोऊ राजनकी तिनको देखिकैदेवता अनुरागे तहां सुमन बर्षिकै दोऊ राजन के यश देवता गावते हैं ( ८४ ) देवता परस्पर कहते हैं कि जग में जब ते बिरञ्चि ने हमको उपजायो

है तबते वहुत बिवाह देखा है औ सुना है ( ८५ ) पर सकलभांतिते सब साजसमाज सजे बरोबरि समसमधी हम आजुदेखाहै ( ८६ ) तहां देवतनकीबाणी सुन्दरिसांची दोउराजसमाज समेत सुनिकै परस्पर अलौकिक प्रीतिमचिरही है ( ८७ ) तहां पांवड़ेकही मार्ग्गमेंपटपरत अर्घ्यदेत दशरथमहाराज अति आदरपूर्व्वक जनकके मण्डपको

हारिहियमानी इनसमयइउपमाउरआनी ८३ समधीदेखिदेवअनुरागे सुमनवर्षिजयगावनलागे ८४ जगबिरंचिउपजावाजबते देखेसुनेब्याहबहुतबते ८५ सकलभांतिसबसाजसमाजू समसमधीदेखेहमआजू ८६ देवगिरासुनिसुन्दरिसांची प्रीतिअलौकिक दुहुंदिशिमांची ८७ देतपांवड़ेअर्घसुहाये सादरजनकमंडपहिआये ८८ छं० ॥ मंडपबिलोकिविचिबरचनारुचिरतामुनिमनहरे निजपाणिजनकसुजानसबकहँआनिसिंहासनधरे ८९ कुलइष्टसरिसवशिष्ठपूजेविनयकरिआशिषलही कौशिकहिपूजत परमप्रीतिकिरीतितौनपरैकही ९० दो०॥ बामदेवआदिऋषयपूजेमुदितमहीश दियेदिव्यआसनसबहिसबसनलहीअशीश ९१ चौ० ॥ बहुरिकीन्हकोशलपतिपूजा जानिईशसमभावनदूजा ९२ जोरिपाणिकरिविनयबड़ाई कहिनिजभाग्यबिभवबहु-

आवतभये ( ८८ ) छन्दार्थ॥ मण्डपकी विचित्र रचना जो मुनिनकेमनको हरै सो सब विलोकतभये तब जनकजीने अपने हाथन सबकी यथायोग्य बिनयकीन्हि अरु उन्हें सिंहासन देतभये ( ८९ ) पुनि जनकजीकुलइष्टदेवनके सरस बशिष्ठको पूजतेभये अरु महामुनिननेहर्षिकै आशीर्व्वाददीन्ह पुनि परमप्रीतिते कौशिकमुनिकीपूजनकीन्ह सो रीतिप्रीतिकही नहींपरै है ( ९० ) दोहार्त्थ ॥ बामदेवआदिक सब ऋषिनकी पूजन कीन्हि बशिष्ठ विश्वमित्रके समान राजा पूजतभये सुन्दर दिब्य आसनसबको देतभये सबते आर्शीर्व्वाद पावतेभये ( ९१ ) बहु राजादशरथकै पूजाकरतभये तहां ईश कही महादेवके समान जानिकै पूजाकरतेभये दूसरभावनहीं ( ९२ ) तब जनकजू हाथजोरिकै बारबार बिनय अरु बड़ाई करते हैं मेरे भाग्यकी विभव को कहिसकै ( ९३ ) हे भरद्वाज भूपतिने दशरथमहाराजही के समान अतिप्रीतिते सब बरातिनको पूज्यो ( ९४ ) तहां लघुमध्य बड़े इत्यादिक समस्त बरातिनको यथायोग्य आसन देतभये तहां हे गरुड़ महाउत्साह एकमुखते नहीं कहा जातहै ( ९५ ) बिविध प्रकारते समस्त बरातियों को पृथक् २ दान मान बिनय बार्णाते सन्मानकीन्ह ( ९६ ) बिधि हरि हर दिशिपति कही दशौ दिग्पाल चन्द्र सूर्य्य जे श्रीरघुनाथजी के प्रभावको जानते हैं ( ९७ ) जे सब ईश्वर कोटिदेवता हैं ते सब कपटकही अपनो बेष दुराइकै ब्राह्मणका रूपबेष सुन्दर बनिबनि श्रीरघुनाथजी के बिवाहको कौतुक अति आनन्दते देखते हैं ( ९८ ) तहांजनकजीने जैसे ये देवताहैं तैसेई पूजनकीन्ह अरु बिनुपहिचाने दिव्य

ताई ९३ पूजेभूपतिसकलबराती समधीसमसादर सबभांती ९४ आसनउचितदीन्हसबकाहू कहौंकहामुखएकउछाहू ९५ सकलबरातजनकसनमानी दानमानबिनतीबरबानी ९६ बिधिहरिहरदिशिपतिदिनराऊ जेजानहिंरघुवीरप्रभाऊ ९७ कपटबिप्रबरबेषबनाये कौतुकदेखहिंअतिसचुपाये ९८ पूजेजनकदेवसमजाने दियेसुआसनबिनपहिंचाने ९९ छं० ॥ पहिचानकोकेहिजान सबहिअपानसुधिभोरीभई आनन्दकंदबिलोकिदूलह-उभयदिशिआनँदमई १०० सुरलखेरामसुजानपूजेमानसिकआसनदये अवलोकिशीलसुभावप्रभुकोबिबुधमनप्रमुदितभये १०१ दो० ॥ रामचन्द्रमुखचन्द्रछबिलोचनचारुचकोर करतपानसादरसकल प्रेमप्रमोदनथोर १०२ चौ० ॥ समयबिलोकिवशिष्ठबोलाये सादरसतानन्दसुनिआये १०३ बेगकुंवरिअबआनहुजाई चलेमु-

आसनदीन्ह ( ९९ ) छन्दार्त्थ॥ हे गरुड़को केहिको पहिंचानते हैं काहेतेसबको अपनपौ कही अपनी सुधि भोरी होइगई काहेते आनन्दके कन्द श्रीरामचन्द्र दूलह तिनको बिलोकिकै सबकीदशा बिदेह होइगई उभयदिशि दोऊ राजनकी समाज आनन्दमयभई ( १०० ) तब श्रीरामचन्द्र सुजान देखतभये कि ब्रह्मा बिष्णु शिवादिक बिप्रबेष बनाइकैआये हैं तबतिनको मानसीदिब्य आसनदीन्ह तहां प्रभुको शीलस्वभाव स्नेह अवलोकिकै देवता परम आनन्द समेत नमस्कार करिकै बैठतेभये ( १०१ ) दोहार्त्थ॥ तहां श्रीरामचन्द्रको मुख पूर्णचन्द्रहै सबके सन्मुखते सब चहूंफेरते छबि अमृतको पानकरते हैं जैसे पूर्णचन्द्रके सुधाको चकोर पानकरते हैं तहां कैसे तनकीसुधिरहै ( १०२ ) तहां वशिष्ठजीने उत्तम समय बिलोकिकै सतानन्दकोबोलायो सुनिकैआदरपूर्व्वक आवतेभये ( १०३ ) तब बशिष्ठनेकहा कि शीघ्र कुँवरिको लै आवहु आज्ञापाइकै मण्डपको लै चले ( १०४ ) तहां सतानन्दने रनिवासनतेकहा कि जानकीजीको मण्डपमें लैचलौ ( १०५ ) तब उपरोहितकी बाणीसुनिकै सखिनसंयुक्त आनंद भई तब रनिवासमें बिप्रनकी बधुनको अरु कुलकी दिनवृद्धनको बोलायेजे सब कुलकीरीति जानती हैं तिनते पूंछि २ कुलकीरीतिकरिकै सुष्टमंगलमय गीतगावती हैं ( १०६ ) तहां वरनारिनकर बेषबनाइ जे सुरनकीवामाकहीस्त्री जे सहजस्वभाये सुन्दरी हैं अरु श्यामा कही नित्यकिशोरी हैं ( १०७ ) तिनको देखिकै रनिवास अरु सब नारी अति सुखपावती हैं अरु बिना पहिचाने सबको प्राणतेप्यारी लगती हैं ( १०८ ) तिनको रानी बारबार सन्मान करती है जैसी वे हैं तैसेही उमा रमा शारदाके समानजानिकै आदर करती हैं ( १०९ ) ते सबमिलिकै श्रीजानकीजीको साज

**दितमनआयसुपाई १०४ रानीसुनिउपरोहितबानी प्रमुदितसखिनसमेतसयानी १०५ बिप्रबधूकुलवृद्धबोलाई करिकुलरीति सुमंगलगाई १०६ नारिवेषजेसुरबरबामा सकलसुभायसुंदरीश्यामा १०७ तिनहिंदेखिसुखपावहिंनारी बिनुपहिचानप्राणतेप्यारी १०८ बारबारसनमानहिंरानी उमारमाशारदसमजानी १०९ सियसँवारिसबसाजबनाई मुदितमंडपहिचलींल्यवाई ११० छं० ॥ चलील्याइसीतहिंसखीसादरसजि-सुमंगलभामिनीनवसप्तसाजेसुन्दरीसबमत्तकुंजरगामिनी १११ कलगानसुनि**

साजिकै मुदितमन कही आनन्दते मण्डपको ल्यवाइचली हैं ( ११० ) छन्दार्त्थ॥ तहां हे भरद्वाज श्रीजानकीजीको सजिकै सखी आदर पूर्वक मण्डपको ल्यवाइचलीं तहां नवसप्तकही सोरहौश्रृंगार करिकै अरु सोईसब सखी अपने अपने अंगमें श्रृंगार सजिकै सब सुन्दरी मत्त कुञ्जरके तुल्य गमन करतभईं तहां सोरहो श्रृंगार अरु बारहौं आभूषण कहते हैंतहां सुनयनाकी आज्ञानुरूप सखी जे हैं ते श्रीजानकीजीको मज्जन करावतीभईं अगर कर्पूर चन्दन केसरि इत्यादिक अनेकसुगन्ध श्रीकमलजलमिश्रितते स्नानकरावतीभईं श्रृंगारमें प्रथम मज्जनहै तहां सोरहो श्रृंगार श्रीजानकीजी की षष्ठअष्टमुख्य सखी पुनि षोड़शमुख्य सखी पुनि श्रीरघुनाथजी की षष्ठअष्टमुख्य सखी पुनि षोड़शमुख्य सखीते सबश्रीसुनयनाजी की आज्ञालैकै श्रीजानकीजीको श्रृंगारकरती हैं सखिनकेनाम आह्लादिनी द्यौदिशी सहजानन्दिनी मदनमञ्जरी चन्द्रकला चन्द्रवती चन्द्रमुखी इति षष्ठ पुनि अष्ट बिमला उत्कर्षिनी क्रिया योगा पार्व्वी ईशानाज्ञाना सत्या इत्यष्टसखी पुनि षोड़श उज्ज्वला काँचनी चित्रा चित्ररेखा सुधामुखीहंसी प्रहंसी कमला बिशदाक्षी सुदर्शना चन्द्रानन्नी चन्द्रभद्रा मधुर्य्या शालिनी कर्पूरांगी वरारोहा इतिषोड़श श्रीजानकीजीकी सखी हैं और भी अनन्त सखीहैं अब श्रीरघुनाथजीकी सखी सो जानकीजीकेसंग हैं षष्टसखी आह्लादिनी द्यौदिशी चारुशीला अतिशीला सुशीला हेमा लक्ष्मण इत्यषष्ठ पुनिअष्ट बागीश माधवी हरिप्रिया मनजीवा नित्याबिद्या सुबिद्या कूटरूपा इति अष्टसखी पुनि षोड़शशोभना शुभदा शांता सन्तोषा सुखदा सत्यवती चारुस्मिता चारुरूपा चार्वंगी चारुलोचना क्षेमांगी क्षेमा क्षेमदात्री धात्री धीरा धरा स्मृता इतिषोड़श इत्यादिक अनन्तसखी ते सब श्रीजानकीजीका श्रृंगार करती हैं सब युगुलसेवामें तत्परहैं भूत भविष्य बर्त्तमानमें क्रमतेजानब प्रथमस्नानकराये पुनि नील सारी जामें सुवर्ण मणिनके फूलरचे हैं किनारी जरावनते जटित है सोपहिरावतीभईं दोऊपगनमें जावक जसचाही तसरचतीभईं नूपुर तीनि आवृत्तितेपहिरावतीभईं अंगराग जहांजस चाही तहांतस

करतीभई कटिमें क्षुद्रघण्टिका तीनि आबृतिते पहिराइ दोऊकरमें कङ्कणपहिराये मुक्तन केहार पहिरावतीभई अगर कर्पूर चन्दन केसरि कस्तूरी लेपनकरतीभई कवरीकीरचना चित्र विचित्र करतीभई हैं बेसरि अधरपर शोभितहै श्रवणमें ताटंकशोभितहै भालमें बिन्दुशोभित नेत्रनमेंकाजर देतभई बेणीमुक्तनते गुहतभई येते षोड़शौ शृंगारकरतीभई पुनि उपशृंगारकहे भूषणकहते हैं द्वौ चरण अँगुलिनमें तप्तइव कंचन तामें हरितमणि पीतमणि नीलमणिनकी कनीजटित ऐसोमंजीरकही बिछिया पहिरावतीभई मंजीरंपादभूषणं इत्यमरः पुनि दोऊकरनमें चूरी चित्रविचित्र हेममणि कनिनते जटितशोभित है मुद्रिका शोभितहै द्वौभुजनमें अङ्गदबिचित्र है पुनि ग्रीवकली जवाकार है पुनि पचलरी पुनि पंचकली पदिक जैसे श्रीरामचन्द्रके हैं पुनिचन्द्रहार कैसो है मध्यमें पूर्णचन्द्रवत् मणिलगी हैं पुनि क्रमहीते दाहिनीओर शुक्लपक्षकी चतुर्दशी बामदिशि कृष्णपक्षकी परिवा यहीप्रकारतेजानिलेव द्वौपक्षके षोड़शौकला क्रमहीते जानिलेब शुक्लपक्षकी द्वितीया कृष्णपक्षकी तेरसि ताहीको सुमेरुस्थाने ऐसोहारहै पुनि मणिनकी कनी कइउरंगनके लघुमोती ताको रचितमणि जारसारी किनारीताई जैसे श्रीरघुनन्दनजूके बनमाला है तैसे श्रीजनकनन्दनीजूके मणिजारहै पुनिदुइलरकीबन्दी ताटंक मिलित बन्दीतरटीका सुवर्ण प्रकाशमय ताके द्वौ उठितरंग रंगकीमणि कणीताके मध्यमें ये मणिनीचे झुकितललाटपर अत्यन्त शोभितहैं टीकापर चन्द्रिका सो दाहिनीदिशि झुकित सो सुवर्ण के मध्यमें एकमणि चढ़ाउतार कछुक बंकहै अरु द्वौकिनारे मणि कणिनते रचितहैं ऐसी चन्द्रिका अनेक चन्द्र सूर्य्य दामिनीकी द्युतिको प्रकाश करति है जेते श्रीसीतारामके भूषणहैं ते चैतन्यरूपहैं पुनि नित्यजीवहैं जेजौने रसमें अनन्यहैं ते ताहीमें सायुज्यहोइकै अंगअंग सेवनकरतेहैं रस तौ नव हैं पुनि तीनिमिलि बारहहैं तिनमें पंचभक्तिरस हैं शांत बात्सल्यदास्य सख्य शृंगाररस अथवा सबरसै माधुर्य्य भूषणरूप नित्य अंगअंग सेवनकरते हैं अथवा एकशृंगारैरस अनेक अलङ्काररूप नित्यदम्पति अंगसेवनकरतुहै ऐसे परमदिव्य भूषण श्रीसीतारामजूके अंगअंगनमें अतिही परमशोभाको पावतेहैं ऐसे नवसप्त षोड़शौशृंगार बारहौ आभूषण श्रीजानकीजीके अंग अंगमें सजिकै अरु सोई आपुकरिकै त्रयका मुग्धा मध्या प्रौढ़ा तिनमें अनेकभेद जे शृंगार रसादिक सर्बसेवामें अतिप्रबीणते सब सखि नर्मप्रिय निज अतिसुन्दरी आदि मध्य अन्त किशोरी ते

मुनिध्यानत्यागहिंकामकोकिललाजहीं मंजीरनूपुरकलितकंकणतालगतिबरबाजहीं ११२ दो०॥ सोहतिबनितावृन्दमहँ सहज सुहावनिसीय छबिललनागणमध्यजनु सुखमाअतिकमनीय ११३ चौ०॥ सियसुन्दरताबरणिनजाई लघुमतिबहुतमनोहरताई ११४ आवतदीखबरातिनसीता रूपराशिअतिपरमपुनीता ११५ सबहिंमनहिंमनकीन्हप्रणामा देखिरामभयेपूरणकामा ११६

सखी जानकीजीको मण्डपको लिवायचलीं ( १११ ) तहां श्रीजानकीजीको सखी कलगानकरत लेवायचलीं जो सुनिकै मुनिनको ध्यानछूटि जाइ अरु जो सुनिकै जो कामै कोकिलाको रूपधरिकै बोले तो वहभी लज्जितहोइजाइ तहां मंजीरकही बिछुवा अरु नूपुर अरु सुन्दर कङ्कण सो इनसबके स्वर अरु गान एकताल गतिलिहे बाजते हैं ( ११२ ) दोहार्थ ॥ तहां बनितनके बृन्दकेमध्यबिषे श्रीजानकीजी सहजही शोभित हैं सो कैसे शोभित हैं जनु छबिकही शोभाकीक्रांति तेहिकीद्युतिकही छटातेहिकीमूर्त्ति ललनाकेगणहैं तेहीछबिके मध्यबिषे जो परमानन्द सुख है सोई मूर्त्तिमान् कमनीय कही अतिसुन्दरि शोभितहै तथापि यह उपमाश्रीजानकीके समाजकेआगे लघुहै तहां उपमाकी उत्प्रेक्षाकीन्ही ( ११३ ) हे भरद्वाज श्रीजानकीजीकी शोभा ब्रह्मादिक कबिनको दुर्ल्लभहै काहेतेकि जेते ब्रह्माण्ड मण्डलमें कबिहैं तिनकीमति गुणाभिमानीहै तातेलघुहै अरु श्रीजानकीजी की मनोहरता गुणातीतहै तातेकबि कैसे कहै ( ११४ ) तहां बरातिन श्रीसीताजीको आवतदेखा रूपकीराशिसो रूपसब भाँति ते निर्मलपुनीत ( ११५ ) तब तिन मुनिन अरु देवतन मनहीं मनमाप्रणामकीन्ह तहां प्रकटप्रणाम क्यों नहींकीन्ह यहां यथार्थ श्रीजानकीजी को परमेश्वरी जानिकै शांतरसबिषे मनमें नमस्कारकीन्ह अरु स्वेच्छितनाट्यलीलामें जानिकै बात्सल्यरसमें प्राप्तहैकै प्रत्यक्षप्रणाम नहींकीन्ह पुनि श्रीजानकी रामके बिवाहके सम्बन्धमें एकत्रदेखा तब कामकही सबकी कामना पूर्णभई ( ११६ ) तहां श्रीदशरथमहाराजको निजपुत्रनसहित सखिन संयुक्त श्रीजानकीजीको देखिकै जैसो सुखभयो है सोनहीं कहाजाइ ( ११७ ) तब देवता श्रीराम जानकीको प्रणामकरके

फूलनकीवृष्टि करतेहैं अरु मुनिनके आशीर्बादनकी मङ्गलमय ध्वनिहोती है ( ११८ ) तहां गाननिशान इत्यादिक शब्दनकरिकै कोलाहलकही सोरह्वैरह्यो है नगरके नरनारि प्रेमकरिकै प्रमोदकही आनन्दमें भरिरहे हैं ( ११९ ) यहिप्रकारते श्रीजानकीजी मण्डपको आवतीभई तहां प्रमुदितकही आनन्द

हरषेदशरथसुतनसमेता कहिनजायउरआनँदजेता ११७ सुरप्रणामकरिबरषहिंफूला मुनिअशीषध्वनिमंगलमूला ११८ गान निशानकोलाहलभारी प्रेमप्रमोदनगरनरनारी ११९ यहिबिधिसीयमंडपहिआई प्रमुदितशांतिपढ़हिंमुनिराई १२० तेहिअवसरकरिबिधिब्यवहारू दुहुंकुलगुरुसबकीन्हअचारू १२१ छं० ॥ आचारकरिगुरुगौरिगणपतिमुदितबिप्रपुजावहीं सुरप्रकटपूजा लेहिंदेहिंअशीषअतिसुखपावहीं १२२ मधुपर्कमंगलद्रब्यजोजेहिसमय- मुनिमनमहँचहैं भरेकनककोपरकलशसोतौलिये परिचा-

ते मुनिराय शतानन्द बशिष्ठादिक शांतिकही स्वस्त्ययन पढ़तेभये ( १२० ) तेहिअवसरकर बिधिविधान जो ब्यवहार है सो द्वौकुलके गुरुशतानन्द बशिष्ठ आचार पूर्बक इतै उतै हर्षिकै करते हैं ( १२१ ) छन्दार्त्थ॥ तबसम्पूर्ण आचारपूर्बक बिप्रार्चनसहित गुरुकही श्रेष्ठ जो गौरि गणपति हैं तिनकी प्रथमपूजा करावतेभये तहां जैसोरूप देवतनके बेदबर्णैहैं ते तैसेही स्वरूपते अपने अपने समय समयबिषे प्रत्यक्ष श्रीसीता रामकेरकमल करिकै अपनो अपनोभाग पूजामेंलेतेहैं तुरन्त पाइजाते हैं अपनाकोधन्यमानते हैं अरु आशीर्वाददेतेहैं आशीर्बाद सुनिकै सब अतिसुखपावते हैं ( १२२ ) मधुपर्ककही गोघृत अरु मिश्रितमिश्री दधि अरु मंगलकीद्रब्यकही पुंगीफल पान अक्षत हरिद्रा दूब रत्न इत्यादिक विवाहके जो सरंजाम जौनीसमय जो मुनिमनमें चाहतेहैं सो सब अरु तहां कंचनकेकलशानमहँ अनेक तीर्थनकेजल अरु कंचनके कोपरनमहँ अनेक पदार्थ भरे परिचारककही शुचिसेवकलिहेठाढ़ेहैं ( १२३ ) तहां सूर्यजोहैं सोप्रकट आदरपूर्बक अपने कुलकैरीतिसबकहि देते हैं अरु ब्रह्माजो हैं सो वेदकीरीति सबकहिदेतेहैं तहांयहीप्रकारते श्रीजानकीजीसे सबदेवतनको पुजाइकै सुन्दरसिंहासन पर बैठावतेभये ( १२४ ) तहां श्रीजानकीजी श्रीरघुनाथजीको अवलोकन करतीहैं अरु श्रीरघुनाथजी श्रीजानकीजीको अवलोकनकरतेहैं तहां परस्परचक्षुसंभोगकी प्रीतिते अपनेअपनेतनको अपनपौभूलिगये हैं तहां परस्परकरप्रेम काहूकोलखिनहींपरै तहां कबिनकीमनबुद्धिवाणी जो है बरकही श्रेष्ठ तेहिते अगोचर वह प्रीति कवि कैसेप्रकटकरै ( १२५ ) दोहार्थ॥तहां होमकेसमयविषेअग्नि मूर्त्तिमान्ह्वैकै अतिप्रीतिते प्रत्यक्ष भोजनकरते हैं अरुचारिउवेद ब्राह्मणनकेरूपधरिकै बिवाहकीबिधि कहिदेत हैं ( १२६ )॥

रकरहैं १२३ कुलरीतिप्रीतिसमेतरबिकहिदेतसबसादरकिये यहिभाँतिदेवपुजाइसीतहिसुभगसिंहासनदिये १२४ सियरामअवलोकनिपरस्पर- प्रेमकाहुनलखिपरै मनबुद्धिबरवाणीअगोचरप्रकटकविकैसेकरै १२५ दो० ॥ होमसमयतनुधरिअनलअतिसुखआहुतिलेहिं विप्रवेषधरिवेदसबकहि- बिवाहबिधिदेहिं १२६ चौ०॥ जनकपाटमहिषीजगजानी सीयमातुकिमिजाइबखानी १२७ सुयशसुकृतसुखसुन्दरताई सबसमेटिबिधिरचीबनाई १२८ समयजानिमुनिवरनिबोलाई सुनतसुआसिनिसादरल्याई १२९ जनकबामदिशिसोहसुनैना हिमगिरिसंगबनीजसमैना १३० कनककलशमणिकोपररूरे शुचिसुगंधमंगलजलपूरे १३१ निज

तहांराजाजनककै महिषीकही पटबन्धनीरानी श्रीसुनयना जैसे जनक योगेश्वर तैसे रानी भी सबप्रकारते दिव्यगुण अरु परमशोभाको समुद्रजिनकी उपमाको कोई हईनहीं है इनकीसमान येईहैं ते रानी श्रीजानकीजीकी माता तिनको बखानिकै ऐसो कौन कविहै जो कहै ( १२७ ) कैसी हैं श्रीजानकीजीकी माता असममुझिबेमें आवतहै कि

ब्रह्माण्डभरेमें सुयशजो है अरु सुकृत जो हैं अरु परमसुख जो है अरु परमसुन्दरता जो है चारिउसुष्टसमेटिकै शीलतेसानिकै बिधातैं एकसुनयनाजीकीमूर्त्तिबनावाहै रचनाकरिकै अपनी सुघराई जगत्में देखाइदीन्हि ( १२८ ) तहां समय जानिकै तिनको मुनीश्वर बोलावतेभये तब सुनिकै सुआसिनी कहीनगरकी कन्या छोटी बड़ी मध्यइत्यादिक रानीको मण्डपमें लैआवती भई ( १२९ ) तहां सुनयनाको दिव्यआसनपर बैठावतभये तहां जनकबामदिशि सुनयनाके बामदिशि जनक अरु जनकके दक्षिणदिशि विषे सुनयना शोभितहैं पुण्यकालमें ऐसही चाहिये जैसे पार्वती के बिवाहमेंहिमाचलके दक्षिणांगमें मैना शोभितभई हैं ( १३० ) जहां कनककेकलशा अरु मणिनके कोपर रूरे कही अति सुन्दर तिनविषे अगर कर्पूर चन्दनकेसरि इत्यादिक सुगन्धमिश्रित मंगलमय जलभरे हैं ( १३१ ) रानीसमेत राजाजनक अपनेहाथन श्रीरामचन्द्रके आगे धरतभये ( १३२ ) तहां संपूर्ण मुनीश्वर मंगलवाणी करिकै वेद पढ़ते हैं तहां अवसर जानिकै आकाशते देवता फूलवर्षते हैं ( १३३ ) तब बरको बिलोकि कै दम्पतिअति अनुराग को प्राप्ति ह्वैकै अति पुनीत चरण पखारनेलगे ( १३४ ) छन्दार्थ ॥ तब दम्पति श्रीरामचन्द्र के युगुल चरण कमल पखारनेलगेअति प्रेमते तन पुलकि आयो चरण धोवत जानिकै नभ अरु नगर में

करमुदितराउअरुरानी धरेरामकेआगेआनी १३२ पढ़हिंवेदमुनिमंगलबानी गगनसुमनझरिअवसरजानी १३३ बरबिलोकिदंपतिअनुरागे पायँपुनीतपखारनलागे १३४ छं०॥ लागेपखारनपायँपंकजप्रेमतनुपुलकावली नभनगरगाननिशानजयधुनिउमँगिजनुचहुंदिशिचली १३५ जेपदसरोजमनोजअरिउरसहसदैवबिराजहीं जयसुकृतसुमिरतबिमलतामनसकलकलिमलभाजहीं १३६ जेपरसिमुनिबनिता लहीगतिरहीजोपातकमई मकरंदजिनकोशंभुसिरशुचिताअवधिसुरबरनई १३७ करिमधुपमनयोगीशजनजेहिसेइअभिमतगतिलहैं तेपदपखारतभाग्यभाजनजनक-जयजयसबकहैं १३८ बरकुंवरिकरतलजोरिशाखोच्चारद्वौकुल

गान निशान जय ध्वनि चहुं दिशिमें ह्वैरही है ( १३५ ) जे पद सरोजमनोज अरि जो महादेव हैं तिनको हृदय मानसर है तहां सदैव कही सदा बिराजते हैं जिन चरणोंके सुकृत कही एकबार लवमात्र सुमिरण करतसन्ते सम्पूर्ण कलिकोमल नाशमान होत है ( १३६ ) जिन चरणनको परसिकै गौतमकी पत्नी तरिगई जो पापमय रही जेहि चरणको मकरन्द कहीरस अति शुचि पवित्र महादेवके मस्तकपर शोभित है सुरसरिजी पवित्रताकी अवधिहैं ( १३७ ) पुनि जेहिपद पङ्कजके मकरन्दको अपनेमनको मधुपकीन्हहैं योगीश्वरमुनि परमहंस जेहिको सेइकै अभिमतकही बाञ्छितफलको प्राप्तहोते हैं जनकजीते चरणारबिन्द पखारते हैं ताते भाग्यकेभाजनहैं तहां जनककीस्तुति जयजयकार सबदेवता मुनि सिद्धादिककरतेहैं ( १३८ ) हेभरद्वाज वर जो श्रीरामचन्द्र अरु कुँवरिश्रीजानकीजी तहां दोऊकुँवर कुँवरिको करतलजोरिकै श्रीरामचन्द्रके दक्षिण करतलपर श्रीजानकीजीको दक्षिणकर धराबतेभये तहां शाखोच्चारद्वौकुलगुरु करते हैं प्रमाणंश्रुतिः यामात्र्यदक्षिणकरो परिकन्यादक्षिणकरन्निधाय १ शाखोच्चारकही वेदकीशाखा तेहिको उच्चारण द्वौकुलके गुरुद्वौदिशिते करतेहैं बशिष्ठजी श्रीरामचन्द्रकीदिशि अरु सतानन्द श्रीजानकीजीकीदिशि तहां प्रमाणहै स्वस्तिश्रीमत्सकल जगदघध्वन्सनपरमोदारबिनोद बिचारसदारसच्छास्त्राध्ययनद्विद्वज्जनगोष्टीप्रकाशवर्म्मणः प्रपौत्रः पौत्रः पुत्रः प्रयतपाणिः शरणम्प्रद्यते स्वस्तिस्सम्बादेषूभयोर्वरकन्ययोर्म्मंगलमास्ताम् इतिबरपक्षे बारत्रयम्पठेत् अथकन्यापक्षे स्वस्ति श्रीमत्पदाचाराचरणपरिलब्धगरिष्ठादिमुनिगणयोनीयमानयशश्चन्द्रकर धवलीकृतजगत्रयस्यअमुकगोत्रस्याऽमुकप्रवरस्याऽमुकवर्मणः प्रपौत्रीपौत्रीपुत्रीस्वस्तिसंबादेषूभयोर्मंगलमास्ताम् इतिकन्यापक्षेबारत्रयम्पठेत् २ तब पाणिग्रहणहोतभयो सो बिलोकिकै सुर मनुज मुनि आनन्दको प्राप्तहोत भये ( १३९ )

गुरुकरैं भयोपाणिग्रहणबिलोकिबिधि सुरमनुजमुनिआनँदभरे १३९ सुखमूलदूलहदेखिदम्पतिपुलकतनहुलस्योहियो करिलोकवेदबिधान कन्यादाननृपभूषणकियो १४० हिमवन्तजिमिगिरिजामहेशहिंहरिहिंश्रीसागरदई तिमिजनकसियरामहिंसमर्पीविश्वकलकीरतिनई १४१

**क्योंकरैविनयबिदेहकियोबिदेहमूरतिसाँवरी करिहोमबिधिवतगांठिजोरीहोनलागींभाँवरी १४२ दो०॥ जयधुनिबन्दीवेदधुनिमंगलगाननिशान सुनिहरषहिंबरषहिंबिबुधसुरतरुसुमनसुजान १४३ चौ० ॥ कुंवरिकुंवरकलभाँ-**

तहां सुखकोमूल दूलह जो श्रीरामचन्द्र तिनको अति प्रीतिते नयनभरिबिलोकिकै दम्पतिकोतन पुलकिआयो हृदयमें हुलासभयो तब लोकवेद विधानकरिकै राजनकेभूषण श्रीजनकजी रानीसंयुक्त कन्यादान करतभये ( १४० ) जिमि हिमाचल गिरिजाको महेशको समर्पणकीन्हहै अरु जिमि क्षीरसागर लक्ष्मीजीको बिष्णुभगवान्को समर्प्पणकीन्हहै तिमि तेहिप्रकारते जनक श्रीजानकीजीको श्रीरामचन्द्रजीको समर्प्पणकीन्हहै कीर्त्ति सम्पूर्णबिश्वमें कलकहीसुन्दर नवीनभरिरही है ( १४१ ) तब बिदेहकोबिनयकरिवेकी सामर्थ्यनहींरही काहेते कि साँवरिमूर्त्तिने अपनी शोभा करिकै बिदेहको बिदेह करिदीन्ह तहां बिनय को करिसकै पुनि सावधानहोइकैबिबिधि बिधानते होम करिकै गांठि जोरिकै भाँवरी की तयारी होत भई ( १४२ ) दोहार्त्थ॥ तब नगरमें जयमंगल गानकीध्वनि होतभई सो सुनिकै देवता अति हर्षसंयुक्त कल्पवृक्षके फूलबर्षते हैं ( १४३ ) तब कुँवरि श्रीजानकीजीआगे अरु कुँवर श्रीरघुनाथजीपीछे यहिरीतिते भांवरीहोनेलगी तहां देव नर मुनि इत्यादिक सब नयननको लाभ सादर लेते हैं ( १४४ ) तहां देखिकै सबकेमन हारिगये काहेते मनोहर जोरी बर्णिबेकोकबिनको अगमहै जो उपमा ब्रह्माण्डभरेमें है सो कबिढूंढ़िकैकहैं सो सब थोरीहै तहां सत्कबिनकैबाणी संकोचिकै सीतारामकी प्रतिछाहींकीउपमाकछुकहती है ( १४५ ) जब सीताराम भांवरी फिरनेलगे तब तिनकी प्रतिछाहीं मणिनके खम्भनमें जगमगाइरही है ( १४६ ) तिन प्रतिछाहिनकीउपमा कछुकहते हैं मानो मदन अरु रति बहुरूपधरिकै श्रीरामचन्द्र को बिवाह जो अनूप सो देखते हैं ( १४७ ) तहां दर्शनकी लालसा बहुतिहै अरु अपनीशोभाको महत्समुझिकै अतिसंकोचपावतहैं अरु बिनादर्शन नहीं रहाजाइहै ताते जनु बारबार प्रकटत अरु दुरतहैं जब खम्भनमें प्रतिछाहीं परती है तब मानहुं रति अरु काम प्रकटत है अरु जब खम्भन

**वरिदेहीं नयनलाभसबसादरलेहीं १४४ जाइनबरणिमनोहरजोरी जोउपमाकविकहैंसोथोरी १४५ रामसीयसुन्दरिप्रतिछाहीं जगमगातिमणिखम्भनमाहीं १४६ मनहुंमदनरतिधरिबहुरूपादेखतरामबिवाहअनूपा १४७ दरशलालसासकुचनथोरी प्रकटतदुरतबहोरिबहोरी १४८ भयेमगनसबदेखनहारे जनकसमाजअपानबिसारे १४९ प्रमुदितमुनिनभाँवरीफेरी नेगसहितसबरीतिनिबेरी १५० रामसीयशिरसेंदुरदेहीं उपमाकहिनजाइकविकेहीं १५१ अरुणपरागजलजभरिनीके शशिहिभूपअहिलोभअमीके**

के बीचबीच प्रतिछाहीं परतीजाती है तब मानहु दुरिकही छपिछपिजातहै यहउपमाते मानहु बारबारप्रकटतहै दुरतहै तहां देखियेतौ श्रीगोसाईं तुलसीदासकी रचना कि कामशृंगाररसकीमूर्त्तिहीहै अरु रति शृंगाररसकीमुख्यस्थाईहै तिनदोऊकीउपमा श्रीरामजानकीके प्रतिछाहींकी दीन्हि है पुनि द्वौ जनु अनेकरूप धरिकै श्रीसीतारामकी शोभा देखत हैं तदपितृप्ति नहींहोते हैं तहां सीतारामजूकै शोभा कवि कैसेकहै नाम नहीं कहि सकै ( १४८ ) तहां देव मुनि मनुष्य इत्यादिक तेहिसमयमें सीतारामजीकी सम्पूर्णशोभा देखिकै मग्न ह्वैगये हैं कैसे मग्नभये राजाजनकके समान अपनपौसबको भूलिगयोहै तेहिसमयमें जनकबिदेहते बिदेहभये तैसहीसब चित्रसेरहिगये ( १४९ ) तहांप्रमुदितकही आनन्दते मुनिभांवरी फेरतेभये अरु अपनोनेग लैलै प्रीतिसों सर्वरीति निबेरी कही करतभये ( १५० ) पुनि मुनिनकी आज्ञाते श्रीरामचन्द्र श्रीजानकीजीके भालमें सिंदूरदेतेहैं सो उपमाकै शोभा केहि बिधिते कही जाइ कोई बिधिते नहीं कहीजातिहै ( १५१ ) तहां कछुकसत्कवि कहतेहैं इहां बाचकलुप्तालंकारकी उपमादेतेहैं अरुण जो पराग कही सिन्दूर सो श्रीरामचन्द्रने कमलकरते पांचहू अँगुलिन करिकै भरिलीन्ह श्रीजानकीजीके ललाटकेऊपर भूषितकरतेहैं जनु पराग किंजल्क संयुक्त कमललैकै श्यामसर्पपूर्ण चन्द्रमाकी अमृतकीप्राप्तिहेतु पूजाकरतहै तहां श्रीजानकीजीको मुख सोई पूर्णचन्द्र है अरु श्रीरामचन्द्रकी भुजा सोई श्यामसर्प्प है हथोरी कमलहै अँगुली दल है सिन्दूरपराग

किंजल्क है ऐसी अभूतउपमाहै किन्तु भुजसर्प्प है अरु कमल इव कर तल फण है अरु सिन्दूर मुखमें मणिहै तेहि मणिते अहि सीतामुखचन्द्र को अमियहेतु पूजतिहै ( १५२ ) बहुरिकै वशिष्ठ आज्ञा देतभये कि

१५२ बहुरिवशिष्ठदीन्हअनुशासन बरदुलहिनिबैठहिंयकआसन १५३ छं०॥ बैठेबरासनरामजानकि मुदितमनदशरथभये तनपुलकपुनिपुनिदेखि-अपनेसुकृतसुरतरुफलनये १५४ भरिभुवनरहाउछाहरामबिवाहभासबहीकहा केहिभाँतिबरणिसिरातरसनाएकयहमंगलमहा १५५ तबजनकपायवशिष्ठआयसुब्याहसाजसँवारिकै माण्डवीश्रुतिकीरतिउर्मिलाकुंवरिलइयहँकारिकै १५६ कुशकेतुकन्याप्रथमजोगुणशीलसुखशोभामई सबरीतिप्रीतिसमेतकरिसोब्याहिनृपभरतहिदई १५७ जानकीलघुभगिनीसकलसुंदरिशिरोमणिजानिकै सोजनकदीन्हीब्याहिलषणहिंसकल-बिधिसनमानिकै १५८ जेहिनामश्रुतिकीरतिसुलोचनिसुमुखि

बरदुलहिनि एकआसनपरबैठहिं ( १५३ ) छन्दार्थ॥ श्रीरामचन्द्रजानकीजी बरासनपरबैठे दशरथमहाराजदेखिदेखि परमानन्दकोप्राप्तहैंबारबारतनुपुलकतहै काहेते अपने नवीनसुकृत सुरतरुकोनित्यनवीन फलितदेखिकै ( १५४ ) तहां तीनिउ भुवन में परमउत्साह भरिरह्यो है हे भरद्वाज तहां यह महामंगल एकरस ताते केहिभांतिते कहाजाय ( १५५ ) तब जनकजीवशिष्ठजीकी आज्ञा पाइकै बहोरिकै बिवाहकी रचनासरंजाम शीघ्रसँवारिकै पुनि मांडवी श्रुतिकीर्त्ति उर्मिला तीनिहूँकुँवरिको सखिनकरिकैहँकारिलीन्ह जैसे समाजसंयुक्त श्रीजानकीजी मंडपमें आई हैं तैसेहीतीनिउकुँवरिमण्डपको आवतीभई ( १५६ ) राजाजनककेछोटेभाईकुशकेतुतिनकीजेठीकन्या उत्तमगुण शीलशोभामयमांडवी उसेसबरीतिप्रीतिसमेतकरके भरतजूको ब्याहिदीन ( १५७ ) पुनि श्रीजानकीजीकी लघुभगिनीराजाकीकन्याउर्मिला सकलसुन्दरीनकीशिरोमणि सो सबरीतिप्रीतिकरिकैआनंद पूर्वकराजाने श्रीलक्ष्मणजूकोबिवाहिदीन्ह ( १५८ ) पुनि कुशकेतुकीछोटीकन्या श्रुतिकीर्त्तिनाम कैसी है सुमुखिसुलोचनि अरु उत्तमगुणनके जे गुणी शारदा उमा रमा इत्यादिक तिन बिषे आगरी कही अग्रणीय है तिनकोसबरीति प्रीतिसमेत करिकै श्रीशत्रुहन को बिवाहिदीन्ह ( १५९ ) तहां चारिउ कुँवरि अरु चारौं कुमारनको अत्यानन्दपूर्व्वक बिवाह करतभये ते एकस्थानमें बिराजमान हैं बरके अनुरूप दुलहिनि श्रीरामचन्द्र श्याम श्रीजानकीजीगौरी भरतजूश्याम अरु माण्डवीजी गौरी अरुलषण शत्रुहनगौर उर्म्मिला अरु श्रुतिकीर्त्तिश्याम तहां शृङ्गाररस श्याम है अरु शृङ्गाररसको स्थाई मुख्यरति सो आह्लादकारीगौरी है तहां लक्ष्मणजू उर्म्मिलाके आह्लादकारी अरुशत्रुहन श्रुतिकीर्त्तिके आह्लादकारी अरु श्रीजानकीजी श्रीरामचन्द्रके आह्लादकारी अरु माण्डवी श्रीभरतजीकेआह्लादकारी हैं तहां शास्त्रनके अनुरूप यह कहा जाता है नतु रस अरु स्थाई अन्योन्य परस्पर आह्लादकारी हैं तहां तहां चारिउ कुँवरि अरु चारौंकुमारअपने अपने सम्बन्धमें परस्पर अति हर्षसंयुक्त अवलोकनकरते हैं सो रस

सबगुणआगरी सोदईरिपुसूदनहिंभूपतिरूपशीलउजागरी १५९ अनुरूपबरदुलहिनिपरस्परलखिसकुचिहियहर्षहीं सबमुदितसुंदरतासराहहिंसुमन-सुरगणवर्षहीं १६० सुंदरीसुंदरवरणसहसबएकमण्डपराजहीं जनुजीवउरचारिउअवस्था बिभुनसहितबिराजहीं

कहवेको मन बुद्धि बाणी कबिनकी अगोचर है तेहि समयमें देखिकै सबकोई सुन्दरता सराहते हैं अरु नभते देवतनकेगण फूलबर्षते हैं ( १६० ) सुन्दरी जो चारिउकुँवरि अरु सुन्दर चारौंकुमार सहकहीं कुँवरि कुँवरकिन्तु सहकही राजाते सब एकमण्डपमें राजते हैं जनु जीवके अन्तर्भूत बिषे चारिउअवस्था बिभुकही सामर्थ्य तहां अपने २ पति देवतन संयुक्तबिराजती हैं तहां अवस्थनके अरु तिनके देवता अरु जीव तिन सबके गुण क्रिया स्वरूपकहते हैं तहां जनु पद जो है सो वस्तु उत्प्रेक्षालंकारकोवाचकहै सो सबकहते हैं तहां अवस्था चारिजाग्रत स्वप्नसुषुप्तितुरीय अरु तिनके देवता क्रमते विश्वतैजस प्राज्ञ अन्तर्य्यामीजानब तहां जाग्रत अवस्था चौबिसतत्त्व करिकै है पृथ्वी अप

तेज बायु आकाश ये पांचतत्त्व अरु पांच ज्ञानइन्द्री श्रवण नयन त्वक् रसना नासिका पुनि पांच कर्म्मइन्द्री मुख पाणि पद लिंग गुदा अरु पांच ज्ञानइन्द्रीको बिषय शब्दस्पर्श रूप रस गन्ध पुनि चतुष्टय अन्तष्करण चित्त बुद्धि मन अहंकार यहिचौबीसतत्त्वकरिकै स्थूलशरीर प्रत्यक्षभोग जाग्रत अवस्था विश्वदेवता सत्य गुण तहां जाग्रतअवस्था उर्म्मिलाजी बिश्वरूप लक्ष्मणजी पुनि स्वप्नावस्था सत्रहतत्त्व करिकै पांच ज्ञानइन्द्रीको विषय जो कहिआये श्रवण को बिषयशब्द नेत्रको बिषयरूप त्वक्‌को बिषयस्पर्श जीवको बिषय रसघ्राणको बिषयगन्ध इतिपञ्च पुनि कर्म्मइन्द्रीको बिषय मुखकोबिषय भक्षण हाथकोबिषय ब्यवहार पदकोबिषयगमन लिंगकोबिषय मैथुन मूत्र गुदाकोबिषय बिसर्ग बिसर्गकही मलकोत्याग इतिपञ्च पुनिपञ्च प्राण अपान समान ब्यान उदान इतिपञ्चबायु पुनि मन बुद्धि येते सत्रहतत्त्वकरिकै लिंगशरीर तेहिको सूक्ष्मभोग स्वप्नअवस्था तैजस देवता रजोगुण तहां दिब्यस्वप्न अवस्था श्रुतिकीर्त्ति को जानिये अरु तैजसदेवता शत्रुहनको जानिये पुनि सुषुप्तिअवस्था कही जहां जाग्रतअवस्थाको चौबिसतत्त्व अरु स्वप्नअवस्थाके सत्रहतत्त्व जेहिकालमें सुख बिषे लयहोइजाहिं तहांकारण शरीर अरु आनन्दभोग प्राज्ञ देवता बिमल तमोगुण प्राज्ञकही ज्ञानकेस्वरूपकी प्राप्ति तहां सुषुप्ति अवस्था माण्डवी को जानब अरु प्राज्ञदेवता श्रीभरतजीको जानब पुनि तुरीय अरु कोई मुनीश सुषुप्तिअवस्था को सत्वगुणमय कहते हैं जाग्रतको रजोमय कहते हैं अरु स्वप्नअवस्थाकोतमोमय कहते हैं ताते जो कोई सुषुप्ति अवस्थाको अज्ञानदेशमें कहते हैं उनको स्वरूप भलीबिधि नहीं जानिपरयो है अरु तुरीयावस्थाकही जहांस्थूललिंग कारण तीनिउशरीरको अभाव अरु सुषुप्ति इत्यादिक तीनिउ अवस्थारहितहोइ सहजानन्द बृत्तिहोइ सो तुरीयअवस्था गुणातीत आनन्द बिग्रह ब्रह्मानन्दभोगसो श्रीजानकीजीको जानब अरु तुरीयको दिवता ब्रह्म सर्व्वब्यापक शुद्ध चैतन्य अन्तर्य्यामी रूप राम जो सर्व्वमेंरमिरहेहैंसो श्रीरामचन्द्रको जानब तहां चारिउ अवस्था शुद्ध चारिउ कुँवरि अरु अवस्थन के बिभु कही देवता चारिहु कुँवार अरु जीवस्थाने राजा अरुशरीरस्थाने मण्डप तहां यह कहा कि जनु जीव अरु चारिउ अवस्थाको साम्यता करिकै रहना यह बिरोध भासित होत है काहेते कि कोई मुनियहकहते हैं कि जाग्रत अवस्था सत्वगुणमें है अरु तुरीयावस्था गुणातीत है तहां तीनिउ गुणनमेंभेदहै एकसत्व एकशुद्ध सत्वएकरजःएकशुद्धरजःएकतमःएकशुद्धतमः तैसे इनके देवता जानब तहां श्रीगोसाईं तुलसीदासजीने यहउत्प्रेक्षाकीन्ह कि चारिउ अवस्था अरु तिनके देवता तहां चारिउ कुँवरि अरु चारौंकुँवरनका दृष्टान्तदीन्हहै तहां शुद्धअवस्था शुद्धदेवताजानब काहेते कि जहां जाग्रत अवस्था तहां स्वप्नसुषुप्तिकर बिरोध है अरु जहां स्वप्न अवस्थाहै तहां जाग्रत सुषुप्तिको अभावहै अरु जहां सुषुप्तिहै तहां जाग्रतस्वप्नको अभावहै अरु जहां तुरीयअवस्थाहै तहां तीनिहूंको अभावहै अरु इहां गोसाईं श्रीतुलसीदासनेकहा कि जीवकेअन्तर्ब्भूत चारिउअवस्थासहित देवतन एकहीसंग बिराजते हैं ताते तीनिउअवस्थाको देवतनसंयुक्त इहांशुद्धजानब अरुयहांजीवस्थानेकोईमण्डपको कहतेहैं तहां धर्म के सम्बन्धबिषे बिरोधआवतहै ताते जीवस्थाने दशरथ महाराजकोजानिये काहेते चारिउअवस्था अवस्थनकेदेवता यहिसमयमहँ एकही बेर दशरथमहाराजके बाह्यांतर सुखपूर्वक बिराजते हैं देखिये तौ जाग्रतअवस्थाको स्थूलशरीर अरु तेहिकी क्रिया तनको ब्यवहार अरु अवस्था को देवता विश्व तहां दशरथ महाराज सबक्रिया कर्मकरतेहैं तेहिसमयमेंवेदविधिते ब्यवहार करतेहैं अरु सम्पूर्ण विश्व राजाकी बड़ाई करत है पुनि स्वप्नअवस्था की क्रिया मनको ब्यवहार मनबुद्ध्यादिक सत्रहौंतत्त्वकरिकै अन्तष्करणमें करतेहैं अरु तेहीसमयमें तेजवान् प्रकाशवान् राजा बिराजमानहैं पुनि सुषुप्ति अवस्थाकी क्रियामेंआनन्दकरिकै किसीकर्त्तव्यकी सुधिनहींहै अरु प्राज्ञकही तेहीसमयमें प्राणायाम उत्कर्षकरिकै ज्ञान कही अपने स्वस्वरूपकी प्राप्ति अरु तुरीयावस्थाकी क्रिया निर्विकल्पसमाधि अरु तेहिकर देवता अन्तर्यामी श्रीरामचन्द्र तिनके स्वरूपविषे राजाकेचित्तकी वृत्ति अखण्डलगीहै ताते दशरथमहाराजके वाह्यांतरविषेचारिउअवस्था चारिकुँवरिहैं पुनि चारिउदेवता चारिउकुँवरहैं एकहीबेर

१६१ दो० ॥ मुदितअवधपतिसकलसुतबधुनसमेतनिहारि जनुपायेमहिपालमणिक्रियनसहितफलचारि १६२ चौ०॥ जसरघुबीर

आनन्दपूर्वक राजाकेउरविषे बिराजमान हैं पुनि तत्त्वसारग्रन्थहै तिसकीउक्ति कहते हैं शेषलोक मृत्युलोक स्वर्गलोक तीनिहूंलोकनके कर्मबासना संयुक्त सो स्वप्नावस्थाहै अरु तेहिकोदेवता अष्टांगयोगहै काहेते योगकर्मकोलिहेहै तहां अवस्थारूपी श्रुतिकीर्त्ति सो राजाकेकर्म्म राजाके बासना की कीर्त्ति श्रुतिगावते हैं अरु त्रैलोक्य में पूरिरही है काहेते

राजाकी कर्म्मवासनाको परमदिव्य श्रीरामते सम्बन्धयोगहै पुनि जो कर्म्म करै तेहिके फलकी बासनानहीं सो जाग्रत अवस्था कही अरु तेहिको दवता वैराग्यकही त्याग सो जाग्रतअवस्था उर्म्मिला अरु वैराग्यरूप लक्ष्मण तहांदशरथ महाराज सबनिर्बासिक अरु सर्व्वस्वदान करते हैं सो वैराग्य पुनिसुखबिषे सबलीनहै सो सुषुप्तिअवस्था माण्डवी अरु तेहिको देवता बिवेक लिहेज्ञान सो राजाके आनन्द बिवेकपूर्ण है पुनि जहां दुःखसुख हर्षशोक हानि लाभ समहै अरु ब्रह्मानन्दमें आरूढ़ सो तुरीयअवस्था श्रीजानकीजी अरु तुरीय को देवता विज्ञान स्वरूप सो श्रीरामचन्द्र हैं येतेपरमदिव्य मूर्त्तिमान् अवस्था देवता दशरथ महाराजके अन्तर्ब्भूत एकही बेर एकमण्डपबिषे विराजमान् हैं तहां यहिछन्दके यहिचरणमें अनेकअर्थअनेकभावहैं परन्तु मैंने अपनी मतिकेअनुसारकहा है ( १६१ ) दोहार्थ॥ हे गरुड़ अवधपति सकलसुतन बधुनकोएकहीस्थानबिषे अपनेसमीपदेखिकै अतिमुदितहैं जनुक्रियनसहित चारिउफलएकहीबेर महिपालमणिपावतेभये तहां फलकही अर्थ धर्म काम मोक्ष तहां अर्थ कही द्रब्य रत्न सुबर्णहाथीघोड़े रथपैदर अन्नबस्त्र इत्यादिकनको द्रब्यकही तेहिकी क्रियातप दानते अर्थ सिद्धिहोत है किंतु प्रारब्धके आश्रय पुरुषार्थते सिद्धिहोतहै तहां अर्थ शत्रुहनका जानब काहेते जो शत्रुको नाशकरै तौ अर्थ सिद्धि होय तहां शत्रुहनमें दुइभेद एकअपनेशरीरहीमेंशत्रुहैं कामक्रोध लोभ मोहमद मात्सर्यइत्यादिक जो इनकोनाशकरै तो परमार्थसिद्धिहोइ अरु एक शत्रु बाहरके हैं जीवजीवके जातिनको नाशकरै तौ संसारमें स्वार्थ सिद्धिहोइ ताते परमार्थ स्वार्थ दूनों अर्थरूप शत्रुहन हैं अर्थकीक्रिया तप दान पुरुषार्थ कहे हैं इनको जो निर्वासिक करै तौ परमार्थ मुक्ति सिद्धहोइ अरुजो सवासिककरै तौ मृत्युलोक किंतु स्वर्गलोकमें स्वार्थ कीर्त्ति सिद्धिहोइ तहां निर्वासिक क्रियामें उत्तम कीर्त्ति है अरु सवासिकमें मध्यमकीर्त्ति हैतहां अर्थकीक्रिया श्रुतिकीर्त्तिको जानब निर्वासिक क्रियाकी कीर्त्तिउनको स्वरूप जानब अरु सवासिक क्रियाकी कीर्त्ति उनकी शक्ति जानब अर्थक्रियायुक्तकहेहैं पुनि धर्म कहते हैं धर्मकही सत्यशौच तपदान तहांब्राह्मणनको चारिउ चाही तामें दान सामान्य है अरु क्षत्रीको चारिउ चाहीतेहिमें शौच सामान्य है अरु वैश्यमें तीनि चाही सत्य शौच दान तेहि में शौच सामान्य है अरु शूद्रमें दुइचाही सत्य दान तहां दान सामान्यहै इतिचारिबर्ण पुनि चारिआश्रम कहते हैं ब्रह्मचर्य्य गृहस्थ बाणप्रस्थ संन्यास ब्रह्मचारी को चारिउचाही सत्यशौच तपदान तहां दान सामान्य है अरु गृहस्थको दानविशेष तीनिउ सामान्य हैं अरु जो ब्रह्मचारी बिषे में सोई बाणप्रस्थ बिषेमें अरु संन्यासी बिषेसत्य शौचबिशेष तेहिधर्म बिषेनिर्वासिक सवासिक निर्वासिक मोक्षदाता सवासिक मृत्यु अरु स्वर्गलोकदाता तहां निर्वासिक धर्मकी मूर्त्ति श्रीलक्ष्मणजूको जानिये पुनि धर्मकी क्रिया अपने अपने वर्णाश्रमके कर्म ब्राह्मणके कर्म शमदम शौचशांति आर्जवकही दया ज्ञानविज्ञान इतिनव पुनि क्षत्रीकीक्रिया शूरतेजस्वीधैर्य दक्ष कही शास्त्रादिकनमें प्रवीण अरु युद्धमें अचल अरुदान में उदार इतिषट् पुनि वैश्यकीक्रियाकृषी बाणिज्यकर्म गोरक्षण इतित्रय पुनिशूद्रकीक्रिया तीनिउवर्णकीपरिचार्या इतिएक पुनि आश्रमकीक्रियाब्रह्मचारी बिद्याध्ययन गुरुसेवा भिक्षाभोजन पुनि गृहस्थकीक्रियागृहस्थीकरै जोउत्पन्नकरै तेहिके सत्रहवेंभागमें एकभाग दानकरिकै तुरंग ब्राह्मणकोदेइगृहस्थीकरै पुनि निजयोषितारत पुनि एकएकसीधा पूर्णमासी अमावास्याप्रति देइ पुनि जब रसोई होइ तब भगवत्दर्पण करिकै पंचग्रास देइ गऊ अरु ब्राह्मणको बालक शूद्रको बालक अरु श्वानको अरु पचवां क्षुधितकोई होइ अपनी शक्तिप्रमाण अतिथिकी सेवाकरै इत्यादिक अनेक हैं पुनि बाणप्रस्थकी क्रिया स्त्री संयुक्त बनकोजाइ किंतु अकेलैजाइ तपकरैइन्द्रिनके बिषयको जीतै पुनि संन्यासकी क्रियाविषय ते बैराग्यग्रामके बासकोत्याग भिक्षा भोजन दिनमेंकरै इनसबकी क्रियनमें एक निर्वासिक एक सवासिक स्वर्ग मृत्युलोक निर्वासिक मुक्तहै सो क्रिया उर्मिलाजीको जानिये पुनिकाम कामकही कामना ऋद्धि सिद्धिनकी चाहनासोभरतजीको जानब निर्वासिक आपुहीते सबप्राप्तिहै तेहिकीक्रिया शक्तिन सहित पंचदेवताकी आराधना निर्वासिक सोमांडवीजी को जानिये पुनिअर्थधर्म काम मोक्षकही कैवल्य मूर्त्ति श्रीरामचन्द्र अरु कैवल्यकी क्रिया योग बैराग्य ज्ञान नवधा प्रेमापर भक्तिसो श्रीजानकीजीको जानिये तहांनिर्वासिक अर्थ धर्म काममोक्ष चारिउ कुंवरहैं अरु चारिउफलकी क्रिया

**ब्याहबिधिबरणी सकलकुंवरब्याहेतेहिकरणी १६२ कहिनजातकछुदायजभूरी रहाकनकमणिमंडपपूरी १६३ कंबलबसन विचित्रपटोरे भांतिभांतिबहुमोलनथोरे १६४ गजरथतुरँगदासअरुदासी धेनुअलंकृतकामदुहासी १६५ बस्तुअनेककरियकिमि लेखा कहिनजाइजानहिंजिनदेखा १६६ लोकपालअवलोकिसिहाने लीन्हअवधपतिअतिसुखमाने १६७ दीन्हयाचकनजो**

दिब्य चारिउ कुंवरि हैं तहां देखिये तौ क्रियाफल यकठाईं नहीं सिद्धिहोते हैं तहां दशरथ महाराजके फल अरु फलकी क्रिया तेहिसमय एकहीबार सब प्राप्तिहै ( १६२ ) हे भरद्वाज जेहि बिधिबिधानते श्रीरामचन्द्रको बिवाह बर्णनकीन्ह है तेहि बिधिते तीनिउ कुंवरन को बिवाह दोऊ राजन आनंद पूर्वक कीन्हहै ( १६३ ) तहां जो अतिसमूह दायज जनकजूने दीन्ह है सो कहिबेयोग्यनहीं कनक मणिनते मण्डप परिपूर्ण ह्वैरह्यो है ( १६४ ) तहां कम्बल कही ऊर्णबस्त्र बनात पट्टू दुशाला इत्यादिकअरु खानिखानिके पट्टाम्बर अरु खानिखानिके सूत्रबस्त्र कितनेसाधारण कितने जड़ावनते जटित ऐसे अनेकन अरु कितने भांतिभांतिके जिनकेमोल थोरेनहीं हैं अनन्त हैं कहिबेयोग्य नहीं हैं ( १६५ ) अरु अनेकन गज तुरंग अरु तिनहींके रथ बहुदासदासी अनेक अलंकार संयुक्त श्रीरघुनाथजी अरु श्रीजानकीजीकेहेतु देतेभये अरु अनेक धेनुकही अति दुग्धवती सवत्साकामधेनुके सदृश सदाफलदात्री ऐसी धेनु श्रीराजाजनकजूश्रीराजाधिराज दशरथमहाराजको देतेभये ( १६६ ) हे भरद्वाज राजाजनक

अनेकवस्त्र दायजमें दीन्ह सो कहांताईं लेखाकरिये वह तो अकथनीयहैतेहिसमयबिषे जिनदेखाहोइ सो जानहि तौ जानहि ( १६७ ) सो बिभूति देखिकै लोकपाल सिहाते हैं सो सब पदार्त्थ अति सुखमानिकै दशरथमहाराज लेतेभये ( १६८ ) तहां सो सब सरञ्जाम राजादशरथ याचकन को मनबांछित देतेभये जो उबर्‌यो सो जनवासेको जातभयो ( १६९ ) तब राजा जनक सम्पूर्ण बरातका सन्मान करिकै कर जोरिकै बोलते भये ( १७० ) छन्दार्त्थ॥ सम्पूर्ण आदरदान अरु मान बिनयपूर्वक बड़ाईते यथायोग्य सम्पूर्ण बरातिनको सन्मानकरिकै परमआनन्दते सम्पूर्ण मुनीश्वरनको बन्दतभये अतिप्रेमते सबकीपूजाकीनि है ( १७१ ) पुनि जोदेवता ब्राह्मणको रूपकिहे मण्डपबिषे श्रीरघुनाथजीके बिवाह देखिबे को आये हैं ब्रह्मा शिव भगवान् अरु दशौंदिग्पाल आदिक तिन सबनको सर्व्वज्ञराजा जनकजी करजोरिकै शीशनवाइकै बिनयकरते हैं हे देव मैं तु-

**जेहिभावा उबरासोजनवासहिआवा १६८ तबकरजोरिजनकमृदुबानी बोलेसबबरातसनमानी १६९ छं०॥ सनमानिसकलबरात आदरदानबिनयबड़ाइकै प्रमुदितमहामुनिवृंदबन्देपूजिप्रेमलगाइकै १७० शिरनाइदेवमनाइसबसनकहतकरसम्पुटकिये सुरसाधु चाहतभावसिन्धुकितोषजलअंजुलिदिये १७१ करजोरिजनकबहोरिबन्धुनसहितकोशलरायसों बोलेमनोहरबैनसानिसनेहशीलसुभायसों १७२ सनबन्धराजनरावरे हमबड़े अबसबबिधिभये येराजसाजसमेतसेवकजानवीबिनुगथलये १७३ येदारिकापरचा-**

म्हारो सन्मान अरु आदर केहि प्रकारते करौं क्योंकि जो समुद्र को एकअञ्जुलिदीजिये तौ समुद्रको क्या सन्तोषहोतहै तैसेही आपके सन्मान योग्य मैं नहींहौं पर मोको यतनाबोधहै कि आप भावग्राहकहौ ( १७२ ) पुनि बहोरि कर जोरिकै राजाकुशध्वज बन्धुसहित कोशलरायसों बिनय करते हैं तब जनकजू प्रेमतेभरे शील सुभावते सानिकै मनोहर ( १७३ ) मधुर बचन बोलतभये हे महाराज आपके सम्बन्धभयेते अब हमसबप्रकारते बड़ाईको प्राप्तिभये हेमहाराज यह जो मेरोराज्यसमाजहै उससहित समस्तपरिवारसमेत मोकोअपनोसेवक बिनामोलकोजानिये ( १७४ ) हे महाराज ये जो मेरी चारिउ दारिका कहीकन्याहैं तिनको परिचारिकाकही टहलुई जानिकै इनको प्रतिपाल करब काहेते आपु कि सहित पुत्रन करुणामयहौ आपुकी बिनयकरतहौं कि मैंने आपको बोलाइभेजाहै यहबहुत ढिठाईकीन्हहै मेरो सेवककोधर्म्म तो यहहै कि कन्यनको लैकै च लिकै श्रीअवधमहँ बिवाहकरि आवत्यों ताते अब इहां बोलाइबे को अपराध क्षमाकरब क्योंकि आपु करुणामयहौ ( १७५ ) तब भानुकुल के भूषण दशरथमहाराज

जनकजीकेबचननकीरचनाते अतिसन्मान बड़ाईआदर समधीको करतेभये तहां हे भरद्वाज द्वौ महाराज भक्तराजानकी बिनयप्रीति परस्पर नहीं कही जाती है प्रेमते पुलक अति पूर्णहोइरहे हैं ( १७६ ) तब वृन्दारका कही देवतनकेगण द्वौराजनकी बड़ाई करिकै फूल बर्षते हैं यहिप्रकारते राजादशरथ महाराज बिदाह्वैकै जनवासेको चलतभये तब नभ अरु नगरमें दुन्दुभीवजी हैं जयध्वनिहोती हैं द्वौदिशि आनन्दकोकुतूहल भरिरह्यउ है ( १७७ ) तब त्यहि अवसरबिषे मुनीशकीआयसुपाइकै मंगलगान करतसन्ते दूलह दुलहिनिनको अवलोकन च-

रिकाकरिपालवीकरुणामई अपराधक्षमिवोबोलिपठयेबहुतहौंढीढीदई १७४ पुनिभानुकुलभूषणसकलसनमानबिधिसमधी कियो कहिजातनहिंबिनतीपरस्परप्रेमपरिपूरणहियो १७५ वृन्दारकागणसुमनवरषहिंराउजनवासहिचले धुनिदुन्दुभीअरुवेदधुनिनभनगरकौतूहलभले १७६ तबसखीमंगलगानकरतमुनीशआयसुपाइकै दूलहदुलहिनिनसहितसुंदरि चलींकोहवरल्याइकै १७७ दो०॥ पुनिपुनिरामहिंचितवसिय-सकुचतिमनसकुचैन हरतमनोहरमीनछविप्रेमपियासेनैन १७८ चौ०॥ श्यामशरीरसुभायसुहावन शोभाकोटिमनोजलजावन १७९ जावकयुतपदकमलसुहाये मुनिमनमधुपरहतजहँछाये १८० पीतपुनीतमनोहरधोती हरतबालरविदामिनजोती १८१ कलकिंकिणिकटिसूत्रमनोहर बाहुबिशालबिभूषणसुंदर १८२ पीतजनेउमहाछविदेई

लीजाती हैं सखी कोहवरको लिवाइचलीं हैं ( १७८ ) दोहार्त्थ॥ कोहवरको दुलहिनि दुलहा चलतसन्ते श्रीजानकीजी श्रीरघुनाथजीपर मनमें संकोचसहित तेहि संकोचमहँ आनन्द होतजात है किन्तु मनसकुचतहैअरु नहीं सकुचत अरु मनमें चैनहै इहां मुग्धानायकाकै अवस्थाकही है तहां श्रीरघुनाथजी को रूप शृंगार सागर तेहि बिषे श्रीजानकीजीके नयन मनोहर मीनह्वैकै कल्लोलकरते हैं काहेते प्रेमके पियासे हैं ( १७९ ) कैसो श्रीरघुनाथजी को रूप है श्याम मयूर के कण्ठ इव सुभाये अति शोभित हैं कैसी शोभा है कोटिन कामके लजावनि हारि है ( १८० ) जावक कही महावर संयुक्त पद कमल अति शोभित जहां मुनिनके मन भँवर ह्वैकै छाइ रहे हैं ( १८१ ) अरु पीत अति पुनीत मनकी हरन हारी कटि में धोती पहिरे हैं कैसी धोती है बाल सूर्य्य अरु दामिनीकी ज्योति को हरती है ( १८२ ) कटि बिषे किंकिणी अरु करधनी वह मुनिनके मनको हरते हैं अरु भुजबिशाल तेहिंबिषे अतिसुन्दर बिभूषणपहिरेहैं ( १८३ ) अरु पीतयज्ञोपबीत महाछबिकोदेतहै जनु नीलघनपर बिजुलीकी रेखा थिरह्वैरहीहै अरु करबिषे मुद्रिकाहै सो चित्तकी वृत्तिकोचोरावतीहै ( १८४ ) ब्याहकरसाज रसबसाजे अतिशोभितहैं अरु उरआयतहै उरके भूषण अतिशोभितहैं ( १८५ ) अरु पतिउपरना कांधा सोतीडारेहैंतेहिकेदूनों अचरणमें मोती अरु मणिनकी कनीलगी हैं ( १८६ ) अरु नीलकमल कछु अरुण श्वेत लिहे ऐसे नयन हैं अरु श्रवण बिषे प्रकाशमयगोल मणिनकी कणिनते जटित कुण्डलहैं अरु छोटेछोटे मोती लगे

करमुद्रिकाचोरिचितलेई १८३ सोहतब्याहसाजसबसाजे उरआयतउरभूषणराजे १८४ पीतउपरनाकांषासोती दुहुअचरान लगेमणिमोती १८५ नयनकमलकलकुण्डलकाना बदनसकलसौन्दर्यनिधाना १८६ सुन्दरभृकुटिमनोहरनासा भालतिलकशुचिरुचिरनिवासा १८७ सोहतमौरमनोहरमाथे मंगलमयमुक्तामणिगाथे १८८ छं० ॥ गाथेमहामणिमौरमंजुलअंगसबचितचोरहीं पुरनारिसुरसुन्दरीबरणबिलोकिसबतृणतोरहीं १८९ मणिबसनभूषणवारिआरतिकरहिंमंगलगावहीं सुरसुमनबरषहिं सूतमागधबन्दिसुयशसुनावहीं १९० कोहबरहिआनेकुंवरकुंवरिसुआसिनिनसुखपाइकै अतिप्रीतिलौकिकरीतिलागींकरनमंग-

है सो कुण्डल अतिशोभितहैं जनु पूर्णचन्द्रके दूनौदिशि मैननाचिनाचिअमृतपान करत है अरु वदनसकल सुन्दरता का निधानकही स्थान है ( १८७ ) अरु भृकुटी अति सुन्दरि मयनके धनुषकी छबिकोहरती हैं अरुमनोहर नासिकाहै अरु भालमें जो तिलक है सो रुचिराईको निवासहे ( १८८ ) अतिसुन्दर शीशपर मनोहर मौरसोहतहै अतिजगमगाय रह्योहैजेहिमें मङ्गलमय मणिमुक्ता गुथेहैं ( १८९ ) छन्दार्थ॥ महामणिकही रंगरंगके अमोल चिन्तामणि मौरबिषेगुथेहैं मंजुलकही निर्मल अंगअंगकीछबि सबकेचित्त चोरावते हैं पुरकीस्त्री अरु देवतनकी सुन्दरीजे हैं ते सबदूलह दुलहिनिनिकी सुन्दरताको देखिकै तिनुका तोड़ती हैं जातेदृष्टिनहींलगै किंतु तृणकही लाज सो गुरुजननकी लाजतोरिकै दुलहनको देखती हैं ( १९० ) मणि अरु मणिन के भूषण अरु वस्त्र इत्यादिक अनेकन निवछावरि करिकै मंगल के गीतगावती हैं अरु देवता फूल बर्षते हैं अरु सूतमागध बन्दीजन ये सब उत्तमयशको गावतेअरुसुनावतेहैं ( १९१ ) सुआसिनीजोहैं सो सुखपाइकै दुलहिनि दुलहाको कोहबरको ल्यावती भई अतिप्रीतिते लोककीरीति सुआसिनी करतीं अरु करावतीं हैं ( १९२ ) हे भरद्वाज लहकौरिकेमंगल मंगलसमयबिषे पार्वतीजी श्रीरामचन्द्रको सिखावती हैं हे रघुनन्दन जनकनन्दनीजी को दधि मिश्री मिश्रित लहकौरि अपने हाथसों खवावहु तहां श्रीरघुनाथजी मुसुकाइ अरु सकुचाइकै करनहीं उठावते तब पार्वती अपने करसों श्रीरघुनाथजीको दक्षिणकरधरिकै जानकीजी के मुखचन्द्रबिषे खवावती हैं जनु सर्प अपनी मणिनको प्रकटकिहे शशिकेमध्यमें अमृतरसको ग्रहण करतहै अरु अपनी मणिदेत है ऐसही तीनिबारकर मुखशोभा पावते हैं पुनि यहीरीति ते शारदा जनकनन्दनीको सिखावती हैं कि रघुनन्दनको लहकौरिखिआवो तब जानकीजी अपनो जूठजानिकै अतिसंकोचितहोती हैं करनहीं उठावती हैं तब शारदा अपनेकरते जानकीजीको करधरिकै रघुनन्दनजीको मधुपर्क्क खिआवती हैं जनु फूलीकनककीबल्ली तमालतरुके

लगाइकै १९२ लहकौरिगौरिसिखावरामहिसीयसनशारदकहैं रनिवासहासबिलासरसवशजन्मकोफलसबलहैं १९३ निजपाणि मणिमहँदेखिप्रतिमूरतिस्वरूपनिधानकी चालतिनभुजवल्लीबिलोकतिबिरहबशभइजानकी १९४ कौतुकबिनोदप्रमोदप्रेमनजाइ

फलको चुम्बन करतिहैं तहां यह समयकी उपमा अनूप है कबिनकेमनमहँ नहींसमातीहै तेहिमंगलसमयबिषे रनिवास अनेकन हास्यरस बिलासकरती हैं अरु हास्यरस संयुक्त यह कहतीहैं कि हे रघुनन्दन यह लहकौरिखाहु ऐसो स्वादतुमको कबहूंनहीं प्राप्तिहोइगो यद्यपिरानी कौशल्या केकयी सुमित्राजीके तुमअतिप्रिय हौ तदपि हमारी लरिकनी जनकनन्दनीजीकीजूठनि अतिदुर्लभहै हे लालजी प्रतिसेखाहु तहां यह बिलास को बचनसुनिसुनि श्रीरघुनाथजी बारबार मुसुकातेहैं ( १९३ ) पुनि बहोरिशारदाकरिकै जानकीजीकेकर रघुनाथजीके खवाइबेहेतु मधुपर्क्कलेबे को थारमें प्राप्तिभये तहां करबिषे मणिमय अँगुलिनमें आरसी तेहिबिषेपति जो रघुनन्दन शोभास्वरूपके निधान तिनकर प्रतिबिम्ब आरसीमहँ जानकीजीदेखिकै मग्न होइगई अरु जानकीजीकेमनमेंकछुयहहै कि शारदाजीहमारीभुजकोकदाचित्उठावैंनहीं तहांभुजनकीबल्ली जो अँगुरीहैं सो चलतीनहीं थिरह्वैरहीं हैं काहेते नगमें श्रीरामचन्द्रजी को स्वरूप देखिकैबिरहके वशभई तब श्रीरघुनन्दन जानकीजीकी दशा देखिकै आपौ मग्न होइगये तैसही सब रनिवास समाजसंयुक्त बिदेहदशाको प्राप्तभया तहांतेहिसमयको सुखबिलास सत्कबिनको अगोचर है ( १९४ ) तेहिसमयबिषे बिनोदकही हर्षयुतविलास परस्पर प्रमोदकही आनन्दकर कौतुककही आश्चर्य्यकर्तव्य प्रेमसंयुक्त सो किसूके कहबेयोग्यनहींहै सङ्गकीसखी जानतीहैं तेसब सखी आनन्दपूर्बक मङ्गलगानकरत चारिउसुन्दरि दूलहदुलहिनि तिनको जनवासेको लेवाइचलीं हैं ( १९५ ) तेहिसमयबिषे आशीर्बाद अरु जयजयकारध्वनि नगर अरु नभमेंपरिपूर्णह्वैरहीहै तहां सुरमुनि यहआशीर्बाददेतभये कि सुन्दर जो चारोंजोरीहैं सोसदाचिरञ्जीवरहैं ( १९६ ) योगीन्द्र सिद्धमुनीशदेवता ये सब श्रीरामचन्द्रजीको देखिकै दुन्दुभीबजावतेभये तब देवतासिद्धइत्यादिकहर्षितहै फूलबर्षिकै जयजय-

कहिजानहिंअली बरकुंवरिसुंदरिसकलसखील्यवाइजनवासहिचली १९५ तेहिसमयसुनियअशीषजहँतहँ नगरनभआनँदमहा चिरजीवजोरीचारुचारौमुदितमनसबहीकहा १९६ योगीन्द्रसिद्धमुनीशदेवबिलोकिप्रभुदुन्दुभिहनी चलेहरषिबरषिप्रसूननिज निजलोकजयजय-जयभनी १९७ दो०॥ सहितबधूटिनकुवँरसबतबआयेपितुपास शोभामंगलमोदभरिजनुउमग्यउजनवास १९८

चौ० ॥ पुनिजेवनारभईयहिभांती पठयेजनकबोलाइबराती १ परतपांवड़ेबसनअनूपा सुतनसमेतगवनकियोभूपा २ सादरसब

कारकरत अपने अपने लोकनको जातेभये ( १९७ ) दोहार्थ॥ तब चारिउ कुमारिन संयुक्त चारिउकुमार श्रीदशरथ महाराजके पासआये तहां चारिउभाई शोभा अरु रूपकेपूर्णचन्द्र तिनको आवतदेखिकै सम्पूर्णजनवास उठतभयो मानों मङ्गलमोदको समुद्रउमग्योहै ( १९८ ) ॥ इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने बालकाण्डे श्रीसीताराम बिवाहउत्सव त्रैलोक्यमङ्गल वर्णनन्नामचतुःपञ्चाशत्तरङ्गः ५४॥ :: :: :: :: :: ::

दो०॥ पञ्चपचासतरङ्गमें भोबिवाहसुखकन्द रामचरणलीलाकरहिंपलपलहोतअनन्द ५५ तहां दुलहिनि दुलहा जनवासेकोगये जाइकै लोक वेदकी रीति करिकै बरबासमें राखिकै सखी जो हैं सो दुलहिनिनि को मण्डपमें लेवाइगईं तब अनेकप्रकारकी जेवनारभई तब जनक महाराजको बोलाइपठयो ( १ ) अनूप अनूप जे बस्त्र हैं ते पांवड़े कही राहमें परत तिनपर पुत्रनसहित राजादशरथ चलत भये ( २ ) तब आदर पूर्व्वक जनक सबकर पांव धोवतभये अरु यथोचित सबके बैठिबे को देतभये ( ३ ) तब जनक दशरथ महाराज कर पांव धोवतभये तिन जनक कर शील औ स्नेह बर्ण्यो नहीं जातहै ( ४ ) तब श्रीरामचन्द्रके चरणकमल धोवतभये कैसे रामचन्द्रके चरणकमल हैं जिन्हैं महादेव अपने हृदयकमल महँ जैसे रंक धन को छिपावत है तैसेही छिपाये हैं ( ५ ) तब राजाजनक बिवेकसागर ते तीनिहूं भाइन के श्रीराम सम जानिकै अपने हाथ ते पादप्रक्षालन करते हैं ( ६ ) अरु उचित आसन सबको देतभये पुनि सूपकारीकही रसोईके करनहारनको राजाजनकने बोलाइलियो ( ७ ) तहां आदरपूर्बक पनवारे परनेलगे सो हरित मणिनके पत्रहैं अरु सुवर्णकी कीलैं लगीहैं ऐसे पनवारेहैं ( ८ ) दोहार्थ॥ सूप कही पहिती ओदनकही भात सर्पिकही सुरभीका घृत सो अतिसुन्दरकहीनिर्मल पुनीतकही सर्बकालमें शुद्धसुभग है तेहिकी सुआरकही रसोईको

केपांयपखारे यथायोग्यपीढ़नबैठारे ३ धोयेजनकअवधपतिचरणा शीलसनेहजाइनहिंबरणा ४ बहुरिरामपदपंकजधोये जेहर हृदयकमलमहँगोये ५ तीनिउभाइरामसमजानी धोयेजनकचरणनिजपानी ६ आसनउचितसबहिंनृपदीन्हें बोलिसूपकारीसबलीन्हें ७ सादरपरनलगेपनवारे कनककीलमणिपरणसवाँरे ८ दो० ॥ सूपौदनसुरभीसरपिसुंदरस्वादुपुनीत क्षणमहँसबकेपरसिगे चतुरसुआरबिनीत ९ चौ०॥ पंचकवरकरिजेवनलागे गारिगानसुनिअतिअनुरागे १० भांतिअनेकपरेपकवाने सुधासरिस नहिंजाहिंबखाने ११ परसनलागसुआरसुजाना ब्यंजनबिबिधनामकोजाना १२ चारिभांतिभोजनबिधिगाई एकएकबिधिवर

कर्त्ता सबके पनवारन पर क्षणमात्रमें पारुसकरतेभये काहेते सुआर अनेकनहैं अरु अतिचतुरहैं ( ९ ) तब पञ्चकौरकही पञ्चबलिभाग करिकै जेवनलगे तहां स्त्रीगानबिषे गारीदेतीहैं सो सुनिमुनि राजाआदिक बरातिन के अति अनुराग होतभयो ( १० ) तहां अनेकभांतिके पकवान अरु भांतिभांतिकी मिठाई जिनके स्वाद सुधाते सरस बखानिबेयोग्य नाहींइनसबनकी पारुसहोतिहै ( ११ ) तहां अनेक सुआरकही रसोईकेकर्त्ता ते अनेकपारुस करते हैं तहां अनेकव्यंजन तेहिकेनाम कोजानिसकै ( १२ ) तहां

चारिप्रकारके भोजनवेदगाते हैं एकतेएकअधिकसुन्दर जिनकास्वाद बर्णा नहींजाय चारिप्रकारका भोजन भक्ष्यभोज्य लेह्य चोख्य भक्ष्यकहीबुँदिया इत्यादिक जो चाबनेमें आवै अरु भोज्यकही पूरीमिठाई दालि भात इत्यादिक अरु लेह्यकही मोहनभोग इत्यादिक अरु चोख्यकहीजो चुहुकिकै खाबेमेंआवै कोई डार की तरकारी इत्यादिक ( १३ ) पुनि छः रसकही खट्टा मिट्ठा चरपरा कटु षार कषाय तहां खट्टा कही खटाई इत्यादिक मीठाकही मिठाई बृध शर्बत मेवा इत्यादिक चरपराकही मिर्च सोंठि इत्यादिक अरु कटु मिरचा इत्यादिक अरु षार कही लोन इत्यादिक अरु कषाय कही बाकस अवँरा हर्राकोअचार इत्यादिक तहां छः रस बिषे हरएकजातिके अनेकभेद हैं अति पुनीत अनेक ब्यञ्जननकी पारुसहोतिहै ( १४ ) तहां बरातिनको जेवतसन्ते अनेकनस्त्री स्त्री पुरुषके नाम लैलै ब्यंग्यसंयुक्त जहांजसचाही मधुरधुनिसे गारीदेती हैं ( १५ ) सखिनके मुखनकी बिवाहके समयकी गारीसुनिसुनि बरातिनको अति आनन्द

णिनजाई १३ छरसरुचिरब्यंजनबहुजाती एकएकरसअगणितभांती १४ जेंवतदेहिंमधुरध्वनिगारी लैलैनामपुरुषअरुनारी १५ समयसुहावनगारिबिराजा हँसतराउसुनिसहितसमाजा १६ यहिबिधिसबहीं भोजनकीन्हा आदरसहितआचमनलीन्हा १७ दो०॥ देइपानपूजेजनकदशरथसहितसमाज जनवासेगमनेमुदितसकलभूपशिरताज १८ चौ०॥ नितनूतनमंगलपुरमाहीं निमिषसरस दिनयामिनिजाहीं १९ बड़ेभोरभूपतिमणिजागे याचकगुणगणगावनलागे २० देखिकुंवरसबबधुनसमेता किमिकहिजातमोदमनजेता २१ प्रातक्रियाकरिगेगुरुपाहीं महाप्रमोदप्रेममनमाहीं २२ करिप्रणामपूजाकरजोरी बोलेगिराअमीजनुबोरी २३ तुम्हरी

होतहै ( १६ ) तहां यहिप्रकारते राजा समाज समेत आनन्द पूर्व्वक भोजन करतभये पुनि राजाजनक के आदरपूर्व्वक आचमन कही बरातिन प्रति टहलू हाथ बिधिबिधानते धोवावतभये ( १७ ) दोहार्त्थ॥ तब राजाजनकजू अपनेहाथ पुत्रन अरु समाजसहित राजादशरथादि सबनकोआदरते सुगन्धमिश्रितपान देतेभये बिधिबिधानते सन्मानकरिकै बरात जनवासेकोगई ( १८ ) हे गरुड़ यहीबिधिते नित्य नवीनमङ्गल पुरबिषेहोत है परमानन्दमें बराती अरु पुरवासिनको रातिदिन निमिषसमजातेहैं ( १९ ) तहां बड़ेभोरही राजनकेमणि राजादशरथमहाराज जागतेभये तब अनेक याचक राजाके श्रीरामसम्बन्ध परमदिब्य गुणनकेगण गावते हैं ( २० ) ऐसेही दिन प्रति चारिउ पुत्रनको बधुनसमेत देखते हैं सो आनन्द कहा नहींजाय ( २१ ) तब राजा स्नानादिक प्रातःक्रियाकरिकै महाआनन्दभरेबशिष्ठजीके समीप जातभये ( २२ ) तहां गुरुनकी पूजाकरिकै प्रणाम कही साष्टांग दण्डवत्कीन्ह पुनि करजोरिकै सुन्दरवचन बोलतेभये ( २३ ) राजाबोले हे महामुनीश तुम्हारीकृपाते मेरी सम्पूर्ण कामना पूर्ण भई ( २४ ) ताते हे गोसाईं अब समस्त बिप्रनको बोलाइकै सबत्सा दुग्धकरिकैपूर्णगौवनको नख शिख हेममणि पट्टाम्बरनते शृंगारकराइ मुनीशनको देहु यद्यपि मुनि अचाही है तदपि मेरोभाव राखहिंगे ( २५ ) यह सुनिकै बशिष्ठजी राजाकै बड़ाईकरतभये धन्यराजन् ऐसैचाहिये ( २६ ) दोहार्त्थ॥ बशिष्ठके बोलायेते मुनि आवते भये बामदेव और देवर्षि नारदादिक अरु बाल्मीकि अरु याज्ञवल्क्य तहां कौशिकादिक अनेकनमुनि तपके सालि कही स्थान हैं ते सब आवतेभये ( २७ ) तब मुनिनको राजादशरथ अच्छेभावते दण्डप्रणामकीन्ह पुनि सब मुनीश्वरनको भावप्रीतिते पूजिकै बर

कृपासुनहुमुनिराजा भयोआजुममपूरणकाजा २४ अबसबविप्रबोलाइगोसाईं देहुधेनुसबभांतिसुहाई २५ सुनिगुरुकरिकमहिपाल बड़ाई पुनिपठयेमुनिवृन्दबोलाई २६ दो०॥ बामदेवअरुदेवऋषिबालमीकिजाबालि आयेमुनिवरनिकरतब कौशिकादितपशालि २७ चौ० ॥ दण्डप्रणामसबहिनृपकीन्हा पूजिसप्रेमबरासनदीन्हा २८ चारिलक्षवरधेनुमँगाई कामसुरभिसमशीलसोहाई २९ सबबिधिसकलअलंकृतकीन्हे

मुदितमहीपऋषिनकहँदीन्हे ३० करतबिनयबहुबिधिनरनाहू लह्यउँआजुजगजीवनलाहू ३१ पाइअशीषमहीशअनन्दे लियेबोलिपुनियाचकवृन्दे ३२ कनकबसनमणिहयगजस्यन्दन दियेबूझिरुचिरविकुलनन्दन ३३ चले

कहीं श्रेष्ठ आसन देतभये ( २८ ) तव राजादशरथने चारिलक्ष सबत्साधेनुमँगाये नित्ययुवा सबप्रकारते शीलसुन्दरि गुण कामधेनुके समान ( २९ ) सब बिधि बिधानते पट्ट सुवर्ण अनेकन रत्नादिकनते अलंकृत करिकै मुदित अति हर्षसमेत ऋषिनकहँ देतभये तहां ऋषि तौ बिरक्तहैं तिन्होंने गौवनको क्योंलिया तहां श्रीरामचन्द्रके बिवाहकेउत्सवको प्रसादजानिकैर्लीन्ह ( ३० ) तब नरनाह मुनिनते अनेकविनयकरतभये कि आजुमैंधन्य अपने जीवनकेफलकोप्राप्तभयउँ ( ३१ ) तब सबमुनिनआशीर्वाददीन्ह किएसैआनन्दतुमकोसर्वकालमें बनारहै यह आशीर्वादसुनिकैराजाकोआनंद भयो तब मुनिबशिष्ठजीने वृंदकेवृंदयाचकनकहँ बोलायलीन्ह ( ३२ ) तबबशिष्ठजीने राजादशरथकोआज्ञादीन्ह कि इनको मनवांछितदानदेहु तव रघुकुलनन्दन दशरथ महाराज कनकबसन मणि घोड़े हाथी रथ अनेकनमनवाञ्छित सबको देतेभये ( ३३ ) ते सबयाचक अनेक अलंकार पहिरे वाहननपर चढ़े आशीर्वाददेत अरु दिनकरकुलनाथ की जयजयकार करतचले ( ३४ ) यहिप्रकार को श्रीरामचन्द्रके बिवाहकोउत्साह जो कोटिन शेष कोटिनमुख करिकै बर्णा चाहैं तौ नहींवर्णिसकैं ( ३५ ) दोहार्थ॥ तहां बारबार राजादशरथ कौशिकमुनि के पदकमलमें माथ नवावते हैं अरु करजोरिकै यह कहते हैं कि यह परमसुख अतिशय सर्वकोदुर्लभ सोआपके कृपाकटाक्षते लाभभयो ( ३६ ) जनककर शील अरु स्नेह करतूति अरु बिभूति राजादशरथ को अपनी समाजमहँ सबराति सराहतबीततिभई काहेते जनकके योगबलते शील स्नेह अरु श्रीजानकीजीकी प्रेरणाते ऋद्धि सिद्धिन करिकै करतूति अरु बिभूतिसराहते हैं ( ३७ ) जब भोरभयोप्रात:क्रियाकरिकै ब्राह्मणनकर सन्मानकरि वशिष्ठको पठैकै दशरथमहा-

पढ़तगावतगुणगाथा जयजयजयदिनकरकुलनाथा ३४ यहिबिधिरामबिवाहउछाहू सकैनबरणिसहसमुखजाहू ३५ दो०॥ बारबारकौशिकचरणशीशनाइकहराउ यहसबसुखमुनिराजतवकृपाकटाक्षप्रभाउ ३६ चौ० ॥ जनकसनेहशीलकरतूती नृपसब रातिसराहबिभूती ३७ दिनउठिबिदाअवधपतिमाँगा राखहिंजनकसहितअनुरागा ३८ नितनूतनआदरअधिकाई दिनप्रतिसहस भांतिपहुनाई ३९ नितनवनगरअनंदउछाहू दशरथगवनसुहाहिनकाहू ४० बहुतदिवसबीतेयहिभांती जनुसनेहरजुबँधेबराती ४१ कौशिकसतानन्दतबजाई कहेउबिदेहनृपहिसमुझाई ४२ अबदशरथकहँआयसुदेहू यद्यपिछाँड़िनसकहुसनेहू ४३ भलेहिनाथ कहिसचिवबोलाये कहिजयजीवशीशतिननाये ४४ दो०॥ अवधनाथचाहतचलनभीतरकरहुजनाउ भयेप्रेमवशसचिवसुनिवि

राज बिदामांगते भये तब जनकजी अतिअनुरागते बारबार राखतेहैं ( ३८ ) नित्यनवीन आदर अधिकातजातहै दिनप्रति हजार हजार कीआधिक्यता पहुनाई होति है ( ३९ ) नगर विषे नित्यनवीन उत्साह होतहै दशरथमहाराज को बिदाहोन काहूको नहींसोहातहै ( ४० ) यहिभांतिते बहुत दिन बीते मानहुं स्नेहरूपी रसरीमें सबबँधिरहे हैं ( ४१ ) तव कौशिकअरु सतानन्द जाइकै बिदेहते समुझाइकै कहतभये ( ४२ ) हे राजन् अब दशरथमहाराजको आयसुदेहु यद्यपि तुम स्नेह नहीं छांड़िसकतेहौ तदपिअब ऐसै उचितहै ( ४३ ) तब जनकजीने कहा कि हे नाथ आपुकीआज्ञा माथेपरहै तब विश्वामित्र अपनीसमाजको आये अरु जनकजी मंत्रिनको बोलावतेभये तव तिन जयजीवकही चिरंजीवि अरु आपु सर्वजीवन के जयकर्त्ता हहु यहकहिकै राजाको माथनवावतेभये ( ४४ ) दोहार्थ॥ तबमंत्रिनको जनकजी आज्ञादीन्ह कि महाराज श्रीदशरथजी बिदाभाचाहते हैं ताते तुम महलनमें जनाइदेहु अरु सबसरंजामकी तैयारी करहु यहसुनिकै सबमंत्री अरु विप्रनसहित राजा प्रेमतेबिकलभये ( ४५ ) तहांपुरवासी बरातकर चलब सुनिकै बिह्वलह्वैकै

बूझते हैं परस्पर बातैं कहतेहैं ( ४६ ) कि निश्चय सुनाहै कि बरात बिदाहोति है ते सब अतिबिलखाने कही शोचकोप्राप्त होतेभये मानहुं सन्ध्यासमयविषे कमल सकुचाइरह्योहै ( ४७ ) पुनि जहां बरातीआवते कै बसेहैं तहां तहां जनकजी सीधा अरु अनेकप्रकारके सरंजाम पठवतेभये ( ४८ ) तहां बिविधभांति के मेवा अनेकपक्वान्न भोजनकर साजबखानिबे योग्यनहींहै ( ४९ ) तहां अनेकगाड़ी

प्रसभासदराउ ४५ चौ० ॥ पुरबासिनसुनिचलीबराता बूझतबिकलपरस्परबाता ४६ सत्यगवनसुनिसबबिलखाने मनहुंसांझि सरसिजसकुचाने ४७ जहँजहँआवतबसेबराती तहँतहँसीधचलेबहुभांती ४८ बिबिधभांतिमेवापकवाना भोजनसाजनजाइबखाना ४९ भरिभरिबसहकहारअपारा पठयेजनकअनेकसुआरा ५० तुरगलाखरथसहसपचीशा सकलसवाँरेनखअरुशीशा ५१ मत्तसहसदशसिंधुरसाजे जिनहिंदेखिदिशिकुंजरलाजे ५२ कनकबसनमणिभरिभरिजाना महिषीधेनुबस्तुबिधिनाना ५३ दो० ॥ दायजअमितनजायकहिदीन्हबिदेहबहोरि जोअवलोकतलोकपतिलोकसम्पदाथोरि ५४ चौ०॥ सबसमाजयहिभांतिबनाई जनकअवधपुरदीन्हपठाई ५५ चलिहिबरातसुनतसबरानीबिकलमीनगणजिमिलघुपानी ५६ पुनिपुनिसीयगोदकरिलेहीं

बैल कहार भरिभरिचले अरु अनेकसुआरचले तहां लक्षतुरंग अरु पचीसहजाररथ ( ५० ) तेसम्पूर्ण नखशिखलौं कंचनमणिनतेसवाँरे हैं जिनहिं देखिकै सूर्य्यकेघोड़े अरु देवतनकेबिमान लज्जितहोते हैं ( ५१ ) अरु दशहजार हाथीसाजे जे नखशिखलौं सुवर्ण मणिके शृंगारते सजे हैं जिनके आगे दिशनकेकुञ्जर लज्जितहोते हैं ( ५२ ) अरु सुवर्णके जरावनके अनेकबस्त्र अरु अनेक खानिखानिकीमणि ये सब गाड़िनमें भरिभरि पठावते भये अरु अनेक महिषी अरु अनेक गऊ ऐसही अनेक बस्तु पठावतेभये ( ५३ ) दोहार्त्थ॥ हे भरद्वाज बहोरिकै जनक जो दायजदीन्ह सो कहा नहींजाइ जेहिके अवलोकतसन्ते लोकपतिनको अपनी सम्पदा लघुलागतीहै ( ५४ ) यहिप्रकारते सबसमाज जनकजीने बनाइकै श्रीअयोध्याजी को पठवाइदीन्ह ( ५५ ) रानिनसुना कि अब बरात चलिहि यहसुनिकैसब बिकलभई जैसे थोरेजलमें मीननकेगण बिकलहोइजात हैं ( ५६ ) पुनि पुनि श्रीजानकीजीको अरु तीनिहुं कुंवरिनको गोदमेंलैकै आशीर्वाददैकै सिखापन देतभई ( ५७ ) यहआशीर्वाद देतभई कि सन्ततकही निरन्तर अपने अपने पतिनको पियारी होइहौ अरु सदा अहिवात बनारहैयह आशीषहमारी है ( ५८ ) अरु सासु श्वसुर गुरु कही बड़े बशिष्ठादिक इनसबनकै सेवाकरेहु अरु पतिकैरुखलखिकै अरु आज्ञापाइकै सेवाकिहेहु ( ५९ ) सयानी जे सखी हैं अतिप्रीतिके बशहोइकै कोमलवाणीते चारिउकुंवरिनको स्त्रीकेधर्म्म सिखावतीभई ( ६० ) यहिप्रकारते आदरपूर्वक सबकुंवरिनको समुझाइकै रानीबारबार हृदयमेंलगावतभई ( ६१ )

देइअशीषसिखावनदेहीं ५७ होइहौसन्ततपियहिपियारी चिरअहिवातअशीषहमारी ५८ सासुससुरगुरुसेवाकरेहू पतिरुखलखिआयसुअनुसरेहू ५९ अतिसनेहवशसखीसयानी नारिधर्मसिखवहिंमृदुबानी ६० सादरसकलकुंवरिसमुझाई राननिबारबार उरलाई ६१ बहुरिबहुरिभेटहिंमहतारी कहहिंबिरंचिरचीकतनारी ६२ दो० ॥ तेहिअवसरभाइनसहितरामभानुकुलकेतु चले जनकमन्दिरमुदितबिदाकरावनहेतु ६३ चौ० ॥ चारिउभाइसुभायसुहाये नगरनारिनरदेखनधाये ६४ कोउकहचलनचहतहैं आजू कीन्हबिदेहबिदाकरसाजू ६५ लेहुनयनभरिरूपनिहारी प्रियपाहुनेभूपसुतचारी ६६ कोजानैकेहिसुकृतसयानी नयनअतिथिकीन्हेबिधिआनी ६७ मरणशीलजिमिपावपियूषा सुरतरुलह्यउजन्मकरभूषा ६८ पावनारकीहरिपदजैसे इनकरदरशन

बहुरिकहीं फेरिफेरि महतारी मिलतभईं अरु यहकहतीभईं कि ब्रह्मै स्त्रीनकहँकाहेकोरचा यहकहिकै पश्चात्ताप करतभईं ( ६२ ) दोहार्थ्य॥ जेहि अवसरमें रनिवास कन्यनको सिखावनदेतरहीं तेहिसमयमें भाइनसमेतश्रीरामचन्द्र बिदाहोवेकेहेतु आवतभये ( ६३ ) सहजही अतिसुन्दर चारिउ भाई जनककेमन्दिरमें आवतभये तब नगरकेनरनारि देखनकोधावतभये ( ६४ ) कोईअसकहतेहैं कि आजुरघुनाथजी चलाचाहतेहैं राजाजनक बिदाकै तयारीकीन्हिहै ( ६५ ) ताते शोभाकेसमुद्र जे रघुनाथजीहैं तिनकोस्वरूप नयननभरि देखिलेहु काहेते राजाकेचारिउपुत्र प्रियपाहुने हैं ताते देखिलेहु ( ६६ ) हे सखिहुकाजानी कौनेसुकृतते बिधातै चारिउभाइनकोनेत्रनकेअतिथिकही प्रियकीन्हहै ( ६७ ) हे सखिहुइनकरदर्शन हमकहँदुर्लभ है कैसे जैसे मरणशीलकही मृतकस्थानबिषे कोईअमृतको प्राप्तिहोइअरु जैसेकोई जन्मकर भूंखाकल्प तरुको प्राप्तिहोइ ( ६८ ) जैसेकोई नारकी कही पापी हरिके पदको होइ प्राप्तिहोइ हेसखी तैसेही इनकर दर्शनहमकोहै ( ६९ ) ताते श्रीरामचन्द्रकी शोभानिरखिकै उरमें धारणकरहु हेसखिहु अपने मनकहँ फणिकरहु रामचन्द्रकी मूर्त्तिको मणिकरहु ( ७० ) हेगरुड़सबको नेत्रनके फलदेत चारिउभाई राजमहलको जातभये ( ७१ ) दोहार्थ॥ तबरूपके समुद्र चारिउ भाइनको देखिकै रनिवास निर्भर हर्षते उठतभईं उठिकै चारिउ भाइनको अनेकन निछावरिकैकै अतिहर्षतेआरती करती हैं ( ७२ ) श्रीरामचन्द्रकै छबिदेखिकै रानीअति आनन्दको प्राप्तिभईं प्रेमकेवशह्वैकै पुनि पुनि श्रीरामचन्द्रके पग लागतीभईं ( ७३ ) इहां

हमकहँतैसे ६९ निरखिरामशोभाउरधरहू निजमनफणिमूरतिमणिकरहू ७० यहिबिधिसबहिनयनफलदेता गयेकुंवरसबराज निकेता ७१ दो०॥ रूपसिन्धुसबबन्धुलखिहरषिउठींरनिवासु करहिंनिछावरिआरतीमहामुदितमनसासु ७२ चौ०॥ देखिरामछबि अतिअनुरागी प्रेमविवशपुनिपुनिपगलागी ७३ रहीनलाजप्रीतिउरछाई सहजसनेहबरणिनहिंजाई ७४ चारिउभायउबटिअन्हवाये छरसअशनअतिहेतज्यवाये ७५ बोलेरामसुअवसरजानी शीलसनेहसकुचमयवानी ७६ रायअवधपुरचहतसिधाये बिदाहोनहितहमहिंपठाये ७७ मातुमुदितमनआयसुदेहू बालकजानिकरबनितनेहू ७८ सुनतबचनबिलख्यउरनिवासू बोलिनसकहिंप्रेमवशसासू ७९ हृदयलगाइकुंवरिसबलीन्हीं पतिनसौंपिविनतीअतिकीन्हीं ८० छन्द॥ करिविनयसियरामहिंसमर्पीजोरिकरपुनिपुनिकहै बलि

लाज संकोचचाही तहां लाजसंकोच न रह्यो काहेते अतिप्रीति उरमेंछायरहीहै तहां लाजकोकरै तहांसहजस्नेह नहींकहाजाय सहजस्नेहकहीजैसे अग्निके समीपघृत सहजहीं द्रवतहै तैसे मुनीश्वर जे हैं तिनके श्रीरामचन्द्र कर ध्यान करतसंते स्नेहते अश्रुपातहोतहै अरु इहांतौ विद्यमान श्रीरघुनाथजी हैं तहां सहजस्नेह स्वाभाविकहै ( ७४ ) पुनि रनिवास धीरजधरिकै चारिउ भाइनके उबटन करतीभईं अगर कर्पूर केसरि इत्यादिक सुगंध करिकै शुचिस्नान करावतीभईं पीताम्बरपहिरावतीभईं नखतेशिखलौं शृंगारकरतीभईं परमदिव्य आसनपर बैठारिकै धूपदीपनैवेद्य षट्रस चारिप्रकार के भोजन जेंवावतीभईं सखीमधुर मधुर गानहास्य रसतेपरस्परकी बातैं करतीहैं तहां रघुनाथजी विहँसि बिहँसि पावत हैं संकोच ते उतरनहीं देते हैं ( ७५ ) श्रीरामचन्द्र अँचैकै पानलैकै सुष्ट अवसर जानिकै बोले शील स्नेहसकुच मय वाणी बोलतभये ( ७६ ) अब महाराज श्रीअयोध्याजी को चलाचाहते हैं हमको बिदाहोवे को आपुके इहां पठायोहै ( ७७ ) हेमातु अब आनन्दमनते आज्ञादेहु अरु अपनै बालक जानिकै स्नेहको न छांड़ब ( ७८ ) ऐसेमधुर प्रीतिमय बचन सुनिकै रनिवासबिलखब कहीं दुखी होतभयो प्रेमकेबश सासु बोलिनहीं सकती हैं ( ७९ ) तब चारिउ कुमारनको माता हृदय महँ लगाइकै अतिप्रीतिते पुनिपुनिकहती हैं चारिउ कन्यनको चारिउ कुमारनको सौंपतीभईं ( ८० ) छंदार्थ॥ तातकही अतिप्रिय हेतात मैं तुम्हारी बलिजाउं तुमबड़े सुजानहौ अरुतुमको सबजीवनकीगति बिदितहै ( ८१ ) हेतात हमारोपरिवार अरु परिजन अरु पुरजन राजा अरु मैं सबको श्रीजानकीजी प्राणहुते प्रियजानबगोसाईं श्रीतुलसीदास कहते हैं कि श्रीसुनयनाजी कहतीहैं कि हेतातह-

जाउंतातसुजानतुमकहंबिदितगतिसबकीअहै ८१ परिवारपुरजनमोहिंराजहिंप्राणप्रियसियजानवी तुलसीसुशीलसनेहलखिनिज किंकरीकरिमानवी ८२ सो० ॥ तुमपरिपूरणकामजानशिरोमणिभावप्रिय जनगुणगाहकरामदोषदलनकरुणायतन ८३ चौ० ॥ असकहिरहीचरणगहिरानी प्रेमपंकजनुगिरासमानी ८४ सुनिसनेहसानीबरवानी बहुबिधिरामसासुसनमानी ८५ रामबिदामांग्यउ करजोरी कीन्हप्रणामबहोरिबहोरी ८६ पाइअशीषबहुरिशिरनाई भाइनसहितचलेरघुराई ८७ मंजुमधुरमूरतिउरआनी भईसनेहशि-

मारशीलस्नेह श्रीजानकीजीमें जैसो है तैसोआपु जानतेहौ ताते मेरीओरते जानकीको अपनी किंकरी निजकरिकै जानब अरु इनकीचूकसदा क्षमाकरब ( ८२ ) सोरठार्थ॥ हेश्रीरामचन्द्रजी तुमचारिउ पदार्थकी कामनाते परिपूर्णहौ चारिउपदार्थ की कामना औरनको देतेहौ अरु जहांतक सुजानहैं त्रिकालज्ञ तिनके शिरोमणिहौ अरु तुमको केवलभाव प्रियहै अरुजन जो तुम्हारै दासहै तिनके गुणको ग्रहण करतेहौ अरु अनेकन अवगुणनको देखतेनहींहौ काहेते तुमकरुणाके आयतनकहीस्थानहौ ( ८३ ) असकहिकै परमप्रेमयुक्त रघुनाथजीकेचरणनकोगहिरहीहैं कछुकहिनहींआवै जनु गिरा जोहै बाणी सोईमीनहै अरु प्रेम जोहै सोईकीचहै ताते बाणीमीनरूपी फँसिरहीहै ( ८४ ) तब रानीकी रस स्नेहते सानीबरबाणी सुनिकै श्रीरामचन्द्र अतिप्रसन्न प्रेमते सासुकर बहुप्रकारते सन्मानकरतेभये ( ८५ ) तब करजोरिकै श्रीरामचन्द्र बारबार प्रणामकरतेभये ( ८६ ) तब रानी अतिहर्षते आशीर्वाददेतीभई पुनि श्रीरामचन्द्र रानिनको प्रणामकरिकै दशरथमहाराजके समीप जातेभये ( ८७ ) तब मंजुकही निर्मल मधुर परमानन्दमूर्त्ति चारिउभाइनको हृदयमें राखिकै रानीस्नेहते शिथिलह्वैगई ( ८८ ) पुनि रनिवासन धीरजधरिकै चारिउ कुमारिनको बोलाइलीन ( ८९ ) बोलाइकै जनवासेको पहुँचावतीहैं अरु परस्पर बारबारमिलतीहैं थोरीप्रीतिनहींहै अकथनीयहै ( ९० ) हेगरुड़ पुनिपुनिकहीबारबार छोड़ायछोड़ाय चारिउ कुँवरि मातनको मिलतीहैं तहां यह उपमाहै किअतिस्नेही लवाय धेनुबत्सकोदौरै अरु बत्स धेनुको दौरे तहां कोई धरि धरि अलगावै ( ९१ ) दोहार्त्थ॥ तहां तेहिसमाजमें जेतेनरनारिरहेसहितरनवासतेसब प्रेमतेबिह्वलहैं तहां तेहिसमयमें बिदेहकेपुरबिषे मानहुँ

थिलसबरानी ८८ पुनिधीरजधरिकुंवरिहंकारी बारबारभेंटतिमहतारी ८९ पहुंचावहिंपुनिमिलहिंबहोरी बढ़ीपरस्परप्रीतिनथोरी ९० पुनिपुनिमिलतसखीबिलगाई बालवत्सजनुधेनुलवाई ९१ दो०॥ प्रेमविवशनरनारिसबसखिनसहितरनिवास मानहुकीन्हबिदेहपुर करुणाबिरहनिवास ९२ चौ० ॥ शुकशारिकाजानकीज्याये कानकपींजरनराखिपढ़ाये ९३ ब्याकुलकहहिंकहांबैदेही सुनि धीरजपरिहरैंनकेही ९४ भयेबिकलखगमृगयहिभांती मनुजदशाकैसेकहिजाती ९५ बन्धुसमेतजनकतबआये प्रेमउमंगिलोचनजलछाये ९६ सीयबिलोकिधीरताभागी रहेकहावतपरमबिरागी ९७ लीन्हलाइउरजनकजानकी मिटीमहामर्यादज्ञानकी ९८

करुणा अरु बिरहने निवासकियो है तहां करुणाकही परदुख देखिकै नसहिसकै अरु बिरहकही प्रीतमके बिक्षेपको दुखसोरहा ( ९२ ) श्रीजानकीजीने शुककही शुवा शारिकाकही मैना सो जियाये हैं सोनेके पिजरामेंराखिराखिपढ़ायेहैं ( ९३ ) ते जानकीजीके चलतसंतेकहतभये कि जानकी कहांहैं बैदेहीकहांहैं मैथिलीकहांहैं ऐसीबिहंगनकीबाणीसुनिकैक्यहिकरधीरज नहींछूटिगयोहै तात्पर्य्य सबकाधीरजछूटिगयो है ( ९४ ) जहां श्रीजानकीजीके बिक्षेपते खग मृग यहि भांतिते बिकलभये तहां मनुष्यन की दशाकैसे कहीजाइ तिनखग मृगनको राजैं संगही पठायो है ( ९५ ) तब बन्धुजे कुशध्वज तिनसमेत जनकजी आवतेभये तहां रनिवास अरु कन्यनकीदशादेखिकै

प्रेमकेउमंगते लोचननमें जलछाइरहाहै ( ९६ ) यद्यपि जनकजी परमवैराग्यबिषे बड़ेधैर्य्यमान्हैं तदपि तेहिसमयमें श्रीजानकीजीको देखिकै धैर्यभागिगयोहै तहां जो कोईकहै कि जनकजी परमवैराग्यमान्रहे तिनकर कन्याबिषे मोहकरिकै वैराग्यछूटिगयो यह बड़ा आश्चर्य है तहांयह श्रुति में प्रमाणहै कि श्रीजानकीजी पराभक्तिकीमूर्त्तिहैं पराभक्तिकही श्रीरामचन्द्रके स्वरूपमें चित्तकीवृत्ति अखण्डलगी तब परमानन्दबिषेबाह्यांतरकैवृत्ति डूबिगई तहां ज्ञानवैराग्य योग विज्ञान इत्यादिक यह पराभक्तिके साधनहैं सो जब सिद्धिप्राप्तिभई तब सबसाधन छूटिजातेहैं तातेजनकजीकी धीरताछूटिगई यहीरीतिहै इहांश्रुतिप्रमाणहै॥ जनकस्यराज्ञः सद्मनिसीतोत्पन्नाताः सर्व्वपरानन्दमूर्त्तीर्गायन्ति मुनयोपिदेवाश्चकारणकार्य्याभ्यामवपरा तथैव कारणकार्येशक्तिर्यस्याविधात्रीगौरीणां सैवकर्त्री सैवरामानंदस्वरूपिणीजनकस्य योगफलमिवभातिइत्यथर्बणे ( ९७ ) तहांजानकीजीके देखतसंते वैराग्यजातरह्यो जब उरमेंलगाइलीन्ह तब जनकजीके ज्ञानकै महामर्यादमिटिगई तहां पराभक्तिको साधन जो बैराग्यसो जातरहतहै अरु जो पराभक्तिकैप्राप्तिभई तब योग विज्ञानज्ञानसबलय

**समुझावतसबसचिवसयाने कीन्हविचारनअवसरजाने ९९ बारहिंबारसुताउरलाई सजिसुंदरिपालकीमँगाई १०० दो० ॥ प्रेमविवशपरिवारसबजानिसुलगननरेश कुंवरिचढ़ाईपालकिनसुमिरेसिद्धगणेश १०१ चौ० ॥ बहुबिधिभूपसुतासमुझाई नारिधर्मकुलरीतिसिखाई १०२ दासीदासदियेबहुतेरे शुचिसेवकजेप्रियसियकेरे १०३ सीयचलतव्याकुलपुरबासी होहिंसगुनशुभमंगलरासी १०४ भूसुरसचिवसमेतसमाजा संगचलेपहुंचावनराजा १०५ समयबिलोकिबाजनेबाजे रथगजबाजिबरातिनसाजे १०६**

होइजातेहैं तहां प्रमाण श्रीभगवद्गीतायां भगवद्वाक्यंब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मानशोचतिनकांक्षतिसमः सर्बेषुभूतेषुमद्भक्तिंलभतेपरां ( ९८ ) जबजनकजीकी बिदेहते बिदेहदशा मंत्रिनदेखा तब सयान जो सचिवहैं सो जनकको समुझावतेभये कि हे महाराज अनवसरहै अवसरजानिकै धीरजधरहु तब जनकजी बिचारिकै धीरजधरतभये ( ९९ ) तब धीरजधरिकै राजाजनकजी कन्यनको बारबार उरमेंलगावतेभये पुनि उरमेंलगाइकै अतिप्रीतिते सुन्दरजड़ावनते जटित पालकीमँगावतेभये ( १०० ) राजाजनकजीने सबपरिवारको प्रेमकेबिवशदेखा अरु ब्राह्मणनकहा कि महाराज यहिसाइति लरिकनिनके बिदाकरिबेकी लग्नअच्छी है यहसुनिकै उठिकै हर्षते श्रीगणेशको सुमिरिकै कन्यनको पालकिनपर चढ़ावतभये ( १०१ ) बहुतप्रकार ते राजा कन्यनको समुझावतेभये स्त्रिनकेधर्म्म अरु कुलकीरीति सिखावतेभये ( १०२ ) अरु दासी दासी बहुदिये जो पवित्रसेवक श्रीजानकीजी के हैं ऐसे दासी दास दायजमें दिये ( १०३ ) श्रीजानकीजी के चलतसंतेपुरवासीलोग प्रेमते ब्याकुलभये पर मंगलकी राशि शुभ सगुनहोते भये ( १०४ ) भूसुर तत्त्ववेत्ता वेदपरायण ऐसे ब्राह्मणन अरु अपर समाज समेत राजाजनकजी पहुंचायबेकोचले ( १०५ ) तब समय बिलोकिकै नानाप्रकारके बाजाबाजतेभये अरु रथ गज बाजि जो हैं सो सम्पूर्णबरातीसँवारतेभये ( १०६ ) तहां सम्पूर्ण ब्राह्मणनको दशरथ महाराज बोलाइ लीन्ह दानमानकरिकै परिपूर्णकीन्ह ( १०७ ) तिन ब्राह्मणनके चरणनकी रज माथेपर धरतेभये तिन ब्राह्मणन आशीर्व्वाददीन्ह ( १०८ ) तब गजानन जो गणेश तिनको सुमिरिकै पयानकरतभये तहां मंगलके मूलनानाप्रकारके सगुनहोतभये ( १०९ ) दोहार्थ॥ तब देवता फूलवर्षते हैं

**दशरथबिप्रबोलिसबलीन्हे दानमानपरिपूरणकीन्हे १०७ चरणसरोजधूरिधरिशीशा मुदितमहीपतिपाइअशीशा १०८ सुमिरि गजाननकीन्हपयाना मंगलमूलसगुनभयेनाना १०९ दो० ॥ सुरप्रसूनवर्षहिंहरषिकरहिंअप्सरागान चलेअवधपतिअवधकहँ मुदितबजाइनिशान ११० चौ०॥**

नृपकरिबिनयमहाजनफेरे सादरसकलमांगनेटेरे १११ भूषणबसनबाजिगजदीन्हे प्रेमपोषिठाढ़ेसबकीन्हे ११२ बारबारबिरदावलिभाखी चलेसकलरामहिंउरराखी ११३ बहुरिबहुरिकोशलपतिकहहीं जनकप्रेमबशफिरानचहहीं ११४ पुनिकहभूपतिवचनसुहाये फिरियमहीपदूरिबड़िआये ११५ राउबहोरिउतरिभयेठाढ़े प्रेमप्रबाहबिलोचन

अप्सरा नृत्य गानकरतीहैं अति हर्षसंयुक्त श्रीअवधपति श्रीअयोध्याकोमुदित कही अति हर्षते निशान बजाइकै चले ( ११० ) नृप जो दशरथ महाराज सो बिनय करिकै महा महाजन तिनको फेरते भये तब आदरपूर्बक सब याचकन को बोलायो तब वेप्रसन्नता सहित आये ( १११ ) तब राजा अतिहर्षते भूषण बस्त्र घोड़ाहाथी रथ रघुनाथजी की बकशीश देतभये ते याचक मोहकेबश जाइ नहीं सकते तबराजा दशरथ महाराजने दानमान सन्मानते याचकन को पोषण करिकै ठाढ़कीन्ह ( ११२ ) तबतेसब याचक माथनाइकै राजाकी बिरदावली बरणत श्रीरामचन्द्रको हृदयमें राखिकै चलतभये ( ११३ ) पुनि कोशलपति बारबार प्रेमतेभरेकहतेहैं कि हे बिदेह राजन् अबफिरिये परन्तु जनकजी प्रेमकेबशते फिरते नहीं ( ११४ ) पुनि अवधपति अतिसुन्दर बचन बोले हेमहीपति अबफिरिये बड़ी दूरिआये ( ११५ ) जबराजा जनक नहींफिरहिं तब दशरथ महाराज रथतेउतरिकै ठाढ़ेभये प्रेमकरिकै नेत्रनतेजलके प्रबाहचले ( ११६ ) तब बिदेह करजोरिकै वचन मानौस्नेह रूपसुधाते सनिकैबोले ( ११७ ) तब जनकजी कहते हैं कि हे महाराज आपको अतिशोभित यशप्रतापकृपा तेहिकै बिनयबड़ाई कहांतककरौं आपुहमको सबप्रकारते बड़ाई दीन्हि है ( ११८ ) दोहार्त्थ॥ हे भरद्वाज कोशलपतिकही दशरथने समधी जो जनकहैं तिनकर सबप्रकारते सन्मानकीन्ह पुनि परस्पर मिलते भये हृदयबिषे प्रीतिउमगिचली पुनि परस्पर यथार्थ बिनयकरते हैं ( ११९ ) तब जनकजी मुनिनकी मण्डलीको पृथक् पृथक् अतिप्रीतिते शिरनावते भये सब मुनिप्रसन्नह्वैकै आशीर्बाद देतभये ( १२० ) पुनि जनकजीने यामाता जो श्रीरामचन्द्र तिनको आदरपूर्बक भेंटेकही मिले कैसेहैं रूपशील

बाढ़े ११६ तबबिदेहबोलेकरजोरी बचनसनेहसुधाजनुबोरी ११७ करौंकवनिबिधिबिनयबड़ाई महाराजमोहिंदीन्हिबड़ाई ११८ दो०॥ कोशलपतिसमधीजनकसनमानेसबभांति मिलनपरस्परविनयअतिप्रीतिनहृदयसमाति ११९ चौ० ॥ मुनिमंडलिहिजनकशिरनावा आशिर्वादसबनसनपावा १२० सादरपुनिभेंट्यउजामाता रूपशीलगुणनिधिसबभ्राता १२१ जोरिपंकरुहपाणिसोहाये बोलेवचनप्रेमजनुजाये १२२ रामकरौंक्यहिभांतिप्रशंसामुनिमहेशमनमानसहंसा १२३ करहिंयोगयोगीजेहिलागी कोहमोहममतामदत्यागी १२४ ब्यापकब्रह्मअलखअविनाशी चिदानंदनिर्गुणगुणराशी १२५ मनसमेतजेहिजाननबानी तरकिन

अरु गुणनिधि कही गुणनके समुद्र हैं ( १२१ ) पुनि जनकजी सुन्दरकरकमल जोरिकै बचनबोले कैसीबाणीहै जनु प्रेमको उत्पन्नकरिबेको जाय कही जननी है ( १२२ ) जनकजी कहते हैं कि हे श्रीरामचन्द्र मैं तुम्हारीकेहिभांतिते प्रशंसाकरौं तुमकैसेहौ कि मुनीश्वरन अरु महेशकर अंतःकरण सो मानसर अरु हृदयकमलहै तहांतुम हंसहौ ( १२३ ) जेहिकेनिमित्तक्रोध मोह ममता मदत्यागिकै योगी योगसमाधि करते हैं ते श्रीरामचन्द्र तुमहौ ( १२४ ) हे श्रीरामचन्द्र तुमही ब्यापकब्रह्महौ अरु अलखहौ त्रैगुण्यजनित नेत्रादिक इन्द्रिनते अगोचरहौ अबिनाशी कही नित्य एकरस अखण्डहौ अरु चिदानन्दकही सत्चित् आनन्दघनमूर्त्तिनिर्गुणहौ निर्गुणकही तीनिहूंगुणनतेपरेहौ अरु परमदिब्यगुणकी राशिहौ ( १२५ ) अरु सत्कबि जे हैं ते मनबाणीते नहींजानिसकते हैं किन्तु बाणी कही सरस्वतीते अपनेमनते नाहिं जानिसकती हैं ते सत्कबि अरु सरस्वती अपने मनबाणीते अनुमानकरि तर्कनानाहींकरिसकतहैं तुमअतर्क्यहौ ( १२६ ) अरु तुम्हारीमहिमाकी मर्यादको वेदनेतिनेति कहते हैं काहेते जो तीनिहूं कालमें एकरसरहते हैं ताते

कोकहिसकै ( १२७ ) दोहार्थ॥ ऐसे श्रीरामचन्द्र तुम जे ब्रह्मा शिव नारदादिक तिनको दुर्लभहौ ते रामचन्द्र मेरेनयननके बिषयभये मेरे नयनबिषे प्राप्तभये पर यहियोग्य मैं नहींहौं जबआपु अनुग्रहकीन्ह तब मेरीभाग्य समस्त जागआई तहां कामोरिनिभाग्य जागी है समस्तजीवनकी भाग्यजागीहै आपु परमअनुकूलभयहु ( १२८ ) जनकजी कहतेहैं कि हे रघुनन्दन आपुमोकहँ आपनजनजानिकै सबप्रकारते बड़ाईदीन्ह अरु अपनाइलीन्ह ( १२९ ) हे रघुनन्दन जो शतसहसकही सौहजार शारदशेषहोहिं अरु कोटिनकल्पभरि लेखाकरहिं ( १३० )

सकहिंसकलअनुमानी १२६ महिमानिगमनेतिकरिकहहीं जोतिहुंकालएकरसअहहीं १२७ दो० ॥ नयनविषयमोकहँभयउ सोसमस्तसुखमूल सबहिसुलभजगजीवकहँभयेईशअनुकूल १२८ चौ० ॥ सबहिभाँतिमोहिंदीन्हिबड़ाई निजजनजानिलीन्हअपनाई १२९ होहिंसहसशतशारदशेशा करहिंकल्पभरिकोटिकलेशा १३० मोरभाग्यराउरगुणगाथा कहिनसिराहिंसुनहुरघुनाथा १३१ मैंकछुकहौंएकबलमोरे तुमरीझहुसनेहसुठिथोरे १३२ बारबारमांगौंकरजोरे मनपरिहरैचरणजनिभोरे १३३ सुनिवरवचनप्रेमपरिपोषे पूरणकामरामपरितोषे १३४ करिबरबिनयससुरसनमाने पितुकौशिकवशिष्ठसमजाने १३५ बिनतीबहुरि

तहां मेरीभाग्य अरु आपुके गुणानुवादका दूनौं मिलिकै लेखाकरहिं तौनहींकरिसकहिं हे रघुनाथ जो आपुके गुणानुवाद अरु मेरोभाग्य शारदै अरु शेषै न कहा तौ मैं काकहौं ( १३१ ) पर मैं जो कछुकहतेहौं सो एकबलते कौनबलहै कि तुमथोरेस्नेहतेरीझतेहौ ( १३२ ) अब हे श्रीरामचन्द्र करजोरिकै बारबार यहै बरमांगतहौं कि मोरमन तुम्हारे चरणनको भोरेकहींधोख्यहु न छांड़ै सर्व्वकालमें एकरसबनारहै ( १३३ ) तहां जनकजी के वरवचनसुनिकै श्रीरामचन्द्रको प्रेमकरिकै परिपोषण होतभयो यद्यपिश्रीरामचन्द्र कामनाकरिकै परितोषे हैं तदपि बिदेहयोगेश्वरके प्रेमते अति परितोष न होतभयो किन्तु प्रेमभरे बिदेहके बचनसुनिकै परितोष करतेभये पुनि श्रीरामचन्द्र पूर्णकामकरिकै जनकको परिपूर्णकरतेभये ( १३४ ) तब श्रीरामचन्द्र बर बिनयकरिकै जनकजीको दशरथ बिश्वामित्र बशिष्ठके समजानिकै सन्मानकरतभये ( १३५ ) बहुरि जनकजी भरतजीकै बिनयकरिकै प्रेमसमेत मिलिकैआशीर्वाद देतेभये ( १३६ ) दोहार्थ॥ पुनि राजालक्ष्मण शत्रुहनकोमिलिकै आशीर्बादेतेभये पुनि परस्पर प्रेमकेबश बारबार शीशनवावतेहैं काहेते दोउदिशि रामानन्यहैं तदपि भरत शत्रुहनबड़जानिकैअधिकनम्रहोतेहैं ( १३७ ) बारबार श्रीरामचन्द्रजनकजीकीबड़ाई करिकै भाइनसंयुक्त चलतेभये ( १३८ ) तब जनकजी विश्वामित्रके पदगहिकैचरणरेणु नेत्र अरु उरमें लगावतभये ( १३९ ) हे मुनीश तुम्हारे दर्शनते कोईफल अगमनहीं है सब सुगम है यह मेरेमनमें प्रतीति है ( १४० ) जौनेसुखकी लोकपति चाहनाकरतेहैं तौनेसुखकर मनोरथ करतसंते संकोच करतेहैं कि वह परमानन्दसुख हमको दुर्लभहै यहिकेअधिकारी अबहींहमनाहींहैं ( १४१ ) हे स्वामी सो सुख अरु सुयश मुझ अनुगामीको केवल

भरतसोंकीन्ही मिलिसप्रेमपुनिआशिषदीन्ही १३६ दो० ॥ मिलेलषणरिपुसूदन दीन्हअशीषमहीश भयेपरस्परप्रेमवशफिरि फिरिनावहिंशीश १३७ चौ० ॥ बारबारकरिविनयबड़ाई रघुबरचलेसंगसबभाई १३८ जनकगहेकौशिकपदजाई चरणरेणुशिरनयननलाई १३९ सुनियमुनीशदरशफलतोरे अगमनकछुप्रतीतिमनमोरे १४० जोसुखसुयशलोकपतिचहहीं करतमनोरथसकुचतअहहीं १४१ सोसुखसुयशसुलभमोहिंस्वामी सबबिधितवदरशनअनुगामी १४२ कीन्हविनयपुनिपुनिशिरनाई फिरेमहीश आशिषापाई १४३

**चलीबरातनिशानबजाई मुदितछोटबड़सबसमुदाई १४४ रामहिंनिरखिग्रामनरनारी पाइनयनफलहोहिंसुखारी १४५ दो० ॥ बीचबीचबरबासकरिमगलोगनसुखदेत अवधसमीपपुनीतदिनपहुंचीआइजनेत १४६॥**

तुम्हारेदर्शनते सब सुलभहै ( १४२ ) राजा बिश्वामित्र की पुनि पुनि बिनय करते हैं अरुचरणनमें शीशनवावतेहैं तब बिश्वामित्र अतिप्रेमते आशीर्वाद देतभये राजा फिरतभये ( १४३ ) तब निशान बजाइकै परम मुदितछोटेबड़े सबबराती चलतभये ( १४४ ) जे नरनारि तेहिसमयमें ठाढ़े सब श्रीरामचन्द्रको स्वरूप निरखिकै नयननकर फलपाइकै मूर्त्ति हृदयमें राखिकै चित्रवत् रहिगये बरात हर्षिकै चलतभई ( १४५ ) दोहार्थ॥ जहांजहां बराती आवतकै टिकेहैं तहां तहां सुन्दर बासकरत मगमें लोगनको सुखदेत अतिपुनीत योगदिन प्राप्ति अयोध्याके समीप जनेतकही बरात पहुंचीआइ पौषसुदी दशमीको मिलत मिलावतसंते पहरदिन बीतिगयो तब जनकपुरसे बरात बिदाभई अरु तेही पौषसुदी पौर्णमासीको अवधके समीप बरात प्राप्तिभई पुनि माघबदी द्वितीयाको श्रीरघुनाथजीने मंदिरमें प्रवेशकियोहै ( १४६ ) इतिश्रीरामचरित्रमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसने बालकांडे जनकपुरनिवासपुनिपरस्परमिलापबरातश्रीअयोध्यागमनप्राप्तिबर्णनन्नामपञ्चपंचाशत्तरंगः ५५॥

षट्पंचासतरंगमेंचलिबरातसुखसार रामचरणपश्चिमचली मनहुंगंगकैधार ५६ जबबराती श्री अयोध्याके निकट पहुंचे तब निशानहने अरु पणव कही ढोलैंबाजीं अरु भेरी बाजत भई अरु शंखध्वनि होतभई अरुहाथी घोड़ा गाजतेभये ( १ ) झांझभेरीसहनाई इत्यादिक सुष्टरागते अति शोभित बाजते हैं एकअंक अरु दुइअंककी इनदूनों चौपाइनमें भेरीकहेहैंतहां पुनिरुक्तिन जानब काहेते समाज दुइहैं ( २ ) तहां पुरके संपूर्णनरनारिन अकनिकही सुनाकि बरातआई तबसबमुदितभये अरु मुदितकहीअंगअंगपुलकिआयोहै ( ३ ) आपन आपन सुन्दरसदन संवारतभये हाटकही

**चौ० ॥ हनेनिशानपणववरबाजे भेरिशंखधुनिहयगजगाजे १ झांझबीणदुन्दुभीसोहाई सरसरागबाजहिंसहनाई २ पुरजनआवतअकनिबराता मुदितसकलपुलकावलिगाता ३ निजनिजसुंदरसदनसँवारे हाटबाटचौहटपुरद्वारे ४ गलीसकलअरगजासिंचाई जहँतहँचौकैंचारुपुराई ५ बनीबजारनजाइबखाना तोरणकेतुपताकबिताना ६ सफलपुंगिफलकदलिरसाला रोपेबकुलकदम्बतमाला ७ लगेसुभगतरुपरसतधरणी मणिमयआलबालकलकरणी ८ दो० ॥ बिबिधिभांतिमंगलकलशगृहगृहरचेसँवारि सुर**

बाजार बाटकही गली चौहटकही चौमुखी बाजार को मध्यचौक अरु पुरकेद्वार अरु आपनआपनद्वार अच्छेप्रकारते सँवारतभये ( ४ ) अरु संपूर्ण गली अरगजा इत्यादिक सुगन्धनते सिंचावते भये अरु चारुकही सुन्दरचौकें पुरावतेभये ( ५ ) पुनिबजारैं अतिसुन्दर बनीहैं बखानिबे योग्यनहीं हैं अरु जहांजहां जसचाही तोरणकही बंदनवार अरु केतुपृथक् २ अरु केतुइत्यादिक नवग्रह अरु पताकाकहीछोटीछोटीझंडी जरावनतेजटित अरु वितानकही मांड़वनमहँ सब बिचित्र रचना गृहगृह बिशेष होतिभई ( ६ ) अरु फलसंयुक्त सुपारी आम्र केला अरु बकुल कही मौरसिरी कदम्ब तमाल इत्यादिक जहां जसचाही तहांतस रोपतेभये ( ७ ) ते सुभग तरुफलफूल संयुक्त धरणीको परसते हैं अरु तिनके आलबाल कही थाला मणिनमय बने हैं अरु कलकही सुन्दरपल्लव फूलफल करिकै शोभित हैंकलकरणीकही सबको आनन्ददेते हैं ( ८ ) दोहार्त्थ॥ तहां बिबिधिभांति के मंगलमय अरु हेममणि मोतिनते रचित कलश गृहगृह विषे सँवारतभये तहां पुरवासी जो इच्छा करते हैं सो रामचन्द्रकी कृपाते हाथ स्पर्श करत सिद्धिहोइजातहै तहां रघुबरकीपुरी जो बनीहै तेहि को देखिकै ब्रह्मादिक देवता सिहातेहैं ( ९ ) हे पार्वती तेहि अवसरमें भूपके भवनकी शोभा देखिकै काममोहित हैजाते हैं ( १० ) मंगल के सगुन जे हैं मनोहरअरु ऋद्धि सिद्धि सुख सम्पदा जे हैं सुन्दर ( ११ ) ते सब अरु जेते उत्साह उत्तमउत्तमहैं ते जनु सुन्दरिदेह धरिधरि अपने सुखहेतु

दशरथकेभवनकोआवतेभये ( १२ ) तहां तेहि अवसरमें श्रीराम बैदेहीके देखिबेहेतु ब्रह्माण्ड मण्डलमें ऐसो को है जेहिको देखिबेकी लालसा नहींहै सबके देखिबेकीलालसाहै ताते सबमूर्त्तिमान् होइहोइ  साक्षात् देखिबेकेहेतु आये हैं तहां

ब्रह्मादिसिहाहिंसबरघुबरपुरीनिहारि ९. चौ० ॥ भूपभवनतेहिअवसरसोहा रचनादेखिमदनमनमोहा १० मंगलसगुनमनोहरताई ऋधि सिधिसुखसम्पदासुहाई ११ जनुउछाहसबसहजसुहाये तनधरिधरिदशरथगृहआये १२ देखनहेतुरामवैदेहीं कहहुलालसाहोइनकेहीं १३ यूथयूथमिलिचलींसुआसिनि निजछबिनिदरहिंमदनबिलासिनि १४ सकलसुमंगलसजेआरती गावहिंजनुबहुवेषभारती १५ भूपतिभवन कोलाहलहोई जाइनवरणिसमयसुखसोई १६ कौशल्यादिराममहतारी प्रेमबिवशतनदशाबिसारी १७ दो०॥ दियेदानविप्रनबहुरिपूजिगणेशपुरारि प्रमुदितपरमदरिद्रजनुपाइपदारथचारि १८ चौ० ॥ प्रेमप्रमोदबिवशसबमाता चलहिंनच-

यहितेरह अंककी चौपाई तेहिके भावतेपाछे,जो बारहकीचौपाई है तेहिमें जो जनुपदकी उत्प्रेक्षाहै तेहिकर निषेधहोतहै यह गोसाईंके काव्यकी रचना इहां जानिबेको अतिसूक्ष्म है ( १३ ) तहां राजमन्दिर को यूथयूथसुआसिनी आवतीभई कैसी सुआसिनी हैं जे अपनी छविकेआगे मदन बिलासिनी जो रतिहै ताको निदरती हैं ( १४ ) आरतीइत्यादिक सम्पूर्णमंगलके साज सजे हैं अरु जनु बहुवेषबनाइकै भारतीकही सरस्वतीगान करतीहैं ( १५ ) तहां भूपतिके भवनमें कोलाहल कही मंगलमय सोर ह्वैरहाहै तेहिसमयकर सुख वर्णिबेयोग्य नहीं है ( १६ ) कौशल्यादिक जो श्रीरामचन्द्रकी माता हैं सो प्रेमकेविवश तनकीदशा भूलिगई ( १७ )  दोहार्थ ॥ अरु रानी गणेश महेश पार्वतीकोपूजिकै विप्रनकहँ मनवाञ्छित दानदेतभई पुनि कैसो आनन्दभयोहै जैसे परमदरिद्री चारिउपदार्थनकोपावै ( १८ ) तहां प्रेमानन्दके वश सबमातनकेगात शिथिलह्वैगये हैं चरण नाहीं चलिसकते हैं ( १९ ) श्रीरामचन्द्रके दर्शनकेहेतु अतिअनुराग ते परिछन के साज साजती हैं ( २० ) तहां बिबिधि विधानके बाजन बाजने लगे अतिमुदित समेत सुमित्राजी मंगलसाजती हैं ( २१ ) हर्दी दूब दधिललितपल्लव फूल पान पुंगीफल सब मंगल के मूल ( २२ ) अक्षत अरु अंकुर मूंग यव इत्यादिक रोचनकही रोरी किन्तु गोरोचन तिलक लाजाकहींलावा अरु मञ्जुकही कोमल मञ्जरीसंयुक्त तुलसीदल ( २३ ) अरु सुवर्णके कलश छुहितकही रँगतभई अतिसुन्दर मोतिन मणिनकीचित्रबिचित्रकनी जमाइदीन्ह सो कलश मानो मदनरूपीपक्षी ने नीड़कही

रणशिथिलसबगाता १९ रामदरशहितअतिअनुरागीं परिछनसाजसजनसबलागीं २० बिबिधिबिधानबाजनेबाजे मंगलमुदित सुमित्रासाजे २१ हरददूबदधिपल्लवफूला पानपुंगिफलमंगलमूला २२ अक्षतअंकुररोचनलाजा मंजुमंजरीतुलसिबिराजा २३ छुहेपुरटघटसहजसुहाये मदनशकुनजनुनीड़बनाये २४ सगुनसुगंधनजाइबखानी मंगलसकलसजहिंसबरानी २५ रचींआरतीबिबिधिबिधाना मुदितकरहिंकलमंगलगाना २६ दो०॥ कनकथारभरिमंगलनिकरकमलनलियेमात चलींमुदितपरिछनकरनपुलकप्रफुल्लितगात २७ चौ० ॥ धूपधूमनभमेचकभयऊ सावनघनघमंडजनुदयऊ २८ सुरतरुसुमनमालसुरबर्षहिंमनहुबलाकअवलिमनकर्षहिं २९ मंजुलमणिमयबंदनवारे मनहुंपाकरिपुचापसँवारे ३० प्रकटहिंदुरहिंअटनपरभामिनि चारुचपलजनुदमकहिंदामिनि ३१ दुन्दुभिधुनिघनगर्जहिंघोरा याचकचातृकदादुरमोरा ३२ सुरसुगन्धशुचिवरषहिंवारी सुखीसकलशशिपुरनर

आपन घरबनायो है ( २४ ) अरु अनेक सुगन्ध सगुनमय सो बखानिबेमेंनहींआवै यहिप्रकारके जो मङ्गल सजेहैं सोरानीसजतभईं ( २५ ) तहां अनेकप्रकारते आरतीरचिकै मुदितह्वैकै कलकहीसुन्दरगानकरतीहैं ( २६ ) कञ्चनके थारनमें मङ्गल मय पदार्थ अरु करकमलनमें माला लिहे हैं मुदित प्रफुल्लित मातु पुलकावलीते परिछनकेहेतुचलीं ( २७ ) तहां धूपकेधुवांकरिकै नभबिषे श्यामताछायरही है मानो श्रावणके घनघमण्डकरिकै शोभितहैं ( २८ ) तहां सुरतरुके श्वेतफूलनके मालकेमाल देवताबर्षते हैंसोई मानहुँ बकुलनकीपांति शोभितहै मनको आकर्षण करति है ( २९ ) पुनि राममन्दिरबिषे मञ्जुलकही निर्म्मलमुक्तामणिनकेबन्दनवारजोशोभितहैं सोजनुपाकरिपुजोइन्द्रहै तेहिकोचापकही धनुषउदयभयोहै ( ३० ) अरु महलनपर स्त्री जो हैं ते प्रकटती अरु दुरती हैं ते चपल जनु दामिनि दमकति है ( ३१ ) अरु दुन्दुभी इत्यादिककी धुनि जो है सो जनु मधुरमेघगर्जते हैं अरु याचक जे हैं जयजयकार करिरहे हैं ते जनु चातकमोर हैं ( ३२ ) अरु देवता इतर इत्यादिक सुगन्ध छिरकते हैं सोई मानों मेघबर्षते हैं अरु पुरकेनरनारि सोई शसिकही धानइत्यादिक हैं सो अतिसुखीहोते हैं ( ३३ ) ऐसीशोभा मंगलपुरीमें छाइरही है तब सुन्दर समय जानिकै बशिष्ठजीने आज्ञादीनहै तब रघुकुलमणि राजादशरथने पुरमेंप्रवेशकीन्ह ( ३४ ) तहां सहित समाज मुदितमन शिव पार्व्वती अरु गणेशको सुमिरिकैचलेहैं ( ३५ ) दोहार्त्थ। तेहिसमयबिषे मंगलमय सगुनहोते हैं देवता फूलबर्षते अरु दुन्दुभी बजावते हैं अरु अप्सरा किन्नरी मं-

नारी ३३ समयजानिगुरुआयसुदीन्हा पुरप्रवेशरघुकुलमणिकीन्हा ३४ सुमिरिशम्भुगिरिजागणराजा मुदितमहीपतिसहितसमाजा ३५ दो० होहिंसगुनवरषहिंसुमन सुरदुन्दुभीबजाइ बिवुधबधूनाचहिंमुदित मंजुलमंगलगाइ ३६ चौ० मागधसूतबंदि नटनागर गावहिंयशतिहुंलोकउजागर ३७ जयधुनिविमलवेदबरबानी दशदिशिसुनियसुमंगलखानी ३८ बिपुलबाजनेबाजन लागे नभसुरनगरलोगअनुरागे ३९ बनेबरातीबरणिनजाहीं महामुदितमनसुखनसमाहीं ४० पुरबासीतबराउजोहारे देखतरामहिंभयेसुखारे ४१ करहिंनिछावरिमणिगणचीरा बारिविलोचनपुलकशरीरा ४२ आरतिकरहिंमुदितपुरनारी हरषहिंनिरखिकुंवरबरचारी ४३ शिविकासुभगवहारउघारी देखिदुलहिनिनहोहिंसुखारी ४४ दो०॥ यहिबिधिसबहिनदेतसुखआयेराजदुवार

गलमयनृत्यगानकरतीहैं ( ३६ ) मागधसूत बन्दीजन नट जेहैं नागरकहीप्रबीण तेसबदशरथमहाराजकोयश तीनिहूंलोकमें उजागरसो गावते हैं ( ३७ ) तहां जयजयध्वनि अरु वेदध्वनि दशहुंदिशामें सुमंगलकी खानिराजासुनते हैं ( ३८ ) अरु बिपुलबाजने बाजते हैं नभबिषे देवता अरु नगरके लोग ते सब अति अनुरागे हैं ( ३९ ) अरु बरातीसबबनावतेबनिरहेहैं बर्णेनहींजातेहैं महामुदित ते सुखनहींसमातहै ( ४० ) पुरबासीजेहैं ते राजाकोजोहारतभये अरु श्रीरामचन्द्रको देखिकै सुखीभये ( ४१ ) मणि अरुबस्त्रइत्यादिक अनेकनपदार्थनकी निछाविरिकरतेहैं अरु शरीर पुलकिआयो है अरु लोचनमें जलभरिआयो है ( ४२ ) पुनि जे स्त्रीहैं ते मुदितह्वैकै आरती करती हैं चारोंकुंवर जेदूलहहैं तिनको निरखिकै हर्षित होतभईं ( ४३ ) शिविका जो पालकी त्यहिकरवहार उघारिकै दुलहिनिनको देखिकै सुखी होतीभईं ( ४४ ) दोहार्थ॥ यहिप्रकारते सबको सुखदेसंते राजद्वारको आये बधुन सहित चारों कुमारनकी मुदितह्वैकै मातापरिछन करती हैं ( ४५ ) माताजे हैं तेबारबार आरती करती हैं तेहिसमय प्रेमकरिकै जो प्रमोदभयो है सो को कहिसकै ( ४६ ) नानाजातिके अनेकपट अरु भूषणनकीन्योछावरि अनेकभांतिते करतीहैं ( ४७ ) तहां बधुनसमेत चारों पुत्रनको देखिकै सब मातापरमानंद ते मग्न हैं ( ४८ ) पुनिपुनि सीतारामकी छबिदेखिकै अतिमुदितते यहिजगत् में अपने जन्मको फल धन्यमानती हैं ( ४९ ) सखी जेहैं ते श्रीजानकीजीको अतिचाहते मुखदेखती हैं अरु अपनेसुकृतसराहिसराहिमंगलगानकरती हैं ( ५० ) अरु क्षणक्षण देवता फूलनकी वर्षा करते

मुदितमातुपरिछनकरहिंबधुनसमेतकुमार ४५ चौ० ॥ करहिंआरतीबारहिबारा प्रेमप्रमोदकहैकोपारा ४६ भूषणमणिपटनानाजाती करहिंनिछावरिअगणितजाती ४७ बधुनसमेतदेखिसुतचारी परमानन्दमगनमहतारी ४८ पुनिपुनिसियारामछबिदेखी मुदितसकलजगजीवनलेखी ४९ सखीसीयमुखपुनिपुनिचाहीगानकरहिंनिजसुकृतसराही ५० बरषहिंसुमनक्षणहिंक्षणदेवा नाचहिंगावहिंलावहिंसेवा ५१ देखिमनोहरचारिउजोरी शारदउपमासकलढँढोरी ५२ देतनबनैनिपटलघुलागी यकटकरहीरूपअनुरागी ५३ दो० ॥ निगमनीतिकुलरीतिकरिअर्घ्यपाँवड़ेदेत बधुनसहितसुतपरछिसबचलींलेवाइनिकेत ५४ चौ० ॥ चारि सिँहासनसहजसुहाये जनुमनोजनिजहाथबनाये ५५ तिनपरकुंवरकुंवरिबैठारे सादरपाँयपुनीतपखारे ५६ धूपदीपनैवेद्यवेदवि-

हैं अरु नाचते गावते हैं अपनी सेवा जनावते हैं ( ५१ ) तहांशारदा आपुअरु जो कविनकी रसनामें शारदा सो चारिउ मनोहर जोरी देखिकै ब्रह्मांडभरेमें उपमा ढँढोरीकही ढूंढ़तीभई ( ५२ ) तहां सबउपमाओंको लघुजानिकै उपमा देत न बनै तबएकटक चारिउ भाइनको रूप निहारिकै रहिगई ( ५३ ) दोहार्थ॥ तबवशिष्ठजी करिकै निगमनीति अरु कुलरीतिलोकरीति अतिहर्षते करिकै अर्घ्यदेत दिव्यबसनके पावँड़ेपरत बधुनसमेत चारिउ पुत्रनकै परिछनि करिकै सबमाता निकेतकही मंदिरको लेवाइचलीं ( ५४ ) तबचारिउ कुंवर मंदिरको आवतभये तहां चारिसिंहासन सहजही शोभायमान मानहुं मनोज अपनेहाथन रघुनाथजीके हेतुबनावतभयो ( ५५ ) तेहिसिंहासनपर चारिउ कुंवर कुंवरिनको बैठाइकरि आदरतेपुनी तपांय पखारतभये ( ५६ ) वेदविधि ते धूपदीप नैबेद्य करिकै मंगलकेनिधि जे बरदुलहिनि तिनको पूजतभये ( ५७ ) बारहिंबार आरती करती हैं अरु व्यजन सुन्दर चमर शिरपर ढरत हैं सेवकलिहे हैं ( ५८ ) अरु अनेकन बस्तुनकी निछावरिहोतिहै तहांसब माताप्रमोद भरीअति सोहतीहैं ( ५९ ) जैसे परमतत्त्व कहँयोगीपावै मानहुँ संततकही निरंतरका कोई रोगी अमृतकोपावै ( ६० ) मानहुँ जन्मको दरिद्री पारसपावै मानहुँ आंधर नेत्र पावै ( ६१ ) मानहुं गूंगाबाणीपावे मानहुँ रणमें शूरजीतपावै ( ६२ ) दोहार्थ॥ यहसुख जो कहिआयेहैं तेहिते सौकोटिगुणा सुखमाता पावतीहैं हे भरद्वाज रघुकुलचन्द्र जे श्रीरामचन्द्र हैं तेभाइन सहित व्याहिकैघरकोआये ( ६३ ) पुनःदोहार्थ॥ तहां लोकरीति जो माताकरतीहैं तबबरदुल-

धि पूजेवरदुलहिनिमंगलनिधि ५७ बारहिंबारआरतीकरहीं व्यजनचारुचामरशिरढरहीं ५८ वस्तुअनेकनिछावरिहोहीं भरींप्रमोदमातुसबसोहीं ५९ पावापरमतत्त्वजनुयोगी अमियलह्यउजनुसंततरोगी ६० जन्मरंकजनुपारसपावा अंधहिलोचनलाभसुहावा ६१ मूकबदन जनुशारदछाई मानहुंसमरशूरजयपाई ६२ दो० ॥ यहिसुखतेशतकोटिगुण पावहिंमातुअनन्द भाइनसहितब्याहिघरआयेरघुकुलचन्द ६३ लोकरीतिजननीकरहिं बरदुलहिनिसकुचाहिं मोदबिनोदबिलोकिबड़राममनहिंमुसुकाहिं ६४॥ * * * *

चौ० ॥ देवपितरपूजेबिधिनीके पूजेसकलबासनाजीके १ सबहिबन्दिमांगहिंबरदाना भाइनसहितरामकल्याना २ अन्तरहितसुरआशिषदेहीं मुदितमातुअंचलभरिलेहीं ३ भूपतिबोलिबरातिनलीन्हा यानवसनमणिभूषणदीन्हा ४ आयसुपाइराखि

हिनि संकोचकरते हैं तेहिसमयमें मोदकै बिनोदकही लीलातेहिको देखिकैश्रीरामचन्द्र बहुतमुसुकातभये ( ६४ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वंसने बालकांडेबिवाहपरमउत्सवत्रैलोक्यमंगलकारीअयोध्याप्राप्तिवर्णनन्नाम षट्पंचाशत्तरंगः ५६॥ :: :: ::

दो०॥ सातपचासतरंगमें नृपपूजतद्विजभूरि रामचरणदैदानबहु बंदिचरणसुखमूरि ५७॥ नानाप्रकारके बिबिध बिधानते देवता अरु पितरन की पूजाकीन्ह अपने जीवनकी जेती बासनारही तेतीपूजाकीन्ह ( १ ) सबमातामिलिकै सब देवतनकहँ पूजिकै करजोरिकै मांगती हैं हे देवतहु भाइन बंधुन संयुक्त श्रीरामचन्द्रकर कल्याणहोइ ( २ ) तबअंतर्हित देवता आशीर्बाद देतभये सो आशीर्बाद माता अंचलपसारिकै लैलेत भईं ( ३ ) भूपति बरातिनको बोलाइकै रथ घोड़ा हाथी बस्तु देतभये ( ४ ) ते बराती राजाकै आज्ञापाइकै अपने अपने धामको जातभये ( ५ ) पुनि दशरथ महाराजने पुरके नरनारिनको मनबांछितपहिरावरिदीन्ह अरु घरघर बधाई बाजतभई ( ६ ) अरु याचकलोग जो जो मांगते हैं राजा मुदितमनते २ सोई तिनको देतेहैं ( ७ ) सकलसेवकअरु अनेकन बजनिया तिनको दानमान करिकै मनोरथ पूर्णकीन्ह ( ८ ) दोहार्थ॥ ते सम्पूर्ण पुरबासी जोहारिजोहारि आशीर्वाद देते हैं तब वशिष्ठ अरु ब्राह्मणसंयुक्त दूसरे मन्दिरको नरनाथने गवनकीन्ह ( ९ ) जो वशिष्ठ आज्ञादेतेहैं सो वेदबिधिते ब्राह्मण करावतेहैं माता सब करती हैं ( १० ) जब ब्राह्मणनकी भीर सबरानिनदेखी तब आपन बड़भाग्य जानि

उररामहिंमुदितगयेसबनिजनिजधामहिं ५ पुरनरनारिसकलपहिरायेघरघरबाजनलागबधाये ६ याचकजनयाचहिंजोइजोईप्रमुदित राउदेहिंसोइसोई ७ सेवकसकलबजनियानाना पूरणकीन्हदानसनमाना ८ दो० ॥ देहिंअशीषजोहारिसब गावहिंगुणगणगाथ तबसुरभूसुरसहितगृह गवनकीन्हनरनाथ ९ चौ० जोबशिष्ठअनुशासनदीन्हा लोकवेदविधिसादरकीन्हा १० भूसुरभीरदेखिसबरानी सादरउठींभाग्यबड़जानी ११ पायँपखारिसबहिअन्हवाये पूजिभलीबिधिभूपज्यँवाये १२ आदरदानप्रेमपरिपोषे देतअशीषसकलमनतोषे १३ बहुबिधिकीन्हगाधिसुतपूजा नाथमोहिंसमधन्यनदूजा १४ कीन्हिप्रशंसाभूपतिभूरी रानिनसहितलीन्हपगधूरी १५ भीतभवनदीन्हवरबासू मनजोगवतसबनृपरनिवासू १६ पूजेगुरुपदकमलबहोरी कीन्हबिनयउरप्रीतिनथोरी १७

कै आदरते उठीं ( ११ ) सबरनिवास ब्राह्मणनके चरण धोइकै स्नानकरावतीभईं तब सुन्दरवस्त्र देतीभईं सुन्दरआसनपर बैठाइकै धूपदीपकरिकै सुन्दर पक्वान्न जेंवावतभईं ( १२ ) पुनि जेंवाइकै अनेकदक्षिणा दीन्हिआदरकरिकै पोषणकीन्ह तब ब्राह्मणन आशीर्वाददीन्ह रानिनकोसंतोष भयो ( १३ ) पुनि रानीराजाने मिलिकै विश्वामित्रकै पूजाकीन्हि सबप्रकारते हाथजोरिकै कहतेहैं कि हे नाथ आजु हमारीसमानधन्य कोई नहीं है ( १४ ) तहां विश्वामित्रकैप्रशंसा भूपतिने बहुतिकीन्हि पुनि रानिनसंयुक्तपगकी धूरि माथेपरचढ़ाई ( १५ ) विश्वामित्रको समाजसंयुक्त भवनकेभीतर बासदीन्ह अरु राजारानी विश्वामित्र के मनकोजोगवतेहैं ( १६ ) पुनिबिबिध बिधान अरु अतिप्रीतिते गुरुवशिष्ठ कै पूजा अरु विनयकीन्ह ( १७ ) दोहार्थ॥ चारिउकुमार बधुनसंयुक्त अरु रानिनसहित राजा पुनिपुनि गुरुनके चरणारविन्द बन्दत हैं अरु मुनि आशीर्वाद देतेहैं ( १८ ) अरु अतिअनुराग संयुक्त वशिष्ठजी के आगे चारिउपुत्रनके सहित समस्त सम्पदा राखिकै विनयकरतभये कि हे महामुनीश सबतुम्हारैहै ( १९ ) तब मुनिनायक जो वशिष्ठ हैं सो आपन नेगमात्र मांगिलेतभये पुनि बहुतबिधिते आशीर्वाददीन्ह ( २० ) तब सीतारामकैमूर्ति हृदयमें राखिकै गृह को आवतभये ( २१ ) तब राजा बिप्रन की बधुनको बोलावतेभये सुन्दरचीर अरु हेममणिमय विभूषण सर्वांगमें पहिरावतभये ( २२ ) बहुरिकै

दो० ॥ बधुनसमेतकुमारसब रानिनसहितमहीशपुनिपुनिबन्दतगुरुचरण देतअशीषमुनीश १८ चौ०॥ बिनयकीन्हउरअतिअनुरागे सुतसम्पदाराखिगुरुआगे १९ नेगमांगिमुनिनायकलीन्हा आशिर्बादबहुतबिधिदीन्हा २० उरधरिरामहिंसीयसमेता हरषिकीन्हगुरुगमननिकेता २१ विप्रबधूसबभूपबोलाये चीरचारुभूषणपहिराये २२ बहुरिबुलायसुआसिनिलीन्ही रुचिबिचारि पहिरावरिदीन्ही २३ नेगीनेगजोगसबलेहीं

**रुचिअनुरूपभूपमणिदेहीं २४ प्रियपाहुनेपूज्यजेजाने भूपतिभलीभांतिसनमाने २५ देवदेखिरघुवीरबिवाहू बर्षिप्रसूनप्रशंसिउछाहू २६ दो० ॥ चलेनिशानबजायसुर निजनिजपुरसुखपाय कहतपरस्पररामयश प्रेमनहृदयसमाय २७ चौ० ॥ सबबिधिसबहिसमधिनरनाहू रहाहृदयभरिपूरिउछाहू २८ जहँरनिवासतहांपगुधारे सहितबधूटिनकुंवरनिहारे २९ लियेगोदकरिमोदसमेता कोकहिसकैभयोसुखजेता ३० बधूसप्रेमगोदबैठारी बारबारहियहर्षिदुलारी ३१**

राजादशरथने सुआसिनिनको बोलाया तिनकीरुचि विचारि २ पहिरावरिदीन ( २३ ) अरु नेगीजन जेहैं तिनको जैसो जोगहै तैसो ते लेते हैं तिनकी रुचि अनुरूप राजा देतेहैं ( २४ ) जे प्रियपाहुने पूज्यमान हैं तिनकरराजा सबप्रकारते सन्मान करतभये ( २५ ) सर्वदेवता श्रीरघुनाथजीको बिवाहदेखिकै फूलनकीवर्षा अरु उत्साहकरिकै प्रशंसा करतभये ( २६ ) दोहार्थ॥ तब निशानवजायकै देवता सुखपायकै परस्पर श्रीरामचन्द्रको यशकहत अपनेअपनेपुरकोचले प्रेमहृदयमेंनहींसमातहै ( २७ ) तहांसबकोसबविधि ते समधिकही समबुद्धिते आदर करतभये किन्तु समधि कही समधी जनकके समान सबते प्रीति करतभये ( २८ ) पुनि राजा जहांजनवास तहां पगुधारतभये तब राजामहलमें जायकै सहितबधुन कुँवरनकहँ देखतेभये ( २९ ) तब राजा प्रेमसमेत लरिकनको गोदमें लेतेभयेत्यहिसमयमें ज्यतनासुख राजाकोभयो सो सुख को कहिसकै ( ३० ) पुनि बधुनको प्रेमसमेत गोदमेंलेतभये हृदयमें हर्षिकै बारबार दुलारतभये ( ३१ ) यह समाज राजाकेगोदमें बधुनकोदेखिकै रनिवास इत्यादिक सबकेमन में आनन्दआइ बासकीन्हे है ( ३२ ) जेहिप्रकार बिवाहभयो सो राजासबते कहतभये सो राजाकी बाणीसुनिकै सबको परमहर्षहोतभयो ( ३३ ) राजाजनककोशीलगुणबड़ाईकही महत्व अरु प्रीति अरु रीति अरु बिभव ये सब अतिशोभितहैं ( ३४ ) सो राजा जनककीबड़ाई राजादशरथने बारबार बर्णनकीन्ह जेहिप्रकार भाटबर्णनकरैहैं तब रानी राजाजनककैकरणीसुनिकै अतिआनन्दभई ( ३५ ) दोहार्थ॥ तब पुत्रनसमेत राजा

**देखिसमाजमुदितरनिवासू सबकेउरआनँदकियबासू ३२ कह्यउभूपजिमिभयउबिवाहू सुनिसुनिहर्षहोहिसबकाहू ३३ जनकराजगुणशीलबड़ाई प्रीतिरीतिसम्पदासुहाई ३४ बहुबिधिभूपभाटजिमिबरणी रानीसबप्रमुदितसुनिकरणी ३५ दो० ॥ सुतनसमेतनहाइनृपबोलिबिप्रगुरुज्ञाति भोजनकीन्हअनेकबिधिघरीपांचगइराति ३६ चौ० ॥ मंगलगानकरहिंवरभामिनि भइसुखमूलमनोहरयामिनि ३७ अँचैपानसबकाहूपाये स्रगसुगन्धभूषितछबिछाये ३८ रामहिंदेखिरजायसुपाई निजनिजभवनचलेशिरनाई ३९ प्रेमप्रमोदबिनोदबड़ाई समयसमाजमनोहरताई ४० कहिनसकहिंशतशारदशेशू वेदबिरंचिमहेशगणेशू ४१ सो मैं**

स्नानकरिकै दिव्यपट धारणकरिकै पुत्रनकोबस्त्र अलङ्कार धराइकै विप्र अरुवशिष्ठ अरु सजातिनको बोलाइलीन्ह अनेक पदार्त्थ अनेकबिधि प्रीतिते भोजनकरतभये पांचघरीरातबीततिभई ( ३६ ) तहां मङ्गलगान बरभामिनीकरतीहैं सो रात्री सुखकीमूलहोतिभई ( ३७ ) ऐसे सुखपूर्बक सबही प्रसाद पाइकै मुखप्रक्षालिकै पानलेतभये स्रगकही फूलनके माला अरु इतरआदिक सुगन्धकरिकै भूषितछबि छाइरहीहै ( ३८ ) श्रीरामचन्द्रको देखिकै हृदयमेंधरिकै राजाकी रजायपाइकै परस्पर प्रणामकरिकै निजनिज भवनको जातभये ( ३९ ) तहां प्रेम अरु प्रमोदकही हर्षबिनोदकही आनन्द मयलीला अरु बड़ाई तेहिसमय में समाजकी मनोहरताई छाइरही है ( ४० ) सो सुख नहींकहिसकै जो शत शारदा अरु शत शेष चारिउवेद चारिउमुखते ब्रह्मा अरु महेश पांचोंमुखतें अरुगणेशसहित भाई षणमुखसो नहींकहिसकै ( ४१ ) सो श्रीगोसाईं तुलसीदास कहतेहैं कि मैं कौनी भांतिबर्णौं भूमिके नागजे फिरते हैं सो भूमिकेभारको कैसेधरैं किंतु भूमिनागकही केचुला सो भूमिकेभारको कैसेधरै ( ४२ ) तहां राजाने

सबप्रकारते सबकर सन्मानकीन्ह पुनि मृदुबाणीते रनिवासको बोलावतभये ( ४३ ) सुनहु ये बधूजेहैं लरिकनीते मानहुं परायेघर आईहैं तिनको पलकनयन कीनाईं राखहु ( ४४ ) दोहार्त्थ॥ हे रानिहु रात्रिबहुतगई लरिका श्रमितभये उनींदके बशमें हैं शयन करहुजाइ असकहिकै रामचन्द्रके चरणमें चित्तको लगाइकै बिश्रामकेगृहबिषे गये देखिये तौ इहां बात्सल्यरसमेंसदा डूबिरहेहैं अरु इहां रामचरणने चित्तलाइ यह शांतरस कहाहै तहां शांतरस सम्पूर्णमें अरु बात्सल्यरसमें मग्न यह अतिदुर्ल्लभहै महाराज श्रीदशरथसे केवलैशांतरसके बाहर भीतर बात्सल्यरस पूर्णबनाहै आनसेनहीं

कहौं कवनिबिधिबरणी भूमिनागशिरधरैकिधरणी ४२ नृपसबभांतिसबहिंसनमानी कहिमृदुबचनबोलाईरानी ४३ बधूलरिकनीपरघरआई राखेहुपलकनयनकीनाईं ४४ दो० ॥ लरिकाश्रमितउनींदबशशयनकरावहुजाइ असकहिगेविश्रामगृह रामचरणचितलाइ ४५ चौ० ॥ भूपबचनसुनिसहजसोहाये जटितकनकमणिपलँगडसाये ४६ सुभगसुरभिपयफेनुसमाना कोमलललितसुपेदीनाना ४७ उपवर्हणबरवरणिनजाहीं स्त्रगसुगंधमणिमन्दिरमाहीं ४८ रतनदीपसुठिचारुचंदोवा कहतनबनैजानुजिन जोवा ४९ सेजरुचिररचिरामउठाये प्रेमसमेतपलँगपौढ़ाये ५० आज्ञापुनिभाइनकहँदीन्हे निजनिजसेजशयनसबकीन्हे ५१

बनैगा ( ४५ ) भूपके बचन सहजही अतिशोभितसुनिकै कनकमणिनकरिकैजटित जो पलंग सो डसावतीभई ( ४६ ) तेहि पलंगपर सुभग कही सुंदर कामधेनुकेपयफेन के समान अतिकोमलललित कही मनोहर ऐसी सुपेदीबिछावतीभई ( ४७ ) तहां उपवर्हण जो हैं तकिया बरकहीश्रेष्ठ ते वर्णिबे योग्यनाहीं सुपेदी तिनपरशोभित है अरु श्रृंग जो मोतिन अरु फूलनकेमालमणि जहांतहां मन्दिरनमें झूमते हैं अरु अतर इत्यादिक सुगन्धमणिनकेशीशा कोईगोल कोई चौपहलू तिनमें सुगन्धभरे ते सब अनेकझरोखन अरु ताखनमेंधरे हैं अरु केते मणिजटित मन्दिरबिषे सुवर्णके सूत्रनकरिकै बँधेझूमते हैं ( ४८ ) अरु रत्नकेदीपक तहां मणिमय महलमेंतौ स्वयंप्रकाशहै पर रत्नकेदीपक भावकरिकै प्रकाशित हैं अरु चारु सुठि कही अतिसुन्दर सुवर्णमणि मोतिनकरिकै जटित बिचित्रचँदोवा मंदिरनमेंतने हैं सो कहतसन्तेनहींबनै जिन वहिसमयबिषेदेखा सो जानै ( ४९ ) तब रनिवास चारुशय्या बनाइकरिकै रामचन्द्रको उठावतीभई तब प्रेमसमेत पलँगपर पौढ़ावतीभई ( ५० ) पुनि तीनिउभाइनको श्रीरघुनाथ जी आज्ञाकीन्हजाइ कि जायआरामकरो तब तीनिउभाई आयसुपाइकैदण्डवत्करिकै भिन्नभिन्न पलँगनपर शयनकरतभये ( ५१ ) तब श्रीरामचन्द्रकर श्याम मृदुल निर्म्मलगातदेखिदेखि सबमाता प्रेममय बचनकहती हैं ( ५२ ) कि हे तात राहबिषे मुनीशकेसाथ जातसन्ते घोर ताडुकाराक्षसीको केहिबिधिमारा ( ५३ ) दोहार्त्थ॥ तहां मुनिकेयज्ञविषे घोर जे निशाचर अति बिकटभट अरु समरमें काहूकोगनैनहीं तिन मारीच सुबाहु इत्यादिक निश्चरनको कैसेमारा ( ५४ ) कौशल्याजी कहती हैं कि हे ताततुम्हारी अनेककरिवरैं कही बिघ्नैंटरीं केवल मुनिकीकृपाते महादेवने अ-

देखिश्याममृदुमंजुलगाता कहहिंसप्रेमबचनसबमाता ५२ मारगजातभयानकभारी केहिबिधिताततताडुका मारी ५३ दो० ॥ घोर निशाचरबिकटभटसमरगनैंनहिंकाहु मारेसहितसहायकिमिखलमारीचसुबाहु ५४ चौ०॥ मुनिप्रसादबलिताततुम्हारी ईशअनेककरिवरैंटारी ५५ मखरखवारिकरीद्वौभाई गुरुप्रसादसबविद्यापाई ५६ मुनितियतरीलगतपगधूरी कीरतिरहीभुवनभरिपूरी ५७ कमठपीठपविकठिनकठोरा नृपसमाजमहँशिवधनुतोरा ५८ विश्वविजययशजानकिपाई आयेभवनब्याहिसबभाई ५९ सकलअमानुषकर्मतुम्हारे केवलकौशिककृपासुधारे ६० आजुसुफलजगजन्महमारा देखितातविधुबदनतुम्हारा ६१ जेदिनगयेतुमहिंबिनु

नेकबिघ्नटारी ( ५५ ) हे तात यह सबहमने सुना कि तुम दोऊभाइन मुनीशकेयज्ञकी रक्षाकीन्ह अरु गुरुनकेप्रसादते सबबिद्या प्राप्तिभई ( ५६ ) अरु तुम्हारेचरणकी धूरी स्पर्श होतसन्ते मुनिपत्नी पापमय सो कृतार्थहोतिभई अरु कीर्त्ति चौदहौभूवनमें पूरिरहीहै ( ५७ ) अरु कमठकीपीठि अरु पबिकहीवज्र त्यहिते अति कठोरधनुष सो राजनकी समाजमें तुमतोरिडारयउ ( ५८ ) अरु सम्पूर्णविश्वमें बिजय अरु यशको प्राप्तिभयउ अरु श्रीजानकीजी परममंगलमयमूर्त्ति तिनकोपायहु अरु सबभाई आनन्दपूर्व्वक विवाहिकै घरआयहु ( ५९ ) हे तात तुम्हारेकर्त्तव्य अमानुष्य हैं मनुष्यके ऐसेकर्त्तव्यनहीं हैं इहां कौशल्याके बचनमें धुनिहै कि तुम परमेश्वरहौ ताते अमानुषकरणीकहा यह कौशल्याको बचनसुनिकै श्रीरामचन्द्रमुसुकाते हैं ( ६० ) पुनि कौशल्याजी कहती हैं कि हे तात तुम्हारबिधुबदनदेखिकै आजुहमारजन्म सफलभयो ( ६१ ) श्रीकौशल्याजी कहतीहैं कि हे तात जो दिन तुम्हैं देखे विना गये हैं सो बिरञ्चिलेखामें नपावै यह मैं तुमते बरमांगतिहौं तहां कौशल्याजीके बरमांगिबेकोयहअभिप्रायहै कि जबते तुम मुनीशकेसंगगयहु अरु आजुताई येतेदिन ब्रह्माके लेखामें न आवैं तहां कौशल्याके बचनमें रघुनाथजीने यहसमझा कि जबतेकौशल्याजी को जन्मभयो है अरु जबते श्रीकौशल्याजीके चौथेपनविषे हमजन्मलीन्हहै यतनेबीचमें कौशल्याजी ने हमको नहीं देखा अरु जब हमचित्रकूटकोजाहिंगे तब चौदहबर्षको बिक्षेपपरैगो ताते यतनेदिनसब जो हमारेदेखेबिना कौशल्याजीकी उमरिब्रह्मैलिखाहै तेहिदिनमेंहमारेदेखेबिना कौशल्याकोगये हैं सो ब्रह्मालेखामें न पावै तब रघुनाथजीने कहा एवमस्तु ताते त्रेतामें दशहजारबर्षकीउमरि शास्त्रनकही है तहां कौशल्याजूने नवहजारबर्ष दशरथमहाराजकेसंग राज्यकीन्ह अरु ग्यारहहजारबर्ष रघुनाथजीके राज्यमें बिराजमानरही हैं तेहि उपरान्त सहित

**देखे तेबिरंचिजनिपारहिंलेखे ६२ दो० ॥ रामप्रतोषीमातुसबकहिबिनीतबरबयन सुमिरिशम्भुगुरुविप्रपदकियेनींदबशनयन ६३ चौ०॥ उनिंदेबदनसोहसुठिलोना मनहुंसांझसरसीरुहशोना ६४ घरघरकरहिंजागरणनारी देहिंपरस्परमंगलगारी ६५ पुरी बिराजतिराजतिरजनी रानीकहहिंबिलोकहुसजनी ६६ सुंदरिबधूसासुलैसोई फणिपतिशिरजनुउरमणिगोई ६७ प्रातपुनीतकाल**

दशरथमहाराजके परबिभूतिको श्रीरघुनाथजीकेसंग जातीभई यहिचौपाईमें यहअभिप्रायहै ( ६२ ) दोहार्थ॥ माताको बचनसुनिकै एवमस्तु कहिकै श्रीरामचन्द्रने माताको बिनीत कही कोमल नीतिमान बचन कहिकै परितोषकीन्ह तबशंभु अरु गुरु बिप्रादिकनके पदसुमिरिकै नेत्रनकोनींदके बशकीन्ह नामसोइगये ( ६३ ) तहां उनींदे बदन अतिलोने कहीसुन्दर शोहतहैं मानहुसांझके सरसीरुहकही कमलशोनकही अरुण सांझके समयको अरुण कमल कछुक खुलाकछुक संकुचित तद्वत् उनींदोवदन शोभित है ( ६४ ) अरु घरघर प्रति तेहिरात्रीबिषे स्त्री जागरण करतीहैं अरु परस्पर मंगल गारीदेती हैं ( ६५ ) अरु पुरीजो है सोअतिसुन्दरि बिराजतिहै अरु रात्री अति शोभित है तेहि समयमें रनिवास संपूर्ण स्त्रिनते कहती हैं कि हेसजनिहुं देखौ तौ पुरीमें रात्री की शोभा अतिशय है अकथनीय है ( ६६ ) हे पार्बती सुन्दरि बधुनको लैलैसासु सोवतीभई जैसेफणिकजे हैं सर्पअपने सिरकीमणि अपने उरमेंगोइकहीछपाइरहे हैं तैसेबधुन को सबसासुगोद में लैकैसोई हैं ( ६७ ) महामंगल होतसंते रात्रीबीतिगई अतिपुनीत प्रातसमय होतभयो श्रीरघुनन्दन भाइनसंयुक्त जागतभये जब अरुणचूड़ जो मुर्गा किंतु अरुणचूड़ कहीसीस को सो सारसबोलनेलगे ( ६८ ) बन्दीगण अरु मागधद्वारपर रघुनाथजीकेगुणगावनलगे अरु पुरजन यथायोग्य जोहारिबेको आयेहैं ( ६९ ) तब चारिउभाई प्रातउठिकै बिप्रसुरुगुरु अरु मातापिताके पदनकीबंदना करतभयेमंगलमय सबभ्राता आर्शीर्बाद पावतेभये ( ७० ) तहांमाता चारिउभ्राता के मुखकमल देखिकै आनंद पावती हैं तबराजाके संग द्वारको जातेभये ( ७१ ) दोहार्थ॥ श्रीरामचन्द्र चारिउभाई सहजहीं परमपवित्र सदाएकरस नित्यते लीलाअनुकरण हेतु प्रातशौचक्रिया पूर्वक श्रीसरयू स्नान अरुनेमकरिकै चारिउभाई राजाकेपासआवतभये ( ७२ ) तबभूपने श्रीरघुनाथ

प्रभुजागे अरुणचूड़बरबोलनलागे ६८ बन्दीमागधगुणगणगाये पुरजनद्वारजोहारनआये ६९ बन्दिबिप्रसुरगुरुपितुमाता पाइअशीषमुदितसबभ्राता ७० जननीसादरबदननिहारे भूपतिसंगद्वारपगुधारे ७१ दो० ॥ कीन्हशौचसबसहजशुचिसरितपुनीतनहाइ प्रातक्रियाकरितातपहँआयेचारिउभाइ ७२ चौ०॥ भूपबिलोकिलियेउरलाई बैठेहर्षिरजायसुपाई ७३ देखिरामसबसभाजुड़ानी लोचनलाभअवधिअनुमानी ७४ पुनिबशिष्ठमुनिकौशिकआये आसनसुभगमुनिनबैठाये ७५ सुतनसमेतपूजिपदलागे निरखिराम दोउगुरुअनुरागे ७६ कहहिंबशिष्ठधर्मइतिहासा सुनहिंमहीपसहितरनिवासा ७७ मुनिमनअगमगाधिसुतकरणी मुदितबशिष्ठ

जीको देखिकै उठिकै उरमें लगाइलीन्ह पुनि राजादशरथ उरमें लगाइकै बैठे तबराजाकै रजायसु पायकै राजाके समीप रघुनाथजी बैठे ( ७३ ) श्रीरामचन्द्रकरस्वरूप अतिसुन्दरदेखिकै सभाजुड़ाइगई संपूर्णसभाकेचित्तकैवृत्तिव्यवहारमेंरही सो मिटिकै श्रीरामचन्द्रकेस्वरूपमेंलगी तातेसबजुड़ाई कही शीतलभये अरु अनुमानकीन्ह कि लोचननके लाभकै अवधिइनके दर्शनै हैं आगे कछुनहीं है ( ७४ ) पुनि राजसभामें बशिष्ठ अरु विश्वामित्र आवतभये तबसभा समेत राजाउठिकै प्रणाम करिकै सुन्दर आसनपर बैठावत भये ( ७५ ) दुनौंगुरुनको राजाबैठाइकै पुत्रनसमेत षोड़शप्रकारते पूजन करिकै पदमें लगावतभये तब श्रीरामचन्द्र को देखिकैदूनोंगुरुन को अनुराग होतभयो ( ७६ ) यहि प्रकारते दिनप्रति वशिष्ठजी धर्म इतिहास पुराण वेदबांचते हैं सो राजारानी सुनते हैं ( ७७ ) तहां गाधिसुत बिश्वामित्र तिनकै करणी मुनिनके मनको अगमहै सो बशिष्ठजी बारबार बर्णतभये ( ७८ ) तब बाम देवमुनि बोले कि यह जो बिश्वामित्रकै करणी बशिष्ठजी कहते हैं सो सबसत्यहै इनकी कीर्त्तितीनिउ लोकमें फैलिरही है ( ७९ ) यहसुनिकै सबको आनंद होतभयो अरु श्रीरामचन्द्रअरु लक्ष्मण के उरमें अधिक उत्साह होतभयो ( ८० ) दोहार्थ॥ तहां जो दिन बीतते हैं सो मंगल मोद उत्साहमय सब श्री अयोध्याजीमें उमगि उमगि दिनप्रति अधिकाते हैं ( ८१ ) तब सुन्दर सुदिन साधिकै कङ्कण छोरतभये तहां मङ्गल अरु मोदबिनोदकही आनन्दमयलीला सोथोरिनहींहै अमितहोतिभई है ( ८२ ) नित्य नवीन नवीन सुखदेखिकै देवतासिहाते हैं अरु बिधिते मनावते हैं कि हे बिधि यहीसमयमें श्रीअयोध्यामें हमारोअजन्महोइ ( ८३ ) तहां बिश्वामित्र नित्यउठि चलाचाहते हैं

बिपुलबिधिबरणी ७८ बोलेबामदेवसबसांची कीरतिकलितलोकतिहुंमाची ७९ सुनिआनन्दभयेसबकाहू रामलषणउरअधिकउछाहू ८० दो० ॥ मंगलमोदउछाहनितजाहिंदिवसयहिभांति उमगिअवधिआनन्दभरिअधिकअधिकअधिकाति ८१ चौ० ॥ सुदिनसाधिकरकंकणछोरे मंगलमोदबिनोदनथोरे ८२ नितनवसुखसुरदेखिसिहाहीं अवधजन्मयाचहिंबिधिपाहीं ८३ विश्वामित्रचलननितचहहीं रामसप्रेमविनयबशरहहीं ८४ दिनदिनसौगुणभूपतिभाऊ देखिसराहमहामुनिराऊ ८५ माँगतबिदा राउअनुरागे सुतनसमेतठाढ़भयेआगे ८६ नाथसकलसम्पदातुम्हारी मैंसेवकसमेतसुतनारी ८७ करबसदालरिकनपरछोहू दरशन देतरहबमुनिमोहू ८८ असकहिराउसहितसुतनारी परेचरणभरिलोचनबारी ८९ दीन्हअशीषऋषयबहुभाँती चलेनप्रीतिरीति

परन्तु श्रीरामचन्द्रकी बिनयप्रेमते रहिजाते हैं ( ८४ ) तहां दिनदिनप्रतिसौंसौ गुणभाव राजाबिश्वामित्रकर करतेहैं राजाकर भावदेखिदेखि महामुनिवर बारबार सराहते हैं ( ८५ ) अब विश्वामित्र बिशेष बिदामांगतेहैंतब राजा अतिअनुरागपूर्वक सुतनसमेत करजोरिकै आगेठाढ़ेभये ( ८६ ) तब राजाबोले कि हेनाथ यह सकलसम्पदा आपुकीहै अरु मैं

पुत्रन अरुरानिनसहित आपुकर सेवकहौं अरु सदासेवक जानेरहब ( ८७ ) अरु ये चारिउपुत्र आपुके लरिकाहैं सदाछोहकही दयाकरतरहब अरु दर्शनमोहूंको देतरहब यह कृपाबनीरहै ( ८८ ) तब विश्वामित्रकै विनयकरिकै पुत्रन समेत राजा औ रानी बिश्वामित्रके पांयनपरतभये प्रेमतेगद्गद नेत्रनमेंजलभरे मुखते बाणीनहींआवै ( ८९ ) तब ऋषयउठाइकै बहुप्रकारते आशीर्बाददेतभये पुनि बिदाहोतभये तहां परस्पर प्रीतिकीरीति कछुकहीनहींजातीहै तब राजाने अनेकप्रकारते भेंटदी अरु अनेकप्रकारके भोजन के सरञ्जाम मंजिलके मंजिल पहुंचावतेभये ( ९० ) तहां विश्वामित्रराजाको ठाढ़कीन्ह अरु अनेक मन्त्रिनसंयुक्त चारिउभाई मुनिको पहुंचावै चले तब विश्वामित्र प्रेमतेभरे बारबार रघुनाथजीको फेरते हैं परन्तु रघुनाथजी प्रेमकेबश नहींफिरते हैं पुनि सुन्दर आशीर्वाद अरु आयसुपायकै फिरतेभये तहां माघके शुक्लपक्षकी पूर्णमासीको श्रीअयोध्याते विश्वामित्रबिदाहोतभये निज आश्रमकोगये तब भाइनसहित श्रीरामचन्द्र भवनको आवतभये ( ९१ ) दोहार्थ ॥ तब विश्वामित्र श्रीरामचन्द्रको स्वरूप हृदयमेंधरे सहितसमाज चलेजाते हैं अरु भूपतिकर भावभक्ति अरु बिवा-

कहिजाती ९० रामसप्रेमसंगसबभाई आयसुपाइफिरेपहुंचाई ९१ दो० ॥ रामरूपभूपतिभगतिब्याहउछाहअनन्द जातसराहतमनहिं मनमुदितगाधिकुलचन्द ९२ चौ० ॥ बामदेवअरुकुलगुरुज्ञानी बहुरिगाधिसुतकथाबखानी ९३ सुनिमुनिसुयशमनहिंमनराऊ बरणतआपनपुण्यप्रभाऊ ९४ बहुरेलोगरजायसुभयऊ सुतनसमेतनृपतिगृहगयऊ ९५ जहँतहँरामब्याहसबगावा सुयशपुनीत लोकतिहुंछावा ९६ आयेब्याहिरामघरजबतें बसेअनंदअवधसबतबतें ९७ प्रभुबिवाहजसभयउउछाहू सकहिंनबरणिगिराअहिनाहू ९८ कबिकुलजीवनपावनजानी रामसीययशमंगलखानी ९९ तेहितेमैंकछुकहाबखानी करनपुनीतहेतुनिजबानी १००

हकेउत्सव को आनन्दमन में सराहत गाधिकुलचन्द चलेजाते हैं राजागाधिके कुलके चन्दकही कुलभरेकी तीनितापहरिकै कृतार्थकीन्ह ( ९२ ) तहां बामदेव मुनि जो हैं अरु रघुकुल गुरुज्ञानी बशिष्ठ जोहैं ते बहुरिकहींबारबार गाधिसुत जो बिश्वामित्र तिनकीकथा अतिप्रीतिते बखानते हैं ( ९३ ) गुरुनके मुखते बिश्वामित्रकर सुयश सुनिकै राजाअपने पुण्यकोप्रभाव बहुतमानतभये ( ९४ ) तब राजाकी रजायपाइकै सबलोग अपने अपने घरकोगये ( ९५ ) हे पार्बती स्वर्ग पाताल मृत्युलोकादि तीनिहूंलोकनबिषे जहां तहां रामचन्द्रके बिवाहको पवित्रसुयश छाइरह्योहै ( ९६ ) हे भरद्वाज श्रीअयोध्याअरु अयोध्या बासी ये तौ सदैव आनन्दमय रहतेहैं पर श्रीरामचन्द्र जबते ब्याहकैआयेहैं तबते आनन्दसमेत बसेहैं ( ९७ ) तहां श्रीरामचन्द्रके बिवाहकरजैसो उत्साहभयोहै तैसो गिराकही सरस्वती अरुशेषजी नहींबरणिसकैं ( ९८ ) श्रीगोसाईं तुलसीदास कहतेहैं कि यह जो श्रीरामचन्द्रकर चरित कबिकेकुलको जीवन अरु पावनकर्त्ताहै सो अपनीबाणी पवित्रकरिबेकेहेतु अरु मेरे कल्याणकेहेतुहै ( ९९ ) ताते अपनीमति केमाफिक मैं जो तुलसीदासहौं श्रीरामचन्द्रकर चरित अपनीबाणीके पुनीतहेतु कहतभयों ( १०० ) छन्दार्थ॥ श्रीगोसाईं तुलसीदास कहते हैं कि यह जो श्रीरामचन्द्रकर सुयशहै उसे अपनीबाणीके पावनकरिबेको कारणजानिकै मैं कह्यउँहै अरु श्रीरामचन्द्रकोचरित तौ अपार समुद्र है वर्णन करिकै कौनेकबि पारपावा नामकेहूंनहींपावा ( १०१ ) श्रीगोसाईं तुलसीदास कहते हैं कि श्रीरामचन्द्रको जन्म अरु यज्ञोपवीत अरु बिवाहका मङ्गलमय उत्साह जो गावते अरु सुनतेहैं ते नरलोक श्रीबैदेही अरु रामचन्द्रके प्रसादते सदासुखपावहिंगे ( १०२ ) सोरठार्थ॥ श्रीरघुनन्दन श्री

हरिगीतिकाछन्द ॥ निजगिरापावनकरनकारणरामयशतुलसीकह्यौ रघुबीरचरितअपारबारिधिपारकविकवनेलह्यौ १०१ उपवीतब्याहउछाहमंगलसुनिजेसादरगावहीं वैदेहिरामप्रसादतेनरसर्वदासुखपावहीं १०२ सो० ॥ सियरघुबीरबिवाह जेसप्रेम गावहिंसुनहिं

**तिनकहँसदाउछाह मंगलायतनरामयश १०३॥ इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकाण्डे विमलसम्पादनोनाम प्रथमस्सोपानस्समाप्तः १॥**

* * * * *

जानकीजीको बिवाह जेकोई प्रेमसंयुक्तगावैं अरु सुनैं तिनको सर्बकालमेंउत्साह है काहेते श्रीसीतारामकरयश यह मङ्गलमयको आयतनकही स्थान है ( १०३ ) बर्णसवैया कबित्त॥ निगमागमपादपकल्पलसैं फलरामचरित्रसुधारसमय तुलसीशुककेमुखतेकरिकै द्रवपीवतसन्तसमाजसबय पुनिब्रह्मकण्डलवेददयो सरितासुररामकीकीरतिहय तुलसीसुभगीरथरामचरण भुविजीवसबैजगपावनभय १ सबशास्त्रनकोमतसारलियो जल दूध यथालखिहंसगहयगिरितेजिमिमाणिकलेहिभलेमथिसिंधुअमीजिमिदेवलहयतिमिशा-स्त्रपुराणश्रुतीसुमृतीसुबिचारिबिशेषबिशेषणहयसबरामचरण तुलसीलैकै रचिरामकथामुदमङ्गलमय २ शुचिज्ञानबिरागबिवेकमयी शमतोषदयादमशीलबसी नवधापरप्रेमपराभगती सबसन्तनकेहियमेंहुलसी शुभचारपदारथपूरिभये मदमोहनदीनदकोपुलसी दृढ़रामचरणअतिप्रीतिकरै रघुबीरकथाबरणीतुलसी ३ सरसन्तनकोमनहंसजहां मुकतागुणराम चुनैसुकसी कबिकोबिदको बिश्रामथली सबशास्त्रसुमङ्गलमयमुखसी रघुबीरस्वरूपसदादरसी सुखकोसुखसीदुखकोदुखसी जगजालकोरामचरण असिसी रघुबीरकथाबरणीतुलसी ४ सबकोमतएककरीतुलसी सियरामस्वरूपमेंआनिधरी तेहिग्रन्थकोअर्थकियोमतिजो यहसिंधुसुधारसपूरिभरी सरमानसरामचरित्रजहां गुणकीरतिदिब्यउठैंलहरी सियरामसमीपहिबासकरै जोइरामचरणस्नानकरी ५ दोहा॥ अवधपुरीपूरणभयो सुभग जानकीघाट रामचरणशुभतिलककृत सन्तसमाजकोठाट ६ सम्बतअष्टादशसुभग सत्तरिअर्द्धसपाख रामचरणऋतुराजतिथिपञ्चशुक्लबैशाख ७॥

**इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेबालकाण्डेश्रीसीतारामबिवाह श्रीअयोध्याबिश्रामपरमोत्साहपरमानन्दत्रैलोक्यमङ्गलबर्णनन्नामसप्तपञ्चाशत्तरङ्गः॥**

# ॥रामायण तुलसीदासकृत सटीक॥

## ॥अयोध्याकाण्ड॥

श्रीमतेरामानुजायनमः॥ घनाक्षरी॥ तुलसीकृतमेघस्वाति योगधर्मज्ञानशालिप्रेमनीरचातकमयूरचित्तमनहै कामधेनुदिव्य सोपिदुग्धभावप्रीतिस्वादतोषपुष्टजीवबत्सदेवरामजनहै धर्मिन को धर्म्मसिद्धियोगिनकोयोगसिद्धि ज्ञानिनको ज्ञानसिद्धि भक्त भक्तिधनहै रामचरणश्रीमद्रामायणश्रीरामअयन रामनामलीला श्रीरामसीयतनहै (१) क्षीरसिंधुअवधकांडपूरभयेभरतभावशेष विज्ञान विष्णुरमारामनामहै विरहअथाहस्वस्वरूपइंदुप्रेमसुधा रामरूपचिंतामणिभक्तिधेनुकामहै भरतकोयोगवैराग्यज्ञानध्यान तपआदि गुणदिव्यभूरिजलचरनकोधामहै रामचरणशरणागत सीपमोती कृपारामआरततरंगेंशोचउमगैसुदामहै २ शर्दनभकांड यहपूरचन्द्रभरतभावमुनिगणचकोरकुमुदअंगअंगछामहैवेदनकी तत्त्वरामसर्वोपरसर्बरसकारणऔरकारजपरेकर्मधर्मधामहैरामगुणप्रतापरूपनाम श्रीधामप्रेमभर्त्तसर्बजीवनकोदीन्होंअभिरामहै रामचरणरामकोचरित्रपरमदिव्यसुधापीवै सोरामभक्तहर्षिआठोयाम ३॥

श्लोक॥ वामांकेचबिभातिभूधरसुतादेवापगामस्तके भालेबालबिधुर्गलेचगरलंयस्योरसिब्यालराट्॥ सोऽयंभूतिविभूषणः सुरवरःसर्वाधिपस्सर्वदा सर्व्वस्सर्वगतःशिवःशशिनिभःश्रीशंकरःपातुमाम् १ प्रसन्नतोयोनगतोभिषेकतस्तथानमम्लेवनवासदुःखतः मुखाम्बुजंश्रीरघुनन्दनस्य सदाऽस्तुमेमंजुलमंगलप्रदम् २॥ * * * * * * *

दो०॥ रामब्याहऐश्वर्यसुखचौदहभुवननपूरि रामचरणश्रीअवधमेंप्रथमतरंगनिभूरि १ प्रथमश्रीअयोध्याकांडविषेप्रथमशंकरभागवत् श्रीरामानन्य मुनिभगवत् श्रीरामचन्द्र श्लोकद्वौ ताको अर्थ श्रीशंकर जो हैं सर्व जीवनके कल्याणकर्त्ता ते माम्पातु मेरेऊपर रक्षाकरहु सहितपार्बती प्रसन्नहोहु कैसेहो तुममहादेव वामांगबिषे बिभाति कही शोभितहैं भूधरसुता जे पार्बती अरु देवापगा जो श्रीगंगाजी सो शीशपर शोभितहैं अरु भालविषे बालचन्द्रमा शोभितहै तेद्वौ सर्व जीवनके पापताप हर्त्ता हैं अरु ग्रीवविषेगरल जो श्यामता सो शोभित है जनु सर्बके दुःखहरिकै आपुगरे बांध्यो है पुनिग्रीव बिषे व्याल जो है राट्कही श्रेष्ठ सर्पराज सो शोभित है जनुसर्बजीवनको भय हरिकै निर्भयकीनहै अरु अंगबिषे विभूति भूषितहै सो सर्व जीवनकी सुखकर्त्रीहै सो महादेव कैसे हैं ब्रह्मादिक सर्ब देवतन मेंबर कही श्रेष्ठ हैं काहेते रामानन्य हैं अरु सर्बाधिप हैं सर्बजीवनके राजा हैं सर्वदा सर्बजीवनके पालकहैं अरु सर्वकही षोड़शौकला करिकै संपूर्णहैं अरु सर्वगतकही सर्वजीवबिषे गतकही प्राप्तिहैं शिवकही कल्याणरूप हैं शशिनिभःकही अतिउज्ज्वल निर्मलअमृतमय शीतलमय प्रकाशमयऐसीदेहकी प्रभाहै ऐसे श्रीशंकर माम्पातु श्रीगोसाईं तुलसीदासजी तिन शंकरको नमस्कार करिकै श्रीअयोध्याकाण्ड प्रारम्भकरते हैं काहेते किश्रीशंकर यहि श्रीमद्रामायणके आचार्यहैं १ गोसाईं कहतेहैं रघुनन्दनस्य मे सदा मंजुलमंगलप्रद नाम मंगलके दाता हैं सो कैसे हैं रघुनन्दन मुखाम्बुज मुख नित्यप्रसन्न है मोकोमंगलकरहिंगे पुनः कैसेहैं रघुनन्दन राजादशरथ महाराज्याभिषेक देनेलगे तब लेशहूप्रसन्नता नहींआई पुनिजब कैकेयी माताने बनबासदियो तब तन मनमुखविषे लेशहूमलीनता नहींआई ऐसे श्रीरघुनन्दन मैं जो हौं रामचरण ताहूको मंगलदेहिं जातेश्रीअयोध्याकाण्डको तिलक यथार्थ सिद्धिहोइ २॥

दो०॥ श्रीगुरुचरणसरोजरजनिजमनमुकुरसुधारि बरणौंरघुबरबिमलयशजोदायकफलचारि १ चौ०॥ जबतेरामब्याहिघरआये नितनवमंगलमोदबधाये २ भुवनचारिदशभूधरभारी सुकृतमेघबरषहिंसुखबारी ३ ऋधिसिधिसम्पतिनदीसुहाई उमगिअवधअम्बुधिकहँआई ४ मणिगणपुरनरनारिसुजाती शुचिअमोलसुंदरसबभांती ५ कहिनजाइकछुनगरबिभूती जनुयतनीबिरंचि

दो०॥ श्रीतुलसीदास अपने गुरुनके नमस्कार करतहैं श्रीगुरुजो हैं तिनकर जो कमल चरण हैं तिन चरणन की रज तेहिकरिकै अपने मन मुकुरको निर्मलकरिकै श्रीरघुबरको विशद यशबर्णौं जो चारिउ फलकरदाता है अरु यहरामायण श्रीरामचन्द्रको अयनहै तातेसर्बरस अरु नवधा भक्ति प्रेमा परा अरु रामस्वरूप की दाताहै ताको वर्णत हौं ( १ ) हे पार्बतीसदा महामंगलमय श्रीअयोध्यामें जबते श्रीरामचन्द्र बिवाहकरिकै आये तबते नित्यही नवीन मंगलमोद बधाई बाजती हैं ( २ ) हेभरद्वाज चौदहौभुवन जेहैंसोई पर्बतहैं अरु चौदहो भुवनकेसुकृत सोईमेघहैं अरु महासुख सोईजलहै सो सुकृतरूप मेघबर्षते हैं ( ३ ) तहां ऋद्धिकहीनवनिधि अरु आठ सिद्धीसो भगवत्सम्बन्धिनी हैं अरुदशसिद्धीगुणसम्बन्धिनी हैं अरु पांच अल्पसिद्धी हैंसो नवोनिद्धि अरुतेइससिद्धीसोईनदीहैं ते सब सुखरूप जलते भरीउमगिउमगि श्रीअयोध्या समुद्रमेंमिलतभईं ( ४ ) अरु समुद्रमेंतोमुक्ता इत्यादिक अनेकन जातिनकी मणिहोती हैं अरु अवध समुद्ररूप तामें पुरके नरनारि मणिहैं अरु शुचिकही पवित्र सोई मणिको प्रकाश है अरु अतिसुन्दरता सोई अमोलता है ( ५ ) तहां नगरकी बिभूति कछु कहीनहीं जाइहै जनु बिरंचिकै यतनीहीं करतूति है ( ६ ) सब प्रकारते संपूर्ण लोग श्रीरामचन्द्रकर मुखचन्द्र देखि देखिसुखी हैं ( ७ ) तहां सबमातु सखीसहेलीइत्यादिक अपने मनोरथ की कल्पबेलिको फलित देखिकै मुदित हैं ( ८ ) अरु श्रीरामचन्द्रकर रूप गुणसुभाव देखि सुनि सुनि राजा

आनंदहोते हैं ( ९ ) दोहार्थ॥ सम्पूर्ण अयोध्यावासी मंत्री इत्यादिकनके यह अभिलाषाहै अरु ते श्रीमहेशको मनावते हैं कि हे महेश आपु अछतकही श्रीरामचन्द्रको युवराजपद राजा अपने आगेदहिं १०॥ इति श्रीरामच-

करतूती ६ सबबिधिसबपुरलोगसुखारी रामचन्द्रमुखचन्द्रनिहारी ७ मुदितमातुसबसखीसहेली फलितबिलोकिमनोरथबेली ८ राम रूपगुण-शीलसुभाऊ प्रमुदितहोहिंदेखिमुनिराऊ ९ दो० सबकेउरअभिलाषअसकहहिंमनाइमहेश आपुअछतयुवराजपदरामहिंदेहिंनरेश १०॥ *

चौ०॥ अतिआनन्दअवधपुरबासी भ्रातनसहितदेखिसुखरासी १ एकबारजानकीसमेता बैठेप्रभुनिजरुचिरनिकेता २ भुज प्रलंबउरनयनबिशाला पीतबसनतनश्यामतमाला ३ कोटिमनोजदेखिछबिमोहा सीताकरचामरबरसोहा ४ तेहिअवसरमुनिनारद आये सुरहितलागिबिरंचिपठाये ५ तेजपुंजकरतलकरबीना हरिगुणगणगावतलयलीना ६ देखिरामसहसाउठिधाये करतदण्डवतमुनिउरलाये ७ सादरनिजआसनबैठारे जनकसुतातबचरणपखारे ८ तेहिचरणोदकभवनसिँचावाजगपावनहरिशीशचढ़ावा

रितमानसे सकलकलिकलुष बिध्वंसने विमल श्रीअयोध्याकांडे श्रीरामचन्द्र विवाह श्री अयोध्याविषे प्राप्तिपरमैश्वर्यबर्णनन्नामप्रथमस्तरंगः१॥

दोहा॥ महाराज दशरत्थमन रामराज्यअभिषेक द्वितियतरंगत्रिलोकमें रामचरणसुखएक ( १ ) नारदकोप्रसंग तीनिदोहापर्यन्त काहूकाहू प्रतिमें नहीं है क्षेपक कहते हैं तातेतीनिउ दोहाकोअक्षरार्थै इहां यहींचौपाई को अर्थ करते हैं नारदकहते हैं कि हेरामचन्द्रतुम्हारनामअरु तुम्हार रूप अरु तुम्हारबपु ये तीनों बर्णकही अक्षरनके अर्थतेअभेद हैं अरु बर्णकहींरंग अरुगुणसोतीनिउअभेदहैं बपुकरप्रकाश जेछटाताकोरूपकही अरुबपुजोशरीरतेहि बिषे जो परमदिब्य समष्टीरूपगुणहै ताकोनामकही काहेते अपनेदिब्यगुणरूपकमाधुर्य्यमेंमुनिनके चित्तको रमावते हौ तातेरामकही ऐसेनामरूप बपु

९ सुनुमुनिबिषयनिरतजेप्रानी हमसारिषेदेहअभिमानी १० तिनकहँसतसंगतिजबहोई करहिंकृपाजापरप्रभुसोई ११ ताकहँमुनि नाहिंनभवआगे जेहिबिनुहेतसंतप्रियलागे १२ तातेनारदमैंबड़भागी यद्यपिगृहकुटुम्बअनुरागी १३ दो०॥ सुनिप्रभुवचनमधुर प्रियकरिबिचारिमुनिधीर परमकृपालुलोकहितकसनकहौरघुबीर १४ चौ०॥ कहमुनितवमहिमारघुराया मैंजानौकछुतुम्हरी दाया १५ वचनकहेउप्राकृतकीनाईं यामेंनहिंकछुघटेउगोसाईं १६ प्रभुयहतुमहिंसदाबनिआई निजलघुताजनकेरिबड़ाई १७ सहजस्वभावप्रणतअनुरागी नरतनधरेउदासहितलागी १८ मायागुणगोज्ञानअतीता अजितनामसोदासनजीता १९ जेहिप्रभुसमअतिशयकोउनाहीं ब्यापकअजसमानसबमाहीं २० उदरचराचरमेलिजोसोवा अस्तनपानलागिसोरोवा २१ नामरूपबपुबरणनभेदा अविगतअकलनेतिकहवेदा २२ निर्ममुक्तनिरामयजोईदशरथसुतकहिगाइयसोई २३ तपजपयोगयज्ञब्रतदाना विमल बिरागज्ञानबिज्ञाना २४ करहिंयतनमुनिपावहिंकोई देखाप्रगटभक्तवशसोई २५ हठवशशठबहुसाधनकरहीं भक्तिहीनभवसिन्धुनतरहीं २६ दो० ॥ जानिसकहुतेजानहु निर्गुणसगुणस्वरूप ममहियपंकजभृङ्गइवबसहुरामनरभूप २७ चौ० ब्रह्मभवनमें

रह्यउँकृपाला गावततवगुणदीनदयाला २८ असिइच्छाउपजीमनमाहीं देख्यउँचरणबहुतदिननाहीं २९ यद्यपिप्रभुसर्वत्रसमाना सनुनरूपमोरेमनमाना ३० अवधचलतबिरंचिमोहिजाना कीन्हीबिनयलागिममकाना ३१ प्रभुजानतसबअन्तरयामी भक्तबत्सलबिनतीयहस्वामी ३२ जेहिहितलीनमनुजअवतारा नाथताहिअबकरियसँभारा ३३ सुनतवचनरघुपतिसुसुकाने मुनिअजहूंबिरंचिभयमाने ३४ कह्यउतातब्रह्महिंसमुझाई कछुदिनगयेदेखिहैंआई ३५ बारबारचरणनशिरनाई ब्रह्मानन्दनहृदयसमाई

अभेदहैं अबिगति हैं अकथहैं नेतिनेति वेदकहते हैं प्रमाण महारामायणेएकपंचाशत्सर्गे श्लोकद्वौ मुनिवेषधरंरामंनीलजीमूतसन्निभं रामंतेयोषितो भूत्वारूपंदृष्ट्वामहर्षयः १ पुनि श्रीरामतापिन्याम्रमंतेयोगिनोऽनंतेसत्यानंदेचिदात्मनिइतिरामपदेन्यासो परं ब्रह्माबिधीयते २२ एकतालिसकेअग्रतेहै पार्वतीएकसमयबिषे महाराज श्रीदशरथजीराजसभाबिषे सहितसमाज बिराजमानहैं ( ४१ ) तहां नरनाह सकल सुकृतकीमूर्त्तिहीहैं अरु श्रीरामचन्द्रके सुभाव क्रियागुणको यशसो संपूर्ण सुनि सुनि हृदयमें उत्साह होत ( ४२ ) कैसे श्रीदशरथ महाराज हैं जिनकी चाहना सबराजा करते हैं अरु लोकपकही चौदहौ लोक के पालक अष्टलोकपाल तेसबके सब प्रीतिरुखराखिबे की इच्छाराखते हैं लोकनकेनाम अतल १ बितल २ सुतल ३ तलातल ४ महातल ५ रसातल ६ पाताल ७ तिनलोकन के अधिष्ठाता कहते हैं महिते अर्धतामें बलिनाम दानवहै १ पुनि ताके अर्ध बितल तामें हाटकेश्वरमहादेव हैं २ पुनिताके अर्धसुतल तामेंबलि ३ पुनिताके अर्ध तलातल तामें मयदानवहै ४ ताकेअर्ध महातल तामें अ-

रामरूपउरधरिमुनिनारद चलेकरतगुणगानविशारद ३७ तबरघुपतिसीतहिसमुझाई पूर्वकथासबहेतुसुनाई ३८ सुरहितलागिसो करियउपाई जाइयबनपरिहरिठकुराई ३९ दो०॥ जगसंभवअस्थितिप्रलयजाकीभृकुटिबिलास सोप्रभुयतनबिचारतकेहिबिधिनिशिचरनास ४० चौ०॥ एकसमयसबसहितसमाजा राजसभारघुराजबिराजा ४१ सकलसुकृतमूरतिनरनाहू रामसुयशसुनि परमउछाहू ४२ नृपसबरहहिंकृपाअभिलाषे लोकपरहहिंप्रीतिरुखराषे ४३ त्रिभुवनतीनिकालजगमाहीं भूरिभागदशरथसम

ष्टकुलीनाग है ५ पुनिताके अर्ध रसातल तामें पणिपनाम दानवहै ६ पुनिताके अर्द्ध पातालतामें बासुकी इत्यादिकहै ७ पुनिपृथ्वी शुद्धऊर्द्ध सातलोक ७ भूः १ भुवः २ स्वः३ महर४ जनः५ तपः६ सत्यलोक७ अबलोकनकेराजा कहते हैं भूर्लोकके राजा नरराक्षस १ तेहिके ऊर्द्धभुवः लोकके राजासामान्य देवताऔ पित्र तेहिके उर्द्धखर्ग तहांइन्द्र ३ ताके ऊर्द्ध महरलोक तहां कश्यप ४ ताकेऊर्द्ध जललोक तहां मुनीश्वर मुख्य अगस्त्य हैं ५ ताकेऊर्द्ध तपःलोक तहां तपस्वी मुख्यलोमस हैं ६ ताकेऊर्द्ध सत्यलोकतहां ब्रह्मापुनि अष्टदिक्पाल पश्चिमबरुण बायव्यमहत उत्तरकुबेर ईशानमेंईश पूर्वमें देवपति अग्निकोणमें अग्नि दक्षिणमें धर्मराज नैऋत्यमेंनिऋतनाम देवता इत्यादिक समस्त लोकपाल श्रीदशरथजीकीइच्छाकरते हैं कि हमारे ऊपरसदा प्रीति कृपाकरत रहहिं ( ४३ ) हेपार्बती तीनिकाल भूतभविष्य बर्त्तमान पुनि तीनिलोक पाताल मृत्युस्वर्ग ब्रह्मलोकपर्यंत तिनसर्ब जीवनबिषे जीवकोटीमें अहहिं अरु तेईश्वर कोटीमें अहहिंते सबदशरथ की समानभूरि भाग्यनहीं हैं ( ४४ ) काहेते कि संपूर्ण मंगलकरमूल श्रीरामचन्द्र जिनको सनकादिक अरु नारद शुकदेव इत्यादिकपरमहंस अरु ब्रह्माशिवादिक ईश्वरयेसब एकरस जिनको ध्यावते हैं ते प्रभुदशरथके पुत्रताते जो कछु दशरथकी बड़ाईकरिये सो सबथोरीहै ( ४५ ) तहां राजादशरथ एकसमयसभामें बैठे हैं तेहिसमयमेंमुकुरकहीसीसाकर बिषे लेतभये बदन बिलोकिकै मुकुटसम करतभये नामसुधारतभये ( ४६ ) अपने श्रवणसमीप राजानेसेतकेशदेखे मानहु जरठकही चौथपनको उपदेश करैहै ( ४७ ) यह उपदेशकरै हैं कि हेराजन् युवराजपदश्रीरामचन्द्रकोदेहु अपनेजन्मको फललेहु ( ४८ ) दोहार्थ हे भरद्वाजतबराजा अपने मनमें

नाहीं ४४ मंगलमूलरामसुतजासू जोकछुकहियथोरसबतासू ४५ रायसुभायमुकुरकरलीन्हा बदनबिलोकिमुकुटसमकीन्हा ४६ श्रवणसमीपभयेसितकेशा मनहुंजरठपनअसउपदेशा ४७ नृपयुवराजरामकहँदेहू जीवनजन्मलाभकिनलेहू ४८ दो०॥ यह बिचारिउरआनिनृप सुदिनसुअवसरपाइ प्रेमपुलकितनमुदितमन गुरुहिसुनायउजाइ ४९ चौ०॥ कहैभुआलसुनियनरनायक भयेरामसबबिधिसबलायक ५० सेवकसचिवसकलपुरवासी जेहमरेअरिमित्रउदासी ५१ सबहिरामप्रियजेहिबिधिमोही प्रभुअशीशजनुतनुधरिसोही ५२ विप्रसहितपरिवारगोसाईं करहिंछोहसबरौरेहिनाईं ५३ जेनरगुरुआयसु अनुसरहीं तेजनुसकल बिभववशकरहीं ५४ मोहिंसमयहिजगभयउनदूजा सबपायउंरजपायनपूजा ५५ अबअभिलाषएकमनमोरे पूजहिनाथअनु-

विचारिकै कि कोई समययें सुन्दरघरी तिथि बार नक्षत्र योग लग्न शोधाइकै तनमें पुलकिकै मनमुदित ते गुरुनको सुनाइयेजाइ ( ४९ ) तब गुरुन को दण्डवत्करिकै राजाबोलतेभये हेमुनीश श्रीरामचन्द्र सबबिधिते सबलायकभये ( ५० ) सेवक सचिव और सकलपुरवासी अरु मोरे अरि कहे बिरोधी जे हैं कुटिलराजादिक अरु मित्र जे हैं अरु उदासी कही तपस्वीबिरक्त जे हैं ( ५१ ) इत्यादिकनको श्रीरामचन्द्र प्रियहैं जैसे मोको प्रिय हैं हे प्रभु जनु आपुके आशीर्वादकीमूर्त्ति श्रीरघुनाथजी हैं ( ५२ ) हे गोसाईंब्राह्मण जे हैं अरु हमारे परिवार सब रौरेहिकीनाईं छोह करते हैं ( ५३ ) हे मुनीश अब जस आपुकी आज्ञाहोइ तस मैं करौं काहेते जे नर गुरुनकी आज्ञाकरते हैं तिनकेलोक परलोकहुकी विभूति बशहोतिहै ( ५४ ) काहेते मैं प्रत्यक्ष देखतहौं आपुके पदरजपूजेते मेरे समान त्रैलोक्यमें कोई नहीं है काहेते कि मोको सर्व पदार्थप्राप्ति हैं ( ५५ ) हे नाथ अब एकअभिलाष है सो केवल तुम्हारे अनुग्रहते सबपूजिहि इहां तोरे पदआनन्दार्त्थ है ( ५६ ) तब राजाकीप्रसन्नता अरु सहजस्नेह देखिकै मुनि बोले कि हेराजन् जो अभिलाषहोइ सो कहहु ( ५७ ) दोहार्त्थ॥ हे राजन्राउरकरनाम तरुरूपहै दशरथ दशौदिशाहैं रथीके आधीन सारथी ताके आधीनरथ सर्वसंयुक्तरथ केवलसर्वदिशाहै तहां तीनिहुलोकमें एकदशरथैऐसेरथपर आरूढ़भये हैं जाते परमेश्वरपुरकेअभिलाषको जोफलहै सो तुम्हारो अनुगामी कही सेवकहै ( ५८ ) तहां गुरुनको सबप्रकारते प्रसन्नजानिकै राजा हर्षिकै आनन्दसे बोलतेभये ( ५९ ) हे नाथ श्रीरामचन्द्र

ग्रहतोरे ५६ मुनिप्रसन्नलखिसहजसनेहू कहेउनरेशरजायसुदेहू ५७ दो०॥ राजनराउरनामयशसबअभिमतदातार फलअनुगामि महीपमणिमनअभिलाषतुम्हार ५८ चौ०॥ सबबिधिगुरुप्रसन्नजियजानी बोल्यउराउहर्षिमृदुबानी ५९ नाथरामकरियेयुवराजू कहियकृपाकरिकरौंसमाजू ६० मोहिंअछतयहहोइउछाहू लहहिंलोगसबलोचनलाहू ६१ प्रभुप्रसादशिवसकलनिबाही यह लालसासकलमनमाहीं ६२ पुनिनशोचतनरहौकिजाऊ जेहिनहोयपाछेपछिताऊ ६३ सुनिमुनिदशरथबचनसोहाये मंगलमूल मोदमनभाये ६४ सुनुनृपजासुबिमुखपछिताही जासुभजनबिनुजरनिनजाही ६५ भयउतुम्हारतनयसोइस्वामी रामपुनीतप्रेमअनुगामी ६६ दो०॥ बेगिबिलम्बनकरियनृप साजियसकलसमाज सुदिनसुमंगलजबहितब रामहोहिंयुवराज ६७ चौ०॥ मुदित

को युवराजकरो जो आपुकी प्रसन्नताहोइ तौ मैं सरञ्जामकरौं ( ६० ) मेरे बिद्यमान यहउत्सवहोइ सबलोग लोचनके फललेहिं ( ६१ ) आपुके प्रसादते महादेव सबनिबाहै हैं अरु निबाहैंगे एक यही लालसा मनबिषेरही है सो कृपाकरिकै पूर्णकरौ ( ६२ ) यह बासनापूर्णहोइ पुनि चाहौ तनरहौ चाहौजाय जाते आगेपछिताव न रहै ( ६३ ) तब दशरथ

के मंगलमोदमय बचनसुनिकै मनमें बहुतआनन्दभयो है ( ६४ ) तब मुनीशबोले कि हे नृप जिनते बिमुखभये ते जीव पछिताते हैं जेहिके भजन बिनाजीवकीजरनि कही तीनिउतापैं नहींजाती हैं ( ६५ ) जो देव दानव मनुष्य इत्यादिक चराचरनकास्वामी सोई तुम्हारपुत्रभये हैं ऐसे श्रीरामचंद्रपुनीत प्रेमकेअनुगामी हैं ( ६६ ) दोहार्त्थ॥ तब हर्षिकै श्रीबशिष्ठजूबोले हे नृप अबबिलम्ब न करो राज्याभिषेककै शीघ्रतयारी करो शुभ दिन नक्षत्र योग लग्न इत्यादिक तब सबमंगल हैं जब श्रीरामचन्द्रके राज्यको तुम बिचारकीन किन्तु जब राज्यपर बैठहिंगे तहां जो कोईकहै कि बशिष्ठ तो सर्वज्ञ हैं श्रीरामचन्द्रको बनगमन जानते हैं राजाते हर्षिकै क्यों कहा है तहां जे जीव समर्त्थसर्वज्ञहैं तिनको परमेश्वरबिषे सर्वज्ञतानहीं है और सर्वबिषे सर्वज्ञहैं तहां यतनासंकेत बशिष्ठ कहीदीनहै कि रामराज्यहोई तबै मंगलहै पर जो परमेश्वर निर्विघ्न निबाहै तहां राजाकोसङ्कल्प गुरुआज्ञा श्रीरामचन्द्रराजा ह्वैचुके दोहाकेअर्त्थमें ( ६७ ) मुदित कही आनन्दते महीप दशरथमहाराज मन्दिरमें आवतेभये सेवकनकोअरु सुमन्तादि सचिव कही मंत्रिनको बोलावतेभये ( ६८ ) ते जयजीव

महीपतिमन्दिरआये सेवकसचिवसुमंतबोलाये ६८ कहिजयजीवशीशतिननाये भूपसुमंगलबचनसुनाये ६९ प्रमुदितमोहिं कह्यउगुरुआजू रामहिंराउदेहुयुवराजू ७० जोपाँचहिमतलागैनीका करहुहर्षिहियरामहिटीका ७१ मंत्रीमुदितसुनतप्रियबानी अभिमतबिरवपरेउजनुपानी ७२ बिनतीसचिवकरहिंकरजोरी जियहुजगतपतिवर्षकरोरी ७३ जगमंगलभलकाजबिचारा बेगिनाथनहिंलाइयबारा ७४ नृपहिमोदमनसचिवसुभाषा बढ़तबौरजनुलह्यउसुशाषा ७५ दो०॥ कह्यउभूपमुनिराजकरजोइजोइ आयसुहोइ रामराजअभिषेकहितबेगिकरियसोइसोइ ७६ चौ०॥ हर्षिमुनीशकह्यउमृदुबानी आनहुसकलसुतीरथपानी ७७ औषध

कहिकै आशीर्वाद देते हैं जयजीव कही सर्व जीवनके पालनकर्त्ताहौ किन्तु तुम बहुतदिन जियहु तुम्हारीजय सदाहोइ असकहिकै माथनवावतभये तब मंगलमय राजा बचनसुनावतेभये ( ६९ ) हे सुमन्त आजुआनन्दते गुरुन हमको आज्ञादीन्ह कि हे राजन् श्रीरामचन्द्रको युवराज पददेहु युवराजपदकही राजा आपुबिद्यमान पुत्रको राजदेइ ( ७० ) जोयहमत सबको नीकलागै तौ श्रीरामचन्द्रको तिलकदेहु ( ७१ ) राजाकै बाणी मंत्रिनसुन्यो जनु अभिमतकही बांछितबिरवाने उठतसन्ते अपनेअनुकूल जलपायो इहां यह अभिप्रायहै कि यहबासना आगेसुमन्तहुको उठीरहै ( ७२ ) करजोरिकै सचिव विनयकीन्ह हे जगत्पति तुम कोटिनबर्षजीवहु कोटिनकही सर्वकालबनेरहौ ( ७३ ) जो कार्य आपु बिचार कीन्हहै सो त्रैलोक्यमंगलकारी है सो अब शीघ्रकरिये ( ७४ ) तब सबकैसुबाणी सुनिकै परमानन्दभयो है जैसे सुष्टबेलिको बौंड़ा सुशाखापाइकै बाढ़तहै ( ७५ ) दोहार्त्थ॥ तब दशरथमहाराजबोले कि हेसुमन्तमुनिराज श्रीरामचन्द्रके अभिषेकहित जो जो आज्ञादेइँ सो बेगिहीसबकरो ( ७६ ) तब बशिष्ठजीने हर्षिकैकहा कि अभिषेकहित सर्वसुष्टतीर्त्थनके जलमँगाओ ( ७७ ) औषध औषधी मूलसंयुक्त अरु नानाप्रकारके फूल फल अरु अपरमंगलके पदार्त्थ औषधकही उत्तमअन्न औषधी कही बनस्पतिइत्यादिक ( ७८ ) चामर कही चमर अरु चर्म्मकही मृगसिंहचर्म्म अरु अनेकभांतिकेबस्त्र अरु रोमपट दुशाला बनात इत्यादिक अरु नानाप्रकारके पाटकेपट ( ७९ ) अरु अनेकजातिकेमणि अरु जहांतक मंगलकी बस्तु अनेक जो राज्याभिषेकके योग्य होहिं संपूर्ण मंगावहु ( ८० ) अरुवेदबिहिति अनेक बिधिबिधानकी बस्तु मंगावहु अरु पुरविषे विविधिप्र-

मूलफूलफलपाना कह्यउनामगनिमंगलनाना ७८ चामरचर्मबसनबहुभाँती रोमपाटपटअगणितजाती ७९ मणिगणमंगलबस्तु अनेका जोजगयोगभूपअभिषेका ८० बेदबिहितकहिसकलबिधाना कह्यउरचहुपुरबिबिधबिताना ८१ सफलरसालपुंगिफलकेरा रोपहुबीथिनपुरचहुँफेरा

८२ रचहुमंजुमणिचौकेचारू कह्यउबनावनबेगिबजारू ८३ पूजहुगणपतिकुलगुरुदेवा बहुबिधिकरहुभूमिसुरसेवा ८४ दो०॥ ध्वजपताकतोरणकलशसजहुतुरगरथनाग शिरधरिमुनिवरबचनसब निजनिजकाजहिलाग ८५ चौ०॥ जेहिमुनीशजोआयसुदीन्हा सोजनुकाजप्रथमतेइकीन्हा ८६ विप्रसाधुसुरपूजतराजा करतरामहितमंगलसाजा ८७ सुनत रामअभिषेकसुहावा बाजगहगहेअवधबधावा ८८ रामसीयतनसगुनजनाये फरकहिंमंगलअंगसुहाये ८९ पुलकिसप्रेमपरस्पर

कारके वितान रचहु ( ८१ ) अरु फल संयुक्त आंव सुपारी केरानारियर गलिनमें अरु पुरके चहुंपास आरोपण करहु ( ८२ ) अरु मंजुमणिनके चौके रचहु बजारनकी रचना सुन्दरिकरहु ( ८३ ) गणेश कुलगुरु देवता गुरुकहीश्रेष्ठतिनकहंपूजहु अरु बहुतप्रकारते ब्राह्मणनकी सेवाकरहु ( ८४ ) दोहार्थ॥ अरु ध्वजापताका तोरणकलश अरु तुरंगरथ नागकहीहाथी ये संपूर्ण सजहुजाइ मुनिके बचन शीशपरधरिकै निजंनिजकार्यबिषे लागतभये ( ८५ ) जोकुछ मुनीशने जिसेजो आज्ञादीन्ह सोकार्य जनुप्रथमहि कीन्होहै ( ८६ ) अरु बिप्रजो ब्राह्मणसाधु तिनकीपूजा श्रीदशरथ महाराजकरते हैं अरु श्री रामचन्द्रके राज्याभिषेककी जो बस्तुहै सो संपूर्णरामचन्द्रकेहितमंगलसाज साजतभये ( ८७ ) श्रीरामचन्द्रकेराज्याभिषेककी वार्त्तासुनिकै श्रीअवध में गम्भीर बधाई बाजतीहै ( ८८ ) रामसीय तनसगुन जनाये अरु रामजीकेतनबिषे सगुन जनावते हैं मंगलमय शुभग अंग फरकते हैं ( ८९ ) पुलकि सप्रेम तब श्रीरामचन्द्र जानकीते प्रेमसंयुक्त कहते हैं कि ये संपूर्ण सगुनभरतकर आगमन सूचितकरते हैं तहां यहअभिप्रायहै किहम चित्रकूटको जाहिंगे भरतजू आवहिंगे ( ९० ) तहां ननिआउर गये भरतको बहुतदिनबीतिगये याते श्रीरामचन्द्रके अवसेरि कही अति चिंताहै ताते सगुन की यह प्रतीतिहै कि प्रीतमसे भेंट होइ अभिप्राय कि प्रीतम जो मुनीश्वरहैं तिनते बनमें भेंटहोइगी ( ९१ ) अरु भरतके समान हमको जगत्में कोई नहींप्रियहै सो चित्रकूटमें मिलहिंगे सगुनकर फलयहहै दूसर नहीं है ( ९२ ) श्रीरामचन्द्रको भरतका शोच रातिदिनहै जैसे कमठकीसूरति अपने

कहहीं भरतआगमनसूचकअहहीं ९० भयउबहुतदिनअतिअवसेरी सगुनप्रतीतभेंटप्रियकेरी ९१ भरतसरिसप्रियकोजगमाहीं इहअसगुनफलदूसरनाहीं ९२ रामहिंबन्धुशोचदिनराती अंडनकमठहृदयजेहिभांती ९३ दो०॥ तेहिअवसरमंगलपरमसुनिहरषींरनिवास शोभितलखिबिधुबढ़तजिमि बारिधिबीचबिलास ९४ चौ०॥ प्रथमजाइज्यहिबचनसुनाये भूषणबसनभूरितिनपाये ९५ प्रेमपुलकतनमनअनुरागी मंगलकलशसजन सबलागी ९६ चौकैंचारुसुमित्रापूरी मनिमयबिबिधभांतिअतिरूरी ९७ आनँद मगनराममहतारी दियेदानबहुबिप्रहँकारी ९८ पूजिग्रामदेवीसुरनागा कह्यउबहोरिदेनबलिभागा ९९ ज्यहिबिधिहोइरामकल्यानू देहुदयाकरिसोबरदानू १०० गावहिंमंगलकोकिलबयनी बिधुबदनीमृगशावकनयनी १०१ दो० ॥ रामराज्यअभिषेक

अण्डनबिषे रहतिहै तहांयह धुनिहै कि हमारा चरित सुनिकै देखिकै किधौंभरतजी की दशा कैसी होइगी ( ९३ ) दोहार्थ॥ तेहिसमयबिषे परममंगल सुनिकै जानिकै माता हर्षित भई कैसे जैसे पूर्णचन्द्रमा देखिकै किधौंभरतजी की दशा कैसी होइगी ( ९३ ) दोहार्थ॥ तेहिसमयबिषे परममंगल सुनिकै जानिकै माता हर्षित भई कैसे जैसे पूर्णचन्द्रमा देखिकै समुद्रउमगतहै लहरि उठती है ( ९४ ) जिनप्रथम बचन सुनावा तिन भूषण बसन भूरिकही बहुतपाये ( ९५ ) प्रेमते पुलकिकै मंगल कलश अति अनुरागते सब साजती हैं ( ९६ ) तहां गजमुक्ता अरु बीचबीच और रंगन की मणि तिनकरिकै सुमित्राजी अनेक बिचित्रचौक अतिरुचिर कही अतिसुन्दर पुरावतीभई ( ९७ ) श्रीकौशल्याजी

अत्यानंदमें मग्न होइकै ब्राह्मणनको बोलाइकै दानदेतीभईं ( ९८ ) पुनि ग्रामकेदेवीनागतिनको पूजिकै मांगतीहैं हेदेवहु श्रीरामचन्द्रकर युवराजपद सिद्धिहोइ तौ हमतुमको बहुरिकही फेरिकै बलिदानदेहिंगे ( ९९ ) जेहिबिधि श्रीराचन्द्रकर कल्याणहोइ सोबरदान दयाकरिकैदेहु ( १०० ) बिधुबदनी जो हैं मृग शावक नयनी जोहैं सो सम्पूर्ण कोकिलाके समान गानकरतीहैं ( १०१ ) दोहार्थ॥ श्रीरामचन्द्रका अभिषेकसुनिकै नरनारि हर्षितभईं अरु तेहिके निमित्त विधिअनुकूलता बिचारिकै सम्पूर्णमङ्गल सजतेहैं ( १०२ ) तबराजा बशिष्ठको बोलावतेभये हे मुनीश श्रीरामचन्द्रको सिखापन देहुजाइ ( १०३ ) तहां बशिष्ठजू श्रीरामंदिरको जातभये गुरुकाआगमन सुनिकै श्रीरामचन्द्र द्वारबिषे दण्डवत्करत भयेजाइ ( १०४ ) सादर संयुक्त अर्घदेतसंते गृहबिषे ल्याइकै सुन्दरासन दैकै षोड़शो प्रकारकै पूजाकीन्ह ( १०५ ) पुनि श्रीजानकीजी संयुक्त मुनिकेचरण गहिकै श्रीरामचन्द्र कमलकरजो-

सुनिहियहर्षेनरनारि लगेसुमंगलसजनसबबिधिअनुकूलबिचारि १०२ चौ०॥ तबनरनाहबशिष्ठबुलाये रामधामशिषदेनपठाये १०३ गुरुआगमनसुनतरघुनाथा द्वारआइपदनायउमाथा १०४ सादरअरघदेइगृहआने षोड़शभांतिपूजिसनमाने १०५ गहेचरण सियसहितबहोरी बोलेरामकमलकरजोरी १०६ सेवकसदनस्वामिआगमनू मंगलमूलअमंगलदमनू १०७ तदपिउचितजनबोलिसप्रीति पठइयकाजनाथअसिरीती १०८ प्रभुतातजिप्रभुकीनसनेहू भयोपुनीतआजुयहगेहू १०९ आयसुहोइसोकरियगोसाईं सेवकलहैस्वामिसेवकाईं ११० दो० ॥ सुनिसनेहसानेबचनमुनिरघुवरहिंप्रशंस रामकसनतुमकहहुअसहंसबंशअवतंस १११ चौ०॥ बरणिरामगुणशीलसुभाऊ बोलेपुलकिप्रेममुनिराऊ ११२ भूपसज्यउअभिषेकसमाजू चाहतदेनतुमहिंयुवराजू ११३ रामकर-

रिकै बोलतभये ( १०६ ) हेमुनीश आप इहां आगमनकीन सो बड़ी कृपाकीन काहेते कि जो स्वामीकोआगमन सेवकके सदनबिषे होइ तो मंगल कर मूलहै अमंगल कर दमनहै ( १०७ ) यद्यपि नीतितो अच्छीहोइ कि जनजो हौं मैं तिनको बोलाइपठइत जेहिकाजको आज्ञाकरित सो मैं करत्यउँ ( १०८ ) श्रीरामचन्द्रजी श्रीबशिष्ठजू सों कहतहैं कि हे प्रभु अपनीप्रभुता छोड़िके मेरे ऊपर स्नेह करिकै इहां आगमनकीन्ह यह गृह पवित्र भयो ( १०९ ) हे गोसाईं जो आज्ञाहोइ सो मैं करौं सेवकको इहै धर्म है ( ११० ) दोहार्थ॥ यह स्नेहमय बाणी सुनिकै मुनि श्रीरामचन्द्रकै बड़ाई कही प्रशंसा करिकै कहते हैं कि श्रीरामचन्द्र ब्रह्म ऐसीबात कसनकहहुकाहेते हंसकही सूर्यबंशके तुम अवतंस कही भूषणहौ ( १११ ) पुनिश्रीराम चन्द्रके स्वभावबर्णनकरज्ञानकरिकैपुलकिकेबोलतेभये ( ११२ ) हेश्रीरामचन्द्रभूपजो हैं राजातुम्हारे राज्यके अभिषेकहेतु अनेकसाज साज्यो है तुमको राजपद देनाचाहते हैं ( ११३ ) हे श्रीरामचन्द्र तुम आजसब प्रकारते संयमकरो जो यहकाज कुशल संयुक्त बिधातानिबाहै तौ भलीबातहै इहांयह अभिप्राय है कि हे श्रीरामचन्द्र तुम करोगो सोई होइगो ( ११४ ) तब श्रीबशिष्ठजी सिखदेइकै राजाके पासगये तब श्रीरामचन्द्रके हृदयमें बिस्मय होतभई तबभक्त बासल्य गुणकरिकै शोचकरतेभये ( ११५ ) देखौ तो हमसबभाई एकसंगै जन्मतभये भोजन बालकेलिशयन इत्यादिक एकहीसंग भयो है ( ११६ ) अरु कर्णबेध यज्ञोपवीत बिवाह इत्यादिक सब उत्साहसंगहीसंगभये हैं ( ११७ ) सूर्यबंशबिषे यह अनुचितहोत है कि बन्धु जो

हुसबसंयमआजू जोबिधिकुशलनिबाहहिंकाजू ११४ गुरुशिषदेइराउपहँआयउ रामहृदयअतिबिस्मयपायउ ११५ जनमेएक संगसबभाई भोजनशयनकेलिलरिकाई ११६ कर्णबेधउपबीतबिवाहू संगसंगसबभयोउछाहू ११७ बिमलवंशयहअनुचितएकू बंधुबिहाइबड़हिअभिषेकू

**११८ प्रभुसप्रेमपछितानिसोहाई हरतभक्तमनकैकुटिलाई ११९ दो०॥ त्यहिअवसरआयेलषणमगन प्रेमआनन्द सनमानेप्रियबचनकहि-रघुकुलकैरवचन्द १२० चौ०॥ बाजहिंबाजनबिबिधबिधाना पुरप्रमोदनहिंजाइबखाना १२१ भरतआगमनसकलमनावहिं आवहिंबेगिजनम-फलपावहिं १२२ हाटबाटघरगलीअथाई कहहिंपरस्परलोग लोगाई १२३**

भरतहैं तिनको बिहायकै हमको बड़ाजानिकै अभिषेक करतेहैं तहां बड़ेको तो अभिषेक उचितैहै पर भाईकेसूने यह अनुचितहै ( ११८ ) हेगरुड़ श्रीरामचन्द्रकर परमप्रेम संयुक्त पछिताव केवल भक्तनके मनकै कुटिलाई हरबेकेहेतुहै काहेते कि हम श्रीरामचन्द्रको भजते हैं श्रीरामचन्द्र हमारी सुधिनहींलेतेहैं यह कुटिलाई है तहां श्रीरामचन्द्र संचित प्रारब्धकेद्वारा भोगकरावतेहैं जामें परिणामशेष न रहै अरु क्रियमाणवत्मानमै साधारण साधुनकै भस्महोइजातहै तहाँ गोसाई श्रीतुलसीदास जनावतेहैं किअपने भक्तनकीसुधि श्रीरामचन्द्र यह प्रकारते करतेहैं कि आपनभक्तबिना राजाअंगीकार नहींकरते हैं ( ११९ ) दोहार्थ॥ ताहीसमयमें लक्ष्मणजीआवतेभये प्रेमकेआनन्दमें मग्नहैं तब प्रियबचनकहिकै श्रीरामचन्द्र सन्मानकरतेभये काहेते रघुकुलकैरवचन्द्रहैं ( १२० ) बिबिधबिधान बाजाबाजतेहैं पुरकर प्रमोदकही नहींजातहै ( १२१ ) पुरकेलोग भरतकरआगमन मनावते हैं कि जो यहि अवसरमें आइजाहिं तो भलेजन्मको फलपावहिंकही लेहिं ( १२२ ) हाटबाटगली अथाइनबिषे परस्पर नरनारी कहते हैं ( १२३ ) काल्हि लग्न केतिकबारहै जो हमारीअभिलाषा बिधातापूजिहि ( १२४ ) कनकसिंहासन पर सीताराम बिराजमानहोहिं तोहमारे चित्तको चेताकही चिन्तवनपूर्णहोइ ( १२५ ) सब पुरबासी कहते हैं कि काल्हिकबहोइहि अरु देवता कुचाली बिघ्नमनावतेहैं ( १२६ ) तिन देवतनको अयोध्याकी बधाई नहीं सोहाती है जैसे चोरको चांदनीरातिनहींभावैहै ( १२७ ) तब देवताशारदाको बोलाइकै पांयनपरिकै बिनती करते हैं ( १२८ ) दोहार्थ॥ हेमातुहमारिबड़िबिपत्तिबिलोकिकैसोउपायकरहुजाहिते श्रीरामचन्द्रबनकोजाहिं हमारोकार्यहोइ जबराक्षसनकोबधहोइ सो

**काल्हिलगनभलकेतिकबारा पूजहिंमनअभिलाषहमारा १२४ कनकसिंहासनसीयसमेता बैठहिंरामहोहिचितचेता १२५ सकलकहहिंकबहोइहिकाली बिघ्नमनावहिंदेवकुचाली १२६ तिनहिंसोहाइनअवधबधावा चोरहिचाँदनिरातिनभावा १२७ शारदबोलिबिनयसुरकरहीं बारहिंबारपांयलैपरहीं १२८ दो० ॥ बिपतिहमारिबिलोकिबड़ि मातुकरियसोइआजु रामजाहिंबन राज्यतजिहोइसकलसुरकाज १२९ चौ०॥ सुनिसुरबिनयठाढ़िपछिताती भयउसरोजबिपतिहिमराती १३० देखिदेवपुनिकरहिं निहोरी मातुतोहिंकछुनाहिनखोरी १३१ बिस्मयहर्षिरहितरघुराऊ तुमजानहुसबरामप्रभाऊ १३२ जीवकर्म्मसबदुखसुखभागी जाइयअवधदेवहितलागी १३३ बारबारगहिचरणसकोची चलीबिचारिबिबुधमतिपोची १३४ ऊंचनिवासनीचकरतूती देखिनसकहिंपराइबिभूती १३५ आगिलकाजबिचारिबहोरी करिहैंचाहकुशलकबिमोरी १३६ हर्षिहृदयदशरथपुरआई जनुग्रहदशा**

करहु ( १२९ ) शारदा जोहैं सोदेवतनकी बिनतीसुनिकर ठाढ़िपछितातिहैकि मैं अवध सरोजबनकी हिमरातिभइउँ ( १३० ) शारदाकी दशादेखिकै देवताकहतेहैं कि हे मातु तोरिखोरि एकउनहींहै ( १३१ ) काहेते कि श्रीरघुनाथजी बिस्मयहर्षते रहित हैं अरु तुम श्रीरघुनाथजीके स्वभावको जानतीहौ ( १३२ ) हेमातु जीवजो है कर्मकेबश दुःखसुखकोभागी है अरु श्रीरामचन्द्र तो परमेश्वरहैं ताते देवतनके हेतुलागि श्रीअयोध्याकोजाहु ( १३३ ) बारबार देवताशारदाके चरणगहिकै सकुचावतेभये तब शारदासंकोचकेबशहोइके देवतन्हैं मतिपोचीकही दुष्टजानिकैचलतभई ( १३४ ) देखिये तौ देवतनको निवास तो ऊंच है करतूति बड़ीनीचि अरु पराईबिभूति नहीं देखिसकतेहैं

( १३५ ) यह शारदा बिचारकीन कि आगिल काजकही यह कि श्रीरामचन्द्र बनकोजाहिंगे तो ब्राह्मण सन्तको कार्यहोइगो ताते कुशलकही पण्डित कबिजन मेरी चाहनाकही सराहनाकरहिंगे ( १३६ ) यह समुझिकै हृदयमें हर्षिकै दशरथपुरको आवतभई जनु कँपतग्रहकीदशा दुःखदायीआइके प्राप्तिभई है ( १३७ ) दोहार्थ॥ हे भरद्वाज मन्थरा नामे केकयी की चेरी तेहि को अयश की पेटारी कही अयश को भाजन करिकै मतिफेरिकै शारदाजाति भई ( १३८ ) तब मन्थरैं महल परचढ़िके नगरको बनाव देख्यो कि मंगलमोद बधाई बाजती है ( १३९ ) पुनि मन्थरा बाहेर निकसिकै लोगन से पूछती भई है कि नगरमें

दुसहदुखदाई १३७ दो०॥ नाममन्थरामन्दमतिचेरिकेकयीकेरि अयशपेटारीताहिकरि गईगिरामतिफेरि १३८ चौ०॥ दीखमन्थरानगरबनावा मंगलमंजुलबाजबधावा १३९ पूछ्यसिलोगनकाहउछाहू रामतिलकसुनिभाउरदाहू १४० करैबिचार कुबुद्धिकुचाली होइअकाजकवनबिधिकाली १४१ देखिलागिमधुकुटिलकिराती जिमिगँवतकइलेउँकेहिभांती १४२ भरतमातु पहँगइबिलखानी का अनमनिहसिकहअसरानी १४३ उतरदेइनहिंलेइउसासू नारिचरितकरिढारइआँसू १४४ हँसिकहैरानि गालबड़तोरे दीनलषणसिखअसमनमोरे १४५ तबहुंनबोलिचेरिबड़िपापिनि छांड़ैश्वासकारिजनुसांपिनि १४६ दो० ॥ सभय रानिकहकहसिकिनकुशलराममहिपाल भरतलषणरिपुदवनसुनिभाकुबरीउरशाल १४७ कतसिखहमहिंदेइकोउमाई गाल

आजका उत्सव है तहां रामतिलकसुनिकै हृदयमो दाहहोतभयो ( १४० ) तब मन्थरा कुबुद्धिनि बिचारतिहैकि काल्हि यहितिलककी अकाजकवनी तरहते होइ ( १४१ ) कैसे अकाजचाहतीहै जैसे किरातिनि माखिनकामधुलेबेको तकैहै ( १४२ ) तब बिलखाइकही शोचकरिकै केकयीके इहां जातिभई तब बिहँसिकैरानी बोलती अरु पूछतीभई कि तैं कसअनमनिहसि ( १४३ ) तब मन्थरा उत्तरनहींदेती है अरु उसांसलेती है स्त्रीके चरित करिकै आंशूढारती हैं ( १४४ ) तब रानीहँसिकैकह्यो कि तोको गालाढाढ़ीबहुत आवती है मेरेमनको असससमुझिपरतहै कि लक्ष्मणजू कछु सिखकही दण्डदीन है ( १४५ ) हे पार्वती तबहुं न बोली चेरि बड़िपापिनि श्वासछांड़तीहै जैसे कारीसांपिनि ( १४६ ) दोहार्थ॥ तब भयसंयुक्त रानीबोलती भई हे मन्थरा तैं कहति कसनहीं तैंसत्यकहु श्रीरामचन्द्र अरु राजा अरुभरत शतुहनकुशलहैं इतनीसुनिकै मन्थराकेशालकही दुःखहोतभयो ( १४७ ) इहां मन्थरा केकयीके बचनपर उत्तरदेती है अपनीउक्तिसे अपनीदीनता जनावतीहै जिससेरानी मोसेफेरिबूझैं इहां माईकही मंथरा की जोमाया करै तेहिको माईकही किंतु माईकही केकयीको बड़ाईदैकैकहतीहै हमको कोई काहेको सिखदेयकही दण्डदेइगो अरु हमकेहिकरबलपाइकैगाला कही गालाढाढ़ीकरब ( १४८ ) हेरानीरामहिंछांड़िकै आजुअवर केहिकरकुशलहै जिनको राजाकाल्हि राज्यदेहिंगे ( १४९ ) आजुकौशल्याको बिधाता दाहिनभयो है तिनकेसमानको है जिनके देखतहीको काहूको गर्बनहीं रहतहै ( १५० ) अबतुम पुरकी जोसम्पूर्णशोभा कसनाहीं देखतिहौ जोअवलोकिकैमोरमन क्षोभित होतभयो है इहां क्षोभकही मोहितभयो है अरु संदेहभयो है ( १५१ ) मंथराकहती है कि हेरानीतुम्हारे पूतभरत सो तोबिदे-

करबकेहिकरबलपाई १४८ रामहिंछाड़िकुशलकेहिआजू जिनहिंनरेशदेहिंयुवराजू १४९ भयोकौशलहिबिधिअतिदाहिन देखतगर्बरहतउरनाहिन १५० देखहुकसनजाइपुरशोभा जोअवलोकिमोरमनक्षोभा १५१ पूतबिदेशनशोचतुम्हारे जानतिहौ बशनाहहमारे १५२ नींदबहुतप्रियसेजतुराई

लखहुनभूपकपटचतुराई १५३ सुनिप्रियवचनमलिनमनजानी झुकीरानितबरहि अरगानी १५४ पुनिअसकबहुंकहसिघरफोरी तौधरिजीभकढ़ावोंतोरी १५५ दो०॥ कानेखोरेकूबरे कपटकुचालीजानि तिय

शमें हैं अरु तुम्हारे तनिको नहींशोचहै काहेते नाह जो राजादशरथ हैं तिनको अपनीबश जानतीहौ ( १५२ ) अरु पियकी सेजविषे तुराईकहीरजाई है अतिसुन्दरि कोमल तेहिपर तुमको निद्रा बहुतपियारिहै अरु भूपकेकपटकी चतुराई तुमनहीं जानतीहौ ( १५३ ) इहां मंथरारानीको तो प्रिय कहै है परतेहिबाणीके भीतर अतिप्रियहै अप्रिय बाणीसुनिकै कैकयीझुकतभई हाथचलावबे को तबचेरी अरगाइकै कही सिमिटिकै चुपह्वैरही तहां जबराजाको कपटीकह्यो तब रानीबिशेषते हाथचलावबे को झुकी ( १५४ ) पुनिकैकेयी बोली हेघरफोरी जो ऐसी बातफिरि कबहुंकहसि तौ धरिकै जीभकढ़ाइ डारोंगी ( १५५ ) दोहार्थ॥ सो यहशास्त्र कहते हैं किकाने अरु खोरे कही कोई अंगके हीनजे हैं अरु कुबरे जेहैं कपटकुचाली के घरजे हैं अरु तेहिबिषे स्त्री अरु चेरीकही टहलुई सो तेहिबिषे सबअवगुण हैं यतनाकहिकै भरतकीमाता मुसकातीभई काहेते कि अंतष्करणमें वाहिपरप्रीतिहै ऊपरतेअनीति सुनिकैकह्योहै बाह्यामर्षबाणीकही ( १५६ ) तबकैकयीबोली हे प्रियबादिनि तैं तो मोकोप्रियकही श्रीरामचन्द्रकेराज्याभिषेककी बार्त्ताकहैहै तो कीजोमैं शिषकहीरिसिआनिहुंहै सो तैंकछु अनुचितकहैहै सो अपनेमनमें शोचजनिमानसि तैं मोको बहुतप्रियहसि तोरे ऊपर मोरेसपनेहुं कोपनहींहै ( १५७ ) हे मन्थरा जो तैं कहेसि कि काल्हि श्रीरामचन्द्रकर तिलकहोइहि यह तोर कहा जो काल्हिपूरभयो तो सोई सुदिन सुमंगल दायकहै ( १५८ ) सुनु हे प्रिया हमारेरघुबंशकुलकी यहीरीतिहै कि ज्येष्ठपुत्र स्वामीहै अरु छोटसेवकहै ( १५९ ) हे आली जो काल्हि श्रीरामचन्द्रको तिलकहोइ तौ तोको मैं मनभावतबरदेऊंगी ( १६० ) अरु श्रीरामचन्द्रजू को तौ कोशल्याके समान सब माता सहजहिं प्रियहैं

विशेषिपुनिचेरिकहिभरतमातुमुसुकानि १५६ चौ०॥ प्रियवादिनिशिषदीन्हेउँतोहीं सपनेहुंतोपरकोपनमोहीं १५७ सुदिनसुमंगल दायकसोई तोरकहाफुरजेहिदिनहोई १५८ जेठस्वामिसेवकलघुभाई यहिदिनकरकुलरीतिबड़ाई १५९ रामतिलकजोसांचेहु काली देउँमांगुमनभावतआली १६० कौशल्यासमसबमहतारी रामहिंसहजसुभायपियारी १६१ मोपरकरहिंसनेहबिशेषी मैं करिप्रीतिपरिक्षादेखी १६२ सोबिधिजन्मदेइकरिछोहू होहिंरामसियपूतपतोहू १६३ प्राणतेअधिकरामप्रियमोरे तिनके तिलकक्षोभकसतोरे १६४ दो०॥ भरतशपथत्वहिंसत्यकहुपरिहरिकपटदुराउ हर्षसमयबिस्मयकरसिकारणमोहिंसुनाउ १६५

( १६१ ) अरु सबते मोपर विशेष स्नेहकरते हैं मैं प्रीतिकरिकै परीक्षालीनिहै ( १६२ ) जो यहिजगत् में बिधाता छोहकरिकै जन्मदेइ तौ सीताराम ऐसे पूतपतोहूदेइँ ( १६३ ) हे मन्थरा प्राणहुंते अधिक श्रीरामचन्द्रजी मोकोप्रियहैं तिनके तिलककोक्षोभ कही सन्देहशोक तोको कसभयो है ( १६४ ) दोहार्थ॥ हे मन्थरा तोको भरतकीशपथहै तैं सत्यकहु इहां हर्षकेसमयमें तैं बिस्मयकरति है सो यहिकरकारण तैं मोहिंको सुनाउ तहां कैकेयी भरतकी शपथकरावाहै कि कपटछोड़िकैकहु तहां मन्थरा सबकपट कहेउहै कि यह महाभगवत् अपराधभयो है तहां भरतजी श्रीरामानन्य तिनकरभक्त शत्रुहन तिनके दण्डदियेते अपराध शान्तभयो है अथवा भरतहेतु कपट कहेउहै ताते शन्तिभयो यहदुइ न होते तौ कोजानै काहोतो ( १६५ ) इहां सरस्वतीकी प्रेरणाते युक्तिकरिकै अति उक्तिकहती हैं जामेंरानीकेकहेवचन मन्दपरिजाइँ अरु मन्थराकीबाणीमें प्रतीतिआवै हेरानी एकहीबार कहेते सम्पूर्ण आशपूरी भई काहेते कि तुम कहेउ कि जो तैंदूसरीवात कहिहै तौ जीभकढ़ाइ डारिहौं ताते अब दूजीजीभ कहां पाऊं जाते तुमसे कहौं ( १६६ ) अरु हे माई कपार फोरबेयोग्य है काहेते जोरौरेको नीककहतके अनहित लागत है ( १६७ ) अरु जे कोई झूठको फुरकरिकै कहते हैं अरु फुरको झूठकरिकै कहते हैं सो

तुमकोप्रियलागतेहैं अरु जो हमसांचीकहती हैं आपको हितकारकरिकै सो आपुकोकरूलागती हैं हे माई ( १६८ ) अब हमहूं ठकुरस्वहातीकहब जामें तुम प्रसन्नहोहु चाहेनीकहोइ अरु चाहे बेकारहोइ अरु कीतौ रातिदिनमौनह्वैरहब ( १६९ ) अरु एकतौ विधातैं हमको कुरूपदीनहै पुनि परबशकियो हैताते बाचाशालकही जामें अवरकेबचन बाणसमानसुनै अरु सहिकैचुप ह्वैरहै तैसा सहतेबनैहै ऐसो बिधाता हमकोकीनहै ( १७० ) ताते हमकोकाहानिहै कालाभहै चाहै रामचन्द्रराजाहोहिं अरु चाहै भरतराजाहोहिं

एकहिबारआशसबपूजी अबकछुकहबजीभकरिदूजी १६६ फोरेयोगकपारअभागा भलोकहतदुखरौरेहिलागा १६७ कहइझूंठ फुरबातबनाई तेप्रियतुम्हहिंकरूमैंमाई १६८ हमहुंकहबअबठकुरस्वहाती नाहिंतमौनरहबदिनराती १६९ करिकुरूपबिधिपरबश कीन्हीं बाचाशालहमैंतिन्हदीन्ही १७० कोउनृपहोइहमहिंकाहानी चेरिछांड़िनकहाउबरानी १७१ जारैयोगसुभाउहमारा अनभलदेखिनजायतुम्हारा १७२ तातेकछुकबातअनुसारी क्षमबदेविबड़िचूकहमारी १७३ दो०॥ गूढ़कपटप्रियबचनसुनि तीय

हमचेरिछांड़िकै रानी न कहाउब ( १७१ ) ताते हमकाकरैं हमारो सुभावजारैयोग्यहै काहेते तुम्हाराअनभल हमसे नहींदेखिजातहै इहां लोकोक्ति बाणीमें मरमोक्तिबाणीकहिकै वृथाअर्त्थ को सत्यार्त्थ सिद्धिकरती है कपटसानिकै ( १७२ ) हे रानी तुम्हार अनहित हमसे नहीं देखिजाइ है ताते तुम्हारेहितकी कछुक अनुसार करिकैकहाहै हे देबि ताते हमारी बड़ीचूकमाफकरहु यामें यह अभिप्रायहै कि आगे बहुतकहनाहै काहेते पाखण्डी जे हैं ते अपनीबात बढ़िकैकहते हैं जामें अगिलाको बड़ीबात में प्रतीतिपरैयह अतिछलोक्तिबाणी कहावे है ( १७३ ) दोहार्त्थ॥ गूढ़ कपटबाणीकही प्रियबाणी में कपटछाया है जे कोई स्थूलबुद्धि हैं ते ऊपरकी रंजितबाणीसुनिकै खुशीहोते हैं अरु उसकीबाणीमें अवान्तरकपट सो परिणाममें दुःखदेते हैं सो समुझिबेको महीनबुद्धि चाहिये यह गूढ़ोक्ति अलङ्कारहैतहां कैकेयी मन्थराकेकपटको तो समुझेउनहींहै अरु ऊपरकीप्रियबाणी सीधीजानतभई काहेते कि स्त्रीकीजाति दुर्बुद्धीअरु सुरमायाकीप्रेरणाताते बैरिनिरूप जो मन्थरा ताको सुहृदमानिकै पतियातभई ( १७४ ) तब कैकेयी मन्थराते बारबार सहित आदरते पूछतिभई जैसे सेवरी कहीकिरातिनि तेहिकेगानते मृगी मोहितहोती है ( १७५ ) हे पार्वती जस भवितव्यता रही तस कैकेयीकीमति फिरतिभई तब चेरी जो है मन्थरारहसिकही हर्षितहोतिभई बड़ीफावीकही मन्थराकैघात कैकेयीपर मारने को सहीभई ( १७६ ) इहां बाक्यछलकरिकै कैकेयी को मारनाचाहती हैतब चेरीबोली तुम मोसोंपूछतिहौ अरु मैं कहतिकै डेरातिहौं काहेते कि तुम मोर घरफोरीनामधरयो है ( १७७ ) हे भरद्वाज अनेकछल गर्वितबचन बोलतीभई जैसे कोई सुन्दरमिठाई में बिषसानिकै खवावै तैसे मन्थराकी बाणी है कैकेयीपर तहां प्रतीतिसजिकै अच्छीतरह गढ़िकै छोलिकै अवधकै साढ़सातीरूप बचन बोलती भई साढ़साती कही शनीचरको

अधरबुधिरानि सुरमायाबशवैरिणीसुहृदजानिपतियानि १७४ चौ० ॥ सादरपुनिपुनिपूछतिवोही सवरीगानमृगीजनुमोही १७५ तसिमतिफिरीरहीजसिभावी रहसीचेरिघातबड़िफावी १७६ तुमपूंछौमैंकहतडेराऊं धरेउमोरघरफोरीनाऊं १७७ सजिप्रतीतिगढ़ि बहुबिधिछोली अवधसाढ़सातीजनुबोली १७८ प्रियसियरामकहातुमरानी रामहिंतुमप्रियसोफुरबानी १७९ रहे प्रथमदिनसोअबबीते समयफिरेरिपुहोहिंपिरीते १८० भानुकमलकुलपोषनहारा बिनुजलजारिकरैत्यहिछारा १८१ जरतुम्हारिचहसवतिउखारी

मूर्त्तिमान् करतिभई तहां जब शनिश्चरग्रह जीवनपर आवतेही चढ़तहैं तब साढ़ेसातबर्षरहत हैं प्रथमनेत्रपर पुनि उदरमें पुनि दोउचरणनमें तहां तीनिमहीना उतरत छः महीना निर्विघ्नरहत हैं अरु सातबर्ष दुःखरूप है तहां मन्थराके जनायेते कैकेयी दुइबरदान मांगेगी सो दूनौ शनैश्चर शनैश्चरी हैं इहां मन्थराकैबाणी चौदहबर्षको शनैश्चर

शनैश्चरीभई है ताते दूनौकरिकै चौदहबर्षकीग्रह अयोध्याबिषे चढ़तभई अरु दूनों को कारण मन्थराहोतिभई अयोध्याके नेत्रनते श्रीरामजी ओटहोतेभयेअरु अयोध्याके उदरते निकसिगये अरु पदकही मर्याद को तहां श्रीअयोध्याकी मर्याद श्रीरामचन्द्र हैं ते बनको जाहिंगे ऐसे कैकेयीकेबचन शनैश्चर शनैश्चरी हैं मन्थराकारणहै ऐसी मन्थराहै सो बोलतीभई ( १७८ ) हेरानी तुम जोकहा कि सीताराम मोकोबहुतप्रियहैं अरु तुम सीतारामकेबहुतप्रियहौ सो सत्य है फुरहै ( १७९ ) सो जो तुमकह्यउ सो प्रथमहिं दिनजोर हैं सो बीतिगये हैं हे रानी समयगयेते प्रीतमरिपु ह्वइजाते हैं ( १८० ) हे रानी तुमदेखहु भानु जो है सो कमलकेकुलको पोषणकरत है अरु जब जलनहींरहत तब ओहीसूर्य कमलको जारिडारतेहैं तैसेतुमराजाको बहुतप्रियहौ पर जब रामचन्द्र राज्यपर बैठहिंगे तब कौशल्या करिकै राजातुम्हारेबैरी ह्वइजाइंगे ( १८१ ) हे रानी तुम्हारी जो कौशल्यासवतिहै सो जड़उखारा चाहती है सो तुम उपायरूप बारीकरहुनामरूंधहु ( १८२ ) दोहार्थ॥ अरु तुमको अपने सोहागकेबलते शोचनहीं है काहेते कि राजाको अपनीबशजानतीहौ अरु राजा तो मुखकेमीठेहैं पर मनकेमलीनहैं अरु रौरेकर सहजसुभावहै यह जो मैं कहाहै सो तुम सत्यमानहुं ( १८३ ) हे रानी श्रीरामचन्द्रकीमाताबड़ी चतुरहै अरु गम्भीरहै यह बीचपायकै अपनीबातन कार्य्यको सँवारतभईहै ( १८४ ) कौनबीचपायकै सँवरतीभईहै कि राजाभरतको ननिआउरको पठावतभयोहै सो

**रूंधहुकरिउपायबरबारी १८२ दो० ॥ तुम्हैंनशोचसोहागबलनिजवशजानहुंराउ मनमलीनमुखमीठनृपराउरसरलसुभाउ १८३ चौ० ॥ चतुरगँभीररामहतारी बीचपाइनिजकाजसँवारी १८४ पठयेभूपभरतननिऔरे राममातुमतजानबरौरे १८५ राजहितुमपरप्रीतिविशेषी सवतिसुभावसकैनहिंदेखी १८६ रचिप्रपंचभूपहिंअपनाई रामतिलकहितलगनधराई १८७ सेवहिंसकलसवतिम्वहिंनीके गर्वितभरतमातुबलपीके १८८ सालतुम्हारकौशलहिमाई कपटचतुरनहिंहोतजनाई १८९ यहिकुलरीतिरामकहँटीका सबहिंस्वहाइ मोहिंसुठिनीका १९० आगिल-बातसमुझिदुखमोहीं देवदैवपुनिसोफलवोही १९१ दो० ॥ रचिपचिकोटिककुटिलपन कीन्हेसिकपट**

रामचन्द्रकी मातहिको मतहै यह रौरे नीकीप्रकारते जानब ( १८५ ) अरुराजाकी तुम्हारेऊपर अतिप्रीतिहै सवतिकर यह सुभावहै कि और केसुख नहींदेखिसकैहै ( १८६ ) कौशल्याजू बड़ीचतुरी हैं अनेक प्रपञ्चकरिकैतब राजाको अपनेबशकीन तब राजारामचन्द्रके तिलकहेतु लग्नधराईहै ( १८७ ) यामें का हेतुहै कि जाते भरतकी माता राजाकेबलते बहुतगर्बितहै जब श्रीरामचन्द्रकर तिलकहोई तब भरतकी माता हमारेबशहोइ जाइ हमारीसेवाकरै कौशल्याजू यह बिचारकीन राजाको अपनेबश जोहै ( १८८ ) तहां तुम्हारआदर राजाकेजानिकै कौशल्याके शालहोतहै अरु परमचतुरहै ताते जनाईनहींपरतहै ( १८९ ) तुम जो कह्यउ कि हमारेकुलकी रीतिहै कि ज्येष्ठभ्राताको तिलकहोइ तहां जो सबको स्वहात है तो हमको सुठिनीकहै ( १९० ) तहां आगिलिबात समुझिकै मोकोदुखहोतहैताते हे दैव जेहिकौशल्यैने कैकेयीको अनभलताकाहै सो उहैफलकौशल्या कौ उलटिकैहोइ हे बिधाता तहां मन्थराके बचनमें आगेद्वौदिशिकलहीअभिप्रायहै यहकहती है भरतकै राज्यहोइजाते कैकेयीकोसुख अरु कौशल्याको दुखहोइ तहां द्वौदिशि दुःखभयोहै तहां कैकेयी सम्मतमें असहोतहै ( १९१ ) दोहार्थ॥ हेपार्वती रचिके पचिकेतर्क बढ़ाइकोटिनि कुटिलपनकरिकै अपनेबचनमें रानीको प्रबोध करती भई पुनि सरस्वतीकी प्रेरणाते सैकरन सवतिनकी कथा शास्त्र प्रमाणसे कहतींभई जेहिप्रकारते बिरोधबाढ़ै ( १९२ ) हे पार्वती भावीकेबश मन्थराके बचनमें प्रतीतिआवतीभई तब रानी पूंछिकै शपथ देवावतीभई ( १९३ ) हे रानी तुम का पूंछती हौ अजहूं नहीं जानती हौ निज कही आपनहित अनहितपशु पहिचानते हैं ( १९४ ) हे रानी देखौ तौ राज्य का सरञ्जाम सजत पन्द्रह दिन भयउ है अरु तुम मोसों आजु सुधि पाई है देखिये तौ देवमायाकेवश मन्थरा येती गूढ़कहती है कि पन्द्रहदिन श्रीराम राजहेतु

**प्रबोध कहेसिकथाशतसवतिकैजेहिबिधिबाढ़बिरोध १९२ चौ०॥ भावीवशप्रतीतिउरआईपूंछिरानिपुनिशपथदेवाई १९३ का पूछहुतुमअजहुनजाना निजहितअनहितपशुपहिचाना १९४ भयोपाषदिनसजतसमाजू तुमपाईसुधिमोंसनआजू १९५ खाइयपहिरियराजतुम्हारे सत्यकहेनहिंदोषहमारे १९६ जोअसत्यकछुकहबबनाई तौबिधिदेइहिहमहिंसजाई १९७ रामहिंतिलककालिजोभयऊ तुमकहँविपतिबीजविधिबयऊ १९८ रेखखँचायकहौंबलभाषीभामिनिभइउदूधकैमाषी १९९ जोसुतसहितकरौसेवकाईतौ**

साजसजतभयो है अरु राजाने एकहिदिन बिचारकीनहै पर सरस्वती करिकै मन्थराकीबाणी अर्थमयहै कि पक्षकेभीतर एकदिन है ( १९५ ) उत्साहमें यहकहिबेको बड़ापाप है पर यहकहेते हमको पापनहीं है काहेतेकि तुम्हारेराज्यमें खायपहिरि सम्पूर्णसुखकिये हैं ताते सत्यकहेते हमको कुछ दोषनहीं है ( १९६ ) अरु जो हम कछु बनायकै कहतिहोब तौ हमको बिधाता सजाइदेइगो यहिबात में जितनो मन्थरा छल करि कपट अरु असत्य मय बचन कहिआई है तेहिको फल बिधाता जरूरकै शत्रुहनकेहाथन देइगो ( १९७ ) अब मैं प्रण करिकै कहतिहौं कि जो कालि्ह श्रीरामचन्द्र को तिलकभयो तौ तुमको बिपतिका बीज विधाता बोइचुक्यउ है यहि बचनमें बिपर्य्यय करिकै सरस्वती अर्थ करती हैं न तो श्रीरामचन्द्रकर तिलकहोइहि अरु न भरत राज्यकरहिंगे अरु कैकेयीकोबिपत्तिका बीज विशेष बोइगयो ( १९८ ) अब मैं तीनिरेख खंचाइकै कहतिहौं हे भामिनि तुम दूधकी माखी भयउहै जैसे दूधमें माखीपरिकै मरिजाइपर उसमाखीको निकारिकै दूधपानकरिजाइहै तैसे तुम्हारबिगारहै अरु कौशिल्याजी को यशहोइगो ( १९९ ) अरु जो तुम सहितपुत्र कौशल्याजीकी दास्यटहलकरौ तौ अयोध्यामें परिरहौ नहीं तौ तुम्हारेरहिबे का और कछु उपाय नहीं है ( २०० ) दोहार्थ॥ तहां जैसे कद्रू बिनताकोदुखदीन है तैसेही कौशल्या तुमको दुखदेहिंगी नेवकही मंत्रको तातेयह तो कौशल्यैं मंत्रकीन है कि श्री रामचन्द्राजाहोहिं अरु लक्ष्मणजीराज्य के अधिकारीहोहिं अरु भरतजू बन्दीसेवहिं यह मंत्र कीनहैतहां कद्रूऔ बिनता यह दूनों कश्यपकी स्त्री हैं तहां कद्रू नागनकी माता है अरु बिनता गरुड़की माता है तहां एकसमयमें कछु बिनताते बादभयो तहां कद्रू बोली कि देखौ तौ चन्द्रमा श्यामहै अरु बिनताबोली चन्द्रमातौ प्रमाणहुं अरु प्रत्यक्षहूमेंश्वेतहै तहां दूनोंमें बादभयोहै कि जो हारै सो त्यहि की दासीहोय तब कद्रू अपनेपुत्रको आज्ञादीन तब सर्प्पन जाइकैचन्द्रमाको आच्छादनकीन तब चन्द्रमा श्यामदेखिपरयउहै तब बिनता

**घररहहुनआनउपाई २०० दो० ॥ कद्रूबिनतहिदीनदुखतुमहिंकौशलादेव भरतबंदिगृहसेइहहिंलषणरामकेनेव २०१ चौ०॥ केकयसुतासुनतकटुबानी कहिनसकतिकछुसहमिसुखानी १ तनपसेवकदलीजिमिकांपी कुबरीदसनजीहतबचांपी २ कहिकहि**

हारिकै बहुतक्कालताई दासी टहलकीन तब किसीकालमें गरुड़ अपनीमातासे पूंछतेभये कि हे मातु हम तुमको दुःखित देखते हैं तब माता सम्पूर्ण प्रसंग कहिगई तब गरुड़ सर्पनको भक्षणाकीनहै तब बिनताको उद्धार होतभयो है तैसे कपटसंयुक्त करिकै तुम्हारी कौशल्याकी रीति होइ चाहती हैं किन्तु सूर्यके घोड़ेबिषे बादभयोहै रीति येहूहै ( २०१ ) इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेअयोध्याकाण्डेमंथरावाक्येति प्रतिविज्ञोक्तिकैकेयीप्रतिवर्णनन्नामद्वितीयस्तरंगः२॥ :: ::

दोहा ॥ बचनमन्थराकपटकरितृतियतरंगबिषाद रामचरणकेकयीप्रतिनृपहठयुतसम्बाद ३ तबराजा केकयकीसुता कैकेयी मन्थरा की कपट बाणीसुनिकै सहमिकहीडरिकै सुखाइगई कछुकहिनहीं सकती है ( १ ) तब कैकेयी के तनमें पसेवचल्यो है अरु तनकम्पित भयो है जैसे पवन के बेग ते कदली तरु कम्पित होत है तबकुबरी अपने दांतनतर जीभ दाबती भई ( २ ) जीभदाबिके यह कहती भई कि हायहाय तुम काहे को शोच करती हौ तुमहींकोतो सुखहोइगो असकहिकै कोटिन कपटकी कहानी कहिकहि रानीको प्रबोध करती भई ( ३ ) हेगरुड़ कोटिन कपटककर कुपाठ पढ़ाइकै पोढ़करी दीन्ह्यसि जामें काहूको उपदेश न लागै जैसे उकठाकाठ नहीं नवै है ( ४ ) हे पार्बती कैकेयी के

सुकर्मकी गति फिरिगई है अरु कुचाल प्रियलागी है मन्थराको सराहती है जैसे मानसर की हंसिनिको बकुली सराहै है ( ५ ) हेमन्थरा तोरिबातफुरि है काहेते आजुकै और दिनते मेरे दाहिनअंग सब फरकतेहैं हे पार्वती कैकेयी सत्यैकहै है काहेते कि असगुन को फल आगे प्रत्यक्ष है ( ६ ) अरु दिनप्रति रात्रिविषे कुस्वप्नदेखतीहौं अपने मोहकेवशमैं तोको नहींजनायो है काहेते कि राजा मेरे बशहैं ( ७ ) हेसखि मैं काकरौं

कोटिककपटकहानी धीरजदेइप्रबोध्यसिरानी ३ कीन्हेसिकपटपढ़ाइकुपाठू जिमिननवैफिरिउकठाकाठू ४ फिराकर्मप्रियलागिकुचाली बकिहिसराहतिमानमराली ५ सुनुमंथराबातफुरितोरीदाहिनिआंखिनितफरकैमोरी ६ दिनप्रतिदेखौंरातिकुसपने कहौंनतोहिंमोहबशअपने ७ काहकरौंसखिसूधसुभाऊ दाहिनबामनजानौंकाऊ ८ दो० ॥ अपनेचलतनआजुलगि अनभलकाहुनकीनकेहिअघएकहिबारम्वहिं दैवदुसहदुखदीन ९ चौ०॥ नैहरजन्मभरबबरुजाई जियतनकरबसवतिस्यवकाई १० अरिवशदैव जिआवैताही मरणजीवतेहिनीकनचाही ११ दीनवचन-कहबहुबिधिरानी सुनिकुबरीतियमायाठानी १२ असकसकहहुमानमनऊनासुखस्वहागतुमकहँदिनदूना १३ जेइराउरअतिअनभलताका-स्वइपाइहियहफलपरिपाका १४ जबतेकुमतिसुनामैंस्वामिनि

सूधस्वभावते मोको दाहिन बाम नहीं समुझि परतो है काहेते अबजानिपर्‍यो है ( ८ ) दोहार्थ॥ हेसखी आजुताईं आपनबूतचलत हमकाहूको अनभलनहींकीन है कोजानै अपने कौनअपराधते आजुबिधाता एकहीबार दुसहदुखदेत है ( ९ ) तक कैकेयीबोलीहेमन्थरा बरुनैहरमें जन्मब्यतीत करब परजियततौ सवतिकी सेवकाई न करब ( १० ) काहेते कि अपनेबैरीके वशहोइकै जेहिको दैवजियावतहै तौ वहिजीवनते मरणभला है ( ११ ) हेभरद्वाज रानीकैकेयी अतिदीनबचन बोलतीभई तब कुबरीसुनिकै जैसीकछु स्त्रिनकीमाया है सो ठानीकही दृढ़करिकै कहतभई ( १२ ) तब मन्थरा छलमय बाणीते बोधकरती है सोबाणी कैकेईको यथार्थलागती है हेरानी तुम अससमुझिकै कसमनमें ऊनहो सन्देह मानती हौ तुमको तो दिनदिनप्रति दून सुख स्वहाग है ( १३ ) जेइकौशल्या ने राउरकर अति अनहित ताक्यउ है ते वही इहिफल को परिपाक कही दृढ़करिकै परिणाम में प्राप्ति होहिगी ( १४ ) हेस्वामिनि पक्षदिन भयउ जबतेमैंने यह कुमति सुनीहै तबतेमोको नतौ दिनमें भूंखलगै अरु नतौराति में निद्राआवै ( १५ ) हेरानी गुणीजे हैं ज्योतिषी तिनते मैं पूछ्यहै तिनरेखकही लीकखचाइकै कहाहै कि भरतराजाहोहिंगे सो यह सत्य है ( १६ ) हे भामिनि जोहमारकहा तुमकरौ तोहम उपायबतावैं काहेते कि राजातुम्हारी सेवाके वश हैं ( १७ ) दोहार्थ॥ तब कैकेयी कहती है कि हे सखी तोरे बचनपर कूपमेंपरौं अरु पूतपतिको त्यागिदेउं काहेते तैं मोरेपरमहितकीबातकहतिहै अरु हमाराबड़ादु:खदेखिकैकहतिहसि तोरकहा बिशेषिकै हमकस न करबदेखिये तो मन्थराकरकहासुनिकर कैकेयीने सङ्कल्पकीन कि कूपपरौंपूतपति त्यागिदेउं सो सत्यभयो है कैकेयी बिधवपनकूपमेंपरी

भूखनबासरनींदनयमिनि १५ पूछ्यउंगुणिनरेखतिनखांची भरतभुवालहोहिंयहसांची १६ भामिनिकहौंसोकरहुउपाऊ हैंतुम्हरीसेवाबशराऊ १७ दो० ॥ परौंकूपतुवबचनपरसकौंपूतपतित्यागि कहसिमोरदुखदेखिबड़कसनकरबहितलागि १८ चौ० ॥ कुबरीकर कचबलिकैकेयी कपटछुरीउरपाहनटेई १९ लखैनरानिनिकटदुखकैसे चरइहरिततृणबलिपशुजैसे २० सुनतबचनमृदुअंतकठोरी देतमनहुंमधुमाहुरघोरी २१ कहैचेरिसुधिअहैकिनाहीं भामिनिकह्यउकथाम्वहिंपाहीं २२ दुइबरदानभूपसनथाती मांगहुआजु

अरु पूतपतिको त्योगभयो है ( १८ ) हे पार्व्वती कैकेयी बलिभईहै तेहिकरकच कहीबार सोकूवरीने अपनेहाथमेंगह्यो है अरु कपट सोई छुरीहै उरपाहनमें टेवती है भरतकीराज्यहेतु कैकेयीकोकामना देवताऽर्थ बलिचढ़ावाचाहती है तहां फलअसिद्धहै अरु बिधवपन स्त्रीकोमरणहै ( १९ ) तहां निकटआइकै रिपुप्राप्तिभयो है अरु रानीनहींलखै है कैसेजैसे बलिचढ़ायबेको पशुआयो है ताको हरिततृणडारिदेइ सो खायजायहै अपनी मृत्यु न जानै तैसे मन्थराको बचन हरिततृणवत् है मन्थरा अरिहै कैकेयीबलिपशुहै मन्थराकेबचनमें अंतक्लेशहै ( २० ) तहां मंथराकोबचन सुनत सन्ते तौ कैकेयीकोमृदु अरु मधुर है पर अंतमेंकठोर अरु दुःखदाई है कैसे जैसे बराबरि मधु अरु माखनमिलेतेबिषहोइजातहै जो कोईखाइ तौ मरि जाइहै तहां मंथराको बचनमधुहै अरु भरतकीराज्य सो माखनहै तेहिकोबचनकैकेयीने सत्यमानिकैप्रतीतकियो है सोई खावहै किंतुमधुमाखन सो दूनों बरोबरि दूनोंबरदानहैं सो मन्थरैदीन कैकेयी आपुखातीहै अरु कैकेयीकोमरणबिधवपनहै सोई दशरथमहाराजको देइगी ( २१ ) तब चेरी जो है मन्थरा सो कहती है कि हे भामिनि म्वहिंसे एकबारबचन तुमकह्यउरहैसो सुधिहै कि नाहीं है तहां भामिनिकही प्रियबचन किन्तु हे दशरथ भामिनि किन्तु वहि स्त्रीको भामिनिकही जो बे प्रयोजन क्रोधकरै ( २२ ) हे रानी जो राजैं तुमको दूनोंबरदानदीन है सो तुम्हारी थाती है राजाके पास सो बरदानमांगिकै अपनीछाती जुड़ावहु देखिये तो मन्थराकी बाणीमें बिपर्यय अर्थहोतहै कि दूनोंबरदान मांगिकै छातीजुड़ावहु ( २३ ) एक बरदान यह मांगहु कि भरतको राज्यदेहु अरु दूसरबरदान मांगिकै श्रीरामचन्द्रको बनवास देहु असबरमांगिकै सवतिनकी मालिक तुमह्वइजाहु

जुड़ावहुछाती २३ सुतहिराजरामहिंबनबासू देहुलेहुसबसवतिहुलासू २४ भूपतिरामशपथजबकरई तबमांगेहुज्यहिबचननटरई २५ होइअकाजआजुनिशिबीते बचनमोरप्रियमानहुंजीते २६ दो०॥ बड़कुघातकरिपातकिनि कह्यसिकोपगृहजाहु काजसँवारेहु सजगहोइसहसाजनिपतियाहु २७ चौ० ॥ कुबरिहिरानिप्राणप्रियजानी बारबारबड़िबुद्धिबखानी २८ त्वहिंसमहितनमोरसंसारा बहे जातकहँभइसिअधारा २९ जोविधिपुरवमनोरथकाली करौंतोहिंचषपूतरिआली ३० बहुबिधिचेरीआदरदेई कोपभवनगवनीकैकेई ३१ विपतिबीजबरषाऋतुचेरी भुइँभइकुमतिकैकयीकेरी ३२ पाइकपटजलअंकुरजामा बरदोऊदलफलपरिनामा ३३ कोपस-

हुलासकही आनन्दते जो चाहौ सो देहुलेहु ( २४ ) पर हे रानी जब भूपति रामशपथकरहिं तब मांग्यहु जाते बचन न टरै ( २५ ) अरु जो आजु की रातिभरेमें यह कार्य न भयो तो अकाजह्वइजाइहि यह मेरोबचन परमहितजानहुं हृदयमेंधरहु ( २६ ) दोहार्थ॥ पातकिनि जो मन्थराहै बरु कुघातकरिकै रानीसे कहतभई कि तुमकोपगृहकोजाहु अरु सजगह्वइकैकार्य को सँवारयहु सहसाकही जलदी न पतियावहु ( २७ ) तब रानी कैकेयीने कुबरीको प्राणहुते प्रियजान्यो है अरु बारबार बड़िबुद्धि बखानतीभई ( २८ ) तोरेसमान हितकारी संसारमें मोको कोईनहीं है बहेजात संतेको मोकोअधार भइसिहै ( २९ ) हे आली जो मोरमनोरथ बिधाताकाल्हि पूर्णकरिहि तौ तोको आँखोंकीपुतरीकरोंगी देखिये तो जबअभाग्य आइकै प्राप्तिहोतिहै तब बेकारमें हितप्रतीतिहोती है अरु हितमें अनहितप्रतीतिहोती है ( ३० ) तब हे पार्बती बहुप्रकारते चेरीको आदरदेइकै कैकेयी कोपभवन को जातीभई ( ३१ ) हे गरुड़ कैकेयी की कुमति भूमिभई अरु बिपतिबीज भयो है अरु मन्थरा बर्षा ऋतुभई ( ३२ ) अरु चेरीके अन्तष्करणमें कपट सोई जल है अरु बिपतिबीजको अंकुरहै सो अज्ञान औ भरतकोराज्यहोई यह बासना जोहै अरु मन्थराकरिकै कैकेयीके मुखते जो दूनों बरदान निकसैंगे सोई दूनों दल हैं अरु कैकेयी जो अनेक दुर्बचनकहेगी सोई अनेक शाखा हैं अरु मन्थराके अनेक कल्पितबचन कैकेयी धारणकरिलीन्ह सोई पत्रहैं अरु सुखकी बासना सोईफूलहै अरु परिणाममें अनेकदुख सोईफलहै ( ३३ ) तहां कोपकर समाज सब साजिकै परिरही देखिये तो राजकरत है आपनिकुमतिते बिगोइकहीराज्यकर सुखछूटिगयोहै दुखभयोहै ( ३४ ) राउरकही राजाके मन्दिरको किंतु रावर राजाकोकही तिनको नगर श्रीअयोध्या तहां कोलाहलकहीआनन्दका शोरहोइरहा है नगरमें राजाके अरु महलमें यह कुचाल

माजसाजसजिसोई राजकरतनिजकुमतिबिगोई ३४ राउनगरकोलाहलहोई यहकुचालकछुजाननकोई ३५ दो० ॥ प्रमुदित पुरनरनारिसबकरहिंसुमंगलचार यकप्रविशहिंयकनिरगमैं भीरभूपदरबार ३६ चौ० ॥ बालसखासुनिहियहरषाहीं मिलिदशपांचरामपहँजाहीं ३७ प्रभुआदरहिंप्रेमपहिंचानी पूछहिंक्षेमकुशलमृदुबानी ३८ फिरहिंभवनप्रियआयसुपाई करतपरस्पररामबड़ाई ३९ कोरघुबीरसरिससंसारा शीलसनेहनिबाहनहारा ४० ज्यहिज्यहियोनिकर्मबशभ्रमहीं तहँतहँईशदेवयहहमहीं ४१ सेवक

कोईनहीं जानत है ( ३५ ) दोहार्थ॥ श्रीअयोध्या के सब पुरनरनारिप्रमुदित मङ्गलगानकरते हैं अरु द्वैमिलिकै समाइनहींसकैं हैं ताते एकै एक भूपके दरबारमें अनेकन प्रविशते हैं अरु अनेकन निर्गमयकहीनिकसते हैं भूपके द्वारमें महा मङ्गलमय भीरह्वैरही है ( ३६ ) यह सुनिकै कि भोर श्रीरघुनाथजीको तिलक होइहि तहां जे श्रीरघुनाथजीकेबालहीपनके सखादासते दशपाँच मिलिमिलि श्रीरामचन्द्रजीके समीप जाते हैं ( ३७ ) तब श्रीरामचन्द्र उनको प्रेमपहिचानिकै यथार्त्थ आदरकरते हैं अरु सबते कोमलबाणीते क्षेमकुशल पूछते हैं ( ३८ ) प्रिय जो श्रीरामचन्द्रहैं तिनकी प्रियबाणी आयसुपाइकै श्रीरामचन्द्रकै बड़ाई परस्परकरतसन्ते भवनको फिरते हैं ( ३९ ) यहकहते हैं कि श्रीरामरघुबीरके सरिस यहिजगत्में शील स्नेहको निवाहनहारको है ( ४० ) जहां जहांकर्म्मकेबश हमजन्मैं तहां ईश हमको येहीदेहिं ( ४१ ) हमसब सदासेवक रहैं अरु सीतानाथ स्वामीरहैं हे ईश यहिओर इहै निर्व्वाहदेहु ( ४२ ) यह लालसालाभमें सब अयोध्याबासी मगनहैं अरु केकयसुता कैकेयी त्यहिके हृदयमें अतिदाहहै ( ४३ ) हे गरुड़ कुसङ्गति पाइकै को नहींनसात सबनसाइजाते हैं नीचकरमलियेते कैसऊचतुराईहो तो नाशहोइजाती है श्लोक अध्यात्मे १ धीरोऽत्यन्तदयान्वितोपिसुगुणाचारान्वितोवाथवा नीतिज्ञोबिधवाददैशिकपरोबिद्याबिबेकोथवा दुष्टानामतिपापभावितधियां संगंसदाचेद्भवेत्तद्बुध्यापरिभावितौ ब्रजतिचेत्साम्येक्रमेनस्फुटं ( ४४ ) दोहार्त्थ॥ हेगरुड़ सन्ध्यासमयमें आनन्द संयुक्तराजा कैकेयीकेभवनमेंजातभये मानहुं निठुरताकेसमीप स्नेह देहधरिकैजातभयो है ( ४५ ) तब कैकेयीको कोपभवनमें सुनिकै राजाको भयवशते आगे पाउंनहींपरत

हमस्वामीसियनाहू देवईशयहओरनिबाहू ४२ यहलालसामगनसबकाहू केकयसुताहृदयअतिदाहू ४३ कोनकुसंगतिपाइ नशाई रहैननीचमतेचतुराई ४४ दो०॥ सांझसमयसानंदनृपगयौकैकेयीगेह गवननिठुरतानिकटकिय जनुधरिदेहसनेह ४५ चौ०॥ कोपभवनसुनिसकुचेउराऊ भयबशआगेपरैनपाऊ ४६ सुरपतिबसैबाहुबलजाके नरपतिसकलरहहिंरुखताके ४७ सोसुनितियरिसिगयोसुखाई देखहुकामप्रतापबड़ाई ४८ शूलकुलिशअसिअँगवनिहारे तेरतिनाथसुमनशरमारे ४९ सभयनरेशप्रियापहँगयऊ देखिदशादारुणदुखभयऊ ५० भूमिशयनपटमोटपुराना दियेडारिपटभूषणनाना ५१ कुमतिहिकसकुवेषताफावी अनअहिवातसूचजनुभावी ५२ जाइनिकटनृपकहमृदुबानी प्राणप्रियाकेहिहेतुरिसानी ५३ छं०॥ केहिहेतुरानिरिसानिपर-

है ( ४६ ) हे भरद्वाज देखिये तो ज्यहि श्रीदशरथमहाराजके बाहुबलतेइन्द्र आसनपरसुजितहै अरु सर्व्वद्वीपनकेराजा तिनकीरुखलखते हैं ( ४७ ) सो राजा स्त्रीकी रिससुनिकै सूखिगयोहै देखो तो यहकामके प्रतापकैबड़ाईहै ( ४८ ) हे भरद्वाज यहबड़ाआश्चर्य्य है कि जो श्रीदशरथ शूलकही शिवकोत्रिशूल अरु कुलिशकही इन्द्रकाबज्र असिकही यमराजकोखड्गकिन्तु बिष्णुको नन्दनखड्ग त्यहिके अँगवनिहारे त्यहिराजाको रतिनाथ सुमनशरमास्यउ बेधिगयउहै ( ४९ ) तब राजा भयसंयुक्त कैकेयीकेपासजातभयेहैं

कैकेयीकै दशादेखिकै राजाको दारुणदुःखभयो है ( ५० ) कैसे देखा कैकेयीको भूमिमें तो शयनहै पुरानमोटपहिरे है अरु अंग के अनेकहेममणिमय भूषण सो उतारिकै फेंकिदियो है ( ५१ ) हे पार्व्वती कुभांति जो कैकेयी है तेहिको यह कुबेषफावी कही कैसे अशोभित है जनुभावीजो है भवतव्यता अनअहिवातको सूचितकही जनावतीहै ( ५२ ) तबनिकट जायकै राजामृदुबाणी बोलतेभये हेप्राणप्रिया क्यहिहेत तैंरिसानिहसि ( ५३ ) छंदार्थ॥जब राजादशरथ कैकेयीके तनपर हाथपरसते हैं तब झिझिकारिदेती है भामिनि जो है कैकेयी मानहुं सरोष भुअंगिनिहै सोबिषमभांतिते निहारतिहै ( ५४ ) बरदानकी जो दुइबासनाहैं सोई दुइरसना हैं अरु जो प्रकटकरिकै दूनोंबरमागैंगी जामें अनेकक्क्लेशकेकारण हैं सोई दशनहैं मंथराकोबचनबिषहै राजाके डसबेको बिषम ठौर देखती है मर्म्म ठौर कही ज्यहि ठौरके काटेते नहीं जीवै है कोटिन यत्न कोई करै श्री गोसाईतुलसीदासजी कहते हैं कि यह काम कै कौतुक है इहां बिशेष भवतव्यता रामरजाय जानब ( ५५ ) दोहार्थ॥ तब बारबार राजाकहते हैं कि हे गजगामिनि हे सुमुखिसुलोचनि हे प्रियवचनि अपने कोप का

**सतपाणिपतिहिनिवारई मानहुंसरोषभुअंगभामिनि विषमभांतिनिहारई ५४ दोउबासनारसनादशनबर मर्मठाहरदेखई तुलसीनृपति भवतब्यताबश कामकौतुकलेखई ५५ दो०॥ सुमुखिसुलोचनिपिकबचनि बारबारकहराउ गजगामिनिनिजकोपकर कारणमोहिंसुनाउ ५६ चौ०॥ अनहिततोरप्रियाकेहिकीन्हा क्यहिदुइशिरचहयमपुरलीन्हा ५७ कहुकेहिरंकहिकरौंनरेशू कहुकेहिनृपहिंनिकासौंदेशू ५८ सकौंतोरअरिअमरौमारी कहाकीटबपुरेनरनारी ५९ जान्यसिमोरसुभावबरोरू मनतवआनँदचन्द्रच-**

कारण सुनाउ ( ५६ ) यह कामाशक्त प्रिय बाणी है हे प्रिया तोरअनहित क्यइंकीन्हहै क्यहिके दुइशीशहैं जाको यमलीनचाहते हैं दुइशिर कही हमते अधिक हमारदूसर कौनहै ( ५७ ) हे प्रिया कहुक्यहिरंककोनरेशकरौं अरु कहु क्यहिनरेशको देशतेनिकासिकै क्यहिदेशको पठाइदेउं निकासोकही दूरिकरिदेना पुनि सौकही सत्यसंकल्प राजैंकीनहै सौ दीपदेहरीशब्दहै पूर्व्वापर द्वौपदकोसिद्धिकरै है तहां यहिबाणीमें सरस्वती उलटिकै यहकरती है कि कैकेयीकेकहेते रंक तो नरेशनहींकियो राजा आपहि नरेशते रंकभयो है काहेते श्रीरामचन्द्रधन सो बनको जाहिंगे ताते राजारंकहोहिंगे धनकेदुःखते शरीरत्यागिदेहिंगे अरु श्रीरामचन्द्रको राजाराज्यदेइचुक्यो है सो राजा तो न भये अवधदेशते निकसिकै औरेदेशको गये देखिये तो सकाम सत्यसंकल्प उलटिकै राजाकेमाथे पर्य्योआइ तातेबिवेकते संकल्पकरी इहां तो केवल श्रीरामरजायहै ( ५८ ) हे प्रिय तोर अरि अमरौ मैं मारिसकतहौं अमरदेवता अरु नरनारि बापुरेकीटकी काबिसांतिहै तहां इहां मन्थराकेकहेते कैकेयीके अरि अमरराजैभये काहेते कैकेयीकेकहेते आपुही मरतभये अरु नरनारी अयोध्याबासी मेरे सरीखेभये ( ५९ ) अरु तैं मोरसुभावजानती है बरोरुकहीबरहै उरजेकर किंतु बरोरुकही जो कोऊठेढ़बोलै ताकोदंडदाता अरु तोसोंटेढ़बोलै ताको बिशेषमैं बरोरुहौं काहेते तोरेऊपर मोरि असिप्रीतिहै तोरमुखचन्द्रहै चषचकोर हैं ( ६० ) हेप्रियाप्राण जो है अरु मोरे सर्वस जो है अथवा सुत मेरेसर्वसहैं अरु परिजन प्रजाजन प्रियजन इत्यादिक सकल तोरे बशहैं ( ६१ ) देखिये तौ श्रीरघुनाथजीकी प्रेरणाते बे प्रयोजन राजा यह शपथ करतेहैंतिनकीशत कही सौ शपथ करतहौं ( ६२ ) बिहँसि कही हँसिकै अपनी

**कोरू ६० प्रियाप्राणसुतसरबसमोरे परिजनप्रजासकलबशतोरे ६१ जोकछुकहौंकपटकरितोहीं भामिनिरामशपथशतमोहीं ६२ बिहँसिमांगुमनभावतिबाता भूषणसजहुमनोहरगाता ६३ घरीकुघरीसमुझिजियदेखू वेगिप्रियापरिहरियनिमेषू ६४ दो० ॥ यहसुनिमनगुनिशपथबड़ि बिहँसिउठीमतिमन्द भूषणसजतिबिलोकिमृग मनहुंकिराततिनिफंद ६५ चौ०॥ पुनिकहराउसुहृदजियजानी प्रेम पुलकिमृदुमंजुलबानी ६६**

**भामिनिभयोतोरमनभावा बाजगहगहेअनँदबधावा ६७ रामहिंदेहुंकाल्हियुवराजू सजहु सुलोचनिमंगल साजू ६८ दलकिउठ्यउसुनिहृदयकठोरा जनुछुइगयउपाकबरतोरा ६९ ऐसिउपीरबिहँसिउरगोई चोरनारिजिमिप्रकटनरोई ७०**

मनभावनी बातकोमांगु और मनोहरगातको आभूषणों से सजु ( ६३ ) हे प्रिये घरी कुघरीको समुझिकै कुबेषको त्यागिकै शृंगार करहु यह परदा की बात गर्भित है देखिये तो राजाको कामने अच्छी तरह बशकियो है ( ६४ ) दोहार्थ॥ हेपार्बती राजाकै बड़ीभारी शपथसुनिकै मनमें गुनतभई अब यहशपथ टरनेवाली नहींहै तब मन्दमति कैकेयी बिहँसिकैअंगमें भूषणसजैलगी मानहुंराजा मृगरूप ताको फँदाइकै मारबेहेतु किरातिनि जालसजति है तैसे भूषण कैकेयी साजतिहै ( ६५ ) तब राजै जानाकि सुहृदहै तब मृदुबाणीते प्रेमकरिकै बोलतेभये ( ६६ ) हेभामिनि आजुतोर मनभावा भयउ श्रीअयोध्यामें गहगह आनंदमय बधाई बाजती है ( ६७ ) हेसुलोचनि मंगलकै साजसजहु काल्हिमें श्रीरामचन्द्रको युवराज पदवी देउंगो युवराजकही जोराजा अपने विद्यमान पुत्रको राजदेइहै ( ६८ ) यहसुनिकै कैकेयीको हृदय दलकिउठेउहै जैसे पाकबर तोर छुयेतेशरीर दलकिउठै है काहेते कि जो मंथरै प्रथमकैकेयीते कहिराख्योहै सोईराजाके कहेते रामचन्द्रको युवराजपद सो सुनिकैकैकेयी को अधिक प्रतीतिभई ताते हृदयदलकि उठ्यउहै ( ६९ ) सो कैकेयी ऐसीपीर बिहँसिकै गोइकही छपाइ डार्‌यसिहै कैसे जैसे ग्रामबिषेचोरहै अरु वहिको कोई जानतनहीं है अरु कतहुंचोरी किह्यसि मारिगयो तब चोरकीनारी अपनेबचाव खातिर प्रकटकरिकै नहीं रोवती है परभीतर क्लेशभरि रह्योहै तैसेई कैकेयीके हृदयमें श्रीरामचन्द्रकै राज्यसुनिकै क्लेशभयो है अरु ऊपरसे बिहँसतिहै जातेराजा न जानहिं अपने वरदान मांगवेको कार्यसाधतिहै इहां कपटमय बिहँसबहै ( ७० ) तहां कैकेयीकै कपटकी चतुराई भूपनहीं लख्योहै काहेते कि मंथराजोगुरुहै त्यइँकुटिलपन कैकेयी की मतिको पढ़ाइदीन है किंतु कुटिलाई मयमंथराकैमति तेहिगुरुकी पढ़ाई कैकेयी है तातेराजानेनहीं जान्योहै ( ७१ ) यद्यपि राजानीतिमें निपुणहैं तदपि नारिकरचरितजो

**लखेउनभूपकपटकुटिलाई कोटिकुटिलमतिगुरूपढ़ाई ७१ यद्यपिनीतिनिपुणनरनाहू नारिचरितजलनिधिअवगाहू ७२ कपटसनेहबढ़ाइबहोरी बोलीबिहँसिनयनमुखमोरी ७३ दो०॥ मांगुमांगुपैकहहुपियकबहुंनदेहुनलेहु देनकह्यउबरदानदुइतेउपावत संदेहु ७४ चौ० ॥ जान्यउंमर्म्मराउहँसिकहई तुमहिंकोहाबपरमप्रियअहई ७५ थातीराखिनमाँग्यउकाऊ बिसरिगयोम्वहिंशुद्धस्वभाऊ ७६ झूठहिहमहिंदोषजनिदेहू दुइकेचारिमांगिकिनलेहू ७७ रघुकुलरीतिसदाचलिआई प्राणजाहिंबरुवचननजाई ७८**

अगाधजलधिहै तहां राजाकैसेजानैं ( ७२ ) पुनि हे भरद्वाज कपटकरस्नेहबढ़ाइकै नयनमुखमोरिकै कटाक्षकरिकै प्रियवचन बोलतिभई ( ७३ ) दोहार्त्थ॥ हे प्रिये मांगुमांगु तौ कहतहौ पर कबहुंनलेहु न देहु जो देहुतौ दैकेसुखलेहु काहेते दाता दानदैकै सुखपुण्यलेते हैं तहां तुम दुइ चार बारकहा कि जो चाहौ सो मांगहु तहां पूर्व्वही मोको दुइबरदानदेइकोकहिराख्यो है सोऊ पावतकै सन्देह मोकोदेखिपरतहै दोऊबरदान सम्प्रासुरके संगामबिषेपायो है किन्तु एकबर जब शनैश्चर दृष्टिदीनहै यह इतिहास प्रसिद्धहै ( ७४ ) तबराजा प्रीतिसंयुक्त हँसिकैबोले कि मैं तुम्हारमर्म जानतहौं तुमको कुहाब परमप्रिय है काहेते तुम कोहाइकै अपनेबिषे मोरिअतिप्रीति उपजावतीहौ ( ७५ ) हेप्रियतुमदूनोंबरदानतौ हमसेकबहुंनहीं मांग्यो थातीधरिराख्यो है अरु मोरस्वभाव शुद्ध भूलिगयोहै ( ७६ ) हे प्रियाहमको झूठइदोषनदेहु दुइबरदानके चारि मांगिलेहु ( ७७ ) देखियोतौ दैवीमायाते राजाकेस्वाभाविकै सत्यबाणीसे बचननिकसे हैं हे प्रिया हमारेरघुबंशकुलकी यह सहजहीरीतिहै कि वरुप्राणजायँपै बचननजायँ ( ७८ ) काहेते असत्यकेसमान और दूसर पापनहींहै कैसे जैसेकोटिन घुंघुचीबटोरै तौकापार्वतौं की समानहोयँ तैसे असत्यकहासो पापपर्बतहै अरु अपर पाप गुञ्जाहै ( ७९ ) सबसुकृतकरमूल सत्यबचन है यह

वेदपुराणनमें बिदित है बुधगाइगाइकहते हैं ( ८० ) अरुहेप्रियेत्यहिपर मैं श्रीरामचन्द्रकी शपथकीनिहै कैसे हैं रघुनाथजी सबसुकृतके अवधिकही मर्यादहैं ( ८१ ) हेगरुड़ राजाको बचन स्वाभाविकै दृढ़जानिकै तबकैकेयी बोली तहां कैकेयीको बचन बाजहैं द्वौबरदान बाजकेनेत्र हैं अरु कपटबाजकेकुलहहैं सो खोलैहै ऐसो बचनबोला चाहती है ( ८२ ) दोहार्थ॥ हेभरद्वाज भूपकर मनोरथ सुन्दबनहै अरु जो वहमनोरथ बिषयमेंसुखको अनमोदनहै सोईबिहंगहै अरु कैकेयीभिल्लिनि है अरु भयंकरबचनबाजछोड़ा चाहतहै ( ८३ ) हैप्राणपतिमेरेजीवकी

नहिंअसत्यसमपातकपुंजा गिरिसमहोहिंनकोटिकगुंजा ७९ सत्यमूलसमसुकृतसुहाये वेदपुराणबिदितबुधगाये ८० त्यहिपर रामशपथकरिआई सुकृतसनेहअवधिरघुराई ८१ बातदृढ़ायकुमतिहँसिबोली कपटबिहंगकुलहजनुखोली ८२ दो०॥ भूप मनोरथसुभगवन सुखसुबिहंगसमाज भिल्लिनिजिमिछांड़नचहति वचनभयंकरबाज ८३ चौ०॥ सुनहुप्राणपतिभावतजीका देहुएकबरभरतहिटीका ८४ मागौंदूसरबरकरजोरी पुरवहुनाथमनोरथमोरी ८५ तापसवेषविशेषउदासी चौदहबर्षरामबन-

भावनासुनहु भरतको राज्यदेहुएकबरदानयहदेहु ( ८४ ) पुनिकरजोरिकै दूसरबरमांगतिहौं हेनाथमोरमनोरथ पूर्णकरहु ( ८५ ) पुनिकैकेयीबोली कि रामचन्द्र तापसका वेषधरिकै अरु बिशेष उदासी उदासीकही मुनिवेषबिरक्तह्वैकै चौदहबर्ष बनसेवन करहिं कैकेयीके दुइबरदान मांगिबे का कौन अभिप्राय है बहुत है तहां रघुनाथजी की प्रेरणाभई कैकेयीबिषे दैवमायाकेद्वारह्वैकै कैकेयी के मनमेंआयोहै कि भरतजी राजाहोहिं तब मैं बहुत सुखी रहौंगी यह अभिप्राय प्रसिद्धहै अरु श्रीरामचन्द्र बन जाबेको मुनिवेषते यामें कौन प्रयोजनहै कि जो यहांरहैंगे किन्तु कोईदेश नगर में रहैंगे तो कछु भरतको राज्यमें उपाधिकरहिंगे ताते ग्रामरहित बनबास मांग्यो है अरु मुनिवेष क्योंकहा जातेराज्यकीबासना न उठै अरु चौदहबर्ष में राज्य को बंधेज बँधे है काहेते कि श्रीअयोध्याकी राज्यगदी चौदहौ भुवनकी है तातेचौदहबर्ष श्रीरामचन्द्र जानकीलक्ष्मण बनमेंरहैंगे तबताईं चौदहौ भुवनमें भरतकैराज्य अच्छीतरह होइगी इहां श्रीजानकी लक्ष्मणको तो बन नहींदीनहै तहां राज्यकेउपाधिके सम्बन्धमानिकै इनहूंके बनचलत संते कैकेयी मनमें सुखी भईहै यहप्रसङ्ग लौकिकोंमें प्रसिद्धहै पुनि परमार्थिक करिकै सरस्वतीकरिकै दूसर अर्थहै कि चतुर्दश बर्षमें चौदहौ भुवन सुखीहोहिंगे ( ८६ ) हेभरद्वाज कैकेयी केवचनइतनेमृदुलहैं जो कहतीहै कि हे नाथ हे प्राणप्रिय हेधर्मधुरन्धर अरु ताकेअवान्तर अग्निइवहै जैसेपाला केअन्तर अग्निजारै है देखिये तौ धर्मसूरीपर चढ़ाइकै मारि है सोसुनिकैराजाको शोचभयोहै जैसे शशि जो चन्द्रमा है तेहिकीकिरणि स्पर्श करत संते कोकीकही चकईचक बिकल ह्वैजाते हैं किन्तु कोककही कोकनद कमल ( ८७ ) हे भरद्वाज कैकेयीकेबचन सुनतसंते राजासहमिगयोहै कछु कहिनहींआवैहै जैसे लवाकही बटेरको बचनबाज है ( ८८ ) तब राजा दूनोंहाथ माथेकी बगलमेंधरिकै माथपकरिकै दोऊनेत्र मूंदिकै जनु शोच

बासी ८६ सुनिमृदुबचनभूपहियशोकू शशिकरछुवतबिकलजिमिकोकू ८७ सहमिगयउनहिंकछुकहिआवा जनुसचानबनझपटयउलावा ८८ माथेहाथमूंदिदोउलोचन तनधरिशोचलागजनुशोचन ८९ मोरमनोरथसुरतरुफूला फरतकरिणिजिमिहत्यउसमूला ९० अवधउजारिकीनकैकेयीदीन्हेसिअचलबिपतिकैनेई ९१ दो० ॥ कवनेअवसरकाभयउगयउनारिबिश्वास योगसिद्धिफलसमयजिमियतिहि-अविद्यानाश ९२ चौ०॥ यहिबिधिराउमनहिंमनझाषा देखिकुभांतिमनहिंमनमाषा ९३ भरतकिराउरपूतनहोहीं आन्यहु

तनधरिकै शोचकोकरत राजाअपने अन्तष्करणमें यह शोचकरते हैं कि देखिये तौ कालकीगति मोरमनोरथ कल्पवृक्षरूप सो फलतकहीरामराज्य को प्रारम्भरकतसंते करिणीकही हथिनीरूप कैकेयी त्यइंसमूल उखारिडार्‌यो है ( ९० ) कैकेयी अवधको उजारिकीन्ह्यसि अरु बिपत्तिकी अचल नेइदिहिसि ( ९१ ) दोहार्थ॥ देखिये तौ कौने अवसरमें का भयोहै नारिकर विश्वास तौ सदै अप्रमाण है पर आजुते बिशेषगयो जैसेयती जो हैं संन्यासी योगेश्वर योगसाधतसंते जब योगसिद्धिको समयभयो तब अविद्याप्राप्तभई योगभङ्गह्वैगयो तहां दशरथमहाराज मनमें बिचारकरतेहैं कि तैसे हमकोभयो स्त्रीकेप्रसंगतेरामराज्यको भंगभयो ( ९२ ) यहीप्रकारतेसमुझिकै राजा मनहीमन में झपते हैं तब राजाके कुभांतिदेखिकै कैकैयी कैजो कुमतिभई है तेहिकरिकै मषाइउठी है मषाइकही क्रोधसंचरितभयोहै ( ९३ ) तब कैकेयी बोलतीभई कि बरमांगतसंते तुमको दुःखभयो सो क्यहिकारण करिकै का भरत रौरेकेपुत्र न होहिं का मोललिह्यउ है अरुका मोहूको ब्यसाहि आन्योहै मैं ब्याहीनहींहौं ( ९४ ) जो मोरे बरमांगत सुनतसंते तुम्हारे बाणअस लागतभयो सो यह कैसा है प्रथमहिं सँभारिकैबचनकहि न बोल्यहु ( ९५ ) अब पछिताव काहेको करतहौ यहिकोउत्तर बरदानदेहु अरुकी नाहींकरिजाहु काहेते कि रघुबंशकुलकै सत्यसन्धकहीसत्यसंकल्प हैं तिनसेतुम श्रेष्ठहौ देखिये तौ कैकेयीराजाको सत्यसन्धकहिकै अपने बरदान को दृढ़करता है येतीचतुराई सरस्वतीकरिकै जानब ( ९६ ) हे राजन् बरदानदेनेकी कह्यउ तापर शोच न करहु बर न देहु अपनेबचन सत्यको छांड़िकै तुम अयशैलेहु ( ९७ ) अपने सत्यको सराहिकै बरदेइबेको कह्यउ असतुम जान्यहु कि मानहुं चबेना मांगिलेइहि

**मोलबेसाहिकिमोहीं ९४ जोसुनिशरसमलागतुम्हारे काहेनबोलहुबचनसँभारे ९५ देहुउतरुअबकहहुकिनाहीं सत्यसंधतुमरघुकुलमाहीं ९६ देनकह्यउबरजनिअबदेहू छांड़हुसत्य अयशजनिलेहू ९७ सत्यसराहिकह्यउबरदेना जान्यहुलेइहिमांगिचबेना ९८ शिविदधीचिबलिजोकछुभाषा तनधनतज्यउबचनप्रणराखा ९९ अतिकटुबचनकहतिकैकेयी मानहुंलोनजरेपरदेई १०० दो० ॥ धर्मधुरंधरधीरधरिनयनउधारेउराउ शिरधुनिलीनउसासअतिमारेसिमोहिंकुदाउ १०१ चौ०॥ आगेदीखजरतरिसभारी मनहुंरोषतरवारिउघारी १०२ मूठिकुबुद्धिधारनिठुराई धरिकुबरीखरसानबनाई १०३ लखीमहीपकरालकठोरा सत्यकिजीवनलेइहि**

चबेना कहीं लघु यह सब मर्मकीबातैं कहिकहि अपनोकाम सिद्धिकरै है ( ९८ ) हे राजन् काहेको शोचकरतेहौ तुम्हारी तौ महाराजनमें गिनती है तहां राजाशिवि अरु राजादधीचि अरु बलिने जो कछुकहाहै तिन सबोंने सत्यको नहींत्यागकीनहै अरु तनधन इत्यादिक सर्बसको त्याग कीन है पर बचनको नहींत्याग्यो है यह इतिहास भागवत्में प्रसिद्ध है ( ९९ ) हे पार्बती कैकेयी अतिकटुबाणी कहतीहै यामें प्रसिद्ध ब्यंग्य है मानहुं जरेपर लोन लगावती है ( १०० ) दोहार्थ॥ तहां महाराजदशरथजीधीरके धुरन्धर धीरजधरिकै नेत्रउघारतभये तब शिरधुनिकै उसासलीन यह बिचारकीन कि यहिपापिनि मोको कुदावमारा है ( १०१ ) तब दशरथमहाराज कैकेयी को आगेठाढ़े रिसतेभरी जरतीदेखतेभये मानहु रोष तरवारि उघारिकै ठाढ़िभई है ( १०२ ) रोषरूपी तरवारिकीमूठि कैकेयीकी कुबुद्धिहै अरु निठुरताधार है अरु कुबरीकैकुबुद्धि सोईसान है तहां मन्थराकी कुबुद्धिको कैकेयी अपने मनमें दृढ़करिकै धारणकरतभई तातेकैकेयी की निठुरता इहां धारणह्वैगईहै ( १०३ ) तहां महीप यह लखत भये कि यह मोरजीव लेइहि कि मोरजीव सत्यलेइहि काहेते कराल कठोर कैकेयीकी कुबुद्धि अति निठुराईहै ( १०४ ) तब राजा कठिनछाती करिकै बोलतेभये पर नम्रबाणी बिनयसंयुक्त सो विनयकैकेयीको नहींसोहातिहै ( १०५ ) हे प्रिया यह कुभांतिबचन कसकहतिहै भीरुकही स्त्री को हे भीरु मेरीप्रीति प्रतीति श्रीरामचन्द्रबिषे सो तैं प्रतीतिकरिकै हतेकिंतु मेरीप्रीति राज्याभिषेकबिषे सो तैं हते किंतु बामभीरुकही भयको तोर जो दूनोंबरदान सो सर्बभयदायक हैं त्यहिबिषे तैं प्रतीति मानिकैप्रीतिकरिकै मोको हततभइसि पुनि सामान्य अर्थ करते हैं हे भीरु मोरि

मोरा १०४ बोल्यउराउकठिनकरिछाती बैनसविनयनताहिसोहाती १०५ प्रियाबचनकसकहतिकुभांती भीरुप्रतीतिप्रीतिकरिहाती १०६ मोरेभरतरामदुइआंखी सत्यकहौंकरिशंकरसाखी १०७ अवशिदूतमैंपठउबप्राता अइहैंवेगिसुनतदोउभ्राता १०८ सुदिनशोधिसबसाजबनाई देहुंभरतकहँराजबड़ाई १०९ दो०॥ लोभनरामहिंराजकर बहुतभरतपरप्रीति मैंबड़छोटबिचारिजिय करत रह्यउंनृपनीति ११० चौ०॥ राम शपथशतकहहुंसुभाऊ राममातुकछुकह्यउनकाऊ १११ मैंसबकीनतोहिंबिनुपूंछे तातेप्रयउमनोरथछूंछे ११२ रिसपरिहरिअबमंगलसाजू कछुदिनगयेभरतयुवराजू ११३ एकहिबातमोहिंदुखलागा बरदूसरअसमंजसमांगा ११४

प्रीतिप्रतीति जो त्वहिंबिषेरही सो तैं अपनीओरसे नाशकियेहै तहां भीरुस्त्रीको संज्ञाप्रमाणहै श्लोकार्द्ध॥भीरुमात्येचसमत्रिबर्यय्द्वरतारकं ( १०६ ) हे प्रिया भरत औ श्रीरामचन्द्र मोरेदोऊआंखिहैं मैं यह सत्यकहतहौं त्यहिकर साखीशंकर हैं ( १०७ ) ताते अबतुम शांतहोहु अब प्रातःकालविषे मैं अवश्यकरिकै दूतपठाउब दूनोंभाइनको वेगकही शीघ्रही मैं बोलाइपठवोंगो ( १०८ ) तब सुदिन शोधिकै अरु सम्पूर्ण साजसाजिकै भरतको बनाइकही विशेषि राज्यऐश्वर्यबड़ाई देउँगो ( १०९ ) दोहार्थ॥ अरु श्रीरामचन्द्रको राज्यकालोभनहींहै भरत पर बिशेषप्रीतिहै अरु मैं तो छोट बड़ बिचारिकै राजनीति करतरह्यउँहै ( ११० ) अरु जो तुम्हारे मनमें यहकछु भ्रमभई कि कछु कौशल्याकर सम्मतहोइगो सो मैं श्रीरामचन्द्रकी शपथकरतहौं जो कौशल्याकर तनिकौ सम्मतहोइ ( १११ ) एकबातमोहिंसों नहींबनी कि मैं प्रथम तोसे पूंछिनहींलीन है ताते मोरमनोरथ छूंछ परिगयो है ( ११२ ) अब जो यह मैं कहां है सो रिसकोछोड़िकै सत्यमानिकै सम्पूर्ण मंगलकर साजसाजु अरु आपनो मंगलसाजु अरु भरत के राज्यको मंगलसाजु कछुदिनगये भरतआइजाइँगे तब युवराजपद देउँगो ( ११३ ) एकबातमें मोकोदुःखलागतहै जो दूसरबरदान मांग्यउ है तामें मोको असमञ्जस लागतहै ( ११४ ) यह बरदान तुममांग्यउ कि रामचन्द्र बनकोजाहिं यह समुझिकै मेरीछातीजरति है यह मैं तोसोंपूंछतहौं कि कवनरिसते यह परिहासकही मोरतिरस्कार करतिहसि कि और कवनीबातको सांचीकरतिहसि किंतु कवनीबातमें रिसिआइगइसि है कि कवनिउँबातकरिकै ईर्षामनमेंआईहै सो सब सांचीकहु ( ११५ ) सब तोश्रीरामचन्द्रको परमसाधु कहतेहैं अरु तैं ईर्षाकिहेहै सो क्रोधतजिकै श्री रामचन्द्रकर अपराधकहु ( ११६ ) अरु श्रीरामचन्द्र की सराहना तौ तुहूंकरति रहसिहै अरु बहुतस्नेह करतिरहति है आजुकौन अपराधते बन

अजहूंहृदयजरतत्यहिआँचा रिसपरिहासकिसांचहुसांचा ११५ कहुतजिरोषरामअपराधू सबकोउकहतरामसुठिसाधू ११६ तुहूंसराहहुकरहुसनेहू क्यहिअपराधआजुबनदेहू ११७ जासुस्वभावअरिहुअनुकूला सोकिमिकरहिंमातुप्रतिकूला ११८ दो०॥ प्रिया हासरिसपरिहरियमांगुबिचारिबिबेक ज्यहिदेखौंअबनयनभरिभरतराज्यअभिषेक ११९ चौ०॥ जियैमीनबरुबारिबिहीना मणिबिनुफणिकजियैदुखदीना १२० कहहुंसुभावनछलमनमाहीं जीवनमोररामबिनुनाहीं १२१ समुझिदेखुजियप्रियाप्रवीना

देबेको कहतिहसि ( ११७ ) जिन श्रीरामचन्द्रकर स्वभावअरिहुको अनुकूलहै तहां राजाकहते हैं कि हमारे जो अरि हैं राजाइत्यादिक तेऊ श्री रामचन्द्रके स्वभावकी बड़ाईकरते हैं किंतु श्रीरामचन्द्रके अरि राक्षस दानव तिनहुंपर श्रीरामचन्द्रकर स्वभाव अनुकूलहै काहेते कि तिनअरिनको बधिकै अन्तमें मोक्षदेते हैं यह सहजस्वभावहै ते श्रीरामचन्द्र मातातेकैसेप्रतिकूलहोहिंगे यह अभिप्राय पदकोअर्थहै ( ११८ ) दोहार्थ॥ हे प्रिया हास्यरसकोपरिहरिदेहु बिचारिकैबरमांगहु अविवेककोत्यागिदेहु जाते भरतकाराज्याभिषेक नेत्रनभरिदेखौं और जोबरमांगेहै तौनेकोसिद्धिकरैगी तौमेरेप्राण नहींरहैंगे ( ११९ ) बरु बिनाबारिते मीनजियै बरुबिनामणिकोसर्पदुखदीन ह्वैकैजियै

( १२० ) ताते मैं यह सहजस्वभावकरिकै कहतहौं अरुकछुकछलकरिकै नहींकहतहौं श्रीरामचन्द्रबिना मोरजीवननहींहै मैं यह सत्यकहतहौं सत्यजानु ( १२१ ) हे प्रिया प्रवीणह्वैकै समुझु मोरजीवन श्रीरामचन्द्रके दर्शनकरिकैहै ( १२२ ) यह अतिप्रिय सुन्दरबचन श्रीदशरथ महाराजके सुनिकै कैकेयीजरिउठीहै मानहुं अनलमें घृतकी आहुति परैहै ( १२३ ) तब कैकेयी हृदयमेंअतिक्रोधितह्वैकै बोलतीभई कि हे राजन् तुम अपनी चतुराई से कोटिन उपायकरो इहां तौ रौरे की माया नहींलगैगी देखियेतो भगवतमाया ऐसी विपर्यय करैहै रानी अपनी अज्ञानता राजाबिषे सिद्धि करैहै ( १२४ ) कितौ यह बरदेहु अरु कितौ नाहींकरिकै अयशलेहु मोको बहुत प्रपंच नहीं नीक लागत है ( १२५ ) अरु रामचन्द्रसाधुहैं अरु तुम साधुहौ अरुरामचन्द्र की माता भली हैं, यहसम्पूर्ण जगत् में प्रकटहै ( १२६ ) अरु जस कौशल्यैं मोरभलकीनहै तस मैं उनको परिपाकफल देउँगी जामें मेरीशाकारहै किन्तु कौ-

जीवनरामदरशआधीना १२२ सूनिमृदुबचनकुमतिजियजरई मनहुंअनलघृतआहुतिपरई १२३ कहहिकरहुकिनकोटिउपाया इहांनलागिहिराउरिमाया १२४ देहुकिलेहुअयशकरिनाहींमोहिंनबहुतप्रपंचस्वहाहीं १२५ रामसाधुतुमसाधुसयाने राममातुभलिसबपहिंचाने १२६ जसकौशलामोरभलताका तसफलदेउँउन्हैंकरिशाका १२७ दो०॥ होतप्रातमुनिवेषधरि जोनरामबनजाहिं मोरमरणराउरअयश नृपसमुझियमनमाहिं १२८ चौ०॥ असकहिकुमतिभईउठिठाढ़ी मानहुंरोषतरंगनिबाढ़ी १२९ पापपहारप्रकटभइसोई भरीक्रोधजलजाइनजोई १३० बरदोउकूलकठिनहठधारा भँवरकूबरीबचनप्रचारा १३१ ढाहतभूपरूपतरुमूला चलीविपतिवारिधिअनुकूला १३२ लखीनरेशबातसबसांची तियमिसुमीचशीशपरनांची १३३ गहिकरभूपनिकटबैठा-

शल्याके कर्त्तव्यकी शाकारहै शाकाकही साखीको किन्तु यशको ( १२७ ) दोहार्थ॥ हे राजन् श्रीरामचन्द्र प्रातःकाल होतसन्ते बनको न जाहिंगे तो मोरतो मरणहोइहि अरु रौरेकोअयश होइगो यहमनमें समुझिदेखौ हे नृप ( १२८ ) हेभरद्वाज असकहिकै कुमतिमय जो कैकेयीहै सो उठिकै ठाढ़िहोतीभई है मानहुं रोष की तरंगिणीकही नदी बाढ़ी है ( १२९ ) सोनदी कैकेयीके पापरूपी पर्वतसे प्रकटभई है त्यहिनदीमें कैकेयी का क्रोध रूप जल भरिरह्यो है जोई कही दरवा नहीं जात है ( १३० ) अरु त्यहिनदीको कूलकहीकिनारे दोऊबरदानहैं अरु कठिनजोहै सोई कठिनधारा है अरु कूबरीका बचनप्रचार कही विशेषकै भँवरउठती है ( १३१ ) तहांत्यहिनदी के किनारेपर भूपकररूप सोई तरुहै ताको ढाहतीहै कही गिरावती है अरु बिपत्तिरूपी बारिदकही समुद्र विशेषकै त्यहिके मिलबेको चली है ( १३२ ) तहां हे पार्वती यहिबातको नरेश सांचीजानतेभये हैं कि स्त्री के मिसुकरिकै मोरीमृत्यु मोरेशीशपर नाचतीभईहै ( १३३ ) तब कैकेयी की बांहधरिकै भूप अपनेनिकट बैठारतभये हैं यहकहतभये हैं कि हे प्रिया सूर्यवंश चन्दनकरबन त्यहिकेकाटिबेको कुठारी न होसि कहामानु ( १३४ ) राजाबोलतेभये कि जो मांगसि तौ मैं शीशउतारिदेउँ अरु श्रीरामचन्द्र के बिरहसे मोको न मारसि ( १३५ ) श्रीरामचन्द्रको तैं अयोध्यामें राखु येनकेन कोई भांति करिकै राखु नतु जन्मभरि छाती जरैगी किन्तु मैंतो मरिजाउँगो पर तोरीछाती जन्मभरिजरहिगी ( १३६ ) दोहार्थ॥ हे गरुड़ तबराजा बहुतकहिकरिकैथकिरहे कैकेयीनहींमानैहैतबराजाअ-

री जनिदिनकरकुलहोसिकुठारी १३४ मांगुमाथअबहींदेउँतोहीं रामविरहजनिमारेसिमोहीं १३५ राखुरामकहँज्यहित्यहिभांती नाहिंतौजरिहिजन्मभरिछाती १३६ दो०॥ देखीब्याधिअसाध्यनृपपरेउधरणिधुनिमाथ कहतपरमआरतबचन रामरामरघुनाथ १३७ चौ०

ब्याकुलराउशिथिलसबगाता करिणिकल्पतरुमनहुनितापा १३८ कंठ सूखमुखआवनबानी जनुपाठीनदीनबिनुपानी १३९ पुनिकहैकटुकठोरकैकेयी मनहुंपाछ्परमाहुरदेयी १४० जोअंतहुअसकरतबरह्यऊ मांगुमांगुपियक्यहिबलकह्यऊ १४१ दुइकिहोइँयकसंगभुवालू हँसबठठाइफुलाउबगालू १४२ दानिकहाउबअरुकृपणाई होहिंकिक्षेमकुशलरौताई १४३छां-

साध्यब्याधि जानिकै अपनेकरते अपनामाथधुनिकै पृथ्वीविषे गिरतभये परमआर्त्त बचन कहते हैं हेराम राम हेराम रघुनाथ यहकहत गिरिपरेहैं ( १३७ ) तब राजा सबप्रकारते बिकलहोतभये अरुसंपूर्णगातशिथिलह्वैजातभये मानहुं करिणि जो हथिनी है वह कल्पतरु निपातकरतभई है ( १३८ ) राजाको कण्ठसूखिजातभयो मानों पढ़िना मीन बिनाजलकेतैसे राजाहोतभयेहैं ( १३९ ) हेगरुड़ पुनि कैकेयी अतिकठोरबाणी बोलतीभई मानहुं शरीरबिषे कहूं मर्मस्थान में पाछिकै माहुर को फाहालगावती है ( १४० ) तब कैकेयी कहती है कि हे प्रिय जो अन्तहु तुम्हें यहकर्तब्यरही तो बरमांगु बरमांगु बारबार यह कवनेबलते कह्यउ ( १४१ ) हेभुवाल दुइपदार्थ एकहीबार नहीं होते हैं ठठाइकै हँसब अरु गालकोफुलाउब ( १४२ ) दानिकहावै अरु कृपणताकरै येदोनों नहींबनैं अरु राउतकही शूरको शूरको संग्रामबिषे चढ़िकै अरु क्षेमकुशलचाहै तो नहीं होत है किन्तु राउतकही चौधरी को सो रौताई करिकै अरु यमदूतनते क्षेमकुशलचाहै तहां क्षेमकुशलनहीं है तैसे तुम सत्यबादी कहावाचाहो अरु अपने सुखकी कुशलचाहो सो दोनों एकसंग नहींहोते हैं ( १४३ ) कितौबचनको छांड़हु कि धीर्य्यधरहु अबलाकीनाईं करुणा न करहु ( १४४ ) हे राजन् तुमतौ सत्यबादी पुरुषहौ अरु सत्य पुरुषनको तनतिय तनयअरु धनधामधरणी यह तृणकी समानहै ताते तनतनय इत्यादिकका तुम कोहेको शोचकरतेहो तुमतो सत्यबादी पुरुषहौ ( १४५ ) तहां कैकेयी धर्माध्यारोपणकरिकै राजाके शरीरबिषेबाण बिधिगये बचनकहतीहै हेराजन् दानदैकै पुनि फेरिमांगतेहो लोक अरु वेदकीलज्जाको त्यागिदीन तुमतहां सरस्वतीकरिकै अर्थसिद्धिहोत है कि श्रीरामचन्द्र के बनगमनते लोक

ड़हुबचनकिधीरजधरहू जनिअबलाइवकरुणाकरहू १४४ तनतियतनयधामधनधरणी सत्यसंधकहतृणसमबरणी १४५ ( दीन दानफिरिमांगहुराजा परिहरिलोकवेदकीलाजा ) १४६ दो०॥ मर्मबचनसुनिराउकह कछुकदोषनहिंतोर लाग्यउतोहिंपिशाच जिमि कालकहावतमोर १४७ चौ०॥ चहतनभरतभूपपदभोरे विधिबशकुमतिबसीउरतोरे १४८ सोसबमोरपापपरिणामू भयउकुठाहरज्यहिविधिबामू १४९ सुबशबसिहिफिरिअवधसुहाई सबविधिसुखदरामप्रभुताई १५० करिहैंसकलभाइस्यवकाई होइहितिहुंपुररामबड़ाई १५१ तोरकलंकमोरपछिताऊ मुयहुनमिटिहिनजाइहिकाऊ १५२ अबत्वहिंनीकलागुकरसोई लोचनओ

वेद मर्याद सिद्धिहोइगी तिनको तुम राखाचाहते हो ( १४६ ) दोहार्थ॥ तब यह मर्मबचनसुनिकै राजाबोलतेभये अब जो तोरे मनमानै सो कहु तोको पापरूपी पिशाचलाग्यो है अरु मेरोकाल तेरेहृदयमें प्रवेशकरिकै यहबचन कहावतहै ताते तोरदोषनहींहै ( १४७ ) हे पापिनि बिधिकही कर्म केबशते तोरेकुमतिबसी है अरु भरततो राज्यपदको भोरेकही भूलिहूकैनहींचाहते हैं ( १४८ ) तहां तोरदोषनहीं है मेरो कोई पूर्वजन्मकोपाप उदयभयोहै किंतु परिणामकही भविष्यपाप कछुहोनेरह्यो सो पर्बतमानबिषे उदयभयोहै जेहीकही तेहीअनुसूत जो बिधाता बिपर्ययकरिकै कुठाहर बातभयो है ( १४९ ) हे पापिनिसुनु आगे सुबशकही स्वेच्छित सबप्रकारते अयोध्याबसैगी आनन्दहोयँगे श्रीरामचन्द्रकै प्रभुताई तीनिहूं लोकमें शोभितहोइगी ( १५० ) अरु तीनिउँभाई सेवकाई करैंगे अरुतीनिहूंलोकमें श्रीरामचन्द्रकी बड़ाईहोइगी यह मैं सत्य कहतहौं ( १५१ ) पर तोरकलङ्कअरु

मोरपछिताव यह दूनौं तीनिहुंलोकमें अरु तीनिहुंकालमें काऊकही कबहूंनहीं मिटिहि ( १५२ ) अब जो तोको नीकलागै सो करुजाइ परतैं मेरे नेत्रन के ओटह्वैकै बैठुजाइ अब तैं मुख न देखाउ ( १५३ ) हे अभागिनि अब मैं तोसे करजोरिकै कहतहौं कि जबलगिमैंजियों तब लगिजनि कछु कहसि ( १५४ ) पुनि तैं बारबार पछितायगी अन्त बिषे तैं नाहरू कही नस चारिअंगुलके हेतु गऊबध करती है किंतुनाहरू कही खेतकै अंकुर एकग्रासगऊ कहूं लियो है त्यहिहेतु बधकरति है इहां राजा गऊ है अरु श्रीरामचन्द्र को राज्यको संकल्पमात्र भयो है सोई अंकुरभयो अरु राजाकैबासना मुखतेलेतसन्ते कैकेयी किसानिनिजीवमारती है अरु भरतकीराज्यकीचाहना सोई खेत है अरु तामें कैकेयी

टबैठुमुंहगोई १५३ जबलगिजिअउँकहउँकरजोरी तबलगिजनिकछुकहसिबहोरी १५४ पुनिपछितैहसिअंतअभागी मारसिगाइ नाहरूलागी १५५ दो०॥ परेउराउकहिकोटिबिधि काहेकरसिनिदान कपटसयानिनकहतिकछुजागतिमनहुंमशान १५६ चौ०॥ रामरामरटिबिकलभुवालू जनुबिनुपंखबिहंगबिहालू १५७ हृदयमनावभोरजनिहोऊ रामहिंजाइकहैजनिकोऊ १५८ उदयकरहु जनिरबिरबिकुलगुर अवधबिलोकिशूलहोइहिउर १५९ भूपप्रीतिकेकयिकठिनाई उभयअवधिविधिरचीबनाई १६० बिलपतनृपहिभयउभिनुसारा बीणाबेणुशंखध्वनिद्वारा १६१ पढ़हिंभाटगुणगावहिंगायक सुनतनृपहिंजनुलागतशायक १६२ मंगलसक

के सुखकीबासना सोई बीजसूखिजाइगो धर्म्म जलतेहीनहै ( १५५ ) दोहार्त्थ॥ हे पार्व्वती राजा कोटिप्रकारसे कही परे हैं कि अभागिनि तैं काहेको निदानकरतिहसि तहां कैकेयी कपटकीसयानि ते कछुकहतीनहींहै मानहुं मशानजागती है ( १५६ ) हे भरद्वाज भुवाल बिकलह्वैकै राम राम रटते हैं जैसे बिनापंखकोबिहंग बिकलहोतहै ( १५७ ) तहां हृदयमेंमनावते हैं कि हे विधाताभोर न होइ श्रीरामचन्द्रको बनजाबेको कोई न कहै ( १५८ ) हे रघुकुलकेगुरु रबितुमउदय न होउ नतु अयोध्याबिलोकिकै मोरे हृदयबिषे शूलहोइहि ( १५९ ) हे भरद्वाज भूपकैप्रीति श्रीरघुनाथ बिषे अरु कैकेयीकै कठिनाई यहिकालमें यह दूनौं बिधातैंने तौलिकै एकठाउंरच्योहै ( १६० ) हे पार्व्वती राजाको बिलापकरतसन्ते भोरहोतभयो है अरु राजमहलके दरवाजे पर बीणा बेणु अरु शंखध्वनि नौबतिबाजतीहै महामङ्गलहोत है अस तौ सदाहोत है पर राज्याभिषेकके समय कछु अधिक उत्सवहै ( १६१ ) तहां भाट विरदावली पढ़ते हैं अरु गुणीगण यशगानकरते हैं यहसुनिकै राजाकेहृदयबिषे बाणसरीखेलागते हैं ( १६२ ) तहां राजादशरथ को यह मंगल नहींस्वहातहै कैसे जैसे सहगामिनी कहीसती प्रीतमकर सङ्गदेतसन्ते तब वहिकोबिभूषण अरु भोजन लेशहूनहीं स्वहातहै ( १६३ ) हे भरद्वाज त्यहिनिशिबिषे काहूको नींदनहींपरी है काहेते कि श्रीरामचन्द्रके राज्याभिषेक दर्शनोत्सवकी सबको लालसाहै ( १६४ ) सब पुरवासियों के हृदयमें रात्रिभरि यहलालसाह्वैरही है कि हेसूर्य्य तुमशीघ्रउदयहोउ जाते श्रीरामचन्द्रके दर्शनउत्सव अतिआनन्दते करैं नामदेखैं ( १६५ ) श्रीरामचन्द्र श्रीजानकीको एकहीसंग शत्रुजयहाथीपर आरूढ़देखे कोटिनकाम रतिकीछबिको हरतसन्ते ( १६६ ) तहां

लसोहाहिंनकैसे सहगामिनिहिंबिभूषणजैसे १६३ त्यहिनिशिनींदपरीनहिंकाहू रामदरशलालसाउछाहू १६४ ( कबहिंउदयरबिहोहिंबिहाना देखबनयननकृपानिधाना १६५ गजआरूढ़रामसियसंगा शोभातनशतकोटिअनंगा १६६ करतमनोरथरैनिसिरानी प्रातप्रकटजागेमुनिज्ञानी ) १६७ दो०॥ द्वारभीरसेवकसचिवकहैंउदितर बिदेखि जागेअजहुंनअवधपति कारणकवनविशेषि १६८ चौ० ॥ पछिलेपहरभूपनितजागा आजुहमैंबड़अचरजलागा १६९ जाइसुमंतजगावहुजाई कीजियकाजरजायसुपाई १७० गयोसुमंततबराउरमाहीं देखिभयानकजातडेराहीं १७१ धायखायजनुजायनहेरा मानहुंबिपतिबिषादबसेरा १७२ पूंछतको

ऐसे मनोर्थ करतसन्ते रात्रीब्यतीतभई भोरहोतभयो है तब गुरु बशिष्ठजीपरमज्ञानमान प्राप्त:कालके समयविषे जागतभये हैं ( १६७ ) दोहार्थ॥ हे पार्व्वती द्वारबिषे सचिव सेवक जे हैं ते सबकहते हैं कि सूर्य्योदयभयोहै अरु राजा आजु नहींजागे सो यहबिशेष कौनकारण है यह बिचारिकै परस्पर कहते हैं ( १६८ ) देखिये तौ राजा पछिलेपहर नित्य जागतेरहे हैं ताते आजु अबहींताई नहीं जागे हैं यह बड़ा आश्चर्य्य है ( १६९ ) तब अपरमंत्रिन सुमन्ततेकहा कि राजाको जगावहुजाइ तब जो कछु राजाआज्ञादेहिं सो कार्य्यकरो ( १७० ) तब सुमन्त राउरकही मन्दिर जहां कैकेयी अरु राजारहैं तहांकोजातभये तहां मन्दिर भयानकलागै है जातकैडरतेहैं ( १७१ ) मन्दिर मानहुं धाइकैखाइलीन चाहत है मानहुं बिपति अरु बिषाद दूनोंबासकीन्हे है बिपतिकैकेयी है बिषादराजाहैं ( १७२ ) ज्यहिद्वारपालते सुमन्तपूछते हैं सो उत्तर नहींदेते हैं तब कैकेयी के भवनको सुमंत जातेभये ( १७३ ) तब सुमंत जयजीव कहिकै दण्डवतकरिकै बैठतभये हैं राजा कै दशादेखिकै कछु कहा नहींजातहै जयजीव कही चिरंजीवि अरु जयकही सबप्रकारते जयमान सर्वोत्कृष्ट सर्वोपरि अरु जयजीवकही सर्वोपरि जीवन के जयकही पालनकर्त्ता ( १७४ ) शोकते बिकल शरीरते बिवरण पृथ्वीमें परेहैं मानहुं कमलमूल परिहरिदियो है ( १७५ ) तहां सचिवसभीतकही भयकरिकै नाहींपूछिसकतहै तब अशुभतेभरी अरु शुभतेछूंछी ऐसी जो कैकेयी सो बोलतीभई ( १७६ ) दोहार्थ॥ हे सुमन्त राजाकोरातिभरि नींदनहींपरी है सो हेतु जगदीश ईश्वरजानै किंतु जगदीश श्रीरामचन्द्रके हेतु समुझिपरतहै जानाजातहै काहेते कि राजारामरामरटिकैभोरकीन्हहै कछु यहिबातको राजैंमर्मनहींकह्योहै यहां कैकेयी सब कपटै

**उनउत्तरदेई गेज्यहिभवनभूपकैकेयी १७३ कहिजयजीवबैठशिरनाई देखिभूपगतिगयोसुखाई १७४ शोकबिकलबिबरणमहिपरेऊ मानहुंकमलमूलपरिहरेऊ १७५ सचिवसभीतसकहिंनहिंपूंछी बोलीअशुभभरीशुभछूंछी १७६ दो०॥ परीनराजहिंनींदनिशि हेतुजानजगदीश रामरामरटिभोरकिय मर्मनकह्यउमहीश १७७ चौ०॥ आनहुरामहिंबेगिबोलाई समाचारतबपूछेहुआई १७८ चल्यउसुमंतराउरुखजानी लखीकुचालकीनकछुरानी १७९ शोकबिकलमगपरैनपाऊ रामहिंबोलिकहबकाराऊ १८० उरधरिधीरजगयोदुवारे पूछहिंसकलदेखिमनमारे १८१ समाधानकरिसोसबहीका गेज्यहिभवनभानुकुलटीका १८२ रामसुमंतहिआवतदेखा आदरकीन्हपितासमलेखा १८३ निरखिबदनकहिभूपरजाई रघुकुलदीपहिचल्यउल्यवाई १८४**

करिकै कहती है ( १७७ ) तब कैकेयी कहती है कि हे सुमन्त श्रीरामचन्द्र को बेगिकही शीघ्रबोलावहु तब सम्पूर्ण समाचार पूंछेहुआइ ( १७८ ) तब सुमन्त श्रीराजाको रुखजानिकै कौनिरुखजानिकै कि श्रीरामचन्द्रको देखिकैहठछोड़िदेइगी किंतु मोरिबिकलतादेखिकै रहिजाहिंगे श्रीरामचन्द्रजी अरु मैं भरिनेत्र देखौंगो किंतु जब मालिक न बोलइ कहतसंते तब कछुअपनीतरफते जानिपरो है यह जानिकै सुमन्त चलतेभये यह बिचारा कि रानीकछु कुचालकरतिभई ( १७९ ) शोचते बिकल हैं अरु मगबिषेपांवनहींपरतहै अरु यहबिचार करते हैं कि श्रीरामचन्द्रको बोलाइकै राजा का कहैंगे ( १८० ) तब धीरजधरिकै श्रीराजाकै दरवाजे पर जातभयेहैं अरु सम्पूर्ण मनमारेकही शोचसंयुक्त सुमन्तको देखिकै पूछते हैं ( १८१ ) तब सुमन्त सबकर समाधान करिकै जहां भानुकुलकेटीका श्रीरामचन्द्र तहांको जातेभये हैं ( १८२ ) तब श्रीरामचन्द्र सुमन्तको आवतदेखिकै पिताके समान आदर करतभये हैं ( १८३ ) तब सुमन्त श्रीरामचन्द्रकर बदनदेखिकै यह कहतभये हैं कि राजाकी रजाई है आपचलिये तब श्रीरामचन्द्रजी तुरन्तहि उठतभयेहैं तब रघुंबशकुलकेदीप जो श्रीरामचन्द्र तिनको सुमन्त लेवाइ ले चलतेभये हैं ( १८४ ) तहां श्रीरामचन्द्र सहज भूषण किये सुमन्तके संगजाते हैं सबलोग देखिकै सब जहां तहां बिलखावकहीदु:खहोतभयो ( १८५ ) दोहार्थ॥ तहां रघुबंशमणि श्रीरामचन्द्र राजाको देखतेभये जाइनिपट कुसाजसंयुक्त जानहुं बृद्धगजराज सिंहिनिको देखिकै सहमीकही डरिके गिरिपरग्यउहै ( १८६ ) राजाके अधरसूखिगये हैं अरु

रामकुभांतिसचिवसँगजाहीं देखिलोगजहँतहँबिलखाहीं १८५ दो०॥ जाइदीखरघुवंशमणिनरपतिनिपटकुसाज सहमिपरेउलखिसिंहिनिहिमनहुंवृद्धगजराज १८६ चौ०॥ सूखहिंअधरजरहिंसबअंगू मनहुंदीनमणिहीनभुअंगू १८७ सरुखसमीपदेखिकैकेयी मानहुंमीनघरीगणिलेई १८८ करुणामयमृदुरामसुभाऊ प्रथमदीखदुखसुनानकाऊ १८९ तदपिधीरधरिसमयबिचारी पूछामधुरबचनमहतारी १९० म्वहिंकहुमातु-तातदुखकारण करिययत्नजेहिहोहनिवारण १९१ सुनहुरामसबकारणयेहू राजहिंतुमपरबहुतसनेहू १९२ देनकहेनिमोहिदुइबरदाना माग्यउँजोकछुमोहिंसोहाना १९३ सोसुनिभयोभूपउरशोचू छोंड़िनसकहिं तुम्हारसकोचू १९४ दो० ॥ सुतसनेहइतबचनउतसंकटपरेउनरेशकर-हुतौआयसुधरहुशिरमेटहुकठिनकलेश १९५ चौ०॥ निधरकबैठि

सम्पूर्ण अंग जरिरह्यउहै मानहुं बिनामणिको भुअंग दीनहोइरह्योहै ( १८७ ) अरु श्रीरामचन्द्रको रोषसंयुक्त देखतेभये हैं मानहुं मृत्यु साइति गिनती है ( १८८ ) हेगरुड़ करुणामय कोमल श्रीरामचन्द्रकर सुभावहै यह महादुखप्रथम देखाहै अवरदुःख कबहूं सुन्यउनाहीं कि काहै ( १८९ ) तदपि श्रीरामचन्द्र धीर्य्यधरिकै समयबिचारिकै बोलतेभये कि हेमहतारी ( १९० ) हेमातपिताकेदुःखकर कारणकहु सो यत्नकरी जाते निवारणहोइ ( १९१ ) कैकेयी कहती है कि हे राम दुःखकर यह कारणहै कि राजाकरस्नेह तुम्हारे ऊपर बहुत है ( १९२ ) आगेराजैं माको दुइ बरदान देइको कहेरहैं सो जो मोरेमनमें मानासो बरदानमैं मांगाहै ( १९३ ) सो सुनिकै राजाके उरमें शोचहोतभयो है अब तुम्हारे संकोचते नहीं छांड़िसकते हैं ( १९४ ) दोहार्थ॥ तहां दुइबरदान मैं मांग्यउहै भरतकोराज्य अरु तुमको बनगमन सो बर मोको राजैदीनहै अब तुम्हारो तौ स्नेह अरु सत्यबचन दूनों राजा नहींछांड़िसकतेहैं ताते धर्म्मसंकटहै तहां जो राजाकरक्लेश मेटाचाहौ तौ राजाकाबचन शीशपर धरिकैकरहु कठिनक्लेशको मेटहु ( १९५ ) हे भरद्वाज कैकेयी निधरकहोइकै कटुवाणी कहतीहै जो सुनिकै कठिनता अकुलाइजाती हैं ( १९६ ) तहां कैकेयीकैजीभ सोई कमानहै अरु बचन बाणहैं अरु राजालक्ष्यकही मृदुलनिशानाहै तिनमें मारतीहै ( १९७ ) मानहुं उहै कठोरपन धनुषबिद्या सीखतहै बीररूपधरिकै ( १९८ ) सब प्रसङ्ग रघुपतिकोसुनावतिभई मानहुं निठुराई तनधरिकैकहतिहै ( १९९ ) भानुकुलकेभानु जो श्रीरामचन्द्र सो मनमें मुसुकातेहैं कि देखिये तौ मेरी

कहैकटुवानी सुनतकठिनताअतिअकुलानी १९६ जीभकमानबचनशरनाना मनहुंभूपमृदुलक्ष्यसमाना १९७ जनुकठोरपनधरेउशरीरासिखइधनुषविद्याबरबीरा १९८ सबप्रसंगरघुपतिहिसुनाई बैठिमनहुंतनधरिनिठुराई १९९ मनमुसुकाहिंभानुकूलभानू रामसहजआनन्दनिधानू २०० बोलेबचनबिगतसबदूषण मृदुमंजुलजनुबागबिभूषण २०१ सुनुजननीसोइसुतबड़भागी जोपितुमातुबचनअनुरागी २०२ तनयमातुपितुपोषणहारादुर्लभजननिसकलसंसारा २०३ दो० ॥ मुनिगणमिलनबिशेषबनसबहिभाँतिहितमोरतेहिपरपितुआयसुबहुरिसंमतजननीतोर २०४ चौ० भरतप्राणप्रियपावहिंराजूबिधिसबबिधिम्वहिंसन्मुखआजू २०५ जोनजाहुंवनऐसेहुकाजा

माया ऐसीप्रबलहै यह जानिकै मुसुकातेभये हैं काहेते श्रीरामचन्द्र आनन्दकेनिधान कही स्थान हैं ( २०० ) तब श्रीरामचन्द्र समस्त दूषणरहित बचनबोले मृदुबचन अरु मञ्जुल कही निर्म्मलबचन जनु बाग्नो सरस्वती त्यहिके बिभूषण कही शृंगार बचनबोले किन्तु बाग्कही बगैचा त्यहिके भूषण फूलअसबचनबोले परन्तु बाग् सरस्वती के विभूषण श्रीरामचन्द्र ते बचनबोले ( २०१ ) इहां श्रीरामचन्द्र वेदकीनीतिकहिकै कैकेयी के बचनको सिद्धकरते हैं अरु राजाको अभिप्राय जनाबते हैं कि हम बिशेष वनगमन

करैंगे तब श्रीरामचन्द्र कहते हैं कि हे जननी सो सुत बड़भागी है जो माता पिताकी आज्ञानुकूलकरै ( २०२ ) हे जननी जो पुत्रमाता पिताकर पोषण कही सेवाकरै सो ऐसोपुत्र संसारमें दुर्ल्लभ है सोई धन्य है ( २०३ ) दोहार्त्थ॥ तहां हे मातु बनबिषे मोको सबप्रकारतेआनन्दहै काहेते कि मुनिगणनकरशील औ मिलापहै अरु सत्संग है अरु हे मात तोर सम्मत मिलिकै पिताकी आज्ञाहै ताते बनबिषे सबप्रकारते मोरभलाहै ( २०४ ) अरु भरतजी तो मोको प्राणहुंते प्रियहैं तिनको जो राजा राज्यदेहिं तोमोको परमसुख उत्पन्नहोइ जो असहोइ तौ मैंजानौं कि बिधाता म्वहिंपर बहुत अनुकूल है ( २०५ ) हे मात जो ऐसे परमकार्य पाइकै बनको न जाउँ तौ साधुनकी समाजमें मेरीगनती मूढ़नमेंहोइगी यहां श्रीरामचन्द्र कहतेहैं जामें कैकेयी को आनन्दउत्पन्नहोइ अरु अपनो ऐश्वर्य्य छिपावते हैं ( २०६ ) हे मातु जे कोई प्राणी महामूर्ख हैं अरुकोई योगते कल्पतरुको प्राप्तिभयो अरु त्यहिकोत्यागिकै रेंडकोसेवनकरते हैं अरु तिनको कोई योगते कोई अमृतदेतेहैं सो अमृतकोत्यागिकै बिषकोमांगिलेतेहैं ( २०७ ) हे मातु तेऊ ऐसोसमय पायकै नहींचूकतेहैं जो समय मोको प्राप्तिभयोहै हे मातु तैं अपनेमनमें बिचारिकैदेखु ( २०८ ) यहबातमें तो मोको परमआनन्द होतभयोहै पर एकदुःख मोको राजाकी बिकलताको है ( २० )

**प्रथमगणियम्वहिंमूढ़समाजा २०६ सेवहिंरंडकल्पतरुत्यागी परिहरिअमियलेहिंबिषमांगी २०७ त्यउनपाइअससमयचुकाहींदेखुबिचारिमातुमनमाहीं २०८ अबमोकहँदुखएकबिशेषी निपटबिकलनरनायकदेखी २०९ थोरहिबातपितहिदुखभारी होतिप्रतीतिनम्वहिंमहतारी २१० राउधीरगुणउदधिअगाधू भाम्वहिंतेकछुबड़अपराधू २११ तातेम्वहिंनकहतकछुराऊ मोहिंशपथत्वहिं कहुसतिभाऊ २१२ दो०॥ सहजसरलरघुबरवचनकुमतिकुटिलकरिजान चलैजोंकजिमिबक्रगति यद्यपिसलिलसमान २१३**

हेमाता मेरे बनजाबेकी बात तौ राजाकेअल्प है अरुपिताको दुःखभारी मोको देखपरतहै ताते प्रतीति नहींहोतिहै कि मेरे वनजावेकोदुःख है राजाको तहां दुःखको कछुऔरमर्म्महै ( २१० ) श्रीरामचन्द्र कहते हैं कि हे मातु राजा तो धीरशील शन्ति शूरता दया उदार वैराग्य ज्ञान इत्यादिक गुणनकेसमुद्र राजाहैं ताते कछु मोसे बड़ाअपराधभयो है ताते राजाको यतनादुःखहै ( २११ ) मोरअपराध बहुतसमुझिकै ताते राजा मोसे नहींबोलतेहैं यह अतियुक्तिते वचन श्रीरामचन्द्रकहेहैं सो केवल कैकेयीके प्रसन्नहेतु मातु राजाके दुःखकोकारण तैं सतिभाउते कहु ( ११२ ) दोहार्त्थ॥ हे पार्व्वती श्रीरघुनाथजीकी सहजहि सरलसुभावबाणी जो है त्यहिकोसुनिकै कुटिलमयमति जो कैकेयी है ते देवमायाकीप्रेरणाते टेढ़िबाणी जानतीभई है अरु तेहिसरलवाणीमें कुटिल कपटभरीवाणी बोलाचाहती है जैसे जल शुद्धसरल है पर तेहिबिषे जोंक बक्र कही टेढ़िहीचलै है तहां देखिये तौ श्रीरामचन्द्र सबके नियन्ता अन्तर्य्यामी परमेश्वर सर्व्वज्ञ सर्व्वप्रेरक सर्व्वसाक्षी तिन श्रीरामचन्द्रते कपट चतुर बचन बोलती है यह बड़ाआश्चर्य्य है तहां यह सबरामरजायहै ( २१३ ) तब रानीजाना कि श्रीरामचन्द्र बनजावेकोबहुतप्रसन्नहैं तब रानी रहसिकही हृदय में हर्षितभई आपनकार्य्यसमुझि तब कपटसनेहबढ़ाइकै बोलतीभई ( २१४ ) हे राम मैं तुम्हारी शपथकरतिहौं अरु भरत कै आन कही दोहाईकरतिहौं राजाके दुःखको दूसरहेतु मैं नहीं जानतीहौं ( २१५ ) देखिये तो कैकेयी ऐसी सुधिते भगवत्मायाके बशहोइकै श्रीरघुनाथजीते कपटकी चतुराई करतीहै कि हे तात तुम अपराधयोग्यनहींहौ काहेते तुम जननीजनकके सुखदाताहौ यहबाणी यह पछलहै कि तुम बनकोजाहु तौ हम सुखीरहैंगे ( २१६ ) हे श्रीरामचन्द्र तुराकहतेहौसो सब सत्यकहतेहौ तुम्हारो सत्यसङ्कल्प है अरु तुम माता पिताके अ-

**चौ०॥ रहसीरानिरामरुखपाई बोलीकपटसनेहजनाई २१४ शपथतुम्हारिभरतकैआना हेतुनदूसरमैंकछुजाना २१५ तुमअपराधयोगनहिंताता जननीजनकबंधुसुखदाता २१६ रामसत्यसबजोकछुकहहू तुमपितुमातुबचनरतअहहू २१७ पितहिबुझाइकहहुबलिसोई चौथेपनजेहिअयशनहोई**

२१८ तुमसमसुवनसुकृतज्यहिदीन्हे उचितनतासुनिरादरकीन्हे २१९ लागहिकुमुखबचनशुभकैसे मगहगयादिकतीरथजैसे २२० रामहिमातुबचनसबभाये जिमिसुरसरिगतिसलिलसोहाये २२१ दो०॥ गइमुर्छारामहिसुमि-

नुकूलहौ यामें यहधुनिहै कि तुमहमारो और पिताको बचनमानिकै बनको जाहु ( २१७ ) हे तात मैं तुम्हारी बलिजाउं पिताको बुझाइकै तुम कहहु जामें चौथेपनमेंअयश न होइ इहां यहधुनिहै कि राजासे कहवाइकैआपु बनको तुरतजाहु ( २१८ ) हे तात तुम्हैंअससुअन कही पुत्र जेहि सुकृतते तुमप्राप्तिभयो है तेहि सुकृतको अरु तुम्हारे निरादर करना उचितनहीं है यहवाणीव्यंग्यहै कि तुम राजाते यहकहहु कि हमको आज्ञा देहु हमबनकोजाहिं तेहिबचनको राजामानिकै आज्ञा देहिं इहां कैकेयीकोबचनकैसे है जैसे इन्द्रारुणिकोफलहै देखतसन्ते तौ सुन्दरहै अरु भीतर कटुभरेहैं ( २१९ ) तहां कैकेयीके कुमुखबचन श्रीरामचन्द्र बिषे लागिकैशुभहोइजाते हैं कैसे जैसे मगहरूपहै अरु बचन श्रीरामचन्द्र विषे गयाक्षेत्ररूपहै ( २२० ) माताके बचन श्रीरामचन्द्रको सब भावतेहैं भावतकहीशोभितभये हैं कैसे जैसे अपरजल कर्म्मनाशा आदिक सुरसरिके मिलते शोभित होत हैं तैसे कैकेयी के बचन श्रीरामचन्द्र बिषे शोभित होतहैं ( २२१ ) दोहार्त्थ॥ हे गरुड़ श्रीरामचन्द्र को सुमिरतसन्तेराजाकी मूर्च्छा गई करवटलेतेभये तब सुमन्त श्रीरामचन्द्रकर आगमन कहिकै समयसम विनयकीन कि तुम धीर धर्म्म त्रिकालज्ञ ज्ञान भक्तिके समुद्रहीहौ हे महाराज श्रीरामचन्द्र आपुके समीपआये ( २२२ ) तहां अकनि कही सुमन्तकै बचन सुनिकै राजा अन्तष्करणमें कछुसुखीभयउतब राजाकर रुखपाइकै सुमन्त श्रीरामचन्द्रसे बोलतभये हे रघुबंशमणि अब तुमराजाकेसमीपआवहु तब राजाधीरधरिकै नेत्रखोलतेभये ( २२३ ) तब सचिव राजाकोउठाइकै सँभारिकैबैठारतभये तब श्रीरामचन्द्रपायन परे तबराजाधीरधरिकै श्रीरामचंद्रकोनिहारतभये ( २२४ ) श्रीरामचन्द्रजीकोराजा प्रीति

रि नृपफिरिकरवटलीन सचिवरामआगमनकहि बिनयसमयसमकीन २२२ चौ०॥ तबनृपअकनिरामपगुधारे धरिधीरजतबनयनउघारे २२३ सचिवसँभारिराउबैठारे चरणपरतनृपरामनिहारे २२४ लियेसनेहबिकलउरलाई गइमणिमनहुंफणिकफिरिपाई २२५ रामहिंचितैरहेहुनरनाहू चलाबिलोचनबारिप्रबाहू २२६ शोकबिबशकछुकहैनपारा हृदयलगावतबारहिबारा २२७ बिधिहिमनावराउमनमाहीं जेहिरघुनाथनकाननजाहीं २२८ सुमिरिमहेशहिकहैंनिहोरी बिनतीसुनहुसदाशिवमोरी २२९ आशुतोषतुअमवढ़रदानी आरतहरहुदीनजनजानी २३० दो० ॥ तुमप्रेरकसबकेहृदयसोमतिरामहिंदेहु बचनमोरतजिरहहिंगृहपरिहरिशीलसनेहु २३१ चौ० अयशहोउजगसुयशनशाऊ नरकपरौंबरुसुरपुरजाऊ २३२ सबदुखदुसहसहावहुमोहीं लोचनओट

समेत गोदमें लेतभये जैसे गईमणि सर्पफेरिपावै है ( २२५ ) तब राजाश्रीरामचन्द्रको चितैरहे हैं अरु नेत्रनमें जलकेप्रवाहचले ( २२६ ) तहां राजा शोकते कछुकहि नहीं सकते हैं श्रीरामचन्द्र को बारबार हृदयमें लगावतेहैं ( २२७ ) तब राजाहृदयमें मनावते हैं कि हे महेश हे विधाता श्रीरामचन्द्र बनको न जाहिं ( २२८ ) तब राजामहेश्वरको सुमिरिकै निहोरिकै कहतेहैं कि हे सदाशिव मोरिबिनती सुनहु ( २२९ ) हे महादेव तुम अवढ़रदानीहौ कुअंकमेटिकै सुअंककरिदेतेहौ जेहिकेजौनि आशाहै तेहिकीतौनि तोषणकही पूर्णकरतेहौ सदा अब हमार आरतहरहु दीनजन जानिकै ( २३० ) दोहार्थ॥ हे महादेव तुमसबके हृदयके प्रेरकहो सो मति श्रीरामचन्द्रकोदेहु जाते मोरेबचनको त्यागिकै अरु मेरोशीलस्नेह त्यागिकै घरमेंरहिजाहिं ( २३१ ) हे महादेव मैं तो श्रीरामचन्द्रको बनजावेकोन कहब बरु जगत्मेंअयशहोइ अरु परलोकजाइ सुरपुरजाउं बरु नरक परौं पर

श्रीरामचन्द्रबनको न जाहिं अरु जो मेरोनामलैकै कहती है सो न मानहिं ( २३२ ) महादेव बरुसब दुखसहावहु हमको परलोचनकेओट रामचन्द्र न होहिं ( २३३ ) हे भरद्वाज अपनेमनमें ऐसे गुनतेहैं कछु बोलतेनहीं हैं पर पीपरकेपात सरिसमन डोलते ( २३४ ) जब श्रीरामचन्द्र ने पिताको प्रेमबशजाना तब बिचारकीन कि कैकेयी पिताको फिरिकछुकटुबाणीकहैगी ( २३५ ) तब देशकाल अवसरके अनुहारि श्रीरामचन्द्रजी बिनीतकही कोमलबाणी बोलतेभये देशकही अयोध्या कालकही येकालमें उपद्रवहै अवसरकही ममताके अनुसूत बचनबोलतेभये ( २३६ )

रामजनिहोंहीं २३३ असमनगुनतराउनहिंबोला पीपरपातसरिसमनडोला २३४ रघुपतिपितहिप्रेमवशजानी पुनिकछुकहीमातु अनुमानी २३५ देशकालअवसरअनुसारी बोलेबचनबिनीतबिचारी २३६ तातकहौंकछुकरौंढिठाई अनुचितक्षमबजानिलरिकाई २३७ अतिलघुबातलागिदुखपावा काहुनम्वहिंकहिप्रथमजनावा २३८ देखिगोसाइहिंपूछेउमाता सुनिप्रसंगभयेशीतलगाता २३९ दो०॥ मंगलसमयसनेहवशशोचपरिहरियतात आयसुदेइयहर्षिहियकहिपुलकेप्रभुगात २४० चौ०॥ धन्यजन्मजगतीतलतासू पितहिप्रमोदचरितसुनिजासू २४१ चारिपदारथकरतलताके प्रियपितुमातुप्राणसमजाके २४२ आयसुपाइ

हे तात कछुढिठाईकरिकै कहतहौं मेरी लरिकाईकर अनुचित क्षमाकरहु ( २३७ ) हे तात अतिलघुबातके निमित्त आपुइतनादुख पावतेहौ यतनामोकोकाहू प्रथमहिं जनाइकै न कहा ( २३८ ) श्रीरामचन्द्र कहते हैंकि हे गोसाई आपुकोहाल देखिकै मैं पूछ्यउँहै सो मातामोंसे कहतभई सो सुनिकै मोर सम्पूर्णगात शीतलभयो है ( २३९ ) दोहार्थ॥ ताते हे तात यह तो मङ्गल को समय है आपुशोच काहेको करते हो शोचत्यागिदेहु हर्षिकै मोको आयसुदेहु यह कहिकै श्रीरामचन्द्र को गातपुलकि उठ्योहै ( २४० ) हे तात वह पुत्र जगत् के तलमें धन्य है जो पिता की आज्ञा मानिकै कार्यकरै अरु पुत्रको कार्यदेखिकै पिताप्रसन्नहोइ सोपुत्र जगत्में धन्यहैं ( २४१ ) यह वेदकीआज्ञाहै कि त्यहिपुत्रको चारिउ पदार्थ करतलहैं जेहिपुत्रके मातापिता प्राणकेसमान प्रियहैं किंतु जो पुत्र मातापिताकीआज्ञाकरै सो पुत्र मातापिताको प्राणकीसमान प्रियहै ( २४२ ) ताते मोंको रजाइहोइ मैं आपुकी आयसुपालिकै जन्मकाफल पाइकै बेगिआवौंगोकुशलसंयुक्त आपु चिन्ता न करो ( २४३ ) हे तात मैं मातासे बिदामांगिआवौं बहुरिआपुकर चरणगहिकर तब बनको चलोंगो ( २४४ ) हे गरुड़ असकहिकै तब श्रीरामचन्द्र गमनकीन राजाने प्रेमकेबशते कछुउत्तर नहींदीन ( २४५ ) यह बात तत्क्षण नगरभरेमें ब्यापिगई है जैसे बीछीकेमारेते सबतनमें पीड़ाब्यापिजातभई ( २४६ ) तहां यह सुनिकै नरनारि सब बिकलहोतभये जनु बालबिटप अरु बेलीदावादेखिकै आवते कुम्हिलाइजातहै ( २४७ ) जे जहां सुनतेहैं ते तहां माथधुनते हैं अरु महाबिषादते धीरजनहींहोतहै ( २४८ ) दोहार्थ॥ सबके मुखतोसूखिजाते हैं अरु नेत्रनतेजलश्रवतहै अरु शोकनहींहृदयमें समातहै मनहुं करुणारसकी कटक

जन्मफलपाई ऐहौंवेगिहिहोउरजाई २४३ बिदामातुसनआवौंमांगी चलिहौंबहुरिबनहिंपगलागी २४४ असकहिरामगवनतबकीन्हा भूपप्रेमवशउतरुनदीन्हा २४५ नगरब्यापिगइबातसुतीछी छुवतचढ़ीजनुसबतनबीछी २४६ सुनिभयबिकलसकलनरनारी बेलिबिटपजनुदेखिदवारी २४७ जोयहसुनैधुनैशिरसोई बड़बिषादनहिंधीरजहोई २४८ दो०॥ मुखसूखैंलोचनश्रवैंशोकनहृदयसमाइ मानहुंकरुणाकटकरसउतरीअवधबजाइ २४९ भलिबनाइबिधिबातबिगारी सबमिलिदेइँकेकयिहिगारी २५० यहि पापिनिहिंबूझिकापरेऊ छायभवनपरपावकधरेऊ २५१

निजकरनयनकाढ़िचहदीखा डारिसुधाविषचाहतिचीखा २५२ कुटिलकठोरकुबुद्धिअभागी भइरघुवंशबेणुबनआगी २५३ पालवबैठिपेड़यहिंकाटा सुखमहँशोकठाटधरिठाटा २५४ सदारामयहि

अयोध्यामें बजाइकै उतरी है ( २४९ ) हे गरुड़ समस्तपुरबासी कहतेहैं कि बिधातैं तौ भलीबात बनायोहै पर उपरांत कैकेयी बिगरिदीनहै असकहि कैकेयीको सबलोग गारीदेते हैं ( २५० ) देखिये तो यह कैकेयी पापिनीको का समुझिपर्‍योहै जो छायेभवनपर अग्निलगाइदियोहै श्रीरामचन्द्रको राज्यहोतसंते बिघ्नकरिदियोहै ( २५१ ) देखियेतो ऐसा कोईनहींकरै है जो अपनेनेत्रकाढ़िकै आपुदेखाचाहे है अरु सुधात्यागिकै बिषको भक्षणकरै सो कैकेयी करतभई रामराज्यको विघ्नकरिकै भरतकीराज्य देखाचाहतीहै सो होनकोनहींहै ( २५२ ) कुटिल कठोरी कुबुद्धिकरिकै अभागी यहिकेसमान कोईनहीं है भूत भविष्य बर्त्तमान तीनिहूंकाल में कुटिलमन्थराके कुसङ्गकरिकै अरु कुबुद्धि सरस्वतीकी प्रेरणाकरिकै अरु भाग आपने संसर्गकरिकै ताते रघुबंशकुल बेणुकर बन तेहिते अग्निउत्पन्नहोतीभई ( २५३ ) देखियेतो पल्लवपर बैठिकै पेड़कोकाटैहै अरु परमसुखविषे शोकको ठाटठाटतहै ( २५४ ) एकनते एक कहते हैं यहिको तौ श्रीरामचन्द्र प्राणहुंते प्यारकरतरहे हैं अरु कैकेयीकेप्राण श्रीरामचन्द्ररहे हैं तहां जो कैकेयी बिरोधमान्योहै सो यह कारणनहीं समुझिपर्‍योहै ( २५५ ) तहांस्त्रीकर सुभाव कबिसत्यकहतेहैं सबप्रकारते इनकर दुरावकपट अगम अगाध है ( २५६ ) बरु शीशाबिषे आपनो प्रतिबिम्ब गहिजाइ पर नारिकरसुभाउ नहींजानाजातहै यहकबि कहतेहैं ( २५७ ) दोहार्थ॥ यहिदोहामें काकोक्ति अलङ्कारहै काह न पावकजारिसक पावककाह न जारिसकै सबजारिसकै है महाप्रलयकी अग्निमें अरु पवन सहायकरता है अरु प्रलय

प्राणसमाना कारणकवनकठिनप्रणठाना २५५ सत्यकहैंकबिनारिसुभाऊ सबबिधिअगमअगाधदुराऊ २५६ निजप्रतिबिंबबरुकरगहिजाईजानिनजाइनारिगतिभाई २५७ दो०॥ काहनपावकजारिसककानसमुद्रसमाइ कानकरैअबलाप्रबल केहिजगकालनखाइ २५८ चौ०॥ कासुनाइबिधिकाहसुनावा कादेखाइचहकाहदेखावा २५९ एककहहिंभलभूपनकीन्हा बरबिचारिनहिंकुमतिहिदीन्हा २६० जोहठिभयोसकलदुखभाजन अबलाबिबशज्ञानगुणगाजन २६१ एकधर्मपरमितिपहिचाने नृपहिदोषनहिंदेहिंसयाने २६२ शिविदधीचिहरिचन्द्रकहानी एकएकसनकहहिंबखानी २६३ एकभरतकरसंमतकहहीं एकउदासमौनहोइरहहीं २६४ कान

कालके समुद्रमें सब समाइसकैहै तैसे स्त्री मायारूपहै ते उचित अनुचितसब करिसकैहै जैसे सर्बकाल सर्बको खाइसकैहै तैसे नारि सबकरिसकैहै यह वेदकहतेहैं ताते कैकेयी जो थोरहै ( २५८ ) देखिये तौ बिधाताकीगतिबड़ीबिचित्रहै मङ्गलसुनायकै अमंगल सुनावतभयो मंगलदेखाइकै अमंगलदेखावतभयो ( २५९ ) एककहतेहैं कि राजा तौ बड़ाधर्मज्ञ नीतिमान है पर यह भलोनहीं कियो है काहेते यह कुमतिको बरदान बिचारिकै नहींदियोहै ( २६० ) ताते राजाहठिकै दुखको भाजनभयोहै राजाकोज्ञानगुणतो बनाहै काहेते कि आपनेधर्मबिषे आरूढ़हैं पर श्रीरामचन्द्रबिषे सो धर्मछोड़िदेबेको कहानहींमानते सो राजैनहींकीन जनु अबलाके बशह्वैकै ज्ञान गुणजातरह्यो है ( २६१ ) तहां एकैधर्मको परमिति मर्याद पहिं चानिकै यह कहते हैं कि राजाको दूषणसयाने नहींदेहिंगे ( २६२ ) एककहते हैं कि अपने सत्यधर्मकी मर्यादबिषे राजा शिविरहे तिन आपन शरीर अपनेहाथतेकाटि काटिदियोधर्महेतु अरु राजा दधीचि अपनोशरीरदेवतनकेनिमित्तदैडाराअरु राजाहरिश्चन्द्र धर्मकेनिमित्तकरि डोमकाकाम कियो है यह कथा भागवतबिषे प्रसिद्धहै ऐसे एकएकसन बखानिकै कहते हैं ( २६३ ) एकैभरतकर सम्मतकहते हैं अरु एकसुनिकै उदासह्वैकै मौन ह्वैरहते हैं ( २६४ ) एकैकहतेहै कानमूंदिकै अरु दांतमें जीभदाबिकै कियह बात अलीहाकही मिथ्याहै ( २६५ ) यह कहेते तुम्हारी सुकृतजातहै

मूंदिकररदगहिजीहा एककहैंयहबातअलीहा २६५ सुकृतजाहिअसकहेतुम्हारे रामभरतकहँप्राणपियारे २६६ दो० ॥ चंद्रचुवैबरु अनलकन सुधाहोइविषतूल सपनेहुकबहुंनकरहिंकछुभरतरामप्रतिकूल २६७॥ * * *

चौ० ॥ एकबिधातहिदूषणदेहीं सुधादेखाइदीनविषजेहीं १ खरभरनगरदेखिसबकाहू दुसहदाहउरमिटाउछाहू २ विप्रबधूकुल मान्यजठेरी जेप्रियपरमकेकयीकेरी ३ लगींदेनशिषशीलसराही बचनवाणसमलागहिंताही ४ भरतनप्रियमोहिंप्राणसमाना सदाकहहुयहसबजगजाना ५ करहुरामपरसहजसनेहू केहिअपराधआजुबनदेहू ६ कबहुंनकिहेहुसवतिआरेसू प्रीतिप्रीतीतिजानसबदेसू ७ कौशल्याअबकाहबिगारा तुमजेहिलागिबज्रपुरपारा ८ दो० ॥ सीयकिपियसँगपरिहरिय लषनकिरहिहहिंधाम राज किभूजबभरतपुर नृपकिजियहिंबिनुराम ९ चौ० ॥ असबिचारितजिछांड़हुकोहू शोककलंककोटजनिहोहू १० भरतहिअवशिदेहुयुवराजू काननकवनरामकरकाजू ११ नाहिनरामराज्यकेभूषे धरमधुरीणविषयरसरूषे १२ गुरुगृहबसहिंरामतजिगेहू नृपसन

काहेते कि भरतजीको श्रीरामचन्द्र प्राणहुंते प्रिय हैं अरु श्रीरामचन्द्रकोभरत प्राणतेप्रिय हैं ( २६६ ) दोहार्थ॥ बरु चन्द्रमा अग्निके कनश्रवै अरु सुधाबिषहोइ पर भरतजू श्रीरामचन्द्रते प्रतिकूल न होहिंगे अरु प्रतिकूलताकी मनबचन कर्मकबहुं न करैंगे सपनेहुबिषे ( २६७ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वंसने अयोध्याकाण्डे उमामहेश्वरसम्बादेअयोध्याबासी बिषादबर्णनन्नामतृतीयस्तरंगः ३॥

दो०॥ रामचरणचौथीलहरि केकयिकोउपदेश रामचन्द्रगयेमातपहँकारणकौनबिदेश ४ आगे तीनिदोहाभरि अक्षरार्थै जानब॥ दोहार्थ॥ तहां श्रीरामचन्द्रकरमन यहिसमयमें बनगमनहेतु ऐसो है जैसे बनमें नवीनगयंद पकरिआवै अरु वहिकेपदमें अहँदूपरै तहां कोई यत्नते अहँदूछूटि जाय तबवह बनकोभागै तैसे श्रीरामचन्द्रकर राज्याभिषक सोई अलानकही दहँदू बंधने हैं मानहुंकैकेयी छुड़ाइदीनहै श्रीरामचन्द्र प्रसन्नभये हैं २८

असबरदूसरलेहू १३ जोनहिंलगिहौकहेहमारे नहिंलागिहिकछुहाथतुम्हारे १४ जोपरिहासकीनकछुहोई तौकहिप्रकटजनावहु सोई १५ रामसरिससुतकाननयोगू काहकहहिंसुनितुमकहँलोगू १६ उठहुवेगिसोकरियउपाई जेहिबिधिशोककलंकनशाई १७ छं०॥ जिमिभानुबिनुदिनप्रान जिहिभांतिशोककलंकजायउपायकरिकुलपालही हठिफेरुरामहिंजातबनजनिबातदूसरचालही १८ बिनुतनचंद्रबिनुजिमियामिनी तिमिअवधतुलसीदासप्रभुबिनु समुझुरीजियभामिनी १९ सो०॥ सखिनसिखावनदीनसुनतमधुर परिणामहित तेहिकछुकाननकीनकुटिलप्रबोधीकूबरी २० चौ०॥ उतरनदेइदुसहदुखरूखी मृगिहिचितवजनुबाघिनिभूखी २१ ब्याधिअसाधिजानितिनत्यागी चलीकहतिमतिमंदअभागी २२ राज्यकरतयहिंदैवबिगोई कीन्हेसिअसजसकरैनकोई २३ यहिबिधिबिलपहिंपुरनरनारी देहिंकुचालिहिकोटिकगारी २४ जरहिंबिषमज्वरलेहिंउसासा कवनिरामबिनुजीवनआसा २५ अतिबिषादसबलोगलोगाईं गयेमातुपहँरामगोसाईं २६ मुखप्रसन्नचितचौगुनचाऊ हृदयशोचजनिराखहिंराऊ २७ दो०॥ नव गयन्दरघुबंशमणि राजअलानसमान छूटजानिबनगमनसुनि उरआनँदअधिकान २८॥ *

चौ०॥ रघुकुलतिलकजोरिदोउहाथा मुदितमातुपदनायोमाथा १ दीनअशीशलाइउरलीन्हे भूषणबसननिछावरिकीन्हे २ बारबारमुखचुंबतिमाता नयनप्रेमजलपुलकितगाता ३ गोदलाइपुनिहृदयलगाये श्रवतप्रेमरसपयदसोहाये ४ परमप्रमोदनकछुकहिजाई

इतिश्री रामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वंसने अयोध्याकाण्डेपुरलोगप्रिय कैकेयी उपदेश बर्णनन्नाम चतुर्थस्तरंग:४॥

दोहा॥ राममातु ढिगहर्षअति पूंछतिमातुप्रसंग रामचरणपुनिशोकबशअतिहियपञ्चतरंग ५ रघुबंशकुलकेलक श्रीरामचन्द्र दोउहाथजोरिकै माताके चरणारविन्दबिषे नमस्कार करतेभये ( १ ) तब माता आशीर्वाददैकै हृदयमें लगाइकै पटभूषण अनेक निछावरिकीन ( २ ) माता बार बार मुखचुम्बतिहै अरु नेत्रनमें जलभरिआये गातपुलकितभये हैं ( ३ ) प्रेमते गोदमेंलीनहै हृदयमें लगावतसन्ते स्तननमें पयश्रवतभयो ( ४ ) तहां माताके प्रमोदकही परमआनन्दहोतभयो सो कह्योजातनहीं है जनुरंक जो है सो कुबेरकी पदवीको प्राप्तिभयो ( ५ ) पुनिपुनिकही बारबार श्रीरामचन्द्रकर बदननिहारिकै मधुरबचन बोलतीभई ( ६ ) हे तात कहहुमैं बलिजाउं आपुको राज्याभिषेक मुदमंगलमय लग्नकीसाइति कबहोइहि ( ७ ) कैसी आपुकी राज्यकीलग्नहै सुकृत शील सुखकीसींव कही मर्य्यादाहै अरु हमारेजन्मको परमलाभहै ( ८ ) दोहार्थ॥ अति आरतते

रंकधनदपदवीजनुपाई ५ पुनिपुनिसादरवदननिहारीबोलीमधुरबचनमहतारी ६ कहहुतातजननीबलिहारी कबहिंलगनमुदमंगलकारी ७ सुकृतशीलसुखसीवसोहाई जनमलाभहितअवधिअघाई ८ दो०॥ जेहिचाहतनरनारिसबअतिआरतयहिभांति तिमिचातक चातकितृषितवृष्टिशरदऋतुस्वाति ९ चौ०॥ तातजाउँबलिबेगिनहाऊ जोमनभावमधुरसोइखाऊ १० पितुसमीपतबजायहुभैया भइ बड़िबारजाइबलिमैया ११ मातुबचनसुनिअतिअनुकूला जनुसनेहसुरतरुकेफूला १२ सुखमकरंदभरेश्रीमूला निरखिराममनभवँरनभूला १३ धरमधुरीणधरमगतिजानी कहेउमातुसनअतिमृदुबानी १४ पितैंदीनम्वहिंकाननराजू जहँसबभांतिमोरबड़काजू १५ आयसुदेहुमुदितमनमाता जेहिमुदमंगलकाननजाता १६ जनिसनेहबशडरपतिमोरे आनँदअंबुअनुग्रहतोरे १७ दो०॥ बरषचारि

जिमि चातक चातकी तृषितहै शरदऋतु स्वातीके जलहेतुहै ( ९ ) ताते मैंबलिजाउं स्नानकरिकै जो कछु इच्छाआवै सो मधुर भोजनकरो ( १० ) हे भैया तब पिताके समीपजायहु बड़िबेरहोइगई है मैं बलिजाउं ( ११ ) हे भरद्वाज माताकेबचन अतिअनुकूल श्रीरामचन्द्र सुनतेभये जनु सनेह सुरतरुकेफूलहैं ( १२ ) तहां तेहिफलबिषे राज्यकोसुखद जो है सोई मकरन्दकही रसभरो है सम्पूर्ण श्रीकोमूलहै तहां श्रीरामचन्द्रको मनमधुपहै पर तेहिकोलखिकै तेहिरसमें नहींभूल्योहै ( १३ ) तहां श्रीरामचन्द्र धर्म्मकेधुरीन धर्म्मकी गति अतिसूक्ष्म तेहिको अच्छीतरहजानतेहैं मातासे अति मृदुबाणी बोलतेभये ( १४ ) हे मातु पितैं तो हमको बनकीराज्यदीन है तहां सबप्रकारते हमारोकार्य्यहै माताको संज्ञाजनाइदीनहै अपने ईश्वरत्वकै ( १५ ) हे मातु अब मुदितमनते आयसुदेहु अरु आशीर्व्वाददेहु जाते माको बनजातसन्ते मुदमंगलहोइ ( १६ ) हे अम्ब सनेहकेबश डरपसिजनि तेरी अनुग्रहते मोको सबप्रकारते आनन्दहै ( १७ ) दोहार्थ॥ हे मातु दशचारि चौदहबर्ष बनबास करिकै मुनिनके दर्शनकरिकै पिताके बचनको प्रमाणकरिकै फिरि आपुकेचरणारबिन्द देखिहौंआइ अपने मनमें मलानजनिकरसि ( १८ ) तहां कौशल्याजी बिनीत कही अति कोमल बाणी श्रीरामचन्द्रकी सुनिकै माताके शरकेसमानलागेउ उरकरकिउठेउहै ( १९ ) श्रीरामचन्द्रकी शीतलबाणी सुनिकै सहमिकही सूखिगई है जैसे जवासकेऊपर पावसकही प्रथमबर्षाको जलपरै ( २० ) पुनि श्रीरामचन्द्रकै बाणीसुनिकै कौशल्याको कैसोदु:खभयो है जैसे केहरिकोनाद सुनिकै

दशबिपिनबसि करिपितुबचनप्रमान आयपायँपुनिदेखिहौं मनजनिकरसिमलान १८ चौ०॥ बचनबिनीतसुनतरघुबरके शरसमलगेमातुउरकरके १९ सहमिसूखिसुनिशीतलबानी जिमिजवासपर्यउपावसपानी २० कहिनजायकछुहृदयबिषादू मनहुं मृगीसुनिकेहरिनादू २१ नयनसजलतनथरथरकांपी मांजाखाइमीनजनुमापी २२ धरिधीरजसुतबदननिहारी गदगदबचनकहति महतारी २३ तातपितहितुमप्राणपियारे देखिमुदितनितचरिततुम्हारे २४ राजदेनकहँशुभदिनसाधा कहेउजानवनकेहिअपराधा २५ तातसुनावहुमोहिंनिदानू कोदिनकरकुलभयोकृशानू २६ दो०॥ निरखिरामरुखसचिवसुत कारणकहेउबुझाय सुनिप्रसंगरहिमूकजिमि दशाबरणिनहिंजाय २७ चौ०॥ राखिनसकहिंनकहिसकजाहू दुहूभांतिउरदारुणदाहू २८ लिखतसुधाकर

मृगीसूखिजाइहै ( २१ ) सो बाणीसुनिकै कौशल्याके नेत्रनमें जलभरिआयो है अरु शरीरथरथराइकै कांपिउठ्यउहै माजाकही प्रथमबर्षाकिजल कोफेन सो खाइकै मीन जैसे मापिकही मातिरहतिहै बिकल होइजाती है ( २२ ) हे पार्व्वती धीरजधरिकै श्रीरामचन्द्रकर कमल बदन बिलोकिकै गद्गदवचन माताबोलतीभई ( २३ ) हे तात तुम तौ पिता के प्राणतेप्रियरहेहौ अरु तुम्हाराचरित राजा देखिकै बहुत आनन्द होतरहे हैं ( २४ ) ताते राजैं राज्यदेवेको सुमङ्गलमय दिनसाध्यो है सो कवने अपराधकरिकै बनजाबेको कह्यो है ( २५ ) हे तात निदानकही बिशेष दुःखकोकारण सो मोकोसुनाबहु को सूर्य्यबंशचंदनकेबनको अग्निभयो है ( २६ ) दोहार्त्थ॥ तब श्रीरामचन्द्रकर रुखजानिकै सुमन्तकोपुत्र सबकारण जो कैकेयी करिकैभयो सो श्रीकौशल्याजीसे कहतभयो यह प्रसंगसुनिकै रानीमूकहोइगई सो दुःखकीदशा नहींबर्णिबेयोग्यहै ( २७ ) इहां रघुनाथजीकीबिदा में कौशल्याजीके प्रसङ्गमें आक्षेपालंकारहै तामें द्वादशभेदहैं सो कहते हैं आक्षेपकही रोकबको हे गरुड़ श्रीरघुनाथजी अन्तर्य्यामी हैं जाते कौशल्याजीके हृदयको प्रसंगजानिकै थँभिजाहि इहां संशयाक्षेपालंकार है नतौ श्रीकौशल्याजी राखिसकैं अरु नतौजाइबेकोकहैं दोउभांतिते उरबिषे दारुणदाह उत्पन्नभयो है ( २८ ) कौशल्या पश्चात्तापकरिकै कहती हैं किदेखिये तौ सुधाकरलिखतसन्ते राहुलिखिगयो विधाताकैगति बड़ीबामहै सदा सबप्रकार राज्यहोवेको सो बनभयो ( २९ ) तहां धर्म्मस्नेहकेबीचमेंमतिफँसिरही तहां सांपछछूँदरि कीसीगमिभई है ( ३० ) अथधर्म्माक्षेपालङ्कार तहां यहबिचार अपनेमनमें करती हैं कि जो पुत्रकोराखौं तौ अनुरोधकही द्वन्दबिचारको राखते धर्म्मकैहानिहोति है किन्तु अनुरोध कही

लिखिगाराहू बिधिगतिबामसदासबकाहू २९ धरमसनेहउभयमतिघेरी भइगतिसांपछछूंदरिकेरी ३० राखौंसुतहिकरौंअनुरोधू धर्मजाइअरुबन्धुबिरोधू ३१ कहौंजाइबनतौबड़िहानी संकटशोचबिवशभइरानी ३२ बहुरिसमुझितियधर्मसयानी रामभरतदोउ सुतसमजानी ३३ सरलसुभावराममहतारी बोलीसमयसनेहबिचारी ३४ तातजाउँबलिकीन्हेउनीका पितुआयसुसबधर्मकोटीका ३५ दो०॥ राजदेनकहदीनबनमोहिंनदुखलवलेश तुमबिनुभरतहिभूपतिहिप्रजहिप्रचंडकलेश ३६ चौ०॥ जोकेवलपितुआ-

बिरोधको तहां बन्धु जो भरत तिनमें बिरोधहोतहै ( ३१ ) अरु जो बनकोजाइकहौं तौ बड़िहानि है ताते रानी संकटकेबशह्वैकै शोचके बिवशहोति भई ( ३२ ) बहुरिकही पुनि स्त्रीकोधर्म्म पतिब्रत नीतिसमुझिकै श्रीरामचन्द्र अरु भरतको समजानिकै कछु धीरजधरतीभई तहां भरतको राज्य समुझिकै सन्तोषभयो है श्रीरामबनगवनको असन्तोषहै ( ३३ ) श्रीराचन्द्रकीमाताको अति सरलसुभावहै तेहिसमयकी स्नेहबिचारिकै बोलतीभई ( ३४ ) हे तात मैं बलिजाउं ताते तुमनीककीन्ह काहेते कि पिताकीआज्ञा सबभांतिते सर्ब्बधर्म्मको

तिलकहै ( ३५ ) दोहार्त्थ॥ इहां युक्ताक्षेप कही श्रीकौशल्याजू कहतीहैं कि हे तात राजा आपुको राज्यदेइकोकहा अरु बनदीन तहां मोको तो लेशहूक्लेशनहीं है पर तुमबिना भरतजू अरु राजा अरु सम्पूर्णप्रजा इनको प्रचण्डक्लेश है इहां कौशल्याजू युक्तिकरिकैकहतीहैं कि श्रीरामचन्द्रजी भरतजीकरक्लेश अरु राजाकोक्लेश अरुप्रजनकेक्लेशनहिंसहिसकैंगे काहेते कि भरत औराजारामानन्यविरहीहैं अरु श्रीरामचन्द्रजी अपनासंकल्प छोड़िदेते हैं अरु अपने निजजनकीरुचिराखतेहैं अरु श्रीरामचन्द्र धर्मज्ञ नीतिमान् हैं प्रजापालकहैं ताते यह बिचारिकै रहिजाहिं ( ३६ ) पुनिहे तात जो केवल पिताकै आज्ञाहोइ तौ मैं राजाकी अर्द्धांगीहौं तौ माताको बड़िजानिकै रहिजाहु ( ३७ ) अरु जोराजाबनमें जाइकोकह्यो अरु माता कैकेयी बनजाइकोकह्यो तौ कानन शतअवधके समान है ( ३८ ) हे तात बनके देवता सो तुम्हारे पिताइवअरु बनकीदेवी सो माताइव रक्षाकरहिंगी अरु बनके खग मृग जो हैं सो तुम्हारे चरणारबिन्दोंके सेवीहोहिंगे ( ३९ ) हे रघुबंशतिलक जो तुम अयोध्याकोत्यागा तौ अयोध्या अभागीभई ( ४० ) तथापि नृपको चौथेपनमें बनबासउचितहै अरु तुम्हारी वहिक्रम अवहिंमध्यकिशोरहै ताते बनगमनसुनिकै मोको हरासकही क्लेशहै ( ४१ ) हे पुत्र जो कहौं कि मोकोसंगलेहु तौ

**यसुताता तौजनिजाहुजानिबड़िमाता ३७ जोपतुमातुकह्योबनजाना तौकाननशतअवधसमाना ३८ पितुबनदेवमातुबनदेवी खगमृगचरणसरोरुहसेवी ३९ बड़भागीबनअवधअभागी जोरघुवंशतिलकतुमत्यागी ४० अंतहुउचितनृपहिबनबासू बयबिलोकि हियहोतहरासू ४१ जोसुतकहौं संगमोहिंलेहू तुम्हरेहृदयहोइसंदेहू ४२ पुत्रपरमप्रियतुमसबहीके प्राणप्राणकेजीवनजीके ४३ तेतुमकहहुमातुबनजाऊं मैंसुनिबचनठाढ़िपछिताऊं ४४ दो०॥ यहबिचारिनहिंकरौंहठझूंठसनेहबढ़ाइ मानिमातुकरनातबलि**

तुम्हारे हृदयमें सन्देहहोइगो ( ४२ ) यहि चौपाई ते आगेचौपाई जो कहते हैं तहां प्रेमालंकार है हे पुत्र तुम सबके प्राणप्रियहौ औ प्राणहुके प्राणहौ औ जीवहुके जीवहौ तहां प्राणको प्राण अरु जीवको जीव अन्तर्य्यामी ब्रह्म सो तुम सबके अन्तर्य्यामी हौ इहां कौशल्याजी प्रेमकरती हैं श्रीरघुनाथजी प्रेमके बशहैं मोरप्रेम देखिकै कदाचित् रहिजाहिं ( ४३ ) हेलाल जेतुम सबजीवन के प्राण ते तुम कहतहौ कि हम बनको जातेहैं यह सुनिकै मोको पश्चात्ताप आवतहै मैं ठाढ़िसूखिजातीहौं ( ४४ ) दोहार्थ॥ यह बिचारिकै मैं हठ नहींकरौं माताकर नातमानिकै मोरि सुरति नहीं बिसरै इहां कौशल्याजी की बाणी में बहुत ब्यंग्याभिप्राय है एककहतहौं कि प्राणकेप्राण जीवकेप्राण ब्रह्मते तुम नित्य एकरस सुन्दर चलाचाहते हौ हम सबपुरी के जीव कैसेजीवहिंगे ताते प्रजनकी प्रेमकेबश रहिजाहिंकही मोरि सुरति एकरस न बिसरै यह प्रेमाक्षेपकही साभिप्राय बारहौ भेद जानब ( ४५ ) आगे शिक्षालंकार अरु शांतिरसहै हेतात सबके देवपितर तुमहींहौ अरु जैसे नेत्रकी पलक रक्षाकरै हैं तैसे आपकी रक्षाकरब अरु सबकी रक्षा सदाकरतेहौ किन्तु श्रीकौशल्याजूकहती हैं कि मेरे देवपितर इष्ट तुमसबही हौ मैं तुमको पलक नयनकी नाईं राखति रहीहौं किन्तु देवपितर तुमको पलक नयनसम राखहिं बनविषे ( ४६ ) हेकरुणाकर धर्मधुरीण अवधि जो चौदहवर्ष हैं सो अंबु कही जलहै अरु समस्त परिजन मीन हैं ( ४७ ) हे तात ऐसे विचारिकै सो उपायकरो जाते सबको जियतदेखहुआइ जो चौदहबर्षते एकौसाइति बीतिहि तो सबके प्राणजायँगे ( ४८ ) इहां वाक्याक्षेपहै हे तात मैं बलिजाउँ तुम सुखेनकहीसुखीते बनकोजाहु सम्पूर्णजन पुरजन गाउँकोअ-

**सुरतिबिसरिजनिजाइ ४५ चौ०॥ देवपितरसबतुमहिंगोसाईराखहुनयनपलककीनाई ४६ अवधिअंबुप्रियपरिजनमीनातुमकरुणाकरधर्मधुरीना ४७ असबिचारिसोइकरेहुउपाई सबहिजियतज्यहिदेखौआई ४८ जाहुसुखेनबनहिबलिजाऊं करिअनाथजनपरिजनगाऊं ४९ सबकरआजुसुकृतफलबीता भयउकरालकालबिपरीता ५० यहिबिधिबिलपचरणलपटानी परमअभागिनि आपुहिजानी ५१ दारुणदुसहदाहअतिब्याापा बरणिनजाइबिलापकलापा ५२ रामउठाइमातुउरलाई कहिमृदुवचनबहुरिसमुझाई ५३ दो०॥**

**समाचारत्यहिसमयसुनिसीयउठीअकुलाइनाइसासुपदकमलयुगबंदिबैठिशिरनाइ ५४ चौ०॥ दीनअशीषसासुमृदुबानी अतिसुकुमारिदेखिअकुलानी ५५ बैठिनमितमुखशोचतिसीतारूपराशिपतिप्रेमपुनीता ५६ चलनचहतबनजीवनना-**

नाथकरिकै ( ४९ ) इहाँ आजुसबकर सुकृतफल बीतिजातभयो काहेतेकुशलकाल बिपरीतहोतभयोहै ( ५० ) इहां अधीराक्षेपालंकारहै हेपार्बती श्रीकौशल्याजू बहुतबिधिते बिलापकरिकै श्रीरघुनाथजीके चरणारबिन्दबिषे लपिटिजातभईहैं अपनाको परमअभागिनि जानतीभई ( ५१ ) दारुणदाह दुसहकही जो न सहाजाइ सो शरीरमें व्याप्तभयो है बिलापकरतीहैं कलापकही दुःख की बातैं कहि कहि ( ५२ ) तब श्रीरामचन्द्र माता को उठाइकै उर में लगावतेभये मृदुबचनकहिकै समुझावतेभये ( ५३ ) दोहार्थ॥ त्यहिसमयमें श्रीरामचन्द्रकी बार्त्तासुनिकै श्रीजानकीजी अकुलाइ उठी हैं सासुके पदकमलमें शिरनाइकै बैठतीभई ( ५४ ) तब सासुमृदुबाणीते अशीषदीन अतिसुकुमारिदेखिकै जानिकै अकुलाइउठीहैं ( ५५ ) श्रीजानकीजी रूपकी राशि अतिपुनीत नमितमुख शोचकरतीहैं ( ५६ ) अरु श्रीरामचन्द्रके पदबिषे पुनीतप्रीति है तब जानकीजी कहती हैं कि ममजीवननाथ श्रीमराचन्द्र बनको चलना चाहते हैं तहां क्यहिसुकृततेसाथहोइहि ( ५७ ) कि तौ ये प्राण संगहीजाहिंगे कि केवल प्राणैजाहिं तहां बिधिकै कर्त्तव्य कछुजानिनहींजातिहै इहांबिधि श्रीरामचन्द्रकोकही ( ५८ ) तहां सुन्दरचरणके नखनते धरणीलेखती हैं शोचको संचारीही है तहां नूपुरको शब्द मधुर मधुरहोतहै तहां कबि नूपुरके मधुररवको बर्णनकरते हैं ( ५९ ) मानहु प्रेमकेबश बिनय करते हैं कि श्रीजानकीजी के चरण हमको न परिहरैं इहां मधुरशब्द जो कहाहै तहां मधुरबाणीतेबिनतीहोति है अरु जो कहा कि हमहिंसीयपद जनिपरिहरही इहां बन

**थाक्यहिसुकृतीसनहोइहिसाथा ५७ कितनप्राणकीकेवलप्राणाबिधिकरतबकछुजाइनजाना ५८ चारुचरणनखलेखतिधरणी नूपुरमुखरमधुररवबरणी ५९ मनहुप्रेममयबिनतीकरहीं हमहिंसीयपदजनिपरिहरहीं ६० मंजुबिलोचनमोचतिबारी बोलीदेखिराममहतारी ६१ तातसुनहुसियअतिसुकुमारी सासुससुरपरिजनहिपियारी ६२ दो०॥ पिताजनकभूपालमणिससुरभानुकुलभानु पतिरविकुलकैरवबिपिनबिधुगुणरूपनिधानु ६३ मैंपुनिपुत्रबधूप्रियपाई रूपराशिगुणशीलसुहाई ६४ नयनपुतरियाप्रीतिबढ़ाई राख्यउंप्राणजानकीलाई ६५ कल्पबेलिजनुबहुबिधिलालीसींचिसनेहसुधाप्रतिपाली ६६ फूलतफलतभयउबिधिबामा जा-**

गमनबिषे भूषणनको त्यागहै ताते अत्युक्तिफल उत्प्रेक्षाभावना करिकै कहाहै ( ६० ) कमललोचन बिषे मोचतकही श्रवतजलदेखिकै कौशल्या बोलती भईं ( ६१ ) हे श्रीरामचन्द्रजी श्रीजानकीजी अति सुकुमारि है अरु सासुश्वशुर पुर परिजनको अति पियारि है ( ६२ ) दोहार्थ॥ कैसी हैं जानकीजी जिनके पिता जनक सम्पूर्ण भूपालनकेमणि हैं अरु महायोगेश्वरबिज्ञानी हैं जिनके सत्सङ्ग करिबेको याज्ञवल्क्यजी योगेश्वर शुकदेव इत्यदिकगये हैं अरु श्वशुर सूर्य्यबंशकेसूर्य्य हैं जिनको इन्द्र अर्द्धसिंहासनदेते हैं अरु पति आपु रबिकुल सोई कैरवकही कुमुदिनीकैबनहैं त्यहिके प्रफुल्लितबिमल पूर्णचन्द्र अरु रूपगुणकेनिधान कही स्थान ऐसे तुमपतिहौ ( ६३ ) त्यहि जानकीजीको अतिप्रिय पुत्रबधू मैं पायों है रूपकीराशि अरु गुणशीलकरिकै अतिशोभित ( ६४ ) जैसे नेत्रकैप्रीति जानकीबिषेत्यहिजानकीलागि प्राणराख्योंहौं किन्तु जानकीजीको प्राणकरिकै राख्यों है इहां मरणाक्षेपजानव ( ६५ ) जैसे कल्पबेलि अतिलालित्य अमृततेसींचिकैपालै तैसे मैं स्नेहअमृततेजानकीको पालनकरतीहौं ( ६६ ) सो बेलिकी जब फूलिबेफलिबेकी समयभयी तब बिधिबामभयो कोई बिघ्नह्वैगयो तैसै यहिकालमें मोकोभयो है सो जानानहींजायहै परिणामकही आगेका होइगो ( ६७ ) हे रघुनन्दन जानकीने पलँगकीपांव कही शय्याअरु हिंडोरा अरु गोदसोतजि अवनि कठोर त्यहिमें पगनहींदियो है इहां अति माधुर्य्यरसकहाहै ( ६८ ) हे तात जीवनमूरिकी नाईं मैं जानकीकोजोगवतरह्योंहै अरु

दीपकैंबाती टारनको नहींकहाहै जीवनमूरिकही ज्यहि मूरिकेखायेते शरीमेंरोगदोष कबहूंनहींहोइ अरु अमरबनारहै ( ६९ ) सो जानकीजी आपुकेसाथ बनकोचलाचाहती हैं हे रघुनाथ सो का आ-

निनजाइकाहपरिणामा ६७ पलँगपीठतजिगोदहिंडोरा सियनदीनपगअवनिकठोरा ६८ जिवनमूरिजिमिजोगवतरह्यऊं दीपबातिनहिंटारनकह्यऊं ६९ सोसियचलनचहतिबनसाथा आयसुकाहकहबरघुनाथा ७० चन्द्रकिरणिरसरसिकचकोरी रविरुखनयनसकैकिमिजोरी ७१ दो०॥ करिकेहरिनिशिचरचरहिंदुष्टजन्तुबनभूरि बिषबाटिकाकिसोहसुतसुभगसजीवनमूरि ७२ चौ०॥ बनहितकोलकिरातकिशोरी रचीरबिरंचिबिषयरसभोरी ७३ पाहनकृमिजिमिकठिनसुभाऊ तिनहिकलेशनकाननकाऊ ७४ की तापसतियकाननयोगू जिनतपहेतुतजासबभोगू ७५ सियबनतातबसहिक्यहिभांती चित्रलिखेकपिदेखिडेराती ७६ सुरसरसुभग

ज्ञाहोति है ( ७० ) हे तात चन्द्रमा की किरणिकै रसिक जो चकोरी है सोसूर्य्यकिरणिको कैसेसहिसकै है तैसे जानकीजी बनबिषे कैसे सहिसकैंगी ( ७१ ) दोहार्त्थ॥ ज्यहिबनबिषे हाथी सिंह निशिचर इत्यादिक दुष्ट तामसी जीव अनेक बिचरते हैं तहां श्रीजानकीजी कैसेसुखीरहैंगी हे तात विषकी बाटिकामें सुभगसजीवनमूरि कैसे शोभितह्वै हैं ( ७२ ) हे तात बनके हितकारहेतु कोल किरातनकी किशोरी हैं इनको बिषयकोरस बिरञ्चि भोरेहू नहीं लिखाहै कदाचित् इनको बिषयहोइ तौ जानिये ब्रह्माभूलिकैलिख्यो है उनकोबनै हितकारकहै ( ७३ ) हे तात जो कहो कदाचित् पाहनकरकृमिहोइ तो ताको बनमें काऊ कही कबहूंक्लेश नहींहोइहै तहां पाहनकही पर्व्वतनकेकृमि सर्प्प बिच्छू इत्यादिक काहेते इनकेकठिनसुभावहैं तिनको पर्व्वतनमें क्लेशनहीं है तैसे किरातिनिको बनमें क्लेशनहीं है अरु श्रीजानकीजी वनयोग्यनहीं हैं ( ७४ ) कि तो तपस्विनकीस्त्री बनयोग्यहैं ज्यइ तपहेतु सम्पूर्ण बिषयभोग त्यागकीनहै ( ७५ ) त्यहि बनबिषे श्रीजानकी कैसेबसैंगी काहेते जो चित्रमें बानरलिखाहोइ सो देखिकै डेराती हैं ते बनमें कैसेबसहिंगी ( ७६ ) हे तात देवतनकर मानसरत्यहिकी बिहरनहारी जो मराली सो जो कहूं एकडावर कही गड़हा तहां भैंसी जलको मलिनकरदेती हैं त्यहिमें जो मरालीरहै सो कौनीप्रकारसुखीरहै तैसे श्रीजानकीजी उनजीवनमें कैसेसुखीरहैंगी इहां यह सब मरणाक्षेपजानब ( ७७ ) हे तात असबिचारिकै जैसी आज्ञाहोइ तैसी श्रीजानकीजीको मैं सिखापनदेउं ( ७८ ) माताकहती हैं कि जानकीजी घरमेंरहैं तो मोको बहुत अवलम्बहोइ ( ७९ ) तब श्रीरघुनाथजी माताकीबाणीशील स्नेह सुधामय रससानीबाणी सुनतभये ( ८० ) दोहार्त्थ॥ तब

बनजबनचारी डावरयोगकिहंसकुमारी ७७ असबिचारिजसआयसुहोई मैंशिखदेउंजानकीसोई ७८ जोसियभवनरहैकहअम्बा मोकहँबहुतहोइअवलम्बा ७९ सुनिरघुबीरमातुप्रियबानी शीलसनेहसुधाररससानी ८० दो० ॥ कहिप्रियबचनबिबेकमयकीन मातुपरितोष लगेप्रबोधनजानकिहिप्रगटबिपिन-गुणदोष ८१॥ * * * *

चौ० ॥ मातुसमीपकहतसकुचाहीं बोलेरामसमुझिमनमाहीं १ राजकुमारिसिखावनसुनहू आनभांतिनहिंमनमहँगुनहू २ आपनमोरनीकजोचहहू वचनहमारमानिगृहरहहू ३ आयसुमोरसासुसेवकाई सबबिधिभामिनिभवनभलाई ४ यहितेअधिकधर्म्मनहिंदूजा सादरसासुससुरपदपूजा ५ जबजबमातुकरहिसुधिमोरीहोइहिप्रेमबिकलमतिभोरी ६ तबतबतुमकहिकथापुरानी समु-

श्रीरामचन्द्रजी बिवेकमय प्रियवचनकहिकै माताको परितोषकीन्ह पुनिश्रीजानकीजीकर प्रबोधकरते वनकर गुणदोषकहिकै (८१) इति श्रीराम चरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वन्सनेअयोध्याकाण्डे श्रीकौशल्याबिरहवर्णनन्नामपञ्चमस्तरङ्गः॥ :: :: :: :: ::

दोहा। रामचरणश्रीरामजीकृतसीतहिउपदेश षटतरंगमहँदोषवनज्यहिबिधिगमनबिदेश ६ हेभरद्वाज माताकेसमीप श्रीजानकीजीसे बहुतबात कहतसन्ते सङ्कोचआवतहै पर अपनेमनमें समयसमुझिकै बोलतेभये ( १ ) हेराजकुमारि सिखावनसुनहु आनभांति अपनेमनमें न बिचार करहु ( २ ) जो आपन अरु हमार नीकचाहहु तौ यहविचारिकै गृहमेंरहहु ( ३ ) हे भामिनि मोरसिखावनसुनहु आनभांति अपनेमनमें न समुझौ मोरि आयसु सासुकैसेवकाई तुमको भवनमेंरहेते सबप्रकारते भलाईहै ( ४ ) यहिते और धर्म्मदूसरनहीं है सादर सासु श्वशुरके पदकै पूजाकरहु ( ५ ) जब जब मातामोरि सुधिकरहिगी तब तब प्रेम कीबिकल ताते मतिभोरिहोइजायगी ( ६ ) तबतब हे सयानी तुममृदुबाणी ते सुन्दरिकथा सुनायहु जाते माताको बोधहोइ ( ७ ) हेसुमुखि मैं शतशपथकरिकै कहतहौं केवलमाताकेहेतु राखतहौं यह सुभाये सत्यकहतहौं ( ८ ) दोहार्थ॥ हे भामिनि गुरु जो श्रेष्ठहैं ते अरु श्रुति जोहैं इनकरसम्मतलैकै जे कछुकरैं ते बिनाक्लेशहि उत्तमफलको प्राप्तहोते हैं अरु जो इनकर सम्मतछोंड़िकै हठकरै तौ शठताई आवति है तब संकटहोतहै जैसे हठकरिकै गालवमुनि अरु राजानहुष संकटको प्राप्तभये तहां गालवमुनिने हठकेबश कैसेसंकटको सहाहै कि गालवमुनि बिश्वामित्रके शिष्यरहे मुनिने सम्पूर्ण बिद्यापढ़्यौ तब मुनिते गालवमुनिकह्यो कि हमतेकुछ गुरुदक्षिणामांगौ तब मुनि

**झायहु सुंदरिमृदुबानी ७ कहौं सुभावशपथशतमोहीं सुमुखिमातुहितराखौंतोहीं ८ दो०॥ गुरुश्रुतिसंमतधर्मफल पाइहिबिनहिकलेश हठबशसबसंकटसहे गालवनहुषनरेश ९ चौ०॥ मैं पुनिकरिप्रमाणपितुबानी वेगिफिरबसुनुसुमुखिसयानी १० दिवसजातनहिंलागहिबारा सुन्दरिसिखवनसुनहुहमारा ११ जोहठकरहुप्रेमबशबामातौतुमदुखपाउबपरिणामा १२ काननकठिन**

कह्यो कि जो तुम्हारि श्रद्धाहोइ सोदेहु तब गालवकहा कि जो मांगौ सो देउँ याहीरीतिते तीनिबार हठकियो है तब मुनि हठजानिकै कहा कि श्यामकर्णघोड़ा आठसैलैआवहु तब गालवमुनि जहां तहां तीनिजगहतेयत्नते बड़ेक्लेशते कछुघोड़ेलैआये कछु न पायेते मुनीशकोदीन्ह ताते गुरुनकी अवज्ञाभई चारिसयनमिले पर तथापि गुरुकृपालु हैं क्रोध न कीन ताते बहुत हठबड़ेनते न करी पुनि राजानहुषभये हैं ते बड़ेसुकृत ते इन्द्रपदवीको प्राप्तिभये तब तुरन्त इन्द्राणीते भोगकीइच्छाकियो तब इन्द्राणी कहा कि ब्राह्मणको बाहनबनाइकैचढ़ो इनकरतेज सहौ तबहमसन भोगकरहु तबराजैं हठकरिकै सप्तऋषिनको बोलाइकै पालकीमें लगाइदियो त्यहिपर चढ़तभयो कामातुर ताते यह कहतभयो कि सर्पसर्प कही शीघ्रचलो तब अगस्त्यमुनि शापदीन तैं सर्पहोइजाइ तब सर्पहोइजाइ तब सर्पहोइकै पृथ्वी में गिरतभयो यह प्रसंग महाभारत अरु भागवत्में प्रसिद्ध है ( ९ ) ताते हे भामिनि तुमहठ न करहु भवनमें रहहु अरु मैं पिताकी बाणीप्रमाणकरिकै वेगकही शीघ्र फिरौंगो ( १० ) हे सुन्दरि दिवसजात बारन लागिहि हमार सिखावनसुनहु इहां निषिद्धाक्षेपालङ्कारहै ( ११ ) हेबामाजो प्रेमकेबश हठकरिहौ तौ परिणाममें दुःखहोइहि ( १२ ) काहेते कि काननकठिन घोरभयङ्कर है अरु ग्रीष्मऋतुमें अतिघामहोत है अरु घोरबयारि है अरु बर्षाऋतु में बारिकही अतिजलकी वृष्टि है अरु हिमऋतु में अतिशीतपरैहै सो तुमकैसे सहौगी ( १३ ) अरु मगबिषे कुशकेडाभहैं अनेककंकट अरु कङ्करी हैं अरु बिनापदत्राण पयादेचलबहोइहि ( १४ ) अरु तुम्हारे चरण अतिमृदुल हैं परन्तु भूमिधर पर्बतनकरिकै मार्गअगम है ( १५ ) अरु कन्दरखोहनदी नदनारे अगम अरु अगाधहैं देखतकैभयहोत है ( १६ ) अरु भालब्याघ्रकही भेड़हा केहरिकही सिंह अरु नागकही हाथीयेते समस्त नादकरते हैं बड़ेधीरमान् जो हैं तिनकरधीर्य नहींरहै है ( १७ )

भयंकरभारी घोरघामहिमवारिबयारी १३ मगकुशकंटककाँकरनाना चलबपयादेहिबिनुपदत्राना १४ चरणकमलमृदुमंजुतुम्हारे मारगअगमभूमिधरभारे १५ कंदरकोहनदीनदनारे अगमअगाधनजाहिंनिहारे १६ भालुब्याघ्रवृककेहरिनागा करहिंनादसुनिधीरजभागा १७ दो०॥ भूमिशयनबलकलबसन अशनकंदफलमूल तेकिसदासबदिनमिलहिं समयसमयअनुकूल १८ चौ०॥ नरअहाररजनीचरकरहीं कपटवेषबहुकोटिकधरहीं १९ लागैअतिपहारकरपानी विपिनविपतिनहिंजाइबखानी २० ब्यालकरालबिहगबनघोरा निशिचरनिकरनारिनरचोरा २१ डरपहिंधीरगहनसुधिपाये मृगलोचनितवभीरुसुभाये २२ हंसगवनि तुमनहिंबनयोगू सुनिअपयशमोहिंदेइहिंलोगू २३ मानससलिलसुधाप्रतिपाली जियइकिलवणपयोधिमराली २४ नवरसालब-

दोहार्थ॥ अरु भूमिमें तौ शयनहोइगो अरु बल्कलके बसनपहिरिबेमेंआवैंगे अरु अशनकही भोजनकन्द फल मूल तेऊका सदासबदिनमिलैहैं पर समय-समय के अनुकूलहोहिंगे ( १८ ) अरु निश्चरमनुष्यनको खाइलेतेहैं अनेकरूप भयानकधरतेहैं ( १९ ) अरु पहारको पानीलागत है ताते बिपिनिकीबिपत्ति कछुकहिबेयोग्य नहींहै ( २० ) अरु ब्याल जो सर्पकरालहैं अरु विहँग जेहैं बड़ेबड़ेकराल काग गिद्ध इत्यादिक ते सब जीवत आदमी को खाइजाते हैं अरु निश्चरनिकरकही बहुत हैं नारिनरके चोर सो बनमेंफिरतेहैं ( २१ ) बड़ेबड़ेधीरबान् कि बिषमता सुनि डरपते हैं अरु हे मृगलोचनि तुम्हार तौ भीर कही डरको सुभावहै ( २२ ) हे हंसगवनि तुमबनयोग्यनहीं हौ जो तुम हमारेसंग बनकोजाउगी तौ सबलोग मोको अपयश देहिंगे ( २३ ) हेप्रिय मानसरके सलिल जो सुधाकेसम त्यहिकी पालीजो मराली है सो लोन के समुद्र में कैसे जियैगी ( २४ ) पुनि नवीन जो रसालकही आम्रकीबाटिकाहै त्यहिकै बिहरनिहारि जो कि कोकिलाहै सो करीलवनमें कैसेसुखीरहैगी ( २५ ) तेसीतुमहौ हे चन्द्रबदनी ऐसे बिचारिकै गृहमेंरहहु काननमें बहुत दुःखहैं ( २६ ) दोहार्थ॥ सुहृदकहीजो सहजसुभायमित्र हैं अरु उपाय न जो स्वामीहैं अरु गुरु जो हैं ये त्रैलोक परलोकहुके रक्षक हैं इनकर उपदेश जे मानिकै सहजमें नहीं करते हृदयमें अघाइकै पछताते हैं अरु अवशिकै हितकै हानिहोइ है ( २७ ) इतिश्री रामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वंसने अयोध्याकाण्डे रामोत्तर श्रीजानकीप्रति वर्णनन्नामषष्ठस्तरङ्गः॥

नबिहरणशीला जियइकिकोकिलबिपिनकरीला २५ रहहुभवनअसहृदयबिचारी चन्द्रबदनिदुखकाननभारी २६ दो०॥ सहजसुहृदगुरुस्वामिशिखजोनकरैंहितमानि सोपछिताइअघाइउरअवशिहोइहितहानि २७॥ * * *

चौ०॥ सुनिमृदुबचनमनोहरपियके लोचननलिनभरेजलसियके १ शीतलशिखदाहकभइकैसे चकईशरदचन्द्रनिशिजैसे २ उतरुनआवबिकलबैदेही तजनचहतमोहिस्वामिसनेही ३ बरबशरोंकिविलोचनबारी धरिधीरजउरअवनिकुमारी ४ लागिसासुपदकहकरजोरी क्षमबदेविबड़िअविनयमोरी ५ दीनप्राणपतिमोहिशिखसोई ज्यहिबिधिमोरपरमहितहोई ६ मैंपुनिसमुझिदीख

दो० ॥ सियउत्तरप्रभुवचनको जानबसप्ततरंग रामचरणप्रभुहर्षलहिसीयलषणकोसंग ( ७ ) तब हे पार्व्वती मनोहबचन प्रियकोसुनिकै श्री जानकीजीके कमलनेत्रनमें जलभरिआयोहै ( १ ) तहां शीतलउपदेश कैसे दुःखदायकभयो है जैसे चकईको शरदऋतु निशिके चन्द्रमाकी किरणिपाइकै दहति है तहां श्रीरामचन्द्र धर्म्मकीमर्य्याद उपदेशकीनहै पर प्रीतमके बिक्षेपको उपदेश श्रीरामचन्द्र श्रीमुखते कहे तौ नहीं मानबे योग्यहै याको प्रपत्यशरणागत कही अरु आरतप्रपन्न कही इहां जानकीजी बनके

हेतुआरतप्रपन्न शरणागतदेखाये हैं ( २ ) तब जानकीजीको बिकलभये सन्ते उत्तर न आवा यहबिचारकीन कि स्वामी जो स्नेही हैं सहज सो मोकोतजाचाहते हैं ( ३ ) तब अवनिकमारि जो हैं श्रीजानकीजी ते बरवश नेत्रन को जलरोंकिकै धीरजधरिकै ( ४ ) सासुके पदलागिकै बिनयकरिकैयहकहती हैं कि हे देवि मोरिअबिनय क्षमाकरब ( ५ ) श्रीकौशल्याजीसे श्रीरघुनाथजी को सुनावती हैं कि मोकोप्राणप्रियने शास्त्रमर्य्याद करिकै नीक शिखदीन है जातेलोकमेंमोर परमहितहोइ ( ६ ) पर मैं अपनेमनमेंसमुझिदेख्यों कि पियके बियोगसमान जगमें और दुःखनाहींहै ( ७ ) असकहिकैश्रीजानकीजी रघुनाथजीके पगमें परती भईं प्रेमतेरसपागे बचन बोलती भईं ( ८ ) दोहार्त्थ ॥ हे प्राणनाथ करुणाके आयतन तुम सुन्दर सुखदायकहौ अरु त्रिकालज्ञ सबकेअन्तष्करणके जाननेहारे औ सुजानहौ रघुबंशकुलकुमुदहै त्यहिके तुमबिधुहौ ते तुम्हेंबिना सुरपुर जो है सो नरककेसमान है ( ९ ) माता पिता भगनी सुतभाई अपर जो प्रिय परिवारहै ते सब सहजही सुखदाई हैं ( १० ) अरु सासु श्वशुर इहां गुरुकही बड़ेकोअरु सुजन अरु जहांतकसगेनाते हैं अरु सुत जो सुन्दर सुशील है सुख-

मनमाहीं पियबियोगसमदुखजगनाहीं ७ असकहिसियरघुपतिपदलागी बोलीवचनप्रेमरसपागी ८ दो० ॥ प्राणनाथकरुणायतनसुन्दरसुखदसुजान तुमबिनरघुकुलकुमुदविधुसुरपुरनरकसमान ९ चौ० ॥ मातुपिताभगनीसुतभाई प्रियपरिवारसुहृदसुखदाई १० सासुससुरगुरुसुजनसगाई सुतसुंदरसुशीलसुखदाई ११ जहँलगिनाथनेहअरुनाते पियविनुतियतरणिहुतेताते १२ तनधनधामधरणिपुरराजू पतिबिहीनसबशोकसमाजू १३ भोगरोगसमभूषणभारू यमयातनासरिशसंसारू १४ प्राणनाथतुमबिनुजगमाहीं मोकहँसुखदकतहुंकोउनाहीं १५ जियबिनुदेहनदीबिनुवारी तैस्यइनाथपुरुषबिनुनारी १६ नाथसकलसुखसाथ

दाई है ( ११ ) हे नाथ जहांलगि नेह अरु नाते हैं ते पिय बिना त्यहितियको तरणिकही सूर्य्यहुतेताते हैं ( १२ ) हे नाथ तन धनधाम अरु धरणी अरु पुर कही सम्पूर्णलोकनकेराज्य ये ते समस्त पतिकेबिहीन शोककेसमाजहैं यह श्रुतिस्मृतिकहै है ( १३ ) अरु इन्द्रादिकनकरभोग जो है सो सम्पूर्णरोगकेसरिसहै अरु भूषण जे तनकेहैं ते भारकेसमान हैं अरु यहसंसारयमयातनाके सरिस है तुम्हेंविना देखियेतो इहां श्रीजानकीजी बैराग्यकी अवधि देखाइकै श्रीरामचन्द्रके सम्मुखकरती हैं सर्व्वजीवनको बिना श्रीरामचन्द्र चारिउपदार्त्थ बृथाहैं ( १४ ) हे प्राणनाथ तुम्हेंबिना यहि जगत् में मोको सुखदाता कोईनहींहै ( १५ ) हे नाथ जैसे बिनाजीवकैदेहअरु बिनाजलकीनदी तैसे बिना पुरुषकैनारिहै इहां यह अभिप्राय है कि सर्व्वजीवके प्रिय पति पुरुषनाथ श्रीरामचन्द्रही हैं सबजीव के ब्रह्मादिक देवता दानव मनुष्यपशु पक्षी इत्यादिक चराचरकेनाथ ते श्रीरामचन्द्र के भजनबिना सबझूठे हैं जो पूर्व्वकहिआये हैं ( १६ ) हे नाथ तुम्हारे साथ सुखहै काहेते शरदकेबिमल चन्द्रबदनकोनिहारि मुखछबिको पानकरिकै तीनिउताप नाशह्वैजायँगे ( १७ ) दोहार्त्थ॥ हेनाथ आपुकेसाथ बनकेखगमृग जे हैं तेई मोकोपरिजन हैं अरु बन जो है सोई नगर है अरु पर्णकुटी इन्द्रकेसदनसमहै अरु बल्कलबिमल दुकूलहोहिंगे ये सबसुखकेमूलहोहिंगे इहां श्रीजानकीजी यह देखावती हैं कि जो बनमें श्रीरघुनाथजीको भजनबनिपरै तो त्यहिकेसमान न इन्द्रलोकहै न ब्रह्मलोकहै अरु जो श्रीरामचन्द्रको भजन न बनै तो इन्द्रलोक अरु ब्रह्मलोक कण्टकको बनहै ( १८ ) अरु हे नाथ बनके देवी देव जे हैं ते सासु श्वशुर सम सार कहीरक्षाकरैंगे काहेते कि उदारकही दयालु हैं ( १९ ) कुश जे हैं किशलय कही

तुम्हारे शरदबिमलबिधुबदननिहारे १७ दो०॥ खगमृगपरिजननगरबन बल्कलबिमलदुकूल नाथसाथसुरसदनसम पर्णशाल सुखमूल १८ चौ०॥ बनदेवीबनदेवउदारा करिहैंसासुससुरसमसारा १९ कुशकिशलयसाथरीसोहाई प्रभुसँगमंजुमनोजतुराई २० कंदमूलफलअमीअहारू

**अवधिअवधशतसरिशपहारू २१ क्षणक्षणप्रभुपदकमलबिलोकी रहिहौंमुदितदिवसजिमिकोकी २२ बनदुखनाथकहेबहुतेरे भयबिषादपरितापघनेरे २३ प्रभुबियोगलवलेशसमाना सबमिलिहोहिंनकृपानिधाना २४ अस जियजानिसुजानशिरोमनि लेइयसंगमोहिंछांड़ियजनि २५ बिनतीबहुतकरौंकास्वामी करुणामयअरुअन्तर्यामी २६ दो०॥ राखियअवधजोअवधिलगि रहतजानियेप्राण दीनबन्धुसुन्दरसुखदशीलसनेहनिधान २७ चौ०॥ मोहिमगचलतनहोइहिहारी**

कोमलपर्ण त्यहिकै जो साथरी सो आपकेसंग मनोजकी तुराईकही रजाईसम है ( २० ) अरु आपकेसाथ कन्दमूलफल अहार सुधाते सरस हैं अरु अवधिकही चौदहवर्षताईं शत अयोध्याके सरिस पहार हैं ( २१ ) क्षणक्षण प्रभुके पदकमल विलोकिकै मैं प्रमुदित रहब जिमिदिवसमें कोकके संग कोकीरहै है ( २२ ) बनके दुख आपने बहुतकहा है भयविषादअरु परितापकही अतिचिन्ताते हृदयजरै इनकरिकै युक्त बनके दुख आपकहे ( २३ ) तहां हे कृपानिधान तुम्हारे विक्षेपके दुखके समान येतेदुख लवलेशहू नहीं है ( २४ ) हेनाथ सुजानन के शिरोमणि ऐसेजियमें जानिकै मोको सगंलीजिये तजियेजनि ( २५ ) हे स्वामी मैं बहुत विनतीकाकरौं तुम करुणामय अरु अन्तर्यामी हौ ( २६ ) दोहार्थ॥ हेदीनबन्धु अवधिजो है चौदहवर्ष तबताईं श्रीअयोध्यामें मोको राखते हौ जोतोइतने दिनमें मोर प्राण रहतजानहु तो राखहु काहेते तुम अन्तर्यामीहौ अरु सुन्दर सुखदायकहौ दीनवन्धुहौ अरु शीलस्नेहके निधानकही स्थानहौ आपु विचारिकै आज्ञादेहु ( २७ ) मगचलत मोको हारिन होइहि काहेते किक्षणक्षण तुम्हारे पदकमल निहारिनिहारि इहां यह अभिप्रायहै संसारीजीव को संसारके मार्गबिषे चलतसंते श्रमकही बन्धन न होइहि कब जब रघुनाथजीके चरणारबिन्द हृदय बिषे अहर्निशि एकोएकक्षणमेंआवैं ( २८ ) हेप्रिय सब प्रकार से आपुकीसेवाकरिहौं मगते जनित कही उत्पन्न त्यहिके श्रम जो होहिंगे त्यहिको हरिलेहौं ( २९ ) तहां तरुछाहींमें जब आपु बैठहुगे तब मैं पांउपखारिकै मुदितमनते बयारिकरूंगी ( ३० )

**क्षणक्षणचरणसरोजनिहारी २८ सबहिभांतिपियसेवाकरिहौंमारगजनितसकलदुखहरिहौं २९ पाँयपखारिबैठितरुछाहीं करिहौंबायुमुदितमनमाहीं ३० श्रमकणसहितश्यामतनदेखे कहदुखसमौप्राणपतिलेखे ३१ सममहितरुतरपल्लवडासी पाँयपलोटिहिसबनिशिदासी ३२ बारबारमृदुमूरतिजोही लागिहितातिबयारिनमोही ३३ कोप्रभुसंगम्वहिचितवनहारा सिंहबधूजिमि शशकसियारा ३४ मैंसुकुमारिनाथबनयोगू तुमहिउचिततपमोकहँभोगू ३५ दो०॥ ऐसेवचनकठोरसुनि जोनहृदयबिलगान तौप्रभुविषमवियोगदुख सहिहैंपामरप्रान ३६ चौ०॥ असकहिसीयबिकलभईभारी बचनवियोगनसकीसँभारी ३७ देखिदशा**

अरु श्रम के कणसहित श्यामसुन्दररूप प्राणपतिको देखिदेखिमोको कहाक्लेश है ( ३१ ) अरु तरुकेतर महिसमकरिकै पल्लवडासिकै आपुको बैठाइकै सब प्रकारते दासी पांइपलोटैगी ( ३२ ) हे नाथ बारबारमृदुमूर्त्ति जोहिजोहिकै मोको तातिबयारि न लागिहि ( ३३ ) प्रभुमोको आपुके संग चितवनहारको काहेते सिंहबधूको शशक कही सियार कैसेदेखिसकैहै ( ३४ ) हे नाथ आप कहा कि तुम सुकुमारिहौ बनयोग्य नहीं हौ तहां मैं आपुतेपूंछतीहूं कि आपुवनयोग्यहौ बिचारिलेहु अरु यहबातवेद अयोग्यकरिकै कहते हैं कि आपुको तप अरु मोंको भोग उचित है नहीं है अयोग्य है ( ३५ ) दोहार्थ॥ तहां आपु मोको रहिजाबेको कहा सो ऐसे कठोरबचन सुनत सन्ते जो हृदय बिलगाइ न गयो तो यहपांवर प्राण को जानै केतेदुःख सहैंगे ( ३६ ) हे पार्वती असकहिकै श्रीजानकीजीअतिबिकलभईं देहकीसंभारनहीं रही है ( ३७ ) तब श्रीजानकीजीकी दशादेखिकै

श्रीरघुनाथजी ने यह जाना कि जो हठकरिकै रखिहौं तो प्राणकोन राखिहि ( ३८ ) तब भानुकुलके नाथ श्रीरघुनाथजी कहतेभये कि शोचको तजिकै साथचलौ ( ३९ ) अब विषादको अवसर आजु नहींहैबेगबनकी तयारीकरो ( ४० ) तब प्रियबचनकहिकै प्रियको समुझाइकै माताके पदबंदिकै आशीर्वादपाइकै चलतभये देखिये तो श्रीरामचन्द्रजी सबजीवनके सुहृद गुरुस्वामी हैं अरु श्रीजानकीजी लक्ष्मण भरतशत्रुहनकेप्रियहैं ते श्रीरामचन्द्र आपु श्रीमुख श्रुतिस्मृति धर्म्मशास्त्र सबकोधर्म्मसार श्रीजानकीजी लक्ष्मणजू उपदेशकीनहै उन्होंने उत्तरदैकै नहीं मान्यो है जहां बिचारकरिये इहां सर्व्व धर्म्मोपायशून्य आर्तप्रपन्न शरणागतजानिये यहिजीवनको दुर्ल्लभहै अरु जापर अति कृपाहोइ ताको

रघुनायकजाना हठराखेनहिंराखिहिप्राना ३८ कह्यउकृपालुभानुकुलनाथा परिहरिशोचचलहुबनसाथा ३९ नहिंविषादकर अवसरआजू वेगकरहुबनगवनसमाजू ४० कहिप्रियबचनप्रियहिसमुझाई लगेमातुपदआशिषपाई ४१ बेगिप्रजादुखमेटवआई जननीनिठुरबिसरिजनिजाई ४२ फिरिहिदशाबिधिबहुरिकिमोरी देखिहौंनयनमनोहरजोरी ४३ सुदिनसुघरीतातकबहोइहि जननीजिअतबदनबिधुजोइहि ४४ दो०॥ बहुरिबच्छकहिलालकहिरघुपतिरघुबरतात कबहिबोलाइलगाइउर हर्षिनिरखिहौं। गात ४५ चौ० ॥ लखिसनेहब्याकुलमहतारी बचननआवबिकलभइभारी ४६ रामप्रबोधकीनविधिनाना समयसनेहनजाइबखाना ४७

आवै ( ४१ ) तब श्रीकौशल्याजी कहती हैं कितात हे लाल सुखपूर्व्वकतुम जानकीसंयुक्त बनकोजाहु पर प्रजनकेदुःख वेगमेट्यहुआइ अरु जो जननी मैं हौं अति निठुर सो बिसराइ जनिदेव ( ४२ ) इहां उक्तिबिषेआक्षेपालंकारहै हे बिधाता मोरिदशा कबहुं फिरिहि फेरियहकबहूं मनोहरजोड़ी इननेत्रनभरि देखौंगी ( ४३ ) हे तात वह सुन्दर दिन घरी कबहोइहि मैं जो निठुरजननीहौं सो कबआपुको विधुबदन जोहौंगी ( ४४ ) दोहार्थ ॥ हेपार्बती बहुरि श्रीकौशल्याजी अतिआर्त्त बचनकहती हैं हे बच्छकही अतिप्रीतिको हेलाल हेरघुवर हेतात असकहिकै उरमें लगाइकै सुन्दरगात निरखिकै अतिहर्षको प्राप्ति होउँगी यहमङ्गलघरी कबआइहिइहां बिरहोक्ति आक्षेपकही पुनरुक्ति न जानब ( ४५ ) तब श्रीरामचन्द्र अरु जानकीजीको देखिकै मातास्नेहते ब्याकुल होतिभई ताते बचननहीं कहिआवै अरु जो बोलैहै सोशिथिलवाणी ( ४६ ) यहि चौपाईते सात

तबजानकीसासुपदलागी सुनियमातुमैंपरमअभागी ४८ सेवासमयदैवदुखदीना मोरमनोरथसुफलनकीना ४९ तजबक्षोभ जनिछांड़िहिछोहू कर्मकठिनकछुदोषनमोहू ५० सुनिसियबचनसासुअकुलानी दशाकवनबिधिजाइबखानी ५१ बारहिंबारलाइउरलीन्हा धरिधीरजउरआशिषदीन्हा ५२ अचलहोहिअहिवाततुम्हारा जबलगिगंगयमुनजलधारा ५३ दो०॥ सीतहिसासुअ शीषसिखदीनअनेकप्रकार चलीनाइपदपद्मशिरअतिहितबारहिंबार ५४ चौ० ॥ समाचारजबलक्ष्मणपाये ब्याकुलबिलखिबदनउठिधाये ५५ कंपपुलकतननयनशरीरा गहेचरणअतिप्रेमअधीरा ५६कहिनसकतकछुचितवतठाढ़े मीनदीनजनुजलतेकाढ़े ५७ शोचहृदयबिधिकाहोनिहारा सबसुखसुकृतसिरानहमारा ५८ मोकहँकाहकहवरघुनाथा रखिहैंभवनकिलेइहहिंसाथा ५९ रामबिलोकिबंधुकरजोरे देहगेहसबतृणसमतोरे ६० बोलेवचनरामनयनागर शीलसनेहसरलसुखसागर ६१ तातप्रेमबशजनिकदराहू समुझिहृदयपरिणामउछाहू ६२ दो०॥ मातुपितागुरुस्वामिसिख शिरधरिकरियसुभाय लह्यउलाभतिनजनमकर नतरुजन्मजगजाय ६३ चौ०॥ असजियजानिसुनहुसिखभाई करहुमातुपितुपदसेवकाई ६४ भवनभरतरिपुसूदननाहीं

राउवृद्धममदुखमनमाहीं ६५ मैंबनजाउँतुम्हैंलैसाथा होइहिसबबिधिअवधअनाथा ६६ गुरुपितुमातुप्रजापरिवारू सबकहँपरैदुसहदुखभारू ६७ रहहुकरहुसबकरपरितोषू नतरुतातहोइहिबड़दोषू ६८ जासुराजप्रियप्रजादुखारी सोनृपअवशिनरकअधिकारी ६९ रहहुतातअसिनीतिबिचारी सुनतलषणभयेब्याकुलभारी ७० सियरेबदनसूखिगयेकैसे परसततुहिनतामरसजैसे ७१ दो०॥ उतरुनआवतप्रेमबशगह्यउचरणअकुलाय नाथदासमैंस्वामितुम तजहुतौकाहबसाय ७२ चौ० दीनमोहिंसिखनीकगोसाईं अगमलागम्वहिंनिजकदराई ७३ नरवरधीरधर्मधुरिधारी निगमनीतिकहँतेअधिकारी ७४ मैंशिशुसमसनेहप्रतिपाला मन्दरमेरुकिलेहिंमराला ७५ गुरुपितुमातुनजानौंकाहू कहौंसुभावनाथपतिआहू ७६ जहँलगिजगतसनेहसगाई प्रेमप्रतीतिनिगमनिजगाई ७७ मोरेसबैएकतुम

दोहाताई अक्षरार्थं जानब यहदृष्टांत आशीर्बाद लोकोक्ति है पर अनादिअखण्ड गङ्गा यमुनाकी धारा है तिनपनकी चौपाई को अर्थ॥ हेतातगुरु जे हैं श्रेष्ठ अरु मातापिता अरु सुतजोहै अरु साईं कही जो अपन प्रतिपालन करै हैं इनको प्राणकी नाईं सेइये ( ९५ ) अरु श्रीरामचन्द्र प्राणहु के प्राणहैं अरु जीवनके जीव हैं अरु स्वार्थरहित हैं अरु सर्बजीवनकेसखा हैं ( ९६ ) ताते जे जहांतक परमपूजनीय हैं तेसब श्रीरामचन्द्रकेसम्बन्ध

स्वामी दीनबन्धुउरअन्तर्य्यामी ७८ धर्मनीतिउपदेशियताही कीरतिभूतिसुगतिप्रियजाही ७९ मनक्रमबचनचरणरतिहोई कृपासिंधुपरिहरियकिसोई ८० दो० ॥ करुणानिधिशुचिबन्धुकेसुनिमृदुबचनविनीत समुझायेउरलायप्रभुजानिसुभावसभीत ८१ चौ० ॥ मांगहुबिदामातुसनजाई आवहुवेगिचलहुबनभाई ८२ मुदितभयेसुनिरघुबरबानी भयउलाभबड़गइबड़िहानी ८३ हर्षितहृदयमातुपहँआये मनहुंअन्धफिरिलोचनपाये ८४ जाइजननिपदनायउमाथा मनरघुनन्दनजानकिसाथा ८५ पूंछेहुमातुमलिनमनदेखी लषणकहीसबकथाविशेषी ८६ गईसहमिसुनिबचनकठोरा मृगीदेखिजनुदवचहुंवोरा ८७ लषणलख्यउभाअनरथआजू यहसनेहबशकरबअकाजू ८८ मांगतबिदासभयसकुचाहींजाइसंगबिधिकहैंकिनाहीं ८९ दो० ॥ समुझिसुमित्रारामसिय रूपसुशीलसुभाव नृपसनेहलखिधुन्यउशिर पापिनिदीन्हकुदाँव ९० चौ० ॥ धीरजधरेउकुअवसरजानी सहजसुहृदबोलीमृदुबानी ९१ ताततुम्हारिमातुबैदेही पितारामसबभांतिसनेही ९२ अवधतहाँजहँरामनिवासू तहाँदिवसजहँभानुप्रकाशू ९३ जोसुतरामसीयबनजाहीं अवधतुम्हारकाजकछुनाहीं ९४ गुरुपितुमातुबन्धुसुरसाईं सेइयसकलप्राणकीनाईं ९५ रामप्राणप्रियजीवनजीके स्वारथरहितसखासबहीके ९६ पूजनीयप्रियपरमजहांते मानियसबैरामकेनाते ९७ असजियजानिसंगबनजाहू लेहुतातजगजीवनलाहू ९८ दो० ॥ भूरिभाग्यभाजनभयउ मोसमेतबलिजाउँ जोतुम्हरेमनछांड़िछल कीनरामपदठाउँ ९९॥ * * *

नातेते मानिबेयोग्य हैं अरु जो श्रीरामसम्बन्ध नहोइतो त्यहिकोत्यागहै ( ९७ ) आगे एकचौपाई अरु एक दोहाकोपदार्थैजानब॥ इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसने श्रीअयोध्याकाण्डेश्रीजानकीउत्तरसङ्गबनगमनआज्ञालषणसंयुक्तसुमित्राहर्षशोकवर्णनन्नामसप्तमस्तरंगः ॥७॥

दोहा॥ लषणमातुउपदेशवर रामचन्द्रलैसंग रामचरणपितुपासगेजानब अष्टतरंग ( ८ ) सुमित्राजी कहती हैं कि हे तात तुम श्रीरामचन्द्रके सङ्ग बनकोचलेहु भलकिह्यहुहै तुम मोको स्त्रिनकेमध्यमें श्रेष्ठकीन काहेते कि यहवेदकहते हैं कि पुत्रवतीस्त्री सोईहै जेहिकरपुत्र श्रीरामभक्तहोइ ( १ ) नतरु जेहिकरपुत्र रामभक्त न होइ सो स्त्रीबांझहोइ सो भली है अरु जोवहिकेपुत्र उत्पन्नहोइ सो बादिकही वृथाहै काहेते कि जो श्रीरामचन्द्रते विमुखभये तौ वहिमाताको बड़िहानिहै काहेते कि पुत्रकेकर्त्तव्य नीक बिकार पिता माता के प्राप्तिहोतहैं अरु रामबिमुख प्राणी जोहै जन्मभरिअप्रमादकरैगो ( २ ) हे तात श्रीरामचन्द्र केवल तुम्हारेभाग्य करिकै बनकोजाते हैं काहेते कि सीतारामचन्द्रकैसेवा तुमहींकरोगे अरु जो यह अर्थ

चौ० ॥ पुत्रवतीयुवतीजगसोई रघुपतिभक्तजासुसुतहोई १ नतरुबांझभलिबादिबिआनी रामबिमुखसुततेबड़िहानी २ तुम्हरेभाग्यरामवनजाहीं दूसरहेतुतातकछुनाहीं ३ सकलसुकृतकरफलसुतयेहू रामसीयपदसहजसनेहू ४ रागरोषईर्षामदमोहू जनिसपन्यहुइनकेबशहोहू ५ सकलप्रकारबिकारबिहाई मनक्रमबचनकरेहुसेवकाई ६ तुमकहँबनसबभांतिसुपासू सँगपितुमातुरामसियजासू ७ ज्यहिनरामबनलहहिकलेशू सुतसोकरेहुइहैउपदेशू ८ छं०॥ उपदेशयहिज्यहितातकानन रामसियसुखपावहीं प्रियमातुपितुपरिवारपुरजन सुरतिबनबिसरावहीं ९ तुलसीसुतहिसिखदेइआशिषदीनपुनिआयसुदई रतिहोउअबिचलअमल

करतेहैं कि तुम शेषहौ अरु शेषके माथेपर पृथ्वी है तेहिके भार राक्षस हैं तिनकेबधकेअर्थ श्रीरामचन्द्र बनगमनकियेजाते हैं हे तात ताते तुम्हारो भाग्यहै तहां यहअर्थ सामान्ययुक्तिकरिकै है पर सिद्धनहीं है काहेतेयहिअर्थमें अनित्यता आवती है अरु लक्ष्मणजीको स्वरूप अखण्ड एकरसहै तहांबालकाण्डकी चौपाईमेंजानब शेषसहस्त्रशीश जगकारण ( ३ ) हेतात सबसुकृतकरफल श्रीसीतारामके चरणारबिन्दबिषे सहजस्नेह ( ४ ) हे तात रागरोषईर्षामदमोहइनकेबशसपनेहुंजनिहोयहु ( ५ ) सबप्रकारते बिकारबिहाइकै श्रीसीतारामकै सेवकाई मन बच कर्मतेकिह्यहु ( ६ ) हे ताततुमको बनमें सबप्रकारते सुपासहै काहेते कि श्रीसीताराममाता पिता सरिस तिनकेसंग ( ७ ) हे पुत्र हमार इहैउपदेश है कि तुम्हेंकरिकै बनबिषे श्रीसीता रामको क्लेश न होइ ( ८ ) छन्दार्त्थ ॥ हे तात हमार यह उपदेशहै कि ज्यहिते श्रीसीतारामबनजातसन्ते सुखपावहिं अरु माता पिता परिवार जो हैं अरु पुरजन जो हैं जाते ऐसीसेवातुमकिहेहु कि बनबिषेइनसबकीसुरति बिसरिजाहि ( ९ ) श्रीगोसाईंतुलसीदासजी कहतेहैं कि श्रीसुमित्राजी पुत्रको सिखापन दैकै पुनि आशीर्व्वाददीन पुनि आयसुदीन किहे तात सुखपूर्व्वक सङ्गजाहु पुनि आशीर्व्वाददीन प्रसन्नहोइकै कि श्रीसीतारामजीके चरणारबिन्दबिषे तुम्हारी अबिरल अचल निर्म्मल एकरस नित्यनित्यनई भक्तिउत्पन्नहोइ देखिये तौ ऐसी श्रीरामचन्द्रकी भक्तिमेंप्राप्ति शरणागतहै जिनके धनमेंधाममें पुत्रमें लेशहूस्नेहनहीं है सर्व्वस श्रीसीतारामार्प्पणहै तैसेही लक्ष्मणजी आत्मसमर्प्पणी हैं ( १० ) सोरठार्त्थ॥ हे गरुड़ तब श्रीलक्ष्मणजी माताके नमस्कार करिकै तुरन्तचले पर हृदय बिषे शङ्कितचले काहेते श्रीमाता मोहकेबशफेरि न लेइ त्यहिते हर्षिकै शीघ्रचलतेभये कैसे जैसे बागुरकही जालकोतुराइकै अपने भाग्य के बश आनन्दते बन को मृग भागते हैं ( ११ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसने अयोध्याकाण्डेश्रीरामआज्ञासुमित्राआयसुलक्ष्मणबनगमनसमीपबर्णनन्नामअष्टमस्तरंगः॥ ८॥ :: :: :: ::

सिय रघुबीरपदनितनितनई १० सो०॥ मातुचरणशिरनाइ त्वरितचलेशंकितहृदय बागुरबिषमतुराइ चल्योभागिमृगभागबश ११

चौ०॥ गयेलषणजहँजानकिनाथा भयेमनमुदितपाइप्रियसाथा १ बंदिरामसियचरणसोहाये चले संगनृपमन्दिरआये २ कहहिंपरस्परसबनरनारी भलिबनाइबिधिबातबिगारी ३ तनकृशमनदुखबदनमलीने बिकलमनहुंमाखीमधुछीने ४ करमींजहिंशिरधुनिपछिताहीं जनुबिनुपंखबिहगअकुलाहीं ५ भइबड़भीरभूपदरबारा बरणिनजाइबिषादअपारा ६ सचिवउठाइराउ

दोहा॥ रामसियानुजसंगलैगयेकेकयीभौन नवतरंगपितुबोधकरिकरन चहतबनगौन ( ९ ) हे गरुड़ लक्ष्मणजू श्रीजानकीनाथके पासगये प्रिय साथपायकै आनन्दहोतभये ( १ ) श्रीसीतारामके चरणनकी बन्दनाकरिकै श्रीरामचन्द्रके संग नृपमन्दिर को प्राप्तिभये ( २ ) तहां सम्पूर्णनर नारि परस्पर कहतेहैं कि बिधातैं भलिबनाइकै बात बिगारयो है ( ३ ) सबकेतन कृश कही दूबरहोइरहेहैं कैसे बिकलहैं मानों कोईकरिकै माखिनकी मधुछीनिगई है ( ४ ) सब करमींजते हैं शिरधुनते हैं पछिताते हैं ब्याकुलताहै जैसे बिनापक्षकर बिहंग अकुलाइहै ( ५ ) हेगरुड़ भूपके दरबारकही द्वारबार कही दरवाजे पर बड़ी भीर भई है त्यहि समय कर अपार विषादबर्णिबे योग्यनहीं है ( ६ ) तब सुमंत राजाको उठाइकै बैठारतभये प्रिय बचनते कही कि श्रीरामचन्द्र आये ( ७ ) श्रीजानकीजी सहित दोउपुत्रनको निहारतभये भूमिपतिराजा धीरमान् सो अतिव्याकुलभये ( ८ ) दोहार्थ॥ श्रीजानकीजी सहित सुभग दोउपुत्रनको देखिदेखि अतिअकुलाइ उठे हैं अरु स्नहके बशते बारबार उरमें लगावतेभये ( ९ ) तहां नरनारी शोकते विकल बोलि नहींसकते हैं अरु हृदयमें दारुणदाह है ( १० ) तबश्रीरामचन्द्र अनुरागते चरणमें शीश नाइकै बिदामांगते भये ( ११ ) हेपितु हर्षिकै आयसुदेहु अरु आशीर्बाद देहु हर्षके समयमें आपुबिषाद न करहु ( १२ ) हेतात प्रेम करिकै प्रमाद कही अनुचित के बश मोको राखबेकी इच्छा न करौ नहीं तौ जगत् में यश जाइगो अयशहोइगो अरु अपबादकही निन्दाहोइगी ( १३ ) यह श्रीरामचन्द्रकीबाणी

बैठारेकहिप्रियबचनरामपगुधारे ७ सियसमेतदोउतनयनिहारी ब्याकुलभयउभूमिपतिभारी ८ दो०॥ सहितसीयसुतसुभगदोउ देखि देखिअकुलाय बारहिंबारसनेहबशराउलेहिंउरलाय ९ चौ०॥ सकइनबोलिबिकलनरनाहू शोकशिथिलउरदारुणदाहू १० नाइशीशपदअतिअनुरागा उठिरघुबीरबिदातबमांगा ११ पितुअशीषआयसुम्वहिंदीजै हर्षसमयबिस्मयकतकीजै १२ तातकियेप्रियप्रेमप्रमादूयशजगजाइहोइअपवादू १३ सुनिसनेहबशउठिनरनाहूबैठारेरघुपतिगहिबाहू १४ सुनहुताततुमकहँमुनिकहहीं रामचराचरनायकअहहीं १५ शुभअरुअशुभकर्मअनुहारी देइईशफलहृदयबिचारी १६ करैजोकर्मपावफलसोई निगमनीतिअसकहसबकोई १७ दो०॥ अवरकरैअपराधकोउअवरपावफलभोग अतिबिचित्रभगवन्तगतिकोजगजाननयोग १८ चौ०॥ राउरामराखन

राजासुनिकै स्नेहके बशहोइकै श्रीरघुनाथजीको हाथधरिकै बैठारतेभये ( १४ ) तब श्रीरामचन्द्रने यह जाना कि राजामोरे बात्सल्यरस में प्रेम केबशहोइकै तुरन्त शरीरकोत्यागि न देहिं ताते राजाकेहृदयमें शांतरसनेप्रवेशकीन जाते राजाकेम्वहिंबिषे परमेश्वरभावहोइ तब राजाबोले कि हे तात तुमको सब मुनीश्वर कहते हैं कि श्रीरामचन्द्रजी चराचरकेनायककही पालक हैं ताते सबकेईश तुमहींहौ आगे ईशको अध्यारोपणकरिकै श्रीरामचन्द्रको कहते हैं तौ ईश अन्तर्यामीहैं ( १५ ) तहां यह चाहिये किशुभाशुभ कर्म जो है त्यहिको ईशबिचारिकै फलदेत हैं ( १६ ) काहेते कि जो नीकबिकार कर्मकरते हैं सोईफलको प्राप्तिहोते हैं यह वेदकहते हैं ( १७ ) दोहार्थ॥ तहां देखिये तौ अपराध कोईकरै अरु फलभोग और करै यह भगवत्कै बिचित्रगति कौनजानिसकैहै इहांराजा वाक्यांतरकरिकैश्रीरामचन्द्रसे कहते हैं तुमतौ ईशहौ अरु भगवन्तहौ अरु वेदतुम्हारी

मर्याद हैं तहां जो जसकरै तहां ताको तसफलदेबेको उचित है तहां अपराधतौ केवल कैकेयी को है अरु फलमैं भोगकिया चाहतहौं काहेते कि आपुमोरे माथेडारिकै बनगमन कियाचाहतहौ अरु तुम्हारे बिछुरतसंते मैं प्राणकोत्यागिदेउँगो तहां अयशदुःख अधर्मको मैं भाजनभयउँ अरु जो तुम्हारी इच्छाआवैगी सोतो तुम करबैकरोगे काहेते कि तुम्हारिरजाइ सर्बके शीशऊपर है परमोकोनहीं समुझिपरतहै कि पूर्बमोसे का चूकपरीहै (१८) हे भरद्वाज राजा श्रीरामचन्द्रके राखिबेहेतु ऐसे अनेकउपायकीन है छलत्यागिकै (१९) तब राजाने श्रीरामचन्द्रकर रुखलखा कि नहीं रहैंगे काहेते कि धर्मधुरन्धर हैं धीरसयानहैं किंतु राजा धर्मधुरन्धर धीरसयानेहैं यह जानाकि श्रीरामचन्द्र परमेश्वर हैं इनकीगतिको ब्रह्मादिक देवता अरु वेदभी नहीं जानते हैं ते श्रीरामचन्द्र कैकेयीके मिसुकरिकै मोरीबातको स्थापनकरिकै बिशेषबनगमन कियाचाहते हैं तहां अबमोको का कर्त्तब्यहै जो मैं कहौं कि बनको न जाहु तब जरूररहिजाइँगे काहेते कि भक्तवत्सल हैं परउनकी संकल्पहोइगी तब मैं सन्तनकेसमाज में निपटसकामी अबुधकहा-

**हितलागी बहुतउपायकीनछलत्यागी १९ लख्यउरामरुखरहतनजाने धर्मधुरन्धरधीरसयाने २० तबनृपसीयलाइउरलीन्ही अ-**

वोंगो तहां परमेश्वरको संकल्प ऐसो कौनसमर्थ है जो भंगकरैगो अरु जोकहौंबनकोजाहु तौ सन्तनकीसमाजबिषेमहामूर्खक्रूरकहावोंगोयहविचारिराजा श्रीरामचन्द्रकी दिशिदेखिकै मौनह्वैरहेहैं न रहबेकोकहा न जाबेकोकहा अरु मनमें यह संकल्पहै कि श्रीरामचन्द्रके बिछुरतसंते मैं शरीरको त्यागिदेउँगो पर उनकीसंकल्पभंग नहोइ जाते साधुनकीसमाजमेंतत्सुखीकहावोंगो यह बिचारिकै कछु न कहैं तहां पार्वतीप्रश्नकरतीहैं कि हेमहादेव दशरथमहाराज ऐसे रामानन्य अरु श्रीरामचन्द्रजी के प्रियजिनकोपिताकीन अरु यह जाना कि मोरेबिछुरत शरीरको त्यागिदेहिंगे तहां श्रीरामचन्द्ररहि क्योंनगये पुनि दशरथमहाराजने शरीरको त्यागकीनतब श्रीरामचन्द्र राजाको परमपद क्यों न दीन तब महेश पार्बती पर प्रसन्नह्वैकै प्रश्नको उत्तरदेते हैं कि हे प्रिया तुमधन्यहौ सुनहु जो कोई कहतेहैं राजादशरथ बाक्यधर्ममें बद्धभये ताते स्वर्गको गये सो यह कहत महाअनुचित है काहेते कि राजा अपने बाक्यकोधर्म बिश्वामित्रते श्रीरामचन्द्रहेतु नाहींकरिगये तहां राजाभगवत् धर्ममें बद्धभये हैं काहेते कि राजासदाबात्सल्यरसमें रहते हैं अरु त्यहि कालमें श्रीरामचन्द्रकी प्रेरणा ते राजाकोशांतरस प्राप्ति है श्रीरामचन्द्र को परमेश्वर जान्यो है ताते न रहैको कहा न जाइबे को कहा यह परमभागवतनकी रीति है कि परमेश्वरकीजो इच्छाहोइ सो करैं अरु श्रीरामचन्द्रको जो बनगवनको पूर्बही संकल्पहै अरु श्रीदशरथ महाराज मनुके तनमें यहसंकल्पकीन वरमांगिलीनकि हे श्रीरामचन्द्र तुम्हारे बिछुरतसन्ते मेरोशरीर छूटिजाय यहस्नेहबना रहै ताते श्रीरामचन्द्र अपनी संकल्प अरु अपने प्रियजनको संकल्पसदापूर्ण करतआये हैं ताते बनगमनकीनहै अरु दशरथ महाराजको स्वर्गको प्राप्तिकरहिंगे तामें दुइहेतुहैं तहां राजा श्रीरामचन्द्रको राज्याभिषेक को संकल्पकीनहै अरु वात्सल्यरसमें शरीरकोत्याग कीनहै ताते श्रीरामचन्द्र राजाको इन्द्रलोककको प्राप्तिकीनहैमोक्ष न दीनकाहेते ऊंचेस्थानपरबैठिकैजैसेहमबालकहैं तैसी हमारीबनलीलादेखहिंजाते संतोषहोइ अरुहमारो राज्याभिषेकदेखहिं अरु हमारीराजनीतिदेखहिं अरु जबहमपरबिभूतिकोगमनकरहिंगे तबसंगहीलैजाहिंगे यहबिचारिकै मोक्षप्रथमहिं नहीं दीनजो प्रथम परमपद देते तौ दूनौं रस भंगहोइजाते अरु दोऊ की कल्पना बनीरहती हे पार्वती यह सब श्रीरामचन्द्रकी इच्छानुकूल सबपर है यह बिशेष

**तिहितबहुतभाँतिसिखदीन्ही २१ कहिबनकेदुखदुसहसुनावासासुश्वशुरपितुसुखसमुझावा २२ सियमनरामचरणअनुरागा घरनसुगमबनअगमनलागा २३ औरौसबहिसीयसमुझाई कहिकहिबिपिनबिपतिअधिकाई २४ सचिवनारिगुरुनारिसयानी**

जानौ तहां प्रमाण है ब्रह्मरामायणेबाक्यं नारदंप्रतिश्लोक॥ युक्तोराजाधर्मतोधर्ममध्ये मौनीभूतःप्रेरितोराघवेन (वात्सल्येनद्वौभागवते) धर्मे राजादशरथो महान्यातुंस्थातुंचरामायनोक्तवान्तत्रभक्तितः (पुनः वृहन्नाटके) श्रीदशरथबाक्यं श्रीरामंप्रति॥ माजाहीत्यप्यमंगलंव्रजसखेस्नेहे नहीनंबचःतिष्ठेतिप्रभुतायथा रुचिकुरुष्वासौरामचन्द्रस्यबन्धस्त्यक्तवादेहंस्वर्गलोकंजगाम १ (पुनः श्रीमन्महारामायणे शिवबाक्यंपार्बतींप्रति) सोप्युदासीनताम्प्राप्तोराजीवापमित्ययाबिनेति

वचनंसंभावितेवानवातस्माच्छिक्षसिमांयथासमूचुः तवकृत्ययामास्थितंलीलांदर्शयितुंस्वकममह तारामेणबिरोद्धवामुच्चस्व १ स्मतदर्पयितुंमहेंद्रसदृशो राज्याभिषेकेतथागन्तब्यंहिमयास्यवांधवगणै राजाचधामस्वकं संचिंत्यामृतमानसेननृपते स्वर्गेस्ववासःकृतः४ ॥ ( २० ) तब श्रीदशरथमहाराज जाना कि श्रीरामचन्द्र इहां न रहेंगे तब श्रीजानकीजीको अतिहितकरिकै शिक्षाकरते हैं श्रीजानकीजीको हृदयमें लगाइलीन ( २१ ) तब दशरथमहाराजने श्रीजनकीजीको वनकेदुःख सुनायेहैं अरु सासु ससुर माता पिता के सुखसमुझावते भये हैं ( २२ ) हे पार्बती श्रीजानकीजीको मन श्रीरामचन्द्रजीकेचरणारबिन्दमें उमग्योहै ताते बनसुगम लागतहै अरु घर अगमलागतहै रहानहींचाहतीहैं ( २३ ) और सबै श्रीजानकीजीको विपिनकीअधिकविपतिकहिकहि समुझावतभये ( २४ ) सचिवनारि अरु गुरुनारि सयानी सहित स्नेह मृदुबाणीते कहता हैं ( २५ ) हे जानकीजी तुमको तौ सासु ससुरनेबनबासनहींदीनहै ताते जो आज्ञाकरैं सो करहु ( २६ ) दोहार्त्थ॥ सब कर सिखावन अतिशीतल मधुर मृदुलहितकारक श्रीजानकीजीको न सोहानिहैं कैसे शरदऋतु चन्द्रमाकी किरणिपाइकै जैसे चकई अकुलाइउठी है ( २७ ) इतिश्री रामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वंसने अयोध्याकाण्डे समष्टी बिरहबिषाद बर्णनन्नामनवमस्तंरगः ९॥ :: :: :: :: :: :: :: ::

सहितसनेहकहहिंमृदुबानी २५ तुमकहँतौनदीनबनबासू करौजोकहहिंससुरगुरुसासू २६ दो०॥ सिखशीतलहितमधुरमृदु सुनि सीतहिनसोहानि शरदचन्दचन्दनिलगतजनुचकईअकुलानि २७॥

चौ०॥ सीयसकुचबशउतरुनदेयी सोसुनितमकिउठीकैकेयी १ मुनिपटभूषणभाजनआनी धरिआगेबोलीमृदुबानी २ नृपहिप्राणप्रियतुमरघुबीरा शीलसनेहनछांड़ियभीरा ३ सुकृतसुयशपरलोकनशाऊ तुमहिंजानबनकहबनराऊ ४ असबिचारिसोइकरहुजोभावा रामजननिसियसुनिसुखपावा ५ भूपहिबचनबाणसमलागे करहिंनप्राणपयानअभागे ६ शोकबिकलमूर्छितनरनाहू काहकरियकछुसूझनकाहू ७ रामत्वरितमुनिबेषबनाई चलेजनकजननीशिरनाई ८ दो०॥ सजिबनसाजसमाजसबबनिताबन्धुसमेत बंदिविप्रगुरुचरणप्रभुचलेकरिसबहिअचेत ९ चौ० ॥ निकसिबशिष्ठद्वारभयेठाढ़े देखेलोगबिरहदवदाढ़े १० कहिप्रियबचनसकलसमुझाये विप्रवृन्दरघुवीरबोलाये ११ गुरुसनकहिबरशाशनदीन्हे आदरदानविनयवशकीन्हे १२ याचक

दोहा॥ दशतरंगबनगमनप्रभु करिसबपुरीअचेत। रामचरणनृपसचिवसनकह्योकछुकहितहेत॥ यहि दोहाते आगेचारिदोहाताईं अक्षरार्थैजानब काहेते इहां बिरहबहुत है इहांते दशईं ग्यारहीं बारहीं चौपाईको समष्टीकरिकै अर्थकरतेहैं तब श्रीरामचन्द्र माताको प्रणामकरिके बशिष्ठजी के द्वारपरठाढ़भयेजाय सबलोगनको देखतेभये कि बिरहकेद्वारदावाते दहिरहे हैं तब श्रीरामचन्द्र गुरुनसेकहा कि सम्पूर्ण लोगनके बर्षाशनकहीबर्षदिनको अशन बसन बसनादिक सबसरंजामसंयुक्त सबकोदेहु यहां यहजानब श्रीरामचन्द्रने गुरुतेकहा कि चौदहबर्षकोसम्पूर्णपुरबासिनकोबरषाशनदेहु अभिप्राय कि चौदहबर्षमें आवैंगे ( १२ ) अर्त्थ छत्तीसके अंकते तब सुमन्त राजा की आज्ञापायकै रथसाजिकै श्रीरामचन्द्रके समीपलैगयो

दानमानपरितोषे कहिप्रियबचनरामपरिपोषे १३ दासीदासबुलाइबहोरी गुरुहिसौंपिबोलेकरजोरी १४ सबकरसारसँभारिगोसाईं करबजनकजननीकीनाईं १५ बारहिबारजोरियुगपाणी कहतरामसबसनमृदुबाणी १६ सोइसबभांतिमोरहितकारी ज्यहितेरहहिंभुआलसुखारी

१७ दो०॥ मातुसकलमोरेबिरह ज्यहिनहोहिंदुखदीन सोइउपाइतुमकरेउसब पुरजनपरमप्रवीन १८ चौ० । यहिबिधिरामसबहिसमुझावा गुरुपदपदुमहर्षिशिरनावा १९ गणपतिगौरिगिरीशमनाई चलेअशीषपाइरघुराई २० रामचलतअतिभयोविषादा कहिनजाइपुरआरतनादा २१ कुशगुनलंकअवधअतिशोकू हर्षविषादविवशसुरलोकू २२ गइमुर्छातबभूपतिजागे बोलिसुमंतकहनअसलागे २३ रामचलेबनप्राणनजाहीं क्यहिसुखलागिरहततनमाहीं २४ यहितेकवनिव्यथाबलवाना जोदुखपाइतजैंतनप्राना २५ पुनिधरिधीरकहैंनरनाहू लैरथसंगसखातुमजाहू २६ दो०॥ सुठिसुकुमारकुमारदोउ जनकसुतासुकुमारि रथचढ़ाइदेखराइबनफिरेहुगयेदिनचारि २७ चौ०॥ जोनहिंफिरहिंधीरदोउभाई सत्यसन्धदृढ़ब्रतरघुराई २८ तौतुमबिनयकरबकरजोरी फेरियप्रभुमिथिलेशकिशोरी २९ जबसियकाननदेखिडेराई कह्यउमोरिशिखअवसरपाई ३० सासुससुरअसकह्यउसँदेशू पुत्रिफिरियबनबहुंतकलेशू ३१ पितुगृहकबहुंकबहुंससुरारी रह्यउजहांरुचिहोयतुम्हारी ३२ यहिबिधिकरेहुउपाइकदम्बा फिरे तो होइ प्राणअवलम्बा ३३ नाहिंतौमोरमरणपरिणामा कछु न बसाय भयो बिधि बामा ३४ असकहिमूर्छिपरउमहिराऊ राम लषणसियआनिदेखाऊ ३५ दो०॥ पायरजायसुनायशिररथअतिरुचिरबनाइ गयउजहांबाहिरनगर सियसमेतदोउभाइ ३६ चौ०॥ तबसुमंतनृपबचनसुनाये करिविनतीरथरामचढ़ाये ३७ रथचढ़िसीयहितदोउभाई चलेहृदयअवधहिशिरनाई ३८

राजाको बचनकहतेभये बिनयकरिकै श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण श्रीजानकीजीको रथपर चढ़ावतेभये ( ३७ ) रथपर चढ़िकै दोऊभाई श्रीअयोध्या को दण्डवत्करिकै चलतेभये ( ३८ ) तहां जब श्रीरामचन्द्रचले तब सम्पूर्णअयोध्याबासिन अपनेको अनाथदेख्यो तबबिकलहोइकै श्रीरामचन्द्रके साथ उठिदौरे हैं ( ३९ ) कृपासिंधु श्रीरामचन्द्र समुझावते हैं कछुकदूरिजाते हैं बिकलहोइकै पुनि फिरिआवतेहैं ( ४० ) हे भरद्वाज श्रीआयोध्या में भारी भयानक लागतहै मानौ महाअन्धकाररूप कालरात्रि प्राप्तिभईहै ( ४१ ) तहां कालरात्रिबिषे भूतप्रेत पिशाच इत्यादिक तामसीजीवभरि रहे हैं इहां सो ते पुरकेनरनारि हैं येकयेकनको निहारि निहारि डरपते हैं ( ४२ ) अरुसम्पूर्ण घर जो हैं सो मशानकेसमान लगते हैं परिजन भूत भये अरु सुत हित मीतमानहु यमकेदूतभये हैं ( ४३ ) सम्पूर्ण बगैचाकीबेलि कुँभिलाइगई हैं अरु सरयू औ सागर बावड़ी औ कूपइत्यादिक

चलेरामलखिअवधअनाथा बिकललोगलागेसबसाथा ३९ कृपासिन्धुबहुबिधिसमुझावहिं जाहिंकछुकदुरिपुनिफिरिआवहिं ४० लागतअवधभयानकभारी मानहुंकालरातिअँधियारी ४१ घोरजंतुसमपुरनरनारी डरपहिंयेकहियेकनिहारी ४२ घरमशानपुरपरिजनभूता सुतहितमीतमनहुंयमदूता ४३ बागनविटपबेलिकुम्हिलाहीं सरितसरोवरजोहिनजाहीं ४४ दो०॥ हयगयकोटिनकेलिमृगपुरपशुचातकमोर पिकरथाङ्गशुकसारिकासारसहंसचकोर ४५ चौ०॥ रामबियोगविकलसबठाढ़े जहँतहँमनहुंचित्रलिखिकाढ़े ४६ नगरसकलबनगह्वरभारी खगमृगविपुलनगरनरनारी ४७ विधिकैकेयिहिकिरातिनिकीन्ही ज्यइदवलाइदुसहदुखदीन्ही ४८ सहिनसक्यउरघुबरबिरहागी चलेलोगसबब्याकुलभागी ४९ सबहिबिचारकीनमनमाहीं रामलषण

ये जोड़कही देखेनहींजातेहैं ( ४४ ) दोहार्त्थ॥ हय जो घोड़े हैं अरु गयकहीहाथी अरु मृगा अरु पुरकेपशु अरु चातकमोर शुकपिककहीकोकिलामैना रथांगकही चकचकई किंतुकहूं सारसको भी कहते हैं अरु हंसचकोर इत्यादिक समस्तकोटिन ( ४५ ) ते श्रीरामचन्द्रके बियोगकही बिक्षेपकेदुःखकरिकै संपूर्ण जहां तहां बिकल खड़ेहोइरहेहैं मानहुं बचित्रकही बेलिह्वैरहेहैं ( ४६ ) हे पार्बती नगरमानहु गह्वरकही गम्भीर बनभयो है अरुबिपुलखग मृगादिक सम्पूर्ण नरनारिहोइरहेहैं ( ४७ ) तहां बिधातैं कैकेयीको किरातिनि कीनहै अपने वचनरूपकी दावालगाइकै सबकोदुसहदुःख देतिभई है ( ४८ ) ते सब श्रीरामचन्द्रके बिरहकी जो अग्नितेजमय सो नहींसहिसकैहैं मानहु बनंकोतजिकै बिकलहोइकै सबलोग भागिचलेहैं ( ४९ ) तब सब पुरबासिन अपनेमनमें बिचारकीन कि बिनासीताराम लषणसुखनहींहै ताते संगहीचलिये ( ५० ) अरु जहां श्रीरामचन्द्र हैं तहां सम्पूर्ण सुखकोसाजहै इहां रक्षामोंबिश्वास शरणागत जानब अरु सीतारामलक्ष्मणकेबिना श्रीअयोध्यामें का काज है वह आत्मसमर्पण शरणागत जानब यह प्रभुकेअनुकूल शरणागत कहावैहै अरु वाहीमें प्रतिकूलकोत्यागहै ( ५१ ) हे भरद्वाज ऐसे मन्त्रदृढ़ायकै सम्पूर्ण श्रीरामचन्द्रके संग चलेहैं देवतनको दुर्ल्लभ श्रीअयोध्याको भोग त्यहिकोत्यागिकै इहां बैराग्यबिवेक षट्सम्पति शमदम उपरतितितीक्षा श्रद्धासमाधान युक्तगोप्तृत्व शरणागत जानब ( ५२ ) हे गरुड़ जिनके श्रीरामचन्द्रके पदपंकजबिषेप्रीतिकरिकै रतहैं तिनको बिषय भोग कैसे बशकरिसकैं नहीं वशकरैं हैं

सियबिनुसुखनाहीं ५० जहांरामतहँसबसुखसाजू बिनरघुबीरअवधकाकाजू ५१ चलेसाथअसमंत्रदृढ़ाई सुरदुर्लभसुखसदन बिहाई ५२ रामचरणपंकजप्रियजिनहीं बिषयभोगवशकरैंकितिनहीं ५३ दो०॥ बालकवृद्धबिहायघरलगेलोगसबसाथ तमसातीरनिवासकरिप्रथममदिवसरघुनाथ ५४ चौ०॥ रघुपतिप्रजाप्रेमबशदेखी सदयहृदयदुखभयउबिशेषी ५५ करुणामयरघुवीरगोसाई वेगपाइयेपीरपराई ५६ कहिसप्रेममृदुबचनसोहाये बहुविधिरामलोगसमुझाये ५७ कियेधर्मउपदेशघनेरे लोगप्रेमवशफिरहिंनफेरे ५८ असमंजसबशभेरघुराई शीलसनेछांड़िनहिंजाई ५९ लोगशोकश्रमबशगेसोई कछुकदेवमायानिजमोई ६० जबहियामयुगयामिनिबीती रामसचिवसनकह्यउसप्रीती ६१ खोजमारिरथहाँकहुताता आनउपायबनहिनहिंबाता ६२

( ५३ ) हे गरुड़ सम्पूर्ण लोगनको अपनेविषे अतिआरत बिरहतेसंयुक्तदेखिकै रामचन्द्रने तमसातीर निवासकियो तहां चैत्रशुक्लपक्ष नौमीको मिलत मिलावत तहां ते तब रिक्ताकेर्तीनिचरण बिताइकै चतुर्थ चरणको शुभमंगलजानिकै तमसाकेतीरटिके ( ५४ ) तब श्रीरघुनाथजी प्रजनको प्रेमके बशजाना काहेते कि रघुनाथ जी सदयकही दयामान् हैं ताते रघुनाथजीकोप्रजनकोदेखिकै दुखभयो ( ५५ ) श्रीरामचन्द्र गोसाईंहैं गो जो इन्द्रीहैं मन सुधा त्यहिकेईशहैं अरु करुणामय हैं पराईपीरको बेगपावतेहैं ( ५६ ) रामप्रेमसंयुक्त बचनकहिकै सबलोगनको समुझावतेभये ( ५७ ) अनेकधर्मके उपदेश करतेभये पर प्रेमकेबशते लोगफिरतेनहींहैं ( ५८ ) हे गरुड़ शीलस्नेह नहींछांड़ोजात है ताते रघुनाथजी असमंजसके बशभये हैं ( ५९ ) तब हे गरुड़ श्रीरामचन्द्रके संयोगते अवधबासीलगे हैं सो कछु श्रमकेबशकरिकै अरु कछु देवतनकी माया करिकै वैस्यहि सोयगये हैं ( ६० ) जब युगयामिनिकही अर्द्धरात्रि बीततभई तब श्रीरामचन्द्र सुमन्तते प्रीतिसमेत बोलते भये ( ६१ ) हे तात खोजमारिकै रथकोहांकहु आनउपायते बातनहींबनिहै ( ६२ ) दोहार्त्थ॥ तब श्रीरामचन्द्रकी रजाय सुमन्तशीशपरधरिकै श्रीरामचन्द्र अरु श्रीजानकी श्रीलक्ष्मणजीको रथपर चढ़ा-

दो०॥ रामलषणसिययानचढ़िशम्भुचरणशिरनाय सचिव चलायउत्वरितरथइतउतखोजदुराय ६३॥ * *

चौ०॥ जागेसकललोगभयेभोरू गयेरघुनाथभयउअतिसोरू १ रथकरखोजकतहुंनहिंपावहिं रामरामकहिचहुंदिशिधावहिं २ मनहुंबारिनिधि-बूड़जहाजू बिकलभयेसबबणिकसमाजू ३ येकहियेकदेहिंउपदेशू तज्यउरामहमजानिकलेशू ४ निन्दहिंआपुसराहहिंमीना धृकजीवनरघुबीरबिहीना ५ जोपैप्रियवियोगविधिकीन्हा तौकसमरणनमाँगेदीन्हा ६ यहिबिधिकरतबिलापकलापा आयेअवधभरेपरितापा ७ विषमवियोगनजाहिबखाना अवधिआशराखहिंसबप्राना ८ दो० ॥ रामदरशहितनेमब्रतकरनलगेनरनारि मनहुंकोककोकीकमल दीनविहीनतमारि ९ चौ०॥ सीतासचिवसहितदोउभाई श्रृंगबेरपुरपहुंचेजाई १० उतरे रामदेवसरिदेखी कीनदंडवतहर्षविशेषी ११ लषणसचिवसियकीनप्रणाम सकलभांतिसुखपायउरामा १२ गंगसकलमुदमंगलमूला सबसुखकरनिहरनिसबशूला १३ कहिकहिकोटिककथाप्रसंगा रामबिलोकतगंगतरंगा १४ सचिवहिअनुजहिप्रियहिसुनाई बिबुधनदीमहिमाअधिकाई १५ मज्जनकीन्हपन्थश्रमगयऊ शुचिजलपियतमुदितमनभयऊ १६ सुमिरतजाहिमिटहिभ-

इकै इत उत खोजदुराइकै रथहांकतेभये जाते कोई रथकेलीककी खोजन पावै (६३) इतिश्री रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने अयोध्याकाण्डे लोगबिरह श्रीरामबनगमन बर्णनन्नाम दशमस्तरंगः १०॥ :: :: :: ::

दोहा॥ लोगबिरहसियलषणयुत रामगयेतटगंग। रामचरणगुहमिलनशुभ दशअरुयेकतरंग ११॥ आगे पुरबासिनको बिरहविषाद श्रीरामचन्द्रको गंगातटपर श्रृंगबेरपुरकी प्राप्ति यहि दुइदोहाको पदार्थैसिद्धि जानब तब श्रीरामचन्द्र श्रृंगबेरपुरविषेपहुंचे तहां गुहनामनिषादनको राजा यहसुधि पावतभयो है कि श्रीरामचन्द्रआये तब अपने प्रियबंधुनको बोलावतभये (१९) तब कंदमूलफलफूलइत्यादिक नानाप्रकारके मधुरसुगंधमय भारनभरिभरि भेटलैकै अतिहर्षते मिलिबे को चलतेभये (२०) तहां श्रीरामचन्द्र के समीपजायकै भेटधरिकै दण्डवत् करिकै श्रीरामचन्द्रको स्वरूप अति अनुरागते बिलोकतभयो है (२१) हे भरद्वाज श्रीरामचन्द्र सहजहि स्नेहकेबशहैं उठिकै निषादको मिलतभये

वभारू त्यहिश्रमयहलौकिकब्यवहारू १७ दो०॥ शुद्धसच्चिदानंदमयकंदभानुकुलकेतु चरितकरतनरअनुहरतसंश्रृतसागरसेतु १८ चौ०॥ यहसुधिगुहनिषादजबपाई मुदितलियेप्रियबंधुबोलाई १९ लैफलमूलभेंटभरिभारा मिलनचल्यउहियहर्षअपारा २० करिदंडवतभेटधरिआगे प्रभुहिबिलोकतअतिअनुरागे २१ सहजसनेहबिबशरघुराई पूंछाकुशलनिकटबैठाई २२ कुशलनाथपदपंकजदेखे भयउंभाग्यभाजनजनुलेखे २३ देवधरणिधनधामतुम्हारा मैंजननीचसहितपरिवारा २४ कृपाकरियपुरधारियपाऊं थापियजनसबलोगसिहाऊं २५ कह्यउसत्यतुमसखासुजानामोहिंदीनपितुआयसुआना २६ दो० ॥ बर्षचारिदशबासबन करिमुनिवेषअहार ग्रामबासनहिंउचितसुनिगुहहिभयोदुखभार २७ चौ० ॥ लषणरामसियरूपनिहारी कहहिंसप्रेमग्रामनरनारी २८

निषादपांयनपरतभयो श्रीरामचन्द्र कुशलपूछिकै निकटबैठारतभये ( २२ ) हे नाथ आपुकर पदपंकज देखिकै कुशल अरु बड़भागीभयों आपुकेजननके मध्यमें लेखे में आयों ( २३ ) हे देव यह धन धाम आपुकरहै अरुमैं सहित परिवारनीचजनहौं ( २४ ) अब आपु कृपाकरिकै पुरकोपांवधारिये मोको आपनजन स्थापनकरिये जाते सबलोग सिहाहिं ( २५ ) हेसखेसुजान तुमसत्यकह्यउहै पर मोको पिताकी आज्ञा आनहिहै ( २६ ) दोहार्त्थ॥ हे सखे पितामोको यह आज्ञादीनहै कि चौदहबर्ष बनमें ऋषिधर्मते बासकरौ कन्दमूल फल आदिक भोजनकरौ अरु ग्रामको बासत्यागकरौ यह सुनिकै गुहके महाभारी दुखहोतभयोहै ( २७ ) श्रीसीतारामलक्ष्मणके रूपनिहारिकै ग्रामकेनरनारि इत्यादिक प्रेमसंयुक्तकहतहैं ( २८ ) परस्परकहतीहैं कि हेसखी ते माता पिता कैसे जिन ऐसे बालकनको बनमेंपठाये हैं ते सब श्रीरामचन्द्रको देखिकै बात्सल्यरसमें डूबिगये हैं ते तत्सुखीहैं ( २९ ) आनिदूसरीतिय कहती हैं स्वसुखबिषेमें कि तैंका जानसिराजा यह नीककिहिनि इनको बननहींदीन है हमारे नेत्रनको सफलकीनहै इहां रसभाव पूर्णतर्कहै ( ३० ) तब निषादनकर पति जो गुहहै त्यइअनुमानकीन कि शिंशुपाकही सो सबको तरु अतिछाया गंगाकेतट शृंगबेरपुरकेपूर्ब तहां श्रीरामचन्द्र बिश्रामकरहिं यह बिचारकीन ( ३१ ) तबकरजोरिकै श्रीरामचन्द्रसे कहतभयउ कि शिंशुपाको तरु बहुतउत्तमहै तब श्रीरामचन्द्रको चलिकै देखावतभयो श्रीरामचन्द्रके मनमें भावतभयो ( ३२ ) संपूर्णपुरजनजेहैं सो श्रीरघुनाथजीकी आज्ञापायकै जोहारकरिकैघर

तेपितुमातुकहहुसखिकैसे जिनपठयेबनबालकऐसे २९ एककहहिंभलभूपतिकीन्हा लोचनलाभहमहिंज्यहिदीन्हा ३० तबनिषादपतिउरअनुमाना तरुशिंशुपामनोहरजाना ३१ लैरघुनाथहिठाउंदेखावा कह्यउरामसबभांतिसुहावा पुरजनकरिजोहारघरआये रघुबरसन्ध्याकरनसिधाये ३३ गुहसँवारिसाथरीडसाई कुशकिशलयमयमृदुलसोहाई ३४ शुचिफलमधुरमृदुलजियजानी दोनाभरिभरिराख्यउआनी ३५ दो०॥ सियसुमंतभ्रातासहित कंदमूलफलखाइ शयनकीनरघुवंशमणिपाँयपलोटतभाइ ३६ चौ०॥ उठेलषणप्रभुसोवतजानी कहेउसचिवसोवनमृदुबानी ३७ कछुकदूरिसजिबाणशरासन जागनलगेबैठिबीरासन ३८ गुहबोलाइपाहरूप्रतीती ठाँवठाँवराखेअतिप्रीती ३९ आपुलषणपहँबैठ्यउजाई कटिभाथाशरचापचढ़ाई ४० सोवतप्रभुहिनिहा

बिषे आवतेभये गुह जो है अरु श्रीरघुनाथजी सन्ध्याकालमें गंगातटनेमकरनेको जातेभये ( ३३ ) त्यहिसमयमें तब गुह जो है शिंशुपावृक्षतरकी महि समकरिकै कुश अतिकोमल अरु किशलय कही अग्रभागके नर्मनर्मपाताबिछावतभयो त्यहिपर अतिपावन मृदुचर्म्म डारतभयो ( ३४ ) पुनि शुचि कही पवित्र एकफलरसमय मृदुल कही कोमल अतिमधुर गुणदायकजानिकै दोनाभरिभरिमँगाइ ल्याइल्याइराखतभयो ( ३५ ) दोहार्त्थ॥ सुमन्तश्रीजानकीजी अरुरघुनाथजीभ्रातासहित कन्दमूलफलकोभोजनकरतेभये पुनिश्रीरघुनाथजीने शयनकीनभाइ पांयपलोटते हैं ( ३६ ) श्रीरामचंद्रजीको सोवतजानिकै श्रीलक्ष्मणजीने उठिकै मृदुबाणीते सुमन्तते कह्योकि हे तात तुमसोवहु ( ३७ ) तबश्रीलक्ष्मणजीश्रीरघुनाथजीकोसोवतजानिकै धनुषबाण धारणकरिकैबैठे बीरासनहोइ जागनलागे ( ३८ ) तब गुहजो हे सो प्रतीती २ पहरुआ बोलाइकै जहांतहां चौकीपर राखतभयो आपसेवकाई करतभयो ( ३९ ) अरु आपु लक्ष्मणजीकेपास कटिबिषे भाथाकही तरकसबांधिकै धनुषचढ़ाइकै बैठतभयोजाइ ( ४० ) प्रभुको सोवत जानिकै निषादके प्रेमकेबश हृदयबिषे बिषादभयो ( ४१ ) तन पुलकिआयो है अरु नेत्रनमेंजलबहै है प्रेमसंयुक्त बचन श्रीलक्ष्मणजूसे कहतहै ( ४२ ) यहनिषाद कहतहै कि देखये तौ राजादशरथ के भवनके पटतरकोई इन्द्रको भवननहीं है ( ४३ ) मणिनमयरचितहै ज्यहिबिषेचारु कही

रिनिषादू भयेउप्रेमबशहृदयबिषादू ४१ तनपुलकितजललोचनबहईबचनसप्रेमलषणसनकहई ४२ भूपतिभवनसुभायसोहावासुर पतिसदननपटतरआवा ४३ मणिमयरचितचारुचौवारे जनुरतिपतिनिजहाथसँवारे ४४ दो० ॥ शुचिसुबिचित्रसुभोगमय सुमनसुगंध सुवासपलँगमंजुमणिदीपजहँसबबिधिसकलसुपास ४५ चौ०॥ बिबिधिबसनउपधानसुहाई क्षीरफेनमयबिशदबनाई ४६ तहँसियरामशयननितकरहीं निजछबिरतिमनोजमनहरहीं ४७ तेसियरामसाथरीसोयेश्रमितबसनबिनुजाहिंनजोये ४८ मातुपितापरिजनपुरबासीसखासुशीलदासअरुदासी ४९ जोगवहिंजिनहिंप्राणकीनाईमहिसोवतसोइरामगोसाई ५० पिताजनकजगविदितप्रभाऊ

सुन्दर चौवारे कही चार दरवाजे हैं जनु रतिपतिअपने हाथ सँवारत भयोहै ( ४४ ) दोहार्थ॥ पुनि कैसो राजाकोभवनहै ज्यहिबिषे शुचिकही पवित्र निर्म्मल विचित्र कही अनेकनतरहकी मणिलगी हैं अरु सुगन्ध स्वादमयऐसे तौ अनेकभोग हैं अरु सुगन्धमयपुष्प मणिनमयपात्रनमेंभरे जहां तहां धरे हैं अरु अतरइत्यादिक सुगन्धसेपूरित मणिनके दीपक हैं अरु सबप्रकारतेसुपास कही आराम सुखमयहैं ( ४५ ) सो पलँगकैसो है ज्यहिबिषे बिचित्रबिचित्र पाटम्बरनके प्रकाशमय उपधान कही तकियाबने हैं अतिशोभित हैं अरु क्षीरकेफेनकीसमान विशद कोमल बिछौनाबने हैं ( ४६ ) तहां सीताराम नित्य शयनकरतरहे हैं अपनी छबिकरिकै रति अरु मनोजके मनकोहरै हैं ( ४७ ) इहाँ बात्सल्यरस अरु दास्यरस दूनौमिलिकैशंकररसहैं निषाद अपनेमनमें कल्पनाकरतहै देखिये तो ते सीताराम ऐसेसुकुमार श्रमयुक्त बिनापट साथरीबिषेसोये हैं अरु जो है कही देखे नहीं जातहैं ( ४८ ) मातापिता अरु पुरजन अरु पुरबासीसखा जे हैं अरु दासदासी सम्पूर्णसुशीलहैं ( ४९ ) जिन श्रीसीतारामजीको प्राणकीनाईं जोगवतरहे हैं यह निषादकहतहै कि देखिये तौ इन्द्रनकेईशहैं ते महिबिषेसोवतहैं ( ५० ) श्रीजानकीजी कैसी हैं जिनके पिता जनक तिनकरप्रभाव राजनमें अरु मुनिनमें योगेश्वरनमें तत्त्ववेतनमें बिदितहै उज्ज्वल ऐसीतौ श्रीजानकीजी हैं अरु ससुरमहाराज श्रीदशरथ जिनकरसखा सुरेश हैं अरु रघुबंशकुलके शिरोमणिहैं ( ५१ ) अरु श्रीरामचन्द्र ऐसेपतिहैं सो बैदेही महिमेंसोवती हैं देखिये तौ विधातामें बिवेकनहीं है सबकोबाम कही टेढ़है पुनि बिधातानिर्दोषमें दोष आरोपणकरै हैं ( ५२ ) तहाँ सीताराम बनयोग्यनहीं हैं ताते सबलोग कर्म्मकोप्रबलकहते हैं इहां लौकिक

ससुरसुरेशसखारघुराऊ ५१ रामचन्द्रपतिसोबैदेही महिसोवतिविधिबामनकेही ५२ सियरघुवीरकिकाननयोगू कर्मप्रधानसत्यकहलोगू ५३ दो० ॥ केकयनन्दनिमन्दमतिकठिनकुटिलपनकीन ज्यइँरघुनन्दनजानकिहि सुखअवसरदुखदीन ५४ चौ० ॥ भइदिनकरकुलबिटपकुठारी कुमतिकीन्हसबबिश्वदुखारी ५५ भयउविषादनिषादहिभारी रामसीयमहिशयननिहारी ५६ बोलेलषणमधुरमृदुबानी ज्ञानबिरागभक्तिरससानी ५७ काहुनकोदुखसुखकरदाता निजकृतकर्मभोगसुनुभ्राता ५८ योगवियोगभोगभलमंदा हितअनहितमध्यमभ्रमफंदा ५९ जन्ममरणजहँलगिजगजालू सम्पतिबिपतिकर्मअरुकालू ६० धरणिधामधनपुरपरिवारू

वाक्य दास्यरसहै ( ५३ ) दोहार्थ॥ राजाकेकय तिनकीनन्दिनि जो कैकेयी त्यइं कठिन कुटिलपनकीनहै जो रघुनन्दन अरु श्रीजानकीजी तिनको राज्यके अवसर सुखसमयमें बनदेतिभई तहां भगवन्तकी बिचित्रगति नहींजानीजाती है ( ५४ ) कैकेयी जो है कुमतिरूप सो सूर्य्यबंशकुल त्यहिकी कुठारीभई सम्पूर्णबिश्वको दुखितकीनहै ( ५५ ) तब निषादकोबिषाद भारीहोतभयोहै सीतारामचन्द्रको महिबिषे शयनकिये देखिकै इहां निषाद माधुर्य्यरसमें मग्नहोइगयो है ( ५६ ) तब मनमेंबिहँसिकै श्रीलक्ष्मणजी निषादके

धीर्य्यहेतु ज्ञानवैराग्यभक्ति रससानीमृदुबाणी बोलतभये ( ५७ ) हे तात सुखदुःखकरदाता कोऊनहीं है हे भ्राता सबजीवनबिषे निजकृत जो कर्म्महै सोई फलभोग्य है श्रीरामचन्द्रकर सखाजानि क लक्ष्मणजीने निषादकोभ्राता कहाहै ( ५८ ) योग जे हैं बियोग जे हैं अरु भोग जे हैं अरु मन्द अरु हित जे हैं अनहित जे हैं इत्यादिक भ्रमफन्द हैं ( ५९ ) सम्पति बिपति कर्म्मकाल जन्ममरण जहांतक जगजाल है ( ६० ) धरणी जे हैं धाम जे हैं धन जे हैं अरु पुरपरिवारजे हैं अरु स्वर्ग नर्क इत्यादिक जहां तक व्यवहारहैं ( ६१ ) हे गुरु जहांतक जगत् को व्यवहार देखिवेसुनिबेमेंआवैं सो सब मोहकरमूलहै यामें परमार्त्थनाही है ( ६२ ) दोहर्त्थ ॥ हे तात जैसे स्वप्न बिषे कोई राजा रंकहोइगयो है अरुकोई रंक कही कङ्गल नाककही स्वर्ग्गपति होइगयो है जागिपरयउ तब राजा न तौ कङ्गालहै अरु न तौ कंगालराजाहै दूनहुंकेस्वप्नको दुःखसुखवृथाहै तैसे यहि संसारकर प्रपञ्च जहांतक नीक बिकारहै सो स्वप्नकर दुःख सुखरूपहै पर सबवृथाहै ( ६३ ) हे निषाद यहिसंसारकर प्रपञ्चअनित्यहै ऐसेबिचारिकै न तौ ब्रह्मादिक देवतनकोदोष न तौ राजादशरथ को दोषदेइ अरु न तौ कैकेयीको दोषदेई ऐसे बिचारिकै काहूपर दोषदैकैरोष न करिय यहसबरामरजाइहै ( ६४ ) हे गुहतेश्रीरामरजाय नहीं जानते

**स्वर्गनर्कजहँलगिब्यवहारू ६१ देखीसुनीगुनीमनमाहींमोहमूलपरमारथनाहीं ६२ दो० ॥ सपनेहोइभिखारिनृप रंकनाकपतिहोइजागेहानिनलाभकछु तिमिप्रपंचजगजोइ ६३ चौ० ॥ असबिचारिनहिंकीजियरोषू काहुहिबादिनदेइयदोषू ६४ मोहनिशासबसोवनहारा देखहिंस्वप्नअनेकप्रकारा ६५ यहिजगयामिनिजागहिंयोगी परमारथीप्रपंचबियोगी ६६ जानियतबहिं जीवजगजागा जबसबविषयबिलासबिरागा ६७ होइविवेकमोहभ्रमभागा तबरघुनाथचरणअनुरागा ६८ सखापरमपरमारथयेहू**

हैं काहेते मोहरूपनिशामें देव दानव मनुष्य इत्यादिक सब सोवते हैं तहांअनेकबासना स्वप्नरूप तामेंपरेहैंसो सबवृथा हैं ( ६५ ) हे सखेयह जगयामिनि जो है त्यहिमेंयोगीजनजागते हैं परमार्त्थीकही जो परमअर्थपरमतत्त्व त्यहिकेअर्थीहैं ताते आरूढ़ह्वैकै ब्रह्माकेप्रपञ्चते बियोगीकही छूटि गये हैं प्रमाण भगवद्गीतायांश्लोक॥ यानिशासर्व्वभूतानां तस्याञ्जागर्त्तिसंयमी यस्याञ्जागर्तिभूतानि सानिशापश्यतोमुने ( ६६ ) हे तात तब जानी यह जीव मोहनिशातेजाग्यो कब जब उर कही अन्तष्करणमें बिषयकर बिलास कही अनेक बासना त्यहितेबैराग्यहोइ बासना आत्मामें लयहोइजाइ ताको जाव कही ( ६७ ) हे तात जब पूर्व्व विवेककी प्राप्तिहोतिहै तब श्रीरामचन्द्रके चरणारविंद बिषे पूर्णअनुरागहोतहै हेसखे ते श्रीरामचन्द्र हैं ( ६८ ) तहां हेसखे एकपरमार्थहै एकपरम परमार्थ है तहांपरमार्थकही अपने कार्यको अर्थताको छोंड़िकै अपर जीवको अर्थ सिद्धि करते हैं पुनि परम परमार्थ कही परम अर्थ जामें जीवको मोक्षहोय तामेंसांचा परमार्थहै श्रीरामचन्द्रजी के मन क्रम बचनते चरणाविंदबिषे एक रस स्नेहहोइ ( ६९ ) हे सखे श्रीरामचन्द्र परब्रह्महैं अरु जीवनके परमअर्थ रूपहैं कैसे हैं जिनकी गतिकही अनेकचरित गुणरूप सो काहूकेजानबेयोग्य नहींहै अरु अलखहै ध्यानहुकीदृष्टिते दुर्लभहै अनादिकही जिनको आदि अन्त मध्य बेदउनाहिं जानिसकत हैं अरु अनूप है जिनकी उपमाको कोईनहीं है ( ७० ) अरु सकलबिकारकरिकै रहितहैं बिकारषट्जन्मबृद्धि बिवर्णक्षीर जरामरण जन्मकही गर्भतेउत्पन्न वृद्धिकही बढ़व विवर्णकही मोटतेदूबर दूबरते मोट श्यामते गौर गौरतेश्याम क्षीण कही जेतीब्रह्मै उमिरिलिखाहै त्यहिमें जेतेदिनबीतते हैं सोते चलतेउमिरिक्षीण होतीजाती है जराकही वृद्ध मरणकही मरने इत्यादिक बिकारजीवबिषेहोत हैं परमेश्वर बिषे नहीं हैं इत्यादिक बिकार श्रीरामचन्द्रबिषे सपनेहु

**मनक्रमबचनरामपदनेहू ६९ रामब्रह्मपरमारथरूपा अबिगतिअलखअनादिअनूपा ७० सकलबिकाररहितगतभेदा कहिनितिनेतिनिरूपहिंवेदा ७१ दो० ॥ भक्तभूमिभूसुरसुरभिसुरहितलागिकृपाल करतचरितधरिमनुजतनसुनतमिटहिंजगजाल ७२ ॥**

चौ० ॥ सखासमुझिअसिपरिहरिमोहू सियरघुबीरचरणरतहोहू १ कहतरामयशभाभिनुसारा जागेजगमंगलदातारा २ सकल

नहीं हैं श्रीरामचन्द्रजी को नित्यनिरूपण करते हैं वेदनेति करिकै कहते हैं ( ७१ ) तत्र प्रमाणमाह अध्यात्मे श्लोकार्द्धम् परशुरामवाक्यं श्रीरामं प्रतिषद्विकाररहितंरामं रामत्वद्रूपंचिन्मयं दोहार्त्थ॥ हे भरद्वाज लक्ष्मणजू कहते हैं कि हे सखे श्रीरामचन्द्र परात्पर ब्रह्ममूर्त्तिते भक्तजन जेहैं अरु भूमिसुरकही ब्राह्मण ऋषिमुनि जे हैं अरु सुरभीकही गऊभूमि तिनकेहितहेतु ऐसे कृपालु मनुजतनको श्रीरामलीला धारणकरिकै अनेकचरित करते हैं सो कहत सुनतसंते सम्पूर्ण जगजाल नाश होतजात है ( ७२ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने अयोध्याकाण्डे निषाद मोहलक्ष्मण उपदेश बर्णनन्नाम एकादशस्तरंगः११॥ :: :: ::

दो.॥ मज्जनकरिसुरसरितप्रभु दशअरुदोइतरंग रामचरणगुहप्रीतिकहिउतरिपारभेगंग १२ हे सखे ऐसे समुझिकै मोहपरिहरिकै सीताराम के चरण बिषे रति सहित होहु ( १ ) हे भरद्वाज श्रीरामचन्द्रकर सुयश लक्ष्मणके कहत निषादके सुनतसन्ते भोरहोतभयो है तब जगत् के मंगल दातार श्रीरामचन्द्रजागतेभये हैं ( २ ) तब श्रीरामचन्द्र प्रातः क्रियापूर्व्वकगंगास्नानकरिकै शुचि सुजान श्रीरामचन्द्रते बटक्षीर मँगावतेभये हैं ( ३ ) लक्ष्मणजी सहित बटक्षीरकरिकै जटाबनाइकै शीशमेंबांधतेभये देखिकैसुमन्तके नेत्रनमें जलभरिआयो ( ४ ) तहां सुमन्तके हृदयमें दाह उठत भई है मुख मलीनह्वैगयो है करजोरिकै दीनवचन कहतहै ( ५ ) हे नाथकौशलनाथने हमसोंकह्यो है कि रथलैकै श्रीरामचन्द्रके साथ जाहु ( ६ ) अरु यहकहाहै कि बन देखाइकै सुरसरि स्नान करवाइकै दोउभाइनकोचारिपांचदिनमें फेरिलैआयहु ( ७ ) अरु राजैं यह कहा है कि संशय संकोच छोड़िकै दोउभाइन अरु श्रीजानकीजीको जरूरफेरिलैआयहु ( ८ ) दोहार्थ सुमन्तकहते हैं कि हे गोसाई राजैंजसकहाहै तस आपुकरिये मैं बलिजाउं

शौचकरिरामनहाये शुचिसुजानबटक्षीरमँगाये ३ अनुजसहितशिरजटाबनाये देखिसुमंतनयनजलछाये ४ हृदयदाहअतिबदनमलीना कहकरजोरिवचनअतिदीना ५ नाथकह्यउअसकौशलनाथा लैरथजाहुरामकेसाथा ६ बनदेखाइसुरसरिअन्हवाई आनेहुफेरिवेगिदोउभाई ७ लषणरामसियआनेहुफेरी संशयसफलसकोचनिबेरी ८ दो० ॥ नृपअसकह्यउगोसाइजसकहियकरियबलिसोइ करिबिनतीपायनपरेउदीन-बालजिमिरोइ ९ चौ० ॥ तातकृपाकरिकीजियसोई जातेअवधअनाथनहोई १० मंत्रिहि रामउठाइप्रबोधा तातधर्ममगतुमसबशोधा ११ शिविदधीचहरिचन्दनरेशू सहेउधर्महितकोटिकलेशू १२ रन्तिदेवबलिभूपसु-

इतनाकहिकै बिनयकरिकै बालककीनाईं रोइदीनहै ( ९ ) सुमन्तकहते हैं कि हे तात कृपाकरिकै सोईकरहु जाते अवधअनाथ न होइ ( १० ) तब मंत्रीको उठाइकै श्रीरामचन्द्र प्रबोधकीन कि हे तात तुमधर्म्मको मर्गअच्छे प्रकारते शोधनकीन है ( ११ ) श्रीरामचन्द्र कहते हैं कि हे तात राजा शिवि भये हैं अरु राजा दधीच भये हैं अरु राजा हरिश्चन्द्र भये हैं इन धर्म्मके हेतु कठिन कठिन क्लेश सहे हैं ( १२ ) तहां इतिहास है जो एकसौ एक अश्वमेध यज्ञ करै अरु निर्व्विघ्न निबहि जाइ तौ वाको इन्द्रपदवी होति है तहां राजा शिवि ने निन्नानवे यज्ञ किये पर इन्द्र पदवी हेतु नाहीं कियो भगवत्हेतु जब सवयें यज्ञका प्रारम्भकियो तब इन्द्रनेबिघ्नहेतु अग्निको प्रेरिकै तीतर रूप कियो आपुबाजरूप भयो तब तीतर को बाजघेरि लियो तब राजा यज्ञ पर बैठारहै त्राहित्राहि करिकै तीतर राजाकी गोदमें गिरिपर्‌यो तब राजैं बाजते रक्षाकीन तब बाजकहा कि मैं क्षुधितहौं तब राजा अपना मांस काटि काटि आपुतीतर की बराबर तौलनेलग्यो सो कपटको तीतर पूरानहींहोइ तब राजैं अपने गरेमें तरवारि लगाई कि शीश उतारिकै धरिदेउं तब भगवान् ने प्रसन्नह्वइकै रक्षाकीनअरु इन्द्रको तिरस्कार कीनहै राजाके शीशपर हाथधर्‌यो धर्महेतु येतेक्लेश सह्यो है पुनिराजा दधीच नैमिषारण्य में तपकीन संकल्पकियो कियहशरीर किसूके काजआवै तौ भला है तहाँ वृत्रासुरदानवके बधहेतु देवतन राजाते प्रार्थनाकीन तब राजा अपना शरीर दैडार्‌यो तब राजाकेहाड़को इन्द्र

बज्रबनाइकै दानवको बधकीन देखियेतौ धर्म के हेतुशरीरै त्यागकीन है अरु राजा हरिश्चन्द्र भये हैं तिन धर्महेतु काशीबिषे स्वपचकेइहां टहलकीन यहसबकथा भागवत में प्रसिद्धहै ( १२ ) राजारंति अरु

जाना धरेउधर्मसहिसंकटनाना १३ धर्मनदूसरसत्यसमाना आगमनिगमप्रसिद्धपुराना १४ मैंस्वइधर्मसुलभकरिपावा तजेतिहूंपुर अपयशछावा १५ सम्भावितकहँअपयशलाहू मरणकोटिसमदारुणदाहू १६ तुमसनतातबहुतकाकहऊँ दियेउतरुपुनिपातकलहऊँ १७ दो० ॥ पितुपगपरिकहिकोटिबिधि बिनयकरबकरजोरि चिन्ताकौनिउबातकै तातकरबजनिमोरि १८ चौ० ॥ तुम पुनिपितुसमअतिहितमोरे बिनतीकरौंतातकरजोरे १९ सबबिधिसोइकरतब्यतुम्हारे दुखनपावपितुशोचहमारे २० सुनिरघुबीरसचिवसम्बादू भयउसपरिजनसकलबिषादू २१ पुनिकछुलषणकहीकटुबानी प्रभुबर्ज्जेउबड़िअनुचितजानी २२ सकुचिरा।

राजाबलिभये तिन अनेक संकट सहिकै अपने धर्मको धारणकीन यह इतिहास भागवत् में प्रसिद्ध है ( १३ ) यह श्रीरामचन्द्र कहते हैं किहेसुमंत सत्य के समान दूसरधर्म नहीं है आगम निगम पुराण बखानिकै कहतहैं ( १४ ) सोई सत्यधर्म में पिताके वचनमें सुलभकरिपावा है त्यहिको जो छांड़ौं तौ राजा अरु मोको तीनिहुं पुरबिषे अपयश होइ ( १५ ) हेतातसम्भावित कही समर्थ यशमान् ऐसे पुरुषको जो अपयशको लाभहोइतौ कोटिमरबे के समान दारुणदुख को दाहहोतहै तहाँप्रमाण है श्लोकार्द्धम्भगवद्गीतायां सम्भावितस्यचा कीर्तिर्मरणादतिरुच्यते ( १६ ) हेतात तुम ते बहुतका कहौं उत्तरदियेते पातकहोइगो ( १७ ) दोहार्थ हे सुमन्तपितासे करजोरि कै पगपरि मोरिसंती बिनयकरब मोरिचिंता कवनिउ बात कैनकरब आपके अनुग्रहते हमबनमें सबप्रकारते सुखीरहब ( १८ ) इहांतीनि चौपाई ताईं अक्षरार्थैजानब ( १९-२०-२१ ) तहांसुमन्तके कहत सन्ते श्रीलक्ष्मणजी कछुकटुबाणीराजाको कहतभये इहां यहकटुबाणी सम्भवतहै राजाने कामासक्त ह्वैकै स्त्रीके बचनको प्रमाणकीन यातेराजाको विशेष विवेकहै तबप्रभुबर्जिदीन कि यह अनुचित है असनकहहु ( २२ ) तब श्रीरामचन्द्रने सकुचिकै अपनीशपथदेवाईकि हेतात लक्ष्मणकै लरिकाईं राजातेनकहब ( २३ ) यहि चौपाईते दुइदोहाताईं अक्षरार्थै जानब श्रीजानकीजीकहती हैं हे सुमन्त आपु पिता श्वशुरके समानहौ जो उत्तरदेउँ तौ

मनिजशपथदेवाई कहबनताललषणलरिकाई २३ कहिसुमन्तपुनिभूपसंदेशू सहिनसकिहिसियविपिनकलेशू २४ ज्यहिबिधिअवधआवफिरिसीया सोइरघुवीरतुमहिंकरणीया २५ नतोनिपटअवलम्बविहीना मैंनजिअबजिमिजलबिनुमीना २६ दो० ॥ मैकेससुरेसकलसुखजबहिंजहांमनमान तहँतबरहहिसुखेनसियजबलगिविपतिविहान २७ चौ० ॥ विनतीभूपकीनज्यहिभांती आरतिप्रीतिनसोकहिजाती २८ पितुसँदेशसुनिकृपानिधाना सियहिदीनसिखकोटिविधाना २९ सासुश्वशुरगुरुप्रियपरिवारू फिरहुतोसबकरमिटइखँभारू ३० सुनिपतिबचनकहतिवैदेही सुनहुप्राणपतिपरमसनेही प्रभुकरुणामयपरमबिवेकी तनुतजिरहतछाँहकिमिछेकी ३२ प्रभाजाइकहँभानुबिहाई कहँचन्द्रिकाचन्द्रतजिजाई ३३ पतिहिप्रेममयविनयसुनाई कहतिसचिवसनगिरासोहाई ३४ तुमपितुससुरसरिशहितकारी उतरुदेउं करिअनुचितभारी ३५ दो० ॥ आरतवशसन्मुखभइउंविलगनमानवतात आरजसुतपदकमलबिनुबादिजहांलगिनात ३६ चौ० ॥पितुवैभवबिलासमैंदीठा नृपमणिमुकुटलहतपदपीठा ३७ सुखनिधानअसमायकमोरे पतिबिहीनमनभावनभोरे ३८ ससुरचक्रवैकौशलराऊ भुवनचारिदशप्रकटप्रभाऊ ३९ आगेह्वइज्य-

अनुचितकरिकै उत्तरहोतहै ( ३५ ) दोहार्त्थ॥ अरु मैं आरतकेबश सन्मुखभइउँ हे तात बिलगकही अनुचित आपु न मानब बहुत का कहौं राजा अजके दशरथमहाराज तहां आर्यकही अतिश्रेष्ठ सर्वोपरि तेराजाके सुत जो हैं राइबिद्यमान तिनके पदकमलबिना जहांतकनात सोसब बादिहैं ( ३६ ) सुनहुपिता ताको जो बिभव बिलास है दीठाकही सब देखते हैंजिनपिताके पदपीठिबिषे मणिमुकुटधारी राजानमते हैं ( ३७ ) सुखके निधानकही स्थान ऐसो तौ मेरो मायककही पिताकोघर है सो पितबिहीन मोको भोरेहूनहींभावैहै ( ३८ ) अरु श्वशुर चक्रवर्त्ती कौशलराज जिनकरप्रभाव चौदहौभुवन अरु तीनिहूलोकनमें प्रसिद्धहै ( ३९ ) जिन राजा को इन्द्रआगेह्वइकै लेतहैं अरु अर्द्धसिंहासनको आसनदेतहैं ( ४० ) अरु श्वशुर एतादृशकही यहिप्रकारकेहैं अवधनिवासूकही अवधकेराजा अरुपरिवार जेहैं प्रियजन जे हैं ते श्वशुर सासु माता के सदृशहैं ( ४१ ) हे तात रघुपतिकेपद पद्मपरागबिना अपर जो पदार्थ है सो मोकहँ सपन्यहुमें सुखदातानहींहै ( ४२ ) वनबिषे कठिनभूमिहै पन्थमें पहारहैं अरुकरि हैं सरसरितअपारहै ( ४३ ) कोलकिरात कुरंगबिहंग जेहैं तहाँ ते मोको प्राणपतिके संगबिषे सबप्रकारते सुखदाता हैं ( ४४ ) दोहार्त्थ॥ हे तात सासु

**हिसुरपतिलेई अर्द्धसिंहासनआसनदेई ४० ससुरएतादृशअवधनिवासू प्रियपरिवारमातुसबसासू ४१ बिनुरघुपतिपदपद्मपरागा सोकहँसपन्यहुसुखदनलागा ४२ कठिनभूमिबनपन्थपहारा करिकेहरिसरसरितअपारा ४३ कोलकिरातकुरंगबिहंगा म्वहिंसब सुखदप्राणपतिसंगा ४४ दो० ॥ सासुससुरसनमोरिहुतिबिनयकरबपरिपाँय मोरशोचजनिकरियकछुमैंबनसुखीसुभाय ४५ चौ० ॥ प्राणनाथप्रियदेवरसाथा वीरधुरीणधरेधनुभाथा ४६ नाहिनमगश्रमदुखमनमोरे म्वहिंलगिशोचकरियजनिभोरे ४७ सुनिसुमंतसियशीतलबानी भयेबिकलजनुफणिमणिहानी ४८ नयनसूझनहिंसुनैनकाना कहिनसकैकछुअतिअकुलाना ४९ रामप्रबोधकीनबहुभांती तदपिहोतिनहिंशीतलछाती ५० यत्नअनेकसाथहितकीन्हे उचितउतररुरघुनन्दनदीन्हे ५१ मेटिजाइ**

श्वशुरसे मोरिसंती पांयपरिकै बिनयकरब मोरिकवनिउ बातकै चिंता नकरैं मैं बनमें सुखीहौं ( ४५ ) काहेते प्राणनाथ जो पतिहैं अरु देवर श्रीलक्ष्मणजी हैं महाबीरनमें धुरन्धर हैं धनुषबाण धारणकिहे हैं तहां मोकोकौनिचिंता है ( ४६ ) मोको बन अरु मगबिषे लेशहूदःखनहींहै मोरिचिंता भोरहूकही भूलिकै न करब ( ४७ ) तहां हे भरद्वाज श्रीजानकीजीकीशीतलबाणी सुमन्तसुनिकै कैसे बिकलभये हैं जैसे फणिकीमणि हानि होइजाय तब फणिक बिकलहोइ ( ४८ ) न तौ सुमन्तके नेत्रनतेदेखिपरै अरु न तौ श्रवणतेसुनिपरै ताते अकुलाइउठे कछु कहिनहींसकैं हैं ( ४९ ) अरु श्रीरामचन्द्र मन्त्रीकर प्रबोध बहुतकीनहै तदपि शीतलछाती नहींहोति है ( ५० ) जब सुमन्त श्रीरामचन्द्रके संगजाबेके अनेकयत्नकीन तब उचित उत्तरदैकै श्रीरामचन्द्र सुमन्तको राखिछांड़ा है ( ५१ ) हे पार्वती सुमन्त अपनेमनमें कहत हैं कि श्रीरामचन्द्रकै रजाइ नहींमेटिजाति है कर्मकैगति कठिनहै कछुबसाइ नहीं है ( ५२ ) तब सीतारामचन्द्रके चरणारबिन्दमें नमस्कारकरिकै सुमन्त फिरतेभये हैं जैसे बणिक् मूरगँवाइकैफिरै है ( ५३ ) दोहार्त्थ॥ तब सुमन्त रथहांका तहां घोड़े श्रीरामचन्द्रकी दिशि देखिकै हिहिनाते हैं आगे चलिनहीं सकते हैं तब निषाद देखिकै बिषादके बशह्वइकै शीशधुनि पछितात है ( ५४ ) लोगकहते हैं हे बिधाता जेनर श्रीरामचन्द्र के बिरह करिकै पशु ऐसे बिकल हैं तिनके माता पिता कैसे जीवहिंगे ( ५५ ) हे पार्वती परबशकही जबर्दस्ती श्रीरामचन्द्र सुमन्तको पठावतभये अरु आपु सुरसरी के तटपर जातभये ( ५६ ) तब श्रीरामचन्द्रने नावमांगा कि हेनिषादराज नावलैआवहु तब निषादराज प्रेम भरि उक्तिकरिकै व्यंग्यबाणी बोल्योहै श्री-

**नहिंरामरजाई कठिनकर्मगतिकछुनबसाई ५२ रामलषणसियपदशिरनाई फिर्‌योबणिकजिमिमूरगंवाई ५३ दो० ॥ रथहांके हयरामतनहेरिहेरिहिहनाहिं देखिनिषादबिषादबशधुनहिंशीशपछिताहिं ५४ चौ० ॥ जासुबियोगबिकलपशुऐसे प्रजामातुपितुजीवहिंकैसे ५५ बरबशरामसुमंतपठाये**

**सुरसरितीरआपुचलिआये ५६ मांगानावनकेवटआना कहैतुम्हारमर्ममैंजाना ५७ चरणकमलरजकहँसबकहहीं मानुषकरणिमूरिकछुअहहीं ५८ छुअतशिलाभइनारिसुहाई पाहनतेनकाठकठिनाई ५९**

रामचन्द्र मैं तुम्हारे मर्मजानतहौं (५७) बृहन्नाटके श्लोक निषादाधिपतेशीघ्रंनौकामानयहेसखेप्रामाम्बुनापूर्णवाक्यं श्रीरामाप्रत्युवाचह १ पुनः पाद्मे श्लोक १ उवाचशीघ्रंसुदृढ़ान्नावमानयमेसखे। श्रुत्वारामस्यवचनन्निषादाधिपतिर्गुहः १ स्वयमेवदृढ़ान्नावमानयामाससुव्रतः स्वामिन्नारुह्यतांनौकां सीतयालक्ष्मणेनच २ सखेनिषादेशतरीन्त्वरान्वितः समानयेहावसरोनसंस्थितेः। निशम्यलोकेशवचोतिकोमलं तदेतिनावानयनोत्सुकोऽब्रवीत् ३ छालयामितवपादपंकजंनाथदारुदुखदोःकिमंतरं। मानुषीकरणरेणुरस्तितेपादयोरितिकथाप्रथीयसी ४ वाहयेज्ञातिभिःसार्द्धमहमेवसमाहितः। तथेतिराघवोप्राहआरोप्यशुभलक्षणं ५ गुहःस्वहस्तावालम्ब्यस्वयंचारुहसब्यथा। आयुधादीन समानीयलक्ष्मणोप्यारुरोहच ६ गुहस्ताम्बहिया मासज्ञातिभिस्सहितस्स्वयं। गंगामध्यगतागंगांप्रार्थयामासजानकी ७ हेश्रीरामचन्द्र तुम्हारे चरणनकी रजकोलोकवेद सबकहते हैं कि मनुष्यकरनकी कछु मूरिकही जड़यहिमांहै ( ५८ ) परक्योंकि शिलाजिस चरणकमल की रज को स्पर्शकरतही सन्दरिनारि होइगई तौ कछुपाहन तेकाठकठिन नहीं होतहै ( ५९ ) तहां जो मोरीनावपर तुम्हारे चरणनकी रजपरै तो मोरितरणी कहीनाव यदि मुनिघरणी होइकै अकाशको उड़िजाइ तौ मोरि बाटपरै कही मेरी जीविकाकी बाट जोराह तवनिमारी जायतो मोरअकाज होइजाय ( ६० ) यहनावमोरि जीविकाहै और कछु कबारुकही रोजगार मोरनहीं है ( ६१ ) हेप्रभु जो अवशिपारगाचहहु तोमोको पदपद्म पखारनकोकहहु ( ६२ ) छंदार्थ॥ हेनाथ पदपद्म धोइकै जाते वहिपदकीरज धोइलेउँ नावमें रज न छुइजाइ जाते मोरिनावउड़नसे बचिजाय तब आपुकोनावपर चढ़ावों बहुतखुशीते पारउतारिदेउँ अरु आपुसे उतराई कछु नहीं चाहतहौं हे नाथ बिनापगधोये पार न उतारिहौं मोको आपकी शपथहै अरु दशरथकीआन कही दोहाईहै यहबात मैं सत्यकहतहौं ( ६३ ) बरु

**तरणीमुनिघरणीहोइजाई बाटपरैम्वरिनावउड़ाई ६० यहिप्रतिपालौंसबपरिवारू नहिंजानोंकछुअवरुकबारू ६१ जोप्रभु अवशिपारगाचहहू म्वहिंपदपद्मपखारनकहहू ६२ छन्द ॥ पदपद्मधोइचढ़ायनावननाथउतराईचहौं म्वहिंशपथराउरिआनदशरथबातसबसांचीकहौं ६३ बरुतीरमारहुलषणपैजबलगिनपायँपखारिहौं तबलगिनतुलसीदासरामकृपालुपारउतारिहौं ६४ सो० ॥ सुनिकेवटकेबयनप्रेमलपेटेअटपटे विहँसेकरुणाअयनचितयजानकीलषणतन ६५ चौ ०॥ कृपासिन्धुबोलेमुसुकाई**

लक्ष्मणजू बाणसे मरहिं मरिजाउँ पर जबलगि पांय न पखारिहौं श्रीगोसाई तुलसीदास कहतेहैं कि निषादराज हठप्रण करिकै यह कहत हैं कि बिनापांवधोये हे रामकृपालु पार न उतारिहौं ( ६४ ) सोरठार्त्थ ॥ हे पार्व्वती केवटके वचन श्रीरामचन्द्रसुन्यउ सो वचनकैसे हैं प्रेमते लपेटे अरु अपनेलीला ऐश्वर्य्य में अटपटी कही अरुझीसी सुनिकै करुणाकेआयतन जो श्रीरामचन्द्र सो जानकी लषणतनचितैकै बिहँसतभये जानकी लषणतन क्यों चितैकै बिहँसे मनमेंकहतेहैं कि जानकीजी देखौ तौ तुम्हेंदैकै तव कही तुम्हारेपिताने हमारेपांयधोये हैं अरु यह जातिको निषादत्यइँ ऐसी महा अटपटी बात प्रणकरिकै कही है कि अब हमारो चरणबिनाधोये नहींरहैगो अरु हमको धोवावतैबनैगो पुनि लक्ष्मणजूकीदिशि क्यों विहँसे लक्ष्मणजू देखौतौ बनमें एकएक हमारे ऐसेप्रेमी कोलभिल्ल हैं अरु तुमतौ हमारे अनन्यहौ इहां कोईकोई कहते हैं कि जो श्रीरघुनाथजीते प्रेमलपेटे बचनकह्यो है अरु चरण धोयो है अरु पार उतारयो है सो और केवट है श्रीरामचन्द्रको सखा गुहराजानहीं है तहां यह कहना नहीं सम्भवै है काहेते ऐसो बचन श्रीरघुनाथजी से और केवटकौनसमर्थ है जो कहै यहि चरणधोयो है अरु पारउतारयो है धोइबेको अधिकार कौन केवटको भाग्य है अरु राजा गुहसखाजे हैं सो

बराबरिकीवार्त्तालाप करते हैं पर श्रीरामचन्द्रको मनलिहे हैं अन्तष्करण ते सेवक बनै है ताते चरणधोइबे को अधिकार यहिको है देखिये तौ श्रीरामचन्द्रको चरण कितौ जनकधोयो है कितौ निषाद धोवत है अरु कितौ शवरी धोवैगी जहां जनकजी योगेश्वर हैं भक्त हैं अरु निषाद औ शवरीये आत्मसमर्पणी भक्तहैं ताते निषादराजहीसे नाव मांगाहै अरु वोही चरणधोयो है अरु वोही पार उतारयोहै सो हमने पाछेकी चौपाई में जबनावमांगीहै मँगाइकै श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण श्रीजानकीजी चढ़तभई हैं यामेंयह अभिप्रायहै प्रथम प्रेममयबचनकहिकै पांवधोइकै तब श्रीरामचन्द्र सखैनावमँगाइकै तीनिहूंजनन को चढ़ाइकै निजखेइकै श्रीरामचन्द्रको पारलै गयो

**स्वईकरहुज्यहिनावनजाई ६६ वेगआनिजलपाँयपखारू होतबिलम्बउतारहुपारू ६७ जासुनामसुमिरतयकबारा उतरहिंनरभवसागरपारा ६८ सोइकृपालुकेवटहिनिहोरा ज्यइजगकियतिहुंपगहुतेथोरा ६९ पगनखनिरखिदेवसरिहर्षी सुनिप्रभुबचनमोह**

है प्रमाणचौपाई केवटकीनबहुतिसेवकाई सोयामिनिशृंगवेरगवाँई रामसखातबनावमँगाई प्रियाचढ़ाइ चढ़े रघुराई ४ तहां जो यह कहते हैं किजो प्रेम लपेटे बचनकह्योहै अरु श्रीरामचन्द्रको पांयधोयोहै अरु खेइकैपारउतारिलैगयोहै सो आनकेवटनहींहै रामसखाहै सो यह अच्छीतरह समुझिकै नहीं कहते हैं किरामसखानहीं है रामसखाहीहै काहेते कि असकहतसंते रामसखा बिषयभावभंगदूषणहोत है सोकाब्यनमें महादूषणकहाहै इहां भावरस लक्षणब्यंग्यहै ( ६५ ) हेगरुड़गुहनेकहा कि हे नाथ बिनुपगधोये नावपरनचढ़ैहौंतब कृपासिंधु श्रीरघुनाथ जी मुसकाइकै बोले हेसखे अबसोई करु ज्यहितेतोरि नावनजाइ ( ६६ ) हेगुह अबवेगजललै आव पारउतारहु बिलंबहोतिहै ( ६७ ) हे पार्बती श्रीरामचन्द्रकरनाम एक बार नरजपिकै भवसागरके पारउतरिजातहै ( ६८ ) सो कृपालु श्रीरामचन्द्र केवटको निहोरा करते हैं ऐसेप्रेमकेबशहैं जिन बामन अवतार बिषे त्रैलोक्यहुको तीनिपगते थोरकीन है ( ६९ ) हे पार्वती श्रीरामचन्द्र के पगके नखदेखिकै श्रीगंगाजी अतिहर्षको प्राप्तहोत भई हैं काहेते कि मेरो जन्मस्थान यही है पुनि जब श्रीरामचन्द्र ने कहा कि हे निषाद नावलैआवहु हमको पारउतारौ यह बचनसुनिकै मोहमतिकर्षी तहां जो गंगाजी की मतिबिषेयह मोहरही कि यहिचरणते मोको बहुतदिन छूटेभये हैं श्रीरामचन्द्र मोको आपनजानिकैआदर करते हैं कि नहीं करते हैं वह मोहरही जब श्रीरामचन्द्र नेकहा कि हे निषाद नावलै आवहु गंगाजी के पारउतारिदेहु तब गंगाजीने यह वचन सुन्यउ तहां यह श्रीरामचन्द्र को बचन जो है सो गंगाजीकी मति में जो मोहरह्यो है सो आकर्षण कही हरिलियो गंगाजीको परमहर्षभयो हैसो गंगाजी कहती हैं कि मोको आपनि जानत हैं यह निश्चय भई का समुझिकै कि जो श्रीरामचन्द्र कहते तौ मोरेऊपर पगनते चलेजाते मैंतौउनकी दासीहौं किन्तु आज्ञाहोती तौमैं सूखिजातिउँ पर मोरिमर्य्याद श्रीरघुनाथजी राखी ताते मोहमतिकर्षी पदकहा अथवा अब दूसर सामान्य अर्थ करते हैं सुरसरी को पदनख देखिकै हर्षभयो जब श्रीरामचन्द्रने निषादते उतरिबेको नावमांगी यह बचनसुनिकै सुरसरीकी मतिकोमोहभयो काहेते श्रीरामचन्द्र सच्चिदानन्द यह का कहते हैं यह मोहजो

**मतिकर्षी ७० केवटरामरजायसुपावा पानिकठौताभरिलैआवा ७१ अतिआनन्दउमँगिअनुरागा चरणसरोजपखारनलागा ७२ वर्षिसुमनसुरसकलसिहाहीं यहिसमपुण्यपुंजकोउनाहीं ७३ दो० ॥ पदपखारिजलपानकरिआपुसहितपरिवार पितरपारकरिप्रभुहिंपुनिमुदितगयोलैपार ७४॥**

* * * * * * *

भई त्यइप्रथम के हर्षको आकर्षण करिलियोहै ( ७० ) तब हे तात श्रीरामचन्द्रकै रजायसु पाइकै केवट कठौताभरि पानिकही गंगाजललैकै आवतभयो ( ७१ ) तब अतिआनन्द अरु अनुराग की उमङ्गते चरणसरोजपखारैलाग ( ७२ ) तब यह निषाद को भाग्य देखिकै ब्रह्मादिक देवता फूलनकी बर्षाकरते हैं अरु निषादको भाग्यसराहते हैं यह देवता परस्परकहते हैं कि यहिके समानपुण्यकर पुंज कोईनहीं है काहेते कि ज्यहि चरणको हम जो हैं ब्रह्मा अरु शिव अरु शुक सनकादि इत्यादिक जो परमहंस हैं ते

सब चित्तएकाग्रकरिकै ध्यान करते हैं अपने को धन्यमानते हैं तिनचरणनको निषाद प्रत्यक्ष धोवतहै अरु जो जनक योगीश्वर ने इनचरणनको धोयो है सो एकतो योगेश्वर पुनि श्रीजानकीकोदेके अरु इसने काकियो है जो श्रीरामचन्द्र के चरणारविन्दके धोइबेको अधिकारीभयो है तहां केवल रामकैकृपा श्रीरामचन्द्र कै रीझि किसूसे नहीं जानी जाती है तातै कृपापात्र है ( ७३ ) दोहार्थ॥ हे पार्बती श्रीरामचन्द्रकर पदपखारिकै पितृन को तर्पण करिकै आपुसहित परिवार कृतार्थ होइकै पितृनको भवसागरते पारकरिकै तब श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण श्रीजानकीजीको नावपर चढ़ाइकै श्रीगंगाजी के पार उतारत भयो है तहां देखियेतौ पहिले श्रीरामचन्द्र वहिके सम्पूर्ण बंशको भवसागरते पारउतारिकै तबआपु पारकोगये हैं कृपालु हैं ( ७४ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने श्रीअयोध्याकाण्डे श्रीरामचन्द्र कृपानिषाद अनुराग बर्णनन्नाम द्वादशस्तरङ्गः १२॥

दोहा॥ दशअरुतीनितरंगमें गंगउतरिश्रीराम रामचरणगुहसहितप्रभुगयेप्रयागसुखधाम १३ तव श्रीगंगाजीको उतरिकै रेतामेंठाढ़भये हैं श्रीरामचन्द्रजी श्रीजानकी अरु श्रीलक्ष्मण समेत ( १ ) तब केवटने उतरिकै दण्डवत् कीन्हहै तहां जो केवटईकरै नावखेवै ताकी केवटसंज्ञाहै पर उनकी जातिबिषे तहां यहजानब निषादकही इनसबकी जातिको अरुनिषादराज जो श्रीरामचन्द्रको सखात्यहिको गुहनाउँहै तहां चारिउजने गुहसमेत उतरिकै ठाढ़भये तहां काव्यनबिषे संबंधकी क्रिया है सो कहते हैं कि उतरिकै काकीन्ह तहां गुहनेकेवटई करिकै उतरिकै दण्डवत्कीन्ह

चौ० ॥ उतरिठाढ़भयेसुरसरिरेता सीयरामगुहलषणसमेता १ केवटउतरिदण्डवतकीन्हा प्रभुसकुचेयहिकुछौनदीन्हा २ पियहियकीसियजाननहारी मणिमुँदरीमनमुदितउतारी ३ कह्यउकृपालुलेउउतराई केवटचरणधर्‌योअकुलाई ४ नाथआजु

कि श्रीमहाराजको उतारिलैआयोंहौं तहां उतारेकी दण्डवत्कीनहै तहांलौकिकहुबिषे यहरीतिहै कि सो सर्कारको कौनौकार्य सिद्धकरिआवै सलाम दण्डवत् प्रणाम आशीर्वाद यह करिबे योग्यहै काहेते कि यह करिकै अपनेकार्य की सेवकाई जनावतहै तहाँ निषादराजके संगमें औरौसेवकरहे हैं अरु उतरिकै तिनदण्डवत् कीन्हहै अरु जो औरेनिषादको कोईकहते हैं सो इहां रसास्वाद दूषण परैहै काहेते कि यहि प्रकरण में प्रथम सख्यरस की मुख्यतारहीहै पुनि जबते पांयधोयो तबते दास्यरस की मुख्यताहै तातेनावते उतरिकै गुह दण्डवत्कीन्ह है गुहने तौ अपनी सेवकाई की दण्डवत् कीनहै अरु प्रभुको निषादके बासनाकी परीक्षाहै प्रभुसकुचे यह मनमें कहा कि याकोनावकी उतराई नहींदीन है ( २ ) तव श्रीजानकीजी पियकेहियके जाननहारी मणिजटित मुंदरीनिषादके देवेहेतुमुदितमनते उतारतीभई ( ३ ) तब श्रीरामचन्द्र कृपालुकह्यउ कि हे निषाद उतराईलेहु तब अकुलायकै केवट चरण गहतभयो ( ४ ) हेनाथ आजमैंका नहीं पावा सर्वस पायउँ है अरु मोरसंपूर्ण दुःखकरदावा मिटिगयउ है ( ५ ) बहुतकाल मैं मँजूरीकीन्ह पर बनाइकै आजुमोको बिधातैं भरिपूरिदीनहै ( ६ ) हेनाथ अब मोको कछुनहीं चाहिये इहां निषादनाथ कार्पण्यशरणागत भयो है अरु नीचानुसंधान कीन्ह है जो केवल रामानन्य हैं तिनको यह मुख्य है ( ७ ) हे नाथ फिरती बार जो माको उतराई देव सो मैं माथे धरिलेब यहिबाणी में यह अभिप्राय है कि हे नाथ आपुआनन्दपूर्व्वक सम्पूर्ण कार्य्य करिकै इहैघाटउतरव यह बरदान पावों ( ८ ) दोहार्थ॥ हे पार्वती तब श्रीरघुनाथजी बिहँसिकै बोले हे सखे यहलेहुअरु हम लौटिकै इहै घटउतरब यह श्रीरघुनाथजी बारंबारकहा तब निषाद कहत है कि हे नाथ मैं कालेउँ आपु तौ प्रथमहिं मोर कुलपरिवार सव उतारिदीन अरु मैंतौ केवल गंगैजीके पारउतारयउँहौं यहिमें मैं का आधिक्यता कीनहै जो कछुलेउँ तब श्रीरामचन्द्र प्रेममय तर्कबाणी सुनिकै बिहँसिकै अति प्रसन्नहोइकै बिमल भक्ति बरदान देतभये हैं

मैंकाहनपावा मिटादोषदुखदारिददावा ५ बहुतकालमैंकीन्हिमँजूरी आजुदीन्हबिधिबनिभरिपूरी ६ अबकछुनाथनचाहियमोरे दीनदयालअनुग्रहतोरे ७ फिरतीबारनाथम्वहिंदेबा सोप्रसादमैंशिरधरिलेबात्त दो० ॥ बहुतकीन्ह प्रभुलषणसियनहिंकेवटकछुलेइ बिदाकीन्हरघुबंशमणिभक्तिबिमलबरदेइ ९ चौ०॥ तबमज्जनकरिरघुकुलनाथा पूजिपारथीनायउमाथा १० सियसुरसरिहि

अरु यहकहा कि अब घरको जाहु तहां रघुनाथजी तौ बिदाकीन पर निषाद ठाढ़होइ रह्यो है यह बिचारिकै कि जो रघुनाथजी मोको संगलेते तो भलीबातरहीहै यहसमुझिकै ठाढ़ह्वैरह्यो है काहेते कि जो एकबारके कहेजाइ तौ अनन्यभावप्रेम बिषे बिक्षेप परिजाइहे काहेते किअनन्ययसेवकजेहैं तेस्वामी अपनीसेवाते बिक्षेपकी आज्ञादेहिं तौ स्वामिहुकरकहानहीं मानते हैं यह आर्त्त प्रपन्न शरणागत कहावै है देखिये तो श्रीजानकी अरु लक्ष्मणजीको श्रीरघुनाथजी रहिबेको बहुतकहाहै पर श्रीघुनाथजीको साथछांड़िकै नहीं रहे हैं देखिये तौ यह लौकिकहु बिषे प्रसिद्ध है जो कोई प्रेमी हैं तिनको स्वामीबारबार बिदाकरते हैं परनहीं जाते हैं तब कछुदिन कछुदूरिसाथ लेतेहीबनै है यह प्रेमकीरीतिही है तहां श्रीरघुनाथजीने प्रेमते बिदाकीन्ह पर निषादनाथ ठाढ़ह्वैरह्यो है तहांयह बिशेषजानब कि नावके खेवतसंते निषादराजके सेवक बहुतरहे हैं पर प्रथम नाव मांगिबे में अरु पांयधोइबेमें मुख्यखेइबेमें पारउतारिकै दण्डवत् करिबेमें उतराईदेबेमें अरु न लेबे में अरु ठाढ़होबेमें अरु श्रीरघुनाथजी संगैलेवे में यहसब प्रकरणमें निषादराज श्रीरघुनाथजी की सखाताही को जानबमुख्यकरिकै श्रीरघुनाथजी को कैङ्कर्यअपने हाथनते कियो है अरु अपर सेवक जोरहे हैं सो निषादके आज्ञानुकूल कियो है अरु जो औरे निषादकोकहीतौ रसभंग होइजातहै देखिये तो उत्तरकाण्डमें कहाहै कि श्रीजानकीजी श्रीरघुनाथजी की कैङ्कर्य अपने हाथन करती रही हैं यद्यपिगृहमेंसेवक सेवकिनी बहुतरहे हैं ( ९ ) यहिचौपाईते दुइदोहाताईं अक्षरार्थै जानब

कह्यउकरजोरी मातुमनोरथपुरवहुमोरी ११ पतिदेवरसँगकुशलबहोरी आइकरोंज्यहिपूजातोरी १२ सुनिसियबिनयप्रेमरससानी भइतबबिमलबारिवरबानी १३ सुनुरघुवीरप्रियाबैदेही तवप्रभावजगबिदितनकेही १४ लोकपहोहिंबिलोकततोरे त्वहिंसेवहिंसबबिधिकरजोरे १५ सोतुमम्वहिंबिड़िबिनयसुनाई कृपाकीन्हम्वहिंदीन्हिबड़ाई १६ यदपिदेविमैंदेवअशीशा सुफलहोनहितनिजवागीशा १७ दो० ॥ प्राणनाथदेवरसहितकुशलकोशलाआइ पूजिहिसबमनकामनासुयशरहिहिजगछाइ १८ चौ० ॥ गंगवचनसुनिमंगलमूला मुदितसीयसुरसरिअनुकूला १९ तबप्रभुगुहहिकह्यउघरजाहू सुनतसूखमुखभाउरदाहू २० दीनबचनगुहकहकरजोरी बिनयसुनहुरघुकुलमणिमोरी २१ नाथसाथरहिपंथदेखाई करिदिनचारिचरणसेवकाई २२ ज्यहिबनजाइरहबरघुराई पर्णकुटीमैंकरबसोहाई २३ तबम्वहिंकहँजसदेवरजाई सोकरिहौंरघुबीरदोहाई २४ सहजसनेहरामलखितासू संगलीन्हगुहपरमहुलासू २५ पुनिगुहज्ञातिबोलिसबलीन्हे करिपरितोषबिदासबकीन्हे २६ दो०॥ तबगणपतिशिवसुमिरिप्रभुनाइसुरसरिहिमाथ सखाअनुजसियसहितप्रभुगवनकीन्हरघुनाथ २७ चौ० ॥ त्यहिदिनभयहुबिटपतरबासू संगलीनगुहपरमहुलासू २८

तहां श्रीरामचन्द्रने गुहको बिदाकीन्हहै तबप्रेमते ठाढ़ह्वैरह्यो है तबश्रीरघुनाथजी श्रीगंगास्नान करिकै अरु पारथीपूजिकै आगेको चलिबे की तय्यारीकीन्हहै तबगुहते कह्यो किहेगुह अबतुम घरकोजाहु जबयह दुसराय श्रीरामचन्द्रकहा है तबसुनिकै मुखसूखिगयो है तब श्रीरामचन्द्र अति प्रेमको देखिकै संगमें लेतभये हैं ( २७ ) पुनि श्रीरामचन्द्र गंगाको नमस्कार करिकै प्रयागको चलतभये हैं त्यहिदिन बिषे कोई विटपतरमें बास कियो है लक्ष्मण अरु गुहसबप्रकारते सुपासकीन्हहै ( २८ ) पुनि प्रातउठिकै प्रातःकृत्यकरिकै तीर्थराजको प्राप्तिभये हैं ( २९ ) तहां तीर्थराजको मंत्री सत्यहै अरु श्रद्धाप्रियस्त्री है श्रद्धाकही वेदवाक्य अरु गुहवाक्य में प्रतीतिअरु वेनीमाधव ऐसेठाकुर मित्र हैं सरिसकही अतिश्रेष्ठ प्रवीण ( ३० ) तीर्थराजके भंडारविषे अर्थ धर्म काम मोक्ष चारिपदार्थ भरे हैं अरु पुण्यजो है सोई प्रदेशहै चारुप्रदेश कही राजधानी तेबाहरके मुल्क ( ३१ ) अरु

क्षेत्रजो है सोई गढ़ कही किला है अगमगढ़ है ज्यहिको प्रतिपक्षी वैरीतेस्वप्नेहु नहीं पावते कही अमलनहीं करि सकते हैं तहां क्षेत्रकही जहां तक अक्षयवट की छायाहोइ भरद्वाजको आश्रम अरु अरइलमें शर्म्मेश्वरमहादेव अरु रूसीमें प्रलयकालकोकूप अरु दशाश्वमेधमें उत्तरशिरकोटि

प्रातप्रातकृतकरिरघुराई तीरथराजदीखप्रभुजाई २९ सचिवसत्यश्रद्धाप्रियनारी माधवसरिसमीतहितकारी ३० चारिपदारथभराभँडारू पुण्यप्रदेशदेशअरुचारू ३१ क्षेत्रअगमगढ़गाढ़सोहावा सपन्यहुंनहिप्रतिपक्षिउपावा ३२ सेनसकलतीरथबरबीरा कलुषअनीकदलनरणवीरा ३३ संगमसिंहासनअतिसोहा छत्रअक्षयबटमुनिमनमोहा ३४ चमरयमुनअरुगंगतरंगा देखिहोहिंदुखदारिदभंगा ३५ दो० ॥ सेवहिंसुकृतीसाधुशुचिपावहिंसबमनकाम बन्दीवेदपुराणगणकहहिंबिमलगुणग्राम ३६ चौ० ॥ कोकहिसकैप्रयागप्रभाऊ कलुषपुंजकुंजरमृगराऊ ३७ असतीरथपतिदेखिसोहावा सुखसागररघुपतिसुखपावा ३८ कहिसियलषणहिं

महादेव इतना गढ़है सोई क्षेत्र है प्रतिपक्षी कही मनक्रम बचनके पापत्यहि अगमगढ़ के समीप स्वप्नेहुनहीं जायसकते हैं ( ३२ ) अरु अनेक जे महत् तीर्थ हैं सोई वीरहैं अरु ज्ञान वैराग्य योग बिज्ञान ध्यान समाधिशान्ति सन्तोष दया दान इत्यादिक आयुधहैं अरु सामान्य तीर्थ जो है सोई सेन है तहां अनेक जे कलुष हैं अनेक त्यहि की अनी जे हैं सेनात्यहिके दलिबेकही नाशकरिबेको बड़ेरणधीरहैं ( ३३ ) अरु संगम जो हैं त्रिबेणी सोई राजाको सिंहासनहै अरु अक्षयवटछत्रहै सो देखिकै मुनिनके मन मोहिजातहै ( ३४ ) अरु गंगायमुनाकी तरंगसोंईचमरहै सो देखिकै दुखदारिद्र मच्छ्रहैं सो नाशहोइजाते हैं ( ३५ ) दोहार्थ॥ अरु सुकृती साधु जो हैं सो सेवन करते हैं सोई सेवक हैं अरु सम्पूर्ण मनकी कामना पावते हैं अरु त्यहिराजा के बन्दीकही भाट सोई वेदपुराण हैं ज्यहिके यशको विमलकरिकै गावते हैं ( ३६ ) सो प्रयाग को प्रभावको कहि सकै है सम्पूर्ण जो कलुष हैं सो मत्तहाथिन के यूथ हैं त्यहिके बधिबेकोप्रयाग मृगराज कही सिंहहै ( ३७ ) ऐसे तीर्थपतिको देखिकै सुखके सागरजो श्रीरामचन्द्र ते सुखको प्राप्त होतेभये हैं ( ३८ ) हे पार्बती श्रीरामचन्द्र श्रीमुखते तीर्थराज को यथार्थ माहात्म्य श्रीजानकी लक्ष्मण गुहते कहते भये हैं ( ३९ ) श्रीप्रयागकर माहात्म्य अनुरागयुक्त कहिकै प्रणामकीन है पुनि बनबाग देखत देखत आइकै त्रिवेणी समीप प्राप्तिभये हैं ( ४० ) यहि प्रकारते आइकै त्रिवेणी को देखत भये हैं कैसी हैं त्रिवेणीसम्पूर्ण सुमंगलकी देनहारी हैं ( ४१ ) तहां त्यहि त्रिवेणी बिषे श्रीरामचन्द्र श्रीजानकी लक्ष्मण अरु गुहसंयुक्त स्नान करतभये हैं स्नान करिकैपारथी पूजतेभये हैं अरु यथा बिधिते तीर्थन के देवतनको पूजन करते भये हैं ( ४२ ) तब पुनि श्रीरघुनाथजी भरद्वाज के इहां आवतेभये भरद्वाज को देखिकै दण्डवत् करतेभये हैं तब भरद्वाजजी देखिकै हर्षिकै उठिकै

सखहिसुनाई श्रीमुखतीरथराजबड़ाई ३९ करिप्रणामदेखतबनबागा कहतमहातमअतिअनुरागा ४० यहिबिधिआइबिलोकी बेनी सुमिरतसकलसुमंगलदेनी ४१ मुदितनहाइकीन्हशिवसेवा पूजियथाविधितीरथदेवा ४२ तबप्रभुभरद्वाजपहँआये करतदण्डवतमुनिउरलाये ४३ मुनिमनमोदनकछुकहिजाई ब्रह्मानन्दराशिजनुपाई ४४ दो० ॥ दीन्हअशीशमुनीशउरअतिअनंदअस

हृदय में लगावते भये हैं ( ४३ ) हे पार्बती मुनिके मनमें जो मोदभयो है सो नहीं कहा जाइ है मुनि श्रीरामचन्द्रको पावा जनु ब्रह्मानन्दकी राशिही हैं अरु ब्रह्मानन्द की राशिनि हैं इहां जनुपदकहा सो यह का कहा जनुकही उपमा उपमेय बिषेदेइ तहां जनुकही मुखजनु चन्द्र है नेत्रजनु कमल हैं तहांचन्द्रमा अरु कमल भिन्न हैं मुख अरु नेत्र भिन्न हैं चन्द्रमा अरु कमल के गुण क्रिया सुभाव लैकै मुखनयन की उपमादीन है काहे ते कि चन्द्रकमल उपमान है अरु मुख नयन उपमेय है ताते इहां जनुजो वाचकहै सो

कहाचाहिये अरु इहां तौ श्रीरामचन्द्र ब्रह्मानन्दकी राशि सोभी सूक्ष्मै हैं जैसे बड़वानल अग्नि तेजप्रकाशकै समष्टी राशि है परसूक्ष्मै है अरु ब्रह्मानन्द सुख आत्मअनुभवबिषे प्राप्ति है अरु परब्रह्म श्रीरामचन्द्र अरु परमानन्द श्रीजानकीजी दोउमूर्तिमान् नित्य हैं एकरस इहां उपमान उपमेय न्यूनाधिक्यरूपकालंकार है ताते इहां सीता राम की उपमाको ब्रह्मानन्दकी उपमा छोंड़िकै और कौनकी उपमादैसकै और उपमाहई नहीं है किन्तु दूसर अभिप्राययहहै कि ब्रह्मानन्द राशि जनुपाई जनु अचल ब्रह्मानन्द की राशिपाइनि है ऐसा मोद मुनिकेमनमेंभयो है ( ४४ ) दोहार्थ॥ तब अपने हृदयबिषे मुनि आशीर्बाद देत भये हैं असजानि कै कि मोरे सुकृतकर फलबिधातैं मोरे लोचन के गोचर कीन्ह है इहां मुनि अपने भाग्यको आशीर्बाद दीन्ह है ( ४५ ) श्रीरामचन्द्रते कुशलप्रश्न पूछिकै सुष्टु आसन देतेभये हैं और पूजन करिकै प्रेमते परिपूर्ण कियो है ( ४६ ) मुनिने कन्दमूल फल अंकुर नीक अमृत के समान दीनआनि ( ४७ ) तब श्रीरामचन्द्रजी श्रीजानकीजी श्रीलक्ष्मणजी ने गुहसमेत मधुरकही मिष्टफल अतिरुचिसे खाये हैं ( ४८ ) श्रीरामचन्द्रके राहकोश्रम भरद्वाज के भावकरिकै मिटिगयो अरु सुखीभये हैं तब भरद्वाज बचनउच्चारण करते भये हैं ( ४९ ) हे श्रीरामचन्द्र आजु

जानि लोचनगोचरसुकृतफलआजुकियेबिधिआनि ४५ चौ० ॥ कुशलप्रश्नकरिआसनदीन्हे पूजिप्रेमपरिपूरणकीन्हे ४६ कन्दमूलफलअंकुरनीके दियेआनिमुनिमनहुँअमीके ४७ सीयलषणजनसहितसोहाये अतिरुचिराममधुरफलखाये ४८ भयेबिगतश्रमरामसुखारे भरद्वाजमुनिवचनउचारे ४९ आजुसफलतपतीरथत्यागू आजुसफलजपयोगबिरागू ५० सफलसकलशुभसाधनसाजू रामतुमहिंअवलोकतआजू ५१ लाभअवधिसुखअवधिनदूजी तुम्हरेदरशआशसबपूजी ५२ अबकरिकृपादेहुबरयेहू निजपदसरसिजसहजसनेहू ५३ दो० ॥ कर्मबचनमनछांड़िछलजबलगिजननतुम्हार तबलगिसुखसपन्यहुंनहीं कियेकोटिउपचार ५४

हमार तपतीर्थवास अरु त्याग सर्वकर्मफल अरु जपयोगवैराग्य यह सबसफलभयो है ( ५० ) अरु हेश्रीरामचन्द्र जहांतक हम शुभशुभ साधनकीन सो सबसफलभयो है तुमको अवलोकतसंते ( ५१ ) हे श्रीरामचन्द्र जो हमारे सुखकी अवधि कही मर्याद रही सो अब दूसरिनहीं है आपुके दर्शनते पूजीकही सबपूर्ण भई है ( ५२ ) पुनि भरद्वाज कहते हैं कि हे रघुनाथजी अबसोबर देहु ज्यहि ते तुम्हारे पदकमल में मोर एकरससहजानन्द स्नेह बनारहै ( ५३ ) दोहार्थ॥ हे श्रीरामचन्द्र जबलगि मनवचनकर्म ते तुम्हार जननहींहोइ तबलगि बहिजीव को स्वप्नेहु सुखनहीं है उपचार कही कोटिन उपाय करैजाइ तहां कर्मवचनमनके छलकौन हैं जो अनेक शुभकर्म करते हैं पर अर्थ धर्म कामना हेतु पुनि वचन के छल वचन ते कहते हैं हम रामदास हैं अरु दासहोइरहे हैं कंचन वनितामानके किंतु पढ़िगुनिकै ज्ञान बैराग्य भक्तिनिरूपण करते हैं पर द्रब्य मान बड़ाई के हेतु बकइव हैं याको परमेश्वर विषे वाक्य छलकही पुनिमनकोछल कहूं एकांत बैठतेहैं अरु और कोई जानै कि ध्यानकरते हैं अरु ध्यान भी करते हैं तहां मनलय विक्षेपकषाय रसाभास में रहत है किंतुध्यानमननको अहंकार किंतु मनमें मोक्षकी चाहना किंतु मनमें लोक रंजनाकी चाहना इत्यादिक मनकी वासना जेती हैं ते परमेश्वर विषे मनके छलहैं जो कर्म वचन मन तीनिहूं छलजो न होहिं तबरामभक्ति आवै सुखी होइ ( ५४ ) यह मुनिके वचन सुनिकै श्रीरामचन्द्र सकुचाइगये हैं काहे ते हमनरनाट्य लीला करते हैं अरु मुनिहमारो यथार्थ स्वरूपवर्णन करते हैं पर मुनिके भावभक्ति करिकै अघाइगये हैं अरु आनन्दभयो है ( ५५ ) तब श्रीरामचन्द्र मुनिकर सुयश कोटिन भांतिते श्री

चौ. ॥ सुनिमुनिवचनराममुसुकाने भावभक्तिआनन्दअघाने ५५ तबरघुपतिमुनिसुयशसुहावा कोटिभांतिकहिसबहिसुनावा ५६ सोबड़सोसबगुणगणगेहू ज्यहिमुनीशतुमआदरदेहू ५७ मुनिरघुबीरपरस्परनवहीं वचनअगोचरसुखअनुभवहीं ५८ यहसुधिपाइप्रयागनिवासी बटुतापसमुनिगृहीउदासी ५९ भरद्वाजआश्रमसबआये देखनदशरथसुवनसुहाये ६० रामप्रणामकीन्हसबकाहू मुदितभयेलहिलोचनलाहू ६१

देहिंअशीशपरमसुखपाई फिरेसराहतसुन्दरताई ६२ दो०॥ रामकीन्हविश्रामनिशिप्रातप्रयागनहाय चलेलषणसियसहितजनमुदितमुनिहिंशिरनाय ६३॥ * * * * * *

जानकी लक्ष्मण गुह अरु समस्त मुनि मंडली तिनको सुनावत भये हैं ( ५६ ) श्रीरामचन्द्र कहते हैं कि हे मुनीश जाको तुमकृपा करिकै आदर देतुहौ सोई सबबस्तुन अरु सबसे बड़ा है सब गुणनकर घर है ( ५७ ) तबमुनि कहाकि हे श्रीरामचन्द्र ज्यहिपर आपुकृपाकरहुँ ते ऐसै योग्यहोतहै जस आपु कहतहौ हे पार्बती मुनि और रघुवीर परस्पर नवते हैं तहां दोऊजननके बचननकर सुख अगोचर अनुभवित होत है अनुभवितकही मनहींमनमें अगोचर प्राप्तहोत है ( ५८ ) यह सुधि प्रयागके निवासिनपाईकि श्रीरामचन्द्रआये बटुकही ब्रह्मचारी अरु तपस्वी वानप्रस्थ अरु गृही कही गृहस्थ अरु उदासीकही संन्यासी ते सबखबरि पावतभये हैं ( ५९ ) ते सब भरद्वाज के आश्रम को आये अतिसुन्दर तिन दशरथकुमारन के देखिबे को ( ६० ) तिनसबको श्रीरामचन्द्र नमस्कार करतेभये हैं ते सबलोचनके लाभको पाइकै आनन्दहोतभये हैं ( ६१ ) ते सब अतिसुखपाइकै आर्शीर्वाद देतभये हैं अरु ये श्रीरामचन्द्र की आज्ञापाइकै फिरे सुन्दरता सराहत चलेजाते हैं ( ६२ ) दोहार्थ॥ तब श्रीरामचन्द्रजी रात्रि को विश्रामकीन्ह अरु प्रातःकाल नमस्कार पूर्वक त्रिवेणी स्नानकरिकै मुनिको नमस्कारकरिकै चलतभये सहित लक्ष्मण श्रीजानकीजी जन जो है गुह त्यहिसंयुक्त मुदित हैं ( ६३ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने श्रीआयोध्याकाण्डे श्रीरामतीर्थराजप्राप्ति भरद्वाजमिलाप बर्णनंनामत्रयोदशस्तरंगः १३॥ :: :: :: ::

चौ० ॥ रामसप्रेमकह्योमुनिपाहीं नाथकहियहमक्यहिमगजाहीं १ मुनिमनबिहँसिरामसनकहहीं सुगमसकलमगतुमकहँ अहहीं २ साथलागिमुनिशिष्यबोलाये सुनिमनमुदितपचासकआये ३ सबहिरामपरप्रेमअपारा सकलकहैंमगदीखहमारा ४ सुनिबटुचारिसंगतबदीन्हे जिनबहुजन्मसुकृतफलकीन्हे ५ करिप्रणाममुनिआयसुपाई प्रमुदितहृदयचलेरघुराई ६ ग्रामनिकट जबनिकसहिंजाई देखहिंदरशनारिनरधाई ७ होहिंसनाथ जन्मफलपाई फिरहिंदुखित मनसंगपठाई ८ दो०॥ बिदाकियेबहु विनयकरि फिरेपाइमनकाम उतरिनहानेयमुनजलजोशरीरसमश्याम ९ चौ० ॥ सुनततीरबासीनरनारी आयेनिजनिजकाजबिसारी १० लषणरामसियसुन्दरताई देखिकरहिंनिजभाग्यबड़ाई ११ अतिलालसासबहिमनमाहीं नामगाँवपूंछतसकुचाहीं १२ जेतिनमेंअतिवृद्धसयाने तिनकरियुक्तिरामपहिंचाने १३ सकलकथाकहितिनहिंसुनाई बनहिंचलेपितुआयसुपाई १४ सुनि

दोहा॥ रामचरणपुनिप्रभुचले सीयअनुजगुहसंग यमुनउतरितपसीमिलनदशअरुचारितरंग ( १४ ) एकचौपाईलैकै नवकेदोहाताईं अक्षरार्थै जानब यमुनातीरके बासी नरनारि सुनिकै सबकाज बिसारि बिसारि देखिबेको दौरतेभये हैं ( १० ) तेसब श्रीराम जानकी लक्ष्मणकी सुन्दरता देखिकै अपने भाग्यकी सराहना करते हैं ( ११ ) सबके मनमें यह लालसा है नांवगांव पूंछिबेकी इच्छाकरते हैं परसंकोच ते नहीं पूंछिसकते हैं ( १२ ) तिनमें जे वृद्धहैं तेकछुकसुनि राखिनिहै त्यहिसुनेते कछुअपनी युक्तिकरिकै श्रीरामचन्द्र को पहिंचानिकै कहते हैं ( १३ ) ते सबकथा सुनाइकै कहते हैं कि श्रीअयोध्या के राजा दशरथमहाराज तिनके ये पुत्र हैं पिताकी आज्ञाकरिकै बनको जाते हैं ( १४ ) यहसुनिकै अतिविषाद करिकै सब पछिताते हैं कि राजारानी भलनाहीं कीन है ( १५ ) त्यहि अवसरविषे एकतपस्वी आवत है तेजकरपुंज अरु लघुकही मध्यकिशोर वहि क्रम सो चित्रकूट में रहतरह्यो है सो श्रीरामचन्द्रको परमानन्य उपासकअगस्त्यमुनि को शिष्य त्यहिं अपनी कुटीमेंबैठे ध्यानबिषे श्रीरामचन्द्र को आगमनदेख्यो तब

दर्शनहेतु उठिधायो है परमहंस विलक्षणदशातेजस्वी त्यहिको श्रीरामचन्द्र दूरिते देखिकै कहते हैं कि हे लक्ष्मण निषाद देखौ तो महातेजस्वी दिशन को प्रकाशकरत यह को आवत है तबलक्ष्मणजू अनुमान् अरु युक्तिकरिकै कहते हैं हे श्रीरामचन्द्र ब्रह्मा तौ न होहिं आपुको एकान्तपाय कै आवतेहैं किधौं महादेव तौ न होहिं किधौं नारद तौ न होंहि किधौं किधौं सनकादि तौ न होहिं किधौं शुक्राचार्य्य तौ न

**सविषादसकलपछिताहीं रानीरायकीन्हभलनाहीं १५ त्यहिअवसरतापसयकआवा तेजपुंजलघुबयससुहावा १६ कबिअलखित गतिवेषबिरागी मनक्रमवचनरामअनुरागी १७ दो०॥ सजलनयनतनपुलकिनिजइष्टदेवपहिंचानि पर्‌योधरणितलदण्डजिमिदशानजाहिबखानि १८ चौ०॥ रामसप्रेमपुलकिउरलावा परमरंकजनुपारसपावा १९ मनहुंप्रेमपरमारथदोऊ मिलतधरेतन**

होहिं किधौं बृहस्पति तौ न होहिं देवतन के हितकार राक्षसन के वधहेतु सिखावन देवेको आवते हैं किधौं चित्रकूट की तपस्या मूर्तिमान्ह्वइकै तुमको आगेहोइकै लेबेको आवतिहै किधौं चित्रकूटको वैराग्य आपुको लेबेको आवतहै हे महाराज मैं अपने अनुमान ते कहा तब निषाद बोल्यो कि हे महाराज जो लक्ष्मणजूकहाहै तिनसबके लक्षण गुणसंयुक्तकोई आपुको अनन्यदास आपुके दर्शन हेतु आवतहै मोको तौ लक्ष्मण जूके कहेते अससमुझिपरत है इतिप्रसंगे महारामायणे अरु इनके नामको प्रमाणनहीं पावा ( १६ ) सो कैसो है तपस्वी कविनको त्यहिकैगति अलखित है अरु तन मन वेष बिरक्त अरु मनक्रम वचन ते श्रीरामचन्द्रके चरणारविन्द को अनुरागी है ( १७ ) दोहार्थ॥ नेत्रन में जलभरे अरु तन पुलकित निजकही आपनइष्ट श्रीरामचन्द्रको पहिंचानिकै तबदण्डइव श्रीराचन्द्र के चरणारविन्द में परतभयो है हेभवानी त्यहिकी दशा बखानिकै कहीनहीं जाइ है ( १८ ) तब त्यहिको श्रीरामचन्द्र उठाइकैउरमें लगाइलियो है ऐसे प्रीतमको श्रीरामचन्द्र हृदय में लगावतसन्ते कैसे आनन्दितभये हैं जैसे परमरंककही दरिद्री पारसमणिको प्राप्तिहोइ किंतु श्रीरामचन्द्र के मिलेते ऐसो सुख तपस्वीको प्राप्ति भयो है ( १९ ) मानो परमार्थ औ प्रेमदूनौतनधरिकैमिलतेहैं यह सब सद्‌कविकहते हैं तहां परमार्थकही परमअर्थ अरु परमतत्त्व त्यहिकीमूर्ति श्रीरामचन्द्र हैं अरु प्रेमकीमूर्ति तपस्वीहै तहाँ यह अभिप्राय है केवल प्रेमहिते परमार्थप्राप्तिहोत है अपर कोटिनयत्नते नहीं होतहै ( २० ) पुनि श्रीलक्ष्मणजू के चरणनमें शीशनावत भयो है तब श्रीलक्ष्मणजू अतिअनुराग अरु प्रीतिसे उमगि हृदयमें लगावत भये हैं ( २१ ) पुनि श्रीजानकीजी के चरणनमें लागतभये हैं तब श्रीजानकीजीने आपन बालकजानिकै आशीर्बाददीन्हहै किसदा श्रीरामकेप्रियहोहु ( २२ ) तब त्यहितपस्वीको नियाद दण्डवत् करतभयो तबते तपस्वी

**कहसबकोऊ २० बहुरिलषणपाँयनसोलागा लीन्हउठाइउमगिअनुरागा २१ पुनिसियचरणधूरिधरिशीशा जननिजानिसुतदेहिं अशीशा २२ कीन्हनिषाददंडवततेही मिलेमुदितलखिरामसनेही २३ पियतनयनपुटरूपपियूषा मुदितसुअशनपाइजिमिभूंखा २४ पुनिप्रभुपदसरोजशिरनावा देखिप्रीतिरघुबरमनभावा २५ उरधरिधीररजायसुपाई चलेमुदितमनअतिहर्षाई २६ तेपितुमातुकहौसखिकैसे जिनपठयेबनबालकऐसे २७ रामलषणसियरूपनिहारी शोचसनेहबिकलनरनारी २८ दो०॥ तबरघुवीरअनेकविधि सखहिसिखापनदीन्ह रामरजायसुशीशधरि भवनगमनत्यइँकीन्ह २९॥** * * * * * *

श्रीरामानुरागी निषादको जानिकै निषादको मिलत भये हैं ( २३ ) तहांते तपस्वी श्रीरामचन्द्रकर स्वरूप अति माधुर्य अमृतमय नेत्रनकेपुट कही दानननभरि २ पानकरतहैं मुदित हैं कैसे सुष्टअन्न पाइकै भूंखेको आनन्दहोइ ( २४ ) पुनि श्रीरामचन्द्रके पदसरोजमें शीश नावतभयो त्यहिकी प्रीति देखिकै श्रीरामचन्द्रके मनमें बहुत भावतभयो ( २५ )

तब श्रीरामचन्द्रकै राजायसु पायकै बारबार धीरज धरिकै अपने हृदय में श्रीरामचन्द्रकरस्वरूप धरिकै अतिआनन्द अरु हर्षते बिदाहोतभयो ( २६ ) तहां जेयमुनातटके नरनारि श्रीरामचन्द्रके देखिबेको आयेहैं तेसब परस्पर कहते हैं कि तेमातापिता कैसेहैं जिन ऐसे बालकनको बनविषे पठाये हैं ( २७ ) हेपार्बती श्रीरामचन्द्र लषण अरु श्रीजानकीजी कररूप अति मधुर देखिकै शोकस्नेहके बश बिकल ह्वैजातभये हैं बनगमन को है शोच अरु स्वरूप में स्नेह ताते बिकलह्वै जातभये हैं ( २८ ) दोहार्थ तब हेपार्बती श्री रामचन्द्रने सखाजो निषाद त्यहिको अनेक प्रकारके सिखापनदैकै भलेप्रकारते बोधकीन अरु कहा कि हेसखे तुम अब गृहकहँ जाहु ऐसे तीनि बार कहा तब निषाद श्रीरामचन्द्रकै निजइच्छा जानिकै अति अनुरागभरे बारबार साष्टांग दण्डवत् करिकै बिदाहोतभयो ( २९ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वन्सने श्रीआयोध्याकाण्डे तपस्वीमिलननिषादबिदावर्णनंनाम चतुर्दशस्तरंगः १४॥

चौ० ॥ पुनिसियरामलषणकरजोरी यमुनहिंकीन्हप्रणामबहोरी १ चलेसियसहितमुदितदोउभाई रवितनयाकरिकरतबड़ाई २ पथिकअनेकमिलहिंमगजाता कहहिंसप्रेमदेखिदोउभ्राता ३ राजसुलक्षणअंगतुम्हारे देखिशोचअतिहृदयहमारे ४ मारगचलतपयादेहिपाँये ज्योतिषझूँठहमारेभाये ५ अगमपंथगिरिकाननभारी त्यहिमहँसाथनारिसुकुमारी ६ करिकेहरिबनजाहिंनजोई हमसँगचलहिंजोआयसुहोई ७ जावजहांलगितहँपहुँचाई फिरबबहोरितुमहिंशिरनाई ८ दो०॥ यहिविधिपूंछहिंप्रेमवशपुलकगातजलनयन कृपासिन्धुफेरहिंतिनहिंकहिबिनीतवरवयन ९ चौ०॥ जेपुरग्रामबसहिंमगमाहीं तिनहिंनागसुरनगरसिहाहीं १० कयहिसुकृतीक्यहिघरीबसाये धन्यपुण्यमयपरमसुहाये ११ जहँजहँरामचरणचलिजाहीं तिनसमानअमरावतिनाहीं १२ पुण्यपुंजमगनिकटनिवासी तिनहिंसराहतसुरपुरबासी १३ जेभरिनयनबिलोकहिंरामहिंसीतालषणसहितघनश्यामहिं १४ जोसरसरितरामअवगाहहिं तिनहिंदेवसरसरितसराहहिं १५ ज्यहितरुतरप्रभुबैठहिंजाई करहिंबिबुधतरुतासु

दोहा॥ दशअरुपञ्चतरंगमेंउमगतपुरजनप्रेम रामचरणबनजाहिंप्रभुतहँ २ मंगलक्षेम १५ पहिलचौपाई लैकै दोहाताई अक्षरार्थैजानब हे पार्वती ज्यहि पुरग्रामकेनिकट निकसतहँजाइ त्यहिपुरग्रामको नागसुरपुरसिहाते हैं ( १० ) तहां देवताकहते हैं कि ऐसी कवनिघरी मंगलमयरही है ज्यहिघरी ये पुरग्रामबसे हैं अरु जिन सुकृतिन बसावाहै ते धन्यहैं ( ११ ) हे पार्बती जहां जहां श्रीसीताराम के चरणकमलजाते हैं त्यहिभूमिकेसमान अमरावतीनहीं है ( १२ ) अरु मगके निकटके निबासी तिनकोसुरपुरबासी सराहते हैं ( १३ ) ज्यहिमगमेंलोग श्रीसीतारामचन्द्र सुखकेधाम घनश्याम तिनकोनेत्रभरि बिलोकते हैं तेधन्यहैं ( १४ ) अरु जो सरसरित श्रीरामचन्द्र अवगाहत हैं तिनको देवसर जो मानसर देवसरित गंगा सो सराहते हैं ( १५ ) अरु ज्यहि तरुकेतर श्रीरामचन्द्र बैठते हैं त्यहितरुकै बड़ाई कल्पवृक्ष करते हैं ( १६ ) श्रीरामचन्द्रके पदपद्मकीपराग परसिकै सो भूमि अपनाको धन्य मानती है ( १७ ) दोहार्थ॥ जहां जहां श्रीरामचन्द्र चलेजाते हैं तहां तहां मेघछाया किहेजाते हैं अरु बिबुधगण फूलन की बर्षाकरते जाते हैं बनगिरिनदी देखत चलेजाते हैं ( १८ ) हेगरुड़ सीतारामलषण ज्यहिग्रामके निकट जाइकै निकसत हैं ते धन्य हैं ( १९ ) त्यहिग्रामके बालक वृद्धनरनारि ते सब सुनिकै देखिबे हेतु सर्बकार्य बिसारिकै निर्भर प्रेमते उठिकै धावते हैं ( २० ) ते सब श्रीरामचन्द्र श्रीजानकी

बड़ाई १६ परसिरामपदपद्मपरागा मानतिभूमिभूरिनिजभागा १७ दो० ॥ छांहकरहिंघनबिबुधगणबर्षहिंसुमनसिहाहिं देखत गिरिबनबिहँगमृगरामचलेबनजाहिं १८ चौ०॥ सीतालषणसहितरघुराई ग्रामनिकटजबनिकसैंजाई १९ सुनिसबबालवृद्धनरनारी

चलहिंत्वरितगृहकाजबिसारी २० रामलषणसियरूपनिहारी पाइनयनफलहोहिंसुखारी २१ सजलबिलोचनपुलकशरीरा सबभयेमगनदेखिदोउबीरा २२ बरणिनजाइदशातिनकेरी लह्योरंकजनुसुरमणिढेरी २३ एकहिएकबोलिशिखदेहीं लोचनलाभलेहुक्षणयेहीं २४ रामहिंदेखिएकअनुरागे चितवतचलेजाहिंसँगलागे २५ एकनयनमगछबिउरआनी होहिंशिथिल तनमानसबानी २६ दो०॥ एकदेखिबटछांहभलिडासिमृदुलतरुपात कहहिंगँवाइयक्षणकश्रमगवनबअबहिंकिप्रात २७ चौ०

श्रीलक्ष्मणजी को स्वरूप अनूप निहारिकै नेत्रनके फलपाइकै अति आनन्दहोते हैं ( २१ ) सबके नेत्रनमें प्रेमते जलभरि आयोहै शरीर पुलकि आयोहै दोउ वीरन की शोभादेखिकै सबमग्न भयेहैं ( २२ ) हेपार्बती तिनकीदशादेखिकै कही नहीं जाइहै जनु सुरमणि जो चिंतामणिहै त्यहिकी ढेरीको प्राप्तिभये हैं ( २३ ) एकनते एकबोलिकै अतिप्रेमते कहते हैं कि यह साइति हेभाइहु नेत्रनको फललेहु पुनिदुर्लभहै ( २४ ) एक श्रीरामचन्द्र कैशोभा अतिअनुरागते देखतसंग चलेजात हैं मानहु चढ़त चन्द्रमाको चकोर चकोरी देखतघेरे चलेजात हैं ( २५ ) अरु एकै श्रीरामचन्द्रकै अतिछ्वि नेत्रनके मगते हृदय में आनिकै मनवाणी तनते शिथिल होइरहेहैं स्तंभदशाको प्राप्तिभये हैं देखिये तौ तिनकीदशा देखिकै श्रीरामचन्द्र ठाढ़ ह्वै रहेहैं ऐसे करुणा निधान हैं तहां हेपार्वती श्रीरामचन्द्र ऐसे शृङ्गारमूर्त्तिहैं कि मुनिकेवेष किये हैं तिनको देखिकै ग्रामके गँवार गँवारीलोग कोलभिल्ल इत्यादिक जिनको स्वपनेहु शास्त्रके ज्ञानकर प्रसंग नहीं भयो ते सबविमोहित ह्वैगये हैं जैसे योगीजननकी समाधिबँधि जाती है तहाँ श्रीरामचन्द्र अपने रूपकरिकै सबके चित्तकोआकर्षण करिलीनहै ( २६ ) दोहार्थ तहां एक सुन्दरि बटछाया देखिकै सुन्दर कोमलपात अरु तृणलैकै बिछाइ देतभये अरु यह कहतभये हेनाथ क्षणक इहां बिराजिये कितौफेरिचलब कितौप्रात चलब ( २७ ) अरु एक सुन्दर नवीन कलशामें जलभरिकै तुरंत ल्याइकै यह प्रेमभरि मृदुबाणीते कहते हैं कि हे नाथ इहांबैठिकै जलअँचइये ( २८ ) हेपार्बती तिनके अतिप्रिय बचन सुनिकै अतिप्रीति देखि

एककलशभरिआनहिंपानी अँचइयनाथकहैंमृदुबानी २८ सुनिप्रियबचनप्रीतिअतिदेखी रामकृपालुसुशीलबिशेषी २९ जानीश्रमितसीयमनमाहीं क्षणकबिलम्बकीनबटछाहीं ३० मुदितनारिनरदेखहिंशोभा रूपअनूपनयनमनलोभा ३१ यकटकसबसोहैंचहुंओरा रामचन्द्रमुखचन्द्रचकोरा ३२ तरुणतमालबरणतनसोहा देखतकोटिमदनमनमोहा ३३ दामिनिबरणलषणसुठिनीके नखशिखसुभगभावतेजीके ३४ मुनिपटकठिनकसेतूणीरासोहहिंकरकमलनधनुतीरा ३५ दो०॥ जटामुकुटशीशनसुभगउरभुजनयनबिशाल शरदपर्बबिधुबदनपरलशतश्वेतकणजाल ३६ चौ० ॥ वरणिनजाइमनोहरिजोरी शोभाबहुतिमोरिमतिथारी ३७

कै श्रीरामचन्द्र अतिप्रेम अरु भावके भूंखे शीलके निधान ( २९ ) तब तिनकै प्रीति अरु श्रीजानकीजीको श्रमित जानिकै क्षणक बटकीछायाबिषे त्यहि आसनपर बैठतभये हैं ( ३० ) तहां चहुंफेर घेरेमुदित आनन्दते नरनारि शोभादेखते हैं अनूप रूपदेखिकै मन अरु नयन लोभिगये हैं ( ३१ ) यकटक पलक नहीं चलै चहुंफेरते चित्रवत्‌रहिगये हैं तहाँ श्रीरामचन्द्रकोमुख चन्द्रहै अरु सबनरनारिनके लोचन चकोर चकोरी होतभये हैं ( ३२ ) कैसे हैं श्रीरामचन्द्र तरुण कही नवीन तमालतरुके समान जिनकीशोभादेखिकै कोटिन मदन मोहिजाते हैं ( ३३ ) अरु लक्ष्मणजी के शरीर की शोभा कोटिन दामिनि द्युतिकी शोभा को हरति है बाणी ते नहीं कहीजाइ नखते शिखलौं सुभगहै जीवके अन्तर्भूत भावते ( ३४ ) अरु द्वौभाई मुनिपट भोजपत्र इत्यादिक अतिपावन निर्मल सो धारणकिये हैं अरुकटिमें तूणीर शोभित है अरु करविषे धुनषबाण शोभित है ( ३५ )

दोहार्थ॥ अरु जटाको मुकुट शीशविषे अतिशोभित है अरु भुजनयन विशाल हैं अरु शरद् की पूर्णमासी की पर्बकही रात्री त्यहिको बिधु चन्द्रमा निर्मल तैसोमुख त्यहि मुखके कपोलनपर श्वेतकणकही मगके पसीननके बिन्दुके जालकही बहुत सो लसत हैं शोभित हैं चन्द्रमा कैकिरणि है ( ३६ ) गोसाईं श्रीतुलसीदास कहते हैं कि मनोहरिजोरी वर्णिबेयोग्य नहीं है अरु मेरीमतिथोरीहै मैं कैसे कहिसकौं ( ३७ ) सम्पूर्ण पुरबासी श्रीसीता राम लक्ष्मण की सुन्दरताई को मनबुद्धि चित्तलगाइकै देखते हैं मनलगाइकै मननकरते हैं अरु बुद्धि लगायकै निश्चयकरते हैं अरु चित्त लगाइकै चिन्तवन करते हैं ( ३८ ) समस्त नारि नर श्रीरामचन्द्र अरुश्रीजानकी कै शोभा नेत्रनकरिकै देखनेमें कैसे प्रेमपिआसे हैं जैसे मृगा मृगी दीपककी ज्योति देखिकै चित्रवत् रहिजाते हैं ( ३९ ) श्रीजानकीजीके समीप ग्रामकी स्त्रीजातीहैं पर नामग्राम पूंछतकै संकोच करती हैं

रामलषणसियसुन्दरताई सबचितवहिंमनबुधिचितलाई ३८ थकेनारिनरप्रेमपिआसे मनहुमृगीमृगदेखिदियासे ३९ सीयसमीपग्रामतियजाहीं पूंछतअतिसनेहसकुचाहीं ४० बारबारसबलागहिंपाँये कहहिंवचनमृदुसरलसुहाये ४१ राजकुमारिविनय हमकरहीं तियसुभावकछुपूंछतडरहीं ४२ स्वामिनिअविनयक्षमबहमारी विलगनजानबजानिगँवारी ४३ राजकुँवरदोउसहजसलोने इनतेलहिद्युतिमरकतसोने ४४ दो०॥ श्यामलगौरकिशोरवरसुन्दरसुखमाअयन शरदशर्वरीनाथमुखशरदसरोरुहनयन॥४५ चौ०॥

( ४० ) ते सब श्रीजानकीजीके पाँयनलागती हैं अरु सहजै में शोभितवाणीते मृदुवचन कहती हैं ( ४१ ) हे राजकुमारि हमकछु आपसे पूंछाचाहतीहैं पर स्त्रीके स्वभाव ते डरती हैं काहेते स्त्रिनकेस्वभाव सहजैहैं विनाविचार जो चाहैं सोई शीघ्रकरिउठैं हैं अरु सहजै चंचल हैं दयारहित हैं झूंठकहती हैं अशौचरहती हैं सहजै रोयदेती हैं सहजमें डरतीहैं कुशीलहैं इत्यादिक अनेक अवगुणन के स्वभाव हैं ( ४२ ) हे स्वामिनि हमको गँवारीजानिकै हमारि अविनय क्षमाकरब ( ४३ ) हे स्वामिनि ये राजकुंवर दोऊजन सलोनेकही सहज सुन्दर जिनके तनद्युति की शोभाकरिकै मर्कतमणि अरु सुवर्ण शोभाकोपावतेहैं ( ४४ ) दोहार्थ॥ एकजनश्यामहैं अरु एकजन गौर हैं अरु मध्यकिशोर बहिःक्रम हैं अरु सुन्दरता अरु सुषमाकही शोभाके अयनकही स्थान हैं अरु शरद शर्वरीकही शरदऋतुकी पूर्णमासी की जो रातिहै त्यहिको नाथ जो चन्द्रमा तद्वत्बदनहै अरु शरदऋतु को सरोरुह कही कमल तैसेही नेत्रहैं ( ४५ ) तहां जो श्यामसुन्दर हैं ते कोटिमनोज की शोभा को लजावनहारे सो तुम्हारे को हैं ( ४६ ) तहाँ ग्रामकीस्त्रिनकेवचन मृदुमंजुलवाणीमयसुनिकै श्रीजानकीजी मनमें कछुसकुचिकै मुसक्यातभई ( ४७ ) तिन स्त्रिनकी दिशिदेखिकै पुनि पृथ्वी की दिशि देखतीभई हैं किन्तु स्त्रिकीदिशि अरु श्रीरघुनाथजीकी दिशि देखतीभई तब दोउ दिशिकेसंकोचते संकुचितभई बरणी कही स्त्री बरकही श्रेष्ठ सर्बोपरि हैं श्रीजानकीजी ( ४८ ) तब बालमृगनयनी पिकवयनी जो श्रीजानकीजी ते सकुचसमेत मंजु मृदुवचन बोलतीभई ( ४९ ) हेवनितहु सहज सुभावन अति सुभगतन सुन्दर तिनको श्रीलक्ष्मणजी नाम है ते हमारे लघुदेवरहैं ( ५० ) हे पार्बती बहुरिकै

चौ०॥ कोटिमनोजलजानवहारे सुमुखिकहौकोअहहिंतुम्हारे ४६ सुनिसनेहमयमंजुलबानी सकुचिसीयमनमहँमुसुकानी ४७ तिनहिंबिलोकिविलोकतिधरणी दुहुंसकोचसकुचतवरवरणी ४८ सकुचिसप्रेमबालमृगनयनी बोलीमधुरवचनपिकवयनी ४९ सहजसुभावसुभगतनगोरे नामलषणलघुदेवरमोरे ५० बहुरिवदनविधुअंचलढाँकी पियतनचितयभौंहकरिबाँकी ५१ खंजनमंजु तिरीछेनयनन निजपतिकह्यउतिनहिंसियसयनन ५२ भईमुदितसबग्रामबधूटी रंकनरायराशिजनुलूटी ५३ दो० ॥ अतिसप्रेम सियपाँयपरि बहुविधिदेहिंअशीश सदासोहागिनिहोहुतुमजबलगिअहिमहिशीश ५४ चौ०॥ पार्बतीसमपतिप्रियहोहू देविन हमपरछाँड़बछोहू ५५ पुनिपुनिविनयकरहिंकरजोरी जोयहिमारगफिरियबहोरी ५६ दर्शनदेहुजानिनिजदासी लखीसीयसबप्रेम

बिधुवदन अंचलतेढांपिकै तिरीछे नयनकरिकै श्रीरामचन्द्रकी दिशिदेखिकै ( ५१ ) तहाँ निर्मल खंजनइव नेत्रते भौंहतिरछीकरिकै श्रीरामचन्द्रकी दिशिदेखि स्त्रीन को सैनमेंजनाइदीन कि येई हमारेपति हैं ( ५२ ) तबग्रामकीबधूटी सब अतिआनन्दको प्राप्तिभईहैं जनुरंक रायपदवीकीराशिकोलूटै है ( ५३ ) दोहार्थ॥ तब ग्रामबधू श्रीजानकीके पायनपरिकै आशीर्व्वाददेतभई कि जबताई शेषकेशीशपर पृथ्वी रहै त्यहितेअधिक तुम सोहागिनिबनीरहौ ( ५४ ) अरु पार्व्वतीको समान पतिकोप्रियहोहु हे देवि हमपरछोह न छांड़ब ( ५५ ) पुनि पुनि करजोरिकै ग्रामबधू बिनयकरती हैं हे देवि जो यहिमार्ग बहोरिकै फिरयहु ( ५६ ) तो आपनिदासी जानिकै लौटिकै फेरि दर्शनदिह्यहु तब श्रीजानकीजीजाना कि ये सब प्रेमकी पियासी हैं ( ५७ ) तब श्रीजानकीजी मधुरवचनकहिकहि सबकर परितोषकीन कैसे जैसे कुमुदिनिनको कौमुदिनि जो चन्द्रमाकीकिरणि सो पोषण करति हैं ( ५८ ) तब श्रीलक्ष्मणजी श्रीरघुनाथजीका रुखपायकै मृदुबाणीते चित्रकूटकीराहपूंछतेभये ( ५९ ) तहां जब श्रीलक्ष्मणजीने लोगनतेराहपूंछा सो सुनिकै सबलोग दुःखीभये अरु नेत्रनमेंजल भरिआये तनपुलकि आवतभये हैं ( ६० ) तब सम्पूर्णलोगनकेमोद कही आनन्दमिटि गयो अरु बिषाद होतभयो है मानहुं बिधाता निधि देकै छीनिलेतभयो ( ६१ ) कर्मकैगति समुझिकै धीरजकरतभये हैं पुनि सुन्दरमार्ग शोधिकै बताइदेतभये हैं ( ६२ )

पियासी ५७ मधुरबचनकहिकहिपरितोषी जनुकुमुदिनीकौमोदिनिपोषी ५८ तबहिंलषणरघुपतिरुखजानी पूंछ्यउमगलोगनमृदुबानी ५९ सुनतनारिनरभयेदुखारी पुलकितगातबिलोचनबारी ६० मिटामोदमनभयउमलीना विधिनिधिदेतलेतजनुछीना ६१ समुझिकर्मगतिधीरजकीन्हा शोधिसुगममगतिनकहि दीन्हा ६२ दो०॥ लषणजानकीसहितबनगवनकीन्हरघुनाथ फेरेसबप्रियवचनकहिलियेलाइमनसाथ ६३ चौ० ॥ फिरतनारिनरअतिपछिताहीं दैवहिदोषदेहिंमनमाहीं ६४ सहितविषाद परस्परकहहीं विधिकर्त्तबसबउलटेअहहीं ६५ निपटनिरंकुशनिपटनिशंकू ज्यइँशशिकीन्हसहजसकलंकू ६६ रूखकल्पतरुसागरखारा त्यइँपठयेबनराजकुमारा ६७ जोपैइनहिँदीन्हवनबासू बादिकीन्हविधिभोगविलासू ६८ येविचरहिँमगविनुपदत्राना रच्यउबादिविधिबाहननाना ६९ येमहिपरहिंडासितृणपाता सुभगसेजकतसिरजविधाता ७० तरुतरबासइनहिँविधिदीन्हा

दोहार्थ॥ श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण अरु जानकीसहित बनगवन करतभये तब सबलोग संगलागतेभये हैं तब श्रीरामचन्द्र प्रियवचनकहिकै सबको फेरत भये अरु सबको मन आकर्षणकरिकै संगहीलैचले हैं ( ६३ ) अरु नारिनर फिरतकै अतिपछिताते हैं दैवको अपने मन में दूषणदेते हैं ( ६४ ) तेसबग्रामबासी विषादसहित परस्परकहते हैं कि बिधिकेकर्तव्य सबउलटेहैं ( ६५ ) देखियेतौ बिधातानिपटनिरंकुशहै निठुरहै ज्यइँ अमृतमयचन्द्रमाबिषेकलंक रोग लगाइदियोहै ( ६६ ) अरु कामतरुको वृक्षकियो है अरु सागरको क्षारकरि दियो है त्यइँ बिधातैंराजकुमारनको बनदियो है ( ६७ ) जो बिधातैं राजकुमार को बनदीन्हहै तो भोगबिलास वृथाकीन्हहै ( ६८ ) येराजकुमार जो बिनापदत्राण बनमें बिचरते हैं तो बिधातैं अनेक बाहनवृथा रचे हैं ( ६९ ) जो ये पत्रतृण डासिकै पृथ्वी में परते हैं तौ अनेक सुभगशय्या बिधातैं वृथैरच्योहै ( ७० ) अरु जोइनको तरुतरबास विधातैंदीन्ह है तौ अनेक धवलधाम रचिकै ब्रह्मैंपरिश्रमैं कीनहै ( ७१ ) दोहार्थ॥ तहांपरस्पर कहते हैं किये अति सुकुमारते जटावल्कल करिकै सुनिको वेषकिहे बनमें फिरते हैं तौ बिधातैं अनेकपटभूषण काहेको वृथारच्योहै ( ७२ ) अरु जोये कन्दमूलफल भोजन करते हैं तौ सुधादिक जो भोजनहैं सो बादिकही वृथाहैं ( ७३ ) अरु येकै अतिप्रेमभरे कहते हैं कि ये बिधाताके बनाये नहीं हैं काहेते कि बिधातामें यतनी सुघराई कहांपाइये ताते हेभाइहु हमारेविचारमें तौ ये आपुहीतेआपुप्रकटेहैं इनकाबनावनहार कोईनहींहै देखियेतौ ग्रामकेलोग प्रेमसेपरिपूर्णवेदको सिद्धांत कहते हैं मत अरु उपासनाको

धवलधामरचिपचिश्रमकीन्हा ७१ दो० ॥ जोयेमुनिपटधरजटिलसुन्दरसुठिसुकुमार विविधिभांतिभूषणवसन बादिकियेकरतार ७२ चौ०॥ जोयेकन्दमूलफलखाहीं बादिसुधादिअशनजगमाहीं ७३ येककहहिंयेसहजसुहायेआपुप्रकटभयेविधिनबनाये ७४ जहँलगिवेदकहैंविधिकरणी श्रवणनयनमनगोचरवरणी ७५ देखहुखोजिभुवनदशचारी कहँअसपुरुषकहाँअसिनारी ७६ इनहिंदेखिविधिमनअनुरागे पटतरयोगबनावनलागे ७७ करिअनुमानएकनहिंआवा त्यहिकारणबनआनिदुरावा ७८ एककहहिंहमबहुतनजानहिं आपुहिपरमधन्यकरिमानहिं ७९ तेपुनिपुण्यपुंजहमलेखे जेदेखेदेखहिंजिनदेखे ८० दो० ॥ यहिबिधिकहिकहिबचनप्रियलेहिंनयनभरिनीर किमिचलिहैंमारगअगमसुठिसुकुमारशरीर ८१॥ *

सिद्धांत स्वाभाविक कहते हैं श्रीरामचन्द्रके अनुग्रह अरु प्रेमते सबसिद्धांतै होतहै ( ७४ ) जहँलगि वेदविधिकै करणीबर्णत हैं श्रवणनयन मनके गोचरकही प्रत्यक्ष हैं ( ७५ ) तहां देखियेतौ चौदहौ भुवनमें विचारिलेहु ऐसे पुरुषनारि कहांहैं कहूं नहीं हैं ( ७६ ) एकैतर्क अरु युक्ति करिकै कहते हैं किइनकी शोभादेखिकै बिधाता अतिमनमें अनुरागकोप्राप्तिभयो है तबइनके पटतर योग्य बनावैलाग्योहै ( ७७ ) तहां एक कहीअनेक उपायकरिहारयो नहींबन्यो तब त्यहिईर्षाते बनको पठावतभयोहै ( ७८ ) तबएकै कहतहैं कि हमबहुत नाहिंजानै हैं अपनाको धन्य करिकै मानै हैं ( ७९ ) अरुएकै कहते हैं कि हमतिन्है पुण्यको पुञ्ज जानते हैं जिन इनकोदेखिनिहै अरु जो देखैंगे अरु जे देखत हैं तेधन्यहैं ( ८० ) दोहार्थ ॥ हेपार्वती यहिविधिते प्रियबचन कहिकहि प्रेमतेनेत्रनमें जलभरिकै कहतहैं कि हेदेव इनके तौ अतिसुठिकही सुकुमार शरीर कोमलहैं येमार्गमें कैसे चलहिंगे ऐसेप्रेममय बचन कहि कहि मग्न होते हैं ( ८१ )॥ इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने श्रीअयोध्याकांडेग्रामवासिनांप्रेमलक्षणाभक्तिवर्णनन्नाम पंचदशस्तरंगः १५॥

चौ० ॥ नारिसनेहबिकलसबहोहीं चकईसांझसमयजिमिसोही १ मृदुपदकमलकठिनमगजानी गहवरहृदयकहहिंमृदुबानी २ परसतमृदुलचरणअरुणारे सकुचतमहिजिमिहृदयहमारे ३ जोजगदीशइनहिंबनदीन्हा कसनसुमनमयमारगकीन्हा ४ जो मांगापाइयविधिपाहीं इनहिंराखिसखिनयननमाहीं ५ जेनरनारिनअवसरआये तेसियरामनदेखनपाये ६ सुनिस्वरूपबूझहिंअकुलाई अबलगिगयेकहांदोउभाई ७ समरथधाइविलोकहिंजाई प्रमुदितफिरहिंजन्मफलपाई ८ दो० ॥ अबलाबालकवृद्धजन करमींजैंपछितांहिं होहिंप्रेमबशलोगसब रामजहाँजहँजाहिं ९ चौ० ॥ गावँगावँअसहोइअनन्दा देखिभानुकुलकैरवचन्दा १० जेकुछसमाचारसुनिपावहिं तेनृपरानिहिंदोषलगावहिं ११ कहँएकअतिभलनरनाहूदीनीहमहिंविधिलोचनलाहू १२ कहैंपरस्पर लोगलोगाई बातैंसरससनेहसुहाई १३ तेपितुमातुधन्यजिनजाये-धन्यसोनगरजहांतेआये १४ धन्यतेदेशशैलबनगाऊं जहँजहँजाहिंधन्यतेठाऊं १५ सुखपायउबिरंचिरचितेही येज्यहिकेसबभाँतिसनेही १६ रामलषणपथकथासुहाई रहीसकलमगकाननछाई १७ दो० ॥ यहिविधिरघुकुलकमलरविमगलोगनसुखदेत जाहिंचलेदेखतबिपिन सियसौमित्रसमेत १८ चौ०। आगेरामलषणपुनिपाछे मुनिवरवेषबनेअतिकाछे १९ उभयभांतिसियसोहतिकैसी ब्रह्मजीवबिचमायाजैसी २० बहुरिकहौंछबिजसमन

दो० ॥ षोड़शप्रेमतरंगमें बिरहग्रामनरनारि रामचरणसबपरमपद भयेयोग्यसबझारि १६ इहांतेदुइदोहाताईं प्रेमलक्षणाअक्षरार्थैजानब ( १८ ) हे पार्वती आगे श्रीरामचन्द्रहैं अरुपाछे श्रीलक्ष्मणजीहैं महामुनिराजऋषितिनकर वेष अच्छीतरहसे सुन्दर बनाये हैं काछे हैं ( १९ ) उभयबीच कही श्रीरामचन्द्र अरु श्रीलक्ष्मणजी के बीच में श्रीजानकीजो

कैसे शोभित हैं जैसे ब्रह्म अरु जीवके बीचमेंमायाशोभित है तहांशोभितपदकहा है तहांमाया तीनि प्रकारकीहै एकअविद्या पुनिविद्यापुनिआह्लादिनीतहां अविद्याके अंतरसूत्रात्मकविद्याहैअरुविद्याकेअंतरसूत्रात्मकआह्लादिनीहै प्रमाणंमहारामायणे श्लोकम् (१) मकारव्यंजनचैवत्रिधाशक्तिस्वरूपिणी शक्तिराह्लादिनीविद्या विद्यासुत्रात्मकास्वयंतहांअविद्याब्रह्म जीवके बीचमें अशोभित है अरु विद्यमध्यस्थशोभित है अरु आह्लादिनीपरमशोभितहै तहांतीनिहूं गुणविशेषण कहते हैं अविद्याकेविशेषण षड्विकारइत्यादिक काम क्रोधलोभ मोहमदमात्सर्य इत्यादिक पुनिविद्याकेविशेषणकहते हैं शुद्धसात्विक भगवत्कर्म पुनि वैराग्य योगज्ञान विज्ञान शांति संतोष शील दया करुणाउदार क्षमाध्यान समाधि इत्यादिकविद्याके विशेषण हैं पुनिआह्लादिनीके विशेषण कहते हैं सुखदुःखपाप पुण्य हर्षशोकनिन्दास्तुतिमानापमान हानिलाभ इत्यादिकनते रहित हैं अरु ब्रह्मज्ञान ब्रह्मानंद प्रेमलक्षणा पराभक्ति परमानंदकी एकरसप्राप्ति

बसई जनुमधुमदनमध्यरतिलसई २१ उपमाबहुरिकहौंजियजोहीजनुबुधबिधुबिचरोहिणिसोही २२ प्रभुपदरेखबीचबिचसीता धरतिचरणमगचलतिसभीता २३ सीयरामपदअंकबराये लषणचलहिंमगदाहिनलाये २४ रामलखणसियप्रीतिसुहाई वचनअगोचर

तहां ब्रह्मजीवनके बीचमें आह्लादिनी मायाशोभित है ज्यहिजीव के रामअरुगुरुकी कृपाते परमानन्द प्राप्तिभयो तबजीव अरुब्रह्मकेवीचमें आह्लादिनी जोपरमानन्दस्वरूप शोभित है यहदृष्टान्त उपमानभयो अरुउपमेय श्रीरामलक्ष्मण जानकीजीभये काहेते कि उपमान अतिसूक्ष्मैहै पर उपमेय मूर्त्तिमान् है अरु इहां न्यूनाधिक्यरूपालंकारहै उपमानन्यूनहै अरु उपमेय आधिक्य है किंतु अभेदरूपकालंकारहै तहां अविद्या तो ब्रह्मजीवके बीचमें अशोभित अरु विद्या शोभित है अरु आह्लादिनी केवलअतिशोभितहै ताते जो कहि आये हैं सोई अर्थ शोभित है (२०) पुनि श्रीजानकीजी मध्यमें कैसे शोभित हैं श्रीगोसाईं तुलसीदास कहते हैं किजसिमोरे मनमें उपमाबसीहै तसिकहतहौं जनुमदन अरुमधुकही बसंत त्यहिके मध्यमें रतिलसति है (२१) तहां मदन श्यामरूप रामचन्द्रहैं अरु बसंत अतिगौर श्रीलक्ष्मणजी हैं अरु बालार्कद्युति रति श्रीजानकीजीहैं पुनि अपने जीवमें जोइ कही विचारिकैं उपमा कहते हौं जनुविधुजो चन्द्रमा अरु बुध तिनके बीचमें रोहिणी शोभित है (२२) हेपार्वती श्रीरामचन्द्र के चरणमें अंक त्यहिके बीच बीच श्रीजानकीजी चरण धरती हैं परसभीतकही डरतीजाती हैं श्रीरघुनाथजी के चरणनपै चरणनपरैं (२३) अरु श्रीजानकीजी के चरणबराइकै दाहिनदैकै श्रीलक्ष्मणजीचलते हैं (२४) तहां हेगरुड़ सीताराम अरु श्रीलक्ष्मणकै प्रीतिपरस्पर कविनकीवाणी को अगोचर है नहींकहाजाइहै (२५) श्रीसीतारामलक्ष्मणकी छबिसुन्दरतादेखिकै बनकेखगमृग अपरजीवतरुसंपूर्णमग्नहोइगये

किमिकहिजाई २५ खगमृगमगनदेखिछबिहोही लियेचोरिचितरामबटोही २६ दो० ॥ ज्यइज्यइदेखेपथिकप्रियसियसमेतदोउभाइ भवमगअगमअनन्दत्यहि बिनुश्रमरहेसिराइ २७ चौ० ॥ अजहुंजासुउरसपन्यहुंकाऊ बसहिंलषणसियरामबटाऊ २८ रामधामपथपाइयसोई जोपथपावकबहुंमुनिकोई २९ तबरघुवीरश्रमितसियजानीदेखिनिकटवटशीतलपानी ३० तहंबसिकन्दमूलफलखाई प्रातअन्हाइचलेरघुराई ३१ देखतबनसरशैलसुहाये बालमीकिआश्रमसबआये ३२ रामदीखमुनिबाससुहावन सुंदरगिरिकाननजलपावन ३३ सरनसरोजबिटपबनफूले गुंजतमंजुमत्तरसभूले ३४ खगमृगबिपुलकोलाहलकरहीं बिगतवैरप्रमुदितमनचरहीं ३५ दो० ॥ शुचिसुंदरआश्रमनिरखि हर्षेराजिवनैनसुनिरघुवरआगमनमुनि आगेआयेलैन ३६ चौ० ॥ मुनि कहंरामदण्डवतकीन्हा आशिर्व्वादविप्रवरदीन्हा ३७ देखिरामछबिनयनजुड़ाने करिसन्मानआश्रमहिंआने ३८ मुनिवरअतिथिप्राणप्रियपाये कन्दमूलफलमधुरमँगाये ३९ सियसौमित्रिरामफलखाये तबमुनिआसनदियेस्वहाये

४० बालमीकिमनआनँदभारी मंगलमूरतिनयननिहारी ४१ तबकरकमलजोरिरघुराई बोलेबचनश्रवणसुखदाई ४२ तुमत्रिकालदर्शीमुनिनाथा विश्ववदरजिमितुम्हरेहाथा ४३ असकहिप्रभुसबकथाबखानी ज्यहिज्यहिभांतिदीनबनरानी ४४ दो०॥ तातबचनपुनिमातुहितभाइ

हैं तहांश्रीरामचन्द्र सर्वजीवनको दिव्यदृष्टिदीनिहैं अरुअपनीशोभाकरिकै सबकेचित्तको आकर्षण करिलीन्हहै बटोहीइवराहमें चलतसंते ( २६ ) दोहार्थ॥ हेपार्बती जिनजिन जीवन श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण अरुश्रीजानकीजी अतिप्रियतिनको अतिप्रीतिसेदेखा तिनके अतिअगम जो भवमार्ग्गसो सिराइकही बीतिगयेहैं ( २७ ) अद्यापि ज्यहिकेउरमें श्रीरामलक्ष्मण अरु श्रीजानकीजीके बनगवनको स्वरूप सपन्यहुबिषेबसै ( २८ ) ते रामधाम को अवश्यकरिकै प्राप्ति होहिंगे ज्यहिपदको कबहूं कोई मुनीश जाते हैं ( २९ ) तब श्रीरघुवीर श्रीजानकीजीको श्रमितजानिकै बटकीछाया अरु शीतल जलाश्रयकोदेखिकै टिकतभये हैं ( ३० ) तहां रात्रीकोबसतभये कन्दमूलफलखातेभयेप्रातःकाल स्नानकरिकै श्रीरघुनाथजीचलतभयेहैं यहांतेदुइदोहातांईमधुरपदार्थै सिद्धिहै हेमुनिराज तुम्हारेचरणदेखिकैहमारे सम्पूर्णसुकृतफलितभये हैं ४६ अब जहां रौरेकी आयसुहोइ अरु मुनिनको उद्वेग न होइ ( ४७ ) काहेते कि ज्यहि राजा ते मुनि औ तपस्वी दुखपावहिं तेबिना अग्निही जरिजाते हैं ( ४८ ) काहेते कि बिप्रकर परितोष मंगल

भरतअसराउ मोकहँदरशतुम्हारप्रभुसबममपुण्यप्रभाउ ४५ चौ० ॥ देखिपाँयमुनिराजतुम्हारे भयउसुकृतसबसफलहमारे ४६ अबजहँराउरआयसुहोई मुनिउद्वेगनपावहिंकोई ४७ मुनितापसज्यहितेदुखलहहीं तेनरेशिबिनुपावकदहहीं ४८ मंगलमूलबिप्रपरितोषू दहइकोटिकुलभूसुररोषू ४९ असजियजानिकहहुसोठाऊं सियसौमित्रसहिततहँजाऊं ५० तहँरचिरुचिरपर्णतृणशाला बासकरोंकछुकालकृपाला ५१ सहजसरलसुनिरघुवरबानीसाधुसाधुबोलेमुनिज्ञानी ५२ कसनकहहुतुमरघुकुलकेतू तुमपालकसन्ततश्रुतिसेतू ५३ छ० ॥ श्रुतिसेतुपालकरामतुमजगदीशमायाजानकी जोसृजतिजगपालतिहरतिरुखपाइकृपानिधानकी ५४ जोसहसशीशअहीशमहिधरलषणसचराचरधनी सुरकाजहितनरराजतनधरिचलेदलननिशिचरअनी ५५ सो०॥ राम

कर मूल है अरु जो ब्राह्मणकर अपमानभयो अरु ब्राह्मणै कोपकियो तौकोटिनकुल दहिजाते हैं ( ४९ ) ऐसेबिचारिकै तहांठाउँबताओ कि जहां हमसहित जानकी अरु लक्ष्मण समेत टिकैंजाइ ( ५० ) तहां पर्णतृण की शालारचिकै हे कृपालु कछुदिन बासकरौं ( ५१ ) हे पार्बती सहज सरल बाणी श्रीरघुनाथजी की सुनिकै मुनि बोलतभये कि हे श्रीरामचन्द्रको मुनिकहा है तहां साधुपद ऐसो महत् सर्बोपरि है ( ५२ ) हे रघुकुल के केतु तुमकस न असकहहु काहेते कि तुम सन्ततकही निरन्तर श्रुतिसेतुके पालकहौ ( ५३ ) छन्दार्थ॥ हे श्रीरामचन्द्र तुम श्रुतिसेतुके पालकहौ काहेते जगदीशकही सम्पूर्ण जगत्के ईशहौ अरु श्रीजानकीजीकी मायासम्पूर्णजगत्को उत्पत्ति पालन प्रलयकरतिहै ते तुम कृपानिधान तुम्हारो रुखपाइकै यहजगत् कार्य है अरु श्रीजानकीजीकी मायाकारण है जाकोआद्या शक्तिकही सो श्रीजानकीजीकी मायाहै सो श्रीजानकीजीहैं ( ५४ ) अरु श्रीलक्ष्मणजू कैसे हैं जो सहस शीश अहीशकही जो अनन्तहैं सो अष्टकुली इत्यादिक नाग तिनसबके ईशहैं तेशेष एक शीशपर सम्पूर्ण पृथ्वी को धरे हैं जैसे गजके मस्तकपर एकरजकी कणधरीजाइ तैसे शेषजीके एकशीशपर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड हैं ते अरु चराचर जे हैं तिनसबकेईश धनी श्रीलक्ष्मणजी हैं धनीकही जैसे सबधनको मालिक कुबेर हैं तैसे सबके मालिक श्रीलक्ष्मणजू हैं तहां यही छन्दकाभाव बालकाण्ड में बन्दनामें यह चौपाई में अर्थकरि आये हैं ॥ चौपाई ॥ शेषसहस्त्रशीशजगकारन। सोअवतरयउभूमिभयटारन॥ सो श्रीलक्ष्मणजी देवतनके कार्य हेतु अवतीर्णहुइकै कार्यकीन्ह है जैसे प्राकृत नरतनधारी महाराजकोईकार्यकरैहै तैसे श्रीलक्ष्मणजी आपनीलीलापूर्बक निश्चरनकीअनी बधबेहेतु प्रकटभये हैं आपुके संगही सदाप्रत्यक्ष हैं ( ५५ ) सोरठार्थ॥ हेश्रीरामचन्द्र यह जो तुम्हार स्वरूप है सो वाणीबुद्धि ते अगोचरकही

स्वरूपतुम्हार बचनअगोचरबुद्धिवर अविगतिअकथअपार नेतिनेतिनितनिगमकह ५६ * * *

चौ० ॥ जगपेखनतुमदेखनहारे बिधिहरिशम्भुनचावनहारे १ त्यउनहिंजानहिंमर्मतुम्हारा अपरतुम्हैंकोउजाननहारा २

परे है यह जो तुम्हार स्वरूप है अविगति काहू के जानबेकीगति नहींहै अगम है अकथहै अपार है यहीतुम्हारे स्वरूपको वेदनेति नेतिकरिकै निरूपणकरते हैं ( ५६ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वन्सने श्रीअयोध्याकाण्डे श्रीरामचन्द्र वाल्मीकिमिलन परस्पर यथार्थवार्तावर्णनंनामषोड़शस्तरंगः १६॥

दोहा॥ अशअरुसाततरंगमें मुनियथार्थमतभाषि। रामचरणजोमुनिकह्यउशास्त्रवेदसबसाषि १७ बाल्मीकि कहते हैं कि हे श्रीरामचन्द्र तुम कैसेहौ यहसम्पूर्ण जगत् जो है सो पेखनकही नकलरूप कठपुतरीकी समाज है त्यहिके नचावनहारे विधि हरिहर हैं अरु तुम देखनहारे हौ तुम्हारी आज्ञाते ये नचावते हैं तुमकोदेखावते हैं तहां तीनिउ गुणसूत्र हैं अरु देव दानब मनुष्य चराचर इत्यादिक कठपुतरीहैं तहां राजस गुणके सूत्रते ब्रह्मा नचावते हैं अरु सात्विकगुणकेसूत्रते विष्णु भगवान् नचावते हैं अरु तामसगुणके सूत्रते महादेव नचावते हैं तुमको देखावतेहैं ऐसे महाराज परमेश्वर तुमहौ ( १ ) हेश्रीरामचन्द्र ब्रह्मा विष्णुशिव तुम्हारे मर्मको नहीं जानते हैं किधौं हमारे नचाउबे के ख्यालमेंरीझे हैं किधौं नहींरीझेहैं हे श्रीरामचन्द्रजी ये तीनिउँस्वरूप तुम्हारे महत् अंश हैं तुम्हारे रूपहैं तुमरूपीहौ तुम्हारेस्वरूप अरु दिब्यगुण मर्म्मकोनहीं जानते हैं अपर अस्मदादिक तुम्हारे प्रभावको काजानिसकैं हैं ( २ ) हे श्रीरामचन्द्र ज्यहिको तुम जनाइदेतहौ सोई तुमकोजानैहै जो तुम्हें जानै तौ तुम्हें मय ह्वइजातहै मयकही तुम्हारे स्वरूपमें मुक्तिकोप्राप्तहोतहै किन्तु तुम्हींमय ह्वइजातहै कीटभृंगके न्यायतेसर्वत्र तुमहींदेखीपरतेहौ किन्तु त्यहिके चित्तकी वृत्ति तुम्हारेस्वरूपमय ह्वइजातहै सोवत जागत उठत बैठत चलत बोलत सुनत भूंखे अघाने लेतदेत कहूं तुम्हारेस्वरूपते विक्षेप नहीं परतहै तुम्हारेस्वरूपविषे तुम्हारीप्रेरणाते सहजानन्द वृत्तिकी दशा होती है ( ३ ) हे श्रीरघुनन्दन तुम्हारी कृपाते तुम्हारे भक्तजन तुमकोजानते हैं काहेते कि तुमभक्तनके उरके शीतलकर्त्ता चन्दनहौ जब तुम्हारी कृपाते उनकेहृदयकीतीनिताप नाशभई शीतलभये तब तुम जानेजाते हौ ( ४ ) कैसो स्वरूप

स्वइजानैज्यहिदेहुजनाई जानततुम्हैंतुम्हैंहोइजाई ३ तुम्हरीकृपातुम्हैंरघुनन्दन जानहिंभक्तभक्तउरचन्दन ४ चिदानन्दमयदेहतुम्हारी

तुम्हारहै यह तुम्हारीदेह सच्चिदानन्दमय है सत कही सर्बकाल में एकरसजहां षड्विकारको अभाव है षड्विकार कही जन्मबृद्धि पुनि विवर्ण गौर ते श्याम श्यामते गौरदूबरते मोट मोटते दूबरपुनिक्षीण दिनप्रति अवस्थाक्षीण होतिजातिहै पुनि जराकही वृद्धपुनि मरण इत्यादिक षट्बिकार ते रहित ताको सत् कही अध्यात्मेश्लोकार्द्ध॥ षड्विकारैर्विहितंरामंस्त्वद्रूपचिन्मयं ॥ पुनि चित्तकही चैतन्य स्वरूप जहां जड़जो है माया त्यहिको अभाव अरु जीवके अंतर्भूत ब्याप्त सर्बको नियंताकही अंतर्यामी सर्बकोप्रेरकहै सर्बकीगति वह जानतहै उसकीगति कोईनहीं जानैहै अरु अति सूक्ष्महै जड़को चैतन्य किहे है ताको चितकही पुनि आनन्द कही जहां मायाके सुखदुःखहर्ष शोकइत्यादिक एकहूनहीं सम्भवै हैं ताको आनन्द कही तातेसत् चित् आनन्दमय तुम्हारविग्रह है तहां सच्चिदानन्द बाचकहै अरु तुम बाच्यहौ ऐसी तुम्हारी देहहै तहां ऐसो जो तुम्हारा शरीर है संपूर्ण विकार विगत सो अधिकारीप्रति जानिबेयोग्यहौ अधिकारीकही विवेक वैराग्य षट्संपति समदम उपरति तितीक्षा श्रद्धासमाधान सम कही अंतष्करणचतुष्टय तिनकीगति एकताकरना पुनि दम कही वाह्यइन्द्रिन्हकेबिषयको दमनकहीनाशकरै पुनि उपरतिकही वाह्यांतरकी इन्द्रीसम करै पुनि तितीक्षा कही सुखदुःख हर्ष शोक हानि लाभ शीतउष्णा त्यहिको सहिजाना पुनि श्रद्धाकही गुरु अरु वेद वाक्य में प्रतीति पुनि समाधानकही चित्तकी वृत्तिको सावधान करिकै श्रीरघुनाथजीके स्वरूपकोचिन्तवनकरै यहि आठौकरिकै अरु षट्शरणागत अनुकूलमें संकल्पप्रभु के मिलिबेको जो कर्म ज्ञान उपासनाहोइ तामें संकल्पकरै किसर्बत्यागिकै यही करौंगो १ पुनि प्रभुजीते तीनों इत्यादिक प्रतिकूलहोहिं ताको त्यागसंकल्पकरै २ पुनि रक्षामेंदृढ़ विश्वासकरै कि मेरीरक्षा लोक परलोकहूमें श्रीरामचन्द्र करैंगे ३ पुनि गोप्तृत्व जिन श्रीरामचन्द्र जी जोवेद

नहीं कहँ सोकियोहै निषाद कोलभिल्लनको सखाकीनहै भिल्लिनि के जूंठे फलखाये हैं अरु बानर रीछनको मंत्रीकीन्ह है अरु पाषाणते सेतुबांध्यो है अरु महापापी राक्षसनको परमपददीन्ह है ऐसे कृपालुहैं तेमोको संसारमार्गते तारिदेहिंगे ४ पुनि आत्मनिक्षेप कर्मबचन मन आत्म श्रीरामार्पण जो कछुकरै सो श्रीरामचन्द्रजी आपुकर्ता हैं ५ पुनि कार्पण्य हे श्रीरामचन्द्रमोसे कछुनहींबनै है बाह्यांतर अहंमम दूरि करै इतिषट् ६ श्लोक आन्यकूलंबिसर्जनं रक्षास्तीतिविश्वासः गोप्तृत्ववर्णनंतथा आत्मनिक्षेपकार्पण्यंषड् विधाशरणागतिः १ ये षट् संयुक्त

बिगतबिकारजानअधिकारी ५ नरतनधरेहुसंतसुरकाजा कहहुकरहुजसप्राकृतराजा ६ रामदेखिसुनिचरिततुम्हारे जड़मोहहिं

होइँ ताको अधिकारीकही ऐसो अधिकारी होइ तबतुम्हारे स्वरूपकोजानै किन्तु षड्विकार कामक्रोध लोभमोह मदमात्सर्य त्यहिते रहितऐसो अधिकारी होइ सोजानै (५) नरतन धरयहुअरु पाछे कहा कि सच्चिदानन्द मयसाक्षात् तुम्हारी देहहै तहां यहदूनो वाक्यमें विरोधहोत है काहेते कि कहां सच्चिदानन्दमय विग्रह अरु कहां तनको धरबकहांहै तहां जो कोई कहै कि चतुर्भुज भगवान् नरतन धरिकै रामरूप भये हैं किन्तु व्यापक ब्रह्म नरतन धरिकै रामरूप भये हैं तहां पुनि देवमहि मुनि सन्तनकर कार्य करिकै पुनि चतुर्भुजरूप भये हैं किन्तु निरावयव ब्रह्मके ब्रह्मभये यहकहने में तीनि विरोध हैं एकउपासना विरोध पुनि शिवके मतमें विरोध पुनि वाल्मीकि के बाक्यमें विरोधहोत है काहेते उपासकजन जे हैं ते तौ एकरस अखण्ड स्वरूप की उपासना करते हैं तहां प्रमाण है महारामायणे शिवबाक्यंपार्बतीम्प्रति श्लोकत्रय॥ गुरु मन्त्रानुसारेण लयंध्यानंजपंतथा पाठंतीर्थचसंस्कारमिष्टंसर्वपरात्परं १ इष्टंपूजाञ्चकुर्याद्वितत्कथांश्रृणुयात्पठेत्तदंशब्यापकंविश्वंकथ्यतेसाप्युपासना २ ध्यानेमंत्रेणजेपाठेयोगेज्ञानेसमाधिभिः बिनोपासनवामुक्तिर्नास्तिसत्यंब्रवीमिते ३ पुनि महादेवकहते हैं ॥ चौपाई ॥ रामअतर्कबुद्धिमनबाणी मतहमारअससुनहुंसयानी॥ पुनः सदाशिवसंहितायां श्लोक एक॥ कौशल्यानन्दनंरामं धनुर्वाणधरंहरिं। परमात्मापरब्रह्मसच्चिदानन्दविग्रहं १ पुनिबाल्मीकीये लववाक्यं अगस्त्यंप्रति श्लोक॥ वेदवेदेपरेपुंसिजातेदशरथात्मजे। वेदःप्राचेतसादासीत्साक्षाद्रामायणात्मना १ तहां खण्डान्वय करिकै अर्थ सिद्धि है तहां वेदकरिकै जो वेद्यकही जानबेयोग्य परपुरुष है सो दशरथात्मज ज्ञात है अरु प्रचेता के पुत्र प्राचेत कही वाल्मीकि त्यहिकरिकै कही गई है जो रामायण सो वेदआत्मना साक्षात् सो वेद की आत्माहै साक्षात् वेददेह है अरु रामायण आत्मा है साक्षात् तहां यह चौपाई में यहअर्थ सिद्धिहोतहै कि देवमुनि सन्त अरु सुरनके काज प्राकृतराजाकी नाई नरतनधरयउ जवन तुम्हार कहबकरब है सोई नरतन धरब है यह विशेष अर्थजानब अरु जो नरकीनाई कहब करब है सो सब परमदिव्य है अरु सच्चिदानन्द पदवाचकहै अरु तुम्हारि यहदेवहवाच्य है (६) हे श्रीरामचन्द्र तहां यह प्राकृतइव चरितदेखिकै जे जडआसुरी सम्पतिमें हैं तुम्हारेविषे प्राकृत आरोपण करिकै मोह को प्राप्तिहोते हैं अरु जे

बुधहोहिंसुखारे ७ तुमजोकहहुकरहुसबसांचा जसकाछियतसचाहियनाचा ८ दो० ॥ पूंछ्यहुमोहिंकिरहहुंकहंमैंकहतैसकुचाउं जहंनहोहुतहंदेहुंकहितुमहिदेखावोंठाउं ९॥ * * * * *

बुधकहीं पण्डित हैं दैवीसम्पति विषे हैं ते तुमको परब्रह्म विग्रह जानते हैं अरु तुम्हारचरित परमदिव्य परब्रह्ममय जानते हैं ते अति सुखकोप्राप्त होते हैं श्लोक भगवद्गीतायां॥ दैवीसम्पद्विमोक्षाय निवन्धायासुरीमता मासुचंसम्पदंदैवीमभिप्रातस्यभारत (७) हे श्रीरामचन्द्र तुम्हार लीलापूर्वक कहब करब सो सब सांच है अरु परमदिव्य है अरु तहां हमको जो पूंछतेहौ सो यहउचितहै काहेते कि जस काछकाछै तैसे नाचनाचै तौ शोभा देती है तामें आपु जो राजादशरथ के पुत्र हौ तौ यहकहब करब तुमकोअति शोभित है (८) दोहार्थ॥ अब तुम मोको पूछ्यहु कि हेमुनि हम कहांटिकैं तहां मैं आपुको बतावतहौं पर कहतकै सकुचातहौं काहे ते कितुम सर्वत्रपरिपूर्ण अरु सबतेपरेते मोसे जगहपूछतहौ सो आपुकी आज्ञा से मैं बतावतहौं तहां आपु अपने स्वरूप घनस्तेज करिकै सर्बत्र चराचरमें परिपूर्ण हौ जहां तुम न होहु तहां कहिदेहु तहां मैं कहिदेउं कि उहईं रहौजाइ पर

यह स्वरूप जो तुम्हार अति सुन्दर कृपालु जहां मैं बतावोंतहां बसहु बाल्मीकिजी अत्युक्ति बचन कहते हैं तहां श्रीरामचन्द्र को पूछब अरु बाल्मीकि को कहबमें अनादि एकता देखिपरै है ( ९ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वन्सने श्रीअयोध्याकाण्डे श्रीरामचन्द्र बाल्मीकिसम्वाद वर्णनंनामसप्तदशस्तरंगः १७॥ :: ::

दोहा॥ रामचन्द्रपूंछ्यउसदन मुनिशुभसदनबताइ दशअरुअष्टतरंगमेंरामचरणसरसाइ १८॥ यहमुनिकै परमविवेकमय युक्ति उक्तिभरि वचन सुनिकै श्रीरामचन्द्र सकुचिकै मुसकातभये हैं ( १ ) हे पार्बती तब बाल्मीकिजी विहँसिकै अति मधुर अमियमय सानी बाणी बोलते भये ( २ ) हे श्रीरामचन्द्र अब मैं निकेत बतावतहौं जहां श्रीजानकीजी अरु लक्ष्मणसंयुक्त आपुबसहु ( ३ ) जिनके श्रवण समुद्रसमहोइ अरु तुम्हारिअनेक

चौ० ॥ सुनिमुनिवचनप्रेमरससाने सकुचिराममनमहंमुसुकाने १ बालमीकिहंसिकहतबहोरी बाणीमधुरअमियरसबोरी २ सुनहुंरामअबकहौंनिकेता जहांबसहुसियलषणसमेता ३ ज्यहिकेश्रवणसमुद्रसमाना कथातुम्हारिसुभगसरिनाना ४ भरहिंनिरंतर होहिंनपूरे तिनकेहृदयतुम्हहिगृहरूरे ५ लोचनचातृकजिनकरिराखे रहहिंदरशजलधरअभिलाषे ६ निदरहिंसरितसिन्धुसरिवारी रूपबुन्दजलहोहिंसुखारी ७ तिनकेहृदयसदनसुखदायक बसहुबन्धुसियसहरघुनायक ८ दो० ॥ यशतुम्हारमानसविमलहंसिनिजीहाजासु मुक्ताहलगुणगणचुनैरामबसहुउरतासु ९ चौ०॥ प्रभुप्रसादशुचिसुभगसुवासा सादरजासुलहैनितनासा १० तुमहिं

शुभकथा नदीहोय ( ४ ) तहां जैसे अनेकन दिनकरिकै निरन्तर समुद्रभरत है पर नहीं पूर्णहोइ है तैसे तुम्हारी कथाकरिकै जिनके हृदय न भरिजाइँ तहां तुम बसहुजाय ( ५ ) अरु जिन अपनेनेत्रनको चातृककरिराखा है अरु तुम्हारे स्वरूपकी अभिलाषा सोई स्वातीको मेघ है ( ६ ) तिनके बाह्यान्तरके नेत्र चातकहैं अरु अनेक कर्मधर्म सोई अनेक नदीसिंधुहै तिनको निदरिकै तुम्हारे रूपकै नेकु छटाबुन्दपाइकै ते अतिसुखी होतेहैं ( ७ ) हे श्रीरामचन्द्रजी तिनके हृदयविषे तुम्हार सुन्दरसदन हैसहित अनुज श्रीजानकीजी के तहांटिकहु ( ८ ) दोहार्थ। अरु हेश्रीरामचन्द्र तुम्हार जो यश है सोई मानसरहै अरु तुम्हार गुणमुक्ताहै अरु जिनकै जिह्वाहंसिनिहै तुम्हारगुण रूप मुक्ताको निरंतर चुनतिहै त्यहिके हृदयविषे अनुज अरु जानकी सहित बसहु ( ९ ) अरु हे श्रीरामचन्द्रतुम्हारि प्रसादी तुलसीदलफूल त्यहिकर सुगंधज्यहिकी नासिका सादर ते लहतिहै जैसेलुब्ध मधुप पुष्पकेमकरंदकी सुगन्धको ग्रहणकरतेहैं ( १० ) अरु जो कुछ भोजन चारिविधि अरु षट्रस सो तुमको भोगलगाइकै तुम्हारीप्रसादी पावते हैं अरु तुम्हारी प्रसादीपट भूषणग्रहण करते हैं जैसे कोई कृपिण असंतोषी सुधानिधि की राशिलूटिकै ग्रहण करते हैं ( ११ ) अरुजिनके आदरसे सात्विकीदेवतनके शीशनवते हैं ब्राह्मणनअरु गुरुनके चरणारविंदविषेनमतहैंअरु प्रीतिसमेत विशेषकै विनयकरते हैं कैसे जैसे कोई नीच भयसंयुक्त कोई महाराजको नयनयसलाभकरतहै ( १२ ) अरुकरनादिक सबअंगनकरिकै तुम्हारी कैङ्कर्य अरु पूजाप्रीति समेत करते हैं कैसे जैसे कोई लोभीअपनेहाथते अपनो धन अहर्निशिसवाचतरहै है सुतकलत्र मित्रादिककी प्रीति नहींकरैहै तैसेतुम्हारीपूजाकरते हैं अरु अंतष्करणमें केवलतुम्हारो भरोसहै अरु अपर कोभरोसजो अनेक सुलभ साधनसो हृदयविषे स्वप्नेहुनहीं है जैसे शिशुकही निपटबालक केवल

निवेदित भोजनकरहींप्रभुप्रसादपटभूषणधरहीं ११ शीशनवहिंसुरगुरुद्विजदेखी प्रीतिसहितकरिविनयविशेषी १२ करनितकरहिंरामपदपूजा रामभरोसहृदयनहिंदूजा १३ चरणरामतीरथचलिजाहीं रामबसहुतिनकेमनमाहीं १४ मंत्रराजनितजपहिंतुम्हारा पूजहिंतुमहिंसहितपरिवारा १५ तर्पणहोमकरहिंबिधिनानाबिप्रज्यंवाइदेहिंबहुदाना १६ तुमतेअधिकगुरुहिजियजानी सकल

माताको भरोसराखतहै ( १३ ) अरु जिनकेचरणतुम्हारेतीर्थस्थानको चलिजाते हैं अरु तुम्हारेतीर्थ तुम्हारीकथा सत्संगतहांको चलिजाते हैं कैसे जैसे कोई कृपिण ब्राह्मण नवनिद्धिलूटै कोधावै है हे श्रीरामचन्द्र तिनकेमनमेंतुमबसहु ( १४ ) अरुहेरामचन्द्रजो सबमंत्रनकरराजतुम्हारमहाषडक्षरमंत्र किन्तु रामनाम त्यहिको अहर्निश जपते हैं॥ सदाशिवसंहितायां श्लोकार्द्धद्वं॥ प्रणवंकेचिदाहुर्वैबीजंश्रेष्ठंतथापरे तत्त्वेनामबर्णाभ्यांसिद्धिंप्राप्नोतिमेमतं १ ( पुनर्मनुस्मृतौ ) सप्तकोटिमहामंत्राश्चित्तबिभ्रमकारकाः एकएवपरोमंत्रोरामइत्यक्षरद्वयम् २ राममंत्रमिमंप्रोक्तंरामोक्तंजानकीकृतम् ॥ अरु तुमको सहितपरिवारसेवतेहैं नाम श्रीदशरथ कौशल्यादिकमाता अरु भरतशत्रुहन लक्ष्मण किन्तु लक्ष्मण भरत शत्रुहन हे श्रीरामचन्द्र तुम्हार सहित परिवार तुम्हारीसमान पूजते हैं किंतु अपनपरिवार पिता माइपुत्रस्त्री इत्यादिक किंतुअपने इन्द्रिनके परिवार तिनसबसंयुक्ततुम्हारीपूजाकरते हैं ( १५ ) अरु देव पित्रहेतुयज्ञहोम श्राद्धतर्पणकरते हैं अरु नानाप्रकारके ब्राह्मणन को भोजनकराइकै अवसरानुकूल दक्षिणा देते हैं ( १६ ) हे श्रीरामचन्द्र जे प्राणीतुमतेअधिक अपने जीवविषे गुरुनको जानते हैं अरुसर्बभावते सनमानकरते हैं ( १७ ) दोहार्थ॥ हेश्रीरामचन्द्र जो पूर्वापर कहे हैं सो सबकरिकैयहफल मांगते हैं कि श्रीरामचन्द्रके चरणारविंदविषे मेरीरतिहोइ तिनके मनमंदिरमें जानकी अरु लक्ष्मण संयुक्तआपुबसहु ( १८ ) जिनकेकाम क्रोधमद मान मोह लोभ क्षोभ रागद्रोह इत्यादिक दूरिभये हैं ( १९ ) पुनि जिनके कपटदंभ मद माया छूटिगईहै नहीं है हेरघुराई त्यहिके हृदयविषेबसहु ( २० ) अरु जे सर्वजीवन के प्रिय अरु हितकारी हैं अरु दुःख सुख स्तुति गारीइत्यादिक जिनके सम हैं ( २१ ) अरु प्रीतिसंयुक्त विचारिकै सत्यवचन कहते हैं जासे कहैं ताको प्रियलागैहैं जो सत्यकहेते काहूको क्लेशहोइ तौन सत्यैकहै न असत्यैकहै हे श्रीरामचन्द्र जागत सोवत तुम्हारीशरणागत है जागत कही जाग्रतअवस्था में अरु सोवत स्वप्नावस्था में तुम्हारीशरणागत है तहां जाग्रत अवस्थाकहा चौबीसतत्त्वकरिकै पांचतत्त्व पृथ्वी

**भावसेवहिंसनमानी १७ दो० ॥ सबकरमांगहिंयेकफलरामचरणरतिहोहु तिनकेमनमंदिरबसहु सियरघुनन्दनदोउ १८ चौ०॥ कामक्रोधमदमाननमोहा लोभनक्षोभनरागनद्रोहा १९ जिनकेकपटदम्भनहिंमाया त्यहिकेहृदयबसहुरघुराया २० सबकेप्रियसबकेहितकारी दुखसुखसरिशप्रशंसागारी २१ कहैंसत्यप्रियबचनबिचारी जागतसोवतशरणतुम्हारी २२ तुमहिंछांड़िगतिदूसरिनाहीं**

अप तेज वायु आकाश पुनि पांचज्ञानइन्द्री श्रोत्र चक्षु त्वक् रसना घ्राणपुनि तिनके विषय शब्दस्पर्श रूप रस गन्धपुनि पांचकर्मइन्द्री मुखपद गुदा लिंग कर पुनि चतुष्ट अन्तष्करण अहंकार मन बुद्धि चित्त इन चौबिस तत्वनकरिकै जाग्रतअवस्था है कर्मइन्द्री की विषयनहीं कह्यो है काहेते कि कर्मइन्द्री ज्ञानइन्द्री में मग्न हैं अरु कर्मइन्द्रीको विषय ज्ञानइन्द्री के विषय में मग्न है किंतु कर्म इन्द्रीको विषय केवल स्वप्नमें ताते चौबिसौतत्त्व जाग्रतअवस्था विश्वदेवतास्थूलशरीर प्रत्यक्षभोग सात्वकगुण यह सबयुक्त श्रीरामचन्द्र की शरणागतहोइ इन्द्री इन्द्रिन के विषय तिसमें कोई शुभ है अशुभ इन्द्री के विषयते कैसे शरणागत होहिं तहां इन्द्री में अशुभदुइ गुदा अरु लिंगको विषय तहां जो बाह्यभूमि में लघु बाधा को जाइ तौ अन्तष्करण ते श्रीरामचन्द्र के कैङ्कर्यहेतु शरणागतमानै है काहेते कि इनते शुद्धहोइकै श्रीरामचन्द्र को भजनकरौंगो ताते वहभजनै अर्थ है अरु निजदाराप्रसंग केवल पुत्रउत्पन्नहेतु सो पुत्रकोईयोगभ्रष्टी भागवत् उत्पन्नहोइगो ताते भजनैहेतु है अपर इन्द्रीविषय सब श्रीरामचन्द्र के भजन में यथायोग्य लगारहै यह जाग्रत शरणागतहै पुनिसोवतकही स्वप्नअवस्था में शरणागत सो सत्रहतत्त्वकरिकै पांच पान अपान समान व्यान उदान तहां प्राणमुखद्वार ह्वैकै रामनाम अरु रामचरितका भजन प्रतिस्वास करते हैं पुनि गुदाद्वारह्वैकै अपानवायु को अष्टांगयोग ते बंदकरिकै ऊर्द्धगमन त्रिकुटी स्थानपर जहां अनहदशब्दका उच्चारण होत है पुनि समानवायु चक्षु के द्वार शब्दविषे गमनकरत हैं भगवत् भागवत् को यश अहर्निशि सुनते हैं पुनि उदान वायु नासिकाद्वार ह्वै गमनकरते हैं तहां प्रणव सोऽहम् शब्द का उच्चारण होत है सुखुम्ना नाडी में एकता ह्वै जाती है पुनि पांचकर्म इंद्रीकोविषय पगकोविषयचलब गुदाको बिसर्ग लिंगको मैथुन मुखकोभक्षण हाथको व्यवहार तहां इनपांचहूंको भजन पाछेकहि

आये हैं पुनिमन बुद्धि मनको भजनमननबुद्धिको भजन निश्चय तहां यह बुद्धिको सत्रहौतत्व पंचप्राण पांचकर्म्म इंद्रीको विषय पांच ज्ञानइन्द्री को विषय मन बुद्धि अरु सत्रहौं तत्व करिकै लिंग शरीर सूक्ष्म भोग तैजस देवता राजसगुण यहसब करिकै सोवत

रामबसहुतिनकेमनमाहीं २३ जननीसमजानहिंपरनारी धनपरावविषतेविषभारी २४ जिनहिंरामप्रियप्राणपियारे तिनकेमनशुभसदनतुम्हारे २५ जेहर्षहिंपरसम्पतिदेखी दुखितहोहिंपरविपतिविशेखी २६ दो०॥ स्वामिसखापितुमातुगुरुज्यहिके

कही स्वप्न अवस्थाबिषे श्रीरामचन्द्रके स्वरूपको ध्यान करते हैं चित्तएकाग्र करिकै तहां कारण शरीर है आनंद भोगे है प्राज्ञ देवता शुद्ध तामसगुण है ज्यहि तामसते वैराग्य उत्पन्न होत है यहसब दोइ अवस्थामें मिलिकै श्रीरामचन्द्रकी शरणागत है ताते जागत सोवत केवल तुम्हारी ही शरण में हैं ( २२ ) हे श्रीरामचन्द्र तुमको छांड़िकै ज्यहिके मन बचन कर्ममें दूसरि गातिनहींहै हे श्रीरामचन्द्र त्यहिके मनमेंबसहु ( २३ ) अरु परस्त्री माताके समान जानते हैं अरु परावाधन विषहुते अधिक विष जानते हैं ( २४ ) अरु हे श्रीरामचन्द्र जिनके तुमप्राणहु ते प्रिय हौ तिनके हृदय विषे तुम्हार शुभसदन है तहां तुमटिकहु देखिये तौ कि प्राकृत राजा आदिक जो बड़े हैं ते स्वच्छ महलन में टिकते हैं तहां जो तनिकौ बाह्यांतर मों लीनहोइ तौ श्रीरामचन्द्र कैसे टिकहिंगे ताते वाल्मीकिजी श्रीरामचन्द्र के टिकवेको शुद्धस्थान बतावते हैं श्रीरामचन्द्रको टिकावा चाहै तौ जस वाल्मीकि कहा है तसहोइ ( २५ ) अरु जे पराई सम्पति ऐश्वर्यसुख बड़ाई यशदेखिकै सुनिकै हर्षते हैं अरु पराई बिपतिदेखिकै दुखित होइजाते हैं ( २६ ) दोहार्थ॥ हे श्रीरामचन्द्र स्वामी गुरु तौ तुमही अरुमाता तौ तुमही अरु मित्र भाई तौ तुमही सर्वस लोक परलोक के हितकारी केवल तुमही हौ तिनके मन मंदिरमें सहित जानकी दूनोंजनेबसहु ( २७ ) अरु जो काहूमें अवगुण देखते हैं तिसको मनहूमें नहीं लै आवते हैं अरु वचन कर्म की कहिये अरु जो काहूमें हजार अवगुणहोइअरु एकौ गुणहोइ तो वोही ग्रहणकरते हैं और सबको त्यागकरते हैं विप्र धेनु साधनकेहेतु संकटसहते हैं ( २८ ) अरु नीतिविषे जिनकै निपुणताकै लीक है तिनके मनमें तुमबसहु ( २९ ) अरु जौन तुम्ह सम्बन्धी गुणहोइ सो तौ तुम्हारी प्रेरणाते समुझै अरु दोषसम्बन्धी अवगुण होहिंअपने संस्कार प्रारब्धि क्रियमान बश समुझहिं काहेते कि तुम सर्वोपरि

तुमसबतात तिनकेमनमंदिरबसहुसियसमेतदोउभ्रात २७ चौ० ॥ अवगुणतजिसबकेगुणगहहीं बिप्रधेनुहितसंकटसहहीं २८ नीतिनिपुणजिनकेजगलीका घरतुम्हारत्यहिकेमननीका २९ गुणतुम्हारसमुझैनिजदोसा ज्यहिसबभांतितुम्हारभरोसा ३० रामभक्त प्रियलागहिंजेही त्यहिउरबसहुसहितबैदेही ३१ जातिपाँतिकुलधर्मबड़ाई प्रियपरिवारसदनसुखदाई ३२ सबतजितुमहिंरहैलयलाई तिनकेहृदयबसहुरघुराई ३३ स्वर्गनर्कअपबर्गसमाना जहँतहँदीखधरेधनुबाना ३४ कर्म्मवचनमनराउरचेरा रामकरहुतिनके मनडेरा ३५ दो० ॥ जाहिनचाहियकबहुंकछुतुमसनसहजसनेह बसहुनिरंतरतासुउरसोराउरनिजगेह ३६॥ * * *

नीकहहु ताते तुम्हारी प्रेरणा ते उत्तमगुणै होहिंगे अरु माया जो विकारहै त्यहिकी प्रेरणाते विकार अवगुण होहिंगे यह दूनौ यथार्थ अच्छीतरह समुझै अरु जाहि तुम्हारै सबभांति ते भरोसा है ( ३० ) अरु हे श्रीरामचन्द्र जिनको तुम्हार भक्त तुसमे अधिक प्रियलागत हैं तिनके उरमेंअनुज अरु वैदेहीसहितबसहु ( ३१ ) अरु जातिपांति कुलधर्म बड़ाई अरुअपने प्रियजन जो हैं अरु अपनो परिवार जो हैं इत्यादिक जहांतक सदन सुखदाई ( ३२ ) इनसबको त्यागि तुम्हहि विषय लय लगाइरहे हैं हे रघुराई तिनके हृदयमें तुमबसहु लयकही जैसे चातृककै लय स्वाती के बुंदमें अरु जैसे चन्द्रमा में चकोरकी लय है ऐसे श्रीरामचन्द्र विषेलयलागै अपने देहके विकार की सुधि भूलिजाइ ( श्लोकअन्यच्च ) पूजाकोटिसमंस्तोत्रंस्तोत्रकोटिसमोजपं जपकोटिसमोध्यानंध्यानकोटिसमोलयः१ ( ३३ ) हे श्रीरामचन्द्र जे जन स्वर्ग नर्क अपवर्गकही मोक्ष को समान मानते हैं जिनके मोक्षहू

को त्याग है अरु जहँतहँकही जहांहै तहईंबैठेचलत सोवत जागत बोलत बतलात सुनत देशविदेश सबकाल सर्वभूत में जहां हैं तहां बाह्यांतरकरिकै हे श्रीरामचन्द्र तुमहीको धनुष बाणधरेसहजानंद वृत्तिकरिकै देखते हैं अरु जो यहअर्थकरते हैं कि स्वर्ग नर्क अरु अपबर्गहु में तुमहीको जानते हैं सो यह अर्थ कछुनहीं है ( ३४ ) हे श्रीरामचन्द्र मनक्रम वचन ते सदा सर्वकालविषे जे तुम्हारे चेरे होइरहे हैं तिनके हृदय में लक्ष्मण अरु श्रीजानकी संयुक्त तुम डेराकरहु ( ३५ ) दोहार्थ॥ हे रघुनन्दन जिनका अर्थ धर्म काम मोक्ष येकौ कवहूं नहींचाही अरु तुमते एकरस सर्बकालबिषे सहजस्नेहहै तिनके मनमंदिरमें वसहु सो रौरेकर निजगृह है मैं का कहौं अरु इहां यहिप्रकरणमें सम्पूर्णबाह्यांतर इन्द्री परमशुद्ध कौन है जे यहिरीतिचलैं ते यही शरीर ते परमदिव्य पार्षद होइजाते हैं कैसे जैसे लोहा ताम्र इत्यादिक धातु पारस ते

चौ० ॥ यहिबिधिमुनिवरभवनदेखावा बचनसप्रेमराममनभावा १ कहमुनिसुनहुभानुकुलनायक आश्रमकहौंसमयसुखदायक २ चित्रकूटगिरिकरौनिवासू तहँतुम्हारसबभांतिसुपासू ३ शैलसोहावनकाननचारू करिकेहरिमृगबिहगबिहारू ४ नदीपुनीतपुराणबखानी अत्रित्रियानिजतपबलआनी ५ सुरसरिधारनाममंदाकिनि जहँसबपातकपोतकडाकिनि ६ अत्रिआदिमुनिब

अरु कोई जरीबूटी ते सोना होइजात है धातु बदलिजाती है तैसे यहप्रकरणजानब ( ३६ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने अयोध्याकाण्डेवाल्मीक्युक्ति वेदसिद्धान्तबर्णननामअष्टदशस्तरंग १८:॥ :: :: :: :: :: :: ::

दोहा॥ बालमीकितेबिदाहोइ चित्रकूटप्रभुबास रामचरणदशनवममेंदेवनरचीअवास १९॥ हे पार्वती यहिप्रकरण ते मुनि जो हैं ते भवन देखावतेभये प्रेममय वचनसुनिकै श्रीरामचन्द्रको बहुतभायेहैं ( १ ) तब मुनि पुनि कहा कि हे भानुकुल नायक अब समथसुखदायक आसनकहतहौं ( २ ) हे श्रीरामचन्द्र श्रीचित्रकूटपर्वत तहां निवासकरौ जहां सबप्रकारते तुम्हारसुपासहै ( ३ ) तहां शैलबन अतिसुहावन है अरु करि केहरि मृगादिक तिनको बिहार है ( ४ ) तहां मंदाकिनी गंगा हैं जाको वेदपुराण बखानते हैं सो अत्रिमुनि की स्त्री अनसुइया अपने तपके बल से लैआई हैं ( ५ ) तहां सो सुरसरी गंगा की धारा है मंदाकिनी नाम है कैसी है मंदाकिनी जहां सम्पूर्ण पातक पोतकही वालकहै त्यहिकेखाइ डारिबेको डाकिनी कही डाइनि है ( ६ ) हे श्रीरामचन्द्र ज्यहि चित्रकूट बिषे अत्रि आदिक मुनीश्वर बसते हैं अरु योग जपतपकरिकै अपनेतनको कसते हैं ( ७ ) हे श्रीरामचन्द्र चलिकै सबकर योग जप तप को श्रमसफलकरहु अरु गिरिवरजो है श्रीचित्रकूटका मदानाथ त्यहिको गौरव कही बड़ाईदेहु ( ८ ) दोहार्थ॥ हे पार्वती महामुनिनकोराजाकही श्रेष्ठ तो श्रीचित्रकूट की महिमा अमित कहतभये हैं तब श्रीरामचन्द्र सुनिकै प्रसन्नह्वैकै श्रीचित्रकूटको जाइकै बरकही श्रेष्ठजो श्रीगङ्गाजी हैं त्यहिमें स्नान करतभये ( ९ ) तब श्रीरामचन्द्र कहा कि हेलक्ष्मणजू यहबहुत सुन्दरघाटहै कतहुंटिकवेकर ठाठकरहु ( १० ) तब श्रीलक्ष्मणजू पयस्वर्णीके उत्तरको करारदेखतभये हैं तहांधनुषाकार नाराफिरा है ( ११ ) तहाँत्यहि

रतहँबसहीं करहिंयोगजपतपतनकसहीं ७ चलहुसफलसबकेश्रमकरहू रामदेहुगौरवगिरिवरहू ८ दो०॥ चित्रकूटमहिमाअमित कहीमहामुनिराइ आइनहानेसरितबरसियसमेतदोउभाइ ९ चौ० ॥ रघुबरकह्यउलषणभलघाटू करहुकतहुंअबठाहरठाटू १० लषण दीखपयउतरकरारा चहुँदिशिफिरेउधनुषजिमिनारा ११ नदीपनचशरशमदमदाना सकलकलुषकलिसाउजनाना १२ चित्रकूटजनुअचलअहेरी चुकैनपावमारमुठभेरी १३ असकहिलषणठाँवदेखरावा थलबिलोकिरघुबरमनभावा १४ रम्यउराममनदेव नजाना चलेसहितसुरपतिपरधाना १५ कोलकिरातवेषधरिआये

**रचेपर्णतृणशालसोहाये १६ बर्णिनजाँयमंजुदुइशाला एकललितलघुएकबिशाला १७ दो० ॥ लषणजानकीसहितप्रभुराजतपर्णनिकेत सोहमदनमुनिवेषधरिरतिऋतुराजसमेत १८॥**

नाराधनुष की पनिचमंदाकिनी है अरु शमदमदानबाण है अरु सकलकलिकलुष जो हैं सोई नानाप्रकारके सावज हैं ( १२ ) तहां जनुचित्रकूट अचल अहेरीकही शिकारी सो धनुषबाण लिहेहै सो तिनपापरूपसावजनके मारवेको चूकैतहीं है काहे ते कि मुठभेर कही घातपाई है ( १३ ) असकहिकै श्रीलक्ष्मणजू ठांवदेखरावतेभये तब श्रीरामचन्द्रदेखतभये देखिकै बहुतमनमेंभावतभयो है ( १४ ) तब देवतनजाना कि इहां श्रीरामकर मनरम्यउ सुरपति आदिक जो प्रधान प्रधान दशौदिग्पाल इत्यादिक जे देवता श्रीचित्रकूट को चलत भये हैं ( १५ ) तेसम्पूर्ण देवताकोल किरातको बेषधरिकै आवत भये पर्णके तृण की अतिसुन्दरशालाकही मंदिर बनावतभये ( १६ ) तहां अतिमंजु अरु मनोहर दुइशाला बर्णन करिवे योग्यनहीं हैं तहां एक विशाल है अरु एकलघु है अरु दूनहु की लालित्य एकही है ( १७ ) दोहार्थ॥ तहां हे गरुड़ श्रीलक्ष्मण अरु श्रीजानकी संयुक्त श्रीरामचन्द्र पर्णनिकेत विषे बिराजत भये हैं जनु मदनरति अरु बसंत मुनिकर वेषधरिकैशोभित है ( १८ ) ॥ इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने श्रीअयोध्याकाण्डे ब्रह्मादिकदेवकैङ्कर्यवर्णनंनामएकोनविंशतिस्तरंग॥ १९ :: :: :: :: ::

दोहा॥ बीसैंसुभगतरंग में सुरमुनि आगमजानिरामचरण श्रीरामजी विदाकीन सनमानि २०॥ अमर जो देवता हैं नाग किन्नर इत्यादिक त्यहिकालमें श्रीचित्रकूटमें आवतेभये ( १ ) सब दिग्पाल किराततनमें जे निजरूपभये तिनसबनको श्रीरामचन्द्र प्रणाम करतभये सब देवता

**चौ० ॥ अमरनागकिन्नरदिशिपाला चित्रकूटआयेत्यहिकाला १ रामप्रणामकीन्हसबकाहू मुदितदेवलहिलोचनलाहू २ बर्षिसुमनकहदेवसमाजू नाथसनाथभयेहमआजू ३ करिबिनतीदुखदुसहसुनाये हर्षितनिजनिजसदनसिधाये ४ चित्रकूटरघुनंदनछाये समाचारसुनिसुनिमुनिआये ५ आवतदेखिमुदितमुनिवृन्दा कीन्हदण्डवतरघुकुलचन्दा ६ मुनिरघुबरहिलाइउरलेहींसफलहोनहितआशिषदेहीं ७ सियसौमित्ररामछबिदेखहिं साधनसकलसफलकरिलेखहिं ८ दो०॥ यथायोग्यसन्मानकरिबिदाकियेमुनिवृन्द करहिंयोगजपयागतपनिजआश्रमनस्वस्वन्द ९॥** *

लोचनकै लाहुलहिकै आनन्दहोत भये ( २ ) तब सुमनबर्षिकै देवतन कै समाज कहते हैं हे नाथ हम आजुसनाथ भयन है ( ३ ) तब सबदेवता आये अरु दुसहदुख सुनावतभये हैं हर्षिकै अपने अपने सदनको जातेभये ( ४ ) श्रीरघुनन्दनजी श्रीचित्रकूटविषे छाये हैं अरु यह समाचार सुनिकै सबमुनि आवते भये हैं ( ५ ) तब मुनिनके वृन्दको आवतदेखिकै श्रीरघुकुलचन्द दण्डवत् करतभये हैं ( ६ ) सम्पूर्णमुनि श्रीरामचन्द्र को हृदयमें लगाइलेते हैं अरु अपने आशिषकेसफल होनहित आशीर्वाद देते हैं ( ७ ) श्रीसीतारामचन्द्र अरु लक्ष्मणकी छबि देखते हैं अपने जीवनको समस्त साधन सफलमानते हैं ( ८ ) दोहार्थ ॥ तब श्रीरामचन्द्र यथायोग्य मुनिनको सन्मान करिकै बिदा करते भये ते सब मुनि अपने अपने आश्रमबिषे जाइकै योग जप यज्ञ तप स्वच्छंदकही स्वतंत्रकरते हैं ( ९ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलकिलुषबिध्वंसनेश्रीआयोध्याकाण्डे सर्बमुनि कृपाप्रेम वर्णनंनाम विंशतिस्तरंग: २० ॥ :: :: :: :: :: ::

दोहा॥ एकैबीसतरंगमेंआयेकोलकिरात। रामचरणअपनाइप्रभुबनबरणतहुलसात ( २१ ) श्रीरघुनाथजी श्रीचित्रकूट विषे विराजतभये यह सुधि श्रीचित्रकूटके कोलकिरात पावतेभये यह सुनिकै कैसो कोलकिरातनकोहर्षभयोजैसेकामी पुरुषजे हैं तिन्हैं साधनकरतसंते नवनिद्धीअरु गुण सम्बन्धी दशसिद्धी प्राप्तिभई हैं जैसे वहिको सुखभयो है तैसे कोलकिरातन को सुखभयो यह केवल श्रीरामकृपाते जानब काहे ते जगत् में तीनि प्रकारके जीव श्रीरामचन्द्रकी मोक्षके अधिकारी हैं एकस्वत:सिद्ध सनकादिक नारद

शुकदवेइत्यादिक अरु कृपासिद्ध वशिष्ठ विश्वामित्र वामदेव इत्यादिक जे मुनिहैं अरु एककृपासिद्ध कोलभिल्ल गीध बानर रीछ राक्षसइत्यादिक ये केवल श्रीरामचन्द्रकीकृपाते मोक्षकेअधिकारीभये हैं जैसे कोल

चौ० ॥ यहसुधिकोलकिरातनपाई हर्षेजनुनवनिधिघरआई १ कन्दमूलफलभरिभरिदोना चलेरंकजनुलूटनसोना २ तिनमहँजिनदेखेदोउभ्राता अपरतिनहिंपूंछहिंमगजाता ३ कहतसुनतरघुवीरनिकाई आइसबनदेखेदोउभाई ४ करहिंजोहारभेटधरिआगे प्रभुहि

किरातनको परमानन्दको सुखभयो है तैसो मुनिन को नहीं वर्णनकीन्ह हैकाहेते कोलकिरात कृपासिद्ध हैं अरु मुनि इत्यादिक स्वतः सिद्ध कृपा सिद्ध हैं तहां कृपासिद्ध सबते अधिकाधिकहैं ( १ ) ते कोलकिरात दोननभरिभरि अतिमधुर कन्दमूलफल श्रीरामचन्द्रकेसमीप लैचलतभये हैंकैसे हर्षते चले जाते हैं जनु रंक जो कंगाल है वह सुबर्णकी ढेरीलूटिबेको चलाजात है तैसे कोलकिरात चले हैं ( २ ) तिन कोलकिरातन विषे जिन श्रीरघुनाथ जीको राहमेंआवतदेखाहै तिनते वे पूंछते हैं कि दूनौभाई कैसे हैं हमदेखन हेतु जाते हैं ( ३ ) तब वोऊमगविषे श्रीरघुनाथजीकै शोभा कहतचलेजाते हैं कहते हैं कि जब तुम देखहुगे तबहीं जानहुगे हमसे कहानहीं जाइहै काहेते कि जिन दोऊभाइनकी शोभा शेष महेश गणेश विधिहरि शारदाशुक सनकादिक नहीं कहिसकते हैं जिनकी शोभाकी छबिको देखिकै मुनीश्वरजे योगी हैं विरक्त हैं ज्ञानी हैं ध्यानी हैं तपस्वी हैं इत्यादिक तिनकी शोभाशृंगार रसभावको प्राप्तिहोते हैं तिनकी शोभा हम जो बनचारी हैं ते कैसे कहिसकै हैं ऐसेकहत सुनत श्रीरामचन्द्रके समीपप्राप्ति भयेआइ ( ४ ) आगेभेटधरिकै जोहारकरतभये हैं श्रीरामचन्द्रको अति अनुरागते विलोकते हैं पलकनहीं टारते हैं ( ५ ) तेसब कोलकिरात जहां तहां ठाढ़ेहैं श्रीरामचन्द्रको देखिकै चित्रवत्ह्वैरहेहैं जैसे पूर्णचन्द्रमाको चकोरचितैरहेहैं शरीर पुलकिकै नेत्रनमेंजलभरे रोमांचठाढ़ह्वैइ आये हैं ( ६ ) श्रीरामचन्द्रने सबको प्रेमते मग्नजाना तब सुन्दर प्रियबचनकहिकै उनका सन्मानकरतेभये ( ७ ) तेसब श्रीरामचन्द्रको बारबार जोहारते हैं अरु करजोरिकै प्रेममय विनीत बचनकहते हैं ( ८ ) दोहार्थ ते सबबोले हे नाथ आपुके चरण देखिकै अबहमसब सनाथभये आपुको आगमन

विलोकतअतिअनुरागे ५ चित्रलिखेसेजहँतहँठाढ़े पुलकशरीरनयनजलबाढ़े ६ रामसनेहमगनसबजाने कहिप्रियबचनसकलसनमाने ७ प्रभुहिंजोहारिबहोरिबहोरी बचनविनीतकहैंकरजोरी ८ दो० ॥ अबहमनाथसनाथसब भयेदेखिप्रभुपाँय भाग्यहमारेआगमन राउरकोशलराय ९ चौ० ॥ धन्यभूमिबनपन्थपहारा जहँजहँनाथपाँउतुमधारा १० धन्यविहँगमृगकाननचारी सुफलजन्मभयेतुमहिंनिहारी ११ हमसबधन्यसहितपरिवारा निरखिनयनभरिदरशतुम्हारा १२ कीन्हबासभलिठांवविचारी इहांसकलऋतुरहबसुखारी १३ हमसबभांतिकरबसेवकाई करिकेहरिअहिबाघबराई १४ बनविहारगिरिकन्दरखोहा सबहमारप्रभुपगपगजोहा १५ तहँतहँतुमहिंअहेरखेलाउब सरनिर्झरनिजठाँउदेखाउब १६ हमसेवकपरिवारसमेता नाथनसकुचबआयसुदेता १७ दो० ॥ वेदबचनसुनिमनअगम तेप्रभुकरुणाअयन बचनकिरातनकेसुनतजिमिपितुबालकबयन १८ चौ० रामहिंकेवलप्रेमपियारा जानिलेहुजोजाननहारा १९ रामसकलबनचरपरितोषे कहिमृदुबचनप्रेमपरिपोषे २० बिदाकियेशिरनाइसिधाये प्रभुगुण

केवल हमारे भाग्यते भयो है काहेते रौरे कोशलपाल कृपालु हौ ताते आपु सर्बजीवनके पालनकर्त्ताहौ ( ९ ) यह दोहा भरे में प्रथम माधुर्यगुण है पुनि दास्य रस है पुनि विशेषपद है अरु धुनि करिकै शांतरसहैतहांआठौ चौपाईके पदमें यह अर्थ है जो कहिआये हैं दोहार्थ॥ हे पार्वती वेद के बचन जे मुनिन के मनते अगमहैं ते श्रीरामचन्द्र

किरातन के बचनसुनते हैं जैसे माता पिता बालकनके बचन सुनते हैं ( १८ ) हे गरुड़ श्रीरामचन्द्र को केवल प्रेमपियार है केवल प्रेमकही विरही भक्तिको जब श्रीरामचन्द्रकेमिलिबेको विरह जीवकोभयो तब वाको त्रैगुण्यजनित व्यवहार विस्मरण ह्वइजातहै अरु भगवत्सम्बन्धी कर्मविषे विपर्ययहोइजात है ताको केवल प्रेमकही सो प्रेम सबके जानिवेयोग्यनहीं है ज्यहिपर श्रीरामचन्द्र कै कृपाहोइ सो जानै ( १९ ) तब श्रीरामचन्द्र सम्पूर्ण बनचरजे हैं कोलकिरात तिनको परिणाम निश्चयकरिकै सन्तोष करतेभये कि अब तौ हम तुम्हारे इहां आये हैं सबप्रकार ते हमारी रक्षा तुमकरहुगे अरु तुम हमको बहुतप्रियहौ ऐसे मृदुबचन कहिकै उनको अपनाविषे प्रेमपरिपूर्ण करिदीन्ह ( २० ) तब श्रीरामचन्द्र किरातनको आदरसमेतबिदाकीन्ह ते सब श्रीरामचन्द्रकर माधुर्यस्वरूप अरु दिव्य गुण बर्णत अपने आश्रम को जातभये ( २१ ) हे पार्वती यहिप्रकार ते श्रीजानकीजी सहित दोऊभाई सुर मुनिन के हेतु बिपिनविषे वासकरते हैं ( २२ ) जबते श्रीरामचन्द्र बन में आइकैरहे तबते वन मंगलदायकभयोहै ( २३ ) त्यहिबनविषे जेती जाति जातिके जे तरु तृण इत्यादि करहे ते सब यथा

**कहतसुनतघरआये २१ यहिबिधिसियसमेतदोउभाई बसहिबिपिनसुरमुनिसुखदाई २२ जबतेआइरहेरघुनायक तबतेभये बनमंगलदायक २३ फूलेफलेबिटपबिधिनाना कलितमंजुबरबेलिबिताना २४ सुरतरुसरिससुभायसोहाये मनहुबिबुधबनपरिहरिआये २५ गुंजतमंजुलमधुकरश्रेणी त्रिबिधिबयारिबहैसुखदेनी २६ दो०॥ नीलकंठकलकंठशुकचातकचक्रचकोर भांतिभांतिबोलतबिहगश्रवणसुखदचितचोर २७ चौ०॥ करिकेहरिकपिकोलकुरंगा बिगतबैरविचरहिंयकसंगा २८ फिरतअहेर**

उचित ऋतु अनऋतुत्यागिकै फूलेफले पाके अरु तरुनविषे बेली कलितकही सुन्दरि चढ़िरही हैं ( २४ ) तहां देवतनकर बनकही बाटिका जो है त्यहिविषे कल्पवृक्ष जे हैं तिनमानहु त्यहिबनको परिहरिकै श्रीचित्रकूट विषे आइकै निवासकीन्ह ताते सुरतरु ते सरिशकही श्रेष्ठ है काहेते सुरपुर में सुरतरु देवसम्बन्धी है अरु चित्रके तरु श्रीरामसम्बन्धी हैं ( २५ ) तिन तरु बेलिन अरु फूलनविषे मधुकरनकी श्रेणीकही पंक्ति गुंजारकरतीहैं जनु श्रीरामचन्द्र के गुणगानकरत रागरागिनी सुनावते हैं अरु अतिसुखदाई शीतलमन्द सुगन्ध बयारि बहती है ( २६ ) दोहार्थ॥ नीलकण्ठ दुइमयूर पारावत अरु कलकण्ठ कही कोकिला अरु शुक अरु चातृक अरु चक्रकही चकचकई अरु चकोरइत्यादिक विहंग श्रीरामचन्द्रके टिके ते मधुर बोलते हैं चित्तको चोराइलेते हैं जनु मधुरमधुर बाजा बजावते हैं मयूरनाचते हैं अरु मधुकर रागिनी गावते हैं ( २७ ) अरु करि जे हैं अरु केहरिजे हैं अरु कपि जे हैं अरु कुरंगमृगा जे हैं ते सम्पूर्ण वैरविहाइकै विचरते हैं श्रीरामप्रताप ते सबके हृदयकी विषमता मिटिगई ( २८ ) तहां जब श्रीरामचन्द्र अहेरको जाते हैं तब श्रीरामचन्द्रकै छबिदेखिकैसम्पूर्ण मृगादिक अति आनंद को प्राप्तिहोते हैं ( २९ ) बिबुधकही देवतनके बनइत्यादिक नाग दानव नर इत्यादिकन की जहांतक बाटिकाबनी हैं ते सब चित्रकूट के बनको सिहाती हैं ( ३० ) सुरसरी जो भागीरथी हैं अरु सरस्वती गंगाजो हैं अरु दिनकरकन्या कही यमुनाजी जो हैं अरु मेकल नामें पर्वत त्यहिकीसुता जो है नर्मदा अरु गोदावरी जो हैं येतेधन्यहैं किंतु कोई नदीधन्याहै ( ३१ ) जहांतक ब्रह्माण्डभरेके कोषमेंसरि नदी सर अरु समुद्रादिकहहिं ते सबचित्रकूटविषे मंदाकिनीकरबखान

**रामछविदेखी होहिंमुदितमुनिवृन्दबिशेखी २९ बिबुधबिपिनजहँलगिजगमाहीं देखिरामबनसकलसिहाहीं ३० सुरसरिसरसइदिनकरकन्या मेकलसुतागोदावरिधन्या ३१ सबसरसिंधुनदीनदनाना मन्दाकिनिकरकरहिंबखाना ३२ उदयअस्तगिरिवरकैलासू मंदरमेरुसकलसुरबासू ३३ शैलहिमाचलआदिकजेते चित्रकूटयशगावहिंतेते ३४ बिंध्यमुदितमनसुखनसमाई बिनुश्रमबिपुलबड़ाईपाई ३५ दो० ॥**

**चित्रकूटकेबिहगमृगबेलिबिटपतृणजाति पुण्यपुंजसबधन्यअसकहहिंदेवदिनराति ३६ चौ०॥ नयनवंतरघुबरहिबिलोकीपाइजन्मफलहोहिंबिशोकी ३७ परसिचरणरजअचरसुखारी भयेपरमपदकेअधिकारी ३८ सोबनशैलसुभावसुहावन मंगलमयअतिपावनपावन ३९ महिमाकहीकवनविधितासू सुखसागरजहंकीन्हनिवासू ४० पयपयोधितजि**

करतेहैं ( ३२ ) उदयाचलजोहै अरु अस्ताचल जो है अरु कैलासजो है मंदराचलजोहै अरु सुमेरुआदिक जहांतक देवतनकरबासहै ( ३३ ) हिमाचल आदिक जेशैल ब्रह्माण्ड बिषेहैं ते संपूर्ण चित्रकूटपर्बतके यशकोगावते हैं ( ३४ ) तहां श्रीचित्रकूटविषे बिंध्याचलपर्वत है त्यहिको परमानंदहैकाहेतेकि श्रीरामचन्द्रके टिकेते बिनाश्रमहि विपुल बड़ाईको प्राप्तिभयो है ( ३५ ) दोहार्थ॥ चित्रकूटके विहंग मृग अरु वेलि विटपतृणइत्यादि जातिजाति के चर अचर तिनको ब्रह्मादि देवताधन्यधन्यकरिकै रातिदिन सराहते हैं ( ३६ ) जेतेजीव नेत्रवन्त हैं तेसब रघुवीरकोरूप देखिकै यहिजगत् में अपने जन्मको फलमोक्ष त्यहिकोप्राप्तिहोते हैं ( ३७ ) अरु अचरजे हैं ते रघुबीरकेचरणकीरज स्वाभाविक कछु उड़िउड़िपरै है त्यहिको परसिकै परमपदके अधिकारी होतभये हैं ( ३८ ) हेगरुड़ सो सबबन शैलनदी स्वाभाविकैअतिशोभितहैं अरु मंगलमय अतिपवित्रहुतेपवित्रहैं ( ३९ ) त्यहि चित्रकूटके बन शैल अरु नदिनकी उपमानहीं कहीजाइ है काहेते सुखके सागर श्रीरामचन्द्र जहां निवास कीन्ह तहांकी शोभाको कहिसकै है ( ४० ) काहेते पय पयोधि तजिकै अरु अवध विहायकै ज्यहि चित्रकूटके बनमें श्रीरामचन्द्रछाइरहे हैं यहअर्थ सामान्य है काहेते क्षीरसाई भगवान् जगत् के उत्पन्न कारण हैं अरु श्रीरामचन्द्र कार्य्य कारण ते परे हैं ताते पयपयोधि करऐश्वर्य श्रीचित्रकूट विषे छाइरह्यो है अरु श्रीअयोध्या के ऐश्वर्य्य संयुक्त श्रीचित्रकूटबिषे श्रीरामचन्द्र श्रीजानकीजी श्रीलक्ष्मणजीछाइरहे हैं तहां की शोभा आनंदको कहिसकै है ( ४१ ) हे पार्वती जैसो सुख श्रीचित्रकूट के बनको भयो है सो सुख जो हजारनशेषहोहिं तौभीनहीं कहिसकैं ( ४२ ) श्रीगोसाईं तुलसीदासजी कहते हैं कि त्यहि चित्रकूट के वन की सुखमय

**अवधबिहाई जहँसियरामलषणरहेआई ४१ कहिनजाइसुखभाजसकानन जोशतसहसहोहिंसहसानन ४२ सोमैंबरणिसकोंबिधिकेहीं डाबरकमठकिमन्दरलेहीं ४३ सेवहिंलषणकरममनबानी जाइनशीलसनेहबखानी ४४ दो. ॥ क्षणक्षणलखिसियरामपदजानिआपुपरनेह करतनसपन्यहुलषणचितबंधुमातुपितुगेह ४५ चौ०॥ रामसङ्गसियरहतिसुखारी पुरपरिजनगृहसुरतिबिसारी ४६ क्षणक्षणपियबिधुबदननिहारी प्रमुदितमनहुंचकोरकुमारी ४७ नाहनेहनितबढ़तबिलोकी हर्षितरहैदिवसजिमिकोकी ४८ सियमनरामचरण**

शोभामैं कैसे कहिसकौं डबराकेकमठकहूं मंदराचललेत हैं जो कोईतर्ककरै कि डाबरकमठ मंदराचलनहीं लैसकैं तहांका नदिनकेकमठ मंदराचल लैसकै हैं तहां यह कुतर्क है जे सत्कवि हैं ते ऐसी उपमादेत चले आये हैं ( ४३ ) श्रीलक्ष्मणजी श्रीरघुनाथजीकी अतिप्रीति मनबचन कर्म्मते अरु शीलस्नेह ते सेवकाई करते हैं सो प्रीति बखानबेयोग्यनहीं है ( ४४ ) दोहार्थ तहां श्रीलक्ष्मणजी श्रीसीतारामचन्द्रके चरणारविन्द क्षणक्षण निरखते हैं अरु अपने ऊपर श्रीसीतारामचन्द्रकर अतिस्नेह जानि कै मातुपितु बंधु इत्यादिकन विषे श्रीलक्ष्मणजीकर चित स्वपन्यहु नहीं जात है ( ४५ ) अरु श्रीरामचन्द्रके संग श्रीजानकीजी बहुत प्रसन्न रहती हैं अरु पुरजन परिजन इत्यादिकनकी सुधिभूलिगई है ( ४६ ) क्षणक्षण श्रीरामचन्द्रकर चन्द्रवदन निहारिनिहारि आनन्दरहतीहैं जैसे पूर्णचन्द्रको देखिकै चकोरकुमारी रहतिहै ( ४७ ) अरु श्रीरामचन्द्रकरस्नेह अपनाविषे नित्य बढ़त देखिकै प्रमुदितरहती है जैसे दिवसमें कोकीकही चकई ( ४८ ) श्रीजानकीजीकरमन श्रीरामचन्द्र विषे अनुरागित है ताते हजारन अयोध्याके समान बन प्रियलागत है ( ४९ ) अरु प्रियप्रीतम जोहैं श्रीरामचन्द्र तिनके संग पर्णकुटी हजारन मणिनके महल तेसरस प्रियलागति है अरु प्रियपरिवार हजारनते कुरंगविहंग प्रियलागते हैं ( ५० ) अरुमातुपितुसासुससुर

तिनतेअधिकप्रियमुनितिय अरुमुनिबरहैं अरुअशनकही भोजन अमृतहुते अधिकप्रिय कंदमूलफलहै ( ५१ ) अरु श्रीरामचन्द्रकेसाथ कुशकिशलयकै साथरीसो मैनकीशय्याते अधिक प्रियलागतिहै ( ५२ ) हेपार्वती देखियेतौ जिनजानकीजीके कृपाकटाक्षतेआठौ दिक्पालहोते हैं वरुणवायुकुबेर महादेव इन्द्र अग्नि धर्म्मराज निऋति इत्यादिकहोते हैं तिन श्रीजानकी जीको विषय विलास कैसे मोहिसकैगो ( ५३ ) दोहार्थ देखिये तौ जिन श्रीरामचन्द्र को नाम सुमिरतसंते जनजेहैं दासते किंतु जन जे

अनुरागा अवधसहससमबनप्रियलागा ४९ पर्णकुटीप्रियप्रीतमसंगा प्रियपरिवारकुरंगविहंगा ५० सासुससुरसममुनितिय मुनिवर अशनअमियसमकंदमूलफर ५१ नाथसाथसाथरीसुहाई मैनसेजसमअतिसुखदाई ५२ लोकपहोहिंबिलोकतजासू त्यहिकिमिमोहैविषैविलासू ५३ दो० ॥ सुमिरतरामहिंतजहिंतजहिंजनतृणसमबिषयविलासु रामप्रियाजगजननिसियकछुनआचरजतासु ५४ चौ० ॥ सीयलषणज्यहिबिधि-सुखपावहिं सोइरघुनाथउपायबनावहिं १ कहैंपुरातनिकथाकहानी सुनहिंलषणसियअतिसुख

हैं सर्ब प्राणी ते त्रिभुवन की विषयके बिलास को तृणके समान त्यागिदेते हैं तिन श्रीरामचन्द्रकी प्रिया श्रीजानकीजी तिनको बिषय बिलासकैसे मोहिसकै है ( ५४ ) इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसने श्रीअयोध्याकाण्डे सेवकसेव्यभाव चित्रकूट यथार्थफलवर्णनन्नामएकविंशतितिस्तरंगः॥२१॥ :: ::

दोहा ॥ बाइस सुभग तरंग में जनमन जोगवहिंराम रामचरणपुनि स्वइकरहिं प्रीतिबढ़ैनिष्काम २२ एकविंशति तरंग विषेसेवक कैकैङ्कर्य की स्वामी विषे दृढ़ताई करना पुनि बाइसतरंग विषे स्वामीकै कृपा सेवक विषे अरुसेवककर भावअरु प्रीतिकीपरीक्षा अपने विषे दृढ़करना हे पार्वती श्रीजानकी अरु श्रीलक्ष्मणजी ज्यहिप्रकार सुखपावहिं श्रीरघुनाथजी सोईउपाय बनावते हैं ( १ ) अरुवेद पुराणइतिहास कहानी कही कहतूतिकहते हैं तहां श्रीजानकी अरु श्रीलक्ष्मणजी अतिप्रीति ते सुखमानिकै श्रवणकरतेहैं ( २ ) पुनि श्रीजानकीजी लक्ष्मणके प्रेमकीपरीक्षा अरु अपनाविषे दृढ़भक्ति कराइबेहेतु प्राकृतइव विरहकरतेहैं हेगरुड़ जबजब श्रीरामचन्द्र श्रीअयोध्याकी सुधिकरते हैं तब २ दोऊ नेत्रनमें जलभरि आवते हैं ( ३ ) पुनि माता पिता परिजन भाईकी सुधिकरते हैं अरु भरतकेशीलस्नेह अरु सेवकाई की सुधिकरते हैं ( ४ ) यहसुधि करतसंते विरह संयुक्त कृपासिन्धुजो श्रीरामचन्द्रते दुखितहोते हैं इहांकेवल जनपरकृपाकैअधिकताहै तहांकुसमय बिचारिकै धीरजधरतेहैं ( ५ ) तब श्रीजानकीजी श्रीलक्ष्मणजी श्रीरघुनाथजीकै बिरहदशादेखिकै बिकलह्वैजाते हैं तहां सेवककोभाव स्वामीविषे ऐसीरीतिहै कैसे जैसे पुरुषकेशरीरानुसारपरछाहींरहती है ( ६ ) तहां प्रियाबंधुकी गतिलखिकै श्रीरघुनन्दन अपने दुखतेदुखितदेखिकै अपने दुखकी कैतिसे दूरिकीन्ह जाते प्रिया अनुज सुखी

मानी २ जबजबरामअवधसुधिकरहीं तबतबवारिबिलोचनभरहीं ३ सुमिरिमातुपितुपरिजनभाई भरतसनेहशीलसेवकाई ४ कृपासिन्धुप्रभुहोहिंदुखारी धीरजधरहिंकुसमयबिचारी ५ लखिसियलषणबिकलहोइजाहीं जिमिपुरुषहिंअनुहरपरछाहीं ६ प्रियाबंधुगतिलखिरघुनंदन धीरकृपालुभक्तउरचंदन ७ लगेकहनकछुकथापुनीता सुनिसुखलहैंलषणअरुसीता ८ दो०॥ रामलषण

होहिं काहेते श्रीरघुनाथजीधीर हैं कृपालु हैं अरु भक्तनके उरके चन्दनहैं तीनिउतापके शीतलकर्ता हैं तीनिउताप कौनहैं अधिभूत अध्यात्म अधिदैवत तामें दुइदुइभेदहैं एकस्थूल एकसूक्ष्म अधिभूत कही जौनसर्बजीवन करिकै क्लेशहोतहै राजा सर्प चौर बाघ इत्यादिकन करिकै जो दुखहोइ सो स्थूल है अरु जो मन बचन कर्म करिकै अपनाते कोई जीवनविषे विषमता आवै सोसूक्ष्महै पुनि अध्यात्मकही शरीमें ज्वर बरतोर इत्यादिक रोगहोतहैं सो स्थूलकही जो अपने मन बचन कर्मविषे कोई जीवको शोच उत्पन्नकरै सो

सूक्ष्महै पुनि अधिदैवत कही जो देव करिकै उपाधिहोइ अनबर्षा अतिबर्षा शीत उष्णपाला पत्थर इत्यादिकन करिकै क्लेशहोइ सोस्थूलहै अरु जो इंद्रीकेदेवतनकरिकै उपाधिहोइहै सो सूक्ष्म है ऐसीतनहूंतापको अपने कृपारूपचन्दनते मिटाइदेते हैं शीतलकरिदेते हैं ऐसे कृपालु श्रीरामचन्द्र हैं ( ७ ) तब श्रीरामचन्द्र श्रीजानकी श्रीलक्ष्मणते पुरातनिकथा कहनेलगे जाते श्रीजानकी जी श्रीलक्ष्मणजी सुखको प्राप्तहोहिं ( ८ ) दोहार्थ ॥ हेभरद्वाज श्रीरामचन्द्र श्रीजानकीजी श्रीलक्ष्मणजी पर्णनिकेतमें कैसे सुखपूर्बक विराजे हैं तैसे इंद्रअमरपुरविषे शची अरु जयंतसमेत ऐश्वर्य संयुक्त शोभित हैं ( ९ ) श्रीजानकीजी अरु श्रीलक्ष्मणजीके मन श्रीरघुनाथजी कैसे जोगवतेहैं जैसे दूनौं नेत्रनके पलकगोलक नेत्रनको जोगवते हैं यहि चौपाई में सेवक परस्वामीकी अति कृपा देखावते हैं अरु श्रीरामचंद्र अपने निजदासनको जोगवैं हैं ( १० ) अरु श्रीरामचन्द्र की सेवकाई श्रीजानकी जी श्री लक्ष्मणजी कैसी करते हैं जैसे अविवेकी पुरुष अतिप्रीतिसे अपने शरीरको पालनकरते हैं मातु पितु सुतकलत्र कुटुम्ब इत्यादिक चाहै मरैं चाहैजीवहिं अरु सर्व जीवनते निर्दयरहते हैं केवल अपनो शरीर पालनकरते हैं इहां केवल प्रीतिको दृष्टांतहै इहां परस्पर सेवककी आत्मा स्वामीहै स्वामीकी आत्मा सवेकहै सेवकस्वामी का परस्पर भावदेखावाहै ( ११ ) यही प्रकारते श्रीरामचन्द्र श्रीजानकी श्रीलक्ष्मण श्रीचित्रकूटके

**सीतासहितराजतपर्णनिकेत जिमिबासवबसिअमरपुरशचीजयन्तसमेत ९ चौ० ॥ जोगवहिंप्रभुसियलषणहिंकैसे पलकविलोचनगोलकजैसे १० सेवहिं लषणसीयरघुवीरहिं जिमिअबिवेकीपुरुषशरीरहिं ११ यहिविधिप्रभुबनरहहिंसुखारी खगमृगसुरतापसहितकारी १२॥ * चौ० ॥ कह्यउरामबनगवनसोहावा सुनहुसुमंतअवधजिमिआवा १ फिर्‌यउ निषादप्रभुहिपहुंचाई सचिवसहितरथदेख्यउआई**

बनमें अतिआनन्दते बिराजतभये जलथल तृणतरु खगमृग सुरमुनितपसिनके हितहेतु श्रीचित्रकूट के बनमें टिकतभये हैं ऐसे श्रीरामचन्द्र करुणानिधानहैं ( १२ ) छप्पै चित्रकूटप्रभुटिकेसर्वजीवनसुखदाई। योगविरतिविज्ञानज्ञानपरभक्तिदृढ़ाई॥ अंधनारिनिरसर्बजीवहितबिरहहेतुप्रभु। चित्रकूटबनगवनटिकेनहिंप्रेमघटैप्रभु॥ कहिविषयरामसम्बंधदुइपूर्वार्द्धेपूरणकरे पुनिरामचरणउतरार्द्धमें अधिकारीप्रोजनभरे ( १३ ) दोहा॥ पूर्वअयोध्याकाण्डमेंबाइसबिमलतरंग रामचरणउतरार्द्धमेंविरहीभक्तिउमंग१४ इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने श्रीअयोध्याकाण्डेकेवलसेवकसेव्यभाव श्रीअवधबासीमगवासीसर्बजीवनकोविरहउत्पन्नहेतु श्रीरामबनवासपूर्वार्द्धसमाप्तबर्णनंनामद्विविंशतिस्तरंगः२२॥

दोहा॥ रामचरणउतरार्द्धमें प्रथमतरंगसुभाइ अवधलौटिमंत्रीचल्योबिरहबरणिनहिंजाइ २३॥ हेपार्बती हेगरुड़ हेभरद्वाज श्रीरामचन्द्रकरबनगवन अतिसुन्दर बिचित्र सो मैं पूर्वार्द्धविषे वर्णनकीन अब उत्तरार्द्धविषेज्यहिप्रकारते सुमन्त श्रीअयोध्याको आयो है सो सुनहु ( १ ) जब श्रीरामचन्द्रको यमुनापार उतारिकै आज्ञापाइकै निषाद श्रृंगबेरपुरमें फिरिआयो तब सुमन्तको रथसमेत आइ तिसरेदिन देख्यो ( २ ) तहां निषादने मंत्रीको बहुतविकल देख्यउ तब निषादको कोटिन बिषादभयो ( ३ ) मंत्रीकी कैसी दशा अरु बिकलता है हाइ राम हाइ राम हाइ जानकी हाइ लक्ष्मण यही धुनि लगी है अरु पृथ्वीमें अतिबिकल होइकै पर्‌यो है ( ४ ) अरु दक्षिण दिशा हेरिहेरि घोड़े अतिबिकल हिहिनाते हैं जैसे बिनापंख कर बिहंग अकुलातहै ( ५ ) दोहार्थ॥ घोड़े नतौ तृणचरते हैं नतौ जलपीवतेहैं नेत्रनमें जल चलेजाते हैं ऐसीदशा बाजिनकीदेखिकै निषादपति

**मंत्रीबिकलबिलोकिनिषादू कहिनजाइजसभयउबिषादू ३ रामरामसियलषणपुकारी पर्‌यउभूमितलब्याकुलभारी ४ देखिदक्षिणदिशिहयहिहिनाहीं जिमिबिनुपंखबिहगअकुलाहीं ५ दो०॥ नहिँतृणचरहिँनपिअहिँजललोचनमोचतवारि ब्याकुलभयउनिषादपतिरघुवरबाजिनिहारि ६ चौ० ॥ धरिधीरजतबकहतनिषादा अबसुमंतपरिहरहुबिषादा ७ तुमपण्डितपरमारथज्ञाता धरहुधीरलखिबामबिधाता ८ बिबिधिकथाकहिकहिमृदुबानी**

रथबैठार्‌यउवरवशआनी ९ शोकशिथिलरथजाइनहाँकी रघुबरबिरहपीरअतिबाँकी १० तरफराहिंमगचलहिंनघोरे बनमृगमनहुँआनिरथजोरे ११ अटकिपरहिँहयहेरहिंपीछे रामबियोगबिकलदुखतीछे १२ जोकहरामलषणबैदेही हिकरिहिकरिहयहेरहिंतेही १३ बाजिबिरहगतिकिमि-कहिजातीबिनुमणिफणिकबिकल

बिकल होतभयो है ( ६ ) तब धीरजधरिकै निषाद बोलतभयो हेसुमन्त अब बिषादको त्यागिदेहु ( ७ ) काहेते तुम पण्डितहौ अरु परमार्थ बिषे ज्ञानीहौ श्रीरामचन्द्र सर्वजीवनके कल्याणहेतु बनगवन कीनहै अरु जोतुमसे बिक्षेप भयो तौ बिधाताकी बामताकरिकै ( ८ ) हे पार्वती बिबिधि कथा निषाद मृदुबाणी ते कहिकहि रथपर बरबश चढ़ावतभयो है ( ९ ) तहां सुमन्त शोकते अतिबिकलहै रथ नहीं हांकोजाइहै काहेते श्रीरामचन्द्र के बिरहकी पीर बांकीकही तीक्ष्ण ब्यापिरही है ताते मंत्री अतिबिकल है ( १० ) रथके घोड़े तड़फड़ाते हैं मगविषे नहीं चलिसकतेहैं मानो बन के मृगा आनिकै रथमें जोरे हैं ( ११ ) राह में चलत सन्तेअटकिपरते हैं पीछे हेरिहेरि हींसते हैं श्रीरामचन्द्र के वियोग ते तीक्ष्ण पीर ह्वैरही है ( १२ ) जो कोई श्रीरामचन्द्र जानकी लक्ष्मणको नामलेतहै त्यहिकी दिशि हिकरि हिकरि हेरते हैं ( १३ ) बाजिनकीविरह कछु कही नहीं जाती है जैसे विनापंखकर विहंग विकलह्वैजाइहै ( १४ ) दोहार्थ॥ मंत्री अरु घोड़न कीदशादेखिकै निषाद बिकलह्वै जातभयोपुनिधीरज धरिकै चारिसुष्टसेवक बोलाइकै रथकेसारथी करिदेतभयो अरु यहकहतभयोकिसुमन्तको अयोध्यापहुंचाइ आवहु ( १५ ) गुहनिषादनकरराजा जो है वह सारथिनको पहुंचाइकै फिरतभयो त्यहिकरविषाद बर्णिबेयोग्यनहींहै ( १६ ) तबनिषाद सुमन्तको लैकै श्रीअयोध्या को चलतभयो मगमें क्षण क्षण विषादकरत चलेजाते हैं ( १७ ) अरु सुमन्त शोचते बिकलह्वैरहे हैं मनमें यह ग्लानिकरते हैं कि श्रीरघुवीर विना यहजीवन धिक् है ( १८ )

ज्यहिभांती १४ दो०॥ भयउनिषादविषादवशदेखतसचिवतुरंग बोलिसुसेवकचारितबदियेसारथीसंग १५ चौ० ॥ गुहसारथी फिर्‌यउपहुंचाई बिरहबिषादबरणिनहिंजाइ १६ चल्यउरथहिँलैसङ्गनिषादू होतक्षणहिंक्षणमगनबिषादू १७ शोचसुमंतबिकलदुखदीना धिगजीवनरघुबीरबिहीना १८ रहहिनअंतहुअधमशरीरा यशनलह्यउबिछुरतरघुबीरा १९ भयउअयशभाजनयहप्राना कवानहेतुनहिंकरतपयाना २० अहहमंदमनअवसरचूका अजहुनहृदयहोतदुइटूका २१ मींजिहाथशिरधुनिपछिताई मनहुँकृपिणधनराशिगवाँई २२ बिरदबाँधिबरबीरकहाई चल्यउशूरजिमिसमरपराई २३ दो०॥ बिप्रबिबेकीबेदबिदसम्मतसाधुसुजाति

यह शरीर जो अधम सो अंतहुबिषे नरहैगो निदान छूटिजायगो पर श्रीरामचन्द्रके विछुरत सन्ते जो शरीरछूटिजातोतौ यहिजगत्‌में विमलयश को प्राप्तिहोत्यउं सो न भयउ ( १९ ) अब यहप्राण अयशको भाजन होतभयो ताते मेरेप्राण कौनेहेतु करिकै नहीं पयान करते हैं यहिते अधिक औरि कौनिपीर होयगी ( २० ) अहहकही अति क्लेशको हे मंदमनतैं अवसरचूकि गयो है काहेते इन्द्री अरु प्राण ये सबतोरे आधीन हैं जाते श्री रामचन्द्रकेविछुरतसंते यहिप्राण शरीरको छोड़ि न दियो तातेत्वहिं अरु म्वहिको धिक्है जो अजहूंहृदयदुइ टूकह्वैजाय तौ भलाहै सो अबहूंनाहिं हृदयदुइटूक होइहै ( २१ ) हे पार्वती सुमंत हाथमींजत है शिर कँपावतहाथनते शिरधुनत है अरु अति पछितात है जैसे कोई परमकृपिण है अरु उसके धन बहुत है अरु कोई योगते उसकाधन जातरहा जैसेवहकलपै है तैसे सुमंतकी दशाभई है ( २२ ) पुनि जैसे विरदकही बानाबांधिकै बर वीरकहावत है पर साँचाशूरहै अरु सन्मुख संग्राम पाइकै कोईकालसकर्म्मके बश समरते भागिजाइ जैसे वाको पश्चात्तापहोतहै तैसेसुमंत को होतभयो ( २३ ) दोहार्थ ॥ पुनि जैसे कोई ब्राह्मण सुष्टजाति है अरु वेदवेत्ता है अरु अच्छीतरहते विवेकी है अरु साधुहै नेकहू धोखेते मदिरा पान करिगयो जैसे वह पछितातहै कि वरु मरणभला है

जीवननहींभला है तैसे सुमन्तकी दशाभई ( २४ ) पुनि जैसे कुलीनस्त्री है अरु बड़ी प्रवीण है अरु साधु है अरु मनक्रम बचनते पतिब्रतधर्ममें आरूढ़है ( २५ ) पछिली चौपाईकै अन्वय यहि चौपाई में है सो ऐसी जो तिय है वहिकाकालकर्म के बशह्वैकैमन निजपतिको छांड़िकै परपतिबिषे गयोजैसे वाको पश्चात्ताप है तैसे श्रीरामके विक्षेपको दारुणदुख सुमंतको होतभयो ( २६ ) नेत्रनते जलबहतचला जातहै अरु दृष्टिमंदह्वैगई है श्रवणबधिर ह्वैगये हैं अरु बाक् बन्दह्वैगई है अति बिकल ह्वैगयो है कछु

जिमिधोखेमदपानकरिसचिवशोचयहिभांति २४ चौ०॥ जिमिकुलीनतियसाधुसयानी पतिदेवताकरममनबानी २५ रहैकर्मबशपरि हरिनाहूसचिवहृदयजिमिदारुणदाहू २६ लोचनसजलदृष्टिभइथोरी सुनैनश्रवणबिकलमतिभोरी २७ सूखेअधरलागिमुंहलाटी जियनजाइउरअवधिकपाटी २८ विवरणभयउनजाइनिहारी मारेसिमनहुंपितामहतारी २९ हानिगलानिबिकलमतिब्यापी यमपुरपंथशोचजनुपापी ३० वचननआवहृदयपछिताई अवधकाहकहिहौंमैंजाई ३१ रामरहितरथदेखिहिजोईसकुचिहिमोहिं

कहिनहीं जाइहै ( २७ ) अरु अधरसूखिगये हैं मुखमेंलाटी लगिगईहैजीवशरीरते नहींनिकसैहै काहेते श्रीरामचन्द्रके बनगवन के चौदहबर्ष की अवधि सोईउरमें कपाट हैं ताते जीवनहीं निकसिसकतहै श्रीरघुनाथजीके आइवेकी आशकरिकै जीव शरीरको नहीं त्यागै है ( २८ ) सुमंत को शरीर बिबर्ण ह्वैगयोहै देखानहीं जायहै जैसे कोई माता अरु पिताकोबध करै है त्यहि पापते महाचांडाल ह्वैगयो तैसे सुमंतकै चेष्टा होति भई है ( २९ ) हानि ग्लानिकरिकै मति बिकलहै ताते व्याकुल होइरह्यो है हानिकही श्रीरामचन्द्रके बनगवन अरु ग्लानिकही कि हममंत्री हैं हमते कछुनहीं बन्यौ है सुमंतको कैसे शोचभयो है जैसे यमपुरकी राहमेंयमदूतनके धरेते पापीप्राणी शोचकरत चलेजाते हैं ( ३० ) सुमंतते बोलिनहीं आवै है अरु अति पश्चात्ताप करत है यह मन में कहत है कि हे विधाता मैं श्रीअयोध्याबिषे काकहिहौंजाइ ( ३१ ) जब श्रीरामचन्द्रकरिकै रहित रथको लोग देखहिंगे तब मोको देखिकै सबसकुचाइकै मेरो मुखनदेखिहिंगे ( ३२ ) दोहार्थ ॥ अरु जब अवध के लोग धाइधाइ मोते पुंछिहैं आइ तब मैं छाती बज्रसमान करिकै सबको उत्तर देउंगो कि श्रीरामचन्द्र जानकी लक्ष्मण बनकोगये विधातैं मोको ऐसे पात्र कियो है ( ३३ ) अरु अतिशयदीनदुखी मातापुंछिहैं आइ तब हे विधाता तिनसे मैं काकहब ( ३४ ) अरु जब सुमित्रा पुंछिहैं तब कौने सुखकी बातको संदेश कहब ( ३५ ) अरु रामचन्द्र की माता जब धाइकै आवहिंगी जैसे बछराको देखिकै धेनुकही गऊधावै है ( ३६ ) तिनसबके पूंछत संते मैं उत्तरदेहौं कि श्रीरामचन्द्रजानकीअरु लक्ष्मण बनकोगये यह कहतसंते मोरिछाती न फाटिजाइहि ताते धिक्धिक् तरहौं ( ३७ )

बिलोकतसोई ३२ दो०॥ धाइपूंछिहैंमोहिंजब बिकलसकलनरनारि उतरुदेबमैंसबहिंतब हृदयबज्रबैठारि ३३ चौ०॥ पुंछिहैं दीनदुखितसबमाता कहबकाहमैंतिनहिबिधाता ३४ पूंछिहिजबहिंलषणमहतारी कहिहौंवनसंदेशसुखारी ३५ रामजननि जबआइहिधाई सुमिरिबच्छजिमिधेनुलवाई ३६ पूंछतउतरदेबमैंतेही गयेबनरामलषणबैदेही ३७ जोपूंछिहिंत्यहिउत्तरदेवा जाइअवधअबयहसुखलेवा ३८ पुंछिहहिंजबहिंराउदुखदीना जिवनजासुरघुवरआधीना ३९ देइहौंउतरकवनमुंहलाई आयउँकुशलकुंवरपहुंचाई ४० सुनतलषणसियरामसँदेशू तृणसमतनपरिहरिहिनरेशू ४१ दो०॥ हृदयनबिदर्‌यउपंकजिमिबिछुरतप्रीतमनीर जानतहौंविधिदीनम्वहिंयमयातनाशरीर ४२॥ * * *

ऐसेउत्तर मैं सबकोदेब अरु श्रीअयोध्यामेंजाइकै यहसुखलेब नाम यहिअयशको प्राप्तिहोब ( ३८ ) अरुराजाजो हैं अतिदुख करिकै दीन जिनकर जीवन श्रीरघुनाथके आधीन है ( ३९ ) तिनराजा को मैं कौन मुंहलाइकै उत्तरदेब कि कुंवरन को कुशलते बनको पहुंचाइ आयउं है ( ४० ) तब यतनो बचनसुनतसंते राजा तृणइव शरीर को त्यागिदेहिंगे

( ४१ ) दोहार्थ ॥ हाइविधाता मोरहृदय पंकइव बिदरि न गयो प्रीतम जो नीरश्रीरघुनाथजीहैं तिनके बिछुरतसंते ताते अब मैं यह जानतहौं कि विधाता मोको यमयातनाको शरीरदीनहै तहां लिंग शरीरते यमयातना होती है जैसे स्वप्न में अनेक दुःखहोतहैं पर शरीर नहीं मरैहै अरु अनेक दुख प्रत्यक्षहोते हैं जैसे सुनारको यंत्र होत है तामें नर्मधातुकरिकै तारखैंचत हैं तैसे लिंग शरीर होइजातहै ताही शरीको सूजीके नाकामें खैंचते हैं अरु कृमिनतेकटावतेहैं ऐसीहीअनेकयातना यमदूत करते हैं सोई शरीर विधातैंमोको दीन है ( ४२ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने श्रीअयोध्याकाण्डेउत्तरार्द्धेसुमंतनीचानुसंधानविरहभिक्तिवर्णनंनामप्रथमस्तरङ्गः १॥ ::

दोहा ॥ दुखसुमन्तपुरजनबिरहजननीपशुनसमेत। भूपतिस्वर्गतरंगदुइरामचरणचितचेत २॥ हे पार्वती यहिप्रकार पश्चात्तापकरत पुरबिषे आवतहै तमसाकेतीर रथप्राप्तभयोहै ( १ ) तब चारिउ जो निषादरहैं तिनको बिनयकरिकै बिदाकरतभये ते पांयपकरिकै अतिबिकल बिदाभये हैं ( २ ) तहां सुमन्त नगरमें पैठत अतिसकुचातहै जनु गुरु ब्राह्मण अरु गऊको बधकियो है ( ३ ) तहां काहू बिटपतर बैठिकै दिन बितावत भयो जब

चौ० ॥ यहिविधिपंथकरतपछितावा तमसातीरतुरतरथआवा १ बिदाकीन्हकरिबिनयनिषादू फिरयउपाँयपरिबिकलविषादू २ पैठतनगरसचिवसकुचाई जनुमारेसिगुरुब्राह्मणगाई ३ बैठिबिटपतरदिवसगँवावा सांझसमयतबअवसरपावा ४ अवधप्रबेशकीन्हअँधियारे पैठभवनरथराखिदुवारे ५ जिनजिनसमाचारसुनिपाये भूपद्वाररथदेखनआये ६ रथपहिचानिविकलरथघोरे गरहिंगातहिमआतपरोरे ७ नगरनारिनरब्याकुलकैसे निघटतनीरमीनगणजैसे ८ दो० ॥ सचिवआगमसुनतसबबिकलसकलरनिवास भवनभयंकरलागत्यहिमानहुंप्रेतनिवास ९ चौ०॥ अतिआरतपूंछैंसबरानी उतरनआवबिकलभईबानी १० सुनैनश्रवणनयननहिं * * * * *

संध्यासमय अवसर पावतभयो ( ४ ) तब कृष्णपक्षकी दुइदण्ड रात्रीबीतेश्रीअवधको प्रवेशकीन्ह तहां राजद्वारपर रथछोड़िकै अपनेभवनमें प्रवेश कियो ( ५ ) जिनजिन सुना कि सुमन्त रथलै आये ते सब भूपके द्वारपररथदेखिबेको धाइआये हैं ( ६ ) रथको पहिचानतभये पुनि घोड़नकी बिकलता देखिकै अरु रथ श्रीरामचन्द्रबिना देखिकै सबलोगनके गात गरेजाते हैं जैसे घामते ओरा गलेचलेजाते हैं ( ७ ) नगरके नरनारि कैसे अति व्याकुलहैं जैसे नीर घटिकै अल्प रह्यो अरु मीनगण बिकलहोतेहैं ( ८ ) दोहार्थ ॥ सचिवकर आगमन श्रीरामचन्द्रबिना रनिवाससब सुनतभईंतब तिनको भवनभयंकर लागतहै मानहुप्रेतनको निवास है ( ९ ) तबमाता धाइकै सचिवके समीपआइकै अतिआरतते पूंछती हैं तब सुमन्त को उत्तरनहींआयो बाणी बिकलह्वैगई है ( १० ) सुमन्त न तौ श्रवणतेसुनैहै नतौ नेत्रनते सूझत है अतिबिकल ते जेहीतेही ते बूझतहै कि राजा कहांहै राजाकहांहै ( ११ ) तब दासी सचिवकैबिकलाईदेखिकै सुमन्तको श्रीकौशल्याके गृहमें ल्यवायजातभई ( १२ ) तब सुमन्तजाइकै राजाको हाल देखतभये कैसेहैं राजा जैसे अमी रहित दिवसमें चन्द्रमा तेजहतहै ( १३ ) कैसे राजा हैं आसन शयन अरु विभूषण ते हीन ह्वैरहेहैं राजा भूमितल विषे निपटमलीन ह्वैकै परे हैं ( १४ ) भूपति कैसे बिकलपरेहैं जैसे राजाययाति स्वर्गते गिरिपरे हैं राजा ययातिने एकसैएक अश्वमेध यज्ञकियो साक्षात् यहीतनते इन्द्रपदवीको चल्यो तब इन्द्र बृहस्पतिते पूंछत भयो किहमका करैंगे तब बृहस्पति कहा कि तुम ब्राह्मणको रूपह्वैकै राजासे पूंछ्यहु कि तुम ऐसो कौन महत्पुण्यकीन्ह जाते यहीतन ते इन्द्रपदवीको प्राप्तिभये तब राजा आपनपुण्य अपने मुखते बर्णनकरैलागिहि तब पुण्यको क्षीण ह्वैजाइहि तब राजा पृथ्वीबिषे पतितह्वै जाइहि तब इन्द्रब्राह्मणको रूपधरिकै आगेजाइकै राजाते पूंछतभयो कि तुमधन्यहौ कौन

सूझा कहौकहांनृपज्यहिंत्यहिंबूझा ११ दासिनदीखसचिवबिकलाई कौशल्यागृहगयेल्यवाई १२ जाइसुमंतदीखकसराजा अमियरहितजिमिचन्द्रबिराजा १३ आसनशयनविभूषणहीना परयउभूमितलनिपटमलीना १४ भूपतिविकलपरायहिभांती सुर पुरतेजनुखस्यउययाती

**१५ लेतशोचभरिक्षणक्षणछाती जनुजरिपंखपरयउसम्पाती १६ कोकहिसकैभूपविकलाई रघुवरबिरह अधिकअधिकाई १७ रामरामकहिरामसनेही पुनिकहैरामलषणवैदेही १८ दो० ॥ देखिसचिवजयजीवकहि कीन्ह्यउदण्डप्रणाम**

पुण्यकीन जाते यहीतन ते इन्द्रपदवी को प्राप्तहोतहौ तब राजा अपनोपुण्य सबवर्णन करिगये तब बर्णन करतसन्ते पुण्यक्षीण ह्वैगई स्वर्ग ते विमानसहित गिरिगयो प्रमाणचौपाई॥ छीजहिंनिशिचरदिनअरुराती निजमुखकहेधर्मज्यहिभांती॥ ( १५ ) राजादशरथ महाराज छातीभरि भरि उमँगिउमँगि शोचकरते हैं कैसे जैसे सम्पातीनामें गीधको पर जरिगयो पृथ्वीबिषे बिकल गिरतभयो तैसे राजा बिकल हैं तहां इतिहास है सम्पाती और जटायू दोऊभाईरहे ते अपने बलके अभिमान ते सूर्यके समीप दोऊजातभये तहांजटायू सूर्यके समीपते फिरिआयो अरु सम्पाती अभिमानकरिकै सूर्य के समीप प्राप्तभयो सूर्यके तेजते दोऊ पंखजरिगयेपृथ्वीविषे बिकलह्वइकै गिरिपरयउ तैसे श्रीरामचन्द्रकी विरहाग्नि करिकै राजा की दशाभई है ( १६ ) हेपार्वती भूपकै बिकलता काहूके कहिबेयोग्यनहीं है काहेते रघुवरके विरहकी अग्नि अतिअधिक व्याप्तभई है ( १७ ) राजा यह कहतसन्ते बिकल हैं हेराम हेराम सनेही कहां जानकीकहां लक्ष्मण कहां रामचन्द्र हैं ( १८ ) दोहार्थ॥ ऐसी रामाकारदशा विरहमय राजाकी देखिकै सचिव जय जीव कहिकै जयजीवकही आशीर्वादसर्वजीवनके जयकर्ता असकहिकै दण्डप्रणाम कीन्ह तब सुमंतकै बाणी सुनिकै राजाब्याकुल उठतभये हेसुमंत रामकहां रामकहां ( १९ ) तबअति व्याकुलता ते सुमंतको भूप उरमें लगाइलीन्ह जैसे कोई जल में बूड़तसन्ते कछु अधार को प्राप्तिहोइ ( २० ) तब स्नेह सहित निकटबैठारिकै राजा नेत्रन में जलभरिकै पूंछते हैं ( २१ ) हेसखासनेही श्रीरामचन्द्रकी कुशलकहु श्रीराम जानकी लक्ष्मण कहां हैं ( २२ ) हेसखेफेरिआन्यहुकि बनकोपठायहु यह अतिआरत प्रपन्नबाणीसुनिकै सुमन्त

**सुनतउठ्यउब्याकुलनृपति कहुसुमन्तकहँराम १९ चौ०॥ भूपसुमन्तलीन्हउरलाई बूड़तकछुअधारजनुपाई २० सहितसनेहनिकटबैठारी पूंछतराउनयनभरिबारी २१ रामकुशलकहुसखासनेही कहँरघुबीरलषणबैदेही २२ आन्यहुफेरिकिबनहिँसिधाये सुनतसुमंतनयनजलछाये २३ शोकबिकलपुनिपूंछनरेशू कहुसियरामलषणसंदेशू २४ रामरूपगुणशीलसुभाऊ सुमिरिसुमिरिउरशोचतराऊ २५ राजसुनाइदीन्हबनबासू सुनिमनभयउनहर्षहरासू २६ सोसुतबिछुरतगयउनप्राना कोपापीबड़मोहिंसमाना २७ दो० ॥ सखारामसियलषणजहँ तहांमोहिंपहुँचाउ नाहिँतोचाहतचलनअबप्राणकहौंसतिभाउ २८ चौ० ॥ पुनिपुनिमंत्रिहिंपूंछतराऊ प्रीतमसुवनसँदेशसुनाऊ २९ करहुसखासोइबेगिउपाऊ रामलषणसियनयनदेखाऊ ३० सचिवधीरधरिकहमृदु**

के नेत्रनमें जलभरिआयो है ( २३ ) पुनि राजा शोकतेविकल पूंछते हैं हेसुमंत सिय रामलषण करसंदेश कहसिकसनहीं ( २४ ) श्रीरामचन्द्र कर रूपगुण अरु शीलस्वभाव सुमिरि सुमिरि राजाके अति शोचहोतहै ( २५ ) देखिये तौ मैं राज्यसुनाइकै अरु बनबास दिह्यउंहै सो सुनिकै श्रीरामचन्द्र के मनमें नेकहूनहीं हर्ष हरास अरुमनमें क्लेशभयो ( २६ ) ऐसेसुत श्रीरामचन्द्र के बिछुरतसन्ते वहपापी प्राणपयाननकियो तो यह जगत् में मेरे समान पातकी कोई नहीं है ( २७ ) दोहार्थ ॥ हेसखे सियराम अरु लषण जहांहोयँ तहां मोको पहुंचाउ नतु मैं सत्यकहतहौं यह प्राण गवनकीन्ह चाहत है ( २८ ) राजापुनि पुनिकही बारबार मंत्रीतेपूंछतेहैं हे सुमंत प्रीतम जो श्रीरामचन्द्रहैं तिनकरसंदेश शीघ्रसुनाउ ( २९ ) हे सखे सोई उपायकरहु अरु श्रीराम लषण जानकी को नेत्रनभरिवेग दिखाउ ( ३० ) तब हे भरद्वाज सचिव अति धीरजधरिकै मृदुबाणी ते बोलतभयो हे महाराज आपु तौ पण्डित हौ अरु ज्ञानीहौ ( ३१ ) अरु आपुदान युद्धविषेवीरहौ धीरहौ धर्मधुरीणहौ हे देव आपु संतसमाजको अच्छी तरह कीन्हहै तहां शोचकर कारण प्रयोजन नहीं है ( ३२ )

अरु आपु तौ सबजानतेहौ यहविधाता के प्रपंचविषे जन्ममरण दुखसुख हानिलाभ प्रियजनको मिलाप विक्षेप होतैजात है ( ३३ ) यहसर्ब कालकर्म के वशहोत जात है हेगोसाईं कैसे होते हैं जैसे कोई भारीनदी को प्रवाह काहूके रोकिवेयोग्य नहीं है अरु जैसे रातिदिन कालके वशहोतचलेजाते हैं तैसे कालके भीतरकर्मानुसार दुखसुख हानिलाभ होतेजाते

बानी महाराजतुमपण्डितज्ञानी ३१ बीरसुधीरधुरन्धरदेवा साधुसमाजसदातुमसेवा ३२ जन्ममरणसबदुखसुखयोगा हानिलाभप्रियमिलनबियोगा ३३ कालकर्मबशहोइगोसाईं बरबशरातिदिवसकीनाईं ३४ सुखहर्षहिंजड़दुखबिलखाहीं दोउसमधीरधरहिंमनमाहीं ३५ धीरजधरहुबिबेकबिचारी छांड़हुशोचसकलहितकारी ३६ दो० ॥ प्रथमबासतमसाभयउदूसरसुरसरितीर न्हाइरहेजलपानकरिसियसमेतदोउबीर ३७ चौ० ॥ केवटकीन्हबहुतसेवकाई सोयामिनिसिंगरौरगवांई ३८ होतप्रातबटक्षीरमँगावा जटामुकुटनिजशीशबनावा ३९ रामसखातबनावमँगाई प्रियाचढ़ाइचढ़ेरघुराई ४० लषणबाणधनुधरेबनाई आपुचढ़े

हैं ( ३४ ) तहां अज्ञान जड़जीव जे हैं ते विषयके सुखमें हर्षित होते हैं अरु धीरमान् पुरुषजेहैं ते दोऊमें समरहते हें ( ३५ ) ताते आपु तौ परमविवकीहौ धीरजधरहु शोचको त्यागकरहु आपुसर्व जीवन के हितकारीहौ ( ३६ ) दोहार्थ॥ हे महाराज श्रीरामचन्द्रने प्रथम निवास तमसा के तीरकीन पुनि दूसर निवास शृंगबेरपुरविषे सुरसरिके तीरकरतभये त्यहिदिन स्नानकरिकै जानकी लक्ष्मण सहित जलपानकरतभये ( ३७ ) हे महाराज ज्यहिरात्री सिंगरौरजो शृंगबेरपुरहै तहां श्रीरामचन्द्र जानकीअरु लक्ष्मण सहितरहे तहां केवटजो गुहसब केवटनकर राजात्यहि बहुतिसेवकाई कीन सिंगरौर कही मृगनके शृंगनकरवेराकही बाड़ाग्रामके चहुंफेर बँधारहे ताते शृंगवेरपुरकही ( ३८ ) सो रात्री शृंगबेरपुर विषेविताइकै प्रातहोतसंते मज्जन करिकै बटक्षीर मँगाइकै अपने हाथ शीश बिषे जटावनावते भये हैं ( ३९ ) तब गुहजो सखाहै त्यहिते नावमँगावत भये श्रीजानकी को प्रथमचढ़ाईकै आपुचढ़तभये ( ४० ) पुनि लक्ष्मणजी धनुषबाण चढ़ाइकै श्रीरघुनाथजीकै आज्ञापाइकै चढ़तभये ( ४१ ) जबनावपरचढ़े तबमैं अति बिकलताको प्राप्तिभयउं मोरिबिकलता देखिकै श्रीरघुनाथजी मधुरबचन बोलतेभये ( ४२ ) हेतात सुमंत मोरप्रणाम तातजो हैं पिता तिनतेकहब अरु बारबार मोरिसंती पदपंकजगहब ( ४३ ) अरुपांवपरिकैमोरिसंती विनती करबहेतात मोरिचिंता नेकहू न करब ( ४४ ) काहेते पिताकेकृपा अनुग्रह अरु पुण्यप्रतापते मोको बनमें सदामुदमंगलहै ( ४५ ) छंदार्थ॥ हेतात तुम्हरे अनुग्रहते काननविषे मैं सबसुख को प्राप्ति होउंगो अरु आपुकी अरु माताकी आयसु चौदहवर्ष मैं प्रतिपालकरिकै कुशलसंयुक्त पुनि आपुके चरण देखिहौं आइ ( ४६ ) अरु

प्रभुआयसुपाई ४१ बिकलविलोकिमोहिंरघुवीरा बोलेमधुरवचनधरिधीरा ४२ तातप्रणामतातसनकह्यऊ बारबारपदपंकजगह्यऊ ४३ कह्यउपाँयपरिविनयबहोरी तातकरहिंजनिचिन्तामोरी ४४ बनमुदमंगलकुशलहमारे कृपाअनुग्रहपुण्यतुम्हारे ४५ छंदहरिगीतिका तुम्हरेअनुग्रहतातकाननजातसबसुखपाइहौं प्रतिपालिआयसुकुशलदेखनपाँयपुनिफिरिआइहौं ४६ जननीसकलपरितोषिपरिपरिपाँयकरिविनतीघनी तुलसीकरेहुंसोयतनज्यहिबिधिकुसलरहकौशलधनी ४७ सो० ॥ गुरुसनकहबसँदेशबारबार पदपद्मगहि स्वईकरबउपदेशज्यहिनशोचम्वहिंअवधपति ४८ पुरजनपरिजनसकलनिहोरी तातसुनायहु विनतीमोरी ४९

हेतात मोरे बचनते अरु अपनीकैतीते सबमातनकर परितोषकरब परि कहीनिश्चय करिकै पांयपरि विनय करिकै तहां गोसाई श्रीतुलसीदास कहते हैं कि श्रीरामचन्द्र पुनि बोले हेतातसुमन्त सोई यत्नकरब जाते राजा सबप्रकारकुशल अरु आनन्दरहैं ( ४७ ) सोरठार्थ॥ हेसुमन्तगुरुमहाराज श्रीवसिष्ठजूते बारबार पदपद्म गहिकै यह संदेश कहब कि राजाको सोउपदेशकरब जातेअवधप्रति मोरेशोचते दुखित न होहिं ( ४८ ) अरु हेतात समस्तपुरजन परिजनते मोरनिहोरा करिकै कहब मैं विनती करिकैकहतहौं ( ४९ ) सबप्रकारते मोरहितकारी सोई है ज्यहिकरिकै राजासुखी रहैं तहां यह श्रीरामचन्द्रजी का नहीं जानते हैं कि राजा नजियेंगे सो जानते हैं तौ यह लौकिकवाणी कहते हैं किंतु पारलौकिक कहते हैं कि मेरी आज्ञा मानै सो मोको बहुतप्रियहै मैंवाको प्रियहौं ( ५० ) अरु हेतात जब भरतजी आवहिंगे तब यह संदेशकहब कि तुम राजपद पायउहै तहांनीति को न त्यागब अनीतिनचलब ( ५१ ) तहां जो यहअर्थ सिद्धिकरिये किसामदामदण्डविभेद यहचारिउ राजनीतिलिहेराज्यकरबतहां ऐसोकहना श्रीरामचन्द्रको भरतविषे नहीं सम्भवै है काहेते कि भरतजी को श्रीरामचन्द्र जानते हैं कि हमारे परमानन्यभक्तहैं राज्यको न अंगीकार करहिंगे तहां यह अर्थ है कि पितै तुमको राज्यपदबीदीन है ताते यहिनीतिको न तजब जो तुमहूराज्यकोत्यागिदेहुगे तौ प्रजासबदुखकोप्राप्तिहोहिंगी ताते राज्य पदवीको अंगीकारकरब यहभी तौ लौकिकबाणी है पर भरतजू श्रीरामचन्द्रजीकी खड़ाऊं को सिद्धान्त करिकै राज्यकी रक्षाकरैंगे ( ५२ ) अरु हे सुमन्त भरतते यह कहब कि हमारे प्रेमकरिकै अकुलायबजनि मनक्रमबचनते प्रजाकरप्रतिपालकरब अरुसम्पूर्ण मातनकी सेवाकरब समजानिकै ( ५३ ) अरु भायप ओरनिबाहब मैं जो बड़ाभाई हौंसोऊकहतहौं अरुपितैं कहाहै कि राज्यको प्रतिपालकरब ताते हेतात माता पिताके चरणनकी

**स्वइसबभांतिमोरहितकारी ज्यहितेरहनरनाहसुखारी ५० कहबसँदेशभरतकेआये नीतिनतजबराजपदपाये ५१ पालहुप्रजाकरममनबानी सेयहुमातुसकलसमजानी ५२ ओरिनिवाह्यउभायपभाई करिपितुमातुचरणसेवकाई ५३ तातभांति त्यहिराखबराऊ शोचमोरज्यहिकरबनकाऊ ५४ लषणकह्यउकछुबचनकठोरा वर्जिरामपुनिमोहिनिहोरा ५५ बारबारजिनशपथदेवाई कहबनताललषणलरिकाई ५६ दो० ॥ कहिप्रणामकछुकहनलियसियभईशिथिलसनेह थकितबचनलोचनसजलपुलकिपल्लवितदेह ५७ चौ० ॥ त्यहिअवसररघुपतिरुखपाईकेवट-पारहिनावचलाई ५८ रघुकुलतिलकचलेयहिभांती देख्यउं**

सेवाकरब अरु हे तात ज्यहिप्रकारते राजा सुखीरहैं मोरशोचनकरैं हे सुमंत यहसब सँदेशभरतजी से कहब ( ५४ ) पुनिसुमंत कहते हैं हे राजन् लक्ष्मणजी कछुकठोर वचन कहतेभये तब श्रीरामचन्द्र आपनिशपथदेवाइकै बर्जिदिहिनि है तहां सुमन्त यहकटुवचन का कहा है यह समुझिबेमें आवत है कि राजा रानी के बशह्वैकै श्रीरामचन्द्र को बनवासदियो राजा में कौन ज्ञान रह्यो है ( ५५ ) तहां हेमहाराज बारबार श्रीरामचन्द्र आपनि शपथ दिवाईहै कि हेतात लषणकी लरिकाई न कहब ( ५६ ) दोहार्थ ॥ पुनि श्रीजानकीजी प्रणामकरिकै कछुकहिबेकी इच्छाकीन तब गात पुलकिआये हैं वचन थकिगयो नेत्रनमें जलभरिआयो ( ५७ ) त्यहिअवसरबिषे श्रीरामचन्द्रको रुखपाइकै निषादराज अपनेहाथ अरु अपर सेवकको लैकै केवटई करतभयो है शीघ्र पार को नाव चलावतभयो है ( ५८ ) हे महाराज श्रीरघुनन्दन जब गये तब मैं बज्रकै छाती करिकै ठाढ़ेदेख्यउँ है ( ५९ ) अरु मैं आपन क्लेश का कहौं जो मैं जियतै श्रीराम लषण जानकीकर संदेश आपुसे कह्यउंआइ तौ मेरे क्लेशको धिक् है ( ६० ) हे गरुड़ यह कहिकै सचिव चुप ह्वैगयो हानिग्लानि अरु शोचके बशह्वैकै कछुकही नहींजाइ है ( ६१ ) हे पार्वती सूतके बचन सुनिकै राजाको दारुणदुख होतभयो पृथ्वीबिषे व्याकुलह्वैकै गिरत भयो ( ६२ ) बिकलह्वैकै तलफतहै श्रीरामचन्द्र के माधुर्य स्वरूपबिषे बात्सल्य रसके मोहकरिकै प्रतिमाया कही पूर्ण ह्वैगई है कैसे राजाबिकल है जैसेमाजाकही प्रथमबर्षा के जलकोफेन ताकोखायकै मीनबिकल ह्वै जाती

ठाढ़कुलिशधरिछाती ५९ मैंआपनकिमिकहौंकलेशू जिअतिफिर्यउंलइरामसँदशू ६० असकहिबचनसचिवरहिगयऊ हानिगलानिशोचबशभयऊ ६१ सूतवचनसुनतहिनरनाहू पर्यउरधरणिउरदारुणदाहू ६२ तलफतबिकलमोहमनमापा माजामनहुंमीनकहँब्यापा ६३ करिविलापसबरोवहिंरानी महाबिपतिकिमिजाइबखानी ६४ सुनिबिलापदुखहूदुखलागा धीरजहूकर धीरजभागा ६५ दो० ॥ भयउकोलाहलअवधअतिसुनिनृपराउरशोर बिपुलविहगबनपर्यउनिशिमानहुंकुलिशकठोर ६६ चौ० ॥ प्राणकंठगतभयउभुआलू मणिविहीनजिमिब्याकुलब्यालू ६७ इन्द्रीसकलबिकलभइँभारी जनुसरसिजबनसूखतवारी ६८ कौशल्यानृपदीखमलाना रविकुलरविअथयउजियजाना ६९ उरधरिधीररामहतारी बोलीबचनसमयअनुहारी ७० नाथसमुझिमन

है अरु माजा और पदार्थको कहतेहैं सो अर्थनहीं सिद्धिहै काहेतेसम्बन्ध विरोध दूषणपरि जातहै ( ६३ ) बिलाप करिकै रनिवासरोवती हैं महाबिपति नहींकहीजाइहै ( ६४ ) यह बिलाप सुनिकै दुखहूको दुखलागत है अरु धीरजहूको धीरज भागिजात है ( ६५ ) दोहार्थ॥ श्रीअयोध्यामें कोलाहलकही रोदन होतभयो अरु राजाके रावलकही महलमें अति शोरहोतभयो मानहुबनविषे विपुल विहंगबसेहैं निशिविषे तिनपर मानहुकठोर कुलिशपर्यउहै ( ६६ ) राजाकेप्राण कंठविषे गतकही प्राप्तिभये जैसे मणिनते बिहीन ब्याल बिकलहोत है ( ६७ ) सबइन्द्री अतिबिकलभई जैसे सागरके जल सोखेते कमलसूखिजाते हैं तहांइन्द्री दशहैं पांचज्ञानइन्द्री हैं अरु पांचकर्मइन्द्री इनदशनकरिकैराजा अतिबिकलभये हैं ( ६८ ) तब श्रीकौशल्याजी राजा की दशामलान देखतीभई तब यहजाना कि रविकुलको रविअस्तहोवाचाहत है ( ६९ ) श्रीरामचन्द्रकी माता धीरज धरिकैसमयके अनुहारबचन बोलतीभई ( ७० ) हेनाथ अपनेमनमें समुझिकै बिचारकरौ काहेतेश्रीरामचन्द्रकर वियोगकही बिक्षेपको दुख सो अपार समुद्रहै ( ७१ ) अरु अवधिजो चौदहबर्ष है सोई जहाजहै अरु आपकर्णधारहौ अरु हमसब प्रियजन परिजन ते पथिकनकी समाज हैं ( ७२ ) हेमहाराज जो आपु धीरजधरहु तौ सबपार पाइत है नाहीं तौ सबपरिवार डूबिजातहै ( ७३ ) हेप्रभु जो मोरिबिनय हृदयमें धारणकर हुतौ लषण श्रीजानकी अरु श्रीराम बहोरि फेरिमिलैंगे ( ७४ ) दोहार्थ॥ हेपार्वती प्रियाकेबचन अतिमृदुलसुनिकै राजानेत्र उघारतभये कैसे जैसे

करहुविचारू रामवियोगपयोधिअपारू ७१ कर्णधारतुमअवधिजहाजू बैठेसबप्रियपथिकसमाजू ७२ धीरजधरियतौपाइयपारा नहींतौबूड़्यउसबपरिवारा ७३ जोजियधरियबिनयप्रियमोरीरामलषणसियमिलहिंबहोरी ७४ दो० ॥ प्रियाबचनमृदुश्रवणसुनिचितयउनयनउघारि तलफतमीनमलीनजिमिसींच्यउशीतलबारि ७५ चौ० ॥धरिधीरजउठिबैठुभुआलू कहुसुमंतकहँरामकृपालू ७६ कहांलषणकहँरामसनेही कहँप्रियपुत्रवधूबैदेही ७७ बिलपतराउबिकलयहिभांती भययुगसरिशसिरातिनराती ७८ तापसअंधशापसुधिआई कौशल्यहिसबकथासुनाई ७९ भयेबिकलबरणतइतिहासा रामरहितधिग्जीवनआसा ८० सोतनराखिकरबमैंकाहा ज्यहिनप्रेमप्रणमोरनिबाहा ८१ हारघुनंदनप्राणपिरीते तुमबिनुजिअतबहुतदिनबीते ८२ हाजानकीलषण

जलतेभिन्न मीनमलीन ह्वैरहीहैं अरु त्यहिके मुखपर काहूने शीतलजलसींचिदियोहै तैसे राजा तनक चैतन्य ह्वैगये हैं ( ७५ ) तब राजा धीरधरिकै उठिकै बैठे आरत बिकल वचन कहतसन्ते हेसुमन्त कहु श्रीरामचन्द्रकृपालु कहांहैं ( ७६ ) कहां लषण कहां रामसनेही कहां प्रियपुत्रबधू श्रीजानकी हैं ( ७७ ) यहिप्रकारते राजा बिलापकरतेहैं सो रात्री

युगकेसमानहोतिभई बीतती नहीं है ( ७८ ) तब श्रवण जो तपस्वी त्यहिकर पिता अन्धारहै त्यहिके शापकी सुधिकरिकै श्रीकौशल्याको सुनावतभये सो इतिहास प्रसिद्धहै ( ७९ ) सो इतिहास बर्णतसंते राजाविकलह्वैकै कहत भये कि श्रीरामचन्द्रबिना जीवनकी आशाकोधिक्है ( ८० ) सो तनराखिकै मैं काकरब ज्यइमोरे नेम प्रेमको प्रणनहीं निबाहाहै ( ८१ ) तबराजा हाकहिकै अतिआरतक्लेशतेकहतेहैं हेरघुनन्दन प्राणप्रिय तुमबिना जियत बहुतदिन बीते हैं ( ८२ ) हाश्रीजानकी हालक्ष्मण हारघुबर मोरहितकार चितचातक है त्यहिकेतुम संतुष्टकर्ताजलधरहौ ( ८३ ) दोहार्थ॥ हे पार्बती यहकहिकै अरु षट्बार रामरामकहिकै श्रीरामचन्द्रकैवात्सल्य विरहकी अग्निबिषे शरीरत्यागिकै स्वर्गलोकको प्राप्तिभये हैं षट्बाररामरामक्यों कहा तहां पंचप्राण मनसुद्धांषट् त्यहिकर त्यागहोइहि नामकहिकै प्राण मनकोत्याग अरु श्रीरामचन्द्रबिषे बिरहसंयुक्त चित्तकै वृत्तिलगीरहीअरुत्यहि समयविषे शरीरको त्यागभयो तहांनामप्रताप ते राजाको परम पदकी प्राप्तिउचित है किंतु श्रीरामचन्द्रके स्वरूपमेंचित्तकै वृत्तिरहीहैतहांकोप्राप्ति होवाचाहिए अरु गये स्वर्गको यहशास्त्र विरोध भासतहै तहां प्रमाण बाराहपुराणे श्लोकद्वै॥ दैवाच्छूकरसावकेननिहतोम्लेच्छोजराजर्जरो हारामेतिंहतोस्मिभूमिपतितोजल्पस्तनुंत्यक्तवान॥ तीर्णोगोस्पद वद्भवार्णवमहोनाम्नःप्रभावात्पुनः किंचित्रं यदिरामनामरसिकास्तेयांतिरामास्पदं १ पुनि श्रीभगवद्गीतायां॥ यंयंचापिस्मरन्भावं त्यजत्यंतेकलेवरं।

हारघुवरहापितुहितचितचातकजलधर ८३ दो० ॥ रामरामकहिरामकहिरामरामकहिराम तनपरिहरिरघुवरबिरहराउगयउसुरधाम ८४ ॥ चौ०॥ जिअनमरनभलदशरथपावा अण्डअनेकअमलयशछावा १ जिअतरामबिधुबदननिहारे रामबिरहकरिमरण सँवारे २

तत्त्वमेवेत्तिकौन्तेय सदातद्भावभावितः २ तहां राजा पुनि स्वर्गलोकक्योंगये तहां श्रीरामचन्द्र की इच्छा ते काहेतुहै राजा श्रीरामचन्द्र के वात्सल्यरस में विशेषरहैं जब श्रीरामचन्द्र बनगये तब वोहीबिरह में शरीर त्यागकीन्ह अरु राजैं श्रीरामचन्द्र को राजदेवे को संकल्प कीन्ह सो भंगभई अरु श्रीरामचन्द्र को यह संकल्प है कि अपने प्रियजन जे हैंतिनकी बासना पूर्णकरिकै तब परमपद देते हैं ताते अपनी इच्छाकीप्रेरणाते राजाको स्वर्गदीन कि स्वर्ग में बैठिकै हमारे बनकी लरिकाईलीलादेखिलेहिं और हमारो राज्य औ राजनीति अच्छीतरहदेखिलेहिं तबपर विभूतिको संगही लैचलहिंगे यहप्रसंग को प्रमाण यहिचौपाई के तिलकमें जानब चौपाई॥ सुनहुरामतुमकहँमुनिकहहीं रामचराचरनायकअहहीं ( ८४ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वन्सने श्रीअयोध्याकाण्डे पुरबासिनकादुखबिरहनृपस्वर्गगमनवर्णनन्नामद्वितीयस्तरंगः २॥

दो० ॥ तृतियतरंगविलापअति मुनिवशिष्ठकृतबोध। रामचरणश्रीभरतकोअवधआगमनशोध ३ हे गरुड़ जिअब मरबकाफल श्रीदशरथमहाराज ने अच्छेप्रकार ते पायो है जिनकायश निर्मल अनेक ब्रह्मांडमें छाइरह्यो है ( १ ) काहेते कि जिअतसन्ते श्रीरामचन्द्रकर चन्द्रवदन सदादेखतरहे हैं ज्यहिको महादेव ध्यान में देखते हैं अरु श्रीरामचन्द्र के विरह में शरीर तृणइव त्यागिदीनकाल के बशनहीं अपनी विरहीभक्ति के बल ते जो मरण योगिन को दुर्लभ है ताते दशरथ के समान तीनिहूंकालमें कोईनहीं है ( २ ) हे गरुड़ राजाके स्वर्गप्राप्तिहोतसन्ते रनिबास अति शोकते बिकल बिलापकरती हैं रूप तेज बलशील बखानि बखानि रोवती हैं ( ३ ) अनेकप्रकार ते बिलाप करती हैं पृथ्वीबिषे बारबार गिरिगिरि

शोकबिकलसबरोवहिंरानी रूपतेजबलशीलबखानी ३ करहिंबिलापअनेकप्रकारा परहिंभूमितलबारहिंबारा ४ बिलपहिं बिकलदासअरुदासी घरघररुदनकरहिंपुरबासी ५ अथयउआजुभानुकुलभानू धर्म्मअवधिगुणरूपनिधानू ६ गारीसकलकैकयिहिदेहीं नयनविहीनकीन्हजगजेहीं ७ यहिबिधिबिलपतरैनबिहानी आयेसकलमहामुनिज्ञानी ८ दो० ॥ तबवशिष्ठमुनिसमयसम कहिअनेकइतिहास शोकनिवार्यउ

सबहिंकरनिजविज्ञानप्रकास ९ चौ० ॥ तेलनावभरिनृपतनराखा दूतबोलाइबहुरिअसभाखा १० धावहुवेगभरतपहँजाहू नृपसुधिकतहुंकहहुजनिकाहू ११ यतनैकह्यउभरतसनजाई गुरुबोलाइपठयेदोउभाई १२ भलेनाथकहिधावनधाये चलेवेगवरबाजिलजाये १३ अनरथअवधअरम्भ्यउजबते कुसगुनहोहिंभरतकहँतबते १४ दिनप्रतिदेखहिंरातिकुसपना जागिकरहिंबहुकोटिकल्पना १५ शिवअभिषेककरहिंविधिनाना विप्रज्यवाइदेहिंबहुदाना १६ हृदयमनावहिं

परती हैं ( ४ ) अरु दास दासी अति रोदनकरते हैं पुरबिषे घरघर महारोदनकरते हैं ( ५ ) यह कहिकहि रोवते हैं कि आजु भानुकुल के भानु श्रीदशरथमहाराज धर्मनीति अरु गुण के अवधि ते अस्तह्वैगये ( ६ ) सबअयोध्याबासी कैकेयी को गारीदेते हैं ज्यइँ सबको नेत्रनते बिहीनकीन्हहै ( ७ ) यहिप्रकारते बिलापकरत सो रात्री बीततिभई भोरहोतसन्ते महामुनि ज्ञानवान् अरु मंत्री सब आवतभये ( ८ ) दोहार्थ॥ तबबशिष्ठ मुनि ने समयसम अनेक इतिहास कहिकहि सबको शोक निवारणकीन्ह अपने विज्ञानके प्रकाशते ( ९ ) आगे सात दोहाताईं बिरह बहुत है ताते अक्षरार्थै जानब चौवन दोहाको अर्थकरते हैं दोहार्थ ॥ श्रीभरतजीकहते हैं देखिये तो हंसकही सूर्यवंशबिषे जनककही पिता हमारे दशरथ

शम्भुसुजाना भाइनसहितरामकल्याना १७ ॥ दो० ॥ यहिबिधिशोचतभरतमन धावनपहुंचेजाइ गुरुअनुशासनश्रवणसुनि चलेगणेशमनाइ १८ चौ० ॥ चलेसमीरवेगहयहांके नाँघतसरितशैलबनबाँके १९ हृदयशोचबड़कछुनसोहाई असजानहिंजियजाइउड़ाई २० एकनिमेषबर्षशतजाई यहिबिधिभरत अवधनियराई २१ असगुनहोहिंनगरपैठारा रटहिंकुभांतिकुषेतकरारा २२ खरसियारबोलहिंप्रतिकूला सुनिसुनिहोहिंभरतउरशूला २३ श्रीहतसरसरिताबनबागा नगरबिशेषभयावनलागा २४ खगमृगहयगयजाहिंनजोए रामबियोगकुरोगबिगोए २५ नगरनारिनरनिपटदुखारी मनहुसबहिंसबसम्पतिहारी २६ दो० ॥ पुरजनमिलहिंनकहहिंकछु गवहिंजोहारहिंजाहिं भरतकुशलनहिंपूंछसक भाबिषादमनमाहिं २७ चौ० ॥ हाटबाटनहिंजाहिंनिहारी जनुपुरदुहुंदिशिलागिदवारी २८ आवतसुतसुनिकेकयनन्दनि हर्षीरबिकुलकैरवचन्दनि २९ सजिआरतीमुदितउठिधाई द्वारहिभेटिभवनलैआई ३० भरतदुखितपरिवारनिहारी मानहुंतुहिनबनजबनमारी ३१ केकयिहृदयहर्षयहिभांती मनहुंमुदितदवलाइकिराती ३२ सुतहिंसशोचदेखिमनमारे पूंछतिनैहरकुशलहमारे ३३ सकलकुशलकहिभरतसुनाई पूंछानिजकुलकुशलभलाई ३४ कहुकहँतातकहाँसबमाता कहँसियरामलषणप्रियभ्राता ३५ दो० ॥ सुनिसुतवचनसनेहमय कपटनीरभरिनयन भरतश्रवणमनशूलसम पापिनिबोलीबयन ३६ चौ० ॥ तातबातमैंसकलसँवारी भईमन्थरासहायबिचारी ३७ कछुकबातविधिबीचबिगारा भूपतिसुरपतिपुरपगुधारा ३८ सुनतभरतभयेविवशविषादा जनुसहम्यउकरिकेहरिनादा ३९ तातताततहाताततपुकारी परेभूमितलव्याकुलभारी ४० चलतनदेखनपांयउंतोहीं तातनरामहिं सौंप्यहुमोहीं ४१ बहुरिधीरधरिउठ्यउसँभारी कहुपितुमरण हेतुमहतारी ४२ सुनिसुतवचनकहतकैकेयी मर्म्मपाछिजनुमाहुरदेयी ४३ आदिहितेसबआपनिकरणी कुटिलकठोरमुदितमनवरणी ४४ दो० ॥ भरतहिबिसर्‌यउपितुमरण सुनतरामबनगौन हेतुआपनोजानिजिय थकितरहैंधरिमौन ४५ चौ० ॥

बिकलबिलोकिसुतहिसमुझावति मनहुंजरेपरलोनलगावति ४६ तातराउनहिंशोचनयोगू बड़इसुकृतफलकीन्ह्यउभोगू ४७ जीवतसकलजन्म फलपाये अन्तअमरपतिसदनसिधाये ४८ असअनुमानिशोचपरिहरहू सहितसमाजराजपुरकरहू ४९ सुनिसुठिसहम्यउराजकुमारू पाकेछ्तजनुलागअँगारू ५० धीरजधरिउरलेहिंउसासा पापिनिसबहिभांतिकुलनासा ५१ जोपैकुरुचिरहीजियतोहीं जन्मतकाहेनमारेसिमोहीं ५२ पेड़काटितैंपल्लवसीचा मीनजिअनहितबारिउलीचा ५३ दो० ॥ हंसबंशदशरथजनकरामलषणसेभाइ जननीतूजननीभई विधिसेकछुनबसाइ ५४ चौ० ॥ जबतेकुमतिकुमतिजियठयऊ खण्डखण्डह्वैहृदयनगयऊ ५५ बरमाँगतमनभयउ न पीरा गिरीनजीहमुंहपरेउनकीरा ५६ भूपप्रतीतितोरिकिमिकीन्ही मरणकालविधिमतिहरिलीन्ही ५७ विधिहुननारिहृदयगतिजानी सकलकपटअघअवगुणखानी ५८ सरलसुभाव धर्म्मरतराऊ सोकिमिजानहिंनारिसुभाऊ ५९ असकोजीवजन्तुजगमाहीं ज्यहिरघुनाथप्राणसमनाहीं ६०भेअतिअहितरामतेतोहीं कोतूअहसिसत्यकहुमोहीं ६१ जोहसिसोहसिमुहमसिलाई आंखिवोटउठिबैठसिजाई ६२ दो० ॥ रामविरोधीहृदयतेप्रकटकीन्हविधिमोहिं म्वहिंसमानकोपातकीबादिकहौंकछुतोहिं ६३ चौ० ॥ सुनिशत्रुहनमातुकुटिलाई जरहिगातरिसकछुनबसाई ६४ त्यहिअवसरकुबरीतहँआई बसनविभूषणबिबिधिबनाई ६५ अतिरिसभर्‍यउलषणलघुभाई बरतअनलघृतआहुतिपाई ६६ हुमकिलाततकिकूबरमारा परिमुंहभरिमहिकरतपुकारा ६७ कूबरटूट्यउफूटकपारू दलितदशनमुखरुधिरप्रचारू ६८ अहहदैवमैंकाहनशावा करतनीकफलअनइसपावा ६९ सुनिरिपुहनलखिनखशिखखोटी लगेघसीटनधरिधरिचोटी ७० भरतदयानिधिदीन्हछोड़ाई कौशल्यापहँगयेदोउभाई ७१ दो० ॥ मलिनबसनबिवरण-बिकलकृशशरीरदुखभार कनककल्पवरबेलिबनमानहुंहन्यहुंतुषार ७२ चौ० भरतहिदेखिमातुउठिधाई मूर्छितअवनिपरीअकुलाई ७३

ऐसे जिनकी उज्ज्वलकीर्त्ति त्रैलोक्यमें पूरिरहीहै अरु श्रीरामलषण ऐसेभाई हैं तहां जननी तू जननीभई जहां पिता भाई ऐसे तहां जननीतोहिं

देखतभरतबिकलभइभारी परेचरणतनदशाबिसारी ७४ मातुतातकहँदेहुदेखाई कहँसियरामलषणप्रियभाई ७५ कैकेयिकतजनमीजगमाँझा जोजनमीतोभईकिनबाँझा ७६ कुलकलंकज्यहिजनमेमोही अपयशभाजनप्रियजनद्रोही ७७ कोत्रिभुवनमोहिं सरिशअभागी गतिअसितोरिमातुज्यहिलागी ७८ पितुसुरपुरवनरघुकुलकेतू मैंकेवलसबअनरथहेतू ७९ धिक्म्वहिंभयउंबेणुबनआगी दुसहदाहदुखदूषणलागी ८० दो० ॥ मातुभरतकेबचनसुनिमृदुपुनिउठीसँभारि लियेउठाइलगाइउरलोचनमोचतिबारि ८१ चौ० ॥ सरलसुभाउमातुउरलाये अतिहितमनहुँरामफिरिआये ८२ भेट्यउबहुरिलषणलघुभाई शोकसनेहनहृदयसमाई ८३ देखिसुभावकहतसबकोई राममातुअसकाहेनहोई ८४ माताभरतगोदबैठारे आँसुपोंछिमृदुबचनउचारे ८५ अजहुँबच्छबलिधीरजधरहू कुशमयजानिशोचपरिहरहू ८६ जनिमानहुहियहानिगलानी कालकर्म्मगतिअघटितजानी ८७ काहुहिंदोषदेहुजनिताता भाम्वहिंसबबिधिबामविधाता ८८ जोयेत्यहुदुखमोहिंजिआवा अजहुंकोजानैकात्यहिभावा

८९ दो० ॥ पितुआयसुभूषणबसनतातजतज्यउरघुवीर विस्मयहर्षनहृदयकछुपहिर्‌यउबलकलचीर ९० चौ० ॥ मुखप्रसन्नमनरागनरोषू सबकरसबविधिकरिपरितोषू ९१ चलेबिपिनसुनिसियसँगलागीरहैंनरामचरणअनुरागी ९२ सुनतहिलषणचलेउठिसाथा रहहिंनयतनकियेरघुनाथा ९३ तबरघुपतिसबहीशिरनाई चलेसंगसियअरुलघुभाई ९४ रामलषणसियवनहिसिधाये गइउंनसंगनप्राणपठाये ९५ यहसबभायन आँखिनआगे तौनतजातनप्राणअभागे ९६ म्वहिनलाजनिजनेहनिहारी रामसरिशसुतमैंमहतारी ९७ जिअइमरइभलभूपतिजाना मोरहृदयशतकुलिशसमाना ९८ दो० ॥ कौशल्याकेबचनसुनिभरतसहितरनिवास ब्याकुलविलपतराजगृहमानहुंशोकनिवास ९९

ऐसी न चाहिये तहां विधाताकै गतिकठिनहै कछु नहीं जानीजाइहै तहां बिधाता तौ बसाइकही कछुनहीं होइसकै है यह काकोक्ति वक्रोक्ति अलंकारहै जो कोई और अर्थ करते हैं सो सामान्य है ( ५४ ) इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने श्रीअयोध्याकाण्डे भरतविनयबर्णनंनामतृतीयस्तरंगः ३॥ :: :: ::

दोहा॥ चौथतरंगनविरहपुनि सत्यशपथकरिभरत। रामचरणगुरुश्रुतिकह्यउभरतकर्मपितुकरत ४ श्रीकौशल्याको वचन सुनिकै अतिशोक सबको ह्वइरह्यो है अरुभरत दोऊभाई अतिबिलाप करतेहैं तब श्रीकौशल्या हृदयमें लगावती भई हैं ( १ ) श्रीकौशल्याजी भरतजीको अनेकभांति ते समुझावतीभई सुन्दर बिबेकमय वचनकहिकहि ( २ ) तहां पुनि भरतजू मातनको समुझावतेभये श्रुतिस्मृति पुराणनकी कथा कहिकहि ( ३ )

चौ० ॥ विलपहिंविकलभरतदोउभाई कौशल्यालियहृदयलगाई १ भाँतिअनेकभरतसमुझाये कहिबिवेकमयबचनसुहाये २ भरतहुमातुसकलसमुझाई कहिपुराणश्रुतिकथासुनाई ३ छलविहीनसुठिसरलसुबाणी बोलेभरतजोरियुगपाणी ४ जोअघमातुपिताकेमारे गायगोठमहिसुरपुरजारे ५ जोअघतियबालकबधकीन्हे मीतमहीपतिमाहुरदीन्हे ६ जेपातकउपपातकअहहीं कर्म्मबचन मनभवककविकहहीं ७ सोपातकम्वहिंदेहुविधाता जोयहहोइमोरमतमाता ८ दो० ॥ जोपरिहरिहरिहरचरणभजहिंभूतघनघोर तिनकैगतिम्वहिदेहुविधिजोजननीमतमोर ९ चौ० ॥ बेंचहिंवेदधर्म्मदुहिलेहीं पिशुनपरावपापकहिदेहीं १० कपटीकुटिलकलहप्रिय

पुनि छलबिहीन सत्य सुठि सरलबाणी भरतजी दूनौ करजोरिकै बोलतेभये ( ४ ) हेमातु जोयहि प्रपंचमें मोरमत लेशहूहोइ तौ मैं सत्यशपथकरतहौं यहिपापको प्राप्तिहोहुं जो अघ माता पिता के मारेहोतहोइ अरुगऊ ब्राह्मण देवताके मारे होतहोइ अरु गऊ ब्राह्मण देवताके मंदिरजारे ते होतहोइ सोपाप मोकोहोइ ( ५ ) अरु जो अघ स्त्री अरु बालकके बधकिये ते होतहोइ अरु मित्र जो है अरु राजा जो है तिनको छलकरिकै विषखवाइदेइ ( ६ ) येते महापाप हैं अरु जे पातक उपपातकहैं मनबचन कर्मते कविकहते हैं उपपातक कही जो सहजमें गऊ ब्राह्मण अथवा सब जीव ते विरोधकरै है सो उपपातक है ( ७ ) हे मातु सो सबपातक बिधाता मोकोदेहि जो यहमोर सम्मतहोइ ( ८ ) दोहार्थ॥ अरु जे हरिहरके चरणछोंड़िकै भूतगणको पूजते हैं त्यहिकीगति बिधाता मोकोदेहिं हे जननी जो मोर सम्मतहोइ ( ९ ) अरु जे वेद के धर्मको बेंचतेहैं हेमातु अरु दुहुकही पाप सोइदाम लेते हैं वेदधर्म के बेचव का कहावैहैजे द्रव्यहेतु करारकरिकै वेद पुराण स्तोत्र इत्यादिक किसूके इहां बेंचते हैं ते वाहीवेदकरधर्म बेंचते हैं दामकापावते हैं दुहकही पापमय वहै द्रव्यअरु जे पिशुनकहीचुगुलीकरिकै परावा पाप दोष कहते फिरते हैं ऐसे जे महापापी हैं तिनकी गतिको मैं प्राप्तिहोउं जो मोरसम्मतहोइ ( १० ) पुनि कपटी कुटिल कलहप्रिय लागै जिनको अरु क्रोधी अरु वेदके दूषण कर्ता अरु सन्त के विरोधी ( ११ ) अरु लोभी अरु लम्पटी कही कामीअरु परावा पदार्थ कोई यत्न ते लेना अरु लोलुपकही मन वचन कर्मके झूंठे आचरण अरु जे परधन परनारिताकते हैं ( १२ ) हे मातु ऐसे महापापिन की घोरगतिको मैं प्राप्तिहोउं जो यहि प्रपंचविषे मोरसम्मत

क्रोधी वेदविदूषकसन्तविरोधी ११ लोभीलम्पटलोलुपचारा जोताकहिंपरधनपरदारा १२ पावौंमैंतिनकैगतिघोरा जोजननीयहसम्मतमोरा १३ जोनहिंसाधुसंगअनुरागे परमारथपथवमुखअभागे १४ जोनभजैंहरिनरतनपाई जिनहिंनहरिहरसुयशसुहाई १५ तजिश्रुतिपन्थबामपथचलहीं बंचकविरचिवेषजगछलहीं १६ तिनकैगतिम्वहिशंकरदेऊ जोजननीयहजानहुंभेऊ १७ दो० ॥ मातुभरतकेवचनसुनिसाँचेसरलसुभाय कहतिरामप्रियताततुमसदावचनमनकाय १८ चौ० ॥ रामप्राणतेप्राणतुम्हारे तुमरघुपतिहिप्राणतेप्यारे १९ विधुविषचुवैश्रवहिहिमआगी होहिंवारिचरवारिविरागी २० भयेज्ञानबरुमिटैनमोहू तुमरामहिंप्रतिकू

होइ ( १३ ) अरु जे साधुकेसंग अनुराग नहींकरते हैं अरु अभागी अरु परमार्थ के पंथते विमुख हैं ( १४ ) अरु जो नरतनपाइकै हरि को नहीं भजते हैं अरु जिन्हें हरि हरको सुयश नहींसोहात है ( १५ ) पुनि वेदकर पन्थतजिकै बामकही कल्पितपन्थपर चलते हैं अरु बंचककही छली सुन्दर वेषबनाइकै जगत्को छलतेफिरते हैं ( १६ ) ऐसे जे महाअधम हैं तिनकैगति मोको शंकरदेहिं जो यह प्रपंचकर भेद मैं तनिकौ जानतहोउं ( १७ ) दोहार्थ॥ हेपार्वती भरतजी महाशपथ करतेभये तहांमहामहापापन को अपनी सचाई ते अपने माथेपरधरतभये तब भरतकी सांचीसुभाय यहशपथ श्रीकौशल्याजी सुनिकै बोलतीभई हे तात तुम श्रीरामचन्द्र के मन वचनकर्म ते सदा अतिप्रियहौ ( १८ ) हेतात तुमकहँ श्री रामचन्द्र प्राणहुते प्रिय हैं अरु तुम श्रीरामचन्द्र को प्राणहुते प्रियहौ यह मैंअच्छीतरहते जानतिहौं ( १९ ) हे तात अब मैं सत्यप्रणकरिकै कहतिहौं बरु चन्द्रमा विषश्रवै अरु हिम अग्नि श्रवै अरु वारिचर जो मीनहैं बरु बारिते विरागकरैं ( २० ) पुनि वरु पूर्णज्ञान भयते मोह न मिटै एते आश्चर्य्य होहिं परतुममन वचनकर्मते श्रीरामचन्द्रके प्रतिकूल कबहूंनहींहहु ( २१ ) अरु जो कोई तुम्हार सम्मत यहि विषे लेशहूमात्रमन में ल्यावै तौ वहि प्राणी को सपन्यहु विषे सुख सुयश नहीं प्राप्ति होइगो ( २२ ) अस कहिकै माता भरतको हृदयमें लगाय लेतिभई थनविषे पयश्रवत है अरु नेत्रन विषे जलछाइ आयो है ( २३ ) अनेक भांतिते विलापकरतसंते बैठे रातिव्यतीतभई है ( २४ ) प्रातहोत बामदेव अरुश्रीवशिष्ठजी आवतेभये अरुसब सचिव महाजन सबको बोलावते भये हैं ( २५ ) तहांमहा २ मुनि अरु श्रीवशिष्ठजी परमार्थ देशके बचन भरतको उपदेश करते हैं ( २६ ) दोहार्थ॥ हे तात भरत हृदय विषे धीरजधरो जो अवसर आजुहै सो करौ तब गुरुनके वचन सुनिकै आज्ञा लइकै सबकाज करनेलगे ( २७ ) हेगरुड़ राजाको

लनहोहू २१ मततुम्हारयहजोजगकहई सोसपन्यहुसुखसुयशनलहई २२ असकहिभरतमातुउरलाई थनपयश्रवहिंनयनजलछाई २३ करतविलापविपुलयहिभांती बैठेबीतिगईसबराती २४ बामदेवबशिष्ठमुनिआये सचिवमहाजनसकलबोलाये २५ मुनिबहुभांतिभरतउपदेशे कहिपरमारथवचनसुदेशे २६ दो० ॥ तातहृदयधीरजधरहुकरहुसोअवसरआजु उठेभरतगुरुवचनसुनिकरनलगेसबकाजु २७ चौ० ॥ नृपतनवेदविहितअन्हवाये परमविचित्रविमानबनाये २८ गहिपगभरतमातुसबराखी रहीरामदरशन

तन तेल ते निकालिकै जिनहाथ वेद विहित स्नान कराइकै परम दिव्यपट ते नखलौं महाराज के शृंगार भूषित करत भये परम सिंहासन पर बैठावतभये अरु सब प्रजनको बोलाइकै दण्डवत् कराइकै तुलसीपुष्पादिकभेट चढ़वाइकै भरतजू कहा कि महाराजकी आज्ञा है तुम सब अब हमसे विदाह्वइजाहु तहां भरतजूवेदविहित स्नान कराइकै परम विचित्रभावकरिकै तब परमविचित्र विमान बनावतेभये यहि चौपाई विषे अर्थ ध्वनि अभिप्राय अनेक हैं को कहिसकै विचित्र कही जैसे राजाको सिंहासन पर बैठाये हैं तैसेही विमान है पताका ते विमान विलगात हैं तहां श्री वशिष्ठकी आज्ञा पायकै सिंहासनते उतरिकै विमान पर बैठावत भयेत्यहिसमय विषेदेवता ब्रह्मादिक विमाननपर बैठिकै

फूलनकीबर्षा करत भये अरु यह कहते हैं कि जयश्रीमहाराजनके राजा तुम्हारेसम परमार्थीकल्पतरु कामधेनु नहींहैं अपर काकहै अरु न भयोहै न होइगो तीनिहु कालमें न कोई देवलोक अरु नागलोक अरु नरलोक इत्यादिक लोकनविषे जेते ईश्वर कोटीजीव कोटी देवता मुनिहैं ते दशरथसम कोई नहीं काहेते कि परमात्मा परब्रह्म पूर्णपुरुष वेदकैतत्त्व त्यहिअपने भक्तिवात्सल्य रसते तिनको पुत्रकीन्ह ज्यहि पुत्रकै राज्य अनेक ब्रह्माण्डकोष भरे में तहां जब राजारामचन्द्रको राज्यसंकल्पकीन्हहै प्रथमवशिष्ठकी आज्ञालइकै तबसे अरु जबताई श्रीरामचन्द्रराज्यकीन्ह तबताई संपूर्णचराचर जीव को अपनो परमपददीन है तिन दशरथकै बड़ाई को कहिसकै तातेदशरथ के समान दशरथै हैं काहेते महाराजके दग्धसमय में सब आये हैं तामें इन्द्रबहुतप्रसन्नहैं काहेतेपरमहित सखा एकठाइँरहेंगे ( २८ ) जब राजा को तन बिमानपर बैठावतभये तब श्रीकौशल्यादिक माता सबराजा के संग सतीहोबे को चली हैं तब पायन परि परि भरत मातनको राखतभये पर श्रीरामके दर्शनकी अभिलाषा ते रहतिभईं नतु न रहतीं ( २९ )

अभिलाखी २९ चन्दनअगरभारबहुलाये अमितअनेकसुगन्धसुहाये ३० सरयुतीररचिचिताबनाई जनुसुरपुरसोपानसुहाई ३१ यहिविधिदाहक्रियासबकीन्हे विधिवतन्हाइतिलांजुलिदीन्हे ३२ शोधिसुमृतिसबवेदपुराना कीन्हभरतदशगात्रबिधाना ३३ जहँजहँमुनिवरआयसुदीन्हा तहँतहँसहसभाँतिसबकीन्हा ३४ भयेविशुद्धदियेसबदाना धेनुबाजिगजबाहननाना ३५ दो० ॥ सिंहा

पुनि चन्दन अगर कपूर केसरि इत्यादिक चोवा अतर अनेकन भार आवतेभये ( ३० ) राजा को बिमानउठावते भये तब रनिवास पुरबासी अतिरोदन करनेलगे अरु वशिष्ठकी आज्ञा ते शंखध्वनि होतिभई अरु आगे चतुर्बिधि की असवारी ध्वजापताका हेम मणिन ते रचित अरु घोड़नपर नौबति अतिसुन्दर बजावत अरु नृत्यगानकरत अरु नभविषे देवता कल्पवृक्षके फूलबर्षत अरु अप्सरा नृत्यकरत किन्नरबजावत गंधर्व गावत ब्रह्मादिक सुर सिद्धि ऋद्धि समस्त जयजयकार करते हैं अरुमुनीश्वर बेदध्वनि करते हैं अरु अनेकरत्न इत्यादिक दानदेतजाते हैं यहि प्रकार ते अनेक सुख मंगलहोत श्रीअयोध्या के पूर्व राजमहल ते योजनपर्यन्त सरयू के तटपर चिताबनावतेभये जनु इन्द्रलोकको सोपानकही सीढ़ी बनावते भये तहां प्राप्तिभये हैं ( ३१ ) यहिप्रकार ते राजा को बिमानसहित चितापर बैठावते भये पुनि परिक्रमाकरिकै अग्निलगाइदीन्ह नीकीप्रकारते दाहक्रियाकीन वेदविधि विधानते तिलांजुलिदेतभये ( ३२ ) पुनि उहां चौकी बैठायकै सहित समाज राजगृह को प्राप्तिभये तब श्रुति स्मृति पुराण शोधिकै भरतजी ते मुनि दशगात्र करावतेभये ( ३३ ) अरुजहांजहां मुनि आयसुदीन एकबार तहांतहां भरतजू सबप्रेमसंयुक्त हजार हजार बारकरते हैं ( ३४ ) एही भांतिते दशगात्र करिकै शुद्धभये पुनि धेनुबाजि गज रथ इत्यादिक नानाबाहननको दान देतभये ( ३५ ) दोहार्थ॥ पुनि सिंहासन भूषण बसन अन्न द्रब्य धरणी धन धाम राजाके हेतु ब्राह्मणनको मनबांछित दीन यहकार्य परिपूर्ण सिद्धिभयो ( ३६ ) श्रीभरत जी पिता के हेतु जो करणीकीन्ह सो शेष शारदा कोटिनमुखते नहींवरणिसकैं हैं ( ३७ ) त्यहिके उपरांत सुन्दर दिन घड़ी साइति लग्नशोधिकै श्रीवशिष्ठजी आवतेभये सबको बोलावतेभये अरु पुरजन परिजन सचिव इत्यादिक महा महाजन आवतेभये ( ३८ ) श्रीबशिष्ठजी सबको लैकै

सनभूषणबसनअन्नधरणिधनधाम दियेभरतलहिभूमिसुरभयेपरिपूरणकाम ३६ चौ० ॥ पितुहितभरतकीन्हजसकरणी सोमुखलाखजाइनहिंबरणी ३७ सुदिनसाधिमुनिबरतबआये पुरजनपरिजनसचिवबुलाये ३८ बैठेराजसभासबजाई पठयेबोलिभरतदोउभाई ३९ भरतवशिष्ठनिकटबैठारेनीतिधर्ममयबचनउचारे ४० प्रथमकथासबमुनिबरबरणी केकयिकुटिलकीन्हिजसिकरणी ४१ भूपधर्मब्रतसत्यसराहा ज्यइतनपरिहरिप्रेमनिबाहा ४२ कहतरामगुणशीलसुभाऊ सजलनयनपुलकेमुनिराऊ ४३ बहुरिलषणसियप्रीतिबखानीशोकसनेहमगनसबरानी ४४ दो० सुनहुभरतभावीप्रबलबिलखिकहीमुनिनाथहानिलाभजीवनमरण जसअपयश

राजसभाविषे बैठतेभये तब श्रीभरत शत्रुहन दूनौभाइन को बोलावतेभये ( ३९ ) भरतजी दूनौभाई आइकै श्रीवशिष्ठजीको दण्डवत् करिकै आज्ञापाइकै समीप बैठतेभये तब नीतिधर्म मय वचन मुनीश बोलतेभये ( ४० ) प्रथम बशिष्ठजी कैकेयीकै कुटिल करणी बर्णनकीन्हिहै ( ४१ ) पुनि भूपकर धर्म सत्यब्रत नीति सराहतेभये जो आपन प्रणकरिकै श्रीरामचन्द्र विषे प्रेम अच्छीतरह ते निबाहतभये हैं ( ४२ ) पुनि श्रीरामचन्द्रकर गुण शील सुभाव मुनि बर्णतसन्ते प्रेम ते गद्गद ह्वैगये नेत्रन में जलभरिआये ( ४३ ) पुनि श्रीजानजीकी अरु लक्ष्मण की प्रीति श्रीरामचन्द्र विषे बखानते भये ( ४४ ) दोहार्थ॥ हे भरतजू भवितब्यता प्रवल है बिलखिकही शोचकरिकै श्रीवशिष्ठजी कहते हैं भावीकही संसार विषे काल की प्रवलता सर्वोपरि भगवत्इच्छा तहां कर्मकीगतिसे ये सबहोते हैं ताते हानि लाभ जीवन मरण यश अपयश ये सब बिधाता के है किंतु विधाताकही भगवान् के हाथ है किंतु यहसबकै विधि अपनि कर्तव्य के हाथ है किंतु विधिकही कालके हाथ है ( ४५ ) हे भरतजू भवितब्यताजो होनहार है सो प्रबल है सो कालपाइकै होतै चलाआवत है ताते काहूबिषे दोषारोपणकरिकै वृथारोष न करौ ( ४६ ) हे तात बिचारिकै देखौ तौ महाराज श्रीदशरथजी शोचिवेयोग्य नहीं हैं काहतेजिनको उज्ज्वलयश त्रैलोक्यमें छाइरह्यो है ( ४७ ) शोचिबेयोग्य ते पुरुष हैं जिनको अयश संसार में ह्वैरह्योहै ते मृतक के समान हैं प्रमाणं श्रीभगवद्गीतायां श्लोकार्द्ध॥ सम्भावितस्यचाकीर्त्तिर्मरणादतिरिच्यते पुनि चौपाई॥ सम्भावितकहँअपयशलाहू मरणकोटिसमदारुणदाहू यहचारिवर्णके धर्म्म सूक्ष्मते कहते हैं ताते त्यहिब्राह्मणकर शोचकरी जो वैदिक

**विधिहाथ ४५ चौ० ॥ असबिचारिक्यहिदेइयदोषू वृथाकाहिपरकीजियरोषू ४६ तातबिचारकरहुमनमाहीं शोचयोगदशरथनृपनाहीं ४७ शोचियविप्रजोवेदविहीना तजिनिजधर्मबिषयलयलीना ४८ शोचियनृपतिनीतिनहिंजाना ज्यहिनप्रजाप्रियप्राणसमाना ४९ शोचियबैश्यकृपणधनवानू जोनअतिथिशिवभक्तसुजानू ५० शोचियशूद्रबिप्रअपमानी मुखरमानप्रियज्ञानगुमानी ५१ शोचियपुनिपतिवंचकनारी कुटिलकलहप्रियइच्छाचारी ५२ शोचियबटुनिजव्रतपरिहरई जोनहिंगुरुआयसुअनुसरई ५३ दो० ॥ शोचियगृहीजोमोहवशकरैकर्मपथत्याग शोचिययतीप्रपंचरतविगत-विवेकविराग ५४ चौ० ॥ वैषानससोइशोचनयोगू तप**

कर्म्म धर्म्मते विहीन है अरुब्राह्मण कर्म धर्म्म छोड़िकै विषयमें लयलीनहोइरह्योहै ( ४८ ) पुनि वहिक्षत्री राजा इत्यादिकनको शोचकरी जो राजनीतिको नहीं जानते हैं अरु जिनको प्रजाप्राणकेसमान नहींप्रियहै ( ४९ ) अरु त्यहिवैश्यकर शोचकरी जो धनवान् है अरु कृपण है अरु मनवचन कर्म्मते शिवकर भक्त नहीं हैं अरु जिनकोअतिथि प्रियनहीं हैं ( ५० ) पुनिवहि शूद्रकरशोचकरी जो ब्राह्मण कर अपमानकरैहै अरु मुखरकही अपनी बक्तृत्त्वजाको बहुतप्रियहै कि मैं बड़ावक्ताहौं अरु अपनेज्ञानकरगुमानहैचारि ये शोचिबेयोग्य सो कहे ( ५१ ) पुनिवरु स्त्री कर शोचकरै जो अपने पतिते वंचकई कही छलकरिकै परपति की इच्छाकरै है अरु कुटिल है निजइच्छाचारी है अरु कलह प्रिय है जाको ( ५२ ) पुनिचारि आश्रमको कहते हैं पुनिबटु जो ब्रह्मचारी है त्यहिको शोचकरी ज्यहि आपन ब्रतछांड़िदीन है अरु ज्यहितेविद्यापढ़ै त्यहिगुरुकीआज्ञानुसार न चले ताको शोचकरो ( ५३ ) दोहार्त्थ॥ अरु त्यहि गृहस्थ को शोचकरौ जो मोहआलस अरु लोभके बशह्वैकै वेदके अनुकूल जो गृहस्थ के कर्मधर्म है ताको त्यागकरै ताकोशोचकरी पुनि यतीकही संन्यासी जो अपनेधर्मकोत्यागिकै विषयप्रपंचमें रतहोइ अरु बिवेकबैराग्यको छोंड़िदियो है ताकोशोचकरी ( ५४ ) पुनि वैषानसकही वानप्रस्थ वहजो तपको विहाइकै विषय भोग्यकी इच्छाकरै तो शोचिबेयोग्य है ( ५५ ) पुनि पिशुनकही जो इहां उहांकी झूंठकहिकै बैरकराइदेते हैं अरु जो अकारणही क्रोधीहैं अरु जे मातापिता भाई कुटुम्बके विरोधी हैं ते शोचिबे योग्य हैं ( ५६ ) अरु पर अपकारी सबप्रकार ते शोचिबे योग्य है अरु जे निर्दय हैं निजतनु पोषकहैं ते शोचिबेयोग्य हैं ( ५७ ) अरु सब प्रकारते वे शोचिबेयोग्य हैं जे सब छलछांड़िकै श्रीरामचन्द्रके जननहीं होतेहैं परमेश्वरविषे छलकही लोकरंजनाजेती है वर्णाश्रम इत्यादिक देहाभिमानी जे हैं एते समस्त

**विहायज्यहिभावैभोगू ५५ शोचियपिशुनअकारणक्रोधी जननिजनकगुरुबन्धुविरोधी ५६ सबविधिशोचियपरअपकारी निजतनपोषकनिर्दयभारी ५७ शोचनीयसबहीविधिसोई जोनछांड़िछलहरिजनहोई ५८ शोचनीयनहिंकौशलराऊ भुवनचारिदशप्रकटप्रभाऊ ५९ भयेनहहिंनहिंहोनेहारा भूपभरतजसपितातुम्हारा ६० विधिहरिहरसुरपतिदिशिनाथा वरणहिंसबदशरथगुणगाथा ६१ तीनिकालत्रिभुवनजगमाहीं भूरिभागदशरथसमनाहीं ६२ दो० ॥ कहहुतातक्यहिभाँतिकोउकरैबड़ाईतासु रामलषण**

शोचिबे योग्य हैं काहेते मनुष्यतनुपाइकै अरु परलोक नहीं बनायो ते सबनरकको प्राप्तिहोते हैं बहुतकाल भोगकरिकै पुनि चौरासीको जाते हैं ताते शोचिबेयोग्य है ताते सर्वत्यागिकै हरिकोभजी ( ५८ ) हेभरतजी श्रीकौशलराज शोचिबे योग्यनहीं हैं काहेते कि जिनके उज्ज्वलयशको प्रभावचौदहौं भुवनतीनिकाल अरु तीनिहुलोक में छाइरह्यो है ( ५९ ) हे भरतजी दशरथके समतीनिहूलोकमें न कोई भयो है न कोई है न होइगो ( ६० ) देखिये तौ जिनदशरथ के सुयशको अहर्निश दशौदिग्पाल चन्द्रसूर्य ब्रह्मा विष्णु शिव इत्यादिक गावते हैं दिशाके दिग्पालकेनाम पश्चिमबरुण १ बायव्यपवन २ उत्तरकुवेर ३ ईशानशिव ४ पूर्वइंद्र ५ अग्निमेंअग्नि ६ दक्षिणयम ७ नैऋत्यकेनिऋतनामें देवता इतिअष्टदिशा अरु दिशाके दिग्पाल ( ६१ ) हे भरतजी तीनिहु कालतीनिहूलोकमेंअरु लोकनके अंतरायमें भूरिकही समूह भाग्यमान दशरथके समानकोई नहीं है ( ६२ ) दोहार्त्थ॥ हेतात हृदयमें विचारिदेखौ जिन श्रीदशरथके पुत्र श्रीरामचन्द्र तुमलक्ष्मण शत्रुहन श्रीजानकीजी ऐसीपतोहू तहांराजा की बड़ाई को करिसकै है ( ६३ ) ताते सबप्रकारते भूपति बड़भागी हैं तिनके हेतुविषादकरना वृथा है ( ६४ ) यहहमारी बातसुनिकै समुझिकै शोकपरिहरो राजाकी रजाय शीशपरधरिकै शीघ्रजरूरकरहु ( ६५ ) राजैं राज्यपदवी तुमको दीनहै तातेपिताको वचनफुर किया चाहिये ( ६६ ) श्रीदशरथका बाक्यकैसा है ज्यहिबाक्यको राखिकै श्रीरामचन्द्रको त्यागकीन श्रीरामचन्द्र कैसे हैं जिनके विरहप्रेमकरिकै तनुकोतृण इवत्यागिदीन है ( ६७ ) देखिये तौ राजाको प्राणहुते वचनप्रियहैं त्यहिवचनको प्रमाणकरहु ( ६८ ) राजाकै रजाय शीशपरधरिकै करहु तुमको सबप्रकारते

**तुमशत्रुहनसरिससुवनसुतजासु ६३ चौ० ॥ सबप्रकारभूपतिबड़भागी बादिविषादकरियत्यहिलागी ६४ यहसुनिसमुझिशोक परिहरहू शिरधरिरामरजायसुकरहू ६५ रायराजपदतुमकहँदीन्हा पितावचनफुरचाहियकीन्हा ६६ तज्यहुरामज्यहिवचनहिलागी तनुपरिहरयउरामविरहागी ६७ नृपहिवचनप्रियनहिंप्रियप्राणा करहुतातसोइवचनप्रमाणा ६८ करहुशीशधरिरामरजाई हैतुमकहँसबभाँतिभलाई ६९ परशुरामपितुआज्ञाराखी मारीमातुवेदसबसाखी ७० तनययययातिहिंयौवनदयऊ पितुआज्ञाअघअयशनभयऊ ७१ दो. ॥अनुचितउचितबिचारतजिजेपालहिंपितुबयन तेभाजनसुखसुयशकेबसहिंअमरपतिअयन ७२ चौ० ॥ अवशिनरेशवचनफुरकरहू पालहुप्रजाशोकपरिहरहू ७३ सुरपुरनृपपाइहिपरितोषू तुमकहँसुकृतसुयशनहिंदोषू ७४**

भला है ( ६९ ) हे पार्वती पिताके वचन परशुरामने धारणकरिकै माता को मारिडारयो यह इतिहास सर्वत्रविदित है ( ७० ) पुनि राजाययाति के पुत्र ने पिता की आज्ञाते अपनी युवावस्था पिताकोदीन पिताकी वृद्धअवस्था आपुअंगीकारकीन तहांपुत्रकी युवावस्था पिताधारण करिकै दूसरीरानीते भोगकरतभयो तहां वेदमर्याद है कि पुत्र अघअयशको प्राप्तिहोय तहां पिताकीआज्ञाते अघअयशको नहीं प्राप्तभयो है यह इतिहास श्रीभागवतमें प्रसिद्ध है ( ७१ ) ताते हे भरतजू पिताके बचनको अनुचित उचित बिचारतजिकै

प्रतिपाल करिये यहवेदकी आज्ञा है पिताकी आज्ञा जे प्रतिपाल करते हैं तेसुखसुयशके भाजनहोते हैं अरु अमरपतिके स्थानविषे बसतेहैं ते पुरुष किंतु अमरजे हैं देवता तिनसबके पति श्रीरामचन्द्र तिनके पुरविषे जातहैं ( ७२ ) हे भरतजू विशेषकै राजाके वचनको फुरकरहु प्रजनकरशोक हरहु पालन करहु ( ७३ ) राजास्वर्ग लोक में खुशीहोइँगे अरु तुम्हारो सुयशसुकृतहोइगो दोषनहीं होइगो ( ७४ ) अरु लोकवेदको सम्मत सिद्धांतयही है किछोटे बड़ेको विचारनहीं है जाको पिताराज्यदेइ सो राज्यपर बैठेहै ( ७५ ) ताते तुमशोचको तजिकै मेरेबचनको हितरूपमानिकै राज्यकरहु ( ७६ ) अरु पण्डितजन तुमको दोषनहीं देहिंगे अरु श्रीरामचन्द्र अरु वैदेही बनमेंयहबात सुनिकै खुशीहोहिंगे तुमपर प्रसन्नहोहिंगे ( ७७ ) कौशल्यादिक श्रीरामचन्द्र की सबमातासम हैं तेऊप्रजाके सुखतेसुखीहोहिंगी ( ७८ ) अरु हेतात अपनेमनविषे बिचारिदेखौ का तुम्हारे शरणागत के मर्मको श्रीरामचन्द्र नहीं जानते हैं यहां कोकोक्ति अर्थ है तहां श्रीरामचन्द्र सबमर्म तुम्हार जानते हैं सो श्रीरामचन्द्र तुमहींको सकल

वेदविदितसम्मतसबहीका ज्यहिपितुदेइसोपावैटीका ७५ करहुराज्यपरिहरहुगलानी मानहुमोरवचनहितमानी ७६ सुनिसुखलहबरामवैदेही अनुचितकहबनपण्डिततेही ७७ कौशल्यादिराममहतारी त्यऊप्रजासुखहोहिंसुखारी ७८ मर्मतुम्हाररामकिनजानहिं सोतुमसनसबविधिभलमानहिं ७९ सौंप्यहुराज्यरामकेआये सेवाकरयहुसनेहसुभाये ८० दो० ॥ कीजियगुरुआयसुअवशिकहइसचिवकरजोरि रघुपतिआयेउचित जसतसतबकरबबहोरि ८१॥

विधि भलामानते हैं तहां एकबिधि है अरु एकनिषेध है तहां जोभलाकर्मज्ञान उपासना है सत्यबाणी तीर्थ ब्रत जप तप नेम संयम विद्याध्ययन यज्ञदान पित्रदेव भागदेना इत्यादिकजे भलेभलेकर्महैं ते सबकर्मकेविधिहैं अरु शांतिसंतोष क्षमाकरुणा दयाशील योग वैराग्य ज्ञान विज्ञान सर्व भूतविषे राम बाह्यांतरब्यापक दृष्टि ध्यान समाधि दुःखसुख हर्षशोक मानापमान निंदा स्तुति इत्यादिक मनहूमें न उठै अरु ग्रहणयोग ग्रहणकरै यहज्ञानकी भली विधिकै अरु दूनौविधिते पूर्ण अरु भगवत्कैङ्कर्य प्रेमते साक्षात्मानिकै बाह्यांतर सहजानंद चित्तकै वृत्ति नामरूप धामलीला विषे संस्कारसंयुक्त सेवक सेब्यभावयुक्त अनन्य शरणागत यह उपासनाकी भलीविधि है वशिष्ठकहते हैं सो सबविधि भलेप्रकार तुमविषे श्रीरामचन्द्र जानेहैं अपनेविषे ताते तुमसदा निर्मलहौ हेभरततुम्हारे आधीन सर्वविधि है अरु कर्म मनबाणी विकार अनेक सोनिषेध सो तुम विषे सर्वथात्याग है अरु सम्पूर्ण विधिग्रहण है ( ७९ ) हे भरतजी श्रीरामचन्द्र जब आवैंगे तबराज्य सौंपिदिह्यो अरु दूनौनाई सर्व भावते सेवाकिह्यो ( ८० ) दोहार्त्थ॥ पुनिपुनि सुमंतबोले हे भरतजी जोगुरुकहते हैं सो अवश्यकरिये ऐसे श्रीरामचन्द्रने मोसेकहाहै सो करहु पुनि श्रीरामचन्द्रके आयेते जसउचित होइहि तस बहोरिकै करब ( ८१ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसनेश्रीअयोध्याकाण्डे श्रीवशिष्ठउपदेश वर्णनंनामचतुर्थस्तरंगः ४॥ :: :: ::

दोहा॥ रामसचिवगुरुबचनबर उत्तरभरतविशेखि प्रेमसुधामयबोधसुख रामचरणचलिदेखि ५ ॥ श्रीकौशिल्याजी धीरजधरिकै कहती हैं हे पुत्र हमसमस्तपुरबासीप्रजा श्रीरामचन्द्रके बियोगकरिकै अतिदुःखी हैं त्यहिदुःखके कछुशांतिकरिबेको गुरुनको बचन औषध अरु पथ्यहै सो

चौ० ॥ कौशल्याधरिधीरजकहई पुत्रपंत्थ्यगुरुआयसुअहई १ सोआदरियकरियहितमानी तजियविषादकालगतिजानी २ बनरघुपतिसुरपुरनरनाहू तुमयहिभाँतितातकदराहू ३ परिजनप्रजासचिवकहअंबा तुमहींसुतसबकरअवलंबा ४ लखिबिधिबाम कालकठिनाई धीरजधरहुमातुबलिजाई ५ शिरधरिगुरुआयसुअनुसरहू प्रजापालिपरिजनदुखहरहू ६ गुरुकेवचनसचिवअभिनन्दन

करहु ( १ ) हेतात गुरुनके बचनको आदरकरो हितमानिकै कालकीगतिजानिकै बिषादत्यागिदेहु तहांभरतको श्रीबशिष्ठजी बिशेष राज्योपदेशकरते का भरतके रहस्यको नहीं जानते हैं सोसब नहीं जानते हैं भरतकैगति अगमहै भरतमहामहिमा सुनुरानी जानहिंरामनसकहिंबखानी ( २ ) हे पुत्र श्रीरामचन्द्र बन में हैं अरु राजा स्वर्गमें हैं अरु तुम यहिभांतिते कदरातेहौ हमसबकैसेजियब ( ३ ) हे पार्वती श्रीकौशल्याजी कहती हैं हे सुतपरिजन प्रजा सचिव इत्यादिक सबके अवलम्ब तुमहींहौ ( ४ ) हे तात विधिकैबामता अरु कालकै कठोरता जानिकै धीरजधरहु हे लाल मैं तुम्हारीबलिजाउंहौं मातै आर्त्तबचनकहा कि हम बहुतदुःखी हैं वहुतका कहैं ( ५ ) हे वत्स गुरुनकी आज्ञानुकूलकरहु प्रजनको पालनकरहुदुःखहरहु ( ६ ) हे पार्वती गुरुके वचनके अनुसूत सचिवकी अभिनन्दनकही अभिलाषा सोभरतजीसुनतेभये तहांभरतजू यह जानतेभये कि द्वौमहज्जनके वचन मोरे हृदय अरुमनकेहितकारकोजनुचंदनशीतलकर्त्ताहैं ( ७ ) पुनिमाताकोबचनमृदुल शील अरुस्नेहरससानीवाणीसुनतभयेहैं ( ८ ) शुभगीतछन्दार्थ॥ माताकैबाणी अति आरत वात्सल्य रस मय अरु गुरु सुमंतकैसम्मतभरी नीतियुक्त वेदमर्यादमय अरु शीतलचंदनमय भरतजीसुनतभये तहां श्रीरामचन्द्रकी बिरहाग्नि अतिप्रज्वलित तामें शीतलबाणीचंदन माखनइब विरह अग्निमेंपरी अधिकप्रज्वलितभयोहै तातेभरतजू अति ब्याकुलभये हैं तबनेत्रन बिषेजलको प्रवाहचलो है जनु बिरहको नवीन अंकुरसींचत श्रीरामचन्द्रके बिरह अधिक अधिकात भयो है ( ९ ) हे पार्वती भरतकै सो दशा देखतसन्ते सबको अपने अपने देहकी दशा भूलिगईहै तहां गोसाईंतुलसीदास कहते हैं भरतकेस्नेहकै मर्याद सबबखानते हैं ( १० ) सोरठार्थ॥ तब भरतजी धीरके धुरंधर धीरधरिकै कमल करजोरिकै अमृतमय बचनबोलते भये उचित उत्तर देते हैं ( ११ ) भरतजू बोले हे सत्सभा समस्त

सुन्यउभरतहितउरजनुचन्दन ७ सुनीबहोरिमातुमृदुबानी शीलसनेहसरलरससानी ८ छंद॥ सानीसरलरसमातुबाणीसुनि भरतब्याकुलभये लोचनसरोरुहश्रवणसींचतविरहउरअंकुरनये ९ सोदशादेखतसमयत्यहिबिसरीसबहिंसुधिदेहकी तुलसीसराहतसकलसादरशीलसहजसनेहकी १० सो०॥ भरतकमलकरजोरिधीरधुरंधरधीरधरि वचनअमियरसबोरिदेतउचितउत्तरसबहिं ११ चौ०॥ म्वहिंउपदेशदीन्हगुरुनीका प्रजासचिवसम्मतसबहीका १२ मातुउचितपुनिआयसुदीन्हा अवशिशीशधरिचाहियकीन्हा १३ गुरुपितुमातुस्वामिहितबानी सुनिमनमुदितकरीभलजानी १४ उचितकिअनुचितकियेबिचारू धर्मजाइशिरपातक

सुनहु मोको गुरुन नीकउपदेशदीन है जामें माता सचिव प्रजा इत्यादिकसबकर सम्मत है ( १२ ) अरु माता जो उचित आज्ञादीन है ताको अवशिकै शीशपर धरिकै कीनचाहिये ( १३ ) श्रीभरतजी बोलतेभये सोसुनहु तहां यह मैं जानतहौं कि गुरु जो हैं अरु माता पिता स्वामीकही जो सबप्रकारते अपनप्रतिपाल करै इनको वचन आपन परमहित जानिकै मुदितमनते विशेषकै कियाचाहिये ( १४ ) अरु जो इनकी वाणी विषे उचित अनुचित विचारकरिये तौ महापातक को भार शिरपर होतहै अरु धर्म्मजाय है यह दुइचौपाई में भरतकी वाणीविषे विशेष सर्व धर्मको परित्याग अनन्य शरणागत को अभिप्राय समष्टीकरिकै यही जगहमें कहतहौं देखिये तौ यहि चारिउ महान् की वाणी अंगीकार किये ते परम धर्मकहाहै अरु त्यहि सबको परित्यागकरिकै भरतजी श्रीरामचन्द्रकी शरणको जाहिंगे पर तिन चारिउवाणी के भावविषे अभावनहीं है तहां उनकीवाणी के अनुकूल उनकी वाणी को त्यागकीन है इहां ब्यंग्योक्ति अलंकार है प्रमाणं श्रीभगवद्गीतायां श्रीभगवद्वाक्यं श्लोकार्द्धम्॥ सर्वधर्मान्परित्यज्यमामेकंशरणंब्रज इहां सर्वकही सम्पूर्ण धर्म ज्यहिकेआगे दूसर धर्मनहीं है सो गुरु मातु पितु स्वामीकै आज्ञा तामें जो श्रीरामचन्द्र के शरणमें अल्पौ बिक्षेप जानिये तौ वहिधर्मको त्यागिकै श्रीरामशरणको दृढ़करिये यह सम्पूर्ण को त्याग निश्चय निर्दोष है ( १५ ) हे पार्बती भरतजी बोलते भये तहां गुरुमातु मंत्री इत्यादिक ते सब मोको उचित सिखापन देते हैं

ज्यहि आचरतसन्ते मोरभलाहोइ ( १६ ) यद्यपि यह नीकीप्रकार ते जानतहौं तदपि जीमें परितोष नहींहोत है ( १७ ) अब सब मिलिकै मोरिविनयसुनहु मोरअनुहरत सिखापनदेहु ( १८ )

**भारू १५ तुमतौदेउसरलसिखसोई जोआचरतमोरभलहोई १६ यद्यपियहसमुझतहौंनीके तदपिहोतपरितोषनजीके १७ अबतुमविनयमोरिसुनिलेहू म्वहिंअनुहरतशिखापनदेहू १८ उत्तरदेउंक्षमबअपराधूदुखितदोषगुणगनहिंनसाधू १९ दो० ॥ पितुसुरपुरसिय रामबनकरनकहौम्वहिंराजय- हितेजानौमोरहितकैआपनबड़काज २० चौ० हितहमारसियपदसेवकाई सोहरिलीन्हिमातु कुटिलाई २१ मैंअनुमानिदीखमनमाहीं आनउपायमोरहितनाहीं २२ शोकसमाजराजक्यहिंलेखेलषणरामसियबिनुपददेखे २३ बादिवसनबिनुभूषणभारू बादिविरतिबिनुब्रह्मविचारू २४ सरुजशरीरबादिबहुभोगा बिनुहरिभक्तिजायजपयोगा २५**

अब मैं तुम्हारे वचनको उत्तर देत हौं अपराध क्षमाकरहु काहेते दुखितजे हैं तिनकर दोष अरु गुण साधु मन में नहींल्यावते हैं ( १९ ) दोहार्थ॥ भरतजीबोले हे सद्सभा आपु अपने मनमेंबिचारिकै देखौ तौ पितातौ सुरपुरविषे अरु श्रीसीता रामचन्द्र लक्ष्मणजी वनविषे अरु तहां तुम मोको राज्यदेतेहौ तहां यहबात में मेरो भला अरु तुम्हारो कार्य सिद्धिहोइगो यह निश्चयजानतेहौ बातसमुझिकैकहहु इहां काकोक्ति अलंकार है ( २० ) तहां हमार हित केवल सीतापति की सेवकाईमेंहै सो माताकी कुटिलाई हरिलीन है सो सेवकाई अबधौं कब मिलैगी ( २१ ) मैं अपने मनविषे अनुमानकरिकै देखिलीन कि और अनेकन उपायकिहेते मोरभला नहीं है ( २२ ) देखिये तौ शोक की समाजविषे राज्यकर कौनलेखा है सुनो लक्ष्मणजी श्रीरामचन्द्रजी श्रीजानकीजीके चरणारविंद देखेबिना कौनिउबस्तु कै कौनिउचर्चा है ( २३ ) अब मोरि विशेष बात सुनहु जैसे बिना वस्त्र अनेक भूषण वृथा हैं पुनि जैसे बिनाबैराग्यब्रह्मविचारवृथा है ( २४ ) रोगी शरीरविषे अनेक भोजन भोगवृथा हैं अरु जप योग इत्यादिक जेते मोक्षके साधन हैं सब हरिकी भक्ति बिनावृथा हैं इहां भक्ति काको कही केवल श्रीरामरूपानुराग अहर्निशि सहजानन्द अखण्डवृत्ति यह प्रेमापरा मिश्राभक्ति है इहां हरिभक्ति गोसाईं क्यों कहाहै श्रीरामभक्ति क्यों नहींकही इहां उपासना कर तात्पर्यनहीं है इहां सर्वजीवन को शिक्षा भागहेतुहै काहेते हरिशब्द सर्वोपरि ताकोबोध है ताते हरिभक्ति कहा है पुनि हरिकही श्लोकार्द्ध॥ हरिर्हरतिपापानिदुष्टचित्तैरपिस्मृतः तहां रामनामधोख्यहु उच्चारणकरत सन्ते जन्ममरणको पाप मिटिजात है सो प्रसिद्ध है ताते हरिकहा ( २५ ) जैसे अति सुन्दरि देह है अरु जीवनहीं है तब वह देह मृतक है तैसे यहदेह देहकेसम्बन्धी मान बड़ाई सुकर्म धर्म अरुत्रैलोक्यकरराज्य अरु सर्व सिद्धि

**जाइजीवबिनुदेहसुहाई बादिमोरसबबिनुरघुराई २६ जाउँरामपहँआयसुदेहू एकहिआँकमोरभलएहू २७ म्वहिंनृपकरिआपनहितचहहू सोसनेहजड़तावशअहहू २८ दो० ॥ केकयिसुवनकुटिलमतिरामविमुखगतलाज तुमचाहौसुखमोहबशम्वहिंसेअधमकेराज २९ चौ० ॥ कहौंसांचसबसुनिपतिआहू चाहियधर्मशीलनरनाहू ३० मोहिंराजदेइहौहठिजबहीं रसारसातलजाइ**

प्राप्ति है इत्यादिक सब श्रीरामचन्द्र बिना मट्टी हैं परमगहकै ऐसीहै सबविवेकी कहते हैं ( २६ ) ताते अबसब मिलिकै आज्ञादेहु मैं श्रीरामसमीपजाउं जाउंकही एक अंक यही में मेरो भला है ( २७ ) अरु मोकोराजाकरिकै अपनो भलाचाहतेहौ सो वृथा है तुम्हारी सबकै बुद्धि जड़ ह्वैगईहै मोह स्नेह के बशहोइकै देखिये तौ भरतजी माता गुरुआदिकसबको कहते काहेते जाकीवाणी श्रीरामचन्द्रते तनिकौ विक्षेपकरै ताको त्यागशास्त्र कहैहैं भागवते श्लोकएक १ गुरुर्नसस्यात्स्वजनोनसस्स्यात्पितान-

सस्स्याज्जननीनसास्यात्। दैवंनसस्स्यान्नपतिश्चसस्स्यान्नमोचयेद्यः समुपैत्यमृत्युं १ इहां आगे यहि प्रकरणभरे में काकोक्ति अलङ्कार अरु व्यङ्ग्योक्ति अभिप्राय नीचानुसन्धान अरु प्रतिकूलको त्यागे अनुकूलमें संकल्प अरु कार्पण्य तीनिके अवान्तर षट्शरणागत जानब ( २८ ) दोहार्थ॥ कैकेयी कुटिल मन्दमतिगतलाज त्यहिकर मैं पुत्र किन्तु कैकेयी को मैं सुवन अतिकुटिल मन्दमति गतलाज त्यहिअधम को तुम राज्यदैकै आपन भला चाहतेहौ सो वृथाहै ( २९ ) मैं सत्यकहतहौं सबमिलि सुनिकै प्रतीतिमानहु राजा धर्मशील चाही ( ३० ) अरु मोंको हठिकैराज्यदेहुगे तौ रसाकही पृथ्वी रसातल को जायगी ( ३१ ) अपने मन में भलीबात विचार तौ करौ मोरे सम पापनिवासी जगत् में को है नहीं है काहेते मोरेकारण सीताराम बनवास कीन्ह है ( ३२ ) देखिये तौ राजैं श्रीरामचन्द्र को बनदीन है तहां रामइच्छानुकूल ताहूपर श्रीरामबिरहमें शरीरत्यागिदीनहै अमरपुरमें वासकीन्हहै ( ३३ ) सम्पूर्णअनर्थकर कारणमहींहौं तापर चैतन्य ह्वइकै सबकीबातसुनतहौं असगतलाज मैंहौं ( ३४ ) बसूकहीस्थानको सो श्रीरामचन्द्रते बिहीनपुर देख्यों ताहू पर प्राण न गये अनेकउपहासकही हँसौवा निन्दाजगत्‌बिषेसहतहौं और सहौं तहां कोजाने श्रीरामइच्छा श्रीराममाया अपनो संस्कार प्रारब्धि येते जीवके ऊपर प्रबलहैं ( ३५ ) अरु श्रीरामचन्द्र तौ पुनीतकही अतिपवित्र हैं काहेते जाते त्रैगुण्यजनित विषयते रूखे हैं रूखेकही तीनिगुण

**हितबहीं ३१ म्वहिंसमानकोपापनिवासी ज्यहिलगिसीयरामवनबासी ३२ रायरामकहँकाननदीन्हा बिछुरतगवनअमरपुरकीन्हा ३३ मैंशठसबअनरथकरहेतू बैठिबातसबसुनौंसचेतू ३४ बिनरघुवीरविलोकियबासू रहेप्राणसहिजगउपहासू ३५ रामपुनीतविषयरसरूखे लोलुपभूपभूमिकेभूंखे ३६ कहँलगिकहौंहृदयकठिनाई निदरिकुलिशज्यहिलीनबड़ाई ३७ दो० ॥ कारणतेकारजकठिनहोइदोषनहिँमोर कुलिशअस्थितेउपलतेलोहकरालकठोर ३८ चौ० ॥ केकयिसुतभवतनअनुरागे पाँवरप्राण**

त्रैलोक्य विषयते परे हैं अरु मृत्युलोकको विषय त्यहिके राज्यकी कवनिगनती है अरु लोलुपकही मिथ्याबादी लोभी परनारि परधनहर्त्ता ऐसेराजाहैं ते भूमिके भूखे हैं अस्मदादिक ताहीते तुम राज्यहमको देतेहौ ( ३६ ) अरु मैं अपने हृदय की कठोरता कहांलगिकहौं जो जियतै मेरो हृदय बज्रकी कठोरता कोनिदरिकै बड़ाईलेतभयो ( ३७ ) दोहार्थ॥ भरतजी व्यंग्यार्थ कहते हैं कि तुम जो राज्यमोको देतेहौ सो उचितै है काहेते कहूंकारण ते कार्य्य कठिनहोत है इहांकछुमोर दोषनहीं है देखिये तौ राजादधीच की अस्थि करिकै इन्द्रको बज्रभयो सो कारणते कार्य कठिन भयो अरु उपलकही पर्वतते लोहाहोतहै सो कठिन भयो तैसे मैं कैकेयी कहौं त्यइ श्रीरामचन्द्रको बनदियो अरु राजाको प्राणलियो तहांमोको त्यहिते अधिक कराचाहिये ताते तुमराज्य देतेहौ इहांव्यंग्योक्तितर्क करिकै सबकैबाणी आक्षेप करिदीन है ( ३८ ) पुनि कहते हैं किमोकोधिक्है जो श्रीसीताराम कर बनगमन सुनतसंते प्राणनगये कैकेयीतेउत्पन्न पुत्रजानिकै यहितनुमें प्राणन अनुराग कीन्हहै तातेनहीं त्यागत हैं ताते अघाइकै अभागी हैं ( ३९ ) जो अतिप्रिय रघुनन्दनजी अरु जिनकेविक्षेप के विरहते यहशरीर प्राणको नहीं त्याग कियो प्राणप्रियलागेहैं तौकोजानै धौंआगेका सुनिबे देखिबेमें आवैगो ( ४० ) इहांभरतजी अतिक्लेश करिकै कहते हैं देखिये तौ कैकेयी असकीन जसब्रह्मांड में कोईनकरै लक्ष्मण जानकी अरु श्रीरामचन्द्र को बनदीन अरु पतिकोअमरपुरदीन मानहु अतिहितकीन किन्तु यहसब करिकै मानहु मोर अरु आपनहित कीन्ह एती कैकेयी की बुद्धिविपर्यय आश्चर्यवत् भई है ( ४१ ) कैकेयीने अपनी हानिलाभ नहीं समुझी आपुतौ विधवपनलीन्ह अरु प्रजापरिवारको महाक्लेशदीन मोरेहेतु असमय भयोहौं ( ४२ ) देखिये तौ कैकेयी मोकोसुख सुयश अरु राज्य देतभई अरु सबकर कार्य

**नजाहिंअभागे ३९ जोप्रियबिरहप्राणप्रियलागे देखबसुनबबहुतअबआगे ४० लषणरामसियकहँबनदीन्हा पठैअमरपुरपतिहितकीन्हा ४१ लीन्हबिधवपनअपयशआपू दीन्ह्यउप्रजहिशोकसंतापू ४२ मोहिंदीन्हसुखसुयशसुराजू कीन्हकेकयीसबकरकाजू ४३ यहितेमोरकहाअबनीका**

**त्यहिपरदेनकहहुपुनिटीका ४४ केकयिजठरजन्मजगमाहीं अबमोकहंकछुअनुचितनाही ४५ मोरिबातसबबिधिहिबनाई प्रजापांचकतकरहुसहाई ४६ दो० ॥ ग्रहगृहीतपुनिबातवशत्यहिपुनिबीछीमार ताहिपिआइयबारुणीकहहुकवन**

करतिभई त्यहिकी कर्तव्यविषे तुम सब प्रकारते मोरनीक देख्योहै ( ४३ ) तहां यहिते अधिकनीक मोरकवन है असत्यहिपर तुमटीका देनकहते हौ इहांसमाजविषे भरतजी व्यंजनाजनावते हैं अरु श्रीरामचन्द्रविषेलक्षणा जानिये ( ४४ ) यह जो तुमकहतेहौ सो सबउचितहै काहेते मैं कैकेयी के जठरमें गर्भ ते उत्पन्नभयों ताते मोको सर्वविधि जो है सोनिषेध ह्वइगये सर्बनिषेधविधिभये ताते मोको कछु अनुचितनहींहै सब उचितैहै इहां सरस्वतीके अर्थबिषे भरतके मनक्रम बाणी में सबपरमउचित है अनुचित लेशहूनहींहै ( ४५ ) पुनि भरतकहते हैं कि मोरिबात सब बिधातैं बनाइराखी है प्रजा अरु तुमसब पंचमिलि कतसहायकरतेहौ ( ४६ ) दोहार्थ॥ देखिये तौ जे प्राणी कपूतग्रहकरिकै ग्रसितहैं पुनि कफ बात पित्तकरिकै सन्निपातके बशहैं अरु तापर ताको बीछी मारयउहै अरु ताको मदिरा पियाई है तहां वहिप्राणी के सावधान आराम होबे को कहौ कौन उपचार करिये उपचारकही कछु उपाय नहीं है सो चारिउ मोहींपर भये हैं तहां देवतनकरिकै जो उपाधि सोकपूत ग्रह चढ़ी है अरु कैकेयी करिकै श्रीरामचन्द्र श्रीजानकी श्रीलक्ष्मणकर बनगमन सो सन्निपातबातभयो है अरु राजाको मरण सोई हजारबीछूमारयउ है अरु तापर तुमराज्यमद पिआवतेहौ ( ४७ ) इहांसबकाकोक्ति व्यंग्यजानब भरतजी कहते हैं कि कैकेयी के योग्यपुत्र जगत्में जोइकही देखिकै चतुरविधातैं मोकोउत्पन्न करिदीनहै ( ४८ ) पर एकविधाताते नहींकरतबन्योहै जो दशरथकोपुत्र श्रीराम तिनकर लघुभाई यहबड़ाई विधि मोको वृथादीनि है देखियेतौ इहांविधाताको चतुरकहाहै अरु अनारीभी कहाहै इहां नीचानुसन्धान करिकै अपनेविषे दोषारोपण करिकै विधाताको अध्यारोपण करिकै दोऊवाक्यनमें निन्दाकीनिहै ( ४९ ) अरुतुमसब राज्यतिलक देतेहौ तहां रायकही राजा कहावना अरु राज्य-

**उपचार ४७ चौ० ॥ केकयिसुवनयोगजगजोईचतुरबिरंचिरचाम्वहिंसोई ४८ दशरथतनयरामलघुभाईदीन्हमोहिंबिधिबादिबड़ाई ४९ तुमसबकहहुकढ़ावनटीका रायराजसबहींकहँनीका ५० उतरदेउं क्यहिविधिक्यहिकेहीकहहुसुखेनयथारुचिजेही ५१ मोहिंकुमातुसमेतबिहाई कहहुकहिहिकोकीन्हभलाई ५२ म्वहिंबिनुकोसचराचरमाहीं ज्यहिसियरामप्राणप्रियनाहीं ५३ परमहानिसबकहँबड़लाहूअदिनमोरनहिंदूषणकाहू ५४ संशयग्रसितशोकवशअहहूसबैउचितसबजोकछुकहहू ५५ दो० ॥ राममातुसुठिसरलचितमोपर**

गद्दीपर बैठनायहसबको नीकलागत है ( ५० ) अब मैं क्यहिको क्यहिको उत्तरदेउं जाकोजसरुचै सोतसकहौ ( ५१ ) म्वहिं अरु कुमातु दुइ को विहायकै अरु तुमहिं इत्यादिक जगत्में कैंभलाईकीनि है फिरिकहते हैं कि हम दोऊभलाईकीन्हेहै अपरसब अनभले हैं नामहम द्वौ जगत् में अनभल हैं अपरसब भले हैं ( ५२ ) हम द्वौ बिनु सचराचर जगत् में अस कौन जीव है ज्यहिको श्रीसीताराम प्राणहु ते प्रियनहींहैं एकहम द्वौको अप्रिय हैं ( ५३ ) देखिये तौ श्रीरामचन्द्र को बनगमन समष्टीसर्बजीवनको परमलाभ है अरु एक मेरी परमहानि है सो मेरो अदिन आइ प्राप्तिभयो है काहूको दूषणनहीं है ( ५४ ) अरु तुमसब सकामसंशयकरिकै शोक ते ग्रसितहौ यह संशय कि बिना राजा धौं काहोइगो ताते शोकवशह्वैकै जो कछुकहहु सो सब उचित है पर श्रीराम प्रताप तुम्हार सबकर भलाकरैगो शोच न करौ एकमोहींको जो होइहि सो होइहि ( ५५ ) दोहार्त्थ॥ मोको जो श्रीरामचन्द्र की माता कहती हैं कि राज्यकरहु तहां माताकर सुठिसरल चित्त है अरु मोपर विशेष प्रेमकरतीहैं ताते सरलसुभाव ते स्नेहवश मोरिदीनता देखिकै कहतीहैं ( ५६ ) तहां एकही आश्चर्य मोकोलागत है कि श्रीगुरु विवेक के सागर अरु त्रिकालदर्शी जिनके हस्तामलक सम्पूर्ण जगत् को विषय स्वार्थ परमार्थसब है जैसे बदरिकही बेरिको फल मुट्टीमें रहै है ( ५७ ) ऐसे गुरु तेऊ मोको तिलककर साजसाजते हैं तहां विधाता मोपर विमुख है ताते सबैबिमुखभये हैं ( ५८ ) एक श्रीसीताराम को छोंड़िकै अपरको

नहींकहिहि कि भरतको सम्मत नहीं है ( ५९ ) सो मैं सबसुनब अरु सहबसुखमानिकै काहेते जहाँ जल है तहां अन्तहु में कीच होतिही है म्वहिंकरिकै यहसब प्रपंचभयो ताते अयश को भाजन मैं कस न होउँ ( ६० ) अरु जो जगत् पोच कहै तौ यहडर मोकोनहीं है अरु परलोकबनिबे

प्रेमबिशेषि कहहिंसुभावसनेहबशमोरिदीनतादेखि ५६ चौ० ॥ गुरुविवेकसागरजगनाना जिनहिंविश्वकरबदरसमाना ५७ मोकहँतिलकसाजसजसोऊ भाविधिविमुखविमुखसबकोऊ ५८ परिहरिसीयरामजगमाहीं कोनहिंकहिहिमोरमतनाहीं ५९ सो मैंसुनबसहबसुखमानी अंतहुकीचतहाँजहँपानी ६० डरनमोहिंजगकहिहिकिपोचूपरलोकहुकरनाहिंनशोचू ६१ एकैडरजरदुसहदवारीमोहिंलगिभेसियरामदुखारी ६२ जीवनलाभलषणभलपावा सबतजिरामचरणलवलावा ६३ मोरजन्मरघुवरवनलागी झूंठकाहपछिताउंअभागी ६४ दो० ॥ आपनिदारुणदीनता सबहिंकहौंशिरनाइदेखेबिनु-रघुवीरपदजियकीजरनिनजाइ ६५ चौ० ॥ आनउपायमोहिंनहिंसूझा

बिगरिबेकर शोच नहीं है ( ६१ ) तहां एकही दुसहदावाते हृदय जराजातहै काहेते मोरे कारण सीताराम ने बनमें गमनकीन्ह है ( ६२ ) तहां जीवनकर लाभ लक्ष्मणजी ने भलेप्रकार पायो है जिन सर्ब धर्म कर्मनेहनाते त्यागिकै ब्रह्मस्वरूप के पदपद्म को आश्रयलीनहै ( ६३ ) देखिये तौ हे बिधाता मोरजन्म केवल श्रीराम के बनगमनहेतुभयो मैं अभागीझूंठही पछितात हौं ( ६४ ) दोहार्थ॥ अब मैं आपनि दारुण दीनता सबते सविनय करजोरिकै शिरनाइकै कहतहौं श्रीसीताराम के चरणकमल देखेबिना यहजीवकै जरनि न जायगी कोटिहु यत्न ते देखिये तौ गुरु मातु मंत्री इत्यादिकके वचनको नहींमान्वोहै पर भरतकीवाणी में सबै आनन्दको प्राप्तिभये हैं अतिप्रसन्न हैं काहेते भरतजी सम्पूर्णदोष अपनेविषे रोपणकरिकै श्रीरामकी शरणागत में लीनभये सर्बत्यागिकैअरु श्रीरामचन्द्र को दर्शन करावहिंगे यहप्रकार एक भरतहि ते बनै है अपर ते नहीं बनै है ( ६५ ) सबमिलिकै मोरसिद्धान्तसुनहु आनउपायमोको एकहूनहीं सूझै मोरे जियकी एक श्रीरामचन्द्र बिना अपरकोबूझै है ( ६६ ) ताते एकयही अंक मेरे मनविषे लिखिगयो है कि प्रातःकालहोत श्रीरामचन्द्र के पासजाउंगो जैसी आज्ञाहोइगी सोईकरौंगो ( ६७ ) यद्यपि मैं सबप्रकार ते अनभल अपराधीहौं काहेते सबउपाधिको कारणमहींहौं ( ६८ ) तदपि जब मोको अपने सन्मुख आरत दीन देखैंगे तब समस्त अपराध क्षमाकरिकै कृपाकरहिंगे ( ६९ ) काहेते श्रीरघुनाथजी शील संकोच कृपा अरु सनेहके सदन हैं अरु सर्ब जीवनपर सहजसुभाव ते कृपाकरतेहैं पर सम्मुख होवाचाहिये एकहूबार ( ७० ) काहेते श्रीरामचन्द्र अरिहुकर भलाचाहते हैं परमपद देते हैं अरु मैंतो शिशुसेवक हौं

कोजियकीरघुवरबिनबूझा ६६ एकहिआंकइहैमनमाहींप्रातकालचलिहौंप्रभुपाहीं ६७ यद्यपिमैंअनभलअपराधीभइम्वहिंकारणसकलउपाधी ६८ तदपिशरणसंमुखम्वहिंदेखी क्षमिसकरिहैंकृपाविशेषी ६९ शीलसकुचिसुठिसरलसुभाऊकृपासनेहसदनरघुराऊ ७० अरिहुकअनभलकीन्हनरामामैंशिशुसेवकयद्यपिवामा ७१ तुमपैपांचमोरभलमानीआयसुआशिषदेहुसुबानी ७२ ज्यहिसुनिविनय मोहिंजनजानीआवहिंबहुरिरामरजधानी ७३ दो० ॥ यद्यपिजन्मकुमातुतेमैंशठसदासदोषआपनजानिनत्यागिहैंम्वहिंरघुवीरभरोस ७४

यद्यपि सबप्रकार बामहौं मैं श्रीरामचन्द्र कर बालक सेवकहौं ताते चूकको पात्रहौं तहां स्वामी समर्थ हैं माफकरते हैं ( ७१ ) अब तुमपांचमोर भलामानिकै आयसु अरु आशीर्बाददेहु जाते श्रीरामचन्द्र मोको मिलहिं ( ७२ ) जाते मोको आपनजन जानिकै मोरिविनय सुनिकै श्रीरामचन्द्र श्रीअवधराजधानी को बहुरिआवहिं इहां भरतजीकीवाणीमें यहसंकेत है जामें श्रीअयोध्यावासी जानहिं कि अब श्रीरामचन्द्र फिरहिंगे पुनि अभिप्राय चौदहवर्षगये बहुरहिंगे ( ७३ ) दोहार्थ॥ यद्यपिमोर जन्मकुमातुते है अरु सर्बोपाधिको

कारण मैं हौं ताते शठ अचेत ह्वैगयो है तदपि श्रीरामचन्द्र शरणपाल हैं आपनजनजानिकै मोरत्यागनहींकरैंगे यहमोरे दृढ़बिश्वास भरोस है ( ७४ )॥ इतिश्रीरामचरितमानसेसकल-कलिकलुषविध्वंसने श्रीअयोध्याकाण्डेश्रीभरतनीचानुसन्धानसर्वभाववर्णनन्नामपंचमस्तरंगः ५॥ :: :: :: :: ::

दोहा॥ भरतवचनसुनिलोगसबभैसुखहर्षहिंअंग॥ रामचरणकेदरशकीउठतीषष्ठतरङ्ग ६ हे गरुड़ भरतके वचन सुनिकै सम्पूर्ण पुरबासिन को परमप्रियलागे हैं जनु श्रीरामचन्द्रके प्रेमसुधाते पागीकही वाणी है ताते परमआनन्दभयो है ( १ ) श्रीरामचन्द्रके वियोगकही विक्षेप ते सर्व लोग दागिरहे हैं दागिकही विषचढ़िरह्यो है तातेतप्तह्वैरहे हैं तहां भरतके वचन जनु सजीवन बीजमंत्र सुनिकै जागिउठे विषकैगर्मी जाइरही है ( २ ) अरु माता सचिव गुरु पुरके नरनारिसमस्त भरतकर प्रेमदेखिकै प्रेम ते विकल ह्वइगये हैं ( ३ ) ते समस्त भरतजी को सराहि सराहि कहते हैं जनु श्रीरामचन्द्रके प्रेमकैमूर्त्ति हैं ( ४ ) ते सबकहते हैं। हे तातभरततुम कस न असकहहु काहेते तुम श्रीरामचन्द्रको प्राणहुतेप्रियहौ ( ५ )

चौ० ॥ भरतवचनसबकहँप्रियलागे रामसनेहसुधाजनुपागे १ लोगवियोगविषमविषदागे मंत्रसबीजसुनतजनुजागे २ मातुसचिवगुरुपुरनरनारी सकलसनेहविकलभइँभारी ३ भरतहिंकहहिंसराहिसराही रामप्रेममूरतिजनुआही ४ तातभरतअसकांहेनकहहू प्राणसमानरामप्रियअहहू ५ जोपाँवरआपनिजड़ताई तुमहिंसुगाइमातुकुटिलाई ६ सोशठकोटिनपुरुषसमेता बसहिकल्पशतनरकनिकेता ७ अहिअघअवगुणनहिंमणिगहई हरइगरलदुखदारिददहई ८ दो० ॥ अवशिचलियबनरामजहँभरतमंत्रभलकीन शोकसिन्धुबूड़तसबहिंतुमअवलम्बनदीन ९ चौ० ॥ भरतवचनसुनिमोदनथोरा जनुघनधुनिसुनिचातकमोरा १० चलबप्राातलखिनिर्णय

हेभरतजी जे माताकै कुटिलाईविषेतुमकोसुगाइकही जानैंगेते पांवरकहीपशुहैंतेजड़हैं ( ६ ) तिनप्राणिनकेकोटिहूपुस्तिकेपुरुषा ह्वै गये हैं अरु जेहोहिंगे अरु जेहैं ते सबशतकही सौकल्पताईं नरकगामीहोहिंगे ( ७ ) हेभरतजीयद्यपितुमकैकेयीकेपुत्रहौ तदपि कैकेयीके अवगुण तुमको नहींलागिसकते हैं कैसे जैसे सर्प केविष अवगुण सर्पकैमणि नहीं ग्रहणकरै है अरुदुःख दरिद्रकोहरतहै हेभरतजी तैसेतुममणिहौ ( ८ ) दोहार्त्थ॥ तहां श्रीवशिष्ठहर्षिकै सबको सुनाइकैकहतेहैं कि अवश्यकैचलियेज्यहिबनमें श्रीरामचन्द्रहोहिंयहमंत्रभरतजी अतिनीकर्कीन्हहैअवरअसको करिसकैहै काहेतेकिशोककेसमुद्रमें सब डूबते रहे हैं भरतजी अवलम्बन दीन है अवलम्बकही आधारभये हैं ( ९ ) हे भरद्वाज श्रीभरतजी के बचन सुनिकै सबकेमन में मोदकहीआनन्दहोतभयो है जैसे मेघकोगर्जब सुनिकै चातक मयूरहर्षते हैं ( १० ) यहनिश्चसुनिकै कि प्रातही श्रीरघुनाथजीके इहांचलहिंगे तहां श्रीभरतजी सबके प्राणहुँ ते अधिकप्रिय भये हैं ( ११ ) तबश्रीवशिष्ठजी अरु भरतजीके साष्टांगदंडवत्‌करिकरि आयसुपाइकै हर्षिकै सबअपने अपने गृहको तय्यारी हेतु चलतभये ( १२ ) यहसबकहते हैं कि भरतजीको जीवन यहि जगत्‌विषे धन्यहै काहेते कि अपने शील स्नेह करिकै सबके जन्मकोफलदीन है ( १३ ) तहां परस्पर सबकहते हैं कि बड़ा कार्यभयो है यह कहिकहिसकल चलैकर साजसाजते हैं ( १४ ) तहां ज्यहि ज्यहिको कहते हैं कि रखवारी रहो सो कहतहै हमारी गरदननमारो गरदन मारीकही प्राणलेतेहो ( १५ ) तबउनकी दशादेखिकै कोई कोई यहकहतहैं किकाहूतेरहिबेको नहींकहौ काहेते कि अपने जीवनकेलाभ को कोनहीं चाहत है ( १६ ) दोहार्त्थ॥ हे गरुड़ एकै असकहतेहैं संपूर्ण संपतिहैं अरु सदनके

नीके भरतप्राणप्रियभेसबहीके ११ मुनिहिबंदिभरतहिशिरनाई चलेसकलगृहबिदाकराई १२ धन्यभरतजीवनजगमाहीं शीलसनेहसराहतजाहीं १३ कहहिंपरस्परभाबड़काजू सकलचलैकरसाजहिंसाजू १४ ज्यहिराखहिंघररहुरखवारी सोजानैजनुगरदनमारी १५ कोउकहरहनकहियनहिंकाहू

कोनचहैजगजीवनलाहू १६ दो०॥ जरउसोसंपतिसदनसुख सुहृदमातुपितुभाइ सन्मुखहोतजोरामपदकरैनसहजसहाइ १७ चौ० ॥ घरघरसाजहिंबाहननाना हर्षहिंहृदयप्रभातपयाना १८ भरतजाइघरकीन्हबिचारू नगरबाजिगजभवनभँडारू १९ संपतिसबरघुपतिकैआही जोबिनुयतनचलौतजिताही २० तौपरिणामनमोरिभलाई पापशिरोमणिसाइदोहाई २१ करैस्वामिहितसेवकसोई दूषणकोटिदेइकिनकोई २२ असबिचारिशुचिसेवकबोले जेसपन्यहुंनिजधर्मन

जेसुखहैं अरु सुहृदकही मित्रादिक जहांतक स्नेहींहैं अरु मातापिता भ्रातापुत्र इत्यादिक ते सब जरिजाहिं जे श्रीरामचन्द्र जीके सन्मुखहोतसंते सहजही सहायनहीं करते हैं तेजरहिं ( १७ ) घरघर विषे नानाप्रकारकेबाहन साजते हैं अपने अपने अनुकूल प्रभात पयान जानिकै हर्षते हैं ( १८ ) पुनि भरतजीघरमेंजाइकै बिचारकीन्ह कि नगर जो श्रीअयोध्या अरु बाजिजेघोड़े अरु गजजेहाथी भवन अरु भंडारकहीखजाना ( १९ ) यह सम्पूर्ण सम्पत्ति श्रीरघुनाथ जी की है जो याको बिना यत्नतजिकैजाउं तौ भलीबात नहीं है ( २० ) जो तजिकैजाउं तौ परिणाम कही आगे मेरो भला नहीं है पापिन कर शिरोमणि ह्वैजाउंगो अरु साईंश्रीरामचन्द्र हैं तिनकै दोहाई कही द्रोही ह्वैजाउंगो इहांदोहाई सत्यको जानब ( २१ ) स्वामीके हितहेतुकरै कैसो लघुकर्म होइ सोई सेवकहैअरु सोई शुभकर्म है अरु कोई कोटिन दूषणदेइ तौ नहींमानिये ( २२ ) हेगरुड़ ऐसे विचारिकै शुचिसेवकन को बोलावतेभये जिनकर स्वधर्मविषे ते मन सपन्यहुनहीं डिग्यउहै ( २३ ) तिनसेवकन ते सम्पूर्ण मर्म सुधर्म समुझाइ दीनहै अरु यहकहा कि यह विभूति श्रीरामचन्द्र की है जाते बहुत चौकसरहैंगे यहकहिकै जे जसलायक इहां हैं ताको तहां तस राखतभये हैं ( २४ ) ऐसही सबयत्न करिकै रक्षकराखिकै पुनिभरतजीश्रीकौशल्याजी के पासजातभये ( २५ ) दोहार्त्थ॥ तहां भरतजी प्रेमके सुजान यह जाना कि श्रीरघुनन्दनके दरश बिना सबविरहते बिकलहैं तब भरतजी सेवकनको आज्ञादीन कि पालकी सुखासन कही सुखपाल अरु यानकही रथ अनेक सुन्दरतय्यारीकरहु ( २६ ) हेभरद्वाज पुरकेनरनारि चकचकईभयेहैं निशिमें आरतहैं प्रभातचाहते हैं श्रीरामचन्द्रके समीप

डोले २३ कहिसबमर्मधर्मसबभाषा जोज्यहिलायकसोतहँराखा २४ करिसबयत्नराखिरखवारे राममातुपहँभरतसिधारे २५ दो० ॥ आरतजननीजानिसबभरतसनेहसुजान कह्यउबनावनपालकीसजहुसुखासनयान २६ चौ० ॥ चकचकईजिमिपुरनरनारीचहतप्रातउरआनँदभारी २७ जागतसबनिशिभयउविहानाभरतबोलायउसचिवसुजाना २८ कह्यउलेहुसबतिलकसमाजूबनहिंदेवमुनिरामहिंराजू २९ वेगचलहुमुनिसचिवजोहारेतुरततुरगरथनागसँवारे ३० अरुंधतीअरुअगिनिसमाऊ रथचढ़िचलेप्रथममुनिराऊ ३१ विप्रवृन्दचढ़िबाहननानाचलेसकलतपतेजनिधाना ३२ नगरलोगसबसजिसजियाना चित्रकूटकहँकीन्हपयाना ३३ शिविकासुभगनजाहिबखानी

जाबेहेतु ( २७ ) यहीप्रकारते सबरात्रिबीततिभईहै जागतप्रातःकाल भरतजी सुजानजेमंत्रीहैं तिनकोबोलावतेभये हैं ( २८ ) तबमंत्रिनते भरतजी कहते हैं कि राज्याभिषेकको सरंजाम लैचलहु काहेतेकि वनहिविषेमुनिश्रीवशिष्ठजी श्रीरामचन्द्रको राज्य देहिंगे यहसेवक स्वामीकोभावकहावत है ( २९ ) पुनिभरतजीकहा कि तय्यारीशीघ्रकरहु तबमंत्री जुहारिकहीमाथनाइकै हर्षिकैचले तुरंत गज घोड़े रथ पालकी अनेकतय्यारकीनहै ( ३० ) हेपार्वती श्रीवशिष्ठकी स्त्री अरुंधती अरु अग्निसमाउकही नित्यहोमकरसरंजाम तिनसंयुक्त वशिष्ठजी रथपरचढ़िकै प्रथमचलतभये हैं ( ३१ ) अरु विप्रवृन्दके वृन्दतपके निधान वाहनपरचढ़िचढ़ि चलतेभयेहैं ( ३२ ) अरुसंपूर्ण नगरकेलोग रथादिक बाहननपरचढ़िचढ़ि श्रीचित्रकूटको पयान करतेभयेहैं ( ३३ ) अरुशिविकाकही चौपहला पालकी इत्यादिक सुभगकहीअतिसुन्दर बखानिबेयोग्यनहींहैं तिनपरचढ़िचढ़ि

श्रीकौशल्यादिकरनिवासचलतीभई ( ३४ ) दोहार्त्थ॥ हेपार्वती राजनगर घरबारभंडार इत्यादिक संपूर्णशुचिसेवकनको आदर संयुक्तबोलाइकै सौंपिके सीतारामचन्द्रके चरणारविंदसुमिरिकै श्रीभरततशत्रुहनद्वौभाई श्रीचित्रकूटकोचलतेभये हैं ( ३५ ) श्रीरामचन्द्रके दर्शनहेतु सबनरनारि कैसेचलेहैं जैसेपियासेहाथी हथिनी जलदेखिकै चलतेहैं ( ३६ ) अरु श्रीसीतारामचन्द्रको बनवासजानिकै भरतशत्रुहन पयादेहि चलतेभये हैं ( ३७ ) भरतकर अनुरागदेखिकै सबलोगअपने अपनेबाहन त्यागित्यागि पयादेहिंचलतभये हैं ( ३८ ) तबश्रीकौशल्याजी अपनीपालकीभरतके समीपउतारिकै मृदुबाणीबोलतीभई हैं ( ३९ ) हेतात मैं बलिजाउं आपुरथपरचढ़ौ नहींतौ सबप्रियपरिवारदु:खित होहिंगे ( ४० ) काहेते आपुकेपयादे चलतसंते सब पयादेहि

चढ़िचढ़िचलतभईसबरानी ३४ दो० ॥ सौंपिनगरशुचिसेवकनसादरसबहिंबोलाइ सुमिरिरामसियचरणतबचलेभरतदोउभाइ ३५ चौ० ॥ रामदरशबशसबनरनारी जनुकरिकिरणिचलेतकिबारी ३६ बनसियरामसमुझिमनमाहीं सानुजभरतपयादेजाहीं ३७ देखिसनेहलोगअनुरागे उतरिचलेरथहयगयत्यागे ३८ जाइसमीपराखिनिजडोली राममातुमृदुबाणीबोली ३९ तातचढ़हुरथबलिमहतारी होइहिप्रियपरिवारदुखारी ४० तुम्हरेचलतचलिहिंसबलोगू सकलशोककृशनहिंमगयोगू ४१ शिरधरिवचनचरणशिरनाई रथचढ़िचलतभयेदोउभाई ४२ तमसाप्रथमदिवसकरिबासू दूसरगोमतितीरनिवासू ४३ दो० ॥ पयअहारफल

चलहिंगे अरु श्रीरामचन्द्रके शोकविरह करिकै सबकृशित ह्वै रहेहैं मगयोग्यनहींहैं ( ४१ ) तब भरतजी श्रीकौशल्याजीके बचनशीशपर धरिकै द्वौभाई रथपर चढ़िकै चलतभये हैं ( ४२ ) हे गरुड़प्रथम मुकामतमसाविषेभयो पुरीके दूसरे आवरणमें योजनभरि पुनिदूसर निवास गोमतीतीर भयो पंचमआवरणके अंतमें ( ४३ ) दोहार्त्थ॥ तहां श्रीरामचन्द्रके प्राप्तिहेतु सर्वभूषणभोग त्यागिकै कि जबताईं श्रीरामचन्द्र बनविषेरहहिंगेतबताईं यहसंकल्प करतेभये तहां आठपहरमें एकसमय को नेमकीन्हेहैं रात्रिविषे कोईफल कोईकंद कोई पयअहार पुनिपयकही जलहूको कोई जलअहार तहांअत्यंतअरुशूद्रकंद अहार वैश्यफल अरुक्षत्रीदुग्ध अरुब्राह्मणजलअहार यहीप्रकारते चौदहवर्षताईं चतुर्दशइन्द्रीनकी विषयजीति लीन्हिनिहै पांचज्ञानइन्द्री पांचकर्मइन्द्री चतुष्टअंतष्करण तहां संकल्पसंते संपूर्णइन्द्रीनके विषयपरास्तह्वैगई हैं ( ४४ ) पुनिगोमतीते शृंगवेरपुर ताईं पांचआवरण जानबतहां दशआवरण श्रीअयोध्याकरबर्णन है सदाशिवसंहिताविषे आगे श्रीभरतजी गोमतीके तीरते कूचकरिकै सईउतरिकै निवास कीन्हहै पुनिभोरमें कूचकीन शृंगवेरपुर नियरातभयेहैं ( ४५ ) तब अपने चाकरनते खबरिपावतभये हैं कि भरतजी चतुरंगिनी सेना संयुक्त श्रीरामचन्द्र के यहांजातेहैं परकारण हमनहीं जानतेहैं तहां यहसुनिकै निषादराज बिषाद संयुक्त हृदयमेंबिचारकरतहै ( ४६ ) तबनिषादयह बिचारकरतहै कि भरतजी को श्रीरामचन्द्रकेयहां जाबेको का कारणहै यहसमुझिपरतहै कि भरतकेमनमें कछुकपटभावहै इहां श्रीरामचन्द्र

अशनयकनिशिभोजनसबलोग करतरामहितनेमब्रतपरिहरिभूषणभोग ४४ चौ०॥ सईतीरबसिचलेबिहाने शृंगवेरपुरसबनियराने ४५ समाचारसबसुन्यउनिषादा हृदयबिचारकरैसविषादा ४६ कारणकवनभरतबनजाहीं हैकछुकपटभावमनमाहीं ४७ जोपैजियनहोतकुटिलाई तौकतलीन्हसंगकटकाई ४८ जानहिंसानुजरामहिंमारी करौंअकंटकराजसुखारी ४९ भरतनराजनीतिउरआनी तबकलंकअबजीवनहानी ५० सकलसुरासुरजुरहिंजुझारा रामहिंसमरकोजीतनहारा ५१ काआचरजभरतअसकरहीं नहिंविषवेलिअमियफलफरहीं ५२ दो०॥ असबिचारिगुहज्ञातिसन कह्यउसजगसबहोहुहथबासहुबोरहुतरणि

की प्रेरणाते निषादबिषे आत्मसमर्पण शरणागत को प्राप्तिभयो है तातेयहसवकहते हैं ( ४७ ) यहअनुमान बिचाकरतहैं कि जो भरतकेमन में कुटिलाई न होती तौ श्रीरामचन्द्रके इहां बननगमन के दुःखमें चतुरंगिनीसेना क्यहिको सोहाति है सेनाको कौनप्रयोजनहै ( ४८ ) भरतजी यह अपने मनमें जानिकै सिद्धान्त कीनहै कि बनमें जाइकै लक्ष्मणअरु रामको मारिकै तब अकंटकराज्य सुखतेकरैंगे ( ४९ ) पुनि निषाद मनमें कहतहैं कि भरतजीने राजनीति अच्छीतरह अपने मनमें नहींजानीहै काहेते कि तबतौ माताकरिकै कलंकको प्राप्तिभये हैं अरु अब जीवकै हानिहोइगी ( ५० ) काहेते कि जिनदेवतन असुरनके युद्धकरिबे को समार्थ्य उत्साह हैं ते सब जो श्रीरामचन्द्रके सन्मुख संग्राम विषेहोहिं तौ जीतबेकी का चलीहै श्री रामचन्द्रके एकबाणके मारे ते सबनाश एकही वारहोइजाइहि ( ५१ ) जो भरतजी असकीनहै तौकौन आश्चर्य है कहूं विषकी वेलिविषे अमृतकोफल फरैहै ( ५२ ) दोहार्थ॥ तहां जब भरतजी शृंगवेरपुर ते योजनभरे में रहेहैं तबगुहजोहै निषादराज ज्यहि भरत विषे दोषारोपणकीन्ह्यसि है त्यहिको सिद्धांत करिकै ज्ञातिकही अपने जातिभाई कुटुम्बसम्बन्धी चाकर सेवक सबतुरतबोलाइकै कहत है कि शीघ्र सजगहोहु जेती तरणकही नावै हैं ते सब हथवासहुकही रोकिलेहु डाड़पतवारी सुद्धांबोरिदेहु यत्नकरिकै जाते नावन के चिह्न न देखिपरैं अरु घाटघाट रोहाकही रोकिलेहु युद्धकर संयोगआइप्राप्तिभयो है पर शीघ्रही ताते जल्दीकरहु ( ५३ ) निषाद कहत है कि हे भाइहु यहि समर विषे मरैकरठाटठाटहु अब ऐसै काम है अरु हथियार बांधिबांधि घाटघाट रोकिदेहु ( ५४ ) अरु हे बीरहु भरत ते सन्मुख लोहलेहु अपने जियतसुरसरि उतरने न पावहिं ( ५५ ) हे भाइहु मनमांएकौ चिन्तानकरहु काहेते कि एक तौ समरमें सन्मुख शरीरछूटै तौ बिना साधनहि स्वर्गकै प्राप्ति होतिहै सहजमें पुनि श्रीगंगाजीको तीरहै गंगाजी कैसी हैं अन्तकाल विषे गंगाजीको नामउच्चारणहोइ तौ तीनि

कीजियघाटारोहु ५३ चौ० ॥ होहुसजगसबरोकहुघाटाठाटहुसकलमरणकरठाटा ५४ सम्मुखलोहभरतसनलेहू जियतनसुरसरिउतरन देहू ५५ समरमरणपुनिसुरसरितीरा रामकाजक्षणभंगुशरीरा ५६ भरतभाइनृपमैंजननीचू बड़ेभाग्यअसपाइयमीचू ५७ स्वामि

योजन पर्यन्तताईं तौ यह जीव चारिफलको प्राप्तहोत है इहां तौगंगाजी साक्षात् हैं अरु श्रीरामचन्द्र के कार्यहेतु शरीरको त्याग है यहां स्वाभाविकै परमपद होतहै अरु यह शरीर क्षणभंग है तहां यहसंयोगजीवनको अतिदुर्लभ है सो परमेश्वर की कृपाकरिकै सुलभ करनीहै जो योगेश्वरनको फलदुर्लभ है सो तुमआजलेहु अरु त्रैलोक्यविषे उज्ज्वलयशको प्राप्तिहोहुगे ( ५६ ) देखिये तौ श्रीरामचन्द्रजी भरतजीके भ्राता हैं अरु राजा हैं मैं नीचजन हौं ऐसे संयोग विषे भरतके समरविषे मृत्युपाइये तौ बड़ीभाग्य जानिये ( ५७ ) अपने मनमें निषाद यह संकल्प कीन्ह है कि स्वामी जो श्रीरामचन्द्र हैं तिनके कार्यहेतु भरतजू ते रणविषे रारिकरौंगो विशेषकै यहकरिकै चौदहौभुवनमें उज्ज्वलयश लेउंगो अरु ज्यहिपद को योगीश्वर मुनीश्वर सम्पूर्ण मन इन्द्रिनको जीतिकै चाहते हैं तेही रामपद को आजु मैं सहजमें प्राप्तहोउंगो श्रीरघुनाथजी मेरेऊपर अतिशय कृपाकीनि है यहां यह ध्वनि है कि जोईजीव श्रीरामचन्द्र के कार्यविषे तनमन वचन लगाइदेते हैं तेई सज्जन मोक्षकोप्राप्त होते हैं ( ५८ ) तहां आजु भरतके संग्रामविषे श्रीरामचन्द्र के निहोरेप्राणको त्यागिदेउं दोऊहाथनविषे मुदमंगल है मोको लोक में सुयश मंगल है अरु परलोक में परमानन्द परमपद है तहां मुदकही जो अन्तष्करण के विचार ते सुखउत्पन्न होत है अरु मंगलकही जो बाह्यइन्द्रिन के कर्तब्य ते सुख उत्पन्न होत है अरु इहां बीररस अरु शांतरस विषे दास्यरस है याको संकरसकही ( ५९ ) तहां यहशास्त्र कहतहैं कि आत्म समर्पण यह साधुनके उत्तमलक्षण हैं ताते मनुष्य तनपाइकै साधुनकी समाज विषे लेखाकही गनतीभई अरु श्रीरामचन्द्र की भक्तिकररेखा कही लीक हृदय विषे नहींपरी है तिनकर जन्मबृथा है ( ६० ) ते प्राणीजायकही जगत् में वृथाजीवत हैं केवल पृथ्वी के भारहेतुहै अरु तिनके जननी कै युवावस्था सोई तरु है त्यहिके काटिबेको कुठारभये हैं ( ६१ ) दोहार्थ॥ हे पार्वती निषादपति बिषादकही शोच ते बिगतह्वैकै संग्राम

काजकरिहौंरणरारीलेइहौंसुयशभुवनदशचारी ५८ तजौंप्राणरघुनाथनिहोरे दुहूहाथमुदमंगलमोरे ५९ साधुसमाजनजाकरलेखा रामभक्तिउरजासुनरेखा ६० जायजियतजगसोमहिभारू जननीयौवनविटपकुठारू ६१ दो० ॥ विगतविषादनिषादपतिसबहि बढ़ाइउछाह सुमिरिराममांग्यउतुरततरकसधनुषसनाह ६२ चौ० ॥ बेगिहिभाइहुसजहुसँजोऊ सुनिरजायकदराइनकोऊ ६३ भलेहि नाथसबकहहिंसहर्षाएकहिएकबढ़ावहिंकर्षा ६४ चलेनिषादजोहारिजोहारी शूरसकलरणरुचैनरारी ६५ सुमिरिरामपदपंकज

की निश्चयकरिकै सबको युद्धको उछाहबढ़ाइकै श्रीरामचन्द्र को नामसुमिरिकै तरकस धनुष सनाहकहीबखतर तुरन्तमांगिकै पहिरिकै तय्यार होतभयो है ( ६२ ) निषादराज कहतहै कि हेभाइहु वेगीविलम्ब न करहुयुद्धकरसंरजामकरहु भरतकीसेना कोसभरेपरआई है यह हमारीआज्ञा सुनिकै कोई कदराउजनि श्रीराम प्रताप की ओर देखहु ( ६३ ) तबयहैंसुनिकै हर्षसंयुक्त सबकहते हैं हेनाथ भलेकही तुम्हारी रजाय शीशपरहैं यह कहिकै एकएकन ते कर्ष बढ़ावते हैं कि आजु अपनी अपनी शूरतादेखाइदीजिये ( ६४ ) तहां त्यहिकालविषे दशहजार योधा जुरे हैं जेते यूथप हैं ते सब निषादराज को जोहारि जोहारि चलते भये हैं ते सबकैसे हैं जिनको रणविषे रारि अतिशय रुचै है ( ६५ ) ते सब श्रीरामचन्द्रके पदपंकज कै पनहीं त्यहिकी रज सुमिरिकै श्रीरामप्रताप हृदय में धरिकै भाथाकही तरकस दुइदुइ कटिविषे बांधतेभये हैं अरु धनुषचढ़ावते भये हैं ( ६६ ) अरु अंगुरिकही जो अंगुरिनविषे कर्पोस अरु पांयनविषेतारनके जड़े मोजा अंगमें बखतर इत्यादिक पहिरते भये हैं अरु शीश विषे कूंड़ि लोहे की धरतेभये हैं रणविषे यह बीरनको पहिरावा है अरु फरसा अरु सेलकही दुधारा खांड़ा तरवारि किंतु सांग अरु केते गदा परिघ वासकही भाला सुधारतेभये हैं अनेकन सुष्टहथियार धारणकरतेभये हैं ( ६७ ) एक एकनकही केते तौ ऐसे हैं जे ओड़नखांड़े के कलाविषे कुशलकही अतिप्रवीण हैं ओड़नकहीढाल खांड़ेकही तरवारिको अरु कूदिकूदि कै गगनको जाते हैं तरवारिकी गति फेरतसन्ते मानहु भूमिकोछोड़ि दियो है ऐसी कला करतेहैं अरु वैरीको अस्त्रशस्त्र अपने शरीर में नहींलगनेपावै है ढालते बचाइजाते हैं अरु वैरीकोमारिलेते हैं अरु वीर पांच हजार अपरमल्लहैं दशहजार यूथप तहांते सबहथियारनमें कुशलहैं ( ६८ ) तहां यूथप जे हैं तेअपनीअपनी समाज पृथक्पृथक् साजिकै राउतकही

पनहीं भाथाबाँधिचढ़ावहिंधनुहीं ६६ अँगुरीपहिरिकूंड़िशिरधरहीं फरसाबाँससेलसमकरहीं ६७ एककुशलअतिओड़नखांड़े कूदहिंगगनमनहुँक्षितिछाँड़े ६८ निजनिजसाजसमाजबनाई सुहरावतहिंजोहारहिंआई ६९ देखिसुभटसबलायकजाने लैलैनाम सकलसनमाने ७० दो० ॥ भाइहुलावहुधोखजनिआजुकाजबड़मोर सुनिसरोषबोलेसुभटबीरअधीरनहोहिं ७१ चौ०॥ रामप्रतापनाथबलतोरे करहिंकटकबिनुभटबिनुघोरे ७२ जीवतपाँवनपाछेधरहीं रुण्डमुण्डमयमेदिनिकरहीं ७३ देखिनिषादनाथभलटोलू

निषादनकरराजा गुह ताको सब जुहारत कही सलाम करते हैं ( ६९ ) तब गुहराज सबको देखिकै यह निश्चयकीन है कि येसब सुभट शूर सब लायक हैं पुनि भिन्न भिन्न सबके नाम कहि कहि सराहिसराहिआदर देतभयो है ( ७० ) दोहार्त्थ॥ हे भाइहु आजु धोख न लावहु धोख कही विलम्ब न करहु कौनौ कपट न करहु देह गेह की सुधि नकरहु आजु मोको बड़ा काज है सब दिनके कार्य्य को आजु फल है यह सुनिकै सुभट सरोष ह्वैकै बोलते भयेहैं हे स्वामी हे धीरबीर अधीरन होहु ( ७१ ) हे नाथ श्रीरामचन्द्रके प्रतापते अरु तुम्हारे बलते भरत जीकी कटक जोहै त्यहिको बिनाभट बिना घोड़े की करिदेहिंगे ( ७२ ) हेनाथ जीवतसंते तौ पाछेपगनदेहिंगे अरु मेदिनीकही जेतीसेना चतुरंगिनीमयहैतिनसबको बिनामुण्डके रुण्डकरिकै मेदिनी कही पृथ्वीमेंडारिदेहिंगे मेदिनी सेनापृथ्वी दोऊकोजानब ( ७३ ) तबनिषादनाथ देखा कि ढोलकही भलीब्यूहरचनाबनीहै

तबहर्षि कै कहतहै किजुझाऊकही बीररसमय ढोलबजावहु इहां श्रीरामार्पण प्राणह्वैचुके हैं ( ७४ ) हे पार्वतीजब कहा कि जुझाऊ ढोलबजावहु तब इतनाकहतसंते बामभाग विषे छींकहोतिभई है तब सगुनके विचारनेवाले कहते हैं कि सुखेत में छींकभई है ( ७५ ) तब एक बूढ़कही शरीरवृद्ध बुद्धिवृद्धहै सो विचारिकै बोलतभयो है कि भरतते मिलापकरौ रारिनहोइगी ( ७६ ) काहेते सगुन अस कहत है कि विग्रहन होइगो श्रीभरतजी श्रीरामचन्द्रके मनाइवेकोजातेहैं ( ७७ ) तबयहसुनिकै गुहराज बोलतेभयोहै कि बूढ़नीककहत है काहेते कि सहसाकही जल्दी बिनाबिचार कोईकामकरि उठते हैं तेविमूढ़कही विशेषमूर्ख हैं अंतमें पछितात हैं ( ७८ ) तातेभरतकर सुभावशील

कह्यउबजाउजुझाऊढोलू ७४ इतनाकहतछींकभइबांये कहइसगुनियनखेतसोहाये ७५ बूढ़एककहसगुनबिचारी भरतहिमिलहुनहोइहिरारी ७६ रामहिभरतमनावनजाहीं सगुनकहैअसविग्रहनाहीं ७७ सुनिगुहकहैनीककहबूढ़ा सहसाकरिपछिताहिंविमूढ़ा ७८ भरतसुभावशीलबिनबूझे बड़िहितहानिजानिबिनुजूझे ७९ दो० ॥ गहहुघाटभटसिमिटिसबलेउँमर्ममैंजाइ बूझिमित्रअरिमध्यगतितबतसकरियउपाइ ८० चौ० ॥ लखवसनेहसुभायसोहाये बैरप्रीतिनहिंदुरहिदुराये ८१ असकहिभेंटसँजोवनलागे कन्दमूलफलखगमृगमाँगे ८२ मीनपीनपाठीनपुराने भरिभरिभारकहारनआने ८३ मिलनसाजसजिमिलनसिधाये मंगलमूलसगुनशुभपाये ८४ देखिदूरितेकहिनिजनामाकीन्हमुनीशहिंदण्डप्रणामा ८५ जानिरामप्रियदीन्हअशीशा

बिनाबूझे जो युद्धकरिकै जूझीतौ बड़ेहितकै हानिहोतिहै ( ७९ ) दोहार्थ॥ गुहराजकहतहै कि हेभटबीर यूथपहु सबमिलिकै सजगह्वइकै सिमिटिकै घाटरोकहु अरु मैं भावकुभावको मर्मलेउँजाइ मित्रअरि मध्यगति बूझिकै तबतसकरहिंगे ( ८० ) बैरप्रेमभावये सहजसुभावते जानाजातहै ताते बैरप्रीति दुरायेते नहीं दुरैहै ( ८१ ) हे पार्वती यहकहिकै अनेकप्रकारकैभेंटजुड़ावतेभये हैं कन्द मूल फल फूल औषध औषधी खग मृग इत्यादिक अनेकमंगलमय मंगावतभयो है ( ८२ ) पुनि मीनजेहैं पीनकही मोटेमोटे पुराने पुराने शौर पढ़िना रोहूइत्यादिक कांवरिन भरिभरि कहार अनेकन लैआवतेभये हैं ( ८३ ) तब मिलैकर साजसजिकै मिलैहेतु चलतभयोतब अनेक मंगलमय सगुनहोतभये हैं ( ८४ ) तब निषाद दूरिते श्रीवशिष्ठजूकोदेखिकै अपनो गाँव जाति नाम कहिकै साष्टांग दण्डवत् करतभयो प्रणाम कही आर्त्तवचन कह्यउ हम निपटनीच हैं ( ८५ ) तब श्रीबशिष्ठजी गुहको श्रीरामप्रिय जानिकै आशीर्बाददेतेभये पुनि भरतजीतेसमुझाइकै कहते हैं हे भरतजी यह श्रीरामचन्द्रजी को सखा है ( ८६ ) तब भरतजी श्रीबशिष्ठजीकीबाणीसुनतसन्ते तुरन्त रथको त्यागिकै अनुरागभरे निषादके मिलिबे को चलतभये ( ८७ ) तहांनिषाद अपनोगांव जाति गुहनाम कहिकै महिमें माथनाइकै भरतजीको प्रणाम करतभयउहै ( ८८ ) दोहार्थ॥ तहांभरतजू को आवत देखिकै निषाद साष्टांगदण्डवत् करत भयो है तब श्रीभरतजी शीघ्रचलिकै निषादको उठाइकै हृदयमें लगाइलीनहै कैसो सुखभरतकोभयोहै मानो लक्ष्मणजूते भेंटतेहैं अतिहर्ष हृदय

भरतहिंकह्यउबुझाइमुनीशा ८६ रामसखासुनिस्यन्दनत्यागा चलेउतरिउमगतअनुरागा ८७ गाँवजातिगुहनामसुनाईकीन्हप्रणाममाथमहिलाई ८८ दो० ॥ करतदण्डवतदेखित्यहिभरतलियेउरलाइ मनहुंलषणतेभेंटभइप्रेमनहृदयसमाइ ८९॥ * * *

चौ० ॥ भेंटतभरतताहिअतिप्रीती लोगसिहाहिंप्रेमकैरीती १ धन्यधन्यध्वनिमंगलमूलासुरसराहित्यहिबर्षहिंफूला २ लोकवेदसबभाँतिहिनीचा जासुछांहछुइलेइयसींचा ३ त्यहिभरिअंकरामलघुभ्राता मिलतपुलकिपरिपूरणगाता ४ रामरामकहिजोजमुहाहीं तिनहिंनपापपुंजसमुहाहीं ५ यहितौरामलाइउरलीन्हा कुलसमेतजगपावनकीन्हा ६ क्रमनाशाजलसुरसरि

में नहीं समातहै ( ८९ ) इति श्रीरामचरिमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने श्रीअयोध्याकाण्डे बिमलवैराग्यबीररसदास्यरस निषाद भरतमिलापवर्णनन्नामषष्ठस्तरंगः ६॥

दोहा॥ सप्ततरंगउमंग अतिप्रेमभरतगुहराजरामचरणसुरसरिउतरिचले प्रयागसमाज ७ त्यहिनिषादकहँ भरतजी अतिप्रीति से भेंटतेहैंतहांदेवता मुनिनरनारि इत्यादिकप्रेमकीरीतिदेखिकै निषादकोसिहातेहौंकियहधन्यतरहै ( १ ) तबधन्यधन्यमङ्गलकर मूलकहिकैदेवतासराहिकैफूलवर्षातेहैं ( २ ) ब्रह्मादिक देवता यहकहते हैं कि यहलोक वेदहूकरिकै सबभांति तेनीच है ज्यहिकी छायापरे ते जलसींचै तबशुद्ध होते हैं ( ३ ) त्यहिनिषादको श्रीरामचन्द्र के लघुभ्राता सो प्रेमते पुलकि पुलकि परिपूर्णगात अङ्कभरिमिलतेहैं ( ४ ) तहां बृहस्पति कहतेहैं हे देवतहु बिचार तौ करहु ज्यहिप्राणीके सम्मुख पापके पुंज सो नहीं समुहाय सकतेहैं जेजमुहातौसंते रामनामकहते हैं ( ५ ) देखिये तौ यहिको श्रीरामचन्द्र उरमेंलगाइकै सखाकीनहै अरु कुलसतमेत जगत्में सर्बोपरि पावनकीनहै ( ६ ) अरु जोकहौ कि ऐसोनीच कैसेबोंपरि पावनभयो तहां जैसेकर्मनाशा कर जलसुरसरिमें मिलतसंते सुरसरीको रूपभयो कहौत्यहिको कौनशीशपर धरै सबधरैं तैसे श्रीरामचन्द्र के मिलतसंते सारूप्यमुक्ति को प्राप्त भयो है ( ७ ) देखिये तौउलटानाम जपतसंते वाल्मीकिब्रह्मसमानकही ब्रह्माकारहोतभये तहांनारदजी वाल्मीकिको मरामराउपदेशकीन काहेते वाल्मीकिकी प्रथममलीन बृत्तिरही है ताते प्रथमजीवस्वरूपजब शुद्धहोइ तव जीवकेपरे ब्रह्मकी प्राप्तिहोइ अरु जबब्रह्मकी प्राप्तिभई तब श्रीरामचन्द्र के स्वरूप को अधिकारी होइसो वाल्मीकि विषे देखिलेव यह सब लोकमें विख्यात है तहां प्रमाणहै कोईवाक्य आचार्य को

परई त्यहिकोकहहुशीशनहिंधरई ७ उलटानामजपतजगजानावालमीकिभयेब्रह्मसमाना ८ दो० ॥ श्वपचशबरखसयमनजड़पाँवरकोलकिरात रामकहतपावनपरमहोतभुवनबिख्यात ९ चौ० ॥ नहिंअचरजयुगयुगचलिआई क्यहिनदीनरघुवीरबड़ाई १० रामनाममहिमासुरकहहीं सुनिसुनिअवधलोगसुखलहहीं ११ रामसखहिमिलिभरतसप्रेमा पूंछीकुशलसुमंगलक्षेमा १२ देखिभरत

है श्लोक १॥ रकारार्थोरामः सगुणपरमैश्वर्यजलधिः प्रकारार्थोजीवःसकलविधिकैङ्कर्यनिपुणः तयोर्मध्याकारोयुगलमथसंबंधमनयोरनन्यार्हबूतेत्रिनिगमस्वरूपोयमतुलः ( ८ ) दोहार्थ॥ श्वपचकही चण्डालजे हैं अरुशबरकही बेड़िया नट इत्यादिक अरु खसकही खसिया जो पर्वतनपर बसते हैं अरु यमनकही म्लेच्छ अरु कोलकिरातजो बनमें रहतेहैं इत्यादिक जड़पांबर कही पशुज्ञान तिनसबके मुखतेकहूं धोख्यहुरामनाम उच्चारण भयो है ते सब परम पावनहोतेभये हैं यह बात श्रुति स्मृति पुराण सम्पूर्णभुवनन मे विख्यात है तहां प्रमाण है वाराह पुराणेश्लोक १॥ दै वाच्छूकरशावकेन निहतो म्लेच्छोजराजर्जरो हारामेतिहतोस्मिभूमिपतितोजल्पंस्तनुंत्यक्तवान् तीर्णोगोस्पदवद्भवार्णवमहोनाम्नः प्रभावात्पुनःकिंचित्रं यदिरामनामरसिकास्तेयांतिरामास्पदं ( ९ ) वृहस्पतिकै बाणीसुनिकै चन्द्रादिक देवताकहतेहैं कि जोआपुकहतेहौ सोयहआश्चर्यनहींहै यह युगयुगविषे चलीआई है कि श्रीरघुनाथजी क्यहिको क्यहिको नहीं बड़ाईदीनहै नाम सबको दीनहै ( १० ) हे पार्वती रामनामकी महिमा सुर कहते हैं सो सुनिसुनिकै अयोध्यावासी संपूर्ण परमानन्दकोलहतेह ( ११ ) पुनि श्रीरामचन्द्रके सखाको भरतजू प्रेम संयुक्तमिलिकै कुशलक्षेम पूंछतभये ( १२ ) अरु भरतको शीलस्नेह देखिकै त्यहिसमयमें निषादविदेहहोत भयउहै ( १३ ) तहां आपनपाछिल विचार समुझिकै अतिसंकोचसंयुक्तप्रेमते पूर्णमोद अति आनन्द भरिगयोहैभरतके स्वरूपको एकटकदेखिकै चित्रइवठाढ़ होइगयउहै ( १४ ) पुनि निषाद धीरधरिकै भरतजूके दूनौचरणारबिंदगहिकै दूनौकर जोरिकै भरतजूसे प्रेमसंयुक्त बिनयकरतहै ( १५ ) हे भरतजी मेरी सबप्रकारते कुशलभई आपुके पदपंकज मूलदेखतसंते मूलकही मुख्यकिंतुमेरे कुशलकरमूलभयो अबमैंतीनिहूं कालविषे कुशलहौं काहेते आपु आपनकीन है ( १६ ) हे प्रभु अब

करशीलसनेहू भानिषादत्यहिसमयविदेहू १३ सकुचिसनेहमोदमनबाढ़ा भरतहिचितवतयकटकठाढ़ा १४ धरिधीरजपदबन्दिबहोरी विनयसप्रेमकरतकरजोरी १५ कुशलमूलपदपंकजदेखे मैंतिहुंकालकुशलजनलेखे १६ अबप्रभुपरमअनुग्रहतोरे सहितकोटिकुलमंगलमोरे १७ दो० ॥ समुझिमोरिकरतूतिकुल प्रभुमहिमाजियजोइ जोनभजैरघुवीरपद जगविधिबंचकसोइ १८ चौ० ॥ कपटीकायरकुमतिकुजाती लोकवेदबाहरसबभांती १९ रामकीन्हआपनजबहींते भयउंभुवनभूषणतबहींते २० देखिप्रीतिसुनिबिनयसोहाई मिलेबहोरिभरतलघुभाई २१ कहनिषादनिजनामसुबानी सादरसकलजोहारयउरानी २२ जानिलषणसमदेहिंअशीशा जिअहुसुखीसौलाखबरीशा २३ निरखिनिषादनगरनरनारी भयेसुखीजनुलषणनिहारी २४ कह्यउलह्यउ

तुम्हरेपरमअनुग्रहते मोरेसहित कोटिकुलमंगल होतभयेहैं ( १७ ) दोहार्थ॥ मोरिकरतूति समुझिकै अरु मोरकुल समुझिकै अरु प्रभुजो श्रीरामचन्द्र तिनकी महिमा अपने जियमें जोइकैजे श्रीरामचन्द्रकेपद न भजैं त्यहिकोबिधा तौ जगत्‌विषे छलीकीनहै किंतु जगत् उनको छलिलीन है ( १८ ) देखिये तौ मैं कपटी कायर कुमति कुजाति अरु लोक वेद ते बाहेर सबभांति ते हौं ( १९ ) अरुजब ते श्रीरामचन्द्र आपनकीनहै तब ते संपूर्ण भुवनको भूषणहोतभयउँहौं ( २० ) निषादकै प्रीति विनय अति शोभित देखिकै शत्रुहनजी लेतभये हैं ( २१ ) पुनि निषाद शत्रुहनको मिलिकै अरु सुन्दरिबाणी ते अपनो नामकहिकै सादर कौशल्यादिक रानिनको जोहारिकै शीशनावत भयो है ( २२ ) तब हर्षिकै सम्पूर्ण माता लक्ष्मणके समजानकै अशीष देती हैं हे रामसखे तुम सुखपूर्वक सैकरनलाखन बर्षजीवहु श्रीरघुनाथजी को सदा प्रिय बनेरहहु ( २३ ) श्रीअयोध्यानगरबासी नरनारि निषादको निहारिकै सुखीभये मानहु लक्ष्मणजूको देखतभये ( २४ ) यह कहतभये जन्मकरलाभ यह लह्यउहै काहेते कि श्रीरामचन्द्र के भाई भरत ते बाहुभरिभेंटतभयो है ( २५ ) तब निषादअपनेभाग्य की बड़ाई सुनिकै मनमें प्रमुदितकही आनन्दह्वैकै लिवाइ चल्यउ है ( २६ ) दोहार्थ॥ तब निषाद सब सेवकनको सैनकरत भयउकि सेनाटिकवेके जगह की तयारीकरहु शीघ्र तब ते अति शीघ्रही घर तरु सर बाग बनइत्यादिकनमें यथायोग्यआसनबनाइकै आसनकरायदीन तुरन्त ( २७ ) जब भरतजी शृंगवेरपुर देखतभये तब स्नेह के बश

यहिजीवनलाहू भेंट्यउरामभाइभरिबाहू २५ सुनिनिषादनिजभाग्यबड़ाई मनप्रमुदितलैचलेउल्यवाई २६ दो० ॥ सनकारे सेवकसकलचलेस्वामिरुखपाइ घरतरुतरसरबागबनबासबनायउजाइ २७ चौ०॥ शृङ्गवेरपुरभरतदीखजब भेसनेहवशअङ्गशिथिलतब २८ सोहतदियेनिषादहिंलागू जनुतनुधरेविनयअनुरागू २९ यहिबिधिभरतसेनसबसंगा दीखजाइजगपावनिगंगा ३० रामघाटकहँकीन्हप्रणामू भेमनमगनमिलेजनुरामू ३१ करहिंप्रणाममगननरनारी मुदितब्रह्ममयबारिनिहारी ३२ करिमज्जनमांगहिंकरजोरी रामचन्द्रपदप्रीतिनथोरी ३३ भरतकह्यउसुरसरितवरेनू सकलसुखदसेवकसुरधेनू ३४ जोरिपाणिमांगौंबर

अंगअंग शिथिल ह्वैगये हैं ( २८ ) तहां निषाद को लागूकही लगे समीपलिहे सोहत है तहां विनयरूप निषाद अरु अनुरागरूप भरतजी जनु ह्वैतनुधरे सोहत हैं ( २९ ) यहिप्रकारते भरतजी सम्पूर्ण सेनासंग लिहेसम्पूर्णजगत्‌के पवित्रकर्त्री श्रीगंगाजीको देखतेभये ( ३० ) तब भरतजी श्रीरामघाट को साष्टांग दण्डवतकरतभये मनमें मग्नभये जनु श्रीरामचन्द्रमिलतभये हैं ( ३१ ) पुनि सम्पूर्ण नगरकेनरनारि ब्रह्ममय वारिको निहारिकै प्रणाम करतभये हैं ( ३२ ) तब सम्पूर्ण श्रीअयोध्याबासी श्रीगंगाजीबिषे

स्नानकरिकै द्वौकरजोरिकै यहकहतभये कि हेगंगे हम यहबर मांगते हैं श्रीसीतारामजीके पदकमलविषे हमारी प्रीति सदा एकरसबनीरहैकभी थोरी न होइ ( ३३ ) तब भरतजीबोले हे सुरसरीजी तुम्हारीरेणु सकलसुखकीदाताहै अरु सेवक जो हैं तिनको कामधेनुरूपहौ ( ३४ ) अरु हेगंगे तुम श्रीरामचन्द्रके चरणारविंदकी मकरंदरूपहौ ताते हम यहबर मांगते हैं कि श्रीसीतारामचन्द्रके पदकमलविषे हमारो सहजस्नेह बनोरहे ( ३५ ) दोहार्थ॥ यहिविधि ते बरदानमांगिकै गुरुनकी आज्ञापाइकै श्रीभरतजी मज्जनकरतभये पुरबासी अरु सबमाता स्नानकरि भई तबभरतजी सबको डेराकोल्यवाइ चलतभयेहै ( ३६ ) तब जहांतहां लोग डेरा करतभयेहैं भरतजी शोधकही सबहीकीखबरिलेतभये अरु निषादनेकंदमूलफल इत्यादिककरिकै सम्पूर्णसेनाकोयथायोग्यपरिपूर्णकरिदीनहै ( ३७ ) पुनि भरत अरु गुरुनकीसेवाकरिकै द्वौभाई श्रीकौशल्याजीकेपासजातभये ( ३८ ) श्रीकौशल्याजीके चरणचापिकेमृदुवाणीकहिकहि सम्पूर्णमातनकर सन्मानकरतभये ( ३९ ) तब शत्रुहनजीको मातनकी सेवाविषे राखिकै आपुनिषादको बोलाइलीनहै ( ४० ) तब भरत अरु निषाद सखत्वभावते कर

**येहू सीयरामपदसहजसनेहू ३५ दो० ॥ इहिबिधिमज्जनभरतकरि गुरुअनुशाशनपाइ मातुनहानीजानिसबडेराचलेल्यवाइ ३६ चौ० ॥ जहँतहँलोगनडेराकीन्हा भरतशोधसबहीकरलीन्हा ३७ गुरुसेवाकरिआयसुपाई राममातुपहँगेदोउभाई ३८ चरणचापि कहिकहिमृदुबानी जननीसकलभरतसनमानी ३९ भाइहिसौंपिमातुसेवकाई आपुनिषादहिलीन्हबोलाई ४० चलेसखासनकरिकर जोरे शिथिलशरीरसनेहनथोरे ४१ पूंछतसखहिंसोठाउंदेखाऊ नेकुनयनमनजरनिजुड़ाऊ ४२ जहँसियरामलषणनिशिसोये कहत भरेजललोचनकोये ४३ भरतबचनसुनिभयउबिषादू तुरततहाँलैगयेउनिषादू ४४ दो० ॥ जहँसिंसुपापुनीततरु रघुबरकियबिश्रामअतिसनेहसादरभरतकीन्ह्यउदण्डप्रणाम ४५ चौ०॥ कुशसाथरीनिहारिसोहाई कीन्हप्रणामप्रदक्षिणलाई ४६ चरणरेखरजआँखिन**

जोरिकै स्नेहते शिथिल शरीरहोइरहेहैं ( ४१ ) तब भरतजी बोले हेनिषादसखेजहां श्रीरघुनाथजानकी लक्ष्मणजीने विश्रामकीनहै सो ठांउ देखाउ ज्यहि देखिकै नेत्रनकी जरनि नेकु शीतल ह्वैजाइ ( ४२ ) जहां श्रीराम जानकी लषण सोयेहैं यतनाकहतसंते प्रेमते गद्गदहोइगये नेत्रनमें जलभरि आये हैं ( ४३ ) तहां भरतके वचन सुनिकै निषादको बिषाद होतभयउहै तुरन्त श्रीरामाश्रमको ल्यवाइगयउहै ( ४४ ) दोहार्थ॥ तब भरतजी जहां सिंसुपाको बृक्ष अतिपुनीत जहां श्रीरामचन्द्र बिश्रामकीन तहां भरतजीअतिस्नेहसंयुक्त परिक्रमा करिकै दण्डवत् करतभये हैं ( ४५ ) कुशकीसाथरी अतिसुन्दरि निहारिकै अतिप्रेमते प्रदक्षिणा करिकै साष्टांगदण्डवत् करतभये ( ४६ ) पुनि श्रीरामचन्द्रके चरणकै रेखकी रज श्रीभरतजी के अपने नेत्रनमें लगावतसंते जलभरिआयो सो प्रेम कविनते नहीं वर्णतबनै है ( ४७ ) तहां श्रीजानकीजीकी सारीके कनकबिन्दु दुइचारि झरिपरे हैं सो भरतजीउठाइकै शीशविषे राखतभये श्रीजानकीजीकेसमान मानतभये हैं ( ४८ ) भरतके नेत्रनबिषे जल भरिआयोहै हृदयमेंग्लानिकरिकै सखा सों अतिमृदुबाणी कहतभये ( ४९ ) ते कनकबिन्दु श्रीतेजहतहैं श्रीकहीद्युतितेज प्रकाश त्यहितेहीनहैं श्रीजानकीजीके बिरहते जैसे अयोध्याजीके नरनारि मलीनहैं श्रीरामचन्द्रकेबिरहते ( ५० ) देखियेतौ मेरोअभाग्य बिधातहुकी कर्त्तव्यते अधिकभयउहै ज्यहिकरिकै श्रीजानकीजीको बनभयो काहेते कि श्रीजानकीजी के पिता श्रीजनक ऐसे समर्थ जिनकर योगभोगविषे सिद्धहै अरु भोगयोगते विरोधहै त्यहिजनकके पटतरको ब्रह्मा

**लाई बनैनबरणतप्रीतिसुहाई ४७ कनकबिन्दुदुइचारिकदेखे राखेशीशसीयसमलेखे ४८ सजलबिलोचन हृदयगलानी कहत सखासनअतिमृदुबानी ४९ श्रीहतसीयबिरहद्युतिहीना यथाअवधनरनारिमलीना ५० पिताजनकपटतरदेउंकेही करतलभोग योगजगजेही ५१ ससुरभानुकुलभानुभुआलू**

ज्यहिंसिहातअमरावतिपालू ५२ प्राणनाथरघुनाथगोसाईं जोबड़होतसोरामबड़ाई ५३ दो०॥ पतिदेवतासुतीयमणिसीयसाथरीदेखि बिदरतहृदयनहहरिकैपबितेकठिनविशेखि ५४ चौ०॥ लालनयोगलषणसुठिलोने भेनभाइअसअहहिंनहोने ५५ पुरजनप्रियपितुमातुदुलारे सियरघुबीरहिंप्राणपियारे ५६ मृदुमूरतिसुकुमारसुभाऊ तातबायुतनलागनकाऊ ५७ तेबनबसहिंबिपतिबहुभाँती निदरयउकोटिकुलिशयहिछाती ५८ रामजनमिजगकीन्हउजागर रूप

की सृष्टिविषे कोई नहीं है ( ५१ ) अरु ससुरभानुकुलको भानु है जिनकोऐश्वर्य देखिकै इन्द्रसिहातहै ( ५२ ) अरुजिन जानकीजीके प्राणनाथ श्रीरघुनाथजी हैं जो कही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड त्यहिके साईं कही ईशहैं जोकोईब्रह्माण्डमें बड़ेहैं ते रामचन्द्रकी बड़ाई दिहेते बड़े हैं ( ५३ ) दोहार्थ॥ पुनि श्रीजानकीजीकैसी हैं सम्पूर्ण जे पतिब्रता हैं तिनकीमणिहैं तिनजानकीजीकीसाथरी देखिकै यह कहत हैं कि हहरिकैहृदय विदरि न गयउ विशेष कै बज्रहुते कठिनभयो ( ५४ ) अरु लक्ष्मणजी अति लोने सुठिलाड़करिवेयोग्यहैं तहां असभाई न किसूकेभयेहैं न होहिंगे ( ५५ ) अरु कैसे लक्ष्मणजीहैं पुरजनपरिजनप्रियजन पितुमातुकेअतिदुलारे हैं अरु श्रीसीतारामजी केप्राणहुतेअतिपियारेहैं ( ५६ ) अरु अतिमृदुल मूर्त्ति अतिसुकुमार अति कोमल सरलसुभाव जिनकेतातवायु कबहूंनहींलागीहै ( ५७ ) तेतनविषेबहुतभांतिक्लेशितरहतेहैं सोसुनिकैसाथरीदेखिकैमोरहृदय न विदरिगयोकुलिशौकी निन्दाकरिकै कठोरता की बड़ाई लीनिहै ( ५८ ) पर श्रीरामचन्द्रअवतीर्ण ह्वइकै संपूर्ण जगत्में यशको उजागरकीन्ह है इहां यह अभिप्रायहै कि जगत् में जन्मिकै संपूर्णजीवनकर कल्याणकीनहै काहेते रूप गुणशील कृपाकेसमुद्रहैं त्यहिकरिकै सबकोपरमसुख देते हैं ( ५९ ) पुरजन परिजन अरुगुरु मातुपितुजेहैं तिनसबनको श्रीरामचन्द्रकर सुभावसर्वथा सुखदाता है ( ६० ) श्रीरामचन्द्रकैबोलनिमिलनिविनयकही नीतिसंयुक्तरसमयबाणी सो देखिकै सुनिकै बैरीजेराक्षस हैं तेऊ अंतष्करणमें बड़ाईकरतेहैं ( ६१ ) शारदा श्रुति शेषजो शतकोटिहोहिं अरु कोटिकोटि मुखक-

शीलगुणसबसुखसागर ५९ पुरजनपरिजनगुरुपितुमाता रामसुभावसबहिंसुखदाता ६० बैरिउरामबड़ाईकरहीं बोलनिमिलनिविनयमनहरहीं ६१ शारदकोटिकोटिशतशेषा करिनसकहिंप्रभुगुणगणलेषा ६२ दो० ॥ सुखस्वरूपरघुबंशमणिमंगलमोदनिधान तेसोवतकुशडासिमहि-बिधिगतिअतिबलवान ६३ चौ० ॥ रामसुनादुखकाननकाऊ जीवनतरुजिमिजोगवतराऊ ६४ पलक नयनफणिमणिज्यहिभांती जोगवहिंजननिसकलदिनराती ६५ तेसबफिरतबिपिनपदचारी कन्दमूलफलवारिअहारी ६६ धिक्केकयीअमंगलमूला भइसिप्राणप्रीतमप्रतिकूला ६७ मैंधिक्धिक्अघउदधिअभागी सबउतपातभयउज्यहिलागी ६८ कुल

रिकैलेखाकरहिं तौ श्रीरामचन्द्रके गुणगणको लेखानकरि सकहिं ( ६२ ) दोहार्थ॥ सुखकेस्वरूप श्रीरघुबंशमणि अरु मङ्गलमोद के निधान कही स्थान हैं ते श्रीरामचन्द्र महिमें कुशके आसनकरिकै सोवतेहैं तहांदेखियेतौ बिधाताकैगति अतिबलिष्ठ है तहां भरतजी अपने अभाग्यको विधि करिकै कहते हैं किंतु लोकरीति करिकै भरतजी ब्रह्माको कहते हैं अरु सिद्धांतविषे विधि कही श्रीराम स्वेछितचाहैं सोकरैं ( ६३ ) श्रीरामचन्द्रने बनकोदुखकाऊकही कबहूंनहीं सुन्योहै काहेतेकिराजाजीवनमूरिकी नाईंजोगवतरहेहैं ( ६४ ) जिन श्रीरामचन्द्रको सकलमाता पलकनयन अरु फणिमणिकी नाईं दिनराति राखतरहीहैं ( ६५ ) ते श्रीरामचन्द्र विपिनविषे बिनापदत्राण चारीकहीबिचरते हैं अरु कन्द मूल फल फूल अहारकरते हैं फूलकही कोईकोई लघुशाखनके अंकुर फूल मधुर होतेहैं ( ६६ ) धिक्कैकेयी अमंगलकै मूलभईहै जो प्राणप्रीतम श्रीरामचन्द्र तिनते प्रतिकूल

होतभईअरु मोकोप्रतिकूल करतभई है ( ६७ ) अरु मोकोधिक् २ है काहेतेकि सबउत्पातम्वहिंकरिकै होतभयेहैं ( ६८ ) मोकोकुलकेकलङ्ककरिकै बिधाता सृजतभयउहै काहेतेकिसाईंजोश्रीरामचन्द्र त्यहितेद्रोहीकरतभई ज्यइंकुमातैंतातेमाताकोबिधातौकुलकर कलङ्ककरिकैरच्योहै ( ६९ ) भरतजीकोविरहदेखिकै प्रेमसंयुक्त निषादसमुझावतहै हेनाथवादिविषाद काहेकोकरतहौ ( ७० ) श्रीरामचन्द्रतुमको बहुतप्रियहैं अरु श्रीरामचन्द्रकोतुमबहुत प्रियहौ यहनिर्दोषबातहै यहसबबिधाता जो बामहै त्यहिकोदोष है ( ७१ ) छन्दार्थ॥ बिधाताजो बामहै त्यहिकैकरणी कठिनहै त्रैगुण्यमयहै त्यइंमाताको बावरी कीन्हहै पर मेरेबिचारमें सब रामरजायकरतेहैं हे भरतजीजेहिरात्रिविषे इहां श्रीरामचन्द्ररहेहैं सो सबरात्री तुम्हारीभक्तिकै सराहना करतरहे हैं ( ७२ )

कलंककरिसृज्यउबिधाता साँइद्रोहम्वहिंकीन्हकुमाता ६९ सुनिसप्रेमसमुझावनिषादूनाथकरियकतबादिबिषादू ७० रामतुमहिंप्रियतुमप्रियरामहिं यहनिर्दोषदोषबिधिवामहिं ७१ छंद॥ विधिबामकीकरणीकठिन ज्यइंमातुकीन्हीबावरी त्यहिरातिपुनिपुनिकरहिंप्रभुसादरसराहनरावरी ७२ तुलसीनतुमसोंरामप्रीतमकहतहौंसौहैंकिये परिणाममंगलजानि अपनेआनियेधीरजहिये ७३ सो० ॥ अन्तर्यामीरामसकुचिसप्रेमकृपायतन चलियकरियबिश्रामयहबिचारदृढ़आनिमन ७४ चौ० ॥ सखाबचनसुनिउरधरिधीरा बासचलेसुमिरतरघुबीरा ७५ यहसुधिपाइनगरनरनारी चलेबिलोकनआरतभारी ७६ परदक्षिणकरिकरहिंप्रणामा देहिंकेकयिहिंखोरिनिकामा ७७ भरिभरिबारिबिलोचनलेहीं बामबिधातहिदूषणदेहीं ७८ एक सराहहिंभरतसनेहू

गोसाईं श्रीतुलसीदासकहतहैं कि निषाद भरतजूसेकहतहै किमैं तुम्हारीशपथकरिकैकहतहौं श्रीरामचन्द्रजीको तुम्हारेसमान और कोईनहींप्रियहै हेभरतजी परिणामकही आगेअपनो महामङ्गल जानिकै हृदयमेंधीरजधरहु ( ७३ ) सोरठार्थ॥ हे भरतजी श्रीरामचन्द्र अन्तर्यामी हैं अरु प्रेमते संकोचिजाते हैं काहेते कृपाकेआयतन कहीस्थानहैं यहबिचारिकै मनमें दृढ़करिकै बिश्रामकरहु ( ७४ ) सखाकेबचनसुनिकै उरमेंधीरधरिकै श्रीरघुनाथजी को सुमिरतआसनकोचलतभयेहैं ( ७५ ) यहसुधिपाइकै अयोध्यावासी नरनारि अतिआरतते श्रीरघुनाथजीको आसनदेखन चलतभये हैं ( ७६ ) श्रीरघुनाथजी के आसनकी परिक्रमा करिकै प्रणामकरतभये हैं अरुकेकयी खोरिदेते हैं निष्कामकही बिनाप्रयोजन यहकामकियो है ( ७७ ) विरहते नेत्रनमें जलबहे चलेजाते हैं अरु बिधाताकी बामताको दूषणदेते हैं ( ७८ ) कोई कोई भरतजू को स्नेहसराहते हैं अरु कोई यहकहते हैं कि राजाधन्यहैं जिनने श्रीरामचन्द्रसे आपन नेह अच्छीप्रकारसेनिबाहाहै ( ७९ ) यहकहिकै समस्त अवधबासी अपने प्रेमको निदरिकै निषाद के प्रेमको सराहते हैं अरु विमोहकरिकै जो निषाद करते हैं त्यहिको कोकहिसकै है ( ८० ) यहिप्रकारते विरहकरत रातिभरि सबलोग जागरणकरत भये हैं भिनसारहोतभयो तबगुदाराकही उतारा लागतभयउहै ( ८१ ) तबगुरुनकहँ सुष्टनावनपर चढ़ाइकै सम्पूर्ण मातनको नईनावपरचढ़ावतभये हैं ( ८२ ) तहां चारिदण्डमहँ सबपारभये हैं तबभरतजू उतरिकै सबलोगनकी सम्भारकरतभये हैं ( ८३ ) दोहार्थ॥ तब भरतजी उतरिकै प्रात:क्रिया

कोउकहनृपतिनिबाह्यउनेहू ७९ निंदहिंआपुसराहिनिषादू करहिंमोहबशपरमविषादू ८० यहिविधिरातिलोगसबजागा भा भिनुसारगुदारालागा ८१ गुरुहिंसुनावचढ़ाइसुहाई नईनावसबमातुचढ़ाई ८२ दण्डचारिमहँभासबपारा उतरिभरतसबसबहिंसँभारा ८३ दो० ॥ प्रातक्रियाकरिमातुपद बंदिगुरुहिंशिरनाइ आगेकियेनिषादगण दीन्ह्यउँकटकचलाइ ८४॥ * * * * *

चौ० ॥ कीन्हनिषादनाथअगुवाई मातुपालकीसकलचलाई १ साथबुलाइभाइलघुलीन्हा विप्रनसहितगमनगुरुकीन्हा २ आपुसुरसरिहिंकीन्हप्रणामू सुमिरेउलषणसहितसियरामू ३ गमनेभरतपयादेहिंपांये कोतलसंगजाहिंडोरिआये ४ कहैंसुसेवकबारहिंबारा होइयनाथअश्वअसवारा ५ रामपयादेहिपांउसिधाये हमकहँरथगजबाजिबनाये ६ शिरभरजाउंउचितअस

करिकै माताकौशल्याजीके पद बन्दिकै गुरुनके शिरनाइकै आगे निषादगण कैसे नावचलाइदीनहै पुनि अपनीसेना चलावतेभये हैं (८४)॥ इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने श्रीअयोध्याकाण्डेभरतनिषादमिलापपरस्पर सुरसरीपारप्रयागपयानबर्णननामसप्तमस्तरंगः ७॥

दोहा॥ अष्टतरङ्गसुप्रेममय गमनेभरतप्रयाग भरद्वाजसेमिलतभे रामचरणअनुराग (८) निषादनाथ जो है सो अगुवाई करतभयोहै अरु मातन की पालकी चलावतभयो (१) पुनि विप्रनसमेत गुरु रथपरचढ़िकै गमनकीन्ह है तहां भरतजी माता गुरुनकेसाथ शत्रुहन को करिदीन है (२) आपु भरतजी सुरसरीजीको प्रणामकरिकै अरु लषण सहित सीतारामजूको सुमिरिकै चले (३) पुनि भरतजी पयादेपांय चलतभये अरु कोतल जो असवारीके हैं सो संगविषे डुरिआये खालीचलेजातेहैं (४) अरु सुष्टसेवकजेहैं तेबारबार करजोरिकै कहतेहैं हेनाथ घोड़ेपर असवारहूजियो (५) भरतजू कहते हैं हे सेवकहु श्रीरामचन्द्र पांयपयादेहि गये हैं अरु यह बाहन विधातै हमको बादिबनायो है (६) मोको तौ यहउचित है कि ज्यहि राह में श्रीरामचन्द्र पांयनचले हैं तहां मैं शिरकेभरजाउं काहेते कि सबते सेवककर धर्मकठोर है परका करौं शिरभर चलानहींजात है तहां जो कोई कहै कि भरतजी शृंगवेरपुरताईं अयोध्याते रथपर कैसेआयेहैं तहांश्रीरामचन्द्रजी शृंगवेरपुरताईं रथपर चढ़ेआये हैं अरु श्रीकौशल्याजी की आज्ञा ते भरतजी रथपर शृंगवेरपुरताईं आये हैं (७) तहां श्रीभरतकै दशागति देखिकै अरु कोमल वचनसुनिकै सब सेवक अपने मनविषे

मोरा सबतेसेवकधर्मकठोरा ७ देखिभरतगतिसुनिमृदुबानी सबसेवकमनकरहिंगलानी ८ दो० ॥ भरततीसरेपहरकहँ कीन्हप्रवेशप्रयाग कहतरामसिय रामसिय उमगिउमगिअनुराग ९ चौ०॥ झलकाझलकतपांयनकैसे पंकजकोशओसकणजैसे १० भरतपयादेहिंआयेआजू भयेदुखितमुनिसकलसमाजू ११ खबरिलीन्हसबलोगनहाये कीन्हप्रणामत्रिवेणिहिंआये १२ सबिधिसितासितनीरनहाने दियेदानमहिसुरसन्माने १३ देखतश्यामलधवलहिलोरे पुलकशरीरभरतकरजोरे १४ सकलकामप्रदतीरथराऊ वेदविदितजगप्रकटप्रभाऊ १५ मांगौंभीखत्यागिनिजधर्मू आरतकाहनकरहिंकुकर्मू १६ असजियजानिसुजानसुदानी सफल

ग्लानिकरते हैं (८) दोहार्त्थ॥ हे पार्वती भरतजू ने तीसरे पहर प्रयागविषे प्रवेशकीनहै अरु अति अनुराग ते उमगिउमगि श्रीसीतारामनाम कहत सन्ते (९) भरतजूके पाँयनमहँ झलका परिगये हैं सो झलकते हैं जैसे बालकमल के दलपर ओसकेकण झलकै हैं (१०) भरतजू आजुपयादेहिं आये हैं यहसुनिकै सबसमाज दुःखितभये हैं (११) तब भरतजी खबरिलेतभये सबलोग स्नानकरतभये हैं आपु त्रिवेणी के निकटआइकै प्रणामकीन है (१२) सबविधिकही विधि विधान ते सितासितकही श्वेत गंगाकीधारा श्याम यमुनाकी धारा अरु अरुणह्वैकै अन्तर्भूत सरस्वती सोस्नानकरिकै ब्राह्मणनके मनभावितदानदेतेभये हैं (१३) तब श्यामलधवलतर मैं त्यहिकी हिलोरैं देखिकै पुलकगात ह्वैकै भरतजी द्वौकरजोरिकै स्तुतिकरते हैं (१४) भरतजी कहते हैं हे सम्पूर्ण तीर्थकेराज तुम सर्वकाम के प्रद कही दाताहौ यहतुम्हार प्रभाव लोकवेद बिषे विदित है (१५) आपु ते भीखमांगतहौं अपनो सर्बधर्मत्यागिकै काहेते किएक तौ हमरघुबंशी पुनिक्षत्रिय ताते हमारोधर्म है सबकोदेना अरु किसू से याचना नहींकरना अरु इहां महाक्षेत्रराज तहां

हम आपुते याचतेहैं कि आरतकाह कुकर्म नहीं करते हैं सबैकरते हैं तहां यह अभिप्राय है कि जब सर्व धर्मको त्यागकरै तब श्रीरामचन्द्र के अनन्य शरणागतको प्राप्तहोते हैं श्लोकार्द्ध श्रीभगवद्गीतायां॥ सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकंशरणं व्रज॥ किंतु जो कोई कहै कि देवताते मांगब उचित है सो सत्य है देवताके प्रणाम करना आशीर्बाद वा वरदान मांगना परन्तु क्षत्रिनको भीख मांगना यहशब्द क्षत्रियत्व धर्मकर बाधक है ताते काहू ते भीखमांगनाक्षत्रिनको अयोग्य है अरु क्षत्रिजाति रघुकुलमें जन्मरामानुज राजा कहाइकैभीखमांगनातौबहुतैअयोग्यअथवा चौ०॥ मातुपिताप्रभुगुरुकैबानी।बिनहिंविचारकरीभलमानी॥ उचितकिअनुचितकियेविचारू॥ धर्मजाइशिरपातकभारू॥ पुनिरामरजायमेटिमनमाहीं॥ देखासुनाकतहुंकोउनाहीं॥ इत्यादि बाक्यकरिकै माता पिता प्रभुगुरुनकीआज्ञा प्रतिपालकरना यह जो

करहिंजगयाचकबानी १७ दो०॥ अर्थनधर्मनकामरुचिपदनचहौंनिर्वान जन्मजन्मसियरामपद रतिबरदाननआन १८ चौ०॥ जानहिंरामकुटिलकरिमोही लोगकहैंगुरुसाहबद्रोही १९ सीतारामचरणरतिमोरे अनुदिनबढ़ैअनुग्रहतोरे २० जलदजन्मभरि

निजधर्म है त्यहिको छोंड़िकै आपुके इहांआइकै भीखमांगतहौं नाम माता पिता प्रभुगुरुनकी आज्ञारही कि राज्यकरो सो आज्ञा हमनेनहींकिया है किंतु जो कहौ कि धर्म्मछोंड़िकै भीखमांगना सुनिकै जो रघुनाथजीनहींप्रसन्नहोयँ तौ प्रेमबरदान को मांगिकै का करैंगे त्यहिकर अब जवाब देतहैं कि चौ० ॥ जानहिंरामकुटिलकरिमोहीं इत्यादिक आगेचौपाइनमेंहै इत्यर्थः अथवा अवतक हमकबहूं कोईदेवताते याचनानहींकीनहै सो निष्कामता निजधर्म छोंड़िकै भीखमांगतहौं इत्यर्थः ( १६ ) याचकको आरतजानिकै सुजान जे सुदानीहैं जगमें ते याचककीवाणीको सफलकरते हैं ताते हे तीर्थराज तुम सुजान सुदानी राजा हौ अरु मैं आर्त्तहौं ( १७ ) दोहार्त्थ॥ हे तीर्थराज अर्थधर्म्म कामनिर्वाणपदकही मोक्ष यहचारों की चाहना सो मोरेनहींहै अरु जहांजहां मैं जन्मलेउँ तहांतहां श्रीसीता रामचन्द्रके चरणारविंद में रतिप्रीति अखण्ड एकरस बनीरहै यहबरदानदेहु ( १८ ) अरु हे प्रयागराज मैं यहनहीं माग्यउँहै कि श्रीरामचन्द्र मोपर प्रसन्नहोहिं तहां श्रीरामचन्द्र मोकोकुटिलकरिकै जानहिंजाइ अरु समस्त लोग यहकहैं कि ये भरत जो हैं ते गुरु साहब के द्रोही हैं काहेते कि श्रीवशिष्ठजी बहुतकहा राज्यकरबेको तहांतिनकी आज्ञाभंगकीनहै अरु इनहींके हेतु कैकेयी श्रीरामचन्द्रजी को बनदीन है ऐसे सबकोई मोकोजानैकहैजाइ सो डरमोकोनहीं है ( १९ ) पर श्रीसीतारामचन्द्रजीके चरणारविंद बिषे मोरीमति अतिरति प्रीतिसंयुक्त अखण्ड अहर्निश एकरस तुम्हारेअनुग्रह ते बढ़तीजाय यहबरदान मांगतहौं यहां लोकपरलोकको अभाव अरु स्वामीविषे अत्यन्तभावजानब ( २० ) अरु जलद जोमेघहैं सो जन्मभरि सुरतिबिसारिदेहिं अरु चातकमेघ ते जलचाहत है तहां मेघ तौ न दीन्ह्योपविकही बज्रपत्थर बर्षतभयउहै चातकके चंगुलपंख टोंटटूटिगईहै ( २१ ) तापरजो चातककै रटनिप्रीति मेघते घटिजाइ तौचातकके स्नेहकी मर्याद घटिजाइह अरु जो दृढ़प्रेम मेघविषे बढ़तजाइ तौ चातककी भलाईबड़ाई सब प्रकारते है ( २२ ) पुनि जैसे सोनाको अग्निमें धौकेते अधिक

सुरतिबिसारेउ याचतजलपविपाहनडारेउ २१ चातकरटनिघटेघटिजाई बढ़ेप्रेमसबभाँतिभलाई २२ कनकहिबानचढ़ैजिमिदाहे तिमिप्रीतमपदप्रीतिनिबाहे २३ भरतवचनसुनिमांझत्रिबेनी भइमृदुबाणिसुमंगलदेनी २४ तातभरततुमसबविधिसाधू रामचरणअनुरागअगाधू २५ बादिगलानिकरहुमनमाहीं तुमसमरामहिंकोउप्रियनाहीं २६ दो० ॥ तनपुलकहिंहियहर्षसुनिवैणिवचनअनुकूल भरतधन्यकहिधन्यसुर हर्षितबर्षहिंफूल २७॥ * * * * * * *

बानिकही शोभाहोति है तैसेमोको कोटिन दुःखकौन्यहुं योगते होयँ पर श्रीसीतारामचन्द्र के चरणारबिंदविषे अधिकाधिक प्रीतिहोति जाइ तब प्रीतमके प्रीतिकी बड़ाई है ( २३ ) हे पार्वती तब भरतके बचनसुनिकैमध्यत्रिवेणी विषे मङ्गलमयबाणी होतिभई है ( २४ ) हेतातभरत तुम सब प्रकारते साधुहौ अरु श्रीरामचन्द्र के चरणारबिंदविषे तुम्हार

अगाधअनुरागहै ( २५ ) हे भरतजी तुममनमें बादिग्लानि करतेहौ तुम श्रीरामचन्द्र को अतिप्रियहौ हम अच्छीतरह जानते हैं यहसत्यकै मानौ ( २६ ) दोहार्त्थ॥ त्रिवेणीके स्वामीके अनुकूल बचन सुनिकै भरतके हृदयमें अति हर्ष भयो तनपुलकि आयोहै तहां भरतजी को धन्यधन्य कहिकै देवताफूलबर्षते हैं ( २७ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने अयोध्याकाण्डेभरतप्रयागप्रवेशअत्यंतभावत्रिवेणीवरदानवर्णननामअष्टमस्तरंगः ८॥ :: :: :: :: ::

दोहा॥ भरद्वाजअरु भरतको नवतरंगसम्बाद॥ रामचरणअसपरस्परभावसुधादिक स्वाद ९ भरतकरभाव अरु देवतनकर फूलबर्षबदेखिकै प्रयागवासी चारिउवर्ण चारिउआश्रम वैषानसकही वानप्रस्थ बटुजोब्रह्मचारी गृहीजो गृहस्थ उदासी जो संन्यासी येतेसब हर्षसंयुक्त भरतकी बड़ाई करते हैं ( १ ) ऐसेही दशपांच मिलिकै भरतकर स्नेह अरु शील सत्यसांचा परस्पर वर्णन करते हैं ( २ ) हे पार्वती श्रीरामचन्द्रकरगुण भरतकर भक्तिभाव मिलिकै सबवर्णन करते हैं सो भरतजी अतिप्रेमते सुनत सुनतभरद्वाजके आश्रमको जातेभये हैं ( ३ ) तब भरतजू मुनिको अतिप्रीतिभावते साष्टांग दण्डवत्प्रणाम करतेभये हैं तबमुनि भरतको अपने भाग्यकैमूर्त्ति देखतेभये ( ४ ) तबहर्ष पुलकते उठिधाइकै भरतकी भुजागहिकै उठाइ

चौ० ॥ प्रमुदिततीरथराजनिवासी वैषानसबटुगृहीउदासी १ कहहिंपरस्परमिलिदशपांचा भरतसनेहशीलशुचिसांचा २ सुनतरामगुणग्रामसुहाये भरद्वाजमुनिवरपहँआये ३ दण्डप्रणामकरतमुनिदेखे मूरतिवन्तभाग्यजनुलेखे ४ धाइउठाइलाइउरलीन्हें दीन्हअशीषकृतारथकीन्हें ५ आसनदीननाइशिरबैठे चहतसकुचगृहजनुभजिपैठे ६ मुनिपूंछबकछुयहबड़शोचू बोलेऋषिलखिशीलसकोचू ७ सुनहुभरतहमसबसुधिपाई विधिकरतबपरकछुनबसाई ८ दो० ॥ तुमगलानिजियजनिकरहु समुझिमातुकरतूति तातकेकयीदोषनहिंगईगिरामतिधूति ९ चौ०॥ यहउकहतभलकहैनकोऊ लोकवेदबुधसम्मतदोऊ १० ताततुम्हारविमलयश

कै हृदयमें लगावतेभये आशीर्वाद दीन्ह कृतार्थकीन्ह किंतु आशीर्वाददैकै यहकहा हे भरतजू तुमहमको आजु कृतार्थकीन्ह ( ५ ) तबमुनि भरतजू को आसनदेतभये तापरभरतजू नीचेशीश नवाइकै बैठे जनुसकोचकेगृहविषे भागिकै पैठिगयेहैं ( ६ ) यह बड़ोशोच है कि मुनिमोसे पूंछैगे तबमैं कौन उत्तर देउंगो तब अतिशीलसुभाव संकोचदेखिकै मुनिबोलते भयेहैं ( ७ ) हेभरतजी हमसब सुधिपावाहै इहांविधि श्रीरामचन्द्र को कही ताते श्रीरामचन्द्रकी रजायपर किसूकै नहींचलैहै किन्तु लोकरीतिविषे विधि ब्रह्माकोकहीअरुकालकोकही तापरकाहूकी कछुनहींबसाइहै ( ८ ) दोहार्त्थ॥ हे भरतजी माताकी करतूतिसमुझिकै तुमग्लानि जियमें जनिकरहु अरु हेतात कैकेयिहुकर दोषनहींहै काहेते कि देवतनकी प्रेरणाते सरस्वती रानीकी मतिधूति कही छलीगईहै ( ९ ) जो हमकेवल सरस्वतीकोदूषणदेइं तौ कोई भलानकहैगो काहेते कि श्रीरघुनाथजी लोकवेद की रीतिदोऊ कियाचाहते हैं ताते लोकसम्मतमें कैकेयीकरदोष अरुवेदसम्मतमें देवतन अरुसरस्तीकरदोषहै अरुसिद्धांतविषे श्रीरामरजाय ( १० ) अरु हेताततुमनिर्दोषहौ यहतुम्हारविमलयशजोगाइहिवह लोकहुवेदमें बड़ाईपाइहि ( ११ ) अरु लोकहुवेदहुविषे यह प्रसिद्ध है कि छोटेबड़ेपुत्रको प्रमाणनहीं है ज्यहिकोपिता प्रसन्नह्वइकै राज्यदेइसोई पुत्र राज्यकरै यामेंदूषणनहीं है ( १२ ) हेभरतजी जो राजासत्यव्रतहैं तुमको बोलाइकैप्रसन्नते राज्यदेतेतौ सुधर्मयशकी बड़ाईहोती ( १३ ) तहांसो तौनभयो श्रीरामचन्द्रकोबनगमनभयो है जो श्रीअयोध्याविषे अनर्थकोमूलहोतभयोहै जोसुनिकै सम्पूर्णविश्वको शूलकही दुःखभयो हैं ( १४ ) सोभवितव्यताके बशतेरानीकैकेयी अज्ञानह्वैगई है तातेअज्ञानकेबश कुचालकरतभई है पुनिअंत

गाई पाइहिलोकहुवेदबड़ाई ११ लोकवेदसम्मतसबकहईज्यहिपितुराज्यदेइसोलहई १२ राउसत्यब्रततुमहिंबुलाई देतराजसुख धर्म्मबड़ाई १३ रामगमनबनअनरथमूला जोसुनिसकलविश्वभइशूला १४ सोभावीवशरानिअयानी करिकुचालअंतहुपछितानी १५ तहँहुँतुम्हारअल्पअपराधू कहइसोअधमअयानअसाधू १६ करहुराज्यतुमहिंनहिंदोषू रामहिंहोतसुनतसंतोषू १७ दो० ॥ अबअतिकीन्ह्यउभरतभलतुमहिंउचितमतियेहु सकलसुमंगलमूलजगरघुवरचरणसनेहु १८ चौ०॥ सोतुम्हारधनजीवनप्राना भूरिभाग्यकोतुमहिंसमाना १९ यहतुम्हारअचरजनहिंताता दशरथतनयरामप्रियभ्राता २० सुनहुभरतरघुपतिमन

में अतिपछितातीहै तातेरानी काकरै भगवन्माया अतिदुस्तर है तत्रप्रमाणमाह श्रीभगवद्गीतायां श्लोकार्द्ध॥ दैवीह्येषागुणमयी ममसमायादुरत्यया ( १५ ) हेतात तुमविशेषनिर्दोषहौ तहांजो कोई अल्पमात्र तुमविषेदोषारोपणकरै सोअसाधुहै अज्ञानहै अधम है ( १६ ) अरु जोतुमराज्यकरत्यहु तबहूंतुमको दोषनहींहोत अरु श्रीरामचन्द्र श्रीजानकी लक्ष्मणजूकोसुनिकै परमसंतोषहोत ( १७ ) दोहार्त्थ॥ हेभरतजू अवतौंतुम अत्यन्तनीक भलाईकीन्हहै काहेतेकिसर्व त्यागिकै सर्बमंगलकरमूल श्रीरामचन्द्रकेचरणारविन्दको स्नेहहै सो तुम्हारो सिद्धांत है ( १८ ) श्रीराचन्द्रजीकेचरणारविन्द विषे स्नेह सोईतुम्हारे जीवनधन प्राणहै तातेतुम्हारे समानभूरिभाग्यमान कोईनहींहै ( १९ ) हेतात जोतुम सर्बत्यागिकै श्रीरामचन्द्र के चरणारविन्दविषे अनुराग सिद्धांतकीन्हहै तौयहबातमें आश्चर्यनहींहै काहेतेकि दशरथमहाराजके तुमपुत्र अरु श्रीरामचन्द्रके भ्राता ताते कस न असहोइ ( २० ) हेभरतजीसुनहु श्रीरामचन्द्रकेमनविषे तुम्हारेसमानप्रेमकरपात्र कोईनहीं है ( २१ ) काहेते श्रीलक्ष्मण अरु श्रीजानकीजीते श्रीरामचन्द्रजीकी अपनेबिषे तुम्हारीप्रीतिसराहतेसराहतेरात्रिबीतिजातीभई किन्तु श्रीरामचन्द्रजी श्रीजानकीजीश्रीलक्ष्मणजी परस्पर सराहना करतेरहे हैं सोहम अपने कानहूं सुनतरहे हैं ( २२ ) अरु तुम्हारी प्रतिकरमर्म श्रीरामचन्द्रके मनमें हम अच्छीतरहजानाहै काहेते त्रिवेणीस्नान करतसन्ते तुम्हारे अनुरागमें डूबिनिकसे अथवा जबप्रयाग स्नानकरनलागे तब ब्राह्मण संकल्प पढ़तसन्ते यह बोल्यो कि जम्बूद्वीपे भरतखण्डे यह तुम्हारोनाम सम्बन्ध सुनतसन्ते श्रीरघुनाथजीमग्नह्वैगये हैं यहनामोद्दीपन कहावत है किन्तु तीर्थराज प्रयाग ताको सेवन स्नान करत करत हमारोमन निर्मल ह्वैगयोहै ताते प्रीतिकर मर्म जाना है ( २३ ) हे भरतजूतुम्हारे ऊपर श्रीरघुनाथजी की ऐसी प्रीतिहै जैसे जड़नरहै अरु धनवान्

माहीं प्रेमपात्रतुमसमकोउनाहीं २१ लषणरामसीतहिंअतिप्रीती निशिसबतुमहिंसराहतबीती २२ जानामर्म्मनहातप्रयागा मगनहोहिंतुम्हरेअनुरागा २३ तुमपरअससनेहरघुवरके सुखजीवनजसजगजड़नरके २४ यहनअधिकरघुवीरबड़ाई प्रणत कुटुम्बपालरघुराई २५ तुमतौभरतमोरमतयेहू धरयउदेहजनुरामसनेहू २६ दो० ॥ तुमकहँभरतकलंकयहहमसबकहँउपदेश रामभक्तिरससिद्धहितभायहसमयगणेश २७ चौ० ॥ नवबिधुतातविमलयशतोरा रघुवरकिंकरकुमुदचकोरा २८ उदितसदा

हैं त्यहिसुखमें जैसेवहिको अपने देहको जीवन अत्यन्तप्रियहै कि मैं सदा जीवतरहौं ( २४ ) अरु तुमतौ श्रीरामचन्द्र के लघुभ्राता प्रियहौ तौ कछु यह श्रीरामचन्द्र की बड़ाई नहीं है काहेते कि श्रीरामचन्द्र प्रणतकुटुम्बपाल हैं प्रणतकही जो शरण हैं त्यहिकर पालबकही परमपददेते हैं सहित कुटुम्बके ( २५ ) हे भरतजू हमारेमतमें तुमतौ जनु श्रीरामचन्द्रके स्नेहकी मूर्तिप्रत्यक्षहौ ( २६ ) दोहार्थ॥ हे भरतजू यहिको कलङ्कमानि लिह्यउहै सो तुम्हारो कलङ्ककैसो है हमऐसे मुनीश्वरनको उपदेशरूपहैका हेतु श्रीरामचन्द्र की भक्तिकर रसअनुराग प्रेम त्यहिके सिद्धिहेतुहै गणेशकही यहसमय श्रीचित्रकूटको आपुको गमन सर्वजीवन को महामंगलमय होतभयो ( २७ ) तुम्हारयश एकनिर्मलनवीन

चन्द्रमा उत्पन्न भयोहै तहां श्रीरामचन्द के भक्तजनजेहैं तेकुमुद चकोर हैं ( २८ ) अरुवहचन्द्रमा उदयअस्त होतरहतहै अरु तुम्हार यशरूपचन्द्रमा एकरस उदय रहैगो अरु वह घटत बढ़तहै अरु इहा एकरस रहैगो अरु यह सम्पूर्णजगत् ब्रह्मांड सोईनभहै तामें तुम्हार यशरूप चन्द्रदिनप्रति दूनदूनबढ़त उदितरहैगो ( २९ ) अरु यहचन्द्रमा ते अरु कोक जो चकचकई त्यहि तेबिरोध है अरु तुम्हार यशरूप चन्द्रमा अरु तीनिलोक कोक है त्यहि ते अतिप्रीति होइहि अरु इहां श्रीरामचन्द्रकर प्रताप सोई सूर्य है तुम्हारस्वरूप चन्द्रमाकी छबिको न हरैगो ( ३० ) अरु यह चन्द्र निशिदिन सबको सुखदाता होइगो अरु कैकेयीकै कर्तव्यराहु सो न ग्रसिसकैगो ( ३१ ) अरु वहि शशिमें एकरसपूर्ण अमृतनहींरहै है घटत बढ़तसन्ते अरु तुम्हारे यशरूप चन्द्रविषे श्रीरामचन्द्रकर प्रेमपियूष नित्यपूर्ण सर्बकालमें रहैगो अरु वहिचन्द्रमा बिषे दूषणदोष है श्यामता है गौतममुनि अरु दक्ष प्रजापति को शाप तिरस्कारहै अरु दोष गुरु स्त्री गमन अरु तुम्हारेयश चन्द्रमामें गुरु अपमान दूषण दोषनहीं है काहेते कि गुरुनकही कि

**अथइयकबहूंना घटिहिनजगनभदिनदिनदूना २९ कोकत्रिलोकप्रीतिअतिकरहीं प्रभुप्रतापरबिछविहिनहरहीं ३० निशिदिनसुखदसदासबकाहू ग्रसिहिनकैकेयिकरतबराहू ३१ पूरणतासुसुप्रेमपियूषा गुरुअपमानदोषनहिंदूषा ३२ रामभक्तिअबअमियअघाहू कीन्ह्यउसुलभसुधावसुधाहू ३३ भूपभगीरथसुरसरिआनी सुमिरतसकलसुमंगलखानी ३४ दशरथगुणगणवर्णिनजाहीं अधिककाहज्यहिसमजगनाहीं ३५ दो० ॥ जासुसनेहसकोचबशरामप्रकटभेआइ जेहरहियनयननकबहुं निरखेनाहिंअघाइ ३६**

तुम राज्यकरहु अब तुम उत्तरदैकै गुरु मंत्री कौशल्याको प्रसन्नकरिकै श्रीचित्रकूट को गमनकीन्ह ताते तुम्हारयश निर्दोष है ( ३२ ) तहां श्रीरामचन्दविषे प्रेमलक्षणाभक्ति सो अघाइकही परिपूर्ण सो तुमसारी बसुधासर्बजीवन को सुलभ करिदीनहै ऐसो तुम यशरूपचन्द्रमा कीन्हहै ( ३३ ) हे तात जो सर्बजीवन के कल्याणहेतु यशरूप चन्द्रमा मातुमें प्रकटकीन्हतौ का यह बड़ी बात कीन्ह है काहेते यह रघुबंशकुल ऐसे है जहां ज्यहि बंशमें राजाभगीरथभये जे साक्षात् ब्रह्मद्रव श्रीसुरसरी जाते त्रैलोक्यपावनभयो है जाको सुमिरण मंगल कै खानि है सो महिमण्डल में लै आये हैं ( ३४ ) अरु श्रीदशरथ महाराज के गुणगण परमदिव्य बर्णिबेयोग्यनहीं हैं तिनके समान कोई नहीं है अधिक कहां ते होइगो ( ३५ ) दोहार्थ॥ अरु जासुकही जिन दशरथ महाराज के प्रेमस्नेह संकोच के बशह्वैकै श्रीरामचन्द्र प्रकटभये जिन श्रीरामचन्द्रके स्वरूप को श्रीमहादेव अपनेहृदय के नेत्रन ते निरन्तर निरखत अघातनहीं हैं ( ३६ ) हे भरतजी यह कीर्त्तिरूप चन्द्रमा तुम अनूप उत्पन्नकीन्ह है तहां श्रीरामचन्द्रबिषे प्रेम सोई मृगरूप बसन्त है ( ३७ ) हे तात तुमग्लानि जीवमेंकरतेहौ सो जाइकही बृथाकरतेहौ काहेते जाके हस्तामल पारसमणिहै सो दरिद्र को क्यों डरै हे तात तुम तौ श्रीरामानन्यहौ तुमयश अयशकोक्यों डरौ ( ३८ ) हे भरतजी सुनहु हमझूंठ नहींकहते हैं काहेते कि हम उदासीन तपस्वी विरक्तहैं बनमेंरहते हैं निस्पृही हैं ( ३९ ) ताते हमसत्यकहते हैं जेते साधन मुक्तिकेहैं कर्म तप योग वैराग्य ज्ञान ध्यान समाधि इत्यादिक त्यहिकोफल श्रीलक्ष्मणजी श्रीजानकीजी श्रीरामचन्द्रजी सोहमको दर्शनमेंप्राप्तभये जिनपरमेश्वरकेहेतु यह सबसाधनकीन्हहैसो फल निर्मलरसमयको प्राप्तिभयो है ( ४० ) हेभरतजी त्यहिफलकरफल तुम्हारदर्शनहमकोभयोहै परसहित प्रयाग प्रयागबासिनकरभाग्यजागो है इहां यह

**चौ० ॥ कीरतिविधुतुमकीन्हअनूपा जहँबसरामप्रेममृगरूपा ३७ तातगलानिकरहुजियजाये डरहुदरिद्रहिपारसपाये ३८ सुनहुभरतहमझूंठनकहहीं उदासीनतापसबनरहहीं ३९ सबसाधनकरसफलसोहावा लषणरामसियदर्शनपावा ४० त्यहिफलकरफलदरशतुम्हारा सहितप्रयागसुभागहमारा ४१ भरतधन्यतुमजगयशलयऊ कहिअसप्रेममगनमुनिभयऊ ४२ सुनिमुनिवचनसभासदहर्षे साधुसराहिसुमनसुरवर्षे ४३ धन्यधन्यधुनिगगनप्रयागा सुनिसुनिभरतउमँगअनुरागा ४४ दो०॥ पुलक**

अर्थ भावरस व्यंग्योक्ति है कि कर्म योग तप वैराग्य ज्ञान ध्यानसमाधि नवधा प्रेमापराभक्ति इत्यादिक अरु महात्माजनकेदर्शनसत्संग त्यहिको फल परमेश्वर श्रीरामचन्द्र तिनकैप्राप्तियह वेद मुनीश्वरकहते हैं अरु इहां भरद्वाजने कहा कि श्रीरामचन्द्रकेदर्शनकीप्राप्तिकोफल भरतजूकेदर्शन हैं तहां यहअभिप्राय है कि हे भरतजी सर्बजीवके आचार्य श्रीलक्ष्मणजी श्रीजानकीजी परब्रह्म श्रीरामचन्द्रजी तिनको दर्शन हमकोप्राप्ति भयो पर तिनबिषे सेवाभावकै प्रीतितुम्हारे दर्शनसे प्राप्तभई है तहांरसमय जो फल है त्यहिको फल स्वाद है तैसे परमेश्वर की प्राप्तिकर फल प्रेमप्रीतिसंयुक्त कैङ्कर्य सो भरतकेद्वार ह्वैकै सर्बको प्राप्तभयो है ताते भरद्वाज कहाहै ( ४१ ) हे भरतजी तुम जगतबिषे धन्यहौ सर्बजीवन के कल्याण मङ्गलमय हेतु जस जगजयउ कही उत्पन्नकीन है हेगरुड़ असकहिकै मुनि प्रेममें मग्नह्वैगये ह ( ४२ ) भरद्वाजकै बाणी भक्ति रसमय भरी सुनिकै सम्पूर्णमुनिनकीसभा अतिहर्षकोप्राप्तभई है अरु देवता भरद्वाजको साधुसराहिकै सुमनवृष्टि करते हैं ( ४३ ) तहांआकाश अरु प्रयागविषेभरद्वाज अरु भरतकीबड़ाईकी धन्यधन्यधुनिह्वैरहीहै यहध्वनिसुनिकैमुनिभरत अतिअनुराग को प्राप्तिभये हैं ( ४४ ) दोहार्त्थ॥ तब भरतजीके हृदयविषे श्रीसीतारामजीको स्वरूप आनिकैप्रेमतेपुलकिकै कमलनेत्रन में जलभरआयेहैं दोऊ कमलकरजोरिकै भरद्वाजआदिकमुनिनकीमण्डलीकोप्रणाम करिकैगद्‌गदबयनसे बोलतेभये हैं ( ४५ ) मुनिमण्डलीके नमस्कारकरिकै यहशपथकरिकैकहते हैं कि इहां मुनीश्वरनकी तौ समाजहै अरु तीर्थराज बिषेइहांजो कोऊसांचिउ शपथकरैतौ अघाइके अकाजह्वैजाइहै काहेते कियहजीव कहांलगि सांचाहोइगो ( ४६ ) अरु त्यहिसमाज थलविषे मैं कहत हौं कैसो समाजथल है जो इहांकछु उक्ति बनाइकै कहौंगो तौ यहिसमान महाअघ अधमाई दूसरहई नहीं है यहशपथ करिकै भरत जीक्योंकहते हैं

**गातहियरामसिय सजलसरोरुहनयन करिप्रणाममुनिमण्डलिहिबोलेगद्‌गदबयन ४५ चौ०॥ मुनिसमाजअरुतीरथराजू साँच्यउशपथअघाइअकाजू ४६ यहिथलजोकछुकहौंबनाईत्यहिसमअधिकनअघअधमाई ४७ तुमसर्वज्ञकहौंसतिभाऊ उरअंतर्यामीरघुराऊ ४८ म्वहिंनमातुकरतबकरशोचू नहिंदुखजियजगजानिहिपोचू ४९नाहिंनडरबिगरैपरलोकू पितौमरणकरनाहिं**

हैं तहां जे श्रीरामानन्ददास हैं ते चारिउफल अरु लोकमर्य्याद मानवड़ाई यश अयश इत्यादिकनको तृणइव त्यागेहैं तहां भरद्वाजजी कहा है कि हे भरतजीतुम रामानन्य ह्वैकै अयशको डरतहौ यहिचौपाईविषय में डरहु दरिद्रहि पारसपाये ताते भरतजू अपने अनन्यभावको उत्तर मुनिकोदेते हैं ( ४७ ) हेमुनीशतुम सवर्ज्ञहौ मैं सत्यभावते अपने अन्तष्करणकी कहतहौं अरु सबके उरके अन्तर्य्यामी श्रीरघुनाथजीहैं सो जानतेहैं ( ४८ ) अबमेरे बाह्यांतर की सत्यता सुनोमोको माताकी कर्तव्यकरशोच नहीं है अरु सबजगत् मोको पोचजानै जाइयह दुःखशोच नहीं हैं ( ४९ ) अरु परलोकहु बिगरेकर शोकडर नहीं है अरु पितहुके मरिबेकरशोक नहीं है तहां जो भरद्वाजकहा कि तुम अयशको डरतेहौ त्यहिको उत्तर यहिवचनविषे दियो कि यश अयश लोक परलोक इत्यादिकनहींबासना श्रीरामचन्द्रकी भक्ति के विशेष कर्त्ताहै यह मैं अच्छीतरह जानत हौ ताते मेरेइहां इनकोत्यागहै यहसत्य जानब अरु यहां भरतकहाकि**पितौमरणकरनाहिंनशोकू** तहांयहवचनमें अनन्यभाव में रुखाई आवति है ताते यह भरतकहते हैं ( ५० ) मोको पितहुके मरणकर शेकनहीं है काहेतेकि जिनकर सुकृत सुयश तीनिउँ भुवनमें उत्साहसमेत पूर्णभरिरह्योहै अतिशोभित काहेते श्रीलक्ष्मण श्रीराम ऐसेसरसपुत्रपावतभये हैं सरसकहीश्रेष्ठ जिनको श्री शिव सनकादिक ध्यानकरते हैं ( ५१ ) जिन श्रीरामचन्द्रके विरहविषे राजैंशरीरको तृणइव त्यागिदियो है तिन राजाके शोककर कवनप्रयोजनहै ( ५२ ) इनसबकरएकौडर शोकनहींहै तहांएकशोक विशेषहैकि श्रीरामचन्द्रजीश्रीलक्ष्मणजी श्रीजानकीजीके पगबिनु पनहीं बनबन फिरतेहैं मुनिबेषकिये हैं ( ५३ ) दोहार्त्थ॥ अजिन जो मृगचर्म्म अरु भोजपत्र इत्यादिक बल्कलसोतौ बसनहै अरु अशनकही भोजनकन्दमूलफल अंकुरइत्यादिकहैंअरु तृणपर्णडासिकै महिविषे शयन अरुतरुतरबास करते हैं आतपकहीघाम वर्षाशीत नित्यसहते हैं त्यहिकेकारणमैं ऐसो श्रीरामको सेवकहौं ( ५४ ) हेमहामुनि त्रिकालदर्शी यहदुःखके दाहते नित्य

नशोकू ५० सुकृतसुयशभरिभुवनसोहाये लक्ष्मणरामसरिससुतपाये ५१ रामविरहतनतजिक्षणभंगू भूपशोचकरकवनप्रसंगू ५२ रामलषणसियबिनुपगपनहीं करिमुनिवेषफिरतबनबनहीं ५३ दो० ॥ अजिनबसनफलअशनअहिशयनडासिकुशपात बसितरुतरनितसहतहिम आतपबर्षाबात ५४ चौ०॥ यहदुखदाहजरैनितछाती भूषणबासरनींदनराती ५५ यहिकुरोगकरओषधिनाहीं सोध्यउँसकलविश्वमनमाहीं ५६ मातुकुमतिबढ़ईअघमूला त्यइँहमारहितकीन्हबसूला ५७ कलिकुकाठगढ़िकठिन

छातीजरतिहैन तौ दिनमेंभूंखकीसुधि नतौरात्रीमेंनिद्राकी सुधि (५५) यह कुरोग जोमेरेउत्पन्नभयो है त्यहिकीओषधिकहूंहई नहीं है अपनेमनमें अनुभव विचारते संपूर्ण विश्वविषेमैं खोजिदेख्यों नहठिंहरेउहै इहांभरतजीके उपायशून्यशरणागत कोरसभरद्वाजसेकहाहै मुनिसमुझिकैआश्चर्य भावमानते हैं (५६) हेमुनीश यहकुरोग मिटिबेकोबड़ाअसमंजसहै काहेते हमारीमाताकीकुमति अघकरमूलसोई बढ़ईभयोजो हमारोहितकरराज्य देनेलगी सोईवसूलाभयो है सोईमाताकी कुमति अपनेसुखको अनुसन्धानसोई ग्रहणकरतभयो है (५७) कलिकही अपनीबुद्धिमें कल्पितकियो है कि जोरामचन्द्र राजाहोहिंगे तौमेरेपुत्र जोभरतजीहैं तिनको दुःखदेहिंगे अरु कौशल्यामोका दुःखदेहिगी ऐसीअनेक कल्पना कैकेयी करतभई सोई कुकाठ कहीबबूरइत्यादिकभयोकिंतुकलिकहीक्लेशसोईकुकाठहै अरु मंथराकेवचनमेंप्रतीतिसोईगढ़बहैकुयंत्र कही शनिश्चरकैमूर्ति सोकुयंत्रअनेक कुत कीनकासिद्धांत जामें परिणाम केवल महादुःखसोई कुयंत्रहै सोकुयंत्रअयोध्याविषे गडंतकरतिभई हठसोईगाढ़वहै अरु दूनौंवरदानसोईकुमंत्र हैं सोइपढ़िकही राजासे मांगिकै चौदहवर्षको गाड़िदियोहै ऐसो कुयोगकैकेयी करतिभई है (५८) तहां यह कुठाट जो कैकेयी सब टाट्यउ है सोमेरेहेतु त्यहिसबको कारण मैंहौं ज्यहिकरिकै सबजगत् बारहबाटकहीघाल्यउहै बारहबाटकही लौकिकबाणी है निपिद्धमार्गहै दरिद्र निरादर भयशोक ४ अधिभूततेहैं मूर्खत्वपरिणाम वर्तमान चिन्ता संकल्प बिकल्प उद्वेग ४ येचारि अधिदैवतते हैं कफबातपित्त रोगादिक ४ ये चारि अध्यात्मते हैं येतेबारहबाट आमर्षमें कहेजाते हैं तहांकरुणारसहै किन्तु बारहबाटकही अष्टदिशा अरु चारिउफल तामें सर्वजगत् को घालिकही प्राप्तकियो है श्रीरामचन्द्रको बनगवनकारण देवमुनि इत्यादिक सबकोसकामबाटमें प्राप्तिकियो है (५९) हेमुनीशयह कुयोग तब मिटिहि जब

कुयंत्रू गाड़िअवधपढ़िकठिनकुमंत्रू ५८ म्वहिंलगियहकुठाठत्यइठाटा घाल्यसिसबजगबारहबाटा ५९ मिटिहिकुयोगरामफिरिआये अवधबसैनहिंआनउपाये ६० भरतबचनसुनिमुनिसुखपाई सबहिंकीन्हबहुभांतिबड़ाई ६१ तातकरहुजनिशोचविशेषी सबदुखमिटिहिरामपददेखी ६२ दो० ॥ करिप्रबोधमुनिवरकह्यउअतिथिप्रेमप्रियहोहुकंदमूलफलफूलहमदेहिंलेहुकरिछोहु ६३

श्रीरामचन्द्र श्रीअयोध्याकोफेरि आवहिंगे बीच अयोध्यानहीं बसैहै (६०) मेरेमनमें ऐसो असमंजसहै हे पार्वती भरतके वचन सेवक सेव्यभाव रसमय सुनिकै समस्त मुनिमंडली अतिआनन्द हर्षको प्राप्तिभईहै अरुभरतकी बड़ाई करते हैं कि भरतकी समान सेवक सेव्यभावविषे तीनिहूंलोक तीनिहूंकाल में कोईनहीं है (६१) भरद्वाज कहते हैं हेतात अबतुमइहौ शोच न करहु श्रीसीता रामचन्द्रकर पद पंकज देखतसन्ते विशेषकै सब शोचकोदुःख मिटिजायगो (६२) दोहार्थ॥ यहकहिकै स्नेह अरु प्रेमतेपुलकिकै भरद्वाज भरतजूते कहते हैं हे तात तुम अतिथि प्राणप्रियहौ क्योंकि अपने आश्रमविषे जो कोई आवै तिसको सत्कार अरु आदरकिया चाहिये त्यहिते कन्दमूल फलफूल जो हमदेहिं सो आपछोहकरिकैग्रहणकरौ (६३) ३ इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेश्रीअयोध्याकाण्डे भरद्वाजभरतसम्बादे परस्परविलक्षणभाव वर्णनन्नाम नवमस्तरंगः॥९॥ :: :: :: :: :: :: ::

दोहा॥ भरतपहुनईमुनिवचनशोचिरहेत्यहिराति दशतरंगतजिविषयदश रामचरणमतिमाति १० तब भरतजी कै मुनि आयसुलीन भरतजू को महासंकोचभयउ यहसमुझिकै कि प्रयाग क्षेत्र अरु मुनि विरक्त अरुहमरघुवंशी यह कुठाहरविषे हम कौन बिचारकरैं जो नहीं अंगीकारकरैं तौ मुनिके मनमें खेदसंयुक्त यह आवै कि भरतजी कर्मकाण्ड को लिहहैंतौ हमारी उपासना विषे विरोध आवत है ( १ ) तब भरतजू बिचारिकरिकै गुरुकही श्रेष्ठमुनीशके बचन सर्ब धर्म ते गुरुजानिकै पदबंदिकै ह्वौकरजेरिकै बोलते भये ( २ ) हे मुनीश तुम्हारी आज्ञा शीशपर धरिकै हम करिय यहै नाथ हमारो परमधर्म है तब मुनि बहुतप्रसन्नभये ( ३ ) भरतकेवचन श्रेष्ठमुनिके मन में भावतभये हैं तब मुनि सेवक अनेक बोलाबते

चौ०॥ सुनिमुनिवचनभरतमनशोचू भयउकुअवसरकठिनसकोचू १ जानिगरूगुरुगिराबहोरी चरणबंदिबोलेकरजोरी २ शिरधरिआयसुकरियतुम्हारा परमधर्मयहनाथहमारा ३ भरतवचनमुनिवरमनभाये शुचिसेवकतबनिकटबोलाये ४ चाहियकीन्हभरतपहुनाई कंदमूलफलआनहुजाई ५ भल्यहिनाथकहितिनशिरनाये प्रमुदितनिजनिजकाजसिधाये ६ मुनिहिंशोचबड़ पाहुननेवतातसपूजाचाहियजसदेवता ७ सुनिरिधिसिधिअणिमादिकआई आयसुहोइसोकरियगोसाई ८ दो०॥ रामविरहब्याकुलभरतसानुजसहितसमाज पहुनाईकरिहरहुश्रमकहामुदितमुनिराज ९ चौ० ॥ रिधिसिधिशिरधरिमुनिवरबानी बड़िभागिनिआपुहिअनुमानी १० कहहिंपरस्पररिधिसमुदाई अतुलितअतिथिरामलघुभाई ११ मुनिपदबंदिकरियसोइआजूहोहिंसुखी

भये हैं ( ४ ) तब मुनिसेवकनते कहतभये कि भरतकै पहुनाई कीनचाहते हैं कंदमूलफल इत्यादिक ल्यावहुजाइ ( ५ ) तब सबभलेहिनाथकहिकैदंडवतकरिकै अपने अपने कार्यको हर्षिकै जातेभये ( ६ ) तब हेगरुड़ मुनिमनमें बिचारकीनकि पाहुन बड़ाभारी नेवताहै कंदमूलफल इत्यादिक में निर्बाह न होइगो काहेते जसदेवताहोइ तसपूजा चाहिये ( ७ ) यहभरद्वाजजी अपनेमनमें बिचारिकै कहासुनिकै ऋद्धीसिद्धी अणिमादिक आइकै प्राप्तिभई भरद्वाजसे हाथजोरिकै कहती हैं हे मुनीश जो आज्ञाहोइ सोहमकरैं ( ८ ) दोहार्थ॥ तब मुनीशबोले कि भरतजी श्री रामचन्द्रके विरह करिकै सानुज समाजसहित मार्गकरिकै श्रमित हैं ताते अच्छीतरह पहुनाई करिकै श्रमहरहु मुदितमन ते मुनीश आज्ञादीन है ( ९ ) ऋद्धिसिद्धि मुनिकी बरवाणी सुनिकै अपना अपना को बड़िभागिनि मानतीभई कि मुनीश हमारी चाहना कीन है ( १० ) तब ऋद्धि सिद्धि आपुसमें परस्पर कहती हैं कि श्रीरामचन्द्र के लघुभाई अतुलित अतिथिहैं इनकरसत्कार करिवेको हम योग्यनहीं हैं पर अपने बलभरिकराचाहिये ( ११ ) मुनिके पदविषे बन्दनाकरिकै करहु जामें सम्पूर्ण राजसमाज सुखीहोइ ( १२ ) सब ऋद्धिन सिद्धिन आपुसमें असकहिकै अनेकन गृहकी रचना करतभई जिनको देखिकै बिमानकही देवतनके बिमान बिलखाहिं कहीललचाते हैं ( १३ ) तिन मन्दिरन विषे अनेकभोग विभूतिभरिदीनहै जाको देखिकै इन्द्रादिक देवता अभिलाषा करते हैं ( १४ ) अरु अनेक दासीदास अतिसुन्दर किशोर ते सबमुनिके चरणारविंदमें चित्तराखिकै अरु

सबराजसमाजू १२ असकहिरच्यउरुचिरगृहनाना जोबिलोकिबिलखाहिंबिमाना १३ भोगबिभूतिभूरिभरिराषे देखतजिनहिं अमरअभिलाषे १४ दासीदाससाजसबलीन्हे जोगवतरहहिंमुनिर्हिंमनदीन्हे १५ सबसमाजसजिसधिपलमाहीं जोसुखसपन्यहुसुरपुरनाहीं १६ प्रथमहिंबासदियेसबकेही सुंदरसुखदयथारुचिजेही १७ दो०॥ बहुरिसपरिजनभरतकहंमुनिआयसुअसदीन्ह विधिबिस्मयदायकबिभवमुनिवरतपबलकीन्ह १८ चौ०॥

**मुनिप्रभावजबभरतबिलोका सबलघुलागलोकपतिलोका १९ सुख समाजनहिंजाइबखानी देखतबिरतिबिसारहिंज्ञानी २० अशनशयनशुचिबसनबिताना बनबाटिकाबिहगमृगनाना २१ सुरभि**

सबके मनको अपनेमनते त्यहिको जोगवतहैं अरु त्यहिविभूति को जोगवतरहते हैं ( १५ ) सम्पूर्ण सरंजाम एकपल में सिद्धिन रचिदीन है जो सुख विभूति स्वर्गलोक में स्वपन्यहु नहीं है ( १६ ) तब ऋद्धिसिद्धिनसेवक सेवकिनिनकर रूपधरिधरि अति आदर वचन कहिकहि भरत की सेनाको प्रथम मन्दिरन में बासकरावतभई अति सुन्दर सुखद यथारुचिज्यहिको जसिरुचिरही सो बासकरतेभये ( १७ ) दोहार्थ॥ हे पार्वती बहुरिकै भरत परिजन संयुक्त को मुनिआज्ञादीनहै कि अब आसन करहुजाई देखिये तौ जो मुनि अपने तपकेबलते परम ऐश्वर्य उत्पन्नकीन है सो देखिकै ब्रह्मा की बिस्मयजाती है ( १८ ) तब भरतउठिकैजाइकै मुनिकर प्रभाव देखतेभये सब लोकपतिनकर लोक लघुलागत है वरुण वायु कुवेर ईश इन्द्र अग्नि यमराज चन्द्र सूर्य ब्रह्मादिकनके लोक लघुलागते हैं ( १९ ) त्यहिसमाजकर सुखबखानिबे योग्यनहीं है ज्यहिको देखिकै ज्ञानिनकर वैराग्य बिसरिजात है ( २० ) अशन जो भोजन शयन शय्याशुचिकही पवित्र निर्मल अरु हेमरत्नमय जटितवस्त्र मन्दिरनप्रति त्यहि के बितानतनेहैं अरु बनकही सघन बाटिका जो फूलफल पल्लवनकरिकैअतिशोभित हैं ( २१ ) अरु सुरभिकही सुगन्धमय फूलफल तिनके रस अमृतमय अरु निर्मल जलाशय कही कुण्डल मणिमय विविध विधानके बनै हैं ( २२ ) अरु अशनजेहैं चारिप्रकारके भोजन अरु पानकही जो पीवेमें आवत हैं षद्रस इत्यादिक ते सबशुचिकही अतिपवित्र सर्वकालमें निर्मल अमृतकेसमान स्वादगुण त्यहिसबको देखिकै प्राप्तिह्वैकै अयोध्याबासी कैसे सकुचाइकै त्यागेहैं जैसे जमीसकही विषकोजानिकै प्राणीत्यागकरै हैं। तैसे अयोध्यावासिन ऋद्धि सिद्धिनकै बिभूति त्यागकीनहै काहेते कि श्रीरामचन्द्र के मिलवेहेतु सबही संयम नेम ग्रहणकीन है जो यह बिभूतिकोग्रहणकरै तो संयम नेम नाशह्वैजाइगो ताते विषइवत्याग

**फूलफलअमियसमाना विमलजलाशयबिबिधिबिधाना २२ अशनपानशुचिअमलअमीसे देखिलोगसकुचाइजमीसे २३ सुरसुरभीसुरतरुसबहीके लखिअभिलाषसुरेशसचीके २४ ऋतुबसन्तबहबिविधबयारी सबकहँसुलभपदारथचारी २५ स्त्रगचन्दन बनितादिकभोगा देखिहर्षबिस्मयसबलोगा २६ दो० संपतिचकईभरतचकमुनिआयसुख्यलवार त्यहिनिशिआश्रमपींजरा राखेभाभिनुसार २७॥** * * *

कीनहै पुनि सामान्यअर्थ जमीसेकही जे संयमी हैं मुनीश्वर तिनकीनाई बिषयकर त्यागकीनहै अरु जोभरद्वाज कंदमूल फल दल इत्यादिकन को निमंत्रण कीनहै सो मुनिके शिष्यनकेल्यायेको सो तौ ग्रहणकीन अपर विभूतिको त्यागकीन काहेते विना निमंत्रण प्राप्तिभईहै ताते त्यागकीन है ( २३ ) कामधेनु कल्पवृक्ष एकएक सबके मन्दिरनप्रति है तिनको देखिकै अभिलाषा करते हैं सुरेश जो इन्द्र सची इन्द्राणी इत्यादिक देवता देवी इच्छाकरते हैं ( २४ ) अरु बसंतऋतु एकरस ह्वैरहीहै त्रिविध पवन बहते हैं शीतल मंद सुगंध तहां सबको चारिउपदार्त्थ सुलभ हैं अर्थ धर्म काम तौ प्रसिद्धहै अरु इनसबनकर त्याग सो मोक्षहै सो अयोध्यावासिन के मोक्ष पाछेपरी है श्रीराम प्रेमके आश्रय से सब सुलभ है ( २५ ) स्त्रग् जो रत्नकेहार माला इत्यादिक अरु वनितादिकजो नित्यकिशोरी इत्यादिक जो भोग त्यहिको देखिकै सबलोग हर्षविस्मय को प्राप्ति हैं हर्ष तौ बिभवदेखिकै अरु विस्मय यह कि यहबिभूतिकहां ते प्राप्तिभई है पुनि विस्मय यह कि हम श्रीरामचन्द्र के दर्शनको जाते हैं हमारो मन यहिविषयको ग्रहणकरैहैतौ न बनै ( २६ ) दोहार्थ॥ हे पार्वती भरद्वाज की प्रेरी संपति सो तौ चकईभई है अरु भरत चक भये अरु सोई रात्री में मुनिकोआश्रम पींजराभयउ अरु मुनिकीआज्ञासोई खेलवारकही पक्षिनको बझावनेवाला भयो सो संपत्तिको अरु भरतको मुनिकी आज्ञा एक २ जगहकरिदीन है तहां चकचकई एकजगहैरात्री को नहींरहते हैं कदाचित् परवश ते पींजराविषे

एकजगहभये पर स्पर्श नहीं करते हैं तैसे भरतजू समाजसहित विषयको स्पर्शनहींकीनहै मुनिकोनिमंत्रणकंदमूल फलग्रहणकीन है यहीरीतिसेभिनुसारहोतभयो है सकल लोग जागते भये हैं तहां ब्रह्मांडभरेकी बिभूति सो चकईभई है अरु भरतसहित समाज चकभये हैं अरु श्रीरामचंद्र को बनगवन चौदहबर्ष पर्य्यंत सोई महारात्री भई त्यहिविभूति ते भरत चौदहबर्ष भिन्नरहेहैं उपरांत श्रीरामचन्द्र की आज्ञा ते कैङ्कर्य्यकीन है अरु मुनिकीप्रेरी

**चौ० ॥ कीन्हनिमज्जनतीरथराजू नाइमुनिहिंशिरसहितसमाजू १ ऋषिआयसुअशीषशिरराखी करिदण्डवतविनयबहुभाखी २ पथगतिकुशलसंगसबलीन्हे चलेचित्रकूटहिमनदीन्हे ३ रामसखाकरिदीन्हेलागू चलतदेहधरिजनुअनुरागू ४ नहिंपदत्राणशीश**

विभूति की कौनगिनती है ( २७ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने श्रीअयोध्याकाण्डे ब्रह्मर्षिराजर्षिपरस्पर वैराग्यज्ञानभक्ति परीक्षा आनंदमयबर्णनंनामदशमस्तरंगः १०॥ :: :: :: :: :: :: :: :: ::

दो० ॥ दशअरुएकतरंगमें भरथप्रयागअन्हाइ मुनिहिदण्डवतकरिचले रामचरणमनलाइ ( ११ ) भरतजू प्रातःकाल उठिकै सहितसमाज त्रिबेणीमें स्नानकरतेभये पुनि भरतजी आइकै सहितसमाज भरद्वाजजी को दण्डवत्कीन ( १ ) पुनि मुनिकै आशीर्बादआयसु शीशपरराखिकै दंडवत्करिकै दोऊकरजोरिकै बिनयकरते हैं ( २ ) पुनि श्रीचित्रकूटकोविदामांगतेभये हैं चित्तदैकैचले जैसे अयोध्यातेचलेहैं तब जेपथकीगति में कुशलकही प्रवीणातिनको मुनीशसंग करिदीन है किन्तु अपने संगकेपथगतिप्रवीण लैचले हैं ( ३ ) तब भरतजी श्रीरामचन्द्रकर सखानिषाद लागू कही अपने संगमें लगाइकै चले जनुद्यौजन श्रीरामचन्द्रके अनुरागकीमूर्तिचले जाते हैं ( ४ ) न तौ पदत्राण हैं अरु नतौ शीशविषे कछुबस्त्र की छाया है अरु श्रीराचन्द्रविषे नेमप्रेम ब्रतकही प्रण अरु सेवकसेब्यधर्म इत्यादिक अमायाकही निष्काम धारणकिहे चलेजाते हैं ( ५ ) अरु श्रीरामचन्द्र जी श्रीजानकी जी श्रीलक्ष्मणजी के पंथ कै कहानी कहीकहबकरब सो भरतजी सखानिषादत्यहिते अति मृदुबाणीते पूछतजाते हैं ( ६ ) जहांजहां श्रीरघुनाथजी टिकेहैं सो विटपकी छायानिषाद बतावत है सो भरतजी के अनुराग उमँगत है रोकानहीं रहत है ( ७ ) भरतकै दशादेखिकै देवता फूलनकी वर्षाकरते हैं अरु पृथ्वीकुशकंटक आकर्षणकरिलीन्ह है अति कोमल मुदमंगलमय होत भई ( ८ ) दोहार्थ॥ अरु मेघ छाया किहेजाते हैं अरु शीतल मंद सुगंध पवन बहती है जैसो मगभरतजी को भयो है तैसोमग श्रीरामचन्द्र को नहीं भयो है काहेते श्रीरामचन्द्र अपने भक्तन की सेवाते जैसे प्रसन्न होते हैं जैसे अपनी सेवातेनहींप्रसन्न होते हैं ताते श्रीरामचन्द्र के जातसंते मंगलमय मगभयो है

**नहिंछाया नेमप्रेमब्रतधर्मअमाया ५ लषणरामसियपंथकहानी पूंछतसखहिकहतमृदुबानी ६ रामबासथलविटपविलोकी उरअनुरागरहतनहिंरोकी ७ देखिदशासुरबर्षहिंफूला भइमृदुमगमहिमंगलमूला ८ दो०॥ कियेजाहिंछायाजलदसुखदबहइवरबात तसमग भयउनरामकहँ जसभाभरतहिजात ९ चौ० ॥ जड़चेतनमगजीवघनेरे जेचितयेप्रभुजिनचितहेरे १० तेसबभयेपरमपदयोगू भरतदरश मेटाभवरोगू ११ यहबड़िबातभरतकैनाहीं सुमिरतजिनहिंराममनमाहीं १२ बारकनामकहतजगजेऊ होततरणतारणानरतेऊ १३**

अरु भरतजी के जातसंते महामंगलमय मगभयो है ( ९ ) मगविषे जड़चेतन अनेकजीव जेहैं जड़कही श्वासारहित हैं अरु चेतनकही श्वासासंयुक्त जेहैं ते सबजिन श्रीरामचन्द्र को देखिनि है अरु जिनको श्रीरामचन्द्र देखिनि हैं ( १० ) सबपरमपद के योग्यभये भरत के दर्शनते भवरोग कही जन्ममरणसो मिटिगयो है इहां व्यंग्यार्थ है अरु श्रीरामचन्द्र परमेश्वर तिनके दर्शनते भवरोग नहीं मिट्यउहै अरु भरतजी श्रीरामभक्त तिनके दर्शनते भवरोग मिट्यउहै यहकहाहै तहां यह विपर्य्ययभाव अर्थसिद्धि है कि श्रीरामचन्द्र के

दर्शनते परमपदके योग्यभयो है पर परमेश्वर बुद्धिभावनहीं आयोहै अबभरत की दशा श्रीरामचन्द्रविषे देखिकै तिनके दर्शनतेरामचन्द्रविषे परमेश्वर बुद्धिभाव अच्छीतरह आयोहै तातेभव रोग मिटिगयो है अबते जेतेजीव मगके जड़चेतनरहे हैं ते सबपरमपदको प्राप्तिहोहिंगे संसारमेंन जन्मैंगे काहेते भागवतै द्वार भगवत् प्राप्ति होतेहैं ( ११ ) तहां जो भरत के दर्शनते भवरोग मिटिगयो है तौ यहबड़ीबात नहीं है काहेतेभरतको स्मरणरघुनाथजी अपनेमनमें करते हैं यहसब शास्त्र कहते हैं कि जे सर्वोपायशून्य परमेश्वर के शरणागत हैं तिन कोस्मरण परमेश्वर करते हैं ( १२ ) देखिये तौ जो कोई यहि जगत् में बारककही एकहू बाररामनाम उच्चारण करते हैं ते पुरुष आपुतरते हैं अरु औरको तारते हैं यह प्रमाण है पाद्मे श्लोकएक अभिरामेति यन्नाम कीर्तितंविवशाच्चये ते विध्वस्ताखिलाघौघायांतिविष्णोःपरंपदं ( १३ ) अरुभरतजीता उपायशून्य श्रीरामानुरागी हैं अरु लघुभ्राता हैं तिनके चलतसंते मग मंगलमय कस न होई ( १४ ) सिद्धजे हैं अरु सिद्धनकेसाधकजेहैं मननशीलते सबयहैकहतेहैं अरु भरत के दशादेखिकै अपने अपने साधन के फलको प्राप्तिभये हैं ताते भरत को देखि २ अति हर्षते हैं ( १५ ) यह भरत की दशाकर प्रभावदेखिकै इन्द्र के शोचभयउ है काहेते कि जगत् में

**भरतरामप्रियपुनिलघुभ्राता कसनहोइमगमंगलदाता १४ सिद्धसाधुमुनिवरअसकहहीं भरतहिंनिरषिहरषिहियलहहीं १५ देखिप्रभावसुरेशहिंशोचू जगभलभलेपोचकहँपोचू १६ गुरुसनकह्यउकरियप्रभुसोई रामहिंभरतहिभेंटनहोई १७ दो०॥ रामसकोचीप्रेमबश भरतसुप्रेमपयोधि बनीबातबिगरन चहत करिययत्नछलशोधि १८ चौ०॥ वचनसुनतसुरगुरुमुसुकाने सहसनयनबिनुलोचनजाने १९ कहगुरुबादिक्षोभछलछाँडू इहांकपटकरिहोइहिभाँडू २० मायापतिसेवकसनमाया करियतौउलटिपरैसुरराया २१ तब कछुकीन्ह**

जेभले हैं ते सबको भलादेखते हैं जो किसूमें थोरिउ भलाई देखते हैं तौ भलामानते हैं अरु जो किसूमें सर्वथा अनभलाई देखते हैं तौ कछु प्रयोजन नहीं राखत हैं इहां इन्द्रसकामी है ताते साधुन को मुनीश्वरनकोसबको सकामी देखैहै पोचकही आपुदुष्ट है सबको दुष्टभावते देखै है ( १६ ) तबगुरु जो हैं वृहस्पति तिनते इन्द्रकहत है हेप्रभु सो यत्नकरीजातेभरत अरु श्रीरामचंद ते भेंटनहोइ ( १७ ) दोहार्थ॥ काहेते श्रीरामचंद्र थोरेहु प्रेमके संकोचके वशह्वै जातेहैं अरु भरतजी प्रेमके समुद्रहैंताते भरतजी अरु श्रीरामचन्द्रते जबभेंटभई तब श्रीरामचंद्र तुरंत फिरि आवहिंगे तौ हमारा अकाजह्वै चुक्यो ताते कोई छलकी यत्नशोधिकै करौ जाते भेंटनहोइ तौ भला है ( १८ ) तब हेपार्वती इन्द्रके वचनसुनिकै सुरगुरुमुसुकात भये हैं अरु यह जाना कि इन्द्र के एकहजार दुइनेत्र हैं सो सब फूटे है ( १९ ) तब बृहस्पतिबोले हे सुरेश तुम बादि कही वृथाक्षोभ छलकरते हौ क्षोभकहीसंदेह अरु छलकही अपने स्वार्थ हेतु परायेगुणविषे दोषारोपण करिकै कपटकरना हे सुरेश इहां कपटकरिकै भड़ई होइहि नाम बिड़म्बना होइहि ( २० ) हेसुरशय मायापति जो श्रीरामचन्द्रहैं तिनके सेवकते जो माया करिये तौ उनके तौ माया नहीं लगै अपने ऊपर उलटि परैहै यह विशेष जानब ( २१ ) हेसुरेश तुम जोश्रीअयोध्या में कछुकीन्ह है तब श्रीरामचन्द्रकर रुखजानिकै अबइहां कुचाल करिकै सब प्रकारते हानिहोइगी ( २२ ) हेसुरेश रघुनाथजीकर सुभावसुनु निज कही अपने अपराधते कबहूं नहीं रिसकरते हैं ( २३ ) अरु जो रामचन्द्र के भक्तनकर अपराधकरै है तौरामरोष पावकमें जरिजाइहै ( २४ ) यह इतिहास लोकवेद में विदित है दुर्वासाऋषि जानते हैं तहां देखियेतौ भृगुमुनिने भगवान् के लातमारी है तब भगवान् लेशहूमात्ररिसनहीं कीन हैं अरु अम्बरीष भगवत् भक्ततिनकर विरोध दुर्वासासुनिकीन्ह

**रामरुखजानी अबकुचालकरिहोइहिहानी २२ सुनुसुरेशरघुनाथसुभाऊ निजअपराधरिसाहिंनकाऊ २३ जोअपराधभक्तकर करई रामरोषपावकसोजरई २४ लोकहुबेदबिदितइतिहासा यहमहिमाजानहिंदुर्बासा २५ भरतसरिशकोरामसनेही जगजपुरामरामजपुजेही २६ दो०॥**

**मनहुंनआनियअमरपतिरघुपतिभक्तअकाज अयशलोकपरलोकदुखदिनदिनशोकसमाज २७ चौ०॥ सुनुसुरेशउपदेशहमारा रामहिंसेवकपरमपियारा २८ मानतसुखसेवकसेवकाई सेवकबैरबैरअधिकाई २९ यद्यपिसम**

है तब भगवान् के कोपरूप सुदर्शचक्रने मुनिको अतिबिकलकीन्ह है ( २५ ) हेइन्द्र असतौ सबभक्तनकेऊपर श्रीरामचन्द्रकी प्रीति है अरुभरत श्रीरामचन्द्र को कैसे प्रिय हैं सबजगत् श्रीरामचन्द्र को भजतहैं अरु श्रीरामचन्द्र भरतकोभजते हैं ऐसे भक्तबात्सल्य हैं अरु तिनभरत के विरोध कियेते कुशल नहीं होइगी ( २६ ) दोहार्थ॥ हे अमरपति रघुपति के भक्तनकर अकाज मनहुंविषे स्वपन्यहुनआनिये जो कदाचित् मनमें यह आवैतौ लोक में अयशक्लेश है अरु देहछूटे पर लोकमेंनर्क है दिनदिनशोककीसमाजही है ( २७ ) हे सुरेशहमारो उपदेशसुनोश्रीरामचन्द्र को श्रीरामचन्द्र के सेवकपरमप्रिय हैं ऐसोप्रिय देवदानव मनुष्य इत्यादिक में कोई नहीं है ( २८ ) जो श्रीरामचन्द्र के सेवककै सेवकाई करै तौ उसको वहुत मानते हैं अरु जो श्रीरामसेवकते बैरकरैतो श्रीरामचन्द्रको कोटिन बैरीहोत है ( २९ ) यद्यपि श्रीरामचन्द्रसमहैं रागरोषते रहित हैं अरु काहू को गुणदोष पापपुण्यइत्यादिकनहींग्रहणकरते हैं ( ३० ) काहेते त्रैगुण्यमयकर्म्मत्यहिकोविश्वविषेप्रधानकही मुख्यकरिदीन्ह है ताते जो सत्कर्म्मकरते हैं त्यहि को तसफलकोप्रदाता ब्रह्माकोकीन्ह है ताते जेजस करते हैं त्यहिकोतस फल ब्रह्मादेते हैं तेतसभोग करते हैं ( ३१ ) यद्यपि श्रीरामचन्द्रसर्वजीवनविषेसमहैं तदपिसमविषमविहारकरते हैं काहेते भक्तन अरु अनुभक्तन के हृदयानुसार विहारकरते हैं जहांभक्त अपनेहृदयबिषे मन वचनकर्म्मते सदा श्रीरामानुसार है ताते समबिहार करते हैं अरु भक्तनके हृदयविषे श्रीरामचंद्रको छोड़े त्रैगुण्यमय अनुसार है ताते तिनके हृदयविषे विषमविहारकरते हैं तहां श्रीरामचन्द्र तौ एकरस हैं पर समविषम विहार करते हैं कैसे जैसेसूर्य्य को प्रकाश है अरु जैसेअनेक घटसमविषमहैं तैसे घटप्रति सूर्य्यदर्शितहोते हैं पुनितीनि चौपाईको समष्टी अर्थकरते हैं तीसचौपाईलैकै इकतीसताईं हेसुरेश रामभक्तयद्यपि सम हैं काहेते रागरोषते रहित हैं अरुकिसूको पाप पुण्य गुणदोष

**नहिंरागनरोषू गनहिंनपापपुण्यगुणदोषू ३० कर्मप्रधानबिश्वकरिराखा जोजसकरैसोतसफलचाखा ३१ तदपिकरहिंसमविषमविहारा भक्तअभक्तहृदयअनुसारा ३२ अगुणअलेखअमानएकरस रामसगुणभयेभक्तप्रेमबस ३३ रामसदासेवकरुचिराखी वेदपुराणसाधुसबसाखी ३४ असजियजानितजहुकुटिलाई करहुभरतपदप्रीतिसुहाई ३५ दो०॥ रामभक्तपरहितनिरतपरदुखदुखीदयाल भक्तशिरोमणिभरतसनजनिडरपहुसुरपाल ३६ चौ०॥ सत्यसंधप्रभुसुरहितकारी भरतरामआयसुअनुसारी ३७ स्वारथ**

नहीं ग्रहणकरते हैं काहेते कि विधाताते विश्व में कर्म्मकोप्रधानकीन्हहैताते जेजीवजस कर्म्म करैहैं ते तस भोगकरै हैं यहसमुझिकै किसूको गुणदोष नहीं ग्रहण करते है यद्यपि रामभक्तसम है तदपि भक्तनके हृदयानुसागुणग्रहणकरते हैं अरुअभक्तनके हृदयानुसार अवगुण त्यागकरते हैं यहीरीतिसे समविषम विहारकही सर्वत्र विचरते हैं इहां समकही हृदयशुद्ध विषमकहीटेढ़ ( ३२ ) हेइंद्रश्रीरामचंद्र निर्गुणब्रह्म हैं अलेखकही अलख हैं अमान हैं एकरस हैं ते श्रीरामचंद्र अपने भक्तन के हेतु सगुणकही शुद्धसात्त्विकी लीला करते हैं ( ३३ ) अरुश्रीरामचंद्र अपने सेवक कै रुचि सदाराखते हैं यहि के साक्षी बेद पुराण सन्त हैं ( ३४ ) ऐसे अपने जीव में जानिकै कुटिलाई को त्यागकरहु भरतजीके चरणारबिन्द विषे प्रीतिकरहु विशेषकै ( ३५ ) दोहार्थ॥ हेसुरपाल श्रीरामचन्द्र जी के भक्त मन क्रम बचनते पराये हितविषे रत हैं अरुपरावा दुखदेखिकै दुखितहोते हैं काहेते दयालुहै अरु भक्तनविषे शरोमणि हैं श्रीभरतजी तिनते डरतहैं न डरैं भरतजी श्रीरामचन्द्र को फेरै नहींजाते हैं आज्ञालेबे को जाते है ( ३६ ) अरु श्रीरामचन्द्र सत्य के सन्धकही सत्यसंकल्प हैं जिनके मुनि अरु देवतनकेहितहेतु बनगवन कीन्ह है अरु जो कहौ कि अपने भक्तनके बशह्वैकै आपन संकल्प छोंड़िदेते हैं सो सत्य है तहां भरतजी श्रीरामचन्द्र

के केवल आज्ञानुकूल हैं तहां कोई बात को न डरहु ( ३७ ) तुम अपनेस्वार्थ के बश ह्वैकै बिकल होते हौ स्वार्थी पुरुष सदा अंध है स्वार्थ मोह के बशसर्बदोषतुम्हार है भरतकर दोष लेशहूनहीं है सदा निदोष हैं ( ३८ ) सुरनविषे घर कही श्रेष्ठ इन्द्रते गुरुनके प्रमोदकही परमानन्दहोतभयउ मनकीग्लानिमिटिगई ( ३९ ) तब सुरराउ फूलन की वर्षाकरिकै भरतकोसुभाव सराहि सराहि स्तुतिकरत हैं खुसामदकरत हैं ( ४० ) हेगरुड़जी श्रीरामचन्द्रजीके प्रेमविषे मग्नमनमें चलेजाते हैं तहां भरत कै दशा रामाकार देखिकै

बिवशबिकलतुमहोहू भरतदोषनहिंराउरमोहू ३८ सुनिसुरवरगुरुसुरवरबानी भाप्रमोदमनमिट्यउगलानी ३९ बर्षिप्रसूनहर्षिसुरराऊ लगेसराहनभरतसुभाऊ ४० यहिविधिभरतचलेमगजाहींदशादेखिमुनिसिद्धसिहाहीं ४१ जबहिंरामकहिलेहिंउसासाउमगतप्रेममनहुंचहुंपासा ४२ द्रवहिंवचनसुनिकुलिशपखाना पुरजनप्रेमनजाइबखाना ४३ बीचबासकरियमुनहिं आये निरखिनीरलोचनजलछाये ४४ दो०॥ रघुवरचरणविलोकिवरबारिसमेतसमाज होतमगनबारिधिबिरहचढ़ेविवेकजहाज ४५॥

मुनीश्वर सिहाते है ( ४१ ) जब श्रीसीताराम यह उच्चारण करिकै उसासलेते हैं तबमानहु प्रेम की नदी चहुंपास उमगिचली है ( ४२ ) तहांभरत के भाव प्रेमकरिकै वाणी सुनिकै पाषाण तरु तृण चर अचर द्रवतभये हैं अरु राहके पुरजननके प्रेमको बखानिसकै है ( ४३ ) बीच में बासकरिकै भरतजी यमुनाके किनारे जातेभये हैं नीरदेखिकै हृदय में आनन्द उमगतभयउ ( ४४ ) दोहार्थ ॥ हे पार्बती यमुनाकर श्यामजल बरकही श्रेष्ठ गंभीर श्रीरामचन्द्रके चरण देखतसन्ते सहित समाज श्रीरामचन्द्र के स्वरूप कोरूपोद्दीपन होतभयो तब भरतजीकी आत्मवृत्ति श्रीरामचन्द्रके रूपसिन्धुमें डूबने लगी तब प्रथमहिंते श्रीरामचन्द के प्रत्यक्ष दर्शन की बासना जोरही सो चारिके बिवेकरूप जहाज पर चढ़ाइदियो है जो जहाजसमुद्रहि विषे सदारह्यो है तहां रूपोद्दीपनविषे आरतप्रपन्न दीप्तप्रपन्न दोऊ की एकताउपाय शून्यप्रपति शरणागत जानिये ( ४५ ) इतिश्रीरामचरितमा नसे सकलकलिकलुषविध्वंसने अयोध्याकाण्डे श्रीचित्रकूटगमन भरतकोबाह्यांतरअखण्डप्रेमवर्णनन्नामद्वादशस्तरंगः १२॥ :: :: ::

दोहा॥ यमुनउतरिपुनिगमनकरि दशअरुतीनितरंग मगजीवनपूरणकरतरामचरणरसरंग १३ त्यहिदिन यमुनातीर बासहोत भयो श्रीराम सखा समय २ सुपासदेतभयो ( १ ) तहां श्रीरामचन्द्रको सखानिषाद रातिभरेमें अनेकनघाटकी तरणी अनेकन मँगावतभयो है ( २ ) प्रातसमय एकही खेवा में सम्पूर्ण सेना पारहोतभई है श्रीरामचन्द्र के सखा की सेवा से समस्त तोषित अरु प्रसन्नभये हैं ( ३ ) पुनियमुनामें स्नान दण्डवत् करिकै निषादनाथ अरु द्वौभाई भरतजी कैसे चले हैं ( ४ ) आगे वशिष्ठादिकमुनीश्वर बाहननपर चढ़िचढ़िचले आगे मातनकी पालकी चली तिनके पाछे राजसमाज अरु सम्पूर्ण सेनाचली है ( ५ ) सब सेनाके पाछे दोऊबंधु पयादे बिना पदत्राण सादेवेषचले जाते हैं ( ६ ) अरु सुहृद्कही शुद्ध

चौ०॥ यमुनतीरत्यहिदिनकरिबासू भयउसमयसमसबहिंसुपासू १ रातिहिघाटघाटकीतरणी आईंअगणितजाहिंनबरणी २ प्रातपारभयेएकहिखेवा तोषेरामसखाकीसेवा ३ चलेनहाइयमुनशिरनाई साथनिषादनाथदोउभाई ४ आगेमुनिवरबाहनआछे राजसमाजजाइसबपाछे ५ त्यहिपाछेदो उबंधुपयादे भूषणबसनवेषसुनिसादे ६ सेवकसुहृदसचिवसुतसाथा सुमिरतलषणसीयरघुनाथा ७ जहँजहँरामबासबिश्रामा तहँतहँकरहिंसप्रेमप्रणामा ८ दो०॥ मगबासीनरनारिसुनिधामकामतजिधाइ देखिसनेहस्वरूपसबमुदितजन्मफलपाइ ९ चौ०॥

कहहिंसप्रेमएकएकपाहीं रामलषणसखिहोहिंकिनाहीं १० बयवपुबर्णरूपसोइआली शीलसनेहसरससोइचाली ११ वेषनसोसखितीयनसंगा आगेअनीचलीचतुरंगा १२ नहिंप्रसन्नमनमानसखेदासखिसंदेहहोइयहिभेदा

सेवक अरु सुमन्त को पुत्र संगविषे श्रीसीताराम लक्ष्मण को सुमिरतचलेजाते ( ७ ) जहां जहां श्रीरामचन्द्र को बास बिश्राम सुनते हैं देखते हैं तहांतहां परिक्रमाकरिकै साष्टांगदण्डवत् प्रेमसमेतकरते हैं ( ८ ) दोहार्थ ॥ हेगरुड़ मगबासी नर नारि सर्व ते सुनिसुनि अपने अपने धामकेकाम त्यागित्यागि धाये हैं भरतकरस्वरूप स्नेह श्रीरामचन्द्र विषे देखिकै अपने जन्म के फलको प्राप्तिहोते हैं मुदितकही आनन्द मंगलसंयुक्त ( ९ ) प्रेम संयुक्त एकएकन ते कहते हैं हेसखी श्रीराम लक्ष्मणहोहिं कि न होहिं ( १० ) बपुकहाशरीर वयकही अवस्था वर्णकही श्यामगौर रूपकही सुन्दरता शील स्नेह चाल सो सब येकहीहै ( ११ ) देसखी इनकर वेश आनै है अरु इनके संग स्त्रीनहीं है अरु आगे चतुरंगिनी सेना अनीकी अनी चलीजाती है ( १२ ) अरु हेसखी प्रसन्नमुख नहीं है अरु मनमें खेदहै ताते सन्देहहोत है कि रामलक्ष्मण हैं कि नहीं हैं ( १३ ) त्यहि स्त्रीकै तर्क सबके मनमें भावितभई है यह कहतहैं कि तेरेसमान सयानी कोई नहींहै इहां मिलितरूपालंकार है ( १४ ) त्यहिको सराहिकै त्यहिकीबाणीको पूजिकही यथार्थ मानिकै दूसरीतिय मधुरबाणी बोलतीभई ( १५ ) प्रेमसंयुक्त सबकथाकर प्रंसग कहती भई है ज्यहिप्रकारते राज्याभिषेकको रस भंगभयो है ( १६ ) मगविषे जातसन्ते ग्रामन के नर नारी भरत को शील स्नेह सुभाय प्रेम सहजानन्द एकरस देखिकै सबभरतको सराहते हैं कि भरत बड़भागी हैं ( १७ ) दोहार्थ ॥ लोग कहते हैं देखिये तौ श्रीराम हेतु बिनापदत्राण पयादेहि चलते हैं कन्दमूलफलखाते हैं अरु पितैराज्यदीन

१३ तासुतर्कतियगणमनमानी कहहिं सकलत्वहिसमनसयानी १४ त्यहिसराहिबाणींफुरपूंजी बोलीमधुरबचनतियदूजी १५ कहिसप्रेमसबकथाप्रसंगू ज्यहिबिधिरामराजरसभंगू १६ भरतहिबहुरिसराहनलागी शीलसनेहसुभायसुभागी १७ दो०॥ चलतपयादेहिखातफल पितहिदीन्हतजिराज जातमनावनरघुबरहि भरतशरिसकोआज १८ चौ०॥ भायपभक्तिभरतआचरणू कहतसुनतदुखदूषणहरणू १९ जो कछुकहबथोरसखिसोई रामबन्धुअसकाहेनहोई २० हमसबसानुजभरतहिंदेखे भईं धन्ययुवतीजनलेखे २१ मुनिगुणदेखिदशापछिताहीं केकयिजननियोगसुतनाहीं २२ कोउकहदूषणरानिहिंनाहिंन विधिसबकीन्हहमहिंजोदाहिन २३ कहँहमलोकबेदबिधिहीनी लघुतियकुलकरतूतिमलीनी २४ बसहिंकुदेशकुगाउंकुबामा कहँयहदरशपुण्यपरिणामा २५

सो त्यागिदीन है श्रीरामचन्द्र के मनाइवेको जाते हैं भरत के समानतीनिहूं काल में कोई नहीं है ( १८ ) श्रीरामचन्द्रविषे भरतकैभक्ति आचरण जो कोईकहै सुनैगो त्यहिको सम्पूर्ण दोष दूषणदुख नाश होइजाइगो ( १९ ) हेसखी जो कही सोसबथोर है श्रीरामचन्द्रके भ्राता असकस न होहिं ( २० ) हमसब भरत शत्रुहन को देखिकै जगत्विषे युवतिन के मध्यविषेधन्यबड़िभागिनी गनीजाहिंगी ( २१ ) भरतके गुणसुनिकै दशादेखिकै पछिताती हैं हे दैव कैकेयी योग्य ये पुत्रनहीं हैं ( २२ ) कोऊकहती हैं कि रानीकर कुछ दोषनहीं है ब्रह्मै हमारे भाग्यको उदयकियो जो दर्शन इनकेपाये हैं ( २३ ) कोई कहती हैं कि देखिये तौ कहां हमलोकवेदकीविधि ते हीनकुलमलीन करतूतिस्त्री सब प्रकार ते लघु ( २४ ) अरु कुदेशकुगांउमें बसीहैं बामाकही स्त्रीनकै जाति टेढ़ीकर्तब्य तहां यह आश्चर्यकी ऐसीपरिणाम कौनपुण्य आगेहमकीन हैं जो ऐसेदर्शन हमकोभये हैं इहां स्वाभाविकै नीचानुसन्धान कार्पण्यशरणागत है ( २५ ) हेगरुड़ ऐसे आश्चर्यपरमानन्द मगविषे प्रतिग्रामहोतहै सर्वजीवनविषेजनु माड़वारविषेकल्पतरु जामो ह जहां सुष्टतरु

होतै नहीं है ( २६ ) दोहार्थ॥ तहां भरत के दर्शन भये ते मगके जीवलोगजे हैं तिनके परमभाग्य प्रकट भये हैं जनु सिंहलद्वीप बासिनको विधाता के बशते प्रयाग सुलभभयो है किंतु इहांविधिकही केवल भागवतानुग्रह यहां और द्वीपखण्ड को नहीं कहा काहेते सिहलद्वीपउपद्वीप है अरु भरतखण्डकर संबन्ध है ताते सिंहलद्वीप बासीकहा है ( २७ ) श्रीरामचन्द्र के गुणगाथविषे आपनगुणमिश्रितसुनत श्रीसीतारामजीको सुमिरत प्रेमते पूर्ण चलेजाते हैं ( २८ ) अरु जहां तीर्थमुनिआश्रम देवस्थान तहांतहांमज्जन पूजन प्रणाम करतचलेजाते हैं ( २९ ) अरु मनहीविषे तीर्थमुनि

**असअनन्दअचरजप्रतिग्रामा जनुमरुभूमिकल्पतरुजामा २६ दो०॥ भरतदरशदेखतखुलेमगलोगनकरभाग जनुसिंघलबासिनभयउ विधिवशसुलभप्रयाग २७ चौ०॥ निजगुणसहितरामगुणगाथा सुनतजाहिंसुमिरतरघुनाथा २८ तीरथमुनिआश्रमसुरधामा निरखिनिमज्जहिंकरहिंप्रणामा २९ मनहींमनमाँगहिंवरयेहू सीयरामपदसहजसनेहू ३० मिलहिंकिरातकोलबनबासी वैखानसबटुगृहीउदासी ३१ करिप्रणामबूझहिंज्यहितेही क्यहिबनरामलषणवैदेही ३२ तेप्रभुसमाचारसबकहहीं भरतहिदेखि**

देवतनते मनभावित बरमांगते हैं कि श्रीसीतारामचन्द्रके चरणारविंदविषेसुखदुख कौनेहु कालविषे लवमात्रविक्षेप न परै तहांप्रमाण है अन्यच्च श्लोक १ उत्तमासजावृत्तिर्मध्यमाध्यानधारणा शास्त्रचिन्ताधमाप्रोक्तातीर्थयात्राधमाधमा ( ३० ) अरु मगविषे कोलकिरात इत्यादिक बनबासी जे वर्ण बाह्य हैं अरु चारीकही विद्याध्ययनकरै जासेपढ़ै त्यहिकी आज्ञानुकूलरहै स्वहस्तभोजन करै देहान्तरकामना फलपावै किंतु विवाह करै गृहस्थहोइ एकपुत्र उत्पन्न करिकै स्त्री संयुक्तबनमें जाइकै सम्पूर्ण इन्द्रिनको जीतिकै तपकरिकै अन्तमें सकामफलको प्राप्तिहोइहै अरु संन्यासधर्म्म रात्रीको भोजनकरै ग्रामविषे न जाइ धातु न ग्रहणकरै अकेलेरहै दुइरात्री कहूं न रहै एते सबमगबिषे भरत को जातसन्ते मिलते हैं ( ३१ ) भरतजू नस्कारकरिकै ज्यहि त्यहिते पूंछते हैं कि श्रीरामचन्द्रलषण वैदेही कौनबनबिषे बसेहैं तुमशीघ्रबतावहु यहआरतदशाकहावै ( ३२ ) हे पार्वती जिससे ये पूंछते हैं ते सब प्रभुको समाचार हर्षिकै कहतेहैं अरु भरतकै दशा रामाकारदेखिकै अपने जन्मके फलको प्राप्तिहोते हैं ( ३३ ) अरु तिनमें जे जन कहते हैं कि हम श्रीरामलक्ष्मण जानकीकोदेखाहै त्यहि को दौरिकै साष्टांग दण्डवत् करते हैं श्रीरामलक्ष्मणको समान मानते हैं यह नामोद्दीपन भावकहावै है ( ३४ ) यहिप्रकारते सुन्दरिवाणीते बूझत श्रीरामचन्द्र के पन्थ की कहानी सुनत चलेजाते हैं ( ३५ ) दोहार्थ॥ त्यहिबासर कोई जलाशय देखिकै टिके प्रातः समय मज्जननेमकरिकै श्रीरामचन्द्रके दर्शनकीलालसा भरत के समानसहितसमाज चलते भये हैं ( ३६ ) मंगलमय सगुन सबकोहोते हैं नरनारि के दाहिन बामसुभग अंग अरुलोचन भुज इत्यादिक फरकते हैं ( ३७ ) अरु श्रीरामचन्द्रके

**जन्मफललहहीं ३३ जेजनकहहिंकुशलहमदेखे तेप्रियरामलषणसमलेखे ३४ यहिबिधिबूझतसबहिसुबानी सुनतरामबनबासकहानी ३५ दो० त्यहिवासरबसिप्रातहीचलेसुमिरिरघुनाथ रामदरशकीलालसाभरतसरिससबसाथ ३६ चौ० ॥ मंगलसगुन होहिंसबकाहू फरकहिंसुखदबिलोचनबाहू ३७ करतमनोरथजससजियजाके जाहिंसनेहसुरासबछाके ३८ शिशिलअंगपगडगमगडोलहिं बिह्वलबचनप्रेमबशबोलहिं ३९ रामसखात्यहिसमयदेखावा शैलशिरोमणिसहजसुहावा ४० जासुसमीपसरितपयतीरा सीयसमेतबसहिंदोउबीरा ४१ देखिकरहिंसबदण्डप्रणामा कहिजयजीवजानकीरामा ४२ प्रेममगनअसराजसमाजू जनुफिरि**

मिलापदर्शनकी जाकेजसिभावना है सो तसमनोरथकरत स्नेहरूप सुराकहीमद छाकेकही पानकिये मत्तसब चलेजाते हैं ( ३८ ) सबके शिथिलअंग होइरहे हैं मगविषे पगडगमगचलते हैं अरु परस्पर विह्वलवचन प्रेमते बोलते हैं ( ३९ ) हे पार्वती त्यहिसमयविषे शैलनकर शिरोमणि अति शोभित चारिउफलकोदाताकामदा त्यहिको श्रीरामचन्द्रको सखा सबको देखावतभयो ( ४० ) पुनि निषादकहत है कि ज्यहिकामदा के निकट पयस्वर्णी नदी है त्यहिके निकट श्रीजानकी सहित श्रीरामलक्ष्मण दोऊबीर विराजे हैं ( ४१ ) यहसुनिकै सबलोग श्रीकामदाजीके दण्डवत् प्रणाम करते हैं अरु श्रीरामचन्द्र श्रीजानकी जयजीव कहिकै दण्डवत् प्रणामकरते हैं किंतु जयजीवनकही श्रीजानकी जीवन तुम्हारी जयजयकही सदा जयमान सर्वोत्कृष्ट सदाचिरंजीव असकहिकै दण्डप्रणाम करते हैं ( ४२ ) ऐसे ही सबराजसमाज प्रेम ते मग्न ऐसो आनन्दभयो है जनु श्रीरामचन्द्र जानकी लक्ष्मण अयोध्या को फिरिचले हैं ( ४३ ) दोहार्थ ॥ हे गरुड़ भरतकर प्रेम कामदागिरि देखिकै जसभयो है तसकही त्यहिकर शेषकही अल्पशोक बिकलनहीं कहिसकै हैं कैसे जैसे जनेपुकही जे जनब्रह्मवादी कहावते हैं अरु अहंममकरिकै बुद्धिमलीन ह्वै रही है तिनको ब्रह्मसुख अगम है तैसे कविन को भरतकरप्रेम शेषमात्र कहिबेको अगम है किंतु कविजननकै बुद्धि अहंममकरिकै मलीन ह्वरही है तिनको ब्रह्मसुख अगम है किंतु त्यहिसमय में भरतकर प्रेमजसभयो है तस अनन्तजो शेष हैं तेऊ नहींकहिसकहिं तहां कविनको अगम है कैसे जैसे जे जन शास्त्रपढ़ते हैं ब्रह्मनिरूपण करते हैं अरु विद्याज्ञानविषे अहंमम बनाहै तब उनको ब्रह्मसुख अगम है तैसे कविनको भरतकरप्रेमकहिबेको अगम है ( ४४ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने श्रीअयोध्याकाण्डे भरतचित्रकूटप्राप्तअखण्डप्रेमभावबर्णनंनामत्रयोदशस्तरंगः १३॥

अवधचलेरघुराजू ४३ दो० भरत प्रेमत्यहिसमयजसतसकहिसकहिंनशेषु कविहिअगमजिमिब्रह्मसुख अहमममलिनजनेषु ४४॥

चौ० ॥ सकलसनेहशिथिलरघुबरके गयेकोसुदुइदिनकरढरके १ जलथलदेखिबसेनिशिबीते कीनगवनरघुनाथपिरीते २ वहांरामरजनीअवशेषा जागीसीयसपनएकदेखा ३ सहितसमाजभरतजनुआये नाथबियोगतापतनताये ४ सकलमलिनमनदीनदुखारी देखीसासुआनअनुहारी ५ सुनिसियसपनभरेजललोचन भयेशोचबशशोचबिमोचन ६ लषणसपनयहनीकनहोई कठिनकुचाह

दोहा॥ रामचरितअद्भुतकरहिं सेवकसेब्यप्रमान लपणक्रोधचौदहलहरिरामचरणरतिमान १४ श्रीभरतजी सहितसमाज श्रीरामचन्द्रके स्नेह ते बिकल कोसदुइगये दुपहरते दिनढरकिगयो है ( १ ) तहां जल थलदेखिकै मुकामकरत भये हैं रात्रीबीतिगई भोरहोत श्रीरघुनाथजी के मिलबे की प्रीति बिरह समेत मिलतभये ( २ ) हे पार्वती श्रीरामचन्द्र के वहांरजनी अवशेषकही बीततिभई श्रीजानकीजीने जागिकै एकस्वप्नदेखा सो श्रीरामचन्द्र से कहती हैं ( ३ ) हे नाथ आजु मैं एकस्वप्न देख्यों हैं कि सहित समाज भरतजी आवते हैं आपुके वियोग कही दुःख अरु तापकरिकै शरीरताई कही तप्तह्वैरह्यो है ( ४ ) अरु सम्पूर्ण समाज को मनमलीनअतिदुःखित देख्यउँ है अरुसब सासुनको आनि अनुहारि देख्यों है यामें यह अभिप्राय है कि विधवपन देखिपर्यउहै ( ५ ) यह श्रीजानकीजीकर स्वप्नसुनिकै श्रीरामचन्द्रजी के नेत्रन में जलभरिआयो हैं तब सम्पूर्ण शोचके बिमोचनकर्त्ता श्रीरामचंद्र शोच करते हैं यह बिलक्षणलीला जानब ( ६ ) हे लक्ष्मणजी यहस्वप्न नीकनहीहै कोई कठिनकुचाह सुनावैगो ( ७ ) हे पार्वती असकहिकै बन्धु अरु श्रीजानकी सहित स्नानकरतभये महादेवका पूजनकरिकै साधुजो हैं सम्पूर्णमुनि तिनकरसन्मान करतभये ( ८ ) छंदार्थ ॥ सुरमुनिनकर सन्मान करिकै मुनिवृंद संयुक्त बैठतभये उत्तरदिशा देखतभये धूरिउड़िकै नभविषे पूरिरही है अरु खग मृग भूरिकही समूह श्रीरामचन्द्रके आश्रमको भागेचलेआवते हैं ( ९ ) गोसाईं श्रीतुलसीदास जी कहते हैं कि यहकारण अवलोकि कै श्रीरामचंद्र उठतभये कि यह का चरित्र है मुनिनसहित चितचकित होतभये हैं तेही समय विषेकोल्हकिरात भरत के आगमनकर समाचार कहतेभये हैं कि भरतजी

सुनाइहिकोई ७ असकहिबन्धुसमेतनहाने पूजिपुरारिसाधुसनमाने ८ छं०॥ सनमानिसुरमुनिवृन्दबैठेउतरदिशिदेखतभये नभधूरिखगमृगभूरिभागेबिकलप्रभुआश्रमगये ९ तुलसीउठेअवलोकिकारणकाहचितचकृतरहे सबसमाचारकिरातकोलनआइत्यहिअवसरकहे १० सो०॥ सुनतसुमंगलबयन मनप्रमोदतनपुलकभर सरदसरोरुहनयन तुलसीभरेसनेहजल ११ चौ०॥ बहुरिशोचबशभयेसियरमनू कारणकवनभरतआगमनू १२ एकआइअसकहाबहोरी सेनसंगचतुरंगनथोरी १३ सोसुनिरामहिंभाअतिशोचू इतपितबचउतबन्धुसकोचू १४ भरतसुभाउसमुझिमनमाहीं प्रभुचितहितथितिपावतनाहीं १५ समाधानतबभायह

आवते हैं ( १० ) सोरठार्थ ॥ कोल्हकिरातन के मुखनते भरतकर आगमनमंगलमयवचन श्रीरामचन्द्र सुनतभये तब मनविषे प्रमोदकही आनंद भयउ तन पुलकिआयो ( ११ ) हे पार्बती बहुरि सीतारमण शोचके बशहोतभये कि भरतकर आगमन का कारण करिकै है इहां लक्ष्मणजी कर अनन्यभाव तिनके द्वार आपने दासनको देखावा चाहते हैं ताते शोचके बशभये हैं ( १२ ) तब एककोई कोल्हभिल्ल आइकै यह कहत भयो कि भरत के संगविषे चतुरंगिणी सेना थोरीनहीं है बहुत है चतुरंगिणी सेनाकही पैदर रथ घोड़ा हाथी ( १३ ) सहित त्यहिकोबचन श्रीरामचंद्रसुनिकै यह विचार करते हैं कि भरत सम्पूर्ण अयोध्याबासी सेनासमेत आवते हैं मोरपदाभिषेक संयुक्त मनाइबे को ताते अति शोचकरते हैं का समुझिकै इते तौ पिताको वचन अध्यारोपणकरिकै अरु उतै बंधु जे भरतपरमानन्य मेरेदास तिनको संकोच मैं कैसे छांड़ौंगो यहद्वन्द्व विषे अपनी लीला पूर्बक आपने मनको अग्रकरते हैं इहां का हेतु है कि लक्ष्मणजीकी परमानन्य उपासना उपायशून्य अपने भक्तन को ( १४ ) हे गरुड़ भरतकर स्वभाव श्रीरामचन्द्र आपने मनमें समुझिकै प्रभुको चित्त अपने हितकार के थिरताको नहींपावते हैं काहेते श्रीरामचन्द्र अपनेमन में यह विचारकरते हैं कि मैं थोरेप्रेमके बशह्वइजातहौं यह मेरो हितकार वचनगवन सो कैसे सिद्धहोइगो ( १५ ) तब पुनि समाधान होतभये यहसमुझिकै कि भरत मेरी आज्ञानुकूल हैं अरु साधुनमें सयानसाधु हैं सयानकही जे स्वामी की आज्ञानुकूल रहैं शुभाशुभ विचार न करैं ( १६ ) तब लक्ष्मणजी श्रीरामचन्द्रके हृदयविषे खँभारकही व्यग्रमन देखतभये तबजस कछु समय है सेवक स्वामीकै कैङ्कर्य की नीति चाही तस बोलते भये इहां जो कही कि श्रीलक्ष्मणजी श्रीरामचन्द्रके मन की गति का नहीं जानते हैं अरु भरतजी की रीति का नहीं जानते हैं लक्ष्मणजी तौ त्रिकालदर्शी हैं सर्वजीवन के त्रिकालदर्शी हैं अरु परमेश्वर जो श्रीरामचन्द्र हैं तिनके चरित के त्रिकालदर्शी नहीं हैं प्रमाण आरण्यकाण्डे

जानेभरतकहेहमसाधुसयाने १६ लषणलख्योप्रभुहृदयखँभारू कहसमयसमनीतिबिचारू १७ बिनुपूंछेकछुकहौंगोसाईं सेवकसमयनढीठिढिठाई १८ तुमसर्बज्ञशिरोमणिस्वामी आपनिसमुझिकहौंअनुगामी १९ दो० नाथसुहृदसुठिसरलचित शीलसनेह

चौपाई॥ लक्ष्मणहूंयहमर्मनजाना। जोकछुचरितरचाभगवाना। तहांसेवाविधि जानते हैं अरु भरतकी रीतिको जानते हैं अरु नहींजानते हैं काहेते कि भरतकर भाव श्रीरामचन्द्र विषे अगम है एक श्रीरामचन्द्रजानते हैं पर बखानिकै नहीं कहिसकते हैं काहेते गोसाईंजी ने कहा है चौपाई॥ भरत अमितमहिमासुनुरानी। जानहिंरामनसकहिंबखानी ॥ ताते अपनीस्यवकाई की नीतिस्वामीविषे धरिकै लक्ष्मणजी बीररस सानी बाणी बोलते हैं पुनि कवनि अभिप्राय है कि श्रीरामचन्द्र लक्ष्मणजीके अन्तष्करण को देखावते हैं कि लक्ष्मण की नाईं सबरागते रहित होइ सो मेरो अनन्य है ताते लक्ष्मणजी जो कहैंगे तापर श्रीरघुनाथजी नहींबोलेंगे तब लक्ष्मणजी में सेवक सेव्यभाव की रीति बीररसकै आधिक्यता बढ़तजाइगो तब रघुनाथजी देवतन के द्वारह्वैकै पुनि भरतजी के गुणकहिकहि आपु शांतिकरैंगे यहि प्रसङ्गविषे केवल लक्ष्मणजीकी सर्बोपाय शून्य प्रपत्ति शरणागत देखावते हैं ( १७ ) पुनि लक्ष्मणजी कहते हैं हेगोसाईं बिना आपुके पूंछे मैं कछु कहतहौं तहां जो सेवक समयपर ढिठाई करै स्वामी के कार्य्यहेतु तौ वाको ढीठनकही

( १८ ) अरु हे स्वामी आपुतौ सर्वज्ञहौ सबके अन्तष्करण की जानतहौ अरु मैं अपनी स्यवकाई की समुझिते कहत हौं ( १९ ) दोहार्थ॥ पुनि लक्ष्मणजी कहते हैं हे नाथ आपुसर्बते सुहदहौ अरु सुठिकही विशेष सरलचित्तहौ अरु शील स्नेह के निधान कही स्थान हौ अरु सर्बजीवनपर आपुकै प्रीतिप्रतीति करिकैहै ताते अपनी प्रभुता को जनावा चाहते हैं ( २० ) बिषयी जीव प्रभुताको प्राप्तहोकर वे मूढ़ मोहकेबश जनाईकही अहंबुद्धिह्वइजाते हैं ( २१ ) अरुभरतजी जो हैं ते सर्वनीति में रत हैं अरु सुजान साधु हैं अरु आपुके चरणारविन्द लिषे अतिशय प्रीति है यह सबजगत् जानत है ( २२ ) पर हे नाथ भरत यहिकाल में राज्यपदवी को प्राप्तिभये हैं ताते सर्ब धर्मकी

निधान सबपरप्रीतिप्रतीतिजिय जानियआपुसमान २० चौ०॥ विषयीजीवपाइप्रभुताई मूढ़मोहबशहोइजनाई २१ भरतनीतिरत साधुसुजाना प्रभुपदप्रेमसकलजगजाना २२ तेऊआजुराजपदपाई चलेधर्म्मर्यादमिटाई २३ कुटिलकुबन्धुकुअवसरताकी जानिरामबनबासयकाकी २४ करिकुमंत्रमनसाजिसमाजू आयेकरनअकंटकराजू २५ कोटिप्रकारकल्पिकुटिलाई आयेदलबटोरिदोउभाई २६ जोजियहोतिनकपटकुचाली क्यहिस्वहातरथबाजिगजाली २७ भरतहिंदोषदेइकोउजाये जगबौराइराजपदपाये २८ दो० ॥ शशिगुरुतियगामीनहुष चढ़ेभूमिसुरयान लोकबेदतेबिमुखभाअधमकोबेणुसमान २९ चौ०॥ सहसबाहुसुर

मर्याद मिटाइकै इहां चले आवते हैं ( २३ ) अब भरत कुबन्धुभये हैं कुटिलाई करिकै ग्रहण कुअवसर ताकि कै कि रामचन्द्र बन में अकेल हैं अब हम चाहैंगे सो करैंगे ( २४ ) अपने मन में कुमन्त्र करिकै चतुरंगिणीसेनासाजिकै हमैं मारिबे को आवते हैं जाते अकंटक राज्यकरैं ताते यहीहेतु आवते हैं ( २५ ) हे नाथ भरत आपने मन ते कोटिन कुटिलाई कल्पितकरिकै दलबटोरि कै दूनों भाई आवते हैं ( २६ ) हे गोसाईं प्रत्यक्षविषे अनुमान प्रमाणकर कौन प्रयोजन है जो भरत के मनमें कपट कुचालन होती तौ गजरथ बाजिइत्यादिकनकी अवली तिनकीअसवारी क्यहि को स्वहाति है आपु बनविषे हौ अरु भरत सेनासजे चलेआवते हैं तातेकपट कुटिलाई प्रत्यक्ष देखिपरति है ( २७ ) सबको सुनाइकै लक्ष्मणजी कहते हैं काहेते यहि जगत् में ऐसो कौन जीव है जो राज्यपद पाइकैबौराय नहींजाय राज्यपाइकै सब बौरायजाय हैं ( २८ ) दोहार्थ॥ देखिये तौ राजपद करिकै चन्द्रमा गुरुन की स्त्री ते गमनकरत भयउ है अरु राजमद ते राजानहुष मुनिनकर वाहन बनाइकै चढ़तभयो अरु राजा वेणु भयो है राजमद ते सबते आपुही को पुजावै है कि मैंही ईश्वर हौं सो एतेलोक वेद ते बिमुखभये हैं राजमद ते अधमकृत करिकै यह इतिहास श्रीभागवत में प्रसिद्ध है ( २९ ) हे प्रभु राजमदकरिकै सहस्त्राबाहु जमदग्नि की गऊछीनिलियो अरु त्यहिकरिकै नाशह्वइगयो है अरु सुरनाथ जो इन्द्र सो गौतममुनीश्वरकी स्त्री जो अहल्या त्यहिते रति करतभयो त्यहिकरिकै शरीरविषे हजार छिद्र ह्वइगये हैं अरु राजात्रिशंकु राजमदते गुरुन को निरादर करतभयो ताते अद्यापि ऊर्द्ध में अर्द्धमुख टँगिरह्यउ है कोजानै केतेयुगबीतैंगे ताते राजमद क्यहि को नहीं कलंकदियो है नाम सबको दियो है ताते जे जसकरते हैं ताको तसफल उचित है ( ३० ) तातेभरतजी यह उचित उपायकीन है काहेते कि रिपु अरु ऋण यह रंचकौ

नाथत्रिशंकू क्यहिनराजमददीनकलंकू ३० भरतकीनयहउचितउपाऊ रिपुऋणरञ्चकराखिनकाऊ ३१ एककीननहिंभरतभलाई निदरेरामजानिअसहाई ३२ समुझिपरिहिसोआजुविशेषी समरसरोषराममुखदेखी ३३ यतनाकहतनीतिरसभूला रणरसविटपफूलजनुफूला ३४ प्रभुपदबन्दिशीशरजराखी बोलेसत्यसहजबलभाषी ३५ अनुचितनाथनमानबमोरा भरतहमहिंउपचार

न रखिये काहेते परिणामदुःखदायी है ( ३१ ) पर एकबात भरत ते नहींकरतबनी है जो श्रीरामचन्द्र को असहाय जानिकै निरादर कियो है इहां लक्ष्मणजी की बाणी में यहअभिप्राय है कि यह जो मैं सबकहतहौं सो उचित अनुचित बिचारिकै श्रीरघुनाथजी मोसे कछुकहैंगे तहां रघुनाथजी नहीं बोलते हैं लक्ष्मणजीके अनन्यभावकै परीक्षालेते

हैं अरुलक्ष्मणजी अपनी परमस्यवकाई देखावते हैं ( ३२ ) जो भरतजी राजमद के अज्ञानते आवते हैं तौ आजु समुझिपरिहि अब श्रीरामचन्द्रकर समर में सरोषमुख देखैंगे तब राजमद के फलको पावैंगे देखिये तौ इतनीबात कहतसन्ते श्रीरामचंद्रविषे वीररसरोपणकीन्ह है एत्यहुपर रामचंद्र नहींबोले तबलक्ष्मणजू जानाकि श्रीरामचंद्रजीकी आज्ञा जो है सोअभिप्राय हम नहीं जानते हैं ( ३३ ) हे पार्वती यहसब लक्ष्मणजूने कहा है सोसेवकसेव्यभावरसनीति कोमल है श्रीरामचन्द्रनहीं बोलेतबवोहीमूलकारण ते लक्ष्मणजीके जनु बीररसको विटपउत्पन्नभयो है अरु ज्यहिको स्थायीभाव हर्ष अंगअंग रोमरोम हर्षते पुलकि आये हैं सोई नरनरस बिटप जनु फूलफूले है ( ३४ ) जसजस श्रीरामचंद्र नहींबोलते हैं तसतस लक्ष्मणजीके बीररस बिटपकीशाखा ललित बढ़तजाती है पुनिअपनीपरम स्यवकाई के सिद्धिहेतु युक्ति से आज्ञालेते हैं तब प्रभुकेपद बन्दिकै रजशीशपर राखिकै अपने सत्यसहज बलको कहत हैं ( ३५ ) फेरि जनावते हैं कि श्रीरघुनाथजी अवहूं कछुकहैं सो नहीं बोले तब लक्ष्मणजू बोले हे नाथ मैं यथार्थ कहतहौं अनुचित न मानब काहेते हमते अरु भरतते बिरोध को उपचार थोरनहींभयो बहुतभयो है एकतौ प्रथम यहभयो कि आपुके बनगमन के कारण भरत हैं अपनी माताको सिखाइकै ननिआउर चलेगये हैं तबतौ कैकेयी बनदीन है अरु दूसरे अब हमारेमारिबेकोआवते हैं ताते अब न हम सहैंगे ( ३६ ) हे नाथ कहांलग रिसमारिकैसहिये एक तौ आपुके संग दूजे धनुषबाण हमारे हाथविषे ( ३७ ) दोहार्थ॥ अरु क्षत्री हमारि जाति अरु रघुबंशविषे जन्म अरु श्रीरामानुज जगत्

**नथोरा ३६ कहँलगिसहियरहियरिसमारे नाथसाथधनुहाथहमारे ३७ दो०॥ क्षत्रिजातिरघुकुलजनम रामानुजजगजान लातहुमारेचढ़तशिरनीच कोधूरसमान ३८ चौ०॥ उठिकरजोरिरजायसुमांगा मनहुंबीररससोवतजागा ३९ बांधिजटाशिरकटिकसिभाथा साजिशरासनशायकहाथा ४० आजुरामसेवकयशलेऊं भरतहिंसमरसिखापनदेऊं ४१ रामनिरादरकरफलपाई सोवहु समरसेजद्वौभाई ४२ आजुबनाभलसकलसमाजू प्रकटकरौंरिसपाछिलआजू ४३ जिमिकरिनिकरदलैमृगराजू लेइलपेटिलवाजिमि**

विषे बिख्यात हैं सो हम कैसे सहैं देखिये तौ धूरि ऐसीनीच है पर जबकाहूके लातनतें मारीजाती है तब निरादरनहीं सहिसकै है ताही के माथे पर चढ़िजाती है तहां हम कैसे निरादरसहैं हमतौ नाथके साथ सबप्रकार ते समर्थ हैं ( ३८ ) हे पार्वती तेहूपर श्रीरामचन्द्र नहींबोले हैं तब लक्ष्मणजी दोऊकरजोरिकै रजायसु मांगतभये हैं कि मैं भरत ते आगेह्वइकै समरकरौंगो तबौ श्रीरघुनाथजी नहींबोलेहैं तब लक्ष्मणजी सेवक धर्म सांचामानिकै अतिहर्षस्थायी अरुण नेत्र संचारी भाव संयुक्त मानहुंबीररस सोवत ते जागतभयो है ( ३९ ) तब लक्ष्मणजी शीशविषे जटा के जूट बांधिकै अरु कटिविषे दुइतूण बांधतेभये हैं अरु शरासन कही धनुषचढ़ाइकै बाणएकतूण से निकासिकै हाथमें लेतेभये हैं ( ४० ) पुनि लक्ष्मणजी श्रीरामचन्द्र को सुनाईकै कहते हैं कि आजु श्रीरामचन्द्र की सेवाकर फल लेउंगो का करिकै भरतको समरविषे सिखापनदेउंगो ( ४१ ) यह सबको सुनाइकै कहते हैं कि श्रीरामचन्द्र के निरादरकर फल भरत आजुअघाइकै पावहिंगे आजु संग्राम सेजबिषे दूनौभाई भलीप्रकार ते सोवहु ( ४२ ) लक्ष्मणजी बोलतेभये हैं कि आजु बिरोधकर सकल समाज भलीप्रकार ते बन्यो है आज पाछिल रिस प्रकटकरौंगो पाछिलकही जब श्रीरामचन्द्र को कैकेयी बनदेने लगी है तब लक्ष्मणजी मातापर महाक्रोधकीन है श्रीरघुनाथजी तुरन्त शांतिकरिदीन है सो पाछिलक्रोधकही किंतु श्रीरामचन्द्र के बनगमन के कारण तीनि हैं ब्रह्मादिक देवता अरु राजादशरथ माता संयुक्त भरतजी अरु कार्य राक्षसइत्यादिक हैं तहां जो कोई एकबड़ेते बिरोधहोइ तौ हजारन को अकाज होत है तहां लक्ष्मणजीकहा है कि पाछिलि रिस प्रकटकरौंगो प्रलयकालकी रिस पाछिलिकही ( ४३ ) लक्ष्मणजी कोपकरिकै कहतेहैं कि आजु भरतको सेनासहित नाशकरिदेउंगो जैसे सिह करिकही हाथी अनेकन लपेटिकै मारिडारै है अरु जैसे बाज बटेरन को लपेटिलेइ हैं ( ४४ ) तैसेही भरत को सेना समेत मारिकै पुनि उनके अनुजको निदरिकै खेतमें निपातौंगो ( ४५ ) एत्यहुपर

**बाजू ४४ तैसहिभरतहिंसेनसमेता सानुजनिदरिनिपातौंखेता ४५ जोसहायकरशंकरआई तौमारौंरणरामदोहाई ४६ दो०॥ अतिसरोषमाखेलषणलखिसुनिशपथप्रमान सभयलोकसबलोकपतिचाहतभभरिभगान ४७ चौ०॥ जगभयमगनगगनभइबानी**

श्रीरघुनाथजी नहींबोले हैं तब लक्ष्मणजी क्रोध की ज्वालाभरी बाणीबोलते हैं कि जो भरत की सहायपर शंकर सेनासमेत आवहिं तौ तिनहूं को निपातकही मारिडारौंगो यह श्रीरामचन्द्र के शपथकरिकै सङ्कल्पकरत हौं ( ४६ ) दोहार्थ॥ हे गरुड़ जब लक्ष्मणजी अति सरोष कही मखाइकै अतिक्रोध करत भये तब क्रोधाग्नि की ज्वाला सातहूस्वर्गताई प्राप्तिभईजाइ अरु महाशपथ रामकै सुन्यउ है तब शिव ब्रह्मादिक देवता इन्द्र वरुण कुवेर धर्मराज इत्यादिक बिकल होइकै बिमाननपर चढ़िचढ़ि भभरिकहीं डरिकै कहांजाईं ब्रह्मांडभरि बिकल देख्यो है तब श्रीचित्रकूट विषे नभमें बिमानछाइरहे हैं इहां श्रीरामचन्द्र अपनेविषे लक्ष्मणजीकीपरमानन्य उपासना सर्ब धर्म कर्म त्यागे देखिकै देवतनके द्वारह्वैकै शांति करते हैं इहां श्रीरामचन्द्र आपने श्रीमुख भरतकै वैराग्य अरु अपनेविषेपरमानन्यभाव लक्ष्मणजी से कहैंगे जाते भरत को दीप्तप्रपन्न अरु लक्ष्मणजी को आरतप्रपन्न दूनौं को स्वरूप भक्तनको अरु देवतनकोदिखावते हैं ( ४७ ) सम्पूर्ण जगत्भय के समुद्र में मग्नकही डूबजात है तब आकाशविषे देवबाणी होतभई है लक्ष्मणजी कै बाहुकोबलै बिपुलसराहिकै बर्णते हैं ( ४८ ) लक्ष्मणजी ते ब्रह्मादिक देवता कहते हैं कि हे तात तुम्हारे प्रताप के प्रभावको हमसब देवता अरु शेष गनेश महेश वेदवाणी इत्यादिक मन वचन कर्म ते कोई नहींजानिसकै हैं ( ४९ ) पर हे प्रभु आप सर्बज्ञहौ अनुचित उचित जो कछु कार्य्यहोइ सो समुझिकैकराचाहिये जामें और को भलाहोइ अरु सबकोई भलाकहै भलामनावै सो बिचार कही हे श्रीरामानुज संसार उत्पत्ति पालन के कारणहौ पुनिभूमि जल अग्नि पवन नभ अहङ्कार महत्तत्त्व इनसब के आदि कारण तुम हौ हे भगवन्त आप तौ जो करतेहौ सो विचारकरिकै कहते करते हौ अरु तुम्हारी गतिको हमनहीं जानिसक्ते हैं हमलोकरीति कहते हैं आप क्षमाकरब बड़े जेहैं ते उचित अनुचित बिचारिकै करते हैं ( ५० ) अरु जो विना बिचार सहसा कही तुरन्त करते हैं तौ परिणाम पश्चात्ताप

**लषणबाहुबलबिपुलबखानी ४८ तातप्रतापप्रभावतुम्हारा कोकहिसकैकोजाननहारा ४९ अनुचितउचितकाजकछुहोई समुझिकरियभलकहसबकोई ५० सहसाकरिपाछेपछिताहीं कहहिंवेदबुधतेबुधनाहीं ५१ सुनिसुरबचनलषणसकुचाने रामसीयसादरसनमाने ५२ कहीतातेतुमनीतिसुहाई सबतेकठिनराजमदभाई ५३ जोअँचवैंनृपमातेतेई नाहिंनसाधुसभाज्यहिसेई ५४**

होत है ताको वेद बुधनहीं कहते हैं ताते हेतात भरत यह लायकनहीं हैं साधु हैं ( ५१ ) हे पार्वती ब्रह्मादिक देव तिनकै बाणीसुनिकै लक्ष्मणजी सङ्कोचिगये हैं कि मोसे भागवतापराध भयो तब तुरन्त श्रीरामचन्द्र लक्ष्मणजी अरु श्रीजानकी जी को हामी भरायकै अति आदरते प्रबोध करते हैं ( ५२ ) श्रीरामचन्द्र कहते हैं लक्ष्मणजीते हेतात यह तुमबहुत सुन्दरिनीति कही है सेवकसेब्य भाव अरु राजनीति अरु लोकनीति ऐसीही है जसतुमकहा है काहेते अष्टमद हैं तामें राजमद अति कठिन है जातिमद कुलमद युवामद रूपमद विद्यामद ज्ञानमद ध्यानमद धनमद कहौ राजमद ( ५३ ) परहेतात जेइनमदनको अंचवैकही पानकरैकही अपनपौ मानिलियो है अहंब्राह्मण अहंउत्तम कुल अहंयुवाअहं सुन्दर अहंविद्यामान् ज्ञानमान् ध्यानमान् धनमान् अहंसोई अंचउबहै ताते यह परमेश्वर की बिभूति जिनराजन आपनिमानी है तेई माते हैं अभिमानते तावते होइजाते हैं अरु जिनसाधुन की सभानहीं सेवनकीन है तेमानते हैं अरु जिनसेवन कीन है ते संपूर्ण परमेश्वर की विभूति मानते हैं अरु अपनाको परमेश्वरका लघुदासमानिकै बर्तमानकरते हैं सो काहेको मातैंगे कैसे जैसे कोई मदिरा भांग अफीम इत्यादिक जे पावतेहैं तेई माततेहैं अरु जे नहीं पावते हैं ते काहेको मातैंगे तहांभरतजी तौ संपूर्णमेरी विभूतिजानते हैं ताते भरतजी को काहेको राजमद होइगो ( ५४ ) श्रीरामचन्द्र कहते हैं हेताललक्ष्मणजी भरतजी कैसे हैं योगवैराग्य ज्ञानविज्ञान ध्यानसमाधि भक्ति त्यहिके सागरहैं भरतजी

तिनकेसमान ब्रह्माके प्रपंचविषे सुनबे अरु देखबेमें कोई नहीं है भरत को अपनी देहको अहंपद नहीं है ते मेरीबिभूति को अपनीकैसे मानहिंगे भरतजी तनमन बचन अरु आत्मा मोको समर्पण किहेहैं हे तात यहसत्यजानब ( ५५ ) दोहार्थ॥ हेभाई लक्ष्मणजी भरतको राजमद कबहूँ न होइगो जो कदाचित् विधिहरि हरकी पदवीको प्राप्ति होहिं तबहूंनहीं राजमदहोइ कैसे जैसे क्षीरसमुद्र विषे कांजी कही माठाके पात्रको

**सुनहुलषणभलभरतसरीखाविधिप्रपंचमहँसुनानदीखा ५५ दो०॥ भरतहिहोइनराजमदविधिहरिहरपदपाइ कबहुंकिकांजीसीकरनक्षीरसिंधुबिनसाइ ५६ चौ०॥ तिमिरतरुणतरणिहिमकुगिलई गगनमगनमकुमेघहिमिलई ५७ गोपदजलबूड़हिंघटयोनी सहजक्षमाबरुछांड़ैझोनी ५८ मसकफूकमकुमेरुउड़ाई होइननृपमदभरतहिभाई ५९ लषणतुम्हारिशपथपितुआना शुचिसुबन्धुनहिं**

धोवन त्यहिकर कणकही फूही जो परै तौ का क्षीरसमुद्र बिनसिजाइगोनहीं बिनसैगो तैसे भरतजी क्षीरसमुद्र हैं अरु बिधि हरि हर तीनौंजनेन की पदवी कांजीकर कणहै ऐसे जेमेरे अनन्यभक्त हैं ते अहंमम इत्यादिक संपूर्ण अपनपौ को दूरिकिहे हैं ( ५६ ) हेभाई लक्ष्मणजी बरु एते आश्चर्यहोहिं तिमिरकही अंधकार रात्री को सो तरुणकही दुपहर केतरणि कही सूर्य्य तिनको अंधकार गिलैकही लीलिजाय पचायजाय अरु गगनकही आकाश त्यहिको मेघबरुमग्नकही डूबिकै मिलिजाइ एकही होइजाइ तहांगगन सबते भिन्न है ताहीके अन्तर सबहै अरु अमित दूरिहै अरु मेघकै गति एक योजन चारियोजन पर्यन्तताई है सो कैसेमिलै ( ५७ ) अरु गोपदके जलमें अगस्त्यबरु डूबिजाहिं अरु छोणीसहजही क्षमारूप है सो क्षमाबरुछोंड़िदेइ ( ५८ ) पुनि बरु मसाके फूंकते सुमेरुउड़िजाइ हेतातएते आश्चर्य्य होनेवाले नहीं हैं बरुहोइ जाहिं पर भरत को राजमदनहोइ यहबात मैं प्रणकरिकै कहतहौं ( ५९ ) श्रीरामचन्द्र कहते हैं कि हेलषण तुम्हार शपथ अरु पिताकै आनिकही दोहाईकरिकै कहतहौं शुचिसुबंधुसुसेवक भरतकेसमान भरतै हैं दूसरब्रह्मांड मंडल में नहीं है ( ६० ) हे तात सगुणकही सुष्ठगुणस्वधर्म यज्ञतपदान उदार सुकर्म अनेक योगवैराग्य विवेक ज्ञान विज्ञान ध्यान समाधिदयाकरुणा क्षमा शांति संतोष परहित शमदमउपर तितिक्षा श्रद्धासमाधान षटशरणागत अनुकूलमेंसंकल्प प्रतिकूलकोत्यागरक्षामें विश्वासगोप्तृत्वबर्णन आत्मसमर्पण कार्पण्यनवधाप्रेमापराभक्ति इत्यादिक अनन्त अनूपपरमदिब्यगुण सोई दुग्ध है अरुजलअवगुणकही कामक्रोधलोभमोहमद मत्सर्यरागद्वेष अरुममकपटपाखण्ड छलछिद्रदोषदृष्टिइन्द्रियासक्त हर्षशोक हानिलाभ सुखदुखमानापमान निंदास्तुति मित्रअरि पापपुण्य सुभाशुभ स्वर्गनर्क इत्यादिक जहांलहि त्रैगुण्यजनितअनेक द्वंद्वकर्म्मधर्म्म हैं सो जलहैं तहां विधि कहीकर्तारने इत्यादिक गुणअवगुण रचिकै दुग्धजलकीनाईं मिलाइदियो है काहेतेकर्तारकै इच्छास्वतंत्र है अरुकिसूके जानबेमें नहीं आवै है ( ६१ )

**भरतसमाना ६० सगुनक्षीरअवगुणजलताता मिलैरचैपरपंचबिधाता ६१ भरतहंसरबिबंशतड़ागा जनमिकीन्हगुणदोषबिभागा ६२ गहिगुणपय तजिअवगुणबारी निजयशजगतकीन्हउजियारी ६३ कहतभरतगुणशीलसुभाऊ प्रेमपयोधिमगनरघुराऊ ६४ दो०॥ सुनिरघुबरबाणीबिबुध देखिभरतपरहेतु लगेसराहनसहसमुख प्रभुकोकृपानिकेतु ६५ चौ०॥ जोनहोतजगजन्सभरतको**

तहां भरतजूहंसहैं अरुसूर्य्यबंश मानसर हैं तहांजन्मिकही त्यहि विषेबासकरिकै गुणऔगुणको विभागकरिकै गुणदूधको ग्रहण अवगुणजलको त्याग जहां जलदूध मिलेते एकहंसही अलगाइसकै है बहुजाति के अपरबिहंगनते नहीं भिन्नहोइसकै है कोई कहते हैं कि हंसके मुख में खटाई होतीहै ताते हंसजलदूध को भिन्नकरै है सोभी अच्छी युक्ति नहीं है तहांहंसको स्वाभाविकै यह धर्म्म है ( ६२ ) दूधरूप जे गुणहैं त्यहिको भरतजी ग्रहणकीनहै अवगुणचारि त्यहिको त्यागकीन है अपनो परमदिब्यभक्तिमययश जोहै सो त्रैलोक्यबिषे प्रकाशकिये हैं ( ६३ ) हे पार्वती भरतजी को परमदिब्य गुणशीलसुभाव कहतकहत भरत के प्रेमबिषे रघुनाजीमग्न होतभये हैं ( ६४ ) दोहार्त्थ॥ यहिप्रकार ते

यथार्थ श्रीरघुनाथजी भरतके गुणबर्णनकरतभये हैं भरतके ऊपर श्रीरघुनाथजी की अतिप्रीतिसुनिकै देखिकै श्रीरघुनाथजी को भक्तवात्सल्यगुण अतिशय कहते हैं जहां रनमुखकही बारबार यथार्थ बड़ाई करते हैं कि प्रभुकेसमान कृपाको निधान को है कोई नहीं है ( ६५ ) ब्रह्मादिकदेवता परस्पर श्रीरघुनाथजी को सुनाइकैकहते हैं कि यहिजग में भरतकर जन्मनहोत तोसम्पूर्ण धर्म्म कैधुरीको कोधारणकरत यहमहिविषे किंतु अनेक ब्रह्माण्ड के सुधर्म्म सकल धुरकही विशेषि सोई धरणीहै त्यहिके धरिबेको भरतजी शेष कमठबाराहहैं ( ६६ ) ब्रह्मा शिवादिक यह कहते हैं हे श्रीरघुनाथजी भरतकर गुणगाथ कबिके कुलभरेके कहिबेको अगम है आप यथार्थ जानते हौ ( ६७ ) हे गरुड़ श्रीरामचन्द्र श्रीजानकी लक्ष्मणजी देवतनकै वाणीसुनिकै अति सुखको प्राप्तभये हैं ( ६८ ) अरु इहां भरतजी सहितसहाय पुनीत श्रीमन्दाकिनी स्नानकरतभये हैं ( ६९ ) अरु सरिताके किनारे समस्त लोगन को डेरादैकै अरु आपुमातु गुरुसचिव ते नियोगकही आज्ञालैकै ( ७० ) पुनिज्यहि आश्रमविषे श्रीरामलक्ष्मण श्रीजानकीजी विराजमान हैं तहां

सकलधरमधुरिधरणिधरतको ६६ कबिकुलअगमभरतगुणगाथा कोजानैतुमबिनरघुनाथा ६७ लषणरामसियसुनिसुरबानी अति सुखलह्यउनजाइबखानी ६८ यहाँभरतसबसहितसहाये मन्दाकिनीपुनीतनहाये ६९ सरितसमीपराखिसबलोगू माँगिमातुगुरुसचिवनियोगू ७० चलेभरतजहँसियरघुराई साथनिषादनाथलघुभाई ७१ समुझिमातुकरतबपछिताहीं करतकुतर्ककोटिमनमाहीं ७२ रामलषणसियसुनिममनाऊं उठिजनिअनतजाहिंतजिठाऊं ७३ दो०॥ मातुमतेमहँमानिम्वहिं जोकछुकरहिंसोथोर अघअवगुणछमिआदरहिं समुझिआपनीओर ७४ चौ० ॥ जोपरिहरहिंमलिनमनजानी सोसनमानहिंसेवकमानी ७५ मोरेशरणरामकीपनहीं रामसुस्वामिदोषसबजनहीं ७६ जगयशभाजनचातकमीना नेमप्रेमनितनिपुणनबीना ७७ असमनगुनतचलेमगजाता

को भरतजी चलतेभये साथविषेनिषादनको नाथ गुह अरु शत्रुहन चलतभये ( ७१ ) हे पार्वती माताकै कर्तब्यसमुझिकै अनेक कुतर्क मनमें करत जाते हैं ( ७२ ) अरु यह कुतर्क करते हैं कि मेरो आगमन नामसुनि कैठाउँतजिकै अनते न उठिजाहिं ( ७३ ) दोहार्थ ॥ अरु भरतजी अपने मन में यह कल्पनाकरत चलेजाते हैंकि जो श्रीरामचन्द्रमोकोमाता के मतविषेमानहिंतौजो कछुकहहिंकरहिं सोसबथोर है अरुमोर अघअवगुणक्षमाकरिकै आदर करहिंतौ अपनीओरते समुझिकै काहेते सर्बोपरि बड़ेमहाराज कृपाल हैं ( ७४ ) अरु जोमोको मलिनमन जानिकै परिहरिदेहिंतौ उचितै है अरुजो मोर आपन सेवकमानिकै सन्मानकरहिंतौ बड़ेनकै यहरीतिही है यहांनीचानुसंधान अरु कार्पण्यशरणागतजानब ( ७५ ) परमैंतौ श्रीरामचन्द्रकेपनही कीशरणागतहौं श्रीरामचन्द्रसुष्टस्वामी हैं अरु सेवकतौसर्वदोषको भाजन है ताते श्रीरामचन्द्र मेरे सबदोष क्षमाकरहिंगे तहां मैं जो कहा कि मैं श्रीरामचन्द्र की पनहीं के शरणहौं सो मोसे नहींकहत बनैहैं ( ७६ ) काहेते कियहजगत् में स्नेह के नेमप्रेम नित्यनवीन करिकै यशके भाजन चातक मीनह्वैरहे हैं ताते मैं कछुनहीं हौं काहेते श्रीरामचन्द्र के बिछुरतसन्तेमेरो शरीर न छूटिगयो ताते मेरे नेमप्रेम कछुनहीं है ( ७७ ) हे पार्वती ऐसे अपने मनमें गुनतचलेजाते हैं माताकी कर्तब्य को कारण अपनाका समुझिकै अतिसकोचते गात शिथिल ह्वैरहे हैं ( ७८ ) अरु तहां माता की कृतखोरि समुझिके मनफिरि आवतहै अरु भक्ति के बलसे श्रीरामसन्मुख चलेजाते हैं काहेते सेवकसेब्य धर्म प्रबल है त्यहिधुरीके धरैयाहैं ( ७९ ) हे पार्वती अपनी मातकै करतूति समुझिकै मनफेरते हैं परजबश्रीरामचन्द्र कर सुभाव समुझते हैं तब श्रीरामचन्द्र के सन्मुख उताइल

सकुचसनेहशिथिलसबगाता ७८ फेरतमनहिंमातुकृतखोरी चलतभक्तिवशधीरजधोरी ७९ जबसुमिरतरघुबीरसुभाऊ तबपथपरतउताइलपाऊ ८० भरतदशात्यहिअवसरकैसी जलप्रबाहजलअलिगणजैसी ८१ देखिभरतकरशोचसनेहू भानिषादत्यहिसमयबिदेहू ८२ दो०॥ लगेहोनमंगलसगुन

**सुनिगुनिकहतनिषादमिटिहिशोचहोइहिहरष पुनिपरिणामविषाद ८३ चौ० ॥ सेवकबचनसत्यसबजाने आश्रमनिकटजाइनियराने ८४ भरतदीखबनशैलसमाजू मुदितक्षुधितजिमिपाइसनाजू ८५ ईतिभीतिजिमिप्रजा**

पांउपरत है ( ८० ) हेगरुड़ भरत की दशात्यहि अवसरकैसी है जैसे भारीनदी की प्रवाह धाराविषे जलभँवर तरंग उठतजाते हैं यह दृष्टांतविषे बहुअभिप्राय है कोई कहतेहैं जलविषे भ्रमरजल की शोभा देखावतहै अरु जलकी गम्भीरता देखावतहै तैसे सुन्दर निर्मल नदी प्रेम लक्षणा भक्ति अरु सर्वजीवविषे परमेश्वर भाव सोई जलप्रबाह अरु नीचानुसंधान अपनेमनमें अपना अवगुण समुझते हैं कि मोसे कछुनहीं बनैहै मोको धिक्है सोई भ्रमर है सोई गंभीर शोभा है अरु मन क्रम बचनतेश्रीरामचन्द्र की भक्तिकरते हैं सोई भक्तिकी शोभा अरु गंभीरता क्रमते जानब ( ८१ ) तहां भरतकर कार्पण्य सो सब श्रीरामचन्द्रविषे स्नेह यहदूनौ अकथ देखिकै निषाद बिदेह होतभयोहै ( ८२ ) दोहार्थ॥ त्यहि अवसरमें सुन्दर सुन्दर मंगलसगुन होनलगे निषाद सुनिकै बिचारिकैकहत है हेभरतजी यह सगुनकहत है कि हर्ष मंगल आनंद होइ पुनि परिणाम बिषाद होइहि ( ८३ ) तब श्रीराम सेवक जो निषाद त्यहिकोबचनसत्य जाना श्रीरामचन्द्र के आश्रम के निकट नियरातभये हैं ( ८४ ) हेगरुड़ भरतजी श्रीरामचन्द्र को शैल जो श्रीकामदा त्यहि की समाजदेखतभये है आनन्दभये जैसे कोई अतिक्षुधित को सुष्टभोजनपूर्ण प्राप्ति भयो है ( ८५ ) श्रीरामशैल देखिकै भरत के आनन्द भयोहै कैसे जैसेईतिभीति त्रैतापग्रह करिकै प्रजापीड़ित भयो है ईतिभीति एकहीहै कि कछुभेद है ईतिकही जो दैवकरिकै अतिवृष्टि अनावृष्टि पालापत्थर अग्निइत्यादिक करिकै दुखहोइ सोईति पुनि भीतिकही जो जीवन करिकै उपाधिहोइ राजाचोर मूषशलभ इत्यादिक करिकै दुखहोइ सो भीति अरु त्रिताप कही अधिभूत अध्यात्म अधिदैवत अधिभूतकही जो जीवनकरिकै अपनाको क्लेशहोइ किंतु अपनाते कोई जीवनको क्लेशहोइअरु अध्यात्मकही जो अपने शरीर में रोग इत्यादिक क्लेशहोइ किंतुकाम क्रोध लोभमोह मदमात्सर्य्य इत्यादिक करिकै क्लेशहोइ सो अध्यात्मकही अधिदैवत कही जे स्वर्ग के देवता हैं अरु इन्द्रिन के दवता तिनकरिकै

**दुखारी त्रिबिधितापपीड़ितग्रहभारी ८६ पाइसुराजसुदेशसुखारी होहिभरतगतित्यहिअनुहारी ८७ रामवासबनसम्पतिभ्राजा सुखीप्रजाजिमिपाइसुराजा ८८ सचिवबिरागबिबेकनरेशू बिपिनसुहावनपावनदेशू ८९ भटयमनेमशैलरजधानी शान्ति**

जो उपाधिहोइ सो अधिदैवत पुनि नवग्रह सूर्य चन्द्र मंगल बुध बृहस्पति शुक्रशनैश्चर राहुकेतु नवग्रह बारहों राशिबिषे चौथे आठयें बारहें अरिष्टहोइ ज्यहि योगकरिकै इन सबकरिकै प्रजाअति पीड़ित भई है इहांप्रजारूप भरत हैं अरु ईतिभीति सरस्वती मन्थरा भई हैं अरु त्रिताप कैकेयी अरु भरत के राज्यको बरदान अरु देवता जिन प्रेरणाकीन्ह है सो त्रितापभये अरु ग्रह श्रीराम बनगमन राजाको मरण माता इत्यादिक अरु प्रजनको पीड़ासोई नवग्रह कपूतभये हैं त्यहिकरिकै भरतपीड़ित भये हैं अरु सुराजविवेक सुयश श्रीचित्रकूटको प्राप्ति भयेहैं ताते सुखीभये हैं ( ८६ ) ज्यहि करिकै प्रजापीड़ित होइ अरु सुराज्य सुदेशमें जाइकै सुखीहोइ त्यहि अनुहारि भरतको सुखभयो है ( ८७ ) दुखित प्रजा सुराज्यविषे संपतिपाइकै सुखीहोति है श्रीचित्रकूट राज्यविषे श्रीरामचन्द्र को बनवास सोई संपत्ति है सोईपाइके भरतजी सुखी भये हैं ( ८८ ) तहां श्रीचित्रकूट राज्य को परम बिबेक सोई राजा है अरुवैराग्य मंत्री है जो मंत्री प्रवीण बनारहै तौ राजा सब प्रकार ते कुशल रहै है अनेक बिपिन सोहावन सोई सुन्दर देश है ( ८९ ) अरु राजन के भटकही योद्धारहते हैं विवेक राजा को यम नेम भट है संयम दश अहिंसा १.सत्य २. अस्तेय ३. ब्रह्मचर्य ४. दया ५. नम्रता ६. क्षमा ७. धृति ८. अल्पभोजन ९. शौच १०. इति दश १० पुनि दशनेम नियम १. शौच २. होम ३. तप ४. दान ५. विद्याध्ययन ६. इन्द्रीनिग्रह ७. व्रतचांद्रायण आदिक ८. मौन रहना ९. त्रिकाल सुकर्मकरना १०. इति दश अरु कामदा शैल राजधानी है अरु विवेक राजा के शांति सुमति सुन्दरिरानी है ( ९० ) अरु राजा सब लक्षणकरिकै सम्पन्नकही पूर्ण है अरु विवेक राजा के लक्षण सम्पन्न

श्रीरामचन्द्र के चरणारविंदविषे चित्तचाहकरिकै आश्रित है ( ९१ ) दोहार्थ॥ अरु तहां श्रीचित्रकूट विषे विवेक राजा जो है सो मोहरूप महिपाल को दलसहित जीतिकै अकंटक राज्यकरत है सुखसम्पदा सर्बकाल एकरस है अरु विवेक राजा के सेनापति योग वैराग्य ज्ञान विज्ञान ध्यान समाधि शांति सन्तोष करुणा दया क्षमा शील उदारता गम्भीरता इत्यादिक सेनापति हैं अरु इनके सहायक अनेक दिब्य

**सुमतिशुचिसुन्दररानी ९० सबलक्षणसम्पन्नसुराऊ रामचरणआश्रितचितचाऊ ९१ दो०॥ जीतिमोहमहिपालदल सहितबिबेकभुवाल करतअकण्टकराजपुर सुखसम्पदासुकाल ९२ चौ० ॥ बनप्रदेशमुनिबासघनेरे जनुपुरनगरगांवगणखेरे ९३ बिपुलबिचित्रबिहगमृगनाना प्रजासमाजनजाइबखाना ९४ खगहाकरिहरिबाघबराहा देखिमहिषबृकसाजसराहा ९५ बैरबिहाय**

विशेषणगुण सोई सेना है अरु मोह महिपाल के सेनापति काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य्य देहाभिमान अहंमम इत्यादिक सेनापति हैं तामें काम क्रोध लोभ ये तीनि महासेनापति हैं अरु इनके सहायक अनेकवासना तृष्णा इन्द्रिनकी बिषय इत्यादिक अनेक सेना हैं तहां जो विवेकी राजा मोहको दलसहित जीतै तब अपने बाह्यांतर निष्कण्टकराज्यहोइ श्रीरामभजन ते सम्पति अखण्ड प्राप्तिहोइ सर्वकाल सुखीरहै सो श्रीचित्रकूट विषे सदासम्पन्नहोइ ( ९२ ) अरु राजन के प्रदेश कहीबहु नगर गांव खेरे दूरिदूरि हैं अरु विवेक राजा के प्रदेश श्रीचित्रकूट के मर्याद से कछुबाहेर बन है सोई प्रदेश है अरु तिन बननविषे जहांतहांमुनिन के बास हैं जहां बाहुल्यमुनि हैं सो पुरीनगर है अरु जहां मध्यस्थ मुनि हैं सो ग्राम है अरु जहां एकदुइचार मुनि हैं सो खेरे हैं ऐसे अनेकहैं यह अभिप्राय है कि विवेकिन को बनैबिषे रहनाचाहिये जहां श्रीरामचन्द्रको भजन बनै है ( ९३ ) अरु राजन के प्रजा की समाज रहतीहै अरुविवेक राजा के बिपुल अनेकबिहंग मृगसुन्दर बिचित्र बनमेंरहतेहैं सोई प्रजनकी समाजै बखानवे योग्यनहीं हैं ( ९४ ) खगहाकही गैंड़ाकरिकहीहाथी हरिकही सिंह अरु बाघ बाराहकही शूकर अरु महिषकही भैंसा अरु बृककही भेड़हा इत्यादिक अनेक जे हैं तिनकी साजकही समाजकहते हैं ( ९५ ) ते सबपरस्पर बैर विहायकै बनमें बिचरते हैं ते सबचतुरंगिनी सेना हैं हाथी स्थाने हाथी हैं तुरंगस्थानेबाघ सिंह हैं रथस्थानेगैंड़ा भैंसा हैं पैदरस्थाने वृष अपर मृगाइत्यादिक येती सबविवेक राजा की चतुरंगिनी सेना है ( ९६ ) अरु पर्बतनविषे झरनाझरते हैं अरु मत्तहाथी गर्जते हैं ते मानहु निशानकही विविधिप्रकार के नगारा नौबति बाजते हैं ( ९७ ) अरु चकई जे हैं चकोर जे हैं चातकजेहैं शुक जे हैं पिककही कोकिला जे हैं अरु कूजतकही अतिआनन्द ते मधुर मधुर हंस इत्यादिक बोलते हैं ( ९८ ) अरु भ्रमरनकै अवली गुञ्जार करती हैं अरुमयूरनाचते हैं बोलते हैं जनु सुराज्यविषे नृत्यगान मंगल ह्वैरह्योहै चक

**चरहिंयकसंगा जहँतहँ मनहुंसेनचतुरंगा ९६ झरनाझरहिंमत्तगजगाजहिंमनहुंनिशानबिबिधिबिधिबाजहिं ९७ चकचकोरचातकशुकपिकगनकुंजत मंजुमरालमुदितमन ९८ अलिगणगावतनाचतमोरा जनुसुराजमंगलचहुंओरा ९९ बेलि बिटपतृणसफलसफूला सबसमाजमुदमंगलमूला १०० दो०॥ रामशैलशोभानिरखिभरतहृदयअतिप्रेम तापसतपफलपाइजिमिसुखीसिरान्यउनेम ॥१०१**

जे हैं ते मानहुं मृदंगबजावते हैं चकोर मंजीरा चातक सितार शुक तमूरा कोकिला मुर्चंग हंस सारंगी अरु भ्रमर गानकरते हैं। बिवेक राजाके बनबिषे नृत्यगान करिकै राजाको रिझावते हैं ( ९९ ) अरु राजनके राजभरे में मुदमंगलमय ह्वै रह्यो है अरु विवेक राजा के बिटप बेलि तृण इत्यादिक फलफूल पल्लव करिकैशोभित है सोई मुदमंगलह्वैरह्यो है मुदमंगलकही अन्तष्करण ते आनन्द उत्पन्नहोइ ताको मुदकही अरु बाह्यइन्द्रिन के कर्त्तब्यतेजे सुखउत्पन्नहोहिं ताको मंगल कही ( १०० ) दोहार्थ॥ हे पार्वती श्रीरामचन्द्रकर शैल जो कामदा है त्यहिकी शोभा निरखिकै भरतजी के हृदयविषे अतिप्रेम होतभयो है कैसे जैसे तपस्वी तपकोकरत है अरु तप के फल को प्राप्तह्वैकै सुखीभयो है अरु

वहिकर नेमकरिकै श्रमजोहै सो सिराइगयो है तब सुखीभयो है तैसे भरतजीकर सम्पूर्णदुखबीतिगयो है ( १०१ ) इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने अयोध्याकाण्डे लषणप्रतापभरतभावप्रेमबर्णनन्नामचतुर्दशस्तरंगः १४॥ :: :: :: :: :: ::

दोहा ॥ दशअरुपांचतरंगमेंप्रभुअरुभरतमिलाप रामचरण अतिविरहवश द्वौदिशिहोतकलाप' ( १५ ) हे पार्वती तब निषादधाइकै ऊँचेचढ़िकै भुजाउठाइकै भरतजी से कहत है ( १ ) हे नाथ देखौ तौ पांचबिटप विशाल अतिसुन्दर पाकरि अरु यामुनि अरु रसालकही आंब अरु तमाल ( २ ) त्यहि तरुवरन के मध्यविषे बिटप शोभित है मंजुकही निर्मल सुन्दर विशाल मुनिनके मनको हरत हैं ( ३ ) अरु नीललललामीलिहे सघन नित्य एकरस पल्लव हैं अरु अरुणफल की अवली शोभित है अरु अविचल ज्यहिकी छाया है ( ४ ) मानहुं अरुण अरु तिमिर त्यहिकै राशि विधातैं समेटिकै सुषमाकही शोभाकर स्वरूपबनायोहै ( ५ ) निषाद कहतहै हे गोसाईं ये पंच विटप सरित जो मन्दाकिनी है त्यहिके किनारेपर

चौ० ॥ तबकेवटऊंचेचढ़िधाई कहतभरतसनभुजाउठाई १ नाथदेखियेबिटपबिशाला पाकरिजम्बुरसालतमाला २ त्यहितरुवरनमध्यबटसोहा मंजुबिशालदेखिमनमोहा ३ नीलसघनपल्लवफललाला अबिचलछांहसुखदसबकाला ४ मानहुंतिमिरअरुणमयरासी बिरचीबिधिसकेलिसुषमासी ५ येतरुसरितसमीपगोसाई रघुबरपर्णकुटीतहँछाई ६ तुलसीतरुवरबिबिधिसोहाये कहुंकहुंसियकहुंलषणलगाये ७ बटछायावेदिकाबनाई सियनिजपाणिसरोज सोहाई ८ दो०॥ जहँबैठहिंमुनिगणसहित नितसियरामसुजान सुनहिंकथाइतिहाससबआगमनिगमपुराण ९ चौ०॥ सखावचनसुनिबिटपनिहारी उमग्यउभरतबिलोचनबारी १० करतप्रणामचलेदोउभाई कहतप्रीतिशारदसकुचाई ११ हर्षहिंनिरषिरामपदअंका मानहुंपारसपायउरंका १२ रजशिरधरि

हैं त्यहिकेतर श्रीरामचन्द्र की अतिसुन्दरि कुटीबनी है ( ६ ) अरु तुलसीके तरु अरु फूल विविधिप्रकार कहूं श्रीजानकीजी लगायो है कहूं लक्ष्मणजी लगायो है ( ७ ) अरु बटकी छायामें श्रीजानकीजी ने अपने हस्तकमल से वेदिका बनाई है ( ८ ) दोहार्थ॥ ज्यहि वेदिकापरबैठिकै मुनिन के गण अरु श्रीरामचन्द्र जानकीजी सुजाननके समाज के मध्यविषेमुनीश्वर बांचते हैं श्रीरामचन्द्र सुनते हैं कबहूं आगम कवहूं वेद कबहूं पुराणइत्यादिक होते हैं ( ९ ) सखा को बचनसुनिकै विटप निहारतेभयेभरत के नेत्रन में जल उमगतभयो ( १० ) हे गरुड़ निषादकै बाणीसुनिकै ज्यहि आश्रम को दोनोंभाई दण्डवतप्रणामकरत चले जाते हैं सो प्रीतिकहतकै शारदा सकुचाती हैं ( ११ ) श्रीरामचन्द्र के चरण के अंक पृथिवी विषे निरखि निरखि हर्षते हैं कैसे जैसे रंक पारसको पाइकै हर्षकोप्राप्तिहोत है ( १२ ) त्यहि अंकनकी रज शीशपरधरहिं हृदय नेत्रनमें लगावहिं श्रीसीतारामचन्द्र के मिलबे के समान सुखपावते हैं ( १३ ) हे पार्वतीभरतकै गति अकथ अतीव देखिकै चराचर प्रेम ते मग्नहोते भये ( १४ ) तहां श्रीरामचन्द्र की कुटी का मग सखाको प्रेम के बशह्वैकै भूलिगयो है तब देवता श्रीरामचन्द्र की कुटीको मगबतावते हैं फूलबर्षते हैं ( १५ ) तब भरत कै गति देखिकै सिद्ध जे हैं अरु सिद्धन के साधकजे हैं अरु सम्पूर्ण मुनि जे हैं ते अनुरागते भरतकर सहज स्नेह सराहते हैं ( १६ ) ब्रह्मादिक देवता सब सिद्धमुनि कहतेहैं कि जो भूतलबिषे भरतकरभावन होत तौ अचरको सचर अरु सचर को अचरको करत तहां जे अचर

हियनयननलावहिं रघुवरमिलनसरिससुखपावहिं १३ देखिभरतगतिअकथअतीवा प्रेममगनखगमृगजड़जीवा १४ सखहिसनेहविबशमगभूला कहिसुपन्थसुरबर्षहिंफूला १५ निरखिसिद्धसाधकअनुरागे सहजसनेहसराहनलागे १६ होतनभूतलभावभरतको अचरसचरचरअचरकरतको

**१७ दो०॥ प्रेमअमियमन्दरबिरह भरतपयोधिगँभीर मथिप्रगट्य उसुरसाधुहित कृपासिन्धुरघुबीर १८ चौ०॥ सखासमेतमनोहरजोटा लख्यउन लषणसघनबनओटा १९ भरतदीखप्रभुआश्रमपावन सकलसुमंगलसदनसुहावन २० करतप्रबेशमिट्यउदुखदावा जनुयोगीपरमारथपावा २१ देखेभरतलषणप्रभुआगे पूंछ्तबचनकहतअनुरागे २२ शीशजटा**

जीवरहे पर्वत तरु तृण इत्यादिक ते द्रविउठे हैं अरु सचर जड़ीभूत ह्वैगये हैं ( १७ ) दोहार्थ॥ पुनि देवता यह कहतेहैं कि भरतजी क्षीरसमुद्र हैं अरु बिरह मन्दराचल है त्यहिते श्रीरघुनाथजी मथिकै देवता अरुसाधुनके हेतु प्रेमरूप अमृत निकारिलीन्ह श्रीरामचन्द्र ऐसे कृपालु हैं ( १८ ) भरतजी दण्डवत् करत निषाद समेत मनोहर जोरी दोउभाईकुटीके समीप प्राप्त भये इतै श्रीलक्ष्मणजी श्रीरघुनाथजी की सेवा बिषे ठाढ़े हैं तिनसघनवनके ओटते भरतजीको नहीं देख्यो है अरु भरतजू लक्ष्मणजीको देखत भये हैं ( १९ ) भरतजी प्रभुकरआश्रम सम्पूर्ण मंगलमय सदन सो देखत भये हैं ( २० ) कुटी में प्रवेश करतसन्ते दुखकरदावाकही अग्नि की ज्वाला सो मिटिगयो हृदय शीतल ह्वै गयो है जनु योगी योगकोफल परमार्थ त्यहिको प्राप्त भयो है परमार्थ कही परमेश्वर ( २१ ) त्यहि अवसरबिषे भरतजी देखा कि लक्ष्मणजी प्रभु श्रीरामचन्द्र तिनके आगे ठाढ़े हैं सो निषाद ते सहित अनुराग पूंछ्ते हैं ( २२ ) हे सखे देखौतौ लक्ष्मणजी यही हैं पुनि आपुही अति अनुराग ते कहते हैं प्रेम की बात ऐसीही है शीशविषे जटा कटि विषे मुनिपट अरु तापर तूणकसेअरु धनुष कांधेविषे बाण हाथबिषे शोभित है ( २३ ) वेदिका पर मुनि साधुनकै समाज बैठी है अरु मध्यमें श्रीरामचन्द्र विराजमान हैं मुनिसाधु येही हैं अथवा आश्रमी मुनि हैं अरु बिहंग साधु हैं ( २४ ) श्रीरामचन्द्र कैसे हैं बल्कलकही भोजपत्र सोई बसनपहिरेहैं अरु शीशबिषे जटाशोभित है श्यामतन है जानकी सहित जनुमुनिकर वेषबनाइकै काम रति शोभित है ( २५ ) कर कमलनविषे धनुपबाण फेरते हैं अरु बिहँसिकै जब काहूकीओर हेरते हैं तब जीवकै जरनि तीनिउताप सो हरिलेते

**कटिमुनिपटबाँधे तूणकसेकटिशरधनुकाँधे २३ बेदीपरमुनिसाधुसमाजू सीयसहितराजतरघुराजू २४ बल्कलबसनजटिलतनश्यामा जनुमुनिबेषधरेरतिकामा २५ करकमलनधनुशायकफेरत जियकीजरनिहरतहँसिहेरत २६ दो०॥ लसतमंजुमुनिमण्डलीमध्यसीयरघुचन्द ज्ञानसभाजनुतनुधरेभक्तसच्चिदानन्द २७ चौ० ॥ सानुजसखासमेतमगनमन बिसरे हर्षशोकसुखदुखगन २८ पाहिपाहि कहिपाहिगोसाईं भूतलपरेलकुटकीनाईं २९ बचनसप्रेमलषणपहिंचाने करतप्रणामभरतजियजाने ३० बन्धुसनेहसरिशउतओरा इतसाहिबसेवाबरजोरा ३१ मिलिनजाइनहिंगुदरतबनई सुकबिलषणमनकीगतिभनई ३२ रहेराखिसेवापरभारू चढ़ी**

हैं ( २६ ) दोहार्थ॥ हे पार्वती मुनिनकै मण्डली लसत कही शोभित है अरु तिनके मध्य में श्रीसीता रामचन्द्र अतिशोभित हैं मुनिनकै मण्डली जनुज्ञान कै मूर्ति है अरु श्रीसीतारामचन्द्र साक्षात् भक्ति सच्चिदानन्द कैमूर्ति हैं जनु जो है उत्प्रेक्षालंकार सो मुनिके विषे जानव अरु अभेद रूपकालंकार श्रीसीतारामचन्द्र बिषे जानब पूर्वकर पद पूर्वलगै परकरपद परलगै लसतमंजु मुनिमण्डली ज्ञान सभा जनुतनु धरे मध्यसीय रघुचन्द सच्चिदानन्द ( २७ ) हेगरुड़ भरतजी ऐसी समाजसहित श्रीसीतारामचन्द्र को देखिकै सहित भ्राता सखा मग्नहोतभये हर्ष शोक सुख दुःख अनेक बिसरिगये हैं ( २८ ) तब भरतजी आरत बचन कहिकै हे नाथ पाहिपाहि हे गोसाईं पाहिपाहि यहकहिकै लकुटकीनाईं महिबिषे गिरत भये हैं ( २९ ) तबलक्ष्मणजी श्रीरामचन्द्र की सेवामेंठाढ़े हैं प्रेममयभरत के वचनसुनिकै यह जानाकि भरतजीप्रणामकरते हैं ( ३० ) तहांउतैतौ बन्धु जे भरतजी हैं तिनकरस्नेह अरु इतसाहब श्रीरामचन्द्रतिनकीसेवा अतिजोर है ( ३१ ) तहां लक्ष्मणजीकरमन नतौ भरतजीकेमिलबेको जाइसकैअरु न तौ गुदरतकहीसेवामें

स्थिरहोइ तहांलक्ष्मण के मनकैगति सुकबि भनते हैं ( ३२ ) तहां श्रीरामचन्द्रकीसेवाविषे भारराखिकैंभरतकी ओरतेमन खैंचि लीन कैसे जैसे ख्यलारी चंगकोखैंचत है तहां यह अभिप्रायहै कि जो मन मातु पितु भाई कुटुम्बविषे स्वामी की सेवा छोड़िकै जाइ तौ न जाइ पावै खैंचिलेइ ताको सेवादृढ़भाव कही ( ३३ ) तब लक्ष्मणजी महिविषे माथनाइकै करजोरिकै कहते हैं हेरघुनाथजी भरतजूदण्डवत् करते हैं ( ३४ ) यह सुनतसंते श्रीरघुनाथजी प्रेमते अधीर ह्वैकैउठे अधीरकही कहूं पीताम्बरगिर्‌यो कहूं तरकसगिर्‌यो कहूं धनुषबाण गिर्‌यो ( ३५ ) दोहार्थ॥

चंगजिमिखैंचुख्यलारू ३३ कहतसप्रेमनाइमहिमाथा भरतप्रणामकरतरघुनाथा ३४ उठेरामसुनिप्रेमअधीरा कहुंपटकहुंनिषंगधनुतीरा ३५ दो०॥ बरबसलिये उठायउर लायेकृपानिधान भरतरामकीमिलनिलखि बिसरेउसबहिअपान ३६ चौ०॥ मिलनिप्रीतिनहिंजाइबखानी कबिकुलअगम कर्म्मनमानी ३७ परमप्रेमपूरणदोउभाई मनबुधिचितअहमितबिसराई ३८ कहहुसोप्रेमप्रकटको करई क्यहिछायाकबिमतिअनुसरई ३९ कबिहिअर्त्थआखरबलसांचा अनुहरतालगतिहिंनटनाचा ४० अगमसनेहभरतरघुवरको जहँनजाइमनबिधिहरिहरको ४१ सोमैंकुमतिकहौंक्यहिभांती बाजुसुरागकिगाड़रताँती ४२ मिलनिबिलोकिभरत

श्रीरघुनाथजी उठिकै बरबसभरतको उठाइकै उरमें लगावते भये हैं तहांभरतजी अरु श्रीरघुनाथजी कै मिलनि देखिकै सबसभाको अपनपौ भूलि गयो है ( ३६ ) श्रीरघुनाथजी अरु भरतजी के मिलनिकै प्रीति बखानिकै नहीं कहीजाइ है कविनके कुलभरेको मन बचनकर्म ते अगम है ( ३७ ) परम प्रेमते दूनौ भाई पूर्ण ह्वइरहे हैं मन बुद्धि चित्तकी अहंमम बिसरिगई है किन्तु कविनके मनबचन कर्मकै अहंमम बिसरिगई है सोकैसे कहै ( ३८ ) भरतजी कर अरु श्रीरामचन्द्र को प्रेम प्रकटकरिकै को कहिसकै कविकर मति कौनीछायाके अनुसारकहै कछुछाया नहीं मिलती है ( ३९ ) नहीं कहाजाइ काहेते कविजन जेहैं तेअक्षर अर्थके बलसेपदार्थ कहते हैं कैसे जैसे तालके अनुहारते नटनाचते हैं अरु इहां अक्षरार्थै नहीं मिलैहै ( ४० ) ताहीते नाहीं कहाजाइ कि भरत अरु रघुनाथजी करस्नेह अगमहै जहांब्रह्मा शिव विष्णुको मननहीं जाइहै सोकवि कैसेकहै तहां गोसाईं तुलसीदास कहते हैं कि रामभक्तनके प्रेम गुणब्रह्मा शिव नहीं कहिसकते हैं चौ०॥ विधिहरिहरकवि कोविदबानी। कहत साधुमहिमा सकुचानी॥ अरु इहांतौ श्रीरामचन्द्र औभरतको स्नेह है तीनिउ देवता कैसे कहिसकै हैं काहेते तीनिउ प्रभुकैवृत्ति तीनिउ गुणमय है अरु श्रीरामचन्द्र भक्तनकै वृत्ति गुणातीत है तातेको कहिसकै ( ४१ ) तहां मोरिजो कुमतिहै सो कैसे कहै काहेते गाड़रके तारते कहूं सुरागबाजै है नहीं बाजै गाड़र कही गड़रियाके ऊनको सूतकिन्तु गाड़रकही तृण त्यहिकी रज्जु त्यहितेराग नहीं निकसतहै ( ४२ ) भरत कैं श्रीरघुवर कै मलनिबिलोकिकै देवतनकेगण आपुसमें अकुलाइ उठ्योहै हृदय धकधकायउठे है यह समुझिकै कि श्रीरामचन्द्रजी श्रीअयोध्याको फिरि चुके ( ४३ ) तब वृहस्पति देवतनको समुझावते भये तब देवता जड़बुद्धी जागते कहीसमुझत भये तबप्रसून वर्षिकै प्रशंसा करत भये ( ४४ )

रघुबरकी सुरगणसभयधकधकीधरकी ४३ समुझायेसुरगुरुजड़जागे बर्षिप्रसूनप्रशंसनलागे ४४ दो०॥ मिलिसप्रेमरिपुसूदन हिकेवटभेट्यउरामभूरिभाग्यभेटेभरतलक्ष्मणकरतप्रणाम ४५ चौ०॥ भेटेउलषणललकिलघुभाई बहुरिनिषादलीनउरलाई ४६ पुनिमुनिगणदोउभाइनबन्दे अभिमतआशिषपाइअनन्दे ४७ सानुजभरतउमगिअनुरागा धरिशिरसियपदपदुमपरागा ४८ पुनिपुनिकरतप्रणामउठाये शिरकरकमलपरसिबैठाये ४९ सीयअशीषदीनमनमाहीं मगन सनेह हृदयसुधिनाहीं ५० सबबिधि

दोहार्थ॥पुनि श्रीरामचन्द्र प्रेमसहित रिपुसूदनको मिलतभये पुनि श्रीरामचन्द्र बोलिकै निषादको मिलतभये हैं तब श्रीलक्ष्मण जी भरत को दण्डवत् करतभये तबभरतजी अपनी भूरिभाग्य मानिकै निषादको मिलतभये दौरिकै श्रीलक्ष्मणजी को उठायकै मिलतभये हैं यहजानि कै कि लक्ष्मणजी धन्य हैं किन्तु अपने को भूरिभाग्य मानिकै लक्ष्मण भरतको मिलतभये हैं ( ४५ ) तब लक्ष्मणजी ललकिकै शुत्रहन को मिलत भये बहुरिकै लक्ष्मण निषादको उरमें लगाइलीन ( ४६ ) पुनि दोउभाय भरत शत्रुहन मुनिन के दण्डवत् करतभये संपूर्ण मुनिन मनबांछित आशीर्बाद दीन तबदूनौ भाय आनन्दहोतभये ( ४७ ) भरत जी सहितशत्रुहन श्रीजानकीजी के चरणन कै रजप्रेमसंयुक्त शीशपर धरतभये ( ४८ ) तब भरतजी बारबार श्रीजानकीजीके चरणनमें परतभये श्रीजानकीजौ करकमल शीशपर परसिकै उठावती भई हैं ( ४९ ) श्रीजानकीजी अपनेमनविषे आशीर्वाद देती हैं क्योंकि वे स्नेह में मग्न हैं, उन्हें देहकी सुध-बुध नहीं है ( ५० ) भरतजू आनन्दहोतभये सबप्रकारतेभरतजीने अपने ऊपर श्रीजानकीजीको सानुकूलजाना तब विशोक होत भये मनकेअपडर बीतिगये हैं ( ५१ ) त्यहिसमाजबिषे न कोई काहू से कहत है न बूझत है काहेते प्रेमकरिकै पूर्णमन भरिरह्यो है अरु मनकी गति छूंछीह्वैरही है ( ५२ ) त्यहिअवसरविषे केवट जो श्रीरामसखाहै सो धीरजधरिकै प्रणामकरिकै सबसमाज में श्रीरघुनाथजीसे बिनय करत है ( ५३ ) दोहार्त्थ॥ हे नाथ मुनिनाथ जे वशिष्ठजी हैं तिनके साथ सम्पूर्ण अयोध्याबासी सेनासंयुक्त मंत्रीसब माता आपुके वियोगते दुःखभरे आये हैं ( ५४ ) तब सखा के बचन गुरु आगमन शीलके समुद्र श्रीराम सुनिकै श्रीजानकीजीके समीप शत्रुहनको राखतभये ( ५५ ) अरु आप श्रीरामचन्द्र त्यहि

**सानुकूललखिसीता भयबिशोकउरअपडरबीता ५१ कोउकछुकहैनकोउकछुपूंछा प्रेमभरेमननिजगतिछूंछा ५२ त्यहिअवसरकेवटधीरजधरि जोरिपाणिबिनवतप्रणामकरि ५३ दो०॥ नाथसाथमुनिनाथके मातुसकलपुरलोग सेवकसेनपसचिवसबआयेबिकलबियोग ५४ चौ०॥ शीलसिन्धुसुनिगुरुआगमनू सीयसमीपराखिरिपुदमनू ५५ चलेसबेगरामत्यहिकाला धर्म्मधुरन्धरधीरकृपाला ५६ गुरुहिदेखिसानुजअनुरागे दण्डप्रणामकरनप्रभुलागे ५७ मुनिवरधाइलियेउरलाई प्रेमउमगिभेंटेदोउभाई ५८ प्रेमपुलकिकेवटकहिनामू कीनदूरितेदण्डप्रणामू ५९ रामसखाऋषिबरबसभेंटे जनुमहिलुटतसनेहसमेटे ६० रघुपतिभक्तिसुमंगल**

समयबिषे शीघ्रही चले हैं कैसे हैं श्रीरामचन्द्र धर्म्म के धुरन्धर अरु धीर कही युद्धबिषे धैर्य्यमान् अरु कृपालु हैं ( ५६ ) तब त्यहिकाल में श्रीरामचन्द्र गुरुनको सहित अनुराग साष्टांग दण्डवत् करतभये हैं ( ५७ ) तबमुनीश धाइकै उठाइकै उरमें लगाइ लेतभये श्रीरामचन्द्रको पुनि प्रेमते उमगिकै दोऊभाइन को बारबार हृदय में लगाइलीन है ( ५८ ) तब प्रेमतेपुलकिकै निषाद आपननाम कहिकै दूरिते वशिष्ठको दण्डप्रणामकरत भयोहै जो कोईकहै कि निषाद वशिष्ठके संगहीआयो है अबक्यों दण्डप्रणामकरत है तहां यहलोक वेदहू की मर्य्याद है कि जो कोईबड़ेनकी बड़ीटहल सिद्धिकरि आवत है तब बारबार दण्डप्रणाम करत है इहां निषाद श्रीरामचन्द्र को वशिष्ठते मिलाप करावतभयो है ताते वशिष्ठजी निषादको बार बार हृदय में लगावत हैं ( ५९ ) ताते श्रीरामचन्द्र के सखा को महर्षि जोबशिष्ठ हैं त्यहिते श्रीरामचन्द्र को प्रियजानिकै बरबस कही प्रेम ते बार बार हृदय में लगाइकै भेंटते हैं जनुमहिकेबिषे स्नेहकै राशिलूटी जातीहैत्यहिको वशिष्ठजी समेटिकै आपुलैलीन है ( ६० ) जबबशिष्ठजीनिषादको मिलत हैं सो देखिकै देवता श्रीरामचन्द्र की भक्ति मंगलकी मूल त्यहिको साराहि सराहि फूलवर्षते हैं ( ६१ ) देखिये तौ निषादके समान जाति कुल क्रियामें निपटनीच कोईनहीं है अरु जगत् में वशिष्ठके समान उत्तमबड़ा कोई नहीं है ( ६२ ) दोहार्थ ॥ त्यहि निषादको लक्ष्मणहूते अधिक प्रीतिकरिकै महाराज वशिष्ठजी मिलते हैं सो सीतापतिके भजन को प्रभाव प्रताप ऐसो है ( ६३ ) तब श्रीरामचन्द्र करुणाकर सुजान के स्थान ते सबलोगनको आरत जानतेभये हैं ( ६४ ) तबज्यहिकेज्यहिको जैसी जैसी अभिलाषारही तैसी तैसी रुचिपूर्वकपूर्णकीन है ( ६५ ) तब श्रीरामचन्द्रलक्ष्मण

मूला नभसराहिसुरबर्षहिंफूला ६१ यहिसमनिपटनीचकोउनाहीं बड़वशिष्ठसमकोजगमाहीं ६२ दो०॥ ज्यहिलखिलषण-हुंतेअधिकमिलेमुदितमुनिराउ सोसीतापतिभजनकोप्रकटप्रतापप्रभाउ ६३ चौ०॥ आरतलोगरामसबजाना करुणाकरसुजानभगवाना ६४ जोज्यहिभावरहाअभिलाषी त्यहित्यहिकैतसितसिरुचिराषी ६५ सानुजमिलिपलमहँसबकाहू कीनदूरिदुखदारुणदाहू ६६ यहबड़िबातराम कैनाहीं जिमिघटकोटिएकरबिछाहीं ६७ मिलिकेवटहिउमगिअनुरागा पुरजनसकलसराहहिंभागा ६८ देखीरामदुखितमहतारी जनुसुबेलिअवलीहिममारी ६९ प्रथमरामभेंट्यउकैकेयी सरलस्वभावभक्तिमतिभेयी ७० पगपरि

सहित एकपलभरेमेंसम्पूर्ण अयोध्याबासी हाथी घोड़े नरनारिइत्यादिकसबको श्रीरघुनाथजीयथायोग्य जैसे सदादर्शनदेतेरहे मिलतरहे हैं तैसे सब कोमिलतभयेसबको दारुण दुःखमिटाइदीनहै यह श्रीरघुनाथजी की परमदिव्य अनन्त गुणशक्ति है ( ६६ ) तहां जोपलमहँ श्रीरामचन्द्र सबकोमिले तौ यह कछु बड़ी बातनहीं श्रीरामचन्द्र कैसे हैं चराचरबिषे व्याप्तकैसे हैं जैसे सूर्य्यकोटिनघटमेंव्याप्त है अपनीप्रतिछाहींकरिकै तहांप्रतिछाहीं कही अपनेरूपकरिकै तहां सूर्यरूपी हैं अरु प्रतिछाहीं रूप है तैसे श्रीरामचन्द्ररूपी हैं अरु सर्वत्रव्यापक रूप है जाको अन्तर्य्यामीसाक्षीब्रह्मकही तहां जब श्रीरामचन्द्र चाहैंतौ अपनेरूपकरिकै वे अपनोअनेक स्वरूपह्वैजाहिं हैं अरु जो चाहैं तौ अपनेस्वरूपहीते अनेक स्वरूप ह्वै जाहि हैं काहेते परब्रह्म परमेश्वर हैं अपने भक्तनकेहित हेतु अनेक लीलाकरते हैं ( ६७ ) पुनि श्रीरामचन्द्र केवट जोहैं निषाद त्यहिको अनुरागसहित मिलत भये तहां केवट को तौ कुटीकेसमीप मिलिआये हैं अब क्यों मिलते हैं जाते बशिष्ठ को मिलावत भयोहै ताते पुनिमिले यहदेखिकै सम्पूर्ण पुरजन निषाद को भाग्यसराहते हैं ( ६८ ) तब श्रीरामचन्द्र मातनको अतिदुःखित देखतभये जनु सुबेलिकही पानके बेलिकै अवलीपालाकरकै मारिगई हैं ( ६९ ) तब प्रथम श्रीरामचन्द्र कैकेयीको मिलतभये अपनी भक्तिकरिकै कैकेयी की मति को भेयदीन है ( ७० ) तब श्रीरघुनाथजी कैकेयी के पगपरिकै विधाताके माथेखोरिदैकै प्रबोधकीन ( ७१ ) दोहार्त्थ ॥ रघुवरमातन को भेंटिकैप्रबोध अरु परितोषकीन हे अम्ब काहूकर दोषनहीं है यहसबप्रपंचईश के अधीन है यहां यह अभिप्राय है कि यह सब मेरी लीला है ( ७२ ) पुनिगुरुतिय अरु विप्रनकीतिय ये संगआई हैं तिनकेपददोऊभाई बन्दतभये

कीन्हप्रबोधबहोरी कालकर्म्मविधिशिरधरिखोरी ७१ दो०॥ भेंटेरघुपतिमातुसबकरिप्रबोधपरितोष अम्बईशआधीनजगकाहुनदेईदोष ७२ चौ०॥ गुरुतियपदवन्देदोउभाई सहितबिप्रतियजेसंगआई ७३ गंगगौरिसमसबसनमानी देहिंअशीषमुदितमृदुबानी ७४ गहिपदलगेसुमित्राअंका जनुसम्पतिभेंट्यउअतिरंका ७५ पुनिजननीचरणनदोउभ्राता परेप्रेमपरिपूरणगाता ७६ अतिअनुरागअम्बउरलाये नयनसनेहसलिलअन्हवाये ७७ त्यहिअवसरकरबिरहबिषादू किमिकबिकहैमूकजिमिस्वादू ७८ मिलिजननिहिंसानुजरघुराऊ गुरुसनकह्यउकिधारियपाँऊ ७९ पुरजनपाइमुनीशनियोगू जलथलतकिउतरे सब लोगू ८० दो०॥ महिसुरमंत्रीमातुगुरुगनेलोगलियेसाथ पावनआश्रमगमनकियभरतलषणरघुनाथ ८१ चौ०॥ सीयआइमुनिवरपगलागी उचितअशीष

हैं ( ७३ ) सबको गंगगौरिके समान सन्मानकरतभये हैं ते हर्षिकै आशीर्बाद देती हैं ( ७४ ) पुनि सुमित्राके चरणगहे सुमित्राजीकैसे अंकलाइलीन जैसे अतिरंकपारसको प्राप्तिहोई है ( ७५ ) पुनि श्रीकौशल्याजीके चरणन में दोऊभाई परतभये प्रेमते परिपूर्णगात होइरहे हैं ( ७६ ) श्रीकौशल्याजी अतिअनुरागते उरमें लगाइलीन है नेत्रनकेजलके

प्रबाहतेस्नान करावतीभई ( ७७ ) त्यहिअवसरकर बिरहविषाद कबिनहीं कहिसकै हैं जैसे मूक स्वाद नहीं कहिसकैहै ( ७८ ) दोऊभाइनजननीको मिलिकै गुरुनते करजोरिकै कहा कि हेमहाराज आपकुटी को पगधारिये ( ७९ ) तहां मुनीशकीनियोगकही आज्ञापाइकै जलथल देखिकै सबलोग टिकतभये ( ८० ) दोहार्थ॥ महि सुर जे हैं सुमन्तादिकमंत्री जे हैं श्रीकौशल्यादिक माता जे हैं अरु गुरु श्रीवशिष्ठजी अरु गनेगने लोगकही मुख्यमुख्य लोग संगविषे लैकेआगे श्रीरघुनाथ जी लक्ष्मण भरत सहित पावन आश्रम जोकुटी है तहां को गमनंकरतभये हैं ( ८१ ) तब श्रीजानकीजी वशिष्ठ के पांयपरतभई मुनिमनबांछित आशीर्बाद देतभये ( ८२ ) गुरुपत्नी जो हैं अरु मुनिनकीस्त्री जे हैं तिन के सहित अतिप्रेम समेत मिलतभई हैं ( ८३ ) श्रीजानकीजी सब मुनिन के पत्निन के पगलागिलागि आशीर्वाद लेती हैं श्रीरघुनाथजी के आनन्दहेतु ( ८४ ) तब सब सासु श्रीजानकीजी की दशा देखतभई तबसुकमारिजानिकै सहमिकही ड़रिगई हैं कि श्रीजानकीजी बनकेदुःखकैसे सहहिंगी ( ८५ ) देखिये तौ तैसे बधिकके बशमरालीपरै है इहां कैकेयी बधिकहै तहां रानी कहती है कि कर्त्तार की कुचालि पर कछु काहूकी बसाइ

**लहीमनमांगी ८२ गुरुपत्नीमुनितियनसमेता मिलीप्रेमकहिजातनजेता ८३ बन्दिबन्दिपगसियसबहीके आशिर्व्वचनलही प्रियजीके ८४ सासुसकलजबसीयनिहारी मूंद्यउनयनसहमिसुकुमारी ८५ परीबधिकबशमनहुंमराली काहकीनकरतारकुचाली ८६ तिनसियनिरखिनिपटदुखपावा सोसबसहियजोदैवसहावा ८७ जनकसुतातबउरधरिधीरा नीलनलिनलोचनभरिनीरा ८८ मिलीसकलसासुनसियजाई त्यहिअवसरकरुणामहिछाई ८९ दो०॥ लागिलागिपगसबहिंसियभेंटतिअतिअनुराग हृदयअशी षहिंप्रेमबशरहिहुभरीसोहाग ९० चौ०॥ बिकलसनेहशिथिलसबरानी बैठनसबहिंकह्योमुनिज्ञानी ९१ कहि जगगतिमायकमुनिनाथा कह्यउकछुकपरमारथगाथा ९२ नृपकरसुरपुरगवनसोहावा सुनिरघुनाथदुसहदुखपावा ९३ मरणहेतुनिजुनेहबिचारी**

नहीं है ( ८६ ) तिनरनिवासन श्रीजानकीजी को देखिकै निपट दुःखकोप्राप्तभई हैं यह कहती हैं कि जो दैवसहावत है सो सहहिंगे किंतु दोइ चौपाई के अर्थ में श्रीजानकीजी सासुनकोदेखिकै दुखितभई हैं अरु अंतकीएक चौपाई में कौशल्यादिक रानी श्रीजानकीजीको देखिकै दुखितभई हैं ( ८७ ) तब श्रीजानकीजी धीरजधरतभई नेत्रनमें जलभरिआये हैं ( ८८ ) श्रीजानकीजी सबसासुनको मिलतभई हैं त्यहिसमयविषे करुणामहिमें छाइरही है ( ८९ ) दोहार्त्थ॥ तब श्रीजानकीजी सबसासुनके पृथक्पृथक्पगलागती भईहैं ते सब आर्शीर्वाद देती हैं कि तुमसदा सोहागभरी रहहुगी ( ९० ) सबरानिनको स्नेहते विकल श्रीवशिष्ठ जी देखिकै आज्ञादेतभये कि बैठहु ( ९१ ) तब मुनिजो श्रीवशिष्ठ हैं ते माया प्रपंच की गति सबसभाविषे कहतभये पुनि कछु परमार्थकीगति कहतभये हैं ( ९२ ) पुनिराजाकर सुरपुरगवन सुनावतेभये हैं सो सुनिकै श्रीरघुनाथजी को दुसह दुख होतभयो है ( ९३ ) राजाकर मरण अपने स्नेहहेतु विचारिकै श्रीरामचन्द्र धर्म्मकेधुरन्धर सबके क्लेश के हरैया ते विकल होतभये हैं यहनाट्य लीला है ( ९४ ) राजाकर सुरपुरगमन कुलिशहुते कठोर अतिकटुवाणीसुनतसन्ते लक्ष्मणजी श्रीजानकीजी सम्पूर्ण रानी इत्यादिक सबसभा विलापकरते भये हैं विलापकही रोदनकरतभये ( ९५ ) सबसमाज शोक ते बिकलहोतभयो मानहुं राजाकर मरण आजुही भयो है ( ९६ ) वशिष्ठजी श्रीरामचन्द्र को समुझाइकै सुरसरि जो श्रीमन्दाकिनी हैं तहां सहितसमाज स्नान करतभये ( ९७ ) त्यहिदिन श्रीरघुनाथजी मुनीशादिक सब ही निर्मलव्रत करतभये ( ९८ ) दोहार्थ॥ भोरभये ते जो मुनीश आज्ञाकीन्ह सो श्रद्धाभक्ति समेत श्रीरघुनाथजी करतभये ( ९९ ) जस वेद

भयेअतिबिकलधीरधुरिधारी ९४ कुलिशकठोरसुनतकटुबानी बिलपतलषणसीयअरुरानी ९५ शोकबिकलअतिसकलसमाजू मानहुंराजअकाज्यउआजू ९६ मुनिवरबहुरिरामसमुझाये युतसमाजसुरसरितनहाये ९७ व्रतनिरम्बुत्यहिदिनप्रभुकीन्हा मुनिहुंकाहुजलपाननकीन्हा ९८ दो०॥ भोरभयेरघुनन्दनहिंजोमुनिआयसुदीन्ह श्रद्धाभक्तिसमेतप्रभुसोसबसादरकीन्ह ९९ चौ० ॥ करिपितुक्रियावेदजसबरणी भयेपुनीतपातकतमतरणी १०० जासुनामपावकअघतूला सुमिरतसकलसुमंगलमूला १०१ शुद्धसो

वर्णतहैं तसपिताके क्रियाकीन्ह सम्पूर्ण पाप तम त्यहिके नाशकर्ता सूर्यरूप श्रीरामचन्द्र ते लोकरीति करिकै पवित्र होतभये ( १०० ) जिन श्रीरामचन्द्र कर नाम अग्निरूप अघतूल को भस्मकर्ता अरु ज्यहिनामकेसुमिरेते तुरन्त मंगलमूलहोत है ( १०१ ) यह साधुनकर सम्मत है कि श्रीरामचन्द्र जे कर्मकीन्ह है ते सब शुद्ध परमदिव्य होतभये हैं जैसे सुरसरी विषे अपर तीर्थ को आवाहनहोइ तौ सब तीर्थ सुरसरिके समान ह्वइजाते हैं इहां यह अभिप्राय है कि जो साधु शुभकर्मकाण्ड करते हैं सो साधुन के सम्बन्ध ते वहकर्म परमशुद्ध ज्ञानभक्तिरूपह्वइजाते हैं अथवा लोकरीतिकरिकै श्रीरामचन्द्र शुद्धहोतभये यहभी साधुसम्मत सामान्य है जैसे तीर्थनविषे सुरसरी कर आवाहनकरिये अरु जो यहअर्थ करते हैं कि श्रीरामचन्द शुद्धभये हैं जैसे तीर्थन के आवाहन किहेते सुरसरी शुद्धहोइ सो यहअर्थ कछु नहीं है काहेते जो सुरसरी में तीर्थनको आवाहन करी तौ तीर्थै शुद्धहोहिंगे अरु जो तीर्थनविषे सुरसरी को आवाहनकरियेतौ तीर्थहि शुद्धहोहिंगे ताते प्रथम अर्थ सिद्ध है ( १०२ ) दुइबासर बीते जौनी रीति से पाछे कहि आये हैं तब श्रीरामचन्द्र गुरुनसन प्रीतिसमेत बोलतेभये हैं ( १०३ ) श्रीरामचन्द्र मुनीशते बोले कि हे नाथ सब लोग कन्दमूल अम्बुकही जलअहार करत अति दुःखसहते हैं ( १०४ ) हे नाथ अनुजसंयुक्त भरत अरु मंत्री अरु सम्पूर्ण माता इत्यादिक सब कर दुखदेखिकै मोको एकपल युगसम जात है ( १०५ ) ताते सबसमाज समेत पुरकोपाउं धारिये काहेते आपु इहांहौ अरु राजा स्वर्ग विषे हैं ताते मोको शोच है ( १०६ ) मैं ढिठाई करिकै आपुसे बहुत कहा है हे गोसाईं अब जस उचितहोइ तस कहिये ( १०७ ) दोहार्त्थ॥

भयउसाधुसम्मतअस तीरथआवाहनसुरसरिजस १०२ शुद्धभयेदुइबासरबीते बोलेगुरुसनरामसप्रीते १०३ नाथलोगसबनिपटदुखारी कन्दमूलफलअम्बुअहारी १०४ सानुजभरतसचिवसबमाता देखिमोहिंपलयुगसमजाता १०५ सबसमेतपुरधारियपाऊ आपुइहाँअमरावतिराऊ १०६ बहुतकह्यउंसबकियउंढिठाई अबजोउचितसोकरियगोसाई १०७ दो० ॥ धर्म्मसेतुकरुणायतनकसनकहौअसराम लोगदुखितदिनदुइदरशदेखिलहैंबिश्राम १०८ चौ०॥ रामवचनसुनिसकलसमाजू जनुजलनिधिमहँविकलजहाजू १०९ सुनिगुरुगिरासुमंगलमूला भयोमनहुंमारुतअनुकूला ११० पावनपयतिहुंकालनहाहीं जोविलोकिअघओघनशाहीं १११ मंगलमूरतिलोचनभरिभरि निरखहिंहरषिदण्डवतकरिकरि ११२ रामशैलबनदेखनजाहीं जहँसुखसकलसकलदुखनाहीं ११३ झरना

तब श्रीवशिष्ठजी बोले हे श्रीरामचन्द्र तुम धर्म के सेतुहौ अरु करुणाकेस्थानहौ ताते अस कस न कहौ आपुके दर्शनकी लालसा दुइचारिदिन सबकी है ( १०८ ) श्रीरामचन्द्रके बचनसुनिकै सबलोग बिकलहोतभये जैसे जलनिधिबिषे काहूसंयोगते जहाजकेलोगबिकल होतभये हैं यहसमुझिकै कि श्रीरामचन्द्र नहींफिरैंगे ( १०९ ) अरु गुरुन के बचनसुमंगलमूल सुनतेभये जनु जहाज के बूड़तसन्ते अनुकूल पवन सहाय करतभयो है ( ११० ) वशिष्ठ के बचन श्रीरामचन्द्र मानिलीन है ते सब अयोध्याबासी पावन जेपयस्वनीहैं त्यहि में त्रिकालस्नानकरते हैं ( १११ ) अरु मंगलमूर्ति श्रीरामचन्द्र तिनके दर्शन नेत्र भरिभरि अरु दण्डवत् करते हैं हर्षित आनन्द भरते हैं ( ११२ ) अरु

श्रीरामचन्द्र कर शैलजो श्री कामदाजी त्यहिको दिनप्रति देखनकोजाते हैं जहां सबसुखपूर्ण है दुखकै नास्तिहै ( ११३ ) अरुझरना झरते हैं सुधा सुखमय जल शोभित है अरु शीतल मंद सुगंध पवनबहते हैं तीनिहूं तापको हरते हैं ( ११४ ) श्री चित्रकूट कैसो है जहां बिटप बेलि तृण अगणित जाति जाति के पल्लव फूल फल सुगन्ध रस करिकै शोभित है ( ११५ ) सुन्दर शिला हैं अरु सुखद तरुकी छाया सो बर्णिबे योग्य नहीं है ( ११६ ) दोहार्थ ॥ अरु सरन अरु नदिन बिषे कमल फूलिरहे हैं तिनपर भ्रमरनकी अवली गुंजारकरती हैं अरु हंसइत्यादिक बिहंग बोलते हैं अरु बिपिन बिषे अनेक रंग रंगके मृग बिहंग निर्बैर बिचरते हैं ( ११७ ) कोलकिरात भीलजे बनबासी हैं ते सबकंदमूल फलदल अंकुर इत्यादिक अति सुन्दर मधुर सुधासरिस ( ११८ )

झरहिंसुधासमबारी त्रिबिधतापहरत्रिबिधबयारी ११४ बिटपबेलितृणअगणितजाती फलप्रसूनपल्लवसबभांती ११५ सुन्दरशिलासुखदतरुछाहीं जाइबरणिबनछबिकेहिपाहीं ११६ दो०॥ सरनसरोरुहजलविहंग कुंजतगुंजतभृंग बैरविगतबिहरतविपिन मृगविहंगबहुरंग ११७ चौ०॥ कोलकिरातभीलबनबासी मधुशुचिसुन्दरस्वादसुधासी ११८ भरिभरिपर्णकुटीरुचिरूरीकन्दमूलफलअंकुरजूरी ११९ सबहिदेहिंकरिबिनयप्रणामा कहिकहिस्वादभेदगुणनामा १२० देहिंलोगबहुमोलनलेहीं फेरतरामदोहाईदेहीं १२१ कहहिंसनेहमगनमृदुबानी मानतसाधुप्रेमपहिंचानी १२२ तुमसुकतीहमनीचनिषादा पावादरशनरामप्रसादा १२३ हमहिंअगमअतिदरशतुम्हाराजसमनुधरणिदेवसरिधारा १२४ रामकृपालुनिषादनेवाजापरिजनप्रजाचहियजसराजा १२५ दो०॥ यहजिय

भरिभरि पर्णपुटी रुचिरूरी पातनकेपुटीकही दोना सुन्दर बनाइ बनाइजूरी कही जुटाइकै त्यहि बिषेकन्दमूलफल अंकुर इत्यादिकभरि ( ११९ ) ते सब अयोध्यावासिनके विनय प्रणामकरिकै स्वाद गुण नाम कहि कहिदेते हैं ( १२० ) अयोध्यावासी तिनफल फूल कंद कर मोलदेते हैं कोल भिल्ल नहींलेते हैं कि अपना फेरिलेहु तबवे श्रीरामचन्द्र कै दोहाई देतेहैं कि हमनहीं लेइंगे ( १२१ ) तब कोलभिल्ल स्नेहसमेत मृदुवचन कहते हैं कि तुम हमको नीच जानिकै नहीं लेते हौ अरु साधुतौ प्रेमपहिंचानिकै रीझते हैं ( १२२ ) यह कहते हैं कि तुम तौ अयोध्याबासी सुकृतीहौ साधुहौ अरु हम बर्ण बाह्य नीच निषाद हैं आपके दर्शन श्रीरामचन्द्रकेप्रसादते पावा है नतु तुम्हार दरश हमको दुर्लभ है ( १२३ ) तुम्हार दरश हमको अगम है जैसे मारवाड़ की भूमिविषे श्रीगंगाजीकी धारा दुर्लभ है ( १२४ ) हमसबनिषादनको श्रीरामचन्द्र कृपाकरिकै न्यवाजब कही तुम्हारी सेवालायक कीन्ह है नतु श्रीचित्रकूटमें राजा श्रीरामचन्द्र अरुमहिअस प्रजाचाहीकिन्तु श्रीरामचन्द्र महाराज के प्रजातुम जैसे श्रीरामचन्द्र हमको अपनावा तैसे तुमहूं अपनावहु कन्दमूल फललेहु ( १२५ ) दोहार्त्थ॥ यह अपनेजीव में जानिकै संकोच तजिकै हमारेकृतार्थ हेतु हमारो प्रेमलखिकै कन्दमूल फल तृणादिक अंगीकारकरहु ( १२६ ) प्रेमतेकोलभिल्ल कहते हैं कि तुम ऐसे प्रियपाहुन हमारे इहां पगुधारेसे आपकी सेवायोग्य हमारी भाग्य नहीं है ( १२७ ) हे गोसाईं हम तुमकाकादेबेयोग्य हैं हमारी किरातनकी मित्रता लकड़ी पत्ता है ( १२८ ) यह हमारि

जानिसकोचतजिकरियछोहलखिनेहुहमहिंकृतारथकरनलगिफलतृणअंकुरलेहु १२६ चौ०॥ तुमप्रियपाहुनबनपगधारे सेवायोगनभाग्यहमारे १२७ देबकहाहमतुमहिंगोसाई ईंधनपातकिरातमिताई १२८ यहहमारिअतिबड़िसेवकाई लेहिंनबासनबसनचोराई १२९ हमजड़जीवजीवगणघाती कुटिलकुचालिकुमतिकुलजाती १३० पापकरतनिशिबासरजाहीं नहिंकटिपटनहिंपेटअघाहीं १३१ सपन्यहुधर्म्मबुद्धिकसिकाऊ

यहरघुनन्दनदरशप्रभाऊ १३२ जबतेप्रभुपदपद्मनिहारे मिटेउदुसहदुखदोषहमारे १३३ वचनसुनतपुरजनअनुरागे तिनकेभाग्यसराहनलागे १३४ छं०॥ लागेसराहनभाग्यसबअनुरागबचनसुनावहीं बोलनिमिलनिसियरामचरण

बड़ी सेवकाई जो आपुके बासन बसन चोराय न लेब सोई बड़ीबात है ( १२९ ) हमजो हैं अहर्निश जीवबध करते हैं अरुसब प्रकारते कुटिल हैं अरु हमारिमलीन चालुहै अरु मलीन कुल मलीन जाति ऐसे हमजड़ हैं ( १३० ) अरु रातिदिन पापकरत बीतत है ताते न कटिविषे पट अरु न कबहूं पेटभरि भोजनमिलै है ( १३१ ) हमारीबुद्धिधर्म्मविषे स्वप्नेहुनहींजाइ यह तौ श्री रघुनन्दन के दर्शनकरप्रभाव है ( १३२ ) जबते श्रीरामचन्द्र के पदपद्महम देखे हैं तबते दुसहदुखदोष अवगुणसब मिटिगये हैं ( १३३ ) कोलभिल्लनकैवाणीसुनिकै अयोध्यावासिन के अति अनुराग होतभयो है तिनके भाग्यको सराहते हैं ( १३४ ) छन्दार्थ॥ अयोध्यावासी तिनके भाग्य को सराहते हैं अनुरागवचन कहिकहि कोल किरातनके बचन मिलापमय अरु श्रीसीतारामचन्द्रके चरणारविन्दविषे अनुरागमयबचनसुनिसुनि सुखपावते हैं ( १३५ ) अयोध्यावासी जे नरनारि हैं ते सब कोलभिल्लन की बाणी सुनिकै श्रीरामचन्द्रविषे अपने स्नेहकै निन्दाकरते हैं गोसाईंतुलसीदास कहते हैं देखियेतौ लोहनाउको ग्रहणकरिकै जल मेंतिरत है तैसे कोलभिल्लके दरशपरशकृपाते कृतार्थभये हैं संसारतरिगये हैं ( १३६ ) सोरठार्थ ॥ श्रीअयोध्यावासी श्रीचित्रकूटबनविषे चहुंओरबिचरत हैं आनन्दसंयुक्त जैसेजलविषे दादुरप्रथमवर्षापावसको पाइकै अरु मोरघनकोपाइकै आनन्दितहोते हैं ( १३७ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने श्रीअयोध्याकाण्डे श्रीरघुनाथवशिष्ठसम्बादे पुरबासीवनविरहबर्णनंनामपंचदशस्तंरगः १५॥

सनेहलखिसुखपावहीं १३५ नरनारिनिदरिहिंनेहनिजसुनिकोलभिल्लनकीगिरा तुलसीकृपारघुबंशमणिकी लोहलैनौकातिरा १३६ सो०॥ बिहरहिंबनचहुंओरप्रतिदिनप्रमुदितलोगसब जलजिमिदादुरमोरभयेपीनपावसप्रथम १३७॥

चौ०॥ पुरनरनारिमगनअतिप्रीती बासरजाहिंपलकसमबीती १ सीयसासुप्रतिबेषबनाई सादरकरहिंसरिससेवकाई २ लखानमर्म्मरामबिनकाहू मायासबसियमायामाहू ३ सीयसासुसेवाबशकीन्ही तिनलखिसुखशिषआशिषदीन्ही ४ लखिसियसहितसरलदोउभाई कुटिलरानिपछितानिअघाई ५ अवनिजमहियाचतिकैकेयी म्वहिंनबीचविधिमीचनदेयी ६ लोकहुवेदविदित

दोहा॥ रामचरणपुरलोगसुख षोड़शसुभगतरंग ॥ सीयसासुसेवानिपुण पुनिसदसभाप्रसंग १६ हे पार्वती पुरकेनरनारि श्रीरामचन्द्र विषे अतिप्रीतिते आनंदहैं शिशिबासर पलकके समानबीतत है ( १ ) श्रीजानकीजीकी जेतनीसासु हैं तेतने स्वरूपकरिकै सबसासुनकै एकरस सेवाकरतीहैं ( २ ) श्रीजानकीजी जेतनेस्वरूप करिकै सासुनकी सेवाकरत भई यहमर्म एक श्रीरामचन्द्र जानते हैं अपरकोई नहीं जानिसकै काहेते संपूर्ण माया श्रीजानकीजीकी है अरु त्यहिमायाकेबश सबजगत् है माहू कही मायाविषे सबजीव हैं ताते यह मर्म कैसे जानिसकै हैं ( ३ ) श्रीजानकीजी सबसासुनको सेवाके बशकीन है ते सासुसुखको प्राप्ति ह्वैकैसिखापन आशीर्बाद देतभई हैं ( ४ ) श्रीजानकीजीसहित दूनोंभाइनकर सरलस्वभावदेखिकै कुटिलरानी जो कैकेयीहै सो अघाइकै पछितातिहै ( ५ ) अबनिजकही अपुना से कैकेयीमहिते याचती है कि हे विधाता महि मोको बीचदेइ बीचकही फाटिजाइ मैं समायजाउँ मेरीमीच ह्वैजाइऐसी ग्लानि कैकेयी करति है ( ६ ) कविजन यह कहते हैं कि यह लोकहुवेद में विदित है कि रामचन्द्र से जेजे विमुख हैं ते नरकथलकही स्थिरताकोनहींप्राप्तहोते हैं ( ७ ) यहसंशय सबकेमनबिषे है हे विधाताश्रीरामचन्द्र फिरहिंगे कि नहीं ( ८ ) दोहार्थ ॥ अरुइहै सन्देहभरतके हृदयमें है न तौ रात्री को नींदपरै अरुत्यहिकीचके बीचबिषे मीनदबिरह्यो है कछुगति नहीं चलै है तैसे भरत के दशाभई है ( ९ ) भरतजू शोचकरते हैं देखिये तौ

माताकेमिसुकरिकै यहकुचाल काल की कर्तब्य है त्यहिविषे मेरे अभाग्यको संयोगहै जैसे शालिपाकतसंते ईतिभीति करिकै विघ्नहोत हैं तैसे होतभयो है ( १० ) अब श्रीरामचन्द्र कर राज्याभिषेक कैसे होइ यह उपाय मोकोएकौ

कविकहहीं रामबिमुखथलनरकनलहहीं ७ यहसंशयसबकेमनमाहीं रामगवनविधिअवधकिनाहीं ८ दो०॥ निशिननींदनहिं भूंखदिनभरतबिकलसुठिशोच नीचकीचबिचमगनजसमीनहिंसलिसलसकोच ९ चौ०॥ कीन्हमातुमिसुकालकुचाली ईतिभीतिजसपाकतशाली १० क्यहिविधिहोइरामअभिषेकू म्वहिंअनुभवतउपायनएकू ११ अवशिफिरहिंगुरुआयसुमानी मुनिपुनिकहबरामरुखजानी १२ मातुकहेबहुरहिंरघुराऊ रामजननिहठकरहिंनकाऊ १३ म्वहिंअनुचरकैकेतिकबाता त्यहिमहँकुसमयबामविधाता १४ जो हठकरौंतौनिपटकुकर्म्मू हरगिरितेगुरुसेवकधर्म्मू १५ एकौयुक्तिनमनठहरानीशोचतभरतहिंरैनिबिहानी १६ प्रातनहाइप्रभुहि

नहीं सूझिपरै है ( ११ ) यह भरतजी अपनेमन में विचार करते हैं कि श्रीरामचन्द्र गुरुन की आज्ञाते विशेषफिरहिं पर गुरु श्रीरामचन्द्र कर रुख पाइकै कहहिंगे करैंगे अरु कछुनहीं करैंगे ( १२ ) अरु माताके कहेमेंश्रीरामचन्द्र फिरहिंगे पर श्रीरामचन्द्रकै जननी विशेष हठनहीं करैंगी ( १३ ) अरु म्वहिंअनुचरकै केतिकबात है जो मैं श्रीरामचन्द्र को फेरौंअरु त्यहिपरकुसमय है बिधाताबाम है ( १४ ) अरु जो स्वामीते हठकरौं तौ निपटकुकर्म्म होत है काहेते कि गुरु शिष्यको जो धर्म्म है सो हरकहीमहादेव कर गिरिजो है कैलासश्वेत है श्वेत में स्याहीलागै तौ अशोभित है तैसे सेवककरधर्म है ( १५ ) हेपार्वती श्रीरामचन्द्रके फिरबेको भरतजी अपनेमनविषे अनेक बिचारकीन है पर एकौयुक्ति मनमें नहींठहरानीहै शोचकरत रात्रीबीतति भई ( १६ ) तब प्रातउठिकै श्रीमन्दाकिनीमें स्नानकरिकै श्रीरामचन्द्रके नमस्कार करत भये तेहिसमयविषे रघुनाथजीकी आज्ञा ते बैठतसंते वशिष्टजी भरत को बोलाइपठयो है ( १७ ) दोहार्थ ॥ तब भरतजी गुरुन के पदकमल में प्रणाम करिकै आज्ञापाइकै बैठतभये हैं त्यहिसमय विषे महाजनजे हैं ते आवत भये सद्सभाहोतभई है ( १८ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने श्रीअयोध्याकाण्डे श्रीभरत बिषाद बिचार वर्णनंनामषष्टदशस्तरंगः १६ ॥

दोहा ॥ दशअरु साततरंग में भरतगुरूसंबाद ॥ रामचरणसबसदसभा मिश्रितहर्षबिषाद ( १७ ) तब समय के समान श्रीवशिष्ठजी बोलते भये हेसदसभाके लोगहु हेभरतसुजान सुनहु ( १ ) श्रीरामचन्द्र धुरीकेधरैया हैं अरु सूर्यबंश के प्रकाशकर्त्ता हैं अरु श्रीरामचन्द्र स्ववशभगवान् राजतिलक अबहीं तौ नहीं भयो श्रीवशिष्ठने राजाक्यों कहा है तहां श्रीरामचन्द्र स्वयंभगवान् राजाहैं अनादि ब्रह्माविष्णु महेश के राजा हैं ऐसे

शिरनाई बैठतपठयेऋषैबोलाई १७ दो०॥ गुरुपदकमलप्रणामकरिबैठेआयसुपाइ विप्रमहाजनसचिवसबजुरेसभासदआइ १८॥

चौ०॥ बोलेमुनिवरसमयसमाना सुनहुसभासदभरतसुजाना १ धर्म्मधुरीणभानुकुलभानू राजारामस्वबशभगवानू २ सत्यसन्धपालकश्रुतिसेतूरामजन्म जगमङ्गलहेतू ३ गुरुपितुमातुवचनअनुसारी खलदलदलनदेवहितकारी ४ नीतिप्रीतिपरमारथस्वारथ कोउन

भगवान् श्रीरामचन्द्र हैं भगवान्कही शषट्भाग पूर्णसंयुक्त ऐश्वर्य धर्म यशश्री वैराग्य मोक्ष येषट्भाग श्रीरामचन्द्रके चरणसेवनकरते हैं षट्कौनरूपह्वैकै ( प्रमाणंमहारामायणेश्लोकएक ) ऐश्वर्येन चधर्मेन यशसाच श्रीयैवचवैराग्यं मोक्षषट्कोणैस्संजातोभगवान्हरिः ( १ ) पुनिषट्भाग अपरग्रंथकोमत है संपूर्ण विश्वकर पोषण भरत आधार अरु सर्बशरण्यत्व सर्व व्यापकत्व अरुकार्पण्ययहषट्भागकरिकै श्रीरामचन्द्रपूर्ण हैं तातेवशिष्ठजू स्ववशभगवान् कहा है ( प्रमाणमन्यच्च ) श्लोक॥ पोषणंभरणाधारं

शरण्यंसर्वव्यापकं कारुण्यषड्भिःपूर्णः रामस्तुभगवान्स्वयं ( १ ) आगे स्ववशभगवान्कोअर्थ वशिष्ठजू कहते हैं ( २ ) अरु सत्य संधकहीसत्यसंकल्प के समुद्र हैं अरु श्रुतिसेतुकेपालकहैं श्रीरामचन्द्रकर जन्मसंपूर्णजगत् के मंगलहेतु है केवलहमारेतुम्हारे हेतुनहीं है इहांयहअभिप्राय है कि श्रीरामचन्द्रपरब्रह्म हैं तिनते जीवन को कछुउपायनहींचलै है तहां का कर्तब्य है ( ३ ) अरु श्रीरामचन्द्र मर्यादापुरुषोत्तम हैं गुरुमातुपिताकेबचनानुसारी हैं तात्पर्य कि दशरथ महाराज अरुकैकेयीकेवचनकोनत्यागिसकैंगे अरु खलनकेदलकही समूह केदलनकही नाशकर्ता अरु देवतन के हितकर्ता ( ४ ) अरु सर्बनीति अरु सर्बजीवनविषेप्रीति अरु स्वार्थपरमार्थ इनकर यथार्थवेत्ता एक श्रीरामचन्द्र हैं अपर यथार्थवेत्ता कोई नहीं है ताते श्रीरामचन्द्र से कोई का कहैगो ( ५ ) पुनिसुनहु विधिहरिहरजे हैं अरु रवि शशि अरु अष्टदिग्पाल बरुण पवन कुवेर ईश इन्द्र अग्नि धर्मराज नैऋति जेहैं अरु त्रैगुण्यमाया जोहै अरुसंपूर्णजीवजे हैं अरु त्रैगुण्यजनितकर्मजे हैं अरु कुलिकही संपूर्ण काल जेहैं पल दण्ड पहर दिन मास बर्ष युग कल्प महाकल्प यहसबकोकालकही ( ६ ) अरु अहिपजेशेष हैं अरु महिपजेराजा हैं इत्यादिक अनेकब्रह्मांड मंडलविषे जेतीचिदाचित् विभूति है अरु अष्टांगयोगजोहै अरु आठदशपांच तेईसिद्धि जेहैं इत्यादिक जहांलगि निगमागमगावते हैं ( ७ ) श्री वशिष्ठजी कहते हैं कि जो हमपाछेकहिआये हैं ब्रह्मांड के जीव ईश्वर कोटिजेते हैं तिनसबके शीशपर श्रीरामचन्द्र कै रजाय है श्रीरामआज्ञा सब

**रामसमजानयथारथ ५ बिधिहरिहरशशिरबिदिशिपाला मायाजीवकर्म्मकुलिकाला ६ अहिपमहिपजहँलगिप्रभुताई योगसिद्धनिगमागमगाई ७ करिबिचारजियदेखहुनीके रामरजायशीशसबहीके ८ दो०॥ राखेरामरजायरुखहमसबकरहितहोइ समुझिसयानेकरहुअबसबमिलिसम्मतसोइ ९ चौ०॥ सबकहँसुखदरामअभिषेकू मंगलमूलमोदमगएकू १० क्यहिबिधिअवधचलहिंरघुराऊ कहौसमुझिसोकरियउपाऊ ११ सबसादरसुनिमुनिवरबानी नयपरमारथस्वारथसानी १२ उतरनआवलोगभयेभोरे तब**

करते हैं ( ८ ) दोहार्त्थ ॥ त्यहिब्रह्मांडकोश में हमहूं हैं ताते रामरजायराखेते हमारसबकरभला है यह हमको समुझिपरतहै अब तुमसभाविषे सयानेहहु जो सबकरसम्मतहोइ सो करिबेमें आवै ( ९ ) अरु श्रीरामचन्द्रकर राज्याभिषेक ब्रह्मांडभरे के जीवनको परमसुख दाता है यहहम निश्चय जानते हैं पर श्रीरामचन्द्र कर राज्याभिषेक कैसेहोइ यह उपायहमारे मनविषे एकौनहीं ठहरतो है सो सबमिलिकै बिचारिकैकहौ काकरी देखियेतौ श्रीरामरजाय सबके माथेपरकहा है अरु यह भी कहतेहैं कि रामराज्यकैसेहोइ इहां सबके ज्ञानकी परीक्षालेते हैं ( १० ) श्रीरामचन्द्र अयोध्या को कैसे फिरहिं सो उपाय बतावहु ( ११ ) संपूर्ण सभा मुनिवरकै बाणी सुनतभये नयकही नीतिमय परमार्थमय स्वार्थमय ( १२ ) जो वशिष्ठजी कहाकै राजनीति मयबाणी सेवक सवामीकै नीतिबाणी वेदशास्त्र करिकै जेती नीति है त्यहिमयबाणी अरु वैराग्य ज्ञान विज्ञान ध्यान समाधि भक्तिमयबाणी अरु स्वार्थ अर्थ धर्म्म काममय श्रीवशिष्ठकै बाणी सबसभा सुनिकै उत्तरकोई नहीं दैसकै है सबलोग भोरे हैगये हैं तब उठिकै शिरनाइकै भरतजी करजोरिकै बोलतेभये हैं ( १३ ) हेमहामुनीश भानुवंशविषे राजाबहुत एकते एक बड़ेसमर्थ भये हैं ( १४ ) परसबके जन्मकर हेतु माता पिताहैं अरु शुभाशुभ कर्म्मकर फलदाता विधाता है ( १५ ) परतहां भानुवंश के राजनविषे जो विधाता अशुभलिखा है सो अशुभके अंकमिटिगये हैं आपके आशीर्बादते सोउलटिकै कल्याणमय अक्षरसजिगये हैं यहबात वेदशास्त्रपुराणनमें प्रसिद्ध है ( १६ ) हेगोसाईं तुम विद्यमान जिनविधाताके अंककीगतिको छेकिदीन है अपने आशीर्वादके प्रतापतेसो आपु जोटेकटेकाहै सो कोईटारिसकैहै नहींकाहूके टारिबेयोग्यनहीं है तहां जो प्रथम वशिष्ठजीकहाहै कि रामरजायते हमारोसबकरभला है सोई भरतजीसिद्धांतकीनहै ( १७ ) दोहार्त्थ॥ पुनि भरतजी कहते हैं कि आपु

शिरनाइभरतकरजोरे १३ भानुबंशभयेभूपघनेरेअधिकएकतेएकबड़ेरे १४ जन्महेतुसबकरपितुमाताकर्म्मशुभाशुभदेइबिधाता १५ दलिदुखसजैसकलकल्याना असिअशीषराउरिजगजाना १६ सोगोसाइँबिधिगतिजेहिछेकी सकैकोटारिटेकजोटेकी १७ दो०॥ बूझियमोहिंउपायअब सोसबमोरअभाग सुनिसनेहमयबचनगुरुउरउपजाअनुराग १८ चौ० ॥ तातबातफुरिरामकृपाहीं रामबिमुखसुखसपनेहुनाहीं १९ सकुचौंतातकहतयकबाता अर्द्धतजहिंबुधसर्ब्बसजाता २० तुमकाननगवनहुदोउभाई फेरियलषण

ऐसेत्रिकालदर्शी ते मोसे उपाय बूझते हौ सो सबमोर अभाग्य है यह भरतकेस्नेहमय बचन सुनिकै गुरुनके अतिअनुरागहोत भयो है ( १८ ) तब वशिष्ठजी कहते हैं हे तात जो हम अपने आर्शीर्वादते विधाता के अंकछेकिदेते हैं तौ केवल श्रीरामचन्द्र की कृपाते अरु श्रीरामचन्द्र ते विमुख स्वप्नेहुंसुखकहूं काहूको नाहीं है ( १९ ) इहां वशिष्ठजू अपने मनमें यह बिचारकरते हैं कि हमजो रामरजाय सिद्धांत कियो है सोई भरतजूकहा है तहां हमारेवोध हेतु भरतजू कहा है कि धौं इहै इनहूंको सत्य सिद्धांत है कि धौं भरत के कछु औरि बासना तो नहीं है यह विचारिकै भरत के अंतष्करणकर अभिप्राय लिया चाहते हैं कछु युक्तिकै बाणी कहिकै तहां जोकोईकहै कि वशिष्ठ तौ त्रिकालज्ञ हैं सबके हृदय की जानते हैं तहां जो बातहोनेकी नहीं है सो आगे वशिष्ठजू क्यों कहते हैं तहां जे त्रिकालदर्शी पुरुष हैं ते त्रैगुण्यजनित जो सृष्टि है तेहिके त्रिकालदर्शी हैं भूत भविष्य वर्त्तमान सबजानते हैं पर भगवत् भगवत के त्रिकालदर्शीनहीं हैं काहेते सबप्रकारते भगवत् भागवत गुणातीत हैं भगवत् की गति भागवतजानै है अरु भागवतकी गति भगवत् जानैहै अरु भरतजी भक्तशिरोमणि हैं तिनकी कोई नहीं जानिसकै है तहां वशिष्ठ जू कहते हैं हे तात भरतजी मैं एकबात कहतकै संकोचपावत हौं परबिना कहेते नाहींबनैहै काहेते बुधकही पण्डित बिबेकी जनजे हैं ते सर्वसजातसंते आधा मिलै तौ आधेको त्यागकरिकै संतोषकरते हैं हमारे बचन में आगेइहै सिद्धांत है ( २० ) श्रीवशिष्ठजी कहते हैं कि यहिबात में देवतन मुनिनकर काज तौ संपूर्ण होत है अरु हमाराकार्य आधाहोत है सोसुनहु हेभरतजीतुम दोनों भाई बनगवन करिकै कार्य्यकरहु अरु श्रीरामचन्द्र श्रीजानकीजी लक्ष्मणजी श्रीअयोध्या को फिरहिं यहबात अच्छी है ( २१ ) हेपार्वती मुनीशके बचन सुनिकै दोऊभ्राता प्रसन्नभये अरु परम आनन्द

सीयरघुराई २१ सुनिसुबचनहर्षेदोउभ्राता भेप्रमोदपरिपूरणगाता २२ मनप्रसन्नतनतेजबिराजा जनुजियराउरामभयेराजा २३ बहुत लाभ लोगनलघुहानी समदुखसुखसबरोवहिंरानी २४ कहहिंभरतमुनिकहासोकीजै फलजगजीवनअभिमतदीजै २५ काननकरौंजन्मभरिबासू यहितेअधिकनमोरसुपासू २६ दो० ॥ अन्तर्यामीरामसियतुमसबर्ज्ञसुजान जोफुरकहौतोनाथनिजकीजियबचनप्रमान २७ चौ०॥ भरतबचनसुनिदेखिसनेहू सभासहितमुनिभयेविदेहू २८ भरतमहामहिमाजलरासी मुनिमतितीरठाढ़ि

करिकै गात पूर्णह्वैरहे हैं ( २२ ) दोऊभाइनके मन अतिप्रसन्न अरु तनविषे तेजको प्रकाशभयो है दोऊभाइनके अससुखभयो है जनु राजाजिये अरु श्रीरामचन्द्र फिरिकै राजाभये हैं ( २३ ) सबलोग बहुतलाभमाने हैं अरु लघुहानि मानी है अरु रानी दुःख सुख समानमानिकै रोवती हैं ( २४ ) तब भरत कहते हैं हेमुनीश जो आपकहा सो विशेषकरिये हमको आप जगजीवनका दुर्लभ अभिमत फलदीजिये ( २५ ) जन्मभरि काननमें बसिकै श्रीरामचन्द्रकर भजनकरौं यहिसे अधिक मोरसुपासनहीं है ( २६ ) दोहार्थ॥ हे नाथआप सर्वज्ञहौ अरु श्रीसीतारामचन्द्र अंतर्यामी हैं जो यह मेरे अन्तष्करण में सांचीहोइ तौ यहिबातको फुरकरिये ( २७ ) हे गरुड़ भरतकर स्नेह देखिकै बचन सुनिकै सहितसभा मुनि विदेह ह्वैगये हैं काहेते कि प्रथममुनिकै बचनको भरतजी विशेषसिद्धांतकीन है ताते वशिष्ठजी अपने बचनको समुझाहै अरु भरत के अन्तष्करणकी

निर्मलता समुझिकै बिदेहह्वै गये हैं ( २८ ) हे पार्वती तहांभरत के भक्तिकै महामहिमा जो है सो समुद्र है अरु मुनीशकैमति अबलाकही स्त्री है त्यहि समुद्र के किनारे खड़ी है ( २९ ) सोई स्त्री समुद्र केपारजाबे को अनेकयत्न करति है तहां बेरानाव जहाज नहींपावै है कैसे पारजाइ तहांवशिष्ठजीकैमति भरतकेअन्तष्करणको अभिप्रायलैकै पारपावाचाहतिहै तहां श्रीरामचन्द्रविषे भरतकरकर्मकांड जो है ज्ञानकांडजो है उपासनाकांड जो है सोई बेरानावजहाजहै सोसुनिकै मतिएकौनहीं धरैपावैताते भरत के महिमा समुद्रविषे कैसेपारपावै ( ३० ) जहां वशिष्ठजी की मति भरतकी महिमाविषे नहीं समाइसकै है तहां अपरकबि कैसे भरतकी वड़ाई करिसकैंगे जैसे सर अरु सरि जो छोटी हैं त्यहि के सीप विषे समुद्रकैसे समाइगो जो कोई कहै किबड़ेबड़ेसर सरि जे हैं तिनकीसीपविषे का समुद्रसमाइसकैगो तहां यहकुतर्कहै सद्कवि ऐसे कहतचलेआवते

अबलासी २९ गाचहैपारयतनबहुहेरा पावतनावनबोहितबेरा ३० अवरकरहिंकोभरतबड़ाई सरसरिसीपकिसिन्धुसमाई ३१ भरतमुनिहिंमनभीतरपाये सहितसमाजरामपहँआये ३२ प्रभुप्रणामकरिदीन्हसुआसन बैठेसबसुनिमुनिअनुशासन ३३ बोलेमुनिवरबचनबिचारी देशकालअवसरअनुहारी ३४ सुनहुरामसर्वज्ञसुजाना धर्म्मनीतिगुणज्ञाननिधाना ३५ दो० ॥ सबकेउरअन्तरबसहुजानहुभावकुभाव पुरजनजननीभरतहितहोइसोकरहुउपाव ३६ चौ०॥ आरतकहहिंविचारिनकाऊ सूझजुआँरिहिं

हैं ( ३१ ) मुनिके बचन भरत के मनमें भावतभये अरु भरतकेवचन मुनिके मनमें भाये हैं तब सहित समाज श्रीरामचन्द्र के इहां चलतभये ( ३२ ) श्रीरामचन्द्र वशिष्ठ अत्रिआदिक जे महान्जनरहे तिनके नमस्कार करिकै सबको वरासन देते भये मुनि की आज्ञाते सब बैठतेभये हैं ( ३३ ) तब मुनि बिचारिकै देशकाल अवसरके अनुसार बोलतेभये हैं ( ३४ ) हे श्रीरामचन्द्र सर्वज्ञसुजान धर्मनीति गुणज्ञानकेनिधान सुनहु ( ३५ ) दोहार्थ॥ सबके उरअन्तरमें बसतहौ अरु सर्वजीवनकर भावकुभाव जानतहौ पुरजन जननी अरु भरतकर हितहोइ सो उपायकरहु इहां वशिष्ठजी जो पूर्वही सभाविषे रामरजाय कहाहै सोई अभिप्राय श्रीरामचन्द्रसे जनाइदीन्ह है ( ३६ ) यह विशिष्ठजू कहा कि जाते पुरजन माता भरतकर हितकारहोइ सो करिये तहां इनकर तौ हितकार श्रीरामचन्द्रके फिरतेहोतहैताते वशिष्ठजू यह कहते हैं कि आर्त्त जे हैं सो विचारिकै बात नहीं कहते हैं जैसे जुआंरी अपनोदावँ मांगत है परपासा अपनी ढार ढरत है तैसे हमारी सवकीबाणी आर्त्तभरी है आपु अपने विचारते करब यह हम कहते हैं ( ३७ ) मुनिके वचन सुनिकै श्रीरघुनाथजी कहते हैं कि तुमसबजानतेहौ सबकर निवाह आपुके हाथ है ( ३८ ) सबकर हितकार रौरे के रुखराखेते है यहसत्य हमकहते हैं ( ३९ ) प्रथमजो आज्ञा मोकहँहोइ सोमाथेधरिकै करौं ( ४० ) पुनि ज्यहिकहँ जस आपुकहब सोतसकरिहि ( ४१ ) तब सुनिबोले हे श्रीरामचन्द्र तुमसत्य कहते हौ पर भरत के स्नेहविषेहमारविचार एकौ नहीं रहा है ( ४२ ) हे श्रीरामचन्द्र ताते बारबारकहत हौं मोरिमति भरतकी भक्तिकेबश ह्वैगई है ( ४३ ) मोरेजान तौ भरत कै रुचिराखिये उपरान्त जो कछुकरिये सो सब मंगलहोइगो त्यहिकेसाक्षी शिवजीहैं ( ४४ )

आपनदाऊ ३७ सुनिमुनिबचनकहतरघुराऊ नाथतुम्हारेहाथउपाऊ ३८ सबकरहितरुखराउरराषे आयसुकियेमुदितफुरभाषे ३९ प्रथमजोआयसुमोकहँहोई माथेमानिकरौंसिखसोई ४० पुनिज्यहिकहँजसकहबगोसाईं सोसबभांतिकरिहिसेवकाई ४१ कहमुनिरामसत्यतुमभाषा बभरतसनेहविचारनराषा ४२ त्यहितेकहौंबहोरिबहोरी भरतभक्तबशभइमतिभोरी ४३ मोरेजानभरतरुचिराखी जोकीजियसोशुभशिवसाखी ४४ दो० ॥ भरतबिनयसादरसुनियकरियबिचारबहोरि करबसाधुमत लोकमतनृपनयनिगमनिचोरि ४५ चौ०॥ गुरुअनुरागभरतपरदेषी रामहृदयआनन्दबिशेषी ४६ भरतहिधर्म्मधुरन्धरजानी निजसेवकतनमानसबानी ४७

दोहार्थ ॥ हे श्रीरामचन्द्र भरतके विनय आपुसादर सुनियेबहुरि विचार करिये तब लोकमत साधुमत वेदकर सिद्धान्त निचोइकै करैंगे तहां यहिअर्थविषे विरोध है कि वशिष्ठजी कहा कि भरतजू जो कहाहै त्यहि कर्तव्य में मंगल है अरु कहते हैं कि भरत के वचन सुनिलेहु फिरि विचार करिकै लोकवेदमत करैंगे ताते दूषण है तहां यह अर्थहै श्रीवशिष्ठजी कहते हैं कि भरतके वचन सादर सुनिये पुनिबहोरिकै भरतके वचनविषे विचारकरतसन्ते लोकमत साधुमत वेदको सिद्धांत पूर्ण है ( ४५ ) तबगुरुनको अनुरागभरतकेऊपर अतिशय श्रीरामचन्द्र देखिकै विशेषकै अतिआनन्द होतभये हैं ( ४६ ) तब श्रीरामचन्द्र बिचारकरतभये कि जो कदाचित् भरतकहैं कि फिरिचलौ तौ हमको फिरतै बनैगो पर भरतजी यह विशेषकैनकहैंगे काहेते धर्म्म के धुरन्धर हैं अरु मनबचन कर्म्मते हमारे सेवक हैं स्वसुखी नहीं हैं तत्सुखी हैं हमारे सुखमें सुखी हैं ( ४७ ) गुरुन कै आयसु अनुकूल जानिकै श्रीरामचन्द्र मृदुमंगलमय वचनबोलतेभये हैं ( ४८ ) हे नाथ तुम्हारीशपथ अरु पिताके चरणकैदोहाई भुवन में भरतकेसमानभाई नहीं भयो है ( ४९ ) जिनप्राणिन के गुरुपदपङ्कजमें अनुराग है ते लोकहुवेद में बड़भागी हैं तहां भरत कर अनुराग मन वचन कर्म्मते आपुके चरणविषे है तौ भरतके समान को है ( ५० ) जो भरत के ऊपर राउरकर अस अनुराग है तौ भरत के समान भाग्यमान् कोहै श्रीरामचन्द्रकी बाणीमें यह अभिप्राय है कि भरतजीको थांभते हैं कौनिउँफिरैकै बात न कहैं काहेते कि श्रीरामचन्द्र अपने दासनसे सब प्रकारते हारिरहे हैं ( ५१ ) तब लघुबन्धुलखिकै भरतके मुखपर बड़ाई करतसन्तेश्रीरामचन्द्र संकोच करते हैं ( ५२ ) तब श्रीरामचन्द्र कहा कि जो भरतकहैं

**बोलेगुरुआयसुअनुकूला बचनमंजुमृदुमंगलमूला ४८ नाथशपथपितुचरणदोहाई भयउनभुवनभरतअसभाई ४९ जेगुरुपदपंकजअनुरागी तेलोकहुबेदहुबड़भागी ५० राउरजापरअतिअनुरागू कोकहिसकैभरतकरभागू ५१ लखिलघुबन्धुबुद्धिसकुचाई करतबदनपरभरतबड़ाई ५२ भरतकहहिंसोकियेभलाई असकहिरामरहेअरगाई ५३ दो०॥ तबमु निबोलेभरतसनसबसकोचतजितात कृपासिन्धुप्रियबन्धुसनकहहुहृदय की बात ५४॥**

* * * * * * * *

**चौ० सुनिमुनिबचनरामरुखपाई गुरुसाहेबअनुकूलअघाई १ लखिअपनेशिरसबछरभारू कहिनसकतकछुकरतबिचारू २ पुलकशरीरसभाभयेठाढ़े नीरजनयननेहजलबाढ़े ३ कहबमोरमुनिनाथनिबाहा यहितेअधिककहबमैंकाहा ४ मैंजानौंनिजनाथ**

सो हमको प्रमाण है यह कहिकै अरगाइकहींचुपह्वैरहे हैं ( ५३ ) दोहार्त्थ। तबमुनिहर्षसेबोलेहेतातसब संकोचतजिकै कृपासिन्धुदीनबंधुनिजबंधुसे अपने हृदय की बात कहहु ( ५४ ) इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुपविध्वंसने श्रीअयोध्याकाण्डे श्रीवशिष्ठश्रीरामचन्द्रसम्वादेसप्तदशस्तरंगः १७॥

दोहा ॥ दशअरुआठतरंगमेंभरतवचनगम्भीर। नीतिप्रीतिसेवकधरमरामचरणमतिधीर १८ तब भरतजी मुनिके वचन सुनिकै रामरुख पाइकै गुरुसाहेबकोअनुकूलपहिंचानिकै ( १ ) अपनेशिरपर सबछरभार लखिकै कछुकहिनहीं सकते हैं बिचारकरते हैं छरकही ब्यवहार किन्तु छरभार लोकबाणी है ( २ ) तब भरतजी सभाके मध्यविषे उठिकै ठाढ़भये हैं शरीर पुलकि आयोहै अरु कमल नेत्रनमें स्नेहजल भरिआयो है ( ३ ) सभामें करजोरिकै भरतजी कहते हैं कि मोरकहब तौ मुनिनाथहि निबाहिदीन्ह है यहिते अधिक अबमैं काकहौंगो जोमुनि प्रथम सभा में सिद्धांत कीन है कि श्रीरामरजाय राखेते हमार सबकरभला है पुनि दूसर सिद्धांतकीन कि तुम दूनौंभाई बनकोजाउ श्रीसीताराम लक्ष्मणजी अवध को फिरहिं पुनि इहां एकवचनकहा है कि जामें पुरजन माता भरतकरभलाहोइ सो श्रीरामचन्द्र तुमकरौ यहतीनिबाततें आगे हमकाकरब ( ४ ) अरु मैं निजनाथकर सुभाव जानतहौं जेजीव विमुख हैं अपराधीहैं तिनहूंपर कबहूं क्रोधनहीं करते हैं ( ५ ) अरु मोपर तौ कृपास्नेह विशेषकै है बालअवस्थालैकै आजुताईं

खेलखेलतसन्ते काहूपर खुनुसकही रिसकरत कबहूंनाहीं मैं देखा है ( ६ ) अरु बालअवस्थाते मैं स्वामीकर संग कबहूंनहीं छांड्यउंहौं अरु मोरमनभंग स्वामी कबहूं नहींकीन है ( ७ ) मैं प्रभु के कृपाकैरीति जोहतकही अच्छीतरहसे जानिगयोंहौं जो खेलतसन्ते

सुभाऊ अपराधिहुपरक्रोधनकाऊ ५ मोपरकृपासनेहबिशेषी खेलतखुनसकबहुंनहिंदेषी ६ शिशुपनतेपरिहरयउंनसंगू कबहुंनकीन्हमोरमनभंगू ७ मैंप्रभुकृपारीतिजियजोही हारेउंखेलजितवहिंमोही ८ दो० ॥ महूंसनेहसकोचबश कह्यउंनसन्मुखबयन दर्शनतृप्तिनआजुलगि प्रेमपियासेनयन ९ चौ० ॥ बिधिनसक्यउसहिमोरदुलारा नीचबीचजननीमिसपारा १० इहौकहहतम्वहिआजु

मैं हारिजाउं तौ मोह को जिताइदेहिं ऐसेस्वामी हैं ( ८ ) दोहार्त्थ॥ अरुमहूं आजुताईं कछु सन्मुख वचन नाहीं कह्योहौं अरु दर्शनलागि आजु ताईं प्रेमके पियासे नयनतृप्त नहीं भये हैं इहां भरत कीवाणीके प्रसंगविषेबहु अभिप्राय है एकतौ यह अभिप्राय है कि जो श्रीरामचन्द्रकहा है किजो भरतजीकहैं सो विशेषिकै करियेसो भरतजीको सदहिजितावत आये हैं ताते यह कहा है अरु भरतजू कहा है कि मैं सन्मुख वचन कबहूं नहीं कहे हैं सो अबकैसे कहौंगो अरु जोयह कि मेरेनेत्र दर्शनहेतु तृप्तनहींभये हैं तहांयहध्वनि है कि मैं केवल आपुके दर्शनहेतु आयउँहौं अपरकछु कहै नहीं आयोहौं जो आज्ञाहोइ सोकरौं ( ९ ) तहां श्रीरामचन्द्र मोपर बहुतदुलार करतरहेहैं सोविधि नहीं सहिसक्यउहै कि मोरिपदवी भरतको न दै डारहिं ताते अपनी सकामता करिकै बड़ाबीच पारिदियो है यहबीचकैसोहै बड़ानीचबीचपरिगयोहै इहां भरतजी विधाताको नीचनहीं कहते हैं बीचकोनीच कहते हैं काहेते साधुकाहूपर दूषण नहीं रोपणकरते हैं अरुब्रह्मपदवी कागबिष्ठा के समानजानते हैं ( १० ) यह कहतसंते आजुमोको शोभानहींहोति है काहेते मोरी बाणीमें साधुता है तहां अपनेकहेते अपनीरुचि सुधितेसाधुकोभाहै ( ११ ) जो यह कहौ कि माता तौ मंदहै अरु मैसुचालीसाधुहौं तौयह मनमें आनतसंते कोटिकुचालहोतहै ( १२ ) काहेते मैं कैकेयी कर पुत्रहौं यहिकारण मन्दहौं कहूंकोदवकी बालीमें सुन्दर शाली कहीचाउर उत्पन्नहोय है और कहूंतलैयाकी सीपीमोती जन्मैहै ( १३ ) ताते स्वप्नेहुविषे न काहूको दोष न काहूकोक्लेश है मोरअभाग्यजो है सोई उदधिहै कोई का करै ( १४ ) मोर जो अघपरिपाक है त्यहिको मैं न समुझा जो समुझत्यउं तौ स्वामी को संगछोड़िकै मैं ननिआउरको नजात्यौं तहांमोर अघपरिपाककही दृढ़जोरहा है सो स्वामी के बिछोहपाइकै माता के जायकही उत्पन्नहैकै काकूकही टेढ़िबचन कहाइकै

नशोभा अपनोसमुझिसाधुशुचिकोभा ११ मातुमन्दमैंसाधुसुचाली उरअसआनतकोटिकुचाली १२ फरैकिकोदवबालिसुशाली मुक्ताप्रसवकिशम्बुकताली १३ सपनेहुदोषकलेशनकाहू मोरअभाग्यउदधिअवगाहू १४ बिनुसमुझेनिजअघपरिपाकू जारिउजाइजननिकहिकाकू १५ हृदयहेरिहारेउं सबओरा एकहिभाँतिभलेभलमोरा १६ गुरुगोसाइँसाहेबसियरामू लागतमोहिंनीकपरिणामू १७ दो० ॥ साधुसभाप्रभुगुरुनिकट कहौंसुथलसतिभाव प्रेमप्रपंचकिझूठफुरजानहिंमुनिरघुराव १८ चौ० ॥ भूपतिमरणप्रेमप्रणराखी जननीकुमतिजगतसबसाखी १९ देखिनजाईविकलमहतारी जरहिंदुसहज्वरपुरनरनारी २० महींसकल

जननीको जारयउजाय है किंतु विनासमुझे जायकही वृथामैं माताको दोषदेतहौं मेरेअघ मोको दुखदेत हैं ( १५ ) अपने हृदयविषे सबओरहेरिकै हारिगयोहौं तीनिहूंलोक चौदहौ भुवन वेदउपनिषद् शास्त्रस्मृतिसंहिता पुराणकाब्य ब्याकरण इत्यादिक सबढूंढ़ि काढ़्योहौं परमोरभला एकपदार्थ में देखिपर्यो है ( १६ ) कि गुरु गोसाईं वशिष्ठ ऐसे अरुसाहेब

सीतानाथ ऐसे ताते परिणाम भला देखिपरै है काहेते गुरुसाहेब अति सामर्थ है सामर्थ के आश्रयते सबकर भलाहोत है ( १७ ) दोहार्थ॥ इहां साधुनकी तौ समाज है अरु प्रभुगुरुके निकटहौं अरु सुथलहै तहां मैं किधौंप्रेमते कहतहौं किधौं प्रपंचते कहतहौं किधौं झूंठफुर कहतहौं यहमुनि अरु रघुरावजानैंगे काहेते सर्बज्ञ अंतर्यामी हैं ( १८ ) अरु जो भूपके मरणकर शोच राखितहै तौ हमारी जननीकै कुमतिभूपतिके मरणकर कारण है उन्होंने तौ अपने प्रेम अरु सांचे प्रणका निर्बाहकिया लोक में प्रसिद्ध है ( १९ ) अरु सबमाता अति बिकलनहीं देखीजाइहैं अरु पुरके नरनारि दुसहदुखके ज्वरसे जरेजाते हैं ( २० ) यहि अनर्थ कर मूलमहींहौं त्यहिते सबकर शूलसहतहौं ( २१ ) देखिये तौ मुनिकरवेषकरिकै श्रीरामचन्द्र अरु श्रीजानकीजी लक्ष्मण सहित बनगवनकीन्ह यह मैं सुनतभयों ( २२ ) अरु बिनपदत्राण पांयपियादे यह सुनतमहावज्रघात घाउलागतसंते अरु मैं जियतरहिगयों अपनाको अनर्थकर कारण समुझिकै नतु तृणइव शरीरको त्यागिदेत्यउं शंकरसाखि हैं श्रीरामबनगवन सुनतसंते ( २३ ) अरु बहुरिकै निषादको स्नेहदेखिकै छाती नहीं फटि गई हैं बज्रहुते कठोरह्वैगई है ( २४ ) अब सब जोसुन्यों सोआंखिनदेख्यों आइकै जियतसंतेयहजीवजड़ सबसहतहै ( २५ ) जिन श्रीरामचन्द्र

अनरथकरमूला सोसुनिसमुझिसहौंसबशूला २१ सुनिबनगबनकीन्हरघुनाथा करिमुनिवेषलषणसियसाथा २२ बिनुपानहींपयादेपाये शंकरसाखिरह्यउंयहिघाये २३ बहुरिनिहारिनिषादसनेहू कुलिशकठिनउरभयउनबेहू २४ अबसबआँखिनदेख्यउं आई जियतजीवजड़सबहिंसहाई २५ जिनहिंनिरखिमगसांपिनिबीछी तजहिंबिषमबिषतामसतीछी २६ दो०॥ तेरघुनन्दनलषणसिय अनहितलागेजाहि तासुतनयतजिदुसहदुखदैवसहावैकाहि २७ चौ०॥ सुनिअतिबिकलभरतबरबानी आरतबिनयप्रेमरससानी २८ शोकमगनसबसभाखँभारू मनहुंकमलवनपरेउतुषारू २९ कहिअनेकबिधिकथापुरानी भरतप्रबोधकीन्हमुनिज्ञानी ३० बोलेउचितबचनरघुनन्दू दिनकरकुलकैरवबनचन्दू ३१ तातहृदयजनिकरहुगलानी ईशअधीनजीवगतिजानी ३२ तीनिकालत्रिभुवन

जानकी को देखिकै मगकेसांपिनि बीछूजे हैं विषमतामस अति तीक्ष्णविषत्यागि देहिहैं ( २६ ) दोहार्थ॥ तेरघुनन्दनजानकीजी श्रीलक्ष्मणजू कैकेयी को अति प्रियलागे हैं त्यहिकरतनयजोमैंहौं त्यहिको तजिकै दैवदुसहदुख और क्यहिको सहावैगो ( २७ ) यहभरतकै विनय आरतदीनतामय प्रेमरससानी बाणीसुनिकै सम्पूर्णसभा बिकल होत भई है ( २८ ) तबशोकतेबिकल सबसभाखभारकहीशोचते सूखेजाते हैं मानहुकमलकेबनपर पाला पर्‌यो है ( २९ ) तब अनेकनप्रकारते श्रुतिस्मृति पुराणइतिहास कै कथाकहिकहि श्रीवशिष्ठजी भरतकर प्रबोधकीन है ( ३० ) सूर्य्यवंश कैरवकही कुमुद बनत्यहिके आनन्दकरिबेको चन्द्रमा है ते श्रीरामचन्द्र उचित वचनबोलतेभये हैं देखियेतौ श्रीरामचन्द्र कहा कि जो भरतजी कहैं सो करी तहां रामाज्ञाते भरतजू ऐसे रसमय वचन कहतेभये पुनि श्रीरामचन्द्रको बोलत बन्यो है ( ३१ ) हेतात भरत अपने हृदय में ग्लानि न करहु जीव की गति ईशके आधीन जानहु इहां श्रीरामचन्द्र अपने वचनविषे संपूर्णसभा में महादेव को ईशजनावते हैं किन्तुईश्वर को ईशजनावते हैं अरु भरत को जनावते हैं कि हम जो ईश हैं तो हमारे आधीन सम्पूर्णकालविषे जीवन की गति है तुम काहे को शोचकरते हौ ( ३२ ) हेतात हमारे मनमें तीनिहूंलोक तीनिहूंकालविषे पुण्यश्लोककही भगवान् जोहैं सोतुम्हारे करतलविषेहैं किन्तु पुण्य असपदार्थ जेहैं सम्पूर्ण सो तुम्हारे करतल हैं यहध्वनि है कि मैं तुम्हारे करतलविषे हौं ( ३३ ) तुमपर जोकोई कुटिलताआनै त्यहिकोलोक परलोकहूनाशह्वैजाइगो ( ३४ ) अरु जेजड़ जननी

मतमोरे पुण्यश्लोकताताकरजोरे ३३ उरआनततुमपरकुटिलाई जायलोकपरलोकनशाई ३४ दोषदेइजननिहिजड़जेई नाहिन साधुसभाज्यहिसेई ३५ दो० ॥ मिटिहहिंपापप्रपंचसबअखिलअमंगलभार लोकसुयशपरलोकसुखसुमिरतनामतुम्हार ३६ चौ०॥ कहौंसुभावसत्यशिवसाखी

भरतभूमिरहराउरिराखी ३७ तातकुतर्ककरहुजियजाये बैरप्रीतिनहिंदुरइदुराये ३८ मुनिगणनिकटबिहँगमृगजाहीं बाधकबधिकबिलोकिपराहीं ३९ हितअनहितपशुपक्षिउजाना मानुषतनगुणज्ञाननिधाना ४० ताततुमहिंमैंजानउंनीके कहौंकहाअसमंजसजीके ४१ राख्यउराउसत्यम्वहिंत्यागी तनुपरिहरय्यउप्रेमप्रणलागी ४२ तासुबचनमेटतबड़शोचू

को दोषदेई तिनसाधुनकै सभानहीं सेवन कीन है ( ३५ ) दोहार्त्थ ॥ श्रीरामचन्द्र कहते हैं भरतजी जे तुम्हारनाम सुमिरैंगे त्यहिकर प्रपंचकेपाप त्यहिकर भार अमंगलमय अखिलकहीसमूह सो नाशह्वैजाइगो ( ३६ ) यह मैं सत्यसुभावते कहत हौं शिवको साक्षीदैकै यहमहिमण्डल केवल भरत को राखो है दूसर एकरक्षक नहीं है इहां यह अभिप्राय है कि जाते भरतजी अस न कहैं कि फिरहु काहेते हमपृथिवीके रक्षाहेतु बन को जाते हैं ( ३७ ) हे ताततुम अपने मनमें कुतर्कनानहींकरौ वैरप्रीति छिपायेते नहींछिपै है ( ३८ ) मुनिगणके निकट बिहंगमृगादिकजाते हैं अरु ब्याधा जो बन्दूक तीरते मारते हैं अरु वधिक जो जालते वझाइलेते हैं तिनकेनिकटनहीं जाते हैं परायजाते हैं ( ३९ ) तहां हित अनहित पशुपक्षिउजानते हैं अरु मनुष्यतनतौ गुणज्ञान को निधान है तुमसब प्रकार ते निर्दोषहौ ( ४० ) हे तात मैं तुमकहँ नीकी तरहते जानतहौ मोरेमनविषे असमंजसहोत है। ताते कछु कहतसुनत करत नहीं बनत है मेरीसबरीतिको जानते हौ ( ४१ ) हे भरत राजा अपनी सत्यको राख्यो अरु मोको बनगवनदीन है अरु मैं कैसो प्रियहौं कि मोरे विरहकरिकै अपने प्रेमको राखिकै राजाशरीरको त्यागिदीनहै सो तुम जानतहहु ( ४२ ) तिनराजा के बचन मोको टारत कै सकोचहोत है अरुत्यहिते अधिकतुम्हारसकोचहै यामेंयहध्वनि हैकि पिताकेबचन दोऊजनेकरी ( ४३ ) तापगुरुनकीआज्ञाहै ताते जो तुम कहौगे सोहम अवश्यकैकरहिंगे देखियेतौ रघुनाथजीकीचतुराई भरत को अच्छीतरहथांभिकै सबकोप्रसन्नकरते हैं ( ४४ ) दोहार्त्थ॥ हे तात मन प्रसन्नकरिकै जोतुम आजु कहौ सोईकरौंगो सत्यकेसन्ध श्रीरामचन्द्रकेवचनसुनिकै सबसमाज सुखीभये हैं ( ४५ ) अरु हेगरुड़ देवगणसहित इन्द्रभयकोप्राप्तिभयो है यह जाना

त्यहितेअधिकतुम्हारसकोचू ४३ तापरगुरुम्वहिंआयसुदीन्हाअवशिजोकहौसोचाहौंकीन्हा ४४ दो०॥ मनप्रसन्नकरिसकुचतजिकहहुकरहुसोआज सत्यसन्धरघुबरबचनसुनिभासुखीसमाज ४५ चौ०॥ सुरगुरुसहितसभयसुरराजू शोचहिंचाहतहोनअकाजू ४६ बनतउपायकरतकछुनाहीं राम शरणसबगेमनमाहीं ४७ बहुरिबिचारपरस्परकहहीं रघुपतिभक्तभक्तिबशअहहीं ४८ सुधिकरि अम्बरीषदुर्ब्बासा भेसुरसुरपतिनिपटनिरासा ४९ सहेसुरनबहुकालबिषादा नरहरिप्रकटकीन्हप्रहलादा ५० लगिलगिकानकहैंधुनिमाथा सबसुरकाजभरतकेहाथा ५१ आनउपायनदेखियदेवा मानतरामसुसेवकसेवा ५२ हियसप्रेमसुमिरहुसबभरतहि निज

कि भरतजूतौ श्रीरामचन्द्र को फेरैआये हैं ताते हमार अकाजआजुह्वैचुक्यो काहेतेकि श्रीरामचन्द्रकहा जोभरतकहैं सोकही ( ४६ ) तब देवतन को कछुउपाय करतनहीं बनत है सब अपने मनमें श्रीरामचन्द्र के शरणागतसकाम होतभये हैं ( ४७ ) बहुरि कै देवता आपुस में विचार करते हैं कि रघुपति के भक्त जे हैं जो उनकै भक्तिकरैं तौ प्रभु वशह्वैजाते हैं ताते भरतकी शरणहोहु ( ४८ ) यह विचार करते हैं कि अम्बरीष ते विरोधदुर्बासा मुनि कीनरहै सो अतिबिकल होतभये हैं ताते जोभरतकर बिरोधकरोगेतौ हमारो ठिकाना नहीं है असकहिकै सहित इन्द्र निराश होतभये हैं ( ४९ ) देखौ तौ हिरण्यकशिपु के तेज ते हम सबदेवता बहुकाल दुखसहे हैं तब प्रह्लादजी नरसिंहजीको प्रकटकीन्ह है तब हमारो दुःखमिट्यो है ( ५० ) एकएकन के कान में लगिलगि शीशपीटिपीटि कहते हैं कि अबदेवतनकर काज भरत के हाथ है ( ५१ ) परस्पर यहकहते हैं कि हेदेयतहु

आनउपाय कछु नहींदेखिपरैहै एकउपायहै कि श्रीरामचन्द्र अपनेसेवककी सेवकाई किये ते बहुत मानते हैं ( ५२ ) देवतन विषे कोई बुद्धिमान् देवता सो कहते हैं हेदेवतहु भरतकर स्मरणकरहु तब तुम्हार कार्यसिद्धिहोइगो भरतजी कैसे हैं अपने गुण सुभाव शीलकरिकै श्रीरघुनाथजीको अपने वशीभूत किये हैं ( ५३ ) दोहार्थ॥ तब देवतनकर सम्मत सुनिकैवृहस्पति कहते हैं कि अब भरत के चरणारविन्दविषे तुम्हारो सर्बमंगल को मूल अनुरागभयो है ताते तुम बड़भागीहौ ( ५४ ) हे देवहु सीतापतिके जे सेवक हैं तिनकै सेवकाई शतकही सौकामधेनुकेसरिस फलदाता है तहां सन्देह है कि अर्थ धर्मकाम तीनिफल तौ जेतनाचाहै तितनाएकैकामधेनु देत है शतक्योंकहा है तहां यहअर्थ है इन्द्रकीकामधेनु फलसुद्धा

गुणशीलरामबशकरतहि ५३ दो०॥ सुनिसुरमतसुरगुरुकह्यउअबतुम्हारबड़भाग सकलसुमंगलमूलजग भरतचरणअनुराग ५४ चौ० ॥ सीतापतिसेवकसेवकाई कामधेनुशतसरिससुहाई ५५ भरतभक्तितुम्हरेमनआई तजहुशोचविधिबातबनाई ५६ देखुदेवपतिभरतप्रभाऊ सहजसुभावविवशरघुराऊ ५७ मनथिरकरहुदेवडरनाहीं भरतहिजानिरामपरछाहीं ५८ सुनिसुरगुरुसुरसम्मतशोचू अन्तर्यामीप्रभुहिंसकोचू ५९ निजशिरभारभरतजियजानीकरतकोटिविधिउरअनुमानी ६० करिबिचारमनदीन्ह्यउठीका रामरजायसुआपननीका ६१ निजप्रणतजिराख्यउप्रणमोरा छोहसनेहकीन्हनहिंथोरा ६२ दो०॥ कीन्हअनुग्रहअमितअति सबबिधिसीतानाथ करिप्रणामबोलेभरतजोरिजलजयुगहाथ ६३॥ *

असतहै अरु सीतापतिके सेवककै सेवकाई फलसहित सत है तहां असतकही नाशमानको अरु सतकही एकरस अबिनाशीको ( ५५ ) जो भरतकै भक्ति तुम्हारे मनमें आई है तौ शोचको तजिदेहु तुम्हारकार्य्य विधातैंसिद्धिकीन्ह है ( ५६ ) हे देवपति तू भरत को सुभाव तौ देखु जिनके सुभावकेवश श्रीरघुनाथजी सहजही वश हैं ( ५७ ) हेदेवहु अब तुम मनकोथिरकरहु न डेराउ भरतको श्रीरामचन्द्रकै परिछाहीं जानहु श्रीरामकी आज्ञा अनुकूल भरतजू हैं ( ५८ ) सुरनको सम्मतजो है त्यहिको बृहस्पतिसुनिकै समुझिकै संकोचको प्राप्तिभये हैं काहेते श्रीरामचन्द्र अन्तर्यामी हैं यह कहैंगे कि वृहस्पति भी देवतन को नहीं समुझावते हैं ( ५९ ) जबभरतजी अपने शिरपर सबभार जानतेभये तब कोटिन अनुमान करते हैं ( ६० ) तब भरतजी बिचारकरिक अपने मन में यहठीककीन्ह कि रामरजाय राखेते हमारसबकर भला है ( ६१ ) देखिये तौ अपनप्रण छोड़िकै मोरप्रण राखतभये हैं छोह दया मोरेऊपर थोरा स्नेह नहींकीन्ह है बहुतकीन्ह है ( ६२ ) दोहार्थ॥ ते सीतानाथ मोरेऊपर सबप्रकार ते बहुत अनुग्रहकीन है अस बिचारिकै दोऊकमलकर जोरिकै तब बोलतेभये हैं ( ६३ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने श्रीअयोध्याकाण्डे श्रीरामगुरुभरतसम्बादवर्णनन्नाम अष्टादशस्तरंगः १८॥

दोहा॥ युक्तिउक्तिरसभावबर भरतबचनजिमिगंग। रामचरणविलसितविमलनवदशसुभगतरंग १९ भरतजी कहते हैं हे स्वामी मोसे का कहावतहौ आपु तौ कृपासिन्धु अन्तर्यामीहौ सबके बाह्यांतरकै गति जानते हौ ( १ ) अब मैं यहकहतहौं कि गुरु तौ मेरेऊपर प्रसन्न हैं अरु साहेब

चौ० ॥ कहौकहावहुकाअबस्वामी कृपाअम्बुनिधिअन्तर्यामी १ गुरुप्रसन्नसाहेबअनुकूला मिट्यउमलिनमनकल्पितशूला २ अपडरडरेउनशोचसमूले रबिहिनदोषदेवदिशिभूले ३ मोरअभाग्यमातुकुटिलाई विधिगतिविषमकालकठिनाई ४ पांवरोपिसब मिलिम्वहिंघाला प्रणतपालप्रणआपनपाला ५ यहनईरीतिनराउरिहोई लोकहुवेदविदितनहिंगोई ६ जगअनभलभलएकगोसाई कहियहोइभलकासुभलाई ७ देवदेवतवसरिशसुभाऊ सन्मुखबिमुखनकाहुहिकाऊ ८ दो०॥ जाइनिकटपहिचानितरुछाँहशमन

अनुकूल हैं ताते मेरेमनकी कल्पनाकर शूलकही दुःख सो मिटिगयो है कल्पनाकही बिनाकारण सुख दुखको अनुभवकरना ( २ ) मैं आपुहि से आप आपुके इहां अपडरकही डयरायगयाहौं डरकर कारणनहीं है हेदेवजैसे कोई को दिशाभूलिजाय है अरु कहै कि सूर्यपश्चिम उदयभये हैं तहां रविको दोषनहीं है अरु किसूके समुझायेते यथार्थ दिशाकोज्ञानभयो है तैसे तुम्हारी कृपै मोको समुझाइ दियो है अब मेरो भ्रम मिटिगयो है ( ३ ) तहां मोर अभाग्य अरु माता कै कुटिलाई अरु बिधाताकै विषमगति अरु काल की कठिनाई जो है ( ४ ) तहां इनचारिउमें एकएक के बशभये ते जीव महादुखको प्राप्तिहोत है अरु ये चारिउ सम्मतिकरिकैमेरेऊपर कुयोग करिकै घालाचाहतरहै तहां आपु प्रणतकही शरणपाल को प्रण सो पालतभये हैं चारिउ ते आपु मोको प्रणकरिकै बचाइलीन है ( ५ ) यह आपुकी नईरीति नहीं है प्रणतपालको पताका वेद शास्त्र गावत हैं ( ६ ) हे गोसाई यहसब जगत् अनभल है आपु एक भलेहौ जितनी जगत् में भलाई हैं सो केवल आपुकी भलाई से होइ हैं ( ७ ) हे देव तुम्हारस्वभाव देवतरु के समान है जो कोऊ सन्मुखहोइ वह काहू को कबहूंविमुख न करै तैसेही आपुको सुभाव है कि सबको बांछितफल देते हौ विमुख कोई को नहीं करतहौ ( ८ ) दोहार्थ ॥ जे कोऊ तरुकीछायापहिंचानिकै जाइ हैं ताको अभिमतकही बांछितफलदेते हौ राउरकभल पोच कोईहोय ( ९ ) भरत कहते हैं मैं अपनेविषे सबप्रकारते जान्योहौं अब मोरे मनकर क्षोभकही संशय मिटिगयो है अब मनमें सन्देह नहीं है ( १० ) हे करुणाकर अब मैं यहकहत हौं सो बातकरिये मैं जो जनहौंत्यहिकर तौ हितकारहोइ अरु आपुके मनमें क्षोभ न आवै ( ११ ) अरु

**सबशोच मांगेअभिमतपावजग राउरकभलपोच ९ चौ०॥ लखिसबबिधिहियस्वामिसनेहू मिटेउक्षोभमननहिंसंदेहू १० अबकरुणाकरकीजियसोई जनहितप्रभुचितक्षोभनहोई ११ जोसेवकसाहेबहिसकोची निजहितचहैतासुमतिपोची १२ सेवकहितसाहेबसेवकाई करहिसकलफलचारिबिहाई १३ स्वारथनाथफिरेसबहीका कियेरजायकोटिबिधिनीका १४ यहस्वारथपरमारथसारू सकलसुकृतफलसुगतिसिंगारू १५ देवएकबिनतीसुनिमोरी उचितहोइतसकरबबहोरी १६ तिलकसमाजसाजिसबआना करियसफलप्रभुजोमनमाना १७ दो० ॥ सानुजपठइयमोहिंबनकीजियसबहि-सनाथनतरुफेरियेबन्धुदोउनाथचलौंमैंसाथ १८ चौ० ॥ नतरुजाहिं**

जो सेवकह्वैकै अरु साहेबको सकुचाइकै आपन हितकारकरै त्यहिसेवककै मतिपोची कही दुष्ट है ( १२ ) सेवककर हितकार साहेब की सेवकाई विषे है सो सेवकाई स्वार्थ अरु चारिउफल अरु सकल सुखकै बासनाविहायकैकरिये ( १३ ) हे नाथ आपुके फिरेते सबकरहितकारहै अरु आपुकै रजाय राखेते सबकर कोटिनविधि नीक हितकार है ( १४ ) आपुकैरजाय कैसी है सम्पूर्ण स्वार्थ परमार्थ को सारभूत है अरु सकल सुकृत कर फल है अरु चारिहू मुक्तिकर शृंगार है देखिये तौ भरतकी बाणी जिनकी उक्तिविषे काहूकबिकै मति नहींपैठिसकै है तहां वशिष्ठजीके पूर्व सम्मत सिखायेते यह कहाहै हे नाथ आपुकेफिरेते सबकर एकविधि हितकार है अरु रजायराखेते ब्रह्माण्डभरेके जीवनकर कोटिनविधिते परमहित है देखियेतौभरतकी यहिवाणीविषे सेवक सेब्यपरमभावकोकहिसकैहै ( १५ ) हेदेवमोरिएक विनतीसुनिये पुनिजसउचितहोइतस बहोरिकैकरब ( १६ ) आपुके राज्याभिषेकको सरंजाम सबआवाहै पर जो आपुके मनमानैतौ सफलकही अंगीकारकरिये ( १७ ) दोहार्थ ॥ सहितशत्रुहन मोको बनपठाइये आपु फिरिकै सबको सनाथकरिये नतरु दोनों बन्धु फिरिये बनको मैं आपुकेसाथ चलौंगो ( १८ ) नतरु हमतीनिउभाई बनकोजाँय अरु आपुसहित श्रीजानकीजी फिरिकै सबको सनाथकरिये ( १९ ) हे प्रभु करुणा के सागर ज्यहिप्रकारते आपुकर मनप्रसन्नहोइ सोईकरिये पाछे यह सिद्धांत कहोचहौं ( २० ) हेदेव सबभार मोरे ऊपर दीन है अरु मोरेधर्म्मकीनीतिकर विचारनहीं है ( २१ ) यह ज्यतने वचन मैं कहे हैं त्यतने सब स्वार्थहेतुकहेहैं काहेतेकिजेआरत हैं ते चैतन्यह्वैकैनहीं कहते हैं अचेत हैं ( २२ ) विनारजाय जो स्वामीकोकौनिहुबातकर उत्तरदेयतौ त्यहिसेवकको देखिकै

बनतीनिहुभाई बहुरियसीयसहितरघुराई १९ ज्यहिबिधिप्रभुप्रसन्नमनहोई करुणासागरकीजियसोई २० देवदीन्हसबमोकहँभारू मोरेनीतिनधर्म्मबिचारू २१ कहौंबचनसबस्वारथहेतू रहतनआरतकेचितचेतू २२ उतरदेइबिनुस्वामिरजाई सोसेवकलखि लाजलजाई २३ असमैंअवगुणउदधिअगाधू स्वामिसनेहसराहतसाधू २४ अबकृपालुम्वहिंसोमतभावा सकुचिस्वामिमनजायनपावा २५ प्रभुपदशपथकहौंसतिभाऊ जगमंगलहितएकउपाऊ २६ दो०॥ प्रभुप्रसन्नमनसकुचतजिजोज्यहिआयसुदेव सोशिरधरिधरिकरहिंसबमिटहिअनटअवरेव २७ चौ०॥ भरतबचनशुचिसुनिसुरहर्षे साधुसराहिसुमनसुरबर्षे २८ असमंजसबशअवधनिवासी

लज्जा लजायजाती है ( २३ ) अस अवगुण को अगाध समुद्रएक मैं हौं अरु स्वामी अपने शीलसुभाव स्नेहते मोको साधुसराहते हैं ( २४ ) हे कृपालु अबमोको सोमत भावत है जाते आपुकरमन संकोचकोन प्राप्तिहोइ ( २५ ) अब मैं प्रभुके चरणकै शपथकरिकै कहतहौं सम्पूर्ण जगत् के मंगलहित एक उपाय है सो मैं कहत हौं ( २६ ) दोहार्त्थ ॥ हे प्रभु सकोचतजिकै ज्यहिको जसआज्ञा आपुदेव सोप्रसन्नह्वैकै शीशपर धरिकै करहि सम्पूर्ण अनट जे हैं त्यहिको अवरेब सब मिटिजाइहि मंगलमय होइगोअनटकही कैकेयी को बरदान अवरेबकही त्यहिकरिकै सबको क्लेश सो ऐसो अरुझ्यउ है काहूके निवारिबेयोग्य नहीं है सो भरत कहते हैं किआपुकी रजायते सब मिटि जाइगो ( २७ ) जब भरतजूकहा कि रामरजाय राखेते हमार सबकर भला है यह सुनिकै देवता अतिहर्षिकै फूलबर्षतेहैंसाधुसराहिकै स्तुति करते हैं आपनस्वार्थ सिद्धि जानिकै ( २८ ) सम्पूर्ण अवधबासिनको असमंजस होतभयो है अरु तपस्वी बनवासी प्रमुदितहोतभये हैं ( २९ ) भरत के बचनसुनिकै श्रीरघुनाथजी संकोचिकै चुपह्वैरहे हैं प्रभुकैगति देखिकै सबसभा शोच में मग्नह्वैरही है ( ३० ) त्यहिअवसरमें जनकके दूतआये हैं तब वशिष्ठजी बोलाइलेत भये हैं ( ३१ ) तेदोऊदूत वशिष्ठ अरु श्रीरामचन्द्रको प्रणामकरिकै श्रीरामचन्द्र को वेष देखिकै अति दुखितभये हैं ( ३२ ) दूतनते मुनिवर बूझते हैं कि राजा विदेहकी कुशलकहौ ( ३३ ) जब वशिष्ठजीने दूतनते विदेहकी कुशलबूझी सो सुनिकै चरजे हैं दूतते महिविषे माथनाइकै हाथजोड़िबोलते भये हैं ( ३४ ) दूत कहते हैं हेगोसाई राउरकर सादरते पूंछबसोई कुशलको हेतुहै पुनियुक्तिकरिकै अर्थकरतहैं राउरकर पूंछब सोई कुशलहै नतुकुशलकेहेतुजो श्रीरामचन्द्र

३४ प्रमुदितमनतापसबनबासी २९ चुपहिरहेरघुनाथसकोची प्रभुगतिदेखिसभासबशोची ३० जनकदूतत्यहिअवसरआये मुनिबशिष्ठसुनिबेगबोलाये ३१ करिप्रणामतिनरामनिहारे वेषदेखिभये निपटदुखारे ३२ दूतनमुनिवरबूझियबाता कहहुबिदेहभूपकुशलाता ३३ सुनिसकुचाइनाइमहिमाथा बोलेचरबरजोरेहाथा बूझबराउरसादरसाईं कुशलहेतुसोभयउगोसाईं ३५ दोहा॥ नाहितकोशलनाथकेसाथकुशलगैनाथ मिथिलाअवधबिशेषतेजगभासकलअनाथ ३६॥ * * * * * *

चौ० कोशलपतिगतिसुनिजनकौरा भयेसबलोगशोकवशबौरा १ ज्यहिदेखात्यहिसमयबिदेहू नामसत्यअसलागनकेहू २

हैं ते गोसाईभये हैं संन्यासधर्म्मलीन है ( ३५ ) दोहार्त्थ॥ आपुको सादरपूंछब सोईकुशल है नतु कुशल तोकौशलनाथहिके साथगई है परमिथिला अवध विशेषकै नतु अनाथ तौ सबजग भयो है राजाके शरीर त्यागेते राज्यभरि अनाथभयो है ३६॥ इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलि कलुषविध्वंसने श्रीअयोध्याकाण्डेसर्वसभा भरतउत्तरदूतागमन-वर्णनंनामैकोनविंशतिस्तरंगः १९॥ :: :: ::

दोहा॥ जनकआगमनप्रेममय जनकरुणाकरदीसरामचरणआश्रमउदधिमिलीतरंगमबीस २० दूत कहते हैं कौशलपतिकीगति जनककीओरसुनिकैसब लोगबावरेह्वैगये हैं ( १ ) त्यहिसमयविषेजिनविदेह को देखा है तहांसत्यनाम असकाहूकोनहींलागहैतहांजनकजीकेतीनिक्रियानामहैं केवलपितातेउत्पन्नभये हैं ताते जनककही अरु राजानिमिके शरीरमथेते उत्पन्नभयेहैं तातेमिथिलेशकहीकामते उत्पन्न नहीं भये हैं तातेविदेहकही अरुराजाकर नाम सीरध्वजहै तहां कोशलपतिकी गति सुनतसन्ते विदेह जो रहे है ताते साक्षात् विदेह भये हैं देहकी सुधिनहींरही तहां राजा ज्ञानकरिकै विदेहरहे हैं देहकरिकै विदेह नहींरहे हैं त्यहि अवसरविये विदेह ते विदेह ह्वैगये हैं ऐसोसत्यनाम एकजनकविषे लाग है असकाहूको नहींलाग है जैसे कोई दुइचारि गांवको पति है अरु दुनियापतिनाम है सो सत्यनामनहीं है अरु राजा विदेहनाम सो विदेहै ह्वैगये हैं ( २ ) रानी कै कुचालु राजासुनिकै बिनु मणिफणिकी नाईं बिकल होतभये हैं ( ३ ) राजै यहसुना किभरत को राज्य श्रीरघुनाथजी को बनभयो है तब कोई राजहिंहरासकही सबप्रकार ते हृदय में हारिगये हैं ( ४ ) तब राजा मंत्रिनकै समाज करिकै बूझत हैं कि बिचारिकै कहौ का कर्तब्य है ( ५ ) अवधकर असमंजस दोऊ

रानिकुचालिसुनतनरपालहि सूझनकछुजिमिमणिबिनुब्यालहि ३ भरतराजरघुबरबनबासू भामिथिलेशहिंहृदयहरासू ४ नृपबूझ्यउबुधसचिवसमाजू कहहुबिचारिउचितकाआजू ५ समुझिअवधअसमंजसदोऊ चलियकिरहियनकहकछुकोऊ ६ नृपहिधीरधरिहृदयबिचारी पठयेअवधचतुरचरचारी ७ बूझिभरतगतिभावकुभाऊ आयहुबेगिनहोहुलखाऊ ८ दोहा॥ गयेअवधचरभरतगतिबूझिदेखिकरतूति चलेचित्रकूटहिभरत चारचलेतिरहूति ९ चौ०॥ दूतनआइभरतकैकरणी जनकसमाजयथामतिबरणी १० सुनिगुरुपुरजनसचिवमहीपति भेसबशोचसनेहबिकलअति ११ धरिधीरजकरभरतबड़ाई लियेसुभटसाहनीबोलाई

असमंजसकही श्रीरामबनगवन भरतकै राज्य सो समुझिकै कोई कछुकहिनहींसकै है कछु बिचार में सिद्धांत न भयो ( ६ ) तब राजै धीर्य्यधरिकै चारिचरकही दूत अयोध्या को पठये हैं ( ७ ) राजा कहतभये हैं हेदूतहुश्रीरामचन्द्र विषे भरतकर भाव कुभाव तुम समुझिकै शीघ्र चलेआवहु कोई जानि न सकै ( ८ ) दोहार्थ॥ तहां चारिउचर जे दूत ते अयोध्याकोजल्दपहुंचेजाइ एकदिन रहिकै भरतकरभाव श्रीरामचन्द्र विषे अच्छीप्रकार देखिकै जानिकै भरतजी सहित समाज श्रीरामचन्द्र के मनाइबेको श्रीचित्रकूट को चले यह देखिकै दूततिरहुत को चले ( ९ ) दूतनआइकैराजा के समाजबिषे भरतकै करणी अपनीमतिके अनुसार बर्णी यहदूतनकीबाणी गुरुमंत्री महीपति सुनिकै मनविषे अतिबिकल होतभये हैं ( १० ) गुरु अरुपुरजनमहीपति समेतसब शोचमेंबिकलह्वैगये हैं ( ११ ) तबधीरजधरिकै भरतकैबड़ाई बारबारकरिकैसाहनी जे हैं घोड़ेरथ हाथीतिनकेदरोगा अरु सुभट तिनको बोलायलेतभये ( १२ ) घरपुर देशमें रखवारराखिकै घोड़ेरथ हाथीतुरंग तैयार करतभये हैं ( १३ ) तबदुघड़ी साधिकै तत्काल चलतभये मगविषे मुकामकहूँ नहीं कीन है ( १४ ) आज भोर हीं प्रयागस्नानकरिकै श्रीयमुनाउतरैलागे हैं ( १५ ) हे नाथ हमको खबरिलेनकोपठाये हैं यतनाकहिकै महिविषे माथनाइकै प्रणामकरतभये हैं ( १६ ) यहलोकबाणी है छः सातक किरातदूतनके संगकरिदीन अरु बिदाकीन ( १७ ) दोहार्त्थ॥ हेपार्वतीतबजनककोआगमनसुनतसन्तेसम्पूर्णअयोध्याकै समाजहर्षितभयेरघुनन्दन को संकोचभयो इन्द्रकोशोचभयो है ( १८ ) जनककरआगमन

१२ घरपुरदेशराखिरखवारे बेगितुरगरथसाजिसँवारे १३ द्विघरीसाधिचलेततकाला कियबिश्रामनमगमहिपाला १४ भोरहिआजुनहाइप्रयागा चलेयमुनउतरनसबलागा १५ खबरिलेनहमपठयेनाथा असकहितिनमहिनायउमाथा १६ साथकिरातछसातकदीन्हे मुनिवरतुरतबिदाचरकीन्हे १७ दो० ॥ सुनतजनकआगमनसबहर्षेअवधसमाज रघुनन्दनहिंसकोचबड़शोचबिबशसुरराज १८ चौ०॥गरइगलानिकुटिलकैकेयी

**काहिकहैक्यहिदूषणदेयी १९ असमनआनिमुदितनरनारी भयउबहोरिरहबदिनचारी २० यहिप्रकारगतबासरसोऊ प्रातनहाइलागसबकोऊ २१ करिमज्जनपूजहिंनरनारी गणपतिगौरिगिरीशतमारी २२ रमारमणपदबन्दिबहोरी विनवहिंअंचलअंजुलिजोरी २३ राजारामजानकीरानी आनँदअवधिअवधरजधानी २४ स्ववशबसहिपुनिसहितसमाजा भरतहिरामकरहिंयुवराजा २५ यह सुखसुधासींचिसबकाहू देवदेहुजगजीवनलाहू २६ दो०॥ गुरुसमाजभाइनसहित**

सुनिकै कैकेयीग्लानिबिषेगरीजाति है अपनी चूककासेकहै अरु क्यहिकोदूषणदेय ( १९ ) श्रीअयोध्यावासी जनककर आगमन मनमाआनिकै आनन्दसे कहते हैं कि चारिछःरोज और रहवभयो है ( २० ) ऐसेही हर्षशोकके विचारमें सो बासरबीततभयो है प्रातसमय सबलोग स्नान करतभये हैं ( २१ ) स्नानकरिकै सबलोगपंचांग गणेशगौरी शिवसूर्यकीपूजा करते हैं ( २२ ) पुनिविष्णुको पूजिकै स्त्री अंचलजोरिकै पुरुष करजोरिकै विनय करते हैं ( २३ ) राजाश्रीरामचन्द्र रानीश्रीजानकी जी आनन्दकी अवधिअवधरजधानी में होइँ ( २४ ) हे देवतहु यहवरदेहु श्रीअयोध्या फेरिस्ववशबसै श्रीरामचन्द्रराजाहोहिं अरु भरतको युवराजकरहिं ( २५ ) हे देवहुयहिसुखसुधाते सबको सींचिकै जगत् में जीवनकर लाभलेहु ( २६ ) दोहार्थ॥ गुरु अरुसमाज अरु भाइनसहित श्रीरामचन्द्र राज्यपर बैठहिं अरु त्यहिसुखमें हमारोशरीर छूटिजाइ यहवरदेहु ( २७ ) स्नेहमयबाणी पुरजननकै सुनिकै योगीजनजेहैं मुनीशजेहैं ते अपने योगज्ञानकी निन्दाकरते हैं ( २८ ) यहिप्रकारते नित्यकर्म्मपुरजनकरिकरि श्रीरामचन्द्र को प्रणामकरते हैं ( २९ ) ऊंचनीच मध्यम ऊंचब्राह्मणक्षत्रीवैश्य नीचशूद्रइत्यादिक यथायोग्य नरनारि अधिकारप्रति दर्शनकरते हैं ( ३० ) अरु श्रीरामचन्द्र सबको सावधान करिकै सन्मानकरते हैं ( ३१ ) लरिकाईते रघुवरकै बानिहै सम्पूर्ण अयोध्यावासिनका नीतिप्रीति पहिंचानिकै पालतआये हैं ( ३२ ) काहेते रघुराउ

**रामराजपुरहोहु अछतरामराजाअवधमरणमाँगुसबकोउ २७ चौ०॥ सुनिसनेहमयपुरजनबानी निदरहिंयोगबिरतिमुनिज्ञानी २८ यहिबिधिनित्यकर्म्मकरिपुरजन रामहिंकरहिंप्रणाममुदितमन २९ ऊँचनीचमध्यमनरनारी लहहिंदरशनिजनिजअनुहारी ३० सावधानसबहिनसनमानहिं सकलसराहहिंकृपानिधानहिं ३१ लरिकाईतेरघुबरबानी पालतप्रीतिनीतिपहिचानी ३२ शीलसकोचसिन्धुरघुराऊ सुमुखमुलोचनसरलसुभाऊ ३३ कहतरामगुणगणअनुरागे सबनिजभाग्यसराहनलागे ३४ हमसबपुण्यपुंजजगथोरे जिनहिंरामजानतकरमोरे ३५ दो० ॥ प्रेममगनत्यहिसमयसबसुनिआवतमिथिलेश सहितसभासंभ्रमउठेरबिकुलकमलदिनेश ३६ चौ०॥ भाइसचिवशुचिगुरुजनसाथा आगेगवनकीन्हरघुनाथा ३७ गिरिबरदीखजनकनृपजबहीं करिप्रणामरथत्यागयउ तबहीं ३८ रामदरशलालसाउछाहू पथश्रमलेशकलेशनकाहू ३९ मनतहँजहँरघुवरबैदेहीविनुमनतनसुखदुखसुधिकेही ४० आवत**

शील के समुद्र हैं अरु सबके सन्मुख हैं पाछे काहूको नहींदिहे हैं अरुसुलोचन कही सबपर कृपादृष्टि हैं अरु सहजहीसरलसुभाव है ( ३३ ) परस्पर यहकहिकहि अनुराग को प्राप्तिहोते हैं ( ३४ ) हमसबका पुण्यपुञ्ज के थोरे हैं बहुत हैं काहेते जिनको श्रीरामचन्द्र आपन जानते हैं ( ३५ ) दोहार्थ॥ त्यहिसमयविषे यहसुना कि मिथिलेश निकट आये तबसब कोई प्रेमतेमग्नहोतभये अरु रघुकुल कमल दिनेश जहां श्रीरामचन्द्र हैं त्यहिसहित सभासंभ्रम उठतभये हैं संभ्रमकही शरीरकर संभार नहीं रहा है ( ३६ ) तब श्रीजनकजीको आगेलेबेको श्रीरघुनाथजी गुरुभाई मंत्रिनसहितचलतेभये ( ३७ ) तहां जनकजीने कामदाजीको देखिकै प्रणामकरिकै रथको त्यागिदीन्ह्यउ है ( ३८ )

श्रीरामचन्द्र के दर्शन की लालसा के उत्सव करिकै श्रमकर क्लेश लेशहूमात्र नहींभयो हैं ( ३९ ) मगको क्लेश काहेते नहींभयो है सबकर मन तौ श्रीसीताराम विषेरहै अरु जो तनविषे मननहीं है तौ दुख कैसे होइगो ( ४० ) सहजस्नेह जो प्रेममदहै त्यहिते मदमाते जनकजी समाज संयुक्त मत्त यहिभांति ते चले आवते हैं ( ४१ ) आइकै दोऊ समाज निकट प्राप्तिभये अति अनुराग ते परस्पर मिलतभये हैं ( ४२ ) जनकजी मुनिके पद बन्दनाकरते हैं अरु जनक की ओर जे ऋषि है तिनके पदको बन्दना श्रीरघुनाथजी करते हैं ( ४३ ) भाइनसहित श्रीरामचन्द्रराजाको मिलिकै सहित समाज अपने आश्रमको लिवाइचले हैं ( ४४ ) दोहार्थ॥ श्रीरामचन्द्रकर आश्रम सोई समुद्र है अरु श्रीचित्रकूट अतिपावन शांतरसरूप सोई पूर्णपाथ है अरु जनककी सेनाकर श्रीरामचन्द्र

जनकचलेयहिभांती सहजसनेहप्रेममदमाती ४१ आयेनिकटदेखिअनुरागे सादरमिलनपरस्परलागे ४२ लगेजनकमुनिजनपदबन्दन ऋषिनप्रणामकीन्हरघुनन्दन ४३ भाइनसहितराममिलिराजहिं चलेल्यवाइसमेतसमाजहिं ४४ दो०॥ आश्रमसागरशान्तिरसपूरणपावनपाथ सेनमनहुंकरुणासरितलियेजातरघुनाथ ४५ चौ०॥ ढाहतज्ञानविरागकरारे वचनसशोकमिलतनदनारे ४६ शोचउसाससमीरतरंगा धीरजतटतरिवरकरभंगा ४७ विषमविषादतोरावतिधारा भैभ्रमभँवरअवर्त्तअपारा ४८ केवटबुधविद्याबड़िनावा सकइनखेइअइकनहिंआवा ४९ बनचरकोलकिरातबिचारे थकेविलोकिपथिकहियहारे ५० आश्रमउदधिमिलीजबआई

बिषे विरह सोई करुणारस नदी है ताते ज्ञान शांतरस प्रेममय जल ते पूर्ण है त्यहिनदी को श्रीरामचन्द्र आश्रम समुद्रकोलैचलेहैं जैसे भगीरथ गंगाको लैचले हैं ( ४५ ) तहां करुणारूप नदी अतिजोरतेचली है सबकरज्ञान वैराग्य दौ कगार ढाहत चलीजाती है अरु शोकसंयुक्त जहांतहां वचन कहते हैं सोई मानहुं नदनार मिलते हैं ( ४६ ) अरु शोच जो है सोई पवन है अरु शोचकरिकै ऊबि कै उसास जो लेते हैं सोई करुणा नदीविषे तरंग उठती जाती हैं ( ४७ ) बिषम जो विषाद है सोई जोरधारातोरावतजाती है अरु भय जो है सोई भंवर है भयकही डरिगये हैं कि बिधाता धौं काकरैगो अरु भ्रम जो है सोई आवर्त्त है भ्रमकही श्रीरामचन्द्र फिरै अतर्ककही कहूं नदके खोह में अगाधजल घूमै है इहां दुख अगाध है ( ४८ ) अरु बुध जो पण्डित हैं तेई केवट हैं अरु उनकी विद्यासोई नाव हैं अरु त्यहिनावको खेइनहीं सकते हैं काहूकै विद्या नहींचलि सकै है अइककही कौनिउयुक्ति नहीं आवति है का करौं नदी अति जोर है ( ४९ ) अरु करुणा बिरहरूप नदी के पारजोबेको पथिकचाही सो बनचर कोलकिरात हैं ते बिचारे का करैं हृदय में हारि गये हैं तेभी धीर्य नहींधरिसकते हैं सो कैसे पारपावैं ( ५० ) जैसे भारी नदी समुद्र को मिलै तब समुद्र अकुलाइकै उठै है तैसे सेनाकै करुणारूप नदी जब श्रीरामाश्रम समुद्र को मिलीजाइ तब सम्पूर्ण समाज अकुलाइ उठतभये हैं ( ५१ ) शोक ते बिकल होतभये हैं दोऊसमाज में काहूको ज्ञान धीर्यनहींरह्यो है ( ५२ ) दोऊसमाज शोककरते हैं श्रीदशरथ महाराजकर शीलसुभाव गुण कहि कहि शोकसमुद्र में अवगाहबककही डूबते उतराते हैं ( ५३ ) छन्दार्थ॥ श्रीरामाश्रम सोई शोक को समुद्रभयो है त्यहिविषे श्रीअयोध्या के नर

मनहुंउठ्यउअम्बुधिअकुलाई ५१ शोकबिकलदोउराजसमाजा रहानज्ञाननधीरजलाजा ५२ भूपरूपगुणशीलसराही शोचहिंशोचसिन्धुअवगाही ५३ छं०॥ अवगाहिशोकसमुद्रशोचहिंनारिनरव्याकुलमहा दैदोषसकलसरोषबोलहिंबामविधिकीन्ह्योकहा ५४ सुरसिद्धतापस

योगिजनमुनिदेखिदशाविदेहकी तुलसीनसमरथकोउजोतरिसकहिसरितसनेहकी ५५ सो० ॥ कियेअमितउपदेश जहँ तहँलोगनमुनिबरन धीरजधरियनरेशकह्यउवशिष्ठ विदेहसन ५६॥ * * * *

चौ०॥ त्यहिकिमोहममतानियराई यहसियरामसनेहबड़ाई १ विषयीसाधकसिद्धसयाने त्रिविधजीवजगवेदबखाने २ रामसनेह

नारि अवगाहब कही बूड़त उतरात हैं दोष देकै रिसाइकै सबकहते हैं कि वामविधातैं धौं का कीन है (५४) सुरसिद्ध मुनीश योगीशजनजेहैं इत्यादिक विदेहजी की सबदशा देखिकै ऐसो कोई नहींसामर्थ्यरह्यो जो स्नेहनदी के पारजाइसकै (५५) सोरठार्थ॥ तब वशिष्ठादिक मुनीश्वर सब लोगन को अनेक उपदेश करते हैं अरु कहते हैं हे विदेहजी धीरजधरियेजिन जनकको ज्ञान सूर्यवत् है अरु वचन किरणि है अरु अनेक मुनि कमल हैं (५६) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने श्रीअयोध्याकाण्डे द्वौसमाजविरहवर्णनंनाम विंशतिस्तरंगः २०॥

दो०॥ जनकसमाजविवेकमयगुरुवशिष्ठप्रभुबात रामचरणयकविंशमेंनीतितरंगसोहात २१ जिन जनककर ज्ञान सूर्यवत् जिनजनक को मोह ममता नहीं समुहायसकै है यह श्रीसीतारामचन्द्र के स्नेहकीबड़ाई है (१) तहां तीनिप्रकार के जीव जगत् में हैं विषयी अरु साधक जे मुमुक्षू अरु एक सिद्धकही मुक्त हैं अरु एककैवल्य अरु एकनित्य तहां तीनिप्रकार के जविजगमें हैं विषयी अरु साधक जे मुमुक्षु अरु एकसिद्ध जे जीवन्मुक्त हैं अरु कैवल्य अरु नित्य तहां कैवल्य नित्य ये द्वौ जगत् ते मुक्तहोगये हैं तहां नित्यकही जे श्रीरामचन्द्र के समीपपर विभूतिविषे रहते हैं लक्ष्मण भरत शत्रुहन हनुमान् इत्यादिक अरु कैवल्यकही जे ब्रह्मास्मि सायुज्यमानते हैं तामें मतकरिकै दुइभेद हैं विशिष्टाद्वैतविषे परमेश्वर के अंग के अलंकार ह्वैकै रहते हैं अरु अद्वैतविषे जीव ब्रह्मकी एकतामानत हैं तहांदूनो शुद्धजीवै तत्व हैं पुनि विषयी साधक सिद्धकहते हैं ये तीनि जगत् में विषयी जीव में तीनिभेद हैं एक पामर विषयी हैं जिनको ईश्वरकरज्ञानै नहीं है अरु एकबद्ध विषयी हैं सदा शास्त्र पढ़ते हैं सुनते हैं सब जानते हैं कहते हैं अपनाको धिग्मानते हैं पर प्रथमते अरु अन्तताईविषयकर अनुसन्धान बनारहत है अरु विषयिनि है शास्त्रपढ़त अरु बांचत ईश्वरकर ज्ञानहोत है परकेवलविषयकी वासना आद्यन्तपर्यन्त ताईबनी है पुनि साधककही जेमोक्षकै साधनाकहैं मुमुक्षुज्ञानै चारिभेद हैं

सरिसमनजासू साधुसभाबड़आदरतासू ३ सोहनरामप्रेमबिनुजानूकर्णधारबिनुजिमिजलयानू ४ मुनिबहुबिधिबिदेहसमुझाये राम

विषयशील मुमुक्षुकृपाशील मुमुक्षु है मननशील मुमुक्षु मुक्तशील मुमुक्षुतहां विषयशील मुमुक्षु विषय को उपाय करते हैं भगवत् भागवत में लगायदेते हैं आपु वैराग्य ज्ञान बने हैं पुनि कृपाशील अनेक भगवतकर्मकरिकै अर्पणकरिदेते हैं आपु शुद्धवैराग्य में आरूढ़ हैं पुनि मननशील शस्त्रकाविचार सारासार अहर्निश करते हैं सारकर ग्रहण असारकरत्याग तीव्र वैराग्य में आरूढ़ हैं पुनि मुक्तशील कही सनकादिकनकी दशा में अनुसन्धानकरते हैं तीव्रतर वैराग्यमें आरूढ़ है पुनि सिद्ध जे मुक्त हैंतिनमें तीनि भेद हैं एक जीवन्मुक्त जनक वशिष्ठ विश्वामित्र बामदेव इत्यादिक अरु विदेह मुक्त दत्तात्रेय जड़भरत ऋषभदेव इत्यादिकअरु सनकादिक शुकदेव नारदइत्यादिक जीवन्मुक्त विदेहमुक्त दूनों दशा में हैं तीनों के एकैतत्त्व है पर ये तीनोंप्रकार के जीव जगकही प्रकृतिमण्डल में हैं यह वेद कहते हैं इत्यर्थः (२) यहि नीतिविषे ज्यहिकर स्नेह श्रीरामचन्द्र के चरणारबिन्द विषे अधिक है सन्तनकी सभाविषेतेहीकर आदर है (३) श्रीरामचन्द्र के स्नेह बिना ज्ञाननहीं शोभित है अरु जे ज्ञानके सिद्धान्त को प्राप्त हैं अरु श्रीरामचन्द्र के चरणारविंदविषे अखण्डप्रेम हैं ते सन्तनकी सभाविषे अग्रणीय हैं अरु जो श्रीरामचन्द्र विषे प्रेमनहीं है तौ बहैज्ञान अशोभित है जैसे बिनाकर्णधार कीनाव जहांचाहै तहां बहिजाइ (४) ऐसे ही वशिष्ठजी विदेह को बहुतभांति समुझाइकै सबलोग श्रीरामघाट स्नानकरतभये हैं (५) सबनर नारि शोकते बिकल हैं त्यहिदिन निर्जल रहतभये हैं (६)

त्यहिदिन पशु खग मृगन आहार नहींकीन है अपरकर कौन बिचार है ( ७ ) दोहार्थ॥ हे पार्बती निमिराज समाज रघुराज समाज दोऊसमाज प्रातस्नानकरिकै सामबटतर बैठतभये हैं मन गात कृश ह्वै गये हैं ( ८ ) जे अवधमिथिलापुरबासीब्राह्मण ब्रह्मवेत्ता हैं ( ९ ) अरु हंसकही सूर्यबंश अरु जनक के पुरोधक कही उपरोहित श्रीवशिष्ठजी शतानन्दजी जिन यहिजगत् जो मायाकरजाल है त्यहिविषे परमार्थ अच्छीतरह से शोधिराख्योहै ( १० ) ते अनेक

घाटसबलोगनहाये ५ सकलशोकसंकुलनरनारी सोबासरबीत्यउबिनुबारी ६ पशुखगमृगननकीन्हअहारा प्रियपरिजनकरकवन बिचारा ७ दो०॥ द्वौसमाजनिमिराजरघुराजनहान्यउप्रात बैठेसबवटबिटपतरमनमलीनकृशगात ८ चौ० ॥ जेमहिसुरदशरथपुरबासी जेमिथिलापतिनगरनेबासी ९ हंसबंशगुरुजनकपरोधा जिनजगमगपरमारथशोधा १० लगेकहनउपदेशअनेका सहितधर्म्मनयबिरतिबिबेका ११ कौशिककहिकहिकथापुरानी समुझायेसबसभासुवानी १२ तबरघुनाथकौशिकहिकह्यऊ नाथकाल्हि जलबिनुसबरह्यऊ १३ मुनिकहउचितकहतरघुराई गयोबीतिदिनपहरअढ़ाई १४ ऋषिरुखलखिकहतिरहुतराजूयहांउचितनहिंअशनअनाजू १५ कहाभूपसबसबहिसोहाना पाइरजायसुचलेनहाना १६ दो०॥ त्यहिअवसरफलफूलदलमूलअनेकप्रकार

उपदेश करनेलगे हैं धर्म नीति विवेक वैराग्यसंयुक्त ( ११ ) पुनि कौशिकजो विश्वामित्र हैं ते पुराणिकही वेदशास्त्र पुराणन की कथा कहिकहिकै सुन्दरि बाणी ते सबको समुझावते भये हैं ( १२ ) तब श्रीरामचन्द्रविश्वामित्रतेकहा हेनाथ काल्हि सब निर्जलरहे हैं ( १३ ) तबमुनि सब ते कहा कि श्रीरघुनाथजी उचित कहते हैं अढ़ाईपहर दिन बीतिगयो है ( १४ ) तब विश्वामित्रकर रुखनिरखिकै जनकजी ने कहा कि इहां हमको अन्नभोजन उचितनहीं है ( १५ ) भूपके बचनसुनिकै सबको नीकलागहै वशिष्ठ की आज्ञापाइकै सबस्नानकरिबेको चले हैं ( १६ ) दोहार्थ ॥ सब लोग स्नान नेमकरिकै बैठे हैं तेहीसमय विषे श्रीरामइच्छा ते कन्दमूलफलफूल दल इत्यादिक कोल भिल्ल किरातादि अनेकबनचर विपुल कांवरिभरिभरि त्यावतभये हैं विश्वामित्र वशिष्ठ के आगे धरतभये हैं ( १७ ) चित्रकूट के पर्वत सब चारिउ फलके दाता हैं श्रीरामचन्द्र के प्रसाद कही कृपा ते ज्यहि को अवलोकतसन्ते सम्पूर्ण बिषाद नाशहोत है ( १८ ) सरसरिता बन भूमि विभागकही पृथक् पृथक् जनु उमंग अरु आनन्द अनुराग के स्वरूप हैं ( १९ ) बेलि विटप तृण सफल सफूल तिनपर मधुकर विहंग बोलते हैं अनुकूलकही मनके आनन्ददाता ( २० ) त्यहि अवसरविषे बनको अधिक उत्सव होतभयो है फलफूल दल सुधाके समानपरिपूर्ण ह्वै रहे हैं अरु शीतलमन्द सुगन्ध पवन बहते हैं ( २१ ) त्यहि

लैआयेबनचरबिपुलभरिभरिकाँवरिभार १७ चौ० ॥ कामदभयेगिरिरामप्रसादा अवलोकतअपहरतबिषादा १८ सरसरिताबनभूमिबिभागा जनुउमगतआनँदअनुरागा १९ बेलिबिटपसबसफलसफूला बोलतखगमृगअलिअनुकूला २० त्यहिअवसरबनअधिकउछाहू त्रिबिधिसमीरसुख दससबकाहू २१ जाइनबरणिमनोहरताईजनुमहिकरतिजनकपहुनाई २२ तबसबलोगनहाइनहाई रामजनकमुनिआयसुपाई २३ देखिदेखितरुवरअनुरागे जहँतहँ पुरजनउतरनलागे २४ दलफलफूलकन्दबिधिनाना पावनसुन्दरसुधासमाना २५ दो०॥ सादरसबकहँरामगुरुपठयेभरिभरिभार पूजिपितरसुरअतिथिसबलगेकरनफलहार २६ चौ०॥ यहिबिधिबीते बासरचारी रामनिरखिनरनारिसुखारी

२७ दुहुंसमाजअसिरुचिमनमाहीं बिनुसियरामफिरबभलनाहीं २८ सीतारामसंगबनबासू कोटिअमरपुरसरिससुबासू २९ परिहरिलषणरामबैदेहीज्यहिघरभावबामबिधितेही ३० दाहिनदैवहोइजबसबहीं रामसमीप

वनकी मनोहरता बर्णिबेयोग्य नहीं है जनु महि जनकके पहुनाई करतिहै काहेते महि श्रीजानकीजी की माता है ( २२ ) श्रीरामचन्द्र अरु मुनि अरु जनककी आज्ञा पाइकै सबलोग नहाय नहाय जनकजी के ओर केलोग सुन्दर तरु देखि २ उतरतभये हैं ( २३ ) तरुवरनको देखि देखि अनुरागभरिकै उतरतभये हैं ( २४ ) दलफल फूल कन्दमूल इत्यादिकनाना विधिके अति पावन सुधा के समान हैं ( २५ ) दोहार्त्थ ॥ सादरकही आदरते श्रीवशिष्ठजी विश्वामित्रजी से भराइ भराइ सबको पठवतभये हैं ते सब सुरपितर अतिथि पूजि पूजि फलाहार करनेलगे हैं ( २६ ) यही प्रकार ते चारिदिन बीततभये हैं श्रीरामचन्द्र को सब नरनारि देखिदेखिसुखीरहते हैं ( २७ ) दोऊसमाजके यहरुचिहै कि श्रीसीतारामचन्द्रके विना न फिरिये ( २८ ) परस्पर कहते हैं कि सीतारामचन्द्रकेसंग विषेबनबासकरी तोकोटिनइन्द्रपुरते सरससुख है ( २९ ) श्रीरामचन्द्र वैदेहीलक्ष्मण को परिहरिकै ज्यहि को घरसुहाय त्यहिके ऊपर विधताबाम है ( ३० ) तबजानिये कि दैव जोपरमेश्वर है सो दाहिन है जब श्रीरामचन्द्र के समीप हमारोबासहोय ( ३१ ) तीनिहूकाल श्रीरामचन्द्रकर दर्शन मुदमंगलकरमाला कही समूह है ( ३२ ) श्रीरामचन्द्र के गिरिबन थलकर अटनकहीफिरब अरु तपस्विनकेथल करदर्शन अरुकन्दमूल फलसुधासमभोजनकरहिंगे ( ३३ ) अतिसुखसंयुक्त दुइसातसम्मतकही चौदहवर्षपलसमबीति जायंगेश्रीसीतारामचन्द्रके संगविषेनजानिपरैंगे ( ३४ ) दोहार्त्थ ॥ दोऊसमाजयह कहते हैं कि यह भाग्य हम जो लोग हैं तिनको कहां है ऐसेकहिकहि श्रीरामचन्द्रके चरणारविन्द

बसीबनतबहीं ३१ मन्दाकिनिमज्जनतिहुँकाला रामदरशमुदमंगलमाला ३२ अटनरामगिरिबनतापसथल अशनअमियसमकन्दमूलफल ३३ सुखसमेतसम्मतदुइसाता पलसमहोइहिजानिनजाता ३४ दो० ॥ यहसुखयोगनलोगसबकहहिंकहाअसभाग सहजसुभायसमाजदोउरामचरणअनुराग ३५॥ * * * * * * * *

चौ०॥ यहिबिधिसकलमनोरथकरहीं बचनसप्रेमसुनतमनहरहीं १ सीयमातुत्यहिसमयपठाई दासीदेखिसुअवसरआई २ सावकाशसुनिसबसियसासू आयउजनकराजरनिवासू ३ कौशल्यासादरसनमानी आसनदीनसमयसमआनी ४ शीलसनेहसरसदुहुंओरा

विषे अति अनुरागहोत है ( ३५ ) इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने श्रीअयोध्याकाण्डद्वोसमाजवर्णनन्नामएकविंशतिस्तरंगः २१॥

दोहा ॥ दोउरनिवासमिलापबरदुइ अरुबीसतरंग । रामचरणदशरथजनकदुइपरशक्तिप्रसंग २२ दोउ समाज यहि प्रकार ते मनोरथ करते हैं जोपाछे कहिआये हैं तिनकेवचन प्रेममयमनको हरते हैं ( १ ) त्यहिसमयविषे श्रीजानकीजीकी माता श्रीकौशल्याजी के मिलाप हेतु दासी पठावती भई हैं सोदासी तुरन्तखबरि लैकैरानी से कहती हैं किसुन्दर अवसर है ( २ ) सावकाश सुनिकै श्रीसुनयनाजी श्रीकौशल्याजी केसमीप आवती भई हैं ( ३ ) श्रीकौशल्या जी अति आदरते सन्मानकरती भई हैं समयसम आसन देतीभई हैं श्रीसीतारामचन्द्र करनेमस मुझिकै ऊर्णबस्त्र को आसनदीन है ( ४ ) शील श्रीसुनयना की ओर अरुस्नेह श्रीकौशल्याकी ओर दोऊपरस्पर अतिशय देखिकै कुलिशजे कठोर हैं तेद्रवत हैं ( ५ ) रनिवासन के तनपुलकते शिथिल ह्वै गये हैं नेत्रनमेंजल भरिआये हैं नखनते पृथ्वी मैं खिंचावती हैं शोचकरती हैं ( ६ ) तब श्रीसीतारामचन्द्र की ऐसी मूर्त्ति ह्वैरही है जनुकरुणारस बहुवेषकोरूपबनाइकै बिसूरतकही चिंता करत है प्रेमदुइरसते उत्पन्नहोत है शृंगार अरु करुणारसविषे इहां करुणारस को प्रयोजन है

करुणारस वेषहैत्यहिको अवांतर प्रेममूर्तिमान् है इहां जनु हेतु उत्प्रेक्षा कह्यो है ( ७ ) तब धैर्य धरिकै श्रीजानकीजी की माता कहती हैं हे महारानी विधाताकैबुद्धि बांकी कहीटेढ़ी है जो दूधके फेन को बज्रकी ढांकीते फोरते हैं श्रीसीतारामचन्द्र दूधके फेन तिनको बज्रकै ढांकीबन तहां पठैकै क्लेश देतभयो है यहां वात्सल्यरसमें विधातामें दूषणकीन्ह है ( ८ ) दोहार्थ॥ देखिये तौ नीकजो पदार्थसुधा त्यहिको सुनाइ राख्यो है किसुधा है अरु देखिबेपीबेमें नहीं आवै है अरु बिकार जो गरलकही विष है सोप्रत्यक्ष

**द्रवहिंदेखिसुनिकुलिशकठोरा ५ पुलकशिथिलतनवारिबिलोचन महिनखलिखनलगींअतिशोचन ६ सबसियरामप्रेमकीमूरति जनुकरुणाबहुवेषबिसूरति ७ सीयमातुकहविधिबुधिबाँकी जोपयफेनुफोरफविढाँकी ८ दो० ॥ सुनियसुधादेखीगरलसबकरतूतिकराल जहँतहँकाकउलूकबकमानससकृतमराल ९ चौ०॥ सुनिसशोचकहदेविसुमित्रा विधिगतिसबबिपरीतविचित्रा १० जोसृजिपालैहरैबहोरी बालकेलिसमविधिमतिभोरी ११ कौशल्याकहदोषनकाहू कर्म्मबिबशदुखसुखक्षतिलाहू १२ कठिनकर्म्म**

किहे है अरु काकउलूकबक प्रत्यक्षजहां देखो तहांही हैं अरु हंसमानसरविषे सकृतकही कहूंकहूं सुनिबे में आवते हैं किंतु कैकेयी के मुखविषे सुधासुनत रहेहैं सोप्रत्यक्ष विषउगिलत भईहै अरु काकउलूकबक तहां बककैकेयीभई है अरु उलूक मंथरा भई है अरु काकदेवताभये गोसाईंजी कहाहै चौपाई॥ काकसमानपाकरिपुरीती छलीमलीनकतहुंनप्रतीती अरु मानस सकृतमराल अरु अपने मानस विषे हंसवत्विवेक वशिष्ठ सुमंतादिकन को सुनारहै सो यहि समय में काहूकर विवेकन देखिपर्‍यो है ताते विधाताकै सबकरतूति करालहै ताते श्रीरामचन्द्र को राज्याभिषेक सुनाइमात्र दियो है अरु बनवास प्रत्यक्ष दियो है इत्यर्थः ( ९ ) तबयह बात सुनिकै सुमित्रा जी कहती हैं यहसत्य है विधाताकैगति सबविपरीति कही उलटी है बिचित्र है नहीं जानीजातिहै काहेते श्रीरामचन्द्र श्रीजानकीजी को वनचाही कि नचाही सो विधातैने दीन्ह है ( १० ) जो विधाता सृजै है पालत है पुनि नाश करत है बालबुद्धी है बालककोऐसो खेलकरत है ऐसीमति भोरी है ( ११ ) इहां वात्सल्यरस विषे बिधाताको दूषण देती हैं तब श्रीकौशल्याजी बोलती भईहैं हेरानिहु तुमसत्यकह्यो है परकाहे को काहूको दोषदीजिये काहेते अपने कर्मके बशदुख सुख क्षतिकही हानिलाभ इत्यादि कर्माधीन होतजाते हैं तीनिहुं कालविषे यहां कौशल्याजी कर्मको प्रधानकीन है ( १२ ) अरु जो तुमकहती हौ कि बिधाताको दूषणहै सो यहिरीतिसे दूषण है काहेते कि कर्मकीगति अपनाको नहीं समुझिपरै है बिधाता जानत है सो जे जस कर्मकरते हैं ताको तसफल देतेहैं जैसे जो जैसोबीज बोवत है सो तैसोलुनत है ( १३ ) अरु विशेषतौ यह जानब कि ईशरजाय सबही के शीशपर है जो बिधाता उत्पत्तिकही उत्पन्नकरत है अरुथितिकही विष्णुपालन करते हैं अरु रुद्रप्रलय करते हैं अरु बिषमारि डारत है अरु असुत अमरकरत

**गतिजानुविधाता जोशुभअशुभकर्म्मफलदाता १३ ईशरजायशीशसबहीके उतपतिथितिलयविषहुअमीके १४ देविमोहवशशोचियबादी विधिप्रपंचअसअचलअनादी १५ भूपतिमरणजिअबउरआनी शोचियसखिलखिनिजहितहानी १६ सियामातुकहसत्यसुबानी सुकृतीअवधिअवधपतिरानी १७ दो० ॥ लषणरामसियजाहिंबनभलपरिणामनपोच गह्वरहियकहकौशिला**

है सो सब ईशरजाय जानब इहां ईश श्रीरामचन्द्र को कहाहै ताते रामरजाय सबके माथेपर है ताते काहूको दूषण न दीजिये श्रीरामरजाय अपेलजानब ( १४ ) हे देवि मोहकेवश बादिकही वृथाशोच करती हौ बिधिप्रपंच कही विधिके प्रपंच में ईशकैरजाय असअचल अनादिहै जस कहि आइनहै ( १५ ) श्रीकौशयाजी कहती हैं हेरानी जो भूपति कर मरबजियब मनविषे लाइत है तो आपनि हानि समुझिकै नतुईशकी रजाय ते मरणजीवन हानिलाभ दुखसुख यहि संसारविषे अमेट है ( १६ ) इहांश्रीकौशल्याजी की वाणी

विषे केवल शान्तरस सुनिकै योगेश्वर की रानी सुनयना बोलतीभई हैं महारानी यहसत्य तुमकस न कहहु काहेते किसुकृतकी अवधि मर्य्याद श्रीदशरथमहाराज जिनके सुकृत से परमेश्वर परब्रह्म श्रीरामचन्द्रआइकै पुत्रभये तिनकी तुमरानी ताते तुम्हार कहनायथार्थ है (१७) दोहार्त्थ॥ पुनि श्रीकौशल्याजी बोलतीभई हैं कि लक्ष्मणजी रघुनाथजी जानकीजी बनको जाहिं परणिामकही आगेभला है सबकार्य्य सिद्ध है पोचकही बेकारनहींहै गह्वरकही प्रेमते गद्‌गदबाणी कहती हैं मोरे भरतकरशोच है (१८) हे रानी ईशके प्रसाद अरु तुम्हारे आशीर्वादते चारिउ जे पुत्र हैं अरु पुत्रवधूजे हैं ते गंगाजल के समान निर्मल पावन बरोबरि हैं (१९) अरु मैं श्रीरामचन्द्रकै शपथकबहूं नाहीं कीनहैसो करिकै कहतिहौं हे सखी इहां सखी कही सर्वोपरिश्रेष्ठ सबप्रकारतुम हौ मैं सत्यभावसे कहतिहौं (२०) श्रीरामचन्द्रविषे भरतकर शीलविनयबड़ाई अरु भायप अरु भक्ति अरु भरोसभलाई (२१) नीतिप्रीति शील सकोच भरोस भक्तिभावशरणागत इत्यादिक जेतेगुण भरतके श्रीरामचंद्रविषे हैं ते कहतकैशारदाकी मति हीचिजाती है नहीं कहिसक्ती हैं जैसे तलाई की सीपीते कहूंसमुद्र उलचाजाइ है तैसे शारदाकै मति भरतकेगुणको का कहिसकै है (२२) अरु बारबार मोसे महीप कहा है कि भरत

मोहिभरतकरशोच १८ चौ०॥ ईशप्रसादअशीषतुम्हारी सुतसुतबधूदेवसरिबारी १९ रामशपथमैंकीननकाऊ सोकरिकहौंसखीसतिभाऊ २० भरतशीलगुणविनयबड़ाई भायपभक्तिभरोसभलाई २१ कहतशारदहुकैमतिहीची सागरसीपकिजाहिउलीची २२ जान्यहुसदाभरतकुलदीपा बारबारम्वहिंकह्यउमहीपा २३ कसेकनकमणिपारिखपाये पुरुषपरखियेसमयसुहाये २४ अनुचितआजुकहबअसमोरा शोकसनेहसयानपथोरा २५ सुनिसुरसरिसमपावनबानी भईसनेहशिथिलसबरानी २६ दो० ॥ कौशल्याकहधीरधरिसुनियदेविमिथिलेशि कोविवेकनिधिबल्ल-भहिंतुमहिंसकैउपदेशि २७ चौ०॥ रानिरायसनअवसरपाई आपनिबातकहबसमुझाई २८ राखहिंलषणभरतगवनहिंबन जोयहमतमानहिंमहीपमन २९ तौभलियतनसुकरहुबिचारी मोरेशोच

को कुलकर दीप जानेरहब (२३) सो भरतको मैं देखिलीन है कुल केप्रकाशकर्त्ता हैं काहेते कञ्चनकसेते जानाजात है अरु पुरुष समय पायकै सुभावते परखाजाइहै देखिये तौ ऐसी उपाधिविषे भरतजी ऐसे सावधान हैं (२४) यहकहना यथार्थ है परआजु यहिसमयविषे यहकहतसन्ते मेरोसयानप थोरह्वइजात है कि सब कोई यह जानैगो कि भरतजीराजाभये हैं ताते कौशल्याजी खुशामद करती हैं (२५) गंगाजल समबाणी सुनिकै स्नेहते शिथिल सबरानी भई हैं (२६) दोहार्त्थ। श्रीकौशल्याजीधीरज धरिकै कहती हैं हेदेविमिथिलेशि सुनहु विवेकके निधिकही समुद्र ऐसे श्रीजनकजी तिनकी तुम बल्लभाकही प्रियाहौ तुम मोको उपदेशकरिसकौहौ (२७) हेरानी अवसर पाइकै राजासे आपनीकी रीतिसे समुझाइकै कहब हमारी कही न समुझिपरै (२८) लक्ष्मणजी फिरहिंभरत जी श्रीरामचन्द्र के संगजाहिं यह मैं आपनि समुझि कहति हौं जो यहमत महीप मन में मानहिं (२९) जो यहमत होइ तौ यह विचारभला है काहेते मोरेमनविषेभरतकर शोचबहुत है (३०) काहेते भरतकेमनविषे श्रीरामचन्द्रविषे गूढ़स्नेहहैताते इहांरहेतेमोको नीकनहीं लागत है यहां यह अभिप्राय है कि राजाकीनाईं श्रीरामचन्द्रके विरहविषे कबहूंभरतजीशरीरको कदाचित्त्यागिन देहिं अरु लक्ष्मणजी श्रीरघुनाथजीकी सेवा अरु आज्ञा में बड़े धीर्य्यमान् हैं काहेते सर्वजीवनकेआचार्य्य हैं (३१) श्रीकौशल्याजीके सरलसुभाव अरु शान्तरस वात्सल्यरसते सानीबाणी सुनिकै सबरानी करुणारसविषेसानिरही हैं (३२) श्रीकौशल्याजीके बचनसुनिकै देवतन के आनन्दभयो

भरतकरभारी ३० गूढ़सनेहभरतमनमाहीं रहेनीकलागतम्वहिंनाहीं ३१ लखिसुभावसुनिसरलसुबानी सबभई मगनकरुणरससानी ३२ नभप्रसूनझरिधन्यधन्यधुनि शिथिलसनेहसिद्धयोगीमुनि ३३ सबरनिवासबिथकिरहिगयऊ तबधरिधीरसुमित्राकह्यऊ ३४ देवियामयुगयामिनिबीती

रामातुसुनिउठीसप्रीती ३५ दो० ॥ वेगिपायंधारियथलहि कहसनेहसतिभाइ हमरेतौअबईशगति कीमिथिलेशसहाइ ३६ चौ०॥ लखिसनेहसुनिबचनविनीता जनकप्रियागहिपायंपुनीता ३७ देबिउचितअसबिनयतुम्हारी दशरथघरनिराममहतारी ३८ प्रभुअपनेनीचहुआदरहीं अग्निधूमगिरिशिरतृणधरहीं ३९ सेवकराउकर्म्ममनबानी सदा

है कि हमारकार्य्य सिद्धिभयो है काहेतेकि श्रीकौशल्याजीको सिद्धान्तभयोकि श्रीरामचन्द्रबनकोजाहिंगे अबचाहैं श्रीलक्ष्मणजीसंगजाहिंचाहैं भरतजी जाहिंअससमुझिकै कहिकै फूलनकीवृष्टिकरते हैं अरुधन्यधन्य कहते हैं श्रीकौशल्याजी को विवेक अरु स्नेह देखिकै सुनिकै त्रिकालदर्शी जे योगी मुनि हैं ते प्रेमकरिकै शिथिलह्वैगये हैं ( ३३ ) अरु सबरनिवासबिशेषकै प्रेमतेथकितह्वैगई हैं तबधीरजधरिकै सुमित्राजी कहती हैं ( ३४ ) हेदेवी युगयाम कही दुइपहरराति व्यतीतभई तब श्रीकौशल्याजी सुनिकै प्रीतिसमेतबोलती भई हैं ( ३५ ) दोहार्थ॥ हेरानीबेग आश्रमकोजाइये हमारेतौईश की गति है कि सहायक मिथिलेश हैं यहां ईश श्रीरामचन्द्रको जानब अरुवात्सल्यरसमेंईश महादेवको ( ३६ ) स्नेहमयप्रबीण नीतिमय बचनसुनिकै सुनयनाजी श्रीकौशल्याजी के पुनीतचरण गहतीभई हैं ( ३७ ) पुनिकहती हैं किहे देविआपुकसन उचितबचनकहौ राजादशरथकीघरनीकही रानीहौ अरु श्रीरामचन्द्रकीमाता हौ सबउचित सुकृतकीमूर्त्तिहौ ( ३८ ) प्रभुजेबड़ेसामर्थ हैं ते अपनेनीचहु को आदरकरते हैं अग्निजोहै धूमको अरु गिरितृणको अपनेशीश पर धारणकिहे रहते हैं ( ३९ ) राउजो हैं जनकजी सो तौ आपुके मन बचन कर्मतेसेवक हैं अरु आपुके ऊपरतौ महेश भवानी सदासहाय हैं ( ४० ) अरु रौरेकही तुम्हारे योग्यजगत् में कोनहींहैं सूर्य्यकैसहाय कहूं दीपककरैहै ( ४१ ) सुनयनाजी कहती हैं हेमहारानी श्रीरामचन्द्रबनको जाहिंगे देवतनकर कार्य्यकरिकै श्रीअयोध्याजीमें अचलराज्य करहिंगे ( ४२ ) अमरनागनर श्रीरामचन्द्र के बाहुकेबलते अपने अपने थल में सुखपूर्वक बसहिंगे ( ४३ ) यहप्रसंग श्रीयाज्ञबल्क्यजीनेराजासे पूर्वही कहाहै सो हमश्रवणकीन्ह है हेदेविमुनिको बचन मृषानहीं

सहायमहेशभवानी ४० रौरेअंगयोगजगकोहै दीपसहायकिदिनकरसोहै ४१ रामजायंबनकरिसुरकाजूअचलअवधपुरकरिहैंराजू ४२ अमरनागनररामबाहुबल सुखबसिहैंअपनेअपनेथल ४३ यहसबजाज्ञबक्यकहिराखा देविनहोइमृषाऋषिभाषा ४४ दो०॥ असकहिपगपरिप्रेमअतिसियहितविनयसुनाइ सियसमेतसियमातुतब चलींसुआयसुपाइ ४५॥ * * *

चौ० ॥ प्रियपरिजनहिंमिलींबैदेही जोज्यहियोगभावत्यहितेही १ तापसवेषजानकीदेषी भासबबिकलबिषादविशेषी २ जनकरामगुरुआयसुपाई चलेथलहिंसियदेख्यउआई ३ लीन्हलाइउरजनकजानकी पाहुनिपावनिप्रेमप्राणकी ४ उरउमग्यउअम्बुधि

होत है ( ४४ ) दोहार्थ॥ हेपार्वति असकहिकै श्रीजानकीजीके निमित्तबिनय करती हैं कि आज्ञाहोइ तौ श्रीजानकीजीको आश्रमविषे लैजाउं पुनि आवहिंगी तब श्रीकौशल्याजी का आयसु पाइकै श्रीजानकीजीसमेत रानी आश्रमको आवतभई हैं ( ४५ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने श्रीअयोध्याकाण्डे द्वौरनिवाससमाजबिरहबिवेकमयबाणीबर्णनंनामद्वाविंशतिस्तरंगः २२॥

दोहा ॥ तेइससुभगतरंगमें जनकरानिसंबाद प्रेमबिवेकविरागमयरामचरणरतिबाद २३ आश्रमविषे जाइकै प्रियपरिजननको श्रीजानकीजी परस्पर मिलतभई जो ज्यहियोग्य हैं त्यहिको तैसेहीभावते अनेक रूपधरिकै मिलतभई हैं परकाहू यह भेदनहीं जान्यो हैं ( १ ) तापसवेष श्रीजानकीजी को देखिकै सबविशेष विषाद में बिकलहोतभये हैं ( २ )

त्यहिसमयविषे जनकजी श्रीरामआश्रममें रहेहैं तब श्रीरामगुरु जो श्रीवशिष्ठजी तिनकी आज्ञापायकै आश्रमको आगतभये हैं श्रीजानकीजी को देखतभये हैं ( ३ ) तबजनकजी जानकीजीको उरमें लगाइलीन्हहैं मानहु प्रियपाहुनिपावाहै परकैसी पाहुनिहैं पावनिकही निर्मलप्रेमरसजो है त्यहिके पानकी करनहारी पाहुनिहै ( ४ ) इहां विलक्षणं उक्तिकी उपमा गोसाईकह तेहैं तहां जनकजू यह बिचाराहै कि जानकीजी पाहुनिअति बड़ी हैं अरु अतिप्रिय हैं अरु केवल निर्मल पराप्रेमकी गाहकहैं यह समुझिकै उर उमंग्यउ अनुरागको अम्बुधि तब जनकके हृदयविषे अनुरागकोसमुद्र उमगत भयोहै तहां भूपकर मनमानहु प्रयागभयो है इहांफल उत्प्रेक्षालंकारजानब ( ५ ) प्रलयकालविषेसमुद्र उमंगत है तहां प्रयागविषे अक्षयवट जलके संगकछुऊंचबढ़त जात है त्यहिकी उपमा श्रीगोसाई यहि प्रसंगबिषे कहते हैं पाछेकी चौपाई में जो कहाकि उरउमंग्यउअंबुधि अनुरागू इहां शांतरस सो जनककर ज्ञानसर्वकर्मको फल त्यहिको फलअनुरागकही प्रीतिमय पराभक्ति श्रीजानकीजी विषे सो हृदय ते उमंग्यउ हैतहां प्रलयकाल में अक्षयबट जलके संगही बढ़त हैं इहां श्रीजानकीजी

**अनुरागू भयउभूपमनमनहुंप्रयागू ५ सियसनेहबटबाढ़तजोहा तापररामप्रेमशिशुसोहा ६ चिरंजीवमुनिज्ञानविकलजनु बूड़तलह्यउबालअवलम्बनु ७ मोहबिकलमतिनहिंविदेहकी महिमासियरघुरबरसनेहकी ८ दो० ॥ सियपितुमातुसनेहबशबिकलन**

विषे जनकजीकर अनुराग के अन्तर स्नेह बढ़्यो है सोई अक्षयबट है सनेहकही लयको इहां वात्सल्य करुणारस त्यहिको स्वाद स्नेह अरु अक्षयबट के एकपल्लवपर भगवान् बालरूपरहते हैं अरु इहां श्रीजानकीजी के स्नेह पर श्रीरामचन्द्र विषे वात्सल्यरस प्रेमदृढ़भयो है शांतरस युक्त सोई अक्षयबटपर शिशु है ( ६ ) तहां प्रलयकालविषे मार्कण्डेय जे चिरंजीव मुनि हैं ते उतिरातबूड़त विकल होइजाते हैं तब बालरूप जो भगवान् अक्षयबटपर हैं तिनकर अवलम्बन पाइकै बचिजाते हैं इहां श्रीजानकीजी परमानन्दमय मूर्तितिनके अनुराग समुद्रविषे जनकजीकर ज्ञान अखण्ड चिरंजीव मुनि बिकलह्वैकै डूबनेलगेउ है तब परब्रह्ममूर्ति श्रीरामविषे जनककर ज्ञान पराप्रेमको प्राप्तिभयो है सो अवलम्बनपाइकै ज्ञान डूबेते बचिगयो है ( ७ ) जो कोई कहै कि श्रीजानकीजी श्रीजनकजीकी कन्या हैं अरु श्रीरघुनाथजी जामाता हैं तहां अपने लरिकाकर दुखदेखिकै किसको शोक मोह नहींहोत है सो सत्य है पर जनकजी ज्ञानिन अरुयोगिनविषे अग्रणीय हैं श्रीसीतारामचन्द्र को परब्रह्म जानते हैं ज्ञानयोगकर फल श्रीसीतारामचन्द्र तिनको नीकीप्रकार ते जानते हैं ताते मोहविषे बिदेहकै मति विकलनहीं है यह सीतारामचन्द्रके स्नेहकै बड़ाई है काहेते जो श्रीसीतारामचन्द्र विषे विरह प्रेम नहोइअरु योगीज्ञानी लोमससनकादिकसमानहोइ सो बिना श्रीरामानुराग ज्ञानयोगकर्म्मअनन्योपासना सर्व स्वप्नको सुख है आकाश को फूल है शशा का शृंग है ऊषर कोबीज है बांझको बालक है इत्यादिक अनेक दृष्टांत हैं तत्र प्रमाणंश्रीमन्महारामायणे श्रीशिववाक्यंपार्वतींप्रति श्लोकएक॥ किंवर्णयामिविमलेबहुभि:प्रकारैः सीतापतेर्विगतज्ञानविशेषसर्वं ज्ञानंतदेवसुमनचयथानभोगंसत्यं वदामितदज्ञानसुखं च स्वप्ने ( ८ ) दोहार्त्थ॥ श्रीजानकीजी के मात पितुविरहते विकलभये संभारि नहींसकेहैं तब अपने हृदयविषे समयविचारिकै श्रीजानकीजी धीर्य्यधरतभई हैं ( ९ ) यहांजबजनकजीने आइकजानकीजीको देखाहै त्यहिबीच में पाँचचौपाई गोसाईंतुलसीदासजीने उत्प्रेक्षोप-

**सकियसँभारिधरणिसुताधीरजधरहु समयसुहृदयबिचारि ९ चौ० ॥ तापसवेषजनकसियदेखी भयउपरमसन्तोषविशेषी १० पुत्रिपवित्रकिह्यहुकुलदोऊसुयशधवलजगकहसबकोऊ ११ जिमिसुरसरिकीरतिसरितोरी गवनकीन्हविधिअण्डकरोरी १२ गंगअवनिथलतीनिबड़ेरे यइकिय साधुसमाजघनेरे १३ पितुकहसत्यसनेहसुबानी सीयसकुचगृहमनहुंसमानी १४ पुनिपितुमातुलीनउरलाई शिषआशिषहितदीनसुहाई १५ कहतिनसीयसकुचमनमाहीं इहांबसबरजनीभलनाहीं १६ लखिरुखमनकहतिहुतिराऊ**

मालंकारकहाहै पुनिठांवैंते कथाप्रसंगकहतेहैं श्रीजानकीजीको तापस वेषदेखिकै जनकजीको विशेष सन्तोषभयो है यहसमुझिकै कि श्रीरघुनाथजीको संगदीन है ( १० ) तबजनकजीबोले हे पुत्रि निमिवंशरघुवंश दोऊकुल तुम पवित्रकीन है तुम्हार सुयश अतिधवल कहीउज्ज्वल जगत्विषे सबकोई गावैगो ( ११ ) तोरिकीर्ति सुरसरिकी सरिसनिर्मल है तहां गंगाजीकर गमनएक ब्रह्माण्डविषे बिधातै कीन है अरु तोरिकीर्ति गंगारूप कर गमन करोरिकही कोटिनब्रह्माण्ड विषे है ( १२ ) तहां गंगाकर आगमनकेअवनिकही महिविषे तीनिथलबड़े हैं हरद्वार प्रयाग गंगासागर अरु तेरी कीर्ति गंगाविषे अनेक साधुनकी समाज बड़ेबड़े थलभये हैं ( १३ ) हे पावती पिताकी सत्यस्नेहमय वाणीसुनिकै श्रीजानकीजीकामन संकोच गृह विषे मनहु समायगयो है यहनीति है कि जो कोई बड़ाहै अरु अपनी बड़ाई यथार्थकरत है तहां बड़े संकोच पाइजाते हैं ( १४ ) तब पुनि माता पिता श्रीजानकीजीको उरविषे लगाइलीनहै आशीर्वाद सिखापन सुन्दर सुन्दर देतभये हैं ( १५ ) श्रीजानकीजी मनमें संकोचिकै कछुकहतीनहीं हैं कि इहांरात्री भरिटिकना उचित नहीं है काहेते कि माता पिता जहाँ हैं तहँ घर है जो इहांरात्रीभरि टिकैं तौ चौदहबर्ष में एक दिनको विक्षेपपरि जाइगो ( १६ ) तबराजा श्रीजानकीजीके मनको रुखलखिकै शीलसुभावधर्म बारबार अपनेहृदयविषे सराहते हैं ( १७ ) दोहार्थ ॥ तब राजारानी श्रीजानकीजी को बारबारमिलिकै भेंटिकै सन्मानकरिकै प्रवीण चारिदासी संगकरिकै बिदाकरतभये हैं तब रानी सुनयना समयपाइकै श्रीकौशल्याकी बात भरतकै रीति अपनेओर ते जाते कौशल्या कै कही नजानिपरै राजा से कहती हैं ( १८ ) तब भूपाल भरतकर व्यवहार सबसमुझिकै सो भरतकर व्यवहार कैसो है सोन सुगन्ध सोनकही अतिसुन्दर अरु सुगन्धमय है अरु चन्द्रमा कर सारभूत सुधामय भरतकर व्यवहार

**हृदयसराहतशीलसुभाऊ १७ दो०॥ बारबारमिलिभेंटिसियबिदाकीन्हसनमानि कहीभरतगतिसमयसम रानिसुबानिसयानि १८ चौ०॥ सुनिभूपालभरतब्यवहारू सोनसुगन्धसुधाशशिचारू १९ मूंद्यउनयनसजलपुलकेतनसुयशसराहनलगेमुदितमन २० भरतकथाभवबन्धबिमोचनि सावधानसुनुसुमुखिसुलोचनि २१ धर्म्मराजनयब्रह्मबिचारू इहांयथामतिमोरिप्रचारू २२ सोमतिमोरिभरतमहिमाहीं कहौंकहाछलिछुवतनछाहीं २३ बिधिगणपतिअहिपतिशिवशारद कविकोबिदबुधबुद्धि**

असजानिकै ( १९ ) तबगद्गद ह्वैकै सजल नेत्र मूंदतेभये हैं तनपुलकिआये हैं मुदितमन ते भरतकर सुयश रानी प्रतिसराहते हैं ( २० ) जनकजी कहते हैं हे सुमुखि सुलोचनि सुमुखिकही तुम सदा परमार्थ विषेसन्मुख हौ सुलोचनि कही तीनिहूंकाल विषे परमार्थ दृष्टि हैं सो तुम सावधान ह्वैकै मेरे सन्मुख सुनहु भरतकै कथा भवकर बन्धन बिमोचनकही नाशकरि देति है ( २१ ) हे रानी धर्मशास्त्र जो है राजनीतिशास्त्र जो है अरु ब्रह्मबिचारकही वेदांतशास्त्र जो हैं छहउशास्त्र जे हैं वेद जे हैं अरु यथामेरी मतिकर प्रचारकही बिचार जो है किंतु इनशास्त्रन विषे जो मेरीमतिकर बिचार है ( २२ ) सो शास्त्र जे हैं अरु मेरीमतिकर बिचारजो हैं सो भरतकी महिमाको कहाकहै छलिकही युक्तिउक्तिकरिकै छाहीं नहीं छुवैपावै है ताते मैं का कहौंगो ( २३ ) विधि गणेश अहिपतिकहीशेष अरु शिव शारदा अरु कवि जे हैं व्यास बाल्मीकि आदिक अरु बुध कही पण्डितवृहस्पति आदिकअपर जे बुद्धिके विशारद कही प्रबीण हैं ( २४ ) तहां भरतकर चरित करतूतिकही कर्तव्य अरु धर्मशील इत्यादिक अनेक जे निर्मल गुण विभूति भरत कै श्रीरामचन्द्र विषे है ( २५ ) ते भरतकर गुण समुझत सुनत कहत सबको सुखदाता है ब्रह्मा शिवादिक जे कहिआये हैं अरु सुरसरि जलके समान सबके रुचिउपजत है अरु भरतकर गुण अमृतहुकै निंदाकरते हैं काहेते कि अमृतपान देवतनकीन्ह है तेई अमरनाममात्र हैं अमरनहीं हैं काहे ते जब पुण्यक्षीण होत है तब स्वर्ग ते गिरिपड़ते हैं अरु सुरसरि कर जल परमपद देत है ( २६ ) दोहार्थ ॥ भरतकेगुण निरबधिकही मर्याद रहित हैं यहनहीं कहाजाइ कि भरत के गुण अर्बखर्ब इत्यादिक ताईं गनतीकरिये सो नहीं है अनगणित परमदिव्यगुण हैं अरु अनगणित परमदिव्य फल है तिनकै मर्य्यादनहीं है अरु भरत भरत के गुण निरूपमकही उपमा रहित हैं जैसे तौल को

बिशारद २४ भरतचरितकीरतिकरतूती धर्मशीलगुणविनयबिभूती २५ समुझतसुनतसुखदसबकाहू लोकलाभपरलोकनिबाहू २६ दो०॥ निरवधिगुणनिरुपमपुरुषभरतभरतसमजानि कहियसुमेरुकिसेरसम कविकुलमतिसकुचानि २७ चौ०॥ अगमसबहिं बरणतबरबरणी जिमिजलहीनमीनगणतरणी २८ भरतअमितमहिमासुनुरानी जानहिंरामनसकहिंबखानी २९ बरणिसप्रेमभरतअनुभाऊ तियजियकीरुचि लखिकहराऊ ३० बहुरहिंलषणभरतबनजाहीं सबकरभलनसबकेमनमाहीं ३१ देविपरन्तुभरत

सेरजो है त्यहिको सुमेरु के समान कहतसन्ते कबिन के कुलभरेकीमतिसकुचाती है जेती उपमा है सो सेरभरि है अरु भरतकर प्रभाव अतौल सुमेर है यह बिचारिकै कवि अनन्वयालंकार करिकै कहते हैं कि भरतकेसमान भरतै हैं ( २७ ) जो पाछे कहिआये हैं विधि गणपति अहि पति शिव शारद कवि पण्डित जेते बुद्धिके विशारद हैं तिनसबको वरवर्णीकही वरकही श्रेष्ठ वर्णीकही वर्णिबेको किन्तु वर्णीकही हे रानी भरतकर गुणकहिबेको अगम है जैसे जल ते हीनमीन कै गति थकित हैं पुनि जैसे मगविषे तरणी कही नावकीगति थकित हैं तैसे सबकैमति भरतकर गुण कहिबे को थकिरहती है ( २८ ) हे रानी भरतकै महामहिमा कर प्रभाव अपने प्रभाव ते अधिक मानते हैं काहेते आपु परमेश्वर हैं अरु भक्त जीव हैं ते मायाको त्यागिकै श्रीरामचन्द्र को भजते हैं ताते नहीं कहिसकते हैं ( २९ ) हेपार्वती प्रेमसमेत अनुभावकही अपने अनुभवते जनकजी भरतकर अनुभाव विभाव श्रीरामचन्द्रविषे कहिकै पुनि रानी के हृदय कै रुचि कहते हैं ( ३० ) जनकजी कहते हैं कि लक्ष्मणजी बहुरहिं कही फिरहिं अरु भरतजी श्रीरामचन्द्रजीके संगजाहिं यह सबकोसुखहै अरु सबकेमनमें हैं ( ३१ ) हे देवि परन्तु भरत अरु रघुवरकै परस्पर प्रीतिकै प्रतीति अतर्क्य है किसूके तर्कणाकरिबे योग्यनहीं है तर्ककही अर्थधर्म काममोक्ष त्यहिकै बासनालिहेप्रीति किंतु जगमें अयश मिटाइकै सुयशहेतु प्रीति इत्यादिक तर्कणारहितप्रीति भरतकै श्रीरामचन्द्र विषे है ताते अतर्क्यप्रीति श्रीराम में कहा है तहां कोई का कहैगो ( ३२ ) भरतजी स्नेहकै समताकही एकरस तैलवत्धार श्रीरामचन्द्र विषे त्यहिकै अवधिकही मर्यादा हैं अरु यद्यपि श्रीरामचन्द्र ममता के सींवकही मर्य्यादहैं तदपि सर्बजीवनपर भरत के स्नेह के आगे सबकै ममता छोड़िदेहिंगे जो भरतके मनमें होइगो सो श्रीरामचन्द्रजी

रघुवरकी प्रीतिप्रतीतिजाइनहिंतरकी ३२ भरतअवधिसनेहसमताकी यद्यपिरामसींवसमताकी ३३ परमारथस्वारथसुखसारे भरतनसपन्यहु मनहुंनिहारे ३४ साधनसिद्धिरामपदनेहू म्वहिंलखिपरतभरतमतयेहू ३५ दो०॥ भोरेहुभरतनपेलिहहिंसपनेहुरामरजाय करीनशोचसनेहबशकह्य-उभूपबिलखाइ ३६॥ * * * * *

करहिंगे अरु जो श्रीरामचन्द्र के मन में होइगो सो भरतजी करहिंगे यह अन्योन्य परस्पर स्नेहकै ममता अरु समता कै समता दुइसमुद्रको संगम कौनसामर्थ अलगाइसकैहै देखिये तौ श्रीरामचन्द्र थोरेस्नेह में रीझिजाते हैं ममताकही आपनकरिलेते हैं अरु भरतजी स्नेहकी अवधि हैं तिनकोतौ मनवचनकर्मते ममताकही अतिप्रीतिसे आपन किहेहैं अरु जाको यहिभांति आपन किहेहैं ते तौ सर्बकाल में स्वामीकै रुचिराखैंगे तहां कोई का कहैगो का करैगो तहां जिन श्रीरामभक्तन विषे पूर्ण शान्तरसहैं ताते अखण्डस्नेह होत है अरु करुणारसते प्रीतिममता होति है ( ३३ ) हे रानी परमार्थ अरु सुखकर स्वार्थयेईदुइ अर्थसारहैं लोकमें सवार्थसुखपरलोक में परमार्थ सुखपरमपदकर सुख सोतो भरतजीस्वपन्यहु नहीं निहारे हैं केवल श्रीरामचन्द्र के आज्ञानुकूल हैं ( ३४ ) हे रानी जहांतकमोक्षको साधन है त्यहिसबकरफल श्रीरामचन्द्रके चरणारविंदविषे स्नेह सोई भरतजीको सिद्धांतमत है हमकोतौ असदेखिपरत है ( ३५ ) दोहार्थ ॥ हेरानी श्रीरामचन्द्रकै रजायभरतजी सपन्यहु नहींटारहिंगे तातेस्नेह के बशते शोच न करिये बिलखाइकै

भूपकहतेभये हैं बिलखाइकही दुःखकरिकै ( ३६ ) इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेश्रीअयोध्याकाण्डेदम्पतिसम्वादेपरमविवेकभावभक्तिभरतगुण-बर्णनन्नामत्रयोविंशतिस्तरंगः २३॥ :: :: :: :: :: :: :: :: ::

दोहा ॥ बीससुचारितरंगमें प्रभुवशिष्ठसम्बाद। रामचरणमुनिजनकमिलिभरतभक्तिरसस्वाद २४॥ हे गरुड़ श्रीरामचन्द्र अरु भरतकर गुण मिलिकै बारबार प्रीतिसोंबखानकरत भोरहोतभयो है ( १ ) तब दोउराजनकेसमाज प्रातसमयजागतभये स्नानकरिकै देवतनकीपूजाकरतेभये हैं ( २ ) तब श्रीरामचन्द्र स्नानकरिकै वशिष्ठ के समीप जातभये चरणबंदिकै कहते हैं ( ३ ) हे नाथ भरत पुरजन माता सब बनविषे दुःखित हैं ( ४ ) अरु सहित समाज जनक अरु आपु बनमेंदुःखितहौ ( ५ ) यहमैं आपुसे कहा है पर जस उचित होइ तस आपुकरहु सबकर हितकार आपुहीके हाथ

चौ०॥ रामभरतगुणकहतसप्रीती निशिसबनृपहिंसराहतबीती १ राजसमाजप्रातयुगजागे नाइनाइसुरपूजनलागे २ गेनहाइगुरुपहँरघुराई बंदिचरणबोलेरुखपाई ३ नाथभरतपुरजनमहतारी शोकबिकलबनबासदुखारी ४ सहितसमाजराजमिथिलेशू बहुतदिवसभासहतकलेशू ५ उचितहोइसोकीजियनाथा हितसबहीकररौरेहाथा ६ असकहिअतिसकुचेरघुराऊ मुनिपुलकेलखिशीलसुभाऊ ७ तुमबिनुरामसकलसुखसाजा नरकसरिसदुहुंराजसमाजा ८ दो०॥ प्राणप्राणकेजीवकेजियसुखके

है इहां यह अभिप्राय है कि सबको लैकै बिदाहोहु ( ६ ) असकहिकै श्रीरघुनाथजी सकोचिगये हैं काहेते कि गुरुनते बिना आज्ञाकहना शास्त्रकी आज्ञानहीं है तब श्रीरघुनाथजी कर शीलस्वभाव देखिकै मुनि पुलकिउठे ( ७ ) तब वशिष्ठजीबोले हे श्रीरामचन्द्र तुम तौ कृपालुहौ कस न असकहहु पर जब इहांसे हम घरको गये तब तुम हमसे छूटिगये अरु तुम्हारे छूटेते हमको अस समुझिपरत है कि तुम बिना दोऊराजन के समाज को सदननरक के सरिस है किन्तु हे श्रीरामचन्द्र तुम्हें बिनास्वर्ग मृत्युलोक दोऊराज्यकर सुख नरक के सरिस है ( ८ ) दोहार्थ ॥ हे श्रीरामचन्द्र तुम प्राणहुके प्राणहौ अरु जीवहुके जीवहौ ताते तुमकहँतजिकै ज्यहिको गृह सोहात है त्यहिपर बिधाताबाम है प्राणकही पांच प्राण अपान उदान व्यान समान त्यहिप्राणनकर प्राणजीव है त्यहिजीवकर जीव अन्तर्यामी ब्रह्म है त्यहिकर सुख ब्रह्मानन्द त्यहिकर सुख तुम हौ इहां यह अभिप्राय है कि बन में बसिकै श्रीरामचन्द्रकर भजनकरिये अरु जो बनबिषे भजनतजिकै गृह को विषय नीकलागै तौ त्यहि प्राणी पर बिधाताबाम है ( ९ ) सो कर्म धर्म जरिजाय ज्यहिविषे श्रीरामचन्द्रके पदपंकज विषे भाव न होइ अरु जो भावकरै तौ बनेरहैं ( १० ) अरु नेम यम प्रत्याहार आसन प्राणायाम ध्यान धारणा समाधि अष्टांग योग सोकुयोग है अरु आत्मज्ञान सो अज्ञान है जहां श्रीरामचन्द्र के चरणारविन्द विषे प्रेमकै प्रधानताकही मुख्यता न होइ सो बृथा है ( ११ ) हे श्रीरामचन्द्र जे तुम्हैं बिना अनेकभांति ते दुःखित हैं तिनहींको तुमसुखीहौ अनेकसुखदेते हौ अरु ज्यहिके जीवमें जौन है सो सबजानतेहौ हम बहुत का कहैं ( १२ ) पुनि वशिष्ठ जी विचारकरते हैं कि जो मैं कहा है ता विषे

सुखराम तुमतजितातसोहातगृहतिन्हैंबिधाताबाम ९ चौ०॥ सोसुखकर्म्मधर्म्मजरिजाऊ जहँनरामपदपंकजभाऊ १० योगकुयोगज्ञानअज्ञाना ज्यहिनहिंरामप्रेमपरधाना ११ तुमबिनदुखीसुखीतुमतेहीं तुमजानहुजियजोज्यहिकेहीं १२ राउरिआयसुशिरसबहीके बिदितकृपालहिगतिसबनीके १३ आपुआश्रमहिंधारियपाऊ भयेसनेहबिकलमुनिराऊ १४ करिप्रणामरघुनाथसिधाषे ऋषिधरिधैर्यजनकपहँआये १५ रामवचनगुरुनृपहिंसुनाये

**शीलसनेहसुभायसुहाये १६ महाराजअबकीजियसोई सबकरधर्मसहितहितहोई १७ दो०॥ ज्ञाननिधानसुजानशुचि धर्म्मधीरनरपाल तुमबिनुअसमंजसशमन कोसमरथयहिकाल १८**

श्रीरामचन्द्र को सन्देह होइगो कि जो वशिष्ठजी यहकहा कि तुम्हैं बिना सबनरकहै तौ हमको कब छोंड़ते हैं यहसमुझिकै वशिष्ठजी कहते हैं हे श्रीरामचन्द्र तुम्हार आयसु सबके शीशपर है आपुकै इच्छा है सबकोई फिरिजाहु तहां हम सोईकरहिंगे हेकृपालु सबके दुःख सुखकैगति आपुको नीकीप्रकारते विदित है सो जानेरहब ( १३ ) अब आपु आश्रमकोजाइयेयहकहिकै मुनिराज प्रेम ते शिथिल ह्वै गये हैं ( १४ ) तब श्रीरामचन्द्र प्रणामकरिकै जातभये हैं तब ऋषि धीरजधरिकै जनक के पास जातभये हैं जनकजी अतिआदर ते आसनदेत भये है ( १५ ) तब श्रीरामचन्द्र कै कही बात जनकजी से श्रीवशिष्ठजी कहतभये हैं श्रीरामचन्द्र कर शीलस्नेह स्वभाव सुन्दरकहा है ( १६ ) हेमहाराज सोई बातकरिये जाते धर्म सहित सबकर हितकारहोइ इहां यह अभिप्राय है कि जो श्रीरामचन्द्रआज्ञादेहिं सो करैं तौ सबकर धर्मरहैगो इहां वशिष्ठजी ब्रह्मा के पुत्र हैं अरु श्रीरामचन्द्र के गुरु हैं तहां जनकजी को महाराज क्यों कहा है श्रीरामानन्य योगीश्वरजानिकै कहा है ( १७ ) दोहार्थ ॥ ज्ञान के निधान अरु सुजानकही त्रिकालज्ञ अरु शुचिकही त्रैगुण्यमयी माया त्यहिते बाह्यांतरते त्याग वैराग्यकै अवधि अरु अष्टांग योगपूर्ण अरु धर्मविषे धीरधुरन्धर इनसबके ऐसे सबप्रकारते सामर्थ्य ते तुम्हैं बिना यहिकालविषे यह असमंजस कहीं नाशकर्त्ता दूसरनहीं है ( १८ ) मुनि के वचनसुनिकै जनकजी के अनुराग होतभयो है तब जनक कै दशादेखिकै ज्ञान वैराग्य को प्रापितभये हैं श्रीरामचन्द्रके अनुराग विषे ज्ञान वैराग्य दूरि ह्वैगये हैं ( १९ ) राजा स्नेह ते शिथिलह्वैगये हैं बिचारकरते हैं कि इहांकर आउब भलानहींभयो है ( २० ) काहेते कि महाराजदशरथजी जो श्रीरामचन्द्रजीकोबनजावे

**चौ०॥ सुनिमुनिबचनजनकअनुरागे लखिगतिज्ञानविरागविरागे १९ शिथिलस नेहगुणातमनमाहीं आयेइहांकीन्हभलनाहीं २० रामहिंराउकह्यउबनजानाकियेआपुप्रियप्रेमप्रमाना २१ हमअबबनतेबनहिंपठाई प्रमुदितफिरबविवेकबढ़ाई २२ तापसमुनिमीपगतिदेखी भयेप्रेमवशबिकलबिशेयी २३ समयससुझिधरिधीरजराजा चलेभरतपहस्त्रहितसमाज २४ भरतआइआगेह्वैलयऊ अवसरसरिससुआसनदयऊ २५ तातभरतकहतिरहुतिराऊ तुमहिंविदितरघुवीरसुभाऊ २६ दो०॥ रामधर्मरतसत्यब्रतसबकरशीलसनेहु संकटसहतमसकोचबशकरिय-जोआयसुदेहु २७ चौ०॥ सुनितनपुलकिनयनभरिबारी बोलोभरतधीरधरिभारी २८ प्रभु**

को कहाहै तौ अपने प्रिय प्रेमकर प्रमाणकीनहै श्रीरामचन्द्र के बिछुरत प्राणको त्यागिदीन है ( २१ ) देखिये तौ हमअबते औरवनको पठावनेआये हैं जब हम फिरि जाहिंगे तबसबलोगकहैंगे कि जनकजी कस न फि रे आवहिं विवेकी हैं सोसुनिकै हम प्रमुदित होहिंगे विवेकिनविषे बड़ेकहावैंगे तहां न तौ श्रीरामचन्द्र को फेरिलैचले हैं अरु नतु बिछुरतसन्ते शरीरछूटैगो ताते हमारे विवेक में धिकहै ( २२ ) तपस्वी जे हैं मुनिजेहैं मनन शीलते सब जनककी विवेक दशा देखिकै प्रेमते विकलह्वैगये हैं ( २३ ) तबसमय समुझिकै धीरजधरि कै सहितसमाज भरतकेइहां चलतभये हैं ( २४ ) तब आगेह्वैकै भरतजी राजाको लेतभये हैं ल्याइकै समयसम आसनदेतभये हैं ( २५ ) तबराजाबोले हेतात भरत तुमकहँ रघुवीरकर स्वभाव विदित है ( २६ ) श्रीरामचन्द्र धर्म्मव्रती हैं ताते सबकर शील स्नेह समुझिकै सकोचकै वश संकट सहते हैं अब जो आयसुदेहु सो करिये ( २७ ) तबजनक जीकै वाणी सुनि कै भरतजी के तन पुलकि आये नेत्रनमें जलभरि आये हैं भरतजी धैर्य्य धरिकै बोलते हैं ( २८ ) प्रभु जो श्रीरामचन्द्र हैं ते आपु लोकहू परलोकहू के विशेष प्रियपूज्य हैं जैसे श्रीदशरथमहाराज तातेआपु हमारे पिताके समान हौ अरु श्रीवशिष्ठके समान न मायी है नपिता है अभिप्राय यह है कि आपु जो सिखापन

करतहौ सोकरिये ( २९ ) अरुकौशिक मुनि आदिक साधुनकीसमाजहै अरु ज्ञानकेसमुद्र आपुहौ ( ३० ) अरु एक सयान सेवक है सो स्वामीके मनका जानिकैकरै है अरुएक शिशु कही अज्ञान सेवक है सो कहेते करत है सो मैंहौं हेस्वामी यह जानि कै जो मोको आयसुहोइ सोकरौ ( ३१ ) यह समाज यह थलविषे राउरकर बूझब कही समुझबहै अरुमोरमन खेदकरिकै मलिनह्वै रह्यउहै ताते मोरबोलब बाउर कही बौरहाकरअसहै ( ३२ ) तुम्हारी समाजविषे में कछु कहिबेयोग्य नहीं हौं अरु छोटे बदनते बातबड़ी कहत हौं ताते बनबअन बनब

**प्रियपूज्यपितासमआपू कुलगुरुसमहितमायनबापू २९ कौशिकादिसुनिसचिवसमाजू ज्ञानअंबुनिधिआपुनआजू ३० शिशुसेवकआयसुअनुगामी जानिमोहिंसिखदेइग्रस्वामी ३१ यहसमाजथलबूझबराउर मनमलीनमैंबोलबबाउर ३२ छोटेबदनकहौंबड़िबाता क्षमबतातलखिबामविधाता ३३ आगमनिगमप्रसिद्धपुराना सेवकधर्मकठिनजगजाना ३४ स्वामिधर्मस्त्रारथहिविरोधू बधिरअंधप्रेमहिंन प्रबोधू ३५ दो०॥ राखिरा मरुखधर्मब्रतपराधीनम्वहिंजानि सबकेसम्मतसर्वहितकरियप्रेमपहिंचानि ३६**

मोर क्षमाकरहु मोरेऊपर विधाताको बामजानि कै ( ३३ ) आगम जोशास्त्रहै निगमजो वेदहै अरु पुराणारदिकमें यहबात प्रसिद्ध है स्वामी विषे सेवकको धर्म्म कठिन है यह सब जगत् जानत है ( ३४ ) स्वामीके धर्म्म ते अरु अपने स्वार्थते विरोध है जैसे बहिरते अरु आंधरते प्रेमकर प्रबोध नहीं है तहां बहिर आंधर दूनौं कहूंनाच देखिकै आये हैं अरु काहूपूछा नाचकैसोभयो है तब हिराकहत है नाच अच्छोभयो है गान बाजा नहींभयो है तब अंधा कहत है कि गानबाजा दूनोंभयो हैं अरु नचइयानही रह्यउ है देखिये तौ वहिरेदेखीकही अँधरे सुनीकही परस्पर विरोधभासतहे अरु दूनोंके कहेतेनृत्यगान दूनों सिद्धिहोत हैं जैसे जोकेवलस्वामीको धर्म्मराखैतौअपनेस्वार्थविषे देखिबेमें विरोधभासै है अरु जोकेवलआपनस्वार्थकरिये तौ सवामीके धर्म्म में विरोध होत है लोकदृष्टि में असहै अरु परमार्थदृष्टिअरु स्वामी के धर्म्मविषे दूनों अविरोध सिद्धिहोत है जैसे कोई अन्धबधिर नहीं है अरुनृत्य गानदूनों यथार्थ करिदियो है ( ३५ ) दोहार्थ ॥ अबमोरिनिश्चय सुनौ श्रीरामचन्द्रकररुख राखेते मोरसर्व धर्म्म को ब्रत एकई है काहेते सेवकसदा स्वामीके आधीन है जो यह सबकर सम्मत होइ सबकरहितकार होइ अरु यहिबातविषे मोरप्रेम पहिंचानिकै करिये तौ इहैबात सिद्धान्तराखिये ( ३६ ) भरत के बचनसुनिकैस्नेह देखिकै सहित समाजराजासराहते हैं ( ३७ ) तहां भरतके वचनविषे बड़ध्विनि है कि कहत कै तौसुगमहौंक स्वामीकी रुचिराखियेपरकरिबेको अगम है काहेते जबस्वार्थपरमार्थस सब कर त्यागहोइ तबस्वामीकीरुचिअनुसारसेवाहोतिहै सोअगमहै ज्यहिपरस्वामी अतिकृपाकरहिं त्यहितेहोइ काहिबेकोअक्षरथोरेहै तातेमृदुल है अरुअर्थअमित है काहेतेजबसब धर्मकर्म देहाभिमान इत्यादिक सर्बोपायशून्य शरणागत होइ तबस्वामीकी रुचि अनुकूल सेवाबनै है यहसर्बेशास्त्रकर सिद्धान्त है ताते कठोर है ( ३८ ) भरत की बाणी विषे अर्थकैसेभासत-

**चौ० ॥ भरतबचनसुनिदेखिसुभाऊ सहितसमाजसराहतराऊ ३७ सुगमअगममृदुमंजुकठोरा अर्थअमितअतिआस्वरथोरा ३८ ज्योंमुखमुकुरमुकुर निजपाणी गहिनजायअसदभुतबाणी ३९ भूपभरतमुनिसाधुसमाजु गेजहँविबुध कुमदद्विजराजू ४० सुनिसुधिशोचबिकलसबलोगा मनहुंमीनगणानवजलयोगा ४१ देवप्रथमकुलगुरुगतिदेखी निरखिबिदेहसनेहबिशेषी ४२ राम**

है अरु धारणा में नहीं आवत है जैसे मुकुरकही शीशापाणिकहीअपने हाथमें है अरु त्याहीविषे आपन मुखदेहित है अरु गहिबेमें नहीं आ वै तैसे ारतकी वाणी में अर्थनहीं गहिबे आवत है इहां अर्थकै यह ध्वनि है कि वशिष्ठजी जनकजी अपने मनविषे यहसिद्धांत करिआये हैं कि श्री रामचन्द्र की इच्छा है कि बिदाहोहु अरु श्री चित्रकूट आउबेके

कारणभरत हैं तिनकीधौंका इच्छा है सोईबात बिदाहोबेकी भरतजी सेवकसेब्य भावविषे रामरजाय सिद्धांतकीन है तातेअगमअर्थ ह्वैगयो है अरुश्रीवशिष्ठविश्वामित्र जनकइत्यादिक सब श्रीरामचन्द्र के अनन्यभाव विषे हैं तहां सबकर मतएकै भयोहै पर तहां श्रीरामचन्द्र विषे भरतकीबाणी में भावअनुभाव विभाव रसयुक्ति उक्ति सर्बोपाय शून्यप्रपत्ति शरणागत समुझि कै सबकै वुद्धि थकिरही है ( ३९ ) हे पार्वती राजाजनक अरु भरतकरसमाज द्वौ समाज श्रीरामचन्द्र के यहां जातभये हैं कैसे श्रीरामचन्द्र हैं देवता सोई कुमुदहैं तिनके पोषिबेको द्विजराज कहीपूर्ण चन्द्रमा हैं ( ४० ) यह सुधि सुनिकै कि सबसमाज श्रीरामचन्द्र के समीप बिदाहोबे को गये हैं यहजानि कै सबलोग बिकल होत भये जैसे प्रथमवर्षा के जलबिषे मीनके गणबिकल होते हैं ( ४१ ) तहां देवतनने कुलगुरु वशिष्ठ जी की प्रथमगति देखी है जब बशिष्ठ जी प्रथम श्रीरामचन्द्र से कहा कि तुम्हें बिना दोऊ राजन कै समाजको सुख नरकके समान है जो वशिष्ठ जी यह सिद्धांत कीन तौ बिना श्रीरामचन्द्र नहीं फिरैंगे अरु प्रथम स्नेह बिदेहकर देखा है तब जनकजी यहकहा है कि हमअब बनते बनको पठावै आये हैं हमारे बिबेक को धिक्है तौ जनकजी बिना श्रीरामचन्द्र नहीं फिरैंगे ( ४२ ) अ/ भरत को रीरामचन्द्र की भक्तिमय देखा है अरु श्रीरामचन्द्र थोरही में भक्ति के बश हइजाते हैं ताते श्रीरामचन्द अवश्य फिरहिंगे अरु जनकजी भरतजी रीरामचन्द्र की आज्ञालेबे को गये हैं सो देवतन नहीं जाना है ताते सुरस्वार्थी हहरिकही हायहाय करिकै हृदयमें हारिगये हैं ( ४३ ) अरु कुलगुरु अरु जनक अरु भरत की प्रथमगति देखिकै

भक्तिप्रियभरतनिहारे सुरस्वारथीहहरिहियहारे ४३ सबकहँरामप्रेममयपेखा भयेअलेकखशोचवशलेखा ४४ दो०॥ राम सनेहसकोचवशकहसशोचसुरराज रचहुप्रपंचहिपंचमिलिनाहितहोतअकाज ४५ चौ०॥ सुरनसुमिरिशारदासराही देविदेवशरणागतपाही ४६ फेरुभरतमतिकरिनिजमया पालुबिबुधकुलकरिछलछाया ४७ बिबुधविनयसुनिदेविसयानी बोलीसुरस्वारथजड़जानी ४८ मोसनकहहुभरतमतिफेरू लोचनसहसनमूझसुमेरू ४९ बिधिहरिहरमायाअतिभारी सोनभरतमति

अरु सबको प्रेममय देखा है लेखानाम देवतनकर सो अलेखहिशोचके वशभये हैं कछुशोचकर लेखानहीं है सकामिनकै यह रीतिही है ( ४४ ) दोहार्थ॥ इन्द्र कहते हैं हे देवतहु श्रीरामचन्द्र प्रेमसकोचके वश हैं सो अवश्य फिरहिंगे ताते सब पंच मिलिकै प्रपंचरचहु नहीं तौअका जहोबे चाहत है ( ४५ ) तब देवतन शारदा को स्मरण करिकै औ सराहिकै स्तुतिकरते हैं शारदा प्राप्तिभई है हे देविहमसब देवता आपुकी शरण है ( ४६ ) हे देवि अपनी मायाकरिकै भरतकेरि मति फेरिदेहु अपनेछलकै छायाकरिकै देवतन के कुल की पालनाकरहु ( ४७ ) हे पार्वती देवतनकी बाणी शारदा सुनिकै लजाइगई है देवतनको सवारथजड़ जानिकै बोलतभई है ( ४८ ) मोसे तुम कहते हौ कि भरत की मतिको फेरिदेहु तुमकैसेहौ जैस्काहूके हजारनेत्र हैं अरु ताको सुमेरू न देखिपरै तैसेतुम्हारी दृष्टि है किंतु इन्द्र के हजारनेत्र वृथा हैं जाको भरतकी महिमा नहीं देखिपरैहै ( ४९ ) विधिहरिहरकी मायाबड़ी प्रबल है सो भरत की मतिको नहीं देखिस कै है ( ५० ) त्यहिभरतकी मति को मोसेकहतहौ कि फेरिदेहु सो बड़ेमूर्ख हौ काहेते चंदनिकहे चन्द्रमाकी किरणिकहूं चन्द्रमा कीचोरीकरिसकै है ( ५१ ) भारतके हृदयविषे श्रीसीतारामचन्द्र कर सदानि वास है तहां कहाूकी मायानहीं जाइसकैहैं कैसेजैसे सूर्य के उदयहोतसन्तोतिमिर जो अन्धकार है ताको नाश ह्वइजात है ( ५२ ) असकहिकै शारदा ब्रह्मलोक को जाती भई तब विबुधकही देवता बिकलभये हैं जैसे निशिमें विकल कोकहोते हैं ( ५३ ) दोहार्थ॥ सुर जे स्वार्थी मलीन मन ते कुमन्त्रकर ठाट ठाठत भये हैं अपनी मायाकर प्रपंचरचिकै भय के बशभ्रमह्वैकै आरत उच्चाटन सि ांत रचतभये हैं ( ५४ ) इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुपविध्वन्सने श्रीअयोध्याकाण्डे जनकभरतसम्बादे सुरशोचबर्णनन्नामचतुर्विंशतिस्तरग: २४॥ :: :: ::

सकइनिहारी ५० सोमतिमोहिंकहतकरुभोरी चंदनिकरैकिचंदकिचोरी ५१ भरतहियेसियरामनिबासू तहँकितिमिरजहँतरणिप्रकासू ५२ असकहिशारदगइबिधिलोका बिबुधबिकलनिशिमानहुकोका ५३ दो०॥ सुरस्वारथीमलीनमनकीन्हकुमंत्रकुठाट रचिप्रपंचमायाप्रबल भयभ्रमअरतउचाट ५४॥ * * * * * *

चौ० ॥ करिकुचालशोचतसुरराजू भरतहातसबकाजअकाजू १ गयेजनकरघुनाथसमीपा समनमानेसबरघुकुलदीपा २ समयसमाजधर्म्मअबिरोधा बोलेतबरघुबंपुरोधा ३ अनकभरतसम्बादसुनाई भरतकहावतिकहीसुहाई ४ताररामजसआयसुदेहू सोसबकरैमोरमतयेहू ५ सुनिरघुनाथजो रियुगपाणी बोलेसत्यसरलमृदुवाणी ६ विद्यमानआपुनमिथलेशूमोरकहबसबभांतिभदेशू ७ राउरि

दोहा० ॥ पंचमलीसतरंगमेंसतमयसभासुजान रामचरणत्यहिबंदिकै बरणौंमतिअनुमान २५॥ हेपार्बती कुचालकरिकै सुरराजशोचकरत हैं अब हमार काज अकाज ारतजी के हाथ है ( १ ) तब सहित समाज ब्रह्मवेत्ताजनकजी श्रीरघुनाथजी के समीप जातभये तब सबकर सन्मान श्रीराम चन्द्रकरतभये हैं ( २ ) जससमय है अरु समाज है सोदेखिकै धर्मअबिरु बचन रघुबंशपुरोधा जे बशिष्ठ हहैं ते बोलतेभये हैं ( ३ ) तबश्रीबशिष्ठजी जनक भरतकर संबाद सुनावाहै अरु भरतजीने जनकजीसे ज्यहिप्रकारते कहा है सो सुनाइदीन है ( ४ ) हेतात श्रीरामचन्द्र जस आयसु देहु सो सब कोई करै हमार मत अस है ( ५ ) तबयह सुनिकै श्रीरामचन्द्र दूनो हाथजोरिकै सत्य कोमलबाणी बोलतभये हैं ( ६ ) जहां आपु मिथिलेश विद्य मान हौ तहां मारे कहा सबप्रकार ते भदेश कही फूहर है ( ७ ) राउरिकैअरुराजाकै रजायसुजोहोइसोराउर शपथकरिकै कहतहौं सोईहमकरहिंगे ( ८ ) दोहार्त्थ ॥ तब श्रीरामचन्द्र कै बड़ीशपथ सुनिकै श्रीवशिष्ठ जी अरुजनकजी विश्वामित्र इत्यादि सबसभा संकोचिगये हैं कछुउत्तर देतनहीं बनै है सब भरतकर सुखदेखते हैं यहिबातकर उत्तर भरतजीदेहिंगे औरकौन समर्थ है जो रीरामचन्द्र के बचनकर उत्तर दैसकैगो ( ९ ) तब भरतजी सम्पूर्ण सभको संकोचकेवश देखिकै अतिधीर्य्य धरतभये काहेतेश्रीरामचन्द्रके भ्राता हैं ताते रीरामचन्द्र की बाणीकोउत्तरदेहिंगे ( १० ) त्यहिसमय में श्रीरामचन्द्र विषे प्रेमबढ़तभयो ताको कुसमयजानिकै सँभारिलीनहै यहविचाररिके किजो यह अवसरविषे मोरे प्रेम बढ्यउ तौ स्वामीके वचनकर

रामरजायसुहोई राउरिशपथसहीशिरसोई ८ दो०॥ रामशपथसुनिमुनिजनक सकुचेसभासमेत सकलबिलोकतभरतमुखबनैनउत्तरदेत ९ चौ०॥ सभासकुचबशभरतनिहारी रामबन्धुधरिधीरजभारी १० कुसमयदेखिसनेहसँभारे बढ़तविंध्यजिमिघटजनेवारे ११ शोककनकलोचनमतिछोनी हरीबिमलगुणगणजगयोनी १२ भरतबिबेकबराहबिशाला अनायासउबरत्यउत्यहि

उत्तरनहीं आवैगो तबसबसमाज शोक में डूबिजाइगी ताते सनेह को समेटिलीन है कैसे जैसे विन्ध्याचलपर्वत को अगस्त्यजीने वारणकन्हि है तहां इतिहास है कोईसमय बिषेसूर्य्यघ्नके तेजकरिकै विन्ध्याचलपर्वतकेतृणतरुजरिगये हैं जबविन्ध्याचल सूर्यनपरकोपकरिकै बढ़तभयो महिते लक्षयोजनपरसूर्य हैं विन्ध्याचल दुइलक्षयोजन बढ़ियगयो है सूर्यकेरथको आवरणकियो है तब मनुष्य देव इत्यादिक सर्ब बिनासूर्य बिकलहोतभये हैं तहां विन्ध्याचल अगस्त्यजी को शिष्य है तब अगस्त्यजी सबकर दुःखदेखिकै त्यहिकेसमीप आवतभये हैं तहां विन्ध्याचल साष्टांग दण्डवत् करतभयो अगस्त्यजू माथेपर हाथधरिकै यहकहा कि ऐसेपरेरहौ जबलग हम फिरिन आवहिं ( ११ ) तहां सभाविषे बड़ेबड़े महान् बैठे हैं परश्रीरामचन्द्र के बचन का उत्तरदेबेको सबके शोकभयोहै सोई शोक हिरण्याक्ष है अरु सबकै मति सोई छोनीभई है जैसे हिरण्याक्ष पृथिवीको

हरिलेगयो है तब सम्पूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति बन्दह्वैगई है काहेते पृथिवी जगत् की योनि है अरुइहां शोककरिकै सबकीमति छोनी हरिगई विमल गुणगण कहांते उत्पन्नहोहिंगे बिमल गुणकै योनिमति है सो मति झोककरिकै हरिगईताते उत्तर कहां ते दीनजाइ ( १२ ) तहां बाराहजी ब्रह्मा ते उत्पन्नह्वैकै हिरण्याक्ष ते देवतनके हजारवर्ष युद्धकरिकै त्यहिको मारिकै महिको उद्धारकीन है इहां भरत ब्रह्मास्थाने अरु भरतकर विवेक बाराह है बिना श्रम सबके शोक दानवको सबकीमति छोनीको उद्धारकीन है ( १३ ) तब भरतजी श्रीरघुनाथजीके प्रणामकरिकै अरु बशिष्ठआदिक समाजके अरु सबसे करजोरिकै श्रीरामचन्द्र वशिष्ठ जनकजी तिनते निहोराकरिकै कहते हैं ( १४ ) आजु मोर अनुचित क्षमाकरब काहेते यह समाजविषे कछु कहबेलायक मोरमुखनहीं है मृदुकही कोमल है काहेते मैं बालबुद्धीहौं ताते मोरकहना कठोर है ( १५ ) तब भरतजी आपने हृदय में शारदाकर स्मरणकीन सुहाई कही अतिशोभित शारदाजो है तहांशारदाके चारिस्वरूप हैं परा पस्यन्ती मध्यमा बैषरी तहां बैषरीका मुख

काला १३ करिप्रणामसबकहँकरजोरे रामराउगुरुसाधुनिहोरे १४ क्षमबआजुअतिअनुचितमोरा कहौंबदनमृदुबचनकठोरा १५ हियेसुमिरिशारदासुहाई मानसतेमुखपंकजआई १६ बिनयबिबेकधर्म्मनयशाली भरतभारतीमंजुमराली १७ दो०॥ निरखिबिबेकबिलोचनन्हिशिथिलसनेहसमाज करिप्रणामबोलेभरतसुमिरिसीयरघुराज १८॥ * * * * *

परिनिवास है मध्यमाकर वास कंठविषे है अरु पस्यन्तीकावास हृदयविषे है अरु पराबाणीका बासनाभि बिषे है तहां नाभिस्थान विषे अष्ट दल कमल है त्यहिपर भगवान् का एकस्वरूप अंगुष्ठमात्र तहां बिराजैहैअरु तहां पराबाणीकर बास है सो तीनिउं गुणकेपरे है अरु पस्यन्ती सात्विक गुणमय है अरु मध्यमा राजस गुणमय है ताते भरतजी परावाणी को स्मरणकीन है काहेते कि परावाणी का बास अष्टदल कमलपर है गुणातीत है तहां गुणमय तीनिबाणीकोबोधिकै पराबाणी मुख पंकजपर प्राप्तिभई आइ किंतु तीनिउं वाणी पराबाणी विषे लैह्वैगई अरु जो कोई कहते हैं कि वैषरीबाणी ते सबकहबहैसो उनने वाणीकर स्वरूप क्रिया अच्छीतरह नहींजान्यो है जेते भगवद् गुण यश नाम हैं सो पराबाणीसे कहत सुनतबनै हैं काहेते भगवान् करनामयश गुणातीत है जाते पराबाणी ते कहाजाइ है अरु त्रैगुण्य जनित जे कर्म धर्म हैं ते पस्यन्ती मध्यमा वैषरी ते कहाजात है ताते भरत केमुखपङ्कजपर पराबाणी प्राप्ति है यह अर्थ विशेष सिद्धांत जानब काहेते बड़ेजे हैं ते आपने सनातन आसनपर बैठते हैं ताते नाभिकमल ते मुखपंकज पर आई है ( १६ ) भरत कै गुणातीत पराभारतीकही बाणी सो मंजु मराली है अरु बिनय विवेक धर्मनीति चारिउ, श्रीरामचन्द्र विषे गुणातीत ताते बिमलहै सोई शलीकही मोती है काहेते इहां क्रियानाम सम्बन्धते जानब शालीकही धान सो विशेष बर्षाकेजलते होत है महिको आधार है अरु मोती केवल स्वाती के जलत होत है ताते शालीकही सो भरत कै भारती हंसिनि सो चुनिचुनिकहैगी अरु धारणाकरैगी सेवक स्वामी भावविषेविनयविवेक धर्मनीति कहते हैं ( १७ ) दोहार्थ॥ तबभरत जी ज्ञान बिबेक के नेत्रनते समाज को सनेह ते शिथिलदेखिकै श्रीसीतारामचन्द्र को सुमिरिकै सबके प्रणामकरिकै बोलतेभये हैं ( १८ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने श्रीअयोध्याकाण्डे श्रीवशिष्ठ श्रीरामचन्द्रसंवादे सभाशोचभरतबिबेकवर्णनन्नामपंचबिंशतिस्तरंगः २५॥

चौ०॥ प्रभुपितुमातुसुहृदयगुरुस्वामी पूज्यपरमहितअंतरयामी १ सरलसुसाह्यबशीलनिधाना प्रणतपालसरबज्ञसुजाना २ समरथशरणागतहितकारी गुणगाहकअवगुणअघहारी ३ स्वामिगोसाइहिसरसगोसाई म्वहिंसमानमैंस्वामिदोहाई ४ प्रभुपितुबचनमोहवशपेली आयउँइहाँसमाजसकेली ५ जगभलपोचऊंचअरुनीचू अमियसजीवनमाहुरमीचू ६ रामरजायसमेटिमनमाहीं

दोहा॥ षष्टसुबीसतरंग में भरत बिनय सुविवेकरामचरणपरभक्तिमयज्योंचातककरटेक २६॥ प्रथम बिनयकहतेहैं पुनिविवेककहते हैं पुनिधर्मकहेंगेपुनि नीति कहैगे भरतकहते हैं किप्रभु जो श्रीरामचन्द्र हैं ते मेरे गुरु पितुमातु सुहृदस्वामी अरु परमहित पूज्य एकश्रीरामचन्द्र हैं जो कछुबनाइकै कहत होउं तौ अंतर्य्यामी हौ ( १ ) कैसे जैसे स्वामीकर सरलसुभाव है सरलसुभावकही सदासर्वजीवनपर एकरसदया है अरु प्रणतपाल हैं सर्वज्ञसुजान हैं ( २ ) अरु जे केऊ एकहूबार शरणागत आवै तिसको प्रीति से आपन करि लेतेहैं उसके गुणग्रहण करते हैं अवगुणकर त्याग करते हैं ( ३ ) यह मैं कहत हौं कि स्वामी गोसाईं के समान स्वामी हैं अरु मोरी समानमहीहौं स्वामीकर द्रोहीकही द्रोहीहौं किंतुद्रोहीकही स्वामीकी दोहाई करिकैकहतहौं अरु स्वामीके समान कृपालु स्वामी हैं ( ४ ) काहेते कि मैं स्वामीकरद्रोही हौं अपनेमोह के बशप्रभु के बचन पेलिकहीटारिकै सब समाज लैके इहां आवतभयों है राजाकहिगये हैं अरु प्रभुकहाहै सुमंत के मुखते सुनेउं है कि भरतराज्यकरहिं सो मैं अंगीकारनहींकीन है ताते मोरी समान स्वामीकर द्रोही को है ( ५ ) यहजगत् विषे जेभले हैं अरु जो पोच हैं अरु अमृत हैं मृतक को जीवदेत हैं अरु विष जीवत को मोरि डारत है ( ६ ) श्रीरामचन्द्र के रजायमेटिकै त्यहिकी कुशलकहूंनदेखिबे में आयो नकहूं सुनिबेमें आयो है ( ७ ) सो प्रभुकी आज्ञा मैं पेलिआयों सबप्रकार अपनीढिठाई ते अवज्ञाकिह्यउंहै सो मोरिचूकमहाअपराध प्रभुक्षमाकरिकै स्नेहरूप स्यवकाई मानिलीन है एसे कृपालु हैं ( ८ ) दोहार्थ॥ सबकेनाथ मेरे विशेष अपनीकृपाकी भलाई ते मोरभलाकीन है देखियेतौ मारेदूषण स्वामीप्रभुभूषण करिदीन है ताहीप्रभुके सुयशचारिउवेद में चारिउदिशामें तीनिहूंलोकमेंचौदहौभुवन में शोभितह्वैरह्यउ है ( ९ ) राउरिरीतिअरुसुवानिकही रहस्यबड़ाईउज्ज्वलनिगमागमगावते हैं यहजगतविषे विदित है ( १० ) यहांकूरकही मनबचन कर्म्मतेकठोर हैं अरुकुटिलकही मनबचनकर्मतेटेढ़े हैं अशास्त्रमार्गचलते हैं अरु कैतर्क व्यंगिकूट हंसीकरत रहते हैं

देखासुनाकतहुंकोउनाहीं ७ सोमैसबबिधिकीन्हढिठाई प्रभुमानीसनेहस्यवकाई ८ दो०॥ कृपाभलाईआपनी नाथकीन्हभलमोर दूषणभेभूषणसकल सुयशचारुचहुंओर ९ चौ०॥ राउरिरीतिसुबानिसुहाई जगतबिदितनिगमागमगाई १० कूरकुटिलखलकुमतिकलंकी नीचनिशीलनिरीशनिशंकी ११ त्यउसुनिशरणसामुहेआये सुकृतप्रणामकियेअपनाये १२ देखिदोषकबहुंनउरआने सुनिगुणसाधुसमाजबखाने १३ कोसाह्यबसेवकहिनेवाजी आपुसमानसाजसबसाजी १४ निजकरतूतिनसमुझियसपने

अरु खलकहीपरावाबिघ्न हिंसाअहर्निशिकरते हैं अरु कुमतिकही कुत्सितमलीनसमझहैं मलीनकर्तब्यमलीनबाणीमलीनमन जौनकाहू को न नीकलागै अरु कलंकीकही चोरीपरस्त्रीगमन परनिंदकअसनीच निशीलकहीकाहूतेप्रीतिनहीं है अरुदयाहीन हैं अरुईर्षाअरुनिरीश कही गुरु हीन हैं किंतुनास्तिक हैं किसी बड़े का कहानहीं मानते हैं मनसुखी हैं अरुनिशंकीकही अनरीतिकरतकै शंकानही करते हैं ( ११ ) यहहम शास्त्रन विषे सुनाहै कि ऐसे जेकोऊहैं अरुकौन्यहुंयोग अरु प्रीतिऔ भयते स्वार्थते सुकृतकही एकौबार शरण आवै प्रणाममात्रै करतसंते अपनाइलेते हैं यह श्रीरामचन्द्र स्वामीकी सहजसुभावरीति है कि प्रमाणवाल्मीकी ये श्लोकएक॥ सकृदेवप्रपन्नायतवास्मीति चयाचते अभयंसर्वभूतेभ्योददाम्येतद्व्रतंमम ( १२ ) जे ऐसे दोषके भाजन हैं अरु तिनकेदोष देखते हैं परकबहूं नहीं उरमेंल्यावते हैं यह गुण श्रीरामचन्द्र का सुनिकै साधुन की समाजविषे बखानते हैं किंतुप्रभुतिनके अवगुण गुण करिकै साधुनकी समाज में बखानते हैं यहबात वेदकरिकै सबकेसुनबेमें आयो है ( १३ ) ऐसोकौन साहेब है कि अपने सेवकको निवाजि कही सर्वस्व देइ आपनेसमानसबसाज साजिदेइ ऐसेएक श्रीरामचन्द्रै हैं दूसरप्रभुऐसोकोई नहीं है॥ प्रमाण उत्तरकांडे चौपाई॥ हनुमदादिसबबानरबीरा धरेमनोहरमनुजशरीरा तहांसबके मनके हरनहार एक श्रीरामचन्द्र को स्वरूप है तहां श्रीरामचन्द्र ने सब बानरन्ह को आपन स्वरूपदीन है ऐसो को कृपालु है ( १४ ) तहांयेती

कृपासेवकपर करते हैं अरु तेहीगुणको सपनेहुंनहींमानते हैं अरु सेवकविषे अवगुण अनेकहैं अरु प्रभुविषे एकशरणगुणहै त्यहिगुणके सकोचते आपुसकुचि जाते हैं ( १५ ) सो ऐसे गुणगाहकएक गोसाईं श्रीरामचन्द्रै हैं अपिकही निश्चयकरिकै ऐसो कृपालु दूसरगोसाईं नहीं है यहबातमैं भुजाउठाइकै प्रणकरिकै यथार्थ कहतहौं जो चाहै

**सेवकसकुचशोचउरअपने १५ सोगोसाइँनहिंदूसरकोपी भुजाउठाइककहौंप्रणरोपी १६ पशुनाचतशुकपाठप्रवीना गुणगतिनटपाठकआधीना १७ दो०॥ सोसुधारिसनमानिजन कियेसाधुशिरमोर कोकृपालबिनुपालिहहिविरदावलिबरजोर १८ चौ०॥ शोकसनेहकिबालसुभाये आयउँलायरजायसुवाये १९ तबहुंकृपालुहेरिनिजओरा सबहिभाँतिभलमान्यउमोरा २० देख्यउँपाँयसु-**

सो वेदशास्त्र में प्रमाणकरिलेइगो ( १६ ) भरतजीकहते हैं तुमसबमिलिबिचारिकै देखो तौ बानरजे हैं ते नटके आधीन नाचत हैं अरु शुकमैना पढ़वैयाके आधीन पढ़त हैं अरु नटनटवा बालक जे हैं ते पाठककहीउनकेपिता अथवा सिखावने वाला त्यहिकेआधीन अनेककलागति करत हैं ल्यावत हैं यहां यहध्वनि है कि जैसोस्वामी श्रीरामचन्द्र करहिंगे कहहिंगे त्यहि अनुकूल हमनाचहिंगे पढ़ैंगे कलागतिकरहिंगे ल्यावहिंगे काहेते चराचर के सूत्रधर स्वामी हैं भरत के वचन सुनिकै रघुनाथजी सहितसभा दंग ह्वैगये हैं ( १७ ) दोहार्थ॥ जैसा स्वामी करते हैं सोई होत हैं देखिये तौ मैं इतनी अवज्ञाकीन है सो सब स्वामी सुधारिकै मोको आपनजन मानिकै सन्मानकीनहै ऐसेस्वामी कृपालु बिना यह विरदावली को साहेब पालिसकैहै बरजोरकही वेदहूकै कहा अपने शरणागत विषेनहीं मानते हैं ( १८ ) किधौं शोकते किधौं स्नेहते किधौं बालस्वभावही ते स्वामी कै आज्ञा बामकही नहींकिह्यउँ है यहां आउबेकै आज्ञानहींरही सो मैं कीन है यहांशोक स्नेह बालस्वभाव तीनिउँ हैं ( १९ ) यतन्यहु पर कृपालु अपनीओर हेरिकै सबप्रकार ते मोरभलामाना है ( २० ) काहे मैं स्वामी को अनुकूल जाना कि समस्त मंगलकर मूल चरणारविंद सो देख्यउँआइ ( २१ ) यह बड़ी समाजविषे मोरिभाग्य मोको देखिपरी है काहेते कि इतनी बड़ीचूकमें मेरे ऊपर इतना बड़ा साहेबकर अनुराग हैं ( २२ ) कृपा के निधि कही समुद्र ते सबप्रकार ते मेरे ऊपर अधिकाईकीन है कैसे जानिये कि कृपाअनुग्रह इहां अम्बुकही अमृत त्यहिते मोको अघवाइदीन है कृपाकहीसर्बसुदेइ अनुग्रहकही सबचूकमाफकरै ( २३ ) सो गोसाईं अपने शीलस्वभाव भलाईते सबप्रकार मोरदुलाराखा है ( २४ ) हे नाथ आपुकी शीलसकोंच यहसमाजविषे बिहायकही त्यागिकैमैं सबप्रकारते ढिठाईकीन है ( २५ ) हेदेव शिरोमणि यथामोरे रुचिभई

**मंगलमूला जान्यउँस्वामिसहजअनुकूला २१ बड़ेसमाजबिलोक्यउँभाग्बड़ीचूकसाहेबअनुरागू २२ कृपाअनुग्रहअम्बुअघाई कीन्ह कृपानिधिसबअधिकाई २३ राखामोरदुलारगोसाईं अपनेशीलस्वभावभलाईं २४ नाथनिपटमैंकीन्हढिठाई स्वामिसमाजसकोचबिहाई २५ अविनयविनययथारुचिबानी क्षमबदेवअतिआरतजानी २६ दो०॥ सुहृदसुजानसुसाहिबहिबहुतकहबबड़िखोरिआयसुदेइयनाथअबसबैसुधारियमोरि २७ चौ० ॥ प्रभुपदपदुमपरागदोहाई सत्यसुकृतसुखसीवँसुहाई २८ सोकरिकहौंहियेअपनेकी रुचिजागतसोवतसपनेकी २९ सहजसनेहस्वामिसेवकाई स्वारथछलफलचारिबिहाई ३० आज्ञासमनसुसाहिबसेवा सोप्रसादजनपावै**

है तथा अविनय विनय वाणी कहेउँ है ताते मोको आरतजानिकै आपुक्षमाकरव ( २६ ) दोहार्थ ॥ तहां सुहृदकही परम प्रिय मित्रजे हैं अरु सुजानकही सब प्रकार ते प्रवीण जे हैं अरु सुसाहेब जे हैं तिनते बहुतकहना खोरिकही दूषण है तहां आप सर्बजीवन के सुहृदहौ अरु सुजान कही सबके अन्तर्य्यामीहौ अरु सबके सुसाहेबहौ ताते आपुते बहुतबातकहना अनुचित है काहेते आपु सबजानतेहौ अब माको आपु आयसु दीजिये मोर सबप्रकार यही में सुधरत हैं ( २७ ) हेकृपासिन्धु श्रीरामचन्द्र हे प्रभु आपु के पद

पदुम परागकही धूरिऐसी है सत्यकै सुकृतकी सुख की सीवँकही मर्य्याद है ( २८ ) त्यहिपराग की दोहाईकरिकै रुचिजागतकै सोवतकही सुषुप्तिकै स्वपनेकै सांचीकही तुरीयकही चारिउअवस्थाकी रुचिकहतहौं ( २९ ) स्वामीकै सत्यसांची सेवकाई सहजस्नेहकही स्वामीके चरणारविंद विषे तैलवत्धार चित्तकै वृत्ति अखण्ड सनेहयुक्त बनीरहै अर्थ धर्म काम मोक्ष एते चारिस्वारथ हैं अरु श्रीरामचन्द्र स्वामीकी सेवाविषे चारिहू फल स्वार्थ की बासना सोई छल है त्यहिको त्यागिकै सेवा शुद्धभक्ति है सो करै ( ३० ) अरु साहेब की सेवा आज्ञा समान औरनहीं है हे देवनकेदेव सो आज्ञा प्रसाद सेवाजन जो है सो मैं पावों यह मोरे इच्छा है ( ३१ ) इतनाकहिकै प्रेम ते भारी बिकलभये हैं हेपार्बती त्यहिसमय केबिषे शरीर पुलकआयो है नेत्रनमें जलबहत है ( ३२ ) पुनि श्रीरामचन्द्र के चरणकमल अकुलाइकै गहतभये हैं हे पार्बती त्यहिसमयकेर स्नेह भरतकर किसी के कहिबेमें नहीं आवै ( ३३ ) तब कृपासिन्धुश्रीरामचन्द्र सुष्ठुवाणीतेसबसन्मानकीन है अरु हाथधरिकै समीपबैठावतभये हैं ( ३४ ) भरतकीबिनय कैसी है षट्प्रकारकीशरणागतयुक्त है सोसुनिकै अरुभरतकासुभाव

देवा ३१ असकहिप्रेमबिबशभेभारी पुलकशरीरबिलोचनबारी ३२ प्रभुपदकमलगहेअकुलाई समयसनेहनसोकहिजाई ३३ कृपासिन्धु-सनमानिसुबाणीबैठायउसमीपगहिपाणी ३४ भरतबिनयसुनिदेखिसुभाऊ शिथिलसनेहसभारघुराऊ ३५ छं०॥ रघुराउशिथिलसनेहसाधुसमाज-मुनिमिथिलाधनीमनमहँसराहतभरतभायपभक्तिकीमहिमाघनी ३६ भरतहिंप्रशंसतबिबुधबरषतसुमनमानसमलिनसे तुलसीबिकलसबलोग-सुनिसकुचेनिशागमनलिनसे ३७ सो०॥ देखिदुखारीदीनदुहुसमाजनरनारिसब मघवामहामलीन मुयेमारिमङ्गलचहत ३८॥ * *

देखिकै श्रीरघुनाथजी स्नेहते शिथिल ह्वैगये हैं ( ३५ ) छंदार्थ॥ हेगरुड़ भरत की दशा देखिकै रघुनाथजी विश्वामित्रजी जनकजी इत्यादिकसाधुनकी संपूर्ण समाज स्नेह ते शिथिल ह्वै गई है आपने मन विषे भरतकरभायप अरु भक्तिकी महिमा अगाध सबसराहते हैं ( ३६ ) अरु भरत की प्रशंसाकरने हैं देवता फूल बर्षते हैं पर मलिनमनते यहबिचारते हैं कि प्रेममय सबसमाज ह्वैगई है अरु श्रीरघुनाथप्रेमके आधीन हैं देखिये धौं बिधाताका करै गोसाई श्रीतुलसीदासजी कहते हैं कि द्वौसमाजसुनिकै समुझिगये हैं जैसे निशापाइकै कमलसंपुटहोत हैं ( ३७ ) सोरठार्थ॥ त्यहिसमय विषे भरत जनक दोऊसमाजके नरनारिन को अतिदीनदुःखीदेखिकै इन्द्रको मघवा तिरस्कारकरिकै कहा है काहेते महामलीन है मूर्ख है मुयेकोमारिकै मंगलचाहत है अयोध्यावासी एकतौ आपुदुःखी हैं दूसरेइन्द्र आपनी उच्चाटनमाया डाराचाहत है ताते मलीन है अरु भरतकी तौ तैयारी है सो नहीं बिचारकियो है ताते मूर्खहै ( ३८ ) इतिश्रीराम चरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसने श्रीअयोध्याकाण्डेभरतआरतबिनयवर्णनन्नामषटबिंशतिस्तरंगः २६॥

दोहा ॥ सुरमायाकछुरामरुख भरतसुविनयविवेक। सप्तमबीसतरंगमेंरामचरणरतिएक २७॥ सुरराजकपटकुचाल के सीवँ हैं काहेतेविशेषपरावाअकाज औआपनकाजसाधत हैं ( १ ) पाककही यज्ञ त्यहिकररिपु जो इन्द्र किन्तु पाकनामें जो राक्षसत्यहिकोरिपुइन्द्र त्यहिकैरीतिकाक के समान है छली है मलीन है कहूं प्रतीतिनहीं है ( २ ) प्रथमकुमति करिकैसमेटिलियो है सोई उच्चाटनमाया सबकेमाथेपर डारिदियो है ( ३ ) तब

चौ०॥ कपटकुचालसीवँसुरराजू परअकाजजियआपनकाजू १ काकसमानपाकरिपुरीती छलीमलीनकतहुँनप्रतीती २ प्रथमकुमतिकरिकपटसकेला सोउचाटसबकेशिरमेला ३ रामप्रेमअतिसैनबिछोहा सुरमायाबशलोगबिमोहा ४ भयउचाटबशमनथिरनाही क्षणवनरुचिक्षणसदनस्वहाहीं ५ दुबिधमनोगतिप्रजादुखारी सरितसिन्धुसंगमजिमिबारी ६ दुखितकतहुँपरितोषनलहहीं एकएकसनमरमनकहहीं

७ लखिहियहंसिकहकृपानिधानू सरिसश्वानमघवानिजबानू ८ दो०॥ भरतजनकमुनिगणसचिवसाधुसचेतबिहाय लगीदेवमायासबहिं-यथायोगजनपाय ९ चौ० ॥ कृपासिंधुलखिलोगदुखारे निजसनेहसुरपतिछलभारे १० सभारावगुरुमहिसुरमंत्री भरतभक्तिसबकैमतियन्त्री ११ रामहिंचितवतचित्रलिखेसे सकुचतबोलतबचनसिखेसे १२

श्रीरामचन्द्रके प्रेमते दूनौसेनाके मनमें बिछोह होतभयो है देवतनकीमायाकरिकैसबमोहित ह्वैगये हैं ( ४ ) सबदेवमायाके उच्चाटनकेबशह्वैगये हैं क्षणक बन में मनलागत है क्षणक घर में ( ५ ) संपूर्ण प्रजनके मनकीगति दुबिधाकरिकै दुःखितभई है क्षणकबन क्षणकबर जैसे भारीनदी अरु समुद्रकर संगमहोत जलहलोर उठत है ( ६ ) दुःखितभये हैं कतहुं परितोष नहीं प्राप्त होते हैं आपने २ मनकीगति समुझिकै लज्जितह्वैकै एक २ सन मरमनहीं करते हैं ( ७ ) अपने हृदय में बिहँसिकै कृपानिधान श्रीरामचन्द्र कहते हैं कि मघवा जोइन्द्र है त्यहिकैवानि श्वानकेसामन है ( ८ ) दोहार्थ॥ भरतजे हैं मुनिकेगणजे है सचिवजे हैं जनकराजजेते सचेत कही आत्मनेष्ठी भजनानन्दसाधुजे हैं तिनसबकोबिहाइकै देवमाया यथायोग्यपाइकै सबको लगी है ( ९ ) कृपासिन्धु सबलोगन को दुःखीदेखा है अपने सनेह में देवमायाकर दल देखा है ( १० ) राजाइत्यादिक सम्पूर्णसभाकै मति भरतकी भक्तिकरिकै यंत्रित कही बंशह्वैगई है ( ११ ) श्रीरामचन्द्रको सबदेखते हैं मानहुं लिखेचित्र हैं जो वचनबोलते हैं सोमानहुं पराये से सिखिआये हैं कछुबोलत बनैहै कछुनहीं बनै है ( १२ ) भरत कै प्रीति अरु नयकहीनीति अरु विनयबड़ाई श्रीरामचन्द्रविषे सुनतकैतौ अतिसुखलागत है पर वर्णनकरिबे में अतिकठिन है ( १३ ) जिन भरतकी भक्तिकर लवलेशविलोकिकै प्रेमविषे मग्नह्वइगये हैं रघुराउ अरु मुनिगण अरु मिथिलेश आदिकजे महान् हैं ( १४ ) तिन भरतकी महिमाको मैं जो तुलसीदासहौं सोकिमि कहिसकौं भरतकी भक्तिके प्रभावते जो कछु मोरीमति में हुलासभयो है सो कह्यउंहै ( १५ ) कविनके कुलकैमति अपुनाको छोटिजानिकै अरु भरतकी महिमाको अतिबड़ी जानिकै अपनेको कानिकही

भरतप्रीतिनयविनयबड़ाई सुनतसुखदबरणतकठिनाई १३ जासुबिलोकिभक्तिलवलेशू प्रेममगनमुनिगणमिथिलेशू १४ महिमातासुक हैकिमितुलसीभक्तिसुभावसुमतिहियहुलसी १५ आपुछोटमहिमाबड़िजानीकबिकुलकानिमानिसकुचानी १६ कहिनसकतगुणरुचिअधिकाई मतिगतिबालबचनकीनाई १७ दो० ॥ भरतबिमलयशबिमलबिधु सुमतिचकोरकुमारि उदितबिमल जनहृदयनभ इकटकरहीनिहारि १८ चौ०॥ भरतसुभावनसुगमनिगमहू लघुमतिचापलताकविक्षमहू १९ कहतसुनतसतिभाव

लज्जामानिकै सकुचाइगई है नहींसहिसकै है ( १६ ) भरतके गुणको कविन कैमति कहिबेको बड़ी रुचि होति है पर कहिनहीं सकै है कैसे जैसे बालक के बचन हैं तोतरीरुचि है दूधपान के अर्थ ऊधकहै है ( १७ ) दोहार्थ ॥ भरतकर बिमल गुण निर्मल निर्दोष पूर्णचन्द्रमा सदा एकरस विमल है अरु संतनकर हृदय बिमलनभ है तहां एकरस उदय है त्यहिकोकविनकी मतिचकोरकै कुमारी है यकटक निहारिरही है विवेक नेत्रनते अमृत पानकरती है ( १८ ) वाल्मीकि वेदव्यास शुक्राचार्य बृहस्पति इत्यादिक जे कवीश्वर हैं ते सबमेरी चपलमतिको क्षमाकरब जो मैं भरतकर गुणकह्यउँ है सो मैं का कहिसकौ काहते कि भरतकर गुणसुभाव कहिबेको निगमागम स्मृति पुराण इत्यादिकनहूंके कहिबेको अगम है ताते मैं काकहौं ( १९ ) भरतकर सत्यगुणभाव श्रीरामचन्द्र विषे सोकहत सुनतसंते श्रीसीतारामचन्द्र के चरणारविंद विषे को न रतहोइ नाम सबरतहोइँ ( २० ) भरतको सुमिरतसंते अरु श्रीरामचन्द्र विषे प्रेमनहोइ त्यहिकी सरिसबामकहीटेढ़ जगत्में को है तबजानी वह प्राणी बड़ा अभागी है ( २१ ) तब श्रीरामचन्द्र सुजान अंतर्यामी अपने जनके

जीवकी जानते हैं किंतु जनकही सबप्राणिन के जीवकीगति जानते हैं तिन सबकीदशा श्रीरामदयालु देखत भये हैं ( २२ ) कैसे हैं श्रीरामचन्द्र धर्मके धुरीणकेधरैया हैं अरु अतिधीर हैं नयजो है संपूर्णनीति त्यहिविषे नागरकही अतिप्रवीण हैं सत्यके स्नेहके शीलके सुखके सागरकही महासमुद्र हैं ( २३ ) देशकही श्रीचित्रकूटवन अरु इहां कालकही जामें सर्ब जीवकर हितकारहोइ अरु समयकही जो भरतजू आयसुमांगे हैं त्यहिकेअनुकूल अरु समाजकही सबके दुःखनिवृत्ति हेतु तहां देशकाल अवसर

भरतको सीयरामपदहोयनरतको २० सुमिरतभरतहिप्रेमरामको ज्यहिनसुगमत्यहिसरिसबामको २१ देखिदयालदशासबहीकी रामसुजानजानजनजीकी २२ धर्म्मधुरीणधीरनयनागर सत्यसनेहशीलसुखसागर २३ देशकाललखिसमयसमाजू नीतिप्रीतिपालकरघुराजू २४ बोलेबचनबानिसरबससे हितपरिणामसुनतशशिरससे २५ तातभरततुमधर्म्मधुरीणा लोकवेदबिदप्रेमप्रवीणा २६ दो०॥ कर्मबचनमानसबिमल तुमसमानतुमतात गुरुसमाजलघुबन्धुलखि कुसमयकिमिकहिजात २७ चौ०॥ जानहुतातत‌रणिकुलरीती सत्यसंधपितुकीरतिकीती २८ समयसमाजलाजगुरुजनकी उदासीनहितअनहितमनकी २९ तुमहिंबिदित

समाज के अनुसार कहा चाहते हैं काहेते सबके नीति प्रीतिके पालक हैं ( २४ ) तब श्रीरामचन्द्र बोले बाणिकही अपनी नीति सुन्दरि सर्ब कै हितकाररूप ऐसे वचनबोले जामें परिणाम कही आगेसबकर हितकारहोइ कैसोहित होइ जैसे शशिरसकही अमृत पानकिये ते फल होतहोइ त्यहिते अधिकजानब ( २५ ) श्रीरामचन्द्र कहते हैं हेतातभरत तुमधर्म्म की धुरीके धरैया हौ अरु लोकवेदके तत्वके वेत्ताहौ अरु प्रेमविषे तुमप्रवीण हौ ( २६ ) दोहार्त्थ॥ हे तात संपूर्ण देशकाल अवसरके अरु धर्म के जनैया मनबचनकर्म तुम्हारी समान तुमहीं हौ दूसरकोईनहीं है यह अनन्वयालंकार है गुरुन की समाजविषे अरु कुसमयहै यामें भरतकै खुसामदिसूचितहोत है तातेलघुबन्धुकै बड़ाई करिकै नहीं कहाजाइहै ( २७ ) अरु हे तात तरणिकहीसूर्यकुलकीरीति तुमअच्छीतरहते जानतेहौ अरुत्यहिकुलविषे पिता श्रीदशरथमहाराजसत्यकेसमुद्रकै कीर्ति कीतीकहीकेती हैं बेशुमार है ( २८ ) हेतात समयजो है अरुसमाजजो है अरुगुरुजननकर लाज जोहै अरु उदासीन जे मुनीश्वर हैं अरुसबके मनकरहितअनहितजो है ( २९ ) सोयहसबकर्तब्य तुमको अच्छीतरह विदित है अरुआपनमोरधर्म्मसब अच्छेप्रकारते जानते हौ यहिप्रकरण में यह अभिप्राय है किराजाके सत्यवचन रहैं अरु मैं बनकोजाउं सबकर कार्य्यसिद्धिहोइ अबतुम श्रीअयोध्याकोजाहु चौदहवर्षभरि सवकरबोध किहेरहौ ( ३० ) हे तात मोको तुम्हारभरोस सबप्रकारते है तदपिअवसरके अनुसारकहत हौं ( ३१ ) हेतात तात जोदशरथमहाराज हैं तिनबिना हमारीबात केवलगुरुनकी कृपैसम्हारी है ( ३२ ) नतु प्रजापुरजन परिवार हमसमेत सब खम्भारकही दुखकरिकै विकल ह्वैजाते ( ३३ ) बिनाअवसर सूर्य्य अस्तह्वैजाहिं कहौं जगत् में क्यहिको

सबहीकरकर्म्मू आपनमोरपरमहितधर्म्मू ३० म्वहिंसबभांतिभरोसतुम्हारातदपिकहौंअवसरअनुसारा ३१ तात‌तातबिनुबातहमारी केवलकुलगुरुकृपासुधारी ३२ नतरुप्रजापरिजनपरिवारू हमैंसहितसबहोतखँभारू ३३ जोबिनुअवसरअथवदिनेशू जगक्यहिकहहुनहोइकलेशू ३४ जसउतपाततातबिधिकीन्हा मुनिमिथिलेशराखिसबलीन्हा ३५ दो० ॥ राजकाजसबलाजतजि धर्म्मधरणिधनधाम गुरुप्रभावपालिहिसबै भलहोइहिपरिणाम ३६ चौ० ॥ सहितसमाजतुम्हारहमारा घरबनगुरुप्रसादरखवारा ३७ मातुपितागुरुस्वामिनिदेशू सकलधर्म्मधरणीधरशेशू ३८ सोतुमकरहुकरावहुमोहू तात‌तरणिकुलपालकहोहू ३९ साधनएकसकल

क्लेशनहोइ सबकोहोइ ( ३४ ) हे तात जैसो उत्पात विधातैं कीन है सो काहूके थांभिबेयोग्य नहीं रह्यउहै सो मुनि मिथिलेश राखिलीन है इहां श्रीरघुनाथजी सबकर आश्वासनकीन है जाते सबकर विरहशान्तहोइ ( ३५ ) हेतात अवधकर राज्यजोहैं अरु राज्य के सर्बकार्य्यजे हैं अरु हमारी तुम्हारी सबकै लाजजो है अरु पतिजोहै पतिकही आबरूह अरु धर्मअरु धरणी अरु धनधाम तहां गुरुनकर प्रभाव इनसबको पालनकरैगो ताते परिणामकही आगे सबप्रकारते भला है ( ३६ ) सहित समाज हमारतुम्हार घर बन में गुरुनकर प्रसाद रखवार है ( ३७ ) मातापिता स्वामीकर निदेशकही उपदेशसो सकल धर्म्म धरणी है त्यहिके धरिबेको शेष हौ ( ३८ ) सो तुम करहु अब मोसे करावहु हेतात तरणिकही सूर्यवंश कुलकेपालक होहु इहां यह अभिप्राय है कि माता पिता कै आज्ञा करिकै हमबनको जाइँ अरु गुरुनकी आज्ञा अरु हमारी आज्ञा मानिकै तुम अवध को जाहु आगे जो भरतजू कहाहै कि जो आज्ञाहोइ सोमैं करौं तहां रघुनाथजीसब धर्म्म नीति समुझायकै यहैआज्ञादेत भये हैं ( ३९ ) हेतात एक साधन ते अनेकसिद्ध होत हैं हमारी आज्ञा कैसी है कीर्तिजो है सुगतिजो है विभूति जो है इत्यादिकजेहैं त्यहिकीबेणीहैं बेणीकहीएकदुइतीनिचारि पाँचछः सात आठ नव दश इत्यादिक हमारनपदार्थ मिलिकै एकजगह सिद्धि होई ताको बेणीकही सो मेरी आज्ञाते तुम्हार सबसिद्ध है ( ४० ) हे तात सो हमारी आज्ञा ऐसी बिचारिकै अवधिकही चौदह वर्षभरि संकट सहिकै प्रजापरिवारको सुखीकरौ ( ४१ ) हे भाई यहि बिपत्तिको सब मिलिकै बांटिलेहु अवधि कही तुमको चौदहवर्षभरि अति कठिनाई है ( ४२ ) हेतातमैं जानतहौंतुम मृदुकही कोमलहौ ताते यह भार तुम सँभारिबेयोग्य नहीं हौ अरुमैं कठोरभार तुम्हें सौपतहौंतहां कुसमयविषे मोरकहब अनुचित नहीं है ( ४३ ) हेतात कुठाहरविषे सुबंधुजे हैं सोई सहायकहोते हैं देखि

**सिधिदेनी कीरतिसुगतिभूतिमयबेनी ४० सोबिचारिसहिसंकठभारी करहुप्रजापरिवारसुखारी ४१ बांटिबिपतिसबहीमिलिभाई तुमहिंअवधिभरिबड़िकठिनाई ४२ जानितुम्हैंमृदुकहौंकठोरा कुसमयतातनअनुचितमोरा ४३ होहिंकुठाँयकुबन्धुसहाये बोढ़ियहाथअसनिकेघाये ४४ दो०॥ सेवककरपदनयनसेमुखसेसाह्यबहोइ तुलसीप्रीतिकिरीतिभलिसुकबिसराहतसोइ ४५**

ये तौ असनिकही बज्र किन्तु तरवारिते कोऊमारैलगै तौपहिलेहाथ आड़ाजाइहैअरुशरीर अरुहाथएकही हैं ( ४४ ) दोहार्त्थ ॥ इहां श्रीरामचन्द्रपरमनीति कहते हैं राजाप्रजा की नीति सेवकस्वामीकी रीति हे समस्तपुरबासिहु तुमभरतको यहिरीतिसेजानेरहब अरु हेभरत तुमपुरवासिनको यहिरीति से जानब अरु तुमहमको यहिरीतिसेजानब अरु हमतुमको यहिरीतिसे जानब यहिदोहाविषे अनेकअभिप्राय हैं अपनी मति अनुसार हमकहते हैं सेवकस्वामीविषे सेवककसचाही अरु राजाविषेप्रजाकसचाही करपद नयनसे अरुस्वामीराजामुख ते इहांप्रतिलोमान्वयक्रमते अर्थ है तहांनेत्रनते देखि देखि पांयनतेचलिचलि हाथनतेकरिकरि तीनिउमिलि कै अतिप्रीतिकरिकै भोजनकी यत्नअनेकतरहसे रचिकै बनावते हैं मुखके खवाइबेहेतु अरु आपु वहिभोजनते निष्कामहै जोवहैव्यञ्जन नेत्रनमेंडारिदियो पगपरधरिदियो करपरधरिदियो पर तीनिउमिलिव्यञ्जनकेस्वादरसकोलेशहू मात्र नहींग्रहणकरैहैं अरुव्यञ्जन अनेक प्रकारते बनाये हैं यह दृष्टांत है अबदृष्टांतकहते हैं ऐसेसेवक मनबचनकर्मतेस्वामीकीटहलकरै स्वार्थपरमार्थचारिउ पदार्थकीबासना स्वामी ते न राखै ऐसे प्रजाराजाकी सेवा करै अरुस्वामी अरुराजा अपनेसेवकचाकर कर पालनपोषणकरै जैसेसुखयथार्थसबअंगइन्द्रिनकरपोषणकरै है सो आगेकहैंगे ( ४५ ) तहांसम्पूर्णसभा श्रीरामचन्द्रकै प्रेमकर समुद्र अमृतमय सानी बाणी सुनत भये हैं ( ४६ ) तहां सबसभा सनेह से शिथिल ह्वैकै जड़ीभूत ह्वैगये हैं मानहुंसमाधिलगिगई है ( ४७ ) श्रीरामचन्द्रकी आज्ञापाइकै भरतकोपरम संतोषहोतभयो है स्वामी को सन्मुखजानिकै सबदोषदुःख बिमुखह्वैगये हैं ( ४८ ) मुखप्रसन्न ह्वै आयो है बिषाद मिटिगयो है मानहुं गूंगाको गिराकही शारदाको प्रसाद भयो है ( ४९ ) पुनि प्रेमसमेत प्रणामकरिकै दोऊकरजोरिकै बोलतभये हैं ( ५० ) हे नाथ आपुकेसाथ गयेकर असखुख मोकोभयो है जगत् विषे जन्मभये

चौ०॥ सभासकलसुनिरघुबरबानी प्रेमपयोधिअमियजनुसानी ४६ शिथिलसनेहसमाजसमाधी देखिदशाचुपशारदसाधी ४७ भरतहिभयउपरमसंतोषू सन्मुखस्वामिबिमुखदुखदोषू ४८ मुखप्रसन्नमनमिटाबिषादू भाजनुगूंगहिगिराप्रसादू ४९ कीन्हसप्रेम प्रणामबहोरी बोलेपाणिपंकरुहजोरी ५० नाथभयउसुखसाथगयेको लह्यउलाभजगजन्मभयेको ५१ अबकृपालुजसआयसुहोई करौंशीशधरिसादरसोई ५२ सोअवलंबदेवम्वहिंदेवा अवधिपारपावौंज्यहिसेवा ५३ दो०॥ देवदेवअभिषेकहितगुरुअनुशासनपाय आन्यउसबतीरथसलिलत्यहिकहँकाहरजाय ५४ चौ०॥ एकमनोरथ बड़मनमाहीं सभयसकोचजातकहिनाहीं ५५ कहहुतातप्रभुआयसुपाई बोलेबाणिसनेहसुहाई ५६ चित्रकूटसुनिथलतीरथबन खगमृगसरिसरनिर्झरगिरिगन ५७ प्रभुपदअंकितअवनि

कर लाभमोको प्राप्तिभयो है ( ५१ ) कृपालु अब जसि आज्ञाहोइ तसिमाथेपर धरिकै अतिआनन्द युक्तकरौं ( ५२ ) हेदेव अबसो अवलम्ब कछु दीजिये जो सेवनकरिकै अवधि जो चौदहवर्ष सो पारपावौं आगे खड़ाऊंलेबेको अभिप्राय है ( ५३ ) दोहार्थ ॥ हे देवनकेदेव आपुके राज्याभिषेक हेतु गुरुनकी आज्ञा ते सब तीर्थनकर जल अरु औषधी इत्यादिक सबल्यायउं है ते त्यहिको का रजाय होत है ( ५४ ) हे नाथ मेरे मनमें एक बड़ी मनोरथ है पर भयसंकोचते कहानहींजात है ( ५५ ) श्रीरामचन्द्रबोले हे तात जो तुम्हारी रुचिहोइ सो कहहु आज्ञापाइकै भरतजी स्नेह बाणी बोले ( ५६ ) हे नाथ श्रीचित्रकूटबिषे थल जे हैं तीर्थ जे हैं खग जे हैं सरसागर तलाब जे हैं गिरिन के विषे निर्झरकही झरना झरते हैं ( ५७ ) अरु हे प्रभु तुम्हारे चरणारविन्द करिकै अवनि अंकित ह्वैरही है जो आपकी आज्ञाहोइ तौ तिनकी परिक्रमाकरिकै दर्शनकरिआवौं ( ५८ ) हे तात अवश्य कै अत्रिमुनिको आज्ञा शीशपरधरिकै बनविषे निर्भय बिचरहुजाइ ( ५९ ) हे भ्राता मुनिके प्रसाद ते बन मंगलदाता अतिसुहावन पावन सो देखौजाइ ( ६० ) अरु हे तात ऋषिनायक जो अत्रि हैं ते जहांआज्ञादेहिं त्यहिथलविषे तीर्थनकर जलस्थापन करहुजाइ ( ६१ ) प्रभुकर वचनसुनि भरत बहुत सुखीभये हैं पुनि अत्रिमुनिके चरणकमलमें माथनावतभये हैं ( ६२ ) दोहार्थ॥ भरतकर अरु श्रीरामचन्द्रकर सम्बाददेखत

बिशेषी आयसुहोइतौआवौंदेखी ५८ अवशिअत्रिआयसुशिरधरहू तातबिगतभयकाननचरहू ५९ मुनिप्रसादबनमंगलदाता पावनपरमसुहावनभ्राता ६० ऋषिनायकजहँआयसुदेहीं राख्यहुजलथलतीरथतेहीं ६१ सुनिप्रभुबचनभरतसुखपावा मुनिपदकमलमुदितशिरनावा ६२ दो०॥ भरतरामसम्बादसुनि सकलसुमंगलमूल सुरस्वारथीसराहिसबबर्षतसुररुफूल ६३ चौ० ॥ धन्यभरतजयरामगोसाईं कहतदेवहर्षितबरिआई ६४ मुनिमिथिलेशसभासबकाहू भरतबचनसुनिभयउउछाहू ६५ भरतरामगुणग्रामसनेहू पुलकिप्रशंसतराउबिदेहू ६६ सेवकस्वामिस्वभायसुहावन नेमप्रेमअतिपावनपावन ६७ मतिअनुसारसराहनलागे सचिवसभासदअतिअनुरागे ६८ सुनिसुनिरामभरतसम्बादू दुहुंसमाजहियहरषविषादू ६९ राममातुदुखसुखसमजानी कहिगुणदोषप्रबोधीरानी ७० एककहहिंरघुवीरबड़ाई एकसराहतभरतभलाई ७१ दो०॥ अत्रिकह्यउतबभरतसन शैलसमीपसुकूप राखियतीरथतोयतहँ

सुनतभये यहजाना कि अब श्रीरामचन्द्र बन को चलिचुके तब भरतकैस्तुतिकरते हैं अरु सुरतरु के फूलबर्षते हैं ( ६३ ) देवताहर्षिहर्षि यह कहते हैं कि रामगोसाई धन्य हैं अरु भरतधन्य हैं ( ६४ ) मुनि जे वशिष्ठआदिकअरु मिथिलेश भरत तिनके वचनसुनिकै महाउत्साह होतभयो है ( ६५ ) भरतकर श्रीरामचन्द्रकर गुणग्राम अरु परस्परकर स्नेह

पुलकि पुलकिबिदेह प्रशंसाकरते हैं ( ६६ ) सेवक स्वामीकर जो उत्तम भाव स्वाभाविकै है अति स्वहावन पावनकही पवित्रहु ते पवित्र है भरतकर श्रीरामचन्द्रविषे ( ६७ ) सो सब सचिव सभासद अपनीमति के अनुसार सराहतभये हैं ( ६८ ) भरतकर अरु श्रीरामचन्द्रकर संबाद सुनिसुनि दोऊसमाजके हृदयविषे हर्षविषाद होतभयो है हर्ष श्रीरामचन्द्रकर आज्ञानुकूल अरु विषाद श्रीरामचन्द्रको बनगवनजानिकै ( ६९ ) तब श्रीरामचन्द्रकै मातादुख सुख बरोबरिजानिकै सबरानिनकर प्रबोध करती भई है ( ७० ) एकै रघुबीर धीरकी बड़ाईकरते हैं अरु एकै भरत की भलाई सराहते हैं तहांदूनोंपद अगम हैं ( ७१ ) दोहार्थ॥ तब अत्रिमुनि कह्यउ है हेभरत उत्तम शैल के समीप सुष्टकही उत्तमकूप है तेही कूपविषे उत्तम पावन अमलअनूप तीर्थनकर जलराखहु ( ७२ ) तब भरतजी अत्रिमुनिका अनुशासन पाइकै जलके भाजन तहां को चलाइदेतभये हैं ( ७३ ) पुनि शत्रुहनसंयुक्त अरु साधुनकी समाज अरु अत्रिमुनिके आगे भरतजी चलतभये हैं अगाधकूप के समीप प्राप्तिभयेजाइ ( ७४ ) पावन जो पाथ तीर्थनकर जलपुण्यथलविषे राखतभये हैं प्रमुदित प्रेम ते अत्रिमुनि असकहते हैं ( ७५ )

**पावनअमलअनूप ७२ चौ०॥ भरतअत्रिअनुशासनपाई जलभाजनसबदियेचलाई ७३ सानुजआपुअत्रिमुनिसाधू सहितगयेजहँकूपअगाधू ७४ पावनपाथपुण्थलराखा प्रमुदितप्रेमअत्रिअसभाषा ७५ तातअनादिसिद्धिथलयेहू लोपेउकालबिदितनहिंकेहू ७६ तबसेवकनसरसथलदेखा कीन्हसुजलहितकूपबिशेषा ७७ बिधिवशभयउबिश्वउपकारा सुगमागमअतिधर्मबिचारा ७८ भरतकूपअबकहिहैं लोगा अतिपावनतीरथजलयोगा ७९ प्रेमसनेमनिमज्जतप्राणीहोइहिविमलकरममनबाणी ८० दो०॥ कहतकूपमहिमासकलगयेजहाँरघुराउ अत्रिसुनायउरघुबरहितीरथपुण्यप्रभाउ ८१ चौ०॥ कहतधर्मइतिहासमप्रीती भयउ**

हे तात यह अनादि सिद्धिथल है सो बहुतकाल को लोप्यउकही गुप्त है प्रकटनहीं है ( ७६ ) तब सरसथल देखिकै सेवकन सुष्टराज्याभिषेक कर जल कूपविषे करतभये हैं कूपकर अतिहितकारकीन है ( ७७ ) देखिये तौकहांयह संयोगरह्यउ जे श्रीरामचन्द्र के राज्याभिषेककर जलआइकै यह कूपको अभिषेकभयो है ताते यहकूप सबतीर्थनको राजाभयो है सो विधिके संयोग ते बिश्वकर उपकार होत भयो है देखिये तौ धर्मकर बिचार ऐसोहै कहूं सुगम को अगम ह्वै जात है अरु कहूं अगमको सुगम ह्वइजातहैइहां अगम को सुगम ह्वैजात हैं इहां अगमबस्तु सुगमभई है ( ७८ ) भरत करिकै अतिपावन जो तीर्थनकर जल त्यहिके संयोगते अब ते भरतकूपसबलोग कहैंगे ( ७९ ) यहकूपविषे जे प्राणीप्रेम नेम ते मज्जनकरहिंगे ते मनक्रमवचनते विमलहोहिंगे ( ८० ) दोहार्थ ॥ कूपकर माहात्म्य अत्रिमुनि सबते बर्णनकरत श्रीरघुनाथजी के समीपजातभये हैं तब अत्रिमुनि तीर्थ के पुण्यकर प्रभाव श्रीरघुनाथ जी को सुनावतभये हैं हे रघुराज यहभरत कूप के जलको जो सेवनकरैंगे ते आपुके सारूप्य सामीप्य मुक्तिको प्राप्तिहोहिंगे ( ८१ ) धर्मकर इतिहास परस्पर कहत सन्ते रात्री बीतिगईभोरभयो ( ८२ ) दूनोंभाई नित्यक्रियानिबाहिकै भरतजी श्रीरामचन्द्र अरु अत्रि अरु वशिष्ठकी आज्ञापाइकै सहित वशिष्ठ ( ८३ ) आसाहेतसमाजसबसाज सादेपांय पियादे श्रीरामचन्द्रकर बनअटनकही देखिबेकोचलत भये हैं ( ८४ ) भरत के कोमलचरण हैं अरु बिनापनहिन तातेभूमि सकुचिकेकोमलह्वै गई है ( ८५ ) कुशजे हैं कंटकजे हैं कुराई कही गड़वाजे हैं कंकर जे हैं इत्यादिक जहांतक कटुकही पगमें लागतसन्ते छर्छराइउठैं अरु कठोर कुबस्तुजे हैं तिनसबको दुराइकही छपाइलेतभई है महि अतिकोमल

**भोरनिशिसोसुखबीती ८२ नित्यनिबाहिभरतदोउभाई रामअत्रिगुरुआयसुपाई ८३ सहितसमाजसाजसबसादे चलेरामबनअटनपयादे ८४ कोमलचरणचलतबिनुपनहीं भइमृदुभूमिसकुचिमनमनहीं ८५ कुशकण्टककांकरीकुराई कटुककठोरकुबस्तुदुराई ८६ महिमंजुलमृदुमारगकीन्हो**

बहतसमीरसदासुखलीन्हो ८७ सुमनबर्षिसुरघनकरिछाहीं बिटपफूलफलतृणमृदुलाहीं ८८ मृगबिलोकिखगबोलसुबानी सेवहिंसकलरामप्रियजानी ८९ दो०॥ सुलभसिद्धिसबप्राकृतौ रामकहतजमुहातरामप्रेमप्रियभरतकहँ यहनहोहिबड़िबात ९० चौ० ॥ यहिविधिभरतफिरतबनमाहीं नेमप्रेमलखिमुनिसकुचाहीं ९१ पुण्यजलाश्रयभूमिविभागा खगमृगतृणतरुगिरिबिनबागा ९२ चारुबिचित्रपवित्रबिशेषी बूझतभरतदिव्यसबदेखी ९३ सुनिमनमुदितकहतऋषिराऊ

ह्वैगई है श्रीरामानन्यभागवत कछु संबन्धमानिकै भरतकै सेवाकरैहैं ( ८६ ) भरतके चलतसन्ते महिमृदुमंजुलमयमारग भई है अरु शीतल मन्दसुगंध सुखमयपवन बहत है ( ८७ ) देवता फूलबर्षते हैं मेघछाया करते हैं अरुबिटप फूलफल पल्लव मृदुकरिकै शोभित ह्वैरहे हैं ( ८८ ) मृगजे हैं ते अपने अवलोकनते भरतकी सेवाकरते हैं अरु विहंगबोलीते सेवाकरते हैं श्रीरामप्रिय जानिकै ( ८९ ) दोहार्त्थ॥ हे पार्वती जेजमुहातौ कै श्रीरामकहत हैं तिनप्राकृतमनुष्य के सम्पूर्ण पाप नाशह्वैजाते हैं अरु त्यहिकाल विषेसम्पूर्ण सिद्धीआइ जाती हैं ते भरत श्रीरामचन्द्र के परमप्रीतम तिनको जो मंलमयभयो तौ कछुबड़ीबात आश्चर्य्य की नहीं है ( ९० ) यहिप्रकार ते भरतजी बनमें फिरते हैं नेमप्रेम देखिकै मुनीश्वर सकुचाइजाते हैं ( ९१ ) पुण्यमय जलाश्रयकही जहांजलरहत है विभागकही भिन्नभिन्नभूमिकी शोभा खगजे मृगजे तृणजे गिरिजेवनजे बागजे ( ९२ ) येसब चारु कही अतिसुन्दर अरु विशेष पवित्र हैं तिनसबकोभरतजी परमदिब्यदेखिकै अत्रिमुनितेबूझते हैं ( ९३ ) सुनिकै मनमुदितते ऋषिराउ अत्रिमुनि सबके हेतुकारण कहते हैं उनके पुण्य अरु उनके गुण अरु उनकेफल उनकेप्रभाव अतिनिर्मल ( ९४ ) अत्रिमुनिकेबचनसुनिकै भरतजीकतहूं निमज्जन अरु कतहूं प्रणामकरते हैं अरु कतहूंमनके अभिरामकही स्वेच्छित आनंदते विलोकते हैं ( ९५ ) अरु कतहूं मुनिकी आयसु पाइकै बैठिजाते हैं अरु सीतासहित दोऊभाइनकर स्मरणकरते हैं ( ९६ ) भरत के सुभाउस्नेह तेअपनी सेवादेखिकै बनकेदेवता मुदित मनते आशीर्वाददेते हैं ( ९७ ) प्रात समय स्नानकरिकै श्रीरामचन्द्र अरु गुरुनके प्रणामकरिकै आज्ञालैकै परिक्रमाको नित्यजाते हैं अढ़ाई पहर दिनबीते फिरिआवते हैं श्रीरामचन्द्र

हेतुनामगुणपुण्य प्रभाऊ ९४ कतहुंनिमज्जनकतहुंप्रणामा कतहुंबिलोकतमनअभिरामा ९५ कतहुँबैठिमुनिआयसुपाई सुमिरतसीयसहितदोउभाई ९६ देखिसुभावसनेहसुसेवा देहिंअशीषमुदितमनदेवा ९७ फिरहिंगयेदिनपहरअढ़ाई प्रभुपदकमलबिलोकहिंसाई ९८ दो०॥ देखेथलतीरथसकल भरतपाँचदिनमाँझ कहतसुनतहरिहरसुयश गयउदिवसभइसाँझ ९९ * * * *

चौ० ॥ भोरन्हाइसबजुरयउसमाजू भरतभूमिसुरतिरहुतिराजू १ भलदिनआजुजानिमनमाहीं रामकृपालुकहतसकुचाहीं २

के चरणकमलविषे दण्डवत् करते हैं ( ९८ ) दोहार्त्थ ॥ भरतजी सम्पूर्णतीर्थथलबन मुनिनके स्थान पाँचदिनविषे सब देखतभये हैं हरजो महादेव तिनकै अनन्यभक्ति श्रीरामचन्द्र विषे अरु हरि जो श्रीरामचन्द्र तिनकैदयालुता अपनेजन विषे ताते हरिहरकर सुयशपरस्पर अत्रिमुनि अरु भरतकहतसुनत श्रीरामचन्द्र के निकट प्राप्तिभये आइ संध्यासमय ह्वैगई है ( ९९ ) इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने श्रीअयोध्याकाण्डे श्रीरामचन्द्रभरतअत्रिबिमलविवेकसम्बादेसप्तविंशतिस्तरंगः २७॥

दोहा ॥ अष्टमबीसतरंगमें विनयधर्म्मगतमूल रामचरणश्रीरामकैआज्ञामंगलमूल २८ भोरहीस्नानकरिकै सम्पूर्ण समाजजुरतभई है भरत भूमिसुर ब्राह्मण अरु तिरहुतिके राजाजनकते सब जुरतभये ( १ ) हे पार्वती श्रीरामचन्द्र अपने मनमें विचारकीनहै कि आजु बिदाहोबेको भलोदिनहै सोककहतकै संकोचकरते हैं काहेते ते कृपालु हैं ( २ )

गुरुजेवशिष्ठ विवामित्रराजाजनक भरतजा इन्हैआदिक सबसभाको अवलोकिकैश्रीरामचन्द्रसकोचिकै देखिकै नजरिनीचे करिलीनहै ( ३ ) श्रीरघुनाथजीकरशीलसंकोच देखिकैसराहिकै सबसभा शोचकरती है कि श्रीरघुनाथ के समान संकोची साहेब कोई नहीं है ( ४ ) भरतजी अतिसुजान श्रीरामचन्द्रकर रुखदेखि उठिकैप्रेमतेबोलतेभये हैं ( ५ ) दण्डवत्करिकै करजोरिकै कहते हैं हेनाथ आपु मोरि सकलरुचि राखा है ( ६ ) मोरेहेतु आप संतापकही क्लेशपायो है कहांतक कहाँ बहुत भांति ते आपु दुःखपावा है ( ७ ) भरत कहते हैं हे गोसाई अब मोको रजायहोइ अवधि जो चौदहबर्ष तबताईं श्रीअयोध्या सेवनकरौंजाइ ( ८ ) दोहार्थ ॥ हे दीनदयालु सो उपायकरब जामें आपुके चर-

गुरुनृपभरतसभाअवलोकी सकुचिरामफिरिअवनिविलोकी ३ शीलसराहिसभासबशोची कहूँनरामसमस्वामिसकोची ४ भरतसुजानरामरुखदेखी उठिसप्रेमधरिधीरविशेषी ५ करिदण्डवतकहतकरजोरी राखीनाथसकलरुचिमोरी ६ म्वहिंलगिसह्यउसकलसंतापू बहुतभांतिपावादुखआपू ७ अबगोसाइँम्वहिंदेहुरजाई सेवउँअवधअवधिभरिजाई ८ दो० ज्यहिउपायमुनिपांयजनदेखैंदीनदयाल सोसिखदेइय अवधिलगि कोशलपालकृपाल ९ पुरजनपरिजनप्रजागोसांई सबशुचिसरससनेहसगाई १० राउरिबदिभलभवदुखदाहू प्रभुबिनुबादिपरमपदलाहू ११ स्वामिसुजानसबहीकी रुचिलालसारहनिजनजीकी १२ प्रणतपालपालिहिसबकाहू देवदुहूंदिशिओरनिबाहू १३ असम्वहिंसबबिधिभूरिभरोसो कियेबिचारनशोचखरोसो १४ आरतमोरनाथ

णारविंद में फेरिदेखौं हे कोशलपाल कृपालु अवधिलगि सोई सिखदीजिये ( ९ ) हे गोसाईं पुरजन परिजन अरु प्रजाजे हैं आपु विषेस्नेह कै सगाई कही नाताविषे सबशुचिकही पवित्रहैं अथवा पुरजन परिजन प्रजाजन जहांतक नेहनाते सागाइक हैं ( १० ) ते सबराउरिबदि कही आपुके ह्वैकै आपुकी आज्ञाते इनविषे स्नेहकरि अरु अनेक संसारदुखदाह प्राप्तिहोइ सो दुखभला है सुखरूप है अरु हे प्रभु तुमते विमुख जो परमपदकै लाभहोइ तौ बृथा है ( ११ ) अरु हे सुजान स्वामी आपु सबजनके हृदयकी रुचिलालसा जानते हौ ( १२ ) हे प्रणतपाल तुम सबकर पालनकरहुगे हे देव इहां उहांघर बन मोर धर्मकर्म का सब आपुहिके हाथ निबाहहै ( १३ ) असकही यहीप्रकार ते मोको भूरिभरोसो है बिचार कियेते अब मोको तृणहुबरोबरि शोचनहीं है ( १४ ) हे नाथ मोर आरत अरु नाथकरक्षोह दोऊमिलिकै मोको ढीठकीनहै जो मैं आपुसे यतनी बातकह्याउं है सो क्षमाकरव ( १५ ) यह बड़ादोषमोर दूरिकरिकै हे स्वामी अपने अनुगामी का संकोच तजिकै सिखापनदीजिये ( १६ ) भरतकै बिनयसुनिकै सबसभा प्रशंसाकरते हैं कैसी भरत कै विनय है स्वसुख तत्सुखीनीर क्षीर मिलिरहे है त्यहिके विवरणकरबेको भरतकै बाणी हंसिनी है सबसुख जल त्यागिकै तत्सुखकही स्वामीकर सुखदुख दूधसों ग्रहणकियो है ( १७ ) दोहार्थ॥ दीनबन्धु जे श्रीरामचन्द्र हैं ते शुचिबन्धु के वचनदीन छल हीन सुनिकै देशकाल अवसर सरिस श्रीप्रवीण रामचन्द्र बोलतेभये हैं ( १८ ) हेतात हमारि तुम्हारिपरिजन पुरजन घर बनकी चिंता गुरुको अरु

करक्षोहू दुहुंमिलिकीन्हढीठहठिमोहू १५ यहबड़दोषदूरिकरिस्वामी तजिसकोचसिखईअनुगामी १६ भरतबिनयसुनिसबहिंप्रशंसी क्षीरनीरविवरणगतिहंसी १७ दो०॥ दीनबंधुशुचिबंधुके वचनदीनछलहीन देशकालअवसरसरिस बोलेरामप्रवीन १८ चौ०॥ ताततुम्हारमोरिपरिजनकी चिन्तागुरुहिनृपहिघरबनकी १९ माथेपरगुमुनिमिथिलेशू हमहिंतुमहिंसपनेहुनकलेशू २० मोरतुम्हारापरमपुरुषारथ स्वारथसुयशधर्मपरमारथ २१ पितुआयसुपालियदोउभाई लोकवेदभलभूपबड़ाई २२ गुरुपितुमातुस्वामिसिखपाले चलतसुगममगपरहिंनखाले

२३ असबिचारिसबशोचबिहाई पालहुअवधअवधिभरिजाई २४ देशकोषपुरजनपरिवारू गुरुपदरजहिंलागिछरभारू २५ तुममुनिमातुसचिवसिखमानी पाल्यहुपुहुमिप्रजारजधानी २६

राजाको हैं ( १९ ) जो हमारे तुम्हारे शीशपर गुरु वशिष्ठजी श्रीविश्वामित्र मुनीश श्रीमिथिलेशहैं तौ द्वौदिशि सपन्यहु क्लेशनहीं है ( २० ) हमार तुम्हार जो परमपुरुषार्थ अरु स्वार्थ सुयश धर्म परमार्थ इत्यादिक जे हैं ( २१ ) पिताकै आयसुदाऊभाइन कर पालनकरिहि हमारबनमें तुम्हार घर में काहेते लोकहु वेदमें भूपकैबड़ाई है ( २२ ) हे भरतजी गुरु पितु मातुस्वामी इनसबकर सिखापन पालेते सुष्टमार्ग में चलतसन्ते कुमार्गबिषे कबहूं नहीं पगपरै है काहेते इनकै आज्ञासुमार्गैहै इहां अरु पाछे, आगे कछुलोक व्यवहार परमार्थ मिश्रितकहते हैं ( २३ ) असबिचारिकै हमारीआज्ञा मानिकै अवधिकही चौदहबर्ष श्रीअयोध्यासेवन पालनकरहुजाइ ( २४ ) देशकोष पुरजन परिवार सबकर छरभार कही कार्य्य छरभार लोक वाणी सोगुरुन के रजबिषे लागिहि ( २५ ) तुमगुरु मातु हेभरत सचिवइनकीआज्ञा लैलैरजधानी श्रीअयोध्यापुहुमी जे पृथ्वीत्यहिकर पालनकरो जाइ ( २६ ) दोहार्थ ॥ श्रीगोसाईं तुलसीदासकहते हैं श्रीरामचन्द्र भरतकोराजनीति उपदेश करते हैं हे भरत जी मुखियामुख के समानचाही खानपान आदिक मुखमें होत हैं अरु बिबेकसमेत सब अंगनकर पालनकरते हैं तैसे तुम पुरजन प्रियजन प्रजनकर पालनकिहेहुयहपरम राजनीति है अरु हे प्रजहु तुम भरतकर सेवनयहि प्रकारते करेहु जैसे नयन पग कर मुखको सेवन करैहैं यह सुनिकैसबहर्षे ( २७ ) हेभरतजी राज्यकर धर्मनीति सर्बस कही संपूर्ण इतनै है जैसे अपने मनकर मनोर्थ अपने मनहिंमें गोइकही छपाइ राखते हैं पुनि बिचारकरिकै समयपाइकै प्रकटकरते हैं तैसे राजनीतिकर धर्म है इहां श्रीरघुनाथजीने थोरेअक्षरन में अर्थ बहुतकहाहै ( २८ ) तब श्रीरामचन्द्र बन्धुकर प्रबोध बहुतभांति से कीन पर बिना

दो० ॥ मुखियामुखसेचाहियेखानपानकहँएक पालैपोषेसकलअँगतुलसीसहितबिबेक २७ चौ० ॥ राजधर्मसर्बसयतनोई जिमिमन मांहमनोरथगोई २८ बंधुप्रबोधकीन्हबहुभाँती बिनुअधारमनतोषनछाती २९ भरतशीलगुणसचिवसमाजू सकुचसनेहबिबशरघुराजू ३० प्रभुकरिकृपापावरीदीन्ही सादरभरतशीशधरिलीन्ही ३१ चरणपीठकरुणानिधानके जनुयुगयामिकप्रजाप्रानके ३२ सम्पुटभरतसनेहरतनके आखरयुगजनुजीवयतनके ३३ कुलकपाटकरकुशलकरमके बिमलनयनसेवासुधरमके ३४ भरतमु-

कछु अधार भरत के मनकर बोधनहीं होत है ( २९ ) भरतकर शीलगुणअरु सचिव समाज कै दशादेखिकै श्रीरघुनाथजी सकोचिगये हैं ( ३० ) तब श्रीरामचन्द्रजी भरत के मनकै गति जानिकै अपने पगनकी पांवरीजो खराऊं हैं सो देतभयेहैं तब अतिहर्ष आदरते परिक्रमा साष्टांग दण्डवत्करिकै शीशपर चढ़ाइलीन है ( ३१ ) हे गरुड़ करुणानिधान के चरणपीठजेहैं खराऊं ते कैसे हैं सम्पूर्ण प्रजन के प्राणके रक्षाहेतु जनुयुगजामिक कही पहरुआ चौकीदार हैं ( ३२ ) पुनि खराऊंकैसी हैं सम्पुटकही डब्बाहै भरतकर स्नेह रत्नराखिबेको भरतकरस्नेह खराऊं देखिदेखिरहैगो नतु काजानीधौं का होत पुनि खराऊं कैसी हैं जनु युग अक्षर रामनाम जीवन के यत्न को संसार ते रक्षाहेतु तैसे खराऊं पुरबासिन को हैं ( ३३ ) पुनि दोऊखराऊं कैसी हैं भरतसहित सम्पूर्ण अयोध्याबासिन के श्रीरामचन्द्र हेतु जे कर्म करहिंगे त्यहिके कुशलकही रक्षाहेतु दोऊ कपाट कही केवारे हैं पुनि कुलकही कुलुफकुञ्जी हैं इनखराउन करिकै सबकेसुकर्मनेम धर्म सदा कुशल बनेरहैंगे किंतु कुलकही सबके कुलभरे के सुकर्म के रक्षाकरिबे को दोऊकपाट कुलुफ हैं श्रीरामचन्द्रकर सेवा सुधर्म करबे को दोऊखराऊं बिमल नेत्र हैं देखिबेको ( ३४ ) हे पार्बती श्रीरामचन्द्रके खराऊंकर अवलम्ब पाइकै भरत को कैसो सुखभयो है जैसे श्रीसीतारामचन्द्र के रहेकर सुखभयो है ( ३५ ) दोहार्थ॥ तब साष्टांग दण्डवत् प्रणाम करिकै भरतजी बिदामांगतभये हैं तब श्रीरामचन्द्र अतिप्रीति से हृदयमेंलगाइलीन है तेही

समयविषे अमरपति जो कुटिलहै सो सवलोगनको बिदाकी समय कुअवसरपाइकै उच्चाटन करतभयो है ( ३६ ) सो इन्द्रकैकुचालि श्रीरामकृपा ते सबको नीकीभई है अवधि जो चौदहबर्षहैं त्यहि

दितअवलम्बलहेते अससुखजससियरामरहेते ३५ दो०॥ मांग्यउविदाप्रणामकरि रामलियेउरलाइ लोगउचाटेअमरपतिकुटि लकुअवसरपाइ ३६ चौ०॥ सोकुचालिसबकहँभइनीकी अवधिआशसबजीवनजीकी ३७ नतरुलषणसियरामबियोगा हहरिमरतसबलोगकुरोगा ३८ रामकृपाअवरेबवसुधारी बिबुधधारिभैगुणदगोहारी ३९ भेटतभुजभरिभायभरतसो रामप्रेमरसकहिनपरतसो ४० तनमनबचनउमगिअनुरागा धीरधुरंधरधीरजत्यागा ४१ बारिजलोचनमोचतबारी देखिदशासुरसभादुखारी ४२ मुनिगणगुरुधुरधीरजनकसे ज्ञानअनलमनकसेकनकसे ४३ जोबिरंचिनिर्लेपउपाये पद्मपत्रजिमिजलजगजाये ४४ दो०॥ त्यउ

की आशय ते सबर्जीवन को जीवन होतभयो है ( ३७ ) जो लोगनपर इन्द्रउच्चाटन न करत तौ श्रीसीतारामचन्द्रके बियोग जो बिक्षेप त्यहि कुरोग में सबलोग हहरिकै मरिजाते ( ३८ ) यह अवरेब श्रीरामचन्द्र की प्रेरणाकृपे सुधारा है बिबुधकै धारिजो है माया सो गुणदायक मानहुं गोहारि भई है ( ३९ ) भुजभरिकै श्रीरामचन्द्र भाई भरत को भेंटते हैं त्यहिसमयकर श्रीरामचन्द्र अरु भरतकर प्रेम किसूके कहिबेयोग्यनहीं है ( ४० ) तन मन वचनते दोऊभाइनके अनुरागकर महानद उमगतभयो है देखिकै जनक इत्यादिक जे धीरके धुरंधरतिन धीरजको त्यागिदीन है ( ४१ ) बारिज जो कमलनयन तिनते वारिजलसो बहेजाते हैं यहदशादेखिकै देवतनकी सभादुखित होतभई है कि श्रीरामचन्द्र प्रेमके बशहोतभये हैं अबधौं का होइ ( ४२ ) मुनिनके गणजे अरुवशिष्ठ जनकजे ऐसे धीरहैं ज्ञानअग्निविषे जिन अपने मनकञ्चनकोताइ लीन है ( ४३ ) जेविरञ्चिके उपायसे निर्लेपहैं जैसे जलविषे पद्मपत्ररहै हैंतैसे जगत्विषे उत्पन्नह्वइकै हैं ( ४४ ) दोहार्थ॥ तेसबरघुबर भरतकै अपारप्रीति बिलोकिकै मन बचनकर्मसहित ज्ञानवैराग्य मग्नकही प्रेमविषेडूबिगये हैं ( ४५ ) जहां जनकके गुरुनकी गति मति भोरीह्वैगई है तहां प्राकृत कविकलिके मनुष्यजे हैं ते जो यहिप्रीतिकोकछु वर्णनकरैंतौ बड़ीखोरिहै किन्तु प्राकृत काहूमनुष्य की प्रीति की उपमा कछुदेहिं तौबड़ी खोरिहै ( ४६ ) अरु भरतकर रघुवरकरबियोग कहीबिक्षेपकरबिरह जोकछुमैं मतिके सरिस वर्णनकरौं तौमोको सबकवि कठोर कविकहैंगे ( ४७ ) भरतजूकर श्रीरघुनाथजीकर त्यहिसमयकरअकथस्नेह समुझिकै कविनकी सुवाणी सकुचिगई है नहीं कहसकती है ( ( ४८ ) श्रीरामचन्द्र भरतको

बिलोकिरघुबरभरतप्रीतिअनूपअपार भयेमगनमनतनबचनसहितबिरागबिचार ४५ चौ०॥ जहांजनकगुरुगतिमतिभोरी प्राकृतप्रीतिकहतबड़िखोरी ४६ बरणतरघुबरभरतबियोगू सुनिकठोरकविजानहिंलोगू ४७ सोसकोचबशअकथसुबानी समयसनेहसमुझिसकुचानी ४८ भेंटिभरतरघुबरसमुझाये पुनिरिपुदवनहर्षिउरलाये ४९ सेवकसचिवभरतरुखपाई निजनिजकाजलगेसबजाई ५० सुनिदारुणदुखदुहूंसमाजा लगेचलनकेसाजनसाजा ५१ प्रभुपदपद्मबन्दिदोउभाई चलेशीशधरिरामरजाई ५२ मुनितापसबनदेवनिहोरी सबसनमानिबहोरिबहोरी ५३ दो०॥ लषणहिभेंटिप्रणामकरि शिरधरिसियपगधूरि चलेसप्रेमअशीष सुनि सकलसुमंगलमूरि ५४ चौ०॥ सानुजरामनृपहिंशिरनाई कीन्हबहुतबिधिबिनयबड़ाई ५५ देवदयावशबड़दुखपायहु

भेंटिकै समझाइकै शत्रुहनको उरमेंलगावते हैं ( ४९ ) सेवकजे सचिवजेते सबभरतकर रुखपाइकै बिदाहेतु अपने अपने कार्य्य में लागतेभये हैं ( ५० ) बिदासुनिकै द्वौसमाज में दारुणदुख संयुक्त अपनी अपनीचलनेकी तैयारीकरते हैं ( ५१ ) पुनि प्रभुकेपदको दूनौंभाई बंदनाकरिकै रामरजाय शीशपरराखिकै बिदाहोतभये हैं ( ५२ ) मुनिजेहैं तापसजेहैंबनकेदेवताजेहैं तिनको भरतजीनिहोरिकही निहोराकरिकै सन्मानकरिकै पूजाकरतभये हैं ( ५३ ) दोहार्थ ॥ पुनि दोऊभाई लक्ष्मण को भेंटतभये हैं प्रणामकरिकैश्रीजानकीजीके चरणन कै रजशीशपर राखतभये मंगलकरमूल आशीर्वाद पाइकै चलतभये हैं ( ५४ ) श्रीरामचन्द्र सहित लक्ष्मण जनक के प्रणामकरतभये बहुतीप्रकारते जनककै यथार्थबड़ाईकीन अरु विनयकीन कि भरतकै खबरिलेतरहब ( ५५ ) हे देवमोरे ऊपर दयाकेबशबनमें आइकैसहितसमाज बड़ेदुखकोप्राप्तिभये ( ५६ ) अबआशीर्वाददैकै पुरकोपधारिये मोरिसुधि न बिसारब यहसुनिकै जनकजी कछु नहींबोले प्रेमतेगद्‌गदह्वइकै धीरजधरिकै गमनकीन है ( ५७ ) पुनि श्रीरामचन्द्रजी मुनिनकोमहि देवनको साधुनको सबप्रकारते सन्मान करतभये हैं हरिहरके समानजानिकै प्रणामकरिकै बिदाकरत भये हैं ( ५८ ) तब दोउभाई सासुकेसमीप गये पदवंदिकै आशीर्वाद लैकैबिदाभये हैं ( ५९ ) कौशिकवामदेवजावालिपरिजन पुरजन मंत्रीयेते सबै सुष्टचालिते हैं ( ६० ) यथायोग्य सबको प्रणाम करिकै सहित लक्ष्मण श्रीरामचन्द्र सबको बिदाकरतभये हैं ( ६१ ) नारिपुरुष लघु मध्य बड़े छोटे जे सब हैं तिनको तिनको कृपानिधि सन्मान

**सहितसमाजकाननहिंआयहु ५६ पुरपगुधारियदेइअशीशा कीन्हधीरधरिगवनमहीशा ५७ मुनिमहिदेवसाधुसनमाने बिदाकियेहरिहरसमजाने ५८ सासुसमीपगयेदोउभाई फिरेबंदिपगआशिषपाई ५९ कौशिकबामदेवजावाली परिजनपुरजनसचिवसुचाली ६० यथायोगकरिविनयप्रणामा बिदाकियेसबसानुजरामा ६१ नारिपुरुष लघुमध्यबड़ेरे सबसनमानिकृपानिधिफेरे ६२ दो०॥ भरतमातुपदबंदिप्रभु शुचिसनेहमिलिभेंटि बिदाकीन्हसजिपालकी सकुचशोचसबमेंटि ६३ चौ०॥ परिजनमातुपितहिमिलिसीता फिरीप्राणप्रियप्रेमपुनीता ६४ करिप्रणामभेंटीसबसामू प्रीतिकहतकबिहियेहुलासू ६५ सुनिसियअभिमतआशिषपाई रहीसीयदुहुंप्रीतिसमाई ६६ रघुपतिपटुपालकीमँगाई करिप्रबोधसबमातुचढ़ाई ६७ बारहिंबारमिलेद्वौभाई समसनेहज-**

करिकै फेरतभये हैं ( ६२ ) दोहार्थ ॥ श्रीरामचन्द्र शुचिस्नेह ते भरतकीमाताको भेंटतभये हैं सुन्दररिपालकी मँगायकै चढ़ाइकै शोचसकोच सब मिटाइकै पदबन्दिकै बिदाकरतभये हैं ( ६३ ) परिजन जे हैं अरु माताजे हैं तिनको जानकीजी अतिप्रीति से भेंटिकै फिरतिभई हैं तहां कछु प्रीति मोहकर संचारनहीं है काहेते प्राणप्रिय जे श्रीरघुनाथजी तिनके चरणारविन्द विषेअनूप नित्य प्रेमवन्दिरह्यो है ( ६४ ) पुनि पगनमें प्रणामकरिकै सबसासुनको श्रीजानकीजी भेंटतभई हैं त्यहि अवसरकर प्रेम बिरहकहतसन्ते कविके हृदयविषे हुलास नहींहोत है ( ६५ ) सबसासुन आशीर्बाद सिखापनदीन सो सुनिकै श्रीजानकीजीके परमानन्द भयो है श्रीजानकीजीकर स्वरूप दोऊप्रीति विषे समायरही है माताकै प्रीति सासुनकै प्रीति दोऊप्रीति विषे सहजध्यान बंधिरह्यउ है ( ६६ ) तब श्रीरामचंद्रपटुकही पट्टाम्बर जरावनते जटित ऐसीपालकी अनेक मंगाइकै सबमातनकर प्रबोध करिकै चढ़ावतभये हैं ( ६७ ) बारबार दोऊ भाई सबमातनको समस्नेहते मिलिकै बिदाकरतभये हैं ( ६८ ) बाजि गज इत्यादिक साजिकै भरतभूपकर दोऊदलपयानकरतभये हैं ( ६९ ) हृदयविषे श्रीसीतारामलक्ष्मणकोधरे अचेतचलेजाते हैं ( ७० ) बसहजेबेल हैं घोड़ेहाथी इत्यादिक पशुमनमारे परबशचले जाते हैं ( ७१ ) दोहार्थ॥ ते सब श्रीरामचन्द्र जीकेबिक्षेपते बिकलचले जाते हैं अरु श्रीरामचन्द्रजी जानकीजी लक्ष्मणजी

ननीपहुंचाई ६८ साजिबाजिगजबाहननाना भूपभरतदलकीन्हपयाना ६९ हृदयरामसियलषणसमेता चलेजाहिंसबलोगअचेता ७० बसहबाजिगजपशुहियहारे चलेजाहिंपरवशमनमारे ७१ दो० ॥ गुरुगुरुतियपदवंदिप्रभु सीतालषणसमेत फिरेहर्षबिस्मयसहित आयेपर्णनिकेत ७२॥ * * * * * * * *

चौ० ॥ बिदाकीन्हसन्मानिनिषादू चल्यउहृदयबड़बिरहबिषादू १ कोल्हकिरातभीलबनचारी फिरेज्वहारिज्वहारिज्वहारी २ प्रभुसिय लषणबैठिबटछांहीं प्रियपरिजनबियोगबिलखांहीं ३ भरतसनेहसुभायसुबानी प्रियाअनुजसनकहतबखानी ४ प्रीतिप्रतीतिबचनमनकरणी श्रीमुखरामप्रेमबशबरणी ५ त्यहिअवसरखगमृगजलमीना चित्रकूटचरअचरमलीना ६

गुरु तिय गुरुके पदवन्दिकै बिदाहोत भये हैं हर्ष बिस्मयसमेत पर्णकुटीको आवतभये हैं हर्ष सबकेबिदाकर शोचसबके शोचकर ( ७२ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुष-विध्वंसनेश्रीअयोध्याकाण्डेश्रीरामचन्द्रदोउराजसमाजविदावर्णनन्नामअष्टाविंशस्तङ्गः २८॥ :: :: :: :: ::

दोहा ॥ अवधकांडपूरणभयो उनतिस प्रेमतरंग। भरतभक्तिअनपावनीरामचरणरतिरंग २९ तब श्रीरामचन्द्र सनमानकरिकै निषादको बिदाकीन निषादचल्यउ हृदयविषे बिरहबिपादबहुत है ( १ ) कोलकिरात भीलबनबासीजे हैं निषादके संगीते जोहारिजोहारि फिरतभये हैं ( २ ) श्रीरामचन्द्र जानकीजी श्रीलक्ष्मणजी बटकी छायाविषे बैठिकै प्रियजन परिजन प्रीतमके वियोगते बिलखावकही शोच करते हैं ( ३ ) भरतकर स्नेह अरु सुष्ट भाव सुन्दरवाणी प्रियअनुजसन बखानिबखानि कहते हैं ( ४ ) भरतकेमनबचनकरणीकै प्रतीत अपना विषे श्रीमुखतेप्रेमते प्रियानुजते कहते हैं ( ५ ) त्यहि अवसरविषे खगमृग जल के जीव चरअचर श्रीरामचन्द्रकै दशादेखिकै सबमलीन ह्वैगये हैं ( ६ ) तब बिबुध इन्द्रआदिकजे देवता हैं ते श्रीरामचन्द्र कै दशादेखिकै फूलबर्षिकै अपने घरघर के हवालकहतेभये हैं देखिये तौ जेसकामी पुरुष हैं ते परमेश्वरहुकै प्रतीति नहींराखते हैं श्रीरामचन्द्र सबको बिदा करिदीन है तापरइन्द्रके प्रतीत नहीं आवै है ( ७ ) तब प्रभुप्रणाम करिकै भरोसदीन कि तुम नडरो तुम्हार कार्य्यहम करहिंगे यह सुनिकै जयजयकार करिकै पुनि फूल बर्षिकै अपने घरको जातेभयेअबते तृणौभरि शोचनहीं रहा है ( ८ ) दोहार्थ ॥ हे गरुड़ सानुज जानकी समेत श्रीरामचन्द्र पर्णकुटी विषे राजत हैं जनु वैराग्य भक्तिज्ञान परमशरीरधरे सोहत हैं इहां वैराग्य भक्ति ज्ञानसबको देखावते

बिबुधबिलोकिदशारघुबरकी बरषिसुमनकहिगतिघरघरकी ७ प्रभुप्रणामकरिदीनभरोसो चलेमुदितमनडरनखरोसो ८ दो० ॥ सानुजसीयसमेतप्रभु राजतपर्णकुटीर भक्तिज्ञानवैराग्यजनु सोहतधरेशरीर ९ चौ० मुनिमहिसुरगुरुभरतभुआलू रामबिरह सबसाजबिहालू १० प्रभुगुणग्रामगुणतमनमाहीं सबचुपचापचलेमगजाहीं ११ यमुनाउतरिपारसबभयऊ सोबासरबिनुभोजनगयऊ १२ उतरिदेवसरिदूसरबासू रामसखासबकीन्हसुपासू १३ सईउतरिगोमतीनहाये चौथेदिवसअवधपुरआये १४ जनकरह्यउपुरबासरचारी राजकाजसबसाजसँभारी १५ सौंपिसचिवगुरुभरतहिराजू तिरहुतिचलेसाजसबसाजू १६ नगरनारिनरगुरुशिषमानी बसेसुखेनरामरजधानी १७ दो०॥ रामदरशहितलोगसब करतनेमउपबास तजितजिभूषणभोगसुख जियतअवधिकी

हैं ( ९ ) पुनि वशिष्ठमहिसुर भरत भुवाल जनकइत्यादिक श्रीरामचन्द्रकेवियोग के विरहते सबसमाज बेहालचलेजाते हैं ( १० ) प्रभुकर गुणग्राम अपने अपने मनमें गुनतसब चुपचापचलेजाते हैं चुपचापकही लोकबाणी है कोई किसूसे बोलैनहीं है ( ११ ) यमुनाउतरिकै सबपारभये सोदिन बिनाभोजन गयो है ( १२ ) पुनि गंगाउतरिकै दूसरमुकाम करतभयो तहांनिषाद सबप्रकारते सुपासकीन है ( १३ ) पुनिसईउतरिकै गोमतीस्नान करिकै तीसरमुकामकीन हैं पुनि चौथेदिन श्रीअयोध्या में दाखिल भये हैं ( १४ ) तहां चारिदिन श्रीजनकजी श्रीअयोध्यामें रहिकै राजकाज सब संभारिकै तबबिदाभये हैं ( १५ ) तब जनकजी भरतको राज्यसौंपिकै पुनिभरतको गुरु मंत्रिनको सौंपिकै आपु सब साजसाजिकै तिरहुतको चलत भये हैं ( १६ ) नगर के नरनारि सब गुरुमंत्रिनकर शिषमानिकै रामरजधानी श्रीअयोध्या तहां बसतभये हैं ( १७ ) दोहार्थ॥ श्रीरामचन्द्र के दर्शनहेतु सबलोग भूषण बसन भोजन शरीर के निरस निर्बाहमात्र ग्रहण अपर सबत्याग नेम उपवास तपसबकरते हैं अवधि जो चौदहबर्ष त्यहिकीआशते सबजीवते हैं ( १८ ) भरतके प्रबोधकही आज्ञाते सचिव जे हैं सुसेवकजे हैं आपन आपन कार्यपाइकै सुखबोधभयो है ( १९ ) पुनि भरतजी शत्रुहनको बोलाइकै कहते हैं कि सबमातनकी स्यवकाई तुमकरौ ( २० ) ब्राह्मण को बोलाइकै भरतजी करजोरिकै निहोराकरिकै कहते हैं ( २१ ) ऊंच नीच भलपोच जो कार्यहोइ सो मोको आज्ञादेव कौनौसंकोच नकरब ( २२ ) पुनि परिजन पुरजन प्रजाजन सबको बोलाइकै सुबसबसा-

**आस १८ चौ० ॥ सचिवसुसेवकभरतप्रबोधे निजनिजकाजपाइशिषबोधे १९ पुनिशिषदीनबोलिलघुभाई सौंपीसकलमातुसेवकाई २० भूसुरबोलिभरतकरजोरे करिप्रणामबरबिनय निहोरे २१ ऊंचनीचकारजभलपोचू आयसुदेवनकरबसकोचू २२ परिजनपुरजनप्रजाबोलाये समाधानकरिसुबसबसाये २३ सानुजगेगुरुगेहबहोरी करिदण्डवतकहतकरजोरी २४ आयसुहोइतौरहौंसनेमा बोलेमुनितनपुलकिसप्रेमा २५ समुझबकरबकहततुमसोई धर्मसारसबकरहितहोई २६ दो०॥ मुनिशिषपाइअशीषसुनिगणि कबोलिदिनसाधिसिंहासनप्रभुपादुका बैठारेनिरुपाधि २७ चौ०॥ राममातगुरुपदशिरनाई प्रभुपदपीठिरजायसुपाई २८ नंदिग्राम करिपर्णकुटीरा कीन्हनिवासधर्मधुरधीरा २९ जटाजूटशिरमुनिपटधारी महिषनिकुशसाथरीसँवारी ३० अशनबसनबासन**

वतभये हैं ( २३ ) तब अनुजसहित श्रीवशिष्ठजी इहां जातभये दण्डवत् करिकै करजोरिकै कहतभये हैं ( २४ ) भरतजूकहते हैं कि जो मोको आज्ञा होइ तौ मैं कछु नेमसंयुक्त रहउं तब तन पुलकित श्रीवशिष्ठजी कहते हैं ( २५ ) हे भरतजी तुम समुझब अरु कहब सो सम्पूर्णकरसार जामें सबकर हितकारहोइ सोई तुमकरहुगे ( २६ ) दोहार्थ ॥ तब मुनि कै आज्ञापाइकैगणिक ज्योतिषी बोलाइकै सर्वकाल सुन्दर साधिकै श्रीरामचन्द्रकर पादुका सिंहासन पर बैठाबतभये सिंहासन खराऊं निरुपाधि हैं ( २७ ) श्रीरामचन्द्रकी माता गुरुनके पदमें शिरनाइकै अरु पदपीठ खराऊंकै रजायसुपाइकै खराऊं प्रत्यक्ष आज्ञा देतरह्यउहै ( २८ ) नन्दिग्राम विषे पर्णकुटीबनाइकै धर्मधुरंधरभरतटिकतभये हैं ( २९ ) शिरविषे जटाकेजूट बनावत भये हैं अरु मुनिपट भोजपत्र धारण करतभये हैं अरु साढ़ेतीनिहाथभुइँखनिकै कुशासन बनाइकै बैठतभये हैं ( ३० ) अशन जो है भोजन बसन कही वस्त्र बासनकही कमण्डलु ब्रतकही एकादशी इत्यादिक श्रीभरतजीकै सो ब्रतकीन है श्रीरामचन्द्र बनमें फल कन्दमूल इत्यादिक भोजन कीन है चौदहवर्ष श्रीभरतजू यह ब्रतकीन है नन्दिग्राम बिपे बैठिकै ज्येष्ठ की शुक्लपक्षकी परिवाको पैसाभरि यव गोमूत्र में भिजोइकै ताको मींजिकै ताकोरस पानकरैं ऐसेही दिनप्रति पैसापैसाभरि बढ़त जाहि पूर्णमासी ताईं पुनि ऐसेही कृष्णपक्षकी परिवाते पैसापैसाभरि घटाबतजाहिं ऐसेही तीनि तीनिवर्ष तीनिमास पुनि तीनिवर्ष तीनिमास दूर्बादल के

अर्कताके आधाररहे पुनि वर्षतीनि तीनिमास जल आधाररहे पुनि तीनिवर्ष तीनिमास पवन आधाररहे पुनि एकवर्ष निराधाररहे हैं ऐसेही व्रत जबलगि श्रीरामचन्द्रजीको नहीं मिले तबलगि कीन है पुनि

**ब्रतनेमा करतकठिनऋषिधर्मसप्रेमा ३१ भूषणबसनभोगसुखभूरी मनक्रमबचनतजेतृणतूरी ३२ अवधराजसुरराजसिहाहीं दशरथधनसुनिदलजाहीं ३३ त्यहिपुरबसतभरतबिनुरागा चञ्चरीकजिमिचम्पकबागा ३४ रमाबिलासरामअनुरागी तजतबमनइवजनबड़भागी ३५ दो०॥ रामप्रेमभाजनभरत बड़ीनयहकरतूति चातकहंससराहिये टेकबिबेकबिभूति ३६ चौ० ॥ देंह**

व्रतकही प्रणका समस्त धर्मको प्रणकीन है पुनि नेमको रूप जहां यमनेम आवैगो तहां यमनेम एकहीसंग कहेंगे अब कछु कहते हैं श्रीरामचन्द्र के हेतु त्रिकालसंध्या पुनि काल कालपर श्रीरामचन्द्रके पादुका युगुलताकीपूजा पुनि श्रीसीताराम युगुलमंत्र ताको जाप्यताको नेम द्वादश सहस्र प्रतिदिन अरु श्रीसीताराम यह तौ एकएक स्वामी प्रति अनेकबार धाराबँधिरही है जे मुनिनको कठिनकर्तव्य सो भरतजी धारण कीन है ( ३१ ) भूषणबसन भोग सुख भूरिकही बहुत जिनसबको मन क्रमबचनते तृणइव तोरिडार्यो है ( ३२ ) हे पार्वती अवधके राज्यदेखिकै इन्द्र सिहाते हैं अरु दशरथ कर धनसुनिकै कुबेर लजाते हैं ( ३३ ) त्यहि पुर विषे भरतबसते हैं बिनाराग त्यहि बिभूतिको भरतजी करमन कैसे नहीं ग्रहण करतहैं जैसे कोई बगैचा में चम्पाकर पेड़ है अरु भ्रमरजेहैं ते चम्पाके फूलकेसुगन्ध को नहीं ग्रहणकरते हैं तैसे श्रीअयोध्यामें श्रीभरतजीबिराजे हैं ( ३४ ) तहां भरतजीतौ श्रीरामचन्द्रजीके अंगहैं तहां अपरजे श्रीरामचन्द्रजीके अनुरागीभक्त हैं रमाजेलक्ष्मी हैं तिनकरबिलासजहांतक ब्रह्माण्ड है त्यहिको बमनकीनाई त्यागे हैं जे बड़भागी श्रीरामजन हैं ( ३५ ) दोहार्थ॥ श्रीरामचन्द्र कै प्रेमकर भाजन है भरतजीकी यह कछुबड़ीकरतूति नहीं है देखिये तौ ये दुइ विहंगहैं तहां चातक करटेकसराहिबेयोग्य है अरु हंसकरबिवेक सराहिबेयोग्य है अरु श्रीरामचन्द्रविषे भरतकरटेक बिवेककैबिभूतिकाहूके कहिबेयोग्य नहीं है ( ३६ ) भरतजीकीदेंह दिनदिन दूबरिहोतीजाती है अरु तेजबढ़त जात है तेजकीछबि मुखपर शोभितहैरही है ( ३७ ) नित्यही श्रीरामचन्द्र बिषे नवीन प्रेमकोबढ़ब त्यहिकेप्रण विषे पीनकही मन पुष्टहोतजात है अरु श्रीरामचन्द्र विषे धर्मकर दलप्रफुल्लित बढ़तजात है अरु मनमें कौनौ खेदकरिकै तनिकौ मलीनता नहीं आवै है ( ३८ ) कैसेभरतके अंतष्करण मनभये हैं जैसे शरदऋतुके विषे बिपत कही आकाश बिलसित निर्मलहै अरु त्यहिसमय विषे बनजकही कमल भरतके योगसरविषे हृदयकमल बिगसे हैं ( ३९ ) तहां भरतकर हृदयबिमल आकाश है

**दिनहिंदिनदूबरिहोई बढ़ततेजमुखद्युतिछबिसोई ३७ नितनवरामप्रेमपनपीना बढ़तधर्मदलमननमलीना ३८ जिमिजलनिघटत शरदप्रकाशे बिलसतविपतसबनजविकासे ३९ शमदमसंयमनेमउपासा नखतभरतहियबिमलअकाशा ४० ध्रुवविश्वासअबधिराकासी स्वामिसुरतिसुरबीथिविकासी ४१ रामप्रेमबिधुअचलअदोषा सहितसमाजसोहनितचोखा ४२ भरतरहनिसमुझनिकर**

अरु सम दम संयमनेम बिमलनक्षत्र हैं शमकही चित्तबुद्धि मन अहंकारचतुष्ट अंतष्करण अरु बाह्यइंद्रिन की विषयदूनौ की एकवृत्ति आत्माविषे सो मन अरु बाह्य इन्द्रिनकी विषयको दमन कही जीतिलेना सो दमसंयम दशहैं १० अहिंसा सत्य स्तेयकही इंद्रिनकी विषय चुराइ लेना ब्रह्मचर्यदया नम्रताक्षमा ६८ धृति अल्पभोजन शौच येते दशसंयम है १० पुनि नेम शौच होमतप दानविद्याध्ययन इंद्रीनिग्रह ब्रत चान्द्रायनइत्यादिक किंतु ब्रतकही प्रण उपवास एकादशी आदिक मौनरहना स्नानत्रिकाल संध्याकरना दशनेम

१० श्लोक द्वै प्रमाण गायत्रीभाष्ये ॥ अहिंसासत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यदयार्जवं क्षमाधृतिमिताहार: शोचश्चतेयमादश १ शौचेय्याचतपोदानं सवाध्यायोपस्थनिग्रहा ब्रतोपवासमौनानि स्नानानि चयमादश २ तेतेशम दमसंयम नेम निर्मल नक्षत्रभरतके हृदयवर्ष है ( ४० ) अवधि में जो अचल बिस्वासहै सोईराकाकही पूर्णमासी कीरात्री है अरु स्वामी जो श्रीरामचन्द्र हैं तिनविषे जो भरतकै सूरत अखंडलगी है सोई सुरबीथी कही शिशुमारचक्र है बिकसीकही बिलसित है ( ४१ ) अरु श्रीरामचन्द्र विषे जो भरतकेर प्रेमपूर्णएकरस है सोई चन्द्रमापूर्ण हैनिर्दोष अचलसहित समाजकही नक्षत्रन संयुक्त अति चोखशोभित है ( ४२ ) भरतकै रहनि समुझनि करतूति अरु भक्ति अरु बैराग्य ज्ञान इत्यादिकजे निर्मलबिभूति है ( ४३ ) सोभरत कै यहबिभूति बर्णत कै सुकविजेहैंतिन कै माते सकुचाति है काहेते शेष गणेश शारदादिकके वर्णबेको गम्यनहीं है अरु सुकविकही वाल्मीविदव्यास बृहस्पति इत्यादिकन कै मतिनहीं कहिसकै सकुचाइजाती है ( ४४ ) दोहार्थ॥ श्रीरामचन्द्र कै पावरीजोपादुका सो नित्यत्रिकाल पूजनकरते हैं अति प्रीति हृदय में नहीं समाति श्रीरामचन्द्र की पादुका ते आयसु मांगिमांगि राजकार्य्य बहुभांतिते करते हैं ( ४५ ) अरु गातपुलकित हैं नेत्रनमें जलबहते हैं अरु हृदय में श्री

तूती भक्तिबिरतिगुणबिमलविभूती ४३ बरणतसकलसुकविसकुचाहीं शेषगणेशगिरागमनाहीं ४४ दो० ॥ नितपूजतप्रभुपाँवरी प्रीतिनहृदयसमाति मांगिमांगिआयसुकरत राजकाजबहुभांति ४५ चौ०॥ पुलकगातहियसियरघुबीरा जीहनामजपिलोचननीरा ४६ लषणरामसियकाननबसहीं भरतभवनबसितपतनकसहीं ४७ द्वौदिशिसमुझिकहतसबलोगू सबबिधिभरतसराहनयोगू ४८ सुनिब्रतनेमसाधुसकुचाहीं देखिदशामुनिराजलजाहीं ४९ परमपुनीतभरतआचरणू मधुरमंजुमृदुमंगलकरणू ५० दहनकठिनकलिकलुषकलेशू महामोहनिशिदलनदिनेशू ५१ पापपुंजकुंजरमृगराजू शमनसकलसंतापसमाजू ५२ जनरंजनभंजनमहिभारू

सीतारामचन्द्रकै मूर्ति बिराजमान ह्वैरही है अरु जीभते रामध्वनि बंधिरही है ( ४६ ) लक्ष्मणजी श्रीरामचन्द्र जी बनमेंबसते हैं अरु भरतजी अवधमें बसिकै तपकरिकै तनकसते हैं ( ४७ ) श्रीरामचन्द्र भरत के परस्पर स्वामिसेवक जस कछुचाही नित्यजीव परमेश्वर करयथार्थ भावचाही तैसेदोऊदिशि समुझिकै सबलोग भरतकै सबबिधिसराहना करते हैं कि भरत अधिक हैं ( ४८ ) भरत कर व्रत नेम सुनिकै साधु संकोचि जाते हैं अरु भरत कै दशादेखिकै बड़ेबड़े जेमुनिराज हैं सो लजायजाते हैं ( ४९ ) हे पार्बती भरतकर आचरण परमपुनीत है किसूके कहिबे योग्यनहीं है मुदमंगलमय है ( ५० ) भरत के चरित कैसे हैं कठिन कलिके कलुषजेहैं पापअनेक क्लेश कर दाता त्यहिको दहन कर्ता हैं अरु महामोह निशित्यहि के नाश करिबे को सूर्य्य हैं ( ५१ ) अरु पाप सोई कुंजर है त्यहिके नाशकरिबेको मृगराज हैं अरु सम्पूर्ण संताप जे दुख के समाज त्यहिकेनाशकर्ता हैं ( ५२ ) अरु रामजनजे हैं तिनको रंजन कहे आनन्द दाता हैं महिकर भार जो है त्यहिके भंजन कर्ता हैं अरु राम स्नेह सुधाते पूर्ण जो चन्द्रमा त्यहिकर सार हैं ( ५३ ) छन्दार्थ॥ जो यह जगत्विषे भरतकरजनम न होततौ श्रीसीतारामचन्द्रकर प्रमपियूष अमृत रूप सोकोप्रकट करत अरु मुनिनके मनको अगम शम दम नेम संयम विषमकही अतिकठिन आचरण कहे सो करिकै देखाइदेत ( ५४ ) अनेक दुख दाह दरिद्र कही असन्तोष अरु दम्भकहे अवरेके देखाइबे को नीकआचरण करना अरु अनेक दूषण तो सब अपने सुयशके मिसुको अपहरत कही नाशक रत गोसाईं तुलसीदास कहते हैं कि यह महाकलिकाल घोरबिषे हमहिऐसे शठनको श्रीरामचन्द्र के सन्मुखको करत ( ५५ ) सोरठार्थ॥ गोसाईं श्रीतुलसीदास कहते हैं नेमकरिकै आदरते जे भरतकर चरित सुनिहैं तिनको श्रीसीतारामचन्द्र के चरणारविन्द विषे अवशिकै प्रेमहोइगो

**रामसनेहसुधाशशिसारू ५३ छं०॥ सियरामप्रेमपियूषपूरणहोतजन्मनभरतको मुनिमनअगमयमनेमशमदमबिषमब्रतआचरतको ५४ दुखदाहदारिददम्भदूषणसुयशमिसुअपहरत को कलिकालतुलसीसेशठहुहठिरामसन्मुखकरतको ५५ सो०॥ भरतचरितकरनेम तुलसीजे सादरसुनहिं सीयरामपदप्रेम अवशिहोहिंभवरसविरति ५६॥**

अरु भव जो संसार त्यहिके रसते बिरसहोहिंगे ( ५६ ) छं० ॥ भरत धर्मतपब्रतनेमयमनिर्मलशमदमयोग विसलवैराग्यज्ञानबिज्ञानध्यान समन वधाप्रेमापशभक्तिरससिन्धुसीनमन रामबिरहकीअग्नि नाम जपिहोमकरतसन श्रीरामचन्द्रपदपद्मरस सुखअनन्दचितमधुपकरि शशिरामचरणपूरण भरत मुनिचकोरलखिनयनभरि १ भरतभजनरविउदय-लोकत्रयभुवनचारिदश मोहअविद्यानिशानाशजगजीवएकरस कामक्रोधमदलोभचोर निश्चरगतिनाशी ज्ञानयोगवैराग्यधर्मसरकमलप्रकाशी दो० ॥ श्रीरामखराऊंरा जते पूरणनीतिअनीतिगइ सोइरामचरणअद्यापिलखु रामचरण ज्यहिप्रीतिभइ ( २ ) इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुपविध्वंसने श्रीअयोध्याकांडेभरतअवधि वैराग्यबिवेक षट्सम्पति षट्शरणागत भावं भक्ति अखण्डएकरसबर्णनन्नामएकोनत्रिंशतिस्तरंगः ( २९ ) दो० असीएक अरुआठदशसम्बतसावनपूर अवधकांडकोतिलकभोरामचरणरतिरूर ३०

**इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसनेविमलवैराग्यसम्पादनो नाम श्रीअयोध्याकाण्डे द्वितीयस्सोपानः समाप्तः॥**

# ॥रामायण तुलसीदासकृत सटीक॥

## ॥अरण्यकाण्ड॥

श्रीरामायनमः ॥दोहा॥ रामचरणबन्दनकर रामचरणशिनाइ कांड आरण्यविरागमय प्रथमतरंगनहाइ १ प्रथमतरंगशृंगाररस कृतजयंतबहुपाय रामचरणसोइफलदियो अत्रियराम मिलाय २ श्लोकार्थ॥ श्रीगोसाईंतुलसीदासजी प्रथमतो श्रीमहादेव के नमस्कार करते हैं काहेते शंकर श्रीमद्रामायणके आचार्य हैं कैसे हैं, श्रीशंकर संपूर्ण जो भगवत् भागवत्धर्म है सो कल्पतरु है त्यहिके मूलकारण महादेव हैं अरु त्यहितरुको फलज्ञान त्यहिको रसभक्ति त्वहिरसको भोक्तासन्तसो देवता है पुनि कैसे हैं महादेव विवेकके जलधिकही समुद्र हैं पुनि कैसे हैं शिवपूर्णइन्दु हैं जिनको सुखअमृत को थल है अरु वचन रामचरित अमृतमय किरणि है एकरस अरु सन्तजन कुमुदचकोर है तिनको आनन्ददाता है अथवा विवेक समुद्र को आनन्ददाता पूर्णेन्दुहैं अरु योगवैराग्य अंबुज है त्यहिके प्रफुल्लित करिवेको भास्कर हैं अरु संपूर्णअघ त्यहिके नाशकर्ता हैं अरु तीनिउताप अधिभूत

श्लोक मूलंधर्म्मतरोर्विवेकजलधौपूर्णेन्दुमानंददं वैराग्याम्बुजभास्करंह्यघघनंध्वन्तापहंतापहं मोहाम्भोधरपुंजपाटनविधौ खेशंभवंशंकरम् बन्देब्रह्मकुलं कलंकशमनंश्रीरामभूपप्रियम् १ सांद्रानन्दपयोदसौभगतनुं पीताम्बरंसुन्दरम् पाणौ बाणसरासनं कटि

अध्यात्मअधिदैवत त्यहिको अपहरत हैं पुनि कैसे हैं शंकर मोहसोई अंभोधरकही मेघ है पुंजकही समूहपाटनकही त्यहिकेउड़ायबेकी विधिमेंखकही आकाशशंकर त्यहिते संभव कही सो बार्णाप्रचंड पवन है तं शंकरंअहंवंदे पुनि कैसे हैं शंकर ब्रह्मजे हैं ब्राह्मण तिनके कुलके जेकलंक हैं त्यहिके शमनकर्ता हैं ब्राह्मणत्व आपन धर्म छोंडिकै परधर्म करना सो कलंकशंकर नाशकरते हैं जो शंकरकर भजन करै काहेते कि शंकर श्रीरामानन्य हैं अरु श्रीरामभूपमणि सोई प्राणहुतेप्रिय हैं १ जिनशंकर को श्रीरामचन्द्र अतिप्रिय हैं ते श्रीरामचन्द्र कैसे हैं सांद्रकही सघनआनंद के मेघ हैं अरु कृपाकरुणाजल है अरु ब्राह्मण बैष्णवसालि हैं तिनको आनंददेते हैं अरु घनश्याम सुन्दरतन हैं जिनको देखिकै काम मोहित है पुनः होइजात है अरु पीतांबरधारण किहे हैं सोदामिनिकी द्युतिको हरत है अरु दोऊकरमें अति सुन्दर धनुर्वाणलिहे हैं अरु कटिविषे बरकही श्रेष्ठतूणीरबाणके भारभरे बाहकही धारणकिहे लसतहैं किंतुतूणीरके भारतेकटिशोभित है अरु राजीव कही विशालकमल तद्वत्नेत्र हैं अरु शीश विषे जटाकेजूट धारणकिहे अतिशोभित हैं श्रीसीतालक्ष्मण संयुक्तपथविषे गतकही प्राप्तसंपूर्ण कामनाके दाता तंश्रीरामचन्द्रं अहंभजे ( २ ) सोरठार्थ॥ हे उमा श्रीरामचन्द्र के गुणगूढ़ हैं पंडितमुनि जानिकै बिरतिकहीबैराग्यकोप्राप्तिहोइ कैसे संसारतरि जाते हैं अरु जे बिमूढ़कही बिशेषमूढ़ हैं ते मोहको प्राप्तहोते हैं कि श्रीरामचन्द्र कैसे परमेश्वर हैं ते बनमें अनेक दुखसहते हैं ऐसे कल्पना करिके विमोहित होइजाते हैं काहेते कि हरिचरणारबिंद धर्मत्यहिते बिमुख हैं ( ३ ) हे गरुड़ भरतकै श्रीरामचन्द्रविषे पूर्णप्रीति अरु भरतके आधीन पुरवासिनकै प्रीति सो अपनीमति के अनुरूप मैं अनूपगावत भयों ( ४ ) अब श्रीरामचन्द्र जो आरण्य में चरितकीनहै अतिपावन सुरमुनिनके मनभावन सोसुनहु ( ५ ) हेपार्वतीएकबार श्रीचित्रकूटविषे फटिक शिलापर श्रीरामचन्द्र निजकरते सुन्दर पुष्पचुनिकै निजकरनते अंग अंगके भूषण बनावते भये ( ६ ) इहां श्रीरामचन्द्र

लसत्तूणीरभारम्बरस् राजीवायतलोचनंधृतजटाजूटेनसंशोभितम्सीतालक्ष्मणसंयुतंपथिगतंरामाभिराममभजे २ सो०॥ उमाराम गुणगूढ़ पण्डितमुनिपावहिंविरति पावहिंमोहविमूढ़ जेहरिविमुखनधर्मरति ३ चौ०॥ पूरणभरतप्रीतिमैंगाई मतिअनुरूपअनूपसुहाई ४ अबप्रभुचरितसुनहु अतिपावन करतजेबनसुरमुनिमनभावन ५ एकबारचुनिकुसुमसुहाये निजकरभूषणरामबनाये ६ सीतहिपहिरायेप्रभुसादर बैठेफटिकशिलापरभाथर ७ सुरपतिसुतधरिबायसवेषा शठचाहतरघुपतिबलदेखा ८ जिमि

शांतरस श्रृंगाररस बीररस इत्यादिक मुनिनके अनुभवमें जनावते हैं अरुदेवतनको जनावते हैं पुनि श्रीरामचन्द्रश्रीजानकीजीको फूलन के भूषण अंगअंगप्रति अतिआदरते पहिरावतेभये तबश्रीजानकीको श्रीरघुनन्दनजीकेसाथ रासबिहार करिबेकीइच्छा है तब श्रीजानकीजी श्रीरघुनन्दनजी को फूलनके श्रृंगारकीन है पुनि श्रीजानकीजीने अपनेअंगतेअनेकनसखी उत्पन्नकीनहै तिनके संगमहारासहोतभयो रासविलासकरिकैपुनिसमस्त सखिन को श्रीजानकीजी अंतरभूत करिलीनहै पुनिफटिकशिला पर श्रीराम जानकीजी फूलनकरश्रृंगारकिहे बैठे हैं अतिशोभित हैं भाकही अतिशोभा को धारण किहेसंते ( ७ ) जहां सुरपतिकरपुत्र बायसकही काककर वेषधरिकैकाकरूप ह्वइगयो है ऐसोशठ श्रीरघुपतिकरबलदेखाचाहतहै तहांदेखियेतौ महाराज श्रीदशरथताई अपने प्रतापबलते इन्द्रादिक दिक्पालन की सदा रक्षाकरतआये हैं अरु श्रीरामचन्द्र तिनकेपति तिनकीपरीक्षा लेनआयो है ऐसो शठ जयन्त महामन्द है ( ८ ) जिमि पिपीलिकासमुद्र की थाह लेवाचाहति है तैसे मूढ़ श्रीरामचन्द्र को बलदेखिकै पारपावाचाहत है ( ९ ) तहां श्रीजानकीजीके चरण में चोंचहतिकै भागिजातभयो है ऐसोमूढ़ महामन्दमति है कागमूढ़ महामन्दमतिकही जहांतकमहामन्दमति है जीव सुरासुर नरत्रिजग इत्यादिक में जे

मन्दमति हैं तिनको कारण है काग देखिये तौ श्रीरघुनाथजी की परीक्षालेबेको मनमेंआवतसन्तेइन्द्रासनको युवराज तुरन्त अधमतन काक त्यहिको प्राप्तिभयो अब ते सदा कागाकार मुखरहैगो अरु त्यहिको कारण कार्यसदामन्दरहैगो ( १० ) श्रीजानकीजी के चरण में रुधिरचल्यो श्रीरघुनाथजीने जानिकै सींकको धनुषबाण संधानकियो है काहेते सींक के धनुषबाणते अपनो प्रभाव देखावते हैं ( ११ ) दोहार्थ ॥ देखिये तौ ऐसे अतिकृपालुरघुनाथजी सदादीननपर नेहकरते हैं तिनते आइकै छलकीन्ह ऐसोमतिमन्दमूर्ख अवगुण को घरहै ( १२ ) तब

पिपीलिकासागरथाहा महामन्दमतिपावनचाहा ९ सीताचरणचोंचहतिभागा मूढ़मन्दमतिकारणकागा १० चलारुधिररघुनायकजाना सींकधनुषशायकसन्धाना ११ दो०॥ अतिकृपालुरघुनायकसदादीनपरनेह तासनआइकीन्हछलमूरुखअवगुणगेह १२ चौ० ॥ प्रेरितमंत्रब्रह्मशरधावा चलाभागिबायसभयपावा १३ धरिनिजरूपगयोपितुपाहीं रामविमुखराखात्यहिनाहीं १४ भानिराशउपजीमनत्रासा यथाचक्रभयऋषिदुर्बासा १५ ब्रह्मधामशिवपुरसबलोका फिराश्रमितब्याकुलभयशोका १६ काहूबैठनकहानओही राखिकोसकैरामकरद्रोही १७ मातुमृत्युपितुशमनसमाना सुधाहोइबिषसुनुहरियाना १८ मित्रकरैंशतरिपु

सींकको बाण ब्रह्ममन्त्रते प्रेरित जयन्तके पाछे धावतेभयो ब्रह्ममन्त्र कहीजाते ब्रह्माकी सृष्टिभरे में बाणबिकलकरै तब बायसभयकोप्राप्ति ह्वैकै भाजि चल्यो है ( १३ ) तब निजरूपकही जैसो इन्द्रकेपुत्रको रूपरहा है सोई रूपधरिकै पिताके पासजातभयोपरमुखकागाकारदेखिकै श्रीरामचन्द्र ते बिमुख जानिकै इन्द्र न राखाकाहेते कि जो मैं राखौं तौ इहैबाण मेरे लोकसुद्धां मोको भस्मकरिडारैगो ( १४ ) तब निराशहोतभयो हृदयमेंत्रासहोतभई यथा सुदर्शनचक्रकेभयते दुर्वासाऋषि दुःखितभये हैं ( १५ ) हेगरुड़ब्रह्माकेपासगयो शिवकेपासगयो श्रीरामचंद्रते बिमुखजानिकै काहूनहींराख्यो है तब अतिब्याकुलताकरिकै श्रमित भयकरिकै शोकतेभरयउऐसेही अतिबिकलताते त्रिभुवन अरु सम्पूर्ण दिग्पालन के लोकनमें ह्वइआयो ( १६ ) याको काहूबैठिबेहूको न कहाकाहेते कि श्रीरामचन्द्रके द्रोहीको कौनसामर्थ है जो राखिसकै ( १७ ) हे हरियानश्रीराचन्द्रजी ते बिमुखजे जीव हैं तिनकोतिनकी मातातो मृत्यु की समानहोय है अरु पिताशमनकही यमकेसमानहोयहै काहेतेकि मातापितानेश्रीरामचन्द्रको पदार्थनहीं उपदेशकियो है अरुसुधाबिषके समान होत है हेहरियान काहेते कि सुधादेवतनपानकीन है परफिरि पतितहोते हैं श्रीरामचन्द्रतेबिमुखभयेसंतेयोनि में भ्रमते हैं ( १८ ) अरु मित्रशतकही सौरिपुकै करणीकरैंहैं काहेतेश्रीरामचन्द्रते बिमुखजानिकैसुमित्रकुमित्र ह्वइ जाते हैं चौरासीजाबेको उपदेश करैहैं अरुत्यहिको बिबुधनदीकहीगंगा है सो वैतरणी जो यमपुरमें है त्यहिके समानह्वइजाति है अरु जे सरयू गंगाजीको जललैकैशौचकर्म करतेहैं तिनको बिनाभाव वैतरणी ह्वैजाति है ( १९ ) हे भरद्वाज भ्राताकही प्रियजे रामचन्द्रते बिमुख हैं तिनकोजगत्सब अग्निहुंतेतात है ( २० )

कीकरणी ताकहँबिबुधनदीवैतरणी १९ सबजगत्यहिंअनलहुंतेताता जेरघुबीरबिमुखसुनुभ्राता २० दो०॥ जिमिजिमिभाजत शक्रसुत ब्याकुलअतिदुखदीन तिमितिमिधावतरामशर पाछेपरमप्रबीन २१ चौ०॥ बचहिउरगबरुग्रसैखगेशा रघुपतिशरकरबचबअँदेशा २२ नारददेखाबिकलजयन्ता लागिदयाकोमलचितसन्ता २३ दूरहिंतेकहिप्रभुप्रभुताई भजेजातबहुबिधिसमुझाई २४ पठवातुरतरामपहंताही कहेसुपुकारिप्रणतहितपाही २५ आतुरसभयगहेसिपदजाई त्राहित्राहिदयालुरघुराई २६ अतुलित

दोहार्थ॥ जिमिजिमि शक्रकही इन्द्रपुत्र जयन्त व्याकुल भागत है तिमितिमि श्रीरामचन्द्र करबाण पाछेनागह्वैकै लग्योहै दुइअंगुलकर बीच है न तौ बधै अरु न छोड़ै ऐसो प्रवीण बाण व्याकुलकरैहै ( २१ ) हे गरुड़ बरुतुम्हरे ग्रसे ते सर्प बचिजाइ पर श्रीरामचन्द्रके बाणते बचब अंदेशकही सन्देहहु दुर्लभ है तहां न बचै ( २२ ) तब जयन्त को नारद बिकलदेख्यो सन्तनकर कोमलचित्त दयालागि आई है ( २३ ) तब नारदने दूरही ते प्रभु श्रीरामचन्द्र की प्रभुताई कहि कहिकै इन्द्रकेपुत्र जयन्तको बहुत प्रकारते समुझाया ( २४ ) तब नारदनेकहाकितैंश्रीरामचन्द्र के यहां जाइकै कहु हे प्रणतहित पाहिपाहि मैं शरणहौं यहकहिके पांयनमें गिरिपरयसु ( २५ ) तब हे गरुड़ आतुरकही अतिशीघ्र श्रीरामचन्द्रकेचरण में परयउजाइ हे दयालुरघुराइ मोको त्राहित्राहि है जो नारदकहासो तुरन्तकियोजाइ ( २६ ) आपुको अतुलितबल है अरु अतुलितप्रभुताई हैं मैं मतिकरमन्द आपुको काजानिसकौं ( २७ ) हेनाथ आपुकी परीक्षालेबेको जस मैंकाक तनधरिकै आयों त्यहिकाक कृतकर जनितकही उत्पन्न सो फलमैं अच्छीतरह से पायों अब हे प्रभु पाहि पाहि मैं आपुकीशरण ताकिकै आयोहौं कि आपुकी शरणागत में यहि जीवकर बचाव है-अंतेनाही कहूं है ( २८ ) हे भवानी कृपालु जो श्रीरामचन्द्र हैं तिन जयन्तकेआरतबार्णा सुनिकै एकनेत्रफोरिकै तजिदीन तहां कृपालुकहना अरु एक नेत्रफोरिडारा यामें विरोध आवै है काहेते कि जयन्त आरतकहिकै शरणआयो अरु एकनेत्र फोरिडारा तहां यहकैसीकृपालुताहै तहां श्रीजानकीजी

**बलअतुलितप्रभुताई मैंमतिमन्दजानिनहिंपाई २७ निजकृतकर्म्मजनितफलपायहुं अबप्रभुपाहिशरणतकिआयहुं २८ सुनिकृपालुअतिआरतबानी एकनयनकरितज्यउभवानी २९ सो०॥ कीन्हमोहबशद्रोहयद्यपिताकरबधउचित प्रभुछांड्यउकरिछोह कोकृपालुरघुवीरसम ३० चौ०॥ रघुपतिचित्रकूटबसिनाना चरितकियेशुचिसुधासमाना ३१ बहुरिरामअसमनअनुमानाहोइहिभीरसबहिम्वहिं जाना ३२ सकलमुनिनसनबिदाकराई सीतासहितचलेद्वौभाई ३३ अत्रिकेआश्रमजबप्रभुगयऊ सुनतमहामुनिहर्षितभयऊ ३४ पुलकितगातअत्रिउठिधाये देखिरामआतुरचलिआये ३५ करतदण्डवत्मुनिउरलाये प्रेमवारिद्वौजनअन्हवाये ३६ देखिरामछबिनयनजुड़ाने सादरनिजआश्रमतबआने ३७ करिपूजाकहिबचनसुहाये दियेमूफलप्रभुमनभाये ३८ सो०॥ प्रभुआसनआसीन भरिलोचनशोभानिरखि मुनिवरपरमप्रवीन जोरिपाणिअस्तुतिकरत ३९॥ * ***

के बिरोध ते यह दण्डदीन है पुनि शृंगाररस में वैभत्सरस करत भयोताते नेत्र फोरै हैं अपने विरोध ते कछु नाहींकरते पुनि कृपाकीन है कि मोको जगत् में एकआंखिदेखै यह मुक्तिको अर्थ है ( २९ ) सोरठार्थ ॥ हेपार्वती इहां मोहकही अज्ञानको त्यहिके वशह्वइकै जयन्त ने श्रीरामचन्द्र को द्रोहकियो यद्यपि जो श्रीरामचन्द्रकर द्रोहकरत तौ सब प्रकारते बचिजात तहां श्रीजानकीजीकर द्रोहकियो है ताते यहिकर बध उचितरहा है तहां श्रीरामचन्द्र सहजहि भागवतापराध नहींसहिसकते हैं अरु श्रीजानकीजीकर द्रोह कैसे सहैं पर बड़े कृपालु यहभी सहिगये तहां श्रीरामचन्द्र ने दयाकरिकै नहींवध्यो देखिये तौ श्रीरामचन्द्र की बराबरि कृपालु को है ( ३० ) हे भरद्वाज रघुपति श्रीचित्रकूट में बसिकै अमृतमय नानाप्रकारके चरित करते हैं तीस चौपाई से आगे अक्षरार्थै जानब ( ३१ ) सोरठार्थ ॥ प्रभुआसन आसीन तहां अत्रिमुनि श्रीरामचन्द्र को शुद्धासनपर बैठायकै षोड़शप्रकार से पूजनकीन अरु कहा कि बड़ीकृपाकीन आजु मोपर हेपार्वती श्रीरामचन्द्रकी परमशोभा देखिकै अंगअंग पुलकि द्वौकरजोरिकै स्तुतिकरते हैं प्रमाणिका छन्द करिकै ( ३९ ) इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने आरण्यकाण्डे जयन्तकृतश्रीरामकृपा अत्रिमिलापबर्णनन्नामप्रथमस्तरंगः १॥ :: ::

दोहा ॥ स्तुतिअत्रिप्रियाशुभकृतसीतहिंउपदेश रामचरणदूसरिलहरिबधविराधज्यहिदेश २ छन्दार्थ ॥ हे श्रीरामचन्द्र मैं आपुके नमस्कारकरत हौं आपु भक्तबत्सलकही अपने भक्तनको कैसे राखत हौ जैसे पिता माताछोटबालकको राखतहैं अरु जैसे गऊलघुबछराको राखति है अरुकृपाशील

प्रमाणिका छं०॥ नमामिभक्तवत्सलं कृपालुशीलकोमलं भजामितेपदाम्बुजं अकामिनांस्वधामदं १ निकामश्यामसुन्दरं भवाम्बुनाथमंदरं प्रफुल्लकंजलोचनं मदादिदोषमोचनं २ प्रलम्बबाहुविक्रमं प्रभोऽप्रमेयवैभवं निषंगचापसायकंधरेत्रिलोकनायकं ३ दिनेशवंशमण्डनं महेशचापखण्डनं मुनींद्रसंतरंजनं सुरारिवृन्दभंजनं ४ मनोजवैरिवंदितं अजादिदेवसेवितं विशुद्धबो-

कोमलताके सदन हौ तेतुम्हारपदअंबुज अहंबन्देअकामकही निःकामजेतुम्हार चरणारविन्दभजै हैं तिनकोतुम आपनधामदेतेहौ ( १ ) हेश्यामसुन्दर तुम निःकाम कृपालुहौ हेनाथ भवजोसंसार सोई समुद्र है त्यहिके मथिबेकोतुम्हारगुणनाम मन्दराचलहै तहां तुम्हारेजनरत्न हैं संसारसागर मथिकै काढ़िकै अपनेपासराखते हैं तहां कृपाकटाक्ष करुणायहै बासुकी है हेप्रफुल्लकंजलोचन मदादिकदोष त्यहिके नाशकर्ताहौ ( २ ) प्रलम्बबाहु कही अजानभुजसोबलकरिकै बिक्रमकहीप्रचंडहेप्रभु तुम्हारेवैभवकहीबिभवऐश्वर्य अप्रमेय अप्रमाण है हे त्रैलोक्यनायक आपसबकेरक्षा हेतुतूणधनुषबाणधरेरहतेहौ ( ३ ) आपुकैसेहौ सूर्यबंशके मंडनकही श्रृंगारहौ अरु महाघोरमहेशकर चाप त्यहिके खंडनकर्ताहौ अरु मुनीशजे हैं संतजनजेहैंतिनकेरंजनकही आनंददाताहौ अरु सुरनके अरिजे हैं राक्षस बृन्दकेवृन्दतिनके तुमनाशकर्ताहौ ( ४ ) अरु मनोजकही कामके बैरी श्रीमहादेव तिनकरिकै तुम बंदनीयहौ अरु अजजो ब्रह्मादिक देवतातिनकरिकै तुमसेव्यमानहौ बिशुद्ध बोधजो है बिशेष ब्रह्मज्ञान सोतुमब्रह्म बिग्रहहौ अरु समस्तदूषणजे हैं त्यहिकोतुमअपहरतेहौ ( ५ ) इंदिराजोहैं लक्ष्मीतिनकेतुम पतिहौ ते तुम्हारे मैं नमस्कार करतहौ पुनि तुम कैसेहौ सुखकारक ही सुखकीखानिहौ अरु सर्बगति कही सबसंतनकी गतितुमहींहौ अरु सत्संगतिके प्राप्तिकर्ता तुमहींहौ तेश्रीरामचन्द्र तुमको सहित श्रीजानकी जी लक्ष्मणसंयुक्त अहंभजे पुनि आपु कैसे हौ शची जो इन्द्राणी तिनकेपतिइन्द्र अरु इन्द्रके प्रिय अनुज बावनरूप तुमहींहौ ( ६ ) हे श्रीरामचन्द्र तुम्हार जो अंघ्रिकही चरण त्यहिको जो भजते हैं पर सर्बजीवन ते मत्सरकही ईर्षारहित सो भवार्णवं नोपतन्ति कैसोहै भवार्णवजामें वितर्ककही विशेष अनेकमन की तर्कना सोई हैं बीचीकही लहरी ज्यहि भवार्णवविषेताते वे तरिजाते हैं ( ७ ) यदाकही यदिबासनाप्रबलहै तद त्यहिते बिबिक्त कही छूटिकै अरु तुमको भजते हैं ते मुदाकही आनन्दमय मुक्तिको प्राप्तिहोते हैं अरु जे प्राणी इन्द्रियादिकन के विषय ते निरसह्वइकै भजते हैं

धविग्रहं समस्तदूषणापहं ५ नमामिइंदिरापतिं सुखाकरंसतांगतिं भजेशशक्तिसानुजं शचीपतिप्रियानुजं ६ त्वदंघ्रिमूलयेनरा भजंतिहीनमत्सरा पतन्तिनोभवार्णवं वितर्कवीचिसंकुलं ७ बिविक्तवासिनोयदा भजंतिमुक्तिदंमुदा निरस्यइंद्रियादिकं ब्रजंतितेगतिं स्वकं ८ त्वमेकमद्भुतंप्रभुं निरीहमीश्वरंविभुं जगदगुरुंचशाश्वतं तुरीयमेककेवलं ९ भजामिभावबल्लभं कुयोगिनांसुदुर्ल्लभं स्वभक्तकल्पपादपं समंसुसेब्यमन्वहं १० अनूपरूपभूपतिं नतोहमुर्बिजापतिंप्रसीदमेनमामिते पदाब्जभक्तिदेहिमे ११ पठन्तियेस्तवंइदं नरा

ते स्वकंकही तुम्हारी गतिको ब्रजन्तिकही प्राप्तिहोते हैं ( ८ ) हे प्रभुत्वमेकंकही तुमएकहौ पुनि अद्भुतकही अपार अजान बिलक्षणस्वरूप लीला तुम्हारि सब है पुनि निरीहकही इह चेष्टात्यहिते रहितहौ चेष्टाकही लघुदीर्घ क्षीणपुष्ट हर्ष शोकइत्यादिकन ते रहितहौ अरु आप परम ईश्वरहौ अरु बिभुकही सर्बप्रकारते सामर्थहौ अरु जगत्केगुरुहौ अरु शाश्वतकहीनित्यस्वतन्त्रहौ पुराण पुरुष अखण्ड एकरसहौ अरु तुरीयरूपहौ अरु केवलएकहौ ( ९ ) ऐसे जे तुमहौ तिनको मैं भजतहौं काहेते कि आपु भावबल्लभकही तुमको भाव प्रिय है अरु कुयोगिनको दुर्लभहौ कुयोगी जे तुम्हारी शरणनहीं हैं अरु स्व कही तुम्हारे भक्त जे हैं तिनको आपु कल्पपादपकही कल्पतरुहौ अरु समं सुसेब्यकही जे समसुबुद्धि हैं तिनकरिकै तुम सेब्यमान् हौ अरु मन्वहंकही क्रोधमानको नाशकिहेहौ किन्तु जे मनकरिकै क्रोधमानको जीते हौ किन्तु अपने भक्तनकर क्रोधमाननाशकरते

हौ अरु तिनसबकरिकै सेव्यमानहौ ( १० ) हे भूपमणि अनूपरूपनत कही हमतुम्हारी शरणह्वैकै नमस्कारकरते हैं अरुउर्विजाकही पृथ्वीते उत्पन्न श्रीजानकीजी तिनकेतुमपतिहौ ताते करुणामयहौ तेतुम श्रीरामचन्द्र प्रसीदकहीमोपरप्रसन्नरहहु मैंतुम्हार नमस्कार करतहौं आपुके जे पद हैं अब्जकही कमलइव त्यहिकी भक्ति मोको देहु ( ११ ) यह अत्रिमुनि कहते हैं कि यहजोस्तोत्र मैंआपुकर कीन है यहिको जोकोई त्रिकाल पाठकरैंगे ते नर आदरसंयुक्त तुम्हारे पदको ब्रजन्तिकहीप्राप्तहोहिंगे यहि में संशयनहीं है तुम्हारीभक्ति संयुक्त तुम अपने में करिलेते हौ ( १२ ) दोहार्थ॥ हे भरद्वाज अत्रिमुनि स्तुतिकरिकै श्रीरामचन्द्रके चरणारविन्द में शीशनाइकै दोऊकरजोरिकै यहबरमांगत हैं कि हेनाथतुम्हार जो चरणसरोरुह हैं तिनको मोरिमति न तजै जैसे शुद्धभ्रमरी कमल के मकरन्दको नहीं तजै हैं ( १३ ) हे पार्बती श्रीरामचन्द्र मुनिकै बिनय प्रणाम सुनिकै

दरेणतेपदं ब्रजंतिनात्रसंशयं त्वदीयभक्तिसंयुतं १२ दो०॥ बिनतीकरिमुनिनायशिरकहकरजोरिबहोरि चरणसरोरुहनाथजनिकबहुंतजैमतिमोरि १३ चौ०॥ देखिराममुनिबिनयप्रणामाबिबिधिभांतिपायोविश्रामा १४ जन्मजन्मतवपदसुखकंदा बढ़ैप्रेमचकोरजिमिचन्दा १५ अनसुइयाकेपदगहिसीता मिलीबहोरिसुशीलबिनीता १६ जोसियसकललोकसुखदाता अखिललोकब्रह्माण्डकीमाता १७ तेउपायमुनिवरबरभामिनि सुखीभईकुमुदिनिजिमियामिनि १८ ऋषिपत्नीमनसुखअधिकाई आ-

बिबिधिप्रकार ते बिश्राम पावतभये ( १४ ) पुनि मुनिबोले हेसुखकेकन्द तुम्हारजो पदकंज हैं त्यहिबिषे मेरेचित्त कै वृत्तिजैसे चन्द्रमाकोचकोरचाहै तैसे सदाबनीरहै यहबरपावौं तब बिहसिकै श्रीरामचन्द्रने मनहीमें एवमस्तुकहा ( १५ ) त्यहिकेउपरान्त अनसुइयाकेपद श्रीजानकीजी गहत भई बहुरिकै अनसुइयाजी परस्पर अतिशील विनीतकही नम्रता अरुअतिप्रीतिते मिलती भई ( १६ ) हेगरुड़ देखियेतौ जोजानकीसकललोकनकीमाता सुखदाता अरु अखिलकही समूहलोक एकब्रह्मांडके भीतर है ऐसेअनेक ब्रह्मांड तिनकी माताकही अनेक ब्रह्मांडको कारण हैं श्री जानकीजी आद्याशक्ति जाको मूलप्रकृतिकही ते श्रीजानकीजी अनसुइयाकेपद गहतीभई हैं आशीर्बाद चाहती हैं तहां बड़यनकी यहीबड़ाई है ( १७ ) ते श्रीजानकीजी मुनिबरकी भामिनिको पाइकै कैसे सुखी भई जैसे कुमुदिनी रात्रिको पाइकै सुखीहोय है ( १८ ) ऋषिपत्नी के मनमेंअति सुख अधिकातभयो तब श्रीजानकीजीको आशीर्वाददेकै निकट बैठावती भई ( १९ ) पुनि अपने तपके बलते दिब्यभूषण बसनजे नित्यनबीन अमल ते श्रीजानकीजी को पहिरावतीभई ( २० ) ज्यहि वस्त्रभूषण को देखिकै संपूर्णदुख परायजाते हैं कैसे जैसे गरुड़को देखिकै पन्नग कहीसर्प परायजाते हैं ( २१ ) दोहार्थ॥ हे पार्बती ऐसे चित्रबिचित्र सुठिविलक्षणभूषण वस्त्र सो श्रीजानकीजी को दीनहै अरु अतिप्रियबचन बात्सल्य रसकरिकै कहतीभई हैं अत आदरकरतीभई अरु श्रीजानकीजीको शान्तरसते हृदय में आने हैं अरु अतिप्रीति हृदय विषे है जानीनहीं जाइ है ( २२ ) हे पार्बती ऋषिबधू मृदुबाणीसे श्रीजानकीके ब्याजकहीमिसकरिकै कछु स्त्रिनके धर्मकहती हैं तहां स्त्रिनके धर्म कहिबे में उपास-

सिषदीननिकटबैठाई १९ दिब्यबसनभूषणपहिराये जेनितनूतनअमलसुहाये २० जाहिनिरखिदुखदूरिपराहीं गरुड़देखिजिमिपन्नगजाहीं २१ दो०॥ ऐसेबसनविचित्रसुठि दियेसीयकहँआनिसनमाने प्रियबचनकहि प्रीतिनजाइबखानि २२ चौ०॥ कहऋषिवधूसरलमृदुबानी नारिधर्म्मकछुब्याजबखानी २३ मातुपिताभ्राताउरगारी मितसुखप्रदसुनुराजकुमारी २४ अमितदानभर्त्ताबैदेही अधमसोनारिजोसेवनतेही २५

धीरजधर्ममित्रअरुनारी आपतिकालपरखियेचारी १६ वृद्धरोगवशजड़धनहीना अंधबधिर क्रोधीअतिदीना २७ ऐस्यहुपतिकरकियअपमाना नारिपावयमपुरदुखनाना २८ एकैधर्मएकब्रतनेमा कायबचनमनपतिपदप्रेमा २९ जगपतिव्रताचारिबिधिअहहीं वेदपुराणसंतसबकहहीं ३० दो०॥ उत्तममध्यमनीचलघुसकलकहौंसमुझाइ आगेसुनहिं

ना कीरीति आवती है ( २३ ) हेराजकुमारि यद्यपि मातापिता भ्रातापुत्रइत्यादिक ये सम्पूर्ण परमसुखदाई हैं पर इनकर सुख मितकही अल्पप्रदकही फलदाता है ( २४ ) हे वैदेही अपने भर्त्ताकी सेवा यह अमित दानपुण्य है जो नहीं सेवनकरती हैं तेनारि अधम हैं ( २५ ) हेजानकीजी धैर्य अरु धर्म अरु मित्र अरु स्त्रीयेचारिउ आपत्तिकाल में परखेजाते हैं परखेते ठहरैंतौनीकहैं अरु जोनठहरैं तौ कछुकामकेनहीं हैं ( २६ ) जोअपनोभर्त्ता बृद्धहोइ अरु रोगबशहोइ औजड़होइ ताहूपर धनकरिकै हीनहोइअंध अरुबधिर होइ अरुक्रोधीहोइ अतिदीनहोइ ( २७ ) ऐसेहूपतिकर जो अपमानकरै तौ नारियमपुरमें नानाप्रकार के दुःखपावती है ( २८ ) स्त्रीकोधर्म ब्रतनेम एकै है कि केवलपति केपद में प्रेममनवचन कर्मते करै ( २९ ) हे श्रीजानकीजी जगत्बिषे पतिब्रताचारिप्रकारकी हैं यहवेदपुराणअरु सबसंतकहते हैं ( ३० ) दोहार्थ ॥ कि एकैपतिब्रताउत्तम हैं अरु एकैमध्यम हैं अरुएकैनीचहैं अरु एकैवाहूते लघुहैं इनचारिउ के भेद आगेकहतीहौं जेयहभेद स्त्रीसुनहिंगी तेसंसारकोतरिजाहिंगी हेजानकीजी सोमनलगाइकैसुनहु ( ३१ ) तहां उत्तम पतिब्रताके मन में असबसत है किआनपुरुषसपन्यहुं जगत्विषेनहीं है तहांयहबिचारिबेमें आवतहैकि उत्तमपतिव्रता कहांरहती हैं जो कही किग्राम विषेअपने गृह में रहती है तौ गृहग्राममें अनेकपुरुष रहते हैं अरुपति के भ्राता पुत्र गृहमें हैं तहां निकसत पैठत सबकोदेखती होहिंगी अंधीतोनहीं हैं तहां स्वपन्यहुं आनपुरुष जगनाहीं यह पद कैसे सिद्धहोइगो तहां जोपुरुष में रतिधर्म है सो वहधर्म अपरपुरुष में स्वपन्यहुं नहीं देखैहैं तहां पतिके सम्बन्धी भ्राता पुत्र मित्रादिक बहुत हैं इहां हम अपनी उक्ति से कहते हैं पर तिनको पतिके प्रसन्न हेतु मानै हैं पर उनमें रतिकोभाव स्वपन्यहुं नहींल्यावती हैं कि नहुमें निजपत्नी भाव है सो स्वपन्यहुं में नहींदेखती हैं तहां तिनते लक्षणके अनुसूत चारिप्रकारके उपासक साधुकहते

तेभवतरहिंसुनहुसियामनलाइ ३१ चौ० ॥ उत्तमकेअसबसमनमाहीं सपन्यहुंआनपुरुषगतिनाहीं ३२ मध्यमपरपतिदेखहिंकैसे भ्रातापिता पुत्रनिजजैसे ३३ धर्मबिचारिसमुझिकुलरहई तेनिकृष्टतियश्रुतिअसकहई ३४ बिनुअवसरभयतेरहजोई जान्यउअधम

हैं जैसे उत्तमपतिब्रता हैं तैसेही संतजनजेहैं गुरुन के उपदेशते ज्यहि परमेश्वरके स्वरूप में अनन्यभाव करते हैं अरु जो परमेश्वर के अपरस्वरूप के हैं तिनमें भुक्ति मुक्ति भक्ति स्वपन्यहुं देखतेई नहीं हैं पर ज्यहिस्वरूपमें अनन्य है त्यहि के प्रसन्नहेतु सबस्वरूप मानिबेयोग्य हैं अरु भुक्ति मुक्ति भक्ति अपने इष्टदेव में देखते हैं ताको एकस्वरूपानन्य उपासक कही सोउत्तम हैं ( ३२ ) अरु मध्यमा पतिव्रता जे हैं ते परपतिको कैसे देखती हैं जैसे अपने भ्राता पिता पुत्रको देखती हैं तहां भ्राता पिता पुत्रकेबिषेकाम की बासना नहींउठै पर यहजानै हैं कि जैसे मेरेपतिविषे रतिकर सुख है तैसही मेरे पितामेंहैं भ्रातामेंहै पुत्र में है ताते मध्यमाठहरी तैसेजे सन्तजन हैं तिनमें जे सब ईश्वरकर स्वरूप एकमानते हैं कि सब ईश्वर के स्वरूप में जे हैं ते एकै हैं भुक्ति मुक्ति भक्ति के दाता सबबराबरिहैं अपने इष्टबिषे पर हैं तिनको स्वरूपानन्य उपासककही ताते मध्यम हैं ( ३३ ) अब मध्यमा ते जे नीच हैं तिनको कहतीहौं तहां जैसे अपनेपुरुष ते रतिकी इच्छाकरती हैं तैसे सबपुरुषनकी इच्छाकरै हैं पर अपने धर्मकुल को बिचारिकै बचिजाती हैं ताते मध्यमा ते छोटी हैं ताको शास्त्र में निकृष्ट कहते हैं तहां जे कोई गुणकरिकै ईश्वरकी शरणागतभये हैं अरु अपर देवताके आराधनकी इच्छाचलति है पर गुरुनको धर्मबिचारिकैरहिजाते है ताते तिनको सामान्य उपासक कही ते मध्यम ते नीच हैं यह श्रुति पुराण कहते हैं ( ३४ ) पुनि चतुर्थ अधमापतिब्रता कहती हौं अपनेपति ते बचाईकै परपति ते बिशेष रतिकी

इच्छाकरती हैं पर अवसर नहीं पावती हैं अरु कुटुम्ब ग्रामलोक की भयकरिकै बचिजाती हैं सोअधमा पतिव्रता हैं अधमाके लक्षणकरिकै तीनिहुं ते न्यून उपासक कहत हैं जिनको गुरुनकरिकै ईश्वरको मन्त्रउपदेश भयो है अरु वे अन्यदेवता सम्बन्धी मंत्र तीर्थव्रत फलकी चाहना बिशेष करते हैं तहां गुरुन के भयकरिकै अरु संगतिकरिकै अवसर नहीं पावते हैं ते ईश्वरविषे अथमानन्य उपासक हैं यह जो चारि पतिव्रता अरु चारिउपासक दृष्टांत क-

नारिजगसोई ३५ पतिबंचकपरपतिरतिकरई रौरवनर्ककल्पशतपरई ३६ क्षणसुखलागिजन्मशतकोटी दुखनसमुझत्यहि समकोखोटी ३७ बिनुश्रमनारिपरमगतिलहई पतिव्रतधर्मछांड़िछलगहई ३८ पतिप्रतिकूलजन्मजहँजाई बिधवाहोयपाइतरुणाई ३९ सो०॥ सहजअपावननारि पतिसेवतशुभगतिलहइ यशगावहिंश्रुतिचारि अजहुंतुलसिकाहरिहिप्रिय ४० सुनुसीता

रिकै कहे हैं सोई पूर्णोपमालङ्कार जानब ( ३५ ) अरु अपनेपति ते बंचककही छलकरिकै परपति विषे रतिकरती हैं ते रौरवनर्क में प्राप्तिहोती हैं रौरवकही जहां महाघोर शब्दहोता है मारु मारु हायहाय यहैचिक्कारपरिरही है पुनि जो वहीनर्क ते अपनो फल भोगकरिकै कोईकाल में निकस्यउ तब चौरासीयोनिमें प्राप्तिहोत हैं शूकरी कूकरी सर्पिणी इत्यादिकअनेकन जन्म धरती हैं अरु तैसही जिनको गुरुनकरिकै ईश्वरको मंत्र प्राप्तिभयो है अरु त्यहिको छोड़िकै कोई राजसी तामसी देवता बीर यक्षराक्षस इत्यादिक देवताकी उपासना करते हैं ते महाघोर नर्ककोप्राप्ति होते हैं जे अपने पतिको त्यागिकै परपति से रतिकरती हैं ( ३६ ) क्षणमात्र सुखके निमित्त जे शतकोटि जन्म नर्कमें परती हैं त्यहि दुःखको न समुझै त्यहिके समान को खोटी हैं ( ३७ ) अरु नारिजोहैं सो बिनाश्रमहीपरमगतिको प्राप्तिहोती हैं जे छलछांड़िकै पतिव्रतधर्मको गहती हैं ( ३८ ) अरु जे स्त्री पति ते प्रतिकूल परपति ते अनुकूलभई ते जहांजहां अनेकबारजन्मैं तहांतहांतरुणअवस्था पाइकै विधवाह्वैजाती हैं तैसे जे श्रीराम चन्द्राकारह्वइकै अपरदेव सेइकै कल्याण चाहते हैं तिनको तौ चौरासी होति है ( ३९ ) सोरठार्थ॥ हे श्रीजानकीजी नारिसहजहिं अपावनिहिं तिनको सेवतसन्ते शुभगति को प्राप्तिहोती हैं देखिये तौ जलंधर दानवकी स्त्री बृन्दा वह अपने पतिव्रतधर्म ते तुलसीभई सो हरि जो भगवान तिनको अद्यापि सदाप्रिय है ज्यहिके यशको चारिउवेद गावत हैं ( ४० ) तहां मुनिपत्नी अनुसूयाजी कहती हैं हेजानकीजी सुनहुं देवदानव नागनर इत्यादिकन की स्त्रीजेहैं ते सबतुम्हार नामसुमिरिकै पातिब्रत धर्मको प्राप्तिहोती हैं अरु श्रीरामचन्द्र तुमको तौ प्राणहुते प्रियहैं यह सबकथामैं संसारकी नारिनके हेतुकही है ( ४१ ) हे पार्वतीयहसुनिकै श्री जानकीजी को परमसुख भयो आदरते तिनके चरणारविंदगहती भईं ( ४२ ) तब कृपाके निधान श्रीरामचन्द्र ने मुनिसनकहा कि मोको आज्ञाहोइ तौ मैं अपरबनको जाउं ( ४३ ) मेरेऊपरसंतत कृपाकरतरहब

तवनाम सुमिरिनारिपतिव्रतकरहिं तुमहिंप्राणप्रियराम कह्यउँकथासंसारहित ४१ चौ०॥ सुनिजानकीपरमसुखपावा सादर तासुचरणशिरनावा ४२ तबमुनिसनकहकृपानिधाना आयसुहोईजाउँबनआना ४३ संततमोपरकृपाकरेहू सेवकजानितज्यउ जनिनेहू ४४ धर्मधुरंधरप्रभुकैबानी सुनिसप्रेमबोलेमुनिज्ञानी ४५ जासुकृपाअजशिवसनकादी चाहतसबपरमारथवादी ४६ तेतुमरामअकामपियारे दीनबंधुमृदुबचनउचारे ४७ अबजानामैंश्रीचतुराई भजीतुमहिंसबदेवबिहाई ४८ ज्यहिसमानअतिशयनहिंकोई

सेवक जानिकै नेहनछांड़ब ( ४४ ) धर्मकेधुरंधर प्रभु तिनके बाणी सुनिकै ज्ञानी मुनि प्रेम सहित बोलतेभये ( ४५ ) हे श्रीरामचन्द्र जे मुनीश ब्रह्मबादी हैं शुकसनकादि नारदशेष शिवादिक सर्वत्यागिकै तुम्हारी कृपाअरु चरणारबिंदकी प्रीति की चाहनाकरते हैं ते तुमहौ तुम्हारी कृपाते मैं तुमको जानत हौं तुम्हारी कृपाको ब्रह्मा शिवादिक

परमार्थबादीजेहैं ते चाहते हैं ताते मोपरकृपाकरतरहब परमार्थ परमअर्थजे तुम हौ सोहै बादकही प्राप्तिजिनको ( ४६ ) तेतुम श्रीरामचन्द्र अकामपियारेहौ तुम निष्काम सर्वजीवनपर प्रीतिकरते हौ पुनितुमनिष्काम जीवन पर अधिकप्रीति करते हौ अरु निष्कामजीवनको तुम बहुत प्रियहौ ताते हे दीनबंधु तुम कसनमृदुबचनकहहु ( ४७ ) श्रीकहिये यश अरु तेज अरु प्रताप अरु ऐश्वर्य अरु शोभा अरु तप पुनि दान अरु संपूर्णसिद्धी अरुनवोनिधि अरु वेदव्याकरण इत्यादिकनमें प्रबीणता अरु चौदहौबिद्या चौंसठकलासंयुक्त योगवैराग्य ज्ञानविज्ञानध्यानसमाधि अरु दयाकृपाकरुणा अरु धर्म अरु शरणपाल अरु सर्वजीवन के गतिकी जानिबेकीसर्बज्ञता अरु सर्बको प्रेरक अरुसदाएकरस आनंदस्वरूप इत्यादिकसर्बश्रीकेअंगहैं सो तुम्हारे आश्रयहैं तुम्हारीकृपाते यह चतुराई मैं जानाऐसे श्रीमान् एकआपुहीहौताते सर्ब देवविहायकै एकतुमहींको भजियेकिंतु श्रीलक्ष्मीजो हैं तिनकी चतुराई मैं अब जानी है कि सर्बदेवको बिहाइकै एक तुमहींको भजिती हैं ताते भजिबे योग्य एक तुमहीं हौ ( ४८ ) जे तुम होतेतुम्हारे समान अतिशय कोई नहीं है यामेंयह अर्थ है कि तुम्हारेसमान कोई नहीं है अतिशय कहति होइगोकाहेते कि जे तुम अतिशयहोते तुम्हारे समानकोहोय तुम्हारेसमान तुमहीहौ तेतुम्हारशीलअसकसन होइजो तुमहमसे विनय करते हौ ( ४९ ) हे स्वामी मै आपुको क्यहिबिधिसेकहौं कितुमबनको जाहु आपुतौ अंतर्यामी हौ मोकोअसकहना उचितनहीं

**ताकरशीलकसनअसहोई ४९ क्यहिबिधिकहौंजाहुबनस्वामी कहहुनाथतुमअंतरयामी ५० असकहिप्रभुबिलोकिमुनिधीरा लोचनजलबहपुलकशरीरा ५१ छं०॥ तनपुलकनिर्भरप्रेमपूरण नयनमुखपंकजदिये मनज्ञानगुणगोतीतप्रभुमैंदीखजपतपकाकिये ५२ जपयोगधर्मसमूहतेनरभक्तिअनुपमपावहीं रघुबीरचरितपुनीतनिशिदिनदासतुलसीगावहीं ५३ दो०॥ मुनिहुंकिअस्तुतिकीनप्रभु दीनसुभगबरदान सुमनवृष्टिनभसंकुल जयजयकृपानिधान ५४ कलिमलशमनदमनदुख रामसुयशसुखसूल सादर**

है ( ५० ) इतनाकहिकै श्रीरामचन्द्रको स्वरूप नेत्रनके द्वार ते हृदय में धरिकै नेत्रनमें जलभरिआयो शरीर पुलकिआयो है ( ५१ ) छन्दार्थ॥ हे गरुड़ मुनिकेतन अति पुलकिआये अरु निर्भरकही शरीरकी सुधिनाहीं है प्रेमते पूर्ण द्वै नेत्र श्रीरामचन्द्र के मुखकंजविषे चन्दइव लगिरहे हैं चकोरवत् हैं प्रभु तुम मन ते गुणते ज्ञानते इन्द्रिन ते अतीतकही परेहौ तिनप्रभुको मैं नेत्रभरिदेख्यों ऐसो कौन जप तप ब्रत योग मैं कीन है नामकछु नहींकीन है आपु केवल आपनी कृपा ते दर्शनदीन है ( ५२ ) हे श्रीरामचन्द्र जे तुम्हार जप योग ज्ञानधर्म समूहकरिकै सम्पूर्ण इन्द्रिनको जीति कै तुमको सबसमर्पण करते हैं ते तुम्हारी अनूपमभक्तिको प्राप्तिहोते हैं अरु हे रघुबीर जे तुम्हारचरित अहर्निशि गावते हैं ते अनूपम भक्ति पावते हैं यह गोसाईं तुलसीदास कहते हैं ( ५३ ) दोहार्थ॥ हे गरुड़ श्रीरामचन्द्र मुनिहुंकी स्तुतिकीन शुभगबरदान दीन देवतनजयजय कहिकै फूलन की बर्षाकीन ( ५४ ) श्रीरामचन्द्रकर सुयश सुखकर मूल कलिमलकरहरणहार दुखकर दमनहार ऐसो रामचिरत जे सादर ते सुनहिं तिनपर श्रीरामचन्द्र सदा अनूकूलरहते हैं ( ५५ ) सोरठार्थ॥ हे गरुड़ यह जोकालकर कोषकही भण्डार मल ते भरा है सो कठिन है तहां न योग न ज्ञान न जप न तप ताते सबभरोस तजिकै जे श्रीरामचन्द्र को भजते हैं तेई चतुर नर हैं तहां चारिहुयुग में जब कठिनकाल प्राप्तिहोतहै सोकलियुगही को धर्मजानब अरु कलियुग तौ मलकर कोषही है ( ५६ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वंसने आरण्यकांडे श्रीरामअत्रिसत्संगवर्णनंनामद्वितीयस्तरंगः २॥ :: :: :: :: ::

दोहा॥ बधिबिराधगतिदीनशुभ देहतजीसरभंग रामचरणमुनि अभयकरिबिलसततीनितरंग ३॥ पुनिसुरनरमुनिके ईश मुनिकेपदमेंनमस्कार

**सुनहिंजेतिनपर रामरहहिंअनुकूल ५५ सो०॥ कठिनकालमलकोष धर्मनज्ञाननयोगजप परिहरिसकलभरोस रामहिंभजहिंते चतुरनर ५६॥**

चौ०॥ मुनिपदकमलनाइकरशीशा चलेबनहिंसुरनरमुनिईशा १ आगेरामलषणपुनिपाछे मुनिवरबेषबनेअतिआछे २

करिकै आगे बनकोचले ( १ ) आगे श्रीरामचन्द्र पाछे श्रीलक्ष्मणजी मध्यमें श्रीजानकीजी मुनिबरबेषकिये अतिसुन्दरबेषचलेजाते हैं ( २ ) हे गरुड़ उभयकहीदुइ श्रीरामचन्द्र श्रीलक्ष्मणजू के बीच में श्रीजानकीजी जाती हैं सो कैसे शोभित हैं जैसे ब्रह्म अरु जीव के बीच में माया शोभित है इहां शोभितपदकहाहै तहां मायादुइप्रकारकी एकअविद्या एकविद्या तहांसर्वजीवनके अरु ब्रह्मके बीच में अविद्या है सो अशोभित है काहेते कि जीवब्रह्मते बिक्षेप किहेह तहां जीवनमुक्त जे जीवहैं अरु ब्रह्म द्वौ के बीच में जैसे विद्यामायाशोभित है काहेते कि ब्रह्माको ब्रह्मानंद सुखजीवन को बिद्याप्राप्तकरेहैं तातेशोभितहैं तैसे श्रीरामचन्द्र में भावसेवापरमानंदसुख श्रीलक्ष्मणजीको श्रीजानकी जीप्राप्तिकिये हैं ताते शोभितकहाहैदेखिये तौब्रह्म जीवअरुदिव्यमाया तीनिंहुकोबाचककहाहै अरुश्रीरामचन्द्र श्रीलक्ष्मणजी जानकी को बाच्यकहा है अरु ब्रह्मजीव विद्यामायाको उपमान् कहा है अरु श्रीरामचन्द्र लक्ष्मणजी श्रीजानकीजी को उपमेयकहाहै इहांउपमानते उपमेयको अधिक जानब अरु दृष्टांते दृष्टांतअधिक होत है उपमान् दृष्टांत लक्षणाहै अरु उपमेय दृष्टांतलक्ष है परइहां न्यूनाधिक्यरूपालंकार जानब ( ३ ) आगे पांचचौपाईतकअक्षरार्थै सिद्धि जानब ( ८ ) दोहार्थ ॥ तहां मुनि सरभंग श्रीरामचन्द्र को मुखकैसे देखतहैं जैसे पंकज के मकरंद को मधुकर पानकरते हैं तैसे नेत्रभृङ्गकरिकै मुख को मकरंद सादरते पानकरते हैं ताते हे गरुड़ सरभंग को जन्म धन्य तर धन्य है ( ९ ) पुनिसरभंगकहते हैं कि हे रघुवीर कृपालु तुमशंकर के हृदय मानसरके राजहंसहौ ( १० ) हे श्रीरामचन्द्र मैं ब्रह्माके स्थान को तुम्हारे स्वरूप के भजन के सतसंग हेतु जातरह्यउंहै तव मैं यह मुनीश्वरनते वेदकरिकै सुन्यउं कि श्रीरामचन्द जो परमेश्वर हैं तेराजादशरथ के गृह में अवतीर्णहोइकैबनलीलाकरहिंगे यह सुनिकै बैठिरह्यउं किन्तु मैं ब्रह्मा के इहांजातरह्यउं

उभयबीचसियसोहहिकैसीब्रह्मजीवबिचमायाजैसी ३ सरिताबनगिरिअवघटघाटा पतिपहिचानिदेहिबरबाटा ४ जहँजहँजायँदेव रघुरायाकरहिंमेघतहँतहँनभछाया ५ मिलाअसुरबिराधमगजाताआवतहीरघुबीरनिपाता ६ तुरतहिरुचिररूपत्यहिंपावादेखिदुखीनिजधामपठावा ७ पुनिआये जहँमुनिसरभंगासुन्दरअनुजजानकीसंगा ८ दो०॥ देखिराममुखपंकजमुनिवरलोचनभृंगसादरपानकरत अति धन्यजन्मसरभंग ९ चौ०॥ कहमुनिसुनुरघुबीरकृपाला शंकरमानसराजमराला १० जातरहेउँबिरंचिकेधामा सुन्यउँश्रवण बनऐहैं रामा ११ चितवतपंथरह्यउँदिनराती अबप्रभुदेखिजुड़ानीछाती १२ नाथसकलसाधनमैंहीना कीन्हीकृपाजानिजनदीना १३ सोकछुदेवनमोरनिहोरानिजपन राख्यउजनमनचोरा १४ तबलगिरहहुदीनहितलागी जबलगिमिलौंतुम्हैंतनत्यागी १५ योगयज्ञ

कही प्राप्तभयोंजाइ ब्रह्मैकहा कि परमेश्वर तुमको आरण्यमेंमिलैंगे ( ११ ) हे श्रीरामचन्द्र आपुके आगमन को पन्थरातिदिन चितवतरह्यउं है अब आपुका दर्शनकरिकै परमानन्दकरिकै हृदय शीतल ह्वैगयो ( १२ ) हेनाथआपुके प्राप्ति जे साधन हैं तिनसब ते मैं हीनहौं आपु जो दर्शनदीन है सो केवल दीनजनजानिकै कृपाकीन यह उपाय शून्यशरणागत है ( १३ ) हे देव कछुमोर निहोरानहीं है काहेते कि जो म्वहि में कछु कर्तब्य होइ तौ निहोराहोइ तुमने तौ अपनो बिरदप्रण राख्यो है तुम्हार दीनदयालअशरण शरण पतितपावन इत्यादिक बाना है अपने जननको मनहरि लेते हौ यह सत्यबचनमें षट्शरणागत पूर्ण है अनुकूल में संकल्प प्रतिकूल में त्याग गोप्तृत्व वर्णन रक्षा में विश्वास आत्मसमर्पण कार्पण्य इन कर स्वरूप बालकाण्ड में कहिआये हैं यहि चौपाई के पूर्वापर प्रसंग में रीझतरामसनेहनिसोते कोमतिमन्दमलिनमतिमोते ( १४ ) सरभंगकहते हैं कि मैं जो दीनहौं त्यहिके हितहेतु इहांधरी एकरहहु जबलगि मैं तनत्यागिकै तुमको प्राप्तिहोउं ( १५ ) हे गरुड़मुनि योग यज्ञ जप तप व्रत इत्यादिक कीन्ह है

सम्पूर्ण श्रीरामर्पण करिकै भक्तिबरदान मांगिलीनहैकाहेते कि धर्मकाण्ड को फल है अरु योग वैराग्य बिज्ञान ज्ञानकाण्डको फल है अरु उपासनाकाण्ड जो भक्ति सो रस है ( १६ ) यहि प्रकार ते सम्पूर्ण बाह्यान्तर की इन्द्री विषयसंयुक्त त्यहि की लकड़ीकरिकै चित्तको सराबनाइकै त्यहिपर आत्मा की वृत्ति श्रीरामचन्द्र के स्वरूपमें समाधानकरिकै अरु चारिउफल कै बासना त्यहिको संगछांड़िकै दृढ़समाधि करिकै बैठतभयो है ( १७ ) दोहार्थ॥ जब प्रेम परमानन्दभरे बोले हे श्रीरामचन्द्रजी जानकी लक्ष्मण संयुक्त धनुषबाण धारणकिहे परमदिब्य

जपतपब्रतकीन्हा प्रभुकहंदेइभक्तिबरलीन्हा १६ यहिविधिसररचिमुनिसरभंगा बैठेहृदयछांड़िसबसंगा १७ दो०॥ सीताअनुजसमेतप्रभु नील जलदतनश्याम ममहियबसहुनिरन्तरसगुणरूपश्रीराम १८॥ * * * *

चौ० असकहियोगअगिनितनुजारा रामकृपाबैकुंठसिधारा १ तातेमुनिहरिलीननभयऊ प्रथमहिंभेदभक्तिबरलयऊ २

सगुण रूप सनातन अखण्ड एकरस नीलघन नीलकंज तड़ित संयुक्ततद्वत् बर्ण मेरे हृदय में सदाबसहु तब श्रीरामचन्द्र कहा कि एवमस्तु पर मेरीआज्ञा ते तबताईं तुम वैकुण्ठ में बासकरहु जब हम परविभूति को चलहिंगे तबहम तुमको सङ्गही लैचलैंगे तरंगविषे चौपाई अक्षरार्थै है दोहाके आगे ( १८ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने आरण्यकाण्डे सरभंग वैकुण्ठवर्णनंनाम तृतीयस्तरंगः ३॥ :: :: :: :: :: :: ::

दोहा॥ मुनिसमूहकहं अभयकरि जानतचौथतरंग रामचरणमुनिआश्रमन जाय जायसतसंग ( ४ ) तब मुनिअसकहिकैकिमेरेहृदय में बसहु यह कहिकै योगरूप अगिनि उत्पन्नकरिकै शरीरको भस्मकरिदीन है तहांसमूह मुनि खड़ेरहे हैं सरभंग के शरीर को काहू न लखापरमदिव्यबिमानपर चढ़िकै बैकुण्ठको प्राप्तिभये सरभंगशरीरको कैसे त्यागकीन है जैसे सर्पकेचुलित्यागकरै है अरु जैसे नरनवीनबस्त्र ग्रहणकरै है पुरान त्यागकरै है तहां परमेश्वर के दासनका शरीर ऐसही ग्रहण त्यागनाजानब प्रमाणंभगवदगीतायां १ क्षिप्रंभवतिधर्मात्मा शश्वच्छांतिंनिगच्छतिकौन्तेयप्रति जानीहि नमेभक्तःप्रणश्यति १ बासांसिजीर्णानियथाविहाय नवानिगृह्णातिनरोऽपराणि तथाशरीराणिविहायजीर्णा न्यन्यानिसंयातिनवानि देही २॥ हे गरुड़ मुनिकर योग सिद्धिरहा है अरु योगकोफल सायुज्यमुक्ति है चाही कि हरिमें लीनहोइजाइ पर श्रीरामचन्द्रकर दर्शनपायो तब योग के फल को फलरस सेवक सेब्य भावभेद भक्ति सो बरमांगिलियो है अभेदभक्तिकही विज्ञान ब्रह्मलीन मिश्रित अरु केवलभक्ति सेवक सेब्यभावानन्य यहभक्ति अभेदभक्ति रसकर स्वाद है ताते यहजानिकैहरिमेंलीन न भयो ( २ ) तहां निकायकही समूहऋषि जे रहैं ते सरभंगकै गतिदेखिकै हृदयमें विशेष आनन्दभये हैं ( ३ ) तहां वृन्दकेवृन्द मुनि अस्तुति करते हैं हे करुणाकन्द प्रणतहित तुम्हारी जयहोइ ( ४ ) पुनि श्री रामचन्द्र आगे बनको चले हैं संगविषे वृन्दकही अनेक विपुलकही समाज की समाजमुनि चलेजाते हैं ( ५ ) वहां मगमें अस्थिजेहाड़ अनेकपरे

ऋषिनिकायमुनिवरगतिदेखी सुखीभयेनिजहृदयबिशेषी ३ अस्तुतिकरहिंसकलमुनिवृन्दा जयतिप्रणतहितकरुणाकन्दा ४ पुनिरघुनाथचलेबनआगे मुनिबरवृन्दबिपुलसँगलागे ५ अस्थिसमूहदेखिरघुराया पूंछामुनिनलागिअतिदाया ६ जानतहहुपूंछतकसस्वामी समदरशीतुमअन्तर्यामी ७ निशिचरनिकरसकलमुनिखाये सुनिरघुनाथनयनजलछाये ८ दो०॥ निश्चरहीनकरौंमहिभुजउठायप्रणकीन सकलमुनिनकेआश्रमनि- जायजायसुखदीन ९॥ * * * * *

हैं सो देखिकै श्रीरामचन्द्र दयाकरिकै मुनिन ते पूछते हैं कि अस्थि जेसमूहनपरे हैं सो यह का कारण है ( ६ ) तब मुनिबोले कि हे परमात्मा स्वामी आपु तौ समदर्शीहौ अरु अंतर्यामीहौ सर्वज्ञ हौ आपु हमते कापूछतेहौ ( ७ ) निश्चरों ने मुनिनको खाइलीन्ह है यहसुनिकै श्रीरघुनाथजी के नेत्रनमें जलभरिआयो है ( ८ ) दोहार्थ॥ तब मुनिनके वचनसुनिकै श्रीरामचन्द्र ने भुजाउठायकै यहप्रणकीन कि निश्चरनकरिकै हीन पृथ्वीकरिदेउंगो जिनकै निश्चरकरणी है यह प्रणसुनिकै सम्पूर्ण देवताफूलनकी बर्षाकरतेभये अरुमुनिनको आनन्दभयो पुनि श्रीरामचन्द्र मुनिनके आश्रमनविषे जाइजाइ सुखदेतभये अरु सम्पूर्ण मुनि अच्छेप्रकारते पूजाकरतेभये हैं ( ९ ) इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने आरण्यकाण्डेमुनिनाभयबर्णनन्नामचतुर्थस्तरंगः ४॥ :: :: :: :: :: ::

दोहा ॥ पंचतरंगसुतीक्षणकै भक्तिप्रेमबरबुद्धि। रामचरणमुनिबिनयबड़ि प्रभुवरदैअतिशुद्धि ५॥ हे पार्बती अगस्तमुनिकरशिष्य परमसुजान सुतीक्ष्ण परमेश्वर भगवान् जो श्रीरामचन्द्र तिनमें अति परमानन्य उपासक ( १ ) मन क्रम बचनते श्रीरामसेवक अपर पंचदेव इत्यादिक तिनकोभरोस सुधि स्वपन्यहुं बिषे नहीं है ( २ ) वह प्रभुकर आगमन श्रवणबिषे सुनत संते अनेक दिव्यमनोरथ करत तुरंत उठिधायो है ( ३ ) तहां बिधि श्रीरामचन्द्र ही को जानब काहेते कि जो इहां बिधिब्रह्माकोकही तौ पाछेकहाहै कि आनदेव का भरोसा स्वपन्यहुं बिषे नहीं है तातेबिधि सर्बकर्ता श्रीरामचन्द्रही को जानिये तातेहेबिधि दीनदयाल रघुराईमोसे शठपर दयाकरिहैं अथवा अपने पूर्वसंस्कार को बिधिरोपण करिकै

चौ० ॥ मुनिअगस्त्यकरशिष्यसुजाना नामसुतीक्षणरतभगवाना १ मनक्रमबचनरामकरसेवक स्वपन्यहुंआनभरोसनदेवक २ प्रभुआगमनश्रवणसुनिपावा करतमनोरथआतुरधावा ३ हेबिधिदीनबन्धुरघुराया मोसेशठपरकरिहैंदाया ४ सहितअनुजम्वहिंरामगोसाई मिलिहहिंनिजसेवककीनाईं ५ मोरेजियभरोसदृढ़नाहीं भक्तिविरतिनज्ञानमनमाहीं ६ नहिंसतसंगयोगजपयागा नहिंदृढ़चरणकमलअनुरागा ७ एकबानिकरुणानिधानकी सोप्रियजाकेगतिनआनकी ८ होइहैसफलआजुममलोचन देखिबदनपंकभजवमोचन ९ निर्भरप्रेममगनमुनिज्ञानी कहिनजायसोदशाभवानी १० दिशिअरुबिदिशिपन्थनहिंसूझा को मैं कहां

मनंत कहते हैं कि मोसे शठपर दयाकरहिंगे ( ४ ) यह मनोरथ करत हैं कि सहित अनुजअरु श्रीजानकीजी श्रीरामगोसाईं अपने जनकीनाईं मोको मिलहिंगे ( ५ ) काहेते कि मोरेजिय में भरोसा दृढ़ नाहीं है न तोमोरे भक्तिहैन वैराग्य है अरुन ज्ञान है ताते कैसे मिलहिंगे ( ६ ) न तौ मैं सत्संगकीन है न जपकीन अरु न यज्ञकीन न कछु दानकीन है अरु न दृढ़कै चरणारविन्द में अनुरागकीन है ताते मोको कैसे मिलहिंगे यह नीचानुसन्धान कार्पण्य शरणागत कहा है आपु अकर्ता कर्ता श्रीरामचन्द्र हैं ( ७ ) तहांयह सुतीक्षण अपने मन में दृढ़ विश्वास कीन है कि करुणानिधान जो श्रीरामचन्द्र हैं तिनकी बानिकही एकरीति है कि जाके आनगति कछुनहीं है ते श्रीरामचन्द्र को प्रिय हैं आनकही कर्म धर्म अपर देव अरुचारिउ पदार्थ अर्थ धर्म काम मोक्ष इनसबनको भरोस जिनके लेशहू नहीं है ते श्रीरामचन्द्र को प्रिय हैं यह सहजबानि है हे गरुड़ सुतीक्षण सर्बोपाय शून्य शरणागत है ( ८ ) श्रीरामचन्द्र भवमोचन हैं सबके अन्तष्करणकी जानत हैं ताते आज पंकजबदन देखिकै मेरे नेत्र सफल होहिंगे ( ९ ) हे पार्वती मुनिज्ञानी हैं अपने स्वरूपमें आरूढ़ हैं ताहीको यह प्रेमापराभक्तिप्राप्तिहोती है ताते सुतीक्षण निर्भर प्रेम में मग्न है निर्भरकही जाको प्रेम करिकै देह की संभारनहीं है सो दशानहीं कहीजाइ है ( १० ) हे पार्वतीमुनि प्रेम में मग्न हैं जाको दिशि बिदिशिनहीं सूझिपरै है कि को मैं क्यहिके मिलिबे को अरु कहांचल्यउंहौं यह मुनिको नहींबूझिपरै है दिशिकही पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर अरु विदिशिकही अग्निकोण नैऋत्य वायव्य ईशान किन्तु आगे दिशा अरु विदिशा कही भूमि आकाश सोमुनि प्रेम ते मग्न हैं एकौनहीं सूझत हैं ( ११ ) हे गरुड़ कबहुं

मुनि पाछे को चलेजाते हैं अरु कबहुंक आगे चलेजाते हैं पुनि कबहुंक दाहिने बायेंसन्मुख चलेजाते हैं अरु कबहुंक प्रेम में हंसिदेते हैं पुनि कबहूं रोइदेते हैं अरु कबहूं श्रीरामचन्द के गुणानुबाद गावते हैं अरु कबहूं नाचिउठते हैं याको शुद्ध लक्षणा प्रेमभक्ति कहिये ( १२ ) हे भरद्वाज अविरल भक्ति

**चल्यउँनहिंबूझा ११ कबहुंकफिरिपाछेपुनिजाई कबहुंकनृत्यकरैगुणगाई १२ अबिरलप्रेमभक्तिमुनिपाई प्रभुदेखैंतरुवोटलुकाई १३ अतिशयप्रीतिदेखिरघुवीरा प्रकटेहृदयहरणभवभीरा १४ मुनिमगमांझअचलह्वैवैसा पुलकशरीरपनसफलजैसा १५**

को मुनि प्राप्तिहोहिं श्रीरघुनाथजी दीन है अबिरलकही सघनजामें अहर्निशि एकौपल विक्षेप न परै तब मुनिकी दशा श्रीरघुनाथजी तरुकेवोट ते देखते हैं ( १३ ) तब श्रीरघुबीर सम्पूर्ण भवभीरकही जन्म मरण त्यहिकी पीर के हरैया ते मुनिकी अतिशय प्रीति अपनेविषे देखिकै तब मुनि के हृदय में धनुषवाण लिये प्राप्तिभये अरु स्वरूपदेखाइदीन ( १४ ) तबश्रीरामचन्द्र सुतीक्षण के हृदय में अपने स्वरूप को दर्शनदीन तब मुनि मगमध्य में अचलह्वैकै श्रीरामचन्द्र को स्वरूप हृदयमें देखिकै बैठिगयेतब स्वस्वरूप कै वृत्ति परस्वरूपमें तदाकारभई तब बाह्यांतर की वृत्ति भूलिगई काहेते कि सम्पूर्णइन्द्री मनके आधीन हैं अरु मन जीवके आधीन है तहां जीव अपने अन्तर्भूत परमात्माको स्वरूपदेखिकै परमानन्द सुखकोप्राप्तिभयो तब क्यहि को कहांकी सुधि है मुनि मननशील आत्माराम बिज्ञान जो पराभक्ति को प्राप्तिभयो है प्रमाणंभगवदगीतायांश्लोक॥ ब्रह्मभूत:प्रसन्नात्मा नशोचतिनकाङ्क्षति। समस्सर्वेषुभूतेषु मद्भक्तिंलभतेपरां १ जे आत्माराम विज्ञानी ब्रह्मज्ञान में नित्यआरूढ़ तब त्यहिके कहूं रामकृपा ते रामस्वरूप हृदय में आयो तब वहज्ञानी बिदेहह्वइजात है अपनपौ भूलिगयो तब यही दशा को पराभक्तिकही मुनि मग मांझमें अचल ह्वइकै जब बैठ्यउ है तब बाह्यांतर शरीर पुलकिआयो है अरु रोमांचठाढ़ह्वइआये हैं पनसफल कही जैसे कटहरको फल ( १५ ) तब श्रीरामचन्द्र मुनिके निकटको चलिआये हैं मुनिकै दशा देखिकै निजजन निश्चयकरिकै मनभायो है ( १६ ) तब मुनिको श्रीरामचन्द्र बहुतभांतिते जगावत भये पर मुनि जागैंनहीं काहेते कि ध्यानकरिकै जनितकही जो उत्पन्नसुख है साक्षात् श्रीरामचन्द्र परब्रह्ममूर्त्ति शांतरस शृङ्गाररस इत्यादिक सर्बरस के कारण अखण्ड एकरस कोटिनकामते सुन्दर तिनके परमानंदसुख में मग्नभयो है कैसे जागैं ( १७ ) जब मुनि नहींजाग्यउ तब श्रीरामचन्द्र भूपरूपकही सर्बदिग्पाल ब्रह्मा विष्णु शिवादिक तिनसब के राजाप्रमाणंश्रीमद्भागवते श्लोक॥ यूयंनृलोकेवतभूरिभागलोकंपुनानांमुनयो वदंति येषांग्रहाणांवसतीतिसाक्षात् गूढ़ंपरब्रह्ममनुष्यलिंगं नारदपंचरात्रेआनन्दोद्बिबिध: प्रोक्त: मूर्तश्चामूर्तएवच अमूर्तस्याश्रयोमूर्त: परमात्मानरा

**तब रघुनाथनिकटचलिआये देखिदशानिजजनमनभाये १६ मुनिहिंरामबहुभांतिजगावा जागनध्यानजनितसुखपावा १७ भूपरूपतबरामदुरावा हृदयचतुर्भुजरूपदेखावा १८ मुनि अकुलाइउठातबकैसे बिकलहीनफणिमणिबिनुजैसे १९ आगेदेखिरामतनश्यामा**

कृति: ॥ जो दशरथनन्दन रूप मुनिके हृदय में प्रत्यक्षरहै सो दुराइकहीछिपाइलीन है अरु मुनिके हृदय में चतुर्भुजरूप देखावते भये ( १८ ) तब मुनि अकुलाइकै उठे कैसे जैसे बिनामणिको फणिक ( १९ ) तब बिकलताते मुनिकेनेत्र खुलिगये हैं तब जो प्रथम श्रीरामचन्द्रको स्वरूप श्याम सुन्दर हृदय में देख्यो सोई स्वरूप बाह्यनेत्रन के आगेदेख्यो लक्ष्मण श्रीजानकीजी श्रीरामचन्द्रजी सुखकेधाम तिनकोदेखिकै अति आनन्द को प्राप्तिभये हे पार्वती वोई श्रीरामचन्द्र प्रथममुनिको निजनित्य द्विभुजकिशोर धनुर्द्धर दर्शनदीन पुनि वोई श्रीरामचन्द्र चतुर्भुजरूप ह्वइकै मुनिके हृदय में देखावतभये तहां श्रीरामचन्द्रजी जो गुरुनकीदईउपासना ताकीपरीक्षालीन है तब मुनि अकुलाइउठे हैं तहां तत्वस्वरूप तौ एकही है द्विभुज चतुर्भुज को भेद है तहां मुनि क्यों अकुलाइउठे तहां हे पार्वतीजे परमानन्य उपासक हैं ते एकही स्वरूप में अनन्य हैं रूपांतर नहींसहि सकते हैं देखिये तौ जब विष्णुभगवान् नृसिंहरूपको अतिशय प्रज्वलितधारणकीन तब ब्रह्मैकहा कि हे लक्ष्मीजी तुम्हारेपति हैं तुमजाइकै शांत करहु तब लक्ष्मीजी समीप नहींगईं

यहकहा कि यद्यपि वोई भगवान् हैं तदपि यहिस्वरूप की उपासक मैं नहींहौं ताते मुनिहृदय में अकुलाइ उठे हैं ( २० ) तब सुतीक्षण लकुटिकी नाईं श्रीरामचन्द्र के चरण विषे परतेभये प्रेम ते मगन हैं हे पार्बती मुनिवर बड़भागी हैं ( २१ ) तब श्री रामचन्द्र विशालभुजा ते उठाइकै उरविषे अतिप्रेम प्रीति ते लगावतेभये ( २२ ) मुनिको मिलत कृपालु कैसे शोभितभये हैं जैसे कनकतरु अरु तमालतरु मानहुं मिलिकै शोभितहोत है ( २३ ) तब श्रीरामचन्द्रकरबदन बिलोकिकै मुनि चित्रइव ठाढ़ह्वैरहा है ( २४ ) दोहार्थ॥ तब मुनि धीरधारिकै वारबार चरणारविंद गहिकै द्वौकरजोरि बिनयकरिकै श्रीरामचन्द्रको निजआश्रममें आनिकै बिबिधिप्रकार कही षोड़शप्रकार से पूजा

सीताअनुजसहितसुखधामा २० परयउलकुटिजिमिचरणनलागी प्रेममगनमुनिवरबड़भागी २१ भुजबिशालगहिलियेउठाई प्रेमप्रीतिराख्यउउरलाई २२ मुनिहिंमिलतअतिसोहकृपाला कनकतरुहिजनुभेंटतमाला २३ रामबदनबिलोकिमुनिठाढ़ा मानहुंचित्रमांझलिखिकाढ़ा २४ दो०॥ तबमुनिहृदयधीरधरिगहि पदबारहिंबार निजआश्रमप्रभुआनकरिपूजाविविधप्रकार २५ चौ०॥ कहमुनीशप्रभुबिनतीमोरी अस्तुतिकरौंकवनबिधितोरी २६ महिमाअमितमोरिमतिथोरी रविसन्मुखखद्योतअजोरी २७ श्यामतामरसदामशरीरा जटामुकुटपरिधनमुनिचीरा २८ पाणिचापशरकटितूणीरं नौमिनिरन्तरश्रीरघुवीरं २९ मोहबिपिनघन

करतभये ( २५ ) तब मुनीशकहा कि हे प्रभु मेरी यह बिनय है कि आपुकैस्तुति मैं कौनीरीति से करौं ( २६ ) काहेते कि आपुकी महिमा अमित है अरु मोरी मति थोरी है रविके सम्मुख खद्योत अजोरीकही कैसे प्रकाशकरै ( २७ ) हे श्रीरामचन्द्र तामरसकही कमल नीलतद्वत् आपु श्यामहौ अरु दामकही वोही नीलकमलनके रंगकीछटा लालित्य चमक भालकीमाल पुनि दामकही पदार्थ के अन्तर के कीमति जैसे नीलमणिके ढिग लालमणिको प्रकाश नीलके अन्तर भासत है पुनि दामकही दामिनीमानो नील घन के अन्तर तड़ित थिर है यहसम्बन्ध अर्थ जानब ताहू ते अधिकशोभा आपुके तनकै लालित्य है अरु सचिक्कन जैसे नखरेशमअति झलक ऐसे जटाके मुकुटाकार अतिशोभित हैं अरु परिधनकही कटिविषे मुनिचीर भोजपत्रादिक सुष्ट बल्कल शोभित हैं ( २८ ) अरु पाणिविषे धनुर्बाण शोभित है कटि विषे तूणीर शोभित है हे श्रीरामचन्द्र मैं निरन्तर नमस्कार करत हौं ( २९ ) हे श्रीरामचन्द्र मोहबिपिन दहनकरिबेको तुम कृशानु हौ अरु सन्त कमलकेबन हैं तिनके तुम सूर्य हौ ( ३० ) अरु निश्चर सोई हाथिन के यूथ हैं जिनके नाशकरिबेको मृगराज कहींसिंहहौ हे श्रीरामचन्द्र त्रातुनाम मोपर रक्षाकरहु तौकही मैं नमस्कार करतहौं ते तुम कैसे हो भव जो संसार सोई बिहंग है तिसके नाशकरबेको तुमबाज हौ ( ३१ ) हे अरुण कमलदललोचन श्रीजानकीजीके नयन चकोर त्यहिको तुम पूर्ण निशेशहौ ( ३२ ) पुनि महादेव के हृदय मानसर के आपु राजमरालहौ अरु कहूं बालमराल पाठ है हे अजानुबाहु मैं नमस्कारकरतहौं ( ३३ ) संशयरूप सर्प त्यहिके नाशकरबे को तुम उरगाद कही उरगाद कही गरुड़हौ अरु सकर्ककही जेते दुख अन्तष्करण में कसकते हैं करकते हैं अरु अनेक मनकी तर्कना अरु अनेकबिषाद त्यहि सबकेनाशकर्ता हौ ( ३४ ) पुनि भवभंजन हौ अरु देवतनके यूथजे हैं तिनके रंजन

दहनुकृशानू संतसरोरुहकाननभानू ३० निश्चरकरबरूथमृगराजं त्रातुसदानोभवखगवाजं ३१ अरुणनयनराजीवसुवेषं सीतानयनचकोरनिशेशं ३२ हरहृदमानसराजमरालं नौमिरामउरबाहुबिशालं ३३ संशयसर्पग्रसनउरगादं शमनसकर्कसतर्कविषादं ३४ भवभंजनरंजनसुरयूथं त्रातुसदानीकृपाबरूथं ३५ निर्गुणसगुणबिषसमरूपं ज्ञानगिरागोतीतअनूपं ३६ अमलअखिलअनवद्यमपारं नौमिरामभंजनमहिभारं ३७ भक्तिकल्पपादपआरामं तर्जनलोभक्रोधमदकामं ३८ अतिनागरभवसागरसेतू

कर्ता हौ पुनि कही आनन्दकर्ताहौ त्रातुकही मेरीरक्षाकरहु मैं नमस्कारकरतहौं ( ३५ ) हे श्रीरामचन्द्र निर्गुण तुमहींहौ सगुण तुमहींहौ अरु दुष्टनको विषमरूप तुमहींहौं अरुसाधुनको समरूपतुमहींहौ अरु ज्ञानतेगिरा कही बाणीते गो कही इन्द्रिन सबते अतीत कही परेहौ अरु अनूप हौ ( ३६ ) पुनि अमलहौ अरु अखिलकही समहौ अथवा अखिलको अमलकर्ताहौ आपु नित्यनिर्मलहौ अरु अनवद्यकही निर्दोषहौ किन्तु अनवद्यकही काहूके कहिबेयोग्य नहीं हौ अपारहौ पुनि कैसेहौ मोहकोभार भंजनहारहौ ते मैं तुम्हारे नौमिकही नमस्कार करत हौं ( ३७ ) अरु अपने भक्तन को कल्पपादप कही कल्पतरुकी आरामकही बाटिकाहौ अरु लोभ क्रोध मद काम त्यहिक तर्जनकही ताड़नकर्ताहौ ( ३८ ) हे श्रीरामचन्द्र तुम अतिनागरकही प्रवीण हौ अरुभवसागर को तुम्हार चरित नामध्यान सेतुहै अरु दिनकरकुल के केतुनाम पताकाहौ त्रातुकही मोपर रक्षा करहु ( ३९ ) अरु द्वौभुज अतुलित बलप्रतापकेधामहौ अरुकलिकेमलजो बिपुल अनेकहैं त्यहिकरनाशकर्ता तुम्हारनाम है ( ४० ) अरु धर्मजो है सोई वर्मकही तुम्हारबखतर है किंतु तुम्हारधर्म है तुम्हारेदासनको किंतु तुम्हार गुणग्राम धर्मको नर्मबखतर है अरु तुम्हार गुणग्राम नर्मदकही अंतष्करणकी कठोरता नाशकरिकै कोमलकरिदेते हैं सुखक्षांति क्षमा आनन्द करिदेत है अथवा धर्मविषे अहंमम मदसो तुम्हार गुणनर्मदकहीमदते रहित करिदेत है हे श्रीरामचन्द्र संततकही निरंतर नोतु कही मैं नमस्कार करत हौं किंतु संतत कही सम्यक्प्रकार सुख आतनोति कही विस्तरित ( ४१ ) यद्यपि तुम विरजकही मायाते रहितहौ अरु सर्बब्यापकहौअ सबके हृदय में निरंतर बसत हौ प्रेरकहौ सूत्रधरहौ ( ४२ ) तदपि हे

**त्रातुसदादिनकरकुलकेतू ३९ अतुलितभुजप्रतापबलधामं कलिमलविपुलविभंजननामं ४० धर्मवर्मनर्मदगुणग्रामं संततसंतनोतुममकामं ४१ तदपिविरजब्यापकअबिनाशी सबकेहृदयनिरन्तरबासी ४२ तदपिअनुजसियसहितखरारी बसहुमनसिममकाननचारी ४३ जेजानहिंत्यहिजानहुस्वामी सगुणअगुणउरअंतरयामी ४४ जोकोशलपतिराजिवनयना करहुसोरामहृदयममअयना ४५ असअभिमानजाइजनिभोरे मैंसेवकरघुपतिपतिमोरे ४६ सुनिमुनिबचनराममनभाये बहुरिहर्षिमुनिवरउरलाये ४७ परमप्रसन्नजानुमुनिमोहीं जोबरमांगुदेउँमैंतोहीं ४८ मुनिकहमैंबरकबहुंनयांचा समुझिनपरैझूठकासांचा ४९ तुमहिंनीकलागैरघुराई**

खरारिकही आगे खरको बधकरहिंगे सो सहित जानकी अनुजबनचारीकही यह जो तुम्हारस्वरूप बनमें बिचरतेहौ सो मोरे हृदयमेंबसहु ( ४३ ) हे स्वामी जे तुमको विष्णुरूप सगुणजानै किंतु विराट्जानैं निर्गुणरूप अंतर्यामीजानैं ताकोतुम जसजानहु तसजानहुजाइ ( ४४ ) अरु जो कोशलपति राजीवनयन तुमहौ सो मेरेहृदय में अयनकही स्थानकरहु ( ४५ ) अरु श्रीरामचन्द्र असअभिमान मेरे हृदयते कबहुं भोरेहुनहीं जाइ हे रघुपति तुम मोरपति मैं सेवक तुम्हरो ( ४६ ) मुनिके वचन सुनिकै श्रीरामचन्द्र अतिप्रीतसे हर्षिकै उरमें लगावतेभये ( ४७ ) हे मुनि मोको तैं परमप्रसन्नजानु जो बरमांगसि सोमैं देउंगो यामें संशयनहीं है ( ४८ ) तबहे पार्बती मुनिकहा कि मैंबर कबहूं काहूसे नहींयाच्यों काहेतेकि नीक बिकार शुभ अशुभ झूंठ सत्य यहमोको नहीं समुझिपरैहै यामें यह तात्पर्य है कि मैं निष्काम उपायशून्य आपुकीशरणहौं ( ४९ ) हे भक्तन के सुखदाई रघुराई जो तुमको अपने भक्तनके सुखदाई पदार्थ नीकलागैं सो देहु ( ५० ) तब रघुनाथजी बोले कि हे मुनि तुमको अबिरल भक्तिहोइ बैराग्यहोइ अरु विज्ञानहोइ अरु संपूर्ण गुणज्ञानके निधानकही स्थानहोहु ( ५१ ) तब मुनिबोले हे प्रभु जो बरदीन सोतो मैं पावा अबमोरे मनभावत देहु ( ५२ ) दोहार्थ॥ हे प्रभु अनुजजानकीसहित धनुषबाण धारणकिहे मेरेहृदयनभविषे पूर्ण इन्दुइव एकरस बसहु यहकामना पूर्णबरदेहु कहूं यहपाठ है बसहुसदानिष्काम कहे हे श्रीरामचन्द्र आपुनिष्कामहौ किंतु मेरे हृदय में बसहु जौने मों निष्कामहोउं ( ५३ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने आरण्यकाण्डे सुतीक्षणप्रेमास्तुतिबर्णनन्नमपंचमस्तंरगः ५॥

दोहा ॥ षटतरंगप्रभुमग्न ह्वै लीनसुतीक्षणसंग चलेअगस्त्यपहँरामसँगरामचरणमनरंग॥ ६ तहांरमाकही श्रीकहिये यश तेज प्रताप शोभा तप

सोम्वहिंदेहुदाससुखदाई ५० अविरलभक्तिविरतिबिज्ञाना होहुसकलगुणज्ञाननिधाना ५१ प्रभुजोदीनसोबरमैंपावा अबसो देहुमोहिंजोभावा ५२ दो०॥ अनुजजानकीसहितप्रभु चापबाणधरिराम ममहियगगनइंदुइव बसहुसदानिष्काम ५३॥ * *

चौ०॥ एवमस्तुकहिरमानिवासा हर्षिचलेकुम्भजऋषिपासा १ बहुतदिवसगुरुदर्शनपाये भयेमोहिंयहिआश्रमआये २ अबप्रभुसंगजाउँ गुरुपाहीं तुमकहँनाथनिहोरानाहीं ३ देखिकृपानिधिमुनिचतुराई लियेसंगबिहसे दोउभाई ४ पंथकहतनिजभ-

धन सम्पूर्ण सिद्धि अरु नव निद्धि अरुचारिहु वेदके तत्व अरु षट्काव्यअरु नौ व्याकरण षट्शास्त्र अठारहौ पुराण उपपुराण अठारहौ स्मृति अठारहसंहिता बानवे उपनिषद अरु चारिउफल अरु योग वैराग्य ज्ञानविज्ञान ध्यान समाधि पांचौ मुक्ति नवधा प्रेमापराभक्ति इत्यादिक सबन को सिद्धांत ताको श्रीकहिये पुनि रमा श्रीलक्ष्मीजी त्यहिसबके निवासकर्ता प्रकाशकर्ता श्रीरामचन्द्र तिनसे जो मुनिमांगा तिनको एवमस्तु कहिकै दीन तब हार्षिकै अगस्त्यमुनि के इहां चलतभये ( १ ) तब मुनिप्रेमलपेटी बाणी बोले हे श्रीरामचन्द्र गुरुनके दर्शनको मोको बहुतदिन बीते यहिआश्रममें टिकते ( २ ) हेनाथ अब आपुके संग गुरुन के दर्शनकोचलत हौं कछुआपुको निहोरा नहीं है परआपुके संगचलौंगो ( ३ ) तब श्रीरामचन्द्र मुनिकी प्रेमकी चतुराईदेखिकैसहितजानकी द्वौ भाई बिहंसिकैसंग लेतेभये ( ४ ) हे गरुड़ पंथबिषे श्रीरामचन्द्र अपनी अनूपमभक्ति बर्णन करत अगस्त्य के आश्रमबिषे पहुँचेजाइ ( ५ ) तब आगे सुतीक्षण धाइकैगुरुन के समीपजाइकै साष्टांगदण्डवत् करिकै कहतभये ( ६ ) हे नाथकोशलाधीश जो दशरथमहाराज तिनके कुमार श्रीरामचन्द्र जगत् के आधारसो आपुकेमिलबेको आवते हैं ( ७ ) हे देवरामानुजअरु बैदेहीं समेत निशिदिन जिनको आपु जपते हौ अरु मोको उपदेशकीन है किंतु जिनदेवशिरोमणि को आपुजपतेहौ अरु सर्बमुनिदेवजपते हैं ते आये ( ८ ) हेगरुड़ सुतीक्षण के बचन सुनतसंते निर्भरहर्षतेसंभारनाहिं अगस्त्य उठिदौरेहैं आगेजाइकै श्रीरामचन्द्र को स्वरूप देखिकै प्रेमते नेत्रनमें जलछाइरह्यो है ( ९ ) तब श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण मुनि के साष्टांगदण्डवत् करते भये तब ऋषि जो हैं सोअतिप्रीतिसे हृदयमें लगाइलीन ( १० ) तहां परम ज्ञानमें आरूढ़

क्तिअनूपा मुनिआश्रमपहुंचेसुरभूपा ५ तुरतसुतीक्षणगुरुपहँगयऊ करिदंडवतकहतअसभयऊ ६ नाथकोशलाधीशकुमारा आयेमिलनजगतआधारा ७ रामानुजसमेतवैदेही निशिदिनदेवजपतहौजेही ८ सुनतअगस्त्यतुरतउठिधाये हरिविलोकिलोचनजलछाये ९ मुनिपदकमलपरेद्वौभाई ऋषिअतिप्रतिलियेउरलाई १० सादरकुशलपुंछिमुनिज्ञानी आसनपरबैठारयउआनी ११ पुनिकरिबहुप्रकारप्रभुपूजा म्वहिंसमभागवंतनहिंदूजा १२ जहँलगिरहेअपरमुनिवृन्दा हर्षेसबविलोकिसुखकन्दा १३ दो०॥ मुनिसमूहमहँबैठिप्रभु सन्मुखसबकीओर शरदइंदुतनचितवतमानहुंनिकरचकोर १४ चौ०॥ तबरघुबीरकहामुनिपाहीं तुमस-

जे अगस्त्यमुनि हैं ते श्रीरामचन्द्र की कुशल पूछिकै सादरते निजआसनपर बैठावतेभये ( ११ ) पुनि मुनिने श्रीरामचन्द्रकै पूजाबहुत प्रकारते करिकै यहकहा कि आजुमोरे समान भाग्यवंत कोई नहीं है ( १२ ) जहांतक अपरमुनि बृन्दरहे तिन श्रीरामचन्द्र जो सुखकेकंद तिनको देखिकै अति हर्षको प्राप्तिभये ( १३ ) दोहार्थ ॥ हे पार्वती मुनिसमूहके मध्यमेंश्रीरामचन्द्र बैठे हैं अरु सन्मुख सबकी ओरहैं काहूके पाछे नहीं हैं जे मुनिदेखते हैं ते सबअपने सन्मुखै मुखचंद देखते हैं कैसे जैसे पूर्णचंद्रमाको सब दिशाके चकोर अपने सन्मुख देखते हैं, इहांपरम दिव्य चिच्छक्ति मुनिन को देखावते भये ( १४ ) तब श्रीरघुबीर मुनिते कहा किहे प्रभु तुमसे कछु दुरावनहीं है इहां प्रभुकही

सामर्थ्य को तहां अगस्त्यजू मुनिनमें बड़े समर्थ हैं काहेते कि समुद्र को शोकिगये अरु आतापीवातापी राक्षसनको खाइकै पचैडारयउ अरु श्रीराम के परमानन्यउपासक हैं जिनके इहां महादेव सनकादिक सत्संग करिबेको जाते हैं तहां प्रभुकहा श्लोकः॥ आतापीभक्षि तोयेन वातापीच महाबलः। समुद्रः शोषि तोयेनअगस्त्यश्चमहाबलः ( १५ ) हे तात ज्यहिकारण मैं बनको आयउंहै सो तुमजानते हौ ताते मैं आपुसे का कहौं ( १६ ) हे प्रभु अबसोमंत्रदेहु ज्यहिप्रकार मुनिनके द्रोहीजे राक्षस हैं तिनको मारौं ( १७ ) हेभरद्वाज तबप्रभुकी बाणीसुनिकै मुनिमुसकाने हे नाथमोको काजानिकै पूछतेहौ इहां यह अभिप्राय है कि श्रीरामचन्द्र यहजानिकै पूछते हैं किमेरे जे अनन्यदास हैं तेई मेरे मंत्री हैं तिनके मतमें मैं सबकार्य करत हौं ( १८ ) तब अगस्त्यजू बोले हे प्रभुतुम्हारे प्रभावको कोई नहीं जानते हैं पर हे अधारीकही मन बचनके अघकेहरैया तुम्हारे भजन के प्रभावते तुम्हारी महिमा मैं जानतहौं ( १९ ) हे श्रीरामचन्द्र जहांतक कोटिजीवन हैं तिनसबको तुम्हारजानब दुर्लभ है जहांतक आपु मोको जनावा है

**नप्रभुदुरावकछुनाहीं १५ तुमजानहुज्यहिकारणआयउँ तातेतातनकहिसमुझायउँ १६ अबसोमंत्रदेहुप्रभुमोही ज्यहिप्रकार मारौंमुनिद्रोही १७ मुनिमुसुकानेसुनिप्रभुबानी पूंछ्यहुनाथमोहिंकाजानी १८ तुम्हरेभजनप्रभावअघारी जानौंमहिमाकछुकतुम्हारी १९ डुमरीतरुविशालतवमाया फलब्रह्माण्डअनेकनिकाया २० जीवचराचरजन्तुसमाना भीतरबसहिंनजानहिंआना २१ तेफलभक्षककठिनकराला तवडरडरतसदासोकाला २२ तेतुमसकललोकपतिसाई पूछ्यउमोहिंमनुजकीनाई २३**

सोसुनहु तुम्हारी मायाडुमरिकही विशालगूलरि कोतरु है अरु तामें अनेक ब्रह्मांडसमूह कही विस्तारफल हैं ( २० ) अरु ब्रह्मांडप्रति जेतेजीव हैं त्यहिफलके भीतर के जंतु हैं वहीफलके भीतरकी जानते हैं बाहेरकीजानते नहीं हैं अरु तुम ब्रह्मांड के परात्पर हौ ( २१ ) अरु जैसे गूलरिकै पक्वफल सहित कृमिको क्षुधित दशबीस पचासखाइजाते हैं तैसे तुम्हारी माया में अनेक ब्रह्माण्ड हैं अरु ब्रह्माण्डप्रति ब्रह्माको एकदिन हजार चौकरी युग हजार सतयुगहजार त्रेताहजार द्वापरहजारकलियुगयतने को ब्रह्माको एकदिन होत है अरु इतनै रातिहोति है ऐसे दिनराति जब तीसबीतैं तब एकमास होत है असबारहमासबीते एकबर्षहोत है ऐसे सौ बर्ष ताईं ब्रह्माकी आयुर्बल होत है तहां ब्रह्माकीआयुर्बलबीतै तब महाकालको एकदिन होत है ते दिनविषे फलरूप ब्रह्माण्ड अनेक पकिजाते हैं तहां ब्रह्मादिक सर्वजीव सुद्धां अनेक ब्रह्माण्ड काल नित्य भक्षणाकरै है सो काल आपुकेडरते डरत है अरु सोईकाल तुम्हारीभृकुटी निरखत रहत है ( २२ ) ते तुम श्रीरामचन्द्र अनेक ब्रह्माण्ड के साईं मोसनमनुज की नाईं पूछतेहौ ( २३ ) हेपार्वती पुनि अगस्त्यजू कहते हैं कि हे श्रीरामचन्द्र कृपाके निकेत यहबर मांगतहौं सहित जानकी लक्ष्मण धनुषबाण लिहे मेरे हृदय में बसहु ( २४ ) हे श्रीरामचन्द्र अबिरलभक्तिदेउ जामें एकोपल चित्तकै वृत्ति में विक्षेप न परै अरु विरतिकही वैराग्य देहु जामें मनकै वृत्ति संसार के विषय अरु मानबड़ाई लोकरंजनामें न जाइ अरु सत्संगदेहु जामें तुम्हारो स्वरूप गुणलीला प्रताप इत्यादिकन में बुद्धिबनीरहै अरु अपने चरणारविंदविषे अभंग प्रीतिदेहु ( २५ ) यद्यपि तुमहीं अखण्ड अनन्त ब्यापक ब्रह्महौ अरु अनुभवकरिकै

**यहबरमागौंकृपानिकेता बसहुहृदयश्रीअनुजसमेता २४ अविरलभक्तिविरतिसतसङ्ग चरणसरोरुहप्रीतिअभंगा २५ यद्यपिब्रह्म अखण्डअनन्ता अनुभवगम्यभजहिँज्यहिसन्ता २६ असतवरूपबखानौंजानौं फिरिफिरिसगुणब्रह्मरतिमानौं २७ सन्ततदासन देहुबड़ाई तातेम्वहिंपूछ्यउरघुराई २८ हैप्रभुपरममनोहरठाऊँ पावनपञ्चबटीत्यहिनाऊँ २९ दण्डकवनपुनीतप्रभुकरहू उग्रशापमुनिवरकैहरहू ३० बासकरहुतहँरघुकुलराया कीजैसकलमुनिनपरदाया ३१ चलेराममुनिआयसुपाई तुरतहिपञ्चबटीनियराई ३२ दो०॥ गीधराजसेभेटभइबहुबिधिप्रीतिबढ़ाइ गोदावरीनिकटप्रभुरहेपर्णगृहछाइ ३३॥**

* * * * * *

गम्यकही प्राप्तिहौ ऐसे जानिकै ज्ञानी भक्त तुमको भजते हैं ( २६ ) अरुजो मोसे कोई पूछैं तौ मैं उत्तरदेउं कि ये जो दशरथनन्दन नित्यकिशोर मूर्ति अनन्त हैं अरु ये अपने परमदिव्य चिन्मय गुण ते सर्वब्यापकहैंयेई अनुभवगम्य हैं ऐसे बखानौं औ जानौं पर यहसगुण ब्रह्ममूर्ति येही स्वरूप में सबजानौं बखानौं यह परमदिव्य चरित्र जो तुमकरते हौ सोईस्वरूपमें मेरीरतिहोइ अरु हृदय में बसै ( २७ ) तहां तुम ऐसे हौ अरु जो मोसे पूछतहहु तौ अपने दासनको सन्ततबड़ाई देतचले आयउहौयह तुम्हारीरीति है ( २८ ) हे प्रभु आपु तौ सबजानतेहौ पर आपु के पूछेते मैं कहतहौं अतिपावन महाठाउं पंचबटी है अरु अतिपवित्र तहांगोदावरी नदी है कहांतक कहौं सर्वमंगलमय है ( २९ ) हे प्रभु चलिकै दण्डकारण्य को पवित्रकरहु महामुनि शुक्राचार्य के शाप ते दण्डकारण्यजरिगयो है जीवजन्तु कोई नहीं आइसकते हैं त्यहि उग्रशाप को आप हरहु यह कथा श्रीभागवत विषे प्रसिद्ध है ( ३० ) हे रघुवंशकुल के भूषणत्यहि पंचबटी में बासकरहु सम्पूर्ण मुनिनपर दयाकरहु ( ३१ ) हे पार्वती मुनिन के नमस्कार करिकै आशीर्बाद आयसुपाइकै चले अरु तुरतहिंपंचबटी को नियरातभये ( ३२ ) दोहार्थ॥ हे पार्वती तहां गृद्धराज जटायु से भेटभई सो दशरथमहाराज को सखा है ताते रघुनाथजी अतिप्रीतिकीन्ह पुनि गोदावरी के निकट देवताकोल किरात को रूपधरिकै पर्ण तृण की कुटी अतिसुन्दरि प्रथमहीं बनावतेभये तहां श्रीरघुनाथ जी बिराजमान होतभये प्रमाणं हनुमन्नाटके एकश्लोक एषापंचबटीरघूत्तमकुटी यत्रास्तिपंचाबटी पांथस्यैकघटी पुरस्कृततटी संस्लेषभीतौबटी। गोदायत्रनदी तरंगिनितटी कल्लोलचंचत्पुटी मोदादिव्यकुटी भवाब्धिसकटी भूत क्रियादुष्कटी ( ३३ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वंसनेआरण्यकाण्डे महामहामुनि अगस्त्यप्रभुसत्संग पंचबटीनिवास बर्णनंनाम षष्ठस्तरंगः ६॥

चौ०॥ जबतेरामकीन्हतहँबासा सुखीभयेमुनिबीतीत्रासा १ गिरिबननदीतालछबिछाये दिनदिनप्रतिअतिहोहिंसुहाये २ खगमृगवृन्दअनन्दितरहहीं मधुपमधुरगुंजतछबिलहहीं ३ सोबनबरणिनसकअहिराजा जहांप्रकटरघुबीरबिराजा ४ एक बारप्रभु सुखआसीना लक्ष्मणबचनकहेछलहीना ५ सुरनरमुनिसचराचरसाईं मैंपूछौंनिजप्रभुकीनाईं ६ म्वहिंसमुझाय * * * * *

दोहा ॥ सप्ततरंगउमंगसुखबनमुनिमंगलताइ लषणप्रश्नप्रभुउतरबररामचरणसुखदाइ ( ७ ) जब ते श्रीरामचन्द्र पंचबटीमें बासकीनतबते सबमुनिन की त्रासमिटिगई सुखीभये ( १ ) गिरिवरनदी ताल तिनके जीवतहां छबिछाइरही है दिनदिन प्रतिललित शोभा होतचलीजाति है ( २ ) अरु खगमृगवृन्दकेवृन्द आनंदितरहते हैं अरु मधुपजे हैंभंवरते मधुर मधुरगुञ्जते हैं फूलनकी मकरंदलेते हैं छविको पावते हैं ( ३ ) हे गरुड़ त्यहिदंडकारण्य की छबिजो शेष बर्णा चाहैं तौ नहीं वर्णिसकैं हैं काहेते जहां प्रकट श्रीरामचन्द्र बिराजमान हैं तहां कीशोभाको कहै ( ४ ) हेपार्वती एकबार श्रीरामचन्द्रसुखरूप आसनपर बैठे हैं त्यहिसमयमें सुन्दर अवसर जानिकै लक्ष्मणजू छलहीन प्रश्नकरते हैं छलकही जो बस्तु को जानिकै परीक्षा हेतु प्रश्नकरै हैं तहां लक्ष्मणजी छलहीन बचन बोलतेभये हैं ( ५ ) हे श्रीरामचन्द्र सुरनरमुनि चराचर के स्वामी तुमहौ पर मैं आपनकेवल प्रभुजानिकै पूछतहौं ( ६ ) हे देव मोसे समुझायकै कहौजाते सबतजिकै आपुकेचरणरजकी सेवाविषे मन अनन्यह्वैकै लागै ( ७ ) हे पार्वती लक्ष्मणजी प्रश्नकरते हैं हे स्वामी ज्ञानकर स्वरूप कहहु अरु बिरागकर स्वरूपकहहु अरु मायाकर स्वरूप कहहु ज्यहिवश जीव बंधनमें परै है अरु आपनि भक्तिकहौ ज्यहिते तुमदाया करतेहौ ( ८ ) दोहार्थ॥ हे प्रभु ईश्वरते अरु जीवतेभेदकहहु जातेकहौं जो श्रीमुखतेसुनिकै आपु के चरण में रति होइ अरु शोकमोह भ्रमनाशको प्राप्तिहोइ तहां लक्ष्मणजी तो श्रीरामचन्द्रके परमानन्य सेवक हैं तिनको शोक मोह भ्रम कहां है यह जो लक्ष्मणजी पांच प्रश्नकीन है सो मुमुक्षु जीवन के हेतु अथवा सर्वजीवन के हेतु काहेते कि लक्ष्मणजी सबजीवन के आचार्य हैं ( ९ ) तब हे पार्वती श्रीरामचन्द्र बोले श्रीलक्ष्मणजीके प्रश्नको उत्तर देते हैं हेतात जैसे जुम थोरे प्रश्न में महत्पदार्थ बूझ्यउ है तैसे मैं थोरे में समुझाइकै कहतहौं

**कहौसोदेवा सबतजिकरोंचरणरजसेवा ७ कहहुज्ञानबिरागअरुमाया कहहुसोभक्तिकरहुज्यहिंदाया ८ दो०॥ ईश्वरजीवहिंभेद प्रभुसकलकहहुसमुझाइ जातेहोइचरणरतिशोकमोहभ्रमजाइ ९ चौ०॥ थोरेमहँबहुकहहुंबुझाई सुनहुतातमनचितमतिलाई १० मैंअरुमोरतोरतैंमाया जेबशकीन्हेजीवनिकाया ११ गोगोचरहंलगिभनजाईसोसबमायाजानबभाई १२ त्यहिकर**

ते तुमसुनहु परमनचित्त लाइकै सुनहु इहां दण्डान्वय के कर्म ते अर्थसिद्धिहोत है सुनहु कही श्रवणकरौ अरु मनको सावधानकरौ मननकरौ चित्तकरिकै चिंतवनकरौ निदध्यासनकही अभ्यासकरो ( १० ) प्रथम लक्ष्मणजी के प्रश्न में ज्ञानपूंछ्यो पुनि वैराग्य पूंछ्यो पुनि माया पूंछ्यो तहां रघुनाथजी तीनप्रश्न के प्रतिलोम के क्रम से कहते हैं हे तात प्रथम माया को रूपसुनहु पुनि वैराग्य सुनहु पुनि ज्ञानसुनहु मायाकही मैं अरु मोर तोर तैं मैं इत्यादिक अहंमम ताहीको मायाकही ज्यहि निकायकही समूह जीवनको बशकियो है त्यहिसबको कारणसुनहु ( ११ ) इहां गो गोचर यह चौपाईलैकै अरु विद्या अविद्याताई चारिचौपाई को एकही अन्वयजानब हे तात गो जे हैं पांचज्ञानइन्द्री पांचकर्मइन्द्री श्रवणत्वक्नयन रसना नासिका ये पांचज्ञानइन्द्री पुनि पग गुदा लिंगकर मुख ये पांचकर्मइन्द्री तिनसबको कही तहां एक अगोचरकही अदृश्यको अरु एक गोचरकही प्रत्यक्ष देखिबेको अरु चरगमन भक्षणविषे होत है सो इन्द्रीकी विषय ताको भक्षणकरै ताको चरकही क्रम ते जानब सो कहते हैं श्रवणको दिशा देवता त्वक्को वायु नेत्रके सूर्य जीभको वरुण नासिकाको अश्वनीकुमार सूर्यके पुत्र अरु कर्मइन्द्रीके दवेतापगके देवतायज्ञविष्णु गुदा के देवता यमराज लिंगके देवता दक्षप्रजापति हाथके इन्द्रमुखको अग्नि येदशौंदेवता दशौंविषयकर भक्षणकरते हैं क्रमहींते जानबशब्दस्पर्श रूपरस गंधि ये ज्ञानइन्द्री विषय हैं पुनि चलन बिसर्गमैथुनब्यवहार भक्षण ये कर्मइन्द्रीविषय हैं तहां गोगोचर गो जो इन्द्रीतिनकी विषय में जहांतक देवतनके भोगहेतु मनजाइ हेभाई सो सबमायाजानब हेतात यहि में तुमसन्देह नकरहु हमकहते हैं ( १२ ) हे तातत्यहि माया के दुइभेद सुनहु एकविद्या है अपरएक अविद्या है तहांइन्द्रिनके द्वारादूनौंभोग होत हैं सो आगे कहते हैं ( १३ ) हेतातएक जो अबिद्याहै सो अति दुष्ट है त्यहिविषे जो इन्द्रिन के द्वार इन्द्रिन के विषय अविद्या में जातिभई अरु तिसके संग मनजाइकै उस अविद्याकोबिषय भोग करतभयो तब सो मन अविद्यामय ह्वइजातहै त्यहिके संबंधकेबश जीवभवकूपमेंपर्‌यो है भवकूपकही देवदानव मनुष्य इत्यादिक जेते जीव हैं चरअचर त्यहि सब ब्रह्मांडकोश जो त्रैगुण्यमयहै सो भवकूपहै तामेंअविद्याकेबश सर्बजीवपरे हैं ( १४ ) अरु हेतात एकविद्याहै तब विद्याके वशमनपर्‌यो तब

**भेदसुनहुतुमसोऊ विद्याअपरअविद्यादोऊ १३ एकदुष्टअतिशयदुखरूपा जाबशजीवपराभवकूपा १४ एकरचैजगगुणबल**

उहै बिद्या मनको मिलिकै इंद्रिन के द्वारजीवबिषे यहि जगत् में दिब्यगुणको रचैहै कवनदिव्यगुणहैं प्रभु प्रेरित गुण सो कवनगुणहैं योगबैराग्यज्ञान बिज्ञान ध्यान समाधि चतुष्टअंतष्करण कीवृत्ति मनराम गुणमननकरै अहंकारते विषयको त्यागकरै मदमानमोह इत्यादिक अरु बुद्धिते राम गुण तत्वमनन निश्चयकरै अरु चित्ततेरामस्वरूपको चिंतवनकरैहै बिद्यागुण करिकै अन्तष्करणकै बृत्ति संसार ते उलटिकै ऐसीहोति है जैसे कहि आये हैं अरु विद्या के बश बाह्यइन्द्री की वृत्ति सो कहते हैं श्रवण ते अमृतमय प्रभुकी कथासुनै है अरु नेत्रनते भगवान्कीप्रतिमा मृत्तिका चित्र दारु शिला धातु श्रीविग्रह लीला विग्रह शालिग्राम इत्यादिक प्रभुकीप्रतिमा अरु चराचर में ईश्वरब्यापक भावसमेत बाह्यांतरके नेत्रन ते देखते हैं अरु प्रतिमाके गुरुनके सन्तनके ब्राह्मण के शीशनवाइकै प्रीतिसमेत नमस्कारकरै हैं अरु जीभ ते श्रीभगवद्यश अहर्निशि कहते हैं अरु राममन्त्रजपते हैं नामरटते हैं अरु मुख ते महाप्रसाद सेवनकरते हैं तहांबिना प्रसाद जो अमृतौहोइ तौ छुवै नहीं अरु नासिका ते भगवत्प्रसादी तुलसीदल फूल सुगन्ध ग्रहणकरते हैं अरु बिना प्रसादी जो अतर फुलेल आदिक होय तौ छुवैंनहीं अरु करते भगवत् भागवत गुरु आचार्य तिनके कैङ्कर्यभाव समेत सम्पूर्ण करते हैं अरु पग ते हर्षिकै चलिकै

भगवत्तीर्थ सत्संग दर्शन सेवासबकरते हैं यह विद्यामायाके गुण हैं भगवत्कृपा अरु प्रेरणाते होते हैं मन मायाके निजबल ते नहीं होते हैं अब दृष्टांत करिकै अनात्मा के स्वरूप लक्षित कराते हैं तहां अनात्मा शरीर अरु आत्मा जीव दूनौं बराबरि मिलिरहे हैं अनात्मा स्थूल अरुआत्मा सूक्ष्म दूनौं कै एक ह्वै रहे हैं अनात्मा अविद्या को ग्रहणकिये है अरु आत्मा बिद्याको ग्रहणकिये है जैसे दुग्ध में घृत अरु फूलमें सुगन्धतहां दुग्ध फूलसूक्ष्म है अरु घृतरस सुगन्ध तिनमें सूक्ष्मव्याप्त है पर सर्वांग पूर्ण ह्वैकै बराबर ब्याप्त है तहां यत्न ते दुग्ध ते घृत भिन्न ह्वैकै स्थूल ह्वै जात है अरु फूल ते रस सुगन्ध भिन्नह्वैकै अन्तर स्थूल ह्वै जाते हैं पुनि दुग्ध में अरु फूल में नहींमिलिसकै है तैसे अनात्मा विषे आत्मा अविद्याके आवरण ते सूक्ष्मदर्शित ह्वइ रह्यउहै तहां विद्या के यत्न ते उहै आत्मा स्थूल सूक्ष्म विग्रहमान ह्वइजात है अबिद्या छूटिगई जैसे दुग्धते घृत निकसे ते केवल जलरहत है सपेदीमात्र देखिबेमें आवै है तैसे अनात्मा विषे आत्मा सूक्ष्मव्यापक है तहां प्रभुकी प्रेरणा ते जो मनमें विद्याके गुणनकी यत्नहोइ तौ उहै सूक्ष्मआत्मा मूर्त्तिमान् ह्वइकै परमेश्वर के स्वरूपको प्राप्तिहोइ है तव अविद्यारूप अनात्मा निर्जीव रहिजात है जैसेघृतके निकसे ते दूध छांछमात्र पुनि जैसे सर्पविषे केंचुलि जब सर्पकर स्वरूप अन्तरस्पष्ट निर्मलभयो तब अनायास केंचुलि छूटिजाती है सर्पनिर्मलह्वइकै निकसिजात है तैसे अविद्यारूप अनात्मा छूटिजात है अरु आत्मा को विद्यामय विग्रह परमदिव्य रूप परमेश्वर को प्राप्तिहोत है पुनि जैसे रूसा अरु करंजको पेड़ ऊपरते काटिकै उसकाथान तीनिबार उलटिकै लगाईजाय तब बेला गुलाब ह्वइजात है पुनि जैसे पारसके परसेते अरु रसायनी के संगते मैलछाटेते धातु तांबा रांगा पलटिजात है सोना चांदी ह्वइजात है तैसे भगवत् भागवत कै निश्छल कैंकर्य सेवाकिहेते अविद्यामैल छुटिजात है इहां आह्लादिनीविद्या एकही जानव त्यहि के बश आत्मा मूर्त्तिमान् है तहां अविद्या के विशेषण काम क्रोध लोभमोह मद मात्सर्य हर्ष शोक हानि लाभ मित्रअरि मानापमान अहंमम इत्यादिक अनेकन हैं ताको फल चौरासी है तहां कर्मकांडौ अविद्याहीको विशेषण है एक अशुभ है अरु एकशुभ है शुभकरिकै स्वर्गहोत है पुनि पतितहोते हैं ताते अविद्या है पुनि विद्याके विशेषण योग वैराग्य ज्ञानविज्ञान ध्यान समाधि नामस्मरण शांति सन्तोष शील दया इत्यादिकन को फल मोक्ष है तहां विद्या आत्माकीसत्ता ते चैतन्य है जैसे चुम्बकशिलाकी सत्ता ते लोहास्फुरितहोत है पुनि जैसे कोई मिठाईइत्यादिक पदार्थ है तामेंस्वादहै पुष्टीहै जबस्वादगतरसभयो तबपदार्थ नष्टह्वइगयो तैसेअनात्माअविद्याविषे विद्यास्वाद है आत्मापुष्टीहै स्वादपुष्टीएकही है अरु पदार्थ अनित्य हैं तैसे बिद्याआत्मा एकही संगनित्य है पुनिशरीरमें अनात्माआत्माएकहीसंग दुइभाग हैं कैसेजानिये जबइन्द्री अविद्या के गुणनमें चलैअरु उसको मनभोगकरै तब अनात्माकी इन्द्री मनजानिये अरु जबइन्द्रीविद्याकेगुणनमें चलिकै प्रहर्षपावै अरु ताको मनभोगकरै तौ आत्माकी इन्द्री मनजानिये ताते आत्मा बिग्रहमानहै परमदिव्य है ऐसेअनेकदृष्टांतते अनात्मा आत्मा अविद्या विद्याकोभेद बिबेकी जन जानते हैं तहां गीता में भगवान् ने कहा है श्लोकार्द्ध॥ कौन्तेयप्रतिजानीहि नमेभक्तःप्रणश्यति॥ तहां चौबीसतत्त्वकरिकै अनात्मा है तहांपांचतत्त्व पांचज्ञानइन्द्री पांच कर्म इन्द्री अरु पांच ज्ञानइन्द्रीकी विषय अरु चतुष्टअंतष्करणयह चौबीसौ अविद्यामय हैं तिनकेबश आत्मासूक्ष्म है अरु आत्मापचीसवां तत्त्व है बिद्याबश दिव्यविग्रहमान है दुइचरणहैं कटिहै दुइभुज हैं मुखनासिका नयन शीश सर्वांग परमदिव्यहैं प्रमाणश्रुतिसामवेदे॥ दशहस्तांगुलयोः दशपादाद्बाहूरुद्वौ बाहुआत्मैव पंचविंशकः ( १५ ) हेतात ज्ञानकही जहां एकौ माननहीं है जातिकोमान कुलको मान युवाकोमानधन

**जाके प्रभुप्रेरितनहिंनिजबलताके १५ ज्ञानमानजहंएकौनाहींब्रह्मबसैसमानसबमाहीं १६ कहियेतातसोपरमविरागी तृणसमसिद्धितीनिगुणत्यागी १७ दो०॥ मायाईशनआपुकहं जानिकहीसोजीव बद्धमोक्षप्रदसर्बपर मायाप्रेरकसीव १८॥**

को मान विद्याको मान बैराग्यकोमान ज्ञानकोमान ध्यानकोमानइत्यादिक जे मानहैं तेबाह्यांतरते त्यागहोइँ अरु संपूर्ण जगत् में चराचरविषे समान चित्तकरिकै बाह्य नेत्रकरिकै ब्रह्ममय देखते हैं ताको विशेषज्ञानकही ( १६ ) पुनि हेतात बैराग्यकहते हैं परमबैराग्यकाको कही जेतीनिउं गुण अरु तीनिउं गुणसम्बन्धी सिद्धिनको तृणकेसमान त्यागकरैहैं

तहांसिद्धिते ईशहैं तामेंपांचसामान्यसिद्धी हैं अरु दश तीनिगुणसम्बन्धीसिद्धि हैं अरु अष्टभगवत्सम्बन्धीसिद्धी है तिनमेंआठकर त्यागनहीं है पन्द्रहकोत्यागहै सिद्धिन के नाम रूप कहते हैं सिद्धिनकेनाम अणिमा १ महिमा २ लघिमा ३ प्राप्ति ४ प्राकाम्य ५ ईशिता ६ वसिता ७ अवस्यति ८ ये आठौं भगवत्प्राधान्य हैं भगवान्‌विषे स्वाभाविकी हैं निरतिशय हैं अरु दशसिद्धी गुणसम्बन्धी हैं अनूर्मिमित्वं १ दूरेश्रवणं २ दूरेदर्शनं ३ मनोजवः ४ कामरूपं ५ कायप्रवेशनं ६ स्वच्छंदमृत्यु ७ देवानांसह क्रीड़ानुदर्शनं ८ यथासङ्कल्पसंसिद्धिः ९ आज्ञाअप्रतिहतागति १० पुनि पांचक्षुद्र सिद्धी हैं सोवर्णनकरते हैं त्रिकालज्ञत्वं १ अद्वन्द २ पर चित्ताद्यविज्ञता ३ अग्न्यर्काम्बुबिषादीना प्रतिष्ठम्भाः ४ अपराजय ५ इतिपंच अब सिद्धिनके स्वरूपकहते हैं अणिमा महिमा लघिमायेतीनिसिद्धि देहीकी हैं जिससिद्धिकरिकै देह अणुरूपकोधारण करै सो अणिमासिद्धि कही १ ज्यहिसिद्धि करिकै देहस्थूल शरीर को प्राप्तिहोइ ताको महिमा सिद्धिकही २ ज्यहि सिद्धि करिकै देहलघुभावको प्राप्तिहोइ ताको लघिमासिद्धिकही ज्यहिसिद्धि करिकै सबप्राणिमात्र तिनकी जो इन्द्री तिनकरिकै सहितइन्द्रिन के देवतारूप ह्वैकै इन्द्रिन में प्रवेशकरै ताको प्राप्ति सिद्धिकही ४ ज्यहिकरिकै सुनिबे में आये इन्द्रादिकलोक अरु पृथ्वी के विवर सप्तपातालादिक लोक अरु पर्वतनके विवर तिनकरिके ढके देखनेलायक जे पदार्थ तिनको जो भोगदर्शन की सामर्थ्य तिसकरिकै होइ सो प्राकाम्यसिद्धि कही ५ अरु मायाकेअंश उनकी प्रेरणाकरना माया की प्रेरणा ईश्वराधीन अरु अंश की प्रेरणा जीवाधीन यहभेदज्ञान सो ईशिता सिद्धिकही ६ विषयभोग में असंगरहना कोवसितानाम सिद्धिकही ७ येआठौभगवत्सम्बन्धी सिद्धि हैं बन्धनरूप नहीं हैं ताते इनकर त्यागनहीं है ज्यहिकरिकै क्षुधा पिपासादिक रहितहोइ ताकोनाम अनूर्मिमत्व सिद्धिकही ९ दूरिकीबस्तुदेखना ताको नाम दूरिदर्शनसिद्धिकही १० दूरि ते सुनिपरै ताको नाम दूरिश्रवणसिद्धिकही ११ मनकी बराबरि देहकीगति होना ताको नाम मनोजव सिद्धिकही १२ जैसा रूपचाहै तैसा रूपधरिलेइ ताकोनाम कामरूप सिद्धिकही १३ पराईदेहमें प्रवेश करै ताको परकाय प्रवेशनसिद्धिकही १४ स्वेच्छामृत्युहोइ ताकोनाम स्वच्छन्दमृत्युसिद्धिकही १५ अप्सरन के संग में जो देवतनकी क्रीड़ाप्राप्तिहोना ताको देवनांसहक्रीड़ानुदर्शन सिद्धिकही १६ जैसासंकल्पकरैताकोअनुरूप पदार्थ की प्राप्ति होनाताको नामयथासंकल्प संसिद्धिकही १७ जाकोअज्ञाननिवारणनहोइ ताकोनाम आज्ञाअप्रतिहतागति सिद्धिकही १८ क्षुद्रासिद्धिपांचभूतभविष्यवर्तमान जानना ताकोनाम त्रिकालज्ञत्व सिद्धिकही १ शीतउष्णकरिकै पराभवनहींहोना ताकोनाम जाननाताको नाम अद्वन्दसिद्धिकही २ परचित्तादिककी बस्तुजाननाताकोनाम परचित्ताद्यभिज्ञतासिद्धिकही ३ अग्नि सूर्यजलविषइत्यादिककोथाम्भनाताकोनाम अग्न्यर्काम्बुविषादीनाप्रतिष्ठम्भसिद्धिकही ४ काहूकरिकै पराजयनहोह ताकोनामअपराजयसिद्धिकही ५ भगवत्सम्बन्धीजोअष्टसिद्धीकहिआयेहैंत्यहिकोत्यागनहीं है अरुदशसिद्धिजोगुणसम्बन्धी हैं अरुपांचक्षुद्र सिद्धि हैं तिनको वैराग्यमान तृणसमानत्याग करते हैं ताको परमवैराग्यकही अबधिवैराग्य तहां वैराग्य में चारिभेद हैं एक हेतु वैराग्यएकरूप वैराग्यएकफल वैराग्य एक अबधि बैराग्य अबइनकर स्वरूप कहते हैं हेतुवैराग्य कही विषयको बिषहूते अधिकजानै काहेते कि विष खायतौ शरीर एकबार छूटिजात है पुनि कहूंजो वहशरीर को धारणकियो तहांवह विष नहीं अमलकरत है अरु जो मनुष्यतनुपाइकै अरु विषय-रूपको अंगीकार कियो सो प्रथमतौ नरकको जाते हैं पुनिकोई कालपाइकैनिकसे तौचौरासी योनिमें बिषयरूप अमल करत है मरते हैं जन्मते हैं पुनिदेखिये तौविषते विषययतनाअधिकहै तहांचौरासीको प्रमाणअन्यच्चश्लोकद्वै॥ स्थावरंविंशतंलक्षंजलचरंनवलक्षकं कूर्मश्चरुद्रलक्षंचदशलक्षं चपक्षिणं १ तृंशल्लांक्षंक्षंपशूनांचचतुर्लक्षंचवानरं ततः मनुष्यतांप्राप्य ततः कर्माणिसाधयेत् २ पुनिस्वरूपवैराग्यकहते हैं ज्यहि विषयको त्याग कियो है सो काहूप्रारब्धयोगते अनायास ऋद्धीसिद्धि इत्यादिकप्राप्तिभई हैं त्यहिको स्वरूपैत्यागकरते हैं तामेंदुइभेद हैं एकफलकोत्याग एकस्वरूपको त्यागफलको त्यागकही त्यहिबिषयको लैकै सत्कर्म में लगाइदेतेहैं फलकी इच्छा नहींकरते हैं पुनिफल वैराग्यकहते हैं ज्यहि विषयको स्वरूप त्यागकिये हैं पुनित्यहि बासनाचलैस्वरूपकै त्यागको अरु फलकेत्यागको अहंपद न आवै ताकोफलवैराग्य कही पुनिअवधि वैराग्य कहते हैं जैसेज्यहि विषयको त्यागकियो है तैसे नागलोक की विषयमृत्युलोककी विषयस्वर्गलोककी विषय तीनिहूं लोककी विषयको विषहूते अधिकजानैताको अवधिवैराग्य कही नामपरम वैराग्य कही सो गोसाईं तुलसीदासजी वैराग्यकहाहै कहेते कि तीन गुणकी प्रवृत्ति तीनिउंलोककी विषय है अरुगोसाईं तीनिउंलोक तीनिउँगुणमय

सिद्धिनको त्यागकहा है तातेअवधि वैराग्यकही चौपाई॥ कहियेतातसोपरमविरागी तृणसमसिद्धि तीनिगुणत्यागी (१७) दोहा॥ मायाईशन आपुकहँ यह दोहा को अर्थ तबकहैंगे जब लक्ष्मण जी के प्रश्न को अर्थकरिलेहिंगे आगे सत्रहके अठारह के अंक दोहा को अर्थकही बाकी भूमिका कहते हैं लक्ष्मणजी यहप्रश्नकीन है दोहा॥ ईश्वरजीवहिभेदप्रभु सकलकहौसमुझाइ जातेहोइचरणरति शोकमोहभ्रमजाइ १ कि हे प्रभु ईश्वर जीवकर भेदकहहु सकल कही सबप्रकारते सबमतकरिकै ज्यहिको सुनिकै तुम्हारे चरणारविंदविषे रति होइ अरु शोक मोह भ्रम जात रहै तहां शोककही जो काहूपदार्थकी चाहनाभई है अरु नहींप्राप्ति होती है अरु तेहींकोकल्पना शोककही अथवा कोईपदार्थ प्राप्तिरह्यउ है अरु काहूयोगते जातरह्यउ है त्यहिको कल्पनाशोक अरु मोहकही देहादिक जो सनेह स्नेही विषय है त्यहिमें अपनपौ मानना ताको मोहकही भ्रमकोकही असह्य जो यह सम्पूर्ण शरीरादिकविषय है तामें सत्यभावकरना अरु सत्य आत्मा में असत्यभावकरना जैसे रज्जु में सर्पभावकरना अरु सर्पमें रज्जुभावकरना ताको भ्रमकही तहांआपुके मुख ते सुनिकै यह शोक मोह भ्रम नाशहोइगो तहां लक्ष्मणजी सर्बजीवनके आचार्य हैं ताते सर्बजीवन के हेतु श्रीरामचन्द्र ते प्रश्नकीन है अरु आपु तौ निर्मल हैं तहां शोक मोह भ्रम एकविषय में होत है सो कहिआये हैं अरु एक ईश्वर में होत है सो कहते हैं ईश्वरजीवहि भेदप्रभुसकलकहौसमुझाइ हे प्रभु ईश्वर अरु जीवकर सकलभेद कहहु सकल कही स्वरूप ईश्वर अरु जीवकै एकै सकल है कि भिन्नभिन्न है सो भेदकहहु जो सुनिकै ईश्वरविषे जो शोक मोह भ्रम होत है सो जातरहै तुम्हारे चरणन में प्रीतिहोइ तहां जो सद्‌गुनकरिके प्रथमईश्वरतत्व जानिगई है अरु कोई कुसंगयोग ते वहतत्वजातरहा पुनि कहूं सत्संग के योग ते बहितत्व की सुधिआई तब कल्पनाभई सो शोककही पुनि मोहकहीईश्वर के जानवेविषे अपनपौमानै कि मैं ईश्वरतत्व बहुतजान्यउं हैं और किसूसे का पूछैना अपनी बुद्धिकी प्रवीणता में अपनपौमानै ताको मोहकही अरु भ्रमकही जो ईश्वरके स्वरूप में भ्रमप्राकृतभाव रोपणकरै ताको भ्रमकही तहां सतीजीके तीनिउंभयरहे हैं श्रीरामचन्द्र आपुकेमुखते सुनिकै जाते यह शोक मोह भ्रमजातरहै हे नाथ ज्यहिजीव को शोक मोह भ्रमनाशह्वइकै तुम्हारे चरणारविंद में प्रीति है ऐसो शुद्धजीव त्यहिकी सकल अरु ईश्वर की सकल त्यहिको भेदाभेद कहहु यहलक्ष्मणजीके प्रश्न को उत्तर श्रीरामचन्द्र देते हैं हे तात पहिले सकल कही सबमतबादसुनहु एकै मुनीश्वर असकहते हैं कि मायाईशनआपुकह जानिकही सो जीव माया को ईश जेई अपने स्वरूपको जानै सो ईशते अभेद है अरुन जानै ताही को जीवकही यहईश्वरजीव ते भेदाभेदमानते हैं पुनि बद्ध मोक्षप्रद सर्वमायाप्रेरक सीव जो अपनेस्वस्वरूप को मायाकर ईशजानैसोई ज्ञानमोक्ष का प्रदकही दाता है अरु जो अपने स्वस्वरूप को ईशको ज्ञाननजानै वहै अज्ञानबद्धदाता है अरु वहै ज्ञानमाया प्रेरक है अरुवही अज्ञानपरमाया प्रेरक हैं यहसर्बपर है जो जानै अरु न जानै कोई होइ सीवकही यहमर्यादा है ताको अद्वैतमतकही तहां विशिष्टाद्वैत मतबादी बोल्यो कि तुम जो कहा कि मायाकर ईश जो अपने स्वरूप को न जानै ताको जवकही तहां अबहम पूछत हैं कि यह जीव मायाकर ईशकबहूं रहा है कि नहींरहा है तबअद्वैतबादी यह बिचारते हैं कि जो मैं कहौं कि यह जीव मायाकर ईश कहीं नहीं रहा तौ पुनि मायाकर ईशकहूं होइगो तहां मेरो कहना असिद्धह्वइजाइगो तब यह उत्तरदेत है कि यह जीव मायाकर ईश अनादिहै ताते ईश्वर अरु जीव ते अभेद है जैसे जलतरंग जैसे घटाकाश मठाकाश महदाकाश घट मठ भंगभये ते केवल आकाशही है पुनि जैसे समुद्र मेघको बुन्द अरु सिन्धुतरंग उपाधिमिटेते तत्वएकही है तैसे माया की उपाधि ते ईश अपने स्वस्वरूप को भूलि गयो ताते जीवकही जब अपने स्वरूप को ज्ञानभयो तब उपाधि मिटिगई तब जीवत्व मिटिगई ईशको ईशही है तहां हमपूछते हैं कि जो ईश में उपाधिलगी सो ईश कैसा है काहेते कि उपाधि ईशके आधीन है अरुईशउपाधि के आधीननहीं है अरु जो उपाधि के आधीनहोइ तो ईशते उपाधि प्रबल होती है यह दूषण है तहां पुनि अद्वैतबादी कहते हैं किहमकहते हैं कि ईश ने अपनो संकल्प आपु विषे लयकरिलियो है तामें स्वेच्छित क्रीड़ाकरते हैं ताते जीवकही पुनि जब अपनो संकल्प आपुविषो लयकरिलियो तब ईशकोईश है जैसे मकरी अपने जालाको उत्पन्न करती है अरु वाही में बिचरती है जब चाह्यो तब अपनो सूत्र अपनोमेंलयकरिलियो शुद्धमकरी रहिगई तैसे जीवईश ते अभेद है पुनि बादी प्रश्न करते हैं कि तुमने ईशको मकरीको दृष्टांतदिया सो हम यह कहते हैं कि ईश ने कौनेकाल में मायाको संकल्प कियो है त्यहि संकल्प विषे ईश जीवत्वको प्राप्तिभयो सो को जानेके ते काल जीवरहैगो पुनि जबज्ञानहोइगो तब ईशत्वको

प्राप्तिहोइगो ताते बद्धमोक्ष तौ बनारह्यो सो ईशत्वको कैसे प्राप्तिभयो है तहां यहनहीं संभवै है पुनि अद्वैतबादी कहते हैं कि पुनि नहीं संकल्पहोत है कैसे जैसे कोई बमनकरै है पुनि वह कोई दिशिनहीं देखै है सो सत्य है तहां हम यह कहते हैं कि जीवनकीदिशि नहींदेख्यो है तौ भोजनकियो है त्यहिकी दिशि विषे तौ मनजाइगो तबहीं भोजनको ग्रहणकरैगो तब फेरि कोईकाल में बातहोइगो तातेयह तौ तुम्हारे कहेमें बद्धमोक्ष बनारहा है तहां पुनि बादी कहते हैं कि यह जीव ईशही है अपनी ईशता ते जड़को चेतनकिहे है जैसे चुम्बकशिला लोहा को स्फुरितकरै है अरु आपु भिन्न है ऐसी आत्मा है तहां पुनि बादी बोल्यो किये भी नहींबनै है काहेते कि यहकहतसन्ते ईशकीपरिपूर्णता नहींहोती है अरु ईश जो ब्रह्म है सो अखण्ड परिपूर्ण एकरस है काहेते कि ईश एकदेशी ह्वइजात है ताते ईश ईशै है अरु जीव जीवै है यह सिद्धिजानहु और वादविवाद तौ चलैआवतहै पर जीव ईशत्व को नहीं प्राप्तिहोत है पूर्णज्ञानभये ते मोक्षहोत है तहां श्रीरामोपनिषदप्रमाण है ३ जीवमायाईश्वरसतेत्रयतत्वानादषोड़षण्डाश्चैकरसासवेदवत इतिश्रुतिः १ तब अद्वैतबादी बोल्यो कि हम तुमसे प्रश्नकरते हैं तुमईशको अर्थका करतेहौ तब उनकहा कि हम यह अर्थ करते हैं कि तुमने दण्डान्वयकरिकै अर्थकीन है अरु हमखण्डान्वयकरिकै अर्थकरते हैं तहांमायाईश न आपुकहँ जानि त्यहिको जीवकही जो मायाको ईश ईश्वर है ताको नहीं जानते हैं आपुहीको ईश्वरजानते हैं ताको जीवकही मायाईशकै जो है बद्धमोक्षकर प्रदकही दाता है अरु माया प्रेरकहै अरु सर्ब पर है अरु सीवकही सबकर मर्याद है ईश्वर है तहां बादी पुनि बोल्योकि तुमकहा कि मायाको ईश न जानै ताको जीवकही सो हम पूछते हैं कि जब मायाके ईशकोजान्यो तब कही जो ईशकोजानै ते जीव को ईशकही तौ हमारमत सिद्धिहोत है ताते तुम दूषण काहे को देतहौ अरु जो कहौ कि ईशकोजानै ते जो जीवईशरहत है तौ यामेंविवाद तो ब्याघातह्वइजाते हैं काहेते कि ईशकोजानै तौ जीवकही अरु न जानै तौ जीव कही अरु जो तुमकहौ कि एकबद्ध जीव है अरु एक मुमुक्षु है एकमुक्त है एककैवल्य है एकनित्य है तहां ईशकोजाने ते बद्धमुमुक्षु मुक्त मुक्त कैवल्य कैवल्य नित्यहोत है किंतु ईशके जाने ते बद्धै नित्य जीवहोत है अरु बद्धजीवन जानेते होत है तहां तौ श्रीलक्ष्मणजी केवल जीव ईश कर प्रश्नकीन है अरु बद्धमोक्षकर इहां कछु प्रयोजनै नहीं है तब उत्तरन आयो तहां कोई मतबादी पुनि बोल्यो कि हमकहते हैं कि मायाईशन आपुकहँ जानि न मायाको स्वरूपजानै अरु न ईशको स्वरूप जानै अरुन आपनस्वरूपजानै ताको जीवकही तहां बादीकहै है कि ये भी नहींबनै है काहेते कि जो तीनिहुं को जानै तब का कहैंगे सो तो वही अर्थ है तब उसको उत्तरनआयो तब चुपह्वैरह्यउ है तबद्वैतबादी बोल्यो कि हम कहते हैं कि मायाईश न आपुकहं जानिकही सो जीवमायान ईशकहं अरु आपुकहं जीवजानि हे लक्ष्मण यह हमतुमसे कहा जीव आपुकहं जीवजानि अरु ईशकहं ईशजानि मायानजानि पुनिबादी बोल्यो कि तुमकहा माया न तहां जोपदार्थै नहीं ताको निषेधका करना अरु जो माया नहीं है तौ बद्धमोक्षप्रद क्योंकहा अरु जो मायानहीं तौ प्रेरैगो किसकोइसमें उत्तरनहीं आयो है पुनि द्वैताद्वैत बादी बोल्यो कि हमकहते हैं मायाईश न आपुकहं जानि माया करईश न आपुकहं जानि तब जीवईशद्वैत है अरु मायाईश अपने स्वस्वरूप कहंजानै तब अद्वैत है यह अनादि है तबबादीबोल्यो कि यह कौनकहता है कि दुइकोमतलैकै एकमतसिद्धिकरना येभीनहीं बनैहै तहां हे लक्ष्मणजू अपने अपने देश में सबको मत सिद्ध है कैसे जैसे एकसोना है तिसकोकाहू कुण्डलकरिकै पहिर्यो है अरुकाहू कङ्कणकरिकै पहिरै है अरु काहूमुकुट करिकै पहिर्यो है काहूके में मोतीरत्न जड़े हैं अरु काहूके में केवलरत्नजड़े हैं अरु काहूके केवल सुबर्णै है पर सबसोना है सबकोमत तत्व एकही है परमिलिकै एकनहींहोइ है हेतात ऐसे मतबादी हैं॥ प्रमाणं श्रीमन्महारामायणे पार्वत्युवाचश्लोकः केचिद्दाससखाकेचित्केचिद्ब्रह्म वदन्तिहि किंस्वरूपस्य जीवस्यस्वामि न्कथयविस्तरात् १ श्रीशिवउवाच रामरूपस्यतेजोयंजीवोवेदः प्रभाषितंभेदोमत्तस्यसर्वेषामाचार्याणांबदामिते २ दासवद्येभिजानन्तितेषांदासः इतिस्मृतः येजानन्तिसखातुल्यसखावच्चयथोदितः ३ येपश्यंतिसखीभावंसखित्वंप्राप्नुवंति तेब्रह्मात्मकंचयेजीवंतेषांब्रह्मइतिस्मृतः ४ श्रीरामंयेच हित्वाखलमतिनिरताब्रह्ममन्यद्वदन्तितेमूढानास्तिकास्तेशमगुणरहितासर्बबुद्धातिरिक्तापापिष्ठाधर्महीनागुरुजनबिमुखावेदशास्त्रे-विरुद्धास्तेहित्वा गांगमंभोरबिकिरणिजलंयातुमिच्छंतित्रस्ताः ५ अब अपने प्रश्न को दूसर अर्थ सुनौ यामेंएकदेशलैकै सबकोमत एकजगह सिद्धि होत है मायाईशन आपुकहंजानि कही सोजीव मायाईश न आपुकहं जानि ताते हेतातेतुम आपुहिको जानौ जीवमायाको ईशनहीं है अरु ईशमाया कोईशहै ईश बद्धमोक्षदाताको प्रेरक है सबकेपरे

है अरु सबकी मर्यादा है अरुजीवमें येती सामर्थनहीं है इतनाजीव ईशतेभेद है हेलक्ष्मण देखोतो मैं माया को ईशहौं अरु तुम मायाकेईश नहीं हौ अरु हमारी तुम्हारी सकलएकही है ताते जीव ईश्वर में सकलकही रूपतत्व को भेदहै अरु सर्वज्ञ अल्पज्ञ सामर्थ असामर्थमें भेद है काहेते कि हेतात तुम निर्मलजीवतेअरु ईश्वर ते सकलकर भेदपूछ्यउ है तहां हेतात शोक मोहभ्रम तुम्हारी सबप्रकारते जाइरही है ताते तुम्हारे समान निर्मलजीव अरु मेरे चरणारविन्द मेंरति दूसरनहीं है पर तुम मायाईशनहीं हौ अरु मैं मायाईश हौं इतना भेद है तहां सब मतबादिनको मत एकएक देशलैकैसिद्धिभयो तहां अद्वैतवादी बोल्यो कि हमारोमत सिद्धिभयो काहेते कि श्रीरामचन्द्र परमेश्वर निजमुखते कहते हैं कि जीव ईश्वर की सकल अभेद है पुनि विशिष्टाद्वैतबादी बोल्यो कि हमारोमत सिद्धिभयो है काहेते कि श्रीरामचन्द्र जी निजमुखते कहा है कि जीव माया ईशनहीं है ताते जीव माया ईश्वर त्रेतत्व अखण्ड एकरसहै अरु नित्यजीव ईश्वर की सकलतौ एकही है यहतौहम भी कहते हैं पुनिद्वैतमतवादी बोल्यो कि हमारोमत सिद्धिभयो काहेते कि श्रीरामचन्द्र कहा कि जीव माया ईश नहीं है जो जीवमायाकर ईशैनहीं है तौजीव तत्वसदाशुद्ध है ताते जीवईश्वर येदुइतत्व सदाअखण्ड एकरसहैं अरुईश सामर्थ है चाहैसोकरै हम तौ यहकहते हैं कि जीवमाया न जानै जीवमाया को नजानै एक ईशदुइतत्वहैं पुनि द्वैताद्वैतबादी बोल्यो कि हमारोमत सिद्धिभयो काहते कि श्रीरामचन्द्र निजमुखते कहा कि जीव ईश्वर की सकलएकही है ताते अद्वैत है अरु कहाकि जीव मायाको ईशनहीं है ताते द्वैत है यह प्रकरण रामगीता में है ताते अपनी मतिके अनुसार हमने कहाहै ( १८ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने आरण्यकाण्डे विद्याअविद्या ज्ञानवैराग्य ईश्वरजीवभेद श्रीरामगीतायां वर्णनन्नामसप्तमस्तरंगः ७॥ :: :: :: :: :: :: :: :: :: :: ::

दोहा ॥ रामचरणनवधापरा प्रेमा अष्टतरंग रामचन्द्रकहिलषणते भक्तिबिमलबहुरंग ८ हे तात प्रथम वर्णाश्रमको धर्मकरै तब कोई काल में एकौवैराग्य आवै वैराग्यते योगहोत है योगते ज्ञानहोत है ज्ञानते मोक्षहोत है यह वेदकहते हैं ( १ ) हे तातजाते वेगि द्रवतहौं सो मेरी भक्ति है जो मेरे भक्तनमें सुखदायी है ( २ ) सो मेरी भक्तिस्वतंत्र है ज्यहिविषे कवनौ अवलम्बनसाधननहीं है केवलमेरी कृपा रूप सत्संगति है ज्यहिभक्ति के आधीन योगवैराग्य ज्ञानविज्ञान है ( ३ ) हे तात सो स्वतंत्राप्रेमापराभक्ति है सो सबसुखकी मूलअनूपम है पर जबमनलगाइकै सत्संगकरै अरु संतनकी सेवाकरै तब संत अनुकूलकहीप्रसन्नहोहिं तब मेरीभक्ति प्राप्तिहोई ( ४ ) हे तात भक्ति के साधनसुनो नवधाभक्तिताई साधन हैं तहां साधन सिद्धिएकही है परसुगम है ज्यहिकेकियेते प्राणीमीको प्राप्तिहोत है अरु प्रेमापरास्वतंत्रा है केवल मेरी कृपा

**चौ० ॥ धर्मतेबिरतियोगतेज्ञाना ज्ञानमोक्षप्रदवेदबखाना १ जातेवेगिद्रवौंमैंभाई सोममभक्तिभक्तसुखदाई २ सोस्वतन्त्रअवलम्बनआना ज्यहिआधीनज्ञानविज्ञाना ३ भक्तितातअनुपमसुखमूला मिलहिजो सन्तहोहिंअनुकूला ४ भक्तिकेसाधनकहौंबखानी सुगमपन्थम्वहिंपावहिंज्ञानी ५ प्रथमहिंबिप्रचरणअतिप्रीती निजनिजकर्मनिरतश्रुतिनीती ६ यहिकरफलमनविषयबिरागा तबममचरणउपजअनुरागा ७ श्रवणादिकनवभक्तिदृढ़ाहीं ममलीलारतिअतिमनमाहीं ८ सन्तचरणपङ्कजअतिप्रेमा मनक्रमबचन** * * * * *

ते प्राप्तिहोति है जहां मेरीकृपा सत्संगहै ( ५ ) हे तात सुनहु प्रथम ब्राह्मण के चरण में प्रीतितब उनकी प्रसन्नताहोई तबवेदकी रीतिते अपने धर्म कर्म करिबेमें दृढ़होइहै तबमुनिजन आशीर्बाददेते हैं कि वैराग्यसंयुक्त श्रीरामभक्ति तोकोहोइ ( ६ ) हे तात स्वधर्म यह प्रथम भक्ति है १ पुनित्यहिकरफलमनविषयते वैराग्य यहद्वितीयभक्ति २ तब मेरेचरणारविंद में अनुरागको अंकुरउठैहै यहतृतीयभक्ति ३। ( ७ ) अरु श्रवणादिक नवधाभक्ति दृढ़करिकैजानै श्रवणकीर्तन स्मरणपादसेवन अर्चनबंदनसख्यदास्य आत्मनिवेदन नवौंमिलिकै एक वोचतुर्थभक्ति ४ पुनि मेरी लीलाविषे रति अतिशय है यह पंचमभक्ति है ५ लीलाकही बाललीलाकुमारलीला पौगंड पुनि आदि किशोर बिवाहलीला

बनलीला संग्राम लीला इत्यादिक मेरेलीलाचरित्र में तनमन वाणीतेरतिहोय यहपंचमभक्ति ( ८ ) पुनिसंतके चरणकमलकी सेवाविषे अतिप्रीतिहोइ यहषट्भक्ति ६ अरु मनक्रमबचन करिकै मेरेभजन में दृढ़नेमहोय गुरुमंत्र पुरश्चरणकरना यहसप्तमभक्ति ७ पुनिभजनकही मेरीप्रतिमाकीसेवा अरु मोरेदासन कैसेवा अरु मेरीकथाकहना सुनना अरु मोरनाम नेम करिकैजपै यह अष्टमभक्ति ( ९ ) अरु गुरु पितु माता पतिबंधुदेवता सबमोहींकोजानै दृढ़करिकै मोरिसेवाकरै यहनवमभक्ति ( १० ) पुनिमेरो गुणगावतसंते शरीरपुलक गद्गदवाणीहोइ पुनिनेत्रनमें जलभरिआवै ( ११ ) अरु कामादिक कही काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्यदंभादिक अरुमदकही आठजाति कुलरूप युवा धन बिद्या महत्व अरु वैराग्य इहां यह अष्टमद हैं सो कामादिक मदादिक जिनके बाह्यान्तर नीकीप्रकारते रहे हैं अरु मेरे प्रेमलक्षणामें मति है हे तात त्यहिके हृदय में मैं निरन्तर बसतहौं यहदशधा

भजनदृढ़नेमा ९ गुरुपितुमातुबन्धुपतिदेवा सबम्वहिंकहंजानैदृढ़सेवा १० ममगुणगावतपुलकशरीरा गद्गदगिरानयनबहनीरा ११ कामादिकमदम्भनजाकेतातनिरन्तरबसमैंताके १२ दो०॥ बचनकर्ममनमोरगति भजनकरहिंनिष्काम तिनके हृदयकमलमहँकरौं सदाबिश्राम १३॥ * * * * * * * * *

चौ० ॥ भक्तियोगसुनिअतिसुखपावा लक्ष्मणप्रभुचरणनशिरनावा १ यहिबिधिगयेकछुकंदिनबीतीकहतबिरागज्ञानगुणनीती २ सूर्पनखारावणकीबहिनी दुष्टहृदयदारुणजिमिअहिनी ३ पञ्चबटीसोगइयकबारा देखिबिकलभइयुगुलकुमारा ४ भ्राता पिता * *

भक्ति कहिये ( १२ ) दोहार्थ ॥ पुनि मनकर्म बिषे जिनके एकमोरिगति है अरु बाह्यान्तर विषे दूसरिगतिनहीं है अरु निष्काममोरि भक्ति करते हैं सहजानन्द एकरस हैं सोवत जागत उठत बैठत चलत एकरस मोहिविषेसहजानन्दबृत्ति अखण्डलागिहै हेतात तिनकेहृदयकमलमें सदाबिश्राम करौं यहिको एकादश भक्ति कहिये ( १३ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसने आरण्यकाण्डे भक्तियोगबर्णननामअष्टमस्तरंगः ८॥

दोहा ॥ नवमसमग्रतरंगमें सूर्पनखाअँगभंग रामचरणगइखरनिकटकहिरिपुसकलप्रसंग ९ हे पार्वती भक्तियोग सुनिकै श्रीलक्ष्मणजू अति सुखपावते भये श्रीरामचन्द्र के चरणन में शिरनावतेभये ( १ ) ज्ञान वैराग्यनीतिगुण कहतसन्ते यहिप्रकारते कछुदिन बीततभये ( २ ) तहां सूर्पनखा रावण कै बहिनि है सो कैसी अतिदुष्ट है जैसे सर्पिणी ( ३ ) सो सूर्पनखापंचबटी को एकबार जातिभई है तहां दूनौंकुमारनकी अतिशोभा शृंगारमयमूर्त्ति देखिकै मोहिकै बिकलह्वइगई है ( ४ ) हे उरगारि स्त्रीकै यहरीति है कि जो मनोहर पुरुषहोइ भ्राताहोइ पुत्रहोइ तौ कामदृष्टिकरिकै निरखती है जिनकै कि कामदृष्टि अनुचित है तहां कुमारन को देखिकै कसनमोहिजाइ ( ५ ) सो द्वौ कुमारन को देखिकै कामासक्तह्वइकै बिकल है गई मनको न रोकिसकी है कैसे जैसे रबिकोदेखिके रवि की मणिद्रवत है रविकी मणिकही ज्यहिविषे सूर्य के सम्मुख भये अग्नि निकसत है किंतु एकसूर्यमणि होती है जब सूर्यके सन्मुखकरै तब सुबर्णद्रवत है ( ६ ) दोहार्थ॥ अधम निश्चरी अति कुटिल मोहिगई है सांचो अपनो उपहास करिवेको चली है हे खगेश भवितब्यता के बश निशिचरन के नाशकेकारण होते हैं वे नाशहुआ चाहते हैं ( ७ ) चौ० ॥ अति सुन्दर रूपधरि कै श्रीमचन्द्रके समीप जातिभई है बहुतमुसुकाइ कै बोलतभई है ( ८ ) यह कहती भई कि न तौ तुम्हारे समान पुरुष सुन्दर गुणवान् है अरु

होइबिकलसकमनहिंनरोकी जिमिरविमणिद्रवरबिहिबिलोकी ६ दो० ॥ अधमनिशा-पुत्रउरगारी पुरुषमनोहरनिरखतिनारी ५ चरिकुटिलअतिचलीकरनउपहास सुनुखगेशभावीप्रबल भाचहनिशिचरनाश ७ चौ०॥ रुचिररूपधरिप्रभुपहँजाई बोलीबचन बहुतमुसुकाई

**८ तुमसमपुरुषनमोसमनारी यहसँयोगबिधिरचाबिचारी ९ ममअनुरूपपुरुषजगनाहीं देख्यउंखोजिलोकतिहुंमाहीं १० तातेअबलगिरहिउंकुमारी मनमानाकछुतुमहिंनिहारी ११ सीतहिंचितैकहीप्रभुबाता अहैकुमारमोरलघुभ्राता १२ गई-**

न तौ मोरी समान नारि है त्रैलोक्य विषे गुणरूपवान् यह संयोग बिधातैं बिचारिकै रचा है ( ९ ) तहां मोरे अनुरूप पुरुषनहीं हैं मैं तीनिउलोक बिषे ढूंढ़िआइउंहौं ( १० ) तहां जब तीनिउ लोकविषे मेरे अनुरूपपुरुषन ठहरयो ताते अबताई कुमारिरहिउंहौं तुमको देखिकै कछुमन माना है ताते तुम मोर बिवाहकरौ देखिये तौ राक्षसी कैसी मिथ्यायुक्ति बनाइकै कहती है तामसीबुद्धि परमेश्वर ते छलकरिकै बार्तालाप करती है पर श्रीरामचन्द्र के सम्भाषण ते राक्षसी की बाणीसत्य ह्वैगई है तहां न तौ अनेक ब्रह्माण्ड अरु ईश्वर तत्वविषे श्रीरामचन्द्र के समान उत्तम पुरुष है और जीवतत्व की कविनि चली है अरु ब्रह्माण्डकोश में सूर्पनखाकी समान दुष्टस्त्री नहीं है यह सांचीकह्यउ है सो कह्यो कि तुम्हारी शोभा देखिकै कछुमनमान्यो है तहां यह भी सत्य है काहेते कि यहिकेद्वार कार्यलेना है ताते श्रीरामचन्द्र की इच्छा ते कछुदुष्टभावलिहे ब्यामोहित भई है ताते कछु कह्यउ है ताही ते द्वापरविषे कूबरीहोइगी तब कछुअनुराग को पूर्णफल पावैगी ( ११ ) तब कछु श्रीजानकीजीकी दिशिदेखिकै श्रीरामचन्द्र कहा कि हमारो बिवाहभयो है अरु हमारो भ्राता कुमार है तहां श्रीरामचन्द्र तौ सत्यवादी हैं अरु बिवाह श्रीलक्ष्मणौ को भयो है तहां यहकाकहा है तहां देशकाल अबसरविषे कहाहै यह आरण्यदेशराक्षसन कै राज्य अरु विरोध को काल अरु आपु श्रीजानकी संयुक्त हैं अरु श्रीलक्ष्मणजू अकेल हैं तहां जो स्त्रीरहित पुरुष विदेशमेंहोइ ताकीएकदेश में कुमार संज्ञा है जो वह पुरुष बिवाहकरिलेइ तौ दोषनहीं है तहां ऐसे कहिबे को अवसर है ताते कुमार कहा है किन्तु श्रीरामचन्द्र कहते हैं कि हे सुन्दरी मोर भ्राता ऐसो सुन्दर है कुकही कुत्सित है मार कही काम ज्यहिके रूपके आगे ताते उनकर बिवाहकरु ताते कुमारकहा ( १२ ) तब श्रीलक्ष्मण के पास जातीभई है किन्तु तुम मोकोबरहु तहां श्रीलक्ष्मणजूजाना रावण रिपु त्यहिकी भगनी है तब श्रीरामचन्द्र कीदिशि देखिकै मृदुवाणी बोलतेभये हैं ( १३ ) हे परमसुन्दरी मैं उनकर

**लक्ष्मणरिपुभगिनीजानी प्रभुविलोकिबोलेमृदुबानी १३ सुन्दरिसुनुमैंउनकरदासा पराधीननहिंतोरसुपासा १४ प्रभुसमरथकोशलपुरराजा जोकछुकरैंउन्हैंसबछाजा १५ सेवकसुखचहैमानभिखारी ब्यसनीधनशुभगतिब्यभिचारी १६ लोभीयशचहैचारगुनानी**

दासहौं उनके आधीन हौं तहां मोरे बिवाहकिये ते त्वहूं आधीन ह्वैजायगी तब तोको कौनसुपास होइगो ( १४ ) अरु वै प्रभु हैं सामर्थ्य हैं कोशलपुर के राजा हैं उनकी दुइचारि विवाह छाजत हैं ताते तुमउन्हीं के पास जाहु इहां हास्यरसजानव ( १५ ) हे सुन्दरी सेवकह्वैकै जो सुखचाहै तौ कहा है अरु भिक्षुकह्वैकै जो मान चाहै तौ कहा है अरु ब्यसनी जेहैं अपनोशरीरकर ब्यसनचाहतहैं सुन्दरभोजन अरुसुन्दरबस्त्र अरु सुन्दर अलंकार अरु शब्दस्पर्श रूप रस गंध पंचविषय इत्यादिकमें ब्यसनकहीप्रीति येते प्राणी जो धनसंचित कीनचहैं तौ कहांतेहोइ नहोइ अरु व्यभिचारीजेहैंलोलुपझूंठेपरस्त्री द्रष्टापरधनहारीमिथ्यावादी येतेप्राणीजो शुभगति चाहैं तोकहांतेहोइनहोइ ( १६ ) अरु लोभीह्वैकैयशकोचहैअरु चारकही चरगमनविषे होत है तहां जिनको मनचलायमान चंचल ह्वैरह्योहैतेगुनानीकही उत्तमगुणको प्राप्ति होवाचहैं तौ नहींह्वैसकै हैं किन्तु चारकही सुष्टाचरणअरु गुनानीकही अशस्त्र कल्पित गुणकरै तौ सुष्टाचरण नहींहोयहै तहांजो नभके दुहेते दूधनिकसै तौ यह प्राणिनको यहपदार्थोप्राप्ति होइ तहां न तो नभविषेदूध है अरु नइन प्राणिनको यह बस्तुकीप्राप्ति है ( १७ ) ताते हे सुन्दरी हमारे सम्बन्धते तोको क्लेश है ताते उनहीं के पास जाहु तब पुनि श्रीरामचन्द्रके समीप जातीभईहै तब श्रीरामचन्द्र फेरिकहाकि तुमउनहींकेपासजाहु वेतेरीपरीक्षा लेते हैं यहनीति है किपुरुष अपने विषे कन्याकै दृढ़प्रीति करिकै तब अंगीकार कराचाहै तहां तोकोलक्ष्मणजी कोईरीतिते अंगीकार करहिंगे तब लक्ष्मणजीके पास जाति भई ( १८ ) तब श्रीलक्ष्मणजीने कहा कितोको सो बरै जो लज्जाकोतृणके समान तोरिडारै ( १९ ) तबखिसियानिकही

रिसिआइकै श्रीरामचन्द्र के समीप जाइकै भयानकरूप प्रकटतिभईहै ( २० ) तब श्रीजानकीजीको सभय देखिकै श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण के समीप काहूयत्नते फेरि पठायो है अरु अनुजते सैन बुझाइकै कहा कौनि सैन लक्ष्मणजीते बुझायो है तहां तर्जनी अंगुली आकाश विषे घुमाइदीन है यामें का अभिप्राय है

नभदुहिदूधचहतयेप्रानी १७ पुनिफिरिरामनिकटसोआईप्रभुलक्ष्मणपहंबहुरिपठाई १८ लक्ष्मणकहातोहिंसोबरई जातृणतोरिलाजपरिहरई १९ तबखिसियानिरामपहँगई रूपभयंकरप्रगटतभई २० सीतहिसभयदेखिरघुराई कहाअनुजसनसैनबुझाई २१ दो०॥ लक्ष्मणअतिलाघवसोनाककानबिनुकीन ताकेकररावणको मनहुंचुनौतीदीन २२ चौ० ॥ नाककानबिनुभइबिकरारा जनुश्रवशैलगेरुकैधारा २३ खरदूषणपहँगइबिलखाता धिक्धिक्तवबलपौरुषभ्राता २४ तेपूंछासबकह्यासिबुझाई यातुधान

कि आकाश को नाम नाक काटिलेहु अरु तहां आकाशतत्वको इंद्री कान है अरु त्यहिको देवता दिशा है ताते नाककान काटिलेहु संज्ञाजनाइदीन तर्जनी नभ में उठायेते नाकजानबै घुमायेते दिशा देवताकै इन्द्रीकानजानब इहां संज्ञालंकारहै तहां॥ दोहा॥ शूर्पनखागइ रामपहंअतिशयवेषबनाइ रामचन्द्रलखि अनुजदिशि तर्जनि गगन घुमाइ॥ पुनि बरवा रामायणे वेदनाम कही अंगुरिन चितै आकाश शूर्पनखै प्रभुपठई लक्ष्मणपास वेदकही श्रुति नाक अरु आकाशनाक ( २१ ) दोहार्थ तबलक्ष्मणजू श्रीरामचन्द्रके मनकी गति जानिकै अति लाघवकही शीघ्रते वाकी नाक कान काटिलीन मानहु त्यहिकेकर रावणको संग्रामकेहेतुचुनौतीदीन है ( २२ ) चौ० तहां शूर्पनखा नाककान बिनु बिकरार कही बिकलहोती भई है अरु त्यहिके नाक कानते रुधिरचल्यो है मानहु पर्वतते गेरुकैधाराचली है ( २३ ) तब खरदूषणके इहां जातिभई है बिलखाय कही अतिदुख संयुक्त रोदन करतसंते यह कहतीभईकिहे भ्रातातुम्हारे बल पौरुष को धिक् धिक्है ( २४ ) तब तिन पूछा सो सब हवालकहि गई कितुम्हारे जियत हमारो यह हालहै तबते यातुधान पति सुनिकैसेनाकी तयारीकीन्ह ( २५ ) यूथयूथ अनेकनधाये मानहुं कज्जलके पर्ब तनकी अवलिकी अवली सपक्षचलै है पर कज्जलनके गिरिमें कछुसारनहीं है ताते कज्जलगिरि की उपमादीनि है तैसे श्रीरामचन्द्रके बाण पवन अरु कज्जलगिरि राक्षसन को उड़ाइदेहिंगे ( २६ ) नानाप्रकारके बाहन नानाप्रकार के रंग सूकर कूकर श्रृगाल गदहा खच्चर ऊंट हाथी घोड़े रथ इत्यादिक अनेक जाति जाति के बिकरार अरु नानाप्रकारके आयुधलिहे हैं तरवारि बरछी भाला धनुषबाण त्रिशूल मुद्गर गदा चक्र

सुनिसैनबनाई २५ धायेनिशिचरनिकरबरूथाजनुसपक्षकज्जलगिरियूथा २६ नानाबाहननानाकारानानायुधबरघोरअपारा २७ शूर्पनखाआगेकरिलीन्ही अशुभवेषश्रुतिनासाहीनी २८ अशकुनअमितहोतभयकारी गनहिंनमृत्युविबशसबझारी २९ गजहिंतर्जहिंगगनउड़ाहीं देखिकटकभटअतिहरषाहीं ३० कोउकहजियतधरहुदोउभाई धरिमारोतियलेहुछड़ाई ३१ धूरिपूरि नभमण्डलरहारामबोलाइअनुजसनकहा ३२ लैजानकीजाहुगिरिकन्दर आवानिशिचरकटकभयङ्कर ३३ रह्यउसजगसुनिप्रभुकैबाणी चलेसहितश्रीधरधनुपाणी ३४ देखिरामरिपुदलचढ़िआवा बिहंसिकठिनकोदंडचढ़ावा ३५ हरिगीतिका छं० ॥ कोदंडकठिनचढ़ाइशिरजटजूटबांधतसोहक्यों मर्कतशैलपरलसतदामिनि कोटिसोयुगभुजगज्यों ३६ कटिकसेनिषंगबिशालभुजगहि

बन्दूक तोप इत्यादिक अनेकन आयुधलिहे हैं ( २७ ) आगे अट्ठइसचौपाई लैके पैंतिस चौपाईतक अक्षरार्थै जानब ( ३५ ) पैंतिस के आगे छन्दार्थ॥ कहैंगे छन्दार्थ श्रीरामचन्द्र आपु कठिन कोदण्ड त्यहिको चढ़ावतभये अरु शीशविषे जटाबांधतभये हैं सो जटाके जूट बांधतसन्ते कैसे शोभित है जनु सर्कत शैलपर कोटिन दामिनी

लसतकही जगमगाइरही हैं अरु तिनके मध्य में दुइसर्पलपिटे शोभाकोदेते हैं तहां श्रीरामचन्द्र को श्यामस्वरूप मर्कतकही श्यामशैल है अरु दूनोहाथन ते जटाबांधते हैं तहांकर अंगुलिनके नखनकी छटा अरु जटाके अग्रभागकीछटा सोई समूह मनोदामिनी है अरु द्वैभुज दुइसर्प हैं लक्षन शोभा बनिरही है ( ३६ ) पुनि कटिविषे निषंग कसिकै अरु बिशालभुजविषे विशिखबाण सुधारिकै राक्षसन की दिशि श्रीरघुनाथजी देखते हैं कैसे जैसे मत्त कुञ्जरन की थूथनके घटाको सिंह देखैंहैं इहां प्रथमहिं श्रीरामचन्द्र रौद्ररस देखावते भये हैं पुनि माधुर्यरूप देखावैंगे ( ३७ ) सोरठार्थ ॥ हेपार्बतीराक्षसनकीसेना बगमेल कही घोड़े हाथी रथ इत्यादिकनकी बागैं ढीलीकै दौराइकै धरहु धरहु कहत धावतभये हैं श्रीरामचन्द्र को घेरिलीन है जैसे बालसूर्यको राक्षस घेरिलेते हैं ( ३८ ) चौ० पुनि श्रीरामचन्द्र कृपाकरिकै माधुर्यरूप सदाको देखाइकै सब राक्षसन के चित्त ब्यमोहित करिलीनहैतबराक्षस अतिसुन्दर रूपदेखिकै बाण नहींचलाइ सकते हैं निशिचरन कै धारिकही सेना थकित ह्वैगई है ( ३९ ) तब अपने मंत्रिन को बोलाइकैखरदूषण कहतभये हैं कि येतौ कोई राजाके बालकहैं अरु संपूर्ण नरनके

**चापविशिषसुधारिकै चितवतमनहुंमृगराजप्रभुगजराजघटानिहारिकै सो० ॥ आइगयेबगमेलधरहुधरहुधावतसुभट यथाबिलोकि अकेल बालरबिहिघेरतदनुज ३८ चौ० ॥ प्रभुबिलोकिशरसकहिंनडारी थकितभयेरजनिशिचरधारी ३९ सचिवबोलिबोलेखरदूषण येकोउनृपबालकनरभूषण ४० नागअसुरसुरनरमुनिजेते देखेजितेहतेहमतेते ४१ हमभरिजन्मसुनहुंरेभाई देखीनहिंअसिसुन्दरताई ४२ यद्यपिभगिनीकीन्हकुरूपा बधलायकनहिंपुरुषअनूपा ४३ देहिंतुरतनिजनारिदुराई जीवतभवनजाहिंद्वौभाई ४४ मोरकहातुमताहिसुनावहु तासुबचनसुनिआतुरआवहु ४५ दूतनकहारामसनजाई सुनतरामबोलेमुसुकाई ४६ हमक्षत्रीमृगयाबनकरहीं तुमसेखलमृगखोजतफिरहीं ४७ रिपुबलवंतदेखिनहिंडरहीं एकबारकालहुसनलरहीं ४८ यद्यपिमनुजदनुजकुल**          *          *          *          *

शृंगार अतिसुन्दर हैं ( ४० ) नागजे असुर जे सुर जे मुनि इत्यादिकजेते हैं तिनसबको हमदेखाहै अरु सबको जीतिलीन है अरु बहुतनको हति डारा है ( ४१ ) हे भाइहु हमत्रैलोक्यविषे देखा जन्मभरिपर ऐसीसुन्दरता नहीं देखीहै ( ४२ ) हे मंत्रिहु यद्यपि इन भगनीकर कुरूपकीन्ह है तदपि ये अनूपपुरुष हैं बधकरिवे योग्य नहीं हैं ( ४३ ) तुमजाइकै इनतेकहहु कि जो अपनी नारी दुरायो है सो हमको तुरतदेहु अरु कुशल पूर्वक ते जीवत घरै चलेजाहु यह कहहुजाइ ( ४४ ) हमार कहा तिनको जाइ सुनाकैजवाब लैकै शीघ्रआवहु ( ४५ ) हे पार्वती तीनिहुं राजनकैबात श्रीरामचन्द्रते दूतनकहिनिजाइ तब श्रीरामचन्द्र मुसुकाइकैबोले ( ४६ ) कि हे दूतहु हम क्षत्री के बालकहैं बनविषे मृगयाकही सिकारखेलिबेको आयेहैं तहा तुम्हें ऐसे खलमृगन के बधिवेको ढूंढ़ते फिरते हैं ( ४७ ) अरुकैसो बलवन्त रिपुहोइ त्यहिको हम नहींडरते हैं अरु जो काल हमसे युद्धकरैतो एकही बाणमें हम परास्तकरिदेते हैं हम ऐसेहैं ( ४८ ) यद्यपिहममनुजहैं पर दनुजनके कुलकेघालक कही नाशकर्ता हैं अरु खलन के सालकहैं उनके हृदय में सालते हैं अरु मुनिनके पालकही रक्षकहैं ऐसे हमबालकहैं ( ४९ ) अरु जो हमसे लरिवेको तुम्हारे राजनके बलन होइ तो घरको फिरिजाहिं जोकोई समरते बिमुखहोते हैं त्यहिको हमनहीं मारते हैं ( ५० ) हे दूतहु रणविषे चढ़िकै रिपुपर दयाकरिये तो कपटकी चतुराई कहावतिहैयामेंकदराई है ( ५१ ) हेपार्वती तबदूतन श्रीरामचन्द्रकै कहीबातसंपूर्ण यथार्थ तुरंत कहाजाइ तब सुनिकै खरदूषणको उरदहिउठ्यो है अरु महाक्रोध भयोहै ( ५२ ) छंदार्थ ॥ तब खरदूषणक्रोधकरिकै कहते हैं कि हे निशिचर भटहु धाइकै इनको धरहुतब शरचाप

घालक मुनिपालकखलशालकबालक ४९ जोनहोइबलघरफिरिजाहू समरबिमुखमैंहतबनकाहू ५० रणचढ़िकरैकपटचतुराई रिपुपरकृपापरमकदराई ५१ दूतनजाइतुरतसबकह्यऊ सुनिखरदूषणउरअतिदह्यऊ ५२ छं०॥ उरदह्यउकह्यउकिधरहुधावहुबिकटभटरजनीचरा शरचापतोमरशक्तिशूलकृपाणपरिघपरशूधरा ५३ प्रभुकीनधनुषटंकोरप्रथमकठोरघोरभयावहा भेबधिरब्याकुलयातुधाननज्ञानत्यहिअवसररहा ५४ दो०॥ सावधानहोइधायेजानिसबलआराति लागेबरषणरामपरअस्त्रशस्त्रबहुभांति ५५ तिनकेआयुधतिलसमकरिकाटेरघुबीर तानिशरासनश्रवणलगिपुनिछांड़ेनिजतीर ५६ छं०॥ लीलाबारहमात्रा॥

तोमर शक्ति शूल अरु कृपाण अरु परिघ अरु परशा इत्यादिकहथियारन को एकहीबार लैलै राक्षसधावत भये हैं ( ५३ ) तब श्रीरामचन्द्रदेखा कि राक्षसनकी सेना हमारे ऊपरआई तब धनुष के रोदाको टंकोर कीनतहां महाघोर शब्द वहाकही भयदायक होतभयो है सो घोरशब्द सुनिकै राक्षसनकी सेना बधिर अरु व्याकुल ह्वै गई है त्यहि अवसरविषेसंग्रामकर ज्ञाननहीं काहूको रह्यो है ( ५४ ) दोहार्थ ॥ तब निशिचर सावधान ह्वैकै धाये हैं आरातिकही अपने रिपुको सबलजानिकै तब श्रीरामचन्द्र के ऊपर अस्त्र शस्त्र बहुतभांतिकी बर्षाकरनेलगे हैं ( ५५ ) तिन राक्षसन के आयुध अपनेबाण तेकाटिकै तिलसमान करिदीन है पुनि शरासन श्रवणलगि तानिकै आपनो बाणछोड़तेभये हैं ( ५६ ) लीलाछन्दार्थ ॥ बारह मात्रा हैं इसको तोमर भी कहते हैं हे पार्वती जब श्रीरामचन्द्र के कराल बाण चले हैं निशितकही मानहुं अनेक सर्प फुंकरत चले हैं जब श्रीरामचन्द्र समरविषे कोपे तब बिशिख जो बाण हैं निशितकहीपैनअति चले निकाम जो हैं राक्षस तिनके ऊपर किंतु वाणै निष्काम हैं काहेते राक्षसन को निष्कामपद देबे को चले हैं किंतु निष्काम यथा संकल्प उक्तंचहनुमन्नाटके एकश्लोक ॥ तूणीनैककरेणवाणदशधासंधान कालेशतं चापेभूतसहस्त्रलक्षगमनं कोटिश्चकोटिर्बधे अन्तेचार्बनखर्वबाणविबिधैः सीतापतेः शोभितं एतद्बाणपराक्रमस्यमहिमासत्यात्रदानेयथा ( ५७ ) तहां अनेकबाण जो चले हैं सो निशिचरनको नाहींदेखिपरते अरु शरीर में लगिकै घाउह्वैजाते हैं तब निशिचरनकै सेना बड़ेबड़ेवीर मुरिकै भागि चले हैं तब खरदूषण त्रिशिरा जान्यो कि हमारी सेना भागी तब क्रोधकरिकै बोलतेभये कि जो कोई रण ते भागिजाइगो ( ५८ ) त्यहिको हम

तबचलेबाणकराल फुंकरतमानहुँब्याल कोप्यउसमरश्रीराम चलेविशिखनिशितनिकाम ५७ अवलोकिपरतनतीर मुरिचलेनिशिचरबीर भयेक्रोधतीनिउंभाइ जेभागिरणतेजाइ ५८ त्यहिबधबहमनिजपानि फिरेमरणमनमहँठानि आयुधअनेकप्रकार सनमुखतेकरहिंप्रहार ५९ रिपुपरमकोप्यउजानि प्रभुधनुषशरसंधानि छांड़ेबिपुलनाराच लगेकटनबिकटपिशाच ६० उरशीशभुजकरचरन जहँतहँलगेमहिपरन चिक्करतलागतबान धरपरतकुधरसमान ६१ भटकरततनशतखण्ड पुनिउठत

आपने हाथ ते बधैंगे तब यहसुनिकै अपने मन में वीररसमें लज्जितह्वैकैमरणठानिकै फिरतभये हैं तब अनेक आयुध सन्मुखह्वैकै श्रीरामके ऊपर अनेक प्रकार के प्रहार करतभये ( ५९ ) तब श्रीरामचन्द्र जाना कि रिपु परमकोप को प्राप्तिभयो तब प्रभु धनुषबाण संधानकरिकै नराचकही बाण विपुल छांड़ते भये तब अनेक पिशाच राक्षसकटैलागेहैं ( ६० ) कैसेनिशिचर कटते हैं श्रीरामचन्द्र के बाणकरिकै तहां किसूके उर कटते हैं अरु किसूके शीश कटते हैं अरु किसूके भुजकटते हैं अरु किसूके करकहीकलाई कटते हैं अरु किसूके चरण कटते हैं ऐसे खण्डखण्ड ह्वैकै जहां तहां महिविषे कटिकटि परते हैं तहां अदृश्य बाण लागते हैं चिक्कारकरिकै पृथ्वी विषे

गिरिपरते हैं जैसे इन्द्रके वज्रकेपरेते कुधरकही पर्बत खण्ड खण्ड ह्वैकै गिरिपरते हैं ( ६१ ) हे गरुड़ भट सौसौ खण्ड ह्वैकै गिरिपरते हैं पुनि अपनी राक्षसी मायाते पाखण्डकरिकै उठते हैं इहां श्रीरामचन्द्र की इच्छाजानब तहां नभविषे श्रीरामचन्द्र के बाण करिकै अनेकनभुजशीश उड़े उड़े फिरते हैं जैसे पवन की गांठिके जोर वेग से सूखे पत्र उड़े उड़े फिरते हैं जाको एकदेश लोक में बवंडरकही अरु बिना मुण्डके रुण्डनभ भूमि विषे अनेकन धावते हैं ( ६२ ) तहां खग कंक कही गिद्ध अरु काक अरु शृगालकही सियार ते सब मांसहेतु अतिकराल परस्पर कटकटाते हैं ( ६३ ) छन्दार्थ ॥ तहां जम्बुक कटकटाते हैं अरु भूत प्रेत पिशाच जे हैं ते रुधिर मांसभरबे को खप्पर साजते हैं अरु वैताल वीर कराल जे हैं ते अपने को मांस भोजन की आधिक्यता देखिकै हर्षसंयुक्त बीरन के कपालनके ताल बजावते हैं अरु उहै देखिकै योगिनी नाचती हैं ( ६४ ) तहां रघुवीर के बाण जे प्रचंड हैं सो भटनके उर भुज शीश खंड

करिपाखण्ड नभउड़तबहुभुजमुण्डबिनुमौलिधावतरुण्ड ६२ खगकंककाकशृगाल कटकटहिंकठिनकराल ६३ छं० ॥ कटकटहिंजम्बुकभूतप्रेतपिशाचखप्परसाजहीं बैतालवीरकपालतालबजाइयोगिनिनाचहीं ६४ रघुबीरबाणप्रचण्डखण्डहिंभटनकेउरभुजशिरा जहँतहँपरहिंउठिलरहिंधरुधरुकरहिंगिराभयंकरा ६५ अन्तावरीगहिउड़तगिद्ध पिशाचकरगहिधावहीं संग्रामपुरबासीमनहुंबहुबालगुड़ीउड़ावहीं ६६ मारेपछारेउरविदारेविपुलभटकहरतपरे अवलोकिनिजदलविकलभटत्रिशिरादिखरदूषणफिरे ६७ शरशक्तितोमरपरशुशूलकृपाणएकहिबारहीं करिकोपश्रीरघुवीरपरअगणितनिशाचरडारहीं ६८ प्रभु

खण्ड करते हैं जहांजहां परते हैं तहांतहां उठिउठि लरते हैं अरु भयंकरघोरशब्द करते हैं ( ६५ ) तहां बीरनकी आंतैगहिकै बिपुल गीध आकाश को उड़िधावते हैं अरु पिशाच उनकर करगहिकै धावते हैं किंतु पिशाचआंतकर गहिधावते हैं मानो संग्रामसोईपुरहै त्यहिके बहुबालक गुड़िआ कही पतंगउड़ावते हैं ( ६६ ) तहां श्रीरामचन्द्र के बाणनभटनकोमारेअरु पछारे अरु उरको बिदारे हैं तहां बिपुलभट पृथ्वीबिषे परे कहरते हैं तब आपनदल बिचलत मरत भागत देखिकै खर दूषण त्रिशिरादिक भटफिरिकै क्रोधकरिकै श्रीरामचन्द्रके सम्मुखसहायलैके युद्धकरिबेको चलते भये हैं ( ६७ ) तब श्रीरामचन्द्रके निकट जाइकै शर अरुशक्ति अरु तोमरकही मुद्गर अरु कहूं कटारकहते हैं अरु परशुकही फरसा अरु शूल कही त्रिशुल अरु कृपाणकही तरवारिइत्यादिक अस्त्रकही जो फेंकेतेचलैअरु शस्त्रकही जो हाथ के ग्रहण ते चलै सो सब एकहीबार श्रीरामचन्द्र के ऊपर अगणित निशिचर प्रहारकरते भये हैं ( ६८ ) तहां हेपार्वती श्रीरामचन्द्र एकै निमिषमात्र में निशिचरनके आयुध आपने बाणनते खंड खंड करिकै निवारण करिदीन पुनि खरदूषण त्रिशिरादिक अपर सेनापति जे रहे हैं तिनसबनको प्रचारिकै तिनके हृदयविषे दश दश बाण मारतेभये हैं ( ६९ ) तहां वीर महि में परते हैं पुनि उठिउठि श्रीरामचन्द्रते भिरते हैं पुनि गिरते हैं मरते नहीं हैं उठिउठि अनेक मायाकरतेहैं लिंगशरीर ते स्थूल ह्वै जाते हैं हे गरुड़ नभविषे ब्रह्मादिक देवता संग्रामदेखते हैं अरु डरते हैं कि चौदहसहस्त्र राक्षस भट हैं तिनहींको प्रेतकही उपरान्त अमित प्रेत हैं अरु कोशलधनी श्रीरामचन्द्र एक हैं देखिये तौ कर्ताका करत है ( ७० ) हे पार्बती सुरनको अरु मुनिनको भय संयुक्त देखिकै श्रीरामचन्द्र अपनी दिव्य माया अरु अपनोप्रण कृपाकरिकै चरितकरतेभये तहां जब प्रथमहिं राक्षसन श्रीरामचन्द्र को स्वरूप अतिसुन्दर :: ::

निमिषमहुंरिपुशरनिवारिप्रचारिडारेशायका दशदशबिशिखउरमांझमारे सकलनिशिचरनायका ६९ महिपरतउठिभटभिरतमरतनकरतमायाअतिघनी सुरडरतचौदहसहसप्रेतबिलोकियककोशलधनी ७० सुरमुनिसभयप्रभुदेखिमायानाथअतिकौतुककरयउदेखहिंपरस्पररामकरिसंग्रामरिपुदल-

**लरिमर्‌यउ ७१ दो० ॥ रामरामकहितनतजहिंपावहिं पदनिबनिकरिउपायरिपुमार्‌यउ महँकृपानिधान ७२ हरषितबरषहिंसुमनसुरबाजहिंगगननिशान अस्तुतिकरिकरिसबचले शोभितविविधविमान ७३॥** * * * * *

देखातब देखिकै मोहिगये ताते श्रीरामचन्द्र सबराक्षसनको अपनो स्वरूपदेतभये तबदेखहिं परस्पर राम तहां एकएकनको देखते हैं कि येई राम हैं अरु वे देखते हैं कि येई राम हैं ऐसेही आपुस में संग्रामकरिकै सबलड़िमरे हैं ( ७१ ) दोहार्थ॥ तब सबराक्षस यहजानिकै कि येई राम हैं ताते रामरामकहिकै शरीर छोड़तभये हैं इहां निर्वाणपदकही मोक्षस्वरूपमुक्तिको प्राप्तह्वैकै परमपद श्रीरामधाम को प्राप्तभये हैं काहेते प्रथम स्वरूपासक्तभये हैं ताते श्रीरामचन्द्र करुणामय सारूप्य मुक्तिदीन है हे पार्बती यहिउपाय करिकै श्रीरामचन्द्र रिपुदल को एकक्षण में बधिकै परम पददीन काहेते कि श्रीरामचन्द्र कृपानिधान हैं ( ७२ ) तब अतिहर्षतेदेवताश्रीरामचन्द्र के ऊपर फूलनकीबर्षा करतेभये हैं अरु स्तुति करिकै हर्षिकै जयजयकारकरिकै अपने विमानपर शोभित निजनिजभवन को जातेभये हैं ( ७३ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने आरण्यकाण्डे श्रीरामखरदूषणयुद्धवर्णनंनामनवमस्तरंगः ९॥ :: :: :: :: :: ::

दोहा ॥ शुर्पणखालखिखरकिगति गइरावणपहँभीति दशतरंगमहँबिबिधबिधि रामचरणकहिनीति १० जब श्रीरामचन्द्ररिपुनकर समरजीता तब सुर मुनिनकी भय बीतिगई ( १ ) तब लक्ष्मणजू श्रीजानकीजीकोलैआये श्रीरामचन्द्रके चरणारबिन्दबिषे दण्डवत् करतभये ( २ ) तब श्रीजानकीजी श्रीरामचन्द्रकर मृदुगात देखि देखि परम प्रेमपूर्बक लोचननहीं अघात हैं ( ३ ) तहां पंचवटीमें बसिकै श्रीरघुनाथजी सुरमुनिनकेसुखदायक चरित्र करते भये हैं ( ४ ) तब खरदूषण आदिक बीर जोदग्धभयेतिनको धुआं देखिकै कि येतौ सबमरि जरि गये हैं तब शूर्पणखा रावण के इहां जाइकै पुकारत भई है किन्तु धुआं अस बुतिगये सौ देखिकै प्रेरेकही रावण को पठवाचाहति है ( ५ ) तब शूर्पणखा भारी क्रोधकरिकै

**चौ० ॥ जबरघुनाथसमररिपुजीते सुरनरमुनिसबकेभयबीते १ तब लक्ष्मणसीतहिलैआये प्रभुपदपरतहर्षिउरलाये २ सीताचितवश्याममृदुगाता परमप्रेमलोचननअघाता ३ पंचबटीबसिश्रीरघुनायक करतचरितसुरमुनिसुखदायक ४ धुआँदेखिखरदूषणकेरा जाइसुपनखारावणप्रेरा ५ बोलीबचनक्रोधकरिभारी देशकोषकैसुरतिबिसारी ६ करसिपानसोवसिदिनराती सुधिनहिंतबशिरपरआराती ७ राजनीतिबिनुधनबिनुधर्मा हरिहिसमर्पेबिनसतकर्मा ८ विद्याबिनविवेकउपजाये फलश्रमपाठकियेअरुगाये ९ संगतेयतीकुमंत्रतेराजा मानतेज्ञानपानतेलाजा १० प्रीतिप्रणयबिनुमदतेगुनी नाशहिवेगिनीतिअससुनी ११ सो० रिपुरुज**

रावण से बोलतभई अपने देश अरु अपने कोष कही भंडारकै सुरति तैं बिसारि दिहेहै ( ६ ) तैं मदादिक पान करतहसि अरु रातिदिन सोवतहसि अरु तेरे शिर पर आराति कही शत्रु प्रबल सो प्राप्तिभयो है अरु तोकोसुधिनहीं है ( ७ ) हे रावण नीतिबिना राजा नहींरहत है अरु बिना धर्म धन नास्ति है अरु जो सम्पूर्ण सत् कर्मकरै अरु हरिको न समर्पण करैतौ सब कर्म बृथा हैं ( ८ ) हे रावण जे बिद्याको पढ़ते हैं अरु विद्या गान करते हैं अरु उसमें विवेक नहीं उपजावते हैं तिनको पाठ गानश्रम है पाठकही वेद पुराण स्तोत्र इत्यादिक नेम ते पाठकरते हैं अरु तामें बिबेककही जो तत्त्व है ताको धारणा नहीं करते हैं सो केवल श्रम है अरुजो छन्दप्रबन्ध है तिसको रागकरिकै गानकरते हैं अरु तेहिके तत्त्व में अनुराग नहींकरते हैं सो केवल श्रम है ( ९ ) अरु जहां मानहै तहां ज्ञाननष्ट है अरु जहां मदादिक अमल पानकही जे पीवते हैं तहां लज्जानष्ट है अरु यतीजे हैं संन्यासी

विरक्ततेजोदूसरेकैसंगति करैं तौ संन्यासधर्मभ्रष्टह्वैजाइ अरुजोराजाके कुमन्त्रीहोइतौ राज्यभ्रष्टह्वैजाइ इहांखंडान्वयचौपाई उलटिकैअर्थजानब ( १० ) अरुप्रीतिकरिकै मित्रताकरते हैं अरु प्रणय कही नम्रतानहीं है तौसो प्रीतिनिष्ट है अरुजहांमदहै तहांगुणनष्टहै तैसेरावण जहां येती वस्तुनहोइ तहां येते पदार्थनाशहोते हैं यहनीति हम वेदमेंसुनी है ( ११ ) सोरठार्थ ॥ शूर्पणखाकहती है हेप्रभुरिपु कही शत्रुरुजकही रोग अरु

पावकपाप प्रभुअहिगनिय नछोटकरि असकहिविविधबिलाप पुनिलागीरोदनकरन १२ दो०॥ सभामांझपरिब्याकुल बहुप्रकारकहरोइ तोहिंजियतदशकन्धरमोरिकिअसिगतिहोइ १३ चौ०॥ सुनतसभासदउठिअकुलाई समुझायेगहिबांहउठाई १४ कहलंकेशकहसिकिनबाता केतवनासाकाननिपाता १५ अवधनृपतिदशरथकेजाये पुरुषसिंहबनखेलनआये १६ समुझिपरीम्वहिंउनकीकरणी रहितनिशाचरकरिहैंधरणी १७ जिनकरभुजबलपाइदशानन अभयभयेबिचरतमुनिकानन १८ देखतबालककालसमाना परमबीरधन्वीगुणनाना १९ अतुलितबलप्रतापदोउभ्राता खलबधरतसुरमुनिसुखदाता २० शोभाधामरामअसनामा तिनकेसंगनारिइकश्यामा २१ रूपराशिबिधिनारिसंवारीरतिशतकोटितासुबलिहारी २२ तासुअनुजकाटेश्रुतिनासा सुनितवभगिनिकीनउपहासा २३ खरदूषणसुनिलागपुकारा क्षणमहंसकलकटकउनमारा २४ खरदूषणत्रिशिराकरघाता सुनिदशशीशजरेसबगाता २५ दो०॥ शूर्पणखहिसमुझाइकरि बलबोल्यसिबहुभांति गयउभवनअतिशोचबश नींदपरीनहिंराति २६ चौ०॥ सुरनरअसुरनागखगमाहीं मोरेअनुचरकहंकोउनाहीं २७ खरदूषणम्वहिंसमबलवंता तिनहिंकोमारैबिनुभगवंता २८ सुर

पावक अरु पाप अरु आपनप्रभु अरुअहिकही सर्प अरु ऋणी इनको छोटकरिकै न जानिये इनसे गाफिल नरही यहकहि विविध विलापकरिकै रोदनकरनेलगी ( १२ ) आगे दोहाभरेको अर्थ दोहा सहित अक्षरार्थै जानब शूर्पणखासब यथार्थैकहाहै ( २६ ) तब रावण अपनेमनमेंबिचार करतहैकि सुरजे हैं असुरजेहैंनाग खग इत्यादिक जेतेत्रैलोक्यबिषे हैं तेमेरे अनुचरकही टहलूकी बराबरि कोईनहीं हैं ( २७ ) अरु खरदूषण त्रिशिरा मेरेसमान बलवान् हैं तिनको बिनाभगवन्त को मारिसकैहै ( २८ ) तहां मोको अस समुझि परत है किसुर नरके रंजन कही आनंददाता अरु पृथ्वीके भारउतारिबे हेतु भगवंत अवतार लीन्हवह बिशेष है ( २९ ) जोभगवंत अवतार लीन्ह तौ तिनभगवंत से मैं जाइकै बैरकरौं तब भगवंत के बाणसमरबिषे मारते मेरा शरीर छूटै तबमेरी मोक्ष होगी ( ३० ) काहेते मुनिऋषि इत्यादिक जेहैं ते भजनकरिकै भगवत्को प्राप्ति होते हैं अरु मोसे भजन न होई काहेते मेरा शरीर तामसीहै ताते भजनतौ होइ नहीं ताते मन क्रम बचन ते इहै मंत्र दृढ़है कि इनते बैर करौंगोइहां अभिप्राय है श्रीमन्महारामायण को तहां रावण अपने मनमें पूर्वप्रसंगको स्मरण करतभयो कि भगवंत जो श्रीरामचन्द्र हैं तिनकर मैं नित्यप्रियसखा हौं अरु तिनके अनुकूल तिनते बरोबरिक्रीड़ाकरत रह्यो है तिनपूर्वहींपर बिभूतिविषे मोको आज्ञादीन्ह्यउ है कि हे प्रतापी नामसखे तुम प्रकृतिमण्डलको जाहु हम तुम्हारे संग रणक्रीड़ा करहिंगे तहां मोको अससमुझि परतहैकिसोई काल आइकै प्राप्तिभयो है जो इहै निश्चय बिशेषिहोइगो तो यह :: :: :: :: :: :: :: :: ::

रंजनभंजनमहिभाराजोभगवंतलीनअवतारा २९ तौमैंजाइबयरहठिकरऊं प्रभुशरप्राणतजेभवतरऊं ३० होईभजननतामसदेहा मनक्रमबचनमंत्रदृढ़एहा ३१ जोनररूपभूपसुतकोऊ हरिहौंनारिजीतिरणदोऊ ३२ चलाअकेलयानचढ़ितहँवाँ बसमारीचसिंधुतटजहँवाँ ३३ इहाँरामजसयुक्तिबनाई

**सुनहुउमासोकथास्वहाई ३४ दो०॥ लक्ष्मणगयेबनहिंजबलेनमूलफलकन्द जनकसुतासनबोल्यउ बिहंसिकृपासुखकंद ३५ सुनहुप्रियाब्रतरुचिरसुशीला मैंकछुकरबलललितनरलीला ३६ तुमपावकमहंकरहुनिवासा**

मेरा संकल्प है कि हठिकै बैरकरिकै रणक्रीड़ा करौंगो तहां मेरोपरिवाद ऐश्वर्य शरीर सहित श्रीरामार्पण करिकै इनकी इच्छा पूरण करौंगो ताते रावण काहूकी कही नहीं मान्यो है यह आत्मसमर्पण शरणागत कहावत है अरु कदाचित् वह काल नहींप्राप्तिभयो हैं कोई देवता छलकरिकै आयोहोइतौ जीतिलेउँगो ( ३१ ) औ जो कोई नरभूप सुतसमर्थ होहिंगे तौ संग्राममें जीतिकै उनकी नारी हरिलेउंगो ( ३२ ) तब रावण यह बिचारिकै सिद्धांतकरिकै रथपर अकेल चढ़िकै जहांमारीच सिंधु तटरहा तहां को जातभयोहै ( ३३ ) हे पार्बती इहां श्रीरामचन्द्र जैसीयुक्ति बनावा है सो सुन्दरि कथासुनहु ( ३४ ) दोहार्थ ॥ श्रीलक्ष्मणजी बनको मूल फल कंद लेबेको जातभये तब श्रीरामचन्द्र बिहंसिकै श्रीजानकीजी सों बोलत भये हैं ( ३५ ) हे प्रिये सुनहु तुम सुन्दर शीलवान् हौ सो तुमसे कहतहौं कि मैं कछु लीला अतिशयलालित्य कीन्ह चाहतहौं ( ३६ ) ताते हे प्रिये तुमपावकमें निवास करिकै अंतर्भूत हमारे पासरहौ जबलगि निश्चरन करनाश न करौं तबलगि ( ३७ ) तब श्रीरघुनाथजी के चरण कमलहृदयमेंधरिकै अग्निमें प्रवेशकीन तहां अग्नि श्रीरामचन्द्रकेसमीपही अंतर्भूत श्रीजानकीजीको लिहेरह्यउहै ( ३८ ) तब श्रीजानकी आपनो अंश अपनी प्रतिबिम्ब सदृश शोभा शील गुण बिनीतिकहीप्रवीण कृपा दया यथा तथ्य त्यहिस्थान में राखिकै श्रीरामचन्द्र की आज्ञानुकूल अग्नि बिषे अंतर्द्धान होतभई हैं ( ३९ ) हे पार्वती तहां यह मर्म श्रीलक्ष्मणहूने नहींजाना जो कछु चरित श्रीरामचन्द्र कीन है तहां जो कोई कहै कि श्रीलक्ष्मणजू तौ यह चरित्र नहीं जाना तौ कबिन कैसेजाना है तहां कविनके हृदय में श्रीरामचन्द्र अपनी कृपाते जनाइ देते हैं अरु लक्ष्मणजी को येहीते नहीं जनावा है कि यह चरित जानहिंगे तोश्रीजानकी जी बिषे इनको शोच प्रीति आर्तता जाती रहैगी ताते नहीं :: ::

**जबलगिकरौंनिशाचरनासा ३७ जबहिंरामसबकहाबखानी प्रभुपदधरिहियअनलसमानी ३८ निजप्रतिबिंबराखितहँसीता तैसईशीलरूपसुबिनीता ३९ लक्ष्मणहूं यहमरमनजाना जोकछुचरितरचाभगवाना ४० दशमुखगयउजहांमारीचा नाइमाथस्वारथरतनीचा ४१ नवनिनीचकैअतिदुखदाई जिमिअंकुशधनुउरगबिलाई ४२ भयदायकखलकैप्रियबानी जिमिअकाशकेसुमनभवानी ४३ दो०॥ करिपूजामारीचतबसादरपूछीबात कवनहेतुमनब्यग्रअतिअकसरआयहुतात ४४ चौ०॥ दशमुखसकल**

जनावा ( ४० ) हे गरुड़ रावण मारीच के इहां जातभयो है तहां अति स्वार्थरत मारीच के माथनावतभयो नीचनकी येही रीति है आपनस्वार्थ येन केन रीतिसे सिद्धि करते हैं ( ४१ ) हे गरुड़ नीच जे प्राणी हैं ते जोअपनाते नइ चलैं तबजानिये कि यह दुख जरूरकै देइगो तहां नीचकै नवनि दुखदायी होतिही है कैसे जैसे अंकुश अरु धनुष अरु उरग औबिलारी इन कै नवनि दुखदायी है ( ४२ ) हे पार्वती खलकैबाणी बिशेषकै भयदायकहै जैसे आकाशकेफूलतहां आकाशमेंफूलहोतनहीं हैं तैसेखलनकी बाणी में हितकारनहीं है केवलक्लेशैहै किंतु आकाशकेफूल जेताराटुटते हैंकिंतु जोराहु केतु उदयहोत हैं सोसबहीको भयदायकहैं तैसे खलकीबाणी है अरुकहूं अकालके कुसुमपाठ है सो अर्थ अच्छानहीं है ( ४३ ) दोहार्थ॥ तब मारीच रावण की पूजाकरिकै सादर रावणते पूछतभयो हेतात अपुको मन ब्यग्र देखत हौं अरु आपु अकेल आयेहौ सो यह काहेतु है ( ४४ ) तबसब कथा रावण अभिमान समेतत्यहिते कहतभयो रावणअभागा है ( ४५ ) तहां रावण कहत है कि तुम कपटके मृगा ह्वैकै इनते छलकरहु जाते मैं नृपकीनारि हरलेउं ( ४६ ) तब रावण के बचनसुनिकैमारीच बोलतभयो कि हे रावणजिनको नरकहते हौ सो नररूप चराचर के ईश हैं ( ४७ ) हेतातज्यहिके मारेमरी अरु जियाये जीजै त्यहितेबैरनहीं करिबेयोग्य है ( ४८ ) हेतातई दोऊकुमार बिश्वामित्रकी यज्ञराखिबे को गयेरहे तबमोको बिनागांसीके बाणते मारतभये ( ४९ ) त्यहिबाणकेवेगते

मैं यहांते सौयोजन एकक्षणमें आयप्राप्त भयों हौं हेतातातिनतेवैर कियेते भलाई नहीं है (५०) हेतात मेरी कीट भृङ्गकीरीतिहोति भईहैजहांजहांमैं देखौं तहां २ मोको द्वै वीरैदेखिपरैं हैं (५१) अरुहेरावणजो कदा-

कथात्यहिआगे कहीसहितअभिमानअभागे ४५ होहुकपटमृगतुमछलकारी ज्यहिबिधिहरिआनौंनृपनारी ४६ त्यइँपुनिकहासुनहुदशशीशा तेनररूपचराचरईशा ४७ तासोंतातवैरनहिंकीजै मारेमरियजियायेजीजै ४८ मुनिमखराखनगयउकुमारा बिनुफरशररघुपतिम्वहिंमारा ४९ शतयोजनआयउंक्षणमाहीं तिनसनबैरकियेभलनाहीं ५० भइममकीटभृङ्गकीनाई जहंतहंमैंदेखौं दोउभाई ५१ जोनरतातदपिअतिशूरा तिनहिंबिरोधनआइहिपूरा ५२ दो०॥ ज्यइताड़कासुबाहुहतिखंड्यउहरकोदंड खरदूषणत्रिशिराबध्यउमनुजकिअसवरिबंड ५३ चौ०॥ जाहुभवनकुलकुशलबिचारी सुनतजरादीन्ह्यसिबहुगारी ५४ गुरुजिमिमूढ़करसिममबोधा कहुजगम्वहिंसमानकोयोधा ५५ तबमारीचहृदयअनुमाना नवहिंबिरोधेनहिंकल्याना ५६ शस्त्रीमर्मीप्रभुशठधनी * * * * *

चित् इनको नरैमानहुतौभींये महाशूर हैं इनके विरोधते संग्रामविषे पूरिन परैगी (५२) दोहार्थ॥ हे तातजिनताड़का अरु सुबाहुको सहितसेना एकक्षणमें संहारकीन अरु महादेवको कोदंडखंडनकीन है अरु खरदूषणत्रिशिराजो चौदह हजारयोद्धा के संगतिनको अबहीं हालसाल एकक्षणमें नाशकीन है हे तात ऐसेबलिष्ठ मनुष्यनहीं होत हैं (५३) ताते तुमअपनेभवनको जाहु जो अपनेकुलकी कुशलचाहौ तबयहसुनिकै जरिउठ्यउ है मारीचको बहुतीगारी देतभयो है (५४) तबरावण क्रोधकरिकै कहत है हेमूढ़ तैं गुरुकीनाई मोर प्रबोधकरै है कहुजगत् में मेरे समान योद्धा को है (५५) तब मारीच अपने हृदय में अनुमानकीन कि नवप्राणिनतेविरोधकियेते कल्याणनहीं है (५६) सो नव कौन कौन हैं जेशस्त्रबांधे हैं अरु मर्मीकही अपनोगुणअवगुण इत्यादिकजोधर्मजानै किन्तुमर्मीकही कपटघाती २ अरुजोअपनोप्रभुहै ३ अरुशठजेहैं ४ अरुधनीकहीधनमान्जेहैं ५ अरु बैद्यजेहैं ६ अरुबन्दीकहीभाटजेहैं ७ अरुकविजेहैं ८ अरुकोविदकहीपंडितगुणवान्जे हैं ९ इननवतेबिरोधकियेतेहानिहै काहेतेशास्त्रर्थते मारते हैं मर्मीजी अपनागुप्त नहींकहिवे में योग्य सो कहिदेइ अपना प्रभुदेशते निकासिदेइ जसमूर्ख एकांत पाइकै मारै विषदेइ अग्निलगाइदेइ धनवान्द्रव्यकरिकै जो चाहै सो करै वैद्यकछु कुपथ्यकरि देइ बन्दीभाटनिन्दाकरतफिरै कविअगण डारिकै श्लोककवित्त में खराबकरै पण्डित प्रयोगकरै किन्तु सबको अपनेगुणते परास्तकरे ताते याते नवते अवश्यविरोधन करी देशकाल अवसर विचारिकै आपनकार्य्यकरै ताते रावणएक तौ त्रैलोक्यको राजा अरु शस्त्रधारी अरु धनी अरु पण्डित अरु कवि वेदपर तिलक कियो है अरुवैद्यकपढ़े अरु बन्दी सबकैनिन्दाकरै अरुसबमर्म

वैदबंदिकविकोविदगुनी ५७ उभयभांतिदेख्यसिनिजमरणा तबताक्यसिरघुनायकशरणा ५८ उतरदेतम्वहिंबधबअभागे कसनमरौंरघुपतिशरलागे ५९ असजियजानिदशाननसंगा चलारामपदप्रेमअभंगा ६० मनअतिहर्षजनावनतेहीं आजुदेखिहौंपरमसनेहीं ६१ छं०॥ निजपरमप्रीतमदेखिलोचन सफलकरिसुखपाइहौं श्रीसहितअनुजसमेत कृपानिकेतपदमनलाइहौं ६२ निर्वाण * * * *

जानत है अरु शठहै तहां रावण नवों गुणयुक्त है तातेअबजो मैं कछुकहौंतौ मोर बधकरैगो अरु जो मृगहोउंगो तौ श्रीरामचन्द्र मोरवधकरैंगे (५७) तब मारीच अपने हृदय में उभयभांति कही दोऊदिशिते अपनो मरणजान्यो तब श्रीरघुनाथजीके शरणको ताकतभयो है (५८) यह बिचारयोकि उत्तर देतकै यह अभागा मोको बधिहि अब मैं

श्रीरामचन्द्रके बाणते कसनमरौं ( ५९ ) ऐसे अपने जीमें जानि कै रावणके संग मारीच चलत भयो है ज्यहिकें श्रीरामचन्द्रके चरणारविन्दविषे अभंग प्रीति है ( ६० ) मनमें अतिहर्ष है परन्तु रावण को नहीं जनावै है यहआनन्द है कि यहिजीवके परम सनेही श्रीरामचन्द्र को आजु देखौंगो ( ६१ ) छन्दार्थ॥ निजकही यहिजीवके परमसनेही प्रीतमश्रीरामचन्द्र तिनको देखिकै आजु लोचन सफल करौंगो अतिसुखको प्राप्तिहोउंगो अरु जानकी अनुजसमेत कृपानिकेत श्रीरामचन्द्रके पदकमल ज्यहिको सनकादिक ब्रह्मा शिवादिक ध्यावते हैं सो पद आजु मनलाइकै देखिहौ ( ६२ ) निर्वाणकही कैवल्य मोक्षदायक जाकोक्रोध है तहां कैवल्यमुक्ति सुष्कता नित्यकरैहैसो श्रीरामक्रोधते होत है तिन श्रीरामचन्द्रको भक्तजन भक्तिकरिकै अवश्यकै बशकीन है ते श्रीरामचन्द्रसुखके सागर निजपाणिते धनुषबाणकरिकै मोरबधकरहिंगे जो योगिनको दुर्लभगतित्यहिको मैं प्राप्तिहोउंगो ( ६३ ) दोहार्थ॥ जबमैं मृगह्वइकै भागौंगो तबधरकही शरीर मेरे पाछे धनुषबाणधरे मेरेमारिवेको धावहिगो किंतु धरकही धरिबेकोजिनके चरणकी प्राप्तिहेतु मुनिनके मनधावते हैं ते चरणमेरेपाछे धावैंगे अरु में फिरिफिरि अतिसुन्दरगातबारबार बिलोकौंगोताते आजुमेरेसमान धन्यको है कोईनहीं है काहेते अजुयहतन श्रीरामचन्द्रके कार्य में लागिहि यह आत्मसमर्पणशरणागतभक्ति है ( ६४ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने आरण्यकाण्डेरावणमारीचबार्त्ता श्रीरामनिकटगमनबर्णनंनाम-दशमस्तरङ्गः॥१०॥

दोहा ॥ रामचरितमारीचबधरावणयतीपखंड रामचरणसियहरणकहिदशअरुएकसुखंड ११॥ हेपार्बती ऐसेबिचारकरत रावण समेतपंचवटीमें

**दायकक्रोधजाकर भक्तअवशहिवशकरी निजपाणिशरसंधानि सोम्वहिंबधिहिसुखसागरहरी ६३ दो०॥ ममपाछेधर धावतधरेशरासनवान फिरिफिरिप्रभुहि विलोकिहौं धन्यनम्वहिंसमआन॥ ६४॥** * * * * *

**चौ०॥ त्यहिंबननिकटदशाननगयऊ तबमारीचकपटमृगभयऊ १ अतिविचित्रकछुबरणिनजाई कनकदेहमणिरचीबनाई २ सीता परमरुचिरमृगदेखा अंगअंगसुमनोहरवेषा ३ सुनहुदेवरघुवीरकृपाला यहिमृगकरअतिसुन्दरिछाला ४ सत्यसन्धप्रभुबधकरि** * *

प्राप्ति भयउ है तबमारीचकपटको मृगाहोतभयो है ( १ ) अतिबिचित्र वर्णिबे योग्यनहीं है कंचनमय देह है ज्यहिकीलालिमा कही मणिन के बुन्दाजहां जौनेरंगकै मणिचाही तहांतसचित्रबिचित्र है अतिसुन्दर पंक्ति की पंक्ति हेममणिमयऐसीशुभज्यहिकीदेह है ( २ ) ऐसे अंग अंग मनोहरसुन्दरवेषकोश्रीजानकीजीदेखतीभई ( ३ ) श्रीजानकी जी कहती है हे देवरघुबीर कृपालु सुनहुयहिमृगकर अति सुन्दरिछालाहै ( ४ ) हे पार्वती वैदेहीकहती हैं हेप्रभुसत्यसंधकही सत्यसंकल्प यहिकोबधिकै चर्मआनिकैदेहु सत्यसंधजो श्रीजानकी जी कहा है तामें यहध्वनि है किमोर निजस्वरूप अग्नि को सौंप्यहु है अरु मैं त्यहिस्वरूपकी प्रतिबिंब मायाहौं तातेमोरग्रहण जोपूर्वजानकीस्वरूप मेंरहै तैसेयहिनित्यएकरस स्वरूपकोग्रहणबनारहैत्यागनहोइजोमैं आपुको आज्ञादेतिहौं सोमबक्षमाकरिकै समीपलवमात्रको न छूटै आपु सत्यसन्धहौ पुनि लीला उपरांत द्वौस्वरूप एकह्वै रहैं यहअर्थ सम्बन्ध सिद्धि है ( ५ ) तहांश्रीरामचन्द्रसबकारणजानते हैं तबहर्षिकै देवतनकेकार्य्यसँवारिबे हेतुउठतभये ( ६ ) तब मृगकोविलोकिकैकटिविषे पारकरकही मुनि पटकोपटुकातापरतूणबांधतभये अरु करविषेधनुषबाण रुचिर लेतभये ( ७ ) अरु श्रीलक्ष्मणतेसमुझाइकैकहाकि हेतातबनमें निश्चर बहुतफिरत हैं ( ८ ) ताते तुमजानकीजीकी रखवारी करहु अपनो बुद्धिविवेक बलसमयको विचारिकै काहेते हे तात यह जो कञ्चनमृग है त्यहिकरिकै कारण बहुत उठैगो ( ९ ) तब हेपार्वती प्रभुको बिलोकिकै मृगभाजिचल्यो है तबश्रीरामचन्द्र धनुषबाण साजिकै मृगाके पाछे धावते भये हैं ( १० ) देखिये तौ ज्यहिको निगम नेतिनेतिकरिकै गावत हैं अरु शिवादिकनकेध्यान में नहीं आवते हैं ते मायामृगकेपाछे धावतभये हैं यहचरित कौनजानि :: :: :: :: :: ::

येहीआनहुचर्मकहतिबैदेही ५ तबरघुपतिजानासबकारन उठेहर्षिसुरकाजसँवारन ६ मृगविलोकिकटिपरिकर बांधा करतलचाप रुचिरशरसांधा ७ प्रभुलक्ष्मणहिंकहासमुझाई फिरतबिपिननिशिचरबहुभाई ८ सीताकेरिकरेहुरखवारी बुधिबिबेकबलसमय बिचारी ९ प्रभुहिविलोकिचलामृगभाजी धायेरामशरासनसाजी १० निगमनेतिशिवपारनपावा मायामृगपाछेस्वइधावा ११ कबहुंनिकटपुनिदूरिपराई कबहुंकप्रकटकबहुंदुरिजाई १२ प्रकटतदुरतकरतछलभूरी यहिबिधिप्रभुहिंगयोलैदूरी १३ तबतकिरामकठिनशरमारा धरणिपरयउ उकरिघोरचिकारा १४ लक्ष्मणकरप्रथमहिंलैनामा पाछेसुमिरयसिमनमहँरामा १५ प्राणतजतप्रकटयसिनिजदेहा सुमिरयसिरामसमेतसनेहा १६ अंतरप्रेमतासुपहिंचाना मुनिदुर्लभगतिदीनसुजाना १७ दो० ॥ विपुलसुमन * * * * * * * *

सकै है ( ११ ) कवहूं तौ मृग दूरिभागिजात है अरु कबहूं निकट आवै है कबहूंप्रकटतहै कवहूंछिपिजात है ( १२ ) तहां प्रकटतदुरतमें अनेकछलकरत प्रभु को दूरिलैजात भयो है ( १३ ) तवतकिकै रामचन्द्र कठिनबाण मारतभये हैं तब घोरपुकार करिकै मारीच पृथ्वी में गिरतभयो है ( १४ ) प्रथमहिं श्रीलक्ष्मणजी को नामपुकारतभयो पुनि श्रीरामचन्द्रको नामअंतष्करणमें सुमिरतभयो मारीचने प्रथम लक्ष्मणजी को नामक्यों उच्चारण कियो तहां लक्ष्मणजू सर्व जीवन के आचार्य हैं प्रथमबिना आचार्यकी शरणभये परमेश्वरनहीं जीव को ग्रहणकरै हैं ताते प्रथम श्रीलक्ष्मणजी की शरणागतभयो तबश्रीरामचन्द्र परमपददीन्ह किन्तु श्रीराम इच्छाते इहांऐसे सब कारण हैं कि लक्ष्मण इहां आवहिं ( १५ ) प्राणतजतकै अपनो निजस्वरूप प्रकटतभउ अरु स्नेह तमेत श्रीरामचन्द्र को सुमिरतभयो ( १६ ) तब सुजान श्रीरामचन्द्र त्यहिकर अन्तर्गत प्रेमदेखिकै जो मुनिनहुं को दुर्लभगति है सो देतभये ( १७ ) दोहार्थ ॥ तहां हे पार्वती विपुलदेवताश्रीरामचन्द्र के ऊपर फूल वर्षते हैं श्रीरामचन्द्र के गुणगाथगावते हैं अरु यह कहते हैं कि देखिये तौ एसे असुरको आपनपदार्थ दीन ऐसे कृपालुदीनबन्धु हैं ( १८ ) श्रीरामचन्द्र मारीचको वधकरिकै तुरन्तफिरे कटिविषे तुणीरकरविषे धनुषबाण वीर रस शोभित है ( १९ ) जब मारीच प्रथमलक्ष्मणजीको नाम लेतभयो तब श्रीजानकीजी आरतबाणीसुनिकै परम भयसंयुक्त लक्ष्मणजी ते बोलतीभई तहां श्रीरामचन्द्र की विचित्र माया को रूप अब श्रीजानकी जी हैं ते चाहैं सो कहैं करैं ( २० ) तहां लक्ष्मणजी :: :: :: :: :: ::

सुरबरषहिं गावहिंप्रभुगुणगाथ निजपददीनअसुरकहँ दीनबंधुरघुनाथ १८ चौ० ॥ खलबधितुरतफिरेरघुवीरा सोहचापकरकटितूणीरा १९ आरतगिरासुनीजबसीताकहलक्ष्मणसनपरमसभीता २० जाहुबेगिसंकटअतिभ्राता लक्ष्मणविहंसिकहासुनुमाता २१ भृकुटिबिलासस्रृष्टिलयहोई सपन्यहुसंकटपरैकिसोई २२ मर्मवचनसीतातबबोली हरिप्रेरितलक्ष्मणमतिडोली २३ बनदिशि देवसौंपिसबकाहू चलेजहांरावणशशिराहू २४ शून्यबीचदशकंधरदेखा आवानिकटयतीकेवेषा २५ जाकेडरसुरअसुरडयराहीं निशिननींददिनअन्ननखाहीं २६ सोदशशीशश्वानकीनाई इतउतचितैचलाभडिहाई २७ इमिकुपंथपगदेतखगेशा रहन * * * * *

कर नाम जब मारीच कहत भयो तब श्रीजानकीजी सुनिकै कहतभई कि तुम्हारे भ्राताको बड़ासंकट परयउहै तुमको पुकारते हैं तुम शीघ्रजाहु तब विहंसिकै लक्ष्मणजी ने कहा हे मातुसुनहु ( २१ ) जिन श्रीरामचन्द्र की भृकुटी के विलास ते अनेक ब्राह्मांड उत्पत्ति पालन प्रलय होते हैं ते श्रीरामचन्द्र सबजीवनके संकटके हरैयातिनको सपन्यहु संकटनहीं है ( २२ ) तब श्रीजानकीजी लक्ष्मणजीको मर्मवचन कहती भई काहेतेमाया रूप हैं अरुचरित्रकीनचाहती हैं तातेलक्ष्मणजी से यहमर्म कहाकि तुम्हारेमनमेंहमारेलेबे

की इच्छाहै तब श्रीरामचन्द्रकी इच्छातेलक्ष्मणजीकीमतिफिरिगई श्रीरघुनाथजीकीधौंकाइच्छा है ( २३ ) तबलक्ष्मणजी बनके दिशनके देवतनको सौंपिकै रावणशशि है त्यहिकेसम्पूर्णग्रसिबेकोराहु श्रीरामचन्द्रतिनके पासजातभये ( २४ ) हे पार्वती लक्ष्मणजी श्रीरामचन्द्र के पासगये जब रावणने शून्यस्थान देखातब यती कही संन्यासीका वेष करिकै श्रीराजनकीजीकेसमीप आवतभयो ( २५ ) हेपार्वती ज्यहि रावणकेडरते सुर असुरडरिकै रातिमेंनींदअरु दिनमेंभोजननहींकरिसकैं ( २६ ) वहीरावण इतैउतै चितैकैकही कि रामलक्ष्मणतौ नहींआवत हैं ताते सबदिशि देखिकैचलतभयो है सोरावण जैसेकुत्ताभड़िहाई करिबको चलै है तैसे चलत भयो है ( २७ ) हेगरुड़इमि कही श्वानकीनाईं कुपन्थमें पददेतभयो है त्यहिक्षण तनको तेज अरुबलबुद्धि नाशभई है ( २८ ) तहांरावण श्रीजानकीजीसे नानाविधि की कथा सुनावतभयो तहां यह अभिप्राय है कि रावण ने जो यतीकर वेष कीन्ह है तहां यती को धर्म्म भिक्षामांगना है ताते रावण श्रीजानकीजी से यह मनमें भिक्षामांगत है काहेते मेरी तामसी देह है मोसे कछु ऊपरते करतकहत बनैगो सो आपु क्षमाकरब मैं केवल मनते आपुकी शरणहौं असकहिकै राजनीति भयप्रीति कहि कहि देखावतभयो ( २९ ) तब श्रीजानकीजी ने कहा हेयती गोसाईं तूतौ संन्यासी

तेजतनबुधिलवलेशा २८ नानाविधिकहिकथासुनाई राजनीतिभयप्रीतिदेखाई २९ कहसीतासुनुयतीगोसाईं बोलहुवचनदुष्ट की नाईं ३० तबरावणनिजरूपदेखावा भईसभयजबनामसुनावा ३१ कहसीताधरिधीरजगाढ़ा आयगये प्रभुरहुखलठाढ़ा ३२ जिमिहरिवधुहिक्षुद्रशशचाहा भयसिकालबशनिशिचरनाहा ३३ सुनतवचनदशशीशरिसाना मनमहँचरणबंदिसुखमाना ३४ दो०॥ क्रोधवंततबरावण लीन्ह्यसिरथबैठाइ चलागगनपथआतुर भयरथहांकिनजाइ ३५ चौ०॥ हाजगदीशवीररघुराया क्यहिअपराध * * *

है पर वचन दुष्टकी नाईं कहत हौ ( ३० ) तब रावण अपनो निजरूपप्रकटतभयो अरु अपन नामकहतभयो कि मैं रावणहौं परआपुकी शरण बिषे आपनकल्याण विशेष देख्यउंहै अरु मैं बीररसते आपुकी शरणहोतहौं ताते सबचूक क्षमाकरब तुममेरी माताहौ तबजानकीजी नामसुनत भयको प्राप्तिभई हैं ( ३१ ) तब श्रीजानकीजी गाढ़धीरज धरिकैकहती हैं हे खल घरिक ठाढ़रहु प्रभुको आवनेदे तब तोरखलत्व निकरिजाइगो ( ३२ ) हे निश्चरनकेनाह अबमैं जानातैं कालकेवश भयसि तोरिमतिभ्रष्टभई है तैं हमका चाहतहसि जैसे सिंहके बधूको शशचाहै है ( ३३ ) यह श्रीजानकीजी को वचन सुनिकै ऊपरत बहुत रिसातभयो अरु अंतष्करणमें श्रीजानकीजी के चरणवंदिकै हृदय में राखिकै अति सुखको प्राप्तिभयो मनमें यह कहतभयो कि हे मातु मैं यहै चाहत हौं कि श्रीरामचन्द्र के हाथनते शीघ्रमोर कालहोइ ( ३४ ) दोहार्थ ॥ हे गरुड़ तब रावण क्रोधवन्त ह्वैकै जामें श्रीजानकीजीको छुइ न जाइ ताते जहांतक श्रीलक्ष्मणजी धनुष के गोसाते श्रीजानकीजीकी रक्षाहेतु रेखखँचाइगये हैं सो रेखाभरि पृथिवी उखारिलियो काहेते यामेंबहुत हेतुहैं मुख्य तौयहहै कि श्रीजानकीजीकी मातापृथिवी है जाते माताकी गोद में सदाबैठी रहैं ताते कुशादेके आसनभरि पृथिवी उखारिकै रथपर बैठावतभयो रथपर बैठायकै लंकाको लैचलतभयो आतुरनभ पथविषे भयते रथनहीं हांकिजाइ है तहां कोई कहते हैं कि मायारूप श्रीजानकीजी लंका कोनहींगईं साक्षात् गई हैं जो मायारूप श्रीजानकीजी लंकाकोजाहिं तौ सम्पूर्णलीला अरु श्रीरामचन्द्र मायावी ह्वइजाहिं ताते साक्षात् गई हैं अरु लक्ष्मण को अपमानकीन है ताते भगवतापराधभयो ताते लंकाको गई हैं तहां यह दूनौं कहना नहीं सम्भवै है काहेते कि रावणने केवलअपनी मुक्तिके हेतु यह उपायकीन है तहां श्रीरामचन्द्रकेबल विद्यामाया करिकै जीवनको मोक्षदेते हैं तहां विद्यामाया श्रीजानकीजी को प्रतिबिम्ब माया है सो लंकाको रावण लैगयो है अरु साक्षात् श्रीजानकीजीको लैजाबे को अधिकारी रावण नहीं है यह ध्रुवजानब साक्षात् श्रीजानकीजी के प्राप्ति के अधिकारी श्रीजनकदशरथ हैं अरु ज्यहिजीव को विद्यामायाभई त्यहिको तौ श्रीरामचन्द्र आपुही चलिकै मोक्षदेते हैं किन्तु जहांवेहैं तहांईस्वाभाविक मोक्षदेते हैं काहेते विद्यामायाआत्माके गुण हैं अरुश्रीजानकीजी अरु श्रीरामचन्द्र एकपल नहीं भिन्नहोते हैं देखिये तौसतीके मोहके प्रसंग में श्रीजानकीजीको खोजतरहे हैं पुनि

शृंगारमूर्त्ति श्रीजानकीजी संयुक्त सतीको दर्शनदीन है पुनि अपनी परमदिव्य लीलाते श्रीजानकीजी को अपनेविषे अन्तर्द्धान करिलीन है पुनि उहै लीला करनेलगे हैं तहां सब लीला स्वरूप सत्य नित्य ब्रह्ममयजानिये अरु जोकोई कहै कि श्रीजानकीजी भगवतापराध ते लंका को गई हैं तहां श्री जानकीजी के लक्ष्मणजी शिष्य हैं तहां गुरु अपनी इच्छाके कर्त्तव्यविशेशिष्यकी शिक्षाहेतु तिरस्कार करै तौ अपराध कहा है यहसब श्रीराम इच्छा अमेट है चाहै सो करै तब रावण रथपर बैठाइकै लैचलतभयोतहां माघशुक्ल पक्ष अष्टमी को श्रीजानकी जी को रावण हरयउ है मत अग्निवेस रामायण को अरु कोई मुनीश्वर के मत में चैत्रशुक्लाष्टमीकोहरयउ है तहां प्रमाण कूटश्लोक ॥ अर्द्धरात्रौदिनस्यार्द्धे अर्द्धेचन्द्रेऽर्द्धभास्करे रावणेनहतासीताकृष्णपक्षेसिताष्टमी १ तहां पित्रिनको एकमासको दिनरात्रि होत है तहां अमावश अमावश महीना कोई मुनिमानते हैं तहां मनुष्यन को कृष्णपक्ष सो पित्रिनको एकदिवस होत है अरुशुक्लपक्ष रात्रीहोत है ताते अष्टमी पित्रिनकी अर्द्धरात्रि है अरु देवतनको षट्मास दिवस षट्मास रात्रिहोत है तहां कर्कसंक्रांतिते लै धनकीसंक्रांति ताईं रविदक्षिणायन सो रात्रिहोत है अरु मकरकी संक्रांति ते लैकै मिथुन की संक्रांतिताईं रविउत्तरायन सो दिवसहोत है तहां चैत्रशुक्लाष्टमी मीनकीसंक्रांति ताईं देवतनको मध्यदिवस होत है तहां आठौं चन्द्रमा अरु मध्याह्न में सूर्य अरु पित्रिनको कृष्णाष्टमी अरु नरनकीशुक्लाष्टमी बिन्दानामे मुहूर्त्तविषे श्रीजानकीजी लंकाविषे गई हैं तहां माघशुक्लाष्टमी अरु चैत्रशुक्लाष्टमी तहां मास घटे बढ़े द्वैमुनिको एकहीमत है किधौं कल्पभेद है ( ३५ ) श्रीजानकीजी कल्पनासंयुक्त श्रीरघुनाथजी को पुकारत चलीजाती हैं कि हे जगत् विषे एकवीर क्यहि अपराध ते दयाबिसारिदियो है ( ३६ ) हे आरत हरण शरणके सुखदायक हारघुवंशकुल कमल त्यहिकेदिनेश सो मोको काहे को बिसारयो है ( ३७ ) हालक्ष्मणजीतुम्हार कछु दोषनहीं है मैं जो तुम्हार तिरस्कार अरु रोषकीन्ह तेहीकर :: :: ::

**बिसारयउदाया ३६ आरतहरणशरणसुखदायक हारघुकुलसरोजदिननायक ३७ हालक्ष्मणतुम्हारनहिंदोषा सोफलपायउंकीन्ह्यउंरोषा ३८ विविधविलापकरतिवैदेही भूरिकृपाप्रभुदूरिसनेही ३९ बिपतिमोरिकोप्रभुहिसुनावा पुरोडासचहरासभखावा ४० सीताकैबिलापसुनिभारी भयेचराचरजीवदुखारी ४१ गीधराजसुनिआरतबानी रघुकुलतिलकनारिपहिचानी ४२**

फलपायो है इहां जो यहकहिये कि केवल लक्ष्मण के तिरस्कारही कोफल है तो रघुनाथजी की दीनदयालुता करुणानिधानतामें दूषणहोइगा काहेते कि श्रीरघुनाथजीको भी कहा है कि मोरेऊपर दया क्यों बिसारिदियो है अरु पूर्वहीं श्रीरघुनाथजी श्रीजानकीजीसे यहसब चरित्र कहा है ताते लक्ष्मण के तिरस्कार को सिद्धांत इहां नहीं है यह विरह की दशा है बिना बिलापकिहे विरहनहीं सिद्धिहोत है ( ३८ ) हे पार्वती बैदेही विविध विलापकरती हैं अरु यह कहती हैं कि हे श्रीरामचन्द्रतुम विषे तौ मोपर भूरिकृपा सनेह है मोसे क्योंदूरिभये ( ३९ ) मोरिविपति प्रभुको को सुनावै देखिये तौ बड़ाआश्चर्य है कि पुरोडासकही देवतन के यज्ञको भाग सो रासभकही गदहा खावाचाहत है ( ४० ) श्रीजानकीजीकर विलापसुनिकै सम्पूर्ण चराचर जीव दुखित भये हैं त्यहिकालमें चरजीवन के आहारछूटिगये अरु तृण के पात फूलफल झरिगये शिलादिक तपिउठे हैं ( ४१ ) गीधराज जो जटायू है त्यहिने आरतबाणी सुनिकै पहिचाना कि ये तौ रघुकुलतिलक श्रीरामचन्द्र की नारि श्रीजानकी हैं काहेते प्रथमहिं पंचबटी आवतसन्ते श्रीरामचन्द्र श्रीजानकीजी श्रीलक्ष्मण से मिलाप भयो है ( ४२ ) गीधराज यहविचारतभयो कि अधम निश्चर श्रीजानकीजी को लीन्हेजात है जैसेम्लेच्छके बशकपिलागऊपरै है ( ४३ ) हेसीतापुत्री चिन्तानकरसि यातुधान पतिकर नाशकरौंगो ( ४४ ) हे पार्वती गीधराज रावणके ऊपर कैसे धावतभयो है जैसे पर्वत के ऊपर वज्रछूटैहै ( ४५ ) यह कहतभयो कि रे रे दुष्ट ठाढ़ क्यों नहींहोयहैतैं निर्भय चल्यसि है मोको नहींजानै है ( ४६ ) जब रावण ने गिद्धकोकृतांतकही कालकेसमानआवतदेखा तबमनमेंअनुमानकरत है ( ४७ ) कि यहमैनाकपर्वत तौनहाइकि तौ गरुड़ तौ न होइ काहेते कि मेरे पराक्रमको सहितपतिवह जानतहै सहितपतिकही सहितविष्णु जानते हैं तहां उत्तरकांडे बाल्मीकीये

अधमनिशाचरलीन्हेजाई जिमिमलेच्छवशकपिलागाई ४३ सीतापुत्रिकरसिजनित्रासा करिहौंयातुधानकरनासा ४४ धायोक्रोधवंतखगकैसे छूटैपविपर्बतपहँजैसे ४५ रेरेदुष्टठाढ़किनहोही निर्भयचल्यसिनजान्यसिमोही ४६ आवतदेखिकृतांतसमाना फिरिदशकन्धरकरअनुमाना ४७ कीमैनाककिखगपतिहोई ममबलजानसहितपतिसोई ४८ जानाजठरजटायूयेहा ममकरतीरथछांड़िहिदेहा ४९ सुनतगीधक्रोधातुरधावा कहसुनुरावणमोरसिखावा ५० तजिजानकीकुशलगृहजाहू नाहिंतअसहोइहिबहुबाहू ५१ रामरोषपावकअतिघोरा होइहिसकलसलभकुलतोरा ५२ उतरनदेतदशाननयोधा तबहिंगीधधावाकरिक्रोधा ५३ धरिकचविरथकीन्हमहिगिरा सीतहिंराखिगीधपुनिफिरा ५४ चोंचनमारिबिदारयसिदेहीं दण्डएकभइर्छ्यातेहीं ५५ तबसक्रोधनिशि-

एकबार कोईकालमें गरुड़परचढ़े श्रीविष्णुभगवान् अरु रावणते महायुद्धभयो है ताते भययुक्त कहते हैं अरु कोईकाल में मैनाकपर्वत से भिरयउहै तहां द्वौ जगह समयुद्धभया तातेभययुक्त कहत है ( ४८ ) तबरावणजाना कि श्रीजठर कही बृद्धजटायू है मोरे कर तीरथरूप त्यहिमें शरीरको त्यागैगो ( ४९ ) तबरावणकी बातसुनिकै गिद्धराज आतुरतेक्रोधकरिकै धावतभयो बोल्यो कि हे दुष्टमोर सिखावनसुन ( ५० ) श्रीजानकीजीको तजिकै कुशलते अपनेगृहको जाहुनाहीं तौ हे बहुबाहु यहहालह्वोइहि ( ५१ ) श्रीरामचन्द्रकरक्रोध अग्निरूप त्यहि में त्वहिंसहित तोरकुल पतंगइवभस्म ह्वइजाइगो ( ५२ ) यह गिद्धराजकहा तब रावणने अपनेबलके अभिमानते उत्तरनहीं दियो तबहींगीध अतिक्रोध करिकै धावत भयो ( ५३ ) तबचोंच चंगुलते रावणकेबार धरिकै रथतेपृथ्वीविषे गिराइदीन है अरु श्रीजानकीजी को अंतेबैठाइकै पुनिभिरतभयो है ( ५४ ) चोंच नचंगुलनतेमारिकै देहविदीर्ण करिदीन तबरावणको एकदंडमूर्च्छा आवत भई ( ५५ ) तबनिश्चरनकर राजारावणउठिकै खिसिआवकही क्रोध करिकै कृपाणकाढ़िकै ( ५६ ) गिद्धराजके दूनौपर काटिडारतभयो यह बिचारिकै नहीं मारिडारयउहै कि श्रीरघुनाथजीसेमेरीकर्त्तव्य कहैगो तबपंख काटेते गीधराज पृथ्वी में गिरतभयो अद्भुतकरणी करिकै स्वरूप में चित्तक बृत्तिलगाइकै श्रीरामनामसुमिरै लाग्यउ ( ५७ ) पुनि बहोरिकै श्रीजानकीजी को रथपर बैठाइकै रावणलै चलतभयो पर उताहिल चलतभयोकाहेतेकि हृदयविषे त्रासबहुतहै ( ५८ ) तहां अतिसभीत श्रीजानकीजी

चरखिसियाना काढ़्यसिपरमकरालकृपाना ५६ काट्यसिपंखपराखगधरणी सुमिरिरामकैअद्भुतकरणी ५७ सीतहिंयानचढ़ाइबहोरी चलाउताइलत्रासनथोरी ५८ करतिविलापजातिनभसीता ब्याधबिबशजनुमृगीसभीता ५९ गिरिपरबैठेकपिननिहारी कहिहरिनामदीन्हपटडारी ६० यहिविधिसीतहिंसोलैगयऊ बनअशोकमहँराखतभयऊ ६१ दो०॥ हारिपराखलबहुबिधि भयअरुप्रीतिदेखाइ तबअशोकपादपतर राख्यसियतनकराइ ६२ दो०॥ ज्यहिविधिकपटकुरंगसंग धाइचलेश्रीराम सोछबिसीताराखिउर रटतिरहतिप्रभुनाम ६३॥ * *

विलापकरत चलीजाती हैं जैसे व्याध के बशमृगीपरै है ( ५९ ) वहां रीकमूकपर्वतपर कपिनसंयुक्त सुग्रीव बैठैरहैं श्रीजानकीजीके आरतबचनसुनिकै सुग्रीवादिक कल्पना संयुक्तबोले हेरामहेराम तबयह बचनसुनिकै श्रीजानकीजाना कि कोई श्रीरामजनहै तबकछुपट उतारिकैडारिदीन है ( ६० ) यहिप्रकारते श्रीजानकीजी को लैकै पृथ्वीके आसनसंयुक्त अशोकबाटिकामें राखतभयो अपनेगृहको जातभयो ( ६१ ) दोहार्थ ॥ तबरावण भय प्रीतिनीतिकहिकै देखाइकै हारिपरयउ तहांत्यहिकोबचन श्रीजानकीजीनतौसुन्यो न वहिकीदिशि देख्यौ तब रावण अशोकबाटिका विषे यत्नकराइकै राखतभयो अपनेगृहको जातभयो ( ६२ ) तब श्रीजानकीजी श्रीरामचन्द्रको स्वरूप जो कपटमृगके

पाछेधाये हैं सोईछवि हृदय में रखिकै श्री रामराम जपती हैं ( ६३ ) इतिश्री रामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने आरण्यकांडेगिद्धश्रीजानकी बिरहबर्णनन्नाम एकादशस्तरङ्गः११॥

दोहा ॥ दशअरुदोइतरंगमें रघुपतिविरहबखानि तहँबियोगशृंगार है रामचरणरसदानि १२ हे पार्वती श्रीघुनाथजी ने अनुज को अपने पास आवत देख्यउ तब बाहिजकही ऊपर ते अपने लीला पूर्बक विशेष चिन्ता करते हैं ( १ ) हे तात मोर बचनटारिकै जनकसुताकोअकेलि छोड़ि आयउ सो अच्छा नहींकिह्यउ है ( २ ) मेरे मनमें यहआवत है कि श्रीजानकीजी आश्रमविषे नहीं हैं काहेते कि बनमें निश्चर बहुत फिरते हैं ताते कोई निश्चर हरि लैगयउ है ( ३ ) तब श्रीलक्ष्मणजी चरणगहिकैकरजोरिकै कहते हैं हे तात मोरिकछु खोरिनहीं है ( ४ ) तब श्रीरामचन्द्र अनुजसंयुक्त गोदावरी के तट बिषे आश्रमतहांको जातभये ( ५ ) तब श्रीजानकीजीते बिहीन आश्रमदेखा तब बिकलभये जैसे प्राकृतनर दीनह्वैकै विकलहोइ ( ६ ) इहां वियोग शृंगाररस जानब श्रीरघुनाथजी विरहकरते हैं हा गुणकीखानि हे जानकी हे सीते हे जनकतनया हे मैथिली हे

चौ०॥ रघुपतिअनुजहिंआवतदेखी वाहिजचिंताकीनविशेषी १ जनकसुतापरिहरयउअकेली आयहुताबचनममपेली २ निश्चरनिकरफिरहिंबनमाहीं ममनआश्रमसीतानाहीं ३ गहिपदकमलअनुजकरजोरी कह्यउनाथकछुमोहिंनखोरी ४ अनुजसमेतगयेप्रभुतहँवाँ गोदावरितटआश्रमजहँवाँ ५ आश्रमदेखिजानकीहीना भयेबिकजलसप्राकृतदीना ६ हागुणखानिजानकीसीता रूपशीलब्रतनेमपुनीता ७ लक्ष्मणसमुझायेबहुभांती पूछतचलेलतातरुपाती ८ हेखगमृगहेमधुकरश्रेनी तुमदेखीसीतामृग

प्राणप्रिया रूप की शीलकीब्रत अरु नेमकी अतिपुनीत इहां जानकीकहासीता कहा तहां पुनरुक्ति न जानब काहेते विरह में प्रीतिमें संग्राम में एकशब्द को कइउबार उच्चारणकरै ताको पुनरुक्ति न कही ( ७ ) तहां लक्ष्मणजी श्रीरघुनाथजी को बहुतप्रकार समुझावत भये हे नाथ आपु शोच काहेकोकरतेहौ पर्बतन की कन्दरा अरु जल थल त्रैलोक्यब्रह्माण्डकोश भरे में जहां श्रीजानकी जी होहिंगी तहांते मैं लैआवौंगो आपकी आज्ञाहोइ तौ एकबाण ते त्रैलोक्य भस्मकरिदेउं अरु श्रीजानकीजी तौअखण्ड हैं तिनको आनिदेउं तब श्रीरामचन्द्र कहा कि हे तात यह मैं एकौ बात नहींसमुझतिउं श्रीरामचन्द्र कहा हेलतहु तुम श्रीजानकीजीको देख्यो है हे तरुवरहु तुम श्रीसीताजू को देख्यो है हे बिहंगहु तुम श्रीविदेहतनया को देख्यहु है हे मधुकरहु श्रीजनकलाड़िलीको देख्यउहै हे मृगहु श्रीमैथिलीको देख्यो है हेबनकेदेवतहु तुमभूमितनयाको देख्यो है हेबनकीदेविहु मेरी प्राणप्रियाकोदेख्यो है ऐसही अतिबिरहसंयुक्त श्रीरघुनंदनजू अपनीसुधिबिसराइकै पंक्तिकीपंक्ति चराचरनते बूझतचलेजाते हैं प्रमाणमन्यच्च एकश्लोकभोभोवृक्षाबहु कुसुमयुतावायुनागुंजमाना भोमोश्रेण्याखगमृगगणादेव देवीमरण्या भोभोसर्वे जीवाश्चमहिजलेष्वग्नि बायुर्नभश्च भोभोबिदिशिदिशिचदृष्टा प्राणप्रियाजानकी ( ८ ) पुनिपुनि बिरह के बशउनसे बूझते हैं हेखगमृग मधुकरश्रेणी मेरीप्राणप्यारी मृगनयनी सीताजी तिनकोतुम देख्यो है ( ९ ) इहांउपमेय लुप्तालंकार जानबश्रीरामचन्द्र विरह संयुक्त कहते हैं कि हेजनकनंदनी खंजननयनी शुकनासिका कपोतग्रीव मृगनयनी कही दीर्घनेत्र अरु मीन कही चपलता पुनिखंजन की फिरिकनि अरु मधुपकी अवलिइव भृकुटी अरुअलकहै कोकिलाको ऐसोबोल ऐसीतुम प्रवीण ( १० ) अरु कुन्दकेफूलकीकली त्यहिकी उज्ज्वलता अरु दाड़िमकही अनारकेबीजकी सघनता उज्ज्वलताअरुण

नैनी ९ खंजनशुककपोतमृगमीना मधुपनिकरकोकिलाप्रवीना १० कुन्दकलीदाड़िमदामिनी कमलशरदशशिअहिभामिनी ११ बरुणपाशमनोजधनुहंसा गजकेहरिनिजसुनतप्रशंसा १२ श्रीफलकनककदलिहर्षाहीं नेकुनशंकसकुचमनमाहीं १३ सुनुजानकीतोहिंबिनुआजू हर्षेसकलपाइजनुराजू १४ किमिसहिजातअनखत्वहिपाहीं प्रियावेगिप्रकटसिकसनहीं १५ यहिविधि

कीझलक लिहे ऐसेदशनहैं अरु दामिनीकीद्युतिकोहरत हैं दशनअरु देहअरु शरद्ऋतुके कमलइव नेत्र हैं अरुशरद्को पूर्णचन्द्र तद्वत् मुखहै अहिकीभामिनी नागिनी तद्वत् बेणी बनी है ( ११ ) अरुबरुणकीपाश तद्वत् नेत्रकी कटाक्ष किंतु नाभी अरु मनोजकही कामकी धनुष इव बंकभृकुटी हैं हंसइव गमन है किंतु विवेक है अरु गजकी ऐसी चालमंदमंदहै अरु केहरिकही सिंहकी ऐसीकटिहै हेजानकीजी येसब तेरे अंगअंग की प्रशंसा कही अस्तुति करते हैं ते येते येसब बहुत प्रसन्नभये हैं अब अपनी प्रशंसाकरते हैं मानलिये हैं ताते तुमशीघ्र प्रकटहु ( १२ ) अरु श्रीफलकही बेलकोफल तद्वत्लक्षणाकरै अरुकनककदली तद्वत्जंघहैं हेजानकीजी तेरे विक्षेपतेये सबहर्षितभये हैं काहेते तेरेअंगकी शोभा के आगेइनकी छबिमंद परिगई है ताते तेरेगयेते हर्षको प्राप्त भये हैं इनके नेकहुशंका संकोच मनमें नहीं है यह जानिके कि श्रीजानकीजी भलेगई हैं अब नहीं आवैंगी यह निश्चयकीन है काहेते श्रीजानकीजीके प्रकट भये ते हमारी शोभा को निरादर होइगो ताते हे प्रिया तेरे गयेते शंका संकोचरहित भये हैं ( १३ ) हे जानकीजी आजुत्वहिंविना येतेसब अतिहर्षको प्राप्तभये कैसे जैसे कोईरंक राज्यको प्राप्तहोइ है ( १४ ) हे प्रिया यहअनख कही ईर्षा तोसे कैसे सहीजाति है तूवेग कस नाहींप्रकटै जाते इन सबकी शोभा मन्दपरिजाइ येसब लज्जितहोइजाइँ ( १५ ) देखिये तौ इहां अति वियोग शृंगाररस कहा है हे पार्वती यहिप्रकारते सर्वके स्वामी श्रीरामचन्द्र विरहविलाप करत श्रीजानकीजीको खोजतपूछत चलेजाते हैं मानहुं विषयी विरही कामी इव विरह करते हैं यह वियोग शृंगार है तहां यह अनुमान अपनीउक्तिसे कहते हैं कि रावणकेभयते कोईउत्तरनहीं देते हैं ( १६ ) हे पार्वतीश्रीरामचन्द्रसम्पूर्ण कामनाकरिकैपूर्ण हैं काहेतेपरमानन्दसुखकीराशि हैं तेनरइवपरमपवित्रपरम :: ::

खोजतबिलपतस्वामी मनहुंमहाविरहीअतिकामी १६ पूरणकामरामसुखराशी मनुजचरितकरअजअविनाशी १७ आगेपरागृद्धपतिदेखा सुमिरतरामचरणरजरेखा १८ दो०॥ करसरोजशिरपरस्यउ कृपासिंधुरघुवीर निरखिरामछविधाममुख विगत भईसबपीर १९॥ *

चौ०॥ तबकहगिद्धबचनधरिधीरा सुनहुरामभंजनभवभीरा १ नाथदशाननयहगतिकीन्ही त्यहिखलजनकसुताहरिलीन्ही २ लैदक्षिणदिशिगयउगोसाईं बिलपतिअतिकुरुरीकीनाईं ३ दरशलागिप्रभुराख्यउँ प्राना चलनचहतअबकृपानिधाना ४ रामकहा

दिव्य चरित्र करते हैं श्रीरामचन्द्र अज अविनाशी हैं उनको सब सोहत है ( १७ ) यहिप्रकारते विरह संयुक्त चले जाते हैं आगे गृद्धराजको घायल परादेखा अरु श्रीरामराम सुमिरतसन्ते अरु श्रीरामचन्द्रके चरणकीरेखास्वस्तिक इत्यादिक अड़तालिस अंक अरु चरणकी रजसुमिरत पृथ्वी पर परा है ( १८ ) दोहार्थ ॥ तब श्रीरघुवीर कृपाके सिन्धु कृपाकरिकै करसरोज गृद्धके शीशपर परसतभये तब गृद्धकी श्रीरामचन्द्र कर दर्शन अरु छबिके धाम कमलमुखको देखतसन्ते पूर्णपीड़ाविगतभई ( १९ ) इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसनेआरण्यकाण्डे श्रीरामविरहगृद्ध राजोपरिकृपावर्णनन्नामद्वादशस्तरंगः १२ ॥ :: :: :: :: ::

दोहा ॥ गृद्धराजपरकृपाकरि दीन्हतुरतनिजधाम दशअरुतीनितरंगमेंरामचरणअभिराम १३ तब धीरज धरिकै गृद्धराजबोल्यो हेभवभीरभंजन राम सुनहु ( १ ) हे नाथ यह मोरहाल रावणकीन है अरु तेईखल श्रीजानकीजी को हरिलीन है ( २ ) हेगोसाईं दक्षिण दिशिको लैगयो है तहां जैसे कुररी बिहंग नभविषे विरहबाणी स्वाभाविकैरटै है तैसे श्रीजानकीजी आपुको अतिविरह आर्तितेरटत चलीगई हैं ( ३ ) हे कृपानिधान आपुके दर्शनहेतु प्राणको राख्यहुं है अबआपुको दर्शनभयो अब शरीर को त्यागिकै चलाचाहत हैं ( ४ ) तब श्रीरामचन्द्र करुणाकरिकै कहते हैं हे तात शरीर राखहु मैं अचलकरिदउं तब गृद्धराज मुखमुसकाइकै कहत हैं ( ५ ) हे श्रीरामचन्द्र आपुकरनाम सुमिरतसंते अंतकाल में मोक्षहोत है जो अधमौ होइ यहवेद कहते हैं बाराहपुराणे शंकरवाक्यंश्लोक॥ दैवाच्छूकरशावकेन निहतोम्लेच्छो जरार्जजरोहारामेतिहतोस्मिभूमिपतितो जल्पंस्तनुंत्यक्तवान् तीर्णोगोस्पदवत्भवार्णवमहोनाम्नः प्रभावात्पुनः किंचित्रंयदिरामनामरसिकास्तेयांतिरामास्पदं ( ६ ) सो श्रीरामचन्द्र मेरेलोचन के

तनराखहुताता मुखमुसकाइकहीत्यइँबाता ५ जाकरनाममरतमुखआवा अधमौमुक्तहोइश्रुतिगावा ६ सोममलोचनगोचरआगे राखौंनाथदेहक्यहिखागे ७ जलभरिनयनकहतरघुराई तातकर्मनिजतेगतिपाई ८ परहितबसजिनकेमनमाहीं तिनकहँजगदुर्लभ कछुनाहीं ९ तनतजितातजाहुममधामा देउंकाहतुमपूरणकामा १० दो०॥ सीताहरणतातजनिकह्यउतातसनजाइ जौमैंरामतो

गोचरकही प्रत्यक्षश्यामसुन्दर विराजमानहौ सो मोकोअब काखांगा है जो देहको राखहुं आखिरतौ शरीर सबको नाशमान है अबयह अवसर जो शरीर त्यागिबेको योगेश्वरनको दुर्लभ है सो अवसर मोको सुलभभयो है अबयह अनित्य शरीर मैं काहेको राखौंगो ( ७ ) गृद्धकै कर्तव्य आत्मसमर्पण शरणागत भक्तिदेखिकै श्रीरामचन्द्र नेत्रन में जलभरिकै कहते हैं हेतात तुमअपनीकर्तव्यते परमपदलीन है ( ८ ) हे तात परावाहितकार जिनके मनबचनकर्म विषे बसत है तिनकोजगत् में कछुदुर्लभ नहीं है प्रमाणएकश्लोक ॥ अष्टादशपुराणानांव्यासस्यवचनद्वयं परोपकारपुण्याय पापायपरिपीडनं १ ताते तुमसब उपकारनते परात्पर उपकार कीनहैताते तुमको मनबांछित फलतयार है ( ९ ) हे तात अब तुमतनतजिकै मेरेधामको जाहुऔर तुमको का देउंतुमतौ पूर्णकामहौ ( १० ) दोहार्थ ॥ श्रीरामचन्द्र कहते हैं कि हे तात अबतुम मेरोधामजो बैकुण्ठ है तहांको प्रथम चतुर्भुज स्वरूप ह्वैकै जाहु पुनि जब हम परविभूति को गमन करहिंगे तब पिताको अरु तुमको संगही लै जाइंगे पर हेतात हमारपिता इन्द्रलोक में है अरु बैकुण्ठको वोहीराह जाहुगे ताते सीताकोहरण तातसेनकहब काहेते जो सुनहिंगे तौ अत्यन्त दुखको प्राप्तिहोहिंगे तहां अग्रेमेरी यह संकल्प है कि जो मैं श्रीरामचन्द्र तौ रावणआदि सहित राक्षसनके कुलको जबमैं परमपद देउंगो तबवोई सीताहरणको वृत्तांत कहहिंगे चलेजाहिंगे तब पिता प्रसन्नहोहिंगे ( ११ ) श्रीरामचन्द्र के यतने बचनसुनिकै गृद्धराज ने बिनाश्रम स्वेच्छित शरीरको त्यागिदियो है जैसे कोई नवीनबस्त्र पहिरै प्रसन्नते पुराने को त्यागिदेइ तैसेशरीर को त्यागिकै हरिकेस्वरूप को प्राप्तिभयो पीताम्वर धारण अरु किरीट कुण्डल बनमाला इत्यादिक अलंकार करिकै शोभित है ( १२ ) मर्कतमणिइव श्यामशरीरअरु विशाल चारिभुज गदापद्मशंखचक्र संयुक्त प्रेमयुक्त नेत्रनमें जलभरे पंकजइव मुखते श्रीरामचन्द्रकै अस्तुति करतहै ( १३ ) हरिगीतछन्द॥ हे श्रीरामचन्द्र आपु सर्वोपरि जयमान्हौ अरुअनूपरूपहौ तुम्हारयहस्वरूपकैसो

कुलसहितकहहिदशाननआइ ११ चौ०॥ गृद्धदेहतजिधरिहरिरूपा भूषणबहुपटपीतअनूपा १२ श्यामगातविशालभुजचारी अस्तुतिकरतनयनभरिबारी १३ हरिगीत छं०॥ जयरामरूपअनूपनिर्गुणसगुणप्रभुप्रेरकसही दशशीशबाहुप्रचण्डखण्डनचण्डशरमण्डनमही १४ पाथोदगातसरोजमुखराजीवआयतलोचनं नितनौमिरामकृपालु बाहुविशालभवभयमोचनं १५ बलमप्रमेयमनादिमजमव्यक्तमेकमगोचरं गोविन्दगोपरद्वंदहरविज्ञानघनधरणीधरं १६ जेराममंत्रजपंतसंतअनन्तजनमनरंजनं नितनौमिरामअका- * * *

है तहां निर्गुणब्रह्म जो अरुसगुणब्रह्मईश्वरजो तिनदूनौं स्वरूपके तुम प्रेरक सहीहौनिर्गुण ब्रह्मतुम्हारो घनस्तेजहै चैतन्य सर्वत्र परिपूर्ण एकरस अरुसगुणब्रह्मा ईश्वरतुम्हारो महत् अंशहं अरु तुम दूनौंस्वरूपके उपादानकारण हौ अरु दशशीशके प्रचण्डभुज त्यहिकर खंडनकर्ता तुहारोबाण प्रचण्ड है अरु पृथ्वी के मण्डनकही शृंगार हौ ( १४ ) अरु पाथोद जोमेघहैं तद्वत्श्यामहौ गंभीरहौ उदारहौ अरु कमल सममुख है अरु विशाल अरुण कमलइवनेत्र हैं हे श्रीरामचन्द्र तुमनित्य हौ अरुमैं नित्य नमस्कारकरतहौं हेकृपालु हेबिशालभुज भवभय मोचनके कर्त्ताहौ ( १५ ) अरु अप्रमेयबल अनादिअज अव्यक्त एकअगोचर अब्यक्तकही मनबुद्धिवाणीते परेहौ हेगोबिंद तहां गोकही पृथ्वी बिंद कही त्यहिके पालक आनंददाताहौ अरु गोकही इन्द्री विराट् के सुद्धां किन्तु गोकही ब्रह्मांड त्यहिकेपरेहौ अरु द्वन्दकही मैं तैं मोरतोर त्यहि के हरैया हौ अरु विज्ञानकेघनकही समूहहौ धरणी धरहौ ( १६ ) हे श्रीरामचन्द्र जो तुम्हार राम नाम महामंत्र अनंतसंत जपते हैं तिनको मनरंजनकही अतिआनंद होते हौ अकामप्रिय जेनिष्काम हैं ते तुमको बहुत

प्रिय हैं अरु तुमउनको बहुतप्रियहौ ते श्रीरामचन्द्र मैं तुमको नौमिकही नमस्कारकरतहौं अरु कामादि काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य इत्यादिकखलनकेदल तिनको गंजनकही नाशकरते हौ ( १७ ) हे श्रीरामचन्द्र तुमको वेद निरंजनकही मायारहित व्यापक ब्रह्म अज अद्वैत विरजकही षट्विकाररहित जन्म वृद्धिविवर्ण क्षीण जरा मरण इन षट्विकार करिकै रहितहौ अरु अजकही अजन्मा गर्भ में नहीं आवंते हौ असकहिकै तुमको वेदगावते हैं अरुयह स्वरूप जो तुम्हार है ताके गुण वेद कहते हैं जो कहिआये हैं स्वेच्छित आविर्भाव होते हौ अरु अनेकन मुनि ध्यान योग वैराग्य ज्ञानकरिकै इन्द्रिनको जीतिकै तुमको पावते हैं ऐसेकरिकै तुमको वेद निरन्तर

मप्रियकामादिखलदलगंजनं १७ जेश्रुतिनिरंतरब्रह्मब्यापकविरजअजकहिगावहीं करिज्ञानध्यानविरागयोग अनेकमुनिज्यहिपावहीं १८ सोप्रकटकरुणाकन्दशोभावृन्दअगजगमोहई ममहृदयपंकजभृङ्गअंगअनंगबहुछबिसोहई १९ जेअगमसुगमसुभावनिर्मलअसमसमशीतलसदा पश्यन्तियंयोगीयतनकरिकरतमनगोवशयदा २० सोरामरमानिवाससन्ततदासवश त्रिभुवनधनी ममउर

गावते हैं ( १८ ) ऐसेतुम श्रीरामचन्द्र तेप्रकटकही प्रत्यक्षहौ हे करुणाकेकन्द्र अरु शोभाके वृन्दकही समूह अपनी शोभा करिकै अगजग हौ मोहि लेते हौ तेतुम मेरेहृदयकंज के भृङ्गहोहु तुम्हारी छबिके आगे कोटिन अनंग मोहित होते हैं तहां जहां अंगै नहीं तहां उसकी शोभाकहे हैं अरु कैसे मोहैगो तहां जब महादेवने काम को नहीं जार्‍यो है तबकी उपमा दीन है किन्तु महादेव रतिको बरदान दीन है तब अंगसंयुक्तभयो है किन्तु अनंगनाम भविष्यकहाहै जैसे अहल्या ने श्रीरामचन्द्रको रावणारिकहा है ( १९ ) जो तुम्हार स्वभाव अतिनिर्मल अगम है अरु सुगम है अरु सम है अरु असम है अरु सदाएकरस शीतल है तहां अपने जानिबेको अगम है अरु हे श्रीरामचन्द्र तुम्हारी कृपा ते तुम्हारसुभाव सुगम अरु जीवन को कर्मानुसार फलदेवे को तुम्हार सुभाव असमकही विषम है अरु वहफल समकरिदेते हौ अरु अपनी कृपा सुभावते भक्तिदेते हौ ताते समहौ अरु असमकही अपने क्रोधस्वभाव ते मोक्षदेते हौ ताते सदा शीतलहौऐसे जे तुमहौ तिनको अनेक यत्नकरिकै मन इन्द्रिनको वशकरिकै योगी जन अपने हृदयविषे पश्यन्तिकही देखते हैं ( २० ) हे राम रमानिवासपूर्ण जो रमा हैं लक्ष्मी तिनविषे आपहीकी तेज शक्तिब्याप्त है तहां हे त्रिभुवनधनी सन्ततकही निरन्तर ऐसे तुम दासन के बशहौ तहां यह अभिप्राय है इहां गृद्धराज दशरथमहाराज को सखा है त्यहि श्रीजानकी जी के हेतु शरीर को त्यागकीन है ताते इहां श्रीरघुनाथजी ने अपने आवान्तर श्रीजानकीजी संयुक्त गृद्धको देखाइदीन है तब गृद्धबोल्यो कि हे श्रीरामचन्द्र मम उरविषे आपुको इहै स्वरूप श्रीजानकीजू लक्ष्मणजी संयुक्त बसै कैसे हौ तुम संसृतकही जन्म मरण त्यहिके शमनकर्त्ता आपकी विमलकीर्त्ति है ( २१ ) दोहार्थ ॥ यह कहिकै अविरलभक्तिमांगिकै अविरलकही तैलवत्धार सो भक्ति बरदान पाइकै गृद्धराज हरिधामको जात भयो त्यहिकै क्रिया यथोचित पिता के समान श्रीरामचन्द्र अपनेहाथनते कीनि है ( २२ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने आरण्यकाण्डे गृद्धराजमोक्षवर्णनन्नामत्रयोदशस्तरंगः १३॥ :: ::

बसहुसोशमनसंसृतजासुकीरतिपावनी २१ दो०॥ अविरलभक्तिमांगिवर गृद्धगयोहरिधाम त्यहिकीक्रिया यथोचित निजकरकीन्हीराम २२॥

चौ० ॥ कोमलचितअतिदीनदयाला कारणविनुरघुनाथकृपाला १ गृद्धअधमखगआमिषभोगी गतिदीन्हीजोयाचतयोगी २ सुनहुउमातेलोगअभागी हरितजिहोहिंविषयअनुरागी ३ पुनिसीतहिंखोजतद्वउभाई चलेविलोकतबनबहुताई ४ संकुललताबिटपघनकानन बहुखगमृगतहँगजपंचानन ५ आवतपन्थकवन्धनिपाता त्यइसबकहीशापकैबाता ६ दुर्वासाम्वहिंदीन्ह्यउशापा * *

दोहा॥ दशअरुचारितरंगमें बधिकवन्धगतिदीन रामचरणशवरीमिलेप्रेमपरस्परकीन १४ हे पार्वती श्रीरघुनाथजी कृपालु जो हैं ते बिना कारणही अति कोमलचित हैं अरु दीनदयालु हैं ( १ ) देखिये तौ गिद्ध पक्षिनमें अधम है अरु आमिषाहारीहै त्यहिको सो गतिदीन जो गति योगेश्वर चाहनाकरते हैं ( २ ) हे उमा ते लोग बड़े अभागी हैं जे श्रीरामचन्द्र कोतजिकै विषय में अनुरागकरते हैं ( ३ ) पुनि हे पार्वती गिद्धको निजधाम दैकै पुनि श्रीरामचन्द्र श्रीजानकीजी को खोजत विरहसंयुक्त अनेक बनविलोकत चलेजाते हैं ( ४ ) संकुलकही परिपूर्ण हैं लता ज्यहि बनबिषे अरु खग मृग गजपंचानन कही सिंह इत्यादिक अनेक जन्तुनते अरुतरु लतनते श्रीजानकीजी को पूछत चलेजाते हैं ( ५ ) तहां राहमें जात सन्ते कवन्धनाम राक्षस मुनिके शापते त्यहिको शीश हृदयमेंरहै ताते अन्धरहै मुखमात्र निकसार है अरु बड़े भुजारहैं जाही को पावै त्यहिको धरिकै खाइजाइ तहां त्यहिके द्वौभुजन के बीचमें श्रीरघुनाथजी अरुश्रीलक्ष्मणजी निकसेजाइ तब मुखबाइकै द्वौभुजन ते पकरिकै समेटत भयो तब श्रीरघुनाथजी त्यहिके निकटजाइकै द्वौभुजनको मूल बाण तेकाटिडारयो है अरु हृदय में एकबाणमारा शीश खण्डखण्ड ह्वइजातभयो तब सो शरीर छोड़िकै सुन्दर गन्धर्बहोतभयो अरु अपने शापकीसम्पूर्णबात कहतभयो ( ६ ) हे श्रीरामचन्द्र मैं गन्धर्बहौं पूर्व मैं दुर्बासामुनि ते कछु हास्यकिह्यउं तब मुनि मोको शापदीन कि तैं राक्षस जाइहो तेरोशीश तेरे हृदयमें रहै ताते मैं राक्षसभयोंहौं श्रीरामचन्द्र कलियुग के चौथे चरण में शापदेकै अनुग्रहकीन कि त्रेता के चौथेचरणमें परब्रह्म अवतीर्णहोहिंगे तहां बनविषे जाहिंगे तोको बधहिंगे पुनि तोकोभक्तिदेहिंगे ते श्री

प्रभुपददेखिमिटासोपापा ७ सुनुगन्धर्बकहौंमैंतोहीम्वहिंनसोहाइब्रह्मकुलद्रोही ८ दो०॥ मनक्रमवचनकपटतजि जोकरभूसुरसेव मोहिंसमेतबिरंचिशिवबशताकेसबदेव ९ चौ०॥ शापतताड़तपरुषकहंता बिप्रपूजिअसगावहिंसंता १० पूजियबिप्रशीलगुण

रामचरित गान सब गन्धर्ब तन ते करावैंगे उपरांत मोक्षहोइगो सो आपुके चरणारविंद देखे ते सम्पूर्ण पाप मिटिगयो ( ७ ) तब श्रीरामचन्द्रबोले हे गन्धर्व मैं तोसे कहतहौं मोको ब्रह्मकुलद्रोही नहीं सुहात है ( ८ ) दोहार्थ॥ हे गन्धर्व जो मन क्रमवचन ते कपटतजिकै भूसुर जो ब्राह्मण तिनकी सेवाकरै वह मोहिंसमेत ब्रह्मा शिवादिक देवतनको बशकरै ( ९ ) चौ० ॥ जो ब्राह्मण शापौदेइ अरु अनेक ताड़नाकरै दण्डौदेइ अरु परुष कही निंदाकरै गारीदेइ तबहूं ब्राह्मण पूजनीय है यह वेद पुराण सन्तकहते हैं ( १० ) हे गन्धर्व जो ब्राह्मण शील गुण इत्यादिकनते हीनहोइ तौ भी पूजाकरिबे योग्य है अरु जो शुद्र अनेक गुणगण करिकै सम्पन्नहोइ तौभी पूजनकरिबे योग्यनहीं है तहां भेदहै जे शूद्र अपनो बर्णाश्रम धर्मलिहे हैं ते अपूज्य हैं अरु जे शूद्र बर्णाश्रम छोड़िकै श्रीभगवत् शरणहोयँ सो पूजनीय हैं अरु जे बिप्र अरु भगवत् से बिमुखहैं तहां पूज्य मानतौ हैं पर त्यहिबिप्रते भगवद्भक्तश्रेष्ठ तहांप्रमाण है एकश्लोक ॥ येशूद्राभवद्भक्ता बिप्राभागवताः स्मृताः । सर्ववर्णेषुतेशूद्रा येनभक्ताजनार्दनः पुनः श्रीभागवते एकश्लोक ॥ बिप्राद्विषट्गुणयुतादरविन्दनाभ पादारविन्दबिमुखाःस्वपचंवरिष्ठं मन्येतदर्पितमनोबचनेहितार्थान् प्राणंपुनातुसकुलंनतुभूरिमानः ( ११ ) श्रीरामचन्द्र कहते हैं कि हे गन्धर्व ब्राह्मणकैसे पूजनकरिबेयोग्य है जैसे गऊदुष्टौहोइ तौभी दुहीजाती है अरु रासभीकही गदही बहुत दुग्धदात्री शांतिमतीहोइ परदुही नहीं जाइहै तहांप्रमाणहै अन्यच्च एकश्लोक ॥ पतितोपिद्विजः श्रेष्ठः नचशूद्रोजितेन्द्रियः अदुग्धासुरभीपूज्या नखरीघटदोहना ( १२ ) तहां श्रीरामचन्द्र अपनो निजब्रह्मण्यधर्म समुझाइकै कहते भये पुनि अपने पदमें गंधर्बकै प्रीतिदेखिकै मनमें भावतभयो इहां गन्धर्व को केवल रामकृपा भई है तहां श्रीरामचन्द्रने कृपाकरिकै गन्धर्व को अपनी विमलभक्तिदीनि है अरु यह कहा कि हे गन्धर्व तुम अपने लोक को जाहु मोरिबमलं कीर्त्ति गानकरहु मैं तुम्हारे बंशभरिको अपने परंपद को प्राप्तिकरौंगो ( १३ ) तब श्रीरामचंद्र

हीना शूद्रनगुणगणज्ञानप्रवीना ११ दुष्टौधेनुदुहीसुनुभाई साधुरासभीदुहीनजाई १२ कहिनिजधर्मताहिसमुझावा निजपदप्रीतिदेखिमनभावा १३ रघुपतिचरणकमलशिरनाई गयउगगनआपनिगतिपाई १४ ताहिदेइगतिरामउदारा शवरीकेआश्रमपगुधारा १५ शवरीदेखिरामगृहआये

**मुनिकेवचनसमुझिजियभाये १६ सरसिजलोचनबाहुबिशाला जटामुकुटशिरउरबनमाला १७ श्यामगौरसुंदरद्वौभाई शवरीपरीचरणलपटाई १८ सादरजललैचरणपखारे पुनिसुंदरआसनबैठारे १९ दो०॥ कंदमूलफल**

के चरणारबिंद विषे दण्डवत्करिकै भक्तिवरपाइकै हर्षिकै निजलोकको जातभयो तहां गंधर्बलोक के गंधर्ब इनको रामभक्त कियो है ( १४ ) त्यहि के बंधुको भक्तिगति दैकै शवरीके आश्रमको चलतभये देखिये तौ इतनेको अधिकारी गंधर्ब नहींरह्योहै त्यहिको दुर्ल्लभगतिदीन है ऐसे श्रीरामचन्द्र उदार हैं ( १५ ) तहां शवरी ने देखा कि श्रीरामचन्द्र मेरे आश्रमको आवतेभये हैं तहां शवरी मतंगमहामुनीशकी शिष्य है जब मुनि श्रीराम धामको चलेलगे हैं तहां तब शवरीसे कहा कि श्रीरामचन्द्र इहां आवहिंगे तब तू मनपूर्ण दर्शनकरिकै श्रीरामधाम को हमारे समीप आवैगी तब शवरी ने जाना कि गुरुकोवचन सत्य है त्यहिकोफल आजुमोकोप्राप्तिभयो अतिहर्षको प्राप्तिभई है ( १६ ) तहांश्रीरामचन्द्रआइकैप्राप्तभये विशाल कमलइवनयन जटाकेजूट सुन्दरविशालभुज उरविषे बनमालशोभितहै ( १७ ) धनुर्बाण पीताम्बरधारी श्यामगौर अतिसुन्दर कोटिनघन अरु दामिनिकीद्युतिकोहरत है प्रसन्नबदन अरुश्रीलक्ष्मणजी तैसहीसंगै ऐसोस्वरूपदेखिकै तब शवरी निर्भरप्रेमतेचरणमेंपरतिभई लिपिटिगई है ( १८ ) प्रेमतेमग्नकछुकहानहीं जाइतहांश्रीरघुनाथजीबारबार उठावते हैं अरु बारबारचरणनपरती है पुनिधीरज धरिकै पावनआसनपर बैठारिकै प्रेमते भरी अपनेपात्रते जललैकै चरणप्रक्षालिकै चरणामृत लातेभई ( १९ ) दोहार्थ॥ पुनि शवरीके हृदयमें यह आवतभयो कि दूनौंभाईमगके श्रम तेक्षुधित तृषित हैं यह बिचारिकै बात्सल्यरस भरिआयो है तहां हेपार्वतीशवरीसे जो मतंग मुनिकहि गये हैं कि श्रीरामलक्ष्मण दोऊभाई इहां आवहिंगे तब शवरी बनमें जाइकै कन्दमूलफल लै आई है परफलनको आपुअपनो मुखलगाइकै चीखिलेतीरही है जोरसमय अतिमधुरमधुर कन्दमूलफलपावै सो श्रीरघुनाथजीके हेतुधरेजातीरहै तहां प्रेमकी दशामें अपने जूंठे की खबरिहीनहीं रही है तहां प्रेमापराभक्तिकी यहीदशाहै तहां पुनि कोई कहते हैं कि ज्यहिवृक्षको फलएकचाखै अरु मधुरलागै तब उसफलको डारिदेइ अरु उसवृक्षकेफल श्रीरघुनाथ जी के हेतु अमनियाधरि राखैहै ऐसेही कन्दमूलफल धरैहै तहां यहिको तौ कर्ममिश्रा भक्तिकही तामें यहसामान्य अर्थ है अरु यहकहतसंते प्रेमकी दशा में विरोधआवै है

**सरसअति दियेरामकहँआनि प्रेमसहितप्रभुखाये बारहिंबारबखानि २० चौ०॥ पाणिजोरिआगेभइठाढ़ी प्रभुहिबिलोकिप्रीति**

काहेते जो चीखिकै पेड़को अमनिया फलधरिराख्यो है तहां असतौ हमीपंच करते हैं यामें शवरीके प्रेमकी आधिक्यता का भई कछु न भई ताते जूठ ही में प्रेम की लक्षणा होती है अरु शवरी तौ गुरुन की कृपा ते अरु श्रीरामचन्द्र की कृपा ते केवल शुद्ध प्रेमाकार उत्तमभक्ति को प्राप्ति भई है ताते मधुरफल जूठधरिराखें हैं काहेते शवरी जो फलचीखै ताहीको ज्ञानरहा है ताते कन्दमूलफल सोई श्रीरामचन्द्र के आगेदोननभरिभरि धरतिभई है त्यहिफलको श्रीरामचन्द्र श्रीलक्ष्मणजी बारबार बखान करिखाते हैं अरुशवरी अपने हाथनते दियेजाती है तहां श्रीरामचन्द्र श्रीलक्ष्मणजीते कहते हैं कि हे भाई ऐसोस्वाद विश्वामित्रके अरु जनक के अरु दशरथ के इहांन मिले हैं न खाये हैं तब श्रीरामचन्द्र शवरीकी दशा देखिकै कहते हैं कि हे शवरी ये जो कटेफल हैं सो किनपक्षिन की चोंचलगी है जो अमृतमयह्वइगये हैं अतिमधुर प्रियलागते हैं तहां कोई श्रीमद्रामायण में कोई साधूक्ति चौपाई॥ येफलकिनपक्षिनकेखाये अतिप्रिय लागनजातअघाये १ पुनिश्रीसूरसागरोक्तिपद॥ कवनकवनगुणबरणौं श्यामतिहारे शवरीके फलजूठेखाये गुणअवगुणनबिचारे॥ तबशवरीकोसुधिआई कि ये संपूर्णकंदमूलफल मेरे दांतन के लागेतेकटे हैं मेरेजूठे हैं हायहाय सो मैं स्वामी को खवाये हैं यतनामनमें आवतसंते कम्पभावको प्राप्तिभई है अतिविरह प्रेमाकुल ह्वइकै शरीर को त्यागाचाहति है तब श्रीरामचन्द्रधीरजदेते हैं इहां प्रेमापरा मिश्रितभक्ति है ( २० ) हे शवरी चिंता न कर मोको केवल प्रेमप्रियहै मैं केवलभावको भूखा हौं जो कदाचित् मोको बिगरजाने प्रेमतेदेखै भोगलगावै ताको मैं बड़ीप्रीतिते पावत हौं अरु अपनेदास कोउ है प्रसादअमृतकरि देतहौं यह अनेक जगहशास्त्र में प्रमाणहै अरु तूम्बहिंविषे चित्तकैवृत्ति लगाइकै मोरनाम अहर्निशि प्रेमसमेत जपैहै ताततोर मुखपरमअमृत को भाजनहोत भयो

है ताते तोरेदशनके काटेफल अमृतहूते अधिकस्वादको प्राप्तिभये श्लोक ॥ नयोग वैराग्यनज्ञानध्यानै र्नचक्रियाभिर्नतपोभिरुग्रैः प्राप्तैश्चमामेवकिंकोटियत्नैः सर्वात्मकंप्रेमसूत्रोपिवद्धः १ तब शवरी धीरजधरिकै उठिकै दूनोंकर संपुटकरिकै श्रीरामचन्द्र को अतिसुन्दर मधुरस्वरूप देखिकै नेत्रनके पुट भरिभरि पानकरती है जैसे श्रीरामचन्द्रजू शवरीके फलखातखात नहीं अघाते हैं तैसे शबरी श्रीरामरूपको नेत्रनकेद्वार अति अनुरागते पानकरतनिहींअघाती है ( २१ )

**अतिबाढ़ी २१ क्यहिबिधिअस्तुतिकरौंतुम्हारी अधमजातिमैंजड़मतिभारी २२ अधमतेअधमअधमअतिनारी तिनमहँमैंमतिमंदअघारी २३ कहरघुपतिसुनुभामिनिबाता मानौएकभक्तिकरनाता २४ जातिपाँतिकुलधर्मबड़ाई धनबलपरिजनगुगसमुदाई २५भक्तिहीननरसोहैकैसे बिनुजलवारिददेखियजैसे २६ नवधाभक्तिकहौंत्वहिंपाहीं सावधानसुनुधरुमनमाहीं २७ प्रथमभक्तिसं**

तब धीरजधरिकै शवरी अपनो नीचानुसंधानकार्पण्य शरणागत अरु आत्मसमर्पण जामेंसबशरणागतहैं तहां सब मिश्रितप्रेमते सानीबानी बोलतीभई है हे श्रीरामचन्द्र अधमउधारन पतितपावन दीनदयाल करुणानिधान अशरणशरण तुमहौ ताते मैं तुम्हारीस्तुति क्यहिविधिते करौंएकतौ मोरि अधमजाति अरु जड़मति ऐसी मैंहौं ( २२ ) अधमहुतेअधमाधम अरु त्यहिपरस्त्री अरु स्त्रिन में अतिमन्द मैं हौं हे अघके हरैया मैं ऐसी हौं ( २३ ) तब श्रीरामचन्द्रबोले हे भामिनि सुनु मैं एकभक्तिकर नातामानत हौं ( २४ ) जातिपांति कुल धर्म बड़ाई अरु धन बल परिवार कर सुख अरु चतुराई के गुण इत्यादिक सबसुलभलक्षण करिकैंपूर्ण होइ ( २५ ) पर मेरी भक्तिते जो नरहीन होइ सो यद्यपि सब गुण करिकैंपूर्णहैंपरकछुनहीं है कैसोजैसोविनजलकोमेघ है पुनिजैसे दिवसमेंचन्द्रमापुनिजैसेविनालोनके व्यञ्जनपुनिजैसेबिनाजलकीनदी इत्यादिक जैसे तैसे बिनारामभक्ति मनुष्य अशोभित कोईहोइ तहां प्रमाण है श्रीमद्भागवतेएकश्लोक ॥ विप्रद्विषट्गुणयुतादरविंदनाभ पादारविन्दबिमुखाः स्वपचंवरिष्ठं मन्येतदर्पितमनावचनेहितार्थः प्राणंपुनातुसकुलंनतुभूरिमानः १ तहां बारहगुण ब्राह्मण में स्वाभाविकरहते हैं ताको कहते हैं जातिपांति कुलधर्म बड़ाई इत्यादिक करिकै उत्तमहोइ याको प्रथमगुणकही १ अहंकारमन बुद्धिचित्त समहोइ २ अरु नेमहोइ जो नेमकरै तामें प्रत्यवाय विप्रहोइ ३ अरु यम अल्पभोजन निद्राको जीतै ४ अरु इंद्रीदमनहोइ ५ तपस्वीहोइ ६ आचार धर्म्ममें आरूढ़होइ ७ अरु शान्तमन होइ द्वंद्वधर्म आवत सन्ते क्षमाकरिजाइ ८ आर्यवकही दयामानहोइदीनको देखिकै हृदयते द्रविउठैतहां आर्यव तेजको भी कहते हैं ताततेजस्वी होइ सब कोई देखिकेंडरै स्वाभाविक डरिकै अपने कल्याणहेतु प्रीतिकरै ९ अरुज्ञानीहोइ तहां ज्ञानदुइप्रकारकरएक शास्त्रजन्यज्ञान अरु एकआत्म ज्ञानआत्मा आनात्माकार स्वरूप जानैसत्य असत्य जानैआत्मकोसत्यजानै अनात्माकोअसत्यजानै अच्छीप्रकारते जानिकैसत्य में आरूढ़होइ अरु असत्यकोत्यागहोइ तहांजोप्रवृत्तिमेंहोइतौफलको त्यागकरै अरु जोनिवृत्तिमेंहोइ तौस्वरूपको त्यागकरै ऐसीदशामें आरूढ़होइताकोज्ञानकही १० पुनि विज्ञानकही विशेष ज्ञानकही सुखदुःखविषे समहोइ स्थित रहै अरु कञ्चनमणि इत्यादिकको लोष्टइव त्यागकरै जैसे चौकादेकै लीझी फेंकिदेते हैं पुनि नहीं मनचलै है अरु प्रिय अप्रिय समहोइ अरु निन्दास्तुति में धीरहोइ हर्ष शोक न आवै अरु मानापमान तुल्यहाइ यह समुझिकै कि अपमान तौ अनात्मा को धर्म है अरुमान आत्माको धर्म है यहदूनौं समुझिकै तबमानापमान तुल्यरहै अरु मित्र अरितुल्यहोइ ऐसो गुणातीत बिज्ञानहोइ किन्तु जीव ब्रह्मकी एकता मानिकै ब्रह्मास्मिवृत्तिष्ठताको विज्ञान कही ११ अरु ब्राह्मण अस्तिमान होइ जाकोशापआशीर्बाद फलै १२ येतेद्वादशगुण करिकैब्राह्मण युक्त होइ अरु श्रीरामचन्द्र की भक्ति ते विमुखहोइ त्यहिते स्वपच श्रेष्ठहै पर ज्यइ स्वपच मनवचन कर्म करिकै परमेश्वर बिषे आत्म समर्पण कीन्ह है तहां सो सर्बोपायशून्य भक्ति है ते श्रेष्ठ हैं कोई होइ तहां जो कोई कहै कि ब्राह्मणके बारहौं गुणका भागवत् सम्बन्धी नहीं हैं तहां नहीं हैं काहेते इनगुणन मेंअहंकर्त्ता मानै है श्रीरामाश्रयनहीं है कर्मज्ञानमय है ताते भक्ति नहीं है अरु स्वपचके सर्व धर्म को त्यागि केवल अनन्यभक्ति भई है तातेश्रेष्ठकहा है काहेते भगवत् को अनन्यभक्ति बहुत प्रिय है काहूमें होइ प्रमाण श्रीभगवद्गीतायांश्लोक ॥ सर्वधर्मान्परित्यज्यमामेकंशरणंव्रज श्लोकार्द्धकाहेते सर्वजीव श्रीरामचन्द्रके हैं अरुवर्णाश्रम धर्म येते गुणमय हैं अरु अनन्यउपासक गुणातीत हैं

तत्रप्रमाणं श्रीमन्महारामायणेएकश्लोक ॥ नविधिर्ननिषेधश्चश्रीरामविरहान्वितः । इन्द्रियाणामभावःस्यात्सोनन्योपासकः स्मृतः ( २६ ) श्रीरामचन्द्र कहते हैं हे शवरी नवधाभक्ति तोसेमैं कहतहौं सो सावधानह्वैकै तैं सुनु अरु मनमें धारणाकरु ( २७ ) प्रथम भक्तिसाधुनकै संगति है पुनि दूसरि मोरी कथाको प्रसंग है ( २८ ) दोहार्थ ॥ पुनितीसरीभक्ति अमानह्वइ गुरुके पदपंकजकी सेवाकरै पुनिचौथी भक्तिमोर गुणगणकर कपटमान तजिकै परमेश्वरविषे कपट लोकरंजनाजोहै ताहित्यागि गानकरै ( २९ ) चौ०॥ पुनि पंचमभक्ति मोर मंत्रनेम करिकै अरु मेरेस्वरूप में चित्तकैवृत्ति लगाइकै अरु मोरेविषे दृढ़विश्वासकरिकै जपै यह भक्तिवेदमें प्रकाशित है ( ३० ) पुनि छठई भक्ति दम शीलदमकही इन्द्रिनको दमनकरै अरु शुभाशुभ कर्म ते वैराग्य है अरु मेरे कर्म में रतहै पुनि सर्वजीवन ते शीलमानराखै काहूको :: :: ::

**तनकरसंगा दूसरिरतिममकथाप्रसंगा २८ दो०॥ गुरुपदपंकजसेवा तीसरिभक्तिअमान चौथिभक्तिममगुणगण करैकपटतजि गान २९ चौ०॥ मंत्रजापममदृढ़विश्वासा पंचमभजनसोवेदप्रकासा ३० षटदमशीलविरतबहुकर्मा निरतनिरंतरसज्जनधर्मा ३१ सप्तमसमम्बहिंमयजगदेखा मोतेसंतअधिककरिलेखा ३२ आठौयथालाभसंतोषा सपन्यहुंनहिंदेखैपरदोषा ३३ नवमसरलसबसन छलहीना ममभरोसहियहर्षनदीना ३४ नवमहंजिनकेएकौहोई नारिपुरुषसचराचरकोई ३५ स्वइअतिशयप्रियभामिनिमोरे**

निरादरनकरै किंतुदमशीलकही इन्द्रिन के जीतिबेको स्थानबुद्धि है तिनकै अरु सज्जननकेधर्मविषे निरतकही निरन्तररत है ( ३१ ) पुनि सतई भक्ति मोहिमय जगत् चराचर जलथल नभ सर्वत्र मोको व्याप्तदेखै अरुम्वहिंते अधिक मोरे संतनकोजानै श्रीमन्महारामायणेएकश्लोक॥ भूमौ जलेनभसिदेवनरासुरेषु भूतेषुदेविसकलेषुचराचरेषु पश्यंतिशुद्धमनसाखलुरामरूपंरामस्यतेभुवितलेसमुपासकस्सः १ पुनः ब्रह्मांडपुराणे श्रीरामगीतायां ॥ मद्भक्तेभ्यः प्रयच्छंतिसुबहूनिधनान्यपि आतिथेपंकरिष्यामितस्याहंसीतयासह ( ३२ ) पुनि अठई भक्ति यथालाभ तथासंतोष अरु परावादोष सपन्यहुनहीं देखै है श्लोकार्द्ध ॥ असंतोषोदरिद्रः स्यात्संतोषःपरमोधनं ( ३३ ) पुनि नवमभक्ति सर्वजीवनते सरलसुभाव छलहीन रहै छलकही श्रीरामचन्द्र के शरणागत विषे वर्णाश्रम देहाभिमान त्यहिकोत्याग सर्वजीवनते अरु केवल मोरभरोस बाह्यांतरविषे अरु न कौनिउ बस्तुकै दीनता न कोनिउबस्तुको हर्ष आनंदपूर्बक जगत्विषे बिचरतेहैं सहजानंद मोरिभक्तिग्रहण किहे है ( ३४ ) हेभामिनि नवमें एकौभक्ति जिनकेहोइ नारिपुरुष चराचर कोईहोइ ( ३५ ) हे भामिनि सोई मोकोअतिशय प्रिय है अरु तेरेविषे नवौंप्रकार की भक्तिपूर्ण है ताते मोको तैं अतिप्रियहसि श्रीभगवद्गीतायां एकश्लोक मां हिपार्थव्यपाश्रित्य येऽपियुःपापयोनयःस्त्रियोबैश्यास्तथाशूद्रास्तेऽपियांति परां गतिं ( ३६ ) हे शवरी जो अनेकयोगी मुनिनको दुर्लभगति सोई तोको आजु सुलभभई है ( ३७ ) हे भामिनि मेरेदर्शनकरफल परमअनूपम स्वाभाविकहिंजीव अपनेसहजस्वरूपको प्राप्तिहोते हैं इहां दर्शन साधनफल भयो अरु जीवको सहजस्वरूपकी प्राप्ति सो सफलभयो ताते यहसिद्ध है पुनि अन्वयते सिद्ध अर्थ करते हैं ममदर्शनकर फल परम अनूप है पर जब जीव अपने सहजस्वरूपको सत्संग करिकै प्राप्ति होइ तबमोर दरश अनूपहोइ पुनि तीसरा अर्थ तहां जीवकर सहजस्वरूप श्रीरामचन्द्रहैंकाहेते जीवरूप है श्रीरामचन्द्र रूपी हैं जैसे सूर्यआपु रूपी है अरु सूर्यको प्रकाश सूर्यको सहजरूप है जैसे सूर्यहीके प्रकाशते सूर्य देखि परते हैं तैसे श्रीरामचन्द्रजी रूपी हैं अरु जीव श्रीरामचन्द्र को सहजरूप है ताते जबजीव अपनेनिज रूप :: :: :: ::

**सकलप्रकारभक्तिदृढ़तोरे ३६ योगिवृन्ददुर्लभगतिजोई तोकहँआजुसुलभभइसोई ३७ ममदर्शनफलपरमअनूपा जीवपावनिज**

को योग ज्ञानभक्ति करिकै प्राप्तिहोइ तबवाकी दिव्यदृष्टिहोति है तबश्रीरामचन्द्र के दर्शनकर अनूपफल त्यहिको प्राप्तहोत है जब यहिजीव को श्रीरामचन्द्र के दर्शनभये तब संपूर्ण विकार जीवके मिटि गये तबजीव शुद्ध सहज स्वरूप रामरूप ताको प्राप्तिभयो तब वाको श्रीरामचन्द्र को स्वरूप फलप्राप्त होत है तहां दर्शन साधनभयो प्राप्तफल

भयो तातेमोर दर्शन जीवनको परम अनूपहै अरु जीवनको सहजस्वरूप जो मैं हौं सो मोरिप्राप्ति परमअनूपफल है इहां साधनसिद्धि एकही है जैसे कटहरको फूलफल एकही है तहां प्रमाण है श्रीमन्महारामायणे पार्वत्युवाचश्लोकः केचिद्दासंसखाकेचित्केचिद्ब्रह्मबदंतिहि किंस्वरूपोस्यजीवस्यस्वामिन्कथयविस्तरात् १ श्रीशिवउबाच रामरूपस्यतेजोयं जीवोवेदप्रभाषितं भेदोमतस्यसर्वेषामाचार्याणांवदामिते २ दासवद्योभिजानाति तेषांदासःइतिस्मृतः येजानंतिसखातुल्यंसख्यवत्वान्यथोदितः ३ येपश्यन्तिसखी भावं सखित्वंप्राप्नुवन्तिते ब्रह्मात्मकंचयेजीवंतेषांब्रह्मइतिस्मृतः ४ श्रीरामंयेचहित्वाखलमतिनिरताब्रह्मजीवंबदन्ति तेमूढ़ानास्तिकास्तेशुभगुणरहितास्सर्वबुद्धातिरिक्ताः पापिष्ठाधर्महीनागुरुजन-बिमुखावेदशास्त्रेबिरुद्धा स्तेहित्वागाङ्गमंभोरविकिरणिजलंपातुमिच्छन्तितृष्णा ५ अरु यह अर्थ करिये कि श्रीरामचन्द्र के दर्शनते जीवकर निजसहजस्वरूप ताको प्राप्तहोत है तहां नहींबनै है काहेते कि जीवकर सहजस्वरूप शुद्ध निर्मल चेतनरूप सो स्वरूप योग ज्ञान ते प्राप्तहोत है पर जब योग ज्ञान विज्ञानअच्छीतरह प्राप्तहोइ तब श्रीरामचन्द्र को दर्शन पराभक्ति प्राप्तिहोति है तहां बाटिका में सनकादिकन में सुतीक्ष्णमें देखिलेव तहां प्रमाण है भगवद्गीतायां एकश्लोक ब्रह्मभूतप्रसन्नात्मानशोचतिनकांक्षति समःसर्वेषुभूतेषुमद्भक्तिंलभतेपरां १ किंतु सहजस्वरूप जीवकर सो अनेकजन्मके ज्ञान सिद्धिभये ते प्राप्तहोत है सो दर्शनमात्र ते भयो तब ताहि क्षण श्रीरामचन्द्र के स्वरूपविषे अखण्डपराभक्तिको प्राप्तिहोत है तहां श्रीभगवद्गीतायां अनेकजन्मसंसिद्धिस्ततोयातिपरांगतिं ॥ जो कोई कहै जनकपुरमें सबराजनदर्शनकीन है तहांज्ञानी अज्ञानी सब रहे हैं तहाँ ज्ञानी अज्ञानी दूनौ श्रीरामदर्शन ते शुद्ध हैं तुरन्त स्वरूप में भक्तिभई है फलको प्राप्त

**सहजस्वरूपा ३८ जनकसुताकैसुधिभामिनी जानहुकहुकरिवरगामिनी ३९ पंपासरहिजाहुरघुराईतहांहोइसुग्रीवमिताई ४० सोसब कहिहिदेवरघुवीरा जानतहूहुपूछहुमतिधीरा ४१बारबारप्रभुपदशिरनाई प्रेमसहितसबकथासुनाई ४२ हरिगीतछंद॥ कहिकथा सकलविलोकिहरिमुखहृदय-पदपंकजधरेतजियोगपावकदेहहरिपदलीनभइजहंनहिंफिरे ४३ नरविविधिकर्मअधर्मबहुमतशोकप्रद**

भये हैं सबही यह विचारकीन कि श्रीरामचन्द्र कैसे प्रसन्न होहिं अपनीअपनी कन्यादेहु तुरत मँगाइकै देखिये तौ अज्ञानी शुद्ध भये हैं तब तौ यह मतिआई है प्रमाणं श्रीमन्महारामायणे दुइश्लोक सप्तद्वीपकुपाःसर्वेसाधवोऽसाधवोपिवा विदेहकुलसंभूतायेचसर्वेनृपोत्तमाः १ रम्यरूपार्णवेरामे दत्तात्मजानिजानिजा अतएवरमुक्रीड़ा रामनाम्नैववर्तते ( ३८ ) भामिनिकही स्त्री जाति को श्रीरामचन्द्र कहते हैं कि हे भामिनि जनकसुता जो करिवर गामिनी हैं तिनकैखबरि कहूं पायहुहै सो कहहु ( ३९ ) तब शवरी कहती है हे रघुराई पम्पासर को जाहु त्यहिकं अग्रे सुग्रीव ते मिताई होइहि ( ४० ) सो सुग्रीव श्रीजानकीजी को हवाल सब कहिहि हे देव रघुवीर आपुसब जानते हैं मोते कापूछतेहौ ( ४१ ) हे पार्वती तब शवरी सब कथा सुनाइकै प्रेम संयुक्त वार वार प्रभुके पद विषे शीशनावती भई ( ४२ ) छन्दार्थ हे गरुड़ सम्पूर्ण कथा कहिकै श्रीरामचन्द्रकर चन्द्रबदन विलोकिकै चितवतिरहिगई श्रीरामचन्द्रकर स्वरूप अरु पदपंकज हृदय में अच्छी तरह धारण करिकै प्रेमयोग की अग्नि में शरीर को त्यागिके श्रीरामचन्द्र के पदको लीनकही प्राप्तिभई है ज्यहि पदको पाइकैफिरि जगत् में जीव नहीं आवते हैं किन्तु हरिपद परमपद ताको प्राप्ति भई अरु जो कोई कहौ कि लीन कही हरिपद विषे लयह्वै गई एकह्वैगई है जहां पद विषे लीनता नहीं कहाहै स्वरूप में जहांतहां कहा है ताते हरिपद को प्राप्तिभईइहां श्रीरामचन्द्र को हरिकहा है हरिर्हरतिपापानिशवरीकर पापहरिकै अपनीकीन है ( ४३ ) ताते हेप्राणिहु विविधि प्रकार के जे कर्म्म अरु धर्म्म हैं ताते धर्म्म कर्म्म अधर्म्म बहुमत सर्वको त्यागकरहु काहेते कि ये सम्पूर्ण भक्ति के विरोधी हैं ताते शोकप्रद कही शोक के दाता हैं ये ते समस्त त्यागिकै विश्वासकरिकै यहगोसाईं तुलसीदासकहते हैं किहे मनुष्यहु श्रीरामचन्द्रके पदविषे विशेष अनुराग करहु जो आपन कल्याण चहहु ( ४४ ) दोहार्थ॥ देखिये तौ जाति करिकैहीन अरुहिंसामय पापरूप भिल्लिनि नीचयोनि में जन्म महिविषे स्त्री सबप्रकार

सबत्यागहू बिश्वासकरिकहदासतुलसीरामपदअनुरागहू ४४ दोहा॥ जातिहीनअघजन्ममहिमुक्तिकीनअसनारि महामंदमनसुख चहसिऐसेप्रभुहिंबिसारि ४५॥ * * * * * * * *

चौ० ॥ चलेरामत्यागयउबनसोऊ अतुलितबलनरकेहरिदोऊ १ बिरहीनरइवकरतविषादा कहतकथाअनेकसंबादा २ लक्ष्मणदेखुबिपिनकैशोभा देखतक्यहिकरमननहिंछोभा ३ नारिसहितसबखगमृगवृन्दा मानहुंमोहिकरतहैंनिन्दा ४ हमहिंदेखिमृगनि-

ते अशौच ऐसीनारि त्यहिको दुर्ल्लभ योनि की गति को श्रीरघुनाथजीप्राप्तिकीन है ताते हे महामन्दमन ऐसे श्रीरामचन्द्रको बिसारिकै तहां तू सुख चहैहै ( ४५ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसनेआरण्यकाण्डे शवरीभक्तिमुक्तिबर्णनन्नामचतुर्द्दशस्तरंगः १४॥

दो०॥ दशअरुपांचतरंगमें चलेरामबनआन रामचरणप्रभुविरहकहिपंपासरहिपयान १५ हे पार्वती सो बनत्यागिकै श्रीरामचन्द्र लक्ष्मणजूआगे चले सो कैसे हैं नरन में वीरहैं अरु सिंहकही श्रेष्ठ हैं अतुलितबल हैं ( १ ) तहां बिरहीनरके समान विषादकरते अरु लक्ष्मणजूते अनेककथा सम्बादकहते हैं ( २ ) हे लक्ष्मणजू यहिबनकी शोभादेखौ तौ देखिकै क्यहिको मन न क्षोभित ह्वइजाइ क्षोभितकहीसंदेहयुक्तमनबशनह्वइजाइ ( ३ ) हे तात अपनी स्त्रिनसंयुक्त खगमृगवृन्दशोभित हैं मोरि निंदाकरते हैं ( ४ ) हे लक्ष्मणजी हमको देखिकै मृगभागिजाते हैं तहां मृगी कहती हैं कि तुम मतभागहु तुमको भयनहीं है ( ५ ) जहांतक तुम मृग जायकही उत्पन्नहहु सोतुम आनन्दकरहु येतोकञ्चनकेमृग मारिबेको खोजतेफिरते हैं यहमृगिनकेवचन सुनिकैश्रीरघुनाथजी बहुतप्रसन्नभये हैं ( ६ ) देखौतौकरिणीकही हथिनीतिनको हाथी संगमें लिहे हैं मानहुं मोको सिखापनदेते हैं कि तुमश्रीज़ानकीजीको काहेको छोड़िकै कहूंगये ( ७ ) हे लक्ष्मणजी यहनीति है कि शास्त्रकोबारबार चिंतवनकरि देखतरही तब शास्त्र को विषय हस्तामलकरहै है अरु चिन्तवन देखव छूटिजातहैं तबशास्त्र की विषयनहीं भासित होती है अरुभूपकीसेवा समीपह्वैकैअहर्निशि करते हैं अरु जो कहूं एकबार विक्षेप परिगयो तब पुनिराजा अपने बशनहीं है दंडहेतुहै ( ८ ) अरु जैसे स्त्रीको उरमें लगायेरहै तदपिकहूं एकहूं

करपराहीं मृगीकहहिंतुमकहंभयनाहीं ५ तुमआनंदकरहुमृगजाये कञ्चनमृगखोजनयेआये ६ संगलाइकरणीकरिलेहीं मानहुमोहिंसिखावनदेहीं ७ शास्त्रसुचिंततपुनिपुनिदेखिये भूपसुसेवितवशनहिंलेखिये ८ राखियनारियदपिउरमाहीं युवतीशास्त्रनृपतिवशनाहीं ९ देखहुतातबसंतस्वहावा प्रियाहीनम्वहिंभयउपजावा १० दो०॥ बिरहबिकलबलहीनम्वहिं जानिसिनिपटअकेल सहितबिपिनमधुकरखगन मदनकीन्हबगमेल ११ देखिगयउभ्रातासहित तासुदूतसुनिबात डेराकीन्ह्यउमनहुंतिनकटकन भटकहिजात १२ चौ०॥ विटपविशाललताअरुझानी बिबिधिवितानदियेजनुतानी १३ कदलितालबरध्वजापताका देखतमो-

बारछूटितौ स्वतंत्रह्वइकै हाथते जातिरहै तैसेशास्त्र अरु भूपतिको जानिये ताते हेतात मैं जानकीजीको छोंड़िगयों ताते मोरे हाथते जातरहीं हैं ( ९ ) हेतात देखहुतौ यह कहा चरित्र है देखियेतौ मेरेऊपर कामतौसेनासंयुक्तनहीं चढ़्यो है हे पार्वती इहां रघुनन्दनजी अतिबिरह बियोग शृंगाररस देखावते हैं तहां देखियेतौ स्वाभाविकै बसन्त ह्वइरह्यो हैप्रियाजो श्रीजानकीजी हैं तिनतेहीनमोकोजानिकैभयउपजावतहै ( १० ) दोहार्थ ॥ हेतात मोको श्रीजानकीजीके विरहते बिकलताते बलहीनअकेलजानिकै मदन अपनी असवारी बन सहित मधुकर खगमृग इत्यादिक ते यहिसमय विषे मदकीसेना के बाहनहैं तिनबाहननकी बगमेलकही बाग मेरे जीतिबे हेतु छोंड़त भयो है ( ११ ) तब हे तात

कामकेदूत त्रिविधि पवन ते तुम्हैं संयुक्त मोको देखिगये कामते कह्योजाइ कि भ्राता महाबीरसंगहै तब सुनिकै कामकी असवारी थँभिरही काहेतेतुम विरहते बचेहौ तुम्हारे भयते डेराडारि दियो है त्यहिके कटककेभट कहेनहींजाते हैं ( १२ ) देखियेतौ विशालविशाल विटपनविषे लताचढ़िकै अरुझिकै छत्राकार ह्वैरही हैं मानहुं विविधि प्रकार के वितानकही तम्बूतानिदिये हैं ( १३ ) तहांराजनकी सेनामें ध्वजापताका होते हैं अरुयहि के कदलीके पेड़ सोई पताका हैं अरु तार के पेड़ सोईध्वजा हैं झंडाजाकोकही जो यहिकीसेना देखिकैनमोहै त्यहिकेमनमें वड़ाधीरजानिये ( १४ ) अरु हेतात विविधि प्रकार के तरु बिबिधि प्रकार के फूल फूलिरहे हैं जनुतरु बानैतहैं अरु तिनकेशाखा धनुषहैं अरु फूल विविधिप्रकारके बाण हैं ( १५ ) अरु कहूं कहूं भिन्नविटप शोभित हैं जनु बिलगह्वइकै आपन आपनडेरा ठाढ़करिकरि भट उतरिरहे हैं ( १६ ) अरु पिक जे कोकिला ते बसन्त में मतवारे कूंजबकही बोलते हैं ते मानहुं गजनको मधुर मधुरगर्जब है अरु ढेक जे पक्षी हैं ते मानहुं ऊंटनकीपंक्ति हैं अरु महोषपक्षी

हधीरमनजाका १४ बिबिधिभांतिफूलेतरुनाना जनुवानैतबनेबहुबाना १५ कहुंकहुंसुंदरबिटपसोहाये जनुभटबिलगबिलगह्वैछाये १६ कुंजतपिकमानहुंगजमाते ढेकमहोषऊंटबेसराते १७ मोरचकोरकीरबरवाजी पारावतमरालसबताजी १८ तीतरलावापदचरयूथा बरणिनजायम-नोजबरूथा १९ रथगिरिशिलादुंदभीझरना चातकबंदीगुणगणबरना २० मधुकरमुखरभेरिसहनाई त्रिबिधिबयारिवसीठीआई २१ चतुरंगिनीसेनसबलीन्हे बिचरतसबहिचुनौटीदीन्हे २२ लक्ष्मणदेखतकामअनीका रहहिंधीर

जे हैं ते व्यसरातेकही खच्चर हैं ( १७ ) अरु मयूर चकोर कीरकही सुआते जातिजाति के बाजीकही घोड़े हैं अरु पारावतकही कबूतरजे हैं अरु मरालहंस जे हैं सागरनविषे तेई ताजीजाति के घोड़े हैं ( १८ ) अरु तीतर जे हैं अरु लावाकही बटेर इत्यादिक जे हैं ते सब पैदर हैं यूथयूथ हैं हे तात यह मनोज की सेना बरूथ की बरूथ बर्णी नहींजाइ है ( १९ ) अरु पर्बतन के शिलाजे हैं ते अनेकरथ टिकिरहे हैं अरु पर्बतनके झरना जे झरते हैं तेई मुकामके दुन्दुभी कही नगाराबाजते हैं अरु चातककहीपपीहा ते बन्दीकही भाटके गण हैं राजा के गुणगणबर्णते हैं ( २० ) अरु मधुकरनको गुञ्जार जो फूलनको रसलेतसन्ते सोई भेरी सहनाई हैं पुनि मधुकर गानकरते हैं मयूर नाचते हैं अरु शीतलमन्द सुगन्ध पवन सोई बसीठीकही दूत आये हैं ( २१ ) हे तात चतुरङ्गिनीसेना सब साथमें लीन्हे बनमें बिचरत हैं सबको चुनौटीदेत हैं कि जो कोई मुनि योगी ज्ञानी ध्यानी बिरक्त इत्यादिक बीरहोहिं ते आइकै मेरे सन्मुखहोहिं ( २२ ) हे लक्ष्मण यह काम कै अनीकदेखतसन्ते जे धीर रहिजाहिं मन न डिगैं तिनकी यहिजगत में धीरनमें लीक है ( २३ ) अरु हेतातयह काम राजाके अतिबल परमस्त्री है त्यहिते जे कोऊ उबरैं तेईभारी सुभट हैं ( २४ ) दोहार्थ ॥ हे तात ये तीनि अतिप्रबल हैं काम क्रोध लोभये तीनिउं महासेनापति हैं जे मुनि विज्ञान ध्यान के तत्परधाम हैं तिनके मनमें एक निमिषमें क्षोभ करिदेते हैं सन्देह संयुक्त विक्षेप करिदेते हैं श्रीभगवद्गीतायां त्रिविधंनरकस्येदंद्वारं नाशनमात्मनः। कामक्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयंत्यजेत् ( २५ ) तहां हे तात लोभकरबल जब दम्भकरबलभयो अरु जब दम्भको अंगीकार कियो तब लोभ ने जीतिलियो अरु कामकोबल केवल जब स्त्रीमें इच्छाचलै तहां स्त्रीकोदेखब बतलावहास्यव्यवहार इत्यादिक जबकरैलाग तब काम ने जीतिलियो है अरु

तिनकैजगलीका २३ यहिकेएकपरमबलनारीत्यहितेउबरसुभटस्वइभारी २४ दो०॥ तातत्तीनिअतिप्रबलये कामक्रोधअरुलोभ मुनिबिज्ञानधाममन करहिंनिमिषमहंक्षोभ २५ लोभकेइच्छादंभबल कामकेकेवलनारि क्रोधकेपरुषबचनबल मुनिवर कहहिं बिचारि २६ चौ०॥ गुणातीतसचराचरस्वामी रामउमासबअंतरयामी २७ कामिनकैदीनतादेखाईधीरनकेमनविरतिदृढ़ाई २८ क्रोधमनोजमोहमदमाया छूटहिंसकलरामकीदाया २९ स्वइनरइन्द्रजालनहिंभूला जापरहोइसोनटअनुकूला ३० उमाकहौं मैं

क्रोध को बल परुष बचन कहना जब काहूते टेढ़ ब्यंग्यवचन तर्कबचननिन्दा वादविबाद इत्यादिक कै इच्छाकरते हैं तहां तिनको क्रोध ने जीतिलियो है यह मुनिबर बिचारिकै कहते हैं ( २६ ) हे पार्वती यहसबप्रपंच गुणनको प्रभाव है अरु चराचर स्वामी श्रीरामचन्द्र गुणातीत हैं सबके अंतर्यामी हैं यह सब अपनीलीला करते हैं ( २७ ) हे पार्वती यहकामिनको दीनता देखावते हैं अरु धीरमान पुरुषनको धीरता दिखायकै बैराग्य में दृढ़कीन है कि इनसबकर त्यागही श्रेयस्कर है ( २८ ) हेपार्वती क्रोध मनोज मोह मद माया इत्यादिक श्रीरघुनाथजी की कृपा ते छूटते हैं तहां श्रीरामचन्द्र ने विवेकिन के हेतु कृपाकरिकै जनाइदियो है ( २९ ) हे पार्वती नटको साधकजो नर सो नटकेइन्द्रजालमें नहींभूलतहै काहेते कि नटओही के ऊपर अनुकूल है तैसे प्राणी सर्ब धर्म बर्णाश्रम अहंमम इत्यादिक सर्बत्यागिकै केवल श्रीरामानन्य सेवक अच्युत गोत्र हैं तिनको यह श्रीरामचन्द्र को प्राकृतइव नटखेल नहीं प्राप्त है स्वामी की लीला जानते हैं पर संसार ते तारिबेको यह दिब्य चरित्र है काहेते कि उनके ऊपर श्रीरामचन्द्र अनुकूल हैं ( ३० ) हे उमा अबहमआपन अनुभव सिद्धांत कहते हैं श्रीरामचन्द्र को भजन सत्य है अरु सम्पूर्ण जगत् व्यवहार सहित स्वप्नवत् है असत्य है ( ३१ ) पुनि श्रीरामचन्द्र श्रेष्ठ पम्पासरके समीप जातभये अति सुभगगम्भीर जल  है ज्यहिको ( ३२ ) त्यहिको कैसो निर्मल जल है जैसे सन्तनके हृदय निर्मल हैं अरु चहुँदिशा में चारिघाट मनोहर बांधे हैं जैसे साधुन के हृदयमेंयोग वैराग्य ज्ञान विज्ञान शोभित है अरु भक्ति जल है अनेक दिब्यगुण जे हैं सो कमल मृग विहंगादिक हैं ( ३३ ) अरु तहां तहां मृग बिहंगादिक जल पीवते हैं जैसे उदार धर्मात्मन के याचकनकी भीर बनीरहती है ( ३४ ) दोहार्थ ॥ त्यहिसरमें पुरइनि सघनछाइरही है त्यहिके ओट ते शीघ्र जल

**अनुभवअपना सतहरिभजनजगतसबसपना ३१ पुनिप्रभुगयेसरोवरतीरापम्पानामसुभगगम्भीरा ३२ संतहृदयजसनिर्मलबारीबांधेघाटमनोहरचारी ३३ जहँतहँपियहिंविविधमृगनीरा जिमिउदारगृहयाचकभीरा ३४ दो०॥ पुरइनिसघनओटजलवेगिनपाइयमर्म मायाछन्ननदेखियेजैसेनिर्गुणब्रह्म ३५ सुखीमीनसबएकरसअतिअगाधजलमाहिं यथाधर्मशीलनकेदिनसुखसंयुतजाहिं ३६ चौ०॥ विकसेसरसिजनानारङ्गा मधुरमुखरगुंजहिंबहुभृङ्गा१ बोलतजलकुक्कुटकलहंसा प्रभुबिलोकिजनुकरतप्रशंसा २ चक्रवाक** * * * * * *

नहींदेखिपरै है कैसे जैसे माया के छन्नकही आवरण ते निर्गुणब्रह्म सर्बब्यापक हृदय में नहींदेखिपरै है ( ३५ ) तहां अतिअगाधजल विषे मीन जे हैं ते एकरस अति सुखीरहते हैं जैसे धर्मशील पुरुष जे हैं तिनकेदिन सुखसंयुतबीतते हैं ( ३६ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेआरण्यकाण्डे श्रीरामचन्द्रविरह पम्पासरप्राप्तिशोभावर्णनंनामपंचदशस्तरंग: १५॥ :: :: :: :: :: :: ::

दोहा ॥ पंपासरबर्णनबहुरिदशअरुषष्ठतरंग रामचरणमुनिमिलनपुनिनारदविविधप्रसंग १६॥ हे पार्वती त्यहि सरविषे पांचरंग के कमल फूले हैं नील हरित अरुण श्वेत पीत अरु तिन कमलन के मकरन्दहेतु मधुकरनकीमधुर मुखर गुंजारशोभित है ( १ ) त्यहि पम्पासरविषे जलकुक्कुट कही पक्षी जो जलही में रहते हैं ते अरु हंस तहां कलनामशोभित बोली ते बोलते हैं जनु श्रीरामचन्द्र को देखिकै प्रशंसा कही स्तुतिकरते हैं ( २ ) अरु चक्रवाक कही चकई चकवा अरु बककही बगुलाइत्यादिक समुदायपक्षी जे हैं ते अति शोभित हैं देखतबनै है वर्णिबे योग्य नहीं हैं ( ३ ) सुन्दरजे अनेक पक्षी गण हैं तिनके मुखरकहीशब्दअति शोभायमान होते हैं जनु पथिकन को जातसन्ते बोलाइ लेते हैं कि मज्जन जलपान करिलेहु ( ४ ) अरु तालके निकट चहूंदिशि मुनिगण पर्णतृणकैकुटी सुन्दरिबनाइकै बिराजे हैं अरु वृक्षलगे हैं ( ५ ) चम्पा बकुल कही मौलसिरी अरु कदम्ब अरु तमाल श्यामरंग है अरुपाटल गौररंग है सो देवतरुहै अरु कहूं पाटल लताको भी कहते हैं पनसकही कटहर अरु पलाशकही ढाकअरु रसाल कही आम इत्यादिक उत्तमवृक्ष चहुँफेरलगे हैं ( ६ ) अरु नित्य विविध रंग के नवीनपल्लव फूले

बकखगसमुदाई देखतबनैबरणिनहिंजाई ३ सुंदरखगगणगिरास्वहाई जातपथिकजनुलेतबोलाई ४ तालसमीपमुनिनगृहछाये चहुंदिशिकाननबिटपलगाये ५ चंपकबकुलकदंबतमाला पाटलपनसपलाशरसाला ६ नवपल्लवकुसुमिततरुनाना चंचरीकपटलीकरगाना ७ शीतलमंदसुगंधसुभाऊ संततबहैमनोहरबाऊ ८ कहूं कहूं कोकिलध्वनिकरहीं सुनिरवसरसध्यानमुनिटरहीं ९ दो०॥ फलभारननवविटपसबरहेभूमिनियराय परउपकारीपुरुषजिमि नवहिंसुसम्पतिपाय १० चौ०॥ देखिरामअतिरुचिरतलावा मज्जनकीन्हपरमसुखपावा ११ देखिएकसुंदरतरुछाया बैठेअनुजसहितरघुराया १२ तहँपुनिसकलदेवमुनिआये अस्तुतिकरिनिजधामसिधाये १३ बैठेपरमप्रसन्नकृपाला कहतअनुजनसनकथारसाला १४ विरहवंतभागवंतहिदेखी नारदमनभाशोचबिशेषी १५

हैं सो अति शोभित हैं अरु तिनके पुष्पनपर चंचरीकनकी पटली कही पंक्तिकी पंक्ति गानकरती हैं ( ७ ) अरु शीतल मन्दसुगन्ध पवन स्वाभाविक सन्तत कही निरन्तर मनोहर बहत है ( ८ ) अरु कहूंकहूं कोकिलाअतिमधुर ध्वनिकरते हैं ज्यहि सुनिकै मुनिन के ध्यानछूटिजाते हैं ( ९ ) दोहार्थ ॥ सबतरु नित्यनवीन रसमय फलके भारनते भूमिमें नियराइरहे हैं जैसे परोपकारी पुरुष जे हैं ते सुसम्पति पाइकै नइ चलते हैं ( १० ) चौ०॥ हे पार्वती श्रीरामचन्द्र रुचिर तालाब देखिकै स्नानकरतेभये तालाब परमसुखको प्राप्तिभयो है किंतु श्रीरामचन्द्र परमसुखको प्राप्ति भये है ( ११ ) तब एक सुन्दरतरुकी छायादेखिकै अनुज सहित श्रीरामचन्द्र विराजतभये ( १२ ) तहां श्रीरामचन्द्र को सुखासीन जानिकै ब्रह्मादिकदेवता अरु अनेकमुनि आवतभये फूलबर्षिकै स्तुतिकरिकै रामरुखपाइकै निज स्थान को जाते भये ( १३ ) तहां श्रीरामचन्द्र सुखासीन बैठे हैं अतिप्रसन्नता ते अनुज ते विरहसंयुक्त रसाल कथाकहते हैं ( १४ ) तब श्रीरामचन्द्रको बिरहसंयुक्त देखिकै नारद के मनमें विशेष शोच होत भयो है ( १५ ) पुनि नारद बिचार करते हैं कि देखिये तौ मोरशापअंगीकारकरिकै श्रीरामचन्द्र नानाप्रकारके दुःखकोभार सहते हैं तहां नारदके शापको अवतार तौ अपरकल्प में गोसाईं वर्णन कीन है तहांप्रमाणबालकाण्डे चौपाई॥ नारदशापदीन्हएकबारा एककल्पत्यहिलगिअवतारा १ अरु यहिकल्पबिषे तौ स्वायंभूमनुके हेतु अवतारभयो हैं तहां नारदअपनेशापको आरोपणकरते हैं तहां नारदकीबाणी में यह ध्वनि है कि मैं तो शापदीन है कौनेकल्प में त्यहिको परमेश्वर श्रीरामचन्द्रजी ऐसेकृपालु हैं कि मेरेशापको पर अवतारमें परम परमात्मा मानिर्लीन है ( १६ )

मोरशापकरिअंगीकारा सहतरामनानादुखभारा १६ ऐसेप्रभुहिंविलोकौंजाई पुनिनबनीअसअवसरआई १७ यहविचारिनारदकरबीना गये जहांप्रभुसुखआसीना १८ गावतरामचरितमृदुबानी प्रेमसहितबहुभांतिबखानी १९ करतदंडवतलियेउठाई राखेबहुतबारउरलाई २० स्वागतपूंछिनिकटबैठारे लक्ष्मणसादरचरणपखारे २१ दो०॥ नानाविधिविनतीकरि प्रभुप्रसन्नजियजानि नारदबोलेबचनतब जोरिसरोरुहपानि २२॥

ते ऐसे प्रभु भक्तप्रणधारी तिनको बिलोकौंजाइ फिरि ऐसो अवसर नहींमिलैगो ( १७ ) यहबिचार करिकै करमें बीणालैकै श्रीनारदजी जहां श्रीरामचन्द्रजी सुखासीन रहैं तहां जातभये ( १८ ) श्रीरामचन्द्रकर चरित प्रेमसहित गानकरत अरु मृदुबाणीते बहुत बखानते हैं ( १९ ) तब श्रीरामचन्द्र उठिकै दण्डवत्कीन्ह नारदमुनि उठाइकै बारबार उर में लगावत भये किंतु नारददंडवत्करतभये श्रीरघुनाथजी उठाइकै बारबार उरमें लगावतेभये परस्परअर्थ है ( २० ) तब श्रीरामचन्द्र स्वागतकही आदरते पूछते हैं हेमुनीशबड़ीकृपाकीन्ह आपु कौनेहेतु आगमनकीन केवल दर्शन हेतु पुनि अतिआदरते सुन्दरआसनपर बैठारतेभये लक्ष्मणजू जललैकै आदर संयुक्तचरणप्रक्षालतभये ( २१ ) दोहार्थ ॥ तब नारदजू

श्रीरामचन्द्रको अति प्रसन्नजानिकै नानाप्रकार ते स्तुति करिकै करकमल जोरिकै सुन्दरबचनबोलतभये ( २२ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने आरण्यकाण्डेनारदआगमनर्वणनन्नामषद्दशस्तरंगः १६॥ :: :: :: :: :: ::

दो० ॥ दशअरुसप्ततरंग में नारदप्रश्नबखानि प्रभुउत्तरनारदसुखीरामचरणदृढ़मानि १७ ॥ नारदबोलते भये हे श्रीरामचन्द्रजी तुम सहजही उदारहौ अति सुन्दर जो अगम वर है त्यहिको देते हौ ( १ ) हे स्वामी एक वरमांगत हौं यद्यपि तुम सबके अन्तर्यामीहौ तदपि मांगत हौं ( २ ) श्रीरामचन्द्र कहते हैं हेमुनि तुममोर सुभाव जानतेहौ मोरेजनको कौनौदुराव नहीं है ( ३ ) हे मुनि अस कौनि बस्तु मोको प्रियहै जोतुम नहीं मांगिसकते हौ ( ४ ) हे मुनि मोरे जनकहँ कछुअदेय नहीं है असविश्वासकरहुभूलिकै जनित्यागहु ( ५ ) तब नारद हर्षिकै बोलतेभये मैं ढीठह्वैकै असबरमांगौं तहां यह ध्वनि है कि यद्यपि ऐसोतुम्हारो नाम वेदकहते हैं सो आपुके परोक्ष वाक्य है पर त्यहिअनुसृत मैं आपुको प्रत्यक्ष वाक्य बरदान चाहतहौं कि मोहिंआदि जेते जीवब्रह्मांडकोश में हैं तिनके मुखनते एकबार कैस्यहु धोख्यहु रामनाम ऐसोशब्दउच्चारणहोइ त्यहिकेमन

**चौ०॥ सुनहुउदारसहजरघुनायक सुंदरअगमसुगमवरदायक १ देहुएकवरमांगौंस्वामी यद्यपिजानतअन्यर्यामी २ जानहुमुनितुममोरसुभाऊ जनसनकबहुंकिकरौंदुराऊ ३ कवनिबस्तुअतिप्रियम्वहिंलागी जोमुनिवरतुमसकहुनमांगी ४ जनकहंकछुअदेयनहिंमोरे असविश्वासतजहु जनिभोरे ५ तबनारदबोलेहर्षाई असबरमांगौंकरौंढिठाई ६ यद्यपिप्रभुकेनामअनेका श्रुतिकहअधिकएकतेएका ७ रामसकलनामनतेअधिका होउनाथअघखगगणबधिका ८ दो०॥ राकारजनीभक्तितव रामनामस्वइसोम अपरानामउड-**

वचन कर्मके अघ अरु जन्म मरण सम्पूर्ण नाशह्वइकै तुम्हारे पदकोप्राप्तिहोइ ऐसे चारिउयुग में होउ सदा यह वरपावौं जामें सर्बजीवको सहज में कल्याणहोइ ( ६ ) हे प्रभु यद्यपि तुम्हारे नाम अनेक अरु एकते एकअधिक हैं यह वेद कहते हैं इहां प्रभुकहतसन्ते जेते परमेश्वरके स्वरूप हैं तिनके सबके नामआइगये हैं अरु प्रभुके स्वरूप सब एकही हैं तातेसबप्रभुके स्वरूपकी एकता करिकै श्रीरामचन्द्र से कहते हैं कि इहां श्रीरामचन्द्रप्रभु हैं परात्मपरब्रह्ममूर्त्तितातेकहा है ( ७ ) तहांतुम्हारे सबनामते रामनामअधिकहैसोनामकैसाहै कोऊकैसहूउच्चारणकरौशोकते धोखेतेप्रीति अनप्रीतिहुतेरामकहै त्यहिके मनवचन कर्मकेअनेक अघसोई विहंगहैं त्यहिकेनाशकरिबेकोबधिक हैं ऐसेसर्बजीवनका-सर्वकालमेंएकरसहैयबरपाऊं ( ८ ) दोहार्थ ॥ हे श्रीरामचन्द्र राका कही पूर्णमासीकी रात्रि सोई तुम्हारी भक्ति है अरु रामनाम पूर्णचंद्र है अरु सन्तनकर अंतष्करणजो है सोई आकाश है तहांबसउ यह बरदेउ अरु अपर नामजो तुम्हारे अपरस्वरूप के हैं सो बिमलनक्षत्र हैं तिनसंयुक्त बसहु चंद्रमा उड़गणराज है जैसे परमेश्वरके जे अनंतनाम हैं तिनसब नामनको राजा रामनाम है पर चंद्रमाअपने एश्वर्यते नक्षत्रनके ऐश्वर्य मंद करिदेत है अरु रामनामनके ऐश्वर्य पूर्णराखे है प्रमाणं श्रीमन्महारामायणे श्रीशिववाक्यं पार्बतींप्रति श्लोक १२ श्रृणुष्वमुख्यनामानिवक्ष्येभगवतःप्रिये। विष्णोर्नारायणः कृष्णोवासुदेवोहरिस्मृतः १ ब्रह्मविश्वंभरोनंतो विश्वरूपः कलानिधिः। कल्पषघ्नोदयामूर्तिः सर्वगः सर्वसेवितः २ परमेश्वरनामानि संत्यनेकानिपार्वति। एकादेकंमहास्वच्छमुच्चरन्मोक्षदायकः ३ नाम्नामेवचसर्वेषांरामनामप्रकाशकः । ग्रहाणांचयथाभानुर्नक्षत्राणांयथाशशिः ४ देवानांचयथाशक्रोनराणांभूपतिर्यथा। सर्वलोकेषुगोलोकः सरयूनिम्नगासुच ५ निर्जराणांयथानंतोभक्तानामंजनीसुतः । शक्तीनांचयथासीतारामोभगवता

**गणविमल बसहुभक्तिउरब्योम ९ एवमस्तुमुनिसनकह्यउकृपासिंधुरघुनाथ तबनारदमनहर्षअतिप्रभुपदनायोमाथ १० चौ० ॥ अतिप्रसन्नरघुनाथहिंजानी पुनिनारदबोलेमृदुबानी ११ रामजबहिंप्रेर्‌यहुनिजमाया मोह्यउमोहिंसुनहुरघुराया १२ तबविबाहमैं चाहौंकीन्हा प्रभुक्यहिकारणकरैनदीन्हा १३ सुनुमुनितोहिंकहौं सहरोसा भजहिंमोहिंतजिसकलभरोसा १४ करौंसदातिनकैरख** * *

मपि ६ भूधराणांयथामेरुःसरसांसागरोयथा कामधेनुर्गवांमध्येधन्विनांमन्मथोयथा ७ पक्षिणांवैनतेयश्चतीर्थानांपुष्करोयथा। अहिंसासर्वधर्माणां साधुत्वेपिदयायथा ८ मेदिनीक्षमिनांमध्येमणीनांकौस्तुभोयथा। धनुषांचयथाशार्ङ्गोखङ्गनांनन्दकोयथा ९ ज्ञाननांब्रह्मज्ञानंचभक्तीनांप्रेमलक्षणा। प्रणवःसर्वमन्त्राणांरुद्राणामहमेवच १० कल्पद्रुमश्चवृक्षाणांयथायोध्यापुरीसुच। कर्मणांभगवत्कर्म अकारश्चस्वरेष्वपि ११ किमत्रबहुनोक्तेनसम्यग् भगवतःप्रिये। नाम्नातथाचसर्वेषांरामनामपरंमहत् १२ ( ९ ) दोहार्थ॥ तबकृपा के समुद्र श्रीरामचन्द्र ने मुनि ते एवमस्तु कह्यो तब नारदके मन में अतिहर्षभयो श्रीरामचन्द्र के चरणारविंदमें माथनावतेभये ( १० ) तबश्रीरामचन्द्र को अतिप्रसन्न जानिकै अतिमृदुवाणी बोलतेभये ( ११ ) हे श्रीरामचन्द्र जब तुम मेरे ऊपर अपनीमायाको प्रेरणाकीन तब मोकात्यहिने ब्यामोहित करिलीन ( १२ ) तब मैं विवाहकीन चाहौं तहांआपुने क्यहि कारण करिकै न करै दीन तहां नारदजी प्रभुको सबस्वरूप एकमानिकै कहते हैं ( १३ ) तबप्रभुबोले हे मुनि मैं तुमसे सहरोषकही सत्य संकल्पकरिकै कहत हौं जे मोको सब भरोसतजिकै भजते हैं तहां सबभरोसकही अर्थ धर्म काम मोक्ष जे हैं चारिहुफल के क्रिया फलसंयुक्त तिनकर भरोस त्यागिकै मेरे शरणह्वइकै मोको भजते हैं ( १४ ) तिनकै रखवारी मैं सदाकरतहौं जैसे माता लघुबालक कै रक्षाकरती है ( १५ ) जब शिशु बालक बच्छकही लाड़की वाक्य श्रीअयोध्याकांडे दोहा॥ बहुरिबच्छकहिलालकहि शिशु पांचवर्षताईं जो उहै शिशु कहूं सर्प अरु अनलधरै को धायो है तब माता हजारन कार्यछांड़िकै बालकको अरगाइकही पकरिलेती है कहूंकहूं दूसर पाठ कहते हैं चौपाई॥ गहिशिशुबच्छअनलअहिधाई तहँराखैजननी अरुगाई ॥ तहां यह अर्थहोत है कि जो शिशु मनुष्यकोबालक अरु गऊको बछरा तहां शिशुबछरा जो अनल अरु अहिको धाइकै धरै तौ तहां जननी अरु गऊ राखिलेती है धरिलेती है तहां यह अर्थ में दूषण है काहेते कि बछरा अग्नि अरु अहिकरिबेको प्रयोजनै नहीं सम्भवै है अरु गऊको बछराधरिबेको नहींसम्भव है ताते पूर्णपाठसिद्धिहै ( १६ ) हे नारद जब उहै बालकप्रौढ़कही सयानभयो तब त्यहि सुत :: :: :: ::

वारी जिमिबालकपालैमहतारी १५ गहिशिशुबच्छअनलअहिधाई तहँराखैजननीअरगाई १६ प्रौढ़भयेत्यहिसुतपरमाता प्रीतिकरैनहिंपाछिलबाता १७ मोरेप्रौढ़तनयसमज्ञानी बालकशिशुसमदासअमानी १८ जिनहिंमोरबलनिजबलताहीं दुहुंकहँ काम * * *

पर माताप्रीति तौ करती है पर पाछिलबात नहीं मनमें ल्यावती है सो कवनि पाछिल बात जबबालकरह्यो तब अग्निसर्पको ज्ञाननहीं रह्यो तब माता रक्षाकरती है अरु जबसयानभयो अग्नि सर्पकोज्ञानभयो तबमाताको पुत्रभावकी प्रीतितौहै परअज्ञानको डरनहींहै काहेते किजबबालक सयान भयो तब वाको अग्निसर्पको ज्ञानहै ताते माताकोबोध है ( १७ ) तैसे हेनारद ज्ञानीजे हैं ते मेरेसयानपुत्रहैं अरुमेरेदासजे हैं अमानी सो मेरे बालपुत्र हैं काहेते कि सर्बमानरहित हैं ( १८ ) हे मुनि जैसे बालकके केवल माताको बलहै तैसे अमानी दासनके मोरबल है अरु जैसे सयाने पुत्रके अग्नि सर्पते बचिबेको आपनबल है तैसे ज्ञानीमेरे सयान पुत्रहैं काम क्रोध के बचिबे को उनको आपन ज्ञान है अरु जैसे अग्नि औ सर्प छोटेहु बालक को अरि है अरु बड़ेहुबालक को अरि है पर छोटेबालककी रक्षकमाता है अरु बड़ाबालक बचै तौ अपुना ते बचै अरु न बचै तौ अपुना ते तैसे काम क्रोध भक्त ज्ञानी दूनौ के रिपु है तहां भक्तकोतौ मैं बचावतहौ अरु ज्ञानी अपुना ते बचै तौ बचै न बचै तौ न बचै कामसर्प है अरु क्रोध अग्नि है प्रमाणं भगवद्गीतायां दैवीह्येषागुणमयीममामायादुरत्यया मामेवयेप्रद्यंतेमायामेतांतरंतिते ( १९ ) ऐसे विचारिकै पण्डितजन जे हैं ते मोको भजते हैं ज्ञानहुको पाइकै मेरीभक्तिकोग्रहणकरते हैं ( २० ) दोहार्थ ॥ हे मुनि काम क्रोध लोभ मदमात्सर्य मान इत्यादिक अतिप्रबल मोहकै धारिसेना जे हैं त्यहिके येषट्सेनापति हैं तिनके विषय अति दारुण दुःखकैदाता माया रूपीनारि है ( २१ ) चौ०॥ हे मुनि सुनु यह वेदपुराण सन्तकहते हैं तहां मोहरूपी विपिनकेस्त्री प्रफुल्लित करिबेको बसंतऋतु है ( २२ ) अरु जपतप नेम जलकर आश्रय है तहां तलाव नदी नारा डावर इत्यादिक जहां जलरहै है त्यहिके शोषण करिबेको स्त्री ग्रीष्म ऋतु है ( २३ ) हे मुनि काम क्रोध मदम-

क्रोधरिपुआहीं १९ यहबिचारिपंडितमोहिंभजहीं पायहुज्ञानभक्तिनहिंतजहीं २० दो०॥ कामक्रोधलोभादिमदप्रबलमोहकैधारि तिनमहँअतिदारुणविदुषमायारूपीनारि २१ चौ०॥ सुनुमुनिकहपुराणश्रुतिसंता मोहबिपिनकहँनारिबसंता २२ जपतपनेम जलाशयझारी होइग्रीषमशोषैसबबारी २३ कामक्रोधमदमत्सरभेका इनहिंहर्षप्रदवर्षाएका २४ दुर्बासनाकुमुदसमुदाई तिनकहँशरदसदासुखदाई २५ धर्मसकलसरसीरुहवृन्दा ह्वैहिमतिनहिंदेतदुखमन्दा २६ पुनिममताजवाससमुदाई पलुहइनारि शिशिरऋतुपाई २७ पापउलूकनिकरसुखकारी नारिनिबिड़रजनीअँधियारी २८ बुधिबलशीलसत्यसबमीना बंशीसमत्रिय कहहिंप्रबीना २९ दो०॥ अवगुणमूलशूलप्रद प्रमदासबदुखखानि तातेकीन्हनिवारण मुनिमैंयहजियजानि ३० चौ०॥ सुनि

त्सर इत्यादिक भेक कही मेंढक हैं तिनको हर्षप्रद कही सुख देबेको नारि प्रथम पावसको वर्षाऋतु है ( २४ ) अरु अनेक दुर्बासना जेहैं सोई कुमुदनी हैं तिनके सुखदेबे को शरदऋतु की पूर्णमासी की चन्द्रमासंयुक्तरात्रि है ( २५ ) अरु संपूर्ण धर्म जेहैं सोई कमलहैं तिनके दुःखदेबेको हिमऋतु की रात्री है धर्मको नाशकरिदेती है ( २६ ) पुनिममता जो है सोई जवासहै तिनको पलुहइकही प्रफुल्लित करिबेको स्त्री शिशिरऋतु है ( २७ ) अरु मनबचनकर्म को पापजो है सोई उलूकहै अरु स्त्री तिनकेसुखदेबेको सघनबर्षाऋतु की अमावसकी रात्री है ( २८ ) बुद्धि को अरु तनको बल अरु शील अरु सत्यते सब मीन हैं अरु सनेहजाल है अरुस्त्रीवंशीसम है यहप्रवीण कहते हैं ( २९ ) दोहार्थ॥ हे मुनि प्रमदा जो है सो अवगुणकी मूलहै अरु शूलकही दुःखकी प्रदनामदाता है सबशोक अरुदुःखकी खानि है ताते यहजानिकै मैं निवारण कीन है तहां विवाही स्त्री ऐसी धर्मकी बाधक है अरु हे मुनीश अपर स्त्रीन की का कहिये ( ३० ) चौ०॥ श्रीरामचन्द्र के अतिसुन्दर बचनसुनिकै मुनिके तन पुलकिआये हैं नेत्रनमें जल भरिआयो है ( ३१ ) मनमें कहते हैं कि देखिये तौ श्रीरघुनाथजी अपने जन पर जेती कृपाकरते हैं सो को कहिसकैहै तब नारद अपने मन में कहते हैं कि ऐसो कवनप्रभु है ज्यहिके सेवकपर यतनीप्रीति है ऐसे एक श्रीरामचन्द्र हैं दूसरप्रभुनहीं है यतनी समाई अपरप्रभु के अवतारहुविषे नहीं है अपरदेवताजे बड़े हैं प्रभुकहावते हैं तिनकी काकहौं ( ३२ ) ऐसे प्रभुको भ्रमत्यागिकै जे नहीं भजते हैं ते ज्ञानकेरंकहैं अरु मतिके मन्दहैं अरु अभागी हैं भ्रमकही असत्य जो संसार है तामेंसत्यभावकरना अरु श्रीरामलीला जो सत्य है तामें प्राकृतभाव करना

रघुपतिकेबचनसोहाये मुनितनपुलकनयनजलछाये ३१ कहहुकवनप्रभुकैयहरीती सेवकपरममताअरुप्रीती ३२ जेनभजहिं प्रभुअसभ्रमत्यागी ज्ञानरंकनरमन्दअभागी ३३ पुनिसादरबोलेमुनिनारद सुनहुरामविज्ञानविशारद ३४ सन्तनकेलक्षणरघुवीरा कहहुनाथभवभंजनभीरा ३५ सुनुमुनिसन्तनकेगुणकहऊं जिनते मैं उनकेवशरहऊं ३६ षटविकारजितअनघअकामा अचल अकिंचनशुचिसुखधामा ३७ अमितबोधअनीहमितभोगी सत्यसारकविकोविदयोगी ३८ सावधानमदमानविहीना धीरधर्मग- * * *

श्लोकार्द्ध ॥ रज्जौभुजंगवद्भ्रान्त्या बिचारेनास्तिकिंचन ( ३३ ) पुनि आदरसहित नारदजी बोलतभये कि हे श्रीरामचन्द्रजी बिज्ञानके विशारद सुनहु ( ३४ ) हे नाथभवकी भीरके अनेकजाल हैं त्यहिकेहरैया तुमसोसंतनके लक्षणकहहु ( ३५ ) तब श्रीरामचन्द्र बोले हे मुनि सुनहुसंतन के लक्षणमैं कहतहौं ज्यहिकरिकै मैं उनके वशहौं ( ३६ ) कैसे हैं संतषट्विकारजेते हैं काम क्रोधमद मात्सर्यादि तिनको जीते हैं अरु अनघकही पापरहित हैं अरु निष्काम हैं अरु अपने धर्म में अचलअकिंचन हैं अरुसबप्रकारते पवित्र हैं

अरु सुखके धामहैं ( ३७ ) अरु श्रुतिस्मृति गुरुवाक्य निजअनुभवमें अमितबोध है अरुअनीहकहीचेष्टाहर्षशोक रहित हैं अरु मितभोगी कही अल्पाहारी हैं अनायासप्राप्ति विषेसंतोष है अरु सत्यजोसार है त्यहि में आरूढ़ है अरुकविकही भूतभविष्यवर्तमान तीनिहूंकालकी गति जिनके हस्तामलकहै अरु जिनके अष्टांग योगसिद्ध हैं ( ३८ ) अरु अनेकद्वन्द्व धर्मविषे सावधान हैं अरु सबप्रकारते धीरमान् हैं अरु धर्मकी गतिमें बड़ेप्रवीण हैं ( ३९ ) दोहार्थ॥ अरु दिब्यगुण के आगार हैं संसारको व्यवहारदुःखरूप त्यहिते रहित हैं अरु अनेक संदेहतेबिगतकही रहितहैं अरु मोर कमलचरण जो है त्यहिको तजिकै जिनके देहगेह इत्यादिकन में नेहनहीं है केवलमेरे चरणारबिंद विषे नेहहै ( ४० ) पुनि मेरे संतकैसे हैं आपनगुण यश सुनतसंते सकुचाइजाते हैं अरु परावागुण सुनतसंते अति हर्षते हैं ( ४१ ) अरु सब जीवनविषे प्रीति करते हैं अरु समशीतल बुद्धि हैं अरु नीतिको नहीं त्यागते हैं नीतिविषे चलते हैं अरु सरलकही सर्व जीवनको सुखदाता हैं जिनके सदा सुभाव ऐसे हैं ( ४२ ) अरु जप तप ब्रत संयमनेम अरु दमकही इन्द्रीदमन अरु नेम अरु गोविन्द विप्रके चरणारविंदविषेप्रीति है ( ४३ ) फिरिउ मेरे सन्तकैसेहैं श्रद्धाक्षमाअरु मयित्री अरु दायात्यहिकरिकै :: ::

**तिपरमप्रवीना ३९ दो०॥ गुणागारसंसारदुखरहितविगतसंदेहतजिममचरणभरोसप्रियजिनकेदेहनगेह ४० चौ० ॥ निजगुणश्रवणसुनतसकुचाहीं परगुणसुनतअधिकहर्षाहीं ४१ समशीतलनहिंत्यगहिंनीती सरलसुभावसबहिंसनप्रीती ४२ जपतपब्रतदमसंयमनेमा गुरुगोविन्दबिप्रपदप्रेमा ४३ श्रद्धाक्षमामयित्रीदायामुदितामपदप्रीतिअमाया ४४ विरतिविवेकविनयविज्ञाना * * * ***

युक्त हैं श्रद्धाकही वेदगुरु वाक्य में प्रतीति क्षमाकहीपृथ्वीसमानमयित्री मयित्रीकही सर्वजीवनविषे पारमेश्वरी दृष्टिकरिकै सबते यथायोग्य मित्रभाव सबते निर्बैर अरुदायाकही काहूजीवकर दुःखनहीं सहिसकैसामर्थ्यते ऊपर उपकारकरते हैं अरु मुदितकही आनन्दसेमेरे चरणारविंदविषे प्रीति अतिशय परि अमायाकही निष्काम किंतु अमायाकही माया त्यहिते सबप्रकारते रहित हैं हे मुनि ऐसे मेरे भक्तनमें लक्षण हैं ( ४४ ) पुनि कैसे हैं मेरेभक्त विरतिकही वैराग्यमान हैं अरु विवेकी हैं अरु विनयमय हैं अरु विज्ञानमय हैं वैराग्यकही त्रैगुण्यजनित जो विषय त्यहिके स्वरूपहीको त्यागे हैं अरु विवेककही सारासारको जानिकै सारको ग्रहणअरु असारको त्यागकरै हैं जैसे क्षीरनीर मिलेते हंसक्षीर को ग्रहण करै है नीरको त्यागकरै है तैसही चित्तबुद्धि को हंसहंसिनि करिकै आत्मादुग्धताको ग्रहण अरु अनात्माचारि ताको त्याग पुनि बिकही बिकल्प दुइ को तहां द्वैत जो है तैं मैं तोर मोर इत्यादिक अहंमम देहाभिमानजामेंमति रति नहीं है सर्वथा त्याग है अरु शांति संतोष शीलकरुणाउदार इत्यादिक परमउत्तम आत्माकेगुण त्यहिकर ग्रहण म्वहिंसे अनन्यभावयह श्रीरामचन्द्र कहते हैं ताको विवेककही पुनि जैसे शक्करअरु बारूमिले ते पिपीलिका शक्करग्रहण करै है बारूको त्यागकरै है ताको विवेक कही विनय कही संसार को दुःखरूपमानिकैमोसे विनयकरते हैं अरु चराचरविषे मोको ब्याप्तजानिकै सर्वभूततेदीनह्वैरहेहैं अरुविज्ञानकही विशेषज्ञान आनात्माकोविषय त्याग अरुअपनी आत्मा अरु सर्वभूतकीआत्मासे समदृष्टि समबुद्धिब्रह्मानन्दकीप्राप्ति ताकोविज्ञानकही अरु वेदपुराणविषे यथार्थ जोतत्त्वहै त्यहिविषे बोधकहीज्ञान ( ४५ ) अरु हे मुनि मेरे सन्त कैसे हैं दम्भमानमद त्यहिकर त्याग दम्भकही अशास्त्रकर्त्तव्य अरु मानकही हमको कोई बड़ाकरिकै मानै मदअष्ट हैं जाति कुल विद्या धन रूप युवा

**बोधयथारथवेदपुराना ४५ दम्भमानमदकरहिंनकाऊ भूलिनदेहिंकुमारगपाऊ ४६ गाबहिंसुनहिसदाममलीलाहेतुरहितपरहितरतशीला ४७ मुनिसुनुसाधुनकेगुणजेते कहिनसकैंशारदश्रुतितेते ४८ छं० ॥ कहिसकनशारदशेषनारद सुनतपदपंकजगहे असदीनबन्धुकृपालु-अपनेभक्तगुणनिजमुखकहे ४९ शिरनाइबारहिंबारचरणनब्रह्मपुरनारदगये तेधन्यतुलसीदासआशबिहाइ जेहरिरंगरये ५० दो०॥ रावणारियशपावन**

**गावहिंसुनहिंजेलोग रामभक्तिदृढ़पावहिं बिनुविरागजपयोग ५१ दीपशिखासमयुवतिरस मनजनिहोसिपतंग भजहिंरामतजिकाममद करहिं-सदासतसंग ५२** * * * * * * * *

वैराग्यध्यान येते अष्टमद हैं अरु कुमार्गकही राजसतमासकरिकै मलीनकर्त्तव्य कामक्रोधलोभ इत्यादिक त्यहिको भूलिहुनहीं करते हैं त्यहिमार्ग में भूलिहुकै पाउँ नहीं देते हैं मनक्रमबचनते तिनकोत्याग है अरु त्यागको अभिमाननहीं है ( ४६ ) अरु मोरचरित्र लीला गावते अरु सुनते हैं अरु हेतुरहित पराये उपकारविषे रत अरु शीलाकही स्थान हैं ( ४७ ) हे मुनि मेरे साधुनके जेतेगुण हैं तेते शारद श्रुतिपुराणशेष महेष इत्यादिक नहीं कहिसकते हैं ( ४८ ) छन्दार्थ॥ हे मुनि शारद शेषमहेश इत्यादिक नहीं कहिसकते हैं यह सुनिकै नारदजी श्रीरामचन्द्रके पदपंकज गहतभये श्रीनारदजी अपनेमनमें कहते हैं कि देखिये तौ ऐसे दीनबन्धु कृपालु श्रीरामचन्द्र हैं कि अपनेभक्तनकेगुण अपने मुखतेकहते हैं भक्तऐसे प्रिय हैं ( ४९ ) पुनि नारद श्रीरामचन्द्रके चरणारविंदविषे बारबारशिरनाइकै ब्रह्मलोककोजातेभये पुनि गोसाईंतुलसीदासजी कहते हैं कितेनरधन्य हैं कि जे स्वार्थपरमार्थके साधनजेहैं तिनसबकी आशविहाइकै श्रीरामचन्द्रके चरणारविंदविषे रंगिरहे हैं ( ५० ) दोहार्थ ॥ यहगोसाईंतुलसीदासजीकहते हैं कि रावणारि जे श्रीरामचन्द्र हैं तिनकर जो निर्मल पावन यशहै त्यहिको जेनर आदरते गावहिं सुनहिं ते श्रीरामचन्द्रकी दृढ़भक्ति को प्राप्तिहोहिंगे विना योग वैराग्य ज्ञान इहांरावणारि क्यों कहा तहां भविष्य कहाहै काहेते रावणके नाशकरिबेहेतु अवतीर्णभये हैं पुनि मुनिन की समाजमेंसंकल्पकीन है कि निश्चर हीनकरौंमहि पुनि जटायुते कहा है दोहा॥ सीताहरणतातजनि कह्यउपितासनजाइ॥ जोमैरामतौकुलसहित कहिहिदशानन आइ १ ताते इहां रावणारि कहा हैं ( ५१ ) गोसाईंतुलसीदास कहते हैं संपूर्ण स्त्री पुरुषको संयोग दीपकी शिखासमहै अपने मनको पतंगनकरौ भस्म ह्वैजाहुगे त्यहि काममदको त्यागिकै सत्संगकरिकै श्रीरामचन्द्रके पदपंकजकोभजहु जोआपन कल्याणचाहौ ( ५२ ) धनाक्षरी ॥ सत्रहतरंगमध्यसत्रहपदार्थलसैं चारिअनुबन्धवैराग्यतेरहरंग हैं प्रथमाधिकारी षटशरणयुक्तग्रंथ विषय श्रीरामजूसे जीवसेतेरहसम्बन्ध हैं दाससख्यपतिपत्नी पितापुत्र प्रजाभूप मित्रभावब्रह्मजीव अंशअंशीसम्बन्ध हैं। प्रकाशीप्रकाश दीनोद्धरशेषशेषीधर्माधर्मी गुरुशिखा रामचरणसोसुगन्ध हैं ( ५३ ) चौथोअनुबन्धसोप्रयोजनकैङ्कर्यरामबहुरिवैराग्य चारिभूमिकाबखानिये। हेतु वैराग्यपुनिस्वरूप वैराग्यबहुरि फल वैराग्यबहुरिअवधिपहिचानिये। अनुभवजितमानवितरेक बशीकारएकइन्द्रीमन्दतीब्रतमजानिये। रामचरणभूमिका सअंगक्रियाचारिचारि उत्तरज्ञानदीपककेआदिमेंबखानिये ( ५४ ) तुलसीगोसाईंकृतसुभगअरण्यकाण्डपुत्रौयुक्तभक्तिसोहै अर्थनअवान्धहै । गंगाकीप्रबाहधाराचोंचभरिबिहंग लै त्रिपितभेनीकेथाहपावैक्योंअगाध है। तैसहीसुमेरुविषेरंकसोनापाइधनीहंसक्षीरसागरसुकल्पबृक्षौलाध हैं। रामचरणतैसेमैंअर्थरत्नसुधापायोंगायों सोत्यहिकेअधिकारीसर्वसाधु हैं ( ५५ ) दोहा॥ सम्बतसतअरुआठदशअसीअवधसियघाट रामचरणबनकाण्डकोतिलकपूरमतिठाट ( ५६ ) इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेआरण्यकाण्डेविमल वैराग्यज्ञानभक्तिसम्पादनोनामसप्तदशस्तरंगः १७॥

इतिश्रीरामचरितमानसेसककलिकलुषविध्वंसनेआरण्यकाण्डेविमलवैराग्यसम्पादनोनामतृतीयस्सोपानस्समाप्तः॥

# ॥रामायण तुलसीदासकृत सटीक॥

## ॥किष्किन्धाकाण्ड॥

श्रीरामाय नमः॥ दोहा॥ रामचरणवंदतसदा रामलषण पदकंज रामचिरतपावनपरमबरणौंनिजमतिरंज १ पावन गंगतरंगबरबिलसतप्रथमतरंग रामचरणहनुमतमिलन पुनि सुग्रीवप्रसंग २ श्लोकार्थ॥ श्रीरामचन्द्र अरु श्रीलक्ष्मणजी पम्पासरतेउठिकैऋष्यमूक पर्वतको चलतभये हैं श्रीरामचन्द्रजीकैसे हैंइन्दीवरकहीश्यामकमलतद्वत्श्यामकोमलसुगन्ध-मकरन्दमयऐसोस्वरूपसुन्दर अतिशय अरुलक्ष्मणजी कुन्दकेफूल तद्वत्उज्ज्वल कहीगौरकोमलसुगन्ध मकरन्दमय ऐसोस्वरूप सुन्दर है अरु दोऊभाई अतिशय बल अरु विज्ञानके धाम हैं अतिशोभा करिकै आढ्यकही युक्त हैं अरु वरकही श्रेष्ठधनुष वाण लिहे हैं द्वौभाइनकेकर विषे शोभित है अरु कटिविषे तूणकसे हैं गऊ ब्राह्मण सन्तके रक्षक सबप्रकारते अतिशयप्रिय हैं अरु श्रुति स्मृति पुराण करिकै स्तुतिमान हैं अपनी दिब्य मायाके आचरण करिकै परम दिब्य मनुष्य रूप लीला करते हैं ऐसे श्रीरामलक्ष्मण रघुवंशकुल में अवतीर्णह्वैकै परमदिब्य अनेक चरित्रकरते हैं अरु परम दिब्य धर्मजे हैं सोई वर्म कही

श्लोक॥ कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौविज्ञानधामावुभौ शोभाढ्यौवरधन्विनौश्रुतिनुतौगोविप्रवृन्दप्रियौ। मायामानुषरूपिणौरघुवरौसद्धर्मवर्म्मौहितौ। सीतान्वेषणतत्परौपथिगतौभक्तिप्रदौतौहिनः॥१॥ ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवंकलिमलप्रध्वंसनंचाव्ययं श्रीमच्छंभुमुखेन्दुसुन्दरवरंसंशोभितंसर्वदा संसारामयभेषजंसुखकरंश्रीजानकीजीवनं धन्यास्तेकृतिनः पिबन्तिसततंश्रीरामनामामृतं २

बखतरपहिरे हैं अरु श्रीजानकीजी को अति प्रीतमें तत्परह्वैकै पंथविषेअन्वेषण कही खोजते हैं काहते सब जीवन को भक्तिप्रद कही भक्ति देते हैं अरु दोऊभाई निश्चयकरिकै भक्तवत्सल हैं। ( १ ) अबदूसरे श्लोकविषेश्रीमद्रामायणको विशेषणकहते हैं ब्रह्म जोहैं वेद सोई अंभोधि कही क्षीर समुद्र हैं त्यहिते समुद्भव कही उत्पन्नभयो है अमृतमय श्रीमद्रामायणको कैसे निकासि लियोहै तहां योगको कच्छप ज्ञानको मन्दराचल उपासना वासुकि रज्जुकरिकै महादेवने मथिकै काढ़िलीन है कैसे वह अमृतरूप रामायण है कलिकही क्लेश त्यहिकर मलकही जन्ममरण सोमहाविष रूप त्यहिको प्रध्वंसनकही नाशकरि देत हैं पुनः चाव्ययं कही अविनाशी एकरस हैं पुनि श्रीशम्भुकर मुख पूर्ण निर्मल इंदुवर कही श्रेष्ठ तद्वत्संशोभितकहीसम्यक्प्रकारते सर्वदाएकरसशोभित है त्यहिमुखचन्द्रते श्रीरामायणप्रकाशित है त्रैतापनाशकरतहै पुनि संसारामयकही सांसारिकरोग कामक्रोध लोभ मोह मदमात्सर्य्य मानबड़ाई देहाभिमान इत्यादिकआमय त्यहिकेनाशकरिबेको भेषजकही औषध संजीवनिहै पुनि श्रीजानकीजीवन जो श्रीरामचन्द्रहैं तिनके सुखको कर्त्ता हैं ते पुरुषधन्यहैंजे कृतिनः कही अपनी कर्त्तव्यकरिकै संततकही निरंतर अहर्निशअंतर नपरै श्रीमद्रामायण श्रीरामनाम कीर्त्तनामृत पानकरते हैं ( २ )॥

सोरठार्थ॥ पुनि श्रीगोसाईं तुलसीदासजी शिवपार्वतीको नमस्कारकरते हैं त्यहि काशीविषे शिव पार्वती कैसी हैं मुक्तिकी जन्मभूमि हैं अरु ज्ञानकी खानि हैं अरु सम्पूर्ण अघकही पापको हानि करतीहैं ज्यहिकाशीविषे शिवपार्वती सदाबसतीहैं त्यहिकाशीको महादेवसहित कसन सेवनकरी पुनि दूसरा अर्थ करते हैं श्रीमद्रामायण कैसी है मुक्ति की जन्मभूमि है अरु ज्ञानकी खानि है अघको नाशकरती है ज्यहिरामायण

सो०॥मुक्तिजन्ममहिजानि ज्ञानखानिअघहानिकर जहंबसशंभुवानिसोकाशीसेइयकसन ३ जरतसकलसुरवृंद बिषमगरलज्यहिं पानकिय त्यहिनभजसिमतिमंदकोकृपालुशंकरसरिस ४ चौ०॥ आगेचलेबहुरिरघुराईरीकमूकपर्बतनियराई ५ तहंरहसचिवसहितसुग्रीवा आवतदेखिअतुलबलसीवा ६ अतिसभीतकहसुनुहनुमाना पुरुषयुगुलबलरूपनिधाना ७ धरिबटुरूपदेखुतैंजाई कहेसुजानि

विषे शम्भुभवानी अंतष्करणते सदाबसतेहें पुनि रामायण कैसी है सोकाशी कही शोकके नाशकरिबेको असी खड्ग है त्यहि रामायणको कसन सेवनकरो अवश्य सेवनकरो ( ३ ) श्रीमद्रामायणके आचार्य जानिकै पुनिमहादेवके नमस्कारकरते हैं कैसे महादेवजीहैं ज्यहि महाविषहालाहल की ज्वालाकरिकै सुरासुरजरे जातरहे हैं त्यहिविषम विषको पानकरिगयेहैं ताते शंकरके सरिसकृपालुकोहै कोई नहीं है तिन शंकरको हे मतिमंदकसनभजसिसदाभजु ( ४ ) श्रीरामचन्द्र आगेचले अरु रीकमूकपर्वतको नियरातभये हैं ( ५ ) त्यहिपर्बतपर मंत्रिनसहितसुग्रीवरहत रहैअतुलबल केसींव श्रीरामचन्द्र दोऊभाइनको आवतदेखतभयो है सुग्रीवके मनविषे द्वौभाई बीररसभासतभये हैं ( ६ ) अति भयते हनुमान्जीतेकहत है ये महाबल रूपके निधान दुइपुरुषआवते हैं सोको हैं देखिये तौ श्रीरामचन्द्रजी अपनी बलवीरता सुग्रीवके हृदयबिषे प्रथमहिं जनाइदीनहै ( ७ ) अतिभयते हनुमान्जी ते कहते हैं हेपवनतनय बटुकही ब्रह्मचारी अबध्यहैअरु मंगलरूपहै ताते बटुको स्वरूपधरिकै तुम देखौतौ जाय अपनेजी मेंबिचारिकै जैसाहोइ तैसा मोको सैनमै बुझाइकै जनाइदेना ( ८ ) जोकदाचित् अपनेमनको मलिनिकरिकै मेरे मारबेहेतु महाबीरको बालिपठवाहोइ तौ मैं तुरन्त यहि शैल को छोड़िकै भागिजाउं ( ९ ) तहांब्राह्मणका रूप धरिकै हनुमान्जी जाते भये हैं माथनाइकै असबूझतभये ब्राह्मणरूपह्वइकै माथ क्यों नवायाहै तहां हनुमानजी यहजाना कि कोई ब्रह्मऋषिके बालकहैं किंतु श्रीरामचन्द्र

के दर्शनकरतसंते पारमेश्वरी बुद्धि आइगईहै किंतुसुग्रीवके माथनाइकैचलिकै रघुनाथजीतेबूझतभये हैं ( १० ) तुमश्यामल गौर जोरी सुन्दर को हौ कोई राजऋषिके वालक तौ नहीं हौ क्षत्रीरूप बीर बनबिषे फिरते हौ ( ११ ) अरु कंटक कंकर युक्तकठोरभूमि अरु तुम्हारो कोमलचरणहै कौन हेतु करिकै बन में बिचरते हौ हे स्वामी क्यों कहा तहाँ हनुमान्‌जी तौ श्रीरामचन्द्र के परबिभूतिके नित्यपार्षद हैं अरु प्रकृति मंडल में पवनपुत्र हैं पर प्रकृतितत्त्व जो पवन त्यहि

जियसैनबुझाई ८ पठवाबालिहोहिमनमैला भागौंतुरततजौंयहशैला ९ विप्ररूपधरिकपितहंगयऊ माथनाइपूछतअसभयऊ १० कोतुमश्यामलगौरशरीरा क्षत्रीरूपफिरौबनवीरा ११ कठिनभूमिकोमलपदगामी कवनहेतुबनबिचरहुस्वामी १२ मृदुलमनोहरसुंदरगाता सहतदुसहबनआतपबाता १३ कीतुमतीनिदेवमहंकोऊ नरनारायणकीतुमदोऊ १४ दो० ॥ जगकारणतारणभवहिंभंजन धरणीभार कीतुमअखिलभुवनपतिलीन्हमनुजअवतार १५ चौ०॥ कोशलेशदशरथकेजायेहमपितुवचनमानिबनआये१६नामराम

केपुत्र नहीं हैं परमशुद्ध कारण प्रणवरूप जोपवनहै त्यहिके शीतल मंद सुगंध पुत्र हैं ताहीते श्रीहनुमान्‌जी को प्रकृतिको पवननहीं लाग्यो है ताहीते नित्यपरलीला विभूतिमें एकरस श्रीरामानन्य हैं ताते श्रीरामकृपाते जानिकै स्वामीकहाहैअरु जो पदगामीकहाहै अरु बिचरबकहा है सो पुनरुक्ति न जानब भावभिन्नहै किंतुजेते कोमलपदगामीहैं तिनसबकै कोमलतात्यहिको स्वामीतुम्हारी कोमलताहै किंतु कोमल अवनि के गवन कर्त्ता तुम सों कठोर अवनि में क्यों बिचरतेहौ ( १२ ) अरु तुम्हारे मृदुलमनोहर सुन्दरगात हैं तहां आतपकही घाम पवन बात यह दुसह दुःख काहेको सहतेहौ ( १३ ) श्रीहनुमान्‌जी प्रथमहिं संदेहालंकारकरिकैकहा है श्रीरामचन्द्र के आश्रय सबस्वरूप कहैंगे पुनि मध्य में कारणालंकार कहते हैं पुनि परविषे परकारण कहते हैं कि तुम तीनिहुं देवताब्रह्मा विष्णु शिव कोऊ दुइस्वरूपकरिकै अपनी त्रैगुण्यमय रचना देखत फिरतेहौ कि तुम नरनारायण दोउस्वरूप तपमूर्त्ति मुनिवेष धरिकैजगत्‌की रक्षाहेतु विचरते हौ ( १४ ) दोहार्थ॥ यहि दोहाविषे पूर्बकेअर्थ के अन्वयपर सिद्धहोत है परकर पूर्व सिद्धहोत है कि तुम अखिलभुवनके उत्पत्तिकर्त्ताहौ अखिल अनेकन ब्रह्माण्डविषे पृथ्वीके भार उतारिबे हेतु मनुज अवतारलीन है पर मेरे सिद्धांतमें यह है मनुज अवतारकहीमनुजइवलीला परमदिब्य करतेहौ सर्वईश्वर के स्वरूपके कारण तुमहींहौ अरु सम्पूर्ण जगत् के महाकारण आपही हौ अरु भव जो संसारत्यहिके तारिबेको आपुहौ ( १५ ) तब हनुमान्‌जी कै वाणी श्रीरामचन्द्र सुनिकै विहँसिकै कहते हैं कि कोशलपुरी जो श्रीअयोध्या है त्यहिकेमहाराज श्रीदशरथ परमतत्त्ववेत्ता तिनके गृहविषे हम जायकही उत्पन्न भये हैं पिताकेवचन अंगीकारकरिकै बनविषे गमनकीनहै ( १६ ) हे हनुमान् हमारो रामनाम है इनकर लक्ष्मणनाम है दोऊजने भाई हैं इहां

लक्ष्मणदोउभाई संगनारिसुकुमारिसुहाई १७ इहांहरीनिशिचरवैदेही बिप्रफिरतहमखोजततेही १८ आपनचरितकहाहमगाई कहहुबिप्रनिजकथाबुझाई १९ प्रभुपहिचानिपरयउगहिचरणा सोसुखउमाजाइनहिंबरणा २० पुलकिततनमुखआवनवचना देखतरुचिरवेषकीरचना २१ पुनिधीरजधरिअस्तुतिकीन्हा हर्षिहृदयनिजनाथहिंचीन्हा २२ मोरन्यावमैंपूछौंसाईं तुमकसपू-

यह अभिप्राय है कि जीव अरु परमेश्वरको अनादि सम्बन्ध है भ्राताभ्रातसम्बन्ध है सखत्व सम्बन्ध है पितापुत्रसम्बन्ध है राजा प्रजा सम्बन्ध है अंशअंशी सम्बन्ध है प्रकाश प्रकाशी सम्बन्ध है पतिपत्नी सम्बन्ध हे इत्यादिक अनादि सम्बन्ध हैं श्रीरामचन्द्र कहत हैं कि हमारे संग अति सुकुमारि नारि श्रीजानकीरही है ( १७ ) श्रीरामचन्द्र कहते हैं कि हे बिप्रहमारे संग जो प्रिय वैदेहीरही है तिनको कोई निशिचर हरिलैगयो है तिनको हम बनविषे खोजत फिरते हैं ( १८ ) अपना चरित तुमसे हमकहा है अरु हे विप्र तुम आपनचरित कहहु कि को तुम हौ कहां ते आवतेहौ ( १९ ) तब श्रीहनुमान्‌जी प्रभुकर लीला ऐश्वर्यस्वरूप पहिचानिकै चरणोंमें परत भये हैं हे उमा हनुमान्‌जी कर सो

सुखबर्णिबे योग्यनहीं है ( २० ) तन पुलकिआयो है नेत्रनमें जलभरिआयो है वाक्‌बन्द ह्वै गई है श्रीरामचन्द्र के मुनिवेषकै रुचिर रचना देखिकै अति करुणारस उत्पन्न होतभयो है ( २१ ) पुनि धीरजधरिकै निजनाथको पहिचानिकै परमदिब्य चरितजानिकै प्रसन्नचित्त स्तुतिकरतभये हैं ( २२ ) अस्तुतिकरिकै पुनि कहते हैं हेस्वामी हमजीव हैं आपुको नहींपहिचानाहै ताते आपु ते पूछबेको हमको न्यावकही उचित है अरु तुमपरमेश्वर अनेक ब्रह्माण्ड के स्वामी ते नरकीनाईं पूछतहौ यह आश्चर्य है ( २३ ) हे प्रभु ब्रह्मा विष्णु शिवादिक देव दानव मनुष्य इत्यादिक तुम्हारीमायाकेवश ते आपुको भूलिरहे हैं ताते हम आपुको कैसे पहिचानिसकैं ( २४ ) दोहार्थ॥ एक तौ हमारी मतिमन्द है मोहके बशह्वैरही है पुनि अपनेहृदयमें कुटिलाई भरिरही है काहेते हमारी वानरयोनि अज्ञान है आपु अन्तर्यामी हौ पुनि त्यहिपर हे प्रभु आपु हमको बिसारिदीन है अरु आपु दीनबन्धुभगवान्‌हौ तहां हमारी का चलै है ( २५ ) हे नाथयद्यपि हम बहुअवगुणके पात्र हैं तदपि स्वामी समर्थ हैं सेवकको नहीं बिसारते हैं ( २६ ) हे नाथ यह जीव तुम्हारी माया के बश ह्वैरह्यो है केवल तुम्हारी कृपा ते जीवकर निस्तारहै ( २७ ) अपर जीव तो कोई कोई

छहुनरकीनाईं २३ तवमायावशफिरौंभुलाना तातेमैंनहिंप्रभुपहिचाना २४ दो०॥ एकमंदमैंमोहवशकुटिलहृदयअज्ञान पुनिप्रभुमोहिं बिसार्‌यहुदीनबंधुभगवान २५ चौ० ॥ यदपिनाथबहुअवगुणमोरे सेवकप्रभुहिंपरेजनिभोरे २६ नाथजीवतवमायामोहा सोनिस्तरै तुम्हारीछोहा २७ तापरमैंरघुबीरदोहाई जानौंनहिंकछुभजनउपाई २८ सेवकसुतपितुमातुभरोसे रहैंअशोचबनैप्रभुपोसे २९ असकहिपर्‌यउचरणअकुलाई निजतनप्रकटप्रीतिउरछाई ३० तबरघुपतिउठाइउरलावा निजलोचनजलसींचिजुड़ावा ३१ सुनुकपिजिय

सुकर्म्मज्ञान कछु करत हैं अरु मैं रघुवीर की दोहाई करिकै कहतहौं कि भजनकर उपाय मैं एकौजानतैनहीं हौं ( २८ ) पर सेवकजेते हैं ते केवल अपने प्रभुके भरोसे रहैं अरु पुत्र माता पिताके भरोसे रहैं पर अशोच रहते हैं तौ उनको पालन पोषण करते बनैगो इहां हनुमान्‌जी श्रीरघुवीरकै शपथ करिकै कहते हैं स्वार्थ परमार्थ सर्बोपाय पुण्य शरणागतदेखाया है ताही को प्रपत्तिशरणागत कहै हैं सो अति दुर्लभ है ( २९ ) हे पार्वती असकहिकै श्रीरामचन्द्रके चरणारविन्दविषे अकुलायकरिलिपटिपर्‌यउहै ब्राह्मणतन छूटिगयो है निजतन प्रत्यक्षभयो है प्रीति उरमें छाइरही है ( ३० ) श्रीरामचन्द्र उठाइकै उरमें लगाइके नेत्रन के जलतेसींचिकै शीतलकरतेभये हैं ( ३१ ) हे कपि तुम अपने मनमें ऊनकही संदेह न मानो तुम हमको लक्ष्मण ते दूनप्रिय हौ दून क्यों कहा हे कपिमोको लक्ष्मणजी अतिप्रिय हैं अरु तुमहम दोऊभाइनको अति प्रिय हौ ताते दून कहा है ( ३२ ) हे हनुमान् मोको सबकोऊ समदर्शी कहते हैं सोसत्य है पर मेरे जे अनन्य सेवक हैं ते मोको अधिक प्रिय हैं ( ३३ ) दोहार्थ॥ हे हनुमान् अनन्य तोहीं को कही जाकी ऐसी मति न टरैदृढ़रहै कैसी मति कि स्वामी जो श्रीरामचन्द्र भगवन्त तिनकररूप चराचर विषे चैतन्यमय व्याप्त है जड़काचैतन्यकिहे है तहां चराचर भगवंतस्वामीकर रूप है त्यहि भगवन्तको मैं दासहौं इहांभाव सिद्धिहै प्रमाणं महारामायणे शिववाक्यं पार्वतींप्रति श्लोक भूमौजलेनभसिदेवनरासुरेषु भूतेषुदेवसकलेषुचराचरेषु पश्यन्तिशुद्धमनसाखलुरामरूपं रामस्यते भुवितलेसमुपासकस्य १ कोई कहै कि चराचर में तौ सब हैं यह क्योंदास भयो है पुनि दूसरा अर्थ जाके असिमति न टरै मैं सेवक चराचर :: ::

मानसिजनिऊना तैंममप्रियलक्ष्मणतेदूना ३२ समदर्शीम्वहिंकहसबकोई सेवकप्रियअनन्यगतिसोई ३३ दो०॥ सोअनन्यजाके असिमतिनटरैहनुमंत मैंसेवकसचराचर रूपस्वामि भगवंत ३४॥ * * * * * *

चौ०॥ देखिपवनसुतपतिअनुकूला हृदयहर्षबीतेसबशूला १ नाथशैलपरकपिपतिरहईसोसुग्रीवदासतवअहई २ त्यहिसननाथमयत्री कीजैदीनजानित्यहिअभयकरीजै ३ सोसीताकरखोजकराइहिजहंतहंमर्कटकोटिपठाइहि ४ यहिविधिसकलकथासमुझाई लियेदोउजनपीठिचढ़ाई ५ तबसुग्रीवरामकहंदेखा अतिशयजन्मधन्यकरिलेखा ६ सादरमिल्यउनाइपदमाथा भेटेउअनुजसहितरघुनाथा ७

तोहिं आदिदै जीवजे हैं ते सब सेवक हैं श्रीरामस्वामी भगवन्तस्वामीहैं मैं दासहौं भगवन्तको रूप चराचर में व्याप्त है अरु भगवन्तरूपी हैं अस जो जानै सोई मेरो अनन्यसेवक है ( ३४ )॥ इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने किष्किन्धाकाण्डे श्रीरामहनुमान मिलन वर्णनन्नामप्रथमस्तरंगः१॥ :: :: ::

दो० प्रभुसुग्रीवसखत्त्वकरिद्वितियतरंगसुजानि रामचरणसियपायपटकछुप्रभुविरहबखानि २ तहां पवनसुत पति जो श्रीरामचन्द्र तिनको अनुकूलजानिकैहृदयमेंहर्षितभये सबशूलमिटिगयो हैं ( १ ) तबहनुमान्जी श्रीरामचन्द्रजीसे कहते हैं कि हेनाथरीकमूकपर्वतपर एककपिपतिसुग्रीवरहत है सोआपुको दासहै ( २ ) हेनाथ त्यहिते मित्रताकरौ दीनजानिकैअभयकरौ ( ३ ) सो श्री जानकीजीके खोजहेतु जहांतहां कोटिनवानर भेजैगो ( ४ ) हेपार्वती यहिप्रकारते हनुमान्जी सबकथा समुझायकैदोऊभाइन को दोऊकांधेपर चढ़ायकै कूदिकै पर्वतपर प्राप्तभयेजाइ ( ५ ) तब सग्रीव श्रीरामचन्द्रको देखिकै अपनोजन्म धन्य मानतभये हैं ( ६ ) तबसुग्रीव महिमें माथनाइकै दण्डवत् करतभये हैं तब दोऊभाई उठाइकै हृदयमें लगावतभये हैं ( ७ ) सुग्रीव यह विचारते हैं कि हे विधाता ये मोसन प्रीतिकरैंगे ( ८ ) दोहार्थ॥ तब हनुमान्जी श्रीरामचन्द्रकर गुणप्रताप सुग्रीवसे कहतभये हैं अरु सुग्रीवकै सेवकाई शरणागत श्रीरामचन्द्रसे कहतभये हैं असकहिकै अग्निको साखीदैकै दोऊदिशि प्रीतिदृढ़ाइकरिकै करतभये हैं अग्निको साखी क्योंदिया यहि लीला विषे अग्निकारण है काहेते श्रीजानकीजीको सौंपाहै अरु अग्निकरिकैं लंकादहन करैंगे अरु अंतमें अग्नि :: ::

कपिकरमनबिचारयहिरीती करिहहिंबिधिमोसनयेप्रीती ८ दो०॥ तबहनुमंतउभयदिशि कहिसबकथासुनाइ पावकसाखीदेइकरि जोरीप्रीतिदृढ़ाइ ९ चौ०॥ कीन्हप्रीतिकछुबीचनराखा लक्ष्मणरामचरितसबभाखा १० कहसुग्रीवनयनभरिबारी मिलिहिनाथमिथिलेशकुमारी ११ मंत्रिनसहितइहांइकबारा बैठरह्यउंमैं करतबिचारा १२ गगनपंथदेखीमैंजाता परबशपरीबहुतबिलखाता १३ रामरामहारामपुकारी हमदिशिदेखिदीनपटडारी १४ मांगारमतुरततिनदीन्हा पटउरलाइशोचअतिकीन्हा १५ कहसुग्रीवसुनहुरघुवीरा तजहुशोचमनआनहुधीरा १६ सबप्रकारकरिहौंसेवकाई ज्यहिविधिमिलहिंजानकीआई १७ दो० ॥ सखाबचनसुनि

श्रीजानकीजी को देइगो अरु श्रीजानकीजीके हेतु यह मित्रताभई है ताते पावक को साखी दियाहै ( ९ ) अति प्रीतिकीन कछु बीच न राखाहै तक लक्ष्मणजी श्रीरामचन्द्र कर चरित सुग्रीवसे कछु कहते हैं हे सुग्रीव तुमको शरणागत लैकै यही तनमें सखाकीनहै अरु बालिको अरु रावण को बधिकै दूसरे तनमें सखाकरिकै परबिभूतिको तुरन्त प्राप्ति करैंगे ताते तुम अब श्रीराम प्रतापते निर्भयह्वैकै श्रीरामचन्द्र कर कार्य मनबचन कर्मते करौ ( १० ) सुग्रीवके नेत्रन में जल भरिआयोहै करजोरिकै कहते हैं हेनाथ मिथिलेशकुमारी आपुको जरूर मिलहिंगी ( ११ ) हेनाथ मंत्रिनसहित एकबार यहाँबैठिकै कछुबिचार करत रहौं ( १२ ) हे श्रीरामचन्द्र श्रीजानकीजी को गगनपंथबिषे परबश शोचकरत चलीजात हमदेखा ( १३ ) तब हा राम हा राम करिकै हमपुकारकीनहै तब हमारी दिशिदेखिकै पटडारिदीनहै ( १४ ) तब श्रीरामचन्द्र पटमांगतभये हैं सुग्रीव देतभये हैं तब उरमेंलाइकै बहुतशोचकरत भये हैं ( १५ ) तब सुग्रीव कहा हेनाथ शोचकोतजहु धीरजधरहु ( १६ ) मैं सब प्रकारते सेवकाईकरिहौंज्यहिप्रकारते श्रीजानकीजीमिलहिंगी ( १७ ) दोहार्थ॥ तबसखाकेबचनसुनिकैहर्षे कैसेहैं श्रीरामचन्द्र कृपाकेसमुद्र हैं बलकेसींवकही मर्यादहैं हे सुग्रीवकौन कारण करिकै बनमें बसतेहौ सोकहौ ( १८ ) सो सुग्रीव कहते हैं हे नाथ हम अरु बालि दूनों भाइयों से बड़ी प्रीति रही है सो बर्णी नहीं जाती है ( १९ ) हे नाथ मयनाम दानवकर पुत्र मायाबीनाउं सो रात्रिको हमारे गाउंमें कोईसमय में आवतभयो है ( २० ) अर्द्धरात्रिकोपुरके द्वारपर गर्जतभयोहै तहां बालिमहाबली रिपुकर बलकरिकै गर्जबनहीं सहिसकै है ( २१ ) तबबालिदेखिकै धावतभयो है भाग्यो अरु मैं फिरि बंधुकेसंग चलागयों हौं ( २२ )

हरष्यउ कृपासिन्धुबलसींव कारणकवनबसहुबन मोहिंकहौसुग्रीव १८ चौ० ॥ नाथबालिअरुमैंद्वउभाई प्रीतिरहीकछुवरणिनजाई १९ मयसुतमायावीत्यहिनाऊं सोप्रभुआवाहमरेगाऊं २० अर्द्धरात्रिपुरद्वारपुकारा बालिमहाबलसहैनपारा २१ धावाबालि देखिसोभागा मैं पुनिगयउँबंधुसँगलागा २२ गिरिवरगुहापैठसोजाई तबबालीम्वहिंकहाबुझाई २३ परख्यसुमोहिंएकपखवारा नहिंआवौंतौजान्यसुमारा २४ मासदिवसतहँरह्यउँखरारी निसरीरुधिरधारतहँभारी २५ बालिहत्यसिम्वहिँमारिहिआई शिला द्वारदैचल्यउपराई २६ मंत्रिनपुरदेखाबिनुसाई दीन्ह्यउमोहिंराजबरिआई २७ बालीताहिमारिगृहआवा देखिमोहिंजियभेदबढ़ावा २८ रिपुसमम्वहिंमारेसिअतिभारी हरिलीन्ह्यसिसर्बसअरुनारी २९ ताकेभयरघुवीरकृपाला सकलभुवनमैंफिरतबिहाला ३०

तब सो भागिकै पर्वतकी कन्दरामें पैठिगयो है तब बालिमोको बुझाइकैहतभयो है ( २३ ) हे सुग्रीवमैं यहीदानव के मारिबेको जातहौं जो पन्द्रह दिनमें न फिरौंतौ दानवके हाथमोर बधजानब ( २४ ) हे खरारिबालिने मोसे पन्द्रहदिन का करारकीन रहै अरु मैं एकमास रह्याउँ है तब कंदरासे लोकहूकैधारा निकसति भई है तबबालिके संकल्पकै प्रमाणसमुझिकै मैं यहजाना कि दानव करिकै बालिको बधभयो है ( २५ ) तबमैं यह विचारकीन्हहै कि दानवने बालिको मारयो है अब मोहूंको मारैगो तब कंदराके द्वारपर शिलादैके मैं अपने पुरको भागिआयो हौं ( २६ ) तब मंत्री बिना राजाको पुर देखिकै मोको जबर्दस्ती राज्य देतेभये हैं ( २७ ) त्यहि दानव को बधिकै बालिगृहको आवतभयो है मोको राजगद्दी पर देखिकै अनेक भेद बढ़ावतभयो है भेद कही सब मन्त्रिन अरुकाजकामिन को फोरिफोरि धरि बांधि अलग करिदियो है ( २८ ) तब रिपुके समानमोको मारत भयो है अरु मेरी सर्बसलै लियो अरु स्त्रीको अपनाइलियो है ( २९ ) हे श्रीरामचन्द्र त्यहि बालिके भयते मैंसकलभुवन में बिकल फिरयउं है जहां जहां मैं जाउँ तहां २ बालिके दूत प्राप्ति होहिंआइकै ( ३० ) अरु रीकमूक पर्वतबिषे कोई मुनीशको शापहै तातेइहाँ बालि अरु त्यहिके दूतनहीं आइ सकते हैं तदपि अपनेमनमेंमैं सभीतरहतहौं काहेते बालिको बड़ाप्रतापी बली जानिकै हे श्रीरामचंद्र मेरी औ बालिकी चूक अचूक आपु समझिकै त्यहिको तसफल देहु काहेते आपु अनेक ब्रह्मांडको राजाहौ सबको नीतिमें चलावतेहौ ( ३१ )

इहांशापबशआवतनाहीं तदपिसभीतरहौंमनमाहीं ३१ सुनिसेवकदुखदीनदयाला फरकिउठेद्वौभुजाबिशाला ३२ दो०॥ सुनुसुग्रीवमैंमारिहौं बालिहिएकैबाण ब्रह्मरुद्रशरणागत गयेनउबरहिंप्राण ३३ चौ०॥ जेनमित्रदुखहोहिंदुखारी तिनहिंविलोकत पातकभारी ३४। निजदुखगिरिसमरजकरिजाना मित्रकेदुखरजमेरुसमाना ३५ जिनकेअसिमतिसहजनआई तेशठकत हठिकरतमिताई ३६ कुपथनिवारिसुपंथचलावा गुणप्रगटहिंअवगुणहिंदुरावा ३७ देतलेतमनशंकनधरई बलअनुमानसदाहितकरई ३८ बिपतिकालकरसतगुणनेहा श्रुतिकहसंतमित्रगुणयेहा ३९ आगेकहमृदुबचनबनाई पाछेअनहितमनकुटिलाई ४०

तब सेवक के दीनमय बचन सुनिकै दीनदयाल के द्वौ बिशाल भुजा फरकि उठेहैं बीररसको प्राप्ति भये हैं ( ३२ ) दोहार्थ॥ तब श्रीरामचन्द्र यह संकल्प कीनहै हे सुग्रीव बालिको एकही बाणते मारौंगो जो कदाचित्ब्रह्मा शिवादिक की शरण जाइ तबहूं नहीं उबरैगो ( ३३ ) श्रीरामचन्द्र कहते हैं हे कपीश अबहमते तुमते मित्रता भई है तुम्हारे दुःखमें हमको दुःखप्राप्त है यह शास्त्रकी आज्ञा है कि जेमित्रनके दुःखते दुखित नहीं होतेहैं तिनको बिलोकत संते महापाप लागत है ( ३४ ) यहवेदकी मर्यादाहैकिअपनादुःख

मेरुके समानहोइसो रजसमजाने अरुमित्रकोदु:ख रजसम होइ ताको मेरु समजानै ताहीको मित्रकही ( ३५ ) अरुजिनके ऐसीमति सहजमें न आई ते शठहठिकै मित्रता काहेको करते हैं ( ३६ ) अरुकुपंथ निवारिकै सुपंथमें चलावतेहैं गुणको प्रकट करते हैं अवगुणको दुरावते हैं तेसन्मित्र हैं ( ३७ ) अरु मित्रके पदार्थ अरु अपनेपदार्थ बिषे देतलेत मनमें शंका न धरैं अपने बलके अनुमान मित्रकरहितकार करैं हैं ( ३८ ) विपतिकाल विषे सत्कही समीचीन गुणकरिकै स्नेह करते हैं तेही मित्रके गुणको श्रुतिसंतगावते हैं ( ३९ ) अरु आगेतो सुन्दरमृदु कहीकोमल मधुरबचन बनाइकै कहते हैं अरु पाछे मनविषेअनहित अरु मनमें कुटिलाई करते हैं ( ४० ) जाकरचित्त अहिगतिसम कही सर्पकीगतिकेसमान है त्यहि कुमित्रको त्यागेहीते भला है ( ४१ ) दोहार्थ ॥ मित्रमित्रसे परस्पर प्रीति करते हैं परन्तु हृदयमें आन मुखमें आन मन बचन कर्म तेप्रेमनहीं है अपना कपट हृदय में दुरावतकही छिपावतबीतत है ताकोकुमित्र जानब ( ४२ ) चौ० ॥ जो सेवक शठहोइ अरु राजा कृपिण होइअरु गृहबिषे कुनारीकही मलीनकरतूति सबप्रकारते अरु कपटीमित्रहोइ इनचारिउ करसंग शूलकही बरछी की धारकेसमान है ताते इन करत्यागही कुशल है ( ४३ ) हेसखे अबहमारेबलते तुम शोचकर त्यागकरहु-

जाकरचितअहिगतिसमभाई असकुमित्रपरिहरेभलाई ४१ दो० ॥ मित्रमित्रसोंप्रीतिकरि हृदयआनमुखआन जाकेमनबचप्रेमनहिं दुरेदुरायेजान ४२ चौ० ॥ सेवकशठनृपकृपिणकुनारी कपटीमित्रशूलसमचारी ४३ सखाशोचत्यागहुबलमोरे सबविधिकरब काजमैंतोरे ४४ कहसुग्रीवसुनहुरघुवीरा बालिमहाबलअतिरणधीरा ४५ दुंदुभिअस्थितालदिखराये बिनुप्रयासरघुनाथढहाये ४६ देखिअमितबलबाढ़ीप्रीती बालिबधनकैभइपरतीती ४७ बारबारनावइपदशीशा प्रभुहिंजानिमनहर्षकपीशा ४८ उपजा

तुम्हारकार्य सबप्रकारते हमकरैंगे ( ४४ ) सुग्रीव कहते हैं हेरघुवीर बालिवड़ो रणधीरबीर है ( ४५ ) हे श्रीरामचन्द्र दुन्दुभी नाम जो दानवरहा है त्यहि की अस्थिपर सप्त ताल जामें हैं तेमंडलाकार हैं तहां कोई मुनिका वचन है कि जो सातौं ताल को एकही बाणते एकही बारनाशकरि देइ त्यहिकेमारे बालिमरैगो मोको तो आपुके बलकी परीक्षा लेवेकोन चाहिये पर ये सातौंताल वृक्ष काहू मुनिके शापते देवलोकते च्युत भये हैं आपुके बाणलागेते कृतार्थ ह्वइ जाहिंगे यह सुनिकै श्रीरामचन्द्रनेएकबार एकही बाणते तुरन्त ढहाइ कही काटिकै गिराइदीन है ते सातौं दिव्यस्वरूप धरिकै अरु दुन्दुभिअस्थि दिव्यस्वरूप धरिकै परमपदकोप्राप्तिभये हैं ( ४६ ) अमितबल देखिकै अमित प्रीति बढ़ी है पुनि बालिके बधबे अरु परमपदके प्राप्तिहोवे की विशेषप्रतीति भई है ( ४७ ) हेपार्वती सुग्रीवप्रभु को अच्छीतरह पहिचानिकै बारबार चरणन विषे शीश नावतहै ( ४८ ) सुग्रीव के ज्ञान उत्पन्नहोत भयो है तबवचन कहत है हेनाथतुम्हारी कृपाते अबमोरमन अडोलकही अचलहोत भयो है ( ४९ ) तब श्रीरामचन्द्रको परब्रह्म चीन्हतभयो है दर्शनते आत्मज्ञान परमात्माश्रीरामचन्द्र विषे होतभयो है तब बोलो हे नाथअबमोरमन आपकी कृपाते निर्वासिक अडोलभयो है अब आपुते विनय करतहौं कि मोपर ऐसी कृपाकरहु कि सुख सम्पति परिवार लोककीबड़ाई सर्बत्यागिकै आपुकी विशेषकै सेवकाई करौं सुखकही इन्द्रिनकर भोगसम्पति द्रब्य अरुलोकराज्य तपदानइत्यादिक परिवारकही सुत दारामाई भाई कुलनात कुटुम्ब इत्यादिक बड़ाई कहीबर्णाश्रम धर्म लोकमर्याद मानबड़ाई इत्यादिक चारिउ अरु जहां तक धर्म वेद कहते हैं तेसब बिनात्यागे आपुकी अनन्य शरणागतको नहीं प्राप्ति होतहैं ताते मैं सब त्यागिकै आपुकी शरणागतहोउंगो ( ५० ) सुख सम्पति परिवार बड़ाई इत्यादिक सब

ज्ञानबचनतबबोला नाथकृपामनभयोअडोला ४९ सुखसंपतिपरिवारबड़ाई सबपरिहरिकरिहौंसेवकाई ५० येसबरामभक्तिकेबाधक कहहिसंततवपदअवराधक ५१ शत्रुमित्रदुखसुखजगमाहीं मायाकृतपरमारथनाहीं ५२ बालिपरमहितजासुप्रसादा मिल्यउरामतुमशमनविषादा ५३ सपन्यहुज्यहिसनहोइलराई जागतसमुझतमनसकुचाई ५४ अबप्रभुकृपाकरहुयहिभाँती सबतजि

श्रीरामचन्द्रकी भक्तिके बाधकहैं जे तुम्हारे चरणारबिन्द के अवराधक हैं तेयहबात कहते हैं ( ५१ ) हे श्रीरामचन्द्र तुम्हारे संतनकर यह सिद्धांत है कि शत्रुमित्र सुखदुःख हानिलाभ हर्षशोक निन्दा स्तुति मानापमानइत्यादिक मायाकृत बंधनरूप हैं इनमें परमार्थ नहीं है ताते इनसबको त्यागिकै मैं आपुकी शरणागतहौं आप अन्तर्यामीहौ मैं सत्य कहतहौं ( ५२ ) हे श्रीरामचन्द्र बालितो मोर परमहितकारी भयो है ज्यहिके प्रसादते तुमप्रथमहिं मोको मिल्यउहौ जो बालिमोको दूरि न करत तौआपुके चरणकै शरण कैसे प्राप्ति होत्यउं आपुके दर्शनहोतसंते सम्पूर्ण विषाद मिटिगयो है आपु योगेश्वरनको दुर्लभहौ इहां यह अभिप्राय है कि मेरे हुतु बालिको न मारहु मेरे राज्यइत्यादिककै कछुवासनानहीं है ( ५३ ) हे श्रीरामचन्द्र जैसे काहूसे स्वप्नविषे लराईहोइ अरुजागे ते मनमें संकोच अरुग्लानि आवति है तैसे यहि संसारविषे तैं मैं तोर मोर अहंमम इत्यादिक स्वप्नकै लराई है सो वृथाहै आपुकी कृपाते अबमैंजागतभयोहौं तुम्हारो भजनसत्यहै अपर सब असत्य है ज्ञान वैराग्यकी दृष्टिकरिकै आपुकी कृपाते यहमोको देखिपरय्उ है ( ५४ ) हे प्रभु अबयहिभांतिते कृपाकरहुमैं आरतह्वैकै कहतहौं सबतजिकै अहर्निशि तुम्हारो भजनकरौं ( ५५ ) श्रीरामचन्द्र यहजाना कि सुग्रीवमोर अनन्य शरणागतभयो है तहां वैराग्यमयकपिकै बाणीसुनिकै धनुषधारी विहंसिकै बोलतेभये हैं ( ५६ ) श्रीरामचन्द्र विहंसिकै कहते हैं हे सखे तुमसत्य कहतेहौसिद्धांतविषे ऐसे है परमेरी संकल्प वृथानहीं होती है बालिको बधौंगो अरु तुमको राज्यदेउंगो अरु तुममेरी शरणागत सत्यहौ पर राज्यकरविषयभोग त्यहिकर फल जन्म मरणसो तुमको न होइगो तुममेरे नित्य विभूतिके सखाहौ यहकहिंकै सुग्रीवको ज्ञानआकर्षण करिलीनहै ( ५७ ) हे गरुड़ जैसे नटमर्कटको नचावत है तैसे श्रीरामचन्द्र जी जाको जसचाहैं ताकोतसकरैं अस वेदगावतहैं ( ५८ ) तबअस कहिकै सुगीवको संगलैकै धनुषचढ़ाइकै बाणहाथमें लैकै श्रीरघुनाथ जी चलतेभये हैं ( ५९ ) तब

**भजनकरौंदिनराती ५५ सुनिविरागसंयुतकपिबानी बोलेविहंसिरामधनुपानी ५६ जोकछुकह्यउसत्यसबसोई सखाबचनमम मृषानहोई ५७ नटमर्कटइवसबहिंनचावत रामखगेशवेदअसगावत ५८ लैसुग्रीवसंगरघुनाथा चलेचापशायकगहिहाथा ५९ तबरघुपतिसुग्रीवपठावा गर्ज्यउजाइनिकटबलपावा ६० सुनतबालिक्रोधातुरधावा गहिकरचरणनारिसमुझावा ६१ सुनुपतिजिनहिंमिलासुग्रीवा तेद्वउबंधुतेजबलसींवा ६२ कौशलेशसुतलक्ष्मणरामा कालहुजीतिसकैंसंग्रामा ६३ दो०॥ कह्यउबालिसुनु**

सुग्रीवको श्रीरामचन्द्र बालिके पासपठावतभये हैं श्रीरामचन्द्रको बलपाइकै निकटजाइकै गर्जतभयो है ( ६० ) सुग्रीवको शब्दसुनिकै बालि अतिक्रोधते आतुरधावत भयो है तबतारा चरणगहिकै समुझावती है ( ६१ ) हेपति जिनको सुग्रीवमिले हैं ते द्वौ बंधु तेजबल बुद्धिप्रताप के निधान हैं ( ६२ ) कोशलपुरी श्रीआयोध्या त्यहिकेराजा श्रीदशरथमहाराज तिनकेपुत्रहैं श्रीराम लक्ष्मणनामहै तेसंग्रामविषे कालहुको जीति सकतेहैं तहां अससमुझिपरतहै कि ज्यहिपरमेश्वर को वेदनेतिनेति कहिकै गावते हैं तेपृथ्वीके भारउतारिबेहेतु अवतीर्णभये हैं ( ६३ ) दोहार्थ॥ तबबालि बोलतभयो है हेप्रिया भीरुकही तू भयको प्राप्ति भईहै किंतु भीरुकही स्त्रीको सो तू न डरै श्रीरामचन्द्र परमेश्वर हैं तुहीकहै तौ उनके सबजीवनपर समदृष्टिहै जो कदाचित् अपने संकल्प हेतुमोको बधैंगे तो मैं सनाथहोउंगोज्यहि पदके प्राप्तिहोवेको मुनीश योगीश इच्छाकरते हैं त्यहिपदको मैं बिनाश्रम प्राप्ति होउंगो ( ६४ ) हेपार्वती श्रीरामचन्द्रको आत्मसमर्पणकरिकै सुग्रीवके ऊपर महाअभिमान करिकै तृणसमान मानिकैबालिचलतभयो है ( ६५ ) तबसुग्रीव अरु बालि भिरत भयेहैं तर्जाकही क्रोधकरिकैबालिएक मुष्टिका हनिकै गर्जतभयो है ( ६६ ) मुष्टिका बज्रके समानलागतभयो तब सुग्रीव बिकलह्वइकै श्रीरामचन्द्रके समीपको भागतभयो है ( ६७ ) तबसुग्रीव कहते हैं हेकृपालु मैं आपुसे कहारहै कि यहमोरबन्धु न होइ कालहोइ ( ६८ ) श्रीरामचन्द्र कहते हैं हे सुग्रीव तुम दूनौभ्राता एकरूपहौ ताते मोको भ्रमभई है कि कौन सुग्रीव कौनबालिहै ताते मैं नहीं मारयो है तहां श्रीरामचन्द्र परमेश्वर अरु कहते हैं कि मोकोभ्रमभई है यहआश्चर्य है तहां यह अर्थ सिद्धिहोत है चौपाई प्रणतकुटुम्ब पालरघुराई इहां श्रीरामचन्द्रजी सौशील्यगुण दिखावते हैं सुग्रीवकोसखाकीनहै अबसुग्रीवकरभाई कुटुम्ब वानराकार जेते हैं तेसबमेरे सखा हैं

भीरुप्रियसमदर्शीरघुनाथ जोकदाचिम्वहिंमारिहैं तौपुनिहोबसनाथ ६४ चौ०॥ असकहिचलामहाअभिमानी तृणमानसुग्रीवहिंजानी ६५ भिरयउयुगुलबालीअतितर्जा मुष्टिकमारिमहाधुनिगर्जा ६६ तबसुग्रीवबिकलह्वैभागा मुष्टिप्रहारबज्रसमलागा ६७ मैंजोकहारघुवीरकृपाला बंधुनहोयमोरयहकाला ६८ एकरूपतुमभ्रातादोऊ त्यहिभ्रमतेनहिंमारयउंसोऊ ६९ करपरसासुग्रीवशरीरा तनभाकुलिशगईसबपीरा ७० मेलीकंठसुमनकीमाला पठवापुनिबलदेइबिशाला ७१ पुनिनानाबिधिभईलराई विटप

अबमैं बालिको कैसेमारौं अरुमैं मारिबेको संकल्प करिचुक्यउं है इहांयहभ्रमभई है अरु ताहिमें श्रीरामचन्द्र ने बिटपके ओट ते बालिको मारा है सखामानिकै शीलकेवश सम्मुख नहींमारिसके हैं ऐसे शीलके निधान हैं अरु यह जो अर्थकरते हैं कि बालिके सम्मुख यद्धकिये ते आधाबल हरिजात है मुनिकै आशीर्बाद है तहां जीवको बल आकर्षणहोत है परमेश्वरकर अमोघबल है किन्तु श्रीरामचन्द्र कहते हैं हेसुग्रीव तुम प्रथमकह्यउरहै कि बालि मोर परमहितकारी भयो ताते अबहींताईं मैं नहीं मारयउं है अब तुम बैरी कहा है अब मारौंगे ( ६९ ) तब सुग्रीवके माथेपरकरकमल स्पर्शकीन है तनबज्रइव ह्वइगयो है सम्पूर्णपीड़ा जातिरही है ( ७० ) तब श्रीरामचन्द्र फूलनकर प्रसादी मालासुग्रीवको पहिरावते भये हैं संस्कारकरिदीन है जब वैष्णवद्रोहकरैगो तब श्रीरामचन्द्र मारहिंगे काहेते भागवतापराध श्रीरामचन्द्र नहीं सहिसकते हैं पुनि बिशाल बल दैकै पठवतभये हैं ( ७१ ) पुनि द्वौभाइन ते नानाप्रकार कै लराई होतिभई है विटपकेओटते श्रीरामचन्द्रजीदेखते हैं ( ७२ ) दोहार्थ॥ तब बालिते मल्लयद्ध होतसन्ते सुग्रीव बहुत छलबल करिकैहारिपरयो है तब भयको प्राप्तिभयो है कि मेरे प्राण जाते हैं तब श्रीरामचन्द्र सभीत जानिकै बालिके हृदयविषे बाणमारते भये हैं ( ७३ ) अरुबाणमारिकै अपनो संकल्प पूर्णकरिकै आगे तुरत ठाढ़भये आइकै ताते बाणकेलागेते बिकलउठिबैठ्योहै प्रभुको आगे ठाढ़देखत है ( ७४ ) श्यामगात शिरविषे जटाबांधे अरुणनेत्र धनुषचढ़ाये करविषेबाणलिहे हैं ( ७५ ) तब बालि ने हृदयविषे सावधान ह्वैकै चरणन विषे चितको लगाइकैप्रभु को चीन्ह्यो कि सम्पूर्ण मुनिनके योगिनके नारद शुक सनकादिक

वोटदेखतरघुराई ७२ दोहा॥ बहुछलबलसुग्रीवकरि हृदयहारिभयमानि माराबालिहिंरामतब हृदयमाझशरतानि ७३ चौ० ॥ पराबिकलमहिशरकेलागे पुनिउठिबैठिदीखप्रभुआगे ७४ श्यामगातशिरजटाबनाये अरुणनयनशरचापचढ़ाये ७५ पुनिपुनिचितैचरणचितदीन्हा सुफलजन्ममानाप्रभुचीन्हा ७६ हृदयप्रीतिमुखबचनकठोरा बोलाचितैरामकीओरा ७७ धर्महेतुअवतरयउगोसाईं मारयहुमोहिंब्याधकीनाईं ७८ मैंबैरीसुग्रीवपियारा कारणकवननाथम्वहिंमारा ७९ अनुजबधूभगनीसुतनारी सुनुशठयेकन्यासमचारी ८० इनहिंकुदृष्टिबिलोकैजोई ताहिबधेकछुपापनहोई ८१ मूढ़तोहिअतिशयअभिमाना नारिसिखावनकरयसिन * * * *

महादेव ब्रह्मा इत्यादिकन को ईश तिनको पाइकै अपने नेत्रन को साफल्य मानतभयो है ( ७६ ) हृदयमें प्रीतिपर श्रीरामचन्द्र की ओर चितैकै कठोर वचन बोलतभयो है ( ७७ ) हे गोसाईं तुम धर्म के हेतु अवतारलीन है अरु मोको ब्याधकीनाईं लुकाइकै मारतभये हौ ( ७८ ) हे नाथ सुग्रीव आपुको पियारभयो अरु मोको बैरीमानिकै मारत भये हौ सोकौन कारण ते जो कहो कि सुग्रीव हमारो कार्य करैगो तहां जो कार्य करिबेको मैं सामर्थ्यहौं सो सुग्रीव से जन्मपर्यन्त न होइगो सो मोकोआपु कौनहेतु मारयो है ( ७९ ) तब श्रीरघुनाथजी दोषारोपणकरिकै कहतेहैं हे शठ अनुज की वधू अरु भगिनी अरु सुतकीनारी अरु कन्या येचारिउ सम मानिबेको है ( ८० ) जो इनको कुदृष्टि ते कोई

बिलोकै तौ त्यहिके बधेते कछु पाप नाहींहोत है सो तैं सुग्रीवकी स्त्री हरिलीनहै एक अपराध पुनि बिना अपराध सुग्रीवको मारिकै निकारिदिह्यसिहै एक अपराध तोंसे यह भयो है ( ८१ ) पुनि तोको अतिशय अभिमानभयो है कितैंनेनारिको सिखावननहीं मान्यौ है यह तीसरी तकसीरभई ( ८२ ) पुनि मोरे भुजनके आश्रित सुग्रीवको तैं जानतहै अरु त्यहिपर माराचाहसियतना अभिमान त्वहिंविषे यह चतुर्थ अपराध है ( ८३ ) दोहार्थ॥ तहां श्रीरघुनाथजीने चारिदोष बालिविषे आरोपणकीन है। त्यहिको उत्तरबालिदेतहै हे स्वामी आपुकी कृपाते मैं आपुको जानिकै यह चतुराई कीन है कि आपुकेबाण करिकै शरीरको त्यागकरौंगो अरु मोको आपुपापी कहतेहौ सो अन्तकाल विषे ज्यहिजीव के केवल आपुकी गतिहै सो कैसेपापीरहैगो ( ८४ ) तब श्रीरामचन्द्र कोमलबाणी सुनिकै बालिके शीशपरकरकमल परसत भये हैं ( ८५ ) श्रीरामचन्द्र कहते हैं हेसखेबालि अबमेरो संकल्प पूर्णभयो है अबतुम प्राणनको राखहुमैं अचलकरिदेउंगो कालकीगतिते रहित करिदेउंगो तबबालिकहा हे कृपानिधान सुनहु ( ८६ ) मुनि

काना ८२ ममभुजबलआश्रितत्यहिंजानी माराचहसिअधमअभिमानी ८३ दो० ॥ सुनहुरामस्वामीसुभगचलनचातुरीमोरि प्रभु अजहूंमैंपातकीअंतकालगतितोरि ८४ चौ० ॥ सुनतरामअतिकोमलबानी बालिशीशपरस्यउनिजपानी ८५ अचलकरौंतनराखौप्राना बालिकहासुनुकृपानिधाना ८६ जन्मजन्ममुनियतनकराहींअंतरामकहिआवतनाहीं ८७ जासुनामबलशंकरकाशी देतसबहिंसमगतिअविनाशी ८८ ममलोचनगोचरस्वइआवा बहुरिकिप्रभुअसबनहिबनावा ८९ छं०॥ सोनयनगोचरजासुगुण नितिनेति * *

जन्मजन्म यत्नकरते हैं परन्तु मरणसमय रामनामके दो अक्षरमुख सेनहीं निकसतहैं अरु अन्तकालविषे अपुहीको नामस्मरणकरिकै आवागमनते रहितहोत हैं प्रमाणं श्रीअध्यात्म रामायणे बालिवाक्यं श्रीरामंप्रति श्लोक यन्नामविवशोगृह्णन् म्रियमाणः परंपदं यातिसाक्षात्सएवाद्यमुमुर्षोर्मे पुर स्थितं २ हेश्रीराचन्द्रजी अन्तकाल विषे तुम्हारे नामकरस्मरणहोइ तौ कैसौ पातकी जीवहोइ सो परमपदको प्राप्ति होतहैपुनः प्रमाणं बाराह पुराणे शंकर वाक्यं पार्वतींप्रति श्लोकएक॥ दैवाच्छूकरशावकेननिहतो म्लेच्छोजराजर्जरोहारामेतिहतोस्मिभूमिपतितोजल्पंस्तनुं त्यक्तवान् तीर्णोगोस्पदवद्भवार्णवमहोनाम्नः प्रभावात्पुनः किंचित्रंयदिरामनामरसिकास्तेयांतिरामास्पदं ( ८७ ) हेरामचन्द्र जासु कही जो तुम्हार नामोपदेशकरिकै सर्वजीवनको शंकरअविनाशीगतिदेतेहैं ( ८८ ) जाकरनाम ऐसो है सो प्रभु मेरे लोचन गोचर कही प्रत्यक्ष विद्यमान ठाढ़ेहौ ऐसोबनाव कबबनैगो अरु यहशरीर अनित्यहै ( ८९ ) हरिगीतिका छंदकरिकै बालि श्रीरामचन्द्रकैस्तुति करतहै तत्रार्थ हे श्रीरामचन्द्र तुम्हारे गुणगण परमदिव्य जाको वेदनेति नेति करिकै गावते हैं सो मेरे नेत्रनके गोचर खड़ेहौ मोरे समान बड़भागी को है कोई नहीं है कैसेहौ तुम मुनीश्वर जिनको योगसिद्धि है पवन कही प्राण अपान उदान व्यानसमान अरु मन अगोचर कही इन्द्री सबको जीतिकै तुम्हारोध्यान करते हैं तब तुम्हैं कबहूं कबहूं पावते हैं ( ९० ) अरु ते तुम मेरे नेत्रनके आगेठाढ़े हौ जो आपु कहाकि तैंप्राणको राखुमैं अचल करिदेउंगो तहांमोको अतिशय अभिमानी आपुजानाहै सो सत्यहै मैं आपुकर सखाहौंआपुहिंते आपुकी रुचिलीन्हे बराबरि युद्ध करतरह्याउं है अपर मैं किसू को कागनतहौं आपु जो तरुकेओटते मोंको माराहै सो लीला किसूकेजानिबेयोग्य नहीं है यह मैं जानतहौं कि परविसूतिकोमोको प्रथमपठावहुगे

कहिश्रुतिगावहीं जितिपवनमनगोनिरसकरिमुनिध्यानकबहुंकपावहीं ९० म्वहिंजानिअतिअभिमानवशप्रभुकह्यउराखुशरीरहीं असकवनशठहठिकाटि सुरतरुबारिकरहिंबबूरहीं ९१ अबनाथकरिकरुणाविलोकहु देहुजोवरमागऊंज्यहिंयोनिजन्मौंकर्मवशतहंरामपदअनुरागऊं ९२ यहतनयममसमविनय-बलकल्याणपदप्रभुदीजिये गहिबांहसुरनरनाहआपनदासअंगदकीजिये ९३ दो०॥ रामचरणदृढ़प्रीतिकरिबालिकीन्हतनत्याग सुमनमालजिमिकंठते गिरतनजानैनाग ९४॥ * * * * * *

उपरांत आपुआवहुगे अरु मोको कहाकि शरीरकोराखु सो ऐसोकौन शठहैजो सुरतरुको काटिकै बबूरकीबारिकी बारिकरैगो तुमको पाइकै अरु पंचभौतिक अधम अनित्य शरीर ताको राखैगो ऐसो कौनशठ है ( ९१ ) हेनाथ अब करुणाकरिकै मेरीदिशि अवलोकहुयहबरदान देहुअपनेकर्मके बश ज्यहियोनिमें जन्मौं तहां तहां तुम्हारे चरणारबिंद विषे मोर एकरस अनुराग बनारहै यह निष्काम भक्तिहै औरजे अनन्यदासहैं तिनकी परमचतुराईहै काहेते कि चरणारबिंदविषे अखंड अनुराग जाकरहोइगो सो काहेको योनिनमें जाइगो ( ९२ ) हेप्रभु एकविनयमोरी औरिहै यहमोर तनयजो अंगदहै सो यहिको मोरेसमान बलवान्जानब आपुके कार्यलायक है ताते तुम कल्याणके पदकही दाताहौ इसको लीजिये असकहिकै बालि अंगदकै बांहधरिकै श्रीरामचन्द्रको सौंपतभयोहै हे सुरनर मुनिनके नाथअंगदको आपनदास कीजिये ( ९३ ) दोहार्थ॥ तबश्रीरामचन्द्रबिषे दृढ़प्रीति करिकै श्रीरामचन्द्रकै मूर्त्ति हृदयमेंधरिकै बालितनको त्यागकीन है जैसे हाथीके गरविषे ते फूलको माला गिरिपरै वहनहीं जानैहै तैसे महायोगेश्वरनकी नाईं बालितनको त्यागकीनहै ( ९४ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसनेकिष्किन्धाकाण्डेबालिपरमधामप्राप्तिबर्णनन्नाम द्वितीयस्तरंगः२॥ :: ::

तृतियतरंगउपदेशकरि तारहिंज्ञानसिखाय रामचरणकपिराजदै रामशैलरहिछाय ३ श्रीरामचन्द्र बालिको अपनो स्वरूप मुक्तिदैकै दिब्य बिमानपर चढ़ाइकै चमर छत्र व्यजनहोत सबके देखत निजधाम कोपठाइ दीन है तबनगरबासी समस्त मनुष्य बिकल ह्वैकै धाये हैं ( १ ) तब देखिकै नानाप्रकारके बिलापताराकरती भई है केशछूटिगये देहकींसंभारनहीं करती है ( २ ) तब श्रीरामचन्द्र ताराको बिकल देखिज्ञानोपदेश करत हैं मायाको हरिलीन है ( ३ ) हेतारातुमकाहेको रोदनकरतीहौयहसबको शरीरतोअनित्यहैकाहेते यह अधम पांचतत्व

चौ० रामबालिनिजधामपठावा नगरलोगसबब्याकुलधावा १ नानाविधिबिलापकरतारा छूटेकेशनदेहसँभारा २ ताराबिकलदेखिरघुराया दीन्हज्ञानहरिलीन्हीमाया ३ क्षितिजलपावकगगनसमीरा पंचरचितयहअधमशरीरा ४ प्रकटसोतनुतवआगेसोवा जीवनित्यक्यहिंलगितुवरोवा ५ उपजाज्ञानचरणतबलागी लीन्ह्यसिपरमभक्तिवरमांगी ६ उमादारुयोषितकीनाईं

करिकै रचित है पृथ्वी अपतेज वायु आकाश ताते यह अधमशरीरहै जाते त्रैगुण्यमय बिकार अहर्निशि होतरहते हैं ( ४ ) हे तारा ज्यहिशरीर के हेतु तुम रोदन करतीहौसोतो तुम्हारे आगेपरा है अरु जीवतो मेरोहै नित्य है एकरस है न काहूको पति है न काहूको पुत्र है न काहू को पिता है न काहूको मित्रहै न काहू को बैरी है सबते भिन्न है यह देहकर सम्बन्ध सब विषे है सो नाशमान् है मोहको सहाय करिकै यह मन में अपनपौ मानिलियोहै अरु हेतारा जबते तुम्हाराबालिको सम्बन्धभयो है तबते बालिविषे जो जीवरहा है त्यहिको कबहुंतुम देख्यो है कैसोरूप है का नाम है कारंग है सोतो तुम एकौ नहीं देख्यो है तहांत्यहिको न आवतदेखी न जातदेखी नरहत देखी त्यहिकर शोचवृथाहैका करिये अरु ज्यहिंदेहको तुम देख्योहै सोतुम्हारे आगेपराहै अरु जीवात्मातौ मेरो है तुम्हारोनहींहै तातेपराईवस्तुको काहेको शोचकरिये तुम अपने मनमें विचारिदेखौ देव दानव मनुष्य चराचर सबकी देह नाशमान्है ताते परमेश्वरकर भजनकरहु मोहको त्यागिदेहु ( ५ ) हे पार्वती श्रीरामचन्द्रके उपदेश ते ताराको ज्ञानभयो है तब चरणन लागिकै परमभक्तिवरदान मांगिलेति भई है ( ६ ) हे उमा जैसे दारुकी योषिता कठपुतरी को सूत्रधर नचावत है तैसै श्रीरामचन्द्र अपनीसत्यताको सूत्रधरिकैदेवदानव मनुष्य चराचर सबको नचावते हैं तिनकीगति को जानिसकै है ( ७ ) तब सुग्रीवको श्रीरामचन्द्र आज्ञा देतभये हैं तब बालिकरमृतककर्म्म विधिविधानते सुग्रीव करतभये हैं ( ८ ) श्रीरामचन्द्र कहते हैं हे लक्ष्मणसुग्रीवको राजगद्दीपर बैठाइआवहु ( ९ ) श्रीरामचन्द्रकी आज्ञाते श्रीलक्ष्मणजी धनुपबाण चढ़ाइकै संपूर्ण मंत्रिनको लैकै चलत भये हैं ( १० ) दोहार्थ॥ श्रीलक्ष्मणजी तुरन्त ब्राह्मणकी समाज अरु मंत्रिनकी समाज अरु अपरसमाज बोलाइकै सुग्रीवको राज्यदेते भये हैं अरु अंगदको युवराजपदवी देतभये हैं युवराजपदवी कही राजाकेपीछे उहै राजाहोइ ( ११ ) हेउमा श्रीरामचन्द्रके समान हितकारी जगत्विषे कोई

सबहिंनचावतरामगोसाईं ७ तबसुग्रीवहिंआयसुदीन्हा मृतककर्मविधिवतसबकीन्हा ८ रामकहाअनुजहिंसमुझाई राजदेहुसुग्रीवहिंजाई ९ रघुपतिचरणनाइकरिमाथा चलेसकलप्रेरितरघुनाथा १० दो०॥ लक्ष्मणतुरतबोलाये पुरजनबिप्रसमाज राजदीनसुग्रीवकहं अंगदकहंयुवराज ११ चौ०॥ उमारामसमहितजगमाहीं गुरुपितुमातुबंधुकोउनाहीं १२ सुरनरमुनिसबकैयहरीती

नहीं है न गुरु न पितु न मातु न बन्धु इत्यादिक कोई नहीं है जो कोई कहै गुरुभी नहीं है गुरु को ईश्वर शास्त्र कहते हैं श्लोक प्रसिद्ध है २ गुरुर्ब्रह्मागुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवमहेश्वरः गुरुरेवपरब्रह्म तस्मैश्रीगुरवेनमः १ अखण्डमण्डलाकारंब्याप्तम्येनचराचरम् तत्पदम्दर्शितंयेनतस्मैश्रीगुरवेनमः २ ताते गुरु तौ श्रीरामचन्द्रके समान हैं ताते हितकारी क्यों होहिंगे सो सत्य है परगुरु अपने शिष्यको ईश्वर है अरु ईश्वर सबको ईश्वर है पुनि ईश्वर चराचरके हितकारी हैं अरु गुरु अपने शिष्यके हितकारी हैं अरुगुरु जीव है अपने शिष्यके मानिबेको ईश्वर है ताते श्रीरामचन्द्र के समानकैसे हितकारी होहिंगे प्रमाणंश्रीभागवते पञ्चमस्कन्धे ऋषिवाक्यंगुरुर्नसस्स्यात्स्वजनोनसस्स्यापित्पतानसस्स्याज्जननीनसास्यात् दैवन्नस स्स्यान्नपतिश्चसस्स्यान्नमोचयेद्यःसमुपैतिमृत्युं २ तहां श्रीरामचन्द्रनिजविरोधी कोटिन कोलभिल्ल कीटपतंगनको परम्पद दीन है अरु गुरु वशिष्ठ ऐसे सामर्थ्य ते राजा त्रिशंकुको परम्पदनहीं दैसके हैं ताते श्रीरामचन्द्र के समान हितकारी कोई नहीं है अरुगुरु श्रीरामचन्द्रकी प्राप्ति हेतु शिष्यको उपदेशकरते हैं आगे शिष्यकै कर्त्तव्य है पुनि दूसरा अर्थ चौपाई उमारामसमहितजगमाहीं श्रीरामचन्द्रकेसमान जगत् में हितकारी एकगुरुहै और कोऊनहींहै पुनितीसराअर्थ गुरुकहीश्रेष्ठकोजेतेश्रेष्ठहैंपिता माता बन्धु मित्रादिक श्रीरामचन्द्रकेसमान हितकारी कोईनहीं है पुनि चतुर्थअर्थ हे उमा श्रीरामचन्द्र सर्वजीवनपर समकही एकरस सबके हितकारी हैं गुरु पितु मातु बन्धु मित्रादिक सबके हैं कोऊरहि नहीं जाते हैं ( १२ ) हे पार्वती सुर नर मुनि सबकै यह रीति है स्वार्थ हेतु सब प्रीति करते हैं बिनु स्वार्थ प्रीति जीवपर एक श्रीरामचन्द्र करते हैं ( १३ ) देखिये तौ बालिकी त्रासते सुग्रीव को शरीर बिबरणह्वै रह्योहै अरु चिंताकरिकै छाती अंतष्करण जराजातरहै ( १४ ) त्यहिको कपिन

स्वारथलागिकरहिंसबप्रीती १३ बालित्रासब्याकुलदिनराती तनविवरणचिंताजरछाती १४ सोसुग्रीवकीन्हकपिराऊ अति कोमलरघुवीरस्वभाऊ १५ जानतहूंअसप्रभुपरिहरहीं काह्यनबिपतिजालनरपहीं १६ पुनिसुग्रीवहिंलीनबोलाई बहुप्रकारनृप नीतिसिखाई १७ कह प्रभुसुनुसुग्रीवहरीशा पुरनजाउंदशचारिबरीशा १८ गतग्रीषमवर्षाऋतुआई रहिहौंनिकटशैलपरछाई १९ अंगदसहितकरहुतुमराजू संततहृदयधरयहुममकाजू २० तबसुग्रीवभवनफिरिआये रामप्रवर्षणगिरिपरछाये २१ दो०॥ प्रथमहिंदेवनगिरिगुहा राखारुचिरबनाइ रामकृपानिधिकछुकदिन वासकरहिंगेआइ २२ चौ०॥ सुंदरवनकुसुमितअतिशोभा गुंजत

कर राजाकरिदीन है ऐसो श्रीरामचन्द्रकर कोमल स्वाभाव है ( १५ ) ऐसे प्रभुको जानिकैजेनर परिहरि देतेहैं ते चौरासीलक्षयोनि विषे विपत्तिके जालमें कस न परेरहैं ( १६ ) पुनि श्रीरामचन्द्र सुग्रीवको बोलाइकै बहुप्रकारते राजनीति सिखावत भये हैं ( १७ ) तब सुग्रीवके मनविषे यहहै कि श्रीरामचन्द्र पुरको चलहिं तब श्रीरामचन्द्र मनकीगति जानिकै कहते हैं हरि कही बानरको त्यहिके ईशहैं हेहरीश मैं चौदहवर्ष ताईं कोई पुरको नहीं जाउंगो ( १८ ) हे कपीश ग्रीष्मऋतु गतभई है वर्षाऋतुप्राप्तिभई है अरु तुम्हारे निकट प्रवर्षण शैलपरछाइकै मैं रहौंगो ( १९ ) अरु अंगदसहित तुमराज्यकरहु अरु निरन्तर मोरकार्य हृदयमें धरहु ( २० ) श्रीरामाज्ञाते तबसुग्रीव भवनको आवतभये हैं अरु प्रवर्षण पर्वत पर श्रीरामचन्द्र छाइरहे हैं ( २१ ) दोहार्थ॥ प्रथमहिं देवनपर्वतके गुहा कहींकंदराबनाइराखे हैं काहेते कि श्रीरामचन्द्र कृपाके निधान कछुक दिवस आइकै वासकरहिंगे ( २२ ) देखिये तौ श्रीरामचन्द्रकै अतिमाधूर्य शोभादेखिकै तरु तृण मधुकर विहंग शिला इत्यादिक चराचर मोहिगये हैं अरु सुन्दरबनफल फूल करिकै शोभितहै

मकरन्दके बशभ्रमर गुञ्जारकरते हैं ( २३ ) अरु जबते प्रभुआये तबते फलफूल पत्रअतिसुन्दरसुधामय रससुगंध करिकै युक्त बहुतभये हैं ( २४ ) मनोहर शैल देखिकै द्वौभाई देवतन के शिरोमणि तहां रहतेभये हैं ( २५ ) तहां सिद्ध मुनि देवता मधुकरमृगबिहंग इत्यादिकनकेतनधरिकै रघुनाथजीकै सेवाकरते हैं ( २६ ) रमाकही अनेकब्रह्माण्डकी श्रीत्यहिकेपति श्रीरामचन्द्रजी ते रमापति जबते बासकीन तबते मंगलमूलबन भयो है ( २७ ) अरु स्फटिकमणिनको शिलासुन्दर गोलविशाल विश्वकोबिस्तार अतिसुन्दर तहां द्वौभाई

मधुपनिकरमधुलोभा २३ कंदमूलफलपत्रसुहाये भयेबहुतजबतेप्रभुआये २४ देखिमनोहरशैलअनूपा रहेतहँअनुजसहितसुरभूपा २५ मधुकरखगमृगतनुधरिदेवा करहिंसिद्धमुनिप्रभुकैसेवा २६ मंगलमूलभयेबनतबते कीन्हनिवासरमापतिजबते २७ फटिकशिलाअतिसुभ्रसोहाई सुखआसीनतहांद्वौभाई २८ कहतअनुजसनकथाअनेका भक्तिविरतिनृपनीतिविवेका २९ बर्षाकालमेघनभछाये गर्जतलागतपरमसुहाये ३० दो० ॥ लक्ष्मणदेखहुमोरगणनाचतवारिदपेखि गृहीविरतिजिमिहर्षयुत विष्णुभक्तकहँदेखि ३१ चौ०॥ घनघमंडनभगर्जतघोरा प्रियाहीनडरपतमनमोरा ३२ दामिनिदमकिरहीघनमाहीं खलकैप्रीतियथाथिरनाहीं ३३

बिराजतभये हैं ( २८ ) हेपार्वती वर्षाऋतुसुन्दरऋतु को बिलोकिकै अनुजसे श्रीरामचन्द्र अनेक प्रकारकी भक्तिवैराग्य राजनीति विवेक मिश्रित कथा कहते हैं ( २९ ) हे लक्ष्मणजी देखिये तौ बर्षापाइकै मेघगर्जते हैं अतिमधुरलागते हैं इहां द्वौऋतुके प्रकरणविषे पदार्थसिद्धि जानब अपर अर्थ न जानब ( ३० ) दोहार्थ ॥ हे लक्ष्मणजी देखिये तौ मयूरकेगणवारिद देखिकै नाचते हैं जैसे गृही है अरु सत्संगपाइकै मनमें वैराग्यभईहै सो विष्णुभक्तको देखिकै जैसे उसको हर्षहोत है तैसे मयूरनाचतेहैंइहां यह अभिप्राय है कि गृहस्थनके रामभक्तनमें प्रीतिहोइ सो कृतार्थ है ( ३१ ) हेलक्ष्मणजी नभविषे मेघ घन घमंडकरिकै गर्जत हैं प्रिया जे जानकीजीहैं त्यहिते मैं विहीन हौं ताते मोरमन डरपतहै इहां रघुनाथजी बिरह दिखावते हैं अपर अर्थ इहां असिद्धहै यहै ध्वनिकरिकै अपनीप्रीति श्रीजानकीविषे दृष्टांतके आश्रयकरिकै अखण्ड देखावते हैं ( ३२ ) देखिये तौ दामिनी दमकिकै पुनि मेघविषे लयहोतहै तैसे खलप्राणिनकैप्रीति थिर नहीं रहति है ( ३३ ) अरु भूमिविषे नियराइकै मेघवर्षा करते हैं तहां बुधकही पण्डित विवेकी जे हैं ते विद्यापाइकै नवतेहैं अरु विवेकमय वार्ता करते हैं ( ३४ ) जलके बुन्दनके घात कही चोटपर्वत सहते हैं अरु भीजते नहीं हैं कैसे सहते हैं जैसे खलनके बचन सन्तसहते हैं जैसे काहूको टेढ़बचन तर्क ब्यंग कहै सो खल अरु जो सहिजाइ अरु दुःख न पावै सोईसाधु है ॥ प्रमाण श्रीगोसाईंको दोहावली॥ दोहा॥ बचनतूणजिह्वाधनुषबचनपवनगमतीर साधुनके लागैनहींक्षमासनाहशरीर ( ३५ ) बर्षाके जोरते क्षुद्रकही छोटी नदी तिराइकही भरिकै उतराइचली है जैसे थोरेधनते थोरे ज्ञानते थोरी विद्याते खलइतराइ चलते हैं ( ३६ ) तहाँ मेघनिर्मलजल बर्षते हैं जब भूमिमें परयो तब ढाबर ह्वैजात है जैसे अनादि जो जीवनिर्मल है अरु माया विषे अपनपौ

वर्षहिंजलदभूमिनियराईं यथानवहिंबुधविद्यापाई ३४ बुंदाघातसहहिंगिरिकैसे खलकेवचनसंतसहंजैसे ३५ क्षुद्रनदीभरिचलींतिराई जसथोरेधनखलइतराई ३६ भूमिपरतभाढाबरपानी जिमिजीवहिमायालपटानी ३७ सिमिटिसिमिटिजलभरहिंतलावा जिमिसद्गुणसज्जनपहँआवा ३८ सरिताजलजलनिधिमहंजाई होहिंअचलजिमिजनहरिपाई ३९ दो०॥ हरितभूमितृणसंकुलसमुझिपरहिनहिंपंथ जिमिपाषंडविवादतेगुप्तभयेसदग्रंथ ४० चौ०॥ दादुरधुनिचहुंदिशास्वहाई वेदपढ़हिजनुवटु

मानिकै मलीन ह्वैगयो है जबनदी सागरविषे प्राप्ति भई है तबक्रमहिंक्रम जल अपनो स्वरूपमुझत है तब शरदऋतु पाइकै कीच कीच में बैठिगई है जलपूर्वस्वरूप निर्मलता को प्राप्तिभयो है जब रसहि रस सत्संग होइ तबसत्गुरु शरदऋतुपाइकै माया जो रही सो मायाविषे गई है तब जीव निर्मल रूपको प्राप्तिहोत है ( ३७ ) बुन्दबुन्द दैव बर्षतेहैं सो सिमिटिसिमिटि बड़ेबड़ेतलावभरते हैं जैसेसज्जनजेहैं तेसत्गुणज्यहिविषे पावतेहैं सो लैलै शुभगुण के सागर ह्वैजाते हैं जैसे दत्तात्रेय चौवीसके गुण लैकै परमहंसह्वइगये हैं अरु तिनको गुरु मानिलियो हैं ( ३८ ) देखिये तौ सरसरितनके जल उमगिउमगि समुद्रको जाइ मिलते हैं तब अचलह्वइजाते हैं जैसे जे जीव मायाते निवृत्त ह्वइकै भजन करिकै हरिकोप्राप्तिह्वइकै अचलह्वइजाते हैं ( ३९ ) दोहार्थ ॥ देखियेतौ सघनतृणकरिकै पृथ्वी हरित ह्वैरही है मार्ग नहीं समुझिपरै है जैसे पाषण्डिन के बादाबिबादते सद्ग्रन्थनके पदार्थ गुप्तह्वइजातहैं पाषण्डीकही जे अशास्त्रमार्ग में चलते हैं ( ४० ) चौ० ॥ अरु दादुरध्वनिसे चहूंदिशा शोभित हैं जनु बटुकही ब्रह्मचर्यलीन्हे बालक विद्यार्थी वेद पढ़ते हैं शुद्ध अशुद्धघोखते हैं ( ४१ ) अरु नवीनपल्लव तरुनविषे शोभित हैं जैसे परमेश्वर पदार्थके साधकजे हैं तिनके मन विषेविवेक प्राप्ति भयउहै पुराणवेत्ताअर्थ धर्म काम त्रिवर्ग फल के बासनाकै जैसे साधना है ते सब झरिगये हैं विवेक पल्लवको प्राप्तिभये हैं ताते शोभित हैं ( ४२ ) अर्क जो मदार है अरु जवासाजो है ते वर्षाविषे विना पाता ह्वैगये हैं जैसे सुराज्य पाइकै खलकर उद्यमजातरहे है किन्तु मनविषे ज्ञानकै राज्यभई तब काम क्रोध लोभ मोह मदमात्सर्यइत्यादिक खलनकेकर्म्मजातरहेहैं ( ४३ ) बर्षाकाल विषे धूरि काहूको खोजेनहीं मिलति है जैसे क्रोधके उत्पन्नभयेते संपूर्णधर्म दूरिह्वै जाते हैं ( ४४ ) अरु शशि जो कृषी है सम्पन्नकही सघनहरित

**समुदाई ४१ नवपल्लवभयबिटपअनेका साधकमनजसमिलहिंबिवेका ४२ अर्कजवासपातबिनुभयऊ जससुराज्यखलउद्यमगयऊ ४३ खोजतकतहुंमिलइनहिंधूरी करैंक्रोधजिमिधर्महिंदूरी ४४ शशिसम्पन्नसोहमहिकैसे उपकारीकैसम्पतिजैसे ४५ निशितमघनखद्योतबिराजा जनुदम्भिनकरमिलासमाजा ४६ महावृष्टिचलिफूटिकियारी जिमिस्वतंत्रभयबिगरहिंनारी ४७ कृषीनिरावहिंचतुरकिसाना जिमिबुधतजहिंमोहमदमाना ४८ द्यखियतचक्रवाकखगनाहीं कलिहिपाइजिमिधर्मपराहीं ४९ ऊषरवर्षे**

शोभित है जैसे परमार्थी पुरुषकै संपति शोभित है ( ४५ ) अरु देखौ सघनतमविषे खद्योत चमकते हैं जैसे दंभिनकी समाज विषे अज्ञानतमसघन विषे उनको ज्ञान जुगुनूँइव चमकतहै ( ४६ ) देखिये तौ महावृष्टिभई है कियारीकही मेंड़ डाँड़ फूटि चली हैं जैसे स्वतन्त्रभयेते स्त्री बिगरि जातीहैं किन्तु स्वतन्त्र कही जबआत्मा इन्द्रिन के बशनहीं है तव स्त्रिनकेनारिजेहैं भय संदेह विषय वृत्ति सो बिगरिजाती है ज्ञानमें डूबिजाती है ( ४७ ) अरु चतुर किसानजे हैं ते कृषी को निरावते हैं धानमात्र राखते हैं विजातीय घास निकासि डारते हैं काहेते धानकी वृद्धि मारीजाती है तैसे बुधपंडित विबेकीजेहैं ते मोहमदमानइत्यादिक विवेकीविवेकतेनिकारिडारते हैं काहेते मोहमद मानज्ञानकेबाधक है ( ४८ ) वर्षाऋतुविषे चक चकईनहीं देखिपरते हैं जैसे कलियुग पाइकैधर्म पराइगये हैं नहीं देखिपरते हैं किन्तु कलिकही क्लेशको जबतनमनमें क्लेशउत्पन्नभयो है तबधर्मपराइजात है ( ४९ ) वर्षाभई है अरु ऊषरविषे तृणनहीं जामतहै जैसे हरिजननक हृदयविषे चारिउपदार्थकै कामनानहीं उठै है ( ५० ) बिबिधिप्रकारके जन्तु महिविषे भ्राजते हैं जैसे सुराज्य पाइकै प्रजाबढ़ते हैं किंतु ज्यहिके हृदयहिपे सुराज्यकही श्रीरामराज्यभयो तब ज्ञानवैराग्य योग विज्ञान ध्यान समाधि इत्यादिक परमदिव्य गुणबढ़तहैं ( ५१ ) बर्षाऋतुविषे जहां तहां नानाप्रकारके पथिकथकिकही ठिठुकिरहे हैं जैसे ज्ञानके भये ते इन्द्रीगणके विषय थकिरहे हैं ( ५२ ) दोहार्थ। अरु कबहूंप्रबलमारुत चलते हैं तब जहां तहां मेघ बिलाइजाते हैं जिमिकपूत पुत्र के उपजेते कुलके धर्म नाशह्वइजाते हैं ( ५३ ) कबहूंक दिवसते मेघ चढ़िआवते हैं निविडकही सघनअंधकार ह्वइजात है अरु कबहूंकै पतंगकही सूर्य्यप्र-

तृणनहिंजामा जिमिहरिजनजियउपजनकामा ५० विविधिजंतुसंकुलमहिभ्राजा प्रजाबाढ़जिमिपाइसुराजा ५१ जहँतहँरहेपथिकथकिनाना जिमिइन्द्रीगणउपजैज्ञाना ५२ दो० ॥ कबहुंप्रबलमारुतबहैजहँतहँमेघबिलाहिं जिमिकपूतकेऊपजे कुलकेधर्मनशाहिं ५३ कबहुंदिवसमहँनिबिड़तम कबहुंकप्रगटपतंग बिनशैउपजैज्ञानजिमि पाइकुसंगसुसंग ५४ चौ० ॥ वर्षाविगतशरदऋतुआई लक्ष्मणदेखहुपरमरस्वहाई ५५ फूलेकाससकलमहिछाई जनुवर्षाऋतुप्रगटबुढ़ाई ५६ उदितअगस्तपंथजलशोषा जिमिलोभैशोषैसंतोषा ५७ सरितासरनिर्मलजलसोहा संतहृदयजसगतमदमोहा ५८ रसरसशोषसरितसरपानी ममतात्यागकरहिंजिमिज्ञानी ५९ जानिशरदऋतुखंजनआये पाइसमयजिमिसुकृतस्वहाये ६० पंकनरेणुसोहअसधरणी नीतिनिपुणनृपकैजसकरणी ६१

गटहोते हैं जैसे कुसंग पाइकै ज्ञानबिनाशहोत है सुसंगपाइकै बढ़त है ( ५४ ) हे लक्ष्मणजी देखौतौ वर्षाऋतु विगतभई है अरुपरम सुहावन शरदऋतु प्राप्तिभई है ( ५५ ) महि विषे कांसफूलि रहे हैं जनुवर्षा ऋतुकैकर्त्तव्य प्रगट वृद्धह्वइगई है किन्तु बर्षाऋतु प्रगटवृद्ध ह्वैगईहै ( ५६ ) अगस्त्य उदयभये हैं पन्थको जलसोषतभये हैं जिमि सन्तोषके भयेते लोभकरशोषण होतहै अरु लोभकेभये संतोषकरशोषण होतहै अन्योन्यहै ( ५७ ) सरिता सरजे हैं तिनमें निर्मल जल शोभितहै जैसे सन्तकेहृदय मोहमदगयेते निर्मल हैं ( ५८ ) अरु रसहिरस सरितासरके जल सोषतजाते हैं जैसे सन्तजनअपनेज्ञानकरिकै रसहिरसममताकोत्यागकरते हैं ममताकही त्रैगुण्यजनितपदार्थविषे अपनपौमानना ( ५९ ) शरदऋतुपाइकै खञ्जनजे खड़ैचा ते प्राप्ति भये हैं जैसे समयपाइकै प्राणिनके सुकृत शोभित होते हैं तहां दृष्टान्त है राजारनन्तिदेवराज्यको त्यागिकै ऋषिधर्मलैकै आकाशवृत्ति लीन है चालिस अरु आठ दिनबीते भोजन प्राप्तिभये हैं ताहीसमयविषे एकब्राह्मण आइकै बोल्यो मैं पचास दिनकर भूखाहौं तब अपनो भोजन ब्राह्मण को उठाइदीन है आपु भूखे रहिगये हैं ताहीसमयमें राजाको भगवान् प्राप्तिभये हैं ऐसोसमयपाइकै सुकृत शोभित है ( ६० ) अरु महिविषे पंककही कीच ज्यहिको जल सोषिगयोहै कीचसूखिगईहै त्यहिपर रेणुशोभित है जैसे प्रबीण नीतिनिपुण राजाकी राजनीतिकैकरणी शोभित है ( ६१ ) जहां तहां जल संकुचित कहीथोरे ह्वैगये हैं त्यहिविषे मीन बिकल हैं जैसे अबुध जे अज्ञानीप्राणी हैं अरु बहुकुटुम्बीहैं अरु धनते हीन हैं ते बिकल ह्वै जाते हैं ( ६२ ) शरदऋतु बिषे मेघ बिलाइगयेहैं निर्मल आकाश शोभित है जैसे आशाबासना ध्वंसभये ते सन्तनके हृदय निर्मल हैं ( ६३ ) अरु शरदऋतु विषे कहूं कहूं थोरी वृष्टि ह्वै जाती है जैसे मेरी भक्ति कोईकोई पुरुषनको प्राप्तिहोतीहै प्रमाण श्रीमन्महा-

जलसंकोचबिकलभयमीना अबुधकुटुंबीजिमिधनहीना ६२ बिनुघननिर्मलसोहअकाशा हरिजनइबपरिहरिसबआशा ६३ कहुँकहुँवृष्टिशरदऋतुथोरी कोउयकपावभक्तिजिमिमोरी ६४ दो० ॥ चलेहर्षितजिनगरनृप तापसबणिकभिषारि जिमि

रामायणे शिववाक्यं पार्वतींप्रति श्लोक॥ हेमुग्धे श्रृणुष्वमनुजोपि सहस्त्रमध्येधर्मव्रतोभवति सर्वसमानशीलः तेष्वेवकोटिषुभवेद्विषयेविरक्तः संदानकोभवतिकोटिविरक्तमध्ये १ ज्ञानीपुकोटिषुनृजीवनकोपिमुक्तः कश्चित्सहस्त्रनरजीवनमुक्तमध्ये विज्ञानरूपविमलोप्ययब्रह्मलीनस्तेष्वेवकोटिषुसकृत्खलुरामभक्तः ( ६४ ) दोहार्थ ॥ बर्षाबिगतशरदऋतुको पाइकै राजाआपने नगरतजिकै आपनादेशसंभारिवे को चलते हैं अरु तपसी ग्रामछोंड़िकै बनविषे तपकरिबेको चले हैं अरु बणिक व्यापार करिबेको चले हैं अरु भिक्षुक भिक्षापर्यटनकरिबेको चलेहैं जैसे जेप्राणीमेरी भक्तिको प्राप्ति भयेहैं ते हैं चारिउबर्णाश्रमकेधर्मकर्मत्यागकरते हैं जबमेरीभक्तिकोरस जैसेजैसे पावतजाते हैं तैसे तैसे क्रमहीते वर्णाश्रमके धर्म कर्म आश्रम आपुहि छूटिजातेहैंवर्णकहीब्राह्मण क्षत्रीबैश्यशूद्र आश्रमकही गृहस्थ ब्रह्मचर्य बाणप्रस्थ संन्यास तहां राजा गृहस्थ स्थाने बाणप्रस्थतपस्वी अरु ब्रह्मचारी बणिक् बिद्याको व्यापार करते हैं अरु भिक्षुक संन्यासी येई मेरीभक्तिप्राप्ति भयेते चारिबर्णाश्रम कर्म्म धर्म्मके परिश्रमजेते हैं सो सबपरिश्रम छूटि जाते हैं ( ६५ )

जहां अगाध नीरहै तहां मीनसुखी हैं जैसे हरिकेशरणविषे एकौबाधानहीं है ( ६६ ) अरु कमल फूले सर कैसे शोभित हैं जैसे निर्गुण ब्रह्म सगुणहोत है तहां सागरविषे जल अन्तर कमलबीजमात्ररह्यो है शरद काल पाइकै जल के ऊपर फूलिकै शोभित है जैसे निर्गुण ब्रह्म संसार के अन्तर्भूत व्याप्त है कोईकालविषे अपने भक्तनके हेतु सगुण स्वरूपधरिकै संसारको शोभितकरे है जैसे प्रह्लादहेतु नरसिंह प्रत्यक्षभये हैं दूसराअर्थ मूर्त्तिमान् जो ब्रह्म है निर्गुण कही तीनगुणकेपरेहै यह नेत्रन के आगे गोचर सो अपने भक्तन के हेतु प्रकृतिमण्डल विषे प्रत्यक्षहोते हैं यह नेत्रनके गोचरभये हैं जैसे जलके अन्तर कमल के बीज शोभित मूर्त्तिमान् सो बायब है अरु जल के ऊपर फूल्यो है तबहुं सो

हरिभक्तिपाइश्रमतजहिंआश्रमीचारि ६५ चौ० ॥ सुखीमीनजहँनीरअगाधा जिमिहरिशिरणनएकौबाधा ६६ फूलेकमलसोहसरकैसे निर्गुणब्रह्मसगुणभयेजैसे ६७ गुंजतमधुकरमुखरअनूपा सुन्दरखगरवनानारूपा ६८ चक्रवाकमनदुखनिशिपेखीजिमिदुर्जनपरसम्पतिदेखी ६९ चात्रिकरटततृषाअतिवोही जिमिसुखलहैनशंकरद्रोही ७० शरदातपनिशिशशिअपहरई संतदरशजिमिपातकटरई ७१ देखहिंबिधुचकोरसमुदाई चितवहिंजिमिहरिजनहरिपाई ७२ मसकडंसबीतेहिमत्रासा जिमिद्विजद्रोहकियेकुलनाशा ७३ दो०॥ भूमिजीवसंकुलरहे गयेशरदऋतुपाइ सद्गुरुमिलेतेजाहिंजिमि संशयभ्रमसमुदाइ ७४॥ * * * * *

बायब ह्वै ( ६७ ) सागरन विषे जो कमलफूले हैं तिनपर भ्रमर गुंजारकरते हैं मुखरकही बोली सुन्दर लागति है इहां पछिली उपमाके अभिप्राय ते उपमादेते हैं श्रीरामचन्द्र कहते हैं हे तात भ्रमर कमलनपर गुंजारकरते हैं मकरंद पानकरते हैं जैसे मेरे जन अपने चित्तको भ्रमर करिकै मेरे चरणन की मकरंद को पानकरते हैं अरु परावाणी ते मेरोनाम उच्चारण ध्वनिकरते हैं अरु अनेक रूपरंग के सुन्दर बिहंग बोलते हैं जनु मेरो यशगाइकै मोको प्रसन्नकरते हैं ( ६८ ) अरु सन्ध्यासमयदेखिकै चकवा चकईके दुःख उत्पन्न भयो है जैसे दुर्जनकही दुष्टजन पराई सम्पतिदेखिकै दुखित होते हैं ( ६९ ) अरु चातक स्वाती के जलहेतु तृषितह्वैकै सदा रटते हैं बरहींमास दुखित हैं जैसे शिवकर द्रोही कबहूं सुखी नहींरहत है ( ७० ) अरु शरद ऋतुकर आतपकही घाम तीक्ष्ण त्यहिकी तपनिकोनिशिविषे चन्द्रमाहरत है जैसे सन्तनके दर्शन ते मन बचनके पाप भागि जाते हैं ( ७१ ) शरदऋतु विषे इन्दु पौर्णमासी को चन्द्रमा एक है अरु समुदाई चकोर देखते हैं जैसे जेहरिके जन अनेक हैं ते हरि को पाइकै बाह्यान्तर के नेत्रनते अहर्निशि मूर्त्तिमान् सिंहासनपर विराजमान अरुचराचर विषे व्याप्त अन्तर्यामी रूप एकहरि को देखते हैं ( ७२ ) अरु शरदको अन्त हिमऋतु को आगमन त्यहिकी त्रास ते मसक डंसादिकऊष्मज जीव जे हैं ते बीतिजाते हैं जैसे ब्राह्मण करद्रोहकियेते कुलकही बंश नाशह्वइजात है ( ७३ ) दोहार्थ॥ भूमिके जीव संकुलकही संपूर्ण जे रहेते शरदऋतु के अन्तविषे जातरहे हैं कोजानै कहांगये जैसे सद्गुरुनके मिलेते संशय अरु भ्रम के समुदाय जातरहते हैं ( ७४ ) इतिश्रीरामरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने किष्किन्धाकाण्डेनीतिबैराग्यविवेक ज्ञानभक्तिमिश्रितवर्षाऋतुबर्णनन्नामतृतीयस्तरंगः ३ ॥ :: :: :: :: :: ::

चौ० ॥ बर्षाबिगतशरदऋतुआई सुधिनतातसीताकैपाई १ एकबारकैस्यहुसुधिजानौं कालहुजीतिनिमिषमहँआनौं २ कतहुंरहैजोजीवतिहोई तातयतनकरआनौंसोई ३ सुग्रीवहुसुधिमोरिबिसारी पावाराजकोशपुरनारी ४ ज्यहिशायकमारामैंबाली त्यहिशरहतौंमूढ़कहँकाली ५ जासुकृपाछूटैमदमोहा ताकहंउमाकिसपन्यहुंकोहा ६ जानहिंयहचरित्रमुनिज्ञानी जिनरघुबीरचरणरतिमानी ७

दोहा॥ सुभगतचतुर्थतरंगमें रामरोषकपित्रास पुनिमिलापसेनासहितरामचरणप्रभुपास ४ चौ०॥श्रीरामचन्द्रकहते हैं हेतात लक्ष्मणजीवर्षाऋतु विगतभई शरदऋतुप्राप्तिभई है श्रीजानकीजीकै सुधिनहींपाई है ( १ ) हेतातएकवार कैसेहूसुधिपाऊं तौ कालहुकोजीतिकै एकनिमियमहँ लाऊं ( २ ) हे तात श्रीजानकीजी कहूंरहैं अरु जीवनतरहैं तौमैं

यत्नकरिकैलै आवोंगो ( ३ ) हेतातसुग्रीवने भी पुरको राज्य अरु कोशकहीभंडार अरु नारिपाइकै मोरिसुधि बिसारि दीन्ही है ( ४ ) हे लक्ष्मणजी ज्यहिबाणते मैंने बालिकोमारा है तेहीबाणते मूढ़जो सुग्रीवहै त्यहिको मारोंगो कोईकहै कि श्रीरामचन्द्रकै सत्यसंकल्प है सुग्रीवकोबध क्यों नहीं कियो है तहां काल्हि कहाबिहानके दिनको संकल्पकियो है अरु सुग्रीवतौ आजुही मिलैगो तहां श्रीरघुनाथजी के सत्यसंकल्प हैं किन्तु आजुनहीं मिलै तौ काल्हि उसकी मूढ़ता हरौंगो ( ५ ) हे पार्वती जिनकी कृपाते मद मोह छूटिजात है तिन श्रीरामचन्द्रको सपन्यउं क्रोध का उत्पन्न होई न होई अथवा श्रीरामचन्द्रकी कृपाते सुग्रीवके मदमोह प्रथमहि छूटिगयो है तब शरणागत भयो है सुग्रीवपर सपन्यहुं क्रोधकरैं न करैं तहां भयदेखावते हैं जामेंदास गाफिल नपरै ( ६ ) हे पार्वती यह श्रीरामचन्द्र कर चरित जे ज्ञानीमुनीश्वर हैं अरु सर्वत्यागिकै श्रीरामके चरणारविंदमें रतहैं तेई जानतेहैं ( ७ ) जब श्रीरामचन्द्रने कहा कि सुग्रीवने राज्य पाइकै मोको बिसारि दीनहै यहसुनिकै लक्ष्मणजी के क्रोधभयो धनुषबाण चढ़ाइकैतैयारभये हैं ( ८ ) दोहार्थ ॥ श्रीरामचन्द्र करुणाके सींवकही मर्याद ते अनुजको समुझाके कहतहैं हेतातभय देखाइकै सुग्रीवको लैआवो सुग्रीवमेरो सखाहै यहसमुझायोहै हेतात सुग्रीवतौ प्रथमहिं सर्बत्यागिकै मेरे शरण भयो है यहरात्यतौ मैं अपनीइच्छाते दीनहै जोराज्यकेविषे सुखमें मोको भूलिनजाइ तौ जीवनविषे मोरिमाया प्रबल कैसेकहावै तहां सुग्रीवको विषय बाधा न करैगो काहेते सुग्रीवमेरे शरण अरु विभूति मेरीदई है तहां जे जीव मेरेशरण हैं तिनको विषयनहीं बाधाकरै हैं

**लक्ष्मणक्रोधवन्तप्रभुजाना धनुषचढ़ाइगहेकरबाना ८ दो०॥ तबअनुजहिंसमुझायो रघुपतिकरुणासींव भयदेखायलैआवहु तातसखासुग्रीव ९ चौ० ॥ इहांपवनसुतहृदयबिचारा रामकाजसुग्रीवबिसारा १० निकटजाइचरणनशिरनावा चारिहुबिधित्यहिंकहिसमुझावा ११ सुनिसुग्रीवपरमभयमाना विषयमोरहरिलीन्ह्योज्ञाना १२ अबमारुतसुतदूतसमूहा पठवहुजहंतहं वानरयूहा १३ कहहुपाषमहंआवनजोई मोरेकरताकरबधहोई १४ तबहनुमन्तबोलायेदूता सबकरकरिसन्मान बहूता १५ भयअरुप्रीतिनीतिदेखराई चलेसकलचरणनशिरनाई १६ त्यहिअवसरलक्ष्मणपुरआये क्रोधदेखिजहंतहंकपिधाये**

मोरजानिकै काहेते कि मैं तीनिहूं कालमें तिनकैरक्षा करौंहौंयहै मेरोप्रण हैं प्रमाण बालमीकीये श्लोक॥ सकृदेवप्रपन्नाय तवास्मीतिचयाचते अभयंसर्बभूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतंमम ( ९ ) इहां हनुमान्जीने अपनेमनमेंविचारा कि श्रीरामचन्द्रकर कार्यसुग्रीव बिसारिदीन है ( १० ) हनुमान्जी समीपजाइकै सुग्रीवके चरणनमहँ शिरनाइकै सामदामदंड बिभेदचारिहूनीति समुझावतभये हैं ( ११ ) तबसुनिकै सुग्रीवने परमभयमान्योहै हनुमान्जी मायाप्रबल त्यइँ मोरज्ञान हरिलीन्ह्यो है ( १२ ) सुग्रीवकहते हैं हे मारुतसुत अबश्रीजानकी के ढूंढ़िबेको समूहकही यूथके यूथ बानरबोलावहु दूतपठवहु ( १३ ) अरु कहहुएकपक्षविषे जोनआयोत्यहिकरवधमैं अपनेहाथनकरोंगो ( १४ ) तबहनुमान्जी दूतनकोबोलाइकै सबकर अतिसन्मानकरते भये हैं ( १५ ) भय अरु प्रीति नीति देखाइकै बिदाकीनहै हनुमान्केचरणमें शीशनाइकै सबचलत भये हैं ( १६ ) त्यहिअवसर विषे लक्ष्मणजी पुरको आये हैं क्रोधवत देखिसुनिकै जहांतहांसे बानरपांयन परिबेको धावतभये हैं ( १७ ) दोहार्थ॥ धनुषविषे बाणचढ़ाइकै यहकहा कि एक बाणते याहीक्षणमें संपूर्णपुर भस्मकरिदेतहौं पुनित्यहिक्षण विषे नगरमेंगर्मीउठी है लोगब्याकुल ह्वैगये हैं तबअंगदतुरंत आइप्राप्ति भयो है ( १८ ) अंगद चरणनबिषे शिरनाइकै विनयकरतभयो है तबलक्ष्मणजीने अभयबांहदीन्ही है ( १९ ) क्रोधवन्तलक्ष्मणजी को सुनिकै सुग्रीव अतिही भयकरिकैअकुलाइउठ्यो है ( २० ) सुग्रीवकहते हैं हेहनुमंत ताराकोसंगलैकै बिनतीकरिकै लक्ष्मणजीकोसमुझावहु

१७ दो० ॥ धनुषचढ़ायकहातबजारिकरौंपुरछार ब्याकुलनगरदेखितब आयोबालिकुमार १८ चौ०॥ चरणनाइशिरविनतीकीन्ही लक्ष्मणअभयबांहतबदीन्ही १९ क्रोधवंतलक्ष्मणसुनिकाना कहकपीशअतिभयअकुलाना २० सुनुहनुमंतसंगलैतारा करिबिनतीसमुझावकुमारा २१ तारासहितजायहनुमाना चरणवंदिप्रभुसुयशबखाना २२ करिबिनतीमंदिरलैआये चरणपखारिपलंगबैठाये २३ तबकपीशचरणनशिरनावा गहिभुजलक्ष्मणकंठलगावा २४ नाथविषयसममदकछुनाहीं मुनिमनमोहकरैक्षणमाहीं २५ सुनतविनीतबचनसुखपावा लक्ष्मणत्यहिबहुबिधिसमुझावा २६ पवनतनयसबकथासुनाई ज्यहिविधिगयेदूतसमुदाई २७ दो०॥ हर्षिचलेसुग्रीवतब अंगदादिकपिसाथ रामअनुजआगेकिये आयेजहँरघुनाथ २८॥ * * * * * * *

जाइ ( २१ ) तबताराकोलैकै हनुमान्‌जी लक्ष्मणजीके चरणगहिकै श्रीरामलक्ष्मणजी के सुयशबहुप्रकारतेबखानतेभये हैं यहअतिआदर कहावत है ( २२ ) विनतीकरिकै लक्ष्मणजीको मन्दिरमेंलैआयेहैं चरणपखारिकै पलंगपर बैठावतभये हैं यहअतिआदर कहावतहै लक्ष्मणजी पलंगपर क्यों बैठेहैं तहां श्रीरघुनाथजीने कहाहै कि सुग्रीवकर निरादरकरबअंगीकारकरबताते श्रीरामाज्ञाते बैठे हैं ( २३ ) तब कपीशचरणनमहँ शीशनावतभयो है लक्ष्मणजी बांहपकरिकै कंठमेंलगावतभये हैं ( २४ ) हेनाथ विषयके समानकछु मदनहीं है जो मुनिनकेमनविषे एकनिमिषमें क्षोभकही आवरण करिदेत है विषयकही इन्द्रियासक्त मैं मोर तोर तैं मैं मदअष्ट जातिकुलरूप यौवन विद्या धन ज्ञान ध्यानताते धनकर कारण राजमद कठिन है ( २५ ) विनीतकही दीनतामें प्रवीण बचनसुनिकै लक्ष्मणजी आनन्दितभये हैं सुग्रीवकर बहुविधि बोधकरतभये हैं ( २६ ) तब हनुमान्‌जी सबकथा सुनाइदीन ज्यहिप्रकारसमुदाईदूतगयेहैं ( २७ ) दोहार्थ॥तब हर्षिकैहनुमान् अंगदादिकअरुमंत्रीसंयुक्तसुग्रीवलक्ष्मणजीको आगेकरिके श्रीरघुनाथजी के समीप प्राप्तिभये हैं ( २८ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसनेकिष्किन्धाकाण्डे श्रीरामरोषसुग्रीवागमनवर्णनन्नामचतुर्थस्तरंग: ४॥

दोहा॥ कपिसेनाआईविपुलरामकृपाकरिदेखि रामचरणसनमानसबपंचतरंगमलेखि ५ तबसुग्रीव श्रीरामचन्द्रके चरणारविन्दविषे माथनाइकै करजोरिकै कहते हैं हेनाथ मोरि खोरि कछुनहींहे ( १ ) हेदेवतुम्हारीमायाबड़ीप्रवलहै विनातुम्हारीदाया नहीं छूटिसकै है ( २ ) हेस्वामी तुम्हारी मायाके बश सुर नर मुनि चराचर हैं अरु मैंतौ स्वाभाविक विषयीहौं काहेते पामर पशुनमें बानर अति कामी हौं मोरेकौन दूषण है ( ३ ) हे

चौ०॥ नाइचरणशिरकहकरजोरी नाथमोरिकछुनाहिंनखोरी १ अतिशयप्रबलदेवतवमाया छूटैरामकरहुजोदाया २ विषयवश्यसुरनरमुनिस्वामी मैंपामरपशुकपिअतिकामी ३ नारिनयनशरजाहिनलागा घोरक्रोधतमनिशिजोजागा ४ लोभफांसज्यहिगरनबंधाया सोनरतुमसमानरघुराया ५ यहगुणसाधनतेनहिंहोई तुम्हरीकृपापावकोइकोई ६ तबरघुपतिबोलेमुसकाई तुमप्रियमोहिंभरतजिमिभाई ७ अबसोयतनकरहु मनलाईज्यहिविधिसीताकैसुधिपाई ८ दो० ॥ यहिविधिहोतबतकही आये

नाथ स्त्रीके नयनकर वाणजाके नहीं लाग्यो है अरु घोर क्रोध महाअंधकार रूप त्यहिनिशिविषे जो जागे हैं ( ४ ) अरु लोभकी जो फांसी त्यहि विषे जिन अपने गरेको नहीं बँधायो है ते नरतुम्हारे समान हैं जीवको परमेश्वर समान क्यों कहा यहध्वनि है कि जे काम क्रोध लोभहैं तहां कामको सहायक मद है अरु बनितास्थाई है अरु क्रोधको सहायक मोहहै अरु अहंकार स्थाई है अरु लोभको सहायक मात्सर्य कही ईर्षाहै अरु दंभस्थाई है इनको जो जीतै अरु श्रीरामचन्द्रकर भजनकरै ते सारूप्यमुक्तिको प्राप्तिहोतेहैं

ताते जीवको रामसमानकहाहै ( ५ ) हेनाथ यहगुण भक्तिमय है सो अनेक साधनते नहीं सिद्धि होतहै तुम्हारी कृपाते कोईकोई पावते हैं ( ६ ) तब श्रीरामचन्द्र सुग्रीवते मुसकाइकै कहते हैं तुम मोको भरतकेसमान प्रिय हौ ( ७ ) अब सोयत्नमनलाइकैकरहुज्यहिबिधि श्रीजानकीजी कै सुधिपाइये ( ८ ) दोहार्थ॥ यहिप्रकारते बतकहीहोतिहै तेही समयविषे वर्णवर्णके जातिजातिके रंगरंगके वानर नानायूथकेयूथ आवतेभये हैं सबदिशनमेंपूरिरहे हैं ( ९ ) हेपार्वती बानर रीछनकै कटक जो मैं देखा है सो अगणित जानब जे कोई लेखा करैं ते मूर्ख हैं ( १० ) आइकै श्रीरामचन्द्रके चरणनविषेमाथनावते हैं मुखनिरखिकै सबसनाथहोते हैं ( ११ ) हे पार्वती जेती सेना रहीहै तिनविषे जेतने रहैं श्रीरामचन्द्र ने सबतेकुशलपूछी है ( १२ ) जो श्रीरामचन्द्र सबकै कुशल पूछतभये हैं अनन्त कोटिसेना पृथक् पृथक् बानर रीछप्रति तौ यह कौनि बड़ी आधिक्यता भई है श्रीरामचन्द्र सम्पूर्ण विश्वरूप हैं विश्वविषे व्याप्त हैं अरु जिनके अनन्त शक्ति है अरु अनन्तरूप है ( १३ ) जहांतहां ठाढ़े हैं श्रीजानकीजीके खोजिबेको श्रीरामकी आयसु पावत भये हैं तब सुग्रीव

बानरयूथ नानाबरणसकलदिशि देखियकीशवरूथ ९ चौ०॥ बानरकटकउमामैंदेखा सोमूरखजोकियचहलेखा १० आइरामपदनावहिंमाथा। निरखिबदनसबहोहिंसनाथा ११ असकपिएकनसेनामाहीं रामकुशलज्यहिंपूंछ्यानाहीं १२ यहकछुनहिंप्रभुकैअधिकाई विश्वरूपब्यापकरघुराई १३ ठाढ़ेजहंतहंआयसुपाई कहसुग्रीवसबहिंसमुझाई १४ रामकाजअरुमोरनिहोरा बानरयूथजाहुचहुंआरा १५ जनकसुताकहंखोजहुजाई मासदिवसमहंआयहुभाई १६ अवधिमेटिजोबिनुसुधिपाये आयेबनिहिकिमोहिंमराये १७ दो० ॥ वचनसुनतसबवानरजहंतहंचलेतुरंत तबसुग्रीवबोलायउअंगदनलहनुमंत १८ चौ० ॥ सुनहुनीलअंगदहनुमाना जामवंतमतिधीरसुजाना १९ सकलसुभटमिलिदक्षिणजाहू सीतासुधिपूछ्यहुसबकाहू २० मनक्रमबचन सोयतनबिचार्‌यहु रामचन्द्रकरकाजसंवार्‌यहु २१ भानुपीठिसेइयउरआगी स्वामीसेइयसबछलत्यागी २२ तजिमायासेइयपरलोका

सिखापनदेत हैं ( १४ ) श्रीरामचन्द्रकर कार्य अरु मोर निहोरा है वानरअरु भालु यूथके यूथ चारिहुदिशि विदिशु को जाहु ( १५ ) श्रीजानकी जी का खोजलैकै एकमहीना में आवहु ( १६ ) अवधिकही एकमहीनाके भीतर बिना सुधिलिहे जो आइहि ताको आउबका बनिहि न बनिहि तहां मोहिं कही मोरेहाथन ताकर बधहोइगो ( १७ ) दोहार्थ॥ यहवचन सुनिकै जहांतहां बानर तुरन्त चलतभये हैं तब सुग्रीव अंगद नल नील हनुमन्त को बुलावतभये हैं ( १८ ) हे नील नल अंगद हनुमान् जामवंतमतिकेधीर सुजान इत्यादिक सबसुनहु ( १९ ) सब सुभटमिलिकै दक्षिण दिशाको जाहु सीताकै सुधि सबते पूछ्यहु ( २० ) मनक्रम वचन ते सोयत्न बिचार्‌यहु अरु श्रीरामचन्द्र कर कार्य सवाँर्‌यहु ( २१ ) सुग्रीव कहते हैं हेबानर बीरहु सुनहु जैसे भानुको पृष्ठिदैकै अरु अपने उरविषे अग्निकोसेवन करते हैं तैसे स्वामी को सर्वभाव करिकै सेवनकरिये सर्बभाव छल छोड़िकै तहां भानुपृष्ठि कही सूर्यमुखी चस्मा होतहै जब सूर्यके सन्मुख करहु तबअग्नि उत्पन्न होतहै पर चस्मासे सूर्यनकी टेढ़ीकिरण परैं शुद्ध सन्मुख गोलबिंदु परै तबतुरंत अग्नि उत्पन्नहोत है अरु जोकिंचित् टेढ़ीलकीर होइतो अग्नि न उत्पन्नहोइ अरु सूधीगोल होइ तौ सूर्य अग्निदेते हैं तबवहि अग्निते जितनाकार्य चाहौ तितना होतहै सूर्य केसन्मुख भयेते अग्नि सूर्येदेकै कार्यकरते हैं अरु नाम चरुमा को होत है प्राणी कहते हैं कि हम चस्मा ते अग्निकरिकै अपनोकार्य कीन है यहदृष्टान्त है अब दृष्टान्त करिकै कहते हैं इहां सर्वभाव कही सर्वछल कपट त्यागिकै मन वचन कर्म्मते अपर पदार्थ दृष्टि न आवै एक श्रीसीतारामके स्वरूपसागर बिषे जीव मीन ह्वै रहे हैं ऐसे सन्मुख जब तुम ह्वैकै श्री रामप्रताप को मनक्रम वचनते भरोस केवल राखहुगे अपनपौ छुड़ नजाइ अरु पौरुष वित्त से अधिक करहुगे वीरहु यहबात हृदयमें दृढ़ करिकै श्रीरामकार्य करहुगे तहां सर्वकार्य श्रीरामचन्द्र के आपु करिलेहिंगे नाम तुम्हाराहोइगो यह विशेषार्थ जानब पुनि पृष्ठि नाम आसनकर भानुहै जिनके असान प्रमाणं श्रीरामस्तवराजे श्लोकार्द्ध॥

सूर्यमण्डलमध्यस्थं रामसीतासमन्वितं॥ अरु सेई उरआगी उरविषे अग्निवैश्वानर रूप ह्वैकै सेवनकही सबकर पालन करत है प्रमाणं श्रीभगवद्गीतायांश्लोकएक॥ अहंवैश्वानलोभूत्वाप्राणिनांदेहमाश्रितः प्राणपानौसमायुक्ता पचाम्येनंचतुर्विधं १ पुनि भानुपृष्ठ तहां अरुण जो सारथी है तो भानुको अपनी पृष्ठि पर सेवनकरते हैं इहां अभावते संचितहोतहै जो स्वामी अर्थी हैं ते पाछे परते हैं अरु सारथी घोड़नके सन्मुख हैं तहां सर्वभावते स्वामीकर कार्य करते हैं आत्मसमर्पण करिकै नतु सूर्यनके तेजकरिकै जरिबेको डरैकोहै ते सूर्यनकै अग्नि अपने उरमें सेवनकही जानते हैं अरुपाछेपरे ते न अभाव को डरै यह स्वार्थ परमार्थ बासना शून्य परमानन्यभाव कहावत है इहां केवल स्वामी को कार्य सिद्धान्त है तैसे हेवानरहु तुम श्रीरामचन्द्रकर कार्यकरहु सर्वत्यागिकै तुम्हारीदेहके तुम्हारे कर्त्तव्यकर पालन रक्षा श्रीरामचन्द्र करहिंगे पुनि चतुर्थ अर्थ करते हैं भानुपृष्ठिसेइयउरआगी जे तप करते हैं ते भानुको पृष्ठिपर सेवनकरते हैं अरु अग्निकर अग्रभाग करिकै उरविषे सेवनकरते हैं उनविषे यतनाकपट छल है कि सूर्यको अग्रभाग सेवनकरहिंगे तौ नेत्रनकै ज्योति मरिजाइगी अग्निकर पाछे सेवनकरैं तो कदाचित् जरिनजाइ देखिये तौ ज्यहिदेवता ते फलकै चाहना है तेही देवताते छल करते हैं सो कैसे फल होइगो तहां सब कपटछल त्यागिकै सर्वभावते स्वामी को भजिये तव स्वामी सेवककर कार्य्य सब आपुही से सिद्धि करिलेते हैं हे बानरहु तुम ऐसे समुझिकै श्रीरामचन्द्रकर कार्य्यकरौ ( २२ ) हे बानरहु मायातजिकै परलोककर सेवनकरिये परलोककही मोक्षसालोक्य सामीप्य सारूप्य सायुज्य त्यहि चारिउके पति श्रीरामचन्द्र तिनकर सेवनकरिये जाते भव जोहै संसार त्यहिते संभव कही उत्पन्न काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य इत्यादिक अनेक शोकजो हैं सकल परलोक सेवन करतसंते नाशह्वइकै जीवकर मोक्ष होत है ( २३ ) हे भाइहु यहि संसार बिषे

**मिटहिंसकलसंभवसबशोका २३ देहधरेकरयहफलभाई भजियरामसबकामबिहाई २४ स्वइगुणज्ञानसोईबड़भागी जोरघुवीरचरणअनुरागी २५ आयसुमांगिचरणशिरनाई चलेसकलसुमिरतरघुराई २६ पाछेपवनतनयशिरनावा जानिकाजप्रभुनिकटबोलावा २७ परसाशीशसरोरुहपानी करमुद्रिकादीनसहिदानी २८ बहुप्रकारसीतहिंसमुझायहुकहिबलबीरवेगितुमआयहु २९ हनुमतजन्मसुफलकरिजाना चलेहृदयधरिकृपानिधाना ३० यद्यपिप्रभुजानतसबबाता राजनीतिराखतसुरत्राता ३१ दो० ॥चलेसकलवनखोजतसरितागिरिबनखोह रामकाजलयलीनमनबिसरातनकरछोह ३२॥**

* * * * * * * * *

देहधरे कर इहैफलहै कि सब कार्य बिहाइकै निरस निर्बाह करिकै श्रीरामचन्द्र को भजिये अरु यह श्रुति स्मृति शास्त्र पुराणन कर सिद्धांत है ( २४ ) सोई प्राणी गुण अरु विद्या ज्ञान अरु संपूर्णभाग्यकर भाजनहै ज्यहिके श्रीरामचन्द्र के चरणारविंद विषे अनुरागभयो है ( २५ ) हे पार्वती सुग्रीवकर उपदेश ग्रहण करिकै आज्ञामांगिकै चरणनविषे शीशनाइकै श्रीरामचन्द्रको सुमिरण करत सब जहँ तहँ चलतभये है ( २६ ) सब वीरनके पाछे हनुमान्‌जी दण्डवत् करतभये हैं हनुमान्‌के द्वाराकार्यकी सिद्धि जानिकै श्रीरामचन्द्र अपने निकट बोलावतेभये हैं ( २७ ) बोलाइकै शीशपरकरकमल धरतभये हैं अपनो निजकही विशेजनजानिकै करमुद्रिका देतभये हैं ( २८ ) हे हनुमन्त यहमुद्रिका सहिदानी देते हैं श्रीजानकीजी को बहुप्रकार समुझायहु अरु हमार बल अरु हमार श्रीनकीजीपर विरह अच्छीप्रकारते कहिकै तुमवेगिआवहु यहिवाणी विषे आशीर्बादकी ध्वनिहै कि तुम कार्यकरिकै आनन्द पूर्वकवेगि आवहुगे ( २९ ) तब हनुमान् अपनो जन्मसुफलकरिकै जानाकि अब मोरेसमान बड़भागी कोई नहीं है तब कृपानिधानको स्वरूप हृदय में धरिकैपरिक्रमा दण्डवत् करिकै अतिहर्ष संयुक्त विदाभये हैं ( ३० ) हे पार्वती यद्यपि श्रीरामचन्द्र सबके अन्तर्यामी सूत्रधर सबकीगति जानते हैं तदपिअपनी लीलापूर्वक सुरत्राताकही देव ब्राह्मण गऊकी रक्षाहेतु राजनीति राखते हैं ( ३१ ) दोहार्थ॥ ते सब बानर सरिता गिरि बनखोह खोजतचलेजाते हैं श्रीरामचन्द्र के कार्य विषे लयलागी है तनकरि सुधि भूलिगई है ( ३२ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने किष्किन्धाकाण्डेश्रीजानकीहेतुकपिविदावर्णनन्नामपञ्चमस्तरंगः५॥

चौ० ॥ कतहुंहोइनिशिचरसनभेटा प्राणलेहिंयकएकचपेटा १ बहुप्रकारगिरिकाननहेरहिंको उमुनिमिलहिताहिसबघेरहिं २ लागितृषाअतिशयअकुलाने मिलैनजलघनगहनभुलाने ३ मनहनुमानकीन्हअनुमाना मरणचहतसबबिनुजलपाना ४ चढ़िगिरिशिखरचहूंदिशिदेखा भूमिविवरयककौतुकपेखा ५ चक्रवाकबककहंसउड़ाहीं बहुतकखगप्रवशिहिंत्यहिमाहीं ६ गिरितेउतरिपवनसुतआवा सबकहँलैगिरिबिवरदेखावा ७ आगेकरिहनुमंतहिंलीन्हा पैठेबिवरबिलम्बनकीन्हा ८ दो० ॥ दीखजाइउपबनबर सरबिकसितबहुकंज मंदिरएकरुचिरतहंबैठिनारितपपुंज ९ चौ० ॥ दूरितेताहिसबनशिरनावा पूछ्यसिनिजवृत्तांतसुनावा १० त्यहिंतबकहाकरहुजलपाना खाहुसरससुन्दरफलनाना ११ मज्जनकीनमधुरफलखाये तासुनिकटपुनिसबचलिआये १२ तेसबआपनिकथासुनाई मैं अबजाउंजहांरघुराई १३ मूंदहुनयनबिबरतजिजाहू पैहौसीतहिंजनिपछिताहू १४ नयनमूंदिदेखहिंसबबीरा ठाढ़ेसकलसिन्धुकेतीरा १५ सोपुनिगईजहांरघुनाथा जाइकमलपदनायोमाथा १६ नानाभांतिबिनयतिन

दोहा षटतरङ्गपूरणभयो रामचरितअवगाह रामचरणप्रभुसुयशकहिकोकविपावैथाह ६ दुइदोहाताईं अक्षरार्थैसिद्धि जानब दोहार्थ॥ यहतपस्विनी जो कन्दराविषे तपकरतीरही है सो विष्णुकी मायाहै ज्यहिनारदको व्यामोहित कियो है तहां नारदजी भागवत् हैं तिनकर अपराधकियो है यद्यपि भगवत्प्रेरित माया है तदपि भगवान् भागवतापराध नहींसहिसक्ते हैं ताते भगवान् आज्ञादीन है कि तुम तपकरहुजाइ यह अपराध मिटिजाइगो तब औरे कल्प त्रेता के चौथे चरणविषे श्रीरामचन्द्र परब्रह्मपरमात्मा तोको मिलहिंगे सो तपस्विनी श्रीरामचन्द्रके चरणविषे प्राप्ति भई जाइ अनेक स्तुति करतिभई है तब श्रीरामचन्द्र प्रसन्नमन विहँसिकै अनपावनी भक्ति देतेभये हैं अनपावनी कही अचलको अरु ज्यहि ते पावन दूसरपदार्थ कोई नहीं है सो भक्तिपाइकै प्रभुकै आज्ञा शीशपरधरिकै बद्रीबन नाम प्रयाग को जातीभई है श्रीराम के पद पंकज हृदय में धरिकै जाको विधि शिव बन्दते हैं श्रीरघुनाथजीने कहा कि जबताईहम पृथ्वी को भार नहीं उतारैं तबताईं तुम प्रयागमें भजन करहु उपरांत

कीन्हा अनपावनीभक्तिप्रभुदीन्हा १७ दो० ॥ बदरीबनकहंसोगईप्रभुआज्ञाधरिशीश उरधरिरामचरणयुगजेबंदतअजईश १८ चौ०॥ इहांविचारहिंकपिमनमाहीं बीतिहिअवधिकाजकछुनाहीं १९ सबमिलिकरहिंपरस्परबाता बिनुसुधिलियेकरबकाभ्राता २० कहअंगदलोचनभरिवारी दुहुंप्रकारभइमृत्युहमारी २१ इहांनसुधिसीताकैपाई उहांगयेमारहिकपिराई २२ पिताबधेपरमारतमोहीं राखारामनिहोरनओहीं २३ पुनिपुनिअंगदकहसबपाहीं मरणभयोकछुसंशयनाहीं २४ अंगदबचनसुनतकपिबीरा बोलिनसकहिंनयनबहनीरा २५ क्षणयकशोचमगनह्वैगये पुनिअसबचनकहतसबभये २६ सीताकैसुधिलीन्हेवीना नहिंजैहौं

हमारो स्वरूप जो क्षीरसागरमें है ताको प्राप्तिहोइजाइ जैसे रही है एक चौपाई सुद्धां दोहार्थ जानब बद्रीबन प्रयाग को कही किंतु वद्रिकाश्रमको भी कहते हैं ( १८ ) समुद्रके तटविषे सब कपि आपुसमें विचार करते हैं कि अवधिकही मियाद सो बीतिआई है अरु कार्य कछु नाहींभयो है ( १९ ) परस्पर सब बात कहते हैं कि बिना सुधिपये हेभाइहु काकर्त्तब्यहे ( २० ) अंगदकहते हैं नेत्रन विषे जलभरिआयो है कि द्वौप्रकार ते मृत्यु हमारि होति है ( २१ ) इहां ते जो श्रीजानकीजी की बिना सुधिपाये लौटिजायँतो सुग्रीव

मोको मारिडारैगो ( २२ ) जब हमारे पिता को वधभयो है तबै सुग्रीव हमको मारिडारतो परन्तु तहां श्रीरामचन्द्र राखिलीन है सुग्रीवको निहोरा नहीं है ( २३ ) पुनि पुनि अंगद कहते हैं कि मरण जरूरभयो है यामें सन्देह नहीं है ( २४ ) अंगदके वचन सुनिकै सब कपि वीर बोलिनहींसक्ते हैं नेत्रन ते जल बहिआयो है ( २५ ) क्षणएक शोचमें मग्नकही डूबिगये हैं पुनि असवचन कहते हैं ( २६ ) हे अंगद युवराज प्रवीण श्रीसीता कै सुधि लीन्हे विना हम सुग्रीव के इहां जाहिंगे ( २७ ) ऐसे कहिकै लवणकही क्षारसमुद्रके तटपर दर्भकही कुश बिछाइकै सबकपिबैठिकै श्रीसीताराम नाम जपैलागे हैं ( २८ ) तब जामवन्त अंगदकर दुःख देखिकै अनेककथा कहिकै उपदेशकरतभये हैं ( २९ ) हे तात श्रीरामचन्द्र को नरजनिजानहु श्रीरामचन्द्र निर्गुणब्रह्महैं सात्विक राजस तामस तीनिउं गुणकेपरे हैं अरु अजितकही कालहु को जीतिबे योग्य हैं काल जिनकी आज्ञा में है ताते अजित हैं अरु अजकही अजन्माहैं गर्भ में नहीं आवते हैं काहेते कि स्वयं भगवान् हैं ताते तुम कौनिहुं बातकैभय न मानहु सबकार्य श्रीरामचन्द्र कै कृपाकरिलेइगी ( ३० ) तहां ऐसे

युवराजप्रवीना २७ असकहिलवणसिन्धुतटजाई बैठेसबकपिदर्भडसाई २८ जामवन्तअंगददुखदेखी कहीकथाउपदेशविशेषी २९ तातरामकहंनरजनिजानहु निर्गुणब्रह्मअजितअजमानहु ३० हमसबसेवकअतिबड़भागी संततसगुणब्रह्मअनुरागी ३१ दो० ॥ निजइच्छाप्रभुअवतरयउ सुरमहिगोद्विजलागि सगुणउपासकसर्बतजि रहहिंमोक्षपदत्यागि ३२ चौ० ॥ यहिबिधिकथाकहीबहुभांती गिरिकंदरासुनासंपाती ३३ बाहिरह्वैदेखाबहुकीशा मोहिंअहारदीनजगदीशा ३४ आजु सबनकहंभक्षणकरऊं दिन बहुगे अहारबिनु मरऊं ३५ कबहुं न मिल भरि उदर अहारा आजू दीन बिधि एकहिं बारा ३६ डरपेगृद्धवचनसुनिकाना अबभामरणसत्यहमजाना ३७ कपिसबडठेगृद्धकहँदेखी जामवंतमनशोचविशेषी ३८ कहअंगदबिचारिमनमाहीं धन्यजटायु

सगुणब्रह्मकही जिनके अनन्तगुण ब्रह्मरूपहैं ताते सगुण ब्रह्मकही तिनकेहमसेवक चरणकमलकेनिरन्तरअनुरागी ताते हमअतिबड़भागी हैं ( ३१ ) दोहार्थ॥ प्रभु अपनीइच्छाते अवतीर्णभये हैं देवमहि कही पृथ्वी गोद्विज गुरु अरु विप्रसन्तनकेहेतु लीलाकरते हैं जैसे सगुणब्रह्म के उपासकहैं ते अर्थ धर्म काम मोक्षपद सबकेत्यागी हैं ( ३२ ) यहिप्रकार बहुभांति ते सबकथाकहते हैं तहां गिरिकन्दराविषे सम्पातिनाम गृद्धराज सो सुनत भयो है ( ३३ ) तब गिरि कन्दरा ते बाहर आवतभयो है बहुतबन्दर देखिकैकहतहै कि आजु जगदीश मोको आहार दीन है ( ३४ ) आजु सबकर भक्षण करौंगो बहुत दिनबीते हैं आहारबिना भूंखन मरतहौं ( ३५ ) उदरभरिआहार कबहूं नहीं मिल्यो है थोड़बार कबहूंकबहूं मिल्यो है आजु विधातैं एकैबारदियो है ( ३६ ) तब गृद्धकेवचनसुनिकै सबबानर डरिगये हैं कि महाकालरूप कोहै अब हम जाना कि मरणकाल सत्यभयो है ( ३७ ) गृद्धकहँ देखिकै सबकपिउठे हैं डरिगयेहैं जामवन्तमनमें शोचकरते हैं कि एकगृद्धकहँ देखिकै सबकपि डरिगये हैं आगे रावणके संग्रामविषे कैसा होइगो यह शोचभयो है ( ३८ ) तहां यहप्रसंग अंगदजानते हैं नतुगृद्धराजको उत्तरदैकै युद्धजरूर करतेताते अंगदने बिचारिकहा कि सम्पाति जटायुकाभ्राताहै त्यहिसम धन्यकोई नहीं है पुकारिकै कहते हैं जामें सम्पातिसुनै ( ३९ ) देखिये तौ जटायुबड़भागी है श्रीरामचन्द्रके कार्य हेतुशरीरको त्यागिकै परमपदको प्राप्तिभयो है ( ४० ) तबकपिनकै बाणीसुनिकै खगराजके हर्ष शोक भयो है भ्राताके मरेकर शोक भयो है अरु हरिपुर जाबेको हर्षभयो है तब कपिनके निकट चलतभयो है महा पर्बताकरदेखिकै कपिनको भय भयोहै तहां कपि तौ महावीर हैं बार-बार क्यों :: :: :: :: :: ::

सरिसकोउनाहीं ३९ रामकाजकारणतनत्यागी हरिपुरगयउपरमबड़भागी ४० सुनिखगहर्षशोकयुतबानी आवानिकटकपिनभयमानी ४१ तिनहिंअभयकरिपूछेसिजाई कथासकलतिनताहिसुनाई ४२ सुनिसम्पातिबंधुकैकरणी रघुपतिमहिमाबहुविधिवरणी ४३ दो० ॥ म्वहिंलैचलहुसिंधुतटदेउंतिलांजलिताहि वचनसहायकरबमैंपैहहुखोजहुजाहि ४४ चौ०॥ अनुजक्रियाकरिसागरतीरा कहनिजकथासुनहुकपिवीरा ४५ हमदोउबंधुप्रथमतरुणाई गगनगयउरविनिकटउड़ाई ४६ तेजनसहिसकसो

भय मानते हैं तहां श्रीजानकीजीके खबरि नहीं पावते हैं तातेमनमलीनह्वैरहे हैं श्रीरामचन्द्रके भयते अरुसुग्रीवके भयते ताते उहैडर हृदयमें समाइरहो है ताते गृद्धको देखिकै भयमान्यो है ( ४१ ) तब गृद्धकहतभयो है कि तुम मतडरौ मैं श्रीरामचन्द्रकर सेवकहौं यहसुनिकै सवअभय भये हैं तबगृद्ध पूछतभयो है कि तुम कोहौ तबत्यहिते सबकथा सुनावतभये हैं ( ४२ ) तब सम्पाति बन्धुकैकरणी समुझिकै श्रीरामचन्द्रकै महिमा बहुप्रकारते बर्णतभयोहै ( ४३ ) दोहार्थ॥ हे कपिहु मोको सिन्धुके तटपरछिदाइकै लैचलहु मैं अपने भ्राताके तिलांजलिदेउं बचनकै सहाय मैं करब श्रीजानकीजीको पैहहु चित्तलगायकै खोजहु जाइ शोच न करहु ( ४४ ) तब त्यहिको बानरलैगये हैं तब अनुजकै क्रियासागरकेतीर करिकै कहत है हे कपिवीरहु मेरी कथासुनहु ( ४५ ) हमद्वौ बन्धु प्रथम जब तरुणअवस्थामें रहेहैं तबअपनेबलके अहंकारते सूर्यकेसमीपको उड़िचले हैं निकट प्राप्तिभयेजाय ( ४६ ) सो जटायु सूर्यकोतेज नहीं सहिसक्यउहैफिरिआयोहै अरु मैं अभिमानते निकट प्राप्तिभयोंजाइ ( ४७ ) तब सूर्यके अपारतेज करिकै मेरे द्वौपंख जरिगयेहैं तब घोरचिक्कार करिकै महिमें गिरिपरयउंहौ ( ४८ ) तहां जबमैं महिमें गिरिपरयौं तहां चंद्रमा नामें मुनि कर आश्रमरहै तेमोको बिकल देखिकै दयाकरते भये हैं ( ४९ ) ते बहुप्रकारते मोको ज्ञानउपदेश करतभये हैं देहाभिमान महाअज्ञान त्यहिको छोड़ाइदीन है आत्मज्ञानको प्राप्तिभयउंहौं ( ५० ) पुनि मुनिकहा हे खगत्रेताके चौथेचरणविषे परब्रह्म मनुज अवतार कही महिविषे रामअवतीर्णह्वैकै मनुजइवलीलाकरहिंगे तिनकी नारिको निशिचरपति हरैंगे ( ५१ ) तिनके खोजिबेको प्रभु श्रीरामचन्द्र दूत पठावहिंगे तिनको मिलिकै तैं पवित्रहोइगो ( ५२ ) तबतेरे पंख तुरन्तजामिआवैंगे चिन्ताकही तैं कवनिउँ चिन्ता न करसि पर श्रीजानकीजी

फिरिआवा मैंअभिमानीरविनियरावा ४७ जरेपंखअतितेजअपारा परयउंभूमिकरिघोरचिकारा ४८ मुनियकनामचन्द्रमाओही लागीदयादेखिकरिमोही ४९ बहुप्रकारत्यइंज्ञानसुनावा देहजनितअभिमानछोडावा ५० त्रेतारामममनुजतनुधरिहैं तासुनारिनिशिचरपतिहरिहैं ५१ तासुखोजपठवाप्रभुदूता तिनहिंमिलेतुमहोबपुनीता ५२ जामिहिंपंखकरसिजनिचिंता तिनहिंदेखाइदीनतैंसीता ५३ मुनिकैगिरासत्यभइआजू सुनिममवचनकरहुप्रभुकाजू ५४ गिरित्रिकूटऊपरबसलंका तहँरहरावण

को दूतनको दिखाइदेना ( ५३ ) तहां मुनिने मोको सतयुगके प्रथमचरणमें उपदेश कीन है सो आजु मुनिकै गिराकही बचनसत्यभई है अबमोर बचनसुनिकै प्रभुकर कार्य करहुगे ( ५४ ) गृद्धकहतहै हे बानरहु त्रिकूटपर्वतहै त्यहिपर लंकापुरी है अगम गढ़है तहां रवण सहज अंशकबसत है कहूं बार्तिक इतिहासहै त्रिकूटकही कोईसमयविषे गरुड़जी समुद्रविषेते एक महासर्प बड़ादीर्घ त्यहिको धरिकै लैउड़ेहैं सुमेरुके शृंगपर अतिदीर्घ विस्तारितएकतरुहै तापर गरुड़ बैठेजाइ सर्पको खानेलगे सर्पने तरुको लपेटिलियोहै तबगरुड़ अरु सर्पकरभार तरु शृंग न सँभारि सक्यउ है तब गरुड़जी पुनि सहित पर्वत वृक्ष शृंग सुद्धा सर्पको लैकैउड़े तहां सर्पको भक्षणकरिबेको ठाउं न पायो तब सूर्यके सारथी अरुणते गरुड़के भ्राताहैं तिन अपनी भुजापर बैठाइलीनहै तबगरुड़ने भक्षणकरिकै सर्पकरहाड़ अरु तरु अरु शृंग समुद्रबिषे डारिदीनहै सोई अतिविस्तारित

त्रिकूटपर्वतहै तापर लंकापुरीहै ( ५५ ) तहां उपवनकही पुरके बाहर सुन्दर अशोकबनहै तहां श्रीजानकीजी बैठी शोचकरतीहैं ( ५६ ) दोहार्थ॥ मैंतौ श्रीजानकीजीको देखतहौं अरु तुमनहीं देखतेहौं काहते गिद्धकै दृष्टि अपारहोतिहै अरु मैं वृद्धह्वइगयोंहौं नतु तुम्हारीसहाय कछु जरूरकरत्यउं ( ५७ ) जो मतिकरआगरकही श्रेष्ठहोइ सो सौयोजन समुद्रनांघे सो श्रीरामचन्द्रको कार्य्य करैगो ( ५८ ) मोको विलोकि कै धीरज धरहु श्रीरामचन्द्रकी कृपाते तुम्हारे दर्शनते मेरोशरीर सुवर्ण ह्वैगयो है ( ५९ ) हे वानरहु जे जन्म जन्मके पापी हैं अरु श्रीरामचन्द्रकर सुमिरणकरते हैं ते अपार भवबारिधिको गोपदकी नाईं तरिजाते हैं ( ६० ) जिनश्रीरामकी कृपाते हमद्वौ भ्राता आमिष आहारी पक्षिनविषे नीच गीधकै जाति

सहजअशंका ५५ तहंअशोकउपबनजहँरहई सीयबैठितहँशोचतिअहई ५६ दो० ॥ मैंदेखौंतुमनाहिंन गीधहिंदृष्टिअपार बूढ़भयउंनतुकरत्यउं कछुकसहायतुम्हार ५७ चौ० ॥ जोनांघैशतयोजनसागर करैसोरामकाजमतिआगर ५८ मोहिंविलोकिधरहुमनधीरा रामकृपाकसभयउशरीरा ५९ पापिउजाकरसुमिरणकरई अतिअपारभवसागरतरई ६० तासुदूततुमतजिकदराई रामहृदयधरिकरहुउपाई ६१ असकहिगरुड़गीधजबगयऊ तिनकेमनअतिविस्मयभयऊ ६२ निजनिजबलसबकाहूभाषा पारजाइकहँसंशयराखा ६३ जरठभयउंमैंकह्यउरिछेशा नहिंतनुरहाप्रथमलवलेशा ६४ जबहिंत्रिविक्रमभयउखरारी तबमैंतरुणरह्यउंबलभारी ६५ दो० ॥ बलिबांधतप्रभुबाढ़यउ सोतनुबरणिनजाइ उभयघरीमहँकीनमैं सातप्रदक्षिणधाइ ६६ चौ० ॥ अंगद

ते परमपदको प्राप्तिभये हैं अरु मैं तुम्हारे देखत निर्मल ह्वैके पूर्णपदकोअधिकारीभयो हौं अरु तिनके दूतह्वैकै तुमकदराई करतेहौ रामचन्द्रको हृदयमें धरिकै उपाय रचिकै प्रसन्नमन कार्यकरहु ( ६१ ) हे गरुड़ असकहिकै जबगृद्ध निजआश्रमको जातभयो है तब वानरनके हृदयमें बिस्मयभयो है अब कवनउपाय करिये ( ६२ ) आपन आपन बलसबहिनबर्णनकीन परसमुद्रके पारजाबेकर बलकाहूनहीं कहाहै देखियेतौएकएक वानर सातौं समुद्रनांघिकै सातौद्वीप खोजिबे को गये हैं अरु इहां सबयूथप वीर हैं अरु लंका शतयोजन तहां जाबेको काहूकै हिम्मति नहीं होती है रावणके भयते ताते सबके संशय होतभई है ( ६३ ) तब जामवन्तकहते हैं जरठकही वृद्धमैं भयोहौं प्रथमके बलकर लेशहूनहींरह्योहै ( ६४ ) जब खरारि जे भगवान् हैं ते त्रिविक्रम कही वामनरूपभये हैं त्यहिसमयविषे मेरी तरुण अवस्था थी अरु मेरे अपार बलरहै ( ६५ ) दोहार्थ॥ जब बलिको भगवान् बन्धन कीन है तब अपनोशरीर अति बढ़ायो है विश्वरूपदेखि परयउ है सो तन वर्णिबेयोग्यनहीं है तहां दुइ दण्डमें सात परिक्रमा दौड़िकै कीन है सो बलवान् समय रह्यउ है ( ६६ ) तब अंगदबोले कि पारको मैं जाउंगो पर फिरतीबार जियबिषे कछु संशय आवत है यहसंशयकीन कि लंकाजाइकै मैं कासे काकहौंगो अरु काकरौंगो अरु लौटिकै का कहिहौं आइ यहसंशय है ( ६७ ) तब जामवन्तने और कछु नहीं कहाहै यहकहा हेतात तुमसबलायकहौ पर तुमसबसेना के नायकहौ ताते तुमको नहीं पठावहिंगे ( ६८ ) पुनि जामवन्तबोले हेहनुमान्

कहाजाउंमैंपारा जियसंशयकछुफिरतीबारा ६७ जामवंतकहतुमसबलायक पठइयकिमिसबहीकरनायक ६८ कहैऋक्षपतिसुनुहनुमाना काचुपसाधिरह्यउबलवाना ६९ पवनतनयबलपवनसमाना बुधिविवेकविज्ञाननिधाना ७० कवनसोकाजकठिजगमाहीं जोनहिंतातहोइतुमपाहीं ७१ रामकाजलगितवअवतारा सुनिकपिभयोपर्वताकारा ७२ कनकवरणतनतेजविराजा मानहुंअपरगिरिनकरराजा ७३ सिंहनादकरिबारहिंबारा

लीलहिंनांघौंजलनिधिखारा ७४ सहितसहायरावणहिंमारी आनौंइहांत्रिकूटउपारी ७५ जामवंतमैंपूछौंतोहीं उचितसिखावनदीजैमोहीं ७६ यतनाकरहुताततुमजाई सीतहिंदेखिकहौसुधि

बलवन्त तुमकस चुपसाधिरहेहौ ( ६९ ) हे पवनतनय तुम्हारबलपवनके समानहै अरुबुद्धिविवेक विज्ञानके निधान कही स्थानहौ ( ७० ) ऐसो जगत् विषे कौनकठिन है जो हेताततुमसे न होइ तुमसे सबहोइगो ( ७१ ) श्रीरामचन्द्रके कार्यहेतु तुम्हारअवतारहै यह सुनतसंते हनुमान्जी पर्वताकार रूपधारण करतभये हैं ( ७२ ) कैसो हनुमान्जीको स्वरूप है जसकंचन तेजोमय मानहु अपर कही दूसर सर्वपर्वतनकर राजा सुमेरुहै ( ७३ ) तबहनुमान्जी बारहिंबार सिंहनाद करते भये हैंयहकहाकि लंका सौयोजनका बड़ीबात है मैं तौ लीलाकही कौतुकहिंते अपार कही सातौ समुद्रनांघिजाउंगो ( ७४ ) सहित सहायरावणको मारिकै ज्यहिपर लंकाबसतिहै सो त्रिकूटाचल पर्वत उपारिकै इहांधरिदेउंगो तौ श्रीरामदास कहावोंगो ( ७५ ) हे जामवन्तमैं आपतेपूछतहौं जो मोको उचित कर्तब्यहोइ सोसिखावनदेहु ( ७६ ) तहां जामवन्तबोले हेतात तुमजोकह्यउहै त्यहिते अधिकबल प्रताप तुम्हारहैपरजोतुम कह्यउहै सोकरिबेको श्रीरामचन्द्रकै आज्ञानहीं है यतनाकरहु जाइ श्रीजानकी जी कै सुधिलैकै श्रीरामचन्द्रसे कहहुआइ ( ७७ ) तबश्रीरामचन्द्रजी राजीवनयन हैं ते अपने भुजनके बलते बानर रीछनकै सेनालैकै कौतुकही चरित करहिंगे रावणको मारिकै श्रीजानकीजी कोलैआवहिंगे ( ७८ ) छन्दार्थ ॥ जामवन्तकहते हैं हे हनुमान् श्रीरामचन्द्र कपि रीछनकै सेनासाजिकै निशिचरनकै सेना संहारिकै श्रीजानकीजी को ल्यावहिंगे त्रैलोक्यमें पावन करनहार सुयशब्रह्मा शिवसनकादिशुक नारदादि बखान करहिंगे ( ७९ ) ज्यहिको कहतसुनत समुझतगावत नर परमपदको प्राप्ति होहिंगे इसचरित्रको प्रेमतेगावहिंगे जेते श्रीरघुबीरचरण पाथोज कही कमल तद्वत् त्यहिकी भक्तिको प्राप्तिहोहिंगे श्रीतुलसीदास कहते हैं महूं अपने मनको मधुकरकरिकै चरणकमल

आई ७७ तबनिजभुजबलराजिवनैना कौतुकलागिसंगकपिसैना ७८ छं० ॥ कपिसेनसंगसंहारिनिशिचररामसीतहिंआनिहैं त्रैलोक्यपावनसुयशसुरमुनिनारदादिबखानिहैं ७९ जोसुनतगावतकहतसमुझतपरमपदनरपावहीं रघुवीरपदपाथोजमधुकरदासतुलसीगावहीं ८० दो० ॥ भवभेषजरघुनाथयशसुनहिंजेनरअरुनारि तिनकरसकलमनोरथसिद्धिकरहिंत्रिपुरारि ८१ सो ० ॥ नीलोत्पलतनश्याम कामकोटिशोभाअधिक सुनियतासुगुणग्रामजासुनामअघखगबधिक ८२॥ इतिकिष्किन्धाकाण्डेचतुर्थस्सोपानः समाप्तः॥

विषे बसावतहौं ( ८० ) दोहार्थ॥यह श्रीरघुनाथजी कर यशभयकहीसंसारविषे जन्ममरण सोरोगनाश करिबेको सो भेषजकही औषधि सजीवनि मूरिहै जेनरनारि कहहिंगे श्रवणकरहिंगे तिनके सकल मनोरथत्रिपुरारिसिद्धकरहिंगे काहेते यहिग्रंथके तत्वके आचार्यमहादेवहैं ( ८१ ) सोरठार्थ॥ नीलोत्पलकहीनीलमणि तद्वत्श्याम सुचिक्कण प्रकाशमयअमोलहैं कोटिनकामकी शोभाते अधिकहैं तिनकर गुणग्रामसुनिये जिनकरनाम अघविहंगके नाशकरिबेको बधिकहैं ( ८२ ) छप्पैछन्द॥ रामचरित्रपवित्रप्रेमयुतसुनहिंजेगावहिं ज्ञानभक्तिवैराग्यबिना साधनसोपाव महाघोर भवसिन्धु बिनाश्रमपारसो जोहिं सुयशलोकपरलोकमोक्षप्रदसहजलहोहिं सबत्यागिरामयशभजनकरु मनमेरेजोचहसिसुख भजुराम चरणमनक्रमवचनमिटिजैहैं संसारदुख ( ८३ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुपविध्वंसने किष्किन्धकाण्डेशरणागतविवेकवैराग्यज्ञान भक्तिवर्णनन्नामषष्ठस्तरंगः ६॥ दोहा॥ सम्बतशतअष्टादशौ असीएकशुकबार ग्रीषमअन्तसुशुक्लछठि रामचरणकहिपार १॥

# ॥रामायण तुलसीदासकृत सटीक॥

## ॥सुन्दरकाण्ड॥

श्रीगणेशायनमः ॥ दोहा॥ बन्दौंश्रीगुरुपवनसुतकृपारूप श्री राम सुन्दरवरबार्त्तिककरौं रामचरणसिधिकाम १ सुन्दर सुन्दरकांडपरप्रथमतरंगबखानि रामचरणबार्त्तिककरौं पवनतनयगुण खानि २ श्लोकार्थ ॥ सुन्दरकाण्ड विषे द्वैश्लोकहैं त्यहिकोअर्थ मैं अपनी मतिअनुसार पूर्वापर अन्वयकरिकै करतहौं वन्देहं करुणाकरंरघुवरं करुणाके आकरकही खानि हैं ऐसे श्रीरघुवर तिनको वन्दतहौं कैसे रघुवर हैं भूपाल जे राजा हैं देवतनविषे इन्द्र वरुण कुवेर ब्रह्मा शिव विष्णुआदिक अरु नरनविषे जे राजाभये हैं दधीचि स्वायम्भू मनुआदिक अरु दानवन विषे वलिआदिक अरु नागनविषे अनन्त आदिक देव दानव नाग मनुष्यादिक जेते ब्रह्माण्ड विषे राजाभये हैं अरु हैं अरु होहिंगे तिनसबके चूड़ामणि कही माथे के मणि हैं पुनि कैसे हैं श्रीरघुवर शांतकहे शान्तरस ज्ञान जिनको दिब्यगुण है पुनि साश्वत कहे पुराणपुरुष सत् एकरस निरन्तर अप्रमेय कहे जिन

श्लोक ॥ शांतंसाश्वतमप्रमेयमनघंनिर्वाणशांतिप्रदं ब्रह्माशंभुफणींद्रसेव्यमनिशंवेदांतवेद्यंविभुं रामाख्यंजगदीश्वरंसुरगुरुंमायामनुष्यंहरिम् वन्देहंकरुणाकरंरघुवरं भूपालचूड़ामणिम् १ नान्यास्पृहारघुपतेहृदयेस्मदीये सत्यंवदामिचभवानखिलांतरात्मा भक्तिंप्रयच्छरघुपुंगवनिर्भरामे कामादिदोषरहितंकुरुमानसंच २ श्लोक ॥ अतुलितबलधामंस्वर्णशैलाभदेहं दनुजबनकृशानुंज्ञानिनामग्रगण्यं सकलगुणनिधानंवानराणामधीशं रघुपतिवरदूतंबातजातंनमामि ३॥ * * * * * * *

को आदि अन्त मध्य किसूके जानिबेयोग्य नहीं है अनघ कहे निर्दोष निःपाप निर्मलसदा निर्वाण कहे मोक्ष सालोक्य सामीप्य सारूप्य साढ्य शान्ति संयुक्त प्रदकहे इनके दाता हैं अरुब्रह्मा शम्भु फणीन्द्र कही शेष इत्यादिक करिकै अहर्निशि निरंतर सेव्यकही पूज्यमान् हैं अरु निशंक हैं पुनि वेदान्त वेद्यंकही वेदांतकरिकै वेद्य कही जानिबेयोग्य हैं विभु कही सब प्रकारते सामर्थ सर्वब्यापकहैं आख्यकही राम ऐसोनाम है जिनको कैसे हैं श्रीरामचन्द्र सम्पूर्ण जगत् के ईश्वर हैं ब्रह्मादिक देवतन के गुरु हैं अपनीमाया करिकै मनुष्य लीला करते हैं ऐसे हरिहैं अपने रामनाम करिकै पापको हरि लेते हैं ताते हैं ताते हरिकही ( १ ) हे रघुपते अस्मदीये कहीमेरे हृदयविषे मान्यस्पृहा कही औरि बासना नहीं है सत्यंवदामि मैं सत्य कहतहौं भवान कही अष्टाबिंशति तत्वविषे अन्तरात्मा तुमहींहौ ताते तुम से मैं कहतहौं पुनि तुम कैसेहौ अखिलांतरात्मा अखिल ब्रह्मांड जे हैं त्यहिके अन्तरात्मा तुमहींहौ सब जानते हौ भक्तिंप्रयच्छ कहीमेरेहृदय में तुम्हारी भक्तिकै इच्छा है सो देहु आपु रघुवंशविषे पुंगवकही श्रेष्ठहौ किंतु रघुसंज्ञा जीवकी है जीवकुल के पुंगवकही नियन्ताहौ प्रेरकहौ ताते निर्भरभक्ति देहु में कही मोको निर्भरकही देहाभिमान ज्ञानाभिमान छोड़िकै कामादिक दोष ते रहित ह्वैकै तुम्हारी भक्ति करौं किन्तु तुम्हारी भक्ति कामादिक दोष ते रहित है सो मेरे हृदय में कुरुकही करहु

चौ० ॥ जामवंतकेवचनसुहाये सुनिहनुमानहृदयअतिभाये ४ तबलगिमोहिंपरखियहुभाई सहिदुखकंदमूलफलखाई ५ जब लगिआवौंसीतहिंदेखी होहिकाजम्वहिंहर्षविशेषी ६ असकहिनाइसबनकहँमाथा चल्यउहर्षिहियधरिरघुनाथा ७ चौ०॥ सिंधुतीरयकभूधरसुंदर कौतुककूदिचढ़ेताऊपर ८ बारबाररघुवीरसँभारी तरक्यउपवनतनयबलभारी ९ ज्यहिगिरिचरण देइहनुमंता सोचलिजाइपतालतुरंता १० जिमिअमोघरघुपतिकरबाना ताहीभांतिचल्यउहनुमाना ११ जलनिधिरघुपतिदूतबिचारी तैमैनाकहोहुश्रमहारी १२ दो०॥ हनूमानत्यहिंपरसि-करत्यहिपुनिकीन्हप्रणाम रामकाजकीन्हेबिना मोहिंकहांविश्राम १३ चौ० जातपवनसुतदेवनदेखा जानैकहबलबुद्धिविशेषा १४ सुरसानामअहिनिकैमाता पठईदेवकहिनितिनबाता १५ आजुसुरनमोहिंदीन्हअहारा सुनतबचनकहपवनकुमारा १६ रामकाजकरिमैंफिरिआवौं सीताकैसुधिप्रभुहिंसुनावौं १७ तबतव बदनपैठिहौं आई सत्यकहौंम्वहिंजानदेमाई १८ कवन्यहुयतनदेइनहिंजाना ग्रससिनमोहिंकहाहनुमाना १९ योजनभरित्यहिं

किंतु तुम्हारी भक्ति करतसन्ते चारिउ फलकै कामना जो है दोष सो मेरेमनमें न आवै सो करहु ऐसी भक्तिदेहु ( २ ) श्लोक ॥ अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं दनुजबनकृशानुंज्ञानिनामाग्रगण्यं सकलगुणनिधानंवानराणामधीशं रघुपतिवरदूतंबातजातंनमामि॥ यह श्लोक गोसाईं तुलसीदासकृत न जानब अपरग्रन्थ को है ताते तिलक नहीं किया है पर सम्बन्धमिला है ( ३ )॥

इहां प्रथमतरंग को अर्थ पदार्थै सिद्धिजानब ॥ त्यहिसमय बिषे सबसिद्धि हनुमान् के समीप हाथजोड़िकै प्राप्तिभई हैं। श्रीरामचन्द्र के बाण को गमन अमोघ है कार्यकरिकै आनन्दते फिरिआवत हैं तैसे हनुमानजीचले हैं। समष्टीछंदार्थ ॥ श्रीहनुमानजी पर्वत पर चढ़िकै लंका देखतेहैंसौ

बदनपसारा कपितनकीन्हदुगुनबिस्तारा २२ सोरहयोजनमुखत्यइंठयऊ तुरतपवनसुतबत्तिसभयऊ २३ जसजससुरसाबदनबढ़ावा तासुदुगुनकपिरूपदेखावा २४ शतयोजनत्यहिंआननकीन्हा अतिलघुरूपपवनसुतलीन्हा २५ बदनपैठिपुनिबाहरआवा मांगीबिदाताहिशिरनावा २६ मोहिंसुरनज्यहिंलागिपठावा बुधिबलमर्मतोरमैंपावा २७ दो०॥ रामकाजसबकरिहहु तुमबलबुद्धिनिधान आशिषदैसुरसाचली हर्षिचलेहनुमान २८ चौ०॥ निशिचरएक सिंधु महँरहई करिमायानभकेखगगहई २९ जीवजंतु जेगगनउड़ाहीं जलविलोकितिनकैपरछाहीं ३० गहैछांहसोसकनउड़ाई यहिविधिसदागगनचरखाई ३१ सोइछलहनूमानसोंकीन्हा तासुकपटकपितुरतहिंचीन्हा ३२ ताहिमारिमारुतसुतबीरावारिधिपारगयउमतिधीरा ३३ तहांजाइदेखीबनशोभा गुंजतचंचरीकमधुलोभा ३४ नानातरुफलफूलसोहाये खगमृगवृन्ददेखिमनभाये ३५ शैलबिशालदेखियकआगे तापरधाइचढ़ेभयत्यागे ३६ उमानकछुकपिकैअधिकाई प्रभुप्रतापतेकालहिंखाई ३७ गिरिपरचढ़िलंकात्यइँदेषी कहिनजाइअतिदुर्गविशेषी ३८ अतिउतंगजलनिधिचहुंपासा कनककोटकरपरमप्रकासा ३९ छंदसमिष्टी॥ कनककोटविचित्रमणि कृतसुन्दरायतअतिघना चहुं हाटहाटसुबाटबीथी चारुपुरबहुबिधिबना ४० गजबाजिखच्चरनिकरपदचररथवरूथनकोगनै बहुरूपनिशिचरयूथअतिबलसेनबरणतनहिंबनै ४१ बनबागउपबनबाटिका सरकूपाबापीसोहहीं नरनागसुरगन्धर्वकन्या रूपमुनिमनमोहहीं ४२ बहुमल्लदेहविशाल

योजन उत्तर दक्षिण है अरु तीनिसैतीसयोजन पूर्वपश्चिम है अरु सौयोजन कर ऊंचा है अरु कंचनमणिमय रचित है अरु जहां तहां चौमुखी बजार बनी है अरुजहां तहां कोटिनयोधा मल्लयुद्ध करते हैं गर्ज्जते हैं अरुपुरके कहूं कहूंभीतर अरुबाहेर चहुंफेर उपबन अतिसुन्दर फलफूल करिकै शोभित हैं बिहंग मृगयुक्त अरु जहांतहां बावली कुएं सागर चित्रबिचित्र कंचन मणिनमन बँधेहैं अरुजलनिर्मल है कमलफूले हैं मधुकर गुञ्जार करते हैं हंसादिक बिहंग बोलते हैं ऐसे पुरके चित्रबिचित्र अरु पुरके रखवारे अरुबीर महा अविवेकी जो छंदविषे कहि आयेहैं ते सब श्रीरामचन्द्र के बाण तीर्थ में शरीर त्यागिकै कैवल्य पदको प्राप्तिहोहिंगे तिनको हनुमान्‌देखिकै (४५) दोहार्थ॥ तब महाबुद्धिमान् हनुमान् ने अपने मनमें यह बिचार कीन्ह कि अति लघुरूप धरिकै रात्रिको नगर में प्रवेश करौं (४६) इतिश्रीरामचरितमानसे सकल कलिकलुषविध्वंसनेसुन्दरकांडेहनुमत्बलबुद्धि बर्णनन्नामप्रथमस्तरंगः ॥ :: :: :: :: :: ::

शैलसमानअतिबलगर्ज्जहीं नानाअखारनभिरहिंबहुविधि एकएकनतर्ज्जहीं ४३ करियतनभटकोटिनबिकट तननगरचहुंदिशिरक्षहीं कहुंमहिषमानुषधेनुखरअजखलनिशाचरभक्षहीं ४४ यहिलागितुलसीदासइनकीकथासंक्षेपहिंकही रघुवीरसरतीरथ शरीरनत्यागिगतिपैहहिंसही ४५ दो०॥ पुररखवारेदेखिबहुकपिमनकीन्हबिचार अतिलघुरूपधरयउंनिशि नगर करौंपैसार ४६

चौ० ॥ मसकसमानरूपकपिधरी लंकहिंचल्येउसुमिरिनरहरी १ नामलंकिनीएकनिशिचरी सोकहचल्यसिमोहिंनिन्दरी २ जानेनहींमर्मशठमोरा मोरअहारलंककरचोरा ३ मुष्टिकएकमहाकपिहनी रुधिरबमनधरणीठनमनी ४ पुनिसम्भारिउठीसोलंका जोरिपाणिकरविनयसशंका ५ जबरावणहिंब्रह्मवरदीन्हा चलतविरंचिकहाम्वहिंचीन्हा ६ बिकलहोसितैंकपिकेमारे तब

दोहा सूक्ष्मरूपधरिपवनसुत पुरप्रवेशसबदेखि दुइतरंगमिलिरामजन रामचरणशुभलेखि ( २ ) तबकपिने मसाकर रूपधरिकै नगर बिषे प्रवेश कीन है नरहरी कही नरनविषे सिंहतिन श्रीरामचन्द्रको सुमिरिकैलंकाको चलतभये हैं मसक समाने अर्थ जानब ( १ ) एकलंकिनीनामे निशिचरी है लंका जोहै सो दूसररूप धरिकै अपनीरक्षाकरै है तहां हनुमान्जीसूक्ष्मरूप धरिकै चले हैं तिनको देखिलियो है सो कहती है कि तैं को हसि मोकोनिन्दिकै चलेसिहै ( २ ) हेशठ मोरमर्म तैंनहीं जानै है लंकाकरचोरसो मोर आहारहैसो तैंलंकाकरचोरहै ( ३ ) तबहनुमान्जी आपनस्वरूपप्रकटकरिकै एकमुष्टिका त्यहिकोमारतभये हैं त्यहिकेमुखतेबमनकहीरुधिरकैधारानिकसतिभई है महिविषेठनमनाइवपरीहै ( ४ ) पुनिसोलंकास्वरूपसंभारिकै उठतिभई है दूनौं हाथ जोरिकै अशंकहै विनय करती है ( ५ ) किहेहनुमन्त जबरावणको ब्रह्मैवरदानदीन रहै तबमोररूपचीन्हिकै चलतकहतभये हैं ( ६ ) किन्तुतबलंका संहारकरकारण विशेषि जानबजब कपिके मारे बिकलहोसि तबही निशिचरनको संहार जान्यसि ( ७ ) हे तात मेरीपुण्यबहुत है काहेतेश्रीरामचन्द्र के दूत को यहिनेत्रन भरिकै दर्शनभयो है ( ८ ) हेतात सातस्वर्गजे हैं भू भुर्वः स्वः महः जनः तपः सत्यं एते सातौं स्वर्गके सुखजेहैं अरुअपवर्गकहीमोक्ष सालोक्य सामीप्य सारूप्यसायुज्य सार्षिकही सामान्यऐश्वर्य तिनकरसुखजे हैं सोतुलाकही तराजूकेएकपलरापरधरै अरुसत्संग जोसुखकर समुद्र है त्यहि को एक कणमात्र कहा त्यहिकरसुखएक पलरापरधरै त्यहिलवमात्रके सुखकास्वर्ग अपबर्गकोसुखनहीं

जान्यसुनिशिचरसंहारे ७ तातमोरअतिपुण्यबहूता देख्यउं नयनरामकरदूता ८ दो० ॥ सातस्वर्गअपवर्गसुख धरियतुलायकअंग तुलैंनताहिसकलमिलिजोसुखलवसतसंग ९ चौ० ॥ प्रविशिनगरकीजैसबकाजा हृदयराखिकोशलपुरराजा १० गरलसुधारिपुरकरैमिताई गोपदसिन्धु अनलशितलाई ११ गरुअसुमेरुरेणुसमताही रामकृपाकरिचितवहिंजाही १२ अतिलघुरूपधरय्यउहनुमाना पैठेनगरसुमिरिभगवाना १३ मन्दिरमन्दिर प्रतिकरिशोधा देख्यउजहँतहँअगणितयोधा १४ गयउदशाननमंदिरमाहीं अतिविचित्रकहिजातसोनाहीं १५ शयनकियेदेखाकपितेहीं मन्दिरमहँनदीखवैदेहीं १६ भवनएकपुनिदीखसुहावा हरि

तुलै है तहां सत्संगविषेवह कौन सुख है जहां स्वर्ग अपवर्ग दूनौं को सुख सबासिक है अरु सत्संगविषे निर्बासिक सुख है जाको परमानन्द कही श्रीभागवते श्लोकएक ॥ तुलयामलवेनापिनस्वर्गनापुनर्भवम् भगवत्संगसंगस्य मर्त्यानांकिमुताशिषः ( ९ ) हे तात श्रीरामचन्द्र कोशलपुरकही श्रीअयोध्या अनेक ब्रह्मांडकोश त्रिपादपरविभूति सहितत्यहिसबकेराजा तिनको हृदयविषे धरिकै नगरविषे प्रवेशकरिकै श्रीरामकार्य करहु ( १० ) गरलसुधाहोत है अरिमित्र ह्वैजात है समुद्रगोपद होत है अग्निशीतल शशिसमान होत है ( ११ ) अरु सुमेरु रेणुकेसमान ह्वैजात है ज्यहि पर श्रीरामचन्द्र कृपाकरिकै चितवहिं त्यहिको यह सब तुरन्तहोत है अरु हे तात तुम तौ कृपाके पात्रैहौ तुमको सब सुलभ है ( १२ ) हनूमान्जूते कहिकै लंकिनी मोक्षको प्राप्तिभई है तब हनुमान्जी अतिसूक्ष्मरूप धरिकै श्रीरामचन्द्र पूर्ण भगवान् तिनको सुमिरिकै लंका को प्रवेश कीन्ह है ( १३ ) मन्दिर मन्दिरप्रति अगणितयोधा देखतभये हैं ( १४ ) रावणकरमंदिर अतिविचित्र देखा है कहानहीं जात है ( १५ ) तहांरावण शयन किहेपरा है मानहुं नलीशैल पवन

के जोरते उखरि परयउ है तहांशीशशृंग है भुजा विटप है बार लता हैं मुख कन्दरा है रावणको मंदिर चारि योजन विस्तरित है तहां श्रीजानकीजी को न देखा ( १६ ) तहांपुरके उत्तर दिशाविषे एक हरिमन्दिर अतिसुन्दर चित्रविचित्र भिन्नबना है ( १७ ) दोहार्थ ॥ सो मंदिर को दरवाजा श्रीरामायुध जो धनुषबाणत्यहि करिकै अंकित हैं सो शोभा बर्णिबे योग्य नहीं है अरुआगे नवीन तुलसीके बृन्द लगे हैं सो देखिकै हनुमान्‌जी प्रसन्न भये हैं इहां यह अभिप्राय है जहां भगवान्‌ को मन्दिर है अरु जो मन्दिर को अधिकारी है ते दोऊ जो धनुर्बाण करिकै अंकित नहीं हैं ते अशोभित हैं तहांप्रमाणहै श्रुतिस्मृति रामायण पुराण इत्यादिक इतियजुर्वेदे उत्तरार्द्धे एकोनत्रिंशत्तमोऽध्यायेश्रुतिः धन्वमांकितधन्वनागाधन्वनाजिझयेम धन्वनातीवासमदोजयेम धनुःशत्रोरपकामंकृणोति धन्वनासर्वाप्रदिशोजयेम १

मन्दिरतहँभिन्नबनावा १७ दोहा॥ रामायुधअंकितगृह शोभावरणिनजाइ नवतुलसीकरवृन्दतहँ देखिहर्षिकपिराइ १८ चौ० ॥ लंकानिशिचरनिकरनिवासा इहांकहांसज्जनकरबासा १९ मनमहँतर्ककरैकपिलागा तेहींसमयविभीषणजागा २० रामनाम

ससंसारंतरति सभवताश्रितोभवतिसभगवद्रूपीभवति अथर्वणेउत्तरार्द्धे २ श्रीमन्महारामायणे शिववाक्यंपार्वतींप्रति येजापकाभगवतश्चतपश्विनो ये पूजारताशुचिरताश्चविरागयुक्ताः सर्वैर्गुणैर्नियमसंयमनित्ययुक्तः निःकल्मषाः सकलसिद्धिकराश्चनित्यं ३ योनांकितोधनुशरैर्नचमंत्रराजस्योपासकोनसजनोरघुनन्दनस्य ४ श्रीरामसंस्कारविवर्ज्जिताये निष्पुच्छशृङ्गापशवोनरास्ते शक्तानवेदाअभिवर्णितुंयं त्वत्तोमयाख्यातमविस्तरेण ५ वाहुमूलेधनुर्बाणेनांकितोरामकिंकरः शीतलेनाथतप्तेन तस्यमुक्तिंनसंशयः ६ नांकितोचापबाणाभ्यां नमंत्रोस्तिषडक्षरःननामरामसम्बन्धिनरामोपासको भवेत् ७ इत्यगस्त्यसंहितायां श्रीरामगीतायां श्रीरामचन्द्रवाक्यं वशिष्ठंप्रति धनुर्बाणादिचिन्हानां धारणंतिलकान्वितंतुलसीकाष्ठमालाढ्यं तंजानीतसुवैष्णवं ८ कि जो सौयोजनके मध्यविषे एकवैष्णवरहै तौ सबकोकृतार्थ करै है ( १८ ) यह बिचार हनुमान्‌जी करते हैं कि लंकामें निशिचरनकर बासहै इहांसाधुकर मंदिर आश्चर्यित है ( १९ ) ऐसेतर्क हनुमान्‌जी मनमें करते हैं तेही समय में बिभीषण जागतभये हैं ( २० ) श्रीराम नाम सुमिरण करत हनुमान्‌जी सुनिकै अति हर्षते जाना कि कोई श्रीरामोपासक सज्जन है ( २१ ) यहिते हठिकै पहिचान करिहौं साधुते परकार्य्य सिद्धि होत है हानि नहीं होत है ( २२ ) तब हनुमान्‌जीने ब्राह्मणकर रूप धरिकै यह बचन कहा जयश्रीसीतारामजीकी यह सुनतसंते विभीषणजी हर्षयुक्त उठिकै मंदिरके बाहर आये हैं ( २३ ) तब विभीषणजीने प्रणाम करिकै कुशल पूछा है हेबिप्र अपनीकथा कहहु कहांते आये हौ ( २४ ) कि तुम हरिदासनमहँ कोई हौ तुमको देखिकै मेरे हृदय में बड़ी प्रीतिभई है ( २५ ) कि तुम श्रीरामचन्द्र के दीन अनुरागी हौ मोको बड़भागी करन आये हौ ( २६ ) दोहार्थ तब हनुमान्‌जीने श्रीरामचन्द्रकीकथा सबप्रकारकी कही अरु आपन नाम कहा है आपनीजाति आगमन

त्यहिँसुमिरणकीन्हा हृदयहर्षिकपिसज्जनचीन्हा २१ यहिसनहठिकरिहौंपहिंचानी साधुतेहोइनकारजहानी २२ विप्ररूपधरि वचनसुनाये सुनतविभीषणउठितहँआये २३ करिप्रणामपूछीकुशलाई विप्रकहौनिजकथाबुझाई २४ कीतुमहरिदासनसहँकोई मोरेहृदयप्रीतिअतिहोई २५ कीतुमरामदीनअनुरागी आयहुमोहिंकरनबड़भागी २६ दोहा॥ तबहनुमन्तकहीसब रामकथा निजनाम सुनतयुगुलतनपुलकमन मगनसुमिरिगुणग्राम २७ चौपाई॥ सुनहुपवनसुतरहनिहमारी जिमिदशननमहँजीभबिचारी २८ तातकबहुंम्वहिंजानिअनाथा करिहहिंकृपाभानुकुलनाथा २९ तामसतनकछुसाधननाहीं प्रीतिनपदसरोजमनमाहीं ३० अबम्वहिंभाभरोसहनुमन्ता बिनुहरिकृपामिलहिंनहिंसंता ३१ जोरघुवीरअनुग्रहकीन्हा तौतुममोहिंदरशहठिदीन्हा ३२ सुनहु

को हवाल कहा है यह सुनिकै दोऊ जननकेतन पुलकिआये नेत्रनमें जलभरिआयो है श्रीरामगुणग्राम सुमिरिकै ( २७ ) हे पवनसुत यहिपुर विषे हमारी रहनि सुनहु जैसे दशननविषे जीभ है ( २८ ) हे तात कबहूंभानुकुलके नाथ अरु सबकेनाथ श्रीरामचन्द्र अनाथजानिकै मेरीसुधि करते हैं कबहूं उनकी कृपाते मोको दर्शन होहिंगे ( २९ ) काहेते मैं कहतहौं किमेरो तामसीतन राक्षसकर अरु परमेश्वरकै प्राप्ति की जेती साधना वेद कहते हैं त्यहिते मैं हीन हौं अरु मोरेमनविषे लेशहू प्रीतिनहीं है पदकंजविषे यह नीचानुसन्धान कार्प्पण्य शरणागत कहावत है ( ३० ) हेहनुमंत अबमोको दृढ़भरोस भयो है कि बिना श्रीरामकी कृपा रामोपासक नहींमिलते हैं ( ३१ ) जो श्रीरामचन्द्र ने मोपर अनुग्रह कीन है तौ तुम मोको हठिकै दर्शनदीन है ( ३२ ) तबहनुमान्जी कहते हैं हे विभीषण श्रीरामचन्द्रकै यह रीति है कि सेवकपरसदा अतिप्रीति करते हैं ( ३३ ) जैसे विभीषण ने नीचानुसन्धान कार्प्पण्य शरणागत कहा है तैसे हनुमान्जू कहते हैं हे विभीषण कहहु मैं कौन कुलीन हौं एकतौ मैं बानरकैजाति चंचल सबप्रकार ते हीनहौं ( ३४ ) जेप्रातःकाल हमार नामलेइँ त्यहिदिन ताकोआहार नहीं मिलै है ( ३५ ) दोहार्थ॥ हेसखेसुनहु ऐसो मैं अधम हौं अरु ताहूको श्रीरघुनाथजी आपन कीन्हे हैं यह श्रीरघुनाथजी कै कृपा गुणसुमिरि कै नेत्रन में जलभरिआयो है ( ३६ ) ऐसे स्वामीको जानि कै भी

विभीषणप्रभुकैरीती करहिंसदासेवकपरप्रीती ३३ कहहुकवनमैंपरमकुलीना कपिचंचलसबहीबिधिहीना ३४ प्रातलेइजोनामहमारा त्यहिदिनताहिनमिलैअहारा ३५ दो०॥ असमैंअधमसखासुनहु ताऊपररघुवीर कीन्ह्यउकृपासुमिरिगुण भरेविलोचननीर ३६ चौ०॥ जानतहूअसस्वामिबिसारी तेनरकाहेनहोइंदुखारी ३७ यहिविधिकहतरामगुणग्रामा पावाअनिर्वाच्यबिश्रामा ३८ पुनिसबकथाविभीषणकही ज्यहिंविधिजनकसुताजहंरही ३९ तबहनुमंतकहासुनुभ्राता देखाचहौंजानकीमाता ४० युक्तिविभीषणसकलसुनाई चल्योपवनसुतबिदाकराई ४१ करिस्वइरूपगयोपुनिजहंवां वनअशोकसीतारहतहंवां ४२ देखिमनहिमनकीन्हप्रणामा बैठेहिबीतिजातिनिशियामा ४३ कृशतनशीशजटायकवेणी जपतिहृदयरघुपतिगुणश्रेणी ४४ दो०॥ निजपदनयनदियेमन रामचरणलयलीन परमदुखीभापवनसुत देखिजानकीदीन ३५॥ *

चौ०॥ तरुपल्लवमहंरहालुकाई करैबिचारकरौंकाभाई १ त्यहिअवसररावणतहंआवासंगनारिबहुकियेबनावा २ बहुबिधि

जे बिसारिदेते हैं ते नर काहे न सदा सुखी रहैंगे ( ३७ ) यहिविधिते श्रीरामचन्द्रकर गुणानुबाद परस्पर कहत सुनतसंते अनिर्वाच्यकही जोबाणी में न समाइसकै बिश्रामकही परमानन्द सुखको प्राप्ति भये हैं ( ३८ ) अड़तिसके आगे दोहाताई पैंतालिसके अंतताई अक्षरार्थै जानब॥ इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वंसने सुंदरकांडे हनुमतबिभीषण मिलापसत्संगवर्णनन्नाम द्वितीयस्तरंगः २॥ :: :: :: :: :: :: ::

दोहा ॥ रावण श्रीसीताबचनतृतियतरंगमजानि रामचरणदशमुखगयोसीताबिरहबखानि ३ तब हनुमान्जी अतिलघुरूप धरिकै अशोक के पल्लव के बिषे छिपिरहे हैं बिचारकरतेहैं कि का करौं ( १ ) त्यहि अवसरबिषे बहुत स्त्री शृंगार अरुबनाव किहेसंगलीन्हे रावण आवतभयोहै ( २ ) हेगरुड़ रावण खलबुद्धिकरिकै बहुतप्रकार श्रीसीताको समुझावत भयोहै चारिउ राजनीति साम दाम भय भेद क्रमहिंते देखावतभयो है ( ३ ) रावण कहत है हे सुमुखिसयानी सुनु मन्दोदरी आदिकजे मेरी रानी हैं ( ४ ) एकबारतुममेरी ओर देखहु तौ मन्दोदरी आदिक सब रानिन को तुम्हारी टहलुई करिदेउंगो ( ५ ) तब श्रीजानकीजी अवधपति परमसनेही श्रीरामचन्द्रको सुमिरिकै तृण ओट धरिकै कहती हैं इहां तृणनाम माथेको पट घूंघटकरिकै कहती हैं किन्तु तृणउठाइकै लक्षणाकीन है हेखल तैं तृणके समान है ( ६ ) श्रीजानकीजी कहती हैं हेदशमुख मैं तोरीदिशिका देखौं

खलसीतहिंसमुझावा सामदामभयभेददेखावा ३ कहरावणसुनुसुमुखिसयानी मंदोदरीआदिसबरानी ४ तबअनुचरीकरौंप्रणमोरा एक बारबिलोकुममओरा ५ तृणधरिओटकहतिबैदेही सुमिरिअवधपतिपरमसनेही ६ सुनुदशमुखखद्योतप्रकासा कबहुंकिनलिनीकरैंबिकासा ७ असमनसमुझिकहतिजानकी खलनहिंसुधिरघुबीरबाणकी ८ शठसूनेहरिआनेमोहीं अधमनिलज्जलाजनहिं तोहीं ९ दो०॥ आपुहिंसुनिखद्योतसम रामहिंभानुसमान परुषबचनसुनिकाढ़िअसि बोलाअतिखिसिआन १० चौ०॥ सीतातैंममकृतअपमाना कटिहौंतवशिरकठिनकृपाना ११ नहिंतवशपथमानुममबानी सुमुखिहोतनतुजीवनहानी १२ श्यामसरोज

तैंमोरी कृपाकर पात्रनहीं है नलिनीकही कमल सो खद्योत के प्राकशते कहूं बिकसत है ( ७ ) हे खल रघुबीर को रबिसमुझु अपनाको खद्योत समुझु रघुबीर के बाण कै तो को सुधिभूलिगईहैजो मारीचने तो से कहाहै अरु खरदूषणकर हवालतोसे शूर्पणखैं कहाहै सो यादिकरु ( ८ ) हेशठतैं श्रीरामचन्द्रके शूने मोको हरिलायोहै तैं अधम निर्लज्ज लज्जा रहितहसि ( ९ ) दोहार्थ ॥ तब रावण अपनाको खद्योत के समान सुन्यो है अरु लक्षणाकरिकै श्रीरामचन्द्र को भानुके समान जान्यउ है तब परुषकहीनिरादरबचन सुनिकै खिसिआइकही रिसिआइकै तरवार काढ़तभयो है ( १० ) तब रावण रिसिआइकै बोला हे सीता तैं मोर अपमान किहेहै मैं तोरशिर कठिनकृपाणते काटिडारोंगो ( ११ ) तैं मेरीवाणी को शपथकही शीघ्रमानु नाहींतौ हेसुमुखि तेरे जीवकैहानि होति है ( १२ ) तब श्रीजानकीजी कहती हैं हे दशकन्धर श्याम जो कमल है दामकही पंक्ति त्यहिकी आभा छटा तद्वत् रघुबीर श्याम अतिसुन्दर हैं ऐसे प्रभुजिनके भुज करिकर कही हाथीके कर शुण्डकेसम हैं ( १३ ) कितौसोई भुज मेरे कण्ठविषे लागेंगे कितौ तेरी घोरतरवार लागैगी हे शठ ऐसेप्रमाण है ऐसो मोरप्रण है यह अर्थ करतसन्ते श्रीजानकीजीविषे आरत दीनता आवति है अरु पूर्व्वापर विरोधहोत है श्रीजानकीजीने पूर्व्वहीरावणको खद्योतकरिकै कहा है अरु परविषे शठकरिकै कहा है ताते आरत वचन श्रीजानकीजी न कहैंगी ताते यह अर्थ अच्छानहीं है इहां खंडान्वयव्यञ्जनाकरिकै अर्थ सिद्धिहोत है श्यामसरोज सुन्दर ऐसे प्रभु जिनकर करिकरसम भुजदण्ड हैं चौपाई सोभुजकंठ कितव असिघोरा सोईभुजकै असिघोरकण्ठ कितौ त्यहिभुजकै असिघोर कि तोरेकंठ विषे लागहिंगे इहांको पद जो कहा है सो सन्देहविषे न जानब क्रियाविषेजानबताते त्यहिभुजकै असिघोर तोरेकंठविषे लागिहि हे शठ ऐसे शास्त्रकर

दामसमसुंदर प्रभुभुजकरिकरसमदशकंधर १३ सोइभुजकंठकितवअसिघोरा सुनुशठअसप्रमाणप्रणमोरा १४ चंद्रहासहरुममपरितापा रघुपतिविरहअनलसंतापा १५ शीतलनिशितवअसिबरधारा कहसीताहरुममदुखभारा १६ सुनतबचनपुनिमारनधावा मयतनयाकहिनीतिबुझावा १७ कह्यसिसकलनिशिचरीबोलाई सीतहिंबहुविधित्रासहुजाई १८ मासदिवसमहंकहान

प्रमाण है अरु ऐसे मोरप्रणहै ( १४ ) चन्द्रहासनाम तरवार तेहितेमोरपरिताप जो दुख सो हरु मोको मारिडारुश्रीरामचन्द्रके बिरहकीअग्नि विषे मैं तप्तहौं इहां पूर्व्व आधीचौपाईको अर्थ विरोध करै है ताते यह अर्थ है कि चन्द्रहास जो तेरी तरवार है सो चन्द्रहासकही चन्द्रमाकी किरणि तद्वत् तेरी तरवार है त्यहिते तैं मेरोदुख हरैगो अरुरघुपतिको विरह प्रबल अग्निकी ज्वाला है त्यहिविषे तेरोचन्द्रहास भस्म ह्वइजाइगो ( १५ ) तेरी असि जो तरवार त्यहिकी धारशीतल निशिकी समान है त्यहिते तैं मेरो दुख भारी कभी न हरिसकैगो ( १६ ) तब श्रीजानकीजी के बचन सुनिकै रावण क्रोधकरि पुनि मारैको धायो है तब मयनाम दानव त्यहिकी तनया मन्दोदरी सो समुझावतिभई यह नीतिमें विरोध आवत है ( १७ ) तब बहुत निशिचरिन को बोलाइकै कहतभयो बहुतप्रकारते त्रास देखावहुजाइ ( १८ ) जो एकमास विषे कहानहीं मानेगी तौ मैं कृपाण काढ़िकै मारौंगो ( १९ )

दोहार्थ ॥ असकहिकै रावण गृहको गयोहै वृन्दनिशाचरी जे मन्दहैं ते अनेकरूप धरिकै श्रीजानकीजीको त्रास देखावती हैं ( २० ) आगे तरंगताई दुइदोहा को पदार्थ सिद्धिजानब॥ श्रीजानकीजी को विरह ॥ श्रीजानकीजी रघुनाथजीके विरहकरिकै

माना तौमैंमारबकठिनकृपाना १९ दो०॥ भवनगयोदशकंधतब इहांपिशाचिनिवृंद सीतहिंत्रासदेखावहीं धरेरूपबहुमंद २० चौ०॥ त्रिजटानामराक्षसीएका रामचरणरतिबिपुलबिबेका २१ सबहींबोलिसुनायसिसपना सीतहिंसेइकरहुहितअपना २२ सपनेबानरलंकाजारी यातुधानसेनासबमारी २३ खरआरूढ़नगनदशशीशा मुंडितशिरखंडितभुजबीशा २४ यहिविधिसोदक्षिणदिशिजाई लंकामनहुंविभीषणपाई २५ यहसपनामैंकहौंपुकारी होइहिसत्यगयेदिनचारी २६ तासुबचनसुनितेसबडरीं जनकसुताकेपाँयनपरीं २७ दो० ॥ जहंतहँगईसकलतबसीताकरमनशोच मासदिवसबीतेम्वहिँ मारिहिनिशिचरपोच २८ चौ०॥ त्रिजटासनबोलीकरजोरी मातुबिपतितैंसंगिनिमोरी २९ तजौंदेहकरुवेगउपाई दुसहबिरहअबसहिनहिंजाई ३० आनिकाठरचिचिताबनाई मातुअनलपुनिदेहुलगाई ३१ सत्यकरहिंममप्रियासयानी सुनैकोश्रवणशूलसमबानी ३२ सुनतबचनपदगहि समुझायसि प्रभुप्रतापबलसुयशसुनायसि ३३ निशिनअनलमिलुसुनुसुकुमारी असकहिसोनिजभवनसिधारी ३४ कहसीताविधिभाप्रतिकूला मिलिहिनपावकमिटिहिनशूला ३५ देखियतप्रकटगगनअंगारा अवनिनआवतएकौतारा ३६ चौ०॥ पावकमयशशिश्रवतनआगी मानहुंमोहिंजानिविरहागी ३७ सुनहुविनयममबिटपअशोका सत्यनामकरुहरुममशोका ३८ नूतनकिशलयअनलसमाना देहुअगिनिनिजकरहुनिदाना ३९ देखिपरमविरहाकुलसीतात्यहिक्षणकपिहिं-कल्पसमबीता ४० सो०॥ कपिकरहृदयबिचार दीन्हमुद्रिकाडारितब जनुअशोकअंगार लीन्हहर्षिउठिकरगह्यउ ४१॥ * *

आकाशविषे नक्षत्रनको अंगारमय देखती हैं मन में कहती हैं कि मेरेहेतुएकौअंगार अवनि में उतरिनहीं आवत है। हे अशोक अगिनिदेहु अपने निज नामका सत्यकरौ निदान कही विशेषिदेहु ( ४० ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने सुन्दरकाण्डे रावण श्रीजानकीजी सम्बादे श्रीसीता विरह वर्णनन्नाम तृतीयस्तरंगः ३॥ ::

दोहा ॥ श्रीसीताहनुमतमिलन रघुबरविरहबखानि चौथतरंगउमंगसुख रामचरणदृढ़आनि ( ४ ) जब हनुमान्जीने अशोक तरुते मुद्रिका डारिदीन कैसी मुद्रिकाहै प्रकाशमय रामनामते अंकित अतिमनोहर त्यहिको देखिकै श्रीजानकीजी ने हर्षिकै उठाइलीन जनु अशोक अंगार दीन है त्यहि को प्राप्ति भई ( १ ) तब मुद्रिका पहिंचानिकै चकृतभई हैं हर्षशोक होतभयो है हृदय में अकुलाइ उठी हैं ( २ ) जो कहौं मुद्रिका कोई जीतिकै ल्यायोहोइ तौ श्रीरघुनाथजी अजय हैं कालहुके काल हैं तिनकोकौनजीति सकै है पुनि अजय कही जिनकी जय अजअखंड है अजन्म

चौ०॥ तबदेखीमुद्रिकामनोहर रामनामअंकितअतिसुंदर १ चकितचित्तमुदरीपहिंचानी हर्षबिषादहृदयअकुलानी २ जीतिकोसकैअजयरघुराई मायातेअसिरचीनजाई ३ सीतामनबिचारकरनाना मधुरबचनबोलेहनुमाना ४ रामचन्द्रगुणबरणैलागा सुनतहिंसीताकरदुखभागा ५ लागीसुनैश्रवणमनलाई आदिहिंतेसबकथासुनाई ६ श्रवणामृतजेकथासुनाई काहेनप्रकटहोतकिनभाई ७ तबहनुमंतनिकटचलिगयऊ फिरिबैठीमनविस्मयभयऊ ८ रामदूतमैंमातुजानकी सत्यशपथकरुणानिधानकी ९ यह

है एकरसहैं अरु राक्षसी मायाते ऐसो रचीनहीं जाइहै यहशोच करती हैं ( ३ ) तहां श्रीजानकीजी नानाप्रकारतेबिचारकरती हैं त्यहिसमयहनुमान्जी मधुर बचन बोलतेभये हैं ( ४ ) श्रीरामचन्द्र के गुण हनुमान्जी वर्णैलागेहैं सुनत संते श्रीजानकीजी के दुख दूरि ह्वैगये हैं ( ५ ) मनलाइकै श्रीजानकीजी श्रवण करती हैं तहां जबते श्रीरघुनाथजीको हनुमान्जी मिले हैं तबतक अरु पंचबटी ताईं जो श्रीरामचन्द्र से सुनारहै सो आदिहिंते सब कथा सुनावत भये हैं ( ६ ) तबश्री जानकीजी बोलीं इहां भाई कहीप्रीतिको जिन श्रवण को अमृतमय कथा सुनाई है ते प्रकट कसनाहीं होत हैं ( ७ ) तबहनुमंत बानर रूप श्रीजानकीजी केसमीप प्राप्तिभये हैं श्रीजानकीजी देखिकै विस्मय मानिकै फिरिबैठी हैं ( ८ ) तब हनुमान्जी बोले हे श्रीजानकी माता मैं श्रीरामचन्द्र कर दूतहौं करुणानिधान की सत्यशपथकरिकै कहतहौं ( ९ ) हेमातु यह मुद्रिका मैं आन्यउंहै श्रीरामचन्द्र तुमको सहिदानी कही चीन्हि दीन है ( १० ) तब श्रीजानकीजी कहती हैं नररूप श्रीरामचन्द्र अरु बानररूप तुम सो संगति कैसे भई है तवहनुमान्जीजैसे संगति भई है सो सबकथा कहिगये हैं ( ११ ) दोहार्थ॥ प्रेमसंयुक्तसुनिकै विश्वासकरिकै जाना कि यह मन क्रम वचन ते कृपासिंधुको दास है ( १२ ) तब हरि जे श्रीरामचन्द्र त्यहिकीदिशि देखते हैं जे उनकीदिशिदेखते हैं अरु जे नाम चरित उच्चारण करते हैं जेसुनते हैं उनसबचराचरन के पाप को हरिलेते हैं ताते हरिकही तिनकरजन निश्चय जानिकै श्रीजानकीजीके प्रीति अतिबाढ़ी है नेत्रनमें जलभरिआयो पुलकावली ठाढ़ीभई हैं ( १३ ) हे हनुमान् विरहके जलनिधि विषे मैं बूड़तीरहिउँहै हे तात तुम आइकै जलयानभयेहौ ( १४ ) हे हनुमान् मैं बलिजाउँ

मुद्रिकामातुमैंआनी दीन्हरामतुमकहंसहिदानी १० नरबानरहिंसंगकहुकैसे कहीकथाभइसंगतिजैसे ११ दो०॥ कपिकेबचनसप्रेमसुनि उपजामनविश्वास जानामनक्रमबचनयह कृपासिंधुकरदास १२ चौ०॥ हरिजनजानिप्रीतिअतिबाढ़ी सजलनयनरोमावलिठाढ़ी बूड़तविरहजलधिहनुमाना भयउतातमोकहंजलयाना १४ अबकहुकशलजाउंबलिहारी अनुजसहितसुखभवनखरारी १५ कोमलचितकृपालुरघुराई कपिक्यहिंहेतुधरीनिठुराई १६ सहजबानिसेवकसुखदायक कबहुंकसुरतिकरतरघुनायक १७ कबहुंनयनममशीतलताता होइहहिंनिरखिश्याममृदुगाता १८ बचननआवनयनभरिबारी अहहनाथम्वहिंनिपटबिसारी १९ देखिपरमविरहाकुलसीता बोलाकपिमृदुबचनविनीता २० मातुकुशलप्रभुअनुजसमेता तवदुखदुखितसुकृपानिकेता २१ जननीजनिमानहुजियऊना तुमतेप्रेमरामकेदूना २२ दो०॥ रघुपतिकरसंदेशअब सुनुजननीधरिधीर असकहिकपि

अब अनुजसहित सुखके भवन खरारिकै कुशलकहौ ( १५ ) हे कपिश्रीरघुनाथजीकर कोमल चित्त है तिन मेरीओर काहेते निठुराई कीन है ( १६ ) जिनके सहजबानि सेवक सुखदायक हैं ते रघुनायक मोरिसुरति कबहूं करते हैं ( १७ ) हेतात कबहूं मृदु श्यामलगात देखिकै मेरे नेत्र अरु गात शीतलहोहिंगे ( १८ ) तब यह कहिकै श्रीजानकीजी केनेत्रनविषे जलभरिआये हैं क्लेशविरहकरिकै श्रीजानकीजी कहती हैं किहे नाथ मोको निपटबिसारिदीन्ह है ( १९ ) तवबिरहतेब्याकुल श्रीजानकी जी को देखिकै हनुमान्जी मृदुल विनीतवचन बोलते भये हैं ( २० ) हेमातु बन्धुसमेत कृपालु सबप्रकारते कुशल हैं परन्तु तुम्हारेही दुखते दुखितहैं ( २१ ) हे जननी अपने मनमें ऊनकही सन्देह न मानहु तुम्हारेऊपर तुमते दून श्रीरामचन्द्रकर प्रेम है अरु लक्ष्मणजीके मातृभाव करिकै हैं ( २२ ) दोहार्थ॥ हे जननी श्रीरघुपतिकर सँदेश धीरज धरिकै सुनहु यतना कहत प्रेमते गद्गद नेत्रन में जलभरि आयो है ( २३ ) हे मातु तुम्हारे वियोगकर विरह श्रीरामचन्द्र कहा है मोहिं देखिपर्‍यो है सो सुनहु इहां मोरसब विपरीत भये हैं ( २४ ) तरुन के नवीन किशलय जे पल्लवते प्रिया के विरहते मोको अग्नि के लवर समान लागते हैं अरु निशा कालरात्री के समान हैं अरु निशिविषे शशि भानुके समान हैं ( २५ ) कुवलयकही कमल के

बन कुन्तकही बरछीके समान लागते हैं अरु बारिद जो मेघ जल बर्षते हैं सोमोको तप्ततेल के समान लागते हैं ( २६ ) अरु ज्यहितरुके तर रहत हैं त्यहिकी छाया ग्रीष्म की तपनिके सरिश पीड़ादेति है

गद्‌गदभयउ भरेविलोचननीर २३ चौ०॥ कह्यउरामवियोगतवसीता मोकहंसकलभयेबिपरीता २४ नवतरुकिशलयमनहुंकृशानू कालनिशासमशशिअरुभानू २५ कुवलयबिपिनकुंतबनसरिसा बारिदतप्ततेलजनुबरिसा २६ ज्यहिंतरुरहेकरतसोइपीरा उरगस्वाससम-त्रिबिधिसमीरा २७ कहेतेकछुदुखघटिनहिंहोई काहिकहौंयहजाननकोई २८ तत्त्वप्रेमकरममअरुतोरा जानतप्रियाएकमनमोरा २९ सोमनसदारहततवहिंपाहीं जानुप्रीतिरसयतन्यहिंमाहीं ३० प्रभुसंदेशसुनतवैदेही मगनप्रेमतनसुधिनहिंतेहीं ३१

अरु त्रिविधि पवन शीतलमन्दसुगन्ध सो सर्पके स्वासके समान लागत है ( २७ ) यह दुख कहेते नहीं घटत है कहहु कैसे कही एक मोरैमन यहिदुखको जानत है और कोई नहीं जानत है ( २८ ) तहां ममकही मोर अरुतोर प्रेमकैतत्त्व जोहै सो परस्पर दोऊदिशि एकह्वैके प्रियाको मन अरु मोर जानत है मोरमन प्रियाको विरह जानत है अरु प्रियाको मन मोरविरह जानत है ( २९ ) सो रघुनाथजी तिनकर मन तुम्हारे पास सदा रहत है हे मातु यह सत्यजानहु यतन्यहिबिषे प्रीतिकी रीति मानहु ( ३० ) अपनाबिषे प्रभुके विरहकर संदेश सुनिकै प्रेमतेमग्न ह्वैगई हैं तनकरसुधि भूलिगई हैं इहां श्रीरघुनाथ जी को वियोग शृंगाररस हनूमान्‌जी कहा है ( ३१ ) तब हनुमान्‌जी बोले हे मातु धीरजधरहु सेवक के सुखदाता श्रीरामचन्द्रकर सुमिरणकरहु ( ३२ ) उरविषे श्रीरामचन्द्रकै प्रभुताल्यावहु मेरेवचनसुनिकै कदराईको छोड़िदेहु ( ३३ ) दोहार्थ ॥ रघुपतिकर बाण कृशानु है अरु राक्षस पतंगइव सो जरिजाहिंगे हे जननी यह निश्चयमानिकै धीरज धरहु ( ३४ ) जो श्रीरामचन्द्र आपुकै सुधिपाये होते तौ बिलम्ब न करते ( ३५ ) हे श्रीजानकीजी श्रीरामचन्द्रकर बाण तरुणसूर्य है अरु राक्षसनके यूथ सो तम अन्धकारहैं सो नाशह्वइ जाहिंगे ( ३६ ) हे मातु अबहीं मैं तुमको ल्यवाइचलौं पर श्रीरामचन्द्रकै आज्ञा नहीं है तिनकी दोहाई करिकै कहतहौं ( ३७ ) हे जननी कछुकदिन धीरज धरहु कपिनकी सेनासहित श्रीरामचन्द्र आवहिंगे ( ३८ ) सम्पूर्ण निशिचरनको मारिकै तुमको लैजाहिंगे तीनिहुँलोक विषे नारदादिक मुनीश्वर

कहकपिहृदयधीरधरुमाता सुमिरिरामसेवकसुखदाता ३२ उरआनहुरघुपतिप्रभुताई सुनिममबचनतजहुकदराई ३३ दो०॥ निशिचरनिकरपतंगसम रघुपतिबाणकृशानु जननीहृदयधीरधरु जरेनिशाचरजानु ३४ चौ०॥ जोरघुवीरहोतसुधिपाई करतेनहिंबिलंबरघुराई ३५ रामबाणरविउदयजानकी तमबरूथकहंयातुधानकी ३६ अबहिंमातुमैंजाउँल्यवाई प्रभुआयसुनहिंरामदोहाई ३७ कछुकदिवसजननीधरुधीरा कपिनसहितऐहैंरघुवीरा ३८ निशिचरमारितोहिंलैजैहैं तिहुँपुरनारदादियशगैहैं ३९ हैंसुतकपिसबतुमहिंसमाना यातुधानअतिभटबलवाना ४० मोरेहृदयपरमसंदेहा सुनिकपिप्रकटकीन्हनिजदेहा ४१ कनकभूधराकारशरीरा समरभयंकरअतिरणधीरा ४२ सीतामनभरोसतबभयऊ पुनिलघुरूपपवनसुतलयऊ ४३ दो० ॥ सुनु

यशगावहिंगे ( ३९ ) तब श्रीजानकीजी कहती हैं हे सुत सबकपि तुम्हारेहीसमान हैं कि और कछु बड़े हैं अरु इहां राक्षस बड़े बड़े दीर्घभट बलवान् हैं ( ४० ) तब श्रीजानकीजी कहती हैं कि मेरे मन में परम सन्देह है तबयह सुनिकै हनुमान्‌जीने अपनी देह प्रकट कीन है ( ४१ ) मानहु शरीर कनक कर पर्वत है अरु समरविषे भयानकरूप अरु

अतिरणधीर बीरस्वरूप महाकाल रूप है ( ४२ ) देखिकै श्रीजानकीजीके मनविषे तब भरोस भयो है पुनि हनुमान्‌जी ने लघुरूप धारणकीन है इहां सर्बसिद्धि हनुमान्‌ की आज्ञानुकूल हैं ( ४३ ) दोहार्थ ॥ हे माता हमारी बानर की जाति शाखामृग है एक शाखाते एक शाखापर जाते हैं येता हमार पुरुषार्थ है ताते हमविषे बड़ी बलबुद्धि नहीं है पर प्रभु के प्रतापते परमलघु सर्पको बच्चा चाहै तौ गरुड़ को भक्षण करिजाइ जापर श्रीरामचन्द्र कृपाकरहिं हे मातु सो असहोइ ( ४४ ) कपिकैबाणी सुनिकै श्रीजानकीजी के मनविषे सन्तोष भयो है कैसीबाणी कपिकैहै श्रीरामचन्द्रविषे भक्ति प्रतापतेज अरु बलते सानी है ( ४५ ) तब श्रीरामप्रिय जानिकै आशीर्बाद दीन्ह है हेतात बल अरु शील के निधान कही स्थानहोहु ( ४६ ) हे सुत अजर कही बाल युवा वृद्ध जन्म मरण त्यहिते रहितहोहु अमरहोहु गुणके निधि कही समुद्रहोहु अरु रघुनायक बहुत छोहकरहिंगे ( ४७ ) यह आशीर्वाद सुनिकै हनुमान्‌जी बारबार माथ नावत भये हैं पुनि दूनों कर

माताशाखामृगनहिंबलबुद्धिविशाल प्रभुप्रतापतेगरुड़हिं खाइपरमलघुब्याल ४४ चौ०॥ मनसंतोषसुनतकपिबानी भक्तिप्रतापतेजबलसानी ४५ आशिषदीन्हरामप्रियजाना होहुतातबलशीलनिधाना ४६ अजरअमरगुणनिधिसुतहोहू करहुबहुतरघुनायकछोहू ४७ करहुकृपाप्रभुअससुनिकाना निर्भरप्रेममगनहनुमाना ४८ अबकृतकृत्यभयउँमैंमाता आशिषतवअमोघबिख्याता ४९ सुनहुमातुम्वहिंअतिशयभूखा लागिदेखिसुंदरतरुरूखा ५० सुनुसुतकरहिंबिपिनरखवारी परमसुभटरजनीचरभारी ५१ तिनकरभयमाताम्वहिंनाहीं जोतुमसुखमानहुमनमाहीं ५२ दो०॥ देखिबुद्धिबलनिपुणकपि कह्यउजानकीजाहु रघुपतिचरणहृदयधरितातमधुरफलखाहु ५३॥ * * * *

जोरिकै बोलतभये हैं ( ४८ ) हे माता अब मैं कृतकृत्य कही कृतार्थ भयउं हौं काहेते तुम्हार आशिष अमोघ है यह बात लोक वेदमें विख्यात है ( ४९ ) तब हनुमान्‌जी कहते हैं हे मातु सुन्दर तरुन के फूल फल देखिकै मेरे भूखलागी है ( ५० ) तब श्रीजानकीजी कहती हैं हे सुत यहिविपिनकै रखवारी बड़ेबड़े सुभट निशिचर करते हैं ( ५१ ) हे माता तिनकर भयमोको नहीं है जो तुम मेरे ऊपर अपने मन में सुखमनिहौ तौ मैं निर्भय हौं ( ५२ ) दोहार्थ ॥ तब श्रीजानकीजी हनुमान्‌जीको बुद्धि बलविषे निपुणजानिकै कहती हैं हे तात रघुपतिकर चरण हृदय में धरिकै मधुर मधुर फल खाहुजाइ ( ५३ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेसुन्दरकाण्डेश्रीजानकीजीहनुमान् सम्वादेचतुर्थस्तरंगः ४॥

दोहा ॥ हनूमानबलबुद्धिवररावणबीरप्रसंग ॥ रामचरणपुरदहनकरि जानवपंचतरंग ५॥ दुइदोताईं पदार्थैसिद्धिजानब॥ दोहार्थ ॥ तब मेघनाद विचारकीन है कि यह प्रभंजन कही पवनको पुत्र है अजय है काहूके जीतिबे योग्यनहीं है ताते ब्रह्मास्त्रते मारौं असकहिकै

चौ०॥ चल्यउनाइशिरपैठ्यउबागा फलखायसितरुतोरैलागा १ रहेतहांबहुभटरखवारे कछुमारयसिकछुजाइपुकारे २ नाथएकआवाकपिभारी त्यहिंअशोकबाटिकाउजारी ३ खायसिफलअरुबिटपउपारे रक्षकमर्दिमर्दिमहिडारे ४ सुनिरावणपठयउभटनाना तिनहिंदेखिगर्ज्ज्यउहनुमाना ५ सबरजनीचरकपिसंहारे गयेपुकारतकछुअधमारे ६ पुनिपठयउत्यहिंअछ्यकुमारा चलासंगलैसुभटअपारा ७ आवतदेखिबिटपगहितर्ज्जा ताहिनिपातिमहाधुनिगर्ज्जा ८ दो०॥ कछुमारयसिकछुमर्द्यसि कछुकमिलायसिधूरि कछुपुनिजाइपुकारयउ प्रभुमर्कटबलभूरि ९ चौ०॥ सुतबधसुनिलंकेशरिसाना पठयसिमेघनादबलवाना १० मारयसिजनिसुतबांध्यसिताही देखौंकपिहिंकहांकरआही ११ चलाइंद्रजितअतुलितयोधा

बंधुनिधनसुनिउपजाक्रोधा १२ कपिदेखादारुणभटआवा कटकटाइगर्ज्जाअरुधावा १३ अतिविशालतरुएकउपारा विरथकीन्हलंकेशकुमारा १४ रहेमहाभटत्यहिकेसंगा गहिगहिकपिमर्देनिजअंगा १५ तिनहिंनिपातिताहिसनबाजा भिरेयुगुलमानहुगजराजा १६ मुष्टिक मारिचढ़ातरुजाई ताहिएकक्षणमुर्च्छाआई १७ उठिबहोरिकीन्ह्यसिबहुमाया जीतिनजाइप्रभंजनजाया १८ दो०॥ ब्रह्मअस्त्रत्यहिसाध्यउ कपिमनकीन्हबिचार जोनब्रह्मशरमानउंमहिमाघटैअपार १९ चौ०॥ ब्रह्मबाणकपिकहँत्यहिंमारा परतिहुबारकटकसंहारा २० त्यइँदेखाकपिमुर्च्छितभयऊ नागफांसबांध्यउलैगयऊ २१ जासुनामजपिसुनहुँभवानी भवबंधनकाटहिंनरज्ञानी २२

ब्रह्ममन्त्र योजितकरिकै सन्धान कियो है तब हनुमान्जी अपने मनविषे यह बिचारकीन कि मैं ब्रह्मास्त्र न मानों तो वेदकी मर्य्याद अरु ब्रह्माकै अपारमहिमा सो घटी जाती है ताते मैं ब्रह्मवाण अंगीकार करौंगो ( १९ ) हे पार्वती तब मेघनाद हनुमान्जी को ब्रह्मबाणकही ब्रह्माकरदीनबाण मन्त्रप्रेरित जो अफल न होइ सो कपिको मारतभयो है तब हनुमानजी बाणकेमारे गिरतकै कटक संहारकीनहै ( २० ) तब त्यइँकपिको मूर्च्छित देखिकै नागफांसते बांधिलैगयो है ( २१ ) हे पार्वती जे ज्ञानीनर श्रीरामचन्द्रकर सुमिरण करते हैं तिनकर भवबन्धन कटिजात है ( २२ ) तिनकर दूत कबहूं भवबन्धनतर आइ सकै है नहीं आइ सकै है प्रभु के कार्य हेतुआपु ते बँधायोहे ( २३ ) कपिकर बंधन सुनिकै निशिचर धाये हैं सभाविषे कौतुक ह्वइरह्यउ है ( २४ ) रावणकैसभा हनुमान्जीने देखी सो अति प्रभुताई कही नहीं जाइ है ( २५ ) रावण को प्रतापऐसो है जाके आगे भयसंयुक्त दिशिपकही दशौदिग्पाल बरुण पवन कुवेर ईश इन्द्र अग्नि यमनिऋत आकाश व भैरव पातालकेनाग क्रमते जानब चन्द्र सूर्य इत्यादिक

तासुदूतबंधनतरआवा प्रभुकारजलगिआपुबँधावा २३ कपिबंधनसुनिनिशिचरधाये कौतुकलागिसभासबआये २४ दशमुखसभादीखकपिजाई कहिनजाइकछुअतिप्रभुताई २५ करजोरेसुरदिशिपबिनीता भृकुटिबिलोकतसकलसभीता २६ देखिप्रतापनकपिमनशंका जिमिअहिगणमहँगरुड़अशंका २७ दो०॥ कपिहिबिलोकिदशानन बिहँसाकहिदुर्बाद सुतबधसुरतिकीन्हपुनि उपजाहृदयबिषाद २८ चौ०॥ कहलंकेशकवनतैंकीशा क्यहिकेबलकीन्हेबनखीसा २९ कीधौंश्रवणसुनेनहिंमोहीं देखौंअतिअशंकशठतोहीं ३० मारेनिशिचरक्यहिअपराधा कहुशठतोहिंनप्राणकिबाधा ३१ सुनुरावणब्रह्मांडनिकाया पाय

करजोरेखड़े हैं औ भृकुटी विलोकते हैं ( २६ ) सो प्रताप देखिकै कपिकेमनविषे नेकहू शंकानहीं आई है जैसे सर्पनके समूह विषे गरुड़ निर्भय राजहि ( २७ ) दोहार्थ ॥ हनुमान्जी को देखिकै रावण दुर्बाद कहिकैविहँसतभयो है पुत्रकरबध समुझिकै हृदय में विषाद होतभयो है ( २८ ) तब लंकेश कहत है हे कीश तैं कोहसि किंतु तैंकौने कीशनमहँ हसिकीशबहुत हैंनामजादी अरु क्यहिके बलते तैं अशोक बाटिका खीस कही नाशकरि डारे है ( २९ ) हे शठ कीधौंमोर प्रताप श्रवण नहीं सुनेहै तोको मैं अतिअशंक देखतहौं ( ३० ) अरु निशिचरनको क्यहि अपराधते मारेहै तोको अपने प्राणको डरनहीं है ( ३१ ) हनुमान्जी बोले हे रावण सुनु निकायाकही विस्तार अनेक ब्रह्मण्ड जे हैं तिनको रचत हैं माया श्रीरामचन्द्रकर अनुशासनकही आज्ञापाइकै ( ३२ ) हे दशशीश पुनि श्रीरामचन्द्र के बलकही शक्तिते विधि हरि हर यहि जगत् को उत्पत्ति पालन संहार करते हैं ( ३३ ) जिनके बलते सहसानन कही शेषते अंड जो ब्रह्माण्ड त्यहिकेकोशकही भीतर आपने एक शीश पर एककणकी समान महि बन पर्वत सहितधरे हैं ( ३४ ) ते श्रीरामचन्द्र देवतन के त्राताकही रक्षाहेतु विविधप्रकारकी देहधरते हैं मत्स्य कच्छप बाराह नृसिंह बामन परशुराम इत्यादिक सो कहेहेतु तनधरते हैं तुम्हें ऐसे

शठनको सिखावनकही शिक्षादंडदेबेहेतु ( ३५ ) जिन श्रीरामचन्द्र महादेव करकोदंड जो धनुष त्यहि को भंजन कही नाशकरिदीन है अरु त्वहिंसमेत बाणासुर आदिक जे राजाबड़े बड़े रहे हैं तिन सबकर मानमद मर्दन करिकै ( ३६ ) अरु खरदूषण

जासुबलबिरचितमाया ३२ जाकेबलबिरंचिहरिईशा पालतसृजतहरतदशशीशा ३३ जाबलशीशधरेसहसानन अंडकोशसमेतगिरिकानन ३४ धरैजोदेहविविधसुरत्राता तुमसेशठनसिखावनदाता ३५ हरकोदंडकठिनज्यहिंभंजा त्वहिंसमेतनृपदलमदगंजा ३६ खरदूषणत्रिशिराअरुबाली बध्यउसकलअतुलितबलशाली ३७ दो०॥ जाकेबललवलेशतेजित्यउचराचरझारि तासुदूतमैंजासुकैहरिआन्यहुप्रियनारि ३८ चौ०॥ जानौंमैंतुम्हारिप्रभुताई सहसबाहुसनपरीलराई ३९ समरबालिसनकरियशपावा सुनिकपिबचनबिहँसिबहिरावा ४० खायउँफलप्रभुलागीभूखा कपिसुभावतेतोर्यउंरूखा ४१ सबकेदेहपरमप्रियस्वामी मारहिं

त्रिशिरा अरु बालि तिनकर पौरुष अतुलित बलके शालिकही स्थान सो तैं अच्छी प्रकार ते जानतहसि तिनको एकबाणते नाशकरिदीन है ( ३७ ) दोहार्थ॥ हे रावण जिन श्रीरामचन्द्रके बलके लवलेश मात्रते चराचरझारिते जीतिलीन्हे हैं प्रथम रकारतेरे नामविषे पर्यउहै वोहीके प्रतापते तैं सबको जीत्यउ है तिनकर मैं दूतहौं तिनकै प्रियनारि तैं हरिआनेहै इतनीमूर्खाई ढिठाई तैं कीन्हेहै ( पुनि दूसरार्थ ) जिनके बलके लवलेश ते चराचर कही देव दानव नाग मनुष्य पशु पक्षी तरुतृण शैल इत्यादिक जेते हैं तिनविषे जेता बल है सो सब श्रीरामचन्द्र के बलके लवलेशते सबके बलहै ( ३८ ) हे रावण मैं तोरि प्रभुता जानतहौं सहस्राबाहुते युद्धकीन्हे है सो तैं जानतहसि ( ३९ ) अरु तैं बालिते समरकीन्हेहै सो तैं बड़े यश को प्राप्तिभयसिहै तब यह सुनिकै रावण बिहँसिकै आनाकानी करिगयो है यह बिचारिकै कि जो रावणमैंहौं सो यह नहींजानतहै ( ४० ) इहां प्रभुकही राजाको नाम है ताते हनुमान्जी कहा हे प्रभु भूंखलागेते फलखायोंहै अरु कपिस्वभावते रूखतोर्यउँहै किंतु अन्वयकरिकै अर्थहोत है हे तरु फलन के प्रभु भूंखलागेते फलखायोंहै कपि स्वभावते रूखतोर्यउंहै ( ४१ ) अरु अपनीदेह सबको परमप्रिय है कुमारग गामी राक्षस मोको मारहिं अरु तिनको मैं नमारौं इहां स्वामी राजनके नामकीसंज्ञा है तातेहनुमानजी कहा है स्वामीकही हे राजन् किंतु अन्वयकरिकै अर्थहोत है हे कुमार्गगामिन के स्वामी जिन मोको मारा तिनको मैं माराहै ( ४२ ) जिन जिन मोको माराहै ताही ताही को मैं माराहै अरु त्यहिपर तुम्हारो पुत्र मोको बांधिल्यायो है सो बदला मैं लेउँगो ( ४३ ) अरु यह बांधेकैलज्जामोको नहीं है अपने प्रभुकर कार्यकीन चाहत हौं ( ४४ ) हे रावण

मोहिकुमारगगामी ४२ जिनम्वहिंमारातिनमैंमारा त्यहिपरबांधेउँतनयतुम्हारा ४३ मोहिंनकछुबांधेकैलाजा कीन्हचहौंनिजप्रभुकरकाजा ४४ बिनतीकरौंजोरिकररावन सुनहुमानतजिमोरसिखावन ४५ देखहुतुमनिजकुलहिबिचारी भ्रमतजिभजहुभक्तभयहारी ४६ जाकेडरअतिकालडेराई जोसुरअसुरचराचरखाई ४७ तासोंबैरकबहुंनहिंकीजै मोरेकहेजानकीदीजै ४८ दो०॥ प्रणतपालरघुबंशमणि करुणासिंधुखरारि गयेशरणप्रभुराखिहैं तवअपराधबिसारि ४९ चौ०॥ रामचरणपंकजउरधरहू

मैं करजोरिकै बिनती करतहौं मानतजि मोरसिखावन सुनहु जाते तुम्हार भलाहोइ ( ४५ ) तुम अपने कुलको बिचारि देखहु पुलस्त्य बिश्वश्रवा महातपस्वी ज्ञानके निधान श्रीरामानन्यउपासक त्यहिबंश विषेतुम ताते भ्रमतजिकै भक्तनके भयकेहरैया श्रीरामचन्द्र तिनको भजहु ( ४६ ) जिनके डरते महाकाल डेरात हैं जो चराचरको खाइलेते हैं

सम्पूर्णदेव दानव नाग असुर चराचर सबको भक्षणकरैहै ( ४७ ) तिन श्रीरामचन्द्रते बैरकबहूं न करौ हमारेकहेते श्रीजानकीजीको देहु ( ४८ ) दोहार्थ॥ प्रणत जेशरणजात हैं तिनको रघबंशमणि सब प्रकारते पालनकरते हैं काहेते खरारिकही खरको बधिकै सहित सेना परिवार परमपदको प्राप्तिकरिदीनहै जो पद योगिनको दुर्लभ सो दीन ऐसे करुणासिंधु हैं ताते जब शरणको तैं जाइगो तब तेरो अपराध क्षमाकरिकै अवश्य आपन करहिंगे ( ४९ ) श्रीरामचन्द्र के शरणह्वैकै पदपंकज उरमेंधरिकै लङ्का में अचल राजकरहु ( ५० ) हे रावण पुलस्त्यकरबंश यशबिमलमयंकइव उदय ह्वइरहेउ है त्यहिविषे कलंकजनिहोसि ( ५१ ) हेरावण रामनामबिना गिरानहीं शोभादेतिहै ताते तैंमद मोह त्यागिकै रामनामभजु ( ५२ ) हेसुराररिामनामबिना जिह्वा कैसेनहीं सोहतिहै जैसे स्त्री चन्द्रबदनी अनेक अलङ्कारकरिकै भूषित है अरुवस्त्रबिहीन है ताते अतिअशोभित है तैसे रामनाम बिनावाणीअशोभित है ( ५३ ) हे रावण श्रीरामचन्द्र ते बिमुख भयेते जेतीसम्पति प्रभुताईहै सो पाईकही बर्तमानमें सम्पति प्रभुता है अरु बिनुपाईकही जो परिणामपाइबेको है सो दूनोंजातिरहती हैं किन्तुपाई कही एककरअंक तापर एक सुन्नते दशहोत है दुइ सुन्नते सौ ऐसे दशदशगुण बढ़तजाते हैं अरु जोअंक न होइ तब सब सुन्नै सुन्न हैं तैसे रामनाम अंक है अपर मोक्ष के साधन

लंकाअचलराजतुमकरहू ५० ऋषिपुलस्त्ययशबिमलमयंका त्यहिशशिमहँजनिहोहुकलंका ५१ रामनामबिनुगिरानसोहा देखुबिचारित्यागिमदमोहा ५२ बसनहीननहिंसोहसुरारी सबभूषणभूषितबरनारी ५३ रामबिमुखसंपतिप्रभुताई जायरही पाईबिनुपाई ५४ सजलमूलतिनसरितननाहीं बर्षिगयेपुनितबहिंसुखाहीं ५५ सुनुदशकंठकहौंप्रणरोपी रामबिमुखत्रातानहिंकोपी ५६ शंकरसहसबिष्णुअजतोही सकहिंनराखिरामकरद्रोही ५७ दो०॥ मोहमूलबहुशूलप्रदत्यागहुतमअभिमान भजहुरामरघुनायकहिकृपासिंधुभगवान ५८॥ * * * *

सब सुन्नहैं हे रावण असजानिकै श्रीरामचन्द्र के सन्मुख शरणह्वैकै रामनाम भजहु ( ५४ ) हे रावण ज्यहिसरिता कही नदीविषे जलकरमूल कारण नहीं है सो बर्षाभयेते बहती है जब मेघबर्षाबन्द ह्वइगयो है तबनदी सूखिजाती है तैसे श्रीरामचन्द्र सब सुखकेकारण हैं अरु तिनते जे बिमुख हैं तिनके पूर्बसंस्कारते ऐश्वर्य्य भयो है सो परिणाम वर्त्तमान क्षीणह्वैजात है ( ५५ ) हे दशकंठ मैं प्रणरोपिकै कहतहौं श्रीरामचन्द्रते बिमुख त्राता कही रक्षक ब्रह्मांड विषे कोई नहीं है ( ५६ ) हे दशकंठ जो हजारन शंकर विष्णु अजकही ब्रह्माहोहिं ते सब तोको श्रीरामचन्द्र कर द्रोही जानिकै न राखिसकहिंगे ( ५७ ) दोहार्थ॥ हे रावण महातमरूप अभिमानसो मोहकर मूलकही कारण सो मोहमूल शूलकही अनेक दुःखदेबेको बर्छी के घावके समान है त्यहि अभिमानको तुम त्यागकरहु कृपाकेसिंधु श्रीरघुनाथजी को भजहु जो आपन भलाचाहौ ( ५८ ) इतिश्रीरामचरित मानसेसकलकलिकलुपविध्वंसनेसुन्दरकांडेरावणहनुमतसंबादेवीररसपरमनीतिवर्णनंनामपंचमस्तरंगः ॥५॥

दोहा ॥ प्रभुप्रतापतेपवनसुत लंकदहनअतिकीन रामचरणषटलहरिमें सियपदबंदिप्रवीन ६॥ हेगरुड़ यद्यपि कपि अति हितकार मयबाणी परमार्थरूप वेद तत्व भक्ति विवेक वैराग्य ज्ञान मयकही ( १ ) तदपिरावण सुनिकै समुझिगयो है पर पूर्बसंकल्प जो कियो है चौ०॥ तासन जाइबयरहठिकरऊं। प्रभुशरलागेतेभवतरऊं ॥ सो अपनी संकल्प को गुप्तराखिकै काहूको उपदेश कबहूं नहीं मानैगो ताते महाअभिमानभरे बचन बोलतभयो है देखिये तौ यहकपि हमारो गुरुह्वैकै ज्ञान उपदेशकरैहै ( २ ) हे खलअधम तोरिमृत्यु निकटआई है तैं मोको उपदेश करैलाग्यसि है ( ३ )

चौ०॥ यदपिकहीकपिअतिहितबानी भक्तिविवेकबिरतिमयसानी १ बोलाबिहँसिमहाअभिमानी मिलाहमहिंकपिगुरुबड़ज्ञानी २ मृत्युनिकटआईखलतोहीं लाग्यसिअधमसिखावनमोहीं ३ उलटाहोइकहाहनुमाना मतिभ्रमतोरिप्रकटमैंजाना ४ सुनिकपिबचनबहुतखिसियाना

वेगिनहरहुमूढ़करप्राना ५ सुनतनिशाचरमारनधाये सचिवनसहित बिभीषणआये ६ नाइशीशकरिविनयबहूता नीतिविरोधनमारियदूता ७ आनदंडकछुकरियगोसांई सबहीकहामंत्रभलभाई ८ सुनतबिहँसिबोलादशकंधर अंगभंगकरिपठवहुबंदर ९ दो० ॥ कपिकरममतापूंछपर सबहिकहासमुझाय तेलबोरिपटबांधिपुनि पावकदेहुलगाइ १०

तब हनुमान्जी बोले हेखलतोरकहा उलटाहोइहि तोरीमतिको भ्रमह्वैगयो है तोरिमृत्युनिकटआई है यहमोकोप्रकटजानिपरयो है ( ४ ) हनुमान्जी नीतिमय बचनकहा है सो सुनिकै रावणको कठोरलाग्यो है तबखिसियाइ कही रिसियाइकै बोलतभयो है यह मूढ़करप्राण हरिलेहुमारिडारहु ( ५ ) यह सुनतसन्ते निशाचर मारनधाये हैं तेही समयबिषे विभीषण मंत्रिनसमेत प्राप्तिभये आइ ( ६ ) तब विभीषण रावणके शीशनाइकै बहुत विनय करिकै कहते हैं हे नाथ दूतकर बधकरना नीति में विरोध आवत है ( ७ ) गो जो पृथ्वी त्यहिकर साईं ताते रावणको गोसाईंकहाहै हे गोसाईं कछु आनदंड करिये यहसुनिकै सब सभाबोलीकि भलामंत्र है ( ८ ) बिभीषणके वचन सुनिकै रावणहँसिकैबोला कि अंगभंग करिकै बांदरको पठवहु ( ९ ) दोहार्थ ॥ तबरावणकै सभाबोली कि कपिकैममता शोभापूंछपरहै ताते तेलबोरिकै वस्त्रलपेटिदेहु अग्निलगाइदेहु पूंछजरिजाइ आगे

चौ०॥ पूंछहीनबानरतहँजाइहि तबशठनिजनाथहिलैआइहि ११ जिनकैकीन्ह्यसिबहुतबड़ाई देखौंमैंतिनकै प्रभुताई १२ वचनसुनतकपिमनमुसुकाना भैसहायशारदमैंजाना १३ यातुधानसुनिरावणवचना लागेरचनमूढ़स्वइरचना १४ रहाननगरबसनघृततेला बाढ़ीपूंछकीन्हकपिखेला १५ कौतुककहँआयेपुरबासी मारहिंचरणकरहिंसबहासी १६ बाजहिंढोलदेहिंसबतारी नगरफेरिपुनिपूंछप्रजारी १७ पावकजरतदेखिहनुमंता भयउपरमलघुरूपतुरंता १८ निबुकिचढ्यउकपिकनकअटारी भईसभीतनिशाचरनारी १९ दो०॥ हरिप्रेरितत्यहिअवसर बहमारुतउनचास अट्टहासकरिगर्ज्यउ कपिबढ़िलागअकाश २०चौ०॥ देहबिशालपरमहरुआई मंदिरतेमंदिरचढ़िधाई २१ जरतनगरभेलोगबिहाला झपटलपटबहुकोटकराला २२ तातमातुहासुनियपुकारा यहिअवसरकोहमहिंउबारा २३ हमजोकहायहकपिनहिंहोई बानररूपधरेसुरकोई २४ साधुअवज्ञाकरफलऐसा जरैनगरअनाथकरजैसा २५ जारानगरनिमिषइकमाहीं एकबिभीषणकरगृहनाहीं २६ ताकरदूतअनलज्यहिसिरजा जरानसोत्यहिकारणगिरिजा २७ उलटिपलटिकपिलंकाजारी कूदिपरापुनिसिंधुमझारी २८ दो०॥ पूंछबुझाइ खोइश्रम धरिलघुरूपबहोरि जनकसुताकेआगेठाढ़भयउकरजोरि २९ चौ०॥ मातुमोहिंदीजैकछुचीन्हा जैसेरघुनायकम्वहिं दीन्हा ३० चूड़ामणिउतारितबदयऊ हर्षसमेतपवनसुतलयऊ ३१ कह्यउतातअसमोरप्रणामा सबप्रकारप्रभुपूरणकामा ३२ दीनदयालबिरदसंभारी हरहुनाथममसंकटभारी ३३ तातशक्रसुतकथासुनायहु बाणप्रतापप्रभुहिसमुझायहु ३४ मासदिवसमहँ

तरंगभरि अक्षरार्थै सिद्धिजानब॥ अब हनुमान्ने जाना कि पूंछ में अग्निलगी है लंकापरचढ़िगये हैं तब श्रीरामचन्द्र की प्रेरणाते उंचासौ पवन बहे हैं अग्नि की ज्वालाते स्वर्गलोकताईं तप्तह्वैगयो है अरुलंकाके सबराक्षस बिकलह्वैगये हैं कंचनकीलंका बहुतमहलैं गलिगईं हैं साधुअवज्ञाकर यह फल है हनुमान् ने साधुधर्म उपदेशकीन्ह सो रावण अवज्ञाकीनहै ताकोफल लंकाभस्मह्वैगईहै समष्टीतिलक सूक्ष्मजानब ( १० ) शीशपरललाट के ऊपर मणिरहती है सो चूड़ामणि है ( ३१ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकल-कलिकलुषविध्वंसनेसुन्दरकांडेलंकादहनबर्णननामपष्ठस्तरंगः ६॥

दोहा ॥ सप्ततरंगअनन्दमय मिलेकपिनहनुमान रामचरणपूंछ्तकहत गयेजहांभगवान ७॥ श्रीजानकीजीते विदाह्वइकै हनुमान्जी महाध्वनि सेगर्जतभये तब सुनिकै राक्षसनकी स्त्रिन गर्भ डारिदीन ( १ ) एकउछारमें समुद्रपार आये हैं आनन्दमय किलकिला कही जैसे बानरकी बोली

नाथनआवा तबम्वहिंतातजियतनहिंपावा ३५ कहुकपिक्यहिबिधिराखौंप्राना तुमहूंतातकहतअबजाना ३६ तोहिंदेखिशीतलभइछ्ाती अबमोंकहंस्वइदिनस्वइराती ३७ दो०॥ जनकसुतहिसमुझायकरि बहुबिधिधीरजदीन्ह चरणकमलशिरनायकपि गमनरामपहँकीन्ह ३८॥

चौ०॥ चलतमहाध्वनिगर्जेसिभारी गर्भश्रवहिंसुनिनिशिचरनारी १ नांघिसिंधुयहिपारहिआवा शब्दकिलकिलाकपिनसुनावा २ हर्षेसबबिलोकिहनुमाना नूतनजन्मकपिनतबजाना ३ मुखप्रसन्नतनतेजबिराजा कीन्ह्यसिरामचंद्रकरकाजा ४ मिलेसकलअतिभयेसुखारी तलफतमीनपावजनुबारी ५ चलेहर्षिरघुनायकपासा पूंछतकहतनवलइतिहासा ६ तबमधुबनभीतरसबआये अंगदसहितमधुरफलखाये ७ रखवारेतबबरजनलागे मुष्टिप्रहारकरतसबभागे ८ दो०॥ जाइपुकार्‌यउतेसबन बनउजारयुवराज

होती है सो सुनावतभये हैं ( २ ) हनुमान्जीको देखिकै सब कपिहर्षे हैं अपनेजन्म को नवीनकरिकै मान्योहै ( ३ ) मुखप्रसन्न है तन तेजमान् है यहजाना कि श्रीरामचन्द्रकर कार्यकरिआये हैं ( ४ ) सबकपि हनुमान्जीको मिलत अतिसुखीभये हैं जैसेसूखेसें तलफतमीनको जलपाइकै आनन्दहोत है ( ५ ) पुनि नवीनइतिहास जो हनुमान् ने लंकाविषेकीन है सो पूछ्तकहतसुनत श्रीरामचन्द्रके समीप चलतभये हैं ( ६ ) तब अंगद सहित बानर अरु ऋच्छसबमिलिकै मधुबनविषे आप मधुर मधुर फलखातभये हैं ( ७ ) तब रखवारेबर्जनेलागे मुष्टिकनकेमारे सब भागतभये हैं ( ८ ) दोहार्थ ॥ तेसबजाइकै सुग्रीवते पुकारतभये हैं हेराजन् युवराज जेअंगद तिनमधुबन बाटिका उजारिदीन है तब सुग्रीवने हर्षिकै यह बिचार कीन्ह कि कपि श्रीरामचन्द्रकर कार्य्य करिआये हैं ( ९ ) जो श्रीसीताकैसुधि न पाईहोती तो मधुबनके फलनखाइसकते ( १० ) यहि प्रकारतेराजा सुग्रीव मनमें विचारकरते हैं तेहीसमयविषे सहितसमाज हनुमान् अंगदजामवन्त इत्यादिक प्राप्तिभये आइकै ( ११ ) सब सुग्रीवकोशीशनावतभये सुग्रीव प्रीतिसमेत सबको उठिकैमिलतभये हैं ( १२ ) सुग्रीव ने सबते कुशलपूछी सो कहते हैं कि आपुके पदपङ्कज देखते कुशल है श्रीरामचन्द्रकी कृपा अरु आपुकी आज्ञाते सबकार्य्य सिद्धिभयो है ( १३ ) हे कपिनकेनाथ यह सबकार्य्य हनुमान्जीनेकीन है हमारेसबके प्राणराखेहैं ( १४ ) यह

सुनिसुग्रीवहर्षकपि करिआयेप्रभुकाज ९ चौ०॥ जोनहोतिसीतासुधिपाई मधुबनकेफलसकहिकोखाई १० यहिबिधिमनबिचारकरराजा आइगयेकपिसहितसमाजा ११ आइसबनिनायउपदशीशा मिल्यउसबनअतिप्रीतिकपीशा १२ पूंछीकुशलकुशलपददेखी रामकृपाभाकाजविशेषी १३ नाथकाजकीन्ह्यउहनुमाना राखेसकलकपिनकेप्राना १४ सुनिसुग्रीवबहुरित्यहिंमिल्यऊ कपिनसहितरघुपतिपहँचल्यऊ १५ रामकपिनजबआवतदेखा कियेकाजमनहर्षबिशेषा १६ फटिकशिलाबैठेद्वौभाई परेसकलकपिचरणनजाई १७ दो०॥ प्रीतिसहितसबभेंटे रघुपतिकरुणापुंज पूछाकुशलकुशलअब नाथदेखिपदकंज १८ चौ०॥ जामवन्तकहसुनुरघुराया जापरनाथकरहुतुमदाया १९ ताहिसदाशुभकुशलनिरंतर सुरनरमुनिप्रसन्नत्यहिंऊपर २० स्वइविजयी

सुनिकै सुग्रीव सबको मिलिकै सहित समाज रामचन्द्रके इहां चलतभये हैं ( १५ ) जब श्रीरामचन्द्रने कपिनको आवतदेखा कि मन में अतिप्रसन्न विशेषिकै कार्य्यसिद्धिकिहे हैं ( १६ ) स्फटिकमणिनकी शिला त्यहिपरद्वौभाईबैठे हैं तहां सबकपि चरणनपरेजाइकै ( १७ ) दोहार्थ॥ तब रघुपति करुणाकेपुंज सबकोभेंटत भये हैं सबकै कुशलपूंछी है ते कहते हैं हेनाथ तुम्हारे पदकमल देखिकै सबप्रकारते कुशलमंगल है ( १८ ) जामवन्तबोले हेरघुराय जापर तुमदायाकरहु ( १९ ) त्यहिको निरन्तर सबकाल में कुशलहै अरु देव मुनि सिद्ध त्यहिकेऊपर सबैप्रसन्न हैं ( २० ) जगत् में ताहीकी विजय है अरु सोई स्तुतियोग्य है अरु सोई गुणाकर सागर है अरु ताकर सुयश तीनिउँलोकविषे उजियार है ( २१ ) जामवन्तकहते हैं हेनाथ तुम्हारी कृपाते सबकार्य्य सिद्धिभयो है हमारोजन्म आजुसुफलभयो है ( २२ ) हेनाथ जो करणी हनुमान्जी ने कीन है सो हजारनमुखते शेषनहीं कहिसक्ते हैं काहेतेरावण त्रैलोक्यविजयी त्यहिको समाज सहित आपके प्रतापतेमानमर्दन करिआये हैं ( २३ ) पवनतनयके सुन्दरचरित जामवन्त श्रीरामचन्द्र को सुनावतभये हैं ( २४ ) हनुमान्जीके चरित अतिसुन्दर सुनिकैकृपासिन्धुके मनविषे बहुतभावतभये हैं पुनि हनुमान्जी को उठिकै अतिप्रीतिसे हृदय में लगाइलीन है ( २५ ) हेतात हनुमान्कहौ श्रीजानकीजीक्यहिभांतितेरहती हैं अरु अपनेप्राण की रक्षाकरती हैं ( २६ ) दोहार्थ ॥ हनुमान्जी

विनयीगुणसागर जासुसुयशत्रैलोक्यउजागर २१ प्रभुकीकृपाभयउसबकाजू जन्महमारसुफलभाआजू २२ नाथपवनसुतकीन्हिजोकरणीसहसहु मुखनजाइसोबरणी २३ पवनतनयकेचरितस्वहाये जामवंतरघुपतिहिंसुहाये २४ सुनतकृपानिधिमनअतिभाये पुनिहनुमानहर्षिहियलाये २५ कहहुतातक्यहिभाँतिजानकी रहतिकरतिरक्षासुप्रानकी २६ दो० ॥ नामपहरुवादिवसनिशिध्यानतुम्हारकपाट लोचननिजपद-यंत्रिकाप्राणजाहिंक्यहिबाट २७ चौ०॥ चलतमोहिंचूड़ामणिदीन्ही रघुपतिहृदयलाइसोलीन्ही २८ नाथयुगुललोचनभरिबारी बचनकह्यउकछुजनककुमारी २९ अनुजसमेतगह्यउप्रभुचरणा दीनबंधुप्रणतारतहरणा ३०

करजोरिकै कहते हैं हे नाथ श्रीजानकीजीके प्राणकैरक्षा यहिप्रकारतेहोति है हेनाथ तुम्हारनाम सोई रातिदिन दोऊपाहरू हैं अरु तुम्हार ध्यानसोई कपाट हैं अरु अपने नेत्र आपनेचरण में नीचेकिहे हैं सोईयंत्रिकाकही कुलुफ है हेनाथप्राणकवनेबाट ह्वइकैजाहिं इहां हनुमान्जी अपनी उक्तिसे श्रीरघुनाथजी के पूंछबेको उत्तरदीन है इहां अभिप्राय यह है कि जे आपकेनामरूप सुमिरैंगे तिनके प्राणकालकी सामर्थ्य नहीं है जो लैसकैगो तुम्हारी रजाय उनपर है अरु श्रीजानकीजीकर विरहदु:खजनाइदीन है ( २७ ) हे स्वामीचलतकै मोकोचूड़ामणि भूषणदीन है चूड़ामणिकही जो शीशपर चूड़ाविषे मणिरहती है सो हनूमान्जीने दीन श्रीरघुनाथजी हृदय में लगाइलीन है ( २८ ) हेनाथ दूनोंनेत्रनमें जलभरिकै कछु श्रीजानकीजीने कहाहै सो सुनहु ( २९ ) अनुज समेत सर्बकाल एकसंगरहते हैं ऐसे जो प्रभुहैं शरणागत आरतकेहरैया तिनके चरणकमल मोरीसंतीगह्यहु अथवा बन्धु समेत द्वौजनकेचरण गह्यहु लक्ष्मणजी करकहानहीं मान्यउ है ताते अपनीचूक माफकरायबे अर्थ कह्यउहै ( ३० ) मैं तौ मनक्रम बचनते चरणनकी अनुरागिनीसदाहौं कौने अपराधते मोरत्यागकीन है ( ३१ ) आपन अवगुण एकमैंनेमाना कि बिछुरतकैप्राणनहीं गये हैं ( ३२ ) तो नेत्रनकर अपराध है कि प्राण के निकसत बाधाकरत हैं ( ३३ ) नाथकर विरह सोई अग्नि है तन तूलकही रुई है श्वाससमीरहै क्षण महँ शरीर जरिजात है ( ३४ ) नेत्रनसेजल बहेजाहिं ताते विरहकी अग्निबुझाइ जाती रही सोनेत्रनको अपराधहै काहेते नेत्रन आपनहितजानिकै

मनक्रमबचनचरणअनुरागी क्यहिअपराधनाथम्वहिंत्यागी ३१ अवगुणएकमोरमैंमाना बिछुरतप्राणनकीन्हपयाना ३२ नाथसोनयननकरअपराधा निकसतप्राणकरतहठिबाधा ३३ विरहअग्नितनतूलसमीरा श्वासजरैक्षणमाहिंशरीरा ३४ नयनश्रवहिंजलनिजहितलागी जरैनपावदेहबिरहागी

३५ सीताकैअतिबिपतिविशाला बिनहिंकहेभलदीनदयाला ३६ दो०॥ निमिषनिमिष करुणानिधि जाहिंकल्पसमबीति वेगिचलियप्रभुआनियेभुजबलखलदलजीति ३७ चौ०॥ सुनिसीतादुखप्रभुदुखअयना भरिआयेजलराजिवनयना ३८ बचनकायमनममगतिजाही सपन्यहुंबुझियबिपतिकिताही ३९ कहहनुमंतविपतिप्रभुसोई जबतव

कि विरह की अग्नितेशरीर छूटिजायगो तौ महूंजाइ रहौंगो ताते नेत्रनकोश्रवैके विरह की अग्नि बुझायदीन है ताते शरीर बचिगयो है यह हनुमान्‌जी अत्युक्ति अलंकारकहाहै ( ३५ ) हेदीनदयाल श्रीजानकीजीकी विपत्तिबिनाकहेहीते भला है ( ३६ ) दोहार्थ ॥ हेकरुणानिधान श्रीजानकीजीको एकएक निमिष एकएक कल्पसम बीतता है तातेआप शीघ्रतय्यारी करिकै अपने भुजनकेवल ते खलदलकोजीतिकै श्रीजानकीजीको ल्याइये ( ३७ ) हे पार्वती हनुमान्‌के मुखते श्रीजानकीजीकर दुःखसुनिकै श्रीरामचन्द्रकेनेत्रकमल में जलभरिआये हैं ( ३८ ) मन क्रम बचन ते जिनको मोरिगति है तिनको सपन्यहुंदुःखचाही न चाही ( ३९ ) तबहनुमान् कहते हैं हे प्रभु जौनेकालविषे ज्यहिजीवते तुम्हार भजन न होइ सोईकाल बिपत्तिरूप है इहां सुमिरण भजनरूप कहा है ( ४० ) यातुधान जो राक्षस सो केतिकबात है रिपुनको जीतिकै श्रीजानकीजीको ल्यावहिंगे ( ४१ ) श्रीरामचन्द्र कहते हैं हे कपि तेरे समान उपकारी तनुधारी सुर नर मुनि कोईनहीं है ( ४२ ) तोरीकरणीकर प्रत्युपकार मैं का करौं मोरमन सन्मुख नहीं ह्वैसकत है ( ४३ ) हे सुत मैं तोंसे उऋणनहीं हौं मेरे मनमें विचारइहै है ( ४४ ) देवतनके त्राताकही रक्षकहैं श्रीरामचन्द्र हनुमान्‌की दिशि बारबार चितैरहे हैं गातपुलकिकै नेत्रनमें जलभरिआये हैं ( ४५ ) दोहार्थ॥ तबश्रीरामचन्द्रके बचन सुनिकै चन्द्रमुखदेखिकै हनुमन्तके गातपुलकि आये प्रेमाकुलते त्राहित्राहि करिकै चरणन में परतभये हैं ( ४६ ) हनुमान्‌जी पांयनपरे हैं रघुनाथजी बारबार उठावते हैं प्रेमतेमग्ननाहीं उठतभावैहै ( ४७ )

सुमिरणभजननहोई ४० केतिकबातप्रभुयातुधानकी रिपुहिंजीतिआनिबैजानकी ४१ सुनुकपित्वहिंसमानउपकारी नहिंकोउसुरनरमुनितनुधारी ४२ प्रतिउपकारकरौंकातोरा सन्मुखह्वैनसकतमनमोरा ४३ सुनसुततोहिंउऋणमैंनाहीं देख्यउँकरिविचारमनमाहीं ४४ पुनिपुनिकपिहिंचितवसुरत्राता लोचननीरपुलकअतिगाता ४५ दो०॥ सुनिप्रभुबचनविलोकिमुख गातहर्षिहनुमंत प्रेमाकुलचरणनपर्‌यउ त्राहित्राहिभगवंत ४६ चौ०॥ बारबारप्रभुचहैंउठावा प्रेममगनत्यहिउठबनभावा ४७ प्रभुपदपंकजकपिकरशीशा सुमिरिसोदशामगनगौरीशा ४८ सावधानमनकरिपुनिशंकर लागेकहनकथाअतिसुन्दर ४९ कपिउठाइप्रभुहृदयलगावा करगहिपरमनिकटबैठावा ५० कहुकपिरावणपालितलंका क्यहिविधिदह्यउदुर्गअतिबंका ५१ प्रभुप्रसन्न

हे गरुड़ प्रभुकर पदपङ्कज कपिकरशीश यह प्रेम कै दशादेखिकैगौरीश जे महादेव ते प्रेमविषे मग्नह्वैगये हैं ( ४८ ) तब शङ्कर सावधान ह्वै कै अतिसुन्दरिकथा पार्वतीसे कहते हैं ( ४९ ) हे पार्वती रघुनाथजी अपने भुजनते हनुमान्‌जी को उठाइ हृदय में लगाइकै करगहि, निपट निकट बैठावतभये हैं ( ५० ) रघुनाथजी पूछतेभये हैं हेकपि सिन्धुनांघिकैअरु रावण त्रैलोक्यविजयी बीर त्यहिकरिकै रक्षित जो लङ्का अतिशय दुर्ग्ग अगम त्यहिको तुमने कौनेप्रकार ते दहनकीन है पुनि समुद्र नांघि आये सब आश्चर्य्यित कामकीन है सोकहौ ( ५१ ) तब प्रभुको प्रसन्नजानिकै विगत अभिमान हनुमान्‌जी बोलतेभये ( ५२ ) हे नाथ हम बानर शाखामृग हैं हमारी बड़ीमनुसाई इतनीहै कि यहिडारते कूदि वहिडारपर गये ( ५३ ) हे नाथ जोआपु श्रीजानकीजी को मुद्रिकादीन है तेहीकेआधारसेसमुद्रपारगयउँहौं तहां श्रीजानकीजी आपुको विरह महा

अग्निज्वाला रूप त्यहिते तप्तरहै मुद्रिका पाइकै शीतलभई हैं तब आपुकर बिरहमहाअग्निरूप मैं लंका के सन्मुख करिदीन है बिनाप्रयासहि पुरीभस्म ह्वैगई है अरु बानर सुभावते बन उजारिदीन है अरु आपुके बलते राक्षसन कोमाराहै अरु आपुको श्रीजानकीजी चूड़ामणि दीन है त्यहिके आधार ते समुद्रपार उतरिआयों है हे महाराज एकराति लंका में रह्यउँ है ( ५४ ) हे नाथ सब आपुकी प्रभुतातेभयो अरु होइगो हमारी प्रभुता कछुनहीं है।

जानाहनुमाना बोलाबचनबिगत अभिमाना ५२ शाखामृगकैबड़िमनुसाई शाखातेशाखापरजाई ५३ नांघिसिंधुहाटकपुरजारा निशिचरगणबधिबिपिनउजारा ५४ सोसबतवप्रतापरघुराई नाथनकछुकमोरिप्रभुताई ५५ दो०॥ ताकहँप्रभुकछुअगमनहिं जापरतुमअनुकूल तवप्रतापबड़वानलहिजारिसकैखलुतूल ५६ चौ०॥ नाथभक्तितवअतिसुखदायिनि देहुकृपाकरिसोअनपायिनि ५७ सुनिप्रभुपरमसरलकपिबानी एवमस्तुतबकह्यउभवानी ५८ उमारामसुभावज्यहिंजाना ताहिभजनतजिभावनआना ५९ यहसंवादजासुउरआवा रघुपतिचरणभक्तिस्वइपावा ६० सुनिप्रभुबचनकहहिंकपिबृन्दा जयजयजयकृपालुसुखकन्दा ६१

आपुकै शपथकरिकै कहतहौं ( ५५ ) दोहार्थ ॥ हेप्रभु जापरआपु अनुकूलहोहु ताको कछुअगम नहीं है काहेते तुम्हारे प्रतापते बड़वानल जो अग्नि त्यहि को खलुकही निश्चय करिकै तूल जो रुई सो जारिडारैगो ( ६५ ) हे नाथ तुम्हारी भक्ति अति सुखदाई अनपायिनी सो कृपाकरिदेहु अनपायिनी कही ज्यहिते अपरमोक्षके साधनपदार्थ पावन नहीं हैं किंतु जाकोकोई २ पावते हैं जाको आपुकृपाकरिकै देहु सो ऐसी अनपायिनी अचल भक्तिपावैहै ( ५७ ) हे भवानी कपिकै परमसरल बाणीसुनिकै एवमस्तुश्रीरामचन्द्र कहा है ( ५८ ) हे उमा जिन्ह श्रीरामचन्द्रकर सुभाव जाना है तिनको भजन तजिकै अवर कछु भावतै नहीं है ( ५९ ) यह सम्बादजिनके उरविषेआवै तिनके रघुपतिचरणकै भक्ति प्राप्तिहोत है ( ६० ) प्रभु के बचनसुनिकै कपिके वृन्द कहते हैं हेसुखकेकंद तुम्हारी जयजय तुमसदा जयमान हौ चिरंजीव एकरस सुखकेकंद हौ ( ६१ ) तब श्रीरामचन्द्र सुग्रीवसेकहा हेसुग्रीव तुरंतचलिबेकी तय्यारी करहु ( ६२ ) श्रीरामचन्द्रकहा हेसुग्रीव अबका कारणकरिकै बिलम्ब है तुरंत कपिनकहँ आज्ञादेहु तय्यारीकरहु ( ६३ ) यह श्रीरामचन्द्रकर कौतुक चरित्र देखिकै देवता सुमनवर्षिकै जयजय कहिकै हर्षिकै नभ ते भवनको जात भये हैं ( ६४ ) दोहार्थ ॥ तब कपिपति सुग्रीव जामवन्त तुरंत सब सेनापतिन को बुलावतभये हैं तिनके यूथप नानाबरण अति दीर्घ तन अतुलबल अनेकन बानर ऋच्छ प्राप्तभये आइ ( ६५ ) तब श्रीरामचन्द्रके चरणारविन्दविषे शीशनावते हैं महाबली बानर भालु गर्जते हैं ( ६६ ) हे पार्बती तब कपि ऋच्छन

तबरघुपतिकपिपतिहिबोलावा कहाचलैकरकरहुबनावा ६२ अबबिलंबक्यहिकारणकीजै तुरतकपिनकहंआयसुदीजै ६३ कौतुकदेखिसुमनसुरबर्षे नभतेभवनचलेअतिहर्षे ६४ दो०॥ कपिपतिवेगिबोलाये आयेयूथपयूथ नानाबरणअतुलबल बानरभालुबरूथ ६५ चौ०॥ प्रभुपदपंकजनावहिंशीशा गर्जहिंभालुमहाबलकीशा ६६ देखीरामसकलकपिसैना चितयकृपाकरिराजिवनैना ६७ रामकृपाबलपाइकपिन्दा भयेपक्षयुतमनहुंगिरिंदा ६८ हर्षिरामतबकीन्हपयाना सगुनभयेसुंदरशुभनाना ६९ जासुसकलमंगलमयकीती तासुपयानसगुनयहनीती ७० प्रभुपयानजानावैदेही फरकहिंअंगसगुनकहिदेही ७१ ज्वइज्वइसगुनजानकिहिहोई असगुनभयउरावणहिंसोई ७२ चलाकटककोबरणैपारा गर्ज्जहिंबानरभालुअपारा ७३ नखआयुधगिरिपादपधारी * * * * * * *

कै सेना राजीवनयन कृपादृष्टि करिकै देखतेभये हैं ( ६७ ) श्रीरामचन्द्रकर बलपाइकै सकल कपीन्द्र मानहुं सपक्षगिरिंद कहीसुमेरु हैं ( ६८ ) हेगरुड़ तब श्रीरामचन्द्र हर्षिकै पयानकरत भये हैं तब नानाप्रकारके सुन्दर मंगलमय सगुनहोत भये हैं ( ६९ ) हेपार्बती जासुकही जिन श्रीरामचन्द्रकै कीती कहीकीरति सकल मंगलमय है तिनके पयानविषे ये सबसगुनहोते हैं सो यह नीतिहिहै सगुन साफल्यहोते हैं ( ७० ) प्रभुकर पयान श्रीजानकी जी जाना है बाम अंगफरकते हैं मानहुं सबसगुन कहिदेते हैं ( ७१ ) जोईजोई श्रीजानकी जीको सगुन होते हैं सोईसोई रावण को असगुनहोते हैं ( ७२ ) कटक चल्योहै को बरणिसकैहै भालु बानर अपार गर्जते हैं ( ७३ ) तिनके आयुधका हैं नख तरु पर्वत अरु महि में गगन में स्वइच्छित चलते भये हैं ( ७४ ) भालु कपि सिंहइव नाद करते हैं दिशनके दिग्गज चिक्कार करते हैं डगमगाइ रहे हैं ( ७५ ) छंदार्थ ॥ दिशनके दिग्गज चिक्कार करते हैं अरु गिरिलोल कही कंपिउठे हैं अरु समुद्रके जल खरभराइ उठे हैं अरु मनमें हर्षे हैं सूर्यचन्द्र सुरमुनि किन्नर सबके दुःख टरिगये हैं ( ७६ ) अरु कोटिन कोटिन मर्कट ऋच्छ कटकटाते हैं गर्जते हैं धावते हैं जैश्रीरामचन्द्र कोशलाधीश प्रबलप्रताप बिमल गुणगण गावते हैं ( ७७ ) श्रीरामचन्द्रके दलकर भार अतिउदार कही अतिशय सोभार अहिपति नहीं सहिसकते हैं वारवार बिमोहित मूर्च्छितहोते हैं पृथ्वी नहीं धरी रहती है तहां कमठकै पृष्ठ अतिकठोर त्यहिको हजारहु मुखते दांतनधरतेहैं त्यहिकी शोभाकै उपमा कबिदेते हैं ( ७८ )

चलेगगनमहिइच्छाचारी ७४ केहरिनादभालुकपिकरहीं डगमगाहिंदिग्गजचिक्करहीं ७५ छं० ॥ चिक्करहिंदिग्गजडोलमहि गिरिलोलसागरखरभरे मनहर्षदिनकरसोमसुरमुनि नागकिन्नरदुखटरे ७६ कटकटहिंमर्कटबिकटभट बहुकोटिकोटिनधावहीं जयरामप्रबलप्रतापकोशलनाथगुणगणगावहीं ७७ कहिसकनभारउदारअहिपति बारबारबिमोहहीं गहिदशनपुनिपुनिकमठपृष्ठ कठोरसोकिमिसोहहीं ७८ रघुवीररुचिरपयानप्रस्थित जानिपरमस्वहावनी जनुकमठखप्परसर्पराज सोलिखतअबिचलपावनी ७९ दो० ॥ यहिविधिजाइकृपानिधि उतरेसागरतीर जहँतहँलागेखानफल भालुबिपुलकपिबीर ८० ॥ * * * * * *

चौ० ॥ उहांनिशाचररहहिंसशंका जबतेजारिगयोकपिलंका १ निजनिजगृहसबकरहिंबिचारा नहिंनिशिचरकुलकेर उबारा २

श्रीरघुबीरकर प्रथम सुन्दर प्रस्थान पयान अतिपावन स्वहावन अतिजानिकै सर्पराज कमठराजके खप्परपर जनुलिखलेते हैं ताते बिसरि नहीं जाइ अबिचल कही कीरति जो है सोलिखते हैं ( ७९ ) दोहार्थ ॥ हे पार्वती यहिप्रकारते कृपानिधि अनगणित सेनासंयुक्त समुद्र के किनारे डेरापरत भयो है जहांतहां बानरभालु बड़ेबड़ेबीर फलखाने लगे हैं ( ८० ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने सुन्दरकांडे श्रीरामप्रस्थानवर्णनंनामसप्तमस्तरंगः ॥७॥ :: :: ::

दोहा ॥ अष्टतरंगनिशंकअति रावणमंत्रिनबात रामचरणसबनीतिकहिं नहिरावणहिंस्वहात ८ हे भरद्वाज जबते हनुमान्‌जी लंकाजारिगये हैं तबते राक्षस सशंकित रहते हैं ( १ ) आपने आपने गृह में बिचार करते हैं कि अब निशिचरन के कुलकर उबारनहीं हैं ( २ ) जाके दूतकर बलबर्णिबेयोग्य नहीं है त्यहि के आयेते पुरकै कौनिभलाई है ( ३ ) दूतन पुरजननतेमंदोदरी यह सुना कि श्रीरामचन्द्र सेनासहित समुद्रके पार परे आइकै तब हृदय में अकुलाइ उठी है ( ४ ) रहसि कही एकांत शोच करिकै रावणकेपद लागती भई जायकै नीतिरसपागे बचन बोलतीभई है ( ५ ) हे कंत हरि ते कर्ष जो विरोध सो परिहरिदेहु हमारा कहा अतिहित मानिकै हृदयमें धारणकरहु ( ६ ) जिनके दूतकैकरणी समुझतसंते निशिचरनकी स्त्री गर्भ

जासुदूतबलबरणिनजाई त्यहिआयेपुरकवनिभलाई ३ दूतनसुनिसुनिपुरजनबानी मंदोदरीहृदयअकुलानी ४ रहसिजोरिकरपतिपदलागी बोलीबचननीतिरसपागी ५ कंतकर्षहरिसनपरिहरहू मोरकहाअतिहितहियधरहू ६ समुझतजासुदूतकैकरणी श्रवहिंगर्भरजनीचरधरणी ७ तासुनारिनिजसचिवबोलाई पठवहुकंतजोचहहुभलाई ८ तवकुलकमलविपिनदुखदाई सीताशीतनिशासमआई ९ सुनहुनाथसीताबिनुदीन्हे हितनतुम्हारशंभुअजकीन्हे १० दो०॥ रामबाणअहिगणसरिस निकरनिशाचरभेक जबलगिग्रसतनतबलगि यतनकरहुंतजिटेक ११ चौ०॥ श्रवणसुनीशठताकरिबानी विहँसाजगतमहाअभिमानी १२

डारिदेती हैं ( ७ ) हे कंत आपनमंत्री बोलाइकै तिनकै नारि पठैदेहु जो आपन भलाचाहौ ( ८ ) तुम्हारकुल कमल है त्यहि को दुःखदेबेको सीता शीतऋतुकीरात्री आई है ( ९ ) हेनाथ सुनहु बिना सीताकेदीन्हे तुम्हारहितकारी ब्रह्मा शम्भु कोई नहीं होइगो ( १० ) दोहार्थ ॥ हेरावण श्रीरामचन्द्रकेबाण सर्पनकेगणहैं अरु संपूर्ण निशिचरभेक कही मेडुकहैं जबताईसर्प मेडुककोनहीं ग्रसत है तबताई कुशल है ताते हठछोड़िकै आपनी यत्न करहु श्रीजानकी को लैमिलहु ( ११ ) बारहकी चौपाई लैकै औ आगेकेदोहाताईं अक्षरार्थै जानब ॥ दोहार्थ ॥ सचिव वैद्य गुरु तीनिउजे हैं ते जो भयआशकरिकै प्रियवचन बोलहिं तौ राजकर तनकर धर्मकर नाशह्वैजात है सचिव दंड के भयकरिकै प्रियबचन बोलहि तौ राजकर नाशहोइ अरु वैद्य लोभ दंड के भयकरिकै प्रियबचन बोलहि तौ तनकर नाशहोत है औ गुरुमान बड़ाई पुजाइवे के हेतु कछु आशकरिकै प्रियबोलहि तौ धर्म्मकर नाश ह्वइजात है ( २१ ) सोई सब रावणको बिपरीत करिकै सहायभये हैं सुनाइ सुनाइ स्तुति खुशामद करते हैं ताते रावणकर तीनिउंनाश होइगो ( २२ ) त्यहि अवसर विषे बिभीषण आये हैं रावण के चरण में शीश नावतभये हैं ( २३ ) पुनि शीशनाइकै अपने अपने आसनपर बैठतभये हैं तब रावण बोला हे विभीषण समुद्रपार बानरनकी सेना आई है सोकाकर्तव्य है आज्ञापाइकै विभीषण बोले ( २४ ) हे कृपालु जो मोसे

सभयसुभावनारिकरसांचा मंगलमहंभयमनअतिकांचा १३ जोआवैमर्कटकटकाई जियहिंबिचारेनिशिचरखाई १४ कंपहिलोकजासुकीत्रासा तासुनारिसभीतबड़िहासा १५ असकहिबिहंसितासुउरलाई चल्यउसभाममताअधिकाई १६ मंदोदरीहृदयकरचीता भयउकंतपरबिधिबिपरीता १७ बैठ्यउसभाखबरिअसपाई सिंधुपारसेनासबआई १८ बूझेसिसचिवउचितमतकहहू तेसबहंसेमष्टकरिरहहू १९ जित्यहुसुरासुरतबश्रमनाहीं नरबानरकेहिलेखेमाहीं २० दो०॥ सचिवबैद्यगुरुतीनिजोप्रियबोलहिंभयआश राजधर्म्मतनतीनिकरहोइवेगहीनाश २१ चौ०॥ स्वइरावणकहबनीसहाई अस्तुतिकरहिंसुनाइसुनाई २२ अवसरजानिविभीषणआवा भ्राताचरणशीशतिननावा २३ पुनिशिरनाइबैठनिजआसन बोलाबचनपाइअनुशासन २४ जोकृपालपूछेहुम्वहिंबाता मतिअनुरूपकहौंहिततताता २५ जोआपनचाहियकल्याना सुयशभक्तिमतिगतिसुखनाना २६ सोपरनारिललाटगोसाईं तजियचौथिचंदाकीनाईं २७ चौदहभुवनएकपतिहोई भूतद्रोहतिष्टैनहिंसोई २८ गुणसागरनागरनरसोऊ अलपलोभभलकहैनकोऊ २९

पूंछ्यउतौ आपुके हितकै निज मतिके अनुसारर कहतहौं ( २५ ) बिभीषण कहते हैं हेनाथ जो आपनकल्याण अरु सुयश भक्ति सुमति सुगति नानाप्रकार के सुख लोकहूपरलोकहूके जोचाहौ तौ हमारकहामानौ ( २६ ) हेगोसाईं परनारिके जो ललाटकहे संपूर्णमुखमण्डल त्यहिको कैसे देखब त्यागकरी जैसे भादौंकी चौथिकर चन्द्रमा

त्यहिको त्यागकरियत है ( २७ ) काहेते चौदहौभुवनकर एकराजा होइ तौ भूतकही जीवकर द्रोहकरै तौ न तिष्टिसकै है ( २८ ) हे तात जोगुण के सागर हैं अरु नागर सबप्रकारते श्रेष्ठ हैं ऐसे मनुष्यन के जो अल्पौलोभ भयो तौ तिनको भला कोई नहीं कहैहै ( २९ ) दोहार्थ॥ हेतात काम क्रोध मद लोभ इत्यादिक सब नरक के मार्ग हैं इनसबको परिहरिकै रघुबीरकोभजहु जिनको सब संतशनकादि नारदादि भजते हैं ( ३० ) हे तात श्रीरामचन्द्र को नरभूपाल न जानब भुवनेश्वर सबके परे परमेश्वर हैं कालहु को कालहैं ( ३१ ) ब्रह्म हैं अनामय कही षड्वर्ग जन्म वृद्धि बिबरण क्षीण जरामृत्युषड्वर्ग इत्यादिक मायाके बिकार आमय त्यहितेनिरामय कही रहित हैं अरु अजकही अजन्मा हैं पूर्ण भगवान् हैं यह सत्य जानब पांचौ तत्त्व तीनिउँगुण चराचर विषे व्याप्त हैं जड़को चैतन्यकिहे हैं सबके साक्षी हैं नियंता हैं अरु अजित हैं कालहुके जीतिबेयोग्य नहीं हैं अरु अनादि पुरुष येई हैं अरु अनंत हैं जाकर आदि अंत मध्य वेदहूनहीं जानि सकै है ( ३२ )

दो० कामक्रोधमदलोभसब नाथनरककेपंथ सबपरिहरिरघुवीरही भजहुभजहिंज्यहिसंत ३० चौ०॥ तातरामनहिंनरभूपालाभुवनेश्वरकालहुकेकाला ३१ ब्रह्मअनामयअजभगवंता व्यापकअजितअनादिअनंता ३२ गोद्विजधेनुदेवहितकारी कृपासिंधुमानुषतनधारी ३३ जनरंजनभंजनखलब्राता बेदधर्मरक्षकसुरत्राता ३४ ताहिबैरतजिनाइयमाथा। प्रणतारतभंजनरघुनाथा ३५ देहुनाथप्रभुकहँबैदेही भजहुरामबिनुहेतुसनेही ३६ शरणगयेप्रभुताहुनत्यागा विश्वद्रोहकृतअघज्यहिलागा ३७ जासुनामत्रयतापनशावन

इहां गो कही पृथिवी अरु द्विज कही ब्राह्मण हैं अरु गऊ अरु देवता इनसबके हितकारहेतु कृपासिंधु नरतनधारी कही दिखाइबेको नरइव लीला करते हैं ( ३३ ) हे भ्राता अपने जनन के रंजन कही आनंददाता हैं अरु खलनके ब्रातकही पंक्ति की पंक्ति तिनके भंजनकही नाश कर्त्ता हैं अरु वेदधर्म के रक्षक हैं ( ३४ ) ताहिकही तिन प्रभुसे बैर तजिकै माथा नाइये कैसे हैं प्रभु प्रणत जे शरण हैं तिनकी आरत हरते हैं ( ३५ ) हे नाथ प्रभुको वैदेही देहु प्रभु श्रीरामचन्द्र बिना कारण स्नेह करते हैं तिनको भजहु ( ३६ ) अरु तुम डरहुजनि प्रभु कैसे हैं जो कोई विश्वकर द्रोहीहोइ अरु शरणआवै ताहूको नहींत्यागते हैं ( ३७ ) हे रावण जिनकर नाम जे कोई कैसेहु उच्चारण करैं त्यहिकै तिनउँ तापनाशहै जात हैं ते प्रभु प्रकटहैं तुम अपनेमन में समुझिदेखहु ( ३८ ) दोहार्थ ॥ हे दशशीशमैं बारबार तुम्हारेचरणमें लागिकै विनयकरतहौं मानमोह अरु मदको त्यागिकै कोशलाधीश को भजहु ( ३९ ) हे तात मुनिपुलस्त्यने अपनेशिष्यते यह बातकहि पठई है सो अवसरपाइकै मैं आपुसे कहा है सो आपु यहिबातकर प्रमाणकरहु ( ४० ) रावण के मंत्रिनविषे मालवन्त अतिसुजानथा त्यहिने विभीषण के वचनसुनिकै अति सुखमान्यो है ( ४१ ) हे राजन् तुम्हार अनुज सम्पूर्ण नीतिकर भूषण कहत है ताते जो विभीषण कहते हैं सो उरविषे धरहु ( ४२ ) तब रावणबोल्या ये दूनों शठ रिपुकर उत्कर्ष कहते हैं ताते कोई है नहीं जो इनदोनों को दूरिकरै ( ४३ ) तब यह सुनिकै मालवन्तने जानाकि यह दुष्ट है तब अपने गृहको उठि-

स्वइप्रभुप्रकटसमुझुजियरावन ३८दो०॥ बारबारपदलागहूंबिनयकरउंदशशीश परिहरिमानमोहमदभजहुकोशलाधीश ३९ मुनिपुलस्त्यनिज-शिष्यसन कहिपठईयहबात तुरतसोमैंप्रभुसनकही पाइसुअवसरतात ४० चौ०॥ मालवंतअतिसचिवसयाना तासुबचनसुनिअतिसुखमाना ४१ तातअनुजतबनीतिबिभूषण सोउरधरहुजोकहतबिभीषण ४२ रिपुउतकर्षकहत शठदोऊ दूरिनकरौइहांहैकोऊ ४३ मालवंतगृहगयउबहोरी कहैबिभीषणपुनिकरजोरी ४४ सुमतिकुमतिसबकेउररहही नाथपुराणनिगमअसकहही ४५ जहाँसुमतितहंसंपतिनाना जहाँकुमतितहंबिपतिनिदाना

४६ तवउरकुमतिबसीबिपरीता हितअनहितमानहुंरिपुपीता ४७ कालरातिनिशिचरकुलकेरी तैसीतापरप्रीतिघनेरी ४८ दो०॥ तातचरणगहिमांगौंराखौमोरदुलार

गयो है अरु विभीषण पुनि करजोरिकै कहते हैं ( ४४ ) हेनाथ हमसेचूकपरी है कुमति सबके मनविषे बसति है वेद पुराण सब कहते हैं ताते माफ करहु ( ४५ ) पर हे रावण जहां सुमति है तहां नानाप्रकारकैसम्पतिहै अरु जहां कुमतिहै तहां निदान विपत्ति है ( ४६ ) तोरे उरविषे कुमति विपरीत बसी है तेरी हितकारकै प्रीति जो कोऊकहै सो तोकोअनहित रिपुके समान लागत हैं ( ४७ ) तू सीतापर प्रीति घनेरी किहे है सो सीता निशिचरन के कुलभरेको कालरात्री आई है ( ४८ ) दोहार्थ ॥ हेतात चरणगहिकै मांगतहौं लघुभ्रताजानिकै मोर दुलार राखहु श्रीजानकीजीको श्रीरामचन्द्र को देहु तुम्हार अनहित न होइहि सबप्रकारतेहितैहोइहि ( ४९ ) हे पार्वती विभीषण ने भलेप्रकार ते बुध वेद सम्मति नीति कही है ( ५० ) तब सुनिकै रावण रिसाइकै उठाहै हे खल तोरिमृत्यु निकटआई है ( ५१ ) हे शठ सदा मोरजिआवा जियतहसि अरु रिपुकर पक्ष करतहसि ( ५२ ) हे खल कहु ऐसो को जगत् में है जाको अपने भुजबलतेजीति नहींलिहेउहौ ( ५३ ) हे शठ मोरे पुरमें बसिकै अरु तपसिन सन प्रीति करतहसि ताते उनहीसे मिलिकै नीतिकहुजाइ ( ५४ ) इतनाकहिकै विभीषणको लातमारतभयो है तब फेरिकै अनुज बारबार चरणगहत भयो है ( ५५ ) हे उमा सन्तनकेइहै बड़ाई है किजोकोई मन्दकर्म्म करै है तौ साधु ताहूसों भलाई करते हैं ( ५६ ) हे तात जो तुमने लातमारा है

सीतादेहुरामकहं अहितनहोइतुम्हार ४९ चौ०॥ बुधपुराणश्रुतिसंमतबानी कहीबिभीषणनीतिबखानी ५० सुनतदशाननउठारिसाई खलत्वहिंनिकटमृत्युअबआई ५१ जियसिसदाशठमोरजिआवा रिपुकरपक्षमूढ़त्वहिंभावा ५२ कहसिनखलअसकोजगमाहीं भुजबलज्यहिंजीतामैंनाहीं ५३ ममपुरबसितपसिनपरप्रीती शठमिलुजाइतिनहिंकहुनीती ५४ असकहिकीन्ह्यसिचरणप्रहारा अनुजगहेपदबारहिंबारा ५५ उमासंतकैइहैबड़ाई मंदकरतजोकरैभलाई ५६ तुमपितुसरिसभलेम्वहिंमारा रामभजेहितनाथतुम्हारा ५७ सचिवसंगलैनभपथगयऊ सबहिसुनाइकहतअसभयऊ ५८ दो०॥ रामसत्यसंकल्पप्रभुसभाकालबशतोरि मैंरघुबीरशरणअबजाउँखोरिनहिंमोरि ५९॥ *

चौ०॥ असकहिचलाबिभीषणजबहीं आयुहीनभेनिशिचरतबहीं १ साधुअवज्ञातुरतभवानी करकल्याणअखिलकैहानी २

सो भलाकीन है काहेते तुम पिताकेसमानहौ पर श्रीरामचन्द्र के भजेते तुम्हारभला है ( ५७ ) यह कहतसन्ते रावणने फेरि तिरस्कार कीन है तब विभीषण छः मंत्रिनसंयुक्त नभपथको जातभयो है अरु सबको सुनायकै यह कहतभयो है ( ५८ ) दोहार्थ ॥ श्रीरामचन्द्रकै सत्यसङ्कल्प है सभासंयुक्त तोर काल प्राप्तिभयो है ताते मैं श्रीरामचन्द्रकी शरणागतजातहौं अब मोरिखोरि नहीं है ( ५९ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेसुंदकांडेमंत्रीविभीषणरावणोपदेशवर्णनंनामअष्टमस्तरंगः ८॥ ::

दोहा ॥ भक्तविभीषणषटशरण बिरतिज्ञानवरभक्ति रामचरणनवअंकपर नवतरंगनवशक्ति १ इहांरावणने जो विभीषणको लातमारी है सो का हेतु है रावणबीररसते आत्मसमर्पण शरणागतभयो है तहांपूर्वही आरण्यकांडमें यह संकल्प कियो है चौपाई॥ तासनजाइ वैरहठिकरऊं। प्रभुशरलागेतेभवतरऊं ॥ ताते रावण यह संकल्प अपने मन में दृढ़करिकै किसूकाकहानहीं मानै है अरु यह बिचार अपने मन में कियो कि परमेश्वर अपना अपराध सब माफकरै हैं पर भागवतापराध नहीं सहिसकैं हैं अरु मैंने श्रीजानकीजीकर अपराध कीन है तहां रामजानकी एकही हैं तिनकी तौ मैं शरणलीन है तहां विभीषण श्रीरामभक्त अनन्य हैं त्यहिकर अपराधकरौं तौ भगवत् विशेष कही

अतिहीशीघ्र मोको बधैंगे तबमैं अपने निजस्वरूप पार्षदको प्राप्तहोउँगो यही कारणते बिभीषण को लातमारी है अब नवईतरंगकी चौपाई को अर्थकरते हैं चौ०॥ हे गरुड़ असकहिकै जब विभीषणचल्यो तबहीं रावणसुद्धांसव आयुर्बलते हीनभये हैं ( १ ) हेभवानी साधुकी अवज्ञाकरतसंते जो अपनेकरविषे अखिलकहै समूह

रावणजबहिंबिभीषणत्यागा भयउबिभवबिनुतबहिंअभागा ३ चलेहर्षिरघुनायकपाहीं करतमनोरथबहुमनमाहीं ४ देखिहौंजाइचरणजलजाता अरुणमृदुलसेवकसुखदाता ५ जेपदपरसितरीऋषिनारी दंडककाननपावनकारी ६ जेपदजनकसुताउरलाये कपटकुरंगसंगधरधाये ७ हरउरसरसरोजपदजेई अहोभाग्यमैंदेखिहौंतेई ८ दो०॥ जिनपांयनकीपादुका भरतरहेमनलाइ तेपद आजुबिलोकिहौं इननयननअबजाइ ९

कल्याण हैं सो तुरंतनाशह्वैजात हैं किंतुसाधु अवज्ञाते भूत भविष्य बर्त्तमान तीनिहुंकालके कल्याणनाश ह्वैजात हैं ( २ ) जबरावणने बिभीषणको त्याग्यहु है तबहीं विभव बिनु रावणभयो है ऐसो अभागी है ( ३ ) नभमार्गविषे विभीषण रघुनाथजी के यहां हर्षितबहुमनोरथकरत चलेजाते हैं ( ४ ) श्रीरघुनाथजीके पदपंकज अरुण मृदुल सेवकके सुखदातासो मैं देखिहौंजाइ ( ५ ) जिनचरणारविन्दोंको परसिकै अहल्यातरीहै अरु दण्डकारण्य पावन भयो है ( ६ ) अरु जे पद श्रीजानकीजी हृदयमेंलगाये हैं अरु कपटकेकुरंगके संग धरिबेको धाये हैं किंतुधर जो शरीरधायोहै ( ७ ) हरजोमहादेवकर हृदयसोसर है श्रीरामचन्द्रके पदपंकज जहां नित्यफूलेरहते हैं सो चरणआजु इननेत्रनते प्रत्यक्ष देखिहौंजाइ मोरोअहोभाग्य है ( ८ ) दोहार्थ ॥ जिनपांयनकी पादुकाविषे भरतमनलाइरहे हैं जैसे लोभी मधुकर कमलमें लागिरहै सो पदआजुमैं इननयनन ते बिलोकिहौंजाइ ( ९ ) यहिप्रकारते प्रेमसंयुक्त विचारकरत सपदि कही शीघ्र समुद्र के पार आवतेभये हैं ( १० ) जब कपिनविभीषणको आवतदेखा तबजाना कि रिपुको दूतकोई है ( ११ ) तब बिभीषणको ठावहिं राखिकै तिनकर आगमन सुग्रीवने कहाजाइ ( १२ ) तब सुग्रीवबोले हेरघुराई दशाननकर भाई मिलिबेको आयो है ( १३ ) तब प्रभुनेकहा हेसखे अबकाकर्तव्य है तब सुग्रीवबोले हे नरनाह सुनहु ( १४ ) तब सुग्रीव कहते हैं हे प्रभु निशाचरकै माया नहीं जानी जाय है कामरूप होते हैं जैसारूपचाहैं तैंसाधरिलेते हैं को जानै क्यहि कारणआया है ( १५ ) मोको तौ अससमुझि परत है कि यहशठ हमारोभेद लेनआयो है ताते बांधिराखिये ( १६ ) हे सखे तुमने तौ अच्छी प्रकार ते नीति बिचार

चौ०॥ यहिबिधिकरतसप्रेमबिचारा आयउसपदिसिंधुयहिपारा १० कपिनबिभीषणआवतदेखा जानाकोउरिपुदूतविशेषा ११ ताहिराखिकपीश-पहँआये समाचारसबताहिसुनाये १२ कहसुग्रीवसुनहुरघुराई आवामिलनदशाननभाई १३ कहप्रभुसखाबूझियेकाहा कहैकपीशसुनहुनरनाहा १४ जान्निजाइनिशाचरमाया कामरूपक्यहिकारणआया १५ भेदहमारलेनशठआवा राखियबाँधिमोहिंअसभावा १६ सखानीतितुमनीकिविचारी ममप्रणशरणागतभयहारी १७ सुनिप्रभुबचनहर्षिहनुमाना शरणागतवत्सलभगवाना १८ दो० ॥ शरणागतकहँजेतजहिं निजअनहितअनुमानि तेनरपामरपापमय तिनहिंबिलोकतहानि १९ चौ०॥ कोटिबिप्रवधलागहिंजाही आयेशरणतजौंनहिंताही २० सन्मुख

कीन्ह है पर मोर प्रण शरणागत भयहारी है ( १७ ) यह प्रभुके बचन सुनिकै हनुमान्जी हर्षे हैं कि प्रभु शरणागत बत्सल हैं जो कोऊ शरणागत आवत है त्यहिको पुत्र की नाईं राखत हैं ( १८ ) दोहार्थ ॥ पुनि श्रीरामचन्द्र कहते हैं हे सुग्रीव जो आपन अनहित अनुमान करिकै शरणआवै ताको जे तजि देहिं ते नर पामर कही पापमयपशु हैं तिनकोबिलोकतकै हानिहोतिहै ( १९ ) अरु हेसखे जो कोटिन ब्राह्मणकर बध लागै अरु मेरीशरणआवै तौ मैं ताहूको न तजौं ( २० ) जबहींयह जीवमेरे सन्मुखहोइ तबहीं

वोहीसाइति कोटिनजन्मकेपाप नाशकरिदेउँ यह मोरप्रण है श्लोकवाल्मीकीये सकृदेवप्रपन्नायतवास्मीतिचयाच्यते अभयंसर्वभूतेभ्योददाम्येतद्व्रतंमम १॥ ( २१ ) हेसखेपापवन्त जे पुरुष हैं तिनको सुभावहिते मोरभजननहीं भावत है ( २२ ) जो हृदय में दुष्टताहोइ सोमोरेसन्मुख नहीं आवैगो ( २३ ) जिनकरमन निर्मल है तेई मोकोपावहिंगे अरु कपटछलछिद्रजिनकेहैं तेमोको भावतेनहीं हैं किंतु जिनके कपटछलछिद्रहैं अरु मोरेसन्मुख आवतभये तौ उनकोकपट छलछिद्रमोको भावतैकही मैं लेतैनहीं तुरन्त मननिर्मल करिदेतहौं ( २४ ) हेकपीश जोरावणनेभेदलेनपठवाहोइ तबहूंकछुभयनहीं ( २५ ) हेसखेजगत्बिषे जेते निशाचर हैं तिनको लक्ष्मणजी एकनिमिषमें नाशकरिदेहिंगे ( २६ ) हेसुग्रीव कांडुमुनिकेमोको बचन स्मरणहैं कि जो तुम्हारीशरण आवैतिस को तुम अंगीकार करिकै फेरि जनित्यागयहु

**होइजीवम्वहिँजबहीं जन्मकोटिअघनाशौँतबहीं २१ पापवंतकरसहजसुभाऊ भजनमोरत्यहिभावनकाऊ २२ जौपैदुष्टहृदयसोहोई मोरेसन्मुखआवकिसोई २३ निर्मलमनजनमोहिँसोपावा मोहिँकपटछलछिद्रनभावा २४ भेदलेनपठवादशशीशा तबहुंनकछुभयमानकपीशा २५ जगमहंसखानिशाचरजेते लक्ष्मणहनहिंनिमिषमहँतेते २६ जोसभीतआवैशरणाईं रखिहौंताहि प्राणकीनाईं २७ दो० ॥ उभैभांतित्यहिआनहुहंसिकहकृपानिकेत जयकृपालुकहिकपिचलेअंगदहनूसमेत २८ चौ०॥ सादरत्यहिआगेकरिबानर चलेजहांरघुपतिकरुणाकर २९ दूरिहितेदेखेद्वौभ्राता नयनानन्ददानकेदाता ३० बहुरिरामछबिधामबिलोकी रहेठिठुकियकटकपलरोकी ३१ भुजप्रलंबकंजारुणलोचन श्यामलगातप्रणतभवमोचन ३२ सिंहकंधआयतउरसोहा आनन**

ताते जो रावण के भयते सभीतकही डरिकै आयोहोइ तौ प्राणकी नाईं राखिहौं ( २७ ) दोहार्थ ॥ हेकपीश दुष्टभावते आइोहोइ या आर्त्तह्वइकै आयोहोइ तौ उभयभांति कही दोऊभांतिसे ल्यावहु बिहँसिकै कृपानिधान कहते हैं बिहँसे क्यों कपिनकर सम्मतसुनिकै तब अंगद हनुमान् समेत सबकपिजयकृपालु रामचन्द्रकी कहिकैचले ( २८ ) आदर समेत बिभीषणको आगे करिकै सब बानर करुणाकर रघुपति तिनके पासचले हैं ( २९ ) तबबिभीषण दूरिहिते नेत्रन के आनंदके दानकेदाता द्वौभाइनको देखतभये हैं ( ३० ) बहुरि श्रीरामचन्द्र छबिकेधाम तिनको बिलोकिकै ठुठुकिकही थँभिरहे हैं नेत्रन की पलक नहीं चलती है ( ३१ ) कैसेहैं श्रीरामचन्द्र प्रलंब कही आजानु भुज हैं अरु अरुणकमल इवनेत्र हैं श्याममणि इवगात हैं प्रणत जे शरण हैं तिनकेभयके मोचनकर्त्ता हैं ( ३२ ) अरु बालसिंहके ऐसे कंधहैं अरु आयत कही बिशाल उर है अरु मुख अमित मदन के मन को मोहत है ( ३३ ) तब बिभीषण के नेत्रनमें जलभरि आयो है मनमें धीरधरिकै मीठी बात बोलतभये हैं ( ३४ ) हेनाथ मैं रावणकर भ्राता हौं। हेसुरत्राता हमार निशिचर बंश में जन्मभयो है ( ३५ ) अरु सहजै में हमको पापप्रिय है काहे ते हमारोतामसी शरीरहै जैसे उलूकको अन्धकार विषे स्नेह है ( ३६ ) दोहार्थ ॥ आपुकर सुयशश्रवणन ते सुनिकै मैं आयउँहौं कि भवभारभंजन हैं हे आर्त्तहरण त्राहि २ हेरघुबीर तुमशरणागत के सुखदाताहौ मैं तुम्हारी शरणहौं इहां षट्प्रकारते शरणागत बिभीषण होतभये हैं षट्प्रकार कौन है श्रीरामचन्द्रके अनुकूल ज्यहि प्रकारते प्रसन्न होइ सोईकर्म धर्म योग बैराग्य ज्ञान विज्ञान इत्यादिक ज्यहिविषे संकल्प करै कि यही करौंगो ताको अनुकूल कही अरु येई कर्मधर्म योगबैराग्य ज्ञान विज्ञान इत्यादि कियेते श्रीरघुनाथजी बिषे प्रतिकूलता आवै तौ तिनको त्याग

**अमितमदनमनमोहा ३३ नयननीरपुलकितअतिगाता मनधरिधीरकहीमृदुबाता ३४ नाथदशाननकरमैंभ्राता निशिचरबंशजन्मसुरत्राता ३५ सहजपापप्रियतामसदेहा यथाउलूकहिंतमपरनेहा ३६ दो० ॥ श्रवणसुयशसुनिआयउं प्रभुभंजनभवभीर त्राहि त्राहि आरतहरणशरणसुखद-रघुवीर ३७॥**

* * * * * *

करना अरु प्रसिद्ध जो प्रतिकूल है काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य इत्यादिक तिनके त्याग में संकल्प करै सोई प्रतिकूलबर्जन कहावैहै अरु जो ब्रह्मा शिवादिक के स्वामी हैं अरु अपने शरणागत निषाद गिद्ध सुग्रीव बिभीषणादिकन की सदारक्षा करिआये हैं सो हमारि रक्षाअवश्य करैंगे यहिप्रकारको जो दृढ़विश्वासताको रक्षिष्यतीति विश्वासकही अरु जो आर्तबाणी कहेते रघुनाथजी को करुणा उत्पन्न होइ अरु वोहीकरुणाबश ह्वइकै रक्षाकरै सोई आर्तबाणी रघुनाथ जी के आगे करुणा जैसेशेवरी सुग्रीव गज द्रौपदी इत्यादिकनकर दीनबचन सुनिकै उनकी रक्षाकिया ताको गोप्तृत्ववर्णन कही शरण्य जो श्रीरघुनाथजी हैं तिनकी प्रसन्नता करहेतु शरणागत है यह बिचारिकै आत्मा औ आत्मीय जो पदार्थ ताको सब प्रकारकरिकै वेदविधि पूर्बक श्रीरघुनाथजी बिषे समर्पण करना मनबचन कर्म इत्यादिककी विषय जैसे काहूनेपशुबेचिदियो है जिननेलिया तिसकेऊपर भारपर्यउ है तैसे स्वार्थ परमार्थको भार श्रीरघुनाथजीविषे डारिदेइ अरु अपने मन विषे नर्क स्वर्ग अपवर्ग तिनके सङ्कल्प विकल्प कै बासना न उठै अरु हर्ष शोक सुख दुःख हानि लाभ इत्यादिकजे अनेक मायाके ब्यकार अनेकसंस्कारबश शरीर विषे वर्तमान होते जाते हैं पर सब पर श्रीरामरजाय जानै अरु कौनेहु पदार्थ में अपनपौ न आवै ताको आत्मनिक्षेप शरणागतकही पुनिकार्प्पण्यकही संसारकोविषय त्यागिकैमन बचन कर्मते श्रीरघुनाथजी के प्राप्ति कै कर्तब्य करै अरु अपनपौ तनिकौ न आवै बाह्यांतरते यहकहै अरुजानै कि मोसेकछुनहीं बनत है हे श्रीरामजी मैंसबप्रकार सर्बजीवन ते नीच हौं ताकोकार्प्पण्य शरणागत कही जब विभीषण प्रथमरावणकेइहांआये अरु रावणसे परमनीति कही है सो श्रीरामचन्द्र के अनुकूल कह्यो है अरु त्यहिविषे बिभीषणकै संकल्प है कि जो मैं रावणसे कह्यों है सोई करौंगो ताको अनुकूल संकल्पनाम प्रथम शरणागत जानब अरु रावण सबप्रकारते श्रीरामचन्द्रके प्रतिकूल कहै करै तेहिको बिभीषण त्यागकीन है सो प्रात्यकूल बिवर्ज्जन द्वितीय शरणागत जानब अरु रावण त्रैलोक्य बिजयी तेहिकर त्यागकीन है तहांकछु भयनहीं आई है काहेते यहदृढ़ बिश्वास कीनहै कि जिनबालिको बधिकै सुग्रीव कै रक्षाकीनि हैसोई श्रीरामचन्द्र मेरेलोकहु परलोककैरक्षाकरहिंगे ताको रक्षिष्यतीति विश्वास शरणागत सो तृतीय जानब अरु बिभीषण श्रीरामचन्द्र के पासचले हैं तहां अपने मारबे को बानरन की भयनहीं करते हैं काहेते श्रीरामचन्द्र को आत्मसमर्पण कीन है ताते श्रीरामचन्द्र जो करहिंगे सोई होइगो विशेषिकै यह आत्मसमर्पण शरणागत सो चतुर्थजानब अरु जो विभीषण विचारकरत चलेजाते हैं कि ज्यहि चरणकमलकै सनकादिक नारद शुकदेव अगस्त्य ब्रह्मा शिवादिक आश्रयलीन्हे हैं सो नेत्रनभरि प्रत्यक्ष देखौंगो इहां ताईं अरु जब विभीषण कहा है हे सुरत्राता मोर निशिचर बंशविषे जन्म है अहर्निशि हमको पापैप्रिय है यह कार्पण्यशरणागत सो पंचमजानब अरु श्रीरामचन्द्र के समीप प्राप्तिभये हैं अरु यह कहा है हे शरणागत रक्षक मोको त्राहि त्राहि मैं आपुके शरणैहौं असकहिकै दण्डइव पृथिवीविषे गिरिपरेपाहि पाहि कहिकै सो गोप्तृत्व वर्णनरक्षाशरणागत सोषष्ठमजानब तत्रप्रमाणमाह श्रीनारद पंचरात्रेश्लोकडेढ़ ॥ अनुकूल्यस्यसंकल्पः प्रातिकूल्यस्यवर्ज्जनं रक्षिष्यतीतिविश्वासो गोप्तृत्ववर्णनंतथा आत्मनिक्षेपकार्पण्य षड्विधाशरणागतिः॥ यहषड्शरणागत जो कहि आये हैं सो श्रीनारद पंचरात्र करमत है पुनि बाल्मीकिकर मतकहते हैं तहां जब बिभीषणने आकाशविषे उच्चस्वरते आर्तबचन श्रीरघुनाथजी को सुनाये हैं सबबानरन संयुक्त सुना है हे श्रीराघव रावण जो संपूर्णजगत् को रोवावत है अरु सर्बराक्षस महापापीतिनकर राजा है अरु आपकर विरोधी है सर्वथा बिमुख है त्यहिकर मैं लघुभ्राता हौं ताते मैं सबप्रकारते महानीचहौं इहांयह अभिप्राय है कि आपसब उपायकर अभिमान त्यहितेरहितह्वैकै अरु सबप्रकारते दीनह्वैके श्रीरामचन्द्र की शरणभयो है ताको कार्पण्य शरणागत कही १ पुनिचराचरविषे व्याप्त श्रीरामचन्द्र को रूपजानिकै तिनसबते अनुकूलरहे सो विभीषणने रावणते कहा है श्रीरामचन्द्रके प्रसन्नहेतु ताको अनुकूल संकल्प शरणागत कही २ पुनि भगवत्प्रतिकूल माता पिता भ्राता दारा पुत्र मित्र इत्यादिकनकर त्यागकरै सोबिभीषण कीन है ताको प्रतिकूलवर्ज्जनशरणागतकही ३ पुनि सर्वोपायशून्य कही सर्वकर्म धर्मत्यागिकै अनन्य भावते श्रीराघवजी के शरणहोइ सो बिभीषणकीन है ताको आत्मसमर्पणशरणागत कही ४ पुनिसत्गुरुन अरु साधुनते आर्तदीन ह्वइकै यह कहै कि मेरीसुधि श्रीरघुनाथजीसे कराइदेहु तहां बिभीषण आर्तह्वइकै सबबानरनते पुकारिकै कहत हैं कि तुमसमीपीहौ श्रीरघुनाथजीते जनाइदेहु सो गोप्तृत्व शरणागत कही ५ पुनि श्रीरघुनाथजी सबप्रकारते रक्षाकरहिंगे यह दृढ़ विश्वास करिकै समीपको निर्भयह्वइकै प्राप्तिभये हैं महाविश्वासरूप

**असकहिकरतदंडवतदेखा तुरतउठेप्रभुहर्षविशेखा १ भुजबिशालगहिहृदयलगावा दीनबचनसुनिप्रभुमनभावा २ अनुजसहित**

ताकोरक्षिष्यतीति बिश्वास शरणागतकही ६ तहां प्रमाण है बाल्मीकीयेश्लोकआठ॥ रावणोनाम दुर्वृत्तोराक्षसोराक्षसेश्वरः तस्याहमनु जो भ्राता बिभीषणइतिश्रुतः १ अन्यच्च उपायेनैवसिद्ध्यतत्यिपायाबिबिधास्तथा इतियागबहानिस्तद्दैन्यंकार्प्पण्यमुच्यते २ पुनिबाल्मीकीये तमहंहेतुनिर्बाक्यैर्बिबिधैश्चान्यदर्शयन् साधुनिर्यात्युतांसातां रामयेति पुनः पुनः ३ अन्यच्च चराचराणिभूतानि सर्बाणिभगवद्वपुः अतस्तदानुकुल्यंमे कर्तव्यमितिनिश्चयः ४ पुनः वाल्मीकीये सोहंपुरुषितस्तेन दासवच्चावमानितः त्यत्क्वापुत्राश्चदाराश्च राघवंशरणंगतः ५ सर्वलोकशरण्याय राघवायमहात्मने निवेदयतमाक्षिप्रं बिभीषणमुपस्थितं ६ अन्यच्च अप्रार्थितोनगोपायेदितितत्प्रार्थनामतिः गोपायिताभवत्येव गोप्तृत्ववर्णनंस्मृतं ७ रक्षिष्यत्यनुकूलान्नइत्येवंसुदृढ़ामतिः सबिश्वासोभवच्चक्रीसर्बदुष्कृतिनाशनः ८ दुइग्रंथकेमतसे षड्प्रकारते शरणागत कहिआये हैं तामें एकआत्म समर्पण अंगी है सो बिभीषण को छइउ शरणागत पूर्णजानब ( ३७ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसनेसुन्दरकांडे बिभीषण शरणागतवर्णनंनामनवमस्तरंगः ९॥ ::

दोहा ॥ शरण बिभीषण आइ जब अंगीकृत प्रभुकीन। दशतरंगमहँकृपाप्रभु रामचरण अतिदीन ( १० ) त्राहि त्राहि असकहिकै बिभीषण ने साष्टांगदंडवत् कीन है तब हर्षिकै तुरंत उठतभये हैं ( १ ) दीनबचन सुनिकै अति मनमें भायो है बिशाल भुजते उठाइकै हृदय में लगावतभये हैं ( २ ) अनुज सहित मिलिकै ढिगबैठाइकै भक्त भयहारी प्रभुबचन बोलतेभये हैं ( ३ ) तब श्रीरामचन्द्र कहा हे लंकेश अपनी कुशल कहौ तुम्हार कुठाहर बास है देखिये तौ इहां यहध्वनि है कि जब यहि जीवकोश्रीरामचन्द्र मद मात्सर्य इत्यादिक ते रहित करते हैं तब अंगीकार करते हैं ताते यह समुझि परत है कि बिभीषण को अंगीकार कीन है उपरांत रावणको अंगीकार करिचुके काहेते ज्यहिलंकाके राज्यमद करिकै रावणने बिभीषणको निरादर कीन है सो राज्य श्रीरामचन्द्रने बिभीयणको दीनहैताते लंकेश कह्यो है अब रावण मदते रहित भयो है अरु बिभीषण को

**मिलिढिगबैठारी बोलेबचनभक्तभयहारी ३ कहुलंकेशसहितपरिवारा कुशलकुठाहरबासतुम्हारा ४ खलमंडलीबसहुदिनराती सखाधर्मनिबहैक्यहिभांती ५ भैंजानौंतुम्हारिसबनीती अतिशयनिपुणनभावअनीती ६ बरुभलबासनरककरताता दुष्टसंगजनिदेइबिधाता ७ अबपददेखिकुशलरघुराया जोतुमकीन्हजानिजनदाया ८ दो०॥ तबलगिकुशलनजीवकहँ सपन्यहुंमनबिश्राम**

राज्यमद न होइगो काहेते अब श्रीरामचन्द्र की प्रसादी राज्य बिभीषणपावाहै ( ४ ) हे सखे तुम रातिदिन खलमंडलीमें बसतहौ तुम्हार साधु कर्म कैसे निबहतहै ( ५ ) अरु तुम्हारि सबरीति मैं जानत हौं अतिशयनयकही नीति बिषे निपुणहहु अनीति तुमको नहीं भावै है ( ६ ) हेतात बरु नर्ककर बासभल है पर बिधाता दुष्ट संगति न देइ काहेते नर्कविषेकेवल शरीरको दुःखहै अरु पाप क्षीण होतजात है अरु दुष्टनकी संगति विषे मनक्रम बचनते क्लेशहोत है अरु परिणाम क्लेश कै वृद्धि है ( ७ ) तब बिभीषण कहते हैं हे श्रीरघुराय तुम्हार पदपंकज देखिकै अबमैं सबप्रकारते कुशलहौं जाते आपनजन जानिकै आपु दयाकीन है ( ८ ) दोहार्थ ॥ हे श्रीरामचन्द्र कृपा के समुद्र सर्बात्मक जबलगि कामनाजे हैं अर्थ धर्म काम यह त्रैवर्ग शोक मोह इत्यादिक के धाम हैं अरु तिनको तजिकै जबलगि तुम्हार पदपंकज नहीं भजत हैं तबलगि यहि जीवको स्वपन्यहु कुशल बिश्राम नहीं है ( ९ ) हे श्रीरामचन्द्र तबलगि हृदय विषे नानाप्रकारकेखललोभ मोह मत्सर मदमान इत्यादिक बसते हैं ( १० ) हे श्रीरामचन्द्र धनुषबाणलिहे जबलगि तुमनहीं बसते हौ तबलगि सबैब्यकार है ( ११ ) ममता कही मायाकृत जेहैं उत्तम मध्यम निकृष्ट पदार्थ तामें अपनपौ मानना सोममता सोई तरुण अंधकार है राग दोष उलूक तिनको सुखदाता है ( १२ ) तबलगि येजीव मनरूप तामें बसते हैं जबलगि हे प्रभु तुम्हार प्रताप सूर्य उरविषे नहीं बसत हैं तब लगि ये सब हैं ( १३ ) अब मैं आपुकर पदकमल देखिकै कुशलहौं समस्तभवकर भारमिटि गयो ( १४ ) बिभीषण कहते हैं हे कृपालु ज्यहिपर आपु अनुकूलकही प्रसन्नहोहु त्यहिको त्रिविधि शूल नहीं व्यापते हैं तीनिउशूल कौन हैं तीनिउताप अधिभूत अध्यात्म अधिदैवत अधिभूत कही जो जीवन करिकै उपाधिहोइ राजाचोर सिंहसर्प इत्यादि करिकै जो दुखहोइ यहदेह की अधिभूत

जबलगिभजतनरामपद शोकधामतजिकाम ९ चौ०॥ तबलगिहृदयबसतखलनाना लोभमोहमत्सरमदमाना १० जबलगिउरनबसतरघुनाथा धरेचापशायककरभाथा ११ ममतातरुणतमीअंधियारी रागद्वेषउलूकसुखकारी १२ तबलगिबसतजीवमनमाहीं जबलगिप्रभुप्रतापरबिनाहीं १३ अबमैंकुशलमिटेभवभारे देखिरामपदकमलतुम्हारे १४ तुमकृपालजापरअनुकूला ताहिनब्यापत्रिबिधिभवशूला १५ मैंनिशिचरअतिअधमसुभाऊ शुभआचरणकीन्हनहिंकाऊ १६ जासुरूपमुनिध्याननआवा त्यहिं

है अरु जो चित्त बुधि अहंकार ते काहूजीवको दुःख दीजिये सो अन्तर अधिभूत है किन्तु बाह्यान्तर दूनौं ते काहूजीवपर उपाधिकरी किन्तु कोई जीव बाह्यांतर अपने ऊपर उपाधिकरै सो अधिभूत पुनि अध्यात्म शरीर में ज्वर जूड़ी बरतोर अंगभंग इत्यादिक होइ किन्तु मनमें अनेक बासनाकरिकै खेदहोइ सो अध्यात्म तापपुनि अधिदेवत कही जो देवतनकरिकै विघ्नहोइ अतिवृष्टि अनावृष्टि अग्नि पवन जल इत्यादिक करिकै जो विघ्नहोइ अरु जो इन्द्रिनके देवतन करिकै विघ्नहोइ सो अधिदैवत है ये तीनिउ ताप शूलकही अतिदुःखदाई हैं सो तुम्हारी अनुकूलताते मिटिजात हैं पुनि तीनिउ शूलकही सुत बित लोक सुत जो पुत्रदारा इत्यादिक बित कही धन ऐश्वर्य इत्यादिक लोककही लोकमर्य्याद मान बड़ाई इत्यादिक यहतीनिउ कै बासना इक्षनाते सबशूल कही जन्ममरण के कारण हैं सो तुम्हारे अनुकूलते सबशूलनाश होइजात हैं ( १५ ) बिभीषण कहते हैं हेकृपालु मैं निशिचर हौं मोर अधम स्वभाव है अरु शुभआचरण एकौ नाहीं हैं ( १६ ) हे प्रभुतुम्हार स्वरूप मुनिनके हृदय में नहीं आवत है सो प्रभुमोको हृदय में लगाइ लीन है तहां आपुकैकृपा अरु मोरभाग्य दूनौंकिसूके कहनेयोग्य नहीं है ( १७ ) दोहार्थ ॥ ताते मेरी अहोभाग्य जे श्रीरामचन्द्र कृपा अरुसुखके पुंजजिनके चरणारविंद ब्रह्मा शिवादिक करिकै पूज्यमान हैं तिनचरणनको नेत्रनभरि मैंनेदेखा ( १८ ) श्रीरामचन्द्र कहते हैं हेसखे मेरेस्वभाव को कागभुशुण्डि महेश गिरिजा जानते हैं सोसुनहु ( १९ ) हेसखेतुमतौ मेरेनिजदासहौ जो ऐसेदुष्टन की संगति में अपने भजनविषे आरूढ़रहेउहै अरु जोकोई चराचरकर द्रोहीहोइ अरु भयकरिकै मेरीशरण तकिआवै ( २० ) हेसखे जो विश्वकर द्रोहीहोइ अरु भयकरिकै मोरिशरण तकिकैआवैहै त्यहिकर मद मोह कपट नानाप्रकारके छल सोसब उसके तजिकै सद्यकही शीघ्र अपने साधन के समान करिदेतहौं यह

प्रभुहर्षिहृदयम्वहिंलावा १७ दो०॥ अहोभाग्यममअमितअतिरामकृपासुखपुंज देख्यउंनयनबिरंचिशिव सेब्ययुगलपदकंज १८ चौ०॥ सुनहुसखानिजकहौंसुभाऊ जानभुशुंडिशंभुगिरिजाऊ १९ जोकोइहोइचराचरद्रोही आवैसभयशरणतकिमोही २० तजिमदमोहकपटछलनाना करौंसद्यत्यहिसाधुसमाना २१ जननीजनकबंधसुतदारा तनधनभवनसुहृदपरिवारा २२ सबकैममताताागबटोरी ममपदमनहिंबांधिबरिडोरी २३ समदर्शीइच्छाकछुनाहीं हर्षशोकभयनहिंमनमाहीं २४ अससज्जनममउरबसकैसे लोभीहृदयबसहिधनजैसे २५ तुमसारिखेसंतप्रियमोरे धरोदेहनहिंआननिहोरे २६ दो०॥ सगुणउपासकपरमहित

मेरो संकल्पहै इहां श्रीरघुनाथजी शरणागतकै मूर्त्तिकहाहै ( २१ ) अरुजननी जोहै माता जनकजो है पिता बंधुजेहैं पुत्रदारा जोहैं अपर कुटुम्बजोहै तनजोहै धनजोहे भवनजोहै मित्रजो है परिवारजे हैं ( २२ ) तहांतिनसब कै ममता कच्चातागहै त्यहिको बटोरिकै एकडोरी बनावै गांठीदैकै मेरे चरणविषे बांधिदेइ अभिप्राय यह है कि सबकैममतात्यागिकै मेरेचरणविषेममत्वकरै ( २३ ) अरु जे ऐसेमेरे अनन्यशरणहैं ते समदर्शी हैं सर्बजीव विषे एकदृष्टि हैं अरु समदर्शीको कछुइच्छानहीं है निकामहै अरुहर्ष शोक भय जिनके मनमें नहीं है ( २४ ) हे सखे ऐसो सज्जन मेरे हृदय में कैसे बसत है जैसे लोभीके हृदय में धनबसत है ( २५ ) अरु तुमसारिखे मेरे प्रियसंत जे हैं तिनके हेतु देह धरौ कही नरकी

ऐसी लीला धारण करतहौ आननिहोराहेतु नहीं है ( २६ ) दोहार्थ ॥ हे सखे जो मैं सगुण परब्रह्मरूपहौं जेमेरी उपासना करते हैं सो मोको परमहित हैं अरु निरंतरकही रतहैं मेरेनेमविषे दृढ़हैं ते नरमोको प्राण के समान प्रिय हैं अरु जिनके ब्राह्मणके चरण में प्रीति है अरु जो मेरो परम दिब्य परमप्रकाश गुण है सोई ब्रह्मव्याप्त जे त्यहिको जानते हैं ते संसारते निवृत्तह्वइकै मेरीकैवल्य मुक्ति को प्राप्त होते हैं ( २७ ) हेलंकेश मेरे साधुनविषे जेपरम दिव्य मेरेदासन विषे उत्तम अनेक लक्षण हैं सो हे बिभीषण तुमविषेसब हैं ताते तुम मोको परमप्रियहौ ( २८ ) श्रीरामचन्द्रके बचन बानर ऋच्छनके यूथके यूथ सुनिकै हर्षिकै बोलते हैं हे कृपाके बरूथ तुम्हारी जयहोय ( २९ ) तहां श्रीरामचन्द्रकै बाणी श्रवणनमें अमृत सानी सुनिकै विभीषण नहीं अघाते हैं ( ३० ) तब बिभीषण पदअम्बुज बारबार गहतभयो है अरु अपारप्रेम हृदय में नहीं समात है ( ३१ ) हे देव सचराचरके स्वामी सुनहु हे प्रणतपाल सबके उर अन्तर्य्यामीहौ ( ३२ ) मेरेउरविषे प्रथम कछु बासनारही है आपुके चरणारबिन्द बिषे सोईबासना

निरतनीतिदृढ़नेम तेनरप्राणसमानमम जिनकेद्विजपदप्रेम २७ चौ०॥ सुनुलंकेशसकलगुणतोरे तातेतुमअतिशयप्रियमोरे २८ रामबचनसुनिबानरयूथा सकलकहहिंजयकृपाबरूथा २९ सुनतविभीषणप्रभुकैबानी नहिंअघातश्रवणामृतजानी ३० पदअंबुजगहिबारहिबारा हृदयसमातनप्रेमअपारा ३१ सुनहुदेवसचराचरस्वामी प्रणतपालउरअंतरयामी ३२ उरकछुप्रथमबासनारही

अब प्रभुपदपंकज देखिकै नदी रूप ह्वइकै बही है तहां बिभीषणके जो कही कि प्रथम यहबासना रही है कि रावणको बधकराइकै मैं राज्यकरौं तो यह कहना नहीं सम्भवितहै काहेते कि बिभीषणकै परमभागवतनमें गिनती है अरु भागवत निर्बासिक होते हैं॥ प्रमाणंभारतेश्लोकएक ॥ प्रह्लादनारदपराशरपुंडरीकव्यासाम्बरीषशुकशौनकभीष्मकाद्याः॥ रुक्मांगदार्ज्जुनवशिष्ठबिभीषणाद्याः एतानहंपरमभागवतान्नमामि १ देखिये तौ शास्त्रनविषे यहप्रमाण है कि पूर्बापर विशेषण तहांग्रंथनके प्रकरणविषे पुनिश्लोक आदिअन्त विशेषकहावत है अरु मध्यमसामान्य कहावत है तहां यहश्लोकविषे प्रथमप्रह्लादकी गिनती है सो दानवबंशविषे अरु अन्तमें विभीषणको कहाहै सो राक्षसबंशविषे तिनदूनोंको विशेष भागवत कहा है काहेतेकिहिरण्यकशिपु अरु रावण ते द्वौ त्रैलोक्यविरोधी तिनकीसभाविये वैष्णवधर्मकरनिशान गाड़िदीनहै सो नाहीं हिल्यो है तेहीधर्मते प्रह्लाद बिभीषणके द्वारह्वइकै सहित परिवार दूनों बंश कृतार्थ भये हैं तहां बिभीषण के कहां बासना संभवतहै जामें स्फुरितहोइ ताते यह चौपाई को उहै अर्थ पुनि कही है उरकछु प्रथम बासना रही बिभीषण कहते हैं हे श्रीरामचन्द्र मेरे उरविषे आपुके चरण देखिबे की प्रथमकछुबासना रही है अब आपुके चरणारविंद देखिकै सो बासना महानदी रूप ह्वइकै प्रबाह चलीजाती है ऐसे आपुके चरणारबिन्दके दर्शनहैं ( ३३ ) हे कृपाल अब मोको अतिपावनि शिवके मनभावनि भक्तिदेहु ( ३४ ) हे पार्वती तब श्रीरामचन्द्र एवमस्तु कहिकै सो भक्ति दीन है तब भक्तिदकै समुद्रकर जल मांगतभये हैं ( ३५ ) हे सखे यद्यपि तुम्हारे लंकाके राज्यकी इच्छानहीं है तदपि मेरेदर्शन कर अमोघफल है ज्यहि राज्यकरिकै रावण तुम्हार निरादरकीन है सो राज्य मैं तुमको दैकै शुद्धकीन चाहतहौं ( ३६ ) असकहिकै पुनि श्रीरामचन्द्र समुद्र के जलते

प्रभुपदप्रीतिसरितसोबही ३३ अबकृपालनिजभक्तिपावनी देहुसदाशिवमनभावनी ३४ एवमस्तुकहिप्रभुरणधीरा माँगातुरतसिंधुकरनीरा ३५ यदपिसखातवइच्छानाहीं मोरदरशअमोघजगमाहीं ३६ असकहिरामतिलकत्यहिसारा सुमनवृष्टिनभईअपारा ३७ दो०॥ रावणक्रोधानलसरिसश्वाससमीरप्रचंड जरतविभीषणराख्यउदीन्ह्यउराजअखंड ३८ जोसंपतिशिवरावणहिदीन्हदियेदशमाथ सोसम्पदाविभीषणहिं-सकुचिदीन्हरघुनाथ ३९॥

* * * * *

बिभीषण के लंकाके राज्यकर तिलक करतेभये हैं तब ब्रह्मादिक देवताफूलनकी वृष्टि नभते करतेभये हैं ( ३७ ) दोहार्थ ॥ हे गरुड़ रावणकर क्रोध अग्नि के सरिश है अरु रावण कै श्वासा क्रोधभरी बचन सो पवन है त्यहिते बिभीषणजरतरह्यउहै त्यहिको श्रीरामचन्द्र राखिकै अखण्ड राज्य दीन है ( ३८ ) जो संपत्ति रावण ने शिवते अनेकबार शीश चढ़ाइ चढ़ाइपाई है सोई सम्पदा अरु अपनी भक्ति बिभीषणके आवतसंते सकुचिकै श्रीरघुनाथजी दीन है ( ३९ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुबविध्वंसने सुन्दरकांडे श्रीरामकृपाविभीषणप्रणिपत्यशरणागत परमानन्यवर्णनंनामदशमस्तरंगः १०॥ :: :: :: ::

दोहा ॥ दशअरुएकतरंग में मंत्रबूझिश्रीराम रामचरणमिलिसमुझिकै कहहुकरीसोकाम ११॥ हे उमा ऐसे प्रभुको छांड़िकै जो अपर कोई प्रभु मानिकै भजते हैं ते नर बिनाशृंग पूंछ केपशुहैं जिनके अपनेशरीर की रक्षाकर ज्ञाननहीं है ( १ ) देखिये तौ बिभीषण राक्षसबंश अरु रावण विरोधी त्यहिकरभाई त्यहिको आपन निजकही विशेष जनजानिकै आपनकीन है यह स्वभाव श्रीरघुनाथजीकर देखिकै ऋच्छ कपिवंशके मन में अतिभावत भयो है ( २ ) प्रभु कैसे हैं सर्बज्ञहैं सर्वउरबासी हैं अरु सर्बचराचर उनहीको रूप है अरु सर्बतेरहित उदासीन हैं ( ३ ) ते श्रीरामचन्द्र नीति के प्रतिपालक बचन बोलतेभये हैं कैसे हैं मनुजजे मनुष्य हैं तिनके हितकारके कारण हैं किन्तु मनुष्यरूप मनुजलीला करते हैं दनुजनके कुल तिनके नाशकरिबे हेतु ताते मनुजकारण कहा है अरु कारण तौं सबके हैं अरुदानव बंश जे सर्बजीवन के विरोधी तिनके कुलघालक हैं

असप्रभुछांड़िभजहिंजेआना तेनरपशुबिनुपूंछबिषाना १ निजजनजानिताहिअपनावा प्रभुसुभावकपिकुलमनभावा २ पुनिसर्वज्ञसर्ब्बउरबासी सर्वरूपसबरहितउदासी ३ बोलेवचननीतिप्रतिपालक कारणमनुजदनुजकुलघालक ४ सुनुकपीशलंकापतिबीरा क्यहिबिधिउतरिय जलधिगँभीरा ५ संकुलमकरउरगझषजाती अतिअगाधदुस्तरसबभांती ६ कहलंकेशसुनहुरघुनायक कोटिसिंधुशोषैतवशायक ७ यद्यपितदपिनीतिअसगाई विनयकरियसागरसनजाई ८ दो०॥ प्रभुतुम्हारकुलगुरुजलधिकहिहिउपायबिचारि बिनुप्रयाससागरतरिहि सकलभालुकपिधारि ९ चौ०॥ सखाकहीतुमनीकउपाई करियदैवजोहोइसहाई १०

( ४ ) श्रीरामचन्द्र बोलते भये हैं हे कपीश हे लंकेश हे अपर महाबीरहु सुनहु यह जो जलधि गम्भीर है त्यहिकेपार कौनीबिधि उतरिये ( ५ ) सो बिचारिकै कहहु काहे ते समुद्रबिषे मगर जे हैं सर्पजेहैं मीन इत्यादिक बड़ेबड़े भारी दीर्घशरीर अतिदुस्तर संकुल कही भरे हैं तहां त्यहिसिंधुको कैसेतरिये ( ६ ) तब लंकेश जे बिभीषण ते बोले हे रघुनायक तुम्हार एकबाण कोटिन समुद्र को शोषिसकै है ( ७ ) तब श्रीरामचन्द्र कहते हैं हेसखे यद्यपि जैसे तुमकह्यउ तैसे है तदपिजसनीति वेदगावते हैं तसकरिलेइ ताते सागरते प्रथमबिनयकरिलेई ( ८ ) दोहार्थ ॥ तब बिभीषणहर्षिकै बोलेहैं हेनाथ आपु कसनकहहु जलनिधि आपुके कुलगुरु कही श्रेष्ठहै तातेबिचारिकै उपाइकहिहि तब संपूर्णसेनाकी धारिबिना प्रयासहि उतरिजाई ( ९ ) श्रीरामचन्द्र कहते हैं हे सखे तुमनीक उपाइकह्यो है जो दैवसहायकरै तौ यह बात करी ( १० ) तब यह मंत्र लक्ष्मण के मनबिषे नहीं भावतभयो है श्रीरामचन्द्र के बचनसुनिकै अतिदुःखहोतभयो है ( ११ ) तब लक्ष्मणजी बोले हे नाथ दैवकर कवनभरोस है मोको आज्ञाहोइ मैं मनमें रोषकरों समुद्रशोषिजाइ ( १२ ) यह तौ कादर आलसिनकै बात है कि दैव करीसो होई ( १३ ) यहबातसुनिकै रघुबीर बिहँसिकैबोले हे तात धीर्य्यधरहु यह बात जसतुम

मंत्रनयहलक्ष्मणमनभावा रामवचनसुनिअतिदुखपावा ११ नाथदैवकरकवनभरोसा शौषैसिंधुकरियमनरोसा १२ कादरमनकरएकअधारा दैवदैवआलसीपुकारा १३ सुनतबिहँसिबोलेरघुवीरा ऐसइकरबधरहुम्नधीरा १४ असकहिप्रभुअनुजहिसमुझाई सिंधुसमीपगयेरघुराई १५ प्रथमप्रणामकीन्हशिरनाईपुनिबैठेतटदर्भडसाई १६ जबहिंविभीषणप्रभुपहँआये पाछेरावणदूतपठाये १७ दो०॥ सकलचरिततिनदेख्यउ

धरेकपटकपिदेह प्रभुगुणहृदयसराहत शरणागतपरनेह १८ चौ०॥ प्रकटबखानहिंरामसुभाऊ अतिसप्रेमगाबिसरिदुराऊ १९ रिपुकेदूतकपिनतबजाने सकलबांधिकपीशपहँआने २० कहसुग्रीवसुनहुसबबन्दर अंगभंगकरिपठवहुनिशिचर २१ सुनिसुग्रीवबचनकपिधाये बाँधिकटकचहुँपासफिराये २२ बहुप्रकारमारनकपिलागे दीनपुकारततदपिनत्यागे २३ जोहमारहरनासाकाना त्यहिकोशलाधीशकरआना २४ सुनिलक्ष्मणतबनिकटबोलाये दयालागिहँसितुरतछुड़ाये २५ रावणकरदीन्ह्यउयहपाती लक्ष्मणबचनबाँचुकुलघाती २६ दो०॥ कह्यहुमुखागरमूढ़सन ममसंदेशउदार सीतादेइमिलहुनतुआवाकालतुम्हार २७ चौ०॥ तुरतनाइलक्ष्मणपदमाथा चलेदूतबरणतगुणगाथा २८ कहतरामयशलंकहिआये

कह्यउ है तैसेकरब ( १४ ) यहिप्रकारते अनुजकोसमुझाइकै समुद्र के किनारे जात भये हैं ( १५ ) श्रीरघुनाथजी प्रथमसमुद्रके प्रणामकरिकै कुशासन डारिकै बैठतभये हैं ( १६ ) हे पार्वती जब विभीषण श्रीरामचन्द्र के पास आयोहैत्यहि के पाछे रावणने शुकसारणदुइदूत पठये हैं ( १७ ) दोहार्थ ॥ ये द्वौदूत कपट करिकै बानरकारूपधरिकै सब चरित्र देखिकै पुनिप्रकटह्वइकै प्रभुकेगुण जो शरणागत के नेहते अंगीकार करना सो सराहते हैं ( १८ ) आगे यह दोहाते अरु २ दोहाताईं अक्षरार्थै सिद्धिजानब॥ इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेसुन्दरकांडेसुभगनीतिवर्णनन्नामएकादशस्तरंगः ११॥ :: :: :: ::

दोहा ॥ रावण रावण दूत के प्रतिउत्तरसंबाद रामचरणद्वादश लहरि गयेद्वौविगत विषाद ( १२ ) हे नाथ जैसे कृपाकरिकै पूंछ्यउ है तैसेक्रोध तजिकै हमारकहामानहु ( १ ) हेनाथ जबतुम्हार अनुज मिलाजाय तब जातहि संते श्रीरामचन्द्र लंकाके राज्यकर तिलककरिदीन है ( २ ) पुनि तुम्हार

रावणचरणशीशतिननाये २९ बिहँसिदशाननपूंछीबाता कहसिनशठआपनिकुशलाता ३० पुनिकहुखबरिबिभीषणकेरी जासुमृत्युआईअतिनेरी ३१ करतराजलंकाशठत्यागी होइहिजवकरकीटअभागी ३२ पुनिकहुभालुकीशकटकाई कठिनकालप्रेरितचलिआई ३३ जिनकेजीवनकररखवारा भयउमृदुलचितसिंधुबिचारा ३४ कहुतपसिनकैबातबहोरी जिनकेहृदयत्रासअतिमोरी ३५ दो०॥ कीभइभेंटकिफिरिगये श्रवणसुयशसुनिमोर कहसिनरिपुदलतेजबल बहुतचकितचिततोर ३६॥ * * * * * *

चौ०॥ नाथकृपाकरिपूंछ्यहुजैसे मानहुकहाक्रोधतजितैसे १ मिलाजाइजबअनुजतुम्हारा जातहिरामतिलकत्यहिसारा २ रावणदूतहमहिंसुनिकाना कपिनबांधिदीन्हेदुखनाना ३ श्रवणनासिकाकाटनलागे रामशपथदीन्हीतबत्यागे ४ पूंछ्यहुनाथरामकटकाई बदनकोटिशतबरणिनजाई ५ नानाबरणभालुकपिधारीबिकटाननबिशालभयकारी ६ ज्यहिपुरदह्यउहत्यउसुततोरा सकलकपिनमहंत्यहिबलथोरा ७ अमितनामभटकठिनकराला अमितनागबलबिपुलबिशाला ८ दो०॥ द्विविदमयंदनीलनल

दूतसुनिकै कपिनहमको बांधिकै नानाप्रकारके दुःखदीन है ( ३ ) जबहमार नाककान काटन लागे तबहम कोशलाधीशकै दोहाई दीन है तब छोड़ि दिहिनिहै ( ४ ) हे नाथ तुम श्रीरामचन्द्र को कटकपूंछ्यहु है सो कोटिनबदनकरिकै शेष शारदाकहा चाहैं तौ नहीं कहिसकैं हैं ( ५ ) अरु कपिन भालुनकी जो धारि कही सेना है सो नानाबर्ण कै है अरु जिनके दीर्घ शरीर हैं अरुमहाबिकट मुखहैं अरु महाभयको करत हैं ( ६ ) हे रावण ज्यहँबानरने तुम्हारे पुरको दह्यउहै अरु तुम्हारे पुत्र को मारयउहैसो सबकपिन में लघु है

इहां श्रीरामचन्द्र कर प्रताप अति सूचित कीन है ( ७ ) अमित सेना है अमितनाम हैं अमितभट हैं बड़े बड़े कठिन कराल हैं अरु अनेकबीर एक एक वीरनके अनेकहाथिन के बल हैं ( ८ ) दोहार्थ ॥ अरु द्विविद मयंद नीलनल अङ्गद अरु बिकटाक्ष जो हैं दधिमुख केहरि निशठ शठ जाम्बवंत येसब बलकेराशि हैं ( ९ ) इत्यादिक अनेक कपिनके ईश हैं तेसब सुग्रीव के समान हैं इनसम नानाकही अगणित कोटिन कोगनै है ( १० ) श्रीरामचन्द्रके प्रतापते तिनके अतुलित बलकही समूहबल है एक एकभट त्रैलोक्य को तृणसमान गनते हैं ( ११ ) हे दशकन्धर असमैं श्रवणते सुन्यउँ है कि श्रीरघुनाथजीकै सेना बानर ऋच्छनकी जो है तिनविषे अठारहपद्म यूथपकही यूथनके पतिहैं अरुजेते यूथ हैं तेते एकयूथ एक अक्षौहिणी दूसर दुइ अक्षौहिणी तीसर तीनि अक्षौहिणी हैं चौथे चारि अक्षौहिणी हैं पांचये पांच अक्षौहिणी हैं छठयें छह अक्षौहिणी हैं सातवें सात अक्षौहिणी हैं आठवें आठ अक्षौहिणी हैं नवयें

**अंगदादिबिकटासि दधिमुखकेहरिनिशठशठजामवंतबलरासि ९ चौ०॥ येकपिसबसुग्रीवसमाना इनसमकोटिनगनैकोनाना १० रामकृपाअतुलितबलतिनहीं तृणसमानत्रैलोक्यहिगिनहीं ११ असमैंश्रवणसुनादशकंधर पदुमअठारहयूथपबंदर १२ नाथकटक**

नव अक्षौहिणी हैं दशयें दश अक्षौहिणी हैं ग्यारहें ग्यारह अक्षौहिणी हैं बारहें बारह अक्षौहिणी हैं तेरहें तेरह अक्षौहिणी हैं चौदहें चौदह अक्षौहिणी हैं पन्द्रहें पन्द्रह अक्षौहिणी हैं सोरहें सोरह अक्षौहिणी हैं सत्रहें सत्रह अक्षौहिणी हैं अठारहें अठारह अक्षौहिणी हैं अरु यहीप्रमाणते कोई यूथ में कछु घटिहै कोई यूथमें कछुबढ़िहै अरु कोईयूथ कहे हैं सोहै अरु अपरउपसेना ताते अनन्त हैं अरु अठारह पदुम यूथप तिनके गिनतीकी संख्या कहते हैं १ एकतेदशगुणदश १० त्यहिकरदशगुण सौ १०० त्यहिकरदशगुणहजार १००० त्यहिकरदशगुणअयुतकहीदशहजार १०००० त्यहिकरदशगुणलक्ष १००००० त्यहिकरदशगुणनियुतकहीदशलक्ष १०००००० त्यहिकरदशगुणकोटि १००००००० त्यहिकरदशगुणदशकोटि १०००००००० त्यहिकरदशगुणअर्बुद १००००००००० त्यहिकरदशगुणदशअर्बुद १०००००००००० त्यहिकरदशगुणखर्ब १००००००००००० त्यहिकरदशगुणदशखर्ब १०००००००००००० त्यहिकरदशगुणनील १००००००००००००० त्यहिकरदशगुणदशनील १०००००००००००००० त्यहिकरदशगुणपदुम १००००००००००००००० ऐसे अठारहपदुमयूथप हैं यह संज्ञा बेदने जीवन के जानबे के हेतु कही है नतु असंख्य हैं तहां एक एक यूथप त्रैलोक्य जीतिबे को सामर्थ्य है ( १२ ) हेनाथ श्रीरामचन्द्रके कटकमें ऐसो कोईवानर नहीं है जो रणमें तुमको न जीतिसकै ( १३ ) परमक्रोधते सब हाथ मींजते हैं पर श्रीरघुनाथजी आज्ञा नहीं देते हैं ( १४ ) कैसे वानर हैं कि सहितझष अरु ब्यालके समुद्र को पानकरिकै शोषिलेहिं खाइजाहिं अरु कुधर जे विशाल पर्वत हैं तिनको नखनते फोरिकै चूर चूर करिडारैं ( १५ ) ऐसेसब नरकहते हैं कि श्रीरघुनाथजी हमको आज्ञा देहिं तौ दशशीश को मर्दिकै गर्दमें मिलाइ देहिं ( १६ ) अरु ऐसेकहिकै गर्ज्जते हैं अरु तर्जहिं कही क्रोध करिकै

**महँसोकपिनाहीं जोनतुमहिंजीतहिरणमाहीं १३ परमक्रोधमींजहिंसबहाथा आयसुपैनदेहिंरघुनाथा १४ शोषहिसिंधुसहितझषब्याला फोरहिंनखधरिकुधरविशाला १५ मर्दिगर्दिमिलवहिंदशशीशा ऐसेबचनकहैंसबकीशा १६ गर्ज्जहिंतर्ज्जहिंसहजअशंका मानहुंग्रसनचहतहैंलंका १७ दो० ॥ सहजशूरकपिभालुसब पुनिशिरपरप्रभुराम रावणकोटिनकालकहँ जीतिसकहिंसंग्राम १८ चौ०॥ रामतेजबलबुधिबिपुलाई शेषसहसशतसकहिंनगाई १९ सकशरशोषिएकशतसागर तवभ्रातहिंपूंछेउनयनागर २० तासुवचनसुनिसागरपाहीं मांगतपंथकृपामनमाहीं २१ सुनतवचनबिहँसादशशीशा जोअसिमतिसहायकतकीशा २२ सहज**

कूदतेहैं मानहुं लंकाको ग्रसि लीन्ह चाहत हैं ( १७ ) दोहार्थ ॥ हे रावण भालु कपि सहजहि शूरहैं पुनि उनकेऊपर प्रभु जे श्रीरामचन्द्र तिनकर बलहै हेरावण कोटिनकालको संग्राम में जीतिसकैवालेहैं किन्तु जो काल कोटिन रावणस्वरूप बनिकैआवैंतौ एकक्षणमें सबको जीतिलेहिं ( १८ ) हेरावण श्रीरामचन्द्र कर तेज बल बुद्धि बिपुल है शेषशारदा जो सौकोटिहोहिं तौ नहीं कहिसकते हैं ( १९ ) अरु एकबाणके मारेते सैकरन सागर शोषिजाहिं परऐसे नीतिमान् हैं कि तुम्हारेभ्राता ते पूंछतभये हैं ( २० ) तब बिभीषणने कहा कि समुद्र ते राह मांगिलीजिये तेसमुद्रकै मर्य्याद राखिबेहेतुऐसे कृपालुहैं कि समुद्र के तटपर बैठिकै राहमांगते हैं ( २१ ) यह बचनसुनिकै रावण बिहँसतभयो है जोऐसीमति है तब तौ बानरकै सहाय लीन्हे हैं ( २२ ) रावण कहत है देखिये तौ सहजभीरु कही मेरे भयते डेराइकै सब वचनन की दृढ़ताकरिकै सागरते मचलाई कही धन्नैबैठे हैं हँसिकै रावण कहत है कि जो सागर के धन्ने परे हैं तौ हम इतनेहीमें उनकर बल प्रताप तेज पौरुष बुद्धि जानिगये हैं बहुत काकहैंगे ( २३ ) हे मूढ़ तैं वृथाबड़ाई का करत है रिपुके बलबुद्धिकै थाह मैं पाइचुक्यउँहौं ( २४ ) रावण कहत है मैं सबमर्म्म जानि चुक्यउँहौं काहेते कि जो बिभीषण मेरे भयकरिकै ग्रसित इहां से भागिगयो है सो तौ जिनको मंत्रीभयो है तिनकी बिजयबिभूति कहांतक होइगी कछु नहीं होयगी ( २५ ) हेपार्वती रावणके खलमयबचनसुनिकै दूतनकेरिसबढ़ीहै तेहीसमयलक्ष्मणकैपत्रिकाकाढ़तभये हैं ( २६ ) हेनाथ यह पत्रिका रामानुजकही लक्ष्मणने दीन्ही है सोबांचिकै अपनी छाती जुड़ावहु ( २७ ) तबबिहँसिकै रावण बामहाथबिषेपत्रिकालेतभयो है बैरीकैपत्रिका जेबैरी हैं तेबामै हाथबिषेलेते हैं पुनि जो शठरावणहै सो

भीरुकरुवचनदृढ़ाई सागरसनठानीमचलाई २३ मूढ़मृषाकाकरसिबड़ाई रिपुबलबुद्धिथाहमैंपाई २४ सचिवसभीतबिभीषणजाके विजयबिभूतिकहां लगिताके २५ सुनिखलवचनदूतरिसबाढ़ी समयविचारिपत्रिकाकाढ़ी २६ रामानुजदीन्हीयहपाती नाथबँचाइजुड़ावहुछाती २७ बिहँसिबामकर लीन्ह्यउरावन सचिवबोलिशठलागबँचावन २८ दो०॥ बातनमनहिंरिझाइशठ जनिघालसिकुलखीश रामविरोधनउबरिसक शरणविष्णुअजईश २९ तजिअभिमानकिअनुजइव प्रभुपदपंकजभृंग होहिंरामशरअनलखलजनिकुलसहितपतंग ३० चौ०॥ सुनतसभयमनमुखमुसुकाई कहतदशाननसबहिंसुनाई ३१ भूमिपराकरगहत

पत्रिकाको मन्त्रीबोलाइकै बँचावतभयो है ( २८ ) दोहार्थ॥ मंत्रीपत्रिकावांचिकै सुनावत भयो है यह लिखा है कि हेशठरावण तैं अपनी बातनते अपने मनको रिझावतहसि अपने कुलकर नाशजनिकरसि श्रीरामचन्द्र के विरोध ते तोर उबार जो कदाचित् ब्रह्मा विष्णु शिवके शरणागत जायगो नहीं है ( २९ ) कि तौ अभिमानको छोंड़िकै अपने अनुजकीनाई श्रीरामचन्द्र के पदपंकजविषे अपने मनको भृङ्गकरिकै भजन करु मिलुआइ आपन कल्याण करु नहीं तो हेशठ श्रीरामचन्द्रकरबाण महाअनलरूप त्यहिविषे अपने कुलको पतंग जनिकरसि एकबाणविषे तोहिं सुद्धाकुल भरि भस्म ह्वइजाहिगो ( ३० ) पत्रिकासुनिकै रावण अपने हृदय में भयमानिकै मुसुकाइकै सबको सुनाइकै बोलतभयो है ( ३१ ) देखिये तौ भूमिमें परा है अरु आकाश को गहाचाहत है तैसेलघुतापसकर बागबिलास है ( ३२ ) तब शुकदूत कहत है हे नाथदृष्टांत तुम सत्यकह्यउहै पर प्राकृतिक अभिमानको छोड़िकै समझहु ( ३३ ) हे नाथ क्रोधपरिहरिकै हमार बचन सुनहु श्रीरामचन्द्रजी ते विरोध त्यागिदेहु ( ३४ ) हे रावण तुमतौ पण्डितहौ जानतेहौ यद्यपि श्रीरघुनाथजी अखिल ब्रह्माण्डकेईश हैं तदपि अस सरलस्वभाव है कि दीन को अति हितकारते पूंछते हैं अरु निहाल करिदेते हैं ( ३५ ) हे नाथ तुम्हारे मिलतसंते श्रीरघुनाथजी अतिकृपा करहिंगे अरु तुम्हारे अपराध एकौ उरमें न धरहिंगे ( ३६ ) पुनि शुकसार कहते हैं हे प्रभु जनकसुता श्रीरघुनाथजीको देहु इतनाहमार कहामानहु ( ३७ ) हे पार्वती जब शुकने वैदेहीके देबेको कह्यो तब रावणशठ तिनकोलात मारिकै दूरि करदेतभयो है तहां रावण सबकैकही सबसुनत है सबसहत है पर जबकोई श्रीजानकी के देबेको कहत है

अकाशा लघुतापसकरबागबिलाशा ३२ कहशुकनाथसत्यसबबानी समुझहुछांड़िप्रकृतिअभिमानी ३३ सुनहुवचनममपरिहरिक्रोधा नाथरामसनतजहुविरोधा ३४ अतिकोमलरघुवीरसुभाऊ यद्यपिअखिललोककरराऊ ३५ मिलतकृपातुमपरप्रभुकरहीं उरअपराधनएकौधरहीं ३६ जनकसुतारघुनाथहिदीजै यतनाकहामोरप्रभुकीजै ३७ जबत्यइँकहादेनबैदेही चरणप्रहारकीन्हशठतेही ३८ नाइचरणशिरचलासोतहँवां कृपासिंधुरघुनायकजहँवां ३९ करिप्रणाममनिजकथासुनाई रामकृपाआपनिगतिपाई ४० ऋषिअगस्त्यकरशापभवानी राक्षसभयउरहेउमुनिज्ञानी ४१ बंदिरामपदबारहिंबारा मुनिनिजआश्रमकहँपगुधारा ४२

त्यहिको दण्डदैकै निकासिदेत है काहेते कि यह मनमें बिचारिकै कि श्रीजानकीजी करिकै मैं आपन कल्याण सिद्धान्त कीन है अरु तिनको ये देनेको कहते हैं ताते तिनकर त्यागकरत है ( ३८ ) तब शुकसारन रावण के चरण में माथनाइकै श्रीरघुनाथजी के इहां चलतभये हैं रावणके माथ क्यों नाये कि बड़ी कृपाकीन है अरु राजा हैं ( ३९ ) तब श्रीरामचन्द्रके साष्टांग दण्डवत्करिकै अपनी समस्त गाथा सुनावतभये हैं तब श्रीरामचन्द्र कृपाकरिकै अपनी भक्तिदैकै यहकहा कि हे मुनि अपने आश्रम को जाहु अन्त में हमको प्राप्तहोहुगे ( ४० ) हे भवानी ये दूनों ज्ञानी मुनिरहे हैं कोई समयविषे इनके आश्रमविषे अगस्त्य मुनिगये रहैं तहां दूनों ने अपने ज्ञान के मानते अगस्त्य को उठिकै आदर नहीं कीन है तब अगस्त्यजी शापदीन है कि तुम दोऊमिलि राक्षस होहुजाय तबदोऊ आर्त्त भये हैं पुनि अगस्त्यमुनि ने कहाकि त्रेताकेचौथे चरणविषे परब्रह्म श्रीरामचन्द्र अवतार लेहिंगे तिनकोमिलिकै तुमभक्तिको प्राप्तहोहुगे तहां यह समुझिपरत है कि ज्ञानिन कै मुक्ति जब बहुत जन्म धरहिंगे ता उपरान्त श्रीरामचन्द्र कृपाकरिकै अपनी भक्ति देहिंगे तब ज्ञानिनकै मोक्षहोगी ( ४१ ) तब श्रीरामचन्द्रकर चरणारविंद बारहिंबार बन्दिकै भक्तिबर पाइकै आज्ञापाइ दोऊमुनि अपने पूर्व आश्रम को जातभये हैं ( ४२ ) दोहार्थ॥ हे गरुड़ जब तीनिदिन बीति गये हैं तब रामचन्द्र कोप करिकै बोले कि यहजड़ समुद्र नहींमानत है हे भाई भयबिना प्रीति नहीं होति है ( ४३ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने सुन्दरकाण्डेदूतरावणसम्बादेद्वादशस्तरंगः १२ ॥ :: :: ::

दोहा ॥ दशअरुतीनितरंग में गयोसिंधुकहिबात रामचरणसम्मतभयोरचहुसेतुसरसात ( १३ ) हे लक्ष्मणजी हमारो धनुर्वाणलाओ अग्निबाण

दो०॥ विनयनमानतजलधिजड़ गयेतीनिदिनबीति बोलेरामसकोपतब भयबिनुहोइनप्रीति ४३॥ * * *

लक्ष्मणबाणशरासनआनू शोषैबारिधिविशिखकृशानू १ शठसनविनयकुटिलसनप्रीती सहजकृपणसनसुंदरिनीती २ ममतारतसनज्ञानकहानी अतिलोभीसनविरतिबखानी ३ क्रोधिहिसनकामिहिंहरिकथा ऊषरबीजबयेफलयथा ४ असकहिरघुपतिचापचढ़ावा

समुद्र सोखिलेइ ( १ ) काहेते शठकही समुझबै नकरै त्यहिसेकवनिउँ बिनतीकरी तौवृथा है अरु कुटिलकही जिनकै ढेढ़ी बचन टेढ़ीकरतूति टेढ़ै मन जो काहूको न रुचै अरु इहां उहांकै चुगुली करना ऐसेशठनते जोमिताई प्रीतिकरै तौ वृथा है अरुसहजै जेकृपणकही जोकाहूकर प्राणौजात होइ अरु एकदमड़ी दियेते चलिजाइतौ न देहिं अरु सामर्थ्य सैकरनकैहै तिनते जोकौनो सुनीति कहिये तौ वृथा है ( २ ) जैसे ममताकही जे पुरुष सुतदारा धन धाम देइ इत्यादिकन बिषे अच्छीतरह ते अपनपौ मानिकै ममताकिहे हैं अरु तिनते ज्ञानकै कथा कहिये सो वृथा है और अति लोभी ते बिरति कथा का बखाननाव्यर्थ है ( ३ ) अरु जे क्रोधी हैं तिनते समताबुद्धि कहिये कि सर्बजीव बिषे समबुद्धिकरिये क्रोधिनते असकहना वृथा है अरु कामी जे पुरुष हैं तिनते हरिकै कथा कहनावृथा है येसबकैसे हैं जैसे ऊसर में बीजबोयेते वृथा है ( ४ ) असकहिकै श्रीरघुनाथजी

चापचढ़ावत भये हैं तब लक्ष्मण जी प्रसन्नभये हैं यहमत नीकलाग है ( ५ ) तब श्रीरामचन्द्र करालविशिख जो अग्निबाण त्यहिको संधान करतभये हैं सन्धान करतसन्ते समुद्र के बाहर अरु भीतर ज्वाला उठतिभई है ( ६ ) तब समुद्र को जल बनायतप्त ह्वइगयो है मकर उरग झषगण इत्यादिक अनेकजंतु अकुलाइउठे हैं जरेजातेहैं तब यह अपनीदशा समुद्र देखतभयो है ( ७ ) जब ब्राह्मणकर रूपधरिकै कंचनकेथार विषे अनेक रत्नभरिकै मानको छांड़िकै तुरन्त श्रीरामचन्द्र के समीप आइकै भेंटधरत भयो है ( ८ ) दोहार्थ॥ काटेतेकदली फरै है कोटि यत्नतकोऊसींचे हे पार्बती केलाकाटे हीते फिरि उत्पन्नह्वइकै फरत है अरु एकबार जो फरिगयो है फेरि कोटि यत्नते सींचहु तौ वह पेड़ नहीं फरेहै तैसे नीचजन जेहैं ते नहींमानते हैं डाटेकही दंडदिहेहीते मानते हैं ( ९ ) तब सभयकही भयसमेत प्रभुकेचरण गहत भयो है अरु हाथ जोरिकै कहतहै हेनाथमैं अवगुण

यहमतलँक्ष्मणकेमनभावा ५ संधान्यउप्रभुविशिखकराला उठीउदधिउरअंतरज्वाला ६ मकरउरगझषगण अकुलाने जरतजंतुजलनिधिजबजाने ७ कनकथारभरिमणिगण नाना विप्ररूपआयेतजिमाना ८ दो०॥ काटेहितेकदलीफरै कोटियतनकरिसींच विनयनमानखगेशसुनु डाटेतेनवनीच ९ चौ०॥ सभयसिंधुगहिपदप्रभुकेरे क्षमहुनाथसबअवगुणमेरे १० गगनसमीरअनलजलधरणी इनकैनाथसहजजड़करणी ११ तवप्रेरितमायाउपजाये सृष्टिहेतुसबग्रंथनगाये १२ प्रभुआयसुज्यहिंकहंजसअहई सोत्यहिभांतिरहैसुखलहई १३ प्रभुभलकीन्हमोहिंसिखदीन्हीं मर्य्यादापुनितुम्हरीकीन्हीं १४ ढोलगंवारशूद्रपशुनारी

कर भाजनहौं अरु तुम कृपालु हौ ताते मोरअपराध क्षमाकरहु ( १० ) हेनाथ आकाश पवन अग्नि जलधरणी इनकैसहजहि जड़करणीहै ( ११ ) हे प्रभु तुम्हारी आदिमाया इनको उपजायेहै पृथिवी अप तेज वायु आकाश तीनिउँगुणये सब जैसी आपकी आज्ञा अनादिहिते हैं तौनीरीति सब चलेजाते हैं कोई सात्त्विक में कोईराजसमें कोई तामसमें यह त्रिगुणमय तुम्हारीबिभूति है तहां मोकोजसआपुजल जड़कीन है तसमैं हौंसृष्टिके हेतु ऐसा सबग्रन्थोंने गानकिया है ( १२ ) आगेतेरहकै चौपाई अक्षरार्थै जानब अरु हे प्रभु जोयह शिक्षा मोकोदीन है सो अतिनीककीनहै अग्निबाणते मेरीजड़ता नाशकरिदीन है अब मैं शुद्धभयों हौं ताते आपुके दर्शनभये हैं ताते मैं धन्यहौं यहमर्य्यादा आपुकैदीनि है जो आपुकी इच्छाहोंइ सो मैं करौं ( १४ ) हे प्रभु ढोलजेहैं गँवारजे हैं शूद्रजेहैं पशुजे हैं स्त्रीजे हैं इत्यादिक ये सब ताड़नाके अधिकारी हैं ताहीते शुद्धरहते हैं ताते‌मोको जो दण्डदीन है सो कृपाकीन्ह है ( १५ ) हे प्रभु तुम्हारे प्रतापते मैं सूखिजाब अरु कटक उतरिजाइहि पर मोरिबड़ाई न रही ( १६ ) हे प्रभु तुम्हारी आज्ञा अपेल वेदगावते हैं जो आपुकीइच्छाआवै सो करहु ( १७ ) दोहार्थ॥ तब समुद्र के आर्त्तवचन सुनिकै श्रीरामचन्द्र बोले हेतात सो उपाय बतावहु जातेकटक उतरै ( १८ ) हेनाथनलनील जे द्वौभाई हैं तिनबाल अवस्था बिषे मुनिकै आशीर्वाद पाइनिहै ( १९ ) कौन आशीर्बाद पाइन है इनके छुयेते पर्वत जल में न डूबें ताते इनको आज्ञादीनजाइ ये मोरे ऊपर पर्वतकर सेतुबांधिदेहिं तुम्हारे प्रतापते कटक उतरिजाइ ( २० ) अरुआपुको प्रतापहृदय में

सकलताड़नाकेअधिकारी १५ प्रभुप्रतापमैंजाबसुखाई उतरहिकटकनमोरिबड़ाई १६ प्रभुआज्ञाअपेलश्रुतिगाई करहुसोवेगिजोतुमहिं सोहाई १७ दो०॥ सुनतविनीतिवचनअति कहकृपालुमुसुकाय ज्यहिविधिउतरैकपिकटक तातसोकहहुउपाय १८ चौ०॥ नाथनीलनलकपिदोउभाई लरिकाईऋषिआशिषपाई १९ तिनकेपरसकियेगिरिभारे तरिहहिंजलधिप्रतापतुम्हारे २० मैंपुनिउरधरिप्रभुप्रभुताई करिहौंबलअनुमानसहाई

यहिबिधिनाथपयोधिबँधाई ज्यहिंयहसुयशलोकतिहुंगाई २२ यहिशरममउत्तरतटबासी हतहुनाथखलगणअघरासी २३ सुनिकृपालुसागरमनपीरा तुरतहिंहरीरामरणधीरा २४ देखिरामबलपौरुषभारी हर्षिपयोनिधिभयोसुखारी २५ सकलचरितकहिप्रभुहिसुनावा चरणबंदिपाथोधिसिधावा २६॥ हरिगीतिकाछंद ॥

धरिकै मैंभी अपनेबलके अनुमान सहायकरौंगो ( २१ ) हेनाथ यहिप्रकारते पयोधिबँधाइय ज्यहिते आपुकर सुयशतीनिहुं लोकमें गानकरकैकृतार्त्थ होहिंगे ( २२ ) हेनाथ ज्यहिबाणते मोकोशिक्षा कीन है सो आपकरबाण अमोघसिद्ध है तातेमोरे उत्तरतटविषे माड़वारदेश है तहां बड़ेपापी नरहैं यहिबाणते तिनको मारिये ( २३ ) हे पार्वती कृपालु श्रीरामचन्द्रने सागरकैपीड़ासुनिकै ताहीबाणते माड़वारके पापिनको नाशकरिदीन है वे जबतब समुद्र को कौनिउँरीति से पीड़ादेतरहे हैं सोपीड़ा कृपालुने हरिलीन्ह है ( २४ ) तब श्रीरामचन्द्रकर अतिभारी पौरुषदेखिकै पयोनिधि अतिसुखीभयो है ( २५ ) सेनापार उतारिबेकर सबचरित्र प्रभुको सुनायकै चरणबन्दिकैभक्ति वरदानलैकै समुद्र विदाभयो है ( २६ ) हरिगीतिकाछन्दार्थ ॥ समुद्रने निजभवनको गवनकीन्ह है यहमत श्रीरामचन्द्रको भावतभयो है यह श्रीरामचन्द्रकरचरित्र संपूर्ण कलिमल जो जन्ममरणको क्लेश त्यहिको हरणहार किंतु कलिजो कलियुग त्यहिकोमल जो पाप सोसमयसमय चारियुगबिषे बर्त्तमानहोत है सतयुगमेंकहूं किंचिन्मात्रत्रेतामें किंचित् अधिक द्वापर में कछु अधिक कलियुग में संपूर्ण तिनसबको श्रीरामचरित्र नाशकरैहै सो रामचरित्रगोसाईं तुलसीदास कहते हैं कि श्रीरामचरित अपार है अपनीमतिके सरिशअपनीमन कर्मबाणीके पवित्रहेतु गानकीन है ( २७ ) श्रीरघुवर के गुणगण कैसे हैं संपूर्ण सुखको भवन हैं अरु संपूर्ण संशयकर शमनकर्त्ता हैं अरु संपूर्ण दुःखजन्म मरण त्यहि को दमनकहीनाशकर्त्ता हैं श्रीरघुपति के गुणगण ऐसे हैं कैसे हैं श्रीरामचरित ज्यहि को सनकादि नारदादिक

निजभवनगवन्यउसिंधु श्रीरघुबीरयहमतभायऊ यहचरितकलिमलहरण जसमतिदासतुलसीगायऊ २७ सुखभवनसंशयशमनदमन विषादरघुपतिगुणगना तजिसकलआशभरोसगावहिं सुनहिंसंततशुचिमना २८ दो०॥ सकलसुमंगलदायक रघुनायकगुणगान सादरसुनहिंतेतरहिंभव सिंधुबिनाजलयान॥ २९ * * * * * *

इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वंसने सुंदरकाण्डेमूलसमाप्तः ॥

मुनीश्वर चारिहुफलकै आश भरोस त्यागिकै मनको निर्मल करिकै गावते हैं अरु परस्पर कहते हैं सुनते मनन निदिध्यासन साक्षात्रसको प्राप्त हैं ( २८ ) ॥ दोहार्थ ॥ श्रीरामचरित गुणगानजो है सोसंपूर्ण मंगलकरदाताहै जे नरनारिसादरतेसुनहिंकहहिं ते भवसागर को अनेकसाधन ते जलयानहैं त्यहिकेबिना तरिजाते हैं॥ इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेसुन्दरकांडेसेतुबंध संमतबर्णननामत्रयोदशस्तरंगः १३

दोहा ॥ असीएकदशआठशत भाद्रशुक्लतिथिपांच अवधपुरीसुन्दरतिलक रामचरणरतिसांच ॥ :: :: ::

॥मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने मुकाम लखनऊ में छपी जनवरी सन् १८८८ ई.॥

समाप्त

# ॥रामायण तुलसीदासकृत सटीक॥

## ॥लंकाकाण्ड॥

श्रीगणेशायनमः॥ दोहा॥ बंदिसिंधुतटसभायुत चरणकमल रघुवीर लंकाकांडअरम्भकृत रामचरणरसवीर ( १ ) सेतुबांधिउतरे कटक पारभयेकपिवीर रामचरणडेराकियो प्रथमतरंगगँभीर ( २ ) प्रथमश्लोकको अर्थ करते हैं श्रीगोसाईं तुलसीदास श्रीरामचन्द्र को बंदते हैं कैसे हैं श्रीरामचन्द्र कामारि जेमहादेवहैं तिनकरिकै सेव्यमान हैं पुनिभव जो संसारहै त्यहिको भयजो है जन्ममरण त्यहिके हरैयाहैं पुनि कालमत्त हाथी हैं त्यहिके नाशकरिबेको सिंह हैं पुनियोगीन्द्र जेसनकादि नारदशुकादि तिनको ज्ञानकरिकै गम्यकही प्राप्त हैं अरु गुणकेनिधि हैं अजित हैं निर्गुण हैं निर्विकारहैं मायाते अतीत कही परे हैं ब्रह्मादिक देवतनके ईश हैं अरु खलके बधमें निरतहैं अरुब्रह्म जे ब्राह्मणहैं तिनके पूजिबेकोएक मुख्यदेवहैं पुनिकैसे हैं अपनी श्यामता अरु गंभीरताते कंदजो मेघहै तिनकोश्यामता गंभीरतादिहेहैं अरु सरसिज नयन हैं अरु देवतन करिकै सेव्यरूप हैं तंरामंअहंबन्दे ( १ ) गोसाईं श्रीतुलसी

श्लोक॥ रामंकामारिसेब्यंभवभयहरणंकालमत्तेभसिंहं योगोन्द्रं ज्ञानगम्यंगुणनिधिमजितंनिर्गुणंनिर्विकारं मायातीतंसुरेशंखलबलनिरतंब्रह्मवृंदैकदेवं बंदेकंदावदातंसरसिजनयनंदेवकैस्सेब्यमानं १ शंखेंद्वाभमतीवसुंदरतनुं शार्दूलचर्म्माम्बरंकालब्यालकपालभूषणधरं गंगाशशांकप्रियं काशीशंकलिकल्मषौघशमनंकल्याणकल्पद्रुमंनौमीड्यं गिरिजापतिंगुणनिधिंश्री

दासजीमहादेवको नमस्कार करते हैं काहेते शिवजी श्रीमद्रामायण के आचार्य्य हैं कैसेहैं शिवजू शंखतद्वत् गौरउज्ज्वल सचिक्कण मंगलमय हैं अरु पूर्णइन्दु इवगौर निर्मल शीलप्रकाशमय अमृतमय तद्वत्शरीर अतिसुन्दरहैं अरुशर्दूलकही सिंहकरचर्म वरकही श्रेष्ठसोई अम्बरकही वस्त्रधारण किहे हैं अरु जीवनके कालव्यालसर्प जे हैं सो धारणकिहे हैं अरु कपाल में विभूतिको भूषणकिहे है अरु श्रीगंगाजी मस्तकपरशोभित हैं अरु चन्द्रमा को भालविषे अतिप्रीतिते धारणकिहे हैं काशीश कही शिवकलिकल्मषकही क्लेश जन्ममरण त्यहिसबके शमनकही नाशकर्त्ता हैं अरु संपूर्णकल्याण के कल्पतरुहैं सर्वकाम दायकहैं तिनसब करिकै नवमीड्यकही युक्त ह्वैकर जोरिकै नमस्कारकरतहौं अरु गिरिजा कही पार्वती तिनकेपति सम्पूर्णकल्याणके दायकहैं अरु अनेक दिव्यगुणनके निधिकही समुद हैं अरु कैलास जो आनन्दमय त्यहिके बासीहैं ऐसेशिव मेरेऊपर सदाकृपाकरहिं ( २ ) दोहार्थ॥ हे मन श्रीरामचन्द्रको भजुकैसे हैं श्रीरामचन्द्र कल्प ज्यहिकरबाण है अरु कालजाको दण्डहै कल्पकाल काको कही लवकही जो पलककही बरौनीहालै हैं त्यहिसाठिको निमिष कही जामेंपलक नेत्रनकी बारंबार खुलतहै बन्दहोतहै त्यहिसाठि निमिषकोएकपरिमाणु होतहै साठि परिमाणुको एकपलहोतहै साठिपलको एकदण्डहोतहै साठिदण्डको एकदिनराति होतहै तीस दिनरातिकर एकमास होतहै बारह मासकर एकवर्षहोतहै सौवर्षश्रीमराचन्द्रके बाणकै दांड़ीहै अरु लवअरुनिमेष ज्यहि बाणनकै फोंकहै अरु यहिप्रमाणते वर्षमें लगेहैं चारिउयुग सोई बाणकेपरहैं अरु कल्प प्रचंडगांसीहै कल्पकही हजारसत्ययुग हजारत्रेता हजार द्वापर हजार कलियुग ऐसे चारिउयुग हजार हजार मिलिकै हजारचौकरी जब बीतैंतब ब्रह्माकर एकदिन होतहै अरु वतरेबीते रात्रीहोतहै तब प्रलयहोतहै ताको कहूंनैमित्य प्रलय कहते हैं तहां ब्रह्माकर

शंकरंकामहं २ दो० ॥ लवनिमेषपरिमाणुयुग वर्षकल्पशरचंड भजसिनमनत्यहिंरामकहँ कालजासुकरदंड ३ सो० ॥ सिंधुबचनसुनिराम सचिवबोलिप्रभुअसकह्यउ अबविलंमक्यहिकाम करहुसेतुउतरैकटक ४ सुनहुभानुकुलकेतु जामवंतकरजोरिकहनाथनामतवसेतु नरचढ़िभवसागरतरहिं ५ चौ०॥ यहलघुलजधितरतिकतबारा अससुनिपुनिकहपवनकुमारा ६ प्रभुप्रतापबड़वानलभारी शोषेउप्रथमपयोनिधिबारी ७ तवरिपुनारिरुदनजलधारा भर्यउबहोरिभयउत्यहिखारा ८ सुनिअसउक्तिपवनसुतकेरी

लोक रहिजातहै अपर प्रलय होइजातहै कल्प प्रचण्डबाणकै गांसीहै अरुमहाकाल कही जो महाप्रलय होतहै सोई धनुषहै अरु जोकालकेभीतर उत्पत्ति पालन प्रलय है सोई पनिच है हेमन जिन श्रीरामचन्द्रके ऐसे धनुषबाणहैं तिनको भजु ( ३ ) सोरठार्थ॥ हे पार्वती समुद्र के बचनसुनिकै श्रीरामचन्द्र मंत्रिनको बोलाइकै कहते हैं कि अब कौन कारण करिकैबिलम्बहै सेतुबांधहु कटक उतरै ( ४ ) तब जामवंत करजोरिकै कहते हैं हे नाथ तुम्हार नाम महासेतुहै तापर चढ़ि कही नामको धारणकरिकै नरभवसागरते उतरिजाते हैं तहां यहसेतु बांधिबेके का बड़ी बात है ( ५ ) तब जामवन्त कहते हैं कि हे नाथ यह लघुसमुद्र तरिबेकी का बात है यह सुनिकै हनुमान्‌जी बोलतेभये हैं ( ६ ) हे प्रभु तुम्हारे प्रतापते प्रथमहिं बड़वानलने समुद्रको जल सोखिलियोहै ( ७ ) तब तुम्हाररिपु जो रावणहै त्यहिकीस्त्रीने समुद्रकेशोषेतेरोदनकीनहै त्यहिकेआंशुनकी धारा समुद्रफेरि भरिगयोहै ताहीते क्षारहोतभयोहै ( ८ ) त्यहिसमुद्रके उतरिबेकी कवनि बड़ीबातहै यहहनुमान्‌ने अपनी उक्तिकरिकै कहाहै बड़वानल को प्रथम सोखब यहयथार्थहै फिरिकैसमुद्र भरिगयोहै अरु स्त्रीनकेरोदनते समुद्रको भरब यह अत्युक्त्यलंकारहै श्रीरघुनाथजीके प्रसन्नहेतु सभा चातुरीहै आगे और अर्थ जो करतेहैं तामें विरोधपरतहै यह

हनुमान्‌कीउक्तिहै उक्ति कही अपनी उक्तिसे कहिकै मालिककर अर्थ सिद्धि करतहैं मालिक प्रसन्नहोतहै सो उक्ति सुनिकै श्रीरघुनाथजी बिहँसत भयेहैं तबरघुनाथजीकीदिशि देखिकै सबकपि हर्षित होतभयेहैं ( ९ ) तब जामवन्त बोलतभये हैं द्वौभाई नलनील जे हैं तिनते सवकथा सुनावत भये हैं जो सुन्दरकांडमें समुद्र कहिगयोहै ( १० ) हेनलनील श्रीरामचन्द्रकर प्रताप हृदयमें धरिकै सेतु बांधिबेकी तैयारी करहु तुमको कछुप्रयास न होइगो तुम सुयशको प्राप्तिहोहुगो ( ११ ) तब जामवन्त कपि निकरकही बानरन

हर्षेकपिरघुपतितनहेरी ९ जामवंतबोलेद्वौभाई नलनीलहिसबकथासुनाई १० रामप्रतापसुमिरिमनमाहीं सेतुकरहुप्रयासकछुनाहीं ११ बोलिलियेकपिनिकरिबहोरी सकलसुनहुविनतीएकमोरी १२ रामचरणपंकजउरधरहू कौतुकएकभालुकपिकरहू १३ धावहुमर्कटविकटबरूथा आनहुविटपगिरिनिकरयूथा १४ सुनिकपिभालुचलेकरिहूहा जयरघुबीरप्रतापसमूहा १५ दो०॥ अतिउतंगत रुशैलगण लीलहिंलेहिंउठाय आनिदेहिंनलनीलकहँ रचहिंसुसेतुबनाय १६ चौ०॥ शैलविशालआनिकपिदेहीं कंदुक

के जे समूहहैं तिनको बोलाइकै कहते हैं हेकपिरीछहु सबमिलिकै हमारी एक विनती सुनहु ( १२ ) श्रीरामचन्द्रके चरणारबिंद हृदय में धरिकै सब भालु कपि मिलिकै एककौतुक जो चरित्र है सोकरहु ( १३ ) बिपुल मर्कटउत्तरदिशा को धाइधाइ पर्वतनके यूथकेयूथ सहित बिटपलेइलेइ आवहु जाइ ( १४ ) यहसुनिकै कपि भालु हहाकही हहास करिकै श्रीरामप्रतापसमूहको सुमिरिकै जयजयकार करिकै धावतभयेहैं ( १५ ) दोहार्थ॥ अतिशय उतंग जे ऊंचे विस्तारित पर्वत तिनपर तरु संयुक्त बनके बन लीलहिं अपने खेलहिते पृथ्वीसहित उखारिलेते हैं अरु नलनीलको देतेहैं ते सुन्दर बनाइकै सेतु बांधते हैं ( १६ ) हेपार्वती विशाल विशाल पर्वत कपिअरु भालु उखारि उखारि दक्षिणदिशाको अनेकन फेंकिदेत हैं त्यहिको नलनील कन्दुककही गेंदकी नाईंरोंकिलेते हैं हजारन पर्वतलेते हैं सोअतिशीघ्र समुद्रबिषे बरोबर धरते ई ह जैसे सूतधरिकै बनावतहै तैसे तीनि दिनके भीतर में सेतुबांधिके तैयारकीन्ह बाल्मीकिमें पांचरोजमें कहा है दशयोजन बिस्तारित सौयोजन लम्बा औ द्वौ ढिग अति सुन्दर सम्पूर्ण मध्य अतिशयसम बरोबर अतिसुन्दर बनावतेभये हैं ( १७ ) तब श्रीरामचन्द्र कृपानिधान सेतुकै अतिसुन्दर रचनादेखिकै बिहँसिकै बोलतेभयेहैं ( १८ ) हे बिभीषण जामवन्त सुग्रीव आदिक सखहु सुनहु यहधरणी परम रमणीय अरु रम्य कहीउत्तमहै यहिकी महिमाअमितहै बर्णिबेयोग्य नहीं है ( १९ ) मेरे मनमें यह परमकल्पना कही सिद्धांतहै किमहादेव मेरे परमानन्यभक्तहैं ताते यहि सेतुपर उनकी स्थापना करौंगो तातेसखहु मुनीश्वरनको बोलावहु ( २० ) यहसुनिकै सुग्रीवजी जहांतहांदूतपठावत भये हैं सम्पूर्ण मुनिनकहं बोलाइकै आयेहैं अत्रिमुनि अगस्त्य च्यवन मार्कण्डेय गर्ग मुद्गल नारदसनकादिक शुकदेव इत्यादिक अनन्त मुनि आवते भये हैं ब्रह्मादिक देवता ब्राह्मण कररूप धरि २ आवतेभये

इवनलनीलसोलेहीं १७ देखिसेतुअतिसुंदररचना बिहंसिकृपानिधिबोलेबचना १८ परमरम्यउत्तमयहधरणी महिमाअमितजाइनहिंवरणी १९ करिहौंइहांशंभुस्थपना मोरेहृदयपरमकल्पना २० सुनिकपीशबहुदूतपठाये मुनिवरसकलबोलिलैआये २१ लिंगथापिविधिवतकरिपूजा शिवसमानप्रियमोहिंनदूजा २२ शिवद्रोहीममदासकहावा सोनरसपनेहुंमोहिंनपावा २३ शंकरबिमुखभक्तिचहमोरी सोनरमूढ़मंदमतिथोरी २४ दो० ॥ शंकरप्रियममद्रोही शिवद्रोहीममदास तेनरकरहिंकल्पभरि घोरनरकमहँबास २५ चौ० ॥ जोरामेश्वरदरशनकरिहहिं तेतनतजिममलोकसिधरिहहिं २६ जोगंगाजलआनिचढ़ाइहि सोसायुज्य

हैं ( २१ ) तब वेद के बिधिबिधानते शिवकर लिंग स्थापनकीन्हहै सेतुके ऊपर पुनि सबमुनिनमिलिकै श्रीरामचन्द्रका पूजनकीन्ह है तब श्रीरामचन्द्रजी बोले कि शिवके समान मोको दूसर प्रियनाहीं है ( २२ ) हेमुनीशहुयह जो मैंने सेतुबांधाहै त्यहिकेनाथ महादेव हैं ताते जो कोई शिवकर द्रोहकरै अरु मोरदासकहावै तेनर सपन्यहुं मोको नहीं प्राप्तिहोतेहैं ( २३ ) शंकरते विमुखहोइ अरु मोरिभक्ति चाहै तेनर मूढ़हैं मन्दहैं मतिके हीनहैं मेरीभक्ति उनको सपन्यहुं विषे न कबहूं प्राप्तिहोई ( २४ ) दोहार्थ॥ अरु शंकरकी भक्तिकरिकै शंकरको प्रियमानहिं अरु मोसेंद्रोहकरैं अरु मोरिभक्तिकरि शंकरते द्रोहकरैं तेनरमहाघोर नरकविषे कल्पभरिबासकरैंगे उपरांत चौरासीको जाहिगे ( २५ ) जे प्राणी रामेश्वरकर दर्शन करहिंते अन्तकालविषे तनत्यागिकै मेरेधामको जाहिंगे यहमेरो सत्य संकल्प है रामेश्वर कही जो रामचन्द्र परमेश्वर हैं सर्व ईश्वरनके ईश्वरहैं अरु जे श्रीरामचन्द्रके महादेव सरीखे परमानन्यभक्त हैं तिनही को श्रीरामचन्द्र आपनईश्वर करिकै पूजते हैं ताते रामेश्वर कही अरु श्रीरामचन्द्र जिन महादेवके ईश्वर हैं ताते रामेश्वर महादेवको कही ( २६ ) श्रीरामचन्द्र कहतेहैं कि जो रामेश्वर को गंगा कही भागीरथीको जलल्याइकै चढ़ाइहि सो मेरी सायुज्यमुक्तिको प्राप्तहोइहि सायुज्य कही मेरे अंगको अलंकारह्वैकै रहैगो अथवा मेरो घनस्तेज जो है ब्रह्म त्यहिमें लीन ह्वइजाइगो ( २७ ) अरु जे प्राणी निष्काम छलछांड़िकै शंकरकर सेवनकरैंगे त्यहि को मोरिभक्ति शंकरदेहिंगे विशेष छल कही मेरे स्वरूपमें अरु महादेवके स्वरूप में भेद करते हैं सो छल कही ( २८ ) यह मोर कृत सेतु जो है इसका जोदर्शन करहिंगे तेबिना श्रमहिं भवसागर तरिजाहिंगे ( २९ )

**मुक्तिनरपाइहि २७ होइअकामजोछलतजिसेइहि भक्तिमोरित्यहिशंकरदेइहि २८ ममकृतसेतुजेदर्शनकरिहहिं तेबिनुश्रमभवसागरतरिहहिं २९ रामबचनसबकेमनभाये मुनिवरनिजनिजआश्रमआये ३० गिरिजारघुपतिकैयहरीती संततकरहिंप्रणतपरप्रीती ३१ बांध्यउसेतुनीलनलनागर रामकृपायशभयउउजागर ३२ बूडहिंआनहिंअवरहिंजेई भयेउपलबोहितसमतेई ३३ महिमायहनजलधिकैबरणी पाहनगुणनकपिनकैकरणी ३४ दो० ॥ श्रीरघुवीरप्रतापते सिंधुतरेपाषान तेमतिमंदजेरामतजि भजैंजाइप्रभु**

श्रीरामचन्द्र के वचन सबके मनमें अतिशय भाये तब मुनिवरकही श्रेष्ठमुनि बिदा ह्वैकै अपने अपने आश्रमको जातभयेहैं ( ३० ) हेपार्वती श्री रघुपतिकै यह रीतिहै कि जे प्रणत कही शरणहैं तिनपरसंतत कही निरंतरप्रीतिकरतेहैं तहां यह समुझिपरतहै कि कौनौं शुभकार्यहोइ प्रथम श्रीराम भक्तनकै स्थापनाकरिये तब सिद्धहोतहै ( ३१ ) नीलनल नागरकही श्रेष्ठजेहैं ते सेतुको बांधतेभये हैं श्रीरामचन्द्रकी कृपाते नीलनलकर यश उजागर कही तीनिहुँलोकमें शोभित होतभयोहै ( ३२ ) देखिये तौ स्वाभाविकै जलमें डूबिजाते हैं अरु जो कोई उनके आधार होइ त्यहिकोभी लैकै डूबिजाते हैं ते शिला पर्वत बोहित कही जहाजकेसमान केवल श्रीरामकृपाते होतभयेहै नल नीलके द्वारह्वैकै कृपाभई है ( ३३ ) यह महिमा न समुद्रकी है न पाहनकी है न कपिनकी करणीहै ( ३४ ) दोहार्थ॥केवल श्रीरामकृपाते पाषाण समुद्रविषे तरे कही उतराइरहेहैं तहां ऐसे श्रीरामचन्द्रको छोंड़िकै जे प्राणी अपर कोई देवता को आश्रयलेते हैं तेमूढ़हैं मन्दमतिहैं अपना जन्म वृथा खोवते हैं ( ३५ ) तहां नल नील सेतुबांधिकै सुढर कही अतिसुन्दर दूनोंकिनारा बरोबरि अरु बीच में चित्रविचित्र बनावतेभये है कहूं नीलशिला कहूंहरित कहूंलाल कहूं स्फटिक कहूंपीत कहूंकहूं कईरंगमिलित संकररंग इत्यादिक अनेकरंगनके शिलन करिकै सेतुकी रचनाकरतभये ज्यहिको देखिकै देवता अरुमुनिनके मन मोहिजाते हैं तहां समुद्रसेतु दोनों निर्मल ह्वैरहे हैं सो सेतु देखिकै कृपासिंधुके मनमें बहुत भवतभयोहै ( ३६ ) सेतुके ऊपर सेना चलतभई है कछु वर्णिबेयोग्य नहीं है मर्कट भालु भट कही विपुलाई झुण्डकेझुण्ड गर्जते हैं ( ३७ ) तब त्यहीसमय विषे कृपालु जे श्रीरामचन्द्र ते सेतुके मध्य ढिगपर ठाढ़ेभये अरु एक ढिगपर श्रीलक्ष्मणजी ठाढ़ेभयेसेना के चलिबेको कल्लोल अरु समुद्रकी तरंगनकै कल्लोल दूनोंकी आधिक्यता देखते हैं ( ३८ ) तहां करुणाकन्द श्रीराम लक्ष्मण द्वौभाइनके स्वरूप को प्रतिविम्ब समुद्रके भीतर जगमगाइरहो है सो प्रतिविम्ब अतिसुन्दर

आन ३५ चौ० ॥ बांधिसेतुअतिसुढरबनावा देखिकृपानिधिकेमनभावा ३६ चलीसेनकछुबरणिनजाई गर्जहिंमर्कटभटबिपुलाई ३७ सेतुबांधिढिगचढ़िरघुराई चितैकृपालुसिंधुअधिकाई ३८ देखनकहँप्रभुकरुणाकन्दा प्रकटभयेसबजलचरवृन्दा ३९ नानामकरनक्रझषव्याला शतयोजनतनपरमविशाला ४० ऐसहिएकएकधरिखाहीं एकनकेडरएकपराहीं ४१ प्रभुबिलोकिदृगसकहिंन

देखिकै समुद्रके जलचरन के वृन्द जे रहे तेऊ वाही प्रतिबिम्ब की शोभा देखत जल के ऊपर होइरहेआइ तब श्रीराम लक्ष्मणकर स्वरूप प्रत्यक्ष देखत भये हैं कोटिनकाम की शोभाते अधिक शोभित हैं ( ३९ ) ते नानाप्रकार के जलचर मकर नक्र कही नाक घरियार झष कही मीन सर्प इत्यादिक अनेकजाति जातिके अनेक रंगरंग के प्रकटे हैं तिनके शरीर सौ योजननके लम्बे अरु त्यहिकर दशांशको विस्तार अपर लघु दीर्घ को प्रमाणको जानेहै ( ४० ) ऐसे तब एक एकको धरिखाहिं अरु एकनकेडर एक भागिजाहिं ( ४१ ) तहां श्रीरामचन्द्र अरु लक्ष्मणजीको स्वरूप देखिकै नेत्रनकी पलक नहींचलतीहै सेतुके द्वौ किनारे पूर्व पश्चिम उत्तरदक्षिण द्वौभाइनके सन्मुख परमानन्दकरिकै परिपूर्ण ह्वइरहे हैं अपने अपने शरीरकी सुधि भूलिगई है जड़ीभूत ह्वइगये हैं जैसे चित्रकी बेलि देखिये तौ ऐसी समाधिदशा योगिन मुनिनको दुर्लभ है सो जलचरनको रामकृपाते प्राप्तिभई है इहां अति शृंगाररस विषे शांतरसजानब अरुपरमभक्ति जानब ( ४२ ) तिनजलचरनकी ओटते समुद्र को जल नहीं देखिपरै है श्रीराम लक्ष्मण के देखिबेहेतु तर ऊपर घस्मसाइरहे हैं अरु छोटे छोटे तिनके बीच बीच ठसिरहेहैं श्रीरामलक्ष्मणके स्वरूपकीशोभा देखिकैसबमग्न ह्वइगयेहैं देहकी सुधिभूलिगईहै देखियेतौ दशयोजनके विस्तारते सेतुबंधाहै अरु पूर्व पश्चिम द्वौ किनारे सौसौयोजनकोविस्तार जलचरनके सेतुबंधिगयेहैं तिनहीकेऊपर श्रीरामचन्द्रजीकी सेनाउतरैगीइहांकछु समुद्रकै सेवकाईनजानब सर्वथा सर्बजीवनपरकेवल श्रीरामचन्द्रकै कृपाजानब ( ४३ ) हे पार्वती श्रीरामचन्द्रकै कटक अतिकल्लोलकरत सेतुपरचलतभयो सोबर्णिबे योग्यनहीं है अरु कपिनकेदलकै बिपुलताकाहू कविके बर्णिबेयोग्यनहींहै ( ४४ ) दोहार्थ॥ सेतुबंधविषे अतिभीरभई है द्वौदिशि जलचरनके ऊपर अरु सेतुविषे सेनासमाइनहीं सकति है अरु

टारे परमहर्षसबभयेसुखारे ४२ तिनकीओटनदेखियबारी मगनभयेहरिरूपनिहारी ४३ चलीकटककछुबरणिनजाई कोकहिसककपिदलबिपुलाई ४४ दो० ॥ सेतुबंधभइभीरअति कपिनभपंथउड़ाहिं अपरजलचरनकेउपर चढ़िचढ़िपारहिजाहिं ४५॥ * * *

चौ० ॥ असकौतुकबिलोकिद्वौभाई बिहँसिचलेकृपालुरघुराई १ सेनसहितउतरेरघुबीरा कहिनजाइकपियूथगंभीरा २ सिंधुपारप्रभुडेराकीन्हा सकलकपिनकहंआयसुदीन्हा ३ खाहुजाइफलमूलसुहाये सुनतभालुकपिजहंतहंधाये ४ सबतरुफलेरामहितलागी ऋतुअनऋतुहिकालगतित्यागी ५ खाहिंमधुरफलबिटपहलावहिं लंकासनमुखशिखरचलावहिं ९ जहंकहुंफिरतनिशाचर

अनेकनबीर नभपंथविषे उड़ेचलेजातहैं ( ४५ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेलंकाकांडेसेतुबंधश्रीरघुनाथजीसेनासंयुक्तसमुद्रपारवर्णनंनामप्रथमस्तरंगः१॥

दोहा॥ द्वितियतरंगसुगंगसम मन्दोदरिउपदेश रामचरणरावणसभा मंत्रअशुभशुभवेश २ तब अपनेलीलाकी रचनाबानर रीछनकरकौतुक लरत भिरत किलकत कूदत कलोलकरत चलेजाते हैं सोकौतुक द्वौभाईबिलोकिकै विहँसिकै चलतभये हैं ( १ ) हे गरुड़तीनिदिन तीनिरातिमेंसेनाउतरिगईहै तहांगम्भीर यूथपअपनो अपनो यूथसंभारतभये सो यूथपनकैभीरकछुकहीनहीं जाइहै ( २ ) आगेदोहाभरि अक्षरार्थ जानब॥ दोहार्थ॥ रावणअकुलाइकै दशोंमुखते एकहीबार एकही पदार्थका दशनामकरिकै बोल्यउ है

बनकही जलको बननिधिबांध्यों नीरनिधिबांध्यों जलधिबांध्यों सिंधुबांध्यों बारीशबांध्यों सत्यकरिकै तोयकही जलनिधि समुद्र बांध्यों पुनि कंपति कही कं कही जल पतिकही स्वामी कंपति कही समुद्रबांध्यों उदधिबांध्यों पयोधिबांध्यों नदिनकर ईशबांध्यों इहां दशनाम करिकै कह्यउहै तहां भयानकरसविषे वीररसविषे करुणारसविषे शृंगाररसविषे हर्ष शोकविषे एक पदार्थको बहुवारकहै ताको पुनरुक्ति न कही ( ११ ) तहां रावण अपनी व्याकुलता बहोरि समुझिकै गृह को हासयकरिकै उठिचल्यउहै भयको भोरिकही बिसराइकै ( १२ ) तहां मन्दोदरीनेसुना कि कौतुकहिते समुद्राबांधिकै प्रभु सेना संयुक्त पारउतरि

पावहिं घेरिसकलबहुनाचनचावहिं ७ दशननकाटिनासिकाकाना कहप्रभुसुयशदेहिंतबजाना ८ जिनकरनासाकाननिपाता तिनरावणहिंकही सबबाता ९ सुनतश्रवणबारिधिबंधाना दशमुखबोलिउठाअकुलाना १० दो०॥ बांध्योंबननिधिनीरनिधिजलधिसिंधुबारीश सत्यतोयनिधिकंपति उदधिपयोधिनदीश ११ चौ० ॥ व्याकुलतानिजसमुझिबहोरी बिहंसिचलागृहकरिभयभोरी १२ मंदोदरीसुनाप्रभुआये कौतुकहीपाथोधिबंधाये १३ करगहिपतिहिंभवननिजआनी बोलीपरममनोहरबानी १४ चरणनाइशिरअंचलरोपा सुनहुवचनपियपरिहरिकोपा १५ नाथबैरकीजियताहीसों बुधिबलजीतिसकियजाहीसों १६ तुमहिंरघुपतिहिअंतरकैसा खलुखद्योतदिवाकरजैसा १७ अतिबलमधुकैटभजिनमारे महावीरदितिसुतसंहारे १८ ज्यइंबलिबांधिसहसभुजमारा सोइअवतरेउहरणमहिभारा १९

आयेहैं ( १३ ) तब मन्दोदरी करगहि कही हाथपकड़िकै रावणको निज भवनविषे लै आइकै मनोहरबाणी बोलतभईहै ( १४ ) चरणनमें शीश नाइकै अंचलरोपिकै कहतीहै हे पति कोप परिहरिकै मोरबचन सुनहु ( १५ ) हेनाथ तुम तौ राजनीति अच्छीतरह जानतहौ बैर ताहीसों कीजिये जासों बल बुद्धि करिकै जीतिये ( १६ ) अरु तुमसे अरु रघुपतिसे केतिकबीचहै निश्चयकरिकै जानहु तुमखद्योतहौ अरु रघुपति सूर्य हैं ( १७ ) हेनाथ अतिशयबलवान् मधुकैटभ दानव जिन तीनिउंलोकको जीतिलीनहै अरु तिनको इनहीं बधकीनहै अरुमहादितिकेपुत्र हिरण्यकशिपु आदिक तिनसबनको इनहीं बधकीनहै ( १८ ) अरु बालिको इनहीं बधकीनहै अरु सहस्राबाहुको इनहीं बधकीनहै ते अब पृथ्वीके भार उतारिबेको अवतीर्णभये हैं सो तुमनिश्चयकरिकै जानहु इहां मन्दोदरी भयदर्शन करावतिहै ( १९ ) हे नाथ जीवकर कालकर्म जाकेहाथहै तासों विरोध न करो ज्यहिकालविषे जीवकोजैसी प्रेरणा कर्मानुसार प्रभुकरतहैं जीव तैसहिकर्म करतहै तैसहिफल भोगकरतहै यह सुनिकै रावण हँसत भयो है ( २० ) दोहार्थ॥ पुनि मन्दोदरी कहती है हेनाथ श्रीरघुनाथजीके चरणारविन्दविषे शीशनाइकै श्रीजानकीजीको सौंपिदेहु अरुमेघनादको राज्यसौंपिकै बनविषे जाइकै श्रीरघुनाथजी को भजनकरहु यह चारिउवेदको सिद्धांत है ( २१ ) अरु जोतुमविचारहु कि मैं बड़ी चूक कीनहै मोको श्रीरघुनाथजी कैसे अंगीकार करहिंगे तहां रघुनाथजी दीनदयालु हैं तुमको आपनविशेषि करहिंगे देखिये तौ सन्मुख गयेते तामसी जो

तासुबिरोधनकीजियनाथा कालकर्मजियजाकेहाथा २० दो० ॥ रामहिंसौंपहुजानकी नाइकमलपदमाथ सुतकहंराजसमर्पिबन जाइभजहुरघुनाथ २१ चौ०॥ नाथदीनदयालुरघुराई बाघौसनमुखगयेनखाई २२ चहियकरनसोसबकरिबीते तुमसुरअसुरचराचरजीते २३ संतकहहिंअसनीतिदशानन चौथेपनसेइयनृपकानन २४ तासुभजनकीजियसुनुभर्त्ता जोकर्त्तापालकसंहर्त्ता २५ सोइरघुवीरप्रणतअनुरागी भजहुनाथममतामदत्यागी २६ मुनिवरयतनकरहिंज्यहिलागी भूपराजतजिहोहिंबिरागी २७ सोइकौशलाधीशरघुराया आयेकरनतोहिंपरदाया २८ जोप्रियमानहुमोरसिखावन

बाघहै वहौनहीं मारिसकतहै ( २२ ) अरु यहिजगत्में विषयकर ऐश्वर्य तुमसबकरि बीते हौ सुर असुर नर चर अचर त्रैलोक्यविषे सबको तुम जीतिलीन सबतुम्हारी आज्ञानुकूल है ( २३ ) हेप्रियतम श्रुतिस्मृति पुराण सन्तनकर यह सम्मत है कि राजातीनिपन राजकरै चौथेपन बनमें जाइकै तप अरु भजनकरै यहनीतिहै ( २४ ) ताते हेभर्त्ता बनमेजाइकै त्यहिकर भजनकरी जो प्रभुयहि संसाको उत्पत्ति पालन संहारकर्त्ता है ( २५ ) सोई रघुवीर प्रणतहितकारी जो हैं हेनाथ ममता अरु मद त्यागिकै तिनहींको भजहु ( २६ ) जिनरघुवीरकी प्राप्तिहेतु मुनिवर कही श्रेष्ठ मुनि योग बैराग्य ज्ञान ध्यान समाधि तप करिकै यन्त्र करते हैं अरु चारिउयुगविषे बड़ेबड़े राजावैराग्य करिकै आपु राज्यको त्यागिकै रघुवीरको भजते हैं ( २७ ) सोई कौशलाधीश रघुनाथजी तोरेऊपर दयाकरिकै आपुचाल आयेहैं तुम्हारी बड़ीभाग्यहै तातेतुम शरणहोहु यहभली अवसर पायो है ( २८ ) हे पिय जो मोर सिखावनमानहु तौ तीनिहुंलोकमें उज्ज्वल यशकोप्राप्ति होहुगे अरु अन्तमें परमपदको प्राप्तिहोहुगे ( २९ ) दोहार्थ॥ इहां मन्दोदरी जसकछुईश्वरकी ईश्वरताजानतीरही तसरावणते कहतिभई है इहांभयदर्शन भयानक रसजनावाहै असकहिकै नेत्रनमें जलभरि आयो है अरु गातकंपित ह्वहइआयोहै तब रावणके चरणगहिकै कहतिहै हेनाथ रघुनाथजीते बैरत्यागिदेहु जातेमोर अहिवात बनारहै ( ३० ) हे पार्वती तब रावण मयनामदानव त्यहिकीसुता मन्दोदरी त्यहिको उठावत भयो है अरु ऐसोखलहै अपनी प्रभुता अपने मुखते वर्णनकरैलागहै तहा अपनेमुखते जो कोई आपनि बड़ाईकरै सो खलत्वं धर्म्महै ( ३१ ) हेप्रिया तैं वृथाभयमानैहै जगत कहीं त्रैलोक्यविषे देव दानव मनुष्य मेरे समान योधाको है कोईनहींहै ( ३२ ) रावणकहतहै हेप्रिया वरुण कुबेर पवन यम अरु कालइत्यादिक जे हैं सो सबमेरे वशहैं मैंनेसबको जीति

होइसुयशतिहुंपुरअतिपावन २९ दो० ॥ असकहिलोचनबारिभरि गहिपदकंपितगात नाथभजहुरघुबीरपद ममअहिवातनजात ३० चौ०॥ तबरावणमयसुताउठाई कहैलागखलनिजप्रभुताई ३१ सुनतैंप्रियावृथाभयमाना जगयोधाकोमोहिंसमाना ३२ बरुणकुबेरपवनयमकाला भुजबलजित्यहुंसकलदिगपाला ३३ देवदनुजनरसबवशमोरे कवनहेतुउपजीभयतोरे ३४

लीनहै यहाँ रावण वीररसके आवांतर शांतरसकहतहै वीररस जो कहिआयेहैं तिनसबको जीतिलियो है यहकथा सबशास्त्रनमें प्रसिद्धहै पर कालकोजीतना यहकैसे संभवैहै जोकाल यमराज आदिक आठौदिग्पाल अरु ब्रह्मांडसुद्धां भक्षणकरिलेतहै तहां प्रमाण आरण्यकांडे चौपाई॥ श्रीअगस्त्यवाक्यं श्रीरामंप्रति॥ उमरीतरुसमानतवमाया फलब्रह्मांडअनेकनिकाया जीवचराचरजंतुसमाना भीतरबसहिंनजानहिंआना सो फलभक्षणकठिनकराला तवडरडरतसदासोकाला॥ तहाँ जो काल ब्रह्मांडको भक्षणकरतहै त्यहिकालको रावणकैसेजीतैगो अरु जोकालकोजीते होत तौ शरीर कैसेछूटिजात यहसन्देह है इहां रावणकी वाणीविषे वीररस कहिआयेहैं त्यहि आवांतर शांतरस कहते हैं हेरानीतुम जो कह्यउ वे ईश्वरहैं कालहुको जीतेहैं सो महूंकालको जीतेहौं कैसेजबते यहिप्राकृतमंडलमें मैं जन्मलीनहै तबते केते युगबीतिगयेहैं मेरे भयते मेरे समीप कालनहीं आइसक्यउहै अबज्यहिकी बड़ाई तैंकीनहै तिनते युद्धकरिकै फेरि परमपदकोजाउं सोफेरि प्रकृतमंडलमें नहीं जन्मौंगो तातेमैं काल को जीतिलीनहै इहां यह समुझिपरतहै कि रावणने ब्रह्माते वेदपढ्यउहै पुनिवेदकर तिलककियो है ताते रावण परमतत्त्ववेत्ताहै काहेते शांतरस पूर्णबिना कालनहीं जीताजाइहै यहि चौपाई विषे बहुत अभिप्रायहै मैंने अपनीमतिके अनुसार कहाहै यह कथा श्रीहनुमन्नाटकमें प्रसिद्ध है ब्रह्मा रावणको नित्यवेदपढ़ाइबेकोजाहिं अरु बृहस्पति स्मृति पढ़ावैजाहिं यहिरीतिसे आठौदिग्पाल चन्द्र सूर्यइत्यादिक अपनीअपनीविद्या दिनप्रति रावणकोसुनावहिंजाइ तातेरावण पूर्णपंडितरहाहै ( ३३ ) हे प्रियादेवता इन्द्रादिक अरु दनुजकही दानव राक्षस अरु नर अरु चर अचर ब्रह्माकी सृष्टिविषे जेते जीवकोईहैं तेसबमोरेवशहैं तहां तेरे कौनेहेतु करिकै भयउपजीहै ( ३४ ) नानाप्रकारते मन्दोदरीको समुझाइकै रावणसभा

नानाबिधित्यहिंकहिसमुझाई सभाबहोरिबैठसोजाई ३५ मंदोदरीहृदयअसजाना कालबिवशउपजाअभिमाना ३६ सभाजाइमंत्रिनसनबूझा करबकवनबिधिरिपुसनजूझा ३७ कहहिंसचिवसबनिशिचरनाहा बारबारप्रभुबूझहुकाहा ३८ कहहुकवनभयकरियबिचारा नरकपिभालुअहारहमारा

३९ दो० ॥ वचनसबनकेश्रवणसुनि कहप्रहस्तकरजोरि नीतिबिरोधनकरियप्रभु मंत्रिनमतिअतिथोरि ४० चौ०॥ कहहिंसचिवसबठकुरसोहाती नाथनपूरिआवयहिभांती ४१ बारिधिनांघिएककपिआवा तासुचरितमनमासबगावा ४२

विषे जाइकैबैठेउहै ( ३५ ) तब मन्दोदरीने अपने हृदयविषे यह निश्चय कीनहै कि हमारेपतिको कालकेवश अभिमानकेद्वारा नाशहोइगो ( ३६ ) तब रावणसभाविषे मंत्रिनको बुलाइकै बूझतहै कि रिपुसन कवनप्रकारते युद्धकरी ( ३७ ) तब सचिव सबबोलतभयेहैं हेनिशिचरकेनाह प्रभु बार बारकाहबूझतेहौ ( ३८ ) कहौकौने भयकरिकै बिचारकरिये नरबानर भालु इत्यादिक हमारे आहार हैं ( ३९ ) दोहार्थ॥ सबमंत्रिनके बचनसुनिकै प्रहस्तजाकी बुद्धिनिर्मलहै सो करजोरिकै बोलतभयोहै हे प्रभुनीतिविषे विरोध न चाही इनमंत्रिनविषे थोरी मतिहै नीतिविरोध वचन कहते हैं ( ४० ) हेनाथ येमंत्री जेसबहैं तेठकुरसोहाती बातकहतेहैं इनबातनमेंपूरिनपरैगी ( ४१ ) तहां इन मंत्रिनते हम अब कहते हैं कि एककपि समुद्रनांघिकै आयोरहै तिहिकरचरित्र सब मनविषे गानकरते हैं आपुकेभयकरिकै प्रकटनहींकहते हैं ( ४२ ) सो हम पूंछते हैं कि तुमकह्याउ कि नरबानर हमारे आहार हैं तहां जो कपि समुद्रनांघिकै लङ्कजारतभयो तब तुम्हारे काहूके क्षुधानहींरही जो त्यहिकोधरिकै खाइलेत्यहु तुम सब अनीतिवादीहौ ( ४३ ) हे नाथ सचिवन जो यहमत आपुको सुनावाहै सो वर्त्तमान सुनतसंते नीकलागैहै परपरिणाम महादुःखहै ( ४४ ) ज्यहिवारिधिको हेलाकही एकहल्लामें बांधिलियोहै अरु तुरन्त सेना सहितउतरिकै सुबेलपर्व्वत पर डेराकीनहै किंतु सुवेलकही किनारेपर तहां डेरा कीन्ह ( ४५ ) जिनकर एकदूत लङ्कजारिकैगयोहै अरु जिनकीआज्ञाते वानरन एकहल्लामें समुद्रबांधिलीन तिनको ये मंत्री मनुकही मनुजकहत हैं कि हम तिनको खाइलेब तहां ये सब गालफुलाइकै बचनकहते हैं इनते कुछ होनानहीं है ( ४६ ) हे तात मोरवचन अतिआदरतेसुनहु

क्षुधानरहीतुमहिंसबकाहू जारतनगरनकसधरिखाहू ४३ सुनतनीकआगेदुखपावा सचिवनअसमततुमहिं सुनावा ४४ ज्यइंबारीशबंधायोहेला उतरेसेनसमेतसुबेला ४५ सोमनुमनुजखाबहमभाई वचनकहहिंसबगालफुलाई ४६ सुनिममवचनतातअतिआदर जनिमनगुनहुमोहिंकरकादर ४७ प्रियबाणीजेसुनहिंजेकहहीं ऐसेनरनिकायजगअहहीं ४८ वचनपरमहितसुनतकठोरा सुनहिंजेकहहिंतेनरजगथोरा ४९ दो० ॥ नारिपायफिरिजाहिंजो तौनबढ़ाइयरारि नाहिंतौसनमुखसमर महं तातकरोहठिमारि ५० चौ० यहमतजोमानहुप्रभुमोरा उभयप्रकारसुयशजगतोरा ५१ सुतसनकहदशकंठरिसाई असमति

अरु मोको कादरकरिकै मनविषे न जानहु ( ४७ ) जे कोई काहूको परिणाम हित अनहितकर विचार नहींकरते हैं अरु वर्त्तमानमें प्रियवाणीकहते हैं तेहिवाणीके सुनैया कहैया इसजगत् में बहुत हैं ( ४८ ) अरु जोवाणीकहतकै कठिनलागै अरु जेहिवाणी में परिणामकही अंतविषे हितकारहै तेकर कहैया औ सुनैया यहिजगत्में थोरेपुरुषहैं ताते हेनाथ मोरकहब वर्त्तमानबिषे आपुको करूलागतहै पर परिणाम विषे अमृत है॥ प्रमाण श्रीभगवद्गीतायां॥ यत्तदग्रेविषमिवपरिणामेऽमृतोपमम्। तत्सुखंसात्त्विकंप्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम् ( ४९ ) दोहार्थ॥ ताते हेनाथ श्रीजानकीजीको उनके यहां विभीषणके हाथ पठइदेहु जो नारिपाइकै फिरिजाहिंतौ काहेको रारिबढ़ाई अरु जो न फिरिजाहिं तौ नीकीप्रकारते सन्मुख संग्रामकरी यह नीतिहै आपुतौ पण्डितहौ सबजानतेहौ ( ५० ) हे प्रभु जो यहमत हमारमानहु तौ उभयप्रकारते तुम्हारा यशहोइगो लोकहुपरलोकहुविषे अरु विवेकिनकी समाजबिषे बीरनकीसमाजविषे साधुयोगी मुनिनकी समाजविषे ब्रह्मादिक देवतनकी समाजबिषे अरु वेद अरु परमेश्वर तेरी बड़ाई करहिंगे ( ५१ ) आगे दोहाभरि अक्षरार्थैजानब दोहार्थ॥ सुनासीर जोइन्द्रहैं तहां शतकही सैकराइंद्रते सरिसकही अधिक लंका बिषे रावण निर्भय भोगकरतहै देखिये तौ परमप्रबल रिपु श्रीरामचन्द्र

शीशपरआयेहैं तदपि हृदयबिषे तिनको त्रासनहीं है तहां रावण जो अतिहर्ष ते नाचगानकरावत है यह वीररसको स्थायीभाव है शतइन्द्रतेसरिसभोग क्योंकहा जाते रावणकेपुत्रने इन्द्रको जीतिलियोहै अरु इन्द्र

शठत्वहिंकौनसिखाई ५२ अबहींतेउरसंशयहोई बेणुमूलसुतभयसिघमोई ५३ सुनिपितुगिरापरुषअतिघोरा चलाभवनकहिवचनकठोरा ५४ हितमततोहिंनलागतकैसे कालबिवशकहंभेषजजैसे ५५ संध्यासमयजानिदशशीशा चलाभवननिरखतभुजबीशा ५६ लंकाशिखरउपरआगारा अतिबिचित्रतहंहोइअखारा ५७ बैठजाइत्यहिमंदिररावन लागेकिन्नरगंधर्बगावन ५८ बाजहिंतालपखाउजबीणा नृत्यकरहिंअप्सराप्रवीणा ५९ दो० ॥ सुनासीरशतसरिससोइ संततकरैबिलास परमप्रबलरिपुशीशपर तदपिहृदयनहिंत्रास ६०॥ * * *

चौ० ॥ इहांसुबेलशैलरघुबीरा उतरेसेनसहितअतिभीरा १ शैलशृंगयकसुन्दरदेखी अतिउतंगसमसुभ्रविशेखी २ तहंतरुकिशलयसुमनसुहाये

को दानव राक्षसनकरिकै भयहै अरु जहां काहूकी भयहै तहां सुखकहा है अरु रावण निर्भय भोगकरतहै ताते शतइन्द्र सरिसकहा (६०) इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुपबिध्वंसने लङ्काकाण्डेरावणमंदोदरीमंत्रिनसंवादवर्णनंनाम द्वितीयस्तरङ्गः२॥ :: :: ::

दो० रामविरहशिशुचन्द्रमासभालंकपतिभंग रामचरणरावणनिडरबर्णबतृतियतरंग ३ इहां सुबेलशैलपर श्रीरामचन्द्र सेनासंयुक्त उतरतभये हैं (१) त्यहि सुबेलशैलकर एकशृंग उतंगकही अतिऊंचा अरु समकही बरोबरि कछुकविस्तार अतिसुन्दर सो देखिकै (२) त्यहि शृंगपर एक बटकरतरुहै त्यहिकेतर किशलय जो कोमलपत्ता हैं अरु पुष्पहैं अतिसुन्दर बनाइकै लक्ष्मणजी अपने हाथ बिछावतभयेहैं (३) त्यहिपर अत कोमल मृगाको छालाजिसपर श्रीरामबिराजतेभये हैं (४) तहां कपीशजो सुग्रीव हैं तिनके उछंगकही गोदविषे शीशधरिकै पहुड़िगये हैं अरुदाहिनीदिशिबाण है अरु बामदिशि धनुषतूणधरे हैं (५) अरु दोउकर कमलविषे सुधारबकही फेरतेहैं बाणफेरतसन्ते बाणश्रवणके समीपजातहै जनुमंत्र पूछतहैं कि जो आज्ञाहोइ तौलंकेश को नाशकरिदेउं इहांअत्युक्ति अलंकारजानब अरु जो यह अर्थकरते हैं कि लंकेश जोविभीषण सो मंत्र कहाहैसोयहिअर्थकर सम्बन्धनहींहै (६) तहांअंगदहनुमान्बड़भागीहैं जे श्रीरामचन्द्रके चरणकमल नानाविधि सेवनकरते हैं (७) प्रभुके पाछे दाहिनीदिशा लक्ष्मणजी वीरासन बैठेहैं कटिविषे निषंगकसे अरु धनुषचढ़ाये बाण करविषे लिहेशोभित हैं (८) दोहार्थ॥ हे पार्वती यहिप्रकारते

लक्ष्मणरचिनिजहाथडसाये ३ त्यहिपररुचिरमृदुलमृगछाला त्यहिआसनआसीनकृपाला ४ प्रभुकृतशीशकपीशउछंगा बामदहिनिदिशिचापनिषंगा ५ दुहुंकरकमलसुधारतबाना कहलंकेशमंत्रलगिकाना ६ बड़भागीअंगदहनुमाना चरणकमलचापतविधिनाना ७ प्रभुपाछेलक्ष्मणवीरासन कटिनिषंगकरबाणशरासन ८ दो० ॥ यहिबिधिकरुणासींवगुण धामरामआसीन तेनरधन्यजोध्यानयहि रहहिंसदालैलीन ९ चौ० ॥ पूरुबदिशाबिलोकिप्रभु देख्यउउदितमयंक कह्यउसबहिदेखहुशशिहि मृगपतिसरिसनिशंक १० चौ०॥ पूरुबदिशिगिरिगुहानिवासी परमप्रतापतेजबलरासी ११ मत्तनागतमकुंभविदारी शशिकेशरीगगनबनचारी १२

करुणाकेसिन्धु अरु गुणकेधाम श्रीरामचन्द्र अतिशोभित बिराजमानहैं तेनरधन्य हैं जिनके हृदयविषे यहिसमयको ध्यानमें सर्वदा लयलीनह्वैरहेहैं (९) तबसंध्याकाल में पूर्णमासीको मयंकनिर्मल श्रीरामचन्द्र देखतभयेहैं सो सबमंत्रिनते कहते हैं हे प्रवीणहु पूर्वदिशाविषे चन्द्रमाको देखौ तौ मृगपति कही सिंहके सरिस निशंक देखियतु है इहाँ

श्रीरघुनाथजीचन्द्रमाको देखिकै श्रीजानकीजी विषे बिरहगर्भित रूपकालंकार करिकै कहते हैं (१०) तहां क्षीरसमुद्र गिरिहै पूर्वदिशि सोई गिरिगुहाहै सोईनिवास है तहांतेनिकसे हैं अरु प्रकाश सोई प्रतापहै अरु तेजजेहिशीतकरिकै भस्मकरिदेतहै सोई बलकीरासिहै (११) मत्तहाथी रूपतम त्यहिकर प्रथमआगमन सोई कुम्भकही मस्तकहै त्यहिको बिदारिकै गगनबन विषे शशिकेशरी चारी कही बिचरत है (१२) तहां सिंहजो मत्तहाथीको मस्तक विदारतहै तबमुकुता विथरिजाते हैं त्यहिमुकुतनके कोई रानिन के गलेको हार शृंगार होतहै इहां नक्षत्र सोईमुकुता हैं निशिसुन्दरताको शृंगार है (१३) पुनि श्रीरामचन्द्र कहतेहैं हे समस्त प्रवीणहु यहचन्द्रमाविषे मेचकताई कही श्यामता सोकाहै सारकहहु (१४) तहां प्रथमसुग्रीव कहते हैं हे रघुराई शशिविषे भूमिकै छायापरीहै सोई श्यामताहै इहां सबकीबाणीविषेसम्बन्धकीयुक्ति मिलाइकै अपनी अपनी उक्ति से कहते हैं श्रीरघुनाथजीके विरह भावलिहे हैं (१५) तहांदश वीसमिलिकै एकसम्मतकरिकै कहतेहैं कि हे श्रीरामचन्द्र सर्वज्ञराहु जो है सोअपनेबाणकरिकै चन्द्रमाको कोई कालमें मारयउ है सोई श्यामतापरिगई है कोई यहकहते हैं (१६) पुनि कोई कहते हैं जबविधाताने रतिकरस्वरूप बनावा तब चन्द्रमाकर सारभाग जो है सुधाकर कारण सो हरिकही काढ़िकै

बिथुरेनभमुकुताहलतारा निशिसुन्दरीकेरश्रृंगारा १३ कहप्रभुशशिमहँमेचकताई कहहुकहानिजनिज मतिभाई १४ कहसुग्रीवसुनहुरघुराई शशिमहँप्रकटभूमिकैछाई १५ मारेउराहुशशिहिकह कोई उरमापरीश्यामता सोई १६ कोउकहजबबिधिरतिमुखकीन्हा सारभागशशिकरहरिलीन्हा १७ छिद्रसोप्रकटइंदुउरमाहीं त्यहिमगदेखियनभपरिछाहीं १८ कोउकहगरलबंधुशशिकेरा अतिप्रियनिजउरदीन्हबसेरा १९ विषसंयुतकरनिकरपसारी जारतविरहवंतनरनारी २० दो० ॥ कहमारुतसुतसुनहुप्रभु शशितुम्हारप्रियदास तवमूरतिबिधुउरबसति सोइ श्यामताभास २१ पवनतनयकेबचनसुनि बिहँसेराम सुजान

रतिके मुखपर धरिदीन है (१७) जब ब्रह्मै चन्द्रमाकोसार भागकाढ़िकै रतिके मुखपर धरयउ तब चन्द्रमा विषे छिद्रह्वइ गयो है त्यहिमगविषे नभकी परछाहीं श्यामता देखिपरतिहै (१८) कोई कहते हैं कि गरल जो चन्द्रमाकोबन्धुहै अतिप्रिय मानिकै अपने उरमें बासदियो है (१९) तातेविषसंयुक्त त्यहिकी किरन फैलिरही हैं त्यहिते विरहिनी स्त्रिनको जारतहै ताते चन्द्रमाविषे विषकीश्यामताहै (२०) दोहार्थ॥ तब स्वरूपनिर्मल हनुमानजी अतिरसोक्ति बाणीकहते हैं हे श्रीरामचन्द्रजी शशितुम्हार प्रियदासहै तुम्हारीमूर्ति सदाहृदय में राखत है अरु शशिकर आदर्शवत है ताते आपुके स्वरूपकै श्यामता भासत है हनुमानके बचनविषे यथार्थउक्ति भासत है काहेते जब श्रीरामचन्द्र रासविहार करते हैं तहां पुरुष करिकै अगोचर स्थान है पुरुषवर्ग एक चन्द्रमा रहते हैं ताते प्रियदास कहाहै अरु ताही को देखिकै श्रीरामचन्द्रजी के विरहभयो है॥ प्रमाण हनुमत्संहितायां॥ पुंसामगोचरस्थानंकेवलं प्रेमदायकं (२१) तहां हनुमानको वचन अतिरसोक्ति सुनिकै श्रीरामचन्द्र बिहँसतभये हैं पुनि दक्षिणदिशा देखिकै कहते हैं (२२) हे विभीषण आशाकही दक्षिण दिशा देखौ तो घनजो है मेघ सो मण्डलाकार ह्वइरह्यउ है गर्जतहैअरु दामिनी दमकतहै (२३) हे विभीषण मधुर मधुर तड़किकै घनगर्जतहै जनुउपलकही पत्थरकठोर त्यहिकै वृष्टिहोवाचहतिहै (२४) तब विभीषण कहते हैं हे कृपालु न मेघमाला है न तड़ितहै (२५) हे श्रीरामचन्द्र लंकाकै ऊंचे शिखरपर अतिरुचिर एक आगाराकही स्थानहै तहां रावण अखारा

दक्षिणदिशाविलोकिप्रभु बोलेकृपानिधान २२ चौ० ॥ देखुबिभीषणदक्षिणआशा घनघमंडदामिनीबिलाशा २३ मधुरमधुरगर्जतघनघोरा होइवृष्टिजनुउपलकठोरा २४ कहहिंबिभीषणसुनहुकृपाला होहिनतड़ितनबारिदमाला २५ लंकाशिखररुचिरआगारा तहँदशकंधरकेरअखारा

२६ छत्रमेघडंबरशिरधारी सोजनुजलदघटाअतिकारी २७ मंदोदरीश्रवणताटंका सोइप्रभुजनुदामिनीदमंका २८ बाजहिंतालमृदंगअनूपा सोइरवसरिससुनहुसुरभूपा २९ प्रभुमुसुकानसमुझिअभिमाना चापचढ़ाइबाणसंधाना ३० दो० ॥ छत्रमुकुटताटंकश्रुतिहत्यउएकहीबान देखतसबकेमहिपरे मरमनकोऊजान ३१ असकौतुककरिरामशर प्रबिशेउआइनिषंग रावणसभासशंकसब देखिसभारसभंग ३२ चौ० ॥ कंपनभूमिनमरुतविशेखाअस्त्रशस्त्रकछुकाहुनदेखा ३३

खाराकही सभाकरतहै ( २६ ) रावणके शीशपर मेघडंबरकही छत्रहै सोइजनु नीलमेघ है ( २७ ) अरु मन्दोदरीके श्रवणको ताटंक सोईजनु दामिनी दमकतहै ( २८ ) हे सुरभूप अरु ताल मृदंगइत्यादिक बाजते हैं सोईजनु मेघकोगर्जबहै ( २९ ) रावणको अभिमान समुझिकै श्रीरामचन्द्र मुसुकातभये हैं पुनि श्रवण ताईं धनुष खैंचिकै एकबाण मारतभयेहैं ( ३० ) दोहार्थ॥ तहां छत्र मुकुट ताटंक एकहीबाणते सबकेदेखत देखत मारिकै गिराइ दीन महिविषे गिरतसंते काहू यह मर्म नाहीं जाना ( ३१ ) ऐसोकौतुक करिकै श्रीरामचन्द्र बाणनिषंगमें प्रवेशकीन आइ उहाँ रावणके सभा रसभंगदेखिकै सशंकितभई है ( ३२ ) यहसबकहते हैं नतौभूमिकांपी है अरु नतौ पवनचल्यउ है अरु नतौ अस्त्रशस्त्रकाहू देखा है यह का आश्चर्यभयोहै ( ३३ ) सब अपने हृदयमें शोचकरतेह कि भयंकर असगुण भयोहै ( ३४ ) तब रावणदेखा कि सभा भयकोप्राप्तिभईहै तबबिहंसिकैयुक्तिबनाइकै कहतहै ( ३५ ) तुमसबकाहेको भयमानतेहौ मेरेशिर महादेवकेआगे गिरतरहे हैं तब नित्यमंगल सुखहोतभयो है अरु मुकुटकेगिरे तुम अमंगल मानिलिह्यउ है ताते तुम सबकादरहौ मेरेइहां अमंगलकबहूं नहीं है ( ३६ ) तुम अपने अपने घरमें शयनकरहुजाइ तबसबचरणमें शिरनाइकै गवनकरतभयेहैं ( ३७ ) तब मन्दोदरीकेहृदयमें शोचभयोजबते श्रवणके ताटंक महिमें खसिपरेहैं ( ३८ ) नेत्रनमें जलभरिकै दोऊकर जोरिकै कहतिहै हे प्राणपति एक बिनती मोरिसुनहु ( ३९ ) हे कन्त श्रीरामचन्द्रते विरोध परिहरिदेहु मनुज जानिकै अपने मनमें हठ न धरहु ( ४० ) दोहार्थ॥ येजो रघुबंशमणि हैं विश्वरूपहैं यह मोरेबचनकर विश्वास करहु चौदहलोकजिनके अंग अंग प्रतिहैं यह वेदकरिकै कल्पित

शोचहिंसबनिजहृदयमझारी असगुनभयोभयंकरभारी ३४ दशमुखदीखसभाभयपाई बिहँसिबचनकहयुक्तिबनाई ३५ शिरो गिरेसंततशुभजाही मुकुटगिरेकसअनहितताही ३६ शयनकरहुनिजनिजगृहजाई गवनेभवनचरणशिरनाई ३७ मंदोदरीशोचउरबसेऊ जबतेश्रवणफूलमहिपरेऊ ३८ सजलनयनकहदोउकरजोरी सुनहुप्राणपतिबिनतीमोरी ३९ रामविरोधकंतपरिहरहू मनुजजानिमनहठनहिँधरहू ४० दो० ॥ विश्वरूपरघुबंशमणि करहुबचनविश्वास लोककल्पनाबेदकहँ अंगअंगप्रतिजासु ४१

चौ० ॥ पगपातालशीशअजधामा अपरलोकअंगअंगविश्रामा १ भृकुटिबिलासभयंकरकाला नयनदिवाकरकचघनमाला २

कही कहागयाहै ( ४१ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेयुद्धकाण्डे श्रीरामसुवेलासनचन्द्र मिसुकछुबिरहरावणरसभंगबरनन्ना मतृतीयस्तरंगः३॥

दोहा॥ चौथतरंगमरावणहिं मन्दोदरिउपदेश रामचरणभयदरशहित प्रभुबिराटकहिवेश ४ इहांमन्दोदरी रावणको भयदर्शन देखावती है हे प्राणपति मनुजरूप जो श्रीरामचन्द्रहैं येई विश्वरूपहैं अपने भक्तनके हेतुअवतार लीनहै जिनके कटिते पगतल ताईं सातौ नीचेके लोकहैं अतल बितल सुतल रसातल तलातल महातल पाताल ( १ ) अब पगते वर्णनकरते हैं जिनके पगको तल पाताल है १ अरु पदपीठि महातल है २ अरु गुल्फतलातलहै ३ अरु गुल्फकेऊर्द्ध पिडरीके रसातलहै ४ अरु पिडरीसुतलहै ५ अरु

गांठि बितलहै ६ अरु जंघा अतलहै ७ अब कटिते शीश ताईं कहते हैं सातलोक ऊपरके भूः भुवः स्वः महर जन तप सत्यलोक जिनके जंघके स्तम्भ भूकही मृत्युलोकहै १ अरु कटिभुवः कही लघुस्वर्ग है जहाँ गन्धर्व किन्नर इत्यादिक रहते हैं २ कटिके ऊर्ध्व पृष्टि उदरस्वः कही स्वर्गलोकहै जहां इन्द्ररहते हैं ३ द्वौभुजाके मध्य बक्षस्थल पृष्टि महरलोक है जहां कश्यप रहते हैं ४ अरु ग्रीव जनलोकहै जहां ऋषिमुनि रहते हैं ५ अरु त्यहिकेऊर्द्ध शीशकेअर्द्ध मध्य तपलोकहै जहाँ परमतपस्वी रहते हैं ६ अरु शीश सत्यलोक है जहां ब्रह्मा रहते हैं ७ अरु अपरलोक अंगअंगमें आश्रित हैं १ जिन भगवान् के भृकुटीकर बिलास भयंकर काल है अरु सूर्य चन्द्रमा जिनके नेत्र हैं अरु मेघ सोई कच कही बार हैं ( २ ) जिनकर नासिका अश्विनीकुमार हैं अरु रातिदिन जिनको निमेष है अपार ( ३ )

जासुघ्राणअश्वनीकुमारा निशिअरुदिवसनिमेषअपारा ३ श्रवणदिशादशवेदबखानी मारुतस्वासनिगमनिजबानी ४ अधरलोभजमदशनकराला मायाहास्यबाहुदिगपाला ५ आननअनलअंबुपतिजीहा उत्पतिपालनप्रलयसमीहा ६ रोमावलिअष्टादशभारा अस्थिशैलसरितानसजारा ७ उदरउदधिअधगोयातना जगमयप्रभुकरबहुतकल्पना ८ दो० ॥ अहंकारशिवबुद्धिअज मनशशि चित्तमहान मनुजबासचरअचरमय रूपराशिभगवान ९ असबिचारिसुनुप्राणपति प्रभुसनबैरबिहाय प्रीतिकरहुरघुवीरपद मम

अरु दशोंदिशा जिनके श्रवण हैं यह वेदकहते हैं अरु उनचासौ पवन जिनकी स्वासाहैं अरु चारिउ निगम जिनकी बाणी हैं ( ४ ) अरु लोभ अधरहै अरु यमराज जिनके कराल दांतहैं अरु माया जिनकी हास्य बिलास है अरु दिग्पाल जिनकी भुजा हैं ( ५ ) अरु बड़वानल इत्यादिक आठौअग्नि जिनके मुखहैं अरु अम्बुपति बरुण जिनकी जिह्वाहैं अरु संसारकी उत्पत्ति पालन प्रलय समीहाकही ईहा जिनकी चेष्टाइच्छा है ( ६ ) अरु अठारह भार बनस्पति सो जिनकर रोमहैं अरु सुमेरु इत्यादिक पर्वत जिनके अस्थि हैं। अरु पृथ्वी मांस है अरु कहूं जलको रुधिर कहते हैं अरु सम्पूर्ण बड़ीनदी जिनकी नस हैं अरु छोटी २ नदी नारेनसकी जार सघन हैं ( ७ ) अरु सातौसमुद्र जिनको उदर है अरु यम यातना जिनकी गुदाइन्द्रीहै अरु प्रजापति लिंग है अरु सम्पूर्ण जगमय प्रभुको अंगहै कल्पनाकही वेदकहतेहैं ( ८ ) दोहार्थ॥ अरु शिव जिनके अहंकार हैं अरु ब्रह्मा जिनके बुद्धि हैं अरु चन्द्रमा जिनकर मन है अरु महान् कही आत्मा जिनकर चित्त है अरु कहूं महान् विष्णुको महान् चित्त करिकै कहा है सो द्वौतत्त्व एकही हैं ये जो मनुज वेषरूपकी राशि श्रीरामचन्द्र हैं तहां चराचरमय बासकिहेहैं किन्तु मनुष्य इत्यादिक जो चराचरहैं ते सब बिराट्हीके रूप हैं राशिकही समूह ( ९ ) हे प्राणपतिअसबिचारिकै श्रीरघुनाथजीके चरणारबिन्दमें प्रीतिकरौतौ मोर अहिवात बनारहैगो ( १० ) तब रावण मन्दोदरीके बचनसुनिकै बिहँसिकै यह कहतहै अहोनाम आश्चर्यकरिकै मोहकीमहिमा बड़ीबलिष्ठहै देखिये तौसुत पतिधनधाम इत्यादिक सब स्यप्नइवसुखवृथाहै त्यहिकेविषे रानी दृढ़ममत्व सत्यकरिकै मान्यो है यह जीवका मोह देखिये तौ अनित्यको नित्य मानैहै इहां यह अभिप्रायहै कि मोको परमेश्वरकी शीघ्रप्राप्तिहै त्यहिकोआक्षेपकरिकै कहतिहै कि भजनकरो तहां भजन कियेते कोजानै कबप्राप्ति

अहिवातनजाय १० चौ० ॥ बिहँसानारिबचनसुनिकाना अहोमोहमहिमाबलवाना ११ नारिस्वभावसत्यकबिकहहीं अवगुणआठसुदाउररहहीं १२ सहसाअनृतचपलतामाया भयअबिबेकअशौचअदाया १३ रिपुकररूपसकलतैंगाये अतिविशालभयमोहिंसुनाये १४ सोसबप्रियासहजबशमोरे समुझिपराप्रसादअबतोरे १५ जान्यउंप्रियातोरिचतुराई यहिमिसकह्यउमोरिप्रभुताई १६ तवबतकहीगूढ़मृगलोचनि समुझतसुखदसुनतभयमोचनि १७ मंदोदरिमनमाअसठयऊ पियहिकालवशमतिभ्रमभयऊ

होहिंगे अपने अहिवातके स्वार्थहेतु मोहकरिकै यतना बिक्षेपकरैहै ( ११ ) तहां नारिविषे स्वाभाविकै आठ अवगुण कबिसत्यकरिकै कहतेहैं ( १२ ) सहसा अनृत चपलता अरु माया अबिवेक अशौच अदाया सहसाकही बिनाविचार जलदीकाम करना अनृत कही मिथ्याकहना चपलताकही चंचलसुभाव माया कही क्षणकमें रोइदेना क्षणकमें हास्यबिलास कटाक्ष करिकै ब्यामोहित करतीहै अरु सदा सबप्रकारते भयकरिकै डरत रहतीहै अरु जो कहै करैसो अविवेकमय विवेक रहितहै अरु सदाअशौचरहती है अरु दायारहितहै ताते स्त्रीकी कही कबहूं न मानिये ( १३ ) हे प्रियारिपुकर सकलरूपगाइकै अतिविशालभयते मोको सुनायोहै ( १४ ) जो विराटरूप तैं वर्णनकीन्हहैं सोसब तेरेप्रसादते मेरे बश है अबमोको समुझिपरेउहै प्रसादकही प्रसन्नतकहेहैं ( १५ ) हे प्रिया तोरिचतुराई मैं जानीहै यहमिस करिकै मोरिप्रभुता वर्णनकान्हह ( १६ ) हे मृगलोचनि तोरि बतकही गूढ़है समुझतकै सुखदहै सुनतको भयमोचनिहै मंदोदरीने परमेश्वरकै एकविभूति भयानकरस वर्णनकियोहै ताते गूढ़ कहा अरु तिन परमेश्वरके युद्धविषे वाणलागेते मोक्षहोतहै ताते भवमोचनकहाहै सो मैं करौंगो जाते शीघ्र मोक्षको प्राप्तिहोउंगो अरु जो रानीकहा कितुम रघुबीरके पदभजहु सोभी भवमोचन वाणीहै पर सो भजनकरिकै येतेदेर करिकै मोक्षहै अरु मोसे भजन नहीं बनैगो समर बनैगो यह रावण अपने मनमें कहैहै कि तोरिबतकही भवमोचनिहै सो सुनिकैमैं निर्भयभयोहौं ( १७ ) तब मंदोदरी अपनेमनमें विचारकरिकै यह ठीककीन्ह कि पिय जो रावणहै त्यहिकी कालवश मतिभ्रम भईहै रावणकैबाणी गूढ़ मन्दोदरी नहीं समुझीहै ( १८ ) दोहार्थ॥ हे पार्वती मन्दोदरीते रावण जल्पतकही अभिमानभरी बात बारबार कहत प्रभात होतभयोहै तब सहजही जो अशङ्कलङ्कापतिहै सो लौकिक मतिअन्ध सभा

१८ दो०॥ बहुबिधिजल्पतसकलनिशि प्रातभयेदशकंध सहजअशंकीलंकपति सभागयोमदअंध १९ सो० ॥ फूलैफलेनबेत यदपिसुधाबर्षहिंजलद मूरुखहृदयनचेत जोगुरुमिलैंबिरंचिशत२०॥

चौ० ॥ इहाँप्रातजागेरघुराई पूछामतसबसचिवबुलाई १ कहहुबेगिकाकरियउपाई जामवंतकहपदशिरनाई २ सुनुसर्बज्ञ सकलगुणरासी सत्यसंधप्रभुसबउरबासी ३ मंत्रकहौंनिजमतिअनुसारा दूतपठाइयबालिकुमारा ४ नीकमंत्रसबकेमनमाना अंगद

को जातभयोहै ( १९ ) सोरठार्थ ॥ देखिये तौ जो नीति रीति मन्दोदरीपरमार्थ उपदेश करैहै सो रावण नहींमानैहै कैसे जैसे बेतकही आकाश विषे जो कदाचित् मेघ अमृतकै वृष्टिकरैं तौ फूल फल नहींलागेहैं काहेतेआकाशविषे अमृत नहीं ठहरैहै आकाश शून्यहै तैसे मूर्खको हृदयशून्य है तैसे सद्गुरुनकी बाणी नहीं ठहरैहै जो सैकरों ब्रह्मा उपदेशकरैं तौ उनके हृदयमें उपदेशनहीं फलीभूतहोत है मूरुखकही जो सहीजानत हैं अरु मानतनहीं है ( २० ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेलङ्का कांडरोवणमन्दोदरीसम्बादेविराटवर्णनन्नामचतुर्थस्तरंग ४॥

दोहा॥ रामाज्ञाधरिशीशपर अंगदचलेनिशंक रामचरणपञ्चमलहरिगयेजहाँ पतिलंक ५ हे पार्वती इहां श्रीरघुनाथजी प्रातसमय जागिकै सब मन्त्रिनकहँ बोलावतेभये हैं मत पूछते हैं ( १ ) हे प्रवीण मन्त्रिहु विचारकरहु अबका कर्त्तव्य है तब जामवन्त पदविषे शिरनाइकै कहते हैं ( २ ) हे सर्बज्ञसर्बउरबासी सर्बगुण की राशि अरु सन्धकही सत्यसंकल्पहै तुम्हारो अरु सबके प्रभुहौ सर्बके उरमें बसतेहौ अंतर्य्यामीहौ ( ३ ) हेमहाराज अपनी मतिके अनुसार मंत्रकहतहौं अंगदको दूतपन करिबेको पठाइये रावणके इहांकोमर्मबूझिआवहिं ( ४ ) जामवन्तकै कही बाणी सबके मनमें नीकि लागिहै तब श्रीरामचन्द्र कृपानिधान अंगदसे बोलायकै कहते हैं ( ५ ) हेबालितनय तुमबल बुद्धिगुणके धामहौ तातेहमारे कार्यहेतु लंकाविषे तुमजाहु ( ६ ) तुमपरम चतुरहौ सबजानतेहौ मैं जानत हौं तुमसे बहुत बुझाइकैका कहनाहै ( ७ ) हमार कार्यहोइ अरु त्यहिकर हितकारहोइ रिपुते सोई बार्ताकरब यहि चौपाई में अभिप्रायबहुतहै श्रीरामचन्द्र कहते हैं कि हमार कार्ययहहै कि हमसंकल्प कीन्हहै कि पृथ्वी राक्षसनकरिकै हीन करिदेउंगो यहहमारो संकल्प है तातेरिपुरूप सन्मुख बार्ताकरब अरुरावणौकोसंकल्पहै किमैं समरकरिकै आपनहितकार करौंगो तातेरावण किसू

सनकहकृपानिधाना ५ बालितनयबलबुधिगुणधामा लंकाजाहुतातममकामा ६ बहुतबुझाइतुमहिँकाकहऊं परमचतुरमैंजानतअहऊं ७ काजहमारतासुहितहोई रिपुरसनकरबबतकहीसोई ८ सो० ॥ प्रभुआज्ञाधरिशीश चरणबंदिअंगदउठ्यउ सोइगुणसागर ईश रामकृपाजापरकरहु ९ स्वयंसिद्धिसबकाज राममोहिँआदरदियो असबिचारियुवराज तनपुलकिततहर्षिततहियो १० चौ० ॥ बंदिचरणउरधरिप्रभुताई अंगदचलेसबहिँशिरनाई ११ प्रभुप्रतापउरसहजअशंका रणबांकुराबालिसुतबंका १२ पुरपैठतरावण

की कहीनमानैगो रिपुरूपबार्ता करैगो तैसहीतुमहूं बार्ताकिह्यउ अरुजोयहअर्थकरिये कि अंगद रावणसे सोवार्ताकिह्यउ कि रावण जानकीकोलैकै हमकोमिलैआइ सो यह रघुनाथजी न कहेंगे काहेते यामेंदीनता कादर्यता सूचितहोत है ताते यहअर्थ कछु नहींहै ( ८ ) सोरठार्थ॥ श्रीरामचन्द्रके बचनसुनिकै प्रभुआज्ञा शीशपर धरिकै हर्षिकै अंगदउठिकै श्रीरघुनाथजीके चरणमें माथनाइकै यहकहतहै कि हेनाथ जाको तुमकृपाकरिकै आदरदेउ सोई गुणकरसागर है ( ९ ) हेनाथ आपको कार्यस्वयंसिद्धहै काहेते कि आपमोंको आदरदीनहै असबिचारिकै अंगदकेतन पुलकि आयेहैं हृदय में हर्षभयो है ( १० ) पुनि श्रीरामचन्द्रके चरणारबिंदकै बंदनाकरिकै सबराजनके शिरनाइकै श्रीरघुनाथजी करप्रताप हृदयमें राखिकै अंगदचलत भयेह ( ११ ) हे पार्वती प्रभुके प्रतापते अंगद हृदयमें साधारणै अशंकहैं रणविषे बड़ेबांके हैं काहेते बालिमहावीर त्यहिकेपुत्र हैं अरु श्रीरामचन्द्रकै कृपाहै ताते निश्शंकहैं बंककही युद्धक्रियामें प्रवीण हैं ( १२ ) लंकाकेप्रथम दरवाजेमें पैठतसंते रावणकरपुत्र प्रहस्तखेलत रह्यउ त्यहिते भेटह्वइगई है ( १३ ) बातहिंबात अतिउत्कर्ष बढ़िगयो है अरु दोनोंतरुण अवस्थाहै ( १४ ) अरु अतुलबलहै वहप्रहस्त अंगदको लातउठावत भयोहै तब अंगदजीउहै पदधरिकै चक्रइवघुमाइकै पृथ्वीमें पटकिदीन प्राणांत ह्वइगयोहै ( १५ ) जब अंगदरावणको पुत्रबधिकै रावणकी सभाको चलेहैं तब राक्षसनकेगण भारीभटदेखिकै कोई काहूते पुकारि नहीं सकैहैं जहांतहां चलेजाते हैं ( १६ ) रावणकेपुत्र करबधसमुझिकै कोई काहूसे मरमनहीं कहते हैं चुपहोइरहै हैं ( १७ ) तबलंकाविषेकोलाहलभयो है जो कपिलंकाजारि गयो सो फिरिआयो है यहसुनिकै

करबेटाखेलतरहासोह्वैगइभेटा १३ बातहिबातकर्षबढ़िआई युगलअतुलबलपुनितरुणाई १४ त्यहिअंगदकह लातउठाई गहि पदपटक्यउभूमिभवाई १५ निशिचरनिकरदेखिभटभारी जहंतहंचलेनसकहिंपुकारी १६ एकएकसनमर्मनकहहीं समुझितासु बधचुपकररहहीं १७ भयोकोलाहलनगरमझारी आवाकपिलंकाज्यहिजारी १८ अबधौंकाहकरीकरतारा अतिसभीतसबकरहिंबिचारा १९ बिनुपूछेमगदेहिंदेखाई ज्यहिबिलोकुसोइजाइसुखाई २० दो० ॥ गयोसभादरबाररिपु सुमिरिरामपदकंज सिंहठवनिइतउतचितै बीरधीरबलपुंज २१ चौ० ॥ तुरतनिशाचरएकपठावा समाचाररावणहिँसुनावा २२ सुनतबिहँसिबोल्यउदशशीशा आनहुबोलिकहाँकरकीशा २३ आयसुपाइदूतबहुधाये कपिकुंजरहिबोलिलैआये २४ अंगददीखदशाननवैसा सहित

नगरके लोगभयको प्राप्तिभये हैं ( १८ ) अतिभयते बिचारकरते हैं कि अबधौंकरतारका करैगो ( १९ ) विनापूछे रावणकी सभा की राहबताइ देतेहैं अरु ज्यहिकीदिशि देखतहैं सो सूखिजातहै ( २० ) दोहार्थ ॥ हेपार्वती जहां रावणकै सभास्थान है सो एक योजन मण्डलाकार तहांअति भारी भयानकदरबार लागिरहेउहैत्यहिसभाविषे श्रीरामपदकंज सुमिरिकै अंगदजात भये हैं ठवनिकही सिंहकी ऐसी रहस्यते इतउत राक्षसन की दिशिदेखत हैं कैसे अंगदहैं वीरनके रणविषेधीरहैं अरुबलकेपुंज हैं ( २१ )

तबअंगद एक निशाचर पठवतभये कि जाइरावणते कहहु कि एकराम दूत आयो है ( २२ ) तब रावणविहँसिकै बोलतभयो बोलाइल्यावो कहांकर बानर है ( २३ ) तब रावणकै आयसुपाइकै बहुदूत धाइकै अंगदको लैआये हैं कैसे अंगद रावण कीसभाको आवतहैं जैसे कुंजर कहीहाथिनके यूथविषे सिंहआवै है ( २४ ) तब अंगद रावणको कैसे बैठेदेखा जैसे कज्जलकोपर्वत प्राणसहित ( २५ ) अरु शीश जोहै रावणके सोई पर्वतके शृंगहैं अरु भुजा सोई बिटपहैं अरु रोमनकी अवली सोई नानाप्रकारकी लता हैं ( २६ ) अरु मुख नासिका नयन श्रवण एते पर्वतके कन्दरा हैं ( २७ ) ऐसी सभाको अंगदजीगयेहैं परमनमें नेकनहीं मुरेउहै काहे ते बालिकोतनय अति रणबांकुरोहै ( २८ ) तहां कपिकहँदेखिकै सम्पूर्णसभा उठतभई है तब रावणके मन में शोचसंयुक्त क्रोधहोतभयो है विशेषिकै इहां सदसभा क्यों कहाहै जाते अंगदको देखिकै सब उठतभये हैं किन्तु सदअंगद सभाकोजातभये हैं किन्तु भकारकी अकारलैके असदसभा उठतभई किन्तु सदसभाकर नाव है ( २९ ) दोहार्थ॥ हे पार्वती यथामत्तगजके यूथनविषे पंचानन जो सिंहहै सो चलोजाइहै तैसे अंगद रावण

प्राणकज्जलगिरिजैसा २५ भुजाबिटपशिरशृङ्गसमाना रोमावलीलताबिधिनाना २६ मुखनासिकानयनअरुकाना गिरिकंदरा खोहअनुमाना २७ गयेउसभामननेकुनमुरा बालितनयअतिबलबाँकुरा २८ उठेसभासदकपिकहंदेखी रावणउरभाक्रोधविशेखी २९ दो० ॥ यथामत्तगजयूथमहँ पंचाननचलिजाइ रामप्रतापसँभारिउर बैठवीरशिरनाइ ३० चौ० ॥ कहदशकंधकवनतैं बंदर मैंरघुवीरदूतदशकंधर ३१ ममजनकहित्वहिंरहीमिताई तवहितकारणआयउंभाई ३२ उत्तमकुलपुलस्त्यकरनाती शिवविरंचिपूज्यउबहुभांती ३३ वरपायउकीन्ह्याउबहुकाजा जीत्यउलोकपालसुरराजा ३४ नृपअभिमानमोहबशकिम्बा हरिआन्यउ

की सभामें गये हैं श्रीरामचन्द्रकर प्रताप समुझिकै श्रीरामचन्द्रके माथनाइकै वीररूप अंगद बैठतभये हैं पंचाननकही ज्यहिके पाँचमुख हैं अरु कोई कहते हैं चारिपगमें चारिअंगुलहैं एक मुखहै पांचहुते पांचहाथी पकरै है ताते पंचाननकही सो यह अर्थ कछुनहीं है ( ३० ) रावण कहतहै कि बानर बहुतबीर है पर तैं कवनबानरन विषे हसि तब अंगद कहतहैं हे दशकन्धर मैं रघुवीरकरदूतहौं ( ३१ ) हे रावण मोर जनकेजो पिताहै बालि त्यहिते तुमते मित्रतारही है ताते तुम्हरेहितकारके खातिर आयो हौं ( ३२ ) तुम्हार उत्तमकुल है महामुनि पुलस्त्यके पुत्र विश्वश्रवा तिनके तुम पुत्रहो ताते पुलस्त्यके नातीहौ अरु शिवविरंचि को भलीप्रकार बहुभांतिते पूजनकिह्योहौ ( ३३ ) अरु तिनते तुम वरदान पाइके बहुत कार्य्य कीनहौ इन्द्रादिक सब लोकपालन को तुम जीतिलीनहौ ( ३४ ) हेरावण एकतुमसेनहीं करतबनाहै नृपअभिमानकही राज्य पदके मोहते कि कही यहतुम काहेको कीनहै अच्छानहीं कीनहै किंवा कही विकल्पकरिकै श्रीजानकीजी जगदम्बा तिनको तुम हरिलायो है विकल्पकही दुइवस्तुको तहां जो तपकरिकै ब्रह्मा शिवादिकको अवराधन करिकै वरदानपाइकै सबजगत् को तुम जीतिलीन है यह तो उचित है राजनीति तुम कीन है अरु दूसरे अपरमद कीन जो श्रीजानकीजी को हरिल्यायो है मोहके वश ( ३५ ) हे रावण अब हमारासिखावन सुनहु तुम्हारो अपराध रघुनाथजी सब क्षमाकरहिंगे ( ३६ ) अब अंगद शास्त्रकी मर्य्यादलिहे परिउतकर्ष बाणी तर्कसंयुक्त वीररससानी उपदेशकरत हैं हे रावण अब तुम हमार उपदेशमानौ दांतनमें तौ तृणधरिलेहु अरु गरमें कुल्हरीवांधिलेहु अरु संगविषे अपनी मुख्यरानी परिजनसंयुक्तलै लेहु ( ३७ ) हे रावण श्रीजानकीजी कहँ बहुत आदर संयुक्त अलंकार करिकै सुखपालपरचढ़ाइकै आगे करिकै यहिविधिते लैचलहु मोह मद

सीताजगदम्बा ३५ अबशुभकहासुनहुतुममोरा सबअपराधक्षमहिंप्रभुतोरा ३६ दशनगहहुतृणकंठकुठारी परिजनसहितसंगनिजनारी ३७ सादरजनकसुताकरिआगे यहिबिधिसकलचलहुभयत्यागे ३८ दो०॥ प्रणतपालरघुबंशमणि त्राहित्राहिअतिमोहिं सुनतहिआरतबचनप्रभु-अभयकरहिंगेतोहिं ३९ चौ० ॥ रेकपिपोचबोलुसंभारी मूढ़नजानेमोहिंसुरारी ४० कहुनिजनामजनककर

त्यहिगिकै निर्भयते चलहु काहेते तुम अनुचित कीन है ताते बड़े महाराजनके इहां यहरीतिसे तकसीर माफहोती है ( ३८ ) दोहार्थ॥ अरुश्री रघुनाथजी तौ प्रणतकही शरणपाल हैं सबकै सबप्रकारते रक्षाकरै हैं तहां यही रीतिसे चलिकै त्राहि त्राहि मोको मैं पातकीहौं यहकहिकै साष्टांग दण्डवत्करु तब तोर सबअपराध क्षमाकरिकै तोको लोकहु परलोकहुते अभय करहिंगे यहिबातके बीचबिषे हमपरतेहैं देखियेतौ अंगदजी कैसीआत्मसमर्पण शरणागत बतायो है तहां रावण नहीं मानै है अपनेमनमें समुझिकै कि मैं तो प्रथमहिं सर्वस्वसहित प्राणसमर्पण कीन है पर बीररसते ताते काहुको उपदेश न मानैहै ( ३९ ) तब रावण कहत है रे कपिपोच सँभारिकै बोलु हेमूढ़ तैं मोको देवतनकर अरि नहींजानै है कहूंनहीं सुनेहसि ( ४० ) कहुतोर कानाम है अरु तोर जनक जो पितात्यहिको कानाम है अरु तैं कौनेनातेसे अपने पितासे औ हमसे मिताई अरु भाइकही कौनेभावते मानैहै ( ४१ ) तब अंगदबोले हे रावण मोर अंगदनाम है अरु मेरे पिताकर बालिनाम है तिनबालिसे अरु त्वहिंसे कबहुं भेटभई है ( ४२ ) तब अंगद के बचन सुनिकै सकुचाइकै कहत हैबालिबानर अच्छाबीर रहा मैं जानतहौं तहां रावण सकुचान्यो कि कोई कल्प बिषे त्रेताके युगबिषे कोई रावण भयो है हिरण्यकशिपु हिरण्याक्ष किन्तु शिवके दूनौदूत जो नारदको हँसेहैं किन्तु जलन्धर ये तीनिउ तीनि कल्पमें रावण भये हैं तिनमें कोई एकरावण ताहीकल्पके युगमें सो वह रावण बालिकी काखमें रह्यउहै ताते रावण यहिनामकी लघुता समुझिकै सकुचाइगयो है ( ४३ ) पुनि कहत है कि बालि महाबीर त्यहिकर पुत्र अंगद तुहीहै अहो आश्चर्य है निजबंश बनके अग्निभयसि अपने कुलको नाशकिहे है ( ४४ ) धृग है तोको तै गर्भहीमें न मरिगयो यहिजगत्में वृथा जन्मभयो अपने मुखन तैं पिताकर बैरी तपस्वी ताकरदूत कहावत

**भाई कयहिनातेमानियेमिताई ४१ अंगदनामबालिकरबेटा तासोंकबहुंभईहैभेटा ४२ अंगदबचनसुनतसकुचाना रहाबालिबानरमैं जाना ४३ अंगदतुहीबालिकरबालक उपज्यउबंशअनलकुलघालक ४४ गर्भनगयोवृथातुमजायहु निजमुखतापसदूतकहायहु ४५ अबकहुकुशलबालिकहंअहई बिहँसिबचनतबअंगदकहई ४६ दिनदशगयेबालिपहंजायहु बूझेउकुशलसखहिउरलायहु ४७ रामबिरोधकुशलजसहोई सोसबकहिसमुझाईसोई ४८ सुनुशठभेदहोइमनजाके श्रीरघुबीरहृदयनहिंताके ४९ दो० ॥ हमकुल**

है ( ४५ ) अब कहु कुशल बालिकहाँ है यह बचन सुनिकै बिहँसिकै अंगद बोलतेभये इहाँ बीररस शांतरसमिली बाणीद्वौकी जानब अंगद श्रीरामचन्द्रके संकल्प पर कहते हैं अरु रावण अपने पाछिल संकल्प परकहतहै ताते विरोधाभास अनेकयुक्ति उक्तिभाव अभाव तर्क अतर्क यथार्थ द्वौ ओर होतहै अन्तमें द्वौ संकल्पकर फल एक है अंगद बिहँसिकै रावण केवचनको उत्तरदेते हैं ( ४६ ) हे रावण दिन दशकमें बालिकेइहां जायहु सखाकहिकै उरमें लगाइकै सब कुशलका हवाल बूझि लिह्यहु आगे जो रावण बूझा कि बालिकी कुशलकहु त्यहिकी अत्युक्तितर्कलिहे अंगद उत्तर दीन है अरु दिनदश यह एकबाणी है ( ४७ ) हे रावण श्रीरामचन्द्र के विरोधकै जसकुछ कुशलचाही सो बालि सबप्रकारते समुझायदेइगो अरु तुही जो समुझिकै जाइगो सो हवाल बालिसे कहिसुनाई ( ४८ ) अंगदकहते हैं हे शठ ज्यहिके हृदयबिषे भेदहोतहै कि हमारे पिताको मारिनि है इहां जे श्रीरामचन्द्रते बिमुख हैं ते जीवतहि मरे हैं मात पिता भाईमित्र कुटुम्ब इत्यादिक तिनको कवन सम्बन्ध यह जीवकरहै कछु नहीं है ताते इनकर कौनशोचहै जैसे बालि बिमुखकोकार्य कियोरहै तैसे अबतैंहे ( ४९ ) दोहार्थ॥ हमको तैं कुल घालक कहेहै अरुदशशीश तैं कुल पालक सत्यही है अपनेपापते सबको संहार करावैगो जसतैं कहतहसि असतौ आंधर बहिर कोऊनहीं कहैगो अरु तोरे तौ बीसश्रवण नेत्रहैं सो मेरे समुझिबेमें बीसौ आंधर बधिर आदिहीके हैं ( ५० ) हे रावण शिवब्रह्मादिक देवता अरु सम्पूर्ण मुनीश्वर जिन श्रीरामचन्द्रके चरणारविंद कै सेवकाई चाहते हैं अरु नहीं पावते हैं ( ५१ ) तिन श्रीरामचन्द्र के दूतह्वइकै हमें कुलबोराकहै ऐसी मति आवतसंते तोरीछाती नहिं फटि गई ( ५२ ) तब ऐसी कठोरबाणी कपिकी सुनिकै नयन तरेरिकै रिसहोइकै दशानन बोलतभयो है ( ५३ ) हे खल तोर कठिनबचन मैं सहत

**घालकसत्यहैं कुलपालकदशशीश अंधौबधिरनकहैंअस नयनकानतवबीश ५० शिवविरंचिसुरमुनिसमुदाई चाहतजासुचरण सेवकाई ५१ तासुदूतहोइहमकुलबोरा ऐसीमतिउरबिहरनतोरा ५२ सुनिकठोरबाणीकपिकेरी कहतदशाननयनतरेरी ५३ खलतवकठिनबचनमैंसहऊँ नीतिधर्ममैंजानतअहऊं ५४ कहकपिधर्मशीलतातोरी हमहुंसुनाकृतपरत्रियचोरी ५५ देख्यउनयनदूतरखवारी बूड़िनमरय्यउधर्मब्रतधारी ५६ नाककानबिनभगिनिनिहारी क्षमाकीनतुमधर्मबिचारी ५७ धर्मशीलतातवजगजागी पावादरशहमहुंबड़भागी ५८ दो० ॥ जनिजल्पसिजड़जंतुकपि शठबिलोकुममबाहु लोकपालबलबिपुलशशि ग्रसनहेतुजिमि**

हौं काहेते नीतिधर्म मैं जानतहौं ( ५४ ) तब अंगद यथार्थ तर्क करिकै उत्तरदेते हैं हेरावण धर्मशीलपुरुष उन्हींको कहिये जे पराई स्त्री चोराइले जाइं ( ५५ ) हे रावण तोरदूत जो बगैचा रखावते रहे तिनको सहित बाटिका श्रीहनुमान्जी नाशकरिदीन अरु तुम्हारे देखतसंते सोतुमक्षमाकरि गयो धर्मनीति बिचारिकै ऐसे तुम्हारे धर्मनीतिमें धिकहै तुमऐसेहुपर बूड़ि न मरेहु ( ५६ ) अरु तुम्हारी बहिनी शूर्पणखा सो वाहि नाककान बिना तुम रोज देखतेहौ तहांभी धर्महीं बिचारिकै क्षमाकिहे जातेहौ ( ५७ ) तहां तोरि धर्मशीलतासंपूर्ण जगतविषे जागि कही बिदित ह्वइरहीहै ताते हमारिउ बड़ी भागिहै जो तुम्हार दर्शनपावा इहां अंगद युक्तिउक्ति तर्क करिकै रावण के मानको ध्वंसकरतेहैं ( ५८ ) दोहार्थ॥ अंगदके बचनसुनिकै रावणकहतहै हेशठ कपि जड़जन्तु क्यों जल्पबाद करैहै मोरे भुजनको बिलोकु मेरे भुजनकोबल कैसोहै राहु अरु दिग्पाल अपर लोकपालादिकनकर बल बिपुल सम्पूर्ण चन्द्रमाहै तिनके बलको ग्रसिलेतहौं जबजब चाहौं ( ५९ ) पुनि मेरेभुजकैसेहैं नभ जो आकाश है सोई एकसरोवरहैत्यहिविषेमोरजोकर बलसंयुक्तसोकमलकीनाल है अरुकरकमलाजोहथोरीहै सोईफूलहैं तिनपर कैलाशसहित महादेव शोभितभयेहैं जैसे अरुणकमलके फूलफूलेपर हंसबैठते शोभितहोतहैं इहां यहध्वनिहै जैसेकोई सरोवरमें कमलफूलेहैं त्यहिपर हंसबैठते हैं शोभितहोतेहैं तैसेब्रह्मांडकोश सागरबिषे मेरे भुजनको बल कमल इव फलि रह्यउ है सोको नहीं जानतहै सब जानतेहैं सो तू हंस जानिकै जल्पबाद न करै ( ६० ) रावणकहतेहैं हेअंगद तेरेकटकके मध्यविषे ऐसो कौनयोधाहै जो मोसेभिरहि बद कही कहु अथवा बद कही प्रचारिकै कौनयोधा मोसे भिरहिगो

**राहु ५९ पुनिनभसरममकरनिकर करकमलनपरबास शोभितभयोमरालइव शंभुसहितकैलास ६० चौ० ॥ तुम्हरेकटकमाँझ सुनुअंगद मोसन भिरहिकवनयोधावद ६१ तवप्रभुनारिबिरहबलहीना अनुजतासुदुखदुखितमलीना ६२ तुमसुग्रीवकूलद्रुमदोऊ बंधुहमारभीरुअतिसोऊ ६३ जामवंतमंत्रीअतिबूढ़ा सोकिहोइअबसमरअरूढ़ा ६४ शिल्पकर्मजानहिंनलनीला हैकपिएकमहाबलशीला ६५ आवाप्रथमनगरज्यहिंजारा सुनिहँसिबोलेबालिकुमारा ६६ सत्यवचनकहनिशिचरनाहा सांचेउकीशकीनपुरदाहा ६७**

अथवा बद कही मैं प्रचारिकै कहतहौं कोईयोधा मोरेसन्मुख न होइगो ( ६१ ) अरु तोरप्रभु जो तपस्वीहैं तेबलवानहैं सही पर नारिके बिरह ते बलहीनह्वैगयेहैं अरुत्यहिको अनुज अपने भाईके दुःखतेदुःखितहै तातेबलहीनहै ( ६२ ) अरु तुम अरु सुग्रीव नदीके कूलके द्रुम ह्वइरह्यउहै काहेतेतोहिंकोतोपितामरेकोदुःख अरुसुग्रीवको बंधुके मरेको दुःखहै तातेबलहीनहौ मेरेसमरलायक नहीं हौकाहेते समररूपनदीकाप्रवाह जब बढ़ैगो तब तुमदोऊ गिरिपरौगे अरु बिभीषण जो हमारबंधु है सो भीरुकही मेरे भयते सूखाजातहै ( ६३ ) अरु जामवन्तमंत्री बलवानरह्यउ है पर वृद्धह्वइगयोहै मंत्र उपदेश करिबेको बलहै सो समरबिषे कैसे आरूढ़ होइगो ( ६४ ) अरु नलनील शिल्पाकार कर्म

में प्रवीण है महल बनाइबे को थवई ह तहां तुम्हारे कटकविषे एककपि महाबलको शीलकही स्थानहै ( ६५ ) जो कपि प्रथम आयोहै हमारोनगर जारिगयोहै सो महाबलशीलहै यह सुनिकै अंगद बिहँसिकै अपनी उक्तिकरिकै बोलते भये हैं ( ६६ ) हे निश्चरनाह सत्यकह सांच्यहु कपि नगरजारि गयोहै ( ६७ ) यह बड़ो आश्चर्य है कि तैं रावण त्रैलोक्य बिजयी अरु त्यहिकर नगर एक अल्पकपि जारिकै चलाजाइ यह बचन सुनिकै को सत्यमानैगो ( ६८ ) हे रावण जो तुम वीररस सराह्यउ है सो सुग्रीव को लघुदूत धावनहै यह कहतसन्ते सेनाका अतिशयबल सूचितभयो है ( ६९ ) हेरावण जोबहुत चलै त्यहिको बीर न कही प्रभु केवल खबरि लेनेको पठ्यो है ( ७० ) दोहार्थ ॥ पर अबमोको जानिपरेउ कि कपि पुरदहन करिगयो काहेते जानिपरेउ कि बिना श्रीरामचन्द्रकी आज्ञा पुर जारिगयो है ताते भयकरिकै कहूं छपिरह्यउ सुग्रीवकेसमीप नहीं गयो है इहांकोई सन्देह न करै कि अंगदझूठ क्यों कहा यह सभाचातुरी उक्तिहै ( ७१ ) तब अंगद बोलतेभये हैं दशमौलितैं सबसत्यकहे है सो सुनिकै हमारे क्रोधननहीं उत्पन्नभयो

**रावणनगरअल्पकपिदहई सुनिअसबचनसत्यकोकहई ६८ जोअतिसुभटसराह्यउरावन सोसुग्रीवकेरलघुधावन ६९ चलैबहुतसोवीरनहोई पठवाखबरिलेनप्रभुसोई ७० दो० ॥ अबजानेउपुरदह्यउकपि बिनप्रभुआयसुपाइ फिरिनगयोनिजनाथपहं त्यहिभयरहालुकाइ ७१ सत्यकह्यउदशमौलिसब मोहिंनसुनिकछुकोह कोउनहमरेकटकअस तुमसनलरतजोसोह ७२ प्रीतिविरोध समानसन करियनीतिअसआहि जोमृगपतिबधमेडुकहि भलनकहैकोउताहि ७३ यद्यपिलघुतारामकहं तोहिंबधेबड़दोष तदपिकठिनदशकंठसुनु क्षत्रिजातिकररोष ७४ बक्रउक्तिधनुवचनशर हृदयदह्यउरिपुकीश प्रतिउत्तरसडसीमनहुं काढ़तभटदशशीश ७५**

है काहेते हमारे कटकविषे त्वहिंते लड़ाई करिकै को शोभा पावेगो ऐसो कोईनहीं है यह अत्युक्तिवाणी है ( ७२ ) काहेते समान कही अपने बराबरिबल बुद्धि ऐश्वर्य करिकै युक्त होइ तासों बैरप्रीति करिये यह नीतिहैअरु जो सिंह है सो मेडुकको बधैतौ त्यहिको सोहको कोभलकहैगो कोई न कहैगो इहां श्रीरामचन्द्र को सेनासमेत सिंहस्थाने कहाहै अरु रावणको सेनासमेत मेडुकास्थाने कहाहै इहां अंगद अपनी उक्तिसे रावणकै अतिलघुता कीन्हहै ( ७३ ) पुनि अंगद कहतेहैं कि यद्यपितोरे बधेते श्रीरामचन्द्रको लघुताहै काहेते तैं ब्राह्मण कुलमें है तदपि हेदशकण्ठ क्षत्री जातिकर रोष कठिन है ( ७४ ) इहां अंगदकै वक्र उक्ति सो धनुषहै अरु बचन बाणहैं सो रावण रिपुके हृदय विषे दहतकही भारतभये हैं अरु रावणकर प्रत्युत्तर सोई सड़सी है मानो ताही से रावणभट बाणन को खैंचिखैंचि काटतहै ( ७५ ) तब रावण हँसिकै अपनी उक्तिकरिकै कहते हैं देखिये तौ बानरन विषे एक बड़ागुण है कि जो कोई उनकर प्रतिपाल करैहै त्यहिके पुजाइवे हेतु मनबचन कर्म्मते अनेककला उपाय करते हैं ( ७६ ) रावण कहतहै देखिये तौ कीशधन्य हैं जेअपने प्रभुके कार्य्य हेतु जहांतहां लाज परिहरिकै नाचतेहैं ( ७७ ) नाचिकूदिकै लोगनको रिझाइकै अपने पतिकर हितकार जामेंहोइ त्यहिधर्मकी निपुणता अनेक प्रकारते करतेहैं ( ७८ ) हे अंगद तोरिजाति निजस्वामी भक्तहै ताते तैं अपने प्रभुकरगुण यहिभांतिते कस न कहसि ( ७९ ) अरु मैं परमसुजान गुणगाहकहौं ताते तोर कटुवचन काननहीं करतहौं इहां रावणयुक्ति करकै

**हँसिबोल्यउदशमौलितब कपिकरबड़गुणएक जोप्रतिपालैतासुहित करहिंउपायअनेक ७६ चौ० ॥ धन्यकीशजो निजप्रभुकाजा जहंतहंनाचहिंपरिहरिलाजा ७७ नाचिकूदिकैलोगरिझाई पतिहितकरहिंधर्म्मनिपुणाई ७८ अंगदस्वामिभक्तितवजाती प्रभुगुणकसनकहसियहिभांती ७९ मैंगुणगाहकपरमसुजाना तवकटुवचनकरौंनहिंकाना ८० कहकपितवगुणगाहकताई सत्यपवनसुतमोहिंसुनाई ८१ बनबिध्वंससिसुतबधिपुरजारा**

**तदपिनत्यइंकछुकृतअपकारा ८२ सोइबिचारितवप्रकृतिसोहाई दशकंधरमैंकीनिढिठाई ८३ देख्यउंआइजोकछुकपिभाषा तुम्हरेलाजनरोषनमाषा ८४ जोअसिमतिपितुखायउकीशा कहिअसवचनहँसादशशीशा ८५ पितहिखाइखात्यउंअबतोहीं अबहींसमुझिपराकछुमोहीं ८६ बालिबिमलयश-भाजनजानी**

अंगदविषे जातिभाव रोपणकरिकै तिरस्कार करतहै ( ८० ) तैसही अंगदयुक्ति करिकै रावणको तिरस्कार करतेहैं हेरावणतैं जसगुणगाहक हसि तसहनुमान् मोसे सब सांचै कहाहै ( ८१ ) कैसे हम जानाहै हनुमान्जी तोर बनउजारिकै अरु राक्षसन सहित तोरे सुतको बधकीन अरु तोरे पुरको भस्म करिदीन तदपितै अपनेगुण करिकै कछुप्रमाण अरुवहिका अपकार नहीं कीन इहां ब्यंगार्थ है ( ८२ ) सोईतोरि शीलताकै प्रकृति बिचारिकै हेदशकंधर मैं ढिठाई कीन्ह्यउँ ( ८३ ) जो कपि कहा सो मैं देख्यउँआइ नतौ तोरे कवनिउँ लज्जाहै अरु न रोषहै न माषहै तैंनिर्लज्जहसि ( ८४ ) तब रावण हँसिकै कहतहै कि मैंतौ आगेही कहाहै की त्वहिंको युक्ति उक्ति वहुत आवतीहै जोऐसी मति न रही तौअपने पिता को कैसे खाइलिह्यउ है ( ८५ ) अंगद कहते हैं पिताको खाइकै अबहीं तोहूंको खाइजात्यउ परकछु समुझिकै गमखाइजातहौ ( ८६ ) काहेते रावणअस नाम जो तोर है सोतैं बालिके विमल यशकर भाजनहै हे अधम अभिमानी ताते मैं तोको नहीं हतौंहै ( ८७ ) हे रावणसुनु यहिजगत् बिषे केतेरावण भये हैं मैं अपने श्रवणते सुनाहै कि बहुत रावण भये हैं ( ८८ ) एकरावण पातालविषे बलिके जीतबे हेतुगयोहै त्यहिको बालकन हयशालामें बांधिराखाहै ( ८९ ) तेहिको बालकन खेल बनाइकरिकै मारहिं तब दयाकरिकै बलि छोड़ाइदीन है ( ९० ) अरु एकरावणको सहस्राबाहु कवनो जंतुमानिकै धरिलैगयो है ( ९१ ) जब भवन को लैआये तब कौतुक लागिकै सब देखिबे को आये हैं सो पुलस्त्यमुनि जाइकै छोड़ावाहै ( ९२ ) दोहार्थ॥ अरु एकबात कहतकै मैं संकोच करतहौं एकरावण बालिकी काखमें रह्यउहै त्यहितीनि रावण में तैंकौनहसि

**हतौंनतोहिंअधमअभिमानी ८७ सुनुरावणरावणजगकेते मैंनिजश्रवणसुनासुनुतेते ८८ बलिजीतनयकगयोपताला राखाबांधिशिशुनहयशाला ८९ खेलहिंबालकमारहिंजाई दयालागिबलिदीनछुड़ाई ९० एकबहोरिसहसभुजदेखा धाइधराजिमिजंतुविशेखा ९१ कौतुकलागिभवनलैआवा सोपुलत्स्यमुनिजाइछुड़ावा ९२ दो० ॥ एककहतम्वहिंसकुचअति रहाबालिकीकाख तिनमहँरावणकवनतैं सत्यकहहुतजिमाख ९३॥ ***

**चौ० ॥ सुनुशठसोइरावणबलशीला हरगिरिजानजासुभुजलीला १ जानउमापतिजासुशुराई पूज्यउँज्यहिशिरसुमनचढ़ाई २**

माखकही लज्जाक्रोध छांड़िकै सत्यकहु ( ९३ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेलंकाकांडेयुक्तिउक्तितर्कमयबीरसअंगदरावणसंबादबर्णनोनामपंचम-स्तरंगः ५॥

दोहा॥ अंगदरावणप्रबलभट पटतरंगयुगबाद॥ रामचरणसुरबचनसुनिवीरनमिटैविषाद ६ अंगदके बचन सुनिकै तब रावणबोलत भयोहै हे शठ हठबाद छोड़िकै तैंसुनु मैंवेदवेत्ताहौं मैं जानतहौं ज्यहितीनि रावण कै अरु बालिकै तैंवर्णनकिहेहै सो पूर्वही कल्पन विषेभये हैं सो रावण मैं न होउँ मैं सो रावणहौं बलकर शीलकहीस्थान मेरे भुजनकरबल हरगिरिजानते हैं ( १ ) अरु उमापति मेरी शूरताको जानते हैं जिनमहादेव को पूजौसुमन आपनेशीश उतारिकैअरु अपने यशकीरतिकै धूपदीप करौ अरु अपने बलकी नैवेद्य चढ़ाइ महादेव मोको दूनप्रसाददेइँ अरु त्रैलोक्यअभयकैआरतीकरौ ( २ ) यहीप्रकारते अपने करनते शिरसरोजउतारि महादेवकी पूजन मैंअमितबारकीनहै ( ३ ) अरु मेरे भुजन के बलकर विक्रम कही अतितीक्ष्ण प्रबलता सब दिग्पाल जानते हैं हे शठ अजहूं जिनके उरबिषे मेरे भुजनकर बल शालतहै ( ४ ) अरु दिशनके दिग्गज जे

हैं ते मेरेउरकी कठिनाई जानतेहैं जबजब मैंउनसे बरिआई भिरौंजाइ ( ५ ) ते दिग्गज जब अपने दांतनको अभेरहिं तब करालकराल पर्वत फूटिकै चूरह्वैजाहिं अरु जब मैं उनके समीप जाउं अरु कहौं कि मेरी छातीमें दांतदेहु तबवे दांतदैकै बलकरिकै पेलहिं तब उनके दांत टूटिजाहिं उखरिजाहिं जिमि मूरीकीजर बिनप्रयास उखरिजाती है टूटिजाती है ( ६ ) सो रावणमैं हौं ज्यहिके चलतसन्ते पृथ्वी कम्पायमान

शिरसरोजनिजकरनउतारी अमितबारपूजिउँत्रिपुरारी ३ भुजबिक्रमजानहिंदिग्पाला शठअजहूंजिनकेउरशाला ४ जानहिंदिग्गजउरकठिनाई जबजबजाइभिरौंबरिआई ५ जिनकेदशनकरालनफूटे उरलागतमूलकजिमिटूटे ६ जासुचलतडोलतइमिधरणी चढ़तमत्तगजजिमिलघुतरणी ७ सोइरावणजगबिदितप्रतापी सुनेनश्रवणअलीकप्रलापी ८ दो० ॥ त्यहिरावणकहँलघुकहसि नरकरकरसिबखान रेकपिबर्बरखर्बखल तबनजानअबजान ९ चौ०॥ सुनिअंगदसकोपिकहबानी बोलुसँभारिअधमअभिमानी १० सहसबाहुभुजगहनअपारा दहनअनलसमजासुकुठारा ११ जासुपरशुसागरखरधारा बूड़ेनृपअगणितबहुबारा १२ तासुगर्वज्यहिदेखतभागा

होतिहै जैसे मत्तहाथीके चढ़ेते छोटीनाव हालतिहै ( ७ ) सो रावण मैं हौं ज्यहिकर प्रताप जगत् बिषे विदितहै सो तैं श्रवणबिषे सुननेहीं पर सुने तौ होइगो काहेते जगत्‌बिषे ऐसो को है जोमेरे प्रतापको नहीं सुनेहै तहां त जानिकै हठकरिकै अलीक प्रलापकरै है अलीकप्रलाप कही लोकवेद की मर्य्याद छोंड़िकै तैं बाद बिवाद करैहै ( ८ ) दोहार्थ॥ हे अभिमानी त्यहि रावणको तैं लघु कहतहसि अरु तोरस्वामी जोनर त्यहिकर बखानकरतहै रे कपि बर्बरकही बहुत बेमर्याद बोलतहसि खर्बकही ते लघु है हेखल जो मोको तब तैं नहीं जानैहै तो अब अपने ज्ञानकरिकै मोकोजानु जसमैंहौं ( ९ ) रावणके बचन सुनिकै कोपकरिकै अंगद बोलतेभये हैं हे अधम अभिमानी बचन संभारिकै बोलु ( १० ) देखुतौ परशुराम कैसे हैं सहस्राबाहु के भुजगहनकही सूखबनभये हैं अरु जिनकर कुठार प्रबलाग्नि ह्वइकै भस्म करिदियोहै ( ११ ) पुनि जिनके परशाके खरधारा समुद्रभई है त्यहिबिषे अनेकबार बड़ेबीर अगणितराजा डूबिगयेहैं ( १२ ) तिन परशुरामका गर्व श्रीरामचन्द्रके देखतसन्ते नाशह्वैगयोहै हे अधम अभागी तिन श्रीरामचन्द्रको तैं नरकहत है ( १३ ) इहांलघु पदार्थ अरुमहत्पदार्थ द्वौकी नाम सम्बन्ध एकहै तहां महत्पदार्थ बिषे लघुनामके सम्बन्धको निषेधकरिकै कहते हैं बंगाकही जो सबते विरोध करैहै सबके विरोधी शठ बंगा श्रीराचन्द्रको कैसे मनुजकही न कही जैसेसब धनुष बाण धारणकिहे हैं तैसे कामहुको कही न कही काहेते काम सुमन को धनुषबाण लैकै त्रैलोक्यको विजय किहेहै अरु जैसेसर्व नदीहैं तैसे गंगा को कही न कही ( १४ ) जैसेसब गउनको पशुकही तैसे कामधेनुको कही न कही अरु कल्पवृक्षको रूखकही न कहीं अरु जैसे सबदानहै तैसे अन्नहु

सोनरक्योंदशशीशअभागा १३ राममनुजकसरेशठबंगा धन्वीकामनदीपुनिगंगा १४ पशुसुरधेनुकल्पतरुरूषा अन्नदानअरुरसनपियूषा १५ बैनतेयखगअहिसहसानन चिन्तामणिपुनिउपलदशानन १६ सुनुमतिमंदलोकबैकुंठा लाभकिकछुहरिभक्तिअकुंठा १७ दो० ॥ सेनसहिततवमानमथि बनउजारिपुरजारि कसरेशठहनुमानकपि गयोजोतवसुतमारि १८ सुनुरावणपरिहरिचतुराई भजसिनकृपासिंधुरघुराई १९ जोखलभयसिरामकरद्रोही ब्रह्मरुद्रसकराखिनतोही २० मूढ़मुधाजनि

को देब दानकही न कहीं अन्नकरदेब प्राणदानहै अरु जैसे सबरस हैं तैसे पियूष जो अमृतहै तेहूको रसकही न कही ( १५ ) अरु बैनतेय कही गरुड़जैसे सब बिहंगहै तैसे गरुड़को कहीनकही अरु जैसेसब सर्पहैं तैसे सहसानन जो शेष अनन्त हैं तिनको सर्पकही न कही अरु जैसेसब शिलाहैं तैसे चिंतामणि को कही न कही ( १६ ) हेदशानन

मतिमन्द जैसे सब लोकहैं तैसे बैकुंठौको कही न कही अरु जैसे अर्थधर्म कामकोलाभ है तैसे हरिकी भक्तिहुको लाभकही न कही काहेते हरिकी भक्तिको अकुंठकही अखंड लाभहै ( १७ ) दोहार्थ॥ जो हनुमान् तोरबन उजारिकै तोर सुतमारिकै सेनासहित तोरमान मथिकै तोरपुर जारिकै निशंक चलागयो त्यहि हनुमान् को जैसे सबकपि तैसे कही न कही अरु हे दशानन जैसे सब राक्षस तैसे तोकोकही न कही तहां महाराक्षस है ( १८ ) अंगदजी कहते हैं हे रावण चतुराई त्यागिकै त्यागिकै सुनु कृपासिन्धु श्रीरघुनाथ को कसनहीं भजसि भजु यामेंतोर कल्याणहै ( १९ ) अरु हेखल जो तैंश्रीरामचन्द्रकर द्रोही भयसिहै तौ जिन ब्रह्मै शिव तोको बरदान दीन है तेऊतोरि रक्षा न करिसकैंगे ( २० ) हेमूढ़ मुधाकही वृथा जनिगाल मारसिश्रीरामचन्द्रके बैरते असहालहोई ( २१ ) तोरशिर श्रीरामचन्द्रके बाणन के लागेते कपिनकेआगे कटिकटि गिरिपरैंगे ( २२ ) तिनशिरनको कंदुककही गेंदकीनाई कपि चौगानमें खेलहिंगे ( २३ ) हे दशानन जब श्रीरामचन्द्र समरविषे कोपकरैंगे तब अनेक कराल शायक छूटहिंगे ( २४ ) तबतेरी गालाढ़ोड़ी ऐसी न चलैगी ताते तैं श्रीरामचन्द्र उदार तिनको भजु उदारकही जे जीव निष्कपट ह्वैकै किन्तु कपटौयुक्त थोड़ौभजन करैं हैं तिनको अपनाइ लेतेहैं ( २५ ) हेपार्बती अंगदके बचन सुनिकै परकही उत्कर्ष करिकै रावण क्रोधते जरिउठाहै जैसे प्रज्वलित अग्निबिषे घृतपरै है ( २६ ) दोहार्थ॥ तब रावण बोल्यो हे कपिमूढ़ मेरे कुम्भकर्ण ऐसे तौ

मारसिगाला रामबिमुखहोइहिअसहाला २१ तवशिरनिकरकपिनकेआगे परिहहिँधरणिरामशरलागे २२ तेतवशिरकंदुक इवनाना खेलहिंभालुकीशचौगाना २३ जबहिंसमरकोपिहैंरघुनायक छुटिहहिंअतिकरालबहुशायक २४ तबकिचलीअसगाल तुम्हारा असबिचारिभजुरामउदारा २५ सुनतबचनरावणपरजरा बरतमहानलघृतजनुपरा २६ दो०॥ कुंभकर्णअसबंधुमम सुतप्रसिद्धशक्रारि मोरपराक्रमनहिंसुने जित्यउंचराचरझारि २७ चौ० ॥ शठशाखामृगजोरिसहाई बाँध्योसिंधुइहैप्रभुताई २८ नांघहिंखगअनेकबारीशा शूरनहोहिंतेसुनुजड़कीशा २९ ममभुजसागरबलजलपूरा जहंबूड़ेअगणिनृपशूरा ३० बीसपयोधिअगाधअपारा

भ्राता हैं छठयेमहीना ज्यहिके जागतसन्ते त्रैलोक्य कम्पायमान होत है अरु मेरे सुत जो प्रसिद्ध शक्रारि जाको सब कोई जानत है इन्द्रजीत ज्यहिके सहज बोलतसन्ते सहित इन्द्रलोक सर्व दिग्पाल कांपते हैं अरु तैं मोर पराक्रम नहीं सुनेहै मैं जहांतक ब्रह्माकै सृष्टिभरिकै जे चराचर हैं सो सब मैं जीतलीन है ( २७ ) रावण कहत है हे शठशाखा मृग बानरनकै सहाय जोरिकै समुद्र बांध्यो है इहै बड़ी प्रभुता तुमठीक किहेहौ ( २८ ) हे शठ कीश खग जे विहंग हैं ते उड़िकै अनेकसमुद्र लांघिजातेहैं का तिनको शूरकहीन कही ( २९ ) सुनु मेरे भुजासागरहैं अरु भुजनकर बल सोई परिपूर्ण जलहै जहां अगणितराजा डूबिमरे हैं ( ३० ) अरुतुम एकसमुद्रकै खाड़ीबांधिकै पारभयोहै अरु मेरेभुजा बीससमुद्र अपारहैं तहां ऐसो कवन बीरहै जो पार पाइहि ( ३१ ) हेखल मैंसब दिग्पालनको कहारकरिकै जलभरावतहौं तहांतैं एकभूपको सुयश मोको सुनावत हसि ( ३२ ) जोपै तोरनाथ सुभटहैं ज्यहिकर गुणगाथ बारबार कहतहसि ( ३३ ) तौ बसीठी कही दूत काहेको पठावते हैं रिपुसन प्रीतिकरतकै लाजउनहीं लागतहै ( ३४ ) मोरभुजा तौ निरखहु हरगिरिकर मथनकरताहै हे शठ इनभुजनको देखिले पुनि अपनेनाथको सराहेसु ( ३५ ) दोहार्थ॥ हेशठ मेरीबराबर शूरकवनहै स्वकरकही ज्यहि अपने हाथनते अपने शीशकाटिकाटि बहुबार होमकिह्याउं सो गिरीश हर्षित अरु साखीहैं जिनके निमित्त होमकिह्याउं है ( ३६ ) जब मोरशीश अग्निबिषे जरैलागे तबजो मरे कपालमें ब्रह्मैलिखाहै ( ३७ ) सो मैं बांचिलेउं यह

कोअसबीरजोपाइहिपारा ३१ दिगपालनमैंनीरभरावा भूपसुयशखलमोहिंसुनावा ३२ जोपैसमरसुभटतवनाथा पुनि पुनिकहसिजासुगुणगाथा ३३ तौबसीठपठवतक्यहिकाजा रिपुसनप्रीतिकरतनहिंलाजा ३४ हरगिरिमथननिरखुममबाहू पुनिशठकपिनिजनाथसराहू ३५ दो० ॥

शूरकवनरावणसरिश स्वकरकाटिनिजशीश हुनेअनलमहंबारबहु हरषितसाखिगिरीश ३६ जरतबिलोकेउंजबहिंकपाला बिधिकेलिखेअंकनिजभाला ३७ नरकेकरआपनवधबांची हँस्यउँजानिबिधिगिराअसांची ३८ सोमनसमुझित्रासनहिंमोरे लिखाबिरंचिजरठमतिमोरे ३९ आनबीरबलशठममआगे पुनिपुनिकहसिलाजपतित्यागे ४० कहअंगदसलज्जजगमाहीं रावणतोहिंसमानकोउनाहीं ४१ लाजवंततवसहजसुभाऊ निजमुखनिजगुणकहैनकाऊ ४२ शिरअरुशैल कथाचितरही तातेबारबीसतैंकही ४३ सोभुजबलराखेउउरघाली जीत्यउसहसबाहुबलिबाली ४४ सुनुमतिमंददेहअबपूराकाटे

लिखारहै कि नरके हाथ यहिकर बधहोइगो यह लिखासमुझिकै मैं हँसतभयों है कि ब्रह्मा बड़ाझूठाहै ( ३८ ) सो मनमें समुझिकै मोको त्रासनहीं भई काहेते ब्रह्माजरठ कही वृद्धह्वइगयो है ताते मतिभोरी ह्वैगईहै ( ३९ ) हेशठ तैं मोरेआगे आनवीरकरबल वर्णनकरत है तोरे लज्जापतिकही आबरूहीनहीं है ( ४० ) रावणके बचनसुनिकै अंगद युक्तिकरिकै रावणकर प्रताप शूरताखंडन करिकै कहते हैं तोरी बराबरि आबरूही सलज्ज जगत् में कोई नहीं है ( ४१ ) हे निर्लज्ज लाजवंतकर तौ सहजसुभावहै कि आपनगुण अपने मुखते नहीं कहते हैं अरु तैं आपनगुण अपने मुखते बारबार कहैहै ( ४२ ) अरु तोरे शीशकाटिकै अरु शैलउठाइबेकै यह कथा चित्तमें रहिगई है ताको तैं बीसबार कहीहै ( ४३ ) ज्यहिभुजन ते शैलउठायो है सो भुज जो तुम्हारे उरमें संग्रामविषे रहिजाइगो तौहमजानब कि सहस्राबाहुबली बालि इत्यादिकन को तुम जीत्यहुहै ( ४४ ) हे मतिमन्द अबसुनु पूराकही देह होमेते अरु शीशकाटेते शूरनहीं कहावै ( ४५ ) काहेते बाजीगर अपनेहाथते अपनो शरीर काटिडारैहै ताको का वीरकही न कहीं ( ४६ ) दोहार्थ॥ हे मतिमन्द अपने मनमें समुझिकैदेखु पतंग विमोहके बश अग्निविषे जरिजाते हैं तैसे तैं सकामह्वैकै शिव को शीश चढ़ाये है अरु तैसे तैं शैलउठाये है तहां खरकही गदहाबृन्दकही बहुतभार वाहकहोतहै तेका शूरसराहिबेमें आवते हैं शूरनहीं हैं ताते तैं पतंग अरु गदहाहै ( ४७ ) अंगद कहते हैं हे खल अब तौ बतबढ़ाव न करसि मोरेबचन सुनिकै त्यागिदे ( ४८ ) हेदशमुख मैं बसीठी

शीशकिहोइयशूरा ४५ बाजीगरकहंकहियनबीरा निजकरकाटेसकलशरीरा ४६ दो० ॥ जरैपतंगबिमोहबशभारबहैखरवृन्द तिन्हैंनशूरसराहियेसमुझिदेखुमतिमंद ४७ चौ० ॥ अबजनिबतबढ़ावखलकरई सुनिममबचनमानपरिहरई ४८ दशमुखमैंनबसीठीआयउ असबिचारिरघुबीरपठायउ ४९ बारबारइमिकहहिंकृपाला नहिंगजारियशबधेशृगाला ५० मनमहंसमुझिबचनप्रभुकेरे सहेउंकठोरबचनशठतेरे ५१ नाहिंतोकरिमुखभंजनतोरा लैजात्यउं सीतहिबरजोरा ५२ जानेउं तवबलअधमसुरारी हरि आनेउसूनेपरनारी ५३ तैंनिश्चरपतिगर्वबहूता मैं रघुपतिसेवककरदूता ५४ जोनरामअपमानहिंडरऊँ तोहिंदेखतअसकौतुककरऊं ५५

नहीं आयो है असबिचारिकै श्रीरघुनाथजी मोको पठायोहै ( ४९ ) बारबार कृपालुकहाहै कि हे अंगद गजारि जो सिंह है सोसियारको मारेतोकछु यशनहीं है तैसे तोहिं बधेते श्रीरघुनाथजी को कौनिशोभाहै कछुनहीं है ( ५० ) इहै प्रभुके बचन मनमें समुझिकै तोरकठोर बचनमैं सह्यउँ है ( ५१ ) जो यहबचन श्रीरघुनाथजी न कहते तौ तोर मुख भंजनकरिकै श्रीजानकीजी को बरजोर लैजात्यउँ ( ५२ ) हे अधर सुरारि तोरबलमैं भलीप्रकारते जान्यो है काहेते सूने चोरीकरिकै परनारी श्रीजानकीजीको हरिलैआयसि है वीरजेहैं ते चोरीनहीं करतेहैं वीरनकै इहै मर्य्याद है ( ५३ ) अरु तै निशिचरनकर पतिहै तोरे गर्वबहुत है अरु मैं श्रीरघुपति के सेवक जेसुग्रीवहैं तिनकर दूतहौं ( ५४ ) जो श्रीरामचन्द्रके अपमान को नडरौं तौ तेरेदेखत असकौतुक करौं हेशठ जस आगेकहतहौं जोतसकौतुककरिजाउँ अरुपश्चात् तोको श्रीरामचन्द्रजी बधैंगे तौयामें श्रीरघुनाथजीकर

अपमान होतहै ( ५५ ) दोहार्थ॥ नाहिं तौ तो को पृथ्वी में पटकिकै सेनाबधिकै लंकाचौपटकरिकै मन्दोदरी समेत श्रीजानकीजीको लैजाउँ पर श्रीरघुनाथजी की आज्ञा नहीं है ताते डरतहौं ( ५६ ) जो असकरौं तदपि बड़ाई नहीं है काहेते मुरदाके मारेतेकछु मनुसाई नहीं है ( ५७ ) जो कोई काहूते कौलकही कौनौकरार करतेहैं कछु देइकहतेहैं अरु वहबात नहींकरते हैं पुनि जीवहिंसकहैं अरु चोर हैं मिथ्याबादी अरु पाखंडी इनकी कौलसंज्ञाहै अरु कामी जे हैं काम अरु कामनाकेवशहैं अरु कृपणजो लोभी हैं अरु मूढ़ जे मूर्खहैं अरु अतिदरिद्री जेहैं धन करिकै हीनहैं अरु अतिशय असंतोषी हैं अरुअयशीजिनकर यश जगत्में नहीं है अरु अतिवृद्ध जेहैं ( ५८ ) अरु जेसदा रोगकेवशहैं अरु जेसंतत

दो०॥ तोहिंपटकिमहिसेनहतिचौपटकरितवगाउं मंदोदरीसमेतशठजनकसुतहिलैजाउं ५६ चौ० ॥ जोअसकरौंनतदपि बड़ाई मुयेहिबधेकछुनहिंमनुसाई ५७ कौलकामबशकृपणबिमूढ़ा अतिदरिद्रअयशीअतिबूढ़ा ५८ सदारोगबशसंततक्रोधी विष्णुबिमुखश्रुतिसंतबिरोधी ५९ निजतनपोषकनिर्दयखानी जीवतशवसमचौदहप्रानी ६० असबिचारिखलबधौंनतोहीं अबजनिरिसउपजावसिमोहीं ६१ सुनिसकोपकहनिशिचरनाथा अधरदशनगहिमींजतहाथा ६२ रेकपिपोचमरणअबचहसी छोटेबदनबातबड़िकहसी ६३ कटुजल्पसिजड़कपिबलजाके बुधिबलतेजप्रतापनताके ६४ दो० ॥ अगुणअमानबिचारित्यहि पितादीनबनबास

कही निरंतर बेकारणही क्रोधकिहे रहतेहैं अरु विष्णुते बिमुखहै अरु जेवेदके अरु संतनके बिरोधी हैं ( ५९ ) अरु जे अपने तनको पोषणकरतेहैं अरु जे निर्दयहैं काहूके जीवपर दयानहीं है हेशठ ये चौदह प्रानीजीवतहि शवकहीमृतक मुर्दाकेसम हैं ( ६० ) हे खल असबिचारिकै मैं तोको नहीं बधौंहौं तैं मृतकसमहै अब तैं बढ़ाव करिकै मोरे क्रोध न उपजावै ( ६१ ) यहसुनिकै निशिचरनाह कोपसंयुक्त ओष्ठ दांतते दाबतहै अरु हाथमींजिकै कहतहै ( ६२ ) रे कपिपोच अब तोरिमृत्यु होवाचहतिहै तैं छोटेबदनते बातबड़ी कहतहै ( ६३ ) हेकपिजड़ ज्यहिके बलतेतैं कटुजल्पना करतहै त्यहिके बुद्धि बल तेज प्रताप एकौ नहींहै ( ६४ ) दोहार्थ॥ अरु तोरस्वामी जो है सोअगुणहै एकौगुण नहींहै अरुअमानहै मानापमान नहींहै यह विचारिकै पितैंबनको पठाइदीन है त्यहिदुखते दुखित है अरु युवतीके बिरहकर दुख है अरु त्यहिपर निशिदिन ममकही मोरित्रास है पहिले दुइक्यों यह सिद्धांत कह्यासिहै आगे अपनीयुक्ति बनाइकै कह्यउँहै ( ६५ ) रावण कहतहै उत्कर्षबाणी जामें तुरन्त विरोधहोइ हे शठ जिनके बलकर तोको बहुतगर्व है सो ऐसे मनुज अनेकन मेरे निशिचर अहर्निश खातरहे हैं हे मूढ़ टेक तजिकै समुझु ( ६६ ) हे गरुड़ जब रावण श्रीरामचन्द्रको केवल मनुष्यकरिकै निंदाकीन्ह तब कपींद्र अंगद कोधवन्तभये हैं ( ६७ ) तहां अंगद बिचारकीन है कि हरि हरकै निंदा जो कोई करै तो वह प्राणी पापकोरूपहै अरु जो सुनै ताको गोबधको पापहोतहै ( ६८ ) तब महामत्त कुंजर अंगद कटकटाइ कहीं अंगअंग थरथराइकै क्रोधकरिकै दोनों भुजदंड तमकिकैपृथ्वी पटकत भयेहैं ( ६९ ) तब पृथ्वीमें अतिकांपति भईहै सुमेरुआदिक पर्वत देवलोकसुद्धां डगमगाइरहै हैं समुद्रको

सोदुखअरुयुवतीबिरहपुनिनिशिदिनममत्रास ६५ जिनकेबलकरगर्वत्वहिं ऐसेमनुजअनेक खाहिंनिशाचरदिवसप्रति मूढ़समुझुतजिटेक ६६ जबत्यइंकीनरामकैनिंदा क्रोधवंततबभयोकपिंदा ६७ हरिहरनिंदासुनैजोकाना होइपापगोघातसमाना ६८ कटकटायकपिकुंजरभारी द्वौभुजदंडतमकिमहिमारी ६९ डोलतधरणिसभासदखसे चलेभागिमारुतभयग्रसे ७० गिरतदशाननउठेउसँभारी भूतलपरेमुकुटषटचारी ७१

कछुत्यइंलैनिजशिरनसँवारे कछुअंगदप्रभुपासपँवारे ७२ आवतमुकुटदेखिकपिभागे दिनहिंउलूकपरनअबलागे ७३ कीरावणकरिकोपचलाये कुलिशचारिआवतहैंधाये ७४ प्रभुकहहँसिजनिहृदयडेराहू लूकनअशनि

जल उछलतहै लंकाके कंगूरा गिरिपरत हैं तहां सभासदकारका आकारविषे दुइआकार लैकै असदसभा होतहै सो रावणकै असदसभा खसे कहीसब गिरिपरेहैं अरु भयकरिकै भागिचलेहैं जैसे प्रबल मारुतकीप्रेरणाते वृक्षके सूखपत्ता उड़िजातहैं ( ७० ) अरुसिंहासन ते रावण गिरेउहै दशौमुकुट भूमिमें गिरिपरेहैं पुनि संभारिकै उठतभयोहै ( ७१ ) तबषट्मुकुट तौ संभारिकैं रावण अपने शीश पर धरतभयो है अरु चारिमुकुट अंगदलैकै तुरन्त श्रीरघुनाथजीके इहाँ फेंकिदियेहैं ( ७२ ) तहांआकाशबिषेमुकुटचले आवतेहैं सो देखिकै कपिनकै सेनाभागतिभईहै यहकहते हैं हेविधाता दिनहींविषे लूकपरने लागेहँ ( ७३ ) बानरकहतेहैं किरावणअपनेकोप चारिकुलिशरूपकै चलायोहै किन्तु कोपकरिकै चारिकुलिश कही वज्र चलायोहै सो धाये चलेआवतेहैं ( ७४ ) तब श्रीरामचन्द्र बिहँसिकैकहते हैं हेबानरहु न डेराहु नतौ यह लूकहै न राहुकेतुहै न अशनिकही वज्रहै ( ७५ ) ये चारिउ दशकन्धरके किरीटहैं बालितनयके प्रेरे कही फेंकेते चले आवतेहैं ( ७६ ) दोहार्थ॥ जब येकिरीट नगीचआये तब हनुमान् जी आकाशबिषे कूदिकै गहिकै श्रीरघुनाथजी के अगारी धरिदीन है तहांमानहुं चारिसूर्य प्रकाशित हैं सो भालु कपि धाइधाइ कौतुक देखते हैं ( ७७ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेलंकाकांडेरावण-सभामानभंगअंगदविजयबर्णनन्नामषष्ठस्तरंगः ६॥ :: :: :: :: :: ::

दोहा॥ रामचरणसतईलहरिपगरोप्यउसुतबालि डिगैनकोटिनभटलगेरावणादिबलशालि ७ हे पार्बती इहां रावणरिसाइकै कहतहै हेनिशिचहु

केतुनहिंराहू ७५ येकिरीटदशकंधरकेरे आवतबालितनयकेप्रेरे ७६ दो० ॥ कूदिगह्यउतबपवनसुतआनिधरेप्रभुपास कौतुकदेखहिँभालुकपिदिनकरसरिसप्रकास ७७॥ * * * * *

चौ०॥ इहाँकहतदशकंधरिसाई धरिमारउकपिभागिनजाई १ यहिबिधिवेगिसुभटसबधावहु खाहुभालुकपिजहँतहँ पावहु २ महिअकीशकरिफेरिदोहाई जियतधरहुतापसदोभाई ३ पुनिसकोपबोल्यउयुवराजा गालबजावततोहिँनलाजा ४ मरुगलकाटिनिलजकुलघाती बलबिलोकिबिदरतनहिँछाती ५ रेतियचोरकुमारगगामी खलमलराशिमंदमतिकामी ६ सन्निपातजल्पसिदुर्बादा भयसिकालवशखलमनुजादा ७ याकोफलपावहुगेआगे बानरभालुचपेटनलागे ८ राममनुजबोलतअसबानी गिरतनतब

यहिकपिको धरिकैंमारहु भागि न जाइपावै ( १ ) अरु येहीबिधिसे सब सुभट धाइधाइ जहां तहां भालु कपिनकहँ धरिधरि खाइलेहु ( २ ) यह पृथ्वी बानर रीछनते रहित करिदेहु अरु मोरिदोहाई फेरिकै जियतही दोऊभाई तपस्विनको धरिलेहु ( ३ ) तब यहसुनिकै युवराज सकोप बोलतेहैं हे शठ तोको गालबजावतकै लाजौ नहीं लागतिहै ( ४ ) हे निर्लज्ज कुलघाती गर काटिकै मरिनहीं जात्यसि तोको आपनबल बिलोकिकै बिदरतिकही छाती नहीं फाटिजाइहै ( ५ ) हे त्रियाचोर कुमार्गगामीरे खल मलकीराशि मन्दमति अतिकामी सुनु ( ६ ) तोको श्रीरामचन्द्र के भय करिकै सन्निपात होइगयो है ताते तैं जल्पिजल्पि दुर्बाद कहत है हे शठ मनुजाद आद कही हिंसाको हे खल तैं मनुष्यन को खाइ लेत है अब तैं कालके वशभयसि है ( ७ ) यह अपनी करणीकर फल आगे पावहुगे जब बानर भालुनके चपेटे कही धक्कालागहिंगे ( ८ ) हे अभिमानी श्रीरामचन्द्रको मनुज कहतसंते तोरिरसना न गिरिपरी ( ९ ) पर समरभूमिमें दशौशीश संयुक्त तेरी रसना गिरहिंगी यामें संशय नहीं है ( १० ) सोरठार्थ। हे शठ दशकन्ध तिनको

नरकही जिन एकबाणते बालि महावीर त्यहिको बधकीन है तैं बीसौलोचनते अंध है धिक्है तोको कुजाति जे राक्षस तिनके घरमें तोर जन्मै ( ११ ) हे निशिचर अधम तैं कटु जल्पबाद करैहसि कटुकही करू जल्पबाद करै है जो काहूको नहींरुचै है अबहींतोको बधिडारत्यउँ पर तेरेलोहूके पियासे श्रीरामचन्द्रके बाणहैं ताते त्यहिडरते तोको छांड़िदेतहौं ( १२ ) हे रावण तोर दांत तोरिबेलायक

रसनाअभिमानी ९ गिरिहैंरसनासंशयनाहीं शिरनसमेतसमरमहिमाहीं १० सो० ॥ सोनरक्योंदशकंध बालिबध्योजिनएकशर बीसहुलोचनअंध धिकतवजन्मकुजातिधर ११ तवश्रोणितकीप्यास तृषितरामशायकनिकर तजौंतोहिंत्यहित्रास कटुजल्पसिनिशिचरअधम १२ चौ०॥ मैंतवदशनतोरिबेलायक आयसुपैनदीनरघुनायक १३ असरिसहोइदशौमुखतोरौं लंकागहिसमुद्रमहँबोरौं १४ गूलरिफलसमानतवलंका बसहुमध्यतुमजंतुअशंका १५ मैंबानरफलखातनवारा आयसुदीननरामउदारा १६ युक्तिसुनतरावणमुसुकाई मूढ़सिखेकहँबहुतझुठाई १७ बालिकबहुंअसगालनमारा मिलितपसिनतैंभयसिलवारा १८ सांच्यउमैंलवारदशशीशा जोनउपारेउँतवभुजबीशा १९ रामप्रतापसुमिरिकपिकोपा सभामाँझप्रणकरिपदरोपा २० जोममचरण

तौ महीं सामर्थहौं पर श्रीरघुनाथजीने आज्ञानहींदीनहै ( १३ ) असरिस उत्पन्नहोतिहै कि तोर दशौमुख तोरिडारौं अरु लंकाउखारिकै समुद्रमहँ बोरिदेउँ ( १४ ) तोरि लंकागूलरिके फलके समानहै अरु तुमफलके जन्तुहौ त्यहिकेमध्य अशंकबसतेहौ ( १५ ) अरु मैं बानरहौं फलैहमार अहार हैं फलखात हम बिलंब नहींकरते हैं तहां उदारकही सामर्थ श्रीरघुनाथजीने आज्ञा नहींदीन नहीं तो तोरिलंका गूलरिके फलइव तोहिं सुद्धां खाइलेत्यउँ ( १६ ) हेभरद्वाज यह अंगदकैयुक्ति सुनिकै रावण मुसुकाइकै कहतहै हे मूढ़ यतनीझुठाई कहां सिखेहै ( १७ ) बालिको मैं जानतहौं ऐसो गालकही झूठ कबहूं नाहीं कह्यउहै सत्यबादीरह्यउहै अरु तैंतपसिनमहँ मिलिकै महालवारभयसि है ( १८ ) तब अंगदकहते हैं हे दशशीश मैं सांच्यउलवारहौं जो संग्रामविषे तोर बीसौभुजा उखारि न डारौं ( १९ ) हे पार्वती श्रीरामचन्द्रकर प्रताप सुमिरिकै अंगद कोपकरिकै सभाके मध्यविषे प्रणकरिकै पगरोंपतभये हैं ( २० ) हे शठ जो मोरचरण टारिसकसि तौ श्रीरामचन्द्र फिरिजाइँ श्रीजानकीजीको मैंहारिचुक्यों इहां यह अभिप्राय है कि रामकेप्रतापकर ध्रुवविश्वास है कि मोरपग न टरैगो अर्थ यही सिद्धान्त है पुनि सामान्य अर्थ करते हैं कि हे शठ जो मोरचरण टारिसकसि तौ श्रीरामसीता तोको मारिकै फिरबैकरेंगे पर मैं तोसे हारिचुक्यों संग्राम विषे मैं तेरेसन्मुख न होउँगो किन्तु इहां काकु शब्दकरिकैअर्थकरते हैं जोमोरचरण टारिसकसि न टारिसकैगो काहेते जोरामसीता मोसे फिरेहोहिं तौ तैं टारिसकै सीतारामचन्द्र तौ मेरेसम्मुख हैं तातेमैं तोसे कैसे हारौंगो न हारौंगो ( २१ ) तब दशशीशकहत है हेसुभट राक्षसहु पदगहिकै यहिबानरको पृथ्वीमेंपछारिडारौ ( २२ ) तब रावणके

सकसिशठटारी फिरहिंरामसीतामैंहारी २१ सुनहुसुभटसबकहदशशीशा पदगहिधरणिपछारहुकीशा २२ इन्द्रजीतआदिकबलवाना हर्षिउठेजहँतहँभटनाना २३ झपटहिंकरिबलविपुलउपाई पदनटरैबैठहिंशिरनाई २४ पुनिउठिझपटहिंसुरआराती टरैनकीशचरणयहिभाँती २५ पुरुषकुयोगीजिमिउरगारी मोहबिटपनहिंसकहिउपारी २६ दो० ॥ भूमिनछाँड़तकपिचरणदेखतरिपुमदभाग कोटिबिघ्नतेसंतकर मनजिमिनीतिनत्याग २७ चौ० ॥ कपिबलदेखिसकलहियहारे उठाआपुयुवराजप्रचारे २८

वचनसुनिकै इन्द्रजीत आदिक अनेकन योधा उठेहैं ( २३ ) ते सबयोधा झपटि झपटि अंगदके पगगहि गहि उठावतेहैं अनेक बल उपायकरिकै पग नहींटरैहै लजाइकै शीशनाइकै बैठतेहैं मानहुँ अंगदके चरणमें नमस्कारकरते हैं कि धन्य यहवीर है ( २४ ) पुनि सुरनके आरातीजे बैरी ते पुनि पुनि अपरराक्षस अरुतेऊ उठिउठि झपटि झपटि अंगदकेचरणगहते हैं पगनहीं उठे यहि भांतिते ( २५ ) हेउरगारिजैसे कुयोगी कही पाखण्डी पुजाइबेहेतु ऐसे पुरुष जे हैं ते मोहकर बिटप नहीं उखारिसकते ( २६ ) दोहार्थ॥ हे पार्वती कोटिन योधा लागिरहे हैं कपिकरचरण भूमिनहीं छोड़ैहै सो रावण देखिकै बीरताकोमद जातरह्यउहै जैसे कोटिनबिघ्न प्राप्तिहोत सन्ते सन्तनकर मन नीतिको नहीं त्यागैहै तिनको साधुता नहीं डिगैहै तैसे अंगदकर पदनहीं टरै है ( २७ ) कपिकर बलदेखिकै सकल हृदय मेंहारि गये हैं तब रावण अंगदको प्रचारिकै तालदैकै आपुउठत भयो है अंगदकेपग गहिबेको झुक्यउहै ( २८ ) तब बालिकुमार रावणकी मर्यादाराखिबेहेतु गहतसमय युक्ति करिकै कहते हैं हे रावण मोरचरण गहेते तोर उबारनहीं है ( २९ ) हे शठ श्रीरामचन्द्रकर चरण नहीं गहसिजाइ जातेलोकहु परलोकहुमें तोरभला होइगो यह सुनिकै मनमें अति सकोचकरत लजाइकै रावण फिरतभये हैं ( ३० ) तेजहतभयो है श्रीसब जातरहीहै जैसे मध्यदिवस कही दुपहरबिषे चन्द्रमा अशोभित है ( ३१ ) तब सिंहासनपर शीशनीचे करिकै बैठतभयोहै मानहु सबसम्पति गँवाइदियोहै ( ३२ ) हे पार्वती सम्पूर्ण जगत्के आत्मा चैतन्य कर्त्ता प्राणपति श्रीरामचन्द्र तिनते बिमुखह्वैकै किमि बिश्रामकोलहै न लहैगो ( ३३ ) हे उमा श्रीरामचन्द्रकी भृकुटी के बिलास ते अनेक ब्रह्मांड उत्पत्ति पालन प्रलय

**गहत चरणकहबालिकुमारा ममपदगहेनतोरउबारा २९ गहसिनरामचरणशठजाई सुनतफिरामनअतिसकुचाई ३० भयोतेजहतश्रीसबगई मध्यदिवसजिमिशशिसोहई ३१ सिंहासनबैठाशिरनाई मानहुसंपतिसकलगँवाई ३२ जगदात्माप्राणपतिरामा तासुबिमुखकिमिलहबिश्रामा ३३ उमारामकरभृकुटिबिलासा होइबिश्वपुनिपावहिनासा ३४ तृणतेकुलिशकुलिशतृणकरहीं तासुदूतप्रणकहुकिमिटरहीं ३५ पुनिकपिकहीनीतिविधिनाना मानतनाहिँकालनियराना ३६ रिपुमदमथिप्रभुसुयशसुनाये असकहिचलेबालिनृपजाये ३७ हतौंनखेतखेलाइखेलाई त्वहिँअबहींकाकरौंबड़ाई ३८ प्रथमहिँतासुतनयकपिमारा सोसुनिरावणभयोदुखारा ३९ यातुधानअंगदबलदेखी भैब्याकुलसबसभाविशेखी ४० दो०॥ रिपुबलधर्षितहर्षिकपिबालितनयबल**

होतहै ( ३४ ) श्रीरामचन्द्रचाहैं तौ तृणको कुलिश करिदेहिं अरु कुलिशको तृण करिदेहिं तिनके दूतकर प्रण कहौ कैसे टरै न टरै ( ३५ ) पुनि अंगद नानाप्रकार की नीति उपदेश कीनहै सो रावण सुनतनहींहै काहेते कालकेबश भयोहै ( ३६ ) हे गरुड़ रावणकर मदमथिकै श्रीरामचन्द्रकर सुयश सुनाइकै अंगद चलत भये हैं ( ३७ ) पुनि यहवात कहिकै हे खल जोतोको रणभूमिबिषे खेलाइ खेलाइहतौं तौसही तोसे अवहीं अपनी बड़ाई का करौं ( ३८ ) प्रथमहीं जो अंगदने रावणकर पुत्रमारा सोरावणसुनिकैदुःखितभयोहै ( ३९ ) हेभरद्वाज यातुधान अंगदकर बलदेखिकै सम्पूर्ण सभाबिशेषिकै विकलभईहै ( ४० ) दोहार्थ ॥ हे गरुड़ बालिकर तनय बलकरपुंज रिपुकेबलको धर्षितकही परास्त करिकै हर्षिकै प्रेमते नेत्रनमें जल भरिआये हैं तनपुलकि आयेहैं श्रीरामचन्द्रके चरणारबिंद बिषे परतभयेहैं ( ४१ ) इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेलंकाकांडेरावण-सभामदभंगवर्णनन्नामसप्तमस्तरंगः ७॥ :: :: :: :: :: :: :: ::

**पुंज सहजसुलोचनपुलकतनगहेरामपदकंज ४१॥** * * * *

दो०॥ साँझजानिदशमौलितब भवनगयोविलखाय मंदोदरिनिशिचरपतिहिंबहुरिकहासमुझाय १ चौ० ॥ कंतसमुझिमनतजहुकुमतिही सोहनसमरतुमहिँरघुपतिही २ रामानुजलघुरेखखँचाई सोइनहिँनांघ्योअतिमनुसाई ३ पियतुमताहिजितबसंग्रामा जाकेदूतकेरअसकामा ४ कौतुकसिंधुनांघितवलंका आयोकपिकेशरीअशंका ५ रखवारेहतिबिपिनउजारा देखततोहिँअछ्यज्यइँमारा ६ जारिनगरकीन्ह्यसिसबछारा कहाँरहाबलगर्वतुम्हारा ७ अबपतिमृषागालजनिमारहु मोरकहाकछुहृदयबिचारहु ८ पतिरघुपतिहिनृपतिजनिजानहु अगजगनाथअतुलबलमानहु ९ बाणप्रतापजानमारीचा तासुकहानहिँमान्यउनीचा १० जनकसभाअगणितमहिपाला रहेहुतुमहुँबलबिपुलबिशाला ११ भंजिधनुषजानकीबिवाही तबसंग्रामनजीत्यउताही १२ सुरपतिसुतजानैबलथोरा राखाजियतआँखिगहिफोरा १३ शूर्पणखाकैगतितुमदेखी तदपिहृदयनहिँलाजबिशेखी १४ दो०॥ बधिबिराधखरदूषणहिंलीलहिंहत्यउकवंध बालिएकशरमारेउत्यहिजानहुदशकंध १५ चौ० ॥ ज्यइँजलनाथबंधावाहेला उतरेप्रभुदलसहितसुबेला १६ कारुणीकदिनकरकुलकेतू दूतपठायोतवहितहेतू १७ सभामांझत्यइँतवबलमथा करिबरूथमहँमृगपतियथा १८ अंगदहनुमतअनुचरजाके रणबांकुरेवीरअतिबांके १९ त्यहिकहँपियपुनिपुनिनरकहहू मुधामानममतावशअहहू २० अहहकंतकृतरामबिरोधा कालविवशमनउपजनबोधा २१ कालदंडगहिकाहुनमारा हरैधर्मबलबुद्धिबिचारा २२ निकटकालज्यहिआवतसाईंत्यहिभ्रम

दोहा॥ अष्टतरंगमन्दोदरीलंकेशहिउपदेश रामचरणयुवराजसनसपूछतरामसंदेश ८ दोहार्थ॥ सन्ध्याकाल जानिकै दशकन्ध शोच संयुक्त भवनको गयो है बहुरिकै मन्दोदरी निशिचरपतिको समुझावतीभई ( १ ) आगे दुइदोहाभरि अक्षरार्थैजानब॥ हे भरद्वाज मन्दोदरी ने नीतिकहा है पर रावणको वाके वचन बाणसमानलागे हैं भोरहोतही सभाकोजातभयो ( २५ ) सिंहासनपर फुलिकै बैठाजाइ अभिमानते मनमेंकछुत्रास नहीं है काहेते अपने पूर्वसंकल्पको दृढ़किहे है कौनसंकल्प आरण्यकाण्डे चौपाई ॥ तासनजाइबैरहठिकरऊं प्रभुशरलागेतेभवतरऊं ( २६ ) इहां श्रीरामचन्द्र अंगदको बोलावते भये हैं तब अंगद आइकै चरणगहतभये हैं ( २७ ) श्रीरामचन्द्र अतिआदरते समीप बैठाइकै विहँसिकै कृपालु खरारि बोलतेभयेहै इहां खरारि क्योंकहाहै खरकही तीक्ष्ण रावणकर अभिमान सो अंगदके द्वारह्वइकै नाशकीन तातेखरारी कहाहै अरु खरारि

होहितुम्हारीनाईं २३ दो० ॥ दुइसुतमारेउदहेउपुरअजहुंपीयसियदेहु कृपासिंधुरघुपतिहिभजिनाथबिमलयशलेहु २४ चौ० ॥ नारि वचनसुनिबिशिखसमाना सभागयोउठिहोतबिहाना २५ बैठिजाइसिंहासनफूली अतिअभिमानत्राससबभूली २६ उहाँरामअंगदहिबुलावा आइचरणपंकजशिरनावा २७ अतिआदरसमीपबैठारी बोलेबिहँसिकृपालुखरारी २८ बालितनयअतिकौतुकमोहीं तातसत्यकहुपूछौंतोहीं २९ रावणयातुधानकुलटीका भुजबलअतुलजासुजगलीका ३० तासुमुकुटतुमचारिचलाये कहहुतातकवनीबिधिपाये ३१ सुनुसर्बज्ञप्रणतहितकारी मुकुटनहोहिंभूपगुणचारी ३२ सामदामअरुदंडबिभेदा नृपउरबसहिँनाथकहवेदा ३३

तौ विद्यमान है ( २८ ) हे बालितनय तुमसे सत्यपूंछताहौं रावणकी सभाबिषे कौतुक तुमकीन सोकहौ ( २९ ) काहेते जहांतक राक्षक पृथ्वी बिषे हैं तिनसबकर टीकाकही महाराज हैं अरु अतुलजाके भुजनके बलकैलीक है ( ३० ) त्यहिरावणकेमुकुट चारि सो तुम हमारे पास फेंकि दीनहै सो हे तात कहौ कवनीप्रकारते पायोरहै ( ३१ ) अंगद

हाथजोरिकै स्वामी के अनुकूल युक्तिकरिकै कहते हैं हे सर्बज्ञ प्रणतपाल ये मुकुट न होहिं राजाके चारिगुणहैं ( ३२ ) हे नाथ साम दाम दण्ड विभेद सामकही सर्बजीवनको समजानिकै पालनकरै यथायोग्य दामकही द्रब्यसेना आयुध इत्यादिकनकर संग्रह दण्ड जो अनीतिकरै ताको यथायोग्य दण्डदेइ अरु विभेदकही भेदाभेद फोरिकै कछु दैलैकै आपनकार्य सिद्धिकरै यहै राजनके उरमें बसतहै वेद कहतेहैं ( ३३ ) तहांनीतिके धर्मजे हैं त्यहिके ये चारिउ चरणहैं सो आपुनीतिके निकेतहौ असजानिकै आपुके इहां आयेहैं ( ३४ ) दोहार्थ॥ तहां रावण राजनीतिके धर्मते विमुख ह्वइगयोहै काहेते आपुके चरणते विमुख ह्वैगयेसन्ते काहेते कालके विवशभयो है दशशीश ताते हे कोशलाधीश रावण को तजिकैये चारिउ गुण आपुके शरण आये हैं ( ३५ ) हे पार्बती अंगदकै परम चतुरता सुनिकै श्रीराम

नीतिधर्मकेचरणसोहाये असजियजानिनाथपहँआये ३४ दो० ॥ धर्महीनप्रभुपदबिमुखकालविवशदशशीश आयेगुणतजिरावणहिंसुनहुँकोशलाधीश ३५ परमचतुरताश्रवणसुनिबिहँसेरामउदार समाचारपुनिसबकहेउगढ़केबालिकुमार ३६॥ * * *

चौ० ॥ रिपुकेसमाचारजबपाये रामसचिवसबनिकटबोलाये १ लंकाबंकाचारिदुआरा क्यहिबिधिलांघियकरहुबिचारा २ तबकपीशऋच्छेशबिभीषण सुमिरिहृदयदिनकरकुलभूषण ३ करिबिचारतिनमंत्रदृढ़ावा चारिअनीकपिकटकबनावा ४ यथायोग्यसेनापतिकीन्हे यूथपसकलबोलितबलीन्हे ५ प्रभुप्रतापसबकहँसमुझाये सुनिकपिसिंहनादकरिधाये ६ हर्षितरामचरणशिरनावहिं गहिगहिशिखरवीरसबधावहिं ७ गर्ज्जहिंतर्ज्जहिंभालुकपीशा जयरघुवीरकोशलाधीशा ८ जानतपरमदुर्गअतिलंका प्रभुप्रतापकपिचलेअशंका ९ घटाटोपकरिचहुँदिशिघेरी मुखहिनिशानबजावहिंभेरी १० दो० ॥ जयतिरामभ्रातासहितजयकपीशसुग्रीव गर्जहिंकेहरिनादकपिभालुमहाबलसीव ११ चौ० ॥ लंकाभयउकोलाहलभारी सुन्यउदशाननअतिहंकारी १२ देखहुबनरनकेरिढिठाई बिहंसिनिशाचरसैनबोलाई १३ आयेकीशकालकेप्रेरे क्षुधावन्तरजनीचरमेरे १४ सुभटसकलचारिउदिशिजाहू धरिधरिभालुकीशसबखाहू १५ असकहिअट्टहासशठकीन्हा गृहबैठेअहारबिधिदीन्हा १६ उमारावणहिअसअभिमाना

उदार विहँसत भये हैं उदारकही सर्वको चारिहुफलके दाता पुनि अंगदगढ़के समाचार रिपुकर बल ऐश्वर्य सेना सब कहतभयोहै ( ३६ ) इतिश्री रामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेलंकाकांडेरावणमदभंगअंगदश्रीरामसमीपप्राप्तिवर्णनंनामअष्टमस्तरंगः ८॥ :: :: ::

दोहा॥ रामचरणनवईलहरिसचिवमंत्रभलकीन घटाटोपकरिघेरिगढ़कारणयुद्धप्रवीन ९ आगेतरंगताईअक्षरार्थे जानब॥

जिमिटिटीनगणसूतउताना १७ चलेनिशाचरआयसुमांगी गहिकरभिंडिपालवरसांगी १८ तोमरमुदगरपरिघप्रचंडा शूलकृपाणपरशुगिरिखंडा १९ जिमिअरुणोपलनिकरनिहारी धायेखलशठमांसअहारी २० चोंचभंगदुखतिनहिंनसूझा तिमिधायेमनुजादअबूझा २१ दो० ॥ नानायुधशरचापधरयातुधानबलवीर कोटिकँगूरनचढ़िगयेकोटिकोटिरणधीर २२॥

इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेलंकाकांडेअंगदोक्ति उभयसेनासंघट्टसंग्रामबर्णनन्नामनवमस्तरंगः ९॥

चौ० ॥ कोटिकंगूरनसोहहिंकैसे मेरुकेशृंगनजनुघनवैसे १ बाजहिंढोलनिशानजुझाऊ सुनिधुनिहोहिंभटनमनचाऊ २ बाजनफीरीभेरिअपारा सुनिकादरउरजाहिंदरारा ३ देखिनजाइकपिनकरठट्टा अतिविशालतनभालुसुभट्टा ४ धावहिंगनहिंनअवघटघाटा पर्वतफोरिकरहिंगहिबाटा ५ कटकटाहिंकोटिनभटतर्जहिं दशननओठकाटिअतिगर्जहिं ६ उतरावणइतरामदुहाई जयतिजयतिकरिपरीलराई ७ निश्चरनिकरसमूहढहावहिं कूदिधरहिंकपिफेरिचलावहिं ८ हरिगीतिकाछंद॥ धरिकुधरखंडप्रचंड मर्कटभालुगढ़परडारहीं झपटहिंचरणगहिपटकिमहि भजिचलतबहु-रिप्रचारहीं ९ अतितरलतरुणप्रतापतर्पहिंतमकिगढ़परचढ़िगये कपिभालुचढ़िमंदिरनजहँतहँरामयशगावतभये १० दो० ॥ एकएकगहिरजनिचर पुनिकपिचलेपराइ ऊपरआपुहिंहेरिभट गिरहिंधरणिपरआइ ११ चौ० ॥ रामप्रतापप्रबलकपियूथा मर्दहिंनिश्चरनिकरबरूथा १२ चढ़ेदुर्गपुनिजहँतहँबानर जेरघुबीरप्रतापदिवाकर १३ चलेतमीचरनिकरपराई प्रबलपवनजिमिघनसमुदाई १४ हाहाकारभयउपुरभारी रोवहिंआरतबालकनारी १५ सबमिलिदेहिंरावणहिंगारी राजकरतयहिमृत्युहँकारी १६ निजदलबिचलसुनाजबकाना फिरेसुभटलंकेशरिसाना १७ जोरणविमुखसुनामैंकाना त्यहिमारिहौंकरालकृपाना १८ सर्बसखाइभोगकरिनाना समरभूमिभयेदुर्लभप्राना १९ उग्रबचनसुनिसकलसकाने फिरेक्रोधकरिबीरलजाने २० सनमुखमरणबीरकैशोभा तबतिनतजाप्राणकैलोभा २१ दो० ॥ बहुआयुधधरसुभटसबभिरहिंप्रचारिप्रचारि कीन्हेव्याकुलभालुकपिपरिघप्रचंडनमारि २२ चौ० ॥ भयआतुरकपिभागनलागे तदपिउमाजितिहहिंअबआगे २३ कोउकहकहँअंगदहनुमाना कहँनलनीलद्विविदबलवाना २४ निजदलबिचलसुनाहनुमाना पश्चिमद्वाररहाबलवाना २५ मेघनादतहँकरैलराई टूटनद्वारपरमकठिनाई २६ पवनतनयमनभाअतिक्रोधा गर्ज्यउप्रलयकालसमयोधा २७ कूदिलंकगढ़ऊपरआवा गहिगिरिमेघनादपरधावा २८ भंज्यउरथसारथीनिपाता ताहिहृदयमहँमारेउलाता २९ दुसरेसूतबिकलत्यहिजाना स्यंदनघालितुरतगृहआना ३० दो० ॥ अंगदसुन्यउकिपवनसुतगढ़परगयोअकेल समरबांकुराबालिसुततरकिचढ्यउकपिखेल ३१ चौ० ॥ युद्धबिरुद्धक्रुद्धद्वउबंदर रामप्रतापसुमिरिउरअंतर ३२ रावणभवनचढ्यउतबजाई करहिंकोशलाधीशदोहाई ३३ कलशसहितगहिभवनढहावा देखिनिशाचरपतिभयपावा ३४ नारिवृन्दकरपीटहिंछाती अबदोउकपिआयेउतपाती ३५ कपिलीलाकरितिनहिंडेरावहिं रामचन्द्रकरसुयशसुनावहिं ३६ पुनिकरगहिकंचनकेखंभा लगेकरनउतपातअरंभा ३७ कूदिपरेकपिकटकमझारी लागेमर्दनभुजबलभारी ३८ काहुहिलातचपेटनकेहू भज्यउनरामहिंसोफललेहू ३९ दो० ॥ एकएकसनमर्दिकरितोरिचलावहिमुंड रावणआगेपरहिंत्यइजनुफूटहिंदधिकुंड ४० चौ० ॥ महामहामुखियाजेपावहिं तेपदगहिप्रभुपासचलावहिं ४१ कहहिंबिभीषणतिनकेनामा देहिंरामतिनकहँनिजधामा ४२ खलमनुजादद्विजामिषभोगी पावहिंगतिजोयांचतयोगी ४३ उमाराममृदुचितकरुणाकर बैरभावसुमिरतम्वहिंनिशिचर

४४ देहिंपरमगतिअसजियजानी असकृपालुकोकहहुभवानी ४५ सुनिअसप्रभुनभजहिंभ्रमत्यागी नरमतिमंदतेपरमअभागी ४६ अंगदअरुहनुमंतप्रबेशा कीनदुर्गअसकहअवधेशा ४७ लंकाद्वौ

दोहा॥ निशिचरकीशलराइबहुजानबदशमतरंग रामचरणतिहुँकालपुरभयोनअसरणरंग १० इहांचपेटा कहीथपेरा और तरंगभी अक्षरार्थे जानब (४९) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेलंकाकांडेनिशिचरकीशसंग्रामवर्णनंनामदशमस्तरंगः१०॥

दोहा॥ निशिचरकीशसमुद्ररण रुद्रलहरिरसबीर रामचरणजिमिप्रलयघन गर्जहिंदोउदलबीर ११ आगे अर्थकरते हैं हे पार्वती अंगद अरु हनुमान्जी लंकाविषे युद्धकरतेरहे तेसंध्याकाल पाइकै श्रीरघुनाथजी के रचणारविंदविषे शीशनावते भये द्वौ महासुभटको देखिकै दोनों श्रीरघुनाथजीके मनमेंबहुत भावतेभये हैं (१) श्रीरामचन्द्र कृपाकरिकै द्वौबीर श्रमतेबिगत भये देखतभयेहैं परमसुखीभये हैं यहजानिकै कि हमारेऊपर

कपिसोहहिंकैसे मथइँसिंधुदुइमंदरजैसे ४८ दो० । भुजबलरिपुदलदलमलेउ जानिदिवसकरअंत कूदेयुगलप्रयासबिनु आयेजहँभगवंत ४९॥

चौ०॥ प्रभुपदकमलशीशतिननाये देखिसुभटरघुपतिमनभाये १ रामकृपाकरियुगलनिहारे भयेबिगतश्रमपरमसुखारे २ गयेजानिअंगदहनुमाना फिरेभालुमर्कटभटनाना ३ यातुधानप्रदोषबलपाई धायेकरिदशशीशदोहाई ४ निशिचरअनीदेखिकपिफिरे जहँतहँकटकटाइभटभिरे ५ द्वौदलप्रबलप्रचारिप्रचारी लरहिँसुभटनहिंमानहिँहारी ६ बीरतमीचरसबअतिकारे नानाबर्णबलीमुखभारे ७ सबलयुगलदलसमबलयोधा विविधप्रकारभिरतकरिक्रोधा ८ प्राबिटशरदपयोदघनेरे लरतमनहुंमारुतकेप्रेरे ९

श्रीरघुनाथजी प्रथमहिं संग्रामविषे एतीकृपा कीनहै अबहम सदानिर्भय हैं (२) तब भालुकपि जे युद्धकरतेरहे तिनजाना कि हनुमान् अंगद फिरि गयेहैं तब सबकपि भालु श्रीरामचन्द्रके समीप आवत भये हैं (३) तवयातुधान जे राक्षसहैं तिनजाना कि बानरनकीसेना फिरिगई अरु प्रदोष कही सन्ध्यापाइकै कोटिन निशिचर रावणकी दोहाई करिकै धावतभये हैं (४) तहां निशिचरनकी अनी आवतदेखिकै भालुकपिनकै सेनाफिरत भई श्रीरामचन्द्रकै दोहाई करिकै इतैउतै कटकटाइकै कोटिनभट भिरतभये (५) हे गरुड़ द्वौदलसबलहैं एक एकन कहं सुमट प्रचारि भट भिरते हैं हारिकोई नहीं मानैहैं (६) तमीचर जे वीरहैं ते सब अतिकारे हैं अरुबलीमुख जे बानरहैं ते नानाबर्णते भारेकही युक्तहैं पीतश्वेत लालहरित नील इत्यादिक बीर अनेकरंग मिश्रितहैं (७) द्वौदल समसबल योधा हैंबिबिधप्रकारके क्रोधकरिकै भिरतेहैं (८) जनुप्राबिट कही वर्षाऋतुके मेघ अनेकन पृथक्पृथक् पवनकी प्रेरणाते लरते हैं (९) तहां अकम्पननामेराक्षस अरु अतिकायानामें येदुइ महा सेनापतिहैं ते अनीकी अनीसेना बिचलत जानिकै माया करतेभयेहैं॥ दूसरार्थ॥ अनीनाम अरुअकम्पन अतिकाय ये तीनोंराक्षस अपनी राक्षसीमाया करते भये हैं (१०) एक निमिष महँ अति अन्धकार होतभयोहै अरु रुधिर उपलकही पत्थर अरुछार कही धूरिकै वृष्टि होतीभई है (११) दोहार्थ॥ निबिड़कही महा अन्धकार दशौदिशि बिषे देखिकै कपिनके दलखंभार कही बिकलहोतभयेऐसा अन्धकार भयो कि एक एकनको नहीं देखते हैं जहाँ तहाँ कही जय जय कहतेहैं पुकार करते हैं (१२) अनिप जो अकम्पन अतिकाय जो माया रच्योहै सोसब श्रीरामचन्द्र जानतेभये तब अंगद हनुमान्को बोलाइ

अनीअकंपनअरुअतिकाया बिचलतसेनकीनअतिमाया १० भयोनिमिषमहँअतिअँधियारा वृष्टिहोइरुधिरोपलछारा ११ दो० ॥ देखिनिविड़तमदशहुदिशि कपिदलभयोखँभार एकहिएकनदेखतब जहँतहँकरहिँपुकार १२ चौ० ॥ यहसबमरमकृपानिधिजाना बोलिलियेअंगदहनुमाना १३ समाचारसबकहिसमुझाये सुनतकोपिकपिकुंजरधाये १४ पुनिकृपालुहँसिचापचढ़ावा पावकशायकसपदिचलावा १५ भयोप्रकाशकतहुंतमनाहीं ज्ञानउदयजिमिसंशयजाहीं १६ भालुबलीमुखपाइप्रकाशा धाये

लेतेभयेहैं ( १३ ) तब श्रीरामचन्द्र अंगद हनुमान्ते राक्षसनकी मायाकरसब समाचार कहाहै सुनतै कपिकुंजर धावतभये हैं ( १४ ) पुनि कृपालु श्रीरामचन्द्र बिहंसिकै चापचढ़ाइकै अग्निबाण शीघ्र छोड़तभये हैं ( १५ ) तहां श्रीरामचन्द्रके बाणकरिकै महाप्रकाश होतभयो राक्षसन की माया कर अन्धकार अरुसहजरात्रीकर अन्धकार सो सब मिटिगयोहै जैसे ज्ञानके उदयसन्ते सम्पूर्ण संशय नाशह्वइ जातहैं ज्ञानकही आत्माबिषे निश्चबुद्धि विशेषि अरु संशय जे हैं ते अनात्मा जोहै शरीर त्यहिके धर्महैं संशयकही सत्असत् बिषे सकल्प बारबार उठाकरे हैं तहां शरीर की कर्त्तव्य में दुइभेदहैं एक त्रैगुण्यमय संशयहै अरु एकपरमेश्वर प्राप्तिहेतु संशयहै तहां जब याको आत्मज्ञान भयो ज्ञानको प्रकाशमयो अज्ञान अन्धकार नाशभयो तब त्रैगुण्यजनित जो संशय बाह्यांतरमें रही सो नाशको प्राप्ति भई है परमेश्वरैकै प्राप्तिकी संशय है चतुष्ट अन्तःकरण की वृत्ति अरु बाह्य इन्द्रिनकै वृत्तिसंसारते उलटिकै परमेश्वर बिषे प्राप्ति भईजाइ जैसे श्रीरामचन्द्रके बाणकरिकै प्रकाशभयो तमनाश ह्वइगयो है ( १६ ) तबभालु जे हैं बलीमुख बानरजे हैं ते प्रकाश पाइकै श्रमते बिगत क्रोधकरिकै रहित धावतभये ( १७ ) हनुमान् अरु अंगद रणबिषे गर्जतभये तिनकी हांक सुनिकै निशिचरन कीसेना पराइ चलीहै ( १८ ) भागतसन्ते राक्षसनके भटनको भालु कपि धरिधरिकै पृथ्वीबिषे पटकि देते हैं अद्भुतकही जिनराक्षसन के बलकरिकै इन्द्रादिक देवता कांपते हैं तिन बीरनको भालु कपि गेंद इव श्रीरामप्रतापते पटकिदेते हैं ( १९ ) तिन वीरनके पदधरिकै समुद्रबिषे फेंकिदेते हैं तिनको मकर सर्प मच्छधरिधरि खाइलेते हैं ( २० ) दोहार्थ॥ हे पार्बती राक्षस अनेकन तौ

कोपिविगतश्रमनाशा १७ हनूमानअंगदरणगाजे हांकसुनतरजनीचरभाजे १८ भागतभटपटकहिंधरिधरणी करहिंभालुकपिअद्भुतकरणी १९ गहिपदडारहिंसागरमाहीं मकरउरगझषधरिधरिखाहीं २० दो० ॥ कछुघायलकछुरणपरेकछुगढ़चलेपराइ गर्ज्जहिंमर्कटभालुभटरिपुदल-बलबिचलाइ २१ चौ० ॥ निशाजानिकपिचारिउअनी आयेजहांकोशलाधनी २२ रामकृपाकरिचितवाजबहीं भयेविगतश्रमबानरतबहीं २३ उहांदशाननसचिवहंकारे सबसनकहेसिसुभटजेमारे २४ आधाकटककपिनसंहारा कहौवेगिकाकरियबिचारा २५ मालवन्तअतिजरठनिशाचर रावणमातपितामंत्रीबर २६ बोलावचननीतिअतिपावन सुनहुतातकछुमोरसिखावन २७ जबतेतुमसीताहरिआनी असगुनहोहिंनजायँखानी २८ वेदपुराणजासुयशगावा रामबिमुख

घायलपरे हैं अनेकन मारिगये हैं अनेकन भागिकै गढ़पर चढ़िगये अरु भालुकपि भट रिपु करदल बल बिचलाइकै गर्जते हैं किन्तु अपने बलते रिपुकर दलबिचलाइ दीन है ( २१ ) बानरनकी चारिअनी बनीरहीं लंकाविषे चारिउ दरवाजे पर युद्धहोतरह्यो है ते निशाजानिकै श्रीरघुनाथजी के इहां आवतभये हैं ( २२ ) हेपार्वती श्रीरामचन्द्रकी कृपाअवलोकनते सब बानर श्रमते विगतभये हैं ( २३ ) इहां रावण मंत्रिनको बोलाइकै सब नामलैकै सबते कहतहै कि ये सुभट मारेगये हैं ( २४ ) हे मंत्रिहुआधाकटक

कपिनके मारे संहार होतभयो है कहौ अबका शीघ्रही बिचार करिये ( २५ ) तहां मालवंत रावणके मातापिताको जरठकही वृद्ध पुरान मंत्रीहै किंतु रावण के माताको पिता है अरु मंत्रिन में बरकही श्रेष्ठ है ( २६ ) सो अति पबित्रनीतिमय बचनबोलतभयो है हे तात मोरसिखाबन कछु सुनहु ( २७ ) हे तात जबते तुम श्रीजानकीजीको हरिलायो है तबतेप्रतिदिन महा भयंकर अकथनीय असगुन होतेजाते हैं ( २८ ) हे राजन् वेद पुराण ज्यहि परमेश्वरके यशको गानकरते हैं त्यहि परमेश्वरके विमुखभये ते कोईजीव सुखको नहीं प्राप्तहोत है ( २९ ) दोहार्थ॥ हे रावण हिरण्याक्ष भ्रातासहित अरु मधुकैटभ महाबलवान् तिनकोजिनमारा है तेई कृपाकेसिंधु भगवान् गोब्राह्मण अरु अपने भक्तनके हेतु अवतीर्णभये हैं ( ३० ) हे रावण जे प्रभु लंकाविषे आये हैं ते कालरूपइ हैं अरु खलनके बलको दहनकर्ता हैं अरु गुणनके आगारहैं अरु बोध कही ज्ञानके घन समूह हैं जिनके चरणारविंदको शिव अरु कमलभवकही ब्रह्मा इत्यादिक

सुखकाहुनपावा २९ दो० ॥ हिरण्याक्षभ्रातासहित मधुकैटभबलवान ज्यइंमारेउसोइअवतरेउ कृपासिंधुभगवान ३० कालरूपखलबलदहन गुणागारघनबोध ज्यहिसेवहिँशिवकमलभव तिनसनकौनबिरोध ३१ चौ० ॥ परिहरिबैरदेहुबैदेही भजहुकृपानिधिपरमसनेही ३२ ताकेवचनबाणसमलागे करियामुखकरिजाहुअभागे ३३ बूढ़भयसिनतमरत्यउंतोहीं अबजनिबदनदेखावसिमोहीं ३४ त्यइंअपनेमनअसअनुमाना बध्योचहतयहिश्रीभगवाना ३५ सोउठिगयोकहतदुर्बादा तबसकोपिबोल्योघननादा ३६ कौतुकप्रातदेखिहौमोरा करिहौंबहुतकहतहौंथोरा ३७ सुनिसुतवचनभरोसाआवा प्रीतिसमेतनिकटबैठावा ३८ करतबिचारभयोभिनसारा लगेभालुकपिचारिउद्वारा ३९ कोपिकपिनदुर्घटगढ़घेरा नगरकोलाहलभयोघनेरा ४० बिबिधायुध

देवता सेवते हैं ऐसे समर्थ ते कौन विरोध है ( ३१ ) हे राजन् बैर परिहरिकै श्रीजानकीजी को देउ परमसनेही कृपानिधि श्रीरामचन्द्र को भजहु ( ३२ ) मंत्रीके बचन सुनिकै रावणके बाण समानलागे हैं तब रावण कहतहै हे मूढ़ मुँहपरकरिखा लगाइकै उतजातरहु ( ३३ ) तैं वृद्ध भयसिहै ताते तोको नहीं मारतहौं अब मेरेनेत्रनके सामने नहीं आवना कभीबदन नहीं देखावना ( ३४ ) हे गरुड़ तब त्यइं अपने मनमें यह अनुमानकीन कि श्रीभगवान् यहिको बधा चहते हैं ( ३५ ) सो मालवन्त रावणको दुर्वाद कहत उठिजातभयोहै तब मेघनाद कोपकरिकै बोलतभयो ( ३६ ) हे तात काल्हि मोरकौतुकदेख्यउ कहतथोड़हौं करिहौंबहुत ( ३७ ) तब सुतके बचनसुनिकै बड़ोभरोसा होतभयो है प्रीतिसंयुत निकट बैठारतभयोहै ( ३८ ) ऐसही विचारकरतभोरहोतभयोहै तब भालुकपिचारिउदरवाजे विषे लागेजाइ ( ३९ ) कोपिकै कपि दुर्घट जोगढ़है त्यहिको घेरतभये तब नगरमें घनेराकही बहुत कोलाहल होतभयो ( ४० ) तब बिविधप्रकारके आयुधधरिकै निश्चर धावतभये गढ़परते पर्बतनके शिखर बानरनकेऊपर ढहावतभये ( ४१ ) छन्दार्थ॥ गढ़परते राक्षस कोटिनमहीधर शिखरढाहे कही डारते हैं अरु बिबिधप्रकारके गोलाचले हैं तोपनके कैसे घहरात कही शब्दहोते हैं जनुपवि कही इन्द्रकेवज्र अनेकन पातकही गिरते हैं अरु जनु प्रलयकालके मेघगर्जते हैं ( ४२ ) जहां तहां गढ़परते निश्चर चलावते हैं डारते हैं मारते हैं मर्कटनकी सेनाके निकट भटनकेतन कटिकटिजाते हैं काहूके अंगकटिकटिजाते हैं सबके

धरिनिशिचरधाये गढ़तेपर्वतशिखरढहाये ४१ छं०॥ ढाहेमहीधरशिखरकोटिन बिबिधबिधिगोलाचले घहरातजिमिपविहातगर्जतजनुप्रलयकेबादले ४२ मर्कटबिकटभटजुटतकटतनलरततनजर्जरभये गहिशैलतेगढ़परचलावहिं जहंसोतहँ निशिचरहये ४३ दो० ॥ मेघनादसुनिश्रवणअसगढ़पुनि-

छेंक्यउआइ उतरिदुर्गतेबीरबरसन्मुखचलाबजाइ ४४ चौ० ॥ कहँकोशलाधीशद्वौभ्राता धन्वीसकललोकबिख्याता ४५ कहँनलनीलद्विबिदसुग्रीवा कहँअंगदहनुमतबलसींवा ४६ कहांविभीषणभ्राताद्रोही आजुशठहिंहठिमारौंवोही ४७ असकहिकठिनबाणसंधानेअतिशयकोपिश्रवणलगिताने ४८ शरसमूहसोछाड़ैलागा जनुसपक्षधावहिंबहुनागा ४९ जहँतहँपरतदेखिअहिबंदर सन्मुखहोइनसकतत्यहिअवसर ५० भागेभयब्याकुलकपिरिच्छा विसरीसबैयुद्धकै

तन घाउकरिकै जर्जरह्वैरहे हैं लरिबेकै सामर्थ्य किसूके नहीं रही है ( ४३ ) दोहार्थ॥ महायुद्ध होतसंते मेघनादने श्रवणविषे अससुन्यउहै कि बानरन गढ़ पुनिकही फिरि दुसराइआइकै छेंक्यउहै दुर्गकही अतिऊंचे स्थानते उतरिकै बीरनबिषे बरकही श्रेष्ठ बाजाबजाइकै हांकदैकै बानरनकीसेनाविषे पहुंच्यो आइ है ( ४४ ) हे गरुड़ मेघनाद यहकहत निर्भयचलाआवतहै कि कोशलाधीश द्वौभ्राता कहां हैं धनुष विद्याविषे जिनकै विख्यात सर्वलोकन विषे ह्वैरही है ( ४५ ) अरु कहां नलनील द्विविद मयन्दसुग्रीव हैं अरु कहां अंगद हनुमान् हैं जे बलकेसींव कहावते हैं ( ४६ ) अरु विभीषणभ्राता द्रोही कहां है ज्यहि शठको आजुप्रचारिकै मारौंगो ( ४७ ) असकहिकै कठिनबाण धनुषमें संधान करिकै अतिशयकही बहुतही कोपिकै श्रवणलगि खैंचतभयोहै ( ४८ ) समूहबाण छांड़ैलागहै तेबाण मानहुं सपक्ष बहुनाग धावतेहैं ( ४९ ) जहँ तहँ अनेकन बाणसर्पइव देखतसंते बानरनकीसेना कोईनहीं सन्मुख ह्वइसकते हैं ( ५० ) तब सबकपि ऋच्छ भूमिते भागतभये काहूके युद्धकै इच्छा नहींरही है ( ५१ ) रण विषे सो भालु कपि नहीं देखिबेमेंआये जिनके प्राणकर अवशेषकही प्राणको संकटनहीं करिदीन सो सबको करिदेतभयो ( ५२ ) दोहार्थ॥ जहाँ तक ऋच्छ बानररहे हैं तिनसबके दशदश बाण मारतभयोहै जेते वीर कपिरहे तेसब रणभूमिविषे मूर्च्छितपरे हैं तब सिंहनाद करिकै गर्जतभयो है जैसे प्रलयकालको मेघ ऐसो रणधीर मेघनाद है ( ५३ ) मेघनादके मारेते सम्पूर्णसेना बानरनकी ऋच्छनकै कटक बिहालदेखिकै हनुमान् क्रोध करिकै कालके समान धावतभयेहैं ( ५४ ) तहां तमकिकही शीघ्र जोरकरिकै एकमहापर्वत उखारिकै अति रिसियाइकै मेघनादके ऊपर डारतभये

इच्छा ५१ सोकपिभालुनरणमहँदेखा कीन्ह्यसिजिनहिंप्राणअवशेखा ५२ दो० ॥ मारेसिदशदशविशिखसब परेभूमिकपिवीर सिंहनादगर्जतभयो मेघनादरणधीर ५३ चौ० ॥ देखिपवनसुतकटकबिहाला क्रोधवंतधायोजनुकाला ५४ महामहीधरतमकिउपारी अतिरिसमेघनादपरडारी ५५ आवतदेखिगयौनभसोई रथसारथितुरङ्गसबखोई ५६ बारबारप्रचारहनुमाना निकटनआवमरमसोजाना ५७ रामसमीपगयोघननादा नानाभाँतिकहैदुर्बादा ५८ अस्त्रशस्त्रआयुधबहुडारे कौतुकहीप्रभुकाटिनिवारे ५९ देखिप्रभावमूढ़खिसियाना करैलागमायाबिधिनाना ६० जैसेकरैगरुड़सनखेला डरवावैअहिस्वल्पसपेला ६१ दो० ॥ जासुप्रबल

हैं ( ५५ ) सोई पर्वत आवतदेखिकै मेघनाद अंतर्द्धान ह्वइकै नभकोजातभयो त्यहि पर्वतकरिकै रथ सारथी तुरंग नाशहोतभयोहै ( ५६ ) तबबारबार हनुमान् प्रचारतेहैं हेशठकहांजातहै सन्मुखयुद्धकरु सो मेघनाद हनुमान् के बलकर मर्मजानतहै ताते निकटनहीं आइसकैहै ( ५७ ) तब घननाद श्रीरामचन्द्रके सन्मुख प्रत्यक्षभयो जाइकै नाना भांति दुर्बाद कहतभयोहै ( ५८ ) अस्त्र कही जो बाण आदिक जे करके सहाय मंत्र यंत्रके बलते चलते हैं अरु शस्त्र कही जो कर गहेतेचलै सो अनेकन अस्त्र शस्त्रआयुध श्रीरामचन्द्रके ऊपर डारतभयोहै त्यहिके आयुध श्रीरामचन्द्र एक बाणते काटिकै डारिदियोहै कौतुक कही एक ख्यलवारते ( ५९ ) श्रीरामचन्द्रको प्रभाव देखिकै मूढ़मेघनाद

खिसिआइ कही लज्जितह्वइकै अपनी माया अनेकबिधि करैलाग है ( ६० ) हे पार्बती मेघनाद रघुनाथजी को अपनी माया देखावै है जैसे सर्पको अल्पसपेला कही बालक सो खेल करिकै गरुड़को डयरवावत है ( ६१ ) दोहार्थ॥ हे गरुड़ जिन श्रीरामचन्द्रकी माया केवश ब्रह्मा शिवादिकन को प्रभाव छोट ह्वइरह्यो है तिन श्रीरामचन्द्र को निश्चरमति खोट कही बुद्धिकोहीन अपने कपटकी मायाको देखावत है ( ६२ ) पुनि मेघनाद नभविषे जाइकै महातप्त अंगार बर्षतभयो है जामें सबजरिजाइ अरु सम्पूर्ण महिते जलकी धारा प्रकटभई है जामें डूबिजाइ सब बहिजाइ किन्तु श्रीरामचन्द्र ने जलबाण छांड़्यो है जामें मेघनाद के बरषे अंगार बुझाइजाइ ( ६३ ) पुनि मेघनाद नानाभांति के पिशाच पिशाची प्रकटकरत भयो है ते सब मारुमारु काटुकाटु यह घोरशब्द करते अरु नाचते हैं ( ६४ ) पुनि मेघनाद बिष्ठा पीब रुधिर कच कही बार अरु हाड़ इनकी बर्षा आकाशते करत है अरु कबहूं

**मायाबिवशशिवबिरंचिबड़छोट ताहिदेखावतरजनिचरनिजमायामतिखोट ६२ चौ० ॥ नभचढ़िबरषैंबिपुलअँगारा महितेप्रकटहोहिजलधारा ६३ नानाभांतिपिशाचपिशाची मारुकाटुधुनिबोलहिंनाची ६४ बिष्टापीबरुधिरकचहाड़ा बर्षेकबहुँउपल बहुछाड़ा ६५ बर्षिधूरिकीन्ह्यसिअँधियारा सूझनआपनहाथपसारा ६६ अकुलानेकपिमायादेखी सबकरमरणबनायहिलेखी ६७ कौतुकदेखिरामसुसकाने भयेसभीतसकलकपिजाने ६८ एकबाणकाटीसबमाया जिमिदिनकरहरतिमिरनिकाया ६९ कृपादृष्टिकपिभालुबिलोके भयेप्रबलरणरहतनरोके ७० दो० ॥ आयसुमाँग्यउरामपहँ अंगदादिकपिसाथ लक्ष्मणचलेसकोपितब बाण**

उपलकही पत्थर बहुकही बहुत छाड़ा कही छांड़तभयो किन्तु छाड़ाकही चर्म बर्षतभयो है अरु इहां छाड़ाकही दामिनीकी बर्षा करत है ( ६५ ) अरु समूह धूरि बर्षिकै अन्धकारकरिदियो है चहूंदिशि अपने हाथको पसारब नहीं सूझिपरतहै ( ६६ ) यह राक्षसीमाया देखिकै सबसेना कहतीहै कि अब हमारो मरणभयो है यहिलेखेकही यहि उपद्रवते ( ६७ ) यह मेघनादको कौतुक देखिकै श्रीरामचन्द्र मुसुकाने अरु यहजाना कि बानर ऋच्छ सभीत कही अतिभयको प्राप्तिभये हैं ( ६८ ) तब एकबाण करिकै सबमाया निवारण करिदीन है जैसे सूर्य की किरिण करिकै निकाय कही समूह तिमिर नाशह्वइजात है ( ६९ ) पुनि भालुकपिनको कृपाकरि देखतभये हैं ते सब श्रमते बिगतभये प्रबलह्वइकै संग्राम को गर्जिकै धावतभये हैं रणबिषे रोकेते नहीं रहते हैं ( ७० ) दोहार्थ॥ हेपार्बती तब श्रीलक्ष्मणजी श्रीरामचन्द्रजीते आयसु मांगतभये हैं कि मोको आज्ञाहोइतौ मैं मेघनादते युद्धकरौं तब श्रीरामचन्द्र अंगद हनुमान् नल नील इत्यादिक बड़ेबड़े भट तिनको श्रीलक्ष्मणजीके संग करिदीन मेघनादको महायोधा बिचारिकै तब लक्ष्मणजी कोपकरिकै शरासन साजिकै चलतभये हैं ( ७१ ) लक्ष्मणजी क्रोधकरिकै संग्रामको चलेहैं क्षतज कही लालवस्त्र ह्वइरहेहैं अरु उरभुज बिशालहैं अरु हिमगिरि जो हिमाचल पर्बत निभकही त्यहिकी आभा तद्वत् गौरशरीर है अरु बीररस करिकै कछु अरुणाई आइगईहै ( ७२ ) अरु उहां मेघनादकी सहाय को रावणअनेकन सुभट पठावत भयोहै ते नानाप्रकारके आयुधालैकै धायेहैं ( ७३ ) अरु इतै पर्वततरु अनेकन सोई लैलै ऋच्छ बानरनकैसेना श्रीरामचन्द्रकी जय पुकारिकै धावतभई है ( ७४ ) हे पार्बती द्वौदिशि दल जोरिनते

**शरासनहाथ ७१ चौ०॥ क्षतजनयनउरबाहुविशाला हिमगिरिनिभतनकछुयकलाला ७२ उहाँदशाननसुभटपठाये नानाअस्त्रशस्त्रगहिधाये ७३ भूधरनखविटपायुधारी धायेकपिजयरामपुकारी ७४ भिरेसकलजोरिनसनजोरीइतउतजयइच्छानहिं थोरी ७५ मुठिकनलातनदाँतनकाटहिं**

कपिजयशीलमारिपुनिडाटहिं ७६ मारुमारुधरुधरुधुनिमारू शीशतोरिगहिभुजाउपारू ७७ असरवपूरिरहासबखंडा धावहिंजहँतहंरुण्डप्रचंडा ७८ देखहिंकौतुकनभसुरवृन्दा कबहुँकविस्मयकबहुँअनंदा ७९ दो० ॥ जम्योगाढ़भरिभरिरुधिर ऊपरधूरिउड़ाइ जनुअंगारराशिनपर मृतकछाररहिछाइ ८० चौ० ॥ घायलबीरबिराजहिं

जोरी भिरतभये हैं अपनी अपनी जय के इच्छा थोरीनहीं है ( ७५ ) मल्लयुद्धहोत है एक एकनको मुष्टिकन मारते हैं लातन मारते हैं अरु दांतन काटते हैं महायुद्धहोतहै तहां कपिनको जयशीलकही विजय स्थान है तेमारिमारि डाटते हैं ( ७६ ) मारुमारु धरुधरुयहहाहाकार शब्दह्वइरह्यो है कोई काहूके शीश तोरिडारते हैं कोई काहूके भुजा उखारि डारते हैं कोईकाहूकी जांघफारि डारते हैं ( ७७ ) ऐसेही युद्ध महारव सातौंद्वीप बिषे सब खण्डनविषे नभबिषे परिपूर्ण ह्वइरह्यो है अरु जहां तहां रुण्डप्रचण्ड अनेकन धावते हैं ( ७८ ) नभविषे ब्रह्मादिक देवता तब संग्रामकर कौतुक देखते हैं कबहुंक बिस्मय होतहैं कबहूं आनन्द होतहैं जब राक्षसनकैप्रबलता होतिहै तब बिस्मयहोतहै अरु जब बानरनकै प्रबलताहोतिहै तबदेवतनके हर्षहोतहै ( ७९ ) दोहार्थ॥ रुधिरकेगाढ़कही कुण्डभरिगये हैं तिनके ऊपर धूरि उड़िउड़ि परिरही है जनु अंगारकी राशिपर मृतक कही उहै अंगारकै छार जोहै राख सो छाइरही है ( ८० ) हे पार्बती घायलबीर दोउदलबिषे कैसे बिराजते हैं जैसे किंशुककही पलासकेतरु फूलि रहे हैं ( ८१ ) लक्ष्मणजी अरु मेघनाद द्वौसमयोधाहैं परस्पर क्रोध करिकरि लरते हैं ( ८२ ) एकतेएक नहीं जीति सकते हैं अरु मेघनाद राक्षसी माया करिकै अनेक छलबल करिकै अनीति करैहै परन्तु लक्ष्मणजी शुद्धयुद्ध करतेहैं ( ८३ ) तब अनन्त जो लक्ष्मणजी हैं तिन क्रोधकरिकै एकही बाणते तुरन्तही रथसारथी नाशकरिदियो है ( ८४ ) इहां लक्ष्मणजीको शेष कही जिनकी समान ब्रह्माण्ड गोलोकबिषे बीरनहीं है ताते शेषकही पुनि रघुनाथजी शेषी हैं अरु लक्ष्मणजी शेषहैं अरु सामर्थ्यबिषे शेषकहीसहस्त्रशीश जे अनन्त लक्ष्मणजी मेघनादके ऊपर अनेक आयुध प्रहार

कैसे कुसुमितकिंशुककेतरुजैसे ८१ लक्ष्मणमेघनादद्वउयोधा भिरहिंपरस्परकरिअतिक्रोधा ८२ एकहिंएकसकहिंनहिंजीती निशिचरछलबलकरैंअनीती ८३ क्रोधवंतजबभयोअनंता भंज्योरथसारथीतुरंता ८४ नानाबिधिप्रहारकरशेषा राक्षसभयउप्राणअवशेषा ८५ रावणसुतनिजमनअनुमाना संकटभयोहरिरिहिममप्राणा ८६ बीरघातिनीछ्षँड्यसिसाँगी तेजपुंजलक्ष्मणउरलागी ८७ मूर्छाभईसांगकेलागे तबचलिगयोनिकटभयत्यागे ८८ दो० ॥मेघनादसमकोटिशत योधारहेउठाइ जगदाधारअनंत किमिउठैंन चलेलजाइ ८९॥ * * *

कही मारतभये हैं तब राक्षस प्राणअवशेष कही अतिबिकल होतभयोहै ( ८५ ) तब रावणको पुत्र जो मेघनादहै सो संकटते अनुमान करतभयो कि यह मेरो प्राण अवश्य लेइगो ( ८६ ) तब बीरघातिनी जो सांग ब्रह्मदीनहै सो अफलनहींहै सो सांगि लक्ष्मणजी के ऊपर छांड़तभयोहै कैसी सांगहै तेजकरपुंज सो लक्ष्मणजीके उरबिषे लागतभईजाइ ( ८७ ) तबसांगके लागे श्रीलक्ष्मणजी मूर्छिकै गिरिपरे हैं तब मेघनाद अनेकनयोधा लैके भयत्यागिकै लक्ष्मणजीके निकट जातभयो है ( ८८ ) दोहार्थ॥ मेघनादके समान सौकही शतकोटियोधा लक्ष्मणजी को उठाइरहे हैं नहीं उठै हैं काहेते सम्पूर्ण जगत् के आधारभूत हैं अरु अनन्त ज्यहिकर आदिअन्त मध्य कोई नहीं जानिसकैहै ते कैसे उठहिं तब लजाइकै मेघनाद फिरिगयोहै ( ८९ ) इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेलंकाकाण्डेमेघनादलक्ष्मणबिमलयुद्धशक्तिघातबर्णनन्नामएकादशस्तरंगः ११॥

दोहा॥ करुणारसरघुबीरकृत हनुमतलायेमूरि द्वादशसुभगतरंगमें रामचरणसुखभूरि १२॥ हे पार्बती जिनलक्ष्मणजीकी क्रोधकै अग्नि चौदहो भुवन तीनिहूंलोकको आशुकही तुरन्त भस्म करिडारै है ( १ ) तिन लक्ष्मणजीको संग्रामविषे को जीतिसकैहै जिनलक्ष्मणजीकै सुर ब्रह्मादिक अरु सम्पूर्ण नर अरु नाग मुनि सिद्ध इत्यादिक अरु

त्रैलोक्य अचर सेवनकरते हैं ( २ ) इहां जो लक्ष्मणजी के मेघनादकै शक्तिलागिहै यह संग्राम की शोभाहै अरुश्रीरामचन्द्रकर कौतूहलकही चरित्रयहकोजानिसकैहै ज्यहिपर श्रीरामचन्द्रकी कृपाहोइ सोकछु जानैहै ( ३ ) संध्याजानिकै दूनौ अनी फिरतभई अपनी अपनीसेनासंभारत भयेहैं ( ४ ) हेपार्वती श्रीरामचन्द्र सर्वविषे व्याप्त अंतर्यामी अरु अजितकही कोई जीतिनहीं सकैहै काहेते

चौ० ॥ सुनिगिरिजाक्रोधानलजासू जारैभुवनचारिदशआसू १ सकसंग्रामजीतिकोताही सेवहिंसुरनरअगजगजाही २ यहकौतूहलजानैसोई जापरकृपारामकैहोई ३ संध्याजानिफिरीद्वौऐनी लगेसँभारननिजनिजसैनी ४ ब्यापकब्रह्मअजितभुवनेश्वर लक्ष्मणकहँबूझहिंकरुणाकर ५ तबलगिलैआयोहनुमाना अनुजदेखिप्रभुअतिदुखमाना ६ जामवंतकहवैदसुखेना लंकारहपठईकोउलेना ७ धरिलघुरूपगयोहनुमंता आन्यउभवनसमेततुरंता ८ दो० ॥ रघुपतिचरणसरोजशिर नायोआनिसुखेन कहानामगिरि औषधीजाहुपवनसुतलेन ९ चौ० ॥ रामचरणसरसिजउरराखी चलाप्रभंजनसुतबलभाखी १० उहांदूतएकमरमजनावा

अनेकभुवनके ईश्वरहैं सर्वजीवनकी गतिके सूत्रधरहैं तेकरुणाके आकर अपनी लीलाकरिकै पूंछतेहैं कि लक्ष्मणजी कहांहैं ( ५ ) तब तेही समयविषे लक्ष्मणजीको हनुमान्‌जी लै आवते भये हैं अनुजको देखिकै श्रीरामचन्द्र अतिदुख अंगीकार कीनहै ( ६ ) तब जामवन्त कहते हैं हे सर्वज्ञ लंकाविषेसुखेनबैद्यहै हनुमान्‌जीको पठवहु त्यहिंको लैआवहिंजाइ ( ७ ) तब हनुमन्त लघुरूप धरिकै त्यहिको भवनसमेत तुरंत उठाइ ल्याये हैं ( ८ ) दोहार्थ॥ तब सुखेन श्रीरामचन्द्रके चरणारबिन्दविषे माथनाइकै यह कहतेहैं हेसर्वान्तर्यामी उत्तरदिशाबिषे सर्वदुखदवन पर्वत है तापर सम्पूर्ण सजीवनि औषधीहैं रात्रिविषेमें हनुमान्‌जी लैआवैं तबआपुकी कृपाते सर्बकार्य सिद्धिहोइहि ( ९ ) तब श्रीरामचन्द्र की आज्ञा पाइकै प्रभंजन जो पवनसुतहैं ते श्रीरामचन्द्रके चरणारबिन्द हृदयमें राखिकै रामप्रताप आपनबल भाषिकै कि मैं सजीवनि शीघ्रल्यावतहौं असकहिकै चलतभये हैं ( १० ) तब उहांएक रावणकरदूत रावणते कहतभयो कि हनुमान् जी सजीवनिको जाते हैं तब रावण कालनेमिकै इहां आइकै कहतभयोहै ( ११ ) हेकालनेमि तैं हनुमान्‌जी को कोई यत्नतेरोकिदेजाइ जामेंरात्रि बीतिजाइ सूर्य उदयहोहिं तबहमारो कार्य सिद्धि होहि यहरावणके बचनकर मर्मसुनिकै कालनेमि अपनोशीश पुनि पुनिपीटतभयोहै ( १२ ) तब कालनेमि कहतहै हेरावण तुम्हारे देखत तुम्हारे विद्यमान तुम्हारे नगरको ज्यहिं जारिकै भस्मकरिदीनहै त्यहिको पन्थ कौनसामर्थ रोंकिदेयगो ( १३ ) हेनाथ श्रीरामचन्द्रकर भजनकरौ आपन हितकार करो जल्पना कही वृथाकहब छोड़िदेहु ( १४ ) श्रीरामचन्द्रको हृदयबिषे ध्यानकरो कैसे हैं श्रीरामचन्द्र नीलकमलइव श्यामहैं नेत्रन

रावणकालनेमिगृहआवा ११ दशमुखकहामरमत्यइंसुना पुनिपुनिकालनेमिशिरधुना १२ देखततुम्हैंनगरज्यइंजारा तासुपन्थकोरोकनहारा १३ भजिरघुपतिहिकरहुहितअपना छाड़हुनाथवृथाजल्पना १४ नीलकंजतनसुन्दरश्यामा हृदयराखुलोचनअभिरामा १५ अहंकारममतामदत्यागहु महामोहनिशिसोवतजागहु १६ कालव्यालकरभक्षकजोई सपन्यउसमरकिजीतियसोई १७ दो० ॥ सुनिदशकंधरिसानअति त्यइंमनकीनबिचार रामदूतकरमरबबरु यहखलरतमलभार १८ चौ० ॥ अस कहिचलारच्यसिमगमाया सरमन्दिरबरबागबनाया १९ मारुतसुतदेखाशुभआश्रम मुनिहिबूझिजलपियोंजायश्रम २० राक्षस

को आनन्ददाताहैं ( १५ ) हेरावण अहंकार ममता मद यहिकर त्यागकरौ महामोहरात्री बिषे सोइ न रहौ जागहु ( १६ ) कैसे हैं श्रीरामचन्द्र काल जो ब्यालहै त्यहिको भक्षणकरिबे को गरुड़हैं तिन श्रीरामचन्द्रको समरबिषेका कोई जीतिसकैहै ( १७ ) दोहार्थ॥ तब कालनेमिके बचनसुनिकै रावण क्रोधकरिकै बोलतभयो हेखल हमको उपदेश करैहै तबकालनेमि बिचारकीन कि जो अब फेरिउत्तर देउं तौ यहखल मलमें भरा रहतहै मोको मारिडारैगो ताते श्रीरामचन्द्रके दूत करिकैमरौं तौ भलाहै ( १८ ) तब कालनेमि अपनेमनमें यहबिचारिकै चलतभयउ मगबिषे अपनी मायाकी रचना करतभयोहै एकसागर बनायो एक मन्दिर बनायो एकसुन्दर बगैचाबनायो हैं तहांकालनेमि मुनिकर वेषकरिकै बैठतभयोहै ( १९ ) तहां हनुमान्जी चलेजात रहे हैं सुन्दर आश्रम देखतभये हैं तवयह मनमें आयो कि मुनिको बूझिकै जल पानकरौं श्रमजातिरहै ( २० ) पार्बती तहां राक्षस कपटबेष करिकै मुनिबेषते मायापति जो श्रीरामचन्द्र हैं तिनके दूतको मोहाचहत है ( २१ ) तव मुनिको देखिकै हनुमान्जी माथ नावत भयेहैं तब सो श्रीरामचन्द्रकेर परमदिव्यगुण शुद्धह्वइकै बरणैलाग है ( २२ ) हे पवनतनय श्रीराम रावणते महायुद्धहोतहै तथापि परिणाम श्रीरामचन्द्र जीतहिंगे यामें संशयनहींहै ( २३ ) हेभाई इहांते मैं बैठदेखतहौं काहेते मोको ज्ञानकी दृष्टिकर बल बहुतहै तहां कालनेमि आगे तौ रावणको रामतत्त्व उपदेश कियोहै अबइहां कपटक्यों करतहै तहां रावणराजा है त्यहिकी आज्ञाते कपटकरतहै यह धर्महै ( २४ ) तब हनुमान्जी कहा कि हेमुनि मैं तृषितहौं मोको जलदेहु तब अपने कमण्डलुभरि जलदेतभयो तब हनुमान्जी कहा मैं थोरेजलमें न पूर्णहोउंगो ( २५ ) तब मुनिकहा कि यहिसरबिषे मज्जन करिकै जलपान करिकै तुरन्त आवहु मैं तुमको शिक्षादेहुं जाते सर्बज्ञ ज्ञानको प्राप्तिहोहु ( २६ ) दोहार्थ॥ तब

**कपटवेषतहँसोहा मायापतिदूतैचहमोहा २१ जायपवनसुतनायउमाथा लागसोकहैरामगुणगाथा २२ होतमहारणरावणरामहिं जितिहैंरामनसंशययामहिं २३ इहांभयेमैंदेखौंभाई ज्ञानदृष्टिबलम्वहिंअधिकाई २४ माँगाजलत्यइंदीनकमण्डल कहकपिनहिंअघाउंथोरेजल २५ सरमज्जनकरिआतुरआवहु दीक्षादेउंज्ञानजिमिपावहु २६ दो०॥ सरपैठतकपिपदगह्यउ मकरीतबअकुलान**

हनुमान्जी सरोवरबिषे पैठतभये तब एकमकरीने कहा मकरीकही मगरकै स्त्री सो हनुमान्जीकर पदगहतभई तब हनुमान्जी पगतर दबाइदीन अकुलाइकै मरिगई दिव्यतन अप्सरारूप ह्वइकै बिमानपर चढ़िकै आकाशकविषे चलतिभई है हेगरुड़ कालनेमि पूर्वहीको गन्धर्व है अरु मकरी अप्सराहै ते द्वौ इन्द्रकी सभाबिषे गानकरतरहे हैं तेही समयबिषे दुर्बासामुनि प्राप्तिभये आइ तहां मुनिको देखिकै ये दूनौ मुसकात भये हैं तब मुनि शापदीन कि तुमदोऊ राक्षस राक्षसी होहुजाइ लंकाबिषे तब दूनौ भयको प्राप्ति ह्वइकै करजोरिकै स्तुतिकीन है तब मुनिप्रसन्न ह्वइकै शापानुग्रह यह कहा कि तुमदूनौं राक्षस राक्षसी होहु जाइ त्रेताके चौथेचरणमें परमेश्वर श्रीरामचन्द रावणके बधहेतु अवतीर्ण होहिंगे लंकाको जाहिंगे तब तुमद्वौ रावणकी प्रेरणाते हनुमान्जीके मार्गरोंकिबे को जाहुगे यह गन्धर्व मुनिरूप बनैगो अपनी माया करैगो अरु यह अप्सरा मायारूप सागरमें मकरीरूप ह्वइकै रहेगी तब हनुमान्जी के द्वाराह्वइकै द्वौपरमपदको प्राप्तिहोहुगे तब कोई कालपाइकै ये राक्षसराक्षसी भयेजाइ यह इतिहास पुराणबिषे प्रसिद्धहै ( २७ ) तब मकरीबोली हेकपि तुम्हार चरण गहेते तुम्हारे दर्शनते निष्पाप भइउँहै हे तात मुनिवरका शापमिटिगया अब मैं रामधामको जातीहौं ( २८ ) पर हेपवनसुत यहमुनि न होइमोरसंगी कालनेमि निशिचरघोरहै हमद्वौ तुम्हारे छलिबेकोआये हैं यह मोर बचन सत्यमानहु ( २९ ) असकहिकै अप्सरा परमपदको जातभईहै त्यहिमुनिके उपदेशते हनुमान्के द्वारह्वइकै मोक्षभई तबहनुमान् निशिचरके समीप जातभये हैं ( ३० ) जाइकै हनुमान्जी कहतभये हैं मुनि प्रथम गुरुदक्षिणालेहु पुनि पाछेहमहिं मन्त्रदेहु ( ३१ ) यतना कहिकै लंगूरते वहिकर शिर लपेटिकै पृथ्वीबिषे पटकिदीनहै तब त्यहिकर मरतीबार कपटछूटिगयो है राक्षसको राक्षस प्रकटत भयो है ( ३२ ) तब सो

मारिताहिधरिदिब्यतनचलीगगनचढ़ियान २७ कपितवदरशभइउँनिष्पापा मिटातातमुनिवरकरशापा २८ मुनिनहोइयह निशिचरघोरा मान्यहुसत्यवचनप्रभुमोरा २९ असकहिगईअप्सराजबहीं निश्चरनिकटगयेकपितबहीं ३० कहकपिमुनिगुरुदक्षिणालेहू पाछेहमहिंमंत्रपुनिदेहू ३१ शिरलंगूरलपेटिपछारा निजतनप्रकटिसिमरतीबारा ३२ रामरामकहिछांड़ेसिप्राना सुनिमनहर्षिचलेहनुमाना ३३ देखाशैलनऔषधचीन्हा सहसाकरिउखारिगिरिलीन्हा ३४ गहिगिरिनिशिनभधावतभयऊ अवधपुरीऊपरकपिगयऊ ३५ दो० ॥ देखाभरतविशालअतिनिशिचरमनअनुमान बिनफरशरतकिमारेउचापश्रवणलगितान ३६

कालनेमि श्रीरामकहिकै प्राणको त्यागिदियोहै परमपदको प्राप्तिभयोहै तब हनुमान्जी वहिकेमुखते रामनाम उच्चारण सुनिकै अतिहर्षिकै सजीवनि लेबेको चलतभये हैं ( ३३ ) तब पर्वतके निकटजाइकै शैलदेखिकै औषधनहीं चीन्हतभये हैं तब सहसाकही शीघ्रते सम्पूर्ण पर्वत उखारि लीन है तहां इन्द्रके रक्षक जे रहे हैं तिनको कछु मारिडारे कछु भागिगये तुरन्त पर्वत लैकै चलतभये हैं ( ३४ ) गिरिगहिकै रात्रीको आकाशबिषे पवनहुते अधिकवेग धावतभये ते श्रीअयोध्याजीके ऊपर हनुमान्जी प्राप्तिभये हैं ( ३५ ) दोहार्थ॥ तहां भरतजी नन्दीग्रामबिषे बिराजेरहैं तहां भरतजी महाहाहाशब्द सुनतभये हैं तब यह अनुमानकीन कि कोई महाबिशाल घोरनिशिचर है पर निश्चय करिकै निशिचरनहीं जाना तातेबाणकर फरकही गासी निकासिकै तकिकै धनुषको श्रवणलगि तानिकै खैंचिकै बाणमारतभये ( ३६ ) तब भरतकर बाण लागतसंते हनुमान्जी पृथ्वीमें मूर्च्छितह्वैकै गिरिपरेहैं सहितपर्वत श्रीराम श्रीराम श्रीरघुबीर श्रीरघुनायक यह सुमिरतसंते ( ३७ ) यह प्रियबचन सुनिकै भरतजी जाना कि यह तो कोई रामानन्यहै तब उठिधायेहैं तब हनुमान्जीके समीप आतुर चलिआये हैं ( ३८ ) हनुमान्को बिकल बिलोकिकै भरतजी उरमें लगावतभये हैं तब भरतजी जगावते हैं हे तात परमप्रीतम जागहु तब हनुमान्जी नहीं जागते हैं तहां भरतकै भक्ति श्रीरामचन्द्र बिषे अरु भरतकै सामर्थ्य जानिबे हेतु मौनह्वैरहे हैं ( ३९ ) जब हनुमान्जी नहीं जागते तब भरतको मुखमलीन ह्वैगयो है मनमें बहुत दुःखितभये हैं नेत्रमें जलभरे आरत

चौ० ॥ पर्यउमूर्च्छिमहिलागतशायकसुमिरतरामरामरघुनायक ३७ सुनिप्रियवचनभरतउठिधाये कपिसमीपआतुरचलिआये ३८ बिकलबिलोकिकीशउरलावा जागतनहिंबहुभांतिजगावा ३९ मुखमलीनमनभयउदुखारी कहतबचनलोचनभरिबारी ४० ज्यहिबिधिरामविमुखम्वहिंकीन्हा त्यहिपुनियहदारुणदुखदीन्हा ४१ जोमोरेमनबचअरुकाया प्रीतिरामपदकमलअमाया ४२ तौकपिहोउबिगतश्रमशूला जोमोपररघुपतिअनुकूला ४३ सुनतबचनउठिबैठकपीशा कहिजयजयतिकोशलाधीशा ४४ सो० ॥ लीनकपिहिंउरलाय पुलकिततनलोचनसजल प्रीतिनहृदयसमाय सुमिरिरामरघुकुलतिलक ४५ चौ० ॥ तातकुशलकहुसुखनिधानकी सहितअनुजअरुमातुजानकी ४६ कपिसबचरितसमस्तबखाने भयेदुखितमनमहँपछितानै ४७ अहहदैवकतजगजायउँ

बचनते बोलतेभयेहैं ( ४० ) देखिये तौ ज्यहि बिधातैं श्रीरामचन्द्रते मोको विमुखकीन है त्यइँ बिधातैं यह मोको कलंक दारुण दुःखदीन ( ४१ ) भरतजी अपने मनबिषे यह कल्पना करते हैं कि जो मनबचन कर्मकरिकै श्रीरामचन्द्र के चरणारबिन्द बिषे मोरि प्रीति अमायाकहि निष्काम होउ ( ४२ ) अरु श्रीराचन्द्र मोपर अनुकूलहोहिं तौ हे कपि तुम श्रमशूलते बिगतहोहु ( ४३ ) भरतके बचन श्रीरामबिषे उपाय शून्य शरणागत सुनिकै हर्षिकै हनुमान्जी उठिबैठे हैं यह कहिकै जयति कोशलाधीशकी ( ४४ ) सोरठार्थ॥

जब हनुमान्‌जी उठिबैठेहैं अरु तिनके बचनसुनिकै भरतके तन पुलकित ह्वै आयेहैं नेत्रनमें जलभरिआयो है हनुमान्‌जी को हृदयमें लगाइलीन है अति आनन्दते श्रीरामचन्द्र रघुकुलके तिलक तिनको सुमिरिकै प्रीतिहृदयविषे नहीं समाती है ( ४५ ) भरतजी बूझतहैं हे तात अनुजसहित करुणानिधान अरु श्रीमातु जानकीकी कुशल कहहु ( ४६ ) हेपार्बती तब हनुमान्‌जी सबचरित्र समासे कहीथोरेमें अर्थ के अभिप्राय बहुतसो बखानिकै कहतभये हैं हनुमान्‌जीके बचनसुनिकै भरतजी अतिशय मनबिषे दुःखितभये पश्चात्ताप करतेभये हैं ( ४७ ) भरतजी अपने मनमें कल्पना करते हैं अहहकही अतिक्लेशते हे दैव मैं क्यों संसारमें उत्पन्नभयों प्रभुके एकौकाज न आयों मोको धृक् है ( ४८ ) पुनि कुअवसर जानिकै मनमें धीर धरिकै अपने मनको बीररस देखाइकै कपि से बोलत भये हैं ( ४९ ) हे तात तोको जात गहरकही बिलम्बहोइहि अरुरात्रीबीते कार्य नशाइ जाइगो ( ५० ) ताते हेमहाबीर शैलसमेत मेरेबाण पर तुमचढ़ौ कृपानिकेतके समीप तुरन्त तुम पहुँचौगे ( ५१ ) यह सुनिकै हनुमान्‌जी के अभिमान उत्पन्न होतभयो कि मेरे भारकरिकै बाणकैसे

**प्रभुकेएकौकाजनआयउँ ४८ जानिकुअवसरमनधरिधीरा पुनिकपिसनबोलेबलबीरा ४९ तातगहरहोइहित्वहिंजाता काजनशाइहिहोतप्रभाता ५० चढ़ुममशायकशैलसमेता पठवोंत्वहिंजहँकृपानिकेता ५१ सुनिकपिमनउपजाअभिमाना मोरेभारचलहिकिमिबाना ५२ रामप्रभावबिचारिबहोरी बन्दिचरणबोल्यउकरजोरी ५३ तवप्रतापउरराखिगोसाईं जैहौंरामबाणकीनाईं ५४ भरतहर्षितबआयसुदयऊ पदशिरनाइचलतकपिभयऊ ५५ दो० ॥ भरतबाहुबलशीलगुणप्रभुपदप्रीतिअपार जातसराहतमनहिंमनपुनिपुनिपवनकुमार ५६ चौ०॥ उहांरामलक्ष्मणहिंनिहारी बोलेबचनमनुज-अनुहारी ५७ अर्द्धरातिगैकपिनहिं**

चलैगो ( ५२ ) पुनि हनुमान्‌जी मन में यह बिचारकीन कि भरतजी श्रीरामचन्द्रके भ्राता अरु रामानन्य कृपाकेपात्र तहां श्रीरामचन्द्रके प्रतापकर प्रभाव भरतबिषे पूर्ण है सो बिचारिकै भरतके चरणबंदिकै हनुमान्‌जी बोलतेभये हैं ( ५३ ) हे गोसाईं तुम्हारप्रताप उरमें राखिकै श्रीरामचन्द्रके बाणके समान तुरन्त श्रीरामचन्द्रके समीप जाउँगो गोसाईं कही गो जे हैं बाह्यांतरकी इन्द्री तिनको जीतिकै श्रीरामचन्द्रको भजनकरै ताको गोसाईंकही ( ५४ ) तब रामप्रताप जानिकै हर्षिकै आयसुदेत भये हे तात शीघ्रजाहु तब भरतके चरणमें शीशनाइकै जनु पवनहुके वेगते अधिक चलतभयेहैं ( ५५ ) दोहार्थ॥ तहांभरतकर बाहुबल शीलगुण श्रीरामचन्द्रकेचरणारबिंदकै प्रीतिअखंड सोहनुमान्‌जी मनहींमनपुनिपुनि सराहते जाते हैं ( ५६ ) हे पार्बती इहां हनुमान् सजीवन लिहेजाते हैं अरु उहां श्रीरामचन्द्र करुणारसको रूपदेखावते हैं श्रीरामचन्द्र श्रीलक्ष्मणजी को देखते भये हैं तब मनुष्यको अनुहारि बचन बोलतेभये हैं ( ५७ ) अर्द्धराति बीतिगई है हनुमान्‌जी नहीं आये तब श्रीरामचन्द्र लक्ष्मणजी को उठाइ कै हृदयमें लगावतभये हैं ( ५८ ) श्रीरामचन्द्र नरइव बिरह करते हैं हे तात तुम मोरदुःख कबहूंनहीं देखिसक्यउहै तुम्हार अति मृदुलसुभावहै ( ५९ ) हे तात मोरेनिमित्त तुम माता पिता को त्यागिदिह्यउ है अरु बनबिषे आइकै हिम आतपबात सह्यउहै ( ६० ) हे भाई मोरेऊपर जो तुम्हार अनुरागरहा सोअनुराग अब कहां गयो है मोरी बिकलता देखि मोरे बचनसुनिकै जागिउठो ( ६१ ) हे पार्बती श्रीरामचन्द्र यह कहते हैं कि जो मैं जनत्यउँ कि यहि बनबिषे बंधुकर बिछोह होइहि तौ पिताको बचन न मनत्यउँ तहाँ श्रीरामचन्द्रकै तौ सत्यसत्य संकल्प है यह काकहते हैं तहां यह धुनि है कि दशरथ महाराज तो अपने मुखते बनका जाइनाहीं कहा इहां श्रीरामचन्द्रमाता पिताको एकही मानिकै कहते हैं अरु कैकेयी बनजाइको

**आवा रामउठायबन्धुउरलावा ५८ सकउनदुखितदेखिम्वहिंकाऊ बन्धुसदातवमृदुलसुभाऊ ५९ ममहितलागितज्यउपितुमाता सह्यउबिपिनहिमआतपबाता ६० सोअनुरागकहाँअबभाई उठहुनसुनिममबचबिकलाई ६१ जोजनत्यउँबनबन्धुबिछोहू पिताबचनमनत्यउँनहिंओहू ६२ सुतबितनारिभवनपरिवारा होहिंजाहिंजगबारम्बारा ६३ असबिचारिजियजागहुताता मिलइन**

कह्यउ है सो बनमात्र कह्यउ है कछु लंकाजाबेको नहीं कह्यउहै तहां मैं सोऊबचन न मनत्यउँ काहेते माता पिताके बचनकर प्रतिपालन सामान्य धर्म है अरु त्याग सामान्य अपराध है अरु बन्धु जो लक्ष्मणजी हैं सो श्रीरामचन्द्रके परमानन्यदास हैं तिनकरसदा संयोग बिशेष परमधर्म है अरु जिनकर बिक्षेप परमदुःख है ताते श्रीरामचन्द्रबिषे संकल्पकर ग्रहणकीनहै अरु सामान्यकर त्यागकीनहै ताते श्रीमराचन्द्र यह बचन कहाहै चौपाई॥ जोजनतेउँबनबन्धुबिछोहू। पितबचनमनत्यउँनहिंवोहू ( ६२ ) हे भ्राता सुतजे हैं बितकही धन जे हैं नारि जे हैं भवन जे हैं परिवार जे हैं इत्यादिक सब यहि जगत्‌बिषे सर्ब योनिनमें हे तात येते सब बारबार होते हैं जाते हैं ( ६३ ) अरु सहोदर कही भाई जे हैं ते बहुरिनहीं मिलते हैं ताते अस बिचारिकै जागहु उठहु अथवा इहां आरत करुणा रसकी एकही दशाहै तहां पुनरुक्त नहींहोतहै श्रीरामचन्द्र कहते हैं हे तात अस बिचारहु तुम्हैं बिनाहम बहुतबिकलहैं जो तुमनहीं जियहुगे तौ हमनहीं जियहिंगे असबिचारिकै जागहु हेतात हे सहोदर हेभ्राता बहुरिकही जैसे हमको मिलत रह्यउहै तैसे फिरिउठिकै मिलहु आगे जो अर्थकरते हैं जो एकदरमें उत्पन्नहोइ ताको सहोदर कही सो अर्थ इहांनहीं सिद्धहोतहै अथवा एकदेशमें केवल पिताकी धातुलैकै सिद्धिहोतहै अरु कहूं यह पाठ है मिलैनजगतसहोदरभ्राता अरु जगत् बिषे सहोदर कही एकउदर बिषे भ्राता नहींहोइहै अर्थ सामान्य है किन्तु भ्रातानहीं मिलैहै अरु स्त्री पुत्र जगत्‌बिषे बहुमिलते हैं ( ६४ ) हे भरद्वाज श्रीरामचन्द्र कैसे नरइव बिरहकरते हैं जैसे विनापंखकर बिहंगदीनहै अरु जैसे मणिबिनासर्पदीनहै अरु जैसे सुंडबिनाहाथीदीनहै ( ६५ ) ऐसेलक्ष्मणजीते कहते हैं हेबन्धु तैसे मोर जीवन तुम्हैं बिनु है सो दैवजड़ है जो तुम्हैंबिना जियावत है ( ६६ ) रघुनाथजी कहते हैं हे कर्त्तार मैं अयोध्या कवन मुँहलाइकै जाउँगो काहेते नारिके हेतु प्रियबन्धु गँवाइकै अयोध्यामें मेरो कवन कामहै ( ६७ ) बरु जगत् बिषे अपयश सहत्यों कवन अपयश सब कोई मोको

**बहुरिसहोदरभ्राता ६४ यथापंखबिनुखगअतिदीना मणिबिनफणिकरिवरकरहीना ६५ असममजिवनबन्धुबिनतोहीं जोजड़दैवजियावैमोहीं ६६ जैहौंअवधकवनमुँहलाई नारिहेतुप्रियबन्धुगँवाई ६७ बरुअपयशसहत्यउँजगमाहीं नारिहानिविशेषक्षतिनाहीं ६८ अबअवलोकिशोकसुततोरा सहहिनिठुरकठोरउरमोरा ६९ निजजननीकेएककुमारा तासुताततुमप्राणअधारा ७०**

देत कि देखिये तौ सारीअयोध्याकेलोग यहचहैं कहैं कि श्रीरामचन्द्र बनको न जाहिं अरु एक कैकेयीके कहेते हठकरिकै बनको आयोहैं तहां राक्षस जानकीको हरिलैगयो तहां कछु पुरुषार्थ न भयो यह अपयश सहिलेत्यउँ लंकाको न आवत्यउँ तब लक्ष्मणजी तौ कुशल रहते काहेते कि नारिकर विक्षेप महिबिषे विशेषकरिकै क्षतिकही हानिनाहीं है ( ६८ ) हे सुतअबतोको अवलोकिकै तोरेदुःख करिकै मेरोप्राण अबहीं छूटिजात उचित तौ अस है परमोरउर निठुरकही अतिकठोरहै सो सबदुःखसहतहै अरु सहहिं ( ६९ ) हेतात निजकही हमारी माता जो श्रीकौशल्याजी हैं तिनके हम एककुमारहैं अरु तासुकही हमारे तुमप्राणके आधारहौ इहांयहधुनिहै कि तुम हमारे प्राणके आधारहौ तुमनहीं जिवोगे तौ हम कैसे जियैंगे नहीं जियैंगे जोप्राण शरीरसे निकलिगये तौ शरीर कैसेरहैगो पुनियहधुनिहै कि निजजननीके हमएकहैं ताते जो तुमनहीं जियोगे तौ हम नहीं जियैंगे तौ कौशल्याजी निराश ह्वइजाहिंगी ताते हेतात बेगिजाहु उठहु ( ७० ) अरु तुमको कौशल्याजी मोको सौंपिदीनहै सबप्रकारते सुखदकही मेरेसंग तुम बहुतसुख पावहुगे अरु तुम्हार परमहितकार होइगो यहजानिकै सौंप्यहुहै जो कोईकहै कि अयोध्याकांडमें तौ सौंपतौ नहीं कहाहै सुमित्रैकैरन कौशल्याकर अरु इहां कहाहै यह काव्यनबिषे अर्थके लक्षणकै लक्षिकहावतहै ( ७१ ) हेतात तुम्हैं बिनातौ मैं जीबै न करिहौं कदाचित् कौलकी अरु मोरे हृदयकी कठिनाईते जियतहौं कौशल्याको जाइकै कौनउत्तर देउँगो तातेतुम बेगिउठिकै मोको सिखावनदेहु मैं काकरौं इहां श्रीरघुनाथजी क बातनमें अतिशय प्रीति विरह करुणारस पूर्णहै यहिप्रकरणकर अर्थ सुमित्राबिषे नहीं लागत है काहेते सुमित्राके दुइपुत्रहैं सुमित्रापर लगायेते रसाभास दूषण ह्वैजातहै ( ७२ ) हे गरुड़ अनेकशोचकेविमोचनकही नाशकर्त्तातिअपनी नाट्यलीलाकरिकै शोचकरतेहैं राजीव दल नेत्रबिषे जल बहेजाते हैं इहां अभिप्रायहै कि जो अपने जननको कौनिउताप प्राप्तिहोतहै तब करुणारस जलते सींचिकै शीतल करिदेत हैं ( ७३ )

सौंप्यसिमोहिंतुमहिंगहिपानी सबबिधिसुखदपरमहितजानी ७१ उतरकाहदेहौंत्यहिजाई उठिकिनमोहिंसिखावहुभाई ७२ बहुबिधिशोचतशोचबिमोचन श्रवतसलिलराजिवदललोचन ७३ उमारामअखण्डरघुराई नरगतिभक्तिकृपालुदेखाई ७४ सो० ॥ प्रभुबिलापसुनिकान बिकलभयेबानरनिकर आइगयेहनुमान जनुकरुणामहँबीररस ७५॥ * * * * * *

हेउमादेखिये तौकृपालु श्रीरामचन्द्र अखण्ड एकरस पूर्णपरब्रह्ममूर्त्तितेनरकीऐसी गतिदेखाइकै अपने जननकेऊपर अपनी भक्तिदेखावतेहैं किमेरे भक्त मोको ऐसेप्रियहैं किन्तु नरगति जैसे नर अपने सुत भाईपर प्रीतिकरतेहैं तैसे देखावाहै ( ७४ ) सोरठार्थ॥ हेपार्वती प्रभुविलाप अतिकृपाकृत इव सुनिकै सम्पूर्ण रीक्षबानर विकलहोत भयेहैं तेहीसमय बिषे हनुमान्‌जी सजीवनिलैकै आइ प्राप्तभये हैं जनुकरुणारस बिषे बीररसआइ प्राप्ति भयोहै देखिये तौ करुणारसते वीररसते विरोधहै करुणारसकही जो दीनको दुःखित देखिकै द्रविउठै अरु बीररसकही संग्रामविषे युद्धकरतसन्ते अतिहर्षको प्राप्तिहोइ धन धाम शरीर शरीरकेस्नेही सबको वृथाजानै हैअरु प्राणको तृणसमान जानैहै तहाँ करुणा अरु बीररसकर सम्बन्ध कैसे बनैहै अरु गोसाई कहा कि जनु करुणामहँ बीररस तहां बीररसकही संग्रामबीर स्वधर्मबीर तपवीर ज्ञानबीर दानबीर इहां दानवीररसको गोसाई कहा है दानबीररस कही जो काहूको कौनौकलेश देखै है तौ सर्वस औप्राणदैकै वहिकोदुःख मिटावै है ताको दानबीररसकही इहां हनुमान् जी अनेकपरिश्रम करिकै सर्जीवनि ल्यायेहैं लक्ष्मणजीके प्राणकेदाता भये हैं ताते श्रीगोसाईं तुलसीदासजी कहाहै कि आइगये हनुमान् जनुकरुणामहँ बीररस इहां सम्पूर्णसेना करुणारसमय ह्वैरही है हनुमान्‌को आगमनलागि सबके प्राणरहे हैं जो कदाचित् हनुमान् न आवत अरु भोर ह्वइजात तौ सबकेप्राण जातरहते इहां हनुमान् जी सबके प्राणदाताभये हैं तहां सहितसेना रघुनाथजी करुणारसरूप भये हैं अरु हनुमान्‌जी बीररसरूप तहां प्राप्तिभयेहैं ( ७५ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेलंकाकांडेभक्तवत्सलकरुणारसवर्णनंनामद्वादशस्तरंगः १२॥

दोहा॥ दशअरुतीनितरंगमेंकुम्भकरणरणकीन प्रभुसनअद्भुतयुद्धकरिरामचरणरतिलीन १३ हनुमान्‌जी को सजीवनिलैकै आये देखिकै

चौ० ॥ हर्षिरामभेंट्यउहनुमाना अतिकृतज्ञप्रभुपरमसुजाना १ तुरतबैदतबकीनउपाई उठिबैठेलक्ष्मणहर्षाई २ हृदयलाइप्रभु भेंट्यउभ्राता हर्षेसकलभालुकपिब्राता ३ पुनिकपिबैदतहांपहुंचावा ज्यहिबिधितबहिंताहिलैआवा ४ यहवृत्तान्तदशाननसुन्यऊं अतिविषादपुनिपुनिशिरधुन्यऊं ५ ब्याकुलकुम्भकरणपहँगयऊ करिबहुयतनजगावतभयऊ ६ जागानिशिचरदेखियकैसा मानहुकालदेहधरिवैसा ७ कुम्भकरणबूझासुनुभाई काहेतवमुखरहासुखाई ८ कथाकहीसबतेअभिमानी ज्यहिप्रकारसीताहरिआनी ९

श्रीरामचन्द्र अतिहर्षते मिलत भयेहैं प्रभु श्रीरामचन्द्र अति कृतज्ञहैं सबके कर्तव्यको जानते हैं काहेते परम सुजानहैं अन्तर्यामी हैं ( १ ) सब सुषेन वैद्य जोहै सो तुरन्तउपाय करतभयो तब लक्ष्मणजी हर्षिकै उठिबैठेहैं ( २ ) तब श्रीरामचन्द्र हर्षिकै लक्ष्मणजीको हृदयमें लगाइकै भेंटत भयेहैं सम्पूर्णसेना मुनिदेवब्रात कही पंक्तिकी पंक्ति अति आनन्दको प्राप्तिभयेहैं जयजयकारहोतभयोहै ( ३ ) अरु जैसे हनुमान्‌जी वैद्यकोलै आयेरहैं तैसे पहुँचावत भये हैं ( ४ ) यह सबवृत्तांत रावण सुनतभयोहैअति विषाद करिकै बारबार शिरपीटत है ( ५ ) ब्याकुलह्वैकै कुम्भकर्ण के पासजाइकै अनेकयत्न करिकै जगावतभयो ( ६ ) तब कुम्भकर्ण जागिकैबैठ्यउहै मानहु काल देहधरिबैठ्यउहै ( ७ ) तब कुम्भकर्ण रावणते बूझत है हे भाई तोरमुख कैसे सुखाइ रह्यउहै ( ८ ) तबत्यइँ रावण अभिमानी ज्यहि प्रकारते श्रीजानकीजीको हरिआन्यो है सो सबकथा कहतभयो है ( ९ ) पुनि कहतहै हे भाई कपि संग्रामविषे निशिचरनको मारतभये हैं अरु महामहा योधा संहारतभये हैं ( १० ) दुर्मुखनामे वीर अरु देव रिपुनामे बीर अरु मनुजअहारी

नामेबीर अरु अतिकायभट अकम्पनभट भारीजे हैं ( ११ ) अपर महोदर आदिकबीर बड़े बड़े रणधीर सम्पूर्ण समरभूमि विषे परतभये हैं ( १२ ) दोहार्थ ॥ तब रावणके वचनसुनिकै कुम्भकर्ण बिलखावकही विषाद करिकै कहत है हे शठ जगदम्बाकही श्रीजानकीजी तिनको हरिकै आपन कल्याण चहतहै ( १३ ) कुम्भकर्ण कहत है हे निशिचरनकेनाह तैं भलानहीं किहेहै प्रथम तैं मोको न जगाये आइ अबआइकै मोको जगाये है ( १४ ) हे तात अबहुं अभिमानको त्यागकरौ श्रीरामचन्द्रको भजहु तुम्हारकल्याण सबप्रकारते होइहि ( १५ )

तातकपिननिशिचरसंहारे महामहायोधासबमारे १० दुर्मुखसुररिपुमनुजअहारी भटअतिकायअकम्पनभारी ११ अपरमहोदरआदिकवीरा परेसमरमहँसबरणधीरा १२ दो० ॥ सुनिदशकन्धरवचनतब कुम्भकरणबिलखान जगदम्बाहरिआनिकरि शठचाहतकल्यान १३ चौ० ॥ भलनकीनतैंनिशिचरनाहा अबम्वहिंआनिजगायोकाहा १४ अजहुँतातत्यागहुअभिमाना भजहुरामहोइहिकल्याना १५ हैंदशशीशमनुजरघुनायक जाकेहनूमानसेपायक १६ अहहबन्धुतैंकीनखोटाई प्रथमहिंम्वहिंनजगायो आई १७ कीन्हेतैंविरोधत्यहिदेवक शिवविरंचिहरिजाकेसेवक १८ नारदमुनिम्वहिंज्ञानजोकह्यऊ कहत्यउँतोहिंसमयनिर्बह्यऊ १९ अबभरिअंकभेंटम्वहिंभाई लोचनसफलकरौंमैंजाई २० श्यामगातसरसीरुहलोचन देखौंजायतापत्रयमोचन २१

हे दशशीश रामचन्द्रको तैं मनुजकहे है जाके हनुमान्से पायककही दूत हैं तिनको मनुजकही न कही ( १६ ) अरु अहहकही अतिक्लेश मनमें करिकै कुम्भकर्ण कहतहै है बंधु तैं बड़ी खोटाई कीनहै तैं प्रथममोको जगाइकै कसन सुनाये ( १७ ) हे रावण श्रीरामचन्द्र कैसे हैं देवता जिनके चरणकी सेवकाई करते हैं ध्यानकरिकै प्रत्यक्ष करिकै शिव बिरंचि हरिकही विष्णु ये समस्तजाके सेवक हैं ( १८ ) हे रावण यहज्ञान श्रीरामतत्त्व सर्वोपर परब्रह्म नारदमुनि मोसे अच्छीप्रकारते कहाहै सो जो प्रथममोसे जनावतिसि तौ मैं सो ज्ञान संपूर्ण कहिकै निर्बहोकही तोर बोधकरि देत्यउँ ( १९ ) हे भाई अबआउ अंकभरिकै भेंटिले काहेते अबमैं फिरैवाला नहींहौं रणमें जाइकै अपने नेत्रनको सफलकरौंगो ( २० ) जिन श्रीरामचन्द्रको श्याममणिइव गात है कमलइव नेत्र हैं तिनको मैं यहिनेत्रनते देखबजाइ ते कैसेहैं तीनिउतापके नाशकर्त्ता हैं ( २१ ) दोहार्थ ॥ हे पार्वती श्रीरामचन्द्र कररूप गुण सुमिरिकै एकक्षण मगन ह्वैगयो है तब रावण जाना कि यहिके तौ ज्ञानउत्पत्तिभयो यहयुद्ध न करैगो तब कोटि घट मदिरा अरु हजारभैंसा कुम्भकर्ण के खवाइबे पियाइबेको मांगतभयो है ( २२ ) तब कुम्भकर्ण अनेक महिषा खाइकै मदिरापान करिकै मत्त ह्वैकै गर्जतभयो है जैसे इन्द्रबज्र छूटेते हाहाशब्द होत है ( २३ ) कुम्भकर्ण रणविषे दुर्मदकही बीररस मद में मत्त निर्भय अरु रणविषे रंगाकही अतिहर्ष आनन्दते संग्रामकरिबेको चलतभयो है दुर्ग जो लंकागढ़ है त्यहिको छोड़िकै कछुसेना संगविषे नहीं लियो है अकेलचल्यो है ऐसो वीर

दो० ॥ रामरूपगुणसुमिरिमन मगनभयोक्षणएक रावणमाँग्यउकोटिघट मदअरुमहिषअनेक २२ चौ० ॥ महिषखायकरिमदिरापाना गर्ज्जाबज्राघातसमाना २३ कुम्भकरणदुर्मदरणरंगा चलादुर्गतजिसेननसंगा २४ देखिविभीषणआगेगयऊ पदगहिनामकहतनिजभयऊ २५ अनुजउठायहृदयत्यइँलावा रघुपतिभक्तजानिमनभावा २६ तातलातरावणम्वहिंमारा कहतपरमहितमंत्रबिचारा २७ त्यहिगलानिरघुपतिपहँआयउँ दीनजानिप्रभुकेमनभायउँ २८ सुनुसुतभयोकालबशरावन सोकिमानअबपरमसिखावन २९ धन्यधन्यतैंधन्यविभीषण भयउतातनिशिचरकुलभूषण

३० बन्धुबंशतुमकीनउजागर भजहुरामशोभासुखसागर ३१ दो० ॥ वचनकर्म्ममनकपटतजि भज्यहुरामरणधीर जाहुननिजपरसूझम्वहिं भयोंकालबशबीर ३२ चौ० ॥ बन्धु-

है ( २४ ) तहां विभीषण देखा कि कुम्भकर्ण आवतहै तब आगेजाइकै कुम्भकर्णको पदगहिकै आपननामकहत भयो है कि मैं विभीषणहौं ( २५ ) तहां अनुजको उठायकै उरमेंलगावत भयोहै श्रीरामभक्त जानिकै मनमेंबहुत भावत भयोहै ( २६ ) विभीषणकहत है हेतात सुन्दरनीति कहतसंते रावणमोको लातमारयउहै ( २७ ) तबमोको ग्लानि आवतभई है कि ऐसे दुष्ट की संगतित्यागिकै तब श्रीरघुपतिकी शरणागतआवतभयोंहै मोकोदीन जानिकै श्रीरघुनाथजीके मनमेंभावत भयउँहै ( २८ ) कुम्भकर्ण कहतहै हेसुतकालकीवश रावण भयोहै ताते परमउत्तम सिखावन नहींमानैहै ( २९ ) हे विभीषण तैंधन्य धन्यतरहसितू हमारेकुलको भूषणभयो है ( ३० ) हे बन्धु तैं बंश को उजागरकिहे है काहेते श्रीरामचन्द्र शोभा सुखके सागर तिनको तुमभजन करतहौ ( ३१ ) दोहार्थ ॥ हे तात अबमन बचनकर्म करिकै राक्षसीकपट तजिकै श्रीरघुबीर रणधीरको भजहु अबतुम राम समीपको जाउ मोको निजपरकही आपन परावा नहींसूझि परतहै अबमैंकालकेबश भयों है ( ३२ ) कुम्भकर्ण के बचनसुनिकै विभीषण फिरत भयउ है त्रैलोक्यभूषण जेश्रीरामचन्द्र हैं तिनके समीप आवतभयोहै ( ३३ ) विभीषण कहतहै हे नाथ भूधराकार शरीर यह कुम्भकर्ण आवतहै महारणधीर है ( ३४ ) जब यहबचन कपिनसुन्यउ तब बड़े बड़े बलवान् किलकिलाइकै धावतभये हैं ( ३५ ) तहां पर्वत अरु वृक्ष अनेकन उखारिकै कटकटाइकै त्यहिके ऊपर डारतहैं ( ३६ ) कोटिकोटि गिरिनके शिखर भालुकपि मिलिकै एकएकबार प्रहार कही डारत हैं ( ३७ ) चारिउ दिशाते कपि अरु भालु अनेकतरु पर्वतनते मारते हैं पर कुम्भकर्ण मनतन संग्रामभूमिविषे नेकुनहीं मुरै न टरै कैसे जैसे अनेकन आकके फलन

वचनसुनिफिराविभीषण आयोजहँत्रैलोक्यविभूषण ३३ नाथमूधराकारशरीरा कुम्भकरणआवतरणधीरा ३४ यतनाकपिन सुनाजबकाना किलकिलायधायेबलवाना ३५ लीन्हउपाटिविटपअरुभूधर किलकिलाइडारहिंत्यहिऊपर ३६ कोटिकोटिगिरिशिखरप्रहारा करहिंभालुककपि-एकहिबारा ३७ मुरैनमनतनटरैनटारे जिमिगजअर्कफलनकेमारे ३८ तबमारुतसुतमुष्टिकहन्यऊं परयउधरणिब्याकुलशिरधुन्यऊं ३९ पुनित्यइँउठिमारयसिहनुमन्ता घूर्मितभूतलपरयउंतुरंता ४० पुनिनलनीलहिंअवनिपछारिसि जहँतहँझपटिपटकिभटडारिसि ४१ चलीबलीमुखसेनपराई अतिभयत्रसितनकोउसमुहाई ४२ दो०॥ अंगदादिकपिघायल

के मारेते गजनहीं टरै हैं फलफूलकै चूरह्वैजातहैं तैसे पर्वत कुम्भकर्णके शरीर में लागेते चूरचूरह्वैकै गिरिपरते हैं ( ३८ ) तब हनुमान्जी क्रोध करिकै त्यहिकी छाती में एकमुष्टिका हनतभये हैं तब कुम्भकर्ण व्याकुल ह्वैकै शिरधुनिकै पृथ्वी में गिरतभयो है ( ३९ ) पुनि कुम्भकर्ण संभारिकै उठिकै हनुमान्जी को मारतभयो है हनुमान्जी मूर्च्छितकै घूमिकै पृथ्वी विषे गिरिपरे हैं ( ४० ) पुनि नलनीलको अवनिमें पछारतभयो है अरु जहांतहां झपटिकै भटनको पकरिकै महिमें पटकिडारत है ( ४१ ) संपूर्ण बानर रीछकी सेना बिकलकरिदियो है तब बलीमुख जे वानर हैं तिनकी सेना भागिचली है अतिभयके त्रासते कोउ समुहाइ नहीं सकै है ( ४२ ) दोहार्थ॥ हे गरुड़ अंगदादि जे अनेकबीर तिनसबको सुग्रीव सहित घायलकरि दियो है पुनि सुग्रीवको कांखमें दाबिकै कपिनको संग्रामविषे जीतिकै चलत भयो है कुम्भकर्ण अतुल बलकोसीव नाममर्याद ( ४३ ) हे उमारघुपति संग्रामविषे अतिलीलाकरते हैं जैसे गरुड़ सर्पनके बच्चनमें खेलखेलै ( ४४ ) जिन श्रीरामचन्द्रकी भृकुटी भंगकही टेढ़ी भयेते काल जे अतिप्रबल त्यहिकर नाशह्वइजाइ तिनको का ऐसीलराई सोहत है ( ४५ ) यहि लीलाकरिकै जगत् विषे पावनी कीर्त्ति विस्तार करते हैं ज्यहिको गाइसुनिकै नर भवसागरको तरिजाते हैं

( ४६ ) तब हनुमान्जीकी मूर्च्छा बीतिगई है जागिकै सुग्रीवको खोजनलागे हैं ( ४७ ) अरु सुग्रीवहुकै मूर्च्छा बीतिगई है कांखते निबुकिपरे हैं तब कुम्भकर्ण जाना कि मरिगया है ( ४८ ) अरु सुग्रीव आपने दांतनते कुम्भकर्णकै नाक

बशकरियुतसुग्रीव कांखदाबिकपिराजकहँ चलाअमितबलसीव ४३ चौ० ॥ उमाकरतरघुपतिरणलीला खेलगरुड़शिशुअहिगणमीला ४४ भृकुटिभंगजोकालहिखाई ताहिकिसोहैऐसिलराई ४५ जगपावनिकीरतिविस्तरहीं गाइगाइभवनिधिनरतरहीं ४६ मूर्च्छागइमारुतसुतजागा सुग्रीवहिंतबखोजन लागा ४७ कपिराजहुकैमूर्च्छाबीती निबुकिगयो त्यहिमृतकप्रतीती ४८ काट्यसिदशननासिकाकाना गर्जिअकाशचलात्यइँजाना ४९ गह्यसिचरणत्यहिधरणिपछारा अतिलाघवपुनिउठित्यइँमारा ५० पुनिआयोप्रभुपहँबलवाना जयजयकारुणीकभगवाना ५१ नाककानकाटे-त्यइँजानी फिराक्रोधकरिभईगलानी ५२ सहजभीमपुनिबिनुश्रुतिनासा देखतकपिदलउपजीत्रासा ५३ दो०॥ जयजयजयरघुबंशमणि धायेकपिकरिहूह एकहिबारजोताहिपर डारहिं

कान काटिकै गर्जिकै आकाशको चले हैं तब कुम्भकर्ण जानतभयो है ( ४९ ) तब सुग्रीवकर चरणगहिकै पृथ्वीमें पटकिदियो है पुनि सुग्रीव अति लाघवकही अतिशीघ्रते उठिकै कुम्भकर्ण की छातीमें एकमुष्टिका हनतभयो है ( ५० ) मुष्टिका हनिकै अति बलवान् श्रीरामचन्द्रके समीप प्राप्ति भये आइकै कारुणीक कही करुणाको मर्याद जो श्रीरामचन्द्र हैं तिनके समीप जयजयकार करतभयो आइकै ( ५१ ) उहां नाक कान काटेते कुम्भकर्णजाना ग्लानि मानिकै अतिक्रोध करिकै चलतभयो हैं ( ५२ ) एकतौ सहजही भीमकही भयानक है अरु नाककान करिकैहीन ऐसो भयानक देखिकै कपिनके दलविषे त्रासउपजी है ( ५३ ) दोहार्थ॥ तबजयजय श्रीरघुबंशमणि असकहिकै कपिके दल हाहाकही हहासकरिकै धावत भये हैं एकहिबार कपिऋच्छ हजारन पर्वत तरु कुम्भकर्णके ऊपर डारतभये हैं ( ५४ ) हे भरद्वाज कुम्भकर्णरणविषे अतिविरोधते आवतभयो है कपिनकेदल विषे सन्मुख चलतभयो है मानहुकाल क्रोधकरिकै चल्यो है ( ५५ ) कोटि कोटि कपि धरिधरिमुखमें डारिदेत है जैसे गिरिगुहा विषे टीड़ी प्रवेशकरै हैं ( ५६ ) कोटिनकपिनका शरीरसे मर्दिडारत हैअरु कोटिन मींजिकै गर्दमें मिलावतहै ( ५७ ) तहां कपिनके ठाटकही यूथके यूथ मुख नासिका श्रवणकी बाटते निकसिजाते हैं ( ५८ ) हे पार्वतीरणविषे कुम्भकर्ण मदमत्त ह्वइकै दर्पकही क्रोधकरत है मानहु संपूर्ण विश्वको ग्रसाचहतहै यहिबिधि अर्पाकही अपनोशरीर श्रीरामार्पण करिदियो है ताहीते निर्भय संग्रामकरत है ( ५९ ) कपिनकी सेनाके सुभटन

गिरितरुयूह ५४ चौ० ॥ कुम्भकरणरणरंगबिरुद्धा सन्मुखचलाकालजनुक्रुद्धा ५५ कोटिकोटिकपिधरिधरिखाई जिमिटीड़ीगिरिगुहासमाई ५६ कोटिनगहिशरीरसनमर्द्दा कोटिनमींजिमिलावैगर्द्दा ५७ मुखनासिकाश्रवणकीबाटा निकसिपराहिंभालुकपिठाटा ५८ रणमदमत्तनिशाशरदर्प्पा विश्वग्रसहिजनुयहिविधिअर्प्पा ५९ मुरेसुभटरणफिरहिंनफेरे सूझननयनसुनहिं नहिंटेरे ६० कुम्भकरणकपिफौजबिडारी सुनिधायेरजनीचरझारी ६१ देखीरामकटकबिकलाई रिपुअनीकनानाविधिआई ६२ दो० ॥ सुनुसौमित्रकपीशसुनु सकलसँभारहुसैन मैंदेखौंखलबलदलहिं बोलेराजिवनैन ६३ चौ० ॥ करशारंगविशिषकटिभाथा मृगपतिठवनिचलेरघुनाथा ६४ प्रथमकीनप्रभुधनुटंकोरा रिपुदलबधिरभयोसुनिशोरा ६५ सत्यसंधछाड़े-शरलक्षा कालसर्प्प

विषे मुरिचलेहैं हनुमानादिक जे महावीर हैं ते पुकारते हैं कि फिरौफिरौभयते बिकल पुकारिबो सुनतै नहीं हैं नेत्रनते सूझिनहीं परैहै ( ६० ) यहबात निशिचरन सुनाहै किं कुम्भकर्णने कपिनकै सेना विडारिदियोहै तब निशिचरनकै सेना गर्जिकै धावतभई है ( ६१ ) तब श्रीरामचन्द्र अपनी कटककी विकलतादेख अरु नानाप्रकारकै अनी प्राप्तिभई आइकै ( ६२ ) दोहार्थ॥ श्रीरामचन्द्र कहते हैं हे सौमित्र हे कपीश हनुमान् अंगदादि तुमसब सेनाको सँभारहु मैं कुम्भकर्ण जो खलहै त्यहिके बलदलको देखौंगो हे पार्वती राजीवनयन असबोलते भये हैं ( ६३ ) श्रीरघुनाथजी सुग्रीवते कह्यउ कि सेनासँभारहु आप कटिविषे तूणीरकसिकैहाथमेंधनुष विशिषकही बाणलैकै सिंहकी ऐसीठवनि चलतभये हैं ( ६४ ) श्रीरघुनाथजी कुम्भकर्ण की सेनाके समीप जाइकै प्रथम धनुषके रोदाते टंकोर कीन महाघोरशब्द सुनिकै निशिचरन की सेना बधिर ह्वइगई है ( ६५ ) पुनि सत्यसंधकही सत्यसंकल्प हैं जिनके तिनधनुष में योजितकरिकै वाणको छोड़ा है सो वाण लक्षकही लाखस्वरूप ह्वइकै चले हैं मानहुंकाल अनेक सर्परूप ह्वइकै सपक्षचले हैं श्लोक वृहन्नाटके तूणीरैककरेणस्यात्तुदशधासंधानकालेशतं चापेभूतसहस्त्रलक्षगमनं कोटिश्चकोटिर्वधे अंतेअर्वनखर्वबाणबिविधै:सीतापतेशोभितं एतद्बाणपराक्रमस्यमहिमा सत्पात्रदानेयथा १ किन्तु लक्षकही निशानाकर जैसे खेलवारी निशानाको वाण मारे तैसे राक्षसनपर श्रीरघुनाथजीके बाणचले हैं ( ६६ ) अतिशय निशितकही अतिपैन चोषे नराच जे बाण ते चलत भये हैं त्यहिबाणन करिकै निशिचरजे विकटभट हैं तिनको शास्त्रनमें पिशाचौकहा है ते जहां तहां कटैलागे हैं ( ६७ ) कटतहैं चरण उरभुजदंड अरु

**जनुचलेसपक्षा ६६ अतिशयचलेनिशितनाराचा लगेकटनभटबिकटपिशाचा ६७ कटहिंचरणउरशिरभुजदण्डा बहुतकबीरहोतशतखण्डा ६८ घुर्मिघुर्मिघायलभटपरहीं उठहिंसँभारिसुभटपुनिलरहीं ६९ लागतबाणजलधिजिमिगाजहिं बहुतकदेखिकठिनशरभाजहिं ७० रुण्डप्रचण्डमुण्डबिनुधावहिं धरुधरुमारुमारुधुनिगावहिं ७१ दो० ॥ क्षणमहँप्रभुकेशायकन काटेविकटपिशाच पुनिरघुपतिकेत्रोणमहँ प्रविशेसबनाराच ७२ चौ०॥ कुम्भकरणमनदीखबिचारी हत्योनिमिषमहँनिश्चरधारी ७३ भयोक्रुद्धदारुणबलबीरा करिमृगनायकनादगँभीरा ७४ कोपिमहीधरलेइउपारी डारैजहँमर्कटभटभारी ७५ आवत**

बहुतक बीर शतखंड ह्वइजातहैं ( ६८ ) बाणके लागेते घुर्मिघुर्मि भट पृथ्वीमेंगिरिपरतेहैं पुनिसँभारि सँभारि श्रीरघुनाथजीसे उठिउठि लरते हैं ( ६९ ) बाण लागतही मेघकीनाईं गर्जतेहैं अरु बहुतक कठिनशर देखिकै भागिजातेहैं ( ७० ) रुंडकही बिनामुण्डके प्रचंडबीर पृथ्वीमें जहां तहां धावत फिरतेहैं अरु धरु धरु मारु मारु भयानकशब्द ह्वइरहेहैं ( ७१ ) दोहार्थ॥ हे पार्वती श्रीरामचन्द्रकेबाणन कोटिन बिकट पिशाच एकक्षणमें काटिडारेहैं निश्चरनको मारिकै ते बाण श्रीरामचन्द्रके त्रोणमहं प्रबेशभये आइकै ( ७२ ) कुम्भकर्ण अपनेमनमें बिचारिदेखा निश्चरनकी धारीकहीसेनापंक्ति सो एकनिमिषमहं नाशह्वैगईहै ( ७३ ) अतिदारुण बलबीर कुम्भकर्ण सो क्रोधकरत भयो है मृगनायक सिंहकीनाईं गर्जतभयोहै ( ७४ ) कोपिकै अनेकमहीधर शीघ्रउपारिकै कपिनकी सेनापर डारतहैं जहां भारीभटहैं ( ७५ ) तिनपर्बतनको आवतदेखिकै श्रीरामचन्द्र बाणनते काटिकै रजसमान करिडारेहैं ( ७६ ) पुनि कोपकरिकै श्रीरामचन्द्र धनुष संधान करिकै बहुकराल बाण छांड़तभये हैं ( ७७ ) तेबाण कुम्भकर्णके तनमें प्रवेशकरिकै निकरिजाते हैं जनुकही जैसे अनेक दामिनी दमकिकै घनमें समाइजातीहैं इहां पुल्लिग स्त्रीलिंगका तात्पर्य नहींहै केवल उपमाकर तात्पर्यहै ( ७८ ) कुम्भकर्णको शरीर कारोहै महादीर्घहै त्यहिबिषे बाणनके लागेते रुधिर श्रवतहै ऐसी शोभाहोत है जनु कालेपर्वतसे गेरुके पनारेकही झरना झरते हैं ( ७९ ) तब कुम्भकर्णको विकल विलोकिकै भालु कपिनके यूथके यूथ धायेहैं जब निकटभट आयेहैं तबतिनको देखिकै कुम्भकर्ण विहंसत भयोहै ( ८० ) दोहार्थ॥ तब कुम्भकर्ण गर्जिकै धाइकै बेगिकही अतिशीघ्रते कोटिकोटि बानरकरतरेगहिगहि पृथ्वी बिषे

देखिशैलप्रभुभारे शरनकाटिरजसमकरिडारे ७६ पुनिधनुतानिकोपिरघुनायक छाड़े अतिकरालबहुशायक ७७ तनमहँप्रविशिनिसरिशिरजाहीं जनुदामिनिघनमाहिंसमाहीं ७८ श्रोणितश्रवतसोहतनकारे जनुकज्जलगिरिगेरुपनारे ७९ बिकलविलोकि भालुकपिधाये बिहँसाजबहिंनिकटभटआये ८० दो० ॥ गर्जतधायोवेगअति कोटिकोटिगहिकीश महिपटकतगजराजइव शपथकरैदशशीश ८१ चौ० ॥ भागेभालुबलीमुखयूथा वृकविलोकिजिमिमेषवरूथा ८२ चलेभागिकपिभालुभवानी बिकलपुकारतआरतबानी ८३ यहनिशिचरदुकालसमअहई कपिकुलदेशपरनअबचहई ८४ कृपाबारिधररामखरारी पाहिपाहिप्रणतारत

पटकि डारैहै जैसे गजराज शृगालनको धरिधरि पटकिडारैहै रावणकै दोहाई करि करि ऐसोबीर कुम्भकर्णहै अपनेराजा की विजय चाहतहै ( ८१ ) तब कुम्भकर्ण क्रोधसंयुक्त गर्जिकै वानरनको मारतहै तब भालु अरु बलीमुख जे वानरहैं तिनकै सेना यूथपति सहित भागिचलीहै जैसे वृकजोहै भेड़हा त्यहिको विलोकिकै मेषकही भेड़ी बकराके बरूथकही झंडके झुंड भागिजातेहैं ( ८२ ) हे भवानी एक कुम्भकर्णके मारेते भालु कपिनकै सेना भागी चलीजाती है अरु विकल ह्वइकै आरतबाणीते पुकारते हैं ( ८३ ) पुकारि पुकारि यहकहतेहैं हे करतार यह निश्चर दुकालके समान देखि परतहै तहां कपिकरकुल एकदेशहै तहांयहराक्षस दुकालपरा चाहतहै कपिकेकुलको नाशकीन चहतहै ( ८४ ) तहांयह कहतेहैं हेश्रीरामचन्द्र खरारितुम सजलमेघहौ कृपारूप जलबर्षिकै हमको यहिदुकालके दुःखते सुखीकरौ त्राहि त्राहि हम तुम्हारी शरण हैं ऐसे बानरभालु कहतेहैं ( ८५ ) इहांकरुणाकही आरत बचनसुनिकै श्रीरामचन्द्र धनुष बाण संधानिकै चलतभयेहैं ( ८६ ) तब श्रीरामचन्द्र धीरजदैकै सब सेनाको पाछेडारिकै आपु अकेल आगे सालीकही महाबलके स्थानते कुम्भकर्णके सन्मुख चलतभयेहैं इहां श्रीरामचन्द्रको महाबलसालि क्यों कहाहै याते कुम्भकर्णके समान ब्रह्मांडके सृष्टि त्रैलोक्यबिषे नर दानव देव इत्यादिक कोई बीरनहींहै एक श्रीरामचन्द्रके मारे मरैगो ( ८७ ) तब श्रीरामचन्द्र धनुष खैंचिकै शतकही एक सैवाण सन्धान करिकै छोड़त भये हैं सोवाण कुम्भकर्णकेशरीर में समाइगयेहैं ( ८८ ) जब शरीरमें बाणलागैहैं तब क्रोधकरिकै श्रीरामचन्द्रके सन्मुख धावतभयोहै काहेते परविभूति बिषे श्रीरामचन्द्र कर बलवर्यनामे सखाहै अरु रावण प्रतापीनामे सखाहै ताते कुम्भकर्ण श्रीरामचन्द्रके

हारी ८५ करुणावचनसुनतभगवाना चलेसुधारिशिरासनबाना ८६ रामसेननिजपाछेघाली चलेसकोपिमहाबलसाली ८७ खैंचिधनुषशतशरसंधाने छूटेतीरशरीरसमाने ८८ लागतशरधावारिसभरा भूधरडगमगडोलतधरा ८९ लीनएकत्यइँशैलउपाटी रघुकुलतिलकभुजासोकाटी ९० धावाबामबाहुगिरिधारी प्रभुसोभुजाकाटिमहिडारी ९१ काटेभुजसोहैखलकैसा पक्षहीनमन्दरगिरिजैसा ९२ उग्रविलोकनिप्रभुहिविलोका ग्रसनचहतमानहुंत्रैलोका ९३ दो० ॥ करिचिकारअतिघोररव धावाबदनपसारि

सन्मुख क्रोधकरिकै धायोहै त्यहिकै धावतसन्ते पृथ्वीसहित पर्वत डगमगातिहैं ( ८९ ) तेइं कुम्भकर्ण एकपर्वत उपाटि कही उखारि लियोहै सो भुजा कुम्भकर्णकै रघुकुल तिलक श्रीरामचन्द्र एक बाणते काटिडारयउहै ( ९० ) तब कुम्भकर्ण उहै गिरिबायें हाथमें धरिकै धायोहै तब श्रीरामचन्द्र सोऊभुजा काटिकै पृथ्वी बिषे डारिदीनहै ( ९१ ) अरु दोऊभुजाते हीन कुम्भकर्ण कैसे सोहतहै मानहुंबिना पक्षको मंदराचल पर्बतहै ( ९२ ) उग्रकही अति तीक्ष्णतीव्र विलोकनि ते श्रीरामचन्द्र कोदेखत है त्रैलोक्य के आधार श्रीरामचन्द्र तिनका मानहुं ग्रसाचाहत है किंतु मानहुं त्रैलोक्यग्रसा चहतहै ( ९३ ) दोहार्थ॥ तब कुम्भकर्ण विचारकीन कि अब मैं श्रीरामचन्द्रके सन्मुखै प्राप्ति होउंजाइ तब वीररसमें अति घोरशब्द

चिक्कार करत बदन पसारिकै श्रीरामचन्द्रके सन्मुख धावतभयोहै तहां कुम्भकर्णकर क्रोध देखिकै शब्द सुनिकै आकाशबिषे देवता मुनिसिद्ध त्रसित ह्वैकै हाहाइ करिकै अपने दुःख करहेतु समुझिकै पुकारतेभये ( ९४ ) हे भरद्वाज कुम्भकर्ण की वीरता अरु निर्छल महायुद्ध देखिकै देवता अकुलाइ उठेहैं तब श्रीरामचन्द्र देवतनको महाभयसंयुक्तजाना तब श्रवण पर्यन्त शरासन तानतभयेहैं ( ९५ ) अनेकबाण कुम्भकर्ण के मुखमें भरिदीनहै तदपि महाबल कुम्भकर्ण भूमिबिषे नहिंगिरयो है ( ९६ ) बाणनते मुखभरा श्रीरामचन्द्रके सन्मुख धावतभयोहै जनु महाकालकर तरकसहै वही सजीव चलाआवतहै ( ९७ ) तब श्रीरामचन्द्र कोपिकै एक तीव्रशरतेशीश काटिकै शरीरते भिन्न करिदीनहै ( ९८ ) सोबाण कुम्भकर्णकरशिर रावणकेआगे डारिदियोहै आइ बाण तरकसमें प्रवेशकीनआइ कुम्भकर्णकर शीशदेखिकै रावण व्याकुल भयोहै जैसे फणिक मणिके

गगनसिद्धसुरत्रसितसब हाहाहोतपुकारि ९४ चौ० ॥ सभयदेवकरुणानिधिजाने श्रवणप्रयन्तशरासनताने ९५ बिशिखनिकर निशिचरमुखभरयऊ तदपिमहाबलभूमिनपरयऊ ९६ शरनभरासुखसन्मुखधावा कालत्रोणसजीवजनुआवा ९७ तबप्रभुकोपि तीव्रशरलीन्हा धरतेभिन्नतासुशिरकीन्हा ९८ सोशिरपरयउदशाननआगे विकलभयोजिमिफणिमणित्यागे ९९ धरणिधसैधरधावप्रचण्डा तबप्रभुकाटिकीनशतखण्डा १०० तासुतेजप्रभुबदनसमाना सुरमुनिसिद्धअचम्भवमाना १०१ नभदुंदुभीबजावहिंहर्षहिं जयजयकरिप्रसूनसुरबर्षहिं १०२ करिबिनतीसुरसकलसिधाये तेहीसमयदेवऋषिआये १०३ गगनोपरिहरिगुणगणगाये रुचिरबीररसप्रभुहिंसुनाये १०४ बेगिहतौखलमुनिकहिगयऊ रामसमरमहँशोभितभयऊ १०५ हरिगीतिकाछन्द॥ संग्रामभूमिबिराजरघुपतिअतुलबलकोशलधनी

गयेते व्याकुलहोतहै ( ९९ ) कुम्भकर्णका धरजोहै शरीर रुंडप्रचंड पृथ्वीबिषे धावतहै पृथ्वीधसीजातीहै तब श्रीरामचन्द्रने बाणनते सौखण्ड करिके पृथ्वीमें डारिदीनहै ( १०० ) हे पार्बती कुम्भकर्णकर तेजजोहै आत्मा सो श्रीरामचन्द्रके बदनमेंप्रवेश करिगयोहै सुरमुनि सिद्ध इत्यादिक देखिकै सब ही अचंभवकही आश्चर्य मान्यो है ऐसीगति योगिनको दुर्लभहै ( १०१ ) तब नभविषे देवता दुन्दुभी बजावते हैं दुन्दुभी कही छोटे नगारे जिनते नौबति बाजती है सो बजाइकै फूलवर्षते हैं जयजयकार करतेहैं ( १०२ ) बिनती करिकै देवता अपनेअपने लोक को जातेभये हैं तेही समय देवऋषि जो नारदवे आवतेभये हैं ( १०३ ) आकाशके ऊपरबीणा बजाइकै श्रीरामचन्द्रके परमदिव्यगुणगणकही गुणनके समूहबीररस संयुत गानकरिकै सुनावतभये हैं ( १०४ ) मुनि यहकहतभये हैं हे श्रीरामचन्द्र खलनको बेगि नाशकरहु यहकहिकै नारदब्रह्मलोक को जातभये हैं श्रीरामचन्द्र समरविषे बीररस शोभित है ( १०५ ) छंदार्थ॥ हे पार्वतीसंग्राम भूमिविषे रघुपति कोशलधनी अतुलबल कैसे बिराजमानहैं श्रम करिकै पसीनाके बिंदुमुखपर शोभितहैं जनु नीलमणिके आदर्शपर मोती जड़ी हैं अरु राजीव अरुणकमल प्रफुल्लित इवनेत्रहैं अरु रुचिरकही अतिसुन्दर श्रोणितकी कणी शरीरविषे शोभितहैं मानहुं नीलमणिगिरिके श्रृंगविषे अरुणमणिकी कणी अनेकप्रकटी हैं ( १०६ ) युगलभुजा विषे बाणफेरते हैं अरुभालु कपिनकरदल चहुंदिशि बनिरहे हैं श्रीगोसाईं तुलसीदासजी कहतेहैं यहसमय की शोभा अनूपम कोटिन शेषनहीं कहिसकै हैं जिनके अनेकमुख हैं ( १०७ ) दोहार्थ॥ हे पार्वती देखियेतौ निशिचर अधमजिनको मलमयतन कही मनबचन कर्मते खलकार्य

श्रमबिन्दुमुखराजीवलोचनरुचिरतनश्रोणितकनी १०६ भुजयुगुलफेरतशरशरासन भालुकपिचहुंदिशिबने कहदासतुलसीकहिनसकछ-बिशेषज्यहिआननघने १०७ दो० ॥ निशिचरअधममलायतन ताहिदीन निजधाम गिरिजातेनरमन्दमति जोनभजहिंश्रीराम १०८॥ *

चौ०॥ दिनकेअन्तफिरीदोउअनी समरभईसुभटनश्रमघनी १ रामकृपाकपिदलबलबाढ़ा जिमितृणपाइलागअतिडाढ़ा २ छीजहिनिशिचर

में तत्पर तिनपापिनको श्रीरामचन्द्र अपनो परमधाम दीनहै किंतुधाम कही स्वरूपमुक्तिदीन है ऐसे श्रीरामचन्द्र कृपालु हैं तिनको छोड़िकैआन देवता अपस्साधन आराधन करते हैं तेवड़ेमतिमंद हैं ( १०८ ) इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेलंकाकांडेकुम्भकर्णबधमर्म गतिप्राप्तिवर्णनंनामत्रयोदशस्तरंगः १३॥ ::

दोहा॥ दशअरुचारितरंगमें मेघनादरणधीर युद्धकरतआश्चर्यकरि देखिहोतसुरपीर ( १४ ) हेगरुड़ दिनकर अंतपाइकै दोऊअनी अपनेमुकामको जातभये हैं काहेते समरतेश्रम बहुतभयो है ( १ ) श्रीरामचन्द्र की कृपातेकुम्भकर्णके जूझेते कपिनके दलमें बहुत बलबाढ़ाहै जैसे तृणके समूह में दावालगेते फेरिनवीन अंकुरउठतहैं तहां कुम्भकर्ण मारेते बानरनकीसेना जरिरहीहै अरुत्यहिके मरेते बानरऋच्छ जियजागि उठेहैं प्रफुल्लित भये हैं ( २ ) तहां निशिचर रातिदिन छीजेजाते हैं किमि जिमिअपने मुखके कहेते अपनोधर्म क्षीणह्वैजातहै ( ३ ) रावण बहुतप्रकारते बिलापकर रहाहै और बारबार अपनेभाई कुम्भकर्णका शीशअपनी छातीमेंलगावैहै ( ४ ) अरु स्त्री जो हैं ते सबरोवती हैं शिरअरु छाती पीटिपीटि कुम्भकर्णकर बल औ बिपुलप्रताप बखानि बखानिकै रोवती हैं ( ५ ) त्यहिअवसर विषे रावणके समीप मेघनाद आवतभयो है अपनेबल पौरुषप्रतापकै कथा पितासे बहुप्रकार समुझाइकै कहतभयो है ( ६ ) हे तात रात्रीके बीते भोरहोत हमारी मनुसाई देख्यहु अबहीं बहुत बड़ाई काकरौं ( ७ ) जो मैं अपने इष्टदेवसे बल अरु रथ प्रभाव प्रतापकर बरदान पायों है सो बल आपुको नहीं सुनायो है ( ८ ) यहीप्रकारते

दिनअरुराती निजमुखधर्मकहेज्यहिभांती ३ बहुबिलापदशकंधरकरई बंधुशीशपुनिपुनिउरधरई ४ रोवहिंनारिहृदयहतिपानी तासुतेजबलविपुलबखानी ५ मेघनादत्यहिअवसरआवा कहिबहुकथापितहिसमुझावा ६ देख्यउकाल्हिमोरिमनुसाई अबहिंबहुतकाकरौंबड़ाई ७ इष्टदेवसेबलरथपायउं सोबलताततनतुमहिंसुनायउं ८ यहिबिधिजल्पतभयोबिहाना चारिउद्वारलगेकपिनाना ९ इतकपिभालुकालसमबीरा उतरजनीचरअतिरणधीरा १० लरहिंसुभटनिजनिजजयहेतू बरणिनजाइसमरखगकेतू ११ दो० ॥ मेघनादमायाठयो रथचढ़िगयोअकास गज्ज्र्यउप्रलयपयोदजिमि भइकपिकटकहित्रास १२ चौ० ॥ शक्तिशूलतरवारिकृपाना अस्त्रशस्त्रकुलिशायुधनाना १३ डारैपरशुपरिघपाषाना लाग्यउवृष्टिकरैबहुबाना १४ रहेदशौदिशि

जल्पनाकरत भोरहोतभयो है तब चारिउदरवाजेपर बानरनके यूथ आइकै लागे हैं ( ९ ) इतै श्रीरामचन्द्रकी सेना भालु कपि बड़े बड़े बीर कालसम हैं अरु तैसेही उतै रावणके दिशि राक्षस बड़े रणधीर बीर हैं ( १० ) खगनके केतुकही पताका हे गरुड़ द्वौ दिशि अपने अपने विजयहेतु समरकरते हैं सो समर बर्णिबेयोग्य नहीं है ( ११ ) दोहार्थ ॥ तहां मेघनाद जो मायामय है सो अपनी मायाको ठयो कहीनिर्मयो बिस्तारकरतभयो है रथचढ़िकै आकाशको जातभयो तहां महा प्रलयके मेघइव गर्जतभयो है सो सुनिकै कपिनके दलविषे त्रासहोतभईहै ( १२ ) तहां मेघनाद मायामय आपु छांड़त है शक्ति जे बरछी हैं शूल जे त्रिशूल हैं कृपाणकही तरवारि है दूधारा जो हैं अस्त्र जे फेंकेते अरुप्रयोगते चलहिं अरु शस्त्र जे हाथ ते चलहिं अरु कुलिश जे बज्रइव हैं इत्यादिक नानाप्रकारके आयुध ( १३ ) अरु फरसा जे हैं परिघ जे गदाके आकार है अरु पाषाण जे शिला हैं अरु अनेकन बाण इत्यादिक अनेक आयुध वर्षाकरतहै ( १४ ) हे गरुड़ दशौदिशा विषे सघनवाण छाइरहेहैं दिशाकही पश्चिम बायब्य उत्तर ईशानकोण पूर्व अग्निकोण दक्षिणकोण नैऋत्यकोण अरु उर्द्ध अध इत्यादिकन में बाण पूरिरहे हैं मनहुँ मघा नक्षत्रके मेघ झरिलगाये हैं ( १५ ) धरु धरु मारुमारु यहशब्द दशौदिशा पूरिरह्यो है सो बानरसुनते हैं चोटसहतेहैं अरु जे मारतहैं तिनको कोई नहीं देखतहै ( १६ ) कपि ऋक्ष जे हैं ते तरु गिरि कही पहाड़नकोपकरिकै आकाश को धावते हैं तहां काहूको नहीं देखते हैं दुःखितह्वैइकै फिरि आवते हैं ( १७ ) अवघट जे हैं घाटजे हैं गिरिजे हैं गिरिके कन्दराजे हैं इत्यादिक द्वीप उपद्वीप सम्पूर्ण अपनीमायाके बलते शरपंजरकही

शायकछाई मानहुंमघामेघझरिलाई १५ धरुधरुमारुसुनहिंकपिनाना जोमारैत्यहिकोउनजाना १६ गहिगिरितरुअकाशकपिधावहिं देखहिंत्यहिन-दुखितफिरिआवहिं १७ अवघटघाटबाटगिरिकन्दर मायाबशकीन्ह्यसिशरपंजर १८ जाहिंकहांभयब्याकुलबन्दर सुरपतिबंदिपरेजिमिमन्दर १९ मारुतसुतअंगदनलनीला कीन्ह्यसिबिकलसकलबलशीला २० पुनिलक्ष्मणसुग्रीवविभीषण शरनमारिकीन्ह्यसिजर्जरतन २१ पुनिरघुपतिसनजूझनलागा शरछाड़ैंहोइलागहिंनागा २२ ब्यालफांसबशभयो

अपने बाणनते कुलि भरिदियो है ( १८ ) हे पार्व्वती बानरनके भागिजावेकी कहूं जगह नहींरही है तहां बानरनरकीसेना अति विकलभई है जैसे मन्दराचल आदिक पर्वत इन्द्रके बंदिवश बज्रमारेते विकलहोतहैं ( १९ ) हनुमान् अंगद नल नील इत्यादिक जहांतक बीर बलकेशीलकही स्थान हैं तिनसबको मारिकै विकलकरिदिहिसि है ( २० ) पुनि लक्ष्मणजी सुग्रीवविभीषण इत्यादिक जे राजारहे हैं तिनको बाणन मारिमारिकै तन जर्जर करिदियो है ( २१ ) पुनि श्रीरामचन्द्रते युद्धकरैलागहै बाणमारत हैसो बाण नागह्वैकै श्रीरघुनाथजी के शरीरमें लिपिटिजाते हैं ( २२ ) हे पार्वती खरारि जे श्रीरामचन्द्र हैं ते ब्यालफांसके बश होतभये हैं कैसे हैं श्रीरामचन्द्र स्वबशकही काहूकेबश नहीं हैं अरु अनन्तहैं जाको आदि अन्त मध्य कोई नहीं जानिसकै है अरु एककही द्वैतस्वरूपहैं जिनकेसमद्वितीय कोई नहीं है अरु अबिकारीकही षड्विकाररहित हैं जन्म वृद्ध बिवर्ण क्षीण जरा मृत्यु एते षड्विकाररहित हैं अध्यात्मे षड्विकारैर्विरहितंरामंत्वद्रूपचिन्मयं ( २३ ) ऐसे परात्परब्रह्म श्रीरामचन्द्रते जैसे नट कपटकरिकै चरितकरत है तैसे श्रीरामचन्द्र निष्कपट नरइव लीला सहज में करते हैं सो देखिकै विषयीजीव व्यामोहित ह्वइजाते हैं श्रीरामचन्द्र कैसे हैं स्वतन्त्रकही जो इच्छाहोइ सो करते हैं उनकी इच्छा अभंगहै श्रीरामचन्द्र षड्भागपूर्ण भगवान् हैं षड्भागकही ऐश्वर्य्य धर्म यश श्री वैराग्य मोक्ष एते षड् पुनि अपरप्रमाण पोषण भरण आधार सर्वशरण्यत्व सर्वब्यापकत्व अरु करुणा इतिषट् श्लोकद्वै श्रीमन्महारामायणे॥ ऐश्वर्य्येनचधर्म्मेणयशसाचश्रियैवच वैराग्यमोक्षषट्कोणैःसंजातोभगवान्हरिः१ पोषणंभरणाधारंशरण्यंसर्वव्यापकं कारुण्यंषड्भिर्पूर्णोरामस्तुभगवान्स्वयं ( २४ ) हे पार्वती श्रीरामचन्द्र नागफांसते अपनीइच्छाते आपुको बँधावाहै संग्रामकी शोभा हेतु काहेते जो आपुचाहैं तौ एकबाणते एकक्षण में ब्रह्माण्ड भस्मकरिदेहिं पर रावण के ओरके हथियारनके चोट घाउ बन्धन इत्यादिक सब सहते हैं अरु उनकोमारते हैं यह संग्राम की

खरारी स्वबशअनन्तएकअविकारी २३ नटइवकपटचरितकरनाना सदास्वतंत्ररामभगवाना २४ रणशोभालगिआपुबँधावा देखिदशादेवनभयपावा २५ दो०॥ खगपतिजाकरनामजपि नरकाटहिंभवफांस सोप्रभुआवकिबंधतर ब्यापकबिश्वनिवास २६ चौ०॥ चरितरामकेसगुणभवानी तर्किनजाहिंबुद्धिमनबानी २७ असबिचारिजेतज्ञबिरागी रामहिंभजहिंतर्कसबत्यागी २८

शोभा है ताते नागफांसते अपनाको बँधावाहै सो दशा देखिकै ब्रह्मादिकदेवता भयकोप्राप्त होते हैं ( २५ ) दोहार्थ ॥ हे गरुड़ जिन श्रीरामचन्द्रकर नाम जपिकै नर भवफांसकाटिकै परमपदको प्राप्तिहोते हैं ते श्रीरामचन्द्रका बन्धन में आवहिं न आवहिं काहेते सम्पूर्ण विश्व रामआश्रयहै अरु सम्पूर्ण विश्व को आपु चैतन्यकिहेहैं ( २६ ) हेभवानी श्रीरामचन्द्र जो यह नरलीला सगुणचरित्र करते हैं सो अतर्क्य है काहूते तर्क करिबेयोग्य नहीं है मन बाणी बुद्धिते अतर्क्य है ( २७ ) हे पार्वती असविचारिकैजे तज्ञकही तत्त्ववेत्ताहैं ते श्रीरामचन्द्रको भजते हैं तर्क त्यागिकै तत्त्ववेत्ताकही अपनो स्वस्वरूप जो आत्मा त्यहिकोप्राप्तिहैं अरु अनात्माजोअपनोशरीरहै अरु त्यहिकर सम्बन्ध जहांलगि संसारहै त्यहिसबको अनित्यजानिकै वैराग्यकरिकै सर्व त्यागकिहे हैं ते श्रीरामचन्द्रको भजते हैं व सर्व तर्क त्यागिकै तर्क कही कोई यह तर्क करते हैं कि श्रीरामचन्द्र सर्वब्यापक ब्रह्म हैं नाम रूपकरिकै रहितहैं महि गऊ ब्राह्मण सन्तनके हेतु अपनी मायाकरिकै देह को धारणकीन है पुनि कोई यह तर्क करते हैं कि नारायण जो

चतुर्भुजभगवान् ते पृथ्वीके पालनहेतु नरशरीर को धारण कीन है अरु कोई यह तर्क करते हैं कि श्रीरामचन्द्र केवल राजादशरथ के पुत्र हैं सामर्थ्यमय हैं ताते समुद्र बांधिलीन है अरु कोई यह तर्क करते हैं कि जो बहुतकाल श्रीरामचन्द्रकर भजनकरैं तब ब्रह्मांतर शुद्धहोइतब ब्रह्मज्ञानहोइ तब मोक्षहोइ ऐसे ही अनेक तर्क कुतर्क श्रीरामचन्द्र विषे अज्ञानीकरते हैं अरु जिनको विशेषज्ञान प्राप्तिभयो है ते श्रीरामचन्द्रको स्वरूप आतर्क नित्यकिशोर अखण्ड एकरस कालावच्छिन्न सर्वोपरिपरात्परतर परब्रह्मविग्रह असजानिकै सर्वतर्क त्यागिकै श्रीरामचन्द्रको शुकसनकादिभजते हैं ( २८ ) हे पार्वती सम्पूर्णकटकको घननाद व्याकुलकरिदीन है पुनि प्रगटहोतभयोहै अनेकदुर्वाद कहतसंते ( २९ ) तब जामवन्तकहा हे

व्याकुलकटककीनघननादा पुनिभाप्रकटकहतदुर्बादा २९ जामवन्तकहखलरहुठाढ़ा सुनिकैताहिक्रोधअतिबाढ़ा ३० बूढ़जानिशठछाडेउंतोहीं लाग्यसिअधमप्रचारनमोहीं ३१ असकहितीव्रत्रिशूलचलावा जामवन्तकरगहिसोधावा ३२ मार्‌यसिमेघनादकीछातीपराधररिणघूर्मितसुरघाती ३३ पुनिरिसाइगहिचरणफिरायो महिपछारिनिजबलदेखरायो ३४ बरप्रसादसोमरैनमारा तबपदगहिलंकापरडारा ३५ इहांदेवऋषिगरुड़पठावा रामसमीपसपदिसोआवा ३६ दो०॥ खगपतिसबधरिखायउ मायानागबरूथ मायाबिगतभयेसब हर्षेबानरयूथ ३७ गहिगिरिपादपउपलनख धायेकीशबिसाइ चलेतमीचरबिकलतबगढ़

खलठाढ़रहु मैं पहुंच्यउँआइ सुनिकै मेघनादके क्रोधभयोहै ( ३० ) मेघनाद कहतहै हे शठ मैं तौ बूढ़जानिकै छांड़िदिह्यउँहै अब तैं मोको प्रचारैलागिसिहै ( ३१ ) इतनाकहिकै तीव्रत्रिशूल चलावतभयोहै तब जामवन्तउ है त्रिशूल ऊपरहि हाथ में लैधाये हैं ( ३२ ) जामवन्त मेघनादकीछाती में उहैत्रिशूल मारतभयो है सुरघाती घूमिकै पृथ्वीमें गिरिपरतभयो ( ३३ ) पुनि रिसाइकै मेघनादको चरणगहिकै घुमाइकै पृथ्वीमें डारिदियो है अरु यह कह्योकि हे शठ हम ऐसेबूढ़ हैं ( ३४ ) देवीके प्रसादते मारेनहींमरत है पुनि रिसाइकै दूनौचरणपकरिकै लंकागढ़को बहाइदीन है ( ३५ ) हे पार्वती इहां नारदजी गरुड़ते कहते हैं कि तुमजाउ श्रीरघुनाथजीकी आज्ञा है राक्षसीमायाके सर्प तिनको भक्षण करिलेहुजाइ ( ३६ ) दोहार्थ॥ तब तुरन्त गरुड़आइकै मायावी सर्पनको भक्षणकरिलीनहै तब सबऋक्ष वानर मायाते विगतभये हैं अतिहर्ष को प्राप्तिभये हैं ( ३७ ) तब वानर ऋक्ष क्रोधकरिकै गिरि तरु नख इत्यादिक आयुधकरिकै अरु रिसाइकै तमीचरनको मारै हैं तबते गढ़पर परायगये हैं ( ३८ ) हे गरुड़ मेघनादकै मूर्च्छा जागतभई है पिताको विलोकिकै अति लज्जितभयोहै ( ३९ ) तब सोमेघनाद तुरन्त बरकही श्रेष्ठ पर्वतकी कन्दरामें जातभयोहै यह मनमें विचार्‌यो है कि अजय यज्ञकरौं ( ४० ) मेघनाद यज्ञकरै है यह सुधिपाइकै विभीषणकहते हैं हे प्रभु एकसमाचार सुनहु ( ४१ ) हे नाथ मेघनाद अपावन यज्ञ करतहै अपनी मायाकरिकै देवतनकोसतावतहै ( ४२ ) हे प्रभु जो त्यहिको यज्ञ सिद्धिहोइपाइहि तौ रिपुबेगि न जीतिजाइहि ( ४३ )

परचलेपराइ ३८ चौ० ॥ मेघनादकैमुर्छाजागी पितहिँबिलोकिलाजअतिलागी ३९ तुरतगयोसोगिरिवरकंदर करौंअजयमखअसमनमहँधर ४० यहसुधिपाइबिभीषणकहई सुनुप्रभुसमाचारअसअहई ४१ मेघनादमखकरैअपावन खलमायाबीदेवसतावन ४२ जोप्रभुसिद्धिहोनसोपाइहि नाथवेगिरिपुजीतिनजाइहि ४३ सुनिरघुपतिअतिशयसुखमाना बोलेअंगदादिकपिनाना ४४ लक्ष्मणसंगजाहुसबभाई करहुबिध्वंशयज्ञकरजाई ४५ तुमलक्ष्मणरणमारेहुओही देखिसभयसुरदुखअतिमोही ४६ जामवन्तसुग्रीवविभीषन सेनसमेतरहेउतीनिउजन ४७ जबरघुबीरदीनअनुशासन

**कटिनिषंगकसिसाजिशरासन ४८ प्रभुप्रतापउरधरिरणधीरा बोलेघनइवगिरागँभीरा ४९ जोत्यहिआजुबधेबिनुआवौं तौरघुपतिसेवकनकहावौं ५० जोशतशंकरकरहिंसहाई तदपिहतौंरघुबीरदोहाई ५१ दो०॥**

बिभीषण के बचनसुनिकै अतिसुखमानिकै अंगदादिक नानाकपिबीरनको बोलाइलीनहै ( ४४ ) हे बीरहु लक्ष्मणके संगजाइकै यज्ञकर विध्वंशकरहु ( ४५ ) हे लक्ष्मण तुम आजु मेघनादकर बधकरयहु काहेते देवतनकर दुःखदेखिकै मोको दुःखहोतहै ( ४६ ) हे जामवन्त सुग्रीव विभीषण सेनासमेत तुम तीनिजने संयुग में रह्यउ ( ४७ ) जब श्रीरघुबीरजी ने आज्ञादीन तब लक्ष्मणजी कटिविषे तूणकसिकै धनुषबाण सजिकै तैयारभये ( ४८ ) लक्ष्मणजी रणधीर श्रीरामचन्द्रको प्रताप उरमें धरिकै घनकही मेघइव गम्भीरवाणी बोलतेभये ( ४९ ) हे पार्वती लक्ष्मणजी संकल्पकरते हैं कि जो आजु विनमारे मेघनादको फिरौं तौआजुते रघुपतिकर सेवक न कहावौं ( ५० ) यह प्रणकरिकै कहतहौं मेघनादकर इष्ट शंकर है जो शतकही सौ शंकर सहायकरहिंआइ तौ श्रीरामचन्द्रकी दोहाई करिकै कहतहौं रणविषे मेघनादको सहितइष्ट नाशकरिदेउँगो ( ५१ ) दोहार्थ॥ अस प्रणकरिकै श्रीरामचन्द्रके चरणारविन्दमें शिरनाइकै अनन्त जिनके गुण प्रताप तेज हैं ते लक्ष्मणजी तुरन्तचलत भये हैं अरु संगविषे अंगद नीलनल मयन्द हनुमान् इत्यादिक बड़े बड़े भट चलतेभये हैं तहां लक्ष्मणजी को सत्यसंकल्प सम्पूर्ण देवता सुनिकै हर्ष शोकको प्राप्तिभये हैं ( ५२ ) तहां मेघनाद यज्ञपर बैठाहै तमसीयज्ञ भैंसाकर मांस रुधिर आहुति करतहै ( ५३ ) तब मेघनादकै महाघोर यज्ञ देखिकै कपिन विध्वंशकीनहै मल मूत्र करिकै भरिदीन है ताहूपर मेघनाद नाहीं उठै तब कपि त्यहिकी प्रशंसाकही बड़ाईकरते हैं किन्तु प्रशंसाकही त्यहिकेऊपर मुष्टिका लात शिला प्रहारकरते हैं ( ५४ ) तदपि न उठत तब बार धरि धरि खैंचतहैं लातमारिमारि भागिजातेहैं अरु मेघनाद नहीं

**रघुपतिचरणनाइशिर चलेतुरन्तअनन्त अंगदनीलमयन्दनल संगसुभटहनुमन्त ५२ चौ० ॥ जाइकपिनदेखासोइवैसा आहुतिदेतरुधिरअरुभैंसा ५३ कीनकपिनतबयज्ञबिध्वंसा जबनउठैतबकरहिंप्रशंसा ५४ तदपिनउठहिधरहिंकचधाई लातनहतिहतिचलहिंपराई ५५ लैत्रिशूलधावाकपिभागे आयेजहँरामानुजआगे ५६ आवापरमक्रोधकरमारा गर्जघोररवबारहिंबारा ५७ कोपिमरुतसुतअंगदधाये हतित्रिशूलउरधरणिगिराये ५८ प्रभुकहँछाड़िसिशूलप्रचण्डा शरहतिकृतअनन्तयुगखण्डा ५९ उठिबहोरिमारुतयुवराजा हतहिंकोपित्यहिघाउनबाजा ६० फिरेबीररिपुमरइनमारा तबधावाकरिघोरचिकारा ६१**

बोलै मौनह्वैकै आपन यज्ञकर कार्य साधैहै ( ५५ ) जब कपिनबहुतउत्पात कीन है तब नहीं सहिगयो है त्रिशूललैकै धावतभयो है तब कपिभागिकै लक्ष्मणजीके आगे प्राप्तिभयेजाय ( ५६ ) माराकही परमक्रोधसे भरा लक्ष्मणजीके समीप आइकै महाघोर शब्दकरिकै बारबार गर्जतभयो ( ५७ ) तब अंगद हनुमान् कोपकरिकै धावतभये हैं तिनके उरमें त्रिशूलहतिकैपृथ्वीमें गिराइदेत भयो है ( ५८ ) तब लक्ष्मणजी को प्रचण्ड त्रिशूल छांड़त भयोहै तब लक्ष्मणजी बाणते दुइखंड करिडारयोहै ( ५९ ) तब हनुमान् युवराज उठिकै क्रोधकरिकै मेघनादको मारतभये हैं पर मेघनादके घाउ नहीं लागत है काहेते देवीके प्रसादते अरु लक्ष्मणकर बाण महाकाल रूप तहां काहू देवताको बरदान नहीं चलैहै ( ६० ) तब हनुमानादिकबीर फिरे हैं यह समुझिकै कि रिपुहमारे मारे नहीं मरैगो तब मेघनाद घोर चिक्कार करिकै लक्ष्मणजीके सन्मुख धावत भयोहै ( ६१ ) तब मेघनाद क्रोधित कालजनु चलाआवत है सो देखिकै लक्ष्मणजी करालबाण छांड़त भये हैं ( ६२ ) बज्रके समान बाणआवत देखिकै तुरन्तखल अंतर्द्धान ह्वइ गयो है ( ६३ ) मेघनाद विबिधिबेष धरिकै लराई करतहै कबहुं प्रकटतहै कबहुं दुरिजातहै कबहुं देवता ह्वइजातहै कबहूं नर ह्वैजात है कबहूं हाथी कबहूं सिंह कबहूंसर्प इत्यादिक अनेकमाया

करतहै ( ६४ ) अजय रिपु देखिकै वानर डरते हैं तब अहीश अतिक्रोधित होतभये हैं अहीशकही सर्पनके ईश जो अनंत हैं त्यहिकर प्रलयकाल को ऐसो क्रोधकरतभयो है ( ६५ ) लक्ष्मणजी तब अपने मनमें यह मंत्र दृढ़कीन है कि यहिपापीको

आवतदेखिक्रुद्धजनुकाला लक्ष्मणछाड़ेबिशिखकराला ६२ देख्यसिआवतपबिसमबाना तुरतभयोखलअंतरद्धाना ६३ बिबिधिवेषधरिकैरैलड़ाई कबहुँकप्रगटकबहुँदुरिजाई ६४ देखिअजयरिपुडरपेकीशा परमक्रुद्धतबभयोअहीशा ६५ लक्ष्मणअसमनमंत्रदृढ़ावा यहिपापीमैंबहुतखेलावा ६६ सुमिरिकोशलाधीशप्रतापा शरसंधानकीनअतिदापा ६७ छाड़ाबाणतासुउरलागा मरतीबारकपटसबत्यागा ६८ दो० ॥ रामानुजकहिरामकहि असकहिछाड्यसिप्रान धन्यधन्यतवजननिकहँकहँअंगदहनुमान ६९ चौ० ॥ तासुमरणसुनिसुरगंधर्बा चढ़िबिमानआयेसुरसर्बा ७० बरषिसुमनदुन्दुभीबजावहिँ श्रीरघुबीरबिमलयशगावहिँ ७१ जयअनंतजयजगतअधारा तुमप्रभुसबदेवननिस्तारा ७२ अस्तुतिकरिसुरसिद्धसिधाये लक्ष्मणकृपासिंधुपहँआये ७३

मैं बहुतखेलावा है अब यहिको वधकरौं ( ६६ ) कोशलाधीश श्रीरामचन्द्र तिनको प्रताप मनमें सुमिरिकै धनुषमें राममंत्र योजित करिकै दापकही क्रोधकरिकै शरको संधानकीन है ( ६७ ) तब कालरूप बाण छांड़तभये हैं सो बाण मेघनादके उरमें लागतभयो है बाणके लागते मेघनाद पृथ्वीमें गिरतभयो है मरतीबार सबकपट छूटिगयोहै ( ६८ ) दोहार्थ॥ हे पार्वती रामानुज कहिकै रामकहिकै प्राणको त्यागकियो है देखिये तौ प्रथम लक्ष्मणजीकी शरणह्वैकै तब श्रीरामचन्द्रजीको प्राप्तिभयो है त्यहिकी बड़ाई अंगद हनुमान् करते हैं कि हे मेघनाद तेरी जननी को धन्यधन्य है ( ६९ ) त्यहिकर मरणकोई सुनिकै कोई देखिकै सुरजेहैं गंधर्बनके जातिजे हैं इत्यादिक बिमानपर चढ़िकैनभविषे आवतभये हैं ( ७० ) ते देवता फूलबर्षते हैं दुन्दुभी बजावते हैं श्रीरामचन्द्रकर विमलयश गावते हैं ( ७१ ) बहुरिजयजय शब्द करते हैं लक्ष्मण हे अनंत हे संपूर्ण जगत्के अधार तुम यहिको मारिकै सबदेवन को निस्तारकीन है ( ७२ ) हे पार्वती स्तुतिकरिकै देवता सिद्धसब अपने अपने आश्रमको जातभये तब लक्ष्मणजी कृपासिंधु श्रीरघुनाथजी के समीप आवतभये हैं ( ७३ ) सुतकरवध रावण सुनतसंते मूर्छित ह्वैकै पृथ्वीमें गिरि पर्यो है ( ७४ ) तहां मंदोदरी अतिभारी रोदनकरती है करते छातीपीटती हैं बहु भांतिते मेघनादकर प्रतापवल गुणकहिकहि बिलापकरती है ( ७५ ) अरु नगरके लोगसब व्याकुलह्वैकै शोचसंयुक्त कहते हैं कि दशकंधर बड़ापोच है ( ७६ ) दोहार्थ॥ तबरावण धीरजधरिकै मंदोदरी इत्यादिक रानिनको समुझावतहै हे रनिवासहु यहजोप्रपंचहै पृथ्वी अपतेज वायु आकाश तीनिउगुण इत्यादिक करिकै सबको शरीरहै देवदानव मनुष्य पशुपक्षी इत्यादिक चर तिनसबके शरीरनश्वर हैं नश्वरकही नाशहै सब प्रपंच अनित्यहैं त्यहिकर शोचकाहेको करना देखियेतौ चारिहुयुग होत

सुतबधसुनादशाननजबहीं मुर्छितभयउपरेउमहितबहीं ७४ मंदोदरीरुदनकरभारी उरताड़नबहुभाँतिपुकारी ७५ नगरलोगसबव्याकुलशोचा सकलकहहिँदशकंधरपोचा ७६ दो० ॥ तबलंकेशअनेकबिधिसमुझाईसबनारिनिश्वररूपप्रपंचसबदेखहुहृदयबिचारि ७७॥

चौ०॥ तिनहिँज्ञानउपदेशतरावन आपनमंदकथाशुभपावन १ परउपदेशकुशलबहुतेरे जोआचरहिँतेनरनघनेरे २ निशासिरानिभयोभिनुसारा

जाते हैं तिनकरिकै कल्पहोत हैं तिनविषे केते देवता ब्रह्माआदिक दशौंदिग्पाल आदिक अरु केते बलवान् अरु अस्मदादिक राक्षस दानव अरु केते नरराज चक्रवर्ती भये हैं अरु अहहिं अरु होहिंगे तिनसबके शरीर नाशमान हैं अरु जीवनित्य है ताते जो नित्य है त्यहि कर कवनशोच है जो नित्य है सो सर्बकालमें नित्यहै अरु जो अनित्य है सो

सर्बकालमें अनित्य है यह मैं वेदकरिकै अच्छीप्रकार जानतहौं ताते मोको हर्ष शोक नहीं आवै है तुमहूं न शोचकरहु काल्हिसे मेरासंग्राम देखहु ( ७७ ) इतिश्रीरामचरितमानसे-सकलकलिकलुषविध्वंसनेयुद्धकांडेमेघनादवधरावणशोचउपदेशवर्णनन्नामचतुर्दशस्तरंगः १४॥ :: :: ::

दोहा॥ कपिसुरसिद्धिअनन्दभये रावणसमरबखान रामचरणदशपंचमें घोरतरंगमजान १५॥ हे पार्बती तहां रावण रानिनको पूर्बज्ञान उपदेश करतभयो सो ज्ञानकीकथा तौ पावनपवित्रहै अरु रावणकी कर्त्तव्यमन्द है ( १ ) तहां पराये उपदेश करिबेको कुशलकही पण्डित बहुतहैं अरु जैसा कर्त्तव्य मन्दहै तैसे त्यहिआचरणको करते हैं ते नर जगत्में थोड़े हैं ( २ ) रात्री बीतिगई है भिनुसार भयो भालुकपि चारिउ द्वारे लागतभये जाइ ( ३ ) तब रावण सुभटको बोलाइकै कहतभयो है कि रणके सन्मुख जिसको मनडोलै कही नहीं चलै अरु जिसको मनडोलै सो सुनहु यह मैं कहतहौं ( ४ ) आगे ज्यहिको मनसमरते बिमुख होनाहोइ सो यहिसाइति भागिजाइ अरु समरते बिमुखभयेते भलानहीं है ( ५ ) अपने अपने भुजनकेबलते मैंबैरबढ़ायोहै रिपुजो चढ़िआवाहै त्यहिको उतरमैं देउंगो ( ६ ) असकहिकै पवनकेबेगको रथशीघ्र साजतभयोहै जामें हजार घोड़ेलगे हैं अरु अनेक जुझाऊबाजा बाजतभयेहैं ( ७ ) अगणित बीर बड़ेबलीसंग चलतभयेहैं जनु कज्जलकै आंधीचलीहै ( ८ ) त्यहि

लगेभालुकपिचारिउद्वारा ३ सुभटबोलाइदशाननबोला रणसनमुखजाकरमनडोला ४ सोअबहींबरुजाउपराई समरबिमुखनहिँभयेभलाई ५ निजभुजबलमैंबैरबढ़ावा देहौंउतरजोरिपुचलिआवा ६ असकहिमरुतबेगरथसाजा बाजेसकलजुझाऊबाजा ७ चलेबीरसबअतुलितबली जनुकज्जलकैआँधीचली ८ असगुनअमितहोहिँत्यहिकाला गनैनभुजबलगर्बबिशाला ९ छं० ॥ अतिगर्बगनैनसगुनअसगुनश्रवहिंआयुधहाथते भटगिरतरथतेबाजिगजचिक्करतभाजतसाथते १० गोमायुगीधकरारखररव श्वानरोवहिँअतिघने जनुकालदूतउलूकबोलहिं वचनपरमभयावने ११ दो०॥ ताहिंकिसम्पतिसगुन शुभसपन्यहुंमनबिश्राम

काल विषे रावण के चलतसंते अनेकअसगुन होते हैं पर अपने भुजनके बलकेगर्बते एकोअसगुन नहींगनतहै ( ९ ) छंदार्थ॥ हे पार्बती रावणसेना साजिकै श्रीरामचन्द्रके सन्मुख संग्रामको चलतभयोहै इहां सिंहावलोकन पदजानब तहां अनेक असगुनहोतेहैं पर रावण सगुन असगुन सो नहींगनैहै अरु आयुध हाथते गिरिगिरि परतेहैं अरु रस्ताविषे अटुकिअटुकि गिरिपरते हैं अरु बाहनते गिरिगरिपरतेहैं अरु घोड़े हाथी चिक्कार कै कैसाथते गढ़को भागिजातेहैं ( १० ) अरु गोमायु जेसियारहैं अरु गीधजे हैं अरु गदहाजे हैं अरु श्वानजेहैं इत्यादिक करारकही महाघोररव अमंगलमयशब्द बोलते हैं अरु उलूककही खूसट भयानक बचन बोलते हैं जनुकालके दूतहैं कालके समीप रावणको सहितसेना बोलावते हैं ( ११ ) दोहार्थ॥ हे गरुड़ ताहिकही त्यहिपुरुषको सम्पति सुख विश्राम अरु शुभगुण कबहूंहोइ न होइ जे श्रीरामचन्द्र ते विमुखहैं तिनको सर्बकालमें अमंगलैहै अरु भूतकही सर्वजीवकर द्रोहीरावण श्रीरामचन्द्रते विमुखमोहके वश कामनामें रति ताको कल्याण कैसे होइ न होइ ( १२ ) निशिचरनकी कटक अपारकही अनगनित चलतभई है चतुरंगिनीसेना अनीकी अनी झारिचली है चतुरंगिनी सेनाकही हाथी घोड़े रथ पैदर तहां एकसै हाथी हजारघोड़े दशहजार पैदर अरु पचहत्तरि रथ अरु यहिते अधिक जितनाहोइ सो सब चतुरंगिनीसेना कही तहां रावणके संग अपार चतुरंगिनी धारिकही सेनाचली है ( १३ ) यानकही रथ अथवा अनेकजातिके रथहैं ताते काहूको रथकही काहूको यानकही तहां विविधिप्रकारके बाहननपर चढ़े कितने हाथिनपरचढ़े कितने घोड़ेपरचढ़े कितने रथनपर चढ़े कितने खच्चरपरचढ़े कितने गदहापर चढ़े कितने सिंहपर चढ़े

भूतद्रोहरतमोहबशरामबिमुखरतिकाम १२ चौ० ॥ चलीनिशाचरकटकअपारा चतुरङ्गिनीअनीबहुधारा १३ बिबिधिभाँतिबाहनरथयाना बिपुलबरणपताकध्वजनाना १४ चलेमत्तगजयूथघनेरे प्राविटजलदमरुतजनुप्रेरे १५ बरणबरणबरदैत्यनिकाया समरशूरजानहिंबहुमाया १६ अतिविचित्रबाहनीबिराजे बीरबसंतसेनजनुसाजे १७ चलतकटकदिग्सिन्धुरडगहीं क्षुभितपयोधि कुधरडगमगहीं १८ उठीरेणुरबिगयोछपाई पवनथकितबसुधाअकुलाई १९ पणवनिशानघोररवबाजहिं महाप्रलयकेघनजनु

कितने सियारपरचढ़े कितने सर्पपरचढ़े कितने विच्छूपरचढ़े कितने गिरिगिटपर चढ़े इत्यादिक तामसीबाहन अनेक सो बड़े बड़े दीर्घ हैं अरुविपुलकही बहुतहैं (१४) अरु मत्तहाथिनके अनेकयूथ चलतभये हैं जनुप्राविटकही प्रथम वर्षा के मेघ पवनकी प्रेरणाते चलतभये हैं (१५) अरु बरण बरण कही अनेकरंगके बरकही श्रेष्ठ बीर निकायकही बहुत अरु अतिदीर्घ जिनके शरीरहैं ऐसे दैत्यहैं ते माया बहुत जानते हैं अरु समर विषे बहु सुखीरहे हैं (१६) बाहनी कही पृथक् पृथक् सेना सो अतिविचित्र विचित्र शोभित है जनु बंसत बीररसरूप राजाह्वैकै सेनासाजिकै चल्यो है शनीचरकै सेना सहाइलिहे है (१७) कटकचलतसंते चारिउदिशनके दिग्गज डगमगाते हैं अरु कुधरकही सम्पूर्ण पर्वत सुमेरु आदिक सातौद्वीपके ते डगमगाइरहे हैं अरु समुद्रके जल क्षुभितकही उछरत हैं (१८) रावणकी सेना चलतसंते रेणुउठी है त्यहिकरिकै रविछिपिगयो है अरु पवन थकितह्वइगयो है पृथ्वीअकुलाइउठी है (१९) पणवकही ढोलनिशान नगाराआदिक अनेकबाजनके घोरशब्द होतहैं मानहुँ महाप्रलयके मेघगर्जते हैं (२०) अरु भेरिनफीरी सहनाई इत्यादिक अनेकबाजा अनीके अनी बाजते हैं प्रतिबाजन विषे बीररस मारूराग निकसते हैं सोसुनिकै सुभटनके सुखआनन्द उमगतहै (२१) अरु जेतेबीरहैं ते सब सिंहनादकरते हैं अरु हर्षसंयुत आपन बल पौरुष उच्चारणकरते हैं (२२) तब रावण बीररस कर्षाबढ़ाइकै कहतहै हे सुभटहु सुनाहु भालु और कपिनके ठाटकेठाट मर्दिडारहु (२३) रावण कहतहै हे राक्षस बीरहु तुम बानर ऋच्छनको मारिमारि धूरिमें मिलाइदेहु अरु मैं द्वौभा इनको मारौंगो असकहिकै आगे फौज चलावतभयो है (२४) यह सुधि

गाजहिं २० भेरिनफीरबाजसहनाई मारुरागसुभटनसुखदाई २१ केहरिनादबीरसबकरहीं निजनिजबलपौरुषउच्चरहीं २२ कहैदशाननसुनहुंसुभट्टा मर्द्दहुभालुकपिनकेठट्टा २३ हौंमारिहौंभूपद्वौभाई असकहिसन्मुखफौजचलाई २४ यहसुधिसकलकपिनजबपाई धायेकरिरघुबीरदोहाई २५ छं०॥ धायेविशालकरालमर्कटभालुकालसमानते मानहुंसपक्षउड़ाहिभूधरवृन्दनानाबात ते २६ नखदशनशैलमहाद्रुमायुधसकलशंकनमानहीं जयरामरावणमत्तगजमृगराजसुयशबखानहीं २७ दो० ॥ दुहुंदिशिजयजयकारकरि निजनिजजोरीजानि भिरेबीरइतरघुपतिहि उतरावणहिंबखानि २८ चौ० ॥ रावणरथीबिरथरघुबीरा देखिविभीषणभयोअधीरा २९ अधिकप्रीतिमनभासन्देहा बन्दिचरणकहसहितसनेहा ३० नाथनरथअरुनहिंपदत्राना क्यहिबिधिजितब

कपिनकी सेनामें भई कि रावणकी फौज पहुंचीआइ तब रघुबीरकैदोहाई करिकै कपिधाये (२५) छन्दार्थ॥ मर्कट भालु कैसे हैं बिशाल हैं रावण को कालसमान हैं कराल जिनकी करणीहैं मानहुं अनेक सपक्षभूधर प्रबल पवनके जोरते उड़ेचलेजाते हैं (२६) नख दंत शैल महाविशाल महाद्रुम सोई आयुध हैं जिनके अरु संग्रामविषे शंकानहींमानते हैं अशंक हैं बानर ऋच्छ जयजयकहिकै कहते हैं कि रावण मत्तगज को नाश करिबेको श्रीरामचन्द्र मृगराज हैं (२७) दोहार्थ॥ हे पार्वती द्वौदिशिते

जयजयकारकैकै निजनिज जोरीजानिकै युद्धकरते हैं इतै रामचन्द्रकै दोहाई उतै रावणकै बखानि बखानि युद्धकरतेहैं ( २८ ) रावण तौ रथी है अरु रघुबीर बिरथ हैं यह देखिकै विभीषण अधीरहोतभयो है ( २९ ) श्रीरामचन्द्र बिषे अधिक प्रीति है अरु विरथदेखिकै मनमहँ अतिसन्देह होतभयो है तब चरण बन्दिकै सनेहमय बचन कहत है ( ३० ) हे नाथ नतौ आपुके इहां रथहै न पदत्राण हैं यह जो रावण महाबलवान् सो क्यहिविधिते जीताजाइगो ( ३१ ) तब श्रीरामचन्द्र कहते हैं हे सुजान सखे ज्यहिते विजयहोति है सो रथ आनहु ( ३२ ) हे सखे ज्यहिरथते संसार कै विजयहोत है त्यहिकर स्वरूपसुनहु शौरजकही शूरता तहां शूर पांचप्रकारके रणशूर दानशूर धर्मशूर तपशूर ज्ञानशूर रणशूर कुम्भकर्ण पुनिदानशूरराजाबलि पुनि धर्मशूर राजामोरध्वज राजा रन्तिदेव राजा हरिश्चन्द्र राजा शिवि पुनि तपशूर राजास्वयंभूमनु राजा दधीचि राजा भगीरथ पुनि ज्ञानशूर ऋषभदेव तिनको शूरकही सो शूरता रथकी एकचाकाहै पुनि धीरज रथकीदूसरि चाकाहै तहां धीरज जब प्रह्लाद जनक इत्यादिक तहां शूरता औधीरज दूनौरथके चाका हैं अरु सत्यशीलमें दृढ़ता सोई ध्वजा पताकाहैं सत्यबिषे श्रीदशरथ महाराजहैं पुनि युधिष्ठिर सो सत्यरथकी ध्वजाहैं जे बड़े निशानहोते हैं शीलकही काहूजीवको

**बीरबलवाना ३१ सुनहुंसखाकहकृपानिधाना ज्यहिजयहोइसोस्यंदनआना ३२ शौरजधीरजत्यहिरथचाका सत्यशीलद्यौध्वजा पताका ३३ बलबिबेकदमपरहितघोरे क्षमाकृपासमतारजजोरे ३४ ईशभजनसारथीसुजाना विरतिचर्मसंतोषकृपाना ३५ दान**

अवगुण कर्म्मबचन मनमें न ल्यावै अरुगुण ग्रहणकरैसो शीलमान शुकदेवदत्तात्रेय राजारघु इत्यादिक सोशीलरथके पताकाहैंतहां ध्वजापताका दोऊसम मंगलमयहैं ( ३३ ) अरु रथके चारिघोड़ेहैं एकबल एकबिबेक दमएक परायाहितकार बलकही शरीरबल विद्याबल बुद्धिबल पुनि प्राणायाम बल पुनि बिबेककही सारासार करबिचार सारको ग्रहण असारको त्यागजैसे हंसको बिबेकहै अरुदमकही पांचज्ञान इंद्रीपांच कर्मइन्द्री चतुष्ट अंतष्करण चित्तबुद्धि मन अहंकार इनचौदहौंकेबिषे दमनकरै जीतिलेइताकोदमकही पुनि परहितकारकही मनबचनकर्म्मतेपरावा उपकारकरैतहां प्रमाणहै भर्तृहरौ श्लोकएक ॥ एतेसत्पुरुषापरार्थघटिकास्वार्थपरित्यज्ययेसामान्यं परस्वार्थमुद्यमभृतेस्वार्थी विरोधेनये तेमीमानुषराक्षसापरहितंस्वार्थापनिघ्नंतुये एतघ्नन्तुनिरर्थकंपरहितं ते केनजानीमहे१ बलबिबेक दमपरहित येचारिउ घोड़ेहैं अरुक्षमा कृपासमता तीनों जुटाइकै रज्जुकही रसरी हैं क्षमापृथ्वीके समान कृपा अहेतुकी दीननको देखिकै प्रवैतेहिकै दीनता मनबचनते दयाकरिकै मिटाइडारै जैसेमेघअरु समताकही मित्र अरि निंद्या स्तुति मानापमान इत्यादिक सर्वजीवबिषे समबुद्धिरहै उद्वेग न होय जैसे आकाशहै ताकोसमता कहीतहां क्षमाकृपा समता ये तीनोंदिव्य गुण मिलिकै रज्जुकही इहां जो चारिघोड़े कहाहै अरुतीनि रज्जुकहाहै सोसन्देह न करब तीनिलरकरिकै रसरीहोतिहै यह प्रमाण है त्यहिते पुनि जैरसरीको कामलागै तै बनाइलेइगो तहां घोड़ेके आश्रयरथ चलत है अरु रसरीके आश्रय घोड़ेचलत हैं ( ३४ ) अरु ईश जो महादेव आदि जेमेरे अनन्य भक्तहैं तिनकर भजनसोई सारथी सुजान सुजानकही रथकीगतिबिषे बड़ोप्रबीणहै किंतु ईश जो परमेश्वरहै तिनकर भजन सोई सारथी है अरु बिरति जो तीव्रतर बैराग्यहै सोई चर्म्मकही ढालहै परमसन्तोषसोई कृपाणहै सन्तोषकही त्रयगुणजनित जो विषयहै त्यहिबिषे बासना ध्वंशहै अरु शरीर मात्रकोनिर्बाह ग्रहणसोउ निरससो सन्तोष कृपाणहै ( ३५ ) अरु दानसोई फरसाहै अरु बुद्धिसो प्रचण्डशक्तिहै दानकहीतनधनधाम सुतकलत्रधर्म इत्यादिक हर्षसंयुक्त सबसुपात्रको समर्पणकरिदेइ अरुबुद्धिकही सत्पदार्थ को निश्चयकरिकै ग्रहणकरै असत्को त्याग करै अरु बरकहीश्रेष्ठ विज्ञानकही ब्रह्मज्ञान अपनो स्वस्वरूप जोआत्मा अरुपरस्वरूप जो परमात्मा त्यहिकै प्राप्तिसोई कठिनकही करैरकोदंडजो धनुष

**परशुबुधिशक्तिप्रचंडा बरबिज्ञानकठिनकोदंडा ३६ अमलअचलमनत्रोणसमाना संयमनेमशिलीमुखनाना ३७ कवचअभेदविप्र**

है ( ३६ ) अरु अमल अचलमन सोई तूणहै अमल अचलकही मनके संकल्पबिकल्प मिटि जाय परमेश्वरकर गुणगण अहर्निशि मननकरै अनेक अरु अनेक उपाधि ते मननडिगै अरु संयमनेम शिलीमुखकही अनेकबाणहैं तहां संयमदशहैं अहिंसा सत्यस्तेयकही इन्द्रिनको विषय चुराइलेइ कही इन्द्रिनको निग्रह ब्रह्मचर्य दया नम्रता क्षमाधृति

अल्पभोजन शौचइतिदशसंयम पुनि नेमदशहैं शौचहोय तपदान विद्या अध्ययन इन्द्री निग्रह ब्रत चान्द्रायण आदिक किन्तु ब्रतकही मौन उपवास एकादशी आदिक मौनरहना स्नान त्रिकाल सन्ध्याकरना इति दशनेम इत्यादिक सोई बाणहैं श्लोक द्वैप्रमाण गायत्री भाष्ये अहिंसा सत्यमस्तेय ब्रह्मचर्य दयार्जवं क्षमाधृति मिताहारः शौचमिन्द्रियनिग्रहः १ शौचयाजतपोदान स्वाध्यायोपस्थ निग्रहा ब्रतोपवास मौनानि हानिंचनियमादश २। ( ३७ ) अरुअभेद कवच ब्राह्मणके चरणकै पूजाहै अभेदकही जोकाहूके हथियारसे भेदा न जाइसो ब्राह्मणके चरणारविन्दको पूजतेकाहेते ब्रह्माके मुखते उत्पन्न हैं जो ब्राह्मणको पूजै सो भगवान्‌को मुख पूजिचुक्यउहै अरु वेद भगवान्‌के मुखते उत्पन्न है अरु भगवान् ब्रह्मण्य हैं ब्राह्मण के पूजेते प्रसन्न होते हैं तब उहां वेदवेत्ता होत हैं ( ३८ ) हे सखे ऐसो धर्ममयरथ जाके हैं तिनके जीतिबेको संसारविषे कोई रिपु नहीं है तहां ईश जो परमेश्वर हैं तिनकर भजन सो सारथी है अरु जीव रथी है यहै सुनिकै विभीषणके मनमें कछु पूंछिबे की इच्छाभई है सो श्रीरामचन्द्र जानिगये हैं आपु श्रीमुखते कहत हैं हे विभीषण जो तुम मनमें विचारयोहै कि जीव तौ बारके अग्रभाग को शतकभाग ताहूते सूक्ष्महै वेद कहते हैं सो कैसे रथहोइगो सो सत्यहै तहां जो हम तुम सब कहिआये हैं रथकोस्वरूप ताहीके सिद्धिभयेते जीव विग्रहमान किशोरमूर्त्ति है ताते रथी कहाहैत्यहिको दृष्टांत कहते हैं जैसे हरितकोमल घास है अरु त्यहिविषे दुग्ध अतिसूक्ष्म व्याप्त हैं दुग्धविषेघृतअति सूक्ष्म व्याप्त है तहां जो अनेक यत्नकरै उहिघासते दुग्धनहीं प्राप्तिहोत है ताको पीसिडारै कोल्हूयंत्र में पेरिडारै पर वह दुग्ध अतिसूक्ष्महै नहीं प्राप्तिहोत है तहां त्यहिकर यंत्र गऊ है जो उहैघास गऊ को खवाइदेइ तबगऊ के द्वार में घास पचिजाती है तब उहै दुग्धसूक्ष्म गऊ के द्वारह्वैकै स्थूल प्राप्तिहोत है पुनिजो उहै दुग्धघास में मिलावाचहै तौ नहीं मिलिसकैहै अरु त्यहि दुग्धविषे घृतसूक्ष्महै तहां

**पदपूजा यहिसमबिजयउपायनदूजा ३८ सखाधर्ममयअसरथजाके जीतनकहनकतहुंरिपुताके ३९ दो०॥ महाअजयसंसाररिपु**

दुग्धमथनते घृतस्थूल प्राप्तिहोत है तब दुग्धछांछ ह्वइजात है पुनि घृतछांछमें नहीं मिलिसकैहै यह अब दृष्टांत कहते हैं तहां माया दुइप्रकारकी है एकअविद्या एकविद्या तहां अविद्यास्थान घासहै अरु दुग्धस्थान विद्याहै गुरुवाक्य अरु वेदवाक्य में प्रतीति सो सात्वकी श्रद्धाहै सो गऊ है त्यहि विषेअविद्या पचिजाती है विद्या दुग्धरूप स्थूल प्राप्तिहोती है इहां अविद्या कर्मकांडजानब अरु विद्या ज्ञानकांड जानब त्यहिविषे आत्मा घृतरूपहै त्यहिआत्मा को स्थूल विग्रहमान अविद्या विद्यादोऊते निकासिबेकै यत्नसर्बत्यागिकै दृढ़ह्वइकै परमेश्वरको शरणागतह्वइकै भजनकरना तहां आत्माआदि अंतविग्रहमान है सोई रथी है तहां मय जो रामचरण हैं सो यह वेदांतकर सांभूतकह्यउहै श्रीरामचन्द्र अरु विभीषण के संबाद के अभिप्राय करिकै तहां चौबीसौतत्त्व मायामय जानब पांचतत्त्व नभ पवन अग्निजल महि पुनि पांचज्ञानइन्द्री श्रोत्र चक्षु त्वक् रसना नासिका पुनि तिनकी पंचकर्मइन्द्री पगकर मुख लिंग गुदा कर्मइन्द्रीकी विषय ज्ञानइन्द्रीकी विषय में मग्न हैं अरु चतुष्ट अंतष्करण चित्त बुद्धिमन अहंकारयेते चौबीसतत्त्वकरिकै स्थूल विराट् हैं अरु पचीसवांतत्त्वआत्मा मूर्त्तिमान् है दश अंगुलीहैं दुइभुजहैं द्वैपद हैं दशअंगुली हैं द्वैजंघा हैं शिर मुखसुन्दर नित्य किशोर सबल हैं मूर्त्ति हैं जो आयुधकहिआये हैं त्यहिसंयुक्त हैं त्यहिरथपर आरूढ़रथी हैं तहां प्रमाण सामवेदे॥ दशहस्तांगुलयादशपादयोः द्वौबाहू द्वावूरु आत्मै कपञ्चा विंशकश्रुतिः ( ३९ ) दोहार्थ॥ श्रीरामचन्द्र कहते हैं हेसखे जोरथ हमतुमसे वर्णन कीन है त्यहिपर जोजीव आरूढ़होई सो महाअजय जो संसार रिपुरूप है काहूके जातिबेयोग्य नहीं है त्यहिको सो जीतिजाते हैं अरु जो यहिसंसारको जीतै त्यहिको बीरकही ( ४० ) श्रीरामचन्द्रजीके बचनसुनिकै हर्षिकै पदपंकज गहतभये हैं देखिये तौ रथके मिसुकरिकै श्रीरामचन्द्र मोको परमसाधुलक्षण उपदेश करतभये हैं ऐसे कृपाकेपुञ्ज श्रीरामचन्द्र हैं ( ४१ ) उतै अपने सेनाके बीरनको रावण प्रचारतहै कि भालु कपिनकी सेनाको मारो अरु इतै अंगद हनुमान् अपने बीरन को

**जीतिसकैसोबीर जाकेअसरथहोइदृढ़सुनहुंसखामतिधीर ४० सुनतबिभीषणप्रभुवचनहर्षिगहेपदकंज यहिमिसुम्वहिंउपदेशकियरामकृपासुखपुंज ४१ उतप्रचारिदशकंधरइतअंगदहनुमान लरतनिशाचरभालुकपिकरिनिजनिजप्रभुआन ४२** * * *

**चौ० ॥ सुरब्रह्मादिसिद्धमुनिनाना देखहिंरणनभचढ़ेबिमाना १ हमहूंउमारहेत्यहिसंगा देखतरामचरितरणरंगा २ सुभटसमररसदुहुंदिशिमाते कपिजयशीलरामबलताते ३ एकएकसनभिरहिंप्रचारहिं एकनएकमर्दि महिडारहिं ४ मारहिंकाटहिंधरहिं**

प्रचारतहैं कि राक्षसनकोमारो अपने अपने प्रभुकै आनकरते हैं आन कही दोहाई करिकै युद्धकरते हैं ( ४२ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकल कलिकलुषबिध्वंसने-लंकाकांडेश्रीरामचन्द्रपरमतत्त्वउपेदशबिभीषणप्रतिबर्णनन्नामपञ्चदशस्तरंगः १५॥ :: :: :: :: :: ::

दोहा॥ रामचरणश्रीरामते रावणतेरणरंग भयोनहैनहिंहोइगो दशषट घोरतरंग १६॥ ब्रह्मादिक देवता सिद्ध नानाप्रकारके बिमानपर चढ़े श्रीरामचन्द्रकर चरित रणरंग रावणके समरकर बीररसरंग देखते हैं ( १ ) हे उमा त्यहिदेवतनके संगमें हमहूं श्रीरामचन्द्रकर चरित रणरंग अद्‌भुत सो देखतेरहैं ( २ ) दोऊदिशि सुभट बीररसमें मत्तह्वैकै संग्रामकरतेहैं पर श्रीरामचन्द्रके बलते कपिनकै जयशीलकही बिजय स्थानहै ( ३ ) इतै उतै एक एकनते प्रचारि प्रचारि भिरते हैं अरु एक एकनको महिबिषे पछारिकै मर्दिडारते हैं ( ४ ) एक एकनको मारते हैं काटिडारते हैं शिरतोरि तोरि शिरनते मारते हैं ( ५ ) एक एकनको उदर बिदारते हैं अरु एक एकनके भुजा उपारते हैं अरु बहुत पद गहि गहि पृथ्वी में पटकिडारते हैं ( ६ ) अरु निशिचर जो भट हैं तिनको मारिकै भालु जे हैं ते पृथ्वी में गाड़िकै ऊपर बालूते तोपिडारते हैं ( ७ ) बीर जे बलीमुख हैं ते युद्ध में बिरोध करते हैं मानहुँकाल अनेकरूपधरिकै लरत है ( ८ ) छन्दार्थ ॥ कृतांतकही काल के समान क्रोधकरिकै लरत हैं भालु कपिन के तन श्रोणितभरे शोभित हैं अरु निशाचर जो बलवान् भट हैं तिनको भालु कपि मर्दि मर्दि मेघके समान गर्जते हैं ( ९ ) अरु डाटि डाटि चपेटनकही धक्कन थपेरन मारते हैं अरु डाटिकै दांतन काटते हैं लातनमारते हैं मींजि डारते हैं अरु भालु कपि चिक्कार करते हैं अनेक छल बलकरते हैं सोई उपाय करते हैं

**पछारहिं शीशतोरिशीशनसनमारहिं ५ उदरबिदारहिंभुजाउपारहिं गहिपदपटकिअवनिपरडारहिं ६ निशिचरभटमहिगाड़हिंभालू ऊपरडारिदेहिंबहुबालू ७ बीरबलीमुखयुद्धविरुद्धे देखियतविपुलकालजनुक्रुद्धे ८ छं०॥ क्रुद्धेकृतांतसमानकपितनश्रवतश्रोणितराजहीं मर्दहिंनिशाचरकटक-भटबलवंतजिमिघनगाजहीं ९ मारहिंचपेटनडाटिदांतनकाटिलातनमींजहीं चिक्करहिंमर्कटभालु छलबलकरहिंज्यहिखलछीजहीं १० धरिगालफारहिंउरबिदारहिंआँतनिजगरमेलहीं प्रहलादपतिजनुविविधतनुधरिसमरआँगनखेलहीं ११ धरुमारुकाटुपछारुघोरगिरागगनमहिभरिरही जयरामजोतृणतेकुलिशकरकुलिशतेतृणकरसही १२ दो० ॥ निजदलबिचलविलोकित्यइँबीसभुजादशचाप चल्यउदशाननकोपकरि फिरहुफिरहुकरिदाप १३ ॥** * * * * * *

ज्यहिविधि खलछीजहिं ( १० ) धरिकै गालफारते हैं उरको बिदारते हैं तिनकी आँतैं अपने गरमें डारिलेते हैं हे पार्वती प्रह्लादपति नृसिंह जे हैं तिन्होंने जैसे हिरण्यकशिपुको मारिकै आंत गरमें डारिलियो है तैसे बानर जनु अनेक नृसिंहरूप धरिकै संग्राम अंगनाईविषे रणखेल खेलते हैं ( ११ ) धरु धरु मारु मारु काटु काटु पछारु पछारु ऐसो घोरशब्द सातौ द्वीप महिमण्डलबिषे अरु नभबिषे भरिरह्यो है बानर भालु कहते हैं जय श्रीरामचन्द्र की जय जो तृणते कुलिशकरहिं कुलिशते तृणकरहिं ( १२ ) दोहार्थ ॥ तब आपन दल बिचलत देखिकै रावण बीसहुभुजन बिषे दश चाप चढ़ाइकै क्रोधकरिकै दापकही डपटिकै अपनी सेनाको कहत है कि फिरहु हे कादरहु अब तुम ठाढ़ह्वइकै हमारो संग्रामदेखहु ( १३ ) इति श्रीराचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेलंकाकांडेबानरऋच्छयुद्धबर्णनन्नामषोडशस्तरंगः १६॥ :: :: ::

दोहा ॥ दशअरुसप्ततरंगमेंरावणयुद्धअनन्त रामचरणसंग्रामअतिलखहिंरामभगवन्त ( १७ ) ॥ हे पार्बती दशकन्धर परमकोधह्वइकै आगे बानरनके सन्मुख रथ दौरावतभयो है अरु सन्मुख हूहकरिकै बानर धावत भये हैं ( १ ) ये सब बानर उपल जो शिला हैं अरु पहार जो हैं अरु वृक्ष अनेकन रावणके ऊपर एकहिबार गहि गहि डारते हैं ( २ ) त्यहिरावणके शरीर बज्रइव तामें लागत हैं तहां आशकही तुरन्त खण्डखण्ड ह्वइ जाते हैं ( ३ ) तहां रावण रथरोपिकै अचलह्वइकै रहिगयो है तहां रावण अतिकोपिकै रणविषे दुर्मदक ही बड़ामंद है संग्राम बहुत रुचत है ( ४ )

चौ० ॥ धायोपरमक्रुद्धदशकंधर सन्मुखचलेहूहकरिबन्दर १ गहिगिरिपादपउपलपहारा डारहिंतापरएकहिंबारा २ लागहिंशैलवज्रतनतासू खंडखंडहोइफूटहिंआसू ३ चलैनअचलरहैरथरोपी रणदुर्मदरावणअतिकोपी ४ इतउतझपटिडपटिकपियोधा मर्दनलागभयउअतिक्रोधा ५ चलेपराइभालुकपिनाना त्राहित्राहिअंगदहनुमाना ६ पाहिपाहिरघुबीरगोसाईं यहखलखाइकालकीनाईं ७ त्यइँदेखाकपिसकलपराने दशहुचापशायकसंधाने ८ छं०॥ संधानिधनुशरनिकरछांड्यसिउरगह्वइउरलागहीं रहेपूरिशरधरणीगगनदिशिविदिशिकहँकपिभाजहीं ९ भयउअतिकोलाहलबिकलकपिदलभालुबोलहिंआतुरे रघुबीरकरुणा

रावण योधा इत उत कपिनको अतिक्रोधकरिकै डपटि डपटि झपटि झपटि पकरि पकरि महिपर पटकि पटकि मर्दि डारत है ( ५ ) तब भालु कपिनकै सेना पराइचली है यह अंगद हनुमान् पुकारत हैं त्राहि त्राहि हमारी रक्षाकरहु ( ६ ) हे रघुबीर गुसाई पाहि पाहि यह खल कालइव सबको खावाचहत है ( ७ ) तेइँ रावण देखा कि कपिन की सेना भागी है तब दशहु चापविषे बाण सन्धान करतभयो है ( ८ ) छन्दार्थ ॥ धनुषनबिषे शर संधानिकै अनेक बाण छांड़त भयोहै तेबाण सर्पह्वइकै कपिनके लागत हैं तहां बाण महिविषे गगनविषेदिशि विदिशिविषे पूरिरहे हैं बानर कहां भागिकै जाहिं ( ९ ) कपि भालुनके दलविषे अतिकोलाहल हाहाकर होतभयो है अरु भालु कपि अति आतुर बिकल ह्वइकै चिक्कारकरते हैं यह पुकारते हैं हे रघुबीर करुणासिंधु आरतहरण दीनबन्धु जनरक्षक हमारी रक्षाकरहु ( १० ) दोहार्थ ॥ तब लक्ष्मणजी अपनी अनी बिचलत देखिकै कटिविषे निषंग बांधिकै धनुषबाण चढ़ाइकै श्रीरामचन्द्रके चरणारबिन्दविषे शीशनाइकै आज्ञालैकै रावणते युद्धकरिबेको लक्ष्मणजी सरोषचलत भये हैं ( ११ ) जाइकै लक्ष्मणजी रावण से कहत हैं हे खलतैं भालु कपिनको का मारतहसि मोरे ओरदेखु मैं तोरकालहौं ( १२ ) तब रावण कहत है हे सुतघाती मैं तोको खोजत रह्यउं है भले मेरेसामने आइसिहै आजु तोको हतिकै अपनी छाती शीतल करौंगो ( १३ ) अस कहिकै रावण प्रचंडबाण छांड़तभयोहै तब लक्ष्मणजी अपने बाणते दुइखंडकरिडारे हैं ( १४ ) लक्ष्मणजीके ऊपर कोटिन आयुध रावण डारतभयो

सिंधुआरतबन्धुजनरक्षाकरे १० दो० ॥ विचलतदेखिअनीकनिजकटिनिषंगधनुहाथ लक्ष्मणचलेसरोषतबनाइरामपदमाथ ११ चौ०॥ रेखलकामारयसिकपिभालू मोहिंविलोकुतोरमैंकालू १२ खोजतरह्यउँतोहिंसुतघाती आजुनिपातिजुड़ावोंछाती १३ असकहिछांड्यसिबाणप्रंचडा लक्ष्मणतुरतकीनदुइखंडा १४ कोटिनआयुधरावणडारे तिलप्रमाणप्रभुकाटिनिवारे १५ पुनिनिजबाणनकीनप्रहारा स्यंदनभंजिसारथीमारा १६ शतशतशरमारेदशभाला गिरिशृंगनजनुप्रविशहिंब्याला १७ शतशतशरमारेउरमाहीं परयउअवनितनसुधिकछुनाहीं १८ उठाप्रबलपुनिमुर्छाजागी छांड्यसिब्रह्मदीनजोसाँगी १९ छं०॥ जोब्रह्मदीनप्रचंडशक्तिअनन्तउरलागीसही परेउबीरविकलउठावदशमुखअतुलबलमहिमारही २० ब्रह्मांडभुवनबिराजजाकेएकशिर

है तब लक्ष्मणजी काटिकै तिल के समान करिडारे हैं ( १५ ) पुनि लक्ष्मणजी अपने बाणते रथके घोड़े सारथी तिनको प्रहारिकही मारिकै नाश करिदीन है ( १६ ) अरु शतकही सौ सौ बाण दशौ शीश में मारतभये हैं जनु गिरिके शृंगनविषे व्याल प्रवेश करते हैं ( १७ ) पुनि सौबाण उरविये मारा है तब रावण अकुलाइकै अवनि में गिरिपरयउहै कछु सुधि न रही है ( १८ ) पुनि मूर्च्छाजागी प्रवलरावण उठतभयो है तबब्रह्मै जो अचूक सांगिदीन है सो लक्ष्मण के ऊपर छांड़तभयो है ( १९ ) छंदार्थ ॥ जो ब्रह्मै अतिप्रचंड शक्तिदीन है सो अनंतजो लक्ष्मणबीर हैं तिनके उरमें लागतभई है बिकलह्वइकै पृथ्वी में गिरिपरे हैं तबरावण जो विपुल बलवान् है सो निकटजाइकै उठावतभयो है सो नहीं उठिसकते हैं तहांरावण के बलकै महिमा जो मर्यादहै सो जातीरही है ( २० ) हे गरुड़ जिन लक्ष्मणके एक अंशभागते अनंत जो श्रीसहस्त्रशीश शेषहैं तिनके एकशीश पर ब्रह्मांड भुवन एक कणकेसमान बिराजतहै तिनको मूढ़रावण उठावा चाहतहै त्रिभुवनधनी नहीं जानैहै ( २१ ) दोहार्थ॥ रावणको उठावत देखिकै हनुमान्जी कठोरवचन कहिकै धावतभये हैं तब रावण चलिकै हनुमान्जीकी छातीमें घोरमुष्टिका मारतभयोहै तब हनुमान्जी भूमिमें नही गिरेहैं ( २२ ) जांघटेकिकै रहिगये हैं पुनि अतिरिसभरे हनुमान्जी उठेहैं ( २३ ) तब उठिकै हनुमान्जीकहा हे सुरारि अबतैं मोरि मुष्टिका सहु तब रावणछाती रोपिदीनहै कि मारुतब हनुमान्जी महाबज्रइव रावणकी छाती में मुष्टिकामारी तब रावण घूमिकै भूमिपर गिरयउहै कैसे

जिमिरजकनीत्यहिचहउठावनमूढ़रावनजाननहिंत्रिभुवनधनी २१ दो० ॥ देखतधायोपवनसुत बोलतबचनकठोरआबतत्यहिउरमहँहनेसि मुष्टिप्रहारप्रघोर २२ चौ० ॥ जानुटेकिकपिभूमिनपरा उठासँभारिबहुतरिसभरा २३ मुष्टिकएकताहिकपिमारा परेउशैलजनुबज्रप्रहारा २४ गइमुर्छाबहोरिसोजागा कपिबलबिपुलसराहनलागा २५ धृगधृगममपौरुषधृगमोही जोतैंजियतउठ्यसिसुरद्रोही २६ असकहिकपिलक्ष्मणकहँल्याये देखिदशाननविस्मयपाये २७ कहरघुबीरसमुझिजियभ्राता तुमकृतान्तभक्षकसुरत्राता २८ सुनतवचनउठिबैठिकृपाला गगनगईसोशक्तिकराला २९ धरिशरचापचलतपुनिभयऊ रिपुसमीपअतिआतुरगयऊ ३० छं० ॥ आतुरबहोरिविभंजिस्यन्दनसूतहतिव्याकुलकिये गिरेउधरणिदशकन्धर-विकलतनबाणशतबेध्योहिये ३१

जैसे इन्द्रकेबज्र लागेते पर्वत टूटिफूटिकै गिरिपरते हैं ( २४ ) तब रावणकै मूर्च्छा जागत भई है उठिकै हनुमान्जी के बलको बारबार सराहतहै कि तू महाबीर धन्यहै ( २५ ) तब हनुमान्जी कहते हैं कि मोरेबल पौरुषको धिग्है जो तैं मोरे मारेसे जियतै रहसि तौ मैं कवन बीरहौं ( २६ ) असकहिकै हनुमान्जी लक्ष्मणको उठाइकै रघुनाथजीके समीप ल्यावत भये हैं देखिये तौ दशाननको विस्मय भईहै ( २७ ) तब श्रीरामचन्द्र कहते हैं हे भ्राताउठौ सुनौ तुमतौ कृतांतकाल जो है त्यहिके भक्षणकर्त्ता हौ अरु देवतनके त्राताकही रक्षकहौ ( २८ ) श्रीरामचन्द्र कृपालुके वचन सुनतसंते कृपालु लक्ष्मणजी उठिवैठे हैं लक्ष्मणजीको कृपालुकही देव तामुनि सेनाको पीड़ित देखिकै उठिबैठे हैं सो शक्तिब्रह्मलोकको जाती भई है ( २९ ) पुनि लक्ष्मणजी तुरंतउठिकै धनुषबाण संधानिकै रावणके समीप अतिआतुरते जातभये ( ३० ) छन्दार्थ ॥ तब लक्ष्मणजी ने अति आतुरते दूसरे रथपर जो रावण चढ़ाहै त्यहिरथको बिभंजिकै सूतको मारिडारा है रावणको व्याकुल करिकै पृथ्वीमें गिराइदीन है अरु शतबाण कोपकरिकै रावणकी छातीमें मारतभये ( ३१ ) तब सारथी दूसररथ घालिकै लंकाको लैगयोहै श्रीरामानुज प्रतापके पुंज श्रीरामचन्द्र के चरणारबिन्दमें नमतभयेआइ ( ३२ ) दोहार्थ॥ उहां रावणकी मूर्च्छाजागी है तब कछु यज्ञकरै लागहै देखिये तौ ऐसो शठ मूर्ख है श्रीरामचन्द्रते विमुख ह्वइकै आपन कल्याण चाहत है ( ३३ ) इहां विभीषण सुधिपावा कि रावण यज्ञकरतहै तब सपदिकही शीघ्ररघुनाथजीको सुनावतभयो है ( ३४ )

सारथीदूसरघालिरथत्यहितुरतलंकहिलैगयो रघुबीरबन्धुप्रतापपुंजबहोरिप्रभुचरणननयो ३२ दो०॥ उहाँदशाननजाइकैकरनलागकछुयज्ञ जयचाहतरघुपतिविमुखशठहठबशअतिअज्ञ ३३ चौ०॥ इहाँविभीषणसबसुधिपाई सपदिजाइरघुपतिहिसुनाई ३४ नाथकरैरावणएकयागा सिद्धिभयेनहिंमरिहिअभागा ३५ पठवहुदेववेगिभटबन्दर करहिंबिध्वंसआवदशकन्धर ३६ प्रातहोतरघुबीरपठाये हनुमदादिअंगदसबधाये ३७ कौतुककूदिचढ़ेकपिलंका पैठेरावणभवनअशंका ३८ जबहींयज्ञकरतसोदेखा सकलकपिनभाक्रोधविशेखा ३९ रणतेनिलजभागिगृहआवा इहाँआइबकध्यानलगावा ४० असकहिअंगदमारेउलाता चितवनशठस्वारथमनराता ४१ छं०॥ नहिंचितवजबकपिकोपिकचगहिदशनलातनमारहीं धरिकेशनारिनिकारिबाह्यरतेपिदीनपुकारहीं ४२

हे नाथ रावण अभागा एकयज्ञ करतहै जो सिद्धिहोइहि तौ वेगि न मरैगो ( ३५ ) हे देव वेगि बानरभट पठवहु त्यहिको यज्ञ विध्वंसकरहिं तब रावण संग्रामविषे उठिआवै ( ३६ ) तब प्रातहोतै श्रीरघुनाथजी अंगद हनुमानादिक बीर पठवतभये येसब बनचर धायेकही कूदते चलेहैं ( ३७ ) तब कौतुकहिते बानर कूदिकै लंकापर चढ़िकै रावणके भवनविषे अशंक पैठिगये हैं ( ३८ ) रावणको यज्ञकरत देखिकै कपिनके विशेषि क्रोधहोत भयो है ( ३९ ) हनुमान् अंगद कहते हैं हे निर्लज्ज रणते भागिकै इहां बकध्यान लगाये है ( ४० ) असकहिकै अंगद रावणके लातमारत भये हैं तब रावण अपने यज्ञके स्वार्थ सिद्धि समुझिकै लात सहिलियो है चितयो नहीं है ( ४१ ) छन्दार्थ॥ जब रावण नहीं चितवत तब कपिकोपिकै दांतन काटते हैं लातन मारते हैं अरु मन्दोदरीकर केशधरिकै यज्ञशालाते बाहर घसीटिलैगये हैं नारि दीनह्वैकै पुकारती है ( ४२ ) तब रावण मन्दोदरीकर तिरस्कार नहीं सहिसक्यउ है तब कृतांतकही कालकेसमान क्रोधकरिकै उठ्यो है बानरनके चरण गहि गहि महिमें पटकि देतहै ताहिबीचमें अपर बानरन यज्ञकर बिध्वंसकीन सो देखिकै रावण मनमें हारिगयो है ( ४३ ) दोहार्थ ॥ हेभरद्वाज कपि यज्ञबिध्वंस करिकै श्रीरामचन्द्रके समीप कुशलते जातभये हैं तब लंकापति अतिक्रोध करिकै अपने जीवनकी आश छोंड़िकै संग्राम को चलत भयो है तहां जेतेघाउ रावण के लागतरहैं सो सुखेन बैद्य तुरन्त नीककरि देतरह्यउ है ( ४४ ) इतिश्रीरामचरितमानसे-सकलकलिकलुषबिध्वंसनेलंकाकाण्डेलक्ष्मणरावणसमरयज्ञबिध्वंसवर्णनंनामसप्तदशस्तरंगः ( १७ )॥ :: :: :: ::

तब उठ्यउकोपिकृतान्तसमगहिचरणवानरडारई यहिबीचकोपिविध्वंसकृतमखदेखिमनमहँहर्षई ४३ दो० ॥ मखविध्वंसकपि कुशलसब आयेरघुपतिपास चल्योलंकपतिक्रोधहोइत्यागिजियनकरआस ४४॥ * * * *

चौ० ॥ चलतहोहिंअतिअशुभभयंकर बैठहिंगीधउड़ाहिंशिरनपर १ भयउकालबशकहानमाना कह्यसिबजावहुयुद्धनिशाना २ चलीतमीचरअनीअपारा बहुगजरथपदादिअसवारा ३ प्रभुसन्मुखधायेखलकैसे शलभसमूहअनलकहँजैसे ४ इहाँदेवतनविनतीकीन्हा दारुणविपतिहमहिंयहिदीन्हा ५ अवजनिरामखेलावहुयेही अतिशयदुखितहोतिबैदेही ६ देववचनसुनिप्रभुमुसकाना

दोहा॥ रावणकृतमायाअगम दशअरुआठतरंग रामचरणमहिगगनभरि होतमहारणरंग १८॥ रावणके चलत अति भयानक असगुन होते हैं गिद्ध शिरनपर बैठते हैं उड़ते हैं ( १ ) तहां रावण काल के बश एकौ असगुन नहीं मानत है आज्ञा देतभयो कि युद्धके निशान कही नगारे बजावहु ( २ ) निशिचरनकी सेना अपारचली है अमित गजरथ पैदर सवार चतुरंगिनी सेनासमूह चली है ( ३ ) हे पार्वती प्रभुके सन्मुखते खल कैसे धाये हैं जैसे पतंग समूह अग्निको धावते हैं ( ४ ) आकाशमें देवता बिनती करते हैं हे प्रभु

यहि दुष्ट हमको बहुत दुःख दीन है ( ५ ) हे श्रीरामचन्द्र अब यहिकाबहुत न खेलावहु काहेते श्रीजानकी जी बहुतदुःखित होती हैं देखिये तौ देवता अपनो दुःख अपनी चतुराईते श्रीजानकी जी विषे रोपण करते हैं जाते श्रीरघुनाथजी जल्दी बधकरहिं यह चतुराई श्रीरामचन्द्रते करते हैं ऐसे देवता मूर्खहैं ( ६ ) देवतनकै चतुराई बचन सुनिकै श्रीरघुनाथजी मुसुकाइकै उठिकै धनुषविषे बाण सुधारतभये हैं ( ७ ) तब श्रीरघुनाथजी जटाकेजूट शीशविषे दृढ़करिकै बांधत भयेहैं जटाके बीचबीच लक्ष्मणजीने सुमन गूँथिदीन है ( ८ ) अरुकमलइव लाल नेत्रहैं श्याम मेघइव शरीर है कैसी शोभाहै अखिलकही जो चौदहौ भुवन हैं तिनके नेत्रनको अभिरामकही आनन्ददाता हैं ( ९ ) अरु परिकर कही मुनिपटको पटुका तटकही कटिविषे कसिकै तापरतूण कसत भये हैं अरु करविषे कठिन कोदण्ड नाम सब धनुषनको है तहां शारंग अरु बाण लिहे हैं ( १० ) छन्दार्थ॥ शारंग बाण सुन्दर करविषे लिहे हैं अरु शिलीमुख जो बाणहैं तिनकर आकरकही खानि जो निषंग सो कसे हैं अरु भुजदण्ड जो पीनकही पुष्ट मनोहर कामके करि शुण्डइव

उठिरघुबीरसुधारेउबाना ७ जटाजूटशिरबाँध्यउमाथे सोहहिंसुमनबीचबिंचगाथे ८ अरुणनयनबारिदतनश्यामा अखिललोकलोचनअभिरामा ९ कटितटपरिकरकसेनिषंगा करकोदंडकठिनशारंगा १० छं० ॥ शारंगकरसुन्दरनिषंगशिलीमुखाकरकटिकस्यो भुजदण्डपीनमनोहरायतउरधरासुरपदलस्यो ११ कहदासतुलसीजबहिंप्रभुशरचापकरफेरनलगे ब्रह्मांडदिग्गजकमठअहिमहिसिन्धुभूधरडगमगे १२ दो० ॥ हर्षेदेवबिलोकिछबिबर्षहिंसुमनअपार जयजयप्रभुगुणज्ञानबलधामहरणमहिभार १३ चौ० ॥ तेहीबीचनिशाचरअनीकसमसात आईअतिघनी १४ देखिचलेसन्मुखकपिभट्टाप्रलयकालकेजनुघनघट्टा १५ बहुकृपाणतरवारिचमक्कहिं

भुजहैं अरु आयतकही कछुविस्तार मनोहर उरहै अरु त्यहिविषे धरासुर जे ब्राह्मण तिनके पदकरअंक भृगुलता अति शोभित है सो उरकी कोमलता सूचितकरै है ( ११ ) श्रीगोसाई तुलसीदास कहते हैं कि जब श्रीरामचन्द्र भुजविषे बाण फेरनेलागे हैं तब ब्रह्माण्डभरि दिशन के दिग्गज अरु कमठ अरु शेष सकल समुद्र सुमेरु आदिक पर्वत सब डगमगाइ उठे हैं ( १२ ) दोहार्थ॥ त्यहिसमयकै छबि देखिकै ब्रह्मादिक देवता हर्षिकै फूलवर्षते हैं मुनिकहते हैं हे प्रभु गुणज्ञान बलकेधाम महिकेभार निवारणकर्त्ता तुम्हारीजय तुमसदा जयमान्हौ ( १३ ) त्यहिबीच विषे निशाचरनकै अनी कसमसात अतिघनी चलीआवति है ( १४ ) निशिचरनकै सेनादेखि कपिनके भट अनेक धाये हैं जनु प्रलयकालकी घटाचली आवती है ( १५ ) बहुत कृपाणकही जो दुधारा है अरु तरवारिजोहै सो उघारि चमकति है अरु इतै बानरनके लूम चमकते हैं जनु दोउदिशि दामिनी दमकती हैं ( १६ ) अरु गजरथ घोड़े तिनको चिक्कार अरु इतै ऋच्छ बानरन के हहास जनु बलाहक जे मेघते घोर गर्जते हैं ( १७ ) अरु अनेक कपि नभविषे उड़ेजाते हैं तिनके लूंगर नभविषे छाइरहे हैं जनु अनेक इन्द्रके सुन्दर धनुष उदयभये हैं ( १८ ) अरु धूरि उड़ती है जनु जलकी धारा है अरु अनेकन बाणचलते हैं जनु बुंदबर्षते हैं ( १९ ) अरु दोउदिशिविषे पर्वतनके प्रहारहोते हैं जनु बज्रपातकही बज्र बारबार परते हैं ( २० ) तहां श्रीरामचन्द्र कोपिकै बाणनकी झरिलगावत भये हैं तहां समुदाई निशिचर घायलभये हैं ( २१ ) बाणके लागतसंते बीर

जनुदुहुँदिशिदामिनीदमक्कहिं १६ गजरथतुरँगचिकारकठोरा गर्जतमनहुंबलाहकघोरा १७ कपिलंगूरविपुलनभछाये मनहुंइन्द्रधनुउयउसुहाये १८ उड़ी धूरिमानहुँजलधारा बाणबुन्दभइवृष्टिअपारा १९ दुहुंदिशिपर्वतकरहिंप्रहारा बज्रपातजनुबारहिंबारा २० रघुपतिकोपिबाणझरिलाई घायलभेनिशिचरसमुदाई २१ लागतबाणबीरचिक्करहीं घूर्मिघूर्मिजहँतहँमहिपरहीं २२ श्रवहिंशैलजनुनिर्झरबारी श्रोणितशरकादरभयकारी

२३ छं० ॥ कादरभयंकररुधिरसरिताबहहिंपरमअपावनी द्वौकूलदलरथरेत चक्रअवर्त्तपरमभयावनी २४ जलजन्तुगजपदचरतुरँगखर-विविधबाहनकोगनेशरशक्तितोमरसर्प्पचापतरंगचर्म्मकमठघने २५ दो० ॥ बीरपरहिंजनुतीरतरमज्जाबहुबहफैन कादरदेखतडरहिंतेसुभटनकेमनचैन २६ चौ०॥ मज्जहिंभूतपिशाचवेताला

चिक्कार करते हैं घूमि घूमि जहां तहां महिविषे गिरिपरते हैं ( २२ ) बीरनके शरीरते लोहू श्रवतहै जनु पर्बतनते झरना झरते हैं अरु श्रोणितकी नदी बहिचली हैं कादरनको भयदायक हैं ( २३ ) छन्दार्थ ॥ जनु तहां रुधिरकीनदी बहु महाघोर अति अपावनि कादरन को भयदायक हैं अरु त्यहिके फाटको प्रमाण नहीं है अरु दूनोंदल सोई दूनोंकूल हैं अरु रथ मानहुं रेत परिगये हैं अरु रथकेचाका जो हैं ते नदीके आवर्त्तकही जहां बहुत गहिर जल घूमत है अरु महाभयंकर बहति है ( २४ ) अरु बिबिध प्रकार के बाहन गज तुरंग आदिक बहेचलेजाते हैं ते जनुजलजन्तु मगर घरियार इत्यादिक हैं अरु शरशक्ति तोमर इत्यादिक अस्त्र शस्त्र सर्प है अरु धनुष बहेजाते हैं सो तरंग हैं अरु चर्म जो ढालहै सो अनेक कच्छप हैं ( २५ ) दोहार्थ ॥ अरु बीरतीर तीरपर परेहैं जनु नदीके किनारेके वृक्षहैं गिरि गिरिपरे हैं अरु तिनकेशरीरकर मज्जा सोई जनु फेनहै त्यहिनदीको देखिकै कादर डूबिजाते हैं सुभटनके मनमें चैनहोत है ( २६ ) त्यहि रुधिरकी नदीविषे मज्जनकही स्नान करते हैं अनेक जातिके पिशाच पिशाचिनी भूत बेताल प्रथम झोटिका इत्यादिक महाकराल हैं ( २७ ) अरु काक जे हैं अरु कंक गिद्ध जे हैं ते बीरनके भुजा लैलै आकाशको उड़िजाते हैं अरु एकएकनते छीनिछीनि खाते हैं ( २८ ) एकतेएक कहते हैं हे शठहु ऐसेहु समुदायविषे तुम्हार दरिद्र नहीं जात है ( २९ ) अरु जहां तहां तिंहिके तटपर घायलवीर कहरत परेहैं अरु तिनके मुखमें फेन बहाजातहै काक चोंचमारतेहैं जनु अर्द्धजल देत हैं ( ३० ) अरु गीध तटपर बैठि तिनके आंतखैंचते हैं जनु चितलाइकै लोग बंशी खेलते हैं ( ३१ ) तहां अनेकन भट बहेजातेहैं तिनपर खग बैठे हैं जनु

प्रथममहाझोटिकाकराला २७ काककंकलैभुजाउड़ाहीं एकतेछीनिएकलैखाहीं २८ एककहहिंऐसेहुसमुदाई शठहुतुम्हार दरिद्रनजाई २९ कहरतभटघायलतटगिरे जहँतहँमनहुंअर्द्धजलपरे ३० खैंचतआँतगीधतटभये जनुबंशीखेलहिंचितदये ३१ बहु भटबहेचढ़ेखगजाहीं जनुनावरिखेलहिंसरिमाहीं ३२ योगिनिभरिभरिखप्परसाचहिं भूतपिशाचबधूनभनाचहिं ३३ भटकपाल करतालबजावहिं चामुण्डानानाविधिगावहिं ३४ जम्बुकनिकरकटककटकटहीं खाहिंहुहाहिंअघाहिंदपटहीं ३५ कोटिनरुंडमुंडविनडोलहिं शीशपरेमहिजयजयबोलहिं ३६छं०॥ बोलहिंजोजयजयरुंडमुंडप्रचंडशिरबिनुधावहीं खप्परनखगगनअरुझि

नदीविषे नेवारी खेलते हैं ( ३२ ) योगिनी खप्परन विषे रुधिर भरिभरि संचित करतीहैं अरु भूतन पिशाचनकी बधू नभविषे नाचतीहैं ( ३३ ) अरु भटनके कपालनकर करताल बनाइकै बजावती हैं अरु चामुण्डादेवी नाना प्रकारते गावती अरु नाचती हैं ( ३४ ) अरु जंबुककही सियारन की कटक कटकटाते हैं हुहाते हैं अरु बीरनके मांसखाते हैं अघातेहैं अरु आपुसमें एकएकन को दपटते हैं ( ३५ ) अरु कोटिनरुंड बिनामुंडके धावते हैं रणभूमि विषे अरु बीरनकेशीश महिबिषे परे मारुमारु जयजय बोलते हैं ( ३६ ) छंदार्थ॥ बीरनके मुंडपरे हैं सो जयजय बोलतेहैं अरु विनामुंडके रुंडधावते हैं ते बीरनकी खोपरिनबिषे अरु बिहंग गीध आदिक जे अनेकन खातेहैं तिनविषे अरुझि अरुझि रुंड गिरिगिरि परतेहैं प्राणछूटि जाते हैं सुरपुरको प्राप्तिहोते हैं इहां सुरपुर परमपद जानब सुरपुरकर कहना अध्यारोपण है ( ३७ ) तहां भालु कपिदर्पित कही अतिक्रोध करिकरि यूथ के यूथ राक्षसन को मर्दिडारते हैं अरु गर्जते हैं संग्राम आंगनविषे सुभट मरिकै पृथ्वी विषे परे हैं जनु श्रीरामचन्द्रके निकरकही समूह बाणन के मारेते सोइरहे हैं ( ३८ )

दोहार्थ ॥ तब रावण अपने हृदयमें बिचारकीन कि निशिचरनको नाशभयो अब मैं अकेल रहिगयों है अरु भालुकपि बहुतहैं याते अब अपार मायाकरौं ( ३९ ) तहां देवतन रघुनाथजीको पयादेदेखिकै हृदयमें क्षोभकही सन्देह होतभयो है ( ४० ) तब इन्द्र आपनरथ पठवतभये हैं तहां मातुल जो सारथी है सो तुरन्तरथ ल्यावतभयो है ( ४१ ) सोरथ तेजपुंज अरु दिब्य एकरस सदारहै अरु गुणशोभा करिकै अनूप है

जूझहिंसुभटसुरपुरपावहीं ३७ निशिचरबरूथविमर्दिगर्ज्जहिंभालुकपिदर्पितभये संग्रामआँगनसुभटसोवहिंरामशरनिकरनिहये ३८ दो०॥ हृदयविचार्य्यउदशबदनभानिशिचरसंहार मैंअकेलकपिभालुबहुमायाकरौंअपार ३९ चौ० ॥ देवनप्रभुहिपयादे देखा उरउपजाअतिक्षोभविशेखा ४० सुरपति निजरथतुरतपठावा हर्षसहितमातुललैआवा ४१ तेजपुंजरथदिब्यअनूपा विहँसिचढ़ेकोशलपुरभूपा ४२ चंचलतुरँगमनोहरचारी अजरअमरमनसमगतिकारी ४३ रथारूढ़रघुनाथहिदेखी धायेकपिबलपाइ विशेखी ४४ सहिनहिंजाइकपिनकैमारी तबरावणमायाविस्तारी ४५ सोमायारघुबीरहिंबाँची सबकाहूमानीकरिसाँची ४६ देखीकपिननिशाचरअनी बहुअंगदलक्ष्मणकपिधनी ४७ छं०॥ बहुबालिसुतलक्ष्मणकपीशबिलोकिमर्कटअपडरे जनुचित्रलिखित

तब श्रीरामचन्द्र बिहँसिकै रथपर चढ़ेहैं बिहँसे क्योंकि इन्द्रके रथपर हमचढ़ैंगे तोरावणको जीतहिंगे यह खुसामदि समुझिकै बिहँसे हैं ( ४२ ) रथके घोड़े चारिकैसे हैं चारीकही अपने चारगमन गुणगति बिषे मनको हरिलेतेहैं अरु अजरकही जराजो वृद्धता त्यहि करिकै रहित हैं सर्वकाल युवावस्थामें रहते हैं अमर हैं किसूकेमारे मरैनहींहैं अरु मनकी जिनकी ऐसी वेगगतिहै ( ४३ ) रघुनाथ जी को रथपर आरूढ़ देखिकै कपिविशेष बलपाइकै धावतभये हैं ( ४४ ) कपिनकै मारुसही नहीं जातिहै तब रावण मायाबिस्तार करतंभयो है ( ४५ ) जो मायारावण रच्यउहै सो रघुवीर को नहींलागि काहेते जीवकैमाया जीवहिमें लगै है परमेश्वरमें नहीं लगै है अपरसब काहूवह मायासांची करि मानीहै ( ४६ ) कवनिमाया रावण रचीहै निशिचरनकी कटक जब कपिनदेखा तहां अनेकन अंगद हनुमान् लक्ष्मण अरु कपिधनी कही सुग्रीव इत्यादिक देखे निशिचर एकौनहीं देखे है ( ४७ ) छंदार्थ॥ बहुबालिसुत अंगद हनुमान् सुग्रीव लक्ष्मण देखिकै कपि अतिडरे हैं सब आपन आपन स्वरूप अनेकन देखिकै लक्ष्मण समेत जनुचित्रमें लिखेखड़े चितैरहे हैं ( ४८ ) तब श्रीरघुनाथजी अपनी सेनाको चकितदेखिकै बिहँसिकै धनुषबिषे बाणसन्धान करतभये हैं तब एकशरते एक निमिषमें राक्षसीमाया हरिलीन है तब बानरनकी सेना हर्षकोप्राप्ति भई है श्रीरामचन्द्रको हरि क्यों कहा राक्षसीमाया हरीहै ताते हरीकहाहै श्लोक॥ हरिःहरंतिपापानिदुष्टचित्तैरपिस्मृतः ( ४९ ) दोहार्थ॥ तब श्रीरामचन्द्र कपिनकै सेना देखिकै बोले अब तुम श्रमितभयउ है देखहु हमारो रावणको द्वंद्वकही तीनिउँ कालमें तीनिहुंलोकमें न ऐसो युद्ध भयो हैं न होइगो जैसो युद्ध हमारोखड़े रावणको होयगो ( ५० ) इति

समेतलक्ष्मणजहँसोतहँचितवहिँखरे ४८ निजसेनचकितविलोकिहँसिशरचापसजिकोशलधनी मायाहरीहरिनिमिषमहँहर्षे सकलमर्कटअनी ४९ दो०॥ बहुरिरामसबतनचितयबोलेवचनगँभीर द्वन्द्वयुद्धदेखहुसकलश्रमितभयेकपिबीर ५०॥ * * *

चौ०॥ असकहिरथरघुनाथचलावा बिप्रचरणपंकजशिरनावा १ तबलंकेशक्रोधउरछावा गर्जततर्जतसन्मुखआवा २ जीत्यहुजोभटसंयुगमाहीं सुनुतापसमैंतिनसमनाहीं ३ रावणनामजगतयशजाना लोकपजाकेबन्दीखाना ४ खरदूषणकवन्धतुममारा बध्यउब्याधइवबालिबिचारा ५ निशिचरनिकरसुभटसंहारे कुम्भकर्णघननादहिमारे ६ बैरआजसबलेहुंनिबाही जोर-

श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेयुद्धकांडेरावणमायाप्रबलबिध्वंसनवर्णनंनामअष्टदशस्तरंगः१८॥ :: :: :: ::

दोहा॥ रामरावणहिंयुद्धजसतसनकालतिहुँलोक रामचरणउनइसलहरिदेवनहर्षसशोक १९॥ असकहिकै श्रीरघुनाथजी रथ आगे को चलावतभये हैं ब्राह्मणकेचरणमें शिरनाइकै ( १ ) तब लंकेश क्रोधकरिकै गर्जतकही क्रोधकरत तर्जतकही डाटत सन्मुख चलाआवतहै ( २ ) रावण श्रीरामचन्द्र से कहतहै हे तपस्वी जेतेभट तुमसमरविषे जीतेउहै सो सुभटनविषे संयुगकही गनतीहै पर तिनकी समानमैं नहींहौं ( ३ ) मैं सब जगत्को रोवावतहौं ताते मोरनाम जगत्में बिदितहै संपूर्ण जो लोकपति इन्द्रादिक हैं ते मेरेबंदीखाने कहीमेरे हुकुममें हैं ( ४ ) खरदूषण कवन्ध कह अरु बालिगरीबबानर त्यहिको तुमव्याधकीनाई बधकीनहै ( ५ ) अरु अमित बीर निशिचरन को तुम संहारकीन है कुंभकर्ण मेघनाद आदिक को मारिडारयउ है ( ६ ) आजु सबकर निबाहिलेउंगो जो रणभूमिते भागि नहीं जाहुगे ( ७ ) रावण श्रीरामचन्द्रसे कहतहै कि हे खल आजुकालके हवाले करौंगो मैं जो रावण कठिनहौं त्यहि के पालेपरयहु है तहां सरस्वती आनै अर्थकरती है आजु यहकाल जो खल है त्यहिको तुम्हारे हवाले करौंगो कालको खल क्योंकहा यहिकालमें रावणकै मृत्यु है सो काल श्रीरामचन्द्रके हाथ आयो है ताहीमें बधैंगे ( ८ ) रावणके यह दुर्बचन सुनिकै श्रीरामचन्द्र जाना कि कालके बशभयो है तब बिहँसिकै कृपानिधान कहते हैं तहां बिहँसे क्यों निजसखाके बीरमय बचनहै किंतु तूजीवको अभिमान समुझिकै बिहँसे हैं ( ९ ) श्रीरामचन्द्र कहते हैं हे रावण बीर तोर बचनसत्यहै परहमारे ऊपर अपनी मनुसाई करिदेखाउ जल्पबकही बारंबार अपनी प्रभुताई क्योंकहै हैकरिदेखाऊ ( १० ) छंदार्थ॥ श्रीरामचन्द्र कहते हैं हे रावण त्रैलोक्यमें बीरन विषे तोरिलीकहैजल्पना

णभूमिभाजिनहिंजाही ७ आजुकरौंखलकालहवाले परयउकठिनरावणकेपाले ८ सुनिदुर्वचनकालवशजाना कह्यउबिहँसि तबकृपानिधाना ९ सत्यसत्यसबतवप्रभुताई जल्पसिजनिदेखावमनुसाई १० हरिगीत छं०॥ जनिजल्पनाकरिसुयशनाशहि नीतिसुनितैबरुक्षमा संसारमहँपूरुषत्रिविधि-पाटलरसालपनससमा ११ यकसुमनप्रदयकसुमनफलयकफलैकेवललागहीं यक कहहिंकरतनकरहिंकहहिंकरहिंयकनहिंबागहीं १२ दो०॥ रामबचनसुनिबिहँसिकहिमोहिंसिखावतज्ञान बैरकरततबनहिं

कही बारबार तैं अपने मुखते अपनी बड़ाई करिकै अपने सुयशको क्यों नाशकरै है यहनीतिहै कि संसार महँ तीनिप्रकारके पुरुषहैं एकै पाटल तरुकेसमान अरु एकै रसालको कही आंबतरुके समान अरु एकै पनस कही कटहरतरु के समान ( ११ ) एकैपुरुष कहत बहुतहैं कर्त्तब्यनहीं है ते पाटलतरुके समानहैं केवल फूलैलगे हैं रसफल नहीं हैं अरु एकपुरुष जो कहते हैं सो करते हैं जैसे आंबफूलत है पुनि फलत है अरु एकै पुरुष कहते नही हैं मनमें सिद्धांत करते हैं सो करिदेखावते हैं जैसे कटहरमें केवल फलै लागते हैं फूलफल एकही हैं तैसे ह रावण तैं जल्पना न करै अपनी शूरता करिकै देखाइदे ( १२ ) दोहार्थ॥ श्रीरामचन्द्रके बचन सुनिकै रावण निर्भय उत्तरदेत है विहँसिकै कहत है देखिये तो अब मोको ज्ञान सिखावतहौ बैरकरतकै तौ नहीं डरयउहै अब सन्मुख संग्राम बिषे मेरेभयते डेराइकै प्राण प्रियलागे हैं तातेज्ञान सिखावतहौ जाते लराई न होइ बीररसविषे सख्यरस जानब ( १३ ) तब दशकंधरक्रोध संयुक्त दुर्बचनकहिकै कुलिशकही बज्रके समान अनेकबाण छांड़तभयो है ( १४ ) तहां नानाप्रकारके शिलीमुख जेबाणहैं ते धायेकही चले हैं दिशिकही चारिउदिशा विदिशिकही दिशनके कोणको अरु गगनविषे बाण परिपूर्ण ह्वइरहे हैं ( १५ ) तब श्रीरघुनाथजी एकअग्निबाण छांड़त भये हैं एकक्षणमें निशिचरकेबाण भस्मह्वइगये हैं ( १६ ) तब खिसिआइ कही रिसियाइकै तीव्र अचूकशक्ति रावण छांड़त भयोहै तब श्रीरामचन्द्र एक बाणतेमारा शक्ति रावणकेपास फिरिगई है ( १७ ) कोटिन शक्ति त्रिशूल रावण पवाँरबकही मारतहै त्यहिको रघुनाथजी बिनाप्रयासही बाणनते काटिडारते हैं ( १८ ) रावणके बाणसब विफल होते हैं

डरय़उअबलागेप्रियप्रान १३ चौ०॥ कहिदुर्वचनक्रोधदशकन्धर कुलिशसमानलागछांड़ैशर १४ नानाकारशिलीमुखधाये दिशिअरुविदिशि-गगनमहिछाये १५ अनलबाणछांड़ेरघुबीरा क्षणमहँजरेनिशाचरतीरा १६ छांडय़सिब्रह्मशक्तिखिसिआई बाणसंगप्रभुफेरिपठाई १७ कोटिनचक्रत्रिशूलपवाँरै विनुप्रयासप्रभुकाटिनिवारै १८ विफलहोहिंरावणशरकैसेखलकेसकलमनोरथजैसे १९ तबशतबाणसारथिहिमारा परय़उभूमिजयरामपुकारा २० रामकृपाकरिसूतउठावा तबप्रभुपरमक्रुद्धकहँपावा २१ छं०॥ भयेक्रुद्धयुद्धविरुद्धरघुपतित्रोणशायककसमसे कोदण्डपुनिअतिचण्डसुनिमनुजादसबमारुतग्रसे २२ मन्दोदरीउरकम्पकम्पितकमठभूधरशेषसे चिक्करहिंदिग्गजदशनगहिमहिदेखिकौतुकसुरहँसे २३ दो० ॥ छांड़िशरासनश्रवणलगिछांड़ेविशिख

कैसे जैसे खलके मनोरथ वृथा हैं ( १९ ) तब रावण सौबाण सारथीको माराहै सो भूमिमें गिरिपरय़उहै जयश्रीराम कहिकै ( २० ) श्रीरामचन्द्र कृपाकरिकै सूतको उठाइकै रथके अग्रभागमें बैठाइदीन है तब श्रीरामचन्द्र परमक्रोधको प्राप्तिभये हैं ( २१ ) छन्दार्थ॥ हे पार्वती श्रीरामचन्द्र परमक्रोधित होतभये रणके विरुद्धविषे तबत्रोणके बाण कसमसाइ उठे हैं अरु कोदंड चढ़ाइकै पनचको टंकोर करतभये हैं त्यहिकी रवकैधुनि सुनिकै मनुजादजे राक्षसहैं ते बिकल ह्वइगये हैं त्यहिके शब्दके पवनते ग्रसितभये हैं ( २२ ) अरु मन्दोदरीकर उरकांपि उठय़उहै अरु कमठ अरु भूधर सुमेरु आदिक अरुशेषकांपि उठेहैं अरु भूजो पृथ्वीहैसोअतिशयडगमगाइउठीहै अरु दिशनकेदिग्गज चिक्कारकरते हैं दांतनते महिको दबावते हैं यहकौतुक देखिकै देवता हँसते हैं श्रीरामचन्द्रकर प्रभाव समुझिकै कि रावणको वध अब अवश्य होइगो ( २३ ) दोहार्थ॥ तब शरासन जो धनुष है त्यहिबिषे बाणसंधानिकै श्रवणलगि तानिकै करालविशिख जे बाण सो छांड़त भये हैं सो बाणनभ मार्गविषे चले हैं जनु अनेकनसर्प लहलहातकही अतिनिर्भय क्रोधित फुंकरत चलेजाते हैं ( २४ ) श्रीरामचन्द्र के बाणचले हैं जनुसपक्ष उरगहैं प्रथमहिं रावणके सारथी अरु तुरंगको नाशकरि दीनहै ( २५ ) पुनि केतु पताका सहित रथको नाशकरिदीनहै तब अन्तर थकिगयो है पर मेघइव गर्जत भयो है ( २६ ) तब रावण खिसिआइकही रिसिआइकै दूसरे रथपर चढ़िकै अनेकप्रकारके अस्त्र शस्त्र छांड़त भयो है ( २७ ) त्यहि रावणके अनेकन आयुध बिफल

कराल रामबाणमारगचलेलहलहातजनुव्याल २४ चौ०॥ चलेबाणसपक्षजनुउरगा प्रथमहिंहत्योसारथीतुरगा २५ रथविभंजिहतिकेतुपताका गर्जाअतिअन्तरबलथाका २६ तुरतआनरथचढ़िखिसिआना छांडय़सिअस्त्रशस्त्रविधिनाना २७ निफलहोहिं सबउद्यमताके जिमिपरद्रोहनिरतमनसाके २८ तबरावणदशशूलचलावा बाजिचारिमहिमारिगिरावा २९ तुरँगउठाइकोपिरघुनायक खैंचिशरासनछांड़ेशायक ३० रावणशिरसरोजबनचारी चलेरघुबीरशिलीमुखधारी ३१ दशदशबाणभालसबमारे निसरिगयेचलेरुधिरपनारे ३२ श्रवतरुधिरधायउबलवाना प्रभुपुनिकृतधनुशरसंधाना ३३ तीसतीररघुबीरपवाँरे भुजनसमेतशीशमहिपारे ३४ काटतहीपुनिभयेनवीने रामबहोरिभुजाशिरक्षीने ३५ कटतझपटपुनिनूतनभये प्रभुबहुबारबाहुशिरहये ३६

ह्वइजाते हैं कैसे जैसे खलमनुष्य परावा द्रोह मनमें ल्यावते हैं सो वृथाहै ( २८ ) तब रावण कोपकरिकै दशत्रिशूल चलावत भयोहै रघुनाथ जी के रथके घोड़े मारिकै महिविषे गिराइदीनहै ( २९ ) तब श्रीरघुनाथजीघोड़नको उठाइकै कोपकरिकै धनुषखैंचिकै अनेकबाण छांड़तभये हैं ( ३० ) श्रीरामचन्द्र के शिलीमुख जे बाणहैं धारीकही पंक्तिकीपंक्ति

चले हैं रावणके शिरसरोज कही कमलके बनहैं चारीकही त्यहिके चर भक्षण करिबे को गजइवहैं ( ३१ ) पुनिरावणके दशशीश सो एकएक शीशविषे दश दशबाणश्रीरामचन्द्र मारते भये हैं सोबाण शीशफोरिकै निकसिगये हैं रुधिरके पनारे चले हैं ( ३२ ) रुधिरश्रवत रावणबीर श्रीरामचन्द्रके सन्मुख धावतभयो है तब पुनि श्रीरामचन्द्र शरसन्धान कीन है ( ३३ ) तहां तीसशर रघुनाथजी पवांतरतेकही मारतेभये हैं बीसौभुज दशौशीश काटिकै महिमें डारिदीन है ( ३४ ) श्रीरामचन्द्र के बाण रावणके शीश भुजा काटिडारे हैं तबहीं तुरन्त रावणके शीश भुज नवीन होइ आये हैं पुनिबहोरिकै श्रीरामचन्द्र शीश भुजा काटिडारेहैं ( ३५ ) भुज शीश कटतकै झपटिकही शीघ्र पुनि शीश भुज नवीन बढ़िआवते हैं श्रीरामचन्द्र यहीप्रकारते बारम्बार काटतेहैं अरु नवीनह्वइ आवते हैं ( ३६ ) पुनि पुनि कही बारबार श्रीरामचन्द्र अपने बाणनते रावणके शीश भुज काटते हैं पुनिपुनि होतहैं कोशलाधीश कौतुककहीरणकेलि अतिशय करतेहैं ( ३७ ) तहां शिर अरु बाहुनभ विषे छाइरहे हैं मानहुँ अमित राहु केतु उदयभयेहैं तहां शिर राहुके भुज केतुहैं ( ३८ ) छन्दार्थ॥ जनुराहु केतु अमित प्रचण्ड नभ विषे श्रोणित श्रवत धावतेहैं तहां रघुवीरके प्रचण्डबाणलागतहैं परन्तु महिविषे नहीं गिरि पावतेहैं ( ३९ ) एकएक बाण शीश

पुनिपुनि प्रभुकाटतभुजशीशा अतिकौतुकीकोशलाधीशा ३७ रहेछाइनभशिरअरुबाहू मानहुँअमितकेतुअरुराहू ३८ छं० ॥ जनुराहुकेतु अनेकनभपथश्रवतश्रोणितधावहीं रघुबीरतीरप्रचंडलागहिंभूमिगिरननपावहीं ३९ यकएकशरशिरनिकरछेदेनभउड़तइमिसोहहीं जनुकोपिदिनकरनिकरजहँतहँबहुविधुन्तुदपोहहीं ४० दो०॥ जिमिजिमिप्रभुहरतासुशिरतिमितिमिहोहिं अपार सेवतविषयबिबर्द्ध जिमिनितनितनूतनमार ४१ चौ० ॥ दशमुखदेखिशिरनकैबाढ़ी बिसरामरणभईरिसगाढ़ी ४२ गज्ज्र्यउमूढ़महाअभिमानी धायोदशौशरासनतानी ४३ समरभूमिदशकन्धर-कोप्यउ बर्षिबाणरघुपतिरथतोप्यउ ४४ दंडएक

भुज प्रतिछेदे हैं जनु रवि कोपिकै अपनी अनेक किरणि करिकै अनेक बिधुंतुद जे राहु केतु हैं तिन कोपोहे हैं ( ४० ) दोहार्थ॥ श्रीरामचन्द्र जिमि जिमि रावणके शीश भुजकाटते हैं तिमितिमि अपार बढ़त जाते हैं जिमिकामसेवनकरतसंते कामी विषयी पुरुषके काम बढ़त जात है ( ४१ ) रावण देखा कि मेरे शिर काटेजाते हैं आकाशमें पूरिरहे हैं अरु मैं जो नवीन पावतहौं सो महादेवकी कृपाते यह समुझिकै मरणतौ बिसरि गयो है परन्तु अतिक्रोध करतभयोहै ( ४२ ) तब महाअभिमानी जो रावणसो गर्जिकै बीसौ हाथते दश धनुष बाणतानिकै श्रीरघुनाथजी के सन्मुख रथ दौरावत भयो है ( ४३ ) हे पार्बती समरभूमि बिषे दशकन्धर कोपिकैअपने बाणकरिकै श्रीरामचन्द्रको रथ तोपिदियो है बाणनको मण्ड करि दियो है ( ४४ ) एकदण्ड रथनहीं देखिपरयउ है जैसे निहारकही कुहिरा सघनके परेते सूर्यनहीं देखि परयउ है ( ४५ ) तहां यह ब्रह्मादिक देवतन देखिकै हाहाकार करतभये हैं तब श्रीरामचन्द्र कोपिकै वोहीबाणकेमण्डपके भीतर कार्मुक जो धनुष त्यहि बिषे बाणसन्धान करत भये हैं ( ४६ ) तब श्रीरामचन्द्र अपने बाणनते रिपुके बाणनके मण्डपको नाशकरिदीन है अरु रावणके शीश भुज पुनि पुनि काटिडारे हैं ते शीश भुज दिशि बिदिशि महि आकाशबिषे पटिरहे हैं ( ४७ ) काटे शिर जे हैं ते नभबिषे धावते हैं अरु मारु मारु जय जय शब्दकरिकै भय उपजावते हैं ( ४८ ) यह शब्द करते हैं कहां लक्ष्मण हनुमान् कपीश अंगद हैं कहांकोशलाधीश रघुबीरहैं ( ४९ ) छन्दार्थ॥ कहां राम यह शब्द हहास करि

रथदेखिनपरेऊ जिमिनिहारमहँदिनमणिदुरेऊ ४५ हाहाकारसुरनतबकीन्हा तबप्रभुकोपिकार्म्मुकलीन्हा ४६ शरनिवारिरिपुकेशिरकाटे तेदिशिबिदिशिगगनमहिपाटे ४७ काटेशिरनभमारगधावहिं जयजयधुनिकरिभयउपजावहिं ४८ कहँलक्ष्मणहनुमानकपीशा कहँरघुबीरकोशलाधीशा

४९ छं० ॥ कहँरामकहिशिरनिकरधावहिंदेखिमर्कटभजिचले संधानिधनुरघुबंशमणिहँसिशरनिशिरबेधेभले ५० शिरमालिकागहिकालिका-करवृन्दवृन्दनिबहुमिलीं करिरुधिरसरिमज्जनमनहुंसंग्रामबटपूजनचलीं ५१ दो० ॥ पुनिरावणअतिकोपकरिछांड्यसिशक्तिप्रचंड सन्मुखचली-विभीषणहिंमनहुंकालकरदंड ५२ चौ० ॥ आवतशक्तिदेखिखरधारा प्रणतारतिहरबिरदसंभारा ५३ तुरतविभीषणपाछेमेला सन्मुखरामसह्यउ-सोइसेला ५४

करि आकाश बिषे रावण के शिर धावते हैं सो सुनिकै बानरनकी सेनाभागिचली है पुनि श्रीरघुनाथजी धनुष सन्धान करिकै बाणनते रावणके अनेकन शिर भली प्रकार बेधिदिये हैं ( ५० ) तिन शिरनकर मालिकाकहीमाला बनायकै कालिका जे हैं ते वृन्दवृन्द मिलिकै रुधिरकी नदी जे हैं तिनबिषे मज्जनकरिकै मानहुं संग्रामबटरूप पूजिबेको चली हैं ( ५१ ) दोहार्थ॥ पुनि यहिके उपरांत रावणकोपकरिकै प्रचण्डशक्ति विभीषण पर छांड़त भयो है सो बिभीषणके सन्मुख चलतिभई है मानहुं कालकरदण्ड है ( ५२ ) रावणकै शक्तिखरधार आवत देखिकै श्रीरामचन्द्र प्रणतार्त्तिहर आपनबिरद सँभारत भये हैं ( ५३ ) तब तुरन्त बिभीषणको पाछेमेलिकै सन्मुखसेला जो शक्ति है सो अपनी छातीपर सहत भयेहैं ( ५४ ) जब श्रीरामचन्द्र के शक्तिलागी तब कुछ मूर्च्छित ह्वैकै पृथ्वी में गिरिपरे हैं सोकालशक्ति है अचूक है रावणको ब्रह्मैदीन है ताते श्रीरघुनाथजी ब्रह्माकीवाक्य सत्यकीन है अरु संग्रामकी शोभा देखावते हैं आपु रणखेल करतेहैं सो देखिकै ब्रह्मादिक देवता मुनि सिद्ध बिकलहोते हैं ( ५५ ) तहां श्रीरामचन्द्र मूर्च्छात्यागिकै उठिठाढ़भये हैं तब बिभीषण जाना कि श्रीरामचन्द्र मेरेहेतु श्रमको प्राप्तिभये हैं तब बिभीषण गदालैकै रावणके सन्मुख क्रोधकरिकै धावतभये हैं ( ५६ ) तब रावणके समीपजाइकै बिभीषण कहते हैं रे कुभागी शठ मन्दमति कुबुद्धी तैं सुर नर मुनि नागइत्यादिक सबके विरोधी हसि आजु सो फल मैं देहौं ( ५७ ) हे खल तैं सादरकही अतिआदरते शिवको शीशचढ़ाये है सो महादेवकी उदारता करिकै एक एकके कोटि कोटि पाय है ( ५८ ) हे खल त्यहिकारण करिकै अबताईं तैं वचेसिहै अब तेरे शीशपर तोरकाल नाचतहै महादेवको वरदान पूर्ण ह्वइगयो ( ५९ ) हे शठ श्रीरामचन्द्रते बिमुखह्वैकै तैं सुखसम्पदा चहतहसि हे पार्वती असकहिकै रिसभरिकैगदा घुमाइकै रावण की

लागिशक्तिमुर्च्छाकछुभई प्रभुकृतखेलसुरनबिकलई ५५ देखिबिभीषणप्रभुश्रमपाये गहिकरगदाक्रोधकरिधाये ५६ रेकुभाग्यशठमन्दकुबुद्धी तैंसुरनरमुनिनागविरुद्धी ५७ सादरशिवकहँमाथचढ़ाये एकएककेकोटिनपाये ५८ त्यहिकारणखलअबलगि बाचा अबतवकालशीशपरनाचा ५९ रामबिमुखशठचहसिसम्पदा असकहिहन्यसिमाँझउरगदा ६० छं०॥ उरमाँझगदाप्रहार

छातीमें मारतभये हैं तहां बिभीषणको तो परम भागवतनमें मुख्यगनती है तहां क्रोध बिरोध भागवतनिबषे शास्त्रबर्जितकरेहै तहां प्रमाणहै प्रसिद्ध श्लोकएक॥ प्रह्लादनारदपराशरपुण्डरीक व्यासांबरीषशुकशौनकभीष्मकाद्याः रुक्मांगदार्जुनवशिष्ठविभीषणाद्याःएतानहंपरमभागवतान्नमामि १ देखिये तौ शास्त्रनबिषे पूर्वापर बिशेष कहा है मध्यमें सामान्यकहा है तहां प्रह्लादको पूर्बकहा है सो दानव बंशमें अरु बिभीषण को परबिषे कहा है सो राक्षस बंशबिषे अरु महामहा मुनिनको मध्यमें कहाहै तहां प्रमाणहै व्याकरणबिषे पूर्वापर विशेष तहां परम भागवतनबिषे प्रह्लाद बिभीषण बिशेषि ठहरे हैं काहेते हिरण्यकश्यप अरु रावणयेद्वौ त्रैलोक्यबिरोधी बिजयीबीर भये हैं देवमुनि सन्त महि गउ ब्राह्मण इत्यादिकनके बिरोध करिकै सबको जीतिलीन है तिन दुष्टन के संगमेंरहिकै अरु तिनकीसभाके मध्य बिषे बैष्णवधर्म को निशान गाड़िदीन है अचल रहे हैं अरु तेही वैष्णवधर्म ते उनहूंको कृतार्थ कीन है बंशकी काकही अनेकन दुष्ट जीवनको कृतार्थ कीनहै काहेते ऐसे परम भागवतन हेतु प्रकृति मण्डल बिषे प्रमाण श्लोकार्द्ध॥ परित्राणायसाधूनांविनाशायचदुष्कृतां ॥ तहां जे श्रीरामबिरोधी बिमुखजीव हैं तिनको परम भागवत जे हैं ते क्रोध करिकै दण्डदैकै शुद्धकरिकैपरमपदको

पठाइदेते हैं अरु शुद्धकरिबेको देशकाल सामर्थ्यनहीं तब साधुनबिषे क्रोध बिरोध अनुचित है रामबिरोधी पर क्रोधकरिबेको उचित है सो शुद्ध सात्विक क्रोधहै ( ६० ) छन्दार्थ॥ तहां बिभीषणकर गदा घोरकठोर लागतसंते रावण रथते महिबिषे गिरि पर्‍योहै दशौबदनमें रुधिरचल्यो है पुनि सँभारिकै उठिकै रिस भरिकै यह कहिकै कि तेरी वैराग्यनमें गनती है कछु बीरन बिषे नहीं है यह कहत धावत भयो है ( ६१ ) तहां जब रावण कहा कि बीरनमें गनती नहीं है सो सुनिकै बिभीषण गदाडारिकै धावतभये हैं खलआउ हमते मल्लयुद्ध

घोरकठोरलागतमहिपरेउ दशबदनश्रोणितश्रवतपुनिसम्भारिधायोरिसभरेउ ६१ द्वौभिरेअतिबलमल्लयुद्धविरुद्धएककहियकहने रघुबीरबलगर्व्वितविभीषणघालिनहिंताहूगने ६२ दो०॥ उमाविभीषणरावणहिंसन्मुखचितवकिकाउ भिरतसोकालसमान इवश्रीरघुबीरप्रभाउ ६३ चौ० ॥ देखाश्रमितविभीषणभारी धायेहनूमानगिरिधारी ६४ रथतुरंगसारथीनिपाता हृदयमाँझ त्यइँमारेउलाता ६५ ठाढ़रहाअतिकम्पितगाता गयउविभीषणजहँजनत्राता ६६ पुनिरावणतेहिहन्योप्रचारी चलागगनकपि

करु तब द्वौ अति बलवान् भिरे हैं जनु राहु अरु सूर्य इकठाम ह्वइकैलरते हैं एकएकन को बिरोध करिकै मुष्टिकनते हनते हैं अनेक आपन आपन घातपेंच करतेहैं शीशते शीश पगते पग छातीते छाती करतेकरभिरिकै महायुद्ध करतेहैं तहां रावण क्यों आयुध डारिदियो है यह बिचारिकै कि जबताईं भागवतनके शरीरते स्पर्श न करैगो तबताईं मेरोशरीरन शुद्धहोइगो प्रमाण श्लोक॥ साधूनांदर्शनंपुण्यंस्पर्शनंपापनाशनं संभाषणंमहापुण्यंसेवनंपरमंपदं १ तहां द्वौ लरते हैं रघुनाथजी देखते हैं तहां रघुवीर के बलते विभीषण गर्वित है रावण को घालव कही अपने अंग में पकरिकै मुष्टिका घालत है रावण को कछु नहीं गनतेहैं ( ६२ ) दोहार्थ। हे पार्बती बिभीषण रावणके सन्मुख कबहुं नहीं चितैसकै अब रामप्रतापते कालकेसमान रावणते युद्ध करतेहैं ( ६३ ) जब हनुमान्जी देखा कि बिभीषण बहुत श्रमितभये हैं तब गिरिधारीकही एकभारी पर्वतलैकै धाये हैं ( ६४ ) रावणके रथ घोड़ा सारथी सहित निपातिकै कूदिकै रावण की छातीमें लातमार्‍यो है ( ६५ ) तहां रावणके गात कांपिउठे हैं पर अपने जोरते गिर्‍यउ नहीं खड़ारह्यउहै तब बिभीषण जनत्राता जे श्रीरामचन्द्र तिनके समीप जातभये हैं ( ६६ ) तब रावण प्रचारिकै हनुमान्जी पर मुष्टिका चलावतभयो तब हनुमान्जी लंगूरपसारिकै आकाशको उड़िचलेहैं ( ६७ ) तब हनुमान्कै पूंछ, रावण गहतभयो रावण सहित हनुमान् जी आकाशको जातेभये हैं तब हनुमान् जी अतिप्रबलफिरिकै रावणते भिरतभये हैं ( ६८ ) आकाश अन्तरिक्ष विषे युद्धकरते हैं द्वौसमयोधा हैं एकएकनको क्रोधकरिकै हनतेहै ( ६९ ) नभविषे अपने अपने गाँ पेंच छलबल अनेकरिकै लड़तेहैं आकाशबिषे शोभितहैं जनु कज्जलको पर्वत अरु सुमेरु द्वौलरतेहैं नीचेते श्रीरामचन्द्र बिहँसि बिहँसि देखते हैं अरुआकाश बिषे देवता रामराम कहिकै भागते हैं अरु सूर्य्य को रथ अद्भुत

पूंछ,पसारी ६७ गह्यसिपूंछ,कपिसहितउड़ाना पुनिफिरिभिरेप्रबलहनुमाना ६८ लरतअकाशयुगलसमयोधा हनतएकएकनकरिक्रोधा ६९ सोहहिंनभछलबलबहुकरहीं कज्जलगिरिसुमेरुजनुलरहीं ७० बुधिबलनिशिचरपरहिनपारा तबमारुतसुतप्रभुहिसँभारा ७१ छं० ॥ सम्भारिश्रीरघुबीरधीरप्रचारिकपिरावणहने महिपरतपुनिउठिलरतदेवनयुगलकहँजयजयभने ७२ हनुमानसंकटदेखिमर्क्कटभालुक्रोधातुरचले रणमत्तरावणसुभटसकलप्रचंडभुजबलदलिमले ७३ दो० ॥ रामप्रचारेबीरसबधाये

देखिबेको थँभिरहाहै जनु द्वौमन्दराचल मिलिकै नभ समुद्रको मथतेहैं मथिकैबीररस रत्न प्रकटिदेखावतेहैं ( ७० ) बुद्धिकरिकै बलकरिकै रावण हनुमान्के पारेनहीं परतहै तहां नभबिषे चारिदण्ड युद्धभयो है ब्रह्मांडभरि अकुलाय उठेहैं तब हनुमान्जी श्रीरामचन्द्रको संभाराकही सुमिरणकिया ( ७१ ) छंदार्थ॥ श्रीरघुवीर रणधीर तिनको संभारिकै कपि

जेहनुमान् तेबज्रइव मुष्टिका रावणकी छातीमें हनतभये हैं रावणको पृथ्वीमें लैगिरे हैं पुनि रावण संभारिकै हनुमान्ते मल्लयुद्ध करतहै कबहूं हनुमान् गिराइदेते हैं कबहूं रावण गिराइदेतहै काहूकीपीठि महिमें नहीं परैहै द्वौमहाबीर छोड़ि छोड़ि संभारि प्रलयकालके मेघइव गर्जि गर्जि लरतेहैं श्रीरघुनाथजी लक्ष्मणजी खड़े देखतेहैं द्वौकरबल बुद्धि मनमें सराहतेहैं अरु आकाश बिषे ब्रह्मादिक देवता दोऊकी बीरता सराहि सराहि जयजयकार शब्दकरतेहैं ( ७२ ) रावण हनुमान्को युद्धमें व्याकुलकरिदियोहै तब हनुमान् को श्रमित देखिकै भालु मर्कटबीर रावणके ऊपर क्रोधकरिकै धावतभये हैं तहां रावण वीररस मदपान करिकै रणबिषे मत्तह्वै रह्यउहै भालु कपिवीर समीप आवते हैं तिनको अपने भजन के बलते मर्दि मर्दि पृथ्वीबिषे डारिदेतहै ( ७३ ) दोहार्थ॥ तब श्रीरामचन्द्र रावणकी बीरता मनमेंसराहिकैभालु कपि वीरनको प्रचारतभये हैं ते प्रचण्ड कोपकरिकै धाये हैं तहां रावणते हनुमान् ते मल्लयुद्ध को देखत प्रसन्न ह्वैरहे हैं पुनि अपर बीरनको प्रचार हैं तहां रावणकी माया सबको देखावते हैं तहां रावण बीरनकै प्रबलतादेखिकै अपनी मायाको पाखण्ड सो प्रकट करतहै ( ७४ ) तब रावण एक क्षण अंतर्द्धान ह्वइकै आपन अनेकन स्वरूप प्रकट कियो है ( ७५ ) रघुपतिके कटकमें जेते भालु कपि रहे हैं तहां तहांते रावणदेखिपरे हैं एक एक भालु कपिनके आगे एक एक रावण देखिपरे हैं यह आश्चर्यितमाया करत भयो है ( ७६ ) तब कपिन अमित दशशीश देखिकै जेते

## कीशप्रचंड कपिदलप्रबलविलोकित्यइँकीनप्रकटपाखंड ७४ चौ० ॥ अन्तरधानभयोक्षणएका पुनिप्रकट्यसिखलरूपअनेका ७५ रघुपतिकटकभालुकपिजेते तहँतहँप्रकटदशाननतेते ७६ देखेकपिनअमितदशशीशा भागेभालुबिकटभटकीशा ७७ चलेबलीमुखधरहिंनधीरा त्राहित्राहिलक्ष्मणरघुवीरा ७८ दशदिशिकोटिनधावहिंरावन गर्ज्जतघोरकठोरभयावन ७९ डरेसकलसुरचलेपराई जियकैआशतजहुसबभाई ८० सबसुरजितेएकदशकन्धर अबबहुभयेतकहुगिरिकन्दर ८१ रहेविरञ्चि

भालु कपि भटरहे तेते विकल ह्वइकै भागिजात भये हैं ( ७७ ) बलीमुख जे बानर हैं ते धीरनहीं धरते हैं लक्ष्मण रघुबीर पुकारि पुकारि त्राहि त्राहि करत भागे चलेजाते हैं ( ७८ ) हे गरुड़ दशौदिशा बिषे कोटिनरावणधावते हैं घोर कठोर भयदायक शब्दकरत गर्जत हैं ( ७९ ) तब इन्द्रादिक देवता डरिकै पुकारिकै कहते हैं हेभाइहु भागहु अब जियबेकै आश त्यागिदेहु किंतु जयकीआश तजहु ( ८० ) यह कहते हैं हे भाइहु एक रावणने सबको जीतिलियो है देखिये तौ परमेश्वरकै विचित्रगति है अब अनेक रावण देखिपरते हैं अब हमारकहूं ठेकानानाहिं है ताते भागिकै सुमेरुहिंगिरि की कन्दरातकहु देखिये तौ देवता ऐसे अज्ञान हैं नतौ श्रीरामचन्द्र को प्रताप जानहिं नतौ राक्षसीमाया जानहिं काहेते कि सदा राजगद्दीपर रावण एकैस्वरूप रहा है अब यहिकालमें संग्रामविषे अपनी मायाते अनेकन स्वरूप देखिपरते हैं ताते बृथा है अरु देवतन अनेक रावण सत्यकरिकै मानाहै यह महातामिस्त्र अविद्याकही देखिये तौ त्यहि देवता होबेके निमित्तिक बड़ेबड़े शास्त्रकेवक्ता धनमान् यज्ञ तपआदिक करते हैं नरतन पाइकै श्रीरामचन्द्रको नहीं भजते हैं ऐसे अज्ञानी हैं ( ८१ ) त्यहि देवतनके समाजविषे ब्रह्मा शिवादिक बृहस्पति रहेहैं अरु अपर जे सिद्ध मुनि ज्ञानीरहे हैं ते श्रीरामचन्द्रके प्रभावको कछु कछु जानते हैं अरु महादेव बहुत जानते हैं काहेते भक्तराज हैं ( ८२ ) छन्दार्थ ॥ जिन श्रीरामचन्द्रकर प्रताप जाना है ते देवता बानरधीरखड़े रहे हैं अपरजे हैं ते रावणको अनेकरूप सत्यमाने हैं भालु कपि विचले हैं त्राहि त्राहि रघुबीर कृपालु असकहत अति भयातुरते भागे हैं यह संग्रामविषे यह उक्तिधुनि है कि रावण श्रीरामचन्द्रको अरु देवतन को अरु ऋच्छनको अरु बानरनको अपनी बीरता अरु माया देखावत है कि मैं ऐसो प्रतापी सखाहौं ( ८३ ) हनुमान् अंगद नलनील आदिक

## शम्भुमुनिज्ञानी जिनजिनप्रभुमहिमाकछुजानी ८२ हरिगीतछं० ॥ जानाप्रतापतेरहेनिर्भयकपिनरिपुमानेफुरे चलेबिचल मर्क्कटभालुसकलकृपालुपाहिभयातुरे ८३ हनुमन्तअंगदनीलनलअतिबललरतरणबाँकुरे मर्दहिंदशाननकोटिकोटिनकपटभूभटअंकुरे ८४

दो० ॥ सुरबानरदेखेबिकलहँसेकोशलाधीश सजिविशिखासनएकशरहतेसकलदशशीश ८५ चौ० ॥ प्रभुक्षणमहँसबमायाकाटी जिमिरबिउदयजाहितमफाटी ८६ रावणएकदेखिसुरहर्षे फिरेसुमनबहुप्रभुपरबर्षे ८७ भुजउठाइरघुपतिकपिफेरे फिरेएकएकनतबटेरे ८८ प्रभुबलपाइभालुकपिधाये तरलतमकिसंयुगमहिआये ८९ करतप्रशंसासुरत्यहिंदेखे भयउएकमैं

बड़े बड़े बलवान् जे हैं तेमायावी रावणते लरते हैं रणविषे बांकुरेहैं कोटिन रावणको मर्दते हैं पुनि अंकुरकही असंख्यभटभूपर प्रकटहोते हैं ( ८४ ) दोहार्थ॥ तब श्रीरामचन्द्र देवतन बानरनको विकल देखा है तब रावणकी मायादेखिकै हँसेहैं तब विशिखासन कही विशिख जेबाण हैं तिनकर आसन धनुष तिनविषे एकबाण संधान करिकै अनेकमायाबी रावणके स्वरूप नाशकरि दिहिनि है ( ८५ ) प्रभु एकैबाणते एकक्षणमें रावण की माया काटिडारी है जैसे रबिके उदयते अंधकार फाटिजात है ( ८६ ) तब एकरावण देखिकै देवता भागेजातेरहैं सो फिरिकै हर्षिकै श्रीरामचन्द्र की स्तुति करिकै फूलबर्षते हैं ( ८७ ) अरु ऋच्छ बानरनकी सेना भागीजातरहै तिनको बिहँसिकै भुजा उठाइकै रघुनाथजी पुकारिकै फेरते भये हैं एक एकनको टेरिलीनहै ( ८८ ) तब भालु कपि फिरिकै प्रभुके भुजनकर बलपाइकै तरलकही अतिशय क्रोध बलसंयुक्त तमकिकही कूदि कूदिधाये हैं महिबिषे संयुगकही रावणके सन्मुखआइकैप्राप्तिभयेहैं ( ८९ ) तहां देवता श्रीरामचन्द्रकी प्रशंसा करते हैं सो सुनिकै रावण क्रोधकरिकै यहकहत है कि इन देवतन मोको एककरिकै जाना है ( ९० ) रावण कहत है देवतनको हे शठहु तुमसदाके मेरे मरायलहौ इतना कहिकै गदा लैकै गगनपंथको धावतभयो है ( ९१ ) हाय हाय करत देवता भागेहैं तब रावण कहत है हे खलहु मोरेआगे कहां जाहुगे ( ९२ ) तब देवतनको बिकल देखिकै अंगदने कूदिकै नभविषे रावणको पदगहिकैभूमिमें गिराइदीनहै ( ९३ ) छन्दार्थ॥ अरु गहिकै भूमिमें पछारिकै एकलात मारिकै श्रीरामचन्द्रके समीप जातभये हैं तब रावण संभारिकै उठिकै अतिघोरकठोर शब्दते गर्जतभयो है ( ९४ ) पुनि दापकही क्रोधते उठिकै बीसहु

इनकेलेखे ९० शठहुसदातुममोरमरायल असकहिकोपिगगनपथधायल ९१ हाहाकारकरतसुरभागे खलहुजाउकहँमोरेआगे ९२ बिकलदेखिसुरअंगदधाये कूदिचरणगहिभूमिगिराये ९३ छं० ॥ गहिभूमिपारेउलातमारेउ बालिसुतप्रभुपहँगयो संभारिउठिदशकंठघोर-कठोररवगर्जतभयो ९४ करिदापचापचढ़ाइदशसंधानिशरबहुबर्षई कियसकलभटघायलभयाकुलदेखि निजबलहर्षई ९५ दो० ॥ तबरघुपतिलंकेशकरशीशभुजाशरचाप काटेभयोबहोरिजिमिकर्ममूढ़केपाप ९६ चौ० ॥ शिरभुजबाढ़िदेखिरिपुकेरी भालुकपिनरिसभईघनेरी ९७ मरतनमूढ़कटतभुजशीशा धायेकोपिभालुभटकीशा ९८ बालितनयमारुत

भुजविषे दशधनुष चढ़ाइकै बाणनकी वर्षाकरत भयोहै बानर भालु जेतेभटरहे तिनसबको घायल करिदियो है ते भयकरिकै ब्याकुलभये हैं देखिये तौ इहां रावण अपने सखत्वभावको बुद्धि बल प्रताप देखावत है ( ९५ ) दोहार्थ॥ तब श्रीरामचन्द्र रावणके शीश भुज धनुष बाणसहित काटि डारते हैं सो अधिक बढ़त जाते हैं कैसे जैसे मूढ़ जेप्राणी हैं तिनके कर्मके जे पापमय हैं ते अनेक बढ़तजाते हैं ( ९६ ) रावणके शिर भुजनको बढ़ब देखिकै भालु कपिनको घनेरोकही रिसबहुत होतभई है ( ९७ ) भालु कीश अपने मनमें बिचार करते हैं देखिये तौ रावण के शीश भुज कटेचले जाते हैं ताहूपर नहीं मरत है यह समुझिकै कोपकरिकै बहुभालु कीश धावते भये हैं ( ९८ ) बालितनय जे अंगद अरु मारुत जे हनुमान् अरु नलनील द्विविद मयन्द अरु कपीश जे सुग्रीवहैं अरु पनस जे हैं इत्यादिक बीर अनेक जेबलके शीलकहीस्थानहैं ( ९९ ) एते सबबीर बिटप पर्वत लैलै रावणके ऊपर प्रहार करतेहैं रावण अपने बीसौ भजुनते गिरि अरु तरु अनेकन बीचैसे रोंकिकै सोई पर्वत वृक्ष लैकै भालु कपि जे बीर हैं तिनको मारिकै

प्रहस्त करिदेतहै रावण ऐसो त्रैलोक्य विजयी बीरहै श्रीरामचन्द्रको अपने सखत्वरसकै प्रबलता देखावतहै कैसे जानिये रावण सहित रावणके परिवार अरु सुग्रीव जामवन्त हनुमान् अंगद नलनील इत्यादिक इनके समाजते द्वौ श्रीरामचन्द्रकै परविभूतिके परमदिव्य पार्षदहैं तिनके संग श्रीरामचन्द्र नरनाथ रणक्रीड़ा करतेहैं राक्षस बानर जो आकारनाम है सो अध्यारोपण निमित्तमात्र जानब इत्यादिक सब परविभूतिविषे श्रीरामचन्द्रके नित्यसखा दासहैं ऐसेहीलीला श्रीरामचन्द्र परविभूतिविषे करते हैं तहांप्रमाणहै संहितनकर सम्मत भाषाग्रंथ जैमाल

नलनीला द्विविदकपीशपनसबलशीला ९९ बिटपमहीधरकरहिंप्रहारा सोइगिरितरुगहिकपिनसोमारा १०० एकनखनरिपु बपुषबिदारी भागिचलहिंयकलातनमारी १०१ तबनलनीलशिरनचढ़िगये नखनलिलारबिदारतभये १०२ रुधिरबलोकिसकोपिसुरारी तिनहिंगहनकोभुजापसारी १०३ गहिनजाहिंकरशिरपरफिरहीं जनुयुगमधुपकमलबनचरहीं १०४ कोपिकूदि द्वौधरय्यसिबहोरी महिपटकतभजेभुजामरोरी १०५ पुनिसकोपिदशधनुकरलीन्हे शरनमारिघायलकपिकीन्हे १०६ हनुमदादि

संग्रहविषे अरु श्रीगोसाईंकै ॥ चौपाई ॥ हनुमदादिसबबानरबीरा धरेमनोहरमनुजशरीरा॥ तहां येसब फेरिबानर ऋच्छरूप नहीं भये हैं जोपर विभूतिविषे रहै सोईस्वरूप रहेहैं अरु बानराकार जे देवतनके अंश अपने कार्यहेतु तिनविषे प्राप्तिरहै ते अपने स्वरूपविषे प्राप्तिभयेजाइ जेविवेकीजन होहिंगे ते अपनी बुद्धिको सावधान करिकै यहि अर्थको समुझेंगे ( १०० ) एकनकही हजारन बानर रिपु जो रावण त्यहिको शरीर नखन से विदारिकै भागिजाते हैं अरु एकन आकाशविषे कूदिकै लातन मारिकै भागिजाते हैं ( १०१ ) तब नलनील रावणके शिरनपर चढ़िगये नखन ते ललाट विदारत भये हैं ( १०२ ) तब सुरारि जो रावणहै सो अपने ललाटसे रुधिर बहत देखत भयो है तब कोपकरिकै बीसौभुजा उठाइकै नलनील को धरै लाग्यउ है ( १०३ ) तहां नलनील रावणके भुजनते गहेनहीं जाते शीश अरु भुजनपर फिरते हैं जनु दुइ मधुकर कमल के बनबिषे बिचरते हैं ( १०४ ) तब रावण कोपिकै नलनीलको बहोरिकै धरतभयो महिबिषे पटकतभयो पटकतसंते नलनील रावणकी भुजा मरोरिकै भागिजातेभये ( १०५ ) पुनि क्रोधकरिकै रावण दशधनुषमें बाणसन्धानिकै बाणनते मारिकै सम्पूर्ण कपिबीरनको घायन करिदियो है ( १०६ ) हनुमानादिक जे बीरहैं तिनको मूर्च्छित करिदियो है तब प्रदोष कही सन्ध्याकाल पाइकै रावणको हर्षभयो है ( १०७ ) तब सब कपिबीरनको मूर्च्छित देखिकै जामवन्त रणकेधीर ते धाये हैं ( १०८ ) अरु जामवन्तके संगबिषे भालु अनेकनबीर तरु पर्वत लैलै धाये हैं रावणके ऊपर प्रचारि २ प्रहार करते हैं ( १०९ ) तब रावण महाबलवान् अतिक्रोधित ह्वइकै नानाप्रकारके भटनके पदगहिगहि पृथ्वीमें पटकिदेतहै ( ११० ) पुनि

मुर्छितकरिबंदर पाइप्रदोषहर्षदशकंधर १०७ मुर्छितदेखिसकलकपिबीरा जामवंतधायेरणधीरा १०८ संगभालुभूधरतनुधारी मारनलगेप्रचारिप्रचारी १०९ भयेक्रुद्धदारुणबलवाना गहिपदमहिपटकैभटनाना ११० देखिभालुपतिनिजदलघाता कोपिमाँझउरमारय्उलाता १११ छं० ॥ मुर्छितबिलोकिबहोरिपदहति- उरलातघातप्रचंडलागतबिकलरथतेमहिपरा गहिभालुबीसहुकरमनहुंकमलनबसेनिशिमधुकरा ११२ मुर्छितबिलोकिबहोरिपदहति- भालुपतिपहँसोगयो निशिजानिस्यंदनघालित्यहितबसूतयतनकरतभयो ११३ दो० ॥ गइमुर्छातबभालुकपिसबआयेप्रभुपास सकलनिशाचर- रावणहिंघेरिरहेअतित्रास ११४॥ * * * * * * * * * * * * * *

भालुपति जे अपने दलहैं तिनको बिचलत घातकही मरत देखिकै जामवन्त क्रोधकरिकै कूदिकै रावणकी छातीबिषे लातमारत भयो है ( १११ ) छन्दार्थ॥ हे पार्वती जामवन्तकी लात रावणकी छातीबिषे महाबज्र समान लागतसंते रथते गिरिपरयउहै बीसौ भुजनबिषे बीस भालुबीर धरिलियोहै सो कैसे शोभितहैं जनु सन्ध्याकालबिषे कमल संपुटभयो है अर्द्धशरीर मधुकरनके फँसिरहे अर्द्ध खुले हैं ऐसे शोभित हैं ( ११२ ) रावण को मूर्च्छित देखिकै पुनि एकलात मारिकै जामवन्त श्रीरामचन्द्रके समीपजातभये तब रात्रिजानिकै अरु रावणको मूर्च्छित जानिकै रथपर घालि कही चढ़ाइकै सूतयत्न करतभयो है यत्नकही लंकाको लैगयो है ( ११३ ) दोहार्थ॥ तहां राक्षसनकी मूर्च्छा जागतभईहै तब सब श्रीरामचन्द्रके समीप जातभये हैं अरु रावणको सब निशाचर घेरिरहे हैं अतित्रास करिकै त्रास उतै रावणका उतै बानरनकी ( ११४ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वंसनेयुद्धकाण्डेबानरभालुरावणयुद्धवर्णनन्नामएकोनबिंशस्तरंगः १९॥ :: :: :: ::

दोहा॥ सीयशोचरावणसमरबीसतरंगवखानि रामचरणरघुबीरबलप्रबलभालुकपिजानि २०॥ तेही निशि त्रिजटानाम राक्षसी परमबैष्णवी सो श्रीजानकीजीके समीप जातिभई है सम्पूर्ण राम रावणके युद्धकीकथा सुनावति भईहै ( १ ) तब रावणके शिर भुज बाढ़बकीकथा सुनिकै श्रीजानकीजीके उरबिषे अतित्रास भई है ( २ ) बदनमलीनहै उरबिषे चिंता कही चिंतवन संयुक्त नाट्यलीला शोकमय बचन श्रीजानकीजी त्रिजटा से बोलतभाई हैं ( ३ ) श्रीजानकीजी त्रिजटासे बोलती हैं माताकही अतिप्रीतिको हे माता आगेका होइगो यह बिश्वद्रोही रावण कैसे मरैगो ( ४ )

**चौ० ॥ त्यहिनिशिसोसीतापहँजाई त्रिजटाकहिसबकथासुनाई १ शिरभुजबाढ़िसुनेरिपुकेरी सीताउरभइत्रासघनेरी २ मुखमलीनउपजीमनचिन्ता त्रिजटासनबोलीतबसीता ३ होइहिकाहकहसिकिनमाता क्यहिबिधिमरिहिबिश्वदुखदाता ४ रघुपतिशरशिरकट्यहुनमरई बिधिबिपरीतचरितसबकरई ५ मोरअभागजियावतवोही जेइँमोहिंहरिपदकमलबिछोही ६ ज्यइँकृतकनककपटमृगझूठा अजहुँदैवसोम्वहिंपररूठा ७ ज्यइँबिधिम्वहिंदुख-दुसहसहावा लक्ष्मणकहँकटुबचनकहावा ८ रघुपतिबिरहसविषशरभारी तकितकिमोहिंबारबहुमारी ९ ऐसेहुदुखजोराखुममप्राना सोइबिधातजियावनआना १० बहुबिधिकरतबिलापजानकी**

देखिये तौ श्रीरामचन्द्र के बाणनके मारेते शीश कटेजाते हैं ताहूपर रावण नहींमरै है बिधि जो बिधाता सो यह बिपरीत चरित करत है ( ५ ) इहां श्रीजानकीजी त्रिजटासे निपटप्राकृत बाणी बोलती हैं हे त्रिजटामोरि अभाग्य सो रावणको जियावतिहै ज्यइँमोरि अभाग्य श्रीरघुनाथके पदकंजसे बिछोहकीन है ( ६ ) ज्यइँमोरि अभाग्य कनककर मृगझूठा तिनमें प्रतीति करायोहै अजहूं जो मेरी अभाग्यकर प्रेरकदेवहै सो मोपर रूठा है ( ७ ) जो बिधाता मोकोदुःसह दुःख सहावतहै अरु लक्ष्मणजीको कटुबचन कहावाहै ( ८ ) तहां रघुनाथजीको बिरह सोई सविष तीक्ष्ण बाण है तेहीते मोरि अभाग्य मोको खैंचि खैंचि बारबार मारति है ( ९ ) ऐसेहु दुःख बिषे जो मोरप्राण राखत है सोई विधाता त्यहि रावणको जियावतहै आनिबात नहीं है ( १० ) हे गरुड़ श्रीजानकीजी बहुत प्रकारते श्रीरामचन्द्रको सुमिरि सुमिरि बिलाप करती हैं ( ११ ) तबत्रिजटा कहतीहै हे राजकुमारि जब रावणके हृदयमें बाणलागै तब मरैगो ( १२ ) ताते श्रीरामचन्द्र रावणके हृदयमें बाण नहीं मारते हैं काहेते श्रीरामचन्द्रजी जाना कि यहिके हृदय ध्यानमें श्रीजानकीजी बसती हैं ( १३ ) छंदार्थ॥ रघुनाथजी यहबिचार करते हैं किरावणके हृदयमें श्रीजानकीजी बसती हैं जानकीजीके हृदयमें मैं बसतहौं अरु मेरे हृदयमें सम्पूर्ण चराचर बसते हैं तहां रावणके हृदयमें मैं बाण जो मारौं तौ ब्रह्मांडभरेको नाशह्वइ जाइगो ताते नहीं मारते हैं ( १४ ) त्रिजटाके यहबचन सुनिकै श्रीजानकीजी के हर्ष शोक उत्पन्नभयोहै अपने ध्यानको हर्ष अरु ऐसे हैं तब रावण काहेको मरैगो यह शोचभयो है श्रीजानकीजीको हर्षविषाद देखिकै पुनि त्रिजटा कहतीहै हे सुन्दरि महासंशयको त्यागिदेहु अबरावण यहिविधि

करिकरिसुरतिकृपानिधानकी ११ कहत्रिजटासुनुराजकुमारी उरशरलागतमरिहिसुरारी १२ तातेप्रभुउरहतैंन तेही यहिकेहृदयबसतिबैदेही १३ छं० ॥ यहिकेहृदयबसजानकीउरजानकीममबासहै ममउदरभुवनअनेकलागतबाणसबकरनासहै १४ सुनिबचनबिरहविषादमन-अतिदेखिपुनित्रिजटाकहा अबमरिहिरिपुयहिबिधिसुनहुसुंदरितजहुसंशयमहा १५ दो० ॥ काटतशिरहोइहिबिकलछूटिजाहितबध्यान तबरावणकेहृदयमहँमरिहैंकृपानिधान १६ चौ० ॥ असकहिबहुतभाँतिसमुझाई पुनित्रिजटानिजभवनसिधाई १७ रामसुभावसुमिरिबैदेही-उपजीहृदयब्यथाअतितेही १८ निशिहिशशिहिनिंदतिबहुभाँती युगसम

तेमरैंगो ( १५ ) दोहार्थ॥ हे सुन्दरि रावणकर शिर बारबार काटतसन्ते रावणकर मन जब विकल ह्वैजाइगो तब तुम्हार ध्यान छूटिजायगो तब त्यहिके हृदयमें श्रीरामचन्द्र बाणमारहिंगे यह त्रिजटा अपनी उक्तिसेकहिकै श्रीजानकीजीको सम्बोधन कीनहैं ( १६ ) असकहिकै बहुत भाँतिते समुझाइकै निजभवनको त्रिजटा जातभई ( १७ ) तब श्रीजानकीजी श्रीरामचन्द्रको स्वभाव समुझिकै अतिव्यथाको प्राप्तिभई हैं श्रीरामचन्द्रको कृपालु दयालु स्वभाव है जो कदाचित् याकृपाकरिकै रावणको ब्राह्मणबंश जानिकै न बधहिंगे मोहिं आदिक ब्रह्माण्डभरि दुःखीरहहिंगे किन्तु ऐसो स्वभावहै अपने जनकोदुःख अरु मोर दुःख कबहूं क्षणहुभरि नहींसहिसके हैं अब कोजाने धौं कादेरी करतेहैं ( १८ ) तहां हे पार्वती श्रीजानकीजी श्रीरघुनाथजी के विरहमें विकलह्वैकै निशि अरु शशिकर निन्दा करती हैं यहां निशि न होइ अग्निको समूह धूमहै अरु यह चन्द्रमा नहींहोइ अग्निकै राशिहोइ तेहीको ऐसेकहत रात्री नहींबीतै युगके समान रात्रिहोत भईहै बीतति नहीं है ( १९ ) अपने मनमें भारी बिलाप करतीहैं श्रीरघुनाथजी के विरहमें दुःखित हैं ( २० ) जब भारी विरह करिकै दाह उरबिषे भयो हैं तब तेहीक्षणबिषे मंगलमय बामनेत्र भुजा फरकतभये हैं ( २१ ) तब श्रीजानकीजी सगुन विचारिकै धीर्य्य धरिकै कहती हैं अब अवश्य श्रीरघुनाथजी मिलैंगे ( २२ ) हे पार्वती इहां अर्द्धरात्रि प्राप्ति भईरावणकी मूर्च्छाजागत भईहै तब निजसारथीसन खीझतकही रिसात भयो है ( २३ ) हे शठ तैं मोसे रणभूमि छँड़ायदिहे अच्छाकाम नहीं किहे है रिसातभयो है अधम मन्दमति तोको धिग् धिग् है ( २४ ) सो सूत रावणको पदगहिकै समुझावत भयो है हेनाथ रणविषे आपु बिकल ह्वइकै

भई सिरातनराती १९ करतबिलापमनहिंमनभारी रामबिरहजानकीदुखारी २० जबअतिभयोबिरहउरदाहू फरक्यउबामनयन अरुबाहू २१ सगुनबिचारिधरेउमनधीरा अबमिलिहैंकृपालुरघुबीरा २२ इहाँअर्द्धनिशिरावणजागा निजसारथिसनखीजन लागा २३ शठरणभूमिछँड़ायोमोहीं धृगधृगअधममंदमतितोहीं २४ त्यइँपदगहिबहुबिधिसमुझावा भोरभयेरथपुनिचढ़िआवा २५ सुनिआगमनदशाननकेरा कपिदलखरभरभयोघनेरा २६ जहँतहँभूधरबिटपउपारी धायेकटकटाइभटभारी २७ छं० ॥ धायेजोमर्कटबिकटभालुकरालकरभूधरधरा अतिकोपिकरहिंप्रहारमारत-भजिचलेरजनीचरा २८ बिचलाइदलबल-

मूर्च्छित रथते पृथ्वीमें गिरिपरयउ अरु बानरनकी सेना अतिप्रबल आवत जानिकै आपुको रथपर चढ़ाइकै मैं लंकाको लैआयो हैं यह मेरो धर्म है ऐसे कहत भोरभयो है तब रावण सूतको आज्ञादीन कि रणभूमिविषे तैं शीघ्र रथहांकु तब तुरंत रथ हांकिकै रणभूमिविषे प्राप्तिभयो आइ ( २५ ) यह सुना कि रावण रणभूमिविषे फेरि प्राप्तिभयो है आइ तब बानर राक्षसन के दलविषे अति खरभर परयो है ( २६ ) तब बानर ऋच्छ सबकी सेना जहांतहांते पर्वत तरु उखारिकै लैलै कटकटाइकै धावते हैं ( २७ ) छन्दार्थ॥

तब रावणकेऊपर कोटिभालु मर्कट बिकटभटतरुभूधरलैलै अतिकोप करिकै धावतभये हैं निशिचरके दलको मारिकै बिचलाइ दीनहै ( २८ ) तहांऋच्छन अरु कीशनरावणको दल बिचलाइदीनहै तहां रावणभूमिते नहीं चल्यो है ताको बानरन ऋच्छन घेरिलियो है चहूंदशिते रावणको चपेटनकही धक्कन अरु नखन दांतन बिदारिकै व्याकुल करिदियो है ( २९ ) दोहार्थ ॥ तब रावण अपने मनमें बिचारकीन कि बानर प्रबलहैं तब अंतर्द्धान ह्वइकै एक निमिषमात्रमें अपनीमाया विस्तार करतभयो है ( ३० ) लीलाछन्दार्थ॥ हे पार्वती जव रावण अपनी राक्षसीमायाको पाखण्डकीनहै तबअनेकन तामसी जंतुजे जीवहैं ते उत्पन्न होतभयेहैं प्रचण्ड प्रचण्ड जंतु संपूर्ण जेहैं ते सब भूतनकी जातिहैं काहेते कि चारिवर्णकी सृष्टि विधातैं कीनहै मुख्यब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र इति मध्यम नीचलघु ऐसेही देव दानव मनुष्य चर अचर सबकेविषे चारिबर्ण हैं तहां देखिये तौ रावण ऐसो प्रतापी वली ज्यहिकी आज्ञानुकूल ब्रह्माकीसृष्टि भरिरहीहै त्यहिकी ऐसी प्रबलमाया कस न होइ देखियेतौ त्यहिकी मायाने लक्ष्मणहनुमान् कपीशादिक को विमोहित करिदियोहै त्यहि रावणकी माया

वंतकीसनघेरिपुनिरावणलियो चहुँदिशिचपेटनमारिनखनबिदारितनव्याकुलकियो २९ दो० ॥ देखिमहामर्कटप्रबलरावण कीनबिचार अंतरहितहोइनिमिषमहंकरिमायाबिस्तार ३० लीलाछं० ॥ जबकीनत्यइँपाखंड भयप्रकटजंतुप्रचंड बैतालभूत पिशाच करधरेधनुषनराच ३१ योगिनिगहेकरबाल यकहाथमनुजकपाल करिसद्यश्रोणितपान नाचहिंकरहिंबहुगान ३२ धरुमारुबोलहिंघोर रहिपूरिधुनिचहुँओर मुखबाइधावहिंखाइ तबलगेकीशपराइ ३३ जहँजाहिंमर्कटभागि तहँबरतदेखहिं आगि भयबिकलबानरभालु पुनिलगेबरषनबालु ३४ जहँतहँथकितकरिकीश गर्जेउबहुरिदशशीश लक्ष्मणकपीशसमेत भय

विषे वैताल भूत पिशाच इत्यादिक अनेकन उत्पन्नभये हैं अरु ते सबधनुषबाण धारणकिहे हैं ( ३१ ) अरु योगिनी जेहैं ते करबाल कही खड्ग लिहे हैं अरु हाथबिषे मनुजनकर कपाल लिहे हैं त्यहिविषे सद्यकही तुरंतके लोहूभरे पानकरती हैं अरु नाचती हैं बहुतप्रकार से गानकरती हैं ( ३२ ) अरु धरुधरु मारुमारु यह घोरशब्द सबदिशनविषे पूरिरह्यो है अरु मुखबाइ खाउखाउ करिकै धावती हैं एसेही अनेकन अति दीर्घ शरीर दीर्घशब्द देखिकै सुनिकै बानरनकी सेनाभागत भईहै ( ३३ ) जहां जहां मर्कट भालु भागिजाते हैं पिशाचके मुखते अरु स्वाभाविक तहांतहां अग्निकी ज्वाला बरत देखते हैं यहिप्रकारते बानर भालुन को बिकलकरिकै पुनि आकाशविषे जाइकै बालूबर्षते है ( ३४ ) जहां तहां कीश भालुनको थकित कैकै पुनिगर्जत भयोहै लक्ष्मण अरु हनुमान् कपीश समेत इत्यादिक बीरअचेत ह्वइगये है ( ३५ ) हे पार्वती बानर ऋच्छ जो महामहा बीर हैं सबते बिकल ह्वइकै पुकारते हैं अरु क्लेशते हा राम हा रघुनाथ ऐसे कहिकै हाथ मींजते हैं कि हमारे प्राण उबारहु हे कृपालु यहि प्रकारते रावण सबकर बलतोरिकै फिरिकै अनेक कपटकै प्रबलतादेखावत है ( ३६ ) देखिये तौरावणकी मायाकी प्रबलता अनेकन हनुमान् प्रकट करतभयो है ते हनुमान् सब पहार तरु अनेकन लैलै श्रीरामचन्द्रके मारबेको धावतभये तीन यूथ यूथ बनाइकै श्रीरामचन्द्र को घेरि लियो है ( ३७ ) हनुमान्जी के सबरूप यह कहते हैं रघुनाथजीको मारहु मारहु धरहु धरहु भागि न जाइ अरु पूंछ उठाइकै कटकटायकही क्रोधकरिकै किलकार करते हैं गर्जते हैं दशौ दिशाबिषे हनुमान्के लंगूरनकी शोभा बिराजिरही परिपूर्ण आठौदिशा एक ऊर्ध्व अरु एक अध

सकलबीरअचेत ३५ हारामहारघुनाथ कहिसुभटमींजहिंहाथ यहिबिधिसकलबलतोरि त्यइँकीनकपटबहोरि ३६ प्रकट्यसि बिपुलहनुमान धायेगहेपाषान तिनरामघेरेजाइ चहुँदिशिलँगूरबनाइ ३७ मारहुधरहुजनिजाय कटकटैपूंछउठाय दशदिशि लँगूरबिराज त्यहिमध्यकोशलराज

**३८ हरिगीतछं० ॥ त्यहिमध्यकोशलराजसुन्दरश्यामतनशोभालही जनुइन्द्रधनुषअनेककी वरबारितुंगतमालही ३९ प्रभुदेखिहर्षिबिषादउर-सुरवदतजयजयजयकरी रघुबीरएकहितीरकोपिनिमेषमहँमायाहरी ४० माया**

अरु तिनके मध्यबिषे कोशलराज बिराजमान हैं ( ३८ ) छन्दार्थ॥ हनुमान्जीकी लूमैं मण्डपइव छाइरहीहैं त्यहि मध्यबिषे कोशलराज बिराजमानहैं त्यहिकी उपमा गोसाईंजी कहते हैं जनु एक नवीन तमाल तरुहै त्यहिबिषे जो इन्द्रको धनुष उदयहोतहै त्यहि अनेकनकै बारीकही रूधवाही बनी हैं ( ३९ ) तब प्रभु यह लीला देखिकै सुर जे देवता हैं ते देखिकै हर्ष बिषाद संयुक्त जयजयकार करते हैं हर्षकाहै कुम्भकर्ण मेघनाद को बध अरु शोक का है कि अकेल रावण एती आश्चर्यमाया करतहै किन्तु हर्ष यह भयो कि एक हनुमान्जी रावणको मान-मर्दन करतभये हैं अब अनेक हनुमान् हैं अरु शोक का भयो शोक यह भयो कि हनुमान् जी अनेकरूप ह्वइकै श्रीरामचन्द्रको घेरिलिये हैं यह आश्चर्य देखिकै शोच करतेहैं तब रघुबीरजीने हँसिकै रावणकी प्रबल अविद्या मनमें सराहिकै एकबाण प्रबल तरकसते निकासिकै रावणकी राक्षसीविद्या सम्पूर्ण नाश करिदीन है देखिये तौ रावणकी ऐसी प्रबल अविद्याको अनेकन हनुमान्प्रकटकीनहै ज्यइँ एकहनुमान् लंका विध्वंसकीनहै अरु एकअंगद रावण को मान मर्दन करिडारयउ है तहां रावण ऐसोप्रताप इहां कियोहै तैसो प्रथम क्यों न जनायो तहां अभिप्रायहै कि श्रीरामचन्द्रकी इच्छा रावण विचारयउ है अथवा यह विचारिकै प्रभुता नहीं देखायो है कि ये दूनौं बानर अपनी प्रभुता कहैंगे मेरीलघुता कहैंगे सो सुनिकै रघुनाथजी मेरे संग्रामहेतु शीघ्र आवहिंगे अरु रावण इनको कछु गनैनहीं तिनके आगे अपनो प्रताप का देखावे काहेते श्रीरघुनाथजी के सखनकेविषे यूथपहै प्रतापीनामे सखा है ( ४० ) तब बानर ऋच्छ मायाते विगतभये अरु एक निज हनुमान् रहिगयेहैं तब अति हर्षित विटप पर्वत लैलै रावणके ऊपर फिरि धावते भये हैं अरु श्रीरामचन्द्र रावणके ऊपर अनेक बाण मारिकै शिर भुज काटिकै महिविषे गिराइदियेहैं ( ४१ ) हे पार्वती श्रीराम रावणके समरके चरित्र जो शेष शतरूप धरिकै एक एक रूपविषे दूनी दूनी रसना त्यहिकरिकै जो गानकरहिं अरु शारदा शतरूप धरिकै द्वौमिलिकै

**बिगतकपिभालुहरषे बिटपगिरिगहिसबफिरे शरनिकरछांड़ेरामरावणबाहुशिरपुनिमहिगिरे ४१ श्रीरामरावणसमरचरितअनेककल्पजोगावहीं शतशेषशारदनिगमआगम तदपिपारनपावहीं ४२ दो० ॥ कहेतासुगुणगणकछुकजडममतितुलसीदासनिजपौरुयअनुसार जिमिमशकउड़ाहिंअकास ४३ काटेशिरभुजबारबहुमरतनभटलंकेश प्रभुकीड़ितमुनिसिद्धसुख्याकुलदेखिकलेश ४४॥**

अरु वेद शास्त्रते अनेक कल्पताईं गानकरहिं तदपि पारको न पावैं तहां राम रावणके युद्धके समान काहूकल्प युगविषे न भयो है न होइगो देव दानव मनुष्य आदिक विषे इहां अन्योन्यालंकार है राम रावण के युद्धके समान राम रावणही को युद्धहै आकाशके समान आकाशै है अरु समुद्रकी उपमा समुद्रै है तैसे राम रावणके युद्धके समान राम रापणहीको युद्धहै प्रमाण श्लोक एक॥ गगनंगगनाकारंसागरंसागरोपमं रामरावणयोर्युद्धंरामरावणयोरिव ( ४२ ) दोहार्थ ॥ राम रावणकर समर यशअति अपार सो कछुक कहाउँ काहेते मैं जो तुलसीदास हौं मतिकरजड़ सो कहांतक कहौं जैसे मसा अपने पौरुषभरि आकाश विषे उड़ै है पारनहीं पावैहै गोसाईं ने अपनी मतिको जड़ क्यों कहाहै यहरीतिसे जैसे कोई समुद्र थाह लेबेको प्रवेशकरै सो कैसे थाहपावै ताते अज्ञान है तैसे मैं हौं किन्तु नीचानुसन्धान जानब ( ४३ ) पुनि श्रीरामचन्द्र रावणकेशिर भुज काटिकै डारेहैं तहां अनेकन बनिजाते हैं ऐसे अनेकबार काटे हैं रावण नहीं मरै है यह श्रीराम रघुनाथजीकै रणक्रीड़ा कलेश देखिकै देवता सिद्ध मुनि अकुलाय उठेहैं ( ४४ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिलुषविध्वंसनेलंकाकाण्डेश्रीरामरावणसमरर्णनन्नामविंशस्तरंगः२०॥ :: :: ::

दोहा॥ विंशतिएकतरंगमेंरावणबधत्रैलोक भये अनन्दसुरसिद्धमुनिरामचरणगतशोक २१ हे गरुड़ रावणके शीश भुज जैसे जैसे श्रीरामचन्द्र काटतेहैं तैसे तैसे समुदाई होतजातेहैं जिमि प्रतिलाभ लोभबढ़तहै कैसेजैसे काहूके बासना उठीहै कि मोको दशरुपैया प्राप्तिहोइँ तौ मेरोकार्य सिद्धिहोइ तहां दैवयोगसे प्राप्तिभयो तब लोभकेबश बीसकी बासनाभई सोप्राप्तिभयो पुनि उसके दूनकी बासनाभई ऐसही हजारन लाखनकोटिनताईं बढ़तजातहै पुनि जैसेकोई छोटाआदमी प्रारब्धकेबश राजाभयो राजाते इन्द्रकी बासना इन्द्रते ब्रह्माकी बासनाभई ब्रह्माते परमेश्वर की बासनाभई ऐसही लाभ प्रतिलोभ बढ़तजातहै संतोषनहींहोतहै लोभवश लोभकही व्यवहार करिकै अरु दया परमार्थमें नहीं खर्चहोइ ( १ )

चौ० ॥ काटतबढ़तशीशसमुदाई जिमिप्रतिलाभलोभअधिकाई १ मरैनरिपुश्रमभयउविशेषा रामबिभीषणतनतबदेखा २ उमाकालमरुजाकीइच्छा सोप्रभुकरजनुप्रेमपरिच्छा ३ सुनुसर्बज्ञचराचरनायक प्रणतपालसुरमुनिसुखदायक ४ नाभी कुंडसुधाबशयाके नाथजियतरावणबलताके ५ सुनतबिभीषणबचनकृपाला हर्षिगहेकरबाणकराला ६ असगुनअमितहोन लगेनाना रोवहिंबहुश्रृगालखरश्वाना ७ बोलहिंखगजगआरतहेतू प्रकटभयेनभजहँतहँकेतू ८ दशदिशिदाहहोनतबलागा भयउ

तहां रावण मरैनहीं रघुनाथजीके शोचभयो तब बिभीषणकी दिशि देखतभये हैं कि रिपु काहे नहींमरै है ( २ ) हे पार्बती श्रीरामचन्द्र इच्छाकरहिं तौ महाकालको नाशह्वैजाइ ते प्रभुजन जो बिभीषण हैं तिनके प्रेमकै परीक्षा करते हैं अपने जनको आदरदेते हैं पुनि यह धुनि है कि श्रीरामचन्द्र कहा मैं अपने निजजन जे प्रेमी हैं तिनहींते बूझि बूझि उनके मनके अनुकूल सबलीला करतहौं इच्छापर इच्छा करतेहैं ऐसे भक्तबत्सल हैं ( ३ ) तब बिभीषण कहतेहैं हे प्रभु सर्बज्ञ अंतर्यामी चराचरके नायक आपुकी आज्ञाते ब्रह्मा उत्पत्ति करते हैं विष्णु पालन करते हैं रुद्रसंहार करते हैं तुम मोको पूछते हौ सो आपुकी आज्ञाते कहतहौं ( ४ ) हे महाराज आपुतौ सब जानतेहौ रावण के भी स्थानविशे अमृतकुण्डहै हे नाथ ताहीते रावण जियतहै नहीं मरै है ( ५ ) तब बिभीषणके बचनसुनिकै श्रीरामचन्द्र महाकराल अग्निबाणही हर्षकै करमें लेतभये हैं ( ६ ) तबं अनेक असगुन होनेलगे अनेकन सियार खर श्वान रोवनेलगे हैं ( ७ ) अरु तामसी पक्षी जे हैं ते बोलते हैं जगत्के जीवनको रावण करिकै आरतकही पीड़ित जानिकै अपनी बोलीमें यह जनावते हैं कि अब रावणकर बधकरकाल प्राप्तिभयो आजुतुम सुखीहोहुगे अरु नभविषे अनेक राहु केतु प्रकटभये हैं ( ८ ) दशौदिशाते अग्निकीज्वाला उठीहै जनुदावा लगेउ है जनु मकरके सूर्य बिनाप्रयागविशे पर्बयोग परेउ है हल्लाह्वइ रहेउ है तहां बिनापर्बकै पर्बपरे तौ अमंगलहोत है तैसे ये असगुन रावणपर होत हैं किन्तु बिनापर्ब जो पर्बहोइ तहां सो त्यहिकाल दूनमंगलहै तैसे रावणके मरणकालमें असगुनहोते हैं सो असगुन देव मुनि आदिक संपूर्ण जगत्को मंगल है अरु रावणको महामंगल है ( ९ ) अरु मंदोदरीको हृदय अतिकंपित भयोहै अरु रावण के इष्टदेवता तिनके प्रतिमाके नेत्रनसे जलबहते हैं अरु जेहि राजाके राज्यमें कोई देवताकी प्रतिमाके नेत्रन

पर्व्वबिनुरबिउपरागा ९ मंदोदरिउरकंपितभारी प्रतिमाश्रवहिंनयनभरिबारी १० छं० ॥ प्रतिमाश्रवहिंपविपातनभअतिबात बहुडोलतमही बर्षहिंबलाहकरुधिरकचरजअशुभतासककोकही ११ उत्पातअमितबिलोकिसुरमुनिबिकलकहिजयजयजये सुरसभयजानिकृपालुरघुपति-चापशरजोरतभये १२ दो० ॥ आकर्ष्यउधनुश्रवणलगिछांड़े शरयकतीश रघुनायकशायकचले मानहुँकालफणीश १३ चौ० ॥ शायककएकनाभिशरशोषा अपरलगेशिरभुजकरिरोषा १४ लैशिरबाहुचलेनाराचा शिर

से जलश्रवहिं सो राज्यको अमंगलहै ( १० ) छन्दार्थ॥ प्रतिमनके देहविषे पसीना श्रवते हैं अरु आकाशते पविकही पत्थर अरु बिजुली बज्र वर्षतहैं अरु अतितीक्ष्ण पवन उठेउ है अरु पृथ्वी हालनेलगीहै अरु बलाहक जे मेघहैं ते बार रुधिर रजवर्षते हैं तहां यहिकालकी अशुभताको कहिसकै जनु रावणके कर्त्तव्यकै अशुभता मर्त्तिमान्हीं ह्वैकै असगुन देखाइदेत है( ११ ) यह जो अमित उत्पात सो देखिकै अपने भ्रमते सुर मुनि बिकल होइकै जयजयकार करते हैं तब देवनको भयसंयुक्त जानिकै श्रीरामचन्द्र चापविषे शर जोरतभये हैं ( १२ ) दोहार्थ॥ तब धनुष श्रवणलगि आकर्षण कही खैंचिकै एकतीसबाण छोड़तभये हैं ते बाण कैसे चले हैं मानहुंकालके फणीशहैं फुंकरत चलेजाते हैं ( १३ ) तहां श्रीरघुनाथजी के बाण एकतीस चलेहैं ताको एकबाण रावणके हृदय नाभिकुण्डके अमृतजोहैताको शोषिलेत भयो अरु बीसबाण रोषकरिकै बीसौ भुजा को काटि डारे हैं अरु दशौबाण दशशीश काटिडारे है ( १४ ) तब नाराच जे बाण हैं ते शिर भुजकौ लैकै लंकाको चलेहैं अरु रावण शिरभुजते हीन रुण्ड पृथ्वी में नाचत है ( १५ ) तब रावणको शरीर रुण्ड पृथ्वी विषे प्रचण्डधावतहै त्यहिके भारते धरती धँसीजाती है तब श्रीरामचन्द्र एकबाणते काटिकै दुइखण्ड करिडारेहैं ( १६ ) रावण मरतसन्ते घोर शब्द करिकैगर्जत है यह कहिकै रावण प्राणको त्याग करत भयोहै कि रण विषे हतौं प्रचारिकै कहाँ रामचन्द्र देखिये तौ अन्तविषे रावण राम ऐसा शब्द उच्चारण कियो है अरु आगे तपस्वी कहतरहेउ है ( १७ ) दशकन्धरके गिरत सन्ते पृथ्वी हालत भई है सिन्धु जो है सो क्षुभित कही जलउछरतहै ऐसही नदी अरु चारिउ दिशाके दिग्गज अरु भूधर काँपिउठेहैं ( १८ ) तहां रावण द्वौ खण्ड बढ़ाइकै महिविषे परत भयो है अरु बीसौ हाथविषे अरु अपनी देहविषे अनेक बानर भालु धरिदाबिकै परेउ है ( १९ ) हे पार्वती मन्दोदरी के आगे रावणके भुज शीश धरिकै बानर रघुनाथजी केसमीप फिरिआये हैं ( २० ) तब तिन बाण तरकसमें प्रवेशकियो आइ

**भुजहीनरुण्डमहिनाचा १५ धरणिधँसैधरधावप्रचंडा तबप्रभुशरहतकृतयुगखंडा १६ गर्जेउमरतघोररवभारी कहाँरामरणहतौं प्रचारी १७ डोलीभूमिगिरतदशकंधर क्षुभितसिंधुसरिदिग्गजभूधर १८ परेउधरणिद्वौखंडबढ़ाई चापिभालुमर्कटसमुदाई १९ मंदोदरिआगेभुजशीशा धरिशरचलेजहाँजगदीशा २० प्रविशेसबनिषंगमहँआई देखिसुरनदुंदुभीबजाई २१ तासुतेजसमानप्रभु**

यह देखिकै देवता फूलवर्षते हैं दुन्दुभी बजावते हैं ( २१ ) त्यहि रावणको तेज जो आत्माकही जीव सो श्रीरामचन्द्रके आननबिषे प्रवेष करत भयो है यह चरित देखिकै शम्भु चतुरानन अतिहर्षित भये हैं यहबिचारिकै देखिये तौ ऐसो बिरोधी रावण त्यहिको अपने मुखमें प्रवेश करिलीनहै जो कोई कहै कि रावण रघुनाथजीमें संयुक्त शक्ति ह्वइगयोहै सो नजानब मुखविषे प्रवेशको अभिप्रायहै कि सारूप्यमुक्ति सखारूप ह्वइकै परबिभूतिको अंतर्द्धान कराइदीन है देखिये तौ कागभुशुंड श्रीरघुनाथजीके मुखमें प्रवेश करिगयोहै फेरि निकसिकै प्रत्यक्षभयो है पुनि दूसरार्थ करते हैं तासुतेजसमानप्रभुआनन त्यहि रावणकी आत्माको तेज प्रभुके आननके समान है इहां सामान्याधिकरण अभेदरूपकालंकार है तहां यह जीव श्रीरामचन्द्रकी मूर्त्तिका तेजहै शिखते नखलौं नित्य बिभूतिमेंनित्यजीव मुख मण्डलको तेजहै अरु मुक्त मुमुक्षुजीव बक्षःस्थलके तेज हैं अरु बद्धजीव को कटि जानुनी को तेज है तहां तत्त्वरूप एकही है तहां रामनामविषे रेफकी अकार नित्यजीव को रूप तेजोमय अरु मध्यकी अकार मुक्त मुमुक्षुहै मकारकी अकार बद्धहै तहां प्रमाणहै श्रीमन्महारामायणे। शिववाक्यंपार्वतींप्रति॥ रामरूपस्यतेजोयंजीवोवेदप्रभाषितं॥ अर्द्ध॥ रामस्यमण्डलस्यैवतेजोरूपवरानने ॥ कोटिकंदर्पशोभाढ्योरेफाकारोहिविद्धिच १ मध्याकारोमहारूपश्रीरामस्सैववक्षसः॥ अर्द्ध॥ मस्याकारोभवेद्रूपःश्रीरामकटिजानुनी ॥ अर्द्ध॥ नित्यकैवल्यमुक्तश्चमुमुक्षुर्वद्धपंचभिः॥ अकारोमध्यकैवल्यंमध्यमुक्तमुमुक्षणः २ मस्याकारोभवेद्बद्धोजीवतत्त्वसनातनः ॥ ईश्वरासौअणुर्नित्यंसच्चिदानंदमव्ययं ३ ॥ किंतुरावण कैवल्य बीर्यप्रताप सबकरतेज आननमें समानहै जैसे परशुरामको तेज प्रवेशभयो है याहीरीतिते कुम्भकर्णको जानब ( २२ ) देवता मुनि सिद्ध आदिकनकरिकै जयजय धुनि ब्रह्मांडविषे पूरिरही है जय श्रीरघुबीरकी कैसेहौ रघुबीर तुम्हार भुजबल अतिप्रचण्डहै महाकालको जीतिबेयोग्यहौ ( २३ ) तब देवता मुनि सिद्धादिक फूल बर्षते है अरुयहकहते हैं हे मुकुन्द

आनन हर्षेदेखिशंभुचतुरानन २२ जयजयधुनिपूरितब्रह्मण्डा जयरघुवीरप्रबलभुजदण्डा २३ बर्षहिंसुमनदेवमुनिवृन्दा जयकृपालुजयजयतिमुकुंदा २४ छं० ॥ जयकृपालुकुंदमुकुंदद्वंद्वहरणशरणसुखदाप्रभो खलदलबिदारणपरमकारणकारुणीकसदा बिभो २५ सुरसुमनबरषतसकल-हरषतबाजिदुंदुभिगहगही संग्रामआँगनरामअंगअनंगबहुशोभालही २६ शिरजटामुकुटप्रसूनबिच

मुक्तिकेदाता तुम्हारी जय तुम सदाजयमान्हौ कृपालु हौ हमारे सबके ऊपरकृपाकीनहै ( २४ ) छन्दार्थ॥ हे कृपाकंद मुकुंदद्वंद्वजो मैं तैं मोरतोर त्यहिकेहरै याहौ अरु अपने शरणागतके सबप्रकारके सुखदाताहौ हो प्रभो अरु संपूर्ण खलनके दलको बिदारण कर्त्ताहौ सबके प्रभुहौ अरु परम कारण संपूर्ण जगत्के कारण ताहूके तुम कारणहौ अरु कारुणीक करुणा के मर्यादहौ अरु सदा एकरस ऐश्वर्यमान् सामर्थ्यहौ ( २५ ) असकहिकै देवता फूल बर्षते हैं अरु सब हर्षते हैं गहगहकही गम्भीर दुन्दुभी बजावते हैं हे पार्वतीजी संग्राम भूमि जो आंगन है त्यहि मध्यविषे कोशलराज शोभित हैं अंगप्रति अनेक अनंग शोभालहत हैं ( २६ ) शिरविषे जटाके मुकुट बनेहैं बीच बीच फूल अतिमनोहर राजित हैं जनु नीलगिरि श्रृंगपर तड़ित घन समेत अनेक उड़गण भ्राजित हैं तहां रघुनाथजी को स्वरूप नीलमणि गिरि शीश श्रृंगपटकही घन सो जटा अग्रभाग तड़ित सुमन उड़गणहैं ( २७ ) भुजदण्डविषे शरकोदण्ड फेरते हैं अरु रुधिरके छीटकी कनी तनविषे बहुत शोभित हैं जनु तमालतरुपर अनेकन मुनिराय अपने परमसुखयुक्त विराजमानहैं ( २८ ) दोहार्थ॥ कृपादृष्टिकै वृष्टिकरिकै संपूर्ण देवताआदिक जीवनको अभयकरिकै सुखीकीन है अरु बानर भालु आनन्द संयुक्त कहते हैं हे मुकुन्द सुखकेधाम तुम्हारी जयहोइ जयहोइ हे पार्वती श्रीराम रावणको संग्राम ऐसो कौन्यउ कालविषे न भयो है न होइगो रावण त्रैलोक्य विजयी बीर है त्यहिको बधभयो है त्यहिकी सेना संग्रामकी संख्या कछु जनावते हैं जब ज्यहि संग्रामविषे दशहजार हाथी जूझैं अरु दशलक्षघोड़े जूझैं अरु डेढ़सौ महारथीजूझैं अरु दशकोटि पैदरजूझैं तब एक कबन्धकी संख्या है जो रणविषे विना शीशको नाचै तहां जो ऐसे कवन्ध कोटिन नृत्यकरैं तब त्यहिकर एक खेचर संख्या है खेचरकही देवता आकाशविषे एकदेवता बिनाशीशको नाचत है जब

बिच अतिमनोहरराजही जनुनीलगिरिपरतड़िपटलसमेतउड़गणभ्राजही २७ भुजदंडशरकोदंडफेरतरुधिरकनतनअतिबनेजनुराय मुनीतमालतरुपर बैठिबहुसुखआपने २८ दो० ॥ कृपादृष्टिकरिवृष्टिप्रभु अभयकियेसुरवृन्द हर्षेबानरभालुसबजयसुखधाममुकुंद २९

पतिभुजशिरदेखतमंदोदरि मुर्छितबिकलधरणिमहँखसिपरि १ युवतिवृन्दरोवतउठिधाई तेहिउठायरावणपहँल्याई २ पतिगतिदेखिसोकरइपुकारा छूटेचिकुरनदेहसंभारा ३ उरताड़नाकरहिबिधिनाना रोवतकरहिप्रतापबखाना ४ तवबलनाथ

यहीप्रकार कोटि खेचर नृत्यकरहिं तब श्रीरघुनाथजी के कोदण्डबिषे एकघंटा बाजहि तहां ऐसेही अनेक घंटाजे हैं तहां केवल श्रीराम रावणको समर सातदिन सातरात्रि भयोहै त्यहिविषे घंटाबाजते रहे हैं जैसे शालिग्रामकी पूजाविषे बाजत रहत हैं श्लोक॥ नागानामयुतंतुरंगनियुतंसार्द्धरथीनांशतं पत्तीनांदशकोटिकंरघुपतेकोदण्डघंटारवं ( २९ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेलंकाकाण्डेमहायुद्धरावणबधवर्णनन्नामएकबिंशस्तरंगः २१॥

दोहा॥ दुइअरुबीसतरंगमेंराज्यविभीषणसार रामचरणश्रीजानकी मिलनअनंदअपार २२ पतिकर शिर भुज देखिकै मन्दोदरी मूर्च्छित विकलह्वैकै पृथ्वीमें गिरिपरी है ( १ ) तब युवतीवृन्द जेरहीं ते रुदन करतसंते मन्दोदरीको उठाइकै रणभूमिविषे रावणके समीप ल्याईहैं ( २ ) पति कीगति देखिकै मन्दोदरी सहित सखिन पुकारि पुकारि रुदन

करती है चिकुरजेबार ते छूटिरहे हैं देहकी संभार नहींरहीहै ( ३ ) अरु हाथ छाती पीटती है अरु रावणको प्रताप गुण नानाप्रकारके कहि कहि रुदनकरती है ( ४ ) अग्नि शशि तरणि जे सूर्य हैं इनकेतेज हीनह्वइगये हैं ( ५ ) हे नाथ तुम्हारे बल शरीर कर्त्तव्यके प्रभाव भारको शेष कमठ नहीं सहिसक्ते हैं सो तन तुम्हार पृथ्वीविषे छारभरा परा है ( ६ ) अरु बरुण कुवेर इन्द्र पवन अग्नि इत्यादिक तुम्हारे रणसन्मुख काहूनहीं धीरधरयउ है ( ७ ) हे साईं तुम अपने भुजनके बलते यमराज अरु कालको जीतिलीन है अरु अब आप अनाथह्वइकै परयउ है तहां संदेह है कि कालकेबश तौ रावण भयोहै तहां जबते रावण जन्मलियो है तबते अरु जबते श्री रामचन्द्र बधिकै परमपदको पठायो है तबताईं रावणको कालदण्डनहीं भयो है कैसे जानिये रावण निरोग्य रह्यउ है अरु जरावस्था नहीं प्राप्ति

डोलनितधरणी तेजहीनपावकशशितरणी ५ शेषकमठसहिसकहिंनभारा सोतनभूमिपरयउभरिछारा ६ बरुणकुबेरसुरेश समीरा रणसनमुखधरिकाहुनधीरा ७ भुजबलजीतिकालयमसाईं अबरहेआपुअनाथकिनाईं ८ जगतबिदिततुम्हारिप्रभुताई सुतपरिजनबलबरणिनजाई ९ रामबिमुखअसहालतुम्हारा रहानकुलकोउरोवनहारा १० तववशबिधिप्रपंचसबनाथा सबदिशिपतिनितनावहिंमाथा ११ अबतवशिरभुजजंबुकखाहीं रामबिमुखयहअनुचितनाहीं १२ कालबिबशप्रभुकहानमाना अगजग

भई है अरु अन्तकालमें श्रीरामचन्द्रके स्वरूपको प्राप्तिभयोहै ताते कालको जीतिलियो है अरु कहूँ हमसुना है किरावण चौंसठि युगताईं राज्य कियो है ( ८ ) जगतविषे तुम्हारी प्रभुताई विदित है अरु तुम्हारे सुतप्रजनकेवल बर्णिबेयोग्य नहीं हैं ( ९ ) श्रीरामचन्द्रके विमुखसन्ते तुम्हार अस हाल है अब कुलविषे कोऊ रोवनहार नहीं रह्यउहैतहां जो कही किकुलमां कोऊरहवैनहीं कीनहै तौ अबहीं तौ विभीषणादिकलाखनहैं तहां हेनाथ तुमहीं ताईं रोउब रहा है काहेते तुम सबते विरोध करिकै सबजगतको रोवावत रह्यउहै अबकोऊ काहेको काहूते बैरकरिकै काहूको रोवावैगो काहेको कोई रोवैगो ( १० ) हेनाथ सम्पूर्ण जो ब्रह्माके प्रपञ्च विषे जेजीव चराचर हैं तेसब तुम्हारे बशरहे हैं अरु आठौ दिशा के पति तुम्हारे नित माथ नावते रहे हैं ( ११ ) अब तुम्हारे शिर भुजको सियार खाते हैंतहां श्रीरामचन्द्रते विमुख यह उचितहै अनुचित नहींहै ( १२ ) हेनाथ कालेबश ह्वइकै तुम काहूको कहा नहीं मान्योहै श्रीरामचन्द्र अनेक ब्रह्माण्ड चराचरके स्वामी तिनको तुम नरकरिकै जाना है त्यहिके फलको प्राप्ति भयउहै ( १३ ) छन्दार्थ॥ हेनाथ दनुज जेदानव राक्षस ते बन हैं त्यहिके दहन करिबेको श्रीरघुनाथजी अग्निहैं काहेते स्वयंहरि भगवान् हैं तिनको मनुज करिकै तुम जान्यउ है जिन श्री रामचन्द्रके चरणारविन्दविषे ब्रह्मादिक सुर सिद्ध नमतहैं ऐसे करुणासिन्धुको तुम न भजेहु ( १४ ) आजन्म कही जबते तुम जन्म्यउहै तबते पापकर ओघकही समूह करतेबीत्यउहै अद्यापि ताईं ताते तुम्हार शरीर पापमय ते श्रीरामचन्द्र तुमहूँ को निजधाम देतभयेहैं ऐसे जे श्रीरामचन्द्र ब्रह्मनिरामयषड्विकार रहिततिनके मैं नमस्कार करतीहौं ( १५ ) दोहार्थ॥ अहह अतिकष्ट करिकै

नाथमनुजकरिजाना १३ छं० ॥ जान्योमनुजकरिदनुजकानन दहनपावकहरिस्वयं ज्यहिनमतशिवब्रह्मादिसुरपिय भज्यउनहिं करुणामयं १४ आजन्मतेपरद्रोहरतपापौघमयतवतनअयं तुमहूंदियोनिजधामरामनमामिब्रह्मनिरामयं १५ दो० ॥ अहहनाथ रघुनाथसम कृपासिंधुकोआन मुनिदुर्लभजोपरमगतितोहिंदीनभगवान १६ चौ० ॥ मंदोदरीबचनसुनिकाना सुरमुनिसिद्धसबहिं सुखमाना १७ अजमहेशनारदसनकादी जोसुनिबरपरमारथबादी १८ भरिलोचनरघुपतिहिनिहारी प्रेममगनसबभयेसुखारी १९ रोदनकरतदेखनरनारी गयउबिभीषणमनदुखभारी २०

**बंधुदशाबिलोकिदुखकीना रामअनुजकहँआयसुदीना २१ लक्ष्मण जाइताहिसमुझावा बहुरिविभीषणप्रभुपहँआवा २२ कृपादृष्टिरघुबीरबिलोका करहुकृपापरिहरिअबशोका २३ कीनक्रिया**

मन्दोदरी कहतिहै हेनाथ रघुनाथजीके समान कृपालु को है कोई नहीं है जो मुनिनको दुर्लभगति सोभगवान् तोको सारूप्य मुक्तिदीन्यउहै ( १६ ) मन्दोदरीके बचन सुनिकै सुर मुनि सिद्ध इत्यादिक सब सुख मानत भयेहैं ( १७ ) अज जे ब्रह्माहैं महेश जे महादेवहैं नारद सनकादिक अरु जे मुनीश परमारथबादी कही ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मज्ञानी हैं ( १८ ) तेसब लोचनभरिकै श्रीरघुनाथजीको देखिकै प्रेमतेमग्न अतिसुखी भये हैं ( १९ ) सम्पूर्ण मन्दोदरी आदिक नारि अरु नर तिनको रोदन करत देखिकै विभीषण तिनके समीप जाइकै रावणको देखिकै भारी शोच करत भयेहैं ( २० ) बन्धुकै दशादेखिकै अतिदुःख करत भयेहैं तब श्रीरामचन्द्र लक्ष्मणजीकोआज्ञा देतभयेहैं ( २१ ) तब श्रीरघुनाथजी की आज्ञाते लक्ष्मणजी जाइकै विभीषणको समुझाइकै सबप्रकारते बोधकीन है पुनि विभीषण संयुक्त श्रीरामचन्द्रके समीप आवत भये हैं ( २२ ) तब श्रीरामचन्द्र कृपादृष्टि विलोकि कै विभीषणको आज्ञा देतभये किशोचको तजिदेहु रावणकी क्रिया विधिविधानसे करहु जाइ ( २३ ) श्रीरामचन्द्रकै आज्ञा पाइकै विभीषण रावण कै क्रिया विधिविधानसे देशकाल अवसर समेत करतभयेहैं ( २४ ) दोहार्थ॥ मयतनयाजे मन्दोदरी इत्यादिक रानी ते तिलांजुलि देत भई हैं श्रीरघुनाथजी को गुणगण वर्णतसंते भवनको जातीभई हैं ( २५ ) तब रापणकै क्रिया करिकै विभीषण श्रीरघुनाथजीके समीप आइकै शिर नावतभये हैं तब श्रीरघुनाथजी श्रीलक्ष्मणजीको बोलावतभये हैं ( २६ ) हेतात तुमसुग्रीव अंगद नलनील जामवंत मारुत हनुमान् इत्यादिक नयकही नीतिके शीलाकही स्थानहौ ( २७ ) ते तुमसब बिभीषणको लैकैंजाहु राजगद्दीपर बैठाइकै आवहु तिलकसारकही कइआवहु ( २८ ) अरु मैं तौ

**प्रभुआयसुमानी बिधिवतदेशकालगतिजानी २४ दो० ॥ मयतनयादिकनारिसब देहिंतिलांजलिताहि भवनगईरघुबीरगुण गणबरणमनमाहि २५ चौ० ॥ आयबिभीषणपुनिशिरनाये कृपासिंधुतबअनुजबोलाये २६ तुमकपीशअंगदनलनीला जामवंतमारुतनयशीला २७ सबमिलिजाहुविभीषणसाथा सारयहुतिलककहेहु रघुनाथा २८ पिताबचनमैंनगरनजाउं आपुसरिस प्रियअनुजपठाउं २९ तुरतचलेकपिसुनिप्रभुबचना कीन्हीजायतिलककरिरचना ३० सादरसिंहासनबैठारी तिलकसारअस्तुति अनुसारी ३१ जोरिपाणिसबहीशिरनाये सहितबिभीषणप्रभुपहँआये ३२ तबरघुबीरबोलिकपिलीन्हे कहिप्रियबचनसुखी**

समुद्रके किनारे विभीषणके तिलक कैचुक्यउं है अब अपने सरिस अनुजको पठवतहौं काहेते पिताके बचन करिकै चौदहवर्ष में नगरको नहीं जातहौं ( २९ ) श्रीरामचन्द्रके बचन सुनिकै लक्ष्मणजी सुग्रीव इत्यादिक कपिजातभये हैं लंकाविषे जाइकै तिलककी रचना वेदबिधानते करतभये हैं ( ३० ) सादरकही आदर समेत सिंहासनपर बैठारिकै तिलकसारकही श्रीरामचन्द्रकीआज्ञाते तिलककरतेभये हैं स्तुति करतेहैं श्रीलक्ष्मणजी कहते हैं हे विभीषण तुमधन्यहौ अब तुमको राज्यकी विषयहैसो बाधा न करैगी काहेते श्रीरामचन्द्र अपने प्रसाद करिकै लंकाको राज्य तुमको दीनहै काहेते तुम श्रीरामानन्य प्रपत्ति शरणागतहौ ताते निर्भयरहौ अब यह विषयदिव्य ह्वइगई है अरु विभीषणके तिलक करतसंते देवता फूल वर्षते हैं बाजाबजावते हैं गावते हैं नाचतेहैं ( ३१ ) असकहिकै हाथजोरिकै नमस्कार करतभये हैं काहेते भागवतन विषे विभीषणकी मुख्यगनती है काहेते कि रावण त्रैलोक्य विरोधीराजा त्यहिके मध्यमें बैष्णव धर्म विषे अतिदृढ़ रहेहैं ताते स्तुतिकरबे योग्यहैं सब प्रकारते ऐसे हाथजोरिकै स्तुतिकरिकै विभीषण सहित श्रीरघुनाथजीके समीप आवतभये हैं ( ३२ ) तब रघुनाथजी सबकपिनको बोलाइकै बहुत प्रकारते प्रियवचन कहिकै सबको सुखी करतभये हैं ( ३३ ) छन्दार्थ॥ श्रीरामचन्द्रने

सुधासम बाणी कहिकै बानरनको सुखीकीनहै पुनि कहते हैं हे बानरहु तुम्हारे बलते राक्षसनको जीतिलीनहै अरु बिभीषण राज्यको प्राप्तिभये हैं ताते तुम्हारे यश तीनिहुलोकमें नित्य नयाशोभित होइगो ( ३४ ) हमारीकीर्ति और तुम्हारीकीर्तियुक्तहै परम पावनीहै जोयहिको प्रेमसहित गावहिंगे सुनहिंगे समुझहिंगे तं संसार अपार सिंधुजो है सो बिनाश्रमहिं तरिजाहिंगे ( ३५ ) दोहार्थ॥ श्रीरामचन्द्र के सत्यसंकल्प अमृतमयमृदुबचन सुनतसंते

**सबकीन्हे ३३ छं० कियेसुखीकहिबाणीसुधासमबलतुम्हारेरिपुहयो पायोबिभीषणराजतिहुंपुरयशतुम्हारोनितनयो ३४ मोहिंसहितशुभकीरतितुम्हारी-परमप्रीतिजोगाइहैं संसारसिंधुअपारपारप्रयासबिनुनरपाइहैं ३५ दो०॥ सुनतरामकेबचनमृदुनहिं अघातकपिपुंजबारहिंबारबिलोकि-मुखगहहिंरामपदकंज ३६ चौ०॥ पुनिप्रभुबोलिलियेहनुमाना लंकाजाहुकहेउभगवाना ३७ समाचारजानकीसुनावहु तासुकुशललैतुमचलिआवहु ३८ तबहनुमंतनगरमहँआये सुनिनिशिचरीनिशाचरधाये ३९ पूजा बहुप्रकारतेइकीन्हा जनकसुतादेखाइतिनदीन्हा ४० दूरिहितेप्रणामतिनकीन्हा रघुपतिदूतजानकीचीन्हा ४१ कहहुतातप्रभु**

कपिनके जे पुंज हैं ते नहीं अघाते हैं बार बार श्रीरामचन्द्रके मुखचन्द्र विलोकिकै दण्डवत् करिकै पदकमल गहिकै दोउकरजोरिकै कहते हैं हे नाथ आपुकी कीर्ति ऐसी है हम चंचल पशुनाको आपन करिकै ऐसी बड़ाई देते हैं ऐसी तुम्हारी कीर्ति है त्यहिविषे मिलिकै हमारी करणी कमल पावनहोइ है महाराज जैसे गंगामें मिलिकै कर्मनाशा पावन भईहै ( ३६ ) बानरनके वचन सुनिकै श्रीरघुनाथजी मनहिंमें मुसुकाइकै हनुमान्जीते कहा कि तुम लंकाकोजाहु ( ३७ ) तुम जाइकै समाचार जानकी को सुनाइकै तिनकी कुशललैकै तुम चले आवहु ( ३८ ) तब तुरन्त हनुमान्जी नगर में प्रवेश करतभये हैं हनुमान्जी लंका को आये ( ३९ ) यहसुनिकै निशाचरी निशाचर धावतभये हैं हनुमान्जी के मिलिबेको बहुत प्रकारकै हनुमान्जीकै पूजन करिकै श्रीजानकीजी को देखाइदीनहै ( ४० ) हनुमान्जी दूरिहिते प्रणाम करतभये हैं तब श्रीजानकीजी चीन्हा कि श्रीहनुमान्जी रामदूत आये ( ४१ ) तब श्रीजानकीजी हनुमान्जीको पहिचानिकै निकट बोलाइकै हनुमान्जीको प्रसन्न देखिकै प्रसन्नता से पूंछती हैं कि हे तात प्रभु कृपाके निकेत अनुज सेनासमेत कुशल आनन्द हैं ( ४२ ) हे मातु कोशलाधीशप्रभु सब प्रकारते कुशल हैं रावणको समर में जीतिकै मारिकै परमपदको पठैदीन है सहित सेना ऐसेकृपाके निकेत हैं ( ४३ ) पुनि बिभीषणकहँ अविचल राज्यदीन है अबिचलकही आपन प्रसाददीन है ताते अचल ह्वइगई है अरु बिभीषण परम भागवत है तिनके सम्बन्धते लंकाकै राज्य परम दिब्य अचल ह्वइहै ( ४४ ) छन्दार्थ॥ श्रीजानकीजी के अतिहर्षते नेत्रनमें जल भरि आये हैं पुनि पुनि कही पुनः पुनः अतिहर्षविषे अतिआर्तविषे होत है कहती हैं रमा श्रीजानकीजीको रमा क्योंकहा रमाकही लक्ष्मीजीको तह

**कृपानिकेता कुशलअनुजकपिसेनसमेता ४२ सबबिधिकुशलकोशलाधीशा समरमातुजीतेउंदशशीशा ४३ अबिचलराजबिभीषणपाये सुनिकपिबचनहर्षउरछाये ४४ छं० ॥ अतिहर्षमनतनपुलकलोचनसजलकहपुनिपुनिरमा कादेउँतोहिंत्रैलोक्यमहँकपि**

श्रीजानकीजी लंकाविषे आइकै लंकाकै विभूति ब्रह्माकै सृष्टिभरेकै राज्यलंका है सो राजस तामसमय ह्वइरही है तहां श्रीजानकीजी जाइकै राजस तामस करिकै शुद्ध सात्विकमय विभूति करिदीन है श्रीरामानन्य परमभागवत विभीषणको राजा करिदीन है ते श्रीजानकीजी अनेक ब्रह्माण्डकी विभूति श्रीजानकीजीको अंश है ते जानकीजी ब्रह्माण्डभरेकेजीवनको विद्याविषे रमाइकै सुखी करिदीन है ताते रमाकही पुनि रमा कही लक्ष्मीको जौने संयोगसे सबजीव सुखीरहे सोई रमाको स्वरूप है शुद्ध ऐश्वर्यमय ताते रमाकहा है पुनि अर्थ कहते हैं रमाकही जो नारद के चित्तकी बृत्तिकी अपनेविषे रमायो है भागवत के प्रेरणाते अरु नारद ऐसे परमहंस श्रीरामानन्य परम भागवत तिनकर

अपमान कियो हैं ताते भागवतापराध कीन है सो श्रीजानकीजीको अंश है तहां यहि अवतारविषे श्रीजानकी अपने अंशको आज्ञादीनि है कि तुम हमार रूपह्वइकै लंकाको जाहु भागवतापराध मिटिजाइहि अरु रावण बीररसते शरणागत है ताको मोक्षदैकै ब्रह्माण्डभरेके जीवनको सुखीकरिकै हमारे स्वरूप में रमबकहीप्राप्तिहोहु आइ तातेरमाकही अथवा जहांतक रमाजोलक्ष्मी हैं तिनकर बिलास अनेक ब्रह्माण्ड विषे है सो श्रीजानकीजीका एकपाद अंशहै मूल प्रकृति कारण आदि तहां प्रमाण है अन्यच श्लोकार्द्ध॥ जानक्यंशमहामायामूलप्रकृतिकारणं॥ ताते रमाकही है किन्तुसमानअर्थ विषे श्रीजानकीजी को रमाको एककरिकै कहाहै हेहनुमान् त्रैलोक्यविषे किमपि कही तुम्हारी बाणी समान अवरका है कछुनहीं है ताते तुमको कादेहुँ ( ४५ ) हनुमान्‌जी कहते हैं हे मातु तुम्हारी प्रसन्नता मोरे ऊपर है तौ अनेक ब्रह्माण्डकी राज्य मोको प्राप्तिभई सबमेरे आधीन ह्वइरहे हैं आपुकी अनुग्रह ते पायों संशय नहीं है काहेते रणजीतिकै श्रीरामलक्ष्मणजी अतिमधुर बीररसमूर्त्ति पश्यन्ति कही देखिकै कैसे हैं श्री रामचन्द्र निरामय हैं आमय जेषट्‌विकार त्यहिते रहित हैं जन्म वृद्धि विवरण क्षीण जरा मृत्यु इतिषट् असकवन पदार्थ मोको दुर्लभ है सब सुलभ हैं

**किमपितवाणीसमा ४५ सुनुमातुमैंपायोंअखिलजगराजआजनसंशयं रणजीतिरिपुदलबंधुयुतपश्यंतिरामनिरामयं ४६ दो० ॥ सुनुसुतसदगुणसकलतव हृदयबसौहनुमन्त सानुकूलरघुबंशमणिरहीसमेतअनन्त ४७ चौ० ॥ अबसोइयतनकरहुतुमताता देखौंनयनश्याममृदुगाता ४८ तबहनुमानरामपहँजाई जनकसुताकीकुशलसुनाई ४९ सुनिबाणीपतंगकुलभूषण बोलिलियेयुवराजविभीषण ५० मारुतसुतकेसंगसिधावहु सादरजनकसुतालैआवहु ५१ तुरतहिसकलगयेजहँसीता सेवहिंसबनिशिचरीबिनीता ५२**

आपुके अनुग्रहते ( ४६ ) दोहार्थ॥ श्रीजानकीजी कहती हैं हे हनुमान् सद्‌गुण कही समीचीन गुण तुम्हारे हृदयमें बसहिं अरुरघुपति अरु अनन्त जे लक्ष्मणजी जिनके अनन्त कृपा है जीवन विषे ते दोऊजने सानुकूल रहहिं ( ४७ ) श्रीजानकीजी कहती हैं हेतात हनुमान् मनलगाइकै सोयत्न करहु जेहिप्रकार श्याम मृदुगात जे श्रीरामचन्द्र तिनको नेत्रन भरिकेंदेखौं ( ४८ ) तब हनुमान्‌जी श्रीजानकीजी को दण्डवत् करिकै श्रीरघुनाथजीके समीप जाइकै श्रीजानकीजीकी आनन्दकथा कहतभये ( ४९ ) हनुमान्‌जीकै बाणीसुनिकै पतंग जेसूर्य्यतिनके कुलकेभूषण श्रीरामचन्द्र तेयुवराज जेअंगद अरु विभीषण आदिक जेपार्षदहैं तिनको बुलावतभये हैं ( ५० ) श्रीरामचन्द्र कहतेहैं कि सबमिलिकै श्रीहनुमानजी के संगजाहु आदर संयुक्त जनकसुताको ल्यावहु जाइ ( ५१ ) तेसब तुरन्त गये जहांश्रीजानकीजी रही हैं तहां त्रिजटा आदिक जे निशिचरी ते बिनीतकही प्रवीण श्रीजानकीजीकै सेवा करती हैं ( ५२ ) त्रिजटादिक जे निशिचरीरहीं तिनते विभीषण कहते हैं श्रीजानकीजी को अति आदरते अनेक सुगंध लेपन करिकै स्नान करावहु शृंगार करावहु ( ५३ ) तब ते तुरन्तविभीषणकी आज्ञाते दिव्य बसन भूषण पहिरावती भई हैं पुनि शिविका जोपालकी हेमरत्नमय जटिल सूर्यइव प्रकाश सो ल्यावतीभईहैं ( ५४ ) त्यहि पालकीपर श्रीजानकीजी अति प्रसन्नह्वैकै श्रीरामचन्द्रअतिसनेही सुखके धाम तिनको सुमिरिकै स्वरूप हृदयमें धरिकै चढ़त भई हैं ( ५५ ) श्रीरघुनाथ जी के इहां विभीषण अंगद हनुमानादिक श्रीजानकीजी को लै चलत भयेहैं बेतपाणि जे विभीषणके चोपदार अनेकरक्षक पालकीके चहूँपास हर्षते श्रीरघुनाथजीकै बिजययश बोलत चलेजाते हैं ( ५६ ) अरु संगविषे महा भगवती निशिचरी अनेकन त्रिजटासंग समाज श्रीरामचन्द्र को सुमिरत चलीजाती हैं ( ५७ ) श्रीजानकीजीकी पालकी नजदीक आई

**बेगिबिभीषणतिनहिंसिखावा सादरतिनसीतहिअन्हवावा ५३ दिव्यबसनभूषणपहिराये शिविकारुचिरसाजिपुनिलाये ५४ तापरहर्षिचढ़ीबैदेही सुमिरिरामसुखधामसनेही ५५ बेतपाणिरक्षकचहुंपासा चलेसकलमनपरमहुलासा ५६ संगलियेत्रिजटानिशिचरी चलीरामपहँसुमिरतहरी ५७ देखनभालुकीशसबआये रक्षककोपिनिवारणधाये ५८ कहरघुबीरकहाममानहु सीतहिसखापियादेहिआनहु ५९ देखहिंकपिजननीकीनाई**

**बिहँसिकहारघुबीरगोसाईं ६० सुनिप्रभुवचनभालुकपिहर्षे नभतेसुरनसुमनबहुबर्षे ६१ सीताप्रथमअनलमहँराखी प्रकटकीनचहअन्तरसाखी ६२ दो०॥ त्यहिकारणकरुणायतन कहेउकछुकदुर्बाद**

तब भालुकपि देखनको धावतभये तहां रक्षक जे चोपदार रहे ते निवारण करते हैं कि नजदीक न आवहु ( ५८ ) तब श्रीरामचन्द्र कहा कि हे सखे विभीषण हमारोकहामानहु श्रीजानकीजीको पांयपियादहि आनहु ( ५९ ) जाते सब कपि भालु माताकी नाईं देखहिं बिहँसिकै श्रीरामचन्द्र कहत भये हैं ( ६० ) यह रघुनाथजीकी बाणी सुनिकै भालु कपि अतिहर्ष को प्राप्तभये तब श्रीजानकीजी पालकी परसे उतरतभईं सबसेना देखिकै परमानन्दको प्राप्तिभईं अरु देवता फूल बर्षते हैं हर्षते हैं ( ६१ ) तहां श्रीजानकीजी पावकविषे रही हैं पंचबटी विषे तहां श्रीरामचन्द्र तेहि स्वरूपको प्रकटकीन चाहत हैं अग्निको अन्तरसाक्षी करिकै ( ६२ ) दोहार्थ॥ श्रीजानकीजीको पावकते प्रकटहेतु कछु दुर्बादकहा है यहसुनिकै त्रिजटा आदि राक्षसी विषाद करती भईं ( ६३ ) श्रीरामचन्द्र के वचन शीशपर धरिकै श्रीजानकीजी मन क्रम बचन बिनीतकही प्रवीण अति सांचीबोलती भई हैं ( ६४ ) श्रीजानकीजी कहती हैं कि हे लक्ष्मणजी तुम धर्मके नेगीहोउ धर्म के नेगीकही हमारे धर्मके रक्षकहोउ बेगि तुम पावक प्रकट करहु काहेते तुम्हारी आज्ञा सदा करतआयो हैं सबउचितै मानिकै ( ६५ ) तब श्रीलक्ष्मणजी श्रीजानकीजी कै बिरह बिबेक धर्म नीतिमय सानी बाणी सुनिकै ( ६६ ) श्रीलक्ष्मणजी के नेत्रनमें जलभरि आये दोऊकर जोरिकै प्रभु सन्मुख कछुकहि नहीं सकते हैं ( ६७ ) श्रीरामचन्द्रकर रुखदेखिकै श्रीलक्ष्मणजी तुरन्त चन्दन अगर इत्यादिक काष्ठ अरु अग्नि ल्यावतभये हैं ( ६८ ) तहां लक्ष्मणजी काष्ठ अनेक बटोरिकै अग्नि प्रज्वलित करिदिहिनि सो अग्निकै ज्वाला स्वर्गलोक ताईं प्राप्तिभई जाइ सो प्रबल अग्नि श्रीजानकीजी बिलोकतभईं हृदयमें हर्ष

**सुनतयातुधानीसकललागीं करनविषाद ६३ चौ०॥ प्रभुकेवचनशीशधरिसीता बोलींमनक्रमवचनबिनीता ६४ लक्ष्मणहोहु धर्म्मकेनेगी पावकप्रकटकरहुतुमबेगी ६५ सुनिलक्ष्मणसीताकैबानी बिरहबिवेकधर्म्मनयसानी ६६ लोचनसजलजोरिकरदोऊ प्रभुसनकछुकहिसकहिँनओऊ ६७ देखिरामरुखलक्ष्मणधाये प्रकटकृशानुकाष्ठबहुलाये ६८ प्रबलअनलबिलोकिबैदही हृदयहर्षकछुभयनहिंतेही ६९ जोमनवचन कर्म्ममनमाहीं तजिरघुबीरआनगतिनाहीं ७० तौकृशानुसबकोगतिजाना मोकहँहोउश्रीखंडसमाना ७१ छं० ॥ श्रीखंडसमपावकप्रबेशिय सुमिरिप्रभुश्रीमैथिली जयकोशलेशमहेशबंदित चरणरतिअति**

है कुछ भयनहीं है ( ६९ ) यह श्रीजानकीजी अपने मनमें कहतीहैं कि जो मन बचन कर्म सर्बत्यागे श्रीरघुनाथजीकेचरण कमलकै गति मोकोहोइ ( ७० ) तौ हे परमेश्वर तुम अन्तर्यामी सर्बकीगति जानतहौ अरु त्रिकालज्ञ कृशानुरूप तुमहींहौ मोको श्रीखण्डकही चन्दनके समानहोउ ( ७१ ) छन्दार्थ॥ हे पार्बती श्रीजानकीजी यहकहतीहैं जय श्रीकोशलेश यहकहिकै श्रीरघुनाथजी के चरणकमल स्मरण करिकै ज्यहि चरण कमलको महेश बिधि सनकादि इत्यादिक मुनीश्वर ध्यायकै अन्तष्करण निर्मल करते हैं सो चरण हृदयमें धरिकै श्रीजानकीजी महाबप्रबल अग्निमें प्रवेश कीनहै सो पावक श्रीखण्डकही चन्दनके समानभयो है श्रीजानकीजीके प्रवेश करतसंते ( ७२ ) आदि जो श्रीजानकीजी तिनकर प्रतिबिम्ब अरु त्यहिकर जो लौकिक कलंक सो प्रचण्ड पावकविषे दहिगयो है तहां देवतन विषे प्रतिबिम्ब नहीं सुनिबे में आयोहै तहां श्रीजानकीजी विषे प्रतिबिम्ब सो कैसे सम्भवे है सो अपनी लीलाहेतु प्रतिबिम्ब करिलीन है ज्यहि प्रतिबिम्ब करिकै लक्ष्मणजीको दुर्बचन कहा है सो भस्महैगयो है अरु निजसत्य प्रतिबिम्ब जानकीजीके स्वरूपविषे प्राप्तिहोइगयो है किन्तु प्रतिबिम्ब विषे जो कलंकरहेउ सो जरिगयो है तहां यह श्रीरामचन्द्र को चरित्र अद्‌भुत कोईनहीं जानिसकेउ है नभविषे देवता

सिद्ध अरु मुनीश्वर इत्यादिक सबखड़ेदेखते हैं पर काहूके लखिबेमें नहीं आयो ( ७३ ) तब अनल ब्राह्मणको रूपधरिकै आदि जो श्रीजानकीजी श्रुतिको सिद्धांत सो स्वरूप अग्निको श्रीरघुनाथजी सौंप्योरह्यो सो स्वरूप अग्नि गोदमें लैकै श्रीरघुनाथजीको समर्पणकीन आइकै जिमि क्षीरसागर ब्राह्मणको रूपधरिकै इंदिरा जो लक्ष्मीहैं तिनको विष्णु भगवान्को समर्पण कीनहै

निर्म्मली ७२ प्रतिबिम्बआलौकिककलंकप्रचण्डपावकमहँजरे प्रभुचरितकाहुनलख्योनभसुरसिद्धमुनिदेखतखरे ७३ तबअनल भूसुररूपकरगहिसत्यश्रीश्रुतिबिदितजो जिमिक्षीरसागरइंदिरारामहिंसमर्प्यउआनिसो ७४ सोइरामबामविभागराजतरुचिर अतिशोभाभली नवनीलनीरदनिकटमानहुं कनकपंकजकीकली ७५ दो० ॥ हर्षिसुमनबर्षहिंविवुध बाजहिंगगननिशान गावहिंकिन्नरअप्सरा नाचहिंनटीबिमान ७६ श्रीजानकीसमेतप्रभुशोभाअमितअपार देखतहर्षेभालुकपि जयरघुपतिसुखसार ७७॥

( ७४ ) सो श्रीजानकीजी श्रीरामचन्द्रके बामभाग विषे विराजती हैं शोभा अति भलीबनी है मानहुं नीरद जो नील नबीन मेघ है जेहिके निकट कंचनइव पंकजकी कली फूली हैं ( ७५ ) दोहार्थ॥ तहां श्रीरामचन्द्र श्रीजानकी जी की शोभा आनन्दमय देखिकै देवता ब्रह्मादिक हर्ष सहित फूलबर्षते हैं अरु अनेक दुन्दुभी इत्यादिक बाजा गगनमें बाजते हैं बिमाननपर चढ़े किन्नर गावते हैं अप्सरा नृत्यकरती हैं ( ७६ ) श्रीजानकीजी अरु श्रीरघुनाथजीकै अति अपार शोभादेखि भालु कपिनको अतिहर्ष होतभयो है यह कहते हैं संपूर्ण सुखकेसार श्रीरामचन्द्र तिनकी जय ( ७७ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेलंकाकाण्डेबिभीषणराज्यप्राप्ति श्रीजानकीजीश्रीपरमानन्दमिलाप वर्णनंनामद्वाविंशस्तरंगः २२॥ :: :: :: :: :: :: ::

दोहा॥ रामचरणसुरविधिविनयशुभतरंगत्रयबीश दशरथआइअनन्द भेपुनिअस्तुति सुरईश २३ तब इन्द्रको सारथीकही मातलि श्रीरघुनाथजीकी आज्ञापाइकै चरण कमलमें शिरनाइकै रथलैकै इन्द्रलोकको चल्यउ है ( १ ) तब सदा आपन स्वारथी जे देवता अनेकहैं ते नभविषे बिमानपर चढ़िकै आवतभये ते रघुनाथजीकी स्तुति करते हैं कहते हैं बचन मानो परमार्थी हैं परमार्थीके ऐसे बचन कहते हैं परमार्थ कही परमअर्थ श्रीराम स्वरूप परब्रह्म प्रताप ऐश्वर्य तेज कृपा परमदिब्य देवता बर्णन करते हैं ( २ ) देवता बोलते हैं हे देव दीनदयाल श्रीरघुराय हम देवता योग वैराग्य ज्ञान ध्यान तुम्हार जो है त्यहिकरिकै दीनकही हीन बिषयमें मनलीनह्वइरहे हैं तिनपर तुम अति दयाकीन ऐसे दीनबन्धुहौ ( ३ ) यह जो रावणसो संपूर्ण बिश्वकरद्रोही अतिखल कामी कुमार्गगामी अपने पापतेगयो है ताहूको अपने स्वरूप करिकै परमपद दीनहै ऐसे कृपा-

चौ० ॥ तबरघुपतिअनुशासनपाई मातलिचलेउचरणशिरनाई १ आयेदेवसदास्वारथी वचनकहहिंजनुपरमारथी २ दीनबंधुदयालरघुराया देवकीनदीननपरदाया ३ विश्वद्रोहरतयहखलकामी निजअघगयोकुमारगगामी ४ तुमसमरूपब्रह्मअबिनाशी सदाएकरससहजउदासी ५ अकलअगुणअजअनघअनामय अजितअमोघशक्तिकरुणामय ६ मीनकमठसूकरनरहरी बामनपरशुरामबपुधरी ७ जबजबनाथसुरनदुखपायउ नानातनधरितुमहिंनशायउ ८ रावणपापमूलसुरद्रोही काममोहमदरत

लुहौ ( ४ ) तुम समरूपहौ परब्रह्महौ अबिनाशीहौ एकरसहौ अरु संसारते सहजै उदासीनहौ ( ५ ) देवता कहते हैं हे श्रीरामचन्द्र तुम अकल कही कला रहितहौ कलाकही जैसे चन्द्रमाबिषे शुक्लपक्ष कृष्णपक्ष विषे षोड़शौकला भोग्यकरै हैं अरु पूर्णमासीको षोड़शौकला पूर्ण हैं तैसे तुम नहींहौ तुमविषे अनन्तकला हैं अरु एकौनहीं हैं तुमसदा एकरस

परिपूर्णहौ अरु तुम निर्गुण हौ मायाके गणजेते हैं तामस राजस सात्विक इत्यादिक त्यहिते तुमपरेहौ अजकही अजन्महौ गर्भविषे नहीं आवतेहौ स्वयं अवतीर्णहौ अनघ कही संपूर्ण पापते रहितहौ अनामय कही रोग षड्विकार काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य पुनि षड्बर्ग जन्म वृद्ध विवर्ण क्षीण जरा मरण एते आमय त्यहिते तुम रहितहौ अरु अजित हौ काहूके जीतिबेमें नहींहौ महाकालहुको तुमजीतेहौ अरु हेकरुणामय तुम्हारीशक्ति अमोघकही जाको आदि अन्त मध्य वेदौनहीं जानिसकेंहें ( ६ ) अरु मीन कच्छप बाराह नरसिंह बावन परशुराम इत्यादिक अपने अंश कला बिभूति करिकै तुमहीं शरीरको धारण करतेहौ ( ७ ) हे नाथ जब जब राक्षसन करिकै हम देवता दुखितहोते हैं तब तब हमारे दुःख को दूरिकरतेहौ नानातन धरिकै ( ८ ) हे नाथ रावण पापकर मूल देवतनकर द्रोही काम मोह मद त्यहिमहँरत अतिक्रोधी ( ९ ) हे कृपालु सो तुम्हारे धामको सिधावा यह हमारे मनविषे अतिविस्मय भयो है ताते तुम्हारी गतिको कोई जानबेयोग्य नहीं है ( १० ) हे नाथ हमजो देवता है सो तुम्हारे भजनके परम अधिकारी कहावते हैं परस्वार्थविषे रतह्वइकै तुम्हारी भक्तिको विसारिदीन है ( ११ ) हे प्रभु जो संसार महाघोर नदरूप त्यहिको प्रबाहकही संसृत जन्म मरणहै त्यहिविषे हमसंततकही निरंतर बहे फिरते हैं अरु रावणादिक राक्षस परमपदको प्राप्तिभये हैं अब हे प्रभु पाहिपाहि आपुको अतिसमर्थ जानिकै शरण आये हैं हम

अतिकोही ९ सोउकृपालुतवधामसिधावा यहहमरेमनबिस्मयआवा १० हमदेवतापरमअधिकारी स्वारथरततवभक्तिबिसारी ११ भवप्रबाहसंततहमपरे अबप्रभुपाहिशरणअनुसरे १२ दो० ॥ करिबिनतीसुरसिद्धसबरहेजहँतहँकरजोरि अतिशयप्रेमसरोजभव अस्तुतिकरतबहोरि १३॥ तोटकछंद॥ जयरामसदासुखधामहरे रघुनायकशायकचापधरे भवबारनदारनसिंहप्रभो गुणसागरनागरनाथबिभो १४ तनकामअनेकअनूपछबी गुणगावतसिद्धमुनींद्रकबी यशपावनरावननागमहा खगनाथयथाकरिक्रोधगहा १५ जनरंजनभंजनशोकभयं गतक्रोधसदाप्रभुबोधमयं अवतारउदारअपारगुनं महिभारबिभंजनज्ञानघनं १६

सबप्रकारते विषयमें परे हैं आपु हमको उबारिलेहु ( १२ ) दोहार्थ॥ हे भरद्वाज जेतेसुर सिद्धहैं ते बिनती करिकै करजोरिकै ठाढ़ह्वैरहे हैं बहोरि कही त्यहिके उपरांत सरोजभव जे ब्रह्माहैं ते अतिशय प्रेमकरिकै स्तुति करते हैं ( १३ ) छंदार्थ॥ ब्रह्मा स्तुति करतेहैं हेहरे श्रीरामचन्द्र तुम्हारी जय तुमसदा जयमान्हौ अरु सुखके धामहौ हेरघुनायक तुम धनुषबाणको धारण किहेहौ सदा अपने भक्तनकी रक्षाहेतु हेप्रभो भव जो संसार सो बारण कही हाथीहै त्यहिके दारणकही नाशकरिबेको तुमसिंहहौ हे नाथ आपपरमदिव्य गुणके सागरहौ अरु नागर कही सर्वोपरि श्रेष्ठ अतिप्रबीणहौ बिभुकही सबप्रकारते अतिसमर्थहौ ( १४ ) अरु तुम्हारतन अनेकन कामकी शोभाको हरत है अरु तुम्हारे गुण मुनींद्र कबींद्र गाइकै परमानंद सुखको प्राप्तिहोते हैं अरु हे नाथ रावण महानाग है त्यहिको यथा खगनाथ क्रोध सहित महानागन को गहिकै खाइलेते हैं तथा तुम रावणको नाशकरिदीन है तुम्हारो यश छाइरह्यउ है ( १५ ) हे प्रभु अपने जननको रंजनकही अनन्दकर्त्ताहौ अरुशोक भय के हर्त्ता हौ हे प्रभु अरु गतक्रोधहौ अरु बोधकही ज्ञानमयहौ अरु आपने अवतीर्ण ह्वइकै जो लीलाकीन है सो अतिउदार परमदिव्य गुणमयलीला है अरु तुम महिके भारको विभंजन कीन है अरु ज्ञानके घनकही सघनसमूहहौ ( १६ ) हे श्रीरामचन्द्र तुम अजकही अजन्महौ गर्भमें नहीं आवते हौ अरु सर्वत्र व्यापक सर्बत्रको चैतन्य किहेहौ अरु एकहौ अद्वैतहौ अरु अनादिहौ सदा एकरसहौ हे श्रीरामचन्द्र करुणाके आकर कही खानिहौ मुदकही परमानन्द स्वरूपहौ ते तुमको हम नमस्कार करते हैं हे रघुबंशबिभूषण दूषणहा कही सम्पूर्ण दुःख के नाश करनेवालेहौ किंतु खरदूषण को नाश कीन है अरु विभीषण अति दीन रहा तिसको लंकाको राजाकीन अरु भक्तराज कीन ( १७ ) अरु ज्ञान आदिक जे दिव्य गुण

अजब्यापकमेकमनादिसदा करुणाकररामनमामिमुदा रघुबंशबिभूषणदूषणहा कृतभूपविभीषणदीनरहा १७ गुणज्ञाननिधानअमानअजं नितरामनमामिविभुंविरजं भुजदंडप्रचंडप्रतापबलं खलवृन्दनिकंदमहाकुशलं १८ बिनुकारणदीनदयालहितं छबिधामनमामिरमासहितं भवतारणकारणकाजपरं मनसंभवदारुणदोषहरं १९ शरचापमनोहरत्रोणधरं जलजारुणलोचनभूप

अनन्त हैं तिनके निधान कही स्थानहौ अरु सदा अमान हौ अजहौ हेश्रीरामचन्द्र हम तुम्हारो निरन्तर नमस्कार करते हैं विभुकही तुम सब प्रकार समर्थ हौ विरजरजकही माया त्यहिते रहितहौ तुम्हारो जो भुजदण्ड अतिप्रचण्ड बल प्रतापकरिकै पूर्णहै अरु खलनके वृन्दके निकन्दन करबेको कुशल कही पण्डित प्रवीणहौ ( १८ ) अरु तुम बिनाकारणहि दीनदयाल सबके परम हितकारी हौ छबिकेधाम रमाकही सहित जानकीजी हम तुमको नमस्कार करते हैं अरु भवकही संसारके तारबेको एकतुम्हींहौ अरु कारण कार्य द्वौके प्रेरेहौ प्रमाण श्रुतिः॥ यस्यांशेनैवब्रह्माविष्णुर्महेश्वरा अपिजाता महाविष्णुर्यस्यदिव्य गुणाश्चसएवकार्यकारणयोःपरःपरमपुरुषो रामो दाशरथी बभूव॥ मनते सम्भव जे दारुण दुःख दोष तिनको हरतेहौ ( १९ ) तुम शर चाप अरु मनोहर त्रोण धरेहौ अरु अरुणजलज इव तुम्हारे नेत्रहैं तहांतक देवदानव मनुष्यराजा हैं तिनके तुम शिरोमणि हौ सुखमन्दिर सुंदर श्रीरमणहौ मद जो है मारकही काम जो है अरु महा ममता जोहै तिनको शमनकही नाशकर्त्ताहौ ममताकही यहि जगत्में जहांतक विषय सम्बन्ध है त्यहिको अपनपौ मानना अरु महाममता कही योग वैराग्य ज्ञान ध्यान समाधि इत्यादिकको अभिमान है सो सब ममता अपने जननकै दुरि करिदेतेहौ ( २० ) हे श्रीरामचन्द्र अनवद्यकही निर्दोष हौ पुनि अनवद्यकही वाणीते परेहौ अखंड हौ अगोचर हौ गो जो इन्द्री त्यहिते आदिहौ इन्द्रिनके ग्रहण में नहीं आवतेहौ अरु तुम सदा समरूप हौ अरु सब चराचर विषे अन्तर्यामी रूप ह्वइकै तुमहीं व्याप्त हौ अरु सब तुमहींहौ अरु सब नहींहौ सबते भिन्नहौ यह वेदकहते हैं दन्तकथानहींहै कैसे तुमहौ सबमें व्याप्तहौ अरु सबते भिन्नहौ जैसे रबि जो सूर्य हैं तिनकर आतप जो तेज है सो सूर्यतेभिन्न है अरु नहीं भिन्न है ऐसे तुमहौ तहां प्रमाण है ब्रह्माण्डपुराणे श्री

वरं सुखमन्दिरसुंदरश्रीरमनं मदमारमहाममताशमनं २० अनवद्यअखंडअगोचरगो समरूपसदासबहोइनसो इतिवेदवदंतिन दंतकथा रविआतपभिन्ननभिन्नयथा २१ कृतकृत्यविभोसबवानरये निरखंततवाननसादरये धृगजीवनदेवशरीरहरे तबभक्तिबिनाभवभूलिपरे २२ अबदीनदयालदयाकरिये मतिमोरिविभेदकरीहरिये ज्यहितेबिपरीतकृपाकरिये दुखसोसुखमानिसुखीचरिये २३ खलखंडनमंडनरम्यक्षमा पदपंकजसेवितशंभुउमानृपनायकदेवरदानमिदं चरणांबुजप्रेमसदाशुभदं २४ दो ॥ बिनयनकीनविधिभांतिबहु

रामगीतायां श्रीरामचन्द्र वाक्यं वशिष्टं प्रति श्लोक १ यथानेकेषुकुंभेषुरविरेकोपिदृश्यते॥ तथासर्वेषुभूतेषुचिन्तनीयोस्म्यहंसदा ( २१ ) हे विभो समर्थ ऋच्छ बानरनको कृतकृत्यकही कृतार्थ कीन है अरु त्रैलोक्यमें सुयशदीन है ये बानर बड़भागी हैं जे तुम्हारे चन्द्रमुखको अहर्निशि देखते हैं हे हरे हमारे देवतनके शरीरको धिग्है तुम्हारी भक्ति बिना संसारके विषयमें भूलि परे हैं ( २२ ) हे दीनदयाल यहि व्यवहार में बहुत काल बीते हैं ताते अब दयाकरिये हे हरि मोरीमतिको विभेद कही भेदते रहित करिये इहां अभेदकही जहांतक त्रैगुण्यजनित व्यवहार हैं तिन विषे तुम्हैंमय देखौं चैतन्य रूप कर्त्ता तुमहींहौ अरु तुम्हारे चरणारविंद विषे एकरस अनुराग बनारहै अरु जो कार्य मोको सौंप्यौ है तामें मोको अपनपौ न आवै अरु ज्यहिते बिपरीत कृपा होती है सो मिटिजाइ दुःख सुख सममानिकै सुखी ह्वइकै जगत् में विचरते हैं तुम्हारे जन सदा सोई बर मोकोहोइ ( २३ ) हे नाथ खलके खण्डनकर्त्ताहौ खलकही दानव राक्षस अरु षड्विकार काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य इत्यादिक तिनके खण्डनकर्त्ताहौ अरु मण्डन रम्यकही संपूर्ण भुवनके शृंगार अति सुन्दरहौ अरु क्षमारूपहौ अरु तुम्हारे पदपंकजको सहित उमा महादेव सुरराज ऋषिराज योगराज मुनिराज ज्ञानराज भक्तराज इत्यादिक

महात्मा सेवते हैं हे नृपनायक इन्द्र यह वरदान देहु तुम्हारे चरणांबुज विषे अखण्डप्रीति बनीरहै कैसे चरण हैं समस्त शुभ मंगल के दाता हैं ( २४ ) दोहार्थ॥ हे भरद्वाज विधाता प्रेमते पुलकितगात बहुप्रकारते बिनय करिकै श्रीरामचन्द्रको स्वरूप देखतेहैं नेत्रनहीं अघाते हैं ( २५ ) हे गरुड़ त्यहि अवसरविषे इन्द्रलोकसे बिमानपर आरूढ़ह्वइकै श्रीदशरथमहाराज आवतेभये हैं तनय श्रीरामचन्द्रहैं तिन्हैं बिलोकिकै नेत्रनमें जल छाइ रहा है ( २६ ) श्रीलक्ष्मणसहित श्रीरघुनाथजी करजोरिकै प्रणाम करते

प्रेमपुलकिअतिगात बदनबिलोकतरामकरलोचननहींअघात २५ चौ० ॥ त्यहिअवसरदशरथतहँआये तनयबिलोकिनयनजलछाये २६ सहितअनुजप्रणामप्रभुकीन्हा आशिर्बादपितैंतबदीन्हा २७ तातसकलतवपुण्यप्रभाऊ जीत्यउंअजयनिशाचरराऊ २८ सुनिसुतबचनप्रीतिअतिबाढ़ी नयननीररोमावलिठाढ़ी २९ रघुपतिप्रथमप्रेमअनुमाना चितैपितैंदीन्ह्योदृढ़ज्ञाना ३० तातेउमामोक्षनहिपायो दशरथभेदभक्तिमनलायो ३१ सगुणउपासकमोक्षनलेहीं तिनकहँरामभक्तिनिजदेहीं ३२

भये तब आशीर्वाद पिता देतभये कि तुम सदा जयमानरहहु ( २७ ) तब श्रीरामचन्द्र कहते हैं हे तात तुम्हारे पुण्यप्रभावते जो निशाचरनकर राजा रावण अजय किसीके जीतिबे योग्यनहीं त्यहिको हम जीतिलीन आपुके प्रतापते ( २८ ) श्रीरामचन्द्रके बचन सुनिकै अतिशय प्रीतिबढ़ी नेत्रन महँ जलभरि आये रोमांच ठाढ़ह्वइआये हैं ( २९ ) तब श्रीरामचन्द्र पिताको प्रथम प्रेममन अनुमानकीन कि कदाचित् मोरे प्रेमके बश स्वर्ग छोड़िकै चले न आवहिं किंतु देवरूपतन छोड़िदेहिं ताते श्रीरामचन्द्र पिताके अंतर मूर्त्तिविषे ज्ञान उत्पन्न करिदीन है जाते हमविषे परमेश्वर बुद्धि बनीरहै आगे कछु अन्य ग्रन्थकी उक्तिकहते हैं तहां श्रीरामचन्द्र हाथ जोरिकै पितासे यहकहते हैं हे तात केकयी हमारे मनकी रुचि कीनहै ताते केकयी हमको बहुतप्रियहै ताते आपु केकयीको त्याग न करो अंगीकार करहु यह बरदान हमको देहु तब दशरथ महाराज अतिहर्ष ते एवमस्तु कहते भये हैं ( ३० ) हे उमा दशरथ महाराज मोको नहीं प्राप्तिभये हैं स्वर्गविषे रहेजाइ काहेते श्रीदशरथजी ने श्रीरामचन्द्र के स्वरूप में भेदभक्ति विषे मनआसक्त कीनहै तहां एकभेद भक्तिहै एक अभेद भक्ति है कोई ज्ञानको अभेद कहते हैं सो इहां ज्ञानको कछुप्रयोजन नहीं है इहां भेदाभेदभक्ति को प्रयोजन है इहां भेदाभेदभक्ति दुइप्रकार कीहै तेहिको प्रयोजन कहते हैं तहां अभेद भक्ति कहते हैं शांतरसविषे आरूढ़ ह्वैकै श्रीरामचन्द्र से सामान्य ऐश्वर्य पञ्चम मुक्ति चाहतेहैं किन्तु शृंगार रसविषे आरूढ़होइकै श्रीरामचन्द्रजी से बराबरि रसभाव योग्य चाहते हैं सोभी पञ्चममुक्ति है अरु कोई सख्यरसविषे आरूढ़ होइकै सारूप्य मुक्तिहोइकै बराबरि रसक्रीड़ा भोग्य हेतु परमपद श्रीराम इहां मोक्षचाहते हैं यह तीनों अभेद भक्ति भावकरिकै परमपद को प्राप्ति होते हैं कोई दास रसविषे अभेद मानते हैं श्रीरघुनाथजी के अलंकार होइकै अंगसेवन भावकरिकै परमपद चाहतेहैं सोभी अभेद भक्तिहै ताहीकोकोई सायुज्यमुक्ति कहतेहैं अरु भेदभक्ति दास्यरस वात्सल्यरसकरिकै परमपदको प्राप्ति होते हैं तामें दुइ भेद हैं एकसकाम एकनिष्काम एकनको मोक्षकी कामनाहै अरु कैवल्य भक्ति चाहते हैं मोक्षते निष्कामहैं श्रीरामचन्द्र के दर्शनकै

बारबारकरिप्रभुहिंप्रणामा दशरथहर्षिगयेसुरधामा ३३ दो० ॥ अनुजजानकीसहितप्रभुकुशलकोशलाधीश छबि

कार्य चाहते हैं अरु श्रीराम रजाय सर्बथा करते हैं सो भेदभक्ति है सो दशरथ महाराज भेदभक्ति ग्रहणकरिकै स्वर्गको प्राप्तिभयेहैं श्रीराम इच्छा जानिकै श्रीराम लीला छ: कांडको श्रीरामचन्द्र राज्याभिषेक राज्यको ऐश्वर्य सबश्रीरामचन्द्र बिषे देखिकै परमानन्द पूर्ण परविभूतिको श्रीरामचन्द्रके संगही स्वर्ग जाहिंगे ( ३१ ) पांचहु रसविषे जे सगुण ब्रह्मके उपासकहैं अरु सर्ब मोक्षते निष्काम हैं तिनको श्रीरामचन्द्र अपनी भक्तिदेते हैं ज्यहिभक्तिके आधीनपांचहु मुक्तिहैं ( ३२ ) श्रीरामचन्द्र श्रीदशरथ महाराजको ज्ञानदीन अपने स्वरूप परब्रह्मसोबोध दशरथमहाराजको अच्छी तरह करिदीन है ताते दशरथ महाराज श्रीरामचन्द्र कै इच्छा बिचारिकै श्रीरामचन्द्र के बारबार नमस्कार कीनहै

अरु दशरथ महाराज को श्रीरामचन्द्र सहित प्रियानुज लक्ष्मणजी ने बारबार नमस्कार कीन तबदशरथमहाराज अति हर्षते सुरधाम जहांरहे इन्द्रपुरी को जातभये हैं ( ३३ ) दोहार्थ॥ अनुज अरु जानकी सहित श्रीरामचन्द्र कुशलकही आनन्दपूर्वक अत्यन्त शोभा छबि देखिकै सुरनके ईश जे इन्द्रहैं ते स्तुति करते हैं ( ३४ ) छन्दार्थ॥ जयश्रीरामचन्द्र कही सर्वोपरि विजय है जाकी अपनी शोभा करिकै त्रैलोक्यजनित कामादिककी शोभाको जीतिलीन है ताते शोभाधामकही अरु अपने बलकरिकै महाकालहु को जीतिलीन्ह है अरु मोक्ष इत्यादिक दानकरिकै त्रैलोक्य को जीतिलीनहै ताते सदा जयमान कही अरु बिश्राम कही परमानन्द दायक आपने शरणागत जीवनको एकतुमहींहौ अरु धृतकही धारण किहेहौ तूण जो तरकस अरु धनुषबाण आपने भक्तनके रक्षाहेतु अरु तुम्हारे भुजदंडके अति प्रबल प्रताप त्रैलोक्यपर बिराजि रहेउहै ( ३५ ) हे खरदूषणके अरि तुम्हारी उदारताकी महिमा अपारहै जयहोइ तुम्हारी हे रावणारि हे कृपालु यातुधान जे राक्षस हैं तिनको बिकलकरिकै मारिकै परमपददीनहै जयहोइ तुम्हारी ( ३६ ) हे नाथ दशकन्धर जो है सो अति अपने बलके गर्बते बश्यकिहे है सुर गन्धर्ब किन्नरादिकन को मुनि सिद्ध खग नर नाग इत्यादिक जे हैं

**बिलोकिमनहर्षअतिअस्तुतिकरसुरईश ३४ तोमरछं० ॥ जयरामशोभाधाम दायकप्रणतबिश्राम धृतत्रोणबरशरचाप भुजदंडप्रबलप्रताप ३५ जयदूषणारिखरारि महिमाउदारअपारि जयरावणारिकृपाल किययातुधानबिहाल ३६ लंकेशअतिबलगर्ब कियेबश्यसुरगंधर्ब मुनिसिद्धखगनरनाग हठिपंथसबकेलाग ३७ परद्रोहरतअतिदुष्ट पायोसोफलपापिष्ट अबसुनहुदीनदयाल राजीवनयनबिशाल ३८ म्वहिंरहाअतिअभिमान नहिंकोउमोहिंसमान अबदेखिप्रभुपदकंज गतमानप्रददुखपुंज ३९ कोइब्रह्मनिर्गुणध्याव अब्यक्तज्यहिश्रुतिगाव म्वहिंभावकोशलभूप श्रीरामसगुणस्वरूप ४० बैदेहिअनुजसमेत ममहृदयकरहु**

हठ करिकै सबके पंथलागिकै दुख दायोहै ( ३७ ) पराये द्रोह विषे रावण रत राति दिन महापापिष्ट तेहिने अपने फलको पायोहै तेहिको तुम मोक्ष दीन हे राजीवनयन बिशाल सुनहु ऐसे तुम दीनदयाल हौ ( ३८ ) श्रीरामचन्द्र मोरे अति अभिमान रहाहै कि मेरे समान कोईनहीं है रावण करिकै बलको अभिमान जातरह्यउहै त्यहि रावणको आपुनाश करिदीनहै यह समुझेउ कि आपुके समान कोईनहींहै ताते आपुके पदपंकजदेखिकै सम्पूर्ण अभिमान को कारण सुद्धां नाश होइगयो है मानदुःखके पुञ्जको कारण है अरु प्रदकही दाताहौ सोई आपुकी कृपाते गतकही जात रहेउहै ( ३९ ) कोई निर्गुण ब्यापकब्रह्म करिकै तुमको ध्यावते हैं जेहिको वेद अव्यक्तकही अप्रकट अदृश्य करिकै गावत हैं अरु मोको कोशलभूप देहिं तिन श्रीरामचन्द्र ने केवल शक्रको बड़ाई दीनहै ( ४ ) इंद्र अतिहर्ष संयुक्त अमृतकै वर्षा करिकै भालु कपिनको जियाइ देतभयो है सब हर्षिकै उठिकै श्रीरामचन्द्रके समीप आवतभये जैसे कोई सोवतते जागिउठैहै ( ५ ) हे पार्वती दोउदलके ऊपर इंद्रने सुधाकी वृष्टिकीन है पर भालु कपिजिये रजनीचर नहींजिये हैं ( ६ ) निशिचर काहेते नहींजिये हैं संग्राम विषे तिनके मन रामाकार ह्वैरहे हैं अरु तेहीदशामें शरीर छूटे हैं ताते सबराक्षस परमपदको प्राप्तिभये हैं ताते नहींजिये हैं काहेतेकि अमृतकी सामर्थ्य नहीं है कि परमपदसे फेरिकै जीवको शरीरमें आनिसकै तहां राक्षस तौ मुक्तभये हैं भवबन्धनते छूटिगये हैं ( ७ ) अरु जोकोईकहै कि बानर नहीं मोक्षभये सो नहीं मुक्तभये हैं ताते जीउठे हैं काहेते श्रीरघुनाथजीकै ऐसी इच्छारही है कि बानर ऋच्छोंको मैं अपने संगही परविभूतिको लैजाउँगो काहेते थे सबमेरे दिव्यपार्षदहैं अरु देवतन

**कपिभालुजियाये हर्षिउठेसबप्रभुपहँआये ५ सुधावृष्टिभइद्वउदलऊपर जियेभालुकपिनहिंरजनीचर ६ रामाकारभयेतिनकेमन मुक्तभयेछूटेभवबंधन ७ सुरअशंकभवकपिअरुऋच्छा जियेसकलरघुपतिकी इच्छा ८ रामसरिसकोदीनहितकारी कीन्हेमुक्तनिशाचरझारी ९ खलमलधामकामरतरावन**

गतिपायोजोमुनिवरपावन १० दो० ॥ सुमनबर्षिसुरसबचलेचढ़िचढ़िरुचिरबिमान देखिसुअवसररामपहँआयेशंभुसुजान ११ परमप्रीतिकरजोरिकरनलिननयनभरिबारि पुलकिततनगदगदगिरा

के अंश ऋच्छ बानराकार हैं सोई देवतनमें जाहिंगे अरु ये मेरोरूप ह्वइकै मेरे संगही जाहिंगे यह अभिप्राय विशेषि जानब ( ८ ) हे गरुड़ श्रीरामचन्द्र के समान दीन हितकारी दूसर कोहै कोई नहीं है अपर स्वरूप भगवान्‌के जे हैं तेऊ ऐसे दयालुनहीं हैं अपर ब्रह्मादिक देवता काहोंहिंगे कैसे श्रीरामचन्द्र हैं राक्षस जिन्हें आजन्मकही जन्मपर्य्यन्त पापैकरत बीतेउ है तिन कोटिनको परमपदको पठैदीन जो पद योगिनको दुर्लभ है ऐसे कृपालु हैं ( ९ ) देखिये तौ ऐसो रावण खलरूप काम रत मलकरिकै पूर्ण त्यहिको परिवार सहित सो गतिदीन जो गति अतिपावन मुनीश पावत हैं ( १० ) दोहार्थ ॥ इन्द्रकै समाज संपूर्ण श्रीरघुनाथजीकी आज्ञा रूपसेपाइकै सुमनकर वृष्टि करिकै रुचिर बिमाननपर चढ़ि चढ़ि अपने अपने लोको जातभये हैं तब सुन्दर अवसर जानिकै सुजान जे महादेव ते श्रीरामचन्द्रके समीप नभविषे आवतभये हैं ( ११ ) परमप्रीति समेत कमल नयन में जलभरि आये हैं तन पुलकिआयो है गद्गद बाणीते द्वौकरजोरिकै महादेव श्रीरघुनाथजी की स्तुति करते हैं ( १२ ) रघुकुल नायक मामभिरक्षय कही मेरे बांछित रक्षाकरहु किन्तु भूत भविष्य वर्त्तमानमें रक्षाकरहु काहेते अपने जनकी रक्षाकेहेतु धृतकही धारण किहेहौ रुचिरकही सुन्दरबर धनुषबाण किंतु अभिकही अपने अभिलाषते मोरि रक्षाकरहु ( १३ ) तुम कैसेहौ महामोह जो है सो पटलकही घनमेघ है महामोहकही तुम्हारे स्वरूपविषे भ्रांति अरु संशय जो बनहै तेहिके नाशकरिबेको अनलहौ अरु देवतनके रञ्जनकर्त्ता हौ ( १४ ) अरु निर्गुण सगुण स्वरूप परमेश्वर तुमहीहौ निर्गुण कही तीनिउँगुण के परे हौ अरु सगुण कही परमदिब्यगुण के मंदिरहौ अरु अतिसुंदर हौ अपनी शोभा करिकै चर अचर को मोहि लेते हौ अरु मुनीश्वरनको अरु योगीश्वरन को मोहि लेतेहो ऐसे तुम सुन्दर हौ अरु तुम्हारे

बिनयकरतत्रिपुरारि १२ चौ०॥ मामभिरक्षयरघुकुलनायक धृतकरचापरुचिरबरशायक १३ मोहमहाघनपटलप्रभंजन संशयबिपिनअनलसुररंजन १४ सगुणअगुणगुणमंदिरसुंदर भ्रमतमप्रबलप्रतापदिवाकर १५ कामक्रोधमदगजपंचानन बसहुनिरंतरजनमनकानन १६ बिषयमनोरथपुंजकंजबन प्रबलतुषारउदारपारमन १७ भवबारिधिमंदरपरमंदर बारयतारयसंसृतिदुस्तर १८ श्यामगातराजीवबिलोचन दीनबंधुप्रणतारतमोचन १९ अनुजजानकीसहितनिरंतर बसहुरामनृपममउरअंतर २०

जननको कबहूं काल संयोगते तुमविषे भ्रम होइजात है सो भ्रमरात्री है त्यहिके नाशकरबे को तुम्हार प्रताप दिवाकर है ( १५ ) अरु काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य इत्यादिक गजन के यूथ हैं तिनके नाशकरिबेको पंचाननकही सिंहहौ अरु जन जेदास तिनके मनकानन हैं तहां तुम निरंतर बसतहौ ( १६ ) अरु बिषयमें मनोरथ सोई पुंज कंज बन है त्यहिके नाशकरिबे को तुम प्रबल तुषारहौ अरु अति उदारहौ अरु क्रोधवाणी मंनके परेहौ ( १७ ) हे श्रीरामचन्द्र तुमकैसेहौ भव जो संसार बारिधि कही समुद्र है त्यहिके मथबेको तुम मन्दराचलपर्बतहौ अरु मन्दरके आगेपर मन्दरपदहै दरकहीदुःखको सो परमदुःख जो कोईहोइ त्यहिको बारयकही निवारण करतेहौ अरु संसृति जोजन्म मरण दुस्तर है त्यहिते तुम तारि देतेहौ ( १८ ) हे श्यामगात राजीवलोचन हे दीनबन्धु प्रणत जे आपुके शरण एकौबार बचनहुते कहिनिहैं त्यहिकी संपूर्ण आरत नाशकरि देतेहौ ( १९ ) ते तुम श्रीरामचन्द्र सहित जानकी अरु अनुज मेरे उरअन्तर निरन्तर बसहु यह बर पावहुं ( २० ) अरु मुनि के रञ्जनकही आनन्ददाताहौ अरु संपूर्ण पृथ्वी के मण्डनकही शृंगारहौ अरु गोसाईं तुलसीदास कहते हैं संपूर्ण मेरीत्रासको बिखण्डन कही विशेष खण्डनकर्त्ताहौ ( २१ ) दोहार्थ॥ महादेव कहते हैं हे नाथ जब श्रीअयोध्याविषे आपको राज्याभिषेक होइहि तब मैं अतिउदार कही अति समूह सो चरित तुम्हार जोहै ताके देखबेको में अवश्य आउब ( २२ ) हे गरुड़ श्रीरामचन्द्रकै बिनती महादेवकरिकै

आज्ञापाइकै कैलासविषे जातभये हैं तब श्रीरामचन्द्रके निकट बिभीषण आवतभये हैं ( २३ ) तब बिभीषण श्रीरामचन्द्रके चरणमें शिरनाइकै द्वौकर जोरिकै कोमल बाणीसे कहते हैं हे शार्ङ्गपाणि हमारी बाणी सुनहु ( २४ ) हे प्रभु सकुलअरु सदल रावणको बधकीन पृथ्वीकोभार उतारयउहै त्रैलोक्यमें आपु

मुनिरंजनमहिमंडलमंडन तुलसिदासप्रभुत्रासबिखंडन २१ दो०॥ नाथजबहिंकोशलपुरीहोइहितिलकतुम्हार तबमैंआउबसुनहुप्रभुदेखनचरितउदार २२ चौ० ॥ करिबिनतीजबशंभुसिधाये तबप्रभुनिकटबिभीषणआये २३ नायचरणशिरकहमृदुबाणी बिनयसुनहुप्रभुशारँगपाणी २४ सकुलसदलप्रभुरावणमारा पावनयशत्रिभुवनबिस्तारा २५ दीनमलीनहीनमतिजाती मोपरकृपाकीनबहुभांती २६ अबजनगृहपुनीतप्रभुकीजै मज्जनकरियसमरश्रमछीजै २७ देखिकोशमंदिरसंपदा देहुकृपालुकपिनकहँमुदा २८ सबबिधिनाथमोहिंअपनाई पुनिम्वहिंसहितअवधपुरजाई २९ सुनतबचनमृदुदीनदयाला सजलभयेदोउनयनबिशाला ३०

को पावन सुयश पूरिरह्यउहै ( २५ ) अरु मैं अतिशयदीन ऐसे दुष्टनके मध्यमें ताते मैं मलीनह्वैरह्यउँ है अरु जातिसे अरु मतिसे अरु तुम्हारी भक्तिसे हीनह्वइ रह्यउँ है ते तुम मोपर कृपा बहुभांतिसे कीनहै ( २६ ) हे प्रभु अब आपनजन जानिकै गृहपावन करिये मज्जनकरिये जाते समरको श्रम दूरिहोइ इहां संग्रामविषे आपुतो श्रमरहितहौ आपुको देखिकै मोको श्रमभयो सो मिटिजाइ ( २७ ) हे नाथ मन्दिर आपुदेखिये कोशकही भण्डार सम्पदा देखिये सो कपिनको आनन्द संयुक्त जो चाहिये सो दीजिये ( २८ ) हे नाथ सबप्रकार ते मोको अपनाइकै तब अवध को संगलिहे चल्यहु ( २९ ) कोमल बचन बिभीषणके दीनदयाल श्रीरामचन्द्र सुनतसंते द्वौ नयन बिशाल कमल इव सजल ह्वइआये हैं ( ३० ) दोहार्थ ॥ हे विभीषण तातकही प्रियसखे तुम्हारकोशगृहसब हमार है यह सत्यजानौं काहेते मन बचन कर्म तुममेरेहौ पर भरतकै दशा समुझिकै मोको एक निमेष कल्पसम जातहै ( ३१ ) भरतजी तापसवेष कियेहैं अरु तपकरिकै शरीर कृश ह्वइरहाहै अरु मोरनाम निरंतर जपत रहते हैं अरु भरतजी को यह संकल्प है कि जवनी साइति मैं श्रीअयोध्याते चल्यउंहै त्यहि साइति न पहुंचौं तौ भरतजी अग्निमें प्रवेशकरि जाहिंगे हे तात सो उपाय करहु जाते मैं शीघ्र अयोध्याको जाउं भरतजी को नेत्रनभरिदेखौं ( ३२ ) हे तात जोअवधिबीते जैहौं तो भरत बीरको जियतन पैहौं इहां बीरकही अतिप्रियको भरतकै अतिशय प्रीति अपनेविषे समुझिकै बारबार तनपुलकित ह्वइरहेहैं ( ३३ ) अरु अब कल्पताई तुम राज्यकरहु परंतु मोरस्वरूप नामलीला यह सुमिरण करतेरहौ पुनि जहाँ समस्त संतजाते हैं उसी मेरेधाम बैकुंठको चलेजाना ( ३४ )

दो०॥ तोरकोशगृहमोरसबसत्यवचनसुनुतात दशाभरतकैसमुझिम्वहिनिमिषकल्पसमजात ३१ तापसवेषशरीरकृशजपतनिरंतरमोहिं देखौंवेगिसोयतनकरुसखानिहोरेतोहिं ३२ जोजैहौंबीतेअवधिजियतनपावौंबीर प्रीतिभरतकैसमुझिप्रभुपुनिपुनि पुलकशरीर ३३ करहुकल्पभरिराजतुम म्वहिंसुमिरेहुमनमाहिं पुनिममधामसिधारेउजहांसंतसबजाहिं ३४॥ * * * * *

चौ० ॥ सुनतबिभीषणवचनरामके हर्षिगहेपदकृपाधामके १ बानरभालुसकलहर्षाने गहिपदप्रभुगुणबिमलबखाने २ बहुरि बिभीषणभवन-सिधाये पुष्पकमणिगनिबसनभराये ३ लैपुष्पकप्रभुआगेराख्यउ हँसिकरिकृपासिंधुअसभाख्यउ ४ चढ़िबिमान

इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेलंकाकांडेइन्द्रसेवाशिवस्तुति विभीषणसंबादवर्णनन्नाम चतुर्बिंशस्तरंगः २४॥ :: ::

दोहा॥ कपिऋच्छनसँगखेलकरि चढ़िबिमानसियसंग रामचरणदेखतसकल पूरपचीसतरंग २५ श्रीरामचन्द्रके बचन विभीषण सुनिकै अतिहर्षिकै कृपानिधानके पदकमल गहतभये हैं ( १ ) विभीषणपर यहकृपा देखिकै सब बानर भालु अतिहर्ष संयुक्त श्रीरामचन्द्रके पदकमल गहिकै बिमल गुण बखान करते हैं ( २ ) पुनि विभीषण भवनको जाइकै अमोल मणिनकेगण अरु भूषणपट बिमानविषे भरावतभये हैं ( ३ ) तब मणिपट भरिकै पुष्पकबिमान श्रीरामचन्द्रके आगे राखतभये तब हँसिकै श्रीरामचन्द्र कृपासिंधु आज्ञादेत भये हैं ( ४ ) हे सखे विभीषण पुष्पक बिमान पर चढ़िकै आकाशविषे जाइकै पटभूषण बर्षाकरहु यहसब बानर भालु मनबांछित मणिलेहिं ( ५ ) हे पार्वती तबहीं तुरंत विभीषण बिमान सहित नभविषे जाइकै मणि अम्बर बर्षा करतभये हैं जैसे मेघ बर्षते हैं ( ६ ) तहां भालु कपि धाइधाइ मनबांछितमणिलेते हैं अरु सुन्दरफल जानिकै मुखमें डारिलेते हैं जब दशननमें कठोरता लागत है अरु रस नहीं प्राप्ति होतेहैं तब उगिलि डारिदेते हैं ( ७ ) तहां हे पार्वती कपिन कैलीला देखिकै अनुज जानकी समेत कृपानिकेत हँसते हैं परम कौतुकीहैं ( ८ ) दोहार्थ ॥ हे गरुड़ जिन श्रीरामचन्द्रके स्वरूपकर ध्यान मुनीश्वर नहीं पावते अरु वेद नेति नेति कहते हैं ते श्रीरामचन्द्र कपि भालुनके संग ऐसो बिनोद करते हैं ऐसे कृपालु हैं तिनकीगति कोजानै ( ९ ) हे उमाअष्टांग योग है अरु जप जोहै पुरश्चरण इत्यादिक अरु दानजोहै अनेकबिधिके अरु तप जोहै बहुविधिके अरु नानाप्रकार के व्रत जे हैं

सुनुसखाबिभीषण गगनजाइबर्षहुपटभूषण ५ नभपरजाइबिभीषणजबहीं बर्षिदियेमणिअंबरतबहीं ६ जोइजोइमनभावैसोइलेहीं मणिमुखमेलिडारिकपिदेहीं ७ हँसतरामश्रीअनुजसमेता परमकौतुकीकृपानिकेता ८ दो० ॥ ध्याननपावहिंजाहिमुनिनेतिनेतिकहिवेद कृपासिंधुसोइकपिनसनकरतअनेकबिनोद ९ उमायोगजपज्ञानतप नानाब्रतमखनेम रामकृपानहिंकरहिंतसजसनिःकेवलप्रेम १० चौ० ॥ भालुकपिनपटभूषणपाये पहिरिपहिरिरघुपतिपहँआये ११ नानाजिनिसदेखिप्रभुकीशा पुनिपुनिहँसतकोशलाधीशा १२ चितैसबनपरकीन्हीदाया बोलेमृदुलबचनरघुराया १३ तुम्हरेबलमैंरावणमारातिलकबिभीषणकहँपुनिसारा

चान्द्रायण आदिक अरु यज्ञअश्वमेध आदिकजेहैं अरुदशनियम दशसंयमहैं इत्यादिक सबगुण एकैपुरुषविषे होइँ तहां श्रीरामचन्द्र रीझते हैं परजस निःकेवल प्रेमते रीझते हैं तस त्यहि सबसन नहीं रीझते हैं ( १० ) हे पार्वती पटभूषण हेमरत्नजटित सो भालु कपिन पाइकै जिनके पहिरबे योग्य रहेउ सो पहिरतभये बाकी डारिदियो है पहिरि पहिरि हर्षसंयुक्त कल्लोल करत रघुपतिके समीप आवतेभये हैं ( ११ ) नानाप्रकारके बानर ऋच्छ केतेकाले रंगके केते नील रंग केते हरितरंग केते लालरंग केतेश्वेतरंग केते पीतरंग अरु केतेलघु केतेमध्य केते अतिदीर्घ ते सब बिपर्यय अलंकारकिहे देखिकै रघुबीर सहित प्रियानुज मुसकाते हैं पुनि पुनि हंसते हैं ( १२ ) सबपर कृपादृष्टि अवलोकनकरिकै दायाकरत भये हैं जो दाया कीनहै तेहिको अर्थ आगेकहैंगेश्रीरघुबीर मृदुवचन बोलते भयेहैं रघुबीर कही बीररस मृदुल कही करुणारस बीररस मिश्रित बचन बोलत भयेहैं ( १३ ) प्रथम बीररस जनावाहै समस्त बानर ऋच्छहु तुम्हारेही बलतेमैंने रावणको माराहै इहां श्रीरामचन्द्र अपने दासनको महत्त्व देते हैं किन्तु अपने दासनकी परीक्षा लेते हैं कि इनको अपनी बीरताको अहंपद आयो है कि नहीं किंतु इन ऋच्छन बानरन आत्मसमर्पण कैकै कैंकर्य कीनहै त्यहिभक्तिको अभिमान आयो है कि नहीं आयो है यह परीक्षा लक्षणहै अरु तुम्हारे बलते बिभीषणको तिलककीनहै अरु इहां यह अभिप्राय है तुम देवता अंश हौ अरु विभीषण राक्षस बंश है ताते अब बिभीषण राजा भयो है अरु साधु है ताते तुम रक्षाकरहु अरु विभीषण तुम्हारिरक्षाकरहिंगे इहां श्रीरामचन्द्र देवतन राक्षसनको मिलाप कराइदीनहै यह धुनिहै ( १४ ) यह श्रीरामचन्द्र कहते हैं हे ऋच्छ बानरहु अब तुम अपने अपने गृहको जाहुमोर सुमिरण करत रहहुगे काहूको डरयउजनि इहां यह अभिप्राय है कि तुमजो देवतनको अंशहौ सो ज्यहि देवताको

१४ निजनिजगृहअबतुमसबजाहू सुमिरेहुमोहिंडरेहुजनिकाहू १५ बचनसुनतप्रेमाकुलबानर पाणिजोरिबोलेसबसादर १६ प्रभुजोकहततुमहिंसबसोहा हमरेहोतबचनसुनिमोहा १७ दीनजानिकपिकियेसनाथा तुमत्रैलोक्यईशरघुनाथा १८ सुनिप्रभुबचनलाजहममरहीं मशककतहुँखगपतिहितकरहीं १९ देखिरामरुखबानरऋच्छा प्रेममगननहिंगृहकी

जो अंशहोउ ते तहां प्राप्तिहोहुजाइ अरु मेरे पार्षदरूप जे हैं ते बने रहहिंगे इहां यहधुनिहै कि जबते पुष्पक बिमानपर श्रीरामचन्द्र सब बानर ऋच्छनकी सेना चढ़ाइ लेहिंगे तबते सबपार्षद श्रीभरत लक्ष्मण शत्रुहनके स्वरूपनि बनेरहहिंगे पर विभूतिको संगही जाहिंगे ये जोऋच्छ बानराकारहैं ब्रह्माकी आज्ञाते सो देवतनको अंश जानहुगे अरु निजस्वरूप पर बिभूतिके पार्षदहैं ( १५ ) श्रीरामचन्द्र जब यहकहा कि तुम अब निज निज गृहको आनन्दपूर्वकजाहु सो सुनिकै बानर भालु प्रेमभरे व्याकुल ह्वइगये हैं द्वौहाथजोरि सबसादर बोलते हैं ( १६ ) हे प्रभु आप जो कछु कहतहैं सब योग्यही है आपको सब शोभित है पर आपके बचन सुनिकै हमको मोह होतहै काहेते जो आप कहा कि तुम्हारे बलते रावणको मारा यह आपकी आश्चर्य बाणी नहीं समुझिपरी है ( १७ ) हे त्रैलोक्यनाथ हम जो नीच योनि नीचमति चंचलसुभाव बानर ऋच्छ तिन सबको आपु सनाथकीन है ऐसे समर्थ कृपालुहौ ( १८ ) हे नाथ आपुके बचन सुनिकै हम लाजन मरते हैं काहेते मशाकहूं खगपतिकै सहायकरि सकै है तैसे हम आपुकै सहायका करिसकै हैं बानर कै आत्मसमर्पण कार्पण्य शरणागत जानब ( १९ ) तब श्रीरामचन्द्र जाना कि बानर ऋच्छ प्रेमते मगनहै गृहजाबेकी नहीं इच्छाहै तदपि श्रीरामचन्द्रकर रुख बिदाहोबेको जान्यो सो आगे दूनोंअर्थ सिद्धिहोहिंगे ( २० ) दोहार्थ॥ श्रीरघुनाथजी के प्रेरणाकही आज्ञाते संपूर्ण भालु कपि बिनयकरिकै चरणारबिंद हृदयमें धरिकै श्रीराम रुखजानिकै परवश चलते हैं पुनि ठाढ़ह्वै जातेहैं यह प्रेम प्रीतिकीदशा है हर्षकेवल आज्ञानुकूल को है अरु विषाद श्रीराम बिक्षेपको है ( २१ ) तब जामवंत कपिराज नलनील अंगद हनुमान् इत्यादिक जे अठारह पद्मयूथप हैं अरु विभीषण आदिक जे और अतिबलवान् सेनापति हैं ( २२ ) ते सब रामकी ओर देखिरहे हैं कछु

इच्छा २० दो० ॥ प्रभुप्रेरितकपिभालुसबरामरूपउरराखि हर्षबिषादसमेततबचलेबिनयबहुभाखि २१ जामवंतकपिराजनलअंगदादिहनुमंत सहितबिभीषणजेअपरयूथपकपिबलवंत २२ कहिनसकहिंकछुप्रेमबशभरिभरिलोचनबारि सन्मुखचितवहिंरामतननयननिमेषनिवारि २३ चौ० ॥ अतिशयप्रीतिदेखिरघुराई लीन्हेसकलबिमानचढ़ाई २४ मनमहँबिप्रचरणशिरनावा उत्तरदिशाबिमानचलावा २५ चलतबिमानकोलाहलहोई जयरघुवीरकहैंसबकोई २६ सिंहासनअतिऊंचमनोहर श्री

नहीं कहिसकते हैं श्रीरामचन्द्रकर मुखदेखते हैं प्रेमते नेत्रनमें जलभरिकै पलक बिहाइकै इहइच्छा है कि श्रीरामचन्द्रकै राजगद्दी नीकीप्रकार से देखैं बिदाहोबेकै इच्छा काहूके नहीं है ( २३ ) हे गरुड़ ऋच्छ बानरनके यूथ परेहैं तिनकै प्रीति अतिशय श्रीरघुनाथजी देखिकै अरु बानरनको बिदाकीनहै तिनकै प्रीतिदेखिकै कृपाकरिकै सम्पूर्ण सेनाको विमानपरचढ़ाइलीनहै तहां विभीषणको मालिक जैसी इच्छाकरैं तैसी होइजातहै लघुदीर्घ को प्रमाण नहीं है ( २४ ) सब ऋच्छ बानरन को बिमानपर चढ़ाइकै ब्राह्मणके चरणारविन्द में नमस्कार करिकै अति आनन्दपूर्वक आज्ञा भई उत्तर दिशा कीओर श्रीअयोध्याजीको बिमान नभमार्गविषे चलत भयो है ( २५ ) हे भरद्वाज जब बिमान चलतकोलाहल को अति आनन्दमय शोरहोइ रहेउहै जय श्रीरघुबीरकी यह जयजयकार शब्द ह्वैरहेउ है नरनाग संपूर्ण सेना सिद्ध मुनि ब्रह्मादिक देवता दुन्दुभी बजावते हैं अप्सरा नृत्यकरती हैं गंधर्ब गानकरते हैं कल्पवृक्षके फूलबर्षते हैं अरु अनेकतरह के सुगंधरंगझरि करते हैं मंगलमय जयजयकार त्रैलोक्यमें पूरिरहेउ है ( २६ ) तहां बिमान तीनिखण्ड करिकै है सो अंतरखण्ड हेमरत्नते प्रकाशित सूर्यइव सिंहासन है समकही बरोबरि अष्टदल कमलाकारहै अरु ऊँचहै शोभाकरकही शोभाकी खानि है तापर

श्रीरामचन्द्र श्रीजानकी संयुक्त बैठेहैं अरु लक्ष्मणजी हनुमान्जी चवँरकरते हैं अरु अष्टादशपदुम यूथपति मध्यके खण्डविषे चढ़े हैं अरु सम्पूर्ण सेनाबाहरकेखण्ड विषे चढ़ी है ते सब ऋच्छ बानर आकार जो रहे ते देवतनके अंश देवतन विषे प्राप्तिभये जाइ अब सब नित्य पार्षद स्वरूप किशोर मूर्त्ति नराकार नखशिख भूषण अलंकार कीन्हे अतिसुन्दर एकरस हैं अरु विभीषणकी समाज भिन्न शोभित है ऐसही अनेक चन्द्र सूर्य के प्रकाशको करत बिमान चलेउ है ( २७ ) श्रीरामचन्द्र श्रीजानकी जी सहित

समेतबैठेताऊपर २७ राजितरामसहितभामिनी मेरुशृंगजनुदमकदामिनी २८ रुचिरबिमानचलेउअतिसुंदर कीन्हेसुमनवृष्टिहरषेसुर २९ परमसुखदचलित्रिबिधिबयारी सागरसरसरिनिर्मलबारी ३० सगुनहोहिंसुंदरचहुँपासा मनप्रसन्ननिर्मलनभआसा ३१ कहरघुबीरदेखुरणसीता लक्ष्मणइहाँहत्योइंद्रजीता ३२ हनूमानअंगदकेमारे रणमहँपरेनिशाचरभारे ३३ कुंभकर्णरावणद्वौभाई इहांहत्योसुरमुनिदुखदाई ३४ दो० ॥ यहखलसुंदरसेतुजहँथापेउशिवसुखधाम सीताअनुजसमेतप्रभुशंभुहिकीन

राजित हैं जनु सुमेरुके शृंग विषे नीलघन दामिनी दमकति है बिमानसुमेरु को शृंगहै श्रीरामचन्द्र जानकी घनदामिनी इव शोभितहैं ( २८ ) रुचिरकही अति सुन्दर बिमान अति आतुर चलत भयो हैं देवता हर्षिकैफूल बर्षतेहैं ( २९ ) अरु अति सुखदाई त्रिविधि पवन बहत है शीतल मन्द सुगन्ध अरु सागर सरसरित अरु कूप बावली इत्यादिकनके जलनिर्मल होइरहे हैं ( ३० ) अरु चारिउ दिशा उपदिशा में मंगलमय सगुन होइरहे हैं अरु सर्व जीवनके मन प्रसन्न होइरहे हैं अरु नभ आशाकही सब दिशा बिदिशा निर्मल होइरही हैं ( ३१ ) तहां बिमानपर श्रीरामचन्द्र श्रीजानकीजी को देखावते हैं हे प्रिया यहि जंगलमें लक्ष्मणने इन्द्रजीतको हत्यो है ( ३२ ) अरु हनुमान् अंगदादि कपिन के मारे ते निशाचर भारी भारी अनेकन रणभूमि विषे परे हैं ( ३३ ) अरु रावण कुम्भकर्ण को यहि जगह हमने मारा है सुर मुनि दुखदाई जानिकै ( ३४ ) दोहार्थ ॥ अरु हे जानकी यह सेतु जो हमने बाँधा है सोलखहु तासेतुपर महादेव सुखके धाम तिनको स्थापन कीन है सहित जानकी अनुज महादेवको प्रणाम करतभये ( ३५ ) जहां जहां करुणासिन्धु श्रीरामचन्द्र रणक्रीड़ा कीनहै सो रणभूमि सब देखाइकै अरु जहां जहां बन में बास विश्राम कीनहै तहां तहां सबको नामकहिकै देखावत चलेजाते हैं ( ३६ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेलंकाकांडे सहितश्रीजानकीजीलक्ष्मणजीसहितसेनाविमानारूढ़वर्णनंनामपंचविंशस्तरंगः २५॥ ::

दोहा॥ षट्अरुबीसतरंगमेंयुद्धकाण्डभोपूर ॥ रामचरणमंगलकरतमिलतजहांजनशूर २६ सपदिकहीशीघ्र बिमान पंचवटी विषे दण्डकारण्य परम सुहावनके समीप आइकै उतरत भयो है ( १ ) कुम्भज कही अगस्त्य आदिक जेमुनीश मुनिरहे तिनके स्थानन जाइजाइ श्रीरामचन्द्र सबको

प्रणाम ३५ जहँजहँकरुणासिंधुबनकीनबासविश्राम सकलदेखायउजानकीकहेउसबनिकेनाम ३६॥ * * *

चौ०॥ सपदिबिमानतहाँचलिआवा दंडकबनजहँपरमसुहावा १ कुंभजादिजेमुनिबरनाना गयेरामसबकेअस्थाना २ सकलऋषिनसनपाइअशीशा चित्रकूटआयेजगदीशा ३ तहँकरिमुनिनकेरसंतोषा चलाबिमानतहाँतेचोषा ४ बहुरिरामजानकीदेखाई यमुनाकलिमलहरणिसुहाई ५ पुनिदेखहुसुरसरितपुनीता रामकहाप्रणामकरुसीता ६ तीरथपतिपुनिदेखिप्रयागा देखतजन्मकोटिअघभागा ७ देखुपरमपावनिअतिबेनी हरणशोकहरिलोकनिशेनी ८ पुनिलखुअवधपुरीअतिपावनि त्रिबिधि

मिलतभयेहैं ( २ ) सम्पूर्ण मुनिनते आशीर्वाद लैकै श्रीरामचन्द्र बिमानपर चढ़िकै चलेहैं श्रीचित्रकूटमें बिमान उतरत भयोजाइ ( ३ ) तेहिश्रीचित्रकूट विषे अत्रि आदिक जे मुनीश मुनि रहैं तिनसबको मिलिकै आशीर्बाद लैकै सब प्रकारते संतोषकरिकै हे मुनिहु मैं आपुको सेवकहौं सबप्रकारते रक्षाकरौंगो असकहिकै संतोषकरिकै सबते बिदाहोइकै बिमानपर चढ़िकै चोषकही अतिशीघ्र बिमान चलतभयो है ( ४ ) श्रीरामचन्द्र बिमानपर श्रीजानकीजीको देखावते हैं ये अतिपवित्र कलिमलकेहरणहारीयमुनाजी हैं ( ५ ) पुनि सुरसरि जो गंगाजीहैं तिनको देखिकै श्रीरामचन्द्र कहते हैं हे श्रीजानकीजी ये पुनीत गंगाजी हैं तिनको प्रणाम करहु ( ६ ) हे गरुड़ पुनि तीर्थपति जो प्रयाग हैं तिनको श्रीरामचन्द्र देखतभये कैसे प्रयाग हैं जो कोई प्राणी दर्शनकरैं तिनके कोटिन जन्मके पाप भागिजातहैं ( ७ ) पुनि श्रीरघुनाथजी कहते हैं हे जानकीजी परम पावनि जो त्रिवेणी है सो देखहु संपूर्ण शोकको हरणहारी अरु हरिपुरकै निशेनी है ( ८ ) पुनि जानकीजी अतिपावनि अवधपुरी देखहु महलनके शृंगनविषे अनेक कलश चंद्रसूर्यके प्रकाशको कैरहे हैं कैसी है अवधपुरी ज्यहिकेदेखतसंते तीनिताप अधिभूत अध्यात्म अधिदैवत नाशकरिकै भवरोग जन्म मरण त्यहिको मिटाइ देति है मेरे सालोक्य सामीप्य सायुज्य अलंकार ह्वइरहते हैं अरु सायुज्य पांचई मुक्ति मेरी सामान्य ऐश्वर्य जैसी बासना करते हैं त्यहिको तैसी मुक्तिदेते हैं तहां एक एकमें पांचहु जानब सो अयोध्या तुमदेखहु ( ९ ) दोहार्थ॥ तब श्रीरघुनाथजी श्रीजानकीजी श्रीलक्ष्मणजी कपिसेना समेत श्रीअयोध्याजीको नमस्कार करतभये हैं काहेते अपनोनित्यस्थानजानिकै नेत्रनमें जल भरिआये तनपुलकि

तापभवरोगनशावनि ९ दो० ॥ तबरघुनायकसियसहितअवधहिकीनप्रणाम सजलबिलोचनपुलकितनपुनिपुनि हर्षितराम १० बहुरित्रिबेणीआइप्रभु हर्षितमज्जनकीन कपिनसमेतमहीश्वरनदानबिबिधबिधिदीन ११ चौ० ॥ प्रभुहनुमंतहिकहाबुझाई धरिबटुरूपअवधपुरजाई १२ भरतहिकुलहमारसुनायहु समाचारलैआतुरआयहु १३ तुरतपवनसुतगवनतभयऊ तबप्रभुभरद्वाजपहँगयऊ १४ नानाविधिमुनिपूजाकीना अस्तुतिकरिपुनिआशिषदीना १५ मुनिपदबंदियुगलकरजोरी चढ़िबिमान

आये हैं बारबार श्रीरामचन्द्र हर्षते हैं अपनीलीला जीवको परमानन्दमय जनावते हैं ( १० ) पुनि त्रिबेणीके समीप आइकै बिमान उतरत भयो है श्रीरामचन्द्र प्रियानुज सेनासमेत त्रिबेणी स्नानकरिकै अनेकदान ब्राह्मणनको पृथक् पृथक् देतभये हैं जो विभीषण कपिन को रत्न दीन है सो ब्राह्मणनको दानकरिदियो है ( ११ ) त्रिबेणी स्नान करिकै श्रीरघुनाथजी हनुमान्जीसे कहते हैं हे हनुमन्त तुमबटुकही ब्रह्मचारी को स्वरूप धरिकै अयोध्याकोजाहु ( १२ ) हमारे आनन्दके कुशल भरतजीको सुनाइकै उनके समाचारलैकै आतुर आवहु ( १३ ) तब श्रीहनुमान्जी दण्डवत् करिकै तुरन्त श्रीअयोध्याको जातभये हैं हनुमान् को बिदाकरिकै श्रीरामचन्द्र भरद्वाजके आश्रमको आवतभये हैं ( १४ ) श्रीरामचन्द्र भरद्वाजको दण्डवत् कीनहै मुनि उठाइकै हृदयमें लगाइकै शुद्धासनपर बैठाइ सबप्रकारते पूजनकीन स्तुतिकरिकै आशीर्बाददीनहै ( १५ ) मुनिके चरणारबिन्द बिषे बन्दना करिकै करजोरिकै बिमानपर चढ़िकै आज्ञाभई कि शृंगवेरपुरको चलहु ( १६ ) अरु इहां निषादने सुना कि रघुनाथजी आये तब नावल्यावहु नावल्यावहु बारबार असकहिकै लोगनको बुलावतभयो है ( १७ ) जबताईं निषाद पुकारै तबताईं बिमान सुरसरि पारह्वइ आयो आज्ञापाइकै शृंगबेरपुर विषे बिमान उतरतभयो है ( १८ ) तब श्रीजानकीजी श्रीगंगाजीकी पूजा करतभईहैं बहुप्रकार पूजा करिकै श्रीगंगाजी के चरणनमें नमतभई हैं ( १९ ) गंगाजीकै पूजन श्रीजानकीजी कीन तब श्रीगंगाजी मुदित मनते आशीर्वाददीन हे सुन्दरी सब प्रकारते तुम्हारा अहिवात सदाअभंगहै तहां मेरीबाणी सफल होइगी ( २० ) तहां श्रीरामचन्द्रको आगमन सुनिकै प्रेमाकुल गुहधावतभयो है श्रीरामचन्द्रके निकटपरमसुखसंकुल कही पूर्ण प्रेमभरे प्राप्तिभये हैं ( २१ ) सहित बैदेहौ श्रीरामचन्द्रको बिलोकिकै तनकीसुधि बिसारिकै अवनिविषे दण्ड

**प्रभुचलेबहोरी १६ इहांनिषादसुनाप्रभुआये नावनावकरिलोगबोलाये १७ सुरसरिनाँघियानजबआवाउतरे तटप्रभुआयसुपावा १८ तबसीतापूजीसुरसरी बहुप्रकारपुनिचरणनपरी १९ दीनअशीशमुदितमनगंगा सुंदरितवअहिवातअभंगा २० सुनतहिगुहधायोप्रेमाकुल आयोनिकटपरमसुखसंकुल २१ प्रभुहिबिलोकिसहितबैदेही परेउअवनितनसुधिनहिंतेही २२ परमप्रीतिबिलोकिरघुराई हर्षिउठायलियेउरलाई २३ छं० ॥ लियोहृदयलाइकृपानिधानसुजानरामरमापतीबैठारिपरमसमीपबूझीकुशलसोकरबीनती २४ अबकुशलपदपंकजबिलोकिबिरंचि-शंकरसेब्यजे सुखधामपूरणकामरामनमामिरामनमामिते २५ सबभांतिअधमनिषादसोहरि**

इवगिरतभयोहै ( २२ ) परमप्रीति बिलोकिकै श्रीरामचन्द्र हर्षिकै आपु उठिकै निषादको उठाइकै उरमें लगाइलीनहै ( २३ ) छन्दार्थ॥ श्रीरामचन्द्रने उठिकै अतिहर्षते निषादको उठाइकै अति प्रीतिते हृदयमें लगाइलीनहै कैसेहैं श्रीरामचन्द्र कृपानिधान कही कृपाके स्थानहैं सुजान कही अन्तष्करणक प्रीतिजानिकै आपनकरते हैं कोईहोइ रमापतिकही दीननको निहालकरते हैं निषादको समीप बैठाइकै परम कुशलकही हे सखे तुम्हार भजन सब प्रकारते बनारह्यउहै यह सुनिकै निषाद द्वौ करजोरिकै बिनती करते हैं ( २४ ) हे नाथ मैं सदा कुशलहौं अब तुम्हार पदपंकज जो ब्रह्मा शिवादिक करिकै पूज्य सो बिलोकिकै अब मेरी कुशलको कहिसकैहै हे श्रीरामचन्द्र सुखकेधाम सम्पूर्ण कामकरिकै परिपूर्णहौ आपुके मैं बारबार नमस्कार करतहौं ( २५ ) निषाद सबप्रकारते अधम जानिकैअधम कर्त्तव्य त्यहिकर प्रेमदेखिकै श्रीरामचन्द्र अंकभरि मिलतभये जैसे भरतको चित्रकूटमें मिले हैं अरु जैसे आगे भरतको मिलहिंगे ऐसे श्रीरामचन्द्र कृपालु तिनको मोहके बश बिसारिकै मतिमन्दजेहैं ते जगत्में भ्रमतेहैं अथवा गोसाईंजी कहतेहैं जो मैं मतिमन्द ते ऐसे श्रीरामचन्द्रको पद बिसराइदीन है इहां यह धुनिहै कि कोई जो श्रीरामचन्द्रको बिसारतेहैंते मोहके बश मतिमन्दहैं ( २६ ) गोसाईं श्रीतुलसीदासजी कहते हैं रावणारि जे श्रीरामचन्द्र तिनके चरित श्रीरामचन्द्रके पद विषे प्रदकहीप्रीतिदाता सदाहैं यहिचरित्रको सिद्ध मुनि ब्रह्मादिक मुदाकही आनन्द संयुक्त गावते हैं कैसो चरित्र है कामारिकही जो षड्विकार हैं तिनकर नाशकर्त्ता है

**भरतज्योंउरलाइये मतिमंदतुलसीदाससोप्रभुमोहबशबिसराइये २६ यहरावणारिचरित्रपावनरामपदरतिप्रदसदा कामारि हरबिज्ञानकर-सुरसिद्धमुनिगावहिंसदा २७ दो० ॥ समरबिजयरघुबरचरितसुनहिंजेसदासुजान बिनयविवेकबिभूतिनिततिनहिं देहिंभगवान २८ यहकलिकालमलायतनमनकरिदेखुबिचार श्रीरघुनायकनामतजिनहिंकछुआनअधार २९॥** * * *

अरु बिज्ञान भक्ति की खानिहै ( २७ ) दोहार्थ ॥ हे पार्वती श्रीरघुपतिकेसमर बिजय चरितजेहैं तिन्हैं जेनरनारि सुजान सदा श्रवणकरते हैं विनय विवेक अरु शुद्ध सात्विकी विभूति तिन प्राणिनको पूर्ण भगवान् श्रीरामचन्द्र नितदेते हैं ( २८ ) यह कलिकाल मल जो पापहैं तिनकर आयतन कही स्थान है श्रीगोसाईं तुलसीदासजी कहते हैं हेमन समुझिकै विचारि देखु श्रीरघुनाथजीको नामतजिकै और कछुअधार नहीं है ( २९ ) इतिश्री रामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेलंका-काण्डेश्रीरामचन्द्रविजयदेवस्तुतिश्रीरामचन्द्रश्रीअवध आगमनवर्णनन्नामषट्विंशस्तरंगः २६॥ :: :: :: ::

दोहा॥ सम्वतशतअष्टादशा असीतीनिऋतुखास युद्धकांडसुसमाप्तभोरामजन्ममधुमास १ मोहभूपअविवेकदलरागकुटुम्बसमेत रामचरणसोजीतिहैपढ़िहैतिलकसचेत २ युद्धकाण्डपयनिधिहरषतनछब्बीससुतरंग कछुकशांतरसबीरगिरि मथिहनुमतरणरंग ३ कांडसप्तसोपानकियभेदि आवरणसात रामधामकोजातचढ़ि रामचरणहुलसात ४ जक्तमहानिधितरणकोबिरचेउसप्तजहाजश्रीतुलसीभवसेतुरचिरामचरणसजिसाज ५॥

# ॥रामायण तुलसीदासकृत सटीक॥

## ॥उत्तरकाण्ड॥

प्रथममंगलाचरणशुभ प्रथमतरंगसुभाइ रामचरितबंदतहृदय रामचरणहुलसाइ १ सीतारामानुजसहितसखा दासजनभूरि बंदौंपुष्पकयानपर छबिअनंदभरिपूरि २ प्रभुमनमूरतिपवनसुत पुनिपुनिकरौंप्रणाम रामकुशल भरतहिकहीभरतकुशलकहिराम ३ बंदिभरतब्रतनेमयम अक्षयरामपदप्रेम उत्तरपरबार्तिककरौं सबप्रकारजहँ क्षेम ४ छन्दघनाक्षरी ॥ तुलसीदिखायोसबपरोक्षपुनि प्रतक्षरूप योगवैराग्यज्ञान विमलविज्ञान है स्वस्वरूप पर स्वरूपभक्तिकोअनूपरूप लक्षणगुणभावप्रेमसंतजोसुजानहै द्वैताद्वैतभेदकाल कर्मगुणसुभावमायाबद्धमोक्षकार्य पर्मकारणस्थान है कर्मकांडज्ञानजो उपासनाविशेषकह्यो रामचरण जेतेकह्यो वेदमेंप्रमान है ५ आपनीमैंपूर्ब कहो सौहकैबिमूढ़रहौ हृदयमें प्रेरयोपरमेश्वरशरणजाइये जासोमैंपृछौंसोआपनोसिद्धांतकरै और मतखंडनकरैमेरेमनआइये तबमैं बिचारकैअनेकग्रंथदेखेसुने तत्वतुलसीकृतमें जो औरमेंनपाइये रामचरण पापीमनजानिकैरमावतहौ बार्तिकमेंअर्थकरौंमतिकेसरसाइये ६ निगमागमसारशृङ्गार सबग्रंथनकोपियो है पुराणसबैजैसेबक्षमाईके रसको शृङ्गारसारसंतउरहारलसै कीन्ह्यौहै

अहारज्ञानीसदासुखदाईके सिंधुजगजहाजऔस्वपानरामधामके दशधाकेसाजसज्यौमिलैहेतुसाईके रामचरणरामकथा कीन्ह्यीहैबखानसबै रामरसबांटेपरयोतुलसीगोसाईके ७ जो कोईकहै कि तुलसीकृत तौ आपुही भाषा है तिसको बार्तिक तुमका करतेहौ तहां हम यह कहते हैं कि सत्य करिकै यह दिव्यदेव बाणीहै प्राकृतबाणी कहबेकोहै तहां तत्वको तौ उपनिषदरूप है समुझिबे कोस्मृतिरूपहैमतको शास्त्ररूपहै परतुको संहितारूपहै उपासनाको भाष्यरूपहै अर्थको पुराणरूपहै अरु उपमेय उपमान धर्म बाचक भावभेद रसयुक्ति उक्ति अनेक प्रकार ताकोकाव्यरूपहै छंदप्रबंधको पिंगलरूप है शरीरादिक संसार के रागजीतिबेको योग बैराग्यरूप है सारासार जानिबेको विवेकरूपहै अंतःकरण चतुष्टइंद्रिनकै विषयरोकिबेको समरूप है वाह्यइंद्रिनको विषय निवृत्त करिबेको दमरूपहै वाह्यांतर इन्द्रिनकैवृत्ति एकताकरिबेको उपरतिरूप है दुखसुख हर्ष शोकनिन्दास्तुति मानापमान अनेक द्वन्द्व धर्म एकरस सहिबेकोतितीक्षारूपहै वेदबाक्यगुरुबाक्यमें प्रतीति करिबेको श्रद्धारूपहै श्रीरामचन्द्रके स्वरूप में स्वरूपकै वृत्ति अखंडकरिबेको समाधानरूपहै स्वस्वरूपजानिबेको ज्ञानरूपहै सर्बभूतमेंएकरस ब्रह्मजानिबेको विज्ञानरूपहै परमानंदकै प्राप्तिहोइकै श्रीरामचन्द्र को प्रसन्नकरिबेको सर्बांग भावभक्तिरूपहै श्रीरामचन्द्रके स्वरूपमें मग्नहोइकै बिदेहकरिबेकोप्रेमापराभक्तिरूपहै श्रीतुलसीकृत ऐसी है परोक्षप्रत्यक्ष सर्बदेखिलेव मानदूरिकरिकै अवरि प्रश्न या बालकांड कै प्रथमतरंगमें कहि आये हैं यह श्रीरामचरितमानस है तामें टीकातरंग है टीकाकोनाम रामानंदलहरीहै इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वंसने उत्तरकांडे स्वरूपमंगलाचरणकृते प्रथमस्तरंगः १॥

दोहा॥ विदाकीनप्रभुपवनसुत खबरिभरतकहँदेन रामचरणप्रभुकुशलकहि द्वितियतरंगसुखेन २ जनकनन्दनीचरणरज शीशराखिकरिध्यान महतचरितसियरामके बिलसतपावनज्ञान १ अक्षरपदछूटैनहींयुक्तिउक्तिरसभाउ रामचरणदृढ़अर्थसो देशकालयशपाउ २ रामचरितमानसबिमल बार्तिकतिलकतरंग भावभ्रमरऊमंगरस अर्थअगाधप्रसंग ३ श्रीमद्गोसाईं तुलसीदासजी के करकमल की लिखी जो पुस्तक है तापरतिलक करतहौं जो कोऊ पाठफेरिकै अर्थकरै सो अप्रमाण है अब श्लोक को अर्थ करतहौं अवरेवकरिकै श्रीजानकीजी संयुक्त श्रीजानकी ईश श्रीरामचन्द्र के नमस्कार करत हौं ईड्यं कही सर्बस्तुति योग्य हैं अनिशंकही निरंतर बारम्बार केकीकही मयूर ताको जोकण्ठहै ताकण्ठ की आभा तद्वत्श्याम हैं ब्रह्मादिक देवतनविषे सर्वोत्कर्ष बिलसतकही शोभायमान्हैं बक्षस्थल विषे ब्राह्मण के चरण कमल तद्वत् लक्षण हैं विष्णुकी बक्षस्थल विषे भृगुलता शोभितहै सो श्रीरामचन्द्र धारण करिलीन है अपनी इच्छाते काहे ते है कि हमारो वह स्वरूप परात्पर ताको कोई नहीं जाने सबकोई बिष्णु रूपही मानै काहेते पालनशक्ति विष्णुकी है ताते भृगुलता धारणकीन है काहेते मर्यादा पुरुषोत्तम हैं अरु जाको जो श्रीरामचन्द्र दीन सो देचुके

श्लोक ॥ केकीकंठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नंशोभाढ्यम्पीतवस्त्रंसरसिजनयनंसर्वदासुप्रसन्नं पाणौनाराचचापं कपिनिकर-युतंबंधुनासेव्यमानं नौमीड्यं जानकीशंरघुवरमनिशंपुष्पकारूढ़रामं १ कोशलेन्द्रपदकंजमंजुलौ कमलयोनिशित

तहां विष्णु पदबी बिष्णु को हरिहि हरिता बिधिहि बिधिता शिवहिशिवता जिनदई। सोइ जानकी पति मधुरमूरति मोदमय मंगलमई ॥ ताते भृगुलता धारणकीन है काहेते मर्यादा पुरुषोत्तम हैं परम शोभाकरिकै आढ्य नाम युक्त हैं पीताम्बर धारण किये हैं कमल ऐसे नेत्र हैं मुखचन्द्र सदाप्रसन्नहै दोऊकरमें धनुषबाण धारणकिये हैं बिभीषण जाम्बवन्त सुग्रीव हनुमान् इत्यादिक अष्टादशपद्मयूथप अपर अनेकसेना ऐसे जे कपि तिन संयुक्त अरु बन्धु जो श्रीलक्ष्मण जी तिन संयुक्तकरिकै सेव्यमान् हैं पुष्पक बिमानपर

आरूढ़ हैं तं श्रीरामं अहंनमामि ( १ ) कोशलेन्द्रते कोशलानाम श्रीअयोध्या ताकेईश श्रीरामचन्द्र तिनके चरणारबिंद अति कोमल ब्रह्मा शिवादिक करिकै बंदनीय हैं श्रीजानकी जी करिकै करसरोज ललित कही अतिप्रीति ते सेवित हैं सनकादिक नारद शुक बालमीकि अगस्त्य इत्यादिक जो मुनिहैं ते चिंतवन करते हैं अपने मनको शुद्धभ्रमरकरिकै चरणकमलकी मकरंद प्रेमापराभक्ति सो आस्वादन करते हैं तं श्रीरामं अहंनमामि ( २ ) कुन्देति पुनि कल्याणमूर्ति जो शंकर तिनको नमस्कार करत हौं कैसे हैं श्रीशंकरजी कुंदके फूलके सरिस उज्ज्वल कोमल सुगंधमय हैं पुनि इन्दु जो चन्द्रमातद्वत् उज्ज्वल शीतल प्रकाशमय हैं पुनि दर कही शंख तद्वत् उज्ज्वल सचिक्कण मंगलमय ऐसे गौर सुन्दर बिग्रह शिवजी को पुनि संपूर्ण जगत् की माता पार्वती ताको पति पुनि अभीष्ट कही बांछितफल के सिद्धिदाता पुनि करुणाके सीव हैं सीव कही मर्यादा है पुनि कमलनाम सुन्दर अरुण बिशाल तैसे नेत्र हैं पुनि अनंग जो काम है ताको मद मोचनकही दूरिकरिदीन है तं शंकरं अहंनमामि ( ३ ) अब प्रथम दोहाकोअर्थ करतहौं श्रीयाज्ञवल्क्यजी श्रीभरद्वाजजीसे कहते हैं हे भरद्वाज श्रीरामचन्द्र ने स्वेच्छित अपनी लीलाते बनको गमनकीन है अवधिकही मर्यादा चौदहबर्षकी तामें एकदिन रहिगयो है चौदहबर्षभरि आरतरहा जब एकदिन रहिगयो तब अतिआरत पुरके लोग हैं जो जहां हैं सो तहां शोचकरते हैं स्त्री पुरुष सबकृश कही दूबरे ह्वैरहे हैं श्रीरामचन्द्र के बियोगकही बिक्षेप के दुखकरिकै ( ४ ) अरु अनेक प्रकार के सुन्दरसगुणहोते हैं अरु प्रातःकाल श्रीकौशल्याजी उठी हैं

**कंठबंदितौ जानकीकरसरोजलालितौ चिंतकस्यमनभृङ्गसंगिनौ २ कुंदइंदुदरगौरिसुन्दरं अंबिकापतिमभीष्टसिद्धिदं कारुणीककलकंजलोचनं नौमिशंकरमनंगमोचनं ३॥ * * * * * * ***

**दो० ॥ रहाएकदिनअवधिकरअतिआरतपुरलोग जहँतहँशोचतनारिनर कृशतनरामबियोग ४ सगुनहोहिंसुन्दरसकलमनप्रसन्नसबकेर**

प्रसन्न है मनप्रकाशमय मंदिर तामें तीनि हंसकेबच्चा मध्य अजिरमें बैठे हैं अतिसुंदर श्रीकौशल्याजी देखिकै आश्चर्य मानेउ है तिनको दूधपिवाय कै मुखचुम्बन कियो है पुनि ब्रह्मा ब्राह्मणरूपते तीनि कल्पवृक्ष के फल श्रीकौशल्याजीको देतभये प्रसन्नमनते सुमित्रादिक रानी प्रसन्नभईं पुर के चहुंदिशाते हजारन ग्वालिनी तरुणतन संपूर्ण अलंकार कीन्हे दधिभाजनभरे शीशपरलिहे आवती हैं पुनि पुनि पुरके दक्षिणदिशासे तीनि ब्राह्मणके बालक सुन्दर तिलकभाल निर्मलबस्त्र रामायणकी पुस्तक हाथ में गानकरत आवते हैं बाटिका प्रफुल्लित बसंत ह्वै रही है भ्रमर कोकिला मयूर इत्यादिक मधुर मधुर बोलते हैं आकाश निर्मल ह्वैरहा है काग दक्षिणभाग सुखेन बोलते हैं अनेक सगुन स्वरूप धरि धरि श्रीआयोध्याको आये हैं श्रीरामचन्द्रजीको आगमन जनावते हैं आप सफल होते हैं सबको मन प्रसन्न है सुभगअंग फरकते हैं अतिप्रसंगे महारामायणे ( ५ ) कौशल्यादि मात सबके मनप्रसन्न होते हैं आनन्दभरे जनु श्रीरामचन्द्र श्रीजानकीजी श्रीलक्ष्मणजी संयुक्त आवते हैं ऐसो कोई कहन चहत है किन्तु शोकोक्ति ( ६ ) श्रीभरतजीके दाहिनेनेत्र दाहिनेभुज बारबार फरकते हैं श्रीरामचन्द्र जो हैं परम प्रीतम तिनको आगमन सूचित ऐसे जो परम मंगल सगुन ताको जानिकै अतिशय हर्षसंयुक्त बिचार करते हैं ( ७ ) श्रीभरतजी बिचार संयुक्त शोचकरतेहैं एकदिन चौदहबर्ष में रहिगयो सो प्राणको आधार समुझतसंते अवर दुखभयो ( ८ ) आगे तीन चौपाई अक्षरार्थै जानिये जो मेरे अवगुण श्रीरामचन्द्र समुझैं तौ शतकल्प करोरिनलौ निस्तार नहीं है कल्पकही हजार सतयुग हजार त्रेता हजार द्वापर हजार कलियुग हजार चतुर्युग जबबीतै हैं तब ब्रह्मा को एकदिन होत है हजार चतुर्युग रात्रीहोती है दिन रात्रीको एककल्प कहिये शतलक्षको एक क्रोरीकहिये इहांतांई जीवको कल्याण नाहींहोत

**प्रभुआगमनजनावजनु नगररम्यचहुंफेर ५ कौशल्यादिमातुसबमनअनंदअसहोइ आयेप्रभुसियअनुजयुत कहनचहत असकोइ ६ भरतनयनभुजदक्षिणफरकहिंबारहिंबार जानिसगुनमनहर्षअति लागेकरनबिचार ७ चौ०॥ रहाएकदिनअवधिअधारा समुझतमनदुखभयउअपारा**

८ कारणकवननाथनहिंआये जानिकुटिलकिधौंम्वहिंबिसराये ९ अहोधन्यलक्ष्मणबड़भागी रामपदारबिंदअनुरागी १० कपटीकुटिलनाथम्वहिंचीन्हा तातेनाथसंगनहिंलीन्हा ११ जोकरणीसमुझैंप्रभुमोरी नहिंनिस्तारकल्पशतक्रोरी १२ जनअवगुणप्रभुमाननकाऊ दीनबंधुअतिमृदुलसुभाऊ १३ मोरेजियभरोसदृढ़सोई मिलिहैंरामसगुणशुभ

है जो जीवकोदोष श्रीरामचन्द्र देखैं काहेते जीवसदा सदोष है निर्दोष श्रीरामचन्द्र हैं ( १२ ) जनको अवगुण श्रीरामचन्द्र कबहूं नहीं लेत हैं काहेते दीनबन्धु हैं दीन काकोकही जाको संसार दुखस्वरूप लागो है अरु श्रीरामचन्द्रसे आरत है हे श्रीरामचन्द्र मोसे कछुनाहिं बनेहै मैं सब प्रकारते नीचहौं पुनि मैं बहुत दुखित हौं तुम्हारी शरणहौं ऐसे वाह्यांतरनिरभिमान है ताको दीनकही ताके बन्धुनामभाइ हैं पर अतिप्रीतम हैं प्रभु हैं प्रभुकही जनको दुख नाहीं देखिसकै हैं ऐसो स्वभाव है अरु सबके स्वामी हैं अरु अति मृदुलनाम कोमल हैं पुनि जो श्रीरामशरण जाइ ताको अपनो स्वरूप मुक्तिदेते हैं पुनि अपनो ऐश्वर्य देते हैं पुनि जेतेजीव हैं चराचर जो जाही में प्रसन्न है ताको ताही में प्रसन्न रखते हैं अरु करुणा कृपा दयालुता उदारता इत्यादिक सबजीवनपर सदा स्वाभाविक बर्तमान देते हैं सो सुभाव श्रीरामचन्द्रको है ( १३ ) ताते मेरे अन्तष्करण में दृढ़भरोस है श्रीरामचन्द्र मिलहिंगे कैसे जानिये शुभकही महा मंगलमय सगुन होते हैं ( १४ ) अरु चौदहबर्षबीते प्राण रहिगयो तौ मीन अरु चातक येद्वौ मोसे कोटिनभांति भलेहैं मैं जगत् में सब जीवनते लघुहौं अरु मोरे समान अधम या संसार में कौन है ( १५ ) दोहार्थ ॥ श्रीरामचन्द्रको बिरह सो समुद्रभयो तामें भरतजी मग्नकही डूबते हैं तहां हनुमान्जी ब्राह्मणको रूपधारण करिकै जानौ नौकाहीके तुल्य आइगये तब ब्राह्मणकोरूप क्योंधारण कियो मंगलको समय है ताते ब्राह्मणको दरशपरश संभाषण मंगलमय है अनेक दुखको निवृत्ति करैहै अरु संसारसागर तारिबेको जहाज है ताते बिघ्न शांतकरबेको होइ अरु जहां मंगलकार्यहोय तहां जाबेको ब्राह्मणको अधिकार है ( १६ ) पुनि बैठेदेखि

होई १४ बीतेअवधिरहैंजोप्राना अधमकौनजगमोहिंसमाना १५ दो०॥ रामबिरहसागरमहँ भरतमगनमनहोत विप्ररूपधरिपवनसुतआइगयेजनुपोत १६ बैठेदेखिकुशासन जटामुकुटकृशगात रामरामरघुपतिजपत श्रवतनयनजलजात १७ चौ०॥ देखतहनूमानअतिहर्षे पुलकिगातलोचनजलबर्षे १८ मनमहँबहुतभांतिसुखमानी बोलेश्रवणसुधासमबानी १९ जासुबिरहशोचहुदिनराती रटहुनिरंतरगुणगणपाती २० रघुकुलतिलकसुजनसुखदाता आवतकुशलदेवमुनित्राता २१ रिपुरणजीतिसुयशसुरगावत सीताअनुजसहितप्रभुआवत २२ सुनतबचनबिसरेसबदूषा तृषावंतजिमिपायपियूषा २३ कोतुमतातकहांतेआये मोहिंपरम

श्रीहनुमान्जी श्रीभरतजी को मानहुं तप अरु शांतरसकी मूर्ति हैं दास्यरस परिपूर्ण हैं खराऊंको भाव शीशपर दक्षिणमुख श्रीरामचन्द्र सम्मुख राज्य के बिषय पाछेदैकै सादे तीनिहाथ भूमि खनिकै कुशासन कीनेहैं कमलासन इवको है शीशजटा मुकुटाकार बंधिरही है शरीर दुबला ह्वैरहा है श्रीराम राम रघुपति रघुपति रटिलागिरही है प्रेम प्रबाह नेत्रकमलवंत तामें जलधारा चलीजाती है श्रीभरतजी ऐसे बैठे हैं ( १७ ) पुनि श्रीभरतजीकी रामाकार दशा देखिकै श्रीहनुमान्जी अतिहर्ष को प्राप्तिभये अपनी भक्तिको लघुकरिकै मानतेभये श्रीहनुमान्जी के अंग अंग पुलकतभये नेत्रनते जल बर्षतभये ( १८ ) श्रीहनुमान्जी अपने मन में बहुतभांति सुखमानतभये श्रीभरतजीकी दशादेखिकै तिनके श्रवणको अमृतमय बचन बोलतेभये ( १९ ) श्रीयाज्ञबल्क्यजी कहते हैं हेभरद्वाज श्रीहनुमान्जी बोलते भये हैं श्रीरामानुरागी श्रीभरतजी जासुकही जिन श्रीरामचन्द्र के बिरह में रात्रि दिन शोचकरतेहौ अरु जाको गुणगण निरंतर जामें अन्तर न परै पंक्तिकी पंक्ति रटते हौ ( २० ) ते रघुबंशमणिके कुलके तिलक सुजनजोहैं संतजन तिनके

सुखदाता अरुब्रह्मादिक देवता मुनि नारद सनकादिक इत्यादिक अनेक मुनि तिनके त्राताकही रक्षकहैं ते सबप्रकारते कुशल आवते हैं ( २१ ) हे भरतजी रिपुरण जीतिकै मुनिन को अभय कीन है सोदेवमुनि सिद्धयशगावते हैं ताते सर्वयशमान् श्रीसीता अरु श्रीलक्ष्मणजी सहित श्रीरामचन्द्र आवते हैं प्रथम श्रीसीता लक्ष्मण क्योंकहा जातेकहा सो सुनिये जब श्री हनुमान्जी सजीवनिको आयेहैं तब श्रीजानकीजी लंका में रही हैं अरुलक्ष्मणजीको शक्तिलागिरहै श्रीरामचन्द्र शोचमेंरहैं यह प्रसंग श्रीहनुमान्जी के मुखते श्रीभरतजी पूर्वहीं सुन्यो है तब अतिशोचभयो ताते अब आगेही श्रीहनुमान्जी नामलेतभये जो प्रथम नाम नलेते तो श्रीसीता अरु लक्ष्मणजीको तौ भरतजीकी दशाको जानै कैसीहोती ताते प्रथमकहा ( २२ ) कागभुशुण्ड कहते हैं हेगरुड़ श्रीहनुमान्जीके बचन

**प्रियबचनसुनाये २४ मारुतसुत मैं कपिहनुमानानाममोरसुनुकृपानिधाना २५ दीनबंधुरघुपतिकरकिंकरसुनतभरतभेटेउठिहितकर २६**

सुनिकै श्रीभरतजीके मनते संपूर्ण दुखमन में जोरहा सो बिसरिगयो हैकैसे जैसेकोई तृषावन्तकही अतिशय पियासा ताको पियूषनाम शीतलजल मधुर सुगन्ध अमृत तद्वत् प्राप्तिभयो जैसे वह सुखीभयो तैसे वह सुखीभयो तेहिते अधिक भरतजीको सुखभयो ( २३ ) तब हनुमान्जी केबचन सुनिकै श्रीभरतजी बोलतेभये कोतुमहो हेतात कहांते आये हौमोको परमप्रिय बचन सुनावतेभयेहौ सोतुम को अहहु ( २४ ) तबहनुमान्जी बोलते हैं हे श्रीभरतजी तुम करुणा दया अरु कृपा के स्थानहौमैंतौ पवनको पुत्रहौं कपिहौं अरु हनुमान् मेरोनाम है हेभरतजी सुनिये ( २५ ) पुनि दीनबन्धु जो श्रीरघुनाथजी हैं तिनका किंकरहौं सो श्रीरघुनाथजी मोकोपठयो है कुशल कहिबेको कुशल ल्याइबेको अरु हेभरतजी तुमसंदेह मतकरो पुनि श्रीरघुनाथजीक्यों नहीं आये सो सुनिये श्रीरघुनाथजी मोसन कहतभये हैं कि हनुमान्जी जब दुइपहर में दुइघरीदिन बाकीरहै तब श्रीअयोध्याते हमगमनकीनरहै श्रीचित्रकूटको ताते जब उतनैदिन चढ़ैगो तबहम अयोध्या में प्राप्तिहोहिंगे हनुमान् तुम प्रातहीजाहु जामें भरतजी व्याकुल नहोहिंसो आपजानिये प्रयागते दुइदंड में आयों है पुनितुरत जाउँगो यहबातश्रीभरतजी सुनतसंते तुरत अतिहित अति आदरते निर्भरते उठिकै हनुमान्जीको मिलतभये ( २६ ) शिवजी कहते हैं हे पार्वती श्रीभरतजीहनुमान्जी मिलतभये आनन्द करिकै दोऊजन परिपूर्णभये प्रेमहृदयमेंनहीं समाइ गातपुलकिआये हैं नेत्रनमें जल भरिआये हैं रोमांच ठाढ़ेह्वै आये हैं श्रीभरतजी बोले ( २७ ) हे कपि जो कोई कहे कि हनुमान्जी तौ ब्रह्मबेष हैं भरतजीने कपिक्योंकहा कपिकही बानराकार बानररूपते श्रीजानकीजीको बोधकीन पुनि श्रीलक्ष्मणजी के अर्थ हे तातसजीवनि ल्याये सबप्रकारते श्रीरघुनाथजीके आज्ञानुकूल सहायकीन तातेकपिकहा अथवा ककारसंज्ञा आत्मा है आत्मारसपीवै सोकपीकही सो आत्मारूप श्रीरामचन्द्र हैं ताते रामरसपीवे ताको कपिकही श्रीहनुमान्जी केवल रामरसै पीवते हैं सदा और छुवैं नहीं जैसे चातक स्वाती को जल ताते भरतजूने कहा हेकपि तुम्हारे दर्शनते संपूर्ण दुखबीते आजुमोको श्रीरामचन्द्र प्रीतमके मिलेको सुखभयो ( २८ ) श्रीजानकीजी

**मिलतप्रेमनहिंहृदयसमाता नयनश्रवतजलपुलकितगाता २७ कपितवदरशसकलदुखबीते मिलेआजुम्वहिंरामपिरीते २८ बारबारबूझीकुशलाता तोकहदेउंकहासुनुभ्राता २९ यहिसंदेशसरिसजगमाहीं करिबिचारदेख्यउंकछुनाहीं ३० नाहिनतातउऋणमैंतोहीं अबप्रभुचरितसुनावहुमोहीं ३१ तबहनुमन्तनाइपदमाथा कह्यउसकलरघुपतिगुणगाथा ३२ कहुकपिकबहुंकृपालुगोसाईं सुमिरतमोहिंदासकीनाईं ३३ हरिगीतछं०॥ निजदासज्योंरघुबंशभूषणकबहुँममसुमिरणकर्‌यो सुनिभरतबचनबिनीत कोमलपुलकि**

पुनि श्रीलक्ष्मण जू श्रीरघुनाथजू कै कुशल बारबार श्रीभरतजू बूझते हैं हे हनुमान् भ्राता परमप्रीतम तुमको का पदार्थ देउँ ( २९ ) यहि सँदेशकी बराबरि जगत् में कछु नाहीं हैं मैं अपने मनमें बिचारकरि ब्रह्मांडमेंखोजिदेख्यउँ अरु परलोक लोक खोजिदेख्यउँ मेरीगति सर्वत्रहै पर कछु काहूँ नहीं मिल्यउ हे तात तोको का देउँ ( ३० ) सो बहुत का

कहूँ मैं तुमसेलोक परलोकहू में उऋण नाहीं हौं अब श्रीरामचरित सम्पूर्ण सुनावहु अबतौ मैं तुम्हारो ऋणदाताहौं ( ३१ ) तब हनुमान्‌जी हर्षिकै चरणकमलों में माथ को झुकाइकै श्रीरामचरित सम्पूर्ण दुइदण्ड में श्रीभरतजू से कहते भये ( ३२ ) सोसुनिकै श्रीभरतजू मग्न होतभये पुनि सावधान ह्वैकै श्रीभरतजू बोलते भये हेहनुमान् जू श्री रामकृपालु मेरी सुधिकरते हैं सेवक मानिकै ( ३३ ) छन्दार्थ॥ श्रीभरतजू कहते हैं श्रीरघुबंशमणि जेहैंसो मोको निजदासकी नाईं कबहूं सुमिरण करते हैं श्रीभरतजूके बचन बिनीतकही आरत नरम प्रवीण अति दीनता संयुक्त सुनिकै हनुमान् भरतजूके दोऊचरणनपर दंडइव गिरिपरतभये यह कहते हैं अहोधन्य श्रीभरतजूअसकही अब स्थावर जंगम कही जेस्वासायुक्त हैं चलते हैं तिनसबके नाथ श्रीरामचन्द्र सोतुम्हार गुणबारबार प्रेमभरे कहते हैं तुमसोकसनबिनीतहोहु कस न सद्गुणके गाथ कही ग्रन्थहोहु सद्गुण कही समीचीनभगवंतकेगुण ( ३४ ) दोहार्थ ॥ हनुमान्‌जू बोलते भये हेनाथ श्रीभरतजू तुम श्रीरामचन्द्र के अतिशय प्राणप्रियहौ अरु श्रीरामचन्द्र ते तुमको प्राणप्रिय हैं किन्तुजैसे जीवको देह प्राणप्रिय है तैसेतुम श्रीरामचन्द्र को प्रिय हौयह मैंसत्य कहतहौं अरु पुनिपुनि परस्पर मिलते हैं हर्षहृदयमेंनाहीं समातहैदोऊजन रामानन्द मग्नभये ( ३५ ) सोरठार्थ ॥ पुनि पुनि हनुमान्‌जू धीरज धरिकै श्रीभरतजूके चरणारबिन्द में शिरनाइकै आज्ञालैकै तुरतश्रीरामचन्द्र के समीप प्राप्ति भये जाइ सम्पूर्ण कुशल कहते भये

तनचरणनपर्‌यो रघुबीरनिजमुखजासुगुणगणकहतअगजगनाथसो काहेनहोहुविनीतपरमपुनीतसद्गुणगाथसो ३४

दो०॥ रामप्राणप्रियनाथतुम सत्यबचनममतात पुनिपुनिमिलतभरतसन प्रेमनहृदयसमात ३५ सो०॥ भरतचरणशिरनाय तुरतगयेउकपिरामपहँ कहीकुशलसबजाय हर्षिचलेप्रभुयानचढ़ि ३६॥ * * * * * *

चौ० ॥ हर्षिभरतकोशलपुरआये समाचारसबगुरुहिसुनाये १ पुनिमंदिरमहँबातजनाई आवतनगरकुशलरघुराई २ सुनतसकलजननीउठिधाईं कहिप्रभुभरतकुशलसमुझाईं ३ समाचारपुरबासिनपाये नरअरुनारिहर्षिउठिधाये ४ दधिदुर्बारोचनफलफूला

श्रीरामचन्द्र तुरत हर्षिकै पुष्पक बिमान पर चढ़िकै प्रियानुज सेनासंयुक्त चलते भये जो कोई दोहा में एकमात्रा छूटि जात है सो दोहरा छन्द है ( ३६ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलि-कलुषविध्वंसनेउत्तरकाण्डेश्रीहनुमन्तआगमनश्रीभरतमिलाप मंगलमयबर्णनन्नामद्वितीयस्तरंगः २॥ :: :: :: :: ::

दोहा॥ रामकुशलकहिअवधपुर भरतचलेप्रभुपास। रामचरणप्रभुमिलनसुख तृतियतरंगहुलास ३ हे भरद्वाजजू जब हनुमान्‌जी श्रीरामचन्द्र के पासगये तब भरतजी श्रीअवधके अन्तर में आवतेभये श्रीरामचन्द्रजूको आगमन श्रीवशिष्ठजीसे प्रथमहिं कहा ( १ ) पुनि राजमहल में गये यह कहतेभये कि श्रीरामचन्द्र श्रीजनकनन्दनी अरुश्रीलक्ष्मणजी कुशलपूर्बक आवते हैं ( २ ) श्रीभरतजूके बचन सुनत संते सबमाता आतुरते धाइउठीं श्रीभरतजू श्रीरामकुशल सब प्रकारते कहते भये ( ३ ) सो समाचार सब पुरवासिनने पाये नर अरुनारि हर्षयुत उठिधाये ( ४ ) दधि दूर्बा रोचनकहि हरदीचूर्ण अरुफल नारियर सुपारी आम्रकेरा अपरफल मंगलमय जेहैं फूलगुलाब कमल इत्यादि कछु मंगलपदार्थ ( ५ ) कंचनके थारनमें पूर्ण भरि भरि अरु हेमकलश श्रीसरयूके सुगन्धमय जलतेपूर्णअरु लघुमोतिन करिकै सहितकुश अरुअंबकेपल्लव मणिदीपकते आरोपित ऐसेकलश थारन में भरि भरि मंगलमय पदार्थ अनेक लैलै करकमलनिवारकही श्रेष्ठ भामिनी चन्द्रमुखी कोकिलबयनी मंगलमय श्रीरामचन्द्रके केलिचरित बाल कौमार पौगंड किशोर पर्यन्तगान करत सिंधुरकहीगजगामिनी चलती भईं ( ६ ) प्रथमहिं जब जब सगुन होनेलगे तौने तौने मंगलसजे सो कैसे सजे जब श्रीभरतजूने खबरिकहा तब तो जहां जैसहिरहे सो तैसेहि उठिधाये बालक वृद्धकहहिं हमहूंको संगलेहु सो कोई

नवतुलसीदलमंगलमूला ५ भरिभरिथारहेमबरभामिनि गावतचलींसिंधुरागामिनि ६ जोजैसेतैसेउठिधावहिं बालवृद्धकोउसंगनलावहिं ७ एकएकसनबूझहिंधाई तुमदेखेदयालुरघुराई ८ अवधपुरीप्रभुआवतजानी भईसकलशोभाकैखानी ९ भइसरयूअतिनिर्मलनीरा बहहिंसुहावनित्रिविधिसमीरा १० दो०॥ हर्षितगुरुपुरजनअनुज भूसुरवृंदसमेत चलेभरतअतिप्रेममन सनमुखकृपानिकेत ११ बहुतकचढ़ीअटारिननिरखतगगनबिमान देखिमधुरसुरहर्षअति करहिंसुमंगलगान १२ राकाशशिरघुपति

सुनवेनाहिं करैं भोजन भूषण बसन गृहकार्य अनेक छांड़िकै धाये ( ७ ) पुनि एक एकसन धाइकै बूझते हैं तुम श्रीरामचंद्र को देख्यउ है दयालुकही दीन जीवनके प्रतिपालक रघुराईकही रघुवंशकुलके सर्व प्रकारते रक्षक ( ८ ) पुनि हेगरुड़ जी श्रीअयोध्या आपन प्रभुआवत जानिकै दशौदिशा शोभाकै खानि भई ( ९ ) ऐसी जो श्रीसरयू है सोपुनि अतिनिर्मल होतभई शीतल मंद सुगंधमय धारा बहतभयो तैसही परम सुहावन त्रिविध पवन बहतभयो ये सब सूक्ष्मरूपते श्रीरामचंद्र के संगगयेरहैं जब श्रीरामचंद्र लंकाजीतिकै अवधको चले तब आज्ञासंयुक्त आगेही प्राप्ति भये आइ ताते सब प्रकारते समस्त शोभाकै खानि होत भये ( १० ) दोहार्थ ॥ अति हर्ष संयुक्त गुरुजो वशिष्ठ हैं अरु सुमंत इत्यादिक मंत्री श्रीशत्रुहन पुनि भूसुरकही ब्राह्मण वृंद सब वेदवक्ता अनेक पुरजन नखशिखलौं अलंकार हेममणि मय ऐसे अनेक नाग अनेक रथ अनेक सुखपाल अनेक बाजन भेरी मृदङ्ग सहनाई नरसिंहा नगारा इत्यादिक मङ्गलमय गजन अरु घोड़नपर ध्वजा पताका इत्यादिक मङ्गलमय ऐसे सम्पूर्ण समाजलीन्हे पैदर सबन संयुक्त श्रीभरतजी आपुसादे उमगतपगचलत श्रीरामजूकी खराऊँ शीशपर तपयोग वैराग्यज्ञान विज्ञान प्रेमापराभक्ति रामानुरागकै मूर्ति श्रीभरतजू कृपानिकेत श्रीरामचन्द्र केसन्मुख अति प्रेमते मिलिवे को चले हैं ( ११ ) श्रीअयोध्याके जोनारी ते बहुतक तो मङ्गल सजे श्रीरामचन्द्र के सन्मुख चली हैं अरु अनेकमहलन पर चढ़ी गगन में बिमान निरखती हैं सो बिमान देखिपरयो जाको अनेक सूर्य चंद्रमा को प्रकाश है लघुदीर्घ को प्रमाण नहीं है जैसेइच्छा होइ तैसे होत है अरु स्फटिक मणिवत श्वेत निर्मल तापर चित्र-रङ्ग अनेक हैं कहूँ सातखण्ड वर्णन हैं अरु कहीं तीनिखण्ड वर्णन है कमलाकार है बाहेर को खण्ड बत्तिस दलको सोई कोण है मध्यको खण्ड सोरह दलको सोई कोण है अंतर खण्ड अष्टदल है सोई कोण जानियेसर्ब कोणनप्रति मणिनके दण्डा लागेहैं तीनिहु खण्डमें छत्रुरी चित्रबिचित्र बनी है बिमान को अग्रभाग जो है सो युगहंसाकार है अरु बाहेरकेखण्ड में असंख्य बानर रीछनकी सेना चढ़ी है मध्यखंड कछुक ऊँचौ है

पुरीसिंधुदेखिहरषान बढ़ेउकोलाहलकरतजनु नारितरंगसमान १३ चौ०॥ इहांभानुकुलकमलदिवाकर कपिनदेखावतनगरसुधाकर १४ सुनुकपीशअंगदलंकेशा पावनपुरीरुचिरयहदेशा १५ यद्यपिसबबैकुंठबखाना वेदपुराणविदितजगजाना १६

तापर अठारह पद्म राजाआरूढ़ हैं मध्यखण्ड के ऊपर अन्तर खण्ड कछुकऊँचौ है सो सिंहासन महादिब्य है तापर श्रीसीताराम बिराजमान हैं श्रीलक्ष्मणजूहनुमान्जू विभीषण सुग्रीव अङ्गद इत्यादिक बहुत पार्षदन संयुक्तअति शोभायमान हैं जो सखी महलनपर बिराजित हैं सो बिमान देखिके सुनि मङ्गलगान करती हैं यह प्रसङ्ग अगस्त्य संहितायां उत्तरार्द्धे ( १२ ) दोहार्थ ॥ राकानाम पूर्णमासीको चन्द्रमा ताको देखिकै सिन्धु जोहै समुद्र सो उमगत है बढ़त है तरंग उठतीहै गंभीर शब्दहोतहै जैसे चौदह दिन के पक्ष में पूर्णमासी होती है तैसे चौदहवर्षके अन्तर की घरी सोई पूर्णमासी की रात्री है रघुपति परब्रह्म सोई सम्पूर्ण शशि है आगमन उदय है पुरी जो श्रीअयोध्या सोई सिंधु है पुरीको जो कोलाहल हर्ष गानादिक सोई गंभीर शब्द हैं सुख उमगत है बढ़त है अरु नारी जो हैं सो अति शोभित तरंग हैं ( १३ ) हे भरद्वाज अब श्रीरामचन्द्रके इहां सुनहु भानुकुल कमल के प्रफुल्लित कर्ता दिव्यसूर्यरूपी श्रीरामचन्द्रजी सुग्रीवादिक जो सम्पूर्ण कपि हैं जामवन्त इत्यादिक सम्पूर्ण जेऋच्छ हैं विभीषणादिक जो राक्षस हैं तिन सबनको

अपनो जोपरमधाम ताको देखावते हैं जब शृंगबेरपुर ते निषाद के स्थानते बिमान उठाहै नभमें विराजमान भये तब श्रीरामचन्द्र बोले हे सुग्रीव विभीषण निषादादिक अनन्तसखा उत्तर दिशा देखहु तौ कोटि सूर्य चन्द्रमाहूते प्रकाश अधिक शोभित ह्वइ रहेउहै शोभाकर कही सो मोर स्थान भाकही शोभा तेहिको आकरकहीखानि ऐसी श्रीअयोध्या सो देखहु प्रमाणं नाममाला भा आभा शोभा प्रभासुषमाकांति पुनि उकार स्वर में संयोगते शुभाकरके अर्थ कहते हैं शुभाकर कही सम्पूर्ण शुभजे पदार्थ ताकी खानि पुनि शुभकही सुन्दरता जो है अनेक मंगल मुक्ति भुक्ति इत्यादिकन की खानि श्रीअयोध्या सोतुमदेखहु ( १४ ) श्रीरामचन्द्र कहते हैं हे कपीश अंगदादि जामवन्त लंकेश यह जो श्रीअयोध्या पुरी है सो पावन कही पवित्र है निर्मल है त्रिगुण रहित है अयोध्या कही जाते काल न युद्धकरिसकै अरु जाके आगे जो अहै ते करिकै कही अमर होइ पुन: श्रीरामचन्द्र की वशीबनीरहत होइ अरु ब्रह्मा विष्णु महेश जाको ध्यावते हैं अरु मुक्तिकीखानि है जाके ध्यावत अवलोकत तीनिहुं ताप सो पञ्चजनित विकार मिटिजात है पावन निर्मल शुद्धस्वरूपसदा एकरसशुद्ध ब्रह्मस्वरूप है सहित

## अवधसरिसप्रियमोहिंनसोऊ यहप्रसंगजानैकोउकोऊ १७ जन्मभूमिममपुरीसोहावनि उत्तरदिशिबहसरयूपावनि १८

सरयू अरु अवधबासी जगन्नाथ रूप हैं ताते पावनि कही प्रमाणं पद्मपुराणेश्लोक॥ अयोध्याचपरब्रह्मसरयूसगुणोपुमान् । तन्निवासीजगन्नाथस्सत्यंसत्यंबदाम्यहं १ अरु कौशल देश सर्बहै परकछु श्रीअयोध्यामर्यादकरिकै कहते हैं श्रीअयोध्या श्रीदशरथ राजमहलते द्वादश योजन पश्चिम द्वादश पूर्व द्वादश दक्षिण यह ऐसहि आठौ दिशा जानब यहदेशरुचिर कही अतिसुन्दर भूमि सो सब दिब्य है करिकण्टक रहित है कोमल तृण पुष्पसंयुक्त शोभित हैं शुभगुण मय है ऐसोदेश तुमदेखहु हेसखे ( १५ ) इहां अढ़ाई चौपाई के एकही अन्वय हैं श्रीरामचन्द्र कहते हैं यद्यपिसब कोई बैकुण्ठ बखानते हैं वेदपुराणसबगावते हैं त्यहिकरिकै सबजगत् जानते हैं अरु बैंकुंठसब मेरोईहै ( १६ ) पर अवधके समान मोको बैकुण्ठहू प्रिय नाहीं है यह प्रसङ्ग कोई कोई जानहिंगे जोमेरे विशेषि शरण होहिंगे तहां जोकोई कहै कि श्रीअयोध्या श्रीरामजन्म भूमि है इहां नरलीला कीन्हि है ताते अवध बहुत प्रिय है जो यह अर्थ सिद्धकरी तौ यह कहाहै कि यह प्रसंग जानै कोइ कोई यहि पद में विरोध होत है श्रीरामचन्द्र की जन्मभूमि सबजानते हैं इहां कोऊ कोऊ विशेषि पद क्यों कहा देखौ वाहीविशेष बचन अपने मुखते कहैहै प्रमाणं श्रीभगवद्गीतायां ॥ मनुष्याणां सहस्त्रेषुकश्चिद्यततिसिद्धये ॥ यततामपिसिद्धानांकश्चिन्मांवेत्तितत्त्वत: १ ताते श्रीरामचन्द्र जापर अतिकृपा करते हैं ताको श्रीमुखते अपनो तत्त्व बतावते हैं ताते परमात्मा परब्रह्म परमेश्वर ताके चरित तत्त्वजानिबेको गूढ़है नाम स्वरूप लीलाधाम विशेष है तहां श्रीरामचन्द्र कृपाकरिकै धामतत्त्व सबको जनावते हैं ताते सबजानिपरे यहि चौपाई को अन्वय आगे चौपाई में अर्थ सिद्ध होत है यद्यपि सबवैकुंठवेद पुराण बखानते हैं तिनहीं के द्वारा ह्वैकै जगत् सब जानतहै सब कही बहुत बैकुण्ठ जोहैं तिनसब बैकुण्ठ में श्रीअयोध्या मोको बहुत प्रिय है यह अन्वय दूसरी चौपाई में है वेद पुराण बखानते हैं सर्ब बैकुंठ जन्मभूमि ममपुरी यह श्रीमुखबचन ताको अर्थ अयोध्या सबबैकुंठनकी जन्मभूमि है कोई कहै कि अयोध्याते बैकुंठको जन्म कबभयो है तहां यह न कहिबेमें आवै अनिर्वाच्य है इहां कारण कार्य अनादि है जैसे जीव ईश्वर मायाको मूलकारण है पर यहनाहीं काहूकहा कि ईश्वरते जीवभयो है ये तीनिहु तत्त्व अखण्डअनादि हैं पर कारण कार्य कहा जात है बोधकेहेतु तैसे अयोध्या अरु बैकुंठ जानब ऐसही नामरूप इत्यादिक जानब पर सब बैकुण्ठ श्रीरामही के जानब पर श्रीअयोध्या सबते प्रिय है तहां प्रमाण है ग्रन्थनमें एकसै आठ बैकुंठ भूपर हैं पांच बैकुंठ अपर हैं एक बैकुंठ जब नारायण निद्राकी प्रेरणा करते हैं तब ब्रह्मा निद्राबश स्वप्न अवस्थाको प्राप्त होते हैं तब नारायणकी इच्छाते जगत् जलार्णव होत है सो नैमित्य प्रलयकही ताको कारण क्षीरसागर बैकुंठ है काहेते ब्रह्मा नारायण के पुत्र हैं द्वितीयरमा बैकुंठ है तहां सनकादिकन शापदीन है जय विजयको तृतीय कारण बैकुंठ जहां महाप्रलय में प्रकृति पुरुष सम्यताको प्राप्तिहोत हैं जहां तीनि गुण पांचतत्त्व सम हैं पुनि जब वोहीपुरुष महाविष्णु ईक्षणाकरै है तब वैसही जगत् को होत है पुन: चतुर्थ बैकुंठ महा भगवान् चतुर्ब्यूह बासुदेव पुरुष प्रकृति पर बिराजमान

हैं पंचमपद बैकुंठ बिरजापार ताहीको पूर्णअयोध्या कहा है ताते सब बैकुंठनको मूल श्रीअयोध्या है सब स्वरूप को मूल श्रीराम स्वरूप है सबनामको मूल श्रीरामनाम है सब लीला को मूल रामलीला है सब प्रतापको मूल रामप्रताप है तहां प्रमाण है भार्गव पुराणे नारायण वाक्यं नरंप्रति श्लोकसाढ़ेसात ७॥ इदमेवपुराब्रह्मबैकुंठनगरेहरिः ॥ सर्वेश्वरीजगन्मातााप्रत्यक्षकमलालया १ त्रिपाद्विभूतिवैकुंठ विरजायापरेतटे॥ यादेवानांपुरायोध्याह्यामृतानोमृतापुरी २ अन्यच्च॥ वैकुंठपंचविख्याताः क्षीरादीपरमाकूर्ज॥ कारणमहावैकुंठपंचमंविरजापरं ३ नित्यादिव्यमनेकभोगविभवंवैकुंठरूपोत्तरं ॥ सत्यानन्दचिदात्मकस्वयमभून्मूलत्वयोध्यापुरी ४ गोलोकाच्चपरंज्ञेयासाकेतोन्तःपुरप्रियं॥ गोप्यागोप्यतरागोप्यासायोध्यातीवदुर्ल्लभा ५ इतिमहारामायणेशिववाक्यं ॥ रामस्यनामरूपंचलीलाधामपरात्परं ॥ एतच्चतुष्टयंनित्यंसच्चिदानन्दविग्रहं ६ इतिनारदपंचरात्रे॥ पुनि वेदकहते हैं यायोध्यापुरीसा सर्ववैकुंठानामेव मूलाधारामूल प्रकृतेःपरा तत्सद्ब्रह्म मया बिरजोत्तरा दिब्यरत्नकोशाढ्यातस्यांनित्यमेवसीतारामयोर्बिहारस्थलमस्तीति इत्यथर्वणे उत्तरार्द्धे ॥ यादेवानांपुरायोध्यातस्यांहिरण्मयः कोशःस्वर्गेलोकोज्योतिप्रवृत्तां जीवैतांब्रह्मणेवेनामृतेनामृतां पुरीतस्मैब्रह्माचआयुः कीर्तिप्रजाददुरितिसामवेदेतैत्तरीयश्रुति॥ सर्ब बैकुंठनकी जन्मभूमि ममपुरी श्रीअयोध्या सबपर बिराजमान है सुहावनिकही सुर मुनि नागनर सबके मनभावनी है अरु मेरे मनभावनी है अरु सब बैकुंठ मेरोईहै सब बैकुंठन में मेरोई स्वरूप है श्रीरामचन्द्र.यह कहा जो कोईकहै कि काभगवान्के बहुत रूप हैं तहां भगवत् तो एकही है परकार्य कारण करिकै बहुत है सबअखण्ड एकरस है अरु भगवान् अपनी इच्छाते अनन्त कलावछिन्नहै भगवत् गतिको वेद नेति नेति कहते हैं सो इच्छाते जेतने चहते

**जामज्जनतेबिनहिंप्रयासा ममसमीपनरपावहिंबासा १९ अतिप्रियमोहिंइहांकेबासी ममधामदापुरीसुखरासी २० हर्षेकपिसब**

हैं तेतने स्वरूप बनावते हैं तहां श्रीरामचन्द्र कहाहै सो सुनिये ( १७ ) जन्मभूमिममपुरीसुहावनि अतिसुन्दरि तेहिके उत्तरदिशामें श्रीसरयूबहती हैं कैसी हैं सरयू पावनिकही पवित्र निर्मल स्वच्छ एकरस सर्बकालमें हैं ( १८ ) हे सखे ऐसे सरयू के मज्जनकियेते मेरी सामीप्य मुक्तिको प्राप्ति होते नरनाम नरसंज्ञा सबजीव महारामायणे शिववाक्यं श्लोकार्द्ध ॥ नराजीवाश्रयायस्यतस्यनारायणास्मृतः जामज्जनते कर्मयोग बैराग्य ज्ञान भक्ति इत्यादिक बिनाकरेही मेरो स्वरूपह्वैकै मेरीसामीप्यताको प्राप्तिहोते हैं श्रीमुखबचन यह वेदको सारभूतहै तहां प्रमाण है श्लोक अन्यच्च॥ यस्याभातिममोदकाननवरंरामस्यलीलास्वयं ॥ यत्रश्रीसरिताबरंचसरयूरत्नाचलाशशोभिताः १ ध्येयंब्रह्ममहेशविष्णु-मुनिभिःयानंददासर्वदा सायोध्यापरमात्मनोविजयतेधाम्नापरामुक्तिभाः २ पुनः श्रुतिः ॥ प्रवाहरूपिणी भवतीनाम्ना सरयूरहामेवार्तेमनसे जलरूपिणीचचतुर्युगेच-सरयूकलौगंगावशिष्ठजाः ( १९ ) पुनि इहांके बासी मोको बहुत प्रिय हैं अरु पुरी जो अयोध्या सो मेरोधाम कही स्वरूप की देनहारी है दूसरार्थ॥ पुरीको विशेषण कहिआये हैं अब पुरबासिनको विशेषण कहते हैं ताते अतिप्रिय कहा जैसे एकगुरुके दशशिष्य हैं सो सबप्रिय हैं तिनमें एकको गुणवान् बिचारिकै समस्तने अपने ऐश्वर्यको मालिक करिदियो है सो अतिप्रिय भयो है तैसे श्रीरामचन्द्र कहते हैं मेरी बहुतपुरी हैं अरु पुरीके वासीजेहैं सोसबै मोकोप्रियहैं पर अवधकेवासी मोको अतिप्रियहैं काहेते मैं इनको इतनो अधिकार दियों है कि इहांके बासी ममधामदाहैं मेरो धामजो है परमपद किन्तु धामकही मेरोस्वरूप ता मोक्षकेदाता एकहीहौजीव मोक्षदाता नहीं है अरु अवधबासीमोधाम जो यही पुरी सुखकही मुक्ति भुक्तिकेवासी ताकेदाता अवधबासी हैं मेरेसमान ऐश्वर्य को प्राप्ति हैं ( २० ) श्रीरामचन्द्रके बचन सुनिकै सबकपिहर्षे अरु बोले धन्य श्रीअयोध्याजी जाको श्रीरामचन्द्र निजमुखते बखानतेभये ( २१ ) दोहार्थ ॥ पुनिभरतजी सहितसमाज चलेआवते हैं मानहुंकरुणा आरतकी सेना

**सुनिप्रभुबानी धन्यअवधजोरामबखानी २१ दो०॥ आवतदेखेलोगसबकृपासिंधुभगवान नगरनिकटप्रभुप्रेरेउउतरेउभूमिबिमान २२ उतरिकह्यउप्रभुपुष्पकहँतुमकुबेरपहिजाहु प्रेरितरामचलेउसोइ हर्षबिरहअतिताहु २३ चौ०॥ आयेभरतसंगसबलोगा कृशतनश्रीरघुबीरबियोगा**

**२४ बामदेवबशिष्ठमुनिनायक देखेप्रभुमहिधरिधनुशायक २५ धायधरेगुरुचरणसरोरुह अनुजसहितअतिपुलकतनोरुह २६ भेंटीकुशलपूछिमुनिराया हमरीकुशलतुम्हारीदाया २७ सकलद्विजनकहँनायोमाथा धर्मधुरंधर**

चलीआवती है श्रीरामचन्द्र बिलोकिकै तुरंत आज्ञादीन बिमान नगर के निकट रामाज्ञाते भूमिपर उतरतभयो ( २२ ) पुनिश्रीरामचन्द्र ने उतरिकै पुष्पक बिमानको आज्ञादीन कि तुम कुबेरके इहांजाहु श्रीरामकी प्रेरणातेचलेउ श्रीरामचन्द्रके बिरहको बहुतदुःखभयो रामाज्ञाकोहर्षहै अरुकुबेर केइहां जाबेकोविषादहै ( २३ ) पुनि श्रीभरतजी आये संग समस्त लोग हैं श्रीरामचन्द्रकेबियोगकही बिक्षेप करिकै शरीर कृशनामदूबर ह्वैरह्यउहै ( २४ ) पुनि आगे बामदेव इत्यादिक मुनिनायक श्रीबशिष्ठजी तिनको देखिकैप्रभु धनुष बाण भूमिपर धरिकै ( २५ ) पुनि धाइकही शीघ्रकै गुरुकै चरणकमल गहते भये सहित अनुज कही श्रीलक्ष्मणजीके तनोरुह कहीतनरोम अति पुलकिकै खड़े ह्वै आये हैं किन्तु बशिष्ठादिकन के तनोरुह कही रोम ठाढ़े ह्वइआये हैं ( २६ ) पुनि भेंटिकै मुनिराय कुशल पूछतेभये तब श्रीरामचन्द्र बोले तुम्हारी दायाते हमारी कुशल है ( २७ ) पुनि श्रीरामचन्द्र समस्त द्विजनको मिलिकै माथनावते भये ऐसे रघुवंशकुलधर्मके धूरि ताके धरैया पुनि त्यहिकुल के नाथ किन्तु सबके नाथ श्रीरामचन्द्र हैं ( २८ ) पुनि श्रीभरतजी निर्भर प्रेमते दण्डइव परतभये श्रीरामचन्द्र के पद पंकज में शीशनावते भये पुनः किरीट संयुक्त शीशनावते हैं ब्रह्मा शिव इन्द्रादिक दिग्पाल सुर मुनि सिद्ध जेते हैं तेते सब जिन्हैंनवते हैं ( २९ ) श्रीभरतजी को दाहिना हाथ दाहिना चरणपर बावां हाथ बावां चरणपर नासिका दोऊ अंगुष्ठ मध्य में ललाट दोऊचरणपीठिमध्य ज्ञानमुद्रा दोउकरमें ऐसे भूमि में परे श्रीभरतजीमें पराप्रेम पराभाव दूनों पूर्ण हैं श्रीरामचन्द्र उठावते हैं प्रेमते मग्न भये हैं उठते नाहीं हैं बरकर कही श्रेष्ठ आजानुभुजभरिकै उठाइकै श्रीराम कृपा करिकै हृदय में लगावतेभये ( ३० ) श्रीरामचन्द्रके श्यामगात पुलकित अंग अंगपुनिराजीवजो कमल प्रथम बिगसेउ ते तद्वत् ऐसे नेत्र तामें जलप्रबाह बाढ़त भयो द्वौ भाइन के रोम सूक्ष्म ठाढ़े ह्वै आये हैं किंतु देखिकै सबके रोमठाढ़े ह्वै आये हैं हे भरद्वाज सुनिये ( ३१ ) छन्दार्थ ॥ पुनि श्रीरामचंद्र

**रघुकुलनाथा २८ गहेभरतपुनिप्रभुपदपंकज नमतजिनहिंसुरमुनिशंकरअज २९ परेभूमिनहिंउठतउठाये बरकरकृपासिंधुउरलाये ३० श्यामलगातरोमभयेठाढ़े नवराजीवनयनजलबाढ़े ३१ हरिगीतिका छं०॥ राजीवलोचनश्रवतजलतनललितपुलकावलिबनी अतिप्रेमहृदयलगाय अनुजहिमिलतप्रभुत्रिभुवनधनी प्रभुमिलतअनुजहिसोहमोपहँजातनहिंउपमाकही जनुप्रेमअरु**

के नेत्र राजीव कही कमल तद्वत् सो श्रवत कही जलबहत भयो तनमें ललित कही अति आनन्द भरि शोभित पुलकावलि बनिरहीहै अतिप्रेम करिकै अंग अंग की सुधि बिस्मरण होत भई त्रिभुवन धनी पुनः सबकेअनुज को मिलतसन्ते जैसे शोभितहैं सो उपमा मोपैनहीं कहीजाति है जनु प्रेम अरु शृंगारतनको धारणकरिकै मिलतहैं बरनाम श्रेष्ठसुखमाकहीशोभाको प्राप्ति होत हैं पुनि प्रेमकीमूर्त्ति श्रीभरतजी हैं शृंगारमूर्त्ति श्रीरामजी हैं जबप्रेम अरु शृंगार एकरस भये तबसुख शोभा आनन्द अति बिचित्र है ताते श्रीशिवजी कहते हैं मोपै नहीं कहाजाइ ( ३२ ) कृपानिधि भरतजीमिलिकैभरतजी ते कुशल बूझते हैं कृपानिधि कही कृपाके स्थान पुनिभरतजी प्रेमते पूर्ण हैं ताते वेगि बचन नहीं बोले आवै शिवजी कहते हैं हे शिवा कल्याण रूपिणी द्वौभाइन को परस्पर मिलापको सुख जो है सो मन बचनते भिन्न कहे न्यारो है तौ नहीं जाना जाइ पावइकही अथवा मन बचन ते भिन्नजाको आत्मक अनुभवहोइ तौ ज्ञानते जानिबेमें आवैहै ते पावते हैं वहिसुखको अथवा द्वौभाइनके मन बचनते भिन्न जाना कही जानाजाय तौ कविनको प्राप्ति होइ इहां द्वौभाइनके मनबचनके भितरे रहिगयो कविजन क्यों कहै श्रीरामचन्द्रजीके बचन भरतजी सुनत भये तब बोले हे कोशलनाथ मोको आरतजन जानिकै आपदर्शन दीन है ताते मैं कुशलको भाजनहौं विरहरूपजो समुद्र है तामेंबूड़त रहेउं है सो कृपाकेनिधान श्रीरामचन्द्र आपने मेरे कर गहिकै उबारिलियो है इत्यर्थः ( ३३ ) दोहार्थ

॥ पुनि श्रीरामचन्द्र भरतको मिलिकै परमानंद दैकै शत्रुहनजी को हर्षिकै हृदय में लगावतेभये पुनि भरतजीलक्ष्मणजी मिलतेभये प्रेमकही परस्पर धन्यधन्य भक्ति हृदय में सराहिकै आपुको निपट लघुमानिकै प्रेम में मग्नभये हैं द्वौभाई का परस्पर श्रीरामचन्द्र के पदकमल में प्रेमसम अखण्डभाव एकरसहै ( ३४ ) पुनि

श्रृंगारतनधरिमिलतबरसुखमालही ३२ बूझतकृपानिधिकुशलभरतहिंबचनवेगिनआवई सुनिशिवासोसुखबचनमनतेभिन्नजाननपावई अबकुशलकोशलनाथआरतजानिजनदर्शनदियो बूड़तबिरहबारीशकृपानिधानम्वहिंकरगहिलियो ३३ दो०॥ पुनिप्रभुहर्षिशत्रुहनभेंटेहृदयलगाइ लक्ष्मणभरतमिलेतबपरमप्रेमदोउभाइ ३४ चौ०॥ भरतअनुजलक्ष्मणपुनिभेंटे दुसहबिरहसम्भवदुखमेटे ३५ सीताचरणभरतशिरनावा अनुजसमेतपरमसुखपावा ३६ प्रभुबिलोकिहर्षेपुरबासी जनितबियोगबिपति

शत्रुहन लक्ष्मणमिले दुस्सह बिरह जो है सो नाश ह्वैगयो है कैसे दुस्सह बिरहसंभवनाम जो दुस्सह बिरहते उत्पन्नदुःखहै सो समस्त मिटिगयो पुनः द्वौभाइन में किसके दुःखरहे जो सो शत्रुहन में दुःखकही तौ श्रीरामचन्द्र के मिलेते दुःख नाशह्वैगयो भाईके मिलेते दुःखगयो तौ शत्रुहन में लघुता आवती है अरु लक्ष्मणजी श्रीरामचन्द्र के संगहीरहे तहां दुःखकहां हैनाहीं है तहां श्रीरामचन्द्र के बनगवन को संयोग बिरहरहेउ ताके कारण कैकेयी पुत्र भरतजी तिनसेवामें शत्रुहन रहे ता शत्रुहनपर लक्ष्मणजी के दुस्सहदुःख रहेउ जब श्रीभरतजी की दशा श्रीरामाकार देखत भये तब शत्रुहनको मिलतभये सो समस्तदुःख मिटिगयो अरु जब श्रीभरतजी चित्रकूट को गयेरहे तहां रघुनाथजीके मनाइबे को समय रहै ताते भरतजीके ऊपर श्रीलक्ष्मणजीको पूर्ण बोध नाहींभयो ( ३५ ) श्रीसीताजीके युगलपदपद्ममें शीशनवावते भये श्रीशत्रुहनसंयुक्त भरतजूने श्रीजानकीजीको अतिप्रसन्न जाना तब परमानंद सुखको प्राप्तिभये पुनः ( ३६ ) श्रीरामचन्द्रजीको देखिकै समस्त पुरबासीकि श्रीरामचन्द्र को बियोगकही बिक्षेप ताते जनितकही उत्पन्न जो बिपत्ति सो सब नाशभई जो बिपत्ति सबनाशभई तो नवीनसुख उपजत है ( ३७ ) प्रेमकरिकै सबलोग आरत हैं श्रीरामचन्द्र के मिलिबेको आतुर इच्छाहै सो प्रभुजीको ऐसे देखते भये तब कृपालुजो हैं खरारिते कौतुककरते भये इहां खरारि क्यों कहा जब खरदूषण दंडकारण्य में युद्धकरिबेको आये तब श्रीरामचन्द्र को स्वरूप देखिकै सहितसेना मोहिगये तब श्रीरामचन्द्र कृपाकरिकै अपनो स्वरूप सबको देखावतेभये आरण्यकांडे॥ देखहिंपरस्पररामकहंसंग्रामरिपुदललरिमरयो ( ३८ ) अमितरूप त्यहिकालमें श्रीरामचन्द्र होतेभये पुनि यथायोग्य सबको मिलतेभये चारिहुबर्ण चारिहु आश्रम हाथी घोड़े मृगादिक पशुपक्षी इत्यादिक जेते जीव श्रीअयोध्याके रहे हैं जैसे आगे सबको मिलिकै आनंददेते हैं तैसेहीमिले परसब जानते हैं कि श्रीरामचन्द्र हमहींको मिलते हैं जाते सबको परम सुखहोइ ( ३९ ) ऐसेही कृपादृष्टिते सबको

सबनासी ३७ प्रेमातुरसबलोगनिहारी कौतुककीन्हकृपालुखरारी ३८ अमितरूपप्रकटेत्यहिकाला यथायोग्यसबैमिलेकृपाला ३९ कृपादृष्टि सबलोगबिलोकी कियेसकलनरनारिबिशोकी ४० क्षणमहँसबहिंमिलेभगवाना उमामर्मयहकाहुनजाना ४१ यहिविधिसबहिसुखीकररामा आगेचलेशीलगुणधामा ४२ कौशल्यादिमातुसबधाई निरखिबच्छजनुधेनुलवाई ४३

देखिकै सकल नर नारिन को शोकतेरहित करतेभये ( ४० ) तहां एकक्षणमात्रमेंसबकोमिले पर हेपार्वती यह मर्म काहूनहीं जान्योयहसवही जान्यो कि श्रीरामचन्द्रप्रथम हमहींकोमिलते हैं आपुआपुकोधन्य मानते हैं ऐसो चरित श्रीरामचन्द्र क्योंकियो कृपालु हैं सबके अंतरबसते हैं सबकेसुखदाता हैं परब्रह्महैंपूर्ण भगवान् हैं भगवान् शब्द को अर्थभगवान् कहीषट्भाग संयुक्तऐश्वर्य धर्मयश श्री वैराग्य मोक्षतिनकोस्वरूप कहते हैं ऐश्वर्यजाको अनेक ब्रह्मांडहै पुनि धर्मकाको कही सत्यवाक्य सर्बदाता निष्कपट

शुद्धकर्म ताको धर्मकही पुनि यशकाको कही उदार अजय जाको कोई जीति न सकै शीलनिधि अत्यन्त सुन्दर जाको देखिकै चराचर मोहैं ताको यश कही पुनिश्री काको कही तेज को जाके तेजके आगे सूर्य चन्द्र अग्नि दामिनि इत्यादिक छिपि जाइ पुनि श्रीकही शोभा स्वरूप करिकै सर्वगुण करिकैशोभित है पुनि श्रीकही प्रताप जाको सबडरैं जाकी आज्ञामें पृथ्वी अप्तेज वायु आकाश तीनिहु गुण देवदानव मनुष्य इत्यादिक चराचर बर्तमान हैं पुनि श्री कही लक्ष्मीजी ने जाकी आज्ञानुकूल ह्वैकै कोटिन ब्रह्माण्ड में सुखभोग करिदियो है ताको श्रीकही पुनि वैराग्य काको कही शब्दस्पर्शस्वरूप रसगन्धचित्त बुद्धि मन अहंकार सात्विक राजस तामस इनसबनको अपने बशकिये अरु इनके परे ताको बैराग्य कही पुनि मोक्ष काकोकही सालोक्य भगवान् के लोक में बसै सामीप्यसदा निकटरहै सारूप्य जैसो भगवान्को रूप तैसो रूपहोइ सायुज्य अलंकार ह्वैकैरहै अथवा कोई के मत में जैसे सूर्यको तेज घट फूटे सूर्यहीमें लीनहोत है ताको सायुज्य कही पुनि सारिष्ट मुक्ति सामान्य ऐश्वर्य अपने समान ऐश्वर्यदेते हैं येपांचमुक्ति हैं ताते ऐश्वर्य धर्म यश श्री वैराग्य मोक्ष एते षड्भाग जामें संपूर्णहोहिं अरु अपने जनको छहूंकोदाता ताको पूर्ण भगवान् कही जोस्वरूप षड्भागमें कछुक कमहोइ ताको अंशकला विभूतिकही देखिये तो षड्भाग श्रीरामचन्द्र के बामचरण में षट्कोण अंक हैं ताको षड्भागशास्त्रकहते हैं ताते श्रीरामचन्द्र पूर्ण भगवान् हैं श्लोक है श्रीमन्महारामायणे

**छं० हरिगीत॥ जनुधेनुबालकबच्छतजिगृहचरनबनपरबशगई दिनअन्तपुररुखश्रवतथनहुंकारकरिधावतभई अति प्रेमप्रभुसबमातुभेंटेबचन-मृदुबहुबिधिकहे गइबिषमबिपतिबियोगभवतिनहर्षसुखअगणितलहे ४४ दो० ॥ भेंटेउतनयसुमित्राराम**

शिवबाक्यं ॥ ऐश्वर्य्येनचधर्मेणयशसाचश्रियैवच वैराग्यमोक्षषट्कोणैः संजातोभगवान्हरिः १ पोषणंभरणाधारंशरण्यंसर्वव्यापकं कारुण्यषड्भिःपूर्णोरामस्तुभगवान्स्वयं २ अनेक ब्रह्माण्डको पोषणगुण भरणगुण आधारगुण सर्व शरण्यत्व गुण सर्व व्यापकत्व गुण एते षड्गुण परम दिव्यते पूर्ण श्रीरामचन्द्र हैं ताते पूर्ण भगवान्कहा ( ४१ ) यहि प्रकारते सबको मिलिकै सुखरूप परमानन्ददैकै श्रीरामचन्द्र आगेचले शील इत्यादिक जे अनन्तगुण हैं केवल कल्याणरूप ताके धामहैं इहां प्रथम शीलै गुण क्यों कहा जेते श्रीकौशल्याजू के सम्बन्धी हैं अरु जेते कैकेयी के सम्बन्धी हैं अपर समस्त ताको एकरस मिले अरु सबको एकही बारमिले ताते श्रीरामचन्द्र को शील गुणधाम कहा ( ४२ ) श्रीकौशल्यादिक माता श्रीरामचन्द्र के मिलिबेको धावतीभई जैसे बछराको देखिकै लागती गऊधावे है जो कोई कहै कि जब सबकामिले तबका श्रीकौशल्याजू मिलिबे को रहिगई हैं तहां यामें दुइभाव सूचित हैं एक तौ सबको मिलिकै तबश्रीकौशल्याको मिलते हैं यामें अति आदर अति आनन्द सबको प्रभुदेते हैं अथवा सबके संगही सबमातनको मिले अब क्यों माता धावतीभईं अब श्रीरामचन्द्र एकरूप हैं मिलब छूटिकै सबदेखते हैं अरु सबमाता अति आरत हैं तहां पुनरुक्ति न कही बारबार मिलिबेको उचित है ( ४३ ) छन्दार्थ॥ सबमातनको दृष्टान्त करिकै अतिशय स्नेह जनावते हैं जनु धेनु बालक बछराको गृह में छोड़िकै आपु बरबस होइकै बनमें चरिबेको गईहै जब सूर्य अस्ताचलको गये तब गऊ जो अति स्नेहीरही सो घरको धावतीभई थन में दूध श्रवत हुंकार करतसंते तैसे चौदहबर्ष दिनरूप उलटा दुखदाता सो बीततभयो तब श्रीरामचन्द्र के भेंटिबे को माता धावतीभईं जो कोईकहै कि माता तौ घर ही में रही हैं श्रीरामचन्द्रबनको गये यहि उलटे दृष्टान्तको एकदेश लेते हैं कहूंदुइ कहूंतीनि कहूंचारि पद पूर्ण दृष्टान्तलेते हैं ताते इहां केवल स्नेहै लिया है अथ दूसर दृष्टान्त है श्रीअयोध्याकाण्डे चौपाई॥ तहहिं अवधजहँरामनिवासू तहँहिंदिवसजहँतरणिप्रकासू जहां श्रीरामचन्द्र तहांई श्रीअयोध्या ताते श्रीरामचन्द्र बछराभाव घरही हैं माता गऊभाव बनमें रही हैं पुनि श्रीरामचन्द्र

**चरणरतिजानि रामहिंमिलतकेकयीहृदयबहुतसकुचानि ४५ लक्ष्मणसबमातनमिलेहर्षेआशिषपाय केकयिकहपुनिपुनिमिलेमनकरक्षोभनजाय ४६ चौ०॥ सासुनसबहिमिलीवैदेही चरणनलागिहर्षअतितेही ४७ देहिंअशीषबूझिकुशलाता होइअचलतुम्हारअहिवाता ४८**

ने सबमातनको अतिप्रेमते मिलिकै बहुबिधिते मृदुबचन कहा है हे मातु तुम्हारे आशीर्बादते समस्त मंगलभये हैं यह मृदुबचन सुनतसंते मातनके बिषम बिपति बियोगरूप दुख जोरहा सो बीतिगयो अगणितसुखभयो है ( ४४ ) दोहार्थ ॥ श्रीसुमित्राजी लक्ष्मणजी तिनको भेंटती भई अतिप्रीतिते परपुत्र मानिकै नाहीं श्रीरामचन्द्रजू के चरणारविन्दमेंरतनाम अतिप्रीति जानिकै भेंटतीभई यह परमानन्य भाव कहावत है पुनि श्रीरामचन्द्रको श्रीकैकेयीजू मिलतीभई परहृदयमें बहुत सकुचतभई अपनी करणी समुझिकै सन्मुख चितैनहींसकैं अथवा श्रीरामचन्द्र कै मति सकुचाइगई यहजानिकै कि मैंने केकयीके ऊपर बहुत भारदिया अब कैकेयीजीको उपकार मैं केहिबिधिते करौं यह श्रीरामचन्द्र मनमें कहते हैं सो आगे कहैंगे ( ४५ ) लक्ष्मणजू श्रीकौशल्यादिक मातनको मिलतेभये आशीर्बाद मातनदीन कि तुम्हारी प्रीति अरु श्रीसीतारामचन्द्र कै प्रीति तुमपर बनीरहै सर्बकाल में अखण्ड एकरस दिनप्रति अधिकाई यह सुनिकै अतिशय आनंदभयो श्रीलक्ष्मणजू केकयीको पुनिपुनि मिले पर लक्ष्मण के मनकर क्षोभनगयो क्षोभ कही संदेह संयुक्त मनबचनमें नीकविकारकै निश्चयनहोइ दोउनकी गति धँभिजाइ जो श्रीलक्ष्मण के मन में क्षोभरोपणकरी तो पुनः पुनः जोपदहै सो अति प्रीतिको जनावत है तहां क्षोभकहाहै तहां कैकेयीके मन में क्षोभरह्यौका क्षोभरहेउ कि श्रीलक्ष्मणजू मोको दुइबारमिले एती प्रीतिकियो मोसे कछु न बन्यो अबका करौं यह क्षोभरह्यो अथवा दुइबार बहुबार कोई किसको बड़ाइदइ अथवा दुइबार बहुबार मिलापकरै तहां प्रीति अरु व्यंग दोनौं सूचित हैं ताते केकयीके मन में यह रह्यो कि लक्ष्मणजी धौंकाकरैं पुनि श्रीलक्ष्मणजी अतिप्रीतिते दुइबार क्यों मिले श्रीभरतको श्रीरामानन्य जानिकै कैकेयी श्रीरामचन्द्र को बनगवन न देती तौ श्रीसीतारामकै सेवा केवल अनन्य हमकैसे पावते ताते कैकेयी धन्यहै अथवा तिनकी माता जानिमिलेपर क्षोभ कछु रहिगयो कि अबकछु विघ्न न करै अथवा यह जानिकै कि श्रीकैकेयी जब श्रीरामचन्द्रको मिली तब सकुचानी तब श्रीरामचन्द्रपुनि मिले अरु लक्ष्मणजी एकैबारमिले उलटिकै अर्थ सिद्धहोत है तब

**सबरघुपतिमुखकमलबिलोकी मंगलजानिनयनजलरोकी ४९ कनकथारआरतीउतारहिं बारबारप्रभुगातनिहारहिं ५० नानाभांतिनिछावरिकरहीं परमानंदहर्षउरभरहीं ५१ कौशल्यापुनिपुनिरघुवीरहिं चितवतिकृपासिंधुरणधीरहिं ५२**

क्षोभ लक्ष्मण जी के रहा यह जानिकै कि श्रीरामचन्द्र अति प्रीतिसे दुइबारमिले अब धौं कैकेयीका करै ( ४६ ) सबसासुनको जानकीजीमिलीं सबके चरणकमल गहतींभई अतिहर्षह्वौ दिशिभयो ( ४७ ) सासुन आशीर्बाद दीन कि तुम्हारो अहिवात सर्वकालमें अचल रहै ( ४८ ) समस्त माता श्रीरामचन्द्र को मुखकमल बिलोकती हैं जैसे अनेकचकोरी पूर्णचन्द्रमाको चितैरही हैं तैसे श्रीरामचन्द्रको चन्द्रमुख माता देखती हैं मंगलसमय जानिकै नेत्रनते जलनहीं गिरैपावै ( ४९ ) तीनिसैसाठि श्रीकौशल्यादिक पट्टबन्धनी रानी हैं तामें तीनि महामुख्य हैं अपर को जानै केती हैं ते समस्त चहूंदिशाते कंचनके थारनमें अनेकमणि माणिक तुलसीदल इत्यादिक मंगलपदार्थभरे गोघृत कपूरयुक्तबार्तारचे थारनमें आरोपित किये कोईकेमतमें विषमबाती कह्यो है पांचसात इत्यादिक कोईमुनिकै मत में समबाती कह्यो है चारि आठ इत्यादिक अरु मेरेभाव में तौ समआवै है काहेते श्रीरामचंद्र श्रीजानकीजी एकही हैं सर्बदिशाते मंडलाकार ठाढ़ी हैं आरती करती हैं श्रीसीता रामचन्द्र सबके सन्मुख हैं चारिचारि चरण में आरती करती हैं दुइबार कटिमें एकमुखमण्डल में सप्तबार सर्बांगमें आरती करिकै श्रीसीतारामके नखशिखलौं अंगअंग निरखती हैं ( ५० ) श्लोकडेढ़ महाशंभुसंहितायां ॥ रामःसीता जानकीरामचंद्रोनाहुर्भेदोह्येतयोरस्तिकश्चित् ॥ अन्यच्च ॥ आदौचतुःपादतलेदेयाद्वि नाभिदेशोमुखवृत्तमेकं ॥ सर्बांगदेशेशुचिसप्तबारंसुरार्तिकाभक्तजनेनदेया २ पुनिसमस्तमाता श्रीरामचन्द्रको निरखिकै नानाकही अनेकभांतिते अनेकपदार्थ निछावरि करती हैं परमानंद हर्षजो है ताको हृदय में भरती भई ( ५१ ) अरु श्रीकौशल्या जी पुनि पुनि कही बारबार रणधीर कृपाके समुद्र श्रीरामचन्द्र को चितवती हैं कृपासिंधु रणधीर क्योंकहा कृपासिंधुएकहीबार सबको दर्शनदीन अरु रणधीर रावण के संग्राम में धीर रहे हैं ( ५२ ) श्रीकौशल्याजी बारबार बिचारती हैं कि लंकापतिको कैसेमारा है लंकापति कैसोरह्योहै जाकी स्तुतिभय ते ब्रह्मा शिवादिक करहिं अरु इंद्र बरुण कुबेर धर्मराज

इत्यादिक अरु पवन अग्नि जलपृथ्वी शशिसूर्यइत्यादिक जाकी आज्ञामें रहते हैं ( ५३ ) मेरे युगुलबारे अति सुकुमार हैं।

**हृदयबिचारतिबारहिंबारा कवनभाँतिलंकापतिमारा ५३ अतिसुकुमारयुगुलममबारे निशिचरसुभटमहाबलभारे ५४ दो०॥ लक्ष्मणअरुसीतासहित प्रभुहिबिलोकहिंमात परमानंदमगनमन पुनिपुनिपुलकितगात ५५ चौ०॥ लंकापतिकपीशनलनीला जामवन्तअंगदशुभशीला ५६ हनुमदादिसबबानरबीरा धरेमनोहरमनुजशरीरा ५७ भरतसनेहशीलब्रतनेमा सादर**

अरु राक्षस बड़े भट भारीभारी तिनको कैसे मारयो है यह आश्चर्य है नहींजानोजाइ ( ५४ ) दोहार्थ॥ श्रीलक्ष्मण अरु श्रीसीतारामचन्द्र को कौशल्यादिक माता मनोहररूप सब देखती हैं परमानंदमें मग्न ह्वइकैपुनि पुनि गात पुलकते हैं ( ५५ ) लंकापति बिभीषण कपीश सुग्रीव नलनील जामवंत अंगदबड़े शुभमंगल के शीलाकहीस्थान हैं ( ५६ ) हनुमत् इत्यादिक जे बानर बीरहैं ते मनोहर मनुज शरीर धारणकिहे हैं मनोहर क्यों कहा जो मन कोहरै ताको मनोहरकही सो मनोहर श्रीरामचंद्र हैं जिन श्रीरामचन्द्र ने समस्त देव दानव सिद्ध मुनि मनुज जड़ चेतन इत्यादिकन के मन अपनो स्वरूप देखाइकै मोहिलियो है तैसे हनुमान् इत्यादिक जे बीरहैं अठारहपद्म अरु अपरसेना अनंत तिन सबन को श्रीरामचन्द्र अपनो स्वरूपदीन अरु लक्ष्मण को स्वरूपदीन सो इनको नित्यस्वरूप यही है अरु देवांशलीलाहेतु बानराकाररहे हैं लीलान्तदेवतनके अंश देवतन में गये यही जो नित्य स्वरूप सोई रहिगये हैं सोअब सदा बनेरहैंगे जब रावणको विजय कीन है तब सेना पुष्पकविमान पर चढ़ी चली आवती है अरु जहां राजा को नाम लियो तहां समस्तसेना जानिये तैसे हनुमत् आदि समस्त सेना श्रीरामाकार है जोई श्रीरामचन्द्र लक्ष्मणको स्वरूप है तैसे सब सेना है ( ५७ ) श्रीभरतजी कोस्नेह शील ब्रत नेम जो है श्रीरामचन्द्र विषे सो सब सेना बर्णते हैं आदर प्रेम संयुक्त स्नेह कही प्रीति शीलकही इहां सहनशील है श्रीरामचन्द्रकेहेतु अनेक शीत उष्ण क्षुधा तृषा मानापमान निन्दादिक इन सबन को सहिकै अन्तष्करण में प्रसन्नरहै ब्रत कही एकादशी इत्यादिक श्रीभरतजी कैसो ब्रत कीन्हें श्रीरामचन्द्र बनमें फल कन्दमूल इत्यादिक भोजन कीन है चौदह बर्ष श्रीभरतजी यह ब्रत कीनहै नन्दिग्राम में बैठिकै जेठकीशुक्लपक्ष की परिवाको पैसाभरि यव गोमूत्र में मिंजाइकै ताको मींजिकै ताकोरस पानकरैं ऐसेही दिनप्रति पैसा पैसाभरि बढ़त जाहिं पूर्णमासीताईं पुनि ऐसेही कृष्णपक्षकी परिवाते पैसा पैसाभरि घटावत जाहिंऐसेही

**सबबरणहिंअतिप्रेमा ५८ देखिनगरबासिनकैरीती सकलसराहहिँप्रभुपदप्रीती ५९ पुनिरघुपतिसबसखाबोलाये मुनिपदलागहु सकलसिखाये ६० गुरुवशिष्ठकुलपूज्यहमारे इनकीकृपादनुजरणमारे ६१ येसबसखासुनहुमुनिमेरे भयेसमरसागरकहँबेरे ६२**

तीनि बर्ष तीनि मास पुनि तीन बर्ष तीन मास दूर्बादल के अर्क ताकेआधार रहे पुनि बर्ष तीनि तीनि मास जलआधार रहे पुनि तीनि मास तीनि बर्ष पवन आधार रहे पुनि एकबर्ष निराधार रहे हैं ऐसे ही ब्रत जबलगि श्रीरामचन्द्र जी को नहीं मिले तबलगि ऐसो ब्रत कीनहै पुनि ब्रत कही प्रणको समस्त धर्मको प्रणकीन है पुनि नेमको रूप जहां यम आवैगोतहां यम नेम एकही संग कहेंगे अबकुछ कहते हैं श्रीरामचन्द्र के हेतु त्रिकाल संध्या पुनि कालकालपर श्रीरामचन्द्र जी के पादुका युगुल ताको पूजन पुनि श्रीसीताराम युगुलमंत्र ताको जाप ताको नेम द्वादश सहस्त्र काल संध्या पुनि कालकालपर श्रीरामचन्द्र जी के पादुका युगुल ताकोपूजन पुनि श्रीसीताराम युगुलमंत्र ताको जाप ताको नेम द्वादश सहस्त्र दिन प्रति अरु श्री सीताराम यह तौ एकएक श्वासा प्रति अनेक बारधारा बँधिरही है सो सबसराहते हैं ( ५८ ) नगरबासिनकै रीति देखिकै श्रीरामचन्द्रजू के चरण कमल में प्रीति जेती है तेती नहीं कही जाइ जेतीसमस्त सेना है ताते सब सराहती है ( ५९ ) पुनि श्रीरामचन्द्र सब सखन को बोलावते भये हे समस्त सखहु मुनीश के चरणारबिन्द गहहु ( ६० ) हेसखहु येई श्रीवशिष्ठ जी हैं हमारे अरुसमस्त कुलभरे के गुरु हैं उनहीं की कृपाते सम्पूर्ण जे दनुज कही दानव राक्षस हैं तिन

सबनको रण में हमनेमारे हैं ( ६१ ) पुनि श्रीरामचन्द्र कहते हैं हे श्री वशिष्ठ जी ये सब जो हमारे सखा हैं ते समररूप सागर में येई बेराभये हैं बेराकही जो कलशाकाष्ठ बांधि शीघ्रपार उतारि देइ पर इहां बेरा जहाज को जानब ( ६२ ) ममहित लागि जेते सब सखाहहिं ते सब जन्मको हारि दियो है आत्मसमर्पण कियो है ताते भरत जी ते अधिक पियारे हैं तिन अरु भरतजीतौ रामरूपही हैं अरु येते सब बानर ऋच्छ राक्षस ते सब तामसी तन में श्रीरामचन्द्र के अनन्य भये हैं देहादिक संसार भूलिगये हैं ताते भरतजी ते अधिक प्रिय हैं ताते श्रीरामचन्द्र कहा है सत्यसंकल्प है जिनको आगेचौपाई प्रमाण॥ अनुजराज सम्पति बैदेही देहगेहपरिवारसनेही॥ सब ममप्रियनहिं तुमहिंसमाना मृषानकहौंमोरयहबाना ( ६३ ) सुनिप्रभुबचन मगनसबभये मग्न इहां प्रसन्न भये हैं अथवा सुनतसन्ते जो आनन्द भयो तामें मग्न कही डूबि गये हैं फेरि श्रीघुनाथजी की कृपाते निमिष कही जो पलक चलै सो निमेष निमेषते नये नये सुख उत्पन्न होते हैं

ममहितलागिजन्मइनहारे भरतहुतेम्वहिंअधिकपिआरे ६३ सुनिप्रभुबचनमगनसबभये निमिषनिमिषउपजतसुखनये ६४ दो०॥ कौशल्याकेचरणयुगपुनितिननायउमाथ आशिषदीन्हेहर्षितुमप्रियममजिमिरघुनाथ ६५ सुमनवृष्टिनभसंकुलभवनचलेसुख

नये नये सुख कौन हैं यह समुझिकै कि रघुनाथ जी अहेतुक कृपालु हैंसमस्त सखा दास अपने मन में यह कहते हैं कि हम कवनेहु लायक नहीं हैं अरु हमारी बड़ाई प्रभुजी करते हैं तहां यह जानि परेउ कि हमारीसेवा रघुनाथजी अंगीकार कीन है पुनि श्रीरामचन्द्र हमको आपन कीन है अरु हमारी बड़ाई प्रभुजी करते हैं तहां यह जानि परेउ कि हमारीसेवा रघुनाथजी अंगीकार कीन है पुनि श्रीरामचन्द्र हमको आपन कीन है इत्यादिक नये नये सुख उपजते हैं ( ६४ ) दोहार्थ ॥ समस्त सखाजन श्रीकौशल्याजीके युगपदकंज तामें डण्डइव परतभये माताजी हर्षिकै अशीशदीन तुमसब मोको श्रीरामचन्द्रसम प्रियहहु मानबेको श्रीरामअरुश्रीरामदास एकही हैं जानबेको सेवक स्वामी हैं जब श्रीकौशल्याजी सबको श्रीरामसम कह्यो तब श्रीरामचन्द्र ने हृदय में बिहँसिकै संकल्पकीन है कि ये समस्तसेना मेरोई स्वरूपसदा बनेरहे मैं सबको संगही लैजाउँगो अरु जब श्रीकौशल्याजीके बचन देवतन सुन्यो अरु श्रीरामको संकल्पजान्यो तबपरमानंदको अरु परबिभूतिको प्राप्तिभये यह जानिकै कि श्रीरघुनाथजी अब हमको अपनोसेवक कीन्ह काहेते श्रीरामचंद्र के सखादासके संबंधते ( ६५ ) सुमन वृष्टिनभते देवता करते हैं संकुलकही बहुत सघन अरु सुखकन्द श्रीरामचंद्र सबको आनंददैकै भवनकोचले महलनपर बनिता चढ़ी देखती हैं सुगन्ध बर्षती हैं अरु नगर के नारिनर श्रीरामचंद्र के समीपरूपको देखते हैं ( ६६ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेउत्तरकांडे श्रीरामचंद्रविजयागमन श्रीभरतमिलापवर्णनन्नामतृतीयस्तरंगः ३॥ :: :: :: :: :: :: ::

दोहा ॥ चौथतरंगसमाजसुख साजराजअभिषेक रामचरणत्रैलोक्यमेंभोअनंदसुखएक ४ यहि दोहाभरेको अर्थ स्वाभाबिकै सिद्ध है कंचन के कलश बिचित्र संवारि संवारि अपने अपने द्वारपर धरतेभये १ बंदनवार पताका अरु केतुकही ध्वजा जहां जसचाहीं तहां तसरोंपतभये अनेक

कन्द चढ़ीअटारिनदेखहिँनगरनारिनरवृन्द ६६॥ * * * * * *

कंचनकलशबिचित्रसँवारे सबहिँधरेसजिसजिनिजद्वारे १ बन्दनवारपताकाकेतू सबनबनायेमंगलहेतू २ बीथीसकलसुगंधसिँचाई गजमणिरचिबहुचौकपुराई ३ नानाभाँतिसुमंगलसाजे हर्षिनगरनिशानबहुबाजे ४ जहँतहँनारिनिछावरिकरहीं देहिँ अशीशहर्षउरभरहीं ५ कंचनथारआरतीनाना युवतीसजेकरहिंशुभगाना ६ करहिंआरतीआरतहरके रघुकुलकमलबिपिनदिनकरके ७ पुरशोभासंपतिकल्याना निगमशेषशारदाबखाना ८ त्यउयहचरितदेखिठगिरहहीं उमातासुगुणनरकिमिकहहीं ९ दो०॥ नारिकुमुदिनीअवधसर रघुपतिबिरहदिनेश

**अस्तभयेबिगसतभई निरखिरामराकेश १० होहिंसगुनशुभबिबिधबिधि बाजहंगगननिशान पुरनरनारिसनाथकरि भवनचलेभगवान ११ चौ० ॥ प्रभुजानाकेकयीलजानी प्रथमतासुगृहगये भवानी १२**

मंगल के हेतु सजतभये १ आगे दोहाताईं अक्षरार्थं जानब दोहार्थ ॥ श्रीअयोध्याकी नारि जे समस्त हैं ते कुमुदिनीभईं अरु श्रीअयोध्याको सागरस्थान जानिये श्रीरामचन्द्र को बिरह चौदहबर्ष सोई सूर्यस्थानेसो अस्तभयो श्रीरामपूर्णचन्द्र उदय कही प्राप्तिभये जैसे सूर्यके उदयकुमुदिनी संपुटितहोती है चन्द्रमाके उदयते प्रफुल्लित होती है तैसे अवधकीनारिन के आनंदभयो है नारिही क्योंकहा पुरुष न कहा श्रीरामचन्द्र स्वामीहैं सबके भक्ति सबकेमणि नारि ही रूपहै अरु स्वामी के बिछुरेते स्त्रीको अति बिरह होत है ताते नारिही कहा है ( १० ) आगे दोहार्थ सहजै सिद्धहै ( ११ ) प्रभुजानाकेकयी लजाइ गई ताते हे भवानी प्रथम केकयीके भवनगये हैं केकयीलजानी कि मैंने श्रीरामचन्द्र को बनदीन अरु मेरे ऊपर श्रीरामचन्द्रकी अद्यापिताईं एकरस प्रीतिबनी है अथवा लज्जामिसु मानामखता करतीभई कि श्रीरामचन्द्र मोको पतिते बिछोहकी न पुत्र से बिछोहकीन त्रैलोक्य में अयशदीन अरु मैंने सदाआज्ञानुकूलहीकियो है अथवा प्रभुजानी केकयीको ताते श्रीरामचन्द्रकै मति सकुचानी कि केकयीने मेरी आज्ञाकेबल कियो है ( १२ ) ताको प्रबोध बिबिधप्रकारतेकीन हे मातुलंकाविषे मैं दशरथ महाराजते मांगीलीन है कि केकयीको अंगीकार करहु अरु यहिकर्तव्य मोरीहैं बिबेकी जनजे हैं सोतेरी स्तुतिकरहिंगे अरु भरतजू तुमको मातानहीं मानहिंगे तौ आजुते तुमहमारी माता हमतुम्हारे पुत्र भरतजू कौशल्या के पुत्र आजुहम कौशल्या के महलको नहीं जाहिंगे ऐसे बिबिधप्रबोध करिकै बहुतसुखदैकै श्रीरामचन्द्रने हे पार्वती निजभवनको गमनकीन ( १३ ) कृपाकेसिंधु श्रीरामचन्द्र जब अपने मंदिर को आये तब पुरके नरनारि इत्यादिक सब सुखीभये ( १४ )

**ताहिप्रबोधिबहुतसुखदीना पुनिनिजभवनगवनप्रभुकीना १३ कृपासिंधुजबमंदिरगये पुरनरनारिसुखीसबभये १४ गुरुवशिष्ठद्विजलियेबोलाई आजुसुघरीसुदिनशुभदाई १५ सबद्विजदेहुहर्षिअनुशासन रामचन्द्रबैठहिंसिंहासन १६ मुनिवशिष्ठकेबचनसोहाये सुनतसकलबिप्रनमनभाये १७ कहहिंबिप्रमृदुबचनअनेका जगअभिरामरामअभिषेका १८ अबमुनिवरबिलम्बनहिंकीजै**

तब वाहीदिन गुरुजो श्रीवशिष्ठजू तिनसमस्त ब्राह्मणन को बोलाइलीन है समस्त मुनिहुआजु सुंदरदिन सुंदरि शुभदाई घरीहै तहां जब लंकाते बिमानचल्यो है तबहीं श्रीरामचन्द्र को राज्याभिषेक देखिबेको समस्तमुनि आये हैं बालमीकि अगस्त्य अत्रि इत्यादिक व्यास शुकदेव नारद सनकादिक जेते मुनि ब्रह्माण्ड गोलक मेंरहे तेसब श्रीअयोध्याको आये हैं तिनसबनको आदरसंयुक्त वशिष्ठ बुलावतेभये हैं ( १५ ) हे समस्त मुनीशहुजो हर्षिकै आज्ञादेहु तौ श्रीरामचन्द्र सिंहासनपर बैठहिं ( १६ ) श्रीवशिष्ठके बचन अतिप्रिय सुनिकै सब बिप्रनकेमन मग्न भये हैं ( १७ ) समस्त ब्राह्मण हर्षिकै मृदुबचन कहतेभये हैं श्रीवशिष्ठजूतुमधन्यहहु आपुने भलोबिचार कीन है श्रीरामचन्द्र को राज्याभिषेक सम्पूर्णजाति को अभिरामकही आनंददाता है सोयेही कालमेंहोइ ( १८ ) समस्त ब्राह्मण कहते हैं हेमुनिबर मुनिनमें बरनामश्रेष्ठ श्रीवशिष्ठ जू अबबिलंब जनिकरहु महाराजको तिलककरहु महाराज क्योंकहा अबहींतौ तिलकनहीं भयो तहां सर्ब ब्राह्मण तौ ब्रह्मवेत्ता हैं ब्रह्माण्ड के राजा शिव ब्रह्मादिक हैं तिनहूंके राजा श्रीरामचन्द्र हैं ताते महाराज प्रथमहिंकहा अथवा महाराजगादी श्रीअयोध्या ताको तिलककरौ किंतु भविष्यत् कहाकि महाराज होहिंगे ( १९ ) दोहार्थ ॥ तब वशिष्ठ की आज्ञापाइकै धावन जोरहे अनेक मङ्गलमय राज्याभिषेक के जेते द्रव्यचाहिये तेते तुरंत आनिदीन श्रीवशिष्ठजू के चरणगहे आइ द्रव्यसंज्ञा सबहीकी है सातसमुद्र को जल ब्रह्मांड भरेके तीर्थकोजल अरु अनेक औषधि औषधी श्याममृगनके चर्म अनेक ऊनबस्त्र बनात इत्यादिक पट्टांबर अनेकसुगंध अतर इत्यादिक फल पनस रसाल पूंगीफल इत्यादिक अरु पुष्पकमल गुलाब

इत्यादिक के मणिमाणिक मुक्ता इत्यादिक अनेकरत्न मृगअनेक जाति के जेतेवेद राज्याभिषेक के मङ्गलपदार्थ बर्णते हैं तिनसबनकै द्रब्य संज्ञा है सो तुरंतल्याये सो सुमंत आगेही सब सरंजाम तयार राख्योहै या प्रकारते यहां वहां दूतों को भेजकर मङ्गलपदार्थ मंगवाये प्रसन्नचित्तवशिष्ठके चरणों में शिरनाया आइकै ( २० )

**महाराजकहँतिलककरीजै १९ दो०॥ जहँतहँधावनपठैतब मंगलद्रब्यमँगाइ हर्षसमेतवशिष्ठपद पुनिशिरनायउआइ २० तबमुनिकहेउसुमंतसन सुनतचलेहर्षाइ रथअनेकबहुबाजिगजतुरतसँवारेहुजाइ २१ चौ०॥ अवधपुरीअतिरुचिरबनाई देवन सुमनवृष्टिझरिलाई २२ रामकहा सेवकनबोलाई प्रथमसखनअन्हवावहुजाई २३ सुनतबचनजहँतहँजनधाये सुग्रीवादितुरतअन्हवाये २४**

तबमुनि सुमंत ते कहा हे सुमंत शत्रुंजय आदिक अनेकरथ हाथीसजहु अनेक श्यामकर्ण घोड़े तयारकरहु नानातुरंग इत्यादिक अनेकरथ तयारकरहु सुखानंदादिक अनेकसुखपाल तयारकरहु बिजयानंदादिक सेनापतिनको तयारकरहु अनेकन सुतर असवार तयारकरहु अरु निशान नरसिंहा दुंदुभी भेरी सहनाईइत्यादिक अनेकबाजा तयारकरहु सुमंतयह सुनिकै तुरतही चले हैं ( २१ ) पुनि वशिष्ठ बोले हे सुमंत श्रीअयोध्यापुरीको सर्बदिशि अतिरुचिर बनावहुध्वजा पताका कलश कदली सुपारी नारियर बंदनवार चौक इत्यादिक संवारहु जहांजस योग्यचाही तब सुमंतकहा हे महामुनीश आपुकी कृपाते समस्त तयारहै त्यहिसमय आकाशते देवताकल्पवृक्षके फूलवर्षानेलगे गंधर्व किन्नर अप्सरागान बाजन नृत्यकरते हैं ( २२ ) तहां अगणित सेवकठाढ़े हैं श्रीरामचन्द्रकै भृकुटी बिलोकते हैं कि हमको कछुआज्ञाहोइ तब श्रीरामचन्द्र देखिकै कहते भये हे समस्त शुचिसेवकहु हमारे सखन को प्रथम स्नान करावहु पुनिपट भूषण पहिरावहु ( २३ ) श्रीरामचन्द्रके बचन सुनिकै सेवकधाइ धाइसुग्रीवादि विभीषणादि जामवानादिक समस्त सखनदासन को स्नानकरावतेभये समस्तसेनाको दिव्यबसन भूषण पहिरावते भये ( २४ ) पुनि श्रीरामचन्द्र भरतजीको बुलाया अपने आगे बैठाइकै भरतजीके जटा अपने हाथते निरवारुतेभये ( २५ ) पुनि श्रीरामचन्द्र आपुही तीनिहु भाइनको स्नान कराइकै दिब्यपट भूषण पहिरावतेभये काहेते श्रीरामचन्द्र भक्ततबत्सल हैं पुनि कृपालु हैं रघुराइकही रघुबंशकुलके श्रृंगार हैं भक्तबत्सल कही जैसे माता बालकको अतिप्रीतिसे लाड़न पालन रक्षाकरती है तैसे श्रीरामचन्द्र अपने भक्तनको लाड़न पालन हैं ताते भक्तबत्सलकही ( २६ ) हे पार्बती श्रीभरतजीकै परमभाग्य अरु श्रीरामचन्द्रकै कोमलता सबप्रकारते यहदूनौं नहीं कहिसकैं जोशारदा अरु शेष कोटिनहोहिं ( २७ ) तब भरतजी दूनौंकरजोरिकै सन्मुख ठाढ़ह्वइकै बोलतेभये अतिआरत मधुर बचन कहे करुणानिधान जोमोको आज्ञाहोइ

**पुनिकरुणानिधिभरतहँकारे निजकररामजटानिरुवारे २५ अन्हवायेप्रभुतीनिउभाई भक्तबछलकृपालुरघुराई २६ भरतभाग्यप्रभुकोमलताई शेषकोटिशतसकहिंनगाई २७ पुनिनिजजटारामबिवराये गुरुअनुशासनपाइनहाये २८ करिमज्जन**

तौ आपकीजटा मैं निरुवारौं तब श्रीरामचन्द्र प्रसन्न ह्वैकै गुरुआज्ञा पाइकै एवमस्तु कहतेभये तब भरतजी अतिहर्षते श्रीरामचन्द्रकी जटा निरुवारते भये हैं भरत करिकै निज जटा निरुवारिकै अगर चन्दन के शरि कपूर मिश्रित श्रीसरयूजलते स्नान करते भये हैं ( २८ ) मज्जन कराइकै श्रीरामचन्द्र जी को भरतजी पीताम्बर पहिरावत भये पुनि अंग अंग प्रति परमदिब्य कंचन मणिनमय भूषण पहिरावतेभये किरीट शीश पर सो षट्खण्ड चहुंफेर है एक खण्ड मध्य में है अरु छ: खण्ड के बीचबीचएक फणीकार झुकिरहेउ है अब लघु मोतिनते सर्बढिग पोहिरह्यो है अरु मध्यकोखण्ड मुकुटाकार है अनेक रंगकी मणि जड़ित हैं कोटिन सूर्य के प्रकाश कोटिन चन्द्रमा सरिस शीतल मधुर निर्मल अमृतमय ऐसो किरीट है सनत्कुमार संहितायां श्लोकद्वौ ॥ भानुकोटिप्रतीकाशंकिरीटेनविराजितं ॥ रत्नग्रैवेयकेयूररत्नकुंडलमंडितं १ अन्यच्च॥ भानुकोटिप्रतीकाशंचन्द्रकोटिप्रमोदकं ॥ किरीटंषट्खण्डञ्चमध्यैकमुकुटाकृतं २ पुनिकुण्डल मकराकृत ताको दूइअर्थ मकर जो है मीन तद्वत् कुण्डलहैं मीनकोमुख पुच्छमिलत मुद्राकार मीनमुखमें झुमुका

कुण्डलाकार हैं अथवाकेवल कुण्डलाकार संतप्त हेमवन्त रंगरंगकी मणिनकीकणी छोटी छोटी मोतिन करिकै शोभित हैं मीनकी चपलता लीनिहै श्रीरामचन्द्र को स्वरूप सर्वांग मर्कतमणि तद्वत् आवर्ण रहित है परम निर्मल परमदिव्य चक्षुकरिकै दृश्यमान् है तहां कपोलनपर अलकैंबंक कुण्डल संयुक्त हलत है शोभित है ताकी अभूत उपमा है जनु पूर्णशशि ताके सुधाहेतु रबिसुवन अरु राहुसुवन समर करते हैं पुनि जनु मिलाप करते हैं पुनि जनुचन्द्रमामें अमृतकुण्ड तामें कामकेमीन अरु सर्पके बच्चा क्रीड़ाकरते हैं पुनि जनु मयन आपुही सर्पके छवनन मणिन संयुक्तलिहे नृत्यकरत हैं जनु नाचिकै रघुनाथजीके मुखसमीपबूझे हैं जो मोको आज्ञाहोइ तौब्रह्माकी सृष्टिभरेको मनजीतिलेउं ऐसी अनेक उपमा शोभा को कहिसकै कुण्डल अनेक सूर्यवत् प्रकाशमान् हैं अनेक चन्द्रवत् शीतलमान् हैं श्लोक सदाशिवसंहितायां ॥ सूर्यकोटिप्रतीकाशंकुण्डलाढ्यंश्रुतिद्वयं ॥ नासांशैकसमायुक्तंमुक्ताफलस्फुरन्मुखं पुनि श्रीरामचन्द्र की सदा मध्य कैशोर अवस्था है पुनि नासिकामें एकमोती स्फुरित है जनु रतिने अपनी सेंदुरदानी चन्द्रमाको दीनिहै पूर्णशशिने अल्प तड़िततै पोहिकै अपने हृदय में

**प्रभुभूषणसाजे अंगअनेककोटिशतलाजे २९ दो०॥ सासुनसादरजानकिहि मज्जनतुरतकराइ दिब्यबसनबरभूषणअँगअँगसजे बनाइ ३०**

पहिस्यो है जो कोई कहै कि यद्यपि बुलाक शास्त्रोक्तिहै तदपि राज्याभिषेक में न चही तहां रसिक कबिनकी इच्छा जानब पुनि चिबुकमें पीतबिन्दु हैं सो श्रीजानकीजी को चिह्नहै पुनि सुग्रीव में मुक्तन के कंठा शोभित हैं पुनि कौस्तुभमणि त्रिकोण हैं शुद्धसमिष्टी जीवतत्त्व है कौस्तुभ के तरगुंज दुइलर ताके बीच में एकमणि है गुंजतर पदिक सो चौकोणढिगन में मणिकणी जड़ित हैं जनु पूर्णचंद्रके चहुँफेर वृहस्पति शुक्रमङ्गल इत्यादिक नक्षत्रनकी सभाबैठी है पदिकतर मोहनमाला सो तीनि रङ्गमणिहै मुक्ता पद्मराग पिरोजमणि नाभीताईं है पुनि बैजयंती माला पांच रङ्गहै नील पीत श्वेत हरित लालमणि लागी हैं पुनि बनमाला हरिततुलसीदल पीत श्वेत फूल शोभित हैं पुनिकिंकिणीकटिसूत्र कंचनमणि कणिन शोभित हैं पुनि नूपुर तीनि अवलि कंचन तप्तइव मणिकणिनतेरचित हैं पगपीठपर जावक चित्र बिचित्र है पुनि नखन की ज्योति जनु अरुण श्याम पंकजके दलनपर मुक्ताबैठे हैं कोटिन चन्द्रमाकी द्युतिहरतुहै पुनि चरण चिह्न स्वस्तिकादि चालिस अरु आठ शोभित हैं सो आगे इनके स्वरूप कहैंगेपुनि कङ्कण जवाकार तीनि आवृति मणिकणिनतेरचितहैं मणिमुद्रिका अतिशोभित हैं इत्यादिक अनेक अलङ्कारषोडशो शृंगार सोभिन्नकरिकै जनकपुरमेंकहेहैं पीताम्बर कोटिदामिनी की द्युतिहरत है ऐसी शोभा देखिकै अमित अनङ्ग लज्जित हैं अनङ्ग जाके अंगैनहीं सो क्यों मोहैगो तहां प्राकृत अङ्ग शिवजी ने जारिडारयो दिब्य अङ्गते मोहित भयो है ( २९ ) दोहार्थ ॥ श्रीकौशल्यादिक जो सासु हैं ते श्रीजानकी जी को मज्जन करावतीभई अगर कपूर चन्दन केशरि इत्यादिक अनेकसुगन्ध श्रीसरयू जल में मिश्रित तामें स्नान करावतीभई श्रीजानकी श्रीरघुनाथ जी के षष्ठ अष्ट षोड़श मुख्यसखी ते श्रीकौशल्याजी की आज्ञालैके श्रीजानकी जीको शृंगार करती हैं सखिन के नाम अह्लादिनी ह्रौदिशि सहजानन्दिनी मदनमंजरी चंद्रकला चन्द्रावती चंद्रमुखी इतिषष्ठ पुनि अष्ट बिमला उत्कर्षिणी क्रियायोगा पर्बी ईशाना ज्ञाना सत्या इत्यष्टसखी पुनि षोडस उज्वला कांचनी चित्रा चित्ररेखा सुधामुखीहंसी प्रहंसी कमला बिशदाक्षी सुदंशका चन्द्राननी चन्द्रभद्रा माधुर्या सालिनी कर्पूरांगी बरारोहा इति षोडश श्रीजानकी जी की सखी इत्यादिक अनन्त सखी हैं अब श्रीरघुनाथ जी की सखी षष्ठसखी आह्लादिनी सहजानन्दिनी ह्रौदिशि पुनि चन्द्रार्कभा चारुशीला अतिशीलासुशीला हेमा लक्ष्मणा इतिषष्ठ पुनि अष्ट बागीशा माधवी हरिप्रियामनजीवा नित्या विद्या सुविद्या कूटरूपा इति अष्टसखी पुनि षोडशशोभनासुभद्रा शांता संतोषा शुभदा सत्यवती चारुस्मिता चारुरूपा चार्बांगी चारुलोचना हेमाङ्गी क्षेमा क्षेमदात्री धात्री धीरा धरास्मृता एतीषोडशइत्यादिक अनन्तसखी ते सब श्रीजानकी जी को शृंगार करती हैं युगुल सेवा में तत्पर हैं सर्बप्रथम स्नान कराये पुनि नीलसारी में सुवर्ण मणिनके फूल रचे हैं किनारी जड़ाऊ जड़ित है सो पहिरावती भई दोऊ पगन में जावक जसचाही तस रचत भई नूपुर तीनि आवृत्तिते पहिरावती भई अङ्गराग जहां जसचाही तहां तस करती भई कटि में क्षुद्रघंटिका तीनि आवृत्ति पहिराये दोऊ करमें कंकण पहिराये मुक्तनकेहार पहिरावती भई अगर कपूर चन्दन केशरि

कस्तूरी लेपन करती भई कवरीकी रचना चित्र बिचित्र करती भई बेसरि अधरपर शोभित है श्रवण द्वौ में ताटंक शोभित हैं भालमें सेंदुर शोभित है नेत्रनमें काजर देतिभई बेणी मुक्तनते गुहती भई इति षोडशौ शृंगार करती भई पुनि उपशृङ्गार भूषण कहते हैं द्वौचरण अंगुलिन में तप्तइव कंचन तामें हरितमणि पीतमणि नीलमणिन की कणी जड़ित ऐसो बिछुवानाम मंजीर पहिरावती भई मंजीरम्पादभूषणं इत्यमरः पुनि दोउ करमें चूरी हेममणि कणिनते चित्र बिचित्र शोभित हैं मुद्रिका शोभित है द्वौ भुजन में अंगद बिचित्र हैं पुनि ग्रीवकली जवाकार हैं पुनि पंचलरी पुनि चंपकली पुनि पदिक जैसे श्रीरामचन्द्र के हैं पुनि चन्द्रहार कैसोहै मध्य में पूर्णचन्द्रवत् मणि लगी है पुनिक्रमहीते दाहिनी ओर शुक्लपक्षकी चतुर्दशी बामदिशि कृष्णपक्षकी परिवा यही प्रकारते जानिलेव षोड़शौकला द्वौपक्ष के क्रमहीते जानिलेव शुक्लपक्ष की द्वितीया कृष्णपक्षकी तेरसि ताहीको सुमेरु स्थाने ऐसोचन्द्रहार है पुनिमणिन की कणी कईरंग लघुमोती ताको रचितमणि जारसारीकीनाई जैसे श्रीरघुनंदनजूके बनमाल तैसे श्रीजनकनंदनीजीके मणिजार पुनिबंदी दुइलरकी ताटंकमिलित बंदीतरटीका सुवर्ण प्रकाशमय ताके द्वौढिग रंगरंग की मणिकणी जाके मध्य में एकमणिनीचे झुकितललाट पर अत्यंतशोभित टीकाकेऊपर चन्द्रिका सो श्रीरघुबरदिशि झुकितसो सुवर्णके मध्य में एकमणि चढ़ाउतार कछुकबंकहै अरु द्वौकिनारे मणि कणिनते रचित है ऐसो चन्द्रिका अनेक चन्द्रसूर्य्य अरु दामिनि के द्युतिप्रकाश को हरतिहै जेते श्रीसीतारामके भूषण हैं चैतन्यरूप पुनि नित्य जीव है जेजौने रसमें अनन्य हैं ते ताहीरसमें सायुज्यहोइकै अंग अंग सेवनकरते हैं रसतो नवहैं पुनि तीनि मिलेबारह हैं जिनमें पंचभक्ति रस युक्त है सात वात्सल्य दास्यसख्य शृंगाररस अथवा सबरसै माधुर्य भूषणरूपनित्य अंगअंग सेवनकरते हैं अथवा एकशृंगारै रस अनेक अलंकार

दो०॥ रामबामदिशिशोभितरामरूपगुणखानि देखिमातुसबहरषीं जन्मसुफलनिजजानि ३१ सुनुखगेशतेहिअवसर

रूप नित्यदंपति अंगन सेवन करतु है ऐसे परमदिव्य भूषण श्रीसीतारामजीके अंगअंगनमें अतिही परस्पर शोभाको पावते हैं ( ३० ) श्रीरामचन्द्रके बामभागमें रमारूपगुणकी खानि अत्यन्त शोभित हैं श्रीजानकीजोको रमाकाहेको कहा रमानाम श्रीलक्ष्मीजी जेती लक्ष्मी ब्रह्मांडकोश में हैं अरु परधाममें त्रिपादविभूति जो परमदिव्य हैं तिनसबन बिभूतिकी रमासंज्ञाहै सो सब बिभूति श्रीजानकीजीके आश्रय हैं श्रीजानकी जी सब बिभूतिमें रमित हैं अरु सब बिभूति श्रीजानकीमें रमितहै अरु श्रीजानकीजी सबते भिन्न हैं जिन श्रीजानकीजी के चरणारबिंदको समस्तध्यावते हैं तहां प्रमाण है श्लोक श्रीहनुमत्संहितायां ॥ जयतिजनकजायाः पादपद्मंमनोज्ञंहरिहरबिधिबंद्यंसाधकानांसुसेब्यंभ्रूबल्लरीबिल सितंजगदाहुरीसेव्यासादयोमुनिवरास्तुत एवनित्यं पुनिश्रुतिप्रमाणहै जनकस्यराज्ञःसद्मनिसीतोत्पन्नाताग्वंसर्बपरानंद मूर्तिर्गायंतिमुनयोपिदेवाश्चकारणकार्याभ्यामेवपरातथैव कारणकार्योशक्तिर्यस्याः बिधात्री श्रीगौरीणांसैवकर्तृसैवरामानंदस्वरूपिणी जनकस्ययोगफलमिवभाति इत्यथर्वणे उत्तरार्द्धे अथवा रमा जो है रूप गुणमय ताकी खानि श्रीजानकीजी हैं बालकांडे चौपाई॥ उपजहिंजासुअंगगुणखानी अगणितलक्षि उमाब्रह्मानी भृकुटिबिलासजासुजगहोईरामबामदिशिसीतासोई अथवा श्रीरामचन्द्र राज्यपर बैठते हैं संपूर्ण जो लक्ष्मी ताकेईश तातेरमा कहा काहेते श्रीजानकीजी से समस्तलक्ष्मी श्रीशोभित है अथवा कारण कार्य एकही है ताते रमाकहा अथवा श्रीजानकीजी श्रीलक्ष्मणजी को अभेद करिकै कहा सामान्य अर्थ कैसो है रमारूप गुणखानिहै श्री कौशल्या सुमित्रादिक मातादेखिकै अपने जन्म को साफल्य मानतीभई यह युगल शृंगारमाला ग्रंथमें प्रमाण है ( ३१ ) दोहार्थ॥ हे खगेश त्यहिअवसरमें श्रीरामचन्द्र सुखमूल राज्याभिषेकके देखिबे को ब्रह्मा शिवादिक देवता अरु सिद्धमुनि जेते ब्रह्मांड मण्डलमें रहे ते सब बिमानपर चढ़िचढ़ि आवतेभये आकाश में विमान छाइरहे हैं ( ३२ ) श्रीसीतारामकै युगल शोभा अत्यन्त समाजकै शोभा देखिकै वशिष्ठजीको मन अनुराग को प्राप्ति भयो तबतुरत दिव्य सिंहासन मांगते भये ( ३३ ) कैसो है सिंहासन

ब्रह्माशिवमुनिवृन्द चढ़िबिमानआयेसकलसुरदेखनसुखकंद ३२ चौ०॥ प्रभुबिलोकिमुनिमनअनुरागा तुरतहिंदिव्यसिँहासनमाँगा ३३ रबिसमतेजसोबरणिनजाई बैठेरामद्विजनशिरनाई ३४ जनकसुतासमेतरघुराई देखिप्रहर्षेमुनिसमुदाई ३५ वेदमंत्रतब द्विजनउचारे

रबिसम तेज है बर्णिबेयोग्य नहीं है रबिसमकहा जो कही कि रविकीबराबर सिंहासन को तेजहै तौ बर्णिबेमें आवैहै अरु कहा कि बरणि न जाइ ताते यह अर्थनहीं हैं रबि सम तेज रबिको तेज समहोइगयो नाममन्द होइगयो सिंहासन के तेजके आगे रबितेज समकही सामान्य होइ गयो मन्दपरिगयो ता सिंहासन पर श्रीजानकी समेत श्रीरामचन्द्र बैठतेभये श्रीबशिष्ठके चरणनमें माथनाइकै समस्त ब्राह्मणनको नमस्कार करिकै अथवा जब श्रीरामचन्द्र सिंहासनपर बैठे तब सबद्विज शिरनावतेभये परमात्मा परब्रह्म श्रीरामचन्द्रको सब ब्राह्मण जानते हैं काहेते सब ब्रह्मबेत्ता हैं अरु यह जानते हैं कि श्रीरामचन्द्र हमारेलोक परलोकहूकेरक्षक हैं हमारे हेतु अवतीर्ण भये हैं ताते शिर नावते भये अरुलीला प्रकरण में श्रीरामचन्द्र शिरनावते भये काहेते श्रीरामचन्द्र ब्रह्मण्य हैं ब्राह्मण कोबहुत मानते हैं श्रीअयोध्या के मध्य में कल्पवृक्ष हैं योजन पर्यन्त ऊँचो हैं तासुअर्द्ध बिस्तार है छत्राकार है हीरामणि इव पेड़स्कन्ध शाखा हैं हरितमणिइवपत्रहैं पिरोज मणिइव पुष्प हैं लालमणिइव फल हैं श्रीरामचन्द्र के कृपारूप हैं ताकेतर मण्डपहै हजार खम्भा लगे हैं हेमरत्नमयहै मुक्तनकी झालरि लगी है मण्डपकेतरे वेदिका है मणिमय है सहस्त्रदल कमलाकार है तापर सिंहासन कल्पवृक्ष के पूर्ब ताको स्वरूप कहते हैं तीनिअवली हैं प्रथम खण्ड में बत्तिस पावा हैं बत्तिसै दण्डा लगे हैं पुनिमध्य के खण्ड में षोड़शपावा षोड़शदण्ड लगे हैं पुनि अवांतर के खण्ड में अष्टदण्ड लगे हैं छतुरी तीनिहूं खण्ड में शोभित है प्रथमखंड बत्तिस दल का कमलाकार है मध्य को खण्डषोड़शदल कमलाकार है तीसर खण्ड के मध्य में हजारदल कमल मणिनमय सो समस्त परमदिव्यहै कमल के मध्य में तीनिमुद्रा हैं अग्निमुद्रा चन्द्रमुद्रा रबिमुद्रा के मध्य में अष्टदल कमल है तापर श्रीसीताराम बैठते भये चैत्रमास शुक्लपक्ष नौमी तिथि मङ्गलबार चारिदण्ड दिनरहे सूर्यरथ राज्याभिषेक देखिबेको फिरिआय मध्याह्न में थँभिरहे षट्मासलोक काहूनजान्यो सबै परमानन्दमें भरेहैं ताते कोजानै यहि दोहा में अर्थ जानब ॥ ब्रह्मानन्दमगनकपि सबकेप्रभुपदप्रीति। जातनजानेदिवसनिशि गयोमासषटबीति॥ इतिप्रसङ्गेब्रह्मरामायणे बिमल कालजो श्री रामजन्म में योगलग्न मुहूर्त्त नक्षत्र घरी पल इत्यादिक परमदिव्य सर्बकाल अपने साफल्यहोनहेतु प्राप्तिभये श्रीसीताराम सिंहासन पर बैठते भये जो कोई कहै कि हजारन सूर्यनके प्रकाश किरीटमें सोई कुण्डलन में अरु सिंहासन के आगे सूर्यके तेज मन्दपरिगयो तहां सूर्यके प्रकाशते दिनैबन्यो रहत हैं तहां चाहिये कि श्रीरामचन्द्र के राज्य में किन्तुसदा ब्रह्माण्ड भरे में रात्रीहोबै न करै काहेते श्रीरामचन्द्र को किरीट कुंडल सिंहासन अनेक सूर्यमय है सर्बकाल में एकरस है तहां रात्रीकहां सम्भवित है तहां यहबात सत्य है पर देखियेतौ श्रीरामचन्द्र लीलापुरुषोत्तम अरु मर्यादा पुरुषोत्तम हैं ताते श्रीरामचन्द्र सूर्य की मर्यादा नहीं मिटावते हैं अरु सामर्थ्य तौ ऐसी है कि दो०॥ मशकहिकरहिंबिरंचिप्रभु अजहिं मशकतेहीन उनकीगति कोऊ जानिसकै है काहेते अघटघटपटीपसी करिबेको ऐसीजाकी माया है ते श्रीसीताराम सिंहासनपै बैठतेभये कोई मुनि केमतमें चैत्र के शुक्लपक्ष की अष्टमीको श्रीदशरथ महाराज अष्टमुनि बोलाइकै बिचारकीन श्रीबशिष्ठजी बामदेवजी मार्कण्डेय मौद्गल्य काश्यप कात्यायन जाबालि गौतम एते अष्टमहामुनि पुनि अष्टमन्त्री सुमंत बिजयी जयन्त राष्ट्र बर्द्धन सुराष्ट्र अशोक धर्मपाल एते अष्टमन्त्री इत्यादिक सकल महामहा महाननको बुलाइकै श्रीदशरथ महाराज कहते हैं कि जो सबको सम्मतहोइ तौ बिहान नौमीको श्रीरामचन्द्र को राज्याभिषेक होइ सबहींकहा कि शुभस्वस्ति मंगलहोइ जबपच्चीसदण्ड रिक्ताबीतै तब महामंगल है तब राज्याभिषेकहोइ अरु नौमीको जब एकपहर छ: दण्ड दिनचढ़ेउतबश्रीरामचन्द्र स्वेच्छित श्रीचित्रकूट को गमनकीन पुनिचौदहबर्षबीतेवाही रामनौमीको उतनेदिनचढ़े श्रीरामचन्द्र श्रीअयोध्याको आये मिलतमिलावत वाहीदिनमें चारिदण्ड दिन रहिगयो तब राज्याभिषेकभयोपुनि कोई मुनिकोमत है कि चैत्रकी शुक्लपक्षकी दशमीकोगये पुनि दशमीहीकोआये तबै राज्याभिषेकभयो पुनि कोई मुनिकोमत है कि गये दशमीहीको अरु आये दशमीहीको पर बैशाखकी शुक्लपक्ष सप्तमी को राज्याभिषेकभयो है अरु जवनीसाइति श्रीअयोध्यासेगये वाहीसाइतिआये काहेते कि भरतजीको संकल्परहै कि जो वहीसाइति नहीं अवोगे तौ मैं अग्निप्रवेश करौंगो पुनिकोई मुनिकोमत है कि गये हैं दशमीहीको आये दशमीहीको पर बैशाख के शुक्लपक्ष की पंचमीको राज्याभिषेकभयो अरु कोई मुनिकोमत है कि श्रीरामचन्द्र ने चैत्र के शुक्लपक्षकी दशमीही को गमनकीन अरु श्री अयोध्याको कार्तिकमास कृष्णपक्षकी छठिकोआये राज्याभिषेकभयो काहेते कि चौदहबर्षमें पांचमहीना अठारहदिन मलमास बढ़त है अरु भरतजूने मलमास संयुक्त चौदहबर्ष गन्यो है काहेते आरत

हैं अरु बनमें श्रीरामचन्द्र मलमास गने हैं तब यह जान्यो कि भरतजी बारह बारह महीनाको बर्षगनहिंगे काहेते अति आरत हैं आरत जनजेहैं प्रीतमके करारते कालकी बढ़ती एकमुहूर्त्त नहीं सहिसकतेहैं यह श्रीरामचन्द्र बिचार करिकै कार्त्तिकके कृष्णपक्षकी छठिको श्रीअयोध्या को आये एकपहर छः दण्ड दिनचढ़े मिलत मिलावत चारिदण्ड दिन रहिगयो वाहीदिन तब राज्याभिषेकभयो अपर मुनिन मलमास नहीं लियो सम्वत् को सबकहिदियो काहेते श्रीभरतजीमें आरत अरु दीप्तिदोऊलक्षण परिपूर्ण हैं श्रीभरतजी सबकीमर्याद राखते हैं श्रीरामचन्द्र की लीला जानते हैं ताते सम्वत् को सम्वत् मास को मास तिथिको तिथिकहा है अरु सबमुनिनको मतसत्य है तहां कल्पांत भेदहै अरु गोसाईं तुलसीदासके मतमें मोको तो श्रीरामनौमी भासत है चारिदण्ड दिनरहे काहेते कि चैत्रशुक्ल नौमीको रिक्तातिथि संज्ञा है तहां राज्याभिषेक वर्जित है जहां जो सर्बयोग उत्तम है तहां नहीं दूषण है अरु पचीस दण्डबीते महामंगल है तहां ब्रह्मरामायणे श्लोकचारि ४॥ चैत्रशुक्लानवम्यांवाआरम्भेष्टमयामके ॥ राज्याभिषेकोरामस्यबभवात्यन्तमंगलं १ अस्तासन्नोपिभगवान्पुनरावृत्यमध्यगः ॥ षण्मासंतद्दिनंचक्रेरामराज्यमुदोरविः २ पुनःज्योतिषप्रमाणहै ॥ वेदांगाष्टनवार्केन्द्रपक्षरन्ध्रतिथौत्यजेत॥ बस्वंकमनुतत्वाशाश-रानारीपराशुभाः ३ नन्दाभद्राजयारिक्तापूर्णाश्चतिथयःक्रमात् ॥ वारत्रयंसमावर्त्यातिथयः प्रतिपन्मखाः ४ ताते जौने सुयोगमें श्रीरामजन्म वेदबर्णत हैं सोई समस्त मंगलरूप ताही में राज्याभिषेक भयो ( ३४ ) श्रीजानकी संयुक्त श्रीरामचन्द्रको दिव्य सिंहासनपर बैठे देखिकै समुदाई जो मुनि हैं ते प्रहर्षकही अति उत्कर्ष हर्षको प्राप्तभये हैं ( ३५ ) तब द्विजन बेदमन्त्र जामन्त्रन विषे प्रणव प्रथमतामन्त्र को उच्चारण करते हैं अरु नभते सुर मुनिन सिद्धनको जयजयति शब्द उच्चार त्रैलोक्य में संपूर्ण होइरह्यो है ( ३६ ) प्रथम तिलक श्रीवशिष्ठजू कीन्ह्यो पुनि आज्ञा देतभये सब बिप्रनको ते सबतिलक करते भये ( ३७ ) युगलशोभा देखिकै श्रीकौशिल्यादिक समस्त माता परमहर्षको प्राप्ति होइकै बारबार आरती करती हैं ( ३८ ) बिप्रनको मनबांछित पदार्थ विबिध देत भई अपर याचकनको अयाचक कीन है ( ३९ ) त्रैलोक्यके स्वामी श्रीरामचन्द्र को सिंहासन पर विराजमान देखिकै नभमें विपुल देवता विमानन पर चढ़े दुन्दुभी इत्यादिक बाजे बजावत भये अरु ब्रह्मा अरु सबै दिग्पाल अरु श्रीदशरथ महाराज बिमानपर बिराजमान हैं श्री रामचन्द्र देखिकै नमस्कार करिकै तब सिंहासनपर बैठे हैं अबश्रीदशरथ महाराज को मनोरथ पूर्ण भयो ( ४० ) छन्दार्थ ॥ नभदुन्दुभी कही नगारा

नभसुरमुनिजयजयतिपुकारे ३६ प्रथमतिलकवशिष्ठमुनिकीन्हा पुनिसबविप्रनआयसुदीन्हा ३७ सुतबिलोकि हर्षीमहतारी बारबारआरतीउतारी ३८ बिप्रनदानविबिधबिधिदीन्हे याचकसकलअयाचककीन्हे ३९ सिंहासनपरत्रिभुवनसाईं देखिसुरनदुन्दुभीबजाईं ४० छन्द हरिगीतिका ॥
नभदुन्दुभीबाजहिंबिपुलगन्धर्बकिन्नरगावहीं नाचहिंअप्सरावृन्दपरमानन्दसुरमुनिपावहीं

बिपुल कहे बहुत मृदंग सहनाई भेरी नरसिंहा इत्यादिक बाजननभमें बाजते हैं अरु गन्धर्ब किन्नर बिपुल कही अनेकन गान करते हैं ताल प्रबन्ध समेत अप्सरा अनेकन नृत्यकरती हैं सुरमुनि परमानन्दकोप्राप्ति होत हैं तहां भरतादिक भ्राता अरु षोडश पार्षद परमदिव्य किशोर चौदह वर्षकी सन्धिमें ऐसी अवस्था किरीट कुण्डल मुक्तन के माला किंकिणी नूपुरादि नखशिखलौं अंगअंग प्रति अलंकारकिये श्रीरामलक्ष्मण के सदृश श्याम गौर करकमलनमें अनेक साज लिये ठाढ़े हैं सिंहासन के मध्य खण्ड में षोडशौदल पर एकएक दलके कोनन पर ठाढ़ेहैं तिनके नाम हनुमान् सुग्रीव अंगद दधिमुख द्विविद मयन्द जाम्बवन्त सुखेनदरीमुख कुमुद नील नल गवाक्ष पनस गन्धमादन बिभीषण एते षोडश मुख्यपार्षद नित्य हैं श्लोक ६ अगस्त्यसंहितायां उत्तरार्द्धे ॥ षोडशाःपार्षदाः नित्या दिव्यदेहाव्यवस्थिताः ॥ किशोरावयसामध्या रामलक्ष्मणरूपिणः १ श्यामागौड़ाः सुमनसः कामादधिकसुन्दराः ॥ अनेकानिपदार्थानि गृहीताः करकंजकैः २ मनोवाक्कर्मभिःसर्बे रामसेवासुतत्पराः॥ उत्थिताः पार्श्विमाः शुद्धाः सीतारामैकमानसाः ३ यादृशीरामबांछास्यात्तादृशोहि भवंतिते॥ रामाभिलाषिणः सर्वे रामरूपैकतत्पराः ४ हनुमानथसुग्रीवोह्यङ्गदोद्विबिदस्तथा॥ मयन्दश्चसुखेनश्च कुमुदश्चदरीमुखः ५ नीलोनलोगवाक्षश्चपनसोगन्धमादनः ॥ विभीषणोजामवांश्च दधिमुखोषोडशस्मृताः ६॥ पुनि कहते हैं भरतादिक अनुज लक्ष्मण शत्रुघ्नजी अब क्रमालंकार ते जानब पूर्बको

पूर्ब मध्य परको पर ऐसो अक्षरपद अर्थ जहां सिद्धिहोइ ताको क्रमालंकार कही ताते अर्थ जानिलेब भरतजू छत्रलियेहैं छत्र कैसो है जनु पूर्णचन्द्र कोटिन शुक्रादिक नक्षत्रनकी पंक्तिते शोभित है त्यहिते अधिक छत्र जगमगाइ रह्यो है श्रीलक्ष्मण श्रीरामचन्द्र कीदाहिनीदिशिमें चमर लिहेहैं सो चमर कोटिन सूर्यकी किरिणि की चमकको हरेहैभरतजी श्रीसीतारामके मध्य में पाछेठाढ़े हैं शत्रुघ्नजी श्रीजानकी की वामदिशि में ठाढ़े व्यजन कही पंखा मध्य में एकमणि श्वेतचन्द्रवत् ढिगन सुबर्णके सम जरमोतिनते जड़ित हैं अनेक शशिसूर्यकी ज्योतिको हरे हैं ऐसो व्यजन शत्रुघ्न लिये हैं विभीषण धनुषबाण तूणलिये हैं लक्ष्मण के

भरतादिअनुजबिभीषणांगद हनुमदादिसमेतते गहेछत्रचामरव्यजनधनुअसिचर्म्मशक्तिबिराजते ४१ श्रीसहित

दहिने पर ठाढ़े हैं धनुष तीनिरंगकोहै गोसा दूनों लाल हैं अग्नि की द्युतिकोहरतु है मूठि पीत है दामिनीकी द्युतिको हरतु है अपर हरित है कल्पवृक्ष की शाखाकी शोभाहरतु है पनच तीनिहूँ रंग ऐंठिकै शोभित है बाण पांच रंग है फोक अरुण कामके युगल दीपककी शिखाकी द्युतिहरे है पंखचारि सो पीत सुबर्ण के सो बिद्युत् छटाइव सोहत है डाढ़ी हरित नील पीत लाल बिचित्र है गांसी अतिश्वेत कामहूके बाणकी तीक्ष्णताको मन्द करतु है तुणसुबर्ण मणिनते चित्र बिचित्र बन्यो है सोबिभीषण लिये हैं पुनि खड्ग कैसो है मूठिजो है सो सुबर्णकी है तप्त हेमवत् है तापर मणिनकी कणी जड़ित हैं पंचरंग हैं मियान बिबिध रंगकरिकै शोभित है चित्र विचित्र है मियानके पुच्छ भाग बिषे लाल मणि लगी है अरु नील मणि श्वेत मणि हरित मणि कणिनते जटित हैं अरुतरबारि बिजुली की द्युतिको हरतुहै पुनि चर्म कहे ढाल सो अति हरुता में चारिफूल लगे हैं जनु चारिस्वरूप करिकै बृहस्पति बैठे हैं अरु किनारीहेममणिनते जटित है सम्पूर्ण लालनील मिलित रंग हैं सो खड्ग चर्म अंगद जू लिहेहैं पुनि शक्ति कही बरछी सो अति श्वेत है अरु जहां जसचाही तहांतस सुवर्ण मणिनकीकणी जटित हैं अरु शक्ति सर्ब शक्तिकी बीररस करिकै युक्त है सो शक्ति श्रीहनुमान्‌जी लिहे हैं श्रीहनुमान् अरु अंगद बाम अरु दहिने दिशि शोभित हैं किंतु हनुमान् विद्याआह्लादिनी में सो हस्तामल किहे श्रीसीताराम सेवा यश गावते हैं त्रिगुण रहित असिपुत्र अरु कटार उज्ज्वल हेमरत्नकी कली जहांतहां जटित हैं मखतूल मोतिनके झँगा शोभितहैं ऐसी कटार असिपुत्र कही छूरी जो फांड़ में रहै सो सुग्रीव लिहे हैं पुनि दर्पण जामें दशौ दिशा सम्पूर्ण देखिपरैं एकही सुबर्ण मणिन करिकै किनारे रचित सो दधिमुख लिहेठाढ़े हैं अरु जैसेही खड्ग चित्र बिचित्र तैसेही कृपाण शोभायमान सो जामवंत अरु सुखेन लिहेठाढ़े हैं पुनि बेत हेममणिनमय चित्र बिचित्र द्विविद मयंद गंधमादन गवाक्ष लिहेठाढ़े हैं अरु सहस्र दलनके कमल पांच पांचौ रंग हैं सुगन्ध मकरंद प्रकाशमय है ऐसे कमलन को नल नील पनस दरीमुख करकमलन विषे लिहेठाढ़े हैं इत्यादिक अपर अनेकपार्षद अनेकन साजलिहे ठाढ़े हैं ( ४१ )

दिनकरबंशभूषणकामबहुछबिसोहहीं नवअंबुधरवरगातअंबरपीतसुरमुनिमोहहीं मुकुटांगदादिबिचित्रभूषण अंगअंगनप्रतिसजे अंभोजनयनबिशालउरभुजधन्यनरनिरखंतजे ४२ दो० ॥ बहुशोभासमाजसुख कहतनबनैखगेश बरणैंशारदशेषश्रुति सोरसजानमहेश ४३ भिन्नभिन्नअस्तुतिकरि गेसुरनिजनिजधाम बंदिवेषधरिवेदतब आयेजहँश्रीराम ४४ प्रभुसर्वज्ञकीनअति आदरकृपा

संपूर्ण श्रीमय श्रीजानकीजी तिनसंयुक्त सूर्यबंशके भूषण श्रीरामचन्द्र अमित कामकी छबि शोभित हैं नवीनघन जलकरिकै पूर्ण नील गंभीर तद्वत् श्यामगात पर अलंकार पीतांबर शोभित है जनुमधुर तमालतरु विषे बहुरंग के फूल फूलिरहे हैं अरु ताकेमध्य बाहुल्य दामिनी लसतहै ऐसी श्रीरघुनाथजीकी शोभा देखिकै सुर मुनि मोहित भये हैं किरीट मुकुटाकार मध्य में अंगदादि चित्रबिचित्र भूषण अंग अंगप्रति शोभित हैं बिशाल अरुण कमल तद्वत् नेत्र हैं उर भुज बिशाल हैं जो मनुष्य के हृदय में ऐसो ध्यानआवै सो नरधन्य है ( ४२ ) दोहार्थ ॥ श्रीरामचन्द्र के राज्याभिषेकको समाज ताकी शोभा अरु सुख जो है सो हेखगेश नाहीं कहतबनै है तदपि अपनीमति के सदृश सरस्वती अरु

शेष अरु श्रुतिवर्णते हैं पर सो रसतौ महेश भलीभांति जानते हैं ( ४३ ) जब श्रीरामचन्द्र सिंहासनपर बैठे तब संपूर्ण नृत्यगान इत्यादिक उत्सव होतभयो राजादशरथ संयुक्त भिन्नभिन्न स्तुति करतेभये तब ब्रह्मादिक देवता कल्पवृक्ष के फूलनकीबर्षा करतेभये सबको श्रीरामचन्द्र मानसी आज्ञा दीन तब जयजय शब्द करत आनन्द भरे निज निज लोकको जाते भये निष्कण्टक सुख करतभये पुनि तदुपरान्त चारिहु वेद आय भाटको स्वरूप धरे तिनकै किशोर अवस्था नख शिखलौं कञ्चन मणिनके भूषण अंगअंग प्रति सजे शोभित हैं अरु श्याम श्वेत अरुण पीत अरु तीनिउरंग मिलित ऐसो भिन्नभिन्नचारिहुके रूप हैं सो धरिकै वेद तहां आये हैं ( ४४ ) प्रभुने जाना काहेते कि सबके स्वामी सर्बज्ञता जाको सहजएक गुण है ता गुणते श्रीरामचन्द्र अति आदर करत भये पर काहू मर्म न जान्यो तबते श्रीरामचन्द्र के अग्र भाग में ठाढ़े ह्वैकै स्तुतिकरते हैं ( ४५ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने उत्तरकाण्डे श्रीसीतारामराज्याभिषेक वर्णनन्नाम चतुर्थस्तरंगः ४॥ :: :: ::

निधान लखनकाहूमर्मकछु लगेकरनगुणगान ४५॥ * * * * * *

छन्दहरिगीतिका ॥ जयसगुणनिर्गुणरूपरामअनूपभूपशिरोमने दशकंधरादिप्रचण्डनिश्चरप्रबलखलभुजबलहने १ अवतार

दो० ॥ अस्तुतिकरहिंयथार्थश्रुति परमदिव्यधरिरूप रामचरणपङ्कमलहरि रामचराचरभूप ५ छन्दार्थ ॥ प्रथमसामवेदने दोऊकरजोरिकै जय शब्द उच्चारण कियो जय कही अतिशय उत्कृष्ट उत्कर्ष सर्वोपरिबिराजमान अथवा जयकही सदा चिरंजीव पुनि जयकही जयमान सदा जाको पराजय कबहूँ नहींहोइ महाकालहुते जाकी आज्ञानुकूल सदा काल है वेदबोल्यो अरु सगुण रूप ब्रह्म अरु निर्गुणरूप ब्रह्म सो दोनोंरूप तुमहीं हौ कौनरूप तुम्हार ये जो अनूपरूप समस्त उपमा रहित ब्रह्मांड में जेते भूप हैं नर असुर विधि हरि हर दिग्पाल इत्यादिक तिन सबन के शिरोमणि ऐसो द्विभुज स्वरूपतुमहौ तहां सगुण निर्गुण दोनों स्वरूपएकही स्वरूप में कैसे संभवे हैं यह तौ विरोधाभास होत है अरु वेद कहा कि सगुण निर्गुण रूप श्रीरामचन्द्रही हैं तहां विरोधमिटाइकै अर्थ करते हैं सगुण काको कही जो सात्विक राजस तामस इन तीनिउ गुण संयुक्त ईश्वर है ताको सगुण कही सो कौन रूप है बिराटरूप ईश्वर जो है अथवा एक गुण सात्विकको ग्रहणकिये है स्वेच्छित विष्णुरूप भगवान् चतुर्भुज जो संसार को पालनकरते हैं तिनको सगुण रूप ईश्वर कहीजो कही किये दोनों स्वरूप में कोई एक स्वरूप में भक्तनके हेतु अवतार लीनसोई श्रीरामचन्द्र हैं तौ निर्गुण कैसे कही अरु निर्गुण जो ब्रह्म हैं सोनिराकार हैं निर्विशेष हैं सर्वत्र व्याप्त हैं सर्वसाक्षी हैं सबके प्रेरक हैं सबते भिन्न हैं जैसे आकाश सर्बत्र परिपूर्ण है एकरस देख कालावच्छिन्न है अरु चैतन्यरूप है जो कही कि सोई ब्रह्म भक्तनकेनिमित्त एक सगुणरूप होत भयो पुनि भक्तन को कार्य करिकै फेरि निर्गुण होत भयो जोअंश कहियेतौ सगुण सनातन कैसे होइगो अरु वेदने सगुण निर्गुण अखण्ड एक ही रूप में कहा है तहां श्रीरामचन्द्रजी मायिक गुण जो सात्विक राजस तामस इन तीनिहुं गुणते परेहैं ताते निर्गुणकही पुनि पञ्च महाभूतकरिकै रहित आकार हैं ताते निराकार कही अरु माया के विशेषण ते रहित हैं ताते निर्विशेषकही अरु घनीभूत तेजरूप सर्वत्र व्याप्त हैं पूर्ण हैं एकरस सदा हैं ताते श्रीरामचन्द्र को निर्गुण सर्बत्र व्याप्त कहा श्लोक ॥ ध्यायेञ्चपुंडरीकाक्षंपरंज्योतिंपरात्परं ॥ रामएवपरब्रह्मसच्चिदानन्दबिग्रहं १ इतिब्रह्मयामले ॥ पुनि श्रीरामचन्द्र को सगुणब्रह्म कैसे कहा है जातेतीनिगुणते परे हैं परमदिव्य गुण विशेषण है ताते सगुण कहा है सो कौनगुण हैं ज्ञान शक्ति बल ऐश्वर्य तेज वीर्य सौशील्य बात्सल्य आर्यव सौहार्द सर्वशरण्यत्व सौम्यकारुण्य स्थिरता धैर्य दया माधुर्य आर्द्रव एते अष्टादशगुण परम दिव्य तिनके स्वरूप विशेषण कहते हैं १ क्रमहींते सर्वदेशकाल बस्तुको प्रत्यक्ष अनुभव सो ज्ञानहै २ पुनि अघटघटना करने की सामर्थ्य सो शक्ति है पुनि बिश्वधारणादि सामर्थ्य सो बलहै ३ पुनिसर्ब नियमनशक्ति सो ऐश्वर्य है ४ पुनि काहूते पराभव न होय सर्ब को पराभव करने की सामर्थ्य सो तेज है ५ पुनि अपरिमित श्रमके कारणप्राप्त होतसंते श्रम न होय सोबीर्यहै ६ एते षड्गुण सृष्टिआदिकके उपयोगी हैं भगवत् शब्द को वाच्य है जो परब्रह्म तामें रहते हैं पुनिजाति बर्णाश्रम इत्यादिक बड़ाईकी उपेक्षा छांड़िकै निष्कपट मंदजनन के संग मिलिरहना सो सौशील्य है ७ पुनि भृत्य के दोष न बिचारकरना

सोबात्सल्य है ८ पुनि मनबचन कायको समान ब्यापार सो आर्यव है ९ पुनि अपने जनको अपनाते अधिक मानना सो सौहार्द है १० पुनिब्रह्मादि स्थावरान्तकी साधारण रक्षा सोसर्ब शरण्यत्व है ११ पुनि ताही को नाम सौम्य है १२ पुनि परदुखको दूरिकरना सो करुणा है १३ पुनि दान युद्धादिकमें अचल सो स्थिरताहै १४ प्रतिज्ञा पालन सो धैर्य है १५ पुनि कारण बिना परावा दुख देखिकै दुखी होइकै ताके दुखनिवारणकै इच्छा सोदयाहै १६ अमृत पानकी नाईं स्वादरसन सो माधुर्य है १७ अपने शरणागत जनको दुख आपुसहनो सो आर्द्रव है १८ पुनिषोडशगुण कहते हैं महाकुलीन १ सर्बरमण २ सर्बलोक प्रसिद्ध ३ नियतात्मा ४ महाबीर्य ५ द्युतिमान् ६ धृतिमान् ७ बशी ८ बुद्धिमान् ९.नीतिमान् १० बाग्मी ११ श्रीमान् १२ उदार १३ अदभ्र १४ शत्रुनिवर्हण १५ सर्बव्यापकत्व १६ तिनके विशेषण कहते हैं महाकुलीन सर्वोत्तमकुल १ पुनि सर्बरमण शब्दार्थ रमणीयाख्यावान् रामनाम संसार दुःख निर्वृत्ति पूर्वक अपने नित्य नैमित्त लीलामेंरमै रमणकरावै सोराम अथवा रमणकरैं योगी ज्यहि विषे सोराम अथवा स्वरूप लावण्य दर्शन ध्यानते रमण करैं मुनीशजन जिन विषे सोराम २ सर्बलोक प्रसिद्ध आब्रह्मादि स्थावरांत प्रसिद्ध ३ नियतात्मा आब्रह्मादि स्थावरांतको खींच्यो है आत्मा अन्तष्करण जिनते ४ महाबीर्य जिनके पराक्रम के कन में अनन्त कोटि ब्रह्मांडधारी महाबिराटादि के पराक्रम लीन होइजाहिं ५ द्युतिमान् सर्बकाल एकरस सुन्दर ६ धृतिमान् हर्ष शोक दुःख सुखरहित ७ बशी अपने गुणकरिकै सर्बजीवन को बाह्यान्तर बशीकृतकीन जिनने ८ बुद्धिमान् प्रशस्तबुद्धि सर्बजीवनको निश्चय रूप है ९ पुनि नीतिमान् आब्रह्मादि स्थावरान्त अपनी मर्यादमें सबको राखते हैं १० पुनि बाग्मी जाकी सहज पराबाणी है जाबाणीते योगीस्मरण करिकै रामपदको प्राप्तहोते हैं अथवा वेद हैं सहज वाणी जाकी ११ पुनि श्रीमान् अनेकब्रह्मांड में जेती है बिभूति त्रिपाद सहित जाको एकबिलास है १२ पुनिउदार सर्ब जीव जाही में प्रसन्न हैं सोई देते हैं पुनि सन्मुख होइकै जोई पदार्थ की चाहनाकरैं सोई देते हैं १३ पुनि आदभ्रजाको आदि अन्त मध्य नहीं कोई जानै अधिकाधिकतम है १४ पुनि शत्रुनिवर्हण भक्तजन देव महि गो ब्राह्मण तिनके जो शत्रु तिनको नाशकरि देत हैं अथवा सन्त जनके शत्रुकाम क्रोध लोभ मत्सर इत्यादिक तिनको बर्जितकरिदेते हैं १५ पुनि सर्ब व्यापकत्व अपने चैतन्य गुणभूतते अनेक ब्रह्माण्ड चैतन्य किये हैं १६ एते अष्टादश षोड़श इत्यादिक अनन्त गुण परमदिब्य विशिष्ट एक श्रीरामचन्द्रही हैं ताते श्रीरामचन्द्र को वेदने सगुण स्वरूप कहा ताते सगुण निर्गुण रूप श्रीरामचन्द्रही हैं अरु जो कोई कहै कि तुमने कहा कि सगुण रूप बिराट अरु विष्णु भगवान् चतुर्भुज सात्विक गुण को ग्रहणकिये सो सगुण रूप हैं अरु ब्रह्म जोसर्बसाक्षी निर्विशेष सो निर्गुण है तहां श्रीरामचन्द्र में विराट चतुर्भुज निर्गुण कैसेजानिये ताकोउत्तर दूसर अर्थअवरेवकरिकै कहते हैं वेद बोल्यो जयसगुण निर्गुण शिरोमणे यह जो भूपरूप अनूप जो तुमहौ सो सगुण निर्गुण दोनों के शिरोमणि हौ निर्गुण ब्रह्म सोतुम्हार रूप है तुम रूपीहौ अरु रूपजोहै सोई अरूप लक्षित होत है अरु सोई घनीभूत सोईगुणभूत एतेतत्त्व एकही हैं पुनिनिर्गुण सोतौहमआगेहीकहि आये हैं श्रीरामचन्द्र को घनीभूत तेज किंतु व्यापकत्व गुणभूत सो घनीभूत गुणभूत एकही है अरु बिराट चतुर्भुज भगवान् गुणाभिमानी सो अंशभूत है जो कहौ कि निर्गुण ब्रह्मनाम रूपरहित है अरुतुमरूप कहतेहौ यह बिरोध है सो सत्यहै तहां हम यहकहते हैं कि ब्रह्मकहना यहभीनामही है निर्गुणकहना यह भी नाम ही है देखिये तौ उपदेश उपदेष्टाउपदेष्टी एते सर्बकाल में अनादि परम्परा सनातन हैं अरु जहां वेदमन्त्रगुरु शिष्यरहित निरूपण सोतौ हईनहीं है ताते नाम है तौ रूप है अरु जो कोई नामरूप रहित हठकरिकै ब्रह्मकहै तौ कहे कछु बिरोध नहीं हैपर स्वरूप के आश्रय अरूप है श्रुतिस्मृतिप्रमाण है श्लोकसात ७ श्रीराम तापिन्याम् । ॐवैश्रीरामचन्द्रः सभगवान् अद्वैतपरमानन्दात्मा यः परब्रह्मभूर्भुवः स्वस्तस्मैवैनमोनमः १ ॐयोवैश्रीरामचन्द्रः सभगवान् अद्वैतपरमानन्दात्मा योब्रह्माबिष्णुईश्वरोभूर्भुवः स्वस्तस्मैवैनमोनमः २ ॐयोवैश्रीरामचन्द्रःसभगवान् अद्वैतपरमानन्दात्मा योब्रह्माण्डस्यान्तर्बहिर्व्या तोयोबिराटभूर्भुवः स्वस्तस्मैवैनमोनमः ३ यतब्रह्मतत्रस्यतनुभाश्रुतिः ४ अन्यच्च ॥ अंशभूतबिराट्ब्रह्मबिष्णुरुद्रास्तथापरे ॥ ब्रह्मतेजोघनीभूतंबर्ततेजानकीपते: ५ सगुणंनिर्गुणंचैवपरमात्मातथैवच ॥ एतेचांशाहिरामस्यपूर्बचांतेचमध्यतः ६ सदाशिवसंहिताया ॥ आनन्दोद्विविधःप्रोक्तःमूर्तश्चामूर्तएवच॥

**नरसंसारभारबिभंजिदारुणदुखदहे जयप्रणतपालदयालप्रभुसंयुक्तशक्तिनमामहे २ पुनियजुर्वेदबोल्यो॥ तवबिषममाया**

अमूर्तस्याश्रयोमूर्तःपरमात्मानराकृतिः नारदपञ्चरात्रे ७ हे श्रीराम आपुकैसेहौ दशकन्धरादिक जे प्रचण्ड निश्चर बड़ेप्रबल हैं तिनसबन को अपने भुजबल करिकै नाशकीन है ( १ ) अवतारनर अवतारकही अवतीर्ण जैसे कोई ऊंचेमहलते नीचको उतरिआवै तैसे श्री अयोध्यामें भक्तानुग्रहार्थ तुमनरस्वरूप परब्रह्म अवतीर्णभये संसारकोभार रावणादि तिनको बिभंजकही नाशकरिदीन अरु दारुणदुख सबके दहनकरिदीन ते तुम श्रीरामचन्द्र सदा जयमानहौ प्रणतपालहौ पुनिदयालहौ प्रभुकहे सामर्थ अनन्त ब्रह्माण्ड के स्वामीहौ अरु जो तुम्हारी परमशक्ति जाशक्तिते अनेक ब्रह्माण्डकी रचना है देव दानव मनुष्य चराचर जो शक्ति की एकलीला है ताशक्ति संयुक्त हे श्रीरामचन्द्र हमनमस्कार करते हैं नमस्कारतीनिप्रकार को एकसहजनमस्कार है जैसे कोई अपने बराबरिको है सजाती है चलत बैठे कहूंमिलिगयो परस्पर नमस्कार करते भये पुनिएकबाक्याभिनिवेश नमस्कार है जैसे कोई अपने तेबड़ा है कोई राजा इत्यादिक तिनके नमस्कार करतसंते राजाको प्रताप ऐश्वर्य बचन में प्रवेशहोत है पुनि यह स्वरूपाशिवन नमस्कार है जैसे अपने गुरु हैं किन्तुइष्टदेवता हैं तिनको नमस्कार करतसंते गुरुदेवको तेजप्रताप ऐश्वर्य सेवा स्वरूप मनबचन कर्म में प्रवेशहोत है अरु नमस्कार प्रणाम दण्डवत्‌बन्दना येहीहै तहां बेदजो हैं सो श्रीरामचन्द्र के स्वरूपाभिनिवेश पराबाणीते नमस्कार करते हैं ( २ ) पुनि यजुर्वेदबोल्यो हे श्रीरामचन्द्र तुम्हारीमाया अति विषम है जामायाते बशकीन्ह है सुर असुर नर नाग स्थावरजंगम समस्त तुम्हारीमायाके बश हैं भवकही संसार में कालकर्म गुणनतेभरे भ्रमते हैं काल काकोकही प्रमाण अनु लव निमेष पल दण्ड पहर दिन मास वर्ष युग कल्प महाकल्प इत्यादि कालचक्र फिराकरते हैं जैसे कुम्हार को चाक जो कालचक्र में इन्द्र बरुण कुबेर ब्रह्मादि सुर असुर नर चराचर फिरते हैं कर्म काकोकही इन्द्री जनित कर्तव्य अर्थ धर्मकामके बासनालिहे सो कर्मकही गुणतीनि जप तप दान त्रिकालसंध्या वेदाध्ययन इत्यादिक शांतियुक्त करना सो सात्विककही अरु सोई कर्म करना तहांमानसंयुक्त अहंकर्त्ता मृतलोक में राजादिकनके भोग बासनाताको राजसकही अरुतपकरना मलिन कृपाते यक्ष राक्षस पिशाचादिकनको इष्टकरिकै अपर को नाशकरिकै भोग की बासना सोतामस है वेदबोल्या

**बशसुरासुरनागनरअगजगहरे भवपंथभ्रमतामितदिवसनिशिकालकर्मनगुणभरे ३ जोनाथकरिकरुणाबिलोकेउत्रिबिधदुखते निर्बहे भवखेदछेदनदक्षहमकहँरक्षरामनमामहे ४ पुनिअथर्वणवेदबोल्यो ॥ जेज्ञानमानबिमत्ततवभवहरणभक्तिनआदरी तेपाइसुरदुर्लभपदादपिपरत-हमदेखतहरी ५ बिश्वासकरिसबआशपरिहरिदासतवजेहोरहे जपिनामतवबिनुश्रमतरहिं भवनाथसोसमरामहे ६**

हे श्रीरामचन्द्र तुम्हारी अनादिमाया काल कर्म गुणनकी प्रेरक ताकेबशजीव संसारविषे अनेक योनिन्हमें भ्रमते हैं ( ३ ) हे नाथ ताते जो जीव तुम्हारे सम्मुख एकहूबार कोई संयोगते भयो तब तुम्हारी कृपाते त्रिविध दुखते निर्बाहि जाते हैं तीनिदुख कौन हैं काल कर्म गुण याही के भीतर अनेकदुख हैं सो समस्त दुखमिटिजाइँ हे नाथ जापर तुमकृपाकरहु सो तीनिहुँ दुखसे छूटिजाइ भवजो है संसार ताको खेद जन्म मरण ताके छेदनकही नाशकरिबेको तुम दक्षनाम बड़ेचतुरहौ अथवा प्रत्यक्षतेतुम श्रीरामचन्द्र हमारी रक्षाकरहु हम तुम्हारी शरण हैं ( ४ ) पुनि अथर्वण वेदबोल्यो हे श्रीरामचन्द्र जी जेपुरुष सम्पूर्ण माया के मानजेहैं तेहितेपरे हैं सर्वथा ज्ञानी हैं ज्ञानकही अनात्माको असत्यजानै आत्माको सत्यजानै आत्मा जीव अन्तर्यामी ब्रह्म एकही है बासना संयुक्त जीव बासनाध्वंसब्रह्म है द्वौरूप कथनमात्र हैं एकोब्रह्मदितीयोनास्ति ऐसी अभेद बुद्धि ब्रह्मानन्द को प्राप्ति हर्ष शोक दुख सुख मित्र अरि कंचन माटी सम है जिनके स्वरूप परस्वरूप की ऐक्यता ऐसो ज्ञान केवल जानिकै मनमें अलमस्त है प्रमाण श्रीभगवद्गीतायां श्लोकद्वौ॥ समदुःखसुखस्स्वस्थसमलोष्टास्मकांचनः ॥ तुल्यप्रियाप्रियोधीरस्तुल्यनिंदात्मसंस्तुतिः १ मानापमानयोस्तुल्यो तुल्योमित्रारिपक्षयोः ॥ सर्वारम्भपरित्यागीगुणातीतः

सउच्यते २ ॥ अरु जो तुम्हारी भक्ति अतिशय शुद्ध त्यहिको नहीं जो आदर करते तुम्हारीभक्ति कैसी है भवजो है संसार त्यहिकी हरणहारी बिना श्रमही ऐसी भक्ति को आदर नहीं करते जो देवतनको दुर्लभपदहै उहै ज्ञान सो ज्ञान च्युत ह्वै जात है अथवा कैवल्यपद देवतनको दुर्लभ है सो पद ज्ञानी पाइकै आरूढ़भये अपिनाम निश्चय करिकै हेश्रीरामचन्द्र तुम्हारी भक्ति निरादर किये सन्ते यह हमारे देखतसन्तेफिरि गिरिपरते हैं अथवा हमदेखत हमजो वेद हैं तिनको अहर्निशि देखत रहते हैं बिचारत रहते हैं ज्ञानको प्राप्ति हैं अरु तुम्हारी भक्तिको आदर नहीं करते ते गिरिपरतेहैं श्रीभागवते ब्रह्मणो बाक्यं श्लोकद्वौ ॥ येन्येरविन्दाक्षमिवमुक्तमानि

**जेचरणशिवअजपूज्यरजशुभपरसिमुनिपत्नीतरी नखनिर्गतामुनिबंदितात्रैलोक्यपावनिसुरसरी ७ ध्वजकुलिशअंकुशकंजयुतबनफिरतकंटककिनलहे पदकंजद्वन्दमुकुन्दरामरमेशनित्यभजामहे ८ पुनिऋग्वेदबोल्यो ॥ अव्यक्तमूलमनादितरु**

नस्त्वय्यस्तभावादविशुद्धबुद्धयः ॥ आरुह्यकृच्छ्रेणपरंपदंततः पतन्त्यधोनादृतयुष्मदंघ्रयः १ पुनि श्रीमन्महारामायणे शिववाक्यं ॥ येरामभक्तिममलांसुविहायरम्यांज्ञानरेतः प्रतिदिनंपरिक्लिष्टमार्गे ॥ आरान्महेंद्रसुरभीपरिहृत्यमूर्खाअर्कंभजंतिसुभगेसुखदुग्धहेतुं ( ५ ) विश्वासकरिकै सबआश परिहरिकै जे तुम्हार दास ह्वै रहे हैं सब आशा कौन हैं स्वार्थ परमार्थ केसाधन जहां लगि लोक वेद हैं सोसम उपायको त्याग उपाय शून्यशरणागत हैं एक तुम्हारो नाम जपिकै बिना श्रमहीं भव तरिजातेहैं ते तुम्हारनाथ हम स्मरण करते हैं ( ६ ) हे श्रीरामचन्द्र तुम्हार जो चरण दोनों हैं सो शिवजेहैं महादेव अरु अजनाम ब्रह्मादिक देवतन करिकै पूज्यमान् हैं अरु जा चरणकी रज अतिशय सुभग महामङ्गलमय तारजको परसिकै मुनि पत्नी अहल्या पाषाणभई रही सो तरि गई पुनि ज्यहि चरणकेनखनके बीचते श्रीगङ्गा उत्पन्न भईं अरु मुनिन करिकै बन्दित हैं जाको सुरसरिकही त्रैलोक्यको पावन कर निहारी ऐसे तुम्हारे चरण हैं ( ७ ) ध्वज कुलिश अंकुश कञ्ज इत्यादिक अङ्कन करिकै शोभितहैं सो पद बन में फिरतसन्ते कण्टकी नाम तामसी जीव कुश कण्टक सर्प बीछू बनचरइत्यादिक अनेकन सर्बजीवन को जो पद ब्रह्मादिकन को दुर्लभ प्राप्ति भयो ऐसे तुम कृपालु हौ किन्तु जे पद ब्रह्मादिकन को दुर्लभ सो भक्तनहेतु बनमें फिरत कण्टकन करिकै किनकही क्लेश को प्राप्ति भये हैं तब पद कञ्ज द्वंदनाम दोनोंमुकुन्द कहे मुक्तिदाता अथवा हेमुकुन्द हेराम हेरमेशहम तुम्हारे पदनित्य भजे ( ८ ) पुनि ऋग्वेद बोल्यो हे श्रीरामचन्द्रहमतुमको नमस्कार करते हैं यह संसार तुम्हारी इच्छाविभूति हैकिन्तु तुम्हारीबिभूतिही कोनमस्कार करते हैं कैसो है यहसंसार एक बिटपरूप है जाकोमूलअव्यक्त है अव्यक्त कहे अप्रकटहै नहीं देखिपरै ताही को अव्यक्तकही पुनि माया कही जाते मायाको कारण है पुनि दिव्य है ब्रह्ममिलित है पुनि मूल प्रकृति कही परमपुरुषकी आद्याशक्ति है पुनि अव्याकृत कही अबिनाशी है स्वरूप अदृश्यहै पुनि अक्षर कही जाको नाश नहीं है पुनि प्रधानकही पुरुषाकार है सर्बको आधार भूत है पुनि क्षेत्र कही पाप पुण्यको कारण है पुनि अजाकही जाको जन्म नहीं है पुनि अनादि कही जाको आदिअंत मध्य नहीं जाना जाइ इत्यादिक अनेक नाम हैं अनेक विशेषण हैं पुनिधौं कहांते है कहांताईं है केतिक बिस्तार है जाको आदि अन्त मध्यनतौ

**त्वकचारिनिगमागमभने षटकंधशाखापंचबीसअनेकपर्णसुमनघने ९ फलयुगुलविधिकटुमधुरबेलिअकेलिजेहिआश्रितरहे**

कहा जाइ न जानाजाइ वेद जाको अनिर्बचनीय कहते हैं ताही को अव्यक्त कही यह जो संसार बिटपरूप है ताको अव्यक्त मूल है पुनि अनादि तरुहै अदृश्य है अरु चारित्वक् कहे बकला जेहि विषे हे गरुड़ यहवेदशास्त्र कहते हैं ताही सूत्र को सब मुनि कहते हैं कोई कहते हैं कि चित्त बुद्धि मन अहंकार यह जो चतुष्ट अन्तष्करण सोई त्वक्है कोई चारिहूअवस्था जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरीय कोई चारिहू युग सतयुग द्वापर त्रेता कलियुग कोई चारिहूफल अर्थ धर्म काम मोक्षकोई चारिहूखानि अण्डज जरायुज उद्भिज ऊष्मज कोई चारिहू वेद साम ऋग यजु अथर्वण तेहीको बकला करिकै कहते हैं इत्यादिक अपनीअपनी बुद्धिकरिकै सबै कहते हैं अरु सबको बिचारकीन पूर्बापर मेरी

सामुझि में चारिकला हैं एक ओंकार तीनौ गुण सात्विक राजस तामस येचारित्वक् हैं अब इनवृक्षनको अरु संसाररूप वृक्ष को दृष्टान्त की एकताकरिकै कहते हैं वृक्ष में बीज है सो लकरीके अवांतर संपूर्ण वृक्ष में व्याप्त है बीज की व्यापकता अरु लकरी आश्रय बकला पाता फूल फल रस येते बीजकरिकै प्रकाशक हैं दृष्टांतरुमें मूल है संसारतरु में मूल अव्यक्त है लकरीस्थाने जीव है बीजस्थाने ब्रह्म अन्तर्य्यामी सोब्रह्म जीवके अवांतरह्वैकै संपूर्ण ब्रह्मांड में व्याप्त है बीजते वृक्षहरित है ब्रह्मते ब्रह्मांड चैतन्य है यहितरु में एकबकला सूक्ष्म अतिकोमल अतिश्वेत लकरी में लपटिरहेउहै तापर मिलित एकबकला और है सो कछुमोटा है श्वेत है तापरमिलित एकबकला और है सो लालरङ्ग है तापरमिलित एकबकला और है काला है इनवृक्षनमें चारित्वक् प्रत्यक्ष देखिपरै हैं दृष्टांत संसारतरुमेंप्रणवशुद्ध सात्विकरूप सूक्ष्म अतिश्वेत जीव में मिलित सो एकत्वक् है पुनि तापर सात्विकगुण श्वेत पुनि राजसगुण लालरङ्ग पुनि तामसगुणकालारङ्ग क्रमहींते त्वक्जानव पुनि वृक्ष में स्कन्ध हैं उहै पुनि शाखा बहुत है पुनि पत्रफूल बहुत हैं पुनि फल है पुनि लताचढ़ि रही है अरु संसारतरुमें कौनस्कन्ध है का शाखा है कापाता है काफूल है कौनफल है काबेली है सो क्रमते कहते हैं संख्यालंकार करिकै षट्कन्धेति षट्कन्धक है कोई षट्धातु एकछोड़े कहते हैं रक्त मांस अस्थि बस काम मद एते षट्धातु हैं धातुसात हैं मज्जा छोड़िदियो कोई षट्बिकार काम क्रोध लोभ मोह मद एते षट्बिकार कोई षट्वर्गको जन्म वृद्धि बिवर्ण क्षीण जरा मरण एते षट्बर्ग हैं कोई षट्शास्त्र को वेदान्त मीमांसा न्याय पातंजलि सांख्य धर्मशास्त्र एते षट्शास्त्र हैं कोई पांचज्ञान इन्द्री एकमन श्रवणत्वक् नेत्र जीभ नासिका एते पांचज्ञान इन्द्री एकमन इत्यादि सब अपनी अपनी बुद्ध के प्रकाशते कहते हैं पर जामें पेड़ स्कन्ध शाखा पत्र फल मिलितहोइ सो अर्थ है ताते मेरीबुद्धिमें तो पांचोतत्व एकमन एते षट्स्कन्ध हैं मनमध्यको स्कन्ध है अरु इन्द्री विषयको अवांतरकिहे पंचमहाभूत सो गिरदावली के स्कन्ध हैं फैलिरहे हैं षट्स्कन्धशाखा पंचबीस जो स्कन्धप्रति पांचपांच शाखागनै तौ तीसहोते हैं जो चारिचारि गनिये तौ बीसहोते हैं अरु इहां पचीसकहा है ताते मनरूप स्कन्ध ताकी शाखा नहींकहा है काहेते मनको संकल्प विकल्प अनेक है पांचतत्व जो स्कन्धरूप ताकी शाखा कहते हैं पांचपांच सो कवन है पांचहु तत्व में पांचपांच प्रकृति हैं सोई शाखा हैं आकाशतत्व स्कन्धरूप ताकी शाखा काम क्रोध मद मान एते पंचशाखा पुनि पवनतत्व में धावन चलनहाथ पावको पसारब पुनि उत्क्रमणकही ऊबिऊबि उठै पुनि अग्नितत्व क्षुधाक्रांति निद्रा आलस जंभुआई पुनि जलतत्व बीर्यपित्त पसीना रक्त लार पुनि महितत्व हाड़ मांस चर्म्म नस रोम एते पचीसशाखा हैं अरु छंदकरिकै जो शुभाशुभ कर्म्म हैं अनेकविधिके सोई पत्र हैं अरु कर्मनविषे जो फलकी अनेक वासना है सोई फूल हैं ( ९ ) अरु दुइप्रकार को फल है एककरू है एकमधुर है हानि लाभ शोक हर्ष नर्क स्वर्ग दुख सुख इत्यादिक शुभाशुभ दुइविधि सोई फल युगुल कटु मधुर हैं अरु कर्मानुसार बासना सिद्धिसो है अरु बेलि अकेलि सो तरुके आश्रित है पर ऐसो भासै है कि वाही संसार को प्रथम तरुकहा पुनि अंत में बेलीकहा तहां जो कही कि पुंल्लिग स्त्रीलिंग एकहीरूपमें कैसे कहाजाइ जहां ईश्वरतत्व है तहां सबसम्भवत है देखिये तौ एकहीतत्वको शक्तिकहा मायाकहा पुनि वाहीको प्रधान पुरुषाकारकहा पुनि जैसे भागीरथीको गंगाकही जल कही ब्रह्मद्रवकही तीनिहुलिंग सिद्धिहोते हैं ताते तरुबेलि संसारहीको कहा है पुनि फलबेलि के आश्रितकहा है किंतु तरुके आश्रयफल जानब अथवासंसार तरुरूपमें मायाकहे ममत्व तैं मैं मोर तोर सोई देव दानव मनुष्य पशु कीट पतंग जड़ चेतन इत्यादिक त्रैलोक्य में अहंमम छाइरह्यो है ऐसीजोहै ममतामाया सोईबेलि है संसाररूपतरुके आश्रित है तरुपर चढ़िरही है आच्छादित करिरही है पुनि सर्ब काल सदापल्लवित है प्रफुल्लित है नवलकहे नित्यनवीनहै नित्यकहे सदहिं अथवा नित्यकहे नित्यसनातन है अनित्यनहींहैईशको जो त्रैगुण्यजनितकार्य है सोअनित्य है ऐसोजो संसार बिटप तुम्हारी एकपाद बिभूतिते तुमको सहितऐश्वर्य श्रीरामचन्द्र

पल्लवितफूलतनवलनितसंसारविटपनमामहे १० जेब्रह्मअजअद्वैतअनुभवगम्यमनपरध्यावहीं तेकहहुजानहुनाथहमतवसगुनयशनितगावहीं ११ करुणायतनप्रभुसद्गुणाकरदेहुयहबरमाँगहीं मनबचनकर्मबिकारतजितवचरणहमअनुरागहीं १२ दो०॥ सबकेदेखतवेदन बिनती कीनउदार अन्तर्द्धानभयेपुनि गयेब्रह्मआगार १३ ॥

हम नमस्कार करते हैं ( १० ) जो कोई कहै कि रामतौ ब्रह्म हैं अद्वैत हैं मनबचन इन्द्रिनके परे हैं निराकार सर्वत्र व्याप्त हैं अनुभवतेगम्य कही प्राप्ति हैं ऐसो मानिकैजे ध्यावते हैं ते ऐसेकहहिं ऐसेजानहिं जेब्रह्म अज अद्वैत मनभव गम्यमनपर तुमको कहहिं अरु जानहिं अथवा तुमको असकहहिं तुम जसमनमानै तसजानहु अरु हमजेहैं वेद सो हमारो सिद्धांत परात्पर तमतत्व जो है सो तुमजोहौ विद्यमान सिंहासन पर बिराजमान धनुर्द्धर द्विभुज स्वरूप सो तुम कैसेहौ नित्यचेतन जो ब्रह्म सर्वब्याप्त है अरु तुम नित्यहूके नित्यहौ अरु चेतनहूके चेतन हौ ताते तुम्हारी महिमा हम नहीं जानते हैं नेति नेतिकरिकै तुम्हारोगुण गावते हैं अरु जो तुमको छांड़िकै अपरतत्व कहै तौ वह वेदवेत्ता नहीं है अरु उसको वेदकी तत्व यथार्थ नहीं आवै है हे श्रीरामचन्द्र हमजो वेद हैं तिनको परमतत्व तुमहींहौ श्रुतिकहते हैं॥ नित्योनित्यानांचेतनश्चेतनानामेकोबहूनांयोबिदधातिकामात्। यस्यांशेनैवब्रह्माविष्णुमहेश्वराअपिजातामहाविष्णुर्यस्यदिव्यगुणाश्चसएवकार्यकारणपरयोः परमपुरुषो रामोदाशरथिर्वभूव इत्यथर्वणेउत्तरार्द्धेश्रुतिः २ ताते तुम्हारो जोहै यश त्रिगुणातीत परमदिव्य गुणमय ऐसो गुण यश हमगावते हैं ( ११ ) हेकरुणाके आयतन कही स्थान हेप्रभु सद्गुणके आकरकहे खानिसद्गुण जोयाहीछन्दमें प्रथमकहि आये हैं हे श्रीरामचन्द्र तुम्हारी महिमा हम नहीं जानते ताते यहबरदेहु मन बचन कर्मते आपके दोऊचरणमें हमारो अखण्ड एकरस तैलवत्धार अनुरागहोइ समस्तब्यकार तजिकै अहर्निशि तुम्हारोयशगावैं हे भरद्वाज ऐसे चारिहूवेद कहतेभये यथार्थ स्तुतिकरतेभये तब श्रीरामचन्द्र सदाप्रसन्नरूप मनहींमें एवमस्तु कहतेभये ( १२ ) दोहार्थ॥ सबके देखतसंते वेद उदारस्तुति करतेभये उदारकही अमितसर्बोपरि वेदन अपनो विशेष सिद्धांत श्रीरामरुख पाइकै कहा है श्रीसीताराम स्वरूपको हृदयमें धरिकै अंतर्द्धानभये ब्रह्मलोकको जातेभये ( १३ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेउत्तरकांडेपरमऐश्वर्यवेदस्तुतिबर्णनन्नामपंचमस्तरंगः ५॥ :: :: ::

दो०॥ बैनतेयसुनुशंभुतब आयेजहँरघुबीर बिनयकरतगदगदगिरा पूरितपुलकशरीर १ तोटकछन्द ॥ जयरामरमारमनंशमनं भवतापभयाकुलपाहिजनं २ अवधेशसुरेशरमेशबिभो शरणागतमाँगतपाहिप्रभो ३ दशशीशबिनाशनबीसभुजा कृतदूरिमहामहिभूरिरुजा ४ रजनीचरवृन्दपतंगरहे शरपावकतेजप्रचण्डदहे ५ महिमण्लमंडनचारुतरं धृतशायकचापनिषंगबरं ६

दोहा॥ षटतरंगमहंजानियेयशगुणरामअनेक रामचरणश्रीशंभुजीअस्तुतिकरतविशेष ६ दोहार्थ॥ वैनतेयकही हे गरुड़ जबवेदस्तुति करिकै जातेरहे तब महादेव श्रीरघुनाथजीकी स्तुतिकरिबेको आवतेभये कैसेहैंमहादेव जयके मुकुटसुंदर बनिरहे हैं अरु ललाटमें चन्द्रमाशोभित है अरु ग्रीवमें शेषशोभित हैं अरु तनमें परमसुंदरि बिभूतिशोभित है अरुकटिमें सिंहचर्म शोभितहै अरु शिरमें श्रीगंगाशोभित हैं ऐसे जे महादेव सो कमलनयनते श्रीरघुनाथजीकी स्तुति शोभा देखिकै पूर्णचंद्र बदनतेअमृतमय गानकरिकै करमें डमरूबजाइकै गद्गद गिराकही बाणीते पुलकशरीरते स्तुतिकरते हैं १ छंदार्थ॥ हे श्रीरामचन्द्र तुम्हारीजय हे रमारमणकही श्रीलक्ष्मी जो तुम्हारी परमदिब्य बिभूति तिनविषे तुम्हारोतेजश्रीऐश्वर्यपूर्णहोइ रह्योहै अरु शमनकहीभवकी त्रिताप नाश करतेहोजे जीवभवकी तापते बिकलहैं अरु तुम्हारी शरणपाहिपाहि करिकै आयेहैं ( २ ) हे अवधेशकही अवधकेईश ब्रह्मादिक देवतनके ईश हेरमेशबिभुकही हे सामर्थ हे प्रभो पाहिपाहि मैं तुहारिशरण मांगतहौं ( ३ ) दशशीश जो रावणहै तेहिके बीसौभुजाके बिनाश कर्त्ताहौ हे रामचन्द्ररावणपृथ्वीको रुजकही महारोगरहा है तेहि रोगको आपुदूरिकीन्ह ( ४ ) अरु रजनीचर जेवृन्दकेवृन्द सोपतंगभये हैं अरु आपुकोबाण प्रचंडपावककहै तामे भस्महोइगयेहैं ( ५ ) हेश्रीरामचन्द्र आप महिमंडलके मंडनकही श्रृंगारहौ चारुतरकही सुंदरहूते सुंदरहौ अरु आप सुन्दरधनुषबाण तरकसधारण किहेहौ ( ६ ) मदअरु महामोह जो परमेश्वरमें भ्रम रोपणकरै अरु मोहकही सुतबित्ते कलत्र में अपनपौ मानना किन्तु शरीराभिमानअपने गुणनमें अभिमान मानना अपने अज्ञानते मायाके पदार्थको आपनमानते हैं सो मोहकही अरु ममता कही स्नेहको सो मोह ममतातम पुंजरात्री है तेहि रात्रि के नाश करिबेको तुम प्रचण्ड तेजकी अनी

**मदमोहमहाममतारजनी तमपुंजदिवाकरतेजअनी ७ मनजातकिरातनिपातकिये मृगलोगकुभोगशरेनहिये ८ हतिनाथअनाथहिपाहिहरे बिषयाबनपाँवरभूलिपरे ९ बहुरोगबियोगनलोगहये भवदंघ्रिनिरादरकेफलये १० भवसिंधुअगाधपरेनरतेपदपंकजप्रेमनजेकरते ११ अतिदीनमलीन दुखीनितहीं जिनकेपदपंकजप्रीतिनहीं १२ अवलंबभवन्तकथाजिनके प्रियसन्त**

की अनी सूर्यहौ ( ७ ) हे रामचन्द्र मनजातजोहै काम सोईहै किरातनिपात कही मारते हैं केहिको लोगजे हैं प्राणी तेईहैं मृगतिनको काहेते मारत हैं कुभोग कही परस्त्रीगमन इत्यादिक सोई है बाण तेहि करिकैहते हैं किन्तु मनजातकही काम जो कही कामना सोई है किरात अरु कामनाको कुभोग अनेक बासना सोईहै बाण तेहिकरिकै लोगजेहैं मृगतिनके हृदयको बिदीर्ण करते हैं ( ८ ) हेनाथ जिनके तुम नाथ नहींहौ तिन अनाथन मृगन को मारते हैं ताते हे नाथ मांपाहि हम तुम्हारीशरण हैं जे प्राणी पांवर मृगविषय रूपबनमें भूलिपरे ते मारेजाते हैं ( ९ ) अरु हे नाथ जे लोग बहुरोग करिकै बियोग कही दुखित हैं काहेते दुखितहैं भवत्कही तुम्हारे जे अंघिकही चरण हैं तिनके निरादरको यहफल है ( १० ) हे नाथ जे तुम्हारे पदपंकजमें प्रेम नहीं करते ते प्राणी भवसमुद्रमें डूबे हैं ( ११ ) हे नाथ जिनके तुम्हारे पद पंकज में प्रेम नहींहै ते प्राणी नित्यही दीनहैं मलीनहैं दुःखीहैं ( १२ ) अरु हे नाथ भवन्त कही यह तुम्हारी कथाही केवल जिनको अवलम्बहै तिनको सन्त जन जे हैं अनन्त जोहौ तुम तिनकी नाईं प्रियहैं किन्तु अनन्त जेहैं सन्तते सबबराबरि प्रियहैं ( १३ ) कैसे वे सन्तहैं जे राग लोभ मान मद करिकै रहित हैं किन्तु जिनके सन्त अनन्त सम प्रियहैं ते राग लोभ मद करिकै रहितहैं अरु तिनकै सम बुद्धि है अरु वैभवकही त्रैलोक्य विभव पद सो बादि कही उनके मिथ्याहै ( १४ ) यही गुणनते तुम्हारे सेवकजे हैं सो अनंतजो तुमको प्राप्ति है और प्रसन्न होते हैं अरु येही गुणनको ग्रहण करिकै तुम्हारे चरणारबिन्द में प्रीति करिकै मुनि सदा अपने तप योग भरोस छोड़िदेते हैं ( १५ ) पुनि तुम्हारे जे सन्तजन तुम्हारे चरणनमें नेम संयुक्त निरन्तर प्रेम करते हैं अपने हृदय को शुद्धकरिकै तुम्हारे पदपंकजको सेवते हैं ( १६ ) ते सन्त कैसे हैं मान अमान निरादर आदर जिनके

**अनन्तसदातिनके १३ नहिंरागनरोषनमानमदा जिनकेसमवैभवबादिपदा १४ यहितेतवसेवकहोतमुदा मुनित्यागतयोगभरोस सदा १५ करिप्रेमनिरंतरनेमलिये पदपंकजसेवतशुद्धहिये १६ सममाननिरादरआदरही सबसन्तसुखीबिचरन्तमही १७ मुनिमानसपंकजभृङ्गभजे रघुबीरमहारणधीरअजे १८ तवनामजपामिनमामिहरी भवरोगमहामदमानअरी १९ गुणशीलकृपापरमायतनं प्रणमामिनिरन्तरश्रीरमनं २० रघुनन्दनिकन्दयद्वन्दघनं महिपालबिलोकयदीनजनं २१ दो०॥ बारबारबरमाँगौं**

सम है ऐसे सब सन्तहैं ते सुखी ह्वैकै पृथ्वीमें बिचरते हैं ( १७ ) हे रामचन्द्र मुनि मन पंकजके तुम मृगहौ भजकही प्राप्ति हौ किन्तु जे तुमको भजते हैं हे रघुबीर तुममहारण में धीरहौ अज कही अजन्महौ ( १८ ) हे नाथ तुम्हारे नामको मैं सदाजपौं अरु तुम्हारे सदा नमस्कारकरौं भव जो है संसार त्यहिको राग मोह मद मान तिनके अरिहौ अरु कहूँ यहपाठ है भवरोगमहामदमानअरी तहां भवजो सांर त्यहिको जन्ममरण सो रोगहै त्यहिके नाश करिबेको मदकही औषधहौ अरु मानके अरिहौ ( १९ ) अरु परमगुण परमशील परम कृपाके आयतन कही स्थान हौ हे श्रीरमण मैं प्रणाम करतहौं निरंतर कही जामें अंतर न परै ( २० ) हेरघुनन्दन यह जोहै मोर तोर मैं तैं सो सघनद्वंद दुःखहै तिनको तुम निकन्दन कही नाश करते हौ हे पूर्ण महिके रक्षक महाराजाधिराज मैं जो दीनजन हौं तिनकी ओर कृपाकरिकै बिलोकहु ( २१ ) दोहार्थ॥ हे श्रीरंग श्री कही लक्ष्मी रंग कही लक्ष्मी के रञ्जनकर्त्ता आनन्दकर्त्ता ऐसे तुम सो मैं बारबार बरमांगतहौं आप प्रसन्न ह्वइकै देहु तुम्हारो जो पदसरोजहै त्यहिमें अनपावनी भक्तिपावों अरुसत्संगपावोंजाते

भक्तिबनीरहै अनपावनीकही ज्यहिते पावन दूसर नहीं है किंतु अनपावनी कही अचल ( २२ ) हे गरुड़ उमापति जे महादेवते श्रीरामचन्द्रकर यश गुण प्रताप यथार्थ सर्बोपरि प्रीतिते बचननकरिकै कैलास को जाते भये तब प्रभु सुग्रीवादिक राजा अरु कपिनकीसेना सबको बासदिवावतेभये जहां सबप्रकारते नित्यनवीन सुखहै तहां कपि बासकरते भये ( २३ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेउत्तरकांडेश्रीमहादेवस्तुतिवर्णनन्नामषष्ठस्तरंगः ६॥ :: :: :: ::

दोहा॥ सप्ततरंगउमंगसेराज्यकथाशुभदानि कपिनबिदाकरिप्रेमप्रभुरामचरणरतिआनि ७॥ हे खगपति यहकथा अतिसोहावनि कही पवित्र दोहा हर्षिदेहुश्रीरंग पदसरोजअनपावनीभक्तिसदासतसंग २२ बरणिउमापतिरामगुणहर्षिगयेकैलास तबप्रभुकपिनदेवाये सब विधिसुखप्रदबास २३॥ * * * * * * * * *

चौ०॥ सुनुखगपतियहकथासुहावनि त्रिविधतापभवदापनशावनि १ महाराजकरशुभअभिषेका सुनतलहहिंनरविरतिविवेका २ जेसकामनरसुनहिंजेगावहिं सुखसंपतिनानाबिधिपावहिं ३ सुरदुर्लभसुखकरिजगमाहीं अंतकालरघुपतिपुरजाहीं ४ सुनहिंबिमुक्तबिरतिअरुविषई लहहिंभक्तिगतिसंपतिनितई ५ खगपतिरामकथामैंबरणी सुमतिबिलासत्रासदुखहरणी ६ बि-

है अरु तीनिजोताप अरु भवजो संसार त्यहिको दापकही दुःख जन्म मरण तिनकी नाशकरनिहारी ऐसीकथा सो मैं बर्णनकीन ( १ ) हे भरद्वाज महाराज श्रीरामचन्द्रहैं तिनकर जो शुभ राज्याभिषेकहै त्यहिको जेनरसादरते कहैं सुनैं तिनको विरति विवेक सुखइत्यादिक परम दिब्यगुण शीघ्रप्राप्तिहोहिं ( २ ) अरु जेनर सकाम सुनते हैं गावते हैं ते अर्थ धर्मकाम इत्यादिक अनेक बिधिके सुख संपतिको प्राप्ति होते हैं ( ३ ) पुनि जो सुख देवतनको दुर्लभहै तहां जो कुछ पदार्थ होइ सो सब श्रीरामचन्द्रको समर्पण करिकै प्रसादी भोगकरै श्रीरामचन्द्रकर ह्वैकै सो देवतन को दुर्लभ है पुनि ऐसो देवतनको दुर्लभभोग भोगकरिकै अंतकालमें श्रीरामचन्द्रके पुरको प्राप्तिहोते हैं ( ४ ) तहां श्रीरामचन्द्र के राज्याभिषेक की कथा जे विरक्त अरुविमुक्त सुनतेहैं अरुतहां जेविषयी मुमुक्षु सुनते हैं तिन सबनमें जेविमुक्तहैं ते भक्तिको प्राप्तहोते हैं अरु जे मुमुक्षु विरक्त हैं ते मोक्षको प्राप्तहोते हैं अरु जे विषयी हैं ते शुद्ध संपत्ति नित्य नवीनको प्राप्त होते हैं ( ५ ) हेखगपति श्रीरामचन्द्रकै कथाअपनी मति बिलासते मैं वरणी है सो कथाकैसीहै कालको त्रासजो है जन्म मरणकोदुःख जो है त्यहिकी हरनिहारी है ( ६ ) पुनि यहकथा कैसी है बिरति विवेक ज्ञानविज्ञान भक्ति इनसबनकी दृढ़करनिहारी है अरु मोहनदीकोसुंदरि तरणीहै ( ७ ) हे भरद्वाज कोशलपुरीविषे नित नवीन नवीन मंगल होते हैं तहां सबलोग कुरीकेकुरी हर्षित हैं कुरीकही ब्राह्मणमें अनेकभेद क्षत्रिनमें अनेकभेद वैश्यनमें अनेकभेद शूद्रन में अनेकभेद जो चारिउ बर्णनमें अनेकभेद हैं ताको कुरीकही ते सब हर्षितहैं ( ८ ) ते सबअयोध्याबासी तिनके श्रीरामचन्द्रके पदपंकजमें नितनई नई प्रीति होतिजाती है कैसे वे चरणारबिन्दहैं जिनको मुनि सनकादिक अरु शिवब्रह्मादिक जो विवेकी देवताहैं ते सब ज्यहिचरणन को अहर्निश प्रणाम

रतिबिबेकभक्तिदृढ़करणी मोहनदीकहँसुन्दरतरणी ७ नितनवमंगलकोशलपुरी हर्षितरहहिंलोगसबकुरी ८ नितनइप्रीतिरामपदपंकज सबकोउजिनहिंनमतशिवमुनिअज ९ मंगनबहुप्रकारपहिराये द्विजनदाननानाबिधिपाये १० दो०॥ ब्रह्मानंदमगनकपि सबकेप्रभुपदप्रीति जातनजानेदिवसतिनगयेमासषटबीति ११ चौ०॥ बिसरेगृहसुपनेहुसुधिनाहीं जिमिपरद्रोहसंतमनमाहीं १२

पूर्वक ध्यानकरते हैं ( ९ ) तहां श्रीरामचन्द्रकी आज्ञाते मंगनजे हैं याचकतिनको अनेकप्रकारके पहिरावरि देतेभये अरु द्विजनको मनबांछित अनेक प्रकारके दान देतेभये ( १० ) दोहार्थ॥ अरु सुग्रीवादिककी सेनाते सब ब्रह्मानंदमें मग्नहैं अरु श्रीरामचन्द्रके चरणनमें अत्यंत प्रीति है तहां यह सिद्धांत है कि संपूर्ण कर्मको फल ब्रह्मज्ञान तेहि फलकोरस श्रीरामचन्द्र के चरणारबिन्द विषे प्रीति तहां सब कपिनको अरु श्रीअयोध्याबासी इत्यादिक सर्व जीवन को छः महीना बीतिगयो तिनदिवसनको जात नहींजान्यो काहेते कि श्रीरामचन्द्र के राज्याभिषेक विषे सूर्यकोरथछः महीना थँभिरह्यो है तहां रात्रिको आगमनै नाहीं है दिनकैसे जान्योजाइ है ( ११ ) हे भरद्वाज सबकपि श्रीरामानन्द में मग्न हैं तातेगृह बिसरिगयो है सपनेहुमें सुधिनहीं है कैसेसबको गृहबिसरिगयो है जैसे सन्तनके मनते परावाद्रोह बिसरिजाय ( १२ ) तब तहां श्रीरामचन्द्र सब सखनको बुलावतभये आइकै सब आदरपूर्वक शीश नावतेभये ( १३ ) तिनसबको परमप्रीतिते समीप बैठारतेभये भक्तन के सुखदाता जे श्रीरामचन्द्र ते मृदुकही सुखदायक बचन बोलतेभये ( १४ ) हे सखहु तुमने मोरि सबभांतिते अति सेवकाईकीन मुखपर तुम्हारी बड़ाई क्यहिप्रकारते करौं ( १५ ) ताते तुम मोको अतिशय प्रियलागेहौ काहेते मेरे हितके निमित्त तुम अपने भवनको सुख अरु अपने देहको सबसुख त्यागिदीन है ( १६ ) ताते अनुज जे हैं अरु मेरीराज्यजोहै अरु संपूर्ण संपत्तिजोहै अरु बैदेही श्रीजानकीजी जोहैं अरु घर परिवार मेरी देह अरु मेरीदेहके जेते सनेही हैं ( १७ ) एते समस्त मोको प्रिय हैं पर तुम्हारे समान प्रियनाहीं हैं यह मैं सत्यकहतहौं सत्यकरबाना मैं बांधेहौं ( १८ ) तहां यहरीति है कि सेवक सबको प्रियहै पर मोरे दासपर अधिक प्रीतिहै तहां सेवक जोई सेवकाई करै अरु दास जो आत्मसमर्पण

तबरघुपतिसबसखाबुलाये आइसबनसादरशिरनाये १३ परमप्रीतिसमेतबैठारे भक्तसुखदमृदुबचनउचारे १४ तुमअतिकीनमोरिसेवकाई मुखपरकेहिबिधिकरौंबड़ाई १५ ताततुममोहिंअतिप्रियलागे ममहितलागिभवनसुखत्यागे १६ अनुजराजसंपतिबैदेही देहगेहपरिवारसनेही १७ सबममप्रियनहिंतुमहिंसमाना मृषानकहौंमोरयहबाना १८ सबकेप्रियसेवक यह नीती मोरेअधिकदासपरप्रीती १९ दो०॥ अबगृहजाहुसखासबभजहुमोहिंदृढ़नेम सदासर्बगतसर्बहित जानिकर्‌यहुअतिप्रेम २० चौ०॥ सुनिप्रभुबचनमगनसबभये कोहमकहाँबिसरिगृहगये २१ यकटकरहेजोरिकरआगे सकहिंनकछुकहिअतिअनुरागे २२ परमप्रेमतिनकरप्रभुदेखा कहाबिविधबिधिज्ञानविशेखा २३ प्रभुसन्मुखकछुकहइनपारहिं पुनिपुनिचरणसरोज

करै ( १९ ) दोहार्थ॥ हे सखहु अब मेरी आज्ञाते अपने अपने गृहकोजाहु तहां मोको सर्वविषे गतकही ब्यापक अरु सर्वजीवनको हितकारी सदा असजानिकै मोरभजन दृढ़करिकै प्रेमते करत रहब ( २० ) श्रीरामचन्द्रके बचन सुनिकै सबमग्न होतभये मनमें यह कहत हैं कि को हमहैं कहां हमारघर है हमको तौ तनकीसुधि भूलिगई है ( २१ ) दूनोंकरजोरिकै ठाढ़ेहैं पलक नहीं चलतीहै अति अनुरागते कछुनहीं कहिसकते हैं ( २२ ) हे गरुड़ तब तिनकर परमप्रेम देखिकै विविध प्रकारके बिशेष विवेक सहित ज्ञान तिनको श्रीरामचन्द्र उपदेश करतेभये ( २३ ) श्रीरामचन्द्रके सम्मुख कछुनहीं कहिसकते पुनि पुनि चरणसरोज निहारते हैं ( २४ ) तब श्रीरामचन्द्र परमदिव्य भूषण बसन मँगावतेभये कैसेभूषण बसनहैं नानारङ्गके अति अनूप हैं ( २५ ) जरावनके दिव्यबसन रघुनाथजीकीआज्ञाते भरत जी अपने हाथन बनाइ बनाइ प्रथम सुग्रीवको पहिरावते भये ( २६ ) पुनि लंकापति जो बिभीषण हैं तिनको श्रीरामचन्द्रकी आज्ञाते लक्ष्मणजी पहिरावते भये श्रीरामचन्द्रको भलभाये हैं ( २७ ) तहां अङ्गद बैठेरहे डोलेनहीं त्यहि अङ्गदकै प्रीति देखिकै श्रीरामचन्द्र नहींबोले ( २८ ) दोहार्थ॥ श्रीरामचन्द्रकी आज्ञाते तीनिउभाई अरु परम चतुर जे सेवक हैं ते सबमिलिकै जामवन्त नलनीलादिक प्रथम सबराजनको बस्त्र अलंकार पहिरावतेभये पुनि अठारहौपद्म यूथपनको पहिराये पुनि संपूर्ण सेनाको परमदिव्य बस्त्र भूषण जो देवतनको दुर्लभ हैं सो यथायोग्य श्रीरामचन्द्रकी प्रसादी पहिरावतभये ते सबहृदय में श्री

निहारहिं २४ तबप्रभुभूषणबसनमँगाये नानारंगअनूपसोहाये २५ सुग्रीवहिंप्रथमहिंपहिराये बसनभरतनिजहाथबनाये २६ प्रभुप्रेरितलक्ष्मणपहिराये लंकापतिरघुपतिमनभाये २७ अंगदबैठिरहेनहिंडोले प्रीतिदेखिप्रभुताहिनबोले २८ दो०॥ जामवन्तनीलादिसबपहिरायेरघुनाथ हियधरिरामचरणसबचलेनाइपदमाथ २९ तबअंगदउठिनाइशिर सजलनयनकरजोरि अति विनीतबोलेबचन मनहुँप्रेमरसबोरि ३० चौ०॥ सुनुसर्बज्ञकृपासुखसिंधो दीनदयाकरआरतबन्धो ३१ मरतीबारनाथमोहिंबाली गयोतुम्हारेकोछेघाली ३२ अशरणशरणविरदसंभारी मोहिंजनितजहुभक्तहितकारी ३३ मोरेतुमप्रभुगुरुपितुमाता जाउँकहाँ

रामचन्द्रके चरणकमलों को धारण करिकै अरु पैरन में माथनवाइकै चलेहैं ( २९ ) हे पार्वती तब अङ्गद उठिकै श्रीरघुनाथजीके चरणों में माथ नावतभये हैं अरु नेत्रनमें जलभरिआयो है दूनौंकरजोरिकै अतिबिनीतकही दीनह्वैकै मानहुं प्रेमतेबोरे बचनबोलतेभये इहां मानहुं उत्प्रेक्षा जो कहा सो निमित्तमात्र जानब ( ३० ) अबअंगदकहतेहैं कि हेसर्बज्ञ कृपा अरुसुखके सिन्धु हेदीनदयाकर आरतकेबन्धु इहां अंगद तीनि संबोधन दीन त्यहिको यह अभिप्रायहैकिमेरे अन्तष्करणको अभिप्राय तुम जानतेहौ तातेसर्बज्ञ कहाहै अरुतुमकृपाके समुद्रहौ मोपर कृपा काहेको छोड़तेहौ मोको न बिदाकरौ अरु तुमदीनबन्धुहौ मोको न त्यागहु ( ३१ ) हे नाथ मरतीबार मोकोबालि तुम्हारे गोदमें डारिगयोहै ( ३२ ) अरु तुम अशरणशरण हौ तुम्हारो बिरदकही बाना ताको तुमसम्हारहु अरु तुम्हारबिरद नित्यअखण्डहै हे भक्तहितकारी मोको जनित्यागकरौ यहां ब्यंग्यहै कि जो मोको त्यागहुगे तौ तुम्हारो बिरद छूटिजाइगो अरु तुम अपने बिरदको सँभारतआयेहो काहेते तुम भक्तहितकारी हौ अरु मैं तुम्हार भक्तहौं ( ३३ ) पुनि अंगद कहते हैं कि मेरे गुरु माता पिता तुमहौ इहांभी ब्यंग्यहै कि पिताजो बालि ताको तुमने मारिकै परमपद दीन अरु माता सुग्रीवने लीनि है याते अब मेरे सब प्रकारते मातु पितु आपही हौ हे प्रभु इन चरण कमल को छोंड़िकै कहां जाउँ ( ३४ ) हेनरनाह राजा आपुही बिचार करिकै कहो आपुको छोंड़िकै घरमें मोर कौन काजहै नाथघरमें मोरकछुकाज नहीं है ( ३५ ) अरु हे नाथ में बालक अज्ञानहौं अरु बुद्धि ज्ञानबल करिकैहीनहौंताते मोको हीन जानिकै शरणमें राखिये ( ३६ ) तहां अंगदकहतेहैंकि हेमहाराज जोआपुके घरमें नीचटहल होइहि सोमैंसम्पूर्ण करब

तजिपदजलजाता ३४ तुमहिंबिचारिकहोनरनाहा प्रभुतजिभवनकाजममकाहा ३५ बालकज्ञानबुद्धिबलहीना राखहुशरणजानि जनदीना ३६ नीचटहलगृहकैसबकरिहौं पदपंकजबिलोकिभवतरिहौं ३७ असकहिचरणपरेउप्रभुपाहीं अबजनिनाथकहहुघरजाहीं ३८ दो०॥ अंगदबचनबिनीतसुनि रघुपतिकरुणासीव प्रभुउठायउरलायउ सजलनयनराजीव ३९ निजउरमालबसनमणिबालितनयपहिराइ बिदाकीनभगवानतब बहुप्रकारसमुझाइ ४० चौ०॥ भरतअनुजसौमित्रसमेता पठवनचलेभक्तकृत

अरु आपके पदपंकज बिलोकिकै संसारको तरिजैहौं तहां श्रीरघुनाथजीके घर में तौ नीच टहल हई नहीं है इहां अंगदने क्यों कहाहै तहां यह अर्थ होतहै कि मैं नीच बुद्धीहौं सो सब टहल करौंगो अरु यह कहा कि पद पंकज बिलोकि भवतरिहौं त्यहिको यह अर्थ है भवकूप जो है मोर गृह अरु भवन जो शरीराभिमान त्यहिते तरिजाउँगो नाम छूटि जाउँगो यह अर्थ हमने काहेते किया कि जहां श्रीरामचन्द्र विद्यमान तहां भव तरिबेकर प्रयोजन नहीं है ( ३७ ) तब अंगद दीनबचन अनेक व्यंग्य सामर्थ सामर्थ करिकै पाहि पाहि कहिकै रघुनाथजी के चरणन में परतेभये हे नाथ अब जनि गृहमें जाइबेको कहौ ( ३८ ) दोहार्थ॥ तब अंगद के बचन अतिविनीत सुनिकै करुणाके सीवकही मर्याद

श्रीरामचन्द्र अंगद को उठाइकै उरमें लगावतेभये अरु श्रीरामचन्द्रके कमलनयनमें जलभरिआयो ( ३९ ) तब जो राज्याभिषेक विषे श्रीरामचन्द्रने भूषण बसन पहिरेउरहै सोई अंगदको पहिरावते भये काहेते कि अंगदको बिदाकीनचाहते हैं तहां राज्याभिषेक बसन भूषण पहिराइकै अपनी सारूप्य मुक्ति विद्यमान दीनहै अरु यहिमें यह अभिप्राय है कि अपने सामान्यऐश्वर्यकी सम्पूर्णटहल दीनहै यह सब दैकै अनंतर अपने कंठकीमाला पहिरायकै बहुप्रकारते समुझाइकै श्रीरामचन्द्रने बिदाकीन ( ४० ) तब रामकी आज्ञाते भरतजी लक्ष्मण शत्रुघ्न ते सब कपिनके पहुंचाउबेको चले कैसे हैं तीनिउभाई सर्ब जीवनके आचार्यरूप हैं ताते सबभक्तनकेवाह्यांतरके चैतन्यकर्त्ता हैं ताते भक्तकृत चेता कहाहै ( ४१ ) तहां अंगदके हृदयविषे थोरा प्रेमभाव नाहीं है बहुतहै काहेते पुनि कही बारबार श्रीरामचन्द्रको सर्बरस चितवतेहैं ( ४२ ) तहां अंगदजी बारबार प्रणाम करते हैं अरु मनमें यहहोतहै कि श्रीरामचन्द्र मोको कहैं कि रहिजाहु ( ४३ ) तहां अंगदजी यह समुझिकै कि श्रीरामचन्द्रकै बिलोकनि चलनि

**चेता ४१ अंगदहृदयप्रेमनहिंथोरा फिरिफिरिचितवरामकीओरा ४२ बारबारकरिदंडप्रणामा मनअसरहनकहहिम्वहिंरामा ४३ रामबिलोकनिबोलनिचलनी सुमिरिसुमिरिशोचतहँसिमिलनी ४४ प्रभुरुखदेखिबिनयबहुभाषी चलेहृदयपदपंकजराषी ४५ अतिआदरसबकपिपहुंचाये भाइनसहितभरतफिरिआये ४६ तबसुग्रीवचरणगहिनाना भाँतिबिनयकीन्हीहनुमाना ४७ दिन**

कही रहस्य अरु श्रीरामचन्द्रकै मिलनि अरु हसनि मुसकानि यहिसबको सुमिरत हैं कि यह मैं फिरिकब देखिहौं यहसुमिरि सुमिरि बार बार शोचकरते हैं ( ४४ ) अब जब अंगदजू प्रभुनकेर रुष अपने बिदाहोबेको देखा तब बहुत बिनय बचन कहिकै हृदयविषे पदपंकज राखिकै चलतेभये ( ४५ ) तब अति आदरते सब कपिनको पहुंचाइकै भाइन समेत भरतजू श्रीरामचन्द्रके समीप आवतेभये ( ४६ ) तब हनुमान् जी सुग्रीवके चरणगहिकै नाना भांतिकी बिनय करतेभये ( ४७ ) पुनि हनुमान्‌जी बोले हेराजा सुग्रीवजी दिनेश श्रीरघुनाथजी के पदपंकज सेवन करिकै हे देव फिरि आपके चरणदेखौंगो इहां हनुमान्‌ने कहा दिनदशमें तुम्हारे चरण फिरिदेखौंगो अरु रघुनाथजी को छोड़िकै अब जाइँगे नहीं तहां यहबचन क्यों कहा तहां यहिबातमें बिंग्यार्थ है कि श्रीरामचन्द्रने मोको आपनकीन है तहां जो कदाचित् मेरी अभाग्यते यह मेरे दिनदशा फिरिजाहिं श्रीरघुनाथजी मोको त्यागकरहिं तौ फेरि आपुकेचरण देखौंगो किंतु दिनदश कहना यह लोकब्यवहार वाणी है बड़ेनको समान है ( ४८ ) तब हनुमान्‌के बचनसुनिकै उक्तबाणीको अभिप्राय जानिकै सुग्रीवबोले हे पवनकुमार तुमपुण्यके पुञ्जहौ कृपाके आगारकही स्थान श्रीरामचन्द्र तिनकीसेवा सदा करहुजाइ ( ४९ ) ऐसे अनुरागते कहिकै सुग्रीव सब कपिन संयुक्त चलतेभये तब अंगदने कहा हे हनुमन्त ( ५० ) दोहार्थ॥ श्रीरामचन्द्र करुणानिधानसे बारबार दण्डवत् कहबकरब तुमसे करजोरिकै कहतहौं अरु हे हनुमन्त मोरिसुरति श्रीरघुनाथजीसे बारबार नित्यकरावत रहब ( ५१ ) असकहिकै अंगदबिदाभये तब हनुमान् फिरिआयकै अंगदकैप्रीति श्रीरामचन्द्रसे कहतभये सो सुनिकै भगवान् मग्नहोतभये ( ५२ ) हे भरद्वाज श्रीरामचन्द्रकेर स्वभाव केहूके जानिबेयोग्य नहीं है काहेते कि अंगदके मनकर्म बचनते दीनह्वैकै रहबेकी इच्छारही है अरु सबशास्त्र कहते हैं कि श्रीरघुनाथजी भक्तबत्सल हैं अरु शरणागत पालक हैं ऐसे विशेष हैं अरु अंगदको बिदाकीन तहां इतना कछु समुझिपरत है कि श्रीरामचन्द्रजी कुलिशहुते चाहिकरिकै कठोरहैं अरु कोमल कुसुमहुते अधिक हैं चाहिकरिकै तहां ऐसोचित्त श्रीरामचन्द्र

**दशकरिरघुपतिपदसेवा पुनितवचरणदेखिहौंदेवा ४८ पुण्यपुंजतुमपवनकुमारा सेवहुजाइकृपालुअगारा ४९ असकहिकपिसबचलेतुरन्ता अंगदकहैसुनहुहनुमन्ता ५० दो०॥ कहेउदंडवतप्रभुसन तुम्हैंकहौंकरजोरि बारबाररघुनायकहिसुरतिकरायहुमोरि ५१ असकहिचलेउबालिसुत फिरिआयेहनुमन्त तासुप्रीतिप्रभुसनकही मगनभयेभगवन्त ५२ कुलिशहुचाहिकठोरअति कोमलकुसुमहुचाहि चितखगेशअसरामकर समुझिपरैकहुकाहि ५३ चौ०॥ पुनिकृपालुलियेबोलिनिषादा दीने-**

केर हे गरुड़ कहु क्यहिको समुझिपरै किन्तु जे श्रीरामचन्द्र के केवलकृपापात्र हैं तिन काहूकाहूको श्रीरामचन्द्रकेर स्वभाव जानिपरत है काहेते कठोरता कुलिश में चाही अरु कोमलता कुसुम में चाही श्रीरामचन्द्र तौ कठोरता कोमलता दोऊते परेहैं अरु दया नीतिके निधान हैं जो कोई कहै कि ऐसे तौ श्रीरामचन्द्र हैं अरु अंगदके बिदाकेहेतु इतनी कठोरता काहेते किहिनि तहां श्रीरामचन्द्र भक्तबत्सल हैं ताते अंगदके बचन के अर्थ में अंगदको बिदाकीन है काहेते अंगदने कहा है कि मरतीबार बालि तुम्हारे कोंछे घालिगयो है नाम तुमको सौंपिगयो है तहां जो कोई अन्तकालके समयमें अपने बालकको बड़ेको सौंपत है तौ अपने घरकी विभूतिकै मालकीके हेतु ताते श्रीरघुनाथजी अंगदको बिदाकीन है अरु अङ्गदने कहा कि पदपंकज बिलोकि भवतरिहौं ताते श्रीरघुनाथजी अपनो राज्याभिषेकके निज पट भूषण दीन है कि तुम जहांरहौ तहां हमारे हौ अरु सारूप्यमुक्ति दीनहै अरु अपने राज्यको रक्षककीन है अरु अपनी प्रकृति विभूतिते निज पट भूषणदैकै अभयकीन है ताते श्रीरामचन्द्र कैसेहैं कुसुमहुंते अधिक कोमल हैं अरु कठोरता केवल बज्रमें है किन्तुकठोरता अरु कोमलताके श्रीरामचन्द्र महाराज धनीहैं अरु बज्र इत्यादिकमें जो कठोरता है अरु कुसुम इत्यादिकमें जो कोमलताहै सो सबश्रीरामचन्द्रके भण्डारहीते इनको मिलीहै काहेते कठोरता अरु कोमलता सब श्रीरामचन्द्रकी विभूति है ( ५३ ) पुनि श्रीरामचन्द्र निषादको बोलावतेभये अपनी प्रसादी भूषण बसन देतेभये ( ५४ ) हेसखे अब भवनको जाहुहमार सुमिरण करतरह्यउ हमारे सम्बन्ध धर्म मनक्रमबचनते अनुसरत रह्यउ ( ५५ ) हे सखे तुमहमकोभरतभ्राताके समानप्रियहौं ताते श्री

**भूषणबसनप्रसादा ५४ जाहुभवनममसुमिरणकरेहू मनक्रमबचनधर्मअनुसरेहू ५५ तुमममसखाभरतसमभ्राता सदारहेउपुरआवतजाता ५६ बचनसुनतउपजासुखभारी परेउचरणभरिलोचनबारी ५७ चरणनलिनउरधरिगृहआवा प्रभुसुभावपरिजनहिँ सुनावा ५८ रघुपतिचरितदेखिपुरबासी पुनिपुनिकहहिँधन्यसुखरासी ५९ रामराज्यबैठेत्रैलोका हर्षितभयेगयेसबशोका ६० बैरनकरकाहूसनकोई रामप्रतापविषमताखोई ६१ दो०॥ बर्णाश्रमनिजनिजधरम निरतवेदपथलोग चलहिँसदापावहिँसुखहि नहिँभयशोकनरोग ६२॥** * * * *

अयोध्याकोबारबार आवतजात रह्यहु ( ५६ ) तब श्रीरामचन्द्रके बचन सुनतसंते निषादको अतिआनन्दभयो तबनेत्रनमें जलभरि आयो श्रीरघुनाथजीकेचरणमें परते भये ( ५७ ) हे भरद्वाज श्रीरामचन्द्रके चरणकमल हृदयमें धरिकै भवनको जातभयोतहां श्रीरामचन्द्र केरसुभाव प्रेम संयुक्त सम्पूर्ण अपने परिजनन को सुनावत भयो ( ५८ ) श्रीरामचन्द्रकेर अद्भुतचरित अवधबासी देखि देखि सुनि सुनि पुनि पुनि कहते हैं श्रीरामचन्द्र सुखकेरासि धन्य हैं ( ५९ ) हे पार्वती श्रीरामचन्द्र जबते राज्यपर बैठेतबते त्रैलोक्यके जीव चराचर सम्पूर्ण परमसुखको प्राप्तभये सम्पूर्णशोक जातरहे ( ६० ) तहां कोई रामचन्द्रके राज्यमें काहूते बैरनाहीं करते हैं सब निर्भय ह्वैगये श्री रामचन्द्र के प्रतापने सम्पूर्ण विषमता जीवन की मिटाइ दीन्ही है ( ६१ ) दोहार्थ ॥ तहां चारिउ बर्ण अरु चारिउ आश्रम अपने अपने धर्म वेद मार्गकी रीतिपर चलतेहैं तिनको भयशोक सपनेहुँ विषे नाहींहै बर्णाश्रम कर्म धर्म इत्यादिक चरण ब्राह्मण क्षत्री वैश्यशूद्र ब्राह्मणनके कर्म धर्म समदृष्टि किन्तु समकही चित्त बुद्धि मन अहंकार इनकी वृत्ति कामना विषेनचलै सोसमकही ब्राह्मणके एकगुणपुनि दम पांच ज्ञानइन्द्रीपांचकर्मइन्द्री तिनके विषयको रोंकिदेना पुनि तप करना पुनि शौच त्रिकाल स्नानादिक पुनि शान्ति निन्दा स्तुतिमें सम पुनिआर्यव कहे करुणा दया पूज्यमान पुनि ज्ञान सारासारको जानना अपने स्वरूप को लक्ष करना पुनि विज्ञान चराचर में ब्रह्मभाव करना पुनिअस्तिमान आशीष शापकी सामर्थ्य येतेनव ब्राह्मण में स्वाभाविकै चाहिये पुनिक्षत्रीके कर्म खड्गदान तपमें शूरतेजसी सबकोईडरै धैर्यमानसबप्रकारते सावधान दक्षकहे शास्त्र वेत्ता शास्त्रके विधिते नीति करनायुद्धमें अचल वेद विधिते दानकरिकै ईश्वरार्पण येषट् क्षत्रीके स्वाभाविकै धर्महैं वैश्यके धर्म कृषी बाणिज्य गऊको सेवन शूद्र तीनिहूँ बर्णकी सेवा करै प्रमाणश्रीभगवद्गीतायांश्लोक तीनि॥ शमोदमस्तपःशौचंक्षान्तिरार्जवमेव च॥ ज्ञानंविज्ञानमास्तिक्यंब्रह्मकर्मस्वभावजं १ शौर्यंतेजोधृतिर्दाक्ष्यंयुद्धेचाप्यपलायनं॥

दानमीश्वरभावश्चक्षात्रकर्मस्वभावजं २ कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्मस्वभावजं॥ परिचर्यात्मकंकर्मशूद्रस्यापिस्वभावजं ३ पुनि आश्रम के कर्म धर्म ब्रह्मचर्यविद्याध्ययन स्वहस्त भोजन गुरुआज्ञाकरना गृहस्थको कर्म जोधनउत्पन्नकरै सोकोई यत्नसे तामें अठारहभागकरै एकभाग तुरन्तपुण्यकरिदेइ अरु सत्रहभागमें गृहस्थीकरै अतिथि सेवन कुटुम्ब सेवन अरु पितृऋण तर्पण श्राद्ध करै देवऋण यज्ञकरै ऋषिऋण तीर्थ ब्रतदान इनतीनिऋणते तबछूटै अरु नित्य पञ्चबलिबैश्वकरै इन्द्र बरुण कुवेर धर्मराज अग्नि अरु पंच देवताकी पूजनकरै विष्णु शिवदेवी गणेशसूर्य पूजिकै विष्णुते मुक्ति मांगै किन्तु जो गुरु इष्टबतावै सोई पूजनकरै पुनि बानप्रस्थके कर्म धर्म जो ब्रह्मचारी विवाहकरै पुनि बानप्रस्थ लेइ तब बन में जाइकै स्त्रीसंयुक्त तपकरै किन्तु ब्रह्मचर्य ही ते बानप्रस्थ लेइ बन जाइतपकरै पुनि संन्यास कर्म सो दुइ प्रकारको एकवैष्णव एकशैवतेद्वौ दण्ड ग्रहण करिकै दुइरात्री कहूँ नहीं टिकै ग्राममें नहीं जाइ रात्रिको भोजनधातु अरुबाहनको त्याग ब्रह्मनेष्टी ब्रह्मवेत्ता बैराग्यमान बाह्यान्तर इंद्री जीते पुनि संन्यासमें दुइभेद एक दिविदिषा संन्यास जो कहिआये हैं कछुकर्म बेदाज्ञा लिहेहैं अरु एक विद्वत् संन्यास परमहंस दशावर्णाश्रम इत्यादिक धर्म कर्मको त्यागहै (६२) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुपविध्वंसनेउत्तरकांडेश्रीरामराज्याभिषेकवर्णनन्नामसप्तमस्तरंगः ७॥

दोहा॥ अष्टतरंगमलोकत्रयरामराज्यअतिसोछ, सर्बजीवयकरससुखीरामचरणभयमोछ ८ हेगरुड़ श्रीरामचन्द्रके राज्य बिषे तीनिहूँ ताप काहू जीवनको नहीं ब्याप्यो है त्रैतापकवनि है देहिककही अध्यातम देहसम्बन्धी तामें दुइभेद एक ब्रह्मज्वर जूड़ी अनेक रोग देहमें उत्पन्नहोइ अरु मिथ्याबचन इत्यादिक पुनिएकअन्तर कामक्रोधलोभमोह मदमात्सर्य बासना इत्यादिक ताको देहिकतापकही पुनिदैविककही अधिदैवतजोदेवतन करिकै बिघ्नहोइ पालापत्थर अतिवृष्टि अनावृष्टि अरुबज्रपात इत्यादिकताको दैविककही पुनि भौतिककही आधिभूत जीवनकरिकै पीड़ित होइ राजा चोर सर्पसिंह इत्यादि करिकै जो दुःखहोइ ताको भौतिक कहीयेते तीनिउंताप हैं सो श्रीरामचन्द्रके राज्यमें काहूजीवनको नहीं व्याप्त भयो (१) हे भरद्वाज सवनारि नर परस्पर प्रीतिकरते हैं अरु सब अपने बेदकी रीतिकरिकै स्वधर्ममें चलते हैं (२) श्रीरामचन्द्रके राज्य में धर्म के चारिउचरण सत्य शौच तप दान सो सर्वविषे पूरिरहाहै अघ सपनेहुंविषे नहीं रहेउहै (३) तहां श्रीरामचन्द्रकी भक्ति में नीकीप्रकार

**चौ०॥ देहिकदैविकभौतिकतापा रामराजनहिँकाहुहिब्यापा १ सबनरकरहिँपरस्परप्रीती चलहिँसुधर्मनिरतश्रुतिनीती २ चारिउचरणधर्मजगमाहीं पूरिरहासपन्यहु अघनाहीं ३ रामभक्तिरतनरअरुनारी सकलपरमगतिकेअधिकारी ४ अल्पमृत्युनहिंकवनिउंपीरा सबसुन्दरसबबिरुजशरीरा ५ नहिंदरिद्रकोउदुखीनदीना नहिंकोउअबुधनलक्षणहीना ६ सबनिरदम्भधर्मरत**

प्रीति पूर्वक रहतहैं सब नर नारी भक्तिकही नवधाप्रेमापरा श्रवण कीर्तन स्मरण पादसेवन अर्चन बंदन दास्यसख्य आत्मसमर्पण प्रेमापरा ऐसी भक्ति कि हे श्रीरामचन्द्रविषे सबरहत हैं अरु सर्बजीव त्रैलोक्यविषे जेते हैं सब परमपदकी गतिके अधिकारी हैं (४) अरु अल्प मृत्युकाहू जीवकी नहीं है अरु कौनिउं पीड़ा नहीं किसीजीवको है अरु सर्ब जीवनिरुजकही अरोग्यहैं अरु सब अतिसुन्दरहैं यामें यह अभिप्रायहै कि शरीर करिकै सब किशोर अवस्थामें हैं दिननकरिकै थोरेअधिकहैं (५) अरु न कोई दरिद्रीहै न कोई दुखीहै अरु न कोई कवनिउं वस्तुके दीन हैं अरु कोई अबुध नहीं है सब पण्डित हैं अरु लक्षणकरिकै हीन कोऊनहीं है सब सम्पूर्ण सुलक्षणकरिकै संपन्न हैं (६) अरु सब निर्दम्भ हैं धर्मरत धुनी हैं धुनीकही जिनके धर्महिंविषेरत धुनि है अहर्निशि किंतुरतधुनीकही अचल धुरंधर हैं धर्मविषे अरु नर नारि सब छोट बड़ चतुर हैं गुणमानहैं (७) अरु जेते नर नारिहैं ते सब अतिगुणज्ञहैं अरु पंडितहैं अरु सर्व ब्रह्मते बेत्ताहैं अरु सव कृतज्ञकही एकएकके कृतकही करणीको सबजानते हैं अरु कपटकी सयानी किसूमें नहीं है (८) दोहार्थ॥ हे गरुड़ श्रीरामराज्यविषे जेतेजीव चराचर जगत् त्रैलोक्यविषे हैं तिन सबको कालकही भूतभविष्य वर्तमान अरु कर्म सात्विक राजस तामसजेहैं अरु सुभावकही जो वहि पूर्वजन्मके किये कर्म त्यहिकर्मकी सूक्ष्मता जो रहिगई है सो बिना प्रयोजन इन्द्रिनकरिकै वर्तमान होतहै सुभावके द्वार ह्वैकै शरीरमें भोग्यहै ताको

सुभावकही पर आगेको बीर्य नहीं रहत है अरु पूर्वजन्मके कर्म शरीरमें वर्तमान होतेहैं ताको संस्कार अरु तीनिहूंगुणके प्रभाव करिकै क्रमते देवमुनि नर दानव इत्यादिक चराचर सब हैं ऐसेजे काल कर्म सुभावगुण ते सब श्रीरामराज्यमें काहूजीवको नहीं व्याप्तभये हैं तहां काल कर्म सुभावगुणके वश्य ह्वइकरिकै जीवनको जन्म मरण बंधन होतेहैं अरु जे यहिते रहितभये हैं ते त्रैलोक्यमें जीवन मुक्तिभये हैं अरु श्रीरामचन्द्र के राज्यमें ब्रह्मांडभरेके जीवनको

**धुनी नर अरुनारिचतुरसबगुनी ७ सबगुणज्ञसबपण्डितज्ञानी सबकृतज्ञनहिंकपटसयानी ८ दो०॥ रामराजनभगेशसुनुसचराचरजगमाहिं कालकर्मसुभावगुणकृतदुखकाहुहिनाहिं ९ चौ०॥ भूमिसप्तसागरमेखला एकभूपरघुपतिकोशला १० भुवनअनेकरोमंप्रतिजासू यहप्रभुताकछुबहुतनतासू ११ सोमहिमासमुझतप्रभुकेरी यहबरणतहीनताघनेरी १२ सोमहिमाखगेशजिनजानी**

ये चारिउ काल कर्म सुभाव गुण नहीं व्याप्तभये हैं ताते सर्बजीवनमुक्तहैं ताते यह समुझिबे में आवत है कि श्रीरामचन्द्रके राज्यमें जगत में चराचरजीव सब परमपदको प्राप्तिभये हैं जो कोईकहै कि पुनि कहांते जीव जगतमें प्राप्तिभये तहां श्रीरामचन्द्र की बिभूतिविषे अनंतजीव हैं काहूके जानिबेयोग्य नहीं हैं परमेश्वर चाहै एकपलमें कोटिन ब्रह्मांडकी रचनाकरै पालनकरै संहारकरै पर नित्यनबीन करिसकै हे ऐसे सामर्थ्य के चरित्र कौन जानिसकैहै नाम कोई नहीं जानिसकैहै ( ९ ) हे गरुड़सातौदीपकी भूमि जोहै तिनविषे सातौं समुद्र मेखलाकही घेरे हैं तहां दीपनके बर्णन अरु समुद्रनके बर्णन बालकांडमें राजा भानुप्रतापके प्रसंगविषे कहिआये हैं तिनसबके राजा एक श्रीरामचन्द्रहैं ( १० ) तहां हे गरुड़ यह नैमित्य लीलाके प्रकर्णमें अनंतभागहैं एकभागको किंचित्प्रकर्णकहे है ननुभुवनकही अनेकन ब्रह्मांडते श्रीरामचन्द्रकी मायाकेविषे रोमरोममें प्राप्ति हैं तहां यहि प्रभुताकी काबड़ी बात है ( ११ ) सोप्रभुता श्रीरामचन्द्रकै समुझतसंते यहबर्णत बड़ीहीनता होती है ( १२ ) हे खगेश जिनब्रह्मबेत्तन श्रीरामचन्द्रकी महिमा जानी है तेऊ श्रीरामचन्द्रके येही चरित्रमें रतिमानते हैं ( १३ ) काहेते कि सो महिमा जिन जानीहै ते परलोकके साधन जेते करते हैं तहां श्रीराम एक कल्प तरु हैं परलोकके प्राप्तिकी बासना सो फलहै अरु सो ऐश्वर्य्य महिमा श्रीरामचन्द्रकै रसमयफल है अरु पद महिमा जो दशरथ नन्दनकी मरमदिब्यलीला सो स्वादुपुष्टी है यह बात जे मुनि दमशील कही आत्मदर्शी हैं ते कहते हैं ( १४ ) हे पार्वती श्रीरामचन्द्रके राज्यमें जेती सम्पदा सुख है सर्ब जीवनको सो शेष शारदा नहीं कहि सकते हैं ( १५ ) अरु सब उदार हैं इहां उदारकही सब सदा प्रसन्न हैं सर्ब सर्बके दाता हैं अरु सबउपकारीकही श्रीरामतत्व चरित्र एक एकनको उपदेशदेते हैं अरु श्रीरामचन्द्र महाराज को ब्रह्मण्य जानिकै ब्राह्मणके चरणमें सबकी प्रीति है ( १६ ) अरु जेते नरसंज्ञा मनुष्य देवदानव पशु पक्षी कीट इत्यादिक

**फिरियहचरिततिनहुँरतिमानी १३ सोजानेकरफलयहलीला कहहिंमहामुनिबरदमशीला १४ रामराज्यकरसुखसम्पदा बरणिनसकैंफणीशशारदा १५ सबउदारसबपरउपकारी बिप्रचरणसेवकनरनारी १६ एकनारिपतिव्रतसबझारी तेमनबचक्रमपतिहितकारी १७ दो०॥ दण्डयतिनकरभेदजहँ नृत्यकनृत्यसमाजजीतहिँमनहिँमुनियअस रामचन्द्रकेराज १८ चौ०॥ फूलहिँफ**

हैं ते सब श्रीरामचन्द्र के राज्य में एकपत्नी ब्रतहै अरु पत्नी एक पतिब्रतहै मनक्रम बचनते ( १७ ) दोहार्थ॥ हे भरद्वाज चारिराजनीति साम दाम दण्ड बिभेद ये चारिउ श्रीरामचन्द्रके राज्यमें कैसे बर्तमानहैं नाममात्र बर्तमान हैं कैसे जानिये कि अनीति तौ कोई जीव में है नहीं ताते दण्डजो राजनीति है सो कहांरहै संन्यासी के कर्णमें रह्यो अरु भेद कहीकोई यत्नते राजाजेहैं सो अवरेराज के काज कामी किन्तु भ्राता पुत्र इत्यादिकनको फोरिलेना सो भेद राम राज्यमें कोई जीवमें नहींरहाहै पुनिकहां रह्योहै जो समाजनमें नृत्यकार हैं तिनके गानकेभेद तिनके बाजा के भेद अरु नृत्यके भेद तिनके समाजन में रहे हैं पुनि दामकही द्रब्यहाथी घोड़े पैदर रथ आयुध अनेकन करिकै राज पराई राज्य

धन धान्य इत्यादिक जीतिलेइ किन्तु अपनीराज्यमें अपनाते कोई जबरदस्त आयोतौ उसको द्रब्यदैकै अपनी राज्यकी रक्षाकियो किन्तु द्रब्यदैकै पराईराज्यको लैलियो है तहां दामजो राजनीति है तेहिको गुण कोई प्रकारतेकाहूको जीतिलेना सो श्रीरामचन्द्रके राज्यमें सबतौ सबपदार्थते परिपूर्ण है को किसको जीतै है तहां दामजो राजनीति सो कहां रह्योहै तहां योगवैराग्य ज्ञान विज्ञान भक्ति इनदासन करिकै इन्द्रिन संयुक्त अपने मन को जीतते हैं पुनि साम राजनीति सर्बत्र पूर्ण चराचर विषेहै साम कहीसमतो सो सर्बजीवन विषे स्वभाविकै समता ह्वैरहीहै ताते हे गरुड़ साम दाम दण्ड बिभेद श्रीरामचन्द्र के राज्य में यहि प्रकारते रहेहैं ( १८ ) अरुछइउ ऋतु विषे सम्पूर्ण बनस्पती फूले हैं सदापके हैं अरु एक संग विषे गज अरु पंचानन कहीसिंह बिलासकरते हैं तेहिके पांच आननही मुखहैं विशेषतौ यही अर्थ है किन्तु चारिपग एकमुख करिकै पांचहाथी एक हीबार मारत है ताते पंचाननकही किन्तु पांचमुखहैं परमेश्वरकी रचनामें अनेक बहुमुखके हैं ( १९ ) अरु खग मृग इत्यादिक जे हैं जीव जिन

**लहिँसदातरुकानन रहहिँएकसँगगजपंचानन १९ खगमृगसहजबैरबिसराई सबहिंपरसपरप्रीतिबढ़ाई २० कूजहिँखगमृगनानावृंदा अभयचरहिँबनकरहिँअनन्दा २१ शीतलसुरभिपवनबहमन्दा गुंजतअलिलैचलमकरन्दा २२ लताबिटपमांगेमधुचुवहीं मनभावतेधेनुपयश्रवहीं २३ शशिसम्पन्नसदारहधरणी त्रेताभयकृतयुगकैकरणी २४ प्रकटीगिरिनिविविधमणिखानी जगदातमा भूपजगजानी २५ सरितासकलबहहिंबरबारी शीतलअमलस्वादसुखकारी २६ सागरनिजमर्यादारहहीं डारहिंरत्नतटननर**

जीवनमें एक एकते वैररहेहैं तिनसबको बैर सहजही छूटिगयो है श्रीरामचन्द्रके प्रतापते परस्पर सर्बजीव अति प्रीति करते हैं ( २० ) अरु श्रीरामचन्द्रके राज्यविषे अनेक खगमृगजे हैं सो अतिमधुर बोलते हैं अरु विलोकते हैं कल्लोल करते हैं बनविषे मनवांछित बिचरतेहैं अरु भयरहित आनन्द करते हैं ( २१ ) अरु त्रिबिधि बयारि बहती है शीतल मन्द सुरभिकही सुगन्ध अरु भ्रमर जे हैं ते फूलनके मकरन्द लैलै उड़ते हैं ( २२ ) अरु लता बिटप जे हैं ते सबै कोई मांगै तबै मधु जो है सुधा सम रसद्रवते हें अरु मनवांछित धेनु दूध श्रवतीहैं ( २३ ) अरु पृथ्वी विषेशशि जो कृपी है सो सब ऋतुमें सम्पन्न है तहां श्रीरामचन्द्र के राज्य विषे कर्त्तब्य संयुक्तकी होती भई है ( २४ ) अरु पर्बतन विषे मणिनकी खानि प्रकटतभई है काहेते सम्पूर्ण जगत्के आत्मा श्रीरामचन्द्र को राजा जानिकै ( २५ ) तहां सम्पूर्ण नदी बरकही श्रेष्ठनिर्मल शीतल मधुर स्वादकारी अमीइव जलकरिकै बहतीहैं ( २६ ) अरु सातौसमुद्र अपनी मर्यादाविषे रहतेहैं कहूं बढ़िकै कोई देश नहीं बोरिसकैं अरुरत्न जेहैं किनारेनपरडारत हैं मानहुं मनुष्यनको देतेहैं अरु ज्यहिकी इच्छा आवती है सोनरलेते हैं ( २७ ) अरु तड़ागनविषेकमल फूलिरहेहैं अतिशय प्रसन्नता संयुक्त दशौदिशा प्रकाशमान बिराजरही हैं ( २८ ) दोहार्थ॥अरु बिधु जोचन्द्रमा है सो मयूषकही किरणि अमृतमय त्यहिकरिकै पृथ्वीको पूर्णकिये रहे हैं अरु जितनै जीवनको काज है तितनै रबितपते हैं अरु बारिद जो मेघ हैं सो श्रीरामचन्द्रके राज्यविषे मांगे जल देते हैं हे गरुड़ ऐसे मंगलमय त्रैलोक्यविषेह्वै रहोहै ( २९ ) इतिश्रीरामचरित्रमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेउत्तरकांडेश्रीरामराजत्रैगुण्यतीतलक्षण बर्णनन्नाम अष्टमस्तरंगः ८॥

दो०॥ नवतरंगमहँजानियेरामयज्ञश्रुतिरीति॥ राजकाजसेवकअनुजरामचरणअतिप्रीति ( ९ ) हे भरद्वाज श्रीरामचन्द्रने राज्यपर बैठिकै

**लहहीं २७ सरसिजसंकुलसकलतड़ागा अतिप्रसन्नदशदिशाबिभागा २८ दो०॥ बिधुमहिपूरमयूषननरबितपज्यतनइकाज माँगे बारिददेहिंजलरामचन्द्रकेराज २९॥** * * * * * *

**चौ०॥ कोटिनबाजिमेधप्रभुकीन्हे दानअनेकद्विजनकहँदीन्हे १ श्रुतिपथपालकधर्मधुरंधर गुणातीतअरुभोगपुरंदर २ पतिअनुकूलसदारहसीता शोभाखानिसुशीलबिनीता ३ जानतिकृपासिंधुप्रभुताई सेवतचरणकमलमनलाई ४ यद्यपिगृहसेवकसे**

कोटिन अश्वमेध यज्ञकीनहै अरु द्विज जे हैं ब्राह्मण तिनको अनेकदानदीन्हे हैं अरु जो कोई कहै कि बर्षदिनमें एक अश्वमेधयज्ञ होइ है पर बड़ेसामर्थ राजाते अरु श्रीरामचन्द्र तौग्यारह हजारबर्ष राज्यकीन अश्वमेधयज्ञ कैसे कीन है यह संदेहहै तहां एक अश्वमेधविषे जो पदार्थ खर्च होतभयोहै सो एकएक अश्वमेधके पदार्थ कोटिनबिधि बिधानते ब्राह्मणनको देतेभये हैं ताते कोटि बाजिमेध कहाहै किंतु श्रीरामचन्द्र सातद्वीप के राजा जे छोटे बड़े हैं तिनको आज्ञादीन है अश्वमेध करिबेको ते सबग्यारह हजारबर्षताईं यज्ञ करते रहेहैं किंतु श्रीरामचन्द्र परमेश्वरहैं पलकमें कोटिन अश्वमेध करिसकते हैं ( १ ) श्रीरामचन्द्र वेदके पथके पालनकर्त्ता हैं अरु धर्मधुरंधर हैं अरु श्रीरामचन्द्र गुणातीतहैं अरु कोटिन पुरंदरते सरिस भोगकर्त्ता हैं ( २ ) अरु श्रीरामचन्द्रके अनुकूल श्रीजानकीजी रहती हैं कैसी हैं श्रीजानकीजी शोभा शील बिनीत कही प्रवीणताकी खानि हैं ( ३ ) अरु श्रीरामचन्द्रको कृपा प्रभुता को नीकीप्रकारजानती हैं अरु चरणसेवन मनक्रम बचनते करती हैं ( ४ ) यद्यपि गृह विषे सेवक सेवकिनी अनेकहैं कैसी हैं सर्ब सेवा की बिधिमें अतिचतुर हैं ( ५ ) तदपि तहां श्रीजानकीजी अपने करन तेसंपूर्ण अपने गृहकी परिचर्य्या कही टहल करती हैं श्रीरामचन्द्रकी आज्ञाके अनुसार सबकरती हैं ( ६ ) ज्यहिप्रकार श्रीरामचन्द्र सुखमानतेहैं सोई सेवा बिधि श्री जानकी जी जानती हैं और जानिबे योग्य नहीं हैं तहां यह अभिप्राय है कि अपने इहां कितनौ सेवक सेवकिनी होहिं अरु कितनौ ऐश्वर्य होइ तौ भी शालिग्रामकी कैंकर्य अपने हाथते करैं तौ यहजीव श्रीरामचन्द्रको प्राप्तिहोइ है ( ७ ) कौशल्यादिक जो सासुहैं तिनकी सेवाकरती हैं अपने ऐश्वर्य को मानमद त्यागिकै ( ८ ) हे गरुड़ कैसी हैं श्रीजानकीजिनके चरणारबिंदोंको अहर्निशि उमारमा ब्रह्माणी सहित पतिन बंदती

**वकिनी बिपुलसकलसेवाबिधिगुनी ५ निजकरगृहपरिचर्याकरहीं रामचन्द्रआयसुअनुसरहीं ६ जेहिबिधिकृपासिंधुसुखमानहिं सोइकरश्रीसेवाबिधिजानहिं ७ कौशल्यादिसासुगृहमाहीं सेवहिंसबहिंमानमदनाहीं ८ उमारमाब्रह्माणिबंदिता जगदंबा संततुमनिंदिता ९ दो०॥ जाकीकृपाकटाक्षसुरचाहतिचितवनिसोइ रामपदारबिंदरतिकरहिंसुभावहिखोइ १० चौ०॥ सेवहिं सानुकूलसबभाई रामचरणरतिअतिअधिकाई ११ प्रभुमुखकमलबिलोकतरहहीं कबहुँकृपालुहमहिंकछुकहहीं १२ रामकरहिंभ्रातनपरप्रीती नानाभाँतिसिखावहिंनीती १३ हर्षितरहहिंनगरकेलोगा करहिंसकलसुरदुर्लभभोगा १४ अहनिशिबिधिहि**

हैं॥ प्रमाणश्रीहनुमत्संहितायांश्लोकएक॥ जयतिजनकजायाः पादपद्मंचशुभ्रंहरिहरविधिबंद्यंसाधकानांसुसेव्यं॥ नखरनिकरकांतंमुद्रिकानूपुराद्यैरहरहहृदिमध्येयोगयोगीशभाव्यं १ पुनि श्रीजानकीजी कैसी हैं अखिलब्रह्माण्डकी महाकारण हैं अरु संततकही निरंतर परमानंद स्वरूपही हैं ( ९ ) दोहार्थ। जिन जानकीजी की कृपाकटाक्षकी चाहना ब्रह्मा शिव इन्द्र बरुण कुबेर इत्यादिक देवता करते हैं बन्दते हैं ते जानकी अपने ऐश्वर्यके स्वभावको छोड़िकै श्रीरामचन्द्रके चरणारबिंदमें रत हैं ( १० ) श्रीरामचन्द्रकै सेवा संपूर्ण सबभाई सानुकूल करते हैं अरु चरणारबिंद में अतिप्रीति है ( ११ ) अरु तीनिउंभाई श्रीरामचन्द्रको कमलमुख बिलोकत रहते हैं अरु यह चाहना करते हैं कि कबहूं कृपालु हमको कछु आज्ञाकरहिं ( १२ ) श्रीरामचन्द्र भ्रातनपर अतिप्रीति करते हैं अरु नानाप्रकारकी नीति सिखावते हैं ( १३ ) अरु संपूर्ण नगरकेलोग अति हर्षित रहते हैं देवतनको जो दुर्लभ भोगहै सो अवधबासी करते हैं काहेते देवता त्रैगुण्य जनित भोगकरते हैं अरु अवधबासी परविभूति परमदिव्य गुणातीत परमानन्द सर्बभोग करते हैं सो देवतनको दुर्लभ है ( १४ ) तेअयोध्याबासी अहर्निशि बिधिते मनावते हैं कि हे ब्रह्मण श्रीरघुनाथजी के चरणारविंद विषे हमारीप्रीति अखण्ड बनीरहै ( १५ ) तहां श्रीजानकीजी अपनी

इच्छाते मानसी दुइपुत्र उत्पन्नकीन है तिनकेनाम लव कुश तिनकेरूप शोभा गुण प्रतापको वेदपुराण प्रशंसा करते हैं ( १६ ) ते द्वौबालक सर्बके बिनयकही स्तुतियोग्य सबप्रकारते प्रवीण अरु जगत् विजयी दिव्यगुण के मन्दिर अरु श्रीरामचन्द्रके प्रतिबिम्बकर अति सुंदर अपनी शोभाकरिकै कामहूंको लजावते हैं इहां मानहुं जो कहाहै सो

मनावतरहहीं श्रीरघुबीरचरणरतिचहहीं १५ दुइसुतसुंदरसीताजाये लवकुशवेदपुराणनगाये १६ द्वौबिजयीबिनयीगुणमंदिर हरिप्रतिबिंबमनहुंअतिसुंदर १७ दुईदुइसुतसबभाइनकेरे भयेरूपगुणशीलघनेरे १८ दो०॥ ज्ञानगिरागोतीतअजमायामनगुणपार सोइसच्चिदानन्दघनकरनरचरितउदार १९ प्रातकालसरयूकरिमज्जन बैठहिंसभासंगद्विजसज्जन २० वेदपुराणवशिष्ठबखानहिं सुनहिंरामयद्यपिसबजानहिं २१ अनुजनसंयुतभोजनकरहीं देखिसकलजननीसुखभरहीं २२ भरतशत्रुहनदूनौं

उत्प्रेक्षालंकार वस्तु प्रत्यक्ष जानब ( १७ ) तैसेही दुइदुइपुत्र सबभाइनकेरूप शील गुण बल बुद्धिके समुद्रभये तिनकेनाम भरतके पुत्र पुष्कल तक्षक लक्ष्मणकेपुत्र अंगद चित्रकेतु शत्रुहनकेपुत्र श्रुतिसेन सुबाहु ( १८ ) दोहार्थ॥ हे गरुड़ श्रीरामचन्द्र ज्ञानते बाणीते अरु इंद्रिनते गुणते मनते मायाते अतीतकही परेहैं श्रीरामचन्द्र परब्रह्म परमेश्वर सच्चिदानन्द घनते नरचरित उदार अनंत करते हैं ( १९ ) श्रीरामचन्द्रजी उत्तम तो प्रातः काल नित्य सरयूजीको मज्जन करिकै अरु संपूर्ण नित्यक्रिया करिकै ब्राह्मणनकी अरु साधुनकी समाजसंयुक्त सभाविषे बैठते हैं ( २० ) अरु तहां नित्य बशिष्ठजू वेदपुराणको व्याख्यान करते हैं श्रीरामचन्द्रचारिउभाई श्रवण करते हैं यद्यपि श्रीरामचन्द्र परमेश्वरहैं उनहींको वेदपुराण गावते हैं अरु वेसब सहजही जानते हैं तदपि नाट्यलीला विषेप्रेमते सुनते हैं ( २१ ) अरु अनुज सखनसंयुक्त भोजन करते हैं अरु माता अनेकप्रकार के व्यंजन पवावती हैं देखि देखि अतिहर्षित होती हैं ( २२ ) अरु भरतजू शत्रुहनजू दूनौं भाई हनुमान् संयुक्त उपबनको जाते हैं ( २३ ) तब हनुमान्जीसे द्वौभाई प्रश्नकरते हैं तब हनुमान्जी स्वमतिके अवगाह श्रीरामचरित कहते हैं दूनोंभाई अतिप्रेमते सुनते हैं ( २४ ) तहां श्रीरामचन्द्र के विमलचरित्र सुनिकै अति हर्षको प्राप्तहोते हैं अरुकरजोरिकैं बारबार बिनयकरिकै कहावते हैं ( २५ ) अरु संपूर्ण अयोध्याबासिनके गृहगृहविषे पुराणहोते हैं जिनमें श्रीरामचन्द्रके पावन बिमलचरित्रपूर्ण हैं अरु श्रीमद्रामायण जहांतहां सबपंडित बांचतेहैं गृहगृहप्रति चारिउबर्ण श्रवण करतहैं ( २६ ) अरु परस्पर नरनारि श्रीरामचरित्र गुणगावतेहैं अहर्निशिजातनहीं जानते हैं ( २७ ) दोहार्थ॥हेगरुड़ अवध पुरबासिनकरसुखसम्पदा विशालजोहै सो सहस्र शारदा शेष नहीं कहिसकैहैं काहेते जहां के राजा श्रीरामचन्द्र तहांकी विभूतिको कहिसकैहै ( २८ ) हे

भाई सहितपवनसुतउपबनजाई २३ बूझहिंबैठिरामगुणगाहा कहहनुमंतस्वमतिअवगाहा २४ सुनतबिमलगुणअतिसुखपावहिं बहुरिबहुरिकैबिनयकहावहिं २५ सबकेगृहगृहहोइपुरानारामचरितपावनबिधिनाना २६ नरअरुनारिरामगुणगावहिं करहिदिवसनिशिजातनजानहिं २७ दो०॥अवधपुरीबासिनकरसुखसंपदासमाज सहसशेषनहिंकहिसकहिंजहँनृपरामबिराज २८ चौ०॥ नारदादिसनकादिमुनीशा दर्शनलागिकोशलाधीशा २९ दिनप्रतिसकलअयोध्याआवहिं देखिनगरबिरागबिसरावहिं ३० जातरूपमणिखचितअटारी नानारंगरुचिरगचढारी ३१ पुरचहुँपासकोटअतिसुन्दर रचेकँगूरारंगरंगबर ३२

भरद्वाज नारद सनकादिक शुकदेव बाल्मीकि अगस्त्य इत्यादिक जे मुनीशहैं ते सब श्रीरघुनाथजी के दर्शन हेतु ( २९ ) प्रतिदिन श्रीअयोध्याको आवते हैं पुरीकी शोभा परमानंद बिलास देखिकै बैराग्य बिसारिदेते हैं पुनि श्रीरामचन्द्रके दर्शनकरते हैं श्रीरघुनाथजी तिनको अतिआदर पूर्वक पूजनकरते हैं दिव्यासन पर बैठावते हैं बशिष्ठजू

वेदकरिकै श्रीरामचरित बांचते हैं अरु श्रीमद्रामायण महामुनि बाल्मीकि कृत वांचते हैं ते सबमुनि अतिप्रीति प्रेमते श्रवण करते हैं पुनि श्रीरघुनाथजीके मनके आज्ञानुकूल निजनिज आश्रमको जातेहैं ऐसेही दिनप्रति परमानंद होते हैं आइबे जाइबेको मुनिसामर्थ हैं अरु सबसिद्धि उनके हस्तामलकहै ( ३० ) जातरूप जो सुबर्ण है अरु मणिन करिकै अटारी खचित कही जटित हैं अरु नानारंगकी मणिनते गचढारी हैं ( ३१ ) अरु पुरके चहुंपासविषे कोटबनाहै त्यहिकोटके दशहुंदिशा विषे कंगूरा रंगरंग के रचेहैं ( ३२ ) तहां कोटकंगूरन विषे नवग्रह इत्यादिक नक्षत्रनके चित्र अनीककही अवलीकी अवली बनेहैं मानहुं अमरावती घेरिकै टिकेआइकै किन्तु एकउक्ति लक्षणा करिकै कहते हैं पुरके बाहर दशौं दिशिविषे नवोंखण्डके अरु सातौंद्वीपके राजा श्रीरघुनाथजीके दर्शनहेतु मिलिबेको आये हैं सो पुरबाहर टिके हैं मानहुं संपूर्ण अमरावतीके देवता श्रीरघुनाथजीकी आज्ञाकरिकै आये हैं घेरिकैपुरीमेंटिके हैं ( ३३ ) अरु अंगनाई गली चौहटा इत्यादिक संपूर्णभूमि सीसाकार मणिनकरिकै गचरची है रंगरंग के विलोकिकै मुनिनकै मनराचा कही रचिरहे हैं ( ३४ ) अरु धवल मणिनके धामनपर शृंगबने हैं सो अतिऊंचे मानहुं नभके अंतको चुम्बनकरते हैं अरु तिन शृंगनपर मणिन के कलश अति प्रकाशित शोभित हैं

**नवग्रहनिकरअनीकबनाई मनहुंघेरिअमरावतिआई ३३ महिबहुरंगरुचिरगचकांचा जोबिलोकिमुनिबरमनरांचा ३४ धवलधामऊपरनभचुंबत कलशमनहरबिशशिद्युतिनिन्दत ३५ बहुमणिरचितझरोखाभ्राजहिं गृहगृहप्रतिमणिदीपबिराजहिं ३६ छं०॥ मणिदीपराजहिंभवनभ्राजहिंदेहरीविद्रुमरची मणिखंभभीतिबिरंचिबिरचीकनकमणिमरकतखची ३७ सुंदरमनोहरमंदिरायतअजिरमणिफटिकनरचे प्रतिद्वारद्वारकपाटसुभगबनाइबहुबज्रनखचे ३८ दो०॥ चारुचित्रशालासुगृहगृहप्रतिरचे**

मानहुं रबि शशिकी शोभा द्युति अरु कांतिको निन्दते हैं ( ३५ ) अरुबहु गृहप्रति अनेक झरोखा मणिमय भ्राजते हें मानहुँ मन्दिरनके मंगलमय श्रवण नयन शिखामुख हैं अरु गृहप्रति मणिनके दीपक भ्राजते हैं तहां मंदिरतो सब मणिनमय हैं अरु स्वतः प्रकाश है पर महामणिन के दीपकभाव स्थापन कीन्हे हैं ( ३६ ) छन्दार्थ॥ हे गरुड़ भवननविषेमणिनके दीपक राजते हैं अरु अनेक देहरी बिद्रुमकही मूंगनकी बनी हैं अनेक तरह के सुबर्ण अरु मर्कतमणिन के खंभारचे हैं अरु कंचन अरुस्फटिकमणि की भीति रचित है बिरंचि अपने हाथन रच्यो है ( ३७ ) अरु पुरीके मंदिर सब अतिसुन्दर हैं अरु आयतकही विस्तारित हैं अरु स्फटिकमणिनकी अंगनाई रची है अरु द्वारद्वारप्रति कपाट अतिसुन्दर बज्र जेहैं हीरा त्यहिके बनेहैं ( ३८ ) दोहार्थ॥ अरु चारुकही सुन्दर भिन्नभिन्न चित्रशाला सबही रचना करावते हैं तिनविषे चित्रित रामचरित सातहू काण्डकी लीला विधि विधानते लिखी है जाको देखिकै मुनिन को मन चोराइजात है ( ३९ ) नगरके बाहर अरु गृहगृह प्रति सुमनकी बाटिका सबहिन लगाई है अरु बिविध भांति के यत्न से मालिन बनाइराखे हैं ( ४० ) अरु बहुतजाति के लता बाटिकन विषे बनिरही हैं अरु सर्ब ऋतु में रंग रंगके एकरस फूल फूलिरहे हैं अरु सर्ब ऋतुमें बसन्त हैरह्यो है ( ४१ ) तहां तिन बाटिकनमें मनोहर मधुर मधुर मधुकर गुञ्जार करते हैं अरु एकरस शीतल मन्द सुगन्ध पवन सदा बहती है ( ४२ ) अरु नाना प्रकारके विहङ्ग बालकन जिआये हैं शुकसारव सारस मयूर पारावत इत्यादिक ते अतिमधुर बोलते हैं अरुबहुत उड़ते हैं पुनि बोलते हैं अति शोभाको पावते हें ( ४३ ) अरु मोर हंस सारस पारावत भवननके शृङ्गन कलशनपर नाचते हैं अरु बोलतेहैं अति शोभाको पावते हैं ( ४४ ) ते बिहङ्ग मणिन के भवनन विषे जहां

**बनाइ रामचरितजेनिरखहिंमुनिमनलेहिंचुराइ ३९ चौ०॥ सुमनबाटिकासबहिंलगाई बिबिधभाँतिकरियतनबनाई ४० लताललितबहुजातिसुहाई फूलहिंसदाबसंतकिनाई ४१ गुंजतमधुकरमुखरमनोहर मारुतत्रिबिधसदाबहसुंदर ४२ नानाखगबालकनजिआये बोलतमधुरउड़ातसुहाये ४३**

**मोरहंससारसपारावत भवननपरशोभाअतिपावत ४४ जहँतहँ देखहिंनिजपरछाहीं बहुबिधिकूजहिंनृत्यकराहीं ४५ शुकशारिकापढ़ावहिंबालक कहहुरामरघुपतिजनपालक ४६ राजदुवारसकलबिधिचारू**

तहां अपनी प्रतिछाहीं देखिदेखि बहुप्रकारते नाचते हैं बोलते अति आनन्द करते हैं ( ४५ ) अरु बालक जे हैं ते शुक शारिकनको पढ़ावते हैं हे शुक शारिकहु श्री सीताराम कहहु रघुपति कहहु जनपालक कहहु रघुनन्दन कहहु रघुबीर कहहु भुवनेश्वर कहहु महाराजाधिराज कहहु कोशलेन्द्र कहहु कौशल्यानन्दन कहहु सीतापति कहहु कारुण्यकृपानिधान कहहु भरताग्रज लक्ष्मणाग्रज कहहु श्रीरामायनमः यह कहहु पुनःश्लोक एक अन्यच्च१॥ रामंरामानुजंसातां भरतंभरतानुजं। सुग्रीवंवायुसूनुंचप्रणमामिपुनःपुनः १ हे शुक शारिकहु यह पढ़हु अरु सीतारामाभ्यांनमः यह कहहु इत्यादिक श्रीरघुनाथजीके गुण प्रताप लीला यश कीर्त्ति नामशुक शारिकन को बालक पढ़ावते हैं अहर्निश रामाकार ह्वैरहेहैं ( ४६ ) तहां राजद्वार अति चारु कही सुन्दर विस्तारित अति बनिरह्यो है अरुबीथी चौहट बाजार इत्यादिक सब अति सुन्दर बनिरहे हैं कहिबे योग्य नहीं हैं ( ४७ ) छंदार्थ ॥ अरु बाजार जो है सो अतिरुचिर बर्णन करतनहीं बनैहै काहेते जो बस्तु चाहिये सो बिनादामहीं मिलैहै अरु रमानिवासकही अनेकब्रह्माण्डकी लक्ष्मी त्यहिके पति त्रिपादविभूतिसंयुक्तसदा ऐसे श्रीरामचंद्र जहां नित्यराजा हैं तहां की सम्पदा को कहिसकै है ( ४८ ) तिन बजारन बिषे बजाज सराफ बणिक अनेकन बैठेहैं तिनसबनको कुबेरके सम जानिये अरु सम्पूर्ण पुरके लोग सुखीहैं अरु सब पदार्थते सञ्चरित कही पूर्ण हैं अरु बाल पौगण्ड कुमार किशोर अवस्थामें नर नारि सबहैं अरु दिननके कम अधिक हैं ताते युवा जरठकहीवृद्ध कहिबेमें आवै हैं ( ४९ ) दोहार्थ॥ अरु राजमहल के उत्तर श्री सरयूबहतीहैं अति निर्मल गम्भीर जलहै जहांतहां कमलफूलेहैं भँवर गुञ्जार करत हैं अरु हंसादिक विहङ्ग कूजते हैं अरु सुबर्ण मणिनते मनोहरघाटबँधेहैं तहां पङ्कजो है कीच सो लेशहू नहीं है ( ५० ) अरु घाट जे हैं

**बीथीचौहटरुचिरबजारू ४७ छं०॥बाजाररुचिरनबनैबरणतबस्तुबिनुगथपाइये जहँभूपरमानिवासतहँकीसंपदाकिमिगाइये ४८ बैठेबजाजसराफबणिकअनेकमनहुंकुबेरते सबसुखीसबसंचरितसुंदरनारिनरशिशुजठरते ४९ दो०॥ उत्तरदिशिसरयूबहैनिर्मलजलगंभीर बाँधेघाटमनोहरकल्पपंकनहिंतीर ५० चौ०॥ दूरिफराकरुचिरसोघाटा जहँजलपियहिंबाजिगजठाटा ५१ पनिघटपरममनोहरनाना तहाँनपुरुषकरहिंअस्नाना ५२ राजघाटसबबिधिसुंदरबर मज्जहिंतहाँबर्णचारिउनर ५३ तीरतीरदेवनकेमंदिर चहुँदिशितिनकेउपबनसुंदर ५४ कहुँकहुँसरितातीरउदासी बसहिंज्ञानरतमुनिसंन्यासी ५५ तीरतीरतुलसिकासुहाई वृन्दवृन्द**

अतिरुचिर फराकहैं तहां घोड़े अरु हाथिन के ठाटके ठाट जलपीवते हैं ( ५१ ) अरु पनिघट जे हैं अति मनोहर कुञ्जके कुञ्ज बनेहैं सरयूकी धारा के भीतर ताईं आवरण संयुक्त ऐसे अनेक पनिघट जहां सम्पूर्ण पुरीकीस्त्री स्नान करतीहैं तहां पुरुष नहीं जाय सकते हैं अरु घर घरप्रति अँगनाइन में मणिमय कुंडबने हैं कमलफूले हैं भँवर हंस मधुर बोलते हैं अरु सरयूकीमोरी कुंडनप्रति लगी हैं ( ५२ ) अरु राजघाट जोहै सब प्रकारते अतिसुंदर अरु श्रेष्ठ जहांचारिउबर्ण स्नान करतेहैं ( ५३ ) अरु सरयूके तीरतीर देवतनके मन्दिरबनेहैं अरु तिनके चहुंफेर फूलनके सुन्दर उपवनलगे हैं ( ५४ ) अरु कहूं कहूं सरयूके किनारे मुनिन अरु संन्यासिनकी कुटीबनीहैं तहां मुनिगण संन्यासी बसतेहैं जे ते ज्ञान बैराग्य योगमें रतहैं ( ५५ ) अरु तीरतीर तुलसी वृन्दकेवृन्द मुनिजन लगावतेभये ( ५६ ) अरु पुरकीशोभा कछु बरणी नहींजाइ जै अरु पुरके बाहर परम रुचिराई छाइरही है ( ५७ ) तहां पुरीकीशोभा देखतसंते अखिलकही समूह अघकही पाप भागिजात हैं अरु पुरके बाहर बनकही जामें सबवृक्ष लगेहोहिं पनस तमाल रसाल बड़हर बदरीतरु केदली नारियर सुपारी छोहाराबदाम किसमिसतरु अंगूर अरु सेव शहतूत इत्यादिक अनेकतरु सुन्दर लगे हैं अरु अनेकजाति के फूललगे हैं अरु बिस्तार चहुंफेर हेम

मणिमयचित्र बिचित्र भीतिबनी है तहां चारि चारि मनोहर दरवाजे हैं अरु तिनके बाहर समीपही अनेकप्रकारके तरु फूल मेवा इत्यादिक लगे हैं ताको उपबनकही ऐसेही पुरके चहुंफेर अनेक शोभित हैं अरु तिनके मध्यमें तडाग बावली जहां तहां अनेक बनी हैं अरु मणिन के सोपान बने हैं अरु तिनविषे कमल फूले हैं अरु भंवर गुंजार करते हैं अरु बाटिकनमें

बहुमुनिनलगाई ५६ पुरशोभाकछुबरणिनजाई बाहरनगरपरमरुचिराई ५७ देखतपुरीअखिलअघभागा नवउपबनवापिकातडागा ५८ छं०॥ बापीतड़ागअनेककूपमनोहरायतसोहहीं सोपानसुंदरनीरनिर्मलदेखिसुरमुनिमोहहीं ५९ बहुरंगकंजअनेकखगकूजतमधुरगुंजारहीं आरामरम्यपिकादिखगरवपथिकजातहँकारहीं ६० दो०॥ रमानाथजहँराजासोपुरवरणिनजाइ अणिमादिकसुखसंपदारहींअवधपुरछाइ ६१ चौ०॥ जहँतहँनररघुपतिगुणगावहिं बैठिपरस्परइहैसिखावहिं ६२ भजहुप्रणतप्रतिपालक

मूयर कोकिला इत्यादिक मनोहरबाणी बोलते हैं अरु बाटिकन में मधुरफल खाते हैं अरु बावली तड़ाग में मधुरजल पीवते हैं ( ५८ ) छंदार्थ॥ अरु बापी जोहैं अरु तड़ाग जोहैं अरु कूपजोहैं अनेक अनूप बाटिकन बिषे अरु भिन्नभिन्न अति आयतकही विस्तारपूर्वक बनिरहे हैं अरु सोपान निर्मलनीर जाको देखिकै मुनिनके मन मोहते हैं ( ५९ ) अरु अनेकप्रकार के खग मधुप बोलते हैं गुञ्जारते हैं इहां एकबार बावली अरु तड़ाग बर्णन करिआये हैं अरु पुनि छन्दमें बर्णनकीन तहांपुनरुक्ति न जानब यह सिंहावलोकनपद कहावतहै आरामकही बाटिकाते अति रमणीयकही अति सुन्दर हैं तहां पिकादिक पक्षी बोलते हैं मानहुं पथिकनको बोलायलेते हैं कि आवहु फल खाइलेहु जल पीलेहु ऐसी मधुरबाणी बोलते हैं ( ६० ) दोहार्थ॥ हे गरुड़ रमानाथ कही त्रिपादविभूति परमदिव्य संधिनी संदीपिनी आह्लादिनी अरु एकपाद विभूति गुणमयी तामें विद्याशुद्ध सात्विकमय अरु अविद्या त्रिगुणमय अरु ते सब श्रीराजनकीजी की दिव्यविभूति हैं त्यहि सबके नाथ कही प्रतिपालक ते श्रीरामचन्द्र जहां राजा श्रीराजानकीजी रानी त्यहिपुरीको बर्णन किमि कहिजाइ किसीसे नहीं कहाजाइ अणिमादिक जे अष्टादश सिद्धीहैं अरु पंचसिद्धि औरी हैं ते सब आयोध्या में छाइरही हैं घरघरकीटहल करती हैं अरु नवोनिद्धि इत्यादिक अनेक सुखसम्पदा छाइरह्यो है त्यहि श्रीअयोध्याका वर्णन कोकरिसकै ( ६१ ) अरु जहां तहां सबनर नारि श्रीरघुनाथजीके गुणगावते हैं अरु परस्पर इहै सिखावते हैं ( ६२ ) यह सिखावते हैं कि प्रणतप्रतिपालक श्रीरामचन्द्र तिनको भजहुकैसे हैं श्रीरामचन्द्र शोभाके धाम हैं जो श्रीरामचन्द्रकी शोभाको थिरह्वैकै मनमें बसावहुगे तौ ब्रह्माण्डभरेकीशोभा फीकी परिजाइगी अरु शीलके धाम हैं जहां कोई जीव अनेक अवगुण किहेहोइ अथवा करतहोइ अरु भयकरिकै किंतु कछु स्वार्थकरिकै किंतु कछु प्रीतिकरिकै एकहूबार शरण जाइ तौ ताकोत्याग पुनिकबहूं नहीं होइ निजकरिकै आपन जानतेहैं अरु

रामहिं शोभाशीलरूपगुणधामहिँ ६३ जलजबिलोचनश्यामलगातहिं पलकनयइवसेवकत्रातहिं ६४ धृतशररुचिरचापतूणीरहिं संतकंजवनरविरणधीरहिं ६५ कालकरालब्यालखगराजहिं नमतरामअकाममममताजहिं ६६ लोभमोहमृगयूथकिरातहिं

मनोबांछित दिव्य फलदेते हैं अरु रूपकेधाम हैं रूपकही नखते शिखलौं अंगअंगकी गठनि एकरस सोरूप अखण्ड एकरस नित्य अरु श्यामरूप शृंगारहूकी शृंगारमूर्त्तिसो जो हृदयविषे ल्यावहु तौसंसारके विषयते निर्भयहोहु अरु परमानन्दरसको प्राप्तिहोहुगे अरुपरमदिव्य गुणके धाम हैं सौशील्य भक्तबात्सल्य करुणाउदारदया इत्यादिक अनन्तगुण जो ऐसे श्रीरघुनाथजीके गुण हृदयमें ल्यावोतौ येईगुण तुमको प्राप्तिहोहिंगे ऐसे श्रीरघुनाथजीको भजहु ( ६३ ) अरु कैसे हैं श्रीरामचन्द्र कमलनयन हैं ज्यहिकी दिशि नेक देखते हैं त्यहिकी तीनिहूंताप जातरहती हैं अरु श्यामलगात हैं तमालतरु इव निर्मल जो ऐसीमूर्ति हृदय में आवै तौ बाह्यान्तर इन्द्री परमदिव्यको प्राप्तिहोहिं तिन श्रीरामचन्द्रको

भजहु कैसे हैं सेवक जेहैं तिनको पलक नयनइव त्राताकही सबप्रकारते रक्षकहैं ( ६४ ) अरु धृतकही धारणकिहे हैं धनुषबाणअरु तूणीरकही तरकस पुनि कैसे हैं श्रीरामचन्द्र संतजन जेहैं ते कमलके बनहैं तिनके आनन्ददेबेको रणधीरकही एकरस सूर्य हैं ( ६५ ) फिरि कैसेहैं श्रीरामचन्द्र काल जो महाकराल व्याल है त्यहिके भक्षण करिबेको गरुड़ हैं अरु जो एकहूबेर नमत हैं तिन प्राणिनके ऊपर श्रीरामचन्द्र की अति ममताकही प्रीतिहोती है फिरि कैसे श्रीरामचन्द्र हैं निष्काम ममता करते हैं अरु कछु उनसेचाहते नहीं हैं किन्तु जे नर निष्कामह्वैकै श्रीरामचन्द्र की शरण हैं तिन पर ममता कही अतिप्रीति करते हैं किन्तु जहिकही ममताको नाशकरते हैं ( ६६ ) फिरि कैसे हैं काम क्रोध मद लोभ मोह मद मात्सर्य इत्यादिक मृगनके यूथ हैं तिनके नाशकरिबे को किरात हैं अरु मनसिज जो है कामदेव सो करिकही हाथी है त्यहिके नाशकरिबेको हरिकही सिंह हैं अरु सबजन जेहैं दास तिनके जे वैरीहैं तिनको नाशकरिकै अपने जनको सुखदेतेहैं ( ६७ ) अरु संशय शोक इत्यादिक जेहैं निविड़कही सघन अंधकार त्यहिके नाशकरिबेको श्रीरामचन्द्र तरुण भानुहैं अरु दनुज जे दानव हैं ते सब गहन कही सघन बनहैं तिनके नाशकरिबेको प्रबल पावक हैं ( ६८ ) तहां जनककही जो केवल पिताते उत्पन्नहोय तहांराजानिमि ते उत्पन्न भयेहैं ताते परम्परा नाम है ताते जनककहा जनक

**मनसिजकरिहरिजनसुखदातहिं ६७ संशयशोकनिबिड़तमभानुहिं दनुजगहनबनदहनकृशानुहिं ६८ जनकसुतासमेतरघुबीरहिं कसनभजहुभंजनभवभीरहिं ६९ बहुबासनामशकहिमिराशिहिं सदाएकरसअजअबिनाशिहिं ७० मुनिरंजनभंजनमहिभारहिं तुलसिदासके प्रभुहिंउदारहिं ७१दो०॥ यहिबिधिनगरनारिनरकरहिंरामगुणगान सानुकूलसबपररहहिंसंततकृपानिधान ७२**

सुता समेत रघुबीर भयभीर भंजनहार तिनको कस न भजहु नाम भजहु ( ६९ ) पुनि कैसेहैं श्रीरामचन्द्र अनेक बासना तो मशा डंसादिक हैं तिनके नाश करिबे को हिमकही पालाकी राशि हैं पुनि कैसे हैं श्रीरामचन्द्र नित्य एकरस हैं अजकही अजन्महैं गर्भ में नहीं आवतेहैं अरु अविनाशी हैं तिनको भजहु ( ७० ) पुनि कैसे हैं मुनिनके रञ्जन कही आनन्दकर्ताहैं अरु पृथ्वीके भारके हरैयाहैं तहांगोसाई तजुलसीदासकहते हैं किमेरेप्रभु श्रीरामचन्द्र अतिउदार तिनको सर्बजीव मिलिभजहु ( ७१ ) दोहार्थ॥ हे गरुड़ यहि बिधिसे पुरके नरनारि परस्पर श्रीरामचन्द्र कर गानकरते हैं अरु श्रीरामचन्द्र सानुकूल सबपर रहते हैं सन्तत कही निरन्तर जामें अन्तर नपरै ( ७२ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिक लुषविध्वंसने उत्तरकाण्डेरामराज्यप्रतापगुणपरमदिव्यतरवर्णननामनवमस्तरङ्गः ९॥ :: :: :: :: :: ::

दोहा। दशतरङ्गमहँजानिये रामप्रतापदिनेश॥ रामचरणज्यहिउरबसैं कहेतेहोयविशेष १०॥ हेगरुड़ जब श्रीरामचन्द्र राज्यपरबैठे तबते श्रीरामचन्द्रका प्रताप प्रबल सूर्यरूप एकरस उदयभयो है ( १ ) तहां सूर्यवत् प्रताप त्यहिको प्रकाश शुद्ध निर्मल गुणातीत त्रैलोक्यमें पूरि रह्यो है इहां न्यूनाधिक्य रूपकालंकार जानब तहां बहुतनको सुखभयो है अरु बहुतनको शोकभयो है ( २ ) तहां जिनको शोक भयो है तिनको बखानिकै कहतहौं तहां सूर्यके प्रकाशसे रात्रिको नाशहोत है अरु श्रीरामचन्द्र पताप सूर्यते त्रैलोक्य जीवन की अविद्यारूप निशा प्रथमही नाशहोती भईहै ( ३ ) तहां श्रीरामप्रताप सूर्यके उदयते अघजे हैं सोई उलूकहैं सो जहां तहां लुकाइ रहे हैं अरु काम क्रोध कैरवकही कुमुदिनी हैं ते सम्पुटित होतभये हैं ( ४ ) अरु विविध कही त्रैगुण्य जनित जेकर्म हैं ते अरु तीनि गुण अरु कालभूत भविष्य वर्त्तमान भूतकहीं जो पाछे

**चौ०॥ जबतेरामप्रतापदिनेशा उदितभयो अतिप्रबलखगेशा १ पूरिप्रकाशरहेउत्रैलोका बहुतनसुखबहुतनमनशोका २ जिनहिं शोकतेकहहुंबखानी प्रथमअविद्यानिशासिरानी ३ अघउलूकजहँतहांलुकाने कामक्रोधकैरवसकुचाने ४ विविधकर्मगुणकालस्वभाऊ**

**येचकोरसुखलहहिंनकाऊ ५ मत्सरमानमोहमदचोरा इनकनिबाहुनकवनिउओरा ६ धर्मतड़ागज्ञानबिज्ञाना ये पंकजबिकसैंबिधिनाना ७ सुखसंतोषबिरागबिबेका बिगतशोकयेकोकअनेका ८ दो०॥ यह प्रतापरबिजासुउर जबप्रभुकरैं**

ह्वै आयोहै अरु भविष्य कही जो आगे होनहारहै वर्त्तमान कही जो होतहै सो अरु स्वभाउ कही जो अनेक जन्मकर संचित कर्मन के शेष कछु रहिगयो है शरीरमें सो भोग्य करते हैं अनइच्छित स्वभाउके द्वार ह्वैकैते सब चकोर हैं रामप्रताम सूर्य के उदयभये ते इनको कतहूँ नहीं सुख है जरेजाते हैं ( ५ ) अरु मत्सर मान मोह मद मात्सर्य कही जो परावाऐश्वर्य विभूति यश न देखिसकै अरु मान कही अभिमान अपना को सबते बड़ामानै अरु मोहकही सुत वित दारा नात कुटुम्ब देह इत्यादिक में अपनपौ मानिकै प्रीति करना मद कही अष्ट जातिमद कुलमद रूपमद युवामद धनमद विद्यामद ध्यानमद ज्ञानमद येते सब चोर हैं इनसबकर राम प्रताप सूर्यके उयेते निर्बाह कौनिउँ ओर नहीं है सब चोर ह्वै गये हैं ( ६ ) अरु श्रीरामचन्द्रको प्रताप सूर्यवत् उदय होतसन्ते परमधर्मरूप तड़ाग त्यहिविषे ज्ञान विज्ञानरूप कमल फूलिरहेहैं ( ७ ) अरु परमसुख सन्तोष अरु वैराग्य विवेक ये सब कोक कही चक चकई हैं ते शोकरहित अति आनन्दको प्राप्ति भये हैं ( ८ ) दोहार्थ॥ यह श्रीरामचन्द्रको प्रताप रविरूप अद्यापि रामकृपाते ज्यहिके हृदयमें प्रकाश होइ तौ जो जो पाछेकहे हैं धर्म तड़ाग इत्यादिक तिनहूँकी तौ वृद्धिहोइ अरु जे प्रथम कहे अविद्या निशाके चौर इत्यादिक ते सब नाशको प्राप्तिहोत भये हैं तहां श्रीरामचन्द्र के राज्य विषे सर्बजीवनके रात्रीरूप अविद्याके व्यवहार ते सम्पूर्ण नाशभये हैं अरु श्री रामप्रताप एकरस दिनरूप तहां विद्याके व्यवहार की वृद्धि होतिभई है ताते ब्रह्माण्ड भरेके चराचरजीव शुद्ध श्री रामचन्द्र के राज्यविषे सुलक्षण को प्राप्ति भये हैं हेगरुड़ श्रीरामचन्द्रके राज्य में सर्बजीवनको श्रीरामधामके अधिकारी विशेषजानब ( ९ )

इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने उत्तरकाण्डेश्रीरामराज्यप्रतापनिर्मलएकरस सूर्यवत् अखण्डवर्णनन्नामदशमस्तरङ्गः१०॥

दोहा॥ दशअरुएकतरङ्गमें लक्षणगुणगणसन्त॥ रामचरण श्रीमुखकही सुनीअनुजहनुमन्त ११॥ हेपार्वती भ्रातन अरु हनुमन्त संयुक्त एक बार श्रीरामचन्द्र जी एक

**प्रकाश पछिलेवाटहिप्रथमजे कहेते पावहिंनाश १॥** * * * * *

**चौ०॥ भ्रातनसहितरामयकबारा संगपरमप्रियपवनकुमारा १ सुंदरउपवनदेखनगये सबतरुकुसुमितपल्लवनये २ जानिसमय सनकादिकआये तेजपुंजगुणशीलसुहाये ३ ब्रह्मानंदसदालयलीना देखतबालकबहुकालीना ४ रूपधरेजनुचारिउवेदा समदर्शी**

सुन्दर उपबन देखनगयेहैं तहांउपबनके संपूर्णतरु नवीन पल्लव फूल फल करिकै अतिशोभित हैं छहूँ ऋतुमें एकरस हैं तहांउपबन बाटिका फुलवारी बाग एकही जानब भावकरिकै भिन्नभिन्नकहते हैं ( २ ) तहां सनकादिक श्रीरामचन्द्र को यहिसमय में एकान्त बाटिका में दिव्य दृष्टिते देखिकै अरु यह जानिकै कि यहि समयमें श्रीरामचन्द्र के दर्शन अच्छी प्रकार होहिंगे अरु भक्ति बरदान लेहिंगे यह समुझिकै अति आनन्द पूर्वक श्रीरामचन्द्रके समीप आवते भये कैसे हैं सनकादिक तेजके पुञ्ज मानहुँ बारहो कला सूर्य तीनि तीनि कलाकी एकएक मूर्त्ति चारिरूप धरिकै श्रीरामचन्द्र के दर्शन को आवते भये हैं सनकादिक कैसेहैं दिव्यगुण शीलकरिकै अति शोभित हैं ( ३ ) पुनि कैसे हैं ब्रह्मानन्द विषे जिनकै लयलीन ह्वैरही है लयकही तदात्मक ब्रह्माकारवृत्ति एकरस अखण्ड है अरु देखत तौ बालक हैं पांचवर्ष की अवस्था जिनकी सदा अरु बहुकालके हैं जानेनहीं जातहैं ( ४ ) अरु जनु चारिउवेदके वेदान्तसार चारिरूप धरिकै श्रीरामचन्द्रकी स्तुति करिबेको आये हैं कैसेहैं चारिउ मुनि समदर्शी हैं पृथ्वी जल अग्नि पवन नभ तीनिउ गुणइत्यादिक चराचर विषे ब्रह्मदृष्टि है एकरस बाह्यान्तर सदा अरु बिगत बिभेद हैं बिगत कही रहित हैं भेदते अरु भेद कही मैं तैं मोर तोर देहाभिमान

इत्यादिक द्वैत भेदते रहित हैं ( ५ ) आशा जो हैं दशौदिशा सोई हैं बसन जिनके नाम दिगम्बर हैं परमहंसहैं अरु ब्यसन जिनके यहैहैकिजहां श्रीरघुपतिके चरितहोतेहैं तहां सुनतेहैं तहां देखिये तौ जबसनकादिक की दशा को प्राप्ति होइते श्रीरामचरितके तत्वरसको तब प्राप्ति होतहैं ( ६ ) हे पार्वती सनकादिक श्रीरामचन्द्र के समीप कहते आये हैं घट सम्भव कही अगस्त्यमुनिज्ञानी तिनके इहां रहे हैं ( ७ ) तहां का हेतुकरिकै सनकादिक अगस्त्यके इहां रहे हैं तहां अगस्त्यजी श्रीराम तत्व श्रीरामचन्द्र के उपासना अरु चरित्र विषे मुनिन विषे अग्रणीय हैं श्रीरामचन्द्र के चरित्र सदा कहते हैं अरु सुतीक्ष्ण इत्यादिक मुनि श्रवण

**मुनिबिगतबिभेदा ५ आसाबसनब्यसनयहतिनहीं रघुपतिचरितहोहिंतहँसुनहीं ६ तहांरहेसनकादिभवानी जँहघटसंभवमुनिवरज्ञानी ७ रामकथामुनिबहुबिधिबरणी ज्ञानयोनिपावकजिमिअरणी ८ दो०॥ देखिराममुनिआवत हर्षिदंडवत्कीन स्वागत**

करते हैं तहां अगस्त्यजी के इहां सनकादिक चारिउ भाई नित्य जाते हैं तहां ब्रह्मलोकते सनकादिक अगस्त्य जी के इहां प्रातसमय रामचरित श्रवण करिबेको गये हैं तब अपनी दिव्य दृष्टि करिकै श्रीरामचन्द्रको बाटिकामें देखते भये तब अगस्त्य जी से आज्ञा लैकै वह दिनकी कथा उपराम करिकै श्रीरामचन्द्र के समीप सनकादिक चारिउभाई आवतेभयेश्रीराम चरित जोअगस्त्य वर्णन करतेहैं सोरामचरित ज्ञानभक्तिकैखानि उत्पन्न करिबेको महाकारण नित्यहै जैसे अरणीकही काष्ठ अग्नि उत्पन्नकरबेकी खानिहै सो सनकादिक सुनते हैं तहां जो कोईकहै कि सनकादिकन से ज्ञान भक्ति पूर्ण नहीं रह्योहै जो सदा श्रीरामचरित सुनतेरहेहैं तहां दृष्टान्त करिकै बोधकरते हैं जैसे कोई एक बड़ो धनवान् है अरु अनेक पदार्थ चारिप्रकारको भोजन अरु छह्उरस उसके इहां सदापूर्णहै पर एक दिन भोजन करतेहैं अनेक ब्यञ्जन फिरिउहै बिहान में भोजन करते हैं ऐसेही दिनप्रति भोजन करते हैं तृप्त नहीं होतहैं तैसे सनकादिक इत्यादिक जे ज्ञानवान् पुरुषहैं तेश्रीरामचन्द्रके चरित्र अमृतमय नित्यपान करते हैं अरु तृप्तनहींहोते हैं काहेते कि श्रीगोसाई तुलसीदासने कहा है चौपाई॥ रामचरितजेसुनतअघाहीं। रसविशेषतिनजाना नाहीं॥ ताते इहै जानिकै सनकादिक नित्य राम चरित सुनते हैं सुनिकै सब वेद शास्त्रन को परमतत्व श्रीरामचन्द्र तिनके समीप आइकै प्राप्ति होतेहैं ( ८ ) दोहार्थ॥ तहां श्रीरामचन्द्र मुनिन को जब आवतदेखे हैं तब भागे चलिकै श्रीरामचन्द्रहर्षिकै मुनिनके दण्डवत् कीन अरु स्वागत कही श्रीरामचन्द्र यह कहते भये कि हे मुनीशहु आजु स्वेच्छितमोरेऊपर कृपाकीन यह कहिकै अपनो पीताम्बर श्रीरामचन्द्र बिछाइ देते भये अरु यह कहा कि यहिपर बिराजिये ( ९ ) तहां श्रीरामचन्द्रदण्डवत् कीनहै पुनि तीनिउ भाई हनुमान् संयुक्त दण्डवत् कीन परम सुख उत्पन्न होत भयो इहां श्रीरामचन्द्र यह देखावतहैं कि जेमेरेनिजदास हैं तिनको दास मैं हौं ( १० ) तहां जब श्रीरामचन्द्र पीताम्बर बिछाइदीन अरु बैठिबे को कहा तहां मुनि श्रीरामचन्द्रकी अतुलित छबिबिलोकिकै श्रीरामचन्द्र के स्वरूपमें मन मग्नकही डूबिगयो है पीताम्बर

**पूछीपीतपट प्रभुबैठनकहदीन ९ कीनदंडवततीनिउंभाई सहितपवनसुतसुखअधिकाई १० मुनिरघुपतिछबिअतुलबिलोकी भयेमगनमनरुकेनरोकी ११ श्यामलगातसरोरुहलोचन सुंदरतामंदिरभवमोचन १२ यकटकरहेनिमेषनलावहिं प्रभुकरजोरेशीश**

पर ठाढ़े ह्वैरहे हैं देहकी दशा भूलिगई है तहां सेवक स्वामीको भाव बिसरिगयो है पराभक्ति की दशाको प्राप्ति हैं जहां सेवककी सेवकत्व भूलि जाइ अरु स्वामीकी स्वामित्व भूलिजाइ ताको पराभक्ति कही तहां प्रमाण है भगवद्गीतायां १ ब्रह्मभूतप्रसन्नात्मानशोचतिनकांक्षति॥ समः सर्वेषुभूतेषुमद्भक्तिंलभतेपरां १ तहां यह सनकादिकन में देखिलीजियेकाहेते कि सनकादिक ब्रह्मबेत्ता ब्रह्मनेष्ठी ब्रह्मज्ञानी जीवनन्मुक्ति परमहंस तिन सनकादिकनकै श्रीरामचन्द्र की छवि देखिकै चित्तकी वृत्ति डूबिगईहै पराभक्ति की दशाको प्राप्ति भये हैं ताते यह समुझि परत है कि जब ब्रह्मज्ञान तदात्मकहोइ तब श्रीरामचन्द्रकी शोभा छबि रसको अधिकारीहोइहै सो सनकादिक में देखिलीजिये

( ११ ) कैसेहैं श्रीरामचन्द्र जिनकी छबिदेखिकै सनकादिक मग्नभये हैं श्यामगात मर्कतमणिइव निर्मल हैं अरु कमलनयन हैं ज्यहिकीदिशि देखते हैं तिन परमहंसके चित्तको आकर्षण करिलेते हैं अरु सुन्दरताके मन्दिर हैं अरु भवजो है संसार त्यहिते छोड़ाइदेते हैं अपनी कृपाकटाक्षते ( १२ ) तिन श्रीरामचन्द्रकै मनोहर मूर्त्तिदेखिकै एकटक रहिगये निमेष नहीं लागती है जैसे चित्रकीबेलि तैसे श्रीरामचन्द्रको रूपदेखिकै सनकादिक रहिगये हैं यहआश्चर्य देखिये कि सनकादिक शांतरसके पूर्णस्वरूप हैं अरु श्रीरामचन्द्र शृंगाररसके सिंधुस्वरूप हैं तहां सनकादिक डूबिगये तब बिहँसिकै श्रीरामचन्द्र निकासिलियो है तब श्रीरामचन्द्र अपने मनमें अपनी लीलापूर्वक दूनों करजोरिकै शीशनावते हैं ( १३ ) तिन चारिउ मुनिनकीदशा श्रीरामचन्द्र देखते हैं नेत्रनमें जलबहे चलेजाते हैं अरु प्रेमके पुलकते शरीर भरिरह्यो है कछु शरीरकी सुधिनहीं है किंतु तिनकीदशा देखिकै श्रीरामचन्द्र के नेत्रनमें जल श्रवत है अरु शरीर पुलकिआयो काहेते भक्तबत्सल हैं ( १४ ) तहां चारिउमुनि पीताम्बरपर खड़े हैं अति सुंदर श्रीरामचन्द्रकी शोभा देखते हैं जैसे चन्द्रमाको चकोरदेखै तिनकी बिदेहदशा श्रीरघुनाथजी देखिकै अपने हृदयमें आनन्द मानिकै अपने करते चारिउ मुनिन के करगहिकै पीताम्बरपर बैठावतेभये अरु तहां उनकी तौ निर्बिकल्प समाधि रामरूपमें लगीरही है जड़ीभूत ह्वैरहे हैं रामचन्द्रचाहैं सो करैं तब

**नवावहिं १३ तिनकैदशादेखिरघुबीरा श्रवतनयनजलपुलकशरीरा १४ करगहिप्रभुमुनिवरबैठारे परममनोहरबचनउचारे १५ आजधन्यमैंसुनहुंमुनीशा तुम्हरेदरशजाहिंअघखीशा १६ बड़ेभाग्यपाइयसतसंगा बिनहिंप्रयासहोहिंभवभंगा १७ दो०॥ संतसंगअपबर्गकर कामीभवकरपंथ कहहिंसंतकबिकोबिद श्रुतिपुराणसदग्रंथ १८ चौ०॥ सुनिप्रभुवचनहर्षमुनिचारी पुलकित**

उनकी सबकल्प समाधि करिदीनहै मुनिको बैठाइकै परममनोहर बचन बोलतेभये ( १५ ) अरु श्रीरामचन्द्र कहते हैं हे मुनीशहु आज मैं धन्य धन्यतरहौं काहेते कि तुम्हारे दर्शनते संपूर्ण अघनाश ह्वैजाते हैं ( १६ ) हे मुनीशहु सत्संग बड़ी भाग्यते मिलत है तुम्हारे ऐसे सत्संगते बिनाप्रयासहि भवजोहै संसार भंगकही नाशह्वैजात है ( १७ ) दोहार्थ॥ श्रीरामचन्द्र कहते हैं कि हे मुनीशहु संतनकी संगति अपबर्ग जो मोक्ष है तेहि की करकही कर्त्ताहै नाम मोक्षको दाता है सो हमको आजु आपुकी सत्संगतिभई है ताते हम बड़भागी हैं अरु कामी जो पुरुष हैं तिनकी संगति भवजो है संसार तेहिकी कर्त्ता है यह सबसन्त कहते हैं अरु कबीश्वरकहते हैं अरु कोबिदकही पंडित कहते हैं अरु पुरु पुराण श्रुतिस्मृति शास्त्र सत्पुरुष सद्ग्रंथ एतो समस्त इहै सिद्धांत करिकै कहते हैं कि संतनकैसंगति मोक्षदाता है अरु सकामिनकै संगति संसारमें चौरासी की दाता है ताते गृहस्थ जोहै तिनको सब संतनकी संगतिहोइ तब उसको कल्याणहोहि ताते आजु हम बड़भागी हैं यह बचन सनकादिकनते श्रीरामचन्द्र कहाहै सो यामें काहेतु है कि सनकादिकनकी निर्विकल्प समाधि रामाकार ह्वैरही है तहां समाधि छूटिबेकी चारिक्रिया हैं लय बिक्षेप कषाय रसाभास लयकही आलस निद्रा बिक्षेपकही और की बाणी बोल बतलाव श्रवणविषे परे कषायकही जेहि तत्वमें समाधि बांधिरहै सो अवरै रीति चित्तकी वृत्तिमें आवै अरु रसाभासकही चित्तकी वृत्तिविषे कोई अनुसाधन होइहै यहि चारिकरिकै समाधि छूटिजाती है जो कोई कहै कि स्वबिकल्प समाधि छूटि जाती है अरु निर्विकल्प समाधि नहीं छूटतीहै तहां सत्यहै पर इहां श्रीरामचन्द्र श्रीमुखबचनते आपुतौ स्वामी हैं पर सेवकते ऐसो बचन कहते भये हैं तहां सनकादिकन की समाधि कैसेबंधीर है छूटिगई है तहां श्रीरामचन्द्रको बचन सुनिकै निर्बिकल्प समाधि ते सबिकल्प विषे प्राप्तिह्वैकै श्रीरामचन्द्रको यथार्थ आश्रित करतेहैं ( १८ ) हे गरुड़ श्रीरामचन्द्रके बचन प्रेमसंयुक्त सुनिकै चारिउमुनि हर्षिकै अंतर्बाह्य

**तनअस्तुतिअनुसारी १९ जयभगवंतअनंतअनामय अनघअनेकएककरुणामय २० जयनिर्गुणजयजयगुणसागर सुखमंदिर सुंदरअतिनागर २१ जयइंदिरारमणजयभूधर अतिअनुपमअनादिशोभाकर २२ ज्ञाननिधानअमानमानप्रद पावनसुयशपुराणवेद**

पुलकिकै स्तुतिकरते हैं ( १९ ) तहां सनकादिकनकी समाधिविषेजो वृत्तिरही है सोई वृत्ति श्रीरघुनाथजी की प्रेरणाते परावाणी में प्राप्ति होइके यथार्थ स्तुति करते हैं हे भगवन्त तुम्हारी जयहोय सदा जयमानहौ अरु अनन्तहौ तुम्हारी आदि अन्त मध्य किसूके जानबेयोग नहीं है तुम अनामयहौ अनामयकही बिकार सो षट्बिकारते तुमरहितहौ जन्म वृद्धिकही बढ़ब पुनि बिवर्णकही और रंगहोना किन्तु पातरते मोट मोटतेपातर पुनि क्षीयते क्षीयते कही जेते जेते दिनबीते हैं सो क्षीणहोत जाते हैं पुनि जराजरा कही वृद्ध अवस्था पुनि मरण एते षट् आमय कही रोग हैं तहां यहि षट्बर्गते तुमरहितहौ पुनि तुम अनघहौ अनघकही पापरहितहौ उत्पन्न पालन प्रलयते परेहौ अरु तुमअनेकहौ अरु एकहौ यथा सूर्य घटप्रति अनेक है अरु सूर्य निजस्वरूप एकहै तैसही तुमहौ हे करुणामय ( २० ) हे श्रीरामचन्द्र तुम्हारीजय बारम्बार निर्गुण रूप तुमहींहौ अरु दिव्यगुणन के सागरहौ सो गुण अष्टादश षोडश वेदस्तुतिमें कहिआये हैं अरु सुखके मंदिरहौ औ अतिसुन्दरहौ तुम्हारी सुन्दरताकी छटा कामादिकन पायो है अरु अतिनागरकही अतिप्रवीणहौ तुम्हारे बचननकी रचनामें केहिकी समाधि नहीं छूटिजाय है ( २१ ) अरु जयइन्दिराकही लक्ष्मीरमण तहां जहांतक लक्ष्मी अनेकहैं ब्रह्माण्ड में सो तुम्हारी विभूति हैं तिनविषे तुमअन्तर्यामी तुम्हाररूप सो सबमें रमिरह्यो है अरु तुमरूपीहौ अरु भुवि जो पृथिवीहै सो अपने एक अंशभूतकरिकै धारणकिहेहौ अरु अतिअनूपहौ तुम्हारी उपमाको कोई नहीं है अरु अनादिहौ अरु शोभा के आकर कही खानिहौ ( २२ ) अरु तुम ज्ञानके निधानकही स्थानहौ अरु तुम अमानकही मानरहितहौ सबको मानप्रदकही देतेहौ अरु तुम्हार जो सुयश है सो अति पावनहै तेहिको पुराण वेद अहर्निश बदकही गावते हैं ( २३ ) पुनि कैसेहौ परमतत्त्वरूप तुमहींहौ अरु परमतत्त्व वेत्ताहौ अरु कृतज्ञकही सबकी करणीको जानतेहौ अरु अज्ञानके नाशकर्त्ताहौ अरु अनेक तुम्हारे नामहैं अरु अनाम हौ जिनके एकएक नामके अर्थ कोई नहीं जानिसकै है ताते अनामकही अरु जो अनामकही नामरहितहौ तो यह कहना नहीं सम्भव है काहे

**बद २३ तज्ञकृतज्ञअज्ञताभंजन नामअनेकअनामनिरंजन २४ सर्बसर्बगतसर्बउरालय बसहिंसदाहमकहुंप्रतिपालय २५ द्वंदबिपति भवफंदबिभंजय हृदिबसिरामकाममदगंजय २६ दो०॥ परमानन्दकृपायतन ममपरिपूरणकाम प्रेमभक्तिअनपावनी देहुहमहिंश्रीराम २७**

ते कि ब्रह्मकहना यह भी नामही है ताते नामबिना तत्त्वनहीं है अरु निरंजनकही मायाते रहितहौ ( २४ ) अरु सर्बकही संपूर्णहौ अरु सर्बगत हौ सर्बगतकही पृथिवी अप तेज वायु आकाश सात्विक राजस तामस अहंकार महत्तत्त्व सर्बमें गतकही प्राप्तहौ सूक्ष्मरूप अरु सर्ब तुमविषे है सूत्रमणिगणाइव अरु सर्ब उरालयहौ सबके हृदय कमलमें तुम मूर्त्तिमान् बासकियो है किन्तु जेते स्वरूपहो ते तुमकहँ प्रतिपालय ( २५ ) अरु द्वन्दबिपति जो है तैं मैं मोर तोर जन्म मरण यहजो भवकर फन्द है तेहिको बिभंजनकही नाशकर्त्ताहौ अरु हे श्रीरामचन्द्र अपने जनन के हृदयमें बसिकै काम मद इत्यादि बिकार गंजनकही नाशकरतेहौ ( २६ ) दोहार्थ॥ अरु हे श्रीरामचन्द्र परमानन्द अरु कृपा तेहिके स्थानहौ अरु संपूर्ण कामना करिकै तुम्हारमन परिपूर्ण है तुमनिष्कामहौ किन्तु अपने जननके मनको सबकामनाते परिपूर्ण करतेहौ ताते श्रीरामचन्द्र कृपा करिकै अपनी अनपावनी भक्ति हमकोदेहु अनपावनीकही जेहिकेसम अवरपदार्थ पावननहीं है न कोईकर्म न कोईधर्म न योग न वैराग न ज्ञान न विज्ञान न ध्यान न समाधि इत्यादिकनते परमपवित्र पावन ताको अनपावनीकही किन्तु जोभक्ति कोई नहीं पावै जेहिपर श्रीरामचन्द्र अति कृपाकरैं ताकोदेहिं सो अनपावनीकही किन्तु कोटिनबिघ्ननते न चलै सर्वकालमें अचलरहै ताको अनपावनी भक्तिकही सो प्रेमलक्षणाभक्ति सनकादिक श्रीरामचन्द्र से मांगते हैं ( २७ ) हे रघुपति ऐसी जो अनपावनीभक्ति है सो हमको देहु कैसी हे वहभक्ति भवजो है संसार तेहिकर दापजो है दुःख जबरदस्ती देते हैं तीनिउताप करिकै अध्यात्म अधिभूत अधिदैवत अध्यात्मकही जो बाह्यांतर शरीरकरिकै दुःखउत्पन्न होइ अरु अधिभूतकही जो अनेक जीवकरिकै दुःखउत्पन्नहोइ अरु अधिदैवतकही दैवकही कालकरिकै दुःखउत्पन्नहोइ ऐसी जो तीनिउताप हैं भवकीदाप दुःखदायी तिनसबनके नाशकै करनहारी भक्तिसोदेहु ( २८ ) पुनि भक्तिकैसी है प्रणतकही जोतुम्हारी शरण हैं तिनको परमदिव्य कामधेनु कल्पवृक्षहै तहां सर्बकामनादेबेको एकै सामर्थ्य है दुइक्योंकहा है तहां भक्ति कल्पतरु रूपह्वैकै श्रीरामचन्द्रके स्वरूपको देतिहै अरु कामधेनु

चौ०॥ देहुभक्तिरघुपतिअतिपावनि त्रिविधितापभवदापनशावनि २८ प्रणतकामसुरधेनुकल्पतरु ह्वैप्रसन्नदीजैप्रभुयहबरु २९ भवबारिधिकुंभजरघुनायक सेवतसुलभसकलसुखदायक ३० मनसंभवदारुणदुखदारय दीनबंधुसमताबिस्तारय ३१ आशत्रासईर्ष्यादिनिवारक विनयविवेकविरतिबिस्तारक ३२ भूपमौलिमणिमंडनधरणी देहुभक्तिसंसृतिसरितरणी ३३ मुनिमनमानस

रूपह्वैकै स्वरूपविषे अतिप्रीति अनुरागदेति है सो भक्ति प्रसन्नहोइकै वरदान हमकोदेहु ( २९ ) हे रघुनायक भवबारिधि जो है समुद्र तेहि के शोषिबेको तुम अगस्त्यमुनिहौ अरु तुम्हारि सेवासुलभहै काहेते एकबार शरणआयेते तुम आपन करिलेतेहौ फिरिपाछे वहिकर अवगुण नहीं देखतेहौ अरु अमित सुखदेतेहौ ( ३० ) हे दीनबन्धु मनते संभवकही उत्पन्न जो अनेकदुःख हैं तिनको दारयकही नाशकरते हौ अरु बुद्धि में समता बिस्तार करतेहौ ( ३१ ) अरु आशकही बासना जे अनेकहैं अरु त्रासजोहै भय ईर्षा जेहैं इनसबको निवारककही दूरिकरिदेतेहैं अरु विनयजोहै नम्रता अरु विवेक वैराग्य आदिक दिब्यगुणके बिस्तारकर्त्ताहौ ( ३२ ) हे भूपनके माथेकैमणि तुमसम्पूर्ण पृथिवीके मण्डनकही शृंगार हौ हे श्रीरामचन्द्र संसृति जो जन्ममरण है सो नदी है तेहिके परजाबे को तुम्हारीभक्ति तरणीकही नावहै सो भक्ति हमकोदेहु ( ३३ ) अरु मुनिनके मन मानसर हैं तिनके तुमहंसहौ तहां निरन्तर बसतेहौ अरु तुम्हारे चरणकमल को ब्रह्मा शिवादिक अहर्निश बन्दते हैं ( ३४ ) हे रघुकुल के केतु कही पताका अरु श्रुतिसेतु कही मर्याद तेहिके तुमरक्षकहौ अरु कालकर्म स्वभाव गुण तेहिके भक्षकहौ कालकही झरोखा में सूर्य्यकी किरणी जगमगाइ रही हैं तामें एकको तृसरेणु कही अरु सैकरा तृसरेणुकर एकअणुकही अरु सैकरा अणुकर एक परमाणु कही अरु सात परमाणुकर एक लवकही अरु साठि लवकर एक निमेषकही अरु साठि निमेषकर एक पलकही अरु साठिपलकर एकदंड कही अरु साठि दण्डकर दिनराति कही अरु तीसदिन रातिको एकमास कही अरु बारहमासको एक वर्षकही ऐसेही जेते पल घरी दिनवर्षकै उमर ब्रह्मै लिखा है तहां जबते जन्मभयो तेहि साइतिते जेते पलघरी दिनमास वर्षबीतते हैं सो कमी होतजातेहैं अरु तेहिमें अनेक दुःखसुख होतजात हैं तहां उमर पूर्णभये शरीर मृतक होइजातहै अरु तेहि शरीरके कर्मके सम्बन्ध ते जीवनके स्वर्ग मृत्युलोक अरु चौरासीभोगकरते हैं जेहिकाल के विषे ताको कालकही तहां जे जीव तुम्हारी शरण होतेहैं तिनकेकालको तुम भक्षककही कालहुके काल ह्वैकै अपनो पद देतेहौ कर्मजो तीनि

हंसनिरंतर चरणकमलबंदितअजशंकर ३४ रघुकुलकेतुसेतुश्रीरक्षक कालकर्मस्वभावगुणभक्षक ३५ तारणतरणहरणसबदूषण

गुण सम्बन्धी अरु स्वभाव अनेक जन्मके कर्म संस्कार जो सूक्ष्मशेष रहिगयोहै सोजीवन विषे सुभाव करिकै वर्त्तमान होतेहैं ताको स्वभाव कही अरु तीनिगुण तेहिको भक्षककही नाशकरिकै आपनपद देतेहौ ( ३५ ) अरु हे श्रीरामचन्द्र तारण तरणहौ अरु सर्बदूषणके हरैयाहौ तारण कही जो तुम्हारेजनहैं तिनको अनेक दूषणकरिकै संसारते तारिदेते हौ अरु तुमतौ तरणकही संसारके पारहहु शुद्धसच्चिदानन्द विग्रह परब्रह्मरत हौ किन्तु तरणकही ज्ञानीजीवनमुक्त तिनको तुमहीं तारते हौ अपनी शरणकरिकै नतुउनकी सामर्थ्य नहीं है तुम्हारी माया तरिबेको तहां प्रमाण श्लोकएक॥ दैवीह्येषागुणमयीममामायादुरत्यया। मामेवयेप्रपद्यंतेमायामेतांतरंतिते १ किन्तु पुनि उक्ति करिकै कहतेहैं तहां तीनि प्रकारके पुरुषहैं एक तारणहैं एक तरण हैं एक तरणतारण हैं तारणकही वेद शास्त्रपुराण बाँचते हैं वैराग्य ज्ञान भक्तिनिरूपण करतेहैं उनके बचनको ग्रहण करिकै तरिजाते हैं अरु आपु सामान्यहैं अरु एकतरणहैं परमहंस आपुपरेहैंविशेष और किसूसे प्रयोजननहींहै अरु तारणतरणकही सन्तजनआपु तरे हैं अरु अनेकजीवको तारते हैं इनतीनिउपर तुम्हारी कृपाहै अरु तीनिउके अनेक दूषणहरिकै तारण तरण तरणतारण तुमहीं कीन है श्री गोसाईं तुलसीदास कहते हैं कि यह सनकादिक कहते हैं कि हे श्रीरामचन्द्र तीनहूँ लोकके भूषण तुमहौ तेतुम्हारि स्तुति मैं कहांलगिकरौं ( ३६ ) दोहार्थ॥ हेभरद्वाज श्रीरामचन्द्रकी यथार्थ स्तुति करिकै प्रेमसंयुक्त बारबार नमस्कार साष्टांग

दण्डवत् करिकै अति अभीष्ट कही अभिवांछित अचल अनपावनी भक्तिवरपाइकै सनकादिक चारिउ भाई श्रीरामचन्द्रकी शोभास्वरूप हृदयमें राखिकै ब्रह्मलोकको जातेभये ( ३७ ) इतिश्री रामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेउत्तरकाण्डेस्तुतिसनकादिकब्रह्मज्ञानरूपपराभक्तिकोप्राप्तिवर्णनन्नामएकादशस्तरंगः११॥

दोहा॥ दशदुइदिव्यतरंगमें लक्षणगुणशुभसन्त॥ रामचरणश्रीमुखकही सारशास्त्रश्रुतिसन्त १२॥ हे पार्वती सनकादिक ब्रह्मलोकको गये उपरान्त तीनिउँ भ्राता श्रीरामचन्द्र के चरणविषे साष्टांग दण्डवत् करतेभये ( १ ) श्रीरामचन्द्रको पूँछतकै भ्राता संकोच करतेहैं अरु श्रीहनुमान्

तुलसिदासप्रभुत्रिभुवनभूषण ३६ दो०॥ बारबारअस्तुतिकरि प्रेमसहितशिरनाइ ब्रह्मभवनसनकादिगे अतिअभीष्टबरपाइ ३७॥

चौ०॥ सनकादिकबिधिलोकसिधाये भ्रातनरामचरणशिरनाये १ पूंछतप्रभुहिसकलसकुचाहीं चितवतसबमारुतसुतपाहीं २ सुनाचहैंप्रभुमुखकैबानी जोसुनिहोयसकलभ्रमहानी ३ अंतर्यामीप्रभुसबजाना बूझतकहाकहहुहनुमाना ४ जोरिपाणिकहतबहनुमंता सुनहुदीनदयालभगवंता ५ नाथभरतकछुपूंछनचहहीं प्रश्नकरतमनसकुचतअहहीं ६ तुमजानहुकपिमोरसुभाऊ

की दिशि देखते हैं ( २ ) तहांका हेतुहै श्रीरामचंद्र के मुखकी बाणी सुनाचाहते हैं जो सुनिकै सम्पूर्ण भ्रम नाशहोइ किन्तु जीवनकी भ्रमनाशकरिबे हेतु श्रीरामचन्द्रसे पूँछते हैं ( ३ ) तब अन्तर्यामी श्रीरामचन्द्रभाइनके मनकी जानिकै हनुमान्ते कहते हैं हेहनुमान् भरतजी का पूँछाचाहते हैं ( ४ ) तबहनुमान् हाथजोरिकै कहतेहैं हेदीनदयाल भगवंतसुनहु ( ५ ) हनुमान्जी कहते हैं हे श्रीरामचन्द्र हमारेनाथ अरु संपूर्ण चराचरके नाथ भरतजी कछु पूंछा चाहते हैं अरु आपुते प्रश्न करतकै संकोच करते हैं ( ६ ) तब श्रीरामचन्द्र कहते हैं हेकपि तुममोर स्वभाव जानतेहौ हमते भरतते कछुअंतर नहीं कबहूं तहां इहांतौ हनुमान्जी मनोहर नर शरीरधरेहैं चौपाई॥ हनुमदादिसबबानरबीरा धरेमनोहरमनुजशरीरा॥तहां अबतौ हनुमान्जीके निजदिव्य नराकार नित्य शरीरहै श्रीरामचन्द्र ने कपि क्यों कहा तहां कंकही जलको इहां ककार पर अनुस्वारको आगमन करिलीन हैं अस होतहै तहां कं नाम जल सुधा पय बारि नीर इत्यादिक औरौ नामहैं तहां कं कही जलकोनाम सुधाहै तहां हनुमान्जी श्रीरामचन्द्रकै भक्ति अहुर्निश सुधारूप पी कही पीवतेहैं ताते कपिकहा ( ७ ) तहां प्रभुके वचनसुनिकै भरतजी चरणगहतेभये हे मेरेनाथ अरु चराचरके नाथ प्रणत जे हैं शरण तिनके आरत के हरैया सुनहु ( ८ ) दोहार्थ॥ हे नाथमोको कछुसंदेह नहीं है स्वपनेहुँ विषे न शोकहै न मोहहै परकेवल तुम्हारी कृपाते कैसेहौ तुम कृपाके आनंदके संदोहकही समूह समुद्रहौ ( ९ ) हे कृपानिधि एक ढिठाई करतहौं काहेते कि मैं आपुकर सेवकहौं अरु तुमसेवकन के सुखदाताहौ ताते ढिठाई करतहौं ( १० ) हे रघुराई संतनकी महिमावेद पुराण बहुतबिधि गावतेहैं ( ११ ) अरु आप श्रीमुखते संतनकै अति बड़ाई कीनहे अरु आपकै प्रीतिसंतनविषे मैं बहुत देखतहौं ( १२ ) हे प्रभु तिनसाधुनके लक्षण आपके मुखते मैं सुनाचाहतहौं काहेते कि आप

भरतमोहिंकछुअंतरकाऊ ७ सुनिप्रभुबचनभरतगहिचरणा सुनहुनाथप्रणतारतहरणा ८ दो०॥ नाथनम्वहिंसंदेहकछुसपनेहुँशोकनमोह केवलकृपातुम्हारिहीकृपानंदसंदोह ९ चौ०॥ करौंकृपानिधिएकढिठाई मैंसेवकतुमजनसुखदाई १० संतनकैमहिमारघुराई बहुविधिवेदपुराणनगाई ११ श्रीमुखपुनितुमकीनबड़ाई तिनपरप्रभुहिप्रीतिअधिकाई १२ सुनाचहौंप्रभुतिनकरलक्षण कृपासिंधुगुणज्ञानबिचक्षण १३ संतअसंतभेदबिलगाई प्रणतपालमोहिंकहहुबुझाई १४ संतनकरलक्षणसुनुभ्राता अगणितश्रुतिपुराणबिख्याता १५ संतअसंतनकैअसिकरणी जिमिकुठारचंदनआचरणी

## १६ काटैपरशुमलयसुनुभाई निजगुणदेइसुगंध

गुणगण के बिचक्षणकही प्रवीणहैं किंतु संतनके अनन्तगुणगण हैं तिनविषे केवल आपही बिचक्षणहौ ( १३ ) ताते हे प्रणतपाल संतनके लक्षण भेदविलगाइकै मोसे समुझाइकै कहहु ( १४ ) तब श्रीरामचन्द्र प्रसन्नह्वइकै कहतेभये हे भरतजी संतनके लक्षण अगणित हैं वेद पुराण वर्णन करते हैं पर पारनहीं पावते हैं हे तात सुनहु ( १५ ) संतनके अरु असंतनके लक्षण अरु करणी जैसे कुठार अरु चंदनके आचरणहैं तैसे हैं ( १६ ) हे भाई फरसा जो कुल्हारीहै सो चंदनको काटत है अरु चंदन निजगुण सुगन्ध त्यहिकेमुखकहँ देतहै तहां खल कुल्हारीकी नाईं संतनकर बिघ्न करते हैं तहां जो संतनकर विघ्नकरै सो खलहै अरु तिनकर विघ्न संतजनमनमें ल्यावते नहीं हैं तेई संतजन हैं अरु चंदनकीनाईं अपने गुणदेते हैं ( १७ ) दोहार्थ॥ ताहीते चंदनको देवता अपने माथेपर चढ़ावते हैं अरुताहीते संतजन देवतनके लोकनके माथेपर चढ़िकै परमधामको जाते हैं संतनको विमानपर चढ़ेजातेदेखिकै ब्रह्मादिक देवता माथ नावते हैं स्तुति करतेहैं अरु चंदन सबजगत् को बल्लभकही प्रियहै अरु संतजन सबजगत् को प्रियहैं अरु सब जगत् उनको प्रियहै चंदन अरु संत ऐसे हैं अरु कुल्हारी को मुख अनल में दाहिकै घननतेपीटते हैं अरु खलनकरमुख यमलोकमें भी पीटाजातहै ( १८ ) हे भरत पुनि संतनके लक्षणकैसे हैं अरु विषयते अलंपटकही रहितहैं अरु शीलगुण इत्यादिक दिव्यगुण त्यहिके आकर कही खानिहैं अरु परावा दुःखदेखेते दुःखित हैं अरु परावासुख देखेते सुखीहोते हैं ( १९ ) अरु समबुद्धिहै जिनकी अरु भूतरिपुकही जिनके रिपुउत्पन्न हईनहीं है अरु विमदकही अष्टमदते रहितहैं सो पाछे कहिआये हैं अरु विरक्तहैं अरु लोभजोहै अरु अमर्ष

### बसाई १७ दो०॥ तातेसुरशीशनचढ़त जगबल्लभश्रीखंड अनलदाहपीटतघनन परशुबदनयहदंड १८ चौ०॥ बिषयअलंपटशीलगुणाकर परदुखदुखसुखसुखदेखेपर १९ समअभूतरिपुबिमदबिरागी लोभामर्षहर्षभयत्यागी २० कोमलचितदीननपरदाया मनबचक्रममममभक्तअमाया २१ सबहिंमानप्रदआपुअमानीभरतप्राणसममतेप्रानी २२ बिगतकाममनामपरायन शान्तिविरतिविनीतुमदितायन २३ शीतलतासरलतामयंत्री द्विजपदप्रीतिधर्मजनजंत्री २४ येसबलक्षणबसहिंजासुउर जानेहुतात

कही जो उनकी कोऊ लघुता कहै तौ उनके मनमें अमर्ष नहीं आवैहै उनसे बैर नहीं मानत हैं सो जो लोभ अमर्ष है सो मेरे संतत्यागे हैं अरु शोक हर्ष भय इनको त्यागे हैं ( २० ) अरु कोमल चित्त है जिनकर अरु दीननपर दायाहै जिनकी अरु मन क्रम बचनते मेरीभक्ति करतेहैं अरु मायाकही निष्काम अर्थ धर्म काम मोक्ष तेहि कामनाते रहितहैं ( २१ ) अरु सबको मानप्रद कही मानतेहैं अरु आप अमानीहैं हे भरत ते प्राणीमोको प्राणकेसमान प्रियहैं ( २२ ) अरु संपूर्ण कामनातेबिगतकही रहितहैं अरु मेरेनामविषे परायणकही लीन है अरु शांतबिपरीत कही बैराग्य अरु विनीतकही प्रवीणता अरु मुदितकही आनंदत्यहिके अयनकही स्थानहैं ( २३ ) शीतलता अरु सरलता यहिते मयंत्रीकही मित्रताहै अरुद्विजनके पद में प्रीतिहै तहां ब्राह्मणनकेपद कैसे हैं धर्मजोहै तेहिको जानैकही उत्पन्न करिबेको मातापिता हैं ( २४ ) हेतात एतेलक्षण जो कहिआयेहैं अरु जो आगे कहते हैं जेहिजीवके हृदयमें बसहिं तेहिकोतुम निरंतर फुरकहीसांचा संतजानब ( २५ ) अरु शम दम नीतिमहं अचल हैं शमकही चित्त बुद्धि मन अहंकार चित्तकी विषय पदार्थ को चिंतवन अरु बुद्धिको विषय पदार्थकी निश्चय करना अरु मनकी विषय पदार्थ में संकल्प बिकल्प अरु अहंकारकी विषय पदार्थको अपनपौ माने इन चारिउकी वृति एककरिकै परमेश्वरके तत्व विषे लगावे ताकोसमकही अरु दमकही पांचज्ञान इन्द्री श्रवण त्वक नयन जिह्वा नासिका तिनकी विषयसुनब स्पर्शरूप रस गंध क्रमते जानब अरु पांचकर्म इन्द्री मुख हाथ पग लिंग गुदा तिनकी विषय भक्षण ब्यवहार गमन मैथुन बिसर्गकही मलकर त्याग इनदशौ इन्द्रीकी विषय को जीतै ताको दमकही अरु नेमजे

हैं दश अहिसा सत्य स्नेह कही निरआलस अरु इन्द्रिनके विषय बैराग्यते चोराइलेय ब्रह्मचर्य दया आर्जव क्षमा धृति अल्पभोजन शौच अरु नीति चारि साम दामदण्ड विभेदतहां मेरे संतनमें चारिउकैसेरतहैं सामकही चराचरमें समबुद्धि अरुदामकही

**संतसंततपुर २५ शमदमनेमनीतिनहिंडोलहिं परुषबचनकबहूंनहिंबोलहिं २६ दो०॥ निंदाअस्तुतिउभयसम ममताममपदकंज तेसज्जनममप्राणप्रियगुणमंदिरसुखपुंज २७ सुनहुअसंतनकेरसुभाऊ भूलेहुसंगतिकरियनकाऊ २८ तिनकरसंगसदादुखदाई**

मेरे सम्बन्ध युक्त कर्म इन्द्रीजेबेमर्याद चलहिं तिनको बिवेकरूप दण्ड सो ध्वन्सकरते हैं ताको दण्डकही अरु बिभेदकही माया ब्रह्म जीव त्रैतत्वमें भेदराखते हैं मायाको मायाजानै है जीवको जीवजानते हैं अरु ब्रह्मको ब्रह्मजानते हैं यहमेरे संतन में बिभेदकही विशेष है तहां समदम नीति इन चारिउमें अबल है अरु पुरुषकही कठोर बचनकहँ नहीं बोलते हैं ( २६ ) अरु निंदा स्तुति मानापमान हानि लाभ मित्र अरि उभयविषे समबुद्धि जिनके अरु ममता ममपद कंजविषे हैं ते सज्जन मोको प्राणहुते प्रियहैं अरु दिव्यगुणके मंदिर हैं सुखके पुंज हैं तहां प्रमाण है। भगवद्गीतायां। श्लोकद्वै॥ समदुःखसुखःस्वस्थःसमलोष्टाश्मकांचन॥ तुल्यप्रियाप्रियोधीरस्तुल्यनिंदात्मसंस्तुतिः १ मानापमानयोस्तुल्योतल्योमित्रारिपक्षयोः॥ सर्वारम्भपरित्यागीगुणातीतःसउच्यते २ ऐसे लक्षण मेरेसाधुनके हैं ते मोको प्राणप्रिय हैं ( २७ ) श्रीरामचन्द्र कहते हैं कि हे भरत जी अब असंतनके लक्षणसुनहु जे कबहू भूलिहूकै सत्संगमें नहीं जाते हैं ( २८ ) तिनखलनकी संगतिसदा दुखदाई है जिमि हरहाई गऊकेसंग कपिलागऊको दण्डहोत है ( २९ ) पुनि खलकैसेहैं जिनके हृदयविषे पराई संपति देखिकै संताप बनारहता है ( ३० ) अरु जो पराई निंदाको सुनते हैं तौ अतिहर्षको प्राप्तिहोते हैं जैसे पराई निधिकही द्रव्यपाइकै हर्षितहोते हैं ( ३१ ) फिरिकैसे हैं असाधु काम क्रोध मदलोभ इनके परायणकही लीनह्वैरहेहैं अरु निर्दयहैं कपटीहैं कुटिलहैं अरु मलजोहै पाप तेहिके अयनहैं ( ३२ ) अरु अकारणहिं सबते बैरकरतेहैं तहां जोकोई उनकरहितकार करत है ताहूकर अनहित करते हैं ( ३३ ) अरु वे असन्त कैसेहैं जिनके झूंठइलेना है अरु झूंठइदेना है अरु झूंठइभोजन है अरु झूंठइचबेना है तहां जगत्विषे लेबदेबव्यवहारहै सो उनकर यहदूनौंवृथाहै काहेते कि भगवत् सम्बन्ध ब्यवहार उनकरनहीं हैं ताते झूंठइ है अरु केवल शरीरकर ब्यवहार भोजन चर्बनादिकहै सो भगवन्त अर्पण नहींहैताते झूँठइहै किन्तु एक लेना स्वार्थिकहै अरु एकपरमार्थिक है स्वार्थिक कही यह कहतेहैं कि हम वहराजाते अथवा कोई महाजनते यतनी द्रव्यलेते हैं अरु यतनाभोजन लेतेहैं अरु यतना वस्त्रलेते हैं अरु पावते कबहूँ

**जिमिकपिलैघालैहरहाई २९ खलनहृदयअतितापविशेखी जरहिंसदापरसम्पतिदेखी ३० जहँकहुंनिन्दासुनहिंपराई हर्षहिंमनहुंपरीनिधिपाई ३१ कामक्रोधमदलोभपरायन निर्दयकपटीकुटिलमलायन ३२ बैरअकारणसबकाहूसो जोकरहितअनहितताहूसों ३३ झूंठइलेनाझूंठइदेना झूंठइभोजनझूंठचबेना ३४ बोलहिंमधुरबचनजिमिमोरा खाहिंमहाअहिहृदयकठोरा ३५**

नहीं ताते झूँठ कहते हैं अरु परमार्थिक लेनो कही यह कहते हैं कि हमपचास हजार नाम लेतेहैं नित्य अरु लेते नहीं झूँठइ कहते हैं अरु देने में दुइभेद एक स्वार्थिक अरु एक परमार्थिक तहां यह कहते हैं कि हमारेकछुकमीहै हम किसूको सौ रुपैया दिये हैं अरु किसूको पांचसै दिये हैं अरु किसूको हजार दियेहैं अरु किसूको लाखन दियेहैं सोसब झूँठइ कहते हैंअरु एकै कहतहैं कि हमतौ केतन्यो गऊदान दिये हैं अरु केते अन्न बस्त्र द्रब्य भोजन दियेहैं सो सब झूँठइदेनाकहतेहैं अरु भोजन चर्बण मिश्रितचारिहैं भोजनभक्ष लेह्य चुह्य भोज्यकही भात पहिती रोटीपूरी हविष्यान्न लड्डू पेड़ा इत्यादिक मिठाई अरु भक्षकही बुँदिया मेवा चिरौंजी इत्यादिक जा चाबने में आवै अरु लेह्यकही मोहनभोग इत्यादिक अरु जो पीवने में आवै चुह्यकही उत्तममृगनको मांस किन्तु कोई तरकारी अरु मेवा इत्यादिक अरु षटरसकही खट्टा मिट्ठा चरफरा बाकट कटुकषाय

तहां खट्टाकही निंबुवा अचार इत्यादिक अरुमीठाकही चीनी कन्द्रमिश्री इत्यादिक का शरबत चरफराकही चटनी इत्यादिक अरु बाकट कही अँबरा हरा इत्यादिक के अचार अरु कटुकही मिर्चा मिर्च सोंठि इत्यादिक अरु कषाय कही लोन इत्यादिक जो सब भोजन व्यञ्जनको भूषित कर्त्ता है तहां असाधु जोहैं ते यहकहतेहैं कि यह भोजन चर्बणादिक हमनित्य खातेहैं सो झूँठइ कहतेहैं ( ३४ ) अरु खलकिनको जानिये बचन तौ मधुर मयूरकी तरह बोलतेहैं अरु मयूर तौ विषधर खातेहैं खल कपटकरिकै पराई विषय खाते हैं पाप अरु अयशको नहीं डरतेहैं ( ३५ ) दोहार्थ॥ पुनि खल किनकोकही जिनकोमन परावा द्रोह अरु पराईस्त्रीमें रतहै अरु अपवाद कही पराये धनके नाश करिबेकी इच्छा है किन्तु परावाधन आपैलेनेकी इच्छाहै हे भरतजी तेप्राणी पांवरकही नर पशुहैंजैसे पशुकही घोड़ा बैल मृगा इत्यादिक तैसे वे नर पशुहैं अरु पापमय हैं नरतन धरेहैं मनुजाद कही राक्षसहैं आदहिंसा धातुहै जो मनुष्यनकी खाइ ताको मनुजाद कही राक्षस तहां राक्षस मनुष्यकोखातेहैं अरु

दो०॥ परद्रोहीपरदाररत परधनपरअपवाद तेनरपांवरपापमयदेहधरेमनुजाद ३६ चौ०॥ लोभइओढ़नलोभइडासन शिष्णोदरपरयमपुरत्रासन ३७ काहूकीजोसुनहिंबड़ाई श्वासलेहिंजनुजूड़ीआई ३८ जबकाहूकीदेखहिंबिपती सुखीभयेमानहुंजग

खल बिनाकारण मनुष्यनको कर्म धर्म धन खाइ लेते हैं नाशकरिदेते हैं तहां प्रमाण भर्तृहरि श्लोक॥ एतेमत्पुरुषाः परार्थघटिकाःस्वार्थापरित्यज्यये सामान्यम्परस्वार्थमुद्यमभृतेस्वार्थाविरोधेनये॥ तेमीमानुषराक्षसाः परहितंस्वार्थापनिघ्नन्तुये येतुघ्नंतुनिरर्थकंपरहितन्तेकेनजानीमहे १ अरु जो पूर्व कहे हैं तेहिलक्षणते सन्त जानब अरु जो अन्त में कहे हैं तेहिलक्षणते असन्त जानब ( ३६ ) पुनि खल कैसे हैं जिनके लोभै ओढ़ना है दिनभर लोभइके व्यवहार में रहते हैं अरु लोभइ डासन है अरु रात्रीमें जबताई जागते हैं तबताई लोभइको मनन करते हैं अरु जब सोइ जाते हैं तब स्वप्न विषे लोभइको ब्यवहार करते हैं किसूसे ब्यवहार उगाहते हैं अरु किसूकी चोरी करते हैं अरुरात्रि दिन बाह्यांतर लोभइमें रहते हैं अरु शिष्णकही लिंग तेहिको ब्यवहार परस्त्रीगमन मेंलीन रहतेहैं अरु निज उदर येनकेन जिस किसी उपाय करिकै पोषण करते हैं हेभरतजी यई प्राणी यमपुरमें यमके दूतनकरिकै त्रासको प्राप्तिहोतेहैं ( ३७ ) अरु जब काहूकी बड़ाई सुनते हैं तो दुखित होते हैं उठि उठि श्वासलेतेहैं मानहुँ जूड़ी आई है ( ३८ ) अरु जब काहुकै बिपति देखते हैं तो सुखीहोते हैं जैसे कोई जगतमें राजगद्दीपर बैठिकै सुख को प्राप्ति होते हैं ( ३९ ) अरु केवल स्वार्थ विषयमें रतहैं अरु परिवारसहित सबके विरोधी हैं अरु काम तथालोभविषे लंपटकही लीनहैं अरु अकारण क्रोधीहैं ( ४० ) तहां खल जे हैं ये माता गुरु ब्राह्मण अरु देवताकाहूको नहीं मानते हैं अरु आपतौ बनाई गयेहैं अपने सङ्गकरिकै आनहूँको घालते हैं ( ४१ ) मोहकेबश होइकै परायेद्रोहको करतेहैं अरु संतनकोसंग अरुहरिकीकथा जिनकोनहीं भावती है ( ४२ ) पुनि कैसेहैं अवगुणके समुद्रहैं अरु मतिके अतिमन्दहैं अरु कामी हैं अरु वेदकरदूषण करतेहैं अरु परायेधनकेस्वामीह्वैरहेहैं यहकहते हैं कि परावाधन हमार है तहां परावाधन जो है ताको चोरीते वा फवरेब करिकै वा जबरदस्ती करिकै लेते हैं ( ४३ ) अरुदेव ब्राह्मण वैष्णवके विशेषि द्रोहीहैं अरु द्रोहीतौ सबके हैं अरु पाषण्डी

नृपती ३९ स्वारथरतपरिवारबिरोधी लम्पटकामलोभअतिक्रोधी ४० मातपितागुरुबिप्रनमानहिं आपुगयेअरुघालहिंआनहिं ४१ करहिंमोहबशद्रोहपरावा सन्तसंगहरिकथानभावा ४२ अवगुणसिंधुमन्दमतिकामी वेदविदूषणपरधनस्वामी ४३ बिप्रद्रोहपरद्रोहविशेषा दम्भकपटजियधरेसुवेषा ४४ दो०॥ ऐसेअधममनुष्यखल कृतयुगत्रेतानाहिं द्वापरकछुकवृन्दबहु होइहैंकलियुगमाहिं ४५ चौ०॥ परहितसरिसधर्मनहिंभाई परपीड़ासमनहिंअधमाई ४६ निर्णयसकलपुराणवेदकर कह्यउंतातजानहिंकोबिदनर ४७ नरशरीरधरिजेपरपीरा करहिंतेसहहिंमहाभवभीरा ४८ करहिंमोहबशनरअघनाना स्वारथरतपरलोकनशाना ४९

हैं अरु वेष सुन्दर बनाये हैं ( ४४ ) दोहार्थ॥ हे भरतजी ऐसे मनुष्य जे खलहैं अरु अधम हैं ते कृतयुगकही सतयुग त्रेतामें नहीं होते हैं अरु द्वापरमें कछुक होहिंगे अरु कलियुगमें तौ चारिउबर्ण वृन्दके वृन्द होहिंगे ( ४५ ) हे भरतभाई पराये हितकारके समान दूसरधर्म नहीं है अरु परपीड़ाके समानदूसरपाप नहीं है ( ४६ ) हे तात यहसंपूर्ण वेदपुराणको निर्णय मैं तुमसेकहा है तहां कोबिदकही जेपंडितनर हैं तेजानतेहैं तहां प्रमाणहै श्लोकएक॥ अष्टादशपुराणानांब्यासस्यवचनद्वयं॥ परोपकार पुण्यायपापायपरपीडनं १॥ ( ४७ ) हे तात नरशरीर धरिकै परजीवनको पीड़ादेते हैं ते महाघोर संसार में चौरासी योनिको भ्रमब तेहि कीभीर सहते हैं ( ४८ ) तहां मोहकेबशते नर नानाप्रकार के अघकरतेहैं अरु अपने स्वार्थमें रतह्वै कै अपने परलोकको नाशकरतेहैं ( ४९ ) हे तात तिनको कालस्वरूप एक मेरइरूपहै शुभाशुभकर्म फलकोदाताहौं ( ५० ) तहां ऐसे बिचारिकै जोपरम सयानेहैं ते संसृतिकही जन्म मरणकोदुःख मरणकोदुःख जानिकै मोको भजते हैं ( ५१ ) अरु शुभाशुभ कर्मको त्यागिकै देवतन में अरु नरनमें मुनिनमें नायक कही श्रेष्ठ हैं ते सब मोहींको भजते हैं ( ५२ ) हे तात सन्तनके अरु असन्तनके गुण हमतुमसे भाषतभयेतहां जिन सन्त असन्तन के गुण अच्छीतरह लखिराखे हैं ते भवसागर में नहीं परैंगे ( ५३ ) दोहार्थ॥ हे तात सुनहु मायाकृतविषे गुण अरुदोष अनेकहैं तहांजीवनविषे गुण यह सात्विक सो न देखिये अरुउभय जोअवगुण सो न देखिये तौ सोई अबिबेकहै किन्तु मायाकृत गुण देखिये

कालरूपतिनकहँमैंभ्राता शुभअरुअशुभकर्म्मफलदाता ५० असबिचारिजेपरमसयाने भजहिंमोहिंसंसृतिदुखजाने ५१ त्यागहिंकर्म्मशुभाशुभदायक भजहिंमोहिंसुरनरमुनिनायक ५२ सन्तअसन्तनकेगुणभाखे तेनपरहिंभवजिनलखिराखे ५३ दो०॥ सुनहुंतातमायाकृत गुणअरुदोषअनेक गुणयहउभयनदेखियेदेखियसोअबिबेक ५४ चौ०॥ श्रीमुखबचनसुनतसबभाई हर्षेप्रेमनहृदयसमाई ५५ करहिंविनयअतिबारहिंबारा हनूमानहियहर्षअपारा ५६ पुनिरघुपतिनिजमन्दिरगये यहिबिधिचरितकरतनितनये ५७ बारबारनारदमुनिआवहिं चरितपुनीतरामकेगावहिं ५८ नितनवचरितदेखिमुनिजाहीं ब्रह्मलोकसबकथाकहाहीं ५९ सुनिबिरञ्चिअतिशयसुखमानहिं पुनिपुनितातकरहुगुणगानहिं ६० सनकादिकनारदहिंसराहहिं यद्यपिब्रह्मनिरतमुनि आहहिं ६१

जो देखिये तौ अविवेकहै किन्तु गुण मायाकृत शुद्ध सात्विक सोसंतन कर कहिआये हैं सो देखिये अरु मायाकृत अविद्याके गुण जो खलनमें कहे हैं सो उभय न देखिये देखिये तौ अविबेक हे ( ५४ ) हे गरुड़ श्रीमुखके बचन सब भाई सुनिकै अति हर्षयुक्त भये प्रेम हृदयमें नहीं समात है ( ५५ ) बारबार सब भाई श्रीरामचन्द्र की बिनय करते हैं अरु हनुमान्जी के हृदयमें हर्ष अपार है नहीं समातहै ( ५६ ) पुनि श्रीरामचन्द्र निजमन्दिर को जातभये यही प्रकारते नवीन नवीन चरित करतसन्ते ( ५७ ) अरु अयोध्याको नारदजी श्रीरामचन्द्र के दर्शन हेतु बारम्बार आवते हैं तहां श्रीरामचन्द्र के आगे श्रीरामचरित अति पुनीत गावते हैं ( ५८ ) अरु श्रीरामचन्द्रको नित्य नवीन चरित देखिजाते हैं सोई ब्रह्मलोकमें जाइकहते हैं ( ५९ ) तहां नारदके मुखते रामचरित सुनिकै विरञ्चि अतिसुख पावतेहैं अरु यहकहतेहैं कि हेतात श्रीरामचरित गुण पुनि पुनि गानकरौ ( ६० ) तहां जब नारदजी ब्रह्मलोकमें रामचरितगान करतेहैं तहां सुनबेको शिवजीजाते हैं अरु सरस्वती सुनती हैं अरु सनकादिक मुनिसुनते हैं श्रीरामचरित सुनिकै सनकादि नारदको सराहते हैं कि हे मुनीश तुमधन्यहौ यद्यपि सनकादि ब्रह्मरतहैं तदपि रामचरित सुनिकैसराहते हैं ऐसेही प्रेमतेमग्न सबसुनते हैं तहां प्रमाणहै श्रीअध्यात्म रामायणे अहिल्यास्तुति श्लोकएक॥ यस्यावतारचरितानिबिरंचिलोकेगायंतिनारदमुखाभवपद्मजाद्याः॥ आनंदजासुपरिसिक्तकुचाग्रसीमा बागीश्वरीचतमहंशरणंप्रपद्ये १॥६१ तहां सनकादिक श्रीरामचन्द्रकर गुणगान सुनतसंते ब्रह्मलीन समाधिको बिसारि देते हैं सादरते परम अधिकारी ह्वैकै सुनते हैं परम

अधिकारी कही षट्संपति बिबेक बैराग्य षट् शरणागत करिकै युक्तहोइ षट् संपतिकही शमदम उपरति तितीक्षा श्रद्धा समाधान समकही चतुष्ट अंतष्करण चित्त बुद्धि मन अहंकार चारिहु वृत्तिको

सुनिगुणगानसमाधिबिसारी सादरसुनहिंपरमअधिकारी ६२ दो०॥ जीवनमुक्तब्रह्मपरचरितसुनहिंतजिध्यान जेहरिकथानकरहिंरतितिनकेहृदयपषान ६३॥ * * * * * * * * *

एककरिकै आत्मा में लगावे ताको समकही अरु दमकही पांच ज्ञानइन्द्री अरु पांच कर्मइन्द्री की विषै तिनको जीतना पुनि उपरति कही बाह्यांतरकी वृत्तिको एककरना ताको उपरतिकही पुनि तितीक्षाकही शीतउष्ण सुखदुख हर्षशोक मान अपमान इत्यादिकनको सहिजाना उद्वेगनहोइ ताको तितीक्षाकही पुनि श्रद्धाकही वेदवाक्य गुरुवाक्य निजअनुभव इनतीनिउमें प्रतीतिकरना तहां वेदवाक्यमें निजमत अनुकूलप्रतीतिकरना ताको श्रद्धा कही पुनि समाधानकही चित्तकी वृत्ति जीव ब्रह्म की एकता विषे सहजानंद समाधि बंधीरही है जैसे मसानी पुरुषकी मसान जागतेमें नहींडिगै है तैसे समाधानहै पुनि बिबेक बैराग्य बिबेककही सारासारको ज्ञान अरु हंसइव बुद्धि आत्मा दुग्धकरग्रहण अरु अनात्मा जलकोत्याग पुनि बैराग्यमें चारिभेद एकहेतु एकस्वरूप अरुएक फल एक अबधि हेतुकही विषयको विषयते अधिकजानै काहेते कि विषखायेते एकहीवार शरीर छूटैहै अरु विषरूपजो विषय है तेहि के खायेते चौरासी लक्षयोनि में भ्रमते हैं जियते हैं मरते हैं ताते विषय बिषहूते अधिकजानै ताको हेतु बैराग्यकही पुनि जो विषय अनायास अपने पास आवै ताको स्वरूप त्यागकरै काहेते कि जो पदार्थ अपने भजन को बाधक है तिसके ग्रहण कियेते कछुप्रयोजन नहीं है ताको स्वरूप बैराग्य कही अरु ज्यहि विषयके स्वरूपकर त्यागकीन हे तेहिकी चाहना पुनि नउठै ताको फल बैराग्य कही पुनि शेषलोक मृत्युलोक स्वर्गलोक तीनिहूँ लोककी विषय सोंठिसमजानै ताहिसो अवधिबैराग्यकही पुनि बैराग्यके चारि अंग हैं बितरेक जितमान् अरु एकइन्द्री अरु बशीकरण पुनि बैराग्यमें चारिभेदहैं उत्तम मध्यम लघु निकृष्ट सो प्रतिलोम करिकै कहते हैं निकृष्ट कही मन्द बैराग्य लघुकही तीव्रबैराग्य मध्यमकही तीव्रतरबैराग्य अरु उत्तमकही तीव्रतम बैराग्य तहां बैराग्य को बर्णन बालकाण्ड में अच्छीतरहसे कहिआये हैं याज्ञवल्क्य अरु भरद्वाजके मिलाप विषे यहि दोहामें॥ ब्रह्मनिरूपणधर्मबिधि बर्णहिंतत्वबिभाग॥ पुनिषट् शरणागत कहते हैं अनुकूल में संकल्प अरु प्रतिकूल में त्याग पुनि आत्म समर्पण पुनि कार्प्पण्य पुनि गोप्तित्व बर्णन पुनि रक्षामें विश्वास तहां जो श्रीरामचन्द्र के अनुकूल होइ कर्म धर्म योग बैराग्य ज्ञान इत्यादिकतामें संकल्पकरै कि मनबचन कर्मते मैंइ है करौंगो ताको अनुकूल कही पुनि गुणकर्म जे प्रभुते प्रतिकूल होहिं ताको त्याग ताको प्रतिकूल कही पुनि मनबचन कर्मधर्म जीवात्मा श्रीरामार्प्पणकरै अरु इनते अपनपौ दूरिकरै ताको आत्म बिक्षेपकही पुनि कार्प्पण्य कही श्रीरामचन्द्रके प्राप्ति हेतु जेते साधन वेदकहतेहैं सो सबकरै अरु श्रीरामचन्द्रते यह प्रार्थना करै कि हे श्रीरामचन्द्र मोसे कछुनहीं बनैहै मैंबड़ो अपराधीहौं ऐसेही मनबचन कर्मतेसदा दीनरहै कार्प्पण्य कही पुनि गोप्तित्व समुझैहैं तहां श्रीरामचन्द्र ऐसे सामर्थ हैं कि जेपदार्थ वेदमें निपेधहैं तिनको श्रीरामचन्द्र सर्वोपरि करिदीनहै तहां वेदमें यहिबिधिकहा है किकाठ कीनाव होइ अरु सुपात्रको सखामन्त्री करिये अरु जिनकर बाह्यांतर शुद्धहोइतेमोक्षके अधिकारीहैं तहां श्रीरामचन्द्रने पत्थरतेसेतु बाँधाहै जे सहजही डूबिजाते हैं अरु कोलभिल्ल बानररीछको सखामंत्री कीनहै जे ऐसेकुबुद्धीचंचल हैं अरु अनेक राक्षसनको परमपद दीन्हें हैं जिनकर पापमय कर्तब्यशरीरहै ते श्रीरामचन्द्र हम ऐसे पापिनको प्रतिपालन करैंगेसो वर्णनकरै पुनिरक्षामें विश्वासजिन श्रीरामचन्द्रने ग्राहतेगजकी रक्षाकीनहै पुनि दुश्शासनतेद्रौपदीकीरक्षाकीन है पुनिपापते अहल्याकी रक्षाकीनहैपुनि बालिते सुग्रीवकी रक्षाकीनहै पुनि रावणते बिभीषणकी रक्षाकीन है ते श्रीरामचन्द्र संसारसागरते हमारीरक्षा अवश्यकरेंगे यहध्रुव विश्वासकरै यह षट्शरणागत कही तहां षट्सम्पति अरु बिवेक बैराग्य अरु षट्शरणागत इनसब करिकै युक्तहोइ ताको रामचरित रसकेपरम अधिकारीकही सो सनकादिक सबकरिकै युक्त हैं ताते सनकादिक रामचरित रसके परम अधिकारीह्वैकै अति आदरते ब्रह्मलीन समाधिको बिसारिकै सुनते हैं ( ६२ ) दोहार्थ॥

तहां सनकादिक ऐसे हैं जीवन्मुक्त हैं अरु ब्रह्मतत्पर हैं सो ब्रह्मलीन ध्यानको तजिकै श्रीरामचरित सुनते हैं ताते जो सम्पूर्ण कार्पण्य छांड़िकै रामचरित नहीं सुनतेहैं तिनकेहृदयपाषाण हैं ( ६३ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेउत्तरकाण्डेसाधुअसाधुलक्षण बर्णनन्नामद्वादशस्तरङ्गः१२॥

दोहा॥ दशअरुतृतियतरङ्गमेंरामचन्द्रउपदेश॥ रामचरणपुरजनमुनिन गीतारामविशेष १३॥ हे पार्वती एकबार श्रीरामचन्द्र सभा विषे बैठे हैं अरु पार्षदनको आज्ञाभई कि समस्त पुरबासी हमारेपास आवहिं तहां यहबातसबहींसुना सुनिकै प्रथम ब्राह्मणनकी मण्डलीसंयुक्त बशिष्ठजू आवतेभये पुनिसरयूके तीरतीर जोमुनि संन्यासी रहतेहैं ते सम्पूर्ण अरु सम्पूर्ण पुरबासी चारिउ वर्ण आवते भये दिव्य दृष्टिते देखिकै सुनिकै

चौ०॥ एकबाररघुनाथबोलाये गुरुद्विजपुरबासीसबआये १ बैठेगुरुमुनिअरुद्विजसज्जन बोलेबचनभक्तभयभंजन २ सुनहंस कलपुरजनममबानी कहौंनकछुममताउरआनी ३ नहिंअनीतिनहिंकछुप्रभुताई सुनहुकरहुजोतुमहिंसोहाई ४ सोइसेवकप्रीत

सनकादिक नारद बाल्मीकि अगस्त्य इत्यादिक महामहा मुनि त्यहि क्षण आवतेभये यहजानिकै कि श्रीरघुनाथजीके मुखन ते आजु कछु सुनहिंगे ( १ ) तहां सभा विषे बैठतेभये गुरुकही वशिष्ठ अरु सब मुनीश्वर जो आयेहैं महामहा सज्जन अरु लक्ष्मण भरतशत्रुहन अरु सम्पूर्ण रघुबंशी श्रीरामचंद्र सबको आदर दैकै बैठावतेभये तब श्रीरामचन्द्र सुन्दर वचन बोलतेभये तहां कैसेहैं श्रीरामचन्द्र भक्तभयभञ्जन हैं किन्तु भयभञ्जन बचन बोलते भये तहां यहि प्रकरण में जेते बचन श्रीरामचन्द्र कहहिंगे सो भक्त भयभञ्जन बाणी जानब ताते यहिप्रकरणको श्रीरामगीता जानब ( २ ) हे गरुड़ श्रीरामचन्द्र बोलतेभये हे समस्त पुरजनहु मुनीशहु मोरिबाणी सुनहु मैं उरमें कछु ममता आनिकै नहीं कहतहौं ममताकही अपनपौ मानिकै नहींकहौं यथार्थ कहतहौं ( ३ ) पुनि कछु अनीति नहींकहतहौं अरु कछु प्रभुता आनिकै नहीं कहतहौं तहां अनीति कही जो वेद शास्त्र मर्याद छोड़िकै कहै अरु प्रभुता कही ऐश्वर्यमद लिहे कहे तहां समस्त सद्सभा मेरीबाणी सुनहु जोतो मेरीबाणी में तुम्हारो परम कल्याण समुझिपरै तौ जो मैं कहौं सो करहु अरु जोअनुचित समुझिपरैतो न करहु ( ४ ) तहां सोई तौमोरप्रीतम सेवकहै अरुमैं तेहिकर प्रीतम हौं अनुशासन कही जो मोरि आज्ञा मानै तहां एकै सेवक हैं अरु एकप्रीतम सेवक हैं तहां सर्ब जीव श्रीरामचन्द्रकर सेवक हैं अरु जो रामाज्ञा मानै सो प्रीतम सेवकहै तहां तबतौ श्रीरामचन्द्र साक्षात् आज्ञा देतरहे हैं अरु जो कोई श्रीरामचन्द्रकर प्रीतम सेवकहै वा चहै तो कौनी रीति से श्रीरामचंद्रकी आज्ञा जानै तहां दृष्टान्त करिकै जनावते हैं जो कोई सरदार मालिकहै सो अपनो भाई पुत्र सेवक अरु चाकरहै अरु तिसको अपने हाथ पत्रिकालिखै किन्तु लिखाइ देइ जो वहिपत्रिका की रीति वे सब करहिं तौ प्रीतम सबहैं अरु जो पत्रिकाकी रीति नहींकरैं तौभाई पुत्र सेवक चाकर तौ है पर प्रीतम नहीं है दण्ड देबे योग्य है अब दृष्टांत कहते हैं तैसे वेद शास्त्र पुराण इत्यादिक विषे जहां श्रीभगवानुवाच है सो शास्त्र स्वहस्तपत्रिका जानब अरु जहां मुनिनकी बाक्यग्रन्थ है सो रामचन्द्रकी आज्ञाते मुसाहिबनकी लिखी पत्रिका जानब तहां दूनहुं

ममसोई ममअनुशासनमानैंजोई ५ जोअनीतिकछूभाषौंभाई तौम्वहिंबर्ज्यहुभयबिसराई ६ बड़ेभागमानुषतनपावा सुरदुर्लभसबग्रन्थनगावा ७ साधनधाममोक्षकरद्वारा पाइनजेपरलोकसँवारा ८ दो०॥ सोपरन्तुदुखपावैशिरधुनिधुनिपछिताइ कालहि

रीतिकी पत्रिका एकही जानब तहां चारिबर्ण अरु चारिआश्रम अरु जे बिरक्तहैं तिनसबनको जैसी जैसी वेदशास्त्रकी आज्ञाहै त्यहिरीति चलेते श्रीरामचंद के प्रीतम सेवक हैं अरु जो वेद शास्त्रकी आज्ञामें नहीं चलते हैं तिनको श्रीरामाज्ञाते यमराज दण्डदेते हैं काहेते वेद शास्त्र पुराण श्रीरामचन्द्र की पवित्रिका हैं अरु एक आज्ञा श्रीरामचन्द्र की काल है तहां ज्यहिकाल में हानि लाभ दुखसुख इत्यादिक होते हैं तहां विवेकी पुरुष जेहैं ते ज्यहिकाल में जौन होत हैं त्यहि में हर्ष शोक नहीं ल्यावते हैं श्रीरामरजाय मानते

हैं ते श्रीरामचन्द्र के प्रीतम सेवक हैं ( ५ ) तहां भाई प्रियाबाणी को कही तहां श्रीरामचन्द्र कहते हैं हे भाइहु जो कछु अनीति कहहुं तौ मोकोभय बिसराइकै बर्ज्यहु ( ६ ) संपूर्ण सद्सभा सुनहु यह मनुष्यतन बड़ी भाग्यते मिल्यो है का हे ते मनुष्यतन देवतनको दुर्लभ है यह सद्सद्ग्रन्थ कहते हैं ( ७ ) काहे ते देवतनको दुर्लभकहा है का मनुष्यतन संपूर्ण साधनाकर धाम है त्यहि मनुष्यनकी कर्त्तव्यते नरकहोत हैं अरु स्वर्गहोत है सो मोक्ष होत हैं काहेते कि मोक्षकर द्वारा मनुष्यैतन है पुनि कहते हैं कि परमेश्वरकर ज्ञान मनुष्यैतन में है और तनमें नहीं है देवतनमें मोक्षकर ज्ञाननहीं है अपने ऐश्वर्य में भूलिरहे हैं ताते मनुष्यतन दुर्लभ है सो मनुष्यतन पाइकै जे अपनो परलोक नहीं सुधारिलेते हैं तिनकी हानि सुनहु ( ८ ) दोहार्थ॥ ते प्राणी बर्त्तमानमें तो नहीं समुझिकै करते हैं परन्तु परिणामकही अंत विषे विशेष दुखपावहिंगे अरु माथापीटिपीटि पछिताहिंगे अरुकालकर्म ईश्वरको वृथा दोषलगावते हैं काहेते कि मनुष्यतन काल कर्म ईश्वरको सहजमें जानते हैं तहां काल किसकोकही कुघरी सुघरी कुदिन सुदिन कुमास सुमास कुतिथि सुतिथि कुयोग सुयोग कुलग्न सुलग्न इत्यादिक कालविषे बर्त्तमानहीते हैंसो शास्त्रद्वारह्वैकै सबमनुष्य जानते हैं जिनको शास्त्रकरज्ञान नहीं है सोभी ब्राह्मणन के मुखद्वार ह्वैकै जानते हैं काहेते जब कोई बिवाह यात्रा सुदिन इत्यादिक के कामपरते हैं तब ब्राह्मणते पूंछिलेते हैं अरु केतेकामबिना पूंछे कुयोगमें करते हैं ताहीते बिघ्नहोतहै तहां काल तौ शास्त्रके द्वारह्वैकैनीक औ बेकार जनायदेत हैं ताते सबजानतेभीहैं तहां शास्त्रकी आज्ञाको उल्लंघन करिकै कार्यकरते हैं ताते दुख पावते हैं अपनी मूर्खत्वते ताते कालको वृथा दोषदेतेहैं अरु ऐसेही कर्मकीगति

**कर्म्महिंईश्वरहि मिथ्यादोषलगाइ ९ चौ०॥ यहितनकरफलविषयनभाई स्वर्गौस्वल्पअन्तदुखदाई १० नरतनपायविषयमनदेहीं**

शास्त्रके द्वारह्वैकै सुकर्म कुकर्म जानतेहैं अरु जानिकै कुकर्म करते हैं जाते दुःखको प्राप्तिहोतेहैं तहां एककोई प्राणीसुखी है अरु एककोई दुखी है अरु दूनोंको कोई पूंछै कि तुमक्यों दुखीसुखीहौ तहां वेकहते हैं कि हमारे पूर्बजन्मके ऐसेई कर्म हैं ऐसेही नीच ऊँच सबकहते हैं ताते नीक बेकार सबकर्म जानते हैं अरु बेकार करतेहैं ताते कर्मको हरामजादी अपनीसे वृथादोष देते हैं अरु शास्त्र कीरीतिसे ईश्वरको भी जानते हैं ऊंच नीच सबजानते हैं कैसे जानिये जो सुकालहोइ तौ कहते हैं कि ईश्वर भलाकीन है अरु जो कालपरै तौ ईश्वरको गिल्लाकरते हैं अरु जो कोई के घरमें कोईप्राणी मृत्युबशह्वैहै तौ कहते हैं कि ईश्वर मारिडारयोहै तहां देखिये तौ यहकहते हैं कि ईश्वर मारणहार जिआवनहार ईश्वर ऐसो सामर्थ है तहां तेही ईश्वको आठपहरमें एकघरी नहीं भजनकरते हैं अरु आठौपहर जागत सोवत विषयमें लगेरहते हैं तहां अनेकदुखको प्राप्तिहोते हैं तहां ईश्वरको मिथ्यादोष देतेहैं तहां जो कोईकहै कि नीक बेकार जोकछुहै सो सब काल कर्म ईश्वरकरैहै सो सत्यहै पर जहां वेद ईश्वरकी वाणीहै त्यहिद्वारह्वैकै ईश्वरने सब मनुष्यतनको जनायदियो है ताते ईश्वरको मिथ्यादोष देते हैं ( ९ ) तहां श्रीरामचन्द्र कहतेहैं कि हे समस्तसभा सुनहुं मनुष्यतन धरकर यहफलहै कि विषयमेंन आशक्तहोइ कहांतक विषयकरत्याग मनुष्यतनमें चाहिये स्वर्गादिककी विषय अभावहै त्यागहै काहेते कि स्वर्गौ स्वल्पहै अरु अन्त दुखदाईहै तहां यह शास्त्रनमें कहाहै कि जब यहजीव यज्ञ इत्यादिक करिकै स्वर्गकोजात है तब देवीजेहैं ते आगेह्वैकै अतिआदरते लेतीहैं अरु ताही जीवको देवतन के वर्ष जेतना स्वर्ग में रहबेको शास्त्रकहते हैं ते फलको माला देवी पहिराइदेती हैं अरु त्यहि पुरुषसों कहिदेती हैं कि जब एकफूल यहिमालाको सूखैतब एकवर्ष आयुर्बल तुम्हारी क्षीणहोइगी ऐसेही जब सबमाला सूखिजाइगो तब हम तुमको स्वर्गते गिराइदेहिंगे ताते राति दिन वहि पुरुषको गिरिपरिबेकी चिंतामें बीतत है ताते स्वर्गकोसुख स्वल्पहै जैसेकोई काहूबड़ेआदमीको जन्मपत्र सुनाइदेइ कि तुम छठयेंमहीनामें मरहुगे तब वाको चिंता उत्पन्नहोती है छ:महीना वहिको गनते बीततहैं तहां विषयकोसुख वाकोकहांहै तातेस्वर्गकोविषय अल्पकहाहै जाते अंतदुखदाई है प्रमाणभगवद्गीतायां श्लोकएक॥ छित्रेपुण्येमृत्यु

**पलटिसुधातेशठबिषलेहीं ११ ताहिकबहुंभलकहैनकोई गुंजागहैपरसमणिखोई १२ आकरचारिलक्षचौरासी योनिभ्रम**

लोकेबिसंति एवंत्रयोधर्ममनुप्रपन्नागतागतंकामकामालभंते ( १० ) नरतनपाइकै जो विषय में आशक्त होते हैं ते मनक्रम बचनते बड़ी आपनीहानि करते हैं कैसे सुधाबदलिकै विषलेते हैं बड़े मूर्ख हैं तहां सुधा जो मोरिभक्ति ताको त्यागिकै विषयजो विषरूप ताको ग्रहण करते हैं तहां मेरी भक्ति करिकै परमपदको जाते हैं अरु देवता इंद्रादिक अमृत पान किह्यनि है पर कालपाइकै च्युतह्वै जातेहैं ताते मेरी भक्ति अमृतहू ते अधिकहै अरु विषय विषहूते अधिकहै काहेते विष एकबार मारत है अरु विषय चौरासी लक्षबारमारत है जोमेरी भक्ति करतेहैं अरु पक्वनहीं भये अपक्व हैं किंतु योगभ्रष्टभयेहैं अरु तेहीसमय में उनको शरीरछूटोताहूपर एकदुइ जन्मांतर भेद करिकै मोक्षहोते हैं तहां प्रमाण है श्रीभागवते। त्यक्त्वास्वधर्मचरणाम्बुजंहरेर्भजन्नमकोथपतेततोयदि यत्रक्वबा भद्रमभूदमुष्यकिंकोबार्थआप्तोभजतांस्वधर्मतः १ भगवद्गीतायां प्राप्यपुण्यकृतांलोकान-षित्वासास्वतीसमा ॥ शुचीनांश्रीमतांगेहेयोगभ्रष्टोभिजायते ( ११ ) तहां देखिये तौ त्यहिप्राणीको कोई नहीं भलकहै है जे पारसमणिको डारिकै गुंजा को ग्रहणकरते हैं तहां पारस को अरु भक्तिको दृष्टांतदीन है अरु गुंजाको विषयको दृष्टांतदीनहै तहां जैसे पारस अखण्ड धनहै अरु हाथी घोड़े रथ द्रव्य अन्न बस्त्र इत्यादिक सबको अखंडकारणहै तैसे मेरी भक्ति ज्ञान बैराग्य योगशील संतोष दया ध्यान समाधि मोक्ष सबके अखण्ड कारण हैं तहां मनुष्यहि तनको प्राप्तिहैं अरु त्यहि भक्तिको डारिकही छोरिकै गुंजारूपविषयको ग्रहण करतेहैं यहबड़ीहानिहै अरु गुंजाकही घुंघुची कैसी है आधी श्यामहै आधी लालि है अरु काली लालि दूनौंमें कछुमोलनहीं है तहां विषयमें जो शोकहै अरु दुखहै सो कालारंग है अरु सुख हर्ष जेहैं सो लालरंगहैं तहां यहगुंजारूप विषयमें सुख दुःख हर्ष शोक अहर्निशि बनारहत है सोई काला लालहै ( १२ ) हे भरद्वाज श्रीरामचन्द्र कहते हैं हे पुरबासिहु मुनीश्वरहु सुनहुं जो पारसरूप मोरि भक्तिहै ताको त्यागिकै अरु गुंजारूप विषयको ग्रहणकरतेहैं तहां जबउनको शरीरछूटो तब आकर चारिखानि पुनिचौरासीलक्षयोनि त्यहिमें भ्रमते हैं परजीव सदा अबिनाशीहै अरु एकरसहै तहां चारिखानि कहते हैं जरायुज उद्भिज अण्डज ऊष्मज जरायुज कही जोमाताके उदरते झोरीबँधी उत्पन्न होतेहें मनुष्यपशु इत्यादिक पुनि उद्भिजकहीतृणवृक्षइत्यादिकपुनि अण्डज कही जोअण्डाकरिकै उत्पन्न होतेहैं पुनि ऊष्मजकही मसाडंसादिक तहां मनुष्यतनतौ चारिखानिमेंहै

**तयहजियअबिनासी १३ फिरतसदामायाकेप्रेरे कालकर्म्मस्वभावगुणघेरे १४ कबहूंकरिकरुणानरदेही देइईशबिनुहेतुसनेही**

अरु चौरासीयोनिमें भिन्नहै तहांमनुष्य तनपाइकै श्रीरामचन्द्रके भजनमें चूकिगयो बतवोही जीवकोचौरासी होती है अरु चौरासीकही बीसलाखस्थावरकीयोनिमें भ्रमतेहैं तृण तरुइत्यादिक पुनि नवलाख जलके जीव ह्वैकै भ्रमतहैं कृमि मीनइत्यादिक पुनिग्यारहलक्षकूर्मयोनिमेंभ्रमतेहैं ककुआ अरुमेंढक सर्प्प मूसा चींटी दीमक इत्यादिक जेजीव भूमिखोदिकै रहतेहैं पुनिदशलक्षनभचर बिहंग इत्यादिक पुनि तीसलाख घोड़ा बैल शूकर कूकर इत्यादिकमें भ्रमतेहैं पुनि चारलक्ष बानरकीयोनिमें भ्रमतेहैं तब मनुष्य तनपावतेहैं सो मनुष्य तनपाइकै पुनि विषयमें लाग्यो तव पुनि वोही चौरासी जाइ परते हैं तहां प्रमाण है अन्यच्चश्लोकद्वै॥ स्थावरंविंशतेर्लक्षंजलंचनवलक्षकं कूर्मश्चरुद्रलक्षंचदशलक्षंच पक्षिणः १ त्रिंशलक्षपशूनांचचतुर्लक्षंतुबानरः ततःमनुष्यतांप्राप्यततःकर्माणि साधयेत् ( १३ ) ते प्राणी चौरासी में मायाप्रेरित फिराकरतेहैं कालकर्म स्वभाव गुणकी प्रेरणाते काहेते न कोईकालमें भजन कीन्ह्योहै अरु न कोई कर्मकरिकै भजनकियोहै अरु न स्वभावकरिकै भजनकियो है अरु न कोई गुणन करिकै भजन कियोहै कालको भजनकही प्रातः काल मानसीमें रघुनाथजीको चारिदंड रात्रीरहे किंतु दुइदंड रात्रीरहे जगावै अपनी भावनासंयुक्त जसकछु अगस्त्य संहिता इत्यादिकमें कह्योहै सो बिधिकरैपुनि चारिपांचदंड दिनचढ़ेस्नानकी बिधिकरै पुनिडेढ़पहर दिनचढ़े किंतु दुइपहर में दुइदंड दिनकमरहे ज्यवनारकी बिधिकरै त्यहिके आगे स्वउनारकी बिधिकरै किंतु वाटिका गमनकी बिधिकरै आगे नृत्य गानकी बिधिकरै पुनि पहर किंतु डेढ़पहर रात्रीबीते बिआरी स्वउनार की बिधिकरै ऐसेही मानसी में भजन करै तब काल दण्ड से बचिजाइ किंतु ऐसे ही शालग्राम विषे कर्मकरिकै संपूर्ण विधि करै तब कर्मदण्ड से बचिजाइ किंतु अपने स्वभावहि से रामनाम सदा उच्चारणकरै तब स्वभावदण्डसे

बचिजाइ किंतु सात्त्विक गुणलैकै श्रीरामचंद्रको चरित्रकहै सुनैपुनि राजसगुणलैकै श्रीरघुनाथजीके उत्सव में द्रव्यादिक खर्चकरिकै प्रेमकरै पुनि तामसगुण करिकै अहंकार संयुक्त वैराग्य करै विषयकर त्यागकरै तब तामसगुणके दण्डसेबचै अरु जो ऐसेभजन नहीं करते हैं ते कालकर्म स्वभाव गुणनके बशह्वैकै चौरासीमें फिरते हैं ( १४ ) तहां चौरासी भ्रमतसंते अरु कोई योगते ईश जो परमेश्वर है

१५ नरतनभवबारिधिकहँबेरा सन्मुखमरुतअनुग्रहमेरा १६ कर्णधारसतगुरुदृढ़नावा दुर्लभसाजसुलभकरिपावा १७ दो०॥ जोनतरैभवसागर नरसमाजअसपाइ सोकृतनिन्दकमन्दमति आतमहनगतिजाइ १८॥ * * * * *

सो करुणाकरिकै बीच में नरतन देतभयो काहेते यहजीवपर परमेश्वर बिनाहेतु सनेही है ( १५ ) तहां ईशबड़ी कृपाकरिकै नरतन दीनहै सो नरतन कैसोहै भवजो संसारसमुद्र त्यहिके तरिबेको बेराहै इहां बेराकही जहाजको अरु जहाज बिनापवन नहींचलै है तहां जब यह जीव मेरेसन्मुख शरणागतभयो तब मैं कृपाकीन सोई सन्मुख पवन जैसे पूर्व जहाजचलै तब पछिवा पचनचलै अरु पश्चिमको चलै तब पुरवाईबहै सोई मेरीकृपा है ( १६ ) तहां जहाज अरु पवन अरु कर्णधार तीनिहुं को एकताहोइ तब समुद्रपारहोत है पर जहाज दृढ़कही पोढ़ीहोइ तैसेही नरतन जहाज है अरु जीवजहाजको चढ़ैयाहै अरु रामकृपा पवनहै अरु सद्गुरु कर्णधार है पर सद्गुरुनके बचनको शिष्य दृढ़करिकै ग्रहणकरै तब संसार समुद्रते यह जीव पारह्वैकै परमपदको प्राप्ति होत है ( १७ ) दोहार्थ॥ तहां श्रीरामचन्द्र कहते हैं जे नर अससरंजाम पाइकै कि नरतन जहाज अरु मोरिकृपा पवन है अरु सद्गुरु कर्णधार है भवसागर नहीं तरते हैं ते कृतनिंदक हैं आत्महनगतिको प्राप्तिहोते हैं तहां कृतनिंदक कही जो काहूतेनीकि करणीकरै अरु वह प्राणी न मानै सोई कृतनिंदक है तहां देखिये तौ मैं कृपाकरिकै नरतन दीन है सो मोको नहीं मानते हैं ऐसे कृतनिंदक हैं यह जो श्रीगोसाईं भाषाकीन है श्रीमद्रामायण मानसर श्रीमहादेव कृत ताहीको प्रमाण श्रीवेदव्यासने श्रीभागवतमें कहाहै श्लोकएक॥ गुरुर्नसस्यात्सस्वजनोनसस्यात्पितानसस्याज्जननीनसास्यात् दैवंनसस्यात्नपतिश्चसस्यान्नमोचयेद्यः समुपेतमृत्युं १ पुनि श्रीबाल्मीकीये श्रीलक्ष्मणवाक्यं सुग्रीवंप्रति। गोघ्नेचैवसुरायेचचौरेभग्नब्रतेस्तथा निस्कृताबिहतासद्भिःकृतघ्नेनापिनिस्कृती १ ते कृतनिंदक आत्महनगतिको प्राप्ति होते हैं पुनि आत्महनगति काको कही जे अपनी आत्मा को आपहिते हनते हैं काहेते कि अपनी आत्मै अपनी मित्रहै अरु अपनीआत्मै अपनो अरिहै तहां अपनीआत्मासे मित्रता नहीं करते हैं मित्रताकही आत्मज्ञान करिकै मोको नहीं भजतेहैं ते आत्महनगति कही महाघोर नरकको प्राप्तिहोते हैं अरु तहां बहुतकाल रहते हैं पुनि नरकते निकरिकै चौरासीकोजाते हैं यह आत्महनगतिको फलहै तहां प्रमाण है

चौ०॥ जोपरलोकइहांसुखचहहू सुनिममवचनहृदयदृढ़गहहू १ सुलभसुखदमारगयहभाई भक्तिमोरिपुराणश्रुतिगाई २ ज्ञानअगमप्रत्यूहअनेका साधनकठिननमनकहँटेका ३ करतकष्टबहुपावैकोई भक्तिहीनम्वहिंप्रियनहिंसोई ४ भक्तिस्वतंत्रसकल

भगवद्गीतायां श्लोकएक॥ उद्धरेदात्मनात्माननात्मानकवसादयेत्॥ आत्मैवह्यात्मनोबंधुरात्मैवरिपुरात्मनः १। ( १८ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसने-उत्तरकाण्डेश्रीरामगीतायांपुरजनमुनीश्वरन प्रतिवैराग्यज्ञानभक्तिश्रीमुखबर्णनन्नामत्रयोदशस्तरंगः१३॥ :: :: :: ::

दो०॥ दशअरुचारितरंगमेंपुनिउपदेशउदार रामचरणश्रीरामते ल्यइवशिष्ठवरसार १४ तब श्रीरामचन्द्र बोले हे समस्तसभा जो परलोक में अरु इहां सुखचहहु तौ हमारे वचन को दृढ़करिकै सुनिकै ग्रहणकरहु ( १ ) तहां जो मार्ग मैं कहि आयों हौं अरु जो आगे कहत हौं सो अति सुगम अरु सुखद है कछु परिश्रम नहीं है मनमें समुझिबेको है मेरी भक्ति ज्यहिको पुराण श्रुतिगावते हैं ( २ ) त्यहिभक्तिमें यहिजीवको सहजमें कल्याणहै अरु जो कोईकहै कि ज्ञानहूँ में तो कल्याणहै तहां ज्ञानकरमार्ग अगम है अरु कठिन

है अरु ताहूपर प्रत्यूहकही अनेक विघ्न हैं अरु ज्ञान की साधना कठिनहै काहेते कि ज्ञान के मार्ग में कछुमनको आधार नहीं है ( ३ ) अरु जो बहुतकष्ट करिकै ज्ञानमार्ग सिद्धिकरै तौ कैवल्य मुक्तिको प्राप्ति होय पर भक्तिते हीन मोको प्रिय नहीं है ( ४ ) अरु मेरी भक्ति स्वतन्त्र अरु सब गुणकी खानि है स्वतन्त्रकही कोई साधनते नहीं सिद्धिहोती है केवल सत्सङ्गते प्राप्तिहै ( ५ ) सो सब सत्सङ्ग तब मिलै जब पूर्व जन्ममें पुंजकही समूह पुण्यकिह्यो होइ अरु वर्त्तमान पुण्यकरतहोय तब विशुद्धसंतनकै सङ्गति होतिहै सत्सङ्गति कैसीहै संसृत जोहे जन्म त्यहिकी अन्तकर्ताहै ( ६ ) तहां सबपुण्यते एकपुण्य जगत्विषे उत्तमहै दूजानहीं है मन कर्म बचनते ब्राह्मणके पदकी पूजाकरै ( ७ ) तब त्यहि प्राणीके ऊपर मुनि अरु देवता कही समस्त मुनि ब्राह्मण सानुकूल होते हैं ताते सजातीय मानिकै प्रसन्नहोते हैं अपनी भक्ति आशीर्बाद देतेहैं कि तुमकोउत्तम सन्तनकी संगति प्राप्तिहोइ अरु जब ब्राह्मण होमकरतेहैं तब दशौ दिग्पाल इत्यादिक देवता प्रसन्न होतेहैं प्रसन्नह्वैकै जो बाह्यान्तर इन्द्रिनपर देवता हैं भक्तिके विघ्नकर्ता ते शांतिह्वै जाते हैं अरु आशीर्बाद देते हैं कि तुमकी उत्तम सत्सङ्ग होइ कब जब कपट तजिकै बिप्रके चरणनकी पूजाकरै तब सत्सङ्गतिमिलै तब मेरी भक्ति प्राप्तिहोइ ( ८ ) दोहार्थ॥ श्रीरामचन्द्र

**गुणखानी बिनसतसंगनपावहिंप्रानी ५ पुण्यपुंजबिनुमिलहिंनसन्ता सतसंगतिसंसृतिकरअन्ता ६ पुण्यएकजगमहँनहिंदूजा मनक्रमवचनविप्रपदपूजा ७ सानुकूलत्यहिपरमुनिदेवा जोतजिकपटकरैद्विजसेवा ८ दो०॥ औरोएकगुप्तमतसबहिकहौंकरजोरि शंकरभजनबिनानर भक्तिनपावैमोरि ९ चौ०॥ कहहुभक्तिपथकवनप्रयासा योगनमखजपतपउपवासा १० सरलसुभावनमनकुटिलाई**

कहतेहैं हेसम्पूर्ण सभा औरौ एकगुप्तमतमैं करजोरिकै विनयकरिकै कहतहौं यह विशेष उपदेशहै कि शंकरके भजनबिना प्राणी मेरी भक्तिको नहीं प्राप्तिहोतहै तहां हेगरुड़ शंकर श्रीरामचन्द्रके परमानन्य भक्तहैं परमप्रियहैं तहां भजनधातुहै सेवाविषे सिद्धिहोतहैं ताते श्रीरामचन्द्र कहते हैं कि मेरे अनन्यभक्त महादेवहैं ताते ऐसे मेरे भक्तनकी सेवाबिना मेरी भक्ति नहीं प्राप्ति होति है किन्तु शंकर भजन रामनामहै ताते रामनाम प्रेमते रटेबिना मेरी भक्ति नहीं प्राप्तिहोती है तहां वचनमें यह अभिप्रायहै कि मेरे भक्तनकी सेवा बिना मेरी भक्ति नहीं प्राप्ति होतीहै तहां दोहाके पाछे की चौपाई लैकै क्रमते प्रमाण है अध्यात्मरामायणे परशुराम वाक्यं श्रीरामंप्रति श्लोकद्वै॥ यावत्त्वत्पादभक्तानां संगसौख्यंनविन्दति॥ तावत्सं सारदुःखौघान्निवर्त्तेनरःसदा १ पुनि ब्रह्मांडपुराणे श्रीरामचन्द्रवाक्यंवशिष्ठंप्रति॥ मद्भक्तेभ्यः प्रयच्छंति सुवस्तुनिधानान्यति॥ आतिथेयं करिष्यामि तस्याहंसीतयासह ( ९ ) तहां श्रीरामचन्द्र कहते हैं कि भक्तिके पथमें कहौ कौन प्रयास है कछु प्रयास नहीं है काहेते न अष्टांग योग न यज्ञ न तप न ब्रत अरु न कोई कर्म इत्यादिक साधनते मेरी भक्ति रहित है अरु ज्यहि रहस्यसे मेरी भक्ति सिद्धिहोती है सो कहतहौं ( १० ) सरलतौ स्वभाव होइ अरु मनकी कुटिलाई कर त्यागहोइ अरु यथालाभ तथासन्तोषहोइ सरल स्वभावकही दंभ पाखण्ड कपटछलछिद्र ईर्षा यहिषट्ते रहित होइ अरु कहूजीवनकर निरादर न होइ ताको सरलस्वभावकही अरु काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य अरु लोक मर्याद इनसातौ संयुक्तको मनकी कुटिलता कही ताते इन सातौकर त्यागकरै तौ मनकी कुटिलताजाइ अरु अखण्ड एकान्त आसन दृढ़करिकै रामचन्द्रकर ह्वैकै स्मरणकरै जो कछु अनायासमें अन्न बस्त्र आवै ताते शरीरकर निर्वाह करै ताको यथालाभ तथा सन्तोषकही किन्तु यही रीति जगत्मेंबिचरैएक रात्रीसे सिवाय आगे कहूँ टिकै नहीं ( ११ ) अरु मोरदास कहाइकैनर जेहैं प्राणी कोईसा राजा इत्यादिक जो कछु तिनकी आशाकरै तौ मेरे

**यथालाभसन्तोषसदाई ११ मोरदासकहाइनरआशा करैतौकहहुकौनविश्वाशा १२ बहुतकहौंकाकथाबढ़ाई यहिआचरणबश्यमैंभाई १३ बैरनबिग्रहआशनत्रासा सुखमयताहिसदासबआसा १४ अनारम्भअनिकेतअमानी अनघअरोषदक्षविज्ञानी १५**

दासत्वको कौन बिश्वास रहा किन्तु आशा कही जैसे सबनर आशा करत हैं विषयकै तैसी आशा येहू करै तौ मोर कौन बिश्वास है अरु मैं विश्वम्भरहौं तहां मोर विश्वास छोंड़िकै औरकर विश्वासकरै तो यह बड़ा आश्चर्य है तहां प्रमाण है महाभारते श्लोकएक॥ भोजनेच्छादने चिंता वृथाकुर्वन्तिवैष्णवा:॥ योसोविश्वम्भरोदेवोसभक्ताकिंउपेच्छति ( १२ ) ताते हेभाई बहुतकथा बढ़ाइकै का कहौं यहि आचरणमें मैं बश्यहौं जो कहि आये हैं अरु आगे कहतहौं ( १३ ) नतौ किसूते बैरराखते हैं न किसूसे बिग्रह करते हैं अरुन किसूकी आशा राखते हैं तहां बैर कही जो मनमें धरे है अरु बिग्रह कही तुरन्त लरिमरे हैं अरु सबआशा कही दशौंदिशा तिनको सुखमय है किंतु दशौंदिशाकही पांच ज्ञानइन्द्री अरु पांच कर्मइन्द्री ये दशौ तिनको सुखमय हैं ( १४ ) पुनि कैसे हैं अनारंभ हैं अनारंभ कही कवन्यहुं पदार्थकर आरंभनहीं करते हैं नेम नहींकरतेहैं सहजानन्द भजन करते हैं सहजानन्द कही सोवत जागत उठत बैठत चलत मेरगुण स्वरूपमें चित्तकै वृत्ति अखण्ड लगी है तहां प्रमाण है अन्यच्चश्लोकएक १ उत्तमासहजावृत्तिर्मध्यमाध्यानधारणा: शास्त्रचिंताधमाप्रोक्ता तीर्थयात्राधमाधमा:॥१ पुनि अनिकेतकही घर कहीं नहीं बनावते हैं काहेते कि घर बनायेते चिंता बहुतहोती है ताते वैसर्प्य की वृत्ति लेते हैं औरहिकी छायामें निर्बाह करते हैं पुनि अमानी मानकवन्यहुं पदार्थ करनहीं राखेहैं पुनि अनघहैं अनघ कही पापरहितहैं मन कर्म बचनते काहूजीवको दु:ख नहीं देतेहैं अरु अरोषहैं काहूते रिसनहीं करते हैं अरु दक्षहैं चारिउवेद अरु छइउशास्त्रके तत्त्व में प्रवीणहैं अरु विज्ञानी हैं ( १५ ) अरु सदा मोरे संतनके प्रीति इहै संसर्गहै जिनके संसर्गकही पूर्बसंस्कार अरु प्रारब्ध क्रियमान तहां संस्कार कही जैसे किसान अपने घरमें अन्नसंचित करिकै धरतहै पुनि प्रारब्ध कहीउहै अन्नकाटिखात है पुनि क्रियमान कही आगे अन्नउत्पन्न करिबे की यत्नकरते हैं तैसे उनके संचितप्रारब्ध क्रियमान प्रीति संयुक्त मेरे संतनकी संगतिमेंहै अरु सातहू स्वर्गकी विषय अरु अपवर्ग कही मोक्षकी विषयको तृणकी समान जानतेहैं ऐसे निष्कामहैं ( १६ ) अरु भक्तिके पक्षविषे जोहठकरैं तौ त्यहिको शठनहीं कही काहेते कि जोभक्ति के पक्षमें हठ न करैतौ उपासनामें दोषआवैहै ताते उपासनामेंहठकरिकै पक्ष

**प्रीतिसदासज्जनसंसर्ग्गा तृणसमबिषयस्वर्ग्गअपबर्ग्गा १६ भक्तिपक्षहठनहिंशठताई दुष्टतर्कसबदूरिबहाई १७ दो०॥ ममगुणग्रामसुनामरतगतममतामदमोह ताकरसुखस्वइजानैपरानन्दसन्दोह १८ चौ०॥ सुनतसुधासमवचनरामके गहेसबनपदकृपाधामके १९**

कियाचाही पर दुष्ट तर्कणा संपूर्ण दूरिकरिकै किंतु भक्तिपक्ष विषे न तौ हठचाही अरु न शठताई चाही काहेते हठता शठताई कियेते मनको उद्वेगहोतहै तहां ज्यहिके संग हठता शठताई कर प्रयोजनपरै त्यहिकी संगति न करिये अपने सजातीय उपासककी संगति करिये ( १७ ) दोहार्थ॥ अरु मेरे गुणनुबादमें अरु मेरे नाममेंरतहै पर ममता मदमोह इत्यादिक गत कहीछूटगई है त्यागिदिहिनि है काहेते भजन के बाधक हैं तहां ममता कही मातु पितु सुत वित्त कलत्र भाई कुटुम्ब जाति इत्यादिक में अपनपौ मानिकै प्रीति करना पुनि मद कही आठजाति कुल रूप यौबन धन बिद्या ज्ञान ध्यान इत्यादिक अष्टमभक्तिके विरोधीहैं तहां प्रमाणहै अन्यश्लोकद्वै २ जातिविद्यामहत्त्वंच रूपयौबनमेवच॥ यत्नेनपरिवर्जेयात्पंचैते भक्तिकंटका: १ मातंगपातंगकुरंगभृंगी मीनाहतापंचभिरेवपंच॥ येष: प्रमादीसकथंनहन्यते ससेवितंपंचभिरेवपंच २ पुनि मोह कही ज्यहि पदार्थ में ममत्वहै अरु त्यहिको कोई योगते विक्षेपपरयो अरु त्यहिकी कल्पना मिलबेकी सो मोह ताते इनसबनको त्यागिकै मेरे गुणग्राम नाममें अहर्निशरहतहैं हे भाइहु यहरहस्य कर सुखसोई जानैगो कौनसुख परमानंदहै परमानंदसंदोह कही समूहऐसे सुखको ओई जानतेहैं जे यहिरहस्यमें चले ( १८ ) हे भरद्वाज संपूर्णपुरबासी जेहैं ते श्रीरामचन्द्रके बचन सुधासम सुनिकै हर्षिकै श्रीरामचन्द्र कृपाके धाम के पद गहतभये ( १९ ) तब दंडवत्करिकै पुरवासी बोलते भये हे कृपानिधान हमारे जननी जनक गुरु बंधु सबआपुहौ अरु प्राणहुते प्यारेहौ ( २० ) हे श्रीरामचन्द्र हमारे तन धन धाम आपहीहौ किंतु तन धन धामके हितकारी आपुहौ सब प्रकारते प्रणतारत कही प्रणत जोशरणहैं त्यहिके आर्त्तके हरैया आपुहौ ( २१ ) ऐसो सिखापन तुम्हें बिना औरकोदेइ कोई न देइ अरु माता पिताजो कही सो स्वार्थ में रतहैं अरु परमार्थ एक तुमहींहौ ( २२ ) हे श्रीरामचन्द्र महाराज हेतु रहित कही कछुचाहते नहीं अरु युगयुग सर्बजीवनको उपकार करतेहौ

जननिजनकगुरुबन्धुहमारे कृपानिधानप्राणतेप्यारे २० तनधनधामरामहितकारी सबबिधितुमप्रणतारतहारी २१ असशिषतुमबिनुदेइनकोऊ मातपितास्वारथरतओऊ २२ हेतुरहितयुगयुगउपकारी तुमतुम्हारसेवकअसुरारी २३ स्वारथमीतसकलजगमाहीं सपन्यहुंप्रभुपरमारथनाहीं २४ सबकेबचनप्रेमरससाने सुनिरघुनाथहृदयहर्षाने २५ निजनिजगृहगयेआयसुपाई वर्णतप्रभुबतकहीसुहाई २६ दो०॥ उमाअवधबासीनर नारिकृतारथरूप ब्रह्मसच्चिदानन्दघन रघुनायकजहँभूप २७॥ * * * * *

परमार्थरूपतुमअरु तुम्हार सेवक काहेते तुम असुरारिहौ तहां असुरजेहैं कामक्रोधलोभ मोह मद इत्यादिकते परमार्थके विरोधीहैं तिनकरनाशकरिकैपरमार्थकोसिद्धि करिदेतेहौ ( २३ ) हे प्रभु सर्ब जीव अपने अपने स्वार्थके मित्रहैं तिनके संगविषेस्वप्नहूं परमार्थ नहींहैतहां परमार्थतुमहौअरुकितौ तुम्हारे सन्तनकी गतिहै ( २४ ) हेपार्वती सम्पूर्ण सभाके प्रेममय बचनते अपने वचनकर ग्रहण सुनिकै श्रीरघुनाथजी हृदयमें अति हर्षते भये तहां यह अभिप्रायहै कि जो बक्ताके बचनको श्रोता ग्रहणकरै तौ बक्ताको बड़ोआनन्द होतहै ( २५ ) तब श्रीरामचन्द्रकी आज्ञा पाइकै अपने अपने गृहकोचलतेभयेतहां श्रीरामचन्द्रके बचन परस्पर कहत सुनतमनन निदिध्यासन करते आगे साक्षात् हैं ऐसीरीति से अपने अपने गृह को सबजातेभये ( २६ ) हेउमा अवधबासीनर नारितौ संपूर्ण कृतार्थरूपहीहैं काहेते जहांसच्चिदानंद परब्रह्म श्रीरामचन्द्र भूपहैंतहां येसब नित्य बिभूतिके पार्षदहैं श्रीरामचन्द्रकी लीलाहेतु आये हैं पुनि श्रीरामचन्द्रके संगही परबिभूतिको जाहिंगे तहां श्रीरामचन्द्रकी एक नित्यऐश्वर्य लीला विभूति है जाकोत्रिपाद बिभूति कही प्रकृति मंडलके परे है प्रमाणश्रुतिः॥ त्रिपादूर्द्ध्वउदैत्पुरुषःपादोस्येहाभवत्पुनः॥ त्रिपादविभूति कवनिहै संधिनो संदीपिनी आह्लादिनी येतीनि परबिभूतिहैं परमानंद रूपही हैं अरु एकपाद विभूतिमें अनेक ब्रह्मांड हैं तहां एकपादमें दुइभेद हैं एक अविद्या एक विद्या तहां अविद्या प्रमाणमें सब जीवहैं अरु विद्यामें मुमुक्षु अरु जीवन्मुक्त जीवहै तहां सर्बजीवनके कल्याणहेतु श्रीरामचन्द्र अपनी त्रिपाद विभूति संयुक्त परम दिव्य सो प्रकृतिमण्डल ब्रह्माण्डकोसबविषय नैमित्य माधुर्यलीला परमदिव्य अखण्ड करतेहैं पुनिउहैनित्यऐश्वर्य लीलादिव्य अपारस्थानमें आवान्तर करिकै प्रजन कहँउपदेशकेद्वारह्वैकै सहित प्रजन परधामको गमनकिया चाहतेहैं यहीरीतिते काहेते श्रीअयोध्याबासी सबनित्य जीवनहैं परमेश्वरकी आज्ञानुकूलपरमेश्वरके संगही आवतेहैं अरुसंगही जातेहैं तहांजोकैलासमें पार्वतीने महादेवसे प्रश्न

चौ०॥एकबारबशिष्ठमुनिआये जहाँरामसुखधामसोहाये १ अतिआदरघुनायककीन्हा पदपखारिपादोदकलीन्हा २ रामसुनहुमुनिकहकरजोरी कृपासिन्धुकछुविनतीमोरी ३ देखिदेखिआचरणतुम्हारा होतमोहममहृदयअपारा ४ महिमाअमितवेद

कीनहैं कि॥प्रजासहित रघुबंशमणि किमिगवनेनिजधाम॥ त्यहिको उत्तरमहादेव यहि प्रसंगमें चतुर्दश तरंगमें लक्षणाकरिकै प्रजा श्रीरामचन्द्रको परधाम गमन पूर्णकरैंगे हे पार्वती श्रीअयोध्याबासिनके श्रीरामरूपही बिशेषिकै जानहुँ तहां प्रमाण पाद्मे श्लोक एक श्रीरामचन्द्र वाक्यं बिभीषण सुग्रीवादि प्रति॥ अयोध्याचपरंब्रह्मसरयूसगुणःपुमान्॥ तन्निवासीजगन्नाथसत्यमेतद्ब्रवीमिते ( २७ ) इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वन्सनेउत्तरकांडेश्रीरामगीतायांप्रजाउपदेशबर्णनन्नामचतुर्दशस्तरङ्गः १४॥ ::

दोहा॥ दशअरुपांचतरंगमें गुरुबशिष्ठबरदान॥ रामचरणश्रीरामकोधामवाटिकाजान १५॥ हेगरुड़ एकबारही एकसमयमें गुरुवशिष्ठ मुनि श्रीरामचन्द्र सुखकेधाम तिनके समीप आवतेभये ( १ ) तहां रघुनाथजी ने बशिष्ठको अति आदर कीन अतिआदरकही चरणधोइकै पादोदक लीनहै तहां जोकोई कहैकि वशिष्ठ जी तौ श्रीरामचन्द्र को परमेश्वर जानते हैं तिन अपनोचरण क्योंधोवने दिया तहांजेश्रीरामके आत्मसमर्पणी भक्त हैं ते स्वामीकी रुचिमाफिक चलते हैं जामें स्वामी प्रसन्न होहिं सोई करते हैं अपने धर्म कर्मको स्वर्ग नकरको मोक्षको बिचार नहींकरते हैं अरु श्रीरामाज्ञानुकूल रहते हैं ( २ ) पुनि वशिष्ठ करजोरिकै श्रीरामचन्द्रसे कहतेहैं हे कृपानिधान मेरी विनती सुनहु ( ३ )

हे श्रीरामचन्द्र तुम परमेश्वर परब्रह्म हौ यह नरकी ऐसी लीला देखि देखि हमको अपारमोह होत है ( ४ ) हे श्रीरामचन्द्र तुम्हारी माया अमित है वेद नहीं जानि सकै हैं हे भगवान् मैं क्यहिप्रकारते कहौं भगवान् शब्दको अर्थ करते हैं जिन श्रीरामन्द्रकर नाम सुमिरेते सम्पूर्ण अज्ञान नाशह्वै जाते हैं काहे ते परमात्मा परब्रह्म परमेश्वर सर्वज्ञ पूर्ण भगवान् हैं भगवान् क्यों कहाताको अर्थभगवान्कही पट्भगयुक्तऐश्वर्य धर्मयश श्रीवैराग्य मोक्षतिनको स्वरूप कहतेहैं ऐश्वर्यजाको अनेक ब्रह्मांड हैं पुनि धर्म काको कही सत्यवाक्य सर्बदाता निष्कपट शुद्धकर्मताको धर्म कही पुनियशकाकोकही उदार अजय जाको कोई जीति नसकै शीलनिधि अत्यन्तसुन्दर जाकोदेखिकै चराचर मोहेहैं ताको यशकही पुनि श्रीकाकोकहीतेज जाकेतेजकेआगेसूर्य चन्द्र अग्नि इत्यादिककी छबिजाहि श्रीकही शोभा स्वरूप करिकैसर्वगुण करिकै शोभितहैं श्रीकही प्रताप जाको सबडरें जाकी आज्ञामें पृथिवीअप तेज वायुआकाश तीनिहुगुण देवदानव मनुष्य इत्यादिक चराचर वर्त्तमान हैं श्रीकही लक्ष्मीजीने जाकी आज्ञानुकूलह्वैकै कोटिन ब्रह्मांडमें सुख

## नहिंजाना मैंक्यहिभांतिकहौंभगवाना ५ उपरोहितीकर्म्मअतिमन्दा वेदपुराणस्मृतिकरनिन्दा ६ जबनलेउंतबविधिकहमोहीं

भोगभरिदियोहै ताको श्रीकही पुनि बैराग्य काकोकही ह्वैकै शब्द स्पर्शरूपरसगन्ध चित्त बुद्धि मन अहंकार सात्विक राजस तामसइन सबनको अपने बश किये हैं अरु इनकेपरे हैं ताको वैराग्य कही पुनि मोक्षकाकोकही सालोक्य भगवान् के लोकमें बसै सामीप्य सदा निकटरहै सारूप्य जैसो भगवान्को रूपहै तैसोरूपहोइ सायुज्य अलंकारहोइरहै अथवाकोई के मनमें जैसे सूर्यको तेज घटफूटे सूर्यहीमें लीनहोइ ताको सायुज्यकही पुनि सारिष्ट मुक्ति सामान्य ऐश्वर्य अपने समान ऐश्वर्य देते हैं ये पांच मुक्तिहैं तामें ऐश्वर्य धर्म यश श्रीवैराग्य मोक्ष येते षट्भग जामें सम्पूर्ण होहिं अरु अपने जनको दाता ताको पूर्ण भगवान् कही जो स्वरूपषट्भगमें कछुकम होइ ताको अंशकला विभूति कही देखिये तौ षट्भग श्रीरामचन्द्रके बामचरणमें षट्कोश अंक है तामें षष्ठभाग शास्त्रकहते हैं ताते श्रीरामचन्द्र पूर्ण स्वयंभगवान् हैं॥ श्रीमन्महारामायणे॥ ऐश्वर्य्येनच धर्मेणयशसाचश्रियैवच॥ वैराग्यमोक्षषट्कोणैः संजातोभगवान्हरिः १ पोषणंभरणाधारंशरण्यंसर्वव्यापकं॥कारुण्यंषड्भिःपूर्णो रामस्तुभगवान्स्वयं २ अनेक ब्रह्मांडको पोषणगुण अरु भरणगुण आधारगुण अरु सर्बशरण्यत्वगुण अरु सर्व व्यापकत्वगुण अरु करुणागुण येते षट्गुण परम दिव्य श्रीरामचन्द्रमें नित्य ताते स्वयं भगवान् हैं ( ५ ) तहां हे श्रीरामचन्द्र मैं तुमको परब्रह्म अखण्डबिग्रह अच्छीप्रकारते जानतहौं तबतौ उपरोहिती कर्ममें लीनहै तहां उपरोहिती कर्म अतिमन्दहै जाकी वेद पुराण स्मृति निन्दाकरत हैं ( ६ ) तहां एक समयमें ब्रह्माकी सभामें हमहूं बैठे रहे तब ब्रह्माबोले हे बशिष्ठ तुम रघुबंश कुलकी उपरोहिती लेहु तब मैं कहा कि हे पिता हम उपरोहिती कर्मनहीं लेहिंगे काहेते उपरोहितीकर्म अति नीचहै तब पुनि ब्रह्माबोले हेपुत्र रघुवंशकुलकी उपरोहिती में आगेतुमको बड़ो लाभ है ( ७ ) काहेते परमात्मा परब्रह्म जाको कही सोनर रूपकही नराकार हैं अखण्ड एकरस परब्रह्म बिग्रह सो रघबंश कुलके भूषण रघुबंश कुलविषे अवतीर्ण होहिंगे अरु ब्रह्मांडभरे के भूषणहोहिंगे राज्यकरहिंगे अरु जन्मते लैकै जबबारह वर्ष होहिंगे तब विश्वामित्र अपने यज्ञकी रक्षाहेतु श्री अयोध्या को आवहिंगे श्रीरामचन्द्र लक्ष्मणको लै जाहिंगे तब राक्षसनको बधिकै यज्ञकी रक्षाकरिकै विश्वामित्र संयुक्तजनकपुर को जाहिंगे जनक योगीश्वरके इहां विवाह करिकै श्रीअवधको आवहिंगे पुनि बारहवर्ष अवध में रहैंगे पचीसयें वर्ष बनको गमन करैंगे अपनी लीला पूर्वक सर्व जीवनको सुखदेतसन्ते सम्पूर्ण प्रजनसंयुक्तपर

## अहैलाभआगेसुततोहीं ७ परमात्माब्रह्मनररूपा होइहिरघुकुलभूषणभूपा ८ दो०॥ तबमैंहृदयबिचारकरि योगयज्ञब्रतदान

विभूतिको गमनकरैंगे हे श्रीरामचन्द्र यह ब्रह्माजी ने मोसे कह्यो तहां प्रमाण है अन्यच्च श्लोक १॥ अनन्दोद्विविधःप्रोक्तः मूर्त्तश्चामूर्त्तएवच॥ अमूर्त्तस्याश्रयोमूर्त्तः परमात्मानराकृतिः ( ८ ) दोहार्थ॥हे श्रीरामचन्द्र ब्रह्मै असकहा तब मैं अपनेहृदयमें बिचारकीन्ह कि जेहि परमेश्वर की प्राप्ति हेतु यज्ञब्रत दानयोग वैराग्य समाधि इत्यादिक जो बहुतकाल करै मन शुद्ध करिकै तब कहूँ परमेश्वरकी प्राप्तिहोइ किन्तु नहोइ अरु तेहि परमेश्वरकी मैं उपरोहिती कर्ममें प्राप्ति होतहौं ताते यहि उपरोहितीके समान दूसर धर्म नहीं है यामें यह

ध्वनिहै कि जोवेद अरु लोककरिकै निंदितकर्मधर्म इत्यादिकहै अरु वहिमें परमेश्वरकी प्राप्तिकर सम्बन्धहै ताते यहसर्वोपरिउत्तमहै यह बिचारिकै मैं रघुबंशकुलकी उपरोहिती ग्रहणकीनहै तहां प्रमाण है वेदविषे॥ अहोयक्षतसूत्रंपरिदधासिवशिष्ठत्वंपुरोधासि सएवब्रह्मोद्भवंपरिपश्यंतुधीराः अनन्यमनसाचिंतयंतुदेवाः स्वर्गेषुयज्ञायाप्यायतांधियः कौशिकेनसमग्रंप्रलीयतांदेवा:विरसि बाहुरसि तूर्यमङ्गलायतांप्रधानानियज्ञासीत् एषः ब्राह्मणः बशिष्ठस्याहप्रयोजनायकेषु भानुवंशस्यकृतोद्भवः आचरणायकर्मसर्वस्य अप्रमेयानिकर्माणि नाहंवभूवऐषस्तुज्ञेयंसनीचैः तन्नोगृह्णाति कालेकाले मंगलायपरिपूर्ण ब्रह्मलोकादिहागताः पूज्यमानस्संतु आपः सुमनस्यमनोभवः देवर्षेः गच्छन्पुरे मंगलमास्तान् चिन्मयो:संमेलनविधिसंगीयतां ( ९ ) जप तप नेम अष्टांगयोग निजधर्मकही निजनिज धर्म कर्ममें दृढ़ता अरु श्रुतिस्मृति करिकै जेते शुभकर्महैं ( १० ) पुनि ज्ञानमें दुइभेद हैं एक शास्त्रजन्यज्ञान अरु एक आत्मज्ञान अरु दयाकही दीनको देखिकै द्रवै ताकी दीनता अपनी सामर्थ्यते मिटाइदेइताको दयाकही अरु दमकही मनसुद्धां इन्द्रिनको जीतना अरु संपूर्ण तीर्थनको मज्जन अरु जहांलगि धर्म श्रुतिसज्जन कहते हैं ( ११ ) अरु शास्त्र वेद पुराण इत्यादिकन के पढ़े सुने समझे गुनेकर एकफल यही है ( १२ ) हे श्रीरघुनन्दनजू तुम्हारे चरणारविन्द विषे निरन्तर प्रीतिहोइसंपूर्ण साधनकरफल एकयही सुन्दर है ( १३ ) हे प्रभु जो साधन कहि आये हैं जो ऐसो साधन कोटिनकरै तहां अन्तष्करणकी क्षीनीबासना अहंमम इत्यादिक नहींमिटे हैं कैसे जैसे कोई बस्त्र कीचमें भरिगयो है अरु

**जाकहँकरियसोपाइहौंधर्म्मनयहिसमआन ९ चौ०॥ जपतपनेमयोगनिजधर्म्मा श्रुतिसम्भवनानाशुभकर्म्मा १० ज्ञानदयादमतीरथमज्जन जहँलगिधर्म्मकहतश्रुतिसज्जन ११ आगमनिगमपुराणअनेका पढ़ेसुनेकरफलप्रभुएका १२ तवपदपङ्कजप्रीतिनिरन्तर सबसाधनकरयहफलसुन्दर १३ छूटहिंमलकिमलहिकेधोये घृतकिपावकोउबारिबिलोये १४ प्रेमभक्तिजलाबनुरघुराई अभ्यन्तरमलकबहुँनजाई १५**

कीचहीसों धोवै सो कैसे साफहोइ तहां अतिमलीन होइजात है इहां यह अभिप्राय है कि जो कोई अनेक सुकर्म कर्म करते हैं ते स्वर्गको प्राप्ति होते हैं तहां अतिविषय ताको प्राप्तिभयो है काहेते कर्म सबसवासिकै हैं अरु ज्ञानयोग जोहैं सोभी सवासिकहै काहेते कि कैवल्यमुक्तिकी बासना है अरु बासना सबमलीनही है कदाचित् ज्ञान योग जो शुद्धहोइ तौ कैवल्यमुक्तिको प्राप्तिहोइ है पर श्रीरामचन्द्र के स्वरूप भक्तिकी प्राप्ति नहींहोइहै ताते उपासनाकांडमें बिनाभुक्ति मुक्ति शुष्क है ताते अनेक साधनाकरै पर अन्तष्करण नहीं शुद्धहोत है कैसे जैसे जलकेमथेते घृतनहीं निकसै है ( १४ ) ताते हे श्रीरामचन्द्रजी तुम्हारे चरणारविंद विषे प्रेमलक्षणा भक्तिरूप जल जबताईं नहींहोइ तबताईं अनेक साधनाकरै परन्तु अभ्यन्तरमल कबहूं नहीं छूटै है अभ्यन्तरकही अन्तष्करणकी झीनीबासना तहां बासनामें द्वैभेद हैं एकस्थूल एकझीनी जो मनमेंउठै सो करि परै उसे स्थूलकही अरु बेचाहे मनमें बासनाउठै उसे झीनीकही कैसे जैसे कोई अतिक्षुधित ब्राह्मण विवेकी है अरु कबहूं काहू नीचजन के इहां अनेक सुन्दरपदार्थ व्यंजनदेख्यो तहां बासना चलिगई है अरु ब्राह्मण वहपदार्थ जो अनायासहू प्राप्तिहोतसंते नहीं ग्रहणकरै ताको झीनी कही तथापि झीनी बाधक नहीं है पर संतजन झीनीहूको नहीं सहिसकैं तहां स्थूल बासना कर्मयोग ज्ञानते वरु मिटिजाइहै पर झीनीबासना नहीं मिटैहै तहां श्रीरामचन्द्र जे प्रेमलक्षणा भक्ति निर्मलजल नदीरूपपूर्णप्रबाह भरी सो धोइडारे हैं ( १५ ) हे श्रीरामचन्द्रजी सोई सर्बज्ञ है सोई तज्ञहै सोई पण्डितहै सर्वज्ञकही तीनिहूं कालकीगति सबके अन्तष्करणकी जानै तज्ञकही तत्त्ववेत्ता पण्डितकही समदर्शी होइ चराचरविषे परमेश्वरको व्याप्त एकभावदेखै श्लोकएक भगवद्गीतायां॥ विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणेगविहस्तिनि॥ श्वनिचैवस्वपाकेच पण्डितासमदर्शिनः१ अरु सोई उत्तमगुणके गृह हैं अरु अखण्ड विज्ञानको प्राप्ति हैं विज्ञानकही स्वस्वरूपको प्राप्तिहैकै परस्वरूपविषे आत्माकी वृत्ति लयहोइ

**स्वइसर्बज्ञतज्ञस्वइपण्डित स्वइगुणज्ञहविज्ञानअखण्डित १६ दक्षसकललक्षणयुतसोई जाकेपदसरोजरतिहोई १७ दो० नाथएकबरमाँगौंरामकृपाकरिदेहु जन्मजन्मप्रभुपदकमलकबहुँघटैजनिनेहु १८ चौ० असकहिमुनिवशिष्ठगृह**

अरु सर्बत्र समदर्शीहोइ विज्ञान है ( १६ ) अरु शुभकर्म सर्बलक्षणयुक्तसोई है हे श्रीरामचन्द्रजी जे परमदिव्य गुणके पाछे कहिआये हैं त्यहि गुणन करिकैयुक्त सोई पुरुष हैं जिनके मन वचनकर्म तुम्हारे चरणारविंदविषे अतिप्रीतिहोइ काहेते कि तुम्हारे चरणकमल के आश्रय परम दिब्य गुणसर्ब हैं ( १७ ) दोहार्थ॥ हे भरद्वाज श्रीवशिष्ठजू बोलतेभये हे श्रीरामचन्द्र करुणानिधान मैं एकबरदान मांगतहौं कि तुम्हारीमायाकी प्रबलताते जैजन्म यहिजगत्में मेरेहोयं तहां तहां तुम्हारे चरणारविन्द विषे तैलवत् धार अखंड मोरिप्रीति बनीरहै कबहूं घटै नहीं हे महाराज कृपा करिकै यह बर मोको देहु काहेते कि आपु अन्तर्द्धान होवाचाहते हौ अरु मोको इहां राखिजातेहौ अरु तुम्हारी आज्ञा सर्ब के शीश पर है ताते यह बर मांगतहौं तहां श्रीरामचन्द्र बशिष्ठकी सर्बज्ञता अरु अपनी लीला समुझिकै अति प्रसन्नभये हैं अंतष्करणमें एवमस्तु कहत भये इहां वशिष्ठ जीने परमपदकी प्राप्ति क्यों न मांगी अरु अनेक जन्मताईं श्रीरामचन्द्र जी के चरणकै प्रेमलक्षणा भक्तिमांगते भये तहां यह साधुन कै युक्ति यथार्थ है काहेते कि जो परमपदकी प्राप्तिको बरदानमांगहिं तौ सकामी भक्तहोहिं अरु जो संगजाबेको बरदान मांगहिं तौ श्रीरघुनाथजीकी इच्छाभंग होइ है यह जानिकै निःकामभक्ति मांगी है अरु जहां श्रीरामचन्द्रके पदविषे अखण्ड प्रेमहै ते तौ श्रीरामचन्द्र को प्राप्तिही हैं अरु श्रीवशिष्ठ इत्यादिक जे महान् हैं ते श्रीरामइच्छानुकूल रहते हैं ताहीते जे नित्यपार्षद हैं अपनीलीलाविषे तिनहीको परमेश्वर अपनो मातापिता गुरु कहते हैं ( १८ ) हेपार्बती श्रीवशिष्ठजू असकहिकै भक्तिबरलैकै श्रीरामाज्ञा शीशपरधरिकै श्रीरामचन्द्रकी मूर्त्ति मनोहर हृदयमें राखि अपने गृहकोगये तहां कृपासिंधु जो श्रीरामचन्द्र हैं तिनके मनमें श्रीवशिष्ठजी अति भावत भयेहैं तहां यह ध्वनि है कि जो कोई जीव अद्यापि श्रीरामचन्द्र की आज्ञानुकूल चलै सो श्रीरामचन्द्र को अति प्रिय भावत है अद्यापि श्रीरामचन्द्रकी आज्ञा वेदशास्त्रहैं ताते जो वेद शास्त्रकहैं अपने मत उपासनानुकूल सोकरे अरु एक रामाज्ञा यहहै बर्ष मास दिन पहर घरी पल देशकाल अवसर अरु संग कुसंग कर्म-

**आये कृपासिन्धुकेमनअतिभाये १९ हनूमानभरतादिकभ्राता संगलियेसेवकसुखदाता २० पुनिकृपालुपुरबाहेरगयऊ गजरथतुरंगमँगाबतभयऊ २१ देखिकृपाकरिसकलसराहे दियेउचितनिजनिजजोचाहे २२ हरनसकलश्रमप्रभुश्रमपाई गये जहां शीतल**

स्वभाव इन सबनविषे जो नीक विकार हानि लाभ दुःख सुख मानापमान अति निन्दाइत्यादिक प्राप्ति होइ है सोसब रामरजाय जानै तिनमें अपनपौ नहींमानै अरु जो कछु उत्तमहोइ तामै हर्ष न पावै तहांकेवल श्रीरामचन्द्रजीकी कृपाजानै अरु जोकोई विकार प्राप्तिहोइ तौ रामरजायजानै कि मोसे कछुचूकपरी है सो श्रीरामचन्द्रदण्डदैकै मोको शुद्धकरते हैं काहूमें गुणदोष नहीं रोपणकरै है अरु अपनी प्रारब्धभी नहीं मानते हैं यही रीतिसे केवल श्रीरामाज्ञा जानतेहैं ऐसे आत्मसमर्पणप्रसन्न शरणागत जे हैं ते सब श्रीरामचन्द्र की रजाय मानते हैं निश्चय करिकै आप मनवचन कर्मते अकर्त्ता हैं श्रीरामचन्द्र जी को अति भावतेहैं ( १९ ) तहां हनुमान्जी लक्ष्मणजी भरतजी शत्रुहनजी तिनकोसङ्ग लीन्हे हैं काहेते सेवक के सुखदाताहैं ( २० ) जब वशिष्ठजी बिदाहोइकै अपने गृहगये तब श्रीरामचन्द्र सब सेवकन संयुक्त पुरके बाहेर जातेभये तहां अनेकन गजरथ तुरंग इत्यादिक वाहनादि मंगवाते भये अरु रत्न हेमके आभूषण पट अनेकन मंगावते भये ( २१ ) सब पदार्थनको देखिकै श्रीरामचन्द्र कृपाकरिकै सराहतेभये अरु अपनी रुचि अनुकूल सबको देतेभयेहैं अरु जो यह अर्थकही कि अवधबासिन जो जो चाहिन है सो सोदीनहै तौ यहि अर्थ विषे एकअभाव भासत है काहेते कि श्रीरामचन्द्रजी ने यहि प्रकरण के पूर्ब अपनी पर बिभूति परमदिब्य नित्य ऐश्वर्यलीला अरु नैमित्य माधुर्यलीला दिखाईहै तहां नित्यऐश्वर्य नैमित्य ऐश्वर्यमाधुर्य दूनौ मिलेते एकहीहै अरु भिन्नहै दोतत्वएकहीहैं तहां श्रीरामचन्द्रजी अपनी पर बिभूति परमदिब्यतर द्वौएक कराचाहतेहैं सहित ऐश्वर्य परधामको गमनकिया चाहतेहैं ताते पुरबासिनको वैराग्य ज्ञान अपनी परमभक्ति उपदेश कीनहे अरु पुरबासिन ग्रहणकीनहे तहां पुरबासिनके हाथीघोड़े अनेक रत्नके अलंकार पट इत्यादिकन की कहा चाहना है तहां श्रीरामचन्द्रजी अपने उपदेशकै पुरबासिनते परीक्षालेतेहैं जबपरिपक्व देखे तब जेजस कार्यमेंरहे तिनको तैसे तैसे बाहन अलङ्कार देतेभये काहेते कि जेते सबबाहनहैं तेते सबपर विभूतिहीकेहैं

तातेसंगहीजायँगे अरु मनुष्यनको बाहन संयुक्त लैजाहिंगे अरु श्रीअयोध्या के चर अचर जीवजेहैं तिन सबनको श्रीरामाज्ञाते ब्रह्मा कोटिन बिमान ल्यावैंगेतिनपर चढ़ाइकै परधामको पहुँचावहिंगे तहां बिमान सब रहि जाहिंगे

**अमराई २३ भरतदीननिजबसनडसाई बैठेप्रभुसेवहिंसबभाई २४ मारुतसुततबमारुतकरई पुलकिबपुषलोचनजलभरई २५ हनूमान**

काहेते पुरवासिनके संयोगते ब्रह्माके बिमाननकै मोक्षभई अरु जे जीव अपररहे तेसब आदि अन्त द्विभुज नित्य किशोररूपहैं तहांजोकोईशास्त्र को प्रमाणदैकै कहै कि श्रीअयोध्याबासी चतुर्भुज रूपह्वैकै परधाम कोगये हैं तहां श्रीरामचन्द्र करुणानिधान सत्यब्रती सबकी मर्यादाराखते हैं ताते रमाबैकुण्ठताई मध्यविषे विष्णुस्वरूप चतुर्भुजविष्णुके ऐश्वर्यलीला के मार्यादाराखे हैं अरु आदि अन्त विषे नित्य किशोर द्विभुज जानिये यहि चौपाई में यहै धुनि है जो कहि आये हैं यह भेद बालकाण्ड में ब्रह्मादिक देवतन की स्तुति में भगवद्वरदान प्रसंगे ब्रह्मबाणी चौ०॥ कश्यपअदितिमहातपकीन्हा॥ तहां बालकाण्डमें तिलकदेखब ( २२ ) हे भरद्वाज जन्मरण इत्यादिक जे श्रम हैं तेहि सर्बके हरैया श्रीरामचन्द्रजी अपनीलीला नीतिकरिकै सबको देतेदेते श्रमको ग्रहण करते भये पुनि शृंगारबन शीतल अमराईको जातेभये ( २३ ) तहां भरतजी अपनो पीताम्बर बिछाइ देतेभये तापर श्रीरामचन्द्र बिराजतभये सब भाई भरत लक्ष्मण शत्रुहन किंतु लक्ष्मण भरत शत्रुहन अपनी अपनी सेवाकरते हैं तहां सेवा दुइप्रकारकी एक भगवत्सेवा एक भगवत् दाससेवातहांदूनोंमें तीनिभेद जानिये एकदीप्तप्रपन्नह्वैकै सेवाकरतेहैं एक आरत प्रपन्नह्वैकै सेवाकरते हैं अरु एकदीप्त आरतमिले सेवाकरते हैं तहां दीप्त प्रपन्नकही मनबचन कर्मते स्वामी की आज्ञानुकूल रहते हैं अरु आरत प्रपन्नकही जो श्रीरामचन्द्र श्रीमुखतेकहैं कि इहांरहौ हम पक्षमासको जाते हैं किंतु तुमजाहु पक्षमासको तबवे सेवक श्रीरामचन्द्रकी अवज्ञा करिकै निकटसेवा नहीं छोड़तेहैं ( २४ ) अरु मारुतसुत मारुत करते हैं अतिप्रेमते गातपुलकि पुलकिहोइ हैं नेत्रनमें जलभरतेहैं तहां दीप्तआरत प्रपन्नमिलैहै अरु श्रीभरतजी तुरन्त श्रीराम इच्छानुकूल छत्रलेते भये अरु लक्ष्मणजी तुरन्त चमरलेतेभये हैं अरु शत्रुहनजी श्रीरामचन्द्र के दीप्तप्रपन्नहैं अरु भागवत् भरतके आरत प्रपन्नहै तहां शत्रुहनजी सूर्यमुखीलिहे हैं अरु हनुमानजी व्यजनलिहे हैं अपर पार्षद अपरसेवाकी सामग्रीलिहे हैं ऐसेही सबभाई अरु हनुमान् सेवाकरते हैं समय समयपर सबसेवा करतेहैं तहां तीनिहू भाइनको श्रीरामचन्द्रकर रूपही जानिये ( २५ ) हे पार्बती श्रीहनुमान्के समान बड़भागी कोई नहींहै काहेते कि श्रीरामचन्द्रजीके चरणारबिंदके अनुरागी ऐसे न कोईभयेहैं न कोईहैं न कोईहोहिंगे भूत भविष्य बर्तमान तीनिहूंकालमें नहींहै ( २६ ) हे गिरिजा जिन हनूमानकी प्रीति सेवकाई श्रीरामचन्द्रजी श्रीमुखते बार

**समनहिंबड़भागी नहिंकोउरामचरणअनुरागी २६ गिरिजाजासुप्रीतिसेवकाई बारबारप्रभुनिजमुखगाई २७ दो०॥ तेहिअव-**

बार बखानते हैं काहेते कि जाकी अविद्या मायाकी सहित समाज हनुमान् अच्छीतरह जीतिकै स्वस्वरूपहै प्राप्तिह्वैकै श्रीरामचन्द्रजीकेचरणारबिंदके मकरन्दके लुब्ध मधुपइव वृता ताते बारबार बड़ाई करते हैं तहां अविद्यामाया ताको विशेषणकही गुणनके सेनाकहतेहैं तामायाकी सेनाविषे मन अरु महामान द्वौवजीरहैं पुनि तीनि महासेनापतिहैं काम क्रोध लोभ तामें काम महामुख्यहै तिनके द्वैद्वै उपसेनापति हैं क्रमतेजानब मोहमद अहंकार मात्सर्य्य ममता दम्भ तहां मोह उपसेनापति के सहायक राग अपनपौ दारा बालक बित्त इत्यादिकनके विषे प्रीति तिनके संचारी पैदर पंचविषे शब्दस्पर्शरूप रसगन्ध अरु मद उपसेनापतिके सहायक जातिकुल सुन्दरता युवा धन बिद्या शास्त्रज्ञान अरु तिनके संचारी पैदर अनेकहैं मान परमान निंदा अहंमम इत्यादिक पुनि अहंकार सेनापतिके सहायक पुरुषकही टेढ़े मन बचन कर्मतेहैं पुनि तेहिके संचारी पैदर परधन परनारि इत्यादिक जेहैं तिनमें प्रीति पुनि मात्सर्य के सहायक परऐश्वर्य बड़ाई यशभोग नहीं सहिसकै हैं अरु तिनके संचारी पैदर मिथ्याबचन मनकर्मकी कर्त्तव्य पुनि ममता उपसेनापति के सहायक विषय जो द्रब्य त्यहिको संग्रह पुनि उठावैंनहीं पुनि त्यहिके संचारी पैदर चत्तबुद्धि मनकी विषय कर्मते चिन्तवन निश्चय मनन इत्यादिक पुनि दम्भ उपसेनापतिके सहायक सुंदर वेष सुंदर बचन सुंदर कर्म करते हैं अरु अंतष्करण में परधन मान बड़ाईकीबासना मरी है त्यहिके संचारी पैदर लोककी चातुर्यता पुनि अविद्यामय मायाकेभटकहतेहैं

अविवेक अज्ञान गौरव छलकपट पाषण्ड पुनि आयुध सबनके ईर्षा कटुवचन पराये धन धर्मके विघ्नकर्त्ता अरु इंद्री बाह्यांतर विषयलीन तहां अविद्या माया के महामुख्य वजीर मन अरु महामान सो हनुमान्‌जीके नामहींते जीतागयोहै काहेते नाम हनुमान् नकारकी उकार लोपकरिकै तहां हनशब्द नाशविषे होत है ताते खण्डान्वय करिकै जे सर्बथा मनमानको हनैं तिनको हनुमान् कही काहेते हनुमान् सदा मनमानको तीनिहूंकालमें जीतेहैं अरु हनुमान्‌शब्द बर्त्तमानविषे शिक्षामेंहोतहै तहां श्रीरामचन्द्रजीने किष्किन्धाकाण्डमें हनुमान्‌जीको अपने विषे अनन्यभाव शिक्षाकीनहै तब सर्बथा मनमानको नाशकीनहै ताते हनुमान् क्रियामानहैं अरु हनुमान्‌को श्रीगोसाईंने विनयपत्रिकामें कामजीताग्रणीकहाहै तहां कामकही मदनको पुनि कामकही अनेक त्रैगुण्यजनितकामनाजेहैं सोदूनौंकामको हनुमान्‌जीतेहैं जहांजहांमनमान वजीर अरु काम मुख्य सेनापति को जीतेते अपर सेनापति उपसेनापति अरुसहायकअरु पैदर अरु भटसब परायजाते हैं तहां अविद्या मायाके वजीर महाबीर त्यहिको जितैया शास्त्रको विशेष सतसंग को ग्रहण अरु तिनके आयुध मन जीतबेको त्रैगुण्यजनित विषयते विराग पुनि मान महामान ज्ञान पुनि श्रीरामचन्द्रजीके चरणपङ्कजमें रति पुनि शास्त्रके तत्व श्रीरामरूपमय सर्बभूत गुणतत्वनमें एकबुद्धि पुनि काम क्रोध लोभ सेनापतिके जितैयाक्रमते सबको जानिये शम दम उपरति तितीक्षा श्रद्धा समाधानपुनि शास्त्र अष्टांगयोग पुनिक्रोध जीतैको विचार अरुआयुध क्षमाशांति पुनि लोभ जीतैको उदारचित्त आयुध सन्तोष प्रारब्धिबश निर्बाह पुनिमोह उपसेनापति के जितैया ज्ञान पुनि आयुध नित्यानित्यको बिचार पुनि मदके जितैया देह आदिक बर्णाश्रम संसार अनित्यहै आयुध असंग है पुनि अहंकार उपसेनापति के जितैया शील आयुध निर्बैर पुनि मात्सर्यके जितैया विवेक श्री रामचन्द्रजी की रजायमें सबै बर्तमान हैंपुनि आयुध शुभाशुभ कर्मके आधीन सबै हैं पुनि ममताके जितैया सर्ब जीव परमेश्वरहैं पुनि आयुध कोई किसूको नहीं है पुनि दम्भके जितैयासर्बते अचाह सर्ब बस्तुते पुनि क्रमते उपसेनापति के सहाय कहते हैं रोग को जितैया बिराग अपन्यो को जितैया न कोई मित्र न कोई अरि हैपुनि दारा बल बित्त अपनपौ तेहिके जितैया मुमुक्षु दशा सर्ब जीवनते नीचानुसन्धान सर्ब पुरुषार्थ बिभूति श्रीरामचन्द्र जी की है पुनि तिनकेपैदरके जितैया श्रीरामचन्द्रके चरित्र दण्डवत् प्रतिमाब्यापक नामप्रसादी तुलसी फूलइत्यादिकमें प्रीति पुनि मद उपसेनापति के सहायकके जितैया बर्णाश्रम के धर्म कर्मके फलको त्याग किन्तु स्वरूपही को त्याग तिनके पैदर के जितैया देशकाल अवसर लिहे सुकर्म सर्बजीवको आदर सन्मान दया पुनि अहंकार के सहायकनके जितैया मन क्रम बचनते सुधीर रहस्य पुनि तिनके पैदरके जितैया मन क्रम बचनते सन्तनमें प्रीति पुनि मात्सर्य सहायकके जितैया परमेश्वरसबको भलाकरै यह दृढ़ बुद्धि अरु तिसके पैदरके जितैया सत्यबचन पुनि ममताके सहायकके जितैयाविषयके स्वरूपहीको त्याग पुनि तिनके पैदरके जितैया चित्त बुद्धि मन की वृत्ति विषयते उलटिकै श्रीरामचन्द्र को स्वरूप ताको चिंतवन निश्चयमनन अरु प्रताप क्रियामें बुद्धिकी निश्चय अरु मनमें श्रीरामचरितके

सरमुनिनारद आयेकरतलबीन गावनलागेरामकल कीरतिसदानवीन २८ चौ०॥ मामवलोकयपंकजलोचन कृपाबिलोकनि

मनन पुनि दम्भके सहायकके जितैया सरल स्वभाव सहजानन्द श्रीरामचन्द्रके चरणनमें प्रीति पुनि तेहिके पैदरके जितैया श्रीरामचन्द कै लीला गुणनमें अतिप्रबीणता ग्रहण अविद्याके भटनको कौनजितैया है परम विवेकते अविवेक जीताजाइहै ज्ञानते अज्ञान जीताजाइहै श्रीरामको चराचरमय मानिकै सबको गौरव देना तब अपनो गौरव मिटै है निःछलभयेते छलमिटै निष्कपट भयेते कपट मिटै सरल स्वभावते पाखण्डमिटै इत्यादिक अविद्याके अनेक सेनापरिवार हैं अरु अविद्याके बश सर्बजीव हैं त्रैलोकभरि अरु जेजीवश्रीराम शरणागत हैं तिनपर श्रीरामकृपाते बिद्या प्राप्तिभई है तब ते सम्पूर्ण अविद्याको बिना श्रमहींजीति लेतेहैं तबते श्रीरामचरण के अति अनुरागी होते हैं सर्बोपायशून्य अनुरागी ऐसेहनुमान्‌जीहैं ताते श्रीरामचन्द्र श्रीमुखते हनुमान्‌की प्रीतिसेवकाई बारबार बखानतेहैं ( २७ ) हे पार्वती तेहि अवसर विषे ब्रह्मलोकते नारदमुनि श्रीरामचन्द्र के समीप आवते भये करतल विषे बीणालिहे श्रीरामचन्द्रकर गुण कलकही अति सुन्दर अतिनिर्मल कीर्ति गावने लगे कैसी है कीर्ति नित्य नवीनहै नवीन कही गावत सुनतसंते सुख प्रेम बढ़तजाइ घरी प्रतिदिन प्रतिमास प्रतिवर्ष प्रतियुग कबहूंनहीं उठै नित्यनवीन प्रेमबढ़ै ताको नित्यनवीन कही किंतु नवीन नवीनकीर्तिकरते हैं सो नारद

मुनि गावते हैं ( २८ ) हे पंकजलोचन माम विलोकय हमारी दिशि कृपाकरिकै देखौ तुम्हारी कृपा सर्बशोच को बिमोचनकर्त्री है तहां मामविलोकय क्यों कहा का श्रीरामचन्द्र नारदको देखते नहीं हैं तहां श्रीराम अपनी परमदिव्य बिभूति संयुक्त अंतर्द्धान होवा चाहते हैं ताते नारदजू कहते हैं कि हे रामचन्द्रजी मोको कृपादृष्टि करिकै जो आज्ञाहोइ सोकरौं आज्ञा होइ संगचलौं आज्ञाहोइ ब्रह्मलोकमें रहौं तहां श्रीरामचन्द्रजी शीलके निधान नारदके स्तुतिकरि श्रीरामचन्द्रजी बोले नहीं तब नारदजी यह जाना कि श्रीरामचन्द्र की इच्छा मोको इहां रहिबेकी है यह अर्थ चौपाई के अभिप्राय करिकै है ( २९ ) पुनि नारद कहते हैं कि हे श्रीरामचन्द्रजी तामसकही कमल नील तद्वत् तुमश्यामहौ अरु कामअरि को हृदय कमल तेहिको मकरंद प्रेम-

**शोचबिमोचन २९ नीलतामरसश्यामकामअरि हृदयकंजमकरंदमधुपहरि ३० यातुधानबरूथबलभंजन मुनिसज्जनरंजनअघगंजन ३१ भूसुरशसिनववृन्दबलाहक अशरणशरणदीनजनगाहक ३२ भुजबलबिपुलभारमहिखंडित खरदूषणबिराधबधपंडित ३३**

तुम्हैं बिषै तेहि रसके आप मधुपहौ ( ३० ) पुनि आप कैसेहौ यातुधान जेदानवहैं बरूथ के बरूथ तिनके बलके भंजनहारहौ मुनिन अरु संतनके रंजनकही आनंद कर्त्ता हहु अरु अघकेगंजन कर्त्ता हहु ( ३१ ) पुनिभूसुर जो ब्राह्मणन के वृन्दहहिंते शसि कही कृषीहहिं तिनके पालिबेको आपु बलाहक कही मेघहौ अरु अशरण कही जो कोऊ नहीं शरणराखै ताको आपुशरण राखते हैं अरु जे संसारते डरिकै तुमसे दीन होते हैं तिनकोग्रहण करते हौ ( ३२ ) अरु अपनी भुजनके बलते पृथिवी को भारखंडन करतेहौ अरु खरदूषण बिराधके बधबिषे बड़े पण्डित हौ प्रवीणहौ काहेते खरदूषण को सहित सेना के अपनोरूप देत भयेहहु तब वोई सब परस्पर आपुसमें देखतेहैं कियेई रामहैं अरु आपको रामनररूप नहीं देखते हैं अरु वे उसको रामरूप देखते हैं वे उसको रामरूप देखैं हैं श्रीरामचन्द्र की मायाकरिकै सब व्यामोहित होगये हैं आपुस में संग्राम करिकै लरिमरे परमपद को जातेभये आरण्यकांडे॥ देखहिंपरस्पर रामकरि संग्रामरिपुदललरिमरेउ। अरु बिराधको सहज में आवते बधकीन ( ३३ ) हे रावणारि अरु सुखरूप देवदानव मनुष्य इत्यादिकन विषे जेते राजाहहिं तिनसबके शिरोमणि हौ ते तुम्हारी जय दशरथ कुल कुमुदको बनहै तहां तुमसुधाकरहौ ( ३४ ) हे श्रीरामचन्द्र तुम्हारो सुयश बेदशास्त्र पुराण अरु सुरमुनि संतजन अहर्निशि गावते हैं ( ३५ ) हे श्रीरामचन्द्र कारुणीक एक तुमहींहौ काहेते कि दीननपर करुणाकरत आपुको नीकलागतहै ताते करुणाको विशेष ग्रहणकिहेहौ अरु बालि इत्यादिक जे अभिमानी रहे हैं तिनके मदके खंडनकरिबेको आपुकुशलकही पंडितहौ अरु कोशल जो श्रीआयोध्या मंडलहे तेहिके मंडन कही श्रृंगारहौ किंतु जो कोशलपुरी को राजा संपूर्ण ब्रह्मांड मंडल विषैहै ताते आप ब्रह्मांडभरे के भूषणहौ ( ३६ ) हे श्रीरामचन्द्रजी तुम्हार नामजोहै सो कलिके जेमलहैं अहंमम इत्यादिक तेहिको नाशकर्त्ता गोसाईं श्रीतुलसीदास कहते हैं श्रीनारदजू कहा हे श्रीरामचन्द्रजी मैं तुम्हारो

**रावणारिसुखभूपरूपबर जयदशरथकुलकुमुदसुधाकर ३४ सुयशपुनीतबदतनिगमागम गावतसुरमुनिसंतसमागम ३५ कारुणीकबालीमदखंडन सबबिधिकुशलकोशलामंडन ३६ कलिमलमथननाममगताहन तुलसिदासप्रभुपाहिप्रणतजन ३७ दो०॥ प्रेमसहितमुनिनारद बरणिरामगुणग्राम शोभासिन्धुहृदयधरि गयेजहांविधिधाम ३८॥**

* * * * * *

जनहौं सो पाहि पाहि शरणहौं आपके चरणविषे मेरी प्रेमलक्षणाभक्तिबनी रहै यह बरपावौं तब श्रीरामचन्द्रजी बिहँसिकै कृपादृष्टिकै अवलोकनिके द्वार ह्वैकै एवमस्तु कहा ( ३७ ) दोहार्थ॥ हे पार्वती प्रेमसंयुक्त श्रीरामचन्द्र जी की स्तुति करिकै श्रीनारद जू दण्डवत् करिकै मानसी आज्ञापाइकै ब्रह्मलोकको जातेभये पुनि श्रीरामचन्द्र जी हनुमान्‌जीको आज्ञादीन कि एकस्वरूप तुमइहांरहौ अरुतुमहमारे संगचलौ यह कहिकै श्रीरामचन्द्र जी सहित हनुमान् भ्रातन सहित धनुर्बाणादि किशोरमूर्ति पृथक् पृथक्

अन्तर्द्धानहोतेभये परमदिव्य विमाननपर आरूढ़ ह्वैकै परबिभूति को गमनकीन उपरांत सम्पूर्ण अयोध्याबासी अरुसम्पूर्ण बानर ऋच्छनकी सेना परमदिव्य स्वरूप होइकै परमदिव्य बिमान पर चढ़िकै श्रीराम इच्छाते परत्रिपाद बिभूतिको चलते भये तहांप्रमाण ब्रह्मरामायणे ब्रह्मणोवाक्यं नारदंप्रति॥ यानस्थोरघुनन्दनः परपुरीप्रेम्णागमद्भ्रातृभिर्लोकानां शिरसिस्थितामणिमयीनित्यैकलीलांपदा॥ सौमित्रिश्चतदाकलेनप्रथमंरामाज्ञयावर्तितः॥ तेनैवक्रमकेनबंधुमिलितो रामेनसाकंगतः (३८) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वंसनेउत्तरकांडे उमामहेश्वरसम्वादे समाजश्रीरामचंद्रपरधामगमनवर्णनन्नामपञ्चदशस्तरंगः१५॥ :: :: ::

दोहा॥ प्रथमशंभुकहिपुनिउमाप्रश्नकीनश्रुतिसार॥ रामचरणसोरहेंलहरिउत्तमपरमउदार १६॥ हे गिरिजा सुनहुँ मैंने अपनी मतिके अनुसार श्रीरामचन्द्रकी कथा अतिपावनि उज्ज्वल कहीहै (१) हे पार्वतीश्रीरामचन्द्रजी के चरित शतकोटि तेहिकेपरे अपार हैं तहां शतकोटि अपर श्रीमद्रामचरितके ग्रन्थ हैं काहेते कि श्रीरामचन्द्रके संगविषे अठारह पद्म सेनापति रहेहैं तेसब वेदवेत्ता रहे हैं तिन सबनने एकएक श्रीमद्रामायण ग्रन्थ कीन है अरु कोजानै केते श्रीमद्रामायण के ग्रन्थ श्रीमहादेवने कीनहै श्रीब्रह्मैंकीनहै श्रीबाल्मीकि कीन है श्रीवेदव्यास कीन हैं श्री अगस्त्यजी इत्यादिक मुनीशनकीनहै सो रामायण तीनिहूँ लोकमें सातौ द्वीपनमें सर्वत्र प्राप्ति है ताते शतकोटि अपार कहे हैं जाको

**चौ०॥ गिरिजासुनहुंबिशदयहकथा मैंसबकहीमोरिमतियथा १ रामचरितशतकोटिअपारा श्रुतिशारदानबरणैपारा २ रामअनन्तअनन्तगुणानी जन्मकर्म्मआनन्तनमानी ३ जलसीकरमहिरजगनिजाहीं रघुपतिचरितनबरणिसिराहीं ४ विमल**

श्रुति शेष शारदा इत्यादि कहिबे को पारनहीं पाइ सकते हैं किन्तु है सामान्य मुझे याको शतकोटि अपर अपार श्लोकही हैं तामें एकएक अक्षर जो उच्चारण करै सो महापाप जो जन्म मरण है सो मिटि जाइहै श्लोक एक॥ चरितंरघुनाथस्यशतकोटिप्रविस्तरं॥ एकैकमक्षरंपुंसां महापातकनाशनं (२) हे पार्वती श्रीरामचन्द्र एक हैं अरु अनंत हैं अरुअनन्तगुण हैं अरु अनन्त जन्म अनन्तकर्म हैं अरु अनन्त चरित हैं नामानी कहे तिन श्रीरामचन्द्रके नमस्कार करत हौं किन्तु नामानी कहे इहां काकोक्तिशब्दहै का नामानी नतु सर्व अनन्त मानिबेयोग्यहैं किंतु अनन्तनाम हैं जिनके (३) हे पार्वती जल सीकर महिकैरज ये दोऊ गनिबे को आश्चर्य हैं अरु ये दोऊ गनेजाहिं पर श्रीरामचन्द्र के चरित नहीं गनेजाइ हैं (४) तहां अनगणित जो श्रीरामचन्द्र के चरितहैं ते सब अति पावन हैं तामें एकएक श्लोक एकएक चरण एकएक पद एकएक अक्षर श्रीरामचन्द्रके पदको प्राप्ति कर्त्ताहै अरु जाके श्रवणकियेते अनपावनी भक्ति प्राप्तिहोतिहै अनपावनी कही ज्यहिते पावन आन पदार्थ नहीं हैं न तीर्थ ब्रत न कर्म योग न ज्ञान न ध्यान न समाधि किंतु अनपावनी कही अचल श्रीरामचन्द्र के स्वरूप विषे अखण्ड सहजानन्द वृत्ति लगीरहै ताको अनपावनी कही (५) हे उमा यह कथाअति पावनि है जो कागभुशुण्डि ने गरुड़को सुनाई है सोहम तुमसेकहा कागभुशुण्डि का साक्षी क्योंदीन है तहां सती तनमें महादेव कर कहासतीजू नहीं माना ताते कागभुशुण्डि की साक्षी दीनि है किन्तु जाते पार्वती पुनि प्रश्न करहिं (६) हे पार्वती कछु श्रीरामचन्द्र के गुण बखानिकै कह्यउँ अब जो तुम्हारी इच्छाहोइ सो कहौं (७) हे भरद्वाज मंगलमय कथा सुनिकै पार्वती अति हर्ष को प्राप्ति भई आरत प्रवीण मृदुबाणी बोलती भई (८) हे पुरारिमैंधन्य धन्यतरहौं भवजो संसार है त्यहिकी भयजोहै जन्म मरणत्यहिके हरणहारी श्रीरघुबीरकीकथा आपुके मुखनते अच्छेप्रकारतेमैंनेसुनी (९) हेकृपायतन तुम्हारीकृपाते अबमैं

**कथाहरिपददायनी भक्तिहोइसुनिअनपायनी ५ उमाकह्यउंसबकथासोहाई जोभुशुण्डिखगपतिहिसुनाई ६ कछुकरामगुणकह्यउंबखानी अबकाकहौंसोकहहुभवानी ७ सुनिशुभकथाउमाहर्षानी बोलींअतिविनीतमृदुबानी ८ धन्यधन्यमैंधन्यपुरारी सुन्यउंरामगुणभवभयहारी ९**

**दो०॥ तुम्हरीकृपाकृपायतन अबकृतकृत्यनमोह जान्यउंरामप्रतापप्रभु चिदानन्दसन्दोह १० नाथतवाननशशिश्रवत कथासुधारघुबीर श्रवणपुटनमनपानकरिनहिंअघातमतिधीर ११ चौ०॥ रामचरितजेसुनतअघाहीं रसविशेषजानातिननाहीं १२ जीवनमुक्तमहामुनिजेऊ हरिगुणसुनहिंनिरंतरतेऊ १३ भवसागरचहपारजोपावा रामकथाताकहं दृढ़नावा १४**

कृतकृत्य कही कृतार्थ भइउँ काहेते कि जो मोरे सती तनमें महामोहभयोरहै सो मिटिगयो अब मैंने श्रीरामचन्द्रको प्रताप स्वरूप सच्चित आनंदघन विग्रह अच्छीप्रकारते जान्योहै ( १० ) हेनाथ तुम्हार आनन पूर्णशशि है रघुवीर कीकथा सुधाहै बचन किरणिहै आपुकेमुखते श्रवत है मैं श्रवनकेपुटनते पानकरतिहौं मेरीमति अतिधीर नहीं अघातीहै पुटकही पात्रको किंतु हे मतिधीर नहीं अघातीहै ( ११ ) काहेते जे रामचरित सुनतकै अघायजातेहैं तिन श्रीरामचन्द्रके चरितकोरस विशेषनहींजान्यो है ( १२ ) काहेते जे महामहा मुनीश्वर सनकादि जीवनमुक्त हैं ते श्रीरामचन्द्र के चरित निरंतर सुनते हैं कहते हैं यामें अंतर नहीं परे हैं ( १३ ) जे भवसागरके पार जावाचाहैं तिनको श्रीरामचन्द्रकै कथा दृढ़ नाव है ( १४ ) हे विश्वनाथ मेरी जान में विषयी जो प्राणी हैं किन्तु विषयशील मुमुक्षू प्राणी हैं तिनकी कथाकर गुणग्राम श्रवण को सुखदाता है अरु मनको अभिरामकरि बांछित फलदाता है किन्तु अभिराम कही आनन्ददाता है ( १५ ) हे नाथ ऐसो अभागी जगतमें कौनजीव है श्रवणपाइकै अरु जाको रामकथा न सुहाइ तात्पर्य यह कि जे श्रीरामचरित सुनिबेकी श्रद्धा नहींकरैं तिनके श्रवण सर्प के बिल हैं ( १६ ) जिनको श्रीरामचन्द्रकै कथा नहीं सोहाइ है ते जीवजड़ हैं जिन आत्माके घातीकही मारनेवाले हैं अपनी आत्मा आपहीते हीन हैं ते चौरासीको जातेहैं ( १७ ) हे नाथ ऐसो श्रीरामचरितमानस तुमगावतेभये सो सुनिकै मैं अमित सुखको प्राप्तिभइउंहौं ( १८ ) हे नाथ आपुकहा कि यह अतिशोभित कथा है सो कागभुशुण्डिने गरुड़प्रति कही है सो यह सुनिकै आपुसे कछु प्रश्नकरिबेकी इच्छाभई है काहे

**विषइनकहँपुनिहरिगुणग्रामा श्रवणसुखदअरुमनअभिरामा १५ श्रवणवन्तअसकोजगमाहीं जिनहिनरघुपति चरितस्वहाहीं १६ तेजड़जीवनिजातमघाती जिनहिनरघुपतिकथास्वहाती १७ रामचरितमानसतुमगावा सुनिमैंनाथअमितसुखपावा १८ तुमजोकहियहकथास्वहाई कागभुशुण्डिगरुड़प्रतिगाई १९ दो०॥ विरतिज्ञानविज्ञानदृढ़रामचरणअतिनेह बायसतनरघुपतिभगतिमोहिंपरमसन्देह २० चौ०॥ नरसहस्त्रमहँसुनहुपुरारी कोउयककहोइधर्म्मब्रतधारी २१ धर्म्मशीलकोटिनमहँ**

ते पूर्बहीं कोई कालमें मोसे आपु कहारहै ( १९ ) हे नाथ आपुके मुखते यह प्रसंग सुनिकै परम संदेह होतभयो यह जो कथा कागभुशुण्डिने गरुड़प्रति कहा है त्यहि कथाविषे कर्म योग बैराग्य ज्ञान विज्ञान भक्ति श्रीरामचन्द्र के चरणारबिंद विषे अति दृढ़प्रीति करनिहारी यहकथा है अरु मोको यह समुझिपरयो है कि जो कह्यउं है तामें आरूढ़ रह्यउं है तहां यह आश्चर्य है कि कागतन विषे वैराग्य ज्ञान विज्ञान संयुक्त श्रीरामचन्द्रकै भक्ति प्राप्तिभई है यह संदेह है ( २० ) हे भरद्वाज इहां पार्वती जी भक्तिकी सप्तभूमिका कहतीहैं त्यहिके द्वारह्वैके संपूर्ण भक्तिके परमदिव्यगुण महादेव के मुखनते सुनाचाहती हैं हे पुरारि हजार मनुष्यन विषे एककोई अपनेधर्ममें आरूढ़होतेहैं ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र अरु अन्त्यज अरु गृहस्थ ब्रह्मचर्य किन्तु ब्रह्मचर्य गृहस्थबाणप्रस्थ संन्यासी चारिहूं बर्णाश्रम विषे एककोई निजधर्म के ब्रतको धारणकिहे हैं तीर्थ ब्रत दान संयम नेम सुकर्म सुधर्म इत्यादिक जो वेद सुष्टु कर्त्तव्य निज निज धर्म बर्णत हैं सो प्रीति संयुक्त करिकै श्रीरामार्पणकरै यह भक्ति की प्रथम भूमिका है ( २१ ) ऐसो जो निजधर्म नेष्ठी कोटिनहोहिं तिनके मध्यमें एककोई सहनशीलमानहोत है शीलकही जो कटुबचनकहै किंतु मान अपमानकरै सो सहिजाइ अरु अन्तष्करण में उसके ऊपरदुख न ल्यावै अरु मनक्रम बचनते कोई जीवको निरादर न करैं अरु इन्द्री विषय में अशक्त न होहिं ताको शीलकही यह द्वितीय भूमिका पुनि ऐसो सहन शीलमान जो कोटिहोइँ तिनकेमध्यमें

एककोइको विषय वैराग्यहोत है वैराग्यकही तीनिहूं लोककी विषय सिटकी समानमाने हैं यह तृतीय भूमिका ( २२ ) पुनि ऐसे बिरक्त कोटिनके मध्यमें एककोई सुकृती सम्यक्ज्ञानको प्राप्तिहोत है सम्यक्ज्ञान कही अपने अनुभवते आत्माको अनात्मा भिन्नदेखे हैं आत्मज्ञान में आरूढ़ है जैसे

**कोई विषयविमुखविरागरतहोई २२ कोटिविरक्तमध्यश्रुतिकहई सम्यक्ज्ञानसुकृतिकोउलहई २३ ज्ञानवन्तकोटिनमहँकोई जीवनमुक्तिसुकृतकोइहोई २४ तिनसहस्त्रमहँसबसुखखानी दुर्लभब्रह्मलीनबिज्ञानी २५ धर्म्मशीलविरक्तअरुज्ञानी जीवनमुक्तब्रह्मपरप्रानी २६ सबतेअतिदुर्लभसुरराया रामभक्तरतगतमदमाया २७ सोहरिभक्तिकागकिमिपाई विश्वनाथमोहिंकहहुबुझाई २८**

अपनी आत्माको देखे है तैसे ही चराचर विषे देखत हैं यह चतुर्थ भूमिका ( २३ ) ऐसो जो ज्ञानवन्त है तिन कोटिनके मध्यमें एककोई जीवनमुक्त होत हैं जीवनमुक्त कही संसार में देहधरे हैं पर संसारते मुक्त हैं जिनके हर्ष शोक दुख सुख हानि लाभ मानापमान मित्र अरि निन्दास्तुति इत्यादिक देहाभिमान नहीं है ताको नीवनमुक्त कही इति पंचभूमिका ( २४ ) ते जीवनमुक्त के हजारन में एककोई ब्रह्ममेंलीन विज्ञान विषे आरूढ़ है ब्रह्मलीन विज्ञान जीव अंतर्यामी ब्रह्मकी एकता है सो सब सुखकी खानि है ( २५ ) काहेते जामें धर्म शील वैराग्य ज्ञान जीवनन्मुक्त संपूर्ण गमनकरिकै ब्रह्ममें लीन है इति षट्भूमिका ( २६ ) पार्वती कहती हैं हे सुरराय यहसबते अतिदुर्लभ श्रीरामभक्ति है कैसी है रामभक्ति मद मायाते गतहै गतकही भिन्न है ऐसी रामभक्ति त्यहि पराभक्तिको जो प्राप्तिहै सो उनकी कैसीदशा है प्रेममें मत्तहैं हर्ष शोक दुख सुख हानि लाभ इत्यादिकते रहित हैं उठत बैठत चलत सोवत जागत रामाकार सहजानंद वृत्ति रामनाम पराबाणी बाह्यांतरते धुनि है तामें मग्न है अरु सर्वत्र चराचरमें रामरूप देखते हैं अरु श्रीरामचंद्र को स्वरूप शोभा सिन्धु तामें मनमीन ह्वैरह्योहै यहसतईं भूमिका ( २७ ) यह श्रीरामचन्द्र की भक्तिकै सप्तभूमिका समाप्त हे नाथ ऐसी जो श्रीरामचन्द्रकै भक्ति सो कागदेहमें कैसे प्राप्ति भई है यह सन्देह है हे विश्वनाथ यह प्रसंग मोसे समुझाइकै कहो यह प्रसंग मोसे तुम पूर्वहींकहा है तहां प्रमाण है श्रीमन्महारामायणे शिववाक्यं पार्वतीं प्रति श्लोक ५॥ मुग्धेश्रृणुष्वमनुजोपिसहस्त्रमध्ये धर्मब्रतीसर्वसमानशीलः॥ तेष्वेवकोटिषुभवेद्विषयेविरक्तः सद्दानकोभवतिकोटिविरक्तमध्ये १ ज्ञानीषुकोटिषुनृजीवनकोपिमुक्तः कश्चित्सहस्त्रनरजीवनमुक्तमध्ये॥ विज्ञानरूपविमलोप्यथब्रह्मलीनस्तेष्वेवकोटिपुसकृतखलुरामभक्तः २ श्रीरामनामरसनाग्रपठन्तिभक्त्या प्रेम्नाचगद्गदगिरेप्यथहृष्टलोमाः ॥ सीतायुतंरघुपतिंचकिशोरमूर्तिपश्यंत्यहर्निशमुदापरमेनरम्यं ३ भूमौजलेनभसि देवनरासुरेषु भूतेषुदेविसकलेषुचराचरेषु ॥ पश्यन्तिशुद्धमनसाखलुरामरूपं रामस्यतेभुवितले-समुपासकस्य ४ शांतास्समानमनसाचसुशीलयुक्ताः

**दो०॥ रामपरायणज्ञानरत गुणागारमतिधीर नाथकहहुक्यहिकारणपायउकागशरीर २९ चौ०॥ यहप्रभुचरितपवित्रस्वहावा कहहुकृपालकागकहँपावा ३० तुमक्यहिभांतिसुनामदनारी कहहुमोहिंअतिकौतुकभारी ३१ गरुड़महाज्ञानीगुणरासी हरिसेवकअतिनिकटनिवासी ३२ त्यइंक्यहिहेतुकागसनजाई सुनीकथामुनिनिकरबिहाई ३३ कहहुकवनविधिभासम्बादा द्वौहरि**

तोषक्षमागुणदयाऋजुबुद्धियुक्ताः॥ विज्ञानज्ञानविरतिःपरमार्थवेत्ता निर्द्धामकोभयमनाःसचरामभक्ताः ५ पुनः भगवद्गीतायां श्लोकसार्द्धद्वयः॥ ब्रह्मभूतःप्रसन्नात्मा नशोचतिनकांक्षति॥ समः सर्वेषुभूतेषुमद्भक्तिंलभतेपराम् १ चतुर्विधाभजन्तेमांजनाःसुकृतिनोर्जुन॥ आर्तोजिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानीचभरतर्षभ २ तेषांज्ञानीनित्यमुक्तएकभक्तिर्विशिष्यते ३ ( २८ ) दोहार्थ॥ ताते हे नाथ कागभुशुण्डि श्रीरामचन्द्र के स्वरूपाकार भक्ति विषे परायण अरु ज्ञानविषे रत अरु उत्तम गुणनके आगार सो ऐसे परमतत्वके परम अधिकारी सो हेनाथ कागशरीर क्यहि करण करिकै पायो है सो कहिये ( २९ ) हे कृपालु यह जो विचित्रपवित्र चरित है काग कहां क्यहि स्थानमें क्यहिते पायोहै सो कहहु कवनि

विधिसे पायउ है ( ३० ) हे मदनारी तुम क्यहि प्रकारते यह भारी कौतुक सुना है सोकहहु ( ३१ ) हे नाथ गरुड़ जो हैं सो महाज्ञानी उत्तम गुणके राशि हैं अरु हरिके नित्य पार्षद नित्य निकट निवासी हैं ( ३२ ) त्यहि गरुड़के कौन सन्देह भयो जाते सम्पूर्ण मुनिनको बिहाइकै कागभुशुण्डि ते श्रीरामचरितसुनिकै तत्व बोधभयो ( ३३ ) अरु कवनी प्रकारतेसम्बादभयो काहेते कि कागभुशुण्डि अरु गरुड़ ते द्वौ हरिके भक्त हैं द्वौ भागवतन ते कैसे सम्बाद भयो है उरगाद कही गरुड़ उरगकही सर्प अदनाम हिंसाधातु है जो उरगको भक्षण करै ताको उरगाद कही ( ३४ ) हे भरद्वाज पार्वतीकर सहज शोभायमान महादेवसुनिकै सादरते बोलतेभये ( ३५ ) इहां पार्बती को सती क्यों कहा तहां पूर्बसतीतनमें सन्देह भयो रहे

भक्तकागउरगादा ३४ गौरिगिरासुनिसरलसुहाई बोलेशिवसादरसुखपाई ३५ धन्यसतीपावनिमतितोरी रघुपतिचरणप्रीति नहिंथोरी ३६ सुनहुपरमपुनीतइतिहाशा जोसुनिसकललोकभ्रमनाशा ३७ उपजैरामचरणविश्वासा भवनिधितरनरबिनहिंप्रयासा ३८ दो०॥ ऐसेप्रश्नबिहंगपति कीनकागसनजाइ सोसबसादरकहबमैं सुनहुंउमामनलाइ ३९॥ * * * * *

चौ०॥ मैंजिमिकथासुनीभवमोचनि सोप्रसंगसुनुसुमुखिसुलोचनि १ प्रथमदक्षगृहजबअवतारा सतीनामतबरहातुम्हारा २ दक्षयज्ञतवभाअपमानातुमअतिक्रोधतजेतबप्राना ३ ममअनुचरनकीनमखभंगा जानहुतुमसोसकलप्रसंगा ४ तबअतिशोचभयउमनमोरे दुखीभयोंबियोगप्रियतोरे ५ सुन्दरबनगिरिसरिततड़ागा कौतुकदेखतफिरौंविभागा ६ गिरिसुमेरुउत्तरदिशिदूरी नीलशैलइकसुन्दरभूरी ७ तासुकनकमयसिखरस्वहाये चारिचारुमोरेमनभाये ८ तिनपरयकयकबिटपविशाला बटपीपरपाकरीरसाला ९

ताते पूर्व सन्देह को नाशभयो ताते धन्य कहा है हे सती तुम्हारी मति धन्य है अतिपावनि है काहेते रघुपतिके चरणमें थोरि प्रीति नहीं है बड़ी प्रीति है ( ३६ ) श्रीमहादेव कहते हैं कि हे पार्वती यह जो रामपुनीतइतिहासहै सो सुनहु जो सुनिकै सम्पूर्ण शोक अरु भ्रमनाशहोइ ( ३७ ) जो इतिहास सुनिकै श्रीरामचन्द्र के चरण मे बिश्वास होइ जो सुनिकै भव जो संसार त्यहिते बिना प्रयासहि नर तरिजाहिं सो सुनहु ( ३८ ) दोहार्थ॥ हे उमा जैसे तुम मोसे प्रश्नकीन है तैसे प्रश्न गरुड़ कीनहै कागभुशुण्डिसे सो मैं सबसादरसे कहतहौं मनलाइकै सुनहु ( ३९ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने उत्तरकाण्डेउमामहेश्वर सम्बादभक्तिसप्तभूमिकावर्णनन्नामषष्ठदशस्तरंगः१६॥ इतिपूर्वार्द्धस्समाप्तः॥

दोहा॥ दशअरुसप्ततरंगमें कहहिंशंभुहरषाइ रामचरणइतिहासबर सुनहिंउमामनलाइ १७ एक ते ग्यारहकी चौपाईको अर्थ अक्षरार्थै जानब॥ हे पार्वती त्यहि गिरिविषे कागभुशुण्डि बसतहै त्यहिकोनाश कल्पांतमें नहींहोत है ( १२ ) हे पार्वती जो मायाकृत अनेकगुण दोष हैं शुभ अशुभ अरु मोह काम क्रोध लोभ अविवेक इत्यादिक जो हैं सो त्यहिगिरिके निकट नहीं जाते हैं ( १३ ) एते सबत्रैलोक्य में ब्यापिरहे हैं पर कागभुशुण्डिके आश्रमके निकट कबहूं नहीं जाते हैं ( १४ ) हे पार्बति त्यहि गिरिपर बसिकै ज्यहि प्रकारते कागभुशुण्डि श्रीरामचन्द्रकर भजन करत हैं सो भलेप्रकारते मनलाइकै प्रीतिपर्बक सुनहु ( १५ ) हे पार्बती पीपरकेतर ध्यानधरते हैं सतयुगके कृति पीपरकेतर करते हैं सतयुगके धर्म ध्यान अरु पाकरकेतर त्रेताकृति करत हैं त्रेताको धर्म यज्ञ सो जप यज्ञकरत है प्रमाणभगवद्गीतायां यज्ञानांजपयज्ञोस्मि ( १६ ) अरु आम्रकीछाया

शैलोपरसरसुन्दरसोहा मणिसोपानदेखिमनमोहा १० दो०॥ शीतलअमलमधुरजल जलजविपुलबहुरंग कूजतकलरवहंसगण गुंजतमंजुलभृङ्ग ११ चौ० त्यहिगिरिरुचिरबसतखगसोई तासुनाशकल्पांतनहोई १२ मायाकृतगुणदोषअनेका मोहमनोजआदिअबिबेका १३ व्यापिरह्यउसमस्तजगमाहीं त्यहिगिरिनिकटकबहुंनहिंजाहीं १४ तहँबसिहरिहिभजैजिमिकागा सोसुनुउमासहितअनुरागा १५ पीपरतरुतरध्यानसोधरई जापयज्ञपाकरितरकरई १६ आम्रछाहकरमानसपूजा तजिहरिभजनकाजनहिंदूजा १७

विषे मानसीपूजा करत हैं द्वापरको धर्म परिचर्या पूजा है तहां श्रीरामचन्द्रको भजन तजिकै कागभुशुण्डिके दूसर कार्य नहीं है ( १७ ) अरु बटके तरे श्रीरामचन्द्र की कथा कहते हैं अनेक बिहंग सुनते हैं तहां कलियुगके कल्याण कर्त्ता धर्म हरिकीर्तन है तहां यह जानिपरत है कि चारिहू युगको धर्म श्रीरामचन्द्र की भक्तिविषे चारिहू तरुतर करत हैं तहांचारिउ तरु चारिहू युग जानिये प्रमाण श्रीमद्भागवते द्वादशस्कन्धेश्लोक एक॥ कृतेयद्ध्यायतेविष्णुंत्रेतायांयजतामखैः॥ द्वापरोपरिचर्य्यायाकलौतद्धरिकीर्तनात् १। १८ ते कागभुशुण्डि श्रीरामचरित चित्र बिचित्र जो नानाप्रकारके त्यहिको प्रेमसहित सदागानकरते हैं तहां जबचारिदंड प्राप्तःकाल रात्री रहैं तबते अरु चारिदंड दिनचढ़े ताईं यहिब्रह्मबेलामें सतयुग बर्त्तमान होतहै तहां पीपरके तर ध्यान करत हैं पुनि चारिदंड दिनचढ़े ते अरु डेढ़पहर दिनचढ़ेताईं त्रेताकोधर्म बर्तमान होत है तहां पाकरि तर जपयज्ञ करत हैं पुनि डेढ़पहर दिनचढ़ेते अरु दुइपहर चारिदंड बीतेताईं द्वापरकोधर्म बर्त्तमान होतहै तहां आम्रतर मानसीपूजा करत हैं पुनि त्यहिके उपरांत कलिको धर्म बर्त्तमानहोत है तहां बटकेतर श्रीरामचन्द्रकै बिचित्र कथा कीर्त्तन करत हैं ताते उनको सर्बकाल शुद्ध है विद्यामय है ( १९ ) तहां यहिप्रकारते कागभुशुण्डि कथा कहते हैं विमल जो मरालादिक विहंग जे तहां सर्बकाल बसते हैं ते सुनते हैं ( २० ) तहां जब मैं जाइकरि यह कौतुक देखतभयउं तब उरमें अतिआनन्द भयो ( २१ ) दोहार्थ॥ तहां मरालकर तनधरिकै कछुकाल रहिकै श्रीराम चरित्र सबसुनिकै तब कैलासको आवतभयो ( २२ ) हेगिरिजा ज्यहिकालमें मैं खगके पास गयउँ सो संपूर्ण इतिहास कह्यउँ ( २३ ) हे प्रिय

बटतरकहहरिकथाप्रसंगा आवहिंसुनहिंअनेकबिहंगा १८ रामचरितविचित्रविधिनाना प्रेमसहितकरसादरगाना १९ सुनहिंसकलमतिबिमलमराला बसहिंनिरंतरजोत्यहिकाला २० जबमैंजाइसोकौतुकदेखा उरउपजाआनन्दविशेखा २१ दो०॥ तबकछुकालमरालतन धरितहँकीननिवास सादरसुनिरघुपतिचरितपुनिआयोंकैलास २२ चौ०॥ गिरिजाकह्यउँसोसबइतिहासा मैं ज्यहिसमयगयोंखगपासा २३ अबसोकथासुनहुंज्यहिहेतू गयोकागपहँखगकुलकेतू २४ जबरघुनाथकीनरणक्रीड़ा समुझतचरितहोतम्वहिंब्रीड़ा २५ इन्द्रजीतकरआपुबँधाये तबनारदमुनिगरुड़पठाये २६ बन्धनकाटिगयेउरगादा उपजाहृदयप्रचण्डबिषादा २७ प्रभुबन्धनसमुझतबहुभांती करतबिचारउरगआराती २८ ब्यापकब्रह्मविरजबागीशा मायामोहपारपरमीशा २९

अबसो कथा सुनहु ज्यहि प्रकारते कागके इहां बिहंगनको राजागयो है ( २४ ) जब श्रीरामचन्द्र ने रणक्रीड़ा कीन है तहां एक समयकर चरित्र समुझतसंते मोको ब्रीड़ाकही लज्जा आवतिहै ( २५ ) तहां इंद्रजीत जो मेघनाद है तेहिके हाथनते नागफांस करिकै आपनेते आपुको बंधायो है तब नारदमुनि गरुड़को पठावतेभये ( २६ ) तब नागफांसको बंधन काटिकै उरगाद जातेभये उरगादकही गरुड़ अदभक्षणेधातु है उरगकही सर्पको भक्षणकरतेहैं गरुड़ ताते उरगादकही तब गरुड़के प्रचण्ड विषादकही मोह संदेह होतभयो ( २७ ) तिन प्रभु बंधन बहुभांति समुझ के उरगके आरातिकही शत्रुते बिचार करतेभये हैं ( २८ ) कि नारदते मैं पूर्बहीं सुनाहै कैसे हैं श्रीरामचन्द्र सर्वत्र व्यापक ब्रह्म हैं अरु

बिरजकही मायाते परेहैं अरु बागीशकही बाणीके ईश अरु बाणी मनके परेहैं अरु माया मोहकेपरे हैं अरु परमीशकही सब ईशनके ईशहैं ( २९ ) सो जगत्‌विषे अवतार सुन्यउं पर सो प्रभाव कछुनहीं देख्यउँ है ( ३० ) दोहार्थ॥ तहां गरुड़जी अपने मनमें संशय संयुक्त बिचार करते हैं कि देखिये तौ जिन श्रीरामचन्द्रजी कर नाम स्मरण करिकै नर भवबन्धनते छूटिजाते हैं तिन श्रीरामचन्द्रको नागफांसते खर्बकही अल्प निशाचर बांध्यो यह बड़ा आश्चर्य है ( ३१ ) हे पार्बती नानाभांतिते अपने मनको समुझावते हैं परबोध न भयो हृदय में अति भ्रमछाइरह्यो है भ्रमकही अपर पदार्थमें अपर आरोपणकरै तहां परमेश्वरकरि लीला नाजान्यो प्राकृतभाव आरोपण किये हैं ( ३२ ) खेदकरिकै मनखिन्नकही अतिदुखी

सोअवतारसुन्योजगमाहीं देख्यउंसोप्रभावकछुनाहीं ३० दो०॥ भवबन्धनतेछूटहिंनरजपिजाकरनाम खर्बनिशाचरबाँध्यउनागफांससोइराम ३१ चौ०॥ नानाभांतिमनहिंसमुझावा प्रकटनज्ञानहृदयभ्रमछावा ३२ खेदखिन्नमनतर्कबढ़ाई भयेमोहबशतुमरिहिनाई ३३ व्याकुलगयोदेवऋषिपाहीं कह्यसिजोसंशयनिजमनमाहीं ३४ सुनिनारदहिंलागिअतिदाया सुनुखगप्रबलरामकै माया ३५ जोज्ञानिनकरचितअपहरई बरिआईबिमोहमनकरई ३६ ज्यइँबहुबारनचावामोहीं स्वइब्यापीबिहंगपतितोहीं ३७ महामोहउपजामनतोरे मिटीनवेगिकहेखगमोरे ३८ चतुराननपहँजाहुखगेशा सोइकह्यउज्यहिहोइनिदेशा ३९ दो०॥ असकहि

होतभयो है हे पार्बति जैसे तुमको सतीतनमें मोह होत भयो है तैसेही गरुड़को मोह होतभयो ( ३३ ) तब अतिब्याकुलते नारदकेपास जातभयो है अपनो संदेह कहतभयो है ( ३४ ) जब गरुड़जीने नारदसे अपनो संदेहकहा तब नारदजीके दयालागि हे खग श्रीरामचन्द्रकै माया प्रबल है त्यहिने तोको ब्यामोहितकियो है ( ३५ ) कैसी है वहमाया जो ज्ञानिनके चित्तको अपहरतिहै तहां ज्ञानी मायाको त्यागेहैं परवह आपनी बरिआईते बिमोहको करतीहै ( ३६ ) हे गरुड़ ज्यहिमायाने मोको बहुतभांति नचायोहै सोई तोको ब्याप्तभई है ( ३७ ) हे खग महामोह तोरे हृदयमें उत्पन्नहोतभयो मेरे कहेते शीघ्रनहीं मिटैगो मोहकही जो मायाविषे अपनपौमानै अरु महा मोहकही जो परमेश्वर विषे अपने निश्चयते भ्रांतिहोइ ( ३८ ) हे खगेश अबतुम ब्रह्माके पासजाहु सोई किहेहु जामें तुमको निदेशकही उपदेशहोइ जाते तुम्हारो मोहछूटै ( ३९ ) दोहार्थ॥ तब असकहिकै देवऋषि श्रीरामचन्द्रकर गुणानुवाद गावतकैचलतेभये सुजान जो नारद सो हरिकी मायाकरबल बारबार बर्णन करतजातेभये ( ४० ) हे भरद्वाज खगपति बिरंचिकेपास जातेभये आपन संदेह सुनावतेभये ( ४१ ) तब यहसुनिकै बिरंचि श्रीरामचन्द्रके नमस्कार करिकै श्रीरामचन्द्रकी मायाकर प्रताप समुझिकै रामचन्द्र विषे प्रेम उर में छाइरह्यो है ( ४२ ) अपने मनमें ब्रह्मा बिचार करते हैं कि देखिये तौ श्रीरामचन्द्रकी मायाकेबश कवि कोविद अरु अज्ञानी सब हैं ( ४३ ) ब्रह्मा मनमें समुझते हैं कि हरिकी मायाकर प्रभाव अमित है जेइँ बार बार मोको नचावा है ( ४४ ) कि हे खगराज अगजग स्थावर जंगम सब मेरे उपजाये हैं पर हरिकी मायाने मोको बारबार नचायो है ताते तुमको

चलेदेवऋषि करतरामगुणगान हरिमायाबलवर्णत पुनिपुनिपरमसुजान ४० चौ०॥ तबखगपतिबिरंचिपहँगयऊ निजसंदेहसुनावतभयऊ ४१ सुनिबिरंचिरामहिंशिरनावा समुझिप्रतापप्रेमउरछावा ४२ मनमहँकरइँबिचारबिधाता मायाबशकवि कोविदज्ञाता ४३ हरिमायाकरअमितप्रभावा विपुलबारज्यहिंमोहिंनचावा ४४ अगजगमयजगममउपजाया नहिंआचरजमोहिंखगराया ४५ तबबोलेबिधिगिरासुहाई जानमहेशरामप्रभुताई ४६ बैनतेयशंकरपहँजाहू तातअनतपूछहुजनिकाहू ४७ तहांहोइतवसंशयहानी चल्यउबिहंगसुनतबिधिबानी ४८ दो०॥ परमातुरबिहंगपति

आयउतबम्बहिँपास जातरहेउं कुबेरपहँ उमारहिहु कैलास ४९ त्यइंममपदसादरशिरनावा पुनिआपनसन्देहसुनावा ५० सुनिताकरविनीतमृदुवानी प्रेमसहितमैंकह्यउं भवानी ५१ मिल्यहु

जो मोहभयो सो आश्चर्य नहीं है ( ४५ ) तब ब्रह्मा बोले हे गरुड़ श्रीरामचन्द्र की महिमाको महेश नीकीप्रकार जानते हैं ( ४६ ) ताते हे बैनतेय तुम शंकरपहँजाहु अंतकहूं ना पूंछेहु ( ४७ ) तहां तुम्हारे संशयकी हानिहोइगी हे भरद्वाज तब बिधिके वचन सुनिकै तुरंत शिवकेपास जातभयो ( ४८ ) दोहार्थ॥ हे पार्बति तब बिहंगपति परम आतुर मेरेपास आये हे उमा मैं कैलासते कुबेरके इहां जातरहेउँ तुम कैलासपर रहिहु ( ४९ ) हे पार्बती तेइँ मोरेपदविषे माथनाइकै आपन संदेह सुनावतभयो ( ५० ) तेकर विनीत कोमलबाणी सुनिकै प्रेमसहित मैं बोलेउँ हे उमाभवानी ( ५१ ) हे गरुड़ तुममोको राहमें मिलेउ केहिप्रकारसमुझावौं ( ५२ ) हे गरुड़ संशय तब भंगहोइ जब बहुकाल सत्संगहोइ ( ५३ ) त्यहि सत्संग विषे हरिकी कथा सुनहु जो मुनीशन अनेक प्रकारकरिगायो है ( ५४ ) जेहि मुनीशनकी समाजविषे आदि मध्य अवसान कही अंत तीनिहूंकाल विषेप्रभुकी प्रतिपाद्यहोती है प्रतिपाद्य सबग्रंथ है औ प्रतिपाद्य एकप्रभु श्रीरामचंद्र भगवान् हैं ( ५५ ) जहां नित्यही श्रीरामचंद्रकै कथाहोती है तहां मेरे कहेते तुमजाहु कथासुनहु सम्पूर्ण संदेहमिटिजाइहि ( ५६ ) तेहिसमाजमें रामचरित सुनतसंते सबसंशय मिटि जाइहि अरु श्रीरामचंद्र के चरणारविंदविषे अतिनेह होइहि ( ५७ ) दोहार्थ॥ काहेते गरुड़ बिनासत्संग हरिकीकथा नहीं होती है अरु तेहिबिना मोह नहीं जातहै अरु बिनामोहगये श्रीरामचंद्रके चरणारविंदविषेअनुराग दृढ़नहीं होत है ( ५८ ) हे गरुड़ तेहि सत्संगमें श्रीरामचंद्रके चरणारविंद

गरुड़मारगमहँमोहीं कवनिभांतिसमुझावोंतोहीं ५२ तबहिंहोइसबसंशयभंगा जबबहुकालकरियसतसंगा ५३ मुनियतहां हरिकथास्वहाई नानाभांतिमुनिनजोगाई ५४ ज्यहिमहँआदिमध्यअवशाना प्रभुप्रतिपाद्यरामभगवाना ५५ नितहरिकथा होततहँभाई पठवोंतहाँसुनहुंतुमजाई ५६ जाइहिसुनतसकलसन्देहा रामचरणहोइहिअतिनेहा ५७ दो०॥ बिनुसतसंगनहरिकथा त्यहिबिनमोहनभाग मोहगयेबिनुरामपद होइनदृढ़अनुराग ५८ चौ०॥ मिलहिंनरघुपतिबिनुअनुरागा कियेयोगजपज्ञानविरागा ५९ उत्तरदिशिसुन्दरगिरिनीला तहँरहकागभुशुंडिसुशीला ६० रामभक्तिपथपरमप्रवीना ज्ञानीगुणगृहबहुकालीना ६१ रामकथास्वइकहइनिरन्तर सादरसुनहिंबिविधिबिहंगबर ६२ जाइसुनहुंतहँहरिगुणभूरी होइहिमोहजनितदुखदूरी ६३ मैजबत्यइं

विषे अनुरागहोत है अरु बिना अनुराग श्रीरामचंद्र नहीं प्राप्तहोते हैं जो कदाचि केते उपयोग यज्ञज्ञानकरै ( ५९ ) हे गरुड़ उत्तरदिशाविषे सुंदर नीलपर्बत है तेहिपर कागभुशुण्डि रहतेहैं अतिसुशील हैं ( ६० ) अरु श्रीरामचंद्रकी भक्तिविषे अतिप्रबीण हैं अरु ज्ञानके गृहहैं अरु बहुतकालके हैं ( ६१ ) तहां श्रीरामचंद्रकै कथा निरंतर कहते हैं जामें अंतर न परे तहां अनेक बिहंगबरनाम श्रेष्ठहै बुद्धिजिनकी ते श्रवणकरतेहैं ( ६२ ) हे गरुड़ तहां जाइकै श्रीरामचन्द्रकर गुण भूरिकही समूह सो श्रवण करहु मोहते जनितकहे उत्पन्न जो दुख सो दूरिहोइ जाइहि ( ६३ ) हे पार्बती अब मैंने तेहिते बुझाइकै कहेउँ तब मोरेपद विषे नामस्कारकरिकै हर्षित जातभयो ( ६४ ) हे उमाताते मैं न समुझावा काहेते कि रामचन्द्रकी कृपाकर मर्ममैंजानेउँ है ( ६५ ) यह जान्यउँ कि कबहूँ गरुड़ को अभिमानभयोहै सोकृपाकेनिधान श्रीरामचन्द्र खोवा चाहते हैं काहेते कि जो नारद समुझावते ब्रह्मा समुझावते कि मैं समुझावत्यों तौ गरुड़ को अभिमान नहीं जाता तहांगरुड़ पक्षिनकर राजा है अरु कागभुशुण्डि पक्षीजातिन महँ न्यूनहै ताते जब कागभुशुण्डि को यह गुरुकरै

जो तब याको अभिमान छूटैगो तब रामतत्वको प्राप्ति होइगो ( ६६ ) अरुकछु तेहिते नहींराख्यो किखगखगहिकी भाषा अच्छीतरहते समुझतहै ( ६७ ) हे भवानी श्रीरामचन्द्रकी माया बड़ी बली है असकवन ज्ञानी है जाको न मोहै नामसबको मोहै है ( ६८ ) दोहार्थ॥ हे पार्बती देखियेतौ गरुड़ ज्ञानी भक्तनमें शिरोमणि अरु त्रिभुवनपति जो भगवान् तेहिको बाहन

सबकहाबुझाई चल्यउहर्षिममपदशिरनाई ६४ तातेउमानमैंसमुझावा रघुपतिकृपामर्ममैंपावा ६५ होइकीनकबहूंअभिमाना सोखोवाचहकृपानिधाना ६६ कछुत्यहितेपुनिमैंनहिंराखा समुझैखगखगहीकीभाखा ६७ प्रभुमायाबलवंतभवानी जाहिनमोहकवनअसज्ञानी ६८ दो०॥ ज्ञानीभक्तशिरोमणि त्रिभुवनपतिकरजान ताहिमोहमायानर पामरकरहिंगुमान ६९ शिवबिरंचिकहँमोहै कोहैबपुराआन असजियजानिभजहिंमुनि मायापतिभगवान ७०॥ * * * * *

चौ०॥ गयउगरुड़जहंबसैभुशुंडी मतिअकुंठहरिभक्तिअखंडी १ देखिशैलप्रसन्नमनभयऊ मायामोहजनितसबगयऊ २ करि

परमदास समीपी तेहिको मायाने मोह करिकै बिकल करिदियोहै तहां नरजो हैं पामरते गुमान करतेहैं कि हममाया जीति लेहिंगे ( ६९ ) हे भरद्वाज श्रीरामचन्द्रकै माया अतिप्रबलहै जो शिवविरञ्चि कहँ मोहित करैहै और जीवन गरीबनकी काचली है असजानिकै हे मुनि मायापति भगवान् को भजिये (७०) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेशिवगरुड़उपदेशवर्णनन्नाम सप्तदशस्तरङ्गः १७॥

दोहा॥ दशअरुअष्टतरंगमेंगरुड़भुशुण्डिमिलाप रामचरणसोकथासुनु मिटतसकलपरिताप १८॥ हेपार्बती गरुड़ भुशुण्डिकेपास जातेभये कैसे हैं भुशुण्डि जिनके मति अकुण्ठकही अवाध्य है काहेते जिनकी मतिविषे श्रीरामचन्द्र की भक्ति अखण्डहै ( १ ) तहां कागभुशुण्डि को आश्रम सोशैल देखतसन्ते गरुड़को मन प्रसन्नहोतभयो अरु माया मोह शोचसबजातभयो है ( २ ) तब गरुड़ने अमृतमय जो तड़ाग त्यहिमें स्नान कीन जलपानकीन अति हर्षसंयुक्त बटतर जातेभये ( ३ ) तहां वृद्धवृद्ध बिहंगआवते भये इहां वृद्धकही बहुकालके अरु बुद्धिके वृद्ध अरु शरीरके वृद्ध नाहीं हैं सम्पूर्ण किशोररूपहैं काहेते शरीरकर बाल वृद्धयुवा अविद्या करिकै होतहै तहांत्यहिस्थानमें योजनपर्यंत अविद्या हईनहीं हैतहां शरीर वृद्धहोतइ नहींहै तहां सनकादिकन को देखिलीजिये जीवही तत्त्वहै तहांविद्यामय शरीरहै ताते नित्य है अरु अहर्निशि श्रीरामचन्द्र कर चरित्र कहतेहैं सुनते हैं तहां शरीर वृद्धकैसे होइँ ( ४ ) हे पार्बती कथाको आरम्भकागभुशुण्डि कीन चाहतहैं तेहीसमय में गरुड़ जातभये ( ५ ) तब कागभुशुण्डि

तड़ागमज्जनजलपाना बटतरगयउहृदयहर्षाना ३ वृद्धवृद्धबिहंगतहँआये सुनहिंरामकेचरितसुहाये ४ कथाअरम्भकरैसोचाहा तेहीसमयगयउखगनाहा ५ आवतदेखिसकलखगराजा हर्षेबायससहितसमाजा ६ अतिआदरखगपतिकरकीना स्वागतपूंछिसुआसनदीना ७ करिपूजासमेतअनुरागा मधुरबचनबोल्यउतबकागा ८ दो०॥ नाथकृतारथभयउँमैं तवदर्शनखगराज आयसुदेउसोकरौंअब प्रभुआयहुक्यहिकाज ९ सदाकृतारथरूपतुमकहमृदुबचनखगेश ज्यहिकीअस्तुतिसादर निजमुखकीनमहेश १० चौ०॥ सुनहुतातज्यहिकारणआयउं सोसबभयउदरशतवपायउं ११ देखिपरमपावनतवआश्रम गयउमोहसंशयनानाभ्रम १२

गरुड़को आवत देखिकै सहित समाज हर्षित भयो ( ६ ) अतिआदरकही अपने आसनते उठिकै स्वागतकही अतिप्रीतिते कुशलपूछेउ पुनि स्व कही आपुतौ आनन्द मङ्गलके रूपहीहौ मैंका पूछौं अरुस्वकहीआपुके आगत कही आगमनते मोको मंगल भयउहै असकहिकै सुन्दर आसन देतभये ( ७ ) तब षोडश प्रकारप्रीति सहित गरुड़की पूजा करिकैमधुरबचन भुशुण्डि बोलतेभये ( ८ ) दोहार्थ॥ हे नाथ मैं कृतार्थ भयउँ तुम्हारे दर्शनकरिकै अरुआयसुदेहु सोअबमैंकरौं जौनेकार्यको आपुको आगमनभयउहै सो मैंकरौं काहेते आपुसब बिहंगन के राजाहौ राजाकी आज्ञा सबको करवेयोग्यहै अरु भगवतके निज पार्षदहौ अरुमेरेइहां आपुआयेताते मैं धन्यहौं ( ९ ) तब गरुड़ बोले हेतात तुम कृतार्थरूपहौ काहेते ज्यहिकी स्तुति महेश सादरते निजमुख कीन है ( १० ) हे तात ज्यहिकार्यको मैंआयों सोकार्य तुम्हारे दर्शनते सब सिद्धिभयउ ( ११ ) तुम्हार जो परमदिव्य आशयहै त्यहिको देखिकै हमारो मोह संशय भ्रम सम्पूर्णजातारहा ( १२ ) अब श्रीरामचन्द्रकी कथा अति पावनि सम्पूर्णदुखन की नशावनिहारि सुखकी दाता सोकहौ ( १३ ) सो अबकहहु आदरतेहे तातमैं तुमसे बारबार कर जोरिकै हे प्रभु बिनती करतहौं ( १४ ) हे पार्बती गरुड़कै बाणी बिनीतकही दीनता अरु नीति संयुक्त अरु सरलप्रेम संयुक्त सुखकैदाता अति पुनीत सुनतभये ( १५ ) तबत्यहिकी बाणी कागभुशुण्डि सुनिकै मनमें परमउत्साहित भयउ तब श्री रामचन्द्र के गुणगाथकहै लागे हैं ( १६ ) हे पार्बती प्रथमहिं अति अनुरागते श्रीरामचन्द्रकर मानसचरित कथा कहतभयो ( १७ ) पुनि नारदकर अपारमोहकह्यो अरु रावणकर अवतार कह्यो ( १८ ) पुनि चैतशुदी नौमीको प्रभुके अवतारकी कथा कहतभयो पुनिबालचरित मानलाइकै कहतभयो ( १९ ) दोहार्थ॥ अरु मनमहँ परमउत्साह करिकै पुनि बालचरित बिबिधप्रकार

अबश्रीरामकथाअतिपावनि सदासुखददुखपुंजनशावनि १३ सादरतातसुनावहुमोहीं बारबारबिनवोंप्रभुतोहीं १४ सुनतगरुड़कैगिराविनीता सरलसप्रेमसुखदसुपुनीता १५ भयउतातमनपरमउछाहा लागकहनरघुपतिगुणगाहा १६ प्रथमहिंअतिअनुरागभवानी रामचरितसरकह्यसिबखानी १७ पुनिनारदकरमोहअपारा कहेसिबहुरिरावणअवतारा १८ प्रभुअवतारकथापुनिगाई पुनिशिशुचरितकहेसिमनलाई १९ दो०॥ बालचरितकहिबिबिधबिधिमनमहँपरमउछाह ऋषिआगमनकहेसिपुनिश्रीरघुवीरबिवाह २०

ते कहतभयो पुनि कुवारबदी छठिको बिश्वामित्रकर आगमन कह्यो पुनि पांचदिन बासकरिकै कुवारबदी द्वादशीको पारण करिकै चारिदंड दिनचढ़े अपने आश्रमको श्रीरामचन्द्र लक्ष्मणको लैकै चलतभये पुनिपांचयें दिन आश्रममें पहुँचे तीनि दिन मुनिके आश्रममें रहे यज्ञ रक्षा करिकै पुनि जनकपुरको चले बीचमें अहल्याको कृतार्थ करिकै जनकपुरको पहुँचे पुनि कुवारशुदी द्वादशीको बिश्वामित्र अरु जनकको मिलाप भयो पुनि वाही द्वादशी को जनकपुरकी शोभादेखनको श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण संयुक्त जातभये पुनि त्रयोदशी को फुलवारी देखको गयो पुनि चतुर्दशी को धनुषयज्ञ देखनको गये अरु पूर्णमासीको धनुषतोरतेभये अरु ताहीतिथिको जनककेदूत श्रीअयोध्याकोगये पुनि कार्तिकबदी अष्टमी को बरात चली पुनि त्रयोदशी को जनकपुरमें बरातपहुँची जाइ तहां कार्तिक बदी त्रयोदशी सहित कार्तिक अठारह दिन अरु अगहन उन्नीस दिन द्वौ मिलिकै एकमास सातदिन बरातको मुकामरह्यो आनन्दपूर्वक लग्न साधते रहैं पुनि अगहनशुदी पंचमीको बिवाहभयो अरु बिवाह के उपरान्त एकमास पांचदिन पुनिबरात रही अरु पौषबदी दशमी कोमिलतमिलावत सन्ते पहरदिन बीतिगयो तब जनकपुरसे बरात चलत भई अरु तेही पौषशुदी पौर्णमासी को अवधके समीप बरात प्राप्तभईपुनि माघबदी द्वितीयाको श्रीरघुनाथजीने मन्दिरमें प्रवेशकियो हेपार्बति यह प्रसंग सम्पूर्ण बिधि बिधानते भुशुण्डि कहतभयो ( २० ) बहुरिकहीपुनि श्रीरामचन्द्र बारह वर्षकेभये तब बिवाह भयो पुनि बिवाहउपरांत बारहबर्ष श्रीअयोध्यामें बिलासकीन पुनि चौबिसयेंबर्ष चैत्र शुदीअष्टमीको महाराजदशरथने श्रीरामचन्द्रजी को राज्याभिषेक की तैयारीकीन पुनि नौमीको राजरसभंग होतभयो ( २१ ) यहि रीतिते पचीसवां बर्षलागत भयो तब बनगमनकी तैयारी भई तब श्रीरामने जानकी लक्ष्मण

चौ०॥ बहुरिरामअभिषेकप्रसंगा पुनिनृपबचनराजरसभंगा २१ पुरबासिनकरहविरविषादा कहिसिरामलक्ष्मणसंबादा २२ बिपिनिगवनकेवटअनुरागा सुरसरिउतरिनिवासप्रयागा २३ बालमीकिप्रभुमिलनबखाना चित्रकूटजिमिबसभगवाना २४ सचिवागमननगरनृपमरना भरतागमनप्रेमबहुबरना २५ करिनृपक्रियासंगपुरबासी भरतगयेजहँप्रभुसुखरासी २६ पुनिरघुपति

सहित बनगमनकीन्ह पुरबासिनके विरह होतभयो पुनि ताही तिथिको श्रीरामचन्द्र श्रीकौशल्याजी कर सम्बाद भयउ पुनि श्रीरामलक्ष्मणजी को सम्बादभयो सोकहतभयो ( २२ ) तहां श्रीरामचन्द्र श्रीजानकी जी लक्ष्मणजी के नौबर्षबीते पर सदा मध्यकिशोर अवस्था रहतिहै तहां प्रमाण है बाल्मीकीये आरण्यकाण्डे श्लोकएक॥ ममभर्त्तामहातेजा:वयसापंचविंशका:॥ अष्टादशहिवर्षाणिममजन्मनिगण्यते १ अरु तेही नौमीको बनगमनकीन सोरात्री तमसानदीपर निवासकीनपुनि चैत्र शुक्लदशमीको शृंगबेरपुरमें प्राप्तभये पुनि निषादको अनुराग बर्णन कियो पुनि एकादशी को गंगाउतरिकै टिकेतहां तिथि घटि बढ़िकैदुइ एकादशी भई तब दूसरीको प्रयागमें भरद्वाजके आश्रममें निवास कीन ( २३ ) चैत्रशुदी द्वादशीको प्रयागते चलिकै यमुना उतरिकै सोमबटतररहे पुनि त्रयोदशीको निषादको बिदाकरिकै श्रीरामचन्द्र बाल्मीकिके आश्रममेंरहे पुनि चतुर्दशी को श्रीचित्रकूट को गये टिकतभये ( २४ ) तहांचतुर्दशी को श्रीरामचन्द्रके विरहभरे निषाद शृंगबेरपुरको आयो अरु पौर्णमासीको निषादने सुमंतको बिदाकियो श्रीअयोध्याकोचले दुखभरेसुमंत बैशाखबदी पंचमीको प्राप्तभये पुनि ताहीतिथिको श्रीरामचन्द्र के विरह में श्रीदशरथ महाराजने शरीरको त्यागिदियो अरु बैशाखबदी छठिको भरतकेबोलाइबेको बशिष्ठजू दूतपठायो बैशाखबदीनौमीको भरत के पासको प्राप्तभये अरु दशमीको भरतजू चलतेभये अरु द्वादशीको श्रीअयोध्याविषे प्राप्तभये ताहीदिन मातासंयुक्त अतिप्रेमते विरह होत भयो ( २५ ) अरु त्रयोदशीको श्रीदशरथ महाराजजी की क्रियाकीन पुनि शुक्लपक्ष बैशाखकी तृतीयाको राजाको अतिशुद्धकृत करिकै पुनि तीनि दिन श्रीअयोध्याविषे बासकरिकै वैशाख शुक्लपक्ष सप्तमीको सहितसमाज त्रिकूटको चले ( २६ ) तहां नौमीको शृंगवेरपुर पहुंचे अरु दशमी को प्रयागमें पहुंचे एकादशीको स्नानकरिकै श्रीचित्रकूटको चले द्वादशी को यमुनाउतरिकैसोमबटके दर्शनकरिकै मुकामकीन पुनि द्वादशीको यमुनास्नान करिकै फल कंदमूलाहार करिकै श्रीचित्रकूटकोचले बीचमें मुकामकीन पुनि त्रयोदशीको चित्रकूटमें पहुँचे तहां चित्रकूटमें

बहुबिधिसमुझाये लैपादुकाअबधपुरआये २७ भरतरहनिसुरपतिसुतकरणी प्रभुअरुअत्रिभेंटपुनिबरणी २८ दो०॥ कहिबिराधबधज्यहिबिधि देहतजीसरभंग बरणिसुतीक्षणप्रीतिपुनि प्रभुअगस्त्यसतसंग २९ चौ०॥ करिदंडकबनपावनताई गीधमयत्री

श्रीरामचन्द्रको मिलिकै पन्द्रहदिन मुकामकीन पुनि ज्येष्ठबदीतेरसिको श्रीरामचन्द्रजीसे बिदाह्वैके पादुकालैकै चतुर्दशीको कूचकियो पुनि ज्येष्ठशुदीकी द्वितीयाको श्रीअयोध्याविषे पहुंचे श्रीबशिष्ठजी से आज्ञालैकै पंचमीको नंदीग्राममें बैठे ( २७ ) तहांतहां भरतजूकी रहनिकहा अरु इन्द्रके पुत्रकै करणीकहा पुनि त्रैत्रशुदी पंचमी को अत्रि मुनिके आश्रमको गयेपुनि तीनि रात्री उहांबासकीन ( २८ ) दोहार्थ॥ पुनि अष्टमीको उठिकै बिराधको बधकीन पुनि ताही तिथि को सरभंगके आश्रमगये तहां दुइरात्री निवासकीन पुनि ज्यहि तिथिको श्रीअयोध्यासेचले त्यहि सहित बारह बर्ष चित्रकूट मण्डलमें सरभंगके आश्रमताईं पूर्णभयो अरु कोईमुनिकोमत आठबर्ष श्रीचित्रकूट में रहे अरु पांचबर्ष पञ्चबटीमेंरहे अरु एक बर्ष किष्किन्धा अरु लङ्काजीतिकै श्रीअवधको आये चित्रकूटमें विचित्रलीला करतसन्ते तेरहोंबर्ष लागतउहै चैत्रशुक्ल दशमी को आगे चले जहां पुण्यानदी है तहां मुनिनके समूहहैं मुनिनके दण्डवत् करिकै पूछतेभये तब मुनिन आशीर्बाद दैकै कहा कि हम राक्षसन करिकै पीड़ित हैं तहां मुनिनको आरत देखिकै अभयकीन प्रणकीन कि पृथ्वी निशिचरनते हीन करिडारौंगो एकरात्री तहां रहेहैं एकादशी को सुतीक्षण के आश्रम को गये सुतीक्षणको परमभक्ति दैकै द्वादशीको सहित

सुतीक्ष्ण अगस्त्यजी के आश्रमको गये तीनिदिन मुनिराखा अगस्त्यजी से सत्सङ्गभयो ( २९ ) पुनि चैत्रकी पौर्णमासी को दण्डकारण्यको गये अरु ताको पावन कियो अरु गीधराज सों मित्रता भई ( ३० ) तासों बिदा ह्वैकै वाही पौर्णमासी को पञ्चबटी को गये पुनि ताही पौर्णमासी को पञ्चबटी में बास कियो सम्पूर्ण मुनिनकी त्रासको भञ्जन कियो तहां कोई ज्योतिषको मत यह है कि अमावस अमावस ताईं महीना मानते हैं अरु कोई ज्योतिष में मुनिनकोमत यहहै कि संक्रांति संक्रांति महीना मानते हैं अरु कोई ज्योतिषमें मुनिनको मत यहहै कि पौर्णमासी पौर्णमासीताईं महीना मानते हैं ताते ज्यहि मुनिकोमत अमावस अमावसताईं महीना मानते हैं पहिलेपक्षको शुक्लमानते हैं ताकोमत इहांकहे हैं ताही मतते चैत्रबीतत अमावस लागत त्यही पौर्णमासीको रघुनाथजी पंचबटीको गये तहां देव

पुनित्यहिगाई ३० पुनिप्रभुपंचबटीकृतबासा भंजीसकलमुनिनकीत्रासा ३१ पुनिलक्ष्मणउपदेशअनूपा सूर्प्पनखाजिमिकीनकुरूपा ३२ खरदूषणबधबहुरिबखाना जिमिसबमर्मदशाननजाना ३३ दशकन्धरमारीचबतकही ज्यहिबिधिभईसोसबत्यहिकही ३४ पुनिमायासीताकरहरणा श्रीरघुवीरविरहकछुबरणा ३५ पुनिप्रभुगीधक्रियाजिमिकीन्हा बधिकबन्धशवरिहि

तन आगेही पर्ण तृणको आश्रम बनायराख्यो है तहां श्रीरघुनाथ जी सहित जानकी लक्ष्मणजी बिराजतभये दशमहीना आठदिन पंचबटीमें रहे संपूर्ण मुनिनको सुखदीन ( ३१ ) श्रीलक्ष्मणजीको श्रीरघुनाथजी उपदेशकीन आगे तीनिदिन कमी महीना माघशुक्लपक्ष त्रयोदशीका सूर्पनखा पंचबटीमें आई ताही तिथिको लक्ष्मण ने ताको अंगभंगकीन ( ३२ ) त्यहि तिथिको सूर्पनखा खरदूषण त्रिशिराको खबरिकीन पुनि चतुर्दशी पौणमासी फाल्गुन कृष्णप्रतिपदा तीनिदिनमें सेनासाजा फाल्गुन कृष्ण द्वितीयाको श्रीरघुनाथजी से संग्रामभयो पुनि दुइज तीज चौथिको श्रीरघुनाथजीने सबको संहारकीन सबको परमपददीन ( ३३ ) पुनि पंचमी को सूर्पनखा रावणको खबरिदीन पुनि छठिको रावण बिचारकीन पुनि सप्तमीको रावण मारीचके इहां आयो अनेकबार्त्ता भई सो कागभुशुण्डिकहा ( ३४ ) पुनि फाल्गुन कृष्णपक्ष अष्टमी चारिदण्ड दिनचढ़त मारीच मृगबनिकै श्रीराम जानकीके पासगयो श्रीजानकीजीके हेतु श्रीरघुनाथजी मृगमारिबेकोचले सूर्य मध्याह्न विषे मारीचको बधकरिकै परमपद दीन तेहीकालमें वृन्दानामे मुहूर्त्त में मायाकीसीता रावण हरतभयो तहां जिन मुनिन अमावस्या महीनामान्यो है तिन आधामाघ आधाफाल्गुनकरिकै माघमान्यो है ताते अग्निप्रवेश रामायणमें माघशुक्ल अष्टमीको श्रीजानकीजीको हरणकहा है इहां श्रीरघुनाथजी को बिरह बर्णतभयो ( ३५ ) बहुरिकही पुनि श्रीरघुनाथजी को बिरह बर्णत दुइदण्डके भीतर जटायुते अरु रावणते युद्धभयो तेही तिथिको अशोकबाटिकामें रावणश्रीजानकीजीको राखतभयो तहां श्रीरघुनाथ जी सहित लक्ष्मण बिरह करतसंते जटायुके समीपआये जटायुको चारिदण्ड दिनरहे परमपद दैकै तहां निबासकीन पुनि नौमीको कबन्धको बधिकै परमपददैकै शवरीके आश्रम जातभये नौमी दशमी एकादशीशवरीके आश्रमविषे रहतभये द्वादशीको शवरीको परमपददीन ( ३६ ) बहुरि मुनिनते बिदाह्वैकैबिरह कहतसंते पंपासरकोगये द्वादशी त्रयोदशी चतुर्दशी पंपासरमेंरहे ( ३७ )

गतिदीन्हा ३६ बहुरिबिरहबरणतरघुवीरा ज्यहिबिधिगयेसरोवरतीरा ३७ दो०॥ प्रभुनारदसंबादकहि मारुतमिलनप्रसंग पुनिसुग्रीवमिताई बालिप्राणकरभंग ३८ कपिहितिलककरिराम कृतशैलप्रवर्षनबास वर्णतबर्षाशरदऋतु रामरोषकपित्रास ३९ चौ०॥ ज्यहिबिधिकपिपतिकीशपठाये सीताखोजसकलदिशिधाये ४० बिवरप्रवेसकीनज्यहिभांती कपिनबहोरि

दोहार्थ॥ पुनि तीनिदिनके भीतर नारद अरु श्रीरामचन्द्रकर सम्बादकह्यो पुनि फाल्गुन आधे अमावसको श्रीरघुनाथजी पंपासरतेचले ऋष्यमूकपर्बतके समीप हनुमान्‌जीसे मिले ऋष्यमूकपर्बतपर सुग्रीवसे मित्रताकीन तहां एकरात्रिरहे फाल्गुनशुक्ल परीवाको बालिको मारिकै सारूप्य मुक्तिदीन ( ३८ ) द्वितीयाको सुग्रीवको राज्यदीन तृतीया

चौथिकोपुरके निकट बिराजेरहे आगे देवतन आगेहीते श्रीरघुनाथजीके टिकबेको प्रबर्षण पर्वतपर स्थान बनाइराखे हैं तहां श्रीरघुनाथजी पंचमीको बिराजमानभये जाइ तहां चैत्र शुक्लपक्ष नौमीको तेरहबर्ष पूर्णभये तहां बैशाख जेष्ठबीते बर्षाऋतु बर्णनकीन पुनि शरदऋतु बर्णनकीन पुनि सातमहीना छ:दिन यही रीतिते बीत्यो कार्तिकशुक्ल पूर्णमासीको रघुनाथजीने त्रासकरिकै सुग्रीवको बोलाइकै आज्ञादीन ( ३९ ) तब सुग्रीव बानर ऋच्छनकी सेना बोलावतेभये जहां तहांते दशदिनमें अगहन कृष्णदशमी को अगणित सेनाआइ प्राप्तभई पुनि छ:दिनविषे अगहन शुक्लपक्ष परिवाताईं यूथयूथ सेनापतिकीन द्वितीयाको श्रीरघुनाथजी सुग्रीव मिलिकै संपूर्ण बानरन ऋच्छनको आज्ञादीन किहे बानरहु संपूर्ण दिशि बिदिशिद्वीपद्वीप खण्डखण्ड श्रीजानकीजीको खोजहु तब श्रीरघुनाथजीके दंडवत् करिकै सुग्रीवकी आज्ञा लैकै बानर जातभये ( ४० ) पुनि तेही अगहन शुक्लद्वितीयाको हनुमान् जामवन्त अंगद नल नील मयन्द इत्यादिक सेनापति सहित सहाय तिनको आज्ञा दीन कि तुम दक्षिण दिशाको जाहु पुनि श्रीरघुनाथजी हनुमान्जी को बुलाइकै मुद्रिकादीन तब श्रीरघुनाथ जी के दण्डवत् करिकै दक्षिण दिशाको चलते भये तहां दुइज तीज चौथिपञ्चमी ताई गिरिकन्दर बन हेरते भये छठिको प्रभानामे तपस्विनी कोई गिरि कन्दरामें तपकरै तहां कन्दरामें प्रवेश करिकै त्यहिके पास जातेभयेतपस्विनी ने अति सन्मान करिकै कहा कि श्री जानकी जी को पावहुगे चिन्ता न करहु तासों बिदा ह्वैकै समुद्रके किनारे जातेभये तहां तीनिदिन टिकतभये जबते श्रीजानकी जी पंचबटीते लंकाको गई हैं ताते नौ

**मिलासम्पाती ४१ सुनिसबकथासमीरकुमारा नाँघतभयोपयोधिअपारा ४२ लंकाकपिप्रवेशजिमिकीन्हा पुनिसीतहिधीरजजिमिदीन्हा ४४ बनउजारिरावणहिंप्रबोधी पुरदहिनाँघ्यउबहुरिपयोधी ४४ आयेकपिसबजहँरघुराई बैदेहीकीकुशल**

महीना सोरहदिन ऊपर शुक्लनौमीको सम्पाति गृद्धराज तासों श्रीजानकी जी की खबरि पावतेभये ( ४१ ) दशमीको सम्पूर्ण सेनापतिबानर मन्त्रकरतेभये श्रीहनुमान्जी को लंकाजाबे को मन्त्र भयो तब एकादशीको शतयोजन समुद्र हनुमान्जी नांघतभये ( ४२ ) ताही एकादशी को सन्ध्याकाल विषे लंककिनीको मारतभये पुनि सूक्ष्मरूपह्वैकै लंकामें प्रवेशकीन घरघर जानकी जी कर खोजकीन पुनि भोरही जब पहररात्रि रही तब बिभीषणते भेंट भई पुनि जब चारिदण्ड रात्रि रही तब श्रीजानकीजीके दर्शन कीन द्वादर्शी को अशोकवृक्ष के ऊपर रहिगये तेही द्वादशीकी रात्री को रावण आवतभयो श्रीजनकीजी सों बार्ता करिकै जातभयो तब श्रीहनुमान्जी श्रीरामचन्द्र की मुद्रिका श्रीजानकीजीको दीन पुनि बार्तालाप कीन अरु धीर्यदीन ( ४३ ) पुनि त्रयोदशीको अशोकबाटिका उजार्‌यो है अरु अक्षयकुमार को मार्‌यो है पुनि चतुर्दशी को ब्रह्मास्त्र इन्द्रजीत करिकै हनुमान्जी बन्धनमें आये रावणको प्रबोधकीन ज्यहि दिन हनुमान्जी बन्धनमें आये त्यही दिन हनुमान्जी लंका जराइदीन पुनि पूर्णमासीको श्रीजानकी जीको दण्डवत् करिकै चूड़ामणि भूषण श्रीजानकीजी दीन सो लैकै समुद्रपार ह्वैकै महेंद्राचल पर्वत पर प्राप्तभये ( ४४ ) अरु कोई मुनिके मतमें आधा अगहन आधापूषलैकै अगहन मानते हैं तिनने पूष कृष्णपक्ष परिवाको अगहन कृष्णपक्ष परिवा कहा है अरु हम साधारण अगहनको अगहन पूषको पूष कहा है बस्तुउहै ताते पूषकृष्ण परिवाको सबबानर मिलिकै श्रीरघुनाथ जी के इहां चले पांचदिन राहमें लग्यो छठिको मधुबन के फल सम्पूर्ण भक्षणकीन सप्तमीको पहरदिनचढ़े बड़े हर्ष संयुक्त श्रीरघुनाथजीके समीप प्राप्त भये श्रीरघुनाथजी को हनुमान्जी दण्डवत् करिकै श्रीजानकीजी करचूड़ामणि देतेभये सम्पूर्ण कुशल वृत्तान्त कहते भये ( ४५ ) अष्टमी को उत्तरा फाल्गुणी मुहूर्तमध्याह्न के सूर्य प्राप्ति होतसंते श्रीरघुनाथजी प्रस्थान करतेभये दक्षिण दिशाकोचले अरु यह प्रतिज्ञाकीन कि समुद्र को बांधैंगे रावणको मारैंगे त्यहिके उपरांत सतयेंदिन अमावसको समुद्रकेकिनारे सहितसेना प्राप्तभये पूषशुक्लपक्ष परिवातेलैकै तृतीया पर्यन्तताईं

**सुनाई ४५ सेनसमेतयथारघुबीरा उतरेजाइवारिनिधितीरा ४६ मिलाविभीषणज्यहिविधिआई सागरनिग्रहकथा सुनाई ४७ दो०॥ सेतुबाँधिकपिसेनजिमि उतरेसागरपारगयउबसीठीवीरबर ज्यहिबिधिबालिकुमार ४८ निशिचरकोशलराईवर्णयसिबिविधि**

सेनासहित श्रीरघुनाथजी समुद्रके किनारे बसे ( ४६ ) चतुर्थीको विभीषण श्रीरघुनाथजीके शरणागतभये पंचमीको समुद्र उतरबेकोमंत्र करते भये पुनि श्रीरघुनाथजी सप्तमी अष्टमी पर्यन्त तीनिदिन समुद्रते राहमांगतेभये नौमीकी समुद्रको ताड़नाकीन समुद्र हाथजोरिकै अपनीचूक माफकराइकै यत्नबताइकै जातभयो ( ४७ ) दोहार्थ॥ पुनि दशमीको सेतुबांधबे को प्रारम्भकीन दशमी ते त्रयोदशीताई सेतुबांधिकै तीनिदिनमें तयारभयो दशयोजनलम्बा अरु दशयोजन बिस्तार परम सुंदर पर्बतन करिकै ताके द्वौदिशिपर श्रीराम लक्ष्मण ठाढ़ेभये तिनके प्रतिबिंबकी छबि देखिकै अनेक जलचर प्रगटिआये ते शतयोजनकेलंबे सब अरु योजनकी मोटाईते सब द्वौभाइनकी छबिदेखिकै जड़ीभूतभये हैं ऐसेही सेतु के द्वौदिशिविषे पुनि चतुर्दशीको उतरिबेको सुदिनकीन पुनि पूर्णमासी से संपूर्णसेना उतरनेलगी तहां पूषकी पूर्णमासीलैकै माघकी कृष्णपक्ष परिवा द्वितीयाताई तीनिदिन में सेनाउतरिगई पुनि तृतीयाते दशमीताई सुबेलपर्बतपर मुकामरहा आठदिनताई संपूर्णभेद समुझतेरहे युद्ध कर मंत्रकरतेरहे माघकृष्णपक्ष एकादशीको दुइदिनमें सेनाकीसंख्याभई यूथयूथ पृथक् पृथक्करिकै मुकामकीन पुनि त्रयोदशी चतुर्दशी अमावसताईलंकाविषे रावण अपनीसेनाकी संख्याकरतभयो ताही तीनिदिनकेविषे श्रीरघुनाथजी मंत्रकरिकै माघशुक्लपरिवाको अंगदको दूतपन करिबे कोपठायोहै तहां अंगद संपूर्ण वृत्तांत लैकै श्रीरघुनाथजी सों कहेउ आइ ( ४८ ) दोहार्थ॥ पुनि द्वितीयाते अष्टमीपर्यन्त ताई सातदिन बानर राक्षसनते महायुद्ध भयो पुनि माघशुक्ल नौमी की रात्रिको इन्द्रजीतने श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण सम्पूर्ण सेनापति अरु सम्पूर्णसेना नागफाँसतेबंधन कीन पुनि दशमीहीको भोरही गरुड़आये मायारूपी नागसंपूर्ण बिलाइगये पुनि एकादशी दुइदिनमें श्रीहनुमान्‌जी धूम्राक्षको बधकीन पुनि त्रयोदशी को अकंपन राक्षसको मारा पुनि चतुर्दशी को फाल्गुण कृष्णपक्षपरिवा ताई तीनि दिन विषे नल नीलने प्रहस्तको मारा पुनि द्वितीया चतुर्थीताई श्रीरामचन्द्र रावणते तुमुलयुद्धभयो रावण बेहालह्वैकै पंचमीको कुम्भकर्णको जगावत भयो पुनि छठिको कुम्भकर्णको मदिरापान खवावतभयो ताही बीचमें पंचमी छठि दुइदिन संग्राम बन्दरहा तबैरावणकुम्भकर्णते बार्ताभई पुनि सप्तमीको कुम्भकर्ण युद्धकरबेको आवतभयो

## प्रकार कुम्भकरणघननादकर बलपौरुषसंहार ४९ चौ०॥ निशिचरनिकरमरणगविधिनाना रघुपतिरावणसमरबखाना ५०

पुनि अष्टमी नौमी ताई कुम्भकर्णते युद्धभयो तेही नौमीको संध्याकालविषे श्रीरामचन्द्र कुम्भकर्णकोमारिकै परमपददीन पुनि दशमीते द्वादशी ताई तीनि दिनमें नरांतक आदिक पांचराक्षस महाबीर तिनकोबधभयोपुनि त्रयोदशी चतुर्दशी संग्राम बन्दभयो पुनि अमावस फाल्गुण शुक्लपक्ष परिवा सन्ध्या विषे मकराक्षको बधभयो पुनि द्वितीयाको इन्द्रजीतमहायुद्धकरिकै श्रीलक्ष्मणजीको शक्तिमारतभयो तातेश्रीरघुनाथजी विरह करतेभये ताही दिन रात्री को हनुमान्‌जू संजीवनी ल्यावते भये पुनिताही दिन दुइदण्ड रात्रीरहे संजीवनी करिकै लक्ष्मणजू उठतेभये श्रीरामचन्द्र सेना संयुक्त हर्षको प्राप्तभये पुनि तृतीयाते सप्तमीताई पांचदिनइन्द्रजीत अरु लक्ष्मणजी ते महायुद्धभयो पुनि ताही सप्तमीको सन्ध्या काल विषे लक्ष्मणजू इन्द्रजीतको बधकीन परमपददीन देवतनके दुन्दुभी बाजतभई ( ४९ ) रावणके शोकते अष्टमी नौमी दशमी तीनिदिन युद्ध भई एकादशीको रावणने एकांत यज्ञकीन अब अनेक निश्चरन बानरनते युद्धभई अनेक निश्चरमारतभये पुनिद्वादशीको इष्टदेवते शिक्षापाइकै रावण युद्धकरिबेको चल्यो तहां चैत्रकृष्ण परिवाताई पांचदिन श्रीराम रावणते महायुद्ध भई अनेक राक्षस पार्श्वादि महाबीर जूझतभये द्वितीयाको रावणकी शक्ति श्रीलक्ष्मणजूकेलागी ताहीदिन हनूमान् संजीवनीलाये लक्ष्मणजी उठतेभये द्वितीयाते एकादशीताई दशदिन श्रीराम रावणते महायुद्धभई त्रैलोक्यमें पूरिरही ऐसी युद्ध तीनिहूँ लोकमें नतौ कभी भईहै अरु नतौ कभी होइगी तीनिहूँ कालमें ( ५० ) तब वाही एकादशी को पहर दिनरहे रघुनाथजी रावणको बधकीन त्रैलोक्यमें जयजय भयो देवतासम्पूर्ण फूलबर्षत भये श्रीरघुनाथजीकी आज्ञाते ताही दिन विभीषणजू रावणकी क्रियाकीन रावण सारूप्य मुक्तिको प्राप्तभयो श्रीरघुनाथजी को सखा रूपभयो तहां पचास औ पांच पचपन दिन युद्धभई तामें सातदिन युद्धबन्दरही द्वादशीको विभीषण शुद्धभयो त्रयोदशीको श्रीरघुनाथजी की आज्ञाते श्रीलक्ष्मण हनूमान् अंगद जामवन्तसुग्रीव इत्यादिकने राजा सम्पूर्ण

सेनापति संयुक्त बिभीषणको राजगद्दीपर बैठाइकै तिलककीन पुनि चतुर्दशीको आज्ञाभई इन्द्रने अमृतकी वृष्टिकियो सम्पूर्ण बानर श्रीरघुनाथजी की इच्छाते जिये अरु राक्षस परमपदको प्राप्तिभयेताते न जिये सम्पूर्ण बानर श्रीरघुनाथजीके संगही परबिभूतिको जाहिंगे

## रावणबधमन्दोदरिशोका राजविभीषणदेवअशोका ५१ सीतारघुपतिमिलनबहोरी सुरनकीनअस्तुतिकरजोरी ५२ पुनिपुष्पक

अरु अमावसको विभीषणजूने अनेक दिव्यबस्त्र अनेक अलंकार अनेक रत्न श्रीरघुनाथजी को भेंटदीन अरु चैत्रशुक्ल परिवाको उहै सरंजाम श्रीरघुनाथजीकी आज्ञाते विभीषणजू बिमान में भरिकै आकाश में जाइकै बर्षा करत भये तब श्रीरघुनाथजी आज्ञादीन सबबानरनको सो जहां तहां लेतभये कल्लोल संयुक्त कोई मणिको अलंकार बस्त्र पहिरावते हैं कोई अलंकार पहिरते हैं डारिदेते हैं अरु मणिमुखमें मेलिदेते हैं पुनि उगलि डारते हैं अनेक प्रकार के हास्यरस परस्पर होते हैं तहां देवता अशोच भये ( ५१ ) पुनि द्वितीयाको श्रीरघुनाथजी आज्ञादीन विभीषण हनूमान्जीको कि श्रीजानकीजीको लैआवहु तहां विभीषण हनुमान् इत्यादिक मंत्रीजाइकै त्रिजटा इत्यादिक राक्षसी जे भक्तिमान्रहीं तेश्रीजानकीजीको स्नानकरावती भई दिव्यबस्त्र अलंकार पहिरावती भई दिव्यपालकी में चढ़ाइकै श्रीरघुनाथजी के समीप लैआवती भई तृतीयाको श्रीरघुनाथजी की आज्ञाते अग्निप्रवेश कीन्ह अग्निने मूर्त्तिमान् होइकै श्रीजानकीजीको लैकै प्रीतिसे कन्याभावते श्रीरघुनाथजीको समपर्णकीन दण्डवत करिकै अग्नि बिदाभयो ( ५२ ) तहां श्रीरघुनाथजीकी सेनाविषे अठारहपद्म तौ राजारहे हैं तिनके एकएकके संग सेना काहूके संग दुइअक्षोहिणी अरु काहूकेसंग चारिअक्षोहिणी अरु काहूकेसंग छ्ा अक्षोहिणी इत्यादिक अनगणितसेना ते सबसेना संयुक्त अरु विभीषण कै सेनासंयुक्त अरु सब बानर रीच्छ सेनापति सेना संयुक्त श्रीरामचन्द्र की आज्ञाते पुष्पकबिमानपर चढ़तेभये पुष्पकबिमान जेहैं तेहिको लघु दीर्घको प्रमाणनहीं है मालिककी जैसी इच्छाहोइ तैसे ही होइजाइ है आपु श्रीरघुनाथजी सहित श्रीजानकी सहित लक्ष्मणजू पुष्पकबिमान के मध्य परमदिब्य सिंहासन तेहिपरचढ़तभये श्रीअयोध्याकोचले ( ५३ ) तब श्रीरघुनाथजी की आज्ञापाइकै पुष्पकबिमान आकाशमार्गह्वैकै श्रीअयोध्याको चलतभयो पुनि ताहीदिन श्रीजानकीजीको रणभूमिअरु सेना देखावत सेतुकीरचना देखावत चलेजातेहैं अरु अगस्त्यजूके आश्रम में जाइकै बिमान उतरतभयो तहां सो रात्रीरहे पुनि चतुर्थीको प्रातसमय अगस्त्यजूसे बिदाहोइकै श्रीचित्रकूट बिमान उतरेउआइ चतुर्थीकी रात्री चित्रकूटमेंरहे पुनि पंचमीको प्रातही बिमानचल्यो प्रयागमें पहुंचे श्रीभरद्वाजके आश्रममें बिमान उतरतभयो पंचमीकीरात्री अरु छठि सप्तमी

## चढ़िकपिनसमेता अवधचलेप्रभुकृपानिकेता ५३ ज्यहिविधिरामनगरनियराये बायसविशदचरितसबगाये ५४ कहिसिबहोरि

तीनिरात्री प्रयागमें रहे अष्टमीको बड़ेप्रात स्नानकरिकै भरद्वाजसे बिदाभये वोहीसाइति हनूमान्जीको बिदाकीन भरतकेपास खबरिदेबे को आपु श्रीरामचन्द्र गंगाउतरिकै शृंगबेरपुरमें निषादके आश्रममें बिमानउतरेउ निषाद महाआनन्दको प्राप्तिभयो अरु बड़ीसेवकाईकीन तहां हनूमान्जी श्रीजानकीजी श्रीलक्ष्मणजी श्रीरघुनाथजीकी आनन्दकी खबरि भरतजूकोदैकै आनन्दमें दुइपहरबीते ताही अष्टमीको तीसरेपहर हनूमान्जी शृंगबेरपुर लौटिकै प्राप्तिभये श्रीराचन्द्रजी के दण्डवत्कीन भरतजीकै कुशल आनन्दकी खबरिकही रघुनाथजी बहुतप्रसन्नभये प्रसादी मालादीन पुनि शुक्ल श्रीरामनौमीको प्रातही श्रीगंगास्नान करिकै श्रीगंगाजीको श्रीजानकीजी पूजनकीन श्रीरघुनाथजी नमस्कारकीन निषादको बिमानपर चढ़ाइकै श्रीअयोध्याकोचले श्रीरघुनाथजी विभीषण सुग्रीवादिकनको श्रीअयोध्याकी शोभा माहात्म्य श्रीमुख बर्णन करत संते डेढ़पहर दिनचढ़े श्रीअयोध्याके समीप बिमान पहुंच्यो यह बिशद चरित कागभुशुण्डि कहतभये ( ५४ ) तब श्रीरामचन्द्रकी प्रेरणाते भूमि मेंबिमानउतरयो दुइपहरमें दुइघरी ऊन भरतजीसे मिलाप होतभयो इहां मलमासको प्रयोजननहींलीन जौनीसाइति श्रीरामचन्द्र श्रीअयोध्या ते श्रीचित्रकूटको चले हैं वोहीसाइति श्रीअयोध्या विषे प्राप्तिभये अतिआनन्दभयो संपूर्ण अयोध्याबासिनते मिलत मिलावतसंते चारि दण्ड बाकीरह्यो ताही नौमीको श्रीरामचन्द्रको राज्याभिषेकभयो पुनि पुरको बर्णन अरु राज्यनीतिका

बर्णनकहा यह जो मासतिथि हमबर्णन कीनहै सो अग्निबेश रामायणे अरु पद्मपुराणको सम्मतकहा है ( ५५ ) हेपार्बती जो मैं तुमसन कहिआयउं सो समस्तकथा कागभुशुण्डिने गरुड़ तेकही ( ५६ ) सुनिकै परमआनन्दसे बोलतेभये ( ५७ ) सोरठार्थ॥ हे बायसनके तिलककही शिरोमणि तुम्हारे मुखते श्रीरामचरित सुनतसंते मोरसकल संदेहगयो और रामचन्द्र के पदमें नेहभयो ( ५८ ) हे तात मोको अतिमोहभई अतिमोहकही जो अपने इष्टविषे भ्रमहोइ तहां श्रीरामचन्द्र विषे भ्रमभई रणमें बंधन देखिकै कि श्रीरामचन्द्र परब्रह्म सच्चिदानंद यह का करते हैं ( ५९ ) इतिश्री रामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वंसने उत्तरकांडेगरुड़भुशुण्डि मिलापरामचरितश्रवणसंदेह निवृत्तिबर्णनंनाम अष्टादशस्तरंगः १८॥ :: :: :: :: :: :: :: :: :: ::

रामअभिषेका पुरबर्णतनृपनीतिअनेका ५५ कथा भुशुंडिसमस्तबखानी जोमैंतुमसनकहेउ भवानी ५६ सुनिसबरामकथागुणगाहा कहतबचनमनपरमउछाहा ५७ सो०॥ गयउमोरसन्देह सुन्यउंसकलरघुपतिचरित भयउरामपदनेह तवप्रसादबायस तिलक ५८ मोहिंभयउअतिमोह प्रभुबन्धनरणमहँनिरखि चिदानन्दसन्दोह रामविकलकारणकवन ५९ * * * *

चौ०॥ देखिचरितअतिनरअनुहारी भयउहृदयममसंशयभारी १ स्वइभ्रममैंअबहितकरिमाना कीनअनुग्रहकृपानिधाना २ जोअतिआतपब्याकुलहोई तरुछायासुखजानैसोई ३ जोनहिंहोतमोहअतिमोहीं मिलत्यउं तातकवनिविधितोहीं ४

दोहा॥ दशअरुनवमतरङ्गमें वाक्यपरस्परप्रीति॥ रामचरणसम्बादबर युक्तिउक्तियुतनीति १९॥ हे तात श्रीरामचन्द्र विषे नर अनुहारि चरित देखिकै मोको भारीभ्रम ह्वैगयो है ( १ ) तहां हेतात सो भ्रम अबमैं हितकारी मान्यो है काहेते कि भ्रमके द्वार ह्वैकै श्रीरघुनाथजी मोपर कृपाकीन ( २ ) काहेते जो अति आतपते व्याकुल होतेहैं तरुकीछायाको सुख सोई जानते हैं ( ३ ) हे तात जो मोकहँ अतिशयमोह नहोतो तौ तुमकहँ कैसे मिलत्यउँ तुम कैसेहौ कि ज्यहिके स्थानमें आवतसंतेमोह जातीरहीतहां भ्रमरूपी तापते मैं तप्त ह्वैरह्यों तुम्हारस्थान कल्पतरु है अरु तुम त्यहिकी छाया रूपहौ ताते तुमको मिलेते मैं शीतल भयों ( ४ ) अरु जो तुम नहीं मिलत्यहु तौ श्रीरामचन्द्रकै अतिविचित्र कथा कहां सुनत्यउँ अरु जो कहौ कि का कोई मुनीश्वर सुनावत्यो तहांमुनीश्वरनके अपनी जातित्वको क्रियाको विद्याको तपको वैराग्यको योगज्ञानको अभिमान है ताते जैसी रीतितुम कहेहौ तैसी रीतिते बैनकहतेहैं ( ५ ) ताते मोको अससमुझिपरतहै कि वेदशास्त्र पुराण मुनिन यह निःसन्देह सिद्धांत कीनहै ( ६ ) तहां बिशुद्ध कही विशेष शुद्ध योगवैराग्य ज्ञान इत्यादिक संयुक्त श्रीरामानन्य तहां ऐसेसन्तमिलैं जब श्रीराम कृपाकरहिं ( ७ ) काहेते वे सन्त श्रीरामचन्द्रकी कृपाते तुम्हार दरशमोको भयोहै तुम्हारे प्रतापते सम्पूर्ण संशय नाशभयउ ( ८ ) दोहार्थ॥ हे पार्वती बिहंगपतिकै बाणी अति विनय आरत प्रेमभरी सुनिकै कागभुशुण्डिको आनन्दते तन पुलकि आयोहै अरु नेत्रनमें जल भरिआयोहै मनमें अतिहर्षको प्राप्तभयो ( ९ ) तहां हेपार्बती जो श्रोता सुमतिमानहोइ सुशीलहोइ सुशील सहनशीलनिन्दाअपमान इत्यादिकसहिजाइ किसू जीवको

सुनत्यउं किमिहरिकथासुहाई अतिबिचित्रतुमबहुविधिगाई ५ निगमागमपुराणमतयेहा कहहिंसिद्धमुनिनहिंसन्देहा ६ सन्तविशुद्धमिलहिंपरतेही चितवहिंरामकृपाकरिजेही ७ रामकृपातवदरशनभयऊ तवप्रसादसबसंशयगयऊ ८ दो०॥ सुनिबिहंगपतिबाणीसहितविनयअनुराग पुलकगातलोचनसजल मनहर्ष्यउअतिकाग ९ श्रोतासुमतिसुशीलशुचिकथारसिकहरिदास पाइउमायह

निरादर न करै अरु शुचिकही पवित्र काम क्रोध लोभ मोह इत्यादिक ते रहित होइ रसिक कही श्रीरामचन्द्र के चरित रसको पानकरै अपर साधनकेरसते अनइच्छितहोइ अरु भगवतदासहोइ ऐसे श्रोताकोपाइकै तब गुप्तमत सज्जन जे सत्गुरुहैं ते प्रकाशतेहैं किंतु यहि अर्थविषे सत्गुरुनकी उदारता दयालुताकी समानहोती है काहेते कि काहेको कोई

ऐसो श्रोता होइगो अरु काहेको गुप्तसत्गुरु मतकरहिं अरु सत्गुरु तौ मेघबुद्धी हैं तहां दूसरार्थ श्रोताकही सुष्टुमतिते श्रवणकरै जैसे मृगारागसुनैहै पुनि शील शुचिह्वैके मननकरै पुनि रसिक भगवद्दासह्वैके निदिध्यासनकही अभ्यासकरै तब सत्गुरु जो कहते हैं सो तत्ववेत्तन श्रोतनको साक्षात्होइ तहां सज्जन तौ समाज में सब पदार्थ कहते हैं पर उनकी बाणीमें जो गुप्तमतहै तेई श्रोता पावतेहैं जो कहिआयेहैं अरु सज्जनतौ सब प्रकाशकरते हैं जैसे स्वातीके नक्षत्र विषे मेघ सर्बत्र बर्षते हैं पर वृक्षनविषे केवल कदलीहीमें कपूर फरत है अरु समुद्रके अनेक जन्तु हैं पर सीपहि विषे मोतीफरती है अरु बिहंगनमें चातकै संतुष्टहोतहैं तैसे सज्जनकी बाणी स्वाती को जलहै विवेकी श्रोता कदली सीप चातक हैं तहां दोहा शतपञ्चासिकायां॥ कदलिकपूरजसीपमणि चातककीगति सोइ ॥ युतविबेकबैठ्योसुजन स्वातिवृष्टिकुलहोइ॥ हे पार्वती तैसेही गरुड़को पाइकै कागभुशुण्डि सबकहते हैं तहां श्रोता सब रामतत्त्वके अधिकारीहैं ( १० ) तब कागभुशुण्डि गरुड़कै बाणी सुनिकै बहोरिकै नभगनाथपर बड़ी प्रीति करिकै बोलते भये ( ११ ) पुनि कागभुशुण्डि कहते हैं कि हे नाथ तुम मेरे सब प्रकारते पूज्यहौ काहेते एकतौ पक्षिनके राजाहौ दूसरे परम वैष्णवहौ अरु मेरे इहां कृपाकरिकै आयेहौ तापरमोको आप अति आदरदीन अरु आप श्रीरघुनाथजीके पात्रहौ ताते तुममेरे पूज्यमान्हौ अब जो कछु मेरी बुद्धिमें श्रीरामचन्द्र कर पदार्थहै सो मैं

**गोप्यमतसज्जनकरहिंप्रकाश १० चौ०॥ बोलेकागभुशुण्डिबहोरीनभगनाथपरप्रीतिनथोरी ११ सबविधिनाथपूज्यतुममेरे कृपापात्ररघुनायककेरे १२ तुमहिंनसंशयमोहनमाया मोपरनाथकीनितुमदाया १३ पठैमोहमिसखगपतितोहीं रघुपतिदीनिबड़ाईमोहीं १४ तुमनिजमोहकहाखगसाईं सोनहिंकछुआश्चर्यगोसाईं १५ नारदभवबिरंचिसनकादी जेमुनिनायकआतमबादी १६ मोहनअन्धकीनक्यहिकेहीं कोजगकामनचावनजेहीं १७ तृष्णाकेहिनकीनबौराहा केहिकरहृदयक्रोधनहिंदाहा १८ दो०॥ ज्ञानीतापसशूर**

तुमको सबपूजा चढ़ावतहौं जाते श्रीरामचन्द्रकै कृपा कछु मोहूँपर होइ हे नाथ मेरी समुझ में नतौ तुम्हारे संशय है न मोह है अरु न माया है आपको जो आगमन है सो मेरे ऊपर केवल कृपाकीनि ( १२ ) अरु जोयहआपकहो कि तुमबड़ाई करतेहौ जो हमारे मोहनहीं होता तौ हम आपके पास काहेको आवते सो सत्य है ( १३ ) तहां हे तात मोको अस समुझि परत है कि मोहके मिसु करिकै श्रीरामचन्द्र पठावा है मेरे पासको बड़ाई देबेको कि हे गरुड़ तुम पक्षिन के राजाहौ कागभुशुण्डि को मेरेभक्तन विषे स्थापन करिआवो ( १४ ) अरु हे खगनाह जो तुम विशेष कहतहौ कि हमको मोह भयोहै सो यहिको आश्चर्य नहीं है काहेते किप्रभुकी माया बड़ी प्रबलहै ( १५ ) काहेते नारदजोहैं अरुभवकही शिवजो हैं बिरंचि जोहैं सनकादिक जेहैं इत्यादिक अपरमुनिजेहैं ब्रह्मबादी ( १६ ) तहांहेतात यह श्रीरामचन्द्रकी मायाने क्यहिको नहीं मोहकरिकै अन्ध करिदियोहै अपने प्रबल गुणकरिकै अरु त्यहिके जो अनेकहैं कामकही कामना तिन जगतमें क्यहिको नहीं नचायो सबको नचायो है ( १७ ) हे तात यहि तृष्णा क्यहिको नहीं बौराहाकीन तृष्णाके वशह्वइकै बौरहाकी नाईं सबमांगत फिरते हैं देशकाल अवसरनहीं विचारते हैं अरु यह क्रोध केहिके हृदयको नहीं दाहत है सबके हृदयको दाहतहै ( १८ ) हेतात ज्ञानीजेहैं तपस्वीजेहैं अरु शूरजेहैं कविजेहैं कोविदकही पंडितजे हैं अपर जेकोई गुणनके आगार हैं अरु उनके हृदयमें लोभ बसीहै त्यहि करिकै जगत्में विडम्बना कही निन्दाहोती है सोकेहिके हृदयमें लोभने बिडंबना नहींकरी ( १९ ) हे तात श्रीकही लक्ष्मी धन जाति कुल युवाविद्या ज्ञान ध्यान येते आठौमदहैं इनमें अपनपौ मानिकै कोनहीं बक्र कही टेढ़ ह्वइगयो है अरु प्रभुताकही ऐश्वर्य्यमान् त्यहिकरिकै को नहीं बधिर ह्वइगयोहै अरु मृगलोचनी जो स्त्री त्यहिके नेत्रके बाण क्यहिके

**कबि कोबिदगुणआगार केहिकैलोभबिडंबना कीननयहिसंसार १९ श्रीमदबक्रनकीनकेहि प्रभुताबधिरनकाहि मृगलोचनिकेनयनशर कोअसलागनजाहि २० चौ०॥ गुणकृतसन्निपातनहिंकेही कोनमोहमदतजेउनवेही २१ यौवनज्वरकेहिनहिंबलकावा ममताकेहिकरयशननशावा**

२२ मत्सरकाहिकलंकनलावा काहिनशोकसमीरनशावा २३ चिंतासाँपिनिकाहिनखाया कोजगजाहिनब्यापीमाया २४ कीटमनोरथदारुशरीरा जेहिनलागघुनकोअसधीरा २५ सुतबितलोगइर्षनातीनी केहि

नाहीं लागे हैं जगत्में सबके लाग्योहै ( २० ) अपने गुणकै कृतमानिकै काको नहीं सन्निपात ह्वइगयोहै काहेते अपने गुणके आगे काहूको नहीं मानेहैं मोहमद तजिकै यहि जगत्मेंको निबहाहै ( २१ ) अरु युवावस्था कर ज्वर बढ़ेते कोनहीं बलकै नामबौराइहै अरु ममताकही धन धाम सुत कलत्र इत्यादिकमें अपनपौ मानिकै क्यहिकर यश नहीं नाशभयो है ( २२ ) अरु मत्सर कही परावा ऐश्वर्य नहीं देखिसकते हैं सो कौन नहीं कलंकी भयो है अरु शोककही जोबस्तुकी हानि होइजाइहै ताकी कल्पना पावन करिकै क्यहिको शरीर नहींडोलैहै ( २३ ) हेतात चिन्ता कही यह होइहि कि न होइहि यह अहर्निशि चिन्ता करते हैं सो सांपिनिरूपी ने क्यहिको नहींडस्योहै अरु यहिजगत् बिषे ऐसो कवनहै जाकोमायानहीं व्यापीहै ( २४ ) हे तात यह बिषयको मनोरथजो है सोईकीटहै अरु शरीर दारुहै तहां मनोरथ घुनलागिकै शरीर को खाइडारै है ऐसो कौनधीर है जो याते बचिजाइ है ( २५ ) अरु सुतजेहैं अरु बितजेहैं अरु लोककी मर्यादजेहैं ये तीनिउँको इक्षणाकही इच्छा है जाके एकई एक है सो माया लीनकरिदेते हैं अरु जाके तीनिउँ हैं ताकी का कहिये ( २६ ) हे तात ये सबमायाके परिवार हैं पर अमित हैं अरु एकप्रबलहै को बरणिसकै है ( २७ ) हे गरुड़ तहां यहि मायाको शिव चतुरानन डेराते हैं अरु अपरजीवको का लेखाहै ( २८ ) दोहार्थ॥ तहां यहि मायाके प्रचण्ड कटक हैं संसारमें व्यापिरहे हैं त्यहि मायाके सेनापतिकाम क्रोध लोभ मोह मद कपट दम्भ पाषण्ड इत्यादिक अनेक सेनापति हैं अरु मैंतें मोर तोर अरु मम इत्यादिक अनेक सेना है ( २९ ) हेगरुड़ सो माया श्रीरामचन्द्रकै एकदासी है पर समुझबेते मिथ्या है तहां रघुनाथजीकी दासी कहना अरु मिथ्या कहना यह आश्चर्य है तहां रघुनाथजीकी दासी कहना सो सत्यहै अरु जीव कल्याणकारी नहीं है ताते

कैमतिइनकृतनमलीनी २६ यहसबमायाकरपरिवारा प्रबलअमितकोबरणैपारा २७ शिवचतुराननजाहिडेराहीं अपरजीवकेहिलेखेमाहीं २८ दो०॥ ब्यापिरहेउसंसारमहँमायाकटकप्रचंड सेनापतिकामादिभट दंभकपटपाखंड २९ सोदासीरघुनाथकैसमुझैमिथ्यासोपि छूटनरामकृपाबिन नाथकहौंपदरोपि ३०॥ * * * * * * *

चौ०॥ जोमायासबजगहिंनचावा जासुचरितलखिकाहुनपावा १ सोइप्रभुभ्रूबिलासखगराजा नाचनटीइवसहितसमाजा २ सोइसच्चिदानंदघनरामा अजबिज्ञानरूपबलधामा ३ ब्यापकव्यापिअखंडअनंता अखिलअमोघशक्तिभगवंता ४ अगुण

मिथ्याकहा पर यहि जीवको बंधनकिहे है छोड़ेनहीं है जब श्रीरामचन्द्र कृपाकरैं तबछोड़ै है यह प्रण करिकै कहतहौं ( ३० ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसने उत्तरकाण्डेगरुड़प्रतिकागभुशुण्डिउत्तर वर्णनंनामएकोनबिंशतिस्तरंगः१९॥

दोहा॥ बिशईसुभगतरंगमें रामप्रतापअखण्ड रामचरणकहिकागबर बाणीसुभगप्रचण्ड २० हे गरुड़ श्रीरामचन्द्रकी जो माया है सो संपूर्ण जगत्को नचावती है त्यहिको चरित्र सबदेखते हैं पर जानिबेमें काहूके नहींआवै है ( १ ) सो माया श्रीरामचन्द्रकी भृकुटी के बिलासविषे नटीइव सहितसमाज नाचती है सबचरित्र करती है ( २ ) सोई श्रीरामचन्द्र सच्चिदानन्द घनहैं अरु अजकही अजन्मा हैं अरु बिज्ञानरूप बल के धाम हैं ( ३ ) अरु ब्यापि जो संसार है किंतु ब्यापि जो जीव है त्यहि विषे अपनेतेज चैतन्यस्वरूप परमदिव्य गुणकरिकै ब्याप्तहैं अरु अखण्ड हैं अनन्त हैं जाकोअन्त वेदहू नहींपावैं ताते अनन्त हैं अरु जाकीशक्ति अखिलकही अनन्त ब्रह्मांडहै अमोघकही

जाकीथाह कोईनहीं पावै है अरु अब्याहतगति है जाकी अब्याहतकही अव्यय अबिनाशी गतिकही जाके चरित्र हैं सो श्रीरामचन्द्रकी दिब्यशक्तिहै ऐसे स्वयंभगवान् श्री रामचन्द्रहैं ( ४ ) पुनि अगुणहैं तीनिगुणकेपरेहैं अरु अदभ्रकही जिनको आदि अन्त मध्य अनादिअपार जाकोपार कोईनहींपावैहै अरु गिराकही बाणी गोकही मनादिक अंतर्बाह्य इन्द्री ताते अतीतकहीपरेहैं पुनि कैसेहैं समदर्शीकही सर्बजीवनके साक्षी हैं अरु नियंताहैं प्रेरकहैं अरु अनवद्यकही निर्दोषहैं सर्बते भिन्नहैं अरु अजितहैं काहूके जीतबेयोग्य नहींहैं ( ५ ) पुनि कैसेहैं श्रीरामचन्द्र निर्ममकही अहंममते रहितहैं काहूपर ममत्वनहीं है पुनि कैसेहैं निराकारकही पांचतत्त्व तीनिउँगुण केआकार करिकै रहितहैं पुनि सर्बते निर्मोह हैं नित्य हैं निरंजनकही मायारहितहैं

**अदभ्रगिरागोतीता समदरशीअनवद्यअजीता ५ निर्ममनिराकारनिर्मोहा नित्यनिरंजनसुखसंदोहा ६ प्रकृतिपारप्रभुसबउरवासी ब्रह्म निरीहबिरजअबिनासी ७ इहाँमोहकरकारणनाहीं बिनरबिमुखतमकबहुँनजाहीं ८ दो०॥ भक्तहेतुभगवानप्रभु रामधरेतनभूप**

अरु सुखके संदोहकही समुद्र हैं ( ६ ) पुनि प्रकृतिकही मूल प्रकृति अब्याकृत आद्याशक्ति महामाया मूलकारण त्यहिकेपरे हैं अरु सबके उरअंतर बासी हैं अरु परब्रह्म हैं निरीहकही ईहानाम चेष्टाकही षड्व्यकार जन्मकही बढ़ब बृद्धि बिबरण छोट बड़ मोटदूबररंग बदलब सो बिबर्णकही पुनि क्षीयतेकही आयुर्बल घटतजाइ पुनि वृद्धि पुनिमरण येते षड्व्यकार ईहानाम चेष्टा त्यहिसबते रहित हैं श्रीरामचन्द्र बिरजकही रजजो हैं मायाके ब्यकार त्यहिते रहित हैं पुनि अविनाशी हैं ( ७ ) हे गरुड़ इहां मोहकर कारण नहीं है कैसे जैसे रबिके सम्मुख अंधकारको भाववृथा है ( ८ ) दोहार्थ ॥ तहां अपने भक्तनके हेतु प्रभुजो भगवान् हैं श्रीरामचन्द्र तिनभूपतनुधरेउ भूपतनुधरेउ कही जैसे कोई समर्थ उत्तमभूप के सर्बजीवन के हित अनेक क्रियाको धारण किहे है तैसे श्रीरामचन्द्र अपने तनविषे नरभूप की ऐसीक्रिया धारण करिकै सो क्रियाकैसी है परमदिब्य ऐसो चरित्रकरतभये प्राकृत नरइव अपने भक्तनके हेतु ताते भूपतनु धरबकहेउ ( ९ ) हे गरुड़ श्रीरामचन्द्रकीबिचित्रलीला सुनहु यथाकही जैसेकोई नट नटवा अनेकबेष धरिकै नृत्यकरते हैं कबहूं योगी संन्यासी बैरागी ब्रह्मचारी इत्यादिकनके बेषबनाइकै नकल करते हैं पुनि कबहूं स्त्रीकर बेषबनाइ कै नृत्यकरत हैं पर जैसो जैसोबेषबनावत तैसो तैसो भावदेखावत हैं तहां नटवा आपही है अरु जो बेषबनायो है त्यहिको स्वरूप नहीं है तहां जो बेषकियो है सो सबबेष सत्य है अरु उसकी नकल नृत्य सत्य है अरु योगी संन्यासी बैरागी ब्रह्मचारी स्त्री इनको स्वरूप होना नटके बिषेकियो है सो सबबेष सत्यहै नटवा केवल आपुहीहै यह दृष्टान्त है अबदार्ष्टांत कहते हैं तैसे श्रीरामजी नरलीला कीन है सोलीला नित्य है तहां श्रीरामचन्द्र विषे नरभाव ल्यावना अनित्य है श्रीरामचन्द्र पर बिग्रह सच्चिदानंद एकरस आपुहीहैं तहां तिनकी लीलामें भूलिगये हैं काहेते उनकी माया आश्चर्य है तुम काकरहु ( १० ) हे गरुड़ रघुपति कै लीला

**कियेचरितपावनपरम प्राकृतनरअनुरूप ९ यथाअनेकवेषधरिनृत्यकरैनटकोइ सोइसोइभावदेखावइआपुनहोइनसोइ १० चौ०॥ असरघुपतिलीलाउरगारी दनुजबिमोहनिजनसुखकारी ११ जोमतिमलिनविषयरसकामी प्रभुपरमोहधरहिंइमिस्वामी १२ नयनदोषजाकहँजबहोई पीतबरनशशिकहँकहसोई १३ जबजेहिदिशिभ्रमहोइखगेशा सोकहपश्चिमउयउदिनेशा १४ नौकारूढ़चलतजगदेखा अचलमोहबशआपुहिलेखा १५ बालकभ्रमहिंनभ्रमहिंगृहादी कहहिंपरस्परमिथ्यावादी १६ हरिविषयक**

ऐसी है जस कहिआये हैं सो आसुरी बुद्धि जिनकी है तिनको तो व्यामोहित करै है वे यह जानते हैं कि श्रीरामचन्द्र केवल राजपुत्र हैं अरु जिन जननकी दैवीबुद्धि है ते जानते हैं कि श्रीरामचन्द्र परमेश्वर भक्तनके कल्याण हेतु नरइव लीला करते हैं तिनको सुखकारी लीलाहै ( ११ ) अरु हेस्वामी जेमतिके मलिनहैं विषयके बशहैं अरु सकामीहैं ते

प्रभुबिषे इमि मोहकरतेहैं ( १२ ) किमि जिमि नयनदोष काहूको हो इहै चन्द्रमा सर्बथा उज्ज्वल है सो चन्द्रमाको पीतबर्ण कहैहै ( १३ ) हे खगेश जब ज्यहिको दिशाभ्रम होतहैं सोसूर्यको उदय पश्चिमदिशा जनावतहै ( १४ ) पुनि जैसेकोई नावमेंआरूढ़है अरु नावचलीजातीहै तबवै अपने भ्रमते तरु तृण ग्राम चलत देखते हैं अरुअपनाको अचलदेखतेहैं मोहके बशहैं ( १५ ) अरु बालक जो घूमते हैं सो परस्पर मिथ्याबाद करते हैं कि घर घूमते हैं ( १६ ) तहां हरिबिषयक कही अनेक प्रकार के विषयक प्राणीजे हैं ते हरिविषे असमोह करते हैं ताते तिनको हरि कैसे जानिये काहेते जिनको ज्ञानकर प्रसंग सपनेहु नहींहै ते हरिविषे अपनो भ्रम रोपण करतेहैं जस पाछे कहिआयेहैं अरु जे और पाठकरिकै और अर्थ करतेहैं तहां पूर्बापर चौपाई के संबंधमें बिरोधहै ( १७ ) वै प्राणी मायाके बश हैं अरु मतिकेमन्द हैं उनकेहृदयविषे जमनिका कही मोहरूपीकाई लगिरहीहै ( १८ ) तेशठ हठके बशते अनेक संशय करतेहैं अपनी अज्ञानता श्रीरामचंद्र विषे रोपणकरते हैं ( १९ ) दोहार्थ॥ हे गरुड़ जेप्राणी काम क्रोध लोभ मोह मद गृहादिक तेसंपूर्ण दुखरूप तेहिविषे आसक्त हैं तेमूढ़ रघुपतिको किमि जानहिं काहेते तामसगुण जो मोह अन्धकूप है तेहिमें परे हैं ( २० ) हे तात प्रभुके दुइ स्वरूप हैं एक निर्गुणब्रह्म एक सगुणब्रह्म पर विचार कियेते एकै हैं तहांनिर्गुणब्रह्म जानिबेको सुलभ है काहेते निगुर्णब्रह्मको वेद कहते हैं कि सर्बत्र एकरस परिपूर्ण ब्याप्त है अरु सबकहते हैं ताते तिनकर जानबसुलभ है अरु अनुभवते जाना जातहै अरु सगुणब्रह्म जानिबै को अति

**असमोहबिहगा सपनेहुनहिंअज्ञानप्रसंगा १७ मायाबशमतिअंदअभागी हृदयजमनिकाबहुबिधिलागी १८ तेशठहठबशसंशयकरहीं निजअज्ञानरामपरधरहीं १९ दो०॥ कामक्रोधमदलोभरत गृहासक्तदुखरूप तेकिमिजानहिंरघुपतिहिं मूढ़परेतमकूप २० निर्गुणरूपसुलभअति सगुणनजानैकोइ सुगमअगमनानाचरित सुनिमुनिभ्रमबशहोइ २१ चौ०॥ सुनुखगपतिरघुपतिप्रभुताई कहौं**

दुर्लभ है काहेते कि भले भले बिबेकी यह कहते हैं कि श्रीरामचन्द्र निर्गुणब्रह्म हैं अपने भक्तनके हेतु अपनी मायाको आरोपण करिकै देह को धारते हैं ताते सगुण कही अरु कोई असकहते हैं कि श्रीरामचन्द्र ईश्वर हैं अपनी मायाकरिकै देहको धारते हैं ताते सगुणकही अरु कोई असकहतेहैं कि श्रीरामचन्द्र ईश्वर हैं अपनी मायाकरिकै सदा सगुण रूपहैं तहां यहि बाणीके कहनेवाले सगुण ब्रह्मको स्वरूप यथार्थ नहीं जान्यो है काहेते कि सगुणकही जो तीनि गुणते संयुक्त होइ तहां विराट्रूपजोईश्वर है तिनको सगुण कही किंतु विष्णु भगवान्को सगुणकही काहेते कि सात्विक गुणको ग्रहण किहे हैं ताते सगुणकही अरु श्रीरामचन्द्र तौनिर्गुण सगुण के आधार हैं काहेते केवल परब्रह्म विग्रह हैं सगुण ईश्वर जाको अंशहै अरु निर्गुण ब्रह्मजाको घनस्तेज है अरु परमदिब्यगुण जिनकाविशेषण है ताते श्रीरामचन्द्रको स्वरूप ज्ञानदुर्लभ है जो जानहु काहेते किसुगम अगम श्रीरामचन्द्र अगमते सुगमभये हैं तिनको नानाचरित है जो सुनिकै मुनिनके मनमें भ्रमहोत है किन्तु अगुण सगुणकै नानाचरित हैं किसूके जानिबे योग्य नहीं हैं तहां प्रमाण है सदाशिव संहितायांश्लोक एक॥ सगुणंनिर्गुणंचैवपरमात्मातथैवच॥ ऐतेचांशाहिरामस्यपूर्वचांतेचमध्यतः ( २१ ) हे गरुड़ श्रीरामचन्द्रकै प्रभुता सुनहु मैं अपनीयथामति कथा कहतहौं ( २२ ) ज्यहि प्रकारते मोको मोहभयउ है सो सम्पूर्णकथा मैं तुमको सुनावतहौं ( २३ ) हे तात श्रीरामचन्द्रकी कृपाके तुम भाजनहौ अरुहरिके गुणमें तुमको प्रीतिहै अरु मोको सुखदाता हौ ( २४ ) हे तात ताते तुमसे दुरावनहीं करतहौं श्रीरघुनाथ जीको परमजो रहस्य है मनोहर कही मनको हरिलेतहै सो मैं तुमको सुनावत हौं ( २५ ) हेतात श्रीरामचन्द्रकर सुभाव सहजही असहै सोतुम सुनहु अपने जनजेहैं ताकर अभिमानजो है त्यहिको कबहूं नहीं राखतेहैं ( २६ )

**यथामतिकथासुहाई २२ जेहिबिधिमोहभयउप्रभुमोहीं सोसबकथासुनावौंतोहीं २३ रामकृपाभाजनतुमताता हरिगुणप्रीतिमोहिंसुखदाता २४ तातेनहिकछुतुमहिंदुरावौं परमरहस्यमनोहरगावौं २५ सुनहुरामकरसहजसुभाऊ जनअभिमाननराखहिंकाऊ २६ संसृतशूलमूलप्रदनाना**

सकलशोकदायकअभिमाना २७ तातेकरहिंकृपानिधिदूरी सेवकपरममताअतिभूरी २८ जिमिशिशुतनब्रणहोइगोसाईं मातुचिरावैकठिनकिनाईं २९ दो०॥ यदपिप्रथमदुखपावै रोवैबालअधीर ब्याधिनाशहितजननी गनैनसोशिशुपीर ३० तिमिरघुपतिनिजदासकर हरहिंमानहितलागि तुलसिदासऐसेप्रभुहिं कसनभजौभ्रमत्यागि ३१॥ * * * * * *

काहेते संसृतकही जन्ममरण त्यहिकर जो है मूलकारण अविद्या अरुशूलकही नानाप्रकारके दुख अनेक शोक तेहि सबकर दाता अभिमान है ( २७ ) ताते ज्यहि सेवकके कौनौ अभिमानहोत है त्यहि अभिमानको श्रीरामचन्द्र दूरिकरतेहैं काहेते अपने सेवकपर बड़ी ममताहै ( २८ ) कैसे दूरिकरते हैं जैसे कोई बालकके ब्रणकही बरतोर होइ तब माताकठिनमन करिकै बालकको फोरा चिराइ डारती है ( २९ ) दोहार्थ॥ यद्यपि वह बालक प्रथम दुखपावतहै अधीर ह्वैकै रोवत है तदपि मातावहिकी ब्याधिके नाशहेतु वहिकी पीरको नहीं गनति है ( ३० ) तिमि त्यहीप्रकारते रघुपति अपने दासको मानहरते हैं दासके हितहेतु गोसाईं तुलसीदास कहते हैं कि हेप्राणिहु यहि संसाररूप भ्रमको यागिकै ऐसे प्रभुको कसनहीं भजतेहौ ( ३१ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वन्सने उत्तरकाण्डेगरुड़भुशुण्डिसम्बादे श्रीरामस्वरूपपरात्परबर्णनन्नाम विंशतिस्तरंगः २०॥ :: :: :: :: :: :: :: :: :: :: ::

दोहा॥ बात्सल्यअद्भुतरसहिएकसुबीशतरङ्ग॥ मोहभुशुण्डियमोहगतरामचरणरतिरंग २१ हे खगेश रामचन्द्रकै कृपा अरु आपनि जड़ताई कहतहौं मनलगाइकै सुनहु ( १ ) जबजब श्रीरामचन्द्र अपने भक्तके निमित्तकमनुजतनधारी कही किशोरते बालरूप किंतु मनुज तनुधारीइव लीला करते हैं ( २ ) तबतब श्रीअयोध्याको मैं जाउं बालचरित बिलोकिकै हर्षकोप्राप्तिहोउँ ( ३ ) तहां श्रीरामचन्द्रकर जन्मउत्सव देखौं पांचबर्षलोभिरहौं ( ४ )

चौ०॥ रामकृपाआपनिजड़ताई कहौंखगेशसुनहुमनलाई १ जबजबराममनुजतनुधरहीं भक्तहेतुलीलाबहुकरहीं २ तबतबअवधपुरीमैंजाऊं बालचरितबिलोकिहरषाऊं ३ जन्ममहोत्सवदेखौंजाई बर्षपाँचतहँरहौंलोभाई ४ इष्टदेवममबालकरामा शोभाबपुषकोटिशतकामा ५ निजप्रभुबदननिहारिनिहारी लोचनसुफलकरौंउरगारी ६ लघुबायसबपुधरिहरिसंगा देखौंबालचरितबहुरंगा ७ दो०॥ लरिकाईंजहँजहँफिरहिं तहँतहँसंगउड़ाउं जूठनिपरैअजिरमहँ सोउठाइकरिखाउं ८ एकबारअतिशयप्रबल चरितकियेरघुबीर सुमिरतप्रभुलीलासोई पुलकितभयोशरीर ९ चौ०॥ कहैभुशुण्डिसुनहुखगनायक रामचरितसेवकसुखदायक १० नृप

मेरे इष्टदेव बालकरूप श्रीरामचन्द्रहैं जिनकी शतकोटि कामकै शोभाहै ( ५ ) हे उरगारिनित्यनित्य अपने प्रभुकी शोभा देखि देखि नेत्रनको सफल करौं ( ६ ) अरु तहां लघुबायसकर रूपधरिकै बालचरित बहु देखौंजाई ( ७ ) दोहार्थ॥ लरिकाईं में जहांजहां श्रीरामचन्द्र फिरहिं तहांतहां संगविषेमहूं उड़ा उड़ाफिरौं अरु जो जूठनि आंगनमें गिरहि उसेउठाइकै खाइलेउं जिसमें एकमात्रा कमतीहै प्रथमचरण बिषे सो दोहराछंदन ( ८ ) हे भरद्वाज एकबार श्रीरामलालजी बालअबस्थामें अतिशय चरितकीन तब सोई चरितसुमिरतसंते कागभुशुंडिको शरीर पुलकि आयोहै ( ९ ) हे भरद्वाज भुशुण्डि कहतेहैं हे गरुड़ श्रीरामचन्द्रकर चरित सेवकको सुखदायकहै ( १० ) तहां नृपजो दशरथ महाराजहैं तिनको मंदिर सबप्रकारते अति सुंदरहै अरु नानाजाति के कनक मणिनते खचितहैं ( ११ ) हे गरुड़ रुचिर अँगनाई बर्णिबेयोग्य नहीं है जहांनित्य चारिउभाई खेलते हैं ( १२ ) त्यहि अजिरमें श्रीरघुनाथजी बिचरते हैं बालबिनोद करते हैं अरु जननीको बहुप्रकारके सुखदेतेहैं ( १३ ) मर्कतकही श्यामणि मृदुकही कोमल ऐसी श्यामकलेवर

अरु अंग अंग प्रति कोटिन कामकी शोभाहै ( १४ ) नवीन राजीव अरुण तद्वतमृदु चरणहैं अरु पदकंज अरुअंगुली अति रुचिर हैं अरु नखनकी ज्यति सो चन्द्रमाकी द्युति हरतहै ( १५ ) अरुअतिललित चरण विषे कुलिश आदिक चिह्नहैं द्वौचरणविषे कहूं शास्त्रन विषे अठारह कहेहैं कहूँ बाइस कहे हैं कहूँ चौबीश कहे हैं कहूँ बत्तीसकहूँ अरतालिस कहेहैं यह मुनिनको मतहै चारीकही चरगमनविषे होत

मंदिरसुंदरसबभांती खचितकनकमणिनानाजाती ११ बरणिनजाइरुचिरअँगनाई जहँखेलहिंनितचारिउभाई १२ बालबिनोदकरतरघुराई बिचरतअजिरजननिसुखदाई १३ मरकतमृदुलकलेवरश्यामा अंगअंगप्रतिछबिबहुकामा १४ नवराजीवअरुणमृदुचरणा पदजरुचिरनखशशिद्युतिहरणा १५ ललितअंगकुलिशादिकचारी नूपुरचारुमधुररवकारी १६ चारुपुरटमणिरुचिरबनाई कटिकिंकिणिकलमुखरसोहाई १७ दो०॥ रेखात्रयसुंदरउदर नाभिरुचिरगंभीर उरआयतभ्राजतबिबिध बालबिभूषणचीर १८ चौ०॥ अरुणपाननखकरजमनोहरबाहुबिशालविभूषणसोहर १९ कंधबालकेहरिदरग्रीवा चारुचिबुकआननछबि सीवा २० कलबलबचनअधरअरुणारे दुइदुइदशनबिशदबरबारे २१ ललितकपोलमनोहरनासा सकलसुखदशशिकरसमहासा २२

है त्यहि चरणते अँगनाईविषे बिचरतेहैं अरु नूपुर चारु तिनको रवकहीशब्द अति मधुर है ( १६ ) चारुकही सुन्दरपुरटकही सुवर्णविषे मणिन की कणिनते जटित किंकिणी बनी हैं त्यहिकी मुखरकही शब्द कलनामशोभित है ( १७ ) हे गरुड़ उदरमें अति सुन्दर तीनिरेखाहैं नाभी गंभीर दाहिनावर्त अति रुचिर आयत कही चौंड़ी अरु बाल अवस्थाके बिभूषणअरु चीर अति सुन्दर हैं ( १८ ) अरुण हाथ हैं करज जे अँगुली हैं तिनके नख सबमनोहर हैं अरु विशाल भुजहैं भूषण संयुक्त अति सुन्दरहैं ( १९ ) अरु कन्ध कैसे हैं केहरि जो सिंहहै त्यहिको बालक त्यहिको ऐसो कन्ध उच्च पुष्ट अरु दरजो शंख त्यहिके तद्वत् ग्रीवा विषे तीनिरेखाहैं चिबुक नीलमणि इव गोल चारुकही सुन्दर हैं आनन जो है मुख सो त्रैलोक्य विषे जेती शोभा है त्यहिकी सीवकही मर्य्याद है ( २० ) कलबलकही तोतरे बचन हैं अधर अरुण हैं बिंबकी उपमाको हरत हैं अरु अति बिशद बारे कही बालअवस्था के दुइदुइ दशन हैं चन्द्रमाकी किरिणि को निन्दत हैं ( २१ ) अरु दोउकपोल नीलमणिको आदर्शवत् ललित हैं अरुमनोहरकही रुचिर नासिकाहै अरु सर्ब दुखदायक शशिकरइव हास है ( २२ ) अरु नीलकंज इव नेत्रहैं मातैं कज्जल दीनहै जाकी दिशि चितवत हैं त्यहिको संसार छूटि जात है अरु भालविषे गोरोचनको तिलक अति भ्राजत कही सुन्दर लागत है ( २३ ) बिकट कही टेढ़ी भृकुटी हैं मनोहर श्रवण समताई किन्तु श्रवण समकही बरोबरि हैं अरुशीशविषे केशश्याम सचिक्कण घुँघुवारे तिनकी छबि छाइरही है ( २४ ) हे गरुड़ अतिपीत झीनकही मिहीं झंगुली तनविषे शोभित है हे तातकिलकिकै चितवनि मोको अति भावत है ( २५ ) हे गरुड़ रूपके राशि

नीलकंजलोचनभवमोचन भ्राजतभालतिलकगोरोचन २३ बिकटभृकुटिसमश्रवणसोहाये कुंचितकचमेचकछबिछाये २४ पीतझीनझंगुलीतनसोही किलकनिचितवनिभावतमोही २५ रूपराशिनृपअजिरबिहारी नाचहिंनिजप्रतिबिंबनिहारी २६ मोसनकरहिंबिबिधबिधिक्रीड़ा समुझतचरितहोतमोहिंब्रीड़ा २७ किलकतमोहिंधरनजबधावहिं चलौंभागितबपूपदेखावहिं २८ दो०॥ आवतनिकटहँसहिंप्रभु भाजतरुदनकराहिं

**जाउंसमीपगहनपद फिरिफिरिचितयपराहिं २९ प्राकृतशिशुइवलीलादेखिभयउमोहिंमोह कौनचरित्रकरतप्रभु चिदानंदसंदोह ३० चौ०॥ यतनामनआनतखगराया रघुपतिप्रेरिततब्यापीमाया ३१ सोमाया**

श्रीरामचन्द्र नृपके अजिर बिहारी तहां खम्भा मणिनमय तेहि विषे अपनो प्रतिबिम्ब देखि देखि नाचते हैं यह जो शोभा बरणि आये हैं सो अनूपम है कहिबे योग्य नहीं है ताते इहां पदार्थे शोभा सिद्धि है ( २६ ) अरु मोसन बिबिध प्रकारते बालक्रीड़ा करहिं हे गरुड़ सोचरित समुझत सन्ते मोको ब्रीड़ाकही लज्जा लागतिहै ( २७ ) हे तात मोको किलकिकै धरैं धावहिं तब मैं भागिजाउँ तब मोको पुआ देखावहिं बोलावहिं ( २८ ) दोहार्थ॥ तहां जबमैं निकटको जाउँ तबवै हँसहिं अरु जबभागिजाउँ तब रुदन करहिं अरु जब समीप पदगहनको जाउँ तबडरिकै फिरि फिरि हेरि हेरि भागि जाहिं ( २९ ) हे तात प्राकृत शिशुइवलीला देखिकै मोको मोह भयउ प्रभुजी कवन चरित्र करतहहिं मैं तौ इनको सच्चिदानन्द सन्दोह जानतहौं सन्दोह कही सत्‌चित् आनन्द केसमूह तेप्रभु यह कौन चरित्र करतहहिं ( ३० ) यतना मन विषे आवत सन्ते श्रीरामचन्द्र की प्रेरणाते मोको माया व्यापतभई ( ३१ ) सोमाया मोको दुखदाई नहींभई जैसे आनजीव को होतिहै संसृत जन्म मरण करति हैं तसमोको नहीं ब्यापी है ( ३२ ) हे तात मोको जोमाया ब्यापी है सो इहां आनै कारण हैं सो हेहरियान तुम सावधान ह्वैकै सुनहु ( ३३ ) हे नाथ अखण्ड ज्ञान एकरस सीताबर हैं अरु मायाबश चराचर जीव हैं ( ३४ ) हे तात जो कोई जीवकर ज्ञान एकरसहै तौ जीवसे ईश्वरते कहौ कैसे भेदहै तहां जो कोई कहै कि जीवको एकरसज्ञानरहै ते जीवईश्वरते अभेद हैं तहां यह अर्थ नहीं बनै है काहेते जीव ईश्वरते कसभेदहै कि जीवको एकरस ज्ञानरहेते नहीं है ताते ईश्वरते अरु जीवते सदाभेदहै किन्तु जीवकर एकरस ज्ञानरहेते असभेद है

**नदुखदमोहिंकाहीं आनजीवइवसंसृतनाहीं ३२ नाथइहांकछुकारणआना सुनहुसोसावधानहरियाना ३३ ज्ञानअखंडएकसीताबर मायाबश्यजीवसचराचर ३४ जोसबकेरहज्ञानएकरस ईश्वरजीवहिभेदकहहुकस ३५ मायाबश्यजीवअभिमानी ईशबश्यमायागुणखानी ३६ परबशजीवस्वबशभगवंता जीवअनेकएकश्रीकंता ३७ मुधाभेदयद्यपिकृतमाया बिनुहरिजायनकोटिउपाया ३८**

जैसे भरत शत्रुहन लक्ष्मण हनूमान् इत्यादिक जे नित्य पार्षदहैं अरु ज्ञानकही अपने स्वस्वरूपमें नित्यहैं अरु अपरस्वरूप श्रीरामचन्द्र तिनके सेवक हैं ( ३५ ) हे तात काहेते कि मायाके बशते जीव अभिमानीह्वैरह्योहै अरु माया जो गुणकी खानि सो ईशके बश्यहै ( ३६ ) ताते जीवपरबश है अरु भगवान्स्वबशकही अपने बश्यहैं स्वतंत्रहैं अरुजीवपरतंत्र है अनेकहैं परमेश्वरकर अंशहैं तत्वएकहै व्यक्तिअनेक हैं तहां अनादिहीते माया जीवको संबंधहै तहां मायामें तीनिभेद हैं अविद्या विद्या आह्लादिनी तहां अविद्या के संबंधते जीवबद्ध है अरु विद्या के संबंधतः मुमुक्षु जीवन्मुक्तिहै अरु आह्लादिनीमय त्रिपादबिभूतिहै नित्य है अरु शुद्धजीव आह्लादिनी एकही तत्वहै अरुविद्या जीवको विशेषण ज्ञानविज्ञान इत्यादिक शुद्धगुणहै अरु कैसे जीवअनेकहैं जैसे अन्ततत्व एकहै व्यक्ति अनेक तैसे जीवअनेकहैं श्रीकंत परमेश्वरएकहै ऐसो अनादि हीतेहै तहां प्रमाण श्लोकार्द्ध गीतायां। ममैवांशोजीवलोकेजीवभूतसनातनः मकारंव्यञ्जनंचैवत्रिधाशक्तिस्वरूपिणी १ शक्तिराह्लादिनीविद्या सूत्रात्मकः स्वयं॥ पुनिरामायणे॥ रामरूपस्यतेजोयंजीवोवेदःप्रभाषितभेदोमतस्यसर्वेषामाचार्य्याणांवदामिते २। ( ३७ ) मायाकृतभेदमुधाकही मिथ्या हैतदपिश्रीरामचन्द्रकी कृपाबिना नहीं छूटिजाइ कोटि उपायकरै ( ३८ ) दोहार्थ॥ ताते श्रीरामचन्द्रके भजनबिना जोनिर्बाणपदचाहै तौनहींप्रीति होइ अपिकही निश्चय करिकै यद्यपि ज्ञानमान्है तदपि अज्ञान है जैसे बिनासींग पूंछकोपशुहै किंतु निश्चय ज्ञानीहै अरुश्रीरामचन्द्रके भजनबिना कैवल्यमुक्तिको चाहते हैं सो मुक्तिको प्राप्तिहोते हैं पर बिनाभजन कैवल्यमुक्ति कैसीहै जैसे बिनाश्रृंग पूंछको पशुअशोभित है तैसे ज्ञानकै मुक्ति अशोभित है ( ३९ ) हे तात देखिये तौ षोड़शउ कलायुक्त पूर्णमासीको चन्द्रमा उदयहोइ अरु अनेक नक्षत्र अपने तेजसंयुक्त उदयहोहिं अरु सुमेरुआदिक पर्वतनमें प्रचण्ड दावालागै पर रबिबिना रात्रीकोनाश नहीं होइ है ( ४० ) हे तात ऐसेही रामचन्द्रके भजनबिना जीवनको

दो०॥ रामचन्द्रकेभजनबिनु जोचहैपदनिर्बान ज्ञानवंतअपिसोपिनरपशुबिनुपूंछविषान ३९ राकापतिषोड़शउगै तारागणसमुदाइ सकलगिरिनदवलागैरबिबिनुरातिनजाइ ४० चौ०॥ ऐसेहिबिनुहरिभजनखगेशा मिटइनजीवनकेरकलेशा ४१ हरिसेवकहिं नब्यापअविद्या प्रभुप्रेरितब्यापैतेहिविद्या ४२ तातेनाशनहोइदासकर भेदभक्तिबाढ़ैबिहंगबर ४३ भ्रमतेचकितरामम्वहिंदेखा बिहँसेसोसुनुचरितबिशेखा ४४ त्यहिकौतुककरमरमनकाहू जानअनुजनमातपिताहू ४५ जानुपानिधायेम्वहिंधरना श्यामलगात अरुणकरचरना ४६

क्लेश नहींमिटै है कदाचित् जो ज्ञान करिकै कैवल्यप्राप्तिहोहि तौ सामीप्यमुक्तिको नहींप्राप्ति है जैसे कोई कंगाल है अरु भाजी मोटा अन्नखाइकै पेटभरे तैसे ज्ञानकी मुक्तिनिराशहै ( ४१ ) हे तात तहां हरिके सेवकनको अविद्या मायानहीं ब्यापती है काहेते हरिके सेवक अविद्या विद्या ते परेहैं जो कदापि कबहूं जीव धर्मकरिकै कौनौ अभिमानभयो किन्तु हरिविषे भ्रमभई तब किंचित् अविद्या कारण कहूंआइजाइ तौ हरिकी प्रेरणातें विद्या मायाब्यापती है काहेते कि जब छोट कांटागड़त है तब बड़ेकांटाते निकसत है तैसे प्रभु अपने दासनको विद्यामाया करिकै अविद्या निकासिडारते हैं उपरांत दोऊ जातरहत हैं तैसे मोको श्रीरामचन्द्र की प्रेरणाते विद्यामाया प्राप्तभई ( ४२ ) ताते हे गरुड़ रामभक्तनकर नाशकही जन्म मरण नहींहोइ गीतायां॥ कौंतेयप्रतिजानीहिनमेभक्तःप्रणश्यति॥ भेदकही सेवक सेव्य जीवविषे भावभक्तिकी अधिक वृद्धिहोती है ( ४३ ) तहां हे तात भ्रमते मोको श्रीरामचन्द्र चक्रितदेखा तब हँसतभये सो बिहँसिबेको चरित सुनहु ( ४४ ) तेहि बिहँसिबेके कौतुककर मर्म माता पिता अनुज काहूनहीं जाना है हे पार्वती काहेते कि एक स्वरूप कागभुशुण्डिको श्रीरामचन्द्रके समीप वैसैबना रहाहै बैसही लीला करतरहे हैं अरु एकस्वरूप उड़िगयो है सब लोकनविषे गयो ताते पिता अनुज नहीं जान्यो है ( ४५ ) तब जानुकही जांघ अरु पाणिकही हाथ ते जानु पाणिकरिकै घुटुरुवाचलि अतिशीघ्र मोको धरैचले श्यामल गात हैं अरुण करचरण हैं ( ४६ ) तब हे उरगारि मैं भागिचलेउँ तब श्रीरामचन्द्र मोरे धरिबेको भुजापसारते भये ( ४७ ) जिमि जिमि आकाशविषे दूरिदूरि उड़ाजातहौं तिमि तिमि हरिको भुज अपने पासहि देखतहौं ( ४८ ) दोहार्थ॥ हे तात तब मैं उड़त भूलोकजो है तेहिते उड़िकै भुवलोक कही मध्यस्थस्वर्गको गयउँ पुनि स्वःकही स्वर्ग इन्द्रलोक तहां गयउँ पुनि तहांते उड़िकै महर्लोकको गयउँ पुनि महर्लोकते जनलोकको गयउँ पुनि जनलोकते तपलोकको गयउँ पुनि तपलोकते सत्यलोक

तबमैं भागिचल्यउंउरगारी रामगहनकोभुजापसारी ४७ जिमिजिमिदूरिउड़ाउँअकासा तहँहरिभुजदेखौंनिजपासा ४८ दो०॥ ब्रह्मलोकलगिगयउंमैं चितवतपाछउड़ात युगअंगुलकरबीचसबरामभुजहिंममतात ४९ सप्ताबरणभेदकरि जहँलगिरहिगतिमोरि गयउंतहांप्रभुभुजनिरखि ब्याकुलभयउंबहोरि ५० मूंद्यउंनयनतृसितजबभयऊं पुनिचितवत

कोगयउँ हे तात छाआवरण भेदिकै सातवां आवरण सत्यलोकको गयउँतहउँ मैं प्रभुकर भुजा देखेउँ मोसे अरु श्रीरामचन्द्रके भुजाते दुइ अंगुल कर बीचरहा दुइअंगुलकही द्वैत मैं श्रीरामचन्द्र विषे आपन अज्ञान आरोपणकिहेउँ सोई दुइअंगुल ( ४९ ) पुनि हे तात सातआवरण ब्रह्मांडके भेदिगयउँ तहां सत्यलोकते अरु ब्रह्मांडके आवरणताईं एकसैबासठि कोटि योजनके अंतरायहै अरु ताबीचमें तीनिलोक आवरणहै सत्यलोक के उर्द्ध सोरहकोटियोजनको महर्लोक है जहां सनकादिक रहतेहैं ताके उर्द्ध बत्तिसकोटि योजन उमालोकहै पुनि तेहिकेउर्द्ध चौंसठि कोटियोजन शिवलोकहै पुनि शिवलोकते अरुब्रह्मांडके आवरणताईं पचासकोटिको अंतरायहैतहांसात आवरणकरिकै जो ब्रह्मांडहै सोकहतहौं भूमिजल अग्नि आकाश अहंकारतीनिउं गुणनकी एकताहै पुनि तेहिके ऊपर महत्तत्त्वहै तहांनीचेसे प्रमाणदेते हैं प्रथम पृथ्वीको आवरण पचासकोटि योजनकै मोटाई पीतरंगहै पुनिताके ऊपर जलको आवरण पांचसैकोटि योजनकीमोटाई जलको आवरण जैसे पालाजमै है तैसेई है ताको श्वेतरंग है पुनिताके ऊपर

अग्नितत्त्वको आवरणहै पांचहजारकोटि योजन कैमोटाई अंगारसरीखे जमिरह्यो है तेजोमय ताको लालरंगहै पुनिताके ऊपर पवनतत्त्वको आवरण पचासहजार कोटि योजनकैमोटाई पवनभरिरह्यो है जैसेबवंडर पवनकीराशि ताकोहरितरंगहै पुनिताकेऊपर आकाशतत्त्वकी आवरण सो पांचलाखकोटि योजनकी मोटाई महा अंधकाररूपभरिरह्योहै ताकोनीलरंग पुनिताकेऊपर अहंकारतत्त्वको आवरण पचासलक्षकोटि योजन की मोटाई परिपूर्ण ह्वैरह्यौ है ताको श्वेत पीतकालामिश्रित संकररंग है पुनि ताकेऊपर अहंकारतत्त्व को आवरण पांचसैल क्षकोटि योजनकी मोटाई है सो सबरंग करिकै युक्त येते सातआवरणकरिकै ब्रह्मांडगोला है तहां सातौ आवरण मिलेहैं इनमें अंतराय नहीं है तहां हे तात जो यह सातौ तत्त्वको भेदहै सो ब्रह्मांडके पारहोइ है तहां हेतात श्रीरामचन्द्रकी कृपासे महादेवकी अनुग्रह से मोको येती

कोशलपुरगयऊं ५१ मोहिंविलोकिराममुसुकाहीं बिहंसततुरतगयउं मुखमाहीं ५२ उदरमाँझसुनुअंडजराया देखेउं बहुब्रह्माण्डनिकाया ५३ अतिबिचित्रतहँलोकअनेका रचनाअधिकएकतेएका ५४ कोटिनचतुराननगौरीशा अगणितउड़गणरबि

शक्तिरहै तहां मैंसातौ आवरण भेदिगयउं पुनि तेहिके ऊपर जहांतक मोरिगतिरही तहांताई गयउं महाविष्णु को लोकजो ब्रह्मांडको कारण तेहि लोकको मैं भेदिगयउं पुनि महाशंभुको लोक जाको आदिज्योति कहतेहैं सो भेदिगयउं पुनि बासुदेवलोक जाको महाबैकुण्ठ कहतेहैं जहां वासुदेव संकर्षण अनरुद्ध प्रद्युम्न चतुर्ब्यूह रहतेहैं सो भेदि गयउं पुनिगोलोक एकलोकहै तेहिके मध्यपर श्रीअयोध्या इहां ताईं मोरिगतिरहै तहांप्राप्ति भयउं यहप्रसंग सदाशिव संहितामें प्रथम अध्यायमें प्रसिद्धहै तहांबालकांडमें यहचौपाई तिलकमें सबकहाहै चौपाई॥ रामधामदापुरीसोहावनि लोकसमस्त विदित जगपावनि॥ तहउं प्रभुकर भुज युगअंगुलकर बीचमोंसेरहै तबमैं देखिकै अकुलाइउठ्यों काहेते कि ऐसे श्रीरामचन्द्र विषे मोको भ्रमभयउ ( ५० ) हेतात तबमैं विकलह्वैकै नेत्रमूंदिलिहेउं पुनि तुरंत पलक खोलतभयउं पलक खोलत संते ओही कोशलपुर विषे प्राप्ति भयउं ( ५१ ) तब मोकहं बिलोकिकै श्रीरामचन्द्रमुसकात भये तहां बिहँसतसंते श्रीरामचन्द्रकी प्रेरणाते मुखके द्वार श्रीरामचन्द्रके हृदयमें प्राप्तिभयउं ( ५२ ) तहां हे गरुड़ श्रीरामचन्द्रके उदरविषे निकायकही अनेक ब्रह्मांड देखेउं ( ५३ ) तहां अनेकचित्र विचित्रलोक देखतभयउं अरु लोक प्रति भिन्नभिन्न कही अधिक अधिक रचना देखत भयउं ( ५४ ) तहां कोटिनब्रह्मा शिव अरु अगणित कही बहुत उड़गण सूर्य चन्द्रमा ( ५५ ) पुनि अगणित लोकपाल यमकालअरुपर्वत भूमि बिलास बिशाल ( ५६ ) पुनि अनेकसमुद्र अनेकनदी अनेकसर अनेकबिपिन अरु अनेक प्रकारकी सृष्टि ( ५७ ) सुर मुनिकिन्नरचारिखानि जीवचराचर जेकहिआये चौपाई॥आकर चारिलक्ष चौरासी। योनि भ्रमत यहजीवअविनासी ( ५८ ) दोहार्थ॥ हेतातजो कबहूं देखबेसुनवेमें न आयो अरु मनहूंमें नहीं समाइ सो समस्त अद्‌भुत देखेउंकवनिउं

रजनीशा ५५ अगणितलोकपालयमकाला अगणितभूधरभूमिबिशाला ५६ सागरसरिसरबिपिनअपारा नानाभांतिसृष्टिबिस्तारा ५७ सुरमुनिसिद्धनागनरकिन्नर चारिप्रकारजीवसचराचर ५८ दो०॥ जोनहिंदेखानहिंसुना जोमनहूंनसमाइ सोसबअद्‌भुतदेख्यउं बरणिकवनिबिधिजाइ ५९ एकएककब्रह्मांडमहँ रहेउंवर्षशतएक यहिबिधिदेखतफिरौंमैंअंडकटाहअनेक ६० चौ०॥ लोकलोकप्रतिभिन्नबिधाता भिन्नविष्णुशिवमुनिदिशित्राता ६१ नरगंधर्बभूतबैताला किन्नरनिशिचरपशुखगब्याला ६२ देवदनुजगणनानाजाती सकलजीवतहँआनहिंभांती ६३ महिसरसागरसरिगिरिनाना सबप्रपंचतहँआनैआना ६४ अंडकोशप्रतिप्रतिनिजरूपा देख्यउंजिनिसिअनेकअनूपा ६५ अवधपुरीप्रतिभुवननिहारी सरयूभिन्नभिन्ननरनारी ६६ दशरथकौशल्यासुनुताता

प्रकारते बरणी नहीं जाइहै ( ५९ ) हे गरुड़ श्रीरामचन्द्रके उदरके उदरमेंअनन्तब्रह्मांड देखेउं तहां एक एक ब्रह्मांडविषे सौसौ बर्षरहेउं ( ६० ) तहां ब्रह्मांडलोक जेहैं तेहिलोकलोक प्रति एकएक ब्रह्मांड देखेउं अरुब्रह्मांड प्रतिविष्णु शिवमनु अरु दशौदिग्पाल इन्द्रवरुण कुबेर यमराज इत्यादिक सो ब्रह्मांडप्रति जैसे अनंतब्रह्मांड हैं तैसे अनंतइनको स्वरूपमें देखेउं है ( ६१ ) अरु नर गंधर्ब भूत बैताल किन्नर निशिचर पशु खग ब्याल कही सर्पदेखेउँ ( ६२ ) देवता दानव इनके गणकही समूह नानाजाति के नानारूपके मैं देखा तहां सर्बजीवकी आकृतिआनै आनभांति देखेउँ ( ६३ ) महि सरसागर कहे समुद्र सरकहे तलाव गिरिकहे पर्वतनानाप्रकार के हे तात तहां सबप्रपंच आनै आनभांति देख्यउँ ( ६४ ) अरु अण्डकोश प्रति आपन स्वरूप देखेउँ अरु स्थान देखेउँ अरु अनेकजिनिसि अनूप अनूप देखेउँ ( ६५ ) अरु प्रतिब्रह्माण्ड श्रीअयोध्या देखेउँ अरु सरयूतथानरनारि भिन्नभिन्न देखेउँ ( ६६ ) अरु दशरथ कौशल्या अरु भरत लक्ष्मण शत्रुहन हेतात विविधरूपते सबप्रकार देखेउँ हेतात तहां अयोध्या अरु अयोध्याबासिनको नित्य बिभूति केनित्यजीव देखेउँ परि जीव धर्मते आकृत भिन्नभिन्न देखेउँ अपर प्रकृतिमय जीवदेखेउँ ( ६७ ) अरु प्रतिब्रह्मांड श्रीरामचन्द्रकर अवतार बाललीला अपार अनूप देखेउँ ( ६८ ) दोहार्थ॥ हे हरियान भिन्नभिन्न मैं सबदेखेउँ अगणित ब्रह्मांड मैं फिरेउँ पर रामचन्द्रकर स्वरूप आन न देखेउँ एकैस्वरूप आकृत देखेउँ अरु अपर जो देखेउँ सो सब भिन्न भिन्न स्वरूप अतिविचित्र आकृति देखेउँ ( ६९ ) हे गरुड़ जो पाछे कहिआयेहैं सो शिशुपन अरु सोईशोभा सोई कृपाल रघुवीर हे तात जो कहिआये हैं

**बिबिधरूपभरतादिकभ्राता ६७ प्रतिब्रह्मांडरामअवतारा देख्यउंबालबिनोदअपारा ६८ दो०॥ भिन्नभिन्नमैंदीखसबअतिबिचित्रहरियान अगणितभुवनफिरेउंमैं रामनदेखेउंआन ६९ सोइशिशुपनसोइशोभासोइकृपालुरघुबीर भुवनभुवनदेखतफिरौं प्रेरितमोहसमीर ७० चौ०॥ भ्रमतमोहिंब्रह्मांडअनेका बीतेमनहुंकल्पशतएका ७१ फिरतफिरतनिजआश्रमआयउं तहंरहिपुनिकछुकालगंवायउं ७२ निजप्रभुजन्मअवधसुनिपायउं निरभरप्रेमहरषिउठिधायउं ७३ देख्योंजन्ममहोत्सवजाई ज्यहिबिधिप्रथमकहामैंगाई ७४ रामउदरदेखेउंजगनाना देखतबनैनजाइबखाना ७५ तहँपुनिदेखेउंरामसुजाना मायापतिकृपाल**

तेहीरीतिते भुवन भुवन अनेक अनेक मोहरूपी पवन तेहिकी प्रेरणाते मैं देखतफिरौं ( ७० ) हेतात येहीरीतिते अनेक ब्रह्मांडविषे भ्रमत संते मोको मानहु शतकल्पबीते हैं ( ७१ ) तहां फिरत फिरत सबै अपने आश्रमको आवतभयउँ तहां रहिकै कछुकाल ब्यतीतकिहेउँ ( ७२ ) पुनि अपने प्रभुको जन्म श्रीअयोध्यामें सुनेउँ निर्भरकही शरीरकी सुधिनहींरहै ऐसे प्रेमते हर्षिकै उठिधावत भयउँ ( ७३ ) तहां जन्ममहोत्सव देख्योंजाइ जेहिप्रकारते मैं तुमसे प्रथमगाइकै कहाहै ( ७४ ) तहां श्रीरामचन्द्रके हृदयविषे नानाप्रकारके जगत् देखत भयउँ समुझबेमें आवतहै बखानिकै नहीं कहा जाइ है ( ७५ ) तहां पुनि श्रीरामचन्द्र जो सुजान हैं तिनको देखेउँ कैसे श्रीरामचन्द्र हैं मायापति हैं कृपालहैं भगवान् हैं ( ७६ ) तबमैं बहोरि बहोरिकही बारबार बिचार करतहौं मोहते कलित मोरिमतिभोरीकही बौरही होइगईहै ( ७७ ) हेतात उभयकही दुइदण्ड मेंसंपूर्ण देखा तहां मनमें विशेष मोहको प्राप्तिहोइकै श्रमितभयउँ ( ७८ ) दोहार्थ॥ तब कृपाल श्रीरामचन्द्रने अपने अंतष्करणमें मोको बिकल देखा तब बिहँसतभये तब बिहँसतसंते मैं मुखके बाहर आवतभयउँ हे मतिकेधीर सुनहु ( ७९ ) हे तात सोई लरिकाई मोसे श्रीरामचन्द्र करनेलगे मैं अपने मनको कोटिप्रकारते समुझावों परन्तुमन विश्रामको नहीं प्राप्तिहोय ( ८० ) तहां यह बालचरित्रदेखे अरु वह प्रभुता समुझेउँ तब बिकलह्वैकै देहकीदशा भूलिगई ( ८१ ) ताते वोही अँगनाई में मैंगिरिपरेउँ बोल नहीं फूटै है त्राहि त्राहि हे आरत जन त्राता त्राहि मोको

भगवाना ७६ करौंबिचारबहोरिबहोरी मोहकलितब्यापितमतिभोरी ७७ उभयघरीमहँमैंसबदेखा भयउंभ्रमितमनमोह विशेखा ७८ दो०॥ देखिकृपालबिकलमोहिंबिहँसेतबरघुबीर बिहँसतहीमुखबाहेर आयउंसुनुमतिधीर ७९ सोइलरिकाईमोहिंसनकरनलगेपुनिराम कोटिभांतिसमुझावौंमननलहैबिश्राम ८० चौ०॥ देखिचरितयहसोप्रभुताई समुझतदेहदशाबिसराई ८१ धरणिपरेउंमुखआवनबाता त्राहित्राहिआरतजनत्राता ८२ प्रेमाकुलमोप्रभुहिबिलोकी निजमायाप्रभुतातबरोकी ८३ करसरोजप्रभुममशिरधरेऊ दीनदयालसकलदुखहरेऊ ८४ कीनराममोहिंबिगतबिमोहा सेवकसुखदकृपासंदोहा ८५ प्रभुताप्रथमबिचारिबिचारी मनमहँहोइहर्षअतिभारी ८६ भक्तवत्सलताप्रभुकैदेखी उपजीममउरप्रीतिविशेखी ८७ सजलनयनपुलकितकरजोरी कीन्ह्योबहुविधिविनयबहोरी ८८ दो०॥ सुनिसप्रेमममबाणी देखिदीननिजदास बचनसुखदगम्भीरमृदु बोले रमानिवास ८९

त्राहि ( ८२ ) तब प्रेमते ब्याकुल मोहकरिकै मोको श्रीरामचन्द्रदेख्यो तब अपनी मायाकी प्रभुताको रोकतभये ( ८३ ) तब कृपालु श्रीरामचन्द्रने कमलकर मोरे शीश परधरेउ सम्पूर्ण क्लेश दीनदयाल हरिलीनहै ( ८४ ) तब मोको श्रीरामचन्द्र मोहते बिगतकीन काहेते कि सेवक के सुखदाता कृपाके समुद्रहैं ( ८५ ) प्रथम प्रभुता बिचारिकै मोरे मनमें अति आनन्द होत है ( ८६ ) प्रभुके भक्तवात्सल्य गुणको देखिकै तबमोरे मनमें विशेष प्रीति भई ( ८७ ) तब शरीर पुलकिकै नेत्रमें जलभरिकैकर कही द्वौपंख जोरिकै बहुबिनती बारम्बार करतभयो ( ८८ ) दोहार्थ॥ तब प्रेमसंयुक्त मेरी बाणी सुनिकै आपन निजदास जानिकै सुखदाई बचन अतिगंभीर बोलतेभये रमानिवास अनेक ब्रह्माण्ड में रमिकै माकाशकर्ता अन्तर्य्यामी रूप श्रीरामचन्द्र हैं ताते रमानिवासकहा किंतुसंपूर्णरमालक्ष्मी विषे निवास किंतु लक्ष्मीका जिनविषे निवासहै ( ८९ ) तब श्रीरामचन्द्र बोले हे कागभुशुण्डि बरमांगु मोको अति प्रसन्नजानिकै अणिमादिक अष्ट सिद्धी अरु गुणसम्बन्धी दशसिद्धी अरु पांच अल्प सिद्धी अरु अपर नवौनिधि इत्यादिक जोचाहै सोमांगु सिद्धिन निद्धिनके नामआगे ज्ञानदीपके प्रसङ्ग में कहैंगे किन्तु चारिप्रकारकी मोक्ष सुखकी खानि सोमांगु ( ९० ) वैराग्य ज्ञान विज्ञान जो मुनिनको दुर्लभ गुणहै अनेकसो लेहु आजुमैं सब देउँगो यहिमें संशय नाहीं है जो तेरे मन में

कागभुशुण्डिमाँगुबर अतिप्रसन्नम्वहिंजान अणिमादिकसिधिअपरनिधि मोक्षसकलसुखखानि ९० चौ०॥ ज्ञानबिबेकबिरतिबिज्ञाना मुनिदुर्ल्लभगुणजेजगजाना ९१ आजुदेउंसबसंशयनाहीं माँगुजोतोहिंभावमनमाहीं ९२ सुनिप्रभुबचनअधिकअनुराग्यउं मनअनुमानकरनअसलाग्यउं ९३ प्रभुकहदेनसकलमुखसही भक्तिआपनीदेननकही ९४ भक्तिहीनगुणसबसुखकैसे लवणबिनाबहुब्यंजनजैसे ९५ भजनहीनसुखकवनेकाजा असविचारिबोल्योंखगराजा ९६ जोप्रभुह्वैप्रसन्नबरदेहू मोपरकरहुकृपाअरुनेहू ९७ मनभावतबरमागौंस्वामी तुमउदारउरअन्तरयामी ९८ दो०॥ अविरलभक्तिविशुद्धतव श्रुतिपुराण जोगाव ज्यहिखोजतयोगीशमुनि प्रभुप्रसादकोउपाव ९९ भक्तिकल्पतरुप्रणतहित कृपासिंधुसुखधाम स्वइनिजभक्तिमोहिंप्रभु

भावै सो मांगु ( ९२ ) हे गरुड़ प्रभुके बचन सुनिकै अति प्रीतिपूर्वक अपने मनमें अपमान करै लागेउँ ( ९३ ) यहबिचार मोरे मनमेंआयो कि श्रीरामचन्द्र सम्पूर्ण गुण देनकह्यो अरुअपनी भक्तिको नामलैकैनहीं देनकह्यो ( ९४ ) तबमैं विचार किहेउँ कि हेतात भक्ति बिना सगुणकैसे हैं जैसे बिनालोनकर व्यञ्जन फीक होत है ( ९५ ) काहेते भजनते

हीनहै ते अनेक गुण कौने काजकेहैं हे खगराज इहै बिचारि करिकै बोलेउँ ( ९६ ) हे प्रभु जो प्रसन्नह्वैकै बरदेहु औ मोपर कृपा अरु स्नेह करहु ( ९७ ) तौअबमैं अपने मनभावत बरमांगतहौं काहेते तुम उदार अरु अन्तर्य्यामी हौ सबके अन्तष्करण की जानतेहौ ( ९८ ) दोहार्थ॥ ताते अबिरलभक्तिकही सघनको श्वासाश्वासाप्रति प्रेमसहित श्रीरामचन्द्रको सुमिरण अन्तष्कराय नपरै चित्तकै वृत्ति अखण्ड तैलवत्धार श्वासा रूपमें लगीरहै सो अति बिशुद्ध है वेदपुराण जिसे कहतेहैं अरु ताही भक्तिको योगी मुनीश परमहंस खोजते हैं परतुम्हारी कृपाते कोई कोई पावते हैं ( ९९ ) हे श्रीरामचन्द्र तुम्हारी भक्ति भक्तन को कल्पतरु है हे कृपासिन्धु सुखके धाम सोभक्ति हमको देहु ( १०० ) हे पार्वति रघुकुलके नायकने एवमस्तु कहा पुनि परम सुखदायक बचन बोलते भये ( १०१ ) हे बायस तैं परम सयानहसि अब बरदान कस न मांगसि ( १०२ ) हे बायसतैं तोरे समान जगत्में बड़भागी कोई नहीं है काहेते सबसुखकै खानिभक्ति सो तैं माँगि लीनहै ( १०३ ) जो भक्तितैं मांगी है सो कोटिनयतनते मुनिनको दुर्लभ है जे जपयोगरूप जो अनलतामें तनको दाहि-

**देहुदयाकरिराम १०० चौ०॥ एवमस्तुकहिरघुकुलनायक बोलेबचनपरमसुखदायक १०१ सुनुबायसतैंपरमसयाना काहेनमाँगसिअसबरदाना १०२ सबसुखखानिभक्तितैंमाँगी नहिंजगकोउत्वहिंसमबड़भागी १०३॥ जोमुनिकोटियतननहिंलहहीं जेजपयोगअनलतनदहहीं १०४ रीझेउंदेखितोरिचतुराई माँग्यहुभक्तिमोहिंअतिभाई १०५ सुनुबिहङ्गप्रसादअबमोरे सबशुभगुणबसिहहिंउरतोरे १०६ भक्तिज्ञानबिज्ञानबिरागा योगचरित्ररहस्यबिभागा १०७ जानबतैंसबहीकरभेदा ममप्रसादनहिंसाधनखेदा १०८ दो०॥ मायासम्भवसकलभ्रमअबनहिंब्यापिहितोहिं जान्यसुब्रह्मअनादिअज अगुणगुणाकरमोहिं १०९ मोहिंभक्ति प्रियसन्तत असबिचारिसुनुकाग कायबचनमनममपद करिसुअचलअनुराग ११० चौ०॥ अबसुनुपरमविमलममबानी सत्य**

डारतेहैं तिनको अतिदुर्लभ है ( १०४ ) ताते तोरि चतुराई देखिकै मैं रीझेउं काहेते मोरेमनभावती भक्तिमांगेहुहै ( १०५ ) हे बिहंग अबमोरे प्रसादते संपूर्णगुण सुख रूप तोरे हृदयमें बसहिंगे ( १०६ ) हे कागभुशुण्डि ज्ञानबैराग्य योग अरु अनेक प्रकारके मेरेशुभ चरितकै रहस्य बिभागकही भिन्नभिन्न जानैगो ( १०७ ) मेरे प्रसादते तैं इनसबहीको भेदजानैंगो अरु मेरे प्रसादते कौनिउँसाधनाकर खेदनहीं होइगो ( १०८ ) दोहार्थ॥ हे भुशुण्डि मायाते संभव जो अनेक भ्रमहैं सो तोको अब नहींब्यापिहि पर अनादिब्रह्म अजन्मा अरु अगुण जो निर्गुण तत्त्व अरु सगुणतत्त्व जो दूनौंके आकारकहे खानि सो मोको जानहुं ( १०९ ) पुनिसामान्यअर्थ किंतु निर्गुण मोहींको जानु अरु गुणनकी खानि जानु हे भुशुण्डि भक्ति मोको बहुतप्रिय है इहै जानिकै मेरे चरणारबिंद बिषेमन बचन कर्म करिकै अनुराग किहेरहेहु ( ११० ) हे भुशुण्डि अब परम बिमलबाणी मोरिसुनु सत्य है अरु सुगम है जाको निगमआदिक बखानते हैं ( १११ ) अब मैं आपन सिद्धान्त तोको सुनावतहौं ताहि सुनिकै मनमें धारण करिकै सबतजिकै मोकोभजु ( ११२ ) हे भुशुण्डि सुनमोरी मायाते संसारकी संभव उत्पत्ति है तेहि संसारविषे चराचरजीव नाना प्रकारके हैं ( ११३ ) तहां सर्बजीव मेरे उपजाये हैं अरु सबमोको प्रियहैं पर तिनमें मनुष्यतन मोको विशेषप्रिय है ( ११४ ) पुनि तिन मनुष्यन विषे ब्राह्मण अधिकप्रिय है अरु तिनमहँ जो निगमकी रीतिचलते हैं ते बहुतप्रियहैं अरु तिनमें जो वेदवेत्ताहैं सोअधिकप्रिय हैं ( ११५ ) पुनितिनमें जो विरक्त हैं विषयत्यागे हैं ते अधिकप्रिय हैं पुनि तिनमें ज्ञानी जाको अपनी आत्मामें जानते हैं सो अधिक प्रिय हैं तिनमें विज्ञानी कही

**सुगमनिगमादिबखानी १११ निजसिद्धान्तसुनावोंतोहीं सुनिमनधरुसबतजिभजुमोहीं ११२ ममसायासम्भवसंसारा जीवचराचरविविधप्रकारा ११३ सबममप्रियसबममउपजाये सबतेअधिकमनुजम्वहिंभाये ११४ तिनमहँद्विजद्विजमहँश्रुतिधारी तिनमहँनिगमधर्म्मअनुसारी ११५**

तिनमहँपुनिविरक्तपुनिज्ञानी ज्ञानिहुंतेअतिप्रियबिज्ञानी ११६ तिनतेपुनिम्वहिंप्रियनिजदासा ज्यहिगतिमोरिनदूसरिआसा ११७ पुनिपुनिसत्यकहौंत्वहिंपाहीं म्वहिंसेवकसमप्रियकोउनाहीं ११८ भक्तिहीनबिरञ्चिकिनहोई सबजीवनसमप्रियम्वहिंसोई ११९ भक्तिवन्तअतिनीचहुप्राणी मोहिप्राणप्रियअसममबाणी १२० दो०॥ शुचिसुशील

विशेषज्ञान कही ब्रह्मज्ञान सो अतिप्रिय है ( ११६ ) तिनहूंमें मेरेनिजदास प्रियहैं जिनको एकमेरीगति है दूसरेकी आशनहीं है कर्मकाण्ड ज्ञानकाण्ड चारिउफल इत्यादिक एकौकी आशनहीं है ( ११७ ) पुनि पुनि मैं तोसे सत्यप्रण करिकै कहतहौं मोको अपने सेवकके समान दूसर प्रिय नहीं है ( ११८ ) पुनि मेरी भक्तिते हीन जो कदाचि ब्रह्माहोइ तौ जैसेसर्वजीव मोको प्रिय हैं तहां अभिप्राय है कि जो कदाचित् ब्रह्मके समान सामर्थ कोई जीवहोइ सृष्टिकर्त्ता बेदकर्त्ता वक्ता अरु महाकल्पभरि जीवनहोइ अरु मेरीभक्तिते हीनहोइ तौ जैसे सर्वजीव मेरी विभूतिमें कार्यकर्त्ताप्रियहैं तैसे वहभीहै ( ११९ ) अरु हे भुशुण्डि अतिनीच जो प्राणी होइ अरु बर्णाश्रमहीनहोइ अरु मोरनिजदास भक्तिवंतहोइ सो मोको प्राणसमप्रियहै यहमेरी सत्यबाणीहै ( १२० ) दोहार्थ॥ हेतात शुचिकहीपवित्र सुशील कही सहनशील अरु सुमति ऐसो जो सेवकहै कहु काको नहीं प्रियलागत है सब स्वामिन को प्रियलागत है यह नीति पुराण श्रुतिकहते हैं सो सावधान होइकै सुनहु ( १२१ ) हेभुशुण्डि जैसे एक पिता के बिपुल कही बहुत पुत्र हैं तिनके भिन्न भिन्न गुण हैं भिन्न गुण शीलआचरण हैं ( १२२ ) तिनमें कोई पण्डित है कोई तपस्वी है कोई ज्ञानी है अरु कोई धनवन्त है कोई शूरहै कोई दाता है ( १२३ ) कोई सर्वज्ञहै कोई धर्मरत है पर सबके ऊपर पिताकै सम प्रीति है ( १२४ ) अरु कोई मन बचन कर्म करिकै पिताको भक्त है सपनेहुँ विषे दूसर धर्म कोनहीं जानत है ( १२५ ) अरु सो सुत जो पितृभक्तहै सो पिताके प्राणसम प्रियहै यद्यपि सब गुण करिकै अज्ञान है पर पिताको अनन्य भक्तहैदृष्टांत है ( १२६ ) हेभुशुण्डि यहि प्रकारते यहि संसारमें जेते चरअचर

सेवकसुमति प्रियकहुकाहिनलाग श्रुतिपुराणकहनीतिअसिसावधानसुनुकाग १२१ चौ०॥ एकपिताकेबिपुलकुमारा होहिंपृथक्गुणशीलअचारा १२२ कोउपण्डितकोउतापसज्ञाता कोउधनवन्तशूरकोउदाता १२३ कोउसर्ब्बज्ञधर्म्मरतकोई सबपरप्रीतिपितहिसमहोई १२४ कोउपितुभक्तबचनमनकर्म्मा सपन्यहुंजाननदूसरधर्म्मा १२५ सोसुतप्रियपितुप्राणसमाना यद्यपिसोसबभाँतिअयाना १२६ यहिविधिजीवचराचरजेते त्रिजगदेवनरअसुरसमेते १२७ अखिलबिश्वयहमोरिउपाया सबपरमोरिबराबरिदाया १२८ तिनमहँजोपरिहरिमदमाया भजहिंमोहिंमनबचअरुकाया १२९ दो०॥ पुरुषनपुंसकनारिनर जीव

जीवहैं त्रिजग देवता नर असुर इत्यादिक तहां देव नर असुर छोड़िकैअपर सब जीवन की त्रिजग संज्ञाहै अरु त्रिजगको अर्थ कोई और रीति सों कहते हैं सो जहां होइ तहां होइ इहां जो हमकहा सोई अर्थ सिद्धहै ( १२७ ) हे काग अखिल कही समूह यह सम्पूर्ण विश्व मेराही उप राजा है अरु सबपर मेरी बराबरि दाया है ( १२८ ) तिनमें जो मोहमद मायाको परिहरिकै त्यागिकै मन बचन कर्मते मोको भजतेहैं ( १२९ ) दोहार्थ॥ हे भुशुण्डि नपुंसक जो पुरुष हैं और सर्ब नरजेहैं अरु नारिजेहैं अरु चराचर कोई जीवहोहिं सम्पूर्ण कपटतजिकै सर्वभावते मोको भजै सो मोको परमप्रिय है सर्वभाव कही सर्वजीवन विषे मोको व्याप्तदेखै तिनमें गऊ ब्राह्मण तीर्थ विषे मेरी प्रसन्नता अधिकमानै अरु सम्पूर्ण देवतन को सामान्य विशेष मेरी विभूति मानै अरु मेरी प्रतिमामेरी लीला अरु जहाँ कहूँ मेरे सम्बन्धते कहूँ पावै अरु सन्तन को मेरो स्वरूप मानै ताको सर्वभाव कही पुनि कपटकही देव दानव मनुष्य पशुपक्षी बर्णाश्रम अन्त्यजजाति बर्णाश्रमके अभिमान मानै है सो त्यागिदेइ अन्यच्च श्लोक॥ श्रीमद्रामस्वरूपतोजनबपुर्भिन्नंनजातंक्वचित्

मीनाद्यारघुनाथयादवपतिस्सर्वेवतारायथा॥ इत्थंयेप्रतिबोधयन्ति स्वजनान्रामः प्रसन्नस्सदा नित्यञ्चैवनमामिरामचरणस्तेभ्योपि सद्भ्योनमः ( १३० ) सोरठार्थ॥ हे खगमैं तोसे सत्यकहतहौं शुचि सेवक जेहैं तेमेरे प्राणप्रिय हैं अस बिचारिकै मोको भजु सम्पूर्ण आश भरोस त्यागिकै ( १३१ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने उत्तरकांडेकागभुशुण्डिगरुड़संबादेबाललीलाकागभुशुण्डि बर्णनन्नामएकविंशस्तरंगः२१॥ :: :: :: :: ::

चराचरकोइ सर्वभावभजिकपटतजिमोहिंपरमप्रियसोइ १३० सो०॥ सत्यकहौंखगतोहिंशुचिसेवकममप्राणप्रिय असबिचारिभजुमोहिं परिहरिआशभरोससब १३१॥ * * * * * * *

चौ०॥ कबहुंकालनहिंब्यापिहितोहीं सुमिरेसुभजेसुनिरंतरमोहीं १ प्रभुबचनामृतसुनिनअघाऊं तनपुलकितमनअतिहर्षाऊं २ सोसुखजानैमनअरुकाना नहिंरसनापहँजाइबखाना ३ प्रभुशोभासुखजानहिंनयना कहिकिमिसकहिंतिनहिंनहिंबयना ४ बहु

दोहा॥ दुइअरुबीसतरंग में तत्वनकोदृष्टान्त॥ रामचरणश्रीरामकी प्रभुताअतिरसशांत २२॥ अब तोको काल कबहूं न ब्यापिहि पर मोरसुमिरण भजन निरन्तर न छूटै सुमिरण कही चित्तकै वृत्ति अखण्ड एकरस सर्वकाल में लगीरहै पुनि भजनकही भजसेवा विषे होतहै ताते बाह्यांतर भगवत् भागवतकै कैंकर्य प्रतिमा में अरु मानसीमें मन कर्म बचनते लगारहै परदूनौंको एकही जानै ( १ ) हेगरुड़ प्रभुके अमृतमय बचन सुनिकै मैं नहीं अघाउँ तन पुलकित भयोहै अरु मनविषे बारबारअति हर्षाउँ ( २ ) हे गरुड़जी श्रीरामचन्द्रके बचनको सुख कान अरु मनजानै है रसनाते नहीं बखानिकै कहा जात है ( ३ ) हे गरुड़ श्रीरामचन्द्रकी शोभाकर सुख नेत्र जानतेहैं पर तिनके रसना नहीं है ताते वे नहीं कहि सकतेहैं तहां मन श्रवण नेत्र तीनिहूँके रसना नहींहै ताते श्रीरघुनाथजी की बाणीकर सुख अरु तनकी शोभा कहि नहीं सकतेहैं ( ४ ) बहुत प्रकारते मोको प्रबोधिकै बरदान सुखदैकै फेरिशिशु कौतुककरने लगे ( ५ ) तब सजल नयन करिकै भूख संयुक्त मुख रूख करिकै माता की दिशि देखते भये ( ६ ) तब माताने देखिकै आतुरउठि दौरिकै मृदुबचन लाललाड़िले कहिकै गोदमें उठाइलीन ( ७ ) तब गोद में राखिकै पयपान करावती भई पुनि श्रीरघुनाथजी कर चरित्र ललितताको गानकरती भई किन्तु हे गरुड़ रघुनाथकर चरित अति ललित हम तुमसे गानकीन ( ८ ) सोरठार्थ॥ हे गरुड़ जेहि बाल लीला सुख के हेतु पुरारिअशुभवेष धरे हैं तेहि सुख विषे अवधपुरी के नरनारि सन्तत कही निरन्तर मगन हैं तहां अशुभ वेष क्योंकियो तहां जब अशुभ वेषकरिकै योगी बनिकै श्रीमहादेव श्रीरघुनाथजीके समीप अवधमें जाते हैं तब देखिकै किलकि किलकि हँसतेहैं अरु समीपते भिन्न भिन्न नहीं जाइदेते हैं तातै तेहि सुख निमित्त अशुभ वेष किहे हैं किन्तु वैराग्य देखावते

विधिम्वहिप्रबोधिसुखदेई लगेकरनशिशुकौतुकतेई ५ सजलनयनकछुमनकरिरूखा चितैमातुलागीअतिभूखा ६ देखिमातुआतुरउठिधाई कहिमृदुबचनलियेउरलाई ७ गोदराखिकराइपयपाना रघुपतिचरितललितकरिगाना ८ सो०॥ ज्यहिसुखलागिपुरारि अशुभवेषकृतशिवसुखद अवधपुरीनरनारि त्यहिसुखमहँसन्ततमगन ९ स्वइसुखकोलवलेश जिनबारकसपनेलह्यउ तेनहिंगनहिंखगेश ब्रह्मसुखहिंसज्जनसुमति १० चौ०॥ मैंपुनिअवधरह्यउं कछुकाला देख्यउबालबिनोदरसाला ११ रामप्रसादभक्तिबरपायउं प्रभुपदबन्दिनिजाश्रमआयउं १२ तबतेमोहिंनब्यापीमाया जबतेरघुनायकअपनाया १३ यहसबगुप्तचरितमैंगावा

हैं अरु जो पदार्थ संसारमें कोई नहीं ग्रहणकरैहै सो महादेव ग्रहणकिहेहैं कि जो ऐसी वैराग्य संयुक्तरहै सो श्रीरामचन्द्रके सुखको प्राप्तिहोइ ( ९ ) सोई बाललीला के चरित कर सुख तेहिके एक लवकरलेश को जिन बारककही एक दुइबार सपनेहुँ में प्राप्तिभये तेसज्जन सुमतिमान् ब्रह्मसुखको नहीं गनैहैं लवकही जो पलककी बरौनी डोलती हैं तेहिकरलेश कही षोड़शभाग ( १० ) हे गरुड़ तहां मैं कछुकाल श्रीअयोध्यामें रहेउं श्रीरामचन्द्रकर बालबिनोदरसको आलयकही स्थान सो आनन्दपूर्वक देखेउं ( ११ ) पुनि श्रीरामचन्द्रकर प्रसादकही प्रसन्नताते भक्ति बरदान पाइकै प्रभुके पद बंदिकै आज्ञा पाइकै अपने आश्रमको आवतभयउं ( १२ ) हे तात तबते फिरि मोको मायानहीं ब्यापी जबते श्रीरघुनाथजी ने मोको अपनायो है ( १३ ) हे तात यह सब चरित गुप्तमैंहीं जानतहौं जेहिप्रकारते हरिकी मायाने मोकोनचायो है सो सबमैं तुमसे कहेउं ( १४ ) हे खगेश अबमैं आपन अनुभव कहतहौं बिनारामचन्द्रके भजन जोकोटि उपायकरै तौ जीवकरकलेश नहीं मिटैहै ( १५ ) हेखगराय श्रीरामचन्द्रकी कृपाबिना रामचन्द्रकी प्रभुता नहीं जानी जाइहै श्रीरामचन्द्रकी कृपा तब जानिये जबबिशुद्ध संतनकी संगतिहोइ चौपाई॥ संतबिशुद्ध मिलहिंपरतेहीं। चितवहिं रामकृपाकरिजेहीं ( १६ ) अरु श्रीरामचन्द्रके प्रभुता जानेबिना श्रीरामचन्द्रविषे प्रतीति नहीं होइहै अरु बिना प्रतीति प्रीतिनहीं होइहै ( १७ ) अरु बिनाप्रीति भक्ति नहीं दृढ़होइ कैसे जैसे जलकी चिकनाई जबताईं जल के भीतररह्यो तबताईं शरीरमें चिकनाई बनीरहै है अरु जबजलसे निकस्यो तब जल की चिकनाई जातीरही तैसेबिना प्रीति श्रीरामचन्द्रकी भक्ति नहीं दृढ़

**हरिमायाजिमिमोहिंनचावा १४ निजअनुभवअबकहौंखगेशाबिनुहरिभजननजाहिंकलेशा १५ रामकृपाबिनुसुनुखगराई जानिनजाइरामप्रभुताई १६ जानेबिनाहोइनहिंप्रीती बिनुपरतीतिहोइनहिंप्रीती १७ प्रीतिबिनानहिंभक्तिदृढ़ाई जिमिखगेशजलकैचिकनाई १८ सो०॥ बिनुगुरुहोइकिज्ञान ज्ञानकिहोइविरागबिनु गावहिंवेदपुराण सुखकिलहियहरिभक्तिबिनु १९ कोउबिश्रामकिपाव तातसहजसन्तोषबिनु चलैकिजलबिनुनाव कोटिभांतिपचिपचिमरिय २० चौ०॥ बिनुसन्तोषनकामनशाहीं**

होइहै कैसे जैसे जबताईं संयोगसे संतनकी संगतिमें कथा बार्त्ता सुनतसंते भक्तिबनीरही जबसंगति छूटी तब भक्ति जातीरही ( १८ ) सोरठार्थ॥ हे गरुड़ जैसे बिना गुरु ज्ञान नहीं अरु बिना वैराग्य ज्ञाननहीं तैसे वेदपुराण गावते हैं श्रीरामचन्द्रकी भक्ति बिना यहि जीवको कबहूं सुख नहीं है तहां गुरु वैराग्य दुइकरिकै ज्ञानकी उत्पत्तिकहाहै जैसे सूर्य अरुदर्पण जब दोऊको संयोग होइ तब अपनो मुख देखिपरैहै पुनिजब पति पत्नीहोइ तबपुत्रकी उत्पत्तिहोइ काहेते कि गुरुअनेक उपदेशकरते हैं अरु शिष्यके वैराग्य नहीं है तब ज्ञाननहीं उत्पन्नहोइ अरु कोई सास्त्र सुनिकैवैराग्य आई अरु गुरु न कियो तबहूं नहीं ज्ञानउत्पन्न होइ तैसे बिना सेवक सेव्यभाव भक्ति बिना यहि जीवकर कल्याण नहीं है ( १९ ) हे तात सहजसंतोष बिनायह मनको बिश्राम नहीं है कैसेजैसे बिनाजलनावनहीं चलै कोटिभांतिते पचिपचिमरै तैसे श्रीरामचन्द्रकी भक्तिबिना यहि जीवको कल्याणनहीं है सहजसंतोष कही न आये को हर्ष अरु न गयेको शोच ( २० ) हे तात बिना संतोष मनविषे कामकही कामना नहीं नाशहोइ अब जबताईं कामनाहै तबलगे स्वपनेहुं सुखनहीं है ( २१ ) हेतात श्रीरामचन्द्रके भजनविना कामकी नाश नहीं होती है कैसे जैसे थलते बिहीन नभहै जो कोई नभविषे बीजबोवै तो कैसेबोवै अरु कैसेजामैं काहेते ठहरतैनहीं तैसेबिना भजन अपरउपायते कामना की नाश नहीं होइहै ( २२ ) हे गरुड़बिना विज्ञान सर्ब जीवनविषे समता नहीं आवैहै कैसे जैसे बिनानभ आकाश कहीं सावकास नहीं होइहै तैसे श्रीरामचन्द्रकी भक्ति बिनायहि जीवको अवकास जो मोक्ष सोनहीं होइहै ( २३ ) हे तात जैसे श्रद्धाबिना धर्म नहीं होतहै अरु जैसे बिनामहि गन्ध नहीं होतहै तैसे श्रीरामचन्द्रके भजनबिना जीवकरकल्याण नहीं होतहै ( २४ ) पुनि जैसेबिना तप तेजको बिस्तारनहीं होतहै

कामअछतसुखसपन्यहुनाहीं २१ रामभजनबिनुमिटहिंकिकामा थलबिहीनतरुकबहुंकिजामा २२ बिनुबिज्ञानकिसमताआवै कोउअवकाशकिनभबिनुपावै २३ श्रद्धाबिनाधर्म्मनहिंहोई बिनुमहिगन्धकिपावैकोई २४ बिनुतपतेजकिकरविस्तारा जलबिनुरसकिहोइसंसारा २५ शीलकिमिलबिनुबुधसेवकाई जिमिबिनुतेजनरूपगोसाई २६ निजसुखबिनुमनहोइकिथीरा परसकिहोइबिहीनसमीरा २७ कवनिउंसिद्धिकिबिनुविश्वासा बिनुहरिभजननभवभयनासा २८ दो०॥ बिनुबिश्वासभक्तिनहिं त्यहि

अरु जैसे जल तत्वबिनारस की उत्पत्ति नहीं होतहै तैसे श्रीरामचन्द्रके भजनबिना जीवकरकल्याण नहीं होतहै ( २५ ) पुनि जैसे बुध जन जो पंडितजन हैं तेहिकी सेवकाई बिना शीलनहीं प्राप्तिहोता है पुनितेज जोहै अग्नितत्वतेहि बिनारूपविषे नहीं उत्पन्न होतहै तैसे श्रीरामचन्द्रके भजनबिना जीवकरकल्याण नहीं होतहै ( २६ ) अरु जबताईं निजसुख कही आत्मकसुख नहीं होइ तबताईं मननहीं थिरहोइ अरु जैसे बिना पवन तत्व स्पर्श विषे नहीं प्राप्ति होइ तैसे श्रीरामचन्द्रके भजनबिना जीवको कल्याण नहीं होइहै ( २७ ) हे तात विश्वास बिना कवनिउँ सिद्धि नहीं है तैसे श्रीरामचन्द्र के भजन बिना भवजो है संसारतेहिके भयजो हैं जन्ममरण सो नहीं नाशहोत हैं तहां पाछेजो चौपाइन के अर्थ कहि आये हैं तेहिमें यह अभिप्राय है कि श्रवण इन्द्री जो हैतेहिकर देवता आकाश है तेहिकी विषय शब्दहै तहां श्रवण अपनेदेवता की विषय ताहीको ग्रहण करैहै अरुत्वक् इन्द्रीको देवता पवनहै तेहिकीविषय स्पर्श है सोत्वक्इन्द्री अपने देवताकी विषय स्पर्श ताही को ग्रहण करै है अपर त्वकनकी विषयको नहीं ग्रहण करैहै पुनि नेत्र इन्द्री करदेवता सूर्यहै तिनकी विषय रूप है तहां नेत्र रूपहीको ग्रहण करैहै पुनि रसना इन्द्रीकर देवता वरुण हे तिनको विषय रसहै तहां जिह्वा रसैकोग्रहण करैहै अपर विषय को नहीं ग्रहण करैहै अरु नासिकाकर देवता अश्विनी कुमार है महि संयुक्त तेहिकी विषय गन्धि सुगन्धि सो नासिकाअपने देवताकी विषयको ग्रहण करैहै जैसे ये पांचौ इन्द्री अपने इष्टदेवता की विषयको ग्रहण करते हैं अवर अवरेकी विषयको लेशहू नहीं ग्रहण करैहै ऐसो पतिब्रत धर्म इनपांचहू में है तैसेही यहिजीवकर देवता श्रीरामचन्द्र है तिनकी विषय भक्ति है तेहि भक्ति बिना यहि जीवको तीनिहूँ काल में सुख नहीं है अरु यह जीव ब्यभिचार करिकै अपने इष्ट की विषयको छोंड़िकै यह पाँचौ विषयको ग्रहण करते हैं ताते संसार में अनेक योनिनमें भ्रमते हैं ( २८ ) दोहार्थ॥ हे तात बिना विश्वास भक्ति

बिनुद्रवहिंनराम रामकृपाबिनुसपनेहुँ जीवनलहबिश्राम २९ सो०॥ असबिचारिमतिधीरतजिकुतर्कसंशयसकल भजहुरामरघुवीर करुणाकरसुन्दरसुखद ३०॥ * * * * * * *

चौ०॥ निजमतिसरिसनाथमैंगाई प्रभुप्रतापमहिमाखगराई १ कह्यउंनकछुकरियुक्तिविशेखी यहसबमैंनिजनयननदेखी २ महिमानामरूपगुणगाथा सकलअमितअनन्तरघुनाथा ३ निजनिजमतिमुनिहरिगुणगावहिं निगमशेषशिवपारनपावहिं ४ तुमहिं

नहींहोतीहै अरु तेहि भक्ति बिना श्रीरामचन्द्र नहीं कृपाकरते हैं अरु बिना श्रीरामचन्द्रकी कृपा जीवको विश्वास सपनेहुं नहीं है ( २९ ) सोरठार्थ॥ हेगरुड़मतिधीर असबिचारिकै संपूर्णसंशय कुतर्क त्यगिकै श्रीरामचन्द्रको भजहु करुणाकेखानिहैं अतिसुन्दरहैं अतिसुखदाता हैं ( ३० ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेउत्तरकाण्डे-कागभुशुण्डिगरुड़सम्बादेश्रीरामप्रतापभक्तिअनन्यशरणागतवर्णनंनामद्वाविंशतिस्तरंगः २२॥ :: :: :: :: ::

दोहा॥ तेइससुभगतरंगमें रामप्रतापबखान रामचरणदृष्टांतदइन्यूनअधिकअतिजान २३ हे तात अपनी मतिकेसरिस श्रीरामचन्द्रको प्रताप महिमा मैं कहेउँ ( १ ) यह मैं युक्ति करिकै नहीं कहेउँ अपने नयननकीदेखी कहेउँ है कहतहौं ( २ ) हेगरुड़ श्रीरामचन्द्रकी महिमानाम रूप गुण गाथकही समूह येते सकल अमित हैं अरु रघुनाथजी अनन्त हैं जाको आदि अन्त मध्य नहीं जानाजाइ है ( ३ ) अपनी अपनी मति करिकै मुनि श्रीरामचन्द्रके गुणगावते हैं पर निगम शेष शिवादिक पारनहीं पावतेहैं ( ४ ) कैसे नहीं पारपावते हैं जैसे तुमहिं आदिक तौ बिहंगनके राजा अरु मसापर्यंत लघुते सबउड़िकै आकाशको अन्तनहीं पावते हैं ( ५ ) हे तात तिमि रघुपतिकै महिमा है कोऊ कैसे पारपावै ( ६ ) हे तात श्रीरामचन्द्र कैसे हैं कोटिकामते सुभगसुन्दर हैं देखिये तो प्रथमहिं शृंगाररस कहा है अब आगे शांतरस कहते हैं कैसे हैं श्रीरामचन्द्र कोटि दुर्गासम अरिमर्दन हैं ( ७ ) अरु कोटि शक्रसम भोग विलास कर्त्ताहैं अरु कोटिनभसम अमित अवकाशकही बिस्तार है ( ८ ) दोहार्थ॥ शतकोटि पवनसम बलवान हैं अरु रवि शतकोटिसम प्रकाशमान हैं अरु शतकोटि शशिसम शीतल हैं भवजो है संसार तेहिकी

आदिखगमसकप्रयन्ता नभउड़ाहिंनहिंपावहिंअन्ता ५ तिमिरघुपतिमहिमाअवगाहा तातकबहुंकोउपावहिथाहा ६ रामकामशकोटिसुभगतन दुर्ग्गाकोटिअमितअरिमर्दन ७ शक्रकोटिशतसरिसविलासा नभशतकोटिअमितअवकासा ८ दो०॥ मरुतकोटिशतविपुलबल रविशतकोटिप्रकाश शशिशतकोटिसुशीतलशमनसकलभवत्रास ९ कालकोटिसमसरसअति दुस्तरदुर्ग्गदुरंत धर्म्मकेतुशतकोटिसमदुराधर्षभगवंत १० चौ०॥ प्रभुअगाधशतकोटिपताला शमनकोटिशतसरिसकराला ११ तीरथअमितकोटिशतपावन नामअखिलअघपुंजनशावन १२ हिमिगिरिकोटिअचलरघुवीरा सिन्धुकोटिशतसमगम्भीरा १३ कामधेनु

त्रास जन्म मरण तेहितापको शमनकर्त्ता हैं ( ९ ) अरु शतकोटि कालके समदुस्तरहैं दुर्गहैं दुरन्तहैं दुस्तरकही तरिबेयोग्य नहीं हैं अरु दुर्गकही दूरि गम्यकही प्राप्ति जिनकी अरु दुरन्तकही जेकरअन्त पावनादूरि हैअरु धूमकेतुकही अग्नि तेहिके शतकोटिसम दुराधर्म भगवंत दुराधर्षकही दूरि है धर्षणाकही धारणाजिनकै ( १० ) अरु शतकोटि पाताल के समान अगाध हैं अरु शमनकही यमराज शतकोटिते कराल हैं ( ११ ) अरु शतकोटि तीर्थके सरिस रामनाम पावनकर्त्ता है अरुअखिल कही संपूर्ण अघको नाशकर्त्ता है ( १२ ) पुनि रघुवीर कैसेहैं शतकोटिहिमाचलपर्वत के समान अचल हैं किंतु हिम गिरि सुमेरु अरु शतकोटि समुद्रके सम गम्भीर हैं ( १३ ) अरु शतकोटि कामधेनु सम है तहां शतकोटि कामधेनु तीनिहूं फलकैदाता हैं श्रीरामचन्द्र अर्थ धर्म काम मोक्ष सकलकेदाता हैं शतकोटि कामधेनु क्योंकहा जो फलदेइगी एककामधेनु वहीफलदेइगी शतकोटिकामधेनु तहां एकअसत्यद है नाशनाम अरुएकशतपद है नित्य अखण्ड तहां श्रीरामचन्द्र कोटिन प्रकारते शतकाम धेनुते सरिस हैं ताते सबकामदायक हैं ( १४ ) शारदजोहै शारदा तेहिकीसम अमितकोटि चतुराई है बिधिजोहै ब्रह्मा तेहिसम शतकोटि सृष्टिकी निपुणता है ( १५ ) अरु अमित शतकोटि रुद्रकेसम संहारकर्त्ताहैं ( १६ ) अरु शतकोटि कुबेरकेसम धनवान् हैं अरु शतकोटिमायाके सम मायाके प्रपंचके निधानकही स्वस्थान हैं प्रवीणता के ( १७ ) पुनि शतकोटि अहीश कही शेष सम धराकही भूमि भार धरबे को हैं पुनि निरवधि हैं निरूपम हैं ऐसे प्रभु जगदीश श्रीरामचन्द्र हैं निरवधि कही जिनकी मर्य्याद आदि मध्य अन्त किसूकेजानबे योग्य नहीं

शतकोटिसमाना सकलकामदायकभगवाना १४ शारदकोटिअमितचतुराई बिधिशतकोटिसृष्टिनिपुणाई १५ विष्णुकोटिशतपालनकर्त्ता रुद्रकोटिशतसमसंहर्त्ता १६ धनदकोटिशतसमधनवाना मायाकोटिप्रपञ्चनिधाना १७ धराधरनशतकोटिअहीशा निरवधिनिरुपमप्रभुजगदीशा

१८ छं०॥ निरुपमनउपमाआनरामसमाननिगमागमकहै जिमिकोटिशतखद्योतरविसमकहतअतिलघुतालहै १९ यहिभांतिनिजनिज-मतिविलासमुनीशहरिहिबखानहीं प्रभुभावगाहकअतिकृपालसुप्रेमतेसुखमानहीं २० दो०॥

है पुनि निरूपम हैं जिनकी उपमा को कोई नहीं है श्री सदाशिव संहितायां॥ भानुकोटिप्रतीकाशं चन्द्रकोटिप्रमोदकं॥ इंद्रकोटिसदामोदं वसुकोटिवसुप्रदं १ विष्णुकोटिप्रतीपालं ब्रह्मकोटिविसर्जनं रुद्रकोटिप्रमर्दम्वैमातृकोटिविनाशनं २ भैरवकोटिसंहारं मृत्युकोटिविभक्षणं यमकोटिदुराधर्षं कालकोटिप्रधावकं ३ गन्धर्वकोटिसंगीतगणकोटिगणेश्वरं कामकोटिकलानाथं दुर्गाकोटिबिमोहनं ४ सर्वसौभाग्यनिलयं सर्वानन्दैकनायकं कौशल्यानन्दनंरामं केवलंभवखण्डनं ५। १८ छन्दार्थ॥ हे गरुड़ श्रीरामचन्द्र निरूपम हैं इनकी उपमाको आन कोई नहीं है रामसमान रामही हैं यह निगम कहते हैं इहां अन्वय अलंकार जानब अरु जो कोई कहै कि तुम अनेक उपमा कहि आये हौ तहां जो उपमा कहि आये हैं सो सब याही रीति जानब जैसे शतकोटिखद्योतको प्रकाश तेहिको रबि सम प्रकाश कहत सन्ते लघुता आवत है ( १९ ) हे तात जेहि भांतिते श्रीरामचन्द्र को हम बर्णन करिआये हैं तैसेही अपनी अपनी मतिके बिलास सर्ब मुनि बखानते हैं तहां ऐसे प्रभु श्रीरामचन्द्र ते जीवन के भावके गाहक हैं अरु प्रेमते सब मानतेहैं ( २० ) दोहार्थ॥ हे गरुड़ श्रीरामचन्द्र के अमित गुण हैं ते एक एक गुण समुद्र इव हैं ताको को पारपाइ सकै है जस कछु मैं सन्तनते सुनेउँ है तस अपनी मतिके अनुसार तुमको सुनावत भयेउँ हैं ( २१ ) सोरठार्थ॥ हे तात कैसेहैं श्रीरामचन्द्र भावके वश्य हैं सुख के निधानकही स्थान हैं करुणा के भवन हैं ताते ममतामद मान इत्यादिक सर्ब कर्म धर्म शुभाशुभ तजिकै सीतापति श्रीरामचन्द्र को सदा भजी तहांश्रुति स्मृति पुराण इत्यादिक सबको सिद्धांत है कि सीतापति को भजो ( २२ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वन्सनेउत्तरकांडेकागभुशुण्डि गरुड़सम्बादे श्रीप्रतापप्रचण्ड अतिन्यूनाधिक्यरूपकालंकार वर्णनन्नामत्रयविंशतिस्तरंगः२३॥ :: ::

रामअमितगुणसागर थाहकिपावइकोइ सन्तनसनजसकछुसुन्यउं तुमहिंसुनायउंसोइ २१ सो०॥ भावबश्यभगवान सुखनिधानकरुणाभवन तजिममतामदमान भजियसदासीतारमन २२॥ * * * * * *

चौ०॥ मुनिभुशुण्डिकेबचनसुहाये हर्षितखगपतिपंखफुलाये १ नयननीरमनअतिहर्षाना श्रीरघुपतिप्रतापउरआना २ पाछिल मोहसमुझिपछिताना ब्रह्मअनादिमनुजकरिजाना ३ पुनिपुनिकागचरणशिरनावा जानिरामसमप्रेमबढ़ावा ४ गुरुबिनभवनिधितरैनकोई जोबिरञ्चिशङ्करसमहोई ५ संशयसर्पग्रस्यउम्वहिंताता दुखदलहरिकुतर्कबहुबाता ६ तवस्वरुपगारुड़िरघुनायक

दोहा॥ बीसैंचौथतरंगमें खगपतिबोधविशेखि॥ रामचरणआरतसुखीकहतधन्य निजलेखि ( २४ ) हे पार्वती भुशुण्डि के सुंदर बचन सुनिकै खगपतिकै रोमांच जो पंखके प्रेमते प्रफुल्लितह्वै आयोहैं १ हर्षतेनेत्रनमेंजलभरिआयो है अतिप्रसन्नभये हैं जो भुशुण्डि श्रीरामप्रतापकहा है सो हृदयमें छाइरह्यो है ( २ ) पाछिलमोह समुझिकै गरुड़ पछितात भयोदेखिये तो मैं अनादिब्रह्म को मनुष्यभाव रोपणकीन अपनी अज्ञानता ते ( ३ ) बारबार भुशुण्डिके चरणमें गरुड़ माथनावते हैं श्रीरामचन्द्रकी बराबरिजानिकै अतिप्रीति बढ़ावत भयो है ( ४ ) हे भरद्वाज कागभुशुण्डि करिकै गरुड़की मति महामोहगई ताते भुशुण्डि को गुरुकीन तहां बिनागुरुनके उपदेश संसारसागर कोई न तरिसकै जोकदाचित् ब्रह्मा शिव सारिखे होइ जाइ तौ भी नहीं भवसागरतरैं ( ५ ) गरुड़ कहते हैं कि हे तात संशय सर्परूप मोको ग्रस्यो तहां संशयकरिकै मोको दुःखभयो सोईलहरि आवतभई है अरु मनकी कुतर्कनाकी बातकही पंक्तिलहरि आवतीभई ( ६ ) तहां मोको असससमुझिपरयो कि तुम्हारस्वरूप गारुड़ी भयो गारुड़ी कही जो गरुड़के मंत्रतेझारै सर्पकोविष तहां तुम्हारेपासमोको पठैकै रघुनायकमोहिंजिआयो काहेते जनसुखदायकहैं किन्तु तवस्वरूपमें रघुनायकने गारुड़ी रूपह्वैकै मोको जिवायो मोहविषरूप उतरिगयो

गारुड़ीकही हमजो हैं गरुड़ तेहिकेमंत्रते सर्पको विषझारै सो उतरि जाइ किंतु गारुड़ी मयूरीकही ( ७ ) हेतात तुम्हारेप्रसादते मेरो मोहनाशभयो श्रीरामचन्द्रको अनूपस्वरूप दशरथनन्द सोमोको अच्छीतरह

मोहिंजिआयउजनसुखदायक ७ तवप्रसादममोहनशानारामरहस्यअनूपमजाना ८ दो०॥ ताहिप्रशंसिबिविधविधिशीशनाइकरजोरि बचनबिनीतसप्रेममृदुबोलेगरुड़बहोरि ९ प्रभुअपनेअविवेकतेबूझौंस्वामीतोहिं कृपासिन्धुसादरकहहु जानिदासनिजमोहिं १० चौ०॥ तुमसर्ब्बज्ञतज्ञतमपारा सुमतिसुशीलसरलआचारा ११ ज्ञानविरतिबिज्ञाननिवासा रघुनायककेतुमप्रियदासा १२ कारणकवनदेहयहपाई तातसकलमोहिंकहहुबुझाई १३ रामचरितसरसुंदरस्वामी पायउकहाँकहहुनभगामी १४ नाथ

जानिपर्यो ( ८ ) दोहार्थ॥ हे पार्वती बड़ी प्रीतिसे भुशुण्डिकै प्रशंसा बारबारकरिकै दोऊकरजोरिकै शीशनाइकै प्रेमसंयुक्त बिनीतकही कोमलबचन गरुड़ बोलतेभये ( ९ ) तब गरुड़बोल हे प्रभु स्वामी मैं अपने अविवेकते तुमसे पूछतहौं हे कृपासिंधु सादरकहहु अपनोदास जानिकै ( १० ) तुम सर्वज्ञहौ तज्ञकही परम तत्ववेत्ताहौ अरु तम जोहै अविद्या तेहिकेपरेहौ अरु सुमति सुशीलकेसदनहौ सुमति सुशील आचरण ये सबतुम्हारे सरल हैं सरलकही स्वाभाविक हैं किंतु सुमति सुशीलरूप तुम्हारे आचरण हैं ( ११ ) अरु ज्ञान वैराग्य विज्ञान तेहिके तुमसदनहौ अरु श्री रघुनायकके अत्यन्त प्रियदासहौ ( १२ ) जो मैं कहाहै तैसे तुम यथार्थ हौ तहां यह मैं बूझतहौं कि यह कागदेह कौनेकारण करिकै पाईहै हेतात यह सकल समुझाइकै कहहु ( १३ ) पुनि दूसरप्रश्न हे नभगामी स्वामी श्रीरामचन्द्रकर मानसचरित अतिसुन्दर सो कहां आपुको प्राप्तिभयउ ( १४ ) पुनि तीसरप्रश्न हे नाथ मैं शिवकेमुखते सुनेउंहै कि महाप्रलयहूमें भी तुम्हारोनाश नहीं होत है ( १५ ) काहेते कि शिव ईश्वर हैं ते मुधा कही वृथाबचन नहीं कहते हैं ताते मोरेमनमें संशय है सो कहहु ( १६ ) हे नाथ तीनिहूलोक विषे अगजेस्थावर हैं जगजेजंगम हैं नाग नर देव तेसब कालकेकलेवा हैं इनको खातइरहतहैं अरु संपूर्ण नहीं होतहैं ( १७ ) हे तात अनेक ब्रह्मांड जो हैं कटाहकही विस्तार कोश अमितनकी लयकारीकही असंख्यनजीवनको लयकरलेत हैं तिनको भक्षणकरिकै नाशकरिदेत हैं पचाइडारत हैं अरु दुरतिक्रमकही दुस्तर तीव्रकर्तब्यहै ऐसो जो काल है ( १८ ) सोरठार्थ ॥ ऐसोकराल काल तुमको नहीं ब्यापत है सो कवन कारणकरिकै हे कृपाल कर्मके प्रभावते किंतु योगके प्रभाव

सुनामैंअसशिवपाहीं महाप्रलयहुनाशतवनाहीं १५ मुधाबचननहिंईश्वरकहही सोमोरेमनसंशयअहही १६ अगजगजीवनागनरदेवा नाथसकलजगकालकलेवा १७ अण्डकटाहअमितलयकारी कालमहादुरतिक्रमभारी १८ सो०॥ तुमहिंब्यापतकाल अतिकरालकारणकठिन-मोहिंसोकहहुकृपालज्ञानप्रभावकियोगबल १९ प्रभुतवआश्रमआयउं मोरमोहभ्रमभाग कारणकवनसोनाथअब कहहुसहितअनुराग २०॥

चौ०॥ गरुड़गिरासुनिहर्ष्यउकागा बोल्यउउमासहितअनुरागा १ धन्यधन्यतवमतिउरगारी प्रश्नतुम्हारिमोहिंअतिप्यारी २ सुनितवप्रश्नसप्रेमसुहाई बहुत जन्मकैसुधिम्वहिंआई ३ सबनिजकथाकहौंमैंगाई तातसुनहुंसादरमनलाई ४ जपतपमखसमदम

ते किंतु ज्ञानके प्रभावते सो संपूर्ण कहहु ( १९ ) दोहार्थ॥ पुनि चतुर्थप्रश्न हे तात तुम्हारे आश्रमको देखतसंते मोरे महामोह करिकै जो मोहमहोह भ्रमभयो सो जातरहा सो यह सब विशेषकारणहै हे नाथ सो कहहु मोपर अनुराग करिकै ( २० ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेउत्तरकाण्डेगरुड़आरतविनयप्रश्नबर्णनंनामचतुर्विंशतिस्तरंगः २४॥

दोहा॥ विंशतिपंचतरंगमें उत्तरकागभुशुण्ड॥ रामचरणसबते अधिकबर्णतभक्तिप्रचंड २५ हे पार्बती गरुड़के बचन सुनिकै कागभुशुण्डि हर्षिकै अनुरागसंयुक्त बोलतभयो ( १ ) हे उरगारि तुम धन्यधन्यतरहौ तुम्हारी प्रश्न मोको बहुतप्रिय है ( २ ) हे तात प्रेमसंयुक्त तुम्हार प्रश्न सुनिकै मोकोवहुत जन्मकै सुधिआई है ( ३ ) हे तात जो तुम प्रश्नकीन है सो तुम्हारे प्रश्नको उत्तर मैं सब कहतहौं आदरपूर्बक मनलाइ कै सुनहु ( ४ ) जप तप मख सम दम ब्रतदान अरु बिरति बिवेक योग बिज्ञान ( ५ ) हे तात इत्यादिक जे उत्तम साधन मोक्षके हैं तिन सबकर फल रसमय श्रीरामचन्द्रके पद पंकजविषे प्रेम तेहिकेबिनाकोई सुख अरु क्षेमकही कुशलको नहीं प्राप्तिहोतेहैं ( ६ ) हेतात श्रीरामचन्द्रके पद पंकजविषे प्रेम लक्षणाभक्तिसोयहितनमें मोकोप्राप्तिभई है तातेयहतन मोको परमप्रिय है ( ७ ) हेतातजेहि को जिस पदार्थ ते आपनस्वार्थहोतहै तेहिपर ममता सबकोई करतहै ( ८ ) सोरठार्थ॥ हेपन्नगारियहनीतिहै श्रुतिपुराण सज्जन कहतेहैं किजो अतिनीचौहोइ ताहू सों अति प्रीतिकरिबेको होतहै काहेते जहां आपनपरमहितकारहोतहोइ ( ९ ) हे तात देखिये तो पाटजोहै सो कीटतेहोत है ताते मनोहर पाटम्बरबनत है

**ब्रतदाना विरतिबिवेकयोगबिज्ञाना ५ सबकरफलरघुपतिपदप्रेमा त्यहिबिनुकोउनपावसुखक्षेमा ६ यहितनरामभक्तिमैंपाई ताते मोहिंपरमप्रियभाई ७ ज्यहितेकछुनिजस्वारथहोई त्यहिपरममताकरसबकोई ८ सो०॥ पन्नगारिसुनुनीति श्रुतिसम्मतसज्जनकहहिं अतिनीचहुसनप्रीतिकरियजानिनिजपरमहित ९ पाटकीटतेहोइ त्यहितेपाटम्बररुचिर कृमिपालैसबकोइपरमअपावनप्राणसम १० चौ०॥ स्वारथसर्ब्बजीबकहँएहा मनक्रमबचनरामपदनेहा ११ स्वइपावनस्वइसुभगशरीरा जोतनपाइभजैरघुबीरा १२ रामबिमुखलहिबिधिसमदेही कबिकोविदनप्रशंसहिंतेही १३ रामभक्तियहितनउरजामी तातेमोहिंपरमप्रियस्वामी १४ तजौं**

सो कृमि अति अपावन है तेहिको सबकोई पाटम्बरहेतुप्राणके समान पालत है ( १० ) हे तात जीवकर सांचास्वार्थ यहीहै कि श्रीरामचन्द्रजीके चरणारविन्दते मनक्रम बचनकरिकै स्नेहकरै ( ११ ) हे खगेश जो तनपाइकै श्रीरामचन्द्रको भजै सोई पावन है सोई सुन्दर है अरु सोई उत्तम है ( १२ ) अरु जो श्रीरामचन्द्रते बिमुखहोइ अरुब्रह्माके समान सबगुणन करिकै युक्तदेहपावै तेहिको कबिकोबिद नहीं प्रशंसा करतहैं तहांप्रमाण है श्रीभागवते श्लोकद्वौ॥ विप्राद्द्विषट्गुणयुतादरविंदनाभ पादारविंदविमुखाःस्वपंचवरिष्टं ॥ मन्येतदर्पितमनोवचनेहितार्थान् प्राणंपुनातुसकुलंनतुभूरिमानः १ अन्यच्च॥ येशूद्राः भगवद्भक्तः विप्राभागवतास्मृताः॥ सर्ववर्णेषुतेशूद्रायेनभक्ताजनार्द्दनः २ ( १३ ) हे स्वामी यहितनविषे श्रीरामचन्द्रकै भक्तिजामी है ताते मोको परमप्रियहै ( १४ ) अरु महादेवकी कृपाते मोको इतनी सामर्थ्य है कि अपनी इच्छाते जबचाहौं तब शरीरको त्यागिदेउं अरु परमशरीरको धारण करिलेउँ अरु हे तात नीचतनमें भजन भलबनत है अभिमान नहींहोत है अरु वेदवर्णते हैं कि बिना तनभजन नहींहोइ है जो कोई संदेहकरैहै कि बिनातन जीवकस है कहां है कहांजात है सोसुनहु तहां ज्ञानकरिकै कैवल्यको प्राप्तिहोत है तहां भजन कहांहोत है नाहींहोत है अरु बिनाश्रीरामचन्द्रके भजन जो कदाचि मुक्तहोइ तौ कवनेकामको अरु देहको तजत अरु देहको धरत अज्ञानदशा होतीहै ताते भजनमें अन्तराइ परतीहै अरु देवतन के लिंगशरीर है तहां लिंगशरीरमें श्रीरामचन्द्रको भजन वेदनहीं वर्णत हैं अरु भजनते जीवकर परम दिव्यतन वेदवर्णतहैं ( १५ ) हे तात प्रथममोह मोको बहुत बिगोयोरहै काहेते श्रीरामचन्द्र

**नतननिजइच्छामरणा तनबिनवेदभजननहिंबरणा १५ प्रथममोहम्वहिंबहुतबिगोवा रामविमुखसुखकबहुंनसोवा १६ नानाजन्मकर्मपुनिनाना कियेयोगजपतपमखदाना १७ कवनियोनिजन्म्यउंजहँनाहीं मैंखगपतिभ्रमिभ्रमिजगमाहीं १८ देख्यउंकरि सबकर्म्मगोसाईं सुखीनभयउंअबहिंकीनाईं**

१९ सुधिम्वहिंनाथजन्मबहुकेरी शिवप्रसादमतिमोहनघेरी २० दो०॥ प्रथमजन्मकेचरितअब कहौंसुनहुबिहँगेश सुनिप्रभुपदरतिउपजै जातेमिटहिकलेश २१ पूर्ब्बकल्पतेएकप्रभु युगकलियुगमलमूल नरअरुनारि अधर्म्मरति सकलनिगमप्रतिकूल २२॥ * *

बिमुखरहैं ताते सपनेहु नहीं सुखसोयों ( १६ ) हेतात मैं अनेकजन्मधरेउँ है अरु तहांतहां अनेक कर्म किहेउँ है अरु तहां तहां अनेकयोग जप तप मख दान किहेउँ है यह अनेक जन्मकी कर्तब्य संपूर्ण मोकोस्मरणहै ( १७ ) हे खगपति असकवनि योनिहै जहां संसारविषे जन्मे जन्मि नहीं भ्रमेउँ है ( १८ ) हे गोसाईं तिन जन्मनविषे बहुत कर्मकरिदेखेउँ पर अब जसयह कागतन में सुखीभयउँ है तस कबहूं नहीं सुखी भयउं ( १९ ) हे नाथ मोको बहुतजन्मकै सुधिहै पर महादेवकी कृपाते मति मोहमें नहीं घेरी ( २० ) दोहार्थ॥ हे खगेश प्रथमजन्मकर चरित कहतहौं सोसुनहु जो सुनिकै श्रीरामचन्द्रके पदविषे रति उपजै संपूर्ण क्लेशमिटिजाइ ( २१ ) हेतात पूर्बकल्पविषे एककलियुग प्राप्तभयो सो कलियुग मलकरमूल जहां नर अरुनारि अधर्महिंविषे रतहोतभये तहां सर्बजीव वेदतें प्रतिकूलहोत भये ( २२ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकल कलिकलुषविध्वंसनेउत्तरकांडेगरुड़प्रतिभुशुण्डि निजदशावर्णनंनामपञ्चबिंशतिस्तरंगः २५॥ :: :: :: :: :: :: ::

दोहा॥ षटअरुबिंशतरंगमें कहिकलियुगकोधर्म॥ रामचरणआपनिदशाकहिभुशुण्डिकछुकर्म २६ हेतात त्यहिकल्पमें कलियुगविषे श्रीअयोध्या में मेरोजन्म शूद्रतनविषे भयो ( १ ) तहां शिवकर उपासकरहौं अरु अपने अभिमानते आनदेवकी निंदाकरौं ( २ ) अरु धनबहुतरहै त्यहिके मदते मैं मत्तरहौं ताते परमबाचाल कही बक्ताकहावों पुनि बाचालकही सबकोई मेरेबचनको खुशामदिते शोभितकहै अरु उग्रकही वड़ीतीक्ष्ण तामस राजस मिलित मेरीबुद्धिरहै अरु उरविषे बिशाल दम्भते परिरहेउँहै दम्भकही शास्त्रके पदार्थ सबको देखावतरहौं अरु त्यहिकी कर्त्तव्य

चौ०॥ त्यहिकलियुगकोशलपुरजाई जन्मतभयउंशूद्रतनपाई १ शिवसेवकमनक्रमअरुबानी आनदेवनिन्दकअभिमानी २ धनमदमत्तपरमबाचाला उग्रबुद्धिउरदम्भविशाला ३ यदपिरह्यउंरघुपतिरजधानी तदपिनकछुमहिमाउरआनी ४ अबजानामैं अवधप्रभावा निगमागमपुराणअसगावा ५ कवन्यहुंजन्मअवधबसजोई रामपरायणसोपरिहोई ६ अवधप्रभावजानतबप्राणी जबउरबसहिरामधनुपाणी ७ सोकलिकालकठिनउरगारी पापपरायणसबनरनारी ८ दो०॥ कलिमलग्रसेधर्म्मसब गुप्तभयेसदग्रन्थ दम्भिननिजमतकल्पिकरि प्रगटकियेबहुपन्थ ९ भयेलोगसबमोहवश लोभग्रसेशुभकर्म्म सुनुहरियानसुज्ञाननिधि कहौंकछुक

ते प्रतिकूलरहौं ( ३ ) हे तात यद्यपि रघुपतिकी राजधानीविषे रहेउँ तदपि धनमद दम्भकरिकै अयोध्याकी महिमा नहींजान्यों ( ४ ) हेगरुड़ अबमैं श्रीअयोध्याको प्रभाव जानेउँ हैं वेद शास्त्र पुराण असगावतेहैं ( ५ ) श्रीअयोध्याविषे कौनेहुजन्म कौनिहु योनिविषे कौनेहु कालविषे बसै सो श्रीरामचन्द्रको निश्चय करिकै प्राप्तिहोई ( ६ ) हे तात अवधको प्रभाव प्राणी तबजानै जब धनुषबाण संयुक्त श्रीरामचन्द्र हृदयमें बसैं ( ७ ) हे उरगारि सो कलिकाल अति कठिनरहै संपूर्ण नर नारि पाप परायण होतभये ( ८ ) दोहार्थ॥ हे तात कलि अपने मलकरिकै संपूर्ण शुभकर्म धर्मको ग्रसिलिहेसि अरु सद्ग्रंथ शास्त्ररीति गुप्तह्वइगये अरु दम्भिन अपनीमतिके कल्पित ग्रंथकिहेनि अनेकपंथ चलावतेभये ( ९ ) हे ज्ञाननिधि हरियान त्यहिकलिविषे संपूर्णलोग मोहकेबश्य होइगये काहेते लोभने शुभकर्मको ग्रसिलियो है अब मैं कलिकरधर्म कछुकहतहौं सो सुनहु ( १० ) चारिबर्णजो हैं अरु चारिआश्रमजो हैं सो बर्णाश्रमकेधर्म पाछेंकहिआये हैं सो कलिकालमें काहूके धर्म न रहै अरु संपूर्ण नर नारि वेदबिरोधी धर्म कर्म करतभये ( ११ ) अरु ब्राह्मण श्रुतिबंचकहैं आपन प्रजाकहते हैं अरु तिनकाधन हरिलेते हैं किंतु प्रजाशनकही प्रजाको अशनकही खाइजाते हैं अरु वेदशास्त्रकी आज्ञा कोईनहीं मानै है ( १२ ) अरु

जिसको जौनमार्ग भावतहै सो तौने मार्ग चलते हैं अरु कलियुगमें जो कोई गालाढाढ़ीकरै सोई पण्डित है ( १३ ) अरुजोमिथ्या आरम्भ है अरु दम्भ संयुक्त हैं तिनको सब कोई संत कहते हैं मिथ्या कही मायाके हेतु बल स्वांग करतेहैं अरु दम्भकही सब जगत मेंबुझाइबे हेतु अनेक मुद्रा साधते हैं ( १४ ) अरु कलियुगमें जो यनकेन

कलिधर्म्म १० चौ०॥ बर्णधर्म्मनहिआश्रमचारी श्रुतिविरोधरतसबनरनारी ११ द्विजश्रुतिबञ्चकभूपप्रजाशन कोउनहिंमान निगमअनुशाशन १२ मारगस्वइजाकहँज्वइभावा पण्डितस्वइजोगालबजावा १३ मिथ्यारम्भदम्भरतजोई ताकहँसन्तकहैंसबकोई १४ स्वइसयानजोपरधनहारी जोकरदम्भसोबड़आचारी १५ जोबहुझूठमसखरीजाना कलियुगस्वइगुणवन्तबखाना १६ निराचारजोश्रुतिपथत्यागी कलियुगसोइज्ञानीबैरागी १७ जाकेनखअरुजटाविशाला स्वइतापसप्रसिद्धकलिकाला १८ दो०॥ अशुभवेषभूषणधरे भक्ष्यअभक्ष्यजोखाहिं त्यइयोगीत्यइसिद्धनरपूजितकलियुगमाहिं १९ सो०॥ जेअपकारीचारि तिनकहँगौरव

करिकै परधन हरै सोई सयान कहावते हैं अरु जे दम्भ करते हैं सो बड़ेआचारी कहावतेहैं ( १५ ) अरु जो बहुत झूँठी बातनमें मसखरी कही तर्ककरिकै हँसते हैं कलियुगमें सोई गुणवान् बखाने जातेहैं ( १६ ) अरुवेदकर पथ छाड़िकै जो निराचार करते हैं ते कलियुग में ज्ञानी बिरक्त कहावतेहैं ( १७ ) अरु जाके नख अरुजटा बढ़िरहीहैं तेई तपस्वी बाजतेहैं अरु तिनके तापकी क्रिया एकउ नहीं है ( १८ ) दोहार्थ॥ अरु जेअशुभवेष धरेहैं अरु भक्ष्याभक्ष्य खाते हैं तेई कलियुगमें योगी सिद्धकहावतेहैं अरु कलियुगमें वेही पूजित हैं ( १९ ) सोरठार्थ॥ अरु जिन प्राणिन के पर अपकारही आचरणहै तिनहींकर कलियुग विषे गौरवकही आदरमानतेहैं अरु जे मन क्रम बचनते लबार कही झूँठेहैं ते कलिकाल में वक्ता कहावते हैं ( २० ) अरु हे गोसाईं नारिके बशह्वैकै सम्पूर्ण नरनाचते हैं जैसे नटके बश्य मर्कट नाचते हैं ( २१ ) अरु शूद्रजे हैं सो द्विजनको ज्ञान उपदेश करते हैं गरेमें जनेऊ डारिकै कुदान लेतेहैं ( २२ ) हे तात त्यहियुगविषे सर्बनर कामक्रोध लोभ मोहमें लीन ह्वैरहे हैं अरु देव बिप्र श्रुतिसन्तके बिरोधी हैं ( २३ ) अरु गुणकर मन्दिर सुन्दरपतिहैं तिनको त्यागिकै पर स्त्री पर पुरुष को भजती हैं ( २४ ) अरु सौभागिनी जोहैं पति संयुक्त ते बिभूषणकरिकै हीनहैं अरु बिधवा नवीन शृंगारकरतीहैं ( २५ ) अरु गुरु शिष्यको अँधरे बहरेको लेखा होतभयो गुरु देखै नहीं शिष्य सुनैनहीं गुरुतौ शिष्यको गुण औगुण देख नहीं लोभके निमित्तक शिष्य करिलियो है अरु शिष्य गुरुनको कहा सुनैनहीं करै नहीं

मानतेमनक्रमबचनलवार त्यइबक्ताकलिकालमहँ २० चौ०॥ नारिविवशनरसकलगोसाईं नाचहिंनटमर्कटकीनाईं २१ शूद्रद्विजनउपदेशहिंज्ञाना मेलिजनेऊलेहिंकुदाना २२ सबनरकामलोभरतक्रोधी देवबिप्रश्रुतिसन्तबिरोधी २३ गुणमन्दिरसुन्दरपतित्यागी भजहिंनारिपरपुरुषअभागी २४ सौभागिनीविभूषणहीना विधवनकेशृङ्गारनवीना २५ गुरुशिषअन्धबधिरकरलेखा एकनसुनहिंएकनहिंदेखा २६ हरैशिष्यधनशोकनहरई सोगुरुघोरनरकमहँपरई २७ मातपिताबालकनबोलावहिं उदरभरैस्वइधर्म्मसिखावहिं २८ दो०॥ ब्रह्मज्ञानबिनुनारिनर करहिंनदूसरिबातकौड़ीकारणमोहबश करहिंविप्रगुरुघात २९ बादहिंशूद्रद्विजनसन हमतुमतेकछुघाटि जानैंब्रह्मसोबिप्रबर आँखिदेखावहिडाटि ३० चौ०॥ परत्रियलम्पटकपटसयाने मोहद्रोहममतालपटाने ३१

गुरुनेवाको अच्छी तरह देखि नहीं लियो ( २६ ) ताते हेतात जे शिष्यके धन हरिबेकी इच्छा करते हैं अरु उसके शोक हरिबेकी इच्छा उपदेश नहीं है ते गुरु घोरनरकमें परतेहैं ( २७ ) अरु मातापिता अपने बालकनको बुलावतेहैं जाते उदरभरै सोई यत्न सिखावतेहैं परमार्थ उपदेशनहीं करते हैं ( २८ ) दोहार्थ॥ अरु कलिविषे सम्पूर्ण नरनारि ब्रह्मज्ञान कथन करहिं दूसरि बात करैं नहीं अरु हैं कैसै कौड़ीके हेतु पावहिं तौ ब्राह्मण गुरुकौ मोहबश घातकरिडारैं ( २९ ) अरु शूद्रजोहैं ते ब्राह्मणतेबादकरते हैं अरु इहां उहांकी बातैं सिखिकै कहते हैं का हम तुमते कछु घाटि हैं काहेते हम ब्रह्मज्ञान जानते हैं अरु ब्रह्मज्ञान तुमको उचित है सोतुमको आवतैनहींहै॥ ब्रह्मजानातिब्राह्मणः॥ इत्यादिक बचनकहि कहि डाटि डाटि आंखि देखावतेहैं ( ३० ) अरु सम्पूर्ण परत्रिय लम्पटहोइगये अरु कपटकी सयानी होतभई अरु मोह द्रोह ममतामें लपटि रहेहैं ( ३१ ) ऐसे विषयमें लपटिरहे हैं अरु कहते हैं कि हम अभेद ज्ञानी हैं जीव ईश्वर एकही है ऐसो कलियुगकर चरित्रमैं देखा है ( ३२ ) अरु जो कोऊ यही दैवयोगते सतमार्ग प्रतिपालते हैं तिनको एकै कहतेहैं कियेई बनाइ गये हैं भ्रष्टहैं औरहुको भ्रष्टकरहिंगे ( ३३ ) हे तात जे तर्कना करिकै वेदकर दूषणकरते हैं ते अट्ठाईस नरक हैं एकएक नरकनमें कल्पकल्प रहतेहैं तहांयमलोकमें अट्ठाईस नरकर्कानेहैं तामिस्र १ अन्धतामिस्र २ रौरव ३ महारौरव ४ कुम्भीपाक ५ कालसूत्र ६ असिपत्र ७ शूकरमुख ८ अन्धकूप ९ कृमिभोजन १० सन्दंशन ११ तप्तभूमि १२ बज्रकण्टक १३ शाल्मली १४ बैतरणी १५ सूपोदन १६ प्राणरोधन १७ बिससन १८ लालभक्षण १९ सारमेवादन २० अबीचिरय २१ पानकर्दम २२ रक्षोगनभोजन २३ शूलपीत २४ द्वन्द्वसुक २५ कूपारोधन २६ बर्जाबर्त्तन २७ सूचीमुख २८ इति अट्ठाईसनरक २८ तामिस्रजो वेदकेवाक्यमें अंधहैं अरु अपनी कल्पितबाणी को सिद्धमानते हैं ते तामिस्रनरकमें जाते हैं १ पुनि जे केवल अपनी इन्द्री शिष्णोदर इत्यादिक पालतेहैं और कछुसमझे नहीं

त्यइअभेदबादीज्ञानीनर देखामैंचरित्रकलियुगकर ३२ आपुगयेअरुआनहुघालहिं जेकहुंसतमारगप्रतिपालहिं ३३ कल्प

हैं ते अंधतामिस्र नरकको प्राप्तिहोते हैं अरु जे सबकी निंदाकरते हैं सोरौरवनरकमें परते हैं ३ अरु जे अनेक अप्रमाद करिकै परावाहितकार नाशकरते हैं निरर्थक उसमें कछु अपनाकार्य नहीं सधैहै ते महारौरवनरकको जातेहैं ४ अरु जे मनमें और को बिघ्नता करते हैं अरु बिघ्नभयेते प्रसन्न होते हैं ते कुम्भीनरकको जाते हैं ५ अरु किसूसे छलकरते हैं ते कालसूत्र नरकको जाते हैं ६ अरु जो कोई जीव को हिंसा करते हैं ते असिपत्र नरकको जाइकै प्राप्तिहोते हैं ७ पुनि भक्ष्याभक्ष्यखाते हैं अरु मलीनरहते हैं ते शूकरमुख नरक में परते हैं ८ अरु जे कपट छलछिद्र करिकै परावाधन हरते हैं केवल अपनोतन कुटुंबगृह पालनकरते हैं सो अंधकूप नरकमें परते हैं ९ अरु जो अपने संगते छपाइकै मीठपदार्थ इत्यादिक खाते हैं ते कृमिभक्षण नरकको प्राप्तिहोते हैं १० अरु जे जीवते ईर्षाकरते हैं ते संदंशननरकको प्राप्तिहोते हैं ११ अरु जे बिनाकारण क्रोधकरते हैं ते तप्तभूमिनरक में परते हैं १२ अरु जे व्यंग अरु कुतर्क करिकै जीवनको कटुबचन कहते हैं ते बज्रकंटक नरकको प्राप्तिहोते हैं १३ अरु जोलोभी हैं अनेक द्रव्यकी संग्रहकरते हैं उसद्रव्यमें परमार्थ नहीं करते हैं ते शाल्मली नरकमें परते हैं १४ अरु जे दानपुण्य करतसंते बाधा करते हैं ते बैतरणी नरकमें प्राप्तहोते हैं १५ अरु जेचोरीकरते हैं तेसूपोदन नरकमें परते हैं १६ अरु जे छलकरिकै किसूको बिषदेते हैं ते प्राणरोधन नरकमें परते हैं १७ अरु जे पर स्त्री गमनकरते हैं ते बिससन नरकमें प्राप्तहोते हैं १८ अरु जे रातिदिन अनेक तृष्णाविषे ग्रसितहैं ते लालभक्षण नरकमें प्राप्तहोते हैं १९ अरु जे सत्यदार्थ को त्यागकरते हैं असत्यको ग्रहणकरते हैं ते सारमेवादन नरकमें परते हैं २० अरु जे किसूको बिघ्नकरिबेको हृदयमेंधरि राखते हैं अवसरपाइकै अनेक विघ्न करते हैं ते अबीचिरय नरकमें परते हैं २१ पुनिजे मदिरा पानकरते हैं ते पानकर्दम नरकमें परतेहैं २२ अरु जे कांईयत्नते पराये धनको आपन मानेहैं लेते हैं खाइ जाते हैं ते रक्षोगनभोजन नरक में परतेहैं २३ अरुजे अहर्निशि मोहमें परेहैं ते शूलपीत नरकमें परते हैं २४ अरु जे तैं

कल्पभरियकयकनर्क्का परहिंतेदूषहिंश्रुतिकरितर्क्का ३४ जेबर्णाधमतेलिकुम्हारा स्वपचकिरातकोलकलवारा ३५ नारिमुईगृहसम्पतिनासी मूड़मुड़ाइभयेसन्यासी ३६ सेविप्रनसनपाउंपुजावहिं उभयलोकनिजहाथनशावहिं ३७ विप्रनिरक्षरलोलुप

मैं मोर तोर हर्ष शोक हानिलाभ सुख दुःख इत्यादिक अहर्निशि यहिमेंपरे हैं धर्मते बिमुखहैं ते द्वंद्वसुकन नरकमें परते हैं २५ अरु बाह्यांतर गृहाशक्त हैं ते कूपारोधन नरक में परते हैं २६ अरु जे दम्भ पाषंडकरिकै संसारको ब्यामोहित करते हैं ते पर्यावर्तन नरक में परते हैं २७ अरु सुन्दर बचनन करिकै किसूको कोई पदार्थकी आश्रय देतेहैं अरुफिरिवहकाम नहीं करते हैं ते सूचीमुख नरक में परते हैं २८ हेतात यह कर्तब्य अरु यहप्राप्ति जो कहिआये हैं त्यहिके अधिकारी कलियुगमें सर्बजीव होतभये ( ३४ ) हे तात जे चारिबर्णके बाह्य अधमहैं तेली कुम्हार स्वपचकही चाण्डाल अरु किरातकही जे जीवहिंसा करते हैं अरुअहर्निशि कोलभिल्ल जे बनमें रहते हैं अरु कलवार ( ३५ ) इत्यादिक जे वर्णबाह्य हैं तिनकै जबनारि मरी किंतु घरकै सम्पति नाशभई तबमूड़मुड़ाइकै संन्यासी होतभये ( ३६ ) ते ब्राह्मणनते पायं पुजावतेहैं उभयलोककही लोक परलोक अपने हाथ नाशकरते हैं ( ३७ ) हेतात ब्राह्मण निरक्षर होतभये अरु गायत्री रहित होतभये अरु लोलुपकही झूंठे होतभये अरु कामी होतभये अरु निराचार शठहठ धर्मी होतभये अरुवृषली जोहैं दासीतेहिके स्वामी होतभये ( ३८ ) अरु त्यहि कलिकालमें शूद्रजप तपब्रत मखदान इत्यादिक करहिंअरु बरासनकही ऊँचाआसनबिछाइकै पुराण बांचहिं ( ३९ ) अरु संपूर्णनर कल्पितआचार करहिं वेदकै मर्यादछोड़िकै अपार अनीति बर्णिबेयोग्य नहीं है ( ४० ) दोहार्थ॥ सबलोग बर्णसंकर होतभये औरै माता औरै पिता हेतात त्यहि कलियुगविषे भिन्नभिन्न मार्ग सबचलतेभये अरु अनेक पापकरै हैं अरु भयरोगकरिकै ग्रसिरहेहैं ( २१ ) वेद के सम्मतते वैराग्य बिबेक करिकै भक्ति नहीं करै मोहकेबशते ते जड़ कल्पि कल्पि अनेकपंथ ठाढ़ करतभये ( ४२ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसेनउत्तरकाण्डेकलिधर्मबर्णनन्नामषट्बिंशतिस्तरंगः २६॥

कामी निराचारशठवृषलीस्वामी ३८ शूद्रकरहिंजपतपमखदाना बैठिबरासनकहहिंपुराना ३९ सबनरकल्पितकरहिंअचारा जाइनबरणिअनीतिअपारा ४० दो०॥ भयेबर्णसंकरकलिहिभिन्नसेतुसबलोग करहिंपापपावहिंतेदुखभवरुजशोकवियोग ४१ श्रुतिसम्मतिहरिभक्तिपथ संयुतविरतिबिवेक तेनरचलहिंनमोहबश कल्पहिपंथअनेक ४२॥ * * * * * *

त्रोटकछंद॥ बहुदामसँवारहिंधामयती विषयाहरिलीनगईबिरती १ तपसीधनवन्तदरिद्रगृही कलिकौतुकताातनजातकही २ कुलवन्तिनिकारहिंनारिसती गृहआनहिंचेरिनिवेरिगती ३ सुतमानहिंमातपितातौलौं अबलाननदीखनहींजौलौं ४ ससुरारि

दोहा॥ सप्तमबीसतरंगमें पुनिकलिधर्मबखानि॥ रामचरणजगजीवसब भये अधर्मकेखानि २७ त्रोटकछन्दार्थ॥ हेतात त्यहि कलिकाल विषे जिन यतिनको वृक्षनतर रहिवेको वेदकहते हैं तेसब बहुदाम संचित करिकै धाम सँवारि सँवारि बनावतभये काहेते विषय उनकी मति को हरिलीन है ताते बैराग्य जातरही ( १ ) हेतात कलिकौतुक कछु कहा नहीं जात है तपस्वी धनवन्त अरु गृहस्थ दरिद्री हैं ( २ ) अरु पुरुष जे हैं ते अपनी नारिजेहैं सती कुलवन्ती कहूं कहूं त्यहिको निकासिदेतेहैं अरु गृहविषे चेरीजे टहलुई हैं व्यभिचारिणी शूद्रिणी त्यहिको निबेरिकही जबरदस्ती धरिकै किंतु कुछदैकै तिनको राखते हैं यहगति कलियुगविषे ह्वैरही है ( ३ ) पुत्र माता पिताको तबलग मानहिं जबलग अपनी स्त्रीको मुखनहीं देख्योहै ( ४ ) अरु जबते ससुरारि पियारिलगीहै तबते कुटुम्ब रिपुरूप ह्वैगयेहैं ( ५ ) अरु कलिमें राजा पापपरायणहोतभये हैं ताते प्रजनते नित्यदण्डलेते हैं अरु बिडम्बनकही मारतेहैं ( ६ ) अरु जाहीके धनहै सोई कलीन है अरु अपिनाम निश्चयते कुलक्रिया करिकै मलीन हैं अरु ब्राह्मण के धर्म जातरहेहैं यज्ञोपबीतमात्र चिह्नरहिगयो है ( ७ ) अरु जे वेद पुराणको नहींमानैं सोई हरिकेसेवक कहावैहैं ( ८ ) अरु कलियुगविषे कविवृन्दभये हैं अरु उदारतौ दुनियामें कहूं सुनिबमें नहीं आवै अरु जे औरनके गुणको दूषणकरैं सो निश्चयकरिकै गुणवान् कहावै हैं ( ९ ) हेतात कलियुगविषे बारम्बार दुकालपरैबिनाअन्न सबलोग दुखकरिकै मरिजाहिं ( १० ) दोहार्थ॥ हेखगेश त्यहि

पियारिलगीजबते रिपुरूपकुटुम्बभयेतबते ५ नृपपापपरायणधर्मनहीं करिदंडबिदंडप्रजानितहीं ६ धनवन्तकुलीनमलीनअपी द्विजचिह्नजनेउउघारतपी ७ नहिंमानपुराणनवेदहिजो हरिसेवकसत्यमहीकलिसो ८ कविवृन्दउदारदुनीनसुनी गुणदूषकबातनकोपिगुनी ९ कलिबारहिंबारदुकालपरै बिनअन्नदुखीसबलोगमरै १० दो०॥ सुनुखगेशकलिकपटहठ दम्भदोषपाखण्ड मानमोहमारादिमद ब्यापिरह्यउब्रह्मण्ड ११ तामसधर्मकरहिंनर जपतपमखब्रतदान देवनबर्षै धरणिमहँबयेनजामहिंधान १२ त्रोटकछंद॥ अबलाकचभूषणभूरिक्षुधा धनहीनदुखीममताबहुधा १३ सुखचाहहिंमूढ़नधर्मरता मतिथोरिकठोरिनकोमलता १४ नरपीड़ितरोगनभोगकही अभिमानबिरोधअकारणही १५ लघुजीवनसंबतपंचदसा कल्पांतननाशगुमानअसा १६ कलिकालबिहालकियेमनुजा

कलिकालविषे कपट हठ द्वेषकही ईर्षा अरु मान मोह मारादिक मद सो संपूर्ण ब्रह्मांडविषे इत्यादिक व्यापिरहेउ है ( ११ ) हे तात त्यहि घोर कलियुगविषे जेनर कछु धर्मकर्म करहिं जप तप यज्ञ दान सो संपूर्ण तामसमय अरु दैव जलनहीं बरषैं अन्न पृथिवी में नहीं उत्पन्नहोइ सबलोग पीड़ितरहैं ( १२ ) त्रोटकछन्दार्थ॥ हेतात स्त्रिनके बारमात्रभूषण रहिगये हैं अरु क्षुधा बहुतभई है त्यहिकरिकै संपूर्णलोग पीड़ित भये हैं अरु धनकरिकै सबलोग हीनह्वैगये हैं अरु धनके प्राप्तिकै ममताबहुत है ( १३ ) अरु ऐसेमूढ़ हैं सुखको चाहतेहैं अरु धर्मविषेरत लेशहूनहीं हैं जाते सुखहोइ ताते दुखीहैं अरु सबकीमति थोरिह्वैरही है ताहू में कठोरमति है कोमलता लेशहूनहीं है ( १४ ) नरजे हैं ते संपूर्ण पीड़ित हैं अरु रोगनके बशहैं भोगकी नास्तिहै अरु बिनाकारणहीं अभिमानभरे हैं ( १५ ) अरु जीवनलघुहै दश पांचबर्षको अरु गुमानअस है कि कल्पांतउमें नाशनहीं होइगा ( १६ ) हे तात कलिकाल करिकै संपूर्ण बेहालह्वइगये हैं अरु अनुज जो भाईकी स्त्री है अरु तनुजा जो आपनी कन्या तिनको कोईनहीं मानतेहैं ( १७ ) न केहूके शीलरहा न संतोषरहा अरु न बिचाररहा अरु संपूर्ण जाति औ कुजाति मँगताहोत भये हैं ( १८ ) ईर्षा परुषाकही अहंकार क्षरकही मिथ्या कर्तव्य मिथ्याआलाप संचार संयुक्त अरु लोलुपताकही चंचलता चुगुलखोर इहांकी उहां करतफिरैं अरु पराईबस्तुको तकतफिरैं इत्यादिक जीवनमें भरिपूरिरहे हैं सर्बमें समता सो बिगतकही जातरही है ( १९ ) सबलोग अति

नहिंमानतकोउअनुजातनुजा १७ नहिंतोषबिचारनशीतलता सबजातिकुजातिभयेमँगता १८ इरषापरुषाक्षरलोलुपता भरिपूरिरहीसमताबिगता १९ सबलोगवियोगबिशोकहिये बर्णाश्रमधर्मअचारगये २० दमदानदयानहिंजानपनी जड़तापरपंचनतातघनी २१ तनपोषकनारिनरासगरे परनिंदकजेजगमेंबगरे २२ दो०॥ सुनुब्यालारिकरालकलि मलअवगुणआगार गुणौबहुतकलियुगकर बिनुप्रयासनिस्तार २३ कृतयुगत्रेताद्वापरौपूजामखअरुयोग जोगतिहोइसोकलिहरि नामतेपावहिंलोग २४ चौ०॥ कृतयुगसबयोगीविज्ञानी करिहरिध्यानतरहिंभवप्रानी २५ त्रेताबिबिधयज्ञनरकरहीं प्रभुहिसमर्पिकर्मभवतरहीं २६ द्वापरकरिरघुपतिपदपूजा नरभवतरहिंउपायनदूजा २७ कलियुगकेवलहरिगुणगाहा गावतनरपावहिंभवथाहा २८

शोककरिकै बियोगकही लीनह्वैगये हैं विशोक कोई न रहा अरु बर्णाश्रमके धर्म आचार संयुक्त जातरहे हैं ( २० ) इंद्रिनको जीतब अरु दान अरु ज्ञान इनबस्तुनकर पनीकही प्रणकरिकै धारणकर करैया कोई रहबै नहींभयो हेतात जड़ता अरु प्रपंच अतिघनी ह्वैरहीहै ( २१ ) अरु सब नारिनर तनपोषक ह्वैरहे हैं अरु परनिन्दक संपूर्ण जगत्में बगरिकही

फैलिरहेहैं ( २२ ) दोहार्थ॥ हे ब्यालारि कलियुग मलकर आगारहै अरु बहुतगुणौ हैं कलियुग विषे बिनाप्रयासहि निस्तारहै ( २३ ) कृतयुगकही सतयुग त्रेता द्वापर कृतयुगविषे ध्यानयोग त्रेतामें यज्ञ अरु द्वापरमें पूजा एतेसंपूर्ण युगके धर्मकरिकै भगवत् अर्पणकरै जवनीगतिको प्राप्तहोहि सो गति कलियुग विषे रामनामते होतिहै ( २४ ) सतयुगविषे सबयोग बिज्ञान ध्यानकरिकै हरिको समर्पण करिकै तब जीवतरैहै ( २५ ) अरु त्रेतामें यज्ञकरै प्रभुको समर्पणकरिकै जीवतरै हैं ( २६ ) अरु द्वापरमें श्रीरघुनाथजी के चरणपूजिकै भवतरहिं दूसरउपाय नहीं है ( २७ ) कलियुगमें केवल श्रीरामचन्द्र के गुणानुबाद गाइकै संसार तरिजाते हैं ( २८ ) कलियुग में योगहै न यज्ञहै अरु न ज्ञानहै न ध्यान है एक श्रीरामचन्द्रकर गुणगान जो है सोई आधारहै ( २९ ) सब भरोसतजिकै श्रीरामचन्द्रको भजतेहैं अरु प्रेमसमेत गुणानुबाद गावतेहैं गीतायांश्लोकार्द्ध॥ सर्वधर्म्मान्परित्यज्य मामेकंशरणंव्रज ( ३० ) सोई संसारको तरहिं जो नामको भजहिं काहेते नामको प्रताप कलियुगमें प्रकटहै ( ३१ ) हेतात कलिकर एकपुनीत प्रतापहै कि मानसी पुण्यहोत है अरु पापनहीं है काहेते जो आपने पासहोइ सो तौ पुण्यकरिदेइ अरु और पुण्यकरनेकी इच्छाकरते हैं सो मानसी पुण्यहोती है अरु पापनहीं होइहै काहे

**कलियुगयोगयज्ञनहिंज्ञाना एक अधाररामगुणगाना २९ सबभरोसतजिजोभजुरामहिं प्रेमसमेतगावगुणग्रामहिं ३० स्वइभवतरकछुसंशयनाहीं नामप्रतापप्रकटकलिमाहीं ३१ कलिकाएकपुनीतप्रतापामानसपुण्यहोइनहिंपापा ३२ दो०॥ कलियुगसमयुगआननहिं जोनरकरबिश्वास गाइरामगुणगणबिमलभवतरबिनहिंप्रयास ३३ प्रकटचारिपदधर्म्मकेकलिमहँएकप्रधान येनकेनबिधिदीन्हेदानकरैकल्यान ३४ चौ०॥ नितयुगधर्महोहिंसबकेरे हृदयराममायाकेप्रेरे ३५ शुद्धसत्वसमताविज्ञाना कृत**

ते कलिमेंमन अहर्निशि पापहीमें रहतहै श्लोकएक श्रीमद्भगवते॥ कृतेयद्ध्यायतेबिष्णुंत्रेतायांयजतोमखैः॥ द्वापरेपरिचर्यायांकलौतद्धरिकीर्तनात् ( ३२ ) दोहार्थ॥ हे तात कलियुगके समान और युगनहीं है जेनर बिश्वासकरिकै श्रीरामचन्द्रको बिमलगुण गाइकै भवसागर बिनहिंप्रयास तरिजाते हैं ( ३३ ) हे तात धर्मके चारिपद प्रकटहैं सत्य शौच तप दान त्यहिकलिमें एकप्रधान है येनकेन बिधिते दानकिये कल्याणहै ( ३४ ) हे तात सबके युगयुगके धर्म नित्यबर्तमान होतेहैं श्रीरामचन्द्रकी मायाकी प्रेरणाते तहां सतयुगको धर्म सतयुगहि में है अरु त्रेताको धर्म त्रेता हीमेंहै अरुद्वापरको धर्म द्वापरमें अरु कलियुगको धर्म कलियुगमेंहैं ताते‌नित्ययुगधर्म कहाहै किंतु तीनिहूं युगकोधर्म कलियुगविषे सूक्ष्मसूक्ष्मबर्तमान होतहै तामें कलियुगको अतिआधिक्यहै यहीरीतिसबयुगमें जानियेकिंतु कोई पुरुषएकहीदिनमेंचारिपहरमें चारिहु युगको धर्मबर्तमान करतेहैं ( ३५ ) शुद्ध सात्विक गुण तेहीते मनमें समताअरुविशेष आत्मज्ञानताते‌मनप्रसन्नहै सबके यह सतयुगको धर्महै ( ३६ ) अरु सात्विकगुण तौ पूर्णअरु राजसगुण के चारि भागमें एकभाग त्रेतामें प्राप्तिभयोत्यहि गुणनके अनुभूत सब नरनारि कर्मकरतेहैं ताते त्रेताके कर्मधर्ममें सब सुखैहै काहेते कि सात्विक करिकै केवल बैराग्य योग ध्यान अरु राजस करिकैयज्ञ इत्यादिक सुन्दरभोग श्रीरामप्रसादी दूनौंमिले त्रेतामें परम सुखै है ( ३७ ) अरु द्वापरमें आधा राजस गुण अरु एक भाग सात्विक एक भाग तामस ताते द्वापर विषे हर्षजोहै भयजोहै शोक इत्यादिक मिलिकै ब्याप्तहै ( ३८ ) अरु कलिमें तामस गुण पूर्ण अरु राजस एकभाग अरुसात्विक जहांतहां भगवत्की कृपाते तातेसम्पूर्ण विरोध ह्वइरहाहै ( ३९ ) ताते बुधजे हैं पण्डित विवेकी सो युगको धर्म जानते हैं ताते अधर्म कोत्यागिकै धर्मकरते हैं तहां एकही दिनमें चारिहू युगके धर्म करते हैं प्रात

**प्रभावप्रसन्नमनजाना ३६ सत्वबहुतरजकछुरतिकर्मा सबबिधिसुखत्रेताकरधर्मा ३७ बहुरजस्वल्पसत्यकछुतामस द्वापरधर्महर्षभयमानस ३८ तामसबहुतरजोगुणथोरा कलिप्रभावविरोधचहुंओरा ३९ बुधयुगधर्मजानिमनमाहीं तजिअधर्मरतधर्मकराहीं ४० कालकर्मनहिंब्यापिहिताही रघुपतिचरणप्रीतिअतिजाही ४१ नटकृतबिकटकपटखगराया नटसेवकहिनब्यापैमाया ४२**

समय जब चारिदण्ड रात्रीरहती है अरु चारिदण्ड दिनचढ़े ताईं सतयुगको धर्म ज्ञान ध्यान करतेहैं उपरांत डेढ़पहर दिन चढ़ेताईं त्रेताको धर्म करते हैं होमयज्ञ किन्तु जप यज्ञ उपरांत अढ़ाईपहर दिन चढ़ेताईं द्वापरको धर्म करतेहैं पूजा स्नान शृङ्गार भोगराग किंतु मानसी पूजा उपरांत कलियुगको धर्म श्रीरामचरित कीर्तन करतेहैं किंतु रामनामै स्मरणकरतेहैं अरुनाम स्मरणतौसदाऐसेही आठौयाम भगवत् धर्मकरतेहैं बुधजनजे हैं ( ४० ) हे तात कलिके कर्म धर्म त्यहि पुरुष को नहीं व्यापतहैं जिनके श्रीरामचन्द्रके चरण विषे भलभावहै ( ४१ ) हे खगराय जैसे नटकै कृतवेष अति बिकट है नहीं जानाजाइ है किससे तहां नटकी माया नटके सेवकको नहीं व्यापत है हेतात तैसेही हरिकी प्रेरणाते हरिकी माया अनेक गुण दोष युक्त कलाकरतीहै पर जे हरिके सेवक हैं तिनको नहीं व्यापती है किन्तु हरि अपनी माया करिकै गुण दोष युक्त अनेक कला करते हैं सो हरिके सेवक हैं तिनको नहीं व्यापती है किन्तु हरि अपनी मायाकरिकै गुण दोषयुक्त अनेक कला करतेहैं सोहरिके सेवकनको नहीं व्यापती है ( ४२ ) दोहार्थ॥ हे गरुड़ हरिकी मायाकर दोष गुण जो हैंशुभअशुभ दूनों मायाकृत हैं अरु दूनों के गये बिना जीवकर कल्याण नहीं है सो दूनौं बिना रामचन्द्रके भजन अनेक उपायकरै नहीं जातेहैं तातेसबकामना तजिकै श्रीरामचन्द्र को भजो मनमें बिचारलेव यह सिद्धांत है ( ४३ ) त्यहि कलिकाल विषे श्रीअयोध्यामें मैं कोई समयमें बहुत काल तक बासकीन्ह हे विहँगेश गरुड़ कोई समय में दुकाल परयो तब क्लेशपाइकै मैं विदेशको दक्षिण दिशाको जातरह्यों ( ४४ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वन्सने उत्तरकाण्डे कलिकालमहाघोरकर्मबर्णनन्नाम सप्तविंशतिस्तरङ्गः २७॥ :: :: :: :: :: :: ::

**दो०॥ हरिमायाकृतदोषगुणबिनुहरिभजननजाहिं भजियरामसबकामतजि असबिचारिमनमाहिं ४३ त्यहिकलिकाल वर्षबहु बसेउंअवधबिहँगेश परयोदुकालबिपत्तिबश तबमैंगयोंबिदेश ४४॥ * * * * * ***

**चौ०॥ गयउंउजैनसुनहुंउरगारी दीनमलीनदरिद्रदुखारी १ गयेकालकछुसंपतिपाई तहँपुनिकरयोंशम्भुसेवकाई २ विप्रएकवैदिकशिवपूजा करैसदात्यहिकाजनदूजा ३ परमसाधुपरमारथविंदक शम्भुउपासकनहिंहरिनिंदक ४ त्यहिसेवोंमैंकपटसमेता द्विजदयालअतिनीतिनिकेता ५ बाहिजधर्मदेखिम्वहिंसाईं बिप्रपढ़ावैंपुत्रकिनाईं ६ शम्भुमन्त्रम्वहिंद्विजवरदीन्हा शुभ**

दोहा॥ विंशतिआठतरंगमें द्विजगुरुकृपाबखानि॥ रामचरणशिवकोपगुरु कृपासिंधुबरदान २८॥ हे उरगारि त्यहिकलिकालमें मैंउज्जैन नगरको जातभयउँ दरिद्रकरिकै दीन मलीन दुखीरहौं ( १ ) कछुकालगये कोई यत्नते प्रारब्धिके बश कछुसम्पतिको प्राप्तभयउँ तहांमहाकालेश्वर महादेवकी मैं सेवकाईकरौं ( २ ) तिनहीं महादेवकी पूजाकरौंएक ब्राह्मण वैदिक वेदवेत्ता मन क्रम बचनते दूसर कार्य नहींकरै ( ३ ) ब्राह्मण परमसाधु परमारथविषे बिंदककही प्राप्तरहैं अरु शंभुको उपासकरहैं अरु हरिकी निंदानहीं करहिं ( ४ ) अरु तिन ब्राह्मणकी मैं कपटसमेत सेवाकरौंऊपरतेसेवाकराभीतरतेनहीं मानौं अरु ब्राह्मणबड़ेदयालुरहैंअरुनीतिके निकेतरहैं ( ५ ) तहां वे ब्राह्मण मेरोबाहिजकही ऊपरकेशुभकर्म देखहिं अरुभीतर कपटीजानिकै मोको पुत्रकीनाईं पढ़ावहिं काहेते जातेमैं शुद्धह्वैजाउं ( ६ ) तब द्विजबर मोकोशम्भुकरउपदेशकीन अरु बिबिधप्रकार ते मोको उत्तम उपदेश करतभये ( ७ ) तबमैं महादेवके मन्दिरमें शिवकरमंत्र जपौं पर दंभसमेत अरु अहमितकही अहंकार बहुतरहै जाते मोको कोई महानुभावकहै ( ८ ) दोहार्थ॥ ताही दंभते मोरिमति खलह्वैगई अरु मलिन ह्वैगई काहेते मैं नीचजाति अभिमान मोहकेबश ब्राह्मण बैष्णवको देखिकै जरिजाउं अरु विष्णुकर द्रोहकरौं शिवउपासनामेंअभिमानकरौं ( ९ ) सोरठार्थ॥ तहां गुरुमोको नित्य उपदेशकरैं मंदआचरण देखिकै अरु मोको क्रोधउपजै काहेते दंभिनको कहूं नीतिभावतहै ( १० ) तब एकबार गुरुमोको बुलावतेभये मोको बहुतप्रकारते नीति सिखावतभये ( ११ ) यह सिखावतभये कि हे पुत्र शिवकी सेवाकरफलश्रीरामचन्द्रके चरणनविषे अबिरलकही सघनजामें एकश्वासाकर बिक्षेपनपरै

उपदेशबिबिधबिधकीन्हा ७ जपौंमंत्रशिवमन्दिरजाई हृदयदम्भअहमितअधिकाई ८ दो०॥ मैखलमलसंकुलमति नीच जातिबशमोह हरिजनद्विजदेखेजरौंकरौंबिष्णुकरद्रोह ९ सो०॥ गुरुनितमोहिंप्रबोध देखिदेखिआचरणमम म्वहिंउपजैअतिक्रोध दम्भिहिनीतिकिभावई १० चौ०॥ एकबारगुरुलीन्हबोलाईमोहिंनीतिबहुभांतिसिखाई ११ शिवसेवाकरफलसुतसोई अबिरलभक्तिरामपदहोई १२ रामहिंभजहिंतातशिवधाता नरपामरकैकेतिकबाता १३ जासुचरणअजशिवअनुरागी तासुद्रोहसुखचहसिअभागी १४ हरकहँहरिसेवकगुरुकह्यऊ सुनिखगनाथहृदयममदह्यऊ १५ अधमजातिमैंविद्यापाई भयउयथाअहिदूधपियाई १६ मानीकुटिलकुभाग्यकुजातीगुरुकरद्रोहकरौंदिनराती १७ अतिदयालगुरुस्वल्पनक्रोधा पुनिपुनिमोहिंसिखावसुबोधा १८

सो भक्तिहोती है ( १२ ) हेतात श्रीरामचन्द्रको शिव अरु धाताकहे बिधाता इत्यादिक भजतेहैं नरजे पामरहैं पशुज्ञान तिनकी कौनि बातहै ( १३ ) जिन श्रीरामचन्द्रके चरणानुरागी शिव ब्रह्माहैं हे अभागीतिन श्रीरामचन्द्रते बिमुख ह्वैकैतैं आपनभला चाहतहै ( १४ ) हेगरुड़ जब गुरुन हरको हरिकर सेवककहा तब सुनिकै मेराहृदय दहिउठेउ ( १५ ) हेतात मैं अधमजाति अरु विद्यापायउं सो विद्याम्वहिंविषे कैसी ह्वइगई जैसे सर्पको दूधपियाये विष ह्वैजात है जैसे स्वातीकोजल सर्पकेमुखविषे परतसंते बिष बिशेषह्वै जातहै तेसे मोको विद्याभई ( १६ ) हे तातमोकोमान बहुत ह्वैगयो काहेते कि मैं कुटिल कुजाती कुभागी ताते गुरुकरद्रोह रातिदिन करौं ( १७ ) अरु गुरुदयाल जिनके स्वल्पौ क्रोध न होइ कबहूं गुरु तिनको कही पुनिपुनि मोको बारबार सुष्ठुज्ञान उपदेशकरैं ( १८ ) हेतात नीचनकी यहरीतिहै कि ज्यहिकरिकै बड़प्पनपावैं त्यहिको हठकरिकै नशावते हैं मोहीं में देखिलेव ( १९ ) हेभाई धूम अग्नितै उत्पन्नहोतहै सो यज्ञके संयोगकरिकै घनपदवीको प्राप्तहोतहै तब जल बर्षिकै अग्निको बुझाइदेत है ( २० ) हेतात देखिये तौ रज मगविषे निरादर परीरहतहै अरु सबके पदको प्रहारकही चोट सहतहै ( २१ ) सोरज पवनके प्रसंग करिकै नभको उड़तहै अरु ऊंचपदबीको प्राप्तिहोतहै सोरज प्रथमपवनहिंको मलीनकरतहै पुनि राजनकेनेत्रन किरीटनमेंपरत है ( २२ ) हेखगपति ऐसे अनेक प्रसंग समुझिकै बुधकहीपण्डित बिबेकीजेहैं ते अधम अधम अज्ञातिनकै संगति नहीं करतेहैं ( २३ ) हे तात कबि कोबिद

ज्यहितेनीचबड़ाईपावा सोप्रथमहिंहठिताहिनशावा १९ धूमअनलसंभवसुनुभाई त्यहिबुझावघनपदवीपाई २० रजमगपरीनिरादररहई सबकरपदप्रहारनितसहई २१ मरुतउड़ावप्रथमत्यहिभरई पुनिनृपनयनकिरीटनपरई २२ सुनुखगपति अससमुझिप्रसंगा बुधनकरहिंअधमनकरसंगा २३ कबिकोबिदगावहिंअसनीती खलसनकलहनभलसनप्रीती २४ उदासीनबरुरहियगोसाईं खलपरिहरियश्वानकीनाईं २५ मैंखलहृदयपटकुटिलाई गुरुहितकहैंनमोहिंसोहाई २६ दो०॥ एकबारहरमंदिरैजपतरह्यउंशिवनाम गुरुआयेअभिमानते उठिनहिंकीनप्रणाम २७ सोदयालनहिंकह्यउकछु उरनरोषलवलेश अतिअघगुरुअपमानते सहिनहिंसकेमहेश २८ चौ०॥ मन्दिरमांझभईनभबानी रेहतभाग्यअधमअभिमानी २९ यद्यपितवगुरुकेनहिंक्रोधा

यहकहते हैं कि खलनसन न कलहकरी अरु न भलाई प्रीतिकरी किंतु भलेउसों न प्रीतिकरी ( २४ ) हे गोसाईं बरु उदासीनह्वैकै एकान्तमें रहिये अरु खलनकी संगति श्वानकीनाईं त्यागकरी ( २५ ) अरु मैं खल हृदयमें कपट कुटिलाई भरिपूर्णरहो अरु गुरु मोरेहितकैकहैं मोकोनहीं सुहाइ ( २६ ) दोहार्थ॥ हे तातएकबारकही एकसमयविषे

महादेवके मंदिरमें बैठिकै शिवमंत्र जपतरहौं ताहीसमयमें गुरुआये तबमैं अभिमान ते उठिकै प्रणाम नहीं कीन ( २७ ) तहां गुरुदयालहैं कछु नहीं कह्यउ तहां गुरुनकर अपमान अति अघहै ताते महेश न सहिसके ( २८ ) तब मन्दिरमध्यमें महादेवकी बाणीहोतभई कोपसंयुक्त हेरेहतभाग्य अभिमानी ( २९ ) गुरुनकर अपमान तैं किहेहै तातेमैं नहीं सहिसकौं अरुजो हमार अपमान तैं करतिसि तौ सहिजातेउं यद्यपितोरे गुरुन क्रोधनहीं कीन काहेते अतिकृपालुहैं अरु बोधकहीसम्यक्प्रकार अंतष्करणमें ज्ञानहै ( ३० ) हे शठयद्यपि तेरे गुरु नहीं बोले तदपिहम तोको शापदेहिंगेकाहेते नीतिविषे बिरोध हमको नहीं स्वहाइहै ( ३१ ) हेखल जोतोकोयह दण्ड नकरौं तौ श्रुतिकर मार्ग जो हमारहै सो भ्रष्टह्वैजाय ( ३२ ) जे खलकोई मनते बचनते वा कर्म करिकै गुरुनते ईर्षा करहिं ते शतकल्प रौरव नरकविषे प्राप्तहोहिं ( ३३ ) पुनि जब कोई कालमें नरकते निकसैं तबत्रिजग योनिको प्राप्तहोते हैं त्रिजगयोनि कही देव दानव मनुष्य छोड़िकै अपरकी त्रिजग संज्ञाहै अयुत कही दशहजार जन्मताईं पीड़ाको प्राप्तहोते हैं ( ३४ ) ताते तेरे गुरुआये अरुतैं उठेसि नहीं अजगर सर्पइव बैठ

अतिकृपालुचितसम्यकबोधा ३० तदपिशापशठदेहौंतोहीं नीतिबिरोधसोहाइनमोहीं ३१ जोनहिंदण्डकरौंखलतोरा भ्रष्टहोइश्रुतिमारगमोरा ३२ जेशठगुरुसनईर्षाकरईं रौरवनरककल्पशतपरईं ३३ त्रिगजगयोनिपुरधरहिंशरीरा अयुतजन्मभरिपावहिंपीरा ३४ बैठरह्यसिअजगरइवपापी सर्पहोसिखलमलअतिब्यापी ३५ महाबिटपषोडरमहँजाई रहअधमाधमअधगतिपाई ३६ दो०॥ कीन्हेहाहाकारगुरु दारुणसुनिशिवशाप कम्पितमोहिंबिलोकिअति उरउपजापरिताप ३७ करिदंडवतप्रेमहिय शिवसन्मुखकरजोरि विनयकरतगद्गदगिरा समुझिघोरगतिमोरि ३८ भुजंगप्रयातछंद॥ नमामीशमीशाननिर्बाणरूपं बिभुंब्यापकंब्रह्मवेदस्स्वरूपं ३९ अजंनिर्गुणंनिर्ब्बिकल्पंनिरीहं चिदाकाशमाकाशबासंभजेहं ४० निराकारमोंकारमूलंतुरीयं गिराज्ञानगोतीतमीशं

रह्यसि ताते हेखल तैं सर्पयोनि विषे प्राप्त होसि ( ३५ ) महाबिटप जोकोई होइ त्यहिके खोड़र में सर्पयोनि ह्वैकै रहुजाइ हे अधमहुँ ते अधम अधोगति को प्राप्तहोसि जाइ अधोगति कही नीचगति शिरनीचे पूँछ ऊपर ( ३६ ) दोहार्थ॥ तब महादेव के महाघोर शापहमारे सुनिकै कांपि उठे हाहाकार कीन्ह तब मोको कंपित देखिकै गुरुनके हृदयमें सन्तापहोत भयो ( ३७ ) तब शिवकै दण्डवत् करिकै सन्मुख ह्वैकै दूनों करजोरिकै गद्गदवाणीते शिवकी विनयकरतभये मोरिघोरिगति समुझिकै ( ३८ ) छन्दार्थ॥ हे गरुड़ हमारेगुरु शिवकी स्तुति करतभये हैं ईशान कोण के ईश निर्बाण कही मोक्षस्वरूपहौ मैं नमस्कार करतहौं पुनि कैसेहौ बिभुकही सामर्थ हौ अरु सर्व व्यापकहौ पुनि वेदतत्व ब्रह्मस्वरूपहीहौ ( ३९ ) निजकही स्वतन्त्रहौ पुनि निर्गुणहौ निर्विकल्प कही मन बाणीकी कल्पनाते रहितहौ पुनि निरीह कही चेष्टा रहितहौ बाल जुवा वृद्ध श्वेत पीत इत्यादिक रंग लघु दीर्घ इत्यादिक ते रहितहौ पुनि चित्स्वरूपहौ नित्यचैतन्य ब्रह्महौ आकाशवत्हौ पुनि आकाशबासी कही अन्तरिक्षबासीहौ तंअहंभजे ( ४० ) पुनः निराकारहौ प्रकृतिके आकारते रहितहौ परमदिव्य आकारहै तुम्हारा पुनि ॐकारके मूलहौ पुनितुरीय अवस्थारूपहौपुनि गिराजोहै बाणी अरुज्ञान अरु गोकही इंद्री इनते अतीतकही परेहौ हेईश हेगिरीशअहंभजे ( ४१ ) अरु हे महेश तुम करालहौ किंतु करालमहाकाल ताहूके करालकालहौ अरु गुणागारकही गुणनके स्थानहौ किंतु तीनिगुणकर आगार संसार जोस्थान है त्यहिके तुमपरेहो किंतु त्रैगुण्यमयजो संसार त्यहिके जीवजेहैं ते तुम्हार पारनहीं पावत हैं ते तुभ्यं नतकही नमस्कार करतहौं किंतु नतकही शरणहौं ( ४२ ) पुनि कैसेहौ तुषाराद्रि कही हिमाचलपर्बत तद्वत् गौरगंभीरहौ पुनि मनोभूत जो कामहै सो कोटिन कामकीप्रभा तुम्हारे शरीरमें हैं ( ४३ ) अरु तुम्हारे मौलिकही शीशजटाविषे

**गिरीशं ४१ करालंमहाकालकालंकृपालं गुणागारसंसारपारंनतोहं ४२ तुषाराद्रिसंकाशगौरंगँभीरं मनोभूतकोटिप्रभासीशरीरं ४३ स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगंगा लसद्भालबालेन्दुकंठेभुजंगा ४४ चलत्कुंडलंशुभ्रनेत्रंबिशालं प्रसन्नाननंनीलकंठंदयालं ४५ मृगाधीशचर्म्माम्बरंमुंडमालं शिवंशंकरंसर्बनाथंभजामि ४६ प्रचंडंप्रकृष्टंप्रगल्भंपरेशं अखडंअजंभानुकोटिप्रकाशं ४७**

स्फुरितकही दीप्तिमान चारुकही सुन्दर श्रीगंगाजी कल्लोलकरतीहैं अरु भालविषे इंदुकही बाल चन्द्रमा शोभितहै अरु कंठविषे भुजंग शोभित हैं ( ४४ ) अरु चलत्कही चंचलकुण्डल हैं सर्पके बच्चनकेश्रवणविषे अरु सुष्ठु भृकुटी हैं अरु बिशालनेत्र हैं अरु सदाप्रसन्न आननकही मुख है अरु आपु नीलकण्ठहौ अरु सर्बथा दयालहौ ( ४५ ) अरुमृगनको अधीशकही राजा सिंह त्यहिकर चर्म बरकही श्रेष्ठ त्यहिके अंबरकही बस्त्र धारणकिहेहौ अरु नरके मुण्डनके माला पहिरेहौ अरु हे शंकर तुमसबके प्रियहौ अरु सर्बके नाथहौ ते अहंभजामि ( ४६ ) पुनि कैसेहौ प्रचण्डहौ प्रकृष्टकही उत्कृष्ट उत्तमहौ गरिष्टहौ गंभीरहौ किन्तु संपूर्ण क्लिष्टकही क्लेशतेपरेहौ पुनि प्रगल्भकही सबके अंतष्करणकी जानतेहौ अरु तुम्हारीजाति कोई नहींजानै है अरु अथाह गम्भीरहौ किन्तु प्रगल्भकही अजन्माहौ जन्म ते रहितहौ स्वतन्त्रहौ अरु सबकेपरे ईशहौ अरु अखण्डहौ अजहौ अरु कोटिभानुसम तनको प्रकाशहै ( ४७ ) अरुत्रिधाशूलकही तीनिताप अधिभूत अध्यात्म अधिदैवत त्यहिके निर्मूल करिबेको तुम त्रिशूललिहेहौ हाथविषेते हे भवानीपति तुमभाव करिकै गम्यकही प्राप्तिहौ तंअहंभजे ( ४८ ) क अरु कलातीत कही षोडशौ कलातेपरेहौ किंतु कलाकही मायाकेपरेहौ अरु सर्बकल्याणके कर्त्ताहौ अरुकल्पके अंतकर्त्ता तुमहींहौ अरु सदा सज्जन जोहैं तिनके आनन्ददाता हौ ( ४९ ) अरु सच्चित् आनन्द त्यहिके संदोहकही समूह समुद्रहहु मोहके अपहारीकही हरैयाहहु हे मन्मथारि हे प्रभो प्रसीदकही यहि पर रक्षाकरहु बारम्बार मोपर प्रसन्नहोहु ( ५० ) हे उमानाथ जबताईं तुम्हार चरणारबिंद नहींभजैं तेनर यहिलोक में सदापरे हैं बाकही बिकल्पे नरक चौरासी मृत्युलोकमें परेहैं ( ५१ ) जबताईं तुम्हार चरणनहीं भजैंतावत्कही तबताईं सुखकहूं नहींहै अरु न शांतिहै अरु न संतापको नाशहै

**त्रिधाशूलनिर्मूलनंशूलपाणी भजेहंभावानीपतिंभावगम्यं ४८ कलातीतकल्याणकल्पांतकारी सदासज्जनानन्ददातापुरारी ४९ चिदानंदसंदोहमोहापहारी प्रसीदप्रसीदप्रभोमन्मथारी ५० नयावदुमानाथपादारबिंदं भजन्तीहलोकेपरेबानराणां ५१ नतावत्सुखंशांतिसंतापनासं प्रसीदप्रभोसर्वभूताधिबासं ५२ नजानामियोगंजपंनैवपूजा नतोहंसदासर्बदाशंभुतुभ्यं ५३ जराजन्मदुःखौघतातप्यमानं प्रभोपाहिआपन्नमामीशशंभो ५४ रुद्राष्टकमिदंप्रोक्तंविप्रेणहरतुष्टये येपठंतिनराभक्त्यातेषांशंभुप्रसीदति ५५ दो०॥ सुनिबिनतीसर्बज्ञशिव देखिबिप्रअनुराग पुनिमंदिरनभबाणी भइद्विजबरबरमाँगु ५६ जोप्रसन्नप्रभुमोहिंपर जानिदीनपर**

हे प्रभो तुम सर्बभूतके अधिपतिहौ अरु तिनबिषे बसेहौ प्रसन्नहोहु ( ५२ ) हे शंभु मैं योगनहीं जानौं अरु मैं जपनहींजानौं अरु पूजानहीं जानौं हे शंभु नतोहंकही तुम्हारी शरणहौं सदासर्बदा नमस्कार करतहौं ( ५३ ) हे शंभु जराकही वृद्ध पुनि मरण पुनि जन्मशोक दुखकर ओघ कही समूहहै त्यहि करिकैमैं तप्तमानहौं हे प्रभु आपन्नकही शरणहौंपाहि पाहि करिकै नमस्कार करतहौं ( ५४ ) यह रुद्राष्टक है बिप्रकरिकैकथित त्यहि करिकै महादेवको परितोषभयो त्यहिको जोकोई नर भक्तिसंयुक्त पाठकरै त्यहिपर शिव प्रसन्नहोतेहैं ( ५५ ) दोहार्थ॥ पुनिबिप्रकै बिनती सुनिकै शिवसर्बज्ञ बिप्रको अनुराग देखिकै प्रसन्नभये अरु बोले कि हेबिप्र बरमांगु ( ५६ ) हेप्रभु जोमोपर प्रसन्नहोहु आपन दीनजन जानिकै नेहकरत होहुतौ आपने चरणारबिन्दविषे अचल प्रीति भक्तिदेहु पुनि दूसर बरदेहु ( ५७ ) हे प्रभु तुम्हारी मायाके बश सबै जीव निरन्तर भूलिरहे हैं तिनजीवन

पर क्रोधनकरहु काहेते कितुम कृपालुहौ दीनदयालहौ भगवानहौ ( ५८ ) हेश्रीशङ्कर दीनदयालअब यहिदीनपर कृपाकरहुहे नाथशाप अनुग्रहकरहु जाते थोरेकालमें यहिकर कल्याण होइ ( ५९ ) जामें यहिकर परमकल्याण कही श्रीरामभक्ति होइ हे कृपानिधान सोई करहु ( ६० ) हे भरद्वाज बिप्रकै बाणीपरमहित सानी सुनिकै महादेव कृपाल बाणीबोलतभये हे बिप्र एवमस्तु हम दूनोंबरदीन ( ६१ ) यद्यपिमैं दारुण पाप कीन है तबमैं क्रोधकरिकै शापदीनहै ( ६२ ) तदपि तुम्हारी साधुता दीनता देखिकै यहिपर कृपामैंबिशेषि करब ( ६३ ) हे द्विज जे पुरुष क्षमा

नेहु निजपदभक्तिदेइप्रभु पुनिदूसरबरदेहु ५७ तबमायाबशजीवजड़संततफिरैंभुलान त्यहिपरक्रोधनकरियप्रभुकृपासिंधुभगवान ५८ शंकरदीनदयालअब यहिपरहोहुकृपाल शापअनुग्रहहोइज्यहि नाथथोरहीकाल ५९ चौ०॥ यहिकरहोइपरमकल्याना सोइकरहुअबकृपानिधाना ६० बिप्रगिरासुनिपरहितसानीएवमस्तुइतिभैनभबानी ६१ यदपिकीनयहिंदारुणपापा मैंपुनिदीनक्रोधकरिशापा ६२ तदपितुम्हारिसाधुतादेखी करिहौंयहिपरकृपाबिशेखी ६३ क्षमाशीलजेपरउपकारी तेद्विजप्रियम्वहिं यथाखरारी ६४ मोरशापद्विजवृथानहोइहि जन्मसहस्त्रअवशियहपाइहि ६५ जन्मतमरतदुसहदुखहोई यहिस्वल्पौनहिंब्यापीसोई ६६ कवन्यहुंजन्ममिटिहिनहिंज्ञाना सुनहुशूद्रममबचनप्रमाना ६७ रघुपतिपुरीजन्मतवभयऊ पुनित्यइँ ममसेवामनदयऊ ६८ पुरीप्रभावअनुग्रहमेरे रामभक्तिउपजिहिहियतेरे ६९ सुनुममबचनसत्यअबभाई हरितोषनब्रतद्विजसेवकाई ७० अबजनि

शील परउपकारमें निरंतरहहिं ते मोको बहुत प्रियहैं जैसे खरारिप्रिय हैं ( ६४ ) हे द्विज मोर शाप वृथा नहीं है तहां हजारजन्म यह अवशिकै पाइहि ( ६५ ) पर जन्मत मरत दुसहदुख होतहै अरुसो दुख यहिको स्वल्पौ न होइहि ( ६६ ) अरु जै जन्म तैं धरिहै तहां तहां तोर ज्ञान बनारहि है हे शूद्र मोरे बचनका यह प्रमाण मान्यसु ( ६७ ) पुनि सुनु रघुपतिकै पुरी श्रीअयोध्या तहां तोर जन्म भयउ है पुनि तुममेरी सेवा विषे मनदीन है ( ६८ ) श्रीअयोध्या पुरीके प्रभावते अरु मेरी अनुग्रह ते श्रीरामचन्द्रकै भक्ति तोरे हृदयमें उत्पन्न होइहि ( ६९ ) अब मोर बचन तू सत्यसुनु भावते हरिके तोषकर ब्रत ब्राह्मणकी सेवकाईहै ( ७० ) अबतैं बिप्रकर अपमान कबहूं न करयसु अरु हरिकेदासन को हरि जो अनन्त हैं तिनके समान मान्यहु ( ७१ ) इन्द्रको कुलिशअरु मोर बिशाल त्रिशूल अरु कालकर दण्ड अरु हरिकर महाकराल चक्र ( ७२ ) जहां छूटहिं तहां कोई नहीं बचै है बरु हरि इच्छाते बचिउजाइ पर बिप्रकर द्रोह महापावक है तामें भस्म होइ जाइ नहीं बचै काहेते बिप्रके द्रोहमें हरि अधिक कोपमान होतहैं ( ७३ ) अरु बिबेकहृदय में राखहु तुमको जगमें कछु दुर्लभ न होइहि ( ७४ ) एक आशिष मैं औरदेतहौं अप्रतिहतगति कही गमन जहांचाहसि तहांतैं जासिजलपवन पर्वत आकाश अग्नि इत्यादिक जहां चाहसि तहां जासितोरी गति को कोईरोंकि न सकै ताको अप्रतिहत गतिकही ( ७५ ) दोहार्थ॥ तबहेतात शिवके बचन सुनिकै एवमस्तु कहिकै अरु मोहिं प्रबोधिकै गुरु

करयसुबिप्रअपमाना जानिसुसंतअनंतसमाना ७१ इंद्रकुलिशममशूलबिशाला कालदंडहरिचक्रकराला ७२ जोइनकरमारानहिंमरई बिप्रद्रोहपावकसोजरई ७३ असबिवेकराख्यहुमनमाहीं तुकहँजगदुर्लभकछुनाहीं ७४ औरौएकआशिषामोरी अप्रतिहतगतिहोइहितोरी ७५ दो०॥ सुनिशिवबचनहर्षिगुरु एवमस्तुइतिभाखि मोहिंप्रबोधिगयउगृह शंभुचरणउरराखि ७६॥ * * *

चौ०॥ त्रिजगदेवनरजोतनुधरयऊं तहँतहँरामभजनअनुसरयऊं १ एकशूलम्वहिंबिसरनकाऊ गुरुकेकेवलशीलसुभाऊ २ चर्मदेहद्विजकैमैंपाई सुरदुर्लभपुराणश्रुतिगाई ३ खेलौंतहाँबालकनमीला करौंसकलरघुनायकलीला ४ प्रौढ़भयेम्वहिपितिपढ़ावा

अपने गृहको शंभु चरण उरराखिकै जात भये ( ७६ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वन्सने उत्तरकांडेशिवशापानुग्रहगुरुकृपा बर्णनन्नाम अष्टबिंशतिस्तरंगः २८॥ :: :: :: :: :: :: :: :: :: :: ::

दोहा॥ नवअरुबीसतरंगमें द्विजतनलहिबैराग॥ रामचरणसतसंगकरि मुनिगणसमतबिभाग २९॥ हे तात त्रिजग देवमनुष्यइत्यादिक जोई तनुधरौं तहां तहां श्रीरामचन्द्रके भक्तिके अनुसार सब प्रकारते भजन करौं ( १ ) हे तात एकशूल कही दुःख जो मोते चूक परी है गुरुन विषे अरु गुरुकरिकै बल शील सुभाउ यह दूनौं नहीं बिसरैं हैं ( २ ) पुनि चर्मकही अन्त विषे ब्राह्मणकै देह पावत भयों कैसी ब्राह्मणकी देह है ज्यहिको उत्तम करिकै वेद पुराण गावते हैं ( ३ ) तहां बाल अवस्थाविषे बालकनके संगमें खेलौं तहां खेलमें श्रीरामचन्द्रकै लीलाकरौं ( ४ ) जब मैं प्रौढ़कही सयान भयों तब पितामोको पढ़ावने लगे तब सुनौं समुझौं गुनौं श्रवण मनन निदध्यासन करौं पर मोरे मनमें नभावै ( ५ ) हे तात मनते सम्पूर्ण बासना भागिगई केवल श्रीरामचंद्र के चरण विषेलयलागिरही श्लोक एक॥ पूजाकोटिसमन्स्तोत्रंस्तोत्रकोटिसमंजपः॥ जपकोटिसमंध्यानंध्यानकोटिसमोलयः १ ( ६ ) हे खगेश श्रीरामचन्द्रकैभक्तिछोड़िकै पढ़ब गुनब अपर करतब्य सब कैसेहैं जैसेकोई कामधेनु छोड़िकैगदहीकै सेवन करैंतातेऐसो कवन अभागी है जो श्रीरामचन्द्र को छोड़िकै औरकहै सुनै करै ( ७ ) तब मैं श्रीरामचंद्र के प्रेम विषेमग्नरहौंमोको कछु सोहाइ नहीं पिता पढ़ाइ पढ़ाइ हारिगये हैं ( ८ ) हेतात जब मातापिता कालबश भये तब जनत्राता जो श्रीरामचन्द्र हैं तिनके भजन हेतु

समुझौंसुनौंगुनौंनहिंभावा ५ मनतेसकलबासनाभागी केवलरामचरणलयलागी ६ कहुखगेशअसकौनअभागी खरीसेवैसुरधेनुहित्यागी ७ प्रेममगनम्वहिंकछुनस्वहाई हारेउपितापढ़ाइपढ़ाई ८ भयेकालबशजबपितुमाता मैंबनगयोंभजनजनत्राता ९ जहँतहँबिपिनमुनीश्वरपावौं आश्रमजाइजाइशिरनावौं १० बूझौंतिनहिंरामगुणगाहा कहहिंसुनौहर्षितखगनाहा ११ सुनतफिरौंहरिगुणअनुबादा अब्याहतगतिशंभुप्रसादा १२ छूटीत्रिबिधिईक्षणागाढ़ी एकलालसाउरअतिबाढ़ी १३ रामचरणबारिजजबदेखौं तबनिजजन्मसुफलकरिलेखौं १४ ज्यहिपूंछौंसोमुनिअसकहई ईश्वरसर्बभूतमयअहई १५ निर्गुणमतनहिंमोहिंसुहाई सगुणब्रह्मरतिउरअधिकाई १६

मैं बनको गयउं ( ९ ) जहां तहां बिपिन विषे मुनीश्वरनको पावों तहां तहां आश्रमनमें जाइजाइकै नमस्कार करौं ( १० ) तिन मुनिनते श्रीरामचन्द्र कर गुणगाह पूँछौं ते अनुराग समेत कहैं अरु मैं हर्ष संयुक्तसुनौं ( ११ ) हरिकर गुणानुबाद मुनिन के मुखते सुनत फिरौं काहेते मोरि अब्याहत गति रहै अब्याहत गतिकही अब्यय अबिनाशी अरुब्याके आगे जो अकार है त्यहिकरिकै शम्भु के प्रसादते मोरि अहतगति रहै मेरी गतिको कोई हतनहीं करिसकै है जहां चहूँ तहां जाऊँ कोऊमेरीगति को रोंकि न सकै ( १२ ) हे तात तीनि प्रकार की ईक्षणागाढ़ी तौनि छूटि गई ईक्षणा कही सुत बित अरु लोक मर्यादपै गाढ़ी जो ईक्षणासोछूटिगई एक लालसा अतिशय करिकै उरमें बाढ़त भई ( १३ ) कवनि लालसा बाढ़ी श्रीरामचन्द्र कर चरण पंकज देखौं तब निज जन्म सुफलकरिलेखौं ( १४ ) ज्यहि मुनिको पूँछों सो मुनि ऐसे कहहिं कि ईश्वर सर्ब भूतमय है ( १५ ) तब मुनि जो निर्गुणमत रोपणकरैं सो मोरे हृदय में नहीं भावै काहेते सगुण ब्रह्म जो अति सुन्दर तिनविषे मेरेहृदय में अति प्रीति अधिकाइरही है काहेते निर्गुणको अच्छी तरह जानै उपरान्त जो सतगुरु कृपाकरहिं अरु श्री रामचन्द्र कृपाकरहिं तब सगुण ब्रह्म विषे प्रीतिहोइ ( १६ ) दोहार्थ ॥ हेतात गुरुके बचन सुरतिकरिकैश्रीरामचन्द्रके चरणारविंद विषे

अति प्रीति लगी है अरु रघुपतिकर यश गावत फिरौं क्षण क्षण अति अनुराग संयुक्त ( १७ ) पुनि आगे सुमेरुके शृंगपर बटकी छाया तहां लोमस मुनि को स्थान रहै फिरत फिरत तहां जातभयउँ मुनिको देखिकै चरण गहत भयों अरु दीन बचन कहतभयों ( १८ ) तब मोर बचन अति बिनीत कही दीन प्रवीण आरतयुक्त

दो०॥ गुरुकेबचनसुरतिकरि रामचरणमनलाग रघुपतियशगावतफिरौं क्षणक्षणनवअनुराग १७ मेरुशिखरबटछाया मुनिलोमसआसीनदेखि-चरणशिरनायउँबचनकहेउँअतिदीन १८ सुनिममबचनबिनीतमृदु मुनिकृपालुखगराज म्वहिंसादरपूंछतभयेद्विजआयेक्यहिकाज १९ तबमैंकहाकृपानिधि तुमसर्बज्ञसुजान सगुणब्रह्मआराधना मोहिंकहहुभगवान २० चौ०॥ तबमुनीशरघुपतिगुणगाथा कहेउकछुकसादरखगनाथा २१ ब्रह्मज्ञानरतमुनिबिज्ञानी मोहिंपरमअधिकारीजानी २२

मुनिसुनिकै बड़ेकृपाल मोको आदरते बूझतभये हेद्विज केहिकार्यको तुमयहां आयहु सो कहहु ( १९ ) तबमैं कहा कि हेकृपानिधि तुमसर्वज्ञहौ सुजानहौ सगुणब्रह्मको आराधन मोसे कहहु हेभगवन् किंतु सगुणब्रह्मजोभगवान् हैं तिनको आराधन मोसे कहहु तहां जो मुनिको भगवान्कहा तहां भगवान्कही षड्भागयुक्त ऐश्वर्यधर्म यश श्री बैराग्य मोक्षतहां यहिषड्विषे जामें एकदुइ तीनि इत्यादिकहोइं तिनकी भगवान् संज्ञा है ताते मुनिको भगवान्कहा ( २० ) तब मुनीश श्री रघुनाथजीके गुणगाथ कछुसादरते कहेहु ( २१ ) हे गरुड़ मुनि ब्रह्मज्ञान में रत हैं अरु मोकोपरम अधिकारी जाना काहेते मुनि यहसमझा कि सगुणब्रह्ममें यहिकै बड़ीप्रीति है अरु संसार में बिरक्त है अरु वेद गुरुबाक्य में प्रतीतिहै तातेमोको परम अधिकारी जाना तब मुनीशआपन सिद्धांतसुख कहनेलगे परम अधिकारी के लक्षण उत्तरकांडके अंतमेंकहा है यहदोहामें॥ कामिहिनारिपियारिजिमि लोभिहि प्रियजिमिदाम ( २२ ) हे गरुड़ तबमोको मुनि ब्रह्मउपदेश करनेलगे हेद्विज ब्रह्मअज हैं अद्वैत हैं अरु निर्गुण हैं अरु हृदयकही सब चराचरके हृदय के ईश हैं अरु अंतर्यामी हैं सबके प्रेरक हैं ( २३ ) अकलकही कलारहित हैं अरु अनामकही नामरहित हैं अनीहकही चेष्टारहित अरु एकही रूपरहित हैं ऐसो ब्रह्म अनुभवगम्य कही अनुभव करिकैप्राप्त हैं अरु अखण्ड हैं अनूप हैं ( २४ ) मनते इन्द्रिनते अतीतकही परे हैं अमलहैं अबिनाशी हैं निर्विकारकही षड्बिकार जन्म वृद्धि विवर्ण क्षीण जरामरण षड्बिकार रहित हैं अरु निरवधिकही जाकी मर्याद नहीं है कि कहांते है अरु कहांताई है कसहै असुखकी राशि है ( २५ ) सोतैं जवन सगुणब्रह्म पूछत है अरु ताहिकही जेहिब्रह्मको भयकरतहै सो तोहिं कही तोको भेद करबेयोग्य नहीं है मोरेतोरे कहेविषे कछुभेद नहीं है कैसे जैसे बारिवीच एकही तत्व है यहभेद कहते हैं मैं जल कहत हौं तैं तरंग कहतहै जेहिब्रह्मको मैं बर्णन करिगयों हैं सोई ब्रह्म आपने भक्तनके निमित्त आपने रूपको धारण करते हैं पुनिभक्तनको कार्यकरिकै फिरि सोई

लागेकरनब्रह्मउपदेशा अजअद्वैतअगुणहृदयेशा २३ अकलअनीहअनामअरूपा अनुभवगम्यअखण्डअनूपा २४ मनगोतीतअमलअबिनाशी निर्विकारनिरवधिसुखराशी २५ सोतैंताहितोहिंनहिंभेदा बारिबीचइमिगावहिंवेदा २६ बिबिधभांतिमोहिंमुनिसमुझावा निर्गुणमतममहृदयनआवा २७ पुनिमैं कहेउंनाइपदशीशा सगुणउपासनकहौमुनीशा २८ रामभक्तिजलममनमीना

ब्रह्मको ब्रह्म है जैसे जलमें पवन की उपाधिते तरंग उठती हैं पवनबंदभयेजलकोजल है तैसे जो ब्राह्मणगऊ देव संतजन तिनकी उपाधिकही रक्षा हेतु करिकै निर्गुणते सगुणहोत है पुनिदूसर अर्थ करते हैं सो तैंताहि जेहिब्रह्मकोमैं कहतहौं सोतैंहीं हसितेहिते अरु तोसे भेदनहीं है तैं आपने अंतष्करणमें बिचारो तौ अंतष्करणमें उहैब्रह्म है अभिप्राय यह कि जीवब्रह्म एकही है जैसे उपाधिते जलमें तरंग है उपाधिमिटे केवलजल है तैसेबासना उपाधिते जीवकही बासनाध्वंस ते केवलब्रह्म है हेतात मोसेमुनि असकहा ( २६ ) हेगरुड़ बिबिध भांतिते मोकोमुनि समुझावतेभये परनिर्गुणमत मेरेहृदयविषे नहीं सिद्धांतभयो ( २७ ) पुनि मैं पदमें शीशनाइके कहेउं किहेमुनीशमैं

सगुणब्रह्मको उपासकहौं सोमोसन कहहु ( २८ ) हे मुनीश प्रवीण श्रीरामचन्द्रकै भक्तिजल है अरु मोर मनमीनहैसोकैसे बिलगाइसकै यहि चौपाई में यह अभिप्राय है कि मुनीशकर कहा सूखी भूमि है जैसे जलते निकारिकै मीनको सूखे में डारिदेइ तैसे हेमुनिमोको भक्ति से छुड़ाइके ज्ञान में डारते हौ यहसमुझिकै मुनिकर कहामोरे मनमें न भायो ( २९ ) हे मुनीश सो उपदेशकरो दयाकरिकै जाते इननयननते श्रीरघुनाथजीको देखौं दरशहोइ ( ३० ) हे मुनिनेत्रन भरिकै अवधेशको बिलोकिलेउं उपरांत निर्गुणको उपदेश सुनौंगो ( ३१ ) हे गरुड़ पुनिहरिकै कथाअनूपसोमुनिकहतभये पर सगुणमतको खंडनकरिकैनिर्गुण मत सिद्धांत उपदेशकरहिं ( ३२ ) तब मैं निर्गुण अद्वैत मतको श्रुतिस्मृतिप्रमाणकरिकै दूरिकिहेउँ यह करिकै कि हे मुनीश यह जो तुम ब्रह्मउपदेश सिद्धांतकीन्ह है सोतो आपनो स्वस्वरूप है जबतेहि ब्रह्मको ज्ञानहोइ तबपरब्रह्म जो श्रीरामचन्द्र स्वरूपमान तबताहिकी पराभक्ति को अधिकारी होइ यह सर्ब वेदशास्त्र को सिद्धांतसार है श्रीमद्भगवद्गीतायां श्लोक ॥ ब्रह्मभूतःप्रसन्नात्मानशोचतिनकांक्षति ॥ समःसर्वेषुभूतेषुमद्भक्तिंलभतेपरां॥

किमिबिलगाइमुनीशप्रबीना २९ सोउपदेशकरहुकरिदायानिजनयननदेखौंरघुराया ३० भरिलोचनबिलोकिअवधेशा तबसुनिहौंनिर्गुणउपदेशा ३१ सुनिमुनिकहिहरिकथाअनूपा खंडिसगुणमतनिगुणनिरूपा ३२ तबमैंनिर्गुणमतकरिदूरी सगुणनिरूपौंकरिहठभूरी ३३ उत्तरप्रतिउत्तरमैंकीन्हा मुनितनभयेक्रोधकेचीन्हा ३४ सुनुप्रभुबहुतअवज्ञाकीये उपजैक्रोधज्ञानकेहीये ३५ अतिसंघर्षणजोकरैकोई अनलप्रकटचन्दनतेहोई ३६ दो०॥ बारंबारसकोपमुनि करैनिरूपमज्ञान मैंअपनेमनबैठितब करौंबिबिधअनुमान ३७

पुनिसगुणब्रह्मविशिष्टाद्वैतमत सेवकसेव्यभाव तेहिकरनिरूपण सिद्धान्तकरतभयो हठकरिकै ( ३३ ) तब उत्तरप्रति उत्तर मैं किहेजाउँ तबमुनि के मनमें क्रोधकेचिह्न परतभये नेत्रअरुणह्वैआये हैं अरु शरीर में ललामीछाइरही है अधर फरकनेलगे ( ३४ ) हेप्रभु बहुत अवज्ञाकियेते ज्ञानी के हृदय में क्रोधउपजत है ( ३५ ) काहेते अतिशय संघर्षण जो कोऊकरै तौचंदनहुंविषे अग्नि उत्पन्नहोइ है यहिदृष्टान्त में ध्वनि है कि चंदन लकड़ी की जातिबनाहै जैसेकोई मनुष्यनमें राजाहै सो सबमनुष्यनते श्रेष्ठहै पर जैसे सबमनुष्यन को भावहै क्षुधा तृषा शीत उष्ण सुख दुख हानि लाभ हर्ष शोक जन्म मरण इत्यादिक तैसे राजहुमें है राजाविषे विषयभोग अधिकहै तैसे सबलकरिनविषे चन्दनराजा स्थाने है शीतल सुगन्ध ऐश्वर्य है जहां अति संघर्षणकहा है तहां अतिसंघर्षणको अभिप्राय है अब लकरिनके सहज संघर्षणते अग्नि उत्पन्नहोती है अरु चन्दनमें अति संघर्षण कहा है तहां चन्दन आपनी शीतलता सुगन्धता करिकै अग्निको मन्दकरि दियो है तामें अतिसूक्ष्म अग्निव्याप्त है ताते अतिसंर्घणते प्रकटत है तैसे सर्बजीवन में ज्ञानी श्रेष्ठ है आपने बैराग्य बिबेक ज्ञानकरिकै लोभ कामक्रोध मद इत्यादिक मंदकरिदियो है पर अतिसूक्ष्मबने हैं जब अतिविषय ऋद्धीप्राप्तिभई तबलोभ लागिआवत है अरु जो भगवत् की प्रेमीमाया जैसे नारदकोभईहै अरु जैसे अप्सराको देखिकै बिश्वामित्रकोभई तैसे संयोगप्राप्तभयेते ज्ञानिहुको कामजागत है अरु जबकोई बिधिते बहुबाद प्राप्तभयो तबक्रोध उत्पन्न होत है काहेते यह जीवकोधर्म है परज्ञानीजे हैं तिनके जो तीनिउँ में कोई उत्पन्नभये तौ ज्ञान को बाधकनहीं है ज्ञानी शुद्ध जीव हैं पर कारणपाइकै होत हैं ताते यह जीव ईशनहींहोत हैं ( ३६ ) दोहार्थ ॥ तब हेगरुड़ सकोपह्वैकै बारम्बार मुनि ब्रह्मनिरूपण करते हैं तबमैं आपनेमन में बिचारेउँ कि अबमुनि कोपमेंहैं मोको उत्तरदेना उचितनहीं है तब मैं मौनह्वैकै आपने मनमें बिचार करनेलगेउँ है कि जो मुनिकहते हैं सोकैसीबात है ( ३७ ) हे तात बिना द्वैतकबुद्धि कबहूं काम क्रोधहोत है अरु बिना

क्रोधकिद्वैतकबुद्धिबिनुद्वैतकबिनुअज्ञान मायाबशपरिछिन्नजड़ जीवकिईशसमान ३८ चौ०॥ कबहुंकिदुखसबकरहितकाके त्यहिकिदरिद्रपरसमणिजाके ३९ परद्रोहीकिहोइनिःशंका कामीपुनिकिरहहिनिकलंका ४० बंशकिरहद्विज

अज्ञान द्वैतनहींहोत है सो मायासम्बन्ध अज्ञानमें द्वैत है मैंअस तैंअसऐसेद्वैतते क्रोध होत है अरु द्वैतकहांतेहोतहै अज्ञानसे तामसगुणयुक्त है ताते बिनाअज्ञान द्वैतनहीं है अरु बिनाद्वैत क्रोधनहीं होत है ताते जोलोमसकेसम बिज्ञान चिरंजीवहोइ तौ जीवकेविषे अज्ञान कारण सूक्ष्मरहैहै ताते कालपाइकै जागिआवैहै आपनेबलते ताते मायाकेबश जीव परिछिन्नह्वैरहाहै परिछिन्नकही मायाकेबश दीनह्वैरहाहै छिन्नह्वैरहाहै सो जीवईशकैसेहोइ जो मुनिकहा कि सोतैं ताहितोहिं न भेदा सो यह नहीं कहतबन्यो पुनि दूसरार्थ क्रोधकिद्वैतकबुद्धिबिनु इहांकेपदजो हैं सो क्रियाविषे होत है ताते क्रोध जो कीन है सो द्वैतबुद्धिबिना सेवक सेव्यभावबिना ज्ञान सो अज्ञान है ताते जीवजीवै है ईशईशै है यहजीव ईशनहींहोत है देखिये तौ लोमसऐसेज्ञानी तिनकेक्रोधहोतभयो जोजीव ईशहोइ तौ क्रोध नहीं संभवै है जोकोई कहै कि लोमस शिक्षाभागविषे क्रोधकीन है तहां अज्ञानी शिष्यविषे क्रोधकीन है तहां अज्ञानी शिष्यविषे क्रोधकरिकै शिक्षा सम्भवत है अरु ब्राह्मण तौ ज्ञानवान है अरु मतबादी है ताते जीव ईशनहीं होत है ताते कितनौ ज्ञानवानहोइ मायाकोकारण सूक्ष्म बनारहत है ( ३८ ) हे गरुड़ मैं यह बिचार करत भयों जो सर्व जीवन को हितकार ताकै तौ ताको कबहूं दुःखनहोइ अरु जाकेपारसहोइ ताको दरिद्र होइ न होइ जैसे जो ज्ञानकेभयेते जीव ईशह्वैजाइ तौ क्रोधनहीं सम्भवै है ताते यह जीव ईशताको नहीं प्राप्तहोत हैं ( ३९ ) अरु जो परावाद्रोह करते हैं ते निश्शंक नहीं होते हैं अरु जे कामी हैं ते निष्कलंक नहीं होत हैं लोकवेद में वे सकलंकी बनेहैं ( ४० ) अरु जो ब्राह्मणकर अनहितकरै तौ बंशरहै नरहै किंतु बंशकही सुकर्मरूपबंश सुधर्मबंश ऐश्वर्यबंश सुयशबंश कुलबंश जातिवंश किंतु पुत्रवंश द्विजकर अनहित कियेते नहींरहते हैं अरु जो अपने स्वस्वरूपको चीन्हैं तौ वहिसे शुभाशुभकर्म नहीं कै सकते हैं किंतु स्वस्वरूपके चीन्हेते शुभाशुभकर्म किंचित्कालके बशते होत हैं तहां त्यहिपुरुषको परिणाम में दूनौंकाम नहीं उगैहैं जैसे भूजान्न॥

**अनहितकीन्हे कर्मकिहोहिस्वरूपहिचीन्हे ४१ काहुहिसुमतिकिखलसँगजामी शुभगतिपावकिपरत्रियगामी ४२ भवकिपर-हिपरमारथविंदकसुखीकिहोहिंकबहुंपरनिंदक ४३ राजकिरहैनीतिबिनुजाने अघकिरहहिंहरिचरितबखाने ४४ पावनयशकिपुण्यबिनुहोई बिनुअघअयशकिपावैकोई ४५ लाभकिकछुहरिभक्तिसमाना ज्यहिगावहिंश्रुतिसंतपुराना ४६ हानिकिजगयहिसमकछुभाई भजियनरामहिंनरतनुपाई ४७ अघकिबिनातामसकछुआना धर्मकिदयासरिसहरियाना ४८ यहिबिधिअमित**

ज्ञानाग्निदग्धकर्माणंतमाहुर्पण्डितंबुधाः ( ४१ ) अरु खलनकी संगति करिकै काहूको सुमतिजामी है नहीं जामी है अरु परस्त्री गमनकियेते काहूको सुगति होति है नहींहोति है ( ४२ ) अरु परमारथबिंद कही जिनको परमार्थ बिंदककही प्राप्त है तेनर भवमेंपरहिं न परहिं अरु जोपराई निंदाकरहिं तेका कबहूं सुखीरहहिं न सुखीरहहिं ( ४३ ) अरु राजनीति न जानै तौ काराज्यरहै नरहै अरु श्रीरामचन्द्रकर चरित बखानतसंते का अधर है नरहै ( ४४ ) अरु बिनाधर्म जो पावनयशचहै तौ काहोइ न होइ अरु बिनापापकिहे जो कोई अयश अघ लगावै तौ न लागै ( ४५ ) अरु यह जगतविषे हरि की भक्तिकेसमान लाभ और कछु है नहीं है ज्यहिभक्तिको वेदपुराण संत गावते हैं ( ४६ ) अरु नरतन पाइकै श्रीरामचन्द्रको न भजै तौ यहिजगत विषे यहिकेसमान हानि कछुनहीं है ( ४७ ) अरु हे हरियान तामसकही क्रोधके समान औरौपापहै नहीं है यहमहापाप है अरु दयाके समान दूसरधर्म नहीं है यह महाधर्म है जैसे यहसबमें कहि आयउं हैं बिशेषिबिशेषि तैसे बिशेषिकै यहजीव ईशनहीं होत है अरु न ईशकी समता को प्राप्त होत हैं ( ४८ ) हे तात यहिबिधि अनेक बिचार युक्तिसमेत मनमें गुन्यउं तहां मुनिकर उपदेश मेरेहृदय में विशेषिसिद्धांत न आयो ताते मुनिको उपदेश बचन सादरते मैं नहीं सुन्यउं ( ४९ ) तब पुनिपुनि सगुणपक्षमैं रोपणकीन तब मुनि कोप करिकै बचन बोलतभये ( ५० ) हेमूढ़मैं तोको परमशिष परमतत्वदेतहौं तौन तैं नहीं मानसि उत्तर प्रतिउत्तर देतहसि ( ५१ ) सत्यबचनकर बिश्वास नहीं करै अरु बायसकी नाईं सबते डरै है ( ५२ ) ताते हेशठ तोरे हृदय में बिशालपक्ष है अरु बारबार जो तैंपक्षरोपण करत है सो पक्ष कहे पखनाहैं ताते मैं तोकोशाप देतहौं सपदि कही शीघ्र पक्षिनमें चण्डालरूपी कागतैं हो तहां मुनिके शापविषे एकआशीर्बाद करिकै युक्त है काहेते जो कागभुशुण्डि सगुणब्रह्म को पक्षकीन

युक्तिमैंगुन्यऊं मुनिउपदेशनसादरसुन्यऊं ४९ पुनिपुनिसगुणपक्षमैंरोपा तबमुनिबोल्यउबचनसकोपा ५० मूढ़परमशिषदेउंन मानसि उत्तर-प्रतिउत्तरबहुआनसि ५१ सत्यबचनबिश्वासनकरई बायसइवसबहीसनडरई ५२ शठसपक्षतवहृदयबिशाला सपदिहोहुपक्षीचंडाला ५३ लीन्हशापमैंशीशचढ़ाई नहिकछुभयनदीनताआई ५४ दो०॥ तुरतभयोंमैंकागतब पुनिपुनिपदशिरनाइ सुमिरिरामरघुबंशमणि हरषितचल्योंउड़ाइ ५५ उमाजेरामचरणरत बिगतकाममदक्रोध निजप्रभुमयदेखहिंजगत क्यहिसन करहिंबिरोध ५६ * * *

है बारबार सोई कागको पखना करिकै कहा कि यहीपक्षरूपी पखनातेउड़िकै बिहंग मार्गते रामधामको प्राप्तहोइगो तहां परमपदकी प्राप्ति के दुइ मार्ग हैं एक बिहंगमार्ग अरु एक पिपीलिकामार्ग तहां कर्मकांड अरु अष्टांगयोग अरु ज्ञानकाण्ड तिनकी मोक्ष पिपीलिकामार्ग जानब अरुउपासनाकांड बिहंगमार्ग जानब ( ५३ ) तब मुनिकाशाप मैं शीशपर चढ़ाइ लीन भय दीनता एकौनहीं आई ( ५४ ) दोहार्थ ॥ हे तात महादेवकीकृपाते जो तन चाहौं सोईतन धरिलेउं ताते तुरंत मैं कागहोतभयउं पुनिमुनिके चरणारबिंदमें नमस्कार करिकै श्रीरामचन्द्रको सुमिरिकै जयति रघुबंशमणिकहिकै अतिहर्ष संयुक्त उड़िचल्यउं ( ५५ ) तब पार्वती बोलीं हे महेश लोमस जो क्रोधकरिकै शापदीन अरु ब्राह्मणके क्रोध न भयो सो का कारण है हे पार्वती जेउपासना करिकै श्रीरामचन्द्र के चरणारविंद विषे रत हैं ताते बिगत कही छूटिगयो है काम मद क्रोध अरु ज्ञानस्वाभाविकै भयोह काहेते ज्ञानबैराग्य भक्तिके पुत्र हैं ताते ज्ञानबैराग्य भक्तिकेआधीन हैं ताते जेरामउपासक हैं स्वाभाविकै अपने प्रभुमें जगतको देखते हैं मयकही जैसेसूर्य प्रकाशमय है ताते सूर्यस्थाने श्रीरामचन्द्रप्रकाशस्थाने ब्रह्म सो ज्ञानिनको सिद्धांत है वे कासे बिरोधकरैं सबमें स्वामीको रूपदेखते हैं अरु रामचन्द्र को रूपी देखते हैं अरु ज्ञानीजीवहिको ब्रह्ममानते हैं जैसे अपनाको ब्रह्ममानते हैं तैसेई सर्बचराचर में मानतेहैं अरुजीवकैसहू शुद्धहोइ तहूं मायाको कारण सूक्ष्मबनै है ताते ज्ञानिनको कालपाइकै क्रोध होत है अरु जो कोई कहै कि कैसहूशुद्ध भक्तहोइ सो भी तौ जीवईहै तौ इनहूंमें मायाको सूक्ष्मकारण है सो सत्य है तहां भक्तजीवजेहैं ते अपने स्वामीकोरूप चराचरमय मानते हैं तिनके कैसे माया को विकारउठै अरु ज्ञानीजीवहि को ब्रह्म मानते हैं ताते बिकारउठै है ( ५६ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेउत्तरकांडेद्विजलोमस सम्बादेपरस्पर उत्कर्षमतबर्णनन्नामएकोनत्रिंशतिस्तरंगः २९॥ :: :: :: :: :: :: :: ::

चौ०॥ सुनुखगेशनहिंकछुऋषिदूषण उरप्रेरकरघुबंशबिभूषण १ कृपासिन्धुमुनिमतिकरिभोरी लीन्हीप्रेमपरीक्षामोरी २ मनबचकर्ममोहिंनिजजाना मुनिमतिपुनिफेरीभगवाना ३ ऋषिममसहजशीलतादेखी रामचरणविश्वासबिशेखी ४ अतिबिस्मय

दोहा ॥ दशअरुबीशतरंगमें शापअनुग्रहकीन ॥ रामचरणरघुवीरकीपरमभक्तिबरदीन ( ३० ) हे पार्वती मुनितौ केवल ज्ञानीरहे हैं अरु भुशुण्डि आदिकजे श्रीरामचन्द्रके निजभक्त हैं तौ उनके ऊपर जो कुछ होइ है सो केवल रामरजाय मानते हैं अरु किसूपर दूषणनहीं रोपणकरते हैं ताते कागभुशुण्डि गरुड़ते बोलतेभये हे खगेश ऋषिकर दूषण कछुनहीं है सबके अन्तरप्रेरक रघुबंश बिभूषण हैं ( १ ) किंतु हे गरुड़ मेरेजान मुनि तौ श्रीरामचन्द्र के अनन्य उपासकरहे हैं पर इहां मोको यहसमुझि परत है बिशेषिकै कि कृपासिंधु जो श्रीरामचन्द्र हैं तिन मुनिकैमति भोरीकरि दीन ताते मुनि सगुणमतको खण्डनकरिकै शुष्कज्ञानमें आरूढ़ह्वइकै मो को ज्ञानउपदेश करनेलगे ( २ ) हे तात श्रीरामचन्द्रजी मनबचन कर्म ते मोको निज जानतेभये तब मुनिकी मतिको फेरिदीन ( ३ ) तबऋषि मोरि सहज शीलता देखिकै अरु श्रीरामचन्द्र के चरणारबिंद विषे दृढ़ विश्वास जानतेभये ( ४ ) तब अतिबिस्मयतेमुनि पुनि पुनि पछिताइकै सादरते मोको बुलाइ लेते भये ( ५ ) तब बिबिधप्रकारते मोर परितोष कीन अरु सब मन्त्रनकरराजा श्रीरामचन्द्र षडक्षर मोको हर्षिकै उपदेशकीन ( ६ ) पुनि श्रीरामचन्द्रकर बालस्वरूपको ध्यान उपदेशकीन कृपा केनिधान मुनि यह मोसे कहतभये

जोमैं तुमसे कहिआयउँ है इहां तिलककर्त्ताकै ब्यंग्योक्ति जानब यहप्रसंग में यह अभिप्राय समुझिपरत है कि मुनिके हृदयविषे श्रीरामस्वरूपै उपासना आइगई है काहेते मुनि आपने स्वस्वरूप के ज्ञान में पूरणरहे हैं अरु इहां ब्राह्मण के बचन शुद्धविशिष्टाद्वैतमत अरु मुनिकेबचन शुद्धाद्वैतमत निर्मल बादाबिवाद होतसंते मुनिके हृदय में श्रीरामस्वरूप आइगयोहै कैसे जैसे पवन के संग सुगन्ध नासिका ग्रहणकरतहै तैसे सत्संगविषे परस्पर बाणीकेप्रसंगते बुद्धितत्वकोग्रहणकरै है पुनि कैसे जैसे सूर्यहिके प्रकाशते सूर्य देखिपरत हैं ( ७ ) हे तात जब मुनीश्वर श्रीरामचन्द्र के बालस्वरूप को ध्यान बतावतेभये सोअतिसुन्दर सुखद मोको अतिभावतभयो जो बालस्वरूप प्रथमहिं मैं कहि

पुनिपुनिपछिताई सादरमुनिम्वहिंलीनबोलाई ५ ममपरितोषबिबिधबिधिकीन्हा हर्षितराममंत्रम्वहिंदीन्हा ६ बालकरूपरामकरध्याना मोहिकह्यउमुनिकृपानिधाना ७ सुंदरसुखदमोहिंअतिभावा जोप्रथमहिंमैंतुमहिंसुनावा ८ मुनिमोहिंकछुककालतहँराखा रामचरितमानससबभाखा ९ सादरमुनियहकथासुनाई पुनिबोलेमुनिगिरास्वहाई १० रामचरितसरगुप्तस्वहावा शंभु

आयोंहौं तुमसुनेउ है ( ८ ) तहां कछुकाल मुनिमोको राखतभये श्रीरामचन्द्रको मानसचरित सातौकाण्ड मुनिमोसे कहतभये इहांयह ऐसे समुझिपरत है बहिर्लापिका करिकै वहिचौपाईसे ॥ पुनिशिवकागभुशुण्डिहिदीन्हा रामभक्तिअधिकारीचीन्हा॥ तहां यह समुझिपरत है कि प्रथम महादेव लोमसरूपह्वैकै आपने आशीर्बादकी परीक्षालीनिहै जब अतिदृढ़जान्योतब श्रीरामचन्द्र उपदेशकीन आशीर्बाद दीन श्रीरामचरित मानस सुनावते भये ( ९ ) यह अनूप कथासो सादर ते सुनावतेभयेपुनि मुनीश सुन्दरि बाणीबोले ( १० ) यह कहा मुनि हेभुशुण्डि यह जो श्रीरामचरित मानसरअति गुप्त है सोशिवके प्रसादते मैं पायउँहै यह अभिप्राय है कि इहां शंभुलोमसरूप हैं ताते शम्भुको अध्यारोपणकरिकै शम्भु कहत हैं किन्तु लोमसै मुनि हैं शम्भु नहीं हैं शिवके प्रसादते कोई काल में पायो है हे भरद्वाज सो कागभुशुण्डिको देतभये ताते भुशुण्डिको जनु शिवहिको दीन ठहरेउ है जैसे कोई किसूको कोई बस्तुदेइ औरके हाथकरिकै ( ११ ) मुनि बोले हे काग तोको श्रीरामकर निज भक्त जानिकै ताते सब बखानिकै कह्यउँ है ( १२ ) हे तात यह रामचरित अतिगोप्यतर गोप्यहै तातेजिनके उरमें श्रीरामभक्ति न होइ तिनते यह कबहूँ न कही ( १३ ) हे गरुड़ मुनि मोको बिबिध प्रकारते उपदेश कीन्ह तब मैं प्रेमसंयुक्त मुनिके चरणारविन्द विषे शीश नावत भयउँ ( १४ ) तब मुनीश निजकर कमल मोरे शीशपर परसतभये पुनि हर्षिकै आशीर्बाद देतभये ( १५ ) हे भुशुण्डि अब मोरे प्रसादते श्रीरामचन्द्रकै भक्ति अबिरल तोरे हृदय में उपजिहि ( १६ ) दोहार्थ ॥ पुनि तुमसदा श्रीरामचन्द्रके प्रियहोहुगे अरुशुभगुण कही अहिंसित गुणनके भवनहोहुगे अरु अमान होहु मान तुमको कबहूं नहीं होइगो अरु कामरूपकही कामना जो तुम करहुगे सोसिद्धिहोइगी अरु इच्छा जन्ममरणकही आपनी इच्छाते जब चाहौ शरीर

प्रसादतातमैंपावा ११ त्यहिनिजभक्तिरामकरजानी तातेमैंसबकह्यउंबखानी १२ रामभक्तिजिनकेउरनाहीं कबहुंनतातकहिय तिनपाहीं १३ मुनिम्वहिबिबिधभांतिसमुझावा मैंसप्रेममुनिपदशिरनावा १४ निजकरकमलपरसिममशीशा हर्षितआशिषदीन्हमुनीशा १५ रामभक्तिअबिरलउरतोरे बसिहिसदाप्रसादअबमोरे १६ दो०॥ सदारामप्रियहोहुतुम शुभगुणभवनअमानकामरूपइच्छामरण ज्ञानबिरागनिधान १७ ज्यहिआश्रमतुमबसब- पुनिसुमिरबश्रीभगवन्त ब्यापिहितहँनअविद्या योजनएकप्रयन्त १८ चौ०॥ कालकर्मगुणदोषस्वभाऊ कछुदुखतुमहिंनव्यापिहिकाऊ १९ रामरहस्यललितबिधिनाना गुप्तप्रकटइतिहासपुराना २०

छोड़िदेहु अरु जबचाहौ तब धरिलेहु अरु योगवैराग्य ज्ञान विज्ञानध्यान समाधि इत्यादिके निधानकही स्थानहोहु ( १७ ) अरु जेहि आश्रम विषे तुमबसिहौ श्रीरामचन्द्र कर सुमिरण करिहौ तहांएक योजनपर्यन्त अविद्या न ब्यापिहि ( १८ ) तबमुनि कह्यउ हेकाग कालकैगतिकर्मकैगति तीनिहूँ गुणकै गतिअरु स्वभावकी गति इत्यादिकन के दोष तोको न लागिहि तोरेस्थान में न ब्यापिहि ( १९ ) श्रीरामचन्द्रकर रहस्य जे हैं ललित नानाप्रकार के गुप्तप्रकट गुप्तकही जो श्रीरामचन्द्र अन्तर्यामीरूप प्रेरक त्रैगुण्यविषे रहस्य करते हैं अथवा जो गुप्त बालरहस्य श्रीकौशल्या कागभुशुण्डि को दिखायाहै अरु श्रीजानकी जीको अग्निप्रवेश इत्यादिक गुप्त रहस्य है प्रकट प्रत्यक्ष लीला किन्तु श्रीरामरहस्य सब गुप्तही है सो तुम प्रकट जानहुंगे अरु जो इतिहास वेदपुराण करिकै है ( २० ) यह जो सम्पूर्णपदार्थ है सो सब बिनाश्रमहिं तुमजानब अरु श्रीरामचन्द्रके चरणारबिंद विषे नित्य नवीन नेहहोत जाइहि ( २१ ) अरु जो इच्छा तुम मन में करिहौ सो सम्पूर्ण श्रीरामचन्द्र के प्रसादते सिद्धि होइहि कछुदुर्लभ न रहिहि ( २२ ) हे गरुड़ मतिधीर मुनिको आशीर्वाद सुनिकै आकाशबाणी गंभीर होती भई ( २३ ) हे मुनीश जो तुम यहिको आशीर्बाद दीन है सो हमरिहुओरते एवमस्तु काहेते यह मन बचन कर्मते मोर भक्त है ( २४ ) तौ नभबाणी सुनिकै मोको अति हर्ष भयो प्रेमते मग्न भयउँ है सब संशय जातरहेउ ( २५ ) तब मुनिसे अनेक बिनय करिकै मुनि के चरणपंकज बारबार गहिकै आयसु पाइकै ( २६ ) तब अति हर्ष से यहि आश्रम को आवत भयउँ ( २७ ) श्रीराम जबते इहां बसेउँ तबते आजुताईं मोको सत्ताइस कल्पबीते हैं कल्पकही प्रलयको

**बिनुश्रमतुमजानबसबसोऊ नितनवनेहरामपदहोऊ २१ जोइच्छाकरिहौमनमाहीं हरिप्रसादकछुदुर्लभनाहीं २२ सुनिमुनिआशिषसुनुमतिधीरा ब्रह्मगिराभइगगनगँभीरा २३ एवमस्तुतवबचमुनिज्ञानी यहममभक्तकर्ममनबानी २४ सुनिनभगिराहर्षम्वहिँभयऊ प्रेममगनसबसंशयगयऊ २५ करिबिनतीमुनिआयसुपाई पदसरोजपुनिपुनिशिरनाई २६ हर्षसहितयहिआश्रमआयउं प्रभुप्रसाददुर्लभबरपायउं २७ इहांबसतम्वहिँसुनुखगईशा बीतेकल्पसातअरुबीशा २८ करौंसदारघुपतिगुणगाना सादरसुनहुबिहंग**

सो प्रलय पांचप्रकार की है नित्यप्रलय कहूं एहीको कालप्रलय कहा है नित्यप्रलयकही सर्बकाल में मरत हैं उत्पन्न होत हैं सदा ताको नित्यप्रलयकही पुनि युगान्त प्रलयकही सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग तहां सतयुग को प्रमाण सत्रहलाख अट्ठाइस हजार १७२८००० पुनि त्रेताको प्रमाण बारहलाख छानबेहजार १२९६००० पुनि द्वापर को प्रमाण आठलाखचौसठिहजार ८६४००० पुनि कलियुग को प्रमाण चारिलाख बत्तिससहजार ४३२००० तहां सतयुग के अंतविषे तेरहहजार आठसै सोरहबर्ष १३८१६ बाकी रहते हैं अरु त्रेताको आगमन १००० सतयुग त्रेता द्वौकी संधि में २३८१६ वर्ष सन्ध्या कहावति है तहां जे जीव सन्ध्याकरैं भूतशुद्धी करिकै २३८१६ वर्ष गायत्री जपिकै तब उतनै श्रीराममन्त्र जपिकै पुनि ध्यान करै ऐसेही दिनप्रतिकरै तहां त्यहि युगांत की संधिमें त्रेताके धर्मकै वृद्धि है सतयुगकी घटती है जब २३८१६ बर्षबीततभये तब केवल त्रेताको प्रभावहोतभयो सतयुग को प्रभाव त्रेताको आवांतर होत भयो ताते ताको युगांतप्रलयकही पुनि त्रेताके अंतविषे जब दशहजारबर्ष बाकी रहिगये अरुद्वापर के आगमन में ६६६६ बर्ष अरु आठमहीनाताईं तहां दूनौमिलिकै सोरहहजार छ:सैछासठिबर्ष आठमास इतनेदिन कै त्रेता द्वापर की संधिमिले सन्ध्या कहावति है तहां जे कोऊ सन्ध्याकरहिं सो त्रेताधर्म लिहेकरहिं भूतशुद्धिकरिकै उपरांत १६६६६ दिनप्रति गायत्री जपिकै उतने राममन्त्र जपै किंतु २४००० गायत्रीजपै अरु १२००० राममन्त्र जपै उपरांत होमकरै रामार्पण करहि तहां द्वापरके धर्म की वृद्धिहोइ त्रेताको सामान्यता द्वापर के आवांतर है ताते ताको युगांतप्रलय कही पुनि द्वापर के अन्तविषे छ: हजार छ: सै छासठि बर्ष आठमहीना अरु कलियुग को आगमन तीनि हजार तीनिसै तैंतिस बर्षचारिमास ३३३३। ४ ताईं द्वौमिलिकै दशहजार बर्षके द्वौयुगके सन्धि की सन्ध्या कहावति है तहां जो कोई जीव भूतशुद्धि करिकै सन्ध्याकरैबारह हजार गायत्री जपिकै किंतु दुइहजार चारिसौ गायत्री जपै अरु छ: हजार राममन्त्र जाप्यकरिकै उपरांत शालग्रामकी पूजा धूप दीप नैवेद्य आरती उपरांत नृत्यगान इत्यादिक पुनिभगवत् कथा दिनप्रतिकरै अरुतेहि सन्ध्या विषे जोपापकरै तौ हजारन बढ़ै पुण्यकरै तौहजारन बढ़ैऐसे सबयुग की सन्ध्या जानब

तहां कलियुग की वृद्धि होत है अरु द्वापर की सामान्यता कलियुग के आवान्तर होत है ताते ताको युगान्तप्रलयकही जब ६६६६ बर्ष ८ महीना बीते तब केवल कलियुग रहि गयो तहां केवल श्रीरामनाम कल्याणकारी पुनि कलियुग के अन्त विषेजब ३३३३ बर्ष ४ मासताईं सतयुग को आगमन १३८१६ वर्ष मास ४ द्वौयुग को मिलिकै १७०४९ वर्ष ४ महीनाकी सन्धि मिले सन्ध्या कहावति है तहां त्यहियुग में जो सन्ध्या करते हैं केवल रामनामको जाप्य अरु सतयुग के संयोगते रामस्वरूप को ध्यान तहां सतयुगकी वृद्धि होती है कलियुग की हानि होती है जब ३६६४ बर्ष अरु ८ महीना कलियुग के बीतिगये तब केवल सतयुग शुद्धसात्विक गुण रामनाम रामध्यान बिज्ञान साधन जीवन विषे बर्तमान होते हैं ताते युगांतप्रलयकही जैसे सूर्य उदयभये दिनअस्त भयो राति पुनि दिन प्रतिकी सन्ध्या कहते हैं सतयुग विषे जब प्रातःकाल आठदण्ड रात्रीरहै अरु छःदंड दिन चढ़ैताईं प्रातःकाल सन्ध्याकही अरु डेढ़ पहरदिन चढ़ेते अरु डेढ़पहर दिन रहेताईं पहरभरि मध्याह्न सन्ध्या कही अरु छःदंड दिन रहेते छःदंड रात्री ताईं सायंकाल संध्याकही पुनि त्रेतायुग विषे छः दण्डरात्री रहेते चारिदण्ड दिन चढ़े ताईं प्रातःकाल सन्ध्या अरु तीनि दण्ड दुइपहर में ऊन अरु तीनि दंड परे मध्याह्न सन्ध्या पुनि सायंकाल चारिदंड दिन रहेतेचारिदंड रात्री बीतेताईं सायंकाल सन्ध्या पुनिद्वापर विषे चारिदंडरात्री भोरके तीनि दंड दिनचढ़े ताईं प्रातःकाल सन्ध्या अरु चारिदंड मध्याह्नसन्ध्या अरु छः दंड सायंकाल सन्ध्या अरु कलियुग में चारिदंड प्रातःकाल सन्ध्या दुइदण्ड मध्याह्नकाल तीनिदण्ड सायंकाल जौनी रीति कहिआये हैं हे तात अब नैमित्यप्रलय कहते हैं तहां ब्रह्माकेदिन प्रलयसों नैमित्यकप्रलय है तहां हजार चौकरी युग के ब्रह्मा को एक दिन होत है हजार सतयुग हजार त्रेता हजार द्वापर हजार कलियुग तब ब्रह्माको एकदिन तामें चौदह मन्वन्तर होते हैं साढ़े एकहत्तरि चौकरी सतयुग त्रेता द्वापरकलियुग बीतै तब एक मन्वन्तर होत है त्यहि मन्वन्तर प्रति एक इंद्र होते हैं अरु एक हरिको अवतार होत है अरु सप्तऋषि होते हैं अरु एकमनुहोत है अरु मनुके पुत्र होत हैं अरु देवता एते षट्मन्वंतर प्रति भिन्न भिन्न होते हैं इन्द्रस्वर्गकी राज्य हेतु हरि जगत की रक्षाहेतु सप्तऋषिधर्मपालन मर्याद हेतु मनु प्रजनकी राज्यहेतु मनुकेपुत्र प्रजनके पालन हेतु अरु देवता यज्ञ के भागलेनहेतु तहां ब्रह्माको एकदिन बीत्यो तब प्रलयहोत है पुनि हजार चौकरी रात्रीताईं प्रलय बनीरहै है पुनि जब हजार चौकरी बीत्यौ तब तबदिनभयो कार्यरूपसृष्टिभई जैसे पसारी आपनीथैलीखोलिकै दिनभरिबेंचै सांझकोसकेलिधरै पुनि भोरभयेखोलत है ऐसे नैमित्य प्रलय होत है तब जलार्णव करिकै लोकन की प्रलय ह्वै जातिहै तीनि लोक बचिजाते हैं जनलोक तपलोक सत्यलोक अरु हे तात मेरेस्थानमें योजनपर्यंत वह प्रलय नहीं आवै है ऐसी जो नैमित्यप्रलयहैताहीको कल्पकही सो जबते मैं लोमशके इहांतेआयों तबते यहि आश्रमबिषे येई सत्ताइसकल्प बीततभये ताहीको नैमित्यप्रलयकही पुनि हेतात दुइप्रलय औरौहैं अत्यन्तकप्रलय महाप्रलय अत्यन्तककही योग ज्ञान भक्तिकरिकै जीव परमेश्वर को प्राप्तिहोते हैं सो अत्यन्तककही पुनि जोब्रह्माकेदिन कहिआये हैं सोईदिन जब ३६० होते हैं तब ब्रह्माको एकबर्ष होत है ऐसे बर्ष एकसौकरिकै ब्रह्माकी उमिरिहोती है जब ब्रह्माके सौबर्ष बीतते हैं तब महाप्रलय होती है तब पृथ्वी तत्त्व जल में लय हो जाती है जलतत्त्व अग्नि में लयह्वैजाती है अरु अग्नितत्त्व पवन में लयहोइजाती है पवनतत्त्व आकाश में लयहोत है आकाशतत्त्व तामसगुणमें लय होत है तामस राजसमें राजस सात्विकमें सात्विक प्रणव में प्रणव महदमें महद महत्तत्त्व में महत्तत्त्वपुरुष की साम्यताको प्राप्तहोत है पुनि जब कबहूं पुरुष की ईक्षणाभई तौ जैसे प्रतिलोम करिकै प्रलय कहिआये हैं तैसे अनुलोम करिकै उत्पन्नहोत है ऐसही पांचहू प्रलय हैं वाहीको पांच कल्पकही नित्य युगांत नैमित्य अत्यन्तक महाकल्प तहां मोको यहस्थान में बैठे नैमित्यकल्प सत्ताईस बीते हैं हेतात जबते मोर औ तुम्हार मिलापभयो तबताईं अरु हेतात पांचहू प्रलय में मेरेस्थानको अरु मेरी कालकीबासना नहींहोति है काहेते कि नाश तौ अबिद्याकरे है सो इहां नहीं है श्रीरामकृपाते अरु महादेव श्रीरामभक्त तिनकी कृपाते ( २८ ) जबते यहि आश्रम में बिराजेउँ है तबते श्रीरघुपतिके गुणानुवाद निरन्तर करत हौं तहां सादरते सुजान बिहंग सुनते हैं ( २९ ) जब जब श्रीअवधपुरीमें श्रीरघुबीर मनुजशरीर धरहिं इहां जो कहा कि श्रीरघुबीर मनुज शरीरधरहिं सो किशोरबालह्वैकै मनुज के बालककीनाई लीलाकरनेलगे सोईलीलामात्र मनुजशरीर धरबकहा है अरु लीला परमदिव्य है अरु औरेके देखत मनुजइव लीला सो भक्तन के निमित्य ताते मनुज शरीर धरबकहा है काहेते अपने शरीर में मनुजइवलीला धारणकीन ताते

**सुजाना २९ जबजबअवधपुरीरघुबीरा धरहिंभक्तहितमनुजशरीरा ३० तबतबजाइरामपुररहऊं शिशुलीलाबिलोकिसुखलहऊं ३१ पुनिउरराखिरामशिशुरूपा निजआश्रमआयउंखगभूपा ३२ कथासकलमैंतिन्हहिंसुनाई कागदेहज्यहिकारणपाई ३३ कह्यउंतातसबप्रश्नतुम्हारी रामभक्तमहिमाअधिकारी ३४ दो०॥ तातेयहतनमोहिंप्रियभयोरामपदनेह निजप्रभुदर्शनपायउं गयउसकलसंदेह ३५ भक्तिपक्षहठ करिरह्यउंदीन्हमहाऋषिशाप मुनिदुर्लभबरपायउं देखहुभजनप्रताप ३६॥** * * * *

कहाहै ( ३० ) तबतब मैं श्रीअयोध्यामें जाउँ शिशुलीला बिलोकि बिलोकि अतिआनन्द को प्राप्तहोउँ ( ३१ ) पुनि श्रीरामचन्द्रको शिशुरूप हृदय में राखिकै हे खगेश निजआश्रमको आवतरहौं ( ३२ ) हेतात ज्यहिकारण करिकै मैं कागशरीरपायउँ है सो तुमसे सबकह्यउँ ( ३३ ) हे तात तुम्हारोप्रश्न मैं सबकह्यउँ अरु श्रीरामचन्द्र कै अपारमहिमा भक्ति सो कह्यउँ ( ३४ ) दोहार्थ॥ हेतात ताते यह कागतन मोको प्रिय है काहेते कि यहीतनविषे अखण्ड आशीर्बाद पायउँ है मोको श्रीरामचन्द्रकैभक्ति प्राप्तिभई है अरु श्रीरामचन्द्र के दर्शन होत भये अरु संपूर्ण संदेह जातरह्यउ ताते यहतन प्रिय है ( ३५ ) हे तात मैं मुनिसे भक्तिपक्ष करिकै अतिहठकीन तब कोपकरिकै महामुनि मोको शापदीन पुनि उलटिकै मोको आशीर्वाददीन हे तात देखौतौ भजन के प्रतापते शापउलटिकै आशीर्बादभयो है पर कैसो आशीर्बाद जो मुनिनन को अतिदुर्लभ है ( ३६ ) इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेउत्तरकाण्डेकागभुशुण्डिगरुड़प्रश्नोत्तरबर्णनन्नामत्रिंसतिस्तरंगः३०॥

दोहा ॥ त्रिंशतिएकतरंग में भक्तिविशेषबखानि ॥ रामचरणपुनिगरुड़ को प्रष्णोत्तरसुखदानि ३१॥ हे गरुड़ जे ऐसीभक्तिको जानिकै परिहरते हैं अरु केवल ज्ञानै करते हैं त्यहिकर फल केवल श्रम है ( १ ) ते जोभक्तिको छोड़िकै केवल ज्ञानै निरूपण करते हैं कामधेनु को त्यागिकै दूध के हेतु आककही मदार खोजत फिरते हैं तहां प्रमाण है श्रीमन्महारामायणेशिवबाक्यं पार्वतींप्रति श्लोक एक॥ येरामभक्तिममलांसुबिहायरम्यां ज्ञानेरताःप्रतिदिनंपरिक्लिष्टमार्गे । आरान्महेन्द्रसुरभींपरिहत्यमूर्खा अर्कंभजंतिसुभगेसुखदुग्ध हेतुं ( २ ) हेखगेश श्रीरामचन्द्रकै भक्ति बिहायकै और कवनेउँ उपायते सुखचहहिं तौ नहीं होत है ( ३ ) ते जड़ संसार समुद्र को बिनानाव पैरिकै पारजावा चाहत हैं तहां प्रमाण है श्रीमन्महारामायणे शिवबाक्यं पार्बतींप्रति श्लोक पांच॥ पंचाशत्तमः सर्गः श्रीरामंयेचहित्वाखलमतिनिरताब्रह्मजीवंबदन्ति तेमूढ़ानास्तिकास्तेशुभगुणरहिताःसर्ब बुद्ध्यातिरिक्ताः पापिष्ठाधर्महीनागुरुजनबिमुखाःवेदशास्त्रेविरुद्धाः तेहित्वागांगमंभोरबिकिरणिजलंपातुमिच्छन्तितृष्णाः १ येमर्त्यारामपादौकुससुत

**चौ०॥ जेअसभक्तिजानिपरिहरहीं केवलज्ञानहेतुश्रमकरहीं १ तेजड़कामधेनुगृहत्यागी खोजतआकफिरहिंपयलागी २ सुनुखगेशहरिभक्तिबिहाई तेसुखचाहहिंआनउपाई ३ तेजड़महासिंधुबिनुतरणी पैरिपारचाहहिंजड़करणी ४ सुनिभुशुण्डिकेबचनभवानी बोल्यउगरुड़हर्षिमृदुबानी ५ तवप्रसादप्रभुममउरमाहीं संशयशोकमोहभ्रमनाहीं ६ सुन्यउंपुनीतरामगुणग्रामा**

बिमलौसंविहायार्तबन्धोः तेमूढ़ाबोधहेतुंधृतपरिघटनेबारिमंथानुयुक्ताः येब्रह्मास्मीतिनित्यंबदतिचहृदिमंरामचंद्रांघ्रिपद्मं तेबुद्धास्त्यक्तयोक्तास्तृण परिनिचयेसिंधुमुग्रंतरंति २ येकेवलाद्वैतमतानुरक्ताःश्रीराममूर्त्तिविमलांविहाय तेषामदृश्यांहरिदश्वमूर्त्तिपश्यंतिमूढ़ाप्रतिबिंबकुम्भे ३ त्यक्त्वाश्रीरघुनन्दनंपरपरंनामंनरूपंतथा ब्राह्मण्येव बदन्तिखेसत्सतेपूर्णोयथाकाशवत् तेवैतण्डुलहेतवेतुषमहोसंघ्नंतिदुर्बुद्धयः मूलंछिंधिसमाश्रयंतिचदलतैः सद्गुरोर्नकृतः ४ किंबर्णयामिबिमलेबहुभिःप्रकारैः सीतापतेबिगतज्ञानविशेषसर्ब ज्ञानंतदेवकुसुमंचयथानभोगं सत्यंबदामितदज्ञानसुखंचस्वप्ने ५ हे भवानि भुशुण्डि के बचन सुनिकै मृदुबाणी ते गरुड़ बोलते भये ( ५ ) हे गरुड़ तुम्हारे प्रसादते अब मोरे हृदयविषे संशय शोक मोह भ्रम नहीं है जातरही संशय कही पूर्वहीं मुनीशनते सुन्यउँरहै कि श्रीरामचन्द्रपरब्रह्म हैं पुनि नारदकहा हे गरुड़ श्रीरामचन्द्र रणविषे नागफांसते बँधे

हैं यह सुनिकै संशयभई पुनि मुनीशन को कहा मेरे हृदय ते जातरह्यो है ताकी कल्पना सों शोक भयो है पुनि मुनीशनके कहने में दृढ़ता नहीं रही अरु बन्धन देखिकै आपनी बुद्धिमें निश्चय किहेउँहै सो मोह भई है अरुपरमेश्वर विषे प्राकृत भावरोपण किहेउँ है सो भ्रम भई है सो सब जात रही नाश ह्वैगई है ( ६ ) हे तात श्रीरामचन्द्रकर पुनीत गुणग्राम सुनेउँतुम्हारी कृपाते बिश्रामको प्राप्तिभयउँ ( ७ ) हे कृपानिधि एकबात आपुते पूँछतहौं सोसमुझायकै कहहु ( ८ ) हे प्रभु यह सन्त पुराण वेदमुनिकहते हैं कि ज्ञान के समान और कछुदुर्लभ नहीं है ऋतेज्ञानान्नमुक्तिःइतिश्रुतेः ( ९ ) हे गोसाईं सोज्ञानतुमसे लोमशमुनि कह्यउ है तहांब्रह्मज्ञान को भक्तिकी नाईं तुमने आदर कीन्ह ( १० ) ताते हे कृपाल हेप्रभुकृपानिकेत ज्ञान ते अरु भक्तिते केतिक अन्तर है सो सब अच्छीतरह से कहहु ( ११ ) हे पार्वती उरगारिके बचन सुनिकैकागभुशुण्डिसुखमानिकै सादर बोलते

**तुम्हरीकृपालह्यउंबिश्रामा ७ एकबातप्रभुपूंछौंतोहीं कहहुबुझाइकृपानिधिमोहीं ८ कहहिंसंतमुनिवेदपुराना नहिंकछुदुर्लभज्ञानसमाना ९ स्वइमुनितुमसनकह्यउगोसाईं नहिंआदरेउभक्तिकीनाईं १० ज्ञानिहिंभक्तिहिअंतरकेता सकलकहौप्रभुकृपानिकेता ११ सुनिउरगारिवचनसुखमाना सादरबोल्यउकागसुजाना १२ भक्तिहिज्ञानिहिंनहिंकछुभेदा उभयहरिहिभवसंभवखेदा १३ नाथमुनीशकहहिंकछुअंतर सावधानह्वैसुनुबिहंगबर १४ ज्ञानबिरागयोगविज्ञाना येसबपुरुषसुनहुंहरियाना १५ पुरुष**

भये ( १२ ) हेतात भक्तिते अरु ज्ञानते कछुअन्तर नहीं है उभय कही दूनौंभवतेसम्भव खेद जो है जन्ममरण सो ज्ञानभक्ति दूनौ हरते हैं ( १३ ) हे नाथ पर मुनीश कछुअन्तर कहते हैं सो तुम सावधान ह्वैकै सुनहु हे बिहंगबरतुम्हारी बुद्धिबरकही श्रेष्ठ है सो कौन भेद मुनीश्वर कहते हैं सबाध्य अबाध्य ज्ञान सबाध्य है भक्ति अबाध्य है पुनि कौन भेद है काठिन्य सरलज्ञानको मार्ग कठिन है भक्ति को मार्ग सरल है पुनि कौन भेद है निरस सरस ज्ञानकी मुक्ति निरस है भक्तिकी मुक्ति सरस है यह तीनि भेद मुनीश्वर कहते हैं सो यह तीनिउँ भेद ज्ञान दीपकके प्रसंग भरे में कहैंगे सो तुम सावधानते चित्तकै वृत्ति एकाग्र करिकै सुनहुँ ( १४ ) हे हरियान ज्ञान वैराग्य योग बिज्ञान ये चारिउ पुरुष बर्ग हैं औ चारिहूके स्वरूप कहिकै विशेषण कहते हैं ज्ञान में दुइभेद हैं एकशास्त्रजन्यज्ञान संधि विभक्ति पदपदांत धातु क्रिया कर्म्म कर्त्ता इत्यादिकनको समुझिकै भले प्रकारते लगावना अरु एक अनुभवज्ञानकही आपनी जो आत्मा ताकोस्वस्वरूप ज्ञान कही सो जानना अरु अनात्मा जो शरीर त्यहिते आत्मा को भिन्न देखैआत्माको नित्यजानै अरु अनात्माको अनित्य जानै काहेतेकि हर्ष शोक हानि लाभ सुख दुख पाप पुण्य निन्दा स्तुति मानापमान इत्यादिक अनात्माको धर्महै अरु इनते रहित आत्मा को धर्म है पुनिआपनो स्वरूप आपने शरीरहीमें है कैसे है जैसे फूल में सुगन्ध जैसे पदार्थ में स्वाद जैसे दूध में घृत जैसे दारु पाषाण में अग्नि जैसे तिल में तेल जैसे मृगमें कस्तूरी है पर बिनाजाने बाहेर न रहै जैसे आपनो स्वरूप माया के आवर्ण विक्षेपकरिकै ढँपिरहेउहै तहांनित्यानित्य को बिबेक करिकैआवर्णविक्षेपको दूरिकरिकै आपनो स्वस्वरूप आपहीमेंदेखै आवर्णकही अपने अज्ञानते अपनो स्वरूप ढँपिरह्यउहै विक्षेपकही शरीर इन्द्री मनइनकीब्याधि आधिकी उपाधि हरिकै स्वस्वरूप भूलिगयो है ताको बिक्षेपकही बुद्धि के अनुभव विचारकरिकै आपनोस्वरूप शरीरते भिन्नकरिकैदेखैकि मेरोस्वरूप नतौ चारिवर्ण है नतौ चारिआश्रम है नतौ देवता है न दानवहै नतौ मनुष्य है नतौ चरहै न अचर है यहतौ सब अनित्य है अरुमेरोशरीर नित्य है अखण्ड एकरस है शुद्धचैतन्य निर्मल है चौबीसतत्त्वमा याके हैं जड़ हैं अरु पचीसवां तत्त्व आत्मा है चौबीसते भिन्न है चौबीसौआत्माकरिकै सत्य चैतन्य ह्वैरहे हैं चौबीसौ तत्त्वते आत्माको भिन्नकरि लेइ ज्ञानकी यत्नते जैसे फूल में अतर चोवा फुलेल काढ़िलेते हैं जैसे दूध में घृत व्याप्त है यत्नते काढ़ि लेते हैं इत्यादिक अनेक दृष्टांत हैं ऐसेही जब आपने अनुभवते आपने स्वरूपकी प्राप्तिभई तब उसको न सुख न दुख न पाप न पुण्य न निंद्या न स्तुति तबयह आनंदमय होत है जबस्व स्वरूप की प्राप्ति भई ताको ज्ञानस्वरूपकही ज्ञानतीनिप्रकारको एकबर्णाश्रमको ज्ञान एकशास्त्रजन्यज्ञान अरु एकबिशेष अनुभव स्वरूपाकारज्ञान अबजाते ऐसे ज्ञानहोइ सो बैराग्य कहते हैं बैराग्य में चारिभेद हेतु स्वरूप फल अवधि विषय जो हैं ताको विषहूते अधिक जानै काहेते कि जो कोई विषखात है तौ शरीर

छूटिजाती है पुनि जो कहूँ कर्मानुसारशरीरको धारण कियो तहां वह विषनहीं अमलकरै अरु जो मनुष्यतन पाइकै विषय जो है महाविषरूप ताही भोगमें आसक्तभयो तब शरीरछूटि गयो तब विषय विषे जोहै सो चौरासीलक्ष योनि में अमल करत है जियत है मरत है को जानै केते युग बीतैंगे यही हालमें ताते विषयविषहूते अधिकाधिक जानै ताको हेतु वैराग्यकही पुनि स्वरूप वैराग्य में दुइ भेद हैं एक फलको त्याग एक स्वरूप को त्याग एक विषय को व्यवहार करिकै कर्म करते हैं पुनि ताको फल भोग्य त्याग करत हैं यह कहते हैं कि वेद की आज्ञा करते हैं फल भगवत् समर्पण करते हैं अरुएकै जब विषय प्राप्तिभई ऋद्धी सिद्धी मान बड़ाई इत्यादिक त्यहि विषय को स्वरूपै त्यागकरते हैं यह कहते हैं कि ज्यहिको फलै नहीं खाना ताको उपाय क्यों करना ताको स्वरूप वैराग्य कही पुनि जो विषय प्राप्ति भई है अरु ताको त्यागदियो पुनि उसमें वासना नचलै दीनाधीनको त्यागकरै दीनकहीजो पदार्थमय त्यागकीन है सो मेरे पास फिरि आवैतौ कछुउसमेंसेलैकै आपनो निर्बाह करौं यह दीनताकी बासना न उठने पावै आधीन यहजो पदार्थ मेरेइहांआयोरहैसोमैं पुण्यकरिदेत्यों तौ भलीहोती जाते कोई काल में मोको फिरि प्राप्तहोती यह बासना न उठने पावै पुनि अहंपदन आवै मन बचन कर्मते कि मैं बड़ो त्यागीहौं यह बासना कबहूंन उठै ताको फल वैराग्यकही पुनि जोविषय जानिकै त्याग कियो है तैसेईविषय इहांताईंजानैसातलोक नीचे हैं अतल १ बितल २ सुतल ३ रसातल ४ तलातल ५ महातल ६ पाताल ७ तहां छः लोक में दानवनकोबास है अरु सतयेंमें नागन को बास है पुनि सातलोक ऊपर हैं भूर्ल्लोक १ भुवःलोक २ स्वर्गलोक ३ महर्लोक ४ जनलोक ५ तपलोक ६ सत्यलोक ७ इतिसात इहांताईं उत्तर पितृदेवता कश्यप मुनितपी ब्रह्माको बासहै पुनिशेषलोक ऐश्वर्य मृत्युलोक ऐश्वर्य ब्रह्मलोक ऐश्वर्यएते समस्त महाविश्वरूप जानै ताको अवधि वैराग्य कही एक वैराग्यचारि प्रकार के हैं जितमान बितरेक एकइन्द्रीबशीकरण जितमानासारसारको बिचार अहर्निशिकरनानीकीप्रकारतेयहसंसार असारहै संसारकहे आपनीदेह अरु देह के सनेही माता पिता स्त्री पुत्र भाई नात कुटुम्ब अरु देव दानव पशु पक्षी इत्यादिक समस्त न काहूकेभये हैं न काहूके होहिंगे अरु न कोई संगजाइगो न कोईसंगआयो है मैंतौ सदा एकहीहौं देखिये तौ बड़ो आश्चर्य है मेरोशरीर अनित्य है अरु शरीरकेहेतु जिनमें स्नेहमान्यो है सोभी अनित्य है अरुतिन दूनौं में अहंमम मानिरह्योहै सर्बभूत में मित्र अरि मानापमानक इत्यादिक अनेकन विकार ग्रहण करिरह्यो है मेरेबिचारमें त्रैगुण्यजनित व्यवहारजो है सो सब अनित्य है अरु आत्मा नित्य है सोई मेरो स्वस्वरूप है सोई सारहै नित्यानित्य दूनों कैसे मिलिरहे हैं जैसे दूध अरु जल तहां हंसवत् बुद्धिकरिकै सारको ग्रहण असारको त्याग ताको जितमान वैराग्यकही पुनि बितरेक काम क्रोध लोभ मोह मद इत्यादिकनको स्वरूप सोधनकरै अरु ज्ञान वैराग्य विज्ञान शांति संतोष शील इत्यादिक इनदूनौंको स्वरूपसोधै कौन परिपक्वहै कौन अपक्वहै जो परिपक्वहोइ तामें चित्तलगावै अरु जो अपक्वहोइ ताको कोईयोग से मिटाइडारै अरु संसारजालजो है सो सर्प है सबको डसै है तहां आपनी बुद्धिको नेउररूपकरै जब नेउरको सर्पकाटैहै तब नेउरभी सर्प को काटिडारत है तैसे गुरुमंत्र बूटीसे कालकी बिषयनिवृत्तिकरै जेते विषयभाव हैं तेते सर्ब अभाव करि देइ ताको बितिरेक वैराग्यकही पुनि एकइन्द्री जो मनमें विषय भोग की इच्छाहोइ तौ विषयको अनित्यजानिकै अरु अपने धर्मको बाधक जानिकै इंद्रिनसंयुक्त बिचारिकै मनको रोंकिदेइ चतुष्ट अन्तष्करण अरु वाह्यइंद्रिन संयुक्त ताके अभिमानको त्यागकरै अरु सब इंद्रिन में व्याप्त श्रीरामचन्द्रकोदेखै जैसे एकघटमें अनेकछिद्र हैं ताके भीतर दीपक बारिदेइदीपक सबछिद्रनको प्रकाशकरत है तैसे श्रीरामचन्द्र सबको प्रकाश करतहैं यह अचलदृष्टिहोइ ताको एकइन्द्री वैराग्यकही पुनि बशीकरण नरलोक विषय भोग्य देवलोक विषयभोग्य नागलोक विषयभोग्य तीनिहूं लोक विषय महारोग समजानिकै अरु नाशमान जानिकै ताको स्वरूपही त्यागकरै ताको बशीकार वैराग्यकही पुनि वैराग्य चारिभेद हैं मन्द तीब्र तीब्रतर तीब्रतम मृतकको देखिकै किंतु कोई योगते बिषय नष्टह्वैगई है अथवा गृहकेलोगन आपनेको त्यागिदियो है तब आपको धिक्मानिकै वैराग्यआई है ताको मन्दवैराग्यकही पुनि तीब्र श्रुतिस्मृति पुराण इत्यादिक श्रवणकरिकै संसार को अनित्यजानिकै सुत दारा धन धाम इत्यादिक त्यागिदियो है ईश्वर के भजन कै लालसा उठी है जो कछु प्राप्त होइ ताहूको अभाव अरु प्राप्ति में बासना नास्ति मुमुक्षरूप हैं ताको तीब्र वैराग्यकही तीब्रतर जाको आपनी देते वैराग्य है शीत उष्ण दुख सुख मानापमान इत्यादिक शरीरमें चेष्टानहीं आवै अरु किसूको गुण औगुण दृष्टिमें न आवै अरु चौदहभुव अरु तीनिलोककी विषय

मनते भूलिजाइ अर्थ धर्म काम इनकी गंधि दूरिह्वैगई है जीवनमुक्त हैं केवल मोक्षदशा में आरूढ़ हैं सर्बत्र ब्रह्मदृष्टिहैं ताको तीब्रतर वैराग्यकही पुनि तीब्रतमजोतीब्रतरके लक्षण हैं सोलक्षणतौ साधारणैहैं पर जिनके मोक्षहूको त्याग है अरु जिन्हैं नित्यनित्यको अभाव है अरु श्रीरामचन्द्र के स्वरूप के बिरहमेंअरु पराभक्तिमें आरूढ़ हैं एकरस जिनकीदशा अलक्षिहै ताको तीब्रतम वैराग्यकही पुनि योगकहते हैं अष्टांगयोग नेम जन्म आसन प्रत्याहार प्राणायाम ध्यान समाधि दशनेम शौच होम तप दान विद्या अध्ययन इंद्री निग्रह व्रतचान्द्रायण इत्यादिक किंतु ब्रतकहे प्रणउपवास एकादश्यादिक मौनरहना त्रिकाल स्नान संध्याकरना येते दशनेम हैं पुनि दशसंयम अहिंसा सत्यबचन अस्तेय अस्तेयकही शक्तिमान किंतु ध्रुवविश्वास किंतु इन्द्रिन के विषय चोराइलेना ब्रह्मचर्य दया नम्रता क्षमा धृति अल्पभोजन शौच येते दशसंयमकही पुनि आसन कमलासनादिक चौरास्थासन हैं तिनमें जोहोइ पुनि प्रत्याहार प्रत्याहारकही अल्पभोजन तिसको भी गिराइदेना प्राणायाम पूरक कुंभक रेचक अंगुष्ठ से दहिना स्वर दाबिकै प्राणचढ़ावना अपने अनुकूलमंत्र संयुक्त सोरहबार पुनि कुम्भक दूनों स्वर दाबिकै प्राणकोथांभना चौंसठिबारमन्त्र संयुक्त पुनि रेचक बामस्वरबन्दकरिकै दाहिने स्वरमें उतारना बत्तीसबार मंत्रसंयुक्त याको नित्यनेम प्राणायामकही तत्रप्रमाण इड़यापिवषोड़शभिः पवनंचतुरुत्तरषष्टिकमौदरिकंत्यजपिंगलयाशनकैः शनकैर्दशभिर्दशभिद्व्र्यधिकैरिति तंत्रोक्तिः पुनि ध्यान योगबिषे स्वस्वरूपकै चितवनि एकाग्र चित्तकरिकै पुनि समाधि तामें दुइभेद एकसबिकल्प एकनिर्बिकल्प सबिकल्पकही लय बिक्षेप कषाय रसाभासकरिकै समाधि छूटिजाइ है लय आलस विक्षेप कछु श्रवणसुनिकै दृष्टिकरिकै कषाय आनकर आनै समाधि में आवै पुनि रसाभ्यासकही बिषयमें चित्तकैबृत्तिजाइ यहवारिते धंधाहोइजाय सो सबिकल्पकही अरु निर्बिकल्पकही जड़ीभूत जैसे चित्रकैवेलियह अष्टांगकरिकै योगकही पुनि बिज्ञानकहते हैं जीव ब्रह्म की एकता शांतिरस रूप समतादृष्टि ब्रह्मानन्दएकरस अखण्ड वृत्ति सोई भोग ताको बिज्ञान कही तहां

**प्रतापप्रबलसबभांती अबलाअबलसहजजड़जाती १६ दो०॥ पुरुषत्यागिसकनारिकह जोबिरक्तमतिधीर नतुकामीबिषयाविवश बिमुखजोपदरघुबीर १७ सो० ॥ सोमुनिज्ञाननिधान मृगनयनीबिधुमुखनिरखि बिकलहोहिंहरियान नारिबिश्वमायाप्रकट १८**

ज्ञान वैराग्य योगबिज्ञान ये चारिपुरुष बर्ग हैं ( १५ ) हेतात पुरुष को प्रताप बल है अरुअबला अबलहै अबलकहीपुरुषते अबल है तुरंत आपनबल नहींकरिसकैहैघातपाइकैबलहैसोकरै है सहजहीजड़जाति है ( १६ ) दोहार्थ ॥ पुनिचारिहूके एकएक विशेषणकहतेहैं पुरुष नारिकोत्यागिसकै है तहांवैराग्यमान जोबिरक्तहोइ तौ मायारूपीनारिकोत्यागिसकैहैं अरु योगी जोधरिमानहोइसोमायारूपी नारिकोत्यागिसकैहै अरुनतुकामीतुपुनः नकामी जिन ज्ञानिन को कामना नहीं है ते मायारूपी नारिको त्यागिसकैहैं अरु विषया बिबश जे बिज्ञानी विषयते अबिबश हैं विषयके बश नहीं हैं ते विज्ञानी मायारूपी नारिकोत्यागिसकैं हैं तहां इनचारिउ तौमायाको त्यागिदीन है परमायाने इनको नहींत्यागेउ है तहां ज्ञानवैराग्य योग विज्ञान येचारिउ अपनीसामर्थ्यते मायाको त्यागिदियो है अरु श्रीरामचन्द्रके पदतेबिमुख हैं येचारिउकेवल आपनेबलतेमोक्षचाहत हैं ( १७ ) हेगरुड़येचारिउमननशीलमुनि हैं अरु ज्ञानकेनिधानहैं परमृगलोचनीबिधुकहीचंद्रबदनी जोमाया है त्यहिकोदेखिकै बिकलह्वैजाते हैं काहेते यह बिश्व नारिरूपही प्रकट है ताते कहां जाहिं तहां जहां दृष्टि जाइहै तहां उड़ेहैं तहां कर्म मन बचन करिकै मायामें तनिकौ चित्तजाइ सोईमृगलोचनी कहा है उन ज्ञानिन के बचन सुनिकै आपु चितैकै ज्ञानिनको चित्तहरिलेत है अरु माया में दृष्टि जाइ ऋद्धि सिद्धि इत्यादिकमें सो चन्द्रबदन देखिकै चित्तहरिजातु है तौ ज्ञान बिज्ञानते च्युतहोइ जाते हैं काहेतेश्रीरामचन्द्रकी भक्तिके निरादर तें ( १८ ) हे तात इहां पक्षपात कही आपन पक्षकरिकै मैं नहीं कहत्यउँ कछु यह वेद पुराण संतनकर सम्मत कहतहौं ( १९ ) हे पन्नगारि यह अनूपनीति मैं कहतहौं देखिये तौ स्त्री स्त्रीके स्वरूप में नहीं मोहित होइ है ( २० ) हे तात सुनहुँ काहेतेन मोहित होइ कि माया अरु भक्ति दूनौं स्त्रीबर्ग हैं यह सब जानते हैं हे तात माया भक्ति दूनौं श्रीरामचन्द्र की हैं पर भक्ति रघुबीर को अतिपियारी है अरु खलुकही निश्चय करिकै माया नर्तकी है जैसे कोई एक राजा है उसके पाटबन्धनी रानी हैं अरु तिनमें एक नटी है किन्तु टहलुई हैं तहांजो नटी टहलुई पाटबन्धनी ते विरोध करै तौ राजादण्डकरिकै

**चौ० इहांनपक्षपातकछुराखौं वेदपुराणसंतमतभाखौं १९ मोहननारिनारिकररूपा पन्नगारियहनीतिअनूपा २० मायाभक्ति सुनहुंतुमदोऊ नारिबर्गजानैसबकोऊ २१ पुनिरघुबीरहिभक्तिपियारी मायाखलुनृत्यकीबिचारी २२ भक्तिहिसानुकूलरघुराया तातेत्यहिडरपतिअतिमाया २३ रामभक्तिनिरुपमनिरुपाधी बसैजासुउरसदाअबाधी २४ त्यहिबिलोकिमायासकुचाई करिन**

दूनो को निकासिदेइ दूरिकरै है तैसे श्रीरामचन्द्रकै भक्ति पाटबन्धनीअरुमाया नटी टहलुई है श्रीरामचन्द्रके उरमें मायाभक्ति को बाधक नहीं करिसकै है ( २२ ) हेतात श्रीरामचन्द्र भक्तिपर सानुकूल हैं ताते मायाडरिकै भक्तिपर कछुउपाधि नहीं करती है ( २३ ) हेतात श्रीरामचंद्रकै भक्ति निरूपमकही उपमारहित है अति सुन्दरिहै ताको देखिकै मायालज्जित ह्वैजाती है अरु श्रीरामचन्द्रकै भक्ति निरुपाधिहै अस जानिकैहरि कीमाया भागि जाती है हेतात ऐसी अवाध्यज्यहिके हृदय में बसी है ( २४ ) हे गरुड़ ज्यहि के उरमें भक्तिबसी है त्यहिको बिलोकिकै मायाभय खाती है अरु आपनी प्रभुता कछुनहीं करसक्ती है तहां चारिप्रकारते माया भक्तिकोनहीं मोहिसकैहै एकतौ स्त्रीस्त्री को नहीं मोहैदूजे भक्तिश्रीरामचन्द्रको पियारी है अरु श्रीरामचन्द्र भक्तिपर अनुकूल हैं ताते स्वामी के भयकरिकैनगीचे नहीं जाइसकैहै अरु श्रीरामचन्द्र कै भक्ति अनूपम है ताते ताकोदेखिकै लज्जितह्वै जाती है पुनि श्रीरामचन्द्रकैभक्तिनिरुपाधिहैसो समुझिकैचुपसाधिकै बैठिरहती है ( २५ ) तहां असबिचारिकैजेबिज्ञानीमुनिहैं तेभक्तिहिकी याचना करते हैं काहेते निरुपाधि जानिकै अरु श्रीरामचन्द्रको प्रियजानिकै अरु दिव्यगुणकी खानि जानिकै दिव्यगुणकौनहैं भगवत् सम्बन्धी कर्म योग वैराग्य ज्ञान ध्यान समाधि दया करुणा क्षमा शील उदारइत्यादिक जेतेभगवत् सम्बन्धी गुण हैं तिनकी भक्तिखानि है ताते मुनीश्वर भक्तिहि को यांचत हैं हे गरुड़ ज्ञान वैराग्ययोगविज्ञान ये चारिउपुरुष बर्गकहे हैं अरु ये चारिउ आपने बलतेमायाको तराचाहते हैं ताते माया इनके ऊपर बाधाकरती है ताते ज्ञानको मार्ग मोक्षको संबाध्य है अरु भक्तिकर मार्ग अवाध्य है अरु मोक्षदाय ज्ञानभक्तिदोनों हैं ताते मुनीश्वर ज्ञान को संवाध्य अवाध्य भेदकहते हैं ( २६ ) दोहार्थ ॥ हे तात यह ज्ञान भक्तिरघुनाथजीकी रहस्य है श्रीरघुनाथजी के अन्तर्यामी ब्रह्मरूपमें ज्ञानरहस्य है अरु किशोरमूर्ति परब्रह्म में भक्तिरहस्य है येदूनौं रघुनाथजीकी रहस्य हैं परमदिव्य गुण परमलीला सो किसूके जानबे योग्यनहीं है अरु

**सकैकछुनिजप्रभुताई २५ असबिचारिजोमुनिबिज्ञानी यांचहिंभक्तिसकलगुणखानी २६ दो०॥ यहरहस्यरघुनाथकर वेगिनजानैकोइ जोजानैरघुपतिकृपा सपन्यहुंमोहनहोइ २७ औरोज्ञानभक्तिकर भेदसुनहुंपरवीन जोसुनिहोइरामपद प्रीतिसदाअवछीन २८**

**चौ०॥ सुनहुंतातयहअकथकहानी समुझतबनैनजाइबखानी १ ईश्वरअंशजीवअविनाशी चेतनअमलसहजसुखराशी २ सोमाया-**

दूनौं को स्वरूप जानै अरु दूनौं करभेदजानै सोरामचन्द्रकी कृपा बिनानहीं जानाजाइ है जब श्रीरामचन्द्रकी कृपाते जानै तौ सपनेहुं मोहनहोइ ( २७ ) हे तात ज्ञानभक्तिकर एकभेद हमकहिआये हैं अब दूसरसुनहुं जोसुनिकै श्रीरामचन्द्र के चरणारविंदविषे अबिच्छन्न प्रीतिहोइ ( २८ ) इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने उत्तरकाण्डेज्ञानभक्तिसबाधिअबाधिभेद बर्णनन्नामएकत्रिंशतितस्तरंगः ३१॥

दोहा॥ दुइ अरु तीसतरंग में जीवईश आभेद॥ सप्तभूमिकाज्ञान की रामचरणकहिवेद ( ३२ ) हे तात यह कहानी सुनहुं समुझत तौ कछुकछु बनै है परबखानिकै नहीं कहा जात है जो कोई कहै कि कहा तौ नहीं जात है पर कहते क्योंहौ तहांजो नहीं कहाजाइ सोई कहते हैं ( १ ) हे तात यह जीव ईश्वर को अंश है अबिनाशी है अरु अमल

है अज है सहजहीसुखकीराशि है तहां सच्चिदानन्द रूप हैं चेत कहे चित चैतन्य रूप अरु अमल कही सतरूप सुखकी राशिकही आनन्द रूप हैं ताते सत्‌चित् आनन्द सच्चिदानन्द हैं कैसे जैसे गंगा सरयू को जलहै कोई घटमेंभरा जाता है परवह सरयुहि गंगाको जल कहावत है निर्मल शुद्ध है जबताईकछु मिलै नहीं जब कोई योगते घटके जलमें कछु मिलिगयो तथापि सरयुहि गंगाको परकछु मलीन मिलते मलीन ह्वैगयो है तब सामान्यह्वैगयो है श्लोकार्द्ध गीतायां। ममैवांशोजीवलोके जीवभूतः सनातनः ॥ सनातन कहा है तहां सच्चिदानन्द जानब ( २ ) हे गोसाईं सोजीवमाया केबशभयो है कैसे जैसे करि मर्कटकीनाईं कीरकही जहांसुआ चुनबेकोजात है तहां ब्याधा यत्नकरिकै फँदावते हैं कैसीयत्न करते हैं बहुत अड्डा बनावते हैं बीता बीता भरेके बीच दुइदुइ लकड़ी गाड़ते हैं दुनहूंके बीच में लकड़ी डारते हैं तिसमें पूँगली डारते हैं नीचे कछु अन्न धरिदेते हैं त्यहि आशाकरिकै सुआ पूँगलीपर बैठत हैं जाइ तब सुआ चुंगलसे पकरयो पूँगली घूमिगई माथानीचे ह्वै गयो है अन्न नेकहू नहीं पावते हैं सुआकी चोंचते अरु वहि अन्नते अंगुल आधको बीच रहिगयो है सुआकी दृष्टि में अन्न समीपही आइ गयो है तहां नतौ अन्नको पाइसकै है अरु न दूरिहैतब सुआके चित्तकी वृत्ति अन्न में ह्वैरही है चुंगलते पूँगली पकर्‌यो है सो

**बशभयोगोसाईं बँध्योकीरमर्कटकीनाईं ३ जड़चेतनहिंग्रन्थिपरिगई यदपिमृषाछूटतकठिनई ४ तबतेजीवभयोसंसारी छूटन**

भूलिगयो है ब्याधा आइकै सहज में धरिलियोहै अन्न नेकहू नहीं पायो है यह दृष्टांत है अब वृत्तांत कहते हैं शुभाशुभ कर्म दोऊ किनारेकी लकड़ी हैं चित्तकै वृत्ति विषयमय सो बीचकी लकड़ी है अरु बासना बीचकी पूँगली है अरु सुत वित दारा इत्यादिकनमें स्नेह सोई अन्न है अरु जीव सुआ भयो है अरु तृष्णा क्षुधाभई सोबासना रूपपूँगलीपर बैठ्योहैसो बासना परमार्थसे उलटि गई है तब अर्द्ध ह्वैकैटंगिरह्यो है तहांक्षुधारूप तृष्णा की प्रबलताते सुत वित दाराको यह कहते हैं कि ये मेरे हैं अरु समीपही हैं तिनमें मोहकरिकै अपनपौ अच्छी तरह मानिलियो है तिनमें चित्त कै वृत्ति अच्छी प्रकारते आसक्त भई है अरु वहपदार्थकिंचित् प्राप्त नहीं हैतीनिहुँ कालमें अरु कालबधिक पकरिकै चौरासीरूप पींजरामेंडारिदियो है अनेकयोनिनमें भ्रमत है पुनिमर्कटकीनाईंबँध्योहै कैसेबँध्यो है तहां बांदर के फँदाइबे को किसानखेत के किनारेपर संकीर्णमुंह की कुल्हियागाड़िदेते हैं अरु उसमें अन्नडारिदेते हैं जो बानर आये कुल्हियामें हाथडारिकै अन्नमूठीमें बांधतभये हैं तबमूठी नहीं निकरैहै काहेते चित्तकीवृत्ति अन्नमय ह्वैरही है अरु मूठीको निकासना भूलिगयो है तब किसान बानरनको मारिकै अंगभंग करिडारते हैं तैसे कालकिसान है अरु संसार खेत है गृहसंकेत मुखकी कुल्हियाहै सुतवित कलत्र अन्न हैं जीवबानरहै बासनारूप मूठीमें तिनकोपकरयो है छूटिनहींसकै है अरु अन्नरूप सुतवितते जीवकोस्वार्थ नहींसधै तीनिहूंकालमें तहां कालकिसान दण्डदेकै योनिनको भ्रमब सोई अंगभंग करिकै जन्म मरण में जेवरीमें बांधिराख्यो है हेतात यह जीव माया में अपनपौ मानिकै कीर मर्कटकीनाईं बंधिरह्यो है ( ३ ) तहां हेतात जड़जो है माया अरु चेतन जो जीव ते द्वौते परस्पर अपनपौते ग्रन्थि परि गई है यद्यपि जीव के विषे मायाकी ग्रंथि वृथा है तदपि छूटिबे को कठिन हैं ( ४ ) तबते जीव संसारीभयो है न वहग्रन्थिछूटै न सुखीहोइ पर यह ग्रन्थि अनादिहै को जानै कबते परी है तहां शास्त्र गुरु बाक्य निज अनुभव करिकै छूटि जाती है तहां प्रमाण है अन्यच्च श्लोकएक॥ शास्त्रदृष्टंगुरोर्बाक्यं तृतीयंचात्मनिश्चयं ॥ त्रिबिधंयोभिजानाति समुक्तोजन्मबन्धनात् ( ५ ) हेताातयह ग्रन्थि छोरबे को श्रुतिपुराण उपाय कर्मकांड बहुत कह्यो है पर त्यहिते अधिकाधिक अरुझत है छूटतनहीं है काहेते कर्मकांड को फल स्वर्ग नरक मृत्युलोक है अरु ज्ञान को निरुपाय कहते हैं

**ग्रन्थिनहोइसुखारी ५ श्रुतिपुराणबहुकह्यउउपाई छूटनअधिकअधिकअरुझाई ६ जीवहृदयतममोहबिशेखी ग्रन्थिनछूटिपरैनहिंदेखी ७ अससंयोगईशजबकरई तबहुंकदाचितसोनिरुअरई ८ सात्विकश्रद्धाधेनुसुहाई जोहरिकृपाहृदयबसआई ९ जपतपब्रत**

वेद पुराण काहेते कि ज्ञान में कछु उपाय नहीं है अंतःकरण में आपनेस्वस्वरूप के समुझिबे की बात है किंतु श्रुति पुराण बहुत उपाय कहा है ग्रन्थि छूटिबे की पर जवनी उपायते छूटै सो किसूको समुझि नहीं परै है अरु जो किसूको समुझि परैहै सोसधै नहीं है अरुजो साधना करैलागै तौ बिघ्न ह्वैजाइहै ताते छूटैनहीं अधिक अधिक अरुज्ञात है अरु जोकदाचित् कोई योगते छूटिबे को उपाय साधै सो आगे कहते हैं ( ६ ) हेगरुड़ जीवके हृदय विषे विषय बासना मोह अंधकार छाइ रह्यो है तहां देखितौ परतै नहीं ग्रन्थि कैसे छूटै जीव के अंतर्भूत मोह अंधकार छाइरह्यो है जड़चेतन की ग्रंथि कैसे छूटै है ( ७ ) हे तात ऐसे संयोग जब ईशकरै तबहूं कदाचित् निरुअरै ( ८ ) हे तात अबज्ञानकी सप्तभूमिका सुनहुं ज्यहि करिकै जड़चेतन की ग्रंथिछूटै है परज्ञान जो निर्विघ्न निबहै तब छूटैतहां हेतात सात्विकी श्रद्धा सोई धेनुहोइ परजब हरिकी कृपाहोइ तब सात्विकी श्रद्धाकही वेदगुरु वाक्य में प्रतीति सो सात्विकी श्रद्धा प्रथमभूमिका कहते हैं ( ९ ) हे तात पुनि जप तप ब्रत नेम इत्यादिक अपार जे हैं जपकही जै अक्षरकर मन्त्रहोइ तै हजार नित्य जपै भूतशुद्धि प्राणायाम करिकै पुनि तपकही येनकेन इंद्रिन को दमन करै पुनि ब्रतकही एकादशी चान्द्रायण इत्यादिक यमकही सूक्ष्मसात्विकी भोजनकरै यमनेम दशपाछे समीपही कहिआये हैं इत्यादिक धर्मके शुभाशुभ आचरण जो वेद कहते हैं ( १० ) एते शुभआचरणते हरित तृणहोइ जैसे हरिततृण गऊ प्रीतिसों भक्षण करै है तैसे सात्विकी श्रद्धाजो है सो जप तप संयम नेम तीर्थ ब्रत इत्यादिक शुभकर्म प्रीतिसों करै सोई गऊको चरबहै तब जैसे गऊहरित तृण पेटभरिखाइकै बछरा को पाइकै पन्हाव है तैसे श्रद्धारूप गऊके भाव बछराहै तहां जोकरै सो प्रीतिभाव प्रेम समेत करै सोई शिशु है तब सुख जो है सोई पन्हाव है ( ११ ) तब अहीर गऊ को रज्जुते नोइकै तब पात्र में दुहत हैं तहां निर्म्मल मन निजदासकही आपने बशहोइ सोई अहीर है अरु मनकी वृत्ति धर्ममय सोई नोइनिहै अरु बिश्वास कही सहजौ मैं शुभकर्म करतहौं सो अवश्य मोकोफलैगो सोई विश्वास पात्र है तहां शुभआचरण अरु भाव अरु वृत्तिते

**यमनेमअपारा जोश्रुतिकहशुभधर्म्मअचारा १० सोइतृणहरितचरैजबगाई भावबच्छशिशुपाइपन्हाई ११ नोइनिवृत्तिपात्रविश्वासा निर्म्मलमनअहीरनिजदासा १२ परमधर्म्ममयपयदुहिभाई औटैअनलअकामबनाई १३ तोषमरुततबक्षमाजुड़ावै घृत**

अरु विश्वास अरु अमल मन एते पांच अंग संयुक्त श्रद्धा सो ज्ञानकीप्रथम भूमिका भई ( १२ ) अरु दूसरिभूमिकाकहते हैं तहां घासमेंदुग्ध अतिसूक्ष्म त्यहि को जो कोटिनउपायकरै तौ दूधनहीं निकसत है अरु जोगऊ घासखाति है तौ गऊकेद्वारह्वैकै घासते दुग्ध निकसत है तैसे श्रद्धा में शुभकर्मकरै तौ परमधर्ममय पयकही दूध निकसत है बिश्वासरूप पात्रमें स्थितहोत है पर गऊ घास मिलिकै प्रयोजन दूधहीतें है परमधर्मकही अहिंसाको काहेते जहांतक शुभकर्म यज्ञ इत्यादिक हैं तिनमें थोर बहुत हिंसा होतई है ताते वाहीको धर्मकही अरु जब यहबिचार आयो कि कर्ममें तौ हिंसाहोती है यहबिचार करतसंते कर्मबिषे हिंसा छूटिगई है अहिंसितभयोहै सो परमधर्म है तहां प्रमाण है अन्यच्चश्लोकएक॥ अहिंसापरमोधर्मः अहिंसापरमोतपः अहिंसापरमोयज्ञः अहिंसापरमोजपः १ पुनिगऊकर दूध तौ औटाजात है इहां परमधर्म में निःकामता अमल है ताही ते औटबकही दृढ़ता ( १३ ) तब संतोषरूपबनते उड़ावै अहंपद उष्णतामिटिजाइ क्षमारूप शीतलता प्राप्तहोइ संतोषकही आपने शरीर के निर्बाहमात्र रस अनरस अनायास यथालाभ तथा संतोष श्लोकार्द्ध॥ असंतोषोदरिद्रस्यात्सन्तोषोपरमोधनं ॥ पुनि क्षमाकही निंदास्तुति में उद्वेग हर्षहोइ तहां अहिंसा निष्काम संतोष क्षमा चारिउ अंग एक रूपह्वैकै सो परमधर्म सो ज्ञानकी दूसरी भूमिकाभई पुनि धृतिसम जीवनदेइ धृतिकही धीर्यपर समधीर्यहोइ हानि लाभ सुख दुखमें बुद्धिसमर है सोई जावनदइ भगवद्गीतायांश्लोकत्रय ॥ श्रीभगवानुवाच॥ प्रजहातियदाकामान् सर्बान्पार्थमनोगतान् ॥ आत्मन्येवात्मनातुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदुच्यते १ दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषुविगतस्पृहः वीतरागभयंक्रोधः स्थितधीर्मुनि रुच्यते २ यःसर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्यशुभाशुभं ॥ नाभिनन्दतिनद्वेष्टि तस्यप्रज्ञाप्रतिष्ठिता ३ तहां वही दूध को दहीभयउ है इहां समधीरज सोई दहीभयउहै सोई समधृति समबुद्धि ज्ञान की तीसरी भूमिकाभई ( १४ ) पुनि चौथीभूमिका कहते हैं तब त्यहि दधिकोमथिकै माखन निकासाचाहतुहै तहां दही ज्यहिपात्र में जमायो त्यहिते पलटिकै माथकही बड़ेपात्रमें करिसकै तब मथानी डारिकै खम्भामें रसरील्याइकै दधिकोमथिकै माखन

**समजावनदेइजमावै १४ मुदितामाथबिचारिमथानी दमअधाररजुसत्यसुबानी १५ तबमथिकाढ़िलेइनवनीता बिमलबिरागसुपरमपुनीता १६ दो०॥ योगअग्निकरिप्रकटतबकर्मशुभाशुभलाइबुद्धिसिरावैज्ञानघृत ममतामलजरिजाइ १७ तबबिज्ञाननिरूप**

निकारतु यहदृष्टांत है अब और दृष्टांत कहते हैं तहां परमधर्मरूपदूध स्वरूप पात्रमें जमायो है सो मुदिताकही आनन्द बड़ेपात्र में पलटिकै बिचाररूप मथानी डारिकै दमको खम्भबनाइकै सप्तबाणी रज्जुमें बांधिकै मथतु है बिचारकही सारासारको निर्णय अरु दमकही इन्द्रिनको दमनकरना सत्यबाणीकही सत्यबोलना किंतु सत्यबाणीकही सत्यरहस्य ( १५ ) जब ज्यहिप्रकारते कहिआये हैं सो दहीमथिकै माखन निकासि लेइ पुनि जो बिचारकहा है त्यहितेमथिकै माखन वैराग्यरूप निकारिलेइ कैसी वैराग्य है अवधिवैराग्य विमल शुभसुन्दरि परमपुनीत कही परम पवित्र है तहां मुदिता अरु बिचार अरु दम अरु सत्याबाणी यहचारिसंयुक्त वैराग्य जोहै सो ज्ञानकी चौथीभूमिकाभई ( १६ ) अब पंचमभूमिका कहते हैं दोहार्थ॥ हेतात अष्टांगयोग जो कहिआये हैं ताहीको अग्निकरै अरु शुभाशुभ कर्मकी लकड़ीकरिकै बारिदेइ शुभकर्म कही सात्विकगुणमय अशुभकही राजस तामसमय तब माखनरूप वैराग्य मैंछांछममताकही अहं राज्यमान सो छांछमल जरिगयो तब वही बुद्धि ज्ञान रूप घृतको सेरावति है सेराउब कही घृतरूप ज्ञानको भिन्नकरति है अरुशीतल करति है यहां ज्ञानकही आत्मा अनात्माको जानना अनात्मा को मिथ्याजानिकै बैराग्य करिकैत्याग अरु आपने स्वस्वरूप को ग्रहणसो ज्ञान की पंचम भूमिकाभई ( १७ ) अब छठई भूमिका कहते हैं आपने स्वस्वरूपको अरु ब्रह्म की एकता करिबेको अनुसंधान है सो विशेषिबिज्ञान है तबजब घिउ जमिकै बिशद भयउ सो घिउरूप विज्ञान निरूपण करनेलगी बुद्धि तहां बिज्ञान विशदभयो अनात्माके सम्बन्धते आत्माभिन्नदेखिपरेउ अनुभवते तब बुद्धि बिज्ञानरूप घिउतहां बिज्ञान बिशदभयो अनात्माके सम्बन्धते आत्मा भिन्न देखिपरेउ अनुभवते तब बुद्धि बिज्ञानरूप घिउ निरूपण करिकै चित्तरूप दिया में भरिकै समतारूप दीवटि पर धरतभई तहां बिज्ञानकही आपनो स्वस्वरूप जीव अरूप स्वरूप ब्रह्म द्वौकी एकताको निरूपण सो बिज्ञानकही ( १८ ) तबबाती बनाइकै बुद्धिबाती बाराचाहती है तहां तीनिअवस्था अरु तीनिगुण सोईकपास है अरु तामें तुरीय अवस्था रुई है अरु तीनिअवस्था तीनिउँगुण बेनवर हैं तूल तुरीयअवस्था त्यहिकीबाती गाढ़िकरिकै तहां गाढ़िकहीदृढ़करिकै जामें दीपककी ज्योतिरूपवृत्ति शुद्धबरैकहीलगै तहां तीनिअवस्था

**णीबुद्धिबिशदघृतपाइ चित्तदियाभरिधरैदृढ़समतादिवटिबनाइ १८ तीनिअवस्थातीनिगुण त्यहिकपासतेकाढ़ि तूलतुरीयसवाँरि**

अरु तीनिउँगुण अरु तुरीय अवस्थाके स्वरूप कहते हैं अवस्था जाग्रत स्वप्न सुपुप्ति तुरीय तहां जाग्रतअवस्था चौबीस तत्त्वकरिकै बर्त्तमान है पांचतत्त्व पृथ्वी अप तेज बायु आकाश पुनि पांच तत्त्व के गुण शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध पुनि पांच ज्ञानइन्द्री श्रवण त्वक् चक्षु रसना नासिका पुनि पांचकर्म इन्द्री पग कर मुख लिंग गुदा अरु चित्तबुद्धि मन अहंकार एते चौबिसतत्त्व स्थूलशरीर अरु पचीसवांतत्त्व जीवात्मा है ज्यहि करिकै तीनिउँ अवस्था स्फुरित हैं तहां स्थूलशरीर जाग्रत अवस्था को देवता विश्वहै उहै जीवस्वरूप है अरु स्थूलशरीर को भोगप्रत्यक्ष है तहां चौबिसतत्त्व विश्वदेवता स्थूलशरीर प्रत्यक्षभोग अरु सात्विकगुण येपांचमिलिकै जाग्रत अवस्थाकही पुनि स्वप्नअवस्था सत्रह तत्त्वकरिकै पांचज्ञान इंद्रीकी विषय शब्द स्पर्शरूप रस गन्ध पुनि पांच कर्मइन्द्रीकी विषय चलन व्यवहार भक्षण मैथुन बिसर्ग पुनि पांच प्राण अपान समान ब्यान उदान मन बुद्धि यहसत्रह तत्त्वकरिकै स्वप्न अवस्था है अरु तैजसदेवता है अरु वहै जीव जाग्रत अवस्था में विश्वरूप है अरु स्वप्न अवस्था में तैजस रूपउहै है तैजस कही अतिसूक्ष्म प्रकाश रूपअरु लिंगशरीर अरु सूक्ष्म भोग अरु पवनइव बेग तहां सत्रह तत्त्वलिंग शरीर सूक्ष्मभोग तैजस देवता राजसगुण एते पांचकरिकै स्वप्न अवस्था जानिये पुनि सुषोप्ति अवस्था जहां जाग्रतकी चौबीसौ तत्त्व स्वप्नकी सत्रहौतत्त्व दूनौ एकह्वैकै समरहती हैं सो सुषोप्ति है अरु प्राज्ञदेवता है कोईके मनमें प्राउत्कर्ष ज्ञानाम ज्ञानधातु है तहां प्राज्ञकही ज्ञानको तहां जीव ज्ञानस्वरूप है अरु कोई कहते हैं प्रकही उत्कर्ष को अरु प्राकेआगे अकार है ताको लैकै अज्ञहोत है ताते यहजीव अज्ञानरूप है सुषोप्ति अवस्था में अज्ञानै भोग है पर

यह अर्थ सामान्य है जहां जाग्रत स्वप्न की साम्यता सुषोप्ति अवस्था प्राज्ञदेवता शुद्धतामसगुण आनन्दभोग एते पांचौयुक्त सुषोप्ति अवस्थाकही पुनि तीनिउँगुण सात्विकगुण सत्यशौच तप दान इत्यादिक हर्षसंयुक्त करना पुनि राजस यज्ञ आदिक करिकै अहंकर्त्ता संयुक्त पुनि तामसकही जे कुछ शुभकर्म करहिं सो अश्रद्धासे अरु क्रोधसंयुक्त अरु अशुभकर्म तौ करतै रहते हैं तहां तीनिउँअवस्था तीनिउँगुण आत्माकरिकै स्फुरित हैं अनादिहीते जैसे रुई अरुबेनवर एकहीसंग बिधाताने उत्पन्नकियो है परजब यलते कपासकोबीज निकासिडारै तब केवल रुई रहिजाती है तैसे जब आत्मज्ञानभयोताको तुरीय अवस्था कही तहां तीनिअवस्था तीनिगुण तेहिमें अहंमम

पुनि बातीकरैसुगाढ़ि १९ सो०॥ यहिबिधिलेसैदीप तेजराशिबिज्ञानमय जातहितासुसमीप जरहिंमदादिकशलभसब २० चौ०॥ सोहमस्मिइतिवृत्तिअखंडा दीपशिखासोइपरमप्रचंडा २१ आतमअनुभवसुखसुप्रकाशा तबभवमूलभेदभ्रमनाशा २२ प्रबल

बेनवररूप सो छुटिगये तब तेहि आत्मज्ञानको दृढ़करिकै ग्रहणकियो है पर तहां जड़ चैतन्यकी जो ग्रंथि है सोसूक्ष्मकरिकै बुद्धिजीव के अन्तरभूत भेषादिबनी है तहां बुद्धि आत्माकी शुभाशुभ शक्ति है ताते बुद्धिकरिकै आत्मा मलिन है अरु बुद्धिहि करिकै आत्मा के आपने स्वस्वरूप को ज्ञान है ( १९ ) सोरठार्थ ॥ हे तात वोहीयोग अग्नि करिकै येहीरीतितेबुद्धि बिज्ञानरूप दीप लेसतभई सो तेजकीराशि बिज्ञानमय तेहि समीपहि जातही मदादिक शलभ जरिजाते हैं विज्ञान छठई भूमिकाभई पुनि सतई भूमिका कहते हैं ( २० ) सोहंअस्मि जो ब्रह्म है सो अहंअस्मि सो ब्रह्ममेरो स्वरूप है यहवृत्ति अखण्ड लागतभई सो अखण्ड दीप की शिखा है तहां जीव ब्रह्म की एकता मानते हैं कैसे जैसे सोना है अरु सोनाते कंकन कुण्डल इत्यादिक अरु महदाकाश है अरु घटाकाशहै पुनि जैसे समुद्र को जल है अरु मेघ नदीको जल है पर एते सबतत्व एकहीहैं ऐसेही जानिके जीव ब्रह्म एकता करते हैं सोई दीपकैशिखा है देखिये तौ यहां अखण्ड वृत्तिकहा है अरु आगे माया के पवन ते खण्डन करैंगे यह संदेह है तहां यहबुद्धि आपने अनुभव बलते आत्माविषे पतिब्रत ग्रहणकियो ताते अपनी बूतभरि आत्महिंविषे आत्माकै अखण्ड वृत्ति लगायो है पर श्रीराम शरणबिना ताते माया परमेश्वर की अतिप्रबल है तेई ज्ञानकी वृत्तिको खण्डन कीन्ह ताते सत्य है ( २१ ) तहां आत्मक अनुभव सुखजो है ब्रह्मानन्द सोई दीपको प्रकाश है तहां इन्द्रीजनित अहंकार अनुभव है तामस गुणमय है अरु एकमनको अनुभव है सो राजस गुणमय है अरु एक चित्तको अनुभव है सो सात्विक गुणमय है अरु एक आत्मक अनुभव है सो गुणातीत ब्रह्ममय है सोई दीपको प्रकाश है तेहि प्रकाश भयेते भवजो संसार है तेहि विषे जन्म मरणकोकारण भेद भ्रम सो आपुहीमें है सो नाश होइजात है भेद कही सजातीय बिजातीय स्वगतभेद सजातीयकही मनुष्य सबएक हैं पुनि ब्राह्मणब्राह्मण सबसजातीय हैं क्षत्रीक्षत्री एक जाति वैश्य वैश्य सब एकजाति

अबिद्याकरपरिवारा मोहआदितममिट्यउअपारा २३ तबसोइबुद्धिपाइउजियारा उरगृहबैठिग्रन्थिनिरुआरा २४ छोरनग्रन्थि पाइजोइसोई तबयहजीवकृतारथहोई २५॥

* * * * * * *

शूद्रशूद्र सब एक जाति पशुसंज्ञा एकहै पुनि गऊगऊ एक जाति बिजातीय कही ब्राह्मण भिन्न क्षत्रीभिन्न वैश्य भिन्न शूद्रभिन्न गऊ भिन्न भैंसि भिन्न पुनिस्वगतभेदकही ब्राह्मणब्राह्मणमेंभेद गऊगऊमेंभेद भैंसिभैंसिमेंभेदबर्णाश्रमइत्यादिकभेदभवकोमूलभ्रमरूप सोमिटिगयोभ्रमकही औरैपदार्थ में औरैपदार्थकैनिश्चय तैसोभेदनहीं है यद्यपिजीव अनेक हैं तदपिएकतत्त्व हैं अभेद हैं पुनिदूसर अर्थकरते हैं शुष्काद्वैत मतबादी यहभेदकहते हैं किदेखिये तौ बालबुद्धी प्राणीजे हैं ते आपनी आत्माको जीवमाने हैं अरु ब्रह्मको ईश्वर माने हैं अरु अपनाको सेवक मानेहैं ईश्वरको स्वामी माने हैं यहभेद भ्रम है सोई भवको मूल है सो नाश को प्राप्त भयो काहेते जीवब्रह्म विषे उपाधि करिकै भेद है उपाधिमिटे जीव ब्रह्म एकही है किंतु यह भेद तैं मैं इत्यादिक सो मिटि गयो ( २२ ) तहां सो अनुभव के प्रकाशते तब अतिप्रबल अविद्याके परिवार मोह आदिक मिटिगये

तहां अविद्याके चारिगुण हैं असत्य संसार ताको सत्यमानना अरु सुत दारा बित्तदेह गेह इत्यादिक दुःख रूप ताको सुखरूप मानना अशुचिको शुचि मानना अशुचिकही यह शरीर जो है हाड़ मांस रक्त इत्यादिकमय अरुतेहिकी कर्तव्य अशुचिमय तामें शुचि बुद्धि करना पुनि अनात्मा जो है देहतामें आत्मकबुद्धि करना पुनिअविद्याके परिवार काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य इत्यादिक अनेक सोई अन्धकार है सो मिटिगयो बिज्ञानदीपकके बरेते ( २३ ) तब हेतात सोई बुद्धि अपने उर अन्तर विषेबिज्ञान दीपक को प्रकाश पाइकै जड़ चेतन की झीनी बासना ग्रन्थि ताको निरुवारती है निरुवारबकही जोआत्मा चैतन्यरूप त्यहि बुद्धिकरिकैजड़ जो माया है त्यहिं में अपनपौ मान्यो है सोई जड़ चैतन्यते ग्रन्थि परिगई है सो छठईं भूमिका करिकै तौ स्थूल ग्रन्थि छूटि गई है परसूक्ष्म निरुवारैको रहिगयो है सूक्ष्मकौन है जब चित्तकी वृत्तिमें बाह्यांतर देहादिक संसार स्थूल सूक्ष्मके त्यागकी ग्रन्थि कछु सूक्ष्मतर है सो जामेंत्यागभयो है त्यहित्यागकी सुधि जाते चित्तकी वृत्ति में बनाइ बिस्मरण ह्वै जाइ सो बुद्धि निरुवारती है ( २४ ) हे गरुड़ जब वह झीनी ग्रन्थि बुद्धिकरिकै छूटिजाइ तब अखण्ड निर्बिकल्प समाधिभई अरु ताहीदशाविषे शरीर छूटिगयो तब यह जीव कृतार्थ होत है अरु जब ताईं शरीर बनो है तब तहां मन बुद्धि चित्त अहङ्कार आत्मा में लय ह्वै जाते हैं काहेते अहङ्कार मनबुद्धि चित्त येचतुष्ट अन्तष्करण बुद्धिकी किरणिहैं इनहीं चारिकरिकै जीव शुभाशुभ विषयकर भोक्ता है जबजीवके आपने स्वस्वरूप को ज्ञानभयो तब इन चारिउ करिकै शुभाशुभ विषयकर त्यागभयो तब येचारि शुद्धसात्विक रूप ह्वैकै आत्मामें लय ह्वैकै आत्मारूपही हैं आत्मा प्रकाशी हैं अरु ये चारिउ किरणिरूप प्रकाश हैं जैसे सूर्य आपनी किरणिकरिकै रस अनरस आकर्षण करते हैं जब सूर्य अस्ताचल को गये तब संपूर्ण किरणी सूर्य के संगही रहती हैं तहां हेतात यहि चौपाई लैकै सात्विक श्रद्धाधेनु अरु इहां ताईं जो कहा है अरु मध्य में जो चौपाई है सोहमस्मि इतिवृत्ति अखण्डा। यह परम बिज्ञानजीव ब्रह्म की एकता वृत्तिसो सप्तभूमिका जानब सात्विकी श्रद्धा प्रथम भूमिका १ पुनि परम धर्म दूसरी भूमिका २ पुनि समधृति तीसरी भूमिका ३ पुनि बिमल वैराग्य चतुर्थभूमिका ४ पुनि स्वस्वरूप ज्ञान पञ्चमभूमिका ५ पुनि विशेष ज्ञान कही बिज्ञान षट्भूमिका ६ पुनि ब्रह्मास्मीति परम बिज्ञान सप्तमभूमिका ७ पुनि कोई २ ग्रंथविषे ज्ञानकी सप्तभूमिका यही रीति कहते हैं कि प्रथम शुभ इच्छा १ सुबिचार २ तनमानसा ३ सत्त्वायति ४ असंसक्ति ५ पदार्थाभावनी ६ तुरीया ७ क्रमते जानब सात्विक गुणके कर्म में प्रीति करना ताको शुभइच्छा कही १ पुनि एकांत विषे सारासार कोबिचारकरना ताको सुबिचार कही २ पुनिजो सारासारको बिचार कियो है तहां असार संसारको असत्य जान्योहै तहांते मनकी वृत्ति खैंचिआईअरु सार जोआत्माताको सत्यजानो तहांमनकी वृत्तिलगीहै ताको तव मनसा कही ३ पुनि निज अनुभव में सत्पदार्थकी प्राप्ति अभंग आत्मादर्शित ताको सत्त्वायति कही ४ पुनि विषयते सर्बथा अनाशक्त ताको असंशक्तिकही ५ पुनि संपूर्ण जगतके पदार्थजे हैं दृश्यमान ताकोअभाव कही बिसरिजाना सोपदार्थ भावनी कही ६ पुनि भावाभाव रहित ब्रह्माकार अखंडवृत्तिताको तुरीया कही ७ हे तातयह कठिन अरु निरसमुक्ति भेद हमकहिआयेहैं ज्ञानकी सप्तभूमिका कैवल्यमुक्तिसो निरस करिकै मुनीश कहते हैं ( २५ ) इतिश्रीरामचरितमानससे सकलकलिकलुषबिध्वंसनेउत्तरकाण्डे ज्ञानदीपककठिननिरसबर्णनंनामद्वितीय त्रिंशतिस्तरंगः ३२॥ :: :: :: :: :: :: :: :: :: ::

दो०॥ बिघ्नबहुरिनिर्बिघ्नकहि तीसैतीनितरंग॥ कठिनसरलयहभेदलघु रामचरणसतसंग ३३ हे खगराय सर्बत्यागिकै जो झीनी सुधि झीनी ग्रन्थि छोरतकही बिसरावतसंते माया अनेक विघ्नकरतु है यहसमुझिकै कि मोको त्यागिकै मोसे भिन्नहोतहै तबमाया अनेक बिघ्नकरती

**चौ०॥ छोरतग्रन्थिजानिखगराया विघ्नअनेककटैतबमाया १ ऋद्धिसिद्धिप्रेरैबहुभाई बुद्धिहिलोभदिखावैजाई २ कलबल**

है ( १ ) हे भाई तब ऋद्धिन सिद्धिनकी प्रेरणा करती है बुद्धिको लोभदेखावती है तहां सिद्धिनके नाम क्रियागुणफल बालकाण्ड में कहिआये हैं यहिचौपाईमें॥ साधकनामजपैंलयलाये होहिंसिद्धिअणिमादिकपाये॥ पुनि नवनिद्धिजानब अरु आठ सिद्धी भगवत सम्बन्धी अरु दश सिद्धी गुणसम्बन्धी हैं अरु पांच सिद्धीक्षुद्र हैं सोसब

करिकै बुद्धि को लोभ दिखावतीहैं जब ऋद्धि सिद्धि बुद्धि के समीप प्राप्तिभई तब मृत्तिका मृत्तिकनके पात्र इत्यादिक समोल अमोल देखिपरतेहैं तब चित्तकै वृत्ति समाधिते छूटि जाती है काहेते कि जबताईं देहहै तबताई आत्माकर अरुशरीरकर सम्बन्ध नहीं भिन्न ह्वैइसकैहैअरु सिद्धिन करिकै स्वर्गलोकमें जोचरित्रहोते हैं सोसम्पूण्र देखिपरतेहैं अरु दीपदीप खण्डखण्ड में पर्बतनमेंनदिन में थलमें भूमितलमें जोजो चरित्र होते हैं सो सम्पूर्ण देखिपरते हैं अरु यह चाहैतौ जलमें जल होइ जाइ अग्निमें अग्नि होइकै प्रवेशजाइ अरु जो मनमें इच्छा करै सो सब प्राप्तहोई है सिद्धिन के नाममात्र कहते हैं गुण क्रिया युक्त बालकांडमें कहेहैं अणिमा १ मुनि महिमा २ लघिमा ३ प्राप्ति ४ प्रकाम्य ५ इशिता ६ बसिता ७ आवस्यति ८ इत्यष्ट पुनि अनूर्मिमत्व १ दूरेश्रवण २ दूरेदर्शनं ३ मनोजव ४ कामरूप ५ परकाय प्रवेश ६ स्वच्छन्दमृत्यु ७ देवक्रीड़ानुदर्शनं ८ यथासंकल्पसंसिद्धि ९ अज्ञाप्रतिहतागति १० पुनि त्रिकालज्ञत्त्व १ अद्वंदभाव २ परिचिताद्यभिज्ञता ३ अग्निर्काम्बुबिषादीनां प्रतिष्ठंभ ४ अपराजय ५ पुनि नौ निद्धि अर्थको गनती पद्म १ त्यहिकर दशगुण महापद्म २ पुनिसंख ३ मकर ४ कच्छप ५ मुकुन्द ६ कुन्द ७ नील ८ खर्ब ९ इतिनव ( २ ) हे तातजबऋद्धिनसिद्धिनकेगुण कलकही अतिसुन्दर हृदयमें प्रवेश भये अरु उसकी चाहना उठी तबमायाकोबलभयो पुनि छलकही झूठी बस्तुको सांचीसीदेखावती है ताको छलकही अरु जो अन्तष्करण सांची मानिकै अपने सुखकी इच्छा किया सोई अंचल है अरु त्यहिसुखमें जो आनन्द मान्योहै सोई पवन है त्यहि अंचलके पवनते बिज्ञानरूप दीपकको बुझावती भई काहते स्त्री जो है सो अंचलहि के पवनते दीपकको बुझावतीहै यहउनको धर्म है यद्यपि ज्ञानी ज्ञानमें पूरणहैं तदपि जबताईं शरीर धारण

**छलकरिजाइसमीपा अंचलबातबुझावैदीपा ३ होइबुद्धिजोपरमसयानी तिनतनचितवनअनहितजानी ४ जोत्यहिबिघ्नबुद्धिनहिं ब्याधी तौबहोरिसुरकरहिंउपाधी ५ इन्द्रीद्वारझरोखानाना तहँतहँसुरबैठेकरिथाना ६ आवतदेखहिंबिषयबयारी तेहठिदेहिं**

किहे हैं तबताईंशरीरके सम्बन्धको व्यवहार सूक्ष्मबनाहै तातेअवसरपाइकैज्ञानिनको मायाबिघ्नकरतीहै काहेते ज्ञानीपुरुषबर्गहैं मायास्त्रीबर्गहै ( ३ ) हे तात जो परमसयानी बुद्धिहोइतौ बुद्धिहोइतौ ऋद्धिनसिद्धिनकी ओर बाह्यांतर दृष्टिमें देखाइ नहीं काहेते निजअनहितजानिकै ( ४ ) जोतेहिऋद्धिन सिद्धिनते बुद्धिकोबाधानभयो तब इन्द्रिनकेदेवता उपाधिकरतेहैं ( ५ ) हे तातजैसे एककोटहै तामेंबहुत दरवाजेहैं तिनपरबड़ेबड़ेभटरक्षकहैं अरुकोटमें रंदाअनेक हैं तिनपररक्षक सिपाहीहैं तैसेशरीर कोटरूपहै तामें दशइन्द्री दशदरवाजेहैं श्रवण त्वक नेत्र जीभ नासिका पगहाथ मुख लिंग गुदा तिनपर दशदेवतनके थानबैठेहैं क्रमते जानब दिशादेवता पवनसूर्यबरुण अश्विनीकुमार पुनि या बिष्णुइन्द्र अग्नि दक्षप्रजापति अरुयमराज एते देवता इन्द्रिनपरथानाकिहेहैं अरु रोमरोमप्रति छिद्रसोई झरोखाहैं झरोखनप्रति देवताबिराजेहैंताहांपुनि कोटको दृष्टांतदेतेहैं कोटको राजा रक्षकनकी चाकरीनहींदियो है अरुतहांकोऊबैरीकोटपरचढ़िआयोहैरक्षकनकी चाकरी दूनीचुकाइदयोहै तबउनदरवाजन के कपाटखोलिदियो है बैरी थानकरिलियोहै तैसे शरीरको राजा जीवहै रक्षक देवता हैं तहांजब जीवके ज्ञानभयो तब इंद्रिनके देवतनके चाकरी बंदहोइगईहै तब झीनी कामना बैरीरूपआइकै रक्षकनको बोधकरिदियोहै ( ६ ) तहां माया की बसीठी दूत विषयरूप बासनाबयारि त्यहिको आवत देखिकै इंद्रिनके देवतनद्वैतरूप कपाट हठिकै उघारिदियो है ( ७ ) इहां पवनको प्रभंजननाम जो बैरीको परास्तकरै ताको प्रभंजनकहीसो विषयरूप बासना झीनी प्रभंजनजब ज्ञानिनके हृदयमें प्रवेशकियो तब बिज्ञानरूपदीपकबुझाइजातहै ( ८ ) जबविषयकी बयारि सूक्ष्महृदयमें प्रवेशकियो तबवह ब्रह्मास्मि वृत्तिदीपक रूपरही सो छूटिगई सोई बुझावकही अरुग्रन्थिनछूटी विषयकी बयारिते बुद्धिबिकलह्वैगई ( ९ ) काहेते इन्द्रिनके देवतनको ज्ञाननहीं सोहातहै काहेते उनके विषय भोगपरप्रीति सदारहतीहै ( १० ) विषयके समीर करिकै बुद्धि भोरी ह्वैगईहै त्यहिबिनु दीपक को कोबारै नामकोईनहीं बारिसकैहै ( ११ ) दोहार्थ॥ तबवह जीवबिबिधप्रकारते संसृतिकर क्लेश पावतहै संसृतिकही जन्ममरण ताते हेतातहरि-

कपाटउघारी ७ जबसोप्रभंजनउरगृहजाई तबहिंदीपबिज्ञानबुझाई ८ ग्रन्थिनछूटिमिटासोप्रकाशा बुद्धिबिकलभइविषयबताशा ९ इन्द्रीसुरननज्ञानसोहाई विषयभोगपरप्रीतिसदाई १० विषयसमीरबुद्धिकृतभोरी त्यहिबिनदीपकोबारबहोरी ११ दो०॥ तबफिरिजीवबिबिधबिधिपावैसंसृतिक्लेश हरिमायाअतिदुस्तरतरिनजाइबिहँगेश १२ कहतकठिनसमुझतकठिन साधनकठिनबिवेक

कै माया अतिदुस्तरहै ताते ज्ञानके मार्ग्गमेंसे संसार सागरनहीं तरिजातहै ( १२ ) हेतात ज्ञानकर मार्ग्गजोहै सोकहतकै कठिनअसमुझतसंते कठिन अरुउसकी साधनाकठिन उसकी बिवेकता कठिनहै जोकदाचित् ज्ञानके मार्ग्गमें घुनाक्षर न्यायहोइ तौ जीव कृतारथहोइ तहां घुनाक्षर न्याय विषे अनेक प्रत्यूह कही बिघ्न हैं घुनाक्षर न्यायकही जैसे घुनलकरी कोचालत है अरु कबहूं दैवयोगते कहूँरकार बनिगयो मकार बनिगयो अरु तेही समयमें कोई योगते वहकृमिको पातभयो तब वह कृमि कृतार्थ ह्वैगयो काहेते कि अन्तकालमें कैसहू रामनाम आवै जानिकै वा अजानि कै तौ कोई जीवहोइ सोकृतार्थ ह्वैजाइ तहां प्रमाणहै बाराह पुराणेश्लोकएक॥ दैवाच्छूकरशावकेननिहतोम्लेच्छोजराजर्जरो हारामेतिहतोस्मि भूमिपतितोजल्पंस्तनुंत्यक्तवान् तीर्णोगोपदवद्भवार्णवमहोनाम्नःप्रभावात्पुनः किंचित्रंयदिरामनामरसिकास्तेयान्तिरामास्पदं १ अरु जो कृमिते चालत सन्ते रकारबनि गयो अरु ताके आगे अपरचिह्न बनिगयो तौप्रत्यूह कही बिघ्नहोत भयो तैसे ज्ञानी जो हैं सो एते साधन षटभूमिका की करिआये अरुसतई भूमिकामें ब्रह्मास्मीतिवृत्ति अखण्डप्राप्तिभई अरुतेही दशामें शरीरपात ह्वैगयो तबयह जीवकैवल्य कही सायुज्यमुक्तिको अद्वैत मतको प्राप्ति भयो अरु ताहीदशा में लयबिक्षेप कषायरसाभासअनेक प्रत्यूह कही बिघ्नहोते हैं ( १३ ) हे खगेश ज्ञानकोपन्थ कृपाणकी धारा है कृपाणकही दुधारा त्यहिके चलाइबे को बड़ी खबरदारी चाहीकाहेते कृपाणको पट परतदेरी नहीं लागति है अरु जो पटपरी तो बैरी ने मारिलियो तैसे ज्ञानमें बड़ी खबरदारी चाही ( १४ ) अरु हेतात ज्ञानकरपंथ निर्बिघ्न निबहिगयो तौ कैवल्य परमपदको प्राप्ति भयो जो कोई कहै कि तुरीया अवस्था कैवल्य रूपही है अरु तुम तुरीया अवस्था को बातीकरिकै वर्णन कीनहै सोऐसीकौन पदार्थहै ज्यहिबिषे जड़की ग्रन्थि परिगईहै अरु तुरीयाके प्राकशते छूटैहै तहांसोहमकहतेहैं किजीवहि विषेचारिउ अवस्था प्राप्ति होती हैं जाग्रत अवस्था में जीव विश्वरूपही है स्वप्न में तेजस्वरूप है सुषोप्तिमें प्राज्ञरूपहै तुरीयामें शुद्धस्वस्वरूपहै पर जाग्रत अवस्थामें समय समयपर तीनिउँ अवस्था वर्तमान होती हैं सूक्ष्म

होइघुनाक्षरन्यायजोपुनिप्रत्यूहअनेक १३ चौ०॥ ज्ञानकिपंथकृपाणकिधारा परतखगेशहोइनहिंबारा १४ जोनिर्बिघ्नपंथनिर्बहई तौकैवल्यपरमपदलहई १५ अतिदुर्लभकैवल्यपरमपद संतपुराणनिगमआगमबद १६॥ * * *

रूप अरु स्वप्न में जाग्रत सूक्ष्म रूप बर्तमान हैं अरु सुषोप्ति में स्वप्न सूक्ष्म रूपहै अरु तुरीया में सुषोप्ति सूक्ष्म रूपहैं काहेते कि तुरीया केवल ब्रह्म स्वरूप है अरु शुद्ध जीव में तुरीया वर्तमान होती है तामें सुषोप्ति जो कारण रूप है सो सूक्ष्म रूप तुरीया में बर्तमान है कुछ सम्बन्ध मानिकै अरु जीवकोधर्म मानिकै ताते जबजीव बिज्ञानको प्राप्तभयो तबतुरीयाअवस्थाकी पूर्णदशा प्राप्तिभई तहां जब संपूर्ण देहादिक संसारकी गन्धिको त्यागभयो परत्यागका किंचित् सुधिवबनीहै सो तुरीयाविषे सूक्ष्मकारण जानब सो कारणबाधकनहीं है जैसे भूजान्नबोयेते उगैनहीं जैसे जरापटवस्त्र जरीजेवरी कागदकी तरवारि ऐसेही वहकारण जीवमेंहै जबताईं यहिशरीरमें आत्माहै तहां सोई त्यागिदियो है त्यहिकी जो सूक्ष्म बुद्धि है सोई आत्माविषे जड़कीग्रन्थि है सूक्ष्मरूप ताहूको आत्मासंगीहैजो शुद्धिहबुद्धिहै सो नहीं सहिसकै ताको निरुवारिकै छोंड़ावा चाहती है वह जो त्याग की सुधिताको बिसरावा चाहती है संसारकी त्यागकीसुधिबिसरिजाना सोईग्रन्थिको छूटबहै तहां तुरीयाअवस्थाको आगमन सोई बाती है बिज्ञान निरूपनघृत है अरु परमयोग अग्निकरिकै लेसिदेना अरुआत्मकअनुभव बिज्ञान सोईप्रकाशहै इहां ईश्वर तौ तुरीयास्वरूपहै अरु ईश्वरकीकृपाते जीवविषे तुरीयाअवस्था बर्तमानहोती है सोई

अवस्थाके प्रकाशमें तीनिअवस्थाकी सूक्ष्मशुद्धि ताको बुद्धिछोंड़ावतिहै जबछूटि जाइ तौ यहजीव तुरीयास्वरूप ह्वैजाइ तब कैवल्य परम्पदकी प्राप्तिहोइ तब तुरीयाजीव आत्माशुद्ध बुद्धिएकही है नाममात्र भिन्नहै ( १५ ) हेतात कैवल्यपरम्पद अतिदुर्लभहै जाको वेदपुराण संतवर्णन करतेहैं ( १६ ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसने उत्तरकाण्डेज्ञानदीपक निरसमुक्तिभेदवर्णनंनामतृतियत्रिंशतिस्तरंगः३३॥ :: :: :: :: :: ::

दोहा॥ चौथीतीसतरंगमेंबरणिभक्तिमणिरूप सरलसरसयहभक्तिबर रामचरणसुअनूप ३४ हेतात रामचन्द्रकर भजनकरतसंते सोई कैवल्यमुक्ति अनइच्छित आवतिहै बरियाईकहे बिनाचाहे ( १ ) कैसे अनइच्छितआवतिहै जैसे थलबिना जलनहीं रहिसकैहै कोटिभांति करिकै कोईउपायकरै

**चौ०॥ रामभजतसोइमुक्तिगोसाईं अनइच्छितआवतबरिआईं १ जिमिथलबिनुजलरहिनसकाई कोटिभांतिकोउकरौउपाई २ तथामोक्षसुखमुनुखगराई रहिनसकैहरिभक्तिबिहाई ३ असबिचारिहरिभक्तसयाने मुक्तिनरादरभक्तिलोभाने ४ भक्तिकरत**

थलमें अनायास अलआवत है ( २ ) हे खगराय तथा तेहीप्रकारते मोक्ष सुखरूप अरु परमसुखरूप रामभक्ति त्यहिके आधीन मोक्षसुख है भक्तिको छोड़िके मोक्ष सुखरूप नहीं रहिसकैहै ( ३ ) ऐसे बिचारिकैहरिकेभक्त जे सयानेहैं ते मुक्तिकर निरादर करतेहैं अरु भक्तिमें लोभानेहैं काहेते हेतात मुक्ति पांचप्रकारकी है कैवल्य जाको सायुज्यकही पुनि सारूप्यमुक्ति पुनि सामीप्यमुक्ति पुनि साढ्यमुक्ति प्रभु आपनो सामान्य ऐश्वर्यादिहेहैं पुनि सालोक्यमुक्ति तहां कैवल्यमुक्तिकही आपने स्वस्वरूपकीप्राप्ति जीव अंतर्यामी ब्रह्मकी एकता तहां आपने शुद्धस्वरूपकी प्राप्तिभये बिना न ज्ञानै सिद्धिहोइ न भक्ति सिद्धिहोइ तहां बिज्ञान तुरीयाअवस्थाप्राप्तिहेतु जीवात्माकी शुद्धता सो ज्ञानदीपकमें कहिआये हैं अतिकठिन ते स्वस्वरूप कैवल्यकी प्राप्ति कहा है सो सिद्धिभयेते जीव शुष्क मुक्ति सायुज्यको प्राप्तिहोत है जैसे महदाकाश मठाकाश घटाकाश तहां मठ घट भंगभयेते आकाश एकही है पुनि जैसे बूंदबूंदजल समुद्रमें मिलेते एकही है पुनि जैसे दर्पणहै ताकी उपाधिते मुख दूसर देखिपरत है जब ऐनाउपाधि दूरिभई तबमुख एकहीहै ऐसेजीव ब्रह्मकी एकता ज्ञानीमानत हैं जीवकी बासना ध्वंसभयेते एकमानते हैं अरु उहै स्वस्वरूपकी शुद्धता कैवल्यरूप जीव ब्रह्मके एकता ज्ञानके मार्गते अतिकठिनते भईहै सोई आपनो शुद्धस्वस्वरूपसोश्रीरामचन्द्रकै साधनभक्ति करतसंतेस्वाभाविकै प्राप्तिहोत है तब उसको पराभक्ति प्राप्तिहोत है तबवह श्रीरामचन्द्रके सामीप्य सारूप्यको प्राप्तिहोत है तहां पूर्बाचार्यनकहाहै कि जबजीव भक्तिकरिकै परबिभूतिको प्राप्तिहोत है तब परमेश्वर जीवकी शुद्धतादेखिकै पूंछत हैं कोभवान तबजीव हर्षिकैबोल्यो ब्रह्मास्मि तवदासोस्मि यह आर्चराजमार्ग ग्रंथहै तामें यहप्रमाणहै तहां कोई यहकहते हैं कि मुक्तिनिरादर भक्तिलोभाने। मुक्तिकही श्रीरामचन्द्रकी मानसीसेवा में है अरु कहूंस्वरूपाकार वृत्तिभई त्यहिको कैवल्यमुक्ति कहते हैं त्यहिमुक्तिको निरादर कहतेहैं भक्ति भजन काहेते वैसेवाको प्रधान करते हैं काहेते स्वरूपाकार वृत्तिमें सेवाछूटिजात है ताते श्रीरामचन्द्रके स्वरूपाकार वृत्तिको कैवल्य कहतेहैं सोयहनहीं कहतबनै है काहेते श्रीरामचन्द्र

**बिनुयतनप्रयाशा संसृतिमूलअविद्यानाशा ५ भोजनकरियतृप्तहितलागी जिमिसुअन्नपचवैजठरागी ६ असहरिभक्तिसुगमसुख**

के स्वरूपाकार वृत्ति को कबहूं कैवल्यमुक्ति नहीं सुनिबे मेंआई याकोशास्त्रमें पराभक्तिकहतेहैं अरुकाहूको यहमत होइ सो होइजाइ हमारे सुनबेजानबेमें नहींआयोहै अरु गोसाईं श्रीतुलसीदासके सम्मतमेंयहआवतहै कि नवधाभक्ति करतसंते सहजमें शुद्धस्वस्वरूपकी प्राप्तिहोतीहै तब प्रेमापराभक्ति होती है ( ४ ) अरु हेतात श्रीरामचन्द्रकै भक्तिकरतसंते बिनायत्नप्रयास संसृतकही जन्मरणत्यहिको कारणअविद्यासो नाशह्वैजातीहै अरु ज्ञानकरिकै कठिनते अविद्या नाशहोती है ( ५ ) अरु भक्तिकरतकैअविद्या कैसे नाशहोती है जैसे शुष्टअन्न बनावबेमें भोजनकरनेको आपनैतेकरिकै होतहै अरु पचावनेहार जठराग्निहै तैसे आपनाते ज्यहिकरभजन करतेहैंसोई संसृतकरमूल अविद्याबिनाश्रमहीं

नाशकरतहै ( ६ ) हेतात ऐसी श्रीरामचन्द्रकै भक्ति सुगमहै कैसाभक्तिकोपंथ अखंडसुगमहैयहजो त्रैगुण्यसहित बिकारहै त्यहिको बाह्यांतर त्याग अरु सर्बभूतते निर्बैर अरु अनन्यउपाय शून्यशरणागत अरुपरस्वरूपमें सहजानंद वृत्तिनामकैधुनि श्वासप्रतिकिंतु आधिक्य त्यहिभक्तिके आधीन सर्बदिव्य गुणहैं तहां कर्मधर्मजपतप विद्याध्ययन ज्ञानवैराग्य योगइत्यादिक एकौनचाहीताकेआधीनसब हैं केवलसत्संगचाही अरु अति सुखदाईहै ऐसो कौन मूढ़है जाकोऐसीभक्ति न सोहाइ ( ७ ) दोहार्थ॥ हेउरगारि सेवकसेव्य भावबिना यहजीव संसार न तरै ऐसेसिद्धान्त बिचारिकै श्रीरामचन्द्रके पद पंकजभजहु तहां सेवक जीवसेव्यकही स्वामी श्रीरामचन्द्रहैं ( ८ ) हेगरुड़श्रीरघुनाथजी ऐसे सामर्थहहिं किएकपलभरेमें जड़को चैतन्यकरहिं, अरु चैतन्यको जड़करहिं ऐसे श्रीरामचन्द्रको जो भजनकरैं तेजीवधन्य हैं ( ९ ) हेतात ज्ञानकर सिद्धान्त मैंतुमसे बुझाइकही समुझाइकैकह्यउं किंतु ज्ञानकर सिद्धान्तकह्यउं अरु ज्यहि प्रकारते ज्ञान बूझागयो है सो कह्यउँऔ भक्ति जो मणिरूप है त्यहिकी प्रभुता सुनहुँ ( १० ) हेगरुड़ श्रीरामचन्द्रकैभक्ति चिंतामणिरूपअतिसुन्दरि ज्यहिकेउरबिषेबसैसोसुनहुँ ( ११ ) ज्यहिके हृदयमें भक्ति चिन्मामणि बसै त्यहिके हृदयमें राति दिन परम प्रकाश बनारहत है तहां न घृतचाही न दिया चाही अरु न बाती चाहीतहां बिज्ञानरूप घिउ समतारूप दीवटि अरु चित्तरूप दिया तुरीया

दाई कोअसमूढ़नजाहिसोहाई ७ दो०॥ सेवकसेब्यभावबिनुभवनतरियउरगारि भजहुरामपदपंकजहि अससिद्धांतबिचारि ८ जोचेतनकहँजड़करै जड़हिकरैचैतन्य अससमर्थरघुनायकहिभजहिंजीवतेधन्य ९ चौ० ॥ कह्यउज्ञानसिद्धांतबुझाई सुनहुंभक्तिमणिकीप्रभुताई १० रामभक्तिचिन्तामणिसुन्दर बसहिँगरुड़जाकेउरअन्तर ११ परमप्रकाशरूपदिनराती नहिं कछुचहियदियाघृतबाती १२ मोहदरिद्रनिकटनहिंआवा लोभबातनहिँताहिबुझावा १३ प्रबलअविद्यातममिटिजाई हारहिसकल सलभसमुदाई १४ खलकामादिनिकटनहिँजाहीं बसैभक्तिजाकेउरमाहीं १५ गरलसुधासमअरिहितहोई त्यहिमणिबिनुसुख

अवस्थारूपबाती तहांभक्ति मणिरूपमें एकौनहींचाही काहेतेज्ञानको दीपकबाह्यान्तरके उपायते सिद्धि भयोहै प्रथम श्रद्धा गऊ शुभकर्म युक्त कहे हैं अरु मणिरूप भक्ति निरुपाइ सिद्धिहै केवल उपाय शून्य शरणागत तातेभक्तिमें परमेश्वरकी कृपाते स्वयंप्रकाश निरूपाधि है ( १२ ) तहां ज्ञान जो पुरुषरूप अरु माया स्त्रीरूप दूनहुँते मोहरूप दरिद्रते सम्बन्ध रह्योहैअरु ज्ञान विषे झीनी लोभ बासनारूप पवनअरुझिगयो है अरु भक्ति चिन्तामणि विषे मोहको कारणै नहीं है अरु लोभरूप पवन बुझाइ नहींसकै है काहेते जो कछु आवै सो भक्तिविषे रामार्पण है ताते निर्विघ्न है ( १३ ) अरु भक्ति मणिके प्रकाशते तमरूप प्रबल अविद्या सो मिटिजाती है अरु काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य इत्यादिक समूह सुलभ करिकै नहीं बाधा कैसकैं हारिजाते हैं ( १४ ) हे गरुड़ ज्यहिके उर विषेचिन्तामणि भक्तिबसै त्यहिके निकट कामादिक केवल नहीं जाते ( १५ ) हे तात कोई सुयोगते काहूको विषको अमृत ह्वै जाइ अरु अरि मित्रहितकारी ह्वैजाइ पर त्यहि भक्ति मणि बिना कोई सुखको नहीं प्राप्ति होते हैं ( १६ ) अरु ज्यहिके उरविषे भक्तिचिन्तामणिबसै त्यहिको मानसरोग नहीं व्यापतहै ज्यहिकेबश संपूर्णजीव दुखीहैं ( १७ ) हेतात श्रीरामचन्द्रकैभक्ति ज्यहिके उरमेंबसी है त्यहिको सपन्यहुंबिषे दुखको लवलेशनहींहै ( १८ ) हे तात यहिजगतमें चतुरन विषे शिरोमणितेईहैं जेभक्ति मणिकेहेतु यत्नकरते हैं ( १९ ) तहां सो मणियद्यपि यहिजगतमें प्रकटहैतदपिबिना श्रीरामचन्द्रकी कृपा नहीं मिलै ( २० ) तहां त्यहिभक्ति पाइबेको सहजउपाय है पर जे नर भाग्यहतहैं उहै अभाग्य भटभेरि करिदेतहैं भटभेरे कही जब कौन्योंसुयोगते सत्संग भजनकै साइति प्राप्तिभई तब अभाग्यते कोई बिघ्न प्राप्तिभयो ताको भटभेर कही ( २१ ) हे खगेश वेदपुराण बावन पर्बतहैं अरु वेदपुराणमें जहां श्रीरामचन्द्रकी

पावनकोई १६ व्यापहिँमानसरोगनभारी जिनकेबशसबजीवदुखारी १७ रामभक्तिमणिबसउरजाके दुखलवलेशनस्वपन्यहुँताके १८ चतुरशिरोमणितेजगमाहीं जेमणिलागिसुयतनकराहीं १९ सोमणियदपिप्रकटजगअहई रामकृपाबिनुनहिंकोउपहई २० सुगमउपाइपाइबेकेरे नरहतभाग्यदेहिंभटभेरे २१ पावनपर्बतवेदपुराना रामकथारुचिराकरनाना २२ मर्मीसज्जनकुमतिकुदारी ज्ञानबिरागनयनउरगारी २३ भावसहितखोदैजोप्रानी पावभक्तिमणिसबसुखखानी २४ मोरेमनप्रभुअसविश्वासा रामतेअधिक

कथा है सोई आकरकही खानिहै जहांभक्तिमणि रहतीहै ( २२ ) तहां हे उरगारिबिवेकी सज्जन जोहैं सोईमर्म्मी हैं मर्म्मी कही जोबेदपुराण पर्बतके अंतर मणिरूप भक्तिको लखै तहांसुमतिरूप कुदारितेवेद पुराणरूपर्बतखनै अरु ज्ञानवैराग्यनेत्रते भक्तिमणिको चीन्है ( २३ ) हेगरुड़ तहां प्रीतिरूप भावते जेप्राणीवेदपुराण खोदैंकही खोजतेहैं तेसब सुख कीखानि भक्तिमणिको प्राप्तिहोतेहैं तहांएकैमर्म्मी तौ आपुही खोदिकै मणिको निकाल लेतेहैं अरु एकै मणिकीखानि बताइदेतेहैं मजदूरसे खोदावतेहैं तैसेजो कोई प्रवीण शास्त्र वेत्तासंतहैं तेआपुही वेदपुराण कीविषयजानतेहैं जहाँभक्ति मणिहै ताकोसुमतिते बांचिकैभक्तिमणि निकासिलेतेहैंअरुजोकोई संतप्रवीण मर्मी हैं अरु शास्त्र नहीं पढ़ेहैं तेका ईब्राह्मण पंडित से वेदपुराण में खानिबताइकै खनाइकही बंचाइलेते हैं भक्तिरूपमणिआपुलेतेहैं अरुजेज्ञान वैराग्यरूपनेत्रते बिहीनहैं वक्ताश्रोता दोऊतौ जैसे आंधरैपर्वतखनै अरु आंधरैमणिहरै तहां ताको कंकर पत्थर नहींचीन्हिपरै ( २४ ) हे प्रभु मैं अपनेमन कर विश्वास आपनी समुझसे कहतहौं कि श्रीरामचन्द्र के दास श्रीरामचन्द्र ते अधिक हैं ( २५ ) देखिये तौपूर्व सामान्यते बिशेषि कीन्हेहैं अब जो सामान्य कीन्ह ताको बिशेष कहते हैं याको व्यञ्जनाकही काहेते श्रीरामचन्द्र समुद्रहैं अरुधीरज सज्जनमेघहैं तहां देखिये तौ मेघई करिकै सबजगतको प्रतिपाल होतहै परमेघ समुद्रहीते जललेते हैं तैसे साधु श्रीरामचन्द्र कर गुण स्वभावलैकै सर्बजीवनको उपदेश करिकै कल्याण करतेहैं अरु हरि मलयागिरि चन्दन हैं अरु सन्तजन समीर हैं समीर चन्दनकी सुगन्धकोलैकै अनेक तरु चंदनकरिदेत है तैसे सन्तजन अनेक जीवनको हरिकी सारूप्यमुक्तिको प्राप्ति

रामकेदासा २५ रामसिंधुघनसज्जनधीरा चंदनतरुहरिसंतसमीरा २६ सबकफलहरिभक्तिसुहाई सोबिनुसतनकाहूपाई २७ असबिचारिजेकरुसत्संगा रामभक्तितेहिसुलभबिहंगा २८ दो० ब्रह्मपयोनिधिमंदर ज्ञानसंतसुरआहि कथासुधामथिकाढ़हिं भक्तिमधुरताजाहि २९ बिरतिचर्मअसिज्ञानमदलोभमोहरिपुमारि जयपाईसोहरिभगतिदेखुखगेशबिचारि ३०॥ * * *

चौ०॥ पुनिसप्रेमबोल्योखगराऊ जोकृपालम्वहिंऊपरभाऊ १ नाथमोहिंनिजसेवकजानी अष्टप्रश्नममकहहुबखानी २

करते हैं ( २६ ) ताते हे पार्वति सबकर फल सुन्दरि श्रीरामचन्द्रकै भक्ति है सो बिना भक्ति सन्त जन नहीं मिलै हैं ( २७ ) हे बिहंग ऐसेही जानिकै विवेकी जन सत्संग करतेहैं तिनको श्रीरामचन्द्रकी भक्ति प्राप्तिहोती है ( २८ ) दोहार्थ॥ हे तात ब्रह्म जो वेदहै सोई क्षीर समुद्र है अरु जे तत्त्ववेता कविसंत हैं तिनकर ज्ञान मन्दराचल पर्वतहै आपने ज्ञानते वेद समुद्र मथिकै श्रीरामचन्द्रकै कथा काढ़िलेते हैं तामें भक्ति माधुर्यताहै अपर सब सन्त देवता हैं तिनको पिआवते हैं ( २९ ) हे खगेश बिचारि देखौ श्रीरामचन्द्रके दास अच्छे जिनके ज्ञान रूप तरवारिहै काम क्रोध लोभ मोह मद इत्यादिक बैरी हैं तिनकोमारिकै श्रीरामचन्द्रकीभक्ति जयरूप त्यहिकोप्राप्ति होतेहैं ( ३० ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलि-कलुषविध्वंसने उत्तरकांडेभक्तिचिंतामणिबर्णनन्नामचतुर्थत्रिंशतिस्तरङ्गः ३४॥

दोहा॥ पांचरुतीसतरंगमेंआठप्रश्नबिहँगेश॥ रामचरणउत्तरपरमकहतभुशुण्डिसुदेश ३५॥ हे पार्बति प्रेम समेत गरुड बोले कि हे कृपाल जो मेरेऊपर भाव राखतेहोहु ( १ ) तौ हेनाथ मोको आपनो सेवकाजानिकै आठप्रश्न मैं करतहौं सो समुझाइकै कहहु ( २ ) हेनाथ मति केधीर प्रथम यहकहहु कि सबते दुर्लभ कौनशरीर है ( ३ ) अरु सबते बड़दुख कौनहै अरु सबते बड़सुख कौनहै सो यह संक्षेपहिते बिचारिकै कहहु ( ४ ) संत असंत के मर्म तुमभलेप्रकारते जानतेहौ तिनकर सहजस्वभाव जो नित्य सर्बकाल में स्वाभाविकै वर्तमानहोते हैं सो कहहु ( ५ ) अरु वेदमें विशालपुण्य कौनबिदित है अरु करालपाप कौन है ( ६ ) अरुमानसरोग कौन है जो पाछे एकबात तुमकहिआयेहौ काहेते तुमसर्बज्ञहौतुम्हारेविषेकृपाकी आधिक्यताहै ताते सबकहहु ( ७ ) तबकागभुशुण्डिकहतेहैं कि हेतात अतिप्रीति से मैं कहत हौं अतिप्रीतिसे तुमसुनहु मैं यह

**प्रथमहिंकहहुनाथमतिधीरा सबतेदुर्लभकौनशरीरा ३ बड़दुखकौनकौनसुखभारी सोसंक्षेपहिकहहुबिचारी ४ संतअसंतमर्मतुमजानहु तिनकरसहजस्वभावबखानहु ५ कौनपुण्यश्रुतिबिदितबिशाला कहहुकौनअघपरमकराला ३ मानसरोगकहहुसमुझाई तुमसर्बज्ञकृपाअधिकाई ७ तातसुनहुसादरअतिप्रीती मैंसंक्षेपकहौंयहनीती ८ नरसमाननहिंकौनिहुंदेही जीवचराचरयांचतजेही ९ नर्कस्वर्गअपबर्गनसेनी ज्ञानबिरागभक्तिदृढ़देनी १० सोतनुधरिहरिभजहिंनजेनर होहिंविषयरतमंदमंदतर ११ कांचकिरीच**

नीतिसंक्षेपते कहतहौं यामें अभिप्राय बहुतहै ( ८ ) हेतात मनुष्यके समानऔर देह नहींहै ज्यहि मनुष्यतनको चराचरजीव यांचतेहैं कि हमहूं मनुष्यहोहिं काहेते जाते हमहूं ईश्वरकोजानैं किंतु मनुष्यतनको यांचब वही यांचज्ञा आश्रय सबजीव करते हैं ( ९ ) काहेते कि कर्मक्षेत्र मानुष्य हीतन है जो बिकारक्षेत्र मनुष्यतनते करते हैं सो नरकको जातेहैं तहां बहुकाल भोग्यकरते हैं पुनि चौरासीलक्ष योनिनिमें भ्रमते हैं अरु जो शुभकर्म बनिपरयो तौ स्वर्गकोजाते हैं अरु जो भगवत् भागवतकर्म निष्काम बनिपरयो तौ मोक्षको प्राप्तिहोते हैं अरु ज्ञान वैरागय भक्ति तिन को दृढ़करनहार मनुष्यहीतन है अरु देवतादिकनके तनमें ज्ञान वैराग्य भक्ति दृढ़नहीं ह्वैसकैहै काहेते विषयभोग में आशक्त हैं और तनकीका चली है ( १० ) सो मनुष्यतन धरिकै श्रीरामचन्द्रको नहीं भजते हैं अरु विषय में रतहोते हैं ते मन्दहै मंदतर मन्दहैं ( ११ ) हे पार्बति तेमूढ़ श्रीरामचन्द्रकै भक्तिपारस त्यहिको आपने करते डारिदेते हैं अरु कांचकोकिणका विषय ताको ग्रहण करते हैं ऐसे ये प्राणीपशु हैं ( १२ ) हेतात दरिद्रकही असन्तोष त्यहिकी बरोबरि दुखनहीं है जगत्विषे किंतु दरिद्रै दुखहै अरु संतनके मिलिबेकी समान कछुसुख नहीं है काहेते कि जब संतमिले तब संतोष करिदेते हैं तबवै सुखीह्वैजाते हैं काहेते संतोष परमधन है तहां प्रमाण है श्लोकार्द्ध अन्यच्च॥ असंतोषोदरिद्रस्स्यात्संतोषः परमोधनं ( १३ ) हे तात संतनकर यह सहजस्वभाव है कि मन बचन कर्मते परावा उपकार करते हैं तहां प्रमाणहै वेदव्यासबाक्यंश्लोकएक॥ अष्टादशपुराणानांव्यासस्यबचनद्वयं परोपकारपुण्यायपापाय परपीडनं ( १४ ) अरु पराये हितकारके निमित्त संतदुख सहते हैं अरु पराये दुखदेबेकेहेतु असंत जे अभागी हैं ते आपु दुख सहिकै परायेको दुखदेते हैं परबिना कारणहिं प्रमाणभर्तृहरश्लोक॥ एतेसत्पुरुषाःपरार्थ

**बदलितेलेहीं करतेडारिपरसमणिदेहीं १२ नहिंदरिद्रसमदुखजगमाहीं संतमिलनसमसुखकछुनाहीं १३ परउपकारबचनमनकाया संतसहजस्वभावखगराया १४ संतसहहिंदुखपरहितलागी परदुखहेतुअसंतअभागी १५ भूरुजतरुसमसंतकृपाला परहितनितसहैंबिपतिबिशाला १६ सनइवखलपरबंधनकरहीं खालकढ़ाइबिपतिसहिमरहीं १७ खलबिनुस्वारथपरअपकारी अहिमूषकइवसुनुउरगारी १८ परसम्पदाबिनाशिनशाहीं जिमिशशिहतिहिमिउपलबिलाहीं १९ दुष्टउदयजगअनरथहेतू यथाप्रसिद्ध**

घटिका: स्वार्थं परित्यज्यये सामान्यंपरस्वार्थंमुद्यमभृतेस्वार्थंबिरोधेनये तेमीमानुषराक्षसा:परहिंतस्वार्थायनिघ्नंतुये येतुघ्नंतुनिरर्थकंपरहितंतेकेन जानीमहे ( १५ ) भूरुजकही भोजपत्र त्यहि तरुकी समान संतकृपालहैं जे परायेहित के निमित्त आपनो बकला खाल दैडारते हैं अनेक दुःख सहते हैं ( १६ ) अरु खलजे हैं ते सनईकीनाईं आपनी खालकोकढ़ाइ कै परको बंधन करते हैं आप अनेकदुख सहिकै परायेको दुख देते हैं ( १७ ) हे उरगारि खलबिना स्वारथहि परावाअपकार करते हैं जैसे सर्प किसू को काटिलेत है सो मरिजात है अरु उसका स्वार्थ लेशहूनहींसधै है तैसही मूसा उत्तम मध्यम बस्त्रको काटिडारै है पर उसका स्वार्थ कछुनहींसधै तैसे खलजानिये ( १८ ) पुनिकैसेहैं खल जैसे उपल हिमिकृषीको दलिकै आपुगलिजातहै तैसेखलजेहै तेपराई संपदानाश करिदेते हैं बरु आपनो नाशह्वैजाइ ऐसेखलहैं ( १९ ) अरु जो दुष्टन का उदयकही ऐश्वर्यभयो तौ जगतआरतकही दुःखके कारणहैं जैसे अधम राहु केतु नभमें उदय होतसंते संपूर्णजगतभयको प्राप्तहोतेहैं काहेते कि नवग्रहबिषे राहुकेतुजो राशिनपरउदयहोतहैं तौ तिनकोऔपरायनको दुखैदेतु हैं ( २० ) अरु जो संतनका उदयकहे ऐश्वर्य भयो तौ बिश्वकोसुखदेतहैं पाछे जोश्लोक कहिआयेहैं तिनको अभिप्राय संत असंतनकेगुण प्रसंगभरमेंजानब ( २१ ) अरु हेतात अहिंसाकही अहिजोसर्प तिनको ईशन संयुततुम हिंसा करतेहौ तुम मोसेपरमधर्मपूंछ्यउहै सोवेदनविषे अहिंसाके समानपरम धर्मदूसरनहींहैअहिंसाकही मनबचन कर्मते कोई जीव अपनाते दुखनपावै अरु सर्बभूतमें दयाबनीरहै यह परमधर्म है अरु पराई निंदा अरु हिंसा यहिके समान दूसरपापगरिष्ट नहीं है श्लोकार्द्ध अन्यग्रन्थको। अहिंसापरमोधर्म:अहिंसापरमोतप:निंदाचपरमोधर्म हिंसाचपरमंअघं ( २२ ) हेतात निंदाकही परावा

**अधमग्रकहेतू २० संतउदयसंततसुखकारी विश्वसुखदजिमिइंदुतमारी २१ परमधर्मश्रुतिबिदितअहीशा परनिंदासमअघनगिरीशा २२ हरिगुरुनिंदकदादुरहोई जन्मसहस्त्रपावतनसोई २३ द्विजनिंदकबहुनरकभोगकरि जगजन्मैबायसशरीरधरि २४ सुरश्रुतिनिंदकजेअभिमानी रौरवनर्कपरहिंतेप्रानी २५ होहिंउलूकसंतनिंदारत मोहनिशाप्रियज्ञानभानुगत २६ सबकैनिंदाजेजड़करहीं तेचमगादुरह्वैअवतरहीं २७ सुनहुंतातअबमानसरोगा जिनतेदुखपावहिंसबलोगा २८ मोहसकलब्याधिनकरमूला**

औगुण सुनिकैदेखिकै किससेकहैं किंतु मनमें लैआवैं ताकोनिंदाकहीतहांजेहगिुरुकैनिंदाकरतेहैं ते बहुतकालतौ नरकमें रहते हैं पुनिहजार जन्म ताईं दादुरकहीमेढुक होतेहैं ज्यहिजीभतेनिंदा किहेनिहै सोजिह्वाभगवाननिकारिकै मेढुककरिदीनहै कपोलकल्पितबाक्यभई पुनिमेढुकह्वैकै उपरांत चौरासीमें जातेहैं ( २३ ) अरु ब्राह्मणकैसौहोइ जोब्राह्मणकी निंदाकरै तोबहुतकाल नरक भोगहि पुनि जगममें बायसको शरीर धरिकै उत्पन्नहोते हैं ज्यहि मुखते ब्राह्मण की निंदाकीन तोही मुखते बिष्टाखाते हैं श्लोक एक॥ पतितोपद्विज: श्रेष्ठ: न च शूद्रोजितेन्द्रिय: अदुग्धासुरभीपूज्यानरवरीघटदोहनात् ( २४ ) अरु जै अभिमानी सुर श्रुति निंदक हैं ते रौरव नरक में प्राप्ति होते हैं जहां घोर शब्दहोत है ( २५ ) अरु जैसे तनकी निंदाकरते हैं सो उलूक होते हैं तिनको मोहरात्री प्रिय है ज्ञानभानु अस्त है ( २६ ) अरु जे सबकै निंदाकरते हैं ते चमगादर होते हैं ज्यहिमुखते निंदाकिहेनि है अरु जेहीमुखते खाते हैं तेहीमुखते मलकरते हैं गुदा मुख एकही बिघातैं कीनहै अरु यह दण्ड भयोहै पगऊपर रहतहै मुखनीचेरहत है टँगेरहते हैं। ( २७ ) हेतात अबमानसरोग सुनहु ज्यहिमानसरोगते सबजीव दुःख पावतेहैं ( २८ ) हेतात मोहजो है सो सब व्याधिनकर मूलहै त्यहिते अनेकशूल कही दुःखउत्पन्न होते हैं ( २९ ) कामजोहै सोई बातहै लोभजोहे सो कफहै अरु क्रोधपित्त है जे नित्यछाती जारतेहैं ( ३० ) वातकफ पित्त जो तीनिउंभाई प्रीतिकरिकै एकत्रहोहिं तौ सन्यपात ह्वैजातहै अतिदुःख होतहै ज्यहि प्राणीके होइ सो बिक्षिप्त ह्वैजातहै तैसे येतीनिहुं एकएक प्राणिनके रहहिं तौ महादुःख देतेहैं अरु जाके तीनिउहोहिं ताकी का कहिये अरु जाके काम क्रोध लोभ मोहतीनिउंहोइ ताकेजानी सन्यभई है त्यहिकोसंग न करिये ( ३१ ) अरु अतिदुर्गम विषयके मनोरथ नानाप्रकारके सबशूलकही दुखदायकहैं तिनके नाम कोजानै ( ३२ ) ममताजोहै सोईदादुहै जैसे दादु खजुआवत बहुतप्रिय लागतहै पाछेदुखहोतहै तैसे कोई

त्यहितेपुनिउपजहिंबहुशूला २९ कामबातकफलोभअपारा क्रोधपित्तनितछातीजारा ३० प्रीतिकरहिंजोतीनिउंभाई उपजैसन्निपातदुखदाई ३१ विषयमनोरथदुर्गमनाना तेसबशूलनामकोजाना ३२ ममतादादुकंडुइर्षाई हर्षबिषादगहरबहुताई ३३ परसुखदेखिजरहिंसोछई कुष्टदुष्टतामनकुटिलई ३४ अहंकारअतिदुखदडमरुआ दंभकपटमदमाननहरुआ ३५ तृष्णाउदरकृच्छ्रअतिभारी त्रिबिधइक्षणातरुणतिजारी ३६ युगबिधिज्वरमत्सरअबिवेका कहँलगिकहौंकुरोगअनेका ३७ दो०॥ एकब्याधिवशनरमरहिं

परमतत्त्वबांधैतौ प्रियलागत है अरु जो जोईयोगते वह पदार्थ जातरहै तौअनेक कल्पनादुःख होत है अरु ईर्षाकंडुकही खाज है सो खजुआते रहते हैं जिनप्राणिनके ईर्षा बनीरहत है अरु हर्ष अरु विषाद जोहै सो गहरकही करगर रोग जो गरफूलत है किन्तु हर्ष विषाद बिकार ग्रह है अरु बहु दुखदाई है ( ३३ ) परावा सुखदेखिकै जे जरिजाते हैं सोई क्षई है अरु मन की दुष्टई कुटिलई सोई कृष्टता है ( ३४ ) अरु अहङ्कार अति दुखदाता डमरुआरोग है डमरुआकही जो पेटफूलिकै डमर लागत है जाको ज्वलन्धररोग कहत हैं ताही को कोई त्रिमदा कहतेहैं पुनि जो दम होतीहै अरु दम्भ कपट मदमान नहरुआरोग है जो पगमें नसनिकरिआवती है ( ३५ ) अरु तृष्णाजो है सो उदर विषे सोकृच्छ्रकही कछुही है अरुतीनि प्रकारकी इक्षणाहै सोई तरुणतिजारी है इक्षणाकहीसुतकी इच्छा धनकीइच्छा लोगमर्यादकी इच्छा इन तीनिउँ क्यहिकी मतिको नहीं मलीन कीनहै जिनके ये तीनौं बसी हैं तिनसबकै मति मलीन है ( ३६ ) अरु युगविधिकहौ द्वन्दज्वर सों मात्सर्यकही काहूको सुखनहीं देखिसकै अरु अविवेक दूनहुंकी एकतासोई द्वन्दज्वरहै हेतात सोकहँलगिकहौं मनमें अनेककुरोगहैं ( ३७ ) दोहार्थ॥ हे तात एकव्याधिके वश नर मरिजाते हैं अरु यह अनेक व्याधिसो असाध्य है सन्तत कही निरन्तर जीवको पीड़ा देतेहैं तेजीव स्वस्वरूप परस्वरूप समाधिको कैसे प्राप्तिहोहिं ( ३८ ) हेहरियान नेम धर्म आचारतप योग ब्रत दान इत्यादिक भेषज कही औषधि अनेकहैं पररोग नहीं जाइ है ( ३९ ) यहि प्रकारते यहि जगतमें सर्बजीव रोगी होइ रहे हैं शोक करिकै हर्ष करिकै भय करिकै प्रीति करिकै मिलाप करिकै बियोग कही रोगमें लीन ह्वैरहे हैं ताते दुखी ह्वैरहेहैं ( ४० ) हे गरुड़ यह मानसरोग कछुक मैं बर्णनकीनहै पर यहिरोगकरिकै सर्बजीवरोगीहैं पर बिरले

पैअसाधिबहुब्याधि पीड़ितसंततजीवकहँसोकिमिलहइसमाधि ३८ नेमधर्मआचारतप योगयज्ञब्रतदान भेषजपुनिकोटिननहीं रोगजाहिहरियान ३९ चौ०॥ यहिविधिसकलजीवजगरोगी शोकहर्षभयप्रीतिवियोगी ४० मानसरोगकछुकमैंगाये हैंसबकेलखिबिरलेपाये ४१ जानेतेछीजहिंकछुपापी नाशनपावहिंजनपरितापी ४२ विषयकुपथ्यपाइअंकूरे मुनिहुंहृदयकानरवापूरे ४३ रामकृपानाशहिंसबरोगा जोयहिभांतिबनैसंयोगा ४४ सतगुरुवेदबचनविश्वासा संयमयहनविषयकीआशा ४५ रघुपतिभक्ति

कोई आपनरोग पहिंचान्योहै कि हमरोगीहैं ( ४१ ) तहां यहजो रोग है जनकही प्राणी त्यहिके परितापकही दुखदाता ते जानेते कछुछीजते हैं काहेते जानेतेकछु भेषजकरैगो जोकहिआयेहैं पर नाशकोनहीं प्राप्तिहोत है ताते जनजेहैं सर्बप्राणीतिनको परितापकही सदादुखदेतेहैं ( ४२ ) तहां हेतातविषयसोईकुपथ्यहै तेहिपाइकै अंकूरकहे बढ़तेहैं सो मुनिन के हृदयविषे येरोगहैं नर बापुरेनिकी कौनि चलीहै तहां मुनिउंतौ नरहैं तहां नरनविषे मुनिरोगीहैं जे अहर्निशि औषधै करतरहतेहैं सामान्यकी कौनिगनती है ( ४३ ) हेतात श्रीरामचन्द्रकी कृपाते येरोगनाश होते हैं पर यहिभांतिते जब संयोगबनिपरै ( ४४ ) जबयहसंयोग बनिपरै सत गुरुबैदहोहिं अरु तिनके बचनमें बिश्वासहोहि जो गुरूबैद संयमबतावहि का बतावतेहैं कि विषयकीआश सोई खटाई मिठाई बातलबस्तुहैसोबिषयकी आशात्यागकरै सोईसंयम है ( ४५ ) तबगुरु रघुपतिकैभक्ति सजीवनिमूरिदेते हैं

अरु श्रद्धा अनोपान बताइदेते हैं तहां रघुपतिकीभक्ति कै अनूपान श्रद्धा है श्रद्धा कही वेदबाक्यगुरु बाक्य निज अनुभव तीनिहुं में बिशेषि प्रतीति सुन्दरि तहां निज मत उपासनायुक्त श्लोकएकअन्यच्च॥ शास्त्रदृष्टेर्गुरोर्वाक्यंतृतीयंचात्मनिश्चयं। त्रिविधंयोभिजानाति समुक्तोजन्मबंधनात्॥ ( ४६ ) हे तात यहिप्रकारते निश्चयकरिकै भलीभांतिते रोगनाशहोतहै नाहीं तौ कोटिहुयत्नते नहीं जात है ( ४७ ) हे तात तबजानी कि मनबिरुजकही बिरोगभयो है कबजब अन्तष्करण में बैराग्यकै बलके आधिक्यताहोइ ( ४८ ) तब सुमतिरूप क्षुधा बाढ़तभई अरु विषकी आशा दुर्लभता सब जातिभई ( ४९ ) तब बिमलज्ञान जलते स्नान करतभयो तबरामभक्ति जो सजीवनिमूरि सो रोमरोममें छाइरहहिं ( ५० ) इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेउत्तरकांडेमानसरोगवर्णनंनाम पंचत्रिंशतिस्तरंगः ३५॥

जीवनिमूरी अनूपानश्रद्धाअतिरूरी ४६ यहिबिधिभलहीरोगनशाहीं नाहिँतकोटियतननहिंजाहीं ४७ जानियतबमनबिरुजगोसाईं जबउरखलबिरागअधिकाईं ४८ सुमतिक्षुधाबाढ़ैनितनई विषयआशदुर्बलतागई ४९ बिमलज्ञानजलजबसोनहाई तबरहैरामभक्तिउरछाई ५०॥ * * * * * * * * * *

चौ०॥ शिवअजशुकसनकादिकनारद जेमुनिब्रह्मबिचारबिशारद १ सबकरमतखगनायकएहा करियरामपदपंकजनेहा २ श्रुतिपुराणसबग्रन्थ-कहाहीं रघुपतिभक्तिबिनासुखनाहीं ३ कमठपीठिजामहिंबरुबारा बन्ध्यासुतबरुकाहुहिमारा ४ फूलहिंनभबरुबहुबिधिफूला जीवनलहमुखहरिप्रतिकूला ५ तृष्णाइवबरुमृगजलपाना बरुजामहिंशशशीशबिषाना ६ अंधकारबरुरबिहि

दोहा॥ छठईंतीसतरंगमें रामचरणग्रंथांत॥ सर्बोपरिकहिभक्तिबरसकलशास्त्रसिद्धान्त ३६ हे गरुड़ शिवब्रह्मा सनकादिक शुकदेव नारद इत्यादिक जेब्रह्म बिचार बिज्ञान में बिशारदकही प्रबीणहैं ( १ ) हेखगनायक सबकर मतसिद्धान्तइहैहै कि श्रीरामचन्द्रके चरणारबिंदविषे नेहकरिये ( २ ) श्रुतिपुराण सब ग्रन्थकहते हैं कि श्रीरामचन्द्रकी भक्तिबिना यहजीवको स्वप्नेहुं सुखनहीं है ( ३ ) बरु कमठकी पीठमें बारजामैं बंध्याकर सुत बरुकाहुहिमारै इहां पदनविषे सिद्धांतते अर्थ है ( ४ ) बरु नभविषे बहुफूल फूलहिं पर श्रीरामचन्द्रते प्रतिकूल जीव सुखको नहीं प्राप्त होत है ( ५ ) बरु मृगतृष्णाते पिपासाजाइ बरुशशाके शीशपर शृंगजामैं ( ६ ) अंधकार बरु रबिको नशाइदेइ बरु एते आश्चर्य्य होहिं पर श्रीरामचन्द्र ते बिमुखजीव सुखको नहीं प्राप्तहोहिं ( ७ ) बरुहिमते अनलप्रकटहोइ पर रामचन्द्रते बिमुख सुख कोई नहीं पावतहै ( ८ ) दोहार्थ॥ हे तात बरुबारिमथे घृतहोइ सिकता कही बारूपरे ते तेलहोइपरश्रीरामचन्द्रके भजनबिना जीवनसंसार ते न तरै यह अपेल सिद्धांतहै ( ९ ) हे गरुड़ श्रीरामचन्द्र कैसेहैं चाहैंतौ मशाको बिरंचिकरिदेइँ अरुबिरंचिकोमशाकरिदेहिं ऐसे समर्थ बिचारिकै प्रबीण जनजोहैं ते श्रीरामचन्द्र को भजते हैं ( १० ) श्लोकार्थ॥ हेगरुड़ यहमैं तुमसेबिशेषि निश्चय कह्यउँ है अरु कहतहौं मेरे बचनको अन्यथा न मानहु श्रीरामचंद्रको जे नर भजते

नशावै रामबिमुखनजीवरुखपावै ७ हिमतेअनलप्रकटबरुहोई बिमुखरामसुखपावनकोई ८ दो०॥बारिमथेघृतहोइबरुसिकतातेबरुतेल बिनुहरिभजननभवतरिय यहसिद्धांतअपेल ९ मशकहिकरहिंबिरंचिप्रभु अजहिंमशकतेहीन असबिचारितजिसंशय रामहिंभजहिंप्रवीन १०॥ श्लोक॥ विनिश्चितंवदामितेनअन्यथावचांसिमे॥हरिन्नराभजंतियेसुदुस्तरंतरंतिते ११ चौ०॥ कह्यउनाथहरिचरितअनूपा ब्याससमासस्वमतिअनुरूपा १२ श्रुतिसिद्धांतयहैउरगारी रामभजहिंसबकामबिसारी १३ प्रभुरघुपति तजिसेइयकाही म्वहिंसेशठपरममताजाही १४ तुमविज्ञानरूपनहिंमोहा

**नाथकीन्हम्वहिंपरअतिछोहा १५ पूंछ्यहुरामकथाअतिपावनि शुकसनकादिशम्भुमनभावनि १६ सत्संगतिदुर्लभसंसारा निमिषदंडभरिएकौबारा १७ ) देखुगरुड़निजहृदय**

हैं तेई संसार दुस्तर तरते हैं ( ११ ) हे नाथहरिचरित अनूप है सो मैंतुमसे कहा व्यास कही बिस्तार पूर्वक सो समासकही थोरे में अपनी मतिके अनुरूप कह्यउँ ( १२ ) हे तात श्रुतिको सिद्धांतइहै है कि सर्वत्यागिकै श्रीरामचंद्रको भजी ( १३ ) हेतात बिचारिदेखहु श्रीरामचंद्र को छोड़िकै क्यहि देवताको भजी किंतुकेहि परमेश्वरके स्वरूपकोभजी काहेते कि श्रीरामचंद्रको छोंड़िकै अपरम्वहिं ऐसे शठपरको ममता करि सकै है ( १४ ) अरु हेनाथ तुम तौ बिज्ञान रूपहौ अरु श्रीरामचंद्रके अनन्य भक्तहौ तुम्हारेमोह नहीं है तुमकेवलम्वहिंपर छोहकीनहै ( १५ ) काहेते कि श्रीरामचंद्रकै कथा अतिपावनि तुममोसे पूंछेहु सो कथाकैसीहै शुकसनकादिक शंभुमनभावनीहै ( १६ ) तुमकरिकै आजुमोको सत्संग होत भयोहै तहांवेदको यह सिद्धांतहै कि सत्संगति संसारमें दुर्लभहै ( १७ ) हेगरुड़ अपने हृदय में बिचारिकैदेखौ तौमैंरघुबीरके भजनके अधिकार योग्य नहीं हौं ( १८ ) काहेते शकुनकही पक्षी तिनमें मैं अधम सबभांतिते अपावन ते हमहिंऐसेनको श्रीरामचन्द्र पावनकीन यह जगत् में बिदितहैअरु बिदितकीन है ( १९ ) दोहार्थ॥ हेतात यद्यपिमैं जातिसर्बक्रिया गुणतेहीनहौं तदपि मैं धन्यधन्यतरहौं काहेते आपन निजजन जानिकै आपुही संतकोसमागमदीन्ह ( २० ) हेनाथ आपनी मतिकेअनुसार रामचरित भाष्योहै कछुगोईनहींराख्यो अरु श्रीरामचन्द्रकरचरित अथाह अपारसमुद्र है हे तात असकौन सामर्थ है पारपाइसकै है ( २१ ) हे पार्बती श्रीरामचन्द्रके गुणनकेगण सुजान कागभुशुण्डि सुमिरि सुमिरि अतिहर्षको प्राप्त भयो ( २२ ) पुनि कागभुशुण्डि बोलतभये हे गरुड़ श्रीरामचन्द्रकै महिमा निगम नेतिनेति करिकै गावते हैं अतुलितबल अतुलितप्रताप

**बिचारी मैंरघुबीरभजनअधिकारी १८ शकुनाधमसबभांतिअपावन प्रभुम्वहिंकीनबिदितजगपावन १९ आजुधन्यमैंधन्यअति यद्यपिसबबिधिहीन निजजनजानिनाथम्वहिं संतसमागमदीन २० नाथयथामतिभाष्यो राख्योनहिंकछुगोइ चरितसिंधुरघुनाथकर थाहकिपावैकोइ २१ चौ०॥ सुमिरिरामकेगुणगणनाना पुनिपुनिहर्षभुशुण्डिसुजाना २२ महिमानिगमनेतिकहिगाई अतुलितबलप्रतापरघुराई २३ शिवअजपूज्यचरणरघुराई मोपरकृपापरममृदुलाई २४ असस्वभावकहुंसुनौंनदेखौं क्यहिखगेशरघुपतिसमलेखौं २५ साधकसिद्धबिमुक्तउदासी कबिकोविदकृतज्ञसंन्यासी २६ योगीशूरसुतापसज्ञानी धर्मनिरत**

श्रीरघुनाथजीके हैं ( २३ ) हे गरुड़ देखिये तौ श्रीरघुनाथजी के चरणारबिंद शिवब्रह्मादिकन करिकै पूजनीय हैं तो रघुनाथजी मोहिं ऐसेपर इतनीकृपा परममृदुलाई कीन है ( २४ ) हे खगेश ऐसो स्वभाव न कहूं देखिबेमें आयो अरु न कहूं सुनबेमें आयो है तिन श्रीरामचन्द्र के समान और क्यहि कोलेखो ब्रह्मांडके बाह्यांतर कोई हईनहीं है ( २५ ) हे गरुड़ जे साधककही मुक्तिकी साधना करते हैं मुमुक्षु अरु सिद्धकही संपूर्ण सिद्धी जिनके हस्तामलक हैं अरु जेजीवन्मुक्तहैं अरु बिदेह मुक्तहैं अरु जेसंपूर्णजगतते उदास ह्वैरहेहैं बिरक्तहैं यहि जगतते शुकसनकादिक इत्यादिक अरु कबिब्यास बाल्मीकि इत्यादिक जेहहिं अरु कोबिदकही पंडित वृहस्पतिशेष शारदा इत्यादिक अरु कृतज्ञकही त्रिकालदर्शी औरेके कृतको अच्छीतरहजानै अरु जेसन्यासधर्म में पूर्णहैं ( २६ ) अरु योगीकही जिनके अष्टांग योगसिद्धि हैं पुनि शूरकही खड्गशूर दानशूर धर्मशूर पुनि तपस्वीकही बनविषे जायकै कन्दमूल फूल फल परनवारि पवन इत्यादिकभक्षणकरिकै तपकरते हैं तपसिद्धिकरते हैं ज्ञानीकही आपनी आत्मामें आरूढ़ अरु देहादिक संसारते भिन्न अरु धर्मनिरतकही स्वधर्मरत पुनिपंडितकही संपूर्ण शास्त्रनको ज्ञान अरु चराचरमें परमेश्वरबुद्धि अरु बिज्ञानीकही बिशेष ब्रह्मज्ञान ( २७ ) हे तात एते जो संपूर्ण

कहिआये तेममस्वामी जो श्रीरामचन्द्र तिनके सेवन पद भजनबिना यह संसार न तरहिं यह ध्रुवकरिकै जानहु तिन श्रीरामचन्द्रके बारबार नमामिकही नमस्कार करतहौं ( २८ ) कैसे श्रीरामचन्द्र हैं जिनकी शरणगयेते हमऐसे अघकीराशि तेऊ सिद्धिभये अरु शुद्धह्वैकै अबिनाशी ह्वैगयेहैं किन्तु अबिनाशी श्रीरामचन्द्र तिनके नमस्कार करतहौं ( २९ )

पंडितबिज्ञानी २७ तरहिंनबिनुसेयेममस्वामी रामनमामिनमामिनमामी २८ शरणगयेमोसेअघराशी होहिंशुद्धनमामिअबिनाशी २९ दो०॥ जामुनामभवभेषज हरणघोरत्रयशूल सोकृपालम्वहिंतोहिंपर सदारहैंअनुकूल ३० सुनिभुशुंडिकेवचनशुभ देखिरामपदनेह बोल्योप्रेमसहितगिरा गरुड़बिगतसंदेह ३१ चौ०॥ मैंकृतकृत्यभयोंतवबानी सुनिरघुबीरभक्तिरसमानी ३२ रामचरणनूतनरतिभई मायाजनितबिपतिसबगई ३३ मोहजलधिवोहिततुमभये मोकहँनाथबिबिधसुखदये ३४ मोपैहोइनप्रति

दोहार्थ॥ हे गरुड़ श्रीरामचन्द्रकर नाम भेषजकही औषधि है भवजो संसार त्यहिके रोग जन्म मरण त्यहिको कारण त्रयशूलकही काम क्रोध लोभ पुनि त्रयशूलकही त्रयताप अधिभूत अध्यात्म अधिदैवत ताको नाशकरिदेतहैं रामनामते श्रीरामचन्द्र हमारे तुम्हारे ऊपर अनुकूलकही प्रसन्नरहैं ( ३० ) हे पार्बती कागभुशुण्डिके शुभबचन सुनिकै श्रीरामचन्द्र के चरणनमें अतिस्नेह देखिकै तब प्रेमभरीबाणी गरुड़धीर बिगतसंदेह बोलत भये ( ३१ ) हे प्रभु तुम्हारीबाणी सुनिकै मैं कृतकृत्यकही कृतार्थभयउँ काहते श्रीरघुनाथ जी कै कथा भक्ति अमृतमय त्यहिरसते सानी तुम्हारी बाणीसुनिकै परमानन्दको प्राप्तभयउँ ( ३२ ) हेतात श्रीरामचन्द्रकेचरणारबिंद विषे नवीन प्रीति उत्पन्न भई है अरु मायाते जनित जो मोह त्यहिते जनित दुःख सोसब नाशभयो है ( ३३ ) हेनाथमोहरूप समुद्रमें तुममोको जहाजभयो है अरु आपमोको बहुतसुखदीन ( ३४ ) हेनाथ जो सुख आपमोको दीन है त्यहिको प्रतिउपकार जो मैं कीन चाहौं तौ ब्रह्मांडभरे में नहीं है मैं कहांते करौं ताते तुम्हारे चरणारबिंद बारबार बन्दतहौं अरुआपसे उऋण नहींहौं अनेककल्पताईं ( ३५ ) हेतात श्रीरामचन्द्र की कृपाते तुम सम्पूर्ण कामना करिकै पूर्णहौ अरु श्रीरामचन्द्रके चरणारविंदके अनुरागीहौ ताते तुमधन्यधन्यतर बड़भागीहौ ( ३६ ) हेनाथ जो तुम कृपाकरिकै मोको इतना सुखदीन तौ का बड़ी बातकीन काहेते वेदशास्त्र यह काहतेहैं कि सन्त अरु बिटप सरिता अरुपर्बत अरु पृथ्वी इनकै करणी केवल परमार्थै हेतुहै ( ३७ ) हे नाथ मोको अस समुझि परतहै कि कबिजन वर्णन करतेहैं सन्तनको हृदय नवनीतकेसमानहै परकविनते कहत नहीं बनाहै ( ३८ ) काहेते नवनीत जो है निजपरितापकही आपनेको जब गरमी होतिहै तब द्रवतकही टेघरिजातहैं अरुसन्त जोपुनीतहैं सो परावा दुःख देखिकै द्रवतेहैं ( ३९ ) हेनाथमोर

उपकारा बंदौंतवपदबारहिंबारा ३५ पूरणकामरामअनुरागीतुमसमतातनकोउबड़भागी ३६ संतबिटपसरितागिरिधरणी परहितहेतुसबनकैकरणी ३७ सन्तहृदयनवनीतसमाना कहाकबिनपैकहैनजाना ३८ निजपरितापद्रवैनवनीता परदुखद्रवहिंसुसन्तपुनीता ३९ जीवनजन्मसुफलममभयऊ तवप्रसादसंशयसबगयऊ ४० जान्यहुंसदामोहिंनिजकिंकर पुनिपुनिउमाकहै बिहंगबर ४१ दो०॥ तासुचरणशिरनाइकरि प्रेमसहितमतिधीर गयउगरुड़बैकुण्ठतब हृदयराखिरघुबीर ४२ गिरिजासंतसमागम समनलाभकछुआन बिनुहरिकृपानहोइसो गावहिंवेदपुरान ४३॥ *

जीवन जन्म सुफलभयउ तुम्हारेप्रसादते सम्पूर्ण संशय मोरगयउ ( ४० ) हे पार्बती बारबार गरुड़कहतेहैं कि हेनाथ मोको आपन किङ्कर सदाजाने रहब ( ४१ ) दोहार्थ॥ हेपार्बती तब कागभुशुण्डिके चरणारविंद विषेमाथनाइकै प्रेमसंयुक्त धीरमान् विनय करिकै रघुनाथजी को स्वरूप गुण प्रताप लीला हृदयमें धरिकै बैकुण्ठमें जातभये ( ४२ ) हे गिरिजा सन्तनके समागमके समान अपरलाभ कछुनहीं है यहवेद पुराण गावते हैं परसंतनकर समागम बिना श्रीरामचन्द्रकी कृपानहीं होतहै ( ४३ ) इतिश्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषबिध्वंसने उत्तरकांडेसर्वोपरिभक्तिवगरुड़बैकुण्ठगमनबर्णनन्नाम षट्त्रिंशतिस्तरंगः ३६॥ :: :: :: ::

दोहा॥ सप्तमतीसतरंगमेंसप्तकांडश्रुतिसार॥ रामचरणशिवबोधकरिउमहिंस्वयंअवतार ( ३७ ) हे पार्बति यह परम पुनीत परम गोप्य इतिहास मैं तुमसे कहाहै जाके श्रवण करतसन्ते भवकर फांस जो जन्ममरण सो छूटि जातहै ( १ ) यह कथासुने शरणागतके कल्पतरु श्रीरामचन्द्र हैं तिनके चरणारबिन्द विषे अतिशय प्रीति उत्पन्न होइ है ( २ ) जो यहि कथाको मनलाइकै सुनै तौ मनकर्म बचनते जो पापहोइ सो तुरन्त नाशको प्राप्तहोइहै ( ३ ) हेपार्वति तीर्थनकर अटन कही फिरब अरुजहांतक कल्याण के साधन वेद बर्णते हैं अनेक योग अरु बैराग्य ज्ञानकी निपुणता ( ४ ) अरु नानाप्रकार ते शुभकर्म अरु तप दान अरुसंयम दमनियम मख ब्रत इत्यादिक जो अनेक शुभसाधन हैं ( ५ )

चौ०॥ कह्यउपरमपुनीतइतिहासा सुनतश्रवणछूटहिंभवफांसा १ प्रणतकल्पतरुकरुणापुंजा उपजैप्रीतिरामपदकंजा २ मनक्रमवचनजनितअघजाई सुनहिंजेकथाश्रवणमनलाई ३ तीर्थाटनसाधनसमुदाई योगबिरागज्ञाननिपुणाई ४ नानाकर्म्मधर्म्मतपदाना संयमदमजपमखब्रतनाना ५ भूतदयाद्विजगुरुसेवकाई बिद्याबिनयबिवेकबड़ाई ६ जहँलगिसाधनबेदबखानी सबकरफलहरिभक्तिभवानी ७ सोरघुनाथभक्तिश्रुतिगाई रामकृपाकाहूयकपाई ८ दो०॥ मुनिदुर्लभहरिभक्तिनर पावहिंबिनहिंप्रयास जेयहकथानिरन्तर सुनहिंमानिविश्वास ९ चौ०॥ सोसर्बज्ञगुणीस्वइदाता सोमहिमण्डितपण्डितज्ञाता १० धर्म्मपरायण सोकुलत्राता रामचरणजाकरमनराता ११ नीतिनिपुणसोपरमसयाना श्रुतिसिद्धांतनीकत्यइँजाना १२ सोकबिकोबिदसोनर

अरु सर्बभूतकही चराचर जीव में दया अरु द्विजनकी अरु गुरुन की सेवकाई अरु बिद्या अरु बिनय कही सर्ब विषे नम्रता १ अरु दीनता बिबेक अरु जयपूज्य बड़ाई ( ६ ) अरु जहाँ तक मोक्षके साधनवेद बर्णतेहैं हे पार्वति इन सबकरफल रसमय श्रीरामचन्द्रकै भक्ति है ( ७ ) सो रामभक्ति जो वेद गावतेहैं सोभक्ति श्रीरामचन्द्रकी कृपाते कोटिनसाधन सिद्धिनमें एककाहूको प्राप्तिहोती है ( ८ ) दोहार्थ॥ ऐसी जो भक्ति मुनिनको दुर्लभ सो भक्ति नरनकोबिना प्रयासहि प्राप्ति होतहै जे यहिकथाको निरन्तर प्रीतिसंयुक्त विश्वास मानिकै कहैं सुनैं ( ९ ) सोई सर्बज्ञहै सोई सर्ब गुणीहै सोई ज्ञाताहै सोई महिमंडित कही महिको भूषणहै सोई पंडितहै अरु सोई दाताहै ( १० ) अरु सोई धर्ममें परायणहै अरु निजकुल त्राताकही रक्षक है ज्यहिकोमन श्रीरामचरणमें रत है ( ११ ) अरु नीतिविषे सोई निपुणहै अरु श्रुतिको सिद्धांत त्यइनीकी प्रकारते जान्योहै ( १२ ) सोई महाकबिहै सोई पंडित है धीरहै जोछलछांड़िकै रघुबीरको भजैहै जीवके परमेश्वरविषे छलकही संसारकै मर्य्याद मानबड़ाई ( १३ ) हे पार्वति वहदेश धन्यहै जहां श्रीगंगाजी हैं अरु वहनारिधन्यहै जाके प्रतिब्रत एकधर्म है ( १४ ) अरु धन्य वह राजाहै जो राजनीतिमें दृढ़है अरु धन्य वह ब्राह्मणहै जो प्राणहुगयेते आपनो धर्मनहीं छोड़ै ( १५ ) हे पार्वतिसो धनधन्यहै जो पुण्यविषे परिपक्व मतिरहै पुण्य कही सबप्रकारते मनक्रम बचनपवित्र ( १६ ) धन्यवह घरीसाइति मुहूर्त पल लक्षणज्यहिमें सत्संगहोइ अरु चारिबर्णाश्रम अरु बर्णबाह्य

धीरा जोछलछाँड़िभजैरघुबीरा १३ धन्यसोदेशजहाँसुरसरीधन्यनारिपतिब्रतअनुसरी १४ धन्यसोभूपनीतिजोकरई धन्यसोद्विजनिजधर्म्मनटरई १५ सोधनधन्यप्रथमगतिजाकी धन्यपुण्यरतमतिसोपाकी १६ धन्यघरीसोजबसत्संगा जन्मधन्यद्विजभक्तिअभंगा १७ दो०॥ सोकुलधन्यउमासुनु जगतपूज्यसुपुनीत श्रीरघुबीरपरायण ज्यहिनरउपजविनीत १८ चौ०॥ मतिअनुरूपकथामैंभाखी यद्यपिप्रथमगुप्तकरिराखी १९

तवमनप्रीतिदेखिअधिकाई तबमैंरघुपतिकथासुनाई २० यहनहिँकहियशठहिहठशीलहि जोमनलाइनसुनहरिलीलहि २१ कहीनलोभिहि-क्रोधिहिकामिहिं जोनभजहिसचराचरस्वामिहिं २२ द्विजद्रोहिहिनसुनाइयकबहूं सुरपतिसरिसहोइनृपजबहूं २३ रामकथाकेतेअधिकारी जिनकहँसतसंगतिअतिप्यारी २४ गुरु

कोईहोइ सो जन्मधन्यहै जाकेब्राह्मणविषे अभंगभक्तिहोइ ( १७ ) दोहार्थ॥ हेउमा सोकुलबंशधन्यहै जगत में पूज्यपुनीत है ज्यहिके कुलमेश्रीरघुबीरके चरणमें परायण होइहैं बिनीतकही आर्त्तदीनहोइकै ( १८ ) हे उमाआपनी मतिकेअनुसार श्रीरामकथा नित्यनिर्मल सो कह्यउं यद्यपिप्रथमहिं गुप्तकरिराख्यउंहै ( १९ ) हे उमा तुम्हारेमनमें अतिप्रीतिदेखिकै तबमैंगुप्ततत्त्व रघुपतिकैकथाकहाहै ( २० ) हेपार्बति यह कथा जेहठीहैंशठहैं कुशीलहैंअरु जेमनलाइकै श्रीरामलीला नहीं सुनहिं तासों न कही ( २१ ) अरु लोभी कामी क्रोधी इत्यादिक अरु जे श्रीरामचन्द्र चराचर के स्वामी तिनको जे नहीं भजहिं तेचराचरके बिरोधीहैं तिनते कबहूं नकही ( २२ ) अरु जो ब्राह्मणकर द्रोह मनहूँ में लैआवै अरु इन्द्रकी समान होइ तौ वहिको यह न सुनाई ( २३ ) हे पार्बति यह श्रीरामचंद्र की कथाके अधिकारी तेई प्राणीहैं जिनको सत्संगति अति प्रियलागीहै ( २७ ) अरु जिनके गुरुनके पदविषे प्रीति है अरु वेद नीतिमें रतहैं अरु द्विज सेवक हैं तेई श्रीरामकथा के अधिकारी हैं ( २५ ) हे प्रिया जिनको रघुनन्दन प्राणहुते प्रियहैं तिनको यहकथा अतिप्रियहै विशेपि सुखदाई है ( २६ ) दोहार्थ॥ हेउमा जेश्रीरामचन्द्र के चरणारविंद विषे अति रति भक्तिचाहैं अथवा निर्वाणकही ज्ञानकरिकै कैवल्य भक्तिचाहैं तेयहि कथाको प्रीतिसमेत श्रवणपुटपानकरैं अरुमनन निदध्यासनकरैं तबसाक्षात्होइ ( २७ ) हेगिरिजा यह श्रीरामचंद्रकी कथाजोमैं बर्णनकीन्ह सोकलिकरमलसकलअरु मनकी बासनारूप मल त्यहि सबकी हरणहारी यहकथा है ( २८ )

पदप्रीतिनीतिरतजेई द्विजसेवकअधिकारीतेई २५ ताकहँयहविशेषिसुखदाई जाहिप्राणप्रियश्रीरघुराई २६ दो०॥ रामचरणरतिजोचहै अथवापदनिर्बान भावसहितसोयहकथा करैश्रवणपुटपान २७ चौ०॥ रामकथागिरिजामैंबरणी कलिमलशमनमनोमलहरणी २८ संसृतिरोगसजीवनमूरी रामकथागावहिंश्रुतिशूरी २९ यहिमारुचिरसप्तसोपानारघुपतिभक्तिकेरपंथाना ३० अतिहरिकृपाजाहिपरहोई पाउंदेइयहिमारगसोई ३१ मनकामनासिद्धिनरपावा जोयहकथाकपटतजिगावा ३२ कहहिंसुनहिंअनुमोदनकरहीं तेगोपदइवभवनिधितरहीं ३३ सुनिसबककथाहृदयअतिभाई गिरिजाबोलीगिरास्वहाई ३४ नाथकृपाममगतसंदेहा रामचरणउपज्यउनवनेहा ३५ दो०॥ मैंकृतकृत्यभयउंअब तवप्रसादबिश्वेश उपजीरामभक्तिदृढ़ बीतेसकलकलेश ३६

हेपार्वति संसृति जो जन्म मरण सोईमहारोगहै त्यहिकेनाशकरिबेको रामकथासजीवनिमूरिहै अरुश्रुति शूरीकही पंडितगावैं कही पुकारि पुकारि कहते हैं ( २९ ) हे उमा यह श्रीमद्रामायण सातोकांडहै सो श्रीरामचन्द्रकी भक्तिके पथको श्रीरामचन्द्रके समीपकी प्राप्ति करिबेको सो पान कही सीढ़ी हैं पर इहां साधनसिद्धि एकही है ( ३० ) ज्यहिपर अतिशयश्रीरामकृपाहोइ सोयहि मगपर पगधरै ( ३१ ) जो यहि कथाको कपट तजि कही बर्णाश्रमकै गंधिमान बड़ाई लोकरंजना त्यागिकै निष्कामह्वैकै गानकरै सो परमदिव्य मनबाञ्छित फलको पावैहै ( ३२ ) अरु जेयहि रामचरित को कहते हैं अनुमोदन कही बिचारते हैं तेप्राणी भवसागरगोपद इवतरते हैं ( ३३ ) हे भरद्वाज अतिभाव ते यहकथा सुनिकै हृदय में हर्षिकै गिरिजा सुन्दरिबाणी बोलतीभई ( ३४ ) हे नाथ तुम्हारीकृपाते मोरसंदेह गतकही नाशहोत भयो है अरु श्रीरामचन्द्रके चरणारबिंदविषे नवीननेह

उत्पन्नहोत भयो है ( ३५ ) दोहार्थ॥ हे बिश्वेश तुम्हारे प्रसादते मैं कृतकृत्य भयउंहै अरु श्रीरामचन्द्रकी भक्ति मेरे हृदयमें दृढ़ करिकै उत्पन्नभई है संपूर्ण क्लेशनाशह्वैगये हैं ( ३६ ) गोसाईं श्रीतुलसीदास कहते हैं कि श्रीयाज्ञवल्क्य कहते हैं हे भरद्वाज यह शंभु उमाको सम्बाद जो है संपूर्णसुख परमानन्द स्वरूप त्यहिको तौ संपादन कही उद्यतकरतहैं त्यहि सुखको बर्णन करतसंते सुकृती जीवनको जनावत हैं देखावत हैं प्राप्तकरत हैं बिषाद जन्ममरण शमन कही नाशकरतहैं ( ३७ ) अरु यहसंबाद भवभंजन है अरु संदेहको गंजन कर्त्ताहै अरु जनकही संपूर्ण प्राणी किंतुजनकही सज्जन जिनको रंजन कही आनन्दकर्त्ता है अरु सज्जन जो साधुजन हैं तिनको अतिप्रिय है ( ३८ ) अरु श्रीरामचन्द्र के जो उपासकहैं जगतविषे तिनको यहशंभु उमासंबाद श्रीमद्रामायणजोहै त्यहिकेसम अपरग्रंथप्रियनहींहै काहेते कि यहिग्रंथविषे श्रीमद्रामचंद्रके स्वरूप किशोरमूर्ति द्विभुज अखण्ड एकरस सर्बोपरि निर्विशेषपरब्रह्मविग्रह विशेषहैं अरुसत्‌चित्‌ आनन्द चिन्मय सर्बनियंता सर्बव्यापक

**चौ०॥ यहशुभसम्भुउमासम्बादासुखसम्पादनशमनबिषादा ३७ भवभंजनगंजनसंदेहा जनरंजनसज्जनप्रियएहा ३८ रामउपासकजे**

सर्वांतर्य्यामीसर्ब शरण्यत्व कृपाकरुणाशील इत्यादिक जिनकोबिशेषणहै यह श्रीमहादेव अरु ब्रह्मा श्रीहनूमान बाल्मीकि वेदव्यास शुक सनकादिक मुनिनकोमतहै ऐसे श्रीरामचन्द्रको प्रतिपादक यहग्रंथहै श्रीरामचन्द्र प्रतिपाद्यहैं ताते श्रीराम उपासकनको यहिसम प्रियदूसरनहीं है उपासना कही उपनाम समीपके प्राप्तिकी आसनाहै जिनके इहां नकारको निषेधजानब वहनकार अनुस्वारको आगमन करिकै बहुबचनको बोधकरतु है किंतु उपासना समीपकी है बासना जिनके अरु ना कही निषेधकोऔर ग्रन्थकी अपर स्वरूपकी अपर धर्म कर्मकै जिनके नहीं है बासना ताको कही उपासना पुनि उपासना यह शब्दै सिद्धिहै जैसे पतिब्रतास्त्रीहै केवल अपने पतिसे रतिमानै है अरु पतिके प्रसन्नहेतु पतिके मनअनुकूल ऊपरते पतिके संबंधिनको समान मानेहै तैसे उपासकजन जेहैं तेतहां परमेश्वरके अनन्तस्वरूपहैं तिनमें जा एकस्वरूप गुरुनकरिकै प्राप्त भयो है ताही में वेरति मानतेहैं अपरस्वरूप अंशकला बिभूति मानते हैं जैसे चातककेवल स्वातीके मेघजलको मानैहै अपरमेघजल की मानतई नहीं सो यहिग्रन्थमें ऐसई उपासना कहाहै ताते रामउपासकको यहिकेसमान दूसर नहीं है तत्रप्रमाणं श्रीमन्महारामायणे शंकरबाक्यं पार्बती प्रति॥ गुरुमंत्रानुसारेण लयंध्यानंजपंतथा। पाठंतीर्थचसंस्कार मिष्टंसर्बपरात्परम् १ इष्टंपूजांप्रकुर्य्याद्वैतत्कथाश्रणुयात्पठेत्। तदंशब्यापकंबिश्वं कथ्यंतेसाप्युपासना २ नबिधिर्ननिषेध्यश्चप्रेमयुक्तंरघूत्तमे। इन्द्रियाणामभावः स्यात्सोनन्यापासकःस्मृतः ३ ध्यानेपाठेजपेहोमेज्ञानेयोगेसमाधिभिः। बिनोपासनयामुक्तिर्नास्तिसत्यंब्रवीमिते ४ वैःकृतंभक्तिबिज्ञान मनन्ययोपासनाबिना। नप्राप्तिर्भगवद्रूपेसत्यंसत्यंवदामिते ५। ३९ हेभरद्वाज अपनी मतिके अनुसार श्रीरामचन्द्र की कृपाते श्रीरामचन्द्रकर चरितगान कीनहै ( ४० ) यहि कलिकालविषे एकौ साधना नहीं है न योग न यज्ञ न जप न तप न ब्रत न पूजा ( ४१ ) तहां करिये का श्रीरामचंद्रको चित्तकीवृत्तिमें सुमिरणकरी अरुश्रीरामचंद्रकर गुणानुबाद अहर्निशि श्रवणकरी अरु प्रीतिसमेत निरंतर गानकरी ( ४२ ) जासु कही जिनश्रीरामचंद्रकर बाना जो है बेष सो पतितनको पवित्र करता है किंतुबाना

**जगमाहीं यहिसमप्रियतिनकेकछुनाहीं ३९ रघुपतिकृपायथामतिगावा मैंयहपावनचरितस्वहावा ४० यहिकलिकालनसाधनदूजा योगयज्ञजपतपब्रतपूजा ४१ रामहिंसुमिरियगाइयरामहिंसंततसुनियरामगुणग्रामहिं ४२ जासुपतितपावनबड़बाना गावहिंकबिश्रुतिसंतपुराना ४३ ताहिभजियमनतजिकुटिलाई रामभजेगतिक्यहिनहिंपाई ४४ छं०॥ पाईनगतिक्यहिपतितपावन रामभजिसुनुशठमना गणिकाअजामिलव्याधगिद्ध गजादिखलतारेघना ४५ आभीरयमनकिरातखल स्वपचादिअतिअघरूपजे कहिनामबारकतेपिपावन होहिंरामनमामिते ४६ रघुबंशभूषणचरितयहनर कहहिंसुनहिंजेगावहीं कलिमलमनोमल**

कही बिरदावली यह कबिकोबिद श्रुतिपुराण गावते हैं ( ४३ ) ताही कही तिन श्रीरामचन्द्रको भजी मनकी कुटिलाई कही लोकमर्याद त्यहिकोत्यागिकै तहां श्रीरामचंद्रके भजन करिकै को नहीं गतिको प्राप्तभयो है तहांसबै गतिको प्राप्तभये हैं ( ४४ ) छंदार्थ॥ हे शठमन श्रीरामचंद्रको भजिकै परमगतिको को नहीं प्राप्तभयो है गणिका अरु अजामिल व्याध गीधगजादिक अनेकखल घने तरिगयेहैं ( ४५ ) अरु आभीरकही अहीर ब्रजके अरु यमन हाराम कहिकै अरु किरात खसकही खसिया कोलभिल्ल अरु स्वपच इत्यादिक जे अघकेरूपहैं ते बारककही एकबार नामकहिकै पावनह्वैकै परमपदको प्राप्तभये हैं तिन श्रीरामचन्द्र के बारबार नमस्कार करतहौं ( ४६ ) रघुबंश कुलकेभूषण श्रीरामचन्द्र तिनकर चरित जे नर कहहिं सुनहिं गावहिं ते संपूर्ण कलिकरमल मनक्रम बचनबिषे सो धोइकै श्रीरामधामको प्राप्तहोते हैं ( ४७ ) अब गोसाईं तुलसीदासजी सातौ काण्ड दोहा चौपाई छन्दसमेटिकै अनुष्टुपश्लोककी गनती कहतेहैं शतपंच तहां पंचशतकर अंकलिखै अरु पांचकेऊपर सौकर अंकलिखै तौ ५१०० होत हैं तहां चारिचरणकी चौपाई होती है सो एक २ चरण सोरह २ मात्राके होते हैं ऐसे चारिचरणकी एक चौपाई छन्दहोत है ऐसेईछन्द पांचहजार एकसौ सातौकाण्ड जानिये अरु यहिते अधिक जहांहै सो क्षेपकजानिये पुनि पदनकोलिहे आपनी उक्तिसे अर्थ करते हैं सत्पंच तहां पंच तीनि प्रकारके एकसत्पंच एकपंच एक असत्पंच सत्पंचकही जो कोईहोइ आपनहितकारी पुत्र मित्र इत्यादिक जो उनसे औकिसूसे पंचाइतिपरी तौ वे यथार्थै कहते हैं चाहौ मित्रहोइ अरु चाहो अरिहोइ ताको सत्पंचकही अरु एकै पंचहैं सबकी समुझिकै कहते हैं पर अपने हितकारीकी कछु अधिक कहतेहैं ताको पंचकही पुनि जे झूंठेको सांचकरैं अरु सांचेको झूंठकरैं अंकोरलैकै ताको असत्पंच कही यह दृष्टान्त है अब दृष्टांत कहते हैं तहां ग्रन्थकर्ता ग्रन्थ तीनिप्रकारके एक शुद्धसात्विक जहाँ केवल परमेश्वर जो श्रीरामचन्द्र तिनकी प्रतिपाद्य होइ अरु तिनके

**धोइबिनुश्रमरामधामसिधावहीं ४७ शतपंचचौपाईमनोहरजानिजेनरउरधरैं दारुणअबिद्यापंचजनितबिकारश्रीरघुबरहरैं ४८**

आश्रय सात्विक देवता पुनि कर्मधर्म बैराग्य योग ध्यान समाधि भक्ति शुद्धबर्णनहोइ केवल परमेश्वरकी प्राप्तिहेतु ऐसो ग्रन्थकर्ता सत्पंच है अरु जहां ये सत्पदार्थ राजसमें बर्णनकरते हैं तहां स्वर्गकी प्राप्तिकहते हैं तेपंचहैं अरु जहां तामस धर्म कर्म इत्यादिक बर्णनकरते हैं तामसी देवता आराधन साधन कहते हैं अरु अर्थ धर्म कामकी प्राप्तिकरते हैं ते असत्पंच कबि मुनिहैं पर वेदमें सबै बर्णन हैं अरु जे सबकरमत यथातथ्य कहते हैं जहां यहरीति ग्रंथमें बर्णनपाये त्यहि ग्रन्थकर्ता मुनीश्वरको सत्पंचकही अरु कोई मुनि शुद्धसात्विक अरु राजसलिहे कहते हैं काहेते आपने मतको खैंचिकै बिशेषि सिद्धांत कहते हैं औरेके मतमें तिरस्कारकरिकै कहते हैं अरु अपर कर्म धर्म ज्ञान योग इत्यादिकनको यथार्थकहते हैं अरु अपने सिद्धांत को प्रियमानतेहैं अरु आपने मतको मोक्षमानते हैं ऐसे जेग्रन्थकर्ता मुनिहैं तिनको पंच जानिये अरुजिन मुनिन ग्रंथ करिकैयहकहे हैं कियक्षराक्षस बीरभैरवभूत इत्यादिकनको जीवबलिचढ़ावै अरु मदिरामांसमछरीभक्षणकरै इत्यादिकतामसी कर्मधर्म में क्षेमबर्ततेहैं अरुशुद्धसात्विक धर्मकीनिन्दा किहिनिहै काहेते कि तामसी देवतनते अर्थधर्मकामके अंकुरलिहेहैं अरुयह तीनिउँ गुणकीप्रवृत्ति अनादिकालते चलीआवैहै नरक स्वर्ग मोक्ष तहां गोसाईं श्रीतुलसीदासजी कहतेहैं कियहजोचौपाई छन्द प्रबंधग्रंथ श्रीमद्रामायणमें मैं कीनहै सोसत्पञ्च है अरुमनोहर है सत्यबादीहै तहां मनते अरु जीवते पञ्चाइति परीहै मन अर्थ धर्म कामको सिद्धांत करैहै अरु जीवमोक्षको सिद्धांत करैहै सो अनादिकालते इनको झगरा चलाआवै है तहां श्रीरघुबर राजा हैं दूनोंकीफिरियादि सुनिकै यह ग्रंथ जो सत्पञ्चहै तिसके इहांपठइदीन यह सत्पञ्च कर कहा हृदयमेंधरै सो जीतिजाय अरुहृदयमें नधरैतौ उसकी भी दारुण अविद्या पंच त्यहिते जनित कहीं उत्पन्न अनेक बिकार दण्ड दैकै शुद्धकरि देते हैं पर यह सत्पंचाइति में आवाचाहिये अरु यह सतपंचको बचन सुनाचाहिये तौ अवश्य शुद्ध होइगो। अथपंचपर्बा अविद्याके नाम कहते हैं तम अविद्या अरु मोह अविद्या महामोह अविद्यातामिश्र अविद्या अन्धतामिश्र अविद्या अबक्रमहींते पांचौके विशेषण कहते हैं तमअविद्या को विशेषण अविवेक अरु मोह अविद्या को विशेषण अन्तष्करण बिभ्रम अरु महामोह अविद्याको विशेषण इन्द्रीग्राम

सुन्दरसुजानकृपानिधानअनाथपरकरैप्रीतिजो सोएकरामअकामहितनिर्बाणप्रदसमआनको ४९ जाकीकृपालवलेशतेमतिमंद

क्षणभंग भोग अरु तामिश्र अविद्याको विशेषण क्रोध अरु अन्धतामिश्र अविद्याको विशेषण मरण विषखाइकै अरु कूपगिरिकै अथवा अपघात करिकै मरिजाते हैं॥ श्लोकद्वै २ तमोविवेकमोहस्य अन्तःकरणविभ्रमः॥ महामोहस्यविज्ञेयो ग्रामभेदसुषेक्षणः १ मरणंअन्धतामिश्र तामिश्रंक्रोध उच्यते॥ अविद्यापंचपर्बैषाप्राहुर्भूतमहात्मनः २ इतिपंचपर्ब अविद्या ४८ कैसे हैं श्रीरघुनाथ जी अति सुन्दर जिनकी शोभाको कोईने प्रत्यक्ष देख्यो अरु कोई ध्यान में देखत हैं तिन सबके मनको आकर्षण करतहैं जिनकीछबि पुनि कैसे हैं सुजन हैं सबके अन्तष्करण के भाव कुभाव प्रीति बैर जानते हैं सो ऐसे कृपाल दयाल सामर्थ एक श्रीरामचंद्रहैं कैसै श्रीरामचन्द्र हैं अकामकही कवनिउ कामना नहीं राखते हैं अरु अपने जनको अति प्रिय मानतेहैं किन्तु अकाम जन अति प्रिय हैं अरु निर्बाण कहीमोक्ष सालोक्य सामीप्य सारूप्य सायुज्य सारिरय ऐसे सहजमें निर्बाण पद के दायक एक श्रीरामचन्द्र हैं ( ४९ ) देखिये तौ जिन श्रीरामचन्द्रकी कृपाके लवलेशते मैं जो तुलसीदास मतिकर मन्दहौं तेऊ परम विश्रामको प्राप्ति भयों है ताते मोरे समझबे में श्रीरामचन्द्र की समानकृपाल ऐसो प्रभु कहूँ नहीं है ( ५० ) दोहार्थ॥ गोसाईं श्रीतुलसीदास कहते हैं कि हे श्रीरघुबीर नतौ मोरे समान कोई दीनहै अरु नतौ तुम्हारे समान कोई दीनदयाल है असबिचारिकै अति बिषम जो भवकी भीर है त्यहिकोहरहु भीरकही जन्ममरण ( ५१ ) हे श्रीरघुनाथजी जैसेकामीको नारि निरन्तर प्रिय है अरु लोभीको दाम प्रिय है तिमि कही ऐसेही निरंतर मोको तुम प्रिय लागहु इहां श्रीगोसाईं तुलसीदास जी जीव को अरु परमेश्वर को चारि अनुबन्ध कहते हैं यही दोहामें अभिप्रायहै तहां श्रुति स्मृति पुराण इत्यादिक अरु श्रीमद्रामायण शतकोटिअपार है सो प्रतिपादक है अरु दशरथनन्दन श्रीरामचन्द्र प्रतिपाद्यहैं प्रतिपादक प्रतिपाद्य ताकोअर्थ समस्तग्रन्थ श्रुतिस्मृतिपुराण श्रीमद्रामायण इत्यादिक श्रीरामचन्द्रहीको गावतेहैं अरु तिनहींको सिद्धांत किहेहैं जब चारि अनुबन्ध सतगुरुनते प्राप्ति होइं तब श्रीरामतत्त्वको प्राप्तिहोतहै सो कहते हैं प्रथम अधिकारी पुनि विषेय पुनि सम्बन्ध पुनि प्रयोजन

तुलसीदासहूं पायोंपरमबिश्रामरामसमानप्रभुनाहींकहूं ५० दो०मोसमदीननदीनहिततुमसमानरघुबीर असबिचारिरघुबंशमणि हरहुविषमभवपीर ५१ कामिहिंनारिपियारिजिमि लोभिहिप्रियजिमिदाम तिमिरघुनाथनिरन्तर लागहुप्रियम्वहिंराम ५२

अब इनके स्वरूप कहते हैं जब बैराग्य बिबेक अरु षट्सम्पत्ति संयुक्तहोइताको विशेष अधिकारी कही बैराग्य सो तौ पाछे कहिआये हैं ज्ञानदीपकके प्रारम्भ विषे चौपाई॥ ज्ञानबिरागयोगबिज्ञाना। येसबपुरुषसुनोहरियाना॥ पुनि बिबेक कहते हैं समुझिकै स्वधर्म ग्रहण परधर्मको तयाग पुनि आत्मा अनात्मा दोऊ मिलिरहेहैं जैसे जल अरु दूध जैसे हंसदूध को ग्रहण करतहैं जलको त्याग करतहै तैसेही रामसम्बन्ध पदार्थ ताको ग्रहण संसार संबंधको त्याग यामें अचल दृढ़बुद्धिरहै ताको बिबेककही पुनि षट्सम्पत्तिकहते हैं शम दम उपरति तितीक्षा श्रद्धा समाधान शमकही अन्तष्करण चित्त बुद्धि मन अहङ्कार इनकी वृत्तिको बेग एकरस स्थिरहैजाइ सो शमकही पुनि पांचज्ञान इन्द्रीपांचकर्मइन्द्री इनके विषयको दमनकरैं जीति लेइ सोदम पुनि अन्तरवाह्य इन्द्रिनकाबेग एकरस स्थिर होइजाहि सो उपरति पुनि दुखसुख निन्दा स्तुति मानापमान हर्ष शोक इत्यादिकअनेक द्वन्दधर्म के प्राप्तहोत संते सहिकै एकरसरहै सोतितीक्षापुनि आपने इष्टअनुकूल वेदवाक्य गुरुवाक्य में प्रतीति सो श्रद्धा पुनि आपने स्वरूपते श्रीरामस्वरूप में चिंतवन चित्तकै बृत्ति डिगै नहीं सो समाधान एतीषट्सम्पत्ति पुनि षट् सम्पत्ति षट्शरणागत को कहते हैं श्रीरामचन्द्र के अनुकूल जो साधन होइ तामें सकल्प करै कि यहै करौंगो पुनि रामप्रतिकूलजो कर्म धर्म होइ ताको बिशेष त्यागकरै पुनि मन बचन कर्म आत्म समर्पणकरै पुनि कार्पण्य हे श्रीरामचन्द्र मोसे कछु नहीं बनै मैं बड़ो नीचहौं पुनि गोप्तृत्वबर्णन देखिये तो जो वेदने गुप्तराख्योहै नहीं कह्यो सो रामचन्द्र कीन्ह्यो है संसारते उबारि लीन्हे हैं शवरी के फल जूँठे खायेमाताके समान मान्यउ निषादको अरु बानर भालुनको परमसखा कीन मन्त्रीकीन यशरूप मुक्ति दीन पाषाण की नावकीन श्रीरामचन्द्रकै कृपाकरुणा दयालुता समुझै रामआगे वर्णनकरै अपनो गुण अवगुण संयुक्त पुनि रक्षामें

विश्वास जिन श्रीरामचन्द्र लोक परलोकहूमें रक्षा कीन बिभीषण सुग्रीव गज द्रौपदी इत्यादिक अनेकनकै रक्षा कीन्ह्यउ सो मेरी रक्षाकरहिंगे यहअचल विश्वास करनाइनसबन करिकै युक्तहोइ सोअधिकारी कही जब ऐसी अधिकारीहोइ तब विषयको प्राप्तहोइ विषयकही

श्लोक॥ यत्पूर्वंप्रभुनाकृतंसुकविनाश्रीशम्भुनादुर्ग्गमं श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशंप्राथ्र्यैवरामायणं। मत्वातद्रघुनाथनामनिरतस्स्वान्तस्तमश्शान्तये भाषावद्धमिदंचकारतुलसीदासस्तथामानसं ५३ पुण्यम्पापहरंसदाशिवकरंविज्ञानभक्तिप्रदं मायामोह

श्रुतिस्मृति शास्त्र पुराण श्रीमद्रामायण समस्त ग्रन्थनकी विषय श्रीरामचन्द्रहैं जब विषय अच्छी तरह जान्यो तब सम्बन्ध को प्राप्तहोइ सम्बन्ध कही जीवते परमेश्वरते सजातीय संबन्धहै अंश अंशी संबंधहै धर्मा धर्मीसम्बन्धहै प्रकाश प्रकाशीसम्बन्धहै भोक्ता साक्षीसम्बन्धहै दीनदयालसम्बन्धहै पुत्रपितासम्बन्धहैसेवक स्वामी सम्बन्धहै राजा प्रजा सम्बन्धहै रूपरूपीसम्बंधहै सखासखी सम्बंधहै पत्नीपतिसंबंधहै इत्यादिसबसम्बंधअनादिहैंताको गुरुकीवाक्यते जानै पुनि प्रयोजन कहीजीवको प्रयोजन सांचीश्रीरामचन्द्र की भक्ति करै चारिहु फलते निष्काम ह्वैकै सो भक्ति पीछे के दोहामें कही है जो चारिउ अनुबन्धजानै सो रामभक्ति पहिंचानै अधिकारी विषय सम्बंध प्रयोजन तब बुद्धि निष्कामते मुमुक्षू मुक्त भक्त होइ (५२) श्लोकार्थ॥ तहां श्रीगोसाईं तुलसीदास कहते हैं कि श्रीमद्रामायणमानसर श्रीमहादेव कृत विशेष अरु महामुनीश्वरन्ह को सम्मतत्यहिको भाषाकरतहौं यत्पूर्वंप्रभुनाकृतं सुकविना श्रीशंम्भुनादुर्गमम्॥ श्रीशम्भु अतिदुर्गम जो रामायण कीन्ह है जहां काहूको सम्पूर्ण जानबे की गम्य नहीं है त्यहिकी अभिप्राय लैकै सुकवि जो बाल्मीकि व्यास इत्यादिकप्रभुजो श्रीरामचन्द्र तिन्हकी कृति कही लीला आकृति स्वरूप त्यहिके श्रीमद्रामायण पूर्वही कही भविष्य कीन्ह है अरु बर्तमान कीन्ह है श्रीरामपदाब्ज भक्ति मणि सम्प्राथ्र्यैव रामायणं कैसी है श्रीमद्रामायण श्रीरामचन्द्रके पदकमलकी भक्ति अहर्निश प्राथ्र्यैवकही करतहै किंतु प्राप्तिहै सिद्धिहै प्रार्थना करतसंते तहां श्रीमद्रामायणमें जो रामनाम ज्ञानभक्ति स्वरूप त्यहिविषे मत्वाकही मैं निरतहौं स्वकही मोर अंतष्करणजाते शांतिको प्राप्तिभयो है यहां शान्तरसकही अपने शुद्धस्वरूपकी प्राप्तिह्वैकै उपरांत श्रीसीतारामकी भक्तिको प्राप्तिभयों है त्यहिमानसरकोआदि कबिनको आशयलैकै मंगलमय भाषाकीन्हेउहै अथवा॥ प्रभुना श्रीशंभुनासुकबिना यत्मानसंरामायणंपूर्बकृतंकथंभूतंमानसंरामायणंदुर्गमंपुनः कथंभूतं श्रीरामस्यपदाब्जभक्तिअहर्निशंप्राप्तिंप्राथ्र्यैवइतिमत्वा तत्रघुनाथनामनिरतंस्वअंतः तमः शांतयेइदंमानसंरामायणं अहंतुलसीदासःभाषाबद्धंचकारतथैवइत्यन्वयः॥ अथबार्तिक श्रीगोसाईं तुलसीदासजी कहते हैं कि प्रभुना सुकबिना जो श्रीशंभु तिनकरिकै यत्कही जौनमानसरामायण पूर्बकृतकही पूर्बहीं की नगयो है सो कैसी

भयापहंसुबिमलंप्रेमाम्बुपूरंशुभंश्रीमद्रामचरित्रमानसमिदंभक्त्यावगाहंतिये तेसंसारपतंगघोरकिरणैर्दह्यन्तिनोमानवाः ५४॥

मानसर रामायण है कि दुर्गमकही अगम है यहिके जानिबे को कोऊ समर्थनहींहै श्रीमहादेव जीकी कृपाबिना सो पूर्बकाल काण्डमें श्रीगोसाईंजी अपने प्राप्तिकी उपाय कहिआये हैं कि॥ शंभुप्रसादसुमतिहियहुलसी॥ रामचरितमानसकबितुलसी॥ यहि चौपाई में पुनि कैसनहै श्रीमानस रामायण कि श्रीमद्रामपदाब्ज कही श्रीराम पदकमलबिषे भक्तिंकही भक्तिको अहर्निश प्राप्तिकरतहै प्राथ्र्यैव कही प्रार्थना करतसंते नाम दीनहोइकै याचना करतसंते वा चाहना करतसंते इतिकही यह मत्वा कही मानिकै तत्कही तौने रघुनाथकेनाम स्वरूपादिकन करिकै निरतकही युक्त इदंकही यह जोहै मानस रामायण त्यहिको मैं जोहौं तुलसीदास सो तथा नाम तेहीप्रकार करिकै स्वमतिके अनुसार भाषाबद्ध चकारनाम करतभयों है स्वअंतःकही अपने अंतःकरणके तमशांतयेकही तमशांति होनेके अर्थ (५३) पुनि श्लोकार्थ॥ कैसो है यह श्रीमद्रामचरित पुण्यरूप है मनबचन कर्मके पाप नाशकरतु है अरु शिवकही सदा कल्याण कर्त्ताहै अरु बिज्ञानभक्ति त्यहिको प्रदकही देत है अरु माया मोह जन्म मरण भय त्यहिको अपहंकही नाशकरत है अरु निर्मल प्रेम अंबुकही इहां अमृतको त्यहिको नित्यपूर्ण शुभमंगल करतहै श्रीमद्रामचरित मानसर जो अवगाहनकही यहि में पैठैं स्नानकरैं पानकरैं अपनी आत्माको

तृप्तकरैं तेनर यह संसार महाघोर पतंगकही सूर्य तिन में किरणि तैं मैं मानबड़ाई इत्यादिक तप्तज्वाला स्वरूप त्यहिबिषे दानव नरदेव इत्यादिक न जरैं किंतु पतंगइव जरेजाते हैं तहां जो यह श्रीमद्रामचरित अवगाहनकरै त्यहिको संसार अग्निरूप शीतलजलह्वइजातहै ( ५४ ) घनाक्षरीछन्द॥ रामयशमानसरसैंतिसतरंगबर ज्ञानहाथअ सिमानोंचमकैकलशीश है। दिब्यबैराग्यज्ञानध्यानभक्तिउरहारलसैमुक्तासाततीसहै। योगअष्टांगषटसंपतिषटशरणागतदशौभक्तिभूमिसप्तमाल मणिजनीशहै॥ रामचरणचिंतामणिमयस्वपानतीस-सातरामधामप्रापतिकोजानभौनदीसहै १ षोड़शौश्रृंगारबरबारहौबिभूषणधरनवौरसतीस सातलसै-दिब्यअंगहैं। रामचरणतत्त्वभेदतीनिकांडतीनोंमतजीवईशभेदाभेदसैंतिसप्रसंगहैं २ शिवकोसिद्धांतबिधिहनूमानशारदागणेशसूर्यचन्द्रअग्निवेदसतहै। बाल्मीकिव्यासमार्कंडेयअगस्त्यशुकनारदसनकादिपरमहंसनकोमतहै। कपिलदेवयाज्ञबल्क्यभरद्वाजबिश्वामित्र-बामदेवजनकवशिष्ठयोगजतहै। रामचरणतुलसीगोसाईंकृतसर्बशारदरूपदर्शावैसीतारामप्रेमरतहै ३ निगमागमपुराणकोविशेषलैलैभाषाकृततुलसीगगोसाईंहंसनी रमिल्योपयगही। दुग्धतेमाखनयथाअनुभवमथानीमथि मधुमाखीबुद्धिकीन्हसर्बोरसकोलही। भावअनुभावहावस्थाईविभावसंचारीआदिपंडितकबिसंतनधनसोकही। रामचरणसप्तकांड आदिमध्यअंतशुभ्र सर्वोपरिरामतत्त्वतुलसीकहिनिर्बही ४ रामचरितमानसमरालसंततुलसीमतिसीपरामुक्तागुणकंजभावपांचहै। वेदपैसमुद्रज्ञानतुलसीकोमन्दरहैबासुकी-सुबुद्धिसुधाभक्तिरतनसांचहै। शैलहैपुराणशास्त्ररामचरितमानिकहैतुलसी सोखोदिछोड़िकर्मशिलाकांचहै। रामचरणतुलसीकृतमानसस्नानकरैशांतरसशीतलनतपैजक्तआंचहै ५ रामजोकरैंमोहिंलोमसेते अधिकऔरब्रह्माकेसरसवेदवेत्ताबनाइये। शेषसमशास्त्रीव्याकरणीकरैंशारदसमकबिताकरैंव्यासगुरुबाल्मीकिभाइये। सांख्यमेंकपिलवेदान्तसनकादि-शुकविद्यागाननारदमहेशपदपाइये। रामचरणयेतेगुणदेहिंश्रीराममोहिंतुलसीकृतअर्थतबौपारनहींपाइये ६ इतिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषबिध्वंसनेउत्तरकांडेयोगवैराग्यज्ञान-परमतत्त्व श्रीमद्रामायणमाहात्म्य भक्तिनिरूपणसर्बशास्त्रसिद्धांतबर्णनन्नामसप्तत्रिंशतितस्तरंगः॥३७

दोहा ॥ उत्तरकाण्डसमाप्तभोसुभगजानकीघाट रामचरणशुभतिलककृतजहँसन्तनकेठाट॥ इतिश्रीमद्रामायणसप्तकाण्डस्समाप्तः॥

*पहले फ्लैप का शेष*

जिस महान् गुण के कारण इसने यह असाधारण सम्मान प्राप्त किया, वह है ऐसी मानवता की कल्पना, जिसमें उदारता, क्षमा, त्याग, निर्वैरता, धैर्य और सहनशीलता आदि सामाजिक शिवत्व के गुण अपनी पराकाष्ठा के साथ मिलते हों और फिर भी जो अव्यावहारिक न हो।

तुलसीदास राम को एक धर्मनिष्ठ नायक के रूप में ही चित्रित करते हैं, जो पिता की आज्ञा का पालन करना अपना एक परम पुनीत कर्तव्य समझता है। इसीलिए उन्होंने कहा है : "*धरम धरीन धरम गतिजानी। कहेउ मात सुन अति मृद बानी।*